

आभार-प्रदान

प्रस्तुत पुस्तिका जन समाज के लिए कितनी उपयोगी है इसका अनुमान अन्तर्गत विषय से भली भाँति लगाया जा सकता है ऐसी लाभप्रद पुस्तिका के प्रकाशन में तन मन धन से सहायता प्रदान करने वाले महानु-भावों का आभार न मानना धृष्टता होगी। सर्व प्रथम इस पुस्तिका के विषय के संग्रह-कर्ता पं. रत्न मंत्री मुनि श्री १००८ श्री मिश्रीमल्लजी म० सा० का हम आभार मानते हैं, तत्पश्चात् इस पुस्तक के संपादन कर्ता श्रीयुत् पं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल न्यायतीर्थ प्रथानाध्यापक श्री जैन गुरुकुल व्यावर तथा अर्थदाता श्री गम्भीरमल्लजी कोठारी डिगरना १५०) रु० तथा श्री रुपराज-जी संठिया जोधपुर ४०) रु० इन्हों का हम आभार मानते हैं।

निवेदकः—
भेंडारी जोरावरमल

* भूमिका *

इस असार संसार में आधार एवं उद्धार का करने वाला शास्त्रकारों ने केवल ज्ञान ही फरमाया है। किंतु ज्ञान ही सम्यक् होना चाहिये। क्योंकि सम्यक् ज्ञान से ही सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र प्राप्त हो सकता है। वही मोक्ष का मार्ग है, देखिये उमास्वाति क्या फरमाते हैं कि “सम्यक् ज्ञान दर्शनं चारित्राणि मोक्षमार्गः” ऐसा परम प्रधान ज्ञान जिनवाणी के अतिरिक्त कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकता। अतः जिनवाणी ठोस ज्ञान सब से प्रथम करना चाहिये और उस ओर ही रुचि बढ़ानी चाहिये, इस उद्देश्य से ही यह “तत्त्व ज्ञान-तरंगिणी” नामक ग्रन्थ गुरुदेव की परम कृपा से प्रकाशित कर रहा हूँ। इसमें तेरह ढालें, समकित छप्पनी, श्री दशवैकालिक व श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र के अध्ययन व थोकड़े बगोरह का समावेश किया गया है। इससे मुमुक्षु सज्जनगण अवश्य ही लाभ उठाकर पं. मुनि श्री व मेरे श्रम को सफल बनाकर उत्साहित करेंगे ॥ इति शम् ॥

आपका—

भंडारी जोरावरमल
प्रेसिडेंट, श्री जैन बुद्धवीर स्मारक मंडल,
जोधपुर.



श्रीतत्त्वज्ञान-तरंगिणी

अथ श्रीमहावीर जिन-स्तुति

पुच्छिसु गं समरणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिआ य।
 से केइ गेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए ।१
 कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं नायसुतस्स आसी ? ।
 जाणासि गं भिक्खु जहातहेण, अहासुतं वृहि जहाणिसंतं ।२
 खेयन्नाए से कुसले महेसी^x, अणंतनाणी य अणंतदंसी ।
 जसंसिणो चक्खुपहट्टियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ।३
 उहडं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
 से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवेव धम्मं समियं उदाहु ।४
 × कुसला सुपन्ने ।

मे सम्बद्धती अमिमूल्यनार्थी, विरामगंगे चिह्नम दितप्पा ।
 अखुचरे सम्बद्धगंगे सि यि-अ र्था अतीते अभय अस्त्र ॥
 से मूरुपये अद्यिएः अखारी, ओहतरे खीरे अखंतचक्षु ।
 अखुचरं तप्पति सुरिए वा वाहोपरिंदे व तमपगासे ॥
 अखुचरं घममिणा विलालां, ऐयामुखी कासप आसुपरवे ।
 इये व देवालं महालुभावे सहस्रवेता विविणा विलिङ्गे ॥
 से पश्या अप्लक्ष्यसागरे वा, महोदही वायि अखंतपारे ।
 अखारले या अक्षताह मिक्षु लक्षके व देवाहिवर्ह सुईमं ॥
 से वीरिपं व परिपुरुषवीरिप, सुरंसखे वा लगसम्बसेहे ।
 द्वयवाप वासि मुदामरे से विरायप लेगगुलोबवेप ॥
 सर्वं उयस्सालु जोपत्तालं रिक्षरगे पंडगवेजयंते ।
 से जोपये लवक्षवते सहस्रे उद्भुतिसतो हेहु सहस्रमेगं ॥
 प्रेह उमे लिहू भूमिवद्विष, ऊं चरिपा अखुपरिषहृपति ।
 से हेमवन्मे वहुनदये व जंती रति वेदयती महिदा ॥
 से पश्यप सहमहाय्यामासे विरायती लचयमहवन्मे ।
 अखुचरे विलिमु व पम्भुगे विरीवरे से अविएवमोमे ॥
 महीह मम्भमिम ठिते लगिंदे परवायते स्त्रिपसुद्देशेस्से ।
 एव सिरीए उ स मूरिषए व मणोरमे जोयह अविमाली ॥
 सुरंसखस्सेव जसो विरिस्स पम्भुर्ह महतो पश्यपस्स ।
 एतोवमे समये नायपुत्रे जाती जघोरंसल्लमालसीले ॥
 विरीवरे वा विमहाऽऽय्याव रुपए व सेहु वलपायतार्ह ।
 तप्तोवमे से वगभूरुपये मुखील मउमे तमुवाहु पएये ॥
 अखुचरं घममुर्हरता, अखुचरं भग्नखरे फिपारं ।
 सुमुक्षसुक्ष अर्गाऽसुक्ष संलिङ्गुपरंतमहातसुक्ष ॥

अग्नुत्तरम् घरम् महेसी, असेसकम्मं स विसोहृत्ता ।
 सिद्धिंगते साइमणेतपते, नारेण सीलेण य दंसरेण ॥१७
 रुद्रखेसु णाते जह सामली वा, जर्सि स रति वेययति सुघन्ना ।
 वरेसु वा गंदणमाहु सेटुं, नारेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥१८
 थणियं व सद्वाण अग्नुत्तरे उ, चन्द्रो व ताराण महागुभावे ।
 गंधेसु वा चंदणमाहु सेटुं, एवं मुखीणं अपडिन्नमाहु ॥१९
 जहा सयंभू उद्धीण सेटु, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेटु ।
 खोओदए वारस वेजयंते, तवोवहाणे मुणि वेजयंते ॥२०
 हत्थीसु परावणमाहु णाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा ।
 पञ्चीसु वा गरुले वेणुदेवे, निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥२१
 जोहे सुणाए जह चीससेणे, पुष्केसु वा जह अरविंदमाहु ।
 खत्तीण सेटु जह दंतवक्के, इसीण सेटु तह बद्धमाणे ॥२२
 दाणाण सेटुं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वर्यंति ।
 तवेसु वा उत्तम वंभचेर, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३
 ठिईण सेटु लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेटु ।
 निव्वाणसेटु जह सब्बधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नारणी ॥२४
 पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न सरिणहिं कुब्बति आसुपरणे ।
 तरिउं समुहं व महानवोधं, अभयंकरे वीर अणेतचकखु ॥२५
 कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउथं अजभत्थदोसा ।
 एआणि वंता अरहा महेसी, ण कुब्बइ पाव ण कारवेइ ॥२६
 किरिया किरियं वेणइयागुवायं, अणाणियाणं पडियच्छ ठाणं ।
 से सब्बवायं इति वेयइत्ता, उवट्टिए संजमदीहरायं ॥२७
 से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयद्याए ।
 लोगं विदित्ता आरं पारं च, सब्बं पभू वारिय सब्बवारं ॥२८

सोऽया य धम्म अरद्दंतभासियं समाहित अद्वृपदोवसुय ।
तं सदहासाय जणा अणार, इन्द्रा य देषादिव आगमिस्सति ॥
लिखेमि ॥ इम सिंहि भीरस्तुइ नाम छुहमग्नयर्थं समर्थ ॥



अथ दुमपुणिया अजम्यर्था

धम्मो मंगलसुचिकृत् अर्थिता संज्ञमो ततो ॥
देवा वित समर्थति अस्स धम्मे स्या मणो ॥१॥
अहा पुमस्स पुष्टेच्छु भमरो आविष्ट रस्ते ॥
क्षय पुष्टक फिलामेइ सो अ पीकेइ अप्पर्य ॥२॥
एमेष समवा मुक्ता जे लोए संति साहुयो ॥
विहगमा य पुष्टेच्छु वाणमचेसणे एपा ॥३॥
वयं अ लिहिति हाम्मामो, श य कोइ उमहम्माइ ॥
आहागडेच्छु रीथते पुष्टेच्छु भमरा जहा बैध ॥
मदुगा (का) रसमा दुदा जे भर्ति अयिसिसपा ॥
नाळार्पिडरपा दता तेय पुष्ट्वर्ति साहुको ॥४॥तिर्थे
इति दुमपुणिया पदमं अग्नम्यर्थं नम्मर्थ ॥१॥



अथ सामरणपुञ्बय अजम्यर्था

कह दु कुआ भामर्थं जो कामे न निधारण ॥
पण पण यिसीधंतो, संक्षिप्यस्म यस गच्छो ॥२॥

वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य ॥
 अच्छुदा जे न भुजंति, न से चाइति बुच्छ ॥२॥
 जे य कंते पिए भोए, लद्दे वि पिट्ठि कुब्बइ ॥
 साहीणे चयइ भोए, से हु चाइति बुच्छ ॥३॥

समाइ पेहाइ परिव्वयंते, सिया मणो निस्सरई वहिज्ञा ॥
 न सा महं नोवि अहं वि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥४॥
 आयावयाही चय सोगमलं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं ॥
 द्विदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥५॥

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ॥
 नेच्छुंति वंतयं भोतुं, कुले जाया अगंधणे ॥६॥
 धिरत्थु ते जसोकामी, जो तं जीवियकारणा ॥
 वंतं इच्छुसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥७॥
 अहं च भोगरायस्स, तं चडसि अंधगविरिहणो ॥
 मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥८॥
 जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छुसि नारिओ ॥
 वाया विद्धुव्व वडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥९॥
 तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासियं ॥
 अंकुसेण जहा नागो, धमे संपडिवाइओ ॥१०॥
 एवं करंति संचुज्ञा, पंडिया पवियव्वखणा ॥
 विणियदुंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥त्तिवेमि॥११॥

इत्र सामरणपुच्चयं नाम दुइत्रं अञ्जभयणं सम्मतं ॥२॥

खुद्दपायार कहा अजमयर्गा

संक्षेपे चुहुभव्याग्नि, विष्वमुक्ताणि ताहणे ॥
 तेसिमेयमक्षारएर्ण, निमायात् महेसिण ॥१॥
 बहेसिय फीयगड्ड नियागममिहदायि य ॥
 राहमते सियाणे य गंधमस्ते य बीयणे ॥२॥
 भनिही गिहिमते य, रापपिंडे किमिष्कप ॥
 भवाहणा वतपहोयका प संपुष्ट्यणा वेहपलोयका य ॥३॥
 अहुपर य नाशीप चराहस य भागवत्पूर्ण ॥
 तेगिष्ठुं पाहणा-पाप समारंभं च जोरको ॥४॥
 मिळायरपिंडं च, आलंदीपकिर्यंकप ॥
 गिर्हतरनिसिङ्गा य गायस्तुम्बहणायि य ॥५॥
 गिहिको देशापडिर्यं जा य आजीववतिभा ॥
 तसा निष्कुडमोहर्स आठरस्तरणायि य ॥६॥
 सूक्ष्म प्रियते य उच्छुर्लंडे अनिष्टुडे ॥
 कंदे मूले य भविष्यते फसे बीप य आमप ॥७॥
 सोबब्ले भिष्यते सोये रोमालोके य आमप ॥
 सामुदे पंचुकारे य चलालोके य आमप ॥८॥
 पुष्पे ति घमये य वत्थीकम्मविरेषये ॥
 भजयो वतपयो य गायधंगविभूसयो ॥९॥
 संघमेयमक्षारान्न निर्गंधाण महेसिण ॥
 संक्षमम्मि अ चुचाणि लक्ष्मूपविहारिणि ॥१०॥
 पंचासय परिणाया तिगुरुा छसु भजया ॥
 पञ्चमिमाहणा चीरा भिर्गाणा उच्छुर्वसिणो ॥११॥

आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ॥
 चासासु पडिसंलीणा, सञ्जया सुसमाहिया ॥२२॥
 परीसहरिऊदन्ता, धूअमोहा जिंदिया ॥
 सव्वदुक्खपहीणहा, पक्कमंति महेसिणो ॥२३॥
 दुक्कराइं करित्तारां, दुस्सहाइं सहितु य ॥
 केइ-त्थ देवलोपसु, केइ सिजभंति नीरया ॥२४॥
 खवित्ता पुच्छकम्माइं, संजमेण तवेण य ॥
 सिद्धिमग्गमणुपत्ता, ताइणो परिणिव्वुडे ॥त्तिवेमि॥२५॥

॥ इत्र खुड्यायारकहा नाम तइयमज्ञयणं समतं ॥

॥ अह छुज्जीवणियानामं चउत्थं अज्ञयणं ॥

सुअं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु
 छुज्जीवणिया नामज्ञयणं समरोणं भगवया महावीरेणं कास-
 वेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता; सेअं मे अहिजिडं अज्ञ-
 यणं धम्मपणत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु सा छुज्जीवणिया नाम-
 ज्ञयणं समरोणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया
 सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअं मे अहिजिडं अज्ञयणं धम्म-
 पणत्ती ? ॥२॥ इमा खलु सा छुज्जीवणिया नामज्ञयणं सम-
 रोणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया
 सुपन्नत्ता सेअं मे अहिजिडं अज्ञयणं धम्मपन्नत्ती ॥ तं
 जहा—पुढविकाइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, घाउ-
 काइया ४, धणस्सइकाइया ५, तसकाइया ६। पुढवीचित्तमंत-
 मक्खाया श्रगोगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं। आउ

चित्तमतमक्षाया अरोगजीवा पुढोसत्ता अधृत्य सत्यपरिष
एण्ठो ॥ ३ ॥ तेऽन् चित्तमंतमक्षाया अरोगजीवा पुढोसत्ता
अधृत्य सत्यपरिष्करण ॥ ४ ॥ वान् चित्तमतमक्षाया अरोग
जीवा पुढोसत्ता अधृत्य सत्यपरिष्करण ॥ ५ ॥ यद्यस्मै चित्त
मंतमक्षाया अरोगजीवा पुढोसत्ता अधृत्य सत्यपरिष्करण,
त जहा—अमाधीया मूलाधीया पोरधीया खंपधीया, धीय
यहा, संमुच्छिमा, तणुलया वण्हसाइया सधीया चित्त
मतमक्षाया अरोगजीवा पुढोसत्ता अधृत्य सत्यपरिष्णपण ॥
से जे पुण्य इमे अरोगे वहेतभा पाणा तं जहा—ग्राहया
पोयया ज्ञानाद्या रसया संसोइया भमुच्छिमा उभिया
उववाइया जेसि केसिचि पाण्याणो, अभिकृतं पदिकृतं
मंकुशिय पमारियं रुय मंतं तमिर्य पवाइयं आगाइगरवि
याया जे अ कीडपर्यंगा जाय कुंपुषिपीक्षिया सब्बेवेहन्दि
या सब्बे तेहभिया, सब्बे चउरिदिया सब्बे पंखिदिया सब्बे
तिरिफ्पय खोक्षिया सब्बे तेरया सब्बे मणुआ, सब्बे देजा,
भब्बे पाणा परमाहमिद्या एसो लासु छट्टो धीवमिकाओ तस
काओ चि पशुवर । इच्छेसि इहाँ जीयमिकायाएँ नेप सय
क्षड समारंभिजा नेवम्भेदि देहं समारंभापिजा कह समारं-
भम्भे बि अन्ने न समणुआहामि जायझीयाए तिविह॑ [तिवि-
हेणो मणेणो यायाए कापरणो न क्षरेमि न कारवेमि करंतपि
अम्भे न समणुआणामि, तस्म मम्भु पडिकमामि निवामि
गरिहामि अप्याएँ बोसिरामि ॥

1

पहमे भम्भु महाप्यप पाणाइयायाओ वेरमणो । नव्वं
मम्भे 1 पाणाइयायं पण्हक्षामि । से सुदूर्मं पा यायर धा, तस्म
वा थापर वा मैव सर्व पाण आणाइया मैप अन्नेदि पाल

अद्वायाविज्ञा, परो अद्वायन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि,
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मरोणं वायाए काण्णं न करेमि
 न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं चोसिरामि । पढमे
 भन्ते ! महब्बए उवट्टिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेर-
 मणं ॥१॥

अहावरे दुच्चे भन्ते ! महब्बए मुसावायं पञ्चकखामि । से
 कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सयं मुसं बइज्ञा,
 नेवन्नेहिं मुसं बायाविज्ञा मुसं चयंते वि अन्ने न समणुजाणामि
 जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेण मरोणं वायाए काण्णं न करेमि
 न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते !
 पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं चोसिरामि । दुच्चे
 भन्ते ! महब्बए उवट्टिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं
 ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भन्ते ! महब्बए अदिन्नादाणाओ वेरमणं ।
 सव्वं भन्ते ! अदिन्नादाणं पञ्चकखामि । से गामे वा, नगरे वा,
 रणोवा, अप्पं वा, वहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा,
 अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गिरहविज्ञा, नेवन्नेहिं
 अदिन्नं गिरहविज्ञा, अदिन्नं गिरहन्ते वि अन्ने न समणु-
 जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मरोणं वायाए काण्णं
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स
 भन्ते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं चोसिरामि ।
 तच्चे भन्ते ! महब्बए उवट्टिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ
 वेरमणं ॥ ३ ॥

चित्तमतमन्तराया अरोगजीया पुढोसता अप्रत्य सत्यपरिण
एर्ण ॥ ३ ॥ तेऽ म चित्तमंतमन्तराया अरोगजीया पुढोसता
अप्रत्य सत्यपरिणएर्ण ग्रध ॥ यादृ चित्तमतमन्तराया अरोग
जीया पुढोसता अप्रत्य उत्थपरिणएर्ण ॥ ५ ॥ यदृस्मई चित्त
मतमन्तराया अरोगजीया पुढोसता अप्रत्य सत्यपरिणएर्ण
त आहा—अगगजीया, मूलयीया पोरजीया येधजीया, जीय
यहा समुच्छियमा ताष्ट्राया, यक्षसाकाह्या, मर्यीया, चित्त
मंतमन्तराया अरोगजीया पुढोसता अप्रत्य सत्यपरिणएर्ण ॥
से जे पुणे इम अरोग वहचे तमा पाळा त आहा—मैड्या
पोण्या झराऱ्या, रसया संसेह्या समुच्छियमा उभिया,
उवयाह्या जेसिं केसिं विपाळार्ण, अभिक्षेपं पविक्षेपं
मंकुचिय, पसारिये रुये भत तभिर्ये पहाईये आगाहाहि
आया जे अ क्रीडयेगा आ य कुंपुपिपीक्षिया सम्बोधेइमि
या सम्बोधेइम्भिया सम्बोधेइम्भिया सम्बोधेइम्भिया, सम्बो
द्धिरिक्षय जोषिया सम्बोधेइम्भिया, सम्बोधेइम्भिया सम्बो
द्धेइम्भिया सम्बोधेइम्भिया, एमो वासु इम्भिया जीवनिकांडो तसु
कांडो चिं पक्षुवार । इच्छेमिं वाहां जीवनिकायार्ण मेव सर्व
वंडे समारंभिया मेवान्नेहि वडे समारंभायिका वडे समारं
भान्ते वि अन्मे न समणुजाणामि खावजीवाप तिविह [तिविह-
हेणी मणेणी वापाप कापर्णी न करेमि, न कारवेमि करतंपि
अन्मे न समणुजाणामि तस्स भन्ते पविष्टमामि लिंदामि
गरिहामि अन्यार्ण चोसिरामि ॥

एहमे भन्ते महाव्यप पाळाऱ्यायामो वेरमर्ण । सर्व
भन्ते । पाण्डाहपायं पवान्तमामि । से म्हुम्हुं का कार्ण वा, तसं
वा घार्ण वा मेव सर्व पाळे अरणाऱ्या मेव अमेहि पाणे

अद्वायाविज्ञा, पाणे अद्वायन्ते विश्वि अन्ते न समणुजाणामि,
जावज्जीवाए तिविहेण मरोणं वायाए काएणं न करेमि
न कारवेमि करंतंपि अन्ते न समणुजाणामि, तस्स भन्ते !
पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । पढमे
भन्ते ! महव्वए उवट्टिओमि सव्वाओ पाणाद्वायाओ वेर-
मणं ॥१॥

अहावरे दुच्चे भन्ते ! महव्वए मुसावायं पञ्चकखामि । से
कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, नेव सयं मुसं वइज्ञा,
नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्ञा मुसं वयंते विश्वि अन्ते न समणुजाणामि
जावज्जीवाए, तिविहेण मरोणं वायाए कायणं न करेमि
न कारवेमि करंतंपि अन्ते न समणुजाणामि । तस्स भन्ते !
पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । दुच्चे
भन्ते ! महव्वए उवट्टिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं
॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं ।
सव्वं भन्ते ! अदिन्नादाणं पञ्चकखामि । से गामे वा, नगरे वा,
रखोवा, अप्पं वा, वहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा,
अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गिरहविज्ञा, नेवन्नेहिं
अदिन्नं गिरहाविज्ञा, अदिन्नं गिरहन्ते विश्वि अन्ते न समणु-
जाणामि जावज्जीवाए तिविहेण मरोणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्ते न समणुजाणामि । तस्स
भन्ते ! पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।
तच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्टिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ
वेरमणं ॥ ३ ॥

अहापरे चउत्त्वे भन्ते । महाष्ठए मेहुकामो बेरमर्णा । सर्व
भन्ते । मेहुर्णा पञ्चकक्षामि । से दिर्घं वा माणुमं वा, तिरि
ज्ञानीसिंहं वा, भेष सय मेहुर्णा सेविका, नेयमौहि मेहुर्णा
सेषापिका मेहुर्णा सेषम्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जाप
ज्ञीवाए तिविद्वं तिविद्वं भवेणा वायाए कापरणा न करेमि न
कारबेमि करतेपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ।
पद्धिकम मि निवामि गरिहामि अप्पाए घोसितामि । चउत्त्वं
भन्ते । महाष्ठए उषट्टिभो मि सर्वामो मेहुकामो बेरमर्णा ॥४॥

अहापरे पञ्चमे भन्ते । महाष्ठए परिमाहामो बेरमर्णा । सर्व
भन्ते । परिगाह पञ्चकक्षामि । से अप्पं वा चाँ वा अरुं वा
पूँ वा चित्तमत वा, अचित्तमतं वा भैष सर्वं परिगाहं परिगि
शिहका भैषम्नेहि परिगाहं परिगिएहापिका परिगाह परि
गियाहसे वि अन्ने न समणुजापिका जापज्ञीवाए तिविद्वं
तिविद्वं भवेणा वायाए कापरणा न करेमि न कारबेमि करं
तेपि अन्न न समणुजाणामि तस्स भन्ते । पद्धिकमामि
निवामि गरिहामि अप्पाए घोसितामि । पञ्चमे भन्ते । महाष्ठए
उषट्टिभो मि सर्वामो परिमाहामो बेरमर्णा ॥ ५ ॥

अहापरे छहे भन्ते । एष पाइमोयक्षामो बेरमर्णा । सुन
भन्ते । पाइमोयर्णा पञ्चकक्षामि । से असर्णा वा पार्णा वा
कार्म वा सार्म वा भैष सर्वं राँ सुविका भैषम्नेहि राँ
सुविका राँ भुर्खतेऽपि अन्ने न समणुजाणामि जाप-
ज्ञीवाए, तिविद्वं तिविद्वं भवेणा वायाए कापरणा न करेमि
न कारबेमि करतेपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ।
पद्धिकमामि निवामि गरिहामि अप्पाए घोसितामि । छहे

न्ते ! वए उवटुओऽमि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं ॥
 ॥ इच्येयाइं पञ्च महव्वयाइं राइभोअणवेरमणं छट्टाइं अत्त-
 हेयटियाए उवसंपदिजत्तारां विहरामि ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपञ्च-
 क्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसा-
 गओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भिन्ति वा,
 सिलं वा, लेलुं वा, ससरक्खं वा कायं, ससरक्खं वा वत्थं,
 हत्थेण वा; पाएण वा, कट्टेण वा, किलिचेण वा, अंगुलियाए
 वा, सिलागण वा, सिलागहत्थेण वा, न आलिहिज्जा, न
 विलिहिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिंदिज्जा अन्नं न आलिहाविज्जा,
 न विलिहाविज्जा, न घट्टाविज्जा, न भिंदाविज्जा, अन्नं आलि-
 हंतं वा, विलिहंतं वा, घट्टंतं वा, भिदंतं वा, न समणुजाणिज्जा
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणां मणेणां वायाए काएणां न
 करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स
 भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणां चोसिरामि
 ॥ ६ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपञ्च-
 क्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ
 वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा, हिमं
 वा, महियं वा, करगं वा, हरितणुगं वा, सुद्धोदगं वा, उद-
 उल्लं वा कायं, उदउल्लं वा वत्थं, ससिणिङ्गं वा कायं, ससि-
 णिङ्गं वा वत्थं न आसुसिज्जा, न संफुसिज्जा, न आवी-
 लिज्जा, न पवीलिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न चक्खोडिज्जा,
 न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं आमुसंतं वा, संफुसंतं

वा अत्यधीसत् वा, पर्वीर्लंतं वा अक्षोद्धंतं वा आयाषम्तं वा, पर्याषन्तं वा न समणुजाखिञ्जा, जाष्ट्वीषाए, तिक्षिहेण मषेण वायाए काप्तेण न करेमि न कारतेमि करतं पि अथ न समणुजाखामि । तस्मि भन्ते । पदिक्षमामि निदामि गरिष्ठामि अप्याश्र्ण षोभितामि ॥ २ ॥

से मिक्तू वा मिक्तमूर्खी वा सञ्चयविरथपद्धियपद्ध
क्षायपाषकम्मे, दिग्भा वा गाम्भो वा पगाम्भो वा, परिसागम्भो
वा, सुर्चे वा जागरमाषेवा से अगर्खिं वा इक्षालं वा
सुम्मुर्त वा अर्खिं वा जालं वा सुखागर्खिं वा उष्ण वा म
रंखिरिज्जा न घट्टिञ्जा न मिदिञ्जा न उज्जासिञ्जा म पञ्चा
खिञ्जा न निष्वाखिञ्जा अथ म उज्जाखिञ्जा न घट्टाखिञ्जा
म मिद्वाखिञ्जा न उज्जासाखिञ्जा न पञ्चासाखिञ्जा न
मिष्वाखिञ्जा अर्खं उज्जास्त वा घट्टसं वा मिरेत वा उज्जा
संसं वा पञ्चासर्तं वा मिष्वायम्तं वा न समणुजाखिञ्जा
जाष्ट्वीषाए तिक्षिहेण मषेण वायाए काप्तेण न
करेमि न कारतेमि करतं पि अथ म समणुजाखामि । तस्मि
भन्ते । पदिक्षमामि मिद्वामि गरिष्ठामि अप्याश्र्ण षोभितामि
॥ ३ ॥

से मिक्तू वा मिक्तमूर्खी वा, सञ्चयविरथपद्धियपद्ध
क्षायपाषकम्मे दिग्भा वा राम्भो वा पगाम्भो वा परिसागम्भो
वा सुर्चे वा जागरमाषेवा, से सिष्टस वा, मिहूयणेषु वा
ताखिर्यटेषु वा पतेषु वा पत्तमंगेषु वा उच्छाए वा साहा-
र्भगेषु वा पिद्वेषु वा, पिहूशहस्त्येषु वा चेलेषु वा, चेल
कम्नेषु वा हस्त्येषु वा मुद्देषु वा अप्यशो वा करयं, शाहिर-

वा वि पुगलं न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमाविज्जा,
न वीआविज्जा, अन्नं फुमंतं वा, वीअन्तं वा न समणुजाणा-
मि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न
करेमि, न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स
भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्च-
क्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ
वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से वीएसु वा, वीयपइट्टेसु वा,
रुट्टेसु वा, रुढपइट्टेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्टेसु वा, हरि-
एसु वा, हरियपइट्टेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्टेसु वा,
सच्चित्तेसु वा, सच्चित्तकोलपडिनिस्सएसु वा न गच्छेज्जा, न
चिट्टेज्जा, न निसीइज्जा, न तुअट्टिज्जा, अन्नं न गच्छाविज्जा,
न चिट्टाविज्जा, न निसीआविज्जा, न तुअंट्टाविज्जा, अन्नं
गच्छंतं वा, चिट्टुंतं वा, निसीअन्तं वा, तुयट्टुंतं वा न समणु-
जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि-
रामि ॥५॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्च-
क्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा,
सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीडं वा, पयंगं वा, कुन्थुं वा, पिषी-
लियं वा, हथंसि वा, पायंसि वा, उरुंसि वा, उदरंसि वा, ब-
सीसंसि वा, वर्थंसि वा, पडिगगहंसि वा, कंवलंसि वा, पाय-
पुच्छंसि वा, रथहरणंसि वा, गुच्छगंसि वा, उंडगंसि वा,

कट्टर्गमि था एहिदर्गमि था, फलगमि था, सेन्यसि था, सपार
गमि था अस्तयरंगमि था, तदृप्यगारे उवगरणजाए तभो
नज्जयामेष पदिलेहिय पदिलेहिय पमरिज्जम पमरिज्जम पगंग
मदयिज्जा नोएं मंथयमयिज्जा ॥६॥

~~~~~

अजर्ण चरमालो अ, पालभूयार हिंसर ॥  
बधै पालर्ण कर्म त से होइ कहुअं फलं ॥१॥  
अजर्ण चिह्नमालो अ पालभूयार हिंसर ॥  
बंधै पालर्ण कर्म तं से होइ कहुअं फलं ॥२॥  
अजर्ण आसमालो अ पालभूयार हिंसर ॥  
बधै पालर्ण कर्म तं से होइ कहुअं फलं ॥३॥  
अजर्ण उषमालो अ पालभूयार हिंसर ॥  
बधै पालर्ण कर्म तं से होइ कहुअं फलं ॥४॥  
अजर्ण मासमालो अ पालभूयार हिंसर ॥  
बंधै पालर्ण कर्म तं से होइ कहुअं फलं ॥५॥  
कह चरे कह खिडे कहमासे कह सए ॥  
कह मुर्वतो मासेतो, पालकर्म म बंधै ॥६॥  
चर्ण चरे जय खिडे जयमासे जर्ण सए ॥  
जर्ण मुर्वतो मासेतो पालकर्म म बंधै ॥७॥

सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ ॥  
पिहिआसवस्स दंतस्स, पावकस्मं न वंधइ ॥६॥

पढमं नाराणं तओ दया, एवं चिङ्गुइ सव्वसंजए ॥  
अन्नारणी किं काही, किंवा नाही सेयपावगं ॥१०॥

सोच्चा जाणइ कल्लाराणं, सोच्चा जाणइ पावगं ॥  
उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥११॥

जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ ॥  
जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥१२॥

जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ ॥  
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं ॥१३॥

जया जीवमजीवे य, दोवि एए वियाणइ ॥  
तया गइ वहुविहं, सव्वं जीवाण जाणइ ॥१४॥

जया गइ वहुविहं, सव्व जीवाण जाणइ ॥  
तया पुरणांच पावं च, वंधं मुक्खं च जाणइ ॥१५॥

जया पुरणं च पावं च, वंधं मुक्खं च जाणइ ॥  
तया निविवदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥

जया निविवदए भोए; जे दिव्वे जे य माणुसे ॥  
तया चयइ संजोगं, सविभतरं वाहिरं ॥१७॥

जया चयइ संजोगं, सविभतरं वाहिरं ॥  
तया मुँडे भवित्ताराणं, पव्वइए अणगारियं ॥१८॥

जया मुँडे भवित्ताराणं, पव्वइए अणगारियं ॥  
तया संवरमुक्किडं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥

जया संघरमुक्तिः घम्मे कासे अणुर्ते ॥  
 तया भुजार कम्मरय अबोहिकसुसं फड़ ॥२०॥  
 जया भुजाइ कम्मरय अबोहिकसुसं फड़ ॥  
 तया सख्वत्तर्ग मारा दंसरा आमिगच्छार ॥२१॥  
 जया सख्वत्तर्ग मारा, दमना आमिगच्छार ॥  
 तया लोगमलोर्ग च, जियो जालार केवली ॥२ ॥  
 जया लोगमलोर्ग च जियो जालार केवली ॥  
 तया जोगे निर्झनिता सेहसि पहिवलार ॥२३॥  
 जया जोगे निर्झनिता सेहसि पहिवलार ॥  
 तया कम्म खविताणां, सिद्धि गच्छार मीरभो ॥२४॥  
 जया कम्म खविताणां सिद्धि गच्छार मीरभो ॥  
 तया लोगमरथपरथा सिद्धो इष्ट भासभो ॥२५॥  
 सुहसायगस्स ममणस्म मायाइलगस्स निगामसाइस्म ॥  
 उद्धोलणापहोअस्म पुण्डा सुगई तारिमगस्स ॥२६॥  
 तबोगुणपहाणस्म उज्जुमर खगितमधमरयस्स ॥  
 परीसहे जिगोतस्म सुसदा सुगई तारिमगस्स ॥२७॥  
 पच्छावि से पयापा लिप्प गच्छति अमरभवणार ॥  
 जेसि गिजो तबो नंजमो च दग्धी अ चमचर च ॥२८॥  
 इच्छेयं दुर्जीयगिभ चम्मदिही भया जप ॥  
 उलट सहितु भामणां, चम्मुला न विरादिग्नासि ॥२९॥  
 ॥ निषेमि ॥ ( दसवेषालिय )  
 इच्छ एउर्जीयगिभ शार्म घडरय अम्भयां ममरां ॥३०॥

## अहं तद्ग्रामं चाउरंगिजं अजभयरां ।

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जन्तुरणो ॥  
 माणुसंतं सुई सद्वा, संजमम्मि य वीरियं ॥१॥  
 समावद्वाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ॥  
 कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विसंभया पंया ॥२॥  
 एगया देवलोपसु, नरएसु वि एगया ॥  
 एगया आसुरं कायं, आहाकम्मेहिं गच्छ्रई ॥३॥  
 एगया खत्तिओ होइ, तओ चरडाल बुकसो ॥  
 तओ कीडपयंगो य, तओ कुंथुपिवीलिया ॥४॥  
 एवमावहुजोणीसु, पाणिणो कम्मकिविसा ॥  
 न निविजंति संसारे, सव्वद्वेसु व खत्तिया ॥५॥  
 कम्मसंगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया वहुवेयणा ॥  
 अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो ॥६॥  
 कम्मारां तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइउ ॥  
 जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आयंयति मणुस्सयं ॥७॥  
 माणुसं विभाहं लद्धुं, सद्वा परम दुल्लहा ॥  
 जं सोच्चा पडिवज्जंति, तचं खन्तिमहिसयं ॥८॥  
 आहच्च सवरां लद्धुं, सद्वा परम दुल्लहा ॥  
 सोच्चा नेआउयं मग्गं, वहवे परिभस्सई ॥९॥  
 सुई च लद्धुं सद्वं च, वीरियं पुण दुल्लहं ॥  
 वहवे रोयमाणावि, नो य रां पडिवज्जए ॥१०॥

माणुसत्तमिं भायामा जो धर्मं सोव्य सहहे ॥  
 वधस्ती वीरिय लद्धुं चकुडे मिद्धुणे रथे ॥१॥  
 सोही उज्ज्यभूयस्स धर्मो चुखस्स चिह्नहे ॥  
 मिष्ठाला परमं जाह, धर्यसिचिह्न पाथप ॥१३॥  
 विगिंव कमुणो हेठ, जस नचिखु खानितप ॥  
 सरीरं पाढवं हिता उद्दृष्ट पक्कर्हि दिस । १४॥  
 चिमालिसेहि सीलेहि, जन्मता उत्तरउत्तरा ॥  
 महासुका च विष्वता भगता अपुष्टचवं ॥१५॥  
 अधिया देषकामायां कामरूपपितृष्ठियो ॥  
 उद्दृष्ट कव्यस्तु चिह्नित पुढ्वा याससया च ॥१६॥  
 तत्य ठिता जहाठारी जन्मता आड़न्मप तुया ॥  
 उवेंति माणुम जोषि से दर्सगेऽमिजायरे ॥१७॥  
 खेतं यत्युं हितएलो च पसबो वासपोदस ॥  
 चक्षारि कामरूपायि तत्य से उथवर्हाई ॥१ ॥  
 मित्तर्ह जायवे दोहि उथागोप च चरणव ॥  
 अव्यायंके महापश्च अभिक्षाए जर्मोषक्षे ॥१९॥  
 गोद्वा माणुमनप भोप अप्पहिर्वे अदाडप ॥  
 पुर्विं विहुदसदम्मे केपलं बोहि बुरिक्षपा ॥२०॥  
 चठरंगे तुमारे नया, संज्ञम पहियसिया ॥  
 तयमा धूयकर्मसे सिद्धे हवर मामप ॥२०॥

॥ सियेमि ॥

इति चाडरंगिन्न णाम तद्वें भामयरा समरा ॥२॥



## अहं चउत्थं असंखयं अजमयरां ।

असंखयं जीविय मा पमायप, जरोवरणीयस्स हु नतिथ तारां ॥  
 एवं विजाणाहि जणे पमन्ते, किरणु विहिंसा अजया गहिंति ॥१  
 जो पावकमेहि धरां मणूसा, समाययंती अमइं गहाय ॥  
 पहाय ते पासपयद्विष नरे, वेराणुवद्वा नरयं उवेंति ॥२  
 तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकमुणा किच्चइ पावकारी ॥  
 एवं पया पेच्छ इहं च लोए, कडाण कम्माण न मुक्ख अतिथ ॥३  
 संसारमावन्न परस्स अद्वा, साहारणं जं च करेइ कम्म ॥  
 कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, न वंधवा वंधवयं उवेंति ॥४  
 वित्तेण तारां न लभे पमन्ते, इममिम लोए अदुवा परत्था ॥  
 दीवप्पणद्वेव अणांतमोहे, नेयाउयं ददुमददुमेव ॥५  
 सुन्तेसु यावी पडिवुद्धजीवी, न वीससे पंडिय आदुपन्ने ॥  
 घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं, भारंडपकखी व चरेऽपमन्ते ॥६  
 चरे पयाइं परिसंकमाणो, जं किंचि पानं इह मण्णमाणो ॥  
 लाभंतरे जीविय वृहद्वत्ता, पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥७  
 छन्दं निरोहेण उवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्किखयवमधारी ॥  
 पुव्वाइं वासाइं चरेष्पमन्ते, तम्हा मुणी खिण्पमुवेइ मोक्खं ॥८  
 स पुव्वमेवं न लभेज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाणं ॥  
 विसीयई सिद्धिले आउथमिम, कालोवणीए सरीरस्स मेए ॥९  
 खिण्पं न सकेइ विवेगमेउं, तम्हा समुद्राय पहाय कामे ॥  
 समिच्छ लोयं समया महेसी, आयाणरकखी चरेष्पन्तो ॥१०  
 मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं, अणेगरुवा समणं चरन्तं ॥  
 फासा फुसंति असमंजसं च न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥११

मंदा य फासा यदुसोहसिता तहप्पगरेमु मरी म कुखा ॥  
 रनिधक्ष कोइ विएपत्र मारी मार्य म सेवेत्त पहस्त लोई ॥  
 जे मखया तुच्छपरव्यवाई ते पित्रदोमाणुगया परम्भा ॥  
 एव अहम्मे ति दुगुष्ठमाणो, कंदा गुण जाय सरीरमेड ॥१३॥

॥ लियेति ॥

शति असलय अठत्यं अभ्यपरां समरा ॥ ४ ॥



थह गोवप नमिपवजा गामजम्यरा ।

बाक्य देवसोगामो नयधमो माणुसम्म लोगम्मि ॥  
 उवसक्तमोहसित्रो मर्य पोरायिये जाई ॥१४॥  
 जाइ सरितु मयथ नवे संतुङ्गो अलुत्तरे घम्मे ॥  
 पुरु र्वेत्तु र्वेत्ते अमिणित्तमर्ह नमी राया ॥१५॥  
 हे देवसोगसरिसे अम्लेडरकर्गामो वरे मोए ॥  
 भुजित्तु नमी राया बुँडो मोरो परिष्यर्ह ॥१६॥  
 मिदिले नपुरजण्डये वलमारोइ च परियर्ह सर्व ॥  
 वित्ता अमिनित्तमत्तो एवन्तमडिहिमो मयथ ॥१७॥  
 कोहाहसगमूर्धं आसी मिदिलाप पव्ययम्भम्मि ॥  
 तद्या रापरिसिम्मि नमिम्मि अमिणित्तमस्तम्मि ॥१८॥  
 अम्लुहिर्यं रापरिसि पव्यखाठायमुच्चर्म ॥  
 सम्भो माहणरूपैय इम वयखमद्वयी ॥१९॥  
 फिरत्तु मो अम्भ मिदिलाप कोहाहसगसंकुला ॥  
 सुव्वंति वाद्या सहा पासाएसु गिहेसु य ॥२०॥  
 पव्यमहु मिसामिच्छा देवकारण्डोइमो ॥  
 तमो नमी रापरिसी देविम्द इष्टमद्वयी ॥२१॥

मिहिलाए चेइए वच्छें, सीयच्छाए मणोरमे ॥  
 पत्तपुप्फफलोवेए, वहूरां वहुगुणे सया ॥६॥  
 वाएण हीरमाणमि, चेइयमि मणोरमे ॥  
 दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो खगा ॥७॥  
 एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
 तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमव्ववी ॥८॥  
 एस अगरी य वाऊ य, एयं डजभइ मन्दिरं ॥  
 भयवं अन्तेउरं तेणां, कीस णां नावपेक्खह ॥९॥  
 एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
 तओ नमि रायरिसी, देविन्दं इणमव्ववी ॥१०॥  
 सुहं वसासो जीवासो, जेसिं मो नतिथ किंचरां ॥  
 मिहिलाए डजभमारणीए, न मे डजभइ किंचरां ॥११॥  
 चत्तपुत्तकलत्तस्स, निव्वावांरस्स भिक्खुणो ॥  
 पियं न विज्ञाई किंचि, अप्पियं पि न विज्ञाई ॥१२॥  
 वहुं खु मुणिणो भहं, अणगारस्स भिक्खुणो ॥  
 सव्वओ विष्पमुक्स्स, एगन्तमणुपस्सओ ॥१३॥  
 एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
 तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमव्ववी ॥१४॥  
 पागारं कारइत्तारां, गोपुरद्वालगाणि य ॥  
 उस्सूलगसयग्धीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥१५॥  
 एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
 तओ नमि रायरिसी, देविन्दं इणमव्ववी ॥१६॥

सद्ग नगरं किष्या उषसंधरमगात ॥  
 समिति निडणपागार्द, तिगुत्तु दुष्प्रघसय ॥२०॥  
 घणु परक्षम् किष्या, जीर्णं च इरिं सया ॥  
 घिरं च केयणि किष्याष, सच्छेष पक्षिमंथय ॥२१॥  
 तथ भारापुत्रेष मित्युर्णं कल्पकञ्जुय ॥  
 मुणी विगवसंगमो, मधाओ परिमुच्यत ॥२२॥  
 एषमहुं निसामिता हेऽकारण्योऽओ ॥  
 तओ नमि रापरिति देविष्वो इषमन्दवी ॥२३॥  
 पासाप कार्णचार्णं बद्मासुगिहाखि य ॥  
 चालगपोऽयाओ य, तओ गच्छसि खतिया ॥२४॥  
 एषमहुं निसामिता हेऽकारण्योऽओ ॥  
 तओ नमि रापरिति देविष्वो इषमन्दवी ॥२५॥  
 संसय यात् सो कुण्डि जो मागे कुण्डि घर ॥  
 जस्येष गम्भुमिष्वेजा तथ कुण्डेष सातय ॥२६॥  
 एषमहुं निसामिता हेऽकारण्योऽओ ॥  
 तओ नमि रापरिति देविष्वो इषमन्दवी ॥२७॥  
 आमोसे लोमहारे य गंडिमेप य लाकरे ॥  
 अगरस्स बोम काम्लार्णं तओ गच्छसि खतिया ॥२८॥  
 एषमहुं निसामिता हेऽकारण्योऽओ ॥  
 तओ नमि रापरिति देविष्वं इषमन्दवी ॥२९॥  
 अमर तु मणुम्सेहि मिष्वावदो पक्षुभाव ॥  
 अकारिष्वोऽय परम्परिति मुण्डि कारओ जपा ॥३०॥

एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमव्ववी ॥३१॥

जे केह पत्थिवा तुजभं, नानमन्ति नराहिवा ॥  
वसे ते ठावइत्ताराणं, तओ गच्छुसि खत्तिया ॥३२॥

एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमव्ववी ॥३३॥

जो सहस्रं सहस्राराणं, संगामे दुज्जेजि जिणे ॥  
एगं जिणेज्ज अप्पाराणं, एस से परमो जओ ॥३४॥

अप्पारणमेव जुज्भाहि, किं ते जुज्भेण वज्भओ ॥  
अप्पारणमेवमप्पाराणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥

पञ्चिन्दियाणि कोहं, माराणं मायं तहेव लोहं च ॥  
दुज्जयं चेव अप्पाराणं, सव्वं अप्पे जिए जियं ॥३६॥

एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमव्ववी ॥३७॥

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे ॥  
दत्ता भोच्चा य जिट्टा य, तओ गच्छुसि खत्तिया ॥३८॥

एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमव्ववी ॥३९॥

जो सहस्रं सहस्राराणं, मासे मासे गवं दण ॥  
तस्स वि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचणं ॥४०॥

एयमदुं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ॥  
तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमव्ववी ॥४१॥

प्रागमम चरचाण, अन्नं परयेति आगम ॥  
 न्हेय पोमदरमो मवादि मणुपादिवा ॥४३॥  
 एयमहु निसामिता हेत्कारण्योहमो ॥  
 तमो नमी रायरिसी देविन्द्रं इषुमध्यवी ॥४४॥  
 मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेष तु मुञ्जप ॥  
 तमो मुपन्धायधमस्स कलं भग्नप्रभमोहसि ॥४५॥  
 एयमहु निसामिता हेत्कारण्योहमो ॥  
 तमो नमिं रायरिसि देविन्द्रो इषुमध्यवी ॥४६॥  
 द्विरण्यो सुवण्यो मणिमुक्त कसं कृत वाहगा ॥  
 कोस चरचायदचाण तमो गच्छसि लक्षिया ॥४७॥  
 एयमहु निसामिता हेत्कारण्योहमो ॥  
 तमो नमी रायरिसी देविन्द्रं इषुमध्यवी ॥४८॥  
 सुवरण्यदव्यस्स उपव्यया नवे सिया तु दिलासासमा असंख्या ॥  
 नरस्म मुखस्स न लेहि किंचि रूपा तु भागासासमा अरांतिवा  
 पुढी साक्षी जना चेत द्विरण्यो पतुमिस्माह ॥  
 पडिपुण्यो नातमेगस्म एव विज्ञा तदं चरे ॥४९॥  
 एयमहु निसामिता हेत्कारण्योहमो ॥  
 तमो नमिं रायरिसि देविन्द्रो इषुमध्यवी ॥५०॥  
 अच्छेगममधुदप मोप अयसि परिघषा ॥  
 असम्ते कामे पत्वेति मक्षप्रस विहम्मसि ॥५१॥  
 एयमहु निसामिता हेत्कारण्योहमो ॥  
 तमो नमी रायरिसी देविन्द्रं इषुमध्यवी ॥५२॥  
 सम्ते कामा विन्मं कामा कामा आसीविसोवमा ॥  
 कामे पर्येमाया अकामा अमित दोग्माई ॥५३॥

अहे वयंति कोहेणां, माणेणां अहमा गई ॥  
माया गइपडिग्धाओ, लोभाओ दुहओ भयं ॥५४॥

अवउज्जिञ्जुण माहणरुवं, विउच्चिञ्जुण इन्दत्तं ॥  
वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ॥  
अहो निरक्षिया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥५६॥

अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्वं ॥  
अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥

इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छा होहिसि उत्तमो ॥  
लोगुत्तमुत्तमं ठाणां, सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥५८॥

एवं अभित्थुणांतो, रायरिसि उत्तमाए सद्वाए ॥  
पयाहिणां करेन्तो, पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥५९॥

तो चंदिञ्जण पाए चक्रं कुसलक्खणे मुखिवरस्स ॥  
आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥६०॥

नमी नमेइ अप्पाणां, सक्खं सक्केण चोइओ ॥  
चद्दज्जण गेहं च वेदेही, सामरणे पञ्जुवट्टिओ ॥६१॥

एवं करेति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ॥  
विशियद्वंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसी ॥६२॥

॥ त्तिवेमि ॥

इति नमिपर्वज्ञा नाम नवमं अञ्जभयणं समत्तं ॥६॥

थह महानियठिज वीसहम अजमयर्थ ।

सिद्धाण्ड समो किंचा, संज्ञयाणो च भाषमो ॥  
 अत्यधमग्र तथं अणुमद्वि शुचेह मे ॥१॥  
 पर्यपर्यसो राया सेषिष्मो मगदादिषो ॥  
 विहारभृत्य भिसाभ्यो मरिदकुर्पिलुसि चेत्त ॥२॥  
 नाक्षत्रुमहयाएर ग नायापक्षियमिसेयिर्य ॥  
 नाक्षत्रुमसंक्षम्म उखारां मन्त्रयोवम ॥३॥  
 वर्त्य सो पासाई साहु, संज्ञयं सुसमादिये ॥  
 निचम्मे रक्षकमूलमिम्म सुकुमास सुदोहर्ये ॥४॥  
 तस्स रूपं तु पासिचा राहु तमिम्म संज्ञये ॥  
 अश्वस्तपरमो आसी अडलो रथविमृष्मो ॥५॥  
 भद्रो चरणो भद्रो रूपं भद्रो अश्वस्म सोमया ॥  
 भद्रो चम्ती भद्रो मुरुी अडो भोगे असंगया ॥६॥  
 तस्स पाए च वंदिता, काक्षय पवादिर्य ॥  
 नारकूरमणासन्ने वंजली पदिपुष्टर्य ॥७॥  
 तदर्क्षी सि भग्नो पर्याप्तो, भोगकालमिम्म संज्ञया ॥  
 उष्ट्रिष्मो सि भामरणे पर्यमद्वि शुचेमि ता ॥८॥  
 अश्वादोमि भद्रागाय, भद्रो मम्भ म विष्टर्य ॥  
 अणुक्षेपणे सुद्धि वायि रूपि नाभिसमेमर्य ॥९॥  
 तमो सो पहसिभ्यो राया सेषिष्मो मगदादिषो ॥  
 वर्ते ते रदिदमन्तस्स, छई भादो न विज्ञर्य ॥१०॥  
 इमि भद्रो भर्तुराणी, भोगे सुंजादि संज्ञया ॥  
 मित्तनाईपरिषुद्धो भाणुस्स एु सुखुरलर्य ॥११॥  
 अश्वसा वि अश्वादोप्रसि, सेषिष्या मगदादिषा ॥  
 अश्वसा अश्वादो सम्लो, रस्म भादो भयिस्ससि ॥१२॥

एवं बुक्तो नरिन्द्रो सो, सुसमन्तो सुविम्हिओ ॥  
 वयरां अस्सुयपुब्वं, साहुणा विम्हयच्चिओ ॥१३॥  
 अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अन्तेउरं च मे ॥  
 भुंजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे ॥१४॥  
 एरिसे संपयगम्मि, सद्वकामसमप्पिए ॥  
 कहं अणाहो भवई, मा हु भन्ते मुसं वए ॥१५॥  
 न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा ॥  
 जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ॥॥१६॥  
 सुणेह मे महाराय, अब्बकिखत्तेण चेयसा ॥  
 जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥  
 कोसंबी नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी ॥  
 तथ्य आसी पिया मज्भ, पभूयधणसंचओ ॥१८॥  
 पढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा ॥  
 अहोत्था विउलो दाहो, सद्वगत्तेसु पत्थिवा ॥१९॥  
 सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरन्तरे ॥  
 आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥  
 तियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई ॥  
 इन्द्रासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥  
 उवट्टिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छिगा ॥  
 अवीया सत्थकुसला, मन्तमूलविसारया ॥२२॥  
 ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं ॥  
 न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्भ अणाहया ॥२३॥  
 पिया मे सद्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा ॥  
 न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्भ अणाहया ॥२४॥

माया पि मे महाराज, पुरुषोगुह्यहिया ॥  
 न य तुमस्ता विमोयति एसा मरम् असाहया ॥२५॥  
 भाष्यरो मे महाराय सगा जेतुक्षिद्गुणा ॥  
 न य तुमस्ता विमोयति एसा मरम् असाहया ॥२६॥  
 भर्तीयो मे महाराय, सगा चेतुक्षिद्गुणा ॥  
 न य तुमस्ता विमोयति एसा मरम् असाहया ॥२७॥  
 मारिण मे महाराय अणुरक्ता अणुम्बया ॥  
 चैमुपुणेहि नयेहेहि उर्मि परिसिंचर्हि ॥२८॥  
 भान्तं पार्ण च एहार्ण च गम्भमङ्गविलेपर्ण ॥  
 मप मायममाय था, सा पासा नेष्य भुजर्हि ॥२९॥  
 यर्ण यि मे महाराय, पासामो मे न फिर्हर्हि ॥  
 न य तुमस्ता विमोर्ण, एसा मरम् असाहया ॥३०॥  
 तामो ई एषमार्दसु तुक्षगमा तु पुरो पुणो ॥  
 वेयणा अणुमधिर्हि ले संसारमिम अणुम्तप ॥३१॥  
 सर्वं च तार मुख्येस्ता वेयसा विद्वा इमो ॥  
 यम्तो इम्तो निरार्तमो पर्णप अणुगारिय ॥३२॥  
 एवं च चिन्तार्तसाणं पमुसो मि कराहिया ॥  
 वरीयत्तमीष रार्णप, वेयसा मे यर्ण गया ॥३३॥  
 तामो कल्ले पमायमिम भाषुच्छित्ताशु वधये ॥  
 यम्तो इम्तो निरार्तमो, पर्णपमो अणुगारिय ॥३४॥  
 तो इ जाहो जामो, अप्यणो य परम्पर य ॥  
 सत्येमि वेय भूयाणो तमाण चाषराण य ॥३५॥  
 अप्या नर्हि वेयरणी अणा मे त्रुट्टसामसी ॥  
 अप्या अमदुदा घर्ण अणा मे नम्तणी यां ॥३६॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ॥

अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्टिय सुपट्टिओ ॥३७॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा, तमेगच्चित्तो निहुओ सुरोहि ।  
 नियंठधम्मं लहीयाण वी जहा, सीयंति एगे बहुकायरा नरा ॥३८  
 जो पव्वइत्तारां महव्वयाइ, सम्मं च नो फासयई पमाया ॥  
 अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ वंधरां से ॥३९  
 आउत्तया जस्स न अतिथ काइ, इरियाएं भासाए तहेसणाए ॥  
 आयाणनिकखेवदुगुङ्छणाए, न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥४०  
 चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनियमेहिं भट्टे ॥  
 चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए ॥४१  
 पोल्ले व मुझी जह से असारे, अयन्तिए कृडकहावणे वा ॥  
 रुदामणी वेखलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणप्पसु ॥४२  
 कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्जभयं जीविय बूहइत्ता ॥  
 असंजए संजयलप्पमाणे, विणिग्धाय मागच्छइ से चिरंपि ॥४३  
 विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुगगहीयं ॥  
 एसो वि धम्मो चिसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥४४  
 जे लक्खणं सुविण पडंजमाणे, निमित्तकोऊहलसंपगाडे ॥  
 कुहेडविज्ञासवदारजीवी, न गच्छई सरणां तम्मि काले ॥४५  
 तमंतमेणोव उ से असीले, सया दुही विष्परियासुवेइ ॥  
 संधावई नरगतिरिक्खजोणि, मोणां विराहेतुं असाहुरुवे ॥४६  
 उहेसियं कीयगडं नियागं, न मुंचई किंच अणेसणिडं ॥  
 अगरीं विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं ॥४७  
 न तं अरी कंठछेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरण्या ॥  
 से नाहइ मच्छुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहृणो ॥४८  
 निरट्टिया नगरुई उ तस्स, जे उत्तमदुं विवज्ञासमेइ ॥  
 इसे वि से नतिथ परे वि लोए दुहओ वि से मिज्जइ तथ्य लोए ॥४९

एमेव हा छम्बकुतीलरवे, मग्नं विराहितु जिणुतमारा ॥  
 कुररी विषा मोगरसालुगिळा निरदूसोया परियावभेर ॥१०॥  
 सोष्यासु मेहापि भुमासिय इम अलुसासरा मालुगुणोष्वेय ॥  
 मनां कुसीसालु जहाय भव्य, महानियंठाण चप पहेस ॥११॥  
 चरितमापारगुणचिप तप्तो अलुतर संजम पाजियास ॥  
 विरासवे संखयियाण रम्म उवेह ठाणो विठ्ठुतमं भुवं ॥१२॥  
 एकुमावन्त वि महातबोभणे महामुणी महापारन्ते महायसे ॥  
 महानियंठिक्कमिरा महासुव्य से काहए महया वित्थरेरा ॥१३॥

तुङ्गो प सेदिप्पो राया इष्टमुराह कावंजली ॥

अथावत जहामूव्य दुरुदु मं उववंसिय ॥१४॥  
 तुरम्म सुलम्द लु मलुस्म जम्मं लामा सुलया य तुमे महेसी ॥  
 तुमे सुलाहा य सवधया य ज मे ठिया मोगे जिणुतमारा ॥१५॥

तंसि नाहो असाहारा सञ्चमूव्याल संजया ॥

खामेमि से महामाग इष्टमिभि अलुमासित ॥१६॥

पुष्पिष्टक्कव्य मण तुप्पं भरसपिग्धाओ जो क्षो ॥

निमस्तिपा प मोगेहि तं सञ्च मारिसेहि मे ॥१७॥

एवं शुषिताव्य स रायसीहो अलगारसीर्द परमार भर्तीए ॥

सओरोहो मपरिपणो सर्वंचवो अम्मालुरतो विमलेल चेयसा ॥

क्षसमियरोमक्षो काक्ष ए पपाहिरा ॥

अमिर्विक्क सिर्सा अर्पामो मगाहिवो ॥१८॥

इपरो वि शुशसमिदो तिगुतिगुता लिंदृष्टविरचो य ॥

विहग ई विष्वमुक्तो विहरत चमुहं विगयमोहो ॥१९॥

॥ चिदेमि ॥

इति महानियंठिक्कं वीसाम अमङ्ग्यणा समाप्तं ॥२०॥

( उत्तराभ्यवन )

# अथ बड़ी साधु वन्देशा लिख्यते ( तेरह ढालां )

---

॥ ढाल १ती ॥

देशी चौपईनी ॥

पंच भरत पंच एरवय जांण, पांचों ही महाविदेह वखांण ।  
जे अनन्त हुवा अरिहन्त, ते प्रणमूं कर जोरी सन्त ॥१॥  
जे हिवडा विहरे जिनचन्द, खेत्र विदेह सदा सुखकन्द ॥  
कर जोड़ी प्रणमूं तस पाय, आरत विघ्न सहू टलि जाय ॥२॥  
सिद्ध अनन्त जे पनरे भेद, ते प्रणमूं मन धरी उभेद ॥  
आचारज प्रणमूं गणधार, श्री उबजभाय सदा सुखकार ॥३॥  
साधु सहू प्रणमूं केवली, काल अनादि अनंता वली ॥  
जे हियडा विहरे गुणवन्त, साधु साधवी सहु भगवन्त ॥४॥  
ते सहु प्रणमूं मन हुलास, अरिहंत सिध ने साधु प्रकाश ॥  
वार अनंत अनंत विचार, साधु वन्दन करसूं हितकार ॥५॥

\* दोहा \*

एहिज्ज जम्बूदीप वर, भरत नाम तिहाँ खेत ॥  
जिनवर वचन लही जिहाँ, निर्मल कीधा नेत ॥६॥  
तिहाँ चौवीसे जिन थया, ऋषभादिक महावीर ॥  
पूरव भव कहि प्रणमिये, पामीजे भवतीर ॥७॥

पूरव भय घक्कहर्ती थया शुपमद्व निर्भीक ॥  
 अवितादिक तेषीम जिन, राजा सहु मंडलीक ॥३॥  
 ग्रह सही पूरव घडव शुपम भण्या मन रंग ॥  
 पूरव भय तेषीम जिन, भण्या इयारे अङ्ग ॥४॥  
 धीस धानक तिहाँ सेविया, बीजे भव चुनराय ॥  
 स्थांघी घयि धीशीस जिन दुया ते प्रणमू पाय ॥५॥



## ॥ ढाल २जी ॥

बीपाई रथा चिघूरी देशी ॥

चन्दयर्ती पूरव भव झाँख यारनाम इष नाम चक्काँण ॥  
 शुपमवेष प्रणमू झगमाँइ गुण गाता हुवे जाम प्रमाण ॥१॥  
 विमलराय पूरव भव नाम अवित जिमेभर कर्के प्रणाम ॥  
 विमल पाहण पूरव भव राय भी सम्भव जिन प्रणमू पाय ॥२॥  
 पूरव भव धर्मसीढ राजा अविनन्दन प्रणमू शुम इयाम ॥  
 पूरव भय सुमित्र प्रसिठ सुमनि जिमेभर प्रणमू सिद्ध ॥३॥  
 पूरव भव राजा धर्ममित्र पद्मप्रभ जिन प्रणमू मित ॥  
 पूरव भव चे सुम्भर चाहु ते सुपास प्रणमू झगलाहु ॥४॥  
 पूरव भव दिवचाहु सुमीश अन्द्रप्रभ प्रणमू जगदीश ॥  
 कुणापाहु पूरव भव जीव प्रणमू सुविदि जिमन्द सदीव प्रध ॥  
 लठचाहु पूरव भव जास भी शीतल जिन प्रणमू हुलास ॥  
 दित्तराय कुह तिहाँ समान प्रणमू भी धेयास प्रधान ॥५॥

इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवन्त, वासुपूज्य प्रणमूं भगवन्त ॥  
 पूरव भव सुन्दर बड़भाग, बन्दूं विमल धरी मन राग ॥७॥  
 पूरव भव जे राय महिंदर, ते अनन्त जिन प्रणमूं सुखकर ॥  
 साधु शिरोमणि सियरथ राय, धर्मनाथ प्रणमूं मन लाय ॥८॥  
 पूरव भव मेघरथ गुण गाऊं, शांतिनाथ चरणे चित लाऊं ॥  
 पहिले भव रूपी मुनि कहिये, कुंथुनाथ प्रणम्यां सुख लहिये ॥  
 राय सुदर्शन मुनि विख्यात, बन्दूं अर जिन त्रिभुवन-तात ॥  
 पहिले भव नन्दन मुनि चन्द, ते प्रणमूं श्री मत्लिल जिनंद ॥१०  
 सीहगिरि पूरव भव सार, मुनिसुबत जिन जगदाधार ॥  
 अदीन शत्रु मुनिवर शिव साथ, कर जोड़ी प्रणमूं नमिनाथ ॥११  
 संख नरेश्वर साधु सुजाण, अरिडुनेमि प्रणमूं गुण खान ॥  
 राय सुदर्शन जेह मुनीश, पार्श्वनाथ प्रणमूं निसदीश ॥१२  
 छड़े भव पोटिल मुनि जाण, कोड वर्ष चारित्र नीहाण ॥  
 तीजे भव नन्दन रजान, कर जोड़ी प्रणमूं वर्ज्जमान ॥१३  
 चौबीसे जिनवर भगवन्त, ज्ञान दरशण चारित्र अनन्त ॥  
 वार अनन्त करुं परणाम, दुष्ट कर्म क्षय करजो साम ॥१४

॥ दोहा ॥

मेरु थकी उत्तर दिशे, इणहिज जम्बूदीप ॥  
 एरवय केत्र सुहामणो, जिण विध मोती शीप ॥१॥  
 तिहाँ चौबीशे जिन थया, चन्द्रानन चारिखेण ॥  
 एहिज चौबीसे सही, ते प्रणमूं समथ्रेण ॥२॥

## ॥ ढाल रेजी ॥

यग—वेसाडल । इ बलिहारी पादमा ॥ ए वेशी ॥

चम्प्रानम जिन प्रथम जिमेश्वर धीजा भी सुखन्द्र मगवत ।  
 अगिगसेष तीजा तीर्थकर धीया भी भद्रिवेष अरिहत ॥ १ ॥  
 विकरण शुद्ध सदा जिन प्रशमू एरषय हेष तसां धीधीय ।  
 शूपमादिक सामी अनुकमे हुया एके समे जनम्या सुजगीय ॥ २ ॥  
 पांचमी भी रिसदिव शुशीजे वयहारी कहा जिनराय ॥  
 सामच्छ सातमो जिन समर्हे शुतिसेष आठमा शुपसाय । जि  
 मषमा अवियसेष जिम प्रशमू बसमी भी शिष्यसेन उकार ॥  
 देयश्रमय दृष्टगमी गाँड़ चारमा नकासंत सुखकार ॥ जि०  
 तेरमा असंकाल जिन लाटक बडमा भी जिष्णुनाय अनंत ॥  
 पञ्चमा उपहारत नमीजे नोहमा भी शुतिसेन महत ॥ जि०  
 सठरमा अतिपास सुर्खीजे प्रणमु अठारमा भी सुपास ॥  
 उगलीसमा मढरेव ममोहर वीसमी अधिष्ठर प्रशमू शुलास ॥ जि०  
 इक्षीमया सामीकोठ शुद्धकर, बालीसमा प्रशमू अगिगसेष ॥  
 तेबीसमी अगिगपुर अमोपम धीधीशमो प्रणमू बारिसेष ॥ जि०  
 धीया अह यही ए मार्या अहतासीस जिमेश्वर नाम ॥  
 कहु धर्मे कहा मुनिशुभत सुखविषाफे शुगवाहु लाम ॥ जि०  
 जिन पचास ए प्रबल्लन बदले एम अमल हुया अरिहत ॥  
 जिहरमाल बही जे जिम विष्टे, बैपली साधु सङ्ग भगवत ॥ जि०  
 सिद्ध यथा बही सम्प्रति बहौ कर जोड़ी प्रणमू तस पाय ॥  
 दिव जे आगम नाम सुर्खीजे ते मुनिष्वर कहसुर्य जितलाय ॥ जि०

जिनवर प्रथम जे गगधर धरमणी, चक्रवर्ती हरि हलधर जेहा।।  
पूर्वभव नमु नाम जे नमु गुर, गर्दैस चौथा अंगधी तेह ॥६॥  
चौदीश जिन तीरथ अन्तर, कोइ असंख्य गुया मुनि सिद्ध ॥  
कर जोडी प्रणमू ते प्रहसनमे, नाम कहुँ हिवे जेह प्रसिद्ध ॥७॥

ताल ४३

## ॥ टाल ४३ ॥

सहस्र समणमु गुरव संयम धरो ॥ ए देशी ॥

प्रहसनमे प्रणमू कृपभ जिनेश्वर, श्री मरुदेवया सिद्ध सुहंकर ॥  
चौरासी गणधार शिरोपरणी, उसभसेन मुनि प्रणमू सुखभणी ॥  
सुखभणी प्रणमू वाहुवल मुनि सहस्र चौरासी मुनि ।  
वीस सहस्र प्रणमू केवली मुनि सिद्ध थया त्रिभुवन धरी ॥  
तीन लाख समणी धुर नमु नित नाम वाली सुदरी ।  
चालीस सहस्र ए केवली वली नमू समणी चित धरी ॥८॥

घर आयंसे भरह नरेसरु, ध्यान वलेकर केवल लहे वरु ।  
सहस्र ए दस संघाते नरपति, वन लेई शिव गया प्रणमू शुभमती ॥  
शुभमती जम्बूदीप पञ्चन्ति वली वखाणिये ।

श्री भरहनी परे केवली वली क्षेत्र एरवय जाणिये ॥

वंदिये चक्रि एरवय मुनि भावसु नित मन रली ।

हिव भरत पटे आठ अनुकमे वंदिये नृप केवली ॥९॥

श्री आइच जस महाजस केवली, अत्रिवल महवल तेज वीरियवली  
कीर्ति वीरिय दंड वीरिय ध्याइये, जल वीरिय मुनि नित गुण गाइये  
गाइये ठालांग मुनिवर एह भाख्या संयती ।

श्री कृपभनी वले अजित अन्तर हिवे कहुँ सुणो शुभमती ॥

पचास साल प कोइ सायर तिहाँ असरण प केवली ।  
जे थया प्रणमू तेह मुनिवर ग्रन्थम् दुर्मति निर्वही ॥३॥

अग्रिम जिनेसर मेह गणधर, भुर प्रणमू नदिसेन सुईकर ।  
प्रहसने प्रणमू फगु चाहुसी हय सु धाँहू सागर महामुणी ॥  
महामुणी सागर तीस लाल प कोइ अस्तर जे थया ।  
केवली मुनिवर तेह प्रणमू दोष कर जोड़ी सथा ॥  
भी संमव चाद भुनिवर चित सामा 'गुणरमू ।  
लाल दस प कोहि सागर अस्तरे सिंह सहू नमू ॥४॥

भी अग्रिमन्द्रन प्रणमू गणपति बहरनाम भुमि अलिपणी सही ।  
सामर लाये नव कोड़ी अस्तरे केवली जे थया प्रणमू रुम परे ॥  
रुमपरे द्वुमति जिल्हेन गणधर अमर कामदी अग्निय ।  
मेह सहस्र प कोइ सागर विष नमु जे सिंह थया ॥  
सामी पदमप्यहंसु सीस प नाम द्वुमय विद्ये ।  
साहुणी रति नाम प्रकमी दुर्लक दूर निर्कल्पिये ॥५॥

कोइ सहस्र नव सागर विष वक्षी प्रणमू मुनिवर जे थया केवली ।  
भी दुपास जिन विषभै गुणश्चिपि प्रणमू सोमा समरणी गुणनिष्ठि ।  
गुणनिष्ठि नव से कोइ सायर अस्तरे जे केवली ।  
तेह प्रणमू माघसं दिम दुर्लक जाये सप दली ॥  
भी चान्द्रप्रभ दिम गणधर सतीय द्वुमक्षा व्याहमे ।  
मेह सायर कोइ अस्तर केवली गुण गाइये ॥६॥

## ॥ ढाल ५मी ॥

सफल संसार अवतार ए हूँ गिण्यूँ ॥ ए देशी ॥

सुविध जिनेश्वर मुनि बाराह ए,  
बाहुणि वंदिये चित्र उच्छ्राह ए ।  
अन्तर क्रोड़ नव सायर विच जिहाँ,  
कालियसुय तणो विरह भाख्यो तिहाँ ॥१॥  
खामी शीतल जिन साधु आरांद ए,  
सतीय सुलसा नमू चित्त आरांद ए ।  
एक सागर तणो क्रोड़ अन्तर कहो,  
एक सौ सागर ऊँणकर संग्रहो ॥२॥  
सहस छावीस लख छासठ ऊपरे,  
कालिय सुय तणो छेद इण अन्तरे ।  
श्री श्रेयांस मुनि गोथूभ ध्याइये,  
धरणी साहुणी चरण चित लाइये ॥३॥  
पुव्वमव गुरु कहूँ साधु संभूत ए,  
विश्वनन्दी घले सुगुण संयुक्त ए ।  
अचल मुनिवर नमू पढम हलधार ए,  
वंधूतिपिडु केशव सिरदार ए ॥४॥  
चोपन सागर विच थया केवली,  
वंदिय सुय तणो विरह भाख्यो घली ।  
एम विच्छेद विच सात जिन अन्तरे,  
जाणिये शांति जिनवर लगे इण परे ॥५॥  
खामी वासुपूज्य जिन साध सोहम्म धुरे,  
साहुणी घले जिहाँ धरणी आपद हरे ।

सुगुरु सुभद्रा सुपर्णु यज्ञाणिये

यिजय मुनि पशु ठिपिहृ हरी जाति य ॥१५॥  
तीस सागर विच अस्तरे ज धया

केवली धविये माय भगवत् सरा ।

विमल जिन धविये माय मंदिर वसी

समर्लो धरली धरा आगमे मांमली ॥१६॥

गुरु सुदर्शन मुनि सागरदत्त प

अयंभू हरि बन्दू भद्र शिवपति ॥  
अस्तर सागर मध्य बीच केवली

चंदिये ओ धया त सहु चली वर्णी ॥१७॥  
मामी अनन्त जिन प्रसमिये जसगणी

समर्ली पड़मा नमु सुगुरु धर्याम मुनी ।  
सीस असोक मध्य बीये सुप्रम जति,

आत पुक्षयोत्तम केशव भगवती ॥१८॥

सायर अ्याट इण अस्तरे मालिये

केवली धविले शिव सुख खालिये ।

जिनवर धर्म अग्निकाळधर रु

सतीब धर्मली गिवा बंद शिव सुख मर्हु ॥१९॥

पुष्टभव हृष्ट गुड लक्षित तसु सीम प

ग्राम प्रखमू सुदर्शन निष्ठुरीय प ॥

वर्णपत्र तुरिस परसीह केशव भयो

आम्बे पंचमी मरण पुढ़वी गथा ॥२०॥

मायर तीम विच अस्तरे मालिये,

एह्य पूषेकर ऊलत दालिये ।

तिहाँ किण रायरिसी मध्व मुनिवर जयो,  
तेह सिद्धी रयण तज शुद्ध संयम थयो ॥१२॥

तथणु चक्रीसर सनतकुमार ए,  
बंदिये अन्त क्रिया अधिकार ए ।

एण अन्तर मुनि मुगत पहँचा जिके,  
केवली बंदिये भाव भगते तिके ॥१३॥



## ॥ ढाल द्ठी ॥

उत्तम हिव रायरिसी महासतीक जयन्ती ॥ ए देशी ॥

सोलमा श्री सन्तेपहु चक्री जिनराय,  
चक्रायुध गणी श्रमणी सूद्र प्रणम्यां सुख थाय ।

पूर्वभव गंगदत्त गुरु तसु सीस वाराह,  
वन्धव पुरिस वर पुंडरीय राम आरांद उछाह ॥१॥

अर्जु पल्योपम अन्तरे ए सिद्धा वहु भेद,  
तेह मुनीश्वर बंदिये ए नहीं तीर्थ छेद ।

चक्रीसर श्री कुंथु नमुं स्वयंभू गणधार,  
अंजु अज्ञा बंदत्ता ए होवे जय जयकार ॥२॥

सागर गुरु धर्मसेन सीस लंदन हलधार,  
वन्धव केशवदत्त नो ए समवाय प्रकार ।

कोड़ सहस वरसे करी ए ऊंगो पलिये चौभांग,  
एण अन्तर हुं सिद्ध वहु वांदू धर राग ॥३॥

अर जिन चक्री सत्तमा ए कुंम गणहर गांड़,  
रखिया समणी बंदत्तां ए शिव संपत्त पांड़ ।

कोही सहस यरस अस्तरे ए सीधा मुनिशुद्ध,  
सत्तमी नरगे संभूम चक्री पहुतो मतिमन्द ॥३॥

महसी डिनेश्वर धर्दिये ए पर्ली मिसय मुर्छिद  
गणिनिकाम्बु चरण कमल प्रणमू सुन्दरम् ।  
सहस पश्चावत साधवी ए सापु सहस चाहीम  
बहीसे मुनि देवकिये प्रहूमू निश्चीम ॥४॥

महसी डिनेश्वर पुष्पमधे महाप्रस अण्णगार  
तात बहे नसु धर्दिये ए बल मुनि अनिषार ।  
अचल जीव पटिषुद्धि थो धरण्डरम्भ धाय  
पूर्ख जीव ते संकल्पसु रूपी कहियाप ॥५॥

वेसमण तं अर्दीन शुद्ध अमिषम्भ डियसरतु,  
लही केषल ए सिद्ध धया पूषमण मित्तु ।  
मुनिपर नम्बने नम्बमित्त त्रुमित्त बजारु,  
यहमित्त मे बले मानुमित्त अमरपरि जाणु ॥६॥

अमरसेन महासेन ए अद्वाय कुमार,  
महसी संपाते सापु धया अह छहे विचार ।  
अस्तर बही इही जायिये ए हला बोयन धात  
केवली तिहाँ वहु धर्दिये ए धरी दरय तुलाम ॥७॥

बीतु डिनपर बीसमी ए मुनिसुब्रत आमी  
गणपर इम्बने पुफचती प्रहूमू शिरनामी ।  
सुरपर सत्तमे कथ्य धयो मुनिपर गंगाकृत  
कहिय सोइम इम्भ पणे सुर सिरि नम्बत ॥८॥

परपरिसी महा पदम चक्रिक पीढ़ु कर ओही  
समुद्र गुड अपराजिता ए गाँई मद मोही ।

राम ऋषीश्वर वंदिये ए नामे पउम जेह,

केशव नारायण तणो ए वंधव कहुं तेह ॥१०॥

लही केवल मुगते त्या ए आठे वलदेव,

नवमो सुरसुख अनुहवे ए लहस्ये शिवहेव ।

मुणिसुव्यय नमि अन्तरे ए वरस लाख छ होइ,

केवली सीधा ते सहू ए प्रणमू सूत्र जोइ ॥११॥

## ॥ ढाळ उर्द्दी ॥

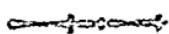
श्री नवकार जपो मनरंगे ॥ ए देशी ॥

इकवीशमां श्री नमि जिन बन्दू, गणधर कुम्म प्रधानरी माई ।  
 श्रमणी अनिला गुण गांवतां, सफल हुवे निज ग्यानरी माई ॥१  
 श्री जिनशासन मुनिवर बन्दू, भगते निज शिरन मरी माई ।  
 कर्म हणीने केवल पामी, पहंता जे शिवठामरी माई ॥श्री०  
 नवनिध चउद रथण ऋद्ध त्यागी, चक्रीसर हरिसेणरी माई ।  
 आथ्रव छंडी संचर मंडी, वेगवरी शिव जेणरी माई ॥श्री०  
 वरस घली इहाँ पिण लख अन्तर, तिहाँ चक्री जय रायरी माई ।  
 घली अनेरा मुगत पहंता, ते वांदू मन लाय री माई ॥श्री०  
 प्रह ऊठी प्रणमू नेमीसर, श्रमण ते सहस अठाररी माई ।  
 घरदत्त आदि मुनि पनरे से, वांदू केवल धाररी माई ॥श्री०  
 गोतम समुद्र ने सागर गाँँ, गंभीर यिमित उदाररी माई ।  
 अचल कंपिल अक्षोभ पसेणी, दसमो विष्णु कुमाररी माई ॥श्री०  
 अक्षोभ सागर समुद्र हुं वांदू, हिमवंत अचल सुचंगरी माई ।  
 धरण पूरण ने अभिचंद अद्वम, अहिय इन्यारे अंगरी माई ॥श्री०

अधग विष्णु भारथी अहज, मुनिष्ठ एह इतर्गी माई ।  
 आठ आठ अन्तेहर साँडी, सहपात्रो भथपात्री माई ॥भी॥  
 वसुदेव देवकी अहज छे ए अणीयमेन अनकमेनगी माई ।  
 अवितसेम अणिहित गिषु शिवधर देवसेल शुक्रसंग । माई ॥भी॥  
 मुखसा नाग घरे सुरज्जोगे, धात्या रमस यतीमरी माई ।  
 छाँडी सुर तप वउहस पुर्वी संयम वच्छर धीमरी माई ॥भी॥  
 वसुदेव देवकी अंगज अहम मुनिष्ठर गय मुकुमालरी माई ।  
 मही उपसर्ग मे शिवपुर पहुता बाँटू तेह त्रिकालरी माई ॥भी॥  
 सारल वादक कुमर अणाडि चढे पूरब धाररी माई ।  
 संयम वच्छर धीस आगधी कीघो चरम महारी माई ॥भी॥  
 जाली मयाली घले उवयाली पुरिससेम वारिसेलरी माई ।  
 वारस अगी सोह वरस बली पात्या संयम जेषरी माई ॥भी॥  
 वसुदेव धारथी अहज आडे रमणी तजी पंचामरी माई ।  
 चमता भावे शिवपव पत्न्या प्रशमू ते तुङ्गामरी माई ॥भी॥  
 सुमुद उमुद मे कुच्छय बाँटू वमदेव धारथी पूररी माई ।  
 धीम वरस सयम घर संग्या ववदे पूरब सूत्ररी माई ॥भी॥  
 यक्षमणी हृष्ण कुमर कु पर्युम आम्बवस्ती सुत सम्बरी माई ।  
 परम्मन सुठ अनिठद अनापम जास वेदरमी अम्बरी माई ॥भी॥  
 समुद्रविजे शिवा देवी मम्मन सत्यमेम रहनेमरी माई ।  
 वारस अगी साल वरस प्रत रमणी पचासे तेमरी माई ॥भी॥  
 समुद्र विज सुत मुगि रहनेमी ए मह राजकुमाररी माई ।  
 केवल पामी मुणते पहुता ते बाँटू बहुधाररी माई ॥भी॥  
 अज्ञा अस्त्रधरी आदे सीयणी समर्थी सहस आक्षीसरी माई ।  
 सात्परी सीषी तीन सहस ते बाँटू कुमत नालीसरी माई ।

भी त्रिन शासन समरी हूँ वस्तु ॥ भी॥

पोमावई गोरी गन्धारी, लखणा सुसीमा नामरी माई ।  
अम्बूदती सत्यभामा रुकमण, हरिगमणी अभिरामरी माई॥थ्री०  
मूलसिरी मूलदत्ता वेह, सम्बकुमरनी नाररी माई ।  
अन्तगड़ अंगे ए सहू भाखी, पहुंती भवने पाररी माई॥थ्री०  
उत्तराजयणे राजमती भती, संयम शील निहाणरी माई ।  
यडिकोही रहनेमी पामी, शामय सुख निर्वाणरी माई॥थ्री०

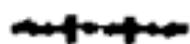


## ॥ ढाल दर्मी ॥

गौतम समुद्र सागर ॥ ए देशी ॥

गवचा सुत सुक सेलग आद, पंथय पमुह मुनि पांच से ए ॥  
गास संलेहणा करिय तप अति व्रणा, पुंडरीगिर शिवपुर घसे ए ॥  
पाय जुहिट्ठिल भीम अतुलवली, अर्जुन नकुल सहदेवजी ए ॥  
पायसिरी परिहरी शुद्ध संयम धरी, साधुजी शिवपद्मी भजी ए ॥१  
बउदे पूर्व धर थविर धर्मघोप धर्मसच्चि शीश सुगुण भरवो ए ।  
गाग श्री माहणी दत्तविसजेण, तुम्बमय मास पारणे कन्यो ए ।  
प्रनुत्तर अवतरी तदनु नरभव करी क्षेत्र विदेह में शिव गयो ए ।२  
ह मुनि वंदतां कर्मवली निंदतां जनम जीतव सफलो थयो ए ।२  
मरणी गोवालिया जेण सुकमालिया दाखिया तास हुँ गुण भरुण ए ।  
म वली सुव्वता द्रोपदी संजता नेम शासन तसु गुण थरुण ए ।  
मेमल अनंत जिन अंतरे राय महावल देवी पदमावती ए ।  
माईस ते अङ्गय कुमर वीरंगय तसुण वत्तीस तसुणीपती ए ।३  
म सिद्धत्थ गुरु पास संयम वरु ब्रह्म लोगेसुर ऊपनो ए ।  
विय घलदेव घर रेवती उदर घर निपध नामा सुत संपनो ए ।

नेमपय अनुभरी अधिर धन परिहरी रमासी पवाम तस्वत्र प्राणे  
 करीय यहु समद्भ घरम नय संयम पाली सवर्थ मिद्द सुद लहा  
 हेत्र विदेह में केवल नयमे सिद्ध होस्ये वहे ह मुखी ए।  
 इष्टरे अनिवह बहु पगली महु भादु जुक्ति फडु गुण युखी ए।  
 दमरह दहरह महाधणु तेम सतपणु गुण मुम मन वस्या ए।  
 नवधणु दसधणु सवधणु पम भासीया खूब वहीदशा ए।  
 पूर्वमय हरिगुड नाम तुमसेन लक्षित हे यम पूर्वमये ए।  
 राम वहयेय वहे नय महल धार भ्रहलोगे सुह अनुहवे ए।  
 अविय जिन तेरमो नाम निरसाय यापसी सही सरतर समोण।  
 यधय ऐश्वर एक अवतार अमम होस्ये जिन शारमो ए।  
 सहस वही त्यासीया लातसे वासीया लास पवास प अवर्द्धए।  
 तिहाँ किण विल मुमि मिद्द नपत पाय लास वेद कीर्ती करए।  
 पुर्वमय वधव अक्षी भ्रहदच सातमी भरक मे नेचस्या ए।  
 एव अतर वही नम् यहु केवली वेग शिव सुवरी जे वरस्या ए।



## ॥ ढाल १३ी ॥

नामि अब भक्तेवा हियहे अति १० ॥

तेवीसमाँ जिन तारक पुरसा वाणीय पास,  
 मुग्धिवर सोहे सहस घर गणधर आठ वहास।  
 अखदिष्ठ सुभा तुमपोप यंत्र वासिठ नाम  
 वही भ्रहमारी सोमनै श्रीघट कई प्रणाम ॥॥  
 वीरमद्र वस आदरे सिद्धा सहस ग्रमास,  
 तेह मुमीसर वन्दतो होये परम करस्याम ।

साध्वी संख्या सहु अड़तीस सहस वर्खांणुं,  
 पुष्प चूलादि सहस वे सीधी ते मन आयुं ॥२॥

समर्णी सुपास सीऊस्ये भास्वी धर्म चउयांम्,  
 ए अधिकार कहो श्री ठाणायांग सुठाम ।

चउदस पुद्धी वले चउणाणी केसी कुमार,  
 परदेसी पडिवोहिय कीधो पर उपगार ॥३॥

वरस अढीसे अन्तरे सीधा साधु अनेक,  
 ते सहृ वांदूं विनयसुं आंणी चित्त विवेक ।

मुनिवर चउदे सहस गुरु प्रणमूं श्री महावीर,  
 सातसे केवली वली एकादश गणधर धीर ॥४॥

इन्द्रभूई अग्निभूईय वंदूं वले वायुभूई,  
 व्यक्त सुधर्मा वन्दत मुज मन निर्मल हृई ।

मंडिय मोरिय पुत्र अकंपित नित सिव वास,  
 अचल भया मेतार्य वन्दूं श्री प्रभास ॥५॥

वीरंगाय वीरयस नृप संजय एरोज राय,  
 सेय सिवे उदायण नरपति संख कहिवाय ।

वीर जिनेश्वर आठ ए दीख्या राय सुजाण,  
 मुनिवर पोहिल वांध्यो गोत्र तीर्थङ्कर ठांण ॥६॥

पालत श्रावक पुत्र ते वांदूं समुद्र पाल,  
 पुन्य ने पाप वे क्षय कर सीधा साधु दयाल ।

नयर सावधी वे मिल्या केसी गोयम सामी,  
 सीस सन्देह परीहरी पण महबत सिया सिरनामी ॥७॥



## ॥ ढाल १०मी ॥

बरक छरण पर मुनिवर ॥

माहसुकुड़स नगरनो अधिपति, माहसुकुल नम्बन्धनो जी ।  
 वीर विषेसर ताव सुगुव भीलो, शूपमद्वच मुनिमो जी ।  
 नित नित यांदू रे मुनिवर ए सह, विकरण दुख विकालो जी ।  
 विधिसु देईरे तीन प्रदक्षिणा, कर अद्वारी मिज भालो जी ।  
 राय उदापल सिंधु सोबीरनो निर्मल संपमधारो जी ।  
 सेड सुवर्णन मुनि मुगते गया, सुष महावल अधिकारो जी ।  
 छाला सवेसिय गडोया गडी पोगलमै सिवराजो जी ।  
 कालोधाई अवपतो मुनि वादता सीझे काङ्गो जी ।  
 मद्धाई मुनि छिकम बंदिये अर्जुतमारी डुलासो जी ।  
 कासव लेमनै वितिहर आयिये, केवल रूप केलासो जी ।  
 मुनि इरचन्द्र यारतम यसी सुवर्णल पूरण भहो जी ।  
 सांधु समष्टमह समता आगला सुपयह समय समुदो जी ।  
 मेह मुनीश्वर अवपतो भम्, रामरिसी अलक्ष्मो जी ।  
 भी विन सीसे सहु मुगते गया सेवे सुरवर सकङ्गो जी ।  
 भहस छत्रीसे अमरी अन्धना आदे अवदेसे सीघो जी ।  
 देवानन्दारे जनभी भीरनी, केवल भाष समिदो जी ।  
 नित नित अमृते समरणो ए सह ॥ लि

समणी अवपती रे पहम सम्पातरी तीघी केवल पामो जी ।  
 नन्दा मन्दवती मन्दुतरा यसी मन्दसेहीया नामो जी ।  
 मरण सुमरतारे भहा मरता नम्, मरदेष्या वजे जालो जी ।  
 भहा सुमरा रे सुज्या विन तर्ही, पासी निर्मल आवो जी ।

मुमणा समणी रे भूदिन्ना नमूं, राणी श्रेणिक रायो जी ।  
 पास संलेहणारे तेरे सिद्ध थइ, प्रणम्यां पातक जायो जी । नि०  
 काली सुकाली रे महाकाली वले, किन्हा सुकिन्हा तेमो जी ।  
 महाकिन्हा वीरकिन्हा साहुणी, रामकिन्हा शुद्ध नेमो जी । नि०  
 पेउसेण किन्हारे महासेण किन्हका, ए दश श्रेणिक नारो जी ।  
 नैज निज नन्दन काल सुणी करी, लीधो संयम भारो जी । नि०  
 दश श्रमणी रे तप रयणा वली, आदे दशे प्रकारो जी ।  
 गर केवल लही सहु मुगते गई, ते प्रणमूं वहु बारो जी । नि०

## ॥ ढाल ११मी ॥

सुख कारण भवियण सम० ॥ ए देशी ॥

धर्मधोष मुनीसर महब्बल गुरु श्रुतधार,  
 जिण पृछथारो हैं लोका लोक विचार ।  
 वेसालिय सावय पिंगल नाम नियंठ,  
 परिवायग पूळिय खन्दक समय पर्यंठ ॥१॥  
 कालियपुत्त मोहिल आरांद रखिया ज्ञानी,  
 वले कासव चौथो थेविर ते पास सन्तानी ।  
 मुनि तीसग कुहदत्त पुत्त नियंठी पूत,  
 धन नारयपुत्त मुनि सामहथी संयुत्त ॥२॥  
 सुनखत्त सव्वाणु भूईखपक आरान्द,  
 जिन उसह आएयो धन धन सीह मुनिंद ।  
 वले पृछथा जिनने लेस्यादिक वहु भेद,  
 ते गाऊं मुनिवर माकन्दी पुत्र उमेद ॥३॥

द्विष्ठ भेदिक सुत कहुं जाती कुमर मयाली,  
 उदयाली पुरिसेण वारिसेह आपदा द्याती ।  
 तीह दम्भने लहूदम्त धारसी मम्बन होय,  
 वेहल वेहायस वेहणा अगज शोय ॥  
 एक नम्दा नम्दा मुनिवर अमय महन्ता,  
 दीहसेष महासेष लहूदम्त गुहदम्त ।  
 सुखदम्त कुमर हस दुमसे बले दुमसेण,  
 गुण गाँड़ महादुम सेणप सीह मे सीहसेष ॥  
 मुनिवर महासीहसेष पुनसेष प्रधान,  
 ए धारसी अहम तेजे तरसी समान ।  
 सहु भेदिक मम्दन ए दश तर कुमार  
 आठ आठ रमण तज अनुवर्ते सुर अवतार ॥  
 तिथ अबसर मधरी काकम्ही अमिराम  
 तिहाँ परिषसे महा सारथाही नाम ।  
 तमु मम्बन घमो सुन्दर रूप निधाम  
 तिण परसी तद्यदी चर्चीष रेमा समान ॥  
 जिन वपण छुपी करी लीषो संयम खोग  
 मुनि तब वपणे सहु काँड्या रसमा भोग ।  
 नित छहु तप पार्थे आंदिल उम्हित भात  
 जसु अमण वसी मग छोयन बंझे वात ॥  
 अति दुकर संयम आयम्हो नद मास  
 कर मास संकेहणा सर्वार्थ सिद्ध मे चास ।  
 काकम्ही दुष्यक्षत रायमिहे इतिवास  
 पेगल ए वेहु एक नयर दुङ्गास ॥  
 रायपुरमै बंधिमा साफितपुर वर ढाम  
 दुष्टिमारप पेहाल दुरु ए वाखियगाम ।

हस्तिथणाउर पोटिल ए सहू धन्ना समान,  
 तरणी तप जननी संयम वरसे मान ॥१०॥

वेहल वली कहू रायगिहे आवास,  
 सर्वार्थ पहुंतो धर संयम छ मास ।

ए एक भवे सिवगामी जिनवर सीस,  
 सहु नवमे अंगे भाख्या मुनी तेतीस ॥११॥

हिके पउम महापउम भद्र सुभद्र वखाणुं,  
 पोमभद्रने पोमसेण पउमगुम्म मन आणुं ।

नलिनीगुम्म आणन्द नन्दन ए मुनि जाण,  
 कालादिक दश सुन कप्पचडिंसिया छाण ॥१२॥

मुनि उरके पूछ्या गोतम ने पचखाण,  
 चउयाम थकी कीयो पंच तणो प्रमाण ।

जिण जिनमत मंडी खंड्या कुमत अनेक,  
 ते आद्र कुमर मुनि धन तसु कुद्ध विवेक ॥१३॥

गद भालिय वोहिय संजम नृप अणगार,  
 मुनि खब्रीग भाख्या वहुविध अर्थ प्रकार ।

महि मंडल विहरे विगत मोह अनाथ,  
 गुण गातां अहनिश सम्पजे शिवपुर साथ ॥१४॥

नृप श्रेणिक नन्दन मुनिवर मेघ सुजाण,  
 तजी आठ अन्तेउर पहुंतो विजे विमाण ।

अपमानीय रयणा आद्र्यो संयम जेह,  
 जिन पालित मुनिवर सोहम्म सुर थयो तेह ॥१५॥

हर चोर चिलातीय सूसमा तातने धन्नो,  
 आराधिय संयम सोहम्म सूर उववन्नो ।

ए वीर जिनेसर शासन मुनीवर नाम, ...  
 नित भगते गाऊं तेह तणां गुणग्राम ॥१६॥

## ॥ ढाल १२मी ॥

ऐसाकिय सावय पिहल पति ॥ ए ऐरी ॥

घर्मधोय गुड सीस सुदर्त, मासने पारणे तेह सुपत्त;  
पहिलामिय सुभवित ।  
सुमार यथो भव थीय सुशाह सर यथो संयम ग्रही सुसाह  
गुण वसू गाँड नित ॥१॥

भी जुगवाह जिनवर आवे चिजय कुमर पहिलामे भावे;  
बीजे भव भद्र नम् ।  
ओग उजी यथो साखु मुष्टि करी संक्षेपसा लहे सुखाह्य,  
गुण वसू गाँड आराद ॥२॥

जुपमदर्त पहिले भव सम तिहु पहिलाम्पो मुमि पुफवंत;  
तिहाई यथो सुशाह ।  
दर्त सम जावी सहु रिष्यात आठे प्रदर्शन मात,  
भवियत वसू गुण गात ॥३॥

पहिले भव नरपति घनपाल, ऐसमधु भद्रमे दाम रसास,  
रेरि सुवासय थाय ।  
संयम कीर ते मुनिराय लही केवल बहे रिष्यात आय,  
ते बांदू मनसाय ॥४॥

पूर्वमव मेघरथ यज्ञान सोहम मुमि मे रेर दाम;  
बीजे भव जियदास ।  
संवर पाली ते यथो सिंद केवल वसय नाण समिद,  
चहु तेह तुलास ॥५॥

मिश्रराय पूर्वमव जालुं संभूत चिजय मुमि नाम वजाह्यं;  
कुमर ते भलपति होह ।

वीर समीये संयम लीधो, तत्क्षण कर्महरणी ने सीधो;  
 दिन प्रते वंदू सोय ॥६॥  
 पूर्वभव नागदत्त धनीस, पडिलाभ्यो इन्द्रपुत्र मुनीस;  
 महवल नाम कुमार ।  
 संयम लेइ कारज सान्यो, भवसायर थी आतम तान्यो;  
 ते वांदू अनिवार ॥७॥  
 यृहपति पहिले भव धर्म घोस, तित पडिलाभ्यो अति संतोष;  
 नामे मुनि धर्मसीह ।  
 वीजे भेव थयो ते भद्रनंदी, मुक्ति गयो भव वंधन छिंदी;  
 ते प्रणमू निरीह ॥८॥  
 पहिले भव जिय सञ्चु नरेश, पडिलाभ्यो धर्म विरत सूलेस;  
 वले महचन्द कुमार ।  
 तिण छुड़ी वहुराज कुमारी, पांच से अपछुर ने अनुहारी;  
 ते नमू केवलधारी ॥९॥  
 विमल वाहन राजा पूर्वभव, धर्मरुचि पडिलाभ्यो गुणस्तव;  
 वरदत्त वले भव वीजे ।  
 संयम लेइ फलसिरी पामी, कप्पंतर तेजे सिव गामी;  
 तेहनी कीर्त कीजे ॥१०॥  
 पूर्वभव देइ दान उदार, वीजे भव थयो राज कुमार;  
 तिहाँ तजी पांच पांच से नारी ।  
 सह थया वीर जिणेसर सीस, सुखविपाक में एह मुनीस;  
 पंच महाव्रत धारी ॥११॥  
 नमी मातंग ने सोमिल गाऊं, राय गुत्त सुदंसण ध्याऊं;  
 नमुं यजमाली भिंगाली ।  
 किंकम पेलग कालिय तीजी, अंतगढ़ अंगे वेय चीजी;  
 ठाणायंग सम्भाली ॥१२॥

पूर्णमव महा योमरो भीजे, तेतक्षी पुत्र मुमी प्रसन्नमीजे।  
महा पठम पुढरीक तात ।  
खली खंडू जित शुभ सुखुचि कमलहरी किंय करिय दिशुचि  
ते सुनि खंडू चिक्षास ॥४॥  
सुनि जय घोस चिजय घोस खंडू, वस भी नाम सुगा पुत्र खंडू  
कमलाष्टी रथु कार ।  
पुत्र पुरोहित वहेत सुमारी, नाम यसा सम्बेगे सारी;  
पांद्रता जित जय जयकार ॥५॥

## ॥ ढाल ४ इमी ॥

चतुर चिक्षारिये रे ॥ ए देशी ॥

मुनि इसिदासमो धम्रो वले वक्षायिये रे ।  
सुनकाच करिय संयुत ॥  
सठाय साधिमद्र आरांद तेतक्षी रे वशार्थ भद्र अति सुत ॥  
मुनि शुण छाइये रे ॥६॥

गावता परमामद, सिव सुज साझु शुणेकर ।  
आहगिय सम्पजे रे भागे भष मगवद्र ॥मु०॥८॥  
असुतर अहमी वहीज बीजी वाचकारे ए वसु सुमिषर नाम ।  
नदी सूत्रमें साझु सुखुचि पणे कडोरे भंडीयेण अभिराम ॥मु०॥९॥  
विषमय नमी कल अधिकार घमो मुनि रे  
घनो देख दिन तात ।  
सुबता अमली शुद्धी सिपसी पोटलारे  
पुढरीक पुढरीफ भात ॥ मु० ॥१॥  
शुद्धी घुमका केरी अमणी मुक्ता रे,  
पूरण भद्र सुर्वंग ।

माणिभद्र ने दत्त सिव वल मुनि रे,  
     अण ढिय पुण्यउपंग ॥ मु० ॥५॥  
 धन ते कपिल यति अति निर्मल मती रे,  
     जिण तज्यो लोभ सन्ताप ॥  
 ईद्र परीक्षा अवसर उपशम आदर्श्यो रे,  
     नमी नमावे आप ॥ मु० ॥६॥  
 उरवर सेवित श्रीहर केसी वल मुनी रे,  
     संवर धर सुभ लेस ॥  
 राक ने प्रेर्ये प्रत्यक्ष संयम आदर्यो रे,  
     दसारण भद्र नरेस ॥ मु० ॥७॥  
 मुनि कर कुंडु राजा देश कलिंगनो रे,  
     दुमुह पंचाल भूपाल ॥  
 गलीय विदेहनो नरपति नभि रामा व्रती रे,  
     नगद् गन्धार रसाल ॥ मु० ॥८॥  
 विद्य विजय ने महवल ए सहु राजवी रे,  
     ब्रत लेइ थया अणगार ॥  
 गिम कपाय निवारी सीतल आतमा रे,  
     थेविर ते गंग गणधार ॥ मु० ॥९॥  
 हवे श्री वीर जिनेसर सीस सोहम गणी रे;  
     तास परंपर एह ॥  
 गम्बू प्रभव ने वली सियर्पंभव जाणिये रे,  
     मनक पिता मुनि तेह ॥ मु० ॥१०॥  
 गी यशोभद्र मुनि संभूत विजे वली रे,  
     भद्रवाहू थृत्त भद्र ॥  
 गम अनेरा जिनवर आणमे जे हुया रे,  
     ते मुनि गाऊं समुद्र ॥ मु० ॥११॥

मुण्डगडांग मे मुनिषर भे कळा रे,  
ठाण्डार्यंग आळीस ॥  
एक सो गुणातर खोये भरो सही रे  
मरणती बारे बीम ॥ म० ॥

पवास साथु कहा प्याता मधे रे,  
अस्तगङ्क मैक दोय ॥  
ततीस साथु नवमे अगे सही रे  
इक्षवीस लिपाए जोय ॥ मु० १३॥

राय प्रसेठी केसी समलु कडा रे  
अम्बूळीप पञ्चती माँय ॥  
ईरवय याकी हुया केवली रे,  
ते बाँदू मनलाय ॥ मु० ॥ ४॥

बस साथ कप्य घड़ि सिया रे,  
पुणिपा महि मान ॥  
चवदै मिलन्य चम्ही बसा रे  
ते समर दिन गत ॥ मु ॥५॥

वयासीस साथु उचरात्ययम में रे  
नंदी सूज में एक व  
पाठ आठ हुया भी चीरना रे  
से समर्द आणु खिल ॥ मु० ॥६॥

सद मिली मे साधु जे घपा रे  
 पौर्य सद इक्षीम ॥  
 पनर सूर मे बिये रे  
 ते समर्द निश्चीम ॥ मु० ॥ ३॥

[ ५५ ]

संयम पाली ने सुर थया रे,  
गाऊँ गुणा ने कोड़ ॥  
कर्म खपावी मुनि मुगते गया रे,  
ज्यां ने वांदूं बे कर जोड़ ॥ मु० ॥१८॥

काल अनन्ते मुनिवर जे मुगते गया रे,  
संप्रति वर्ते जेह ॥  
गाण दंसण वर चरण ने करण धुरंधरा रे,  
श्री देव वांदे तेह ॥ मु० ॥१९॥

ढाल तेरमी ए पूरी थई रे,  
कहे श्री देव रसाल ॥  
भणे गुणे ने सुणे जे भावसू रे,  
तिण घर मंगल माल ॥ मु० ॥२०॥

### ॥ कलश ॥

इम चौबीस जिनवर प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुया ॥  
संसार तारक केवली बली समणा समणी संज्ञया ॥  
संवेग श्रुतधर साधु सुखकर आगम वयणे जे सुणया ॥  
श्री न्यानचन्द्र गुरु सुपसाय श्री देव मुनि ते संथुएया ॥१॥

॥ इति श्री आगमोक्त वृहद् साधु वन्दना समाप्ता ॥



## अथ श्री लघु साधु वन्दनानी मजमाय लिख्यते ।

साधुशी ने पद्मना नित नित फीजे, प्रह उगमते सूर रे प्राणी ।  
मीष गसि मा ते नयि जावे पामे रिक्ष मरपूर रे प्राणी ।  
मोटा ते पच महामन पाल, कु छाचारा प्रतिपाल रे प्राणी ।  
भमर मिळा मुनि सूक्ष्मती केवे, दोप पवालीस टालरे प्राणी ।  
रिक्ष सपका मुनि कारमी जाणे दीधी भसार ने पूठ रे प्राणी ।  
एरे पुरपारी धंदगी करता, आठे करम जाये तृट रे प्राणी ।  
एक एक मुनिपर रसना स्थानी, एकेका छान भडार रे प्राणी ।  
एक एक मुनिपर वैयापच वैराणी

एमा गुणमो जावे पार रे प्राणी ।

गुण सत्तावीस करीने दीये जीस्या परीसा यावीस रे प्राणी ।  
बाबन हो अनाचारम् टाले तमे ममादु माहै शीश रे प्राणी ।  
बहाम समाज से संत मुमीश्वर भण्य जीय केसे आप रे प्राणी ।  
पर उपगारी मुनि दाम स माने देवे ते मुगति पौखापरे प्राणी ।  
ए चरखे प्राणी शाता रे पावे पावे ते सील विलास रे प्राणी ।  
बन्म जरा अने मरण मिटावे जावे करी गर्मावास रे प्राणी ।  
एक घटन ए सत्तगुरु केरो जो केसे दिल माय रे प्राणी ।  
तरक गतिमा ते नयि जावे, एम कहे किनराय रे प्राणी ।  
ग्रमाते डठीने उत्तम प्राणी सुणो सापारो व्याक्ष्यान रे प्राणी ।  
ए पुरपारी सेवा करता पावे अमर विमान रे प्राणी ।  
संयत अदारे ने वर्य अदतीसे बुसी ते गाम औमास रे प्राणी ।  
मुनि आसफ़राहजी परी परे भई

बुदो उत्तम सापारो दास रे प्राणी ।

॥ इति लघु साधु धंदना सम्भव्य समूर्खम् ॥

## ॥ अथ श्री सावु वन्दना लिख्यते ॥

नमू अनन्त चौबीसी, ऋषभादिक महावीर ।

आर्य क्षेत्रमां धाली धर्मनी सीर ॥१॥

महा अतुल्यः वलिनर, शूरवीर ने धीर ।

तीर्थ प्रवर्त्तावी, पहुंच्या भव जल तीर ॥२॥

श्री मंधर प्रमुख, जग्नन्त तीर्थङ्कर वीस ।

छे अद्वी द्वीपमां, जयवंता जगदीश ॥३॥

एक सौ ने सित्तेर, उत्कृष्टा पदे जगदीश ।

धन्य महोटा प्रभुजी, जेहने नमाबुं शीश ॥४॥

कैवली दोय कोडी, उत्कृष्टा नव कोड ।

मुनिदोय सहस्र कोडी, उत्कृष्टनव सहस्र कोड ॥५॥

विचरे विदेह में, महोटा तपस्वी घोर ।

भावे करी वंदूं, टाले भवनी खोड ॥६॥

चौबीसे जिनना, सगला ए गणधार ।

चउदेसे ने वावन, ते प्रणमूं सुखकार ॥७॥

जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर जिरांद ।

गौतमादिक गणधार, वर्ताव्यो आनन्द ॥८॥

श्री रिपभद्रेवना, भरतादिक सोपूत ।

वैराग्य मन आणो, संयम लियो अद्भुत ॥९॥

कैवल उपराजी, करी करणी करतूत ।

जिन मत दिपावी, सघला मोक्ष पहंत ॥१०॥

श्री भरतेश्वर ना, हुवा पटोधर आठ ।

आदित्य जशादिक, पहुंच्या शिवपुर वाट ॥११॥

धी जिन अस्तरमा, हुआ पाठ असत्य ।

मुनि सुनित पहोस्या टासी कर्मसो वंक ॥१॥

अस्य कपिल सुनिष्ठर ममी नम् अखगार ।

जेहु ततद्वय स्यागो, सद्गर रमणी एविदार ॥२॥

मुनि हरकेशी बल वित्त मुनीश्वर सार ।

शुद्ध संयम पाली, पाम्पो मयनो पार ॥३॥

बली रहुकार राजा घरे कमसाधती नार ।

भगु मे जोसा तेहमा दोय कुमार ॥४॥

इये छती रिद्ध काँडी मे लीषो संयम भार ।

इष अस्य कालमो पाम्पा मोङ बुधार ॥५॥

बली मंडती राजा हरस आहिहे जाय ।

मुनिष्ठर गद् भाली आएयो मारग ठाय ॥६॥

चारिद लहीमे भेद्या शुद्धा पाय ।

जानी राज रिपीश्वर, चर्षी करी चितलाय ॥७॥

वसि दसे चक्रवर्ती राज्य रमणी रिद्ध थोङ ।

दग्धे मुनित पहोस्या कुल मे शोभा अदोङ ॥८॥

इल अवसर्पिणीमा आठ राम गया मोङ ।

बलमद्र मुनीश्वर गया ऐश्वर्मे देष्पलोक ॥९॥

कण्ठार्णीमद्र राजा जीर जाया घरि भाम ।

पहोङ इन्द्र हठायो दिषो कृष्णाय अमेवान ॥१०॥

करतंदु प्रमङ्ग, चारे प्रत्येक थोङ ।

मुनि सुनित पहोस्या जीत्या कर्म महाजोष ॥११॥

अस्य महोद्य मुनिष्ठर, सुग्रुण अगीश ।

मुनिष्ठर अनाधी, जीत्या राग मे रीस ॥१२॥

बली समुद्र पाल मुनि, राजीमती रहेनेम ।

केशी ने गौतम, पाम्या शिवपुर क्षेम ॥२४॥

धन्य विजय घोस मुनि, जय घोष बली जांण ।

श्री गर्गीचार्य, पहोंत्या छै निर्वाण ॥२५॥

श्री उत्तराध्ययनमां, जिनवरे कर्या बखांण ।

शुध मन से ध्यावो, मन में धीरज आंण ॥२६॥

बली खन्धक संन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह ।

महावीर समीपे, पंच महाब्रंत लेह ॥२७॥

तप कठिन करीने, झोंशी आपणी देह ।

गया च्युत देवलोके, चवी लेशे भव छेह ॥२८॥

बली रिषभदत्त मुनि सेठ सुदर्शन सार ।

शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अण्गार ॥२९॥

शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार ।

ए च्यारे मुनिवर, पहोंत्या मोक्ष मोभार ॥३०॥

भगवंतनी माता, धन्य धन्य सती देवानन्दा ।

बली सती जयन्ती, छोड़ी दिया घर फन्दा ॥३१॥

सती मुक्ति पहोंत्या, बली ते वीरनी नन्दा ।

महासती सुदर्शणा, घणी सतीयोंना बृन्दा ॥३२॥

बली कार्तिक सेठे, पडिमा वही शूरवीर ।

जीम्यों महोरा ऊपर, तापस बलती खीर ॥३३॥

पछी चारित्र लीधुं, मन्त्री सहस्र आठ धीर ।

मरी हुवा शकेन्द्र, चवी लेशे भवतीर ॥३४॥

बली राय उदायन, दियो भाणेजा ने राज ।

पछी चारित्र लइने, सार्या आतम काज ॥३५॥

- । गद्य सुनि आराव, तरक्ष तारण जिहाड़ ।  
 कुण्डल सुनि रोहो, रियो घणां मे सत्त्व ॥१६॥
- धर्म सुनद्वय सुनिधर सवानुभृति अणगार ।  
 आराधक ह्रै ने गया देवलोक मोमार ॥१७॥
- चरि मुक्ति जासे धली सिंह मुनीश्वर सार ।  
 बीजा पह मुनिधर, भगवतीमी अधिकार ॥१८॥
- भेदिक ना बेटा मोटा मुनिधर भेष ।  
 तजी आठ अन्तेष्ठी, आस्यो मन सम्बेग ॥१९॥
- धीर पै बत लेइने, बांधी तपती लेग ।  
 गया विजय विमाने, चरि लेये शिष्य लेग ॥२०॥
- धर्म धारची पुष्प तजी चतीसे लार ।  
 तेनी साथे निकहपा पुढ़प एक हजार ॥२१॥
- दुर्देव संम्पाती एक सहस्र शिष्य लार ।  
 पंखग्राप सु सेसक, लीघो संबग मार ॥२२॥
- सर्वे सहस्र अर्द्धाई घणा जीवो मे वार ।  
 पुंडर गिरि ऊपर, छिपो पाढ़ाप गमन सायार ॥२३॥
- आराधिक ह्रै ने कीषो लेखो पार ।  
 हुषा मोटा मुनिधर नाम लिया निलार ॥२४॥
- धर्म लिमपाल सुनिधर धोय धनादा साध ।  
 गपा प्रथम देवलोके मोह जासे आयथ ॥२५॥
- धी मदिसनाथ ना हु भिष महावस प्रमुख सुनिराय ।  
 सर्वे मुक्ति सिधाया महोदी पद्मी पाय ॥२६॥
- चक्र विवरण राखा सुखुयि नामे प्रधान ।  
 पोते चारित्र लेइने, राम्या मोह गिरान ॥२७॥

धन्य तेतली मुनि, दियो छकाय अभेदान ।

पोटिला प्रतिवोध्या, पाम्या केवल ग्यान ॥४८॥

धन्य पांचे पांडव, तजी द्रोपदी नार ।

स्थिवरनी पासे, लीधो संयम भार ॥४९॥  
श्री नेमी चंदननो, एहवो अभिग्रह कीध ।

मास मास खमण तप, शत्रुंजय जेर्इ सिद्ध ॥५०॥

धर्मघोप तणां शिष्य, धर्म रुचि अणगार ।

कीड़ीयोंनी करुणां, आंणी दया रस सार ॥५१॥

कडुवा तैँवानो, कीधो सगलो आहार ।

सर्वार्थ सिद्ध पहोत्या, चवि लेशे भवपार ॥५२॥

बली पुंडरीक राजा, कुंडरीक डिगियो जाण ।

पोते चारित्र लेइने, न घाली धर्ममां हांण ॥५३॥

सर्वार्थ सिद्ध पहोत्या, चवि लेशे निर्वाण ।

श्री ग्याता सूत्र में, जिनवरे कर्या वखाण ॥५४॥

गौतमादिक कुमार, सगा अढारे भ्रात ।

सर्व अन्ध क विष्णु सुत, धारणी ज्यांरी मात ॥५५॥

तजी आठ अन्तेउरी, काढी दीक्षानी वात ।

चारित्र लेइने, कीधो मुक्ति नो साथ ॥५६॥

श्री अनेक सेनादिक, छुये सहोदर भाय ।

वसुदेव नो नन्दन, देवकी ज्यांरी माय ॥५७॥

मदीलपुर नगरी, नान गाहावई जाण ।

चुलंसा घर वधिया, सांभली नेमिनी वाण ॥५८॥

तजी वत्रीस २ अन्तेउरी, निकलिया छिटकाय ।

नल कुवेर समाना, भेटियां श्री नेमिना पाय ॥५९॥

फरी छुठ छुठ पारणा, मन में वैराग्य लाय ।

एक मास संथारे मुक्ति विराज्या जाय ॥६०॥

वली वारक सारण सुमुख बुमुख मुनिराय ।  
 अहो कुमर अनाहटि गया मुक्ति गह माय ॥५१॥  
 असुदेव ना नश्वन घन्य घन्य गज सुकुमाल ।  
 दपे असि सुवर, कहायस्त थय बाल ॥५२॥  
 भी नेमि समीपे क्षोहिया मोह जब्राल ।  
 मिलुमो पद्मिमा गया मशान महाकाल ॥५३॥  
 देखी सो मिल कोप्यो ग्रस्त के बोधी पाल ।  
 केहरना खीरा शीर ठविया असरास ॥५४॥  
 मुनि भजर न खयही भेड़ी मनवी भग्न ।  
 परोसह सहीमे मुक्ति गया ततकाल ॥५५॥  
 घन्य जाली मयाली उषपालादिक साप ।  
 सद्गमे प्रथम अमिटघ सांख अगाध ॥५६॥  
 वली सच नेमी रहनेमी करखी क्षिर्धी वाघ ।  
 देशे मुनि मुगते पहोस्या जिम्बर वचन आगाध ॥५७॥  
 घन्य अर्हुन मासी कर्यो क्षवापह धूर ।  
 बीरे पे वत हेहमे, सत्यघादी दुवा धर ॥५८॥  
 करी छठ छठ पारणा चमाकरी भरपूर ।  
 इमासा माही कर्म लिया खक्खूर ॥५९॥  
 कुमर अमुते दीठा गीतम साम ।  
 सुषी वीरमी बोधी कीषो उत्तम काम ॥६०॥  
 आदिक हेहमे पहोस्या शिष्पुर ठाम ।  
 धुर अदि मकाई अन्त अहंक मुनि माम ॥६१॥  
 वली छप्त रायनी अग्र महिपी आठ ।  
 पुत्र यहु दोये संच्या पूर्णना ठाठ ॥६२॥  
 यादप कुस सतियो याही तुफळ उचाट ।  
 पहोस्या शिष्पुर में एक सूज मो पाठ ॥६३॥

श्रेणिकनी रांणी, कालियादिक् दस जांण ।

दशे पुत्र विधोरे, सांभली वीरनी वांण ॥७४॥

चंदन वाला पै, संजम लेइ हुआ जांण ।

तपकरी देह भोशी, पहोंत्या छु निर्वाण ॥७५॥

नन्दादिक् तंरे श्रेणिक् नृपनी नार ।

सघली चन्दन वाला पै, लीधो संजम भार ॥७६॥

एक मास संथारे, पहोंत्या मुक्ति मौंझार ।

ए नेबुं जणांनो, अन्तगडमां अधिकार ॥७७॥

श्रेणिक ना वेटा, जलियादिक् चौवीस ।

वीर पै व्रत लेइने, पाल्यो विश्वावीस ॥७८॥

तप कठिन करीने, पूरी मध्न जगीस ।

देवलोके पहोंत्या, मोक्ष जासे तजि रीस ॥७९॥

काकंडीनो धन्नो, तजी वतीसे नार ।

महावीर समीपे, लीधो संजम भार ॥८०॥

करी छुठ छुठ पारणा, आयंविल उछित आहार ।

श्री वीरे वखाए गां, धन धन्नो अणगार ॥८१॥

एक मास संथारे सर्वर्थ सिद्ध पोहोत ।

महा विदेह क्षेत्रमां, करसे भवनो अन्त ॥८२॥

धन्नानी रीते, हुवा नवेइ सन्त ।

श्री अनुत्तरोवचाइमां, भाखी गया भगवन्त ॥८३॥

सुवाहु प्रसुख, पांच पांच से नार ।

तजी वीर पै लीधां, पंच महाव्रत सार ॥८४॥

चारित्र लेइने, पाल्यो निरतीचार ।

देवलोके पहोंत्यां, सुख विपाके अधिकार ॥८५॥

श्रेणिकना पौत्रा, पौमादिक् हुवा दस ।

वीर पै व्रत लेइने, काढ्यो देहीनो कस ॥८६॥

खयम आराधी, देयसोकर्मा जह घम ।

महा विदेह स्नेहमर्मा, मोह जासे खेह भस ॥८३॥  
यलभद्रना भन्दन, नियपादिक हुया थार ।

तजी पवास अस्तेउरी ल्याग दियो ससार ॥८४॥  
सहु मेमि समीऐ आर महावत सीघ ।

सर्यार्थ सिद्ध पहोत्या होशे दिदेह में सिद्ध ॥८५॥  
धन्नो मे शालिभद्र मुनीश्वरो नी जोड़ ।

मारीनां वर्षन तत्त्वण नार्त्या तोड़ ॥८६॥  
धर कुदूर्व कर्वीलो धन कंचनमी कोड़ ।

मास भास खमणा तप टालशे भयमी योड़ ॥८७॥  
भी सुपर्भा सार्मा ना शिष्य घम धन जंगू ल्याम ।

तजी आठ अस्तेउरी भात दिता धन धाम ॥८८॥  
प्रभवादिक तारी पहोत्या शिष्यपुर ठाम ।

सूष प्रवर्ती, जगमो रात्यू नाम ॥८९॥  
घन्य दृष्टप मुनिवर हृष्ण रायमा भन्द ।

हुष अभिमह पाली टाली द्रियो भय फन्द ॥९०॥  
पली छन्धक शूपिमी देह उतारी कास ।

परीमह भद्रीने भवी केरा दिया टाल ॥९१॥  
पसी घन्धक शूपिमा हुया पाँच से शिष्य ।

पाँखीमो चाल्या, मुफिल गपा तजी रील ॥९२॥  
सभूति यित्य शिष्य, भद्रपादु मुनिराय ।

थउर पूर्ष भारी अभ्युगुस आँखो ढाय ॥९३॥  
पसी चाई कुमार मुनि भूदिभद्र मंदीपेण ।

भरण्ड अमुक्ता, मुनीश्वरो मी भेण ॥९४॥  
बोर्यामे गिमना मुनिया भंत्या अद्वापीम लाल ।

उपर अद्यन अद्वताभीम, भूष परंपरा धार ॥९५॥

कोई उत्तम वांचो, मोहे जयणा राख । . .

उघाड़े मुख धोल्यां, पाप लागे इम भाख ॥१००॥  
धन्य मरुदेवी माला, ध्यायुं निर्मल ध्यान ।

गज होदे पायुं, निर्मल केवल ध्यान ॥१०१॥  
धन्य आदेश्वर नी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दरी दोय ।

चारित्र लेइने मुक्ति गया सिद्ध होय ॥१०२॥  
चौबीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी चौबीस ।

सती मुक्ति पहोत्या, पूरी मन्न जगीसं ॥१०३॥  
चौबीशे जिननी, सर्वे साधवी सार ।

अड्डतालीस लाखने, आठ से स्तिर हजार ॥१०४॥  
चेडानी पुत्री, राखी धर्म सुं प्रीत ।

राजीमती विजया, सृगावती सुविनीत ॥१०५॥  
पद्मा सती मयणरेहा, द्रोपदी दमयन्ती सीत ।

इत्यादिक सतियों, गई जमारो जीत ॥१०६॥  
चौबीसे जिनना, साधु साधवी सार ।

गया मोक्ष देवलोके, हिरदे राखो धार ॥१०७॥  
इण अढी छीपमां, गरहा तपसी वाल ।

शुद्ध पंच महावत धारी, नमो नमो त्रयकाल ॥१०८॥  
ए जतियों सतियोंना, लीजे नित प्रति नाम ।

शुद्ध मन ध्यावो, एह तरणनो टाम ॥१०९॥  
ए जतियों सतियों शुं, राखो उज्ज्वल भाव ।

एम कहे ऋषि जेहमलजी, एह तरणनो दाव ॥११०॥  
संवत अढारने वरस सातो शिरदार ।

गढ जालोर मां, एह कहो अधिकार ॥१११॥

॥ इति श्री साधु बन्दना सम्पूर्णम् ॥

## अथ सम्पर्कस्वरूप पट्टपत्रामिका विलिख्यते ।

४ भूलो मन मैथरा काँइ ममे ॥ ए देशी ॥

इम समकित मन चिर करो, पालो मिरतीचार ॥  
मनुष्य जनम है दोहिलो, भमतां जगत मैंझार ॥ इम० ॥१॥

## अथ ४ आ दुर्लभ ।

गरमय आरज कुल तिहाँ सुणबो चिमधर वाण ॥  
दोय यथारथ साहा चउझह उलह साँस ॥ इम० ॥२॥

## अथारभ-परिमहत्याग ।

आरंभ परिमह दोह ए तिम यह चियय क्षयाय ॥  
जब लग पतला नहि पड़े माही समकित आय ॥ इम० ॥३॥

## अथ ४ थाद ।

आतम १ सोग २ कर्म ३ फिया ४ शुद्ध थाद है व्यार ॥  
चित्पता समकित लहे जीव जगत मंझार ॥ इम० ॥४॥  
जीय अमृति छासतो तीत रसम सु भाव ॥  
परस्तेवोगे ऊप्ते तम चियय क्षयाय ॥ इम० ॥५॥  
अत्यम सम छाँ काव है उपस्त मिर अमिलाप ॥  
परलोक परपस आह्यो जिन आगम है चाप ॥ इम० ॥६॥  
सपत चिपत सुषी तुषी मूळ चतुर सुगान ॥  
माटक फर्मसा जाश्जो जग यह सासा चिपान ॥ इम० ॥७॥  
चिम कीधा लागे नहीं फीधा कर्मज होय ॥  
कर्म कमाया आपगा लह्यी सुख तुज होय ॥ इम० ॥८॥

### अथ हेयज्ञेयोपादेय स्वरूपं ।

जीव अजीव वेहू मिल्या, खीर नीर ने न्याय ॥  
 अज्जव गुणने कारणे, तेहस्थी वन्धन थाय ॥ इम० ॥९॥  
 आश्रव हेतु छै वंधनो, शुभ अशुभ दुय भेद ॥  
 कर्मस्थी पुण्य ने पाप छै, मोक्ष है तेहनो छेद ॥ इम० ॥१०॥  
 संवर रोके आवता, क्षीण तपस्थी होय ॥  
 तेहनो नाम छै निर्जरा, मोक्षना कारण दोय ॥ इम० ॥११॥  
 पहिली त्रिक मन धारिये, ज्ञेय वीजी हेय ॥  
 तीजी उपादेय जाणिये, इम समक्षित सेय ॥ इम० ॥१२॥

### अथ सम्यक्तना ५ लक्षण स्वरूपं ।

उपशम जेह कपाय नो, तेहनो सम अभिधान ॥  
 सक्षित पंथनी चाहना, यह सम्वेग प्रधान ॥ इम० ॥१३॥  
 होय उदास विषय विषे, जांगज्यो निरवेद ॥  
 परदुख देखी दुख दया, ए छै चोथो भेद ॥ इम० ॥१४॥  
 इह परलोक छ्रतापणे, होय आस्तिक भाव ॥  
 कर्म करत्वा तेहना फल सहे, होई पुण्य ने पाव ॥ इम० ॥१५॥

### अथ अद्वा प्रतीत रुचि ३ स्वरूपं ।

तरक अगोचर सद्वहो, द्रव्य धर्म अधर्म ॥  
 केइ प्रतीतों युक्ति सों. पुण्य पाप सकर्म ॥ इम० ॥१६॥  
 तप चारित्र में राचवो, कीजे तस अभिलाख ॥  
 अद्वा प्रत्यय रुचि तिहुँ, जिन आगमनी साख ॥ इम० ॥१७॥

### अथ दस संज्ञा ।

पंथ १ धर्म २ जिय ३ साधु ४ छै, सिद्ध ५ खेतर ६ जानि ॥  
 एह यथारथ जाणिये, संज्ञा दश विधि मानि ॥ इम० ॥१८॥

## अथ १० रुचि ।

जाति स्मृति अपभियादिसौं उपजे बोध निसर्ग ॥  
 छपस्य जिन उपदेश सौं पावे भविज्ञन धर्ग ॥ इम० ॥१४॥  
 आदेश गुरु मुख सुशीलहे आण रुचि या होइ ॥  
 पढ़ने सु रिका उपजे सुकृत रुचि है सोइ ॥ इम० ॥१५॥  
 तेह सक्षिप्त के स्थाप सौं बोध बीज को लाह ॥  
 ते तुम जाणो बीज रुचि भावे जिनवर माह ॥ इम० ॥१६॥  
 अर्थ विचारे भूत के अभिगम रुचि जानि ॥  
 सब गुरु पर्यव भाव नय इम विनारे मानि ॥ इम० । २३॥  
 किरिया रुचि किरिया विदे उपम करते होइ ॥  
 खारिज में उपम किये धर्म रुचि है सोइ ॥ इम० ॥२४॥  
 अग्नि कुवर्णन भी प्रह्लो, ना हम सम प्रवीन ॥  
 उच्चेष रुचि सो जानिये भावे तुदि अहीम ॥ इम० । २५॥

## अथ ११ सम्प्रकृति भेद ।

अपारि अनंतानु वचियो मिष्या मोहसी भीम ॥  
 ए सब समकित को हमे भावयो भी जगदीश ॥ इम० ॥२६॥  
 देश हण्ड स मोहनी समकित ए जाम ॥  
 उपशम इमको कह्लो भीस उदय प्रमान ॥ इम० ॥२७॥  
 उपशम उप ऐ सातमो उप उपशम भेद ॥  
 अपारि अनंतानु वंचिया लिघ्य ऐ इह भेद ॥ इम० ॥२८॥  
 उपशम एक तुहन को उप उपशम शेष ॥  
 सम्प्रकृति मोहिसी उपशमे मिष्यमा तिरुं क्षेष ॥ इम० ॥२९॥  
 भेदफ में नियमा उदय होइ समकित मोह ॥  
 शेष उ प्रहति उपशमे अथवा पावे होइ ॥ इम० ॥३०॥

च्यार कपाय क्षय हुवे, दश दो उपशम ॥  
 अथवा मीसा उपशमे, पंच पावे विराम ॥ इम० ॥३०॥  
 ए नवविध समकित कहो, जेहथी शिवसुख थाय ॥  
 क्षय १ उपशम २ दो भेद है ४, एही च्यारे भाय ॥ इम० ॥३१॥

### अथ द आचार ।

शंका कंखा कर रहित, वितिगिच्छाजीनांह ॥  
 दिए अमूढ थिरीकरण, जिनमत के मांह ॥ इम० ॥३२॥  
 धर्म विषे उछाहना, तस उवबूह नाम ॥  
 होइ प्रभावना आठ ये, आचारेना ठाम ॥ इम० ॥३३॥

### अथ ५ अतिचार ।

शंका संशय ऊपजे, सर्व देशे होइ ॥  
 सवधी अनाचार देशधी, अतीचार है सोई ॥ इम० ॥३४॥  
 धर्म करतां मन धरे, देवादिक थी भीति ॥  
 अथवा लज्जा लोकनी, ए है शंका रीति ॥ इम० ॥३५॥  
 कंखा परमत वांछवा, सब देशे होई ॥  
 सब थी अनाचार देश थी, अतीचार है सोई ॥ इम० ॥३६॥  
 साह्य वंछे धर्म में, सुरनर थी कोई ॥  
 लव्धादिक वंछा करे, येही कंखा जोई ॥ इम० ॥३७॥  
 तप चारित्रना फल विषे, वितिगिच्छा सन्देह ॥  
 साधु उपधि मलीन लखि, दुरगिंछा है पह ॥ इम० ॥३८॥  
 संसार कर्त्तव्य सिद्धि को, परयुंजे धर्म ॥  
 सबही अतिचार ऊपजे, सम मोहिनी कर्म ॥ इम० ॥३९॥

पासत्यादि कुवर्णनी, जेह शिविलालार ॥  
 निहय जेय असाधु है जे स परिषार ॥ इम० ॥५०॥  
 इह प्रयोग सद्यमे अतिकार है पंच ॥  
 समर्थि मुम जांश्चिन्पो, मति सेयो रेत्त ॥ इम० ॥५१॥

### अथ ७ सम्यक्त नाम ।

किम किम कोष करे घरे, अति दीरप दोष ॥  
 इह पर जगत मम्बन्धमा छारण तप दोष ॥ इम० ॥५२॥  
 निमित्त करी आखीबिका यहयी असुरज धाय ॥  
 अपार परे समोह है तद्यी समकित जाय ॥ इम० ॥५३॥  
 उमारणनी देहना पंथ विघ्न सुजान ॥  
 गिरधि भाव विषे तस्ता, काम मोग मिदान ॥ इम० ॥५४॥  
 अरिहत धर्म तथा गुड सद्य अवरण वाद ॥  
 यहयी किलमियता रहे मिथ्यामति उस्पद ॥ इम० ॥५५॥  
 अपशा गुण पर औगुण भूति छौतुकाकार ॥  
 असिषोगी द्वुर जे दुर्वे तेहना अपार ग्रकार ॥ इम० ॥५६॥  
 कल्पटपी विहया करे भयह चेष्टाकी जान ॥  
 अपलाई परिहास है तेहयी कल्पटपी धाम ॥ इम० ॥५७॥  
 आरंभ परिप्रह मोट को पंच इन्द्रिय धात ॥  
 निंथ आहार भरक तथा हेतु अपरे धात ॥ इम० ॥५८॥  
 मापा करे तसु गोपने कृजा देवे आत ॥  
 कृजा मापा बोलता तिरंभ चंभ कात ॥ इम० ॥५९॥

### अथ ४ सम्यक्त ढयवहारी ।

आरित दर्हन अपाम को छीझिये आभ्यास ॥  
 सगत छीझे साधुनी जेह है जगधी उदास ॥ इम० ॥५०॥

[ ७१ ]

भए कुदर्शन की तजो, संगति ए व्यवहार ॥  
समकितना तुम जाणउयो, इम च्यारे परकार ॥ इम० ॥५१॥

अथ ३ आयतन ।

अन्यमती तस देवता, चैत्य बन्दे नांहि ॥

अथ छुंडी

राजागण सुगुह सवल, वृत्ती छुंडी मांहि ॥ इम० ॥५२॥

अथ ४ स्वभाव ।

न्याय करे न्याय भाखइ, न्याय को पक्षपात ॥

न्याय विचारे मन धरे, लज्जा नीति की वात ॥ इम० ॥५३॥

जाको वक्षभ न्याय है, न्यायहि को आचार ॥

न्यायहि सों सब ही करे, वृत्ति आध्यो आहार ॥ इम० ॥५४॥

अथ १२ विरद सवैया तेईसा ।

तौ तत्व जान १ सहाय न वंडे २ डिगे नहिं देव अदेव डिगाये ३ ।

त्रैप विना धरे दर्शन को ४ जिन सब्ब अर्थ करे समुजाये ५ ॥

धर्म के राग रंगयो हिरदेह अति धर्म कहे आपस में मिलाये ७ ।

निर्मलचित्त द अभंग दुवार ८ अंते उरनांहि परग्रह जाये १०। इम० ५५

॥ दोहा ॥

पोपध छुँह तिथि को करे ११, प्रतिलाभे शुध साध १२ ॥

ऐसे समद्युषि तथा, आवक हैं आराध ॥ इम० ॥५६॥

॥ इति सम्यक्षं स्वरूपस्य पट्पंचासिका समाप्ता ॥ शुभं भवतु ॥

समावित छापनी ।

[ ୭୨ ]

## अथ श्री नव-तत्त्व लिख्यते ।

हवे विवेकी सम्यक्त्व दृष्टि जीवने नव पदार्थ जेहवा  
 छै तेहवा तथा रूप बुद्धि प्रमाणे गुरु आम्नायथी धारवा । ते  
 नव पदार्थना नाम कहे छै ॥ जीव तत्त्व १, अजीव तत्त्व २,  
 पुण्य तत्त्व ३, पाप तत्त्व ४, आश्रव तत्त्व ५, संवर तत्त्व ६,  
 निर्जरा तत्त्व ७, वंध तत्त्व ८, मोक्ष तत्त्व ९ ॥ हवे जीव तत्त्व  
 ते केहने कहिये ॥ चैतन्य लक्षण, सदा सउपयोगी, असं-  
 ख्यात प्रदेशी, सुख दुःखनो जांण, सुख दुःखनो वेदक तेहने  
 जीव तत्त्व कहिये ॥ १ ॥ अजीव तत्त्व ते केहने कहिये ॥ जड़  
 लक्षण, चैतन्य रहित, तेहने अजीव तत्त्व कहिये ॥ २ ॥ पुण्य  
 तत्त्व ते शुभ करणिये करी, शुभ कर्म ने उदय करी, जेहना  
 फल आत्मा ने भोगवतां मीठां लागे तेहने पुण्य तत्त्व कहिये  
 ॥ ३ ॥ पाप तत्त्व ते अशुभ कमाणिये करी ॥ अशुभ कर्म ने  
 उदये करी, जेहना फल आत्मा ने भोगवतां कड़वा लागे ॥  
 तेहने पाप तत्त्व कहिये ॥ ४ ॥ आश्रव तत्त्व ते अब्रत ने अपच्च-  
 खाणे करी, विषय कपाय ने सेववे करी, आत्मारूप तलाव ने  
 विषे, इन्द्रियादिक घड़नाले छिड़े करी, कर्म पाप रूप जलनो  
 प्रवाह आवे, तेहने आश्रव तत्त्व कहिये ॥ ५ ॥ संवर तत्त्व ते  
 जीव रूप तलाव ने विषे कर्म रूप जल आवतां ब्रत पच्च-  
 खाणादिक द्वार देवे करी रोकिये, तेहने संवर तत्त्व कहिये ॥  
 ६ ॥ निर्जरा तत्त्व ते आत्माना प्रदेश थी वार भेदे तपस्याये  
 देश थकी कर्मनुं निर्जरबुं दूर थाबुं तेहने निर्जरा तत्त्व  
 कहिये ॥ ७ ॥ वंध तत्त्व ते आत्मा प्रदेश ने कर्म पुद्गलना दल  
 खीर नीरनी परे, लोह पिंड अग्निनी परे लोली भूत थई  
 वंधाय, तेहने वंध तत्त्व कहिये ॥ ८ ॥ मोक्ष तत्त्व ते सकल

आरमाना प्रवेश थी सकल कर्मनु हुट्टुं सकल वधुं  
 मूकाद्यं मकह कार्यमी सिद्धि याय तेहमे मोक्ष तत्त्व  
 कहिये ॥ १ ॥ ए नव पदार्थनु जाणपणु तेहमे तत्त्व कहिये ॥  
 हवे जीवनो एक मेह ई सकल जीवोनु जैतत्त्व सहाय एक  
 ई । माटे संप्रहसये करी एक मेहे जीव कहिये तथा वे  
 प्रकारे पिंख जीव कहिये ॥ जस १ यावर २ ॥ तथा सिद्ध १  
 ने समारी २ ॥ तथा असु मेहे जीव, ली वेद २, पुरुष वेद ३,  
 नपुसक वेद ४ ॥ तथा मवसिद्धिया १, अमवसिद्धिया २  
 लोमवसिद्धिया जो अमवसिद्धिया ३ ॥ तथा अपार मेहे लीव।  
 नारकी १ तिर्यक्ष २, मनुप्य ४ देवता ५ ॥ तथा असु दर्ढनी  
 १ अप्यु दर्ढनी २, अवधि दर्ढनी ३, केवल दर्ढनी ४ ॥  
 तथा पांख प्रकारे जीव एकेत्रिय १ बेहन्द्रिय २, तेहन्द्रिय ३  
 अउर्द्ध्रिय ४ पर्यन्त्रिय ५ ॥ तथा सजोगी १ मनजोगी २  
 वस्त्रजोगी ३ जायजोगी ४ अजोगी ५ ॥ तथा व प्रकारे  
 लीव पृथ्वीकाय १ अपकाय २ तेहकाय ३ वाहकाय ४  
 वनस्पतिकाय ५, वसकाय ६ ॥ तथा सकपायी १ कोह-  
 कपायी २ मानकपायी ३ मायाकपायी ४ लोमकपायी ५,  
 अकपायी ६ ॥ तथा सात प्रकारे लीव नारकी १ तिर्यक्ष २,  
 लिर्यक्षणी ३ मनुप्य ४ मनुप्यणी ५, देवता ६ देवी ७ ॥  
 तथा आठ प्रकारे जीव भक्षेणी १ हृष्णक्षेणी २ नीस्क्षेणी ३  
 कापूतक्षेणी ४ सेज्जुलक्षणी ५ पच्चक्षेणी ६ छङ्गक्षेणी ७ अक्षेणी  
 ८ ॥ तथा नव प्रकारे जीव पृथ्वी १ अप २, तेन ३ वाह ४  
 वनस्पति ५ बेहन्द्रिय ६ तेहन्द्रिय ७, अउर्द्ध्रिय ८, पर्यन्त्रिय  
 ९ ॥ तथा दश मेहे जीव एकेत्रिय १ बेहन्द्रिय २, तेहन्द्रिय  
 ३ अउर्द्ध्रिय ४ पर्यन्त्रिय ५, ए ६ जा अपज्ञाता ने प्रदाता  
 एव १० ॥ तथा इण्ठारे मेहे जीव एकेत्रिय १ बेहन्द्रिय २,

तेइन्द्रिय ३, चउरिन्द्रिय ४, नारकी ५, तिर्यंच ६, मनुष्य ७,  
 भवनपति ८, वाणव्यंतर ९, ज्योतिषी १०, वैमानिक ११ ॥  
 तथा १२ भेदे जीव, पृथिवी १, अप २, तेउ ३, घाउ ४,  
 चनस्पति ५, चसकाय ६, ए छुना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं  
 १२ ॥ तथा तेरह भेदे जीव, कृष्णलेशी १, नीललेशी २,  
 कापूतलेशी ३, तेजुलेशी ४, पद्मलेशी ५, शुक्ललेशी ६, ए ८  
 ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं १२ ने एक अलेशी १३ एवं १३ ॥  
 हवे जीवना १४ भेद कहे छै ॥ सूक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो १,  
 ने प्रजाप्तो २, वादर एकेंद्रिय नो अप्रजाप्तो ३, ने प्रजाप्तो ४,  
 तेइन्द्रियनो अप्रजाप्तो ५, ने प्रजाप्तो ६, तेइन्द्रियनो अप्रजाप्तो  
 ७, ने प्रजाप्तो ८, चउरिन्द्रियनो अप्रजाप्तो ९, ने प्रजाप्तो १०,  
 असंक्षी पंचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ११ ने प्रजाप्तो १२, संक्षी पंचें-  
 द्रियनो अप्रजाप्तो १३ ने प्रजाप्तो १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तार  
 नये करीने पांचसे त्रेसठ भेद जीवना कहे छै ॥ तेहमां त्रणसे  
 ने त्रण भेद मनुष्यना, एकसो अट्ठाखु भेद देवताना, अड़-  
 तालीस भेद तिर्यंचना, चउद भेद नारकीना, ए ५६३ भेद  
 जीवना ॥ हवे तेहमां मनुष्यना ३०३ भेद कहे छै, ते १५ कर्म  
 भूमिना मनुष्य, ३० अकर्म भूमिना मनुष्य, ५६ अन्तर ढीपना  
 मनुष्य एवं १०१ क्षेत्रना गर्भज मनुष्यना, अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता  
 एवं २०२ ने एक सौ ने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अ-  
 प्रजाप्ता एवं ३०३ मनुष्यना ॥ हवे कर्मभूमि ते केहने कहिये,  
 असी १, मसी २, कृषी ३, ए तीन प्रकारना व्यापारे करी  
 जीवे तेहने कर्म भूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते कर्म भूमिना क्षेत्र  
 केटला छै ॥ ५ भरत ५ द्वारवरत ने ५ महाविदेह एवं  
 पंद्रह ॥ ते कर्म भूमि किहाँ छै ॥ एक लाख जोजननो जंबू-  
 ढीप छै, तेहमां १ भरत, १ द्वारवरत, १ महाविदेह, ए तीन

सुब कर्म भूमिनां जम्बूदीपमां हैं तेहमे परतो वेलासु योजननो लबण समुद्र है, तेहने परतो चारलाला जोजननो आत फी जरह ढीप है तेहमाँ २ मरत, २ इरपत, २ महा-विदेह है, तेहमे परतो ८ साल जोजननो कालोद्विधि समुद्र है। तहमे परतो ८ लाल योजननो अर्द्ध पुण्कर ढीप है। तेहमाँ २ मरत २ इरपत २ महाविदेह हैं एव छह १२ नै दे पभर कर्म भूमिना मनुष्य कहा ॥

इवे ४० अकर्म भूमिना मनुष्य कहे हैं ॥ अकर्म भूमि त केहमे कहिये ॥ ३ अकर्म रहित वश प्रकारना कस्यसूक्षे करी नै जीव तेहमे अकर्म भूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केहसा है ॥ ४ हेमवय ५ हिरण्यवय ६ हरिषास ७ रमक्षास ८ देव कुरु ९ उत्तर कुरु एव ३० ॥ इवे जम्बूदीपमाँ १ हेमवय २ हिरण्यवय ३ हरिषास, ४ रमक्षास ५ देवकुरु ६ उत्तरकुरु एव ७ लेङ जम्बूदीपमाँ हैं ॥ यातकी जरहमाँ दे दे जालपा ॥ एव ८ अर्द्ध पुण्कर ढीपमाँ दे दे आख्या एव ३० अकर्म भूमिना मनुष्य कहा ॥

इवे कृष्ण अन्तरद्वीपना मनुष्य कहे हैं ॥ जम्बूदीपना भरतकुरु भी मर्यादामो करण्डार चूलहिमवस्त नामा पर्वत है ते पीला सोमामय है ते सो जोजननो केंचो है सो गाऊनो कटो है एक हजार चायन जोजन ने बार कलानो पाहालो है चौपीस हजार भवसे पर्वति सोममनो लांघो है ॥ तेहमे पूर्व पश्चिम मै ऐहड़ वे ये ढाढ़ी मीकड़ी है एके की ढाढ़ी चौरासी है चौराठी जोजन भासेहरी लांधी है ॥ ते एके की ढाढ़ी ऊपरे सात चात अन्तरद्वीपा है ते अन्तरद्वीपा किहाँ है ॥ भगतीना कोठड़ी १०० जोजन लबण समुद्रमा

जाइये तिवारे पहिलो अन्तरद्वीपो आवे छै । ते ३०० जोजन  
नो लांवो ने पहोलो छै ॥ तिहाँथी ४०० जोजन जाइये, तिवारे  
बीजो अन्तरद्वीपो आवे छै । ते ४०० जोजन लांवो ने पहोलो  
छै ॥ तिहाँथी ५०० जोजन जाइये तिवारे बीजो अन्तरद्वीपो  
आवे ते ५०० जोजननो लांवो ने पहोलो छै ॥ तिहाँथी छः से  
जोजन जाइये तिवारे चौथो अन्तरद्वीपो आवे ते ६००  
जोजननो लांवो ने पहोलो छै ॥ तिहाँथी ७०० जोजन जाइये  
तिवारे पांचमो अन्तरद्वीपो आवे ते ७०० जोजननो लांवो  
ने पहोलो छै ॥ तिहाँथी ८०० जोजन जाइये तिवारे छट्ठो  
अन्तरद्वीपो आवे ते ८०० जोजन लांवो ने पहोलो छै ॥  
तिहाँथी ९०० जोजन जाइये तिवारे सातमो अन्तरद्वीपो  
आवे ते ९०० जोजन नो लांवो ने पोहोलो छै एवं सात चोकू  
२८ अन्तरद्वीपा जाणवा ॥ एमज इरवत क्षेत्रनी मर्यादा नो  
करणहार शिखरीनामा पर्वत छै, ते चूल हिमवंत सरीखो  
जाणवो ॥ तिहाँ प्रण २८ अन्तरद्वीपा छै ॥ अद्गवीस दूरणा  
२९ अन्तरद्वीपा जाणवा ॥ अन्तरद्वीपाना मनुष्य ते केहने  
कहिये ॥ हेठे समुद्र छै अने ऊपर अधर डाढामां द्वीपाना  
रहेनार छै, माटे अन्तरद्वीपना मनुष्य कहिये ॥

हवे १०१ क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्य, १४ स्थानकमां  
उपजे छै ते कहे छै ॥ उच्चारेसु वा ते वडी नीतमां ऊपजे १,  
पासवणेसु वा ते लघु नीतमां ऊपजे २, खेलेसु वा ते वलखामां  
उपजे ३, संघाणेसु वा ते लिंटमां उपजे ४, बन्तेसु वा ते बमन-  
मां उपजे ५, पीतेसु वा ते नीला पीला पीतमां उपजे ६, पुइए-  
सुवा ते परुमां उपजे ७, सोणिएसु वा ते रुधिरमां उपजे ८,  
सुक्केसु वा ते बीर्यमां उपजे ९, सुक्कपोगंलपरिसाडिएसु वा ते

वीर्यादिकना पुद्गल सूक्षाणा ते फिरि भीना पाय लेहमाँ ऊप  
 १०, विगापजीयकहेयरेसु था ते मनुप्यमा कहेयरमाँ ऊप  
 ११, अस्त्रपुरिसासभोगेसुवा ते रुदी पुरुषना संजोगमाँ ऊप  
 १२ नगरनिष्ठमणेसुवा ते नगरनी खालोमाँ ऊपजे १३, सधं  
 सुचेष असुइठाएसुवा ते सधं मनुप्य सम्बन्धी अशुद्धि स्वाँ  
 कोमाँ ऊपजे १४ ॥ एव १०१ देवता समुद्धिम सनुप्य ।  
 ग्रजासा एव सधं मिशी १०५ भेद मनुप्यमा कहा ॥

हथे देवताना १६८ भेद कहे है ॥ लेहमाँ वश भव  
 पतिना नाम ॥ असुरकुमार १, नागकुमार २ सुवर्णकुमार ३  
 विज्ञकुमार ४ अग्निकुमार ५ श्रीपकुमार ६ उद्धिकुमार  
 दिवाकुमार ८, पद्मकुमार ९ अणितकुमार १० ॥ हथे १  
 परमाधामीना नाम कहे है ॥ अम्ब १ अम्बरीस २, शाम  
 सबक्ष ४ बद्र ५ देवद्र ६, काल ७ महाकाल ८, असिपच  
 अनुप्य १० कुम ११ चान्दु १२ चंतरखी १३ चरसर १४  
 महाभोप १५ ॥ छोल वाणव्यतरना नाम ॥ पिण्डाच १ भु  
 २, जह ३, चाहस ४ छिघर ५, छिपुरिम ६ महोरण ७  
 गंधर्व ८, आहपर्वी ९ पादुपर्वी १० इसिवाह ११ भूष  
 १२, कंदिय १३ महाकंदिय १४ कोहड १५ पर्वघदेव १६  
 हथ जेमकासा नाम ॥ अत्यञ्जनका १ पाहञ्जनका २ सया  
 अमका ३ शुपक अमका ४ अञ्जनमका ५ पुष्य अमा  
 ६ फल अमका ७ वीय अमका ८ विज्ञु अमका ९, अर्द  
 यत अमका १० ॥ वश अपातिधीना नाम ॥ अम्बमा १ स  
 २, ग्रह ३ नहान ४ ताप ५ ए ६ चल ते अहीडीपमाँ है  
 ७ स्थिर ते अहीडीप वाहिर है पर्व १० ॥ हथे १ छिलिपी  
 नाम ॥ अल पक्षिया १ वश सागरिया २, लेर सागरिया ३

गेव लोकांतिकना नाम ॥ सारस्वत १, आदित्य २, विन्हि ३,  
वरुण ४, गर्हतोया ५, तोपिया ६, अव्यावाधा ७, अग्निच्चा ८,  
रिठा ९ ॥ वार देवलोकना नाम ॥ सुधर्म १, ईशान २, सन्-  
कुमार ३, महिंद्र ४, ब्रह्मलोक ५, लंतक ६, महाशुक्र ७,  
सहसर ८, आण्ट ९, प्राण्ट १०, आरण ११, अच्छुय १२ ॥  
नव ग्रीवेक ना नाम ॥ भद्रे १, सुभद्रे २, सुजाए ३, सुमाणसे  
४, पियदर्शणे ५, सुंदर्शने ६, आमोहे ७, सुपडिवदे ८, जशो-  
धरे ९ ॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम । विजय १, विजयंत २,  
जयंत ३, अपराजित ४, सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ ए ६६ जातना देवता  
अप्रजासा ने ६६ जातना प्रजासा एवं १६८ भेद देवताना कह्या ।

हवे तिर्यंचना ४८ भेद कहे छै ॥ पृथिवी १, पाणि २,  
तेउ ३, वाऊ ४, ए ४ सूक्ष्म ने ४ वादर एवं ८ ॥ ए ८ ना अ-  
प्रजासा ने ८ ना प्रजासा एवं १६ ॥ वनस्पति ना ३ भेद ॥  
सूक्ष्म १, प्रत्येक २, ने साधारण ३, ए ३ ना अप्रजासा ने ३  
ना प्रजासा एवं ६ एवं २२ एकेंद्रियना ॥ ब्रण विकलेन्द्रिय वे-  
इन्द्रिय ॥, तेइन्द्रिय २, चउरिन्द्रिय ३, ए ३ ना अप्रजासा ने ३  
ना प्रजासा ए ६ एवं २८ ॥ जलचर १, थलचर २, उरपर ३,  
भुजपर ४, खेचर ५, ए ५ समुच्छिम ने ५ गर्भज एवं १० ना अ-  
प्रजासा ने १० ना प्रजासा एवं २० एवं ४८ भेद तिर्यंचना कह्या ।

हवे १४ भेद नारकीना कहे छै ॥ सात नरकना नाम ॥  
घमा १, वंशा २, शिला ३, अंजणा ४, रिठा ५, मधा ६, माघ-  
वइ ७ ॥ हवे ७ ना गौत्र कहे छै ॥ रत्नप्रभा १, शर्करप्रभा २,  
बालुप्रभा ३, पंकप्रभा ४, धूमप्रभा ५, तमप्रभा ६, तमतमा-  
प्रभा ७, ए ७ ना अप्रजासा ने ७ ना प्रजासा एवं १४ भेद  
नारकीना कह्या ॥ एवं सर्व मिली ने ५६३ भेद जीवना  
जांगवा ॥ इति जीवतत्वं समाप्तम् ॥ १ ॥

हय अजीवनाय ना १५ मेव कहे सु ॥ परमास्तिकायना  
स्त्रघ्न १ दश २, प्रदश ३, अधर्माभिक्षयना अक्षघ्न ४  
देश ५, प्रदश ६, आकाशास्तिकायना कालघ्न ७, देश ८  
प्रदेश ९, अद्वामयना काल १० ए १० भेद अरूपी अजीवना  
कहा ॥ हये रूपी अजीवना ११ भेद कहे सु ॥ पुष्टसास्तिकाय  
मो अक्षघ्न १२, देश १३ प्रदेश १४ परमाणुपुष्टस १५ एवं १६ ॥

हये दद्यहार दिस्तार मर्येकरी १६० भद्र अजीवतस्तना  
कहे ई ॥ तहमा १० भेद अरूपी अजीवना कहे सु ॥ परम स्ति  
काय द्रव्ययकी एक १ अवयकी लाल प्रमाण २ काल यकी  
अमादि अमत ३ माय यकी अवयें अगम्ये अरसे अकासे  
अमूर्ति ४ गुणयकी चाल पु सहाय ५ अधर्माभिक्षकाय द्रव्य  
यकी एक ६ देव यकी लोकप्रमाण ७ काल यकी अमादि  
अमत ८, माय यकी अवयें अरंभे अरसे अकासे अमूर्ति ९  
गुणयकी स्थिर सहाय १० आकाशास्तिकाय द्रव्य यकी एक  
११ देव यकी लोकालोक प्रमाण १२ काल यकी अमादि  
अमत्स १३ माय यकी अवयें अगम्ये अरसे अकासे अमूर्ति  
१४ गुण यकी अवगाहना दान १५ हये कास द्रव्य यकी  
अनेक १६ देव यकी अहीर्वदीप प्रमाण १७ कालयकी अमादि  
अमत्स १८ माय यकी अवयें अरंभे अकासे अमूर्ति १९ गुण  
यकी चतुरा लक्षण २० एव २० ते १० घूर्वे कहा से एवं २०  
भेद अरूपी अजीवना जाँचवा ॥

हये २१० भेद रूपी अजीवना कहे हैं तेहमा एवं १  
कालो १ शीलो २ रातो ३ शीलो ४ ओलो ५ ॥ एके का  
बर्द्धमादि बीश बीश भेद लाभे ते २ गंध ५ रस ५ संठाय  
८ रपर्य एवं बीश पंचा सी ॥ हये २ गंध ते सुरमिंगाय १

दुरभिंध २, ॥ एकेका गंधमाहि त्रेवीस त्रेवीस भेद लाभे ॥  
 ५ वर्ण, ५ रस, ५ संठाण, द स्पर्श, एवं २३ दृ छयांलीस भेद  
 जाणवा ॥ हवे ५ रस ते तीखो १, कड्डो २, कपायलो ३,  
 खाटो ४, मीठो ५ एके कारसमां वीश वीश भेद लाभे ५ वर्ण,  
 २ गंध, ५ संठाण, द स्पर्श एवं २० पंचा सौ । हवे ५ संठाण ।  
 परिमंडल संठाण १, वट संठाण २, चंश ३, चउरंस ४,  
 आयत संठाण ५ ॥ एके का संठाणमां वीश वीश भेद लाभे ॥  
 ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, द स्पर्श एवं २० पंचा सौ ॥ हवे द  
 स्पर्श ॥ खरखरो १, सुंहालो २, भारि ३, हलबो ४, टाढो ५,  
 उन्हो ६, चोपड्यो ७, लूखो द ॥ एके का स्पर्शमां तेवीस  
 तेवीस भेद लाभे ॥ ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ५ संठाण, ६  
 स्पर्श एवं २३ भेद लाभे ॥ खरखरामां खरखरो ने सुंहालो वे  
 वर्जवा ॥ एम वे वे स्पर्श वर्जवा एवं २३ अठा १८४ एवं सर्व  
 मिली ने ५३० भेद रूपी अजीवना कहा ॥ एवं सर्व मिली ने  
 ५६० भेद अजीवना जाणवा ॥ इति अजीवतत्वं समाप्तं ॥२॥

हवे नव भेदे पुण्य उपराजे ते कहे छै ॥ अन्नपुन्ने ४,  
 पाणपुन्ने २, लयणपुन्ने ३, शयणपुन्ने ४, बत्थपुन्ने ५, मन-  
 पुन्ने ६, बचनपुन्ने ७, कायपुन्ने द, नमस्कारपुन्ने ८, ए ६  
 भेदे पुण्य उपराजे ॥ तेहना शुभ फल ४२ भेदे भोगवे ॥ शाता  
 वैदनीय १, ऊँच गोत्र २, मनुष्य गति ३, मनुष्यानुपूर्वी ४,  
 देवतानी गति ५, देवानुपूर्वी ६, पंचेंद्रियनी जाति ७,  
 उदारिक शरीर द, वैक्रेय शरीर ६, आहारक शरीर १०, तेजस  
 शरीर ११, कार्मण शरीर १२, उदारिकना अङ्ग उपांग १३,  
 वैक्रेयना अङ्ग उपांग १४, आहारकना अङ्ग उपांग १५, वज्र-  
 रिषभनाराचसंघयण १६, समचउरंशसंठाण १७, शुभवर्ण १८,

हवे अजीयतरय मा १४ मेह कहे हैं ॥ अमांसितकायनो<sup>२</sup>  
स्फुर्य<sup>३</sup>, देश<sup>४</sup>, प्रदेश<sup>५</sup> अधर्मास्ति यनो स्फुर्य<sup>६</sup> ।  
देश<sup>५</sup>, प्रदेश<sup>६</sup>, आकाशास्तिकायनो स्फुर्य<sup>७</sup> देश<sup>८</sup> ।  
प्रदेश<sup>८</sup>, अजासमय काल १० प १० मेह अरपी अजीयता  
कहा ॥ हवे रूपी अजीयता प ८ मेव कहे हैं ॥ पुहलास्तिकर्ण  
मो स्फुर्य<sup>११</sup> देश<sup>१२</sup> प्रदेश<sup>१३</sup> परमाणुपुरुष १४ पर्य<sup>१४</sup> ॥

हवे इययदार पिस्तार मयेकरी १५० मेव अजीयतरयमा  
कहे हैं ॥ तहमा ३० मेव अरपी अजीयता कहे सु प्रथम स्ति  
काय द्रव्यथकी एक<sup>१</sup> देवथकी लोक प्रमाण<sup>२</sup> काल यकी  
अमादि अनंत<sup>३</sup> । भाव यकी अथयें अगम्ये अरसे अफासे  
अमूर्ति<sup>४</sup> गुणयकी घस्ता महाय<sup>५</sup>, अधर्मास्तिकाय द्रव्य  
यकी एक<sup>६</sup> देव यकी लोकप्रमाण<sup>७</sup> काल यकी अतादि  
अनम्त<sup>८</sup>, भाव यकी अथयें अगम्ये अरसे अफासे अमूर्ति<sup>९</sup>  
गुणयकी रिपर साहाय<sup>१०</sup> आकाशास्तिकाय द्रव्य यकी एक<sup>११</sup>  
११ देव यकी लोकालोक प्रमाण<sup>१२</sup>, काल यकी अतादि  
अनम्त<sup>१३</sup> । भाव यकी अथयें अगम्ये अरसे अफासे अमूर्ति<sup>१४</sup>  
गुण यकी अथगाहना वाम<sup>१५</sup>, हवे काल द्रव्य यकी  
अनेक<sup>१६</sup> देव यकी अदीर्दीप प्रमाणे<sup>१७</sup> कालयकी अतादि  
अनम्त<sup>१८</sup>, भाव यकी अथयें अगम्य अफासे अमूर्ति<sup>१९</sup> गुण  
यकी अतेना लक्ष्य<sup>२०</sup> एव २० मे १० पूर्वे कहा त एवे २०  
मेव अरपी अजीयता जांचुवा ॥

हवे १५० मेव रूपी अजीयता कहे हैं तेहमा वर्ष<sup>१</sup>  
कालो<sup>२</sup> भीलो<sup>३</sup>, रातो<sup>४</sup> पीलो<sup>५</sup> घोलो<sup>६</sup> ॥ एक का  
बर्षभादि बीश बीश मेव लाम ते २ ग्रन्थ<sup>७</sup> रस<sup>८</sup> संठाव  
द हर्षण्य एवं बीश धंडा सौ ॥ हवे २ ग्रन्थ ते सुरमिठाय<sup>९</sup>

मान ३७. माया ३८. लोभ ३९. अपच्चखाणावरणीय क्रोध ४०.  
 मान ४१. माया ४२. लोभ ४३. पच्चखाणावरणीय क्रोध ४४.  
 मान ४५. माया ४६. लोभ ४७. संजलनोक्रोध ४८. मान ४६.  
 माया ५०. लोभ ५१. हास्य ५२. रति ५३. अरति ५४. भय  
 ५५. शोक ५६. दुगंछा ५७. खी वेद ५८. पुरुषवेद ५९.  
 नपुंसकवेद ६०. तिर्यंचनी गति ६१. तिर्यंचनी अनुपूर्वी ६२.  
 एकेद्विद्यपर्युग्म ६३. वेइन्द्रियपर्युग्म ६४. तेइन्द्रियपर्युग्म ६५. चउ-  
 रिद्रियपर्युग्म ६६. अशुभ चालवानी गति ६७. उपघात नामकर्म  
 ६८. अशुभवर्ण ६९. अशुभगंध ७०. अशुभरस ७१. अशुभ  
 स्पर्श ७२, ऋृपभनाराच संघयण ७३. नाराचसंघयण ७४.  
 अद्देनाराच संघयण ७५. किलकुसंघयण ७६. छेवदुसंघयण  
 ७७. निगोहपरिमंडलसंठाण ७८. सादिसंठाण ७९. वामन-  
 संठाण ८०. कुञ्जसंठाण ८१. हुंडसंठाण ८२ एवं ८२भेद पाप-  
 तत्त्वना जांणवा इति पापतत्त्वं समाप्त ॥ ४ ॥

हवे आश्रव ना सामान्य प्रकारे २० भेद कहे छै ॥  
 मिथ्यात्व ते आश्रव १. अब्रत ते आश्रव २. प्रमाद ते आश्रव  
 ३. कपाय ते आश्रव ४. अशुभजोग ते आश्रव ५. प्राणाति-  
 पात ते आश्रव ६. मृषावाद ते आ० ७. अदत्तादान ते आ०  
 ८. मैथुन ते आ० ९. परिग्रह ते आ० १०. श्रोत्रेन्द्रिय असंवरे  
 आ० ११. चक्षुइन्द्रिय आ० आ० १२. ग्राणेन्द्रिय आ० आ०  
 १३. अ० १४. स्पर्शेन्द्रिय आ० आ० १५. वचन  
 ०१६. भंडउपगरणउपधिजिम तिम  
 ते आ० २० ॥ हवे  
 ५ इन्द्रिय मोकली मुके  
 ग एवं १७; ने २५

शुभग्रन्थ १६, शुभरस २० शुभस्पर्श २१ अगुहलमुनाम २९  
 पराघातनाम २३, उद्धासनाम २४ आतापनाम ५ उपात-  
 नाम २६, शुभचालपानी गति २७, मिर्माल नाम २८, वस-  
 नाम २९, वाहरनाम ३० पजापतनाम ३१ प्रत्येकनाम ३२  
 स्थिरनाम ३३ शुभनाम ३४ सौभग्यनाम ३५, चुलरनाम  
 ३६ आदेयनाम ३७, अशोकीर्तिनाम ३८ देवतादु आदर्श  
 ३९, मनुष्यदु आदर्श ४० तिर्यक्षु आदर्श शुग्रस्वत ४१  
 तीर्थफ़र नाम कर्म ४२ एवं ४२ भेद पुण्य ना जाणको ॥ इति  
 पुण्यठत्व समाप्त ॥ ३४

इते १८ प्रकारे पाप उपर्यज्ञे से कहे हैं ॥ प्रलातिपात्र  
 १ मूर्याकाद २ अहतादान ३ मैथुन ४ परिप्रह ५ क्लोष ६  
 मान ७ मामा ८ सोम ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२,  
 अग्न्याक्षयान १३ पैद्यन्य १४ परपरिचाल १५ इति अरति  
 १६ भाषा मोसो १७ मिष्ठार्दसप्ससङ्ग १८ प १९ ॥ इते  
 सेहमा अहुम पात्र २० प्रकारे भोगवे से कहे हैं ॥ मतिकाना  
 वरणीय १ भूतकानावरणीय २ अब्दिकानावरणीय ३ मन  
 पर्वपक्षानावरणीय ४ कैवल्यानावरणीय ५ दानातराय ६  
 कामातराय ७ मोगातराय ८ उपमोगातराय ९ वीर्यातराय  
 १० मिद्रा ११ मिद्रा १२ प्रत्यक्षा १३, प्रत्यक्षा प्रत्यक्षा  
 १४ वीक्ष्यनिद्रा १५ अचुक्षर्यमावरणीय १६ अचुक्षर्यमा-  
 वरणीय १७ अब्दिदर्यमावरणीय १८ कैवल्यदर्यमावरणीय  
 १९, मिष्ठानाव २० अशाता देवमीय २१ मिष्ठान मोहनीय २२  
 स्वावरणीय २३ सूखमपर्ण २४, अपर्जीतपर्ण २५ साधारण-  
 पर्ण २६, अस्तिरनाम २७ अगुमनाम २८ शीर्मान्य २९,  
 चुलरनाम ३० अशोकीर्ति नाम ३१ नरकनीगति ३२  
 नरकदु आदर्श ३३ नरकानुपूर्वी ३५ अनंतामुर्खीकोष ३६,

रीग नो० १६, तृणस्पर्शनो० १७, मैलनो० १८, सत्कारं पुर-  
स्कारनो० १९; प्रज्ञानो० २०, अज्ञाननो० २१, दंसणं परिसह  
२२, ए० २२ ने द० पूर्वे कहा ते० एवं ३०, खंति ३१, मुक्ति ३२,  
अज्ज्वे ३३, मद्वे ३४, लाघवे ३५, सच्चे ३६, संजमे ३७,  
तवे ३८, चियाए० ३९, वंभच्चेरवासे ४०, ए० १० प्रकारे जती  
धर्म आराधवो ने १२ भावना भाववी । तेहना नाम ॥ अनित्य  
भावना १, अशरणा भा० २, संसार भा० ३, एकत्व भा० ४,  
अन्यत्व भा० ५, अशुचि भा० ६, आश्रव भा० ७, संवर भा० ८,  
निर्जरा भा० ९, लोक भा० १०, वोध भा० ११, धर्म भा० १२,  
ए० ४० ने १२ भावना मलीने वावन ॥ सामायिक चारित्र ५३,  
छैषीपस्थानीय० ५४, परिहार विशुद्ध० ५५, सूक्ष्म संपराय  
५६, जथाख्यात ५७, ए० ५७ भेद० संवर तत्त्वना जांगवा ॥  
इति संवर तत्त्वं समाप्तं ॥ ६ ॥

हवे० निर्जराना १२ भेद० कहे छै ॥ अनशन १, उणोदरी २,  
वृत्तिसंक्षेप ३, रसपरित्याग ४, कायकलेश ५, पडिसंलीणया  
६, ए० ६ छै भेद० वाह्यना कहा ॥ ११ हवे० छै भेद० अभ्यंतरना  
कहे छै ॥ प्रायछित्त ७, विनय ८, वेयवच्च ९, सञ्जभाय १०,  
ध्यान ११, काउसग्ग १२, एवं १२ भेद० निर्जरा तत्त्वना कहा  
॥ ७ ॥

हवे० वंध० तत्त्वना ४ भेद० कहे छै ॥ प्रकृति वंध १, स्थिति  
वंध २, अनुभाग वंध ३, प्रदेश वंध ४, प्रकृति वंध ते० कर्मनो  
स्वभाव तथा परिणाम ५, स्थिति वंध ते० जे० कर्मनी जेटली  
स्थिति छै० तेटली २, अनुभाग वंध ते० रस तीव्र मंद० रसादि  
कर्मनो० ३, प्रदेश वंध ते० कर्म पुद्गलना दल ४ ए० ४ वंधनुं स्व-  
रूप० मोदक ने० हण्ठांते० करी वतावे छै ॥ जिमं कोई० मोदक घणा

किया १ कायिकी किया २, अचिकरणकी किया ३, पात्र  
सिया ४, पारितावयिया ५, पासारयाय ६, आरभिया ७ पर्व  
गद्धिया ८ मायावतिया ९, अपश्यग्राणवतिया १०, मिहा  
इसलष्टतिया ११, दिठीया १२, पुष्टिया १३, पातुचिया १४,  
सामंतोयिया १५, नेसविया १६, साहिया १७, आहु  
विया १८ विद्वारविया १९ असामोगी २० अणारक्ते  
वतिया २१, अनापदगी २२ मासुदाळी २३ एव्यतिया २४  
शोसवतिया २५ इरियावद्विया किया २६ एवं २५ ने १७ बेता  
कीस में आध्यत तत्त्वना जास्था ॥ इति आध्यत तत्त्वं समाप्तं  
॥ ४ ॥

हवे संवरना मामस्य प्रकारे २० भेद कहे हैं ॥ सम  
क्षित ते सवर १ ब्रतपञ्चकाल ते सवर २ अप्रसाद ते सं० १  
अकपाय ते सं० ४, शुभजोग ते सं० ५, जीवदणा पालकी ६  
सं० ६ सात्य वचन वालदृ ते सं० ७ दत्तवत्र महस ते सं०  
८, शियत पालदृ ते सं० ९, अपरिग्रह ते सं० १० इन्द्रिय  
जोग ११ ए द मुं संवरद्वृ ते सं० १२ भैङ्गदपगरस उपभि उत  
नाये लिये मूढि ते सं० १३, शुचिकुसव्या न करे ते सं० १४  
हवे विशेष १५ भेद कहे हैं ॥ इर्णा सुमति १ मापा सुमति  
२ एव्यता सुमति ३ आपायमंडमत्तनिक्षेपणा सुमति ४  
उच्चारपासवणक्षेत्रजलसिंघाणपरिठावयिया सुमति ५ ए  
सुमति ६ गुति ममगुति ७ वयनगुति ८ कायगुति ९  
प्रवचनमाता आहरया ने १२ परिचह सहेवा ते कहे हैं  
शुभानो परिपह १ दृक्षानो २, टाढ़नो ३ तापनो ४  
दंशुमशुनो ५, अचेहनो ६ अरविनो ७ कीनो ८  
चरियनो ९ बेसवानो १० सेखानो ११ आफोग वक्षनो  
नो १२ वधनो १३ आचवानो १४ असामनो १५

एटला देवमां सिद्ध रह्या है ॥ ३ ॥ स्पर्शना द्वार ते सिद्धक्षेत्र  
 शी काँईक अधिकी सिद्धनी स्पर्शना है ॥ ४ ॥ कालद्वार ते  
 एक सिद्ध आश्री सादि अनन्ता सर्वे सिद्ध आश्री अनादि  
 अनन्त ॥ ५ ॥ अन्तर ते फरी सिद्धने संसारमां अवतरणुं  
 नथी, अने एक सिद्ध तिहाँ अनन्ता सिद्ध है, अने अनन्ता  
 तिद्ध तिहाँ एक सिद्ध है, एटले सिद्ध सिद्धमां अन्तर नथी  
 ॥ ६ ॥ भाग ते सघला जीवने सिद्धना जीव अनन्त में भाग  
 है। लोक ने असंख्यात में भागे है ॥ ७ ॥ भाव ते सिद्धमां  
 क्षायक भाव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन, क्षायक समकित है।  
 अने परिणामिक भाव ते सिद्धपणो जाणवो ॥ ८ ॥ अल्प बहुत्व  
 द्वार ते सर्वथी थोड़ा नपुंसक सिद्ध, तेथी खी संख्यातगुणी  
 सिद्ध, तेथी पुरुष संख्यात गुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुंसक  
 १० सिद्ध थाय, खी २० सिद्ध थाय, पुरुष १०८ सिद्ध थाय  
 ॥ ९ ॥ त्रसंपणे १, वादरपणे २, संक्षीपणे ३, वज्रऋपभ-  
 नाराचसंघयणपणे ४, शुक्ल ध्यान पणे ५, मनुष्य गति ६,  
 क्षायक समकित ७, जथाख्यात चारित्र ८, पंडितवीर्य ९, १०,  
 केवलज्ञान ११, केवल दर्शन १२, भव्यसिद्धिक १३, परम-  
 युक्तललेशी १४, चरमशरीरी १५, ए १४ बोलनो धर्णी मोक्ष  
 जाय ॥ जघन्य वे हाथनी अवगहणावालो। उत्कृष्टी पांच से  
 पनुपनी अवगहणावालो। जघन्य नव वरसनो, उत्कृष्ट पूर्व-  
 कोडिना आयुष वालो कर्म भूमिनो होय ते मोक्षमां जाय ॥  
 रति मोक्ष तत्त्वं समाप्तम् ॥ १६ ॥ इति नव तत्त्वना बोल संपूर्ण ॥



प्रकारना द्रव्य मेर संज्ञोगे नीपमो ॥ यायु ने तथा पितृने दृढ़  
अङ्गेष्म मेर सेधे सहजे करी हुए तेरे समाव कर्दिये ।, तब  
तेज मोदक पद, मास देमास बसमास, चाटमास, चुपी ते  
रुपकरी रहे तेरे मिथनि कहिये ॥ । जिम पही तेज मोदक  
कोई कुषो होप कोई तीप होय तेज इस कहिये ॥ ॥ जिम  
पही तेज मोदक कोई अद्य इस मेर परिमाणे नीपमो । इस  
चही चहुपल मेर परिमाणे नीपमो एमज मोदक मेर पिते दृढ़  
परिमाल तेहमे प्रदेश वंश कहिये ॥ ॥ एकीपरे कर्मनो वध  
प्रकारे जाप्यो ॥ इति वध तत्त्वसमाप्तम् ॥ ८ ॥

हवे मोक्ष तस्म ते १५ मेरे सिद्ध याप ते कहे है ॥ १५  
सिद्धा १ अर्तीर्थ सिद्धा २ लीर्बहूर सिद्धा ३ अर्तीर्थ  
सिद्धा ४ पुहस्तलिंग सिद्धा ५ अम्यलिंग सिद्धा ६ लतिं  
सिद्धा ७ लीलिंग सिद्धा ८, पुक्षपलिंग सिद्धा ९, नपुसकलिंग  
सिद्धा १० लवंदुज सिद्धा ११ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा १२, उर  
बोधि सिद्धा १३, एक सिद्धा १४ एकेक सिद्धा १५, [तथा १५  
प्रकारे जीप मोक्ष जाप ते कहे है ॥] कामेकरी १ दर्शनेकरी २  
आरितेकरी ३ तपेकरी ४ ॥ तथा नवद्वार मोक्षना कहे है ॥  
खद्यपद्म प्रद्युपद्मा से मोक्ष गति पूर्वकाले हसी हमसा एव है  
आग मिथे आके हय ते कही अस्ति है पद्म आकाशना फूलवी  
पर नास्ति न थी ॥ १ ॥ द्रव्यप्रमाणे त सिद्ध अर्नेता है ॥ २  
मद्य जीव वी अनाम्त गुणा अधिक है पद्मस्ति वर्ती मे २३  
ददकवी सिद्धमा जीव अनाम्त गुणा अधिक है ॥ २ ॥ तेज  
द्वार ते सिद्धगिसा प्रमाणे है से सिद्धगिसा पिचलालीभ  
लाल जोगतवी लाली पांडी है ॥ अमै जिगुणी मद्दकरी  
परिवि है । अमै द्वैतप्रे ३१३ भगुप मे ३५ अगुल प्रमाणे

ला क्षेत्रमां सिद्ध रक्षा है ॥ ३ ॥ स्पर्शना द्वार ते सिद्धक्षेत्र  
 काँड़िक अधिकी सिद्धनी स्पर्शना है ॥ ४ ॥ कालद्वार ते  
 सिद्ध आश्री सादि अनन्ता सर्वे सिद्ध आश्री अनादि  
 नन्त ॥ ५ ॥ अन्तर ते फरी सिद्धने संसारमां अवतरणुं  
 ही, अने एक सिद्ध तिहाँ अनन्ता सिद्ध है ॥ अने अनन्ता  
 द्वं तिहाँ एक सिद्ध है, पटले सिद्ध सिद्धमां अन्तर नथी  
 है ॥ भाग ते सघला जीवने सिद्धना जीव अनन्त में भाग  
 लोक ने असंख्यात में भागे है ॥ ७ ॥ भाव ते सिद्धमां  
 यक भाव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन, क्षायक समकित है ।  
 परिणामिक भाव ते सिद्धपणे जाणवो ॥ ८ ॥ अल्प बहुत्व  
 ते सर्वथी थोड़ा नपुंसक सिद्ध, तेथी खी संख्यातगुणी  
 द्वं, तेथी पुरुष संख्यात गुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुंसक  
 सिद्ध थाय, खी २० सिद्ध थाय, पुरुष १०८ सिद्ध थाय  
 ॥ ९ ॥ त्रसपणे १, वादरपणे २, संक्षीपणे ३, वज्रऋपभ-  
 ाचसंघयणपणे ४, शुक्ल ध्यान पणे ५, मनुष्य गति ६,  
 यक समकित ७, जथाख्यात चारित्र ८, पंडितवीर्य ९, १०,  
 वलज्ञान ११, केवल दर्शन १२, भव्यसिद्धिक १३, परम-  
 मललेशी १४, चरमशरीरी १५, ए १४ वोलनो धर्णी मोक्ष  
 य ॥ जघन्य वे हाथनी अवगहणावालो । उत्कृष्टी पांच से  
 मुषनी अवगहणावालो । जघन्य नव वरसनो, उत्कृष्ट पूर्व-  
 डिना आयुष वालो कर्म भूमिनो होय ते मोक्षमां जाय ॥  
 ते मोक्ष तत्त्वं समाप्तम् ॥ १६ ॥ इति नव तत्त्वना वोल संपूर्ण ॥



# अथ श्री पाच देवना वोल लिख्यते ।

पदिसु नामङ्गार १ याजु गुणङ्गार २ त्रीजु उवास्त्वार  
 ३ चोयु मितिङ्गार ४ पांचमु अदि तथा विष्णुपङ्गार ५,  
 सद्गुणङ्गार ६ सातमु सचिन्द्रशङ्गार ७, आठमु अस्तुरङ्गार  
 ८ मात्स्मु अष्ट्य यशुत्यङ्गार ९ प १ ठार पांच देव ऊपर उठारे  
 हैं ॥ इवे पदिसु नाम ठार कहे हैं ॥ मयिय द्रष्ट्य देव १, नूर  
 देव २ घर्मदेव ३ देवाधिदेव ४ भाषद्य ५ ॥ ६ इवे तीहु  
 गुणङ्गार कहे हैं ॥ मनुप्य तथा तिर्यक पञ्चद्विष्य जेहमे देव  
 वामा उपजु ई लेहमे मयिय द्रष्ट्यदेव कहिये ॥ १ ॥ अब  
 एत, मवाधिभान, जेहमे ठोय तहमे नर देव कहिये ॥ २ ॥  
 सातुना सासाकीय गुणेकरी सहित ठोय लेहमे घर्मदेव कहिये  
 ॥ ३ ॥ अदार ठोय रहित मे बारे गुणे करी सहित ठोय लेहमे  
 देवाधिदेव कहिये ॥ अदार ठोय ते कहे हैं ॥ अहान १ कोप  
 २ मद ३ मान ४ माया ५, झोम ६ रंगि ७ अरति ८  
 मिद्रा ९, शोक १० असत्य ११ चोरी १२ सत्त्वर १३, मध्य  
 १४ माधिष्ठाप १५, ध्रम १६ श्रीकृष्णराम १७ द्वास्त्व १८, प  
 १९ ठोय रहित मे २० गुणेकरी सहित ते ११ गुण कहे हैं ॥  
 मगवन्त जिहाँ जिहाँ बमारहै, जेहे समोसरे तिहाँ तिहाँ इष्य  
 बोह सहितते मगवतारी वार गुणो झेहो तत्काल अणोक्तुह  
 वार आरे लामी मे छाँपडो कहे ॥ १ ॥ मगवन्त जिहाँ जिहाँ  
 समोसरे तिहाँ तिहाँ पांच अर्णा अचेत फूलमी दृष्टि याह  
 दिव्वक्षप्रमाणे इगला थाय ॥ २ ॥ मगवन्ती जोजम प्रमाणे  
 काणी विस्तरे सहुमा भममो संशय हरे ॥ ३ ॥ मगवन्त मे  
 लीबीस जोक आमर जिम्माय धधा ॥ अकारिक रत्नमध्य पादपीठ  
 सहित सिंहासन लामी मे आगले चाय ॥ ४ ॥ मामेडल झंडोहा

ने टेकारें तेज मंडल विराजे, दिशोदिशना अन्धकार टाले ॥  
 ६ ॥ आकाशे साढा वार क्रोड़ गेवी वाजा वागे ॥७॥ भगवंत-  
 नी ऊपरे त्रण छुत्र उपराउपरि विराजे ॥ ८ ॥ अनन्त ज्ञान  
 अतिशय ॥ ९ ॥ अनन्त अर्चा अतिशय परम-पूज्य पराणु १० ॥  
 अनन्त वचन अतिशय ॥ ११ ॥ अनन्त अपायापगम अतिशय  
 ते सर्व दोष रहित पराणु ॥ १२ ॥ ए १२ गुणेकरी सहित तथा  
 चौत्रीस अतिशय, पाँत्रीस वचनातिशय आदि देहने अनन्त  
 गुणे करी सहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥१३॥ भावदेव  
 ते भवनपति १, वाणव्यंतर २, ज्योतिषी ३, वैमानिक ४ ॥  
 ए ४ जातिना देवताना भावे प्रवर्ते छै तेहने भाव देव कहिये  
 ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रीजु उवचायद्वार कहे छै ॥ भविय द्रव्य देव  
 मां मनुष्य १, तिर्यंच २, जुगलीया ॥ सर्वार्थ सिद्ध ३ ए ३.  
 ठाम वर्जी ने वाकी ठामना आवी ऊपजे ॥ २ ॥ धर्म देवमां  
 छड़ी सातमी नर्क तेड वाऊ, मनुष्य तिर्यंच जुगलिया ए ६.  
 ठाम वर्जी ने शेष सर्व ठामना आवी ऊपजे ॥३॥ देवाधिदेव-  
 मां, पहिली, बीजी, त्रीजी, नर्क । किलिवपी वर्जी ने वैमानिक  
 देवना आवी ऊपजे ॥ ४ ॥ भाव देवमां तिर्यंच पंचेंद्रिय १ ने  
 संबी मनुष्य ए २ ठामना आवी ऊपजे ॥ ५ ॥ ३ ॥ हवे चोथु  
 स्थितिद्वार कहे छै ॥ भविय द्रव्य देवनी जघ० अंत० उत०  
 ३. पल्यनी ॥ १ ॥ नरदेवनी जघ० सातसे वर्ष नी उत०  
 चोख्यासी लाख पूर्वीनी ॥ २ ॥ धर्म देवनी जघ० अंत० उत०  
 देशे उणी पूर्वी कोडीनी ॥३॥ देवाधिदेवनी जघ० वहुतेर वर्ष-  
 नी उत० ८८ लाख पूर्वीनी ॥४॥ भाव देवनी जघ० दश हजार  
 वर्षनी उत० ३३ सागरनी ॥ ५ ॥ ४ ॥ हचे पांचमुँ ऋषित तथा  
 विकुवणद्वार कहे छै ॥ भविय द्रव्य देवमां जेहने चैकेय लवधि  
 ऊपनी होय तेहने । नरदेव ने तो होयज । धर्म देवमां जेहने

याणि वा पच्छासधुयाणि वा कुलाइं पुब्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुप-  
विसत वा साइज्जइ ॥ ९४ ॥ जे भिक्खु अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अपरि-  
हारिए वा अपरिहारिएण सर्द्धि गाहावङ्कुल पिंडवायपदियाए णिक्खमइ वा अणुप-  
विसइ वा णिक्खमत वा अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ ९५ ॥ जे भिक्खु अण्णउत्थिएण  
वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सर्द्धि वहिया विहारभूमि वा वियारभूमि  
वा णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमत वा पविसत वा साइज्जइ ॥ ९६ ॥ जे भिक्खु  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ अपरिहारिएहिं सर्द्धि गमाणुगामं  
वृडजड दूङ्जंत वा साइज्जइ ॥ ९७ ॥ जे भिक्खु अण्णयर पाणगजायं पडिगाहिता  
पुफ्फग पुफ्फां आइयइ कसाय २ परिष्टुवेइ परिष्टुवेत वा साइज्जइ ॥ ९८ ॥ जे भिक्खु  
अण्णयर भोयणजाय पडिगाहिता सुविम २ भुजइ दुविम २ परिष्टुवेइ परिष्टुवेत वा  
साइज्जइ ॥ ९९ ॥ जे भिक्खु मणुण्ण भोयणजायं पडिगाहेता वहुपरियावर्णं सिया  
अदूरे तथ्य साहम्मिया सभोइया समणुण्णा अपरिहारिया सता परिवसति ते अणुपु-  
च्छिय)या अणिमतिया परिष्टुवेइ परिष्टुवेत वा साइज्जइ ॥ १०० ॥ जे भिक्खु सागारिय  
पिंड गिणहइ गिणहत वा साइज्जइ ॥ १०१ ॥ जे भिक्खु सागारिय पिंड भुजइ  
भुजत वा साइज्जइ ॥ १०२ ॥ जे भिक्खु सागारिय कुल अजाणिय अपुच्छिय  
अगवेसिय पुब्वामेव पिंडवायपदियाए अणुपविसइ अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ १०३ ॥  
जे भिक्खु सागारियनीसाए असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा ओभासिय २  
जायइ जायत वा साइज्जइ ॥ १०४ ॥ जे भिक्खु उडुबद्धियं सेजासथारयं  
परं पज्जोसवणाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइज्जइ ॥ १०५ ॥ जे भिक्खु वासा-  
वासिय सेजासथारय परं दसरायकप्पाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइज्जइ  
॥ १०६ ॥ जे भिक्खु उडुबद्धिय वा वासावासिय वा सेजासथारं उवरि सिज-  
माण पेहाए न ओसारैइ न ओसारेतं वा साइज्जइ ॥ १०७ ॥ जे भिक्खु पाडि-  
हारिय सेजासथारय अणुण्णवेता वाहिं णीणेइ णीणेत वा साइज्जइ ॥ १०८ ॥  
जे भिक्खु सागारियसतिय सेजासथारय अणुण्णवेता वाहिं णीणेइ णीणेत वा  
साइज्जइ ॥ १०९ ॥ जे भिक्खु पाडिहारिय सागारियसतिय वा सेजासथारय  
दोच्चपि अणुण्णवेता वाहिं णीणेइ णीणेत वा साइज्जइ ॥ ११० ॥ जे भिक्खु  
पाडिहारिय सेजासथारय आदाय अप्पडिहटु सपब्बयइ सपब्बयत वा साइज्जइ  
॥ १११ ॥ जे भिक्खु सागारियसतिय सेजासथारय आदाय अहिगरण कटु अण-  
पिणेता सपब्बयइ सपब्बयत वा साइज्जइ ॥ ११२ ॥ जे भिक्खु पाडिहारिमं  
वा सागारियसतिय वा सेजासथारय विष्णद्व ण गवेसइ ण गवेसतं वा साइज्जइ

॥ ११२ ॥ ३ चे मिळा इतरित्यपि उद्दी प विस्त्रेते च विस्त्रेते वा साक्षर।  
तं सेवयाप्य भारत भास्त्रियं परिहारद्वयं उग्माश्यं ॥ ११३ ॥ यितीहुऽन्त-  
यणे यीमो उद्देसो समवो ॥ ३ ॥

### तहांत्रो उद्देसो

ते मिळा आंतरेतु वा आरमागारेतु वा गाहापशुसेतु वा परिवर्तन्ते च  
वा अग्नितरित्यवं वा गारितियवं वा असर्वं वा ४ ओमातियं २ जायं जायं च  
साक्षर ॥ ११५ ॥ एवं अग्नितरित्यवा वा गारितियवा वा अग्नितरित्यवा वा  
गारितियवा वा अग्नितरित्यवीभो वा गारितियवीभो वा असर्वं वा ४ ओमातियं २  
जायं जायं च वा साक्षर ॥ ११६-११७-११८ ॥ ते मिळा आंतरेतु वा  
आरमागारेतु वा गाहापशुसेतु वा परिवर्तन्ते च वेदव्याप्तियाए पठिवन्ते  
रामाप्य अग्नितरित्यवं वा गारितियवं वा अग्नितरित्यवा वा गारितियवा वा अग्नि-  
तरित्यवा वा गारितियवा वा अग्नितरित्यवीभो वा गारितियवीभो वा असर्वं वा  
४ ओमातियं २ जायं जायं च वा साक्षर ॥ ११९-१२०-१२१-१२२ ॥ ते  
ते मिळा आंतरेतु वा आरमागारेतु वा गाहापशुसेतु वा परिवर्तन्ते च  
अग्नितरित्यवं वा गारितियवं वा अग्नितरित्यवीहि वा गारितियवीहि वा असर्वं वा  
४ अभिहृतं वाहु रित्यमार्जं पठिष्ठेतात् तमेव अनुवाचियं २ परिवेतियं २ परि-  
वियं २ ओमातियं २ जायं जायं च वा साक्षर ॥ १२३-१२४-१२५-१२६ ॥  
ते मिळा गाहापशुसेतु पितॄवायपडियाए पविष्टु पवित्रायपिण्डु समाप्ति दोषः(पि)  
तमेव कुम्हं अनुप्प्रवेशं अनुप्प्रविशं वा साक्षर ॥ १२७ ॥ ते मिळा सर्व-  
विष्टव्यवलाए असर्वं वा ४ पठिम्याहृतं पवित्रगाहैतं वा साक्षर ॥ १२८ ॥ ते  
मिळा गाहापशुसेतु पितॄवायपडियाए अनुप्प्रविष्टु समाप्ते परं विवर्तन्तरम्ये असर्वं  
वा ४ अभिहृतं वाहु रित्यमार्जं पठिम्याहृतं पवित्रगाहैतं वा साक्षर ॥ १२९ ॥  
ते मिळा अप्यतो पाए आमजेज वा पमजेज वा आमजेज वा पमजेज वा  
साक्षर ॥ १३ ॥ ० ते मिळा अप्यतो पाए उमाहैज वा पविमरेज वा उमाहैज  
वा पविमरेतं वा साक्षर ॥ १३१ ॥ ० ते मिळा अप्यतो पाए उमेष वा असर्वं  
वा गवर्णीएतं वा महेष वा अमर्गीज वा मन्यैतं वा अमर्यैतं वा साक्षर  
॥ १३२ ॥ ० ते मिळा अप्यतो पाए स्मेष वा क्लेष वा ( ) तामेज वा  
अम्बेज वा उमेषेतं वा सम्भैतं वा साक्षर ॥ १३३ ॥ ० ते मिळा अप्यते

पाए सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेत वा पधोवेत वा साइज्जइ ॥ १३४ ॥ जे भिक्खू अप्पणो पाए फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जइ ॥ १३५ ॥ जे भिक्खू अप्पणो काय आमज्जेज वा पमज्जेज वा आमज्जत वा पमज्जंत वा साइज्जड ॥ १३६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो काय सवाहेज वा पलिमेहेज वा सवाहेत वा पलिमहेत वा साइज्जइ ॥ १३७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो काय तेलेण वा घण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिगेत वा साइज्जइ ॥ १३८ ॥ जे भिक्खू अप्पणो काय लोद्देण वा कक्षेण वा उल्लोलेज वा उब्बहेज वा उल्लोलेत वा उब्बहेत वा साइज्जइ ॥ १३९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो काय सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेत वा पधोवेत वा साइज्जइ ॥ १४० ॥ जे भिक्खू अप्पणो काय फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जइ ॥ १४१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वण आमज्जेज वा पमज्जेज वा आमज्जत वा पमज्जत वा साइज्जइ ॥ १४२ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वण सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेत वा पलिमहेत वा साइज्जइ ॥ १४३ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वण तेलेण वा घण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिगेत वा साइज्जइ ॥ १४४ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वण लोद्देण वा कक्षेण वा उल्लोलेज वा उब्बहेज वा उल्लोलेत वा उब्बहेत वा साइज्जइ ॥ १४५ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेत वा पधोवेत वा साइज्जइ ॥ १४६ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि वण फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जइ ॥ १४७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंड वा पलिय वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदत वा विच्छिदत वा साइज्जइ ॥ १४८ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंड वा पलियं वा अरइय वा असियं वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता पूय वा सोणिय वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ १४९ ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गड वा पलिय वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता (प०) णीहरिता विसोहेता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेत वा पधोवेत वा साइज्जइ ॥ १५० ॥ जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गड वा पलिय वा अरइय वा असिय वा

मांदक वा अन्यदरेण दिक्षेषं सत्प्रजाएर्ण अस्तित्विता विचिह्निता पीहरिता  
विसोहेता पथोहेता अन्यदरेण जातेवयजाएर्ण आस्तित्वेता वा विद्धितेता वा आस्तित्वे  
वा विचिह्निते वा साक्ष्यं ॥ १५१ ॥ ये मिन्दू अप्यतो क्वर्वति गाँ वा पठिये वा  
अएत वा भास्तिते वा मपंदते वा अन्यदरेण दिक्षेषं सत्प्रजाएर्ण अस्तित्विता  
विचिह्निता वीहरिता विसोहेता पथोहेता विचिह्निता लेतेता वा अएत वा अवशीर्ण  
वा अस्तित्वे वा मपेतेता वा अस्तित्वे वा मप्तेता वा साक्ष्यात् ॥ १५२ ॥ ये  
मिन्दू अप्यतो क्वर्वति गाँ वा पठिये वा अएते वा भीस्तिते वा भास्तिते वा  
अन्यदरेण दिक्षेषं सत्प्रजाएर्ण अस्तित्विता विचिह्निता वीहरिता विसोहेता  
पथोहेता विचिह्निता मन्त्रेता अन्यदरेण भूलभाएर्ण भूलभ वा फूलेता वा पूर्वे  
वा पूर्वेते वा साक्ष्यात् ॥ १५३ ॥ ये मिन्दू अप्यतो पासुक्तिमिते वा तुक्तिमिते  
वा अंगुष्ठीए विवेस्ति २ वीहरिते वा साक्ष्यात् ॥ १५४ ॥ ये मिन्दू अप्यतो  
वीहामो अहसिहृष्टो क्षपेता वा संठेता वा क्षप्तेता वा संठक्ते वा साक्ष्यात् ॥ १५५ ॥  
ये मिन्दू अप्यतो वीहावे अंगुष्ठेमार्दं क्षपेता वा संठेता वा क्षप्तेता वा संठबेते वा  
साक्ष्यात् ॥ १५६ ॥ ये मिन्दू अप्यतो वीहावे अंगुष्ठेमार्दं क्षपेता वा संठेता  
वा क्षप्तेता वा संठबेते वा साक्ष्यात् ॥ १५७ ॥ ये मिन्दू अप्यतो वीहावे अंगुष्ठेमार्दं  
क्षपेता वा संठबेते वा क्षप्तेता वा संठबेते वा साक्ष्यात् ॥ १५८ ॥ ये मिन्दू अप्यतो  
वीहावे अंगुष्ठेमार्दं क्षपेता वा संठबेते वा क्षप्तेता वा संठबेते वा साक्ष्यात् ॥ १५९ ॥  
ये मिन्दू अप्यतो वीहावे अंगुष्ठेमार्दं क्षपेता वा संठबेते वा क्षप्तेता वा संठबेते वा  
साक्ष्यात् ॥ १६ ॥ ये मिन्दू अप्यतो वीहावे अंगुष्ठेमार्दं क्षपेता वा संठबेते वा  
क्षप्तेता वा संठबेते वा साक्ष्यात् ॥ १६१ ॥ ये मिन्दू अप्यतो दंठ आस्तित्वे वा  
पठियेता वा आस्तित्वे वा पक्षते वा साक्ष्यात् ॥ १६२ ॥ ये मिन्दू अप्यतो दंठ  
सीजोदगवियडेता वा उत्तिमोदगवियडेता वा उच्छेतेता वा फोटेता वा उप्पेतेता  
वा फोटेता वा साक्ष्यात् ॥ १६३ ॥ ये मिन्दू अप्यतो दंठ फूलेता वा रस्ते  
वा फूलेते वा रस्ते वा साक्ष्यात् ॥ १६४ ॥ ये मिन्दू अप्यतो उडे जास्तेता  
वा फ्लजेता वा आमज्जर्ते वा फ्लज्जे वा साक्ष्यात् ॥ १६५ ॥ ये मिन्दू अप्यतो  
उडे स्वाहेता वा पलिमोहेता वा स्वाहेते वा पलिमेते वा साक्ष्यात् ॥ १६६ ॥  
ये मिन्दू अप्यतो उडे तदेता वा अएत वा अवशीर्ण वा मन्त्रेता वा विचिह्नेता  
वा मप्तेते वा मिक्तिगते वा साक्ष्यात् ॥ १६७ ॥ ये मिन्दू अप्यतो उडे तदेता

१ गंडाइलेप्ते क्षप्ते चामो अमन्त्राद्यं रोगवित्वाराहोता ति वावधितामार्द ।  
२ घोहामित्तिते । ३ विहाए ।

वा कक्षेण वा उल्लोलेज वा उब्बेहेज वा उल्लोलेत वा उब्बेहेत वा साइज्जाइ ॥ १६८ ॥  
जे भिक्खु अप्पणो उट्टे सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज  
वा पधोवेज वा उच्छोलेत वा पधोवेत वा साइज्जाइ ॥ १६९ ॥ जे भिक्खु  
अप्पणो उट्टे फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जाइ ॥ १७० ॥ जे भिक्खु  
अप्पणो दीहाइं उत्तरोद्धरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जाइ  
॥ १७१ ॥ जे भिक्खु अप्पणो दीहाइ अच्छिपत्ताइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत  
वा सठवेत वा साइज्जाइ ॥ १७२ ॥ जे भिक्खु अप्पणो अच्छीणि आमज्जेज वा  
पमज्जेज वा आमज्जत वा पमज्जत वा साइज्जाइ ॥ १७३ ॥ जे भिक्खु अप्पणो  
अच्छीणि सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेत वा पलिमहेत वा साइज्जाइ ॥ १७४ ॥  
जे भिक्खु अप्पणो अच्छीणि तेलेण वा धएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा  
भिलिगेज वा मक्खेत वा मिलिंगेत वा साइज्जाइ ॥ १७५ ॥ जे भिक्खु अप्पणो  
अच्छीणि लोद्वेण वा कक्षेण वा उल्लोलेज वा उब्बेहेज वा उल्लोलेत वा उब्बेहेत वा  
साइज्जाइ ॥ १७६ ॥ जे भिक्खु अप्पणो अच्छीणि सीओदगवियडेण वा उसिणोदग-  
वियडेण वा उच्छोलेज वा पधोवेज वा उच्छोलेत वा पधोवेत वा साइज्जाइ ॥ १७७ ॥  
जे भिक्खु अप्पणो अच्छीणि फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जाइ  
॥ १७८ ॥ जे भिक्खु अप्पणो दीहाइ भुमगरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत  
वा सठवेत वा साइज्जाइ ॥ १७९ ॥ जे भिक्खु अप्पणो दीहाइं पासरोमाइ कप्पेज  
वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जाइ ॥ १८० ॥ जे भिक्खु अप्पणो दीहाइ  
फेसरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जाइ ॥ १८१ ॥ जे  
भिक्खु अप्पणो कायाओ सेय वा जळ वा पक वा मल वा णीहरेज वा विसोहेज  
वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जाइ ॥ १८२ ॥ जे भिक्खु अप्पणो अच्छिमल वा  
कण्णमल वा दत्तमल वा णहमल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत  
वा साइज्जाइ ॥ १८३ ॥ जे भिक्खु गामाणुगाम दृङ्गज्ञमाणे अप्पणो सीसदुवारिय  
करेड करेत वा साइज्जाइ ॥ १८४ ॥ जे भिक्खु सणकप्पा(सा)सओ वा उण्णकप्पासओ  
वा पोण्डकप्पासओ वा अमिल्कप्पासओ वा वसीकरणसोत्तिय करेइ करेत वा साइज्जाइ  
॥ १८५ ॥ जे भिक्खु गिहसि वा गिहमुहसि वा गिहदुवारियसि वा गिहपडि-  
दुवारियसि वा गिहेल्लयसि वा गिहगणसि वा गिहवच्चसि वा उच्चारं वा पासवण वा  
परिद्विवेइ परिद्विवेत वा साइज्जाइ ॥ १८६ ॥ जे भिक्खु मढगगिहसि वा मढगछारियसि  
वा मढगथूभियसि वा मढगासयसि वा मढगलेणसि वा मढगथडिलसि वा मढगवच्चसि  
वा उच्चार वा पासवण वा परिद्विवेइ परिद्विवेत वा साइज्जाइ ॥ १८७ ॥ जे भिक्खु

इमावदाहंसि वा चारदाहंसि वा पामदाहंसि वा दुसदाहंसि वा चमदाहंसि वा उचार  
वा पासवर्ण वा परिदुषेइ परिदुर्वेत वा साइज्जइ ॥ १८९ ॥ जे मिक्कू अभिविभिरु  
वा योसेष्यमियामु अभियमियामु वा भयियस्ताणीमु वा परिमुखमाभियामु वा बनारे  
मुखमाभिरु वा उचारे वा पासवर्ण वा परिदुषेइ परिदुर्वेत वा साइज्जइ ॥ १९० ॥  
जे मिक्कू सेयावर्णसि वा फैसि वा पश्चासि वा उचारे वा पासवर्ण वा परिदुषेइ  
परिदुर्वेत वा साइज्जइ ॥ १९१ ॥ जे मिक्कू चेवरवर्णसि वा भम्मोइवर्णसि क  
अस्त्रत्पवर्णसि वा उचारे वा पासवर्ण वा परिदुषेइ परिदुर्वेत वा साइज्जइ ॥ १९२ ॥  
जे मिक्कू डागावर्णसि वा सासवर्णसि वा मूम्ममवर्णसि वा कोस्यु(कटी)परिवर्णसि वा  
यारवर्णसि वा जीरकवर्णसि वा दमण(म)वर्णसि वा महगावर्णसि वा उचारे वा  
पासवर्ण वा परिदुषेइ परिदुर्वेत वा साइज्जइ ॥ १९३ ॥ जे मिक्कू इस्तुवर्णसि वा  
चालिवर्णसि वा कुसुमवर्णसि वा कृपावलजसि वा उचारे वा पासवर्ण वा परिदुषेइ  
परिदुर्वेत वा साइज्जइ ॥ १९४ ॥ जे मिक्कू असोवर्णसि वा सुतिलप्पवर्णसि वा  
र्खफगवर्णसि वा चूमवर्णसि वा अस्त्रयोदय वा ताहप्पारेय वा फलेवप्पु पुष्पेवर्ण  
पस्तेवप्पु बी(छानो)बोतएसु उचारे वा पासवर्ण वा परिदुषेइ परिदुर्वेत वा साइज्जइ  
॥ १ ४ ॥ जे मिक्कू सपार्यसि वा परपार्यसि वा दिवा वा रात्रे वा दिवाके वा उमा-  
दिव्यमाने सपार्य गद्दाय परपार्य जाहाय वा उचारे पासवर्ण वा परिदुषेइ अस्त्रय  
सुरिए परेइ एवेत वा साइज्जइ । त सेवमाने जाहाय मासिय परिहार्दुर्व उमार्य  
॥ १९५ ॥ णिसीहुर्तुज्ञायमे ताहमो उहेसो समतो ॥ ५ ॥

### चठत्पो उहेसो

जे मिक्कू रावे अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ १९६ ॥ जे मिक्कू राव-  
रमियर्य अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ १९७ ॥ जे मिक्कू अयहरियर्य  
अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ १९८ ॥ जे मिक्कू विगमारकिहर्व अतीक्करेइ  
अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ १९९ ॥ जे मिक्कू देमारकियर्य अतीक्करेइ अतीक्करेत  
वा साइज्जइ ॥ २ ॥ जे मिक्कू ममारमियर्य अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ २ १ ॥ जे मिक्कू  
रायारकिहर्व अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ २ २ ॥ जे मिक्कू  
अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ २ ३ ॥ जे मिक्कू अगाधपित्तर्य  
अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ २ ४ ॥ जे मिक्कू विगमारमिहर्व अतीक्करेइ  
अतीक्करेत वा साइज्जइ ॥ २ ५ ॥ जे मिक्कू देमारमिहर्व अतीक्करेइ अतीक्करेत  
वा साइज्जइ ॥ २ ६ ॥ जे मिक्कू उमारमिहर्व अतीक्करेइ अतीक्करेत वा साइज्जइ

॥ २०७ ॥ जे भिक्खु राय अत्थीकरेइ अत्थीकरेतं वा साइज्जइ ॥ २०८ ॥ जे भिक्खु रायारक्षियं अत्थीकरेइ अत्थीकरेतं वा साइज्जइ ॥ २०९ ॥ जे भिक्खु णगरारक्षियं अत्थीकरेइ अत्थीकरेतं वा साइज्जइ ॥ २१० ॥ जे भिक्खु णिगमा-रक्षियं अत्थीकरेइ अत्थीकरेतं वा साइज्जइ ॥ २११ ॥ जे भिक्खु देसारक्षियं अत्थीकरेइ अत्थीकरेतं वा साइज्जइ ॥ २१२ ॥ जे भिक्खु सञ्चारक्षियं अत्थीकरेइ अत्थीकरेतं वा साइज्जइ ॥ २१३ ॥ जे भिक्खु क्षसिणाऽमो ओसहीओ आहारेइ आहारेतं वा साइज्जइ ॥ २१४ ॥ जे भिक्खु आयरिएहिं अदिणं आहारेइ आहारेतं वा साइज्जइ ॥ २१५ ॥ जे भिक्खु आयरियोवज्ञाएहिं अविदिण विग्रह आहारेइ आहारेतं वा साइज्जइ ॥ २१६ ॥ जे भिक्खु ठवणाकुलाइ अजाणिय अपुच्छिय अग-वेसिय पुव्वामेव पिङ्डवायपडियाए अणुप्पविसइ अणुप्पविसतं वा साइज्जइ ॥ २१७ ॥ जे भिक्खु णिगमार्थीण उवस्त्यंसि अविहीए अणुप्पविसइ अणुप्पविसतं वा साइज्जइ ॥ २१८ ॥ जे भिक्खु णिगमार्थीण आगमणपहंसि दडग वा रयहरणं वा मुहूपोत्तिय वा अण्णयरं वा उवगरणजाय ठवेइ ठवेतं वा साइज्जइ ॥ २१९ ॥ जे भिक्खु णवाइ अणुप्पणाइ अहिगरणाईं उप्पाएइ उप्पाएतं वा साइज्जइ ॥ २२० ॥ जे भिक्खु पोराणाइ अहिगरणाइ खामिय विबोसवियाइ पुणो उदीरेइ उदीरेतं वा साइज्जइ ॥ २२१ ॥ जे भिक्खु मुह विफ्फालिय हसइ हसत वा साइज्जइ ॥ २२२ ॥ जे भिक्खु पास-त्यस्स सधाडय देइ देतं वा साइज्जइ ॥ २२३ ॥ जे भिक्खु पास-त्यस्स सधाडय पडिच्छह पडिच्छतं वा साइज्जइ ॥ २२४ ॥ जे भिक्खु ओसण्णस्स सधाडय देइ देतं वा साइज्जइ ॥ २२५ ॥ जे भिक्खु ओसण्णस्स सधाडय पडिच्छह पडिच्छतं वा साइज्जइ ॥ २२६ ॥ जे भिक्खु कुसीलस्स सधाडय देइ देतं वा साइज्जइ ॥ २२७ ॥ जे भिक्खु कुसीलस्स सधाडय पडिच्छह पडिच्छतं वा साइज्जइ ॥ २२८ ॥ जे भिक्खु नितियस्स सधाडय देइ देतं वा साइज्जइ ॥ २२९ ॥ जे भिक्खु नितियस्स सधाडय पडिच्छह पडिच्छतं वा साइज्जइ ॥ २२१ ॥ जे भिक्खु ससत्तस्स सधाडय देइ देतं वा साइज्जइ ॥ २२२ ॥ जे भिक्खु उद्योगेण वा सिणिद्वेण वा हृत्येण वा दब्बीए वा भायणेण वा असण वा ४ पडिग्राहेह पडिग्राहेतं वा साइज्जइ ॥ २२३ ॥ जे भिक्खु ससरक्खेण वा मट्टियाससद्वेण वा ऊसाससद्वेण वा लोणियससद्वेण वा हरियालससद्वेण वा मणोसिलससद्वेण वा लोद्दससद्वेण वा गेहय-ससद्वेण वा सेहियससद्वेण वा हिंगुलससद्वेण वा अजणससद्वेण वा कुक्कुसससद्वेण वा पिङ्डससद्वेण वा कतवससद्वेण वा कदम्बससद्वेण वा सिंगवेरससद्वेण वा पुपफससद्वेण

वा उद्गुरुसंग्रहेण वा असुराद्वारा इत्येवं वा दधीए वा भाकगेव वा भस्तर्च वा ४ परिमाहेन पठिष्याहेतु वा साहज्य ॥ २३४ ॥ जे मित्रू पासारकियर्व अर्जुन-  
कर्त्र अर्थाहरेतु वा साहज्य ॥ २३५ ॥ जे मित्रू यामारकियर्व अर्थाहरेतु  
अर्थाहरेतु वा साहज्य ॥ २३६ ॥ जे मित्रू गामारकियर्व अर्थाहरेतु अर्थाहरेतु  
वा साहज्य ॥ २३७ ॥ जे मित्रू सीमारकियर्व अर्थाहरेतु अर्थाहरेतु वा  
साहज्य ॥ २३८ ॥ जे मित्रू सीमारकियर्व अर्थाहरेतु अर्थाहरेतु वा साहज्य  
॥ २३९ ॥ जे मित्रू सीमारकियर्व अर्थाहरेतु अर्थाहरेतु वा साहज्य  
॥ २४० ॥ जे मित्रू एषारकियर्व अर्थाहरेतु अर्थाहरेतु वा साहज्य ॥ २४१ ॥  
जे मित्रू एषारकियर्व अर्थाहरेतु अर्थाहरेतु वा साहज्य ॥ २४२ ॥ जे मित्रू  
एषारकियर्व अर्थाहरेतु अर्थाहरेतु वा साहज्य ॥ २४३ ॥ जे मित्रू  
अन्यमन्यस्तु पाए आमजेव वा पमजेव वा आमजर्तु वा पमजर्तु वा साहज्य  
॥ २४४ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु पाए संकाहेज वा पठिमोहेज वा संकाहेतु वा  
पठिमोहेतु वा साहज्य ॥ २४५ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु पाए टेकेज वा चर्ष  
वा चर्वजीएज वा मक्खेज वा मिलिगेज वा मक्खेतु वा मिलिगेतु वा साहज्य  
॥ २४६ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु पाए चेत्रेज वा चेत्र वा उच्छेत्र वा  
उच्छेत्र वा उच्छेतु वा उच्छेतु वा साहज्य ॥ २४७ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु  
पाए सीमोहगविषयोज वा उसिमोहगविषयोज वा उच्छेत्रेज वा चर्वोएज वा  
उच्छेत्रेतु वा परोहेतु वा साहज्य ॥ २४८ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु पाए  
फूलेज वा रेज वा फूलतु वा रहेतु वा साहज्य ॥ २४९ ॥ जे मित्रू अन्य-  
मन्यस्तु कर्य आमजेव वा पमजेव वा आमजर्तु वा पमजर्तु वा साहज्य ॥ २५० ॥  
जे मित्रू अन्यमन्यस्तु कर्य संकाहेज वा पठिमोहेज वा संकाहेतु वा पठिमोहेतु  
वा साहज्य ॥ २५१ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु कर्य तेकेज वा चर्ष वा चर्वजीएज  
वा मक्खेज वा मिलिगेज वा मक्खेतु वा मिलिगेतु वा साहज्य ॥ २५२ ॥ जे  
मित्रू अन्यमन्यस्तु कर्य चेत्रेज वा चेत्र वा उच्छेत्र वा उच्छेतु  
वा उच्छेतु वा साहज्य ॥ २५३ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु कर्य सीमोहगविषयोज  
वा उसिमोहगविषयोज वा उच्छेत्रेज वा परोहेज वा उच्छेत्रेतु वा परोहेतु  
वा साहज्य ॥ २५४ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु कर्य फूलेज वा रेज वा फूलतु वा  
रहेतु वा साहज्य ॥ २५५ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु कर्यि वर्ण आमजेव वा  
पमजेव वा आमजर्तु वा पमजर्तु वा साहज्य ॥ २५६ ॥ जे मित्रू अन्यमन्यस्तु  
कर्यिति वर्ण संकाहेज वा पठिमोहेज वा संकाहेतु वा पठिमोहेतु वा साहज्य ॥ २५७ ॥

जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि वर्णं तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिल्लिंगे वा मक्खेत वा भिल्लिंगेत वा साइज्जइ ॥ २५८ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि वण लोद्देण वा क्लेण वा उल्लोलेज वा उब्बेज वा उल्लोलेत वा उब्बेत वा साइज्जइ ॥ २५९ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि वण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ २६० ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि वणं फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जइ ॥ २६१ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि गंड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएणं अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदेत वा विच्छिदेत वा साइज्जइ ॥ २६२ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि गड वा पिल्य वा अरइय वा असियं वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता पूय वा सोणिय वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ २६३ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि गड वा पिल्यं वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहित्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ २६४ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि गड वा पिल्यं वा अरइयं वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता प वोएत्ता अण्णयरेण आलेवणजाएण आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपेत वा विलिपेत वा साइज्जइ ॥ २६५ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि गंड वा पिला वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिपित्ता विलिपित्ता तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा अब्भगेज वा मक्खेज वा अब्भगेत वा मक्खेत वा साइज्जइ ॥ २६६ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायसि गड वा पिलग वा अरइयं वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिपित्ता विलिपित्ता अब्भगेत्ता मक्खेत्ता अण्णयरेण धूवणजाएण धूवेज वा पवूवेज वा धूवत वा पधूवत वा साइज्जइ ॥ २६७ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स पालुकिमिय वा शुच्छिकिमिय वा अगुलीए णिवेसिय २ णीहरइ णीहरत वा माइज्जइ ॥ २६८ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स दीहाओ णहसिहाओ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ २६९ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स दीहाइ जघ-

रोमाई क्षेत्र वा संठेक्षेत्र वा क्षेत्रों वा संठेत्रों वा साइज्जह ॥ २७० ॥  
 ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई क्षयरोमाई क्षेत्र वा संठेक्षेत्र वा क्षेत्रों  
 वा संठेत्रों वा साइज्जह ॥ २७१ ॥ प्र ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई मंडुरोमाई  
 क्षेत्र वा संठेक्षेत्र वा क्षेत्रों वा संठेत्रों वा साइज्जह ॥ २७२ ॥ ये मिन्हू  
 अप्पमन्धस्स रीहाई पासारोमाई क्षेत्र वा संठेक्षेत्र वा क्षेत्रों वा संठेत्रों  
 वा साइज्जह ॥ २७३ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई अफ़्रुरोमाई क्षेत्र  
 वा संठेक्षेत्र वा क्षेत्रों वा संठेत्रों वा साइज्जह ॥ २७४-१ ॥ ये मिन्हू  
 अप्पमन्धस्स रीहाई क्षयरोमाई क्षेत्र वा संठेक्षेत्र वा क्षेत्रों वा संठेत्रों वा  
 साइज्जह ॥ २७४-२ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई आर्फेज वा पर्सिए  
 वा आर्फेस्टरी वा पर्सेत्रों वा साइज्जह ॥ २७५ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई  
 उच्छेक्षेत्र वा पशोएज वा चच्छेल्लेत्र वा पशोएत्री वा साइज्जह ॥ २७६ ॥ ये  
 मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई उद्देश वा रएज वा फ्लॉट्री वा रर्टरी वा साइज्जह  
 ॥ २७७ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रुद्दु आमजेज वा पमजेज वा अम्मर्टरी  
 वा पम्मर्टरी वा साइज्जह ॥ २७८ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रुद्दु संकाहेज ए  
 पक्षिमोहेज वा संकाहेत्री वा पक्षिमोहेत्री वा साइज्जह ॥ २७९ ॥ ये मिन्हू अप्प  
 मन्धस्स रुद्दु ऐदेज वा चएज वा एवणीएज वा मक्केज वा मिक्किमेज वा  
 मक्कयेत्र वा मिक्कियेत्र वा साइज्जह ॥ २८ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रुद्दु  
 अदेज वा अदेज वा उडेजेज वा उडेजेत्र वा उडेजेत्री वा साइज्जह  
 ॥ २८१ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रुद्दु सीधेशगविवेज वा उडियोशेशगविवेज  
 वा उच्छेक्षेत्र वा पशोजेज वा उच्छेल्लेत्र वा पशोजेत्री वा साइज्जह ॥ २८२ ॥  
 ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रुद्दु फ्लॉमेज वा रएज वा फ्लॉट्री वा रर्टरी वा साइज्जह  
 ॥ २८३ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई उगारोद्दुरोमाई क्षेत्र वा संठेक्षेत्र वा  
 क्षेत्रों वा संठेत्रों वा साइज्जह ॥ २८४ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स रीहाई अर्फि  
 पताई क्षेत्र वा संठेक्षेत्र वा क्षेत्रों वा संठेत्रों वा साइज्जह ॥ २८५ ॥ ये  
 मिन्हू अप्पमन्धस्स अच्छीपि आमजेज वा पमजेज वा अम्मर्टरी वा पम्मर्टरी  
 वा साइज्जह ॥ २८६ ॥ प्र ये मिन्हू अप्पमन्धस्स अच्छीपि संकाहेज वा पक्षि  
 मोज वा संकाहेत्री वा पक्षिमोहेत्री वा साइज्जह ॥ २८७ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स  
 अच्छीपि उदेज वा चएज वा एवणीएज वा मक्कयेज वा मिक्कियेज वा मक्कर्टरी  
 वा मिक्कियेत्री वा साइज्जह ॥ २८८ ॥ ये मिन्हू अप्पमन्धस्स अच्छीपि उदेज  
 वा उदेज वा उडेजेज वा उडेजेत्र वा उडेजेत्री वा साइज्जह

होय तेहमे । माष देवमे तो होयज ॥ ८ ॥ बक्रेय रुप करे तो  
 अ० १ २ ३, उ० संख्याता करे शुभित तो असंख्याता रुप  
 करत्यानी है परन करे नहीं । देवाधिदेवमी शुभित भवी है  
 परन करे नहीं ॥ ४ ॥ हवे छड़ु अथलद्वार कहे है ॥ मनिषद्रष्ट  
 देव चवि देवता याय १ नरदेव चवि जके आय ॥ ५ ॥ शम्भरेव  
 चवी दैमानिक तथा मोहमां याय ॥ ६ ॥ देयाधिदेव तो मुक्ति  
 आप ॥ ७ ॥ माव देव चवी से पूर्वी पांची बनस्पति बहरमा  
 मे गर्भज मनुष्य तिर्यगमी आय ॥ ८ ॥ हवे सातमुं संचिठ्ठुल  
 ते स्यु ते देवमा देवपणे रहे तो केद्दलो काल रहे ते ॥ मनिष  
 द्रष्ट देयमी संखिठसा जय० भ्रेत० १ पर्योपममी ॥ ९ ॥  
 मरदेवमी जय० सात से बर्ष मी उत० व४ साक एवीनी ॥ १० ॥  
 पर्व देवनी जय० १ समयनी उत० देवे बर्षी पूर्व कोडीनी  
 ॥ ११ ॥ देवाधिदेवमी जय० बहुतेर बर्षीनी उत० व४ साक पूर्वी  
 ४ भाव देवमी जय० वशु हजार बर्षीनी उत० १२ सागरोप  
 ममी ५ ॥ १३ ॥ हवे आटमुं अस्तरद्वार कहे है ॥ मनिष द्रष्ट  
 देवदु आतर्द पड़े तो जय० वशु हजार बर्ष मे अस्तर मुहर्त  
 अधिक । उत० अगमता कालमुं आतर्द पड़े १ नरदेवनु जय०  
 १ सागर मांझरो उत० अर्थं पुद्रल परावर्तन देवे उस्यु २ अर्म  
 देवदु जय० ३ पर्य मांझर उत० अर्थं पुद्रल परावर्तन देवे  
 वशु ३ देवाधिदेवनु आतर्द नहीं ॥ १४ ॥ भावदेवनु जय० अत०  
 उत० अगमता कालमुं ॥ व४ हवे मरमुं अरप बहुत द्वार कहे  
 है ॥ सर्वीयी योक्ता नरदेव १ तेहवी देवाधिदेव संख्यातगुणा  
 २ तेहवी अर्मदेव संख्यातगुणा ३ तेहवी मनिष द्रष्टवै  
 असंख्यातगुणा ४ तेहवी भावदेव असंख्यातगुणा ॥ १५ ॥ १६ ॥  
 इति पांच देयता बोल सम्पूर्णम् ॥ शुभे मन्त्रतु ॥

॥ २८९ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स अच्छीणि सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेंत वा पधोएंत वा साइज्जइ ॥ २९० ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स अच्छीणि फूमेज वा रएज वा फूमेंत वा रएत वा साइज्जइ ॥ २९१ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स दीहाइ भुमगरोमाइं कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ २९२ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स चीहाइ पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ २९३-१ ॥  
 केसरोमाइ ॥ २९३-२ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स अच्छिमलं वा कण्णमल वा दत्तमल वा णहमलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ २९४ ॥ जे भिक्खु अण्णमण्णस्स कायाओ सेय वा जल वा पंक वा मलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ २९५ ॥ जे भिक्खु गामाणुगा- [मिय]म दूझज्जमाणे अण्णमण्णस्स सीसदुवारिय करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ २९६ ॥ जे भिक्खु साणुप्पए उच्चारपासवणभूमि साणुप्पए ण पडिलेहइ ण पडिलेहत वा साइज्जइ ॥ २९७ ॥ जे भिक्खु तओ उच्चारपासवणभूमीओ ण पडिलेहइ ण पडिलेहत वा साइज्जइ ॥ २९८ ॥ जे भिक्खु छुङ्गागसि यडिलसि उच्चारपासवण परिद्वेइ परिद्वेत वा साइज्जइ ॥ २९९ ॥ जे भिक्खु उच्चारपासवण अविहीए परिद्वेइ परिद्वेत वा साइज्जइ ॥ ३०० ॥ जे भिक्खु उच्चारपासवण परिद्वेता ण पुछ्हण पुंछ्हत वा साइज्जइ ॥ ३०१ ॥ जे भिक्खु उच्चारपासवण परिद्वेता कट्टेण वा किलिंचेण वा अगुलियाए वा सलागाए वा पुंछ्ह पुछ्हत वा साइज्जइ ॥ ३०२ ॥ जे भिक्खु उच्चारपासवण परिद्वेता णायमइ णायमत वा साइज्जइ ॥ ३०३ ॥ जे भिक्खु उच्चारपासवण परिद्वेता तत्थेव आयमइ आयमत वा साइज्जइ ॥ ३०४ ॥ जे भिक्खु उच्चारपासवण परिद्वेता दूरे आयमइ आयमत वा साइज्जइ ॥ ३०५ ॥ जे भिक्खु उच्चारपासवण परिद्वेता णावापूराण आयमइ आयमत वा साइज्जइ ॥ ३०६ ॥ जे भिक्खु अपरिहारिण परिहारियं वएजा-एहि अजो । त्रुम च अह च एगओ असण वा ४ पडिगाहेत्ता तओ पच्छा पत्तेयं २ भोक्खामो वा पाहामो वा, जे तं एव वयइ वयत वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवज्जइ मासिय परिहारद्वाण उग्धाइयं ॥ ३०७ ॥ णिसीहृज्ज्ञयणे चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥ ४ ॥

### पंचमो उद्देसो

जे भिक्खु सचित्तरुक्खमूलसि ठिच्चा आलोएज वा पलोएज वा आलोएत वा

१ क्याइ एगद्वाणे केण वि कारणेण पारिद्वावणाऽवसरो ण होज तो दोञ्च तच्च ठाण उच्चओगी होउ त्ति तिण्ण ठणाइ बुत्ताइ ति ।

पर्वते वा साहस्र ॥ ३ ॥ ६ ॥ जे मिन्दू सवितालक्ष्मूर्ति ठिका ठार्व वा देवी वा  
निशीहित वा तुमहण वा चेपह पर्वते वा साहस्र ॥ ३ ॥ ७ ॥ जे मिन्दू सवितालक्ष्मूर्ति  
ठिका असर्व वा ४ आहारेह आहारेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ ८ ॥ जे मिन्दू सवितालक्ष्मूर्ति  
ठिका उचारपासवर्ण परिदृश्य परिदृश्येर्व वा साहस्र ॥ ३ ॥ ९ ॥ जे मिन्दू  
सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व करेह करेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ १० ॥ जे मिन्दू  
सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व उदिसार उदिसेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ ११ ॥ जे मिन्दू  
सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व उदिसार उदिसेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ १२ ॥ जे मिन्दू  
सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व उदिसार उदिसेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ १३ ॥ जे मिन्दू  
सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व उदिसार उदिसेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ १४ ॥ जे  
मिन्दू सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व अणुवानह अणुवानेत वा साहस्र  
॥ ३ ॥ १५ ॥ जे मिन्दू सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व वाहूर वाहूर्व वा साहस्र  
॥ ३ ॥ १६ ॥ जे मिन्दू सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व परिवार परिवार्व वा  
साहस्र ॥ ३ ॥ १७ ॥ जे मिन्दू सवितालक्ष्मूर्ति ठिका सज्जासर्व परिवारे परिवार्वे  
वा साहस्र ॥ ३ ॥ १८ ॥ जे मिन्दू अप्पणो सज्जासर्व अभ्युतिष्ठेन वा भारतिष्ठेन  
वा सागारिए वा विष्वाशेह विष्वाशेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ १९ ॥ जे मिन्दू अप्पणे  
संवादिए वीहुष्टार्व करेह करेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ २० ॥ जे मिन्दू विद्मेहक्षम्भवे  
वा विद्मेहक्षम्भव्य वा वीक्षेष्वपविष्टेण वा उविष्टेष्वपविष्टेण वा  
संकायिव २ आहारेह आहारेत वा साहस्र ॥ ३ ॥ २१ ॥ जे मिन्दू पविष्टार्व  
पावर्षुङ्गर्व आहाता तमेव रवणि पविष्टिस्तामिति द्वये पविष्टियह पविष्टिर्व वा  
साहस्र ॥ ३ ॥ २२ ॥ जे मिन्दू पविष्टार्विव पावर्षुङ्गर्व आहाता द्वये पविष्टिस्तामिति  
तमेव रवणि पविष्टियह पविष्टिर्व वा साहस्र ॥ ३ ॥ २३ ॥ जे मिन्दू सगारिव  
संतिव्य पावर्षुङ्गर्व आहाता तमेव रवणि पविष्टिस्तामिति द्वये पविष्टियह पविष्टिर्व  
वा साहस्र ॥ ३ ॥ २४ ॥ जे मिन्दू सगारिवसतिव्य पावर्षुङ्गर्व आहाता द्वये  
पविष्टियह पविष्टियह पविष्टिर्व वा साहस्र ॥ ३ ॥ २५ ॥ जे मिन्दू  
पविष्टार्विव दंडव वा अक्षेष्विव वा ऐक्षुष्टार्व वा आहाता द्वये पविष्टिस्तामिति  
तमेव रवणि पविष्टियह पविष्टिर्व वा साहस्र ॥ ३ ॥ २६ ॥ जे मिन्दू सगारिव  
संतिव्य दंडव वा अक्षेष्विव वा ऐक्षुष्टार्व वा आहाता तमेव रवणि पविष्टिस्तामिति  
द्वये पविष्टियह पविष्टिर्व वा साहस्र ॥ ३ ॥ २७ ॥ जे मिन्दू सगारिवसतिव्य  
दंडव वा अक्षेष्विव वा ऐक्षुष्टार्व वा आहाता द्वये पविष्टिस्तामिति तमेव रवणि

पञ्चपिण्ड पञ्चपिण्ठं वा साइज्जइ ॥ ३२९ ॥ जे भिक्खू पाडिहारियं वा सागारियसतियं वा सेजासथारय पञ्चपिण्ठता दोच्चपि अणणुण्णविय अहिष्टेऽ अहिष्टेऽ वा साइज्जइ ॥ ३३० ॥ जे भिक्खू सणकप्पासओ वा उणकप्पासओ वा पोण्डकप्पासओ वा अमिलकप्पासओ वा दीहसुत्ताइ करेऽ करेत वा साइज्जड ॥ ३३१ ॥ जे भिक्खू सचित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेतदडाणि वा करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३३२ ॥ जे भिक्खू सचित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदंडाणि वा वेतदडाणि वा धरेऽ धरेत वा साइज्जइ ॥ ३३३ ॥ जे भिक्खू चित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेतदंडाणि वा करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३३४ ॥ जे भिक्खू चित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेतदंडाणि वा धरेऽ धरेत वा साइज्जइ ॥ ३३५ ॥ जे भिक्खू विचित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेतदंडाणि वा करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३३६ ॥ जे भिक्खू विचित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेतदंडाणि वा धरेऽ धरेत वा साइज्जइ ॥ ३३७ ॥ जे भिक्खू सचित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेतदडाणि वा वेलुदंडाणि वा परिभुजत वा साइज्जइ ॥ ३३८ ॥ जे भिक्खू चित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदडाणि वा वेतदडाणि वा परिभुजत वा साइज्जइ ॥ ३३९ ॥ जे भिक्खू विचित्ताइ दारुदडाणि वा वेलुदंडाणि वा वेतदडाणि वा परिभुजत वा साइज्जइ ॥ ३४० ॥ जे भिक्खू णवगणिवेससि वा गामसि वा जाव सण्णिवेससि वा अणुप्पविसिता असण वा ४ पदिग्गाहेऽ पदिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ३४१ ॥ जे भिक्खू णवगणिवेससि वा अयागरसि वा तबागरसि घा तउयागरसि वा सीसागरसि वा हिरण्णागरसि वा सुवण्णागरसि वा (रथणागरसि वा) वद्धरागरसि वा अणुप्पविसिता असण वा ४ पदिग्गाहेऽ पदिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ३४२ ॥ जे भिक्खू मुहवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३४३ ॥ जे भिक्खू दत्तवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३४४ ॥ जे भिक्खू उद्धवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३४५ ॥ जे भिक्खू णासावीणिय करेऽ करेत वा साइज्जड ॥ ३४६ ॥ जे भिक्खू कक्खवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३४७ ॥ जे भिक्खू हत्थवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३४८ ॥ जे भिक्खू णहवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जड ॥ ३४९ ॥ जे भिक्खू पत्तवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जड ॥ ३५० ॥ जे भिक्खू पुष्पवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जइ ॥ ३५१ ॥ जे भिक्खू फलवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जड ॥ ३५२ ॥ जे भिक्खू वीयवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जड ॥ ३५३ ॥ जे भिक्खू हरियवीणिय करेऽ करेत वा साइज्जड ॥ ३५४ ॥ जे भिक्खू मुहवीणिय वाएऽ वाएत वा साइज्जइ ॥ ३५५ ॥ जे

ਮिस਼ਨ ਵੰਤੀਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੫੬ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਚਲ੍ਹਾਈਸਿਰਿ  
ਕਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੫੭ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਫਲਕੀਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੫੮ ॥  
ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਹਟਪੀਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੫੯ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਨਾਈਸਿਰਿ  
ਕਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੬੦ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਪਾਈਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੬੧ ॥  
ਅ ਮਿਸ਼ਨ ਫਲਕੀਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੬੨ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਥੀਵੀਸਿਰਿ  
ਕਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੬੩ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਪੁਲਖੀਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੬੪ ॥  
ਅ ਮਿਸ਼ਨ ਫਲਕੀਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੬੫ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਹਰਿਵੀਸਿਰਿ ਬਾਏਹ ਕਾਈਂ ਕਾ  
ਸਾਇਅਦ (ਏ ਮਲਖਰਾਉਣਿ ਕਾ ਹਟਪਾਗਾਉਣਿ ਕਾ ਅਖੁਕਿਅਤ ਸਲੋਈ ਤੁਹੀਏ ਰਹੀਏ ਕਾਈਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ) ॥ ੧੬੬ ॥ ਅ ਮਿਸ਼ਨ ਰੋਇਸਿਰਿ ਦੇਵੀ ਅਖੁਪਵਿਚਾਹ ਅਖੁਪਵਿਚਾਰੀ ਕਾ  
ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੬੭ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਚਾਗੁਸਿਰਿ ਦੇਵੀ ਅਖੁਪਵਿਚਾਹ ਅਖੁਪਵਿਚਾਰੀ ਕਾ ਸਾਇਅਦ  
॥ ੧੬੮ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਚਾਪਰਿਕਾਰੀ ਦੇਵੀ ਅਖੁਪਵਿਚਾਹ ਅਖੁਪਵਿਚਾਰੀ ਕਾ ਸਾਇਅਦ  
॥ ੧੬੯ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਨਾਲਿ ਦੇਸੋਗਾਵਿਨਿਆ ਕਿਰਿਵਹਿ ਕਹੈ ਕਰੀਂ ਕਾ ਥਾਪਕ  
॥ ੧੭੦ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਆਤਮਾਰੀ ਕਾ ਬਾਲਮਾਰੀ ਕਾ ਮਹਿਸਾਪਾਰੀ ਕਾ ਜਾਂ ਹਿਰੁ ਤੁਰੁ  
ਪਾਰਮਿਕੇ ਪਰਿਮਿਤਿਵ ਪਰਿਛੇਤੇ ਪਰਿਛੇਤੇ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੧ ॥ ਜੇ  
ਮਿਸ਼ਨ ਬਲੰ ਕਾ ਪਕਿਸਾਹੁ ਕਾ ਬੰਕਸੇ ਕਾ ਪਾਖੁਲਾਹੁ ਕਾ ਅੰਕੇ ਹਿਰੁ ਤੁਰੁ ਪਾਰਮਿਤੇ  
ਪਕਿਤਿਸਿਰੇ ਪਰਿਛੇਤੇ ਪਰਿਛੇਤੇ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੨ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਹੱਦੀ ਕਾ ਕਲੇ  
ਹਾਥਿੰ ਕਾ ਕੜੁਸਾਹੁ ਕਾ ਪਕਿਸਿਰਿ ੨ ਪਰਿਛੇਤੇ ਪਰਿਛੇਤੇ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੩ ॥ ਜੇ  
ਮਿਸ਼ਨ ਅਵਰੇਕਸਮਾਰੀ ਰਖਹਰਿ ਕਹੈ ਕਰੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੪ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ  
ਛਹੁਮਾਰੀ ਰਖਹਰਿ ਕਹੈ ਕਰੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੫ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਲੁ  
ਏਹੁ ਬੰਧੇ ਕੇਹੁ ਕੇਤੇ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੬ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਕਲੁਸਾਪੀਰੀ ਬੰਧੇ  
ਬੰਧੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੭ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਅਨਿਧੀਣ ਬੰਧੇ ਬੰਧੀਂ ਕਾ  
ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੮ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਏਗੇ ਬੰਧੇ ਬੰਧੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੭੯ ॥ ਜੇ  
ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਪਰੀ ਰਿਖੁ ਕੇਵਾਰੇ ਕੇਹੁ ਕੇਤੇ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੮੦ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ  
ਕੋਚੁੜੇ ਪਰੇਹੁ ਕਰੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੮੧ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਅਮਿਸਾਰੀ ੨  
ਮਹਿਦੀ ਅਹਿਦੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੮੨ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਤੁਹੀਏ ਤੁਹੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ  
ਤੁਹੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੮੩ ॥ ਜੇ ਮਿਸ਼ਨ ਰਖਹਰਿ ਤੁਹੀਏ ਤੁਹੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ  
ਤੁਹੀਂ ਕਾ ਸਾਇਅਦ ॥ ੧੮੪ ॥ ਜੇ ਸਿਸੀਇੜਾਵਿ  
ਪੰਖਮੀ ਭਾਰੇਸੋ ਸਮਚੋ ॥ ੫ ॥

## छटो उद्देसो

जे भिक्खू माउगगाम मेहुणपडियाए विष्णवेइ विष्णवेत वा साइज्जइ ॥ ३८६ ॥  
जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणपडियाए हत्थकम्म करेइ करेतं वा साइज्जइ ॥ ३८७ ॥  
जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणपडियाए अगादाण कट्टेण वा किलिचेण वा अगुलि-  
याए वा सलागाए वा सचालेइ सचालेत वा साइज्जइ ॥ ३८८ ॥ जे भिक्खू  
माउगगामस्स मेहुणपडियाए अगादाण सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेतं वा  
पलिमहेत वा साइज्जइ ॥ ३८९ ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणवडियाए अगादाण  
तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा अब्मगेज वा मक्खेज वा अब्मगेत वा मक्खेतं  
वा साइज्जइ ॥ ३९० ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणवडियाए अगादाण क्षेण  
वा लेद्वेण वा पउमचुणेण वा णहाणेण वा सिणाणेण वा चुणेहिं वा वणेहिं वा  
उन्वद्वेइ वा परिवद्वेइ वा उन्वद्वेत वा परिवद्वेत वा साइज्जइ ॥ ३९१ ॥ जे भिक्खू  
माउगगामस्स मेहुणवडियाए अगादाण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा  
उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेतं वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ ३९२ ॥ जे भिक्खू  
माउगगामस्स मेहुणवडियाए अगादाण णिच्छलेइ णिच्छलेत वा साइज्जइ ॥ ३९३ ॥  
जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणवडियाए अगादाण जिरघद जिरघत वा साइज्जइ  
॥ ३९४ ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणवडियाए अगादाण अण्णयरंसि अचित्तसि  
सोयसि अणुपवेसेता सुक्षपोग्गले णिरधायइ णिरधायत वा साइज्जइ ॥ ३९५ ॥ जे  
भिक्खू माउगगामं मेहुणवडियाए (अवाउडि) सय कुज्जा सय बूया करेत वा (बूएतं  
वा) साइज्जइ ॥ ३९६ ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणवडियाए कलह कुज्जा कलहं  
बूया कलहवडियाए गच्छइ गच्छत वा साइज्जइ ॥ ३९७ ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स  
मेहुणवडियाए लेह लिहइ लेह लिहावेइ लेहवडियाए वा गच्छइ गच्छतं वा साइज्जइ  
॥ ३९८ ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणवडियाए पिढुत वा सोयं(त) वा पोसत वा  
भ(लि)लायएण उप्पाएइ उप्पाएत वा साइज्जइ ॥ ३९९ ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स  
मेहुणवडियाए पिढुत वा सोय वा पोसतं वा भलायएण उप्पाएता सीओदगवियडेण  
वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा साइज्जइ  
॥ ४०० ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुणवडियाए पिढुत वा सोय वा पोसत वा  
उच्छोलेता पधोएता अण्णयरेण आलेवणजाएण आलिपेज वा विलिपेज वा  
आलिपेत वा विलिपेत वा साइज्जइ ॥ ४०१ ॥ जे भिक्खू माउगगामस्स मेहुण-  
वडियाए पिढुत वा सोयं वा पोसत वा उच्छोलेता पधोएता आलिपेता विलिपेता  
तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा अब्मगेज वा मक्खेज वा अब्मगेत वा

मक्खोंते वा साहज्ञ ॥ ४ २ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए द्विर्ग  
वा उत्तर्व वा पोर्चर्तु वा उच्छ्रेणी वा पश्चोएता जालियेता विस्त्रियेता अम्बर्गेता  
मक्खोता अप्पमरेव घूणगामाएर्ते घूमेज वा पश्चोते वा पश्चोर्ते वा  
साहज्ञ ॥ ४ ३ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए कलिनार् वत्पर्व  
वरेष वरेते वा साहज्ञ ॥ ४ ४ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदिवर  
अहवाई वत्पर्व वरेष वरेते वा साहज्ञ ॥ ४ ५ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स  
मेहुषवदियाए भोवरताई वत्पर्व वरेष वरेते वा उत्तर्व ॥ ४ ६ ॥ जे मिस्त्रि  
मातृगामस्स मेहुषवदियाए विवित्ताई वत्पर्व वरेष वरेते वा साहज्ञ ॥ ४ ७ ॥  
जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए विवित्ताई वत्पर्व वरेष वरेते वा साहज्ञ  
॥ ४ ८ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो पाए आमज्ञेज वा  
पमज्ञेज वा आमज्ञेते वा पमज्ञेते वा साहज्ञ ॥ ४ ९ ॥ जे मिस्त्रि मातृगाम  
मस्स मेहुषवदियाए अप्पतो पाए संवाहेज वा पमिमोज वा संवाहेते वा एवं  
मर्हेते वा साहज्ञ ॥ ४ १ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पते  
पाए तेजेज वा घण्ट वा जवाहीएज वा मक्खेज वा भिस्त्रियेज वा मर्हेते वा  
मिस्त्रियेते वा साहज्ञ ॥ ४ ११ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो  
पाए झोटेज वा क्षेत्र वा उड्डोक्षेत्र वा उम्हेते वा उम्हेते वा  
साहज्ञ ॥ ४ १२ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो वह  
सौभ्रेदगवियदेन वा उचियोदगवियदेन वा उच्छ्वेतेज वा पश्चोएज वा उच्छ्वेते  
वा पश्चोर्ते वा साहज्ञ ॥ ४ १३ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदिवर  
अप्पतो पाए घूमेज वा रप्त वा घूमेते वा रप्तेते वा साहज्ञ ॥ ४ १४ ॥ जे  
मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो व्यव आमज्ञेज वा पमज्ञेज वा  
आमज्ञेते वा पमज्ञेते वा साहज्ञ ॥ ४ १५ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुष  
वदियाए अप्पतो वार्त संवाहेज वा पमिमोज वा संवाहेते वा कलिमोर्ते वा साहज्ञ  
॥ ४ १६ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो वार्त टोप वा वह  
वा जवाहीएज वा मक्खेज वा भिस्त्रियेज वा मर्हेते वा भिस्त्रियेते वा साहज्ञ  
॥ ४ १७ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो वार्त तेजेज वा  
क्षेत्र वा उड्डोक्षेत्र वा उम्हेते वा उम्हेते वा साहज्ञ ॥ ४ १८ ॥ जे  
मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो वार्त तौमोर्गवियदेन वा उच्छ्वेते  
गवियदेन वा उच्छ्वेतेज वा पश्चोएज वा उच्छ्वेतेन वा पश्चोर्ते वा साहज्ञ  
॥ ४ १९ ॥ जे मिस्त्रि मातृगामस्स मेहुषवदियाए अप्पतो वार्त घूमेज वा रप्त

वा फूमेतं वा रएंत वा साइज्जइ ॥ ४२० ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं आमज्जेज वा पमज्जेज वा आमज्जंतं वा पमज्जत वा साइज्जइ ॥ ४२१ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वण सवाहेज वा पलिमेहेज वा सवाहेत वा पलिमेहेत वा साइज्जइ ॥ ४२२ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वण तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिगेत वा साइज्जइ ॥ ४२३ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं लोद्देण वा कक्षेण वा उल्लोलेज वा उब्बोलेज वा उल्लोलेत वा उब्बोलेत वा साइज्जइ ॥ ४२४ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं सीओदगवियडेण वा उसिणो-दगवियडेण वा उच्छोलेज वा पथोएज वा उच्छोलेत वा पथोएत वा साइज्जइ ॥ ४२५ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि वणं फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जइ ॥ ४२६ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गडं वा पिलगं वा अरइय वा असियं वा भगंदलं वा अण्यरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदेज वा विच्छिदेज वा अच्छिदेतं वा विच्छिदेतं वा साइज्जइ ॥ ४२७ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गंड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगंदल वा अण्यरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता पूय वा सोणियं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ ४२८ ॥ जे भिक्खु माउगगा-मस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गड वा पिलगं वा अरइय वा असियं वा भगदल वा अण्यरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरेत वा विसोहेता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पथोएज वा उच्छोलेत वा पथोएत वा साइज्जइ ॥ ४२९ ॥ जे भिक्खु माउगगा-मस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गड वा पिलगं वा अरइय वा असियं वा भगं-दल वा अण्यरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता पथोएता अण्यरेण आलेवणजाएण आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपेत वा विलिपेतं वा साइज्जइ ॥ ४३० ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायंसि गड वा पिलग वा अरइयं वा असिय वा भगदल वा अण्यरेण तिक्खेण सत्यजाएण अच्छिदिता विच्छिदिता णीहरिता विसोहेता उच्छोलेता पथोएता आलिपेता विलिपेता तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा अच्भगेज वा मक्खेज वा अच्भगेत वा मक्खेत वा साइज्जइ ॥ ४३१ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुण-

अविमाए अप्पणो क्षमति पैर्हे वा पिल्हो वा भरहर्य वा भरिमे वा नक्की  
अन्धवरेख सिक्केव सत्त्वजाएवं अविमित्ता विविद्विता जीहरिता किंगोष्टे रुपे  
हेता पशोएता आधिपेता विविमिता अभिगेता मस्तेता अन्धवरेख सूक्ष्म  
नुक्ते वा पशुकेत वा पूर्वेत वा पश्चैत वा उत्तरेता ॥ ४२२ ॥ ये मिस्त्रमस्त  
मस्त मेहुषवदिवाए अप्पणे पशुकिमिर्व वा इपिकिमिर्व वा अगुठीए निरेता  
जीहरेख जीहरेख वा उत्तरेता ॥ ४२३ ॥ ये मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए  
चाए अप्पणो शीहाबो नासिहाम्बो क्षप्तेज वा उठकेज वा क्षप्तेत वा उठकेत वा  
उत्तरेता ॥ ४२४ ॥ ये मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो शीहाब  
रोमाद क्षप्तेज वा उठकेज वा क्षप्तेत वा उठकेत वा उत्तरेता ॥ ४२५ ॥ ये  
मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो क्षप्तरोमाद क्षप्तेज वा उठकेत  
क्षप्तेत वा उठकेत वा उत्तरेता ॥ ४२६ ॥ ये मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए  
अप्पणो मेहुरोमाद क्षप्तेज वा उठकेज वा क्षप्तेत वा उठकेत वा उत्तरेता ॥ ४२७ ॥  
ये मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो जासारोमाद क्षप्तेज वा उठकेत  
वा क्षप्तेत वा उठकेत वा उत्तरेता ॥ ४२८ ॥ ये मिस्त्र मात्तमामस्त मुख  
वडिवाए अप्पणो चक्षुरारोमाद क्षप्तेज वा उठकेज वा क्षप्तेत वा उठकेत वा उत्तरेता  
॥ ४२९-१ ॥ ये मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो क्षप्तरोमाद क्षप्तेत  
वा उठकेज वा क्षप्तेत वा उठकेत वा उत्तरेता ॥ ४२९-२ ॥ ये मिस्त्र मात्तमाम  
मस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो दर्ते आप्तेज वा पर्तेज वा आप्तेत वा पर्तेत  
वा उत्तरेता ॥ ४३० ॥ ये मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो दर्ते  
उप्तेमेज वा पशोएज वा उप्तेमेज वा पशोएत वा उत्तरेता ॥ ४३१ ॥ ये मिस्त्र  
मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो दर्ते पूर्मेज वा रएज वा पूर्मेत वा रएत वा  
उत्तरेता ॥ ४३२ ॥ ये मिस्त्र मात्तमामस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो  
वा क्षप्तेज वा आमजाँ वा पमजाँ ॥ ४३३ ॥ ये  
मस्त मेहुषवदिवाए अप्पणो उहो ॥ ४३४ ॥ पत्तिमोरेज वा उहो  
वा उत्तरेता ॥ ४३५ ॥ ये ॥

सोइज्जइ ॥ ४४७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो उट्टे फूमेज वा रएज वा फूमेतं वा रएत वा साइज्जइ ॥ ४४८ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण-चडियाए अप्पणो दीहाइ उत्तरोद्धरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ४४९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइ अच्छि-पत्ताइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ४५० ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि आमजेज वा पमजेज वा आमजत वा पमजत वा साइज्जइ ॥ ४५१ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेत वा पलिमहेत वा साइज्जइ ॥ ४५२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि तेलेण वा घएण वा णवणी-एण वा मध्वेज वा भिलिरोज वा भक्ष्वेत वा भिलिरोत वा साइज्जइ ॥ ४५३ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि लोद्वेण वा कङ्केण वा उल्लोलेज वा उब्बेज वा उल्लोलेत वा उब्बदेत वा साइज्जइ ॥ ४५४ ॥ जे भिक्खू माउ-ग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेतं वा पधोएतं वा साइज्जइ ॥ ४५५ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छीणि फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जइ ॥ ४५६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइ पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ४५७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो दीहाइ पासरोमाइ करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ४५८-१ ॥ केसरामाइ ॥ ४५८-२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो अच्छिमलं वा कण्णमल वा दत्तमल वा गहमल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेतं वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ ४५९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अप्पणो कायाओ सेयं वा जल वा पक वा मल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेतं वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ ४६० ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुग्गाम दूझ्जमाणे सीसदुवारिय करेइ करेत वा साइ-ज्जइ ॥ ४६१ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए खीर वा दहिं वा णवणीय वा सम्पि वा गुल वा खड वा सक्खर वा मन्छडिय वा अण्णयर वा पणीय आहारं आहारेइ आहारेत वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्धाह्य ॥ ४६२ ॥ णिसीहृज्ज्ययणे छहो उद्देसो समत्तो ॥ ६ ॥

सत्तामो उद्देसो

जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तणमालिय वा मुंजमालिय वा वेत्त-

मार्गिय वा ममक्षमालिंये वा पित्रमालिंये वा पोतिवश्वतमालिंये वा सिंगमालिंये ए  
संखमालिंये वा हृष्मालिंये वा भित्रमालिंये वा कद्मालिंये वा पातमालिंये वा पुर्ण-  
मालिंये वा चक्रमालिंये वा शीवमालिंये वा हरियमालिंये वा करेत्र वर्ते वा सद्ग्रह  
॥ ४६३ ॥ जे मिक्त् भावम्यामस्तु मेहुषवदिवाए तत्त्वमालिंये वा मुंडमालिंये वा  
बेतमालिंये वा मध्यमालिंये वा पित्रमालिंये वा पोतिवश्वतमालिंये वा सिंगमालिंये  
वा संखमालिंये वा हृष्मालिंये वा भित्रमालिंये वा कद्मालिंये वा पातमालिंये ए  
पुर्णमालिंये वा चक्रमालिंये वा शीवमालिंये वा हरियमालिंये वा करेत्र वर्ते वा  
सद्ग्रह ॥ ४६४ ॥ जे मिक्त् भावम्यामस्तु मेहुषवदिवाए तत्त्वमालिंये वा मुंड-  
मालिंये वा बेतमालिंये वा मध्यमालिंये वा पित्रमालिंये वा पोतिवश्वतमालिंये ए  
सिंगमालिंये वा संखमालिंये वा हृष्मालिंये वा भित्रमालिंये वा कद्म-  
मालिंये वा पुर्णमालिंये वा चक्रमालिंये वा शीवमालिंये वा हरियमालिंये वा  
पित्रमालिंये वा चक्रमालिंये वा सद्ग्रह ॥ ४६५ ॥ जे मिक्त् भावम्यामस्तु मेहुषवदिवाए  
अवस्थेहायि वा तंत्रस्थेहायि वा रुद्रस्थेहायि वा शीसग्नस्थेहायि वा इप्सस्थेहायि वा  
घुणस्थेहायि वा करेत्र कर्त्तव्य वा सद्ग्रह ॥ ४६६ ॥ जे मिक्त् भावम्यामस्तु  
मेहुषवदिवाए अवस्थेहायि वा तंत्रस्थेहायि वा रुद्रस्थेहायि वा शीसग्नस्थेहायि वा  
इप्सस्थेहायि वा घुणस्थेहायि वा करेत्र कर्त्तव्य वा सद्ग्रह ॥ ४६७ ॥ जे मिक्त्  
भावम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अवस्थेहायि वा तंत्रस्थेहायि वा रुद्रस्थेहायि वा  
शीसग्नस्थेहायि वा इप्सस्थेहायि वा घुणस्थेहायि वा परिसुज्ज्ञ वरिसुज्ज्ञ वा  
सद्ग्रह ॥ ४६८ ॥ जे मिक्त् भावम्यामस्तु मेहुषवदिवाए हारयि वा अद्वारायि  
वा एवावली वा मुत्तावली वा कथगावली वा रववावली वा कथगायि वा दुरियायि  
वा फेल्लरायि वा कुङ्कवायि वा पश्चायि वा मटदायि वा फर्वयुद्धायि वा दृष्ट्य  
मुत्तायि वा करेत्र कर्त्तव्य वा सद्ग्रह ॥ ४६९ ॥ जे मिक्त् भावम्यामस्तु देहुष-  
वदिवाए हारयि वा अद्वारायि वा एवावली वा मुत्तावली वा कथगावली वा  
रववावली वा कथगायि वा दुरियायि वा फेल्लरायि वा कुङ्कवायि वा पश्चायि ए  
मटदायि वा फर्वयुद्धायि वा मुत्तावली वा करेत्र कर्त्तव्य वा सद्ग्रह ॥ ४७० ॥  
जे मिक्त् भावम्यामस्तु महुषवदिवाए हारयि वा अद्वारायि वा एवावली वा  
मुत्तावली वा कथगावली वा रववावली वा कथगायि वा दुरियायि वा फेल्लरायि  
वा कुङ्कवायि वा पश्चायि वा मटदायि वा फर्वयुद्धायि वा दृष्ट्युद्धायि वा  
परिसुज्ज्ञ वरिसुज्ज्ञ वा सद्ग्रह ॥ ४७१ ॥ जे मिक्त् भावम्यामस्तु मेहुषवदिवाए  
कार्यायि वा आर्तिपत्तायायि वा कृदलायि वा कंवलगावरायि वा वेवर(ष)यि

# ॥ व्यवहार सम्यकत्व के ६७ बोल ॥

इन सङ्गसंठ बोलों को वारह द्वारा करके कहेंगे । ( १ )  
 सद्हरणा ४, ( २ ) लिंग ३, ( ३ ) विनय १० प्रकार, ( ४ )  
 शुद्धता ३, ( ५ ) लक्षण ५, ( ६ ) भूषण ५, ( ७ ) दोषण ५,  
 ( ८ ) प्रभावना ८, ( ९ ) आगार ६, ( १० ) जयणा ६, ( ११ )  
 स्थानक ६, ( १२ ) भावना ६ ।

## १ सद्हरणा चार प्रकार की—

( १ ) परतीर्थी का अधिक परिचय न करें । ( २ )  
 अधर्म प्ररूपक पाखंडियों की प्रशंसा न करें । ( ३ ) स्वमत  
 का पासत्था, उसन्ना और कुलिंगादि की सज्जत न करें, इन  
 तीनों का परिचय करने से शुद्ध तत्त्व की प्राप्ति नहीं हो  
 सकती । ( ४ ) परमार्थ को जानने वाले संविग्न गीतार्थ की  
 उपासना करके शुद्ध श्रद्धा को धारण करें ।

## २ लिंग के तीन भेद—

( १ ) जैसे तरुण पुरुष रंग राग ऊपर राचे वैसे ही  
 भव्यात्मा श्री जिनशासन पर राचे । ( २ ) जैसे ज्ञानातुर  
 पुरुष खीर खांड युक्त भोजन का प्रेम सहित आदर करे वैसे  
 ही वीतराग की वाणी का आदर करे । जैसे व्यवहारिक ज्ञान  
 पढ़ने की तीव्र इच्छा हो और पढ़ाने वाला मिलने से पढ़कर  
 इस लोक में सुखी होवे वैसे ही वीतराग के आगमों का  
 सूक्ष्मार्थ नित नया ज्ञान सीख के इह लोक और पर लोक के  
 मनोवांछित सुख को प्राप्त करें ।

वा कोयर(व)पावराणि वा कालमियाणि वा णीलमियाणि वा सामाणि वा मि(मा)हा-  
सामाणि वा उद्धाणि वा उद्धलेस्साणि वा वरधाणि वा विवरधाणि वा परवगाणि वा  
सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा (तिरीडपट्टाणि वा) पतु-  
[ला]ण्णाणि वा आवरंताणि वा वी(ची)णाणि वा असुयाणि वा कणककंताणि वा कणग-  
खचियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेइ  
करेत वा साइज्जइ ॥ ४७२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आईणाणि  
वा आईणपावराणि वा कवलाणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपाव-  
राणि वा कालमियाणि वा णीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उद्धाणि वा  
उद्धलेस्साणि वा वरधाणि वा विवरधाणि वा परवगाणि वा सहिणाणि वा सहिणक-  
ल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पतुण्णाणि वा (पणलाणि वा) आवरंताणि वा  
वीणाणि वा असुयाणि वा कणककंताणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि  
वा आभरणविचित्ताणि वा धरेइ धरेत वा साइज्जइ ॥ ४७३ ॥ जे भिक्खू माउग्गा-  
मस्स मेहुणवडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कवलाणि वा कवलपावराणि  
वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा णीलमियाणि वा सामाणि  
वा मिहासामाणि वा उद्धाणि वा उद्धलेस्साणि वा वरधाणि वा विवरधाणि वा पर-  
वगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पतुण्णाणि  
वा आवरंताणि वा वीणाणि वा असुयाणि वा कणककंताणि वा कणगचित्ताणि वा  
कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा परिभुजइ परिभुजेत वा साइज्जइ  
॥ ४७४ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अ(किंख)क्खसि वा ऊर्झसि वा  
उयरेसि वा थणसि वा गहाय सचालेइ सचालेत वा साइज्जइ ॥ ४७५ ॥ जे  
भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स पाए आमज्जेज वा पमज्जेज  
वा आमज्जन वा पमज्जतं वा साइज्जइ ॥ ४७६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण-  
वडियाए अण्णमण्णस्स पाए सचाहेज वा पलिमहेज वा सचाहेत वा पलिमहेत  
वा साइज्जइ ॥ ४७७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स  
पाए तेहेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिंगेज वा मक्खेत  
वा भिलिंगेत वा साइज्जइ ॥ ४७८ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए  
अण्णमण्णस्स पाए लोद्देण वा कफेण वा उझोलेज वा उब्बेज वा उझोलेत वा  
उब्बेत वा साइज्जइ ॥ ४७९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्ण-  
मण्णस्स पाए सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छ्रोलेज वा पधोएज  
वा उच्छ्रोलेत वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ ४८० ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुण-

विदियाए अन्नमण्डसम पाए फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा सद्ग्रह ॥ ४८१ ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कर्म बामजेज वा पमजेज वा आमजंति वा पमजंति वा साइज्जइ ॥ ४८२ ॥ जे मिक्कू माठग्गी-  
मस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कायं संकाहेज वा पतिमोहेज वा संकाहेत वा पतिमोहेत वा साइज्जइ ॥ ४८३ ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्न-  
मण्डस्स कायं तेलेज वा एप्प वा चबडीएज वा मक्केज वा मिस्तिओज वा मक्कीत वा मिस्तीत वा मिस्तीति वा साइज्जइ ॥ ४८४ ॥ जे मिक्कू माठग्गामस्स मेहुणविदि-  
याए अन्नमण्डसम कायं ब्लेज वा ब्लेज वा उब्लेज वा उब्लेज वा उब्लेज वा उब्लेज वा साइज्जइ ॥ ४८५ ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्नगामण्डसम कायं सीझेदगवियडेज वा उतिथोदगवियडेज वा उब्लेजेडेज वा पथे-  
एज वा उब्लेडेत वा पथोएर्त वा साइज्जइ ॥ ४८६ ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कर्म फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्ज-  
इ ॥ ४८७ ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कर्म संकाहेज वा पतिमोहेज वा संकाहेत वा पतिमोहेत वा साइज्जइ ॥ ४८८ ॥ जे मिक्कू माठग्गा-  
मस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कर्म संकाहेज वा पतिमोहेज वा संकाहेत वा  
पतिमोहेत वा साइज्जइ ॥ ४८९ ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्न-  
मण्डस्स कर्मेति वर्त स्मेदेज वा ब्लेज वा उब्लेजेज वा उब्लेज वा उब्लेज  
वा उब्लेज वा साइज्जइ ॥ ४९० ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्न-  
मण्डस्स कर्मेति वर्त सीझेदगवियडेज वा उतिथोदगवियडेज वा उब्लेजेज वा  
पथोएज वा उब्लेडेत वा पथोएर्त वा साइज्जइ ॥ ४९१ ॥ जे मिक्कू माठग्गामस्स  
मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कायसि वर्त फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा  
साइज्जइ ॥ ४९२ ॥ जे मिक्कू माठगामस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कर्मेति  
गई वा पिल्लां वा जाह्य वा जारिय वा मर्मदूँ वा अन्नमरेव तिक्केव सत्त्वार्थ  
विनिक्केज वा विनिक्केज वा अनिक्केत वा विनिक्केत वा साइज्जइ ॥ ४९३ ॥ जे  
मिक्कू माठग्गामस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कर्मेति गई वा पिल्लां वा जाह्य  
वा जारिय वा मर्मदूँ वा अन्नमरेव तिक्केव सत्त्वार्थ अनिक्किता विनिक्कित्य  
पूर्व वा सोमिय वा गीहरेज वा पिल्लोहेज वा चीहेत वा लिल्लोहेत वा उब्लेज  
॥ ४९४ ॥ जे मिक्कू माठग्गामस्स मेहुणविदियाए अन्नमण्डसम कर्मेति गई वा

पिलग वा अरड्य वा असियं वा भगदलं वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण  
 अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण  
 वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत्त वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ ४९६ ॥ जे  
 भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गंड वा पिलग वा अरड्यं  
 वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता  
 णीहरित्ता विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पवोएत्ता अण्णयरेण आलेवणजाएण आलिपेज वा  
 विलिपेज वा आलिपत वा विलिपत वा साइज्जइ ॥ ४९७ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स  
 मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायंसि गड वा पिलग वा अरड्य वा असिय वा  
 भगंदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरित्ता  
 विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिपित्ता विलिपित्ता तेलेण वा घएण वा णवणीएण  
 वा अब्गेज वा भक्खेज वा अब्गेतं वा भक्खेतं वा साइज्जइ ॥ ४९८ ॥ जे भिक्खु  
 माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायसि गंड वा पिलग वा अरड्य वा असियं  
 वा भगंदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदित्ता विच्छिदित्ता णीहरेत्ता  
 विसोहेत्ता उच्छोलेत्ता पधोएत्ता आलिपेत्ता अब्गेत्ता अण्णयरेण धूवणजाएण धूवेज वा  
 पधूवेज वा धूवेत वा पधूवेत वा साइज्जइ ॥ ४९९ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुण-  
 वडियाए अण्णमण्णस्स पालुकिमिय वा कुच्छिकिमियं वा अगुलीए गिवेसिय २ णीहरइ  
 णीहरेत वा साइज्जइ ॥ ५०० ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स  
 दीहाओ णहसिहाओ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ५०१ ॥  
 जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइ जघरोमाइ कप्पेज वा  
 सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ५०२ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुण-  
 वडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइ कव्वरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत  
 वा साइज्जइ ॥ ५०३ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइ  
 पसुरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ५०४ ॥ जे भिक्खु  
 माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दीहाइ णासारोमाड कप्पेज वा सठवेज  
 वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ५०५ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडि-  
 याए अण्णमण्णस्स दीहाइ चक्खुरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत  
 वा साइज्जइ ॥ ५०६-१ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स  
 दीहाइ कण्णरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ५०६-२ ॥  
 जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स दते आवसेज वा पधसेज वा  
 आधसत वा पधसत वा साइज्जइ ॥ ५०७ ॥ जे भिक्खु माउगगामस्स मेहुणवडियाए

अन्यमन्यस्तु रहि उच्छ्रोदेव वा परोपद वा उच्छ्रोदेव वा फलोर्हं वा उद्दम्प  
॥ ५ ८ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि फूमेव वा  
रएव वा फूमेत वा रहीत वा साइज्जह ॥ ५ ९ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहुष-  
वदिवाए अन्यमन्यस्तु उद्दै आमजेव वा पमजेव वा आमजेत वा पमजेत वा  
साइज्जह ॥ ५ १० ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु उद्दै  
संवाहेव वा परिमोर्ज वा संवाहेत वा परिमोर्हेत वा साइज्जह ॥ ५ ११ ॥ जे मिन्दू  
मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु उद्दै तेषेव वा वप्तु वा वदपीपृष्ठ वा  
मक्केव वा मिस्तिगेव वा मक्केत वा मिस्तिहेत वा साइज्जह ॥ ५ १२ ॥ जे मिन्दू  
मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु उद्दै व्येदेष वा व्येदेण वा व्येदेण वा  
उच्छ्रोदेव वा उच्छ्रोदेव वा उच्छ्रोदेव वा उच्छ्रोदेव वा साइज्जह ॥ ५ १३ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु  
मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु उद्दै सीम्बेशगमियदेव वा उत्तिष्ठोदामियदेव वा उच्छ्रो-  
देव वा परोपद वा उच्छ्रोदेव वा उच्छ्रोदेव वा साइज्जह ॥ ५ १४ ॥ जे मिन्दू  
मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु उद्दै वीहार्द वचिनार्द क्षेय वा  
वत्तरोक्तुरेमार्द क्षेय वा संत्वेय वा क्षेयेत वा संठेयेत वा साइज्जह ॥ ५ १५ ॥ जे मिन्दू  
मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु वीहार्द वचिनार्द क्षेय वा  
संठेय वा क्षेयेत वा संठेयेत वा साइज्जह ॥ ५ १६ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहु-  
षवदिवाए अन्यमन्यस्तु वान्धीलि आमजेव वा पमजेव वा आमजेत वा पमजेत वा  
साइज्जह ॥ ५ १७ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु  
वान्धीलि संवाहेव वा परिमोर्ज वा संवाहेत वा परिमोर्हेत वा साइज्जह ॥ ५ १८ ॥ जे मिन्दू  
मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु वान्धीलि तेषेव वा वप्तु  
वा वदपीपृष्ठ वा मक्केव वा मिस्तिगेव वा मक्केत वा मिस्तिहेत वा उक्तम्  
॥ ५ १९ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु वान्धीलि व्येदेष  
वा व्येदेण वा व्येदेण वा उच्छ्रोदेव वा उच्छ्रोदेव वा उच्छ्रोदेव वा साइज्जह ॥ ५ २० ॥ जे मिन्दू  
मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु वान्धीलि सीम्बेशगमियदेव वा  
उत्तिष्ठोदामियदेव वा उच्छ्रोदेव वा परोपद वा उच्छ्रोदेव वा परोर्हेत वा तार-  
ज्जह ॥ ५ २१ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु वान्धीलि  
फूमेव वा रएव वा फूमेत वा रहीत वा साइज्जह ॥ ५ २२ ॥ जे मिन्दू मात्रम्या-  
मस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु वीहार्द अम्बाहेमार्द क्षेय वा उठेय वा  
क्षेयेत वा संठेयेत वा साइज्जह ॥ ५ २३ ॥ जे मिन्दू मात्रम्यामस्तु मेहुषवदिवाए

अण्णमण्णस्स दीहाइं पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ५२५-१ ॥ केसरोमाइ ॥ ५२५-२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छमलं वा कण्णमल वा दंतमल वा णहमल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ ५२६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायाओ सेय वा जळ वा पंक वा मल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ ५२७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स गामाणुगाम सूदूज्जमाणे सीसदुवारिय करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ५२८ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्तरदियाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५२९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए ससिणिद्वाए पुडवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३० ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए ससरक्खाए पुडवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३१ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए म[ह]द्वियाकडाए पुडवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमताए पुडवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३४ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमताए लेल्लै पुडवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३५ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कोलावाससि वा दासए जीवपहड्डिए सअड्डे सपाणे सबीए सहरिए सओसे सउदए सउतिंगपणगदगमट्टियमक्कडासताणगसि णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अकसि वा पलियकसि वा णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अकसि वा पलियकसि वा णिसीयावेता वा तुयद्वावेता वा असण वा ४ अणुग्धासेज वा अणुपाएज वा अणुग्धासेत वा अणुपाएत वा साइज्जइ ॥ ५३८ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु

अन्यमन्यस्तु रहि उच्छ्रेष्ठेज वा पशोएज वा उच्छ्रेष्ठेत वा पशोएर्त वा सप्तम  
॥ ५ ८ ॥ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि पूर्वेज वा  
रप्त्व वा पूर्वेत वा रर्ति वा साहस्र ॥ ५ ९ ॥ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुष  
वदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि आमजेज वा पमजेज वा आमर्ति वा पमर्ति वा  
साहस्र ॥ ५ १ ॥ १ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि  
संकाहेज वा पश्मिन्देज वा संकाहेत वा पश्मिन्देत वा साहस्र ॥ ५ १ १ ॥ २ जे मिक्क  
मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि तेलेज वा चण्ड वा अद्भीएज वा  
मक्खेज वा मिलिन्देज वा मक्खेत वा मिलिन्देत वा साहस्र ॥ ५ १ २ ॥ ३ जे मिक्क  
मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि अंडेज वा अंडेत वा उच्छ्रे-  
सेज वा पशोएज वा उच्छ्रेष्ठेत वा पशोएर्त वा साहस्र ॥ ५ १ ३ ॥ ४ जे मिक्क मात्रमामस्तु  
मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि स्त्रीलोहगवियदेज वा उत्तिजोहगविदेज वा उच्छ्रे-  
सेज वा पशोएज वा उच्छ्रेष्ठेत वा पशोएर्त वा साहस्र ॥ ५ १ ४ ॥ ५ जे मिक्क  
मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रहि पूर्वेज वा रप्त्व वा पूर्वेत वा रर्ति  
वा साहस्र ॥ ५ १ ५ ॥ ६ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रीढ़र्व  
उत्तरोद्धरेमाई कम्पेज वा संठकेज वा कम्पेत वा संठकेत वा साहस्र ॥ ५ १ ६ ॥  
७ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रीढ़र्व अविक्षपताई कम्पेज वा  
संठकेज वा कम्पेत वा संठकेत वा साहस्र ॥ ५ १ ७ ॥ ८ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुष  
वदिवाए अन्यमन्यस्तु लप्डीयि आमजेज वा पमजेज वा आमर्ति वा पमर्ति  
वा साहस्र ॥ ५ १ ८ ॥ ९ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु  
लप्डीयि संकाहेज वा पश्मिन्देज वा संकाहेत वा पश्मिन्देत वा साहस्र ॥ ५ १ ९ ॥  
१० जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु लप्डीयि लेपेज वा चण्ड  
वा अद्भीएज वा मक्खेज वा मिलिन्देज वा मक्खेत वा मिलिन्देत वा सप्तम  
॥ ५ १ ० ॥ ११ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु लप्डीयि लेपेज  
वा चण्ड वा उच्छ्रेसेज वा उच्छ्रेष्ठेत वा उच्छ्रेष्ठेत वा साहस्र ॥ ५ १ १ ॥  
१२ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु लप्डीयि स्त्रीलोहगविदेज वा  
उत्तिजोहगवियदेज वा उच्छ्रेसेज वा पशोएज वा उच्छ्रेष्ठेत वा पशोएर्त वा सप्तम  
ज्ञान ॥ ५ १ २ ॥ १३ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु लप्डीयि  
पूर्वेज वा रप्त्व वा पूर्वेत वा रर्ति वा साहस्र ॥ ५ १ ३ ॥ १४ जे मिक्क मात्रमा-  
मस्तु मेहुषवदिवाए अन्यमन्यस्तु रीढ़र्व चुम्परोमाई कम्पेज वा संठकेज वा  
कम्पेत वा संठकेत वा साहस्र ॥ ५ १ ४ ॥ जे मिक्क मात्रमामस्तु मेहुषवदिवाए

अण्णमण्णस्स दीहाइं पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ५२५-१ ॥ जे केसरोमाइ ॥ ५२५-२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स अच्छमल वा कण्णमल वा दंतमल वा णहमल वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ ५२६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स कायाओ सेय वा जल वा पक्क वा मलं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जइ ॥ ५२७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णमण्णस्स गामाणुग्गाम दूझ्जमाणे सीसदुवारिय करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ५२८ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्तरहियाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५२९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए सपिणिद्धाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३० ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए ससरक्खाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३१ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए म[ह]ट्टियाकडाए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३२ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमताए पुढवीए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३३ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमताए सिलाए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३४ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए चित्तमताए लेल्लाए णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३५ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कोलावाससि वा दारुए जीवपइट्टिए सअडे सपाणे सबीए सहरिए सओसे सउदए सउत्तिंगणगदगमट्टियमङ्कडासताणगासि णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३६ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अकसि वा पलियंकसि वा णिसीयावेज वा तुयद्वावेज वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३७ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अकसि वा पलियंकसि वा णिसीयावेता वा तुयद्वावेता वा असण वा ४ अणुग्नासेज वा अणुपाएज वा अणुग्नासेत वा अणुपाएत वा साइज्जइ ॥ ५३८ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु वा णिसीयावेत वा तुयद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ५३९ ॥ जे भिक्खू माउग्गामस्स मेहुणवडियाए आगतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावसहेसु

वा विसीमात्रेता वा दुयष्टविता वा असर्वं वा ४ अनुपातेज वा अनुपात्वं वा अनुपातेतु वा अनुपात्वं वा साहज्य ॥ ५४ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुन-विद्याए अन्नवर लेख्यं आवह आलडेते वा साहज्य ॥ ५४१ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अम्बुजार्द योगवार्द अवजीत्वर विहर्ते वा साहज्य ॥ ५४२ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अम्बुजार्द योगवार्द अवजीत्वर विहर्ते वा साहज्य ॥ ५४३ ॥ पे मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अम्बुजार्द योगवार्द अवजीत्वर विहर्ते वा साहज्य ॥ ५४४ ॥ पे मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अम्बुजार्द योगवार्द विहर्ते वा पक्षिवार्द वा पार्वति वा फक्षविति वा पुण्डेति वा सीर्वति वा महाव (उभिह वा पक्षिह वा) संचापेत (उभिहेत वा पक्षिहेत वा) संचालेत वा साहज्य ॥ ५४५ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अन्नवर फुजार्द वा पक्षिवार्द वा सोवंति कहु वा कक्षिवं वा अगुलिव वा सज्जार्द वा अनुपातेतिय संचापेत सज्जार्देत वा साहज्य ॥ ५४६ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अन्नवर फुजार्द वा पक्षिवार्द वा अवसितिविकहु विक्षिव वा परिस्तर्व वा परितुवेज वा किल्लेज वा आस्मिन्देत वा परिस्तर्व वा परितुवेत वा साहज्य ॥ ५४७ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अन्नवर वा ४ परिच्छद् पक्षिवहेत वा साहज्य ॥ ५४८ ॥ पे मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए वत्वं वा पक्षिम्यह वा कहेत्वं वा फक्षपुण्डर्व वा देह देत्वं वा साहज्य ॥ ५४९ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए वत्वं वा ४ पक्षिच्छद् पक्षिवहेत वा साहज्य ॥ ५५० ॥ पे मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए सज्जार्द वाएत वार्देत वा साहज्य ॥ ५५१ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए सज्जार्द वाएत वार्देत वा साहज्य ॥ ५५२ ॥ ये मिकू, माठगामस्स मेहुनविद्याए अन्नदोर्व इविष्णव आकार व्येत वर्तेत वा साहज्य । ते सेवमात्रे आवज्य वामसात्तिये परिहार्दार्व अनुपात्वं ॥ ५५३ ॥ णिसीहुऽम्भयजे सत्तमो वर्देसो समर्तो ॥ ७ ॥

### अहमो उद्देसो

ये मिकू, माठगामारेतु वा आरमामारेतु वा गाहमात्रेतु वा परियात्वदेतु वा एतो एषाए इत्याए तदिविहार वा क्षेत्र सज्जार्द वा वरेत अन्नवर वा ४ जाहारेत इत्यार्द वा यामदर्व वा परिहुपेत अन्नवर वा अकारिवे पिहुरे (पिहुर) वरस्त्र(म)परिवेत्व वा व्येत वर्तेत वा साहज्य ॥ ५५४ ॥ ये मिकू, उज्जाविति वा उज्जाविहिति वा उज्जावसर्वति वा विज्ञाविहिति वा विज्ञावसार्वति वा एवै

एगा इत्थीए सद्धि विहार वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चारं वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयर वा अणारियं पिहुण अस्समणपाउग कहं कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५५५ ॥ जे भिक्खू अटसि वा अटाल्यंसि वा चारियसि वा पागारसि वा दारसि वा गोपुरंसि वा एगो० इत्थीए सद्धि विहार वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चारं वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयर वा अणारियं पिहुण अस्समणपाउगं कह कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५५६ ॥ जे भिक्खू दगसि वा दगमगांसि वा दगपहसि वा दगतीरसि वा दगठाणसि वा एगो० इत्थीए सद्धि विहार वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चारं वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयर वा अणारियं पिहुण अस्समणपाउगं कह कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५५७ ॥ जे भिक्खू सुण्णगिहसि वा सुण्णसालसि वा भिण्णगिहंसि वा भिण्णसालसि वा कूडागारसि वा कोट्टागारसि वा एगो० इत्थीए सद्धि विहारं वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चारं वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयरं वा अणारियं पिहुणं अस्समणपाउगं कह कहेइ कहेतं वा साइज्जाइ ॥ ५५८ ॥ जे भिक्खू तणगिहसि वा तणसालंसि वा तुसगिहसि वा तुससालसि वा भुसगिहसि वा भुससालसि वा एगो० इत्थीए सद्धि विहारं वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चारं वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयर वा अणारियं पिहुण अस्समणपाउगं कह कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५५९ ॥ जे भिक्खू जाणसालसि वा जाणगिहसि वा जुग्गसालसि वा जुग्गगिहंसि वा एगो० इत्थीए सद्धि विहारं वा करेइ सज्जायं वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चारे वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयरं वा अणारियं पिहुण अस्समणपाउगं कह कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५६० ॥ जे भिक्खू पणियसालसि वा पणियगिहंसि वा परियासालसि वा परियागिहसि वा कम्मियसालंसि वा कम्मियगिहसि वा एगो० इत्थीए सद्धि विहार वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चार वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयरं वा अणारियं पिहुण अस्समणपाउगं कह कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५६१ ॥ जे भिक्खू गोणसालसि वा गोणगिहसि वा महाकुलसि वा महागिहसि वा एगो० इत्थीए सद्धि विहार वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहारेइ उच्चारं वा पासवण वा परिद्वेष अण्णयर वा अणारियं पिहुण अस्समणपाउगं कह कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५६२ ॥ जे भिक्खू रखो वा वियाले वा इत्यिमज्जग्गे इत्यिससते इत्यिपरिवुडे कहं कहेइ कहेत वा साइज्जाइ ॥ ५६३ ॥ जे भिक्खू सगणिच्छियाए वा परगणिच्छियाए वा णिग्गथीए सद्धि

गामाखुण्डामे इस्तमाने पुरबो गत्तमारे पिंडमो रीवमाने शेषमन्त्रसंक्षये पिंड-  
सोममायरसंपरित्वे इस्तमप्सहायमुहे भाज्जानेत्वगत विहारे वा करोह सञ्चार्त वा  
क्षेत्रे जगत वा ४ आहारोह उवारे वा पातवर्त वा परिदुषेऽ अन्नदरे वा अन्नत्वं  
पिंडर्य अस्तमजपात्रमि कर्त क्षेत्रे क्षेत्रे वा साइज्ज ॥ ५६४ ॥ ये मिक्षु वार्त  
वा अथाक्षर्य वा उवात्तमे वा अनुशास्य वा अंतो उवस्तमस्त अर्द वा राई अर्तिर्य  
वा राई संवत्तापैद (तं न पदियाइक्षद तं पुर्व मिक्षमह वा पवित्रद वा) संव-  
त्तापैतं वा साइज्ज ॥ ५६५ ॥ ये मिक्षु वावं वा अन्नाक्षर्य वा उवस्तम वा  
अनुशास्य वा अंतो उवस्तमस्त अर्द वा राई अर्तिर्य वा राई संवत्तापैद तं पुर्व  
मिक्षमह वा पवित्रद वा मिक्षमंते वा पवित्रतं वा साइज्ज ॥ ५६६ ॥ ये मिक्षु  
रत्नो वातियार्य सुरियार्य मुद्धामित्तार्य संवायमहेतु वा पिंडमहेतु वा वाल अर्थर्य  
वा ४ पदिमाहेतु पदिम्याहेतु वा साइज्ज ॥ ५६७ ॥ ये मिक्षु रत्नो वातियार्य  
सुरियार्य मुद्धामित्तार्य सचरत्याक्षर्य वा उत्तरत्याक्षर्य वा रीवमार्य अर्थर्य वा  
४ पदिमाहेतु पदिम्याहेतु वा साइज्ज ॥ ५६८ ॥ ये मिक्षु रत्नो वातियार्य  
सुरियार्य मुद्धामित्तार्य इवसामग्याव वा गमसामग्याव वा मौत्तसामग्याव  
वा युग्मसामग्याव वा खस्तसामग्याव वा भेद्यसामग्याव वा अर्थर्य वा  
४ पदिमाहेतु पदिम्याहेतु वा साइज्ज ॥ ५६९ ॥ ये मिक्षु रत्नो वातियार्य  
सुरियार्य मुद्धामित्तार्य सचित्तिद्विनिष्टव्यामो चीर वा वहि वा अल्पीर्य वा सम्पि  
वा गुरु वा खंडे वा उद्दर वा अन्नदर वा मोदवार्य प्रीत्वदेव  
पदिमाहेतु वा साइज्ज ॥ ५७ ॥ ये मिक्षु रत्नो वातियार्य मुद्धामित्तार्य मित्तार्य  
दित्तार्य उस्तम्पिंह वा संस्कृपिंह वा अवाहपिंह वा वर्णमपिंह वा  
पदिमाहेतु पदिम्याहेतु वा साइज्ज । तं सेवमारे अस्तमह चारमार्यिर्य परिष्ठ-  
द्वार्य अनुभाव ॥ ५७१ ॥ पिसीह॒ उपर्यो भद्रमो उद्देसो समर्थो ॥ ८ ॥

### एवमो उद्देसो

ये मिक्षु रम्पिंह गेन्द्र गेन्द्रहेतु वा साइज्ज ॥ ५७२ ॥ ये मिक्षु एमर्यिं  
भुवर भुवर्तं वा साइज्ज ॥ ५७३ ॥ ये मिक्षु रम्पेत्तेतरे पवित्र अमित्त वा  
साइज्ज ॥ ५७४ ॥ ये मिक्षु रम्पेत्तेतरे वर्ज्ञा- आउसो । रावत्तेतुरिए ये  
ज्ञु अम्बं क्ष्याह रम्पेत्तेतरे भिन्नमित्तप वा पवित्रित्तप वा इम्बं दुर्ये प्रीत्वदेव  
ग्याव रम्पेत्तेतरे भिन्न वा ४ अमिह॒ भावु वक्तव्याहि ओ तं एवं भद्र वर्ते  
वा साइज्ज ॥ ५७५ ॥ ये मिक्षु जो वर्ज्ञा रम्पेत्तिरिया वर्ज्ञा 'आउसो' ।  
समर्था यो ज्ञु दुर्ये क्ष्याह रम्पेत्तेतरे भिन्नमित्तप वा पवित्रित्तप वा अप्तेवे

## ४ विनय का वर्णन सेव—

( १ ) अरिहस्तों का विनय करे । ( २ ) सिद्धों का विनय । ( ३ ) आवार्य का विनय । ( ४ ) उपाध्याय का विनय करे । ( ५ ) स्थविर का विनय । ( ६ ) गण [ बहुत आचार्यों के समूह ] का विनय । ( ७ ) कुल [ बहुत आचार्यों के शिष्य समूह ] का विनय । ( ८ ) स्थ धर्मी का विनय । ( ९ ) संघ का विनय । ( १० ) संभोगी का विनय करे, इस वर्णों का गुमान पूर्वक विनय करे । ऐन शासन में ‘विनय मूल पर्म है’ । विनय करते ही अमेक सद्गुणों की प्राप्ति हो सकती है ।

## ४ शुद्धता के ४ भेद—

( १ ) भग शुद्धता—भग करते अरिहंत देव १४ अति शुद्ध १५ वाणी १६ महाप्रातिष्ठाये संष्कृत १७ दूषक रहित, १८ गुणासहित हमारे देव हैं । इसके सिवाय हजारों कष्ट पक्षों पर भी सरागी देवों का समर्पण न करे । ( २ ) वज्र शुद्धता वज्र से गुण कीर्त्ति अरिहस्तों के सिवाय दूसरे सरागी देवों का न करे । ( ३ ) काय शुद्धता—काय से नमस्कार भी अरिहस्तों के सिवाय अस्य सरागी देवों को न करे ।

## ४ लक्षण के ५ भेद—

( १ ) सम-शुद्ध मिष्ठपर सम परिषाम रखता । ( २ ) सरेग—बैठाय मात्र रक्खना यामे संसारभ्रस्तार ही विषय भीर कपाय से अनन्ता काल मध्य अमर्ष करते हुये इस भव अमर्दी सामग्री मिली है इत्यादि विचार करता । यामे यहां तक इस मोहमप अगत् से अलग रहना भीर जगतारक जिमराज की

पडिग्गहग जाए अम्ह रायतेपुराओ असण वा ४ अभिहडं आहद्द दलयामि' जो तं एव वयंतं पडिसुणेइ पडिसुणेत वा साइज्जइ ॥ ५७६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण दुवारियभत्त वा पसुभत्तं वा भयगभत्त वा वलभत्त वा कयगभत्तं वा हयभत्त वा गयभत्त वा कतारभत्त वा दुष्मिक्खभत्त वा दमगभत्त वा गिलाणभत्त वा वद्लियाभत्त वा पाहुणभत्त वा पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ ५७७ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण इमाइ छद्दोसाय-यणाइ अजाणि(य)त्ता अपुच्छिय अगवेसिय पर चउरायपचरायाओ गाहावङ्कुल पिंड-वायपडियाए णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमत वा पविसत वा साइज्जइ, तजहा-कोट्टागारसालाणि वा भडागारसालाणि वा पाणसालाणि वा खीरसालाणि वा गज-सालाणि वा महाणससालाणि वा ॥ ५७८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण अइगच्छमाणाण वा णिगच्छमाणाण वा पयमवि चक्खुदसणपडि-याए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जइ ॥ ५७९ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण इत्थीओ सञ्चालकारविभूसियाओ पयमवि चक्खुदसण-पडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जइ ॥ ५८० ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण मस(क)खाया[ण]ण वा मच्छखायाण वा छवि-खायाण वा वहिया णिगयाण असण वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ५८१ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण अण्णयर उवद्वृहणिय समीहिय पेहाए तीसे परिसाए अणुष्टियाए अभिष्णाए अब्बोच्छिष्णाए जो तमण्ण पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ५८२ ॥ अह पुण एव जाणेज 'इहज्ज रायखत्तिए परिखुसिए' जे भिक्खू ताए गिहाए ताए पएसाए ताए उवासतराए विहारं वा करेइ सज्जाय वा करेइ असण वा ४ आहरेइ उच्चारं वा पासवण वा परिद्वेवे अण्णयरं वा अणारिय पिहुण अस्समणपाउग कह कहेइ कहेतं वा साइज्जइ ॥ ५८३ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण वहिया जत्तास(पट्टि)ठियाण असण वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ५८४ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण वहिया जत्तापडिणियत्ताण असण वा ४ पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ ५८५ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण णइजत्तापट्टि-णियत्ताण असण वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ५८६ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण णइजत्तापट्टि-णियत्ताण असण वा ४ पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ ५८७ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण गिरिजत्तापट्टियाण असण वा ४ पडिग्गा-

ऐ पदिम्बाहेतुं वा साक्षर ॥ ५८८ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं मुश-  
मिचितार्णं गिरिजतापदिमितार्णं असूज वा ४ पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्ष-  
र ॥ ५८९ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं मुशमिचितार्णं महाभिसेवीं  
वस्माप्ति लिक्षयम् वा पदिम्बर् वा मिन्दूमर्ते वा पदिम्बर् वा साक्षर ॥ ५९० ॥  
वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं मुशमिचितार्णं इमामो दस अभिसेवाये  
रामहारीओ उटिटुप्पो गवियाओ ववियाओ अंठो मासस्तु तुक्षयो वा लिक्षये  
वा लिक्षयम् वा पदिम्बर् वा लिक्षयमर्ते वा पदिम्बर् वा साक्षर, तंव्या-वैष्णव  
वाजारसी समल्ली दादवं वैष्णव घेऊवी मित्रिमा हृषित(ना)क्षुरे रामीर्त ॥ ५९१ ॥  
वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं मुशमिचितार्णं असूर्ण वा ४ परस्त जीहृ  
पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्षर, तंव्या-खतिमार्णं वा राहित वा कुरुरैत वा  
रामर्तिमार्णं वा राक्षेतिमार्णं वा ॥ ५९२ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं  
मुशमिचितार्णं असूर्ण वा ४ परस्त जीहृ पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्षर,  
तंव्या-वैष्णव वा वृद्धव वा वृक्षवाज वा वृक्षाव वा गुडिमार्ण वा  
केऽनगार्ण वा वृक्षाव वा वृक्षगाण वा देववृक्षाव वा एतत्कुमार्ण वा  
॥ ५९३ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं मुशमिचितार्णं अरावे वा ४ परस्त  
जीहृ पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्षर, तंव्या-वासपोस्याव वा इति-  
पोसवार्ण वा महिसुपोस्याव वा वस्त्रपोसवार्ण वा सीहृपोसवार्ण वा वग्मप्रेस्याव  
वा अवपोसवार्ण वा षोडपोस्याव वा मिष्ठोसवार्ण वा उच्छ्रपोस्याव वा उवरपंक-  
याव वा मैत्रप्रेस्याव वा कुमुदपोस्याव वा रितिरपोस्याव वा वृक्षप्रेस्याव वा  
काशवपोस्याव वा जीर्ण[कु]पोसवार्ण वा ईसपोस्याव वा भद्ररपेस्याव वा द्रु-  
पेसवार्ण वा ॥ ५९४ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं मुशमिचितार्णं असूर्ण  
वा ४ परस्त जीहृ पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्षर, तंव्या-वास(का)क्ष-  
गार्ण वा हृषिवमगाण वा ॥ ५९५ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं मुश-  
मिचितार्णं असूर्ण वा ४ परस्त जीहृ पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्षर, तंव्या-  
वासमिठार्ण वा वृत्तिमिठार्ण वा ॥ ५९६ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं  
मुशमिचितार्णं असूर्ण वा ४ परस्त जीहृ पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्षर,  
तंव्या-वासत्तेवाव वा हृषितत्तेवाव वा ॥ ५९७ ॥ वे मिन्दू रन्धो खतिमार्णं मुरिवार्णं  
मुशमिचितार्णं असूर्ण वा ४ परस्त जीहृ पदिम्बाहेतुं पदिम्बाहेतुं वा साक्षर,  
तंव्या-वृक्षवाहाव वा सप्तवाहाव वा अवस्त्रवाहाव वा उष्मवाहाव  
वा मज्जावार्ण वा मैत्रवाहाव वा कुमुदवाहाव वा उद्धरणवाहाव वा हृषिववाहाव

वा परियद्यग्रहाण वा दीवियग्रहाण वा असिग्रहाण वा धणुग्रहाण वा सत्तिग्रहाण वा कोंतग्रहाण वा ॥ ५९८ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण असण वा ४ परस्स पीहड पडिग्राहेह पडिग्राहेत वा साइज्जइ, तजहा-चरिसधरण वा कञ्जुइज्जाण वा दोवारियाण वा द[ङ]डारक्षियाण वा ॥ ५९९ ॥ जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण मुदियाण मुद्धाभिसित्ताण असण वा ४ परस्स पीहड पडिग्राहेह पडिग्रा-हेत वा साइज्जइ, तजहा-खुज्जाण वा चिलाइयाण वा चामणीण वा घडभीण वा बब्बरीण वा प[पा]उसीण वा जोगियाण वा पल्हवियाण वा ईसणीण वा थासगिणीण वा लउसीण वा लासीण वा दमिलीण वा सिंहलीण वा आलवीण वा पुलिंदीण वा सवरीण वा पारसी[परिसिरी]ण वा । त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहरद्वाण अणुग्रहाइय ॥ ६०० ॥ गिसीहङ्ग्ययणे णघमो उद्देसो समत्तो ॥ ९ ॥

### दसमो उद्देसो

जे भिक्खू भदत आगाढ वयइ वयत वा साइज्जइ ॥ ६०१ ॥ जे भिक्खू भदतं फरस वयइ वयत वा साइज्जइ ॥ ६०२ ॥ जे भिक्खू भदत आगाढ फरस वयड वयत वा साइज्जइ ॥ ६०३ ॥ जे भिक्खू भदत अण्णयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएह अच्चासाएत वा साइज्जइ ॥ ६०४ ॥ जे भिक्खू अणतकायसजुत आहारं आहारेह आहारेतं वा साइज्जइ ॥ ६०५ ॥ जे भिक्खू आहाकम्म भुजइ भुजत वा साइज्जइ ॥ ६०६ ॥ ( लाभातित्त नि० कहेह कहत वा सा०) जे भिक्खू पद्धप्पण्ण निमित्त वागरेह वागरेत वा साइज्जइ ॥ ६०७ ॥ जे भिक्खू अणागय निमित्त वागरेह वागरेत वा साइज्जइ ॥ ६०८ ॥ जे भिक्खू सेह अवहरइ अवहरत वा साइज्जइ ॥ ६०९ ॥ जे भिक्खू सेह विपरिणमेइ विपरिणमेत वा साइज्जइ ॥ ६१० ॥ जे भिक्खू दिस अवहरइ अवहरत वा साइज्जइ ॥ ६११ ॥ जे भिक्खू दिस विपरिणा-मेइ विपरिणमेत वा साइज्जइ ॥ ६१२ ॥ जे भिक्खू वहियावासियं आएस परं तिरायाओ अविफालेता सवसावेह सवसावेत वा साइज्जइ ॥ ६१३ ॥ जे भिक्खू साहिगरण अविओसवियपाहुड अकडपायच्छत परं तिरायाओ विफालिय अविफा-लिय समुजइ समुजत वा साइज्जइ ॥ ६१४ ॥ जे भिक्खू उग्रादाइय अणुग्रहाइय वयइ वयत वा साइज्जइ ॥ ६१५ ॥ जे भिक्खू अणुग्रहाइय उग्रादाइय वयइ वयतं वा साइज्जइ ॥ ६१६ ॥ जे भिक्खू उग्रादाइय अणुग्रहाइय देह देत वा साइज्जइ ॥ ६१७ ॥ जे भिक्खू अणुग्रहाइय उग्रादाइय देह देत वा साइज्जड ॥ ६१८ ॥ जे भिक्खू उग्रादाइय सोचा णचा समुजइ समुजत वा साइज्जइ ॥ ६१९ ॥ जे भिक्खू उग्रादाइय हेउ सोचा णचा समुजइ समुजत वा साइज्जइ ॥ ६२० ॥ जे भिक्खू

उग्गाइवर्धम्प दोषा वजा संमुच्च उमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२१ ॥ वे  
मिस्त्र उग्गाइव उग्गाइवहेठ वा उग्गाइवर्धम्प वा दोषा वजा संमुच्च  
उमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२२ ॥ वे मिस्त्र अग्निपाइस्यं दोषा वजा संमुच्च  
संमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२३ ॥ वे मिस्त्र अग्निपाइवहेठ दोषा वजा संमुच्च  
उमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२४ ॥ वे मिस्त्र अग्निपाइवर्धम्प दोषा वजा संमुच्च  
उमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२५ ॥ वे मिस्त्र अग्निपाइवर्धम्प अग्निपाइवहेठ वा  
अग्निपाइवर्धम्प वा दोषा वजा संमुच्च उमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२६ ॥ वे  
मिस्त्र उग्गाइव वा अग्निपाइव वा दोषा वजा संमुक्ते वा उग्गाइव  
॥ ६२७ ॥ वे मिस्त्र उग्गाइवहेठ वा अग्निपाइवहेठ वा दोषा वजा संमुच्च  
उमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२८ ॥ वे मिस्त्र उग्गाइवर्धम्प वा अग्निपाइवर्धम्प  
वा दोषा वजा संमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६२९ ॥ वे मिस्त्र उग्गाइव वा  
अग्निपाइव वा उग्गाइवहेठ वा अग्निपाइवहेठ वा उग्गाइवर्धम्प वा अग्निपाइव-  
र्धम्प वा दोषा वजा संमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६३० ॥ वे मिस्त्र  
उग्गाइवितीए अग्निपाइवर्धम्प उपर्याप्ते संविति विवितिविच्छासमाक्षर्ण वाप्तयेत्व  
असर्वे वा ४ पदिमाहेता संमुच्च उमुक्ते वा साहज्ञ । अह पुष्प एव वामेजा  
अग्निमाए सरिए अत्पमिए वा” से वे व व (आरुमैथि) मुहे व व वामिति  
व व पदिमाहे तं विवितिय विशेषित तं परिदुषेमाने (वस्त्रे) वाप्तमन् ।  
जो तं सुवह मुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६३१ ॥ वे मिस्त्र उग्गाइवितीए अग्निपाइ-  
वर्धम्प उपर्याप्ते संविति विवितिविच्छासमाक्षर्ण अप्यायेण असर्वे वा ४ पदिमाहेता  
संमुच्च उमुक्ते वा साहज्ञ । अह पुष्प एव वामेजा अग्निमाए सरिए अत्प-  
मिए वा” से वे व मुहे व व वामिति वे व पदिमाहे तं विवितिविशेषित  
तं परिदुषेमाने वाप्तमन् । जो तं सुवह सुमुक्ते वा साहज्ञ ॥ ६३२ ॥ वे मिस्त्र  
उग्गाइवितीए अग्निपाइवर्धम्प उपर्याप्ते असर्वविति विवितिविच्छासमाक्षर्ण वाप्तयेत्व  
असर्वे वा ४ पदिमाहेता संमुच्च उमुक्ते वा साहज्ञ । अह पुष्प एव  
वामेजा “अग्निमाए सरिए अत्पमिए वा” से वे व मुहे व व वामिति वे व  
पदिमाहे तं विवितिय विशेषित तं परिदुषेमाने वाप्तमन् । जो तं सुवह सुमुक्ते वा  
साहज्ञ ॥ ६३३ ॥ वे मिस्त्र उग्गाइवितीए अग्निपाइवर्धम्प उपर्याप्ते असर्वविति विति  
विच्छासमाक्षर्ण अप्यायेण असर्वे वा ४ पदिमाहेता संमुच्च उमुक्ते वा साह-  
ज्ञ । अह पुष्प एव वामेजा “अग्निमाए सरिए अत्पमिए वा” से वे व मुहे व व  
वामिति वे व पदिमाहे तं विवितिय विशेषित तं परिदुषेमाने वाप्तमन् । (ते

अप्पणा भुजमा० अणेसि वा दलमाणे राइभोयणपडिसेवणपत्ते) जो त भुजइ भुजंत वा साइज्जइ ॥ ६३४ ॥ जे भिक्खु राखो वा वियाले वा सपाण सभोयणं उगाल उगिगलित्ता पञ्चोगिलइ पञ्चोगिलंतं वा साइज्जइ ॥ ६३५ ॥ जे भिक्खु गिलार्ण सोच्चा ण गवेसइ ण गवेसत वा साइज्जइ ॥ ६३६ ॥ जे भिक्खु गिलाण सोच्चा उम्मग वा पडिपहं वा गच्छइ गच्छंत वा साइज्जइ ॥ ६३७ ॥ जे भिक्खु गिलाणवेयावच्चे अब्मुद्धियस्स सएण लामेण असंथरमाणस्स जो तस्स न पडितप्पइ न पडितपतं वा साइज्जइ ॥ ६३८ ॥ जे भिक्खु गिलाणवेयावच्चे अब्मुद्धिए गिलाण-पाउरगे दब्बजाए अलब्भमाणे जो तं न पडियाइक्खइ न पडियाइक्खंतं वा साइज्जइ ॥ ६३९ ॥ जे भिक्खु पढमपाउसम्मि गामाणुगमामं दूझइ दूझंतं वा साइज्जइ ॥ ६४० ॥ जे भिक्खु वासावास पज्जोसवियसि दूझइ दूझंतं वा साइज्जइ ॥ ६४१ ॥ जे भिक्खु अपज्जोसवणाए पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा साइज्जइ ॥ ६४२ ॥ जे भिक्खु पज्जोसवणाए ण पज्जोसवेइ ण पज्जोसवेंत वा साइज्जइ ॥ ६४३ ॥ जे भिक्खु पज्जोसवणाए गोलोमाइ-पि वा(वा)लाइ उवाइणाइ उवाइणतं वा साइज्जइ ॥ ६४४ ॥ जे भिक्खु पज्जोसवणाए इत्तिरिय पा(पि-आ)हारं आहारेइ आहारेत वा साइज्जइ ॥ ६४५ ॥ जे भिक्खु गारत्थिय पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा साइज्जइ ॥ ६४६ ॥ जे भिक्खु पढमसमोसरणहेसे पत्ताइ चीवराइ पडिग्गहेइ पडिग्गहेतं वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाण अणुग्वाह्य ॥ ६४७ ॥

**णिसीहृज्ज्ञयणे दसमो उद्देसो समत्तो ॥ १० ॥**

### एक्कारसमो उद्देसो

जे भिक्खु अयपायाणि वा तवपायाणि वा तउयपायाणि वा कसपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा जायरूपपायाणि वा मणिपायाणि वा कायपायाणि वा दतपायाणि वा सिंगपायाणि वा चम्मपायाणि वा चेलपायाणि वा सखपायाणि वा वइरपायाणि वा करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ६४८ ॥ जे भिक्खु अयपायाणि वा तवपायाणि वा तउयपायाणि वा कसपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा जायरूपपायाणि वा मणिपायाणि वा कायपायाणि वा दतपायाणि वा सिंगपायाणि वा चम्मपायाणि वा चेलपायाणि वा सखपायाणि वा वइरपायाणि वा धरेइ धरेत वा साइज्जइ ॥ ६४९ ॥ जे भिक्खु अयपायाणि वा तवपायाणि वा तउयपायाणि वा कंसपायाणि वा रुप्पपायाणि वा सुवण्णपायाणि वा जायरूपपायाणि वा मणिपायाणि वा कायपायाणि वा दतपायाणि वा सिंगपायाणि वा चम्मपायाणि

१ पज्जोसवणाए (सवच्छरीए) पडिष्कमण करावेइ करावेतं ।

वा चेत्पायामि वा संखापायामि वा बहरपायामि वा परिसुक्ष्म परिसुक्ष्मते वा उद्ध-  
व्याद ॥ ५१ ॥ ए ऐ मिन्दू अवर्जनामि वा तंत्रवर्जनामि वा उठयवर्जनामि वा  
र्जनामि वा हृष्टवर्जनामि वा शुष्टवर्जनामि वा जामस्त्रवर्जनामि वा महि-  
वर्जनामि वा रुमर्जनामि वा दंतर्जनामि वा सिंगर्जनामि वा चमस्त्रवर्जनामि  
वा चेत्पायामि वा संखापायामि वा बहरपायामि वा छट्रे करेते वा सद्गृह  
॥ ५२ ॥ ए ऐ मिन्दू अवर्जनामि वा तंत्रवर्जनामि वा उठयवर्जनामि वा उभ-  
वर्जनामि वा रुमर्जनामि वा शुष्टवर्जनामि वा जामस्त्रवर्जनामि वा महिव-  
र्जनामि वा दंतर्जनामि वा सिंगर्जनामि वा चमस्त्रवर्जनामि वा चेत्पाय-  
यामि वा संखापायामि वा बहरपायामि वा छट्रे बरेते वा उद्गृह  
॥ ५३ ॥ ए ऐ मिन्दू अवर्जनामि वा दंतर्जनामि वा उठयवर्जनामि वा उभ-  
वर्जनामि वा रुमर्जनामि वा शुष्टवर्जनामि वा जामस्त्रवर्जनामि वा महिव-  
र्जनामि वा दंतर्जनामि वा सिंगर्जनामि वा चमस्त्रवर्जनामि वा चेत्पाय-  
यामि वा संखापायामि वा बहरपायामि वा परिसुक्ष्म परिसुक्ष्मते वा उद्गृह  
॥ ५४ ॥ ए ऐ मिन्दू फरमद्वोदयमेताओ वायविहियाए पक्षद्व एकी वा  
उद्गृह ॥ ५५ ॥ ए ऐ मिन्दू फरमद्वोदयमेताओ सवचदायेति पाय वायिव-  
लाहु विज्ञाने पवित्राहै वित्राहै वा उद्गृह ॥ ५५ ॥ ए ऐ मिन्दू  
समस्त अवर्ज वयह वर्ते वा उद्गृह ॥ ५६ ॥ ए ऐ मिन्दू अभस्तस वर्ते  
वयह वर्ते वा उद्गृह ॥ ५७ ॥ ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा गारिविषय-  
वा पाए आमजेज वा पक्षजेज वा आमजेते वा फमजेते वा उद्गृह ॥ ५८ ॥  
ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा गारिविषयस वा पाए ईशाहै वा पक्षीज वा  
संकाहै वा फक्षीहै वा उद्गृह ॥ ५९ ॥ ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा  
गारिविषयस वा पाए लोक्य वा वण्य वा फमजीए वा फक्षीज वा गिल्लीज  
वा मक्कोहै वा गिल्लीहै वा उद्गृह ॥ ६० ॥ ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा  
गारिविषयस वा पाए ल्लेद्व वा क्षेत्र वा उड्डोमेज वा उड्डोहै वा उड्डोहै वा  
उड्डोहै वा उद्गृह ॥ ६१ ॥ ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा गारिविषयस वा  
पाए ईशोद्धपक्षिविद्व वा उड्डियोद्धपक्षिविद्व वा उड्डोक्ष वा उड्डोहै वा  
उड्डोहै वा उड्डोहै वा उद्गृह ॥ ६२ ॥ ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा  
गारिविषयस वा पाए फूमेज वा रहज वा फूमेने वा रहर्ते वा साप्तज्ञ ॥ ६३ ॥  
ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा गारिविषयस वा काय आमजेज वा फक्षीज वा  
आमजेते वा फमजेते वा उद्गृह ॥ ६४ ॥ ए ऐ मिन्दू अन्नत्रिविषयस वा

गारत्थियस्स वा काय सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेत वा पलिमहेत वा साइज्जङ् ॥ ६६५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायं तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिंगेत वा साइज्जङ् ॥ ६६६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा काय लोद्देण वा क्षेकण वा उल्लोलेज वा उब्बेहेज वा उल्लोलेत वा उब्बेहेत वा साइज्जङ् ॥ ६६७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा काय सीओदगवियडेण वा उसिणो-दगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा साइज्जङ् ॥ ६६८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा काय फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जङ् ॥ ६६९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा काय फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जङ् ॥ ६७० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वण आमजेज वा पमजेज वा आमजत वा पमजत वा साइज्जङ् ॥ ६७१ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वण तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिंगेत वा साइज्जङ् ॥ ६७२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वण लोद्देण वा क्षेकण वा उल्लोलेज वा उब्बेहेज वा उल्लोलेत वा उब्बेहेत वा साइज्जङ् ॥ ६७३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वण सीओदगवियडेण वा उसिणो-दगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा साइज्जङ् ॥ ६७४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि वण फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जङ् ॥ ६७५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गड वा पिलग वा अरडय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अन्धिदेज वा विन्धिदेज वा अन्धिंदेत वा विन्धिंदेत वा साइज्जङ् ॥ ६७६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गड वा पिलग वा अरडय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अन्धिदित्ता विन्धिदित्ता पूर्य वा सोणियं वा णीहरेज वा विसोहेज वा णीहरेत वा विसोहेत वा साइज्जङ् ॥ ६७७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गड वा पिलग वा अरडय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्यजाएण अन्धिदित्ता विन्धिदित्ता पूर्य वा सोणियं वा णीहरेत्ता विसोहेत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा साइज्जङ् ॥ ६७८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा कायंसि गड वा पिलग वा अरडयं वा असियं

वा मर्यादकं वा अप्यमरेण दिक्षेष उत्तराएव अचिन्तिता विस्तिरिता पूर्व वा सोमियं वा जीहरेता विसोहेता सीमोदगवियदेव वा उत्तिगोद्यमविदेव वा उच्छ्व-  
केता पशोहेता अप्यदरेण आकृत्यजाएवं आसिपेत्र वा विसिपेत्र वा आसिंहं वा विसिंहं वा धाइजद ॥ १७१ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा गारुदिक्षस्य वा  
कार्यसि यहं वा पिक्का वा अरद्वं वा असिंहं वा भगद्वं वा अप्यदरेण दिक्षेष  
उत्तराएवं अचिन्तिता विस्तिरिता पूर्व वा सोमियं वा जीहरेता विसोहेता  
सीमोदगवियदेव वा उत्तिगोद्यमविदेव वा उच्छ्वेतेता पशोप्तां अप्यमरेण अप्य-  
क्यजाएवं आसिपिता विसिपिता लक्ष्मेता वा कृष्ण वा जडबीएज वा अप्यपिता ए  
मध्येत्र वा अस्मिंहं वा मर्यादेत्रं वा साइजद ॥ १८ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्य-  
स्य वा गारुदिक्षस्य वा अर्यसि गंड वा पिक्का वा अरद्वं वा असिंहं वा मर्यादेत्रं  
वा अप्यमरेण दिक्षेष उत्तराएवं अचिन्तिता विस्तिरिता पूर्व वा सोमियं वा  
जीहरेता विसोहेता सीमोदगवियदेव वा उत्तिगोद्यमवियदेव वा उच्छ्वेतेता पशोहेता  
अप्यदरेण आकृत्यजाएवं आसिपिता विसिपिता लेहेता वा बण वा जडबीएज  
वा अप्यमेता मध्येता अप्यदरेण भूक्तजाएवं धौज वा पशौज वा धूर्द्वं वा  
पशुद्वंसे वा साइजद ॥ १८१ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा गारुदिक्षस्य वा  
पशुद्वंसियं वा इचिकिसियं वा अगुल्लैट विकेतिप ३ जीहरेता जीहरेत्रं वा धाइजद  
॥ १८२ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा यारुदिक्षस्य वा जीहामो जहुहिम्पे  
क्ष्येत्र वा चंठेत्र वा क्ष्येत्र वा उठेत्र वा साइजद ॥ १८३ ॥ ये मिक्षू अप्य-  
उत्तित्यस्य वा यारुदिक्षस्य वा जीहाद चंठेमार्द क्ष्येत्र वा चंठेत्र वा क्ष्येत्र वा  
उठेत्र वा साइजद ॥ १८४ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा यारुदिक्षस्य वा  
जीहाद चंठेमार्द क्ष्येत्र वा उठेत्र वा क्ष्येत्र वा उठेत्र वा साइजद ॥ १८५ ॥  
ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा यारुदिक्षस्य वा जीहाद मंशुरोमार्द क्ष्येत्र वा उठेत्र  
वा क्ष्येत्र वा उठेत्र वा साइजद ॥ १८६ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा  
गारुदिक्षस्य वा जीहाद णास्यारोमार्द क्ष्येत्र वा उठेत्र वा क्ष्येत्र वा उठेत्र वा  
साइजद ॥ १८७ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा गारुदिक्षस्य वा जीहाद चंठ-  
ेमार्द क्ष्येत्र वा उठेत्र वा क्ष्येत्र वा उठेत्र वा साइजद ॥ १८८ ॥ ये  
मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा गारुदिक्षस्य वा जीहाद चंठेमार्द क्ष्येत्र वा उठेत्र  
वा क्ष्येत्र वा उठेत्र वा साइजद ॥ १८९ ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा  
गारुदिक्षस्य वा बंडे आसेत्र वा पर्सिय वा आर्यसुरं वा पंक्तेत्र वा साइजद  
॥ १९० ॥ ये मिक्षू अप्यउत्तित्यस्य वा यारुदिक्षस्य वा बंडे उठेत्र वा

पधोएज वा उच्छोलेत् वा पधोएत् वा साइज्जइ ॥ ६९० ॥ जे भिक्खु अणउत्थि-  
 यस्स वा गारत्थियस्स वा दंते फूमेज वा रएज वा फूमेतं वा रएत वा साइज्जइ  
 ॥ ६९१ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उड्डे आमजेज वा  
 पमजेज वा आमजंत वा पमजत वा साइज्जइ ॥ ६९२ ॥ जे भिक्खु अणउत्थि-  
 यस्स वा गारत्थियस्स वा उड्डे सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेत वा पलिमहेतं  
 वा साइज्जइ ॥ ६९३ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उड्डे  
 तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खेज वा भिलिगेज वा मक्खेत वा  
 भिलिगेत वा साइज्जइ ॥ ६९४ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उड्डे  
 लोद्देण वा क्षेण वा उल्लोलेज वा उब्बद्देज वा उल्लोलेत वा उब्बद्देत वा साइज्जइ  
 ॥ ६९५ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उड्डे सीओदगवियडेण वा  
 उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा  
 साइज्जइ ॥ ६९६ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा उड्डे फूमेज वा  
 रएज वा फूमेत वा रएत वा साइज्जइ ॥ ६९७ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा  
 गारत्थियस्स वा दीहाइ उत्तरोद्धरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेतं वा  
 साइज्जइ ॥ ६९८ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा सठवेत वा  
 अच्छिप्ताइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ६९९ ॥ जे भिक्खु  
 अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि आमजेज वा पमजेज वा आमजंतं  
 वा पमजत वा साइज्जइ ॥ ७०० ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा  
 अच्छीणि सवाहेज वा पलिमहेज वा सवाहेत वा पलिमहेत वा साइज्जइ ॥ ७०१ ॥ जे  
 भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि तेलेण वा घएण वा णवणीएण  
 वा मक्खेज वा भिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिगेत वा साइज्जइ ॥ ७०२ ॥ जे भिक्खु  
 अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि लोद्देण वा क्षेण वा उल्लोलेज वा  
 उब्बद्देज वा उल्लोलेत वा उब्बद्देत वा साइज्जइ ॥ ७०३ ॥ जे भिक्खु अणउत्थि-  
 यस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा  
 उच्छोलेज वा पधोएज वा उच्छोलेत वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ ७०४ ॥ जे भिक्खु  
 अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा अच्छीणि फूमेज वा रएज वा फूमेत वा रएत  
 वा साइज्जइ ॥ ७०५ ॥ जे भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइ  
 भुमगरोमाइ कप्पेज वा सठवेज वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ७०६ ॥ जे  
 भिक्खु अणउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा दीहाइ पासरोमाइ कप्पेज वा सठवेज  
 वा कप्पेत वा सठवेत वा साइज्जइ ॥ ७०७-१ ॥ केसरोमाइ ॥ ७०७-२ ॥

ये भिक्षु अप्यतिवस्तु वा गारतिवस्तु वा अविष्मर्ते वा कल्पमर्ते वा दंठमर्ते  
वा जहमर्ते वा शीहरेत्र वा निसोहेत्र वा शीहरेत्र वा साहजद ॥ ४ ॥  
ये भिक्षु अप्यतिवस्तु वा गारतिवस्तु वा कल्पमर्ते देवर्ते वा चार्वर्ते वा फूर्ते  
मर्ते वा शीहरेत्र वा निसोहेत्र वा शीहरेत्र वा निसोहेत्र वा साहजद ॥ ५ ॥  
ये भिक्षु गमणुराम भूत्यमार्थे अप्यतिवस्तु वा गारतिवस्तु वा सीषुभारीरे  
करेत्र करेत्र वा साहजद ॥ ६ ॥ ५ ये भिक्षु अप्यार्थे शीमादेव शीमावेत्र वा  
साहजद ॥ ७ ॥ ६ ये भिक्षु परे शीमादेव शीमावेत्र वा साहजद ॥ ८ ॥ ७ ये  
भिक्षु अप्यार्थे निम्हादेव निम्हावेत्र वा साहजद ॥ ९ ॥ ८ ये भिक्षु परे निम्हावेत्र  
निम्हावेत्र वा साहजद ॥ १० ॥ ९ ये भिक्षु अप्यार्थे विष्वरियासेव विष्वरियावेत्र  
वा साहजद ॥ ११ ॥ १० ये भिक्षु परे विष्वरियासेव विष्वरियावेत्र वा साहजद  
॥ १२ ॥ ११ ये भिक्षु मुहमन्ते करेत्र करेत्र वा साहजद ॥ १३ ॥ १२ ये भिक्षु  
वैरज्यविरहत्यांते सर्वे गमर्ते सर्वे आगमर्ते सर्वे गमणामर्ते करेत्र करेत्र वा  
साहजद ॥ १४ ॥ १३ ये भिक्षु वियामोभवस्तु अप्यर्थे वयह करेत्र वा साहजद  
॥ १५ ॥ १४ ये भिक्षु एहमोक्षणस्तु वर्त्म वयह करेत्र वा साहजद ॥ १५ ॥ १५ ये  
भिक्षु दिवा असर्वे वा ४ पदिमाहेता दिवा शुभ्र शुभ्रते वा साहजद ॥ १६ ॥ १६ ये  
भिक्षु दिवा असर्वे वा ४ पदिमाहेता रति शुभ्र शुभ्रते वा साहजद ॥ १७ ॥ १७ ये  
भिक्षु रति असर्वे वा ४ पदिमाहेता दिवा शुभ्र शुभ्रते वा साहजद ॥ १८ ॥ १८ ये  
भिक्षु रति असर्वे वा ४ पदिमाहेता रति शुभ्र ॥ १९ ॥ १९ ये भिक्षु अत्यन्ते  
वा ४ परिक्षेत्रे परिक्षावेत्र वा साहजद ॥ २० ॥ २० ये भिक्षु परिक्षिस्तु अत्यन्ते  
वा ४ दयप्यमार्थे वा भूत्यमार्थे वा निगुण्यमार्थे वा बाहुर बाहोरेत्र वा  
साहजद ॥ २१ ॥ २१ ये भिक्षु बाहोर्ये वा फोर्ये वा समर्ये वा द्वियोर्ये वा अत्यन्ते  
वा तदप्यगारे विक्षमन्ते शीरमार्थे ऐहाए ताए भासाए ताए विक्षाए ते रथमि  
अन्यत्व उवाइशादेव उवाइशावेत्र वा साहजद ॥ २२ ॥ २२ ये भिक्षु विक्षमार्पि  
शुभ्र शुभ्रते वा साहजद ॥ २३ ॥ २३ ये भिक्षु अहाङ्करे पर्वते पर्वते वा साहजद  
॥ २४ ॥ २४ ये भिक्षु अहाङ्करे वंदह वंदते वा साहजद ॥ २५ ॥ २५ ये भिक्षु  
जावर्णे वा अजावर्णे वा उजावर्णे वा अग्नावर्णे वा अजर्णे वा उजर्णे वा  
साहजद ॥ २६ ॥ २६ ये भिक्षु जाकर्णे वा अजाकर्णे वा उजाकर्णे वा अग्नाकर्णे वा  
अजर्णे उजद्वावेत्र उजद्वावेत्र वा साहजद ॥ २७ ॥ २७ ये भिक्षु अक्षेत्रे अक्षेत्रे

१ दिवा चेतु निःसि सवासेतु ते विष्वरिये अुक्षमाक्षस्तु अक्षमर्त्यो यद्य ।

२ अक्षार्थ— अक्षमत्वं जागावेत्रे रोमावेत्रे हि विष्वरियम् ।

दीक्षा ले कर्म शत्रुओं को जीत के सिद्ध पद को प्राप्त करने की हमेशा अभिलापा रखना । (४) अनुकम्पा-स्वात्मा, परात्मा की अनुकम्पा करनी अर्थात् दुःखी जीव को सुखी करना । (५) आसता-बैलोक्य पूजनीय श्री वीतराग के वचनों पर दृढ़ अद्वा रखनी, हिताहित का विचार, अर्थात् अस्तित्व भाव में रमण करना । यह व्यवहार सम्यक्त्व का उद्देश्य है । जिस बात की न्यूनता हो उसे पूरी करना ।

### ६ भूषण के ५ भेद—

(१) जिन शासन में धैर्यवन्त हो । शासन का हर एक कार्य धैर्यता से करें । (२) शासन में भक्तिवान हो । (३) शासन में क्रियावान हो । (४) शासन में चालुर्य हो । हर एक कार्य ऐसी चतुरता के साथ करे ताकि निर्विघ्नता से हो । (५) शासन में चतुर्विध संघ की भक्ति और बहुमान करने वाला हो । इन पांच भूषणों से शासन की शोभा होती है ।

### ७ दूषण पांच प्रकार का—

(१) जिन वचन में शंका करनी । (२) कंखा-दूसरे मतों का आडम्बर देख के उनकी वांछा करनी । (३) विति-गिच्छा-धर्म करणी के फल में सन्देह करना कि इसका फल कुछ होगा या नहीं अभी तक तो कुछ नहीं हुवा । इत्यादि । (४) पर पाखरडी से हमेशा परिचय रखना । (५) पर पाखरडी की प्रशंसा करना । ये पांच सम्यक्त्व के दूषण हैं इन्हें टालने चाहिये ।

कारवेइ कारवेत वा साइज्जइ ॥ ७३३ ॥ जे भिक्खू सचेले सचेलगाँण मज्ज्हे सव-  
सइ सवसइ सवसत वा साइज्जइ ॥ ७३४ ॥ जे भिक्खू सचेले अचेलगाँण मज्ज्हे सव-  
सइ सवसत वा साइज्जइ ॥ ७३५ ॥ जे भिक्खू अचेले सचेलगाँण मज्ज्हे सवसइ  
सवसत वा साइज्जइ ॥ ७३६ ॥ जे भिक्खू अचेले अचेलगाण मज्ज्हे सवसइ सवसत  
वा साइज्जई ॥ ७३७ ॥ जे भिक्खू पारियासिय पिप्पलि वा पिप्पलिचुण्णं वा सिंगबेर  
वा सिंगबेरचुण्णं वा विल वा लोण उदिभय वा लोण आहारेइ आहारेत वा साइ-  
ज्जइ ॥ ७३८ ॥ जे भिक्खू गिरिपडणाणि वा मरुपडणाणि वा भिगुपडणाणि वा  
तरुपडणाणि वा गिरिपक्खदणाणि वा मरुपक्खदणाणि वा भिगुपक्खदणाणि वा  
तरुपक्खदणाणि वा जलपवेसाणि वा जलणपवेसाणि वा जलपक्खदणाणि वा जलण-  
पक्खदणाणि वा विसभक्खणाणि वा सथोपाडणाणि वा वल्यमरणाणि वा वसद्वाणि  
वा तब्बवाणि वा अतोसळाणि वा वेहाणसाणि वा गिद्धपिट्ठाणि वा जाव अण्णयराणि  
वा तहप्पगाराणि वाल्मरणाणि पससइ पससत वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवज्जइ  
चाउम्मासिय परिहारद्वाणं अणुग्धाहय ॥ ७३९ ॥ णिसीह॒ज्ज्ञयणे एक्कार-  
समो उद्देसो समन्तो ॥ ११ ॥

### बारसमो उद्देसो

जे भिक्खू अण्णयरि तसपाणजाइ तणपासएण वा मुजपासएण वा कट्टपासएण  
वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा मुत्तपासएण वा रञ्जुपासएण वा वधइ वधत  
वा साइज्जइ ॥ ७४०-१ ॥ जे भिक्खू अण्णयरि तसपाणजाइ तणपासएण वा मुंजपा-  
सएण वा कट्टपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा मुत्तपासएण वा रञ्जुपास-  
एण वा बद्धेलयं मुंच(मुय)ह॒ मुच्च(-य)त वा साइज्जइ ॥ ७४०-२ ॥ जे भिक्खू अभिं-  
क्खण २ पचक्खाण भजइ भजत वा साइज्जइ ॥ ७४१ ॥ जे भिक्खू परित्तकाय-  
संज्ञत० आहारेइ आहारेत वा साइज्जइ ॥ ७४२ ॥ जे भिक्खू तणपीढग वा पलाल-  
पीढग वा छगणपीढगं वा कट्टपीढगं वा परैवत्थेणोच्छण्ण अहिंडेइ अहिंडेत वा  
साइज्जइ ॥ ७४३ ॥ जे भिक्खू णिगंधीए सघाडिं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण  
वा सिंच्चावेइ सिंच्चावेत वा साइज्जइ ॥ ७४४ ॥ जे भिक्खू पुढवीकायस्स वा  
आउक्कायस्स वा अगणिकायस्स वा वाउक्कायस्स वा वणपफङ्कायस्स वा कलमा-  
यमवि समा(रं)रभइ समारभत वा साइज्जइ ॥ ७४५ ॥ जे भिक्खू सचित्तरुक्ख  
दुरुहइ दुरुहत वा साइज्जइ ॥ ७४६ ॥ जे भिक्खू गिहिमते भुजइ भुजत वा

१ सर्जईण । २ जिणकपीण । ३ थेरकपीण । ४ जिणकपिणो कस्स वि  
साहेज ऐच्छति अयो एगला विहरेति ति । ५ 'गिहत्थ'

साइज ॥ ४४० ॥ जे मिक्क लिहिकर्त्त फरिहर्त वा साइज ॥ ४४१ ॥  
जे मिक्क लिहिलिसेज चाहेह चाहेह वा साइज ॥ ४४२ ॥ जे मिक्क लिहिर्त  
इक्क कर्त्त फरिहर्त वा साइज ॥ ४४३ ॥ जे मिक्क पुराक्षमालेष हत्तेज वा  
मरोय वा दृ[विज]धीएज वा भायपोय वा असर्व वा ४ पहिम्याहेह पहिम्याहेह वा  
साइज ॥ ४४४ ॥ जे मिक्क लिहिलाज वा अल्ल(उ)तितियाज वा ईद्दोरप्पे-  
मोरोय हत्तेज वा मरोय वा एव्वीएज वा भायपोय वा असर्व वा ४ पहिम्याहेह  
पहिम्याहेह वा साइज ॥ ४४५ ॥ जे मिक्क लिहिलिसि वा लिहिलिसि वा उपम्याहि-  
वा पह्लाहिवा वा उज्ज्वराहिवा वा वावीहिवा वा घोष्याहिवा वा ईहि-  
याहिवा सराहिवा चरण्याहिवा वा उरसरण्याहिवा वा अक्षुर्दुष्टपदियाए-  
अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा साइज ॥ ४४६ ॥ जे मिक्क लिहिलिसि वा  
गाहाहिवा वा चूसाहिवा वा वयाहिवा वा वयविदुम्याहिवा वा फलवाहिवा वा फलवाहिवा-  
माहिवा वा अक्षुर्दुष्टपदियाए अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा साइज ॥ ४४७ ॥  
जे मिक्क लिहिलिसि वा जगराहिवा वा खेडाहिवा वा क्षमाहिवा वा मर्दवाहिवा वा  
घोष्यमुहाहिवा वा घोष्याहिवा वा अस्तराहिवा वा संवाहाहिवा वा संवाहाहिवा-  
दैसपदियाए अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा साइज ॥ ४४८ ॥ जे मिक्क  
पाममहाहिवा वा गागरमहाहिवा वा खेडमहाहिवा वा मर्दमहाहिवा वा  
घोष्यमुहमहाहिवा वा घोष्यमहाहिवा वा आगरमहाहिवा वा संवाहमहाहिवा वा संविही-  
महाहिवा वा अक्षुर्दुष्टपदियाए अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा साइज ॥ ४४९ ॥  
जे मिक्क लिहिलिसि वा जगरपहाहिवा वा खेडपहाहिवा वा क्षमपहाहिवा वा  
मर्दवपहाहिवा वा दोषमुहपहाहिवा वा घोष्यपहाहिवा वा आगरपहाहिवा वा उपरपहाहिवा-  
वा संविहेसपहाहिवा वा अक्षुर्दुष्टपदियाए अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा साइज ॥ ४५० ॥  
जे मिक्क लिहिलिसि वा जास संविहेसवहाहिवा वा अक्षुर्दुष्टपदियाए-  
वा अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा साइज ॥ ४५१ ॥ जे मिक्क लिहिलिसि वा दूर्द-  
रकाहिवा वा अक्षुर्दुष्टपदियाए अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा साइज ॥ ४५२ ॥  
जे मिक्क लिहिलिसि वा इतियस्त्राहिवा वा उद्गुदाहिवा वा घोष्युदाहिवा वा  
संविहेसपहाहिवा वा स्पर्शरुदाहिवा वा अभिसंधारेह अभिसंधारेह वा

वा साइज्जह ॥ ७६१ ॥ जे भिक्खू उज्जूहिय[द्वा]ठाणाणि वा हयज्ञहियठाणाणि वा  
गयज्ञहियठाणाणि वा चक्रघुदसणपडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जह  
॥ ७६२ ॥ जे भिक्खू अ(भिसे)घायठाणाणि वा अक्षवाइयठाणाणि वा माणुम्मा-  
णियठाणाणि वा महया हयणघ्रीयवाइयततीतलतालतु डियपह्पवाइयठाणाणि वा  
चक्रघुदसणपडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जह ॥ ७६३ ॥ जे भिक्खू  
कट्टकम्माणि वा चित्तकम्माणि वा ( लेवकम्माणि वा ) पोत्यकम्माणि वा दत्कम्माणि  
वा मणिकम्माणि वा सेलकम्माणि वा गठिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि  
वा सधाइमाणि वा पत्तच्छेज्जाणि वा वाहीणि वा वेहिमाणि वा चक्रघुदसण-  
पडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जह ॥ ७६४ ॥ जे भिक्खू  
हिम्माणि वा ढमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासगा-  
माणि वा कलहाणि वा वोलाणि वा चक्रघुदसणपडियाए अभिसधारेइ अभि-  
सधारेत वा साइज्जह ॥ ७६५ ॥ जे भिक्खू विरुवरुवेषु महुस्सवेषु इत्थीणि वा  
पुरिसाणि वा येराणि वा मज्जिमाणि वा डहराणि वा अणलकियाणि वा सुअलकि-  
याणि वा गायताणि वा वायंताणि वा णञ्चताणि वा हसताणि वा रमताणि वा  
मोहताणि वा विउलं असण वा ४ परिभायताणि वा परिभुजताणि वा चक्रघुदसण-  
पडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जह ॥ ७६६ ॥ जे भिक्खू इहलोइएसु  
वा रुवेषु परलोइएसु वा रुवेषु दिट्टेषु वा रुवेषु अदिट्टेषु वा रुवेषु सुएषु वा रुवेषु  
असुएषु वा रुवेषु विणाएसु वा रुवेषु अविणाएसु वा रुवेषु सजइ रजह गिज्जह  
अज्जोववजइ सज्जत रज्जत गिज्जत अज्जोववज(जमाण)जत वा साइज्जड ॥ ७६७ ॥  
जे भिक्खू पठमाए पोरिसीए असण वा ४ पडिगगहेत्ता पच्छिम पोरिसिं उवाइणावेइ  
उवाइणावेत वा साइज्जह ॥ ७६८ ॥ जे भिक्खू परं अद्भजोयणमेराओ असण वा ४  
उवाइणावेइ उवाइणावेत वा साइज्जड ॥ ७६९ ॥ जे भिक्खू दिया गोमय पडिगगा-  
हेत्ता दिया कायसि वणं आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपतं वा विलिपत वा  
साइज्जह ॥ ७७० ॥ जे भिक्खू दिया गोमय पडिगगहेत्ता रत्ति कायसि वण  
आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपत वा विलिपत वा साइज्जह ॥ ७७१ ॥ जे  
भिक्खू रत्ति गोमय पडिगगहेत्ता दिया कायसि वण आलिपेज वा विलिपेज वा  
आलिपतं वा विलिपत वा साइज्जह ॥ ७७२ ॥ जे भिक्खू रत्ति गोमय पडिगगहेत्ता  
रत्ति कायसि वण आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपत वा विलिपत वा साइ-  
ज्जह ॥ ७७३ ॥ जे भिक्खू दिया आलेवणजाय पडिगगहेत्ता दिया कायसि वण  
आलिपेज वा विलिपेज वा आलिपत वा विलिपत वा साइज्जह ॥ ७७४ ॥

ये मिक्क रिया आलेखयज्ञात्र पहिमगाहेता रति कर्वति वर्ष वासिमेज वा  
विक्कियेज वा आलिर्वति वा विक्किर्वति वा साइज्जद ॥ ७७५ ॥ ये मिक्क एति  
आलेखयज्ञात्र पहिमगाहेता रिया कर्वति वर्ष वासिमेज वा विक्किमेज वा आलि-  
र्वति वा विक्किर्वति वा साइज्जद ॥ ७७६ ॥ ये मिक्क रति आलेखयज्ञात्र शी-  
मगाहेता रति कर्वति वर्ष वासिमेज वा विक्किमेज वा आलिर्वति वा विक्किर्वति वा  
साइज्जद ॥ ७७७ ॥ ये मिक्क अन्यउत्तिवएज वा गारत्तिवएज वा उद्दी वारेव  
वाहारेत वा साइज्जद ॥ ७७८ ॥ ये मिक्क तुण्णीसाए वासने वा ४ घेर हेठि वा  
साइज्जद ॥ ७७९ ॥ ये मिक्क इमाओ पक्ष महायात्रमे भद्रान्तिओ दक्षिणाओ  
यमिक्काओ विक्याओ अतो मासस्य तुफहतो वा तिफहतो वा उत्तद वा उत्तर  
वा उत्तरेत वा उत्तरते वा साइज्जद, तंजहा—नीता जडणा सरेद एरावई मही । ई  
ऐवमाजे वासज्जद वाउमासिर्व परिहाराहाते ड[ख्ल]ग्वाइये ॥ ७८ ॥ विसीर  
उज्ज्वलये वारसमो उदेसो सुमतो ॥ १२ ॥

### तेरहमो उदेसो

ये मिक्क अगंतरद्वियाए पुष्टवीए ठार्व वा चेष्टे वा अलिक्षेत्रे वा विदीहिव वा  
चेष्ट चेष्टते वा साइज्जद ॥ ७८१ ॥ ये मिक्क उसिमिद्वाए पुष्टवीए ठार्व वा  
साइज्जद ॥ ७८२ ॥ ये मिक्क मक्षियाक्षाए पुष्टवीए ठार्व वा 'साइज्जद  
वा ॥ ७८३ ॥ ये मिक्क चस्त्रक्षाए पुष्टवीए ठार्व वा साइज्जद ॥ ७८४ ॥ ये  
मिक्क वित्तमंत्राए पुष्टवीए ठार्व वा साइज्जद ॥ ७८५ ॥ ये मिक्क वित्तमंत्र  
हिक्काए ठाज वा साइज्जद ॥ ७८६ ॥ ये मिक्क वित्तमंत्राए चेष्ट ग्र्वति वा  
साइज्जद ॥ ७८७ ॥ ये मिक्क कोमावार्दिति वा धारण जीवदहिए तमहे तद्दी  
चवीए चहरिए चमोस्तु चठहए छडतियणामहयम[ही]विकमडारेतावर्ति ग्र्वति  
वा साइज्जद ॥ ७८८ ॥ ये मिक्क घूर्णनि वा गिहेलुर्वेति वा उद्ध[ना]यारेति वा घूर्ण-  
वसति वा दुष्टदे दुष्टिमित्ते अविक्षे वस्त्रमें ठार्व वा साइज्जद ॥ ७८९ ॥  
ये मिक्क दुष्टिमित्ते अविक्षे वा वित्तिति वा छेष्टुति वा अविक्षियज्ञामेति वा  
दुष्टदे दुष्टिमित्ते अविक्षे वस्त्रमें ठार्व वा साइज्जद ॥ ७९ ॥ ये मिक्क  
खंपति वा फर्लौमि वा मंवति वा महवति वा मालमि वा वासार्यमि वा इम्म  
तत्त्वमि वा दुष्टदे दुष्टिमित्ते अविक्षे वस्त्रमें ठार्व वा साइज्जद ॥ ७९१ ॥  
ये मिक्क अन्यउत्तिवये वा वारत्तिवये वा गिर्व वा मिस्त्रोते वा अदुम्बव वा उत्तरव  
वा दुर्ग[ना]यार्यमि वा उम्माहावर्ति वा विस्त्रापेत्र विस्त्रापेत्र वा तापज्जद ॥ ७९२ ॥  
ये मिक्क अन्यउत्तिवये वा वारत्तिवये वा आगाई वस्त्र वर्ण वा तापज्जद

॥ ७९३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा फरस वयइ वयत वा साइज्जइ  
 ॥ ७९४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा आगाढ फरस वयइ वयत वा  
 साइज्जइ ॥ ७९५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा अण्णयरीए अच्चा-  
 सायणाए अच्चासाएइ अच्चासाएत वा साइज्जइ ॥ ७९६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थि-  
 याण वा गारत्थियाण वा कोउगकम्म करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ७९७ ॥ जे  
 भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा भूइकम्म करेइ करेत वा साइज्जइ  
 ॥ ७९८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा पसिण करेइ करेत वा  
 साइज्जइ ॥ ७९९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा पसिणा-  
 पसिण करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ८०० ॥ (जे पसिण कहेइ कहेत पसि-  
 णापसिण ) जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा तीय निमित्त  
 क(हे)रेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ८०१ ॥ ( पहुप्पण आगमिस्स ) जे  
 भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा लक्खण करेइ करेत वा साइज्जइ  
 ॥ ८०२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा वजण करेइ करेत  
 वा साइज्जड ॥ ८०३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा मुसिण  
 करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ८०४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण  
 वा विज पउजइ पउजत वा साइज्जइ ॥ ८०५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण  
 वा गारत्थियाण वा मत पउजइ पउजत वा साइज्जइ ॥ ८०६ ॥ जे भिक्खू  
 अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा गारत्थियाण वा जोग पउजइ पउजत वा साइज्जड ॥ ८०७ ॥  
 जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा मग वा पवेएड सधि वा  
 पवेएड (मगाओ वा सधि पवेएड) सधीओ वा मग पवेएड पवेएत वा  
 साइज्जड ॥ ८०८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा धाउ पवेएड  
 पवेएत वा साइज्जइ ॥ ८०९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियाण वा गारत्थियाण वा  
 णिहं पवेएड पवेएत वा साइज्जड ॥ ८१० ॥ जे भिक्खू मत्तए अ(पा)त्ताण देहइ  
 देहत वा (पलोएड पलोएत वा) साइज्जइ ॥ ८११ ॥ जे भिक्खू अहाए अप्पाण  
 देहड देहत वा साइज्जड ॥ ८१२ ॥ जे भिक्खू असीए अप्पाण देहइ देहत वा  
 साइज्जड ॥ ८१३ ॥ जे भिक्खू मणीए अप्पाण देहइ देहत वा साइज्जइ ॥ ८१४ ॥  
 जे भिक्खू कुडपाणीए अप्पाण देहइ देहत वा साइज्जड ॥ ८१५ ॥ जे भिक्खू  
 तों अप्पाण देहइ देहत वा साइज्जड ॥ ८१६ ॥ जे भिक्खू मप्पीए अप्पाण  
 देहइ देहत वा साइज्जइ ॥ ८१७ ॥ जे भिक्खू फाणीए अप्पाण देहइ देहत वा

१ फुर्डीवरणमेयत्सायारविडयत्यवस्थधिरियज्जयणाओ णायब्र ।



## चउहसमो उद्देसो

जे भिक्खू पडिगगह किणइ किणवेइ कीयमाहटु दिजमाण पडिगगहेइ पडि-  
रगाहेत वा साइज्जइ ॥ ८५६ ॥ जे भिक्खू पडिगगह पासिवेइ पासिचावेइ  
पासिच्चमाहटु दिजमाण पडिगगहेइ पडिगगाहेत वा साइज्जइ ॥ ८५७ ॥ जे भिक्खू  
पडिगगह परियद्वेइ परियद्वियमाहटु दिजमाण पडिगगहेइ पडिगगाहेत  
वा साइज्जइ ॥ ८५८ ॥ जे भिक्खू पडिगगह अ(च्छ)च्छेज अणिसिष्टु अभिहठ-  
माहटु दि[द]जमाण पडिगगहेइ पडिगगाहेत वा साइज्जइ ॥ ८५९ ॥ जे भिक्खू  
अइरेगपडिगगह गणि उहिसिय गणि समुद्दिसिय त गणि अणापुन्छिय अणामंतिम  
अणामण्णस्स वियरह वियरत वा साइज्जइ ॥ ८६० ॥ जे भिक्खू अइरेग पडिगगह  
खुडगस्स वा खुडियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा अहत्यच्छिण्णस्स अपायच्छि-  
ण्णस्स अणासाछिण्णस्स अकणच्छिण्णस्स अपोहुच्छिण्णस्स सत्तस्स देइ देत वा  
साइज्जइ ॥ ८६१ ॥ जे भिक्खू अइरेग पडिगगह खुडगस्स वा खुडियाए वा थेर-  
गस्स वा थेरियाए वा [अ]हत्यच्छिण्णस्स [अ]पायच्छिण्णस्स [अ]णासाछिण्णस्स  
[अ]कणच्छिण्णस्स [अण]हुच्छिण्णस्स असक्सस्स न देइ न देत वा साइज्जइ  
॥ ८६२ ॥ जे भिक्खू पडिगगह अणल अथिर अधुव अधारणिज धरेड धरेत वा  
साइज्जइ ॥ ८६३ ॥ जे भिक्खू पडिगगह अर्ल थिरं धुव धारणिज न धरेइ न धरेतं  
वा साइज्जइ ॥ ८६४ ॥ जे भिक्खू वण्णमत पडिगगह विवण्ण करेइ करेत वा साइ-  
ज्जइ ॥ ८६५ ॥ जे भिक्खू विवण्ण पडिगगह वण्णमत करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ ८६६ ॥  
जे भिक्खू णो णवए मे पडिगगहे लद्वेत्तिकटु तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा  
मक्खेज वा मिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिंगेत वा साइज्जइ ॥ ८६७ ॥ जे भिक्खू  
णो णवए मे पडिगगहे लद्वेत्तिकटु लोद्वेण वा कक्षेण वा चुणोण वा वणोण वा  
उच्छ्लोलेज वा उच्छ्लोलेत वा उच्छ्लेत वा साइज्जइ ॥ ८६८ ॥ जे  
भिक्खू णो णवए मे पडिगगहे लद्वेत्तिकटु सीओदगवियहेण वा उसिणोदगवियहेण  
वा उच्छ्लोलेज वा पधोएज वा उच्छ्लोलेत वा पधोएत वा साइज्जइ ॥ ८६९ ॥ जे  
भिक्खू णो णवए मे पडिगगहे लद्वेत्तिकटु वहुद्विदि देवसिएण [वा] तेलेण वा घएण वा  
णवणीएण वा मक्खेज वा मिलिगेज वा मक्खेत वा भिलिंगेत वा साइज्जइ ॥ ८७० ॥  
जे भिक्खू णो णवए मे पडिगगहे लद्वेत्तिकटु वहुदेवसिएण(ण) लोद्वेण वा  
कक्षेण वा चुणोण वा वणोण वा उच्छ्लोलेज वा उच्छ्लेज वा उच्छ्लोलेत वा उच्छ्लेत वा  
साइज्जइ ॥ ८७१ ॥ जे भिक्खू णो णवए मे पडिगगहे लद्वेत्तिकटु वहुदेवसिएण

<sup>१</sup> सोभाग्निति ।

सीओइगर्निप १८ का उर्जिगादगर्विहग का उग्रणेभज का पशाणज का उग्रणेभं  
का पोर्टों का गाइजर ॥ ८३ ॥ त जे भिस्कू दुष्प्रियोध म पहिमार्हे स्टेलिग्यू  
यदेश का प्रृथक का उद्दलेश का यस्तोव का भिस्कैट का यस्तोर्ने का भिस्कैट  
का गाइजर ॥ ८४ ॥ त जे भिस्कू दुष्प्रियोध म पहिमार्हे स्टेलिग्यू ल्डेव रा  
क्षय का तुक्कम का ब्लोब का उद्दलेश का उत्तरेव का उद्दोर्ने का उद्दलेश रा  
गाइजर ॥ ८५ ॥ त जे भिस्कू दुष्प्रियोध म पहिमार्हे स्टेलिग्यू ल्डेविट  
उदेश का प्रृथक का यस्तीएश का यस्तोव का भिस्कैट का मार्टेन का  
भिस्कैट का गाइजर ॥ ८६ ॥ त जे भिस्कू दुष्प्रियोध म पहिमार्हे स्टेलिग्यू ल्डू  
डेविट ल्डोरेव का ब्लेव का तुक्कम का ब्लेव का उद्दलेश  
का उद्दलेन्ट का उद्दलेन्ट का गाइजर ॥ ८७ ॥ त जे भिस्कू दुष्प्रियोध म पहिमार्हे  
स्टेलिग्यू ल्डुरेविट ल्डीओइगर्विहग का उर्जिओइगर्विहग का ब्लेवेन्ट  
का पशाणज का उग्रणेन्ट का पोर्टों का गाइजर ॥ ८८ ॥ ते भिस्कू अर्डेन्ट  
रहिवाए पुर्झीए तुम्हदे तुष्टिकिर्तते अविलंये चसाक्कले पहिमार्हे आवादेज का  
पशाणज का आवार्ने का पशावेन्ट का गाइजर ॥ ८९ ॥ ते भिस्कू उर्जिमार्ह  
पुर्झीए तुम्हदे तुष्टिकिर्तते अविलंये चसाक्कले पहिमार्हे आवादेज का अलोव  
का आवार्ने का पशावेन्ट का गाइजर ॥ ९० ॥ ते भिस्कू अर्डारमाए पुर्झीए  
तुम्हदे तुष्टिकिर्तते अविलंये चसाक्कले पहिमार्हे आवादेज का पशाणज का आवार्ने  
का पशावेन्ट का गाइजर ॥ ९१ ॥ ते भिस्कू अर्डारमाए पुर्झीए तुम्हदे  
तुष्टिकिर्तते अविलंये चसाक्कले पहिमार्हे आवादेज का आवार्ने का  
पशावेन्ट का गाइजर ॥ ९२ ॥ ते भिस्कू अर्डारमाए पुर्झीए तुम्हदे तुष्टिकिर्तते  
अविलंये चसाक्कले पहिमार्हे आवादेज का पशावेन्ट का आवार्ने का  
गाइजर ॥ ९३ ॥ ते भिस्कू अर्डारमाए पुर्झीए तुम्हदे तुष्टिकिर्तते अविलंये  
चसाक्कले पहिमार्हे आवादेज का पशावेन्ट का आवार्ने का गाइजर ॥ ९४ ॥  
ते भिस्कू अर्डारमाए पुर्झीए तुम्हदे तुष्टिकिर्तते अविलंये चसाक्कले  
पहिमार्हे आवादेज का पशावेन्ट का आवार्ने का गाइजर ॥ ९५ ॥  
ते भिस्कू अर्डारमाए पुर्झीए तुम्हदे तुष्टिकिर्तते अविलंये चसाक्कले  
पहिमार्हे आवादेज का पशावेन्ट का आवार्ने का गाइजर ॥ ९६ ॥

साइज्जइ ॥ ८८६ ॥ जे भिक्खू थूर्णसि वा गिहेलुयसि वा उस्यालंसि वा का[झा]म[व]-  
जलंसि वा दुब्बद्धे दुष्टिक्षिते अणिकपे चलाचले पडिग्रह आयावेज वा पयावेज  
वा आयावेत वा पयावेत वा साइज्जइ ॥ ८८७ ॥ जे भिक्खू कुलियंसि वा भिर्तिसि  
वा सिलसि वा लेलुसि वा अत(रि)लिक्खजायसि वा दुब्बद्धे दुष्टिक्षिते अणिकपे  
चलाचले पडिग्रह आयावेज वा पयावेज वा आयावेत वा पयावेत वा साइज्जइ  
॥ ८८८ ॥ जे भिक्खू खधसि वा फलहंसि वा मनसि वा मङ्गवसि वा मालसि वा  
पासार्यसि वा दुब्बद्धे दुष्टिक्षिते अणिकपे चलाचले पडिग्रह आयावेज वा पयावेज  
वा आयावेत वा पयावेत वा साइज्जइ ॥ ८८९ ॥ जे भिक्खू पडिग्रहाओ पुढवी-  
काय णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आहटु देज्जमाण पडिग्रहेइ पडिग्रहेत वा साइज्जइ  
॥ ८९० ॥ जे भिक्खू पडिग्रहाओ आउकाय णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आहटु  
देज्जमाण पडिग्रहेइ पडिग्रहाहेत वा साइज्जइ ॥ ८९१ ॥ जे भिक्खू पडिग्रहाओ  
तेउकाय णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आहटु देज्जमाण पडिग्रहेइ पडिग्रहाहेत वा  
साइज्जइ ॥ ८९२ ॥ जे भिक्खू पडिग्रहाओ कदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा  
पुप्फाणि वा फलाणि वा णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आहटु देज्जमाण पडिग्रहेइ  
पडिग्रहाहेत वा साइज्जइ ॥ ८९३ ॥ जे भिक्खू पडिग्रहाओ ओसहिवीयाणि णीहरइ  
णीहरावेइ णीहरिय आहटु देज्जमाण पडिग्रहेइ पडिग्रहाहेत वा साइज्जइ ॥ ८९४ ॥  
जे भिक्खू पडिग्रहाओ तसपाणजाइ णीहरइ णीहरावेइ णीहरिय आहटु देज्जमाण  
पडिग्रहेड पडिग्रहाहेत वा साइज्जइ ॥ ८९५ ॥ जे भिक्खू पडिग्रहग कोरेइ  
कोरावेइ कोरिय आहटु देज्जमाण पडिग्रहाहेइ पडिग्रहाहेत वा साइज्जइ ॥ ८९६ ॥  
जे भिक्खू णायग वा अणायग वा उवासग वा अणुवासग वा गाम-  
पहतरंसि वा पडिग्रह ओभासिय २ जायइ जायत वा साइज्जइ ॥ ८९७ ॥ जे भिक्खू  
णायग वा अणायग वा उवासग वा अणुवासग वा परिसामज्जाओ उड्डवेत्ता पडिग्रह  
ओभासिय २ जायइ जायत वा साइज्जइ ॥ ८९८ ॥ जे भिक्खू पडिग्रहणीसाए उड्डवद्ध  
वसइ वसत वा साइज्जइ ॥ ८९९ ॥ जे भिक्खू पडिग्रहणीसाए वासावास वसइ वसतं  
वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण उग्धाह्य ॥ ९०० ॥  
णिसीहउज्ज्ञयणे चउद्दसमो उद्देसो समस्तो ॥ १४ ॥

### पण्णरसमो उद्देसो

जे भिक्खू भिक्खूण आगाढ वयइ वयंत वा साइज्जइ ॥ ९०१ ॥ जे भिक्खू०  
फस्स वयइ वयत वा साइज्जइ ॥ ९०२ ॥ जे भिक्खू भिक्खूण आगाढ फस्स वयइ  
वयंत वा साइज्जइ ॥ ९०३ ॥ जे भिक्खू भिक्खूण अण्णयरीए अचासायणाए

अवसापह अवसापर्त वा साहजद ॥ ९ ४ ॥ जे मिक्कू सविर्त अर्थ मुंब  
 मुंबर्त वा साहजद ॥ ९ ५ ॥ जे मिक्कू सविर्त अर्थ चि(ड)वसह मिक्कूर्त वा साहजद ॥  
 ९ ६ ॥ जे मिक्कू सविरापहट्टिर्व अर्थ मुंबर्त वा साहजद ॥ ९ ७ ॥ जे  
 मिक्कू सविरापहट्टिर्व अर्थ चिक्कू मिक्कूर्त वा साहजद ॥ ९ ८ ॥ जे मिक्कू  
 सविर्त अर्थ वा अपेय(सियो)सि वा अवमिति(ति)र्त वा अवसास्त्र वा अवहार्ण वा  
 अवचोम्य वा मुंबू मुंबर्त वा साहजद ॥ ९ ९ ॥ जे मिक्कू सविर्त अर्थ वा अप-  
 येसि वा अवमिति वा अवसास्त्र वा अवहार्ण वा अवचोम्य वा चिक्कू चिक्कूर्त  
 वा साहजद ॥ ९ १ ॥ १० जे मिक्कू सविरापहट्टिर्व अर्थ वा अवयेसि वा अवमिति  
 वा अवसास्त्र वा अवहार्ण वा मुंबू मुंबर्त वा साहजद ॥ ११ ॥ जे मिक्कू  
 सविरापहट्टिर्व अर्थ वा अवयेसि वा अवमिति वा अवसास्त्र वा अव-  
 हार्ण वा अवचोम्य वा चिक्कू मिक्कूर्त वा साहजद ॥ ११२ ॥ जे मिक्कू  
 अप्पउलिएन वा पारतिएन वा अप्पणो पाए अमज्जावेज वा पमज्जावेज वा  
 आमज्जावेत वा पमज्जावेत वा साहजद ॥ ११३ ॥ जे मिक्कू अप्पउलिएन वा  
 गारतिएन वा अप्पणो पाए चंचाहावेज वा पक्षिमाहावेज वा ऐचाहावेत वा पक्षि-  
 माहावेत वा साहजद ॥ ११४ ॥ जे मिक्कू अप्पउलिएन वा यारतिएन वा  
 अप्पणो पाए तेलैन वा चणैन वा अप्पणीएन वा मस्तावेज वा निप्पिमावेज वा  
 मस्तावेत वा निप्पिमावेत वा साहजद ॥ ११५ ॥ जे मिक्कू अप्पउलिएन वा  
 गारतिएन वा अप्पणो पाए चंचेलैन वा चंचेलैन वा उच्छावेज वा  
 उच्छेलवेत वा उच्छावेत वा साहजद ॥ ११६ ॥ जे मिक्कू अप्पउलिएन वा  
 गारतिएन वा अप्पणो पाए दीमावगविद्वेज वा उठिलोहयविद्वेज वा उच्छेल-  
 वेज वा पशोवावेज वा उच्छेलवेत वा पशोवावेत वा साहजद ॥ १७ ॥ जे  
 मिक्कू अप्पउलिएन वा गारतिएन वा अप्पणो पाए फूमावेज वा रसावेज वा  
 फूमावेत वा रसावेत वा साहजद ॥ ११८ ॥ जे मिक्कू अप्पउलिएन वा यारति-  
 एन वा अप्पणो वाम आमज्जावेज वा पमज्जावेज वा आमज्जावेत वा पमज्जावेत  
 वा साहजद ॥ ११९ ॥ जे मिक्कू अप्पउलिएन वा पमज्जावेत वा साहजद ॥ १२ ॥  
 जे मिक्कू अप्पउलिएन वा यारतिएन वा अप्पणो कर्व तेलैन वा चणैन वा  
 अप्पणीएन वा मस्तावेज वा निप्पिमावेज वा मस्तावेत वा निप्पिमावेत  
 वा साहजद ॥ १२१ ॥ जे मिक्कू अप्पउलिएन वा गारतिएन वा अप्पणो वाव उत्तेज  
 वा उत्तेज वा उठोवावेज वा उच्छावेज वा उम्मावेत वा उरज्जद

## ८ प्रभावना द प्रकार की-

( १ ) जिस काल में जितने सूझादि हों उनको गुण गम से याक्षे पह शासन का प्रभाविक होता है। ( २ ) अचाहम्भर के साथ घर्मे कथा का व्याख्यान करके शासन की प्रभावना करें। ( ३ ) विकट तपस्या करके शासन की प्रभावना करें। ( ४ ) तीम काल और तीन मत का आलक्षण्य हो। ( ५ ) तर्क वितर्क हेतु पाद युक्ति व्याय और विचारित से वादियों को शासनार्थ में पराजय करके शासन की प्रभावना करें। ( ६ ) पुरुषार्थी पुरुष दीक्षा लेके शासन की प्रभावना करें। ( ७ ) विविता करमें की शक्ति हो तो कविता करे शासन की प्रभावना करें। ( ८ ) व्रहस्पर्यादि कोई बड़ा बोला हो तो प्रगट वद्वात से आश्रियों के बीच में ले। इसीं लोगों को शासन पर अक्षा और वक्त लेने की रुचि वद्वाती अपेक्षा दुर्बल लघर्मी भारपों की सहायता करनी पहली प्रभावना है, परंतु आश्रिय क्षेत्र से में अमल वस्तुओं प्रभावना पा लख्य आदि बांटते हैं दीर्घ वर्ति से विचारि इसके बाटने से शासन की क्षय प्रभावना होती है। अपितना साम है इसका शुद्धिमाम स्वयं विचार कर लक है अगर प्रभावना से आपका भक्षा प्रेम हो तो छोटे व व तस्वीरनमय द्वेषकृ की प्रभावना करिये ताके आपके मार्ग को आत्म काल की प्राप्ति हो।

## ९ आगार द हैं—

सम्यक्ष्य के अन्तर है आगार है। ( १ ) राजा आगार। ( २ ) देवता का०। ( ३ ) न्याय का०। ( ४ ) माता पिता

॥ ९२२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो काय सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज वा पधोवावेज वा उच्छोलावेत वा पधोवावेत वा साइज्जइ ॥ ९२३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो काय फूमावेज वा रथावेज वा फूमावेत वा रथावेत वा साइज्जइ ॥ ९२४ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण आमजावेज वा पमजावेज वा आमजावेत वा पमजावेत वा साइज्जइ ॥ ९२५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण सवाहावेज वा पलिमद्वावेज वा सवाहावेत वा पलिमद्वावेत वा साइज्जइ ॥ ९२६ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण तेलेण वा घएण वा णवणीएण वा मक्खावेज वा मिलिंगावेज वा मक्खावेत वा भिलिंगावेत वा साइज्जइ ॥ ९२७ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण लोद्वेण वा कक्षेण वा उहोलावेज वा उब्बटावेज वा उल्लोलावेत वा उब्बटावेत वा साइज्जइ ॥ ९२८ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज वा पधोवावेज वा उच्छोलावेत वा पधोवावेत वा साइज्जइ ॥ ९२९ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि वण फूमावेज वा रथावेज वा फूमावेत वा रथावेत वा साइज्जइ ॥ ९३० ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि गड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदावेज वा विच्छिदावेज वा अच्छिदावेत वा विच्छिदावेत वा साइज्जइ ॥ ९३१ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि गड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेणं तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदवित्ता विच्छिदवित्ता पूयं वा सोणिय वा णीहरावेज वा विसोहावेज वा णीहरावेत वा विसोहावेत वा साइज्जइ ॥ ९३२ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि गड वा पिलग वा अरइय वा असियं वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदावेता विच्छिदावेता पूयं वा सोणिय वा णीहरावेता विसोहावेता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज वा पधोयावेज वा उच्छोलावेत वा पधोयावेत वा साइज्जइ ॥ ९३३ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो कायसि गड वा पिलग वा अरइय वा असिय वा भगदल वा अण्णयरेण तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिदावेता विच्छिदावेता पूयं वा सोणिय वा णीहरावेता विसोहावेता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण

॥ १५१ ॥ जे मिन्ह अन्यतरतिथएव वा गारतिथएव वा अप्यतो चीहर्व प्रस्तुतमर्व  
कल्पावेत्त वा संभावेत्त वा कल्पावेत्त वा साहज्ञद ॥ १५२-१ ॥ तेष्टै  
मर्व ॥ १५३-२ ॥ जे मिन्ह अन्यतरतिथएव वा मारतिथएव वा अप्यतो अस्तिमर्व  
वा कल्पमर्व वा वरुमर्व वा भास्मर्व वा चीहरावेत्त वा चीहरावेत्त वा  
विसोहावेत्त वा साहज्ञद ॥ १५३ ॥ जे मिन्ह अन्यतरतिथएव वा गारतिथएव वा अप्यतो  
कल्पावेत्त वा चाहं वा वर्कं वा मर्व वा चीहरावेत्त वा विसोहावेत्त वा चीहरावेत्त वा  
विसोहावेत्त वा साहज्ञद ॥ १५४ ॥ जे मिन्ह अन्यतरतिथएव वा गारतिथएव वा गामर्व  
गम्भ दूष्मनावेत्त अप्यतो सुचितुषारिव्य अरवेत्त अरवेत्त वा साहज्ञद ॥ १५५ ॥ जे मिन्ह  
आगीताणारेत्त वा आरामाणारेत्त वा गाहाकल्पारेत्त वा परियाकर्त्तवेत्त वा उचारपार्व  
वर्य परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १५६ ॥ जे मिन्ह उज्जार्वेत्त वा उज्जार  
निर्वेत्त वा उज्जारपासार्वेत्त वा विजार्वेत्त वा विजार्वसार्वेत्त वा  
उचारपासार्वेत्त परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १५७ ॥ जे मिन्ह अर्वेत्त वा  
अप्यतर्वेत्त वा अर्वेत्त वा पश्चार्वेत्त वा वार्वेत्त वा वोषुर्वेत्त वा उचारपासार्वेत्त  
परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १५८ ॥ जे मिन्ह वर्गेत्त वा एम्मस्वेत्त वा  
दगफार्वेत्त वा दगतीर्वेत्त वा इष्टिःठार्वेत्त वा सुचारपासार्वेत्त परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा  
साहज्ञद ॥ १५९ ॥ जे मिन्ह उज्जार्वेत्त वा उज्जारपासार्वेत्त वा विजार्विर्वेत्त वा  
मिज्जसार्वेत्त वा चूचासार्वेत्त वा चेतुगार्वेत्त वा उचारपासार्वेत्त परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा  
साहज्ञद ॥ १६० ॥ जे मिन्ह उज्जार्विर्वेत्त वा उज्जारपासार्वेत्त वा त्रुसमिर्वेत्त वा दुर्चि-  
सार्वेत्त वा चू(मु)सगिर्वेत्त वा चूसार्वेत्त वा उचारपासार्वेत्त परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा  
साहज्ञद ॥ १६१ ॥ जे मिन्ह जाजगिर्वेत्त वा जागसार्वेत्त वा चूगार्विर्वेत्त वा  
हुम्मसार्वेत्त वा उचारपासार्वेत्त परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १६२ ॥ जे मिन्ह  
परिवसार्वेत्त वा परिवर्तिर्वेत्त वा परिवासार्वेत्त वा परियाप्तिर्वेत्त वा इन्द्रियासार्वेत्त  
वा कुमिदगिर्वेत्त वा उचारपासार्वेत्त परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १६३ ॥ जे  
मिन्ह गोणसार्वेत्त वा गोणगिर्वेत्त वा महाज्ञ(भवा)र्वेत्त वा महाविर्वेत्त वा उचार-  
पासार्वेत्त परिदुर्वेत्त परिदुर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १६४ ॥ जे मिन्ह अन्यतरतिथवस्तु वा  
गारतिथवस्तु वा अस्तु वा ४ दैह दैत्यं वा साहज्ञद ॥ १६५ ॥ जे मिन्ह पात-  
त्तवस्तु वस्तु[प्रस्तु]वस्तु वा ४ दैह दैत्यं वा साहज्ञद ॥ १६६ ॥ जे मिन्ह प्रत्तवस्तु  
अस्तु वा ४ परिच्छद्य परिच्छर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १६७ ॥ जे मिन्ह औमालस्तु  
अप्यते वा ४ दैह दैत्यं वा साहज्ञद ॥ १६८ ॥ जे मिन्ह ओच्चन्नस्तु अस्तु वा  
४ परिच्छद्य परिच्छर्वेत्त वा साहज्ञद ॥ १६९ ॥ जे मिन्ह इच्छस्तु अस्तु वा

४ देड़ देतं वा साइज्जइ ॥ ९८० ॥ जे भिक्खू कुसीलस्स असण वा ४ पडिच्छह  
पडिच्छत वा साइज्जइ ॥ ९८१ ॥ जे भिक्खू णितियस्स असण वा ४ देड़ देतं वा  
साइज्जइ ॥ ९८२ ॥ जे भिक्खू णितियस्स असण वा ४ पडिच्छह पडिच्छत वा  
साइज्जइ ॥ ९८३ ॥ जे भिक्खू ससत्तस्स असण वा ४ देड़ देतं वा साइज्जइ  
॥ ९८४ ॥ जे भिक्खू ससत्तस्स असण वा ४ पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जइ  
॥ ९८५ ॥ जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा वथ्य वा पडिग्गह वा  
कंवल वा पायपुंछण वा देइ देतं वा साइज्जइ ॥ ९८६ ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स  
वथ्य वा ४ देइ देत वा साइज्जइ ॥ ९८७ ॥ जे भिक्खू पासत्थस्स वथ्य वा ४  
पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जइ ॥ ९८८ ॥ जे भिक्खू ओसण्णस्स वथ्य वा ४ देड़  
देतं वा साइज्जइ ॥ ९८९ ॥ जे भिक्खू ओसण्णस्स वथ्य वा ४ पडिच्छह पडिच्छत  
वा साइज्जइ ॥ ९९० ॥ जे भिक्खू कुसीलस्स वथ्य वा ४ देड़ देत वा साइज्जइ  
॥ ९९१ ॥ जे भिक्खू कुसीलस्स वथ्य वा ४ पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जइ  
॥ ९९२ ॥ जे भिक्खू नितियस्स वथ्य वा ४ देइ देतं वा साइज्जइ ॥ ९९३ ॥ जे  
भिक्खू नितियस्स वथ्य वा ४ पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जइ ॥ ९९४ ॥ जे भिक्खू  
ससत्तस्स वथ्य वा ४ देइ देतं वा साइज्जइ ॥ ९९५ ॥ जे भिक्खू ससत्तस्स वथ्य  
वा ४ पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जइ ॥ ९९६ ॥ जे भिक्खू जायणवथ्य वा णिम-  
तणावथ्य वा अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पडिग्गहेइ पडिग्गहेत वा साइज्जइ से  
य वथ्ये चउण्ह अण्णयरे सिया, तजहा-णिच्चाणियसणिए म[ज्ञणिह]ज्ञणिए छणूसविए  
रायदुवारिए ॥ ९९७ ॥ जे भिक्खू विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमजेज वा  
पमजेज वा आमजत वा पमजत वा साइज्जइ ॥ ९९८ ॥ एवं जाव सीसदुवारिय  
करेइ करेतं वा साइज्जइ ॥ १०५१ ॥ जे भिक्खू विभूसापडियाए वथ्य वा ४  
अण्णयर वा उवगरणजाय धरेइ धरेतं वा साइज्जइ ॥ १०५२ ॥ जे भिक्खू विभूसा-  
पडियाए वथ्य वा ४ अण्णयरं वा उवगरणजाय धोवेइ धोवेतं वा साइज्जइ । त  
सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारडाण उम्याइय ॥ १०५३ ॥ णिसीहृज्ञ-  
यणे पण्णरसमो उहेसो समत्तो ॥ १५ ॥

### सोलसमो उहेसो

जे भिक्खू सागारियसेजं अणुपविसइ अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ १०५४ ॥ जे  
भिक्खू स(सी)उदग सेज उवागच्छह उवागच्छत वा साइज्जइ ॥ १०५५ ॥ जे  
भिक्खू सवगणिसेज अणुपविसइ अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ १०५६ ॥ जे  
भिक्खू सचित्त उच्छु भुजइ भुजत वा साइज्जइ ॥ १०५७ ॥ जे भिक्खू सचित्त

उच्चु विवस्त्र विवर्णता वा साहज्य ॥ १ ५८ ॥ वे मिक्कू सवित्तपहिर्व उच्चु  
मुंबद मुंबर्ता वा साहज्य ॥ १ ५९ ॥ वे मिक्कू सवित्तपहिर्व उच्चु विवस्त्र  
विवर्णता वा साहज्य ॥ १ ६ ॥ वे मिक्कू सवित्ता अंतस्त्रव्युर्व वा उच्चुर्विर्व ए  
उच्चुनामां वा उच्चुमेरग वा उच्चुसामां वा उच्चुडालग वा मुंबद मुंबर्ता वा साहज्य  
॥ १ ६१ ॥ वे मिक्कू सवित्ता अंतस्त्रव्युर्व वा उच्चुडालग वा विवस्त्र विवर्णता  
वा साहज्य ॥ १ ६२ ॥ वे मिक्कू सवित्तपहिर्व अंतस्त्रव्युर्व वा उच्चुडालग वा  
मुंबद मुंबर्ता वा साहज्य ॥ १ ६३ ॥ वे मिक्कू सवित्तपहिर्व अंतस्त्रव्युर्व वा उच्चु  
डालग वा विवस्त्र विवर्णता वा साहज्य ॥ १ ६४ ॥ वे मिक्कू आरम्भार्व विवर्णता  
अटवीयतासर्वद्विवार्व असर्व वा ४ पवित्राहोर्ता वा साहज्य ॥ १ ६५ ॥ वे मिक्कू वा(अ)रम्भ(व)र्व कर्वधार्व अटवीयतासर्व पवित्रिवार्व  
असर्व वा ४ पवित्राहोर्ता वा साहज्य ॥ १ ६६ ॥ वे मिक्कू वा(कुषि)राहर्व वा(कुषि)विवाहर्व वयद वर्तता वा साहज्य ॥ १ ६७ ॥ वे मिक्कू  
कुमुकिराहर्व कुमुकिराहर्व वयद वर्तता वा साहज्य ॥ १ ६८ ॥ वे मिक्कू कुमुकिर्व  
याज्ञानार्व अलुसिराहर्व वर्व देवमाह देवमर्तता वा साहज्य ॥ १ ६९ ॥ वे मिक्कू  
कुमगाहाहर्वार्व असर्व वा ४ देव देवता वा साहज्य ॥ १ ७ ॥ वे मिक्कू कुमगाहर्व  
देवतार्व असर्व वा ४ पवित्राहर्व पवित्राहर्ता वा साहज्य ॥ १ ७१ ॥ वे मिक्कू  
कुमगाहाहर्वार्व असर्व वा ४ देव देवता वा साहज्य ॥ १ ७२ ॥ वे मिक्कू कुमगाहर्व  
देवतार्व असर्व वा ४ पवित्राहर्व पवित्राहर्ता वा साहज्य ॥ १ ७३ ॥ वे मिक्कू  
कुमगाहाहर्वार्व असहि देव देवता वा साहज्य ॥ १ ७४ ॥ वे मिक्कू कुमगाहाहर्वार्व  
असहि पवित्राहर्व पवित्राहर्ता वा साहज्य ॥ १ ७५ ॥ वे मिक्कू कुमगाहाहर्वार्व  
असहि अलुपविवाह अलुपविसर्ता वा साहज्य ॥ १ ७६ ॥ वे मिक्कू कुमगाहाहर्वार्व  
सज्जार्व देव देवता वा साहज्य ॥ १ ७७ ॥ वे मिक्कू कुमगाहाहर्वार्व सज्जार्व  
पवित्राहर्व पवित्राहर्ता वा साहज्य ॥ १ ७८ ॥ वे मिक्कू विं अलुपविवाहविवर्ण  
एव लाडे विहाराए संवरमासेसु वलवएषु विहारपविवाए अमिसंवारेऽ अमिठाहोर्ता  
वा साहज्य ॥ १ ७९ ॥ वे मिक्कू विवर्णवाई वलवादवर्व लवादिवर्व पवि-  
वर्णर्व पवित्रिवाह एव लाडे विहाराए संवरमासेसु वलवएषु विहारपविवाए अमिठ-  
पारेऽ अमिसंवारेऽ वा साहज्य ॥ १ ८ ॥ वे मिक्कू कुमुकिसुवेत लठर्व  
वा ४ पवित्राहोर्ता वा साहज्य ॥ १ ८१ ॥ वे मिक्कू कुमुकिसुवेत लठर्व  
वर्णे वा ४ पवित्राहोर्ता वा साहज्य ॥ १ ८२ ॥ वे मिक्कू कुमुकिसुवेत  
वर्णे वा ४ पवित्राहोर्ता वा साहज्य ॥ १ ८३ ॥ वे मिक्कू कुमुकिसुवेत

दुगुछियकुलेषु सज्जाय करेइ करेत वा साइज्जइ ॥ १०८४ ॥ जे भिक्खू दुगुछिय-  
कुलेषु सज्जाय उद्दिसइ उद्दिसतं वा साइज्जड ॥ १०८५ ॥ ( समुद्दिसड ००  
अणजाणइ ) जे भिक्खू दुगुछियकुलेषु सज्जाय वाएइ वाएत वा साइज्जइ  
॥ १०८६ ॥ जे भिक्खू दुगुछियकुलेषु सज्जाय पडिच्छइ पडिच्छतं वा साइज्जइ  
॥ १०८७ ॥ ( परियद्ध ) जे भिक्खू असण वा ४ पुढवीए णिक्खिवड  
णिक्खिवत वा साइज्जइ ॥ १०८८ ॥ जे भिक्खू असण वा ४ सथारए णिक्खिवड  
णिक्खिवतं वा साइज्जड ॥ १०८९ ॥ जे भिक्खू असण वा ४ वेहासे णिक्खिवड  
णिक्खिवत वा साइज्जइ ॥ १०९० ॥ जे भिक्खू अण(उत्थिएण)तित्थीहिं वा  
गार(त्थिएण)त्थीहिं वा सद्धि भुजइ भुजतं वा साइज्जइ ॥ १०९१ ॥ जे भिक्खू  
अणतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धि आवेदिय परिवेदिय भुजइ भुजत वा  
साइज्जइ ॥ १०९२ ॥ जे भिक्खू आयरियउवज्ञायाण सेजासथारग पाएण सघटेत्ता  
हृथ्येण अणणुण्णवेत्ता धा(रे)ख्यमा(णे)णो गच्छइ गच्छत वा साइज्जइ ॥ १०९३ ॥  
जे भिक्खू पमाणाइरित वा गणणाइरित वा उवहिं धरेइ धरेतं वा साइज्जइ  
॥ १०९४ ॥ जे भिक्खू अणतरहियाए पुढवीए जीवपइष्टिए सउडें सपाणे सवीए  
सहरिए सबोस्से सउदए सउतिंगपणगदगमद्वियमक्षडासताणगसि चलाचले उच्चार-  
पासवणं परिष्ठवेइ परिष्ठवेत वा साइज्जड ॥ १०९५ ॥ जे भिक्खू ससिणिद्वाए पुढवीए  
जाव साइज्जइ ॥ १०९६ ॥ जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९७ ॥  
जे भिक्खू मद्वियाकडाए पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९८ ॥ जे भिक्खू चित्तमंताए  
पुढवीए जाव साइज्जइ ॥ १०९९ ॥ जे भिक्खू चित्तमताए सिलाए जाव साइज्जइ  
॥ ११०० ॥ जे भिक्खू चित्तमताए लेल्लाए जाव साइज्जइ ॥ ११०१ ॥ जे भिक्खू  
कोलावाससि वा दारुए जाव साइज्जइ ॥ ११०२ ॥ जे भिक्खू थूणसि वा गिहेलुयसि  
वा उसुयालंसि वा कामजलसि वा चलाचले उच्चारपासवण परिष्ठवेइ परिष्ठवेत वा  
साइज्जइ ॥ ११०३ ॥ जे भिक्खू कुल्यिंसि वा भित्तिसि वा सिलसि वा लेलुसि वा  
अन्तलिक्खजायसि वा चलाचले उच्चारपासवण परिष्ठवेइ परिष्ठवेत वा साइज्जइ  
॥ ११०४ ॥ जे भिक्खू खधसि वा फलहसि वा मचसि वा मडवसि वा मालसि वा  
पासायसि वा (अणयरंसि वा अतरिक्खजायसि) उच्चारपासवण परिष्ठवेड परिष्ठवेतं  
वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवजइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण उग्धाइय ॥ ११०५ ॥  
णिसीह॒ज्ज्ययणे सोलसमो उह्वेसो समत्तो ॥ १६ ॥

### सत्तरसमो उह्वेसो

जे भिक्खू कोउह्लपडियाए अण्यायर तसपाणजाय तणपासएण वा मुजपासएण

वा बहुतराएव वा अमरासाएव वा फलागाएव वा रजगामण वा द्रुपदीन्द्र  
वा वैष्ण वैयंते वा साइवद ॥ ११ ५ ॥ जे मिन्हू बोउहापहियाए अस्त्रवर्द्ध  
तगरागजावे तगरागएल वा जाव शुकरागएव वा विक्री सुवद्द मुर्यंते वा सप्तवर्द्ध  
॥ ११ ६ ॥ जे मिन्हू बोउहापहियाए तगरागिये वा सुंबमालिये वा निः  
मालिये वा मयगमालिये वा निउमालिये वा ईतमालिये वा निगमालिये वा ईक-  
मालिये वा दृग्मालिये वा कृत्मालिये वा पत्तमालिये वा पुण्यमालिये वा चम्मालिये  
वा वीम्मालिये वा हरिमालिये वा करेह करेते वा साइवद ॥ ११ ७ ॥ जे  
मिन्हू बोउहापहियाए तगरागिये वा जाव हरिमालिये वा घरेह घरेते वा सप्तवर्द्ध  
॥ ११ ८ ॥ जे मिन्हू बोउहापहियाए तगरागिये वा जाव हरिमालिये वा पिक्कद  
पिक्कद विषद्देते वा सप्तवर्द्ध ॥ १११ ॥ ( 'परियुक्त' ) जे मिन्हू बोउ-  
हापहियाए अयस्मेहायि वा ठंकस्मेहायि वा तउक्स्मेहायि वा हीक्स्मेहायि वा  
स्प्लस्मेहायि वा दुखलस्मेहायि वा कौटुम्ब करेते वा साइवद ॥ १११ १ ॥ जे मिन्हू  
बोउहापहियाए अयस्मेहायि वा जाव दुख्यस्मेहायि वा घरेह घरेते वा सप्तवर्द्ध  
॥ १११ २ ॥ जे मिन्हू घ्रेड्हापहियाए अयस्मेहायि वा जाव दुख्यस्मेहायि वा  
परिसुंब [पिण्ड] इ परिसुंबते वा साइवद ॥ १११ ३ ॥ जे मिन्हू बोउहापहियाए  
हारायि वा अद्वारायि वा एवत्तसि वा मुत्तायसि वा क्षम्यायसि वा  
रवणायसि वा कृत्यायसि वा त्रुहियायि वा तेज्यायि वा कुंडलायि वा पृथुयि वा  
अद्वायि वा फलमुत्तायि वा दुख्यमुत्तायि वा करेह करेते वा साइवद ॥ १११ ४ ॥  
जे मिन्हू काँड्हापहियाए द्वारायि वा जाव दुख्यमुत्तायि वा घरेह घरेते वा  
साइवद ॥ १११ ५ ॥ जे मिन्हू घ्रेड्हापहियाए हारायि वा जाव दुख्यमुत्तायि वा  
पिक्कद पिक्कदेते वा साइवद ॥ १११ ६ ॥ जे मिन्हू घ्रेड्हापहियाए अर्द्धायि  
वा आर्द्धपात्रायि वा कंकमायि वा वैकम्पायावाहायि वा ओमायि वा लोकपात्रायि  
वा काळमिमायि वा औक्षमिमायि वा यामायि वा निहायामायि वा ठायायि वा कृ-  
स्त्वायि वा वर्णायि वा निरव्यायि वा पर्वयायि वा उहियायि वा उहिपत्तायि  
वा बोमायि वा तुगूणायि वा एतुज्ञायि वा अवरेतायि वा वीमायि वा वंसुमायि  
वा कृष्णायायि वा कृष्णस्त्रियायि वा कृष्णकित्तायि वा आस्त्रलवित्तायि वा  
करेह करेते वा सप्तवर्द्ध ॥ १११ ७ ॥ जे मिन्हू बोउहापहियाए अर्द्धायि वा  
जाव आमरचनित्तायि वा घरेह घरेते वा साइवद ॥ १११ ८ ॥ जे मिन्हू  
बोउहापहियाए आरेषायि वा जाव आमरपहित्तायि वा परियुक्त घरेते वा  
सप्तवर्द्ध ॥ १११ ९ ॥ वा ( जे मिन्हू ) विलिम्बिते वा विर्मायस्त्र पाए अन्त-

उत्थिएण वा गरत्थिएण वा आमज्ञावेज वा पमज्ञावेज वा आमज्ञावेत् वा पमज्ञावेत् वा साइज्जइ ॥ ११२० ॥ जाव जा णिगथी सीसदुवारिय कारवेइ कारवेत वा साइज्जइ ॥ ११७२ ॥ जे णिरगंथे णिगथीए पाए अणउत्थिएण वा गरत्थिएण वा जाव सीसदुवारिय कारवेइ कारवेत वा साइज्जइ ॥ १२२५ ॥ जे णिगथे णिगथस्स सरिसगस्स सते ओवासे अते ओवासे ण देइ ण देतं वा साइज्जइ ॥ १२२६ ॥ जा णिगथी णिगथीए सरिसियाए सते ओवासे अते ओवासे ण देइ ण देतं वा साइज्जह ॥ १२२७ ॥ जे भिक्खू मालोहड असण वा ४ उद्धिमदिय देजमाण पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ १२२८ ॥ जे भिक्खू कोट्टियाउत्त अमण वा ४ उक्कुजिय निक्कुजिय उहरीय देजमाण पडिग्गाहेड पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ १२२९ ॥ जे भिक्खू मट्टिओलित असण वा ४ उद्धिमदिय णिर्भिमदिय देजमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ १२३० ॥ जे भिक्खू (असण वा ) पुढविपइट्टिय पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ १२३१ ॥ जे भिक्खू आउपइट्टिय पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ १२३२ ॥ जे भिक्खू तेउपइट्टियं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ १२३३ ॥ जे भिक्खू वणस्सङ्कायपइट्टिय पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ १२३४ ॥ जे भिक्खू अच्छुसिण असण वा ४ सुप्पेण वा विहुयणेण वा तालियटेण वा पत्तेण वा पत्तमगेण वा साहाए वा साहाभगेण वा पिहुयणेण वा पिहुणहृत्येण वा चेलेण वा चेलकणेण वा हृत्येण वा मुहेण वा फूमित्ता वीडत्ता आहट्टु देजमाण पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जड ॥ १२३५ ॥ जे भिक्खू असण वा ४ उसिणुसिण पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा साइज्जइ ॥ १२३६ ॥ जे भिक्खू उस्सेहम वा ससेहम वा चाउलोदगं वा वालोदग वा तिलोदग वा तुसोदग वा जवोदग वा आयाम वा सोवीर वा अवकजिय वा सुद्धवियड वा अहुणाधोय अणबिल अपारिणय अवकतजीव अविद्धत्य पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा साइज्जइ ॥ १२३७ ॥ जे भिक्खू अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाइ वागरेइ वागरेत वा साइज्जइ ॥ १२३८ ॥ जे भिक्खू गाएज वा (हसेज वा) वाएज वा णचेज वा अभिनवेज वा हयहेसिय वा हस्तिगुल्मुलाइय वा उ[कु(क्कि)ट्ट]फट्टिसीहणाय वा करेइ करेत वा साइज्जह ॥ १२३९ ॥ जे भिक्खू मेरिसद्धाणि वा पडहसद्धाणि वा मुरवसद्धाणि वा मुडगसद्धाणि वा णदिसद्धाणि वा जलरिसद्धाणि वा बलरिसद्धाणि वा डमस्यगसद्धाणि वा मद्यसद्धाणि वा सद्यसद्धाणि वा पएससद्धाणि वा गोलुइसद्धाणि वा अणयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्धाणि कणसोयपडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जह ॥ १२४० ॥ जे भिक्खू वीणासद्धाणि वा विवन्विसद्धाणि वा तुणसद्धाणि

वा वस्त्रीस्यसहायि वा वीणाइकसहायि वा दुष्करीयसहायि वा ओदयसहायि वा टंगुणसहायि वा अल्पयरायि वा लाल्पयरायि सहायि कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४१ ॥ जे मिकू लाल्परायि वा कल्पतामसहायि वा लितिवसहायि वा गोद्यसहायि वा मक्षरेयसहायि वा कथमसहायि वा लाल्पयरायि वा लग्नस्त्रियायायायि वा वाल्मियसहायि वा वस्त्र वरयि वा लाल्पयरायि वा अल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४२ ॥ जे मिकू लंखसहायि वा वंससहायि वा वैष्णवसहायि वा वाल्मियसहायि वा वाल्मियसहायि वा परितिसहायि वा लेखायायि वा अल्पयरायि वा लाल्पयरायि वा लुहिरायि सहायि कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४३ ॥ जे मिकू लप्यायि वा फलिहायि वा उपस्थितायि वा वृक्षायायि वा वीरीयि वा पोक्यरायि वा वीरियर्मि वा सुरायि वा सरपंतियायि वा सरसर्पतियायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४४ ॥ जे मिकू लक्ष्मयि वा याम्भायि वा लग्नसहायि वा लेङायि वा कल्पहायि वा मर्दवायि वा दोष्मुहायि वा पश्चायि वा आगरायि वा ईशायायि वा संलिपेसायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४५ ॥ जे मिकू गाम्भायि वा याम्भ संज्ञिकमसहायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४६ ॥ जे मिकू याम्भसहायि वा लग्नहायि वा लेङहायि वा क्षमाय- वहायि वा जाम संज्ञिकेयसहायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४७ ॥ जे मिकू यामपहायि वा जाम संज्ञिकेयसहायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४८ ॥ जे मिकू गामपहायि वा जाम संज्ञिकेयसहायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२४९-१ ॥  
यामदाहायि वा जाम संज्ञिकेयसहायि वा ॥ १२४९-२ ॥ जे मिकू आल्पर आयि वा इतिवरणायि वा लाल्परत्यायि वा पोल्परत्यायि वा मरित्परत्यायि वा मञ्च(स्म)रत्यायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२५ ॥ जे मिकू आसत्तुदायि वा इतिवग्नुदायि वा लाल्परत्यायि वा गोप्तव्युदायि वा महित्पव्युदायि वा कल्पमादपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा साहस्र ॥ १२५१ ॥ जे मिकू उपर्युप्युदायि वा इतिवग्नुदायि वा गोप्तव्युदायि वा कल्पसोबपतिशर अभिसंधारेऽ अभिसंधारेऽ वा लाल्प

॥ १२५२ ॥ जे भिक्खु अभिसेय(ठ)द्वाणाणि वा अक्खाइयद्वाणाणि वा माणुम्मा-  
णद्वाणाणि वा महया हयणट्टीयवाइयततीतलताल्तुङ्गियपङ्गप्पवाइयद्वाणाणि वा  
कण्णसोयपडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जइ ॥ १२५३ ॥ जे भिक्खु  
हिंचाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासगमाणि वा  
क्लहाणि वा वोलाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसधारेइ अभिसधारेत वा साइ-  
ज्जइ ॥ १२५४ ॥ जे भिक्खु विरूवरूवेसु महुस्सवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा  
थेराणि वा मज्जमाणि वा डहराणि वा अणलकियाणि वा सुअलकियाणि वा गाय-  
ताणि वा वायंताणि वा णचंताणि वा हसताणि वा रमताणि वा मोहंताणि वा  
विउल असण वा ४ परिभायताणि वा परिभुजताणि वा कण्णसोयपडियाए अभि-  
सधारेइ अभिसधारेत वा साइज्जइ ॥ १२५५ ॥ जे भिक्खु इहलोइएसु वा  
सदेसु परलोइएसु वा सदेसु दिहेसु वा सदेसु अदिहेसु वा सदेसु स्त्रएसु वा सदेसु  
अस्त्रएसु वा सदेसु विण्णाएसु वा सदेसु सज्जइ रज्जइ गिज्जइ अज्जोववज्जइ सज्जत  
रज्जत पिज्जत अज्जोववज्जत वा साइज्जइ । त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय  
परिहारद्वाण उरघाइय ॥ १२५६ ॥ णिसीहउज्ज्वयणे सन्तरसमो उद्देसो  
समन्तो ॥ १७ ॥

### अहारसमो उद्देसो

जे भिक्खु अणद्वाए णाव दुरुहृइ दुरुहृत वा साइज्जइ ॥ १२५७ ॥ जे भिक्खु  
णाव किणइ किणावेइ कीय आहटु देज्जमाण दुरुहृइ दुरुहृत वा साइज्जइ ॥ १२५८ ॥  
जे भिक्खु णाव पासिच्छ पासिच्चावेइ पासिच्च आहटु देज्जमाण दुरुहृइ दुरुहृत वा  
साइज्जइ ॥ १२५९ ॥ जे भिक्खु णाव परियट्टेइ परियद्वावेइ परियट्ट आहटु देज्जमाण  
दुरुहृइ दुरुहृत वा साइज्जइ ॥ १२६० ॥ जे भिक्खु णाव अच्छेज्ज अणिसिंह  
अभिहड आहटु देज्जमाण दुरुहृइ दुरुहृत वा साइज्जइ ॥ १२६१ ॥ जे भिक्खु  
थलाओ णाव थले ओकसावेइ ओकसावेत वा साइज्जइ ॥ १२६२ ॥ जे भिक्खु  
जलाओ णाव थले उक्सावेइ उक्सावेत वा साइज्जइ ॥ १२६३ ॥ जे भिक्खु पुण्ण  
णाव उस्सिच्च उस्सिच्चत वा साइज्जइ ॥ १२६४ ॥ जे भिक्खु सण्ण णाव उपिला-  
वेइ उपिलावेत वा साइज्जइ ॥ १२६५ ॥ जे भिक्खु उवद्विय णाव उत्तिंग वा  
उदग वा आमिच्चमाणि वा उवरवरे वा क्जलावेमाणि पेहाए हृत्येण वा पाएण वा  
अतिपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मद्यियाए वा चेलेण वा पडिपिहेइ पडिपिहेत वा साइज्जइ  
॥ १२६६ ॥ जे भिक्खु पडिणाविय कटु णावाए दुरुहृइ दुरुहृत वा साइज्जइ  
॥ १२६७ ॥ जे भिक्खु उद्गुगामिणि वा णाव अहोगामिणि वा णाव दुरुहृइ दुरुहृत

वा साहजद ॥ १२६८ ॥ जे मिस्त्र योग्यत्वेक्षणागानिर्मि वा अद्वयोग्यत्वेक्षणागानिर्मि वा जार्य दुर्दृश दुर्घट वा साहजद ॥ १२६९ ॥ जे मिस्त्र यार्थ आसन्द आसन्द योग्य आग्नानिर्मि वा साहजद ॥ १२७ ॥ जे मिस्त्र यार्थ येग्यानिर्मि वा साहजद ॥ १२७१ ॥ जे मिस्त्र यार्थ रक्षणा वा क्षेत्र वा क्षेत्र दृष्टि वा साहजद ॥ १२७२ ॥ जे मिस्त्र यार्थ अक्षितपूर्ण वा परिष्ठाप्त वा वंसेज वा वंसेज वा याहेइ चाहेहर्त वा साहजद ॥ १२७३ ॥ जे मिस्त्र यावाऽस्त्रिस्त्रियेष वा उस्त्रिस्त्र उस्त्रिस्त्रियेष वा साहजद ॥ १२७४ ॥ जे मिस्त्र यार्थ उत्तिरेष उद्दीर्ण आसुष्मान्त्र उष्मान्त्रियेष्मान्त्र (पिहाए) फलेय इत्येज वा पाएय वा आसुष्मा(अहि)प्रतेष वा दुरुप्रतेष वा महिलाए वा ऐछ्युष्मेय वा पठिपिहेइ पठिपिहेहर्त वा साहजद ॥ १२७५ ॥ जे मिस्त्र यावाऽस्त्रियेष यावाऽस्त्रियेष असर्वं वा ४ पठिमाहेइ पठिमाहेहर्त वा साहजद ॥ १२७६ ॥ जे मिस्त्र यावाऽस्त्रियेष यावाऽस्त्रियेष असर्वं वा ४ पठिमाहेइ पठिमाहेहर्त वा साहजद ॥ १२७७ ॥ जे मिस्त्र यावाऽस्त्रियेष यावाऽस्त्रियेष असर्वं वा ४ पठिमाहेइ पठिमाहेहर्त वा साहजद ॥ १२७८ ॥ जे मिस्त्र यावाऽस्त्रियेष यावाऽस्त्रियेष असर्वं वा ४ पठिमाहेइ पठिमाहेहर्त वा साहजद ॥ १२७९ ॥ जे मिस्त्र वर्त्यं किञ्चिद् किञ्चिद् वीर्यं अहेहु देवतामान्त्र पठिमाहेइ पठिमाहेहर्त वा साहजद ॥ १२८० ॥ (इन्हों नारायण चउर्द्ध-मुरोपस्त्र सवसाधियि छातालि पठिमाहेठाने चरणमुखमुंगिव वत्त्वालि चार) वे मिस्त्र वर्त्यजीवाए यासाकाश चक्र वर्त्यं वा साहजद । ते देवमाध्ये आपन्त्र चर्म-म्मालियि परिहारुचुर्वं उग्धाहर्वं ॥ १२८१ ॥ विसीहुर्ज्ञमुयेष्मे भद्राससमो छाईसो उमठो ॥ १८ ॥

### एगूणधीसहमो उद्देसो

जे मिस्त्र चउहि देवाहिं सञ्जाव क्षेत्र क्षेत्रं वा साहजद, तंवहा-उप्त्वर्प सज्जाए पठिमाए सज्जाए क्षत्रणे भवुरतो ॥ १२८२ ॥ जे मिस्त्र यालिम्बुत्सुप्त फर दिव्यं पुच्छान्त्र पुच्छान्त्र वा साहजद ॥ १२८३ ॥ जे मिस्त्र पठिमाक्षत्र पर उद्दीर्ण पुच्छान्त्र पुच्छान्त्र वा साहजद ॥ १२८४ ॥ जे मिस्त्र वर्त्यं महापादिवस्तु सञ्जाये क्षेत्र क्षेत्रं वा साहजद तंवहा-घारिम्बद(योग्युपिक्ष्मो-चउसत्तहक्षिण)यादिव्य, यासादी(पुच्छिमामो सावभक्षिण)याजिकर, (महार-

१ अन्ने आयरिदे सोमस्त्रभैर्णा । पुच्छ-भुजवहते चावर्त्यं कहिहर्त उप्त्वर्पि रो एगा पुच्छ । भहवा चतियं आयरिपूर तरह सञ्जाये वेर्तु दा एना उप्त्वर्प । भहवा अत्यं पर्यं समप्त्व योर्वं वा वहु वा एगा पुच्छ ।

गुरु जनों का० । (५) वलवंत का० । (६) दुष्काल में सुख से आजीविका न चलती हो, इन छे आगारों से सम्यक्त्व में अनुचित कार्य भी करना पड़े तो सम्यक्त्व दूषित नहीं होता है ।

### १०. जयणा दि प्रकार की—

- (१) आलाप-स्वधर्मी भाइयों से एक बार बोलना ।
- (२) संलाप-स्वधर्मी भाइयों से बार बार बोलना । (३) मुनि को दान देना और स्वधर्मी वात्सल्य करना । (४) प्रतिदिन बार बार करना । (५) गुणी जनों का गुण प्रकट करना ।
- (६) और बन्दन नमस्कार, बहुमान करना ।

### ११. स्थान दि हैं—

- (१) धर्म रूपी नगर और सम्यक्त्व रूपी दरवाजा ।
- (२) धर्मरूप बृक्ष और सम्यक्त्वरूपी जड़ । (३) धर्मरूपी प्रासाद और सम्यक्त्वरूपी नींव । (४) धर्मरूपी भोजन और सम्यक्त्वरूपी थाल । (५) धर्मरूपी माल और सम्यक्त्वरूपी दुकान । (६) धर्मरूपी रत्न और सम्यक्त्वरूपी तिजोरी० ।

### १२. भावना दि हैं—

- (१) जीव चैतन्य लक्षणयुक्त असंख्यात प्रदेशी निकलंक अमूर्ति है । (२) अनादि काल से जीव और कर्मों

पुणिमाओ—)आसोय(किण्ह)पाडिवए, कन्तिय(पुणिमाओ-मग्गसिरकिण्ह)पाठिवए [वा] ॥ १३२८ ॥ जे भिक्खू पोरिसिं सज्जाय उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जह ॥ १३२९ ॥ जे भिक्खू चउकाल सज्जाय न करेइ न करेत वा साइज्जह ॥ १३३० ॥ जे भिक्खू असज्जाइए सज्जाय करेइ करेत वा साइज्जह ॥ १३३१ ॥ जे भिक्खू अप्पणो असज्जाइए सज्जाय करेइ करेत वा साइज्जह ॥ १३३२ ॥ जे भिक्खू हैट्टिलाइ समोसरणाइ अवाएता उवरिलाइ समोसरणाइ वाएड वाएतं वा साइज्जह ॥ १३३३ ॥ जे भिक्खू णव वभचेराइ अवाएता उवरि स्थय वाएइ वाएतं वा साइज्जह ॥ १३३४ ॥ जे भिक्खू अप्त वाएइ वाएतं वा साइज्जह ॥ १३३५ ॥ जे भिक्खू पत्त ण वाएइ वाएत वा साइज्जह ॥ १३३६ ॥ जे भिक्खू अव्वत वाएड वाएत वा साइज्जह ॥ १३३७ ॥ जे भिक्खू वत्त ण वाएइ ण वाएत वा साइज्जह ॥ १३३८ ॥ जे भिक्खू दोष्ह सरिसगाणं एक स(सि)चिक्खावेइ एक ण सचिक्खावेइ एक वाएड एक ण वाएइ त करेत वा साइज्जह ॥ १३३९ ॥ जे भिक्खू आयरिय-उवज्जाएहिं अविदिण गिर आइयह आडयत वा साइज्जह ॥ १३४० ॥ जे भिक्खू अणउत्तियगारत्तिय वाएइ वाएत वा साइज्जह ॥ १३४१ ॥ जे भिक्खू अणउत्तियगारत्तिय (वायणं) पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जह ॥ १३४२ ॥ जे भिक्खू पासत्य वाएइ वाएत वा साइज्जह ॥ १३४३ ॥ जे भिक्खू पासत्य पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जह ॥ १३४४ ॥ जे भिक्खू ओसणं वाएइ वाएत वा साइज्जह ॥ १३४५ ॥ जे भिक्खू ओसणं पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जह ॥ १३४६ ॥ जे भिक्खू कुसील वाएइ वाएत वा साइज्जह ॥ १३४७ ॥ जे भिक्खू कुसील पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जह ॥ १३४८ ॥ जे भिक्खू णितिय वाएइ वाएत वा साइज्जह ॥ १३४९ ॥ जे भिक्खू णितिय पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जह ॥ १३५० ॥ जे भिक्खू ससत्त वाएइ वाएत वा साइज्जह ॥ १३५१ ॥ जे भिक्खू ससत्त पडिच्छह पडिच्छत वा साइज्जह । त सेवमाणे आवज्जह चाउम्मासिय परिहारद्वाण उगधाइय ॥ १३५२ ॥

**णिसीहउज्जयणे परगूणवीसइमो उहेसो समत्तो ॥ १९ ॥**

### बीसइमो उहेसो

जे भिक्खू मासियं परिहारद्वाण पडिसेविता आलोएज्जा, अपलिउचिय आलोएमा-  
णस्म मासिय, पलिउचिय आलोएमाणस्स दोमासिय ॥ १३५३ ॥ जे भिक्खू

१ अणधम्मिमओ वाइज्जतो वायणाए दुरुवओग करेजति पायच्छित्तठाण ।  
२ आगमद्वे दुरहिगमो परहम्मिमओ आगमाणमणहिगमणिज्जा अट्टविवज्जास कुणे-  
जति पायच्छित्त ।

दोमालिं परिहारद्वार्थं परिदेविता आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य दोमा-  
लिं पश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य ते(हि)मासिं ॥ १३५४ ॥ ते मिक्षू देमालिं  
परिहारद्वार्थं परिदेविता आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य देमालिं की-  
र्त्तिय आस्मेष्वाप्तस्य चटमासिं ॥ १३५५ ॥ ते मिक्षू आउम्मालिं पौराण  
द्वापर परिदेविता आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य चटमालिं पौराण  
आस्मेष्वाप्तस्य पौरमालिं ॥ १३५६ ॥ ते मिक्षू वैष्मालिय परिहारद्वार्थं की-  
र्त्तिय आस्मेष्वा, अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य पौरमालिं पौरित्तिय वत्त्वेऽ-  
पापस्य छम्मासिं ॥ १३५७ ॥ ते वै परिहरित वा अपश्चित्तिय वा ते (हि)  
वैष्म(गालिय)मासा ॥ १३५८ ॥ ते मिक्षू बहुसोमि गासिं परिहारद्वार्थं  
परिदेविता आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य मालिय पौरित्तिय वत्त्वेऽ-  
पापस्य दोमालिं ॥ १३५९ ॥ ते मिक्षू बहुसोमि दोमालिं परिहारद्वार्थं की-  
र्त्तिय आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य देमालिं पौरित्तिय वत्त्वेऽ-  
पापस्य तेमालिं ॥ १३६० ॥ ते मिक्षू बहुसोमि ठमालिं परिहारद्वार्थं की-  
र्त्तिय आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य तेमालिं पौरित्तिय वत्त्वेऽ-  
पापस्य चटमालिं ॥ १३६१ ॥ ते मिक्षू बहुसोमि आउम्मालिं परिहारद्वार्थं  
परिदेविता आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य चटमालिं पौरित्तिय आस्मेष्वा-  
पापस्य चटमालिं ॥ १३६२ ॥ ते मिक्षू बहुसोमि वैष्मालिय पौरित्तिय वत्त्वेऽ-  
पापस्य चटमालिं पौरमालिय आस्मेष्वाप्तस्य चटमालिं पौरित्तिय वत्त्वेऽ-  
पापस्य छम्मासिं ॥ १३६३ ॥ ते वै परिहरित वा अपश्चित्तिय वा ते वै  
छम्मासा ॥ १३६४ ॥ ते मिक्षू मालिं वा दोमालिं वा तेमालिं वा चाउम्मा-  
लिय वा वैष्मालिय वा एपूर्सि परिहारद्वार्थं अप्पदर परिहारद्वार्थं पौरित्तिय  
आस्मेष्वा अपश्चित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य मालिय वा दोमालिं वा तेमालिं वा  
चटमालिं वा वैष्मालिय वा पौरित्तिय आस्मेष्वाप्तस्य दोमालिं वा तेमालिं वा  
चटमालिं वा वैष्मालिय वा छम्मालिं वा ॥ १३६५-१ ॥ ते वै परिहरित  
वा अपश्चित्तिय वा ते वै छम्मासा ॥ १३६५-२ ॥ ते मिक्षू बहुसोमि मालिं वा  
बहुसोमि दोमालिं वा बहुसोमि तेमालिं वा बहुसोमि आउम्मालिं वा बहुसोमि  
वैष्मालिय वा एपूर्सि परिहारद्वार्थं अप्पदर परिहारद्वार्थं परिदेविता आस्मेष्वा,  
अपश्चित्तिय (बहुसोमि) आस्मेष्वाप्तस्य मालिय वा दोमालिं वा तेमालिं वा चउ-  
मालिय वा वैष्मालिय (बहुसोमि) आस्मेष्वाप्तस्य दोमालिं वा तेमालिं वा तेम्मा-  
लिय वा चटमालिं वा वैष्मालिय वा छम्मालिं वा ॥ १३६६ ॥ ते मिक्षू आउम्मा-

सिय वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासिय वा साइरेगपंचमासिय वा एएसि परिहार-  
द्वाणाण अण्यर परिहारद्वाण पडिसेविता आलोएज्जा, अपलिउचिय आलोएमाणस्स  
चाउम्मासिय वा साइरेग वा पंचमासियं वा साइरेग वा, पलिउचिय आलोएमाणस्स  
पचमासिय वा साइरेग वा छम्मासिय वा ॥ १३६७-१ ॥ तेण पर पलिउचिए वा  
अपलिउचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १३६७-२ ॥ जे भिक्खू वहुसोवि चाउम्मासिय  
वा वहुसोवि साइरेगचाउम्मासिय वा वहुसोवि पचमासियं वा वहुसोवि साइरेगपंचमा-  
सिय वा एएसि परिहारद्वाणाण अण्यर परिहारद्वाण पडिसेविता आलोएज्जा, अपलिउ-  
चिय आलोएमाणस्स वहुसोवि चाउम्मासियं वा वहुसोवि साइरेगं वा वहुसोवि पचमा-  
सिय वा वहुसोवि साइरेग वा, पलिउचिय आलोएमाणस्स वहुसोवि पचमासिय वा  
वहुसोवि साइरेग वा वहुसोवि छम्मासिय वा ॥ १३६८-१ ॥ तेण पर पलिउचिए वा  
अपलिउचिए वा ते चेव छम्मासा ॥ १३६८-२ ॥ जे भिक्खू चाउम्मासिय वा  
साइरेगचाउम्मासिय वा पचमासिय वा साइरेगपंचमासिय वा एएसि परिहारद्वाणाण  
अण्यरं परिहारद्वाण पडिसेविता आलोएज्जा, अपलिउचिय आलोएमाणे ठवणिज्जं  
ठवइत्ता करणिज वेयावहिय, ठविएवि पडिसेविता सेवि कसिणे तथेव आरहेयव्वे  
सिया, पुव्वि पडिसेविय पुव्वि आलोइय, पुव्वि पडिसेविय पच्छा आलोइयं, पच्छा  
पडिसेविय पुव्वि आलोइय, पच्छा पडिसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलि-  
उचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय  
आलोएमाणस्स सब्बमेयं सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए णिव्विसमाणे  
पडिसेवेइ सेवि कसिणे तथेव आरहेयव्वे सिया ॥ १३६९ ॥ जे भिक्खू वहुसोवि  
चाउम्मासिय वा वहुसोवि साइरेगचाउम्मासिय वा (जहा हेड्डा णवरं वहुसोवि)  
जाव आरहेयव्वे सिया एयं पलिउचिए ॥ १३७० ॥ जे भिक्खू चाउम्मासिय  
वा आलोएज्जा, पलिउचिय आलोएमाणे (जहा हेड्डा) जाव पलिउचिए पलिउचिय,  
पलिउचिए पलिउचिय आलोएमाणस्स आरहेयव्वे सिया ॥ १३७१ ॥ जे भिक्खू  
वहुसोवि चाउम्मासिय वा (जहा हेड्डा णवर वहुसोवि) जाव आरहेयव्वे सिया  
॥ १३७२ ॥ छम्मासिय परिहारद्वाण पट्टविए अणगारे अतरा दोमासियं परिहार-  
द्वाण पडिसेविता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्जावसाणे  
सभट्ट सहेउ सकारण अहीणमइरित, तेण पर सवीसइराइया दो मासा ॥ १३७३ ॥  
पचमासिय परिहारद्वाण (जहा हेड्डा) जाव दो मासा ॥ १३७४ ॥ चाउम्मासिय  
परिहारद्वाण (जहा हेड्डा) जाव दो मासा ॥ १३७५ ॥ तेमासिय परिहारद्वाण  
(जहा हेड्डा) जाव दो मासा ॥ १३७६ ॥ दोमासिय परिहारद्वाण (जहा हेड्डा)

जाव दो मासा ॥ १३७५ ॥ मासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव दो मासा  
॥ १३७६ ॥ सबीच्छराइन दोमासिन्ये परिहारुपार्व पद्मिए अवगारे (जहा हेड़ा)  
जाव अहीपमारिते तेज परं सदसरमा तिण्ठि मासा ॥ १३७७ ॥ सदसरम्-  
देमासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव तेज परं चतारि मासा ॥ १३८ ॥  
चाटम्मासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव तेज परं चतीच्छराइन चतारि मासा  
॥ १३८१ ॥ सबीच्छराइनचाउम्मासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव तेज परं  
सदसरमा फैष मासा ॥ १३८२ ॥ सदसरम्पर्वचमासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा)  
जाव तेज परं छम्मासा ॥ १३८३ ॥ छम्मासिन्ये परिहारुपार्व पद्मिए अवगारे  
भंतरा मासिन्ये परिहारुपार्व पद्मिसेविता आस्मेष्वा अहागरा परिकला आरेका  
आइपञ्चाशसाये समझु चहेउं सम्भरने अहीपमारिते तेज परं दिल्लो यन्मे  
॥ १३८४ ॥ फैषमासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव दिल्लो मासो ॥ १३८५ ॥  
चाउम्मासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव दिल्लो मासो ॥ १३८६ ॥  
देमासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव दिल्लो मासो ॥ १३८७ ॥ दोमासिन्ये  
परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जाव दिल्लो मासो ॥ १३८८ ॥ मासिन्ये परिहारुपार्व  
(जहा हेड़ा) जाव दिल्लो मासो ॥ १३८९ ॥ दिल्लोमासिन्ये परिहारुपार्व पद्मिए  
अवगारे भंतरा मासिन्ये परिहारुपार्व पद्मिसेविता आस्मेष्वा अहागरा परिकला  
आरेका आइपञ्चाशसाये समझु चहेउं सम्भरने अहीपमारिते तेज परं दो मासा  
॥ १३९ ॥ दोमासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जहर अहागरा मासा ॥ १३९१ ॥ तेज  
सिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जहर अहुड़ा मासा ॥ १३९२ ॥ अहुड़मासिन्ये  
परिहारुपार्व (जहा हेड़ा) जहर चतारि मासा ॥ १३९३ ॥ चाटम्मासिन्ये परिहारु  
पार्व (जहा हेड़ा) जहर अहुपर्वचमा मासा ॥ १३९५ ॥ अहुपमप्रसिन्ये परि-  
हारुपार्व (जहा हेड़ा) जहर फैष मासा ॥ १३९६ ॥ फैषमासिन्ये परिहारुपार्व (जहा  
हेड़ा) जहर अदाहुड़ा मासा ॥ १३९७ ॥ अदाहुड़मासिन्ये परिहारुपार्व (जहा हेड़ा)  
जहर अम्मागा ॥ १३९८ ॥ दोमासिन्ये परिहारुपार्व पद्मिए अवगारे भंतरा फैष  
परिहारुपार्व पद्मिसेविता आस्मेष्वा अहागरा परिकला आरेका आइपञ्चाशसाये  
एगढु चहेउं सम्भरने अहीपमारिते तेज परं अहुपञ्चा मासा ॥ १३९९ ॥ अ-  
इम्मासिन्ये अगरा दोमासिन्ये अहागरा बीसिया आरेका (जहा हेड़ा) तेज  
परं फैषचाहुड़ा तिण्ठि कासा ॥ १४ ॥ मांयरायतमासिन्ये लंगा अल्लो  
भद्रापण परिकला आरेका (जहा हेड़ा) तेज परं मांयाचाहुड़ा तिण्ठि कासा

॥ १४०१ ॥ सद्वीसङ्करयत्तेमासिय अतरा दोमासिय अहावरा वीसङ्कराइया  
 आरोवणा (जहा हेढा), तेण पर सदसराया चत्तारि मासा ॥ १४०२ ॥ सदसराय-  
 चाउम्मासिय अतरा मासिय अहावरा पक्षिया आरोवणा (जहा हेढा), तेण  
 परं पचूण पच मासा ॥ १४०३ ॥ पचूणपचमासिय अतरा दोमासिय अहा-  
 वरा वीसङ्कराइया आरोवणा (जहा हेढा), तेण परं अद्वल्लद्वा मासा ॥ १४०४ ॥  
 अद्वल्लमासिय अतरा मासियं अहावरा पक्षिया आरोवणा (जहा हेढा), तेण  
 परं छम्मासा ॥ १४०५ ॥ णिसीहुञ्ज्ञयणे वीसङ्करो उद्देसो समत्तो ॥ २० ॥  
 णिसीहसुन्तं समत्तं ॥





णमोऽत्यु णं समणस्स भगवथो णायपुत्रमहावीरस्स

## सुत्तागमे

तत्थ णं

दसासुयक्खंधो

पढमा दसा

सुय मे आउस् । तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं ची[वी]स असमाहिंठाद्वाणा पण्णता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं वीस असमाहिद्वाणा पण्णता ? इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं वीस असमाहिद्वाणा पण्णता । तजहा-दवदवचारी यावि भवइ ॥ १ ॥ अ(प)पमजियचारी यावि भवइ ॥ २ ॥ दुपमजियचारी यावि भवइ ॥ ३ ॥ अइरितसेजासणिए ॥ ४ ॥ राइणि-यपरिमासी ॥ ५ ॥ थेरोवधाइए ॥ ६ ॥ भूओवधाइए ॥ ७ ॥ सजलणे ॥ ८ ॥ कोहणे ॥ ९ ॥ पिट्ठिमसिए ॥ १० ॥ अभिक्खणं अभिक्खणं ओहा(रि)रइता भवड ॥ ११ ॥ णवाण अहिगरणाण अणुप्पणाण उप्पाइता भवइ ॥ १२ ॥ पोराणाण अहिगरणाण सामिय विउसवियाण पुणो(उ)दी(रि)रेता भवड ॥ १३ ॥ अकालसज्जायकारए यावि भवइ ॥ १४ ॥ ससरक्खपाणिपाए ॥ १५ ॥ सहकरे (मेयकरे) ॥ १६ ॥ झंझकरे ॥ १७ ॥ कलहकरे ॥ १८ ॥ सूरप्पमाणभोइ ॥ १९ ॥ एसणाऽसमिए यावि भवइ ॥ २० ॥ एए खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं वीस असमाहिद्वाणा पण्णता ॥ २१ ॥ ति-वेमि ॥ पढमा दसा समन्ता ॥ १ ॥

विह्या दसा

सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं एगवीस सबला पण्णता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं एगवीस सबला पण्णता ? डमे खलु ते थेरेहें भगवतेहिं एगवीस सबला पण्णता । तजहा-हृत्यकम्म करेमाणे सबले ॥ २२ ॥ मेहुण पडिसेवमाणे सबले ॥ २३ ॥ राइभोयण भुजमाणे सबले ॥ २४ ॥ आहाकम्म भुजमाणे सबले ॥ २५ ॥ रायपिंड भुजमाणे सबले ॥ २६ ॥ (टदेसिय) कीय वा पामिज्ज वा अच्छिज्ज वा अणिसिट वा आहदु दिजमाण वा भुजमाणे सबले ॥ २७ ॥ अभिक्खणं अभिक्खणं पडियाइक्खेताण भुजमाणे सबले ॥ २८ ॥

१ अणे आयरिसे पारमे पच णमोक्षारोऽहिगो लव्भड ।

अंतो छर्ह मासार्थ पञ्चामो गर्व उक्तमामे सबडे ॥ ३९ ॥ अंतो मासस्त त्वं  
दग्धिये करेमामे सबडे ॥ ४० ॥ अंतो मासस्त तमो मा[हिं]शुद्धाने करेसिर)मामे  
सबडे ॥ ४१ ॥ सा[ग]गारिविष्ट मुङ्गमामे सबडे ॥ ४२ ॥ माठहिंयाए पाण्ड-  
इवामं करेमामे सबडे ॥ ४३ ॥ आठहिंयाए सुसालार्थ बयमामे सबडे ॥ ४४ ॥  
आठहिंयाए जरिणादार्थ गिर्भमामे सबडे ॥ ४५ ॥ आठहिंयाए अचउद्धिनार्थ  
पुढवीए ठार्ह वा सेझं वा निर्दीक्षियं वा खेत)यमामे सबडे ॥ ४६ ॥ एवं शहिं-  
याए पुढवीए एवं सुसरक्काए पुढवीए ॥ ४७ ॥ एवं आठहिंयाए चित्तलोहार  
चिलाए चित्तमताए चेष्टण बोझावासेहि वा शास्त्र वीष्टप्रद्विए सन्दिः सावै सर्वाए  
पहरिए संतरसे सउदगे सउतिगे पञ्चमदगम(किम)हीए महावासंतामए दटप्पार गर्व  
वा चिझं वा निर्दीक्षियं वा खेत)यमामे सबडे ॥ ४८ ॥ आठहिंयाए गूँग्मोदेवते वा  
फैदभोवर्थ वा चंपगोकर्व वा तयामोपर्व वा प्लावभोकर्व वा पामोवर्व वा पुर्व-  
भोदर्व वा पक्षमोवर्व वा धीयमोपर्व वा भुज्वमामे लरडे ॥ ४९ ॥  
अंतो संवर्धनस्त इह इग्गेने करेमामे सबडे ॥ ५० ॥ अंतो संवर्धनस्त इह  
माद्धामार्थ करेमामे सबडे ॥ ५१ ॥ आठहिंयाए शीमोदयनियद्वयपरिम(पारिम)-  
हत्येय वा मोर्ग वा हृ[किष्ट]पीए वा गाववेय वा भरुवं वा घर्वं वा ताम्वं वा  
दाम्वं वा पद्धिमाहिता भुज्वमामे सबडे ॥ ५२ ॥ एप सलु ते खेष्टै भवर्तिर्हि  
एण्वीसं उम्बा पञ्चता ॥ ५३ ॥ तिन्देमि ॥ चिह्न्या दसा समचा ॥ ५४ ॥

### ताह्या दसा

मुयं मे आठसे । तेवं मासवा एतमन्यामे इह भठ खेष्टै  
मगर्तेहि तेहि तीसे आगायथामो पञ्चतामो क्ष्वरा रातु तामो खेष्टै भ-  
वैतिहि चंसीयं अमायगामो पञ्चतामो । इमामो रातु तामो खेष्टै भवैतिहि  
तेतीसे आगायथामो पञ्चतामो । तीमहा-तेहि रा[व]शिवस्तु पुरुभो गंगा भर  
आसावना संहस्त ॥ ५५-५६ ॥ तेहि राशिवस्तु सुरक्कां क्षामा भाइ आगायथा  
उहस्त ॥ ५७ ॥ तेहि राशिवस्तु आरुवं यंता भरइ अक्षामया तेहस्त ॥ ५८ ॥  
तेहि राशिवस्तु पुरुभो चिद्विता भाइ आगायथा तेहस्त ॥ ५९ ॥ तेहि राशिवस्तु  
उपक्कां चिद्विता भरइ आसायना तेहस्त ॥ ६० ॥ तेहि राशिवस्तु पुरुभो चिद्विता  
भाइ आसायना तेहस्त ॥ ६१ ॥ तेहि राशिवस्तु गराक्कां चिद्विता भाइ आगायथा तेहस्त  
दामा तेहस्त ॥ ६२ ॥ तेहि राशिवस्तु आगामे चिद्विता भाइ आगायथा तेहस्त  
॥ ६३ ॥ छह राशिवस्तु गर्दि वर्तिया चियापूमि [वा] चिह्नात गावं तर्ह तेहि

पुञ्चतराग आयमङ् पच्छा राइणिए भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५४ ॥ सेहे राइ-  
 णिएणं सद्विवहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निकव्वते समाणे तत्य सेहे पुञ्चत-  
 रागं आलोएइ पच्छा राइणिए भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ५५ ॥ केड राइणियस्स  
 पुञ्चसलवित्तए सिया, त सेहे पुञ्चतराग आलवइ पच्छा राइणिए भवइ आसायणा  
 सेहस्स ॥ ५६ ॥ सेहे राइणियस्स राखो वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो ! के  
 सु(त्ते)ता के जाग(रे)रा ? तत्य सेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिसुणेता भवइ  
 आसायणा सेहस्स ॥ ५७ ॥ नेहे असण वा पाण वा खाइमं वा साइमं वा पडि-  
 गाहिता तं पु[व्व]व्वामेव सेहतरागस्स आलोएइ पच्छा राइणियस्स भवइ आसा-  
 यणा सेहस्स ॥ ५८ ॥ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहिता  
 त पुञ्चामेव सेहतरागस्स उवदसेइ पच्छा राइणियस्स भवइ आसायणा सेहस्स  
 ॥ ५९ ॥ सेहे असण वा पडिगाहिता त पुञ्चामेव सेहतराग उवणिमतेइ पच्छा  
 राइणि[ए]य भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६० ॥ सेहे राइणिएण सद्विवहिता असण  
 वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहिता त राइणिय अणापुञ्चिता जस्त  
 जस्त इच्छइ तस्स तस्स खद्ध [खध] २ त दल्यइ आसायणा सेहस्स ॥ ६१ ॥  
 सेहे असण वा ४ पडिगाहिता राइणिएण सद्विवहिता भुजमाणे तत्य सेहे खद्ध २  
 डागं ढाग ऊसठ ऊसठ रसिय रसिय मणुञ्ज मणुञ्ज मणाम मणाम निञ्ज निञ्ज  
 छुक्ख छुक्ख आहारिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६२ ॥ सेहे राइणियस्स  
 वाहर(आल्व)माणस्स अपडिसुणिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६३ ॥ सेहे राइ-  
 णियस्स वाहरमाणस्स तत्य गए चेव पडिसुणिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६४ ॥  
 सेहे राइणियस्स किंति-वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६५ ॥ सेहे राइणिय तुमति-  
 वत्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ६६ ॥ सेहे राइणिय खद्ध खद्ध वत्ता भवइ  
 आसायणा सेहस्स ॥ ६७ ॥ सेहे राइणिय तज्जाएण [२] पडिहणिता भवइ आसा-  
 यणा सेहस्स ॥ ६८ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स इति एव वत्ता भवइ  
 आसायणा सेहस्स ॥ ६९ ॥ सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स णो सुमरसीति वत्ता  
 भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७० ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स णो सुमणसे  
 भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७१ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स परिस मेता  
 भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७२ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स कह अच्छिं-  
 दिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७३ ॥ सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स तीसे  
 परिसाए अणुष्टियाए अभिज्ञाए अबुञ्चित्ताए अवोगडाए दो(दु)च्छपि तच्छपि तमेव  
 कह कहिता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ ७४ ॥ सेहे राइणियस्स सिज्जासथारग

पाएवं संघटिता हस्तेन अजगुतामिता (अजगु(ज्यवे)मिता) गत्तद मत्र आर्थ-  
यना सेरहस ॥ ७५ ॥ सेहे रात्रिवस्तु मित्रासीधारए चिह्निता वा निर्वीक्षा ए  
तुवहिता वा भवइ आसायना सेरहस ॥ ७६ ॥ सेहे रात्रिविवस्तु उचासुर्विक्षा  
ममासयनि वा चिह्निता वा निर्वीक्षा वा तुवहिता वा भवइ आसायना सेरहस  
ग ॥ ७७ ॥ एवामो चमु तामो वेरेहे भवतिहे तेतीर्द आमावपाव्ये फलामे  
ग ॥ ७८ ॥ ति—बेमि ॥ तात्या वसा समता ॥ ६३

### थउत्था वसा

द्युम्ये मे आठसे । तेर्व भगवया एवमक्षयाय इह यहु वेरेहे भवतिहे च्छिता  
गमिर्वेपया फलता अवरा यहु भद्रिता गमिर्वेपया फलता । इमा लहु भद्रिता  
गमिर्वेपया फलता । ठंबहा—आमारसुर्विक्षा १ सुष्युर्वेपया २ सरीरहस्ता ३  
चयनसुर्वेपया ४ आमावासुर्वेपया ५ मश्युर्वेपया ६ फलोगसुर्वेपया ७ दंगाहप्रीता(वाय)  
वदुमा ८ । से कि ते आमारसुर्वेपया ९ आमारसुर्वेपया चतुर्भिता फलता । ठंबहा—  
संकमसुर्वेपया जीमसुर्वेपया यावि भवइ, असुर्वेपयीमभव्या अविदवक्ती तुवहीडे यावि भव ।  
से ते आमारसुर्वेपया ॥ ८ ॥ से कि ते सुष्युर्वेपया १ सुष्युर्वेपया चतुर्भिता फलता ।  
ठंबहा—चहुसु(ति)ए यावि भवइ, परिनिवद्वए यावि भवइ, चिनित्तद्वए यावि भवइ,  
घोरसिद्धदिक्षबए यावि भवइ । से ते सुष्युर्वेपया ॥ ९ ॥ से कि ते सरीरहस्ता  
सरीरहस्ता चतुर्भिता फलता । ठंबहा—आरम्भपरिनाशसुर्वेपये यावि भवइ, अरोत्तम्  
यतीरे विरसेक्षये चहुपरिपुण्डिए यावि भवइ । से ते सरीरहस्ता ॥ १० ॥ ते  
कि ते वयवसुर्वेपया १ वयवसुर्वेपया चतुर्भिता फलता । ठंबहा—आरेक्षन्मे यावि  
भवइ, महुरवयगे यावि भवइ, अविरिसुक्षम्यने यावि भवइ अर्दिसिद्धद्वन्मे यावि  
भवइ । से ते वयवसुर्वेपया ॥ ११ ॥ से कि ते वायवासुर्वेपया १ वायवासुर्वेपया चतुर्भिता  
फलता । ठंबहा—विभव उहिस्त, विभव वाप्त वरिनिष्वाविन्व वाए, वलसिता  
वए यावि भव । से ते वायवासुर्वेपया ॥ १२ ॥ से कि ते मश्युर्वेपया १ मश्युर्वेपया  
चतुर्भिता फलता । ठंबहा—उमगाहमश्युर्वेपया ईहमाहसुर्वेपया अवास्तवसुर्वेपया  
वारजामश्युर्वेपया । से कि ते उमगाहमश्युर्वेपया १ उमगाहमश्युर्वेपया छमिता फलता ।  
ठंबहा—किण्य उगिल्लोर, चहु उगिल्लोर, चहुमिं उगिल्लोर, चुर्व उगिल्लोर, अविरिस्त  
उगिल्लोर, असुर्विं उगिल्लोर । से ते उमगाहमश्युर्वेपया । एवं ईहामद्वन्मि । एवं वाप्त  
मावि । से कि ते वारजामाहसुर्वेपया १ वारजामाहसुर्वेपया छमिता फलता । ठंबहा—  
चहु चरेष, चहुसिं चरेष, चहुमिं चरेष, चुर्व चरेष, अविरिस्त चरेष, असुर्विं  
चरेष । से ते वारजामाहसुर्वेपया ॥ १३ ॥ से कि ते फलोगमश्युर्वेपया १ फलोगमश्युर्वेपया

का संजोग है। ऐसे दृष्टि में धूत लिल में लेल, पूर्व में धारु  
पुण्य में सुगम्भ, घम्भ्रकाति में अमृत इसी माफिक् और  
सफोग है। (३) जीव सुख उभय का कला है और मोक्ष  
है। निश्चय नय से कर्म का कहा। कर्म है और व्यवहार  
से जीव है। (४) जीव द्रव्य गुण पर्याय, प्राण और गुण  
स्थानक सहित है। (५) मध्य जीव को मोक्ष है। (६) इन  
दर्शन और आरित्र मोक्ष का उपाय है ॥ इसि सम्पूर्णम् ॥

इस योग्ये को छठस्य करके विचार करो कि ये १०  
सङ्क्षठ पोस्त व्यवहार मध्यकर्त्त्व के हैं इनमें से मेरे में कि  
तने हैं और आगे के 'क्षिये बढ़ने की कोशिश करो और  
पुरुषार्थ द्वारा उनको प्राप्त करो ॥ इति शुभं ॥

॥ सेवं भौति सेवं भौते तमेव सम्भम् ॥



चउव्विहा पण्णत्ता । तजहा-आय विदाय वाय पउजित्ता भवइ, परिस विदाय वायं पउजित्ता भवइ, खेत विदाय वाय पउजित्ता भवइ, बत्यु विदाय वाय पउजित्ता भवइ । से त पथोगमइसपया ॥ ८५ ॥ से किं त सगहपरिज्ञा नाम सपया? सगह-परिज्ञा नाम सपया चउव्विहा पण्णत्ता । तजहा-वासावासेसु खेत पडिलेहित्ता भवइ वहुजणपाउगयाए, वहुजणपाउगयाए पाडिहारियपीढफलगसेजासथारय उगिणिहित्ता भवइ, कालेण कालं समाणइत्ता भवइ, अहागुरु सपूएत्ता भवइ । से त सगहपरिज्ञा नाम सपया ॥ ८६ ॥ आयरिओ अतेवासी इमाए चउव्विहा ए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता भवइ निरणत्त गच्छइ । तजहा-आयारविणएण, सुयविणएण, विकखेवणाविणएण, दोसनिग्धायणविणएण ॥ ८७ ॥ से किं त आयारविणए? आयारविणए चउव्विहे पण्णत्ते । तजहा-सजमसा(स)मायारी यावि भवइ, तवसामायारी यावि भवइ, गणसामायारी यावि भवइ, एगलविहारसामायारी यावि भवइ । से त आयारविणए ॥ ८८ ॥ से किं तं सुयविणए? सुयविणए चउव्विहे पण्णत्ते । तजहा-सुत्त वाएइ, अत्यं वाएइ, हिय वाएइ, निस्सेस वाएइ । से त सुयविणए ॥ ८९ ॥ से किं तं विकखेवणाविणए? विकखेवणाविणए चउव्विहे पण्णत्ते । तजहा-अद्वृधम्म दिद्वपुञ्च-गत्ताए विणएइत्ता भवइ, दिद्वपुञ्चग साहम्मियत्ताए विणएइत्ता भवइ, चुय-धम्माओ धम्मे ठावइत्ता भवइ, तस्सेव धम्मस्स हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए अणुगामियत्ताए अब्मुद्देत्ता भवइ । से त विकखेवणाविणए ॥ ९० ॥ से किं त दोसनिग्धायणाविणए? दोसनिग्धायणाविणए चउव्विहे पण्णत्ते । तजहा—कुद्धस्स कोहविणएत्ता भवइ, दुद्धस्स दोस णिगिणिहित्ता भवइ, कखियस्स कख छिंदित्ता भवइ, आयासुप्पणिहिए यावि भवइ । से त दोसनिग्धायणाविणए ॥ ९१ ॥ तस्सेव गुणजाइयस्स अतेवासिस्स इमा चउव्विहा विणयपडिवत्ती भवइ । तजहा-उवगरणउप्पायणया, साहिल्या, वण्णसजलणया, भारपचोरुहणया ॥ ९२ ॥ से किं तं उवगरणउप्पायणया? उवगरणउप्पायणया चउव्विहा पण्णत्ता । तजहा-अणुप्पणाण उवगरणाण उप्पाइत्ता भवइ, पोराणाण उवगरणाण सारकिखत्ता सगोवित्ता भवइ, परित्त जाणित्ता पच्छुद्धरित्ता भवइ, अहाविहि संविभइत्ता भवइ । से तं उवगरणउप्पायणया ॥ ९३ ॥ से किं त साहिल्या? साहिल्या चउव्विहा पण्णत्ता । तजहा-अणुलोमवइसहिए यावि भवइ, अणुलोमकायकिरियत्ता, पडिस्त्रवकायसफासणया, सव्वत्थेसु अपडिलोमया । से त साहिल्या ॥ ९४ ॥ से किं त वण्णसजलणया? वण्णसजलणया चउव्विहा पण्णत्ता । तंजहा—अहातच्चाण वण्णवाई भवइ, अवण्णवाई पडिहणित्ता भवइ, वण्णवाई अणुवूहित्ता भवइ, आयवुहुसेवी यावि भवइ । से तं वण्णसजलणया

॥ १५ ॥ ऐ कि त मारफबोल्हया । मारफबोल्हया बढ़निहा पणता । टंबा-  
असुमालियपरिवर्षगद्विता मवा, ऐहा आवारयोवर-संगाद्विता मवा, उम्भमिसमस  
गिक्कमालस्तु बहायामी भेमवाजे अभुद्विता मवा, उम्भमिसयार्व अरियर्वसि उप-  
जांति उत्तम अजिरिसुओवरिसए [वित्तो] अपक्षय[गद्विय]गाही मज्जाल्पमालमृषु सम्ब-  
वाहरमाजे उसस अहिगरम्भु समाल्पाए विरुद्धगमाए उवासमिर्व अद्वितीय  
मवा, उर्व मु साहमिसया अप्पसहु अप्पहीता अप्पल्लवा अप्पल्लाया अप्पल्लुद्विता  
संजमधुब्द संवरणल्लुब्द समालिवहुता अप्पमता उव्वमेवं वासा अप्पार्व माकेहार्व  
एवं च न विहरेजा । ऐ तं मारफबोल्हया ॥ १६ ॥ एसा लहु ऐरेही मरविही  
ल्लुविहा गविसुभ्या पणता ॥ १७ ॥ ति-वेमि ॥ अठल्या वासा समता ॥ १ ॥

### पंचमा वसा

उव्वमे बाठवे । उव्वमे भावदा एकमक्षाय श्व लहु ऐरेही मारविही एस  
वित्तसमालियाना पणता अवरे लहु ते ऐरेही मगवरेही वस वित्तसमालियाना  
पणता ॥ इमे लहु ते ऐरेही मगवरेही वस वित्तसमालियाना पणता । टंबा-  
उव्वमे अधेव्व उव्वमे समएने वानिक्यामे वयरे होता एत्तम अमरण्यामो माविक्यामे ।  
उसस च वानिक्यामस्तु गवरस्तु वहिया उत्तापुरविल्लमे विरुद्धिभाए उप्पस्तुसए नमे  
उत्ताले होता वज्ञामो । वित्तसत् राया उसस बार्णी नामे देवी एवं उर्व  
समोसुरव्व भाविक्यामी बाव पुरावीसिकाक्षय तामी समोसुदे परिदा विम्या  
बमो अद्वितीयो परिदा पदिगजा ॥ १८ ॥ वस्यो । [इ]वि उम्भे भावे महार्वे  
उम्भया विम्याना विस्मयीव्वे च बासंतिता एवं ववासी-“श्व लहु लह्ये । विव-  
वाय वा निर्मातृव्व वा इरियात्तमिवार्व भावाद्विमिवार्व एसवासमिवार्व भावार्व-  
मडमत्तनिक्केवासमिवार्व उत्तापासुवाक्केवालियायारिवासमिवार्व मन-  
समिवार्व वा] वसमिवार्व अवसमिवार्व मन्त्रुतीय बाद्युतीव्व अद्वितीय गुरिही-  
वार्व गुरुत्वमयारीव्व आमद्वीव्व आवहिवार्व आववोइव्व आवपरल्लमार्व उप्प-  
वेजा । टंबाहा-कम्मरिता वा से असमुप्पल्लुमा उप्पवेजा उर्व उर्व-  
वानिताए ॥ १९ ॥ उमिक्केव्वे वा से असमुप्पल्लुमा उप्पवेजा उर्ववेजा  
दुमिला पावित्र ॥ १ ॥ ॥ उव्विवात्तसरवेन सवियाना(वे)व वा दे असमुप्पल्लुमा  
समुप्पवेजा (पुञ्चभवे) अप्पवो पोहामिर्व वर्द्ध उमरिताए ॥ १ ॥ ॥ वैवर्द्धवेजा वा दे  
असमुप्पल्लुमे समुप्पवेजा विव वेविति विव वेवहुई विव वेवल्लमार्व वाहिरर  
॥ १ ॥ २ ॥ बोहिणाव्वे वा से असमुप्पल्लुमे समुप्पवेजा वोहिणा उर्व वाहिरर

॥ १०३ ॥ ओहिदसणे वा से असमुप्पणपुञ्चे समुप्पज्जेजा ओहिणा लोय पासि-  
त्तए ॥ १०४ ॥ मणपज्जवणाणे वा से असमुप्पणपुञ्चे समुप्पज्जेजा अतो मणुस्स-  
किखतेसु अङ्गाइजेसु दीवसमुद्देसु सणीण पचिंदियाण पञ्जतगाण मणोगाए भावे  
जाणित्तए ॥ १०५ ॥ केवलणाणे वा से असमुप्पणपुञ्चे समुप्पज्जेजा केव(ल)लक्षप्प  
लो(गं)यालोय जाणित्तए ॥ १०६ ॥ केवलदसणे वा से असमुप्पणपुञ्चे समुप्पज्जेजा  
केवलकप्प लोयालोय पासित्तए ॥ १०७ ॥ केव(लि)लमर(ण)णे वा से असमुप्पणपुञ्चे  
समुप्पज्जेमरि)जा सब्बटुक्खपही[हा]णाए ॥ १०८ ॥ ओय चित्त समादाय, ज्ञाण स-  
मुप्पज्जइ। धम्मे ठिओ अविमणो, निव्वाणमभिगच्छइ ॥ १०९ ॥ ण इम चित्त समादाय,  
भुजो लोयसि जायइ। अप्पणो उत्तम ठाण, सणिणाणेण जाणड ॥ ११० ॥ अहातच्च  
तु सुमिण, खिप्प पासेइ सबुडे। सब्ब वा ओह तरइ, दुक्खदोय विमुच्छइ ॥ १११ ॥  
पंताइं भयमाणस्स, विवित सयणासण। अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दसेति ताइणो  
॥ ११२ ॥ सब्बकामविरतस्स, खमणो भयमेरव। तबो से ओही भवइ, सजयस्स  
तवस्सिणो ॥ ११३ ॥ तवसा अवहद्दुलेस्सस्स, दसण परिसुज्ज्ञइ। उङ्गु अहे तिरिय  
च, सब्ब समणुप्सस्सइ ॥ ११४ ॥ सुसमाहियलेस्सस्स, अवितक्षस्स भिक्खुणो।  
सब्बओ विप्पमुक्खस्स, आया जाणइ पञ्जवे ॥ ११५ ॥ जया से णाणावरण, सब्ब  
होइ खय गय। तबो लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ॥ ११६ ॥ जया से  
दरिसणावरण, सब्ब होइ खय गय। तबो लोगमलोग च, जिणो पासइ केवली  
॥ ११७ ॥ पडिमाए विमुद्धाए, मोहणिज खय ग[य]ए। असेस लोगमलोग च,  
पासेइ सुसमाहिए ॥ ११८ ॥ जहा मत्थय-सूर्डैए, हताए हम्मइ तले। एवं कम्माणि  
हम्मति, मोहणिजे खयं गए ॥ ११९ ॥ सेणावइमि निहए, जहा सेणा पणस्सइ।  
एव कम्माणि णस्सति, मोहणिजे खय गए ॥ १२० ॥ वूमहीणो जहा अगरी,  
खीयइ से निरिधणे। एव कम्माणि खीयति, मोहणिजे खय गए ॥ १२१ ॥ सुक्खमूले  
जहा स्क्खे, सिंचमाणे ण रोहइ। एव कम्मा ण रोहति, मोहणिजे खय गए  
॥ १२२ ॥ जहा दह्वाण वीयाण, न जायति पुणकुरा। कम्मवीएसु दह्वेसु, न  
जायति भवकुरा ॥ १२३ ॥ चिच्चा ओरालिय वोंदिं, नामगो(त्त)य च केवली।  
आठय वेयणिज च, छित्ता भवड नीरए ॥ १२४ ॥ एव अभिसमागम्म, चित्तमादाय  
आउसो। सेणिमुद्दिमुवागम्म, आया सुद्दि(सोहि)मुवागड ॥ १२५ ॥ त्ति-वेमि ॥  
पंचमा दसा समत्ता ॥ ५ ॥

### छट्टा दसा

सुय मे आउस। तेण भगवया महावीरेण एवमक्खाय, इह सलु थेरेहिं भगवतेहिं

ए(इ) एवं उदासयपदिमाओ पन्नतामो कला रहने ताम्हे ऐरेहि भयबंतेहि दहरण  
उदासयपदिमाओ पन्नताम्हे । इमामो यह ताम्हे ऐरेहि भगविहै एवं उदास  
मपदिमाओ पन्नताम्हो । संजहो—अदिविमवारै यावि भवह, नाहिमवारै, नाहिमवारै,  
नाहिमविही थो सम्मावाहै, थो यितिमावाहै, य संवि परवेमवाहै, अतिथ श्वलेष  
अतिथ परम्प्रेष, अतिथ मात्ता गरिव पिया अतिथ अदिवता गतिय बदलाहै अति  
वदवता अतिथ वामुदेवा अतिथ विरवा अतिथ वेदव्या अतिथ मुकुटवुडवार्व अति  
तिविलुचो वा दुष्पिण्या कम्मा दुष्पिण्या छमा मवंति थो दुनिण्या कम्मा दुनिण्य  
कम्म मवंति भफ्के कलापपात्रए, थो पवाम्हंति वीका अतिथ निरए, अतिथ विही है  
एकवाहै एवं फ्लो एवं दित्तु पर्वत्तु दराम्हाजिविहै यावि भवह ॥ १२५ ॥ से भवह मध्येहि  
मध्यारमे मध्यापरिमाहै अहम्मात्तुए मध्यम्मेवी अहम्मिहै मध्यम्माहै अहम्म  
राती अहम्मपत्त्वेहै अहम्मवीवी अहम्मपत्त्वेहै अहम्मवीक्ष्मुदवायारे अहम्मेवं तेव  
विति व्यपेमाने विरह ॥ १२६ ॥ हय तिथ विहै अदिविवत्ती ची दे  
द्वे असमिक्षिवदव्याही दाहस्तिप्रए उहाव्यव्यव्यवमाहनियविहै दाहसंप्रवेष्युहै  
दुस्तीले दुप्परिच्छए दुप्परिए दुण्डेए दुम्हए दुप्पदिमावहै विस्तीके विभार विष्युहै  
विम्मेरे विष्यवाम्हावपोसाहोम्हावे अवहाहू ॥ १२७ ॥ सम्माम्हे पावाम्हाम्हाम्हे  
अप्पदिविरवा बावजीवाए बाव सम्माम्हो परिग्याहैस्त्रो एव बाव सम्माम्हे व्येषाम्हे  
सम्माम्हो माणस्ये सम्माम्हो माणाम्हो सम्माम्हे थोमाम्हो दोसाम्हे कम्माम्हे  
अप्पदिविरवा वावजीवाए बावजीवाए ॥ १२८ ॥ सम्माम्हो कम्मावद्वक्ष्मुदवाम्हाविहै  
सहपरिचरस्त्रक्षम्मावप्पदिविरवा अप्पदिविरवा बावजीवाए, सम्माम्हे प्रहृ  
वरहायग्नुग्यामितिविहित्तीवासंहनाविवाच्यवाच्यवाहनमेवपदिविरविहै  
अप्पदिविरवा बावजीवाए ॥ १२९ ॥ असमिक्षियवत्ताहै सम्माम्हो बावजीवाम्हे  
द्विसम्य गवेष्यवाम्हासासीकम्मरपोहस्ताम्हो अप्पदिविरवा बावजीवाए, सम्माम्हे  
क्षमित्यमायुदमासहवग्नवक्ष्मुदवाराम्हो अप्पदिविरवा बावजीवाए, सम्माम्हे द्विसम्य  
मुहम्मवजभहम्मभिमो रियस्त्वाविम्मम्मम्मम्मम्हो अप्पदिविरवा बावजीवाए, सम्माम्हो  
क्षम्मुदवाम्हाम्हाम्हो अप्पदिविरवा बावजीवाए, सम्माम्हो बारेम्ममारात्ताम्हे अप्प  
दिविरवा बावजीवाए, सम्माम्हो पद्मम्माम्हाम्हो अप्पदिविरवा बावजीवाए,  
सम्माम्हे क्षम्मवजभवाम्हाम्हो अप्पदिविरवा बावजीवाए, सम्माम्हे दुष्पिण्यविहै

१. पासह एकारसम्म सम्मावं । २. विसेसो दुष्पिण्यविहैवद्वम्हक्षम्हित्यम्हव-  
फहम्मदिविरवाम्हाम्हाम्हाम्हो वाम्हाम्हो ।

तज्जन्तालणाओ वहवधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावजीवाए, जेयावण्णे तहप्प-  
गारा सावजा अबोहिया कम्मा कज्जति परपाणपरियावणक[डा]रा कज्जंति तवोवि य  
अप्पडिविरया जावजीवाए ॥ १३१ ॥ से जहानामए—केइ पुरिसे कलममसूरतिल-  
सुमगमासनिप्फावकुलत्थआलिसदगजवजवा एवमाइएहिं अयत्ते कूरे मिच्छादड पउ-  
जड एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवट्टालावयकवेयकविंजलमियमहिसवराह-  
गाहगोहकुम्मसरिसवाइएहिं अयत्ते कूरे मिच्छादड पउजड ॥ १३२ ॥ जावि य से  
वाहिरिया परिसा भवइ, तजहा-दासेइ वा पेसेइ वा भितएइ वा भाइलेइ वा कम्म-  
करेइ वा भोगपुरिसेइ वा तेसिपि य ण अण्णयरगसि अहालहुयसि अवराहंसि सय-  
मेव गरुय दड वत्तेइ, तजहा-इम दडेह, इमं मुडेह, इमं तजेह, इम तालेह, इम  
अदुयवधण करेह, इम नियलब्रवधण करेह, इम हडिवधण करेह, इम चारगवधण  
करेह, इम नियलजुयलस्कोडियमोडिय करेह, इम हृत्थछिजय करेह, इम पायछि-  
जय करेह, इम कञ्चिजयं करेह, इमं नक्कछिजय करेह, इम उट्टछिजय करेह, इम  
सीसछिजय करेह, इम मुहछिजय करेह, इम वेयछिजय करेह, इम हियउप्पाडिय  
करेह, एव नयण-वसण-दंसण वयण-जिब(भु)भ-उप्पाडिय करेह, इम उलविय करेह,  
इम धासिय०, इम घोलिय०, इम सूला[का(पो)यत]इय०, इम सूलाभिन्न०, इम  
खारवत्तिय करेह, इम दब्मवत्तिय करेह, इम सीहपुच्छय करेह, इम वसभपुच्छय  
करेह, इम दवगिगदङ्गय करेह, इम काक(णि)णीमसखाविय करेह, इम भत्तपाण-  
निस्फ्य करेह, जावजीववधण करेह, इम अन्नयरेण असुभकुम्मारेण मारेह ॥ १३३ ॥  
जावि य से अविभतरिया परिसा भवइ, तजहा-मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा  
भगिणीइ वा भजाइ वा धूयाइ वा सुष्णाइ वा तेसिपि य ण अण्णयरंसि अहाल-  
हुयसि अवराहंसि सयमेव गरुय दड वत्तेइ, तजहा-सीओदगवियडसि काय बोलिता  
भवइ, उसिणोदगवियडेण काय सिन्चिता भवह, अगणिकाएण काय उझूहिता भवइ,  
जोत्तेण वा वेत्तेण वा नेत्तेण वा कसेण वा छिवाढीए वा लयाए वा पासाइ उद्वालिता  
भवइ, दडेण वा अट्टीण वा मुट्टीण वा लेल्लाए वा कवालेण वा काय आउटिता  
भवइ, तहप्पगारे पुरिसजाए सवसमाणे दुम्मणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए  
विष्पवसमाणे सुमणा भवति ॥ १३४ ॥ तहप्पगारे पुरिसजाए दडमासी दडगरुए  
दडपुरेक्खडे अहिए असिंस लोयसि अहिए परंसि लोयसि । ते दुक्खेति सोयति एव  
झरति तिप्पति पिंडेति परितप्पति, ते दुक्खणसोयणद्वरणतिप्पणपिण्ठणपरितप्पण-  
वहवधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवति ॥ १३५ ॥ एवामेव ते इत्थिकामभोगेहिं  
मुच्छ्या गिद्धा गढिया अज्ज्वोववशा जाव वासाइ चउपच[मा]छद्समाणि वा

अप्परो वा भुजठरो वा अर्च दुर्जिता क्षममोगाह पसेवितावे राववपाह दुर्जिता  
चहुर्व पावर्द्ध क्षमार्व उत्तरे उमारक्षेण क्षमुपा दे जहानामाए—जक्षोदित वा लें  
गोडेर वा उद्यंसि पवित्रो समाजे उद्यगत्क्षमावहा आहे वर(वि)लैमधे पद्गुणे  
भवह एकामेव उद्यगारे पुरिसवाए वजवहुळे मुलवहुळे वेशवहुळे रेख  
मिमिदिसाइवहुळे आवामपात्तुळे अक्षयवहुळे अप्पतिमवहुळे उसमध्ये तपश्चात्यं  
च्छमासे काळे किंवा पर्णीयक्षमावहा आहे नरगवरणीमधे एक्षुणे भवह ॥ १३६ ॥ ते वै नरगवरणी वाही वरदरसा आहे उरप्पांडावर्णिता विवाह-  
वारतमसा वृष्ट्यवगाहैवस्त्रक्षमावोद्युपवाहा मेवसामंसरिरपूर्वपात्तदिवस्त्री-  
किंतालुसेवनतावा भद्र(विवाहिता)परमदुर्जितावा काठमध्याविवाहामा अवह  
वाहा दुर्जितावा असुमा भरणा असुमा नरपूष्ट वेशवा नो वेळ न नरए नरवा  
निवार्यति वा वयवार्यति वा धर्व वा र्वं वा धर्व वा धर्वर्मति वा वै तत्त्व  
उज्जर्व विचार फार्व उद्यगे अहुर्व वैर्व उक्त्व उम्म विक्षव विवे शुभ्वर्जितावै  
नरएढ नेरवा नरवविव व्याजुमवामापा विहारीति ॥ १३७ ॥ से व्याजुमवाप-  
क्षमे किंवा पक्ष्यमो जाए भूलक्षिते अमो गहए ज्ञाने निवं ज्ञाने दुर्व वै  
विमाने तज्जो पक्ष्य एकामेव उद्यगारे पुरिसवाए वज्ञमावा वै अवामे  
वै भव्य मारुमो मार दुक्षयाव्ये दुर्व दाहिणमामिनेर्वए क्षम्हविवये भाव्ये  
खार्व दुर्जमवीदिव यावि भवह । से ते भाविरिवावाई [यावि भवह] ॥ १३८ ॥  
से कि ते विरिवावाई [यावि भवह] ॥ तज्जह—आहिवावाई, आहिमस्ये आहिव-  
रिद्वी सम्मावाई, नियावाई, समि परव्येमावाई, अविव इस्त्रेमे अविव फरव्येमे,  
अविव मावा अविव पिया अविव अविवेता अविव अविवी अविव वरवेता  
अविव वामुदेवा अविव दुर्जुहाडावे क्षमावै पक्ष्यविविविवेते दुर्जिता क्षमा  
दुर्जिता क्षम मर्वति दुर्जिता क्षमा दुर्जिता क्षम मर्वति उक्ते व्याजुमवाप-  
पक्ष्यविवति जीवा अविव नेरवा जाव अविव देवा अविव विद्वी से एर्वाप्ये एर्व-  
प्ये एवंविद्वीवंदरवामदनिविद्वी यावि भवह । से भवह मविच्छे जाव उरपात्तिर  
नव्यए दुर्जमविवये भागमेस्त्वावै शुक्षमवीदिव यावि भवह । से ते विरिवावाई  
॥ १३९ ॥ तज्जवम्महावे यावि भवह, तस्म वै वहुर्व दीसवद्युजदेवमनवक्ष्याव-  
वेष्यावेष्यावावाई नो उम्मे व्युम्भिवुभवै मर्वति एवं उवामगस्त वहुमा वैमप्य-  
पवित्रिमा ॥ १४ ॥ भावावह व्योव्या उवामगपित्रिमा-उपपम्महे वावि  
भवह, तस्म वै वहुर्व ॥ उणवेमणवद्युजदेवपोमावेवावावावे उम्म व्युम्भिव-  
वेष्यावेष्यावावाई

पडिमा ॥ १४२-१ ॥ अहावरा तच्चा उचासगपडिमा-सब्बधम्मरुद्दे यावि  
भवड, तस्म ण वहूङ सीलवयगुणवेरमणपञ्चकत्वाणपोसहोववासाड सम्म पटुवियाड  
भवति, से ण मामाड्य देसावगासिय सम्म अणुपालिता भवड, से ण चउ(ह)दसि-  
अट्टुमिउद्दिष्टपुण्णमासिणीमु पडिपुण्ण पोमहोववास नो सम्म अणुपालिता भवड, तच्चा  
उचासगपडिमा ॥ १४२-२ ॥ अहावरा चउत[थी]था उचासगपडिमा-  
सब्बधम्मरुद्दे यावि भवड, तस्स ण वहूङ सीलवयगुणवेरमणपञ्चकत्वाणपोसहोववा-  
साड सम्म पटुवियाड भवति, से ण सामाड्य देसावगासिय सम्म अणुपालिता भवड,  
से ण चउदसिअट्टमिउद्दिष्टपुण्णमासिणीमु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालिता भवड,  
से ण एगराइय उचासगपडिम नो सम्म अणुपालिता भवड, चउत्था उचासग-  
पडिमा ॥ १४३ ॥ अहावरा पंचमा उचासगपडिमा-सब्बधम्मरुद्दे यावि  
भवड, तस्म ण वहूङ सीलवय जाव सम्म अणुपालिता भवह, से ण मामाड्य  
तहेव, से ण चउदसि तहेव, से ण एगराइय उचासगपडिम सम्म अणुपालिता  
भवइ, से ण असिणाणए वियडभोई मउलिकडे दिया वभयारी रत्तिपरिमाणकडे,  
से ण एयाह्वे[ण]ण विहारेण विहरमाणे जहज्ञेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा  
उक्कोसेण पच मा[स]से विहरइ, पंचमा उचासगपडिमा ॥ १४४ ॥ अहावरा  
छ[डी]ट्टा उचासगपडिमा-सब्बधम्मरुद्दे यावि भवइ जाव से ण एगराइय उचा-  
सगपडिम० अणुपालिता भवइ, से ण असिणाणए वियडभोई मउलिकडे दिया वा  
राओ वा वभयारी, सचित्ताहारे से अपरिणाए भवइ, से ण एयाह्वेण विहारेण विहर-  
माणे जहज्ञेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा [जाव] उक्कोसेण छमासे विहरेजा, छट्टा  
उचासगपडिमा ॥ १४५ ॥ अहावरा सत्तमा उचासगपडिमा-सब्बधम्म-  
रुद्दे यावि भवइ जाव राओवराय वा वभयारी, सचित्ताहारे से परिणाए भवइ, से  
ण एयाह्वेण विहारेण विहरमाणे जहज्ञेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा  
उक्कोसेण सत्त मासे विहरेजा, से त सत्तमा उचासगपडिमा ॥ १४६ ॥  
अहावरा अट्टुमा उचासगपडिमा-सब्बधम्मरुद्दे यावि भवइ जाव राओवराय  
वभयारी, सचित्ताहारे से परिणाए भवइ, आरम्भे से परिणाए भवइ, पेसारम्भे से  
अपरिणाए भवइ, से ण एयाह्वेण विहारेण विहरमाणे [जाव] जहज्ञेण एगाह वा  
दुयाह वा तियाह वा उक्कोसेण अट्टुमासे विहरेजा, से त अट्टुमा उचासगपडिमा  
॥ १४७ ॥ अहावरा नवमा उचासगपडिमा-सब्बधम्मरुद्दे यावि भवइ जाव  
राओवराय वभयारी, सचित्ताहारे से परिणाए भवइ, आरम्भे से परिणाए भवइ,  
पेसारम्भे से परिणाए भवइ, उद्दिभम्भते से अपरिणाए भवइ, से ण एयाह्वेण

पिदारन्व पिदमाले जहसेवं एगाई का उवाई का नियाई का उहोसेवं नर माले  
पिदरेजा से तं मयमा उयास्मगपदिमा ॥ १४८ ॥ अहाकरा उसमा उवाई-  
सगपदिमा-मध्यभमद्दृ यावि भगर जाव उहिदुमते से परिष्णाए भद्र, से वं  
उखुंद्र वा विहापारए वा तरम य आमदुस्म ममामदुस्म का क्ष्यंति उव भालाले  
मालितए, जहा-जावे का जाले भवाले का णो जाने है य एमाक्षेवं पिदरेवं  
विहामाली जहसेवं एगाई का उवाई का नियाई का उहोसेवं दय मासे विहरेजा है  
त उसमा उवास्मगपदिमा ॥ १४९ ॥ अहाकरा पर्काश]कारसमा उवाई-  
मध्यपदिमा-मध्यभमद्दृ यावि भगद जाव उहिदुमते से परिष्णाए भद्र, से वं  
उखुंद्र वा लुतालिरए वा गडियादारम गनकरए जारिसे लुमयाले लियोवार्व  
यम्मे पाकते । तंबहा-गम्म वाल्ल वरसेमाले पालेयाले पुग्ये लुगमायाए फेल्लले  
दूध तसे पाले उद्दु पाए री(रि)एजा उद्दु पाए रीएजा लिरिठे वा नर्व चु  
रीएजा सइ परहम्ब[जा] संबयामव पाहमजा नो उचुवे फ्लेजा बेल्ल से  
भायए पेजदंपले अहोठियो भद्र, एवं से क्ष्यद नावलिहि वरशए ॥ १५ ॥ तत्प  
से पुम्भागमणेवं पुम्भाडो भास्मभेद्वे पच्छाडो मिलिंगसूख क्ष्यद से चाउलेवे  
पहिम्[ग]गाहितए, जो से क्ष्यद गिलिंगसूखे पहिम्भाहितए । तत्प [वं] से पुम्भागम-  
षिवं पुम्भाडो मिलिंगसूखे पच्छाडो चाउलेदणे क्ष्यद से मिलिंगसूखे पहिम्भाहि-  
तए, जो से क्ष्यद चाउलेदणे पहिम्भाहितए । तत्प से पुम्भागमणेवं दोषि पक्ष-  
चताई जो से क्ष्यटि दोषि पहिम्भाहितए । वं से तत्प पुम्भागमणेवं पुम्भाडो से  
क्ष्यद पहिम्भाहितए । जे से तत्प पुम्भागमणेवं फ्लेवरते से नो क्ष्यद पहि-  
म्भाहितए ॥ १५१ ॥ तस्स जं गाहवश्कुक पिठवास्मपदिमा ए उपमिल्लस क्ष्यद  
एवं बहाए समलोकास्मस्स पविमापहिकास्स मिल्ले दक्ष्यह “ते जेव एवास्मेव  
विहारेवं विहारेवं यं जेव पातिता एजा-“जेव आउसो ! हुमं वाल्ले लिया-  
समलोकास्मए पहिमापहिकाए अद्दमंसीरि” वाल्ल लिया से वं एवास्मेव विहा-  
रेवं विहारेवं जहसेवं एगाई का उवाई का लियाई का उहोसेवं एहारु  
मासे विहरेजा पर्गा]कारसमा उवास्मगपदिमा ॥ १५२ ॥ एवाजो लह  
ताभो येरेहि मम्भतेहि एहारु उवास्मगपदिमाभो पञ्जताभो ॥ १५३ ॥ लियोसि ॥  
छ(हि)क्षा वसा समचा ॥ ६ ॥

### सस्त[भी]मा वसा

मुर्ये भ आउसे । तर्वं भगम्मा एवमन्द्याव इह वह बेरेहि मम्भतेहि वसा

भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, क्यरा खलु ताओ थेरेहि भगवतेहि वारस भिक्खु-  
पडिमाओ पण्णत्ताओ ? इमाओ खलु ताओ थेरेहि भगवतेहि वारस भिक्खुपडिमाओ  
पण्णत्ताओ । तजहा-मासिया भिक्खुपडिमा १, दोमासिया भिक्खुपडिमा २,  
तिमासिया भिक्खुपडिमा ३, च(१)उ(८)मासिया भिक्खुपडिमा ४, पचमासिया  
भिक्खुपडिमा ५, छ(८)मासिया भिक्खुपडिमा ६, सत्तमासिया भिक्खुपडिमा ७, पठमा  
सत्तराइदिया भिक्खुपडिमा ८, दोचा सत्तराइदिया भिक्खुपडिमा ९, तचा सत्तराइ-  
दिया भिक्खुपडिमा १०, अहोरा(इ)इंदिया भिक्खुपडिमा ११, एगराइया भिक्खु-  
पडिमा १२ ॥ १५४ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्च  
वोसट्काए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उववज्जति, तजहा-दिव्वा वा, माणुसा वा,  
तिरिक्खजोणिया वा, ते उप्पणे सम्म (काएण) सहइ खमइ तितिक्खड अहियासेइ  
॥ १५५ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पइ एगा दत्ती  
भोयणस्स पडिगाहित्तए एगा पाणगास्स, अण्णायउञ्छ सुख्खोवहडं निजूहित्ता वहवे  
दु[ए]पयन्चउप्पयसमणमाहणअतिहिकिवणवणीमगा, कप्पइ से एगस्स भुजमाणस्स  
पडिगाहित्तए, णो दुण्ह णो तिष्हं णो चउण्ह णो पचण्ह, णो गुव्विणीए, णो वालवच्छाए,  
णो दारग पेजमाणीए, णो अतो एलुयस्स दोवि पाए साहटु दलमाणीए, णो  
वा[व]हिं एलुयस्स दोवि पाए साहटु दलमाणीए, एग पाय अतो किच्चा एग पाय  
वाहिं किच्चा एलुय विक्खभइत्ता एव दलयइ एव से कप्पइ पडिगाहित्तए, एव से  
नो दलयइ एव से नो कप्पइ पडिगाहित्तए ॥ १५६ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम  
पडिवन्नस्स अणगारस्स तबो गोयरकाला पन्नत्ता । तजहा-आ[दि]इमे म[ज्जे]ज्जिमे  
चरिमे, आइमे चरेजा, नो मज्जे चरेजा, नो चरिमे चरेजा १, मज्जे चरेजा,  
नो आइमे चरेजा, नो चरिमे चरेजा २, चरिमे चरेजा, नो आइमे चरेजा, नो  
मज्जिमे चरेजा ३ ॥ १५७ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स  
छव्विहा गो-यर-चरिया पन्नत्ता । तजहा-पेला, अद्वपेला, गोमुत्तिया, पतगवीहिया,  
सवुकावटा, गतु(गतु)पच्चागया ॥ १५८ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स  
अणगारस्स जत्थ ण केड जाणड कप्पइ से तत्थ एगरा(इ)इय वसित्तए, जत्थ ण  
केइ न जाणइ कप्पइ से तत्थ एगराय वा दुराय वा वसित्तए, नो से कप्पइ एग-  
रायाओ वा दुरायाओ वा पर वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं  
वसठ से सत्तरा छ्येए वा परिहारे वा ॥ १५९ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडि-  
वन्नस्स० कप्पड चत्तारि भासाओ भासित्तए, तजहा-जायणी, पुच्छणी, अणुण्णवणी,

१ वण्णणविसेसमेयासिं ठाणतच्छाणभगवईअतगडाईहितो जाणियव्व ।

पुद्गत्य वागरणी ५ १५ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस ऋष्य तथो उक्तसमा पदिव्वेहितए, तवहा—ओहे आरामगिर्हित वा ओहे विवरगिर्हित वा ओहे उक्तसमूहित वा । मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस ऋष्य तथो उक्तसमा अनुग्रहेताए, तं—ओहे आरामगिर्ह, ओहे विवरगिर्ह, ओहे उक्तसमूहित । मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस ऋष्य तथो उक्तसमा उक्ताद(वाचि)मिताए, तं चेत ॥ १५१ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस ऋष्य तथो संवारणा पदिव्वेहितए, तं जहा—पुरावीसिंह वा कुमिल वा अहासुक्तमेव । मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस ऋष्य तथो संवारणा अनुग्रहेताए, तं चेत । मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस ऋष्य तथो संवारणा उक्तादिताए, तं चेत ॥ १५२ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस इती वा पुरिते वा उक्तसमूह उक्ताप्यमेजा ए इती वा पुरिते वा नो से कप्त तं पृथ्व निकामिताए वा पवित्रिताए वा ॥ १५३ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस भेद उक्तसमूह आगणिक्षण्ठर्ण शामेजा नो ए कप्त तं पृथ्व निकामिताए वा पवित्रिताए वा तत्त्व च भेद वाहतए गहा[ए]ब असमेजा नो से कप्त तं अकर्मिताए वा वर्तिताए वा कप्त से अहारिय रित[रित]तए ॥ १५४ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस पार्थित पात् वा क्षटए वा हीरए वा लटरए वा अुपमितेजा नो से कप्त नीहरिताए वा कप्त से अहारिय रिताए ॥ १५५ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस बाब अर्थिति चर्य-विजि वा भी[याचि]ए वा ए वा परियाकमेजा नो से कप्त नीहरिताए वा विनोहिताए वा कप्त से अहारिय रिताए ॥ १५६ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस वर्तमेन सरिए अल्पमेजा अन्य एव ज्ञ(प्राक्तवासुवं)सि वा वर्तमिति वा तुम्तिति वा निर्विति वा पञ्चविति वा विरमसि वा गहाए वा दरीए वा कप्त से तं त्वरीत्य त्वरेत उक्ताप्यादिताए नो से कप्त पञ्चविति वर्तमेन, कप्त से वाँ पारम्पराए रवीयै वाँ अलंकृते पार्थियामिसुहस्त वा दाहियामिसुहस्त वा पर्यायामिसुहस्त वा उक्ताप्यामिसुहस्त वा अहारिय रिताए ॥ १५७ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस चे है कप्त अलंकृतिमाए पुढीयै विद्वत्ताए वा पञ्चविताए वा भेदी दूरा आवर्ण मेने से तत्त्व निराम्यमाने वा पञ्चाम्यमाने वा हृत्येहि भूमि परसुमेजा अहारिय मेन ठार्ण अहताए विवरमिताए वा उक्ताप्यासवरपेन उ[पा]न्नाहिया नो ए कप्त उपरित्तिताए [वा] कप्त से पुञ्चपदिकेद्वै वीडिके उक्तारणात्मन भौतिताए तमेव उक्तसमूह आगम्य अहारिय ठार्ण ठाहताए ॥ १५८ ॥ मातिर्य च मिक्तुपदिम् पदिवत्सस भो कप्त उक्तक्षेत्रे काप्त गाहात्तुस भाष्ट्र वा अवाह

# सूत्र श्री पन्नवराजी पद तीजा.

( महादंडक )

| मंख्या | मार्गणा का दृढ़ वोल                      | भेद<br>के<br>लिए<br>नीचों<br>के | गुण स्थान १४ | योग १५ | उपयोग १३ | लेखा १५ |
|--------|------------------------------------------|---------------------------------|--------------|--------|----------|---------|
| १      | सर्व स्तोक गर्भज मनुष्य                  | २                               | १४           | १५     | १२       | १३      |
| २      | मनुष्यणी संख्यात गुणो                    | २                               | १४           | १३     | १२       | १३      |
| ३      | बादर तेडकाय के पर्याप्ता असं०<br>गुणा० । | १                               | १            | १      | ३२       | ३३      |
| ४      | पाँच उत्तर वैमान के देव                  | २                               | १            | ११     | ८        | १०      |
| ५      | ब्रवेयक ऊपरकी त्रिकों देव संख्या.गु.     | २                               | २१३          | ११     | ६        | १       |
| ६      | , मध्यम की,, „ „ „                       | २                               | २१३          | ११     | ६        | १       |
| ७      | , नीचे की,, „ „ „                        | २                               | २१३          | ११     | ६        | १       |
| ८      | बारहवें देवलोक के देव „ „                | २                               | ४            | ११     | ६        | १       |
| ९      | ग्यारवे                                  | २                               | ४            | ११     | ६        | १       |
| १०     | दशवें                                    | २                               | ४            | ११     | ६        | १       |
| ११     | नौवाँ                                    | २                               | ४            | ११     | ६        | १       |

वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, अह पुण एवं जाणेज्ञा ससरक्खे से अत्ताए वा जल्लत्ताए वा मलत्ताए वा पकत्ताए वा विद्वत्ये से कप्पड गाहावङ्कुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १६९ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स० नो कप्पड सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा दत्ताणि वा अच्छीणि वा मुह वा उच्छोलित्तए वा पधोइत्तए वा, पण्णत्थ लेवालेवेण वा भत्तमासेण वा ॥ १७० ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स० नो कप्पड आसस्स वा हत्थिस्स वा गोणस्स वा महिसस्स वा कोलसुणगास्स वा सुणस्स वा वग्धस्स वा दुद्धस्स वा आवयमाणस्स पयमवि पञ्चोसकित्तए, अदुद्धस्स आवयमाणस्स कप्पड जुगमित्त पञ्चोसकित्तए ॥ १७१ ॥ मासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स० नो कप्पइ छायाओ सीयति उण्ह इयत्तए, उण्हाओ उण्हंति छाय इयत्तए । ज जत्थ जया सिया त तत्थ तया अहियामए ॥ १७२ ॥ एव खलु मासिय भिक्खुपडिम अहासुत्त अहामप्प अहामग अहातच्च सम्म काएण फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्ठित्ता आराहइत्ता आणाए अणुपा(ले)लित्ता भवइ ॥ १ ॥ १७३ ॥ दोमासिय ण भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स० निच्च वोसट्टकाए जाव दो दत्तीओ ॥ २ ॥ १७४ ॥ तिमासियं तिणिं दत्तीओ ॥ ३ ॥ १७५ ॥ चउमासिय चत्तारि दत्तीओ ॥ ४ ॥ १७६ ॥ पचमासिय पच दत्तीओ ॥ ५ ॥ १७७ ॥ छमासिय छ दत्तीओ ॥ ६ ॥ १७८ ॥ सत्तमासिय सत्त दत्तीओ ॥ ७ ॥ जेत्तिया मासिया तेत्तिया दन्नीओ ॥ १७९ ॥ पठम सत्तराइदिय भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्च वोसट्टकाए जाव अहियासेइ, कप्पइ से चउत्थेण भत्तेण अपाणएण वहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा उत्ताणगास्स वा पासिल्लगास्स वा नेसजियस्स वा ठाण ठाइत्तए, तत्थ दिव्वा वा माणुमा वा तिरिक्खजोणिया वा उवसगा समुपज्जेज्ञा तेण उवसगा पयलिज वा पवडेज वा णो से कप्पइ पयलित्तए वा पवडित्तए वा, तत्थ ण उच्चारपासवण उच्चाहिज्ञा णो से कप्पइ उच्चारपासवण उगिण्हत्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहियसि थडिलसि उच्चारपासवण परिठवित्तए, अहाविहिमेव ठाण ठाइत्तए, एवं खलु एसा पठमा सत्तराइदिया भिक्खुपडिमा अहासु[य]त्त जाव आणाए अणुपालित्ता भवइ ॥ ८ ॥ १८० ॥ एव दोष्णा सत्तराइदिया [या]वि नवरं दडा[य]इयस्स वा लग[डसाइ]डाइयस्स वा उकुङ्गयस्स वा ठाण ठाइत्तए, सेस त चेव जाव अणुपालित्ता भवइ ॥ ९ ॥ १८१ ॥ एव तच्चा सत्तराइदियावि, नवरं गोदोहियाए वा धीरासणियस्स वा अवख्यजस्स वा ठाण ठाइत्तए त चेव जाव अणुपालित्ता भवइ ॥ १० ॥ १८२ ॥ एवं अहोराइदियावि, नवर छेष्टेण भत्तेण अपाणएण वहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए

वा ईमि दोषि पाए खाहु बग्गारियपाभिस्व ठार्ण ठाहतए, सेस तै जेव जाव अहु  
पालिता मवह ॥ ११ ॥ १८३ ॥ एगराहै च मिन्दुपदिमे पदिक्षवस्तु अक्षयरस्य  
निर्व बोचद्वाघए जै जाव अहियासेह, कप्पद से [व] अदुमेवं भोत्वं जगाहएवं वहिय  
गामस्तु वा जाव रामहाणीए वा ईमि पञ्चारगएलं क्षेत्रं एकायोगल्पृथिवी]पवर  
विद्वाए अविस्तुतनमणे अहापविहिएहि गापहिं सविविएहि गुतेहि दोषि फाए सर्वु  
बग्गारियपाभिस्व ठार्ण ठाहतए, उत्त्व से शिष्मा मालुस्ता विरिक्षयजोमिया वद  
अहियासेह, से ज तत्त्व उच्चारपास्त्वर्ण उच्चाहिमा नो से कप्पद उच्चारपास्त्वर्ण वरिद्विलए  
उमिहिताए, कप्पद से पुञ्चपाहेहियमि वहिक्षेवि उच्चारपास्त्वर्ण वरिद्विलए  
अहाविहिमेव ठार्ण ठाहतए ॥ १८४ ॥ एगराहै च मिन्दुपदिमे अज्ञुपास्त्वर्ण अज्ञगारस्य  
अज्ञगारस्य इम तमो छाणा अहियाए अमुमाए अक्षयमाए अविसेवाए अवहु  
गामित्वाए भवति ईमहा-उम्माद वा ख[ङ]मेज्जा शीहकालिम वा रोपल्ल  
पाठ्वज्जा केविमन्त्रात्ताव्ये भग्न्याओ म[स्ति]सेज्जा ॥ १८५ ॥ एगराहै च मिन्दु  
पदिमे सम्यं अज्ञुपास्त्वर्ण अज्ञगारस्य इमे तमो छाणा शियाए छाए उमार  
मिसेवाए अज्ञगामित्वाए भवति ईमहा-ओहिनाजे वा से उमुपज्जेज्जा अवर्व  
नाजे वा से उमुपज्जेज्जा अवभवाजे वा से असमुप्पश्चुप्ये उमुपज्जेज्जा एवं वह  
एसा एगराहा मिन्दुपदिमा अहावहिं अहाक्ष्यं अहात्वं सम्य अर्व  
पालिता पालिता सोहिता तीरिता ग्रिहिता आरहिता आयाए अज्ञगामिता [शर्मि]  
भवह ॥ १८६ ॥ एसामो उम्मु तामो येरोहि भवत्वहिं वाहए मिन्दुपदिम्म  
पञ्चताम्ये ॥ १८७ ॥ ति-बेमि ॥ इति मिन्दुपदिमा जामै सर्वमा  
दसा समर्था ॥ ७ ॥

### अहुमा वसा

तेवं काळेन तेवं समएज समजे मगर्व महावीरे वंचहत्यारे यावि होम्पै  
तज्जा-इखुताहिं तुए चश्ता गम्म वहिते । इखुताराहि गम्माव्ये गन्व लाहरीप १  
इखुताहिं वाए २ इखुताराहि तुडे भविता आगाराम्भे अग्न्यारिर्य अक्षर ४  
इखुताराहि अग्न्ये अखुत्तर निव(व)भावाए निरावरो कसिने पदिपुम्भे वंचहत्याम्भ  
दंसी समुप्यम्भे ५ यद्यन्ना परिविष्टुए भावं जाव मुझे ६ उन्दरीप ७ १८८ ॥  
ति-बेमि ॥ इति पञ्चोस(व)ज्जा जामै अहुमा दसा समर्था ॥ ८ ॥

### नवमा दसा

तेवं काळेन तर्वं समएवं चंगा ना[म]मै नवरी होत्वा वस्त्वो । उम्ममे क्षमे  
दज्जावे वल्लम्भे । कोवियरया वारिणी देवी भावी समोमड परिमा विम्बना, वम्भे

कहिओ, परिसा पडिगया ॥ १८९ ॥ अजो ! ति समणे मगव महावीरे वहचे निगंथा  
य निगंथीओ य आमतेत्ता एव वयासी—“एव खलु अजो ! तीस मोहणिज्ञठाणाङ्डं  
जाइ इमाइ इत्थी[ओ] वा पुरिमो वा अभिक्खण अभिक्खण आ[यारे]यरमाणे वा  
समायरमाणे वा मोहणिज्ञताए कम्म पकरेड, तंजहा-जे (यावि) केइ तसे पाणे, वारि-  
मञ्ज्ञे विगाहिया । उदएणकम्म मारे(ई)इ, महामोहं पकुब्बड ॥ १९० ॥ पाणिणा  
सपिहितार्ण, सोयमावरिय पाणिण । अतोनदत मारेइ, महामोहं पकुब्बड ॥ १९१ ॥  
जायतेय समारब्द, वहु ओरभिया जण । अतो व्रूमेण मारे(जा)इ, महामोहं पकु-  
ब्बड ॥ १९२ ॥ सीसम्म जो (जे) पहणइ, उ(त्ति)तमगम्मि चेयसा । विभज मत्थय  
फाले, महामोहं पकुब्बड ॥ १९३ ॥ सीस वेढेण जे केइ, आवेढेइ अभिक्खण ।  
तिव्वासुभसमायारे, महामोहं पकुब्बड ॥ १९४ ॥ पुणो पुणो पणिहिए, हणिता  
उवहसे जण । फलेण अदुव दंडेण, महामोहं पकुब्बड ॥ १९५ ॥ गूढायारी निगू-  
हिज्ञा, माय मायाए छायए । असच्चाईं पिण्हाइ, महामोहं पकुब्बड ॥ १९६ ॥  
धसेइ जो अभूएण, अकम्म अत्तकम्मुणा । अदुवा तुमकासित्ति, महामोहं पकुब्बड  
॥ १९७ ॥ जाणमाणो परि[सओ]साए, सच्चामोसाणि भासइ । अकब्दीणज्ञज्ञे पुरिसे,  
महामोहं पकुब्बड ॥ १९८ ॥ अणायगस्स नयव, दारे तस्सेव धसिया । विउल  
विक्खोभइत्ताण, किच्चा ण पडिवाहिर ॥ १९९ ॥ उवगसतपि ज्ञपित्ता, पडिलोमाहिं  
वगयुहि । भोगभोगे वियारेइ, महामोहं पकुब्बड ॥ २०० ॥ अकुमारभूए जे केइ,  
कुमारभूएति' ह वए । “इत्थीविसयगेहीए, महामोहं पकुब्बड ॥ २०१ ॥ अवंभयारी  
जे केइ, वभयारिति ह वए । गद्धेव गवा मञ्ज्ञे, विस्सर नयई नद ॥ २०२ ॥  
अप्पणो अहिए वाले, मायामोसे वहु भसे । इत्थीविसयगेहीए, महामोहं पकुब्बड  
॥ २०३ ॥ ज निस्सिए उब्बहइ, जससाहिगमेण वा । तस्स छुब्बइ वित्तमि, महा-  
मोहं पकुब्बड ॥ २०४ ॥ ईसरेण अदुवा गामेण, अणि(स)सरे ईसरीकए । तस्स  
सपयहीणस्स, सिरी अतुलमागया ॥ २०५ ॥ ई(इस)सादोसेण आविष्टे, कलुसाविल-  
चेयसे । जे अतराय चेएइ, महामोहं पकुब्बड ॥ २०६ ॥ सप्पी जहा अडउड,  
भत्तारं जो विहेसइ । सेणावइ पसत्यारं, महामोहं पकुब्बड ॥ २०७ ॥ जे नायगं  
च रुद्धस्स, नेयार निगमस्स वा । सेष्टि वहुरव हता, महामोहं पकुब्बड ॥ २०८ ॥  
वहुजणस्स, नेयार, दी(व)वताण च पाणिण । एयारिस नरं हता, महामोहं पकुब्बड  
॥ २०९ ॥ उवहिय पडिविरय, सजयं सुतवस्तिय । विउ(वु)कम्म धम्माओ भसेइ,  
महामोहं पकुब्बड ॥ २१० ॥ तहेवाणतणाणीणं, जिणाण वरदसिण । तेसि अवण्णवं  
वाले, महामोहं पकुब्बड ॥ २११ ॥ नेया(इ)उयस्स मगगस्स, दुष्टे अवयरई वहु ।

ते तिष्ठन्ते भाषेऽ महामोह पक्षम्भृ ॥ २१२ ॥ अमरियउवज्ञाएहि, शुर्व लिंग  
च गाहिए । ते चेव लिंगइ वाके महामोह पक्षम्भृ ॥ २१३ ॥ अमरियउवज्ञाए-  
मार्थ सम्मी नो पदितप्पह । अप्पिपूर्वए खदे, महामोह पक्षम्भृ ॥ २१४ ॥ अनु-  
स्तुए य जे खेद, स्थान पवित्रत्वह । सज्जायवार्य वग्न, महामोहं पक्षम्भृ ॥ २५ ॥  
अत्यरस्ती[ए] य जे खेद, सधम पवित्रत्वह । सम्बस्त्रेवपरे तथे महामोहं पक्षम्भृ  
॥ १६ ॥ शाहारणद्वा जे खेद, विसामन्मि उष्टुद्विए । पम् न कुणह लिंग मक्कीपि  
जे न कुणह ॥ २१७ ॥ सहै नियवीपञ्चाले छुसाउङ्गचक्षु । अप्पबो व वला-  
ही(य)ए, महामोहं पक्षम्भृ ॥ २१८ ॥ जे व्याहिगरणव, संपर्णमे पुषो पुषो ।  
यम्भित्याण जेमार्यं महामोहं पक्षम्भृ ॥ २१९ ॥ जे व आहमिन्द जोए, सम्  
(ओ)र्जे पुषो पुषो । महाहेठ सहीहेठं महामोहं पक्षम्भृ ॥ २२ ॥ जे व मर्त-  
स्तुए भोए, अनुका पारबोइए । तेऽतिष्ठन्ते आसवह, महामोहं पक्षम्भृ ॥ २२१ ॥  
शही शुर्व जसो वण्ठो देवार्य वलवीरिव । तसि अवप्यवं वाके महामोहं पक्षम्भृ  
॥ २२२ ॥ अपस्समालो फलासि देव(व)वजक्षे य गुज्जगे । अन्नापी विशृद्धै  
महामोहं पक्षम्भृ ॥ २२३ ॥ एए मोषण्डा तुला चम्मंता विशेषज्ञा । जे द  
मिस्त्र, लिंगेज्ञा चरित्तामेनए ॥ २२४ ॥ जपि जामे इड्ये पुर्वं लिंगार्थं  
वहु वर्त । ते वंता तामि सेविज्ञा जेहि वाकार्थं लिया ॥ २२५ ॥ अनाण्डा  
मुद्दप्पा घम्मे लिया व्युत्तर । तजो वमे सप वासि विसमार्थीमिसो जहा ॥ २२६ ॥  
मुच्चतादसि द्वद्वप्पा चम्मट्टी विशेषापरे । शहेव भ(व)भए छिति पेचा व छर्पर वा  
॥ २२७ ॥ एर्व अमिन्मागम्म मुरा वृद्धपरकमा । सम्बोहिलिमुशा वद्दर  
गमाइप्पिया ॥ २२८ ॥ लिंगेमि ॥ मोहिप्पिक्काठाणव्याम भयमा इसा  
समस्ता ॥ १ ॥

### दसमा वसा

तथे ख्येलं तथे उमर्थं उमर्थिदे नार्थं नवरे होत्पा वलज्जे । गुरुमिन्द  
उज्जाने सेविए राया होत्पा राक्षण्डो जहा उवाहए जाल येवणाए विहर ।  
तप व से सेविए राया अन्नमा क्वात च्छाए केठ मालहै आविहनमिसुगो  
वियवहारद्वारात्तिगरवपाळकस्तेवमालहित्तासमुद्धमोमे पिलदगे उवाग्नुवेत्त  
जाव क्षप्यस्तुए चेव अन्तिविभूसिए वरिह उवोटमहामन्त छोर्वं परिज-  
मालेलं वाव समित्वा पिलदगे नरहई जेवह वादिरिका उवद्वायसासा खेव  
मिहामये सेवेव उवागच्छ १ ता लिं(सी)दावलवर्तीमि पुरत्वामिसुह निर्णीवह १ ता  
कोहुवियपुरिसे उदावेव २ ता एवं वासी—गच्छह व तु रवानुपिका । वर्त

इमाड रायगिहस्म णवरस्म वहिया तजहा-आरामाणि य उज्जाणाणि य आएम-  
णाणि य सभाओ य पवाओ य पणियनिहाणि य पणियमालाओ य छुट्टक-  
म्मताणि य वाणियकम्मताणि य कट्रम्मताणि य डगालकम्मताणि य वणकम्म-  
ताणि य दबमकम्मताणि य जे त[थेव]त्व महतरगा अण्णया चिद्विति ते एव  
वयह—एव खलु देवाणुप्पिया । सेणिए राया भभगारे आणवेड-जया ण समणे  
भगव महावीरे आइगरे तित्यये जाव सपाविओकामे पुञ्चाणुपुञ्चिं च[र]रमाणे  
गामाणुगा[मे]म दू(दु)हज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे सुजमेण तवसा अप्पाण  
भावेमाणे विहरि(इह आगच्छेजा इह समोसरे)ज्ञा तया ण तुम्हे भगवओ महा-  
वीरस्म अहापटिस्व उगगह अणुजाणह अहापटिस्व उगगह अणुजाणेता सेणि-  
यस्म रक्को भभसारस्स एयमढु पिय णिवेएह ॥ २०९ ॥ त[तो]ए ण ते कोडु-  
वियपुरिसा सेणिएण रक्का भभासारेण एव बुत्ता समाणा हट्टुढु जाव हिमया  
जाव एव सामि(तह)ति आणाए विणएण पडियुणति २ त्ता [एव-ते] सेणियस्स  
रक्को अतियाओ पडिनिक्खमति २ त्ता रायगिह नयर मज्जमज्जेण निगगच्छति २ त्ता  
जाड [इमाड-भवंति] रायगिहस्स वहिया आरामाणि वा जाच जे तत्य महत्तरगा  
अण्णया चिद्विति ते एव वयति जाव सेणियस्म रक्को एयमढु पिय निवेएज्ञा पिय  
भे भवउ दोच्चपि तध्वपि एव वयति २ त्ता [जाव] जामेव दि[स]सिं पाउव्यूया  
तामेव दि[स]सिं पडिगया ॥ २३० ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे  
आडगरे तित्यये जाव गामाणुगाम दूहज्जमाणे जाच अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।  
तए ण रायगिहे णयरे सिंघाडगतियवउक्कच्चर एव जाव परिसा निगगया जाव  
पञ्जुवा(से)सद ॥ २३१ ॥ तए ण ते महत्तरगा जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव  
उवागच्छति २ त्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो वदंति नमसति वदित्ता नमंसित्ता  
नामगोय पुच्छति नामगोय पुच्छत्ता नामगोय पधारति० पधारित्ता एगओ मिलति  
एगओ मिलित्ता एगतमवक्षमति एगतमवक्षमित्ता एव वयासी-जस्स ण देवाणुप्पिया ।  
सेणिए राया भभसारे दसण कखइ जस्स ण देवाणुप्पिया । सेणिए राया दसण  
पीहेइ जस्स ण देवाणुप्पिया । सेणिए राया दसण पत्थेइ अभिलसइ जस्स ण  
देवाणुप्पिया । सेणिए राया नामगोत्तस्सवि सवणयाए हट्टुढु जाव भवइ से ण  
समणे भगव महावीरे आइगरे तित्यये जाव सब्बण्णू सब्बदसी पुञ्चाणुपुञ्चि  
चरमाणे गामाणुगाम दूहज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे इह आगए इह समोसदे  
इह सपत्ते जाव अप्पाण भावेमाणे [सम्म] विहरइ, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ।  
सेणियस्स रण्णो एयमढु निवेएमो पिय भे भवउत्तिकदु अण्णमण्णस्स वयण

पदिदुर्जनति २ ता रायगिहं नगरं मजर्जमज्जेष्यं लगेव सेवियस्य रहा पिं  
जेनेव सेपिए राया तेगेव उवागच्छन्ति ३ ता सेवियं रायं करमस्तरैमध्येन  
आब जाएँ विज्ञाप्तं कदाचनि बद्धानिता एवं क्यासी—‘अस्तु वं सामी! संर्वं  
कल्प आब हे वं समजे मगर्वं महावीरे गुमसिः[डिक्ट]ए उजाने आब विज्ञ  
एवं [ठस्ट] वं देवाणुपियार्वं पिं निवेष्मो पिं जे ममत्’ ॥ १२ ॥ तर  
वं से सेपिए राया तेचि पुरिसार्वं अशिए एसमद् सोवा मिसम्म इद्युद्ध राय  
क्षिप्त शीहसाजाभो व्यभुद्धेव २ ता आहा शोविभो आब वंवह नमंप्यं पीरा  
मर्मसिता थं पुरिषे उद्यारेव सम्माप्तेव उकारिता सम्मानिता विडम शेपिय-  
रिहं पीइदार्वं श्वस्यइ २ ता पदिविमयेव पदिविश्विता नगरुपियं गावेव ३ य  
एवं क्यासी—हिप्पामेव भो देवाणुपिया! रायगिहं कारं सर्विंतरणाहित्वं  
आसियसंमजिओवित्ते जाव करिता पविपित्ति ५ २३३ ॥ तए वं थं सेपिए  
राया बद्धाठव्यं साहार्वइ २ ता एवं क्यासी—हिप्पामेव भो देवाणुपिया! इस्पत्ता  
जोहस्तिये आउरुगियि सेष सुम्माहेव आब से वि फवपित्तइ ४ २३४ ॥ तर वं  
से सेपिए राया आपसानिये साहेव २ ता एवं क्यासी— भो देवाणुपिया! विष्ण-  
मेव बन्मियं जावप्पवरं तुलामेव उद्युवेव उद्युविता मम एवमामदिवं प्राप्ति-  
पह” । तए वं स आपसानिये सेपिएवं राया एवं तुषे समाहे इद्युद्ध जाव विवर  
जेनेव आपसाका तेगेव उवागच्छद् २ ता आपसाले अमुप्पवित्तइ २ ता आर्वं  
प्लुतेस्त्वाह २ ता आर्वं फ्लोट्वइ २ ता शुष्टु प्ली[पीह]वित्त ३ ता आपव सम्प-  
ज्जद सफ्मजिता आपरं जीव्यइ २ ता आवद्वं सम्लङ्घरेव २ ता आवद्वं कर्त्तव्य-  
वद्वं करेव २ ता आवद्वं उभेवेव २ ता जेवेव वाहणावाका तेवेव उवागच्छद् १ ता  
वाहणावाके अमुप्पवित्तइ २ ता वाहणावाकुतेस्त्वाह २ ता वाहणावं सेपम्प्य २ ता  
वाहणव वाप्तामेव ३ ता वाहणावं जीवेव २ ता शुष्टु फ्लीवित्त ३ या वाप्तवर्वं  
सम्लङ्घरेव २ ता वरभद्रगमंहिवद्वं करेव २ ता वाहणावं जावरं जेवेव ३ या  
वाहमानं गाह्यइ २ ता फ्लोवल्लु फ्लोवपरे व सम्व वारेवेव २ ता अंतरुसम्पत्ति  
जेवेव सेपिए राया तेगेव उवागच्छद् ३ ता करवस आब एवं क्यासी—तुषे वे  
सामी! बन्मिप जावप्पवरे आद्वे माद्वु बम्हूहि गाहिता ॥ २३५ ॥ तए वं तेविए  
राया गम्मतारे आवसानियस्य अशिए एसमद् सोवा मिसम्म इद्युद्ध आब नज्ज-  
भरे अमुप्पवित्तइ २ ता आब फ्लप्पक्षे जेव अक्षेपियपूर्विए जारिदि आब फ्लप्प-  
भरज्जो पविभिक्ष्यत्वाह २ ता जेवेव खेविज्जित्वाहेवी तेगेव उवागच्छद् १ ता  
जेवज्जित्वाहेवी एवं क्यासी—एवं अहु देवाणुपियए! समाहे मध्यं मावावीरे अहुर्वे

तित्थयरे जाव पुञ्चाणुपुञ्चिं चरमाणे जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे  
विहरइ, तं भ(हा)हप्फर्ल० देवाणुप्पिए। तहास्त्राण ध[र]रिहताण जाव त गच्छामो  
ण देवाणुप्पिए। समण भगवं महावीर वदामो नमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्पण  
मंगल देवय चेहय पञ्जुवासामो, एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए  
निस्से(य)साए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सद। तए ण सा चेलणादेवी सेणियस्स  
रणो अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हृष्टुहृ जाव पडिसुणेहृ २ ता जेणेव मज्जण-  
धरे तेणेव उवागच्छहृ २ ता ष्णाया किं ते वरपायपत्तनेउरा भणिमेहलाहारइय-  
उवचिया कडगस्स झुगएगावलिकठसुत्तमरगवतिसरयवरवलयहेमसुत्तयकुठलउजोविया-  
णणा रयणविभूसियगी चीणसुयवत्थपरिहिया दुशुल्लुकुमालकतरसणिजउत्तरिजा  
सब्बोउयसुरभिकुसुमसुदररइयपलवसोहणक्तविकसतचित्तमाला वरचदणच्चिया  
वराभरणविभूसियगी कालागुरुवृवधूविया सिरिसमाणवेसा वहूहिं खुजाहिं० चिलाइ-  
याहिं जाव महत्तरगविंदपरिक्षित्ता जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव सेणिय[य]ए  
राया तेणेव उवागच्छहृ। तए ण से सेणिए राया चेलणादेवीए सद्दिं वम्मिय जाणप्पवर  
दुरुहृहृ २ ता सकोरिंटमल्लदमेण छत्तेण वरिजमाणेण उववाइ(य)भमेण ऐयवं जाव  
पञ्जुवासइ, एव चेलणादेवी जाव महत्तरगपरिक्षित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे  
तेणेव उवागच्छहृ २ ता समण भगव महावीर वदहृ नमसद सेणिय राय पुरओ काउ  
ठिड्या चेव जाव पञ्जुवासइ ॥ २३६ ॥ तए ण समणे भगव महावीरे सेणियस्स  
रजो भभसारस्स चेलणादेवीए तीसे य महइमहालियाए परिसाए इसिपरिसाए मुणिपरि-  
भाए मण(य)स्सपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए जाव धम्मो कहिओ, परिसा पडि-  
गया, सेणिय[य]ओ राया पडिगओ ॥ २३७ ॥ तत्येगडयाण निगंथाण निगंथीण य  
सेणिय राय चेलण च देवीं पासित्ताण इमे एयारुवे अज्ज्वतिथए जाव सकप्पे समु-  
प्पजित्या—अहो ण सेणिए राया महिङ्गिए जाव महासुख्खे जे ण ष्णाए सव्वाल-  
कारविभूसिए चेलणादेवीए सद्दिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ,  
जइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमसजमवभचेरगुत्तिफलवित्तिविसेसे अत्थि तया वय-  
मवि आगमेस्साण इमाइ ताइ उरालाइ एयास्वाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणा  
विहरामो, से त साहु ॥ २३८ ॥ अहो ण चेलणादेवी महिङ्गिया जाव महासुख्खा  
जा ण ष्णाया सव्वालकारविभूसिया सेणिएण रणा सद्दिं उरालाइ माणुस्सगाइ  
भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ, जड इमस्स सुचरियस्स तवनियमसजमवभचेरवासस्स  
कल्पणे फलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमिस्साण इमाइ एयारुवाइ उरालाइ जाव  
विहरामो, से त साहु[णी] ॥ २३९ ॥ अजो ! त्ति समणे भगव महावीरे ते वहवे निग-

या (y) निर्मन्त्रीओ य भास्मरेता एवं वयासी— ‘सेपियं रावं चेष्टानेति कर्तिता  
इमेयाहवे अक्षरितए वाव उमुप्यजित्वा—अहो यं सेपियं रावा महित्विए वाव वाव  
साहु, अहो च चेष्टानेति महित्विया मुखरा वाव साहु, से वृत्त भव्ये। वृद्धे संदेहे’  
हैता । अन्यि ३२४ पृ एवं यहु समवाचस्ये । मए घम्मो फल्लते हृष्टा] यमदिन्मये  
पाकमणे स्थे व्यक्तिरे पडियुञ्जे केव[ळ]स्ति एवं संदेहे नेयारए स्वप्नते चिपिदिन्मये  
मुक्तिममो निष्ठायममो निष्ठायममो अवित्तुहमन्तिरित्वे स्वप्नतुक्तुप्यहीममन्ते हर्व  
ठिया वीका चिक्षाति तुञ्जर्णति मुचति परिनिष्ठायति सम्मुक्त्वाजमर्ते व(र)त्ति  
॥ ३४१ ॥ चरसु च व्यमस्य मिमांषे चिक्षापृ चवद्विष्ट विहराये पुरानीनिक्तर  
पुरा पिवासापृ पुरान्वायाऽयत्वेहि पुरान्पुद्धे विष्वस्येहि परिसहेयस्मोहि विष्व  
क्तमवापृ विहरिजा से च परक्तमेजा से य परक्तममाने पासेजा—ते इसे उम्मुक्त  
महामाडवा भोगपुता महामाडवा तेति अव्ययरस्य अह्याद्यमावस्य निष्ठायमस्य  
पुरभो महं दावीदायकिन्तुरक्तमहुरपुरिधार्ण अ(तो)ते परिक्तिता छाँ तिपारे वाव  
निष्ठाच्छर्णति ॥ ३४२ ॥ तत्वार्थतरं च च चुरुक्तो म(ह)दावासा वास(व)वरा उम्मे  
देव(पा)सि नागा माग-वरा पिक्तुक्तो र(ह)दा रावद्य संगेति देव त(च्छ)द्विवस्ते  
(द)हो अम्मुम्ममयमिगारे पमाहियतानिर्देव प(वीत्व)विष्व देववामता वासीन्तर  
अमिक्तस्य अमिक्तस्य अह्याह य निष्ठाह च स्वप्नमा सपुष्वाकरं च च चापृ लंगा  
संसारविमूढिष्ट महामहात्मिकाए वृत्तागतसाक्षात् महामहात्मविं विहाच्छर्णति अव  
सव्वरु[तिर्थी]श(वि)एवं ओहणा चित्यायमात्रेव इतिव्युम्परिकुदे महारथे इक्षवृ  
क्ताग्रहतीतीत्वास्तुकियक्षयु(वे)र्षमाहक्षपुष्पवाहनवेष्ट उरात्मदं म्युस्तुत्वं  
क्तमसोभावं भुजमात्रे विहरु ॥ ३४३ ॥ पृ तस्य च एकमविभायदेमाभ्यु वाव वाव  
पंच व्युत्ता चेव अव्युत्तुर्णी—मन वेष्टालुपिता । कि करेमो ॥ कि उषेमो ॥ कि  
आहरेमो ॥ कि आविष्टामो ॥ कि मे विष्टाविष्ट्ये ॥ कि ते व्यास्यस्य उवाह ॥ च वायिता  
जिव्येवे वियाखं करेद—वह इमत्तु वावविममसैक्तमीमतेवासस्तु ते च च वाव छाँ ।  
एवं वातु समवारसो ! यिम्माये वियाखं विया दस्य अवश्यम अवास्येव अप्यक्तिरे  
क्तमसो वातु विया अवश्यरे देवतोएवु देवताए उवत्तारे भवह महित्विष्ट वाव  
विरद्विष्ट देवे यं तत्त्व देवे भवह म[ह]द्वित्विए वाव विरद्विष्ट, तत्त्वे देवतेवावे  
आस्त्रक्तस्याएवं भवत्तरं च च वृश्चा च इसे उम्मुक्ता व्या  
मावत्ता भोगपुता महामाडवा एएति च अवश्यरहि कुम्भिं पुष्टाप्रए व्यवद  
॥ ३४४ ॥ से च तत्त्व वावए भवह उक्तमाल्पाविपाए वाव दस्ये तपृ च से रमर

१ विमेस्तु देवताह दूष्यद्वयोऽप्तुवक्त्वांभुद्यज्ञहवान् ।

उम्मुक्षवालभावे विणायपरिणय[मि]मेते जोब्बणगमणुप्ते सयमेव पेडयं पडिवजइ,  
तस्य णं अइजायमाणस्स वा० पुरओ मह दासीदास जाव किं ते आसगस्स  
सयइ? ॥ २४५ ॥ तस्य ण तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहार्ख्वे समणे वा मौहणे  
वा उभओ काल केवलिपन्नत धम्ममाइक्खेजा? हता! आइक्खेजा, से ण पडि-  
सुणेजा? णो इण्टे समट्टे, अभविए ण से तस्स वम्मस्स सव[णा]णयाए, से य भवइ  
महिच्छे महारमे महापरिगहे अहम्मिए जाव दाहिणगामी नेरइए आग(मे)मिस्राण  
दुल्हब्बोहिए यावि भवइ, त एव खलु समणाउसो। तस्स णियाणस्स इमेयार्ख्वे  
०फलविवागे ज णो सच्चाएइ केवलिपन्नत वम्म पडिस्त्रिण्टए ॥ २४६ ॥ एवं खलु  
समणाउसो। मए धम्मे पण्णते, इणमेव णिगथे पावयणे जाव सञ्चुदुक्खाणमत  
करेति, जस्स ण धम्मस्स निगथी सिक्खाए उवट्टिया विहरमाणी पुरा-दिगिंछाए  
उदिणकामजाया विहरेजा, सा य परक्षमेजा, सा य परक्षममाणी पासेजा-से जा डमा  
इत्थिया भवइ एगा एगजाया एगाभरणपिहिणा तेल्पेला डव सुसगोविया चेल्पेला डव  
सुसपरिगहिया रयणकरडगमसा[णी]णा, तीसे ण अइजायमाणीए वा निजायमाणीए  
वा पुरओ मह दासीदास तं चेव जाव किं मे आसगस्स सयइ? ज पासिता णिगंधी  
णियाण करेइ-जइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमसजमवमचेर जाव भुजमाणी विहरामि,  
से(त) त साहु। एवं खलु समणाउसो। णिगथी णियाण किच्चा तस्स ठाणस्स अण-  
-लोइय अप्पडिक्षता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु ढेवलोएसु ढेवत्ताए उववत्तारो  
भवड महिद्विएसु जाव सा ण तत्य ढेवे भवड जाव भुजमाणी विहरइ, सा ण ताओ  
ढेवलोगाओ आउक्खण भवक्खण ठिक्खण अणतर चय चइता जे इसे  
भवति उभगपुता महामाउया भोगपुता महामाउया एएसि ण अण्णयरंसि कुलसि  
दारियताए पञ्चायाइ, सा ण तत्य दारिया भवइ सुकुमाला जाव सुख्वा ॥ २४७ ॥  
तए ण त दारिय अम्मापियरो उम्म[आ]मुक्षवालभाव विणायपरिणयमेत्त जोब्बण-  
गमणुप्तत पडिरुवेण दुक्षेण पडिरुवस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दल्यति, सा ण  
तस्स भारिया भवइ एगा एगजाया इट्टा कता जाव रयणकरडगमसमाणा, तीसे  
ण अइजायमाणीए वा निजायमाणीए वा पुरओ मह दासीदास जाव कि ते आम-  
गस्स सयइ? ॥ २४८ ॥ तीसे ण तहप्पगाराए इत्थियाए तहार्ख्वे समणे वा माहणे  
वा उभयकाल केवलिपन्नत धम्म आइक्खेजा? हता! आइक्खेजा, सा णं भते!  
पडिसुणेजा? णो इण्टे समट्टे, अभविया ण सा तस्स धम्मस्स सवणयाए, सा य भवड  
महिच्छा महारभा महापरिगहा अहम्मिया जाव दाहिणगामि० गेरड० आगमि-

एवं प्रति समाजावस्तो ! मए बम्मे पक्षाते हं चेद से य फलमेका परहमामे  
 मालुस्त्वप्रमु अमागेमु निष्ठेवं गच्छेजा मालुस्त्वगा यस्तु काममेया अनुष्ठ  
 अभिरिया तदेव जाव संति उहु देवा देवमेगेति ते य तत्त्व जो अन्यतिं देवार्थ  
 अर्ण देवि अभिमुक्तिय २ परियारेति अप्यतो चेद अप्यार्थं वित्तिभिता परिवारी  
 अप्यभिजिवाभ्येति देवीओ अभिमुक्तिय २ परियारेति जह इमस्तु तरनियम तं  
 चेद सर्वं जाव से यं सुहेजा पतिएजा रोएजा ॥ शो इच्छु समद्वे ॥ २५६ ॥  
 अन्यर्थं इमाशाए मे म भवद् से ते 'न' आरभिया आवस्तिया गमीतिया अनुर  
 एहसिया जो वदुसज्ज्या जो वदुविरया सम्बवाणभूम्यतीष्टुतोमु अप्यतो संशामोगर्वं  
 एव विविवदति—अहं य हृतम्भो अण्डा हृतम्भा यह य अजावेदम्भो अन्ये अजाम्  
 मध्या यह य परिवावेदम्भो अन्ये परिवावेदम्भा यह य परिवेतम्भो अप्येपरिवेत्तम्भा  
 यह य उव्वेदम्भो अन्ये उव्वेदम्भा एवमेव इतिप्रामाहि मुचिया परिया  
 मिदा अज्ञावेदम्भा जाव अवमामे काळं किंवा अप्यदर्शं अनुराई विविन्दीर्घं  
 ठापार्थं वदवतारो मर्ति तब्बो विप्प)मुक्तमात्रा अुओ २ एव्यवतार एवार्थी  
 एवं यस्तु समाजावस्तो ! तस्य विमानस्य जाव जो संशाएइ वेत्तिभितो यस्तु  
 यस्तुहितार या ॥ २५७ ॥ एवं यस्तु समाजावस्तो ! मए बम्मे पक्षते जाव मालुम्भगा  
 यतु काममोगा अमुमा तदेव संति उहु देवा देवमेगेति जो अप्येति वदार्थे [अग्नि  
 चेद] अर्ण देवि अभिमुक्तिय परिवारेति जो अप्यतो चेद अप्यार्थं वित्तिभित  
 परियारेति अप्यभिजिवाभ्यो देवीओ अभिमुक्तिय २ परियारेति जह इमस्तु ता  
 नियम तं चर सर्वं जाव एवं यस्तु समाजावस्तो ! जिमातो वा निष्ठेवी या  
 जियार्थं किंवा तस्म ठापस्य अणामेद्व अप्यदिवंत तं चेद जाव किरहि, ते यं  
 तत्त्व जो अप्येति वदार्थं अर्ण देवि अभिमुक्तिय २ परियारेति जो अप्यता चा  
 अप्यार्थं वित्तिभित परियारेति, अप्यभिजिवाभ्यो देवीभ्यं अभिमुक्तिय २ परियारेति  
 से यं तम्भा जाइस्त्वाए भद्रकार्यं तदेव वात्त्वं जरर्ह दृश्य । तो  
 देजा पतिएजा रोएजा से यं सौम्यवद्युजनेत्रमन्तवद्यगामयोगदोषवालार्दं वर्णि  
 देवेजा ॥ जो अद्वे रमद्वे, से यं दंतणमावए भव—भवियदैवतर्थं जाव  
 अद्विमिक्षपेम्मागुरुमरते अयमाडगा ! निष्ठीय पाववते अद्वे एग (अप्य) रमद्वे भवे  
 भवद्वे स यं एयार्थ्येव विद्वामार्गं वहुई वाणां गम्भोपग्नार्थीर्थं  
 पाउजाइ २ ता काममार्गं वासं विद्या अन्यसरेतु देवतागम द्वागाए उपर्याप्ते  
 भवद्वे एवं गम्भोपग्नार्थीर्थं । तस्य विद्यागम्भा इमयार्थ्ये पाइ २ वर्णनार्थं ॥

१ रिक्माय सूक्ष्मद २ मु भ वारामे विविवार्थी दर्शने ।

|    |                         |   |   |    |    |   |                          |                          |
|----|-------------------------|---|---|----|----|---|--------------------------|--------------------------|
| १२ | सातवी मालक नैरिया अस गु | ० | ४ | ११ | E  | १ | प्राचीन विषय<br>मूल्यांक |                          |
| १३ | छटी , " "               | ० | ४ | ११ | E  | १ | प्राचीन                  |                          |
| १४ | बाठें देवलोक के देव "   | ० | ४ | ११ | E  | १ | प्राचीन                  |                          |
| १५ | सातवी देवलोक के देव "   | ० | ४ | ११ | E  | १ | प्राचीन                  |                          |
| १६ | पाँचवी मरक के नैरिया    | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| १७ | छद्द देवलोक के देव      | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| १८ | चीवी नरक के मरिया       | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| १९ | पाँचवी देवलोक के देव    | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| २० | तीवी नरक के मरिया       | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| २१ | चीवी देवलोक के देव      | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| २२ | दूसी नरक के नैरिया      | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| २३ | सीधा देवलोक के देव      | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन विषय<br>मूल्यांक |
| २४ | समुत्तम मसुम्म          | १ | १ | ३  | ४  | १ | प्राचीन - ११             |                          |
| २५ | दूजा देवलोक के देव      | " | २ | ४  | ११ | E | १                        | प्राचीन                  |
| २६ | " - चीवी सं० गु०        | २ | ४ | ११ | E  | १ | प्राचीन विषय<br>मूल्यांक |                          |
| २७ | पहले देवलोक के देव शास  | २ | ४ | ११ | E  | १ | प्राचीन                  |                          |

णो सच्चाएइ सीलब्बयगुण[व्यय]वेरमणपच्चकखाणपोसहोववासाइ पडिवजित्तए ॥ २५८ ॥ एव खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णते त चेव सब्ब जाव से य परक्कममाणे दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेजा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिजा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया च्चलाकल[ण]धम्मा पुणरागमणिजा पच्छा पुब्ब च ण अवस्स विप्पजहणिजा, जइ इमस्स तवनियम जाव आगमेस्साण जे इमे भवति उग्रपुत्ता महामाउया जाव पुम-त्ताए पञ्चायति तत्थ ण समणोवासए भविस्सामि-अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे फासुयएसुणिज असणपाणखाइमसाइम पडिलामेमाणे विहरिस्सामि, से त साहु । एव खलु समणाउसो ! निगथो वा निगथी वा नियाण किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोडय जाव देवलोएसु देवत्ताए उववज्जाइ जाव किं ते आसगस्स सयइ ? ॥ २५९ ॥ तस्स ण तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स जाव पडिसुणिजा ? हता ! पडिसुणिजा, से ण सद्देज्जा जाव रोएज्जा ? हता ! सद्देज्जा०, से ण सीलब्बय जाव पोसहोववासाइ पडिवज्जेज्जा ? हता ! पडिवज्जेज्जा, से ण मुडे भवित्ता [अ[आ]]गाराओ अणगारिय पब्बएज्जा ? णो इणट्टे समट्टे ॥ २६० ॥ से ण समणोवायए भवइ-अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलामेमाणे विहरइ, से ण एयाख्वेण विहारेण विहरमाणे वहूणि वासाणि समणोवासगपरियाग पाउणइ २ त्ता बहूइ भत्ताइ पञ्चकखाइ ? हता ! पञ्चकखाइ २ त्ता आवाहसि उप्पन्नसि वा अणुप्पन्नसि वा बहूइ भत्ताइ अणसणाइ छेएइ २ त्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपते कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवइ, एव खलु समणाउसो । तस्स णियाणस्स इमेयाख्वेपावफलविवागे जेण णो सच्चाएड सब्बओ सब्बत्ताए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पब्बइत्तए ॥ २६१ ॥ एव खलु समणाउसो । मए धम्मे पण्णते जाव से य परक्कममाणे दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेजा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा० असासया जाव विप्पजहणिजा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा जाव पुणरागमणिजा, जइ इमस्स तवनियम जाव वयमवि आगमेस्साण जाइ इमाइ (कुलाइ) भवति (त०)-अतकुलाणि वा पतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्रकुलाणि वा किवणकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा, एसि ण अण्णयर्यसि कुलसि पुमत्ताए एस मे आया परियाए सुणीहडे भविस्मइ, से त साहु । एवं खलु समणाउसो । निगथो वा निगथी वा नियाण किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय अप्पडिक्कते सब्ब त चेव, से ण मुडे भवित्ता अगाराओ अ[ण]ण-गारिय पब्बइज्जा ? हता ! पब्बइज्जा, से ण तेणेव भवग्राहणेण सिज्जेज्जा जाव भव्व-दुक्षपाण अत करेज्जा ? णो इणट्टे समट्टे ॥ २६२ ॥ से ण भवइ से जे अणगारा भगवतो

इरियासुमिमा भासासुमिमा जाव वेमयार्हि तेष विहारेण विहारमाये वहूँ गाम्य  
परियार्ह पत्तणाइ २ ता आवाहामि उप्पर्वाहि वा जाव मत्ताइ पचक्काएजा ॥ हंडा !  
पचक्काएजा वहूँ भत्ताइ अगसपाई देखजा ॥ हंडा ! देखजा आबेहरामित्ते  
समाधिपौत्र कालमासे खस्त किंवा अप्पवरेमु दण्डोएमु देखताए उक्कातारो मध्य  
एवं लक्षु समणारसो । तस्य वियाशस्य इमेवार्थे पादफलविकासे जे जो संवारा  
तंशेब भद्रमाहमेवं विजित्ताप जाव सम्बुक्काम्मर्तं करिताए ॥ २६३ ॥ ता  
यहु समणारसो । मए भम्मे पण्यते इत्तमेव विमाये पादवन जाव से य फहमेव,  
सम्बद्धमविरते सम्बुगविरते सम्बसंगारीते सम्बहा सम्बिलेहाहार्ते सम्ब  
वरितपरिवृहि च ॥ २६४ ॥ तस्य वं भव्यर्हतस्य बहुतरेण भानेव अमुदरेन दूष्टेव  
अमुतरेवं परिनिवाषममोर्यं अप्पार्हं मानेमाभस्य अर्थते अमुतारे निव्वावापे विर  
वरेन वस्तिने पदिपुजो केवलवरलायस्ते समुप्पमेज्जा ॥ २६५ ॥ तए वं सं सम्ब  
अरहा भवह विभे केवली सम्बन्ध् सम्बद्धैश्चर्वाक्षराए ज्ञ वहूँ  
वासाहै केवलिमरियार्हं पाठणाइ २ ता अप्पजो आठसेवं भाम्मेइ २ ता भं  
पचक्काएज्जा २ ता वहूँ भत्ताइ भणसामाहै देइ २ ता तभो पच्छा वरमेहै छायार  
नीसादेहि विज्ञाइ जाव सम्बुक्काम्मर्तं करेह एवं खक्कु समणारसो । तस्य विज्ञ  
याजस्य इमेपास्ये विवाप्त्वाविग्ने जे तुगेह भवम्यहूमेव विज्ञाइ जाव सम्बुक्काम्म  
व्यमर्तं करेह ॥ २६६ ॥ तए वं वाहे विमाया य किंवीकीओ व सम्बास्य सम्बन्धे  
महावीरस्य भविते एममद्दु दोषा निरम्म एमवं भावं महावीर वंशी भंशी  
वंशिता ममंसिता तस्य ठापस्य भास्मेवंति पदिवमेति जाव अहार्यं दावयिते  
तदोऽम्मर्यं पदिवमेति ॥ २६७ ॥ तजं काढेयं तेषं समएवं समग्रे मध्यं भावीरे  
रावगिहे नवरे शुणविळ्प उज्जानं वहूँ य समणार्हं वहूँ समणीर्व वहूँ तावद्वर्य  
वहूँ शावियार्हं वहूँ देवार्हं वहूँ देवीर्हं सदेवमछुयामुहाए परिषापे मन्मह  
एमाइक्कायर एवं भाउह एवं पद्मेव आमझार्हं यार्हं ज्ञजो । भज्जर्मर्व तदहूँ  
सहेठे सम्बर्णं द्वृतं य अर्थं व तदुमये व भुजो भुजो उद्दंसेय ॥ २६८ ॥  
ति-वैभि ॥ आयइठार्हं यार्हं वम्मा वसा समसा ॥ १० ॥

॥ दसामुपक्षद्वयमुर्त्ति समष्टि ॥

संस्कृतम्

## चउछेयसुत्ताइं समत्ताइ

॥ सप्तसिंहोगसंहा ४५०० ॥

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवथो णायपुच्चमहावीरस्स

## सुन्तागमे

चत्तारि मूलसुन्ताइं

तत्थ णं

दसवेयालियसुन्तं

दुमपुष्पिक्या णामं पढममज्जयणं

धम्मो मगल्मुक्षिद्व, अहिंसा सजमो तवो । देवा वि त नमसति, जस्स धम्मे सथा  
मणो ॥ १ ॥ जहा दुमस्स पुष्फेष्टु, भमरो आवियइ रस । न य पुष्फ किलामेइ, सो  
य पीणेइ अप्यय ॥ २ ॥ एमेए समणा मुत्ता, जे लोए सति साहुणो । विहगमा व  
पुष्फेष्टु, दाणभत्तेसणे रखा ॥ ३ ॥ वय च विर्ति लब्धामो, न य क्रोइ उवहम्मइ ।  
अहागडेष्टु रीयंते, पुष्फेष्टु भमरा जहा ॥ ४ ॥ महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणि-  
सिया । नाणापिंडरया दता, तेण बुच्छति साहुणो ॥ ५ ॥ त्ति-वेमि ॥ इति दुम-  
पुष्पिक्या णामं पढममज्जयणं समत्तं ॥ ६ ॥

अह सामणपुञ्चयं णामं दुइयमज्जयणं

कहु तु कुजा सामणं, जो कामे न निवारए । पए पए विसीयतो, सकप्सस वस  
गओ ॥ १ ॥ वत्थगवयमलकारं, इत्थीओ सयणाणि य । अच्छदा जे न भुंजति, न से  
चाइत्ति बुच्छइ ॥ २ ॥ जे य कते पिए भोए, लझे विपिट्टि-कुञ्चइ । साहीणे  
चयड भोए, से हु चाइत्ति बुच्छइ ॥ ३ ॥ समाइ पेहाइ परिव्वयतो, सिया मणो  
निस्सरडै वहिद्वा । “न सा मह नो वि अह पि तीसे”, इच्चेव ताओ विणएज राग  
॥ ४ ॥ आयावयाही चय सोगमल, कामे कमाही कमिय खु दुक्ख । छिंदाहि दोस  
विणएज राग, एवं झुही होहिसि सपराए ॥ ५ ॥ पक्खदे जलिय जोइ, धूमकेउ  
दुरासय । नेच्छति वत्यं भोक्तु, कुले जाया अगधणे ॥ ६ ॥ घिरत्थु तेऽजसोकामी,

यो तं जीविकारणा । परं हृष्टसि आकेशं सेवं ते मरणं मदे ॥ ७ ॥ यदं च  
भोगारमस्य तं वडसि अपगमाणिजो । मा कुछे गैषणा होमो संबन्धं विद्युत्ये च  
॥ ८ ॥ यदं तं वडसि भावं जा जा रिक्षति नारिमो । यावामिदेव एव  
अट्टिक्षणा मविस्तुति ॥ ९ ॥ तीसे यो बदरं सोचा देवदात् शुभामिति । अन्तेष्ठ  
जहा नायो घम्मे संपरिवाहयो ॥ १ ॥ एवं कर्तृति संकुशा पंदिता परिमत्तया ।  
रिविर्याहति मोगेषु जहा से पुरिद्वालमो ॥ ११ ॥ दिवेमि ॥ इति सामरण्यु-  
ग्यर्थं जामे त्रृत्यमज्ञयणं समर्तं ॥ २ ॥

## अहं खुशियायारकहा णामं त्रृत्यमज्ञयणं

संबन्धे शुद्धिक्षणायं विष्यमुक्ताप ताहत । तेऽसिमेयमयाइनं निम्बनां महेश्वरं  
॥ १ ॥ तेऽसिये विवरौहं विष्यतो अग्निहोत्रियि य । राहमेते विर्यते व दर्शये  
व शीर्यते ॥ २ ॥ संजिहो गिहिनते व एवयिदं किमिक्षण् । संजाहर्तो रात्र्येवं वै  
य संपुच्छर्तो वेष्टप्रवेष्टयो व ॥ ३ ॥ अकुर्वेत य नीकोए, कात्स्तसै य चरण्यर् ।  
सेपिष्ठं पाहणो पाए, स्तमारं य वेष्टणो ॥ ४ ॥ सेजावैरेपिष्ठं च जाउरेपिष्ठं  
कर्तृते । विहृतरनिसेपिष्ठं य गावस्त्रुत्यापैयि य ॥ ५ ॥ विश्विको वैर्यतिवं य  
य जातीतविष्ठियो । तावामिद्वयोर्हर्तु भावरस्तरपैयि य ॥ ६ ॥ सूर्यं विष्ठे  
य उग्मुखै विष्यतुहो । कर्तृते दूसै य सवितो वक्षं वीएं य भामए ॥ ७ ॥ तेवं  
वक्षं विष्ठे क्षेत्रे रोमाल्पेये य भामए । तीसुदे वक्ष्यतेरि य काम्पेये य भामर  
॥ ८ ॥ वृद्धेति वमर्ते व वल्लीक्ष्मम विरेयण । वंजते ईक्षते व वाम्पया  
विष्यमने ॥ ९ ॥ सम्मेयमयाइन्यं विमावाप महेश्वरं । ईवनमिम व त्रुष्ट  
अमुभ्यविहारिण ॥ १ ॥ १० ॥ पंचासुवरपरिष्याका विगुता छमु देवदा । पंचविष्यण  
पीता निमोया उग्मुखिको ॥ ११ ॥ वायावर्यति विष्ठेतु वेस्तव्यु भावरा ।  
वाक्तु विक्षुकीणा सज्जा द्वस्तमाहिया ॥ १२ ॥ परिवहरित्वरता शूलमेशा विष्ठ-  
रिया । सम्पुच्छप्रप्तीजद्वा पक्षमंति महेश्वियो ॥ १३ ॥ दुर्यो वरितर्ते तुल्य  
इष्ट सवितु व । केष्टत्वं वेष्टप्राप्तु केष्ट विज्ञति भीतवा ॥ १४ ॥ तातित तुल्य  
क्षमात्, संवेष्ट तर्तीव । विष्यिमम्ममुज्ज्ञता वाहणो वरिविनुग ॥ १५ ॥  
दिवेमि ॥ इति खुशियायारकहा णामं त्रृत्यमज्ञयणं समर्तं ॥ ३ ॥

## अह छज्जीवणिया पामं चउत्थमज्जयणं

—३५५—

सुय मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खाय, इह खलु छज्जीवणिया नामज्जयणं समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपञ्चता सेय मे अहिजिउ अज्जयण धम्मपण्णती ॥ १ ॥ कथरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्जयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपञ्चता सेय मे अहिजिउ अज्जयण धम्मपण्णती ॥ २ ॥ इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्जयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपञ्चता सेय मे अहिजिउ अज्जयण धम्मपण्णती । तजहा—पुढविकाइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, वाउ-काडया ४, वणस्सइकाइया ५, तसकाइया ६ । पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनश्वत्ता अनश्वत्य सत्थपरिणएण १ । आऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनश्वत्य सत्थपरिणएण २ । तेऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनश्वत्य सत्थपरिणएण ३ । वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनश्वत्य सत्थपरिणएण ४ । वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अनश्वत्य सत्थपरिणएण ५ । से जे पुण इसे अणेगे वहवे तसा पाणा तजहा—अडया, पोयया, जराउया, रसया, ससेइमा, समुच्छिमा, उब्बिया, उववाइया, जेसिं केसिं च पाणाण, अभिकंत, पडिक्कत, सकुचिय, पसारिय, स्त्रं, भत, तसिय, पलाइय, आगडगइविज्ञाया, जे य कीडपयगा जा य कुयुपिपीलिया, सब्बे वेइदिया, सब्बे तेइ-दिया, सब्बे चउरिंदिया सब्बे पर्चिंदिया, सब्बे तिरिक्खजोणिया, सब्बे नेरइया, सब्बे मणुया, सब्बे टेवा, सब्बे पाणा परमाहम्मिया, एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाउत्ति पवुच्चइ ६ ॥ ३ ॥ इच्चेसिं छण्ह जीवनिकायाण नेव सय दड समारंभिज्ञा, नेवज्ञेहिं दड समारभाविज्ञा, दड समारंभते वि अज्ञे न समणुजाणिज्ञा । जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंत पि अज्ञ न सम-णुजाणामि । तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ ४ ॥ पठमे भते ! महव्यए पाणाइवायाओ वेस्मण । सब्ब भते ! पाणाइवाय पच-क्खामि । से सुहुम वा, वायर वा, तस वा, थावर वा, नेव सय पाणे अइवाइज्ञा, नेवज्ञेहिं पाणे अइवायाविज्ञा, पाणे अइवायते वि अज्ञे न समणुजाणिज्ञा । जाव-ज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि

अर्थ न समझायामि । उत्तु भंते ! पदिहमामि निवामि परिहामि अप्पण  
बोहिएमि । फहमे भंते ! महम्बए उच्छियोमि सम्भासो पालाहसामामे बेरमर्ण  
॥ १ ॥ ५ ॥ अहारे दुष्टे भंते ! महम्बए मुसायायामो बेरमर्ण । अर्थ भंते !  
मुसायामे पक्षक्षामि । ऐ कोहा वा जोहा वा मवा वा हासा वा देव सर्व मुर्द  
पक्ष्या नेकज्ञेहि मुर्द वायामिज्ञा मुर्द क्षंते वि अर्थ न समझायामि । अत  
जीवाए तिशिंहि तिशिंहि भंते ! आयाए अप्पण न करेमि म अरवेमि कर्ते वि अर्थ  
न समझायामि । उत्तु भंते ! पदिहमामि निवामि गणिहामि अप्पाव बोहिएमि ।  
दुष्टे भंते ! महम्बए उच्छियोमि सम्भासो मुसायायामो बेरमर्ण ॥ २ ॥ ६ ॥  
अहारे तने भंते ! महम्बए अरिहायायामो भरमर्ण । सर्व भंते ! बीर्य  
दार्य पक्षक्षामि । ऐ गामे वा नमरे वा रम्ये वा अर्प्य वा बहु वा अर्थ  
वा अर्द वा निरमर्त वा अनिरमर्त वा नेव सर्व अरिहि यिहिज्ञा नेकज्ञेहि  
अरिहि यिहिज्ञा अरिहि यिहिते वि अर्थ न समझायामि । असजीवाए  
तिशिंहि तिशिंहि भंते ! आयाए अप्पण न करेमि कर्ते वि अर्थ न  
समझायामि । उत्तु भंते ! पदिहमामि निवामि गणिहामि अप्पाव बोहिएमि ।  
तने भंते ! महम्बए उच्छियोमि सम्भासो अरिहायायामो बेरमर्ण ॥ ३ ॥ ७ ॥  
अहारे फउत्ये भंते ! महम्बए भेदुलामो बेरमर्ण । सर्व भंते ! देवर्य  
पक्षक्षामि । ऐ दिव्यं वा मालुर्द वा दिरिष्वज्ञोमिवं वा नेव सर्व देवर्य  
सेमिज्ञा नेकज्ञेहि भेदुने सेवायिज्ञा भेदुर्द उर्दते वि अर्थ न समझायामि ।  
असजीवाए तिशिंहि तिशिंहि भंते ! आयाए अप्पण न करेमि म अरवेमि कर्ते वि  
अर्थ न समझायामि । उत्तु भंते ! पदिहमामि निवामि गणिहामि अप्पाव बोहि-  
रामि । अठत्ये भंते ! महम्बए उच्छियोमि उभासो गेतुलामो बेरमर्ण ॥ ४ ॥ ८ ॥  
अहारे फैचमे भंते ! महम्बए परिगाहामो बेरमर्ण । सर्व भंते ! परिम्ब  
पक्षक्षामि । ऐ अर्प्य वा बहु वा अनु वा अर्द वा निरमर्त वा अनिरमर्त  
वा नेव सर्व परिम्बावं परिगिहिज्ञा नेकज्ञेहि परिम्बावं परिमिहायामि । दीर्घ्य  
परिमिज्ञते वि अर्थ न समझायामि । असजीवाए तिशिंहि तिशिंहि भंते  
वायाए अप्पण न करेमि म कारवेमि कर्ते वि अर्थ न समझायामि । उत्तु  
भंते ! पदिहमामि निवामि गणिहामि अप्पाव बोहिएमि । फैचमे भंते ! महम्बए  
उच्छियोमि सम्भासो परिगाहामो बेरमर्ण ॥ ५ ॥ ९ ॥ अहारे ठडे धरे ! अर्थ  
राइमोमगामो बेरमर्ण । सर्व भंते ! राइमोमर्य पक्षक्षामि । ऐ अर्थ वा अर्थ  
वा लाइमे वा साइमे वा नेव सर्व राइ भुविज्ञा नेकज्ञेहि राइ मुगायिज्ञा दीर्घ्य

भुजते वि अद्ये न समणुजाणिजा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि । छट्टे भते ! वए उवट्टिओमि सब्बाओ राइभोयणाओ वेरमण ॥ ६ ॥ १० ॥ इच्चेयाइ पच महब्बयाइ राइभोयण-वेरमणछट्टाइ अत्तहियद्युयाए उवसपजिताण विहरामि ॥ ११ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपाचकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागराओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से पुढविं वा, भित्ति वा, सिल वा, लेलु वा, ससरक्ख वा काय, ससरक्ख वा वत्यं, हृत्थेण वा, पाएण वा, कट्टेण वा, किलिचेण वा, अगुलियाए वा, सलागाए वा, सलागहृत्थेण वा, न आलिहिजा, न विलिहिजा, न घट्टिजा, न भिदिजा, अन्न न आलिहाविजा, न विलिहाविजा, न घट्टाविजा, न भिदाविजा, अन्न आलिहत वा, विलिहत वा, घट्टत वा, भिंदत वा, न समणुजाणिजा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥ १२ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपाचकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागराओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदग वा, ओस वा, हिम वा, महिय वा, करग वा, हरितणुग वा, सुद्धोदग वा, उदउल्ल वा काय, उदउल्ल वा वत्यं, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्यं, न आमुसिजा, न सफुसिजा, न आवीलिजा, न पवीलिजा, न अक्खोडिजा, न पक्खोडिजा, न आयाविजा, न पयाविजा, अन्न न आमुसाविजा, न सफुसाविजा, न आवीलाविजा, न पवीलाविजा, न अक्खो-डाविजा, न पक्खोडाविजा, न आयाविजा, न पयाविजा, अन्न आमुसत वा, सफुसत वा, आवीलत वा, पवीलत वा, अक्खोडत वा, पक्खोडंत वा, आयावत वा, पयावत वा, न समणुजाणिजा । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ २ ॥ १३ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपाचकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागराओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से अगणि वा, इगाल वा, सुम्मुर वा, अच्चि वा, जाल वा, अलाय वा, सुद्धागणि वा, उक्क वा, न उजिजा, न घट्टिजा, न भिदिजा, न उजालिजा, न पजालिजा, न निब्बाविजा, अन्न न उजाविजा, न घट्टाविजा, न भिदाविजा, न उजालाविजा, न पजालाविजा, न निब्बाविजा,

अर्थं उर्जर्णं वा घट्टं वा भिर्जं वा उज्जाम्बर्णं वा पञ्चाम्बर्णं वा निष्पाम्बर्णं वा  
न समखुजामित्या । याक्षीवाए तितिर्हेण मयेन वावाए घट्टर्णं न करेमि  
न कारबेमि करते पि अस्म न समखुजामामि । तस्म मंते । पदिक्षमामि निदामि  
गरिहामि अप्पाण बोसिरामि ॥ २ ॥ १४ ॥ से मित्रव वा मित्रखूषी वा  
संबद्धविरयपदित्यपत्त्वामपावङ्गम्भे दित्या वा राष्ट्रो वा एग्रो वा परिसाम्भो  
वा छुते वा यागरमाने वा से तित्या वा तित्युभये वा तालिम्भित्य वा परेण  
वा पतमनित वा याहाए वा साहामोग्य वा तित्युषेय वा पितुजात्येष वा  
चेसेत वा चेस्त्वाम्भेत वा इत्येष वा मुहेष वा अप्पलो वा काव वाहिर वामि  
पुनाम्भं न पूमिष्य न वीह्या अर्थं न पूमामित्या न वीमामित्या अर्थं पूमर्ण  
वा वीमर्णं वा न समखुजामित्या । याक्षीवाए तितिर्हेण मयेन वावाए  
घट्टर्णं न करेमि न कारबेमि करते पि अर्थं न समखुजामामि । तस्म मंते  
पदिक्षमामि निदामि गरिहामि अप्पाण बोसिरामि ॥ ४ ॥ १५ ॥ से मित्रव  
वा मित्रखूषी वा संबद्धविरयपदित्यपत्त्वामपावङ्गम्भे दित्या वा राष्ट्रो वा  
एग्रो वा परिसाम्भो वा छुते वा यागरमाने वा से वीष्टु वा वीवय्येत वा  
हेषु वा रुद्राद्वेषु वा याष्टु वा यावय्येषु वा इतिष्ठु वा इतिक्षेषु  
वा डिष्टेषु वा डित्यपद्वेषु वा समित्तलोक्यादित्यसिद्धेषु वा ॥  
गरिह्या न विद्वित्या न निर्दीह्या न तुमहित्या अर्थं न गम्भमित्या न  
विद्वमित्या न निर्दीवमित्या न तुमधमित्या अर्थं पञ्चर्ण वा विद्वां वा निर्दीर्ण  
वा तुवर्णर्ण वा न समखुजामित्या । याक्षीवाए तितिर्हेण मयेन वावाए वार्त्ते  
न करेमि न घट्टर्णेमि करते पि अर्थं न समखुजामामि । तस्म मंते । पदिक्षमामि  
निदामि गरिहामि अप्पाण बोसिरामि ॥ ५ ॥ १६ ॥ से मित्रव वा मित्रखूषी वा  
संबद्धविरयपदित्यपत्त्वामपावङ्गम्भे दित्या वा राष्ट्रो वा एग्रो वा परिसाम्भो  
वा छुते वा यागरमाने वा से वीर्ण वा पर्यंती वा दुर्मुख वा तिपीक्षित वा  
इर्णसि वा पार्वति वा चार्दुसि वा उर्द्दसि वा उद्दरसि वा चीससि वा दत्तसि  
वा पदिम्यहसि वा खंससि वा पादपुरुषसि वा रमहर्णसि वा शुद्धसि  
वा उद्गुर्णसि वा दैर्णसि वा वीक्षसि वा ऋक्षसि वा सेवसि वा उच्चारसि वा  
अद्वमरसि वा तद्वप्यगारे उवयरक्षाए तत्प्रे संज्ञामेव पदिक्षेत्र विक्षेत्र  
फमविष्य फमविष्य एगंतमममित्या जो यं सुवावमावमित्या ॥ ६ ॥ १० ॥  
अज्ञये वरमानो (व) उ पादमूर्याह दित्य । वैतद पादम चम्भे ते से होते अज्ञये अ-

॥ १ ॥ अजय चिद्वमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ । बधइ पावय कम्म, त से होइ कहुय फल ॥ २ ॥ अजयं आसमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ । बधइ पावय कम्म, त से होइ कहुय फल ॥ ३ ॥ अजय सयमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ । बधइ पावय कम्म, त से होइ कहुय फल ॥ ४ ॥ अजयं भुजमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ । बधइ पावय कम्म, त से होइ कहुय फल ॥ ५ ॥ अजयं भासमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसइ । बधइ पावय कम्म, त से होइ कहुय फल ॥ ६ ॥ कह चरे ? कह चिढे ?, कहमासे ? कह सए ? । कह भुजतो भासतो, पावकम्म न बधइ ? ॥ ७ ॥ जय चरे जय चिढे, जयमासे जय सए । जय भुंजतो भासतो, पावकम्म न बधइ ॥ ८ ॥ सब्बभूयप्पभूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ । पिहियासवस्स दत्स्स, पावकम्म न बधइ ॥ ९ ॥ पठम नाण तओ दया, एव चिद्वइ सब्बसजए । अन्नाणी किं काही ?, कि वा नाहिइ सेयपावग ? ॥ १० ॥ सोचा जाणइ कलाण, सोचा जाणइ पावग । उभय पि जाणइ सोचा, ज सेय त समायरे ॥ ११ ॥ जो जीवे वि न याणेइ, अजीवे वि न याणइ । जीवाजीवे अयाणतो, कह सो नाहिइ सजम ? ॥ १२ ॥ जो जीवे वि वियाणेइ, अजीवे वि वियाणइ । जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहिइ सजम ॥ १३ ॥ जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ । तया गईं वहुविह, सब्ब-जीवाण जाणइ ॥ १४ ॥ जया गइ वहुविह, सब्बजीवाण जाणइ । तया पुण्ण च पाव च, बध मुक्ख च जाणइ ॥ १५ ॥ जया पुण्ण च पाव च, बध मुक्ख च जाणइ । तया निविंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥ जया निविंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे । तया चयड सजोग, सविभतरवाहिर ॥ १७ ॥ जया चयइ सजोग, सविभतरवाहिर । तया मुडे भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय ॥ १८ ॥ जया मुडे भवित्ताण, पव्वइए अणगारिय । तया सवरमुक्किछु, धम्म फासे अणुत्तर ॥ १९ ॥ जया सवरमुक्किछु, धम्म फासे अणुत्तर । तया धुणइ कम्मरय, अवोहि-कलुस कड ॥ २० ॥ जया धुणइ कम्मरय, अवोहिकलुस कड । तया सब्बत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥ जया सब्बत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ । तया लोगमलोग च, जिणो जाणड केवली ॥ २२ ॥ जया लोगमलोग च, जिणो जाणड केवली । तया जोगे निरुभिता, सेलेसि पडिवज्जइ ॥ २३ ॥ जया जोगे निरुभिता, सेलेसि पडिवज्जइ । तया कम्म खवित्ताण, सिद्धि गच्छड नीरओ ॥ २४ ॥ जया कम्म खवित्ताण, सिद्धि गच्छइ नीरओ । तया लोगमत्ययत्यो, सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥ सुहसायगस्स भमणस्स, मायाउलगस्स निगामसाइस्स । उच्छ्वोलणापहोयस्स, दुलहा चुगइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥ तवोगुणपहाणस्स, उज्जु-

मह-वैतिसोधमरमस्य । परीक्षाहे विषयात्त्वं द्वच्छाद्य तारिक्षगस्य ॥ १० ॥  
पाणि वि से क्षावा विष्वं गव्यं अमरमवगार्ह । वैति विजो तबो संज्ञो व  
चंती व चंमवेर च ॥ २८ ॥ श्वेतं छमीविनं सम्मतिं द्वया वद । दुर्घं  
श्रीहृष्टु द्वामर्थं क्षमुणा न विराहित्वाति ॥ २९ ॥ ति-वेमि ॥ इति छमी-  
विषया णामं चतुरथमज्ञायणं समर्तं ॥ ४ ॥

## अहं पिंडेसणा णामं पञ्चममज्ञायणं

### पठमो उद्देशो

संपत्ते भिक्ष्यमासमिम असंभवो असुचिलो । इमेय कल्पवेत्य मात्रात्मं पर्य-  
सए ॥ १ ॥ से गामे वा मगरे वा षोडशगग्नो मुण्डी । चरे मैदम्बुधिमयं अ  
विद्योत्त वेयता ॥ २ ॥ पुरबो द्वुपमायाए, पेहमालो महि चरे । वज्रो चौवरी  
याई, पाणे य इग्नात्मिं प ३ ॥ अवेषाये विसमं रात्मं किञ्चं परिवद्वय । द्वामर्थ  
म गव्यिक्षा विज्ञागे परक्षमे ॥ ४ ॥ पक्षाते व से तत्त्वं पक्षमंते व संवर ।  
हिसेज पाण्यभूतह, तसे अतुल यावरे ॥ ५ ॥ प तम्हा तेष्व न गन्धिक्षा संशयं द्वय-  
मादिए । सद वज्रेण ममोय अवमेव परद्वये ॥ ६ ॥ इपामं अरिये राति दुस्पामि  
व गोमवं । उपरक्षेति पापहि, संज्ञो ती भद्रमे ॥ ७ ॥ न चरेज कारे व चर्दे,  
महियाए व पद्धतिए । नहावाए व वावति विरिष्वस्तपाइमेतु वा ॥ ८ ॥ न चरेज  
वेष्वसामेते वंमवेरवसामुए । वंमावरिस्त वंतस्त द्वोजा तत्वं विमोतिवा ॥ ९ ॥  
अथाये चरतस्त संसगीए अमिन्दर्थ । द्वोज वयात्मं पीत्य सामन्द्रमिम व  
सस्नो ॥ १ ॥ ए रम्हा एवं विकायिता दोई दुमाश्वर्हृं । वद्वय ऐमामीं मुण्डी  
पर्मतमरिस्तए ॥ ११ ॥ सार्थं सूक्ष्यं गावि वित्तं गोवं हृं गदे । संकिळ्मं इर्मं तुर्वं  
पूरबो परिवद्वय ॥ १२ ॥ अतुलए मावद्वय, अप्यद्विद्वे अवाउणे । इरिवर्दं वहं  
माणं दमदता सुणी चरे ॥ १३ ॥ दवददल्प न गच्छेज्ञा भासमायो व पोनरे ।  
इर्तेयो नामिगच्छेज्ञा दुर्मं उवावद्वय सवा ॥ १४ ॥ आलोये विमालं राठं तुर्वं  
द्वयभव्यामिय । चरेत्यो न विविक्षाए, संरद्वार्थं विवद्वय ॥ १५ ॥ रवो विवर्दं  
व रहस्यारक्षियायि व । संरिसेनवरै द्वार्थं दुर्वये परिवद्वय ॥ १६ ॥ वहि  
कुठार्हृं न परिदे मामां परिवद्वय । अवियाकुम्हं न परिदे वियत वहि दुर्वं  
॥ १७ ॥ शास्त्रीयावारपिद्वयं अप्यवा मावद्वयुरे । वदाए वो एतिवा उर्मं

|    |                             |     |   |    |    |   |
|----|-----------------------------|-----|---|----|----|---|
| २८ | पहले देवलोक की देवी सं० गु० | २   | ४ | ११ | ८  | २ |
| २९ | सुवनपति देव श्रस्ता०        | ३   | ४ | १० | ८  | ४ |
| ३० | “ देवी संख्या० ”            | २   | ४ | ११ | ८  | ४ |
| ३१ | पहली नरक के नैरिया श्रस्ता० | ३   | ४ | ११ | ८  | १ |
| ३२ | खेचर पुरुष श्रस्ता०         | ”   | २ | ५  | १३ | ८ |
| ३३ | “ खी संख्या० ”              | २   | ५ | १३ | ८  | ८ |
| ३४ | थलचर पुरुष                  | ”   | २ | ५  | १३ | ८ |
| ३५ | “ खी ”                      | २   | ५ | १३ | ८  | ८ |
| ३६ | जलचर पुरुष ”                | २   | ५ | १३ | ८  | ८ |
| ३७ | “ खी ”                      | २   | ५ | १३ | ८  | ८ |
| ३८ | व्यंतर देव ”                | ३   | ४ | ११ | ८  | ४ |
| ३९ | व्यंतर देवी संख्या गु०      | २   | ४ | ११ | ८  | ४ |
| ४० | ज्योतिषी—देव ”              | २   | ४ | ११ | ८  | १ |
| ४१ | “ देवी ”                    | २   | ४ | ११ | ८  | १ |
| ४२ | खेचर नपुंसक ”               | २१४ | ५ | १३ | ८  | ८ |
| ४३ | थलचर ”                      | २१४ | ५ | १३ | ८  | ८ |

अजाइया ॥ १८ ॥ गोयरगपविद्वो य, वच्चमुत्त न वारए। ओगास फासुय नच्चा,  
अणुज्जविय वोसिरे ॥ १९ ॥ नीय दुवार तमस, कुद्धगं परिवज्ञए। अच्चक्खुविसओ  
जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २० ॥ जत्थ पुफाइ बीयाइ, विप्पइण्णाड कोद्धए।  
अहुणोवलित्त उहं, दद्धूण परिवज्ञए ॥ २१ ॥ एलग दारग साण, वच्छ्या वावि कोद्धए।  
उल्लधिया न पविसे, विउहित्ताण व सज्जए ॥ २२ ॥ अससन्त पलोइजा, नाइद्दूराव-  
लोयए। उप्पुळ न विणिज्ज्ञाए, नियट्टिज अयपिरो ॥ २३ ॥ अइभूमि न गच्छेजा,  
गोयरगगल्लो मुणी। कुलस्स भूमि जाणित्ता, मिय भूमि परखमे ॥ २४ ॥ तत्थेव  
पडिलेहिजा, भूमिभाग वियक्खणो। सिणाणस्स य वच्चस्स, सलोग परिवज्ञए ॥ २५ ॥  
दगमट्टियआयाणे, बीयाणि हरियाणि य। परिवज्ञतो चिढ्हिजा, सञ्चिदियसमाहिए  
॥ २६ ॥ तत्थ से चिढ्हमाणस्स, आहरे पाणभोयण। अकपिय न गिणिहिजा, पडिगा-  
हिज कपिय ॥ २७ ॥ आहरंती सिया तत्थ, परिसाहिज भोयण। दिंतिय पडिया-  
इक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ २८ ॥ समद्दमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि  
य। असजमकर्त नच्चा, तारिसि परिवज्ञए ॥ २९ ॥ साहद्दु निक्खवित्ताण, सञ्चित्त  
घट्टियाणि य। तहेव समणद्वाए, उदग सपणुळिया ॥ ३० ॥ ओगाहइत्ता चलइत्ता,  
आहरे पाणभोयण। दिंतिय पडिया-इक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ ३१ ॥ पुरेक-  
म्मेण हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा। दिंतिय पडिया-इक्खे, “न मे कप्पइ तारिस”  
॥ ३२ ॥ एव उदउले ससिणिद्दे, ससरक्खे मट्टिया ऊसे। हरियाले हिंगुलए, मणो-  
सिला अजो लोणे ॥ ३३ ॥ गेह्य वण्णिय सेहिय, सोरट्टिय पिठु कुकुम काए य।  
उक्किट्टमसस्टे, ससट्टे चेव वोद्धन्वे ॥ ३४ ॥ अससट्टेण हत्थेण, दब्बीए भायणेण  
वा। दिजमाण न इच्छिजा, पच्छाकम्म जर्हिं भवे ॥ ३५ ॥ ससट्टेण य हत्थेण,  
दब्बीए भायणेण वा। दिजमाण पडिच्छिजा, ज तत्थेमणिय भवे ॥ ३६ ॥ दुण्ह  
तु भुजमाणाण, एगो तत्थ निमंतए। दिजमाण न इच्छिजा, छठ से पडिलेहए  
॥ ३७ ॥ दुण्ह तु भुजमाणाण, दो वि तत्थ निमतए। दिजमाण पडिच्छिजा, ज  
तत्थेसणिय भवे ॥ ३८ ॥ गुञ्चिपीए उवज्ञत्थ, विविह पाणभोयण। भुजमाण विष-  
जिजा, मुत्तसेस पडिच्छए ॥ ३९ ॥ सिया य समणद्वाए, गुञ्चिपी कालमासिणी।  
उट्टिया वा निसीइजा, निसबा वा पुण्ड्डए ॥ ४० ॥ त भवे भत्तपाण तु, सजयाण  
अकपिय। दिंतिय पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ ४१ ॥ थणग पिज्ज-  
माणी, दारग वा कुमारिय। त निक्खवित्तु रोअत, आहरे पाणभोयण ॥ ४२ ॥  
त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकपिय। दिंतिय पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस”  
॥ ४३ ॥ जं : । भत्तपाण तु, कप्पाकप्पम्म सकिय। दिंतिय पडियाइक्खे “न मे

कप्पद तारिसं ॥ ४४ ॥ दगडारेज पिहिवे नीमाए पीडएज वा । ल्लोव चारि  
सेवेण सिल्लेण व लेवह ॥ ४५ ॥ तं च रिंसिरिवा रिजा समजद्वाए व हत्तु ।  
रितिय यदिवाइक्षे न मे कप्पद तारिसं ॥ ४६ ॥ असर्वं पाल्पर्व वावि वाहर्व  
धाइर्व तहा । चं जाकिज्ज मुकिज्जा वा “दालद्वा पाई इम्” ॥ ४७ ॥ तं मवे मान-  
पार्वं तु, संज्ञाव अक्षयिये । दितिय पडियाइक्षे “न मे कप्पद तारिसं” ॥ ४८ ॥  
असर्वं पाल्पर्व वावि याइम साइर्व तहा । चं जाकिज्ज मुकिज्जा वा “उल्लद्वा पाई  
इम्” ॥ ४९ ॥ तं मवे मानपार्वं तु, संज्ञाव अक्षयिये । रितिय पडियाइक्षे “न  
मे कप्पद तारिसं” ॥ ५० ॥ असर्वं पाल्पर्व वावि याइर्व साक्षं तहा । चं जाकिज्ज  
मुकिज्जा वा “बैकिमद्वा पाई इम्” ॥ ५१ ॥ तं मवे मानपार्वं तु, संज्ञाव अक्ष-  
यिये । दितिय पडियाइक्षे “न मे कप्पद तारिसं” ॥ ५२ ॥ असर्वं पाल्पर्व वा-  
वि याइर्व साइर्व तहा । चं जाकिज्ज मुकिज्जा वा समजद्वा पाई इम्” ॥ ५३ ॥  
तं मवे मानपार्वं तु, संज्ञाव अक्षयिये । रितिये पडियाइक्षे “न मे कप्पद  
तारिसं” ॥ ५४ ॥ उद्देश्ये वैवयड शुक्रम्य च आहूः । अज्ञोमर पाल्पर्व वीर्य  
जाय विक्षणे ॥ ५५ ॥ उमामे से य पुरुषज्जा वस्तद्वा कैय वा कहे । तद्या  
निस्त्रिय मुर्द परिगाहिज्ज संज्ञए ॥ ५६ ॥ असर्वं पाल्पर्व वावि याइर्व तारिसं  
तहा । उपक्षेय कुञ्ज उम्मीर्व बीम्पु हरिएयु वा ॥ ५७ ॥ तं मवे मानपार्वं तु  
संज्ञाव अक्षयिये । दितिये पडियाइक्षे “न मे कप्पद तारिसं” ॥ ५८ ॥ असर्वं  
पाल्पर्व वावि याइर्व मानपार्व तहा । उद्देश्ये कुञ्ज निस्त्रिये उत्तियाण्येत्तु वा ॥ ५९ ॥  
तं मवे मानपार्वं तु, संज्ञाव अक्षयिये । रितिये पडियाइक्षे “न मे कप्पद तारिसं”  
॥ ६० ॥ असर्वं पाल्पर्व वावि याइर्व मानपार्व तहा । अग्निभिर्व होज्ज भिसाद्य तं  
च मधिक्षिका दृष्टे ॥ ६१ ॥ तं भय मानपार्वं तु संज्ञाव अक्षयिये । रितिये वीर्य-  
जायक्षे “न मे कप्पद तारिसं” ॥ ६२ ॥ एवं उस्त्रिया ज्ञेयादिज्जा उत्तरीय  
पञ्चादिया निष्वायिका । उम्मिदिया निस्त्रिया दम्भिया ओवारिया दृष्टे ॥ ६३ ॥  
तं भय मानपार्वं तु संज्ञाव अक्षयिये । रितिये उटियाइक्षे व वै कृप्य  
तारिसं” ॥ ६४ ॥ कुञ्ज कृष्ण विसे कावि शराळे कावि शृणु । दीर्घे उल्लद्वा  
तं च कुञ्ज वसाचम ॥ ६५ ॥ न तण मिस्त्रू गाँठिया दिद्वातार अभिग्नदौ ।  
गम्मीर्व हुमिर्व चर मधिरियम्पादिए ॥ ६६ ॥ निस्त्रिये पत्त्वे दीर्घे उल्लद्वा  
श्वागह । मध्य दीन व पाल्पर्व समजद्वाए व दाक्षर ॥ ६७ ॥ तुरदम्भी राहित  
हाये पाये व द्वाप । पुरुषज्जे वि दिमज्जा वै व तं निस्त्रिया ज्ञा ॥ ६८ ॥  
दक्षारिम्भ सहायेसे जाविक्षण मद्देहिज्जा । तम्भा मानहाई निरन्व व वैनिर्व ॥

सजया ॥ ६९ ॥ कंद मूर्ल पलंबं वा, आम छिन्न च सञ्जिर । तुंबाग सिंगवेरं च,  
आमग परिवज्जए ॥ ७० ॥ तहेव सत्तुचुण्णाइ, कोलचुण्णाइ आवणे । सकुलिं फाणिय  
पूय, अज्ज वावि तहाविह ॥ ७१ ॥ विकायमाण पसड, रएण परिफासियं । दिंतिय  
पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ ७२ ॥ बहुअट्टिअ पुगल, अणमिस वा  
घहुकट्य । अतिथ्यै तिंदुय विल, उच्छुखड व सिंबलि ॥ ७३ ॥ अप्पे सिया भोय-  
णजाए, बहुउज्ज्ञयधम्मिए । दिंतिय पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ ७४ ॥  
तहेवुच्चावय पाणं, अदुवा वारधोयण । ससेइम चाउलोदग, अहुणाधोय विवज्जए  
॥ ७५ ॥ जं जाणेज्ज चिराधोय, मईए दसणेण वा । पडिपुच्छुण सुच्चा वा, ज  
च निससुकिय भवे ॥ ७६ ॥ अजीव परिणय नच्चा, पडिगाहिज सजए । अह सकिय  
भविज्जा, आसाइत्ताण रोयए ॥ ७७ ॥ “थोवमासायणद्वाए, हत्थगम्मि दलाहि मे ।  
मा मे अच्चबिल पूय, नालं तिष्ठ विणित्ताए” ॥ ७८ ॥ त च अच्चबिल पूय, नाल  
तिष्ठ विणित्ताए । दिंतिय पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ ७९ ॥ तु च हुज्ज  
अकामेण, विमणेण पडिच्छय । त अप्पणा न पिबे, नो वि अज्जस्स दावए ॥ ८० ॥  
एगतमवक्षमित्ता, अचित्त पडिलेहिया । जय परिद्विज्जा, परिद्वप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥  
सिया य गोयरगगओ, इच्छुज्जा परिसुत्तुय । कुद्गग भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण  
फासुय ॥ ८२ ॥ अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि सत्तुडे । हत्थग सपमजित्ता,  
तत्थ भुजिज्ज सजए ॥ ८३ ॥ तत्थ से भुजमाणस्स, अट्टिअ कट्टओ सिया । तणक्क-  
डुसक्कर वावि, अज्ज वावि तहाविह ॥ ८४ ॥ त उक्खिवित्तु न निक्खिवचे, आस-  
एण न छड्हए । हथेण त गहेझण, एगतमवक्कमे ॥ ८५ ॥ एगतमवक्षमित्ता, अचित्त  
पडिलेहिया । जय परिद्विज्जा, परिद्वप्प पडिक्कमे ॥ ८६ ॥ सिया य भिक्खू इच्छुज्जा,  
सिजमागम्म भुत्तुय । सपिंडपायमागम्म, उहुय पडिलेहिया ॥ ८७ ॥ विणएण  
पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी । इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥ ८८ ॥  
आभोइत्ताण नीसेस, अइमार जहक्कम । गमणागमणे चेव, भत्तपाणे व सजए ॥ ८९ ॥  
उज्जुप्पन्नो अणुव्विगगो, अव्वविक्ततेण चेयना । आलोए गुरुसगासे, ज जहा गहिय

१ वहुअट्टिअ=वहुगट्टिय-गट्टिया ‘गुठली’ ति भासाए, वहुईओ गट्टियाओ ठियाओ  
जम्मि त व०, गकारयकारलोबो, एव वहुअट्टिअस्स निपक्ती । वहुवीयग ति अट्टो । अहवा  
वहुअट्टिअ=वहुअ+ट्टिअ-वहुयाइ वीयाइ ठियाइ जसि त तारिस फल । २ पुगल=प+  
दगल-पगरिसेण उगलणारिह-पक्खेवणजुगग विज्जए जसि त तारिस फलविसेस ।  
३ अणमिस ति वा अणणास ति वा एगद्वा । ४ पणसफलाइय । ५ अगत्थियस्सक्खम्भल,  
अगत्थियस्सज्जाहारो अत्थिय । ६ सिद्धी जहा हेह्ता, नवर लिंगभेबो पाडयत्तणओ ।

भवि ॥ १ ॥ न सम्ममाभेदये तुजा पुर्णि पक्षम व ज्वर्ण । पुर्णो पक्षिद्वामे तस्य  
षोडश्चो वित्तए इमं ॥ ११ ॥ जहो विषेहित्साक्षा वित्ती साहूप्य रेतिना । मुख्य-  
साहृण्डेवस्य तातुत्तेहस्य वारत्ता ॥ १२ ॥ गमुद्धारेष्य पारिता करिता विक्षेप्ते ।  
उज्ज्वार्य पद्मवित्ताम वीसमेव दर्शनं मुष्टी ॥ १३ ॥ वीसमेवो इमं वित्ते हित्तम्  
साम्मद्वित्तो । अह मे अगुमाहं तुजा ताह तुजामि तारितो ॥ १४ ॥ प्र साहो ये  
विषेण विस्तित्त वाहम । अह तत्त्व वेद हित्तमि तहित्त रद्धित्त मुन्द्रए ॥ १५ ॥  
अह क्षेत्र न हित्तमा तथो भुजिय एवात्तो । आत्त्वेए मात्त्वले ताह, वर्ण वर्ण-  
सादियं ॥ १६ ॥ वित्तण व उत्तर्य व रसार्थं वीषिय व महुर अवर्णं वा । एवत्त्वं  
मध्यत्त्वपत्तं महुष्यं व मुक्तित्त एव ॥ १७ ॥ अर्द्धे विरस वावि त्तुर्वं वा  
अद्युर्वं । तहो वा वद वा त्तद्वं मंजुष्मामास्मोद्वं ॥ १८ ॥ उप्त्वो लालीत्तिना  
अप्य वा वदु व्युत्तव । मुहाम्बद्व मुहावीवी भुजिया दोसवित्तिर्व ॥ १९ ॥ तुजा  
त मुहावाह, मुहावीवी वित्तुत्ता । मुहावाह मुहावीवी दो वि वाक्षी द्वित्तर्व  
॥ १ ॥ विवेत्ति ॥ इसि विदेसणाए पहमो लदेसो समत्तो ॥ ५-२ ॥

### अह पिंडेसणाए वीओ उदेसो

पदित्ताह चक्षिहित्तार्थे वेदमायाह संवर्प । तुर्णवं वा द्वित्तवं वा एवं मुन्द्रं व  
उत्ताए ॥ १ ॥ सेजा निर्विहित्ताए, समावद्वो व गोमर । अवावद्वा मुहावं व  
दुणी न देपरे ॥ २ ॥ त्तमो व्यरप्तसमुप्त्वे गतपाणी वकेव । विहित्ता पुक्तवत्तेर्व  
इत्तेणी उत्तरेष्य व ॥ ३ ॥ व्यसेव विक्षमे विक्षव, व्यसेव व पदित्तये । व्यसेवं  
व विवित्ता वाढे व्यस्त व्यस्तवरे ॥ ४ ॥ “व्यस्ते व्यरुति विक्षव, व्यस्त व  
पदित्तवसि । अप्यार्थं व विजामेति विवित्तेष्य व मरित्तसि” ॥ ५ ॥ सह वाक्षे वे  
विक्षव, तुजा पुरिसव्यरिव । अक्षमोऽसि व तोद्वा “तो” वि विवास्त  
॥ ६ ॥ तहेत्तुत्तावद्वा पाणा भत्तद्वाए समागया । तै उत्तर्य व वरित्ताव व्यवेत्त  
परक्षमे ॥ ७ ॥ गोक्षरपत्तिष्ठो व म निर्विहित्त व्यस्त । वहं व व विवित्त,  
विद्वित्ताय व संवर्प ॥ ८ ॥ अगम्ब विहित्त वार व्याहं वावि संवर्प । व्यसेवित्ता  
व विद्वित्ता वावरमागम्बो मुष्टी ॥ ९ ॥ समर्ण माहर्वं वावि विवित्त व वर्णवर्ण ।  
व्यवेत्तमेत्त मत्तद्वा पाक्ष्याए व संवर्प ॥ १ ॥ तै अवहमित्त व विवेत्त व विवेत्त  
व्यवहुत्तोवरे । एवाम्बमाहमित्ता तत्त्व विद्वित्त व संवर्प ॥ ११ ॥ वर्णवित्तल वा  
ठस्म वामगस्युमयस्त्वा । अप्यवित्त विया तुजा व्यवहुत्तं व्यवदत्त्वा ॥ १२ ॥

पदिसेहिए व दिजे वा, तबो तम्मि नियत्तिए । उवसकमिज भत्तट्टा, पाणट्टाए व सजए ॥ १३ ॥ उप्पल पउम वावि, कुमुय वा मगदतिय । अनं वा पुण्फसच्चित्त, त च सलुचिया दए ॥ १४ ॥ तं भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकपिय । दितिय पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ १५ ॥ उप्पलं पउम वावि, कुमुय वा मगदतिय । अब वा पुण्फसच्चित्त, त च समदिया दए ॥ १६ ॥ त भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकपिय । दितिय पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ १७ ॥ सालुयं वा विरालिय, कुमुय उप्पलनालिय । मुणालिय सासवनालिय, उच्छुखड अनिव्युड ॥ १८ ॥ तरुणग वा पवाल, रुक्खस्त तणगस्स वा । अन्नस्स वावि हरियस्स, आमग परिवज्जए ॥ १९ ॥ तरुणिय वा छिवाडिं, आमिय भजिय सइ । दितिय पडियाइक्खे, “न मे कप्पइ तारिस” ॥ २० ॥ तहा कोलमणुस्सिन, वेलुय कासवनालिय । तिलपप्पडग नीम, आमग परिवज्जए ॥ २१ ॥ तहेव चाउल पिढ्ह, वियड वा तत्तनिव्युड । तिलपिढ्हपूङ्गिण्णाग, आमग परिवज्जए ॥ २२ ॥ कविहृ माउलिंग च, मूलां मूलगत्तिय । आम असत्थपरिणय, मणसा वि न पत्थए ॥ २३ ॥ तहेव फलमथूणि, बीयमथूणि जाणिया । विहेलग पियाल च, आमर्गं परिवज्जए ॥ २४ ॥ समुयाण चरे भिक्खु, कुल उच्चावय सया । नीय कुलमझ-कम्म, ऊसठ नामिधारए ॥ २५ ॥ अदीणो वित्तिमेसिज्जा, न विसीएज पडिए । अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायज्जे एसणारए ॥ २६ ॥ वहु परघरे अत्थि, विविहृ खाइमसाइम । न तत्थ पडिओ कुप्पे, इच्छा दिज परो न वा ॥ २७ ॥ सयणा-सणवत्थ वा, भत्त पाण च सजए । अर्दितस्स न कुपिज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ॥ २८ ॥ इतिय पुरिस वावि, डहरं वा महङ्ग । वदमाण न जाइज्जा, नो य ण फर्स वए ॥ २९ ॥ जे न वडे न से कुप्पे, वदिओ न समुक्से । एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिढ्हइ ॥ ३० ॥ सिया एगइओ लहु, लोभेण विणिगृहड । “मामेय दाइय सत, दट्टूण सयमायए” ॥ ३१ ॥ अत्तट्टा गुरुज्जो छुद्धो, वहु पावं पकुव्यड । दुतोसओ य से होइ, निव्वाण च न गच्छड ॥ ३२ ॥ सिया एगइओ लहु, विविहृ पाणमोयण । भद्ग भद्ग भोच्चा, विवण विरसमाहरे ॥ ३३ ॥ जाणतु ता इमे समणा, “आययट्टी अय मुणी । सतुट्टो सेवए पत, लहवित्ती सुतोसओ” ॥ ३४ ॥ पूणट्टा जसोकामी, माणसमाणकामए । वहु पसवई पाव, मायासल च कुच्छइ ॥ ३५ ॥ चुर वा मेरग वावि, अब वा मजग रस । ससक्ख न पिवे भिक्खु, चस सारक्खमप्पणो ॥ ३६ ॥ पियए एगओ तेणो, “न मे कोइ वियाणइ” । तस्य पस्मह दोसाइ, नियडिं च मुणेह मे ॥ ३७ ॥ वहुड सुडिया तस्स, मायामोसु

अ मिमङ्गशो । अप्यसो य असिष्वार्थं सर्वं च असाहुया ॥ ३८ ॥ निषुक्षिष्यो  
जहा तेणो अताघमोहि दुम्नाइ । तारिसो मरणते वि नाराहेह संवर ॥ ३९ ॥  
आवरिए नाराहेह, समगे भावि तारिसो । गिहत्वा वि वं गरिष्ठति अेव जावनि  
तारिसे ॥ ४ ॥ एवं हु अगुणप्येही गुणार्थं च विकल्पे । तारिसो मरणते वि  
नाराहेह संवर ॥ ४१ ॥ तर्वं कुम्हार मेहावी पश्चिमं कल्पए रसे । महस्यमान  
विरजो तप्तस्ती आवरक्षयो ॥ ४२ ॥ तस्य फस्यां कल्पार्थं अभेगसाहुपूर्वं । गिहवे  
मत्पद्धतिर्वत् किलास्त्वं द्वयेह मे ॥ ४३ ॥ एवं हु गुणप्येही अगुणार्थं च विकल्पे ।  
तारिये मरणते वि आराहेह संवर ॥ ४४ ॥ आवरिए आराहेह, समगे भावि  
तारिसो । गिहत्वा वि वं पूर्वति खेष भावति तारिसे ॥ ४५ ॥ तवतुने वयत्वे,  
स्वतेर्वे य वे परे । आशारमावतेणो च कुम्हार देवकिविरुद्धं ॥ ४६ ॥ अद्यन वि  
देवतां उवरक्षो देवकिविरुद्धे । तत्त्वावि देव जापाइ, कि मे किला इम एवं ॥  
॥ ४७ ॥ तत्त्वे वि ए अहत्तार्थं कुम्हार एम्मूर्यं । पराणो शिरिक्षव्यवेति वा  
बोही वत्वं द्वयेहा ॥ ४८ ॥ एवं च दोषं वद्यूर्वं नायपुत्रेष्व भासितं । अनुपाते  
वि निष्ठावी भावामोर्द्धे विकल्पे ॥ ४९ ॥ शिरिक्षव्यव मिक्षेवेहमसोहि, समाप्त  
कुष्ठाप सगात्ते । उत्त्वं मिष्ट, सूर्यपिहितिए, शिष्मस्त्रशुक्रार्थं गिहविजापि ॥ ५ ॥  
ति-वेसि ॥ इति पिंडेसप्ताप धीमो वदेसो समचो ॥ ५२ ॥ इति  
पिंडेसप्ता वामं पञ्चममज्ञायणं समत्वं ॥ ५ ॥

## ४७४८

अह महाल्लियापारकहा(घम्मत्पकाम)णामं  
छट्टमज्ञायणं

नापर्वसप्तसंपत्त चक्रमे च तत्वे रथे । पवित्रमाप्तसंपत्त उजावनिम स्मोर्वते  
॥ १ ॥ रायाणां रुपमत्ता च भावित्वा अतुष्व वातिया । तुच्छंसि निषुक्ष्यावो वहि  
भे भावारणोमरो ॥ २ ॥ तेसि सो निषुमो दंतो सम्भृतपुराहो । निष्ठावं  
सुसमाप्ततो भावक्षद विज्ञप्यणो ॥ ३ ॥ इति घम्मत्पकामार्थं मिमांसान द्वयेह  
ये । आवारणोमर मीमे उपर्वं दुर्लिहित्वं ॥ ४ ॥ उत्त्वं एविषु तुली वं त्वेव  
परमपुरात् । विष्मद्वापभाइस्त्वं न भूये च भविस्त्वै ॥ ५ ॥ अउप्यविवार्थं  
जाविजार्थं च जे गुणा । अर्हंद्वुद्दिया भावमत्ता तं द्वयेह वदा तदा ॥ ६ ॥  
दध लक्ष्म च ठाजाइ, जार्हं वामेऽपरज्ञात् । उत्त्वं अस्यवरे यत्वे विम्बेषाप्ते  
महस्य ॥ ७ ॥ एवंत्वं कामेऽप्ते भैऽप्तो गिहिमौयवं । पवित्रं विवित्वं

૧૦ ૧૮  
 તિણાણ નોહૃવજણ ॥ ૮ ॥ (૧) તત્થિમ પડમ ઠાણ, મહાવીરેણ દેસિય । આહેમા  
 નિદ્યા દિન્દુ, સંવ્યભ્રાનુ સજમો ॥ ૯ ॥ જાવતિ લોએ પાણા, તસા અદુવ થાવરા ।  
 તે જાણમજાણ વા, ન હળે નો વિ ધાયએ ॥ ૧૦ ॥ સવે જીવા વિ ઇન્દ્ધતિ,  
 જીવિદ ન મરેજિદ । તમ્હા પાણિવહ ઘોર, નિગથા વજયતિ ણ ॥ ૧૧ ॥  
 (૨) અપ્પણદ્વા પરદ્વા વા, કોહા વા જડ વા ભયા । હિસગ ન મુસ વૃયા, નો પિ અન્ન  
 વથાવએ ॥ ૧૨ ॥ મુસાવાઓ ય લોગમિ, મંવ્યાહૂહેં ગરિહિઓ । અવિસ્તામો થ  
 ભૂયાણ, તમ્હા મોસ વિવજએ ॥ ૧૩ ॥ (૩) ચિત્તમતમચિત્ત વા, અપ્પ વા જડ વા  
 વહુ । દત્તમોહણમિત્ત પિ, ઉગહસિ અજાઇયા ॥ ૧૪ ॥ ત અપ્પણા ન ગિણ્ણતિ, નો  
 વિ ગિણ્ણાવએ પર । અન્ન વા ગિણ્ણમાણ પિ, નાણુજાણતિ સજયા ॥ ૧૫ ॥  
 (૪) અવમન્ચરીય ઘોર, પ્રમાય દુરહિદ્વિય । નાયરતિ મુણી લોએ, મેયાયથણવજિણો  
 ॥ ૧૬ ॥ મૂલમેયમહમસ્સ, મહાદોમસમુસ્સય । તમ્હા મેહુણસસમા, નિગથા  
 વજયંતિ ણ ॥ ૧૭ ॥ (૫) વિડમુદ્મેઈમ લોણ, તિલ સંપિ ચ ફાળિય । ન તે  
 સંશ્રિહિમિચ્છતિ, નાયપુત્તવબોરયા ॥ ૧૮ ॥ લોહસ્સેસ અણુપ્ફાસે, મને અન્નય-  
 રામવિ । જે સિયા સંશ્રિહીકામે, ગિહી પંવડાએ ન સે ॥ ૧૯ ॥ જ પિ વત્થ વ પાથ  
 વા, કવલ પાયપુછુણ । ત પિ સજમલજ્જ્વા, ધારતિ પરિહરતિ ય ॥ ૨૦ ॥ ન સો  
 પરિગમાં વુત્તો, નાયપુત્તેણ તાઇણા । “મુચ્છા પરિગમાં વુત્તો”, ઇઝ વુત્ત મહેસિણા  
 ॥ ૨૧ ॥ સંબ્વત્થુવહિણ વુદ્ધા, સરબ્ધણપરિગમૈ । અવિ અપ્પણો વિ દેહમિ,  
 નાયરતિ મમાઇય ॥ ૨૨ ॥ (૬) અહો નિચ તવોકમ્મ, સંબ્વદ્ધેહિં વળિય । જા  
 ય લજાસમા વિત્તી, એગભત્ત ચ ભોયણ ॥ ૨૩ ॥ સતિમે સુહુમા પાણા, તસા અદુવ  
 થાવરા । જાઇ રાઓ અપાસતો, કહ્મેસળિય ચરે ॥ ૨૪ ॥ ઉદઉલ્લ વીયસસત્ત,  
 પાણા નિબ્વઢિયા મહિં । દિયા તાઇ વિવજિજા, રાઓ તત્થ કહ ચરે ॥ ૨૫ ॥  
 એય ચ દોસ દદ્ધૂણ, નાયપુત્તેણ ભાસિય । સંબ્વાહાર ન ભુજતિ, નિગથા રાઇભોયણ  
 ॥ ૨૬ ॥ (૧) પુઢવિકાય ન હિસતિ, મણસા વયસા કાયસા । તિવિહેણ કરણજો-  
 ઇણ, સંજયા સુસમાહિયા ॥ ૨૭ ॥ પુઢવિકાય વિહિસતો, હિસઈ ઉ તયસ્સિએ ।  
 તસે ય વિવિહે પાણે, ચક્કબુસે ય અચ્ચક્કબુસે ॥ ૨૮ ॥ તમ્હા એય વિયાળિતા, દોસ  
 દુગઙ્ગિવંશુણં । પુઢવિકાયસમારભ, જાવજીવાએ વજાએ ॥ ૨૯ ॥ (૨) આઉકાય ન  
 હિસતિ, મણસા વયસા કાયસા । તિવિહેણ કરણજોઇણ, સજયા સુસમાહિયા  
 ॥ ૩૦ ॥ આઉકાયં વિહિસતો, હિસઈ ઉ તયસ્સિએ । તસે ય વિવિહે પાણે, ચક્કબુસે  
 ય અચ્ચક્કબુસે ॥ ૩૧ ॥ તમ્હા એય વિયાળિતા, દોસ દુગઙ્ગિવંશુણ । આઉકાયસમા-

रभ जापजीवाए कजर ॥ ३२ ॥ (१) जायतेर्य म हृष्टि प्रकृती वज्यणर ।  
तिकहमहयर सत्य सुव्ययो वि तुरासम्य ॥ ३३ ॥ पार्वती पदिवं वाचि वा  
शुभिंसामयि । अहे शाहिणओ वाचि वहे उत्तरओ वि य ॥ ३४ ॥ भूत्य  
मेसमाप्ताओ इमवाहो न संमओ । तं पौष्टपमाष्ट्वा संबया त्विवि वास्ते  
॥ ३५ ॥ तम्हा एव वियायिता दोर्दु तुग्गाश्वर्ण । तेऽप्यमसमार्थमे जापजीवाए  
वजर ॥ ३६ ॥ (२) अपिलस्त्वं समार्थमे तुदा मांवि तारिसे । याव्यवद्वर्तं वैरं  
मेयं तारिहि समिय ॥ ३७ ॥ तालिपेण पतोण साहायितुम्भेज वा । व ते  
वीइत्तिष्ठति वीक्षेत्यम वा परे ॥ ३८ ॥ जे वि वत्वं व पाच वा वैरं  
पायपुंहर्ण । त ते वाव्युहर्णति वर्यं परिद्वर्ति य ॥ ३९ ॥ तम्हा एवं विवायिता  
दोर्दु तुग्गाश्वर्ण । जापजीवाए वजर ॥ ४ ॥ (३) वस्त्वर्त  
म हृष्टिं मणसा वयसा कायसा । तिविहेण वर्णबोल्ल संबया तुम्भार्णिवा  
॥ ४१ ॥ वणस्त्वर्त विहिष्टो हृष्टिं त तवस्तिए । तसे य विविहे पाणे वस्तुते  
य अप्यन्तुष्टे ॥ ४२ ॥ तम्हा एवं वियायिता दोर्दु तुग्गाश्वर्ण । वप्त्वर  
समार्थमे जापजीवाए वजर ॥ ४३ ॥ (४-११) उमकार्म न हृष्टिं वक्तव्य  
वयसा कायसा । तिविहेण वर्णबोल्ल संबया तुसमायिता ॥ ४४ ॥ वक्तव्य  
विहिष्टो हृष्टिं त तवस्तिए । ससे य विविहे पाणे वस्तुष्टे य अप्यन्तुष्टे ॥ ४५ ॥  
तम्हा एवं वियायिता दोर्दु तुग्गाश्वर्ण । उमकार्मसमार्थमे जापजीवाए वजर  
॥ ४६ ॥ (११) जाई चत्तारित्तुजाई, इस्तिष्ठाहारमायि । ताई त्रु विवर्णो  
संबयम अल्पाश्वर ॥ ४७ ॥ विर्यं सिवं च वत्वं च वउत्वं पायमेव य । जापिर्व  
न इन्द्रिया पन्याहित्त विवर्ण ॥ ४८ ॥ जे वियामी ममार्यति वीयमुदित्यवर्ण ।  
वहे त सक्तुजार्यति इदु तुर्ण मदित्या ॥ ४९ ॥ तम्हा अमण्डार्यति वीयमुदे  
सिद्यादृ । वजर्यति डियप्पाणो विर्याणा घम्भीर्यित्तो ॥ ५ ॥ (१२) वैरं  
वयपाएतु तुट्टमोल्ल का युजो । भुंजेतो अमण्डार्यति, आवाए वैरेवर्म ॥ ५१ ॥  
सीओन्यगमार्थमे महतपोक्तुउद्ये । जाई ईर्यति भूत्याई, तिहो तत्त्वं वैरं वैरं  
॥ ५ ॥ पातार्यम् पुरेवर्म विवा तत्त्वं व क्ष्यद । एयमहो त भुंजेती विर्यो  
गिहिभायये ॥ ५२ ॥ (१३) आसर्विपत्तिवरेतु र्यमागालागात् वा । जापारी  
वद्यजार्यं आसर्वमु गद्यनु वा ॥ ५३ ॥ तापर्विपत्तिवरेतु व विवाया व वैरा ।  
विमोपाइवित्तो वाए, तुद्युलमदित्या ॥ ५ ॥ गोमीर्विवाया एत, वात्तु तुट्टी  
देव्या । आसर्वी पत्तिवरे व एदमहो विवित्या ॥ ५५ ॥ (१४) लोगार्यवर्माग  
विवित्या वहा व क्ष्यद । इमर्विवमार्यति आवाय वैरीर्यते ॥ ५६ ॥ (१५)

वभन्नेरस्स, पाणाण च वहे वहो । वणीमगपडिगधाओ, पडिकोहो अगारिण ॥ ५८ ॥  
 अगुत्ती बभन्नेरस्स, इत्थीओ वावि सकण । कुसीलवद्धुण ठाण, दूरओ परिवज्जए  
 ॥ ५९ ॥ तिष्ठमन्नयरागस्स, निसिजा जस्स कप्पइ । जराए अभिभूयस्सं, वाहियैस्स  
 तवस्सिणो ॥ ६० ॥ (१७) वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए ।  
 खुक्तो होइ आयारो, जडो हवइ सज्मो ॥ ६१ ॥ सतिमे खुहुमा पाणा, घसालु  
 भिलगास्तु य । जे य भिक्खू, सिणायतो, वियडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥ तम्हा ते न  
 सिणायति, सीएण उसिणेण वा । जावजीव वय धोर, असिणाणमहिङ्गा ॥ ६३ ॥  
 सिणाण अदुवा कङ्क, लोद्ध पउमगाणि य । गायस्सुव्वद्धुणद्वाए, नायरंति कयाइ वि  
 ॥ ६४ ॥ (१८) नगिणस्स वावि मुडस्स, दीहरोमनहसिणो । मेहुणा उवसतस्स,  
 किं विभूसाए कारिय ॥ ६५ ॥ विभूसावत्तिय भिक्खू, कम्म वघइ चिक्कण ।  
 ससारसायरे धोरे, जेण पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥ विभूसावत्तिय चेय, बुद्धा मन्नति  
 तारिस । सावजबहुल चेय, नेय ताईहि सेविय ॥ ६७ ॥ खवेति अप्पाणममोह-  
 दसिणो, तवे रथा सजमअज्जवे गुणे । धुणति पावाइ पुरेकडाइ, नवाइ पावाइ न  
 ते झरेति ॥ ६८ ॥ सओवसता अममा अकिञ्चणा, सविज्जविजाणुगथा जससिणो ।  
 उउप्पसन्ने विमले व चदिमा, सिद्धि विमाणाइ उवेति ताइणो ॥ ६९ ॥ त्ति-बेमि ॥  
 इति महल्लियायारकहा णामं छट्टमज्ज्वल्यण समत्तं ॥ ६ ॥

၁၃၈

अहं सुवक्षसुद्धी णामं सत्तममज्ज्ययनं

A decorative horizontal flourish or scrollwork design located at the bottom center of the page, consisting of stylized floral and geometric patterns.

चउण्ह खलु भासाण, परिसखाय पञ्चव । दुण्ह तु विणय सिक्खे, दो न भासिज  
सञ्चमो ॥ १ ॥ जा य सच्चा अवत्त्वा, सच्चामोसा य जा मुसा । जा य बुद्धेहि-  
डणाडण्णा, न त भासिज पश्चव ॥ २ ॥ असञ्चमोस सच्च च, अणवज्जमकङ्गस ।  
समुप्पेहमसदिद्ध, गिर भासिज पश्चव ॥ ३ ॥ एय च अट्टमन्न वा, ज तु नामेह  
सासय । स भास सच्चमोस च, त पि धीरो विवजाए ॥ ४ ॥ वितह पि तद्वामुत्ति,  
ज गिर भासए नरो । तम्हा सो पुढ्हो पांचेण, कि पुण जो मुस वए ॥ ५ ॥ तम्हा  
“गच्छामो वक्खामो, अमुग वा णे भविस्सामि, एसो वा ण  
करिस्मइ” ॥ ६ ॥ एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्भि सकिया । सपयाईयमहे वा,  
त पि धीरो विवजाए ॥ ७ ॥ अईयम्भि य कालम्भि, पञ्चुपपञ्चमणागए । जमटु तु  
न जाणिजा, “एवमेय” ति नो वए ॥ ८ ॥ अईयम्भि य कालम्भि, पञ्चुपपञ्चमणा-  
गए । जत्य सका भवे त तु, “एवमेय” ति नो वए ॥ ९ ॥ अईयम्भि य कालम्भि,

मनुपत्नमनागण । निरसंक्रिय भवेष वै तु “एरमें” ति निरिषे ॥ १ ॥ तदेव  
फलया भाषा शुद्धभोवपाहनी । सचा यि या न वत्तव्या जग्मो पाकस आस्ते  
॥ ११ ॥ तदेव व्याख्या ‘काले’ ति पैदग पैडगे ति वा । वाहिये वाहि “ऐमि”  
ति उम चोरे” ति नो वए ॥ १२ ॥ एरमें अद्वेष परो बेलुवहमद । आमा-  
रमावदोषात् न तं भासित्वं पत्तवं ॥ १३ ॥ तदेव होक्ते “गोक्ति” ति “धर्मे”  
वा “बनुक्ते” ति वा । दमए “उहए” वाहि न तं भासित्वं पत्तवं ॥ १४ ॥  
अविए पविए वाहि अम्मो मातृत्विति य । पिरिषु भाइयिक्ति भूर भृ-  
त्यिति य ॥ १५ ॥ इडे हडे ति अत्ते ति महे सामिति घोसिति । होडे येडे कुडे  
ति इतियं नेकमास्ते ॥ १६ ॥ नामधिकेव च दूरा इत्यादित्वं वा पुणो । आहा-  
रिष्टमिमिक्ता आस्तित्वं समित्वं वा ॥ १७ ॥ अजए पवाए वाहि वाणी तुश्चैड  
ति य । मातृम्भे भाइयिक्ति उत्ते ननुत्यिति व ॥ १८ ॥ हे हो इतिति वर्ति  
ति भद्रा सामिति गोसिति । इस गोस बनुक्तिति पुरिषे नेकमास्ते ॥ १९ ॥ वर्त-  
धिकेव च दूरा पुरिष्टपुणेण वा पुणो । आहारिष्टमिमिक्ता आस्तित्वं इतित्वं वा  
॥ २ ॥ पैविविद्यापाद्यार्थं एष इत्या अये पुर्वं” । आव वै न विवाहिता  
वाव जाहिति आस्ते ॥ २१ ॥ तदेव मातृत्वं भूमि, परिवेश वाहि सरीरिति । “हे  
फ्लेडे वज्ञे पाद्यमि” ति य नो वए ॥ २२ ॥ परिषुडति च दूरा दूर्य इत्यरिति  
ति य । संवाए पीविए वाहि महाकावति आस्ते ॥ २३ ॥ तदेव गाम्भे तुक्तात्वं,  
इम्मा पोरङ्गति य । वाहिमा रहजोन्ति नेव भासित्वं पत्तवं ॥ २४ ॥ तुर्व भू-  
ति वै दूरा भेडु रसवयति य । यास्ते महाकाव वाहि वै समहविति य ॥ २५ ॥  
तदेव येत्तुमुज्जावं फलवायि वयाविति य । रक्तवा महाल पेहाए, वर्व भासित्वं पत्तवं  
॥ २६ ॥ अर्व पासावदांभार्व तोरङ्गावि गिहाविति व । घटिष्टमक्तमावाव वर्व वर्व  
गदोवित्य ॥ २७ ॥ पीडए अंगवैरे व वंगासे मद्वं सित्या । अंगवैर्व व नासी वा  
गंडिया व अव सित्या ॥ २८ ॥ आसाप्य सद्यर्थं जारी दूरा वा किञ्चुकत्तरं । इडे  
वाहियि भास नेव भासित्वं पत्तवं ॥ २ ॥ तदेव येत्तुमुज्जावं फलवायि वयाविति व ।  
रक्तवा महाल पेहाए, एर्व भासित्वं पत्तवं ॥ २ ॥ वाहिमता इने रक्तवा रीढाव  
महाकाव्या । फलवायावि विविमा वै दरिष्टविति य ॥ २१ ॥ तदा एववै रक्तवं  
पाकसवाई नो वए । चेत्प्रेयावै रक्तवं, वैहिमते ति नो वए ॥ २२ ॥ एव मधुवावा इवे  
भावा शुद्धिवाडिमा फला । वद्यम वद्युसंभूया भूयस्तिति वा पुणो ॥ २३ ॥ तदेव  
सहितो वद्यम्भो नीक्तिम्भो छावी इय । आस्मा भजिमातृति वित्तवयिति वै एव  
॥ २४ ॥ स्वयं वद्युसंभूया विरा वद्यवा ति व । वग्मिमातृते वद्यम्भो इत्याप्त

|    |                                          |    |    |    |    |   |   |
|----|------------------------------------------|----|----|----|----|---|---|
| ४४ | बलचर मनुसक मै० गु०                       | २४ | ६  | १३ | ८  | ५ | १ |
| ४५ | चोरित्रियका पर्याप्ति सौ० गु०            | १  | १  | २  | ४  | ३ | १ |
| ४६ | पर्वत्रिय का " विशेषा                    | २  | १२ | १४ | १० | १ | १ |
| ४७ | दृश्य त्रय का "                          | १  | १  | २  | ३  | १ | १ |
| ४८ | तेज्जिय का "                             | १  | १  | २  | ३  | १ | १ |
| ४९ | पर्वत्रिय का अपर्याप्ति गु               | २  | ३  | ५  | ८  | ६ | १ |
| ५० | चोरित्रिय का विशेषा                      | १  | २  | ३  | ५  | २ | १ |
| ५१ | तेज्जिय                                  | १  | २  | ३  | ५  | १ | १ |
| ५२ | तेज्जिय                                  | १  | २  | ३  | ५  | २ | १ |
| ५३ | मनेक लाली चाहरवम अन्तर्वाप्ति<br>अस० गु० | १  | १  | १  | ३  | २ | १ |
| ५४ | चाहर निर्गोद का "                        | १  | १  | १  | ३  | २ | १ |
| ५५ | चाहर पृष्ठी०                             | १  | १  | १  | ३  | २ | १ |
| ५६ | अप०                                      | १  | १  | १  | ३  | २ | १ |
| ५७ | " चायु                                   | १  | १  | ४  | ५  | ३ | १ |
| ५८ | " तेज० अपर्याप्ति                        | १  | १  | ३  | ५  | ३ | १ |
| ५९ | प्र० चाहर अम०                            | १  | १  | ३  | ५  | ४ | १ |

ति आलवे ॥ ३५ ॥ तहेव सखडिं नचा, किचं कज ति नो वए । तेणग वावि वज्जिति, सुतिस्थिति य आवगा ॥ ३६ ॥ सखडिं सखडिं वृया, पणियद्विति तेणगं । वहुसमाणि तित्थाणि, आवगार्ण वियागरे ॥ ३७ ॥ तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्जति नो वए । नावाहिं तारिमाउति, पाणिपिज्जति नो वए ॥ ३८ ॥ वहुवाहडा अगाहा, वहुसलिलुपिलोदगा । वहुवित्थडोदगा यावि, एवं भासिज पञ्चव ॥ ३९ ॥ तहेव सावज जोग, परस्टट्टाए निट्रिय । कीरमाण ति वा नचा, सावज नालवे मुणी ॥ ४० ॥ सुकडिति सुपक्षिति, सुच्छबे सुहडे मडे । सुनिद्विए सुलद्विति, सावज वज्जए मुणी ॥ ४१ ॥ पयत्तपक्षति व पक्कमालवे, पयत्तछिज्जति व छिज्जमालवे । पयत्त-लद्विति व कम्महेउय, पहारगाडति व गाढमालवे ॥ ४२ ॥ सन्वुक्षस परग्ध वा, अउल नस्थ एरिस । अविक्षियमवत्तञ्च, अच्चियत्त चेव नो वए ॥ ४३ ॥ “सव्वमेय वइस्तामि, सव्वमेय” ति नो वए । अणुवीइ सव्व सव्वत्थ, एवं भासिज पञ्चव ॥ ४४ ॥ सुकीय वा सुविक्षीय, अकिज्ज किज्जमेव वा । “इम गिणह इम मुच, पणियं” नो वियागरे ॥ ४५ ॥ अप्पग्धे वा महग्धे वा, कए वा विक्कए वि वा । पणियद्वे समु-प्पग्धे, अणवज्ज वियागरे ॥ ४६ ॥ तहेवासजयं धीरो, “आस एहि करेहि वा । सय चिठ्ठ वयाहि” त्ति, नेव भासिज पञ्चव ॥ ४७ ॥ वहवे इमे असाहू, लोए वुच्चति साहुणो । न लवे असाहू साहुति, साहुं साहुति आलवे ॥ ४८ ॥ नाणदसणसपन्न, सजमे य तवे रय । एवं गुणसमाउत्त, सजय साहुमालवे ॥ ४९ ॥ देवाण मणुयाण च, तिरियाण च चुम्हाहे । अमुगाण जओ होउ, मा वा होउ ति नो वए ॥ ५० ॥ वायो चुट्ठ व सीउण्ह, खेम धाय सिव ति वा । कया णु हुज एयाणि, मा वा होउ ति नो वए ॥ ५१ ॥ तहेव मेह व णह व माणव, न देव देवति गिरं वइज्जा । समु-च्छिए उन्नाए वा पओए, वइज्ज वा चुट्ठ वलाहयति ॥ ५२ ॥ अतलिक्खति ण वृया, गुज्जाणुन्नरियति य । रिद्धिमत नरं दिस्स, रिद्धिमत ति आलवे ॥ ५३ ॥ तहेव साव-ज्जणुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोवधाइणी । से कोहलोहभयहासमाणओ, न हासमाणो वि गिरं वइज्जा ॥ ५४ ॥ सुवक्सुद्धि समुपेहिया मुणी, गिरं च दुट्ठ परि-वज्जए सया । मिय अदुट्ठ अणुवीइ भासए, सयाण मज्जे लहई पससणं ॥ ५५ ॥ भासाइ दोसे य गुणे य जाणिया, तीसे य दुट्ठे परिवज्जए सया । छ्सु सज्जए सामणिए सया जए, वइज्ज चुद्धे हियमाणुलोमिय ॥ ५६ ॥ परिक्खमासी सुसमाहिदिए, चउक्क-सायावगए अणिस्सिए । स निझुणे चुन्नमल पुरेकड, आराहए लोगमिण तहा परं ॥ ५७ ॥ ति-वेमि ॥ इति सुवक्सुद्धी णामं सत्तमज्ञायणं समत्तं ॥ ७ ॥

## अह आयारपणिही णाम अहुममज्जायणं

आयारपणिही अनु, वदा वादव मिक्तुका । ते भे उषाहरिस्तामि अलुप्ति  
सुनेष मे ॥ १ ॥ पुरविद्गग्निमारव तपशक्तुत्पादीवा । रुक्षा य पाता वै  
ति इह कुर्त महेषिणा ॥ २ ॥ तेसि अच्छुभजोएण निर्व होवव्यवे लिपा । मक्ता  
चव वदेष एव इव चंडए ॥ ३ ॥ पुडिमि भित्ते चिर्व ऐसु नेव भित्ते स देखिषे ।  
तिशिवेष भरमजोएण चंडए शुष्मालिपे ॥ ४ ॥ सुखुप्तिं न निर्वीप, सुरक्षामिं  
न आवत्त । फ्लाजितु निर्वीक्षा जाहता वस्तु रम्यह ॥ ५ ॥ सीक्षेदणं न देखिष्य  
चिम्बुद्ध लिमापि च । उसिभोदणं तत्त्वाशुबे पदिगाहिज संज्ञए ॥ ६ ॥ उद्दा  
अप्पतो अर्प्य नेव पुछि न देखिष्ये । उम्बुद्ध तहामूर्य नो च संपद्य तुष्टी ॥ ७ ॥  
इगर्व अप्पति अर्पि असार्व वा सज्जोर्प्य । न उद्दिजा न पदिजा नो च विनाशर  
सुष्टी ॥ ८ ॥ तात्त्विक्षिय परोज साहाए लिम्बुद्धनेज वा । न भौद्ध अप्पतो चर्व,  
वाहिर वायि पुमाने ॥ ९ ॥ तजस्त्वं न लिमिजा चर्वे मूर्य च वस्तु । वाय  
लिमिह चीर्व भक्ता भित्ता नि न पत्पए ॥ १ ॥ पहेदु न लिमिजा चीर्व हरिह  
वा । सद्वापि लहा निर्व उत्तिगपगोषु वा ॥ ११ ॥ तसे पाते न हिमिय वाय  
वदुव क्षम्बुका । उक्ततो सम्बमृष्ट पादेज लिमिह चर्व ॥ १२ ॥ अद्य लुक्ष्य  
येहाए, चर्व वाहितु चंडए । दणाहियारी भूष्ट अस लिह चर्वि वा ॥ १३ ॥  
क्ष्वर्व अद्य लहुमाह ! अद्य पुक्षित्व संज्ञए । इमाद ताद मेहायी अप्पित्व  
विवक्षणो ॥ १४ ॥ लिमेह पुष्ट्यहुम च पातुरीत्व लहेव वा । वर्ती चीर्व हरिह  
च अहर्विहुम च व्यक्तम ॥ १५ ॥ एवमेभापि जालिता सम्भावेज संज्ञए । अप्पतो  
चंड निर्व उत्तिविवक्षणाहिप ॥ १६ ॥ चुर्व च परिक्षेत्तिज जोगाणा पत्तवर्वह ।  
लिम्बुकारभूमि च चेपार भुक्तासर्व ॥ १७ ॥ उच्चार पत्तवर्व च लिमिह  
चीर्व । चाक्षुये पदिक्षेत्तिज परिक्षुमिज संज्ञए ॥ १८ ॥ पलिहितु पत्तवर्व, चर्व  
मोम्बमस्तु वा । चर्व लिहे लिहे भासे न व स्त्रीषु मर्य होरे ॥ १९ ॥ चुर्व प्रदेह  
चलेहि, चुर्व भव्यतीहि पित्तद । न व लिहे दृव्य चर्व लिम्ब अवदानवर्वह  
॥ २ ॥ चुर्व वा चर्व वा लिहे न लमिक्षोवक्ताहर्व । न व लेव चाहर्व लिरिहे  
समावरे ॥ २१ ॥ लिम्बार्व रसनिम्बुद्ध भहां पातां लि वा । उद्दे वाय व्याप्ते क  
अमामाने न लिरिहे ॥ २२ ॥ न व भोम्बमिम लिम्बो चरे उह चीर्विहे ।  
अप्पस्तुर्व न भुक्षिजा लिम्बुद्धेत्तियाहर्व ॥ २३ ॥ समिहि च न इतिज लिम्ब  
पि चंडए । सुहायीयी अस्तव्ये इतिज वयनिस्तिष्यए ॥ २४ ॥ लिमिहि लिम्ब

अपिन्छे सुहरे सिया । आसुरत्त न गच्छज्ञा, सुच्चा ण जिणसासर्ण ॥ २५ ॥  
 कण्सुक्खेहिं सद्देहिं, पेम नाभिनिवेसए । दारुण कक्षस फास, काएण अहियासए  
 ॥ २६ ॥ खुहं पिवास दुस्सिज्ज, सीउण्हं अरड भय । अहियासे अब्बहिओ, देहदुक्ख  
 महाफल ॥ २७ ॥ अत्थगयमि आइच्चे, पुरत्था य अणुगगए । आहारमाइय सञ्च,  
 मणसा वि न पत्थए ॥ २८ ॥ अतिंतिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे । हविज  
 उयरे दते, थोव लङ्घु न खिसए ॥ २९ ॥ न वाहिरं परिभवे, अत्ताण न समुक्से ।  
 सुयलामे न मजिज्ञा, जच्चा तवस्सिसुद्धिए ॥ ३० ॥ से जाणमजाण वा, कङ्कु आह-  
 म्मिय पय । सवरे खिप्पमप्पाण, वीय त न समायरे ॥ ३१ ॥ अणायार परक्षम्म,  
 नेव ग्रहे न निष्ठवे । सुई सया वियडभावे, अससते जिइदिए ॥ ३२ ॥ अमोह  
 चयण कुज्ञा, आयरियस्स महप्पणो । त परिगिज्ज वायाए, कम्मुणा उववायए  
 ॥ ३३ ॥ अधुव जीविय नच्चा, सिद्धिमग्ग वियाणिया । विणियटिज्ज भोगेसु, आउ  
 परिमियमप्पणो ॥ ३४ ॥ वल थाम च पेहाए, सद्वामास्तगमप्पणो । खेत्त काल च  
 विन्नाय, तहप्पाण निजुजाए ॥ ३५ ॥ जरा जाव न पीडेई, वाही जाव न वङ्घृइ ।  
 जाविंदिया न हायति, ताव धम्म समायरे ॥ ३६ ॥ कोह माण च माय च, लोभ  
 च पाववङ्घृण । वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छतो हियमप्पणो ॥ ३७ ॥ कोहो पीइ  
 पणासेई, माणो विणयनासणो । माया मित्ताणि नासेई, लोभो सञ्चविणासणो ॥ ३८ ॥  
 उवसमेण हणे कोह, माण मद्वया जिणे । माय चज्जवभावेण, लोभ सतोसओ  
 जिणे ॥ ३९ ॥ कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो य पवङ्घृमाणा ।  
 चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचति मूलाइं पुणव्मवस्स ॥ ४० ॥ राइणिएसु  
 विणय पउजे, तुवसीलय सयय न हावइज्ञा । कुम्मुच्च अलीणपलीणगुत्तो, परक्षमिज्ञा  
 तवसजमम्मि ॥ ४१ ॥ निद च न वहु मजिज्ञा, सप्पहास विवज्जए । मिहो कहाहिं  
 न रमे, सज्जायम्मि रवो सया ॥ ४२ ॥ जोग च समणधम्मम्मि, जुजे अणलसो  
 खुव । जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ट लहड अणुत्तर ॥ ४३ ॥ इहलोगपारत्तहिय,  
 जेण गच्छद सुगगइ । वहुसुय पज्जुवासिज्ञा, पुच्छिज्जत्थविणिच्छ्य ॥ ४४ ॥ हृथ्य  
 पाय च काय च, पणिहाय जिइदिए । अलीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी  
 ॥ ४५ ॥ न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठुओ । न य ऊरं समासिज्ञा,  
 चिट्ठिज्ञा गुरुणतिए ॥ ४६ ॥ अपुच्छियो न भासिज्ञा, भासमाणस्स अतरा ।  
 पिट्ठिमस न खाइज्ञा, मायामोस विवज्जए ॥ ४७ ॥ अप्पत्तिय जेण सिया, आसु  
 कुणिज्ज वा परो । सञ्चसो त न भासिज्ञा, भास अहियगामिणि ॥ ४८ ॥ दिढ्ढ  
 मिय असदिढ्ढ, पढिपुण विय जिय । अयपिरमणुविग्ग, भास निसिर अत्तव

॥ ४९ ॥ आवारपदपिष्ठर, शिद्ग्रामयमहिवर्ण । बायदिकलुकियं नवा न तं वदते  
मुणी ॥ ५० ॥ नक्षत्रं सुमिर्ण वोर्ण मिमित भवतेसुर्वं । गिर्विष्टे तं न अद्वन्द्वे  
भूमाहिगर्जं पर्व ॥ ५१ ॥ अग्नद्वं पर्वं स्मर्ण भृष्ट सवधातुर्वं । उवात्सूर्यं  
संपर्वं इत्यीप्तुविविष्ट ॥ ५२ ॥ निविता व नव विवा नवीर्ण न ल्वे एवं ।  
गिर्विष्टेवर्णं न कुञ्जा कुञ्जा साहूर्णि संपर्वं ॥ ५३ ॥ वहा कुहुड्पोयस्तु विष्टं कुम्भं  
गर्वं । एवं वा वंसमारित्यम् इत्यीविग्नात्मो भव ॥ ५४ ॥ विष्टमिति न विष्टम्  
पारि वा चुष्टमित्यं । नक्षत्रं पित्र द्वूर्म् शिद्ग्री पर्विसमाहरे ॥ ५५ ॥ हरस्तम्  
पित्रिविहरं कृष्णनाथकिंचिप्यं । अवि वासवं नारि, वंशवारी विववद ॥ ५६ ॥  
विम्भा इत्यिचमग्नो वर्णीवरसमोर्वं । नरसुलगविष्टस्तु विद्वं वाल्मीद्वं वा ॥  
॥ ५७ ॥ अंकवर्णं गस्त्रवर्णं आहावियपेत्विर्वं । इत्यीर्वं तु न विवाए, इत्यीर्वं  
विष्टवृर्वं ॥ ५८ ॥ विसप्तु म्युवेत्तु फेमि नाभिनिवेष्टए । अकिर्वं तेमि विष्टम्  
परिवाम पेमग्नात्म व ॥ ५९ ॥ योग्यव्वाण परिवाम तमि नवा वहा वा ।  
विणीवद्वात्मो विहरे सीहेभूर्ज अप्यना ॥ ६० ॥ जाइ सदाह विष्टवृद्वं परिवं  
द्वापमुत्तर्वं । तमव व्वायाविज्ञा गुवे आयरिवसम्मए ॥ ६१ ॥ तवं विने हरम्  
जोगवं वा सज्जामज्जेव वा सवा व्विद्वुए । द्वे व वेष्टात् समानावहो, व्वम्भवं  
हाइ अर्वं परेमि ॥ ६२ ॥ सज्जावसज्जावरव्वस्तु ताहो व्वम्भमाहस्तु वा  
रव्वस्तु । विमुम्भावं व विमुम्भावं पुरेष्ट विमुम्भावं व्वम्भावं व्वेष्टा ॥ ६३ ॥ वे  
वारिष्ट व्वम्भवहो विष्टमिति, द्वैष्ट व्वते व्वम्भम वारिष्टवहो । विष्टमिति व्वम्भविष्ट  
अव्वगए व्वसिव्वम्भपुरात्मवहो व व्वम्भवहो ॥ ६४ ॥ विष्टमिति ॥ इति आयारपिष्टी  
णामं अद्वम्भव्वम्भव्वपर्वं व्वम्भवहो ॥ ६५ ॥

अह विणयसमाही णामं पवममउभयणं

पहमो उदेसो

वंसा व व्वेहा व मवप्पमात्मा गुरुस्खणावे विववं व विववे । यो वेष व त्वं  
व्वम्भमावो व्वम्भ व कीमस्य व्वाव विह ॥ १ ॥ ये वारि वरिति व्वम्भ विवा  
वहो इने व्वम्भवहो विवव । व्विमेवै मिमेवै पविवव्वावा वर्णति वावववं वे  
गुर्वं ॥ २ ॥ व्वाव व्ववा वि वर्णति एवो वहाव वि व व व्वम्भवीववेवा ।  
आयारमेवा गुणद्विव्वप्पा वे व्विव्वावा विवविवा वाव व्ववा ॥ ३ ॥ वे वर्णति

नाग डहर ति नच्चा, आसायए से अहियाय होड । एवायरियं पि हु हील्यतो, नियन्त्रिई जाइपहं खु मदो ॥ ४ ॥ आसीविसो वावि परं सुरुद्धो, किं जीवनासाउ पर नु कुज्जा । आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अवोहिअसायण नत्य मुक्खो ॥ ५ ॥ जो पावग जलियमवक्षमिज्जा, आसीविस वावि हु कोवइज्जा । जो वा विस यायइ जीवियट्टी, एसोवमाऽऽसायणया गुरुण ॥ ६ ॥ सिया हु से पावय नो डहिज्जा, आसी-विसो वा कुविओ न भक्खे । सिया विस हालहल न मारे, न यावि मुक्खो गुरुही-लणाए ॥ ७ ॥ जो पब्बय सिरसा भित्तुमिन्छे, शुत व सीह पडिवोहइज्जा । जो वा दए सत्तिअग्गे पहार, एसोवमाऽऽसायणया गुरुण ॥ ८ ॥ सिया हु सीसेण गिरि पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे । सिया न भिंदिज व सत्तिअग्ग, न यावि मुक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥ आयरियपाया पुण अप्पसन्ना, अवोहिअसायण नत्य मुक्खो । तम्हा अणावाहसुहभिकखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा ॥ १० ॥ जहा-हिअग्गी जलण नमसे, नाणाहुईमतपयाभिसित । एवायरिय उचन्तिद्वृइज्जा, अणत-नाणोवगओ वि सतो ॥ ११ ॥ जस्तिए धम्मपयाड सिक्खे, तस्तिए वेणइय पउजे । सष्ठारए सिरसा पजलीओ, कायगिरा भो मणसा य निच्च ॥ १२ ॥ लज्जादयासुज-मवभन्चेरं, कलाणभागिस्त्व विसोहिठाण । जे मे गुरु सययमणुसासयति, ते हं गुरु सयय पूययामि ॥ १३ ॥ जहा निसते तवणच्छिमाली, पभासई केवलभारह तु । एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए, विरायई शुरमज्जे व इदो ॥ १४ ॥ जहा ससी कोमुइ-जोगजुतो, नक्षत्रतारागणपरियुडप्पा । खे सोहई विमले अब्ममुक्के, एव गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥ १५ ॥ महागरा आयरिया महेसी, समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए । सपाविउकामे अणुत्तराइ आराहए तोसड धम्मकामी ॥ १६ ॥ सुचाण मेहावि सुभा-सियाइ, सुस्साए आयरियऽप्पमत्तो । आराहइत्ताण गुणे अणेगे, सो पावइ सिद्धिम-णुत्तर ॥ १७ ॥ ति-बेमि ॥ इति विणयसमाहिणामणवमज्जयणे पढमो उद्देसो समत्तो ॥ ९-१ ॥

### अह पवमज्जयणे वीओ उद्देसो



मूलाउ खधप्पभवो दुमस्स, खधाउ पच्छा समुविति साहा । साहप्पसाहा विस्त-हति पत्ता, तओ सि पुफ्प च फल रसो य ॥ १ ॥ एव धम्मस्स विणओ, मूल परमो से मुक्खो । जेण कित्ति सुय सिग्ध, निस्सेस चाभिगच्छइ ॥ २ ॥ जे य चडे मिए थद्दे, दुव्वाई नियष्टी सढे । बुज्जइ से अविणीयप्पा, कटु सोयगय जहा

॥ ३ ॥ विष्णवं पि ओ चक्राए॒ ज्ञोऽथो तुप्पै॑ नरो । रिव्वं सो विभिन्नै॑  
दंडेष्व पदिदेहए ॥ ४ ॥ तदेव अविजीयप्या उवाचज्ञा इया ग्या । शीघ्रै॑  
तुहमेहता आभिष्टेगमुद्दिश्या ॥ ५ ॥ तदेव मुविजीयप्या उवाचज्ञा इया ग्या ।  
शीघ्रै॑ तुहमेहता इति॑ पता महाक्षणा ॥ ६ ॥ तदेव अविजीयप्या अग्नेः पूर्व-  
नारिये । शीघ्रै॑ तुहमेहता अया ते विगच्छिया ॥ ७ ॥ वदस्त्वपरिज्ञाना,  
असम्भवयेति॑ च । अहुणा विकल्पद्वा तुष्टियादापरिप्रिया ॥ ८ ॥ तदेव  
मुविजीयप्या अग्नेः पूर्वारियो । शीघ्रै॑ तुहमेहता इति॑ पता महाक्षणा ॥ ९ ॥  
तदेव अविजीयप्या देवा अस्ता य तुज्ञसगा । शीघ्रै॑ तुहमेहता आभिष्टेः  
मुक्तिक्षिणा ॥ १ ॥ तदेव अविजीयप्या देवा अस्ता य तुज्ञसगा । शीघ्रै॑  
तुहमेहता इति॑ पता महाक्षणा ॥ ११ ॥ जे आवरिष्टवज्ञानावाप तुस्मै॑  
चमण्डला । तेसि विक्षया फलूर्णि॑ अवतिता इव पात्रा ॥ १२ ॥ अपकृ  
परद्वा वा विष्णा नेत्रनिकामि॑ च । विश्विष्णो उवमोमद्वा इत्येगस्य वारणा  
॥ १३ ॥ जेष चर्व वह थोरं परिमार्व च वारणी । विक्षयमाप्ना निरञ्जनी॑ तुह  
ते त्वमिद्दिश्या ॥ १४ ॥ ते वितु तुर्व पूर्वै॑ तस्य विष्पस्य घरणा । उदाहृती॑  
जमंदर्ति॑ तुद्वा विश्वेष्टियो ॥ १५ ॥ ति॑ पुर्व ते तुवमाही अनुत्तिविग्रहणै॑  
आवरिवा च चए मिक्षृ॒ तम्भा ते नाशतए ॥ १६ ॥ नीर्य॑ लिङ्गे ग्य॑ ग्य॑  
नीर्य॑ च आसुणामि॑ च । नीर्य॑ च पाए वरिज्ञा भीर्य॑ कुम्भा य अवसि॑ ॥ १७ ॥  
सप्तश्चत्ता अवर्ण॑ एहा उवद्विष्णामनि॑ । ‘तुहमेह अवराह मे’ अव्य॑ तुह  
ति॑ च ॥ १८ ॥ तुरप्स्मे वा फलाए॒ ज्ञोऽस्मो वह रहै॑ । एवं तुष्टियित्वा  
तुगो तुलो पूर्वार्व ॥ १९ ॥ आच्छर्ते अव्य॑ वा न विचिज्ञाए पदित्युर्वे । तुला॑  
आसुरं दीरो प्रस्तुत्वाए॑ पदित्युर्वे ॥ २० ॥ अर्ध॑ लंदेवार्व च पदित्युर्वा॑  
हेतुर्वि॑ । तुहै॑ तेहि॑ वयाएहै॑, तं तं सपविष्णावए ॥ २१ ॥ विष्णवी॑ अविजीहत  
सपत्ती॑ विष्मित्य॑ च । अस्तेर्य॑ तुहमे॑ नार्य॑ लिङ्गवे॑ अविमत्त॑ ॥ २२ ॥  
जे शारि॑ वदे महात्म्यार्थे॑ विष्वेष्टे॑ भरे चाहसाहीनपेतुन्मे॑ । नविष्टुप्स्मे॑ विष्णा॑  
अद्वेष्टिए॑, असनिमानी॑ न तु तस्य मुक्त्वा॑ ॥ २३ ॥ विष्टुत्वाही॑ पुर्व ते तुहै॑  
तुष्टत्वप्तम्भा॑ विष्वंविष्मि॑ कोविया॑ । तरितु॑ ते वेहविष्मि॑ इत्याहै॑, विष्णु॑ अर्ध॑ च  
मुक्त्वा॑ ग्या॑ ॥ २४ ॥ श्री-वेनै॑ ॥ इति॑ विष्णवस्तमादिष्णामणवमग्रवत्ते॑  
शीघ्रो छोडेसो लम्भतो ॥ २५-२६ ॥



## अह णवमज्ज्ञयणे तइओ उद्देसो

---

०६३०

आयरियगिमिवाहिअग्नी, सुस्सूसमाणो पडिजागरिजा । आलोइय इंगियमेव नचा, जो छद्माराहयई स पुजो ॥ १ ॥ आयारमट्टा विण्यं पउजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्ज्ञ वक्ष । जहोवइट्ट अभिकखमाणो, गुरुं तु नासायर्यई स पुजो ॥ २ ॥ राइणिएसु विण्य पउजे, डहरा वि य जे परियायजिड्टा । नीयतणे वद्द्व शब्दवाई, ओवायव वक्षकरे स पुजो ॥ ३ ॥ अन्नायउछ चर्द्द विसुद्ध, जवणट्टया समुयाण च निच्च । अलहुयं नो परिदेवइजा, लहु न विक्त्यर्यई स पुजो ॥ ४ ॥ सथारसिजाऽऽसण-भत्तपाणे, अपिच्छ्या अइलमे वि सते । जो एवमप्पाणभितोसइजा, सतोसपाहन्न-रए स पुजो ॥ ५ ॥ सका सहेउ आसाइ कट्या, अओमया उच्छ्या नरेण । अणासए जो उ सहिज कटए, वईमए कण्णसरे स पुजो ॥ ६ ॥ मुहुत्तदुकखा उ हवति कट्या, अओमया ते वि तओ सुउद्धरा । वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणु-वधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥ समावयता वयणाभिघाया, कण्णं गया दुम्मणियं जणति । धम्मुति किच्चा परमग्गसूरे, जिइदिए जो सहई स पुजो ॥ ८ ॥ अवण्णवाय च परमुहस्स, पच्चकखओ पडिणीय च भास । औहारिणि अपियकारिणि च, भास न भासिज सया स पुजो ॥ ९ ॥ अलोलुए अकुहए अमाई, अपिसुणे यावि अदीण-वित्ती । नो भावए नो वि य भावियप्पा, अकोउहले य सया स पुजो ॥ १० ॥ गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुच्छसाहू । वियाणिया अप्पग-मप्पएण, जो रागदेसेहि समो स पुजो ॥ ११ ॥ तहेव ढहर च महलग वा, इत्थी पुम पञ्चश्य गिहिं वा । नो हीलए नो वि य खिसइजा, थम च कोह च चए स पुजो ॥ १२ ॥ जे माणिया सयय माणयति, जत्तेण कलं च निवेसयति । ते माणए माणरिहे तवस्सी, जिइदिए सच्चरए स पुजो ॥ १३ ॥ तेसि गुर्ण गुणसायराण, सुच्चाण मेहावि सुभासियाइ । चरे मुणी पचरए तिगुत्तो, चउक्षसायावगए स पुजो ॥ १४ ॥ गुरुमिह सयय पडियरिय मुणी, जिणवयनिउणे अभिगमकुसले । गुणिय रयमल पुरेकड, भास्त्ररमउल गड गय ॥ १५ ॥ त्ति-नेमि ॥ इति विण्यसमाहि-णामणवमज्ज्ञयणे तइओ उद्देसो समत्तो ॥ १३ ॥

---

## अह णवमज्ज्ञयणे चउत्थो उद्देसो

मुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्षाय, इह खलु येरोहि भगवतेहैं चत्तारे

विषयसमाहित्या पद्धता रहरे रहु त वेरेहि मगर्वतेहि चतारि विषयसमाहित्या  
पद्धता ३ इमे यस्तु ते वेरेहि मगर्वतेहि चतारि विषयसमाहित्या पद्धता ठंडा-  
विषयसमाही १ सुयसमाही २ ठवसमाही ३ आवारसमाही ४ । विषए चर व  
तवे आवारे निर्व फंदिवा । अभिरामयंति अप्यार्थ ते मवति विदिवा ॥ १ ॥  
चठमिहा खलु विषयसमाही मवह, ठंडा-अवुसासिर्क्तो छस्त्र । रहु  
संपरिवज्ञ २ वेमाराहमर ३ न य मवह अतर्वामाहिए ४ चठत्वं फने मव ।  
मवह य इत्य विषेगो-येरेहि विषयसमाही छस्त्र । त तुओ बहिहिए । व व  
माणमएष मवह, विषयसमाही आमनहिए ॥ २ ॥ चठमिहा खलु संपरिवज्ञ  
मवह ठंडा-खुने मे भविस्त्र । ति अज्ञातव्य मवह । प्रागगविहो मविस्त्रमै  
ति अज्ञातव्यमै मवह २ अप्यार्थ ठाकाइस्त्रामि ति अज्ञातव्यमै मवह । तिं  
पर्व ठाकाइस्त्रामि ति अज्ञातव्य मवह ४ चठत्वं फने मवह । मवह य इत्य विषेगे-  
नाणमेवामाहित्ये य ठिल्ये व ठाकाह परे । उपालि य अद्विविहा रव्ये छस्त्रम्  
हिए ॥ ३ ॥ चठमिहा खलु ठवसमाही मवह ठंडा-नो इहमेगद्वाप छमवी-  
हिवा । जो परमेगद्वाप ठवसमहित्या २ जो किपिरक्तसहित्येगद्वाप त्वं  
महित्या ३ । मवह निकरद्वाप ठवसमहित्या ४ चठत्वं फने मवह । मवह य  
इत्य विषेगो-विनिहयुणतवोरए निर्व मवह निरासए निवारहिए । तवसा इत्य  
पुरापाप्य तुच्छे सपा तवसमाहिए ॥ ५ ॥ चठमिहा खलु आवारसमाही मवह,  
ठंडा-नो इहमोमहुवाप आवारमहित्या १ जो परमेगद्वाप आवारसमीक्षा  
र जो कितिवचउत्तित्येगद्वाप आवारमहित्या ३ गवत्व भारदेहै हेय्ये  
आवारमहित्या ४ चठत्वं फने मवह । मवह य इत्य विषेगो-विषमवर  
वाटितिगे पहिपुष्यावस्याववनहिए । आवारसमाहित्युने मवह य ईति भाववर  
॥ ६ ॥ अफिराम चन्त्रो समाहिजो मुक्तिहो इसमाहित्यम्ये । कितिवर्ष चठत्वं  
पुओ तुम्ह छो पक्षेममव्यगो ॥ ७ ॥ आवारपाप्ये शुचह, इत्यत्वं व चर  
सम्भासो । विद्ये वा इवह सासद, वैद्ये वा अपरए महित्या ॥ ८ ॥ विजेमि ॥ हठि  
विषयसमाहित्यामज्ञवमन्हयणे चठत्यो उर्हेसो समलो ॥ ९ ॥  
पाद्यममन्हयणे समर्थ ॥ १ ॥



### अह सनिष्टस्य णाम वसममज्ञयणे



विषयसमाही व तुष्टवयने विर्व विषयसमाहित्यो इविजा । इत्येवामित्र



समा चए निष्ठिवद्विषया । छिरिण बाह्यमरणस्तु वंशजं उत्तेऽ मित्रवृ अनुकूलं  
गर्त ॥ २१ ॥ शिखेनि ॥ इति समिक्ष्य यामै द्वसममल्लायजं समर्तं ॥ १० ॥

## अह रहवका यामा पदमा चूलिया

एह लक्ष्मी भो ! फलहृष्टं उपलक्ष्मीक्षेत्रं संब्रह्मे वयस्मावदवित्तेन बोहुत्ते  
दिष्टा भणोहृष्टं चेत् इवरसिस्पयकुसोयपदायामूर्याई इमाई अद्वारस ग्रन्थं  
सम्यं संपरिष्ठेत्तिमयाई भर्तुति सवाहा—है भो ! तुरस्माए तुप्यजीवी १ अद्वल्य  
इतरिया मिहीय क्षमभोगा २ मुक्तो च साहस्रकुला मणुस्ता ३ इते च मे दृष्ट्ये  
म विरक्षाम्बेद्वाई मतिस्तद् ४ ओमवद्यपुरवारे ५ वंतस्य च पवित्रामर्त्यं ६  
महाराज-वासोवर्देष्या ७ तुम्हाई यहु भो ! गिहीय वन्मे मिहीकाल्मज्ज्ञे वल्लर्त्यं  
८ आम्बो से वहाय होइ ९ संरन्ये से वहाय होइ १ देवदेव विद्वारे  
निरवद्वेषे परिवाए ११ वंभे मिहीकाप्तं मुक्तो परिवाए १२ साम्बो मिहीते  
भज्जाम्बे परिवाए १३ चतुराहारणा मिहीय क्षमभोगा १४ फोर्मे वृष्ट्यामर्त्यं १  
भवित्वे यहु भो ! मणुस्ताण जीविए तुसम्मज्ज्ञेत्तिपृष्ठके १५ वहु च तु चे १  
पाप कृम्म पगड़ १६ पापाय च यहु भो ! क्षडार्तं इम्मात्यं पुणि इवित्तार्तं  
तुप्यन्तिरामं वेत्ता मुक्तो नतिव भवेत्ता तत्त्वां वा ज्ञोचशत्य १८ अद्वल्य  
पर्यं भवहै । भवहै य इत्य तिलेगो—जवा च चयहै वम्मं अधज्जो भोवरस्त्य ।  
स तत्त्वं मुक्तिप्रे वाहे आर्यं नाम्भुज्जहै ॥ १ ॥ जवा भोहवित्तो होइ देवे १  
पवित्रो छमं । सम्परम्परिव्यम्भे स पच्छम परितप्त्यहै ॥ २ ॥ जवा च दीये  
होइ पच्छम होइ अवंदियो । देववा च कुशा ठाका स पच्छा परितप्त्यहै ॥ ३ ॥  
जया य पूर्णो होइ, पच्छा होइ अद्वामो । राका च रजपरम्भम्भे स पच्छम पूर्णामर्त्यहै  
॥ ४ ॥ जया य मावित्तो होइ, पच्छम होइ अमावित्तो । देवित्ति वम्महै ५ ॥ च  
पच्छा परितप्त्यहै ॥ ५ ॥ जया य वेत्तो होइ, उम्मावैतत्तुम्भां । अद्वल्य ६ ॥  
गिहिता स पच्छा परितप्त्यहै ॥ ६ ॥ जया च कुपुर्वेषम् तुवार्तीर्ते मिहीय ।  
हृष्टी च वंशजो वद्दो स पच्छम परितप्त्यहै ॥ ७ ॥ पुत्रावरपरिगित्तो योहुत्तं  
सत्त्वा । वंशावभो जहा नाभो स पच्छा परितप्त्यहै ॥ ८ ॥ ‘अह वहै वहै  
हुता भाविद्यप्ता वद्वस्तुओ । चइ है रम्भो परियाए, चाम्भो जिवनेत्तिर्’ ॥ ९ ॥  
दिक्षामोगममाज्जो च परिकाभ्ये महेत्तिर्ति । रयाय वर्त्यावै च महावरवन्तिर्ति ॥ १० ॥  
अमरावै जाविय दक्षामुत्तमे रमाण परियाए तद्वायाप । निरभो च वहै

|    | बादरनिगोदकाश्रप० पर्याप्ता   | १  | १  | २  | ३  | ३ | ३ |
|----|------------------------------|----|----|----|----|---|---|
| ६० | „ पुरुषीकायका „ „            | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ६१ | „ श्रप कायका „ „             | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ६२ | बादर वाडकायका , श्रसं० गु०   | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ६३ | सूक्ष्म तेउकायका „ „ ,       | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ६४ | सूक्ष्म पुरुषीकायका , विरेषा | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ६५ | „ श्रपकायका „ „              | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ६६ | „ वायुकायका „ „              | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ६७ | „ तेउकायका पर्याप्ता सं० गु० | १  | १  | १  | ३  | ३ | ३ |
| ६८ | „ पुरुषीकायका „ , वि०        | १  | १  | १  | ३  | ३ | ३ |
| ६९ | „ श्रपकायका „ „              | १  | १  | १  | ३  | ३ | ३ |
| ७० | „ वायुकायका „ „              | १  | १  | १  | ३  | ३ | ३ |
| ७१ | „ निगोदकाश्रप० श्रस० गु.     | १  | १  | १  | ३  | ३ | ३ |
| ७२ | „ , पर्याप्ता सं० गु०        | १  | १  | ३  | ३  | ३ | ३ |
| ७३ | श्रमव्य जीव श्रनंत गु०       | १४ | १  | १३ | ३  | ३ | ३ |
| ७४ | पडवाइ सम्मदिटी श्रनंत गु०    | १४ | १४ | १५ | १२ | ३ | ३ |
| ७५ |                              |    |    |    |    |   |   |

दुक्षसुत्तमं, रमिज तम्हा परियाए पडिए ॥ ११ ॥ धम्माउ भट्ट सिरिबोववेय, जन्मग्गि विज्ञायमिवप्पतेय । हीलति ण दुविवहियं कुसीला, दाढ़द्विय घोरविस च नाग ॥ १२ ॥ इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती, दुज्ञामधिज च मिहुजणम्मि । चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो, सभिन्नवित्तस्स य हिड्डओ रहइ ॥ १३ ॥ भुजितु भोगाड पसज्ज चेयसा, तहाविह कहु असज्जमं वहु । गइ च गच्छे अणहिज्जिय दुह, बोही य से नो मुलहा पुणो पुणो ॥ १४ ॥ “इमस्त ता नेरडयस्स जतुणो, दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो । पलिबोवम जिज्जन्नइ सागरोवम, किमग पुण मज्ज इम मणोदुह? ॥ १५ ॥ न मे चिरं दुखमिण भविस्सइ, असासया भोगपिवास जतुणो । न चे सरीरेण इमेणऽविस्सइ, अविस्सइ जीवियपञ्जवेण मे” ॥ १६ ॥ जस्सेवमप्पा उ द्विज लिच्छिओ, चइज देह न हु धम्ममासण । त तारिस नो पहर्लिति इदिया, उवितिवाया व झुदसणं गिरि ॥ १७ ॥ इच्छेव सपस्सिय दुद्विमं नरो, आय उचाय विविह वियाणिया । काएण वाया अहु माणसेण, तिगुतिगुतो जिणवयणमहिद्विजासि ॥ १८ ॥ क्षि-वेमि ॥ इय रहवक्का पामा पढमा चूलिया समत्ता ॥ १ ॥

## अह विवित्तचरिया णामा वीया चूलिया

चूलिय तु पवक्खासि, मुय केवलिभासिय । ज सुणितु सुपुण्णाणं, वम्मे उप्प-  
ज्जए मई ॥ १ ॥ अणुसोयपट्टिए वहुजणम्मि, पडिसोयलद्वलव्वेण । पडिसोयमेव  
अप्पा, दायब्बो होउ कामेण ॥ २ ॥ अणुसोयसुहो लोओ, पडिसोओ आसवो  
सुविहियाण । अणुसोओ ससारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥ तम्हा आयार-  
परक्कमेण, सवरसमाहिबहुलेण । चरिया गुणा य नियमा य, हुति साहृण दहुब्बा  
॥ ४ ॥ अणिएयवासो समुयाणचरिया, अन्नायउछ पहरिक्कया य । अप्पोवही  
कलहविवज्जणा य, विहारचरिया इसिण पसत्था ॥ ५ ॥ आहणओमाणविवज्जणा  
य, ओसन्नदिहाहडभत्तपाणे । ससद्वक्कप्पेण चरिज भिक्खु, तजायससह जई  
जहजा ॥ ६ ॥ अमज्जमसासि अमच्छरीया, अभिक्खण लिन्विगाइ गथा य ।  
अभिक्खण काउस्सगकारी, सज्जायजोगे पयओ हविजा ॥ ७ ॥ न पडिन्नविजा  
सयणासणाइ, सिज्ज निचिज्ज तह भत्तपाण । गामे कुले वा नगरे च देसे, ममत-  
भाव न कहि पि कुज्जा ॥ ८ ॥ गिहिणो वेयावडिय न कुज्जा, अभिवायण वदण-  
पूयण वा । असकिलिद्वैहि सम वसिजा, मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥  
न या लमेजा निउण सहाय, गुणाहिय वा गुणओ सम वा । इक्को वि पावाह-

विवर्जयन्ते विहरिज्ञ क्षमत्वं अप्यज्ञानो ॥ १ ॥ संवच्छदं वाचि परं स्मर्तं  
बीर्यं च वास्तु न तर्हि वरिज्ञा । द्वारात्त्वं ममोऽप्य वरिज्ञ मिक्ष्य, द्वारात्त्वं अत्तो  
अह आप्नेइ ॥ ११ ॥ चो पुन्नरतावरत्त्वस्त्रके संपेहए अण्णामप्पर्व । “कि ते  
क्ष्य ? कि च मे क्षित्यसेसे ? कि सद्विज्ञ न समाप्तरामि ? ॥ १२ ॥ कि ते क्ष्य  
पासइ कि च अप्या कि वाहू विभिर्यं न विवर्जयामि ?” । इत्येव दम्भे अप्पर्व  
माप्तो व्याग्रम् नो परिवर्त्त कुञ्जा ॥ १३ ॥ अत्येव पासे कह तुप्पर्वत्त दर्श  
वामा अत्तु माप्तेषेण । तत्पेह धीरो परिसाहरिज्ञा आहम्मत्तो विष्परित्त वर्त्तमीर्व  
॥ १४ ॥ अत्स्वेरित्ता अग्न विहरियस्त विहरिम्मत्तो सप्पुरियस्त विवर्ज्ञ । उमातु त्वेष  
“परिकुद्दमीर्वी” सो जीवइ संज्ञमज्ञीविष्पर्व ॥ १५ ॥ अप्या एहु सवर्य रम्म  
मत्तो उम्मिविष्पर्व हुसमाविष्पर्व । अरमित्तम्भो जाइप्पहू उत्तेव तुरमित्तम्भो उत्त  
द्वाराप्त मुक्तह ॥ १६ ॥ ति-वेमि ॥ इय विवित्तचरिया जामा वीरा  
चूल्लिया समत्ता ॥ २ ॥

---

॥ दसवेयालियसुत्ता समत्त ॥



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवां णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

तत्य णं

उत्तरज्ञयणसुत्तं

~८८५८~

अह विणयसुयं णामं पढममज्जयणं

सजोगा विष्पमुक्षस्स, अणगारस्स भिक्खुणो । विणय पाउकरिस्सामि, आणुपुव्वि  
सुणेह मे ॥ १ ॥ आणानिदेसकरे, गुरुणमुववायकारए । इगियागारसपने, से  
विणीए ति बुच्छै ॥ २ ॥ आणाऽनिदेसकरे, गुरुणमणुववायकारए । पडिणीए  
असबुद्धे, अविणीए ति बुच्छै ॥ ३ ॥ जहा सुणी पूइकणी, निक्षसिज्जै सञ्चवसो ।  
एव दुस्सीलपडिणीए, सुहरी निक्षसिज्जै ॥ ४ ॥ कणकुण्डग चइत्ताण, विट्ठ भुजह  
सूयरे । एव सील चइत्ताण, दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥ सुणिया भाव साणस्स, सूय-  
रस्स नरस्स य । विणए ठवेज अप्पाण, इच्छतो हियमप्पणो ॥ ६ ॥ तम्हा विणय-  
भेसिज्जा, सील पडिलभेज्ज्यो । बुद्धपुत नियागट्टी, न निक्षसिज्जै कण्हुई ॥ ७ ॥  
निस्सते सियाऽसुहरी, बुद्धाण अतिए सया । अट्टजुत्ताणि सिकिखज्जा, निरट्टाणि उ  
वजए ॥ ८ ॥ अणुसासिथो न कुपिज्जा, खतिं सेविज पडिए । खेड्हेहिं सह  
ससंगि, हास कीड च वजए ॥ ९ ॥ मा य चडालिय कासी, बहुय मा य आलवे ।  
जलेण य अहिजिता, तथो झाइज एगगो ॥ १० ॥ आहच्च चडालिय कडु, न  
नेण्हविज कयाइ वि । कड कडे ति भासेज्जा, अकड नो कडे ति य ॥ ११ ॥ मा  
गलियस्सेव कर्स, वयणमिच्छे पुणो पुणो । कर्स व दहुमाइणे, पावग परिवज्जए ॥ १२ ॥  
अणासवा थूलवया कुसीला, मिउं पि चड पकरंति सीसा । चित्ताणुया लहु दक्खोव-  
वेया, पसायए ते हु दुरासय पि ॥ १३ ॥ नापुद्धो वागरे किचि, पुद्धो वा नालिय  
वए । कोह असच्च कुञ्जेज्जा, धारेज्जा पियमप्पिय ॥ १४ ॥ अप्पा चेव दमेयव्वो,  
अप्पा हु खल दह्मो । अप्पा दतो स्त्री होइ, असिं लोए परत्य य ॥ १५ ॥ वरं  
मे अप्पा दतो, सजमेण तवेण य । माह परेहि दम्मतो, वंधणेहिं घहेहि य ॥ १६ ॥  
पडिणीय च बुद्धाण, वाया अट्टव कम्मुणा । आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा

क्षयाइ दि ॥ १७ ॥ न परमाणु न पुराणो नेव विवाह फिक्कुणो । न सुव असा  
छरं समये लो पदिस्तुते ॥ १८ ॥ नेव परहरित्वे कुजा पक्षविंश च दृष्ट ।  
पाए परवारिए वाहि न विद्वे गुरुर्विद्वे ॥ १९ ॥ आवरिए हि वाहिते दुर्विदीवे  
न क्षयाइ दि । प्रमाणपेहि विवाहद्वै घटविद्वे गुरु दुया ॥ २ ॥ आवरिए वाहि  
वा न विद्वीएव क्षयाइ दि । वाहित्वमाद्यायं वीरो वजो सुता परिस्तुते ॥ २१ ॥  
आसनमयो न पुच्छेज्ञा नेव सेवायमयो क्षयाइ दि । आपमुहुद्वामो स्तो पुक्षिम  
पंजलीठडो ॥ २२ ॥ एवं विवाहगुरुस्तु मुर्त वर्ष च तदुमर्य । पुक्षमाद्यस  
दीपसु वागरिज्ञ व्याधायं ॥ २३ ॥ मुर्त विद्वे विक्षत्, न य बोहारिए  
वरु । भासादेवं परिवरे भाव च वजए दुया ॥ २४ ॥ न स्वैरु युद्धे दुर्वर्य  
न निरुद्धे न मन्मर्य । अप्पमुहु परद्वा वा उभवस्तुतरेव वा ॥ २५ ॥ स्वर्ण  
भगारेत्तु, दंषीद य महापदे । एषो एवित्यिए सम्भिं नेव विद्वे न संबद्धे ॥ २६ ॥  
जं मे बुद्धाऽनुसासीति दीएव व्यद्वेष्य वा । मम जामो ति वेहाए, पक्षो तु वीरि  
स्तुते ॥ २७ ॥ अनुसासधमोवादे तुद्वस्तु म चोमर्य । विद्व तु मन्मर्य वज्ञे,  
विद्व देव असाद्वगो ॥ २८ ॥ विद्व विवाहमया तुद्वा व्यद्वं पि अनुसासीति । विद्व वै  
देव मूर्त चंसियोद्विद्वरं पर्य ॥ २९ ॥ आसने उद्विद्वेज्ञा वज्ञे वर्ष  
विरे । अप्पमुहु विरद्वाहि, विद्वीएवप्पमुहुर ॥ ३ ॥ व वक्षेव विवाहमे विवर-  
व्यक्षेव य पदिवदे । अप्पमर्य च विवविता वज्ञे व्यद्वं समावरे ॥ ३१ ॥ विवाहर  
न विद्वेज्ञा मिक्षद् द्वैत्यर्य वरे । विविवेष एविता मिव वक्षेव मन्मर्य  
॥ ३२ ॥ नाहूरमण्यासाधे नड्डेविच वाहुस्तुतस्यो । एषो विद्वेज्ञा भाष्टु विविता  
तु वज्ञस्तुते ॥ ३३ ॥ नाहूरते व नीए वा नाहूरे भावहुज्ञो । भासुर्य वर्ष  
विद्वं पदियाहेव देवए ॥ ३४ ॥ अप्पपादेऽप्पवीज्ञमिम पदिव्यवमिम दुर्जुते ।  
समर्य देवए भुज्ञे वज्ञे अपरिष्ठाविद्वं ॥ ३५ ॥ विविति दुपरिति दुविते  
द्वाहै भज्ञे । विविति द्वाहैति वाक्यं वज्ञए सुष्टी ॥ ३६ ॥ एवं एवं द्विविति वाहै,  
द्वयं मर्य व वाहए । वासं सम्मद सासंतो विवित्सं व वाहए ॥ ३७ ॥ वुद्धा  
मे वज्ञेज्ञा मे अद्वेसा व वहा व मे । वाविष्टाऽनुसावतो विवितिविद्वं वर्य  
॥ ३८ ॥ पुत्तो मे भाव नाहैति साहू व्याप्त वज्ञर्य । विविति व अप्पार्य वर्य  
वासिति वज्ञर्य ॥ ३९ ॥ न वक्षेव आवरिये व्याप्तार्य पि न वक्षेव । तुद्वेत्य  
न विया न विया वोत्तरेवए ॥ ४ ॥ व अवरिये तुवित्य ववा पतिव्यवमवर ।  
विवाहमेव वंजलीठडो वज्ञ न पुत्तो ति य व ॥ ४१ ॥ वम्मविद्वं व वज्ञर्य  
तुद्वेवावरिये दुया । वमावरेतो ववहार, मर्य नाभिपप्त्वाहि ॥ ४२ ॥ वक्षेव

वक्षगय, जाणित्तायरियस्स उ । तं परिगिज्ज वायाए, कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥  
 वित्ते अचोइए निच्च, खिप्प हवइ सुचोइए । जहोवइद्धुं स्त्रक्य, किच्चाइ कुब्बई सया  
 ॥ ४४ ॥ नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए । हवई किच्चाणं सरणं, भूयाण  
 जगडं जहा ॥ ४५ ॥ पुजा जस्स पसीयंति, सबुद्धा पुञ्चसधुया । पसज्ञा लाभइस्तति,  
 विउल अट्टिय सुय ॥ ४६ ॥ स पुजसत्थे सुविणीयससए, मणोरुई चिट्ठुड कम्म-  
 सपया । तबोसमायारिसमाहिसवुडे, महजुई पच वयाइ पालिया ॥ ४७ ॥ स देव-  
 गधव्वमणुस्सपूए, चइत्तु देह मलपकपुञ्चय । सिद्धे वा हवइ सासए, देवे वा  
 अप्परए महिछ्नुए ॥ ४८ ॥ ति-त्रैमि ॥ इति विणयसुयं पामं पढममज्जयणं  
 समत्तं ॥ १ ॥

### अह परिसहणामं दुःखमज्जयणं

०९०

सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु वावीस परीसहा समणेण  
 भगवया भहावीरेण कासवेण पवेइया जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय  
 भिक्खायरियाए परिब्ययतो पुढो नो विनिहज्जेज्जा, क्यरे खलु ते वावीस परीसहा  
 समणेण भगवया भहावीरेण कासवेण पवेइया जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभि-  
 भूय भिक्खायरियाए परिब्ययतो पुढो नो विनिहज्जेज्जा ? इमे खलु ते वावीस  
 परीसहा समणेण भगवया भहावीरेण कासवेण पवेइया जे भिक्खू सोच्चा नच्चा  
 जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिब्ययतो पुढो नो विनिहज्जेज्जा, तजहा-दिग्गिंच्छा-  
 परीसहे १, पिवासापरीसहे २, सीयमरीसहे ३, उसिणपरीसहे ४, दंसमसयपरी-  
 सहे ५, अचेलपरीसहे ६, अरडपरीसहे ७, इथीपरीसहे ८, चरियापरीसहे ९,  
 निसीहियापरीसहे १०, सेजापरीसहे ११, अकोसपरीसहे १२, वहपरीसहे १३,  
 जायणपरीसहे १४, अलाभपरीसहे १५, रोगपरीसहे १६, तणफासपरीसहे १७,  
 जल्लपरीसहे १८, सक्कारपुरकारपरीसहे १९, पश्चापरीसहे २०, अन्नाणपरीसहे २१,  
 दसणपरीसहे २२ । परीसहण पविभत्ती, कासवेण पवेइया । त मे उदाहरिस्तामि,  
 आणुपुञ्च सुणेह मे ॥ १ ॥ (१) दिग्गिंच्छापरिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामव ।  
 न छिद्दे न छिद्दावए, न पए न पथावए ॥ २ ॥ कालीपञ्चगसकासे, किसे धमणि-  
 सतए । मायक्षे असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥ ३ ॥ (२) तओ पुढो पिवा-  
 साए, दोगुंच्छी लज्जसज्जए । सीओदग न सेविजा, वियद्दस्सेसण चरे ॥ ४ ॥ छिज्ञा-  
 वाएसु पथेसु, आउरे सुपिवासिए । परिस्कमुहाइदीणे, त तितिक्खे परीसहे ॥ ५ ॥

(१) चरत विरव स्थाँ, सीर्य कुसाइ एगवा । भाईजें मुजी गच्छे सोबाई लिन  
सावने ॥ ६ ॥ न मे निवारये अरिय छरितार्ये न विजहि । अर्ह तु अर्यि  
सेवामि इह मिलख न वितप ॥ ७ ॥ (८) उरिये परियावेवं परिवर्त्तन दग्धि ।  
मिद वा परियावेवं चावे नो परिवेष ॥ ८ ॥ उभावितातो मेहावी लियावे नो  
वि फलप । गावे नो परिसिवेजा न बीएजा व अपर्य ॥ ९ ॥ (९) मुझे व  
दसमधुएहैं, समरे व महामुशी । मागो संपामसीसे वा दूरो अविहने पर ॥ १ ॥ व  
न संतसे न वारेजा नमे पि न फलेसप । उवेहे न हजे पासे भुजेठ मंसुदोषिन  
प ॥ ११ ॥ (१०) परिकुण्ठाहि बसेहैं, होमवामि वि अपेक्षप । बहुजा उवेहे  
होमवामि इह मिलख न वितप ॥ १२ ॥ प्रावाङ्गेष्ट द्वाद, सबेहे आवि एमा ।  
एवं घम्मन् हिर्य गवा नावी नो परिवेष ॥ १३ ॥ (११) यामकुण्ठावं उक्तं,  
अवगारं अकिञ्चन । भर्तृ अमुपवेसेजा हं विशिष्टके परियाह ॥ १४ ॥ वर्त  
फिल्लो लिजा विरेण आवरकियए । बम्मारामे निरामने उवसंते मुदी वरे  
॥ १५ ॥ (१२) संगो एव मणूसारं जाजो खेपमिम इरिक्को । बस्त एका एवं  
चाया उक्तहं लम्ब सामर्थ ॥ १६ ॥ एकमात्रावं मेहावी फैलूना व इरिक्को ।  
जो ताहै विविहेजा चरेज़त्तगवेसप ॥ १७ ॥ (१३) एवं एवं वरे अहं विमिल  
परिचहै । गामे वा समरे वावि लिगमे वा रायाविय ॥ १८ ॥ अलगावे वरे  
मिलख, नव कुजा परिमाह । असुधातो विहातेहैं, विविक्ते परिवेष ॥ १९ ॥  
(१४) छाले छवगारे वा लक्ष्ममूढे व एगम्भे । अकुमुखे लिहीएजा न व  
वितास्तप परे ॥ २० ॥ तत्त्व से विहुमाजस्त्व उक्तसम्मामिशारए । सज्जीवे व  
यच्छेजा उद्दिगा अवगारस्त्व ॥ २१ ॥ (१५) उचावकाहि देवाहि, उक्तसी लिन  
चामर्थ । भाईजें विहिजा पावरिहु विहजह ॥ २२ ॥ परिकुमस्त्व अहं  
भग्नामतुव पावये । लिम्माराह चरिस्त्व, एवं उत्पद्धिवासप ॥ २३ ॥  
(१६) अद्वासेजा परे गिल्लाह न तेसि परिसबके । सरिलो होइ वावर्च लम्ब विवेष  
न संबड्हे ॥ २४ ॥ सोबाई अद्वा भावा वाहया गाम्भेटया । दुहिजीवे उपेक्ष,  
न ताजो मज्जीकरे ॥ २५ ॥ (१७) इमो व सबड्हे मिलख, गर्व वि न फोकर ।  
विशिष्टके परमं नवा गिलख अम्म विवितप ॥ २६ ॥ समर्थ संवर्च हं इवं  
च्छे अव्यहै । नरिय बीमस्त्व नाम्मति एवं देहेज सबए ॥ २७ ॥ (१८) उद्दे  
व्यु भो निर्व अगगारस्त्व मिलख्हो । सम्भ से बाहर होइ, नत्ति लिवि अवगर्व  
॥ २८ ॥ गोपरमगपविहुस्त्व पावी नो दुप्पस्त्वारए । सेजो अगारवाम्हुति द्व विवाह  
न वितप ॥ २९ ॥ (१९) पौद्ध वासमेसेजा भोड्हे परिविहुप । अहे शिवे अव्ये

वा, नाणुतप्पेज पडिए ॥ ३० ॥ अजेवाह न लब्धामि, अवि लाभो मुए सिया ।  
 जो एवं पडिसचिक्खे, अलाभो त न तज्जए ॥ ३१ ॥ (१६) नचा उप्पइयं दुक्खं,  
 वेयणाए दुहट्टिए । अदीणो थावए पव, पुढो तत्पडहियासए ॥ ३२ ॥ तेइच्छ  
 नासिनडेजा, सचिक्खडत्तगवेसए । एवं खु तस्स सामण, ज न कुजा न कारवे  
 ॥ ३३ ॥ (१७) अचेलगस्स लूहस्स, सजयस्स तवस्सिणो । तणेसु सयमाणस्स,  
 हुजा गायविराहणा ॥ ३४ ॥ आयवस्स निवाएण, अउला हवह वेयणा । एव नचा  
 न सेवति, ततुज तणतज्जिया ॥ ३५ ॥ (१८) किलिङ्गाए मेहावी, पंकेण व राण  
 वा । घिंसु वा परियावेण, साय नो परिदेवाए ॥ ३६ ॥ वेएज निजरापेही, आरिय  
 धम्मडणुत्तरं । जाव सरीरमेउत्ति, जळ काएण धारए ॥ ३७ ॥ (१९) अभिवायण-  
 मव्वमुद्गाण, सामी कुजा निमत्तण । जे ताइ पडिसेवंति, न तेसिं पीहए मुणी ॥ ३८ ॥  
 अणुक्षसाई अपिच्छे, अजाएसी अलोछुए । रसेसु नाणुगिज्जेजा, नाणुतप्पेज पञ्च  
 ॥ ३९ ॥ (२०) से नूण मए पुन्व, कम्माडणाणफला कडा । जेणाह नाभिजाणामि,  
 पुढो केणह कणहुई ॥ ४० ॥ अह पञ्चा उझजति, कम्माडणाणफला कडा । एव-  
 मस्सासि अप्पाण, नचा कम्मविवागय ॥ ४१ ॥ (२१) निरद्गाम्मि विरचो, मेहुणावो  
 छुसवुडो । जो सबख नाभिजाणामि, धम्म कलाणपावग ॥ ४२ ॥ तवोवहाणमादाय,  
 पडिस पडिवजओ । एव पि विहरओ मे, छउम न नियद्दहुई ॥ ४३ ॥ (२२) नस्ति  
 नूण परे लोए, इहु वावि तवस्सिणो । अदुवा वचिओमिति, इह भिक्खू न चित्तए  
 ॥ ४४ ॥ अभू जिणा अस्ति जिणा, अदुवा वि भविस्सइ । मुस ते एवमाहसु, इह  
 भिक्खू न चित्तए ॥ ४५ ॥ एए परीसहा सब्बे, कासवेण पवेहया । जे भिक्खू न  
 विहजेजा, पुढो केणह कणहुई ॥ ४६ ॥ ति-वेमि ॥ इति परिसहणामं दुइय-  
 मज्जयणं समत्तं ॥ २ ॥

### अह चाउरंगिज्जं णाम तहयमज्जयणं

चत्तारि परमगाणि, दुल्लहाणीह जतुणो । माणुस्त<sup>१</sup> सुई<sup>२</sup> सद्धा<sup>३</sup>, सजमम्मि य  
 वीरिय<sup>४</sup> ॥ १ ॥ समावक्षाण ससारे, नाणागोत्तसु जाइसु । कम्मा नाणाविहा कहु,  
 पुढो विस्सभया पया ॥ २ ॥ एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया । एगया आसुर  
 काय, अहाक्षमेहिं गच्छड ॥ ३ ॥ एगया खत्तिओ होइ, तबो चडालवुक्सो ।  
 तथो कीडपयगो य, तथो कुंयुपिवीलिया ॥ ४ ॥ एवमावहजोणीसु, पाणिणो कम्म-  
 किविसा । न निविज्जति ससारे, सब्बहेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥ कम्मसरोहिं समूला,

तुमिद्यथा वहुभेदणा । जामाकुसासु ओजीद्वि विशिष्टमीति पाविष्ठो ॥ ६ ॥ कल्पार्थं  
हु पहाणाए, आणुपुन्वी क्षमाह उ । जीवा सोहिमकुप्तता जामर्यति क्षमार्थं ॥  
७ ॥ नालुसर्व विशाई अर्हु, द्वारे भग्मस्य दुष्काशा । ज सोवा पविक्षयति त्वं  
विदिमहिसर्वं ॥ ८ ॥ वाहव सर्वं अर्हु, सदा परमयुक्ता । द्वेषा देवाम्ब  
ममा वहै परिमस्तर्ह ॥ ९ ॥ द्वारे च अर्हु सर्वं च वीरिय पुण तुर्हं । त्वं  
रोत्तमाणा वि नो य अविक्षय ॥ १ ॥ मालुकार्मि जामाव्यो चो अर्हं  
धाव सहै । तपस्ती वीरिय अर्हु, संकुदे विशुणे रवं ॥ ११ ॥ सोक्षी उम्भु  
मूयस्य अमो छृद्यस्य विद्वाई । निष्वार्य परमं जाह, ध्यायितिष्व पावए ॥ १२ ॥  
विशिष्ट अम्भुओ हेत्वं वसं संविनु वंतिए । सरीरं पावर्व विषा उर्हु परम्भं विर्ह  
॥ १३ ॥ विशाविद्वेष्व दीडेहि, वक्षा छारउत्तरा । महात्त्रा व विष्वता यद्वा  
व्युपमवर्व ॥ १४ ॥ अपिवा देवम्भमार्य अम्भवितिविष्ठो । अर्हु अल्पे  
विद्वेष्व पुण्या वासासना वहै ॥ १५ ॥ तत्त्व विषा वहाठार्य वक्षा आवर्व  
तुवा । उवेति मालुर्हे ओवि से वसेष्वमिवाय ॥ १६ ॥ देवं वर्हु विर्हु च,  
फलो वासपोर्व । अत्तारि अम्भवेष्वावि तत्प्य से उपवश्व ॥ १७ ॥ विवेष्व  
वावर्व हेव, दवागोए य वन्वर्व । अप्यवर्वे महापत्रे वनिवाए अस्त्रे वहै ॥ १८ ॥  
मुण्या मालुस्साए गोए, अपविक्षये अहारुवर्व । पुर्वं विशुद्धस्वर्वम्भे देवं देवी  
वुमिस्या ॥ १९ ॥ वर्हरं तुर्हु वक्षा संवदे पविक्षयिमा । तपशा तुर्हम्भं विद्वे  
हृष्ट वासए ॥ २ ॥ ति-वेमि ॥ इति घार्हर्वगिर्वां पाम ताव  
मव्युयणी समर्तं ॥ २१ ॥

### आह असंख्य पाम चठत्यमज्जयर्ण

असंख्य जीविय मा फाळाए, वरेवपीयस्त तु वरिष्ठ तार्व । एवं विवाहवै  
जये फलो वि तु विहिषा अम्भा गाहिति ॥ १ ॥ वे पालम्भम्भे वर्हु वर्हु  
समावंती अमहै पहाय । वक्षाव वे पालम्भविष्व नरे विशुद्धव्या वर्हे वेष्व  
॥ २ ॥ देवे अहा संविशुद्धे पर्हीय, वक्षम्भुवा विषाव पावव्यर्हे । एवं वा देव  
त्वं च व्योए, कङ्गाव अम्भाय त मुक्तव वरिष्ठ ॥ ३ ॥ संसारमावव फलु वर्ह  
वाहारणे वं च फरेव अर्हं । अम्भस्य वे तत्प्य च देवम्भे त वेष्वा वंवर्ह  
उवेति ॥ ४ ॥ विवेष्व तार्यं त क्षेष्व फलो इमेमि व्योए अम्भुवा फरत्वा । वीर्य  
व्येष्व वलंतमोहे, वेष्वावर्व वाहुमयद्वेष्व ॥ ५ ॥ शुरोद्ध वारी विशुद्धवै ॥

वीससे पंडिए आसुपणे । घोरा मुहुता अवलं सरीरं, भारंडपक्खीव चरेऽप्पमते ॥ ६ ॥ चरे पयाइ परिसकमाणो, जं किंचि पास इह मन्माणो । लाभतरे जीविय वृहृत्ता, पच्छा परिनाय मलावधसी ॥ ७ ॥ छद निरोहेण उवैइ मोक्ष, आसे जहा सिक्षियवम्मधारी । पुन्वाइ वासाइ चरेऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्पमुवैइ मोक्ष ॥ ८ ॥ स पुव्वमेवं न लभेज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाणं । विसीयद्वि सिद्धिले आउयम्भिम, कालोवणीए सरीरस्स मेए ॥ ९ ॥ खिप्प न सकेइ विवेगमेउ, तम्हा समुद्राय पहाय कामे । समिच्च लोय समया भहेसी, आयाणुरक्खी चरेऽप्पमत्तो ॥ १० ॥ मुहु मुहु मोहगुणे जयत, अणेगरुवा समण चरत । फासा फुसति असमजस च, न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥ ११ ॥ मदा य फासा वहुलोहणिजा, तहप्पगारेषु मण न कुजा । रक्षिवज्ज कोह विणएज भाणं, भायं न सेवेज पहेज लोह ॥ १२ ॥ जेऽसख्या तुच्छपरप्पवाई, ते पिजदोसाणुगया परज्जा । एए अहम्मे त्ति दुगुछमाणो, कखे गुणे जाव सरीरमेउ ॥ १३ ॥ ति-वेमि ॥ इति असंख्यं णाम चउत्थमज्जयणं समन्तं ॥ ४ ॥

### अह अकाममरणिजं णामं पञ्चममज्जयणं

७३०७८

अणवसि महोहसि, एगे तिणे दुरुतरे । तत्थ एगे महापक्षे, इम पण्डमुदाहरे ॥ १ ॥ सतिमै य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणतिया । अकाममरण चेव, सकाममरण तहा ॥ २ ॥ वालाण अकाम तु, मरण असइ भवे । पडियाण सकामं तु, उङ्कोसेण सह भवे ॥ ३ ॥ तत्थिम पठम ठाण, महावीरिण देसिय । कामगिद्वे जहा वाले, भिस कूराइ कुब्बई ॥ ४ ॥ जे गिद्वे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई । न मे दिद्वे परे लोए, चक्षुदिङ्गा इमा रई ॥ ५ ॥ हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया । को जाणाइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥ जणेण सद्वि होक्खामि, इह वाले पगब्बई । कामभोगाणुराएण, केस सपडिवज्जई ॥ ७ ॥ तओ से दड समारभई, तसेसु शावरेसु य । अट्टाए य अणट्टाए, भूयगामं विहिंसई ॥ ८ ॥ हिंसे वाले मुसावाई, माझे पिञ्जुणे सढे । भुजमाणे भुर भस, सेयमेय ति भन्हई ॥ ९ ॥ कायसा वयसा मते, वित्ते गिद्वे य इत्थिसु । दुहओ भल सच्चिणइ, सिसुणागुव्व मष्टिय ॥ १० ॥ तओ पुढो आयकेण, गिलाणो परितप्पई । अभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥ सुया मे नरए ठाणा, अस्तीलाणं च जा गई । यालाण कूरकम्माण, पगाढा जथ्य वेयणा ॥ १२ ॥ तत्थोववाइयं ठाण, जहा

मेदमण्डुक्षर्व । अहम्मेहि पञ्चंतो सो पञ्चम परितप्यै ॥ १३ ॥ यहा सुप्रिये  
आर्ण सर्व हिता महापर्ह । विसर्व ममामोद्यो अन्वे मम्यमिम सोम्यै ॥ १४ ॥  
एवं पर्व मित्रहम्म वहम्म पठिवत्तिमा । बाहे मनुमुर्ह पते अन्वे यमो व  
सोम्यै ॥ १५ ॥ तजो से मरण्येतमिम बाहे एतास्त्रै ममा । अन्वममर्व मर्ह, इते  
व कृष्णिणा विष ॥ १६ ॥ एवं अन्वममरप वाप्यर्व तु परेद्व । इतो सञ्चममर्व  
पठियार्व शुभेष मे ॥ १७ ॥ मरण्य पि सुपुण्णार्व व्यहा मेषमण्डुक्षर्व । विष्णुर्व-  
मणावार्व संबवाय तुसीमओ ॥ १८ ॥ न इम सञ्चेष मित्रहम्म, न इम सर्वे  
शुभगरिष्ठ । नाषादीका अपारत्वा विसुमसीधा य मिक्षुमो ॥ १९ ॥ धूति दर्पे  
मिक्षुहै, गारत्वा दृष्टमुत्तरा । पारत्वेहि य सञ्चेहि, दाहो दृष्टमुत्ताय ॥ २० ॥  
चीरुखिवं नगियिवं वदी संघाति सुविष्ट । एवत्वि वि न तासंवि तुसीवं परिवा-  
गम्य ॥ २१ ॥ विदोष्ट्व्य तुसीके नराक्षो न मुक्त्वै । मित्रद्याए वा विहृते  
वा तुम्पद कृम्यै विष ॥ २२ ॥ अगारि सामाइवगावि सहौ काएष भ्रस्तर् ।  
पोष्टहै तुहमो फूलं एवत्वय न हम्मए ॥ २३ ॥ एवं विक्षासमालो विहृते  
वि तुम्पद । मुक्त्वै उविपव्यामो गच्छे वक्ष्यस्त्वेगम्य ॥ २४ ॥ यह वे धूते  
मित्रह, दोष्ट भवत्वे विदा । सञ्चुक्षपहीने वा देवे वानि महित्विए ॥ २५ ॥  
उत्तरार्व विमोहर्व, शैर्मताज्ञपुष्यसो । उमाइव्यार्व अन्वेहि, आवासर्व अर्हितो  
॥ २६ ॥ वीहात्वा इत्तिमंता दरिद्रा अमरसीमो । अतुवोक्तव्यसंप्रया तुम्हे  
अविमालिष्यमा ॥ २७ ॥ तापि ठाकावि गच्छंति विविक्ता दृम्यं तर्व । मित्रद्याए  
वा विहृते वा वे धूति परिनिक्षुडा ॥ २८ ॥ तेसि धोता सुपुण्णार्व इम्मार्व  
तुसीमओ । न दैतर्यति मरण्यते सीज्ञता वहुस्तुया ॥ २९ ॥ तुम्हिया विलेङ्गार्व,  
द्वाष्टममस्त वंतिए । विष्णुसीएज मेहावी तहामूर्त्य अप्यवा ॥ ३० ॥ तजो वहे  
अमिष्येष, तहौ ताविस्मंतिए । विषएज धोमहरिषे भेद्य वैहस्त वंतिए ॥ ३१ ॥ अहं  
प्रसम्मिं धेनो व्याप्त्याव समुस्सर्व । सञ्चममर्व मर्ह, विषमावर्व मुक्ति ॥ ३२ ॥  
वि-वेमि ॥ इति भक्ताममरपित्तो जामे पञ्चममञ्जहयवं समर्च ॥ ३३ ॥

### अह खुद्गागणियंठिज्ज णामं उद्घमञ्जहयणं

वावंतज्ञिव्यापुरिता समै ते दुक्ष्यसंमवा । तुप्तिव वहुतो नृथं लेहार्व  
अनीतप ॥ १ ॥ उमित्रवं वंदिए तम्हा पासवाहयदे वह । अप्यवा तुल्येवा  
मेति भूम्हु वप्य ॥ २ ॥ मामा विवा कुसा भावा मज्जा तुव्यं व ज्वेण ।

|    |                            |    |    |    |    |   |
|----|----------------------------|----|----|----|----|---|
| ७६ | सिंह मगधान अनेत गु०        | ७  | ०  | ०  | २  | १ |
| ७७ | बाहर थन अपर्याप्ता अनेत गु | १  | १  | १  | ३  | ३ |
| ७८ | पर्याप्ता वि०              | ६  | १४ | १४ | १२ | १ |
| ७९ | वस० अपर्याप्ता अस० गु०     | १  | १  | ३  | ३  | ४ |
| ८० | " अपर्याप्ता वि०           | ६  | ३  | ५  | २६ | ६ |
| ८१ | समुद्रथय बाहर० वि०         | १२ | १४ | १५ | १२ | ५ |
| ८२ | खल बनारसि अपर्याप्ता अन गु | १  | १  | ३  | ३  | १ |
| ८३ | अपर्याप्ता वि०             | १  | १  | ३  | ३  | १ |
| ८४ | " बन पर्याप्ता ह० गु०      | १  | १  | १  | ३  | १ |
| ८५ | पर्याप्ता० वि              | १  | १  | १  | ३  | ३ |
| ८६ | समुद्रथय सूक्ष्म० वि०      | २  | १  | ३  | ३  | १ |
| ८७ | भवसिद्धि शीष वि०           | १४ | १४ | १५ | १२ | १ |
| ८८ | सिंहाद का शीष वि०          | ४  | १  | ३  | ३  | १ |
| ८९ | वस० पर्याप्ति शीष वि०      | ४  | १  | ३  | ३  | ४ |
| ९० | एकत्रिक शीष वि०            | ४  | १  | ५  | ३  | ४ |
| ९१ | तिर्यक शीष वि०             | १४ | ८  | १३ | ८  | १ |

नालं ते मम ताणाए, लुप्ततस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥ एयमटु सपेहाए, पासे समिय-  
दसणे । छिंडे गिंडि सिणेह च, न कखे पुब्वसथव ॥ ४ ॥ गवास मणिकुंठलं,  
पसवो दासपोरुस । सब्बमेय चडत्ताण, कामस्वी भविस्ससि ॥ ५ ॥ (यावरे जंगम  
चेव, धणं धनं उवक्खर । पचमाणस्म कम्मेहिं, नाल दुक्खाओ मोयणे ॥)  
अज्ञत्थ सब्बओ सब्ब, दिस्म पाणे पियाथए । न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ  
उवरए ॥ ६ ॥ आयाण भरय दिस्म, नायएज तणामवि । दोगुंदी अप्पणो पाए,  
दिज भुजेज भोयणं ॥ ७ ॥ इहमेगे उ मञ्चंति, अप्पबक्खाय पाचा । आयरिय  
विदित्ताण, सब्बदुक्खा विमुच्चं ॥ ८ ॥ भणता अकरेंता य, वंधमोक्खपद्धिणिणो ।  
वायाविरियमेतेण, समासासेति अप्पय ॥ ९ ॥ न चित्ता तायए भासा, कुओ  
विजाणुसासण । विसज्जा पावकम्मेहिं, वाला पडियमाणिणो ॥ १० ॥ जे केइ सरीरे  
सत्ता, वणे रुचे य सब्बसो । मणसा कायवकेण, सब्बे ते दुक्खसभवा ॥ ११ ॥  
आवज्जा दीहमद्वाण, ससारमि अणतए । तम्हा सब्बदिस पर्स्स, अप्पमत्तो परिब्बए  
॥ १२ ॥ वहिया उद्धुमादाय, नावकखे कयाइ वि । पुब्बकम्मक्खयद्वाए, इमं देह  
समुद्धरे ॥ १३ ॥ विंगिच्च कम्मुणो हेउ, कालकर्ती परिब्बए । मायं पिंडस्स  
पाणस्म, कड लद्दूण भक्खए ॥ १४ ॥ सनिहिं च न कुवेजा, लेवमायाए सजए ।  
पक्खीपत्त समादाय, निरवेक्खो परिब्बए ॥ १५ ॥ एसणासमिओ लज्जु, गामे  
अणियओ चरे । अप्पमत्तो पमत्तेहि, पिंडवाय गवेसए ॥ १६ ॥ एव से उदाहु  
अणुत्तरनाणी, अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदसणधरे । अरहा नायपुत्ते भगव, वेसालिए  
वियाहिए ॥ १७ ॥ त्ति-वेमि ॥ इति खुड्हागणियंठिज्जं णामं छट्टमज्जयणं  
समत्तं ॥ ६ ॥

### अह एलहज्जाणामं सत्तममज्जयणं

१४९

जहाएस समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलय । ओयण जवस देजा, पोसेजा वि  
सयगणे ॥ १ ॥ तथो से पुट्टे परिवूढे, जायमेए महोदरे । पीणिए विउले देहे,  
आएस परिक्खए ॥ २ ॥ जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से दुही । अह पत्तम्म  
आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥ ३ ॥ जहा से खलु उरब्बमे, आएसाए समीहिए । एवं  
वाले अहम्मिडे, ईहई नरयाउय ॥ ४ ॥ हिंसे वाले मुसावाई, अद्वाणंसि विलोवए ।  
अचदत्तहरे तेणे, माई क नु हरे सढे ॥ ५ ॥ इत्थीविसयगिद्वे य, महारभपरिसगहे ।  
भुजमाणे म्हुरं मंस, परिवूढे परंदमे- ॥ ६ ॥ अयक्करभोई य, तुदिले चियलोहिए ।

## अह नमिपञ्चज्ञा नामं नवममज्जयणं

---

०५३०

अद्यम देवस्त्रोगामो उवत्तो माणुसंमि असेमि । उवर्कंतमोहकिंचो एवं  
पोराविमं बाहं ॥ १ ॥ आहं सरितु ममवं समंसेकुदो अखुत्तरे यम्मे । पुर्णं भैरु  
र्वे, अमितिपञ्चमई नमी एवा ॥ २ ॥ सो देवस्त्रोपसरिते अतेऽउवरम्भे वी  
भोए । मुंबितु नमी राया कुदो मोगे परिवर्यई ॥ ३ ॥ मितिर्णं त्पुरवर्णवं  
वद्मोरोह च परिवन सम्बं । विचा अमितिपञ्चमई एगठमहित्तिजो मवं ॥ ४ ॥  
ओमाइकमामूर्यं आसी मितिर्णाए फमर्णतीमि । उह्या रायरितिमि नमिमि  
अमितिपञ्चमर्णमि ॥ ५ ॥ अम्मुतिर्णं एवरितिए फववाढाम्मुकम्म । उको माहं  
हथेज इमी वयवमम्बावी ॥ ६ ॥ कि तु भो । अज्ञ मितिर्णाए, कोडाइक्यरुद्धम् ।  
मुम्मारि वारणा सहा पासाएष्टु गिरेषु य ॥ ७ ॥ एमम्बृ नियामिता देवस्त्रम्  
चोइयो । तमो नमी रायरिती ऐविर्द इनमम्बावी ॥ ८ ॥ मितिर्णप्र चेत्तप नमं  
सीवज्ञाए मधोरमे । पातपुष्पफलोवेष, वार्ष वागुप्ये सुया ॥ ९ ॥ वायवं हीर  
मायमिमि चेत्तविमि मधोरमे । तुहिता असुरणा अता एए फर्णती भ्ये । उप  
॥ १ ॥ एमम्बृ नियामिता देवस्त्रम्भोइयो । तमो नमी रायरिति ऐविर्द  
इनमम्बावी ॥ ११ ॥ एम अम्मी य वाढ च एवं दग्धाइ महिर । भवं अवगत  
देवं वीसु ये नाकपेचयाह ॥ १२ ॥ एमम्बृ नियामिता देवस्त्रम्भोइये ।  
तमो नमी रायरिती ऐविर्द इनमम्बावी ॥ १३ ॥ त्वाहं वायामो जीवामो, वेति ये  
नतिष्ठ दिवर्णं । मितिर्णाए दग्धमावीए, य मे दग्धाइ दिवर्ण ॥ १४ ॥ एवं  
पुत्रवक्तव्यस्तु निष्पापारस्तु मितिर्णो । विवं न विजाई लिपि अपिंशे ति य  
विजाई ॥ १५ ॥ वहुं ए मुमिषो भाव, अप्यापारस्तु मितिर्णा । तमगो विवं  
मुद्रस्म एगतममुपस्थितो ॥ १६ ॥ एमम्बृ नियामिता देवस्त्रम्भोइये । उत्ते  
नमी रायरिति ऐविर्द इनमम्बावी ॥ १७ ॥ पायाह कारदण्ठं चेतुण्ठपायी  
व । उव्यम्भमस्त्रवर्धाम्भे तमो यद्युति द्यतिया ॥ १८ ॥ एमम्बृ नियामिता,  
देवस्त्रम्भोइये । तमो नमी रायरिती ऐविर्द इनमम्बावी ॥ १९ ॥ चर्द कर  
दिया उवष्टुवरमग्नं । चंति निवृत्पामार्द, विशुत्तु तुप्पपमवं ॥ २० ॥ एवं  
पराम विचा जीवं च इरिये एवा । चिं च वस्त्रं विचा उवेवं वीवंरा  
॥ २१ ॥ उवनाप्रवत्तुतैः मितिर्णं वमर्णतुर्य । मुखी मितिर्णेष्टुम्भे प्राप्ते  
प्रतिमुष्टए ॥ २२ ॥ एमम्बृ नियामिता देवस्त्रम्भोइया । उवा नमी एवोन्मे

देविंदो इणमब्बवी ॥ २३ ॥ पासाए कारइत्ताणं, वद्धमाणगिहाणि य । वाल्मग-  
पोह्याओ य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २४ ॥ एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारण-  
चोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥ २५ ॥ ससर्यं खलु सो  
कुण्ड, जो मग्गे कुण्ड घर । जत्थेव गंतुमिच्छेज्ञा, तत्थ कुञ्बेज्ञ सासय ॥ २६ ॥  
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदो इणमब्बवी  
॥ २७ ॥ आमोसे लोमहारे य, गठिन्नेए य तक्करे । नगरस्स खेम काळणं, तओ  
गच्छसि खत्तिया ॥ २८ ॥ एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी  
रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥ २९ ॥ असइ तु मणुस्सेहि, मिच्छा दंडो पजुज्जहै ।  
अकारिणोऽत्थ वज्ञाति, मुच्छै कारओ जणो ॥ ३० ॥ एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊ-  
कारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥ ३१ ॥ जे केह पत्तिवा  
तुज्ज्ञ, नानमति नराहिवा । वसे ते ठावइत्ताण, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३२ ॥  
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी  
॥ ३३ ॥ जो सहस्स सहस्साणं, सगामे दुज्जए जिणे । एग जिणेज अप्पाण, एस  
से परमो जओ ॥ ३४ ॥ अप्पाणमेव जुज्जाहि, कि ते जुज्जेण वज्ञाओ ।  
अप्पाणमेव अप्पाण, जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥ पचिंदियाणि कोह, माणं मायं  
तहेव लोह च । दुज्जय चेव अप्पाण, सब्बमप्पे जिए जियं ॥ ३६ ॥ एयमट्ठ  
निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥  
जइत्ता विउले जने, भोइत्ता समणमाहणे । दच्चा भोच्चा य जिद्धा य, तओ गच्छसि  
खत्तिया ॥ ३८ ॥ एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी,  
देविंद इणमब्बवी ॥ ३९ ॥ जो सहस्स सहस्साण, मासे मासे गव दए । तस्स वि  
षजमो सेओ, अर्दितस्स वि किंचण ॥ ४० ॥ एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारण-  
चोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥ घोरासम चइत्ताण, अज्ञ  
पत्थेसि आसम । इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥ एयमट्ठ निसामित्ता,  
हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥ ४३ ॥ मासे मासे तु जो  
वालो, कुसग्गेण तु भुजए । न सो सुअक्खायथम्मस्स, कल अग्धइ सोलसि ॥ ४४ ॥  
एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविंदो इणमब्बवी  
॥ ४५ ॥ हिरण्ण सुवण्ण मणिमुत्त, कस दूस च वाहण । कोस वहूवडत्ताण,  
तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ४६ ॥ एयमट्ठ निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ  
नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥ ४७ ॥ मुवण्णरुपस्स उ पव्या भवे, सिया  
हु केलाससमा असख्या । नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छा हु आगासमा

अर्थात् ॥ ४८ ॥ पुष्टी साठी अमा तेव विरत्य प्रमिसज्ज । विदुर्व  
नास्त्वेगस्स इह विजा तर्व चरे ॥ ४९ ॥ एवमहु निषाणिता हेमारक्षेत्रे ।  
तथो नमि रायरिति देवितो इममन्तरी ॥ ५० ॥ अव्वेष्यमध्युरए मेर एवं  
पतिष्या । असेते कामे पर्येति संक्षेपे विष्मिति ॥ ५१ ॥ एवमहु निषाणिता,  
हेमारक्षन्तोइत्यो । तयो नमि रायरिती देवित इममन्तरी ॥ ५२ ॥ तां तम  
विदु कामा अमा आधीनिषेदमा । अमे पर्येमाता अमामा चैति रेत्व  
॥ ५३ ॥ महे क्यद व्येहर्व मानेन भासा गदे । मावा गदेपनिषद्याते, लेनामे  
उद्भ्यो भव्य ॥ ५४ ॥ अव्वउचिक्षेत्रमाहुर्व विचिक्षेत्र इत्यै । वैर विनि  
खण्डो इमाहि मदुराहि फग्नाहि ॥ ५५ ॥ अहो ते निषिद्धो ओहो अहो मातो  
फराविद्यो । अहो ते निरक्षिया मामा अहो लेमो वसीक्षो ॥ ५६ ॥ अहो ते  
अव्वर्व चाहु, अहो ते चाहु महर्व । अहो ते उत्तमा चाठी अहो तु तुषि वद्य  
॥ ५७ ॥ इहं सि उत्तमो भवे । वद्य होशिति उत्तमो । व्येष्यमुक्तमे भवे विनि  
पत्त्वाहि नीरन्तो ॥ ५८ ॥ एव अभिखुर्वतो राक्षरिति उत्तमाए चम्पए । व्यविर्व  
करेतो पुष्टो पुष्टो वृद्धै एहो ॥ ५९ ॥ तो वृद्धित्वं पाए, वर्तेनामन्तो  
मुमिक्षरस्स । आगाएगुप्तस्यो लक्ष्मिनवस्तुपूर्वतिरिती ॥ ६० ॥ कर्ति क्षेत्रे  
अप्याहं सकर्त्तु सद्वेष ओहमो । अद्यम तेहं च करेती उत्तमे सुविद्येते  
॥ ६१ ॥ एवं करेति संकुद्ध पतिष्या पवित्र्यक्षया । विष्मित्याहिति भोवेत, वा ते  
नमि रायरिति ॥ ६२ ॥ ति-वेमि ॥ इति ममिषपत्त्वानामे लघममम्भवत्ते  
स्तमर्तु ॥ ६३ ॥

### अह दुमपत्तय णार्म वसममवहयण

इमरत्तए वृद्धयए जहा निरद्व राशगात्र अव्वए । एवं मनुषाण विनिति  
समये गोवम । मा फ्माएर ॥ १ ॥ दुष्टमो जह ओसनितुए, बोरे विद्व लंकावर ।  
एवं मनुषाण विनिति समर्व गोवम । मा फ्माएर ॥ २ ॥ इह रायरित्य व्याप्त  
विनित्यए व्युपत्यगामए । विद्वाहि तर्व पुरे वहं समये गोवम । मा फ्माएर ॥ ३ ॥  
दुष्टदे लभु यानुसे गवे विरक्षात्वे वि सम्पादित्य । माता व वित्ताप व्युत्ते  
समये लोवम । मा फ्माएर ॥ ४ ॥ पुष्टिराक्षमध्यमबो उद्योगे जीवे उ उद्योगे  
काळे सुधाहित्य समये गोवम । मा फ्माएर ॥ ५ ॥ आउद्यापयमरप्या उद्योगे उद्योगे  
उ सदपु । वर्ते विहारित्य समर्व गोवम । मा फ्माएर ॥ ६ ॥ वेद्याववरप्ये

उक्षोस जीवो उ सबसे । काल सखाईय, समर्य गोयम ! मा पमायए ॥ ७ ॥  
 वाढकायमडगओ, उक्षोस जीवो उ सबसे । कालं सखाईय, समय गोयम ! मा  
 पमायए ॥ ८ ॥ वणस्सडकायमइगओ, उक्षोस जीवो उ सबसे । कालमणतदुरतय,  
 समर्य गोयम ! मा पमायए ॥ ९ ॥ वेडदियकायमडगओ, उक्षोस जीवो उ सबसे ।  
 काल सखिजसन्निय, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १० ॥ तेइदियकायमडगओ,  
 उष्णोस जीवो उ सबसे । काल सखिजसन्निय, समय गोयम ! मा पमायए ॥ ११ ॥  
 चउरिंदियकायमइगओ, उक्षोस जीवो उ सबसे । काल सखिजसन्नियं, समय गोयम !  
 मा पमायए ॥ १२ ॥ पचिंदियकायमइगओ, उक्षोस जीवो उ सबसे । सत्तटुभवगहणे,  
 समय गोयम ! मा पमायए ॥ १३ ॥ देवे नेरइए य अइगओ, उक्षोस जीवो उ  
 सबसे । इक्षेकभवगहणे, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १४ ॥ एव भवससारे,  
 ससरड सुदाङ्गहेहि कम्मोहिं । जीवो पमायवहुलो, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १५ ॥  
 लद्धूण वि माणुमत्तण, आरियत्त पुणरवि दुःह्व । वहचे दसुया मिलक्खया, समय  
 गोयम ! मा पमायए ॥ १६ ॥ लद्धूण वि आरियत्तण, अहीणपचेंदियया हु दुःह्व ।  
 विगलिंदियया हु दीसई, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १७ ॥ अहीणपचेंदियत्त  
 पि से लहे, उत्तमधम्मसुई हु दुःह्व । कुतित्यनिसेवए जणे, समय गोयम ! मा  
 पमायए ॥ १८ ॥ लद्धूण वि उत्तम सुइ, सद्वहणा पुणरावि दुःह्व । मिन्छत्तनिसेवए  
 जणे, समय गोयम ! मा पमायए ॥ १९ ॥ धम्म पि हु सद्वहतया, दुःह्वया  
 काएण फासया । इहकामगुणेहि मुच्छिया, समय गोयम ! मा पमायए ॥ २० ॥  
 परिज्जरइ ते सरीरय, केसा पङ्करया हवति ते । से सोयवले य हायई, समय गोयम !  
 मा पमायए ॥ २१ ॥ परिज्जरइ ते सरीरय, केसा पङ्करया हवति ते । से चक्खुवले  
 य हायई, समर्य गोयम ! मा पमायए ॥ २२ ॥ परिज्जरइ ते सरीरय, केसा पङ्करया  
 हवति ते । से घाणवले य हायई, समय गोयम ! मा पमायए ॥ २३ ॥ परिज्जरइ  
 ते सरीरय, केसा पङ्करया हवति ते । से जिब्भवले य हायई, समय गोयम ! मा  
 पमायए ॥ २४ ॥ परिज्जरइ ते सरीरय, केसा पङ्करया हवति ते । से फासवले य  
 हायई, समय गोयम ! मा पमायए ॥ २५ ॥ परिज्जरइ ते सरीरय, केसा पङ्करया  
 हवति ते । से सब्बवले य हायई, समय गोयम ! मा पमायए ॥ २६ ॥ अरई गड  
 विसङ्गया, आयका विविहा फुस्ति ते । विहडइ विद्धसइ ते सरीरय, समय गोयम !  
 मा पमायए ॥ २७ ॥ वोच्छिद सिणेहमप्पणो, कुमुय सारइय व पाणिय । से  
 सब्बसिणेहवजिए, समय गोयम ! मा पमायए ॥ २८ ॥ चिच्छाण धण च भारिय,  
 पव्वइओ हि सि अणगारिय । मा वत पुणो वि आविए, समय गोयम ! मा पमायए

॥ २९ ॥ अहूर्जितय मित्रावंशम् विवरं चेष पश्योहसुवर्य । मा ई लिहरं प्रेमरु  
सभ्य गोप्यम् । मा प्रमाणए ॥ ३ ॥ न हु जिणे अज विस्तारौ, बहुमाए विस्तय  
मम्यदैषिए । संक्ष नेयाऽप्य पहे समयं गोप्यम् । मा प्रमाणए ॥ ३१ ॥ वस्त्रेहि॒  
कृगाप्त भोर्क्षो यि पहै महास्यम् । गच्छअसि मर्मी विशेषित्रा समयं प्रेमन् ।  
मा प्रमाणए ॥ ३२ ॥ अवले चह मारवाहए, मा ममो विस्तेष्ट्रगाहित्रा । फलम्  
फच्छाशुतावए, समयं गोप्यम् । मा प्रमाणए ॥ ३३ ॥ लिष्यो हु सि अवर्णं महै  
हि पुज विद्युति तीरमात्रबो । अमिदुर पारं प्रिताए, समवं गोप्यम् । मा प्रमाणए  
॥ ३४ ॥ अहूर्जेत्रसेषि चरित्रका विद्यि गोप्यम् । लोके वक्षति । लोके च लिं  
घुतारौ, समयं गोप्यम् । मा प्रमाणए ॥ ३५ ॥ दुदे परिमित्युदे चरे यास्त्रए  
गगरे च संक्षए । संक्षीयन्नं च दूरए, समयं गोप्यम् । मा प्रमाणए ॥ ३६ ॥  
उदस्त विस्तम् भाष्यिते दुरहितमद्वाप्त्योऽस्तोहिते । रागं दोसे च लिंदिता विदित्य  
गणे गोप्यमे ॥ ३७ ॥ ति-वेमि ॥ इति युमपत्तर्म पामे वृत्तममज्ञायने  
समर्थ ॥ ३० ॥

### अह युस्तुपुरुषं णार्म एगारसममज्ञायण

समेता विष्मुक्तस्य अपगारस्य मित्राहो । वायारं पाठ्यविस्तारि अहू  
पुष्टि युनेह मे ॥ १ ॥ जे नारि होह विक्षिते वदे लुदे विष्मयहे । विक्षितं  
यास्तरै अविषीए अव्युत्पत्तए ॥ २ ॥ अह कंवाहै ठापेहि, लेहि वित्रान व वर्णरै ।  
पम्हो कोही प्राप्तैर्य रेतोलोऽवस्तप्तये च ॥ ३ ॥ अह क्षुद्धै ठापेहै, वित्रानीते  
यि तुच्छै । अहस्तिरे स्पा वैत न च मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥ नारीते च विठ्ठीते  
न तिमा व्यस्तेत्तरै । लैकोहये चकर्तरै, वित्रानीते ति तुच्छै ॥ ५ ॥ अह चेम  
चाहै ठापेहि, वायाणं च सज्जए । अविषीए तुच्छै सो उ विष्मार्ण च च गच्छ  
॥ ६ ॥ अमिक्तलर्ण कोही इस्तै, पर्वर्ध च युक्त्यै । मेतिज्ञमात्रो वर्णै, दृष्ट  
क्षद्गुण मर्णै ॥ ७ ॥ जारि पाठ्यविषेषी जारि विषेषु तुच्छै । तुमिष्मसारि  
मित्रस्त रहे मारह पार्वय ॥ ८ ॥ पहलवाहै तुच्छै नेह दृष्टे विष्मार्णै । अह-  
विमागी अविषी, अविषीए ति तुच्छै ॥ ९ ॥ अह पत्रस्तै ठापेहै, तुमिष्मार्णै  
तुच्छै । गीयोविती अवर्णै अग्नीरे अत्युक्त्यै ॥ १० ॥ अव्यं च विहित्यार्णै  
पर्वर्ध च च तुच्छै । मेतिज्ञमात्रो वर्णै, सुप्य खड्डै च मर्णै ॥ ११ ॥ न च च  
परिष्केषी च च विषेषु तुच्छै । अपिक्तसारि मित्रस्त रहे क्षत्रान वर्णै ॥ १२ ॥

<sup>१२</sup>  
 कलहृष्मरवजिए, चुद्धे अभिजाइए । हिरिम पडिसलीणे, <sup>१३</sup> सुविणीए त्ति चुच्छई ॥ १३ ॥  
 वसे गुरुकुले निच्च, जोगव उवहाणव । पियकरे पियवाई, से तिक्ख लङ्घुमरिहई  
 ॥ १४ ॥ जहा सखमि पय, निहिय दुहओ वि विरायइ । एवं बहुस्तुए भिक्खू,  
 धम्मो किती तहा सुय ॥ १५ ॥ जहा से कबोयाण, आइणे कथए सिथा । आसे  
 जवेण पवरे, एव हवइ बहुस्तुए ॥ १६ ॥ जहाइण्णसमाल्हे, सूरे दडपरकमे ।  
 उभओ नदिघोसेण, एव हवइ बहुस्तुए ॥ १७ ॥ जहा करेणुपरिकिणे, कुजरे  
 सट्टिहायणे । बलवते अपडिहए, एव हवइ बहुस्तुए ॥ १८ ॥ जहा से तिक्ख-  
 सिगे, जायखधे विरायई । वसहे जूहाहिवई, एव हवइ बहुस्तुए ॥ १९ ॥  
 जहा से तिक्खदाढे, उदमगे दुप्पहसए । सीहे मियाण पवरे, एव हवइ बहु-  
 स्तुए ॥ २० ॥ जहा से वासुदेवे, सखचक्कगयावरे । अपडिहयवले जोहे, एव हवइ बहु-  
 स्तुए ॥ २१ ॥ जहा से चाउरंते, चक्कवट्टी महिड्हिए । चोहसरयणाहिवई, एव हवइ  
 बहुस्तुए ॥ २२ ॥ जहा से सहस्रक्खे, वजपाणी पुरंदरे । सक्के देवाहिवई, एव  
 हवइ बहुस्तुए ॥ २३ ॥ जहा से तिमिरविद्धसे, उच्छिष्ठते दिवायरे । जल्ते इच  
 तेएण, एव हवइ बहुस्तुए ॥ २४ ॥ जहा से उङ्घवई चदे, नक्खतपरिवारिए ।  
 पडिपुण्णो पुण्णमासीए, एव हवइ बहुस्तुए ॥ २५ ॥ जहा से सामाइयण, कोट्टा-  
 गरे चुरक्खिए । नाणाघञ्जपडिपुण्णे, एव हवइ बहुस्तुए ॥ २६ ॥ जहा सा दुमाण  
 पवरा, जबू नाम सुदसणा । अणादियस्स देवस्स, एव हवइ बहुस्तुए ॥ २७ ॥  
 जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरगमा । सीया नीलवतपवहा, एव हवइ बहुस्तुए  
 ॥ २८ ॥ जहा से नगाण पवरे, सुमह मंदरे गिरी । नाणोसहिपजलिए, एव हवइ बहु-  
 स्तुए ॥ २९ ॥ जहा से सयभुरमणे, उदही अक्खओदए । नाणारयणपडिपुण्णे, एव  
 हवइ बहुस्तुए ॥ ३० ॥ समुद्गमीरसमा दुरासया, अचक्खिया केणइ दुप्पहसया ।  
 सुयस्स पुण्णा विउल्स्स ताइणो, खवितु कम्म गझमुत्तम गया ॥ ३१ ॥ तम्हा  
 सुयमहिड्हिजा, उत्तमठगवेसए । जेणप्पाण परं चेव, सिद्धि सपाउणेजासि ॥ ३२ ॥  
 त्ति-वेमि ॥ इति बहुस्तुयपुज्जं णामं एगारसममज्ज्ञयणं समन्तं ॥ ११ ॥

### अह हरिएसिज्जं णामं दुवालसममज्ज्ञयणं

सोवागदुलसभूओ गुणतरधरो मुणी । हरिएसवले नाम, आसि भिक्खू जिह-  
 ओ ॥ १ ॥ इरिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य । जओ आयाणनिक्खेवे, सजओ  
 समाहिओ ॥ २ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइदिओ । भिक्खट्टा वभ-  
 ०० उत्ता०

इत्यमिम चक्रवार्ते दद्विष्टो ॥ ३ ॥ त पातिष्ठयमेऽर्थं कुवेण परिसोक्तिः । फलेन  
चक्रगमर्त्त उपहृतं सकारिया ॥ ४ ॥ जाग्रमवपदिपदा हिंस्या भविन्नेता ।  
अर्बंभवारिषो वाका इमं कथयमन्वयी ॥ ५ ॥ क्षमो वागमध्य वित्तस्त्री, तत्त्वे  
स्तिष्ठार्थे घोडमार्हे । जोमधेष्ठ वैष्णविसाक्षभूष् संकरत्तुं परिहरिय एव ॥ ६ ॥  
अर्बे द्वामै इन अदामिते ॥ क्षमे व भास्या इत्योग्यो ति ॥ । जोमतेवा वैष्णविस्त-  
भूषा गच्छक्षयमादि किमिर्त ठिक्षो ति ॥ ७ ॥ अनुव तहि विष्णवस्त्वाती वृ-  
ष्टमार्हे उत्सु महामुक्तिस्त । पञ्चमभूता लिङ्की धरीत, इमार्त्त ववयत्तुशतात्त्वा  
॥ ८ ॥ समानी अर्बं संबोधी वैमवारी वित्तो धगपमवपरिमाणामो । फलप्रीक्षस  
उ भिक्षक्षम्यार्थे अत्तसु अद्वा इत्यागम्योति ॥ ९ ॥ विष्णविन्द वैष्णव तुवारे व  
अर्बं पम्ये भवयामेवे । आत्मादि मे चायक्षवीविष्णुति वेतामहेतुं वात्तद तत्त्वी  
॥ १ ॥ उत्तमार्द्दं गोमध्य माहणार्णं वत्तद्विव विद्विष्येष्यमर्त्त । न एवं परिव-  
माहणार्थं वाहसु दुक्षं किमिर्त ठिक्षो ति ॥ ११ ॥ अद्वेद वीयाइ नवार्थं कायण  
तदेव विलेत्त व भास्याए । एमाए स्याए इत्यह मज्जे आरापए तुम्भिते व  
वित्त ॥ १२ ॥ वेतामि अर्बं विष्णवानि शोप, वाहं पवित्रा विमार्ति तुम्भा । ते  
माहणा वाइमित्योद्देशा तारं तु वेतारं शोपेष्यत्त ॥ १३ ॥ वेदो व मात्रे व  
वहो व वेति मोसे वहर्ते व परिमार्त्त ॥ । ते माहणा वाइमित्यिष्ठत, तुवं तु  
वेतारं शोपेष्यत्त ॥ १४ ॥ दुम्भेत्वं गो । भारवरा भित्तारे अद्व व वासेद वैष्णव  
वेद । उक्षावयार्द्दं तुम्भितो वर्ति तारं तु वेतारं शोपेष्यत्त ॥ १५ ॥ वज्ञानमय  
पवित्राममाती फगावते ति तु सगाति वर्त्त ॥ । अदि एवं विजात्त भवयार्थं व वर्त  
वाहसु द्वामै विवेद ॥ १६ ॥ समिर्तहि मज्जे तुम्भाविष्यत्त तुम्भिति तुम्भ  
विष्णविष्यत्त । अदि मे व वायित्य अहैस्मित्य विमव ववयत्त वैष्णव  
॥ १७ ॥ वे इत्य यता उद्वोद्यमा वा अव्यावया वा सह लंगित्वी ।  
व्ये तु देवेन अद्वेद ईता वैठमि वैतूष एतेव वो व ॥ १८ ॥  
अज्ञानव्यार्णं ववयत्त तुम्भेता उत्तम्भमा ताव वहु कुमार । वेदेव विलेत्त द्वेति वेता  
समागम्या न इति तम्भमर्त्त ॥ १९ ॥ रत्नो तवी वोत्तम्भित्वत्त षुष्या भवति ववय  
विविष्यद्यमी । तं पातिया संवय तम्भमार्थं तुद तुमारे परिविष्यत्त ॥ २० ॥  
वेतामित्येव विजोइपूर्वं विष्णवसु रथा भवता व ज्ञामा । वरिद्विवित्तिवैष्णव  
वेतामि वैता इतिष्ठा व एष्ये ॥ २१ ॥ एमो तु सो उत्तमता वह्या विष्णवे  
वैत्यमा वैमवारी । जो मे तथा नेत्तद्व विष्णवानि विज्ञा तवे वोत्तम्भित्वत्त एव  
॥ २२ ॥ भवावगो एम महातुमाग्ये घोरम्भेते घोरम्भेतो व । य एवं तित्वे

अहीलणिज, मा सब्वे तेएण भे निहेजा ॥ २३ ॥ एयाइ तीसे वयणाईं सोचा,  
 पतीड भद्राइ सुमासियाइ । इसिस्स वेयावडियट्ट्याए, जकखा कुमारे विणिवारयति  
 ॥ २४ ॥ ते घोरख्वा ठिय अतलिक्खे, उम्भुरा तहिं तं जण तालयंति । ते भिजदेहे  
 रुहिर वमते, पासितु भद्रा इणमाहु भुजो ॥ २५ ॥ गिरि नहेहिं खणह, अय दतेहिं  
 खायह । जायतेय पाएहि हणह, जे भिक्खु अवमन्नह ॥ २६ ॥ आसीविसो उग-  
 तचो महेसी, घोरव्वओ घोरपरक्षमो य । अगणि च पक्खद पयगसेणा, जे भिक्खुयं  
 भत्तकाले वहेह ॥ २७ ॥ सीसेण एय सरण उवेह, समागया सब्वजणेण तुव्वमे ।  
 जह इच्छह जीविय वा धणं वा, लोग पि एसो कुविओ डहेजा ॥ २८ ॥ अवहेडिय-  
 पिट्टिमउत्तमंगे, पसारिया वाहु अकम्मचिट्टे । निव्वभेरियच्छे रुहिर वमते, उम्भुमुहे  
 निग्गथजीहनेते ॥ २९ ॥ ते पासिया खडिय कछुभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो  
 सो । डसि पसाएइ सभारियाओ, हील च निद च खमाह भते ॥ ३० ॥  
 वालेहि मूढेहिं अयाणएहिं, ज हीलिया तस्स खमाह भते । । महप्पसाया इसिणो  
 हवति, न हु सुणी कोवपरा हवति ॥ ३१ ॥ पुष्ट्व च इर्णिंह च अणागय  
 च, मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ । जकखा हु वेयावडिय करेंति, तम्हा हु  
 एए निहया कुमारा ॥ ३२ ॥ अत्थ च धम्म च वियाणमाणा, तुव्वमे न वि  
 कुप्पह भूडपशा । तुव्व तु पाए सरण उवेमो, समागया सब्वजणेण अम्हे ॥ ३३ ॥  
 अचेमु ते महाभाग ।, न ते किन्चि न अचिमो । भुजाहि सालिम कूर, नाणा-  
 वजणसज्जुय ॥ ३४ ॥ इम च मे अत्थि पभूयमन्न, त भुजस् अम्ह अणुगग-  
 हृष्टा । वाढ ति पडिच्छड भत्तपाण, मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥ ३५ ॥ तहिय  
 गधोदयपुप्फत्वास, दिव्वा तहिं वसुहारा य बुद्धा । पहयाओ दुदुहीओ सुरेहि,  
 आगाते अहो दाण च धुड्ह ॥ ३६ ॥ सक्ख खु दीसइ तवोविसेसो, न दीसइ  
 जाइविसेम कोई । सोवागपुत्त हरिएमसाहु, जस्सेरिसा डहि महाणुभाग ॥ ३७ ॥  
 कि माहणा । जोइमारभता, उदएण सोहिं वहिया विमगगहा ? । ज मगगहा वाहि-  
 रिय विमोहिं, न त सुइद्धु कुमला वयति ॥ ३८ ॥ दुस च जूव तणकट्टमर्गें,  
 साय च पाय उदग फुसता । पाणाइ भूयाइ विहेडयता, भुजो वि मदा । पकरेह  
 पाव ॥ ३९ ॥ कह चरे भिक्खु । वय जयमो, पावाइ कम्माइ पणुल्लयमो ।  
 अन्त्ताहि ये सजय । जक्त्तपूडया, कह सुजट्टु कुमला वयति ॥ ४० ॥ छज्जीवकाए  
 अम्मारभता, मोस अदत्तं च असेवमाणा । परिगगह इत्थिओ माणमाय, एव परिज्ञाय  
 चरति दता ॥ ४१ ॥ चुस्सुडा पंचहिं चवरोहिं, इह जीविय अणवक्खमाणा । वोसट्ट-  
 काया चुइचत्तटेहा, महाजयं जयइ जनसिट्ट ॥ ४२ ॥ के ते जोई के व ते जोइठाणे ?

क्ष ते मुवा कि च ते क्षरिस्यं ॥ एहा य ते क्षमरा चंति मिन्दूः ॥ क्षरेव हेमेष  
दुषापि चोर्दै ॥ ४३ ॥ तो चोर्दै जीवो ज्ञोऽठारं ओगा मुवा चंति क्षरिस्ये ।  
क्षमेहा संब्रमजोगधंती हेमे दुषापि इसिष्य पसत्वे ॥ ४४ ॥ के ते हरए के व ते  
चंतिलित्ये ॥ क्षर्दै चिनायो व एव ज्ञापि ॥ ज्ञाप्तमनुष्टुप् के संब्रम । क्षवाहुता  
इच्छामो नार्दं भक्ष्यो दुगासे ॥ ४५ ॥ चम्भे हरए क्षे चंतिलित्ये ज्ञापिष्ये  
अत्तपसुखदेसे । वहै चिनायो चिन्मने चिमुदो मुसीङ्गभूमो फक्षापि दोषे ॥ ४६ ॥  
एव चिनाण दुष्क्षेहि चिन्तु, महापिजार्य इसिष्य पसत्वे । क्षर्दै चिनाता चिन्मय  
चिमुद्या महारिसी उत्तर्म ठार्य पाता ॥ ४७ ॥ चिन्मेमि ॥ इति हरिषसिर्ये  
जार्य मुवाळसमग्रमनुष्टुप्यणे समर्थ ॥ १२ ॥

### अह चित्तसंमूहज्ञपाम तेरहममज्जयर्ण

←०४३०→

आ॒प्तराजिको यहु चापि चिनार्ण दु॒हरिष्यमुरुपिमि । तु॒क्ष्मीए॑ वं॒क्ष्मणे॑ च॒  
क्ष्मो॑ फउ॒म्युम्माम्मो ॥ १ ॥ क्षपित्रो॑ चं॒भूतो॑ चित्तो॑ यु॒क्ष चाव्ये॑ पुरितात्तमिमि॑ ।  
सेत्तिक्षुममिमि॑ चित्ताडे॑ चम्भं॑ सोक्ष्म फक्षम्मो ॥ २ ॥ क्षपित्रमिमि॑ व नवरे॑, चम्भम्मा॑  
दो॑ चि॑ चित्तादेम्मा॑ । द्यु॒क्ष्मय॒क्षममिमार्य॑ वहै॒ति॑ ते॑ ए॒हमेवस्तु ॥ ३ ॥ चाव्यहै॑  
महित्तीये॑ चेम्मत्तो॑ महाप्स्तो॑ । भावरै॑ चहु॒मालेण॑ इमे॑ चयवमम्मार्यी॑ ॥ ४ ॥ आ॒जियो॑  
भावरा॑ दो॑ चि॑ अ॒क्षम्भवसायुप्या॑ । अ॒क्षम्भम्भूरुणा॑ अ॒क्षम्भहै॒पुरिलो॑ ॥ ५ ॥ एव्य  
दृ॒स्त्वो॑ आसी॑ चिना॑ क्षम्भित्रे॑ नगे॑ । है॒सा॑ भवं॒क्ष्मीरे॑, सोक्ष्माणा॑ काहिम्भूरिर॑ ॥ ६ ॥  
देवा॑ य देवस्त्वेगमिया॑ आपि॑ अम्भे॑ महित्तिया॑ । इमा॑ चो॑ छट्टिवा॑ चाव्य॑, अ॒क्षम्भेव॑ चा॑  
चिना॑ ॥ ७ ॥ क्षम्मा॑ चिनाताप्यदा॑ द्युमे॑ रात्म॑ । चित्तिया॑ । चेति॑ रामविष्ण॑,॒  
चिप्यद्वीपमुवागाया॑ ॥ ८ ॥ चम्भसोयप्यदा॑ क्षम्मा॑ मए॑ पुरा॑ चाव्य॑ । ते॑ अ॒ज वहै॑  
मु॒क्षम्मो॑ कि॑ तु॑ चित्ते॑ चि॑ दे॑ तदा॑ ॥ ९ ॥ सर्वे॑ हृ॒तिक्ष्य॑ चम्भे॑ नहर्य॑ एव्य  
क्षम्भाण॑ न॑ भोक्ष्य॑ अ॒प्यि॑ । अ॒त्यहै॑ कामेहै॑ व उत्तमेहै॑, आ॒या॑ ममे॑ पुष्टम्भेवेर॑  
॥ १ ॥ ज्ञापि॑ चम्भ॑ । महालुमार्ग॑ महित्तिवे॑ पुष्टक्षम्भवेर्य॑ । चित्ते॑ चि॑  
ज्ञापि॑ तदेव॑ राय॑ । इही॑ चुर्दै॑ तस्य॑ चि॑ व च्यम्भ॑ ॥ ११ ॥ महालुमार्ग॑ चम्भ॑  
च्यम्भ॑ याहालुमार्ग॑ नरसंवयम्भ॑ । च॑ मिन्दूलुमो॑ सीम्भुण्यावैवा॑ एव॑ च॑ च॑ च॑  
मि॑ चाव्ये॑ ॥ १२ ॥ उचोदय॑ महु॑ च्यो॑ च॑ च॑ पैवेइवा॑ ज्ञाप्तम्भा॑ व च्यम्भा॑ । इसे॑  
चिह्न॑ चित्त॑ । चण्प्यम्भ॑ वसाहै॑ पैवालुम्भोवेव॑ ॥ १३ ॥ नहेहै॑ गीएहै॑ व चरहै॑  
काहिज्ञवद॑ परिकारवंतो॑ । भुवाहै॑ भोगाइ॑ इमाइ॑ मिन्दू॑ । मम॑ रोवर्य॑ ज्ञाप्ता॑ इ

|    |                    |    |    |    |    |   |
|----|--------------------|----|----|----|----|---|
| ६२ | मिथ्यात्वी जीव वि० | १४ | १  | १३ | ६  | ६ |
| ६३ | अनेनी जीव वि०      | १४ | ४  | १३ | ६  | ६ |
| ६४ | सकषायी जीव वि०     | १४ | १० | १५ | १० | ६ |
| ६५ | छेद्यस्थ जीव वि०   | १४ | १२ | १५ | १० | ६ |
| ६६ | संयोगी जीव वि०     | १४ | १३ | १५ | १२ | ६ |
| ६७ | संसारी जीव वि०     | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ६८ | समुच्चय जीव वि०    | १४ | १५ | १५ | १२ | ६ |

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥



## सूत्र श्री पन्नवराजी पद ६ । ( विरहद्वार )

जिस योनि में जीव था वह वहाँ से चब जाने के बाद उस योनि में दूसरा जीव कितने काल से उत्पन्न होते हैं, उनको विरह कहते हैं । जघन्य तो सर्वे स्थान पर एक समय का विरह है उत्कृष्ट अलग अलग हैं जैसे—

( १ ) समुच्चय च्यार गति संझी मनुष्य और संझी तिर्यंच में उत्कृष्ट विरह १२ मुहर्त का है ।

( २ ) पहली नरक, दश भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्मेशान देव और असंझी मनुष्य में २४ मुहर्त, दूजी नरक

दुक्ख ॥ १४ ॥ त पुव्वनेहेण कयाणुरागं, नराहिव कामगुणेषु गिद्ध । वम्मस्सिओ  
तस्स हियाणुपेही, चित्तो इमं वयणमुदाहरित्या ॥ १५ ॥ सब्ब विलवियं गीय,  
सब्ब नद्व विडवियं । सब्बे आभरणा भारा, सब्बे कामा दुहावहा ॥ १६ ॥  
बालाभिरामेषु दुहावहेषु, न त सुहं कामगुणेषु रायं । विरत्तकामाण तवोधणाणं,  
ज भिक्षुण सीलगुणे रयाण ॥ १७ ॥ नरिंद । जाई अहमा नराण, सोवागजाई  
दुहओ गयाण । जहिं वयं सञ्चजणस्स वेस्सा, वसीअ सोवागनिवेसणेषु ॥ १८ ॥  
तीसे य जाईइ उ पावियाए, बुच्छामु सोवागनिवेसणेषु । सञ्चस्स लोगस्स दुगड्ढ-  
णिजा, इह तु कम्माइ पुरे कडाइ ॥ १९ ॥ सो दाणिसिं राय । महाणुभागो,  
महिंडिको पुण्णफलोववेओ । चइत्तु भोगाइ असासयाइ, आदाणहेउं अभिणिकखमाहि  
॥ २० ॥ इह जीविए राय । असासयम्मि, धणिय तु पुण्णाइ अकुञ्चमाणो । से  
सोयई मम्मुमुहोवणीए, धम्म अकाऊण परंमि लोए ॥ २१ ॥ जहेह सीहो व मिय  
गहाय, मम्मू नर नेइ हु अतकाले । न तस्स माया व पिया व भाया, कालम्मि  
तम्मसहरा भवति ॥ २२ ॥ न तस्स दुक्ख विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा न  
सुया न वधवा । एक्को सथ पच्छण्होइ दुक्ख, कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥ २३ ॥  
चिच्चा दुपय च चउप्पय च, खेत्त गिह वणधन्न च सब्ब । सकम्मवीयो अवसो  
पयाइ, परं भव सुदर पावग वा ॥ २४ ॥ त एक्कग तुच्छसरीरग से, चिर्हगय दहिय  
उ पावगेण । भजा य पुत्तो वि य नायओ वा, दायारमन्न अणुसकमति ॥ २५ ॥  
उवणिजाई जीवियमप्पमाय, वण जरा हरइ नरस्स राय । पचालराया । वयणं  
सुणाहि, मा कासि कम्माइ महालयाइ ॥ २६ ॥ अह पि जाणामि जहेह साहू, ज  
मे तुम साहसि वक्खमेय । भोगा इसे सगकरा हवति, जे दुज्या अज । अम्हारिसेहिं  
॥ २७ ॥ इत्थिणपुरम्मि चित्ता !, दद्धूण नरवइ महिंडिय । कामभोगेषु गिद्धेण,  
नियाणमसुह कड ॥ २८ ॥ तस्स मे अप्पडिकतस्स, इम एयारिस फल । जाणमाणो  
वि ज धम्म, कामभोगेषु मुच्छिओ ॥ २९ ॥ नागो जहा पकजलावसञ्चो, दहु थल  
नामिसमेह तीर । एव वय कामगुणेषु गिद्धा, न भिक्षुणो ममगमणुच्चयामो ॥ ३० ॥  
अच्छेड कालो त्रूति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा । उविच्च भोगा पुरिस  
चयति, दुम जहा खीणफल व पकखी ॥ ३१ ॥ जड तसि भोगे चडइ असत्तो,  
अजाइ कम्माइ करेहि राय । धम्मे ठियो सञ्चपयाणुकपी, तो होहिसि देवो इओ  
विउच्ची ॥ ३२ ॥ न तुज्ज भोगे चडऊण बुद्धी, गिद्धो सि आरंभपरिगहेषु । भोह  
क्तो एक्तिउ विप्पलाचो, गच्छामि राय । आमतिओ सि ॥ ३३ ॥ पचालराया वि  
य घमदत्तो, साहुस्स तस्स वयण अकाउ । अणुत्तरे भुजिय कामभोगे, अणुत्तरे

सो करए फिरहो प ३४ ॥ नितो वि क्षमेहि विरतामो सदगच्छारिक्षतां महेदी । अनुत्तरं संक्षमं पास्त्वा अनुत्तरं निदिग्धं गजो ॥ ३५ ॥ नितेन ॥ इसे विचर्त्संमूहक्षणामं तेरहममम्भयणं समर्थं ॥ ३६ ॥

## अह उत्तुयारिज्ज णाम उत्तृसममज्जयणं

देवा मविदाण पुरे मदमिम केर्दु तुया एगविमाणासी । पुरे तुराये उम्मास नामे वाए समिदे मुरम्भेयरम्भे ॥ १ ॥ सम्मदेशेन पुराङ्गेत्र तुम्भेन इमेत्त व वे फूला । विविक्ष्यसंसागमया जहाय विविदमार्ति सरवं पद्मा ॥ २ ॥ पुम्भ माम्भम उम्भार दो वी पुरेहिमो तस्स बसा व पर्ती । विद्याम्भिती व व्ये श्रुयारो रायत्व देवी उम्भवदै प ॥ ३ ॥ आंबराम्भुमदमिम्भया वर्दि विदा रामिनिदिल्लिता । उंसारक्षस्त्वं विमोक्षदम्भष्टु इहूल व उम्भगुणे विरता ॥ ४ ॥ विद्युत्तां शोक्ति वि माहृत्वस्त्वं उम्भमधीम्भत्तु पुराविद्यस्त्वं । उरितु वोरावित तत्त वार्त, दहा तुविक्ष्यं तवसंजर्वं व ॥ ५ ॥ ते उम्भमोग्मेषु अस्त्रमाणा मालुम्भ एष्टु वे वारि विम्भा । मोन्मामिक्ती अमित्याम्भस्त्वा तार्वं वद्याप्मम ईर्व वर्त्तु ॥ ६ ॥ असासर्वं दहु इमे विहारे उम्भमंतरायं न व वीहमार्वं । तद्वा विद्वि व र्व उम्भामो वामेतवाम्भो वरिस्त्वाषु मोर्ती ॥ ७ ॥ वह तावगो तत्त मुर्वीव देवि, उवस्त्व वाष्पेक्षर वयसी । इमे वर्वं वेयविभे वर्त्तिं वहा व होइ अचाव भेदे ॥ ८ ॥ अहिज्ज वेए परिविस्त्व विष्ये पुरो परिदुष्प विद्विति वामा । । भोवाव वोप चह इस्तियाहि, वारण्यामा दोह तुच्छी फक्षत्वा ॥ ९ ॥ सोवभिगावा भावण्यमिवलो भोद्वाविक्षा क्षम्भयाहित्वं । उंतात्मार्वं परितप्मार्वं अङ्गप्ममार्वं वुहा वुं व ॥ १ ॥ पुरोहितं व उम्भोऽउम्भत्ति विमेत्तर्वं व द्वय वेदेवं । वहामी उम्भयेहि वेह तुम्भाला ते पद्मिक्षव नहं ॥ ११ ॥ वेदा वहीना व भर्त्ति वार्वं तुया विदा विति तमे वमेवं । वामा व पुता व द्वयति वार्वं वे नाम ते उम्भमेव एर्व ॥ १२ ॥ उपमित्ताउम्भवा उम्भाभुम्भवा फामदुम्भवा अवियाम्भुम्भवा । उंसारमेवत्वं विम्भत्तम्भया वाची अन्त्वाय च उम्भमोया ॥ १३ ॥ परिव्यवैठ विवित्वामे, वहो व रामो परितप्ममावो । अङ्गप्मते व उम्भेत्वावे पव्योति मर्तु उरिते वर्व व ॥ १४ ॥ इमे व मे भावित इमे व वर्ति इमे व वे विव इमे भवेव । वै एवमेव अङ्गप्ममार्वं वह इर्यति ति वर्वं पम्भवो ॥ १५ ॥ वर्वं कर्तु वह इस्तियाहि, उववा वहा उम्भगुणा फम्भवा । तर्वं एव वप्तव वस्तु भेदे, व उम्भ



सोवाऽभिनिकर्म्म पहाय भ्रोए । कुडुषधारे वित्तुतामं च रथं अभिनवं समुपय  
देशी ॥ ३७ ॥ अतासी पुरिसो रथं । न सो होइ परेसिओ । मातृज्ञेष परिवर्त,  
अर्थं आशुरमिथ्यति ॥ ३८ ॥ सर्वं जग जह द्वारे सर्वं जाति जगे नहै । सर्वं  
पि हे अपनात येह ताजाय तं तद ॥ ३९ ॥ मरिहिसि रथ । जगा तवा च  
मणोरमे अमणुये पहाय । एहो हु भम्मो नहरेव । तारं न विजै अवनिवेद  
किति ॥ ४० ॥ नाहं रमे परिकल्पि पंखरे वा संतानाहिता अरिस्यामि मोर्ख ।  
अहित्यजा उत्तुक्ता निरामिता परिस्यारमित्यतोषा ॥ ४१ ॥ इत्यग्निका ज्या  
रण्ये उज्जमानेतु अनुपु । अते सत्ता फ्लोर्यति राग्नेत्यर्थं गया ॥ ४२ ॥ स्वर्ण  
बम सूडा बाममोगेतु सुचित्या । उज्जमाने न कुञ्जामो राग्नेत्यमित्या अर्थं ॥ ४३ ॥  
मोगे भोजा बमिता य लमुमूलिहारिषो । आमोयमाणा गच्छति विचा वासन्य  
इत ॥ ४४ ॥ इमे य बदा फैशनि मम इत्यउत्तमामया । अर्थं य सत्ता अन्तेष्ट  
मरिस्यामो ज्या इमे ॥ ४५ ॥ सामिर्दे दुसर्व विस बग्गमार्घ निरामिति ।  
आमित्य मम्ममुजित्या विहरिस्यामि निरामिता ॥ ४६ ॥ निरोषमा न भयानं  
कायं संग्रामबुधे । उरयो सुष्टुपापस्त्वं संक्षमानो दर्ढं भरे ॥ ४७ ॥ वासन्य  
वैष्णवं छित्ता अप्पानो बहुद्विवदे । एवं फलं महारायं उत्सुपारिति मे श्रव्यं ॥ ४८ ॥  
उत्ता विठ्ठं रथं अममोगे य दुष्टए । निरित्यस्या निरामिता निष्पौर्वमा  
॥ ४९ ॥ सम्मं भम्म विमानिता, विचा अमणुये भरे । रथं परिज्ञात्यवानं अर्थं  
ओरप्रहमा ॥ ५० ॥ एवं ते कलाती तुदा सर्वै भम्मफलमया । अम्ममत्तुमत्तिम्य  
दुक्षयस्त्वप्यवेत्यिषो ॥ ५१ ॥ सारये विगवमोहार्घं पुत्रि मातृज्ञामिता ।  
अविरेण्य बलेण दुक्षयस्त्वमुदागमा ॥ ५२ ॥ रामा तह देवीए, मातृनो य  
पुरीशिष्यो । मातृसी वारणा चेव सम्बे ते परिनिष्पुडा ॥ ५३ ॥ ति—वेमि ॥ इति  
उत्सुपारित्यं प्याम अठृसममज्जयर्थं समर्थं ॥ १४ ॥

### अहं समिष्टस्य णामं पण्णरसममज्जयणं

मोर्ख अरिस्यामि समिष्ट भम्मे उत्तिए उत्सुक्ते निवाहितिए । उर्वं वीज  
बग्गमक्षमे बज्जायएसी परिष्वेद स निक्ष ॥ १ ॥ रामोवर्तं चरेव लो वित्त  
वेयविवाहरमित्यए । फ्ले अमिष्टू उम्मदंसी अे अमित वि न मुक्तिए स निक्ष ॥  
२ ॥ अहोसवह वित्त शीरे मुझी भरे जाहे निष्पमाल्युते । अम्मज्ञमने अर्थं

१ वेमे—वेयं (हेव) जाप्त चो । २ उम्मपासी ।

हिंदे, जे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥ ३ ॥ पतं सयणासणं भइता, सीउणहं विविह च दसमसग । अव्वगगमणे असपहिंदे, जे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥ ४ ॥ नो सक्षमिच्छाई न पूय, नो वि य वदणगं कुओ पसस । से सजए सुव्वए तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥ जेण पुण जहाइ जीवियं, भोह वा कसिण नियच्छाई । नरनारिं पजहे सया तवस्सी, न य कोलहलं उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥ छिन्न सर भोम अतलिक्ख, सुमिण लक्खणदङ्कवत्युविज । अगवियारं सरस्स विजय, जे विजाहिं न जीवइ न भिक्खू ॥ ७ ॥ मत मूल विविह वेजचित, वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाण । आउरे सरणं तिगिच्छ्य च, त परिशाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ८ ॥ खत्तियगणउगगरायपुत्ता, माहण भोइय विविहा य सिपिणो । नो तेसि वयह सिलोगपूय, त परिशाय परेव्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥ गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा, अप्पव्वइएण व सयुया हविजा । तेसि इहलोइयफलट्ठा, जो सथव न करेइ स भिक्खू ॥ १० ॥ सयणासणपाणभोयण, विविह खाइम साइम परेसि । अदए पडिसेहिए नियठे, जे तत्य न पउस्सई स भिक्खू ॥ ११ ॥ ज किंचि आहारपाणग, विविह खाइम साइम परेसि लहु । जो त तिविहेण नाणुकंपे, मण-वयकायसुसवुडे स भिक्खू ॥ १२ ॥ आयामग चेव जवोदण च, सीय सोवीरजवोदग च । नो हीलए पिंड नीरस तु, पतकुलाइ परिव्वए स भिक्खू ॥ १३ ॥ सद्य विविहा भवति लोए, दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा । मीमा भयभेदवा उराला, जो सोच्चा न विहिजाई स भिक्खू ॥ १४ ॥ वाय विविह समिच्च लोए, सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा । पन्ने अभिभूय सव्वदसी, उवसते अविहेडए स भिक्खू ॥ १५ ॥ असिप्पर्जीवी अगिहे अमित्ते, जिइदिए सव्वओ विष्पमुक्ते । अणुक्कसाई लहुअप्प-भक्ती, चिच्चा गिह एगच्चरे स भिक्खू ॥ १६ ॥ ति-वेसि ॥ इति सभिक्खू णामं पणणरसममज्जयण समर्तं ॥ १५ ॥

### अह बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसममज्जयणं

मुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं दम वमचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म सजमवहुले सवरवहुले

१ न स भिक्खुति सेसो, अहवा नाणुकपे-ना+अणुकपे “ना” साहुपुरिसो गिहत्यगिहुवलद्विदुदाहाराइणा वालयुद्धगिलाणसजयाणमुवरिमणुकप काऊण वेयावश करेइ त्ति । २ मित्तसत्तुवज्जिए रागदोसरहिए त्ति अट्टो ।

समाहित्युके गुरुते श्रुतिरिए गुतावंभवारी समा अप्पमते विहरेजा । वरे वह दे  
धेरोहि मगवंतेहि दस बैमचेरसमाहिठाणा पदता जे मिक्क दोजा निसुम्म दुम्म  
शुकुके दंबरलकुके समाहित्युके गुरुते श्रुतिरिए गुतावंभवारी समा अप्पमते विहरेजा ।  
इमे यषु ते वेराहि मगवंतेहि दस बैमचेरसमाहिठाणा पदता जे मिक्क दोजा  
निसुम्म दंबरलकुके दंबरलकुके समाहित्युके गुरुते श्रुतिरिए गुतावंभवारी समा  
अप्पमते विहरेजा । दंबाह-विनिवाह समणासुजाह सेविता हवद से निमये । ते  
इत्याप्युपेष्ट्याद्युत्ताह समणासुजाह सेविता हवद से निमये । ते च्छमिति ते ।  
आवरियाह । निम्पयस्य व्यषु इत्याप्युपेष्ट्याद्युत्ताह समणासुजाह सेविता  
वंभवारिस्य बैमचेरे दोजा वा क्षेत्र वा विद्यमित्य वा समुपविक्षा मेरे वा  
उक्षेत्रा उम्मार्य वा पात्रमित्या शीहृष्टिर्य वा रोगार्थक दृष्टेजा केवलित्यात्त्वे  
[वा] उम्मार्यो भेदेजा । उम्हा नो इत्याप्युपेष्ट्याद्युत्ताह समणासुजाह उत्तीरा  
हवद से निमये ॥ १ ॥ नो इत्यार्थ च्छमिति दृष्टा हवद से निमये । ते च्छमिति  
ते । आवरियाह । निम्पयस्य व्यषु इत्यार्थ कह व्येत्याप्युपेष्ट्याद्युत्ताह सेविते  
दोजा वा क्षेत्र वा विद्यमित्य वा समुपविक्षा मेरे वा उक्षेत्रा उम्मार्य वा  
पात्रमित्या शीहृष्टिर्य वा रोगार्थक दृष्टेजा केवलित्यात्त्वो उम्मार्यो भेदेजा ।  
उम्हा [व्यषु] नो इत्यार्थ कह व्येत्या ॥ २ ॥ नो इत्यार्थ उद्दि उद्दित्याप्य  
विहिता हवद से निमये । ते च्छमिति ते । आवरियाह । निम्पयस्य व्यषु इत्यार्थ  
उद्दि उद्दित्यागवस्य बैमचारिस्य बैमचेरे दोजा वा क्षेत्र वा विद्यमित्य वा  
समुपविक्षा मेरे वा उक्षेत्रा उम्मार्य वा पात्रमित्या शीहृष्टिर्य वा रोगार्थक  
दृष्टेजा केवलित्यात्त्वो उम्मार्यो भेदेजा । उम्हा व्यषु नो निमये इत्यार्थ  
उद्दि उद्दित्यागवप्य विहरेजा ॥ ३ ॥ नो इत्यार्थ इतिवाह मन्त्रेहराह मन्त्रोरमार्य  
आम्भेहता निज्ञाविता हवद से निमये । ते च्छमिति ते । आवरियाह ।  
निम्पयस्य व्यषु इत्यार्थ इतिवाह मन्त्रोहराह मन्त्रोरमार्य आम्भेहताप्य निज्ञाव  
मावस्य बैमचारिस्य बैमचेरे दोजा वा क्षेत्र वा विद्यमित्य वा समुपविक्षा  
मेरे वा उक्षेत्रा उम्मार्य वा पात्रमित्या शीहृष्टिर्य वा रोगार्थक दृष्टेजा केवलि  
पदात्त्वो उम्मार्यो भेदेजा । उम्हा व्यषु नो निमये इत्यार्थ मन्त्रोहराह  
मन्त्रोरमार्य आम्भेहता निज्ञाविता ॥ ४ ॥ नो इत्यार्थ इतिवाह मन्त्रोहराह  
वा नित्याहराह वा इत्याहराह वा उद्दित्याह वा उद्दित्याह वा उद्दित्याह  
वा उद्दित्याह वा विद्यमित्याह वा उद्दित्याह वा उद्दित्याह वा विद्यमित्याह  
वा विद्यमित्याह वा विद्यमित्याह वा उद्दित्याह वा उद्दित्याह वा विद्यमित्याह  
वा विद्यमित्याह । निम्पयस्य व्यषु इत्यार्थ इतिवाह मन्त्रोहराह वा विद्यमित्याह वा

कृद्यसदं वा रुद्यसदं वा गीयसदं वा हसियसदं वा यणियसदं वा कदियसदं वा  
 विलवियसदं वा सुणेमाणस्स वभयारिस्स वभचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा  
 समुप्पजिज्ञा, मेद वा लमेज्ञा, उम्मायं वा पाउणिज्ञा, दीहकालिय वा रोगायकं  
 हवेज्ञा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्ञा । तम्हा खलु नो निगंथे इत्थीणं कुट्ट-  
 तरसि वा द्वस्तरसि वा भित्तंतरसि वा कृद्यसदं वा रुद्यसदं वा गीयसदं वा  
 हसियसदं वा यणियसदं वा कदियसदं वा विलवियसदं वा सुणेमाणे विहरेज्ञा ॥ ५ ॥  
 नो इत्थीणं पुब्वरय पुब्वकीलिय अणुसरिता हवइ से निगंथे । त कहमिति चे ।  
 आयरियाह । निगथस्स खलु इत्थीणं पुब्वरय पुब्वकीलिय अणुसरमाणस्स वभया-  
 रिस्स वभचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पजिज्ञा, मेद वा लमेज्ञा,  
 उम्माय वा पाउणिज्ञा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेज्ञा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ  
 भसेज्ञा । तम्हा खलु नो निगंथे इत्थीणं पुब्वरयं पुब्वकीलिय अणुसरेज्ञा ॥ ६ ॥  
 नो पणीयं आहार आहारिता हवइ से निगंथे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग-  
 यस्स खलु पणीय आहार आहारेमाणस्स वभयारिस्स वभचेरे सका वा कंखा वा विइ-  
 गिच्छा वा समुप्पजिज्ञा, मेद वा लमेज्ञा, उम्माय वा पाउणिज्ञा, दीहकालिय वा  
 रोगायकं हवेज्ञा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्ञा । तम्हा खलु नो निगंथे  
 पणीय आहारे आहारेज्ञा ॥ ७ ॥ नो अइमायाए पाणभोयण आहारेता हवइ से  
 निगंथे । त कहमिति चे । आयरियाह । निगथस्स खलु अइमायाए पाणभोयण  
 आहारेमाणस्स वभयारिस्स वभचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पजिज्ञा,  
 मेद वा लमेज्ञा, उम्माय वा पाउणिज्ञा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेज्ञा, केवलि-  
 पन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्ञा । तम्हा खलु नो निगंथे अइमायाए पाणभोयणं  
 आहारेज्ञा ॥ ८ ॥ नो विभूसाणुवाई हवइ से निगंथे । त कहमिति चे । आयरियाह ।  
 विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्यिजणस्स अभिलसणिजे हवइ । तओ णं इत्यिजणेण  
 अभिलसिजमाणस्स वभयारिस्स वभचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्प-  
 जिज्ञा, मेद वा लमेज्ञा, उम्माय वा पाउणिज्ञा, दीहकालिय वा रोगायकं हवेज्ञा,  
 केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्ञा । तम्हा खलु नो निगंथे विभूसाणुवाई हवेज्ञा  
 ॥ ९ ॥ नो सद्वरसगधफासाणुवाई हवइ से निगंथे । त कहमिति चे । आयरियाह ।  
 निगयस्स खलु सद्वरसगधफासाणुवाई हवइ से निगंथे । वा विइगिच्छा वा समुप्पजिज्ञा,  
 मेद वा लमेज्ञा, उम्माय वा पाउणिज्ञा, दीह-  
 कालियं वा रोगायकं हवेज्ञा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्ञा । तम्हा खलु नो सद्व-  
 रसगधफासाणुवाई भवेज्ञा से निगंथे । दसमे वभचेरसमाहिठाणे हवइ ॥ १० ॥

हर्षति हस्य लिङ्गेया । तैवहा—अं निवित्तमजाहृष्णं रुद्रिदं इतिवद्येव च । वंभेरसु  
रकम्भु भास्यं तु निसेवए ॥ १ ॥ भवपत्तायज्ञपत्ती क्षमणात्मिक्षुर्ण ।  
वंभेरसुरभो मित्तू, वीक्ष्म तु निवज्ञए ॥ २ ॥ सुमं च सेव्यं वीहि, सुर्वं च  
भमिक्षुर्ण । वंभेरसुरभो मित्तू, निष्ठसो परिक्षये ॥ ३ ॥ अंगप्रोक्षेष्वर्णं  
चात्मकियपेहियं । वंभेरसुरभो वीक्ष्म चक्षुमित्तू विक्षये ॥ ४ ॥ शूरं चर्तु  
गीर्णं हस्तिं यमिम्पर्णहियं । वंभेरसुरभो वीक्ष्म सोयगित्तू विक्षये ॥ ५ ॥ हर्षति  
क्षिति रहं दप्यं सहस्रावितासिमापि य । वंभेरसुरभो वीक्ष्म नामुपिते चक्षुर्ण ॥ ६ ॥ पश्चीमं  
भात्तपार्णं तु, क्षित्यं मनविक्षुर्ण । वंभेरसुरभो मित्तू, निष्ठे  
परिक्षये ॥ ७ ॥ घमस्तूर्ण निष्ठे चक्षुर्ण चक्षुर्ण परिक्षुर्ण । नामुर्णं तु तुमित्तू  
वंभेरसुरभो चक्षु ॥ ८ ॥ निष्ठसु प्रियजेत्ता सरीरप्रियम्भार्ण । वंभेरसुरभो मित्तू,  
सिमारत्तू न चारए ॥ ९ ॥ सुरे हर्षे च गीर्णं च रसे चारे ताहेव च । प्रेष्टिं  
कामगुणे निष्ठसो परिक्षये ॥ १ ॥ आप्यमो वीक्ष्मात्मेषो वीक्ष्मा च वंभेरसु ।  
सुक्ष्मो चेत्त नौरीय ताहिं इंदियवर्णर्ण ॥ ११ ॥ शूरं शूरं गीर्णं इस्तुत्तूर्ण  
तिर्णापि च । पश्चीमं भर्त्तूर्ण च आहमार्ण पात्तमोर्ण ॥ १२ ॥ यत्तमूर्णर्ण ॥ १३ ॥  
आममोगा य तुज्ज्वली । गरस्त्तत्ताविहिस्तु निष्ठे ताहेवर्ण चहा ॥ १४ ॥ इस्त  
काममोगे य निष्ठसो परिक्षये । ईक्षुष्मापि सुभ्यापि क्षेत्ता परिष्ठाप्तू ॥ १५ ॥  
घममारामे चरे मित्तू, निष्ठे घममाराही । घममारामे एप वर्णे वंभेरसुर्णहिर्  
॥ १ ॥ ईक्षुष्मापि वात्ता चक्षुर्ण चक्षुर्ण कित्तारा । वंभमारिं वंभेरसुर्णहिर्  
कर्णीति तं ॥ १६ ॥ एस घम्मे तुवे निष्ठे सात्तपे विष्ठेलिय । विष्ठा विष्ठेलिय  
चालीय सिविष्ठस्तुष्टि त्वापरे ॥ १७ ॥ ति—तेमि ॥ इति वंभेरसमाप्तित्ता  
णार्मं सोब्बसमम्भुपर्णं समर्ण ॥ १८ ॥

### अहं पात्तसमणिज्जं णाम सत्तारसममज्जहयर्ण

ते चहं च पञ्चहए निष्ठेषे चक्षुमुष्मिता विष्ठमोक्षेषे । ईक्षुष्मं वर्णं गीर्णं  
साभे निहरेव पञ्चा च चहामुर्णं तु ॥ १ ॥ सेज्जा दद्या पात्तर्णमि भर्त्ति उपवर्णे  
मोतु ताहेव पास्ते । आप्यमि च चक्षु भात्तुष्टति क्षि नाम क्षामि ईर्ण वर्णे  
॥ २ ॥ ते चहं च पञ्चहए निष्ठास्तुष्टि क्षामसो । तुष्मा विष्ठा तर्ण तुष्मां चक्षुम्भे  
ति तुष्मर्ण ॥ ३ ॥ आवरियउत्तव्यापर्णै, तुष्मे निष्ठवे च गाहिए । ते चहं तिष्ठी  
वात्ते पञ्चलम्भे ति तुष्मर्ण ॥ ४ ॥ आवरियउत्तव्यापार्णै तुष्मे न चक्षुम्भे ।

अप्पडिपूयए थद्वे, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ ५ ॥ सम्मदमाणे पाणाणि, वीयाणि हरियाणि य । असजए सजयमन्नमाणे, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ ६ ॥ सथार फलग पीढ, निसेज्जं पायकवलं । अपमज्जियमारुहड, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ ७ ॥ दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खण । उल्लधणे य चडे य, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ ८ ॥ पडिलेहेड पमत्ते, अवउज्जाइ पायकवल । पडिलेहा अणाउत्ते, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ ९ ॥ पडिलेहेड पमत्ते, से किंचि हु निसामिया । गुरुपरिभावए निच्च, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १० ॥ बहुमाई पमुहरी, थद्वे लुद्वे अणिगगहे । असविभागी अवियत्ते, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ ११ ॥ विवाद च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा । तुगगहे कलहे रत्ते, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १२ ॥ अयिरासणे कुकुइए, जत्थ तत्थ निसीयई । आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १३ ॥ ससरक्खपाए सुवई, सेज न पडिलेहई । सथारए अणाउत्ते, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १४ ॥ दुद्धदही विगड्बो, आहारेइ अभिक्खण । अरए य तबोकम्मे, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १५ ॥ अत्थतम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं । चोइओ पडिच्चोएइ, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १६ ॥ आयरियपरिच्चाई, परपासडसेवए । गाणगणिए दुब्भूए, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १७ ॥ सय नेह परिच्चज, परगेहसि वावरे । निमित्तेण य ववहरई, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १८ ॥ सञ्चाइपिंड जेमेह, नेच्छह सामुदाणिय । गिहिनिसेज च वाहेइ, पावसमणे त्ति बुच्छई ॥ १९ ॥ एयारिसे पचकुसीलसवुडे, रूब्धरे मुणिपवराण हेट्टिमे । अयसि लोए विसमेव गरहिए, न से इह नेव परत्थ लोए ॥ २० ॥ जे वजए एए सया उ दोसे, से सुब्बए होइ मुणीण मज्जे । अयसि लोए अमर्य व पूझए, आराहए लोगमिण तहा परे ॥ २१ ॥ ति-वेमि ॥ इति पावसमणिज्जं णाम सत्तरसममज्जयणं समत्तं ॥ १७ ॥

### अह संजइज्जाणामं अङ्गारसममज्जयणं

कंपिले नयरे राया, उदिण्णवलवाहणे । नामेण सजए नाम, मिगव्व उवणिगगए ॥ १ ॥ हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य । पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥ मिए छुहिता हयगओ, कपिलुज्जाणकेसरे । भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥ अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तबोधणे । सज्जाय-ज्जाणसज्जुते, धम्मज्जाण ज्ञियायइ ॥ ४ ॥ अफोवमदवमि, झायइ कवियासवे । तस्सागए मिगे पास, वहेइ से नराहिचे ॥ ५ ॥ अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म

सो तहि । हए भिष उ पाणिता अजगार दृश्य पासइ ॥ ६ ॥ वह रामा द्वय  
संभानो अणगारे मजाहमो । मए उ मेंदुष्ट्रियें रसमिदेव पाला ॥ ७ ॥ वह  
भिषजशताभ अणगारत्सा सो निको । विषएव वैदेव पाए, भमर्व । दृश्य मे वहे  
प ॥ ८ ॥ अह मोणेय सो भगवे अणगारे जाप्यमस्तिग । रायार्व न पठिमंत्रा, क्षेत्रे  
राया मयहुम्भे ॥ ९ ॥ संज्ञो अहममीति भगवे । वाहराहि मे । इदे तेह  
अणगार दहेव तरकोटिमो ॥ १ ॥ अमन्त्रो परिथवा । तुष्मं अम्पदामा शर्वी  
य । अविषे जीम्पेगेमिं फि द्विसाप् पमजसी ॥ ११ ॥ चया सर्वे दैवत  
गंतव्यमयमस्तम ते । अविषे जीक्षेगेमिं फि रजेमि पसजसी ॥ १२ ॥ वीर्वं  
चेत रवं य विजुक्तुंगायपवेत । चत्प ते मुग्गसी राये । पेवर्व नालुञ्जने  
॥ १३ ॥ दारामि य मुवा वेय मिता य तह वेष्वा । जीवंतम्भुत्तीति भं  
नायुक्तयंति य ॥ १४ ॥ जीदरुति भव पुणा विवरं परमुक्तियवा । विहे वे  
तहा पुते वंश् एवं । तवं चरे ॥ १५ ॥ तबो देवविषे दम्भे वारे व वै  
रमिदए । जीस्तिडने वरा एवं । द्वित्तुद्वमरमित्य ॥ १६ ॥ तेजामि वं रवं  
क्षम शुर्व वा वह वा तुह । कमुषा तम संतुत्ये गच्छर्व त परं भव ॥ १७ ॥  
चोऽप्य तस्य सो भम्भं अणगारत्सु अविषे । महवा संवेगप्रिमेवं स्वात्मे  
नवाहितो ॥ १८ ॥ संज्ञो चहर्व एवं निकवत्ये विजाप्ताप्तये । पद्मामिस भं  
षमो अणगारत्सु अविषे ॥ १९ ॥ विजा एहु पमजाए, विषीए परिमासहै । चय  
ते वीसर्वे रवं फक्ति ते तहा भयो ॥ २ ॥ फि नामे फि वोते वस्तुर्व  
माप्तये । वह पविष्यर्वी दुर्वे वह विषीए ति पुष्टसी ॥ २१ ॥ संज्ञो वम  
नामेय तहा गोतेण गोम्पमो । गद्याक्षी ममाप्तरिवा विजाप्तप्रपत्तगा ॥ २२ ॥  
द्विरिवं अक्षिरिवं विषयं भवार्व व महामुषी । एएहि चवहि ठापेहि, मेत्वे फि  
पमासहै ॥ २३ ॥ इह पवक्त्रे दुर्वे, नावए परिविष्मुए । विजाप्तप्रपत्तये तो  
स्वप्तप्रहमे ॥ २४ ॥ फहिति नरए घोरे वे तहा पावस्त्रितो । विन्व व वै  
पम्भुति चरिता चम्पमारियं ॥ २५ ॥ मामालुहयमेय दु, गुणा मात्या विरिविव ।  
संज्ञममाभो फि अहौ, वसामि द्वियामि व ॥ २६ ॥ दुष्ट्रेव विजा मज्जे विष्म  
विद्वी अणारिवा । विजामाये परे भ्वेए, सम्भं जाणामि अप्त्वे ॥ २७ ॥ वहत्वे  
महापली तुष्मं वरियस्त्रोहमे । जा सा पालिमद्वापाली विजा वरियस्त्रोहमा  
प ॥ २८ ॥ से तुए वंभम्पेपाभो मालुस मममागए । अप्त्वो य परेहि व वाहे  
जागे वहा तहा ॥ २९ ॥ नावार्व व छहि व परिवेष्व चवए । वन्धु वे व  
सम्भला इह विजामस्तुत्तरे ॥ ३ ॥ पविष्मायि पविष्मार्वे परमेहै वा तुओ ।

में सात दिन तीजी मरण में पन्द्रह दिन, चौथी नरक में एक मास पांचवीं मरण में दो मास, छहीं नरक में च्यार मास सातवीं मरण सियरगति और चौसठ हन्त्रों में विरह के मास का है।

( ३ ) तीजा देवलोक में भी उद्दित बीस मुहूर्त चौथा देवलोक में चाल दिन इत्य मुहूर्त पांचवा देवलोक में चाहावासीस दिन, छहा देवलोक में चैतालीस दिन चातवा देवलोक में असती दिन आठवा देवलोक में सौ दिन नववा पशवा देवलोक में सैकड़ों मास ग्यारहवा बारहवा देवलोक में सैकड़ों वर्षों का नौप्रवेशक पदसे शिक्ष में संख्याते सैकड़ों वर्ष दूसरी शिक्ष में संख्याते हजारों वर्ष तीसरी शिक्ष में संख्याते सालों वर्ष चारब्दनुचर ऐमान में पश्योपम के संख्यात में भाग ।

( ४ ) पाँच स्थावरों में विरह नहीं है तीन विहर्ण-श्रिय असंझी तिर्यक में अस्तर मुहूर्त ।

( ५ ) चम्द्र सूर्य के प्रदण्डाघयी विरह पढ़े हो अपन्य ए मास उत्तर चम्द्र के चेयालीस मास सूर्य के अड़तालीस वर्ष ।

( ६ ) भरतेरखतकेजापेहा उमु साखी आवक भाविका आघयी अपन्य तो ५१००० वर्ष और अरिहर्मत चक्रवर्ती उत्तरेष उमुरेष आघयी अपन्य ८४००० वर्ष उत्तरेष सबको ऐयोम अठाय कोइ सामारोपम का ॥ इति शुभं ॥

० सेव मंते सेव मंते तमेव सम्भव् ॥

— \* —

अहो उद्धिए अहोराय, इड विजा तव चरे ॥ ३१ ॥ जं च मे पुच्छसी काले, सम्म  
सुद्देण चेयसा । ताइं पाउकरे त्रुद्दे, त नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥ किरिय च  
रोयद्दे धीरे, अकिरिय परिवज्ञए । दिद्धीए दिद्धिसप्त्रे, धम्मं चर सुदुच्चर ॥ ३३ ॥  
एयं पुण्णपय सोच्चा, अत्यधम्मोवसोहिय । भरहो वि भारह वास, चिच्चा कामाड  
पव्वए ॥ ३४ ॥ सगरो वि सागरत, भरहवास नराहिवो । इस्सरिय केवल हिच्चा,  
दयाड परिनिव्वुडे ॥ ३५ ॥ चइत्ता भारह वास, चक्कवट्टी महिंहिंओ । पव्वज-  
मव्वुवगओ, मधव नाम महाजसो ॥ ३६ ॥ सणकुमारो मणुर्सिंदो, चक्कवट्टी  
महिंहिंओ । पुत्त रजे ठवेळण, सो वि राया तव चरे ॥ ३७ ॥ चइत्ता भारहं  
वास, चक्कवट्टी महिंहिंओ । सती सतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ३८ ॥ इक्खां  
गरायवसभो, कुथु नाम नरीसरो । विक्खायकित्ती भगव, पत्तो गडमणुत्तर ॥ ३९ ॥  
सागरत चइत्ताण, भरहं नरवरीसरो । अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४० ॥  
चइत्ता भारह वास, चइत्ता वलवाहण । चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमे तवं चरे  
॥ ४१ ॥ एगच्छत्त पसाहित्ता, महिं माणनिसूरणो । हरिसेणो मणुर्सिंदो, पत्तो  
गइमणुत्तर ॥ ४२ ॥ अन्निओ रायसहस्रेहिं, सुपरिच्छाई दम चरे । जयनामो  
जिणक्खाय, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४३ ॥ दसण्णरज्ज मुदिय, चइत्ताण मुणी चरे ।  
दसण्णभदो निक्खतो, सक्ख सक्षेण चोइओ ॥ ४४ ॥ नमी नमेइ अप्पाण, सक्ख  
सक्षेण चोइओ । चइत्तण गेह वइदेही, सामणे पञ्जुबहिंओ ॥ ४५ ॥ करक्ख  
कलिमेसु, पचालेसु य दुम्मुहो । नमी राया विदेहेसु, गंधारेसु य नगाई ॥ ४६ ॥  
एए नरिदवसभा, निक्खता जिणसासणे । पुत्ते रजे ठवेळण, सामणे पञ्जुबहिंया  
॥ ४७ ॥ सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे । उदायणे पव्वइओ, पत्तो गइ-  
मणुत्तर ॥ ४८ ॥ तहेव कासिराया वि, सेबो सच्चपरक्कमे । कामसोगे परिच्छज्ज,  
पहणे कम्ममहावण ॥ ४९ ॥ तहेव विजओ राया, अणद्वाकित्ति पव्वए । रज तु  
गुणसमिद्द, पयहित्तु महाजसो ॥ ५० ॥ तहेवुग तव किच्चा, अव्वकिखत्तेण  
चेयसा । महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥ कहं धीरो अहेऊहिं,  
उम्मत्तो व महिं चरे ? । एए विसेसमादाय, सूरा दछपरक्कमा ॥ ५२ ॥ अच्छत-  
नियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई । अतरिसु तरंतेगे, तरिस्सति अणागया  
॥ ५३ ॥ कहिं धीरे अहेऊहिं, अत्ताण परियावसे । सब्बसगविनिम्मुक्ते, सिद्धे  
भवइ नीरए ॥ ५४ ॥ ति-वेसि ॥ इति संजहज्जाणामं अद्वारसममज्ञयणं  
समत्तं ॥ १८ ॥

## अह मियापुत्रीयं णाम पग्नावीसइम अज्ञयणं

सुमरि भयरे रम्मे कालकुवामसोहिए । रावा बधमहिति मिया टस्सम्म  
दिशी ॥ १ ॥ येसि पुते बद्धमिति मियापुते ति दिशाए । अम्मापितृष्ठ रहै  
चुपराया वरीतरे ॥ २ ॥ भैबने थो उ पासाए, कीछै सह इत्तिहि । रेते देहुते  
थेष निर्बं मुह्यमाप्तसो ॥ ३ ॥ भवित्यणामोहितसे पासावालेकान्तिहि ।  
आओएर भगरह्य चउहतिभव्यरे ॥ ४ ॥ अह तत्त्व लाल्हरे पासाए समवस्थर्वं ।  
तत्त्वनियमसैवमन्तर, सीम्भु गुणमागर ॥ ५ ॥ तं रहाई मियापुते दिशी अर्दि  
मित्ताए त । कहि मधेरिए हर्व दित्तुपुर्वं नए पुरा ॥ ६ ॥ साहुस्स दरितुने हस्त्य,  
अज्ञात्वाप्तामिम स्त्रेहने । मोहै पग्नस्स संतुस्स जाँसुर्वं लमुप्पह ॥ ७ ॥ [ रैर्  
स्त्रेयकुओ उंतो मालुवे मव्वमाप्त्वो । सदिमामे स्त्रुप्पते जाँ चर्व पुराप्पिर्व ॥ ]  
जाँसुर्वे उमुप्पते मियापुते महित्तिहि । उराई पोराप्तिव जाहै, साम्भवे व उप  
भवे ॥ ८ ॥ दिसप्तहि अरज्जतो रख्तो उबनमि व । अम्मापितृष्ठुवाम्म ईं  
चवणमध्यवी ॥ ९ ॥ सुकामि मे पंच महाव्यामि नरएहु तुक्कं व तिरिक्क  
जोपिहु । निविष्टक्षमोमि महावाम्मो अखुवाम्मह पग्नावसामि अम्मो ॥ १० ॥  
अम्मताय । मए मोगा भुला दिपाफ्लमेवमा । पव्वा छ्वयनिवाया ल्लांवतुहार्व  
॥ ११ ॥ इसं सरीरे बलिचे अच्छै अस्त्रसंभवे । असासवासाप्तमिचे उम्भवेत्तर  
मावर्व ॥ १२ ॥ असासपु चरीरमि रहै नोहममासाहै । पात्तम पुरा व चरव्वे,  
फेल्हुप्पुवसदिमे ॥ १३ ॥ मस्तुसदे जसारमि बाहीराप्ताम आब्दै । चरमरम  
चर्वमि चर्व पि व रमामहै ॥ १४ ॥ जम्मे तुक्कं चरा तुक्कं रोया व मरणाव  
व । उठो तुक्को हु स्त्रारो चत्व बीसेति चंतुलो ॥ १५ ॥ बेर्त भर्तु दिर्वं व  
पुत्रवारे व बंधवा । अहावर्व इम बेहै, गंठाव्यमवस्सने ॥ १६ ॥ व्या दिनाप  
फ्लमर्व परिपाम्मो व द्विहरो । एहु मुत्तम भोपावं परिज्ञामो व धूदहे ॥ १७ ॥  
अद्यावं जो महार्त दु, अप्पाहेभो फत्तजाहै । गर्हाल्लो थो तुही होह, तुहाववर्व  
पीडियो ॥ १८ ॥ एवं जम्मे अच्छद्वयं जो गत्तव फर्म भर्म । गत्तो थो तुही  
होह, बाहीरेहेहि पीडियो ॥ १९ ॥ अद्यावं जो महार्त दु, सपाहेभो फत्तजी ।  
गत्तलो थो तुही होह, तुहाववाप्तिविक्षियो ॥ २० ॥ एवं जम्मे पि भर्तवे वे  
गत्तव फर्म भर्म । गत्तलो थो तुही होह, अप्पाहेमे भर्तवे ॥ २१ ॥ व्या नेहे  
पक्षितामिम तस्य गेहस्स जो पहू । चासमेवामि भीयह, असार अस्तज्जात ॥ २२ ॥  
एवं छ्वेए पक्षितामिम चराए मरनेव य । अप्पावर्व ताप्तावसामि तुम्हेहि अनुमित्ये

॥ २३ ॥ त विंतम्मापियरो, सामण्ण पुत्त ! दुक्कर । गुणाण तु सहस्राइ, धारेय-  
च्चाइ भिक्खुणा ॥ २४ ॥ समया सब्बभूएसु, सतुमित्तेसु वा जगे । पाणाइवायविरई,  
जावजीवाए दुक्कर ॥ २५ ॥ निच्चकालङ्घप्पमत्तेण, मुसावायविवज्जण । भासियव्व  
हिय सञ्च, निच्चाउत्तेण दुक्कर ॥ २६ ॥ दत्सोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जण ।  
अणवज्जेसणिजस्स, गिण्हणा अवि दुक्कर ॥ २७ ॥ विरई अवभचेरस्स, कामभोगर-  
सञ्चुणा । उग्ग महव्वय वभं, धारेयव्वं सुदुक्कर ॥ २८ ॥ धणधञ्चपेसवग्गेसु, परि-  
ग्राहविवज्जण । सञ्चारंभपरिच्चाओ, निम्ममत्त सुदुक्कर ॥ २९ ॥ चउच्चिहे वि आहारे,  
राईमोयणवज्जणा । सञ्चिहीसञ्चओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्कर ॥ ३० ॥ छुहा तण्हा य  
सीउप्हं, दसमसगवेयणा । अक्षोसा दुक्खसेजा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३१ ॥  
तालणा तज्जणा चेव, वहवयपरीसहा । दुक्ख भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया  
॥ ३२ ॥ कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो । दुक्ख वभव्वय धोर,  
धारेउ च महप्पणो ॥ ३३ ॥ छुहोइओ तुम पुत्ता !, सुक्षमालो सुमञ्चिओ । न हु सि  
पभू तुम पुत्ता !, सामण्णमणुपालिय ॥ ३४ ॥ जावजीवमविस्सामो, गुणाण तु  
महव्वरो । गुस्थो लोहभास्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥ ३५ ॥ आगासे गंगसोउच्च,  
पडिसोउच्च दुत्तरो । वाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥ ३६ ॥ वालुया  
क्वले चेव, निरस्साए उ सजमे । असिधारागमण चेव, दुक्करं चरिउ तवो ॥ ३७ ॥  
अहीवेगतदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त । दुक्करे । जवा लोहभया चेव, चावेयव्वा सुदुक्कर  
॥ ३८ ॥ जहा अगिसिहा दित्ता, पाऊ होइ सुदुक्करा । तहा दुक्करं करेउ जे, तारुणे  
समणत्तण ॥ ३९ ॥ जहा दुक्ख भरेउ जे, होइ वायस्स कोत्थलो । तहा दुक्ख  
करेउ जे, की[वे]बेण समणत्तण ॥ ४० ॥ जहा तुलाए तोलेउ, दुक्करो मदरो गिरी ।  
तहा निहुय नीसक, दुक्करं समणत्तण ॥ ४१ ॥ जहा भुयाहिं तरिउ, दुक्करं रथणायरो ।  
तहा अणुवसतेण, दुक्करं दमसागरो ॥ ४२ ॥ भुज माणुस्साए भोए, पचलक्खणए  
तुम । भुत्तमोगी तओ जाया !, पच्छा धम्म चरिस्ससि ॥ ४३ ॥ सो वेड अम्मा-  
पियरो, एवमेय जहा फुडं । इह लोए निपिवासस्स, नतिय किचिवि दुक्कर ॥ ४४ ॥  
सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अणतसो । मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्खभयाणि  
य ॥ ४५ ॥ जरामरणकतारे, चाउरंते भयागरे । भया सोढाणि भीमाणि, जम्माणि  
मरणाणि य ॥ ४६ ॥ जहा इहं अगणी उष्णो, एत्तोऽणतगुणो तहिं । नरएसु वेयणा  
उण्हा, असाया वेह्या मए ॥ ४७ ॥ जहा इहं इम सीय, एत्तोऽणतगुणो तहिं ।  
नरएसु वेयणा सीया, असाया वेह्या मए ॥ ४८ ॥ कदतो कंदुकुमीम्ह, उझूपाओ  
अहोसिरो । हुयासणे जलतम्मि, पक्षपुब्बो अणतसो ॥ ४९ ॥ महादविगसकासे,  
६४ सुत्ता ॥

मर्मि पारं कहुए । कल्पनालुम्या एव दहुपुम्बो अर्वतसो ॥ ५ ॥ रसेहो कुरुमीदृ  
उहु वहो अवयवो । करताकरमाहै, छिषुम्बो अर्वतसे ॥ ५१ ॥ अविनाश-  
कंठगाह्ये तुगि चिकित्प्रयमे । चेतिर्य पासवदेहे अहोनहाहि तुर्द ॥ ५२ ॥  
महाअंडेहु उद्गु वा अर्वतो मुमेरव । फीलिभोमि उक्तमेहि, पावङ्मो अर्वते  
॥ ५३ ॥ शून्हो छेष्टमुण्यहै समेहि उवरहि य । पाहिको आक्षिको छिष्ठे  
चिष्पुर्तो अलेपसो ॥ ५४ ॥ असीहि अविनाश्याहि भवेहि पाहियहि व । छिष्ठे  
मिज्जो चिमिज्जो य ओहम्बो पावङ्मनुजा ॥ ५५ ॥ अवसो स्वेहरहे तुर्हो कर्ति  
समिक्तहुए । ओहम्बो तोल्हुतेहि, रोज्जो वा वह पाहिय्ये ॥ ५६ ॥ तुवास्त्र  
असंतुभिं चिवाहु महिसो चिव । दहो फहो म अवसो पावङ्ममेहि पाहिम्बे ॥ ५७ ॥  
वहा संडास्तुडिहि, ब्लेहुतेहि पक्षिवहि । चिक्को चिम्बतो ई ठवियेहि अर्वते  
॥ ५८ ॥ तुवास्त्रिल्लो पाम्हतो पतो वेयरणि नह । जहां पाहि ति चिर्तो इह  
आराहि चिवाह्यो ॥ ५९ ॥ उवास्त्रितो यंपतो अविपां भवावर्ण । अवियहि  
पाहितेहि छिषुम्बो अवेयसो ॥ ६० ॥ मुमरेहि मुष्टीहि उमेहि मुज्जेहि  
य । गयादेमम्यायतेहि, पर्हं तुक्त्वा अर्वतसो ॥ ६१ ॥ तुर्हो चिवाह्याहै,  
सुमियाहि कृप्याहि व । अधिष्ठो आक्षिको छिष्ठो वहित्ये व अवेयसो ॥ ६२ ॥  
पासेहि शूरज्ञायेहि, मिज्जो वा अवसो भाह । वाहिको उवरहो वा गुसो चेत  
चिवाह्यो ॥ ६३ ॥ फेहेहि मयाम्बाकेहि, मच्छो वा अवसो भाह । उक्तिये फ्लिक्के  
गहिजो मारियो य अवातसो ॥ ६४ ॥ बीर्दसयहि चाहेहि केल्याहि उठ्यो चिव ।  
पहिय्यो स्मरो वहो य मारिजो व अर्वतसो ॥ ६५ ॥ तुवास्त्रलुम्बोहि, भाहै  
तुमो चिव । तुहिजो फाक्षिको छिष्ठो ताखिक्को व अर्वतसो ॥ ६६ ॥ चीमुहि  
माहिहि तुमारेहि वर्य चिव । ताखिको कुहिजो मिज्जो तुमिभ्ये व अर्वतसे ॥ ६७ ॥  
वहाहु तंवेहाहु तवयाहु चीस्यायि य । पाह्यो छलक्कल्लाहु, भार्हो तुमेहर  
॥ ६८ ॥ तुहि पिया हुरा चीहु देरझो व माहियि य । पाह्योमि अ-  
तीमो वसाथो लक्ष्मीयि य व ॥ ६९ ॥ निर्बं मीएष तत्त्वेन तुहिएष चीरेव ॥  
परमा तुर्षंस्त्रावा वेयमा वेयमा मए ॥ ७० ॥ तिम्बर्दह्यप्पावास्त्र्ये चेरामे वर्द-  
स्त्रावा । ग्लावम्याथो मीमाथो नरएम्बु वेयमा मए ॥ ७१ ॥ चारीसा मज्जेहे वेर-  
ताया । चीस्ति वेयमा । एर्हो अर्वतयुमिया नरएम्बु तुक्त्वेयमा ॥ ७२ ॥ चारी-  
मज्जेहु अस्त्रावा वेयमा वेयमा मए । निर्गेत्रतरमित्ते पि व च चामा चीरि वेयमा  
॥ ७३ ॥ ही चित्तम्भापियरो छर्हिए पुत । फ्लिया । नवर पुत्र चाम्भे तुर्व-

निष्पद्धिकम्मया ॥ ७५ ॥ सो वेह अम्मापियरो !, एवमेयं जहा फुड । पडिकम्म  
को कुण्डई, अरण्णे मियपविखण ॥ ७६ ॥ एगब्मौए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे ।  
एवं वम्म चरिस्तामि, सजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥ जहा मिगस्स आयको, महार-  
ण्णमि जायई । अच्छत रुक्खमूलमि, को ण ताहे तिगिच्छई ॥ ७८ ॥ को वा से  
ओसह देइ ?, को वा से पुच्छई सुह ? । को से भत्त च पाण वा, आहरितु पणामए ?  
॥ ७९ ॥ जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं । भत्तपाणस्स अट्टाए, वहराणि  
सराणि य ॥ ८० ॥ खाइत्ता पाणिय पाउ, वहरेहि सरेहि य । मिगचारिय चरित्ताण,  
गच्छई मिगचारिय ॥ ८१ ॥ एव समुद्धिलो भिक्खू, एवमेव अणेगए । मिगचारिय  
चरित्ताण, उङ्हु पङ्कमई दिस ॥ ८२ ॥ जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगो-  
यरे य । एव मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिसपृज्ञा ॥ ८३ ॥ मिग-  
चारिय चरिस्तामि, एव पुत्ता ! जहासुहं । अम्मापिझहिंडणुज्ञाओ, जहाइ उवाहिं तहा  
॥ ८४ ॥ मिगचारियं चरिस्तामि, सब्बदुक्खविमोक्खणि । तुव्मोहिं अब्मणुज्ञाओ,  
गच्छ पुत्त । जहासुह ॥ ८५ ॥ एव सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं । ममत्त  
छिंदई ताहे, महानागोव्व कच्चुय ॥ ८६ ॥ इह्वी वित्त च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।  
रेणुय व पडे लग्ग, निदुणित्ताण निग्गओ ॥ ८७ ॥ पचमहव्ययजुत्तो, पंचसमिओ  
तिगुत्तिगुत्तो य । सद्विभत्तरवाहिरए, तवोकम्ममि उज्जुओ ॥ ८८ ॥ निम्ममो निरह-  
कारो, निस्त्सगो चत्तगारवो । समो य सब्बभौएसु, तसेषु थावरेषु य ॥ ८९ ॥ लाभा-  
लाभे भुहे दुक्खे, जीविए भरणे तहा । समो निंदापससासु, तहा माणावमाणओ ॥ ९० ॥  
गारवेषु कसाएसु, दडसहभएसु य । नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अवधणो ॥ ९१ ॥  
अणिस्त्सओ इह लोए, परलोए अणिस्त्सओ । वासीचदणकप्पो य, असणे अणसणे  
तहा ॥ ९२ ॥ अप्पसत्येहिं दारेहिं, सब्बओ पिहियासवे । अज्ज्ञप्पज्ञाणजोगेहिं,  
पसात्यदभसासणे ॥ ९३ ॥ एव नाणेण चरणेण, दसणेण तवेण य । भावणाहि य  
सुद्धाहिं, सम्म भावितु अप्पय ॥ ९४ ॥ बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।  
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धि पत्तो अणुत्तर ॥ ९५ ॥ एव करेति सदुद्धा, पडिया पविय-  
क्खणा । विणियद्विति भोगेसु, मियापुत्ते जहा रिसी ॥ ९६ ॥ महापभावस्स महाज-  
सस्स, मियाइपुत्तस्स निसम्म भासिय । तवप्पहाण चरिय च उत्तम, गइप्पहाणं च  
तिलोगविस्मृय ॥ ९७ ॥ वियाणिया दुक्खविद्धण धण, ममत्तवध च महाभयावहं ।  
जहावह धम्मधुर अणुत्तर, धारेज निव्वाणगुणावह मह ॥ ९८ ॥ ति-वेमि ॥ इति  
मियापूत्तीयं पामं एग्रूणवीसहमं अज्ज्ञयणं समत्तं ॥ ९९ ॥

## आह महानियंठिज्जनाम वीसइम अज्ञायण

---

सिद्धार्थ भगो निता संज्ञार्थ च भावयो । अत्यधम्मपर्द तर्च एकुसहि देव  
मे ॥ १ ॥ फ्रूटरयभो राया देविभो मयहाहितो । विहारती नितायो मैति  
दुर्विक्षिति देवैर् ॥ २ ॥ नामादुमस्त्वाइन्द्र्य नामापमित्तानिदेविय । नामादुमस्त्वाइन्द्र्य,  
ठजार्थ रंदष्ट्रेत्तमी ॥ ३ ॥ उत्त्व द्वो पात्रै द्वादुं संज्ञ्य एकुसाहित । विर्भव  
उक्त्वामूलमिम द्वादुमार्थ ध्योहेत्य ॥ ४ ॥ तत्त्व द्वर्त्त तु पात्रिता एव्वो दृष्ट्य  
देवैर् । अक्षतपरमो भासी अठम्भे रूपमिहूम्भे ॥ ५ ॥ अहो । भन्मो अहो । दृष्ट्य  
अहो । अज्ञस्स द्वोमया । अहो । वृती अहो । मुती अहो । मोगे अदृप्ता ॥ ६ ॥  
उत्त्व पाए त वृतिता अक्षत्व च फ्वाहित्य । नादुमस्त्वात्त्वे रंज्यत्य परिपुर्व  
॥ ७ ॥ तत्त्वो द्वि अयो । फ्वात्त्वो भोगक्षम्भमिम संज्ञा । तत्त्वात्त्वो द्वि सन्त्वन्त्व  
एवमदुं द्वेभित्ता ॥ ८ ॥ अवाहोमि भद्राहुद । नाहो भज्जत म विज्ञौ । एकुल्लं  
द्विं चावि र्द्विं नामित्तमेमहि ॥ ९ ॥ तत्त्वो द्वो फ्वात्त्वो राया देविये मया  
हितो । एवं द्वे इक्षिमेत्तस्त्व च्छ्र्व भाहो त विक्ष्रि ॥ १ ॥ होमि नाहो रंज्यत्य  
मोगे भुजाहि संज्ञा । । विक्त्वाहैपरिषुद्धो मालुर्त्त च द्वादुर्त्त ॥ ११ ॥ अप्पा  
द्वि अवाहो द्वि देविया । अप्पाहित्ता । । अप्पाहा अवाहो देवो चहो भाहो मैति  
स्त्वात्ति ॥ १२ ॥ एवं द्वुत्तो भरित्तो द्वो द्वासेभेत्तो द्विमिहूम्भो । द्वर्त्त द्वस्त्वात्त्व  
द्वादुत्ता विमहित्तित्तो ॥ १३ ॥ अवस्त्वा इत्ती भयुस्त्वा मे द्वुर्त्त अत्तेवर्त्त च ने ।  
भुजामि गत्तुसे भोए, भाजा इस्त्वार्त्त च मे ॥ १४ ॥ द्वर्त्तेत्ते द्वस्त्वात्त्वमिम तत्त्व  
क्षमसमित्तिए । च्छ्र्व भाहो भव्वहि, मा हु भव्वते । सुर्त्त चए ॥ १५ ॥ त द्वर्त्त च्छ्र्व  
अवाहस्त्व भर्त्त वीर्त्त च परिष्वात्त । । अहा अवाहो भव्वहि, भव्वहो ता क्तावित्त  
॥ १६ ॥ द्वुत्तेह मे भाहएत्त । अव्वमित्तेत्त चेवसा । अहा अवाहो भव्वहि, अहा ते  
प्त्वत्तिये ॥ १७ ॥ च्छोर्त्तत्ती भाम भयर्त्ती पुराण्डुर्त्तमेवनी । उत्त्व भावी विवा मत्त  
प्रमूद्यत्वसंख्यो ॥ १८ ॥ पद्मे चए भाहाराय । अवस्त्वा मे अविष्वेवत्ता । अदेव  
वित्तत्ते वाहो दुष्ट्वगत्तेत्त पत्तिवा ॥ १९ ॥ उत्त्व अहा परमतिर्त्त, तर्त्तेत्तित्ते  
द्वो । भावीत्तिय भयर्त्ती द्वुत्तो एवं मे अविष्वेवत्ता ॥ २० ॥ तिदे मे अवत्तर्त्त च  
दत्तत्तमेत्त च पीड्वहि । इवासपित्तमा भोए भेवत्ता परमदात्तमा ॥ २१ ॥ उत्तित्ता ते  
बावत्तिवा विक्त्वामेवत्तिविक्त्वा । भावीवा दुष्ट्वकुस्त्वा भेत्तमूलमेवाराय ॥ २२ ॥  
ते मे विगित्त दुर्विति, भावप्पार्त्त चहाहित्य । त च दुष्ट्वा विमोद्वहि रुदा भव्व

अणाहया ॥ २३ ॥ पिया ने सब्बसार पि, दिजाहि मम कारण। न य दुक्खा  
विमोएइ, एसा मज्ज अणाहया ॥ २४ ॥ भाया वि मे महाराय!, पुत्रसोगदुहट्टिया।  
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्ज अणाहया ॥ २५ ॥ भायरा मे महाराय!, सगा  
जेट्टकणिट्टगा। न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्ज अणाहया ॥ २६ ॥ भद्रणीओ  
मे महाराय!, सगा जेट्टकणिट्टगा। न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्ज अणाहया  
॥ २७ ॥ भारिया मे महाराय!, अणुरत्ता अणुव्या। असुपुणीहि नयणेहि, उरं  
मे परिसिंचइ ॥ २८ ॥ अन्न पाण च छ्वाण च, गथमलविलेवण। मए नायमनाय  
वा, मा वाला नेव भुजइ ॥ २९ ॥ सण पि मे महाराय!, पासाओ वि न फिट्टइ। न  
य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्ज अणाहया ॥ ३० ॥ तबो ह एवमाहंसु, दुक्खमा  
हु पुणो पुणो। वेयणा अणुभवित जे, ससारम्मि अणतए ॥ ३१ ॥ सइ च जइ  
मुच्चेजा, वेयणा विटला इओ। खतो दतो निरारभो, पव्वए अणगारिय ॥ ३२ ॥  
एव च चित्तदत्ताण, पसुत्तोमि नराहिवा। परियत्ततीए राईए, वेयणा मे खर्यं गया  
॥ ३३ ॥ तबो कले पभायमि, आपुच्छित्ताण वधवे। खंतो दंतो निरारभो, पव्व-  
इओडणगारियं ॥ ३४ ॥ तो ह नाहो जायो, अप्पणो य परस्त य। सच्चेसि चेव  
भूयाण, तसाणं यावराण य ॥ ३५ ॥ अप्पा नहि वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली।  
अप्पा कामदुहा घेणू, अप्पा मे नदण वण ॥ ३६ ॥ अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण  
य सुहाण य। अप्पा मित्तममित्त च, दुप्पट्टिय सुपट्टिओ ॥ ३७ ॥ इमा हु अन्ना  
वि अणाहया निवा!, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि। नियठधम्म लहियाण वी जहा,  
सीयति एगे वहकायरा नरा ॥ ३८ ॥ जो पव्वदत्ताण महञ्चयाइ, सम्म च नो  
फासयई पमाया। अनिगहप्पा य रसेम्म गिद्धे, न मूलओ छिन्नइ वंधण से ॥ ३९ ॥  
आउत्तया जस्स न अत्यि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए। आयाणनिक्त्येव-  
दुगुछणाए, न वीरजाय अणुजाइ मर्गं ॥ ४० ॥ चिर पि से मुडरुई भविता,  
अथिरव्वए तवनियमेहि भड्डे। चिर पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु सपराए  
॥ ४१ ॥ पोले व सुद्धी जह से असारे, अयतिए कूडकहावणे वा। राढामणी  
वेरुलियप्पगासे, अमहग्धए होइ हु जाणएसु ॥ ४२ ॥ कुसीललिंग इह धारइत्ता,  
इसिज्जय जीविय वूहइत्ता। असजए सजयलप्पमाणे, विणिधायमागच्छइ से चिर पि  
॥ ४३ ॥ विस तु पीय जह कालकूड, हणाइ सत्थ जह कुमगहीय। एसो वि धम्मो  
विमओववचो, हणाइ वैयाल इवाविवचो ॥ ४४ ॥ जे लक्खण सुविण पउजमाणे,  
निमित्तकोऊहलसपगाढे। कुहेङ्गविजासवदारजीवी, न गच्छइ सरण तम्मि काले  
॥ ४५ ॥ तमतमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परियासुवेइ। सधावई नरराति-

रिक्षपदोर्गि मोर्व विराहेणु असानुन्मे ॥ ४५ ॥ छोडिर्यं कीक्षयाई निदामे व  
मुक्त्वा इन्द्रि अदेसमित्य । अमरी विदा सामान्यसी भविता इये तुए लक्ष्य ए  
पाप ॥ ४६ ॥ अ तं अरी कृत्तेता कौरे, वं से करे अवधिया तुरत्प्राप्ता । से नर्वी  
मनुमुहै तु पतो पञ्चानुतापेय दद्यामित्यौ ॥ ४७ ॥ त निरट्टिया नमस्ते ते तस्य  
जे उत्तमद्वे विज्ञापमेह । इमे वि से नहिं परे वि ओए, तुरन्ते वि से किञ्चन  
दत्त थे ए ॥ ४८ ॥ एमेवज्ञात्तेवत्तुषीम्बले मम्य विराहिणु विजुलमार्प । इर्यै  
विदा भोगरसलुगिया विद्धुसोवा परियापमेह ॥ ४९ ॥ सोवाप्त मेहामि । दुव्यरिव  
इमे अनुप्यापणी नाशनुपातवेय । मम्य कुषीक्षय वद्यम्य सर्वं भद्रानिर्वद्यम्य व  
परेण ॥ ५० ॥ चरित्प्रमाणाप्तुण्डित्य । एवो अलुदर संबन्ध पात्तियार्प । विराप्ते  
संविद्याम रम्यं ठौड़े ठार्च विवलुत्तम्य मुर्व ॥ ५१ ॥ एवुम्यवंते वि मदात्तोर्वे  
महामुखी महाप्दते महाप्यसे । महानिर्वंठित्यमित्य महापुर्वं से व्योर्वे मदम विद्य  
रेण ॥ ५२ ॥ दृष्ट्वे य देविभो रथा इन्द्रुषादु क्षेत्रली । अवाहण वद्यम्,  
द्रष्टु ने उक्तर्वित्य ॥ ५३ ॥ तुर्वां दृष्ट्वे व तुम्पर्व तुम्पर्व तुम्पर्व तुम्पर्व  
महेती । तुम्पे सप्ताहा य सर्ववदा य वं भे तिया मम्ये विजुलमार्प ॥ ५४ ॥  
तं हि नाहो अगाहार्व सम्भूताज संवदा । यामेनि दे महामाय । इष्टसि वक्त-  
सातिर्व ॥ ५५ ॥ पुष्टिक्षम मद्य तुम्पर्व ज्ञानविद्यो उ जो क्षेत्रो । विस्तिवा व  
मोगेत्तु, तं सर्वं भरित्वेत्ति मे ॥ ५६ ॥ एवं तुम्पिताय स रावतीहो अव्याप्तिर्व  
परमात्म भरित्य । उभोरोहो सपरिवदो सर्ववदो अम्माकुरतो विम्बेन वेमदा ॥ ५७ ॥  
उत्तसियतेम्भुतो अद्वय य पराहित्य । अग्निर्वदित्य विरापा नद्याम्ये भराती  
॥ ५८ ॥ इयो वि तुप्रसमित्यो विष्णुषित्यो विर्वन्मित्यो व । विष्णु इव विष्णुहो  
विद्य वद्य विष्णु विष्णुमोहो ॥ ५९ ॥ तिवेनि ॥ इति महानिर्वंठित्यमार्प  
वीसाहम् अज्ञायार्व समर्त ॥ २० ॥

### अह समुदपालीय णाम पूर्णवीसुद्धम अज्ञायणी

‘प्रगाप पात्तिर्य नाम, सामए आवि वामिए । महानीरस्य भगवद्वो दीर्घे तो व  
महाप्यो ॥ १ ॥ निर्वये पावद्वे सामए से वि व्योर्विए । पोएल वद्यहर्ते विष्णुहो  
नगरमापए ॥ २ ॥ विष्णुहो वद्यहर्तरत्तु वामिव्वे विर भूतरे । तं सुर्वत लक्ष्मी  
सदेवमह परिवद्यो ॥ ३ ॥ अह पात्तिरत्तु वरणी सप्ताम्भि फूर्वी । अह वाम-

तहि जाए, समुद्धपालिति नामए ॥ ४ ॥ नेमेण आगए चप, नावए वाणिए घर ।  
 सच्चदृष्टे तस्म घरे, दारए से मुहोडए ॥ ५ ॥ वावत्तरी कलाओ य, तिस्तर्दै नीड-  
 कोपिए । जोव्वणेण य सपने, सुन्वे पियदमणे ॥ ६ ॥ तस्म द्ववड भज, पिया  
 आणेड स्विणि । पासाए कीले रम्मे, देवो दोगुदओ जहा ॥ ७ ॥ अह अज्ञया  
 कथाइ, पासायालोयणे ठिओ । वज्जमउणसोभागं, वज्ज पासइ वज्जग ॥ ८ ॥  
 त पासिऊण सविगो, समुद्धपालो डणमव्ववी । अहोडमुभाण कम्माण, निजाण  
 पावग इम ॥ ९ ॥ सदुद्धो सो तहि भयव, परमसवेगमागओ । आपुच्छडम्मा-  
 पियरो, पव्वए अणगारेय ॥ १० ॥ जहितु मगथ महाकिलेस, महतमोह कसिण  
 भयावह । परियायधम्म चडभिरोयएजा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥  
 अहिंससच्च च अतेणग च, तत्तो य वभ अपरिगग्ह च । पडिवजिया पचमहव्व-  
 याणि, चरिज धम्म जिणदेसिय विदू ॥ १२ ॥ सब्बोहि भूएहि दयाणुरुपी, सति-  
 ऋखमे सजयवभयारी । सावजजोग परिवज्यांतो, चरिज भिक्खू सुगमाहिद्दिए  
 ॥ १३ ॥ कालेण काल विहरेज रटे, वलावल जाणिय अप्पणो य । सीहो व सदेण  
 न सतसेजा, वयजोग सुक्षा न असञ्चभमाहु ॥ १४ ॥ उवेहमाणो उ परिव्वएजा,  
 पियमप्पिय सब्ब तितिक्खाएजा । न सब्ब मव्वत्थडभिरोयएजा, न यावि पूय  
 गरह च सजए ॥ १५ ॥ अणेगद्दा इह माणवेहि, जे भावओ सुपगरेड भिक्खू ।  
 भयमेरवा तत्य उइति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥ परीसहा  
 दुव्विसहा अणेगे, सीयति जत्था वहुकायरा नरा । से तत्य पत्ते न वहिज भिक्खू,  
 सगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥ सीओसिणा दसमसा य फासा, आयका विविहा  
 फुसति देह । अकुक्कुओ तत्थडहियासएजा, रयाइं खेवेज पुराकयाइं ॥ १८ ॥ पहाय  
 राग च तहेव दोस, मोह च भिक्खू सयय वियक्खणो । मेरुव्व वाएण अकपमाणो,  
 परीसहे आयगुते सहेजा ॥ १९ ॥ अणुक्तए नावणए महेसी, न यावि पूय गरहं च  
 सजए । स उज्जुमाव पडिवज्ज सजए, निव्वाणमग्ग विरए उवेइ ॥ २० ॥ अरड-  
 रहमहे पहीणसथवे, विरए आयहिए पहाणव । परमद्वपएहि चिढ्है, छिन्नसोए अममे  
 अकिंचणे ॥ २१ ॥ विवित्तल्यणाइ भएज ताई, निरोवलेवाह असथडाइ । इसीहि  
 चिणाइ महायसेहि, काएण फासेज परीसहाइ ॥ २२ ॥ सज्जाणनाणोवगए महेसी,  
 अणुत्तरं चरिउ धम्मसच्चय । अणुत्तरे नाणधरे जससी, ओभासई सूरिए वतलिक्खे  
 ॥ २३ ॥ दुविह खवेळण य पुण्णपाव, निरंगणे सब्बओ विष्पमुके । तरिता समुद्द  
 व महाभवोघ, समुद्धपाले अपुणगम्म गए ॥ २४ ॥ त्ति-बैमि ॥ इति समुद्ध-  
 पालीयं णामं एग्रावीसहम्म अज्ञयणं समत्तं ॥ २५ ॥

## अह रहनेमिखनाम वावीसइमं अज्जयणं

सोरिष्युरम्भ नवरै भासि राता मदिनिएः बधोकुति नामर्थं रामलक्ष्मणं  
कंशुए ॥ १ ॥ तस्य मज्जा तुवे वासी रोक्षिष्णी देवरै ताहा । तासि बोर्वं तुवे पुष्ट  
इहा रामकेशवा ॥ २ ॥ सोरिष्युरम्भं क्ष्यरे भासि राता मदिनिएः स्मृतिं  
नामं रामलक्ष्मणं कंशुए ॥ ३ ॥ तस्य मज्जा तिगा नामं तीरे तुतो महस्ये ।  
भगवं अरिद्धुनेमिति खेमनाहे इनीसरै ॥ ४ ॥ सोउद्धुनेमिलामो उ अवलक्ष्मणं  
संकुलो । अद्विष्टसम्भवजपरो गीक्षो व्यवग्रहणी ॥ ५ ॥ वज्रिलहसुभवे  
सम्भवरसो भ्रसोदरो । तस्य रावमैरक्ष भज वाक्ष केळो ॥ ६ ॥ वह तु  
रामवरलक्षा कुरीका वादयेही । सम्भवजपरसंक्षया विज्ञुत्तेवामविष्टया ॥ ७ ॥  
वहाह वर्षमो तीरे वादयेवं मदिनिएः । इहामक्षुषु कुमारो वा से कर्वं इहामिर्वं  
॥ ८ ॥ सम्बोसहीहि व्यविष्टो क्ष्यक्षेत्रयगगाढो । विष्टद्वयलपरिष्टिं भावरेष्टे  
विमुक्षिष्टो ॥ ९ ॥ मत्तं च गीपहर्विं च वाहयेवत्स वेणुग । आङ्गो दोहए व्यीर्वे  
ठिर वृक्षामधी वहा ॥ १ ॥ १० अह भविष्टप्त छोम वामराहि च खेक्षिष्टो । वर्ष  
वदेण च सो सम्भामो परिवारिष्टो ॥ ११ ॥ ११ व वर्ठरेष्टिष्टीए देवाए राताए व्यहर्वं ।  
दुरियाप्त सक्षिकाएर्वं विष्टवेष्टं गगण फुर्वे ॥ १२ ॥ व्यारितीए शहीए तुरीए व्यह-  
माह च । नियगामो मध्यामामो नियगामो विष्टत्तुप्तिष्टो ॥ १३ ॥ वह सो तत्त विष्टी  
विष्टय फावे मनवूए । वाहेहि पद्वरेहि च चंगिष्टो द्वृक्षिष्टह ॥ १४ ॥ चंगिष्टीह इ  
सपत्तो मंसुद्वा भविष्टम्भए । पासिता से महापवे साहीह इवमध्यामी ॥ १५ ॥ वह  
अद्वा हसे पाका एए सम्भी छुट्टेसिष्टो । वाहेहि पद्वरेहि च सक्षिक्षा य व्यवहर्वं ॥ १६ ॥  
वह साहीह तम्भो भमाह एए माह उ पासिष्टो । द्वृज्ञं विष्टार्क्षम्भम्भं मोमाहेहि व्यु-  
वर्वं ॥ १७ ॥ सोखण तस्य वनर्वं व्युपाविष्टिवासर्वं । विष्टेह से महापवे सक्षिष्टेह  
विष्टहि छ ॥ १८ ॥ अह मज्जत कारता पए, हम्मेति द्वृक्षु विष्टा । त मे एर्वं द्वृ विष्टेह  
फर्खेगे भविष्टसौ ॥ १९ ॥ सो फुर्क्षाप्त द्वृक्षु द्वृक्षामे च महापवे । आमलक्ष्मणं  
य सम्भामि साहीहस्य पवामए ॥ २ ॥ २० मध्यपरिवामो य च्छो देवा च व्येष्टे  
समोहणा । उम्भिहीह उपरीसा विष्टवमर्वं तत्स च्छर्वं चे ॥ २१ ॥ वृसुर्वं  
परिष्टिष्टो तीयारयनं तमो समाहयो । विष्टवमिय वारणाव्ये वैक्षमिमि विष्टे  
भगवं ॥ २२ ॥ उभार्वं सपत्तो व्येष्टो उत्तमाठ सीयामो । वाहस्तीह वीक्षुगे ।

१ ओउद्दे-मुसम्भवा विष्टाडपासो मंपाह-विष्टवमर्वं द्वृक्षुप्तार्क्षम्भवा विष्टी  
विष्टावे तस्यमध्यपवक्षिष्टवेवाविष्टिविष्टम्भवेरलुप्तार्क्षम्भिष्टो नि व्युगे ।

# सूत्र श्री भगवतीजी शतक १२वाँ

## उद्देशा ५वाँ ।

### ( रूपी अरु रूपी के १०६ वोल )

रूपी पदार्थ दो प्रकार के होते हैं, एक अप्रस्पर्श वाले जिनसे कितनेक पदार्थों को चरम चच्छु वाले देख सके, दूसरे चार स्पर्श वाले रूपी जिन्हों को चरम चच्छु वाले देख नहीं सके, अतिशय ज्ञानी ही जाने। अरु रूपी—जिन्हों को केवल ज्ञानी अपने केवल ज्ञान द्वारा ही जाने—देखे।

( १ ) आठ स्पर्श वाले रूपी के संक्षिप्त से १५ वोल है। यथा—छ्ये द्रव्य लेश्या ( कृष्ण, नील, कापोत, तेजस, पञ्च, शुक्र ) औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारक शरीर, तैजस शरीर, एवं १० तथा समुचय, घणोदधि, घणवायु, तणवायु, वाद्र पुद्गलों का स्कन्ध और काया का योग एवं १५ वोल में वर्णादि २० वोल पावे। ३००

( २ ) च्यार स्पर्श वाले रूपी के ३० वोल है, अठारा पाप, आठ कर्म, मन योग, वचन योग, सूक्ष्म पुद्गलों का स्कन्ध, और कारमण शरीर एवं ३० वोल में वर्णादि १६ वोल पावे। ४८० वोल।

( ३ ) अरु रूपी के ६१ वोल है, अठारा पाप का त्याग करना, चारह उपयोग, कृष्णादि छ्ये भाव लेश्या, च्यार संज्ञा ( आहार० भय० मैथुन० परिग्रह० ) च्यार मतिज्ञान के भांगा।

अह निकखमई उ चित्ताहिं ॥ २३ ॥ अह से शुगधर्गंधीए, तुरिय मउयकुचिए ।  
 सयमेव लुचई केसे, पचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥ वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेस  
 जिइदिय । इच्छ्यमणोरह तुरिय, पावसु त दभीसरा ॥ २५ ॥ नागेण दसणेण  
 च, चरित्तेण तहेव य । खतीए मुत्तीए, वहूमाणो भवाहि य ॥ २६ ॥ एवं ते राम-  
 केसवा, दसारा य वहू जणा । अरिट्टोणमि वदित्ता, अडगया वारगापुरि ॥ २७ ॥  
 सोऽण रायकन्ना, पव्वज सा जिणस्त उ । नीहासा य निराणदा, सोगेण उ समु-  
 च्छ्या ॥ २८ ॥ राईमई विचिंतेइ, धिरत्यु मम जीविय । जाइहं तेण परिच्छत्ता,  
 सेय पव्वइउ मम ॥ २९ ॥ अह सा भमरसन्निमे, कुच्छफणगसाहिए । सयमेव लुचई  
 केसे, धिहमंता ववस्तिया ॥ ३० ॥ वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेस जिइदिय ।  
 ससारसागर घोरे, तर कबे ! लहुं लहु ॥ ३१ ॥ सा पव्वइया सती, पव्वावेसी  
 तहिं वहु । सयण परियण चेव, सीलवता वहुस्तुया ॥ ३२ ॥ गिरि रेवयय जती,  
 वासेणुला उ अतरा । वासते अधगारंमि, अतो लयणस्त सा ठिया ॥ ३३ ॥  
 चीवराइं विसारंती, जहाजायत्ति पासिया । रहनेमी भगगचित्तो, पच्छा दिट्टो य  
 तीइ वि ॥ ३४ ॥ मीया य सा तहिं दहु, एगते सजय तयं । वाहाहिं काउ सगोप्फ,  
 वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥ अह सो वि रायपुत्रो, समुद्रविजयगव्वो । मीय पवेविय  
 दहु, इम वक्षमुदाहरे ॥ ३६ ॥ रहनेमी अह भदे !, सुर्वे ! चारुभासिणी ! । मम  
 भयाहि सुयण !, न ते पीला भविस्तर्इ ॥ ३७ ॥ एहि ता भुजिमो भोए, माणस्स  
 छु सुदुल्ह । भुत्तभोगी तओ पच्छा, जिणमग्ग चरिस्तमो ॥ ३८ ॥ दहूण रहनेमि  
 त, भगुजोयपराजिय । राईमई असभता, अप्पाण स्वरे तहिं ॥ ३९ ॥ अह सा  
 रायवरकन्ना, शुट्टिया नियमव्वए । जाई कुल च सील च, रक्खमाणी तय वए  
 ॥ ४० ॥ जइडसि रुवेण वेसमणो, ललिएन नल्कूवरो । तहा वि ते न इच्छासि,  
 जइडसि सक्ख पुरंदरो ॥ ४१ ॥ पक्खदे जलिय जोइं, धूमकेउ दुरासय । नेच्छति  
 वतय भोतु, कुले जाया अगधणे ॥ ४२ ॥ धिरत्यु तेडजसोकामी, जो त जीविय-  
 कारणा । वत इच्छासि आवेउ, सेय ते मरण भवे ॥ ४३ ॥ अह च भोगरायस्स,  
 त च सि अधगवण्हणे । मा कुले गवणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ४४ ॥ जड  
 त काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ । वायाविद्वोव्व हठो, अट्टिअप्पा भवि-  
 सससि ॥ ४५ ॥ गोवालो भडवालो वा, जहा तद्वणिस्तरो । एव अणिस्तरो त पि,  
 सामण्णस्स भविस्तसि ॥ ४६ ॥ कोह माणं निगिज्हत्ता, माय लोभ च सञ्चसो ।  
 इदियाइ वसे काउ, अप्पाण उवसहरे ॥ ४७ ॥ तीसे सो वयण सोचा, सजयाए  
 श्वभासिय । अकुसेण जहा नागो, धम्मे सपडिवाइओ ॥ ४८ ॥ मणगुत्तो वयगुत्तो,

ते उिजो मे संस्को इमो । अजो वि संस्को भज्ञे ते मे बहु गोक्षा ॥ ४४ ॥  
 अंतोहिमयसंभूया यसा चिह्न गोक्षा ॥ । एकेइ लिममस्तीवि या त उदरिया  
 अह ॥ ४५ ॥ तं स्वं सम्बसो छिता उदरिया समृद्धिये । चिह्नामि यहामे  
 मुक्तोसि विसमक्षर्त्वे ॥ ४६ ॥ यसा य इह अ बुता ? केही गोक्षममज्ञवी । केहिमे  
 बुर्णे तु गोक्षमो इत्यमज्ञवी ॥ ४७ ॥ मवहज्ञा यसा बुता भीया भीयत्वेवत् ।  
 यमुच्छितु यहामात्, चिह्नामि यहामुद्दे ॥ ४८ ॥ साहु गोक्षम । पक्षा ते लिहो मे  
 संस्को इमो । अजो वि संस्को भज्ञे ते मे बहु गोक्षा ॥ ॥ ४९ ॥ संप्रविष्ट  
 शोरा अग्नी चिह्न गोक्षमा ॥ । ये बहुति सरीरत्वा अह विजाविवा दुमे ॥ ५० ॥  
 महामेहप्रस्तावो विज्ञ वारि अहुत्तर्म । रिक्षामि सकर्त रेह, लिता मो बहुति ते  
 ॥ ५१ ॥ अग्नी य इह के बुता ? केही गोक्षममज्ञवी । केहिमे बुर्णे तु, येक्षमे ह्य  
 मज्ञवी ॥ ५२ ॥ यहामा अरिण्यो बुता, उबसीकरणो अह । उदयवारामित्वा लेण  
 मिता तु न बहुति मे ॥ ५३ ॥ साहु गोक्षम । पक्षा ते लिहो मे संस्को इमो । अजो  
 वि संस्को भज्ञे ते मे बहु गोक्षमा ॥ ५४ ॥ अम साहसिमो भीमो बुद्ध्ये अह  
 प्राप्तहै । बंसि गोक्षम । आस्थो अह तथ य हीरहि ॥ ५५ ॥ पवार्ते व त ते  
 प्रश्नरस्तीक्ष्माद्विये । न मे गच्छइ उम्मम्भं भर्मा च परिक्षर्दे ॥ ५६ ॥ वारे व त ते  
 बुतो ? केही गोक्षममज्ञवी । केहिमे बुर्णे तु, गोक्षमो इत्यमज्ञवी ॥ ५७ ॥ अजो  
 साहसिमो भीमो बुद्ध्यस्तो परिवावहै । त स्वं तु लिमिल्लामि बन्माविवाह अहै  
 ॥ ५८ ॥ साहु गोक्षम । पक्षा ते लिहो मे संस्को इमो । अजो वि संस्को भज्ञे  
 ते मे बहु गोक्षमा ॥ ॥ ५९ ॥ झुप्प्वाव बहो भोए, बेही नारीति अनुतो । बहुते  
 अह बाँतो ते न आसहि गोक्षमा ॥ ६० ॥ ॥ ये व ममो यहैति ये व उम्मम्भ  
 पद्धिया । ते सम्ब लेणा मज्ञत तो न जम्मम्भ मुखी ॥ ॥ ६१ ॥ ममी व त ते  
 बुतो ? केही गोक्षममज्ञवी । केहिमे बुर्णे तु गोक्षमो इत्यमज्ञवी ॥ ६२ ॥  
 झुप्प्वावपार्द्दी सम्बे सम्मम्भपद्धिया । सम्मम्भ तु लिमिल्लाह एह ममो वि  
 छत्तमे ॥ ६३ ॥ साहु गोक्षम । पक्षा ते लिहो मे संस्को इमो । अजो वि संस्को  
 भज्ञे ते मे बहु गोक्षमा ॥ ॥ ६४ ॥ महावदगवेन बुज्जमावाह परिवै,  
 सरल गहै एक्षा व बीर्त के नारीति मुखी ॥ ॥ ६५ ॥ अभिए एवो यारीते  
 कारिमज्ञे गहाक्षमो । महावदगवेन्स्त गहै तत्त्व न लियहै ॥ ॥ ६६ ॥ लीडे व त ते  
 बुतो ? केही गोक्षममज्ञवी । केहिमे बुर्णे तु गोक्षमो इत्यमज्ञवी ॥ ६७ ॥ अह  
 मरजक्षेवं बुज्जमावाह परिवै । अम्मो बीरो पक्षा व पहै उरसुर्धमे ॥ ६८ ॥  
 साहु गोक्षम । पक्षा ते लिहो मे संस्को इमो । अजो वि संस्को भज्ञ, ते मे बहु

गोयमा ॥ ६९ ॥ अण्वरसि महोहंसि, नावा विपरिधावईं । जंसि गोयम ! आस्टो, कह पार गमिस्ससि ? ॥ ७० ॥ जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्म गामिणी । जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥ नावा य डइ का चुता ? । केसी गोयममब्बवी । केसिमेव चुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७२ ॥ सरीरमाहु नावत्ति, जीवो चुच्छइ नाविओ । ससारो अण्वो चुतो, ज तरंति महेसिणो ॥ ७३ ॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्ज, त मे कहसु गोयमा ॥ ७४ ॥ अध्ययरे तमे घोरे, चिट्ठति पाणिणो वहू । को करिस्सइ उज्जोय ?, सब्बलोयम्मि पाणिण ॥ ७५ ॥ उगगओ विमलो भाणू, सब्बलोयपभकरो । सो करिस्सइ उज्जोय, सब्बलोयमि पाणिण ॥ ७६ ॥ भाणू य इह के चुते ?, केसी गोयममब्बवी । केसिमेव चुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥ उगगओ खीणससारो, सब्बगू जिणमकद्दरो । सो करिस्सइ उज्जोय, सब्बलोयमि पाणिण ॥ ७८ ॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्ज, त मे कहसु गोयमा ॥ ७९ ॥ सारीरमाणसे दुक्क्षे, वज्जमाणाण पाणिण । खेम सिवमणावाह, ठाण किं मज्जसी मुणी ? ॥ ८० ॥ अत्थ एग धुव ठाण, लोगगमि दुरास्त हू । जत्थ नत्थ जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥ ठाणे य इह के चुते ?, केसी गोयममब्बवी । केसिमेव चुवत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥ ८२ ॥ निव्वाण ति अवाह ति, सिद्धी लोगगमेव य । खेम सिव अणावाह, ज चरति महेसिणो ॥ ८३ ॥ ठाण सासय वास, लोयगमि दुरास्त । जं सपत्ता न सोयति, भवोहंतकरा मुणी ! ॥ ८४ ॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । नमो ते ससयातीत !, सब्बमृतमहोयही ॥ ८५ ॥ एव तु ससए छिन्ने, केसी घोरपरक्षमे । अभिवदिता सिरसा, गोयमं तु महायस ॥ ८६ ॥ पंचमहब्बवयथम्म, पडिवज्जइ भावओ । पुरिमस्स पच्छममि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥ केसीगोयमओ निच्च, तमि आसि समागमे । सुयसीलसमुक्करिसो, भहत्यत्यविणिच्छओ ॥ ८८ ॥ तोसिया परिसा सब्बा, सम्मग्ग समुवष्टिया । सुयुगा ते पसीयतु, भयव केसिगोयमे ॥ ८९ ॥ ति-बेमि ॥ इति केसिगोयमिज्जणामं तेवीसइमं अज्ज्ञयणं समत्तं ॥ २३ ॥

### अह समिईओ पामं चउवीसइमं अज्ज्ञयणं

अट्टु पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य । पचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहिया ॥ १ ॥ इरियाभौसेसणौदाणे, उच्चौरे समिई इय । मणगुर्ती वयगुर्ती, कायगुर्ती

य अद्वना ॥ ३ ॥ एयाम्भे अद्व समिरेभो समासेष मिवाहिया । तुकाळसंपं दिवाकरं  
मायं ज्रत्य च पवयर्ण ॥ १ ॥ (१) आस्त्रवभेजे काषेज ममोर्व चयथार्व च । चरम्भ-  
रणपरिषुद्ध, संजए इरिमं रिए ॥ ४ ॥ तत्य आस्त्रं नाजे दंहनं चरव द्वा । तजे  
य एिसे मुत्तो मग्गे उप्पद्वयिए ॥ ५ ॥ शम्भो खेत्तमो चेष काष्मी मात्तमो द्वा ।  
जयजा चरभिहा तुला तं मे कित्तमो द्वय ॥ ६ ॥ दव्यजो चक्षुसा देहे, हृष्टमै  
च देत्तमो । काल्मधे जाव रीज्जा उबडते य मासम्भे ॥ ७ ॥ इरिमत्ते मिविद्य,  
सज्जाव चेष पंचहा । तम्भुती तम्भुरकारे उबडते रियं रिए ॥ ८ ॥ (२) कोहै भैरे  
य मायारै, क्षेमे च उबडतामा । होसे भई मोहरिए, तिवहार्व तहेव च ॥ ९ ॥ सम्भ  
भद्वाजाई परिवज्जितु संजए । असाक्षं मिमं काषे भासी भासिज पक्षर्व ॥ १ ॥  
(१) गवेसणाए पहेजे य परिम्भेगसद्वी य चा । भाहारेहेहिउेजाए, एर दिवि  
मिसोहैज ॥ १ ॥ ० सम्ममुप्याकर्व पठमे चीए स्थेज एसर्व । परिम्भेयमिम चउम्भ,  
मिसोहैज चर्व चई ॥ १२ ॥ (२) बोहेमेहेक्ष्मीहियं मंहर्व तुम्ही मुत्ती । भिल्लो  
निक्षितवतो च फठेज इर्म निहि ॥ १३ ॥ चक्षुसा परिवेहिता पम्भेज चर्व चई ।  
भाए लिक्षितमेजा चा तुह्मोऽवि समिए सना ॥ १४ ॥ (५) उवारं पालनर्व लेहे  
सिवागवजिवं । भाहार उपहि देह, भर्व वानि तहार्व ॥ १५ ॥ अनामाकमच्छेहे,  
भजाशाए चव होह संब्लेहे । आशाम्भमस्त्वेहे, आशाए चेष संब्लेहे ॥ १६ ॥ अवाम्भ-  
मस्त्वेहे, परस्पत्तमुक्षाश्य । सम अग्नुसिरे वानि अविरल्पत्तम्भमिम च ॥ १७ ॥  
निक्षिल्ले द्वुमेगाहे भासवै विष्मयिए । तसपानवीवरहिए, उवारहियं वोहिए  
॥ १८ ॥ एवाम्भे फूल समिरेभो समस्तेष मिवाहिया । एतो य तजो गुर्तम्भे सेष्मयै  
भग्युप्यस्त्वे ॥ १९ ॥ (६) उच्चो तहेव मोसा य सम्भमोसी तहेव च । चरत्ती चम्भ-  
चमोर्ती च गवगुर्ती चरभिहा ॥ २ ॥ संरेमसमारमे आरेममिम तहेव च । मन्त्र  
पक्षत्तमार्ण तु, नियतेज चर्व चई ॥ २१ ॥ (७) उच्चो तहेव मोसी य सम्भमोसी  
तहेव च । चरत्ती भस्त्रमोसी च गवगुर्ती चरभिहा ॥ २२ ॥ संरेमसमारिय चारं  
ममिम तहेव य । चर्व पक्षत्तमार्ण तु, नियतेज चर्व चई ॥ २३ ॥ (८) डावे निदीन्ते  
चेष तहेव य तुम्हावे । दावेपद्मदेष्ये इरिकाज य तुम्हावे ॥ २४ ॥ संरेमसमारिय  
आरेममिम तहेव य । चर्व पक्षत्तमार्ण तु, नियतेज चर्व चई ॥ २५ ॥ स्वाम्भे फूल  
समिरेभो चरपस्त्य य पक्षत्तमे । तुली निक्षत्तमे तुला अस्त्रमत्तेष्य सम्भसी ॥ २६ ॥ द्वा  
फक्षयज्ञमावा जे सम्भ आवरे मुत्ती । द्वो विष्पर्व उम्भसाहा विष्पमुख्य वंडिए ॥ २७ ॥  
ति-वेनि ॥ इति समिरेभो याम्भ चरत्तीसाहं अज्ञहयर्व समर्त ॥ २८ ॥

## अह जन्मइज्जनामं पंचवीसइमं अज्ज्ञयणं

---

माहणकुलसभूतो, आसि विप्पो महायसो । जायाई जमजन्ममि, जयघोसिति नामओ ॥ १ ॥ इदियगगामिनगगाही, मगगामी महामुणी । गामाषुगाम रीयते, पत्तो वाणरसि पुरिं ॥ २ ॥ वाणरसीए वहिया, उज्जाणमि मणोरमे । फासुए सेजसथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥ अह तेणेव कालेण, पुरीए तत्थ माहणे । विजयघोसिति नामेण, जन्म जयइ वेयवी ॥ ४ ॥ अह से तत्थ वणगारे, मासक्ख-मणपारणे । विजयघोसस्स जन्ममि, भिक्खमट्टा उवट्टिए ॥ ५ ॥ समुवट्टिय तहिं सत, जायगो पडिसेहए । न हु दाहामि ते भिक्ख, भिक्खू । जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥ जे य वेयविऊ विप्पा, जन्मट्टा य जे दिया । जोइसगविऊ जे य, जे य घम्माण पारगा ॥ ७ ॥ जे समत्था समुद्धतु, परमप्पाणमेव य । तेसिं अन्नमिणं देय, भो भिक्खू । सब्बकामिय ॥ ८ ॥ सो तत्थ एव पठिसिद्धो, जायरेण महामुणी । नवि रुद्धो नवि तुद्धो, उत्तमट्टगवेसओ ॥ ९ ॥ नज्जट्ट पाणहेउ वा, नवि निवाहणाय वा । तेसिं विमोक्खणट्टाए, हम वयणमब्बवी ॥ १० ॥ नवि जाणासि वेयमुह, नवि जन्माण ज मुह । नक्खत्ताण मुह ज च, ज च घम्माण वा मुह ॥ ११ ॥ जे समत्था समुद्धतु, परमप्पाणमेव य । न ते तुम वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥ तस्सक्खेवपमोक्ख तु, अचयतो तहिं दिओ । सपरिसो पजली होउ, पुच्छई त महामुणि ॥ १३ ॥ वेयाण च मुह वूहि, वूहि जन्माण ज मुह । नक्खत्ताण मुह वूहि, वूहि घम्माण वा मुह ॥ १४ ॥ जे समत्था समुद्धतु, परमप्पाणमेव य । एय मे ससय सब्ब, साहू । कहसु पुच्छिओ ॥ १५ ॥ अगिगहुतमुहा वेया, जन्मट्टी वेयसा मुह । नक्खत्ताण मुह चदो, घम्माण कासवो मुहं ॥ १६ ॥ जहा चंद गहाईया, चिद्धते पंजलीउडा । वद्माणा नमसता, उत्तम मणहारिणो ॥ १७ ॥ अजाणगा जन्मवाई, विजामाहणसपया । गूढा सज्ज्ञायतवसा, भासच्छज्ञा इवगिणो ॥ १८ ॥ जो लोए वमणो वुतो, अगरी व महिओ जहा । सया कुसलसदिष्ठ, त वय वूम माहण ॥ १९ ॥ जो न सज्जइ आगंतु, पव्वयतो न सोयड । रमइ अज्ज-वयणमि, त वय वूम माहण ॥ २० ॥ जायहृव जहामट्ट, निद्धतमलपावग । राग-दोसभयाईय, तं वय वूम माहण ॥ २१ ॥ तवस्सिय किस दत्त, अवचियमंससोगिय । मुच्चवय पत्तनिव्वाण, त वय वूम माहण ॥ २२ ॥ तसपाणे वियाणेता, सगहेण य यावरे । जो न हिंसइ तिविहेण, तं वय वूम माहण ॥ २३ ॥ कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया । मुस न वयई जो उ, तं वय वूम माहण ॥ २४ ॥

विज्ञानं दमचिह्नं वा अर्थं वा अहं वा वर्तुं । न विज्ञानं अहतं चे त वर्तं शूम माहर्ण ॥ २५ ॥ विष्वमालुस्तरित्यु जो न सेव्य मनुष्यं । मजसा वामत्तर्त्यु, है वर्तं शूम माहर्ण ॥ २६ ॥ जहा पोर्म जडे जार्म नोवक्षिप्त्य वासिता । एत अर्थं वर्त्युहि, तं वर्तं शूम माहर्ण ॥ २७ ॥ अत्येक्षुर्व सुदायीयि अपगार वाक्यं । अर्थत्तर्त्यु गिहत्येषु तं वर्तं शूम माहर्ण ॥ २८ ॥ वहिता पुम्पस्येयं गांध्ये व वंचये । जो न सज्ज भोगेषु तं वर्तं शूम माहर्ण ॥ २९ ॥ पूर्वावा सम्बद्धेषा वर्तं व पावक्षम्मुक्ता । न त तावति तुस्तीह क्षमायि वर्त्यति हि ॥ ३ ॥ त वि तुंडिए समजो न लोक्यरेष वर्मजो । न मुषी रूपावासेव्य कुसर्वरेष न तास्ते ॥ ३१ ॥ समयाए समजो होइ वंभवेरेष वंभवो । वाक्येय य मुषी होइ, होइ होइ तावसो ॥ ३२ ॥ क्षम्मुक्ता वंभवो होइ, क्षम्मुक्ता होइ यातिये । वालो क्षम्मुक्ता होइ, घण्ये वाल क्षम्मुक्ता ॥ ३३ ॥ एए पात्तकरे कुटे, वेहि होप विषावत्ते । सम्बक्षमविष्यम्मुहि तं वर्तं शूम माहर्ण ॥ ३४ ॥ एवं पुष्पसमात्ता चे वर्त्यति वित्तामा । ते समत्ता समुद्दत्तु, फरम्पापमेव य ॥ ३५ ॥ एव दु खेत्र गिरे विक्षयवोषे य महूले । समुदाय तमो ते दु, वयवोषे महास्युयि ॥ ३६ ॥ दुष्टे व विक्षयवोषे इम्मुदाहु कर्मकडी । माहत्ताव व्यामूर्य मुक्तु म उवार्यिये ॥ ३७ ॥ दुष्टे व व्याया व्याय दुष्टे वेयमित्त नित्त । जोत्तर्तावित्त दुष्टे दुष्टे फल्ल वारणा ॥ ३८ ॥ दुष्टे समत्ता उद्दत्तु, वरम्पापमेव य । तस्मुमाह वेष्टमृ विष्यम्मुहि विष्यम्मेवं विष्यम्मुहुदमा ॥ ३९ ॥ न ऋर्वं भज्य मिष्यमेव विष्य मिष्यम्मुहिय ॥ ४० ॥ मा भमिष्यसि मयाक्ते चोरे संपारसागरे ॥ ४१ ॥ उवालो होइ भोगेषु, वर्मेयी नोवक्षिप्त्यै । भोगी भम्य चंसारे अभोगी विष्यम्मुहै ॥ ४२ ॥ उमे दुष्टा व दो शूला गोल्ला महियामया । दो वि अवदिया दुडे जो उमे सोश्वर तम्मै ॥ ४३ ॥ एवं वर्त्यति दुष्टेहा चे नहा क्षम्मालम्मा । वित्ता त न वर्त्यति व्या दे दुष्टो-क्ष्य ॥ ४४ ॥ एवं दे विक्षयवोषे व्यवोषस्तु वर्त्यति । अपगारस्तु विष्यम्मेवो वर्त्य सोवा अल्लतर ॥ ४५ ॥ वर्त्यता पुष्पक्षम्माहु, उवामेय तविष्य य । अव्येषुविष्य-वोषा विदि फा अल्लतर ॥ ४६ ॥ वि-वेमि ॥ इति अव्याख्यनामै वर्त्यती-सहमं वर्त्यत्याणं समर्त्य ॥ ४७ ॥

### अहं सामायारी णामं छत्वीसङ्गम अज्ञायर्ण

सामायारि वक्ष्यामि सम्पुष्पमिष्यम्मोक्षयिति । व वर्त्यता विष्यवा विष्य

सुसारसागर ॥ १ ॥ पठमा आवस्तिया नाम, विडया य निरीहिया । आपुच्छणा  
 य तडया, चउत्थी पठिपुच्छणा ॥ २ ॥ पचमा छदणा नाम, उच्छाकारो य छट्ठो ।  
 सत्तमो मिन्छाकारो य, तहधारो य अट्ठमो ॥ ३ ॥ अच्छुद्ग्राण च नवम, दसमी  
 उवसपया । एमा दसगा नाहण, नामायारी पवेइया ॥ ४ ॥ गमणे आवस्तिय  
 कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं । आपुच्छण सयकरणे, परकरणे पठिपुच्छण ॥ ५ ॥  
 छदणा दच्छजाएण, इन्द्याकारो य सारणे । मिन्छाकारो य निंदाए, तहधारो  
 पटिस्तुए ॥ ६ ॥ अच्छुद्ग्राण गुरुपूया, अच्छणे उप्रसपया । एव दुपचसज्जुता, नामा-  
 यारी पवेइया ॥ ७ ॥ पुच्छिलमि चउब्बाए, आइच्छमि समुट्टिए । भडय पडिलेहिता,  
 वटिता य तओ गुरु ॥ ८ ॥ पुच्छिल पजलीउडो, कि कायच्च मए इह । उच्छ  
 निओइउ भते ।, वेयावच्चे व मज्जाए ॥ ९ ॥ वेयावच्चे निउत्तेण, कायच्च अगि-  
 लायओ । सज्जाए वा निउत्तेण, मव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥ दिवसस्त चउरो  
 भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणे । तओ उत्तरणुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउमु वि  
 ॥ ११ ॥ पठम पोरिसि मज्जाय, वीय ज्ञाण झियायई । तडयाए भिक्खायरिय,  
 पुणो चउत्थीड सज्जाय ॥ १२ ॥ असाढे मासे दुपया, पीसे मासे चउपया ।  
 चित्तामोएसु मासेनु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥ अगुल सत्तरत्तेण, पक्खेण  
 च दुअगुल । चह्यै हायए वावि, मासेण चउरगुल ॥ १४ ॥ आसाढवहुल-  
 पक्खे, भद्वए कत्तिए य पोसे य । फग्गुणवइसाहेसु य, वोद्ववा ओमरत्ताओ  
 ॥ १५ ॥ जेह्वामूले आमाद्सावणे, द्यहिं अगुलेहिं पडिलेहा । अट्ठहिं वीयतयमि,  
 तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥ १६ ॥ रत्ति पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा विय-  
 क्खणे । तओ उत्तरणुणे कुज्जा, राडभाएसु चउसु वि ॥ १७ ॥ पठम पोरिसि  
 सज्जाय, वीय ज्ञाण झियायई । तइयाए निद्यमोक्ख तु, चउत्थी भुज्जो वि  
 सज्जाय ॥ १८ ॥ जं नेइ जया रत्ति, नक्खत्त तमि नहचउब्बाए । सपत्ते  
 विरमेजा, सज्जाय पओसकालमि ॥ १९ ॥ तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्बाग-  
 सावसेसमि । वेरत्तिय पि काल, पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥ २० ॥ पुच्छिलमि  
 चउब्बाए, पडिलेहिताण भडय । गुरु वदितु सज्जाय, कुज्जा दुक्खविमोक्खण  
 ॥ २१ ॥ पोरिसीए चउब्बाए, वदिताण तओ गुरु । अपडिक्कमित्ता कालस्सै,  
 भायण पडिलेहए ॥ २२ ॥ मुहपोत्ति पडिलेहिता, पडिलेहिज गोच्छगा । गोच्छगा-  
 लहयगुलिओ, वत्थाइ पडिलेहए ॥ २३ ॥ उह्यै यिरं अतुरिय, पुच्च ता वत्थमेव  
 पडिलेहे । तो विइय पफोडे, तइय च पुणो पमजिज्जा ॥ २४ ॥ अणच्चाविय

१ सज्जायकालाओ अणिवित्तो होऊण ।

अवलिये अणालुर्विभिन्नोसलि चेष । छापुरिमा नव लोडा पाणीमारिमिसोर्वर्ह ॥ २८ ॥ आरम्भा सम्माना चयेयम्भा च मोसही लह्या । पण्डेश्वा चर्वनी, विमिलाचा लेश्वा लह्यी ॥ २९ ॥ परिविक्ष्मस्त्रक्ष्मयेका एगामोसा अनेयम्भुषा । कुणइ पमाणपमार्ये संकिय गफ्मोळगं कुज्ञा ॥ ३० ॥ अपूर्वाहरित्विक्ष्टेवा अविक्ष्मासा तदोऽय । फल्मं पय पसर्व देसामि त अप्पर्वपाद ॥ ३१ ॥ पहिलेहर्जं कुर्वतो मिशो छाई कुणइ चर्वम्भ था । वेद व वदस्त्रार्ज वारद लं परिविक्ष्म था ॥ ३२ ॥ पुष्करीमाठद्वापु, तेज्वास्त्रपत्तस्त्रहृत्वार्ज । पहिलेहर्जम्भये छर्व पि विराहमो होइ ॥ ३ ॥ पुष्करीमाठद्वापु, तेज्वास्त्रपत्तस्त्रहृत्वार्ज । पविलेहर्जामाउतो छर्व संरक्षयओ होइ ॥ ३१ ॥ तद्याए पोरिसीए, मर्त चर्व गवेसए । छर्व अहम्भरार्गमि चर्वर्यमि समुद्धिए ॥ ३२ ॥ वेम्भ विम्भले इरिद्वार्य संज्ञम्भाए । तद्या पाख्यतिवाए, छर्व पुज भम्भर्विताए ॥ ३३ ॥ लिम्भले भिम्भलो मिर्मावी पि न छरेज छर्व चेष । ठायेहि त इमेहि, वलश्वम्भात्र होइ ॥ ३४ ॥ आर्वके उदस्मो शितिक्ष्मावा वैभवेहुतीच । पामिद्वा तद्वैर्व सहीरबोक्षेवम्भाए ॥ ३५ ॥ अक्षेसु मंडय मिज्जा चर्वम्भया पहिलेहपु । फल्म द्वयोयम्भाओ विहार विहार शुणी ॥ ३६ ॥ चर्वत्वीए पोरिसीए, विमिलामित्वार्ज मावर्ज । सज्जार्य तमो कुज्ञा उज्ज्वालविमावर्ज ॥ ३७ ॥ पोरिसीए चउम्भाए वैविताव तमो गुर्व । पविद्वमित्वा काम्भसु सेवं तु पहिलेहपु ॥ ३८ ॥ वारम्भ वारम्भमि च पहिलेहिज चर्व चर्व । काठम्भस्मो तमो कुज्ञा उज्जुर्वपविमोक्तर्ज ॥ ३९ ॥ देवतिर्य च अस्मार्ट, वितिजा अनुपुभ्यसे । नार्व य रस्ते चेष चरित्वमि तदोऽय । ४ ॥ पारिम्भव्यउस्यमो वैविताव तमो गुर्व । वैवित्व तु अहयार आषोएज अहृत्वा ॥ ४१ ॥ पहिलेहिज विस्त्वामो वैविताव तमो गुर्व । काठस्मर्ग तमो कुज्ञा उज्जुर्वपविमोक्तर्ज ॥ ४२ ॥ पारिवर्वागस्त्रम्भे वैविताव तमो गुर्व । चुह्यंगर्ल च काम्भय फालं सेविलेहपु ॥ ४३ ॥ फल्म लेहिज सज्जार्य मिश्व ज्ञानं वित्याप्यै । तद्याए निइमोक्तर्ज तु सज्जार्य तु चरित्व ॥ ४४ ॥ पोरिसीए चर्वत्वीए, चालं तु पहिलेहिया । सज्जार्य तु उम्भे कुज्ञा वर्गोहतो अस्त्रज्जर् ॥ ४५ ॥ पोरिसीए चउम्भाए, वैवित्व तमो गुर्व । वैवित्वेहिज फाम्भस फालं तु पहिलेहपु ॥ ४६ ॥ आगए कायवीस्त्रमो सम्भुर्वपविमोक्तर्ज । काठस्मर्ग तमो कुज्ञा उज्जुर्वपविमोक्तर्ज ॥ ४७ ॥ राश्य च वर्द्दार उम्भिज अनुपुभ्यसी । नार्वमि देस्त्रमि च चरित्वमि तर्वमि च ॥ ४८ ॥ पारिवर्वागस्त्रम्भे वैविताव तमो गुर्व । राश्य तु अरेयार्ट, आम्भेएज अहृत्वा ॥ ४९ ॥ वैवित्वेहिज

निस्सलो, वदित्ताण तथो गुरु । काउस्सग्ग तथो कुज्जा, सब्बदुक्खविमोक्षण  
॥ ५० ॥ कि तव पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचितए । काउस्सग्ग तु पारित्ता, करिज्जा  
जिणसथव ॥ ५१ ॥ पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तथो गुरु । तवं सपडिवजेत्ता,  
कुज्जा सिद्धाण सथवं ॥ ५२ ॥ एसा सामायारी, समासेण वियाहिया । ज चरित्ता  
वहू जीवा, तिण्णा ससारसागर ॥ ५३ ॥ ति-वेमि ॥ इति सामायारी पामं  
छव्वीसहमं अज्ज्ञयणं समत्तं ॥ २६ ॥

### अह खलुंकिज्जणामं सत्त्वादीसहमं अज्ज्ञयणं

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए । आइणे गणिभावमि, समाहिं  
पडिसधाए ॥ १ ॥ वहणे वहमाणस्स, कतार अइवत्तई । जोगे वहमाणस्स, ससारो  
अइवत्तई ॥ २ ॥ खलुके जो उ जोएइ, विहमाणो किलिस्सई । असमाहिं च वेएइ,  
तोत्तओ से य भजई ॥ ३ ॥ एग डसइ पुच्छामि, एगं विधइऽभिक्खण । एगो  
भजइ समिल, एगो उप्पहपट्टियो ॥ ४ ॥ एगो पडड पासेण, निवेसइ निवर्जई ।  
उक्कुद्दई उप्पिडई, सढे वाल्मावी वए ॥ ५ ॥ माई मुख्येण पडई, कुद्दे गच्छइ पडि-  
प्पह । मयलक्ष्मेण चिद्दई, वेगेण य पहावई ॥ ६ ॥ छिन्नाले छिद्दई सेलिं, दुहंतो  
भजए जुग । से वि य सुसुयाइत्ता, उजहित्ता पलायए ॥ ७ ॥ खलुका जारिसा  
जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोइया धम्मजाणमि, भजंती धिइदुब्बला ॥ ८ ॥  
इहुगीगरविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे, एगे सुन्निरकोहणे ॥ ९ ॥  
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणसीरुए । थद्दे एगेऽणुसासमि, हेऊहिं कारणेहि य  
॥ १० ॥ सो वि अतरभासिलो, दोसमेव पकुब्बई । आयरियण तु वयण, पडि-  
क्कुलेहऽभिक्खण ॥ ११ ॥ न सा मम वियाणाह, न वि सा मज्ज दाहिई । निग्रया  
होहिई मन्ने, साहू अज्जोऽत्थ व[ज]ञ्चउ ॥ १२ ॥ पेसिया पलिउच्चति, ते परियति  
समतओ । रायवेड्ठि च मन्तता, करेति भिउडि मुहे ॥ १३ ॥ वाइया सगहिया  
चैव, भत्तपाणेण पोसिया । जायपक्खा जहा हसा, पक्खमति दिसो दिसि ॥ १४ ॥  
अह सारही विचितेइ, खलुकेहिं समागओ । किं मज्ज दुड्डसीसेहिं, अप्पा मे अव-  
सीयई ॥ १५ ॥ जारिसा मम सीसा उ, तारिसा गलिमाह्वा । गलिगह्वे जहित्ताणं,  
दठ पशिण्हई तव ॥ १६ ॥ मिउमह्वसप्त्रो, गमीरो सुसमाहियो । विहरइ महिं  
महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥ १७ ॥ ति-वेमि ॥ इति खलुंकिज्जणामं सत्त-  
्वादीसहमं अज्ज्ञयणं समत्तं ॥ २७ ॥

## अह मोक्षमग्नगार्ह पाम अद्वावीसङ्गमं अज्ञायण

---

मोक्षमग्नगार्ह तर्व श्रीनेह विज्ञाप्तिः । चतुष्प्रवर्णसंतुर्ते नाथरंसंवलनर्व  
 ॥ १ ॥ नार्ण च देवर्ष चेव परितं च ततो तदा । एस सम्मुक्ति वहये विवेदि  
 वरंपिद्वि ॥ २ ॥ नार्ण च देवर्ष चेव परितं च ततो तदा । एवं मम्ममुपता,  
 जीवा गच्छेति सोम्यद्वि ॥ ३ ॥ तत्प फंचिद्वि नार्ण शुभं जामिनेदेविद्वि । वोर्ण  
 नार्ण तु तर्व मण्डारं च लेखते ॥ ४ ॥ एवं फंचिद्वि नार्ण इमान् च पुष्टव  
 य । पश्चार्ण च सम्भेदि नाय नार्णीहि देविर्य ॥ ५ ॥ गुणात्मास्ते र्व  
 एगदम्बस्तिमा गुणा । अन्तर्व अश्वार्ण तु, उम्भे अस्तिमा भवे ॥ ६ ॥ अम्भे  
 अहम्भो अग्नास्ते अस्ते पुमाकर्मतावो । एस वेष्टो ति पश्चात्ये विवेदि वरंपिद्वि  
 ॥ ७ ॥ अम्भो अहम्भो आपादं इव इक्षिमात्रिव । वर्णतावि च इम्भे,  
 अस्ते पुमाकर्मतावो ॥ ८ ॥ गृहस्तम्भावो च अम्भो अहम्भो अप्तम्भतावो । अन्ते  
 सम्भदम्बार्ण नहि वोगाहृष्टवायर्ण ॥ ९ ॥ वत्तम्भम्भतावो काम्भे जीवो सम्भेऽ  
 कम्भप्तो । नार्णेऽ इस्तेद्वि च शुद्धेष य दुर्देष य ॥ १० ॥ नार्ण च देवर्ष चेव,  
 वरितं च ततो तदा । जीविर्य उष्मोगो च एवं जीवर्त्त सम्भार्ण ॥ ११ ॥ ईं  
 पश्चात्वर्त्तो जहा आपाहृष्टवो इ वा । अन्तर्वात्मप्रसादा गुणाकर्म तु अन्तर्व  
 ॥ १२ ॥ एगार्ण च पुरार्ण च संवा संयमेव य । संबोगा च विमाया च ॥ १३ ॥  
 नार्ण तु अन्तर्व ॥ १४ ॥ जीवात्रीवा य वैष्टो य पुम्भ पापाहृष्टवो वा ।  
 संवरो निवाह भोक्त्वा संतेऽ वहिया नव ॥ १५ ॥ वहिवार्ण तु नार्ण वायवै  
 उपएसर्ण । नार्णेऽ उर्वात्वस्तु सम्मर्तं तं विज्ञाप्तिः ॥ १६ ॥ विज्ञाप्तिः  
 नायद्वै द्वावीमद्वेष । अस्तिम्भ-वित्तात्वद्वै, कैरिया संवेष-वस्तर्द्वै ॥ १७ ॥  
 भूत्वेषाहिम्भा भीवात्रीवा य पुम्भावं च । सहस्रम्भयात्मकर्त्तरो च ऐरु च  
 विस्तुम्भो ॥ १८ ॥ चो विज्ञाप्तु मावे चतुष्पिद्वे सहाय चतुष्वेव । एवं नायपि  
 च स विस्तम्भद्वति नायम्भो ॥ १९ ॥ एप चेव च मावे उष्मो चो देव द्वारा ।  
 उत्तम्भेष विषेष च उपएसर्णति नायम्भो ॥ २० ॥ रसो दोषो मीषो नाय  
 वस्तु वस्तुपये होइ । आकाए रोदेतो दो वहु जावाये नार्ण ॥ २१ ॥ ये इन्हे  
 महिज्ञतो शुएप्प अग्नाहृष्ट तु यम्भात । अगेष वाहिरेष च दो द्वावीपति वस्तुते  
 ॥ २२ ॥ एगेष वस्तुते, पश्चात्व चो पश्चात्व तु यम्भात । उपेष्ट तेविर्य, ते  
 जीवद्वति नायम्भो ॥ २३ ॥ चो होइ अमिगमर्द्व, प्रवावार्ण वेव वस्तुतो होइ ।  
 एवारस अंगात्व, प्रवावार्ण विद्विवावो य ॥ २४ ॥ वन्नाय सम्भावा तन्नावावेहि

( उग्गह ईहा अपाय० आरण्णा ) च्यार शुद्धि ( उत्पत्तिर्थि, विनयकी कर्मकी पारिणामिकी ) तीन इष्टि ( सम्पूर्ण इष्टि मिष्ट्याह॑ए मिष्ट्याइष्टि ) पांच द्रव्य अर्मास्ति अर्मास्ति हिं आकाशगास्ति जीवास्ति शीर काम द्रव्य' पांच प्रकार से जीव की शक्ति 'उत्पान, कर्म वल वीर्य पुरुषार्थ' एवं ६) वोल अकपी के हैं ॥ इति ॥

सेव भते सेवे भते तमेष सम्भ ।

---

## सूत्र श्री ज्ञाताजी अध्ययन द्वा

( तीर्पंकर नाम गोश्र वष के २० कारण )

- ( १ ) यी अरिहस्त भगवान् के शुल्क स्वतन्त्रादि करने से ।
- ( २ ) यी सिद्ध भगवान् के शुल्क स्वतन्त्रादि करने से ।
- ( ३ ) यी पांच समिति तीन शुल्क यह आद् प्रवचन की माठा है इन्हों को सम्पूर्ण प्रकार से आराधन करने से ।
- ( ४ ) यी शुल्कवस्तु शुल्कयी महाराज का शुल्क करने से ।
- ( ५ ) यी स्थिष्टरजी महाराज के शुल्क स्वतन्त्रादि करने से ।
- ( ६ ) यी पद्मभुती-जीतायों का शुल्क स्वतन्त्रादि करने से ।
- ( ७ ) यी तपस्वीयी महाराज के शुल्क स्वतन्त्रादि करने से ।
- ( ८ ) शिखा पड़ा वान को पाठ वार चिकित्सम करने से ।
- ( ९ ) वर्णन [समकित] निर्मल आराधन करने से ।
- ( १० ) सात तथा १४ प्रकार के नियम करने से ।
- ( ११ ) कालो वान प्रतिक्रमण करने से ।
- ( १२ ) शिष्ये शुण मन—प्रस्थार्घान निर्मल पालने से ।
- ( १३ ) धर्म व्याम—शुद्ध च्याम रपाते रहने से ।

जस्स उवलद्धा । सब्बाहिं नयविहीहि, वित्यारस्ति नायव्वो ॥ २४ ॥ दसणनाण-  
चरित्ते, तवविणए सच्चसमिश्रुतीसु । जो किरियाभावरहि, सो खलु किरियारहि नाम  
॥ २५ ॥ अणभिगगहियकुद्धी, सखेवस्ति होइ नायव्वो । अविसारओ पवयणे,  
अणभिगगहिओ य सेसेसु ॥ २६ ॥ जो अत्यिकायधम्म, सुयधम्म खलु चरित्तधम्म  
च । सदहृद जिणाभिहिय, सो धम्मस्ति नायव्वो ॥ २७ ॥ परसत्यसथवो वा,  
सुदिद्धपरमत्थसेवण वावि । वावन्नकुदसणवज्ञणा, य सम्मतसदहृणा ॥ २८ ॥ नत्यि  
चरित्त सम्मतविहूण, दसणे उ भद्रयन्व । सम्मतचरित्ताइ, जुगव पुञ्व व सम्मत  
॥ २९ ॥ नादसणिस्स नाण, नाणेण विणा न हुति चरणगुणा । अगुणिस्स नत्यि  
मोक्खो, नत्यि अमोक्खस्स निव्वाण ॥ ३० ॥ निस्सकिय निक्षिय, निव्विति-  
गिच्छा अमूढद्धीय । उवबूह थिरीकरणे, वच्छल पमावणे अद्धु ॥ ३१ ॥ सामा-  
इयत्थ पढमं, छेऽओवट्टावण भवे वीय । परिहारविसुद्धीय, सुहुम तह सपराय च  
॥ ३२ ॥ अक्सायमहक्खाय, छउमत्थस्स जिणस्स वा । एयं चयरित्तकरं, चारित्त  
होइ आहिय ॥ ३३ ॥ तवो य दुविहो वुत्तो, वाहिरब्मतरो तहा । वाहिरो छविहो  
वुत्तो, एवमब्मतरो तवो ॥ ३४ ॥ नाणेण जाणई भावे, दसणेण य सद्धे । चरि-  
त्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्जरई ॥ ३५ ॥ खवेत्ता पुञ्वकम्माइ, सजमेण तवेण  
य । सव्वदुक्खपहीणट्टा, पक्षमति महेसिणो ॥ ३६ ॥ त्ति-वेमि ॥ इति मोक्ख-  
मगगगई णामं अट्टावीसद्धमं अज्ज्ययणं समत्तं ॥ २८ ॥

### अह सम्मतपरक्मणामं एग्रणतीसद्धमं अज्ज्ययणं

सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय । इह खलु सम्मतपरक्मे नाम  
अज्ज्ययणे समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइए ज सम्म सद्धहिता पत्तिइत्ता  
रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तिइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपा-  
लइत्ता वहवे जीवा सिज्जति त्रुज्जति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाणमंत  
करेति । तस्स ण अयमद्वे एवमाहिज्जइ । तज्ज्हा-सवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३  
शुस्साहमियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निंदणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८  
चउब्बीमत्थवे ९ वदणे १० पडिक्कमणे ११ काउस्सगे १२ पच्चक्खापे १३  
थवयुडमगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७  
सज्जाए १८ वायणया १९ पुच्छणया २० परियद्धणया २१ अणुपेहा २२  
धम्मक्हा २३ सुयस्स आराहणया २४ एग्रगमणसनिवेसणया २५ सजमे २६

तथे २७ कोहाणे २८ छाहाए २९ अप्पिकदया १ चित्तिसवयासुक्षेत्रवा ११  
 दिविकाक्षया १२ संभेदपवस्थाणे १३ उद्दिश्यस्थाणे १४ अवारप  
 क्षयाणे १५ क्षयावरपक्षयाणे १६ घोगपवस्थाणे १७ सुरेपवस्थाणे १८  
 चाहायपवस्थाणे १९ मातपवस्थाणे २ सम्माक्षपवस्थाणे २१ पडिक्षया २२  
 लेवाणे २३ सञ्जुलसंपवस्या २४ वीरागया २५ ईर्षी २६ मुही २७ मातृ २८  
 अज्ञी २९ मात्रसांखे २८ घरचपाणे २९ जोगासांखे ३० मण्डुल्या ३१  
 वयगुल्या ३२ कामगुल्या ३३ मण्डमाधारल्या ३४ वयस्माधारल्या ३५  
 अप्पस्माधारल्या ३६ नायसंफल्या ३७ दंसपंस्त्वया ३८ चरितसंत्वया ३९  
 खोर्दियनिमाणे ३९ चरितदियनिमाणे ४० याचिदियनिम्याणे ४१ चिर्मिदिस  
 निमाणे ४२ चर्तिरियनिमाणे ४३ कोहकिए ४४ मात्विकए ४५ मात्रविकए ४६  
 लोकविकए ४७ पेजदोसमिक्षावृत्तपविकए ४८ संक्षेपी ४९ अक्षम्या ४१  
 संक्षेपोर्जे मंत्रे । जीवे कि जपयह । संक्षेपें अनुतारे धमस्तसदे जपयह । अनुष्ठान  
 अम्मस्त्वया ए संक्षेपे इत्यमागच्छ । अर्थतालुर्भविष्टेहमाणमायावेने वक्ते । अं  
 ए ए एम्मने न चक्ष । तप्पवश्ये ए ए ने मिल्लतविसुहि शब्द्य वैष्णवाम्बद्ध नह ।  
 दंसपविद्योहीए ए ए ने मिल्लतए अत्येष्टाए तेणेव अवस्थावेने विज्ञाह । विसेहि  
 य ए विल्लतए एव पुणो भवयाहर्वं माइक्षम्य ॥ १ ॥ विष्टेहर्व मंत्रे । जीवे कि  
 अपमह ॥ निष्टेहर्व विल्लतविसुहेविक्ष्यु अम्मभेनेषु विष्टेहर्व इत्यमायम्ब ।  
 सम्बविसुष्टु विरज्ज । सुम्बविसुष्टु विरज्जमाणे आरम्भीक्षावं करोइ । आरम्भ  
 परिक्षावं करेमाणे संसारमन्यं याचिक्ष । विसिम्माणे पविक्षे ए इहर ॥ २ ॥  
 अम्मस्त्वया ए ए भंते । जीवे कि जपयह । अम्मस्त्वया ए सायाद्वेष्टेव इत्यम्ब  
 विरज्ज । आगारेष्मं ए ए चक्ष । अवगारिए ए जीवे शारीरयाम्बार्व इत्यम्ब  
 देवयमेयत्वसुवाणार्वे वोक्षेव करोइ । अम्माहर्व ए ए निक्षेव ॥ ३ ॥  
 गुरुहाहम्बिक्षुस्त्वस्त्वया ए ए मंत्रे । जीवे कि जपयह । गुरुहाहम्बिक्षुस्त्वस्त्वय  
 ए विषयपविक्षति जपयह । विषयपविक्षेव ए ए जीवे अववाहीक्षावीडे विरह  
 विरेक्षव्योविक्षम्भुसुधेषुम्भाजो विल्लम्भ । विक्षम्भवाम्भगतिविल्लुमावक्षए अक्षय  
 देषुम्भावीया विरेक्ष । विल्लि सोम्भर्व ए ए विल्लम्भ । फस्त्वर्व ए ए विल्लम्भवं  
 अक्षम्भाहर्व साहर । अथे य वाहे जीवा विवित्ता भवह ॥ ४ ॥ मात्रेक्षावं  
 भंते । जीवे कि जपयह । आरम्भेक्षाए ए मायानिकायविक्षार्व अम्भवार्व मोक्ष  
 मम्बविक्षावं अव्यतिसुसारववयार्व उद्धर्व करोइ । उक्षुमार्व ए ए चक्ष । उक्षुम्भ  
 वप्पिक्षेव ए ए जीवे अमाह । इत्यविक्षम्भुस्त्ववेने ए ए चक्ष । उक्षर्व ए ए

निजरेड ॥ ५ ॥ निंदणयाए ण भते । जीवे कि जणयड २ निंदणयाए ण पच्छाणुताच जणयइ । पच्छाणुतावेण विरजमाणे करणगुणसेटि पडिवज्जइ । करणगुणसेढीपडिवज्जे य ण अणगारे मोहणिज्जं कम्म उग्घाएड ॥ ६ ॥ गरहणयाए ण भते । जीवे कि जणयड २ गरहणयाए ण अपुरक्षार जणयड । अपुरक्षारगए ण जीवे अप्पसत्थेहितो जोगेहितो नियत्तेइ, पसत्थेय पडिवज्जइ । पसत्थजोगपडिवज्जे य ण अणगारे अणतथा-उपज्जवे सवेइ ॥ ७ ॥ सामाइएण भते । जीवे कि जणयड २ सामाइएण भावजजोगविरइ जणयइ ॥ ८ ॥ चउच्चीसत्थएण भते । जीवे कि जणयड २ चउच्चीसत्थएण दसणविसोहिं जणयइ ॥ ९ ॥ वदणएण भते । जीवे कि जणयड २ वदणएण नीयागोय कम्म खवेइ । उच्चागोय कम्म निवंधइ । सोहग्ग च ण अपडिहयं आणाफल निव्वत्तेइ । दाहिणभाव च ण जणयइ ॥ १० ॥ पटिक्कमणेण भते । जीवे कि जणयड २ पटिक्कमणेण वयछिद्वाणि पिहेइ । पिहियवयछिद्वे पुण जीवे निस्त्रासवे असवलचरिते अट्टसु पवयणमायासु उवडते अपुहते सुप्पणिहिए विहरड ॥ ११ ॥ काउस्सगेण भते । जीवे कि जणयड २ काउस्सगेण तीयपहुप्पन पायच्छित्त विसोहेह । दिसुद्ध-पायच्छित्ते य जीवे निव्वयहियए ओहरियभस्त्र भारवहे पसत्थज्ञाणोवगए सुह-सुहेण विहरड ॥ १२ ॥ पच्चक्खाणेण भते । जीवे कि जणयड २ पच्चक्खाणेण आसवदाराइ निश्चभाइ । पच्चक्खाणेण इच्छानिरोह जणयइ । इच्छानिरोहं गए य ण जीवे सवदब्ल्वेसु विणीयतण्हे सीझभूए विहरड ॥ १३ ॥ थवदुद्दमगलेण भते । जीवे कि जणयड २ थवदुद्दमगलेण नाणदसणचरित्तवोहिलाभ जणयइ । नाणदसणचरित्तवोहिलाभसप्ते य ण जीवे अतकिरिय कप्पविमाणोववत्तिय आराहण आराहेइ ॥ १४ ॥ कालपटिलेहणयाए ण भते । जीवे कि जणयड २ कालपटिलेहणयाए ण नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १५ ॥ पायच्छित्तकरणेण भते । जीवे कि जणयड २ पायच्छित्तकरणेण पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च ण पायच्छित्त पडिवजमाणे मग्ग च मग्गफल च विसोहेइ, आयार च आयारफल च आराहेइ ॥ १६ ॥ खमावणयाए ण भते । जीवे कि जणयड २ खमावणयाए ण पल्हायणभावं जणयइ । पल्हायणभावमुवगए य सञ्चपाणभूयजीव-सत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगए य जीवे भावविसोहिं काऊण निव्वभए भवइ ॥ १७ ॥ सज्जाएण भते । जीवे कि जणयड २ सज्जाएण नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥ १८ ॥ वायणाए ण भते । जीवे कि जणयड २ वायणाए ण निजरं जणयइ । सुयस्स य अणुसज्जाए अणासायणाए वद्दए । सुयस्स अणुसज्जाए अणासायणाए वद्माणे तित्थधम्म अवलंबइ । तित्थधम्म अवलवमाणे महानिजरे

महापञ्चवसाने भवद ॥ १ ॥ पदिपुच्छजयाए वं भवते । जीवे कि जबद ॥  
पदिपुच्छजयाए ने मुत्तरयतदुमयाए बिनोहेइ । फूलामोहमिक्षे कम्मे बोधिकर  
॥ २ ॥ परिवाहनाए वं भवते । जीवे कि जबद । परिवाहनाए ने बैतवदे  
जगदहु, वंशजसदि च उप्पाएइ ॥ २१ ॥ अनुप्पेहाए वं भवते । जीवे कि जबदरा  
अनुप्पेहाए च वास्तवदयान्वे सुतममन्मपदावीओ घरियवधयवदामो रिहिस्तंक्ष-  
वदामो पहरेइ । चीहक्षलद्विश्यामो इस्तक्षलद्विश्यामो पहरेइ । रिमासुमासावे  
मंदाजुमावान्वो पहरेइ । बहुपएसुमावे अप्पपएसुमावो पहरेइ । आठवं च वं कम्मे  
घिया वंभद, घिया नो जबद । असामावैयसिक्षे च वं कम्मे नो भुज्जे भुज्जो ठाकियाव ।  
अणार्थ च च अणवदमाँ चीहमर्द चाउरीर्त संसारक्षतार, विष्णामेव वीहमद ॥ २२ ॥  
जम्मसहाए वं भवते । जीवे कि जबद । भम्मसहाए वं निजर जबद । भम्म-  
क्षहाए च फवदवं पमावेइ । पक्षयजपमावैर्च जीवे जागमेस्तस्त भद्राए कम्मे विंश्य  
॥ २३ ॥ सुयस्त भाराहवयाए वं भवते । जीवे कि जबद । सुयस्त भाराहवयार  
वं अचार्ण जावेइ, न य संकिळिस्तद ॥ २४ ॥ एप्पयमवसनिवेसुन्दाए वं भवते ।  
जीवे कि जबद । एप्पमगमजसेनिवेस्तयाए वं वित्तिरोह करेइ ॥ २५ ॥ सुम्मेव  
भवते । जीवे कि जबद । संवदेष अम्महयते जबद ॥ २६ ॥ दक्षेव भवते । जीवे  
कि जबद । तक्षेव बोदार्ण जबद ॥ २७ ॥ बोदार्णेव भवते । जीवे कि जबद ।  
बोदार्णेव अक्षिरिय जबद । अक्षिरियाए गविता तक्षो फल्य घियत्त तुज्ज्व तुज्ज्व  
परिगियावहु सम्मुख्यान्मर्त बरेइ ॥ २८ ॥ शुहसाएवं भवते । जीवे कि जबद ।  
शुहसाएवं अम्मसुमर्द जबद । अनुस्तुवाए वं जीवे अम्मर्दक अम्मदै विक्षेपे  
जरितमोहमिक्षे कम्मे होहेइ ॥ २९ ॥ अप्पमिक्षयाए वं भवते । जीवे कि जबद ।  
अप्पमिक्षयाए ण जीवे विस्तपत्त जबद । विस्तपत्तेव जीवे एगमवित्त विवा व  
रात्मे य अस्तमावे अप्पमिक्षदे यावि विहर ॥ ३ ॥ विवित्तवदासुन्दाए वं  
भवते । जीवे कि जबद । विवित्तवदासुन्दाए वं जीवे चरित्तुर्ति जबद ।  
चरित्तुर्ते च वं जीवे विवित्ताहारे वहचरित्ते एक्षतरए मोक्षमापपदिवदे चुक्ति  
कम्मगाठि विक्षेप ॥ ३१ ॥ विवित्तवदाए वं भवते । जीवे कि जबद । विवित्त-  
याए वं जीवे पक्षममार्च वक्षरवयाए अम्मुद्र । अम्मवदाच व मिजरवयाए तर्ह  
निक्षेप । तक्षो पक्षम चाउरीर्त संसारक्षतार वीहमद ॥ ३२ ॥ संमोमप्पमावदावेव  
भवते । जीवे कि जबद । संमोमप्पमावदावैर्च जीवे आम्भवदार्द जावेइ । विरम्भवदत्त  
व आवदक्षिया जोगा भवति । उपर्ण जामेव अम्मस्त, परसामे जो आसार जो  
तदेइ नो पीहेइ नो फ्लेइ नो अमिक्षद । परसामे अम्मस्ताएमावे वहक्षेपे

अपीहेमाणे अंपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्च सुहसेज उवसपज्जिताण विहरड ॥ ३३ ॥  
 उवहिपच्चकखाणेण भंते । जीवे कि जणयइ ? उवहिपच्चकखाणेण जीवे अपलिमथ  
 जणयइ । निस्वहिए ण जीवे निष्कंखी उवहिमतरेण य न सकिलिस्सड ॥ ३४ ॥  
 आहारपच्चकखाणेण भते । जीवे कि जणयइ ? आहारपच्चकखाणेण जीवे जीविया-  
 ससप्पओग वोच्छिदइ । जीवियाससप्पओग वोच्छिदित्ता जीवे आहारमतरेण न  
 सकिलिस्सड ॥ ३५ ॥ कसायपच्चकखाणेण भंते ! जीवे कि जणयइ ? कसायपच्च-  
 कखाणेण जीवे वीयरागभाव जणयइ । वीयरागभावपडिवन्ने वि य ण जीवे समझुह-  
 दुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥ जोगपच्चकखाणेण भते ! जीवे कि जणयइ ? जोगपच्चकखाणेण  
 जीवे अजोगत्त जणयइ । अजोगी ण जीवे नव कम्म न वधइ, पुव्ववद्ध निज्जरेइ  
 ॥ ३७ ॥ सरीरपच्चकखाणेण भते ! जीवे कि जणयइ ? सरीरपच्चकखाणेण जीवे  
 सिद्धाइसयगुणकित्तण निव्वत्तेइ । सिद्धाइसयगुणसपन्ने य ण जीवे लोगगम्मावगए  
 परमसुही भवइ ॥ ३८ ॥ सहायपच्चकखाणेण भंते ! जीवे कि जणयइ ? सहायपच्च-  
 कखाणेण जीवे एगीभाव जणयइ । एगीभावभूए वि य ण जीवे एगत्त भावेमाणे  
 अप्पसेहे अप्पक्षेष्ठ अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमतुमे सजमवहुले सवरवहुले समा-  
 हिए यावि भवइ ॥ ३९ ॥ भत्तपच्चकखाणेण भते ! जीवे कि जणयइ ? भत्तपच्चकखा-  
 णेण जीवे अणेगाइ भवसयाइ निरुम्भइ ॥ ४० ॥ सब्भावपच्चकखाणेण भते ! जीवे  
 कि जणयइ ? सब्भावपच्चकखाणेण जीवे अनियट्टि जणयइ । अनियट्टिपडिवन्ने य  
 अणगारे चत्तारि केवुलिकम्मसे खवेइ । तंजहा—वेयणिज्ज आउय नाम गोय । तओ  
 पच्छा सिज्जइ बुज्जइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सब्बदुक्खाणमत करेइ ॥ ४१ ॥  
 पडिरुवयाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ? पडिरुवयाए ण जीवे लाघवियं जणयइ ।  
 लघुभूए ण जीवे अप्पमते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मते सत्तसमिइसमते  
 सब्बपाणभूयजीवसतेषु वीससणिजरुवे अप्पडिलेहे जिइदिए विउलतवसमिइसमन्नागए  
 यावि भवइ ॥ ४२ ॥ वेयावच्छेण भते ! जीवे कि जणयइ ? वेयावच्छेण जीवे तित्थयर-  
 नामगोत्त कम्म निवधइ ॥ ४३ ॥ सब्बगुणसपन्नयाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ?  
 सब्बगुणसपन्नयाए ण जीवे अपुणरावत्ति जणयइ । अपुणरावत्ति पत्तए य ण जीवे  
 सारीरमाणसाण दुक्खाण नो भागी भवइ ॥ ४४ ॥ वीयरागयाए ण भंते ! जीवे कि  
 जणयइ ? वीयरागयाए ण जीवे नेहाणुवधणाणि तण्हाणुवधणाणि य वोच्छिदइ,  
 मणुज्ञामणुज्ञेषु सद्फरिसरुवरसगवेषु ( सचित्ताचित्तमीसएषु ) चेव विरजइ ॥ ४५ ॥  
 खत्तीए ण भते ! जीवे कि जणयइ ? खत्तीए ण जीवे परीसहे जिणइ ॥ ४६ ॥ मुक्तीए  
 ण भते ! जीवे कि जणयइ ? मुक्तीए ण जीवे अकिंचण जणयइ । अकिंचणो य जीवे

अस्यल्लेजार्थं पुरिसार्वं अपश्यन्ति(ये) एते भवतः ॥ ४७ ॥ अत्रवयाए न मंते । यीवे कि अथवा । अत्रवयाए च यीवे कम्तज्जुबं भाषुज्जुकं अस्तित्वात्तर्थं अथवा । अविद्यामप्यस्तीपश्यवाए च यीवे अम्भस्त्वं आराहए भवतः ॥ ४८ ॥ महामार्थं मंते । यीवे कि अथवा ॥ भवतः यीवे अवश्याए च यीवे अशुस्तिमर्त्तं अथवा । अशुस्तिमर्त्तं यीवे मित्तमात्पर्युप्ते व्याघ्रमध्याकाशं निष्ठावेत् ॥ ४९ ॥ मावस्त्रेण मंते । यीवे कि अथवा ॥ भाषुज्जुबेर्यं यीवे मावस्त्रोहि अथवा । मावस्त्रो[ही]विद् व्याघ्रमन्ते यीवे अर्थात्पश्यतास्तु अम्भस्त्वं आराहणवाए अम्भुद्वेष । अर्थात्पश्यत्वस्तु अम्भस्त्वं आराहणवाए अम्भुद्विता फरम्भेष्यभम्भस्त्वं आराहए भवतः ॥ ५० ॥ अर्थमन्ते यीवे अथवा ॥ यीवे कि अथवा । फरम्भस्त्रेण यीवे फरम्भस्त्रीं अथवा । फरम्भस्त्रे व्याघ्रमन्ते यीवे अवाहारं द्वाहाकारी यायि भवतः ॥ ५१ ॥ योगास्त्रेभं मंते । यीवे कि अथवा ॥ अवेसास्त्रेण यीवे योर्यं विसोहेत् ॥ ५२ ॥ मवगुणात्माए च मंते । यीवे कि अथवा ॥ मवगुणत्वाए च यीवे एगम्यं अथवा । एगमाविते च यीवे मवगुणो द्वावपार्त्तं भवतः ॥ ५३ ॥ व्यवगुणत्वाए च मंते । यीवे कि अथवा ॥ व्यवगुणत्वाए च यीवे निष्ठियारत्तं अथवा । निष्ठियारे च यीवे व्याघ्रो अग्नष्टप्यवेगसाहस्रुते यीवे भवतः ॥ ५४ ॥ अवगुणत्वाए च मंते । यीवे कि अथवा ॥ अवगुणत्वाए च यीवे स्वरं अथवा । स्वरेण्यं कायगुणो पुष्टो पावास्त्रनिरोहं करेत् ॥ ५५ ॥ महामार्थं द्वारणवाए च मंते । यीवे कि अथवा ॥ भवसमाहारणवाए च यीवे एगम्यं अथवा । एगमा अवगुणा नावपञ्चवे अथवा । नावपञ्चवे अवगुणा सम्मर्तं विसोहेत् विज्ञात् च निष्ठारेत् ॥ ५६ ॥ व्यवसमाहारणवाए च मंते । यीवे कि अथवा ॥ व्यवसमाहारणवाए च यीवे व्यवसाहारणवेत्यपञ्चवे विसोहेत् । व्यवसाहारणवेत्यत्तरवे विसोहिता मुम्भौद्वितां निष्ठाते, तुम्भौद्वितां निष्ठारेत् ॥ ५७ ॥ व्यवसमाहारणवाए च मंते । यीवे कि अथवा ॥ अवग्रहमाहारणवाए च यीवे वरिष्ठवे विसोहेत् । वरिष्ठपञ्चवे विसोहिता अद्वयायवरिते विसोहेत् । अद्वयायवरिते विसोहेता चत्तारि क्षेत्रमित्यमंते याहेत् । तजो पञ्चं विष्टवै तुक्षारं स्वरं यीवे निष्ठावद् सम्भुद्वयात्मंते करेत् ॥ ५८ ॥ नावसंपत्तवाए च मंते । यीवे कि अथवा ॥ नावसंपत्तवाए च यीवे सम्भमावाद्विग्नं अथवा । नावसंपत्ते च यीवे आउर्तं संसारकंतारे च विष्टवद् । गाहा—गाहा सुर्यं रात्रिं पदिता च विष्टवद् । तदा यीवे सम्भौ च सारे च विष्टवद् ॥ १ ॥ नावपित्तवत्तरवरिष्ठवे तंश्चाच्च, संसारवपरस्यविद्यारण् च असंपावनित्वे भवतः ॥ ५९ ॥ दंसपावनवाए च चठि । यीवे कि अथवा ॥ दंसपावनवाए च यीवे भवमित्यत्तेवं करेत्, एव च विष्टवद् ।

पर अविज्ञाएमाणे अणुत्तरेण नाणदंसणेण अप्पाणं सजोएमाणे गम्म भावेमाणे विहरड ॥ ६० ॥ चरित्सपन्नयाए ण भंते । जीवे कि जणयइ ? चरित्सपन्नयाए ण जीवे सेलेसीभावं जणयड । सेलेंगि पडिवने य अणगारे चतारि केवलिस्मसे गवेड । तओ पच्छा निजङड बुज्जड मुच्चइ परिनिध्वायड गच्छुक्ताणमंत करेड ॥ ६१ ॥ सोडंदियनिगहेण भंते । जीवे कि जणयइ ? रोडदियनिगहेण जीवे मणुजामणुजेसु सदेसु रागदोसनिगह जणयड । तप्पचड्य च ण कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६२ ॥ चकिंभदियनिगहेण भंते । जीवे कि जणयइ ? चकिंभदियनिगहेण जीवे मणुजामणुजेसु र्वेसु रागदोसनिगह जणयड । तप्पचड्य च ण कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६३ ॥ धारिंदियनिगहेण भंते । जीवे कि जणयइ ? धारिंदियनिगहेण जीवे मणुजामणुजेसु गधेसु रागदोसनिगह जणयड । तप्पचड्य च ण कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६४ ॥ जिदिंभदियनिगहेण भंते । जीवे कि जणयइ ? जिदिंभदियनिगहेण जीवे मणुजामणुजेसु रसेसु रागदोसनिगह जणयड । तप्पचड्य च ण कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६५ ॥ फासिं-दियनिगहेण भंते । जीवे कि जणयइ ? फासिंदियनिगहेण जीवे मणुजामणुजेसु फासेसु रागदोसनिगह जणयड । तप्पचड्य च ण कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६६ ॥ कोहविजएण भंते । जीवे कि जणयइ ? कोहविजएण जीवे सति जणयड । कोहवेयणिज्ज कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६७ ॥ माणविज-एण भंते । जीवे कि जणयइ ? माणविजएण जीवे मद्व जणयइ । माणवेयणिज्ज कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६८ ॥ मायाविजएण भंते । जीवे कि जणयइ ? मायाविजएण जीवे अज्जव जणयइ । मायावेयणिज्ज कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ६९ ॥ लोभविजएण भंते । जीवे कि जणयइ ? लोभविजएण जीवे सतोस जणयइ । लोभवेयणिज्ज कम्म न वधइ, पुच्चवद्दं च निजरेइ ॥ ७० ॥ पिजदोसमिच्छा-दसणविजएण भंते । जीवे कि जणयइ ? पिजदोसमिच्छादसणविजएण जीवे नाणदसण-चरित्ताराहणयाए अब्मुट्टेइ । अट्टविहस्त कम्मस्स कम्मगठिविमोयणयाए तप्पदमयाए जहाणपुच्चीए अट्टावीसइविह मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ, पच्चविह नाणावरणिज्ज, नच-विह दसणावरणिज्ज, पच्चविह अतराइय, एए तिन्नि वि कम्मसे जुगव खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं कसिण पडिपुण्ण निरावरण वितिमिरं विसुद्ध लोगालोगप्पभावं केवलवरनाणदसण समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ ताव इस्तिवहिय कम्म निवधइ सुहफरिस दुसमयठिइय, त पढमसमए वद्द विड्यसमए वेह्य तड्यसमए निजिण्ण त वद्द पुढ उदीरियं वेह्य निजिण्णं सेयाले य अकम्म चावि भवइ ॥ ७१ ॥

अह आरबे पाम्भता अंतोमुकुलमावसेसाए ओगमिरोह करेमावे शुद्धीर्व  
मपदिष्टर्व द्वकज्ञार्व ज्ञावमाने तप्पदम्भाए मध्यवोर्व विक्षमा, वर्वयेवं भिन्न  
क्षम्भोर्व विक्षमा, ज्ञावपाणविरोह करेह । इसि-येवत्तद्वस्त्रक्षम्भावस्त्र ॥ ८  
व्यवगारे समुच्चित्तविरिव अनियत्तिक्षम्भावं क्षियाम्भाने विविवर्व वावं एवं  
पोर्वं च एष चतारि क्षम्भंसे क्षुग्यवं वावेह ॥ १२ ॥ ततो ज्ञोरविष्टवेक्षम्भं वावी  
विष्पवाह्याहि विष्पवहिता चक्षुदेहिपते व्यक्षुमावगाहे चहुं एक्षम्भावं विष्म्भं  
तत्प गंता धागारोक्तते विक्षाह तुज्याह सुव्याह परिनियावह चक्षुम्भावं  
करेह ॥ १३ ॥ एस चक्षु सम्भावस्त्रमस्त्र अज्ञायवस्त्र अहुं चम्भेवं वन्नह  
महाविरेण ज्ञावविए फहविए फहविए इविए विविए उवदहिए ॥ तिवेवि ॥ इति  
सम्भावपरक्षम्भावं एग्यूणतीसहमं अक्षम्भयर्वं समर्थ ॥ २९ ॥

## अह तवमन्गणामं तीसहमं अज्ञायणं

ज्ञावं च पावं क्षम्भं द्वागदोसम्भविवे । वावेह तवसा विक्षमा, तमेवम्भो  
शुद्ध ॥ १ ॥ पावित्राह्युसावम्भा अद्वामेहुपरिम्भाव विरव्ये । राईमेवम्भविवे  
जीवो भवह अवासवो ॥ २ ॥ पंचसुविवे विग्नो वक्षम्भावो विविवे ।  
अवावेवो व निस्सावे जीवो होह अवासवो ॥ ३ ॥ एषसि द्व विक्षवावे एषवेऽ  
चम्भविवे । वावेह च ज्ञाव विक्षमा, तमेवाम्भावो शुद्ध ॥ ४ ॥ ज्ञाव महाव्यवस्त्र,  
संविष्टद्वे असमगमे । उत्तिवक्ष्याए तववाए, क्षेवं द्वोष्णा भवे ॥ ५ ॥ एह इ  
संववस्सावि पावक्षम्भविराघवे । भवक्षोवीसंविवे क्षम्भं तवसा विविविव ॥ ६ ॥  
सो तवो तुविहो तुवो वाहिरव्यवीतरो तवा । वाहिरो छविहो तुवो एक्षम्भविवे  
तवो ॥ ७ ॥ व्यवस्त्रभूयोवरिवी विक्षवावविवी य रसपरिव्यवो । वत्तमेवे  
स्तीव्यवी य वज्ञो तवो होह ॥ ८ ॥ (१) इतिवे मरभक्षम्भं व व्यवव्य  
तुविहा भवे । इतिवे सम्भव्या विरक्षम्भा व विविवा ॥ ९ ॥ वो द्वे इत्ये  
यत्तो सो चमादेव छविहो । वेक्षिवेवो फवरत्तो खेवो व तव द्वे क्षेवे व  
॥ १ ॥ तदो व वक्षम्भेवो पंचमो छक्षुमो एक्षम्भो । भवक्षम्भविवावो  
वावव्यो होह इतिवो ॥ ११ ॥ चा चा व्यवव्या भवेवे तुविहा द्व विवाविवा ।  
संविवावेवविवावी क्षम्भविद्व पवे भवे ॥ १२ ॥ अद्वा उत्तिव्यव्यवी विविवम्भी  
य वाहिवा । नौहीरिमनीहीरी वाहारव्यवो दोष वि ॥ १३ ॥ (१) वेक्षेवर्व  
पंचवा चमादेव विवाविव । इत्येवो वेत्तेव्यवेवे भविवे क्षेवी ॥ १४ ॥

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु जो करे । जहनेणेगसित्याई, एवं दब्बेण ऊ भवे ॥ १५ ॥ गामे नगरे तह रायहाणि, निगमे य आगरे पली । खेडे कवडदो-गमुह-, पट्टणमढवसवाहे ॥ १६ ॥ आसमपए विहारे, सञ्चिवेसे समायघोसे य । अलिसेणाखधारे, सत्थे सवट्कोहे य ॥ १७ ॥ वाढेसु व रत्थासु व, घरेसु वा एवमित्तियं खेत्त । कप्पद उ एवमाई, एव खेतेण ऊ भवे ॥ १८ ॥ पेढी य अद्धपेढी, गोमैत्तिपयगवीहिर्यो चेव । सदुक्षावद्वौयय-, गतुं पञ्चागर्या छढा ॥ १९ ॥ दिवसस्स पोरुसीण, चउण्ह पि उ जत्तिओ भवे कालो । एव चरमाणो खलु, कालोमाण मुणेयब्ब ॥ २० ॥ अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ धासमेसतो । चउभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥ इत्थी वा पुरिसो वा, अलकिओ वा नलकिओ वावि । अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥ २२ ॥ अन्नेण विसेसेण, वणेण भावमणुमुथते उ । एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेयब्ब ॥ २३ ॥ दब्बे खेत्ते काले, भावंसि य आहिया उ जे भावा । एएहि ओमचरओ, पञ्चवचरओ भवे भिक्खू ॥ २४ ॥ (३) अद्धविहगोयरग्ग तु, तहा सत्तेव एसणा । अभिगमहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥ (४) खीरदहि-सप्तिमाई, पणीयं पाणभोयण । परिवज्जण रसाणं तु, भणियं रसविवज्जण ॥ २६ ॥ (५) ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा । उगगा जहा धरिजंति, कायकिलेस तमाहिय ॥ २७ ॥ (६) एगतमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए । सयणा-सणसेवणया, विवित्तसयणासण ॥ २८ ॥ एसो वाहिरग तवो, समासेण वियाहिओ । अद्विभतरं तव एत्तो, बुच्छामि अणुपुब्बसो ॥ २९ ॥ पायच्छित्त विणेओ, वेया-वैच तहेव सज्ज्वाओ । झाँण च विउस्सर्गो, एसो अद्विभतरो तवो ॥ ३० ॥ (१) आलोयणारिहाईय, पायच्छित्त तु दसविह । जे भिक्खू वहई सम्म, पायच्छित्त तमाहिय ॥ ३१ ॥ (२) अब्मुद्धाणं अजलिकरण, तहेवासणदायण । गुरुमत्ति-भावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥ (३) आयरियमाईए, वेयावच्छमि दसविहे । आसेवण जहाथाम, वेयावच्छ तमाहिय ॥ ३३ ॥ (४) वायणी पुच्छणाँ चेव, तहेव परियट्टाँ । अणुपेहां धम्मकहां, सज्जाओ चच्छा भवे ॥ ३४ ॥ (५) अद्धरुहाणि वज्जित्ता, झाएजा सुसमाहिए । धम्मैसुक्ष्माइ झाणाइ, झाण त तु बुहा वए ॥ ३५ ॥ (६) सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे । कायस्स विउस्सग्गो, छढो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥ एव तव तु दुविह, जे सम्म आयरे सुणी । सो खिप्प सब्बसंसारा, विप्पमुच्छ पंडिओ ॥ ३७ ॥ त्ति-बेसि ॥ इति तवमगणामं तीसद्दूम अज्ज्वयणं समत्तं ॥ ३० ॥

न किंचि तस्वीरं यद्युद्ध शीयराणो ॥ १६ ॥ अहा न किंप्रयत्ना मनोरमा  
रसेण कल्पेण व मुजामाजा । त द्युप चीरिय पवमाजा एवेषम्य यन्मुख  
मिकागे ॥ २ ॥ ये इंशिवार्चि विस्या मधुजा न तेषु भावं विहिरे भवत । न  
नामलुकेषु मर्ज पि कुञ्जा समाहिक्षमे समेत तदस्ती ॥ २१ ॥ (१) चक्रहस्त  
हर्ष गहरं वर्णति व रामहेठ तु मधुजमातु । तं दोषहेठे भमलुक्षमातु, स्मृत  
ये तेषु स शीयराणो ॥ २२ ॥ द्युस्तु चक्रहस्त गहरं वर्णति चक्रहस्त हर्ष वर्ण  
वर्णति । रागस्तु हेठे चमलुक्षमातु, दोषस्थ हेठे भमलुक्षमातु ॥ २३ ॥ स्तेषु ये  
पिण्डिमुकेह तिष्ठ भक्तिमय पाद् दे विजापते । रायमत्तरे से यह वा वर्णये आमे  
मध्येके स्तुपेह मधु ॥ २४ ॥ ये यावि दोषे समुक्ते तिष्ठ तंति वर्णते दे  
व दक्षेह तुकर्व । तुरलदोषेण सप्तम वर्ण, न किंचि हर्ष भवत्ताहे से ॥ २५ ॥  
एकात्मते द्यर्तिये भवतामिते से कुर्वते फलोरे । तुरमप्तस्तु दंपीमुक्तैर् वर्णे  
न किंप्यहे तेज मुणी विराणो ॥ २६ ॥ द्याखुणगांधारुमप व जीवे चरात्तरे दिष्ट  
इडनेगक्षे । वित्तेहि ते परिताळेह वाले पीकेह भात्तुगुह किंचिद् ॥ २७ ॥ द्यक्ष  
बाएण परिमग्नेज उप्पावये रक्षयत्तरुक्षिमोगे । एह विष्णो व वर्ण दाँ दे  
समोगादक्षे य भवित्तामाने ॥ २८ ॥ हर्षे भवित्ते व परिमाहमि चतोक्षये व  
वर्णेह तुक्षि । भद्रुक्षिदोषेण तुही परस्तु चोमाविके आमनाहं वर्णत ॥ २९ ॥  
तत्त्वामिभूमप्तस्तु भवताहारितो त्वे भवित्तस्तु परिमाहे य । मावसुरं तद्व  
लभेदवोस्ता तत्त्वामि तुक्षया न विमुक्तहे से ॥ ३ ॥ मोसस्तु पव्या य तुरलमे  
य फलोगादक्षे य तुही तुरेण । एवं भवतामि समावयतो त्वे भवित्ते तुरिये  
भविस्तो ॥ ३१ ॥ द्याखुरत्तस्तु नरस्य एवं कर्तो तुर होम्य भवाह किंचि ।  
तत्त्वोपन्नोगे वि किंत्तुकर्व विष्वताहं वस्तु त्यज्ञ तुकर्व ॥ ३२ ॥ एवेव त्वमि  
गम्भो फलोरे उपेह तुक्षयेहपरंपरामो । पशुक्षितो य विणाह यमं वं से तुर्वे  
होह तुह विकागे ॥ ३३ ॥ हर्षे वित्तो नक्षत्रो विसेगो एवेव तुक्षयेहपरंपरेव । न  
किंप्यए भवतम्यसे वि रुतो चक्रेण वा येवत्तरिणीपव्यासे ॥ ३४ ॥ (२) सोक्षम  
हर्ष यहरं वर्णति तं रामहेठ तु मधुजमातु । तं दोषहेठे भमलुक्षमातु, तमे  
व ओ तेषु स शीयराणो ॥ ३५ ॥ द्युस्तु चोर्व यहरं वर्णति लेवस्य तं  
गहरं वर्णति । रागस्तु हेठे चमलुक्षमातु, दोषस्थ हेठे भमलुक्षमातु ॥ ३६ ॥  
सोक्षम वो विद्विमुक्ते तिष्ठ वव्यविक्ष्य पाद् दे विजापते । रायमत्तरे द्याखितो व  
सुक्षे चो भवित्ते तुक्षये मधु ॥ ३७ ॥ ये यावि दोर्व त्वमुक्ते तिष्ठ वर्णते  
से व दक्षेह तुकर्व । तुरलदोषेण सप्तम वर्ण, न किंचि तर्ह भवत्ताहे से ॥ ३८ ॥

- (१४) वारह प्रकार की तपश्चर्या करने से ।
- (१५) अभयदान-सुपात्र देने से ।
- (१६) दश प्रकार की वैयावच्च करने से ।
- (१७) चतुर्विध संघ को समाधि देने से ।
- (१८) नये नये अपूर्व ज्ञान पढ़ने से ।
- (१९) सूत्र सिद्धान्त की भक्ति-सेवा करने से ।
- (२०) मिथ्यात्व का नाश और समक्षित का उद्योत करने से ।

ऊपर लिखे वीस वोलों का सेवन करने से जीव कर्मों  
कोड़ाकोड़ी क्षय कर देते हैं, और उत्कृष्टों रसायण  
भावना ] आने से जीव तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर  
ते हैं। जितने जीव तीर्थङ्कर हुये हैं या होंगे उन सब ने इन  
वीस वोलों का सेवन किया है और करेंगे ॥ इति शुभं ॥

\* सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् \*

## अथ श्री जयमल्ल बावनी ।

॥ दोहा ॥

नमो सिद्ध निरंजनं, नमू श्री सत्गुरु पाय ।  
धन वाणी जिनराजरी, सुणियों पातिक जाय ॥ १ ॥  
पहलो तीजो ने चौथो, देश द्रव्य महाब्रत ।  
सर्व द्रव्यधिक पांचमो, चालया कर्म गिरंथ ॥ २ ॥  
तेरे वारे तीसरे, नहीं करे गुण ठाणे काल ।  
चतुर पंच छुठ सात में, गौत्र वांधे दीन दयाल ॥ ३ ॥  
पहलो बीजो ने चौथो, चाले गुण ठाणा लार ।  
पेलो चौथो पंच छुठ तेरमो, सदा सास्वता धार ॥ ४ ॥

एगतरते रुहरसि सदे, अतालिसे से कुण्डि पओस । दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥ सदाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइडणे-गरुवे । चित्तेहि ते परितावेइ वाले, पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिष्टे ॥ ४० ॥ सदाणुवाएण परिगहेण, उप्पायणे रक्खणसञ्जिओगे । वए विओगे य कह सुह से, सभोगकाले य अतितलामे ॥ ४१ ॥ सदे अतिते य परिगहांसि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुष्टि । अतुष्टि-दोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ४२ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, सदे अतितस्स परिगहे य । मायामुस वहूइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यबो य, पओगकाले य दुही दुरते । एवं अदत्ताणि समाययतो, सदे अतितो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥ सदाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुह होज कयाइ किञ्चि । तत्थोवसोगे वि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कण्ठ दुक्ख ॥ ४५ ॥ एमेव सदमि गबो पबोस, उवेइ दुक्खोहपरंपराबो । पदुद्वचित्तो य चिणाइ कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ४६ ॥ सदे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पए भवमज्ज्ञे वि सतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥ ४७ ॥ ( ३ ) घाणस्स गंधं गहण वयति, त रागहेउ तु मणुज्जमाहु । त दोसहेउ अमणुज्जमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ४८ ॥ गधस्स घाण गहण वयति, घाणस्स गध गहण वयति । रागस्स हेउ समणुज्जमाहु, दोसस्स हेउ अमणुज्जमाहु ॥ ४९ ॥ गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिय पावइ से विणास । रागाउरे ओसहगधिष्ठे, सप्पे विलाओ विव निक्खमते ॥ ५० ॥ जे यावि दोस समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख । दुहतदोसेण सएण जतू, न किञ्चि गंधं अवरज्ज्ञई से ॥ ५१ ॥ एगतरते रुहरसि गंधे, अतालिसे से कुण्डि पओस । दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥ गधाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइडणेगरुवे । चित्तेहि ते परितावेइ वाले, पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिष्टे ॥ ५३ ॥ गधाणुवाएण परिगहेण, उप्पायणे रक्खण-सञ्जिओगे । वए विओगे य कहं सुह से, सभोगकाले य अतितलामे ॥ ५४ ॥ गंधे अतिते य परिगहांसि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुष्टि । अतुष्टिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ५५ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गंधे अतितस्स परिगहे य । मायामुस वहूइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ५६ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यबो य, पओगकाले य दुही दुरते । एवं अदत्ताणि समाय-यतो, गंधे अतितो दुहिओ अणिस्सो ॥ ५७ ॥ गधाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज कयाइ किञ्चि । तत्थोवसोगे वि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कण्ठ ॥ ५८ ॥

दुर्घट ॥ ५८ ॥ एमेव गंगमि गबो पमोर्व उवेष तुक्कोहपरपरामो । तुम्हीने म विणाइ कर्म वं से पुणो होइ तुहं विषांगे ॥ ५९ ॥ गंगि विरेष मुम्हे विषोगो एएव तुक्कोहपरपरेष । न लिप्पाई भवमज्जे वि संतो वर्ण्य वा वेष्ट रिणीयसाई ॥ ६० ॥ (४) विष्माए गर्व गहर्व वर्णति तं रापहेठ द्व मुक्तम्हु । त दोसहेड भम्हुजमाहु, समो व जो तम्ह स वीमरागो ॥ ६१ ॥ रसस्व विष्मे गहर्व वर्णति विष्माए रसे गहर्व वर्णति । रामस्व हेठ सम्हुजमाहु, दोस्स हेड अम्हुजमाहु ॥ ६२ ॥ रेतु ज्ये गिरिजुवेष विष्मे अम्हमिर्व पाषां से विषाई । रागावरे विष्माविभिजगाए, भष्टे वहा वामिसुभोगमिहै ॥ ६३ ॥ जे यावि होइ समुद्र विष्मं तंसि वदये से उ उवेष तुक्कर्व । तुरंतवेष साएव वंत, न विषि रसे अवरज्जसाई से ॥ ६४ ॥ एमतरते छरंडिरसे अठामिषे से तुम्है वर्णोर्व । तुक्कपरस्व ईपीस्मुवेष वाष्टे म विष्मै तेज मुण्डी विरुप्ये ॥ ६५ ॥ रघुत्तमानुगाए य जीवे परावरे विष्मावेगस्वे । वित्तेहि ते परितावेष वहै वीर्व आद्युगुह किम्बिद्दु ॥ ६६ ॥ रामाकुवाएण परियाहेज चप्पावसे रक्षक्षसविष्मे । वह विषोगे य वहं म्हाई से ईमोयसाके व वित्तातम्हमे ॥ ६७ ॥ रसे वाहिरै व परिमाईमि उत्तोवसात्तो न उवेष दुष्टि । अदुष्टिवेष तुही परस्व लेपामिषे आम्यर्वै अवर्ता ॥ ६८ ॥ तम्हाविभूक्तस्व वदत्ताविष्मो रसे वित्तात्तु परिष्मे य । मावस्तुर्व वहै व्येमवोसा तत्त्वामि तुक्का न विषुवर्वै से ॥ ६९ ॥ वोस्तु फला य पुरत्वमो व फलेगावके व तुही तुरंत । एव अद्यावि समावदेषे रसे अविष्ये तुहिषो विषिस्तो ॥ ७० ॥ रघुत्तरात्तु वरस्व पर्व वहै व्य दोस्व व्याए विषि । तत्त्वोवसोगे वि विषेयतुक्कर्व निष्माई वरस्व वर्व तुम्है ॥ ७१ ॥ एमेव रसमिमि गबो पमोर्व उवेष तुक्कोहपरपरामो । तुम्हीने म विणाइ कर्म वं से पुणो होइ तुहं विषांगे ॥ ७२ ॥ (५) रसे विलोमे मुम्हे विलोमे एएव तुक्कोहपरपरेष । न लिप्पाई भवमज्जे वि संतो वहेव वा वेष्टवर्णी फलाव ॥ ७३ ॥ (५) आम्यस्व भर्व गहर्व वर्णति तं रापहेठ द्व मुक्तम्हु । तं दोसहेड भम्हुजमाहु, समो व ज्ये तेसु स वीमरागो ॥ ७४ ॥ परस्व कर्म गहर्व वर्णति कामस्व भाष्टे गहर्व वर्णति । रामस्व हेठ सम्हुजमाहु, दोस्स हेड भम्हुजमाहु ॥ ७५ ॥ फ्लेषेषु जो गिरिजुवेष विष्मे अवामिष पाषां से विणासे । रामावरे चीयवद्वावस्वे गाहमाहीए मधिदेषे विष्मे ॥ ७६ ॥ जे यावि होई समुद्र विष्मे तंसि वक्षये से उ उवेष तुक्कर्व । तुरंतवेष व्यव वंत, न विषि फासे अवरज्जसाई से ॥ ७७ ॥ एमतरते छरंडिषि शाष्टि वाहिरै हे

कुण्डे पओस । दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥  
 फासाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसड़णेगरहवे । चित्तेहि ते परितावेइ वाले,  
 पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिट्टे ॥ ७९ ॥ फासाणुवाएण परिगहेण, उप्पायणे रक्खणसंशि-  
 ओगे । वए विओगे य कह सुह से, सभोगकाले य अतितलामे ॥ ८० ॥ फासे  
 अतिते य परिगहमि, सज्जोवसत्तो न उवेइ तुहिं । अतुट्टिदोसेण दुही परस्स, लोभा-  
 विले आययई अदत्त ॥ ८१ ॥ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, फासे अतितस्स परि-  
 गहे य । मायामुस बहूइ लोभदोसा, तत्यावि दुक्खा न विमुच्छई से ॥ ८२ ॥  
 मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पबोगकाले य दुही दुरते । एवं अदत्ताणि समाय-  
 यतो, फासे अतितो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥ फासाणुरत्स्स नरस्स एव, कत्तो सुह  
 होज क्याइ किचि । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं  
 ॥ ८४ ॥ एमेव फासमि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरपराओ । पदुट्टित्तो य चिणाइ  
 कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ८५ ॥ फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एण  
 दुक्खोहपरपरेण । न लिप्पई भवमज्जे वि सत्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥ ८६ ॥  
 (६) मणस्स भावं गहण वयति, तं रागहेउ तु मणुञ्जमाहु । त दोसहेउ अमणुञ्जमाहु,  
 समो य जो तेष्ठ स वीयरागो ॥ ८७ ॥ भावस्स मण गहण वयति, मणस्स भाव  
 गहण वयति । रागस्स हेउ समणुञ्जमाहु, दोसस्स हेउ अमणुञ्जमाहु ॥ ८८ ॥  
 भावेषु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व, अकालिय पावइ से विणास । रागाउरे कामगुणेषु गिद्धे,  
 करेणुमग्गावहिए गजे वा ॥ ८९ ॥ जे यावि दोस समुवेइ तिव्व, तसि क्खणे से  
 उ उवेइ दुक्ख । दुइतदोसेण सएण जतू, न किन्नि भाव अवरज्जर्हई से ॥ ९० ॥  
 एगतरते रुहरसि भावे, अतालिसे से कुणई पओस । दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले, न  
 लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥ भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंस-  
 ड़णेगरहवे । चित्तेहि ते परितावेइ वाले, पीलेइ अत्तद्वगुरु किलिट्टे ॥ ९२ ॥ भावाणु-  
 वाएण परिगहेण, उप्पायणे रक्खणसंशिओगे । वए विओगे य कह सुह से, सभोग-  
 काले य अतितलामे ॥ ९३ ॥ भावे अतिते य परिगहमि, सज्जोवसत्तो न उवेइ  
 तुहिं । अतुट्टिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ९४ ॥ तण्हाभिभूयस्स  
 अदत्तहारिणो, भावे अतितस्स परिगहे य । मायामुस बहूइ लोभदोसा, तत्यावि  
 दुक्खा न विमुच्छई से ॥ ९५ ॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पबोगकाले य दुही  
 दुरते । एव अदत्ताणि समाययतो, भावे अतितो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥ भावा-  
 णुरत्स्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज क्याइ किचि । तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,  
 निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥ ९७ ॥ एमेव भावमि गओ पओस, उवेइ दुक्खोह-

फरंपराम्बो । पुष्टुकितो व विषाइ कम्म वं से पुजो होइ तुहं विषाइ ॥ १५ ॥ अते  
विरतो मणुओ विसोगो एएज दुक्कोहफरंपरेण । न किष्याई मनमग्गे वि संतो स्वेष  
वा पोक्कारिणीमन्मार्त्त ॥ १६ ॥ एविविवत्त्वा व मनस्स वर्त्त्वा दुक्कस्स हेहं स्तु  
वस्स रायितो । ते चेव बोवं पि क्ष्याइ तुक्कहं न वीयरामस्स चर्त्तेति किली ॥ १७ ॥  
न क्षममोया समर्थ उवेति न यावि मोया विक्ष्य उवेति । वे तप्पवेशी व परेष्व  
म ते तेमु मोया किली उवेइ ॥ १८ ॥ तोहं व मार्व व तहेव मार्व वं  
तुहुर्व वर्यं र्यं व । वासं मने होगापुसित्तिवेवं नहुंसुवेद्य विविहे व मार्व ॥ १९ ॥  
वाववाहे एवमलेगद्वे एवविहे क्षमणुगोषु सतो । अते व एवप्पमो विलेष  
क्षमस्पर्शीणे विविमे वहस्ते ॥ २० ॥ ३ ॥ एवं व इविष्व वहावलिष्व, पहलाने  
न तप्पमाव । एवं कियारे अमियप्पवारे आववाहे इविन्वोरवस्ते ॥ २१ ॥ ४ ॥  
उत्तो से वावेति पश्चेष्वलार्ह, निमविर्ह मोहमाह्यमंसि । द्वाहेषिषो दुक्कविवेन्द्रक  
तप्पववे उजामपु व रामी ॥ २२ ॥ ५ ॥ विष्वामावस्स व इविष्वत्त्वा दाहवा वा  
हयप्पगारा । न उस्स सम्बे वि मणुक्त्यं वा विष्वावंटी वक्तुवर्वं वा ॥ २३ ॥ ६ ॥  
एवं संचक्षपविक्षपनामु उंजावाहे वहमवमुवहिष्वस्स । अत्ये व संम्प्रस्त्रो त्वेहे  
फहीयए कामणुगेषु तन्हा ॥ २४ ॥ स वीयरामो क्ष्यसुविक्षिवो वर्यं वावर्व  
वावेवं । तहेव व दंसप्पमावरेह, व अंतरावं पहरेह क्षमं ॥ २५ ॥ त्वं हवे  
आजाइ पासाए व अमोहने होह निरहराए । अनासुवे व्यावसमाविहुपे वावस्त  
मोक्कमुवेद् छुद्ये ॥ २६ ॥ तो तस्स सम्बस्स तुहस्स मुद्यो वं वारो वन्न  
अंतुमेये । वीहामर्य विष्वामुव्वे पश्चेष्वो तो होह अंतमुही क्ष्यत्ये ॥ २७ ॥  
अपावाक्षालप्पमवस्स एसो सम्बस्स दुक्कवस्स फोक्कवमम्मो । विषाइनो वं स्तुविं  
सता व्येग अंतमुही वर्यति ॥ २८ ॥ ८ ॥ ति—वेनि ॥ इति पमायपुष्यवर्व  
वर्त्तीसाइर्म अज्ञायर्यं समर्त्त ॥ २९ ॥

### अहं क्षमप्पयदी णाम तेस्तीसाइम अरुहयर्यं

अहु-क्षमाहं वोक्कमि अखुपुविव वहामे । वेहं वहो मने जीरो क्लारे वं  
वाहे ॥ ३० ॥ नामस्सावरियेवं वहपावर्वं तदा । वेवविर्हं तदा मोहे वावम्भ  
तहेव व ॥ ३१ ॥ नामक्षमं व गोवं व अंतरावं तहेव व । एववेवं व्याम  
भद्रेव ड वहामग्गे ॥ ३२ ॥ (१) नावावर्वं पविर्ह, मुवं वामिविवोहिवं, जीरी  
नामेव व तद्वे मनमार्वं व क्लैस ॥ ३३ ॥ (२) विरो तहेव व्याम, विरविरी व्य

लपयल्या य । तत्तो य शीणगिर्दी उ, पञ्चमा होइ नाथव्वा ॥ ५ ॥ चक्रहृष्मचक्रहृ-  
ओहिस्सै, दसणे केव्हेले य आवरणे । एव तु नवविगप्यं, नायव्व दंसणावरण ॥ ६ ॥  
(३) वेयणीय पि य दुविहुं, सायैमसौर्यं च आहिय । सायस्स उ वहू भेया, एमेव  
असायस्स वि ॥ ७ ॥ (४) मोहणिज पि दुविह, दसणे चरणे तहा । दसणे तिविह  
वुत्त, चरणे दुविह भवे ॥ ८ ॥ सम्मतं चेव मिच्छैत, सम्मामिच्छत्तमेवै य । एयाओ  
तिजि पयदीओ, मोहणिजस्स दसणे ॥ ९ ॥ चरित्तमोहण कम्म, दुविहुं तु वियाहियै ।  
कसायमोहणिज तु, नोकसौर्यं तहेव य ॥ १० ॥ सोलसविहभेण, कम्म तु कसा-  
यज । सत्तविह नवविहुं वा, कम्म च नोकसायजं ॥ ११ ॥ (५) नेरइयैतिरिक्खाऊ,  
मणुस्सौउ तहेव य । देवार्देय चउत्थ तु, आउकम्म चउविहुं ॥ १२ ॥ (६) नाम-  
कम्म तु दुविहुं सुहैमसुहुं च आहिय । सुहैस्स उ वहू भेया, एमेव अद्वहस्स वि  
॥ १३ ॥ (७) गोयं कम्म दुविहुं, उच्चं नीयं च आहिय । उच्च अद्वविह होइ, एव  
नीय पि आहिय ॥ १४ ॥ (८) दंणे लैभे य भौगे य, उव्हेभोगे वीरिए तहा ।  
पञ्चविहमतराय, समासेण वियाहिय ॥ १५ ॥ एयाओ मूलपयदीओ, उत्तराओ य  
आहिया । पएसगरं खेतकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥ १६ ॥ सब्वेसिं चेव कम्माण,  
पएसगमणतग । गठियसत्ताईय, अतो सिद्धाण आहिय ॥ १७ ॥ सब्वजीवाण  
कम्म तु, सगहे छट्टिसागर्य । सब्वेसु वि पएसेसु, सब्वं सब्वेण वद्धगं ॥ १८ ॥  
उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ । उक्कोसिया ठिई होइ, अतोमुहुतं  
जहचिया ॥ १९ ॥ आवरणिजाण दुण्हं पि, वेयणिजे तहेव य । अतराए य  
कम्मान्म, ठिई एसा वियाहिया ॥ २० ॥ उदहीसरिसनामाण, सत्तरि कोडिको-  
डिओ । मोहणिजस्स उक्कोसा, अतोमुहुत जहचिया ॥ २१ ॥ तेत्तीससागरोवमा,  
उक्कोसेण वियाहिया । ठिई उ आउकम्मस्स, अतोमुहुत जहचिया ॥ २२ ॥  
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडिओ । नामगोत्ताण उक्कोसा, अद्वमुहुता जह,  
चिया ॥ २३ ॥ सिद्धाणणतभागो य, अणुभागा हवेति उ । सब्वेसु वि पएसग  
सब्वजीवे अइच्छय ॥ २४ ॥ तम्हा एएसि कम्माण, अणुभागा वियाणिया । एएसि  
सवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥ २५ ॥ ति-वेसि ॥ इति कम्मप्पयदी पामं  
तेत्तीसइमं अज्ञयणं समत्तं ॥ ३३ ॥

अह लेसज्ज्ञयणणामं चोत्तीसइमं अज्ञयणं

—०७३६०—

लेसज्ज्ञयण पवक्खामि, आणुपुव्वि जहक्कम । छण्हं पि कम्मलेसाण, अणुभावे

मुण्डे मे ॥ १ ॥ भामार्द वस्त्रसाक्ष- प्रसंपरिजामम्भवने । अर्थ तिं वं वाह  
केसार्व दुष्येह मे ॥ २ ॥ लिङ्गो नीर्खा व कर्के य रेखे पम्हो दहेव य । इन्द्रेष्ठ  
य छटा य नामश्च दुष्येहम् ॥ ३ ॥ (१) जीम्यगिद्युत्संबसा पद्मतुष्टुत्यनिमा ।  
चौत्रज्यज्ञनवपत्तिमा लिङ्गेष्ठा उ वस्त्रमो ॥ ४ ॥ (२) नीम्बलेष्ठसंबसा,  
चासपित्तुष्टुत्यनिमा । पैरत्तिपित्तुष्टुत्यनिमा भृत्येष्ठा उ वस्त्रमो ॥ ५ ॥  
(३) अवसीष्ठुष्टुत्यनिमा कोहक्षुष्टुत्यनिमा । पारेवत्तमीष्ठनिमा भृत्येष्ठा उ वस्त्रमो  
॥ ६ ॥ (४) शिष्ठुष्टुत्यनिमा तस्माद्युष्टुत्यनिमा । द्युष्टुत्यनिमा तेऽ  
केसा उ वस्त्रमो ॥ ७ ॥ (५) हरियाक्षमेयसंबसा इम्बामेयसंबसा ।  
सधासप्तक्षुष्टुत्यनिमा पम्हेष्ठा उ वस्त्रमो ॥ ८ ॥ (६) उत्तंष्ठुत्यनिमा  
चौरूष्टुत्यनिमा । र्यवहारसंबसा छुम्हेष्ठा उ वस्त्रमो ॥ ९ ॥ (७) वा  
क्षुष्टुत्यनिमा निवरत्तो च्छुवगोद्यनिमा वा । एतो वि अर्जत्युष्ठो एते व  
लिङ्गाए नावम्हो ॥ १ ॥ (८) वह तिम्हमस्तु य रसो तिक्ष्णो वा इति  
पिष्ठीए वा । एतो वि अर्जत्युष्ठो एतो उ वीव्याए नावम्हो ॥ ११ ॥  
(९) वह तरनभैवगरसो द्युष्टुत्यनिम्हस्तु वावि वारिस्तो । एतो वि अर्जत्युष्ठो ते  
उ वस्त्रम्ह नावम्हो ॥ १२ ॥ (१०) वह परिक्षेवगरसो पहङ्गमिद्युष्टुत्यनिम्हस्तु वावि वारित्तो ।  
एतो वि अर्जत्युष्ठो एतो उ तेष्ठम्ह नावम्हो ॥ १३ ॥ (११) वह वासीए व त्वे  
तिम्हाप्य व वासवाय वारिस्तो । मामुमेयस्तु व रसो एतो पम्हाए च्छु  
॥ १४ ॥ (१२) वग्गुष्टुत्यनिम्हसो लीरसो चहसहरसो वा । एतो वि अर्जत्युष्ठो  
एतो उ च्छाए नावम्हो ॥ १५ ॥ वह पोम्हमस्तु यंष्ठो द्युष्टुत्यनिम्हस्तु  
मस्तु । एतो वि अर्जत्युष्ठो केसार्व अप्यसत्त्वार्व ॥ १६ ॥ वह तिप्तुष्टुत्यनिम्हस्तु  
गीक्षासाक्ष पिस्त्यमाणार्व । एतो वि अर्जत्युष्ठो फस्त्यत्तेष्ठाप्य तिर्वं वि ॥ १७ ॥  
वह करणवस्तु असो गोष्ठिभ्याए व सागापत्तार्व । एतो वि अर्जत्युष्ठो तेष्ठ  
अप्यसत्त्वार्व ॥ १८ ॥ वह चूरस्य व वासो वावनीयस्तु व तिप्तुष्टुत्यनिम्हस्तु । एतो  
वि अर्जत्युष्ठो पस्त्यत्तेष्ठाप्य तिर्वं वि ॥ १९ ॥ तिम्हिहो व नवमिहो वा उत्तंष्ठुत्यनिम्हस्तु  
तिहेहसीओ वा । तुरमो तवाव्ये वा तेषार्व हेह परिज्ञामो ॥ २० ॥ (१) वैष्णवार्व  
वातो तीर्त्य अग्न्यो द्युष्टु अविरज्ये व । तिम्बार्वमपरिज्ञामो लद्ये सद्यतियो वरो ॥ २१ ॥  
निद्युष्टुत्यनिम्हमो निस्त्यमो अविरज्ञिमो । एवमोगसमाडतो तिष्ठरेष्ठ तु त्वेष्ठ  
॥ २२ ॥ (२) इस्ता अमरित अत्यो अविज्ञाया वाहीरिया । गिर्वी पद्मेष्ठ व  
सद्ये फम्हेष्ठ रसम्पेष्ठर ॥ २३ ॥ चावगवैष्ठ वै । आरमामो अविरज्ञे ते

१ 'गव्यपीयः' इति भाषाए । २ यद्याद्विगम्यमित्य ।

साहस्रिंशो नरो । एयजोगसमाउत्तो, नीललेस तु परिणमे ॥ २४ ॥ ( ३ ) वंके चकसमायारे, नियदिल्ले अणुजुए । पलिउचगओवहिए, मिच्छादिट्टी अणारिए ॥ २५ ॥ उप्फालगदुद्वाई य, तेणे यावि य मच्छरी । एयजोगसमाउत्तो, काउलेस तु परिणमे ॥ २६ ॥ ( ४ ) नीयावित्ती अचबले, अमाई अकुलहले । विणीयविणए दते, जोगव उवहाणव ॥ २७ ॥ पियधम्मे दहधम्मे, उवजमीरु हिएसए । एयजोगसमाउत्तो, तेऊलेस तु परिणमे ॥ २८ ॥ ( ५ ) पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए । पसंतचित्ते दतप्पा, जोगव उवहाणव ॥ २९ ॥ तहा पयणुवाई य, उवसते जिइ-दिए । एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेस तु परिणमे ॥ ३० ॥ ( ६ ) अद्वद्वाणि वजित्ता, बम्मसुक्षाणि झायए । पसंतचित्ते दतप्पा, समिए गुन्ते य गुत्तिसु ॥ ३१ ॥ सरागे वीयरागे वा, उवसते जिइदिए । एयजोगसमाउत्तो, सुक्लेस तु परिणमे ॥ ३२ ॥ असखिजाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया । सखाईया लोगा, लेसाण हवति ठाणाइ ॥ ३३ ॥ मुहुतद्व तु जहज्ञा, तेत्तीसा सागरा मुहुतहिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किष्ठलेसाए ॥ ३४ ॥ मुहुतद्व तु जहज्ञा, दस उदही पलियमसखभागमब्महिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥ मुहुतद्व तु जहज्ञा, तिणुदही पलियमसखभागमब्महिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥ मुहुतद्व तु जहज्ञा, दोणुदही पलियमसखभाग-मब्महिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥ मुहुतद्व तु जहज्ञा, दस होंति य सागरा मुहुतहिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥ मुहुतद्व द्व जहज्ञा, तेत्तीस सागरा मुहुतहिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्लेसाए ॥ ३९ ॥ एसा खलु लेसाण, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ । चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिई तु वोच्छामि ॥ ४० ॥ दस वाससद्वस्साइ, काउए ठिई जहज्ञिया होइ । तिणुदही पलिओवम-, असखभाग च उक्कोसा ॥ ४१ ॥ तिणुदही पलिओवम-, असखभागो जहज्ञेण नीलठिई । दस उदही पलिओवम-, असखभाग च उक्कोसा ॥ ४२ ॥ दसउदही पलिओवम-, असखभाग जहज्ञिया होइ । तेत्तीससागराइ उक्कोसा, होइ किष्ठाए लेसाए ॥ ४३ ॥ एसा नेरइयाण, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ । तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाण ॥ ४४ ॥ अतोमुहुतमद्व, लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ । तिरियाण नराण वा, वजित्ता केवल लेस ॥ ४५ ॥ मुहुतद्व द्व जहज्ञा, उक्कोसा होइ पुञ्च-कोडीओ । नवहि वरिसेहि उणा, नायव्वा शुक्लेसाए ॥ ४६ ॥ एसा तिरिय-नराण, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ । तेण पर वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाण

॥ ४७ ॥ एष वासवहस्यार्थ, मिन्हाए ठिं बहलिया होइ । पद्मिम्मसंविद्यये उड्होसो होइ मिन्हाए ॥ ४८ ॥ वा मिन्हाए ठिं यह उड्होसा था उ समव्यमन्वयिया । बहलेण नीलाए, पद्मिम्मसंवर्ण च उड्होसा ॥ ४९ ॥ वा गीजए ठिं यह, उड्होसा था उ समव्यमन्वयिया । बहलेण क्षम्भर, पद्मिम्मसंवर्ण च उड्होसा ॥ ५ ॥ तेष परं वोच्छामि तेक्षणेसा जहा धुरगचार्य । भवत्यवद्यावद्यत्त  
वोक्षुव्यमालियार्थ च ॥ ५१ ॥ पद्मिम्मोक्षम् बहला उड्होसा उपारा उ तुश्चिक ।  
पद्मिम्मसंवेद्येन शोइ भागेण तेक्षण ॥ ५२ ॥ वासवहस्यार्थ, तेक्षण ठिं  
बहलिया होइ । तुश्चाही पद्मिम्मोक्षम्- असंवद्यमार्ण च उड्होसा ॥ ५३ ॥ वा तेक्षण  
ठिं यह, उड्होसा था उ समव्यमन्वयिया । बहलेण पम्हाए, एष उ मुकुण्डिव्य  
उड्होसा ॥ ५४ ॥ वा पम्हाए ठिं खल उड्होसा था उ सुमव्यमन्वयिया ।  
बहलेण दक्षाप वेत्तीसमुद्गुतामन्वयिया ॥ ५५ ॥ मिन्हा भीम काळ, तिवि वि  
एवास्मो भाइम्मसेवास्मो । एवाहि तिवि वि जीवो तुम्हारे उपवास्माहि ॥ ५६ ॥ तेक्षण  
पम्हा दक्षा तिवि वि एवास्मो वम्मसेवास्मो । एवाहि तिवि वि जीवो तुम्हारे  
उपवास्माहि ॥ ५७ ॥ ऐसाहि सम्भाहि, वज्रे उमर्वसि परिवाहि दु । न हु तत्त्व  
उपवास्मो परे भवे अतिप जीकस्तु ॥ ५८ ॥ सेवाहि सम्भाहि, वरिमे इन्द्री  
परिवाहि दु । न हु फसह उक्षास्मो परे भवे होइ जीकस्तु ॥ ५९ ॥ अंकुण्डिव्य  
यए, भर्त्युदुत्तांसि देसए चेव । ऐसाहि परिवाहि, जीवा यज्ञहि तत्त्वम्  
॥ ६ ॥ तम्हा एवाहि देसार्थ आशुभावै विवाहिया । अप्यस्तथाव्ये पवित्र,  
फसहास्मोऽहिक्षिप्तु मुक्ति ॥ ६१ ॥ ठिं-जेमि ॥ इति देससम्भवपवार्ता  
वोत्तीसाहम् अज्ञायार्थ भमर्तु ॥ ६४ ॥

## —कथावाच—

## बह अणगारज्ञयणं णाम पञ्चतीसाहम् अज्ञायार्थ

मुखेह मे परामामया ममी झुक्केहि देविय । यमादरतो मिहत्व, उपवासेनां  
मधे ॥ १ ॥ भिन्नादे परिवार फलज्ञामस्तिसए मुखी । इम एवि विवाहिय, तेव  
सञ्चर्ती मायेवा ॥ २ ॥ ताहेव लिप्त अविवै चोर्व वरेमत्तेवै । इवाहते व  
वेमे च संवमो परिवारए ॥ ३ ॥ भवोहर विवारे ग्रामभूदेव पातिर्व । यज्ञव  
पृष्ठत्रौदेव मनसा वि न फलए ॥ ४ ॥ ईविवाहि उ मिन्हाहस्तु तात्त्वम्  
उपवास्माह । हुष्टराहै निवारेठ कामरामविन्नहै ॥ ५ ॥ मुखावै दृष्ट्यारै व  
दृष्ट्यामूळे च एवास्मो । एविवै परद्वये वा वासि दृष्ट्यामिरोनप ॥ ६ ॥ तिवि

अणावाहे, इत्थीहिं अणभिहुए । तथ्य स्तकप्पए वास, भिक्खू परमसजए ॥ ७ ॥  
 न सय गिहाइ कुब्बिजा, ऐव अशेहिं कारए । गिहकम्मसमारमे, भयाणं दिस्सए  
 वहो ॥ ८ ॥ तसाणं थावराण च, सुहुमाणं वादराण य । तम्हा गिहसमारम,  
 सजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥ तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य । पाणभूयदयह्वाए,  
 न पए न पयावए ॥ १० ॥ जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्टनिस्सिया । हम्मति  
 भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥ ११ ॥ विसप्पे सब्बओ धारे, वहुपाणि-  
 विणासणे । नत्य जोइसमे सत्ये, तम्हा जोइ न दीवए ॥ १२ ॥ हिरण्ण जायरुवं  
 च, मणसा वि न पत्थए । समलेढ्हुकचणे भिक्खू, विरए क्यविक्षए ॥ १३ ॥  
 किणतो कह्वो होइ, विक्षिणतो य वाणिओ । क्यविक्षयमि वह्वतो, भिक्खू न भवइ  
 तारिसो ॥ १४ ॥ भिक्खयन्व न केयवं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा । क्यविक्षओ  
 महादोसो, भिक्खाविती दुहावहा ॥ १५ ॥ समुयाण उछमेसिज्जा, जहासुत्तम-  
 पिंदिय । लामालाभमि सतुड्हे, पिंडवाय चरे मुणी ॥ १६ ॥ अलोले न रसे गिद्धे,  
 जिव्भादते अमुच्छिए । न रसद्वाए भुजिज्जा, जवणद्वाए महामुणी ॥ १७ ॥  
 अब्बण रयण चेव, वंदण प्रयण तहा । इम्हीसक्कारसम्माणं, मणसा वि न पत्थए  
 ॥ १८ ॥ सुक्षज्ञाण द्वियाएज्जा, आणियाणे अकिंचणे । वोसद्वकाए विहरेज्जा, जाव  
 कालस्म्य फज्जओ ॥ १९ ॥ निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्टिए । जहिऊण  
 माणुस वोर्दि, पहू दुक्खा विमुच्चई ॥ २० ॥ निम्ममे निरहकारे, वीयरागो  
 अणासवो । सपत्तो केवल नाण, सासय परिणिव्वुए ॥ २१ ॥ त्ति-वेमि ॥ हृति  
 अणगारज्ज्ञयणं णाम पंचतीसह्मं अज्ज्ञयणं समत्तं ॥ ३५ ॥

## अह जीवाजीवविभत्ती णामं छत्तीसह्मं अज्ज्ञयणं

जीवाजीवविभत्ति मे, सुणेहेगमणा इत्थो । जं जागिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ  
 सजमे ॥ १ ॥ जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए । अजीवदेसमागासे,  
 अलोगे से वियाहिए ॥ २ ॥ दब्बओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । पर्वणा  
 तेसि भवे, जीवाणमजीवाण य ॥ ३ ॥ रुविणो चेवङरुवी य, अजीवा दुविहा भवे ।  
 अरुवी दसहा वुत्ता, रुविणो य चउब्बिहा ॥ ४ ॥ धम्मत्थिकाए तोह्से, तप्पएसे य,  
 आहिए । अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ॥ ५ ॥ आगासे तस्स देसे य,  
 तप्पएसे य आहिए । अद्वासमए चेव, अरुवी दसहा भवे ॥ ६ ॥ धम्माधम्मे य  
 दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया । लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥ ७ ॥

अम्मापन्नागामा तिथि वि एए अमाशया । अपम्बविमा चेव धुमद्व तु विमाहिष  
॥ ८ ॥ समप् वि संताई पर्य एकमेव विमाहिष । आपसं पर्य चारौए, सम्भ-  
वहिए वि य ॥ ९ ॥ यथा य दंपदेमा व लप्पाप्ता तहेव य । फ्रमाकुम्भे य  
चोपम्भा हस्तिमो व चरभिहा ग्र ॥ १ ॥ एगतोल मुहतेम यथा य फ्रमाकु ॥  
म्भेगेवेसे म्भेए व भक्ष्यम्भा ते च चेत्तम्भो ॥ ११ ॥ मुहुमा सम्भवेमी ल्लेवरो  
य वावरा । इतो अपम्बविमाग द्व, तेसि कुचं चरभिहं ॥ १२ ॥ संताई पर्य  
तेऽन्नाहि अपम्बविमाय वि य । तिथि पुष्ट चारौया उपम्बविमाय वि य ॥ १३ ॥  
असंतवशाम्भुकोई एदो समझो बहात । अवीकाव य हवीर्ज तिथि एया विमाहिष  
॥ १४ ॥ अवीतवाम्भुकोई एदो समझो बहावर्य । अवीकाव व हवीर्ज अन्तर्म-  
विमाहिष ॥ १५ ॥ कम्भम्भे गीवम्भो चेव रसम्भो फासम्भो तहा । संत्यवन्नो य विमेवे,  
परिषम्भो तेसि पंचहा ॥ १६ ॥ कम्भम्भो परिषम्भा वे उ पंचहा ते परिषम्भा । तिथा  
नीका व भेदिया इतिहा सुरित्य तहा ॥ १७ ॥ गीवम्भो परिषम्भा वे उ तुष्टि  
ते विमाहिषा । द्वित्याप्तपरिषम्भा तुविमार्ग्या तहेव य ॥ १८ ॥ रसम्भे परिषम्भा  
वे उ पंचहा ते परिषिद्या । अप्तवादा मठम्भो चेव यस्मा अम्भवा तहा  
॥ १९ ॥ सीवा तव्वा य निम्या य तहा छुक्या व आधिया । इव असुपरिषम्भ  
एए, पुम्पका उमुद्धाहिया ॥ २० ॥ संठानम्भे परिषम्भा वे उ पंचहा ते परिषिद्या ।  
परिमंडला य वद्य व तंसा चरुरेसमावया ॥ २१ ॥ वस्तम्भो वे भवे विमेवे, भर्त  
से उ पंचम्भो । रसम्भो फासम्भो चेव भद्रप संठानम्भो वि य ॥ २२ ॥ वस्तम्भे वे भवे  
नीषे भद्रप से उ पंचम्भो । रसम्भे फासम्भो चेव भद्रप संठानम्भो वि य ॥ २३ ॥  
वस्तम्भो अहिए वे उ भद्रप से उ गीवम्भो । रसम्भो फासम्भो चेव भद्रप उलम्भे  
वि य ॥ २४ ॥ वस्तम्भे वीयप वे उ भद्रप से उ गीवम्भो । रसम्भो फासम्भो चेव  
भद्रप संठानम्भो वि य ॥ २५ ॥ वस्तम्भे वे भवे द्वुष्मी भद्रप से उ  
वस्तम्भो । रसम्भो फासम्भो चेव भद्रप संठानम्भो वि य ॥ २६ ॥ वस्तम्भो वे भवे  
द्वुष्मी भद्रप से उ वस्तम्भो । रसम्भा फासम्भो चेव भद्रप संठानम्भो वि य ॥ २७ ॥  
रसम्भो वित्ताए वे उ भद्रप से उ वस्तम्भो । गीवम्भो फासम्भो चेव भद्रप उलम्भे  
वि य ॥ २८ ॥ रसम्भो व्याप वे उ भद्रप से उ वस्तम्भो । वस्तम्भे वासम्भे वे उ  
भद्रप संठानम्भो वि य ॥ २९ ॥ रसम्भे वस्ताए वे उ भद्रप से उ वस्तम्भो । वस्तम्भे  
फासम्भो चेव भद्रप संठानम्भो वि य ॥ ३० ॥ रसम्भो अविक्षे वे उ भद्रप से उ

( उगाह इहा अपाय० घारणा ) एवं दुष्टि ( उत्पाति भूमि, विनाशकी कर्मफी, पारिष्यामिकी ) तीन इष्टि ( सम्भव इष्टि मिष्प्यादृष्टि, मिष्पद्विष्टि ) पांच द्रव्य पर्मास्ति, अप्रभास्ति आकाशाग्निस्ति जीवास्ति और 'काल द्रव्य' पांच प्रकार से जीव की शक्ति 'उत्थान कर्म, वह वीर्य पुरुषार्थे' एवं 'द' वोल अरुपी के हैं ॥ इति ॥

सेवं भर्ते सेवं भर्ते तमेव सत्यम्

## सूत्र श्री ज्ञाताजी अध्ययन द्वा

( सीर्पकर नाम गोद्ध यज्ञ के २० कारण )

- ( १ ) भी आरिहस्त मगधान् के गुण स्तापनादि करने से ।
- ( २ ) भी सिद्ध मगधान् के गुण स्तापनादि करने से ।
- ( ३ ) भी पांच समिति तीन शुति यह अप्र प्रवत्तम की भावा हि रथों को सम्प्रक्ष प्रकार से आयथम करने से ।
- ( ४ ) भी गुणपत्त शुद्धजी महाराज का गुण करने मे ।
- ( ५ ) भी स्थिष्यपरजी महाराज के गुण स्तापनादि करने से ।
- ( ६ ) भी गृहधुती-गीतार्थों का गुण स्तापनादि करने से ।
- ( ७ ) भी तपस्वीजी महाराज के गुण स्तापनादि करने से ।
- ( ८ ) जिदा पक्षा छान का बार बार चित्तम करने से ।
- ( ९ ) दर्ढन [समक्षित] निर्मल आराधन करने से ।
- ( १० ) मात तथा ३४ प्रकार के मिष्यम करने से ।
- ( ११ ) काला काल प्रतिष्ठमण करने से ।
- ( १२ ) जिये दुष्ट यन—ग्रन्थाक्षयान निर्मल पालने से ।
- ( १३ ) धर्म द्व्यान—शुद्ध द्व्यान ध्याने रहने से ।

वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३३ ॥ रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ फासओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३४ ॥ फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३५ ॥ फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३६ ॥ फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३७ ॥ फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३८ ॥ फासओ सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ३९ ॥ फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ४० ॥ फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ४१ ॥ फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥ ४२ ॥ परिमडलसठाणे, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४३ ॥ सठाणओ भवे वटे, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४४ ॥ सठाणओ भवे तसे, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४५ ॥ सठाणओ जे चउरसे, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४६ ॥ जे आययसठाणे, भइए से उ वण्णओ । गधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥ ४७ ॥ एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया । इत्तो जीवविभत्ती, बुच्छामि अणुपुब्बसो ॥ ४८ ॥ ससारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया । सिद्धा ऐगविहा बुत्ता, त मे कित्तयथो चुण ॥ ४९ ॥ इत्थी-पुरिससिद्धा य, तहेव य नपुसगा । सलिंगे अब्बलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥ ५० ॥ उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्जिमाड य । उहु अहे य तिरिय च, मसुद्दमि जलसि य ॥ ५१ ॥ दस य नपुसएसु, वीस इत्यियासु य । पुरिसेसु य अट्टसय, समएणेगेण सिज्जाई ॥ ५२ ॥ चत्तारि य गिहिलिंगे, अब्बलिंगे दसेव य । सलिंगे अट्टसय, समएणेगेण सिज्जाई ॥ ५३ ॥ उक्कोसोगाहणाए य, सिज्जते जुगव दुवे । चत्तारि जहन्नाए, मज्जे अट्टुतरं सय ॥ ५४ ॥ चउरहुलोए य दुवे समुद्दे, तओ जले धीसमहे तहेव य । सय च अट्टुतरं तिरियलोए, समएणेगेण सिज्जाई धुवं ॥ ५५ ॥ कहिं पडिहिया सिद्धा ?, कर्हं सिद्धा पइट्टिया ? । कहिं वोंदिं चड्ताण ?, कत्य गतूण सिज्जाई ? ॥ ५६ ॥ अलोए पडिहिया सिद्धा, लोयगे य पइट्टिया । इह वोंदिं चइत्ताण, तत्य गतूण सिज्जाई ॥ ५७ ॥ वारसहिं जोयणेहिं, सब्बद्वस्तुवरि भवे । ईसिपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसठिया

बायरा वे उ पञ्चात्ता, अग्रेगहा ते वियाहिया । ईगडे मुम्मुर जयवी बरि  
जाम तहेव य ॥ ११ ॥ उक्का विजू न बोधवा, अग्रेगहा एकमायम्बे । एन  
विहमणाकरा शुभुमा ते वियाहिया ॥ १११ ॥ शुभुमा सम्बलेयंगि लेवेरे व  
बायरा । इतो अलविभार्य तु, ऐसि कुप्त घटविह ॥ ११२ ॥ सर्व पप्तव्य  
हिया अपमविहिया वि य । तिर्दं पद्म बाईया सफवविहिया वि य ॥ ११३ ॥  
सिन्धेम बहोरता उद्दोसेन वियाहिया । बावठिर्दं तेजर्वं अंतेसुहुर्तं बहविह  
॥ ११४ ॥ असंख्यमुद्देशा अंतेसुहुर्तं बहविह । अवठिर्दं तेजर्वं तं वर्त  
तु असुचमो ॥ ११५ ॥ अपेतप्रमुद्दोर्वं अंतेसुहुर्तं बहवर्वं । विवर्द्ये उर  
प्यए, तेजर्वीवाय भर्तर्व ॥ ११६ ॥ पद्मसि वन्ध्यमो चेव गंधमो रुद्रासनो ।  
संठावादेसमो वावि विहानार्दं सहस्रसो ॥ ११७ ॥ तुविह वावर्वीवा उ द्वुम्ब  
बायरा तहा । पञ्चलमवज्ञा एवमेव तुवा पुणो ॥ ११८ ॥ बायरा वे उ पञ्चल  
पंचहा ते पकितिया । उद्दकिया मंदकिया वज्ञाना शुद्धाना व ॥ ११९ ॥  
पंचहमाया अ, अग्रेगहा एकमायमो । एमविहमायता शुभुमा तत्त्व वियाहिय  
॥ १२ ॥ शुभुमा सम्बलेयंगि लेवेगेरे य बायरा । इतो कालविहार्य तु, ऐसि  
शुभे घटविह ॥ १२१ ॥ सर्वार्दं पप्तव्याईया अपमविहिया वि य । तिर्दं पद्म  
बाईया सफवविहिया वि य ॥ १२२ ॥ तिष्ठेव सहस्रार्द, वासुद्वीपोविह मर्ते ।  
बावठिर्दं वावर्वं अंतेसुहुर्तं बहविह ॥ १२३ ॥ असंख्यमुद्देशा अंतेसुहुर्तं  
बहविह । अवठिर्दं वावर्वं तं वर्त तु असुचमो ॥ १२४ ॥ असंख्यर्वं  
सुद्दोर्वं अंतेसुहुर्तं बहवर्व । विवर्द्ये उर काए, वावर्वीवाय भर्तर्व ॥ १२५ ॥  
पद्मसि वन्ध्यमो चेव गंधमो रुद्रासनो । संठावादेसमो वावि विहानार्दं सहस्रो  
॥ १२६ ॥ उदात्म तसा वे उ घटहा ते पकितिया । वेऽविव वेऽविव चर्वो  
पंचितिया तहा ॥ १२७ ॥ वेऽविव वा उ वे जीवा तुविह ते पकितिया । पञ्चर्वं  
सफवता ऐसि भेद उभेद मे ॥ १२८ ॥ तिमिलो द्वेष्टाव्य चेव वलसा चर्वं  
बाहवा । वावीतुवा व विप्यिवा संवा संवव्या तहा ॥ १२९ ॥ अंतेसुहुर्ता  
चेव तहेव व वर्तगा । वलसा वावलसा चेव वावलसा व तहेव य ॥ १३० ॥ एव  
वेऽविव एण्ड-अग्रेगहा एकमायमो । लेवेगेगेरे ते सुम्बे न सुवर्व वियाहिय  
॥ १३१ ॥ सर्वार्दं पप्तव्याईया अपमविहिया वि य । तिर्दं पद्म बाईया उपम्ब-  
विहिया वि य ॥ १३२ ॥ वावर्व वावसा चेव उद्दोसेन वियाहिया । वेऽविववाय  
ठिर्द, अंतेसुहुर्तं बहविह ॥ १३३ ॥ सुविवच्छमुद्देशा अंतेसुहुर्तं बहविह ।  
वेऽविववायठिर्द, तं वावे तु असुचमो ॥ १३४ ॥ अवर्वतप्रमुद्दोष लेवेगेर्वं

जहन्नय । वेइदियजीवाण, अतर च वियाहिय ॥ १३५ ॥ एएसि वणओ चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १३६ ॥ तेइदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया । पञ्जतमपञ्जता, तेसि मेए सुणेह मे ॥ १३७ ॥ कुंयुपिवीलिउइसा, उक्कलुदेहिया तहा । तणहारकद्वहारा य, माल्हा पत्तहारगा ॥ १३८ ॥ कप्पासत्थिर्मिजा य, तिंदुगा तउसमिजगा । सदावरी य गुम्मी य, वोधव्वा इंदगाइया ॥ १३९ ॥ इदगोवगमाईया, उणेगहा एवमायओ । लोगेगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्य वियाहिया ॥ १४० ॥ सतड पप्पडणाईया, अपञ्जवसिया वि य । ठिइ पहुच्च साईया, सपञ्जवसिया वि य ॥ १४१ ॥ एगूणपणहोरता, उक्को-सेण वियाहिया । तेइदियआउठिइ, अतोमुहुत जहन्निया ॥ १४२ ॥ सखिजकाल-मुक्कोसा, अतोमुहुत जहन्निया । तेइदियकायठिइ, तं काय तु अमुचओ ॥ १४३ ॥ अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत जहन्नय । तेइदियजीवाण, अतर तु वियाहिय ॥ १४४ ॥ एएसि वणओ चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १४५ ॥ चउरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया । पञ्जतम-पञ्जता, तेसि मेए सुणेह मे ॥ १४६ ॥ अधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा । भमरे कीडपयगे य, ढिक्कणे कक्षणे तहा ॥ १४७ ॥ कुक्कडे सिंगिरीढी य, नदावत्ते य विच्छुए । ढोले भिंगिरीढी य, विरली अच्छिवेहए ॥ १४८ ॥ अच्छिले माहए अच्छि(रोडए), विचिते चित्तपत्तए । उहिंजलिया जलकारी य, नीयया तवगाइया ॥ १४९ ॥ इस चउरिंदिया एए, उणेगहा एवमायओ । लोगेगदेसे ते सब्बे, न सब्बत्य वियाहिया ॥ १५० ॥ सतड पप्पडणाईया, अपञ्जवसिया वि य । ठिइ पहुच्च साईया, सपञ्जवसिया वि य ॥ १५१ ॥ छच्चेव य मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया । चउरिंदियआउठिइ, अतोमुहुत जहन्निया ॥ १५२ ॥ सखिजकाल-मुक्कोसा, अतोमुहुत जहन्निया । चउरिंदियकायठिइ, त काय तु अमुचओ ॥ १५३ ॥ अणतकालमुक्कोस, अतोमुहुत जहन्नय । चउरिंदियजीवाण, अतरं च वियाहिय ॥ १५४ ॥ एएसि वणओ चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १५५ ॥ पर्चिंदिया उ जे जीवा, चउविहा ते वियाहिया । नेरइया तिरिक्ख्वा य, मणुया देवा य आहिया ॥ १५६ ॥ नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे । रयणाभसक्कराभा, वालुयाभा य आहिया ॥ १५७ ॥ पकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा । इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥ १५८ ॥ लोगस्स एगदेसमि, ते सब्बे उ वियाहिया । एतो काल-

पाठंतरं-१ लोगस्स एगदेसमि, ते सब्बे परिकित्तिया । २ विजडम्मि सए काए ।

सिमारं तु, बोध्य तसि चठमिह ॥ १५९ ॥ संतां पप्पड्याईया अपमालिया  
वि य । ठिर्य पहुच साईया सफलतासिया वि य ॥ १६ ॥ शामरोक्तमेवं तु  
उद्घोसेण वियाहिया । फ़उमाए बहलेष्य इस्ताससहसित्या ॥ १६१ ॥ तिनेष्य  
सागरा छ, उद्घोसेण वियाहिया । दोषाए बहलेष्य एवं तु धागरेष्यम ॥ १६२ ॥  
उत्तेष्य सागरा छ उद्घोसेण वियाहिया । तद्वाए बहलेष्य त्रिलोक सायरेष्यम  
॥ १६३ ॥ इस्तासागरेष्यमा छ उद्घोसेण वियाहिया । अठवीए वहलेष्य छुते  
सागरेष्यमा ॥ १६४ ॥ उत्तरसागरा छ, उद्घोसेण वियाहिया । पैचमाए बहलेष्य,  
दस चेष्य सागरेष्यमा ॥ १६५ ॥ बासीससागरा छ, उद्घोसेण वियाहिया । छ्वार  
च्छेष्य सत्तरसागरेष्यमा ॥ १६६ ॥ तेत्तीससायरा छ, उद्घोसेण वियाहिया ।  
सातमाए बहलेष्य बासीसे सागरेष्यमा ॥ १६७ ॥ का चेष्य अउठिई, मेप्पार्व  
वियाहिया । सा तेसि अभयिई, बाहुदोलिया भवे ॥ १६८ ॥ अप्पठकाल्पमुहुर्वेष्य  
अंतोमुहुर्तं च्छचर्व । विकडीमि सए काए, भेदहवार्य तु अंतर ॥ १६९ ॥ एवं  
कम्बलो चेष्य गंभओ रसाकासम्भो । संठाणारेष्यमो वामि विहायर्व उत्तसेष्य  
॥ १७ ॥ पविदिवतिरिक्त्याम्भो दुशिहा ते वियाहिया । संमुचित्तिरित्त्याम्भे  
गम्भवहेतिया तहा ॥ १७१ ॥ दुशिहा ते मवि विशिहा बम्बरा बम्बरा तहा ।  
नहमरा य बोध्या तेसि भेए दुष्येह मे ॥ १७२ ॥ मम्भम य कम्भमा य च्छए  
य मम्भरा तहा । मुम्भमारा य बोध्या चंबहा बम्भराहिया ॥ १७३ ॥ ओद्देष्ये  
ते सम्भे य सम्भत्व वियाहिया । हतो कालमिभाये तु, बोध्य तेसि चठमिह  
॥ १७४ ॥ संतां पप्पड्याईया अपमालिया वि य । ठिर्य पहुच साईया उपम-  
विया वि य ॥ १७५ ॥ एगा य पुष्पदोली उद्घोसेण वियाहिया । आउठिई  
बम्भरार्य अंतोमुहुर्तं च्छहिया ॥ १७६ ॥ पुष्पदोलिपुहुर्तं तु उद्घोसेण विय-  
हिया । बावडिई बम्भरार्य अंतोमुहुर्तं च्छहिया ॥ १७७ ॥ अन्तेष्याल्पमुहुर्वेष्य  
अंतोमुहुर्तं च्छचर्व । विकडीमि सए च्छए, बम्भरार्य तु अंतर ॥ १७८ ॥ एवं  
कम्भलो चेष्य गंभओ रसाकासम्भो । संठाणारेष्यमो वामि विहायर्व उत्तसेष्य  
॥ १७९ ॥ च्छलप्या य परिच्छप्या दुशिहा बम्भरा भवे । चठप्या चठमिह ते  
मे कित्तव्यमो शुष्य ॥ १८ ॥ एमहरा दुहरा चेष्य पैदीप्यसवप्यामा । इस्तारौ लोभ-  
माई, गम्भाइसीहिमाइयो ॥ १८१ ॥ मुजोरगपरिच्छप्या य च्छिसप्य दुशिहा भवे ।  
पोहाई बहिमाई य एकेकाडयेगहा भवे ॥ १८२ ॥ ओद्देष्यदेष्ये ते सम्भे, य  
सम्भत्व वियाहिया । एतो कालमिभार्य तु, बोध्य तेसि चठमिह ॥ १८३ ॥  
संतां पप्पड्याईया अपमालिया वि य । ठिर्य पहुच साईया उपमालिया वि य

॥ १८४ ॥ पलिओवमाइं तिणि उ, उक्षोसेण वियाहिया । आउठिई थलयराण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १८५ ॥ पुब्बकोडिपुहुत्तेण, उक्षोसेण वियाहिया । कायठिई थलयराण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १८६ ॥ कालमण्ठंतमुक्षोस, अतोमुहुत्त जहन्नय । विजदंमि सए काए, थलयराण तु अतर ॥ १८७ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १८८ ॥ चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया समुग्मपक्खिया । विययपक्खी य बोधव्वा, पक्खियणो य चउविवहा ॥ १८९ ॥ लोगेगदेसे ते सव्वे, न सब्बत्य वियाहिया । इत्तो कालवि-भारं तु, तेसि बोच्छ चउविवह ॥ १९० ॥ सतहं पप्पडणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिड पहुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ १९१ ॥ पलिओवमस्स भागो, असखेज्जइमो भवे । आउठिई खहयराण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९२ ॥ असखभागो पलियस्स, उक्षोसेण उ साहिया । पुब्बकोडिपुहुत्तेण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १९३ ॥ कायठिई खहयराण, अतरं तेसिम भवे । अणतकालमुक्षोस, अतोमुहुत्त जहन्नय ॥ १९४ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १९५ ॥ मण्या दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण । समुच्छिया य मण्या, गब्बवक्तिया तहा ॥ १९६ ॥ गब्बवक्कंतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया । कम्मअकम्मभूमा य, अतरदीवया तहा ॥ १९७ ॥ पञ्चरसतीसविहा, भेया अद्वीवीसइ । सखा उ कम्सो तेमि, इह एसा वियाहिया ॥ १९८ ॥ समुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहियो । लोगस्स एगदेसामि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥ १९९ ॥ सतहं पप्पडणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिड पहुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥ २०० ॥ पलिओवमाइं तिणि वि, उक्षोसेण वियाहिया । आउठिई मण्याण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ २०१ ॥ पलिओवमाइं तिणि उ, उक्षोसेण वियाहिया । पुब्बकोडिपुहुत्तेण, अतोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २०२ ॥ कायठिई मण्याण, अतरं तेसिम भवे । अणतकालमुक्षोस, अतोमुहुत्तं जहन्नय ॥ २०३ ॥ एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ २०४ ॥ देवा चउविवहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण । भोमिज वाणमतर, जोइस वेमाणिया तहा ॥ २०५ ॥ दसहा उ भवणवासी, अद्वहा चणचारिणो । पचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥ २०६ ॥ असुरा नाग-सुवण्णा, विज्जू अग्णी वियाहिया । दीवोदहिदिसा वाया, थणिया भवणचासिणो ॥ २०७ ॥ पिसायभूया जक्खा य, रक्षपासा किन्नरा किंपुरिसा । महोरगा य गंधव्वा, अद्विवहा वाणमतरा ॥ २०८ ॥ चदा सूरा य नक्खत्ता, गहा तारागणा तहा ।



नेण, वीसइ सागरोवमा ॥ २३३ ॥ वावीस सागराइ, उक्षोसेण ठिई भवे । अच्छुयमि  
 जहन्नेण, सागरा इक्कीसइ ॥ २३४ ॥ तेवीस सागराइ, उक्षोसेण ठिई भवे । पठ-  
 ममि जहन्नेण, वावीस सागरोवमा ॥ २३५ ॥ चउवीस सागराइ, उक्षोसेण ठिई भवे ।  
 विइयमि जहन्नेण, तेवीस सागरोवमा ॥ २३६ ॥ पणवीस सागराइ, उक्षोसेण ठिई  
 भवे । तइयमि जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ॥ २३७ ॥ छच्चीस सागराइ, उक्षोसेण  
 ठिई भवे । चउत्थमि जहन्नेण, सागरा पणवीसइ ॥ २३८ ॥ सागरा सत्तवीस तु,  
 उक्षोसेण ठिई भवे । पचमममि जहन्नेण, सागरा उ छवीसइ ॥ २३९ ॥ सागरा  
 अट्टवीस तु, उक्षोसेण ठिई भवे । छट्टमि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसइ ॥ २४० ॥  
 सागरा अउणतीस तु, उक्षोसेण ठिई भवे । सत्तममि जहन्नेण, सागरा अट्टवीसइ  
 ॥ २४१ ॥ तीस तु सागराइ, उक्षोसेण ठिई भवे । अट्टममि जहन्नेण, सागरा अउ-  
 णतीसइ ॥ २४२ ॥ सागरा इक्कीस तु, उक्षोसेण ठिई भवे । नवममि जहन्नेण,  
 तीसड सागरोवमा ॥ २४३ ॥ तेत्तीसा सागराइ, उक्षोसेण ठिई भवे । चउसु पि  
 विजयाईसु, जहन्नेणेकतीसइ ॥ २४४ ॥ अजहश्मणुक्षोसा, तेत्तीस सागरोवमा ।  
 महाविमाणे सब्बटे, ठिई एसा वियाहिया ॥ २४५ ॥ जा चेव उ आउठिई, देवाण  
 तु वियाहिया । सा तेसि कायठिई, जहन्नमुक्षोसिया भवे ॥ २४६ ॥ अणतकाल-  
 मुक्षोस, अतोमुहुत्त जहन्नय । विजढमि सए काए, देवाण हुज अतर ॥ २४७ ॥  
 अणतकालमुक्षोस, वासपुहुत्त जहन्नय । आणयाईण कप्पाण, गेविज्ञाण तु अतरं  
 ॥ २४८ ॥ सखिज्ञसागरक्षोस, वासपुहुत्त जहन्नय । अणुत्तराणं देवाणं, अतरेय  
 वियाहिय ॥ २४९ ॥ एएसि वणओ चेव, गधओ रसफासओ । सठाणादेसओ वावि,  
 विहाणाइ सहस्रसो ॥ २५० ॥ ससारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।  
 स्विणो चेवऽरुवी य, अजीवा दुविहा वि य ॥ २५१ ॥ इय जीवमजीवे य, सोचा  
 सद्विहिण य । सब्बनयाणमणुमए, रमेज सजमे मुणी ॥ २५२ ॥ तओ वहूणि  
 वासाणि, सामण्णमणुपालिया । इमेण कमजोगेण, अप्पाण सलिहै मुणी ॥ २५३ ॥  
 वारसेव उ वासाइ, सलेहुक्षोसिया भवे । सवच्छरं मज्जिमिया, छम्मासा य जहन्निया  
 ॥ २५४ ॥ पठमे वासचउक्षमि, विगईनिजूहण करे । विइए वासचउक्षमि, विवित्त  
 तु तवं चरे ॥ २५५ ॥ एगंतरसायाम, कहु सवच्छरे दुवे । तओ सवच्छरद्व तु,  
 नाहिविगिहु तव चरे ॥ २५६ ॥ तओ सवच्छरद्व तु, विगिहु तु तव चरे । परिमिय  
 चेव आयाम, तमि सवच्छरे करे ॥ २५७ ॥ कोहीसहियमायामं, कहु सवच्छरे  
 मुणी । मासद्वमासिएण तु, आहारेण तवं चरे ॥ २५८ ॥ कंदप्पमाभिवोग च,  
 किन्विसिय मोहमासुरत्त च । एयाउ दुगगईओ, मरणंमि विराहिया होंति ॥ २५९ ॥

मिष्ठार्दधरता सनियापा च हित्या । इयं चे मर्हि जीवा तेऽपि पुन तुम्हा बोही ॥ २६ ॥ ४ सम्मार्थणरता अनिवागा छादेस्मोगावा । इयं चे मर्हि जीवा तेऽपि तुम्हा भवे बोही ॥ २७ ॥ ५ मिष्ठार्दधरता सनियापा क्षादेस्मोगावा । इयं चे मर्हि जीवा तेऽपि पुन तुम्हा बोही ॥ २८ ॥ ६ जिवदधने अतुला जिवसर्वे चरेति भाविष्य । अमता असंकिञ्चित्ता ते होहि परित्यसंसारी ॥ २९ ॥ ७ नाम्नः भावि बहुतो अभ्यममरणाति चेद न बहूपि । मरिहसि ते वरापा जिवसर्वे चे आपत्ति ॥ २३ ॥ ८ बहुजाप्तमरित्याका समाहितप्याप्तगा च तुम्हगाही । एत्यं च रोते अपिता आत्मेवरं स्तोते ॥ २४ ॥ ९ क्षेत्रप्यकुम्हारै, तद सीम्याहासामिष्यते । तिम्हावेतो च परं, क्षेत्रप्य भावर्व तुम्हारै ॥ २५ ॥ १० मताज्ञोर्व चार्व मौक्ष्मं च चे पठेवंति । सायरस्त्रिहृष्टे अभिभोगं भावर्व तुम्हारै ॥ २६ ॥ ११ नाम्नस्त्रियं अमावरियस्तु संवसाहृष्टे । माहे अव्यवहारै, त्रिविभिर्भिर्भावर्व तुम्हारै ॥ २७ ॥ १२ अकुपदहेसप्तरो तद च त्रिमित्यमि होइ पवित्रेभी । एत्यहि बारेहै, बाहुर्विभावर्व तुम्हारै ॥ २८ ॥ १३ सत्यवहारै विश्वकर्मणं च अङ्गं च वक्ष्यत्वेनो च । अवासारं भवेत्तीवी अभ्यममरणाति कंपेति ॥ २९ ॥ १४ एह पत्रकरे कुर्वे, नाम्न परित्यन्तुर् । लतीस उत्तरज्ञाप, मतिद्वौवर्द्धुते]भए ॥ ३० ॥ १५ त्रिवेमि च हति जीवा जीविभवती यामै लक्षीसामै भवत्ययर्वं समर्वं ॥ ३१ ॥

॥ उत्तरज्ञानसुर्तं समर्तं ॥



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

तत्य णं

नंदीसुत्तं

जयइ जगजीवजोणी-, विशाणओ जगगुह जगाणदो । जगणाहो जगवधू, जयइ  
जगणियामहो भयव ॥ १ ॥ जयइ सुआण पभवो, तित्यराण अपच्छिमो जयइ ।  
जयइ गुह लोगाण, जयइ भहप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भद्र भवजगुज्जोयगस्स, भद्र  
जिणस्स वीरस्स । भद्रं सुरासुरनमसियस्स, भद्रं ध्ययरयस्स ॥ ३ ॥ गुणभवणगहण  
सुयरयणभरिय, दमणविसुद्धरत्थागा । सधनगर । भद्रं ते, अखडचारेत्तपागारा  
॥ ४ ॥ सजमतवतुवायस्स, नमो सम्मतपारियहस्स । अप्पडिच्छक्षस्स जओ, होउ  
सया सधचक्षस्स ॥ ५ ॥ भद्रं सीलपडागूसियस्स, तवनियमतुरयजुत्तस्स । सधरहस्स  
भगवओ, सज्जायसुनदिघोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरयजलोहविणिगयस्स, सुयरयणदीह-  
नालस्स । पचमहव्ययिरकनियस्स, गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥ सावगजणमहुअरि-  
परिखुडस्स, जिणसूरतेयवुद्धस्स । सधपउमस्स भद्रं, समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥  
तवसजममयलछण !, अकिरियराहुमुहुद्धरिस । निच्च '। जय सधचद ! निम्मल-,  
सम्मतिसुद्धजोणहागा ! ॥ ९ ॥ परतित्ययगहपहनासगस्स, तवतेयदित्तलेसस्स ।  
नाणुज्जोयस्स जए, भद्रं दमसधसूरस्स ॥ १० ॥ भद्रं धिइवेलापरिगयस्स, सज्जाय-  
जोगमगरस्स । अक्खोहस्स भगवओ, सधसमुद्धस्स रुदस्स ॥ ११ ॥ सम्मद्वसण-  
वरवइरदडहुडगाडावगाडपेढस्स । धम्मवररत्यणमडियचामीयरमेहलागस्स ॥ १२ ॥  
नियमूसियकणयसिलायलुजलतचित्तकूडस्स । नदणवणमणहरसुरभिसीलगाधुहु-  
मायस्स ॥ १३ ॥ जीवदयासुदरकदछदरियमुणिवरमइदइन्नस्स । हेउसयधाउपगल-  
तरयणदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥ संवरवरजलपगलियउज्ज्वरपविरायमाणहारस्स ।  
सावगजणपउररवतमोरनच्चतकुहरस्स ॥ १५ ॥ विणयनयपवरमुणिवरफुरंतविजुज्ज-  
लतसिहरस्स । विविहगुणकप्पस्क्वगफलभरकुसुमाउलवणस्स ॥ १६ ॥ नाणवरर-  
यणदिप्पत-, कतवेरुलियविमलचूलस्स । वदामि विणयपणओ, सधमहामदरगिरिस्स  
॥ १७ ॥ [गुणरयणुजलकडय, सीलसुगंधितवमडिउदेस । सुयवारसगसिहर, सध-  
महामदर वदे ॥ १८ ॥ नगररहच्छक्षपउमे, चदे सूरे समुद्रमेशमि । जो उवमिजह

सद्यं तं संक्षुप्तायरं वदि ॥ १९ ॥ [वर्दि] उत्तरं अजियं संक्ष- मग्निकैर्लक्ष्म-  
सुप्तमसुपासे । सतिपुष्ट्यर्थतसीयल- दिव्यं वासुपुर्वं च ॥ २ ॥ त्रिमूलवर्तं च  
चर्मं संति उत्तु वरं च मन्त्रं च । मुनिसुक्षमसमिदेमि पासं तद् कर्मात् च  
॥ २१ ॥ पदमित्य ईश्वरं वीए पुष होह अग्निमूर्ति । तदेव य वस्तु, तदे  
मिदेतो द्वाह्मे च ॥ २३ ॥ मंडियमोरियपुरो अर्द्धपिए चेष्ट अवस्थाया च । मेदे  
य पाहाते [व], पणहरा द्वृति वीरस्त ॥ २३ ॥ निष्ठुप्त्यस्तुत्यर्थं ज्ञाह स्ता  
सञ्चमात्वदेशण्यम् । इत्यमयमयनात्मवं जिनिद्वरपीरवासवं ॥ २४ ॥ इत्य  
अग्निकेतावै चूलामं च कार्त्तं । पर्म्यं क्षायर्थं वदि वक्ष त्रिमूलं च ॥  
॥ २५ ॥ वास्तु तुगियं वदि, संमूलं चेष्ट माहर । भासातु च पात्रं त्वम् ॥  
योगमं ॥ २६ ॥ एवाक्षवद्योर्तं वंदामि महागिरि द्वाह्मि च । तदेव दोषित्येवं  
वृद्धस्तु दरित्यर्थं वदि ॥ २७ ॥ द्वारित्युत्तं तद्, च वंदिमो द्वारितं च सत्त्वं ।  
वर्दि कोविष्यगोर्तं संविहा अज्ञवीयवर्त ॥ २८ ॥ त्रिसुक्षमसमिति एकस्तुते  
गद्विदपेतास्ते । वर्दि अज्ञसुरं, अपत्तुमिस्यसुरात्मीरं ॥ २९ ॥ महर्ग वर्तं द्वार्तं  
फमाणो ज्ञात्वैस्यगुणार्थं । वंदामि अज्ञसुरं, शुष्यस्यपराहो दीर्तं ॥ ३ ॥  
[वंदामि अज्ञवर्त्यं ततो वर्दि य माहुतं च । ततो य अज्ञवर्तं, त्रिविक्षयेती  
वाहसमे ॥ ३१ ॥ वंदामि अज्ञवर्त्यित्य- वस्त्रे एकित्वादरित्यस्त्वे । तदेव  
कर्त्तव्यमूलो अनुभोगो रमित्यो वेदि ॥ ३२ ॥] नात्यन्मि द्वृत्यन्मि च त्रिवित्य  
यित्यस्त्वमुकुता । अर्थं नैतिक्यमर्थं तिरसा वदि फलवर्त्यर्थं ॥ ३३ ॥ गृह वर्तं  
गाहातो वक्षत्येवो अज्ञवाहत्यीय । वागरप्यवर्त्यमीमिय- अम्यप्यनीयत्वार्थं  
॥ ३४ ॥ अर्थव्यधात्यसमप्यहात्य शुद्धियुक्त्यमनिहात्य । वृहत् वायक्ते, रेत-  
इत्यवलत्तमामार्थं ॥ ३५ ॥ अज्ञवपुरा त्रिवित्येवो कात्ययन्त्यक्त्यमेति दीर्तं ।  
वंदामीवर्त्यसीहे, वायवप्यसुरामं पतो ॥ ३६ ॥ तेऽपि इसो अनुभोगो फलर वक्षती  
अनुभवत्यन्मि । वृन्दवननिमायत्वे ते वर्दि वंदित्यमर्यिए ॥ ३७ ॥ तदेव द्विती  
वृत्यमैत्रिक्यमे पित्रिपक्षमर्थत्वे । उत्त्वायमर्थत्वरे द्वित्येवो वंदिमो त्रिवित्य  
॥ ३८ ॥ अतिष्यद्वृत्यक्त्यवीगत्य वारेव, वारेव य पुष्यार्थं । त्रिवित्यनात्मार्थं  
वदि जात्यकुण्डायरिए ॥ ३९ ॥ त्रिवित्यस्त्रे भाषुपुष्यिवायपत्यर्थं पते । तेऽपि  
द्वृत्यस्त्राकारे, पाशाकुण्डायए वदि ॥ ४० ॥ [योविदावैषि नमो अनुभोगे त्रिवित्य  
क्षायरित्यित्यार्थं । त्रिवित्यविद्यार्थं फलत्वे द्वृत्यमित्यार्थं ॥ ४१ ॥ ततो य मृत्यिर्वा  
त्रिवित्य तद्वित्यमे अनिवित्यार्थं । पंडित्यवलत्तमामार्थं वंदामो उत्त्वायित्यार्थं ॥ ४२ ॥]  
वर्त्यवलत्तमित्यवंयग- त्रिवित्यवर्त्यमाक्षयमसरित्यते । त्रिवित्यवलत्तिक्यवर्त्य- वर्त्यव-

- (१४) वारह प्रकार की तपश्चर्या करने से ।
- (१५) अभयदान-सुपात्र देने से ।
- (१६) दश प्रकार की वैयावच्च करने से ।
- (१७) चतुर्विंधि संघ को समाधि देने से ।
- (१८) नये नये अपूर्व ज्ञान पढ़ने से ।
- (१९) सूत्र सिद्धान्त की भक्ति-सेवा करने से ।
- (२०) मिथ्यात्व का नाश और समक्षित का उद्योत करने से ।

ऊपर लिखे वीस वोलों का सेवन करने से जीव कर्मों  
की कोड़ाकोड़ी क्षय कर देते हैं, और उत्कृष्ट रसायण  
[भावना] आने से जीव तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर  
लेते हैं। जितने जीव तीर्थङ्कर हुये हैं या होंगे उन सब ने इन  
वीस वोलों का सेवन किया है और करेंगे ॥ इति शुभं ॥

\* सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् \*

## अथ श्री जयमल्ल बावनी । ॥ दोहा ॥

नमो सिद्ध निरंजनं, नमू श्री सत्गुरु पाय ।  
धन वाणी जिनराजरी, सुणियों पातिक जाय ॥ १ ॥  
पहलो तीजो ने चौथो, देश द्रव्य महाब्रत ।  
सर्व द्रव्यधिक पांचमो, चाल्या कर्म गिरंथ ॥ २ ॥  
तेरे वारे तीसरे, नहीं करे गुण ठाणे काल ।  
चतुर पंच छुट सात में, गौत्र वांधे दीन दयाल ॥ ३ ॥  
पहलो वीजो ने चौथो, चाले गुण ठाणा लार ।  
पेलो चौथो पंच छुट तेरमो, सदा सास्वता धार ॥ ४ ॥

विसारए धीरे ॥ ४३ ॥ अहृभरहप्पहाणे, वहुविहसज्जायसुमुणियपहाणे । अण-  
ओगियवरचसभे, नाइलकुलवसनदिकरे ॥ ४४ ॥ भूयहियअप्पगढ़मे, वंडेडह भूय-  
दिन्नायरिए । भवभयवुच्छेयकरे, सीसे नागज्ञुणरिसीण ॥ ४५ ॥ सुमुणियनिच्चा-  
निच्च, सुमुणियसुत्तत्यधारय वदे । सच्चमायुव्यावणया-, तत्य लोहिच्चणामाण ॥ ४६ ॥  
अत्थमहत्थक्षाणि, सुसमणचक्षाणकहणनिव्वाणि । पर्युष्टए महुरचाणि, पयथो  
पणमामि दूसगणि ॥ ४७ ॥ [तवनियमसच्चसज्जम-, विणयजवखतिमद्वरस्याण । सील-  
गुणगद्वियाण, अणुओगजुगप्पहाणाण ॥ ४८ ॥] सुकुमालकोमलतले, तेसि पणमामि  
लक्खणपसत्थे । पाए पावयणीण, पडिच्छयसएहिं पणिवहए ॥ ४९ ॥ जे अन्ने  
भगवते, कालियसुव्ययाणुओगिए धीरे । ते पणमिलण सिरसा, नाणस्स पर्वण  
बोच्छ ॥ ५० ॥ सेलघण १ कुडग २ चालणि ३, परियूणग ४ हस ५ महिस ६ मेसे  
७ य । मसग ८ जल्ग ९ बिराली १०, जाहग ११ गो १२ भेरी १३ आमीरी  
१४ ॥ ५१ ॥ सा समासओ तिविहा पञ्चता, तजहा-जाणिया, अजाणिया, दुव्विय-  
च्छू । जाणिया जहा-खीरमिव जहा हसा, जे धुष्टति इह गुरुगुणसमिद्धा । दोसे  
य विवजति, त जाणसु जाणिय परिस ॥ ५२ ॥ अजाणिया जहा-जा होइ पगइ-  
महुरा, मियछाकवसीहकुकुडयभूया । रयणमिव असठविया, अजाणिया सा भवे  
परिसा ॥ ५३ ॥ दुव्वियच्छू जहा-न य कत्थइ निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्स  
दोसेण । वत्थिव्व वायपुणो, फुट्ठ गामिल्लय(दुव्विय)वियच्छू ॥ ५४ ॥ नाण पच्चविह  
पञ्चत, तजहा-आमिणिवोहियनाणं, सुयनाण, ओहिनाण, मणपञ्जवनाण, केवलनाण  
॥ १ ॥ त समासओ दुविह पण्णत, तजहा-पच्चक्ष च परोक्ष च ॥ २ ॥ से किं  
त पच्चक्ष ? पच्चक्ष दुविह पण्णत, तजहा-इंदियपच्चक्ष नोडियपच्चक्ष च ॥ ३ ॥  
से किं त इंदियपच्चक्ष ? इंदियपच्चक्ष पच्चविहं पण्णत, तजहा-सोइंदियपच्चक्ष  
चक्षिंत्वदियपच्चक्ष धाणिंदियपच्चक्ष जिव्विभिदियपच्चक्षं फासिंदियपच्चक्ष, से त इंदिय-  
पच्चक्ष ॥ ४ ॥ से किं त नोइंदियपच्चक्ष ? नोइंदियपच्चक्ष तिविह पण्णत, तजहा-  
ओहिनाणपच्चक्ष मणपञ्जवनाणपच्चक्ष केवलनाणपच्चक्ष ॥ ५ ॥ से किं त ओहिनाण-  
पच्चक्ष ? ओहिनाणपच्चक्ष दुविह पण्णत, तजहा-भवपच्चइय च खाओवसमिय  
च ॥ ६ ॥ से किं त भवपच्चइय ? भवपच्चइय दुण्ह, तजहा-देवाण य नेरह्याण य  
॥ ७ ॥ से किं त खाओवसमिय ? खाओवसमिय दुण्ह, तजहा-मणसाण य पच्चेदिय-  
तिरिक्षजोणियाण य । को हेऊ खाओवसमिय ? खाओवसमिय तयावरणिजाण  
कम्माण उदिण्णाण खएण अणुदिण्णाण उवसमेण ओहिनाण समुप्पज्ज ॥ ८ ॥  
अहवा गुणपडिवनस्स अणगारस्स ओहिनाण समुप्पज्ज, त समासओ छव्विह

पञ्चते तीव्रा—आलुगामिर्व १ अलालुगामिर्व २ वक्षमात्मये ३ हीनमात्मये  
 ४ पदिवाइर्व ५ अपदिवाइर्व ६ ॥ ९ ॥ से कि ते आलुगामिर्व ओहिनार्व ।  
 आलुगामिर्व ओहिनार्व दुष्टिर्व पञ्चते तीव्रा—अंतर्गत्वे च मज्जमयं च । से कि ते  
 अंतर्गत्वे १ अंतर्यामे तिथिर्व पञ्चते तीव्रा—पुरुषो अतुगम्य मममवे अंतर्गत्वे पास्ते  
 अंतर्गत्वे । से कि ते पुरुषो अंतर्गत्वे १ पुरुषो अंतर्गत्वे—से व्यामामए कर्तुर्वि  
 उद्ध वा चक्षुलिंबे वा असार्वे वा मर्मिवा पर्वते वा जोर्व वा पुरुषो अंतर्गत्वे १  
 गच्छेत्वा से ते पुरुषो अंतर्गत्वे । से कि ते मममवे अंतर्गत्वे १ मममवे  
 से व्यामामए केव तुरिते उद्ध वा चक्षुलिंबे वा असार्वे वा मर्मिवा पर्वते वा ज्यें  
 वा ममाम्बे अंतर्गत्वे १ गच्छित्वा से ते ममाम्बे अंतर्गत्वे । से कि ते  
 पास्ते अंतर्गत्वे १ पास्ते अंतर्गत्वे—से व्यामामए केव तुरिते उद्ध वा चक्षुलिंबे वा  
 असार्वे वा मर्मिवा पर्वते वा ज्यें वा पास्ते अंतर्गत्वे १ गच्छित्वा से  
 ते पास्ते अंतर्गत्वे १ अंतर्गत्वे । से कि ते मज्जमयं १ मज्जमयं—से व्यामामए  
 केव तुरिते उद्ध वा चक्षुलिंबे वा असार्वे वा मर्मिवा पर्वते वा ज्यें  
 एमुमात्मयमे २ गच्छित्वा से ते मज्जमयं । अतगवस्तु मज्जमयस्य व वो अर्थ  
 गितेतो । पुरुषो अतमएव ओहिनार्वे पुरुषो चेव संकिञ्चामि वा असंकिञ्चामि वा  
 जोवयार्व जाप्त वा पास्त । ममाम्बे अतगएव ओहिनार्वे मममवे चेव संकिञ्चामि  
 वा असंकिञ्चामि वा जोवयार्व जाप्त वा पास्त । पास्ते अंतर्याम्बे ओहिनार्वे पास्ते  
 चेव संकिञ्चामि वा असंकिञ्चामि वा जोवयार्व जाप्त वा पास्त । मज्जगएव ओहिना-  
 र्वे चेव सम्भवे समंता संकिञ्चामि वा असंकिञ्चामि वा जोवयार्व जाप्त वा पास्त । से ते  
 आलुगामिर्व ओहिनार्व ॥ १ ॥ से कि ते व्यालुगामिर्व ओहिनार्व । व्यालुगामिर्व  
 ओहिनार्व से व्यामामए केव तुरिते एवं महत् चेत्कुर्व कर्तु तस्मेव ओहिनार्वे पास्ते,  
 अतर्व परिपेतताहि परिपेततेहि परिक्षेपेत्वा चेव तस्मेव ओहिनार्वे पास्ते, अतर्व  
 गए [ न जाप्त ] व वास्तव, एवामेव आलुगामिर्व ओहिनार्व जत्वेव स्मुप्तय  
 तत्वेव संकेजामि वा असंकेजामि वा संवदामि वा असंवदामि वा जोवयार्व जाप्त  
 पास्तु अतर्व गए व वास्तव । सेतो आलुगामिर्व ओहिनार्व ॥ १ ॥ से कि ते व्या-  
 मामय ओहिनार्व । व्यामामये ओहिनार्व पद्धत्येवु व्यामामयवद्वार्वे व्यामामय  
 व्यामामयवरितस्तु व्यामामयवरितस्तु सम्भवे समंता चेती व्याम-  
 व्यामामयवाहरणस्तु द्विमस्तु पञ्चामीवस्तु । जोगाइपा व्यामा जोहीक्षित्वं  
 व्यामय तु ॥ ५५ ॥ सम्भवद्विमयविनीता वित्तर जित्वं भरित्वं । वित्त लभीत्वं  
 व्यामय तु ॥ ५६ ॥ अलुगामिर्व व्यामामयविनीता वित्त वित्त ।

अगुलमावलियतो, आवलिया अगुलपुहुत ॥ ५७ ॥ हृत्थम्मि मुहुत्ततो, दिवसतो  
गाउयम्मि वोद्धव्वो । जोयणदिवसपुहुत, पक्खतो पञ्चवीसाथो ॥ ५८ ॥ भरहम्मि  
अद्धमासो, जम्बूदीवम्मि साहियो मासो । वास च मण्यलोए, वासपुहुत च रुपगम्मि  
॥ ५९ ॥ सखिजम्मि उ काले, दीवसमुद्दावि हुति सखिजा । कालम्मि असखिजे,  
दीवसमुहा उ भइयन्वा ॥ ६० ॥ काले चउण्ह वुह्ही, कालो भइयन्वु खित्तवुह्हीए ।  
वुह्हीए दव्वपज्जव, भइयन्वा खित्तकाला उ ॥ ६१ ॥ सुहुमो य होइ काले, तत्तो  
सुहुमयर हवइ खित्त । अगुलसेढीमित्ते, ओसप्पिणियो असखिजा ॥ ६२ ॥ सेत्त  
वह्हमाणय ओहिनाण ॥ १२ ॥ से कि त हीयमाणय ओहिनाणं ? हीयमाणयं  
ओहिनाणं अप्पसत्येहि अज्ञावसायद्वाणेहि वद्धमाणस्स वद्धमाणचरित्तस्स सकिलिस्स-  
माणस्स सकिलिस्समाणचरित्तस्स सब्बओ समता ओही परिहायइ । सेत्त हीयमाणय  
ओहिनाण ॥ १३ ॥ से कि त पडिवाइओहिनाण ? पडिवाइओहिनाण जहणेण  
अगुलस्स असखिजयभाग वा सखिजयभाग वा, वालगं वा वालगपुहुत वा, लिक्ख  
वा लिक्खपुहुत वा, ज्यूं वा ज्यूपुहुत वा, जवं वा जवपुहुत वा, अगुल वा  
अगुलपुहुत वा, पाय वा पायपुहुत वा, विहत्यि वा विहत्यपुहुत वा, रयणि वा  
रयणपुहुत वा, कुच्छि वा कुच्छपुहुत वा, धणु वा धणुपुहुत वा, गाउर्य वा  
गाउयपुहुत वा, जोयण वा जोयणपुहुत वा, जोयणसय वा जोयणसयपुहुत वा,  
जोयणसहस्स वा जोयणसहस्सपुहुत वा, जोयणलक्ख वा जोयणलक्खपुहुत वा,  
[जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहुत वा, जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहुत  
वा, जोयणसखिज वा जोयणसखिजपुहुत वा, जोयणअसखेज वा जोयणअसखेज-  
पुहुत वा] उक्षोसेण लोग वा पासित्ताण पडिवइजा । सेत्त पडिवाइओहिनाण ॥ १४ ॥  
से कि तं अपडिवाइओहिनाण ? अपडिवाइओहिनाणं जेण अलोगस्स एगमवि  
आगासपएस जाणइ पासइ, तेण पर अपडिवाइओहिनाण । सेत्त अपडिवाइओहिनाण  
॥ १५ ॥ त समासओ चउव्विह पण्णत, तजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ,  
भावओ । तत्य दव्वओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणताइ रुविदव्वाइ जाणइ पासह,  
उष्कोसेण सब्बाइं रुविदव्वाइ जाणइ पासड । खित्तओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलस्स  
असखिजइभाग जाणइ पासइ, उष्कोसेण असखिजाइ अलोगे लोगप्पमाणमित्ताड  
खडाड जाणइ पासइ । कालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आवलियाए असखिजइभाग  
जाणड पासइ, उष्कोसेण असखिजाओ उसप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अडियमणागय  
च काल जाणड पासइ । भावओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणते भावे जाणड पासइ,  
उष्कोसेणवि अणते भावे जाणइ पासइ । सब्बभावाणमणतभाग जाणइ पासइ ॥ १६ ॥

बोही मनपत्रमो गुलपत्रलो व विक्रमो दुष्यिहो । तस्य व वहु विद्या रथे  
विरो य क्षके य ॥ ५३ ॥ नेत्रमवेणतित्वंक्षरा य ओहिस्तुत्ताहिरा हुष्टि । पात्री  
सम्भमो ख्यु, सेचा वेसेष पार्वती ॥ ५४ ॥ सेतो ओहिमामपत्रक्षरं ॥ से कि ते  
मणपत्रक्षराण ! मणपत्रमनाने न मंये । कि यशुस्तार्थं उपज्ञात् अमुस्तार्थं ।  
गोममा ! यशुस्तार्थं नो अमुस्तार्थं । वह यशुस्तार्थं कि संमुचित्तममुस्तार्थं  
गम्भाहैतिवममुस्तार्थं ? गोममा ! नो संमुचित्तममुस्तार्थं उपज्ञात् अमुस्तार्थं  
ममुस्तार्थं । वह गम्भाहैतिवममुस्तार्थं कि कम्ममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं  
कम्ममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं अतरवीक्षणमम्भाहैतिवममुस्तार्थं । योममा !  
कम्ममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं नो अकम्ममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं नो  
अदरवीक्षणमम्भाहैतिवममुस्तार्थं । वह कम्ममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं कि  
संक्षिक्षासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं असुक्षिक्षासात्तद्यमममूर्मिय-  
गम्भाहैतिवममुस्तार्थं । गोममा ! संक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं  
नो असंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । वह संक्षेज्ञासात्तद्यमम  
मूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं कि फलपत्रसंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवम  
स्तार्थं अपत्रागसंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । योममा ! क्षमा !  
गसंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं नो अपत्रागसंक्षेज्ञासात्तद्यम  
मममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । वह पत्रात्मासंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैति-  
यममुस्तार्थं कि सम्मरिद्विपत्रात्मासंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं  
मित्त्विद्विपत्रात्मासंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं सम्मानित्त्विद्वि-  
द्विपत्रात्मासंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । गोममा ! सम्मरिद्वि-  
पत्रात्मासंक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं नो मित्त्विद्विपत्रात्म-  
संक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं नो सम्मानित्त्विद्विपत्रात्म-  
संक्षेज्ञासात्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं वह सम्मरिद्विपत्रात्मसंक्षेज्ञास-  
त्तद्यमममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं कि संवक्षमरिद्विपत्रात्मसंक्षेज्ञासात्तद्य-  
उपज्ञात्मममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं असंवक्षमरिद्विपत्रात्मसंक्षेज्ञासात्तद्य-  
उपज्ञात्मममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । संज्ञार्थवस्तमरिद्विपत्रात्मसंक्षेज्ञासात्तद्य-  
उपज्ञात्मममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । नो असंवक्षमरिद्विपत्रात्मसंक्षेज्ञासात्तद्य-  
उपज्ञात्मममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । संज्ञासंवक्षमरिद्विपत्रात्मसंक्षेज्ञासात्तद्य-  
उपज्ञात्मममूर्मियगम्भाहैतिवममुस्तार्थं । वह संज्ञासमरिद्विपत्रात्मसंक्षेज्ञासात्तद्य-

कम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साणं, कि पमत्तसजयसम्मद्विपज्जत्तगसखेजवासाउय-  
कम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण, अपमत्तसजयसम्मद्विपज्जत्तगसखेजवासाउय-  
कम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण ? गोयमा । अपमत्तसजयसम्मद्विपज्जत्तगसखेज-  
वासाउयकम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण, नो पमत्तसजयसम्मद्विपज्जत्तगसखेज-  
वासाउयकम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण । जह अपमत्तसजयसम्मद्विपज्जत्तग-  
सखेजवासाउयकम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण, कि इहीपत्तअपमत्तसजयसम्मद्विप-  
ज्जत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण, अणिहीपत्तअपमत्तसजय-  
सम्मद्विपज्जत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण ? गोयमा । इही-  
पत्तअपमत्तसजयसम्मद्विपज्जत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमियगव्यभवक्तियमणुस्साण,  
नो अणिहीपत्तअपमत्तसजयसम्मद्विपज्जत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमियगव्यभवक्तिय-  
मणुस्साण मणपज्जवनाण समुप्पज्जइ ॥ १७ ॥ त च दुविह उप्पज्जइ, तजहा-उज्जुमई  
य विउलमई य, त समासओ चउविह पञ्चत, तंजहा-दब्बओ, स्थितओ, कालओ,  
भावओ । तथ दब्बओ ण उज्जुमई अणते अणतपएसिए खधे जाणइ पासइ, ते  
चेव विउलमई अव्यहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ  
पासइ । रित्तओ ण उज्जुमई य जहश्चेण अगुलस्स असखेजयमाग, उक्कोसेण अहे  
जाव इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए उवरिमहेद्विळे खुड्गपयरे, उङ्हु जाव जोहसस्स  
उवरिमतले, तिरियं जाव अतोमणुस्सखिते अहौइज्जेसु दीवसमुद्देसु पञ्चरससु कम्म-  
भूमिसु तीसाए अकम्मभूमिसु छप्पन्नाए अतरदीवरोसु सन्निपचेंद्रियाण पज्जत्याण  
मणोगणए भावे जाणइ पासह, त चेव विउलमई अहौइज्जेहिमुलेहिं अव्यहियतर  
विउलतर विसुद्धतर वितिमिरतराग खेत जाणइ पासइ । कालओ ण उज्जुमई  
जहश्चेण पलिओवमस्स असखिजयमाग उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असखिजयमाग  
अहीयमणागय वा काल जाणइ पासइ, त चेव विउलमई अव्यहियतराग विउल-  
तराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ । भावओ ण उज्जुमई अणते भावे  
जाणइ पासइ, सब्बमावाण अणतभाग जाणइ पासइ, त चेव विउलमई अव्यहिय-  
तराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ । मणपज्जवनाण पुण,  
जणमणपरिचित्यत्यपागहण । माणुसखितनिवद्ध, गुणपचडय चरितवओ ॥ ६५ ॥  
सेत मणपज्जवनाण ॥ १८ ॥ से कि त केवलनाण ? केवलनाण दुविह पञ्चत,  
तजहा—भवत्यकेवलनाण च सिद्धकेवलनाण च । से कि त भवत्यकेवलनाण ?  
भवत्यकेवलनाण दुविह पणत, तजहा—सजोगिभवत्यकेवलनाण च अजोगिभवत्य-  
केवलनाण च । से कि त सजोगिभवत्यकेवलनाण ? सजोगिभवत्यकेवलनाण दुविह

पञ्चत तंवहा—पदमसमदसुज्ञोगिमवत्प्रेक्षनार्थं च अवमसमसदयेगिमस्त-  
केवलनाण च वहा चरमसमदसुज्ञोगिमवत्प्रेक्षनाण च अवमसमदयेगि-  
मवत्प्रेक्षनाण च सेर्तं सुज्ञोगिमवत्प्रेक्षनाण । से कि तं अजोगिमस्त-  
केवलनार्थं ? अजोगिमवत्प्रेक्षनार्थं दुश्चिंह पदार्थं तंवहा—पदमसमवत्प्रेगिमस-  
त्प्रेक्षनार्थं च अवमसमदसुज्ञोगिमवत्प्रेक्षनार्थं च वहा चरमसमदयेगि-  
मवत्प्रेक्षनार्थं च अवमसमदसुज्ञोगिमवत्प्रेक्षनार्थं च सेर्तं अजोगिमस्त-  
केवलनार्थं देत मवत्प्रेक्षनार्थं ॥ ११ ॥ से कि तं दिदकेवलनार्थं ? यिद-  
कलनार्थं दुश्चिंह पदार्थं तंवहा—अनीतरसिद्धेक्षनार्थं च परंपरसिद्धेक्षनार्थं  
च ॥ ॥ से कि तं अधीतरसिद्धेक्षनार्थं ? अनीतरसिद्धेक्षनार्थं पदार्थमिव  
पदार्थं तंवहा—रित्यसिद्धा १ अवित्यसिद्धा २ वित्यमरणसिद्धा ३ अवित्यवरणसिद्धा ४  
सर्वदुष्कृदिष्टा ५ परेयदुष्कृदिष्टा ६ दुष्कृदोहिवसिद्धा ७ इतिशिष्यसिद्धा ८ पुरी-  
समिग्नसिद्धा ९ नुसमग्निग्नसिद्धा १० समिग्नासिद्धा ११ अवलिङ्गसिद्धा १२ यिदि-  
विग्नसिद्धा १३ एगासिद्धा १४ अवेगसिद्धा १५, सेर्तं अनीतरसिद्धेक्षनार्थं । से कि  
तं परंपरसिद्धेक्षनार्थं ? परंपरसिद्धेक्षनार्थं ज्ञेयाश्चिंह पदार्थं तंवहा—आव-  
मसमवसिद्धा दुसमवसिद्धा विदमवसिद्धा चउसमवसिद्धा जाव इत्यमवसिद्धा,  
समिग्नसमवसिद्धा असीक्षियसमवसिद्धा अर्धतसमवसिद्धा सेर्तं परंपरसिद्धेक्षन-  
नार्थं । सेर्तं दिदकेवलनार्थं ॥ ११ ॥ तं सुमासुओ चरमिहं पदार्थं तंवहा—  
इत्यभो वित्ताभ्ये क्षम्भो भाव्यो । तत्त्व वृत्त्यो च केवलनार्थी सम्बद्धनार्थं  
जाप्त ह पाप्त । वित्ताभ्ये च केवलनार्थी सम्बद्ध वित्तं जाप्त ह पाप्त । वाक्यो च केवल-  
नार्थी सम्बद्ध कालं जाप्त ह पाप्त । माव्यो च केवलनार्थी सम्बद्ध माव्यं जाप्त ह पाप्त ।  
अह सम्बद्धपरिणाम—माव्यविष्णवित्तावरणनार्थी । उत्तमपूर्विकारी, पूर्विक लेन्द्र-  
नार्थं ॥ ११ ॥ २२ ॥ केवलनार्थीकृत्ये नाई च तत्त्व पदार्थवोगे । से मात्रां  
वित्यवरो वाक्योमसुर्वं ह वहा सेर्तं ॥ १७ ॥ सेर्तं केवलनार्थं । सेर्तं नोहेहिवपलनार्थं ।  
सेर्तं पदार्थनार्थं ॥ २३ ॥ से कि तं परेमक्षनार्थं ? परोक्षनार्थं दुश्चिंह पदार्थं,  
तंवहा—आविभिरोहियसाक्षप्रोक्षं च दुक्षाक्षप्रोक्षं च जाव आविभिरोहि-  
यनार्थं तत्त्व सुमनार्थं अत्त्व सुमनार्थं दुक्षाभिभिरोहियनार्थं दोऽपि द्वयं नन्त-  
मण्यमनुवायाईं तद्विदि पुज इत्य आवदिया नापार्तं पदार्थस्ति—आविभिरोहियनार्थं  
आविभिरोहियसाक्ष पुजोहिति द्वयं मदुपार्चं द्वेष द्वयं न माई स्वपुरिष्ठ ॥ १४ ॥  
आविभिरोहियसाक्ष माई—मात्रार्थं च मात्रावार्थं च । विसेहिया—सम्मर्हित्य नाई यत्तान्  
मित्युहित्य नाई मात्रावार्थं । आविभिरोहियसाक्ष द्वयं—दुक्षावार्थं च सुमनार्थं च । विसे-

सिय सुय-सम्माद्विस्स सुय सुयनाणं, मिच्छद्विस्स सुयं सुयअचाणं ॥ २५ ॥ से कि त आभिणिवोहियनाण २ आभिणिवोहियनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-सुयनिस्सिय च, असुयनिस्सिय च । से कि त अस्सुयनिस्सियं ३ अस्सुयनिस्सिय चउव्विह पण्णत्त, तंजहा-उप्पत्तिया १ वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४ । बुद्धी चउव्विहा बुत्ता, पचमा नोवलब्मइ ॥ ६८ ॥ २६ ॥ पुञ्चमदिष्टमस्सुय-, मवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था । अब्बाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ ६९ ॥ भरहसिल १ मिंड २ कुकुड ३, तिल ४ वालुय ५ हत्तिय ६ अगड ७ वणसडे ८ । पायस ९ अइया १० पत्ते ११, खाडहिला १२ पच पियरो य १३ ॥ ७० ॥ भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३, खुद्ग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ । गय ९ घयण १० गोल ११ खमे १२, खुद्ग १३ मग्गि १४ त्तिय १५ पह १६ पुत्ते १७ ॥ ७१ ॥ महुसित्य १८ सुहि १९ अके २०, य नाणए २१ भिक्खु २२ चेडगनिहाणे २३ । सिक्खा २४ य अथसत्थे २५, इत्थी य मह २६ सयसहस्रे २७ ॥ ७२ ॥ भर-नित्यरणसमुत्था, तिवगगसुत्तत्यगहियपेयाला । उभओ-लोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७३ ॥ निमित्ते १ अथसत्थे य २, लेहे ३ गणिए ४ य कून ५ अस्से ६ य । गह्य ७ लक्खण ८ गठी ९, अगए १० रहिए ११ य गणिया १२ य ॥ ७४ ॥ सीया साढी दीह, च तण अवसव्यय च कुच्चस्स १३ । निव्वोदए १४ य गोणे, घोडगपडण च रुक्खाओ १५ ॥ ७५ ॥ उवओगदिष्टसारा, कम्मपसगपरि-घोलणविसाला । साहुकारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७६ ॥ हेरणिए १ करिसए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ । तुश्चाए ८ वढुइय ९, पूयड १० घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिष्टतसाहिया, वयविवा-गपरिणामा । हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ ७८ ॥ अभए १ सिद्धि २ कुमारे ३, डेक्की ४ उदिओदए हवइ राया ५ । साहू य नदिसेणे ६, धण-दत्ते ७ सावग ८ अमच्चे ९ ॥ ७९ ॥ खमए १० अमच्चपुत्ते ११, चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य । नासिकसुदरिनदे १४, चझे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ८० ॥ चलणाहण १६ आभडे १७, मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० जाणिज्ञा । परिणामियबुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्त असुयनिस्सिय ॥ से कि त सुयनित्यियं २ सुयनिरिय चउव्विह पण्णत्त, तजहा-उग्गहे १, ईहा २, अवाओ ३, धारणा ४ ॥ २७ ॥ से कि त उग्गहे २ उग्गहे दुविहे पण्णत्त, तजहा-अतुग्गहे य वजणुग्गहे य ॥ २८ ॥ से कि त वजणुग्गहे २ वजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्त, तजहा-सोइदियवजणुग्गहे, धाणिदियवजणुग्गहे, जिव्विभादियवजणुग्गहे, फासिंदियव-

अनुग्रहे । सेता वंशकुमारे ॥ २९ ॥ से कि त अत्युग्रहे ? अनुग्रहे छिह्ने पर्याप्त हैं तंजहा-सोईरियमत्कुम्हे, चर्चित्तरियमत्कुम्हे चार्चित्तरियमत्कुम्हे, चिभिरियमत्कुम्हे, फार्चिरियमत्कुम्हे, नोईरियमत्कुम्हे ॥ ३ ॥ तत्त्व जै इसे एगांडिया नायाक्षेत्रा नायाक्षया पंच नामधिजा भवति तंजहा-आमोहृष्टवा, उद्यारणया उद्यारणया अनवंवलया भेदा । सेता उम्हे ॥ ३१ ॥ प्र से कि त इहा ! इहा छम्हिहा पर्याप्ता तंजहा-सोईरियहैहा चर्चित्तरियहैहा चार्चित्तरियहै चिभिरियहैहा फार्चिरियहैहा नोईरियहैहा । तीसे जै इसे एगांडिया नायाक्षेत्रा नायाक्षया पंच नामधिजा भवति तंजहा-आमोहृष्टया मत्कालया गमेत्तवा, चित्ता बीमंसा । सेता इहा ॥ ३२ ॥ से कि त अत्याए ? अत्याए छम्हिहे पर्याप्त, तंजहा-सोईरियमत्ताए, चर्चित्तरियमत्ताए, चार्चित्तरियमत्ताए, चिभिरियमत्ताए, फार्चिरियमत्ताए, नोईरियमत्ताए । तस्य जै इसे एगांडिया नायाक्षेत्रा नायाक्षया पंच नामधिजा भवन्ति तंजहा-आमोहृष्टया पक्षात्तद्या अत्याए, तुम्ही लिप्तये । सेता अत्याए ॥ ३३ ॥ से कि त घारणा ? घारणा छम्हिहा पर्याप्त तंजहा सोईरियमत्तारणा चर्चित्तरियमत्तारणा चार्चित्तरियमत्तारणा अल्लियमत्तारणा नोईरियमत्तारणा । तीसे जै इसे एगांडिया नायाक्षेत्रा नायाक्षया पंच नामधिजा भवति तंजहा-आरणा साधारणा घारणा फ़हमा बोझे । सेता घारणा ॥ ३४ ॥ उम्हाहे इसमाइए, भर्तोसुहृदित्या इहा भर्तोसुहृदित्या अत्याए, घारणा सुखेत्ती वा वासं वसेत्ती वा वस्ते ॥ ३५ ॥ एवं बद्धावीक्षित्तिसु जामिल्लोहियमायस्त संबुद्धमहस्त पर्याप्त करित्तसामि परिबोहृष्टपरिद्वित्तेन मत्कालित्तिव व । से कि त परिबोहृष्टपरिद्वित्तेन ? परिबोहृष्टपरिद्वित्तेन से वहालामए ऐद् पुरिसे एवं पुरिस द्वार्ते परिबोहित्या अमुमा अमुमति तत्त्व ओक्तो पर्याप्त एवं व्याधी-ति एगांडियपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति । तुसमयपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति वास वहुसमयपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति । एविज्ञसमयपरिद्वापुम्हाता तुम्हाता पहृष्मायच्छंति । असुविज्ञसमयपरिद्वापुम्हाता तुम्हाता गहृष्मायच्छंति । एवं वहुसमयपरिद्वापुम्हाता एवं व्याधी-ति एवं व्याधी-ति जौ एगांडियपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति जौ तुम्हाता समयपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति वहुसमयपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति जौ एविज्ञसमयपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति वहुसमयपरिद्वापुम्हाता गहृष्मायच्छंति एता परिबोहृष्टपरिद्वित्तेन । से कि त मत्कालित्तिव ? मत्कालित्तेन से वालामए ऐद् पुरिसे व्याधीवीसाम्भे मङ्गां यहृष्म तत्त्वेत्त वहृष्मतिं वहृष्मतिं विज्ञासे नद्दे, अल्लित्ति परियत्ते देउति नद्दे, एवं परियत्तमात्तेत्त परिकल्पनात्तेत्त

होही से उदगविंदू जे णं त मल्लग रावेहिडति, होही से उदगविंदू जे णं तंसि  
 मल्लगसि ठाहिइ, होही से उदगविंदू जेणं त मल्गं भरिहिड, होही से उदगविंदू  
 जेणं त मल्ग पवाहेहिइ, एवामेव पवित्रप्पमाणेहिं पवित्रप्पमाणेहिं अणतेहिं  
 पुगलेहिं जाहे त वजण पूरियं होइ ताहे हुति करेइ, नो चेव ण जाणइ के  
 वेस सद्वाइ<sup>२</sup> तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्वाइ, तओ अवाय  
 पविसइ, तओ से उवगयं हवइ, तओ धारण पविसड, तओ णं धारेइ सखिज  
 वा काल असखिज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सद्व सुणिज्ञा,  
 तेणं सद्वत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सद्वाइ, तओ ईह पविसड,  
 तओ जाणइ अमुगे एस सद्वे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ  
 धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज वा काल असखेज वा काल । से जहानामए  
 केइ पुरिसे अव्वत्त रुव पासिज्ञा, तेण रुवत्ति उग्गहिए, नो चेव ण  
 जाणइ के वेस रुवत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रुवे, तओ अवाय  
 पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ सखेज वा  
 काल असखेजं वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त गध अग्नाइज्ञा, तेण  
 गधत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस गधेत्ति, तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ  
 अमुगे एस गधे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ,  
 तओ ण धारेइ सखेज वा काल असखेज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त  
 रस आसाइज्ञा, तेण रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रसेत्ति, तओ ईहं  
 पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगयं हवइ,  
 तओ धारण पविसइ, तओ णं धारेइ सखिज वा काल असखिज वा काल । से जहानामए  
 केइ पुरिसे अव्वत्त फास पडिसवेइज्ञा, तेण फासेत्ति उग्गहिए, नो  
 चेव ण जाणइ के वेस फासओत्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे,  
 तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ णं धारेइ  
 सखेज वा काल असखेज वा कालं । से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सुमिणं  
 पासिज्ञा, तेण सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ  
 ईहं पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय  
 हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज वा काल असखेज वा काल ।  
 सेत्त मल्लगद्धुत्तेण ॥ ३६ ॥ त समासओ चउच्चिव ह पण्णत, तजहा-दच्चओ,  
 खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दच्चओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सब्बाइ  
 दच्चाइ जाणइ, न पासइ । खेत्तओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सब्ब खेत्त

जायद् न पापद् । कालआ र्हे आमिकिगदिवनाभी आपुसेवं सम्बं कालं जायद्  
म पापद् । भावओ र्हे आभिमिदोहिमनाभी आपुसेवं मध्ये भावे जायद् न पापद् ।  
उम्माद् इहाऽत्मामो च पारणा एव हुति चलारि । आभिमिदोहिमनाभस्म भव  
वरथ् समासेवं ॥ ८२ ॥ अत्याख उम्माद्वम्मिद उम्माद्वम्मिद उम्माद् तद् विवाहे देहा । वरद्वा-  
यम्मिद अत्मामो भरवं पुष्प भारत्व विति ॥ ८३ ॥ उम्माद् तद् सम्बं इहाऽत्य-  
सुदुरामद्वं तु । कालमसेवं सुतं च पारणा होइ मामणा ॥ ८४ ॥ पुष्प तद्वेषं भव-  
च पुष्प पापद् अपुद्वं दु । गीर्वं रसे च पास च वद्वुद्वं विवाहे ॥ ८५ ॥  
भासाद्वम्मेद्वाभो श्री र्हे तु अश्व भीमिवं सुणद् । वीसर्वं पुन छं, तुषेषं विम्मा  
परापाए ॥ ८६ ॥ इहा अपोह वीमेता भगवाना य गवेनुषा । सत्ता देहं मारै पता दर्वं  
आभिमिदोहिन ॥ ८७ ॥ सेत आभिमिदगदिमनाभपराकर्त्त्वं [सेतं मरणात्] ॥ ८८ ॥  
से कि तं पुम्नाभपरोक्त्वं । शुक्लाभपरोक्त्वं वात्मविर्वं वलतं तंवहा-वात्मवार्त्त्वं ।  
अपाभपरात्त्वं २ सम्बिकुर्वं ३ अपाभिकुर्वं ४ सम्भवुर्वं ५ विष्वसुर्वं ६ सांने ७  
मध्यात्त्वं ८ मध्यवत्तिर्वं ९ अपाभवित्वं १ गमित्वं ११ अगमित्वं १२ भव-  
वित्वं १३ अवभववित्वं १४ ॥ १५ ॥ से कि तं अपाभवुर्वं अस्त्वात्त्वं विविष्वं पर्वत्,  
तंवहा-सप्तवत्तर, वंजनवत्तर, वदिमवत्तर । से कि तं सप्तवत्तर । सप्तवत्तर भवत्त-  
रत्तम संठाणाभित्वं, सेत मध्यवत्तर । से कि तं वंजनवत्तर ३ वंजनवत्तर अन्वरत्तम  
वज्ञागित्वावो संतो वज्ञावत्तर । से कि तं वदिमवत्तर ५ वदिमवत्तर अन्वर  
वदिमस्तु वदिमवत्तर समुपवत्त्र तंवहा-सार्वियवदिमवत्तर, चर्वियवदिम-  
दिमवत्तर, चार्वियवदिमवत्तर, रसवियवदिमवत्तर, वार्वियवदिमवत्तर,  
गोर्वियवदिमवत्तर सेते वदिमवत्तर । सेतो अन्वरत्तम ॥ से कि तं अपाभवत्तम ॥  
अपाभवत्तम अगेगविहं वलतो तंवहा-छसित्वं नीमसिवं निष्वृट्वं वासित्वं च  
अत्तिवं च । विसिचिविमयुसार, अपाभवत्तर वेत्तिमात्तिवं ॥ १६ ॥ सेते अपाभवत्तम ॥  
॥ १७ ॥ से कि तं सम्बिकुर्वं ३ सम्बिकुर्वं विविहं वलता तंवहा-पर्वत्तम  
एवेषं हेत्वाएवेषं विद्विशाप्रोवपुसेषं । से कि तं वामिषेवप्त्तम ५ वामिषेवप्त्तम  
वलत च विष्व इहा अतोहो मध्याना यवेनुषा विता वीमेता से च उम्मीति  
वलत, वलत च विष्व इहा अतोहो मध्याना गविमणा विता वीमेता से च  
अपाभ्याति सप्तवत्त, सेते वामिषेवप्त्तम । से कि तं हेत्वाएवेषं । हेत्वाएवेषं वलत  
च विष्व अभिष्वपारवपुमिवा कर्मसती से च उम्मीति सप्तवत्त, वलत च विष्व

१ पादेत्तरणाहा-वलताने उम्माद् च उम्माद् तद् विष्वत्तम ॥ १८ ॥  
च वलत च वर्वं पुष्प भारवं विति ॥ १९ ॥

शिक विक सत अठ नष वश, पकावश चवरे वार ।  
 नष गुलठाण असालता, शाल में अभिकार ॥१॥  
 नियह वावर घसा झीवना, सरिखा नाही परशाम ।  
 अनियह वावर सब सारिसा ए गुलठाणा भाम ॥२॥  
 अप्पा भाष पद ब्रह्म तखा आह प्रतिति पुम्प वाप ।  
 एच्या भत सामु आवक तखा करावो खिल आप ॥३॥  
 विशेषा हाप आवे नाही मिस्सा झीवा रेत ।  
 झीव सहित ते प्रयोग सा भी खिल धार्थी तेत ॥४॥  
 जोग उदारिक पहळे आठमें, दूजे छठे चात में मिम आव ।  
 याकी तीन कारभाष कडा उमा आठ परमाष ॥५॥  
 प्रत्येक सो एकण साय में फोरते समुदात ।  
 प्रत्येक संहस अहारीक हात्प एक समारी वात ॥६॥  
 मझ उंचा ते लोक सो लर्ग पांच में जाए ।  
 तीजा प्रसार मे विषे चाह्योउरिए खिमाल ॥७॥  
 मेरु रुधक प्रदेश मे तिरखारो मझ थाय ।  
 औरी मरुक निर्जि खिचातसो औजम असेक्याकाश लग जाय ॥८॥  
 ऐही नर्क ते लापवे औजन अमंस्याकाश ।  
 अवदे राढ तसो मझ सूर्य भगवती भास ॥९॥  
 इम्रीये रुच पोरझी झीय ये रुच पीमाल थाय ।  
 शतक आठ उदेश दशमें आस्यो भगवती माय ॥१०॥  
 एक अद्वर केमली तसो फीजे पर्जना अमर्त ।  
 एक पर्वते अमर्त अम्मा भास्या भी भगवत ॥११॥  
 एक अम्मो लिल मायलो फीजे असेक्या भाग ।  
 एक भाग अनस्ता दणद्वा आहो अहो पास भयार ॥१२॥

अभिसधारणपुच्चिया करणसत्ती से ण असण्णीति लब्धइ, सेत्त हेऊवएसेण । से कि त दिट्ठिवाओवएसेण ? दिट्ठिवाओवएसेण सण्णिसुयस्स खओवममेण सण्णी लब्धइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेण असण्णी लब्धइ, सेत्त दिट्ठिवाओवएसेण । सेत्त सण्णिसुय । सेत्त असण्णिसुय ॥ ४० ॥ से कि त सम्मसुय ? सम्मसुय जं इम अरहतेहि भगवतेहि उप्पणनाणदसणधरेहि तेलुक्कनिरिक्खयमहियपूर्णहिं तीयप-डुप्पणमणागयजाणएहि सब्बदरिसीहि पणीय दुवालसग गणिपिडग, तंजहा-आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपण्णती ५ नायाध-म्मकहाओ ६ उवामगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदमाओ ९ पण्हावामरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ १२, इच्छेयं दुवालसग गणिपिडग चोहसपुच्चिस्स सम्मसुय, अभिष्णदसपुच्चिस्स सम्मसुय, तेण परं भिण्णेसु भयणा, सेत्त सम्मसुय ॥ ४१ ॥ से कि त मिच्छासुय ? मिच्छासुय जं इम अणाणिएहि मिच्छादिट्ठिएहि सच्छदद्विद्विमझिविगणियं, तजहा—भारह, रामायण, भीमासुरखव, कोडिळय, सगडभद्वियाओ, खोड( घोडग )मुह, क्षपासिय, नागसुहुम, कणगसत्तरी, वडेसेसिय, बुद्धवयण, तेरासिय, कविलिय, लोगायय, सट्टितर्त, माढर, पुराण, वागरण, भागवय, पायजली, पुस्तदेवय, लेह, गणिय, सउणस्य, नाढयाइ, अहवा चावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया सगोवगा, एयाइ मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग-हियाइ मिच्छासुय, एयाइ चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मतपरिगहियाइ सम्मसुय, अहवा-मिच्छादिट्ठिस्सवि एयाइ चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मतहेउत्तनओ जम्हा ते मिच्छा-दिट्ठिया तेहि चेव समएहि चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ चयति, सेत्त मिच्छासुय ॥ ४२ ॥ से कि त साइयं सपज्जवसिय, अणाह्य अपज्जवसिय च ? इच्छेह्य दुवालसग गणिपिडग चुच्छित्तिनयद्वयाए साइय सपज्जवसिय, अचुच्छित्ति-नयद्वयाए अणाह्य अपज्जवसिय, त समासओ चउव्विह पण्णत, तजहा-दब्बओ स्थितओ कालओ भावओ, तस्थ दब्बओ ण सम्मसुयं एग पुरिस पहुच्च साइय सपज्जवसिय, वहवे पुरिसे य पहुच्च अणाह्य अपज्जवसिय, खेतओ ण पच भरहाइ पचेरवयाइ पहुच्च साइय सपज्जवसिय, पच महाविदेहाइ पहुच्च अणाह्य अपज्जवसिय, कालओ ण उस्तपिणि ओसपिणि च पहुच्च साइय सपज्जवसियं, नोउस्तपिणि नोओसपिणि च पहुच्च अणाह्य अपज्जवसिय, भावओ ण जे जया जिणपन्नता भावा आधविज्ञति, पञ्चविज्ञति, परुविज्ञति, दसिज्ञति, निदसिज्ञति, उवदसिज्ञति, ते तथा भावे पहुच्च साइय सपज्जवसिय, खाओवसमिय पुण भाव पहुच्च अणाह्य अपज्जवसिय, अहवा भवसिद्धियस्स सुय साइय सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स

सुर्य अजाहये सप्तवर्षिये च सम्भागासुपरेष्ठये सम्भागासपरेष्ठे वर्षतुर्वै  
पञ्चवस्तरं निष्पत्तं, सम्भवीयार्थपि य एव अक्षवरस्तु अवदमाणो मित्रार्थिः  
एव पुक्ष द्योऽपि अवरिजा ठर्य जीवे अवीक्षते परिजा - “द्युषि वेहसुररु  
होर पमा अवधार्ण” सेर्तं सद्य सप्तवर्षिये सेत्र अजाहये अप्तवर्षिये ॥ ५ ॥  
से कि ते गमिये । गमिय रिद्विग्रामो से कि ते गमिये । गमिये गतिवृत्तं,  
ऐत गमिये सेर्तं अगमिये । अहा त समाप्तमो तुष्टिः पञ्चां ठंबहा-अपर्वै  
अगवाहिरं च । से कि ते अवधाहिरं । अगवाहिरु तुष्टिः पञ्चां ठंबहा-आवस्य  
च आवस्यवशिर्तं च । से कि ते आवस्यर्थः आवस्यवशिर्तुष्टिः पञ्चां ठंबहा-  
सामाधव चतुर्वीसत्प्रयो वैदेशय परिष्कर्म अवस्यम्ये पवद्वार्णः सेर्तं गति  
स्तर्य । से कि ते आवस्यवशिर्तं । आवस्यवशिर्तुष्टिः पञ्चां ठंबहा-समिये  
च उद्धाक्षिये च । से कि ते उद्धाक्षिये ॥ ६ ॥ अगेगतिवृत्तं पञ्चां ठंबहा-इतिवृत्तिं  
कृपियाद्यपि युग्माप्सुर्य महाप्यम्युप, उक्तात्मनं रामप्रेतिवृत्तं गौतमित्ये,  
पञ्चवाचा महाप्यम्युप फलाद्यप्यमार्ण नंदी असुलोगदारात्, देवित्यत्वं तेषु  
गेयामिये चंद्रामियम्ये सूरपञ्चां योगित्यम्यहर्व मण्डसम्प्रैषो निजावरप्रतिमि  
चल्लो गतिविज्ञा शाश्वतिमती मरणविमती आविसेष्टी धीरुणाप्सुर्य लौकिका  
घर्व विद्वारक्ष्यो चरणविही आवरप्यवशार्थं महाप्यम्युप एकादृ ऐते  
उक्ताक्षिये । से कि ते काक्षिये । काक्षिये अगेगतिवृत्तं पञ्चां ठंबहा-इतिवृत्तर्थं,  
दसामो चम्पो वद्वारे निर्वाह महामिसीत्, इतिमाधिवारं चम्भैरेवत्तर्थं,  
धीरुणाप्यवशार्थी चंद्रपञ्चां इतिवार्तिमाधिविमती महिमान्मिमाधिविमती  
अगच्छुक्षिया चम्भैरुक्षिया निजाहृक्षिया वद्वारेवत्तर्थ, वद्वारेवत्तर्थ,  
परशोक्षाए, वैद्यम्भोक्षाए, वैदिवोक्षाए, वैद्याप्सुर्य, चम्भैरुक्षुरु  
नागपरिदावतिवृत्तिम्यो निरदावतिवृत्तिम्यो कृपिवाम्यो कृपविविक्षाम्यो तुष्टिम्यो  
पुफ्पच्छुक्षियम्यो वद्वारेवत्तर्थो [ भावीमित्यमावशार्थ विद्विमित्यमावशार्थ द्युमित्यम-  
पाच महाप्यमित्यमावशार्थ वैद्यरियनिचम्यार्थ ] एकमाहयर्व चतुर्वीर्व चतुर्वीर्व  
स्तर्तं गतम्यो भरण्यो ऋष्यसामिस्य आदित्यवरस्तु तदा उक्तिवृत्तं पञ्चवर्ष-  
स्तर्तं मतिवार्थ विक्षरार्थ चोइस-पञ्चगासहस्रार्थ भरण्यो वद्वारेवत्तर्थात्मित्य  
महा वस्त्र वतिवार्थ तीसा वप्पतिवार्थ वैष्णवाए वद्वारेवत्तर्थ वारिवार्तिवार्त  
चतुर्विहाए तुष्टिवार्त तस्त्र वतिवार्थं पञ्चगासहस्रार्थ वैष्णवार्तिवार्त तुष्टिवार्त  
वेष ऐता काक्षिये सेर्तं आवस्यवशिर्तं ऐता अनीपमिहु ॥ ७ ॥ ते कि  
ते अगपतिहु ! अप्तविहु युक्तामिये फलां तंबहा-आवाहे । एकादृ ते कि  
ते अगपतिहु !

ठाण ३, समवाओ ४, विवाहपञ्चती ५, नायाघम्मकहाओ ६, उवासगदसाओ ७, अतगढदसाओ ८, अणुत्तरोववाइयदसाओ ९, पण्हावागरणाइ १०, विवागसुय ११, दिट्ठिवाओ १२ ॥ ४५ ॥ से किं त आयारे? आयारे ण समणाण निगथाण आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाभभासाचरणकरणजायामायावित्तीओ आधविज्ञति, से समासबो पचविहै पण्णते, तजहा-नाणायारे, दसणायारे, चरितायारे, तवायारे, वीरियायारे, आयारे ण परित्ता वायणा, सखेजा अणुओगदारा, सखेजा वेढा, सखेजा सिलोगा, सखिजाओ निजुत्तीओ, सखिजाओ सगहणीओ, सखिजाओ पडिवत्तीओ, से णं अगट्ट्याए पढमे अगे, दो सुयक्खधा, पण्डीस अज्ञयणा, पचासीइ उद्देसणकाला, पचासीइ समुद्देसणकाला, अद्वारस पयसहस्साइ पयगेण, सखिजा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्वा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आधविज्ञति, पश्चविज्ञति, परुविज्ञति, दसिज्ञति, निदसिज्ञति, उवदसिज्ञति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपूवणा आधविज्ञइ, सेत आयारे १ ॥ ४६ ॥ से किं त सूयगडे? सूयगडे ण लोए सूझ्जइ, अलोए सूझ्जइ, लोयालोए सूझ्जइ, जीवा सूझ्जति, अजीवा सूझ्जति, जीवाजीवा सूझ्जति, ससमए सूझ्जइ, परसमए सूझ्जइ, ससमयपरसमए सूझ्जइ, सूयगडे ण असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीईए अकिरियावाईण, सत्तट्टीए अण्णाणियवाईण, वत्तीसाए वेणइयवाईण, तिष्ठ तेसद्वार्ण पासडियसयाण वृह किच्चा ससमए ठाविज्ञइ, सूयगडे ण परित्ता वायणा, सखेजा अणुओगदारा, सखेजा वेढा, सखेजा सिलोगा, सखिजाओ निजुत्तीओ, सखिजाओ सगहणीओ, सखिजाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ट्याए विइए अगे, दो सुयक्खधा, तेवीस अज्ञयणा, तित्तीस उद्देसणकाला, तित्तीस समुद्देसणकाला, छत्तीस पयसहस्साइ पयगेण, सखिजा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्वा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आधविज्ञति, पश्चविज्ञति, परुविज्ञति, दसिज्ञति, निदसिज्ञति, उवदसिज्ञति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपूवणा आधविज्ञइ, सेत सूयगडे २ ॥ ४७ ॥ से किं तं ठाणे? ठाणे ण जीवा ठाविज्ञति, अजीवा ठाविज्ञति, जीवाजीवा ठाविज्ञति, ससमए ठाविज्ञइ, परसमए ठाविज्ञइ, ससमयपरसमए ठाविज्ञइ, लोए ठाविज्ञइ, अलोए ठाविज्ञइ, लोयालोए ठाविज्ञइ। ठाणे ण टका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पच्चारा, कुडाइ, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आधविज्ञति। ठाणे ण एगाइयाए एगुत्तरियाए बुड्हीए दसद्वाणगविवहियाण भावाणं

पत्त्वा आविज्ञद् । अथेऽपि परिता वाक्या संकेता असुमोगदाहु संकेत  
केऽपि संकेता किंवेगा संकेताभ्यो निकुर्तीभ्यो संकेताभ्यो संकेताभ्यो  
परिवर्तीभ्यो । से वर्तं अंगद्वयाए वाहै अग्नि एगे स्मृत्यविषि वस्त्र वाक्यात्मा त्वर्ते  
चोहेत्यक्षमा एक्षीर्त्यं स्मुरेत्यक्षमा वाक्यार्थे फलवाहस्या फलमोर्त्यं संकेत  
मस्तुरा अर्थता गमा अर्थता फलवा परिता तसा अर्थता वापर्तु सावरण्य  
निकदनिकाह्या विक्षप्यता मात्रा आविज्ञदि पत्त्विज्ञदि परिविज्ञदि रुद्धिज्ञदि  
विद्विज्ञदि उवर्तिज्ञदि । से एव वाया एवं नामा एवं विज्ञाया एवं चरण  
रप्पफल्या आविज्ञद् । सेतुं ठाणे १ ॥ ४८ ॥ से कि तं सम्भाएऽ ॥ अपापं वं  
जीवा समाविज्ञदि अजीवा समाविज्ञदि जीवाजीवा उमाविज्ञदि उम्भए उभं  
विज्ञद्, परस्मए समाविज्ञद्, सासम्बफलमए समाविज्ञद्, अप्येऽ समाविज्ञद्,  
अप्येऽ समाविज्ञद्, अप्येऽ समाविज्ञद् । सम्भाएऽ वं एवाद्यावं एत्याद्यावं  
उपलब्धविज्ञियावं भावाव फलवा आविज्ञद्, तुषावसविहस्य वं विविज्ञ  
पत्त्व फलव[र्त]े समाविज्ञद् । सम्भावस्य वं परिता वाक्या संकिता अलुग्नेपर्तु  
संकिता वैता संकिता किंवेगा संकिताभ्यो निकुर्तीभ्यो संकिताभ्यो संकिताभ्यो  
संकिताभ्यो परिवर्तीभ्यो । से वं अंगद्वयाए वर्तये अग्ने एवं मुप्तये तं  
अजस्यये एवो चोहेत्यक्षमाते एगे स्मुरेत्यक्षमके एवो जोवाहे उपस्थाहस्ये फलमोर्त्यं  
संकेता अस्तुरा अर्थता गमा अर्थता फलवा परिता तसा अर्थता वापर्तु  
साधयक्षदनिकदनिकाह्या विक्षप्यता मात्रा आविज्ञदि पत्त्विज्ञदि परिविज्ञदि  
दिविज्ञदि विद्विज्ञदि उवर्तिज्ञदि । से एवं वाया एवं नामा एवं विवाहं  
एवं चरणफल्यावाह्या आविज्ञद् । सेतुं सम्भाएऽ ४ ॥ ४९ ॥ से कि तं विशाहे  
विशाहे वं जीवा वियाहिज्ञदि अजीवा वियाहिज्ञदि जीवाजीवा वियाहिज्ञदि  
सस्मए वियाहिज्ञद् परस्मए वियाहिज्ञद् उपस्मफलमए वियाहिज्ञद्, अप्येऽ  
वियाहिज्ञद्, अप्येऽ वियाहिज्ञद्, अप्येऽ वियाहिज्ञद्, वियाहस्य वं विविज्ञद्  
वाक्या संकिता अलुग्नेपर्तु संकिता वैता संकिता किंवेगा संकिताभ्यो  
निकुर्तीभ्यो संकिताभ्यो संकिताभ्यो संकिताभ्यो परिवर्तीभ्यो से वं अंगद्वय  
पत्त्व अग्ने एगे मुप्तकर्त्ति एवं उपदर्शेऽ अस्यवक्षत्य, वस्त्र उपरमस्याह्यात्, वस्त्र  
स्मुरेत्यगवाह्यावं छतीर्त्यं वागरण्याह्यावं, शो नमता भद्रुतीर्त्यं भद्राह्यावं  
पत्त्वमोर्त्यं संकिता अस्तुरा अर्थता गमा अर्थता फलवा परिता तसा अर्थता  
वाक्या साधयक्षदनिकदनिकाह्या विक्षप्यता मात्रा आविज्ञदि विविज्ञदि  
पत्त्विज्ञदि विद्विज्ञदि विद्विज्ञदि उवर्तिज्ञदि से एवं वाया एवं विवा

विण्णाया, एव चरणकरणपर्वणा आधविज्जइ, सेत्त विवाहे ५ ॥ ५० ॥ से किं त  
नायाधम्मकहाओ? नायाधम्मकहासु ण नायाणं नगराइ, उज्जाणाइ, समोसरणाइ,  
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इङ्गुविसेसा,  
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परियाया, सुयपरिगहा, तबोवहाणाइ, सलेहणाओ,  
भत्तपच्चकखाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपच्चायाइओ, पुणवोहि-  
लाभा, अतकिरियाओ य आधविज्जति, दस धम्मकहाणं वग्गा, तत्थ ण एगमेगाए  
धम्मकहाए पंच पच अक्खाइयासयाइ, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पच उवक्खाइ-  
यासयाइ, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइ, एवामेव  
सपुन्वावरेण अद्भुत्ताओ कहाणगकोहीओ हवंतिति समक्खाय । नायाधम्मकहाण  
परित्ता वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा,  
सखिज्जाओ निजुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण  
अगद्याए छट्टे अगे, दो सुयक्खधा, एगूणवीस अज्जयणा, एगूणवीस उद्देशण-  
काला, एगूणवीस समुद्देशणकाला, सखेज्जा पयसहस्सा पयग्रेण, सखेज्जा अक्खरा,  
अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्ध-  
निकाइया जिणपण्णता भावा आधविज्जति, पश्विज्जति, पहविज्जति, दसिज्जति, निद-  
सिज्जति, उवदसिज्जति । से एव आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एव चरणकरण-  
पर्वणा आधविज्जइ । सेत्त नायाधम्मकहाओ ६ ॥ ५१ ॥ से किं त उवासगद-  
साओ? उवासगदसासु णं समणोवासयाण नगराइ, उज्जाणाइ, समोसरणाइ, रायाणो,  
अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इङ्गुविसेसा, भोगपरि-  
वाया, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिगहा, तबोवहाणाइ, सीलव्वयगुणवेरमण-  
पच्चकखाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्च-  
कखाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपच्चायाइओ, पुणवोहिलाभा,  
अतकिरियाओ य आधविज्जति । उवासगदसाणं परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओ-  
गदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निजुत्तीओ, सखेज्जाओ  
सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगद्याए सत्तमे अगे, एगे सुय-  
क्खधे, दस अज्जयणा, दस उद्देशणकाला, दस समुद्देशणकाला, संखेज्जा पय-  
सहस्सा पयग्रेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा,  
अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपण्णता भावा आधविज्जति, पश्विज्जति,  
पहविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदंसिज्जति । से एव आया, एव नाया, एव  
विण्णाया, एव चरणकरणपर्वणा आधविज्जइ । सेत्त उवासगदसाओ ७ ॥ ५२ ॥ से

कि हे अंतगाहदसामो ! अंतयडदसाहु ये अंतगाहार्थ भवराहु, उजाहार्थ, इमेस्त  
प्राहु, राहामो अम्मापियटे अम्मापरिया भम्महाहाये इहसेवनपरिवेश ईं  
विदेशा म्हेगपरिवागा पम्मजामो परिवागा सुपरिमध्या उद्देश्यायार्थ, संवेद  
शामो मतापचक्षायार्थ, पांचेक्षयम्यार्थ, अंतकिरिवाये आवकिंविं अंतपर्याह  
शामु वे परिवा बाबना संवेजा अनुज्ञेगदाहु, संवेजा खेजा संवेजा विवेद  
संवेजायो विजुतीयो संवेजायो संवेजायो संवेजायो पदिवतीयो से वे वे वे  
द्व्याए अद्युम अगी एसे द्युवक्त्वे द्यु वगा द्यु द्येवप्रभवा द्यु द्युरेव  
क्षम्भ संवेजा पम्महस्या पवमोर्व संवेजा अनवरा अर्वता यमा अर्वता  
पववा परिवा तसा अर्वता बाबरा यासवक्षनिवद्याया विवक्षया यास  
आवकिंविं वलकिंविं पहकिंविं ईहिंविं निरहिंविं उद्यविंविं से हे  
जाया एवं नावा एवं विष्वाया एवं चरणद्वरप्रस्तवा आवकिंवाह, ऐते अद्युम  
दसामो १॥५३॥ से कि हे अंतुत्तरेववाह्यदसामो ! अंतुत्तरेववद्वरवद्व  
अंतुत्तरेववाह्यार्थ नगरार्थ, उजाहार्थ, समोनरणार्थ, रायामो अम्मापियरो अम्म  
परिवागा अम्मज्जामो इहसेवप्रखोया इविविसेशा भोपरीवाया फ्यजाये  
परिवागा मुक्तपरिमाहा त्वोवहायार्थ, पदिवाये उवस्या संवेजाये भवती  
चक्षाणार्थ, पाओक्षम्भार्थ, अंतुत्तरेववाह्यति उक्षती उक्षववाहार्थे तु  
बोहिलामा अंतकिरिवाये आवकिंविं अंतुत्तरेववाह्यदसाहु वे परिवा वासा,  
संवेजा अंतुमेववारा संवेजा खेजा संवेजा विवेगा संवेजाये विजुतीये  
संवेजाये संवेजायो संवेजायो पदिवतीयो से वे अंगद्वाए वक्षे जगे एसे द्यु  
क्षविं विवि क्षम्भ विवि द्येवप्रभवा क्षम्भ विवि समुद्रेवक्षक्षम्भ संवेजार्व अर्वता  
स्वर्व ववमोर्व संवेजा अनवरा अर्वता यमा अर्वता पववा परिवा ल्ल  
अर्वता बाबरा यासवक्षनिवद्याया विवक्षया यास आवकिंविं  
पवविंविं पहकिंविं ईहिंविं निरहिंविं उद्यविंविं से हे यास  
एवं नावा एवं विष्वाया एवं चरणद्वरप्रस्तवा आवकिंवाह, ऐते अंतुत्तरेव  
दसामो १॥५४॥ से कि हे अंतुत्तरेववायरार्थ ! अंतुत्तरेववद्व व अंतुत्तर  
पदिवस्य अंतुत्तर अवकिंविं अंतुत्तर पदिवापरिभवती तंत्रा—अंतुत्तरार्थ  
वाहूपविक्षार्थ, वाहूपविक्षार्थ, वाहूपविक्षार्थ, वाहूपविक्षार्थ, वाहूपविक्षार्थ  
विक्षा संवादा आवकिंविं पववामरणार्थ परिवा वावना संवेजा अंतुत्तरेववार्थ  
संवेजा खेजा संवेजा विवेगा संवेजाये विजुतीये संवेजायो अंगद्वाए  
संवेजायो पदिवतीयो से वे अंगद्वाए वक्षे जगे एसे अंतुत्तरेववद्वार्थ  
संवेजायो पदिवतीयो से वे अंगद्वाए वक्षे जगे एसे अंतुत्तरेववद्वार्थ

अज्ज्ञयणा, पणयालीस उद्देसणकाला, पणयालीस समुद्देसणकाला, सखेजाइ पय-  
सहस्राइ पयगेण, सखेजा अक्खरा, अणंता गमा, अणता पजवा, परिता तसा,  
अणता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आधविजति, पञ्च-  
विजति, परुविजति, दसिजति, निदसिजति, उवदसिजति, से एव आया, एव  
नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपर्वणा आधविजइ, सेत्त पण्हावागरणाइ  
१० ॥ ५५ ॥ से किं त विवागसुय? विवागसुए ण सुकडुकडण कम्माण फल-  
विवागे आधविजइ, तत्थ ण दस दुहविवागा दस सुहविवागा । से कि त दुहविवागा?  
दुहविवागेसु ण दुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मा-  
पियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इङ्गुविसेसा, निरयगमणाइ,  
ससारभवपवचा, दुहपरपराओ, दुकुलपच्चायाईओ, दुल्हवोहियत आधविजइ, सेत्त  
दुहविवागा । से किं तं सुहविवागा? सुहविवारोसु ण सुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ,  
समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया  
इङ्गुविसेसा, भोगपरिच्छागा, पञ्चजाओ, परियागा, सुयपरिग्रहा, तवोवहाणाइ,  
सलेहणाओ, भन्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुहपरपराओ,  
मुकुलपच्चायाईओ, पुणवोहिलाभा, अतकिरियाओ आधविजति । विवागसुयस्स ण  
परिता वायणा, सखेजा अणुओगदारा, सखेजा वेढा, सखेजा सिलोगा, सखिजाओ  
निजुत्तीओ, सखिजाओ सगहणीओ, सखिजाओ पडिवत्तीओ । से ण अगढ्याए  
झक्कारसमे अगे, दो सुयक्खघा, वीस अज्ज्ञयणा, वीस उद्देसणकाला, वीस समुद्दे-  
सणकाला, सखिजाइ पयसहस्राइ पयगेण, सखेजा अक्खरा, अणता गमा, अणता  
पजवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिवद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा  
आधविजति, पञ्चविजति, परुविजति, दसिजति, निदसिजति, उवदसिजति, से  
एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपर्वणा आधविजइ, सेत्त  
विवागसुय ११ ॥ ५६ ॥ से किं त दिङ्गिवाए? दिङ्गिवाए ण सब्बभावपर्वणा  
आधविजइ, से समासओ पञ्चविहे पण्णते, तजहा-परिकम्भे १, सुक्ष्माइ २, पुञ्चगाए  
३, अणुओगे ४, चूलिया ५ । से किं त परिकम्भे? परिकम्भे सत्तविहे पण्णते, तजहा-  
सिद्धसेणियापरिकम्भे १, मणुस्ससेणियापरिकम्भे २, पुढ्दसेणियापरिकम्भे ३, ओगाढ-  
सेणियापरिकम्भे ४, उवसपजणसेणियापरिकम्भे ५, विष्पजहृणसेणियापरिकम्भे ६,  
चुयाचुयसेणियापरिकम्भे ७ । से किं त सिद्धसेणियापरिकम्भे? सिद्धसेणियापरिकम्भे  
चउद्दसविहे पण्णते, तजहा-मारुगापयाइ १ एगढ्यपयाइ २ अट्टपयाइ ३ पाटो-  
आगासपयाइ ४ केउभूयं ५ रासिवद्ध ६ एगगुण ७ दुगुण ८ तिगुण ९ केउभूय १०

पदिम्महो ११ संसारपदिम्महो १२ भद्राकर्ता १३ विद्याकर्ता १४ ऐं मिस-  
रेमियापरिक्लमे १५ से कि तं मधुसुसेमियापरिक्लमे १ मधुसुसेमियापरिक्लमे  
चतुरसमिहे पक्षते तंब्बा-माठ्यासप्तवर्द्ध १ एषात्मिम्मवृद्ध २ अद्भुतात्म ३ पादे-  
लागासप्तवाह ४ केऽभूत् ५ रातिक्लद्व ६ एणगुर्व ७ दुगुर्व ८ रिणुज ९ केऽभूत् १  
पदिम्महो ११ संसारपदिम्महो १२ भद्राकर्ता १३ मधुसुसाकर्ता १४ ऐं  
मधुसुसेमियापरिक्लमे १५ से कि तं पुद्दुसेमियापरिक्लमे १ पुद्दुसेमियापरिक्लमे  
इक्षारसमिहे पक्षते तंब्बा-पाढोभागासप्तवर्द्ध १ केऽभूत् २ रातिक्लद्व ३ एणगुर्व ४  
दुगुर्व ५ रिणुज ६ केऽभूत् ७ पदिम्महो ८ संसारपदिम्महो ९ भद्राकर्ता १  
पुद्दुतात्म ११ ऐं पुद्दुसेमियापरिक्लमे ३ से कि तं बोगाहसेमियापरिक्लमे  
पक्षते १ ओगाहसेमियापरिक्लमे २ इक्षारसमिहे पक्षते तंब्बा-पाढोभागासप्तवर्द्ध १  
केऽभूत् २ रातिक्लद्व ३ एणगुर्व ४ दुगुर्व ५ रिणुज ६ केऽभूत् ७ पदिम्महो ८  
संसारपदिम्महो ९ भद्राकर्ता १ ओगाहसाकर्ता ११ ऐं बोगाहसेमियापरिक्लमे ४  
से कि तं उद्दुसफ्क्षयसेमियापरिक्लमे १ उद्दुसफ्क्षयसेमियापरिक्लमे इक्ष-  
रसमिहे पक्षते तंब्बा-पाढोभागासप्तवर्द्ध १ केऽभूत् २ रातिक्लद्व ३ एणगुर्व ४  
दुगुर्व ५ रिणुज ६ केऽभूत् ७ पदिम्महो ८ संसारपदिम्महो ९ भद्राकर्ता १  
उद्दुसफ्क्षयाकर्ता ११ ऐं उद्दुसफ्क्षयसेमियापरिक्लमे ५ से कि तं विष्वक्ष-  
सेमियापरिक्लमे १ विष्वक्षयसेमियापरिक्लमे इक्षारसमिहे पक्षते तंब्बा-पाढो-  
भागासप्तवाह १ केऽभूत् २ रातिक्लद्व ३ एणगुर्व ४ दुगुर्व ५ रिणुज ६ केऽभूत् ७  
पदिम्महो ८ संसारपदिम्महो ९ भद्राकर्ता १ विष्वक्षयाकर्ता ११ ऐं विष-  
वक्षयसेमियापरिक्लमे ६ से कि तं तुवात्मसेमियापरिक्लमे १ तुवात्मसेमियापरिक्लमे  
इक्षारसमिहे पक्षते तंब्बा-पाढोभागासप्तवाह १ केऽभूत् २ रातिक्लद्व ३ एणगुर्व ४  
दुगुर्व ५ रिणुज ६ केऽभूत् ७ पदिम्महो ८ संसारपदिम्महो ९ भद्राकर्ता १ तुवा-  
त्मसाकर्ता ११ ऐं तुवात्मसेमियापरिक्लमे ७ स अठहन्तवर्द्ध, उद्य वेणी  
याह, ऐत परिक्लमे १ से कि तं मुताई द्युताई वार्षीस पक्षतात्म, तंब्बा-उद्भुत्व १  
परिज्ञापरित्य २ वात्मसिये ३ विज्ञवरित्य ४ अर्थतारे ५ परपरे ६ मात्तात्म ७  
संक्षर्त ८ समिन्द्र ९ आद्यात्म १ सोवत्क्षयाकर्ता ११ भद्राकर्ता १२ बुद्ध १३  
पुद्दुसुद्ध १४ वियाकर्ता १५ एवेभूत् १६ दुवाकर्ता १७ वत्तमात्मवर्द्ध १८ अम-  
मिसहर्द १९ सम्भोगर २० पस्तात्म २१ दुप्पदिम्मह २२ इतेभवर्द्ध वार्षीये  
मुताई चित्तप्लेसनइक्षयि उत्तमयद्युत्तापरित्यातीए, इतेभवाई वार्षीये द्युत्ताप्रव अर्थित-  
रेत्तवाइक्षयि वार्षीयित्ताप्रित्यातीए, इतेभवाई वार्षीये मुताई वित्तवायि

તેરાસિયસુત્તપરિવાદીએ, ઇચ્છેદ્યાં વાવીસ સુત્તાં ચઉક્કનઇયાણિ સસમયસુત્તપરિ-  
વાદીએ, એવામેવ સપુબ્વાવરેણ અદ્વાસીર્દે સુત્તાં ભવંતિત્તિ મક્કાય, સેત્ત સુત્તાં ૨।  
સે કિં ત પુબ્વગાં ૨ પુબ્વગાં ચઉદ્વસવિહે પણતો, તંજહા—ઉપ્પાયપુબ્વ ૧, અગા-  
ણીય ૨, વીરિય ૩, અથિનત્થિપ્પવાય ૪, નાણપ્પવાય ૫, સચ્ચપ્પવાય ૬, આયપ્પવાય  
૭, કમ્મપ્પવાય ૮, પચ્ચક્કાણપ્પવાય (પચ્ચક્કાણ) ૯, વિજાણપ્પવાય ૧૦, અવજ્ઞ  
૧૧, પાણાંઠ ૧૨, કિરિયાવિસાલ ૧૩, લોકવિદુસાર ૧૪। ઉપ્પાયપુબ્વસ્સ ણ દસ  
વત્થુ, ચત્તારિ ચૂલ્લિયાવત્થુ પણતા। અગાણીયપુબ્વસ્સ ણ ચોદ્વસ વત્થુ, દુવાલસ  
ચૂલ્લિયાવત્થુ પણતા। વીરિયપુબ્વસ્સ ણ અદ્વ વત્થુ, અદ્વ ચૂલ્લિયાવત્થુ પણતા।  
અથિનત્થિપ્પવાયપુબ્વસ્સ ણ અદ્વારસ વત્થુ, દસ ચૂલ્લિયાવત્થુ પણતા। નાણપ્પ-  
વાયપુબ્વસ્સ ણ બારસ વત્થુ પણતા। સચ્ચપ્પવાયપુબ્વસ્સ ણ દોળિણ વત્થુ પણતા।  
આયપ્પવાયપુબ્વસ્સ ણ સોલસ વત્થુ પણતા। કમ્મપ્પવાયપુબ્વસ્સ ણ તીસ વત્થુ  
પણતા। પચ્ચક્કાણપુબ્વસ્સ ણ વીસ વત્થુ પણતા। વિજાણપ્પવાયપુબ્વસ્સ ણ પન્ન-  
રસ વત્થુ પણતા। અવજ્ઞપુબ્વસ્સ ણ બારસ વત્થુ પણતા। પાણાંઠપુબ્વસ્સ ણ તેરસ  
વત્થુ પણતા। કિરિયાવિસાલપુબ્વસ્સ ણ તીસ વત્થુ પણતા। લોકવિદુસારપુબ્વસ્સ  
ણ પણવીસ વત્થુ પણતા, ગાદ્વા—દસ ૧ ચોદ્વસ ૨ અદ્વ ૩ ઇદ્વા-, રસેવ ૪ બારસ  
૫ દુવે ૬ ય વત્થૂળિણ। સોલસ ૭ તીસા ૮ વીસા ૯, પન્નરસ ૧૦ અણપ્પવાયમ્મિ  
॥ ૮૯ ॥ બારસ ઇકારસમે, બારસમે તેરસેવ વત્થૂળિણ। તીસા પુણ તેરસમે, ચોદ્વસમે  
પણવીસાઓ ॥ ૯૦ ॥ ચત્તારિ ૧ દુવાલસ ૨ અદ્વ ૩ ચેવ, દસ ૪ ચેવ ચુલ્લ-  
વત્થૂળિણ। આઇલાણ ચઉણ્ણ, સેસાણ ચૂલ્લિયા નાથિ ॥ ૯૧ ॥ સેત્તાં પુબ્વગાં ૩ ॥  
સે કિ ત અણુઓગે ૨ અણુઓગે દુવિહે પણતો, તજહા—મૂલપઢમાણુઓગે, ગાડિ-  
યાણુઓગે ય । સે કિ ત મૂલપઢમાણુઓગે ૨ મૂલપઢમાણુઓગે ણ અરહતાણ ભગ-  
વતાણ પુબ્વમબા, દેવગમણાંદ, આઉ, ચવણાંદ, જમ્મણાણિ, અમિસેયા, રાયવર-  
સિરીઓ, પબ્બજાઓ, તવા ય ઉગા, કેવલનાણુપ્પયાઓ, તિસ્થપવત્તણાણિ ય,  
સીસા, ગણા, ગણહરા, અજપવત્તણીઓ, સઘસ્સ ચઉદ્વિદ્વસ્સ જ ચ પરિમાણ,  
જિણમણપજવાઓહિનાણી, સમ્મતસુયનાણિણો ય, વાઈ, અણુત્તરગાઈ, ય, ઉત્તરવેઉ-  
વ્ખણો ય મુણિણો, જત્તિયા સિદ્ધા, સિદ્ધિપહો જહ દેસિઓ, જચ્ચિર ચ કાલ,  
પાઓવગયા જે જહિં જત્તિયાઈ ભત્તાં અણસણાએ ડેઝતા અતગઢે, મુણિવરુત્તમે,  
તિમિરઓધવિપ્પમુકે, મુંક્ષસુહમણુત્તર ચ પતે, એવમણે ય એવમાઇમાવા મૂલપઢ-  
માણુઓગે કહિયા, સેત્ત મૂલપઢમાણુઓગે । સે કિ ત ગાડિયાણુઓગે ૨ ગાડિયાણુઓગે  
કુલગરગડિયાઓ, તિથ્યયરગડિયાઓ, ચક્કવદ્વિગડિયાઓ, દસારગડિયાઓ, વલ-

वेष्टगडियाओ वास्तुदेवमडियाओ गजघरगडियाओ माणाकुर्मडियाओ छोलम्ब-  
गडियाओ इरिरेसगडियाओ उसपिण्डीगडियाओ लोहपिण्डीगडियाओ लिंग-  
टरगडियाओ अमरलरपिरियनिजपश्चामयविशिष्टपरिवहनेमु पृष्ठमाहियाओ यदि  
याओ आपमिजंति पत्तमिजंति सेत्त वंडियाकुम्होगे सेत्त ब्लुओगे ४ । से ही  
त चूडियाओ । चूम्हियाओ-भाइजाल घटज्है पुम्हार्ण चूम्हिया ऐस्वर्व पुम्हार्ण  
थचूम्हियार्ण, सेत्त चूम्हियाओ ५ । रिहियायस्स र्ण परित्ता बायजा एक्सेजा र्ण  
आगदार्ण संकेजा बेजा संकेजा किम्बेया संकेजाओ पक्कितामो संकेजाओ  
निकुद्दीमो संकेजाओ संगाहार्णीओ । से र्ण अंगदुजाए बारसमे अगे एक द्वय  
क्षुद्रे चोहपुम्हार्ण, संकेजा क्षुद्र, संकेजा चूम्हत्त्व, संकेजा पामुदा र्णक्षुद्र  
पाहुडपाहुडा संकेजाओ पामुदियाओ संकेजास्मे पाहुडपाहुडियाओ संकेजार्ण  
फ्वसहस्तर्ण पक्कोर्ण संकेजा अक्षरा अर्णता रामा अन्ता पक्का पैरेण  
तसा अर्णता बाबरा दासयक्षमनिक्षमाविभद्धा विण्यम्भाता भावा आरक्षियंति  
पक्किजंति पक्किजंति वंडिजंति निवरिजंति दबदरिजंति । से एवं अन्य  
एवं नाम्या एवं विष्ण्याया एवं चरणक्षरणमस्त्वया आरक्षियै । सेर्त रिहिय  
१२ ॥ ५७ ॥ इतेहर्वसि तुवास्त्वंगे यविपिहो अर्णता भावा अर्णता अव्याप्त  
अर्णता हेह अगदा आहेह अर्णता क्षरणा अन्ता अन्तरामा अर्णता औरा  
अर्णता अवीचा अर्णता मविदिया अर्णता अम्भादियिता अर्णता तिष्य  
अर्णता लविया पक्कता—माममम्भा हेठमहेह अरणमस्त्वंगे चेव । योशधीरा  
मविय—ममदिया तिष्य असिद्धा म ॥ ९९ ॥ इतेहर्व तुवास्त्वंगे यविपिहर्व त्वं  
अहे अर्णता यीका आचाए विराहिता चावरर्त संसारक्षतार अनुपरिवहित । इतेह  
तुवास्त्वंगे गविपिहो पक्कपक्कत्वाके परित्ता यीका आचाए विराहित चावर्त  
संसारक्षतार अनुपरिवहित । इतेहर्व तुवास्त्वंगे यविपिहर्व अचाचाए काळे अम्भा  
यीका आचाए विराहिता चावरर्त संसारक्षतार अनुपरिवहित । इतेहर्व  
तुवास्त्वंगे गविपिहां तीए अहे अर्णता यीका आचाए आरहिता चावरर्त संसार  
क्षतार यीक्षत्वंगु । इतेहर्व तुवास्त्वंगे गविपिहां पक्कपक्कत्वाके परित्ता यीक्ष  
आचाए आचाहिता आचारर्त संसारक्षतार यीक्षन्ति । इतेहर्व तुवास्त्वंगे यविपिहर्व  
अणामाए अहे अर्णता यीका आचाए आरहिता आचारर्त संसारक्षतार यीक्षर-  
स्तेति । इतेहर्व तुवास्त्वंगे गविपिहां म क्ष्याए नाती न क्ष्याद न मर्द २  
क्ष्याए न मविस्तार, भुवि च भवह प मविस्तार य पुवे निवेद, सात्तर, अक्षय  
अम्भाए, अवहित, निवे । से वाहामामए वंडित्यक्षय न क्ष्याए नाती न द्वार

एक खण्ड तिण मायलो, भाग संख्याता जाण ।

एक भाग तिण मायलो, तेहनो सुणो प्रमाण ॥१७॥

चार ज्ञान चबदे पूर्व, अङ्ग उपङ्ग संव जाण ।

मावे भागजे एक में, धन भगवन्त रो ज्ञान ॥१८॥

सिद्ध अलोक काल ज्ञान ते, जीव पुद्गल वणस्सई काय ।

निगोदिया जीवं अनन्ता कह्या, ठाणे आठमें माय ॥१९॥

आकाश वायु दग पृथ्वी तस, स्थावर जीवा जीव होय ।

अजीवा जीव परद्विया, जीवा कम्म पद्विया सोय ॥२०॥

अजीवा जीव संगहिया जीवा कम्म संगहिया तास ।

आठ वोल यित लोक विच, ठाणायांग इम भास ॥२१॥

ठाणायांग सूत्र मध्ये, ठाणे पांचवें मांय ।

ऐले उद्देश्ये चालिया, ते सुणजो चित लाय ॥२२॥

पांच महाव्रत साधुना, अणुव्रत पांचज होय ।

पांच वरण ते चालिया, इण अर्थे उद्यम करे छे लोय ॥२३॥

शब्द रूप रस गंध स्पर्श, ए राखे जतन कराय ।

मूर्ढा गिरध तने विषे, एक चित्त वर्ण थाय ॥२४॥

पांच थानके जीवडो, पामें मरणज घात ।

पृथग पतंग भ्रमर मञ्च्छ, कुंजर केरी जात ॥२५॥

पाण विकलेन्द्री भूत वनस्पति, जीव पांचेन्द्री जात ।

छ्यार शावर सत्वज कह्या, भगवन्ते साक्षात ॥२६॥

पांच वोल जाएयों विना, अहेन अशुभ अपच्चखाय ।

अश्रेय आगल जाणिये, रुले चउगति माय ॥२७॥

शब्दादिक जाएयों थकां, सुलटा चारों वोल ।

करे परत संसार ने, पामें मुगति अमोल ॥२८॥

नत्यि, न क्याइ न भविस्सइ, भुवि च,  
 सासए, अकखए, अब्वए, अब्डिए, निचे  
 नासी, न क्याइ नत्यि, न क्याइ न भवि  
 धुवे, नियए, सासए, अकखए, अब्वए, अ  
 पण्ठते, तजहा—दब्बओ, खित्तओ, काल  
 उवउत्ते सब्बदब्बाइ जाणइ पासइ । रि  
 जाणइ पासइ । कालओ ण सुयनाणी उव  
 सुयनाणी उवउत्ते सब्बे भावे जाणइ पा  
 खलु सपजवसिय च । गमिय अगपविद्व  
 आगमसत्थगहण, जं बुद्धिगुणेहिं अद्वीती  
 सारया धीरा ॥ ९४ ॥ सुस्सूसइ १  
 यावि ५ । तत्तो अपोहए ६ वा, धाने  
 हुकार वा, वाढकार पडिपुच्छ वीमसा



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## तत्थ णं अणुओगदारसुत्तं

नाण पचविह पण्णत्त । तजहा—आभिणिवोहियनाण १ सुयनाण २ ओहिनाण ३  
मणपञ्जवनाण ४ केवलनाण ५ ॥ १ ॥ तत्थ चत्तारि नाणाइ ठप्पाइ ठवणिजाइ,  
णो उहिसिजति,<sup>१</sup> णो समुहिसिजति,<sup>२</sup> णो अणुण्णविजति । सुयनाणस्स उहेसो,  
समुहेसो, अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ ॥ २ ॥ जइ सुयनाणस्स उहेसो, समुहेसो,  
अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ, किं अगपविट्टस्स उहेसो, समुहेसो, अणुण्णा,  
अणुओगो य पवत्तइ<sup>२</sup> किं अगवाहिरस्स उहेसो, समुहेसो, अणुण्णा, अणुओगो य  
पवत्तइ<sup>२</sup> अगपविट्टस्स वि उहेसो जाव पवत्तइ, अणगपविट्टस्स वि उहेसो जाव  
पवत्तइ । इम पुण पट्टवण पहुच्च अणगपविट्टस्से अणुओगो ॥ ३ ॥ जइ अँणंगप-  
विट्टस्स अणुओगो, कि कालियस्स अणुओगो<sup>२</sup> उक्कालियस्स अणुओगो<sup>२</sup> कालियस्स  
वि अणुओगो, उक्कालियस्स वि अणुओगो । इम पुण पट्टवण पहुच्च उक्कालियस्स  
अणुओगो ॥ ४ ॥ जइ उक्कालियस्स अणुओगो, कि आवस्सगस्स अणुओगो<sup>२</sup>  
आवस्सगवझरित्तस्स अणुओगो<sup>२</sup> आवस्सगस्स वि अणुओगो, आवस्सगवझरित्तस्स  
वि अणुओगो । इम पुण पट्टवण पहुच्च आवस्सगस्स अणुओगो ॥ ५ ॥ जइ  
आवस्सगस्स अणुओगो, कि<sup>६</sup> ण अग<sup>२</sup> अगाइ<sup>२</sup> सुयखधो<sup>२</sup> सुयखधा<sup>२</sup> अज्जयण<sup>२</sup>  
अज्जयणाइ<sup>२</sup> उहेसो<sup>२</sup> उहेसा<sup>२</sup> आवस्तैयं ण नो अग, नो अगाइ, सुयखधो, नो  
सुयखधा, नो अज्जयण, अज्जयणाइ, नो उहेसो, नो उहेसा ॥ ६ ॥ तम्हा  
आवस्सय निक्खविस्सामि, सुय निक्खविस्सामि, खधं निक्खविस्सामि, अज्जयण  
निक्खविस्सामि । गाहा—जत्थ य ज जाणेजा, निक्खेव निक्खवे निरवसेस ।  
जत्थ वि य न जाणेजा, चउक्कग निक्खवे तत्थ ॥ १ ॥ ७ ॥ से कि त  
आवस्सय<sup>२</sup> आवस्सय चउच्चिह पण्णत्त । तजहा—नामावस्सय १ ठवणावस्सय २  
द्वच्चावस्सय ३ भावावस्सय ४ ॥ ८ ॥ से कि त नामावस्सय<sup>२</sup> नामावस्सय—

पार्द्धतरं-१ उहिसिति । २ समुहिसिति । ३ अगवाहिरस्स वि । ४ अगवाहि-  
रस्स । ५ अगवाहिरस्स । ६ आवस्सय कि । ७ आवस्सयस्स ।

अस्स जैवस्तु वा अवैवस्तु वा जीवाज वा अजीवाज वा तदुमत्तर वा तदुमयाज वा आवस्तुए' ति भास्मं कल्प। सेतु नामावस्तुर्ये ॥ ९ ॥ से कि है ठबावस्तुर्ये । ठबावस्तुर्ये—जैव जैव फट्टकमे वा पोत्पक्ष्मे वा वित्तकमे वा विष्पक्ष्मे वा गंधिमे वा चिदिमे वा पूरिमे वा संवाहमे वा अक्षे वा वरमे वा एगो वा अजेगो वा सम्भावठबावा वा असम्भावठबावा वा 'आवस्तुए' ति ठबावा ठविजाइ । सेता ठबावस्तुर्ये ॥ १ ॥ भास्मदृश्यामे को पहचिसेतो । वास्म भावक्षीर्य ठबावा इतारिवा वा होत्वा भावक्षीर्या वा ॥ ११ ॥ से कि है दम्बावस्तुर्ये । दम्बावस्तुर्ये तुविर्हं पञ्चत । तबहा—भास्ममो व १ नोबावस्तुर्ये व २ ॥ १२ ॥ से कि है वास्ममो दम्बावस्तुर्ये । भास्ममो दम्बावस्तुर्ये—भास्म वै आवस्तुए' ति एवं शिक्षिये ठिवे खिये मिये परिजिवे नामसमे खेलमे भावीपक्ष्म, अवैवपक्ष्म अवैवपक्ष्म अवैवपक्ष्म अवैवपक्ष्म अवैवपक्ष्म पहिपुष्ट्ये पहिपुष्ट्ये एवं फेलुविष्पमुद्दं गुणावयोवस्थये एवं तत्त्व वावस्तु, पुच्छमाए, परिवहनाए, वस्महत्ताए, जो असुप्येहाए । उम्हा ॥ 'अनुक्तेमो' दम्बमिति हु । मेवामस्तु ए एगो अनुकृतये भास्ममो एवं दम्बावस्तुर्ये दोषिय अनुकृतया भास्ममो दोषिय दम्बावस्तुर्याई, दोषिय अनुकृतया भास्ममो दिग्भिय दम्बावस्तुर्याई, एवं भावहया अनुकृतया भास्ममो तापेन्द्रावै दम्बावस्तुर्याई । एहमेव वषहारस्तु ति । संपूर्णस्तु ए एगो वा अजेगो वा अनुकृतये वा अनुकृतया वा भास्ममो दम्बावस्तुर्ये दम्बावस्तुर्यामि वा से एगे दम्बावस्तुए । उम्हुमस्तु एगो अनुकृतयो भास्ममो एवं दम्बावस्तुर्ये पुकुर्ते नेच्छद । तिर्हं घरपार्व वावहए अनुकृतये अस्मन् । उम्हा ॥ वह कावहए, अनुकृतत न महर, वह अनुकृतये, वावहए न महर, उम्हा जतिय भास्ममो दम्बावस्तुर्ये । सेतु भास्ममो दम्बावस्तुर्ये ॥ १३—१४ ॥ से कि है तु नोबास्ममो दम्बावस्तुर्ये । नोबास्ममो दम्बावस्तुर्ये तिर्हं पृथग्ते । तंवहा—जायवस्तुरिदम्बावस्तुर्य १ भविक्षयरिदम्बावस्तुर्य २ वाववस्तुर्य रभविक्षयरिदम्बावस्तुर्ये दम्बावस्तुर्ये ३ ॥ १५ ॥ से कि है जायवस्तुरिदम्बावस्तुर्ये वै जायवस्तुरिदम्बावस्तुर्ये ३ जायवस्तुरिदम्बावस्तुर्ये—'जावस्तुए' ति पवत्पादिग्राजावस्तुर्य वै चौर्द्धे वस्त्रयशुद्ध्यवाविपक्षतदेवै जीविष्पवहै विज्ञायये वा सुवारायये वा निर्दीक्षियस्त्र्य वा विद्विस्त्रयतस्मये वा पापिता वै कोई भवेद्वय(वय)जा—जहो । वै इवर्ते तरीके मुस्साएवं विष्पविद्वेष मावैव भावस्तुए' ति पवं वावविये वस्त्रिवं वस्त्रिये वस्त्रिये निर्दीक्षिये उचरंतिवं । जहा जो विद्वनो ॥ अवै महुर्वभे आही वै वै पवाये आही । ये तु जायवस्तुरिदम्बावस्तुर्य ॥ १६ ॥ से कि है भविक्षयरिदम्बावस्तुर्ये ३

मवियमर्गीरद्वावस्तय—जे जीवे जोणिजमणनिमत्ते, इमेण चेव आत्तएं सरीर-  
समुन्नयाएण जिणोवदिट्रेण भावेण ‘आवस्तए’ ति पत्र सेयकाले मिकिवस्तड न ताव  
सिम्मट । जहा को दिट्टुंनो ? अय महुकुमे भविस्तड, अय घयकुमे भविस्तट । सेन्न  
भवियमर्गीरद्वावस्तय ॥ १७ ॥ से कि तं जाणयमरीरभवियमरीरवडरित्त द्वाव-  
स्तय ? जाणयमरीरभवियमरीरवडरित्त द्वावस्तय तिविह पण्णत्त । तजहा—लोडय १  
कुप्पावयणिय २ लोडत्तरिय ३ ॥ १८ ॥ से कि त लोडयं द्वावस्तय ? लोडय  
द्वावस्तय—जे डमे राईनरनल्लवरमाउंवियकोहुवियडव्हमसेट्रिमेणावडमत्थवाहपमि-  
दओ कळ पाटप्पमायाए रयणीए मुविमल्लाए फुहुप्पलकमल्कोमलुमिलियम्मि अहा-  
पट्टुं पमाए रत्तासोगपगास्तकिमुयसुयमुहुगुज्जरागमरिसे कमलागरनलिणिसद्वोहए  
उटिशम्मि मरं यहम्मरमिम्मिम्मि दिणायरे तेयसा जलते मुहधोयणदत्पक्षवालण-  
तेंलफणिहमिदत्थयहगियालियथद्वागव्हूपुप्फमल्लगवत्तोलवत्थाडयाड द्वावस्तयाड  
रर्ति, तथो पन्छा रायकुलं वा डेवकुलं वा आरामं वा उज्जाण वा मभ वा पव  
वा गन्धंति । सेत्त लोडय द्वावस्तय ॥ १९ ॥ से कि त कुप्पावयणिय द्वाव-  
स्तय ? कुप्पावयणिय द्वावस्तय—जे डमे चरगच्चीरिगच्चमखडियमिक्खौडपहुरंग-  
गोयमगोच्चवडयगिहिवम्मवम्मचिंतगअविस्त्रविस्त्रुक्तुमावगैपमिडओ पासडत्था कळ  
पाटप्पमायाए रयणीए जाव तेयगा जलते, इदस्म वा, खदस्म वा, रदस्म वा,  
मिप्पम्य वा, धंगमणस्म वा, डेवस्म वा, नागस्म वा, जवखस्म वा, भूयस्स वा,  
मुगुदस्म वा, अञ्जाए वा, दुगगाए वा, कोट्टकिरियाए वा, उवलेवणसमज्जणआवरि-  
नणव्हूपुप्फगधमष्टाडयाड द्वावस्तयाड कर्ति । मेत्त कुप्पावयणिय द्वावस्तयं  
॥ २० ॥ से कि त लोगुत्तरिय द्वावस्तय ? लोगुत्तरियं द्वावस्तय—जे इमे समण-  
गुणमुझजोगी, च्छायनिरणुकपा, हया डच उद्धामा, गया डच निरकुसा, घट्टा, मट्टा,  
तुण्णोट्टा, पट्टुरपट्टपाउरणा, जिणाणमणाणाए मन्छट्ट विहरिल्लण उभओ—काल आव-  
स्तयम्म उपट्टति । सेत्त लोगुत्तरिय द्वावस्तय । सेत्त जाणयसरीरभवियसरीरवडरित्त  
द्वावस्तय । सेत्त नोआगमओ द्वावस्तय । सेत्त द्वावस्तय ॥ २१ ॥ से कि  
न भावावस्तय ? भावावस्तय दुविह पण्णत्त । तजहा—आगमओ य १ नोआगमओ  
य २ ॥ २२ ॥ से कि त आगमओ भावावस्तय ? आगमओ भावावस्तय जाणए  
उवउन्ने । मेत्त आगमओ भावावस्तय ॥ २३ ॥ से कि त नोआगमओ भावावस्तय ?  
नोआगमओ भावावस्तय तिविहं पण्णत्त । तजहा—लोडय १ कुप्पावयणिय २ लोगु-

१ भरत्तमए लेण कळवया भावया पच्छा वमणा जाया तेण वमणा वुहुसाव-  
गति त्रुप्यति । २ डेवीणाममिम ।

तरिवं ३ ॥ २४ ॥ से कि तं अद्वयं मात्रावस्तुर्थं । अद्वयं मात्रावस्तुर्थ—पुण्ड्रहे मारहं, अमरहे रामायणं । सेर्तं अद्वयं मात्रावस्तुर्थं ॥ २५ ॥ से कि तं कुप्यावदमिति मात्रावस्तुर्थं । कुप्यावदमिति मात्रावस्तुर्थ—जे इसे चराम्भीरिग चाल पासेहरा इवेदकि-होमज्योमुल्लासुकारमात्रायाहं मात्रावस्तुर्थं कहेति । सेर्तं कुप्यावदमिति मात्रावस्तुर्थं ॥ २६ ॥ से कि तं स्वेषुतरिवं मात्रावस्तुर्थं । स्वेषुतरिवं मात्रावस्तुर्थ—जे (व)र्तं इसे-समने वा समषीवा साक्षो वा साक्षिया वा तथिते तम्मने लोके उद्घाटयितु, ततिभ्युजस्वधाये तद्विद्वक्त्वे<sup>१</sup> उद्घापिवद्वर्ते तम्भावचामाविए, अज्ञत्वं कल्पह मयं वक्त्रेमाने समबो—असं आवस्तुर्थं कहेन्निति]इ । सेर्तं स्वेषुतरिवं मात्रावस्तुर्थ । सेर्तं भोजायमानो मात्रावस्तुर्थ । सेर्तं मात्रावस्तुर्थ ॥ २७ ॥ तस्य वर्तं इसे एष्टिवा नाणायोसा पाणार्दणा शास्त्रेज्ञा मतति तंबद्वा—गाहा—आषस्तुर्थं अवस्तुर्थ-मिति तुलनिमीहो किंतीही य । अज्ञायन्नाम्भौमो नीत्ये आराहत्वा र्ममो ॥ १८ ॥ समवेष्य सावएव य अवस्तु अप्यव्यव्यव्य हक्क अमहा । अतो ज्ञानोनिसत्त्वं व तम्हा आवस्तुर्थं भाम ॥ २८ ॥ सेर्तं मात्रावस्तुर्थं प २८ ॥ से कि तं द्वयं ॥ द्वयं अठित्वा पक्ष्यते । तंबद्वा—नामद्वय । ठवजामुवं २ इम्मुवं ३ माम्मुवं ४ प २९ ॥ से कि तं नामद्वयं ॥ ३ ॥ से कि तं अप्याद्वयं ॥ अवजामुवं—वर्तं व कहुकहमे वा चाव ठवजा ठवित्वा । सेर्तं अवजामुवं ॥ ३१ ॥ नामद्वयानं क्वे प्रविसेदो । मामं आवस्तुर्थे अवजा इतरिया वा होम्या आवहिया वा ॥ ३२ ॥ से कि तं द्वयद्वयं ॥ द्वयद्वयं तुर्विद्य पक्ष्यते । तंबद्वा—आयमानो व १ भो आगमानो य २ प ३३ ॥ से कि तं नामद्वये द्वयद्वयं ॥ आगमानो द्वयद्वयं—द्वस्य वर्तं द्वयं ति पर्य तिनिद्वयं तिवं विवेचन जो व्युप्येहाए । कमहा ॥ ज्ञानमायो द्वयमिति कु । देवमस्तु वर्तं एगो अनुकारे आगमानो एमं द्वयद्वयं चाव तिन्विद्वयं चावए न मत्तु, तम्हा परिष्य आगमानो द्वयद्वयं । सेर्तं आगमानो द्वयद्वयं ॥ ३४ ॥ से कि तं नोकायमानो द्वयद्वयं ॥ नोकायमानो द्वयद्वयं तिनिहं पक्ष्यते । तंबद्वा—आवद्वयीरवजामुवं ॥ भविकसुरीरद्वम्मुवं २ वानमसरीरद्वमित्यसरीरद्वरित्य द्वम्मुवं ३ ॥ ३५ ॥ से कि तं जागरपरीरद्वम्मुवं ॥ वानमसरीरद्वम्मुव— द्वयं ति पवत्वाहिगारजावस्तु वर्तं द्वयद्वयं वर्तमयकुम्भवान्विवक्तादेहं जाव पाहिता वर्तं कोही भवेत्या—जहो । वर्तं इमेन द्वीरस्मुस्तुर्थं विषविद्वेष्य मावैर्वं द्वयं ति पर्य आवस्तुर्थे जाव वर्तं

१ विषववक्तव्यवस्माकुरागरत्वमने ।

घयकुमे आसी । सेत जाणयसरीरदब्बसुयं ॥ ३६ ॥ से किं त भवियसरीरदब्बसुय<sup>१</sup> भवियसरीरदब्बसुय—जे जीवे जोगिजम्मणनिक्खते जाव जिणोवदिट्ठेण भावेण ‘सुय’ ति पय सेयकाले सिक्खस्सइ जाव अय घयकुमे भाविस्सइ । सेत्तं भवियसरीरदब्बसुयं ॥ ३७ ॥ से किं त जाणयसरीरभवियसरीरवइरित्त दब्बसुय<sup>२</sup> जाणयसरीरभविय-सरीरवइरित्त दब्बसुय पत्तयपोत्थयलिहियं । अहवा जाणयसरीरभवियसरीरवइरित्त दब्बसुय पचविह पण्णत्तं । तजहा—अडय १ वोङ्डय २ कीडयं ३ वालय ४ वागय ५ । से किं त अडय<sup>२</sup> अडयं हूंसगब्माइ । से किं त वोङ्डय<sup>२</sup> वोङ्डयं कप्पासमाइ । से किं त कीडय<sup>२</sup> कीडय पचविह पण्णत्तं । तजहा—पट्टे १ मलए २ अस्तुए ३ चीणसुए ४ किमि-रागे ५ । से किं त वालय<sup>२</sup> वालय पचविहं पण्णत्तं । तजहा—उण्णिए १ उट्टिए २ मिय-लोमिए ३ कोतवे ४ किट्टिसे ५ । से किं त वागय<sup>२</sup> वागयं सैणमाइ । सेत्तं जाणयस-रीरभवियसरीरवइरित्त दब्बसुय । सेत्तं नोआगमओ दब्बसुय । सेत्तं दब्बसुय ॥ ३८ ॥ से किं त भावसुय<sup>२</sup> भावसुय दुविह पण्णत्तं । तजहा—आगमओ य १ नोआगमओ य २ ॥ ३९ ॥ से किं त आगमओ भावसुय<sup>२</sup> आगमओ भावसुय जाणए उवउत्ते । सेत्तं आगमओ भावसुय ॥ ४० ॥ से किं त नोआगमओ भावसुय<sup>२</sup> नोआगमओ भावसुयं दुविह पण्णत्तं । तजहा—लोइय १ लोगुत्तरिय च २ ॥ ४१ ॥ से किं त लोइयं नोआगमओ भावसुय<sup>२</sup> लोइय नोआगमओ भावसुय—ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छ-दिट्ठीहिं सच्छद्वुद्धिमझिगपिय तजहा—भारह, रामायण, भीमासुरक्ष, कोडिल्लयं, घोडयमुहं, मगडभद्धियाउ, कप्पासियं, णागसुहुम, कणगसत्तरी, वेसिय, वडसेसियं, बुद्दसासण, काविल, लोगायत, सट्टियंत, माढरपुराणवागरणनाडगाइ, अहवा वाव-त्तरिक्लाओ, चत्तरि वेया सगोवंगा । सेत्त लोइय नोआगमओ भावसुय ॥ ४२ ॥ से किं त लोउत्तरिय नोआगमओ भावसुय<sup>२</sup> लोउत्तरियं नोआगमओ भावसुय—ज इम अरिहतेहिं भगवंतेहिं, उप्पण्णणाणदसणवरोहिं, तीयपञ्चुप्पण्णमणागयजाणएहिं, सब्बण्णौहिं सच्छदरिसीहिं, तिलुक्कवहियैमहियपूङ्गएहिं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधरोहिं, पणीय दुवालसग गणिपिडग । तजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपण्णत्ती ५ णायाधम्मक्हाओ ६ उवाभगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्त-रोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ य १२ । सेत्त लोउत्तरिय नोआगमओ भावसुय । सेत्त नोआगमओ भावसुय । सेत्त भावसुय ॥ ४३ ॥ तस्स ण इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावजणा नामधेजा भवंति, तजहा—गाहा—सुयसुत्तगथसिद्धतसासणे, आणवयण उवएसे । पञ्चवण आगमे वि य, एगट्ठा

१ अलसिमाइ । २ ‘निरिक्षय’ ।

पञ्चांशुतो ॥ १ ॥ सेष्ठ सुर्य ॥ ४४ ॥ से कि त रथि । जापे अवधिहे पञ्चतः ।  
 तंजहा—नामदधि । ठवारार्थभे १ दम्भयभे । भागस्थभि ४ ॥ ४५ ॥ नामद्वालाभे  
 पुष्टमधियसुखसेण मायियस्वाम्भो ॥ ४६ ॥ से कि त दम्भकभे । दम्भकभि तुरीहे  
 पञ्चतो । तंजहा—भागमभो य । नोबागमम्भो य ३ । से कि त भागमजो हप्तवरे ।  
 भागमभो दम्भयहे—जस्त ने रथि ॥ ति पर्य रिकियम जाव सेर्त मवियसुरीरम्भवे  
 नवर खंधाभिस्मम्भो । से कि त जालवसुरीरमधियस्मरीरकइरिते दम्भयहि । जालम-  
 सरीरभियसुरीरमधियस्मरीरकइरिते दम्भयहि । जालम-  
 इकट्ठभि गदयहि किवरदयहि किपुरिसुखभि महोरगद्वेषे गंधम्भवेषे छलम्भवे ।  
 सेर्त सविते दम्भयहि ॥ ४८ ॥ से कि त अविते दम्भयहि । अविते दम्भवे  
 अनेगविहे पञ्चतो । तंजहा—तुपएसिए, तिपएसिए जाव दस्तपएसिए, संकिळपएसिए,  
 नर्दियजपएसिए, अर्वतपएसिए । सेर्त अविते दम्भयहि ॥ ४९ ॥ से कि त मीसर  
 दम्भयहि । मीसए दम्भवेषे अनेगविहे पञ्चतो । तंजहा—सेपाए अविगमे युवि देवर  
 मविकमे लभे सेर्त परिष्ठमे लभे । सेर्त मीसए दम्भवेषे ॥ ५० ॥ अहा जन  
 यसरीरमधियसुरीरमधिते दम्भवेषे विविहे पञ्चतो । तंजहा—कहिकर्थि । अहिक-  
 र्थि २ अवेगदविमयहि ३ ॥ ५१ ॥ से कि त कहिकर्थहि । कहिकर्थहि—से रेव  
 दम्भवेषे गदयहि जाव रुदमवधि । सेर्त कहिकर्थहि ४ ॥ ५२ ॥ से कि त अहिकर्थहि  
 अवधियस्तुर्थहि—से चेव तुपएसियाह खपे जाव अर्वतपएसिए खपे । सेर्त अहिकर्थहि  
 ॥ ५३ ॥ से कि त अयेगदविमवधि । अयेगदविमवधहि—तस्त चेव रेसे अवधिए दस्त  
 चेव रेसे दम्भविए । सेर्त अयेगदविमवधहि । सेर्त जालवसुरीरमधियस्मरीरकइरिते दम्भ  
 लंबे । सेर्त नोबागमम्भो दम्भवेषे । सेर्त दम्भयहि ॥ ५४ ॥ से कि त भाववेषे ।  
 भाववेषे तुरीहे पञ्चतो । तंजहा—भागमभो य । नोबागमम्भो य २ ॥ ५५ ॥ से  
 कि त भागमभो भाववेषे । भागमभो भाववेषे जावए उकठतो । सेर्त भागमभो  
 भाववेषे ॥ ५६ ॥ से कि त नोबागमभो भाववेषे । नोबागमम्भो भाववेषे भाववेषे—  
 एपुर्यि चेव सामारवमाइयार्थ छर्व असहवलाभे सुदवसुमिष्टमायेवे भावस्तुर्थ  
 द्वयवधि ‘भाववेषे’ ति छम्भह । सेर्त भोबागमम्भो भाववेषे । सेर्त भाववेषे ॥ ५७ ॥  
 तस्त वे इसे एगद्विया जाकापोहा जालवस्तुव्या नामदेवा मर्ति तंजहा—गाहा—  
 गाज काए व विक्षिए, युवि कमो लेव राही व । मुंजे मिडे लियरे चेवए भावव-  
 लम्भहे ॥ १ ॥ सेर्त लभेषे ॥ ५८ ॥ जावस्सगस्त वे इसे अस्ताहिवाए मर्ति  
 तंजहा—गाहा—सावजम्भोगविरहौ, उकित्तुव उकवव्यो य पवित्रातौ । उकित्तुव

નિંદણા<sup>૪</sup>, વણતિગિચ્છુ ગુણધારણા ચેવ<sup>૫</sup> ॥ ૧ ॥ ૫૯ ॥ ગાહા—આવસ્સયસ્તસ એસો,  
પિંડલ્યો વળણાઓ સમાસેણ । એતો એકેક પુણ, અજ્ઞાયણ કિચ્છિસ્તસામિ ॥ ૧ ॥  
તજહા—સામાઇયં ૧ ચઉવીસથ્યાઓ ૨ વદણયં ૩ પઢિકમણ ૪ કાઉસ્તસગો ૫,  
પચ્ચક્વાણ ૬ । તત્થ પઠમં અજ્ઞાયણ સામાઇયં । તસ્સ ણં ઇમે ચત્તારિ  
અણુઓગદારા ભવતિ, તંજહા—ઉવક્તમે ૧ નિકલેવે ૨ અણુગમે ૩ નએ ૪ ॥ ૬૦ ॥  
સે કિ તં ઉવક્તમે ૨ ઉવક્તમે છબ્બિહે પણણતે । તંજહા—ણામોવક્તમે ૧ ઠવણોવક્તમે ૨  
દબ્બોવક્તમે ૩ ખેતોવક્તમે ૪ કાલોવક્તમે ૫ ભાવોવક્તમે ૬ । ણામઠવણાઓ  
ગયાઓ । સે કિ ત દબ્બોવક્તમે ૨ દબ્બોવક્તમે દુબ્બિહે પણણતે । તંજહા—અાગમાઓ ય ૧  
નોઆગમાઓ ય ૨ જાવ સેત્ત ભવિયસરીરદબ્બોવક્તમે । સે કિ ત જાણગસરીર-  
ભવિયસરીરવિરિત્તે દબ્બોવક્તમે ૨ જાણગસરીરભવિયસરીરવિરિત્તે દબ્બોવક્તમે તિવિહે  
પણણતે । તંજહા—સચિત્તે ૧ અચિત્તે ૨ મીસએ ૩ ॥ ૬૧ ॥ સે કિ ત સચિત્તે દબ્બો-  
વક્તમે ૨ સચિત્તે દબ્બોવક્તમે તિવિહે પણણતે । તંજહા—દુપ(એ)યાણ ૧ ચઉપ્પયાણ ૨  
અપ્પયાણ ૩ । એકેકે પુણ દુબ્બિહે પણણતે । તંજહા—પરિકમે ય ૧ વત્યુવિણાસે ય ૨  
॥ ૬૨ ॥ સે કિ તં દુપ્પયાણ ઉવક્તમે ૨ દુપ્પયાણ—નડાણ, નદ્રાણ, જલ્લાણ,  
મલ્લાણ, સુદ્ધિયાણ, વેલવગાણ, કહ્યગાણ, પવગાણ, લાસગાણ, આઇક્સ્વગાણં, લંખાણ, મખાણ,  
તૂણિલાણં, તુવીણિયાણ, કા(વડિ)વોયાણ, માગહાણ । સેત્ત દુપ્પયાણ ઉવક્તમે ।  
॥ ૬૩ ॥ સે કિ ત ચઉપ્પયાણ ઉવક્તમે ૨ ચઉપ્પયાણ—આસાણ, હૃથીણ, ઇચ્છાઇ ।  
સેત્ત ચઉપ્પયાણ ઉવક્તમે ॥ ૬૪ ॥ સે કિ ત અપ્પયાણ ઉવક્તમે ૨ અપ્પયાણ—અવાણ,  
અવાડગાણ, ઇચ્છાઇ । સેત્ત અપથોવક્તમે । સેત્ત સચિત્તદબ્બોવક્તમે ॥ ૬૫ ॥ સે કિ  
તં અચિત્તદબ્બોવક્તમે ૨ અચિત્તદબ્બોવક્તમે— ખડાઈણ, ગુડાઈણ, મચ્છંઢીણ । સેત્ત  
અચિત્તદબ્બોવક્તમે ॥ ૬૬ ॥ સે કિ ત મીસએ દબ્બોવક્તમે ૨ મીસએ દબ્બોવક્તમે—  
સે ચેત્ત થાસગાયસગાઇમડિએ આસાઇ । સેત્ત મીસએ દબ્બોવક્તમે । સેત્ત જાણય-  
સરીરભવિયસરીરવિરિત્તે દબ્બોવક્તમે । સેત્ત નોઆગમાઓ દબ્બોવક્તમે । સેત્ત દબ્બો-  
વક્તમે ॥ ૬૭ ॥ સે કિ ત ખેતોવક્તમે ૨ ખેતોવક્તમે—જ ણ હલકુલિયાઈહિં ખેતોઝ  
ઉવક્તમિજાતિ । સેત્ત ખેતોવક્તમે ॥ ૬૮ ॥ સે કિ ત કાલોવક્તમે ૨ કાલોવક્તમે—  
જ ણ નાલિયાઈહિં કાલસ્સોવક્તમણ કીરદ । સેત્ત કાલોવક્તમે ॥ ૬૯ ॥ સે કિ ત  
ભાવોવક્તમે ૨ ભાવોવક્તમે દુબ્બિહે પણણતે । તંજહા—અાગમાઓ ય ૧ નોઆગમાઓ ય ૨ ।  
તત્થ આગમાઓ જાણએ ઉવાત્તે । સે કિ તં નોઆગમાઓ ભાવોવક્તમે ૨ નોઆગમાઓ  
ભાવોવક્તમે દુબ્બિહે પણણતે । તંજહા—પસત્થે ય ૧ અપસત્થે ય ૨ । સે કિ ત અપસત્થે  
નોઆગમાઓ ભાવોવક્તમે ૨ અપસત્થે નોઆગમાઓ ભાવોવક્તમે ડોડિણિગાળિયાઅમચ્છા-

ईर्ष । से कि त पसत्ये नोआयमज्जे भावोवहमे । पसत्ये गुल्माईः । सर्त नोआयमज्जे मावोवहमे । सेर्त मावोवहमे । सेर्त उवहमे ॥ ७ ॥ आहा उवहमे उभिहे फ्लहे । तंबहा-आलुपुष्टी १ मास्त २ प्राप्तां ३ वत्त्वां ४ अत्त्वाद्विहा० ५ समेतारे० ॥ ७१ ॥ से कि तं आलुपुष्टी० आलुपुष्टी० दसिविहा० पक्षता० । तंबहा-आलुपुष्टी० अलालुपुष्टी० २ दम्बालुपुष्टी० ३ वेतालुपुष्टी० ४ अलालुपुष्टी० ५ उद्दितालुपुष्टी० ६ शतालालुपुष्टी० ७ संठालालुपुष्टी० ८ शामायारीआलुपुष्टी० ९ मावलुपुष्टी० ॥ ७२ ॥ प्र नामठवाळे० वयाम्भो० । से कि तं दम्बालुपुष्टी० दम्बालुपुष्टी० तुविहा० पक्षता० । तंबहा-आयमज्जो० १ भोआयमज्जो० २ । से कि तं आगमज्जो० दम्बालुपुष्टी० आयमज्जो० दम्बालुपुष्टी०-जस्स पौ आलुपुष्टी० ति पर्य दिविलव ठिर्य दिवे भिर्य परिचिर्य चाव नो अलुप्पेहाए० । कम्हा० अलुप्पेहो० दम्बमिति कम्हा० । वेमस्स वै पद्यो अलुप्पत्तो आगमज्जो० एषा दम्बालुपुष्टी० चाव चावए० अलुप्पत्ते० अवलु । कम्हा० चाव चावए०, अलुप्पत्ते० न भवत्, चाव अलुप्पत्ते० चावए० न भवत्, तम्हा० न विलायमज्जो० दम्बालुपुष्टी० । सेर्त आयमज्जो० दम्बालुपुष्टी० । से कि तं भोआयमज्जो० दम्बालुपुष्टी० भोआयमज्जो० दम्बालुपुष्टी० दिविहा० पक्षता० । तंबहा-वालकर्त्तरी० दम्बालुपुष्टी० १ भविदसरीरदम्बालुपुष्टी० २ आयमसरीरदम्बालुपुष्टी० ३ आलुपुष्टी० ४ । से कि त आयमसरीरदम्बालुपुष्टी० आलुपुष्टी० पवत्त्वाद्विमारवात्त्वांस्य वै सरीरस्य वयगदम्बालुपुष्टी० दिवत्त्वांत्वेह० सेर्त चहा० दम्बावस्सए० तहा० भाविक्वं चाल सेर्त चालवसरीरदम्बालुपुष्टी० । से कि तं भविमसरीरदम्बालुपुष्टी० भविकर्त्तरी० दम्बालुपुष्टी०-जे वीर्य बोधीकम्यमनिक्वते० सेर्त चहा० दम्बावस्सए० चाल सेर्त भिर्य सरीरदम्बालुपुष्टी० । से कि त आयमसरीरभविमसरीरदम्बालुपुष्टी० गास्त० सरीरमविवसरीरदम्बालुपुष्टी० दम्बालुपुष्टी० तुविहा० पक्षता० । तंबहा०-उवविहिवा० १ अपोवविहिवा० २ । तत्प वै चा या उवविहिवा० चा ठप्पा० । तत्प वै चा चं अपोवविहिवा० या तुविहा० पक्षता० । तंबहा०-नेयमवहारार्थ० १ संगहस्स वै ३ ॥ ७३ ॥ से कि त नेयमवहारार्थ० अपोवविहिवा० दम्बालुपुष्टी० । वेगमवहारार्थ० अपोवविहिवा० दम्बालुपुष्टी० वेगविहिवा० पक्षता० । तंबहा०-अद्वयपवहवन्या० १ भंगालुपुष्टी० चंगोवहवन्या० २ चंगोवहवन्या० ३ स्मोवारे० ४ अलुगमे० ५ ॥ ७४ ॥ से कि तं वेगमवहारार्थ० अद्वयपवहवन्या० नेयमवहारार्थ० अद्वयपवहवन्या०-तिपएहिए० चाव दसरार्थ० आलुपुष्टी० संविजपएहिए० आलुपुष्टी० असंविजपएहिए० आलुपुष्टी० असंविजपए० आलुपुष्टी० परमलुप्पेगङ्गे० आलुपुष्टी० तुपएहिए० अवप्पम्भए०, तिपएहिवा० अलुपुष्टी० अलुपुष्टी० चाव अर्वतपएहिवाळे० आलुपुष्टी० भरमलुप्पेगङ्गे० आलुपुष्टी० भरमलुप्पेगङ्गे०

आधव पांचे सेवनों जीव पांमं तुरगत ।  
 पांच संवर सेवनों, पीविज्ञ मदगत ॥२६॥  
 कर शेषों कठि ऊपरे पुरुष फिरे शैवेर ।  
 औं आकार जिहं साक नो काल्पो प्रस्तु निहेर ॥३०॥  
 अतिक्रम इच्छा जाणिये इयनिक्रम पस्तु प्रसंग ।  
 अविचार ऐश्वर भग है अनाचार एष मंग ॥३१॥  
 इन्द्र प्रस्तु सिहण ममित प्रकापति कहिथाप ।  
 सामी पांच म्यावर तलों कहा ठाणायाग भाय ॥३२॥  
 उपजबो दरोन अवध पांच यामके याय ।  
 उपजबाने पेले समे यालमा लोम पमाय ॥३३॥  
 देखे असप पृथ्वी घोड़ी मरी भसे जीव देख ।  
 आ किम हैं सासे पहरी लालमा पसी रेक ॥३४॥  
 कुम्भुआ सर्पज्ञ माटका इन्द्र तासा किलोह ।  
 ठाम ठाम घन देखामे परया पांचू बोल ॥३५॥  
 मोह कर्म खीझ तब गयो लिद सूलमा पाम ।  
 देवस छान दर्शन उपजय लहा मुलटा पांचू करणा नाम ॥३६॥  
 पारे प्रथम चरम ने शीज मे तुलेम होय ।  
 पांच बोल भी निन कहा मांमलजो सहू कोय ॥३७॥  
 सूर छहवाये तुके तुके समजे मेह माव बिहाम ।  
 जीवादिक देखाहुआ तुके कहा भगवान ॥३८॥  
 परिप्रहरिक सहिवा तुके तुके पले आचार ।  
 मुलठो बारीयो लये पांचौ इम भार ॥३९॥  
 यति मुरि अखव महव लागव पांचमो जाय ।  
 नित वकाएया मुमिनाज ने मगवल भी तृदमाम ॥४०॥  
 सत संभव तपस्या तस्मी, भवेग ने धर चरा ।  
 भावा है विमर्शाजरी सेवन सारे कहा ॥४१॥

दुपएसियाइं अवत्तब्बयाइं । सेत्त नेगमववहाराण अद्वपयपस्वणया ॥ ७५ ॥  
 एयाए ण नेगमववहाराणं अद्वपयपस्वणया ए कि पओयणं ? एयाए ण नेगमवव-  
 हाराण अद्वपयपस्वणया भगसमुक्तिणया कज्जइ ॥ ७६ ॥ से कि तं नेगमवव-  
 हाराण भगसमुक्तिणया ? नेगमववहाराण भगसमुक्तिणया-अत्थि आणु-  
 पुब्बी १ अत्थि अणाणुपुब्बी २ अत्थि अवत्तब्बए ३ अत्थि आणुपुब्बीओ ४ अत्थि  
 अणाणुपुब्बीओ ५ अत्थि अवत्तब्बयाइं ६ । अहवा अत्थि आणुपुब्बी य  
 अणाणुपुब्बी य १ अहवा अत्थि आणुपुब्बीओ य २ अहवा अत्थि  
 आणुपुब्बीओ य अणाणुपुब्बी य ३ अहवा अत्थि आणुपुब्बीओ य अणाणुपुब्बीओ  
 य ४ अहवा अत्थि आणुपुब्बी य अवत्तब्बए य ५ अहवा अत्थि आणुपुब्बी य  
 अवत्तब्बयाइं च ६ अहवा अत्थि आणुपुब्बीओ य अवत्तब्बए य ७ अहवा अत्थि  
 आणुपुब्बीओ य अवत्तब्बयाइं च ८ अहवा अत्थि अणाणुपुब्बी य अवत्तब्बए य ९  
 अहवा अत्थि अणाणुपुब्बी य अवत्तब्बयाइं च १० अहवा अत्थि अणाणुपुब्बीओ  
 य अवत्तब्बए य ११ अहवा अत्थि अणाणुपुब्बीओ य अवत्तब्बयाइं च १२ ।  
 अहवा अत्थि आणुपुब्बी य अणाणुपुब्बी य अवत्तब्बए य १ अहवा अत्थि  
 आणुपुब्बी य अणाणुपुब्बी य अवत्तब्बयाइं च २ अहवा अत्थि आणुपुब्बी य  
 अणाणुपुब्बीओ य अवत्तब्बए य ३ अहवा अत्थि आणुपुब्बी य अणाणुपुब्बीओ  
 य अवत्तब्बयाइं च ४ अहवा अत्थि आणुपुब्बीओ य अणाणुपुब्बी य अवत्तब्बए  
 य ५ अहवा अत्थि आणुपुब्बीओ य अणाणुपुब्बी य अवत्तब्बयाइं च ६ अहवा  
 अत्थि आणुपुब्बीओ य अणाणुपुब्बीओ य अवत्तब्बए य ७ अहवा अत्थि आणु-  
 पुब्बीओ य अणाणुपुब्बीओ य अवत्तब्बयाइं च ८ तिसजोगे एए अ(ड)द्वभंग ।  
 एव सब्वेऽवि छब्बीस भगा । सेत्त नेगमववहाराणं भंगसमुक्तिणया ॥ ७७ ॥  
 एयाए ण नेगमववहाराण भंगसमुक्तिणया कि पओयणं ? एयाए ण नेगमवव-  
 हाराण भगसमुक्तिणया भगोवदसणया कीरइ ॥ ७८ ॥ से कि त नेगमवव-  
 हाराण भगोवदसणया ? नेगमववहाराण भगोवदसणया-तिपएसिए आणुपुब्बी १  
 परमाणुपोगले अणाणुपुब्बी २ दुपएसिए अवत्तब्बए ३ अहवा तिपएसिया आणुपु-  
 ब्बीओ ४ परमाणुपोगला अणाणुपुब्बीओ ५ दुपएसिया अवत्तब्बयाइ ६ । अहवा  
 तिपएसिए य परमाणुपुगले य आणुपुब्बी य अणाणुपुब्बी य चउभगो ४ । अहवा  
 तिपएसिए य दुपएसिए य आणुपुब्बी य अवत्तब्बए य चउभंगो ८ । अहवा परमा-  
 णुपोगले य दुपएसिए य अणाणुपुब्बी य अवत्तब्बए य चउभंगो १२ । अहवा

१ अणायरिसे वारसभगुल्हेहो लब्भइ ।

रिप्रेशिए य परमाणुपोम्मके य तुपएशिए य आलुपुम्मी व अपालुपुम्मी व  
अवताम्बरे व १ आहा रिप्रेशिए य परमाणुपोम्मके य तुपएशिए य आलुपुम्मी  
य लगालुपुम्मी य अवताम्बरे व २ आहा रिप्रेशिए य परमाणुपुम्मके य  
तुपएशिए य आलुपुम्मी य अपालुपुम्मीओ य अवताम्बरे य ३ आहा रिप्रेशिए  
य परमाणुपोम्मके य तुपएशिए य आलुपुम्मी य अपालुपुम्मीओ य अवताम्बरे  
य ४ आहा रिप्रेशिए य परमाणुपोम्मके य तुपएशिए य आलुपुम्मीओ य  
अपालुपुम्मीओ य अवताम्बरे य ५ आहा रिप्रेशिए य परमाणुपोम्मके य तुपएशिए  
य आलुपुम्मीओ य अवताम्बरे य ६ आहा रिप्रेशिए  
य परमाणुपोम्मके य तुपएशिए य आलुपुम्मीओ य अवताम्बरे  
य ७ आहा रिप्रेशिए य परमाणुपोम्मके य तुपएशिए य आलुपुम्मीओ य  
अगालुपुम्मीओ य अवताम्बरे य ८ । सेत नेगमवहारार्थ मगोद्दरसनवा ॥ ५ ॥  
दे कि तुं समोयारे ! समोयारे (मविजह) । नेपमवहारार्थ आलुपुम्मीरम्ब  
वही समोयारे ! कि आलुपुम्मीरम्बेही समोयारे ! आलुपुम्मीरम्बेही समोय  
रे ! अवताम्बरदम्बेही समोयारे ! नेपमवहारार्थ आलुपुम्मीरम्बर वही  
म्बीरम्बेही समोयारे ! नो अपालुपुम्मीरम्बेही समोयारे ! नो अवताम्बर  
समोयारे ! नेगमवहारार्थ आलुपुम्मीरम्बार्थ कही समोयारे ! कि आलुपुम्मी  
रम्बेही समोयारे ! अपालुपुम्मीरम्बेही समोयारे ! अवताम्बरम्बेही समोयारे !  
नो आलुपुम्मीरम्बेही समोयारे ! अवताम्बरम्बेही समोयारे ! आलुपुम्मी  
रम्बेही समोयारे ! अलुपुम्मीरम्बेही समोयारे ! अवताम्बरम्बेही समोयारे !  
नो आलुपुम्मीरम्बेही समोयारे ! नो अपालुपुम्मीरम्बेही समोयारे ! अवताम्बर  
रम्बेही समोयारे ! सेत दुमोयारे ॥ ६ ॥ से कि तु अलुगमे ? अलुपमे लागी  
पवरे ! तंबाहा-गाहा-संतप्तमस्वनवा दम्पम्बार्थ व विचं झुसुमी व । नेपे  
व अर्हार मारी मीडे अप्पावेहुं चेद ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ नेपमवहारार्थ आलुपुम्मी  
रम्बर्थ कि अरिष नरिष ! विवमा अरिष ! नेपमवहारार्थ आलुपुम्मीरम्बर्थ नि  
अरिष नरिष ! विवमा अरिष ! नेपमवहारार्थ अवताम्बरम्बार्थ कि अरिष  
नरिष ! विवमा अरिष ॥ ११ ॥ नेपमवहारार्थ आलुपुम्मीरम्बार्थ कि दंपिष्ठर्थ !  
असंविकर्द ! अर्हातार्द ! नो संविजार्द, नो असंविजार्द, अर्हवार्द ! एर्व अपा-  
लुपुम्मीरम्बार्थ अवताम्बरदम्बार्थ व अर्हवार्द मालिकम्बार्थ ॥ १२ ॥ १३ ॥ नेपमवहारार्थ  
आलुपुम्मीरम्बर्थ लोगस्य कि संविजार्दमार्गे होत्वा ! असंविजार्दमार्गे होत्वा !

सखेजेसु भागेसु होजा ? असखेजेसु भागेसु होजा ? सब्बलोए होजा ? एग दब्बं पहुच सखिजइभागे वा होजा, असखिजइभागे वा होजा, सखेजेसु भागेसु वा होजा, असखेजेसु भागेसु वा होजा, सब्बलोए वा होजा । णाणादब्वाइ पहुच नियमा सब्बलोए होजा । नेगमववहाराण अणाणुपुब्वीदब्वाइ कि लोयस्स सखिजइभागे होजा, असखिजइभागे होजा, जाव सब्बलोए होजा ? एग दब्ब पहुच नो सखिजइभागे होजा, असखिजइभागे होजा, नो सखेजेसु भागेसु होजा, नो असखेजेसु भागेसु होजा, नो सब्बलोए होजा । णाणादब्वाइ पहुच नियमा सब्बलोए होजा । एवं अवत्तब्बगदब्वाइ भाणियब्बाइ ॥ ८४ ॥ नेगमववहाराण आणुपुब्वीदब्वाइ लोगस्स कि सखेजइभाग फुसति ? असखेजइभाग फुसति ? सखेजे भागे फुसति ? असखेजे भागे फुसति ? सब्बलोग फुसति ? एग दब्ब पहुच लोगस्स सखेजइभाग वा फुसति जाव सब्बलोगं वा फुसति । णाणादब्वाइ पहुच नियमा सब्बलोग फुसति । नेगमववहाराण अणाणुपुब्वीदब्वाइ लोगस्स कि सखिजइभाग फुसति जाव सब्बलोग फुसति ? एग दब्ब पहुच नो सखिजइभाग फुसति, असखिजइभाग फुसति, नो सखिजे भागे फुसति, नो असखिजे भागे फुसति, नो सब्बलोय फुसति । णाणादब्वाइ पहुच नियमा सब्बलोय फुसति । एव अवत्तब्बगदब्वाइ भाणियब्बाइ ॥ ८५ ॥ णेगमववहाराण आणुपुब्वीदब्वाइ कालओ केवचिर होइ ? एग दब्ब पहुच जहणेण एग समय, उक्कोसेण असखेज काल । णाणादब्वाइ पहुच णियमा सब्बद्वा । अणाणुपुब्वीदब्वाइ अवत्तब्बगदब्वाइ च एव चेव भाणियब्बाइ ॥ ८६ ॥ णेगमववहाराण आणुपुब्वीदब्बाण अतरं कालओ केवचिर होइ ? एग दब्बं पहुच जहणेण एग समय, उक्कोसेण अण(त)तकाल । णाणादब्बाइ पहुच णत्यि अतर । णेगमववहाराण अणाणुपुब्वीदब्बाण अतर कालओ केवचिर होइ ? एग दब्बं पहुच जहणेण एग समय, उक्कोसेण असखेज काल । णाणादब्बाइ पहुच णत्यि अतर । णेगमववहाराण अवत्तब्बगदब्बाण अतरं कालओ केवचिर होइ ? एग दब्बं पहुच जहणेण एग समय, उक्कोसेण अणतकाल । णाणादब्बाइ पहुच णत्यि अतरं ॥ ८७ ॥ णेगमववहाराण आणुपुब्वीदब्बाइ सेसदब्बाण कइभागे होजा ? किं सखिजइभागे होजा ? असखिजइभागे होजा ? सखेजेसु भागेसु होजा ? असखेजेसु भागेसु होजा ? नो सखिजइभागे होजा, नो असखिजइभागे होजा, नो सखेजेसु भागेसु होजा, नियमा असखेजेसु भागेसु होजा । णेगमववहाराण अणाणुपुब्वी-दब्बाइ सेसदब्बाण कइभागे होजा ? कि सखेजइभागे होजा ? असखेजइभागे होजा ? सखेजेसु भागेसु होजा ? असखेजेसु भागेसु होजा ? नो सखेजइभागे

होआ असेहेज्ञमाने होआ नो संप्रज्ञेशु मारेशु होआ नो असेहेज्ञेशु मारेशु होआ । एव अवतामगदध्वापि ति मातियध्वापि ॥ ८८ ॥ वेगमक्षारार्थं अल्प-  
पुष्टीदध्वाई क्षरमि भावे होआ । ति उद्देश मारे होआ । उद्देशमि भावे  
होआ । यश्च मारे होआ । यमेवसमि भावे होआ । पारिणामिए भावे होआ ।  
सभिकाशए भावे होआ । त्रिमा उद्धारिणामि भावे होआ । अणुपुष्टीदध्वापि  
अवतामगदध्वापि च एवं चन भावियध्वापि ॥ ८९ ॥ एपुष्टि भर्ते । वेगमक्षार-  
एव अणुपुष्टीदध्वार्णं अणुपुष्टीदध्वार्णं अवतामगदध्वार्णं दध्वुवाए पद्धत-  
याए दध्वुपएक्षुवाए क्षरे क्षरेत्तो अप्या वा व्युवा वा त्रुवा वा विस्तारिवा  
वा । गोवमा । सम्भलोवाई लेपमक्षारार्थं अवतामगदध्वाई दध्वुवाए, अल्प-  
पुष्टीदध्वाई दध्वुवाए विसेधाहिवाई, आणुपुष्टीदध्वाई दध्वुवाए असेहेज्ञवाई ।  
पद्धतुवाए—वेगमक्षारार्थं सम्भलोवर्दं अणुपुष्टीदध्वाई पद्धतुवाए, अवताम-  
गदध्वाई पद्धतुवाए, अणुपुष्टीदध्वाई । विसेधाहिवाई, आणुपुष्टीदध्वाई पद्धतुवाए अपेत्युवर्दं ।  
दध्वुपएक्षुवाए—सम्भलोवाई लेपमक्षारार्थं अवतामगदध्वाई दध्वुवाए, अणु-  
पुष्टीदध्वाई दध्वुवाए अपएक्षुवाए विसेधाहिवाई, अवतामगदध्वाई पद्धतुवाए  
विसेधाहिवाई, आणुपुष्टीदध्वाई दध्वुवाए असेहेज्ञवाई, तर्व चेव पद्धतुवाए  
अपत्युवाई । देते व्युगमे । देते लेपमक्षारार्थं व्योवविहिवा दध्वुपुष्टी ॥  
॥ ९० ॥ ति त उगाहस्य अगोदधिवाई दध्वाणुपुष्टी । संगाहस्य अपेत्युविहिवा  
दध्वाणुपुष्टी वंचविहा पञ्चात् । तवहा—अद्वृपपस्तप्यमा । मंगसमुक्तिवाचा १  
मंगावर्दसत्त्वमा । समोवारे ४ अल्पमे ५ ॥ ९१ ॥ १ से ति त संगाहस्य व्युप-  
पक्षवाचा । संगाहस्य व्युपपस्तप्यमा—विपुष्टिए आणुपुष्टी चठप्पण्डिए अल्प-  
पुष्टी जाव दसपाएपुष्टि आणुपुष्टी सदिग्गण्डिए आणुपुष्टी अचक्कित्तम्भिर्  
आणुपुष्टी अर्पतपएपुष्टि आणुपुष्टी फ्रमाणुपोम्भिर् अणुपुष्टी दुप्पण्डिए अपण-  
प्पए । देते संगाहस्य व्युपपस्तप्यमा ॥ ९२ ॥ एवाए च संगाहस्य व्युपपस्तप्य-  
वाचाए ति फ्लोप्यं । एवाए च संगाहस्य अणुपपस्तप्यमाए मंपसमुक्तिवाचा—विति  
आणुपुष्टी । विति अणुपुष्टी २ विति अवताम्भए ३ अहा विति अल्पपुष्टी  
व अणुपुष्टी च ४ अहा विति अणुपुष्टी व अवताम्भए च ५ अहा विति  
अणुपुष्टी व अवताम्भए च ६ अहा विति अणुपुष्टी व अणुपुष्टी व  
अवताम्भए च ७ एवं सत्तमेवा । देते संगाहस्य मंगसमुक्तिवाचा । एवाए च संगाहस्य  
मंपसमुक्तिवाचाए ति फ्लोप्यं । एवाए च संगाहस्य मंपसमुक्तिवाचाए मंपेत्ते

सणया कीरइ ॥ ९३ ॥ से किं त सगहस्स भगोवद्सणया ? सगहस्स भगोवदंसणया—  
 तिपएसिया आणुपुब्वी १ परमाणुपोगला अणाणुपुब्वी २ दुपएसिया अवत्तब्वए ३  
 अहवा तिपएसिया य परमाणुपुगला य आणुपुब्वी य अणाणुपुब्वी य ४ अहवा  
 तिपएसिया य दुपएसिया य आणुपुब्वी य अवत्तब्वए य ५ अहवा परमाणु-  
 पोगला य दुपएसिया य अणाणुपुब्वी य अवत्तब्वए य ६ अहवा तिपएसिया य  
 परमाणुपोगला य दुपएसिया य आणुपुब्वी य अणाणुपुब्वी य अवत्तब्वए य ७ ।  
 सेत्त सगहस्स भगोवद्सणया ॥ ९४ ॥ से किं त सगहस्स समोयारे ? सगहस्स  
 समोयारे (भणिजाइ) । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ कहिं समोयरंति ? कि आणु-  
 पुब्वीदब्वेहिं समोयरंति ? अणाणुपुब्वीदब्वेहिं समोयरति ? अवत्तब्वयदब्वेहिं समो-  
 यरति ? सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइं आणुपुब्वीदब्वेहिं समोयरति, नो अणाणु-  
 पुब्वीदब्वेहिं समोयरंति, नो अवत्तब्वयदब्वेहिं समोयरति । एव दोन्हि वि सद्वाणे  
 सद्वाणे समोयरंति । सेत्त समोयारे ॥ ९५ ॥ से किं तं अणुगमे ? अणुगमे अद्विहे  
 पणते । तजहा-गाहा-सर्तपयपखवणया, देव्वपमाणं च खित्तै फुसणौ य । कौलो  
 य अर्तरं भागैँ, भर्वे अप्पावहु नत्थि ॥ १ ॥ सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ कि अत्थि  
 नत्थि ? णियमा अत्थि । एव दोन्हि वि । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ कि सखि-  
 जाइ ? असखिजाइ ? अणताइ ? नो सखिजाइ, नो असखिजाइ, नो अणताइ,  
 नियमा एगो रासी । एव दोन्हि वि । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ लोगस्म कहभागे  
 होजा ? कि सखिजाइभागे होजा ? असखिजाइभागे होजा ? सखेजेसु भागेसु  
 होजा ? असखेजेसु भागेसु होजा ? सब्बलोए होजा ? नो सखिजाइभागे होजा ?  
 नो असखिजाइभागे होजा, नो सखेजेसु भागेसु होजा, नो असखेजेसु भागेसु  
 होजा, नियमा सब्बलोए होजा । एव दोन्हि वि । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ  
 लोगस्म कि सखेजाइभाग फुसति ? असखेजाइभाग फुसति ? सखेजे भागे फुसति ?  
 असखेजे भागे फुसति ? सब्बलोग फुसति ? नो सखेजाइभाग फुसति जाव णियमा  
 सब्बलोग फुसति । एव दोन्हि वि । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ कालओ केवचिर  
 होति । (नियमा) सब्बद्वा । एव दोन्हि वि । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाण कालओ  
 केवचिर अतर होइ ? णत्थि अतर । एव दोन्हि वि । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ  
 सेसदब्वाण कडभागे होजा ? कि सखिजाइभागे होजा ? असखिजाइभागे होजा ?  
 सखेजेसु भागेसु होजा ? असखेजेसु भागेसु होजा ? नो सखिजाइभागे होजा,  
 नो असखिजाइभागे होजा, नो सखेजेसु भागेसु होजा, नो असखेजेसु भागेसु  
 होजा, नियमा तिभागे होजा । एव दोन्हि वि । सगहस्स आणुपुब्वीदब्वाइ

क्षयरम्भ मावे होआ ३ शियमा चाहपारेषामिए मावे होआ । एवं दोषि वि ।  
 अप्याकु भर्ति । ऐति अनुगमे । ऐति संग्रहस अजोशविद्वा वस्त्रालुपुष्टी ।  
 ऐति अजोशविद्वा दम्भालुपुष्टी ॥ ९६ ॥ ए फि तं उविद्विया दम्भालुपुष्टी ।  
 उविद्विया वस्त्रालुपुष्टी रितिहा पञ्चता । तंजहा-पुम्भालुपुष्टी १ वस्त्रालुपुष्टी २  
 अप्याकुपुष्टी य ३ ॥ ९७ ॥ ए फि तं पुम्भालुपुष्टी ३ पुम्भालुपुष्टी-अमर्तिवाए ।  
 अपमर्तिवाए २ आगासतिवाए १ जीवतिवाए ४ पोमालतिवाए ५ अम-  
 समए ६ । ऐति पुम्भालुपुष्टी । ए फि तं वस्त्रालुपुष्टी १ वस्त्रालुपुष्टी-अमस-  
 समए २ । पोमालतिवाए ३ जीवतिवाए ४ आगासतिवाए ५ अवमर्तिवाए ६ अम-  
 रिवाए ७ । ऐति वस्त्रालुपुष्टी । ए फि तं अभालुपुष्टी १ अभालुपुष्टी-एवाए  
 चेष्ट एगालमाए एग्नारिवाए छाल्लेगवाए ऐडीए अन्नामल्लमासो तुरहूये । ऐति  
 अप्याकुपुष्टी ॥ ९८ ॥ अहं उविद्विया दम्भालुपुष्टी रितिहा पञ्चता । तंजहा-  
 पुम्भालुपुष्टी १ वस्त्रालुपुष्टी २ अप्याकुपुष्टी ३ । ए फि हं पुम्भालुपुष्टी ३ पुम्भ-  
 ालुपुष्टी-परमालुपोमाए १ तुपएसिए २ रिपएसिए ३ आव इसपएसिए १ संक्षि-  
 अपएसिए ११ असेधिजपएसिए १२ अर्णतपएसिए १३ । ऐति पुम्भालुपुष्टी ।  
 ए फि तं वस्त्रालुपुष्टी १ वस्त्रालुपुष्टी-अर्णतपएसिए १३ आव परमालुपोमाए १ ।  
 ऐति वस्त्रालुपुष्टी । ए फि तं अभालुपुष्टी १ अभालुपुष्टी-एवाए चेष्ट एगालमाए  
 एग्नारिवाए अर्णतगाल्लगवाए ऐडीए अल्लमल्लमासो तुरहूये । ऐति अप्याकुपुष्टी ।  
 ऐति उविद्विया दम्भालुपुष्टी १ ऐति आनवसरीरमविवरीलदरिता दम्भालुपुष्टी ।  
 ऐति मोम्मलममो दम्भालुपुष्टी । सेच्चं वस्त्रालुपुष्टी ॥ ९९ ॥ ए फि तं लेघ-  
 ालुपुष्टी १ ऐतालुपुष्टी तुरिया पञ्चता । तंजहा-उविद्विया य अजोशविद्विया य ॥ १ ॥ ग तत्त्व य वा सा उविद्विया सा ठप्पा । तत्त्व यं जा सा अजोशवि-  
 द्विया सा तुरिया पञ्चता । तंजहा-येगमल्लहाराए १ संग्रहस य २ ॥ १ ॥ १ ॥  
 ए फि तं नेममल्लहाराए अजोशविद्विया नेतालुपुष्टी ३ नेममल्लहाराए अजोशवि-  
 द्विया नेतालुपुष्टी तंजहा पञ्चता । तंजहा-महूपवस्त्रवामा १ मंपस्मुरिए-  
 नया २ मंमोशवस्त्रवामा ३ उमोशारे ४ अलुपमे ५ । ए फि तं नेममल्लहाराए  
 महूपवस्त्रवामा ६ नेममल्लहाराए नेममल्लहाराए-तिपस्त्रेगमे लालुपुष्टी वाव  
 इसपएसोयामे लालुपुष्टी संक्षिजपएसोयामे लालुपुष्टी असेधिजपएसोयामे लालु-  
 पुष्टी एगालेगाए अप्याकुपुष्टी तुपएसोयामे लालुपुष्टी तिपएसोयामा लालु-  
 पुष्टीमे वाव इसपएसोयामा लालुपुष्टीमे असेधिजपएसोयामा लालुपुष्टीमे

१ अम्भू २ वर्षतरे पसो पाटी नति ।

एगपएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ, दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाइ । सेत्तं ऐगमववहाराणं अट्टपयपर्खणया । एयाए ण ऐगमववहाराण अट्टपयपर्खणयाए कि पथोयणं ? एयाए० ऐगमववहाराणं अट्टपयपर्खणयाए ऐगमववहाराण भगसमुक्तिणया कजइ । से कि त ऐगमववहाराणं भगसमुक्तिणया ? ऐगमववहाराणं भगसमुक्तिणया-अत्थि आणुपुव्वी १ अत्थि अणाणुपुव्वी २ अत्थि अवत्तव्वए ३ एव दब्बाणुपुव्वी-गमेण खेत्ताणुपुव्वीए वि ते चेव छव्वीस भगा भाणियव्वा जाव सेत्तं ऐगम-ववहाराण भंगसमुक्तिणया । एयाए ण ऐगमववहाराण भगसमुक्तिणयाए कि पथोयण ? एयाए ण ऐगमववहाराण भगसमुक्तिणयाए भगोवदंसणया कीरइ । से कि तं ऐगमववहाराण भगोवदसणया ? ऐगमववहाराण भगोवदसणया-तिपएसोगाढे आणुपुव्वी १ एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी २ दुपएसोगाढे अवत्तव्वए ३ तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ ४ एगपएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ ५ दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाइ ६ अहवा तिपएसोगाढे य एगपएसोगाढे य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य एवं तहा चेव दब्बाणुपुव्वीगमेण छव्वीस भगा भाणियव्वा जाव सेत्तं ऐगमववहाराण भगो-वदसणया । से कि त समोयारे ? समोयारे-ऐगमववहाराणं आणुपुव्वीदब्बाइ कहिं समोयरति ? कि आणुपुव्वीदब्बेहिं समोयरति ? अणाणुपुव्वीदब्बेहिं समोयरति ? अवत्तव्वयदब्बेहिं समोयरति ?० आणुपुव्वीदब्बाइ आणुपुव्वीदब्बेहिं समोयरति, नो अणाणुपुव्वीदब्बेहिं समोयरति, नो अवत्तव्वयदब्बेहिं समोयरति । एव दोन्नि वि सद्वाणे सद्वाणे समोयरति । सेत्तं समोयारे । से कि त अणुगमे ? अणुगमे नवविहे पण्णते । तजहा-गाहा-सतीपयपर्खणया, दैब्बपमाण च खिँत्त फुसणौ य । कालो य अर्तरं भागं, भावे अप्पावेहु चेव ॥ १ ॥ ऐगमववहाराण आणुपुव्वीदब्बाइ किं अत्थि नत्थि ? नियमा अत्थि । एव दोन्नि वि । ऐगमववहाराण आणुपुव्वीदब्बाइ किं सखिजाइ ? असखिजाइ ? अणताइ ? नो सखिजाइ, नो असखिजाइ, अणताइ । एवं दोन्नि वि । ऐगमववहाराण आणुपुव्वीदब्बाइ लोगस्स किं सखिजइभागे होजा ? असखिजइभागे होजा ? जाव सब्बलोए होजा ? एग दब्ब पङ्क्ष सखिजइभागे वा होजा, अस-खिजइभागे वा होजा, सखेजेसु भागेसु वा होजा, असखेजेसु भागेसु वा होजा, देसूणे वा लोए होजा । णाणादब्बाइ पङ्क्ष नियमा सब्बलोए होजा । ऐगमवव-हाराण अणाणुपुव्वीदब्बाण पुच्छाए-एग दब्ब पङ्क्ष नो सखिजइभागे होजा, असखिजइभागे होजा, नो सखेजेसु भागेसु होजा, नो असखेजेसु भागेसु होजा, नो सब्बलोए होजा । णाणादब्बाइ पङ्क्ष नियमा सब्बलोए होजा । एव अवत्तव्व-गदब्बाणि वि भाणियव्वाणि । ऐगमववहाराण आणुपुव्वीदब्बाइ लोगस्स किं सखि-

जहांगे कुर्सिं ! अस्त्रिजहामाय कुर्सिं ! संतेजे भागे कुर्सिं ! असंकेते भागे कुर्सिं ! सम्पत्तीं कुर्सिं ! एवं दर्श पुष्ट उपिज्जमार्गे वा कुर्सर, अस्त्रिजहामाय भागे वा कुर्सर, संतेजे भागे वा कुर्सर, असंकेते भागे वा कुर्सर, वालाइज्जार्द पुष्ट निकमा सम्पत्तेवं कुर्सिं ! अगलुपुम्बीशमार्द अवध-  
मयदमार्द च जहा येते नवरे कुरुत्वा मानिवन्ना । वेषमवहारार्थ बालुपुम्बी-  
इम्बार्द वालभे केवलिर होति । एवं दर्श पुष्ट अहम्बेवं एवं रामदे राहोसेवं वर्ते  
येत्वं कर्त्त । वालाइज्जार्द पुष्ट निकमा सम्पदा । एवं दुष्टिं वि । वेषमवहारार्थ  
बालुपुम्बीशमायमेनर वालभो कवलिर होइ । एवं दर्श पुष्ट अहम्बेवं एवं सम्वं  
उहोसेवं असंकेते वर्त । वालाइज्जार्द पुष्ट पत्ति आर्द । वेषमवहारार्थ बालु-  
पुम्बीन्मार्द सेवदम्बार्द कर्मागे होता । निष्ठिं वि जहा दम्बालुपुम्बीए । वेषम-  
वहारार्थ बालुपुम्बीइम्बार्द क्षरमिम भावे होता । निकमा उत्तरारिणानिरु गर्वे  
होता । एवं देवि वि । एष्वि वं भंते । वेषमवहारार्थ बालुपुम्बीइम्बार्द वर्तु  
पुम्बीइम्बाल वहाल्लगरम्बार्द च दम्बद्वयाए नद्वद्वयाए दम्बद्वयरस्त्वयाए क्षरे वर्ते  
हितो जप्ता वा वहुया वा त्रुता वा विसेवाहिता वा । योवमा । सम्बलोत्तर्द वेषम-  
वहारार्थ अवताम्बरदम्बार्द दम्बद्वयाए, बालुपुम्बीरम्बार्द दम्बद्वयाए विसेवाहितार्द,  
बालुपुम्बीइम्बार्द दम्बद्वयाए वसेवेम्बुत्तार्द, परस्त्वयाए-सम्बलोत्तर वेषमवहारार्थ  
अवताम्बरदम्बार्द वर्तस्त्वयाए, अवताम्बरदम्बार्द दम्बद्वयाए विसेवाहितार्द,  
बालुपुम्बीदम्बार्द परस्त्वयाए वसेवेम्बुत्तार्द, दम्बद्वयएस्त्वयाए-सम्बलोत्तरार्द वेषम-  
वहारार्थ अवताम्बरदम्बार्द दम्बद्वयाए, अवताम्बरदम्बार्द दम्बद्वयाए वर्तस्त्वयाए  
विसेवाहितार्द अवताम्बरदम्बार्द परस्त्वयाए विसेवाहितार्द, बालुपुम्बीइम्बार्द दम्ब  
वाए असुवेज्युत्तार्द, तर्द वेव परस्त्वयाए वसेवेम्बुत्तार्द । ऐती बलुगमे । ऐती  
वेषमवहारार्थ अजोवविहिता वेतालुपुम्बी १ २ ३ से वि तं संगाहसु अप्ते-  
वविहिता वेतालुपुम्बी ३ संगाहसु वविहिता वेतालुपुम्बी वविहिता वव्यता ।  
तं वव्या-बालुपम्बवप्यन्ना १ भेषमसुवित्तप्या २ भेषोवृत्तप्या ३ समेवारे ५  
वव्युप्ये ५ । से वि तं संगाहसु वद्वयप्यवप्यन्ना । संगाहसु वद्वयप्यवप्यन्ना-  
विपस्त्वेगाहे बालुपुम्बी वरप्यएसोगाहे बालुपुम्बी चाव दस्तप्यएसोगाहे बालुपुम्बी  
सुविज्ञप्ययोगाहे बालुपुम्बी भस्त्रिजप्यएसोगाहे बालुपुम्बी एप्पलीयावे अव-  
पुम्बी दुप्यएसोगाहे वव्यत्वय । ऐती संगाहसु वद्वयप्यवप्यन्ना । एवाए वं  
संगाहसु वद्वयप्यवप्यन्ना विप्यत्वय । से वि तं संगाहसु भेषमसुवित्तप्यन्ना । संगाहसु भेष-

समुक्तिणया-अतिथि आणुपुव्वी १ अतिथि अणाणुपुव्वी २ अतिथि अवत्तव्वए ३ अहवा अतिथि आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य एवं जहा दव्वाणुपुव्वीए सगहस्स तहा भाणियव्वा जाव सेत्त सगहस्स भगसमुक्तिणया । एयाए ४ सगहस्स भगसमुक्तिणयाए कि पबोयणं २ एयाए ५ सगहस्स भगसमुक्तिणयाए भगोवदसणया कज्ज़इ । से किं त सगहस्स भगोवदसणया ६ सगहस्स भगोवदसणया-तिपएसोगाढे आणुपुव्वी १ एगपएसोगाढे अणाणुपुव्वी २ दुपएसोगाढे अवत्तव्वए ३ अहवा तिपएसोगाढे य एगपएसोगाढे य आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य एव जहा दव्वाणुपुव्वीए सगहस्स तहा खेत्ताणुपुव्वीए वि भाणियव्व जाव सेत्तं सगहस्स भगोवदसणया । से किं त समोयारे ७ समोयारे-सगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ कर्हि समोयरंति ८ किं आणुपुव्वीदव्वाइहि समोयरंति ९ अणाणुपुव्वीदव्वाइहि समोयरंति १० अवत्तव्वयदव्वाइहि समोयरंति ११ तिष्ण वि सद्वाणे समोयरंति । सेत्तं समोयारे । से कि तं अणुगमे १२ अणुगमे अट्टविहे पण्णते । तजहा-गाहा-सतैपयपर्लवणया, दैव्वपमाण च खित्तै फुसर्णा य । कौलो य अर्तैर भागै, र्भावे अप्पावहु णतिथ ॥ १ ॥ सगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइ किं अतिथि णतिथ १३ गियमा अतिथि । एव दुष्णि वि । सेसगदाराइ जहा दव्वाणुपुव्वीए सगहस्स तहा खेत्ताणुपुव्वीए वि भाणियव्वाइ जाव सेत्त अणुगमे । सेत्तं सगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी । सेत्त अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ॥ १०३ ॥ से किं तं उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी १४ उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १५ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी य ३ । से किं त पुव्वाणुपुव्वी १६ पुव्वाणुपुव्वी-अहोलोए १७ तिरियलोए २ उड्हूलोए ३ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से किं त पच्छाणुपुव्वी १८ पच्छाणुपुव्वी-उड्हूलोए ३ तिरियलोए २ अहोलोए १ । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से किं त अणाणुपुव्वी १९ अणाणुपुव्वी-एयाए चैव एगाइयाए एगुत्तरियाए तिगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्वासो दुर्वूणो । सेत्तं अणाणुपुव्वी । अहोलोयखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १२ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से किं त पुव्वाणुपुव्वी २४ पुव्वाणुपुव्वी-र्यणप्पभा १२ सक्करप्पभा २ वाळुयप्पभा ३ पक्कप्पभा ४ धूमप्पभा ५ तमप्पभा ६ तमतमप्पभा ७ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि त पच्छाणुपुव्वी २५ पच्छाणुपुव्वी-तमतमप्पभा ७ जाव र्यणप्पभा १ । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २६ अणाणुपुव्वी-एयाए चैव एगाइयाए एगुत्तरियाए सत्तगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्वासो दुर्वूणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । तिरियलोयखेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १२ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से किं त पुव्वाणुपुव्वी २७ पुव्वाणुपुव्वी-

गाहामो—अनुरीये लगे वावह कल्पेय पुक्ष्यरे वरण । लीर चम शोय की  
अश्वरे झुड़के रुपगे ॥ १ ॥ जोमरण वत्व यथि उप्पल दिल्लय व पुष्टि निहि  
रक्षे । वाजहर वह मर्द्द्वे विवावा वक्ष्याव कपिला ॥ २ ॥ कुव मंदर जावाला  
कृष्ण वक्ष्याव चंद्र सुरा य । देवे लगे वक्ष्ये भूए य सर्वसुरमये य ॥ ३ ॥ सेर्व  
पुम्बालुपुष्टी । से कि तं पञ्चालुपुष्टी । पञ्चालुपुष्टी—सर्वमूरुमये व वत  
नेत्रीये । सेर्वं पञ्चालुपुष्टी । से कि तं अग्नालुपुष्टी । अग्नालुपुष्टी—एमाए चेद  
एगाइयाए एगुतारियाए असंबोज्यवक्ष्यावाए देवीए अन्नमध्यमासो तुस्त्वो ।  
सेर्वं अग्नालुपुष्टी । उत्तम्भेषालुपुष्टी लिलिहा पञ्चता । तंवहा—मुम्बालुपुष्टी ।  
पञ्चालुपुष्टी २ अग्नालुपुष्टी ३ । से कि तं पुम्बालुपुष्टी । पुम्बालुपुष्टी—  
सोहम्ने १ ईसागे २ सर्वकुमारे ३ माहिदे ४ वसम्भोए ५ लंठए ६ महात्मे ७  
चहस्तारे ८ भाग्यए ९ पाप्यए १ भारणे ११ अम्बुए १२ नेत्रविनिमाणे १३  
भुत्तारविनिमाणे १४ ईसिपम्भारा १५ । सेर्वं पुम्बालुपुष्टी । से कि तं पञ्चालुपुष्टी १  
पञ्चालुपुष्टी—ईसिपम्भारा १५ वाव सोहम्ने १ । सेर्वं पञ्चालुपुष्टी । से कि तं  
अग्नालुपुष्टी । अग्नालुपुष्टी—एवाए चेद एगाइयाए एगुतारियाए पञ्चरसगञ्जावार  
देवीए अन्नमध्यमासो तुस्त्वो । सेर्वं अग्नालुपुष्टी । भद्रा उवविहिया बेताकु  
पुष्टी लिलिहा पञ्चता । तंवहा—मुम्बालुपुष्टी । पञ्चालुपुष्टी २ अग्नालुपुष्टी ३  
४ । से कि तं पुम्बालुपुष्टी । पुम्बालुपुष्टी—एमपद्मोयावे तुपर्षेषावे वाव  
दस्तपद्मोयावे वाव दस्तिज्ञपद्मोयावे दस्तिज्ञपद्मोयावे वाव  
एगपद्मोयावे । सेर्वं पञ्चालुपुष्टी । से कि तं अग्नालुपुष्टी । अग्नालुपुष्टी—एवाए  
चेद एगाइयाए एगुतारियाए अद्विज्ञवक्ष्यवाए देवीए अन्नमध्यमासो तुस्त्वो ।  
सेर्वं अग्नालुपुष्टी । सेर्वं उवविहिया बेतालुपुष्टी । सेर्वं बेतालुपुष्टी ५ ॥ ४ ॥  
से कि तं कालालुपुष्टी । कालालुपुष्टी तुलिहा पञ्चता । तंवहा—उवविहिया य १  
अमोवविहिया व २ ग १ ५ ॥ तत्व नं जा सा उवविहिया दा छापा । तत्व नं  
जा दा व्योवविहिया दा तुलिहा पञ्चता । तंवहा—नेयमवहारार्थ १ दंगाइस्त व ३  
॥ १ ६ ॥ से कि तं नेयमवहारार्थ अमोवविहिया कालालुपुष्टी । नेयदर्थ  
हारार्थ व्योवविहिया कालालुपुष्टी वंवलिहा पञ्चता । तंवहा—मदूपक्षस्त्ववा १  
भगवस्तुविलयवा २ भंगावद्वस्त्ववा ३ उमोवावद्वस्त्ववा ४ उमोवावे ५ अग्नुम्ने ५ ॥ १ ७ ॥ से कि

१ व्युतीयामो वहु, निरता सेवना असरामा । भुजपक्ष इन्द्रवरात्रिय व्येष-  
वरामरजमावे व २ वावनैठरे एसा याहा वि अम्भद ।

पांच थांनके वीरजी, आङ्गा दीवी एह ।  
 अभिग्रह धारी साधुजी, करे गवेपणा तेह ॥४२॥  
 आप निमित्त काढ्यौ वाहिर, थवा न काढ्यौ न चार ।  
 तीजे खातों उवरे, पंत बले लुख अहार ॥४३॥  
 श्रगन्यात कुल मुनिवर तजे, करे गौचरी छांडी काल ।  
 कर खरले अण खर लिये, धन ऋषि दीन दयाल ॥४४॥  
 छाँइ करिते अहार आरिण्यो, दोप चयालिश रेत ।  
 उखा निजरे देख तो, पांचमो पठे देत ॥४५॥  
 प्रायंवल निवी पुरिमट्ठ, करे द्रव्य उन्मान ।  
 भिन्न पिंड वाइ ए पांचमो, ए आङ्गा भगवान् ॥४६॥  
 प्रस विरस अन्त पन्त लूह, पचालया पांच अहार ।  
 ई जीमी जीवे मुनि, धन मोटा अणगार ॥४७॥  
 एक आसण अरु उकड्ठ, पडमा काउसग्ग रात ।  
 दमासण वीरासणे, रहे छ कायानाथ ॥४८॥  
 डडांनी परे साधुजी, रहे पग पसार ।  
 झुवे लकड़ीनी परे, मस्तक भू अलगाड़ ॥४९॥  
 तड़के लेवे आतापना, शीत खमेसी रात ।  
 डीले खाज खीणे नहीं, अहो गुण कह्या न जात ॥५०॥  
 पांच बोले मुनिराजजी, महा निर्जरा पाम ।  
 अन्त करे संसार नो, जो राखे शुद्ध प्रणाम ॥५१॥  
 आचारज उवभाय थविर, तपसी वहशुति जाण ।  
 गणावच्छेदक वली, सात पद्धियें मान ॥५२॥

त ऐगमववहाराणं अट्टपयपर्खणया ? ऐगमववहाराण अट्टपयपर्खणया-तिसमय-  
द्विइए आणुपुव्वी जाव दससमयद्विइए आणुपुव्वी, सखिजसमयद्विइए आणुपुव्वी,  
असखिजसमयद्विइए आणुपुव्वी, एगसमयद्विइए अणाणुपुव्वी, दुसमयद्विइए  
अवत्तव्वए, तिसमयद्विइयाओ आणुपुव्वीओ, एगसमयद्विइयाओ अणाणुपुव्वीओ,  
दुसमयद्विइयाइ अवत्तव्वगाइ । सेत्त ऐगमववहाराण अट्टपयपर्खणया । एयाए णं  
ऐगमववहाराण अट्टपयपर्खणया ए किं पओयण ?० ऐगमववहाराण अट्टपयपर्ख-  
णया ऐगमववहाराण भंगसमुक्तिणया कज्जइ ॥ १०८ ॥ से किं त ऐगमवव-  
हाराण भगसमुक्तिणया ? ऐगमववहाराण भगसमुक्तिणया-अत्थि आणुपुव्वी १  
अत्थि अणाणुपुव्वी २ अत्थि अवत्तव्वए ३ एवं दब्बाणुपुव्वीगमेण कालाणु-  
पुव्वीए वि ते चेव छव्वीस भंगा भाणियव्वा जाव सेत्त ऐगमववहाराण भंगसमु-  
क्तिणया । एयाए णं ऐगमववहाराण भंगसमुक्तिणया ए किं पओयण ? एयाए  
ण ऐगमववहाराण भगसमुक्तिणया ऐगमववहाराण भगोवदसणया कज्जइ  
॥ १०९ ॥ से किं तं ऐगमववहाराण भगोवदसणया ? ऐगमववहाराण भगोवद-  
सणया-तिसमयद्विइए आणुपुव्वी १ एगसमयद्विइए अणाणुपुव्वी २ दुसमयद्विइए  
अवत्तव्वए ३ तिसमयद्विइयाओ आणुपुव्वीओ ४ एगसमयद्विइयाओ अणाणुपुव्वीओ ५  
दुसमयद्विइयाइ अवत्तव्वगाइ ६ । अहवा तिसमयद्विइए य एगसमयद्विइए य  
आणुपुव्वी य अणाणुपुव्वी य एव तहा दब्बाणुपुव्वीगमेण छव्वीस भंगा भाणियव्वा  
जाव सेत्त ऐगमववहाराण भगोवदसणया ॥ ११० ॥ से किं त समोयारे ? समोयारे-  
ऐगमववहाराण आणुपुव्वीदब्बाइ कर्हि समोयरंति ? किं आणुपुव्वीदब्बेहि समो-  
यरंति ? अणाणुपुव्वीदब्बेहि समोयरंति ? अवत्तव्वयदब्बेहि समोयरंति ? एव तिणिण  
वि सट्टाणे समोयरंति इति भाणियव्व । सेत्त समोयारे ॥ १११ ॥ से किं त अणुगमे ?  
अणुगमे नवविहे पण्णते । तजहा-गाहा-सतपयपर्खणयी, दब्बपमैण च खित्तै फुसर्णा  
य । कौलो य अर्तर भैंग, भावे अप्पावंहु चेव ॥ १ ॥ ऐगमववहाराण आणुपुव्वी  
दब्बाइ कि अत्थि णत्थि ? णियमा तिणिण वि अत्थि । ऐगमववहाराण आणुपुव्वी-  
दब्बाइ किं सखिजाइ ? असखिजाइ ? अणताइ ? नो सखिजाइ, नियमा अस-  
खिजाइ, नो अणताइ । एव दुणिण वि । ऐगमववहाराण आणुपुव्वीदब्बाइ लोगस्स  
किं सखिजाइभागे होज्जा ? असखिजाइभागे होज्जा ? सखेजेसु भागेसु होज्जा ? अस-  
खेजेसु भागेसु होज्जा ? सब्बलोए होज्जा ? एग दब्ब पहुच्च सखिजाइभागे वा होज्जा,  
असखिजाइभागे वा होज्जा, सखेजेसु भागेसु वा होज्जा, असखेजेसु भागेसु वा होज्जा,  
(प)टेसूणे वा लोए होज्जा । णाणादब्बाइ पहुच्च नियमा सब्बलोए होज्जा । (आए-

चतुरेण वा एवं पुण्ड्राणाम् होता) एवं अपाणुपुष्टीदद्वाग्नि अवताम्बदद्वाग्नि वि तदहा चेताणुपुष्टीएः । एवं पुस्तका काल्पनुपुष्टीए वि तदहा चेत भाष्मिक्षा । ऐप्स-वग्नहाराण माणुपुष्टीदद्वाग्नि वास्त्रे केवलिर होते । एवं दर्थं पुण्ड्र वहन्ते निष्ठिं नम्भया उडोतेर्थं असुरेण्यं कालं । यापादद्वाग्नि पुण्ड्र सम्भदा । ऐप्सवग्नहाराण वग्न अण्डाणुपुष्टीदद्वाग्नि काल्पयो केवलिर होते । एवं दर्थं पुण्ड्र अवग्नहाराण द्वोसर्थं एवं समर्थं यापादद्वाग्नि पुण्ड्र सम्भदा । अवताम्बदद्वाग्नि पुण्ड्रम् । एवं दर्थं पुण्ड्र अवग्नहाराण द्वोसर्थं वो सम्भदा यापादद्वाग्नि पुण्ड्र सम्भदा । ऐप्सवग्नहाराण एवं समर्थं उडोतेर्थं दो सम्भदा । यापादद्वाग्नि पुण्ड्र चरितं अतर । ऐप्सवग्नहाराण अण्डाणुपुष्टीदद्वाग्नि अतरं काल्पयो केवलिर होते । एवं दर्थं पुण्ड्र वहन्तेर्थं दो समर्थं उडोतेर्थं असुरेण्यं कालं । यापादद्वाग्नि पुण्ड्र चरितं अतर । ऐप्सवग्नहाराण अण्डाणुपुष्टीदद्वाग्नि पुण्ड्रम् । एवं दर्थं पुण्ड्र वहन्तेर्थं एवं समर्थं उडोतेर्थं असुरेण्यं कालं । यापादद्वाग्नि पुण्ड्र चरितं अतर । माणभावग्नप्यवर्तु चर तदहा चेताणुपुष्टीए तदहा माणिक्षाएः जात सेता अल्पगमे । सेता ऐप्सवग्नहाराण अनोदभिहिया काल्प-पुष्टी प० ११२ ॥ से कि तं रैग्नहस्त अनोदभिहिया काल्पाणुपुष्टी । संग्रहस्त अनोदभिहिया काल्पाणुपुष्टी पंचमिहा फल्लया । तं तदहा-अद्वृप्तमप्यभवता १ गोलमु त्रितयया २ भर्गोकर्त्तसयया ३ स्मोदारे ४ अल्पगमे ५ ॥ ११३ ॥ से कि तं रैग्नहस्त अद्वृप्तमप्यभवता-एवर्तं चर वि दाएरं याचेताणुपुष्टीए रैग्नहस्त काल्पाणुपुष्टीए वि तदहा माणिक्षाग्नि । चरते तिद-जमि-सादो चाच सेता अल्पगमे । सेता संग्रहस्त अनोदभिहिया काल्पाणुपुष्टी ॥ ११४ ॥ से कि तं रैग्नभिहिया काल्पाणुपुष्टी । रैग्नभिहिया काल्पाणुपुष्टी तिमिहा फल्लया । दद्वाग्नि-पुण्ड्राणुपुष्टी १ पञ्चाणुपुष्टी २ अण्डाणुपुष्टी ३ । से कि तं पुण्ड्राणुपुष्टी-पुण्ड्राणुपुष्टी-समरे १ आवधिया २ ज्ञाणापाद् ३ वोदे ४ छ्वे ५ सुद्धो ६ अद्वृ-रते ७ पक्षे ८ मासे ९ उच्च १ अयगे ११ संपर्करे १२ लुगे १३ वासस्ते १४ वाससाहसे १५ वाससच्चवसाहसे १६ पुण्ड्रगे १७ पुण्ड्रे १८ त्रुष्टिगे १९ त्रुष्टिए २० अवर्तगे २१ अद्वृते २२ अवर्ती २३ वर्ते २४ त्रुष्टुनो २५ त्रुष्टुपे २६ उप्पलो २७ उप्पके २८ परमंगे २९ वर्तमे १ अविलो ३१ वर्तिये ३ अद्वृ-नितिरंगे ३२ अत्पवित्रे ३४ अठव्यो ३५ अठए ३६ नदवरी ३७ नदए ३८ पहव्यो ३९ परए ४ चूक्षिको ४१ चूक्षिया ४२ चौसपाहेमिन्गि ४३ सीसपेमिन्गि ४४ पक्षिओदमे ४५ सापर्योदमे ४६ औसापिण्डी ४७ उस्सपिण्डी ४८ पोमाल्लर्म-

येट ४९ अतीतद्वा ५० अणागयद्वा ५१ सब्दद्वा ५२ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि तं पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-सब्दद्वा ५२ अणागयद्वा ५१ जाव ममए १ । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणतगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्भासो दुर्वृणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । अहवा उवणिहिया कालाणुपुव्वी तिविहा पणत्ता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से कि तं पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-एगसमयट्टिइए, दुसमयट्टिइए, तिममयट्टिइए जाव दसममयट्टिइए, सखिजसमयट्टिइए, असखिजसमयट्टिइए । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि त पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-असखिजसमयट्टिइए जाव एगममयट्टिइए । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि तं अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असखिजगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्भासो दुर्वृणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्त उवणिहिया कालाणुपुव्वी । सेत्तं कालाणुपुव्वी ॥ ११५ ॥ से कि त उक्तिणाणुपुव्वी २ उक्तिणाणुपुव्वी तिविहा पणत्ता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी य ३ । से कि त पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-उमभे १ अजिए २ समवे ३ अभिणदणे ४ सुमझे ५ पठमप्पहे ६ सुपासे ७ चदप्पहे ८ सुविही ९ सीयले १० सेजसे ११ वासुपुजे १२ विमले १३ अणते १४ वम्मे १५ उती १६ कुथू १७ थरे १८ मली १९ मुणिसुव्वए २० णमी २१ अरिष्टोमी २२ पासे २३ वद्धमाणे २४ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि तं पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-वद्धमाणे २४ जाव उमभे १ । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए चउवीसगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्भासो दुर्वृणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्तं उक्तिणाणुपुव्वी ॥ ११६ ॥ से कि त गणणाणुपुव्वी २ गणणाणुपुव्वी तिविहा पणत्ता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से कि त पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-एगो, दस, सय, सहस्र, दससहस्राइ, सयसहस्र, दससयसहस्राइ, कोडी, दसकोडीओ, कोडीमय, दसकोडिसयाइ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि तं पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-दसकोडिसयाइ जाव ए(क्षे)गो । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए दसकोडिसयगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णव्भासो दुर्वृणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्तं गणणाणुपुव्वी ॥ ११७ ॥ से कि त सठाणाणुपुव्वी २ सठाणाणुपुव्वी तिविहा पणत्ता । तजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से कि त पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-समचउरसे १ निर्गोहमडले २ साई ३ खुजे ४ वामणे ५ हुडे ६ ।

संतरेण वा सम्पुष्टाम् होता) एवं अपशुपुष्टीदम्बाति अपतमगदम्बाति वि  
जहा चेतातुपुष्टीए। एवं ऊपरा कलशुपुष्टीए वि तदा चेत मायिक्या। लेप-  
बवहारात्र आशुपुष्टीदम्बाद् कासओ क्षयिति होति । एवं दर्श पुष्ट चाहतेर  
तिथि समया उद्दोसेष असुखेत्र काल । यापादम्बाद् पुष्ट सम्भवा । विगमस्तह-  
रात्र जगाणुपुष्टीदम्बाद् कासमो क्षयिति होति । एवं दर्श पुष्ट चाहत्तर्तु-  
द्दोसेष एट उमये जापादम्बाद् पुष्ट सम्भवा । अवामगदम्बात्र पुष्टम् । एवं  
दर्श पुष्ट अभृत्यमनुद्दोसेष दो समया जापादम्बाद् पुष्ट सम्भवा । लेप-  
बवहारात्र आशुपुष्टीदम्बात्रमेतर, क्षरलजो लेपिति होत । एवं दर्श पुष्ट चाहतेर  
एवं समय उद्दोसेष दो समया । यापादम्बाद् पुष्ट चित्र अतर । विगमस्तहरात्र  
जगाणुपुष्टीदम्बात्र अतर क्षरलमो क्षयिति होत । एवं दर्श पुष्ट चाहतेर दो  
समये उद्दोसेष असुखेत्र क्षम्भ । यापादम्बाद् पुष्ट चित्र अतर । विगमस्तहरात्र  
अवामगदम्बात्र पुष्टम् । एवं दर्श पुष्ट चाहतेर एवं समय उद्दोसेष असुखेत्र  
क्षम्भ । जापादम्बाद् पुष्ट चित्र अतर । भायमवज्ञप्यात्तु लेप जहा चेतातुपुष्टीए  
तदा मायिक्याद् चाव देत अपुष्ट लेप विगमबवहारात्र अणोवितिहा काम्भ-  
पुष्टम् ॥ ११३ ॥ से ति ते लेपितिहा काम्भपुष्टी । संकल्प  
अणोवितिहा काम्भपुष्टी  
हित्याया २ भयोवशसुज  
क्षम्भ विवरणम् ॥ ११३ ॥ से ति ते क्षम्भ  
विवरणम् ॥ ११३ ॥ से ति ते क्षम्भ

येह ४९ अतीतद्वा ५० अणागयद्वा ५१ सब्बद्वा ५२ । सेत्तं पुव्वाणुपुव्वी । से कि त पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-सब्बद्वा ५२ अणागयद्वा ५१ जाव समए १ । सेत्तं पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुतरियाए अणतगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्मासो दुरुवूणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । अहवा उवणि-हिया कालाणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से कि त पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-एगसमयट्टिइए, दुसमयट्टिइए, तिसमय-ट्टिइए जाव दससमयट्टिइए, सखिजसमयट्टिइए, असखिजसमयट्टिइए । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि त पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-असखिजसमयट्टिइए जाव एगसमयट्टिइए । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुतरियाए अणतगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्मासो दुरुवूणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्त उवणिहिया कालाणुपुव्वी । सेत्तं कालाणुपुव्वी ॥ ११५ ॥ से कि त उक्तिणाणुपुव्वी २ उक्तिणाणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी य ३ । से कि त पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-उसमे १ अजिए २ सभवे ३ अभिणदणे ४ सुमई ५ पउमप्पहे ६ सुपासे ७ चदप्पहे ८ सुविही ९ सीयले १० सेजसे ११ वासुपुजे १२ विमले १३ अणते १४ वम्मे १५ सती १६ कुथू १७ अरे १८ मली १९ मुणिसुब्बए २० णमी २१ अरिदुणेमी २२ पासे २३ वद्धमाणे २४ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि त पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-वद्धमाणे २४ जाव उसमे १ । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुतरियाए चउवीसगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्मासो दुरुवूणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्तं उक्तिणाणुपुव्वी ॥ ११६ ॥ से कि त गणणाणुपुव्वी २ गणणाणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से कि त पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-एगो, दस, सय, सहस्स, दससहस्साइ, सयसहस्स, दससयसहस्साइ, कोडी, दसकोडीओ, कोडीसय, दसकोडिसयाइ । सेत्त पुव्वाणुपुव्वी । से कि त पच्छाणुपुव्वी २ पच्छाणुपुव्वी-दसकोडिसयाइ जाव ए(क्को)गो । सेत्त पच्छाणुपुव्वी । से कि त अणाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी-एयाए चेव एगाइयाए एगुतरियाए दसकोडिसयगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्मासो दुरुवूणो । सेत्त अणाणुपुव्वी । सेत्तं गणणाणुपुव्वी ॥ ११७ ॥ से कि त सठाणाणुपुव्वी २ सठाणाणुपुव्वी तिविहा पण्णता । तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी १ पच्छाणुपुव्वी २ अणाणुपुव्वी ३ । से कि त पुव्वाणुपुव्वी २ पुव्वाणुपुव्वी-समचउरंसे १ निगोहमडले २ साई ३ खुजे ४ वामणे ५ हुडे ६ ।

ऐत पुम्भालुपुष्टी । से कि तं पञ्चलुपुष्टी । ४ - मृडि ५ चाव एमवठरेते ॥  
 ऐत पञ्चलुपुष्टी । से कि तं अपालुपुष्टी । अलुपुष्टी-प्याए चेव एगाहार  
 एगुतरियाए छवच्छगयाए ऐदीए अन्नमन्नम्भासो तुस्त्वयो । ऐत अलुपुष्टी ।  
 सेर्वं संठाण्याणुपुष्टी ॥ ११८ ॥ से कि तं सामायारीमाणुपुष्टी । सामायारीव-  
 शुपुष्टी रिषिदा क्षणता । तंबहा-मुम्भालुपुष्टी १ पञ्चलुपुष्टी २ अलुपुष्टी ३ ।  
 उ कि तं पुम्भालुपुष्टी । पुम्भालुपुष्टी-गाहा-इच्छा-मिष्ठा-दहरै भावरिञ्चा व  
 निरीक्षियो । भाषुच्छर्षी य पदिपुच्छौ छंदर्षा य लिमंत्रणा ॥ १ ॥ उवर्कर्मी व अभे  
 समायारी मधे इसिहा त । ऐत पुम्भालुपुष्टी । से कि तं पञ्चलुपुष्टी । पञ्चलु-  
 पुष्टी-उवर्कर्मी चाव इच्छायारो । ऐत पञ्चलुपुष्टी । से कि तं अपालुपुष्टी ।  
 अलुपुष्टी-एगाए चेव एगाहार एगुतरियाए दसगच्छगयाए ऐदीए अन्नमन्न-  
 भासो तुस्त्वयो । ऐत अलुपुष्टी । सेर्वं सामायारीमाणुपुष्टी ॥ ११९ ॥ से कि  
 तं मालालुपुष्टी । भावलुपुष्टी रिषिदा क्षणता । तंबहा-मुम्भालुपुष्टी १ पञ्चलुपुष्टी २  
 अपालुपुष्टी ३ । से कि तं पुम्भालुपुष्टी । पुम्भालुपुष्टी-दहरै १ उवर्कर्मी २  
 चावै ३ यदोक्तमिष्य ४ पारिकामिष्य ५ चक्षिताहै ६ । ऐत पुम्भालुपुष्टी । से कि  
 तं पञ्चलुपुष्टी । पञ्चलुपुष्टी-यक्षिताहै ६ चाव उहरै १ । ऐत पञ्चलुपुष्टी ।  
 से कि तं अलुपुष्टी । अलुपुष्टी-एगाए चेव एगाहार एगुतरियाए छवच्छ-  
 याए ऐदीए अन्नमन्नम्भासो तुस्त्वयो । ऐत अलुपुष्टी । सेर्वं भावालुपुष्टी ।  
 सेर्वं आपुपुष्टी ॥ १२० ॥ 'आणुपुष्टी' ति पर्यं समत्त ॥

से कि तं बामे १ बामे इसिहे पञ्चते । तंबहा-एगापामे १ तुजामे २ तिजामे ३  
 क्तपामे ४ वंचामे ५ छनामे ६ सलापामे ७ अङ्गामे ८ नदपामे ९ इस्तामे १  
 ॥ १२१ ॥ से कि तं एगापामे १ एगापामे-गाहा-गामावि आवि अवि वि इमाल  
 गुमाप फञ्चार्थं च । तेचिं आपमनिहसे 'नामं' ति फहिया सन्ना ॥ १ ॥ सेर्वं एग-  
 ापामे ॥ १२२ ॥ से कि तं तुजामे १ तुजामे तुषिहे पञ्चते । तंबहा-एगक्तवरिए २ १  
 अलोक्तवरिए ३ २ । से कि तं एगक्तवरिए ३ एगक्तवरिए भयेगविहे पञ्चते । तंबहा-  
 ही ओ ओ ओ । सेर्वं एगक्तवरिए । से कि तं अलोक्तवरिए ३ अलेक्तवरिए-क्तवा  
 गीपा खना मास । ऐत अलेगक्तवरिए । अलवा तुजामे तुषिहे पञ्चते । तंबहा  
 गीपामे च १ अलीपामे च २ । से कि तं गीपामे १ गीपामे अलेगविहे पञ्चते ।  
 तंबहा-देशत्ते अन्नदत्तो विष्वदत्तो सोमदत्तो । सेर्वं गीपामे । से कि तं अर्मी-  
 चामे । अर्मीचामे अलेगविहे पञ्चते । तंबहा-क्तो पाहो क्तो रहो । ऐत अर्मी-

णमे । अहवा दुणमे दुविहे पण्णते । तंजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अविसेसिए-दब्वे । विसेसिए-जीवदब्वे, अजीवदब्वे य । अविसेसिए-जीवदब्वे । विसेसिए-ऐरडए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे । अविसेसिए-ऐरहए । विसेसिए-रथणप्पहाए, सकरप्पहाए, वाळुयप्पहाए, पकप्पहाए, धूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए । अविसेसिए-रथणप्पहापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जत्तए य, अपज्जत्तए य । अविसेसिए-तिरिक्खजोणिए । विसेसिए-एगिंदिए, वेइंदिए, तेइंदिए, चउरिंदिए, पचिंदिए । अविसेसिए-एगिंदिए । विसेसिए-पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए । अविसेसिए-पुढविकाइए । विसेसिए-सुहुमपुढविकाइए य, वायरपुढविकाइए य । अविसेसिए-सुहुमपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जत्यसुहुमपुढविकाइए य, अपज्जत्यसुहुमपुढविकाइए य । अविसेसिए-वायरपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जत्यवायरपुढविकाइए य, अपज्जत्यवायरपुढविकाइए य, अपज्जत्यवायरपुढविकाइए य । एव आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए, अविसेसियविसेसियपज्जत्यअपज्जत्यभेण्हैं भाणियब्बा । अविसेसिए-वेइंदिए । विसेसिए-पज्जत्यवेइंदिए य, अपज्जत्यवेइंदिए य । एव तेइंदियचउरिंदिया वि भाणियब्बा । अविसेसिए-पचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । अविसेसिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-समुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, गव्भवक्षतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-समुन्हमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जत्यसमुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेतिए-गव्भवक्षतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जत्यगव्भवक्षतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जत्यगव्भवक्षतियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य परिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-सम्मुच्छमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, गव्भवक्षतियचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-नम्मुच्छमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेनिए-पज्जत्यसम्मुच्छमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जत्यसम्मुन्हमचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गव्भवक्षतियचउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जत्यगव्भवक्षतियचउप्पयथल-

सेतुं पुम्पाणुपुष्टी । से कि तं पञ्चलुपुष्टी । ५ - तुडि ६ वाव समवर्तरसे ॥  
 सेतुं पञ्चलुपुष्टी । से कि तं अणलुपुष्टी । अणलुपुष्टी-एवाए चेव एवत्तरार  
 पश्चात्तरियाए चन्द्रचक्रगत्याए सेदीए अण्यमन्ममासो तुलसूलो । सेतुं अणलुपुष्टी ।  
 सेतुं हृष्टरणलुपुष्टी ॥ ११४ ॥ से कि तं समायारीजखलुपुष्टी । सामायारीभा-  
 षुपुष्टी रिनिहा फलता । तंजहा-पुम्पाणुपुष्टी १ पञ्चलुपुष्टी २ अणलुपुष्टी ३ ।  
 से कि तं पुम्पाणुपुष्टी । पुम्पाणुपुष्टी-गाहा-इत्यमिन्द्री-राहरी आरसिंहा व  
 निसीहियो । आपुच्छर्णी य पदिमुख्यं छंदर्णी व निर्मलर्णी ॥ १ ॥ उबउपर्णी य वाढ,  
 चमावारी मधे दसनिहा व । सेतुं पुम्पाणुपुष्टी । से कि तं पञ्चलुपुष्टी । फल्क-  
 पुष्टी-उबउपर्णी जाव इत्यगारीरो । सेतुं पञ्चलुपुष्टी । से कि तं अणलुपुष्टी ।  
 अणलुपुष्टी-एवाए चेव एवत्तरार पश्चात्तरियाए दसगच्छगत्याए सेदीए अण्यमन्म-  
 ममासो तुलसूलो । सेतुं अणलुपुष्टी । सेतुं सामायारीआणुपुष्टी ॥ ११५ ॥ से कि  
 तं माणलुपुष्टी । माणलुपुष्टी रिनिहा फलता । तंजहा-पुम्पाणुपुष्टी १ पञ्चलुपुष्टी २  
 अणलुपुष्टी ३ । से कि तं पुम्पाणुपुष्टी । पुम्पाणुपुष्टी-सदैर १ उक्तसिंह २  
 खात्तर ३ पद्मोक्तसमिति ४ पारिषामिति ५ दधिकाश्च ६ । सेतुं पुम्पाणुपुष्टी । से कि  
 तं पञ्चलुपुष्टी । पञ्चलुपुष्टी-सदिकाश्च ६ वाव उदैर १ । सेतुं पञ्चलुपुष्टी ।  
 से कि तं अणलुपुष्टी । अणलुपुष्टी-एवाए चेव एवत्तरार पश्चात्तरियाए इत्यत्य-  
 नाए सेदीए अण्यमन्ममासो तुलसूलो । सेतुं अणलुपुष्टी । सेतुं भाषाणुपुष्टी ।  
 सेतुं आणुपुष्टी ॥ १२० ॥ ‘आणुपुष्टी’ ति पर्यं समर्थ ॥

से कि तं जामै जामे दुरिहे फलते । तंजहा-एवत्तरामे १ हुणामे २ तिजामे ३  
 उरजामे ४ फलजामे ५ छणामे ६ दातानामे ७ गमुजामे ८ गम्यामे ९ इसामे १  
 ५ ॥ १२१ ॥ से कि तं एवत्तरामे १ एवत्तरामे-गाहा-जामालि जालि जलि वि इत्यत्त-  
 युगाम फलवार्ण च । रेति आगमनिद्वे नार्मि ति पद्मविवा दुर्णा ॥ १ ॥ सेतुं एव-  
 त्तरामे ॥ १२२ ॥ से कि तं हुणामै १ हुणामे दुरिहे फलते । तंजहा-एवत्तरारिए २ ।  
 से कि तं एवत्तरारिए ३ एवत्तरारिए अनेगक्षरिहे फलते । तंजहा-  
 ही थी थी लौ । सेतुं एवत्तरारिए । से कि तं अनेगक्षरारिए । अनेगक्षरारिए-क्षरा-  
 शीजा लूजा मास्य । सेतुं अनेगक्षरारिए । जहा तुषामे दुरिहे फलते । तंजहा-  
 शीजामे च १ अनीजामे च २ । से कि तं अनीजामे । अनीजामे अनेगक्षरिहे फलते ।  
 तंजहा-इसत्तरे जन्मदत्तो भिन्नुदत्तो दोमसदत्तो । सेतुं अनीजामे । से कि तं अनीज-  
 जामे । अनीजामे अनेगक्षरिहे फलते । तंजहा-कठो पठो कठो रहो । सेतुं अनीज-

णमे । अहवा दुणमे दुविहे पण्णते । तंजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अविसेसिए-दब्बे । विसेसिए-जीवदब्बे, अजीवदब्बे य । अविसेसिए-जीवदब्बे । विसेसिए-पेरडए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे । अविसेसिए-पेरहाए । विसेसिए-रयणप्पहाए, सकरप्पहाए, वालुयप्पहाए, पकप्पहाए, धूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए । अविसेसिए-रयणप्पहापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जतए य, अपज्जतए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जतए य, अपज्जतए य । अविसेसिए-तिरिक्ख-जोणिए । विसेसिए-एगिंदिए, वेइंदिए, तेइंदिए, चउरिंदिए, पचिंदिए । अविसेसिए-एगिंदिए । विसेसिए-पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए । अविसेसिए-पुढविकाइए । विसेसिए-सुहुमपुढविकाइए य, वायरपुढविकाइए य । अविसेसिए-सुहुमपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जतयसुहुमपुढविकाइए य, अपज्जतयसुहुमपुढविकाइए य । अविसेसिए-वायरपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जतयवायरपुढविकाइए य, अपज्जतयवायरपुढविकाइए य । एव आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए, अविसेसियविसेसियपज्जतयअपज्जतयभेणुहिं भाणियब्बा । अविसेसिए-वेइंदिए । विसेसिए-पज्जतयवेइंदिए य, अपज्जतयवेइंदिए य । एव तेइंदियचउरिंदिया वि भाणियब्बा । अविसेसिए-पचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपचिंदिय-तिरिक्खजोणिए, थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । अविसेसिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-समुच्छमजलयरपचिंदिय-तिरिक्खजोणिए य, गव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-समुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जतयसमुच्छमजलयरपचिं-दियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जतयसमुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जतयगव्व-वष्टियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जतयगव्वमवक्तियजलयरपचिंदिय-तिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-चउप्पय-यलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य परिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-सम्मुच्छमचउ-प्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, गव्वमवक्तियचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-सम्मुच्छमचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जतयसम्मुच्छमचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जतय-सम्मुच्छमचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गव्वमवक्तिय-चउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जतयगव्वमवक्तियचउप्पययल-

सेतं पुमालुपुष्टी । से कि तं पचाषुपुष्टी १ प -हृषे ६ जाव समवदरसे ॥  
 सेतं पचाषुपुष्टी । से कि तं अणाषुपुष्टी ३ अलालुपुष्टी-एवाए चेव एगाइवाए  
 एगुतरियाए स्वर्गम्भाम्याए सेद्वैए अणमण्डम्भासो तुम्भूयो । सेतं अलालुपुष्टी ।  
 सेतं संठापाणुपुष्टी ॥ ११० ॥ से कि तं सामायारीमालुपुष्टी १ सामायारीआ-  
 लुपुष्टी तिशिहा पम्यता । तंजहा-पुम्यालुपुष्टी १ पचाषुपुष्टी २ अलालुपुष्टी २ ।  
 से कि तं पुम्यालुपुष्टी ३ पुम्याषुपुष्टी-गाहा-इच्छेमीष्ठो-उद्दारो जावसिञ्चना च  
 निर्दीहिवो । मापु-छर्णी य पदिपुर्व्यै छर्णी य निर्मलता ॥ १ ॥ उवसंप्यौ च कले  
 उमायारी मवे दसविहा उ । सेतं पुम्यालुपुष्टी । से कि स पचाषुपुष्टी १ फल्गु-  
 पुष्टी-उवसंप्यौ जाव इच्छगारो । सेतं पचाषुपुष्टी । से कि तं अलालुपुष्टी १  
 अलालुपुष्टी-एवाए चेव एगाइवाए एगुतरियाए दसगच्छम्याए सेद्वैए अणमण्ड-  
 भासो तुम्भूयो । सेतं अलालुपुष्टी । सेतं सामायारीआणुपुष्टी ॥ १११ ॥ से कि  
 तं भावालुपुष्टी ३ मापालुपुष्टी तिशिहा पम्यता । तंजहा-पुम्यालुपुष्टी १ पचाषुपुष्टी २  
 अलालुपुष्टी ३ । से कि तं पुम्यालुपुष्टी ३ पुम्याषुपुष्टी-उद्दार १ उवसंप्यै १  
 खाइए ३ यमोवसमिए ४ पारियामिए ५ सकिजाइए ६ । सेतं पुम्यालुपुष्टी । से कि  
 तं पचाषुपुष्टी ३ पचाषुपुष्टी-सकिजाइए ६ जाव उद्दार १ । सेतं पचाषुपुष्टी ।  
 से कि तं अलालुपुष्टी ३ अलालुपुष्टी-एवाए चेव एगाइवाए एगुतरियाए उगाइए  
 याए सेद्वैए अणमण्डभासो तुम्भूयो । सेतं अलालुपुष्टी । सेतं भायालुपुष्टी ।  
 सेतं माणुपुष्टी ॥ ११० ॥ 'भायालुपुष्टी ति पर्य समत्त ॥

उ कि तं यामै जामे इसविहे पम्यते । तंजहा-एमनामे १ तुमामे २ निजामै २  
 खउम्यामे ४ वैचकामे ५ उलामै ६ उलगामे ७ अदुलामे ८ नवलामे ९ इसविहे १  
 ॥ १११ ॥ से कि तं एगामे १ एगामे-गाहा-नामावि जावि व्यविभि इम्ब  
 गुम्याण पञ्चकार्ण च । तमिं भायमनिद्वे नार्मै नि व्यविकाराम्या ॥ १ ॥ सेतं पर्य  
 व्यामे ॥ १ १० से कि तं तुलामै ३ तुमामै तुमिहे पम्यते । तंजहा-एवम्भारिए ४ ।  
 अगवक्गारिए य २ । से कि तं एगवगारिए ५ एवम्भारिए ज्वेगविहे पम्यत । तंजहा  
 हो भी चो ल्ली । सग एगवगारिए । से कि तं अगेगवरारिए । ज्वेगवगारिए-एव  
 वीणा सम्या माम्य । मेतं अगवगम्भारिए । भद्रा तुमामे तुमिहे पम्यते । तंजहा  
 वीक्यामै ४ । अवीक्यामै य ३ । से कि तं वीक्यामे ५ वीक्यामै अन्वर्गिहे पर्यै ।  
 तंजहा-इवद्वे इवद्वो भिन्नद्वय गोमद्वा । मेतं वीक्यामै । से कि तं अवी  
 क्यामै अवीक्यामै अनोगर्हिहे पम्यत । तंजहा चहा पातो ददो रहो । मेतं वीक्यै  
 १ ही २ सी (भाव्यते) ३ ची ४ ची ५ ची ।

जहा तेरे घोलों का योग हो वहा आतुर्मास करें।  
॥ संवैया ॥

कादो लिहां योहो होय, येहन्दी अलप होय;  
मिर्य पानक होय जहा में उतरसो ।  
उच्चारादि ठोड़ होय घीसो यह बस्ती होय  
दैय सुखम होय भीयध उच्चरसो ।  
आपक निष्पत्त होय राजा सुखम होय;  
पाकारणी असप होय, धीरी मिला फिरसो ।  
भउम्नाय भी मोम होय, द्रव्य देन काल माव शोय,  
तेरे बोह मिके जठे आमामो ही करसो ॥११॥

### ३४ असरमाहयों के नाम ।

तारो दृढ़े पति दिए अकाल में गाज भीज,  
कड़के अकाल तथा भूमी छम्य मारी है ।  
बासो अन्द्र पक्ष विन्द आकाशे अगमि काल;  
काढ़ी धीरी धूमड़ अरु रज धात न्यारी है ।  
हाङु माँस लोही राघ, ठरङ्गो मसाल चले,  
अन्द्र सूर्य प्रह राम धूसु विप्रह दारि है ।  
यानक माये पहियो मूमो दंसेही को क्लेशर,  
धीस बोह टाली कर आमी आका पालिये ॥१२॥

आपाह भावको आमोज कासि बैसि पूनम जाव ।  
ऐती लागती जाकओ पहिया पांच धकाव २ सूरा सकाय व  
भयिये खारो समप में भवी कवी दो दो ही यिनिये । संस्पा  
आती धात दोपार प्रान असरमाह दाली दूर मणसी सोय ।  
शूयि लालभान्द यो कहे भो विगत न रघापै छोय २ ॥१३॥

णमे । अहवा दुणामे दुविहे पणते । तंजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अविसेसिए-दब्वे । विसेसिए-जीवदब्वे, अजीवदब्वे य । अविसेसिए-जीवदब्वे । विसेसिए-जेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे । अविसेसिए-जेरइए । विसेसिए-रयणप्पहाए, सक्ररप्पहाए, वालुयप्पहाए, पकप्पहाए, ध्रूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए । अविसेसिए-रयणप्पहापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जतए य, अपज्जतए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरइए । विसेसिए-पज्जतए य, अपज्जतए य । अविसेसिए-तिरिक्खजोणिए । विसेसिए-एर्गिदिए, वेडंदिए, तेइदिए, चउरिदिए, पचिंदिए । अविसेसिए-एर्गिदिए । विसेसिए-पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए । अविसेसिए-पुढविकाइए । विसेसिए-सुहुमपुढविकाइए य, वायरपुढविकाइए य । अविसेसिए-सुहुमपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जतयसुहुमपुढविकाइए य, अपज्जतयसुहुमपुढविकाइए य । अविसेसिए-वायरपुढविकाइए । विसेसिए-पज्जतयवायरपुढविकाइए य, अपज्जतयवायरपुढविकाइए य । एवं आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए, अविसेसियविसेसियपज्जतयअपज्जतयभेएर्हि भाणियव्वा । अविसेसिए-वेइदिए । विसेसिए-पज्जतयवेइदिए य, अपज्जतयवेइंदिए य । एव तेईंदियचउरिंदिया वि माणियव्वा । अविसेसिए-पचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, यलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । अविसेसिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-समुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, गव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-समुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जतयसमुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जतयगव्ववक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जतयगव्ववक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-वक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जतयगव्ववक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-चउप्पय-यलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य परिसप्पयलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-सम्मुच्छमचउप्पयलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, गव्वमवक्तियचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-सम्मुच्छमचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पज्जतयसम्मुच्छमचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपज्जतयसम्मुच्छमचउप्पययलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गव्वमवक्तियचउप्पययल-

सेतुं पुष्पाणुपुष्पी । से कि तं पञ्चाणुपुष्पी । प -दुर्दि ६ वाच समवर्तरसे ॥  
 सेतुं पञ्चाणुपुष्पी । से कि तं अपाणुपुष्पी । अणाणुपुष्पी-एवाए चेष्ट एयात्मार  
 एग्रातरियाए इग्नात्मायाए । सेवीए अन्यमन्यमासो तुस्मूषो । सेतुं अपाणुपुष्पी ।  
 सेतुं सौठापाणुपुष्पी ॥ ११८ ॥ से कि तं सामायारीमाणुपुष्पी । सामायारीक-  
 णुपुष्पी तिरिषा पञ्चता । तंजहा-पुञ्चाणुपुष्पी । पञ्चाणुपुष्पी २ अपाणुपुष्पी ॥  
 से कि तं पुष्पाणुपुष्पी । पुष्पाणुपुष्पी-गाहा-इच्छामिल्लो-उद्धारैरे भासरिस्त्वा य  
 तिरिषीद्वयो । आपुरुष्यी य पदिपुच्छै छंदर्भी य निमत्तै ॥ १ ॥ उवर्त्तयी य सह  
 समायारी भवे दसरिषा उ । सेतुं पुष्पाणुपुष्पी । से कि तं पञ्चाणुपुष्पी । पञ्चाणु-  
 पुष्पी-उवर्त्तयी वाच इच्छामारो । सेतुं पञ्चाणुपुष्पी । से कि तं अपाणुपुष्पी ।  
 अपाणुपुष्पी-एवाए चेष्ट एगात्माए एग्रातरियाए उच्चन्यज्ञमाए सेवीए अन्यमन्य-  
 मासो तुस्मूषो । सेतुं अपाणुपुष्पी । सेतुं सामायारीआणुपुष्पी ॥ ११९ ॥ देकि  
 तं भाषाणुपुष्पी । भाषाणुपुष्पी तिरिषा पञ्चता । तंजहा-पुष्पाणुपुष्पी । पञ्चाणुपुष्पी ३  
 अपाणुपुष्पी ३ । से कि तं पुष्पाणुपुष्पी । पुष्पाणुपुष्पी-उद्धारै । उवर्त्तयी य  
 वाहए । वजोउसमिए ४ पारिषामिए ५ उचिवाइए ६ । सेतुं पुष्पाणुपुष्पी । से कि  
 तं पञ्चाणुपुष्पी । पञ्चाणुपुष्पी-उचिवाइए ६ वाच उद्धारै । सेतुं पञ्चाणुपुष्पी ।  
 से कि तं अपाणुपुष्पी । अपाणुपुष्पी-एवाए चेष्ट एगात्माए एग्रातरियाए इग्नात्म-  
 याए सेवीए अन्यमन्यमासो तुस्मूषा । सेतुं अपाणुपुष्पी । सेतुं माणाणुपुष्पी ।  
 सेतुं आणुपुष्पी ॥ १२० ॥ 'आणुपुष्पी' ति पर्यं समर्त ॥

से कि तं जामे १ जामे दसरिषे पञ्चते । तंजहा-एमादामे १ तुषामे २ तिरिषते ।  
 अवशामे ४ अवशामे ५ छणामे ६ सत्त्वामे ७ अद्युषामे ८ नवशामे ९ इस्त्वामे १  
 ॥ १२१ ॥ से कि तं एगणामे १ एगणामे-गाहा-पामावि जावि व्यविवि इत्याच  
 गुणाच फञ्चार्थ च । तुषिं आपमनिशुद्धे 'नामे' ति फस्त्रिया सञ्चा ॥ १ ॥ सेतुं पर्य-  
 णामे ॥ १२२ ॥ से कि तं तुषामे ३ तुषामे तुषिषे पञ्चते । तंजहा-एग्रात्मारिए ५ ।  
 अवेगक्षरिए य २ । से कि तं एग्रात्मारिए ५ एग्रात्मारिए वजेमविषे पञ्चते । तंजहा-  
 हो धी धी ज्ञो । सेतुं एमक्षरिए । से कि तं अवेगक्षरिए । अवेगक्षरिए-अवेग-  
 वीक्षा अवा मासा । सेतुं अवेगक्षरिए । अहा तुषामे तुषिषे पञ्चते । तंजहा-  
 वीक्षामे च । अवीक्षामे य २ । से कि तं वीक्षामे । वीक्षामे अवेगविषे पञ्चते ।  
 तंजहा-देवशतो अग्नशतो विष्वृद्ध्ये सोमशतो । सेतुं वीक्षामे । से कि तं अवीक्ष-  
 यामे । अवीक्षामे अवेगविषे पञ्चते । तंजहा-बडो पडो कडो रहो । सेतुं अवीक्ष-

णमे । अहवा दुणमे दुविहे पण्णते । तजहा-विसेसिए य १ अविसेसिए य २ । अविसेसिए-दब्बे । विसेसिए-जीवदब्बे, अजीवदब्बे य । अविसेसिए-जीवदब्बे । विसेसिए-ऐरडए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे । अविसेसिए-ऐरह्यए । विसेसिए-रयणप्पहाए, सङ्करप्पहाए, वालुयप्पहाए, पकप्पहाए, धूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए । अविसेसिए-रयणप्पहापुढविणेरडए । विसेसिए-पजत्तए य, अपजत्तए य । एव जाव अविसेसिए-तमतमापुढविणेरडए । विसेसिए-पजत्तए य, अपजत्तए य । अविसेसिए-तिरिक्खजोणिए । विसेसिए-एगिंदिए, वेइंदिए, तेइंदिए, चउरिंदिए, पचिंदिए । अविसेसिए-एगिंदिए । विसेसिए-पुढविकाइए, आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए । अविसेसिए-पुढविकाइए । विसेसिए-सुहुमपुढविकाइए य, वायरपुढविकाइए य । अविसेसिए-सुहुमपुढविकाइए । विसेसिए-पजत्तयसुहुमपुढविकाइए य, अपजत्तयसुहुमपुढविकाइए य । अविसेसिए-चायरपुढविकाइए । विसेसिए-पजत्तयवायरपुढविकाइए य । एवं आउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए, अविसेसियविसेसियपजत्तयअपजत्तयभेएर्हिं भाणियव्वा । अविसेसिए-वेइंदिए । विसेसिए-पजत्तयवेइंदिए य, अपजत्तयवेइंदिए य । एव तेडदियचउरिंदिया वि भाणियव्वा । अविसेसिए-पचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए, खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । अविसेसिए-जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-समुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, गव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-समुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजत्तयसमुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपजत्तयसमुच्छमजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । अविसेसिए-गव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-पजत्तयगव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य, अपजत्तयगव्वमवक्तियजलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए य । - ^ सिए-थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिए । विसेसिए-चउप्पय-  
ल्यर ^ ^ ^ ^

पचिंदियतिरिक्खजोणिए य ।  
 ) । विसेसिए-सम्मुच्छमचउतियचउलयरपदियतिरि-  
 पूचिंदियतिरिक्खजोणिए ।  
 चोणिए य, अपजत्तय-  
 प्रविसेसिए-गव्वमवक्तिय-  
 गव्वमवक्तियचउप्पयथल-

महुरा वि भाषियमा । प्रयगुणक्षस्त्वे वास अर्थत्प्रयगुणक्षस्त्वे । एवं प्रत्यक्षम्  
महुभूमीयठियक्षिद्युक्षसा वि भाषियमा । सेतुं पञ्चवप्तामे । गाहान्मोर्न् उ-  
जामं तिक्ष्णं, इत्वा पुरिष्ठे जपुंसये वेव । एएसि तिक्ष्णं पि(व) अंतिमि व पत्तम्  
पोच्छ ॥ १ ॥ तत्प्र पुरिष्ठस्य भेता आ है क्ष व्ये इवंति वत्तारि । से व्य एव  
यस्तो इवंति अव्याप्तिक्षियमा ॥ २ ॥ प्र अंतिय इविय चतिय अवात वर्तुलव  
पोदम्बा । एएसि तिक्ष्णं पि व वोद्यामि निवृत्ये एतो ॥ ३ ॥ भागारते 'प्र'  
ईगारतो 'निरी' व तिक्ष्णं व । उमारतो 'विकृ' तुमों व भवा व तुर्विकृ  
॥ ४ ॥ भागारतो 'भास्त्र' ईगारतो 'सिरी' व 'क्षक्षी' व । उगारतो 'वृ'  
'वृ' व अवात इत्यीर्ण ॥ ५ ॥ अव्यारते 'वृ' ईव्यारते मधुसुग्न भविष्य । उपर  
तो 'पीस्तु' महुं व भाता चपुंसार्ण ॥ ६ ॥ सेतुं तिणामे ॥ १२४ ॥ से कि  
चत्वामे । चत्वामे चत्वामि है पञ्चते । तंजहा-आयमेवं १ लेखेवं १ भवो ।  
विगारेवं ४ । से कि ते आयमेवं । आगमेवं-पद्यामि फैक्षिय तुम्यामि । ते  
आगमेवं । से कि ते लेखेवं । लेखेवं-ते अव्यारेत्त्र फैयो अव्याप्तोऽत्र,  
अव्याप्तोऽत्र । सेतु अव्येवं । से कि ते पाहैए ३ फाहैए-असी एवी फू ल्ली एवं  
एते माहे हैमि । सेतु फाहैए । से कि ते विगारेवं । विगारेवं-ईण्डम्ब+अप्य-विगार  
से+भागाता=साङ्गाता ईपि+इर्दं=हपीर्न, भैरी+श्व=सरीर, मेतु+उर्दं=है  
र्दं वर्दं+व्याप्त-व्याप्त । सेतु विगारेवं । सेतु चत्वामे ॥ १२५ ॥ से कि  
चत्वामे । चत्वामे चत्वामि है पञ्चते । तंजहा-भैरिकं १ भैरातिकं २ अव्यारतिकं ।  
बौक्षर्तिकं ४ मिभ्यम् ५ । भास' हरि नामिकं राहुं हरि भैरातिकं 'वास्तवी' है  
भास्त्वातिकं 'परि' इस्त्रौप्यामिकं 'चैक्त' हरि मिभ्यम् । सेतु चत्वामे ॥ १२६ ॥  
से कि ते छन्नामे १ छन्नामे छमिहै पञ्चते । तंजहा-उद्दैए १ उद्दैमिए २ उद्दैरे  
समोक्षयमिए ५ सक्षिकाश्वप ६ । से कि ते उद्दैए १ उद्दैरे २ उद्दैरे ३  
य १ उद्दैयनिपञ्चे य २ । से कि ते उद्दैरे ४ उद्दैरे ५

३ उद्दैरे । ४ उद्दै+अत्यव्यारेत्त्र ५ पद्मे+भैरव-व्याप्तोऽत्र  
साम्यवद्वाहरण्याइमिमार्न भव्यामहीए-वै+इविवाप  
पाहैए-दंड+भर्ण्यावैद्वारार्ण्य एवमार्न १ सा+वा-  
व्यारीर्ण, ११ नाई+श्व=नाई, १२ महुं+उर्दं  
नामिय १ वेताइनं २ अव्याराइयं ३ ओनत  
'महुं' ति वेताइये 'भास्त्र' ति अस्तारवं

अद्विष्ट कम्मपयं दीण उद्देण । सेत्त उद्देण । से कि त उद्यनिप्फने ? उद्यनिप्फने दुविहे पण्णते । तजहा-जीवोद्यनिप्फने य १ अजीवोद्यनिप्फने य २ । से कि त जीवोद्यनिप्फने ? जीवोद्यनिप्फने अणेगविहे पण्णते । तजहा-ऐरइए, तिरिक्ख-जोणिए, मणुस्से, देवे, पुढविकाइए जाव तसकाइए, कोहकसाई जाव लोहकसाई, इथीवेयए, पुरिसवेयए, णपुसगवेयए, कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे, मिच्छादिद्वी, सम्म-दिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी, अविरए, असण्णी, अण्णाणी, आहारए, छउमत्थे, सजोगी, ससारत्थे, असिद्दे । सेत्त जीवोद्यनिप्फने । से कि त अजीवोद्यनिप्फने ? अजी-वोद्यनिप्फने अणेगविहे पण्णते । तजहा-उरालिय वा सरीर, उरालियसरीरपओग-परिणामिय वा दब्ब, वेउव्विय वा सरीर, वेउव्वियसरीरपओगपरिणामियं वा दब्ब, एव आहारग सरीर तेयग सरीर कम्मगसरीर च भाणियब्ब । पओगपरिणामिए चण्णे, गधे, रसे, फासे । सेत्त अजीवोद्यनिप्फने । सेत्त उद्यनिप्फने । सेत्त उद्देण । से कि त उवसमिए ? उवसमिए दुविहे पण्णते । तजहा-उवसमे य १ उवसमनिप्फणे य २ । से कि त उवसमे ? उवसमे मोहणिज्जस कम्मस्स उवसमेण । सेत्त उवसमे । से कि त उवसमनिप्फणे ? उवसमनिप्फणे अणेगविहे पण्णते । तजहा-उवसतकोहे ओमे, उवसतपेजे, उवसतदोसे, उवसतदसणमोहणिजे, उवसतचरित्त-सेया सम्मतलद्वी, उवसामिया चरित्तलद्वी, उवसतकसायछउमत्थे । सेत्त उवसमिए । से कि त खइए ? खइए दुविहे व्यनिप्फणे य २ । से कि त खइए ? खइए-अद्विष्ट । से कि त खयनिप्फणे ? खयनिप्फणे अणेगविहे गणधरे, अरहा, जिणे, केवली, खीणआभिणिवोहिय-।, खीणओहिणाणावरणे, खीणमणपज्जवणाणावरणे, निरावरणे, खीणावरणे, णाणावरणिज्जकम्मविप्प-गणिद्दे, खीणनिदानिद्दे, खीणपयले, खीणपयलापयले, गावरणे, खीणअचक्खुदसणावरणे, खीणओहिदसणा-णावरणे, निरावरणे, खीणावरणे, दरिसणावरणिज्ज-जे, खीणअसायावेयणिजे, अवेयणे, निडवेयणे, खीण-वेयणे, सुभासुभवेयणिज्जकम्मविप्पमुक्के, खीणकोहे जाव खीणलोहे, खीणपेजे, खीण-दोसे, खीणदसणमोहणिजे, खीणचरित्तमोहणिजे, अमोहे, निम्मोहे, खीणमोहे, मोहणिज्जकम्मविप्पमुक्के, खीणणेरडयआउए, खीणतिरिक्खजोणियाउए, खीणमणु-साउए, खीणदेवाउए, अणाउए, निराउए, खीणाउए, आउकम्मविप्पमुक्के, गइजाइ-

सरीरमोर्खगर्भपत्रसंज्ञानसंस्यवसंठालभनेवार्तोदिविद्वंशामविष्पुके शीघ्रमुमलाने  
शीघ्रमुमलाने अगाने निष्पामे शीघ्रमले शीघ्रमलानमकमविष्पुके; तीव्र  
उच्चत्योए, शीघ्रपीयागोए, अगोए, निष्पोए, शीघ्रगोए, उच्चशीदगोएकमविष्पुके;  
शीघ्रदार्ढतराए, शीघ्रमान्तराए, शीघ्रमोर्धतराए, शीघ्रतकमोर्धतराए, शीघ्रतीरि  
चंद्रताए, अर्धतराए, विरतराए, शीघ्रतराए, अठटहवकमविष्पुके; तिर्युक्ते,  
मुक्ते परिषिष्पुके, अठगडे उच्चुकस्तप्पहीने। सेतुं यदनिष्पक्ष्ये। सेतुं वदए।  
से कि तं लक्ष्येवसमिए ? लक्ष्येवसमिए दुष्टिहे पञ्चते। तंबहा-वक्षोवसमे य १ यमे-  
वसमनिष्पक्ष्ये य २। से कि तं लक्ष्येवसम ? लक्ष्येवसमे-वक्षन्त चाहृमाप यमे-  
वसमन तंबहा-याणावरविजस्तु १ यसगावरविजस्तु २ मोहविजस्तु ३ अंत-  
रावस्तु द्वयोवसमेण ४। सेतुं वक्षोवसमे। से कि तं लक्ष्येवसमविष्पक्ष्ये ? वक्षे-  
वसमनिष्पक्ष्ये अजेगविहे पञ्चत। तंबहा-लक्ष्येवसमिया जाभिषिकोहियमावक्ष्ये  
जाव सम्भोवसमिया गमपक्ष्यावक्ष्यी लक्ष्येवसमिया महभ्यावक्ष्यी लक्ष्येवस-  
मिया द्वयमन्यावक्ष्यी लक्ष्येवसमिया विमंगालावक्ष्यी यमोवसमिया चक्षुदैवस-  
मदी वक्षोवसमिया अक्षमदैवसमदी लक्ष्येवसमिया व्येहिदैवसमदी एवं सम्प-  
दैवसपक्ष्यी मिष्ठावसपक्ष्यी सम्ममिष्ठावसपक्ष्यी यमोवसमिया सामाइवरीर-  
खदी एवं द्वेषोवद्वाक्षयसमदी परिहारविष्पदिवसमदी द्वयुमसंपरायक्षरितालदी एवं  
चरितावरितालदी लक्ष्येवसमिया वापक्ष्यदी एवं यामसमदी भोगक्ष्यदी उपमोवक्ष्य-  
पमोवसमिया शीरिमक्ष्यदी एवं पंक्तिमीरियक्ष्यदी वाप्तीरियक्ष्यदी वाप्त्यविक्षीरि-  
यक्ष्यदी द्वयोवसमिया द्वोहिदिवक्ष्यदी जाव यासिदिवक्ष्यदी लक्ष्येवसमिए यसार्थ-  
परे एवं द्वयमहमधरे ठार्वगापरे समवार्यपरे विकाहपन्नतिवरे जायावसमवहावरे  
सवासगावसा अंतगद्वसा यमुत्तरोक्तावस्था यव्वावावरवपरे विकाह-  
सुयवर यक्षेवसमिए विद्विक्षावपरे यक्षोवसमिए वदपुष्टी जाव चउत्तुप्ती  
लक्ष्येवसमिए गणी लक्ष्येवसमिए वावए। सेतुं यक्षोवसमनिष्पक्ष्ये। सेतुं लक्ष्येव-  
समिए। से कि तं पारिकामिए ? पारिकामिए दुष्टिहे पञ्चते। तंबहा-वापारि-  
जामिए य १ यामाइपारिजामिए य २। से कि तं यापारिकामिए ? यापारिकामिए  
अजेगविहे पञ्चत। तंबहा-गाहा-कुण्डहुता कुण्डगुण्डे कुण्डकर्व कुण्डतुक्तुल चेर।  
अङ्गमा य अङ्गमस्त्वा सप्त्या र्वज्ञमवयहा य ३ ४ ५ उक्तवावा रिक्तवावा  
यज्ञिये विज्ञ, विष्वावा वूद्या अक्षवारिता शूमिया महिया रुद्धवावा चेते-  
वहागा स्त्रेवहागा चंदपरिवेषा स्त्रपरिवेषा प्रदिव्यंदा पवित्रुर् रुद्ध-  
स्त्रेवहागा, कविद्विया वमोदा, वाचा वाचपरा वाचा वर्षापरा यहा फहा

पायाला, भवणा, निरया-रथणप्पहा, सक्करप्पहा, वालुयप्पहा, पकप्पहा, ध्रूमप्पहा, तमप्पहा, तमतमप्पहा, सोहम्मे जाव अच्चुए, गेवेजे, अणुतरे, ईसिप्पब्भारा, परसाणुपोगले, दुपएसिए जाव अणंतपएसिए । सेत्त साइपारिणामिए । से किं त अणाइपारिणामिए? अणाइपारिणामिए-धम्मत्यिकाए, अधम्मत्यिकाए, आगासत्थि काए, जीवत्थिकाए, पुरगलत्थिकाए, अद्वासमए, लोए, अलोए, भवसिद्धिया, अभव-सिद्धिया । सेत्त अणाइपारिणामिए । सेत्त पारिणामिए । से किं त सञ्चिवाइए? सञ्चिवाइए-एएसि चेव उदइयउवसमियखइयखओवसमियपारिणामियाण भावाण दुगसजोएण तिगसजोएण चउक्कसजोएण पचगसजोएण जे निप्फज्जति सब्बे ते सञ्चिवाइए नामे । तत्थ ण दस दुयसजोगा, दस तियसजोगा, पच चउक्कसजोगा, एगे पंचकसजोगे । तत्थ ण जे ते दस दुगसजोगा ते ण इमे-अत्थि णामे उदइय-उवसमनिप्फणे १ अत्थि णामे उदइयखाइगनिप्फणे २ अत्थि णामे उदइयखओ-वसमनिप्फणे ३ अत्थि णामे उदइयपारिणामियनिप्फणे ४ अत्थि णामे उव-समियखयनिप्फणे ५ अत्थि णामे उवसमियखओवसमनिप्फणे ६ अत्थि णामे उवसमियपारिणामियनिप्फणे ७ अत्थि णामे खइयखओवसमनिप्फणे ८ अत्थि णामे खइयपारिणामियनिप्फणे ९ अत्थि णामे खओवसमियपारिणामियनिप्फणे १० । कयरे से णामे उदइयउवसमनिप्फणे? उदइए त्ति मणुस्से, उवसत्ता कसाया, एस ण से णामे उदइयउवसमनिप्फणे । कयरे से णामे उदइयखयनिप्फणे? उदइए त्ति मणुस्से, खइय सम्मत, एस ण से णामे उदइयखयनिप्फणे । कयरे से णामे उदइयखओवसमनिप्फणे? उदइए त्ति मणुस्से, खओवसमियाइ इंदियाइ, एस ण से णामे उदइयखओवसमनिप्फणे । कयरे से णामे उदइयपारिणामियनिप्फणे? उदइए त्ति मणुस्से, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उदइयपारिणामियनिप्फणे । कयरे से णामे उवसमियखयनिप्फणे? उवसत्ता कसाया, खइय सम्मत, एस ण से णामे उवसमियखयनिप्फणे । कयरे से णामे उवसमियखओवसमनिप्फणे? उवसत्ता कसाया, खओवसमियाइ इंदियाइ, एस ण से णामे उवसमियपारिणामियनिप्फणे । कयरे से णामे उवसमियखयनिप्फणे? उवसत्ता कसाया, पारिणा-मिए जीवे, एस ण से णामे उवसमियपारिणामियनिप्फणे । कयरे से णामे खइय-खओवसमनिप्फणे? खइय सम्मत, खओवसमियाइ इंदियाइ, एस ण से णामे खइयखओवसमनिप्फणे । कयरे से णामे खइयपारिणामियनिप्फणे? खइयं सम्मत, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे खइयपारिणामियनिप्फणे । कयरे से णामे खओवसमियपारिणामियनिप्फणे? खओवसमियाइ इंदियाइ, पारिणामिए जीवे, एस

जे से जामे यज्ञोवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे । तत्त्व वं जे ते वसु दिग्दर्शक्षेया त च  
इमे—अरिव जामे उद्दृश्यठवसमिक्षववनिष्टुष्टे १ अरिव पञ्चे उद्दृश्यठवसमिक्ष  
ओवसमनिष्टुष्टे २ अरिव जामे उद्दृश्यठवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे ३ अरिव जामे  
उद्दृश्यठवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे ४ अरिव जामे उद्दृश्यठवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे ५  
अरिव जामे उद्दृश्यठवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे ६ अरिव जामे उद्दृश्यठवसमिक्ष  
इययामोवसमनिष्टुष्टे ७ अरिव जामे उद्दृश्यमिक्षयद्यपारिजामियनिष्टुष्टे ८ अरिव  
जामे उद्दृश्यमियपारिजामियनिष्टुष्टे ९ अरिव जामे उद्दृश्यठवसमिक्ष  
पारिजामियनिष्टुष्टे १ । क्ष्यरे से जामे उद्दृश्यठवसमिक्षयनिष्टुष्टे । उद्दृश्य  
ति ममुस्ते उवसंता क्ष्यामा यद्यर्थं सम्मतं एस वं से जामे उद्दृश्यठवसमिक्ष  
यनिष्टुष्टे । क्ष्यरे से जामे उद्दृश्यठवसमिक्षमोवसमनिष्टुष्टे । उद्दृश्य  
ति ममुस्ते उवसंता क्ष्यामा पारिजामिए वीचे एस वं से जामे उद्दृश्य  
उवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे । क्ष्यरे से जामे उद्दृश्यठवसमनिष्टुष्टे । उद्दृश्य  
ति ममुस्ते यद्यर्थं सम्मतं क्ष्योवसमियाहै इरियाहै एस वं से जामे  
उद्दृश्यठवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे । क्ष्यरे से जामे उद्दृश्यठवसमनिष्टुष्टे ।  
उद्दृश्य ति ममुस्ते क्ष्यर्थं सम्मतं पारिजामिए वीचे एस वं से जामे उद्दृश्यठव  
यपारिजामियनिष्टुष्टे । क्ष्यरे से जामे उद्दृश्यठवसमनिष्टुष्टे । उद्दृश्य  
ति ममुस्ते क्ष्यमोवसमियाहै इरियाहै, पारिजामिए वीचे एस वं से जामे  
उद्दृश्यठवसमियपारिजामियनिष्टुष्टे । क्ष्यरे से जामे उद्दृश्यमिक्षयद्यपारिजामि-  
यनिष्टुष्टे १ उवसंता क्ष्यामा यद्यर्थं सम्मतं यज्ञोवसमियाहै इरियाहै, एस वं से  
जामे उद्दृश्यमिक्षयद्यपारिजामियनिष्टुष्टे । क्ष्यरे से जामे उद्दृश्यमियल्लायपारिजामि-  
यनिष्टुष्टे २ उवसंता क्ष्यामा क्ष्यमोवसमियाहै इरियाहै, पारिजामिए वीचे एस  
वं से जामे उद्दृश्यमिक्षयद्यपारिजामियनिष्टुष्टे । क्ष्यरे से जामे यद्यक्षमो-  
वसमियपारिजामियनिष्टुष्टे ३ यद्यर्थं सम्मतं क्ष्यमोवसमियाहै इरियाहै, पारिजामिए  
वीचे एस वं से जामे यद्यमयमावसमियपारिजामियनिष्टुष्टे । तत्त्व वं जे त वं  
यउवसंते ते वं इमे—अरिव जामे उद्दृश्यठवसमिययद्यपारिजामियनिष्टुष्टे ४ अरिव जामे उद्दृश्य-

उवममियखओवसमियपारिणामियनिप्कणे ३ अतिथि णामे उद्दयउवसमिय-  
मियपारिणामियनिप्कणे ४ अतिथि णामे उवसमियखड्यखओवसमियपारिणामियनि-  
प्कणे ५ । क्यरे मे णामे उद्दयउवसमियखइयखओवममनिप्कणे ? उद्डए त्ति  
मणुस्से, उवसता कसाया, रड्य सम्मत्त, खओवममियाइ इदियाइ, एस ण से णामे  
उद्दयउवसमियखड्यखओवसमनिप्कणे । क्यरे से णामे उद्दयउवसमियखड्यपा-  
रिणामियनिप्कणे ? उद्दए त्ति मणुस्से, उवसता कसाया, रड्यं सम्मत्त, पारिणा-  
मिए जीवे, एम ण से णामे उद्दयउवसमियखइयपारिणामियनिप्कणे । क्यरे मे  
णामे उद्दयउवसमियखओवममियपारिणामियनिप्कणे ? उद्डए त्ति मणुस्से, उवसता  
कसाया, खओवसमियाइ इंटियाइ, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उद्दयउवस-  
मियखओवममियपारिणामियनिप्कणे । क्यरे से णामे उद्दयखड्यखओवसमिय-  
पारिणामियनिप्कणे ? उद्दए त्ति मणुस्से, खड्य सम्मत्त, खओवसमियाइ इदियाइ,  
पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उद्दयखड्यखओवसमियपारिणामियनिप्कणे ।  
क्यरे से णामे उवसमियखड्यखओवसमियपारिणामियनिप्कणे ? उवसता कसाया,  
खइय सम्मत्त, खओवसमियाइ इदियाइ, पारिणामिए जीवे, एस ण से णामे उवसमिय-  
खइयखओवसमियपारिणामियनिप्कणे । तत्थ ण जे से एके पचगसजोए से णं हमे-  
अतिथि णामे उद्दयउवसमियखइयखओवममियपारिणामियनिप्कणे । क्यरे से  
णामे उद्दयउवसमियखइयखओवसमियपारिणामियनिप्कणे ? उद्दए त्ति मणुस्से,  
उवसता कसाया, खइय सम्मत्त, खओवसमियाइ इदियाइ, पारिणामिए जीवे, एस ण  
से णामे उद्दयउवसमियखइयखओवसमियपारिणामियनिप्कणे । सेत्त सञ्चिवाइए ।  
सेत्तं छण्णामे ॥ १२७ ॥ से कि तं सत्तणामे ? सत्तणामे सत्तसरा पण्णत्ता । तजहा-  
गाहा-सज्जे रिसहे गधारे, मज्जिमे पचमे सरे । धे(र)वए चेव नेसाए, सरा  
सत्त वियाहिया ॥ १ ॥ एएसि ण सत्तण्ण सराणं सत्त सरट्टाणा पण्णत्ता । तजहा-  
गाहाओ-सज्ज च अगगजीहाए, उरेण रिसह सर । कंरुगगएण गधार, मज्जजीहाएँ  
मज्जिम ॥ २ ॥ नासाए पचम वूया, दतोट्टेण य धेवय । भमुहक्खेवेण णेसाय,  
सरट्टाणा वियाहिया ॥ ३ ॥ सत्तसरा जीवणिस्सिया पण्णत्ता । तजहा-गाहा-सज्जं  
रवइ मऊरो, कुकुडो रिसमं सर । हसो रवइ गधारं, मज्जिमं च गवेलगा ॥ ४ ॥  
अह कुमुमसभवे काले, कोहला पंचम सर । छट्ट च सारसा कुच्चा, नेसाय सत्तम  
गधो ॥ ५ ॥ सत्तसरा अजीवणिस्सिया पण्णत्ता । तजहा-सज्ज रवइ मुयगो, गोमुही  
रिसह सरं । सखो रवइ गधार, मज्जिम पुण क्षालरी ॥ ६ ॥ चउच्चरणपद्म्भाणा,  
गोहिया पचम सरं । आङ्गरो रेवइय, महाभेरी य सत्तम ॥ ७ ॥ एएसि ण सत्तण्ण

सरार्थ सत्त सरल्पदना पन्नता । तंबहा-गाहायो-सर्वे भवते विदि, वर्ण च विषस्त्रै । गामो पुक्षा य मिता य नारीष होइ बन्धो ॥ १ ॥ रिहेव उ पूर्व-  
(पृष्ठ)अं देणाकर्वं घणामि य । वर्त्पमधमलभ्यते, इतिमो सयामि य ॥ २ ॥  
णापारे गीकुरुत्तिण्या क्षवित्ती कमाद्विद्या । हर्वति छद्यो भन्ना ते अन्मे उर्व-  
पारमा ॥ ३ ॥ मजिसमसरमंता उ हर्वति छहावीविषो । जावते विवार्ते,  
मजिसमसरमसिञ्चो ॥ ४ ॥ पंचमसरमंता उ हर्वति पुहरीपै । चूरा देणाहृतारे  
ध्वेगगणनायगा ॥ ५ ॥ रेवमसरमंता उ हर्वति दुहावीविषो । दीवमिया वार्त-  
रिवा दोवरिवा य मुडिवा ॥ ६ ॥ मित्तमसरमंता उ हर्वति क्षद्वारगा । वर्ण-  
परो देवहाहा द्विवगा भारवाहपा ॥ ७ ॥ एष्वि वं सताह चरार्थ तदो वला  
पन्नता । तंबहा-पञ्चामे १ मजिसमयामे २ यैवारगामे ३ । सञ्चगमस्तु वं उठ  
मुख्यमात्मो पन्नतामो । तंबहा-गाहा-मैली कोरविवी हरिती रवेती व चारक्ती  
य । छट्टी व सारिषी नाम मुद्दरुवी य सतमा ॥ १ ॥ मजिसमयामस्तु वं उठ  
मुख्यमात्मो पन्नतामो । तंबहा-उत्तरमंती रवेती उत्तरैसमा । उमोहतो व  
सोवीरा अभिष्ठो होइ उत्तमा ॥ १ ॥ पंचारणामस्तु पं उत्त सुख्यमात्मी पन्नतामो ।  
पञ्चहा-मैली व छुट्टीया पूरिमा व चतुर्थी व द्वितीयारा । उत्तरगवारा वि व च्य  
पंचमिया हवह मुख्यम ॥ १ ॥ मुद्दुतरमायमा दा छट्टी चक्ष्यो व वास्तवा ।  
जह उत्तरयवा द्वेविना य दा सतमी मुख्यम ॥ २ ॥ सतासरा छमो हर्वति १,  
गीवस्तु व्य हर्वत् चोर्ती ॥ २ मृद्दुतरमायमा दोसासा ॥ ३ वह वा गीवस्तु आगारा ॥ १ ॥  
सतासरा नामीमो हर्वति गीवं व द्वितीयोणी । पावसमा च्छासा तित्तिव व वीक्ष्य  
आगारा ॥ २ ॥ जाइमह जारमंता चमुख्याहता य मञ्जस्वारमिम । अस्त्रे  
उत्तरमंता तित्तिव व गीवस्तु आगारा ॥ ३ ॥ छट्टेव द्वितीये तित्तिव व वित्तर्व दो  
य भविष्येयो । जो नाही दो गाहिह, दृष्टिक्षिण्यो रेगमञ्जसमिम ॥ ४ ॥ भीवे दुर्व  
द्वितीय उत्तर व बन्धो मुख्यमो । कामसरेमनुर्वीसे द्वेष्या होति गेवस्तु ॥ ५ ॥  
पुर्वं रैतं व भैक्षक्य व दैतं व द्वेष्यमनिष्टेऽ । महुरे सैमं सुर्विष्ट, व्युष्या  
होति गेवस्तु ॥ ६ ॥ उरोक्तेविरेष्विद्युर्व व गीवेवे मठवैरभिष्वेष्विद्युर्व ।  
समताम्युर्वेवे सुरस्वरसीमर गीवं ॥ ७ ॥ अक्षवरसेमं फलेमं ताष्टुमं व्य-  
सैमं व गेहसैमं । नीसुषिष्ठोसुषिष्ठसैमं संचारसैमं दुरा उत्त ॥ ८ ॥ विष्टेव  
सारेमं व देवगुरुर्वेष्विद्युनं । उवेतीव दोवर्यार व मिये महुरमेवं व ॥ ९ ॥  
सैमं व्युष्येमं चेव सुख्यत्व विसैमं व वं । तित्तिव वित्तमारवं, चतुर्थं नोवस्त्रम्भ

१ पाहेतरे-कुचेव व छुमितीय चोरा वंडास्मुडिवा । २ पावसारिति व्युष्ये ।

## १८ लाख २४ हजार एक सौ बीस बार मिथ्या दुष्कृत की धारणा ।

जीव भेद वाण सत तेसठ विचार उर, अभिहयादिक  
ताही दश गुणा कीजिये । तीन करण तीन गुणा, दूणा राग  
द्वेष वस त्रिहँ जोग त्रिगुणा; त्रिहँ काल ते धरि जिये । अहंत  
सिद्ध आचारज उवजभाय साधु आत्मादि पद् गुणा कर  
लीजिये । अठारे लाख चौबीश हजार सत एकबीश, किसन-  
लाल कहे मिथ्या दुष्कृत यों नित दीजिये ॥ ४ ॥

## राज का प्रमाण ।

तीन क्रोड़ उपरे इक्यासी लाख वारा सहस नवसे  
सित्तर मण गोलो एक मानिये । आयो उर्ध्वे लोक से चो  
मास पट दिन पट पहर पट घड़ी पट पल पट जानिये, ताको  
नाम राज एक, ऐसो अधो सात राज सात राज ऊर्ध्वे लोक  
ज्ञान से प्रमानिये, तहमेव सत्य हो निशंक है किशनलाल,  
ज्ञानी देव भाष्यो जामें संशय हूं न आनिये ॥ ५ ॥

जीव अनन्ता मोक्ष में, गया रु जासी जाय ।

पिण खेत्तर रोके नहीं, ज्यों विद्या घट माय ॥६॥

श्रेणिकराय सुपास उदाईन, पौटिल नाम महा अणगारे ।  
जान दढ़ा यूं सती सुलशा पुनि, रेवति नाम भलो सो विचारे ।  
सुन्दर श्रावक शंखरु पोखली, शतक तीसरे अङ्ग उचारे ।  
ए नव जीव तीर्थकर गोत्र उपोत्थर्यो वीर जिनन्द के वारे ॥७॥

॥ १० ॥ सक्षया पायया चेव, भणिर्इओ होंति दोष्णि वा । सरमडलम्मि निजते, पसत्था इसभासिया ॥ ११ ॥ केसी गायइ महुरं, केसी गायइ खर च रुख च । केसी गायइ चउर, केसी य विलवियं दुय केसी ॥ १२ ॥ विसर पुण केरिसी ? । गोरी गायइ महुर, सामा गायइ खर च रुख च । काली गायइ चउर, काणा य विलविय दुय अथा ॥ १३ ॥ विस्तर पुण पिंगला । सत्तसरा तओ गामा, मुच्छणा डङ्कवीसई । ताणा एगूणपण्णास, सम्मतं सरमडल ॥ १४ ॥ स्तेत्तं सन्त्तणामे ॥ १२८ ॥ से कि त अट्टणामे ? अट्टविहा वयणविभत्ती पण्णता । तजहा-निहेसे पठमा होइ, विइया उवएसणे । तडया करणम्मि कया, चउत्थी सपयावणे ॥ १ ॥ पंचमी य अवायाणे, छट्टी सस्सामिवायाणे । सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्टमाऽऽमतणी भवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमा विभत्ती, निहेसे 'सो डमो अह व' ति । विइया पुण उवएसे 'भण कुणसु इम व तं व' ति ॥ ३ ॥ तइया करणम्मि कया 'भणिय च क्य च तेण व मए' वा । 'हंदि णमो साहाए' हवइ चउत्थी पयाणम्मि ॥ ४ ॥ 'अवण्य गिण्ह य एत्तो, इउ' ति वा पंचमी अवायाणे । छट्टी तस्स इमस्स वा, गयस्स वा सामिसवधे ॥ ५ ॥ हवइ पुण सत्तमी त, इमम्मि आहारकालभावे य । आमतणी भवे अट्टमी उ, जह 'हे जुवाण' ति ॥ ६ ॥ स्तेत्तं अट्टणामे ॥ १२९ ॥ से कि तं नवणामे ? नवणामे-नवकव्वरसा पण्णता । तजहा-गाहाओ-वीरो सिंगारो अब्मुओ य, रोहो य होइ वोद्धव्वो । वेलणओ वीभच्छो, हासो कल्हणो पसतो य ॥ १ ॥ (१) तत्थ परिच्चायम्मि य, (दाण)तवचरणसञ्जुजणविणासे य । अणणुसय-धिष्प्रक्षम-, लिंगो वीरो रसो होइ ॥ १ ॥ वीरो रसो जहा-सो नाम महावीरो, जो रजं पयहिच्छण पव्वइओ । कामकोहमहासञ्जु-, पव्वनिगद्यायणं कुणइ ॥ २ ॥ (२) सिंगारो नाम रसो, रहसंजोगाभिलाससजणणो । मडणविलासविब्बोय-, हासली-लारमणलिंगो ॥ १ ॥ सिंगारो रसो जहा-महुरविलाससललिय, हियउम्मायणकरं जुवाणाण । सामा सहुद्धाम, दाएइ भेद्धलादाम ॥ २ ॥ (३) विम्हयकरो अपुव्वो, अनु-भूयुव्वो य जो रसो होइ । हरिसविसाउप्पति-, लक्ष्मणो अब्मुओ नाम ॥ १ ॥ अब्मुओ रसो जहा-अब्मुयतरमिह एत्तो, अन्न कि अत्थ जीवलोगम्मि ? । ज जिण-चयणे अत्था, तिकालजुता मुणिज्जति ॥ २ ॥ (४) भयजणणरूपसद्धयार-, चिंता-कहासुप्पणो । समोहसभमविसाय,-सरणलिंगो रसो रोहो ॥ १ ॥ रोहो रसो जहा-भिउडिविडिवियमुहो, सद्गोढ इय रहिरमाकिणो । हणसि पसु असुरणिर्भो, भीमरसिय अझरोइ । रोहोऽसि ॥ २ ॥ (५) विणबोवयारगुज्जगुरु-, दारमेरावडक-

मुप्पणो । वेतनओ नाम रहो सज्जा संसारसत्तिगो ॥ १ ॥ वेतनओ रहो  
जहा-कि लोहमरणीयो सज्जनीयतर ति सज्जमानु ति । वरिजविन् युद्धनो  
परिवदर वं बहुप्योर्त ॥ २ ॥ (५) अनुद्गुणिमतुरुपय- संज्ञेगम्मासम्पैषनिलग्न्ये ।  
नित्यप्रविहिंशाक्षरणो रहो होइ वीभद्दो ॥ ३ ॥ वीभष्टे रहो जहा-अनु  
इमस्मरियनिज्जर- समानुगांधिसुखकाल ति । धन्ना उ सरीरक्षि बहुक्षम-  
मुर्चं रिमुर्चति ॥ ४ ॥ (६) बद्धवधगम्मामा- विरीयदित्तरणाम्मुप्पण्यो । इन्हो  
मणप्पद्धान्यो पगामस्तिगो रहो होइ ॥ ५ ॥ हारो रहो जहा-यामुक्तमहीमेहिद- वी  
मुद्द वहरे परोयेती । ही जह बलभरक्षेपय- फलसियमन्ना हयह लामा ॥ ६ ॥  
(७) विशिष्यद्येगर्वप- बहाहिविषिग्नामसंमुप्पण्यो । शाम्यकिस्तिमन्नहाम-  
दम्पस्तिगो रहो क्षमो ॥ ७ ॥ कहानो रहो जहा-यग्नामहितापियम्य बाहानयरपुर  
विठ्य बहुमो । तस्य विभागे पुतिय । तुम्हत्वे ते मुहं जाय ॥ ८ ॥  
(९) निरागमणामाहाम- संमतो ये वर्तमापिनं । अविघरस्तराना स्ये एरो  
पर्वता ति शायम्या ॥ ९ ॥ पर्वतो रहो जहा-गम्मातनिविमार्त उवर्वतपर्वात्मेन  
विद्वीये । ही जह मुरिणा याह तुम्हमन्ते वीकरणीय ॥ ३ ॥ एए तद अन्तरणा  
वर्तीमाशागपिद्विमुप्पण्या । याहादि मुरिक्ष्या इति तुम्हा वा र्तीमा वा ॥ १० ॥  
संक्ष नयप्पाम ॥ ११ ॥ से दित इमण्यामे । इगम्माम इगरिहे पलाते । तंजहा  
योग्य १ नामाग्न्य २ आमाजपर्व ३ पटिहागात्तर्व ४ पदायवाए ५ भायद  
विद्वत्तर्व ६ नामत्तर्व ७ अदयवाए ८ संशमार्त्यं पमात्तर्व ९ । ते दि ते देहो ।  
गद्यम-गम्मद ति शायम्या । तहर ति तक्षो जहर ति जहरो पाइ ति तहरो ।  
मेमे गोल्ल । से दि ते नामाग्न्य ३ अनुत्ता गर्तुता अमुम्हे गमुम्हा भमुहा गमुरो  
अमाप पदाते भाविता समुदिता तो वर्त जगह ति तक्षो अमाहररे  
मादराहए भपीदवाह वीकराण्, ता इहगारए इंदोये । उत्ते नोगानो । से दि  
ते भायाग्नार्त्य ४ आयाग्नार्त्य- (पम्मोवार्ते चूम्हा) आर्ती वार्तादित्यं अंते  
शयं भद्रार्त्यित्यं भद्रये जडार्त्यं पुरिगर्त्यं (उग्यार्त्यं) त्यजे हीर्वे  
पम्मा याः । गमोगर्त्यं जम्मद्ये । गिर्वे आयाग्नार्त्यं । से दि ते विहाग्नार्त्यं ।  
विहाग्नार्त्यं-नवुपायाग्नाग्नागर्त्योटव्यामर्त्यहराम्भुहरा-गवीर्त्याम्भुहरा  
त्यहिगग्नार्त्य-भग्निता तिहा भग्नी तीदा । गिर्वे याः वार्तारेतु लंदर्वे  
गाहय जरला ग अम्भा, जरलार ग अम्भा जर्मभरे तु भर, भरो ।  
विहाग्नार्त्य । गिर्वे विहाग्नार्त्य । ५ दि ते वार्तार्त्य । वार्तार्त्य  
आयाग्नार्त्य गायाग्नार्त्य वार्तार्त्य तुर्तार्त्य वार्तार्त्य वार्तार्त्य

दक्खवदणे, सालिवणे । सेत्त पाहण्णयाए । से कि त अणाइयसिद्धतेण ? अणाइय-सिद्धतेण-धम्मत्थिकाए, अवधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पुण्गलत्थिकाए, अद्वासमए । सेत्त अणाइयसिद्धतेण । से किं त नामेण ? नामेण-पिउपिया-महस्य नामेण उब्रामिज(ए)इ । सेत्त नामेण । से कि त अवयवेण ? अवयवेण-सिंगी सिही विसाणी, ढाढी पक्खी खुरी नही वाली । दुपय चउप्पय वहुप्पय, नगुली केसरी कउही ॥ १ ॥ परियरववेण भड, जाणिजा महिलिय निवसणेण । सित्थेण दोणवाय, कविं च इक्काए गाहाे ॥ २ ॥ सेत्त अवयवेण । से कि तं सजोएण ? सजोगे चउविहे पण्णते । तजहा-दब्बसजोगे १ खेत्तसजोगे २ कालसजोगे ३ भावसजोगे ४ । से कि त दब्बसजोगे ? दब्बसजोगे तिविहे पण्णते । जहा-सचित्ते १ अचित्ते २ भीसए ३ । से कि त सचित्ते ? सचित्ते-गोहिं गोमिए, महिसीहिं महिसए, ऊरणीहिं ऊरणीए, उझीहिं उझीवाले । सेत्त सचित्ते । से किं तं अचित्ते ? अचित्ते-छत्तेण छत्ती, दडेण दही, पडेण पही, घडेण घही, कडेण कही । सेत्त अचित्ते । से किं त भीसए ? भीसए-हलेण हालिए, सगडेण सागडिए, रहेण रहिए, नावाए नाविए । सेत्त भीसए । सेत्त दब्बसजोगे । से किं तं खेत्तसजोगे ? खेत्तसजोगे-भारहे, एरवए, हेमवए, एरण्णवए, हरिवासए, रम्म-गवासए, देवकुरुए, उत्तरकुरुए, पुञ्चविदेहए, अवरविदेहए । अहवा-मागहे, माल-वए, सोरढ्हए, भरहढ्हए, कुकणए । सेत्त खेत्तसजोगे । से किं त कालसजोगे ? कालसजोगे-सुसमसुसमाए १ सुसमाए २ सुसमदूसमाए ३ दूसमदूसमाए ४ दूसमाए ५ दूसमदूसमाए ६ । अहवा-पावसए १ वासारत्तए २ सरदए ३ हेमतए ४ वसतए ५ गिम्हए ६ । सेत्त कालसजोगे । से किं त भावसजोगे ? भावसजोगे दुविहे पण्णते । तजहा-पसत्थे य १ अपसत्थे य २ । से कि तं पसत्थे ? पसत्थे-नाणेण नाणी, दसणेण दसणी, चरित्तेण चरित्ती । सेत्त पसत्थे । से किं त अप-सत्थे ? अपमत्थे-कोहेण कोही, माणेण माणी, मायाए माई, लोहेण लोही । सेत्त अपसत्थे । सेत्त भावसजोगे । सेत्त सजोएण । से किं त पमाणेण ? पमाणे चउविहे पण्णते । तजहा-नामप्पमाणे १ ठवणप्पमाणे २ दब्बप्पमाणे ३ भावप्पमाणे ४ । से किं त नामप्पमाणे ? नामप्पमाणे-जस्स ण जीवस्स वा, अजीवस्स वा, जीवाण वा, अजीवाण वा, तदुभयस्स वा, तदुभयाण वा, ‘पमाणे’ त्ति-नाम कज्जइ । सेत्त नामप्पमाणे । से किं त ठवणप्पमाणे ? ठवणप्पमाणे सत्तविहे पण्णते । तंजहा-गाहा-णक्खत्तै देवयै कुँले, पासडै गैणे य जीविर्याहेड । आभिष्पाइयणामे ठवणाणाम तु सत्तविह ॥ १ ॥ से किं तं एकखत्तणामे ? एकखत्तणामे-कित्तियाहिं जाए-

ईपरियमाम । से द्वि हे अवश्यनाम ? अवश्यनामे-अरिहतमाया चक्रविजया एवं  
हैरमाया चासुरेत्यमाया रायमाया मुनिमाया बायगमाया । मेत्ते अवश्यनम् ।  
सत्ते तदिमप् । स द्वि हे शाउए ? शाउए भै-मालाका परम्पराका एवं द्वौ  
स्वेद सेव्ये गार्वे प्रशिगच्छिष्ठोप्येषे च जातेज्ञान । सत्ते शाउए । स द्वि  
हे निरालिए ? निरालिए-सैषां द्येत्यज्ञापि भैमति च राति चक्रध्यरः मुदु  
मुदुप्रसन्नीतिच्छुगमे ईपेरिय स्वनन रथनि च करोत्यज्ञपिषेवे विशुद्धि राति  
शति च भयनिच्छिसालं द्वौर्येकां=उद्दः भैरव्य मालाच्छाला । स द्वि  
निरालिए । सत्ते भाइप्रमाण । सर्वं प्रमाणनामे । सर्वं दृमनामे । सर्वं मामे  
॥ १२१ ॥ मामेति पर्यं समर्प्य ॥

मे द्वि हे ते प्रमाण ? प्रमाण चउभिह पराते । तंत्रहा-दम्भामाणे ।  
नेननामाण ३ व्यवन्ननाम १ भाइप्रमाण ४ ॥ १२२ ॥ मे द्वि हे ते दम्भाम्पर्य ।  
दम्भाम्पर्य दुष्टिहे प्रग्यत । तंत्रहा-दम्भनित्यन्न य १ गिमणनिराली य १ ।  
मे द्वि हे ते प्रग्यनिष्ठा १ । गिमणनिराली दम्भात्तुगामन दुष्टिहा॒ जाव॑ दग्गर्णि॑  
सुगिक्कर्तर्णि॑, असुगिक्कर्तर्णि॑, अग्यतरण्णीए । मन दग्गनिराली । मे द्वि हे  
गिमणनिराली १ । गिमणनिराली पर्यग्नि॑ परात । तंत्रहा-मान १ दम्भाम्पर्य ।  
भाइप्रमाण १ गरीम ४ ५ दिमाला ५ । मे द्वि हे ते मान १ मापे दुर्विहे पराते ।  
तंत्रहा-प्रमाणामाणी य १ रत्ननामामाणी य १ । मे द्वि हे ते प्रमाणप्रमाणपे ।  
प्रमाणामाणा-दो भगद्वेभो-न्नार दा पार्द्वां न दा प्राप्ति मालाके-दुर्विहे  
चलरि दुष्टान्नाचा चलरि पाप्या-भाइं चलरि भाइपर्य॑ दो । ६ द्वि  
भाइपर्य-दहर्वा॑ दुर्वन भद्री॑ भाइपर्य॑ मतिमार्व॑ भैम भद्रदग्य॑ ७ ॥ १२३ ॥  
अदु॑ य भाइपर्य-दहर्वा॑ । दाल॑ प्रग्यामामामाम॑ दि॑ परोद्वाँ॑ । ८ ॥ १२४ ॥  
मामामाम॑ दुर्वोद्विग्नामामाम॑ भैरव्यप्रतिवान॑ चाल॑ भैरव्यप्रतिवान॑  
दिव्यिरामाल॑ भाइ । गुण प्राप्त्यामामा । मे द्वि हे रत्ननामामा । ९ ॥ १२५ ॥  
दहर्वा॑-प्रमाणामाणाभा॑ प्राप्त्यामाम॑ भैरव्यपर्य॑ दहर्वा॑ । गुणप्रतिवान॑  
दिव्य॑ तंत्रहा॑ चार्गुर्वा॑ (चउद्दम्भा॑) १० ॥ १२६ ॥ (तामामाम॑ १)

१ दूर्वामा॑ प्रमाण भद्रदग्य॑ दूर्वा॑ २ दूर्वुर्वा॑ ३ दूर्वुर्वा॑  
४ दूर्वुर्वा॑ भाइपर्य॑ दूर्वा॑ दूर्वा॑ भाइ । ५ दूर्वुर्वा॑  
दूर्वा॑ ६ भद्रदग्य॑ दूर्वा॑ भाइ ७ दूर्वुर्वा॑ दूर्वुर्वा॑ ८ ९ दूर्वा॑  
भाइपर्य॑ भाइ १० दूर्वुर्वा॑ ११ दूर्वुर्वा॑ दूर्वा॑ १२ १३ १४  
दूर्वुर्वा॑ दूर्वा॑ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

सोलसिया (सोलमपलपमाणा १६), अद्वभाडया (वत्तीसपलपमाणा ३२), चउभाइया (चउमट्टिपलपमाणा ६४), अद्वमाणी (सयाहियअद्वाडमपलपमाणा १२८), माणी (दुसयाहियछप्पणपलपमाणा २५६), दो चउसट्टियाओ=वत्तीसिया, दो वत्तीसियाओ=सोलसिया, दो मोलसियाओ=अद्वभाडया, दो अद्वभाडयाओ=चउभाइया, दो चउभाइयाओ=अद्वमाणी, दो अद्वमाणीओ=माणी। एएण रसमाणपमाणेण किं पबोयण ? एएण रसमाणेण-वारकघडककरकन्तिलक्खण भवइ । सेत्त रसमाणपमाणे । सेत्त माणे । से किं त उम्माणे ? उम्माणे-ज ण उम्मिणिजइ, तंजहा-अद्वकरिसो, करिसो, अद्वपलं, पल, अद्वतुला, तुला, अद्वभारो, भारो । दो अद्वकरिसा=करिसो, दो करिसा=अद्वपल, दो अद्वपलाइ=पल, पच पलसइया=तुला, दस तुलाओ=अद्वभारो, वी[वी]सु तुलाओ=भारो । एएण उम्माणपमाणेण किं पबोयण ? एएण उम्माणपमाणेण पत्ताडगरतगरचोययकुकुमखदगुलमच्छियाईण दब्बाण उम्माणपमाणनिव्वित्तिलक्खण भवइ । सेत्त उम्माणपमाणे । से किं त ओमाणे ? ओमाणे-जं ण ओमिणिजइ, तजहा-हत्थेण वा, दडेण वा, धणुक्केण वा, जुगेण वा, नालियाए वा, अक्खेण वा, मुसलेण वा । गाहा-दड धणू जुग नालिया य, अक्ख भुसल च चउहत्थ । दसनालिय च रञ्जु, वियाण ओमाणसण्णाए ॥ १ ॥ वत्युम्मि हत्थमेज, खित्ते दड धणुं च पत्थम्मि । खाय च नालियाए, वियाण ओमाणसण्णाए ॥ २ ॥ एएण अवमाणपमाणेण किं पबोयण ? एएण अवमाणपमाणेण खायचियरहय-करकन्तियकडपडभित्तिपरिक्षेवससियाण दब्बाण अवमाणपमाणनिव्वित्तिलक्खण भवइ । सेत्त अवमाणे । से किं त गणिमे ? गणिमे-ज ण गणिजइ, तजहा-एगो, दस, सय, सहस्स, दससहस्साइ, सयसहस्स, दससयसहस्साइ, कोडी । एएण गणिमप्पमाणेण किं पबोयण ? एएण गणिमप्पमाणेण भितगभितिभत्तवेयणआय-व्ययससियाण दब्बाण गणिमप्पमाणनिव्वित्तिलक्खणं भवइ । सेत्त गणिमे । से किं त पठिमाणे ? पठिमाणे-ज ण पठिमिणिजइ, तजहा-गुजा, कागणी, निप्फावो, कम्ममासओ, मङ्गलओ, सुवण्णो । पच गुजाओ=कम्ममासेओ, चत्तारि कागणीओ=कम्ममासओ, तिणि निप्फावा=कम्ममासओ, एव चउक्को कम्ममासेओ । वारस कम्ममासया=मङ्गलओ, एव अडयाळीस कागणीओ=मङ्गलओ, सोल्स कम्ममासया=सुवण्णो, एव चउसट्टि कागणीओ=सुवण्णो । एएण पठिमाणप्पमाणेण किं पबोयण ? एएण पठिमाणप्पमाणेण सुवण्णरथयमणिमोत्तियसखसिलप्पवालाईण दब्बाण

१ कागणीचवेक्खाए । २ कागणीचवेक्खाए त्ति अद्वो ।

पहिमाणप्पमाणनिभिन्नतिक्षणं मम । सेतुं पहिमामे । सेतुं विमागभिष्ठम्ये । सेतुं  
इव्ययमामे ॥ १३३ ॥ से कि तं बोतमामे १ बोतमामे तुविहे पर्यते । तं बहा-  
पदसनिष्ठम्ये य १ विमागनिष्ठम्ये य २ । से कि त पदसनिष्ठम्ये । पदस-  
निष्ठम्ये—एतत्पदसोगाढे तुपदसोगाढे विपदसोगाढे संविज्ञपदसोगाढे वर्तविज्ञप-  
दसोगाढे । सेतुं पदसनिष्ठम्ये । से कि त विमागनिष्ठम्ये । विमागनिष्ठम्ये—गाहा-  
बाहुम विहित रज्यां दुन्धी द्वन् गाहुं च बोद्धां । बोद्धां सेही पवर, व्लेगम-  
ल्लेगे ति य दहेव ॥ १ ४ से कि त बंगुः १ बंगुः विविहे पर्यते । तबहा—आव्युषे ।  
उस्त्रेहुः २ पमार्जुः ३ । से कि त आव्युषे ३ आव्युषे—वे व जया मनुस्सा  
मवंति तेति व एवा अप्पलो अनुभेदं तुवाळसम्बन्धार्थं मुह, नमुहार्थं तुरिते  
पमार्जुते मम, दोम्याए पुरिते माफ्युते मम, अहमार्थं तुवामाये पुरिते उमार्थ-  
घुते मम । गाहामो—माङ्गमाणप्पमाक्षुता(व्य) मन्त्रायवद्वगुभैर्त उद्देशा ।  
उत्तम्भुसप्पस्या उत्तम्पुरिता सुवेद्या ॥ १ ॥ होति पुज विहितपुरिता भ्लुवं  
अग्न्याय उविदा । छन्दसद छन्दसपुरिता चठकतर मञ्जितिक्षय त ॥ २ ॥ हीय  
वा अहिता वा च वाटु चरसाधारपित्तिता । ते उत्तम्पुरितार्थं उत्तसु पेतुत्त-  
मुदेति ॥ ३ ॥ एषणं बंगुम्पमालेवं—३ व्युडाईप्यामे दो पमार्जित्वा दो  
विहत्वीमो—रथणी दो रथणीमो—कुच्छी दो कुच्छीमो—दो वन् द्वृगे मातिया अवंति  
मुतुके दो पञ्चसाहस्राई—गाहुर्यं चतारि पात्रयाई—बोद्धां । एषण जाव्युषमालेवं  
कि फलोयर्थं । एषण जाव्युषेभ्ये वे व जया मनुस्सा द्वृतिं तेति व तदा वे  
आव्युषेभ्ये अगडतमामाहन्त्रिताविप्रवारीविहितम्भुत्युवातिवामे सरा चरपतिवामे  
सरमरपतिवामो विस्तीतिवामो आरम्भुजाभक्तवदवस्थावदवराईमो समाप्त-  
यात्मपरिवामे पाणारेवाग्रम्भवरियदारोत्तुरपासावचरसरवनवमावपित्तिवाम-  
विहितवामेवाहविहितम्भवत्तेवाग्रम्भाईवि अवामाविवद व बोद्धार्थं विजिति ।  
से उमासमो विविहे पर्यते । तं बहा—स्त्रीव्युः १ पमरुः २ फ्लंगुः ३ । अंगुल-  
यमा एगपेतिवा सेही स्त्रीव्युमे स्त्री स्त्रीविवा फ्लंगुः पवर धौंए तुविर्यं वर्त-  
पुः । एषणि य भेते । शुद्धभंगुम्पमालेवं वर्तुवामे वर्ते अभ्या वा वदुया  
वा तुव्या वा विवेषादिवा वा । उव्यत्तोदे शुद्धभंगुः पवरुः वस्त्रेव्युमे वर्तुवामे  
वर्तुवेव्युषेः । सेतुं आव्युः । से कि त उत्तेव्युः १ उस्त्रेव्युः अवेषिहे पर्यते ।  
तं बहा—गाहा—परमार्थत्तरेष्य, एवेत्य अव्यते व वामस्य । विकाता जूता व वर्तो  
वद्धुव—विविया व्यामो ॥ १ ५ से कि त परमार्थ १ परमार्थ तुविहे पर्यते ।

सुहुमे य १ ववहारिए य २ । तत्य ण जे से सुहुमे से ठप्पे । तत्य ण जे से ववहारिए से ण अणताणताणं सुहुमपोगलाण समुदयसमिइसमागमेणं ववहारिए परमाणपोगले निष्पञ्जइ । से ण भते । असिधार वा खुरधार वा ओगाहेज्जा ? हता । ओगाहेज्जा । से ण तत्य छिजेज वा भिजेज वा ? नो इणट्टे समट्टे, नो खलु तत्य सत्यं कमइ । से ण भते । अगणिकायस्स मज्जमज्जेणं वीडवएज्जा ? हता ! वीइवएज्जा । से ण भते ! तत्य डहेज्जा ? नो इणट्टे समट्टे, नो खलु तत्य सत्यं कमइ । से ण भते ! पुक्खरसवष्टगस्स महामेहस्स मज्जमज्जेणं वीडवएज्जा ? हता ! वीइवएज्जा । से ण तत्य उदउल्ले सिया ? नो इणट्टे समट्टे, नो खलु तत्य सत्यं कमइ । से ण भते ! गंगाए महाणहैए पडिसोय हब्बमागच्छेज्जा ? हता ! हब्बमागच्छेज्जा । से ण तत्य विणिधाय-मावजेज्जा ? नो इणट्टे समट्टे, नो खलु तत्य सत्यं कमइ । से ण भते ! उदगावतं वा उदगविंदु वा ओगाहेज्जा ? हता ! ओगाहेज्जा । से ण तत्य कुच्छेज्जा वा परियावजेज्जा ? नो इणट्टे समट्टे, नो खलु तत्य सत्यं कमइ । गाहा-सत्येण सुतिक्खेण वि, छित्तु भेत्तु च ज न किर सका । तं परमाणुं सिद्धा, वयति आइ पमाणाणं ॥ १ ॥ अणताणं ववहारियपरमाणपोगलाण समुदयसमिइसमागमेण-सा एगा उसण्ह-सण्हियाइ वा, सण्हसण्हियाइ वा, उङ्गरेणूइ वा, तसरेणूइ वा, रहरेणूइ वा । अट्ट उसण्हसण्हियाओ=सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ट सण्हसण्हियाओ=सा एगा उङ्गरेणू, अट्ट उङ्गरेणूओ=सा एगा तसरेणू, अट्ट तसरेणूओ=सा एगा रहरेणू, अट्ट रहरेणूओ=देवकुरुत्तरकुरुण मणुयाण से एगे वालगे, अट्ट देवकुरुत्तरकुरुण मणुयाण वालगा=हरिवासरम्मगवासाणं मणुयाण से एगे वालगे, अट्ट हरिवासरम्मगवासाणं मणुस्साणं वालगा=हेमवयहेरण्वयाण मणुस्साण से एगे वालगे, अट्ट हेमवय-हेरण्वयाण मणुस्साण वालगा=पुञ्चविदेहभवरविदेहाण मणुस्साण से एगे वालगे, अट्ट पुञ्चविदेहभवरविदेहाण मणुस्साण वालगा=भरहएरवयाणं मणुस्साण से एगे वालगे, अट्ट भरहएरवयाण मणुस्साण वालगा=सा एगा लिक्खा, अट्ट लिक्खाओ=सा एगा ज्यूया, अट्ट ज्यूयाओ=से एगे जवमज्जे, अट्ट जवमज्जे=से एगे अगुले । एएण अगुलाण पमाणेण छ अगुलाइ=पाओ, वारस अगुलाइ=विहृथी, चउवीस अगुलाइ=रयणी, अड्यालीस अगुलाइ=कुच्छी, छब्बवइ अगुलाइ=से एगे डेड्इ वा, धणूइ वा, जुगोइ वा, नालियाइ वा, अक्खेइ वा, मुसलेइ वा । एएणं धणुप्पमाणेण दो धणुसहस्रासाइ=गाउरयं, चत्तारि गाउयाइ=जोयण । एएण उस्सेहंगुलेण किं पओयण ? एएणं उस्सेहंगुलेण गेरडयतिरिक्खजोणियमणुस्मदेवाण सरीरोगाहणा मविजाइ । गेरइयाण भते । केमहालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ? गोयमा । दुविहा

पञ्चाणा । सुजहा—मवधारमिजा य । उत्तरेतिविद्या य ३ । तत्त्व वं चा सा मवधारमिजा सा वं—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं पंचकुम्भवार्द्ध । तत्त्व वं चा सा उत्तरेतिविद्या सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं पञ्चसहस्रै । रमणप्पहाए पुढीरीए नेराम्पार्ज भंत । नेमहातिजा सरीरेगाहा पञ्चाणा । गोममा । दुर्विहा पञ्चाणा । तंजहा—मवधारमिजा य । उत्तरेतिविद्या य ३ । तत्त्व वं चा सा मवधारमिजा सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं पञ्चरप्पन्नार्द्ध दोप्पि रम्पीरो वारम अगुल्लव । नेवरप्पहापुढीरीए नेराम्पार्ज भंत । नेमहातिजा सरीरेगाहा पञ्चाणा । गोममा । दुर्विहा पञ्चाणा । तंजहा—मवधारमिजा य उत्तरेतिविद्या य । तत्त्व वं चा सा मवधारमिजा सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं पञ्चरप्पन्नार्द्ध दुप्पिं रम्पीरो वारमअगुल्लव । तत्त्व वं चा सा उत्तरेतिविद्या सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं एक्लीर्ड वन्नार्द्ध इकरवीय । एक्लीर्डप्पहापुढीरीए नेराम्पार्ज भंत । नेमहातिजा सरीरेगाहा पञ्चाणा । गोममा । दुर्विहा पञ्चाणा । तंजहा—मवधारमिजा य । उत्तरेतिविद्या य ३ । तत्त्व वं चा सा मवधारमिजा सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं एक्लीर्ड वन्नार्द्ध इकरवीय । तत्त्व वं चा सा उत्तरेतिविद्या सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं एक्लीर्ड वन्नार्द्ध इकरवीय । एक्लीर्डप्पहाए पुढीरीए मवधारमिजा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं वासुद्विप्पन्नार्द्ध वो रम्पीरो ज । उत्तरेतिविद्या—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण, उडोसेवं पल्लीर्द पञ्चसर्वे । भूमप्पहाए मवधारमिजा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं पल्लीर्द वन्नार्द्ध । उत्तरेतिविद्या—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं भवाइजार्द पञ्चसर्वे । तुमाए मवधारमिजा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं भवाइजार्द वन्नार्द्ध । उत्तरेतिविद्या—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं वन्नार्द्ध । तमस्तमाए पुढीरीए नेराम्पार्ज भंत । नेमहातिजा सरीरेगाहा पञ्चाणा । गोममा । दुर्विहा पञ्चाणा । तंजहा—मवधारमिजा य । उत्तरेतिविद्या य ३ । तत्त्व वं चा सा मवधारमिजा सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं एक्लीर्ड वन्नार्द्ध । उत्तरेतिविद्या सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं वन्नार्द्ध । तत्त्व वं चा सा उत्तरेतिविद्या सा—जहाल्लोर्ज अंगुलस्स असेज्जाइमाण उडोसेवं वन्नार्द्ध ।

असुरकुमाराण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्ठता ? गोयमा ! दुविहा पण्ठता ।  
 तंजहा—भवधारणिज्ञा य १ उत्तरवेत्तव्यिया य २ । तत्थ ण जा सा भवधारणिज्ञा  
 सा—जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण सत्तरथणीओ । तत्थ ण जा सा  
 उत्तरवेत्तव्यिया सा—जहणेण अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्षोसेण जोयणसयसहस्स ।  
 एव असुरकुमारगमेण जाव थणियकुमाराण भाणियब्ब । पुढविकाइयाणं भते !  
 केमहालिया सरीरोगाहणा पण्ठता ? गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग,  
 उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेज्जइभागं । एव सुहुमाण ओहियाण अपज्ञतगाण  
 पज्ञतगाण च भाणियब्ब । एव जाव वायरवाउकाइयाण पज्ञतगाण भाणियब्ब ।  
 वणस्सइकाइयाण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्ठता ? गोयमा ! जहणेण  
 अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण साइरेग जोयणसहस्स । सुहुमवणस्सइकाइयाण  
 ओहियाण अपज्ञतगाण पज्ञतगाण तिण्ह पि—जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग,  
 उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेज्जइभाग । वायरवणस्सइकाइयाण ओहियाण—  
 जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण साइरेग जोयणसहस्स । अपज्ञतगाण—  
 जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेज्जइभाग ।  
 पज्ञतगाण—जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण साइरेग जोयणसहस्स ।  
 वेइदियाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्षोसेण वारस-  
 जोयणाइ । अपज्ञतगाण—जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण वि अगुलस्स  
 असखेज्जइभाग । पज्ञतगाण—जहणेण अगुलस्स सखेज्जइभागं, उक्षोसेण वारसजोय-  
 णाइ । तेइंदियाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण  
 तिण्ण गाउयाइ । अपज्ञतगाण—जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण वि  
 अगुलस्स असखेज्जइभागं । पज्ञतगाण—जहणेण अगुलस्स सखेज्जइभागं, उक्षोसेण  
 तिण्ण गाउयाइ । चउरिंदियाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग,  
 उक्षोसेण चत्तारि गाउयाइ । अपज्ञतगाण—जहणेण ० उक्षोसेण वि अगुलस्स  
 असखेज्जइभागं । पज्ञतगाण—जहणेण अगुलस्स सखेज्जइभागं, उक्षोसेण चत्तारि  
 गाउयाइ । पर्चिंदियतिरिक्खजोणियाण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्ठता ?  
 गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्षोसेण जोयणसहस्स । जलयर-  
 पर्चिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! एव चेव । सम्मुच्छिमजलयरपर्चिंदि-  
 यतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण  
 जोयणसहस्स । अपज्ञतगसम्मुच्छिमजलयरपर्चिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।  
 गो० ! जहणेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेज्जइभाग ।



अहंत मिद्र प्रवचन गुणवत्त गुरु स्वेच्छा ने वह भूति  
तपसी बसानिये । भग्यो गुण वार वार, समक्षित विनय  
सार आवश्यक विधि शील सुद्र मन आनिये ॥ अ्यान दोष  
तप दान अ्याकर्ष समाची माम अपूर्ण ज्ञान मक्षित आगम  
की आणिये जैस पथ यापतो मिद्याक्ष छो उत्थाये झीष,  
जीस बोल जीष तीर्थकर गौत्र का पिङ्गानिश ॥ ८ ॥

सखित पृथ्वी लाएङ पारेया सो करे तन जमूदीप  
मे न मावे जीव ऐता जानिये । जल यिन्हु मधुकर, तेड सर  
सप सम वायु एक मध् छे कम कम ठानिये । प्रत्येक  
बनस्पति असर्वाता गुणा कर, साधारण भूमि अप्र अनन्त  
प्रमानिये । तम ऐह मिद्र मिद्र कहत है लिलोक यिन्ह  
मिज प्राण सम जाल अनुकम्या आनिये ॥ ९ ॥

जाँकि समक्षित रत्न है याँकि आप रहेश ।  
एह वाल भाषी मिल लाठी जाँकि भैम ॥ १० ॥

जीवों का एक मृहर्त में जन्म भरण ।

बारे सहस आर सौ जीवीस एक महारत में, जन्म  
मरण पृथ्वी पार्षी तडवाय में साढ़ी पेसट सहस छतीस  
करे निगाहिया वर्तीस हजार सो प्रत्यक्ष हरिकाय में बेरुदी  
में असौ साठ तंहम्ही में जन्म दुये जीरिम्ही में चालीस  
सर्प्या कही सूक्ष राय में असर्दी जीवीए सर्दी एक भय  
हाय हह अहत है तिनोक ज्ञानी धर्मी समझ जाय मे ॥ ११ ॥

असखेजइभागं, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेजइभागं । पज्जत्तगसम्मुच्छमभुय-परिसप्पाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स सखेजइभाग, उक्षोसेण धण-पुहुत्त । गब्बवक्तियभुयपरिसप्पथलयराणं पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेणं गाउयपुहुत्त । अपज्जत्तगभुयपरिसप्पाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेजइभाग । पज्जत्तगभुयपरिसप्पाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स सखेजइभाग, उक्षोसेणं गाउयपुहुत्त । खह्यरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण धणपुहुत्त । सम्मुच्छमखह्यराण जहा भुयगपरिसप्पसम्मुच्छमाण तिसु वि गमेसु तहा भाणियव्वं । गब्बवक्तियखह्यरपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेजइभागं, उक्षोसेणं वणपुहुत्त । अपज्जत्तगगब्बवक्तियखह्यरपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेजइभाग । पज्जत्तगगब्बवक्तियखह्यरपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स सखेजइभाग, उक्षोसेणं धणपुहुत्त । एत्थ सगहणिगाहाओ हवति, तजहा-जोयणसहस्स गाउयपुहुत्त, तत्तो य जोयणपुहुत्त । दोण्ह तु धणपुहुत्त, समुच्छमे होइ उच्चत्त ॥ १ ॥ जोयणसहस्स छमगाउयाइं, तत्तो य जोयणसहस्स । गाउयपुहुत्त भुयगे, पक्खीसु भवे धणपुहुत्त ॥ २ ॥ मणुस्साण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण तिणिं गाउयाइ । सम्मुच्छममणुस्साण पुच्छा । गोयमा ! जहणेणं अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेजइभाग । अपज्जत्तगगब्बवक्तियमणुस्साण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण वि अगुलस्स असखेजइभाग । पज्जत्तगगब्बवक्तियमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अगुलस्स सखेजइभाग, उक्षोसेण तिणिं गाउयाइ । वाणमंतराण भवधारणिज्ञा य उत्तरवेउव्विया य जहा अझरकुमाराणं तहा भाणियव्वा । जहा वाणमंतराण तहा जोइसियाण वि । सोहम्मे कप्पे देवाण भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता । तजहा-भवधारणिज्ञा य १ उत्तरवेउव्विया य २ । तत्थ ण जा सा भवधारणिज्ञा सा-जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेणं सत्तर-यणीओ । तत्थ ण जा सा उत्तरवेउव्विया सा-जहणेण अगुलस्स सखेजइभागं, उक्षोसेण जोयणसयसहस्स । एव ईसाणकप्पे वि भाणियव्वं । जहा सोहम्मकप्पाण देवाण पुच्छा तहा सेसकप्पदेवाण पुच्छा भाणियव्वा जाव अक्षुयकप्पो । सणकुमारे भवधारणिज्ञा-जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण छ रयणीओ । उत्तर-

ऐरमिया यहा सोहम्मे तहा भाषियमा । यहा संतुमारे तहा माहिरे वि  
भावियमा । वैमलतगेसु मवधारमिया—यहम्में अंगुस्तसु असुखेज्जमाने उहा  
ऐज पंचरमणीओ । उत्तरेतमिया यहा सोहम्म । महायदसाहसरेषु मवधार  
मिया—अहम्मेण अंगुस्तसु असुखेज्जमाने उहोसुर्व दिप्ति रमणीओ । उत्तरेत  
मिया यहा सोहम्मे । आपवाणमवारवत्तमुएषु करम् वि मवधारमिया  
यहम्मेण अंगुस्तसु असुखेज्जमाने उहोसुर्व दिप्ति रमणीओ । उत्तरेतमिया  
यहा सोहम्मे । ऐवेज्जमेवाण मंते । देमहामिया दरीरोगाह्या पम्पता १  
गोममा । एगे मवधारमिये सरीरो फ्लते । दे यहम्मेण अंगुस्तसु असु  
खेज्जमाने उहोसेज्जुमिया रमणीओ । अनुपरोक्षवादमवेक्षण मंते । देमहामिया दरीरोगाह्या  
पम्पता २ गोममा । एगे मवधारमिये सरीरो फ्लते । दे यहम्मेण अंगुस्तसु असु  
खेज्जमाने उहोसेज्जेण एगा रमणी उ । दे समाप्तमो दिविदे फ्लते । ठंजहा—सुमंतुष्टे १  
पवरुले २ पर्वंगुष्टे ३ । एग्नुमावदा एगपश्चिया देवी शुभंगुष्टे सहै द्वीप  
गुमिया पवरंगुष्टे पवर सहै गुमिये काणगुष्टे । एएसि वै शुभंगुष्टमवरंगुष्टम—  
युवार्व क्षरे क्षरोहितो अप्ये वा बहुए वा द्विए वा विसेदाहिए वा । सम्भलेमे  
द्वामगुष्टे पवरंगुष्टे असुखेज्जगुष्टे ज्ञानंगुष्टे असुखेज्जगुष्टे । देतं उस्त्रेहंगुष्टे । दे कि  
तं पमार्थंगुष्टे ४ पमार्थंगुष्टे—एगमेगस्त रम्भो चावरेत्तमवर्मिस्त अनुसुविभिर  
द्वागचीरमने छाप्ते दुमाळस्तिए अद्वृक्षियए अद्विगरणठामस्तिए फ्लते एस्त  
वं एगमेगा छोटी उस्त्रेहंगुलमिक्षंगा त समन्वस्त मवधार्वे महावीरस्त अद्वृहुष्ट  
तं पाहस्त्व्यं पमार्थंगुष्टं भवह । एएवं अशुद्धप्यामेन इ अंगुष्टार्वं—पम्पे त्रिवार्व—  
सञ्चयुक्तार्व=मिहली वो विहलीओ=रमणी वो रमणीओ=कुरमी वो तुप्तीमे=  
पष्, वो भनुसहस्रार्व=गाप्तर्व चत्तारि गाप्तवार्व=जोवर्व । एएवं पमार्थंगुष्टेन कि  
पम्पोवर्व ५ एएवं पमार्थंगुष्टेन पुष्टवीर्व क्षेत्राने पावाकर्व मवधार्व ममनपूर्वकार्व  
निरयाज निरयाक्षीर्व निरवपूर्वकार्व क्षप्याप्त विमानार्व विमानाक्षीर्व विमानपूर्व-  
कार्व टैक्ष्यार्व शूक्षम देवान विहरीर्व पवमाराव विवमार्व वक्षकार्व वासार्व वास  
हराप्त वासाहरपूर्वकार्व विष्व(क्षम्भा)र्व वैश्यार्व वारावे तोरावे वीक्षार्व सुवार्व  
भायानविक्षामोक्तोभेदपरिष्वेता मविज्ञंति । दे समाप्तमो दिविदे फ्लते । ठंजहा—  
संदीक्षगुष्टे ६ पर्वंगुष्टे ७ ज्ञानंगुष्टे ८ । असुखेज्जमानो ज्ञानमोहामोदीनो देवी  
देवी संदीक्षगुष्टे ९ पर्वंगुष्टे १० । असुखेज्जमानो ज्ञानमोहामोदीनो देवी  
देवी संदीक्षगुष्टे ११ पर्वंगुष्टे १२ । असुखेज्जमानो ज्ञानमोहामोदीनो देवी  
देवी संदीक्षगुष्टे १३ पर्वंगुष्टे १४ । असुखेज्जमानो ज्ञानमोहामोदीनो देवी

अप्पे वा वहुए वा तुले वा विसेसाहिए वा ? सब्बत्थोवे सेढीअगुले, पयरगुले असखेजगुणे, घणगुले असखेजगुणे । सेत्त पमाणगुले । सेत्त विभागनिष्फणे । सेत्त खेत्तप्पमणे ॥ १३४ ॥ से कि त कालप्पमाणे ? कालप्पमाणे दुविहे पण्णते । तजहा-पएसनिष्फणे य १ विभागनिष्फणे य २ ॥ १३५ ॥ से कि त पएसनिष्फणे ? पएसनिष्फणे-एगासमयद्विईए, दुसमयद्विईए, तिसमयद्विईए जाव दससमयद्विईए, सखिजसमयद्विईए, असखिजसमयद्विईए । से त पएसनिष्फणे ॥ १३६ ॥ से कि त विभागनिष्फणे ? विभागनिष्फणे-गाहा-समयावलिय मुहुता, दिवस अहोरत्त पक्ख मासा य । सवच्छर जुग पलिया, सागर ओसप्पि परियद्वा ॥ १ ॥ १३७ ॥ से कि तं समए ? समयस्स ण पर्ववण करिस्सामि-से जहानामए तुण्णागदारए सिया-तरुणे, वल्वं, जुगव, जुवाणे, अप्पायके, थिरमगहत्थे, दढपाणिपायपास-पिठुतरोरुपरिणए, तलजमलजुयलपरिघणिभवाहू, चम्मेट्टगदुहणमुद्धियसमाहयनि-चियगत्तकाए, उरस्सवलसमणागए, लघणपवणजइणवायामसमत्थे, छेए, दक्खे, पत्टडे, कुसले, मेहावी, निउणे, निउणसिप्पोवगए, एग महइं पडसाडिय वा पट्टसा-डिय वा गहाय सयराह हत्थमेत ओसारेजा, तथ्य चोयए पण्णवय एवं वयासी-जेण कालेण तेण तुण्णागदारएण तीसे पडसाडियाए वा पट्टसाडियाए वा सयराह हत्थमेते ओसारिए से समए भवइ ? नो इणट्टे समट्टे । कम्हा ? जम्हा सखेजाण ततूण समुदयसमितिसमागमेण एगा पडसाडिया निष्फजइ, उवारेलम्मि ततुम्मि अच्छिणे हिट्टिले ततू न छिजइ, अण्णम्मि काले उवरिले तंतू छिजइ, अण्णम्मि काले हिट्टिले ततू छिजइ, तम्हा से समए न भवइ । एवं वयत पण्णवय चोयए एव वयासी-जेण कालेण तेण तुण्णागदारएण तीसे पडसाडियाए वा पट्टसाडियाए वा उवरिले ततू छिणे से समए भवइ ? न भवइ । कम्हा ? जम्हा सखेजाण पम्हाण समुदयसमिहसमागमेण एगे ततू निष्फजइ, उवरिले पम्हे अच्छिणे हिट्टिले पम्हे न छिजइ, अण्णम्मि काले उवरिले पम्हे छिजइ, अण्णम्मि काले हिट्टिले पम्हे छिजइ, तम्हा से समए न भवइ । एवं वयतं पण्णवय चोयए एवं वयासी-जेण कालेण तेण तुण्णागदारएण तस्स ततुस्स उवरिले पम्हे छिणे से समए भवइ ? न भवइ । कम्हा ? जम्हा अणताण सधायाण समुदयसमिहसमा-गमेण एगे पम्हे निष्फजइ, उवरिले सधाए अविसधाइए हेट्टिले सधाए न विसधा-इजइ, अण्णम्मि काले उवरिले सधाए विसधाइजइ, अण्णम्मि काले हेट्टिले सधाए विसधाइजइ, तम्हा से समए न भवइ । एत्तो वि य ण सुहुमतराए समए पण्णते समणाउसो !, असखिजाण समयाण समुदयसमिहसमागमेण सा एगा ‘आवलिय’त्ति

मागाहेजा रथे न बासनए बासनए एमारेय बालमर्य अवहार आवश्यने कालेने से  
प्ले खीने नीरए निहेवे निहिए मकह सेतु मृदुमे अद्वापकिओवमे । शाहा-एएवि पर्व  
दोडाकोवी भवेव दसगुमिया । ते मृदुमस्स अद्वासामरोकमल्य एगस्तु मवे परीमार्व  
॥ ४ ॥ एएहि मृदुमेहि अद्वापकिभेवमसामरोवमेहि भेवयतिरिस्पत्रभोमियमकुस्त्रेवाच आउय मविज्ञ  
॥ ११९ ॥ गेरद्याच मंतु । केवद्य चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वर्व रुष  
बासनएस्त्राई, उडोसेन देतीसे सागाहेवमाई । रुषप्पाहासुनिवेष्यार्व मंतु ।  
भेवद्य चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वेन इसामासवाहस्त्राई, उडोसेव रुष  
सागरेवम । अपवामरवन्प्यहासुउविगेरद्यार्व मंतु । केवद्य चाल ठिरे पञ्चता ।  
गोममा । जहन्वेन भिंतीमुदुत उडोसेव भिंतीमुदुत । पञ्चतागरवन्प्यह  
पुनिवेष्यार्व भंतु । केवद्य चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वेन इसामास  
साहस्त्राई भंतीमुदुत उडोसेव एर्ग भागरोवमर्य भंतीमुदुत । उपरप्पहासु  
विगेरद्यार्व भंतु । उपरप्प चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वेन एर्ग लालो  
वम उडोसेव निष्ठि भागरोवमाई । एर्ग चेसपुढीमु पुण्डा भापियमा । उर्द्द  
यप्पहासुउविगरद्यार्व-जहन्वेन निष्ठि भागरोवमाई, उडोसेव उत्तमामरोवमाई ।  
पञ्चप्यहासुउविगरद्यार्व-जहन्वेन उत्तमामरोवमाई, उडोसेव उत्तमामरोवमाई ।  
भूमण्डहासुउविगेरद्यार्व-जहन्वेव दमरागरोवमाई, उडोसेव उत्तरक्षमामरोवमाई ।  
तमप्पहासुउविगेरद्यार्व-जहन्वेन उत्तरगगामरोवमाई उडोसेव बावीमगावरोव  
माई । तमतमासुउविगेरद्यार्व भंतु । केवद्य चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । उर्द्द  
व्वेव बालीस भागरोवमाई उडोसेव लालीस भागरोवमाई । अमुखमार्व मंतु ।  
केवद्य चाल ठिरे वग्यता । गोममा । जहन्वेन उगामासमाहस्त्राई, उडोसेव गारेवे  
भागरावम । अमुखनारेवीर्ग भंतु । केवद्य चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वेन  
उगामासमाहस्त्राई, उडोसेव अद्वापमाई पवित्रेवमाई । भागमुमार्व भंतु । केवद्य  
वाले ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वेन उगामासमाहस्त्राई उडोसेव ईम्पर्व तुर्लि  
पवित्रामाई । भागमुमार्व भंतु । केवद्य चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वेन  
उगामासमाहस्त्राई उडोसेव दम्पूर्व पवित्रेवम । एर्ग भदा भागमुमरोवमाई देवीव  
य तदा भाव वर्वियुनारार्ण वेवार्ण देवीव व भावियार्ण । पुरीवारार्ण भं ॥  
केवद्य चाल ठिरे पञ्चता । गोममा । जहन्वेन भिंतीमुदुत उडोसेव लाली  
भागरावस्त्राई । मृदुमुढीध्ययाच अद्वियाच भरम्भावार्ण भरनराच व । तिर  
वामगद्यार्व । भिंतीमुदुत उडोभार्व भिंतीमुदुत । उर्द्दप्पार्व  
वितुण्डा । भायमा । जहन्वेन भिंतीमुदुत उडोभार्व भिंतीमुदुत । उर्द्दप्पार्व

काडयाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वावीस वाससहस्राई । अपज्जत्तगवायरपुठविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगवायरपुठविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वावीस वाससहस्राई । एव सेसकाइयाण वि पुच्छावयणं भाणियव्व । आउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण सत्तवाससहस्राई । सुहुमआउकाइयाणं ओहियाण अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाण तिण्ह वि—जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । वायरआउकाइयाण जहा ओहियाण । अपज्जत्त-गवायरआउकाइयाण—जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगवा-यरआउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण सत्तवाससहस्राई अतोमुहुत्तूणाई । तेउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण तिण्णिं राइदियाई । सुहुमतेउकाइयाण ओहियाण अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाण तिण्ह वि—जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । वायरतेउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण तिण्णिं राइंदियाई । अपज्जत्तगवायरतेउकाइयाण—जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगवायरतेउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण तिण्णिं राइंदियाई अतो-मुहुत्तूणाई । वाउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण तिण्णिं वाससहस्राई । सुहुमवाउकाइयाण ओहियाण अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाण य तिण्ह वि—जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । बायरवाउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण तिण्णिं वाससहस्राई । अपज्जत्तगवायरवाउकाइयाण—जहणेण वि अतो-मुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगवायरवाउकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण तिण्णिं वाससहस्राई अतोमुहुत्तूणाई । वणस्सइकाइयाण—जहणेण अतो मुहुत्त, उक्षोसेण दसवाससहस्राई । सुहुमवणस्सइकाइयाण ओहियाण अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाण य तिण्ह वि—जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । वायर-वणस्सइकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण दसवाससहस्राई । अपज्जत्तग-वायरवणस्सइकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त : पज्जत्तग-वायरवणस्सइकाइयाण—जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण दसवाससहस्राई अतो-मुहुत्तूणाई । वेइदियाण भवे ! केवङ्ग काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वारससवच्छराणि । अपज्जत्तगवेइदियाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्तगवेइदियाण० । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वारससवच्छराई अतोमुहुत्तूणाई । तेउदियाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण एगृणपणास राइदियाण । अपज्जत्तगवेइ-



वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पञ्जत्यसम्मुच्छमउरपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा । जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पञ्जत्यसम्मुच्छमउरपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी । अपञ्जत्यगगब्बवक्तियउरपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तूणाइ । गब्बवक्तियउरपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी । अपञ्जत्यगगब्बवक्तियउरपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी । सम्मुच्छमभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी । सम्मुच्छमभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी । अपञ्जत्यगब्बवक्तियभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वायालीस वामसहस्साइ । अपञ्जत्यसम्मुच्छमभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पञ्जत्यसम्मुच्छमभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वायालीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ । गब्बवक्तियभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी । अपञ्जत्यगब्बवक्तियभुयपरिसप्पथलयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तूणा । खहयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पलिओवमस्स असखेजइभागो । सम्मुच्छमखहयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वावत्तरि वाससहस्साइ । अपञ्जत्यगसम्मुच्छमखहयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पञ्जत्यगसम्मुच्छमखहयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण चावत्तरि वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ । गब्बवक्तियखहयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पलिओवमस्स असखेजइभागो । अपञ्जत्यगब्बवक्तियखहयरपर्चिदियपुच्छा । गोयमा ! जहणेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पञ्जत्यगब्बवक्तियखहयरपर्चिदियतिरिक्खजोणियाण भते । केवइय काल ठिईं पण्णता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पलिओवमस्स असखेजइभागो अतोमुहुत्तूणो । एत्थ एएसि ण सगहणिगाहाओ भवति, तजहा— सम्मुच्छम पुव्वकोडी, चउरासीइ भवे सहस्साइ । तेवणा वायाला, चावत्तरिमेव पक्खीण ॥ १ ॥ गब्बमि पुव्वकोडी, तिणिण य पलिओवमाइ परमाऊ ।

सरण सुव पुष्टद्वयी पश्चिमोत्तमासंबंधमानो य ॥ २ ॥ मणुस्साप्त भंते । केवद्वय  
भर्तु ठिर्य पञ्चता । गोपमा । वहन्नें अंतोसुहुत्त उद्दोसेष्य शिखि पश्चिमोत्तमाद् ।  
चम्पुष्टिमण्डुस्त्यार्थ पुष्टम् । गोपमा । वहन्नें वि अंतोसुहुत्त उद्दोसेष्य वि  
मतोसुहुत्त । गव्यालाहंतिमण्डुस्त्यार्थ पुष्टमा । गोपमा । वहन्नें अंतोसुहुत्त,  
उद्दोसेष्य शिखि पश्चिमोत्तमाद् । अपज्ञातागव्यालाहंतिमण्डुस्त्यार्थ भंते । केवद्वय  
भर्तु ठिर्य पञ्चता । गोपमा । वहन्नें अंतोसुहुत्त उद्दोसेष्य वि मतोसुहुत्त ।  
फलात्तागव्यालाहंतिमण्डुस्त्यार्थ भंते । केवद्वय काल ठिर्य पञ्चता । गोपमा । वह-  
न्नें अंतोसुहुत्त उद्दोसेष्य शिखि पश्चिमोत्तमाद् अंतोसुहुत्तुलाह । वायमंठार्थ  
देवार्थ भंते । केवद्वय काल ठिर्य पञ्चता । वहन्नें दसवास्त्वाहस्त्वाह,  
उद्दोसेष्य पश्चिमोत्तमे । वायमंठार्थ देवीर्ण भंते । केवद्वय काल ठिर्य पञ्चता ॥  
योपमा । वहन्नें दसवास्त्वाहस्त्वाह, उद्दोसेष्य अद्यपश्चिमोत्तमे । वोद्विमार्थ भंते ।  
देवार्थ केवद्वय भर्तु ठिर्य पञ्चता । योपमा । वहन्नें साइरर्थ मद्भुमापश्चिम-  
भर्तु उद्दोसेष्य पश्चिमोत्तमे वासवास्त्वाहस्त्वाहस्त्वाह । वोद्विमदेवीर्ण भंते । केवद्वय  
भर्तु ठिर्य पञ्चता । योपमा । वहन्नें अद्यमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य अद्यपश्चि-  
मोत्तमे पञ्चामापु वासवाहस्त्वेहि अस्त्वाहिर्य । अद्यविमामार्थ भंते । देवार्थ  
भर्तु ठिर्य पञ्चता । योपमा । वहन्नें वडमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य पश्चिमोत्तमे  
वासवास्त्वाहस्त्वाहस्त्वाह । वंद्विमामार्थ भंति । देवीर्ण पुष्टमा । वहन्नें  
चरभात्तापश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य अद्यपश्चिमोत्तमे पञ्चासाद वासवाहस्त्वेहि अस्त्वाहिर्य ।  
सूर्यमिमामार्थ भंते । देवार्ण पुष्टम् । गोपमा । वहन्नें वडमागपश्चिमोत्तमे  
उद्दोसेष्य पश्चिमोत्तमे वासवाहस्त्वाहस्त्वाह । सूर्यमिमामार्थ देवीर्ण पुष्टम् । गोपमा ।  
वहन्नें वडमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य अद्यपश्चिमोत्तमे वंचहि वासवाहस्त्वेहि अस्त्व-  
हिर्य । गद्विमामार्थ भंतु । देवार्ण केवद्वय काल ठिर्य पञ्चता । गोपमा । वहन्नें  
चरमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य पश्चिमोत्तमे । गद्विमामार्थ भंते । देवीर्ण पुष्टम् ।  
गोपमा । वहन्नें वडमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य अद्यपश्चिमोत्तमे । वक्त्वात्तिमा-  
भार्थ भंतु देवार्थ पुष्टम् । योपमा । वहन्नें वडमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य  
अद्यपश्चिमोत्तमे । वक्त्वात्तिमामार्थ देवीर्ण पुष्टमा । गोपमा । वहन्नें वडमाग-  
पश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य साइरे वडमागपश्चिमोत्तमे । लाराविमामार्थ भंतु । देवार्थ  
पुष्टम् । गहन्नें साइरे वडमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेष्य वडमागपश्चिमो-  
त्तमे । लाराविमामार्थ भंतु देवीर्ण केवद्वय काल ठिर्य पञ्चता । योपमा ।  
वहन्नें वडमागपश्चिमोत्तमे उद्दोसेन वाइरे वडमागपश्चिमोत्तमे ।

भंते । देवाण केवइय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण पलिओवम, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ । वेमाणियाण भंते । देवीण केवइय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण पलिओवम, उक्कोसेण पणपण पलिओवमाइ । सोहम्मे ण भंते । कप्पे देवाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण पलिओवम, उक्कोसेण दो सागरोवमाइ । सोहम्मे ण भंते । कप्पे परिगगहियादेवीण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण पलिओवम, उक्कोसेण सत्तपलिओवमाइ । सोहम्मे ण भंते । कप्पे अपरिगगहियादेवीण केवइय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण पलिओवम, उक्कोसेण पणास पलिओवम । ईसाणे ण भंते । कप्पे देवाण केवइय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण साइरेग पलिओवम, उक्कोसेण साइरेगाइ दो सागरोवमाइ । ईसाणे ण भंते । कप्पे परिगगहियादेवीण केवइय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण साइरेग पलिओवम, उक्कोसेण नवपलिओवमाइ । ईसाणे ण भंते । कप्पे अपरिगगहियादेवीण केवइय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण साइरेग पलिओवमं, उक्कोसेण पणपण पलिओवमाइ । सणकुमारे ण भंते । कप्पे देवाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण दो सागरोवमाइ, उक्कोसेण सत्तसागरोवमाइ । माहिंदे ण भंते । कप्पे देवाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण साइरेगाइ दो सागरोवमाइ, उक्कोसेण साइरेगाइ सत्तसागरोवमाइ । वभलोए ण भंते । कप्पे देवाण पुच्छा । गोयमा ! जहणेण सत्तसागरोवमाइ, उक्कोसेण दससागरोवमाइ । एव कप्पे कप्पे केवडय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! एव भाणियब्ब-लतए-जहणेण दससागरोवमाइ, उक्कोसेण चउद्दस सागरोवमाइ । महासुक्के-जहणेण चउद्दस सागरोवमाइ, उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ । सहस्रारे-जहणेण सत्तरस सागरोवमाइ, उक्कोसेण अट्टारस सागरोवमाइ । आणए-जहणेण अट्टारस सागरोवमाइ, उक्कोसेण एगूण-वीस सागरोवमाइ । पाणए-जहणेण एगूणवीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण वीस सागरोवमाइ । आरणे-जहणेण वीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण एकवीस सागरोवमाइ । अच्छुए-जहणेण एकवीस नागरोवमाइ, उक्कोसेण वावीस सागरोवमाइ । हेट्टिमहेट्टिमगेविजविमाणेषु ण भंते । देवाण केवइय काल ठिई पण्णता ? गोयमा ! जहणेण वावीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण तेवीस नागरोवमाइ । हेट्टिममज्जिमगेविजविमाणेषु ण भंते । देवाण० ? गोयमा ! जहणेण तेवीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण चउद्दीस सागरोवमाइ । हेट्टिमउवरेमगेविजविमाणेषु ण भंते । देवाण० ? गोयमा ! जहणेण चउद्दीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण पणवीसु सागरोवमाइ । मज्जिमहेट्टिम-गेवेजविमाणेषु ण भंते । देवाण० ? गोयमा ! जहणेण पणवीस सागरोवमाइ,

उहोसें उच्चीं सागरेकमाई । मजिज्जममजिज्जमगेक्षिमाखेसु वं भंत । देवार्थ १  
योगमा । बहुप्लीर्द उच्चीं सागरेकमाई, उहोसें उच्चीं सागरेकमाई ।  
मजिज्जमठवरिमगेक्षिमाखेसु वं भंते । देवार्थ २ गोकमा । बहुनें इत्यार्थीं  
सागरेकमाई, उहोसें अद्वाक्षीं सागरेकमाई । उवरिमहेत्तिमगेक्षिमाखेसु वं  
भंते । देवार्थ ३ गोगमा । बहुप्लीर्द अद्वाक्षीं सागरेकमाई, उहोसें एक्षार्थीं  
सागरेकमाई । उवरिममजिज्जमगेक्षिमाखेसु वं भंते । देवार्थ ४ गोगमा । एक्ष  
ज्जें एक्षार्थीं सागरेकमाई, उहोसें तीर्थीं सागरेकमाई । उवरिमठवरिमगेक्षि-  
मिमाखेसु वं भंत । देवार्थ ५ गोगमा । अहम्बें तीर्थीं सागरेकमाई, उहोसें इह  
तीर्थीं सागरेकमाई । विवर्यवेक्षतवक्तुवपुष्टिविमाखेसु वं भंते । देवार्थ ६  
इह असं ठिक्की पञ्चता ६ गोगमा । बहुनें इहर्थीं सागरेकमाई, उहोसें तेतीर्थीं  
सागरेकमाई । यम्बुधिदे वं भंते । महाविमाने देवार्थं क्षम्बं असं ठिक्की पञ्चता ७  
गोगमा । अबहृष्टमण्डोसें तेतीर्थीं सागरेकमाई । सेतुं शुद्धुमे अशुपस्तिज्जोवने ।  
सेतुं अशुपस्तिज्जोवने ॥ १४ ॥ वं से क्षित तं वेत्तपस्तिज्जोवने । वेत्तपस्तिज्जोवने तुम्हे  
पम्पते । दैजहा-सुहुमे य १ वावहारिए व २ । तत्प वं जे से सुहुमे से ठप्पे । तत्प  
वं जे से वावहारिए-से वावनामए फ्ले दिवा-ज्योत्तरं वावामविक्षमेवं ज्योत्तरं  
उव्वेहेवं तं तिणुर्द समिदेसं परिस्वेवं से वं फ्ले एवाहिववेयाहिवतेवाहिव अथ  
मरिए वाव्वमग्नोदीनं से वं वाव्वमग्ना वो अम्भी ढोजा जाव वो पूर्णाप् हृष्टमाप  
दोजा वे वं तस्य पास्स आपासपएसा तेहि वाव्वमोहि अप्पुम्भा तन्मो वं स्पष्टे  
समए पूर्णमें आपासपएसं अवहाम्य वाव्वपूर्वं काळेण से फ्ले लीवे जाव मिण्डिए मन्द  
से त वावहारिए वेत्तपस्तिज्जोवने । गाव्वा-एप्पर्दि पाल्पर्वं कोडालीवीं मवेव एक-  
गुणिमा । तं वावहारियस्तु देत्तासागरेवमस्तु पूर्णस्तु मने परिमार्थ ॥ १ ॥ एहि वाव  
हारिएहि वेत्तपस्तिज्जोवनेहि क्षिप्तोवने । एहि वावहारिएहि वेत्तपस्तिज्जो-  
वमसागरावनेहि वल्लि क्षिप्तमोवने वेत्तपववना वन्मविक्ष । सेतुं वावहारिए  
वेत्तपस्तिज्जोवने । से क्षित सुहुमे वेत्तपस्तिज्जोवने । सुहुमे वेत्तपस्तिज्जोवने-से वावना-  
मए फ्ले दिवा-ज्योत्तरं वावामविक्षमेवं वाव तं तिणुर्द समिदेसं परिस्वेवं  
से वं फ्ले एवाहिववेयाहिवतेवाहिव वाव मरिए वाव्वमग्नोदीवं तत्प वं पूर्णमें  
वाव्वमो असंक्षिप्ताईं चंद्राई अम्भ, से वं वाव्वमग्ना दिण्डिओवाव्वमग्नो असंक्षेप  
आगमेत्ता सुहुमस्तु पूर्णगवीवस्तु सर्विमेगाव्वमग्नो असंक्षेपत्ता से वं वाव्वमग्ना वो  
अम्भी ढोजा जाव वो पूर्णाप् हृष्टमाप्वेजा वे वं तस्य पास्स आपासपएसा  
तेहि वाव्वमोहि अप्पुम्भा वा अवाप्पुम्भा वा तन्मो वं समए पूर्णमेवं आपासप-

## छुओं लेश्या का परिणाम ।

एक समें भेला होइ, चाल्या है मंतरी खट, पाको  
आंवो देखी कहे कैसी तरे कीजिये । एक कहे मूल काटो,  
दूजो कहे ऊपर सेती, तीजो नर कहे लघु शाखा काट ली-  
जिये ॥ चौथो जुरे काची पाकी, पांचमा ने पाकी पारी, छठो  
नर कहे इम हेठे पड़ो लीजिये, छुओं जणा संम छुओं लेश्या  
का प्रणाम जान हीरालाल कहे शुद्ध भावों से तिरीजिये ॥ १२ ॥

## जीवों का पिंड ।

सूर अग्रभाग जिति साधारण बनस्पति, यथा दृष्टान्त  
तोमें जीव वास पावे है । श्रेणियों असंख्य श्रेणी, श्रेणी में  
पत्तर असंख्य, पत्तर रंगोल असंख्य रहावे है । एक एक  
गोले मांही असंख्य शरीर रहाइ, प्रत्येके संरीरे जीव अनन्त  
कहावे है, एक स्वांस मांहे साढ़ी सत्तरे जन्म मरणे तीर्थंच के  
दुःख का तो पार कहां पावे है ॥ १३ ॥

## पल्योपम का प्रमाण ।

जुगल्यों हंदा केश, जाय कोइ देवत लावे । तिन का  
करें लघु खण्ड एक का दोय न थावे । योजन मान ग्रमाण  
कूप खिण तेह भरावे । चक्रवर्तीनी ऋद्धि खूंदतो मोच न  
खावे, शत वर्ष गया एक खण्ड ग्रहे काढे जे देवत सदा । ते  
कूप जाम रीतो हूवे पल्योपम कहिये नदा ॥ १४ ॥

पएस अवहाय जावइएण कालेण से पल्हे खीणे जाव निट्ठिए भवइ सेत्तं सुहुमे खेत्त-  
पलिओवमे । तत्थ णं चोयए पण्णवग एव वयासी-अत्थि ण तस्स पल्हस्स आगास-  
पएसा जे ण तेहिं वालगोहिं अणाफुण्णा ? हंता । अत्थि । जहा को दिट्ठतो ? से  
जहाणामए कोट्ठए सिया कोहडाण भरिए, तत्थ णं माउलिंगा पक्खिता ते वि  
माया, तत्थ ण बिल्ला पक्खिता ते वि माया, तत्थ णं आमलगा पक्खिता ते वि  
माया, तत्थ ण बयरा पक्खिता ते वि माया, तत्थ ण चणगा पक्खिता ते वि  
माया, तत्थ ण मुग्गा पक्खिता ते वि माया, तत्थ ण सरिसवा पक्खिता ते वि  
माया, तत्थ ण गगावालुया पक्खिता सा वि माया, एवमेव एएण दिट्ठतेण अत्थि  
ण तस्स पल्हस्स आगासपएसा जे ण तेहिं वालगोहिं अणाफुण्णा । गाहा—एएसि  
पल्हाण, कोडाकोही भवेज दसगुणिया । त सुहुमस्स खेत्तपलिओवमसागरोवमस्स, एगस्स भवे  
परिमाण ॥ २ ॥ एएहिं सुहुमेहिं खेत्तपलिओवमसागरोवमेहिं किं पओयर्ण ? एएहिं  
सुहुमेहिं खेत्तपलिओवमसागरोवमेहिं दिट्ठिवाए दब्बा मविज्जति ॥ १४१ ॥ कइविहा  
ण भते । दब्बा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा—जीवदब्बा य १  
अजीवदब्बा य २ । अजीवदब्बा ण भंते ! कइविहा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा  
पण्णता । तंजहा—हवीअजीवदब्बा य १ अहवीअजीवदब्बा य २ । अहवीअजीव-  
दब्बा ण भते ! कइविहा पण्णता ? गोयमा ! दसविहा पण्णता । तंजहा—  
धम्मत्थिकाए १ धम्मत्थिकायस्स देसा २ धम्मत्थिकायस्स पएसा ३ अधम्मत्थि-  
काए ४ अधम्मत्थिकायस्स देसा ५ अधम्मत्थिकायस्स पएसा ६ आगासत्थिकाए ७  
आगासत्थिकायस्स देसा ८ आगासत्थिकायस्स पएसा ९ अद्वासमए १० । हवी-  
अजीवदब्बा ण भते ! कइविहा पण्णता ? गोयमा ! चउविहा पण्णता । तंजहा—  
खधा १ खधदेसा २ खंधपएसा ३ परमणुपोगला ४ । ते ण भंते ! कि सखिजा  
असखिजा अणता ? गोयमा ! नो सखिजा, नो असखिजा, अणता । से केणट्टेण  
भते । एव चुच्छइ—नो सखिजा, नो असखिजा, अणता ? गोयमा ! अणता परमा-  
णुपोगला, अणता दुपएसिया खधा जाव अणता अणतपएसिया खधा, से एए-  
णट्टेण गोयमा ! एव चुच्छइ—नो सखिजा, नो असखिजा, अणता । जीवदब्बा ण भते !  
कि मसखिजा असखिजा अणता ? गोयमा ! नो सखिजा, नो असखिजा, अणता ।  
से केणट्टेण भते । एव चुच्छइ—नो सखिजा, नो असखिजा, अणता ? गोयमा !  
असखिजा गेरडिया, असखिजा अचुरकुमारा जाव असखिजा थणियकुमारा, अस-  
खिजा पुढविकाडिया जाव असखिजा वाउकाडिया, अणता वणस्सइकाडिया, असखिजा  
चेइदिया जाव असखिजा चउर्दिया, असखिजा पर्चिदियतिरिक्खजोणिया, अस-

गिरजा मनुष्या असंगिजा वायर्वेत्रा असंगिजा जोइयिया असंगिजा ऐमाविष्या  
अवैता निदा से एएकद्वय गोपमा ! ए१ पुण्ड-नो चंडिका जो असंगिजा  
अर्णता ॥ १४३ ॥ कर्मिहा वं भेत । राहीरा पञ्चता ३ गोपमा । वंच सरीरा पञ्चता ।  
तंजहा-ओरालिए १ घउलिए ० आहारए १ तयए ४ कम्मए ५ । लेइश्वावं र्वि ।  
क्ष्य गरीरा पञ्चता ३ गोपमा । तम्हो राहीरा पञ्चता । तंजहा-घेउलिए १ तयए ३  
कम्मए ३ । अगुरुमारावं भेत । क्ष्य सरीरा पञ्चता ३ गोपमा । तम्हो राहीरा  
पञ्चता । तंजहा-घेउलिए १ तयए ३ कम्मए ३ । ए८ तिथिय लिख्य दर वंच  
राहीरा आव विषयकुमारावं भाविष्यता । पुडियिराइमावं भेत । क्ष्य सरीरा  
पञ्चता ३ गोपमा । तम्हो राहीरा पञ्चता । तंजहा-आरालिए १ लेयए ३ कम्मए ३ ।  
ए८ आडतउवत्सन्दाइवाल वि ए८ लेव लिख्य भरीरा भाविष्यता । वाउशाइ  
यानं भेत । क्ष्य गरीरा पञ्चता ३ गोपमा । चक्षारि चरीरा पञ्चता । तंजहा-घेरा-  
लिए १ घेउलिए ३ लेयए ३ कम्मए ४ । लेइरिमतेरैरियिचउरीरिवावं जहा पुर  
शीराइमावं । विभिरियनिरिक्कमोवियावं जहा वाउशाइवावं । मनुस्यावं भेते । वंच  
सरीरा पञ्चता ३ गोपमा । वंच सरीरा पञ्चता । तंजहा-घेरालिए १ घेउलिए ३  
आहारए १ लेयए ४ कम्मए ५ । वायर्वेत्रावं जोइयिवावं ऐमावियावं जहा  
लेइक्काले । लेइश्वा वं भेते । ओरालियपरीरा पञ्चता ३ गोपमा तुमिहा पञ्चता ।  
तंजहा-घेइक्का व १ मुकेक्का व २ । तत्त्व वं जे ते घेइक्का तु वं भसंगिज्य  
असंगिज्याहि उस्तपिक्कीजोसपियाहि अवहीरिति काळमो लेत्तमो असंगिज्या  
स्तेगा । तत्त्व वं जे ते मुकेक्का ते वं अर्णता अवैताहि उस्तपिक्कीजोसपियाहि  
भवहीरिति काळमो लेत्तमो अर्णता स्तेगा इम्माते अभवसिरिएहि अर्णतपुका  
लिक्कावं अर्णतमाप्यो । लेइश्वा वं भेते । लेइविवरस्तरीरा पञ्चता ३ गोपमा । तुमिहा  
पञ्चता । तंजहा-घेइक्का व १ मुकेक्का व २ । तत्त्व वं जे ते घेइक्का ते वं  
भसंगिज्या असंगेज्याहि उस्तपिक्कीजोसपियाहि अवहीरिति काळमो लेत्तमो  
असंगिज्याभ्ये लेक्केमो फरस्स असंगेज्यमाप्ये । तत्त्व वं जे ते मुकेक्का ते वं  
अवैता अवैताहि उस्तपिक्कीजोसपियाहि अवहीरिति काळमो सेव जहा घेरालि-  
यस्तु मुकेक्का तहा ए८ वि भाविष्यता । लेइश्वा वं भेते । आहारणसरीरा पञ्चता ३  
गोपमा । तुमिहा पञ्चता । तंजहा-घेइक्का व १ मुकेक्का व २ । तत्त्व वं जे ते  
घेइक्का ते वं लिय अलिय लिव अलिय बह अलिय जहन्मेवं एमो का हो वा  
तिथिय का उडोउर्य सहस्रपुरुते । मुकेक्का जहा घेरालिया तहा भाविष्यता ।

केवइया ण भते ! तेयगसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धेल्या य १ मुकेल्या य २ । तत्थ ण जे ते बद्धेल्या ते ण अणता, अणताहिं उस्सपिणीओसपिणीहि अवहीरंति कालओ, खेतओ अणता लोगा, दब्बओ सिद्धेहिं अणतगुणा, सब्बजीवाण अणतभागूणा । तत्थ ण जे ते मुकेल्या ते ण अणता, अणताहिं उस्सपिणीओसपिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेतओ अणता लोगा, दब्बओ सब्बजीवेहिं अणतगुणा, सब्बजीववग्गस्स अणतभागो । केवइया ण भते ! कम्मगसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धेल्या य १ मुकेल्या य २ । जहा तेयगसरीरा तहा कम्मगसरीरा वि भाणियव्वा । ऐरइयाण भते ! केवइया ओरालियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धेल्या य १ मुकेल्या य २ । तत्थ ण जे ते बद्धेल्या ते ण णस्ति । तत्थ ण जे ते मुकेल्या ते जहा ओहिया ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा । ऐरइयाण भते ! केवइया वेउन्वियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धेल्या य १ मुकेल्या य २ । तत्थ ण जे ते बद्धेल्या ते ण असखिजा, असखिजाहिं उस्सपिणीओसपिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेतओ असखेजाओ सेढीओ पयरस्स असखिजइभागो, तासि ण सेढीण विक्खभसूई अगुलपढमवग्गमूल विइयवग्गमूल-पहुप्पण्ण, अहवा ण अगुलविइयवग्गमूलधणपमाणमेत्ताओ सेढीओ । तत्थ ण जे ते मुकेल्या ते ण जहा ओहिया ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा । ऐरइयाण भते ! केवइया आहारगसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तंजहा-बद्धेल्या य १ मुकेल्या य २ । तत्थ ण जे ते बद्धेल्या ते ण णस्ति । तत्थ ण जे ते मुकेल्या ते जहा ओहिया तहा भाणियव्वा । तेयगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव वेउन्वियसरीरा तहा भाणियव्वा । असुरकुमाराण भते ! केवइया ओरालियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! जहा ऐरइयाण ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा । असुर-कुमाराण भते ! केवइया वेउन्वियसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धेल्या य १ मुकेल्या य २ । तत्थ ण जे ते बद्धेल्या ते ण असखिजा, असखिजाहिं उस्सपिणीओसपिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेतओ असखेजाओ सेढीओ पयरस्स असखिजइभागो, तासि ण सेढीण विक्खभसूई अगुलपढमवग्गमूलस्स असखिजइभागो । मुकेल्या जहा ओहिया ओरालियसरीरा । असुरकुमाराण भते ! केवइया आहारगसरीरा पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता । तजहा-बद्धेल्या य १ मुकेल्या य २ । जहा एएसिं चेव ओरालियसरीरा तहा भाणियव्वा । तेयगकम्म-गसरीरा जहा एएसिं चेव वेउन्वियसरीरा तहा भाणियव्वा । जहा असुरकुमाराण

तहा अब विषयकुमारार्थ ताव भावियम्भा । पुढिकाइवार्थ भंते । कलह्या ओरालिम्बसरीरा पम्भता । गोकमा । तुविहा पम्भता । तंजहा—बदेह्या व १ सुदेह्या य २ । एवं जहा ओहिया ओरालिम्बसरीरा तहा भावियम्भा । पुढिकाइवार्थ भंते । कलह्या वेउलिम्बसरीरा पम्भता । गोकमा । तुविहा पम्भता । तंजहा—बदेह्या व १ सुदेह्या य २ । तत्त्व वं जे ते बदेह्या ते वं णतिं । सुदेह्या जहा ओहियार्थ ओरालिम्बसरीरा तहा भावियम्भा । आहारगसरीरा वि एवं खेद भावियम्भा । तंजह—कलह्यसरीरा जहा एएचि खेद ओरालिम्बसरीरा तहा भावियम्भा । जहा पुढिकाइवार्थ एवं आउकाइवार्थ तेउकलह्यान य सम्भसरीरा भावियम्भा । वारकलह्यार्थ भंते । कलह्या ओरालिम्बसरीरा पम्भता । पोम्भमा । तुविहा पम्भता । तंजहा—बदेह्या व १ सुदेह्या य २ । जहा पुढिकाइवार्थ ओरालिम्बसरीरा तहा भावियम्भा । वार कलह्यार्थ कलह्या वेउलिम्बसरीरा पम्भता । गोकमा । तुविहा पम्भता । तंजह—बदेह्या य १ सुदेह्या य २ । तत्त्व वं जे ते बदेह्या ते वं असंकिळ्य समए उगए अवहीरमाप्या खेतपलिलोकमस्य असंकिळमाप्यमेतीर्ण काळेवं अवहीर्ति भो खेद वं अवहिया तिवा । सुदेह्या वेउलिम्बसरीरा आहारगसरीरा य जहा पुढिकाइवार्थ तहा भावियम्भा । तेउकलह्यममरीरा जहा पुढिकाइवार्थ तहा भावियम्भा । वक्तव्यकलह्यार्थ ओरालिम्बवेउलिम्बमाहारगसरीरा जहा पुढिकलह्यार्थ तहा भावियम्भा । वप्पस्मैकलह्यार्थ भंते । कलह्या तकलह्यार्थ पम्भता । गोकमा तुविहा पम्भता । जहा ओहिया तयपकलह्यार्थ तहा वक्तव्यकलह्यार्थ वि तेवगकलमासरीरा भावियम्भा । वेईवियार्थ भंते । कलह्या ओर लिम्बसरीरा पम्भता । पोम्भमा । तुविहा पम्भता । तंजहा—बदेह्या व १ सुदेह्या य २ । तत्त्व वं जे ते बदेह्या ते वं असंकिळ्या असंकिळाही उरुपापिणी-ओसपिणीही अवहीर्ति कालमो खेताभो असंकल्पमये सेवीभो फवरस्त असंकिळ भागो कासि नं संदीर्ण विकर्यममै असंकेकाव्ये ओकलकोडोटीभो असंकिळदं संकिळमामूल्य, वेईवियार्थ ओरालिम्बबदेह्यार्थ पवर अवहीर्द असंकिळाही उस्सपिणीओसपिणीही कलह्यो खेताभो अणुसप्तस्तु आगमित्वाए असंकिळ भागपक्किमागेल । सुदेह्या जहा ओहिया ओरालिम्बसरीरा तहा भावियम्भा । वेउलिम्बमाहारगसरीरा बदेह्या तिवा । सुदेह्या जहा ओहिया ओरालिम्बसरीरा तहा भावियम्भा । तकलह्यममसरीरा जहा एएचि खेद ओरालिम्बतिवा तहा भावियम्भा । जहा वेईवियार्थ तहा तेउलिम्बउरितिवार्थ वि भावियम्भा । वंकिलिम्बि

रिक्खजोणियाण भते । केवडया वेडविवियसरीरा पण्णता ? गोयमा । दुविहा पण्णता । तजहा-वद्देलया य १ मुकेलया य २ । तत्थ ण जे ते वद्देलया ते ण असखिज्ञा, असखिज्ञाहि उसपिणीओसपिणीहि अवहीरति कालओ, खेत्तओ असखेज्ञाओ सेढीओ पयरस्स असखिज्ञइभागो, तानि ण सेढीण विक्खभसई अगुलपठमवगग-मूलस्स असखिज्ञइभागो । मुकेलया जहा ओहिया ओरालिया तहा भाणियव्वा । आहारयमरीरा जहा वेडदियाण तेयगकम्मसरीरा जहा ओरालिया । मणुस्साण भते । केवडया ओरालियसरीरा पण्णता ? गोयमा । दुविहा पण्णता । तजहा-वद्देलया य १ मुकेलया य २ । तत्थ ण जे ते वद्देलया ते ण सिय सखिज्ञा सिय असखिज्ञा, जहणगपए सखेज्ञा, सखिज्ञाओ कोडाकोडीओ, एगूणतीस ठाणाड तिजमलपयस्स उवरि चउजमलपयस्स हेट्टा, अहव ण छट्टो वरगो पचमवगगपदुप्पण्णो, अहव ण छणउडडेयणगदाडरासी, उक्कोमपए असखेज्ञा, असखेज्ञाहि उसपिणीओसपिणीहि अवहीरति कालओ, खेत्तओ उक्कोमपए र्वपकिसत्तेहि मणुस्सेहि सेढी अवहीरइ कालओ असखिज्ञाहि उसपिणीओसपिणीहि, खेत्तओ अगुलपठमवगगमूल तडय-वगगनूलपदुप्पण्ण । मुकेलया जहा ओहिया ओरालिया तहा भाणियव्वा । मणुस्साण भते । केवडया वेडविवियसरीरा पण्णता ? गोयमा । दुविहा पण्णता । तजहा-वद्देलया य १ मुकेलया य २ । तत्थ ण जे ते वद्देलया ते ण सखिज्ञा, समए समए अव हीरमाणा अर्हीरमाणा सखेज्ञेण कालेण अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया । मुकेलया जहा ओहिया ओरालियाण मुकेलया तहा भाणियव्वा । मणुस्साण भते । केवटया आहारगमगीरा पण्णता ? नोयमा । दुविहा पण्णता । तजहा-वद्देलया य १ प्रेत्या न २ । तत्थ ण जे ते मुकेलया ने ण निय अतिय सिय णन्हि, जट अतिय नाणेण एहो वा गो दा निप्पिण वा, उषोमंण नहल्लपुरत्त । मुकेलया जहा ओहिया ओरालिया तहा भाणियव्वा । नेयारम्भगमरीरा जहा एगारि चेव ओरालिया तहा भाणियव्वा । नाणमतराण ओरालियसरीरा जहा एरव्याण । नाणमतराण भते । ह्य दा वेडविवर्तीण पासा ? नोयमा । दुविहा पण्णता । नवटा-येट्या न १ मुकेलया य २ । नवटा जे ने देदा रा से प अम्भेज्ञा, अम्भेज्ञाहि उसपिणी-फीरीफीरीहि जर्तामंति रात्तो, मेजांगो वेडविवागो नेहीओ पद्मन फम-उत्तमांगो, तारीध मंडील, विसागाहा दुविहाजे दगडावयवार्तांगो पद्मस्स । मुकेलया जहा वर्त्या लोहाली, जहा गर्त्यादगडा । गालार्यनरी दुविहा विप्रा पद्मपुण्णाशा यहा नोयमार । वातावाता ने । रेत्तदा ने गालार्यनरीग पद्म । गोत्ता ! उठा गा, सेर रेत्तदा तहा ने तारम्भतरीग माति



पण्णते । तजहा-णाणगुणप्पमाणे १ दसणगुणप्पमाणे २ चरित्तगुणप्पमाणे ३ । से किंत णाणगुणप्पमाणे २ णाणगुणप्पमाणे चउच्चिवहे पण्णते । तजहा-पच्चक्खे १ अणुमाणे २ ओवम्मे ३ आगमे ४ । से किंत पच्चक्खे २ पच्चक्खे दुविहे पण्णते । तजहा-डिय-पच्चक्खे य १ णोइदियपच्चक्खे य २ । से किंत इदियपच्चक्खे २ इदियपच्चक्खे पच्चविहे पण्णते । तजहा-सोइदियपच्चक्खे १ चक्कुरिदियपच्चक्खे २ घार्णिदियपच्चक्खे ३ जिविभिदियपच्चक्खे ४ फासिदियपच्चक्खे ५ । सेत्त इदियपच्चक्खे । से किंत णोइ-दियपच्चक्खे २ णोइदियपच्चक्खे तिविहे पण्णते । तजहा-ओहिणाणपच्चक्खे १ मण-पजवणाणपच्चक्खे २ केवलणाणपच्चक्खे ३ । सेत्त णोइदियपच्चक्खे । सेत्त पच्चक्खे । से किंत तं अणुमाणे १ अणुमाणे तिविहे पण्णते । तजहा-पुब्बव १ सेसवं २ दिद्व-साहम्मव ३ । से किंत पुब्बवं २ पुब्बव-गाहा-माया पुत्त जहा नट, जुवाणं पुणरागय । काइ पच्चभिजाणेजा, पुब्बलिंगेण केणइ ॥ १ ॥ तजहा-खएण वा, वणेण वा, लछणेण वा, मसेण वा, तिलएण वा । सेत्त पुब्बव । से किंत सेसवं २ सेसव पच्चविह पण्णत । तजहा-कज्जेण १ कारणेण २ गुणेण ३ अवयवेण ४ आस-एण ५ । से किंत कज्जेण २ कज्जेण-सख सदेण, भेरि ताडिएण, वसभ डक्किएण, मोरं किंकाइएण, हय हेसिएण, गय गुलगुलाइएण, रह घणघणाइएण । सेत्त कज्जेण । से किंत कारणेण २ कारणेण-ततबो पडस्स कारण, ण पडो ततुकारण, वीरणा कडस्स कारण, ण कडो वीरणाकारण, मिर्पिंडो घडस्स कारण, ण घडो मिर्पिंड-कारण । सेत्त कारणेण । से किंत गुणेण २ गुणेण-सुवण्ण निकसेण, पुप्फ गंधेण, लवण रसेण, घय आसायएण, वत्थ फासेण । सेत्त गुणेण । से किंत अवयवेण २ अवयवेण-महिस सिंगेण, कुकुड सिहाएण, हर्टिय विसाणेण, वराह दाढाए, मोरं पिच्छेण, आस खुरेण, वरघ नहेण, चमरि वालगेण, वाणरं ल्लौणेण, दुपय मणुस्साइ, चउप्पय गव[या]माइ, वहुपय गोमियाइ, सीह केसरेण, वसह कळुहेण, महिल वलयवाहाए, गाहा-परियरबधेण भड, जाणिजा महिलिय निवसणेण । सित्येण दोणपाग, कविं च एक्काए गाहाए ॥ २ ॥ सेत्त अवयवेण । से किंत आसएण २ आसएण-अमिंग धूमेण, सलिल वलागेण, बुँडि अब्बविगारेण, कुलपुत्त सीलसमाया-रेण । सेत्त आसएण । सेत्त सेसव । से किंत दिद्वसाहम्मव २ दिद्वसाहम्मव दुविह पण्णतं । तजहा-सामण्णदिद्वं च १ विसेसदिद्वं च २ । से किंत सामण्णदिद्वं २ सामण्णदिद्वं-जहा एगो पुरिसो तहा वहवे पुरिसा, जहा वहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो, जहा एगो करिसावणो तहा वहवे करिसावणा, जहा वहवे करिसावणा तहा

एगो करिसावणो । सर्त सामग्रिहितुं । से कि त विमेसरिहुं । विमेसरिहुं—से बहासर्व  
बेद पुरिस ईवि पुरिस बहूण पुरिसाज मज्जे पुम्परिहुं फलमिशानेजा—‘अने हे  
पुरिसे’ बहूण करिसावणार्व मज्जे पुम्परिहुं करिसावर्व फलमिशानेजा—‘वरे हे  
करिसावणे’ । तस्स समासओ तिथिह यहू भनाह, तंजहा—भटीयाकाळ्याहर्व ।  
पहुप्पणकाळ्याहर्व ३ अनाम्यकाळ्याहजे २ । से कि त अटीयाकाळ्याहर्व ।  
अटीयाकाळ्याहर्व—उत्तमायि व्याप्ति निष्कण्डसुरसे वा भेदभिं पुम्पायि व कुंड  
सरफहीरीहियातडागाहृ वाहिता देवं साहित्य वहा—मुकुदी आसी । सेत अटीय-  
काळ्याहृ । उ कि तं पहुप्पणकाळ्याहृ । पहुप्पणकाळ्याहृ—साहु योवरम्पर्य  
विभित्तियपउभालापार्व पाहिता देवं साहित्य वहा—मुकिते वहृ । देह  
पहुप्पणकाळ्याहृ । से कि तं अणागवकाळ्याहृ । अणागवकाळ्याहृ—वाहसरु  
गिम्मकार्तं कहिता व गिरी दहित्युया महा । असिर्य वाहस्यामो रंगा रम  
पर्य(हा)दा व ० ३ ॥ वाहर्व वा महिंद वा अणवर्व वा वस्त्र उपार्वे पाहिता  
देवं साहित्य वहा—मुकुदी भविस्सह । सेत अणागवकाळ्याहृ । एपुषि वेद  
विमज्जामे तिथिह गहर्व भनाह, तंजहा—भटीयकाळ्याहर्व । पहुप्पणकाळ्याहृ ३  
अणागवकाळ्याहृ ३ । से कि तं अटीयकाळ्याहर्व ३ नितिणद्व वजाहं अनिष्टम्भसुर्य  
वा भेदभिं मुकायि व कुंडसरलीरीहियातडागाहृ वाहिता देवं साहित्य वहा—मुकुदी  
आसी । सेत अटीयकाळ्याहर्व । से कि त पहुप्पणकाळ्याहृ ३ पहुप्पणकाळ्याहृ—  
साहु गोवरम्पर्य मिक्की अद्भुम्मार्व पाहिता देवं साहित्य वहा—मुकिते  
वहृ । सेत पहुप्पणकाळ्याहृ । से कि तं अणागवकाळ्याहृ । अणागवकाळ्याहृ  
गाहा—भूमार्पति विसाओ संविय—मेहणी अपविवहा । वावा येइवा वहृ,  
कुमुदिमेप नितिवंति ० ४ ॥ अमोय वा वायर्व वा अणवर्व उपार्वे  
पाहिता देवं साहित्य वहा—मुकुदी भविस्सह । सेत अणाम्यकाळ्याहर्व । सेत  
विमेसरिहुं । सेत विदुसाहम्मो । सेत अमुमार्गे । से कि तं व्योवम्मे । व्योवम्मे  
मुकिहे पञ्चते । साहह—साहम्मोवणीए १ येइम्मोवणीए व १ । से कि तं साहम्मे-  
वणीए १ साहम्मोवणीए तिथिहे पञ्चते । तंजहा—किमिसाहम्मोवणीए १ पास्याहम्मो-  
वणीए १ उपसाहम्मोवणीए १ । से कि तं किमिसाहम्मोवणीए १ तिथिसाहम्मे-  
वणीए—वहा भंदरो तहा सरित्यो वहा भंदरो वहा समुदो व्या  
गोप्यर्व वहा योप्यर्व वहा समुदो वहा भाइचो तहा सम्योदो जहा कम्पेचो  
तहा आश्वो वहा खंदो तहा इमुदो वहा इमुदो तहा खंदो । सेत तिथिसाहम्मो-  
वणीए । से कि तं पायसाहम्मोवणीए १ पायसाहम्मोवणीए—वहा यो तहा फाये

जहा गवओ तहा गो । सेत्त पायसाहम्मोवणीए । से किं त सब्बसाहम्मोवणीए ? सब्बसाहम्मे ओवम्मे णत्यि, तहावि तेणेव तस्स ओवम्म कीरइ, जहा-अरिहतेहिं अरिहतसरिस कय, चक्रवट्टिणा चक्रवट्टिसरिस कय, वलदेवेण वलदेवसरिस कय, वासुदेवेण वासुदेवसरिस कय, साहुणा साहुसरिस कय । सेत्त सब्बसाहम्मे । सेत्त साहम्मोवणीए । से किं त वेहम्मोवणीए ? वेहम्मोवणीए तिविहे पण्णते । तंजहा-किंचिवेहम्मे १ पायवेहम्मे २ सब्बवेहम्मे ३ । से कि त किंचिवेहम्मे ? किंचिवेहम्मे-जहा सामलेरो न तहा वाहुलेरो, जहा वाहुलेरो न तहा सामलेरो । सेत्त किंचिवेहम्मे । से किं त पायवेहम्मे ? पायवेहम्मे-जहा वायसो न तहा पायसो, जहा पायसो न तहा वायसो । सेत्त पायवेहम्मे । से किं त सब्बवेहम्मे ? सब्बवेहम्मे ओवम्मे णत्यि, तहावि तेणेव तस्स ओवम्म कीरइ, जहा णीएण णीयसरिस कय, दासेण दाससरिस कय, काकेण काक्तसरिस कयं, साणेण साणसरिस कय, पाणेण पाणमरिस कय । सेत्त सब्बवेहम्मे । सेत्त वेहम्मोवणीए । सेत्त ओवम्मे । से किं त आगमे ? आगमे दुविहे पण्णते । तजहा-लोइए य १ लोउत्तरिए य २ । से किं त लोइए ? लोइए-जण इम अणाणिएहिं मिच्छादिट्टिएहिं सच्छदबुद्धिमङ्गिगपिय, तजहा-भारहं, रामायण जाव चत्तारि वेया सगोवगा । सेत्त लोइए आगमे । से किं त लोउत्तरिए ? लोउत्तरिए-जण इम अरिहतेहिं भगवतेहिं उप्पणणाणदसनधरेहिं तीयपच्चुप्पणमणागयजाणएहिं तिलक्षवहियमहियपूझएहिं सब्बण्णूहिं सब्बदरिसीहिं पणीय दुवालसग गणिपिडंग, तजहा-आयारो जाव दिट्टिवाओ । अहवा आगमे तिविहे पण्णते । तजहा-सुत्तागमे १ अथागमे २ तदुभयागमे ३ । अहवा आगमे तिविहे पण्णते । तजहा-अत्तागमे १ अणतरागमे २ परपरागमे ३ । तित्यगराण अत्यस्स अत्तागमे, गणहराण सुत्तस्स अत्तागमे, अत्यस्स अणतरागमे, गणहरसीसाण सुत्तस्स अणतरागमे, अत्यस्स परपरागमे, तेण परं सुत्तस्स वि अत्यस्स वि णो अत्तागमे, णो अणतरागमे, परपरागमे । सेत्त लोगुत्तरिए । सेत्त आगमे । सेत्त णाणगुणप्पमाणे । से किं त दसण-गुणप्पमाणे ? दसणगुणप्पमाणे चउव्विहे पण्णते । तजहा-चक्रबुद्दसणगुणप्पमाणे १ अचक्रबुद्दसणगुणप्पमाणे २ ओहिदसणगुणप्पमाणे ३ केवलदसणगुणप्पमाणे ४ । चक्रबुद्दसण चक्रबुद्दसणिस्स घडपडकडरहाइसु दब्बेसु, अचक्रबुद्दसण अचक्रबुद्दसणिस्स आयमावे, ओहिदसण ओहिदसणिस्स सब्बरुविदब्बेसु न पुण सब्बपज्जवेसु, केवलदसण केवलदमणिस्स सब्बदब्बेसु य सब्बपज्जवेसु य । सेत्त दसणगुणप्पमाणे । से कि त चरित्तगुणप्पमाणे ? चरित्तगुणप्पमाणे पचविहे पण्णते । तजहा-सामाइय-चरित्तगुणप्पमाणे १ छेओवट्टावणचरित्तगुणप्पमाणे २ परिहारविसुद्धियचरित्तगुण-

प्पमाणे ३ शुद्धमर्त्तव्यचरित्यगुणप्पमाणे ४ अद्वक्त्वामचरित्यगुणप्पमाणे ५ । सामाइमचरित्यगुणप्पमाणे दुष्टिहे पञ्चते । तंबद्धा—इतरिए य १ आदर्शिए व २ । छेष्टोवद्वावण्यचरित्यगुणप्पमाणे दुष्टिहे पञ्चते । तंबद्धा—याह्यारे व १ निरस्यारे व २ । परिहारमिष्टदिव्यचरित्यगुणप्पमाणे दुष्टिहे पञ्चते । तंबद्धा—यिष्ठित्यमाभरे व १ यिष्ठिद्वन्द्वए व २ । शुद्धमर्त्तव्यचरित्यगुणप्पमाणे दुष्टिहे पञ्चते । तंबद्धा—संकेष्टस्यमाणए य १ यिष्ठुज्ञमाणए व २ । आह्या शुद्धमर्त्तव्यचरित्यगुणप्पमाणे दुष्टिहे पञ्चते । तंबद्धा—पदिकाई व १ अपदिकाई व २ । अद्वक्त्वामचरित्यगुणप्पमाणे दुष्टिहे पञ्चते । तंबद्धा—पदिकाई व १ अपदिकाई व २ । आह्या आह्यामचरित्यगुणप्पमाणे दुष्टिहे पञ्चते । दंबद्धा—छत्तमतिए य १ केष्टिए व २ । देवतं चरित्यगुणप्पमाणे । देवतं चांचल्यगुणप्पमाणे । देवतं युवप्पमाणे ॥ १४६ ॥ ए कि तं कवाचमाणे ? नवप्पमाणे दिलिहे पञ्चत । दंबद्धा—पत्त्वयरिद्वितुर्वेष १ वसद्विरिद्वितुर्वेष १ पत्त्वयरिद्वितुर्वेष ३ । ए कि तं पत्त्वयरिद्वितुर्वेष ? पत्त्वयरिद्वितुर्वेष—से बहानामार्ण ऐ ए पुरिसे फसु गङ्गाय अडविगमदुत्ते गच्छेज्ञा तं पाहिता बेद बएज्ञा—“कहि मर्व यस्त्वासि ?” अभिसुद्धो येगमो भजइ— पत्त्वयस्य यस्त्वासि” । तं च बेद तिरमार्ण पाहिता बएज्ञा— कि मर्व छिद्वसि ?” यिषुद्धो येगमो भजइ—“पत्त्वय छिद्वसि” । तं च बेद तच्छमार्ण पाहिता बएज्ञा—“कि मर्व तच्छमि ?” यिषुद्धतरामो येगमो भजइ—“पत्त्वय छिद्वसि” । एवं यिषुद्धतरामो येगमो भजइ—“पत्त्वय उद्दीरासि” । तं च बेद तिरिहमार्ण पाहिता बएज्ञा—“कि मर्व तिरिहसि ?” यिषुद्धतरामो येगमो भजइ—“पत्त्वय छिद्वसि” । एवं यिषुद्धतरस्स येगमस्स भाषाउडिभो पापमो । एवमेव बहानारस्म वि । दंगहस्म विद्यमान्मास्त्वो पत्त्वभो । उज्जुयस्म पत्त्वभो वि पत्त्वज्ञा भेज्ञ वि पत्त्वभो । तिर्द्वेष सहन्यार्थ पत्त्वयस्म अवधादिमारदानमें उम्म वा बम्य पत्त्वभा निष्कज्ञइ । सत्त पत्त्वयरिद्वितुर्वेष । ए कि तं वसद्विद्वितुर्वेष ? वगद्विद्वितुर्वेष—से बहानामार्ण बद्दु पुरिसे बेष्टि पुरिसे बएज्ञा “कहि मर्व यस्त्वासि ?” ते अभिसुद्धो येगमो भजइ—“स्त्वागे बगासि” । स्त्वागे निष्टिहे पत्त्वते तंबद्धा—उहाँसे १ भद्रोगाए निरिमन्येए ३ तसु गम्यनु मर्व बपति ? यिषुद्धो येगमो भजइ— निरियन्येए बगासि” । निरियन्येए बेष्टुद्धाराइया नर्यभृमन्यप्रवासाचा वर्षे गिज्ञा लीरगमुरा पत्त्वज्ञा तथु गम्यनु भय बपति ?” यिषुद्धतरामो येगमो भजइ— लंबुहीय बगासि” । “बेष्टुहीय इग-नेता पत्त्वज्ञा तंबद्धा—भरहे १ एवर ३ देमरए १ एरण्णारए ४ दरिवस्स ५ रम्यमहस्मे ६ देवारु ७ गारु ८ पुन्ह

## चतुर्थसिंहों के नाम ।

भल सागर मे मध्य समन्व खीयो सुपकारी । शांति  
कुम्भ भरनाय महापद्म अयक्षारी । हरिवेण जयवेष रम्भ  
प्रद्वयक्त सांखो । मुक्तित देव मे नक पहनो छिपते वाहो,  
मध्य समंत देव गते अष्ट मुगव पासी गिलो, शंभूम ब्रह्मवृण  
सप्तमी नरक चक्रपक्षी वारे मिलो ॥ १५ ॥

## मुनियों के १२५ अतिथार ।

ज्ञान है अतुर्क्षय वाण समक्षित केय वेद इत्याय  
मुञ्ज मापाय उद्धार है । युग मुमि ऐपणारा खीर्षी सुमतिप  
इग पांखमीया दिह निम मोजन द्व सार है । पांख महावत  
की पश्चीस मावना न भूल तीम श्रुति रा अंक द्याहे अखगार  
है । पांखप शुलेपणारा भार उर कुशलता सापुजी रा एक  
सी पश्चीस अतिथार है ॥ १६ ॥

सस्य शील सम दम दया विद्या कीश्वर वान ।

जग ब्रह्मवा सूरता पाषव वस पुनवान ॥ १७ ॥



વિદેહે ૯ અવરવિદેહે ૧૦ તેસુ સબ્વેસુ ભવ વસસિ ૨” વિસુદ્ધતરાઓ ણેગમો ભણદ્દ-  
 “ભરહે વાસે વસામિ” । “ભરહે વાસે દુવિંહે પણજો તજહા-દાહિણદ્વારહે ૧  
 ઉત્તરદ્વારહે ય ૨ તેસુ સબ્વે(દો)સુ ભવ વસસિ ૨” વિસુદ્ધતરાઓ ણેગમો ભણદ્દ-  
 “દાહિણદ્વારહે વસામિ” । “દાહિણદ્વારહે અણેગાડ ગામાગરણગરહેડકબ્વડ-  
 મદ્યદોણમુહપદ્ધણાસમસવાદ્યસણિવેસાઇ, તેસુ સબ્વેસુ ભવ વસસિ ૧” વિસુદ્ધતરાઓ  
 ણેગમો ભણદ્દ-“પાડલિપુત્તે વસામિ” । “પાડલિપુત્તે અણેગાડ નિહાઇ, તેસુ સબ્વેસુ  
 ભવ વસસિ ૨” વિસુદ્ધતરાઓ ણેગમો ભણદ્દ-“દેવદ-  
 તસ્સ ઘરે અણેગા કોટુગા, તેસુ સબ્વેસુ ભવ વસસિ ૨” વિસુદ્ધતરાઓ ણેગમો ભણદ્દ-  
 “ગબ્બઘરે વસામિ” । એવું વિસુદ્ધસ્સ ણેગમસ્સ વસમાણો । એવમેવ વવહારસ્સ વિ ।  
 સગહસ્સ સથારસમાંઢો વસાઇ । ઉજ્જુસુયસ્સ જેસુ આગાસપએસેસુ ઓગાડો તેસુ  
 વસડ । તિણું સહણયાણં આયભાવે વસાઇ । સેતુ વસહિદ્ધુતેણ । સે કિ ત પણદિ-  
 દ્ધુતેણ ૨ પણદિદ્ધુતેણ-ણેગમો ભણદ્દ-“છણું પણસો, તજહા-ધમ્મપણસો, અધમ્મ-  
 પણસો, આગાસપણસો, જીવપણસો, ખધપણસો, દેસપણસો” । એવ વયત ણેગમ સગહો  
 ભણદ્દ-“જ ભણસિ-છણું પણસો ત ન ભવાઇ” । “કમ્હા ૨” “જમ્હા જો દેસપણસો સો  
 તસેવ દચ્વસ્સ” । “જહા કો દિદ્ધતો ૨” “દાસેણ મે ખરો કીઓ, દાસો વિ મે ખરો  
 વિ મે । ત મા ભણાહિ-છણું પણસો, ભણાહિ પચણું પણસો, તજહા-ધમ્મપણસો,  
 અધમ્મપણસો, આગાસપણસો, જીવપણસો, ખધપણસો” । એવ વયત સગહ વવહારો  
 ભણદ્દ-“જ ભણસિ-પચણું પણસો ત ન ભવાઇ” । “કમ્હા ૨” “જાડ જહા પચણું  
 ગોદ્ધુયાણ પુરિસાણ કેદ દચ્વજાએ સામણે ભવાઇ, તજહા-હિરણે વા સુવણે વા ધણે  
 વા વણે વા, ત ન તે જુત્ત વત્તુ જહા પચણું પણસો, ત મા ભણાહિ-પચણું પણસો,  
 ભણાહિ-પચવિહો પણસો, તજહા-ધમ્મપણસો, અધમ્મપણસો, આગાસપણસો, જીવપ-  
 ણસો, ખધપણસો” । એવું વયત વવહારું ઉજ્જુસુઓ ભણદ્દ-“જ ભણસિ-પચવિહો પણસો  
 ત ન ભવાઇ” । “કમ્હા ૨” “જાડ તે પચવિહો પણસો, એવ તે એકેકો પણસો પચ-  
 વિહો, એવ તે પણવીસિદ્ધિહો પણસો ભવાઇ, ત મા ભણાહિ-પચવિહો પણસો, ભણાહિ-  
 ભદ્યવ્યો પણસો-સિય ધમ્મપણસો, સિય અધમ્મપણસો, સિય આગાસપણસો, સિય  
 જીવપણસો, સિય ખધપણસો” । એવ વયત ઉજ્જુસુય સપાઇ સહનાંઓ ભણદ્દ-“જ ભણસિ-  
 ભદ્યવ્યો પણસો ત ન ભવાહ” । “કમ્હા ૨” “જડ ભદ્યવ્યો પણસો એવું તે ધમ્મપણસો  
 વિ-સિય ધમ્મપણસો સિય અધમ્મપણસો સિય આગાસપણસો સિય જીવપણસો સિય  
 ખધપણસો, અધમ્મપણસો વિ સિય વમ્મપણસો જાવ સિય ખધપણસો, જીવપણસો વિ  
 સિય ધમ્મપણસો જાવ સિય ખધપણસો, ખધપણસો વિ સિય વમ્મપણસો જાવ સિય

संखेजए तिथिहे पन्नते । तंबहा—बहूप्रथम् १ उडोसए २ अब्रहूप्रमुक्तोसए ३ । से कि तं अभतए ! अपतए तिथिहे पन्नते । तंबहा—परिताकतए १ शुतार्थतए २ अर्णतार्थतए ३ । से कि तं परिताकतए ! परितार्थतए तिथिहे पन्नते । तंबहा—बहूप्रथम् १ उडोसए २ अब्रहूप्रमुक्तोसए ३ । से कि तं शुतार्थतए ! शुतार्थतए तिथिहे पन्नते । तंबहा—बहूप्रथम् १ उडोसए २ अब्रहूप्रमुक्तोसए ३ । से कि तं अनागतए ? अपतागतए तुविहे पन्नते । तंबहा—बहूप्रथम् १ अब्रहूप्रमुक्तोसए ३ । अहलय संखेजर्य केवद्य होइ । दोबद्य । लेण परं अब्रहूप्रमुक्तोसवर्त्त ठाकर्त चर उडोसर्य संखेजर्य म पावइ । उडोसर्य संखेजर्य केवद्य होइ । उडोसवस्सु संखेजर्य पहवर्त्त करिस्तामि—से बहानामए एओ तिथा—एग जोवजसवस्सुस्ती आवाम निकन्तमेवं तिथिय जोवजसवस्सुस्ताइ थोक्सस्सुस्तिहृ वोतिन व सतावीसे जोवजसए तिथिन व छोसे अकुवीसे व अपुसर्य तेरस व अगुवाइ अद्य अगुसे व तिथि निदेसाहित्य परिक्षेपेण पन्नते से नं फ्ले तिदत्यवार्त मरिए, तजो न तेहि भिन्न त्यएहि धीवसमुद्धार्ण उदारो देष्ट, एओ धीवे एगे समुद्रे परं पसिद्यप्पमानेवं पसिद्य प्पमानेवं बावद्वा धीवसमुद्रा तेहि तिदत्यवार्त अस्तुत्ता एस अं एवरए देते नो (भाइडा) पामा समागा एवदत्यवार्त सप्तागाप्य अचेष्टप्पा स्मेगा मरिका तहा ति उडोसर्य संखेजर्य म पावइ । बहा को विद्युतो । से बहानामए र्वचे तिका आमक्ष याचे गरिए, तत्त्व एगे आमक्षए पसितुते देऽति माए, अन्तेऽति पकितुते सेऽति माए, एवं पसिद्यप्पमानेवं पकितुप्पमानेवं होही सेऽति आमसए वर्ति पकितुते से मंबए भरितिहित जे तत्त्व आमसए न माहिइ, एगामेह उडोसए उहेजए हवे प्रसिद्यते अहलय परितासेहेजर्य मवइ । देण परं अब्रहूप्रमुक्तोसवर्त्त ठाकर्त चर उडोसर्य परितासेहेजर्य न पावइ । उडोसर्य परितासेहेजर्य काद्य होइ । अहलय परितासेहेजर्य बहूप्रथमे परितासेहेजर्यमत्तानं राहीर्ण अव्यवस्थमान्ते हट्टो उडाओ परितासेहेजर्य होइ । अहा बहूप्रथमे शुतासेहेजर्य अव्यव उडोसर्य वरिता सेहेजर्य राहीर्ण अव्यवस्थमासो पदितुत्तो बहूप्रथमे शुतासेहेजर्य होइ । अहा उडोसए पसितासेहेजए इवं पसितार्त बहूप्रथमे शुतासेहेजर्य होइ । आविद्वा ति तर्तिका खेइ । तत्त्व परं अब्रहूप्रमुक्तोसवर्त्त ठाकर्त जाव उडोसर्य शुतासेहेजर्य न पावइ । उडोसव शुतासेहेजर्य केवद्य होइ । बहूप्रथमे शुतासेहेजर्य अव्यवित्ता गुरिका अव्यवस्थमागो बृक्षा उडोसर्य शुतासेहेजर्य होइ । अहा बहूप्रथमे अव्यव शुतासेहेजर्य बृक्षे उडोसर्य शुतासेहेजर्य होइ । जट्टावे अव्यवजाहीनेहेजर्य वाहावे

होइ २ जहणएण जुत्तासखेजाएण आवलिया गुणिया अणमणब्भासो पडिपुणो जहणय असखेजासखेजयं होइ । अहवा उक्कोसए जुत्तासखेजए रुव पक्खित्त जहणय असखेजासखेजयं होइ । तेण परं अजहणमणुक्कोसयाइ ठाणाइ जाव उक्कोसयं असखेजासखेजयं ण पावइ । उक्कोसय असखेजासखेजयं केवइय होइ २ जहणयं असखेजासखेजयमेत्ताणं रासीणं अणमणब्भासो रुवूणो उक्कोसयं असखेजासखेजय होइ । अहवा जहणय परित्ताणंतयं रुवूण उक्कोसयं असखेजासखेजयं होइ । जहणय परित्ताणंतय केवइय होइ २ जहणय असखेजासखेजयमेत्ताणं रासीणं अणमणब्भासो पडिपुणो जहणय परित्ताणंतय होइ । अहवा उक्कोसए असखेजासखेजए रुव पक्खित्त जहणय परित्ताणंतय होइ । तेण परं अजहणमणुक्कोसयाइ ठाणाइ जाव उक्कोसय परित्ताणंतय ण पावइ । उक्कोसय परित्ताणंतयं केवइय होइ २ जहणय-परित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं अणमणब्भासो रुवूणो उक्कोसय परित्ताणंतय होइ । अहवा जहणय जुत्ताणंतयं रुवूणं उक्कोसय परित्ताणंतय होइ । जहणय जुत्ताणंतयं केवइयं होइ २ जहणयपरित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं अणमणब्भासो पडिपुणो जहणय जुत्ताणंतय होइ । अहवा उक्कोसए परित्ताणंतय रुवं पक्खित्त जहणय जुत्ताणंतय होइ । अभवसिद्धिया वि तत्तिया होंति । तेण परं अजहणमणुक्कोसयाइ ठाणाइ जाव उक्कोसय जुत्ताणंतय ण पावइ । उक्कोसय जुत्ताणंतय केवइय होइ २ जहणएण जुत्ताणंतएण अभवसिद्धिया गुणिया अणमणब्भासो रुवूणो उक्कोसय जुत्ताणंतय होइ । अहवा जहणय अणताणंतयं रुवूणं उक्कोसय जुत्ताणंतय होइ । जहणय अणताणंतय केवइय होइ २ जहणएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिया गुणिया अणमणब्भासो पडिपुणो जहणय अणताणंतय होइ । अहवा उक्कोसए जुत्ताणंतए रुवं पक्खित्त जहणय अणताणंतय होइ । तेण परं अजहणमणुक्कोसयाइ ठाणाइ । सेत्त गणणासखा । से किं त भावसखा ? भावसखा-जे इमे जीवा सखगइनामगोत्ताइ कम्माइ वेदेति । सेत्त भावसंखा । सेत्त सखापमाणे । सेत्त भावप्पमाणे । सेत्तं पमाणे ॥ १४७ ॥ पमाणे न्ति पयं समत्तं ॥

से किं त वत्तव्या ? वत्तव्या तिविहा पण्णत्ता । तजहा-ससमयवत्तव्या १ परसमयवत्तव्या २ ससमयपरसमयवत्तव्या ३ । से किं त ससमयवत्तव्या ? ससमयवत्तव्या-जत्थ ण ससमए आधविजाइ, पण्णविजाइ, परुविजाइ, दसिजाइ, निदसिजाइ, उवदंसिजाइ । सेत्त ससमयवत्तव्या । से किं तं परसमयवत्तव्या ? परसमयवत्तव्या-जत्थ ण परसमए आधविजाइ जाव उवदंसिजाइ । सेत्त परसमयवत्तव्या । से किं त ससमयपरसमयवत्तव्या ? ससमयपरसमयवत्तव्या-जत्थ ण

सुसमए परस्मए भावनिज्ञ जात उत्तमिक्षु । ऐति सुसमयपरस्मदवत्त्वा ।  
इकार्णी क्षे पञ्चे क वास्तवं इच्छ ॥ एतत् वेयससंसाहकवारा तिक्षित् वहन्ते  
इच्छंति त्रिग्राहा-सुसमवत्त्वार्थं । परस्मवत्त्वार्थं २ सुक्षमवरस्मवत्त्वार्थं ३ ।  
उत्तमुमो तु तिक्षित् वहन्त्वं इच्छ, त्रिग्राहा-सुसमवत्त्वार्थं । परस्मवत्त्वार्थं ३ ।  
तत्त्व व जा सा सुक्षमवत्त्वार्थया सा सुसमवं पविद्वा जा सा परस्मवत्त्वार्थया जा  
परस्मवं पविद्वा तम्हा तु तिक्षित् वहन्त्वार्थया । तिक्षित् वहन्त्वार्थया । तिक्षित् वहन्त्वार्थया  
परस्मए अग्नेऽन्नेऽन्न असम्भावे अक्षिरिए उभ्यरो अनुष्टुप्स्ये मित्रार्दद्वयमितिष्ठु ।  
तम्हा स्वा सुसमवत्त्वार्थया परिप्य परस्मवत्त्वार्थया अतिं सुसमयपरस्मव-  
वत्त्वार्थया । स्वेतं वहन्त्वार्थया ॥ १४८ ॥ से कि तं अत्याहिमारे । अत्याहिमारे-  
ओ अस्य अज्ञात्यनन्तस्य अत्याहिमारे त्रिग्राहा-ग्राहा-साध्यगोगमिति ३ उक्तिप्र-  
युगमध्ये य पवित्रता । बलिप्रस्थ निवाप- त- तिरिष्ठ शुच्यारणा चेत् ॥ १ ॥  
स्वेतं अत्याहिमारे ॥ १४९ ॥ से कि तं अमोक्तारे । उमोक्तारे उक्तिहे फलते ।  
त्रिग्राहा-ग्राहसमोक्तारे । अणासमोक्तारे २ इमसमोक्तारे ३ चेतासमोक्तारे ४  
च्छसमोक्तारे ५ मात्रसमोक्तारे ६ । आप्तवक्तामो पुर्वं विविदाभ्यो जात स्वेतं  
भवियसुरीरमवियसुरीरकृतिरेष्व वस्तुमोक्तारे । से कि तं आप्तवक्तामोक्तारे ।  
जात्यसुरीरमवियसुरीरकृतिरेष्व वस्तुमोक्तारे तिक्षिते फलते । त्रिग्राहा-आवक्तामो-  
क्तारे । परस्मोक्तारे २ तुम्भवस्तुमोक्तारे ३ । सम्बद्ध्या वि नं आप्तवक्तामोक्तारे-  
आप्तवक्तामोक्तारे । परस्मोक्तारेष्व वहा तुम्भे वहरायि । तुम्भवस्तुमोक्तारे वहा वहे  
स्वमोक्तामोक्तारे व वहा घौं गीता आवक्तामोक्तारे य । ग्राहा आप्तवक्तामोक्तारे-  
कृतिरेष्व वस्तुमोक्तारे तु तिक्षिते फलते । त्रिग्राहा-आवक्तामोक्तारे व १ तुम्भवस्तुमोक्तारे-  
व २ । चठसद्विद्वा आवक्तामोक्तारेण आप्तवक्तामोक्तारे चमोवरद्, तुम्भवस्तुमोक्तारेण वही-  
तिक्षिताए चमोवरद् आवक्तामोक्तारे य । चत्तीसिया आवक्तामोक्तारेण आप्तवक्तामोक्तारे समोवरद्,  
तुम्भवस्तुमोक्तारेण चोक्षिताए चमोवरद् आप्तवक्तामोक्तारे य । छोक्षितावा आवक्तामो-  
क्तारेण आप्तवक्तामोक्तारे चमोवरद्, तुम्भवस्तुमोक्तारेण व्याप्तमारुद्धाए चमोवरद् आप्त-  
वक्तामोक्तारे य । अद्यमाइया आवक्तामोक्तारेण आप्तवक्तामोक्तारे चमोवरद् तुम्भवस्तुमोक्तारेण  
चडमाइया ए चमोवरद् आप्तवक्तामोक्तारे य । चडमाइया आवक्तामोक्तारेण आप्तवक्तामोक्तारे-  
समोवरद्, तुम्भवस्तुमोक्तारेण अद्यमानीए चमोवरद् आप्तवक्तामोक्तारे य । अद्यमानी आप्त-  
वक्तामोक्तारेण आप्तवक्तामोक्तारे चमोवरद्, तुम्भवस्तुमोक्तारेण मानीए चमोवरद् आप्तवक्तामोक्तारे य ।  
सेतु आप्तवक्तामोक्तारेण व्याप्तिरुद्धरिते वस्तुमोक्तारे । स्वेतं नोप्तामोक्तारे वस्तुमोक्तारे ।

सेत्त दब्बसमोयारे । से किं तं खेत्तसमोयारे ? खेत्तसमोयारे दुविहे पण्णते । तंजहा—आयसमोयारे य १ तदुभयसमोयारे य २ । भरहे वासे आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण जबुद्दीवे समोयरइ आयभावे य । जंबुद्दीवे आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण तिरियलोए समोयरइ आयभावे य । तिरियलोए आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण लोए समोयरइ आयभावे यै । सेत्त खेत्तसमोयारे । से किं त कालसमोयारे ? कालसमोयारे दुविहे पण्णते । तंजहा—आयसमोयारे य १ तदुभयसमोयारे य २ । समए आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण आवलियाए समोयरइ आयभावे य । एवमाणापाणू थोवे लवे मुहुते अहोरत्ते पक्खे मासे उक्त अयणे सवच्छरे जुगे वाससए वाससहस्रे वाससयसहस्रे पुन्वगे पुन्वे तुडियंगे तुडिए अडडगे अडडे अववगे अववे हुहयगे हुहुए उप्पलगे उप्पले पउमगे पउमे नलिणगे नलिणे अत्थनिउरंगे अत्थनिउरे अउयगे अउए नउयंगे नउए पउयंगे पउए चूलियंगे चूलिया सीसपहेलियगे सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे—आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण ओसपिणीउस्सपिणीसु समोयरइ आयभावे य । ओसपिणीउस्सपिणीओ आयसमोयारेण आयभावे समोयरंति, तदुभयसमोयारेण पोगगलपरियहे समोयरंति आयभावे य । पोगगलपरियहे आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण तीतद्वाभणागतद्वासु समोयरइ । तीतद्वाभणागतद्वाऽ आयसमोयारेण आयभावे समोयरंति, तदुभयसमोयारेण सव्वद्वाए समोयरंति आयभावे य । सेत्त कालसमोयारे । से किं त भावसमोयारे ? भावसमोयारे दुविहे पण्णते । तजहा—आयसमोयारे य १ तदुभयसमोयारे य २ । कोहे आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण माणे समोयरइ आयभावे य । एव माणे माया लोमे रागे मोहणिजे । अट्टकम्पयद्दीओ आयसमोयारेण आयभावे समोयरंति, तदुभयसमोयारेण छविहे भावे समोयरंति आयभावे य । एवं छविहे भावे । जीवे जीवत्तिकाए आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण सव्वद्ववेसु समोयरइ आयभावे य । एत्य संगहणीगाहा—कोहे माणे माया, लोमे रागे य मोहणिजे य । पगडी भावे जीवे, जीवत्तिकाय दब्बा य ॥ १ ॥ सेत्त भावसमोयारे । सेत्त समोयारे । सेत्त उवक्कमे ॥ १५० ॥ उवक्कम इति पठमं दारं ॥

१ लोए आयसमोयारेण आयभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेण अलोए समोयरइ आयभावे य । इच्छिय पच्चतरे ।

से कि त निष्ठेदे । निष्ठेदे शिरिहे पर्यन्ते । तंबहा-बोहनिष्ठये । नामनिष्ठन्ते ।  
 मुतास्मश्वयनिष्ठन्ते । से कि त बोहनिष्ठये । बोहनिष्ठये चठिही पर्यन्ते ।  
 तंबहा-मज्जन्ते । अज्जीने २ बाबा है बाबा ४ । से कि त बज्जन्ते । बज्जन्ते  
 चठिही पर्यन्ते । तंबहा-गमज्जन्ते । ल्वपञ्ज्ञन्ते २ दम्भज्ञन्ते ३ मात  
 ज्ञन्ते ४ । आमछबाओ पुर्व बचियबाओ । से कि त दम्भज्ञन्ते । दम्भज्ञन्ते  
 दुष्टिहे पर्यन्ते । तंबहा-आगम्नो य । नोआगम्नो य २ । से कि त आगम्ने  
 दम्भज्ञन्ते । आगम्नो दम्भज्ञन्ते-क्षस्तु वं मज्जन्तन् ति पर्व शिक्षन्ते दिने  
 चिंते मिर्य परिचित बाब एवं आबासा अकुकरदा आगम्नो तामस्मात् दम्भज्ञन्ते  
 गाइ । एकमेव बाहारत्स्व ति । संगहस्तु वं एग्ये बा अजेगो बा बाब सेर्त आगम्ने  
 दम्भज्ञन्ते । से कि त बोआगम्नो दम्भज्ञन्ते । बोआगम्नो दम्भज्ञन्ते शिरिहे  
 पर्यन्ते । तंबहा-जाणयसरीरदम्भज्ञन्ये । मविकसरीरदम्भज्ञन्ये २ जाणयसरीर  
 मविकसरीरदम्भरिते दम्भज्ञन्ते । से कि त बाणयसरीरदम्भज्ञन्ये ३ बज्जन्तन्  
 प्यत्वाहिगारजागमस्तु वं सरीर बदगम्बुद्यचाविमत्तातेहौं, जीवित्यदृढ़ बाब बासे  
 च इमेवं सरीरसमुस्थपर्व शिवरित्वेवं भावेवं भज्ञन्ते ति पर्व आवित्य बाब  
 लब्दर्तिये । बाब को शिरुटो । बबं बद्धुमे आई अम मदुकुमे आसी । देर्त  
 आणयसरीरदम्भज्ञन्ये । से कि त मविकसरीरदम्भज्ञन्ये ३ मविकसरीरदम्भज्ञन्ये-  
 चे जीवे बोविकम्भयनिक्तंते इमेवं चेव भावतएवं सरीरसमुस्सर्व शिवरित्वेवं  
 भावेवं भज्ञन्ते ति पर्व सैवद्वके शिक्षन्तरुत्तम ताम शिक्षाइ । बाब को शिरुटो ।  
 अर्य मदुकुमे मविस्ताइ, अर्य बद्धुमे भविस्ताइ । देर्त मविकसरीरदम्भज्ञन्ये । से  
 कि त बाणयसरीरमवियसरीरदम्भरिते दम्भज्ञन्ये ३ २ पातयपेत्कवशिहीवं । देर्त  
 बाणयसरीरमवियसरीरदम्भरिते दम्भज्ञन्ये । देर्त बोआगम्नो दम्भज्ञन्ये । देर्त  
 दम्भज्ञन्ये । से कि त भावज्ञन्ये । भावज्ञन्ये दुष्टिहे पर्यन्ते । तंबहा-आगम्नो  
 व । नोआगम्नो य २ । से कि त आगम्नो भावज्ञन्ये । आगम्ने भावज्ञन्ये  
 बाबए चबडते । देर्त बागम्नो भावज्ञन्ये । से कि त नोआगम्नो भावज्ञन्ये ।  
 बोआगम्नो भावज्ञन्ये-गाहा-बज्जन्प्यस्थापदने क्षमार्य भवच्छ्वेऽवशियार्य ।  
 अनुवाच्नो च नवाचं तम्हा भज्जन्पमिष्टिः ॥ १ ॥ देर्त बोआगम्नो भावज्ञन्ये ।  
 देर्त भावज्ञन्ये । देर्त अज्जन्यने । से कि त अज्जीये । अज्जीये चठिही  
 पर्यन्ते । तंबहा-भामज्जीये । ल्वमज्जीने २ दम्भज्जीये ३ भामज्जीये ४ ।  
 आमछबाओ पुर्व बचियबाओ । से कि त दम्भज्जीये । दम्भज्जीये दुष्टिहे पर्यन्ते ।  
 तंबहा-आगम्ने य । नोआगम्नो य २ । से कि त आगम्नो दम्भज्ञन्ये ।

आगमओ दब्वज्जीणे—जस्त ण ‘अज्जीणे’ ति पयं सिक्खिय ठियं, जिय, मियं, परिजिय जाव सेत्त आगमओ दब्वज्जीणे । से कि त नोआगमओ दब्वज्जीणे १ नोआगमओ दब्वज्जीणे तिविहे पण्णते । तंजहा—जाणयसरीरदब्वज्जीणे १ भवियसरीरदब्वज्जीणे २ जाणयसरीरभवियसरीरवडरिते दब्वज्जीणे ३ । से कि तं जाणयसरीरदब्वज्जीणे । जाणयसरीरदब्वज्जीणे—‘अज्जीण’ पयत्थाहिगारजाण-यस्त ज सरीरय ववगयनुयचावियचत्तदेह जहा दब्वज्जयणे तहा भाणियव्वं जाव सेत्त जाणयसरीरदब्वज्जीणे । से कि तं भवियसरीरदब्वज्जीणे २ भवियसरी-रदब्वज्जीणे—जे जीवे जोणिजमणनिक्खते जहा दब्वज्जयणे जाव सेत्त भविय-सरीरदब्वज्जीणे । से कि त जाणयसरीरभवियसरीरवडरिते दब्वज्जीणे २ जाण-यसरीरभवियसरीरवडरिते दब्वज्जीणे सब्बागाससेढी । सेत्त जाणयसरीरभविय-सरीरवडरिते दब्वज्जीणे । सेत्त नोआगमओ दब्वज्जीणे । सेत्त दब्वज्जीणे । से कि त भावज्जीणे २ भावज्जीणे दुविहे पण्णते । तंजहा—आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि त आगमओ भावज्जीणे २ आगमओ भावज्जीणे जाणए उवउत्ते । सेत्त आगमओ भावज्जीणे । से कि त नोआगमओ भावज्जीणे २ नोआगमओ भावज्जीणे—गाहा—जह दीवा दीवसय पइप्पइ, दिप्पए य सो दीवो । दीवसमा आयरिया, दिप्पति पर च दीवति ॥ १ ॥ सेत्त नोआगमओ भावज्जीणे । सेत्त भावज्जीणे । सेत्त अज्जीणे । से कि त आए २ आए चउन्विहे पण्णते । तजहा—नामाए १ ठवणाए २ दब्बाए ३ भावाए ४ । नामठवणाओ पुन्व भणियाओ । से कि त दब्बाए २ दब्बाए दुविहे पण्णते । तजहा—आगमओ य १ नोआगमओ य २ । से कि त आगमओ दब्बाए २ आगमओ दब्बाए—जस्त ण ‘आए’ ति पय चिकिय, ठिय, जिय, मिय, परिजिय जाव कम्हा २ ‘अणुवओगो’ दब्बमिति कहु । ऐगमस्त ण जावइया अणुवउत्ता आगमओ तावइया ते दब्बाया जाव सेत्त आग-मओ दब्बाए । से कि त नोआगमओ दब्बाए २ नोआगमओ दब्बाए तिविहे पण्णते । तजहा—जाणयसरीरदब्बाए १ भवियसरीरदब्बाए २ जाणयसरीरभवियसरी-रवडरिते दब्बाए ३ । से कि त जाणयसरीरदब्बाए २ जाणयसरीरदब्बाए—‘आय’ पयत्थाहिगारजाणयस्त ज सरीरय ववगयनुयचावियचत्तदेह जहा दब्वज्जयणे जाव सेत्त जाणयसरीरदब्बाए । से कि त भवियसरीरदब्बाए २ भवियसरीरदब्बाए—जे जीवे जोणिजमणनिक्खते जहा दब्वज्जयणे जाव सेत्त भवियसरीरदब्बाए । से कि त जाणयसरीरभवियसरीरवडरिते दब्बाए २ जाणयसरीरभवियसरीरवडरिते दब्बाए तिविहे पण्णते । तजहा—लोइए १ कुप्पावयणिए २ लोगुत्तरिए ३ । से कि तं

भोदए ? ओह तिथिहे पन्नते । ठंबहा-सविते १ अविते २ मीसए य ३ । से कि तं सविते १ सविते तिथिहे पन्नते । ठंबहा-कुपवार्ष १ चठप्पवार्ष २ अववार्ष ३ । हुपवार्ष-वासार्ष वासीर्ष चठप्पवार्ष-वासार्ष हृतीर्ष, अस्वार्ष-अवार्ष अववार्ष आए । सेतु सविते । से कि तं अविते १ अविते-मुम्भयरम्भमविमोतिकर्त्तुर्ष-सिढप्पवार्षतरकणार्ष (संतुषावध्यस्त) आए । सेतु अविते । से कि तं मीसए १ मीसए-वासार्ष वासीर्ष आसार्ष हृतीर्ष समामरियार्जित्वार्ष आए । से तं मीसए । से तं ओहए । से कि तं कुप्पावयविए १ कुप्पावयविए तिथिहे पन्नते । ठंबहा-सविते १ अविते २ मीसए य ३ । तिथिवि वि बहा ओहए जाव से तं मीसए । से तं कुप्पावयविए । से कि तं ओहुतरिए १ ओहुतरिए तिथिहे पन्नते । ठंबहा-सविते १ अविते २ मीसए य ३ । से कि तं सविते १ सविते-हीरार्ष तिः[स]सिसविमार्ष । सेतु सविते । से कि तं अविते १ अविते-पदिग्गार्ष भववर्ष फूलवार्ष पावपुड्डवार्ष आए । सेतु अविते । से कि तं मीसए १ मीसए-सिस्तार्ष सिसिविमार्ष समडोकरम्भार्ष आए । से तं मीसए । से तं ओहुतरिए । से तं अव्ययसरीरमवियसरीरमविते दम्भाए । सेतु नोआममझे दम्भाए । से तं दम्भाए । से कि तं भावाए १ भावाए तुथिहे पन्नते । ठंबहा-मागमझे य १ नोआममझे य ३ । से कि तं अगममझे भावाए १ अगममझे भावाए जाणए उच्चरते । से तं अगममझे भावाए । से कि तं नोआममझे भावाए १ नोआममझे गावाए तुथिहे पन्नते । ठंबहा-फसल्ले य १ अफसल्ले य ३ । से कि तं फसल्ले १ फसल्ले तिथिहे पन्नते । ठंबहा-जावाए १ दंसकाए २ चरिताए ३ । सेतु फसल्ले । से कि तं अफसल्ले १ अफसल्ले चरिताए पन्नते । ठंबहा-ओहाए १ भावाए २ भावाए ३ ओहाए ४ । से तं अफसल्ले । से तं नोआममझे भावाए । से तं भावाए । से तं भाव । से कि तं भववा १ भववा चठविहा पन्नता । ठंबहा-नामज्जवला १ ऊबग्गहवला २ दम्भज्जवला ३ भावज्जवला ४ भावज्जवला ५ । नामज्जवलामझे पुर्व भवियावते । से कि तं दम्भज्जवला १ दम्भज्जवला तुथिहा पन्नता । ठंबहा-भागमझे य १ नोआममझे य २ । से कि तं भागमझे दम्भज्जवला १ भागमझे दम्भज्जवला-जस्त नं 'हवने' ति पर्य तिथिवय तिये तिये मिर्ये परितिये जाव सेतु भागमझे दम्भज्जवला । से कि तं नोआममझे दम्भज्जवला १ नोआममझे दम्भज्जवला तिथिहा पन्नता । ठंबहा-जाववसरीरदम्भज्जवला १ भवियसरीरदम्भज्जवला २ जाववसरीरमविव सरीरकहरिला दम्भज्जवला ३ । से कि तं जाववसरीरदम्भज्जवला ४ 'हवना' पक्कवाहियारजानवस्तु व सरीर्य दम्भवकुम्भवाविवतार्दृ लेवे बहा दम्भज्जवले

જાવ સેત્તં જાણયસરીરદબ્વજ્જ્વચણા । સે કિ તં ભવિયસરીરદબ્વજ્જ્વચણા ૨ ૨ જે જીવે  
 જોળિજમ્મણળિક્ષતે સેસ જહા દબ્વજ્જ્વચણે જાવ સેત્ત ભવિયસરીરદબ્વજ્જ્વચણા ।  
 સે કિ ત જાણયસરીરભવિયસરીરવિરિત્તા દબ્વજ્જ્વચણા ૨ ૨ જહા જાણયસરીરભવિય-  
 સરીરવિરિત્તે દબ્વાએ તહા ભાળિયબ્વા જાવ સે ત મીસિયા । સે ત લોગુત્તરિયા । સે  
 તં જાણયસરીરભવિયસરીરવિરિત્તા દબ્વજ્જ્વચણા । સે ત નોઆગમથો દબ્વજ્જ્વચણા ।  
 સે ત દબ્વજ્જ્વચણા । સે કિ ત ભાવજ્જ્વચણા ૨ ભાવજ્જ્વચણા દુવિહા પણત્તા । તંજહા-  
 આગમથો ય ૧ નોઆગમથો ય ૨ । સે કિ ત આગમથો ભાવજ્જ્વચણા ૨ આગમથો  
 ભાવજ્જ્વચણા જાણએ ઉવડતે । સે ત આગમથો ભાવજ્જ્વચણા । સે કિ ત નોઆગ-  
 મથો ભાવજ્જ્વચણા ૨ નોઆગમથો ભાવજ્જ્વચણા દુવિહા પણત્તા । તજહા-પસત્થા ય ૧  
 અપસત્થા ય ૨ । સે કિ તં પસત્થા ૨ પસત્થા તિવિહા પણત્તા । તજહા-નાણ-  
 જ્જ્વચણા ૧ દંસણજ્જ્વચણા ૨ ચરિત્તજ્જ્વચણા ૩ । સેત્ત પસત્થા । સે કિ ત અપસત્થા ૨  
 અપસત્થા ચરુબ્વિહા પણત્તા । તજહા-કોહજ્જ્વચણા ૧ માણજ્જ્વચણા ૨ માયજ્જ્વચણા ૩  
 લોહજ્જ્વચણા ૪ । સે ત અપસત્થા । સે ત નોઆગમથો ભાવજ્જ્વચણા । સે ત  
 ભાવજ્જ્વચણા । સે તં જ્જ્વચણા । સે તં ઓહનિપ્ફળણે । સે કિ તં નામનિપ્ફળણે ૨  
 નામનિપ્ફળણે સામાઇએ । સે સમાસથો ચરુબ્વિહે પણત્તે । તજહા-ણામસામાઇએ ૧  
 ઠવણસામાઇએ ૨ દબ્વસામાઇએ ૩ ભાવસામાઇએ ૪ । ણામઠવણથો પુબ્બ ભળિ-  
 યાઓ । દબ્વસામાઇએ વિ તહેવ જાવ સેત્ત ભવિયસરીરદબ્વસામાઇએ । સે કિ ત  
 જાણયમરીરભવિયસરીરવિરિત્તે દબ્વસામાઇએ ૨ ૨ પત્તયપોત્થયલિહિય । સે ત જાણય-  
 સરીરભવિયસરીરવિરિત્તે દબ્વસામાઇએ । સે ત નોઆગમથો દબ્વસામાઇએ । સે ત  
 દબ્વસામાઇએ । સે કિ ત ભાવસામાઇએ ૨ ભાવસામાઇએ દુવિહે પણત્તે । તજહા-  
 આગમથો ય ૧ નોઆગમથો ય ૨ । સે કિ ત આગમથો ભાવસામાઇએ ૨  
 આગમથો ભાવસામાઇએ જાણએ ઉવડતે । સે ત આગમથો ભાવસામાઇએ । સે કિં  
 ત નોઆગમથો ભાવસામાઇએ ૨ નોઆગમથો ભાવસામાઇએ-ગાહાઓ-જસ્સ  
 સામાળિઓ અપ્પા, સજમે ણિયમે તવે । તસ્સ સામાઇય હોઈ, ઇદ કેવલિભાસિય  
 ॥ ૧ ॥ જો સમો સબ્વભૂએસુ, તસેસુ થાવરેસુ ય । તસ્સ સામાઇય હોઈ, ઇદ કેવલિ-  
 ભાસિય ॥ ૨ ॥ જહ મમ ણ પિય દુક્ખ, જાળિય એમેવ સબ્વજીવાણ । ન હણિ ન  
 હણાવેહ ય, સમમણિ તેણ સો સમણો ॥ ૩ ॥ ણત્થિ ય સે કોડ વેસો, પિઓ ય  
 સબ્વએસુ ચેવ જીવેસુ । એણ હોઈ સમણો, એસો અન્નોડવિ પજાઓ ॥ ૪ ॥ ઉરગ-  
 શિરિજલણસાગર-, નહતલતરુગણસમો ય જો હોઈ । ભમરમિયધરણિજલરુહ-, રવિ-  
 પવણસમો ય સો સમણો ॥ ૫ ॥ તો સમણો જહ સુમણો, ભાવેણ ય જડ ણ હોઈ

पावमधो । सयने य जगे व समो समो य मात्राक्षमादेष्ट ॥ ६ ॥ से तं नोभागम्भो भावसामाइए । से तं मासक्षमामाइए । से तं यामनिष्ठव्यजे । से कि तं सुतालाक्षणगनिष्ठव्यजे । इयार्थि सुतालाक्षणगनिष्ठव्यजे निक्षेपं इष्टादेष्ट, से व पर्ण अन्तस्तुते वि य विक्षिष्ठप्पद । तम्हा ? घामवत्त्वं । अरिष्ट इमो तद्देष्ट ब्रह्मोमतस्मृते अनुगमे ति । तत्प्रय विक्षेपो इह विक्षिष्ठते स्वदृढ़ । इह या विक्षिष्ठते तात्प्रय विक्षिष्ठते स्वदृढ़ । तम्हा इह य विक्षिष्ठप्पद, तहि वेच विक्षिष्ठप्पद । से तं यिक्षेपो ति ॥ १५१ ॥ से कि तं अनुगमे । अनुगमे तुविहे पञ्चो । तं गाहा-सुतालाक्षमो य । निजुतिभ्रुगमे य २ । से कि तं निजुतिभ्रुगमे । निजुतिभ्रुगमे तिविहे पञ्चो । तं गाहा-विक्षेपं निजुतिभ्रुगम । उवाचायनिजुतिभ्रुगमे २ द्वातप्त्यसिवनिजुतिभ्रुगमे ३ । से कि तं विक्षेपं निजुतिभ्रुगमे । विक्षेपं निजुतिभ्रुगमे । लिक्षेषनिजुतिभ्रुगमे अनुगमे । से कि तं विक्षेपं निजुतिभ्रुगमे । से कि तं उवाचायनिजुतिभ्रुगमे । २ इमाहि दोहि गूडमात्तावी अनुगमत्तमो तं गाहा-गाहामो-सोहे निरैषु व निगमे केता व्यज्ञ तुरिष्ट व । अर्थं व्यज्ञ सम्बन्ध नए स्मोयस्त्वाख्यमए ॥ १ ॥ कि व्यविहै वस्त्व वहि एव व्यविहै किविर इव व्यज्ञ । व्यद उत्तर-सविरहिते भवागरिष्ट व्यस्त्व निरैषी ॥ २ ॥ से तं उवाचायनिजुतिभ्रुगमे । से कि तं सुतालाक्षणगनिजुतिभ्रुगमे । द्वातप्त्यसिवनिजुतिभ्रुगमे-हुतं उवारेवम्-अवद्यतिर्थं अवद्यतिर्थं अवद्यतिर्थं पवित्रुम् पवित्रुम् वोहि व्यविष्ट्यमुहु गुरुत्वाव्यवयवे । तमो तस्म व्यविहै स्वमवर्त्त वा परस्यम्यम्य वा वैष्पर्य वा मोक्षवर्त्त वा सामाध्यवर्त्त वा मोक्षामाध्यवर्त्त वा । तथो तम्भि उवारिए उमाये केती व यं मगवैदाय केव अस्त्वाविष्टात्त व्यविगता भवति केव अस्त्वाविष्टात्त अवद्यतिर्था भवति । तथो तेसि अवद्यतिर्थावं अवद्यतिर्थावं पवित्रुम् वाप्त व्यविष्ट्यमुहु । वाक्या व्यविष्ट्यमुहु व्यविष्ट्यमुहु-गाहा-उद्दिष्टा य पर्य वेच व्यक्त्वो व्यविगतो । वाक्या व्यविष्ट्यमुहु व्यविष्ट्यमुहु व्यविष्ट्यमुहु । से तं द्वातप्त्यसिवनिजुतिभ्रुगमे । से तं अनुगमे ॥ १५२ ॥ से कि तं मए ॥ ताग गूडमात्ता व्यक्त्वा । तं गाहा-वेगमे १ साहे २ वगहारे ३ उत्तुम्हुए ४ सो ५ सममिहदे ६ एवं व्यक्त्वा । तं गाहा-वेगमे १ साहे २ वगहारे ३ उत्तुम्हुए ४ सो ५ सममिहदे ६ एवं व्यक्त्वा । तत्प्रय गाहामो-नेतोहि मानेहि, विक्षिष्ठते वेगमस्त्व व निरैषी । सेवार्थं व्यक्त्वा व्यविष्ट्यमुहो द्वयह वोष्टी ॥ १ ॥ प साहिष्यपरिविक्षेपं संवद्यवर्त्त वि नवार्थं सम्बन्धमिन्मो द्वयह वोष्टी ॥ १ ॥ प साहिष्यपरिविक्षेपं व्यविष्ट्यमुहो व्यविष्ट्यमुहो विविति । वक्त्र विविष्ट्यमत्त ववहारो द्वयव्यवेष्ट ॥ २ ॥ प सुभ्रह्माती उत्तुम्हुओ ववविही मुखेयम्भो । इत्यत्त विविष्ट्यत्तर व्यविष्ट्यमत्त वज्ञो ताती ॥ ३ ॥ उत्तुम्हुओ ईम्भवं होह अवल्लू नए सममिहदे । वैवद्यत्तव्यवद्यत्तमं व्यविष्ट्यमत्त विवेष्ट व्यविष्ट्यमत्त विविष्ट्यमत्त विविष्ट्यमत्त विविष्ट्यमत्त ॥ ४ ॥ वाक्यमिह विविष्ट्यमत्त विविष्ट्यमत्त विविष्ट्यमत्त विविष्ट्यमत्त । ववविष्ट्यमत्त विविष्ट्यमत्त ॥

# देव गुरु धर्म सम्बन्धी प्रश्नोत्तर ।

---

## देव

प्रश्न-देव किसे कहते हैं ?

उत्तर-देव दो प्रकार के होते हैं—लौकिक और लोकोत्तर।  
दोनों का स्वरूप अलग अलग है।

प्र०-लौकिक देव किसे कहते हैं ?

उ०-लोक में कई तरह से देव शब्द का प्रयोग होता है।  
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देव कहलाते हैं, स्वर्ग में रहने  
वालों को देव कहते हैं तथा राजा और चक्रवर्ती भी  
देव कहलाते हैं।

प्र०-लोकोत्तर देव किसे कहते हैं ?

उ०-जो महात्मा अनेक जन्मों की साधना के द्वारा अपनी  
आत्मा को सर्वथा विशुद्ध बना लेते हैं। जिनमें अनन्त  
ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त शक्ति  
प्रकट हो जाती है; अतएव जो सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, होते  
हैं, वीतराग होते हैं, कर्मों से एकदम् सुक्ष्म हो जाते हैं;  
वे लोकोत्तर देव कहलाते हैं।

प्र०-अनन्त ज्ञान और अनन्त दर्शन से क्या मतलब है ?

उ०-तीन लोक में और तीन काल में जितने भी पदार्थ थे, हैं  
और होंगे उन सब को एक साथ पूर्ण रूप से जानने  
वाला ज्ञान अनन्त ज्ञान कहलाता है। और सामान्य  
रूप से सब पदार्थों को जानने वाला अनन्त दर्शन कह-  
लाता है।

जो, उवएसो सो नओ नाम ॥ ५ ॥ मव्वेमि पि नयाण, वहुविहवत्तव्वय निसामित्ता ।  
त सब्बनयविसुद्ध, जं चरणगुणटिओ नाहू ॥ ६ ॥ सेत्तं नए ॥ १५३ ॥ अणु-  
ओगदारा समत्ता ॥ सोलससयाणि चउहत्तराणि, होंति उ इममि गाहाण ।  
दुसहस्र मणुद्वुभ-, छदवित्तपमाणओ भणिओ ॥ १ ॥ णयरमहादारा इव, उवधम-  
दाराणुओगवरदारा । अक्खरविंदुगमत्ता, लिहिया दुक्खक्खयद्वाए ॥ २ ॥

॥ अणुओगदारसुत्तं समत्तं ॥

तस्समत्तीए

# चत्तारि मूलसुत्ताइं समत्ताइं

॥ सब्बसिलोगसखा ५५०० ॥





णमोऽत्यु पं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

तत्थ पं

## आवस्सयसुत्तं

३७६३०

### अह पदमं सामाइयावस्सयं

०४९

आवस्सही इच्छाकारेण सदिसह भगव ! देव(सी)सियैपडिक्कमर्ण ठाएमि, देव-सियणाणदंसणचरित्ततवभइयारचित्तवणटु करेमि काउसमं ॥ १ ॥ णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्ञायाण, णमो लोए सब्बसाहूण ॥ २ ॥ केरेमि भते ! सामाइय सब्ब सावज जोग पच्चक्खामि, जावजीवाए तिविह तिविहेण भणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतपि अण न समण-जाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ ३ ॥ इच्छामि (पडिक्कमिउ-ओ) ठामि काउसमग, जो मे देवसिओ अह्यारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुतो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिजो दुज्ज्ञाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असमणपाउग्गो नाणे तह दसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्ह गुत्तीण चउण्ह कसायाण पच्छण्ह महब्बयाण छण्ह जीवनिकायाण सत्तण्ह

१ विही-पुर्विं ‘तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेमि वदामि नमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवयं चेहय पजुवासामि मत्थएण वदामि ।’ इच्छेण पाढेण गुरुवदणा किज्जइ । पच्छा णमोक्कारुच्चारो ‘एसो पच णमोक्कारो, सब्बपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वेसिं, पठम हवइ मगल ॥’ जुत्तो । पुणो ‘तिक्खुत्तो०’ तओ ‘इच्छाकारेण०’ ‘तस्सुत्तरीकरणेण०’ जाव ‘ठाणेण’ फुहुच्चारण किच्चा ‘मोणेण०’ अप्पुड अव्वत्त मणंसि ‘इरियावहियाए०’ मगगविसोही कीरइ । णमो-क्कारुच्चारणेण ज्ञाण पारिज्जइ, पच्छा ‘लोगस्स०’ फुहुच्चारो, तओ दुण्णिण ‘णमोऽत्युण०’ । पच्छा सामाइय पठमावस्सयं पारब्बइ । पत्तेयावस्सयसमत्तीए ‘तिक्खुत्तो०’ इच्छेण गुरु वदित्तु अणस्सावस्सयस्साणा घेप्पइ त्ति विसेसो । २ ‘राइय०’ ‘पक्खिय०’ ‘चाउम्मासिय०’ ‘सवच्छरिय०’ । ३ केइ विहीए ‘तिक्खुत्तो०’ पच्छा केवलं णमोक्कारं णवपयमिच्छति, ‘करेमि भते !०’ इच्छेण पठमावस्सयं पारब्बति य ।

पिण्डेसन्नार्थं अद्युप्तं पत्रवणमात्रम् न वर्ण्णत् वर्णमधेणुतीर्णं ददृशिते समवक्षमे सम-  
जार्थं जोगार्थं चं लंडितं चं लिहाइतं तस्य मिळामि उद्दर्त ॥ ४ ॥ तस्य उच्चै-  
करणेऽप तस्य विठ्ठलाक्ष्मेयं विसोहीक्ष्मेयं विसङ्गीक्ष्मेयं पावार्णं कृमार्णं मिळ-  
मयद्वाप् थामि क्षटसम्मे अवात्प च्छसिएर्णं नीचाहिएर्णं खाहिएर्णं छैएव वर्णमद  
एष उद्दृप्तं वायनिसमोणं भमविए पिण्डमुच्छाए घुमेहि अग्रसंचासेहि घुमेहि  
केमरुचाषेहि घुमेहि शित्तिचाषेहि एकमवहि वागारेहि अगम्यो वरिराहिते  
हुञ्च मे क्षटसम्मो वाव अरिहतार्णं भगवतान् क्षमोक्षारेष प वारेमि ताव भर्ते  
ठारेवं मोलेष ज्ञानेवं अव्याप्त वोसिर्तमि ॥ ५ ॥ हह पदमे सामाइया  
घस्तर्यं समर्त ॥ १ ॥

### अह वीर्यं अडवीसत्पवावस्तर्यं

अभेगस्त सञ्जेत्यगरे कम्माहितयरे विदे । वरिहिते किन्त्रदस्ते करवीर्तिपि केमर्मे  
॥ १ ॥ उसममित्यं च वदे, उमाममित्यवर्णं च द्विमार्णं च । उत्तमप्पार्णं द्विपार्णं विर्वं  
च वेदप्पार्णं वदे ॥ २ ॥ द्विर्वं च पुण्यवर्णं दीयवहित्यं द्विपुण्यं च । विमङ्ग-  
मनते च विर्वं वस्मी संति च वदामि ॥ ३ ॥ द्वंद्वं वरं च मति वदे मुरिद्वंश्वं  
नमिविर्वं च । वैदामिद्विद्वनेमि पार्सं तद् कदमार्णं च ॥ ४ ॥ एवं मए अमिलुमा  
विद्वयरक्मला फीवरबरमरणा । अडवीर्तिपि विषवरा विषवरा मे फहीर्वं  
॥ ५ ॥ विर्तिवर्तिविमविमा वै ए अभेगस्तु उत्तमा विद्या । आङ्ग्यवोहित्यमे  
समाहितसुचम विद्यु ॥ ६ ॥ अदेहु विम्मवरा वाष्टेषु विहितं फासकरा ।  
सागरणगभीरा विद्या विद्यि मम विद्यु ॥ ७ ॥ हह वीर्यं अडवीसत्प-  
वा(उक्तित्वा)घस्तर्यं समर्त ॥ २ ॥

१ आगमे विभिते वाव नूँगुच पंच इच्छामि ठामि ‘सत्पस्त्र वि देव  
विद्यु दुवितिव दुमाहित्यं दुवितिव दुपासित्यं एए उच्चे पश्च योवेवं फलमात्रल-  
यज्ञाने भाहवंति पुचो लक्ष्याकस्त्यस्त्यस्त्य पञ्चम चतुरत्याकस्त्यस्त्यस्त्यविद्यि विद्या फुञ्ज-  
वारपुञ्जर्णं वज्ञारित्यंति । एष्व आगमे ‘इच्छामि व्यमि एए दुविति वस्त्रमा-  
गाहीए ‘सत्पस्त्र वि अदमदमायहीए अद्य भासाए । देवा मिळ्यमिळ्यमिळ्याए  
विभिति ततोऽप्तसेवा ।

## अह तद्यन्तं वंदणावस्सयं

इच्छामि खमासमणो ! वंदित जावणिजाए निसीहियाए, अणुजाणह मे मिउग्गह, निसीहि अहोकाय कायसफास, खमणिजो भे किलासो, अप्पकिलताण वहुस्त्रभेण भे दिवसो वइक्तो ? जत्ता भे ? जवणिज च भे ? खामेमि खमासमणो ! टेवसिय वइक्कम, आवसिसयाए पडिक्कमामि खमासमणाण देवसियाए आसायणाए तेत्तीसन्नयराए ज किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोहाए सब्बकालियाए सब्बमिच्छेवयराए सब्बवस्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ अह्यारो कबो तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ इह तद्यन्तं वंदणावस्सयं समत्तं ॥ ३ ॥

## अह चउत्थं पडिक्कमणावस्सयं

चैत्तारि मंगल-अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलिपञ्चतो धम्मो मगल । चैत्तारि लोगुत्तमा-अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपञ्चतो धम्मो लोगुत्तमो । चैत्तारि सरण पवजामि-अरिहता सरण पवजामि, सिद्धा सरण पवजामि, साहू सरणं पवजामि, केवलिपञ्चत धम्म सरण पवजामि ॥ १ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउ इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे शीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिगपणगदगमटीमक्कडासताणासक्कमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइदिया तेइदिया चउरिदिया पचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया सघाइया सघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाण सकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ २ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउ पगामसिजाए निगामसिजाए सथाराउब्बट्टणाए परियट्टणाए आउट्टणाए पसारणाए छप्पइसघट्टणाए कूहए कक्कराइए छीए जभाइए आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए सोवणवत्तियाए इत्थीविष्परियासियाए दिट्टीविष्परियासियाए मणविष्परियासियाए पाणभोयण-विष्परियासियाए जो मे देवसिओ अह्यारो कबो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ३ ॥ पडिक्कमामि गोयरचरियाए भिक्खायरियाए उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छा-

---

१ 'राहओ' 'पक्षिखबो' 'चाउम्मासिओ' 'सवच्छरिओ' । २ 'तिक्खुत्तो० इच्छेण वंदण किच्चा पच्छा पच्छणमोक्कारं तओ 'करेमि भंते० !' तओ 'चैत्तारि मगल०' । ३ 'चैत्तारि मगल०' पच्छा 'इच्छामि०' पडियब्ब ति केइ ।

दारासंवध्याए मंदीपादुदियाए वलियादुदियाए ठवयापादुदियाए संकेत्र सहमत्याए  
अन्नेउव्याए पावेसव्याए पाषमोयव्याए वीममोयव्याए इरियमोयव्याए पच्छाकम्भियव्य  
पुरेकम्भियव्याए अरिदुहड्हाए दग्धेयद्गुह्याए रयसंगद्गुह्याए पारिद्गुह्य-  
यियाए ओहास्यगमिक्याए जं उमामेवं उप्याक्लेसव्याए अपरिद्गुह्यं परिम्भाद्विव परिमुक्त  
वा जं म परिद्गुह्यिये तस्स मिच्छामि तुहड्हे ॥ ४ ॥ परिद्गुह्यामि जाठङ्गालं उग्घास्यसु  
अस्त्रव्याए उभमोऽस्त्रं भेदोक्तारणसु अप्यदिवेष्याए तुप्यदिवेष्याए अप्यमन्त-  
व्याए तुप्यमन्तव्याए अहड्हे वहड्हे अव्यारे अव्यायारे जो मे देवसिंहे नह्यारे  
कमो तस्य मिच्छामि तुहड्हे ॥ ५ ॥ परिद्गुह्यामि एगमिह अस्त्रव्ये । परिद्गुह्यामि  
तोहि वंवेहि-रसायेव्येव दोसवंवेव्येव । परिद्गुह्यामि तिहि वंवेहि-मन्तद्वेव  
वयद्विवं अवद्वेवं । परिद्गुह्यामि तिहि गुतीहि-मन्तगुतीए, वस्तुतीए, कान-  
गुतीए । परिद्गुह्यामि तिहि लोहि-मामासवेवं निकाम्यवेव मिच्छार्थस्यवेवं ।  
परिद्गुह्यामि तिहि गारवेहि-इहुमारवेवं रुद्यारवेवं सामागरवेव । परिद्गुह्यामि  
तिहि विराह्याहि-जाजविराह्याए रूपमविराह्याए, चरितविराह्याए । परिद्गुह्यामि  
चउहि झ्याएहि-जोहृसाएवं मावकसाएवं मावाखसाएवं घेमस्याएवं ।  
परिद्गुह्यामि चउहि स्त्वाहि-जाहारस्याए, भमस्याए, मेहुषस्याए, परिम्भ  
सञ्चाए । परिद्गुह्यामि चउहि विश्वाहि-श्वलीश्वाए, सत्ताश्वाए, देवश्वाए, रात्र-  
श्वाए । परिद्गुह्यामि चउहि ज्ञानेहि-अदेवं ज्ञानेवं घोरं ज्ञानेवं घन्नेवं ज्ञानेवं  
घोरेवं ज्ञानेवं । परिद्गुह्यामि वंवेहि लिरिवाहि-क्षाह्याए, अहिपरवियाए, पाठवि-  
याए, परिलाववियाए, पाणाह्यायविरियाए । परिद्गुह्यामि वंवेहि ज्ञान्युतेहि-ज्ञानेवं  
हौरेवं वंवेवं रसेवं फासेवं । परिद्गुह्यामि वंवेहि महापहि-स्त्वाज्ञो पाणाह्या-  
वामो वेरमवं सम्भाज्ञो मुद्यावामाज्ञो वेरमवं सम्भाज्ञो वरिज्ञावामाज्ञो वेरमवं  
सम्भाज्ञो मेत्तुजाज्ञो वेरमवं सम्भाज्ञो परिम्यह्याज्ञो वेरमवं । परिद्गुह्यामि वंवेहि  
समिहि-दरियामस्त्रीए, गायायमिहि-ए, एस्यासमिहि-ए, आप्याजमेहमतनिक्षेप्या-  
समिहि-ए, उवास्यासम्भवेव्यवियाक्षारित्यवियासमिहि-ए । परिद्गुह्यामि छहि जीव  
निकाएहि-मुहवियाएवं आत्माएवं तेवकाएवं वाठङ्गाएवं वयस्त्वज्ञाएवं  
तुस्त्वज्ञाएवं । परिद्गुह्यामि छहि फेत्ताहि-क्षेप्यवेसाए, जीववेसाए, अठवेसाए, तेर-  
वेसाए, फम्हवेसाए, त्वद्वेसाए । परिद्गुह्यामि सत्ताहि भस्त्रवेहि, अद्गहि भस्त्रवेहि,  
वग्हहि वंवेत्तुतीहि, वस्त्रवेहि उम्भवेव्यमे एमारसहि उवास्यावियाहि, चरसहि  
मिह( च )तुप्यदियाहि, तेरसहि लिरियाववेहि, चउ( च )त्वसहि भूत्यावेहि, फ्लरचहि  
परमाह्यमिहि-ए, सोक्षमहि-ए, एमारस्योक्षम( ए )हि, छछरववेहि अस्त्रमे व्याहसविहि

सहसागरेण वोसिरामि ॥ १ ॥ पोरिसीपच्चक्खाणं-उग्रए सूरे पोरिसि  
पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहार असण पाण खाइम साइम अण्णत्थडणाभोगेण  
सहसागरेण पच्छणकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण सब्बसमाहिवत्तियागारेण  
वोसिरामि [एवं सहृपोरिसिय] ॥ २ ॥ पुरिमहृपच्चक्खाणं-उग्रए सूरे पुरिमहृं  
पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असण पाण खाइम साइम अण्णत्थडणाभोगेण  
सहसागरेण पच्छणकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेण सब्बसमा-  
हिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ३ ॥ एगासण[वेआसण]=पच्चक्खाणं-  
[उग्रए सूरे] एगासण [वेआसण] पच्चक्खामि, [दुविह] तिविहपि आहारं  
असण [पाण] खाइम साइम अण्णत्थडणाभोगेण [सहसागरेण] सागारियागारेण  
आ[उहृ]उटणपसारणेण गुरुभव्यमुद्घाणेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण  
सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ४ ॥ एगद्वाणपच्चक्खाणं-एगद्वाण  
पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहारं असण पाण खाइमं साइमं अण्णत्थडणाभोगेण  
सहसागरेण सागारियागारेण गुरुभव्यमुद्घाणेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण  
सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ५ ॥ आयंविलपच्चक्खाणं-आयविल  
पच्चक्खामि, [तिविहपि आहार असणं खाइमं साइम] अण्णत्थडणाभोगेण सहसा-  
गरेण लेवालेवेण गिहत्थससद्वेण उक्तिखतविवेगेण पारिद्वावणियागारेण महत्त-  
रागारेण सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ६ ॥ अभत्तद्वृ[चउव्विहा-  
-र]पच्चक्खाणं-उग्रए सूरे अभत्तद्वृ पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहारं असण  
ग खाइम साइम अण्णत्थडणाभोगेण सहसागरेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरा-  
ग सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ७-१ ॥ अभत्तद्वृ[तिविहाहार]-  
-खाणं-उग्रए सूरे अभत्तद्वृ पच्चक्खामि तिविहपि आहारं असण खाइम  
-अण्णत्थडणाभोगेण सहसागरेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण सब्ब-  
-नेयागारेण पाणस्स लेवेण वा अच्छेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा  
- वोसिरामि ॥ ७-२ ॥ दिवसचरिम[भवचरिम]पच्चक्खाणं-  
भवचरिम वा] पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहार असण पाण  
डणाभोगेण सहसा ।

१ अ० ९  
मि, चउ  
गारेण

कार्यति केऽ साहू र्याहरण्युच्छापदिमाहृषारा पञ्चमहस्यपारा अद्वैतस्त्रिस्त्री-  
संगपारा भक्त्यामारवरिता ते सम्बे सिरसा मजसा भत्त्वएष वरामि ॥ ५ ॥  
[ वोक्यरियदव्यक्ताए, सीधे साहृमिष्टुक्त्याये य । जे ये केऽ कलामा सम्बे तिथिहै  
यामेमि ॥ १ ॥ ] सम्बस्तु सम्लसंषस्तु भगवान्मो अंबसि वरीय सीधे । सम्ब  
षमाकृता यमामि सम्बस्तु वाहयपि ॥ २ ॥ सम्बस्तु वीवराहिस्तु भाक्त्ये  
पम्मनिश्चिवनिमनित्ये । स ॥ ३ ॥ ] सामेमि सम्बद्धीये सम्बे जीवा खम्भु ने ।  
मिती मे सम्बमूरुष वेर मम्ही न केणद ॥ ४ ॥ एकमहै भाक्तोऽस्य मितिव गरिव  
दुर्गाद्विरु सम्म । तिथिहै पदिक्ती वेदामि दिने वर्त्तव्यीर्थे ॥ ५ ॥ पूर्वामि  
यमासमनो । वेदिरु जाव अप्यार्थ बोहिरामि । [ इन्द्रात्मे ] ॥ इह वठत्व्य पहि  
कमणावस्तुये समर्थ ॥ ६ ॥

### अह पञ्चमं काउस्तस्त्रगावस्तस्य

बौवस्तुही । करेमि मरे । । इष्टमि ठामि व्यवसम्भ वाव सम्भार्त बोवार्थ  
तस्तु मित्यामि दुखद । तरस उत्तरीश्वरेय वाव अप्यार्थ बोहिरामि ॥ इह पञ्चमं  
काउस्तस्त्रगावस्तुये समर्थ ॥ ५ ॥

### अह छहुं पञ्चमस्त्राणावस्तस्य

इसविहे कवक्त्वामे प ते - अकाययमाहर्तु अवैदिव्ये निविदिव वेर ।  
सापारमणागारे, परिमापम्भ विरक्तेर्थे ॥ १ ॥ घोडे वेव अद्वार, पञ्चमार्थ  
मये दसहा । जमोक्तारस्त्रियपञ्चक्षार्थ-उम्पए द्वे नमुक्तारस्त्रिये  
पञ्चक्षामि वर्तमिहैपि आहारे असाध पार्थ वास्त्रे साक्षे अन्तर्लक्ष्यामोगेन

१ कोदुगगवान्मो माहाये व्यवन्तरेऽविग्रह्ये छम्भीति । २ तमो व्याहर्तीक्ष्म-  
जीववेनिवमाक्षणार्थं पदिवद । तमो-। अक्षमभेद्यतोऽप्येमो । ३ अस्तु द्याये वेद  
इष्टामि व भंते । तुम्भेहि अस्त्रमुज्जाए समागे देवसिद विसोदृष्टु करेमि व्यव  
सम्भे दि उच्चारिति । ४ ति पदितु अवस्त्रम्भ तुम्भा तत्वं 'व्येष्टस्तु उद्योगपरे  
वारचत्वां मजसा चेत्यमरिणु उपमोक्तारे काउस्त्रम्भं पारितु पुष्टर्थि 'व्येष्टस्तु उद्यो-  
गपरे तुम्भुक्तारेऽव तम्भे इष्टामि जमासमनो तुम्भाये पदित्वा पुष्टमभि  
पञ्चमोऽव-ति विही ।

सहसागरेण वोसिरामि ॥ १ ॥ पोरिसीपच्चक्खाणं-उग्रए सूरे पोरिसि  
पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहार असण पाण खाइम साइम अण्णत्थडणाभोगेण  
सहसागरेण पच्छण्णकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण सब्बसमाहिवत्तियागारेण  
वोसिरामि [एव सहृपोरिसिय] ॥ २ ॥ पुरिमह्यपच्चक्खाण-उग्रए सूरे पुरिमह्यं  
पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असण पाण खाइम साइमं अण्णत्थडणाभोगेण  
सहसागरेण पच्छण्णकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेण सब्बसमा-  
हिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ३ ॥ पगासण[वेआसण]=पच्चक्खाणं-  
[उग्रए सूरे] एगासण [वेआसण] पच्चक्खामि, [दुविह] तिविहपि आहारं  
असण [पाण] खाइम साइम अण्णत्थडणाभोगेण [सहसागरेण] सागारियागारेण  
आ[उट]उटणपसारणेण गुरुअब्मुद्गाणेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण  
सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ४ ॥ एगद्वाणपच्चक्खाणं-एगद्वाण  
पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहारं असण पाण खाइम साइमं अण्णत्थडणाभोगेण  
सहसागरेण सागारियागारेण गुरुअब्मुद्गाणेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण  
सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ५ ॥ आयंविलपच्चक्खाणं-आयविल  
पच्चक्खामि, [तिविहपि आहारं असण खाइमं साइम] अण्णत्थडणाभोगेण सहसा-  
गारेण लेवालेवेण गिहत्थससद्वेण उक्खितविवेगेण पारिद्वावणियागारेण महत्त-  
रागारेण सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ६ ॥ अभत्तद्वृ[चउव्विहा-  
हार]पच्चक्खाण-उग्रए सूरे अभत्तद्वृ पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहारं असण  
पाण खाइम साइम अण्णत्थडणाभोगेण सहसागरेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरा-  
गारेण सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि ॥ ७-१ ॥ अभत्तद्वृ[तिविहाहार]-  
पच्चक्खाणं-उग्रए सूरे अभत्तद्वृ पच्चक्खामि तिविहपि आहार असण खाइमं  
साइम अण्णत्थडणाभोगेण सहसागरेण पारिद्वावणियागारेण महत्तरागारेण सब्ब-  
समाहिवत्तियागारेण पागस्स लेवेण वा अच्छेण वा वहुलेण वा ससित्येण वा  
आसित्येण वा वोसिरामि ॥ ७-२ ॥ दिवसचरिम[भवचरिम]पच्चक्खाणं-  
दिवसचरिम [भवचरिम वा] पच्चक्खामि, चउव्विहपि आहारं असण पाण खाइम  
साइम अण्णत्थडणाभोगेण सहसागरेण महत्तरागारेण सब्बसमाहिवत्तियागारेण  
वोसिरामि ॥ ८ ॥ अभिगगहपच्चक्खाणं-[उग्रए सूरे गंठिसहिय मुङ्डिसहिय]  
अभिगगह पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असण पाण खाइम साइम अण्ण-  
त्थडणाभोगेण सहसागरेण महत्तरागारेण सब्बसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि  
॥ ९ ॥ निव्विगड्यपच्चक्खाण-[उ० स०] निव्विगड्य पच्चक्खामि [च०

मा ४ ४] अप्यपाकामगां गदगारेण त्रिलोकं विहायन्ते त्रैर्व  
जरिगार्दिपनं पश्चद्विगार्वं जापिद्विषयगारेण महागमारेवं गणवर्मार्द  
विषयगारेण जापितोऽपि ॥ १ ॥ [ पश्चद्विगायपारणविही-उपार श्रे  
ष्टमुदारगच्छं जाप पश्चगार्वं क्वयं ते गम्ये अप्य जापिवं जापिवं जापिवं  
स्त्रीरिव विहीवं अतार्दिवं अनुजार्दिवं भवत् ते च म भवत् तरण विहीनि तु इति । ]  
अमाङ्गु ते अर्देगां भारीर्वार्वं भारीर्वार्वं भारीर्वार्वं भारीर्वार्वं भारीर्वार्वं  
भारीर्वार्वं पुरिगमीर्वार्वं पुरिगमार्वार्वं पुरिगमार्वार्वं पुरिगमार्वार्वं स्त्रेमन्त्रहार्वं  
प्रेण वार्वं इति विहीवं गायत्राविगारानं अनवद्वयार्वं पश्चात्वार्वं गायत्राविगार्वं  
गायत्राविगार्वं जीर्वार्वं जीर्वार्वं पश्चात्वार्वं पश्चात्वार्वं जीर्वार्वं पश्चात्वार्वं  
पश्चात्वार्वं पश्चात्वार्वं पश्चात्वार्वं पश्चात्वार्वं पश्चात्वार्वं पश्चात्वार्वं विहीवं  
द्वयरत्नमर्दगमधरात् विहीवं जापयन्ते विहीवं तात्वार्वं तु इति  
वाद्यार्वं मुलार्वं भादगार्वं गायत्रार्वं गायत्रीहीवं विहीवं विहीवं विहीवं  
भारामुपरामिति विहीवं ठार्वं ठार्वं विहीवं विहीवं विहीवं विहीवं  
[ठार्वं विहीवं शा(मल)भीवं] ॥ इह एहु पश्चमगायायमर्वं समर्ते ॥ ६ ॥

॥ आयस्सयसुर्तं समत्तं ॥

तस्मभत्तीए

वत्तीस सुत्ताइ समत्ताइ

तेसि समस्तीए

सुत्तागमे समत्ते

॥ सन्ध्यसिङ्गेगसरा ७३००० ॥

१ एमि ददार्द पश्चगामार्वं अग्नवरे पश्चस्यार्वं पश्चस्यित्वा तामाप्तमद्यार्वं  
उद्भवत्सवान्मद्यार्देविभिर्णमि-तुहार्द इव तु इति अमोऽस्तु ४  
द्वाहिण जातु भूमीए उद्धितु वामे जातु उहु किंवा पंचित्तदेव पवित्र । रात्रे  
पश्चस्यामे वहावारणति विचेषो । २ अस्तिप्रथये । ३ पश्चतरे उद्भवत्सवपत्तम  
एसो पश्चेऽस्तियो भस्माइ-दूष्प्रगारेण सरिषह भगवं अ अभितरे ऐतिमं वामेत  
इत्थे रामेमि इतिये वे द्विति व अप्तीर्वं ४ मत्तपाने विषए वैशाखे भास्मये  
संन्मये उच्चासगे तमासगे अंतरमासाए अपरमासाए जे द्विति मत्तसे विषद्विहीवं  
तुम्हे (वेत्त) वा वामरे (वहु) वा तुम्हे जातह अहं व जातामि तस्त विषममि  
तुहार्द । ५ साववात्सुपविषए परिउहु द्वाम्हे ।

[ ११८ ]

प्र०—तोकोल्लर देव में भया काई भी दाय मही होता ?

उ०—नहीं । दोप मुक्ष्य देव में अठारह है । उनमें से एक भी  
दोप देव में मही होता ।

प्र०—अठारह दोप कौन कौन है ?

उ०—इनाम्नराय, भामाम्नराय भोगाम्नराय, उपमोगाम्नराय,  
बीर्याम्नराय, हास्य, रसि अरसि, शोक, भय, निशा,  
काम मिथ्याक्षय, इशान निद्रा अपिगति, राग उप ।

प्र०—देव के शरीर होता है या मही ?

उ०—होता भी है और नहीं भी होता ।

प्र०—यह कैसे ?

उ०—अरिहस्त देव के शरीर होता है और सिंह देव के नहीं  
होता ।

प्र०—अरिहस्त देव किस कहत है ?

उ०—जिम्बोनि आठ कर्मों में स बार घन घातिया कर्मों का  
हटा दिया हा उन्हें अरिहस्त कहत है ।

प्र०—आठ कर्म कौन कौन है ?

उ०—( १ ) इमावरण ( २ ) वर्णावरण ( ३ ) वेदमीष ( ४ )  
मोहनीष ( ५ ) आयु ( ६ ) नाम ( ७ ) गाढ ( ८ )  
अम्लराय । यह आठ कर्म हैं ।

प्र०—बार घन घातिया कर्म कौन है ?

उ०—भामावरण वर्णावरण मोहनीष और अम्लराय ।

प्र०—अरिहस्त देव के शरीर क्यों होता है ? —

उ०—शरीर, नामकर्म के उदय से बनता है । अरिहस्त भगवाम्  
के नामकर्म का उदय है इसलिये शरीर भी होता है ।

એમોઽત્થુ ણ સમણસ્સ ભગવાં ણાયપુત્તમહાવીરસ્સ

# પદમં પરિસિદ્ધં

દસાસુયકરખંધસ્સ અટુમમજ્જયણં

અહૃવા

કપ્પસુત્તં

નમો અરિહતાણ, નમો સિદ્ધાણ, નમો આયરિયાણ, નમો ઉવજ્જ્વાયાણ, નમો લોએ સબ્વસાદ્ધુણ । એસો પચનમુષ્કારો, સબ્વપાવપ્પણાસણો । મંગલાણ ચ સબ્વેસિં, પઢમ હૃવિં મંગલ ॥ ૧ ॥ તેણ કાલેણ તેણ સમએણ સમણે ભગવં મહાવીરે પચ-હૃત્યુત્તરે હૃત્યા, તજહા-હૃત્યુત્તરાહિં ચુએ ચિદ્તા ગઢ્ભં વક્ષંતે ૧ હૃત્યુત્તરાહિં ગવ્ભાઓ ગઢ્ભં સાહરિએ ૨ હૃત્યુત્તરાહિં જાએ ૩ હૃત્યુત્તરાહિં મુંડે ભવિત્તા અગારાઓ અણગારિય પવ્વિં ૪ હૃત્યુત્તરાહિં અણતે અણુત્તરે નિબ્વાઘાએ નિરાવરણે કસિણે પદિપુણે કેવ-લ્વરનાણદસણે સમુપ્પણે ૫ સાઇણા પરિનિબ્બુએ ભયવ ૬ ॥ ૨ ॥ તેણ કાલેણ તેણ સમએણ સમણે ભગવ મહાવીરે જે સે ગિમ્હાણ ચ઱ત્યે માસે અટુમે પક્ખે આસાદસુદ્ધે તત્સ ણ આસાદસુદ્ધસ્સ છદ્ધીપષ્કખણ મહાવિજયપુફુત્તરપવરપુડીરીયાઓ મહાવિમા-  
ણાઓ વીસસાગરોવમદ્વિદ્યાઓ આઉકખાએણ ભવકખાએણ ઠિઙ્કખાએણ અણતરં ચયં  
ચિદ્તા ઇહેવ જખુદીવે દીવે ભારહે વાસે દાહિણહુભરહે ઇમીસે ઓસપ્પણીએ સુસમ-  
સુસમાએ સમાએ વિઝ્કતાએ ૧ સુસમાએ સમાએ વિઝ્કતાએ ૨ સુસમદુસમાએ સમાએ  
વિઝ્કતાએ ૩ દુસમદુસમાએ સમાએ વહુવિઝ્કતાએ-સાગરોવમકોડાકોદીએ વાયાલી-  
(સાએ)સવાસસહસ્રેહિં ઊળિયાએ પચહત્તરિવાસેહિં અદ્ધનવમેહિ ય માસેહિં સેસેહિં-  
ઝકીસાએ તિત્યયરેહિં ઇક્ખાગકુલમસુપ્પણેહિં કાસવગુતોહિં, દોહિ ય હરિવસકુલ-  
સમુપ્પણેહિં ગોયમસગુતોહિં, તેઘીસાએ તિત્યયરેહિં વિઝ્કતોહિં, સમણે ભગવ મહાવીરે  
ચ(રિમે)રમતિત્યયરે પુબ્વતિત્યયરનિદ્વિષે માહણકુઢ્ગમગમે નયરે ઉસભદત્તસ્સ માહ-  
ણસ્સ કોડાલસગુત્તસ્સ ભારિયાએ ટેવાણદાએ માહણીએ જાલધરસગુત્તાએ પુબ્વરત્તા-  
ચરત્તકાલસમયસિ હૃત્યુત્તરાહિં નક્ખતોણ જોગમુચાગણે આહારવક્ષંતીએ ભવવક્ષંતીએ  
સરીરવક્ષંતીએ કુંચિંચિ ગવ્ભત્તાએ વક્તે ॥ ૩ ॥ સમણે ભગવ મહાવીરે તિશાણો-  
વગાએ યાવિ હૃત્યા-ચિસસામિત્તિ જાણિ, ચયમાણે ન જાણાછ ચુએમિત્તિ જાણિ । જં  
૧ પરિ૦

त्वयि च च समेते मगवं माहारी देवापदाए माहारीए जासंवरसुत्ताए कुमिकि  
गम्भत्ताए वहंटे तं रथयि च नं सा देवापदा माहारी समविवैसि द्वात्तव्यम्  
बोहीरमाणी २ इमेवास्ये उराढे कङ्गाणे चिये बडे मङ्गो सुसिरीए चरहसम्भा-  
धुमिये पाहिताण परिकुदा तंजहा—गवे-उसह—सीहे-वमित्ते-दामे-सिरिजहे द्वं  
कुमे । फरमसीरे-सांगरे-विमाणम्भाँये-रयुभैय-पिहै च ॥ १ ३ ४ ॥ तए चं सा देवा-  
यैहा माहारी इमे एवाह्ये उराढे कङ्गाणे चिये बडे मङ्गो सुसिरीए चरहसम्भम्भिये  
पाहिताण परिकुदा समाणी द्वात्तुमुवितामानविवा पीदमना परमस्त्रेमवसिसवा हाँ-  
सदसविसप्तमानविद्यवा घाराहयकेअंगुष्ठिभ यमुस्तिवरोमहूदा द्वुमिष्टमाहै फै-  
सुमिष्टमाहै करिता समविवामो अभ्युदेव अभ्युहिता अदुरिकमचदम्भम्भैरिए एव्ये  
सदसरितीए गाँए लेख्ये उसमव्यो माहये तेगेव उवापच्छाद उवापच्छिता उसमव्यो  
माहवं जएने विजएने बद्धानेव बद्धानिता गद्यासमवरगया आसत्ता बीसत्ता द्वात्त-  
सक्तवरगया चरयस्त्वरिमविद्ये द्वात्ताहै चिरापार्वत मत्तवै अंजकि क्षु एवं बयारी-  
एवं पद्म नहै देवाकुपिया ! अज सवविवैसि द्वात्तजागरा बोहीरमाणी २ इमेव-  
ह्ये उराढे बाब सरित्तरीए चरहसम्भम्भिये पाहिताण परिकुदा तंजहा—गवे  
बाब चिहै च । एव्ये देवाकुपिया । उपाकालं बाब चरहसुष्ट द्वात्तमिताणे वे  
मडे कङ्गाणे अलवितिविसुसे भविस्त्वाद ॥ ५ ५-६ ॥ तए चं से उसमव्यो माहये  
देवापदाए माहारीए अंतिए एममदु द्वात्ता निसम्म द्वात्तुदु बाब द्विवए घाराहस्त्व-  
कुमिकि समुस्तिवरोमहूदे द्वुमिष्टमाहै क्षेत्र चरिता है द्वुमित्तिव अकुमितिता  
अप्यगो चाहायिएने द्वात्तुम्भएने द्वुमित्तियामीने तेहि द्वुमिणाणे अक्षुमाहै चौर ३ ता  
देवापदेव माहयि एवं बयारी—बराका ऐ तुमे देवाकुपिये । द्वुमित्ता चिह्न बडाका  
(न) चित्ता बडा मंगाणा सरित्तरीगा बारम्यतुमितीदात्तकाम्भमेगङ्करणा वं तुमे  
देवाकुपिये । द्वुमित्ता चिह्न तंजहा—अत्कडामो देवाकुपिये । भोगम्भमो देवाकुपिये ।  
पुक्तलामो देवाकुपिये । द्वुमित्तमो देवाकुपिये । एवं बडु तुमे देवाकुपिये ।  
नपर्व मासार्व बहुपरिपुवाण अद्युमाणे राईसार्व द्विद्वाराण द्वात्तमानविवाने  
भाहीणपरिपुवापरिविवसरीर छक्कवर्षांवग्युत्तोलवेन मालुमानवमाल्यपरिपुवामान-  
सम्बंगद्वारां चक्षितेमानार भर्तु पियदंसर्व द्वुर्व देवकुमारेकम वार्त व्याहिति  
॥ ५-६ ॥ से त्रि च वं दारए उम्मुक्तवालम्भावै निवावपरियवमितै बोम्भकाम्भमुप्यै  
रित्तव्येवरहैमसामवेमवव्यवेव—इतिहासपैवमार्व निः(३)वंगुष्ठार्व चयेव-  
बाब सरात्तसार्व चरहै देवान्व चारए (बारए), बारए, सईगारी उद्दित्तविदि

सारए, सखाणे [सिक्खाणे] सिक्खाकप्पे वागरणे छदे निरुते जोइसामयणे अन्नेषु य चहुषु वभण्णएसु परिब्बायएसु नएसु सुपरिनिटिए यावि भविस्सइ ॥ ९ ॥ त उराला णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिद्धा जाव आरुगतुट्टिदीहाउयमंगलकलाणकारगा ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्टिकट्टु भुजो २ अणुवूहइ ॥ १० ॥ तए णं सा देवाणदा माहणी उसभदत्तस्स माहणस्स अतिए एयमट्टु सुच्चा निसम्म हट्टुहट्टु जाव हियया जाव करयलपरिगगहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु उसभदत्त माहण एव वयासी-एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छ्यमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छ्यमेय देवाणुप्पिया ! इच्छ्यपडिच्छ्यमेय देवाणुप्पिया !, सच्चे ण एस(अ)मट्टे से जहेय तुब्जे वयहत्तिकट्टु ते सुमिणे सम्म पटिन्छइ २ ता उसभदत्तेण माहणेण सद्धि उरालाइं माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरइ ॥ ११-१२ ॥ तेण कालेण तेण समएण सक्के देविंदे देवराया वजपाणी पुरंदरे सयक्कऊ सहस्रक्खे मधवं पागसासणे दाहिणझुलोगाहिवई बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिदे अरथवरत्थधरे आलझ्यमालमउडे नवहेमचारुचित्तचन्चलकुडलविलिहिजमाणगले महिङ्गुहिए महजुहिए महाबले महायसे महाणुभावे महासुक्खे भासुर(बों)बुद्धी पलव-वणमालधरे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सुहम्माए सभाए सक्कसि सीहा-सणंसि, से ण तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसाहस्सीण, चउरासीए सामाणिय-साहस्सीण, तायत्तीसाए तायत्तीसगाण, चउण्ह लोगपालाण, अट्टुण्ह अगगमहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह अणीयाण, सत्तण्ह अणीयाहिवईण, चउण्ह चउरासी(ए)ण आयरक्खदेवसाहस्सीण, अन्नेसिं च वहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमा-णियाण देवाण देवीण य आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित महत्तरगत्त आणाईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महया हयनझगीयवाइयततीतल्तालतुट्टियघणमुंझगपट्ट-पडहवाइयरवेण दिव्वाईं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥ १३ ॥ इम च ण केवल-कप्प जबुद्धीव दीवे भारहे वासे दाहिणझुभरहे माहणकुडग्गामे नयरे उसभ-दत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालधरसगुत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए वक्त पासइ २ ता हट्टुहट्टिचित्तमाणटिए णटिए परमाणटिए पीझेमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहय(क्यव)नीवसुरभिकु-सुमच्चुमालझ्यऊससियरोमकूवे वियसियवरकमलनयणवयणे पयलियवरकडगतुट्टि-यकेझरमउडकुडलहारविरायतवच्छे पालवपलवमाणघोलतभूमणधरे ससभम तुरिय

चरसं पुरिये सीहासपानो अम्बुद्धे १ ता पावपीडानो पत्तोद्दाह २ ता देसी-  
यवारिदुर्दुष्पनिठणो(इषि)विषमितिमितिवमिरवलमितियाजो पाउयाजो अंगु-  
यह ३ ता एगागाहिये उहराईयं करेह २ ता अंगमितिमितिमहस्ये तित्वयरामितुहे  
मतदृपमर्द अमुपक्ष्यह २ ता बार्म बालु अंगु ३ ता दाहिने बालु चरविक्षमि  
नाहु निकात्तो मुदार्म वरविक्षमि निवेदेह २ ता हैमि पञ्चमह १ ता करक्ष-  
परिग्यहिये दणमहे तिरयात्तो मत्ताए अंगसि अंगु एवं कवाची-ममुलु र्म अरिहत्तर्म  
मगांतार्म आहराण तित्वयराण समंसेहुदार्म पुरिखतमार्म पुरिखसीहाम पुरिखस  
पुहरीयार्म पुरिखपर्मवहत्तीम स्वेगुतमार्म लेगनाहार्म स्वेगहियार्म स्वेगपूर्वार्म  
स्वेगप्रज्ञेकगरार्म अमयद्यार्म अमुद्यार्म ममाद्यार्म सरवद्यार्म वीरद्यार्म  
बोहिद्यार्म घम्मद्यार्म घम्मदेस्यार्म घम्मनामधार्म घम्मसारहीर्म घम्मत्त्वाडर्म-  
चक्रहीर्म हौवो तार्म सरव पाहे पद्मद्व अप्पहिद्यवरत्तावद्युत्तमार्म विवहउमार्म  
जिकार्म जात्यार्म तिकार्म तार्म तुदार्म बोहवार्म मुदार्म मोक्षार्म सक्षम्भू  
सम्बद्धसीर्म चित्तमम्मसम्पूर्तमस्यवम्मवाप्तमपुवहुमितिप्रियद्युमार्म  
ठार्म द्युपातार्म कमो जिकार्म तिक्ष्यमार्म । नमुलु वे सम्भस्य भगवान्मो महात्मीरस्य  
आहगरस्य चरमतित्ववरस्य पुम्मतित्ववरलिद्युस्य चास द्युपातित्वमस्य । रंदामि  
र्म भगवान्म तत्परार्म इहणए, पास(इ)उ मे भयर्म तत्परए इहणवित्तु समयं भर्म  
महावीर वद्य नम्मेत्त नं २ ता सीहासपवर्तु पुरत्यामितुहे सरित्तुहे ॥ १४-१५ ॥  
तए र्म लस्स सहस्र देविदस्य देवरलो अक्षमेवाहसे अग्निरित्त वित्तिए परिवर  
मध्योगप् सरप्ते समुप्पवित्ता-म लस्स एव मूर्व न एवं मर्व न एवं मरिस्ते  
व न अद्यता वा चम्मदी वा वक्षेत्ता वा वाक्षेत्ता वा अद्युषेत्तु वा चास  
मिक्ष्याम्भुक्षेत्तु वा माहशुक्षेत्तु वा आवार्तु वा आवाद्यति वा आमत्तस्येत्ति वा  
॥ १६ ॥ एवं पठु अद्यता वा चम्मदी वा वक्षेत्ता वा वाक्षेत्ता वा अम्भुक्षेत्तु  
वा मोगक्षुक्षेत्तु वा एक्ष्याम्भुक्षेत्तु वा वक्तिम्भुक्षेत्तु वा इरिष्यक्षुक्षेत्तु  
वा अक्षयरेत्त वा छहप्यारेत्त वित्तुहवात्तुम्भुक्षेत्त आवार्तु वा आवार्ति वा  
क्षावाद्यस्येत्ति वा ॥ १७ ॥ अरिष्य पुच एसे वि भावै लोगत्तेवभूए अर्वाहिति  
इस्सपिणीमोसपिणीहि विद्यताहि समुप्पज्ज, नामगुत्तस्य वा कम्मस्य अन्त्याहि  
जस्य भग्यस्यस्य अविजित्यस्य चद्यएवं र्म र्म अद्यता वा अद्यती वा वक्षेत्ता  
वा वाक्षेत्ता वा अद्युषेत्तु वा जाव माहशुक्षेत्तु वा आवार्तु वा ३ इरिष्यति  
गङ्गमत्ताए वक्तिमितु वा वक्तिमित्ति वा वक्तिमित्ति वा नो चेव न योनीजम्मवित्तम्भ-  
वेत्त विक्ष्यमितु वा निक्ष्यमित्ति वा निक्ष्यमित्ति वा ॥ १८ ॥ र्म र्म समयै

भगव महावीरे जबुदीवे दीवे भारहे वासे माहणकुडगगमे नयरे उसभदत्तस्स माह-  
णस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छिसि  
गव्मत्ताए वक्ते ॥ १९ ॥ त जीयमेय तीयपञ्चपञ्चमणागयाण सक्षाण देविंदाणं  
देवरा(डे)याण अरहते भगवते तहप्पगरेहिंतो अतकुलेहिंतो जाव कि(वि)व्रण-  
कुलेहिंतो० तहप्पगरेसु उगकुलेसु वा जाव राइणकुलेसु वा नाय(०)रजत्तियह-  
रिवसकुलेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगरेसु विसुद्धजाइकुलवसेसु (जाव रजसिरं  
कारेमाणेसु पालेमाणेसु) वा साहरावित्तए, त सेय खलु मम वि समणं भगव महावीर  
चरमतित्ययर पुव्वतित्ययरनिद्वि माहणकुडगगमाओ नयराओ उसभदत्तस्स माह-  
णस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए कुच्छीओ  
खत्तियकुडगगमे नयरे नायाण खत्तियाण सिद्धत्यस्स रजत्तियस्स कासवगुत्तस्स भारि-  
याए तिसलाए खत्तियाणीए वासिद्वसगुत्ताए कुच्छिसि गव्मत्ताए साहरावित्तए । जे  
वि य ण से तिसलाए खत्तियाणीए गव्भे त पि य ण देवाणदाए माहणीए जाल-  
धरसगुत्ताए कुच्छिसि गव्मत्ताए साहरावित्तएत्तिकदु एवं सपेहेइ २ ता हरिणेगमेसि  
अग्ना(पायत्ता)णीयाहिवइ देव सदावेइ २ ता एव वयासी-एव खलु देवाणुपिया ।  
न एय भूयं, न एय भव्य, न एय भविस्स, ज ण अरहता वा चक्कवटी वा वलदेवा  
वा वासुदेवा वा अतकुलेसु वा जाव भिक्खागकुलेसु वा० आयाइसु वा ३, एव खलु  
अ(रि)रहता वा चक्कवटी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उगकुलेसु वा जाव हरिवस-  
कुलेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगरेसु विसुद्धजाइकुलवसेसु आयाइसु वा ३ ॥ २०-२१ ॥  
अत्यि पुण एसे वि भावे लोगच्छेरयभूए अणताहिं उस्सपिणीओसपिणीहिं विइक-  
ताहिं समुप्पजद, नामगुत्तस्स वा कम्मस्स अक्खीणस्स अवेइयस्स अणिज्जिणस्स  
उदएण, ज ण अरहता वा चक्कवटी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा अतकुलेसु वा  
जाव भिक्खागकुलेसु वा० आयाइसु वा ३, कुच्छिसि गव्मत्ताए वक्षमिसु वा ३, नो  
चेव ण जोणीजम्मणनिक्खमणेण निक्खमिसु वा ३ ॥ २२ ॥ अय च ण समणे भगव  
महावीरे जबुदीवे दीवे भारहे वासे माहणकुडगगमे नयरे उसभदत्तस्स माहणस्स  
कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए माहणीए जालधरसगुत्ताए कुच्छिसि गव्मत्ताए  
वक्ते ॥ २३ ॥ तं जीयमेय तीयपञ्चपञ्चमणागयाण सक्षाण देविंदाण देवराईण अर-  
हते भगवते तहप्पगरेहिंतो अतकुलेहिंतो जाव माहणकुलेहिंतो तहप्पगरेसु उगकु-  
लेसु वा भोगकुलेसु वा जाव हरिवसकुलेसु वा अन्नयरेसु वा तहप्पगरेसु विसुद्धजाइ-  
कुलवसेसु साहरावित्तए ॥ २४ ॥ त गच्छ ण तुम देवाणुपिया । समण भगव महा-  
वीर माहणकुडगगमाओ नयराओ उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए

देवार्थाए माहणीए जालंभरसगुत्ताए कुच्छीमे लक्षितमुङ्कुडगयामे नवरे यापार्व  
लक्षितार्थं सिद्धत्वस्तु यतिवस्तु जामगुत्तास्तु मारिवाए लिंगामे उक्तिमार्चीए  
वापिश्चित्तमगुत्ताए कुच्छित्ति गद्भगत्ताए साहराहि, जे ति य अं दे लिंगाए लक्षितार्चीए  
गम्भे त पि ज र्ण देवार्थाए माहणीए जालंभरसगुत्ताए कुच्छित्ति नम्बद्धम  
साहराहि साहरिता भम्प एयमार्पित्ये लिंगामेव प्रविष्ट्याहि ॥ २५ ॥ एवं अं दे  
हरिनेपमेसी अम्माणीवाहिवरे देवे सदेव वेदिवर्व देवरक्षा एवं तुते भम्पामे  
प्रदान्त जाव हिवए अस्मन् जाव तिष्ठु एवं देवो आमधेत्ति जावाए लिंगार्व  
वयन्प विद्युत्तेह २ ता साहस्र देविद्युत्त रक्षरक्षो अक्षिमामो पहिनिस्त्वम् २ ता  
उत्तरुत्तिष्ठम् लिंगीमार्ण अवद्धमह २ ता वेऽविष्यसमुद्धाएर्व समोद्धम् २ अ  
संविजाई ओमपार्व दहि वितिरां तम्भा-त्यजार्ण वहरार्ण देवितिर्वार्ण  
ओहियक्षयार्ण मसारपश्चार्ण ईसगम्भार्ण पुष्ट्यार्ण सोमाधियार्ण व्योरसार्ण अग्नार्ण  
अजन्मुख्मार्ण जामस्मार्ण सुमपार्ण अक्षार्ण पविष्ट्यार्ण दिग्गार्ण जाहस्मार्णे  
पुरग्ने परिसावेह २ ता भद्राद्धुमे पुरग्ने परिवा(प)वेवह २ अ तुविपि  
वेऽविष्यसमुग्याएर्व समोद्धम् २ ता उत्तरवेऽविष्यस्त्व लिंगह २ ता उत्त  
उक्तिष्ठाए द्विवाए चक्षाए च(य)श्चाए उक्तुयाए लिंगाए लिंगार्व  
वेष्टपौप शीशवक्षमाणे २ ता लिंगमस्तिज्ञार्ण एवंसमुद्धार्ण मर्ज्जमज्जेव वेष्ट  
उक्तुर्वे शीषे मारहे वासे वेष्ट माहणुक्तमामे भवरे वेष्ट उत्तमदत्तस्तु भव  
जस्तु गिहे वेष्ट देवार्थाए माहणी तपेव उत्तमपश्चात् २ ता भास्त्रेव समपत्तसु  
मग्नक्ष्यो महावीरस्तु पञ्चमी करेह २ ता देवार्थाए माहणीए सपरिज्ञाए ओसो-  
क्षिपि दक्षह २ ता भद्रामे पुरग्ने भवहरह २ ता द्वामे पुरग्ने परिक्षकह २ ता  
भगुवाजठ मे ग(य)गावंतिक्षु समर्थ भगवं महावीर अग्नावाह अग्नावाहेव  
मित्येवं पहावेव चर्यक्षस्तुवेव लिंगह २ ता वेष्ट लक्षितमुङ्कुडमामे भवरे वेष्ट  
सिद्धत्वस्तु लक्षितमस्तु गिहे वेष्ट लिंगम लक्षिताणी देवेव उत्तमपश्च २ अ  
लिंगाए लक्षितार्चीए सपरिज्ञाए ओसोवर्णि दक्षह २ ता भद्रामे पुरग्ने भवहरह २ ता  
द्वामे पुरग्ने परिक्षकह २ ता समर्थ भगवं महावीर अग्नावाह अग्नावाहेव  
लिंगाए लक्षिताणीए कुच्छित्ति गम्भमाए साहरह (२ ता) जे ति य अं दे लिंगाए  
लक्षिताणीए गम्भे त पि ज र्ण देवार्थाए माहणीए जालंभरसगुत्ताए कुच्छित्ति  
गम्भमाप साहरह २ ता जामेव लिंगि पात्रस्त्वपु तामेव लिंगि पविष्ट्याए ॥ २६-२७ ॥  
ताए उक्तिष्ठाए द्विवाए चक्षाए चक्षाए उक्तुयाए लिंगाए लिंगाए वेष्ट-  
गौप लिंगमस्तिज्ञार्ण एवंसमुद्धार्ण मर्ज्जमज्जेव वेष्टयाहस्तिपौपि लिंगावेह

उप्पयमाणे २ जेणामेव नोहम्मे कप्पे नोहम्मवडिंगए विमाणे सकंसि सीहासणसि  
सके देविंटे देवराया तेणामेव उवागच्छइ २ ता सक्स्स देविंदस्स देवरन्नो एयमा-  
णत्तिय खिप्पामेव पच्चपिण्ड ॥ २८ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव  
महावीरे जेसे वासाण तच्चे मासे पचमे पक्खे आसोयवहुले तस्स ण आ(अस)सो-  
यवहुलस्स तेरसीपक्खेण वासीइराइदिएहिं विडकतेहिं तेसीडमस्स राइदियस्स अतरा  
वट्टमा(णस्स)णे हिँयाणुकंपएण देवेण हरिणेगमेसिणा सक्वयणसदिट्टेण माहणकुंड-  
गामाओ नयराथो उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगुत्तस्स भारियाए देवाणदाए  
माहणीए जालधरसगुत्ताए कुच्छीओ खत्तियकुडगमगमे नयरे नायाण खत्तियाण  
सिद्धत्यस्स खत्तियस्स कासवगुत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिष्ट्टसगुत्ताए  
पुच्चरत्तावरत्तकालसमयसि हत्युतराहिं नक्खतेण जोगमुवागए अब्बावाह अब्बा-  
वाहेण कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरिए ॥ २९ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे  
भगव महावीरे तिन्नाणोवगए यावि हुत्था, तजहा-साहरिजिस्सामित्ति जाणइ,  
- साहरिजमाणे न जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ ॥ ३० ॥ ज रयणि च ण समणे  
भगव महावीरे देवाणदाए माहणीए जालधरसगुत्ताए कुच्छीओ तिसलाए खत्तिया-  
णीए वासिष्ट्टसगुत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरिए त रयणि च ण सा देवाणदा  
भाहणी सयणिजसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमेयास्वे उराले कलाणे सिवे धन्ने  
मगले सस्सरीए चउद्दसमहास्तुमिणे तिसलाए खत्तीयाणीए हडेत्ति पासित्ताणं पडिबुद्दा,  
तजहा-गय जाव सिहिं च ॥ ३१ ॥ जं रयणि च ण समणे भगव महावीरे  
देवाणदाए माहणीए जालधरसगुत्ताए कुच्छीओ तिसलाए खत्तियाणीए वासिष्ट्टस-  
गुत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरिए त रयणि च ण सा तिसला खत्तियाणी तसि  
तारिसगसि वासधरंसि अव्वितरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्टमड्हे विचितउ-  
ल्लोयचिल्लियतले मणिरयणपणासियधयारे वहुसमसुविभत्तभूमिभागे पचवन्नसरसस्तुर-  
भिमुक्पुफ्पुंजोवयारकलिए कालागुरुपवरकुदुस्कतुस्कडज्ञतधूवमधमधतगधुद्दुया-  
भिरामे सुगधवरगधिए गधवद्धिभूए तसि तारिसगसि सयणिजसि सालिंगणवड्हिए  
उभओ विब्बोयणे उभओ उच्चए मज्जे णयगभीरे गगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए  
ओयवियखोमियदुगुलपट्टपडिच्छन्ने सुविरइयरयत्ताणे रत्तसुयसवुए सुरम्मे आइणगरूय-  
वूरनवणीयत्तलुद्गळफासे सुगधवरकुसुमचुन्नसयणोवयारकलिए, पुच्चरत्तावरत्तकालसम-  
यसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमेयास्वे उराले जाव चउद्दसमहास्तुमिणे पासित्ताण

१ हिएण-अप्पणो इदस्स य हियकारिणा तहा अणुकपएण-भगवओ भत्तेण  
ति अट्टो ।

पद्मिनुष्ठी तंत्रहा—गये—वसह—सीह—मधिमेह—दामो—सिंह—दिव्यरूप स्थ तुम्हे । फड  
मसैर—सागैर—मिमाणमन्त्रे—रक्षुष्ट्रे—सिंह च ॥ १ ॥ १३ ॥ तए खं सा तिरुब्ब  
वरिमाणी तप्पमामाप [तभो य] वर्त [तनुष्ठिमालिम्बिपुक्षवस्त्ररक्षारक्षीरक्षा-  
गरसंस्कृतरणदगरमरयमहासेव्यंहु (र) वर्त समामममुयसुगंवदावादियम्ब (दे)-  
वोक्षमूर्ख देवरामकुम्भ (र) (द) वरप्पमाल पित्तद उत्तमजलविपुक्षवस्त्ररगवियम्बी-  
रक्षावोह इर्भ तुम्हे उच्चालक्षणक्षांविर्भ वरोह ॥ २ ॥ १४ ॥ तजो पुजो वश्व-  
क्षममत्तपमरादरेगहप्पमं पहासुवमोवहारेहि उम्भजो चेद वीक्षत अद्विरि  
मरपित्तमाविद्युप्यत्तेवत्तोहतचाम्भुह तुष्टु (द) अमुक्षमालवेमनिदक्षिणि विरुद्ध  
दमंसल्लेवविद्युत्तमाविमास्त्वादरोहि विद्यु वम्भावक्षुद्रविद्युत्तित्तुप्यविद्युत्तिप्यविद्यु  
वर्त सिंह उमाणसोहत्तुद्वर्त वसह अमिश्युनमंसमुह ॥ ३ ॥ १५ ॥ तजो तुम्हे  
हारनिक्षरखीरसागरसंस्कृतरणदगरमरयमहासेव्यंहु (रत्त) रं रमविज्ञविद्युत्तिप्य  
विरुद्धपत्तुष्टुप्यविद्युत्तमीवरसुविद्युत्तित्तमावाहाविद्युविद्युह परिविमयवस्त्रमम्भो  
मम्भमाणसोहत्तुद्वहु रुप्पमालवनस्तुमास्त्रात्तनिद्विमम्भीह मुत्तापम्भव  
क्षममत्तमिवमावताम्भत्तव्वदिमविमक्षुद्रविद्युत्तिप्यविद्युत्तमम्भं विद्युत्तमीवरदरोहि विद्युत्तमिव  
क्षुद्रविद्युत्तमस्त्रमम्भवानपसत्यविद्युत्तमेवरादोवसुद्विर्भ त्तविद्युत्तमिवमिवद  
वायमप्पोदिमम्भुह सोमं सोमाघर उम्भावर्त मायमालो लोवमाध निवगम्भ  
फमद्वद्वर्त पित्तद चा गाहतिक्षयमालहं सीह वयविरीप (स्व) वरप्पत्तमालहीह  
४ ॥ १५ ॥ तजो पुजो पुम्भवदवन्ना उम्भामठावक्षुद्रविद्युत्तिप्यविद्युत्तम्भे सुप्तद्विम-  
क्षमग (मय) क्षमसरिद्धोमाप्यमम्भं अमुद्रवपीवरद्वमंसमउ (कर्ति) वरक्षुद्रविद्युत्तमिव  
द्वन्ह अम्भमालमुक्षमालवपरम्भोमम्भरणुष्ठि तुष्टिद्वात्तवस्त्रपुष्टवर्भ विगृह  
जाहुं यमवरक्षरसिद्धीवरोह जामीरख्यमेहम्भुत्तविद्युत्तमिवसोविचार जर्व  
अम्भमरवस्त्रमपवरद्वुयसमसविक्षुमालावद्वात्तपुममउवरमविज्ञवेमराह  
नामीमंदम्भुद्रविद्युत्तमिवक्षमवद्वर्भ वर्भममप्यमत्तविद्युत्तमज्ञी मायमविक्ष-  
नगरवविमम्भमहात्तविज्ञाभरणमूलविराह (कर्तु) यंगोवर्भिं हारविरात्तवृद्धरमाल-  
विज्ञवमम्भविमित्तवयमुद्यमसविमम्भक्षमव्व आद्यमविद्यविभूषिएर्भ तुम्भमालुम्भवेव  
मुत्ताक्षमावद्वर्भ वरक्षवीक्षारम (क) विद्यविरात्तएव व तुम्भतुम्भस-  
संतम्भमोवसामोमेन्तस्त्रमेवं सोमागुवसमुद्यवर्भ आवणद्वुंविद्यविमम्भविमा  
लरमविज्ञवेल (ल) व अम्भववक्षमवरगविद्यमुहतोय लैलावादरवयवस्त्रवर्भ छवि-  
छुम्भविद्यववस्त्रवर्भ वत्तविवादियविद्यविभूषिएर्भ तुम्भमालुम्भवेव  
वर्भमेन्तस्त्रमेहरे विद्यमालदोलवीवरद्वामिविद्यमालि ५ ॥ १६ ॥ तजो तुम्हे वर्भ

कुसुममदारदामरमणिज्जभूय चपगासोगपुञ्चागनागपियगुसिरीसमुगरगमलियाजाइ-  
जूहिअकोल्कोज्जकोरिटपत्तदमणयनवमालियवउलतिलयवासतियपउसुप्पलपाडलकु-  
दाइमुत्तसैहकारसुरभिगंधि अणुवममणोहरेण गंधेण दसदिसाओवि वासयंत सब्बो-  
उयसुरभिकुसुममल्लधवलविलसतकतवहुवण्णभत्तिचित्तं छप्पयमहुयरिभमरगणगुमगु-  
मायतनिलितगुजतदेसभाग दाम पिच्छइ नहगणतलाओ ओवयंत ५ ॥ ३७ ॥ ससिं  
च गोखीरफेणदगरयरयकलसपडुर सुभ हिययनयणकत पढिपुण्ण तिमिरनिकरघण-  
गुहिरवितिमिरकर पमाणपक्ष्वतरायलेह कुमुयवणविबोहरं निसासोहरं सुपरिमट्ट-  
दप्पणतलोवमं हसपडुवण्ण जोइसमुहमंडग तमरिपु मयणसरापूरग समुद्दगपूरग  
दुम्मण जण दइयवजियं पायएहिं सोसयत पुणो सोमचारुखं पिच्छइ सा गगण-  
मंडलविसालसोमचकम्ममाणतिल(ग)य रोहिणिमणहियवलहं देवी पुण्णचद समुल्ल-  
सत ६ ॥ ३८ ॥ तथो पुणो तमपडलपरिपुर्फुर्दं चेव तेयसा पजलतरुव रत्तासोग-  
पगासकिस्यसुयमुहगुजद्वरागसरिस कमलवणालकरणं अकण जोइसस्स अवरतल-  
पईव हिमपडलगलगगह गहगणोरुनायग रत्तिविणास उदयत्थमणेसु मुहुत्तसुह-  
दसण दुश्चिरिक्ष्वरुव रत्तिखुद्वतदुप्यारप्पमद्वण सीयवेगमहणं पिच्छइ मेरुगिरि-  
सययपरियद्व्य विसाल सूरं रस्सीसहस्सपयलियदित्तसोह ७ ॥ ३९ ॥ तथो पुणो  
जच्चकणगलट्टिपङ्गिय समूहनीलरत्तपीयसुकिलसुकुमालुलसियमोरपिच्छकयसुद्व्य धय  
अहियसस्सरीय फालियसखककुददगरयरयकलमपडुरेण मत्थयत्थेण सीहेण राय-  
माणेण रायमाण भित्तु गगणतलमडल चेव ववसिएण पिच्छइ सिवमउयमारुयल-  
याहयकपमाण अइप्पमाण जणपिच्छणिज्जरुव ८ ॥ ४० ॥ तथो पुणो जच्चक्क्वणुजल-  
तरुव निम्मलजलपुण्णमुत्तम दिप्पमाणसोह कमलकलावपरिरायमाण पढिपुण्ण[य]-  
सब्बमगलभेयसमागम पवररयणप(रि)रायतकमलट्टिय नयणभूसणकरं पभासमाण  
सब्बओ चेव दीवयत सोमलच्छीनिमेलण सब्बपावपरिवजिय सुभ भासुरं सिरिवरं सब्बो-  
उयसुरभिकुसुमभासत्तमलदाम पिच्छइ सा रययपुण्णकल्लस ९ ॥ ४१ ॥ तथो पुणो  
(पुणरवि) रविकिरणतरुणवोहियसहसपत्तसुरभितरपिंजरज्जल जलचरपहकरपरिहत्य-  
गमच्छपरिभुजमाणजलसचय महत जलतमिव कमलकुवलयउप्पलतामरसपुडरीय-  
उरुसप्पमाणसिरिसमुद्दएण रमणिज्जरुवसोह पमुइयतममरगणमत्तमहुयरिगणक्करो-  
लि(लि)जमाणकमल कायवगवलाहयचक्कलहससारसगच्चियसउणगणमिहुणसेविज्ञ-  
माणसलिल पउभिणिपत्तोवलगगजलविंदुनिचयचित्तं पिच्छइ सा हिययनयणकत पउ-

१ मदारपारिजातियचपगविउलमच्चकुदपाडलजायजूहियसुगंधंगंधपुप्पमाला० ।

२ परसमयावेक्ष्वाए ।

मसुरे नामसुरे सरदाहमिराम । ॥ ४३ ॥ ए तजो तुजो वंदहितराहितरितिरि  
क्षम्योह चठ(गु)गमयमाहुमाणवङ्गसंचर्य चवत्त्वंचतुशावप्यमानघोड्डेश्वरों  
पद्मपद्माहयन्त्रिमयवदपागद्वरेगरींतमेग्योद्यमानसोमंतनिम्महाददर्शमीतर  
संवेषधावमा(वाम)तोनियतामाहुरतरामिरामं महामगरमध्यतिमितिमितिनिद्यति  
कितिकियामिवायस्यूरेषपसुरे महामहातुरिवदेयमनायवदममयावताहुप्यमाहुषसं  
पत्तोनियताममानसोमसुप्तिं पित्तार चौरोवसावर सा रवविहरत्तेमवता ॥ १  
॥ ४४ ॥ तजो तुजो तदक्षमूर्मंडनसमप्यह दिष्माणसोह उत्तमर्जनवदमहाप्यमिळ  
मूर्षपवरतेमज्ञाहुमाहस्त्रिपूर्वन्तरुप्यहर्व कण्यपवरक्षमाणमुत्तममुञ्जते जहंति  
व्यवामे ईहामिगदसमनुरप्यनरमयरविहगवालगदित्तरदमरभेष्मरसंचाहुं तदम्भ-  
यपउमक्षमगितिते गोव्योस्त्रवावावसंपुष्टादोरु निर्वं सकलवप्यवित्तवामाहृप-  
विक्षयाणुग्रामा देशुदुर्विमहारेण सवदमरि गोपदेवे पूर्वते क्षमाहुप्य-  
पंतुम्भदुरक्षवज्जंतपूर्व(सार)वार्ष्ण्य(वं)उत्तममभमवेत्पंतुम्भामिरामं निवालेवं  
सेय सेवप्यम भ्रमरामिरामं पित्तार सा दावोवमोय वरमिमाहुंडीते ॥ १२  
॥ ४५ ॥ तजो तुजो तुजगदेविदनीक्षसासगदेवपत्तेविदवदमरयमसावप्यता-  
सप्तमित्तसोर्येवियाहस्त्रमभेजपत्तप्यवरजवेहि मद्विष्मपहुंहित्तिं गपवदेवत्त  
फमासमर्त त्रुयं नेहिरितिनिं(ग)जारुं पित्तार सा रमवनिहरराति ॥ १३ ॥ ४६ ॥  
सिद्धि च-सा विठ्ठ्लज्जसपित्तमहुवपरितिवावनिशुभृष्मपवगाहयवर्क्षग्रहुज्ञात-  
मिराम उरत्तमवेषमुद्देहि चाक्षवरेहि अमुज्ञामिद अनुप्यात्त वित्तार वार्ष-  
जज्ज्ञ(ग)ये अंवर च चत्तार वर्ती भावेवरवेच्छं वित्ति ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इते एवारिते  
स्त्रेसे त्रेसे पित्तारेषे त्रेसे त्रेसे त्रेसे त्रेसे त्रेसे त्रेसे त्रेसे त्रेसे त्रेसे  
हरितपुस्त्रक्षेत्री । एए चरदस्त्रमिले चम्बा एसेह वित्तवरमाया । च एवं  
वद्वामी, कुचित्तिसि महायसो अरहा ॥ १ ॥ ४९ ॥ तए वं सा वित्तम वरितावी  
इते पवारवे तराके चरदस्त्रमहाद्वमिले पातिताव एविकुदा चमाणी हुद्वाह चाह  
विदया चारहस्तमेवपुष्टांपित एमुस्त्रिमयेमहुता त्रमिष्मयह चरेऽ ता  
यवविजाभो अम्भुद्वाह २ ता पामपीडाभो पवोद्वाह ३ ता अनुरियमवदत्तमसंभेदाप  
व्यविक्षियाए रायहस्तरिसीए गर्वए चेयेव चमवित्त वित्तसे त्रतिप तेवेव  
उवागच्छ ४ ता वित्तत्वं त्रतिने ताहि इद्वाहि चंताहि वित्ताहि ममुज्ञाहि  
मणेवमाहि उराकाहि वद्राणाहि वित्ताहि चदाहि मंत्राहि वित्तिरियाहि वियद  
ममविजाहि वियदप्यवायमित्ताहि मिरम्भुरमेत्ताहि विराहि संमदमावी ५  
पवित्रोद्वाह ॥ ४८ ॥ तए वं सा वित्तम वरितावी वित्तस्तेवेव रम्या अम्भुज्ञावा

प्र०-सिद्ध भगवान् किसे कहते हैं ?

उ०-जिन परम आत्माओं ने आठों कर्मों का समूल नाश कर दिया है, जो गुणस्थानों से अतीत हो चुके हैं, जिन्होंने परम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्त कर लिया है, जो लोकाकाश के मस्तक पर जा विराजे हैं, उन्हें सिद्ध कहते हैं। सिद्ध भगवान् फिर कभी जन्म नहीं लेते, फिर संसार में नहीं आते। वे अनन्त ज्ञान स्वरूप होकर सिद्ध क्षेत्र में विराजते हैं।

प्र०-अरिहन्त और सिद्ध में क्या भेद है ?

उ०-अरिहन्त भगवान् ने चार कर्मों का नाश किया है और सिद्ध भगवान् ने आठों का। अरिहन्त भगवान् तेरहमें गुणस्थानवर्ती हैं और सिद्ध गुणस्थानों को पार कर चुके हैं। अरिहंत की अपेक्षा सिद्ध भगवान् उच्च पद पर हैं।

प्र०-एमोकार मंत्र में पहले अरिहंत को नमस्कार क्यों किया गया है ?

उ०-अरिहंत भगवान् सर्वज्ञता प्राप्त करके भी संसार में रहते हैं। वे जगह जगह अमणि करके भव्य जीवों को धर्म का उपदेश देते हैं, कल्याण का मार्ग सुझाते हैं। हम लोग जिन शास्त्रों को पढ़ते-सुनते हैं, उनमें अरिहन्त भगवान् का उपदेश ही है। सिद्ध भगवान् का ज्ञान हमें अरिहंत भगवान् के कथन से ही होता है। इस प्रकार सिद्ध यद्यपि बड़े हैं फिर भी निकट उपकारक होने के कारण पहले अरिहंत भगवान् का स्मरण किया जाता है।

तिं० सयणागारं पद्म गमण० ] पढमं परिसिद्ध

समाणी नाणामणिकणगरथणभत्तिचित्तसि भद्रासणसि निसीयइ २ ता आसत्था  
चीसत्था सुहासणवरगया सिद्धथ खत्तिय ताहिं इड्डाहिं जाव सलवमाणी २ एव  
वयासी-एव खलु अह सामी ! अज तसि तारिसगसि सयणिजसि वणओ जाव  
पडिबुद्धा, तजहा-गय(उ)वसह० गाहा । त एएसिं सामी ! उरालाण चउदसणह महा-  
सुमिणाण के मन्ने कलाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सड २ ॥ ४९-५० ॥ तए ण से  
सिद्धथे राया तिसलाए खत्तियाणीए अतिए एयमटु सुच्चा निसम्म हट्टुट्टुचित्ते  
जाव हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुमच्चुमालडयरोमकूवे ते सुमिणे ओगिण(ह)हैइ २  
ता ईह अणुपविसइ २ ता अप्पणो साहाविएण मझपुव्वएण बुद्धिविण्णाणेण तेसिं  
सुमिणाण अत्थुगहू करेइ २ ता तिसल खत्तियाणि ताहिं इड्डाहिं जाव मगळाहिं मिय-  
महुरसस्सरीयाहिं वग्गूहिं सलवमाणे २ एव वयासी-उराला ण तुमे देवाणुप्पिए !  
सुमिणा दिद्धा, कलाणा ण तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिद्धा, एव सिवा, वन्ना,  
मगळा, सस्सरीया, आरुगगतुट्टिदीहाउकलाणमगळकारगा ण तुमे देवाणुप्पिए !  
सुमिणा दिद्धा, तजहा-अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो  
देवाणुप्पिए ! सुक्खलाभो देवाणुप्पिए ! रजलाभो देवाणुप्पिए !, एव खलु तुमे  
देवाणुप्पिए ! नवणह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धुमाण राइदियाण विइक्ताण  
अम्हं कुलकेउ, अम्ह कुलदीव, कुलपव्वय, कुलवडिसय, कुलतिलय, कुलकित्तिकरं,  
कुलवित्तिकर, कुलदिणयरं, कुलाधारं, कुलनदिकर, कुलजसकर, कुलपायव, कुलविव-  
द्धणकरं, सुकुमालपाणिपाय, अहीण(स)पडिपुणपंचिदियसरीर, लक्खणवजणगुणोव-  
वेय, माणुम्माणप्पमाणपडिपुणसुजायसब्बगसुदरंग, ससिसोमाकारं, कत, पियद-  
सण, सुरुवं दारय पयाहिसि ॥ ५१-५२ ॥ से वि य ण दारए उम्मुक्वालभावे विण्णा-  
र्यपरिणयमित्ते जुब्बणगमणुप्पते सूरे वीरे विक्कते वि(च्छ)त्थिण्णविउलब्बलवाहणे  
रजवई राया भविस्सइ ॥ ५३ ॥ त उराला ण तुमे देवाणुप्पिं० ! जाव दुच्चपि  
तच्चपि अणु( वू)वहूइ । तए ण सा तिसल खत्तियाणी सिद्धथस्स रणो अतिए  
एयमटु सुच्चा निसम्म हट्टुट्टु जाव हियया करयलपरिगहिय दसनह सिरसावत्त  
मथए अजलि कहु एव वयासी-एवमेय सामी ! तहमेय सामी ! अवितहमेय सामी !  
असदिद्धमेय सामी ! इच्छियमेय सामी ! पडिच्छियमेय सामी ! इच्छियपडि-  
च्छियमेय सामी ! सच्चेण एसमट्टे-से जहेय तुब्मे वयहत्तिकद्दु ते सुमिणे सम्म  
पडिच्छइ २ ता सिद्धथेण रणा अब्बणुण्णाया समाणी नाणामणि(कणग)रथण-  
भत्तिचित्ताभो भद्रासणाभो अब्बुट्टेइ २ ता अतुरियमच्चवलमसभताए अविलवियाए  
रायहंससरिसीए गईए जेणेव सए सयणिजे तेणेव उवागच्छइ २ ता एव वयासी-

मा मे ते (एगु) उत्तमा पहाणा भेगदा सुमिथा रिदु अब्रेहि पावतुमि<sup>३५६</sup>  
पदिहमिस्येतितिकु देवयगुक्षमधर्मदाहि पमत्वाहि भेगदाहि कुहै  
पहाहि उमिणमागरिय आगरमाजी पदिजागरमाजी विद्र ॥ ५४-५५ ॥ तर व  
सिद्धत्ये यतिए पशुसराम्मधमविष्ट शोरुषिवुरिचे उत्तमै १ ता एवं वर्षी  
यिष्पामेव भो देवलुपिया । अज ऐसे बाहिरिये उबडामधाखं गैषोदयमिति कुहै  
संमजिस्तेष्विति शुर्गंपदरंचक्षुलोग्यारम्भिम्यं जासागुदपार्षुस्तुतुरात्मकं  
भूमपमधंतर्गुमुखामिरामे शुर्गभवरंपियं खंपउम्भूयं छरेह कारबेह वहै  
कारविता य सीहासर्ण रथावैद रथाविता ममेषमालतियं यिष्पामेव पदिहै  
॥ ५७-५८ ॥ तर वे ते शोरुषिवुरिगा यिद्यत्येच रक्ता एवं कुता स्मारा  
इद्युद जाव दिया करदम जाव वृ एवं शामिति आमाए विषएवं वर्ष  
पदिमुर्जति पदियुपिता यिद्यास्म गतियस्म अविमाओ पदिनिरागमेति पदिमिता  
मिता जेनेव बाहिरिया उबडामगाला त्तौव उबामार्षति (तरेव) उत्तापरिता  
यिष्पामेव यमिसेसे बाहिरियं उबडामगामे गैषोदयमि (ततुश्य)ते जाव हीटावं  
रथाविति रथाविता जेनेव यिद्यत्ये गतिए तेनेव उबामार्षति उत्तापरिता एव  
यमतरित्यद्विये एगार्द यित्याकर्त्त मर्याए अंमलि वृ यिद्यापला तामिस्म तमाव  
तिये पवित्रित्वा ॥ ५९ ॥ तर वे यिद्यत्ये गतिए कर्म पात्रपमाए रक्तान्ते  
पुमुलम्ममस्त्रोमनुम्मीभिर्यमि भद्रार्दुरे पमाए, रक्तायोग्यगालाहिगुयगुमुरुर्दु  
दरागर्भुर्मीरागायारदवक्तव्यनयणारदुवगुरात्येवमजानुवयन्तुमुमराणि<sup>३५७</sup> उम्भर्य  
राइरेयर्द यमिसे बमजावरमेहोदै उद्धिर्भेति शैरे गहमारमिति यित्यावे तद्वा  
जैन तस्य य उत्तापरागरदमि अंगारे बालवार्तुमर्व तापिता वै त्वेव  
गदविमाम्भे भव्युद्दृ ॥ ६ ॥ प गदविमाम्भे भव्युद्दृ तावीजाम्भे पक्षार्दृ २ ता  
जोरा भव्यगात्रा त्तौव उत्तापरार्दृ ३ ता भृत्यगम्भे भृत्यर्दृ ३ ता भाव-  
वायाम्भोगरमाभवाम्भर्माम्भुद्दृम्भे<sup>३५८</sup> त्तौव त्तिर्येति त्तिर्यागरात्मान्ति<sup>३५९</sup> उम्भर्य  
वार्तान्मार्दृ<sup>३६०</sup> वीर्यान्मार्दृ<sup>३६१</sup> वीर्यिर्दृ<sup>३६२</sup> मर्यान्मार्दृ<sup>३६३</sup> ॥ (६) तात्रेव दर्शन्ति वै  
गर्भिन्यगदाहायर्भार्या<sup>३६४</sup> अव्यंगिए गमाच तिर्याम्भेति रित्याम्भ<sup>३६५</sup> वीर्याम्भ<sup>३६६</sup>  
परित्यक्ताम्भाम्भोमज्ञान्माम्भे<sup>३६७</sup> भव्यंगराम्भिम्भुर्माम्भाम्भर्माम्भ<sup>३६८</sup> वै त्वेव  
दर्शन्ति वै<sup>३६९</sup> वृम्भाम्भे<sup>३७०</sup> वर्षाम्भाम्भे<sup>३७१</sup> वृम्भेव<sup>३७२</sup> अंगर्दृ वै त्वेव  
त्तिर्याम्भर्माम्भ<sup>३७३</sup> यमित्याम्भुद्दृ त्तिर्याम्भर्माम्भ<sup>३७४</sup> वै त्वेव  
वायाम्भ(मेव)त्तिर्याम्भे भव्यगात्रा वीर्यिर्याम्भ ॥ ६१ ॥ भावाम्भाम्भ  
वीर्यिर्याम्भ त्तेव भव्यंगराम्भे त्तौव उत्तापरार्दृ ३ ता भव्याम्भ भृत्यर्दृ ३ ॥

दिवुज्ज्ञति ॥ ७२-७७ ॥ इमे य णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए  
। महासुमिणा दिट्ठा, त उराला णं देवाणुप्पिया ! तिसलाए  
दिट्ठा जाव मगळकारगा ण देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए  
हृ-अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो  
खलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया !, एव खलु  
सला खत्तियाणी नवणह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्दट्टमाण राह-  
ग तुम्हं कुलकेउ, कुलदीव, कुलपव्य, कुलवडिंसय, कुलतिलय, कुल-  
त्तिकर, कुलदिणयर, कुलधार, कुलनदिकर, कुलजसकर, कुलपायव,  
प्रवद्धणकर, सुकुमालपाणिपाय, अहीणपडिपुण्णपचिदिग्रसरीर, लकख-  
वेयं, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसब्बगसुदरंग, ससिसोमाकारं,  
ण, सुरूव दारय पयाहिसि ॥ ७८ ॥ से वि य ण दारए उम्मुळवालभावे  
। यमित्ते जुब्बणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्ते विच्छिणविपुलवलवाहणे  
वट्ठी रज्जवड्डे राया भविस्मड, जिणे वा तेलुड्ड[तिलोग]नायगे वम्मवर-  
म्मवट्ठी ॥ ७९ ॥ त उराला ण देवाणुप्पिया ! तिसलाए खत्तियाणीए  
दिट्ठा जाव आसगतुट्टिदीहाउक्काणमगळकारगा ण देवाणुप्पिया ! तिसलाए  
गीए सुमिणा दिट्ठा ॥ ८० ॥ तए ण सिद्धत्ये राया तेसिं सुविणलक्खणपाढ-  
-ततिए एयमट्ट सोचा निगम्म हट्टतुट्ट जाव हियए करयल जाव ते सुविण-  
-गपाढए एव वयासी-एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय ढे० ! अवितहमेय ढे० !  
मेय ढे० ! पडिच्छियमेय ढे० ! डच्छियपडिच्छियमेय ढे० !, मच्ये ण एसमट्टे  
यं तुच्ये वयहत्तिकट्ट ते सुमिणे सम्म पडिच्छइ २ ज्ञा ते सुविणलक्खणपाटए  
ण अमणेण पुण्पत्त्यगवमळालफरेण गळारेड मम्माणेड मळारित्ता मम्मा-  
विडल जीवियारिह पीडदाण दलयड २ ज्ञा पडिविमज्जेड ॥ ८१-८२ ॥  
ग ने सिद्धत्वे नत्तिए सीहागणाओ अब्बुट्टेड २ ज्ञा जेणेप्र तिमला खत्तियाणी  
-गोव उवागच्छड २ ज्ञा तिनल नत्तियाणि एव वयासी-एव खलु  
-णरत्यनि चायालीसु सुमिणा तीस महासुमिणा जाव एं महा-  
-पुण्पन्ननि । इमे य ण तुगे उवाणुप्पिए । चउद्दर महासुमिणा  
नुमे जाव लिणे वा तेलुपनायो घम्मवरच्चाउरननवट्ठी  
। निनला नत्तियाणी एयमट्ट सो(नु)या निरम्म हट्टतुट्ट  
ने सुमिणे मम्म पडिच्छइ २ ना सिद्धन्येण गळा अन्म-  
-गामत्तिचित्ताओ भद्रगणाओ अब्बुट्टेड ॥ ८३-८४ ॥

‘सप्ताह’ ।

वियाणिता एगदेसेण एयइ, तए ण सा तिसला खत्तियाणी हट्टुट्टु जाव हियया एवं वयासी-नो खलु मे गब्मे हड्डे जाव नो गलिए, मे गब्मे पुर्विं नो एयइ, डयाणि एयइत्तिकट्टु हट्टुट्टु जाव हियया एवं विहरइ ॥ ९३ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे गब्मत्थे चेव इमेयाहूव अभिग्रह अभिग्रिणहृइ-नो खलु मे कृप्पद अम्मा-पिलहिं जीवतेहिं मुड्डे भविता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ॥ ९४ ॥ तए ण सा तिसला खत्तियाणी ष्हाया सब्बालकारविभूतिया त गब्म नाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतितेहिं नाइकहुएहिं नाइअविलेहिं नाइमहुरेहिं नाइनिद्वेहिं नाइ-ल्लुक्खेहिं नाइउलेहिं नाइसुक्षेहिं सब्बत्तुगभयमाणसुहेहिं भोयणच्छायणगधमलेहिं ववगयरोगसोगमोहभयपरिस्समा सा ज तस्स गब्मस्स हिय मिय पथ गब्मपोसण त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विचित्तमउएहिं सयणासणेहिं पङ्किंकसुहाए मणोऽणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला सपुण्णदोहला समाणियदोहला अविसाणि-यदोहला वुच्छिशदोहला ववणीयदोहला सुहसुहेण आसइ, सयइ, निट्टइ, निसीयइ, तुयझइ, विहरइ, सुहसुहेणं त गब्म परिवहइ ॥ ९५ ॥ तेणं कालेण तेण समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाण पढमे मासे दुच्चे पक्खे चित्तसुद्दे तस्स णं चित्तसुद्दस्स तेरसीदिवसेण नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धुमाणं राइदियाणं विइक्षताण उच्छट्टाणगाएसु गहेसु पढमे चद्जोगे सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जडएसु सब्बसउणेसु पयाहिणाणुकूलसि भूमिसप्पसि मास्यसि पवायसि निप्पनमेह-णीयसि कालंसि पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि हत्युत्तराहिं नवखतेण जोगमुवागाएण आ(इ)रोग्ग(आरु)रोग्ग दारय पयाया ॥ ९६ ॥ ज रथणि च ण समणे भगव महावीरे जाए सा ण रथणी वहूहिं देवेहिं देवीहि य ओवयतेहिं उप्पयतेहिं य उप्पिजलमाणभूया कहकहगभूया याचि हुत्या ॥ ९७ ॥ जं रथणि च ण समणे भगव महावीरे जाए त रथणि च ण वहूवे वेसमणकुडधारी तिरियजभगा देवा सिद्धत्यरायभवणसि हिरण्णवास च सुवण्णवास च वयरवास च चत्यवास च आभरणवास च पत्तवास च पुष्पवास च फलवास च वीयवास च मल्लवास च गधवास च चुणवास च वण्णवास च वसुहारवास च वासिंसु ॥ ९८ ॥ तए ण से सिद्धत्थे खत्तिए भवणवइवाणमतरजोइसवेमाणिएहिं देवेहिं तित्यरजम्म-णाभिसेयमहिमाए कथाए समाणीए पच्चूसकालसमयसि नगरगुत्तिए सद्वेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । (खत्तिय)कुड(भगामे)पुरे नगरे चारग-सोहणं करेह करिता माणुम्माणवद्वण करेह करिता कुडपुरे नगर सविभतरवाहिरियं आसियसम्भज्जिओवलित्त सिंघाडगति(ग)यचउक्कच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु सित्तसुइ-

रियमत्तवक्षमसंभवाए अविष्टयिवाए रामादृष्टवरिष्ठीए गईए जेवेव एए मदवे तोवे  
 उवागम्भृत ३ ता उवं मदव न्युपतिष्ठा ॥ ८६-८७ ॥ अप्पमिह व वे उवे  
 ममव महावीरे तंसि ना(रा)म्भमसि साहरिए तप्पमिह व व वहवे वेत्तमार्दी  
 अरिष्ठा लिरियवमगा वेत्ता साक्षयगेष से अर्द्ध इमाई पुरापोरावाई महानिहावै  
 मवीति तंस्था-पर्वीणसामियाई पहीणसेत्तवाई पहीण(पु)ग्रेत्तागार्वाई, उद्धिष्ठावै  
 माई उद्धिष्ठसेत्तवाई उद्धिष्ठगोत्तायारवै, गामागरनगरवेड्डवद्वाहमार्देत्तुई  
 पहणसमसं-आहसिमिसेत्तु सित्तावाएषु वा तिएषु वा उडकेषु वा वर्तेषु व  
 चत्तम्भुहेषु वा महाप्पेषु वा पाम्भुषेषु वा नयागुषेषु वा गमनिहमेषु वा  
 कगरनिहमणेषु वा भावमेषु वा वेत्तमेषु वा समाषु वा पवाषु वा आउमेषु वा  
 उज्जालेषु वा बनेषु वा बनसेषु वा दुसावध्यागारगिरिष्ठरसिसेत्तेन्दुष्ममवर्द्ध  
 गिहेषु वा सत्तिकिसावाई विद्वति ताई विद्धपरावभवर्णसि धावर्ती ॥ ८८ ॥  
 वं रथयि व वं समगे घावं महावीरे नावङ्गम्भसि साहरिए तं रथयि व वे नाम-  
 कुंड विरज्येष विहृत्वा द्वचन्वेष विहृत्वा पगेष घावं रजेष त्तेष वदेष वह  
 येष छेसेष कोङ्गपारेष पुरेष अंतेरोनं अववाएष वस्त्वाएष विहृत्वा विसु-  
 दवद्वगरनवममिनोतिवस्यादिष्ठवाद्वत्तरववमाहेन धैर्यारसावद्वेष वीर-  
 उक्तारसमुद्देष अद्वैत अद्वैत अमिष्ठविष्ठा ॥ ८९ ॥ तए वं समवस्त्व मगाक्षो महावै  
 रस्त अमापिष्ठने अयमेवाव्ये अम्भरिष्ठ विरिए पतिष्ठ गमोष्ठ उक्तप्पे उमुष्ठ-  
 जिल्ला-अप्पमिह व व अम्भ एस वारए तुष्ठिष्ठि गम्भाए व्याते तप्पमिह व वे  
 अम्भे विरज्येष व्याम्भो द्विक्षेष व्याम्भो व्याम्भे वाव धैर्याराधावद्वेष वीरस्त्वा-  
 रेन अद्वैत अद्वैत अमिष्ठवामो तं ववा वं अम्भ एस वारए वाए मविस्तर त्वा  
 वं अम्भे एस्त्व वारमस्त्व एवत्तुस्व तुष्ठे तुष्ठमिष्ठले नामाविज्ञ वरिस्त्वमी-  
 वद्वमानुति ॥ ९ ॥ तए वं समव मगावं महावीरे मात्तम्भुहेष्ठाए विष्ठे  
 विष्ठेवे विरेष्ठे अद्वैतवाहवे वाव उक्तप्पे उमुष्ठजिल्ला-इडे मे से गम्भे मवे म वे  
 गम्भे तुए मे से गम्भे पमिह मे से गम्भे एस मे गम्भे तुष्ठि एवह इवावि  
 लो एस्त्वित्तु लोहमवसेष्ठा वित्तासोपदामरसंपत्ति वर्तमम्भहत्तमुही वाई  
 ज्ञावोवम्भा भूमीगप्पित्तिवा विवायश, तं पि व विद्धपरावभरमवर्द्ध वर्तमम्भर्द्ध  
 तंत्तीत्तद्वाव्यनाव्यज्ञवम्भु(व्य)व वीणविमर्द्ध विहृत ॥ ९२ ॥ तए वं से समवै  
 अवर्द्ध भद्रवीरे माव्यर अवमेवाव्ये अम्भरिष्ठ विष्ठमी मवोगावं उक्तप्पे उमुष्ठ

१ 'जावत्तवा' । २ लिद्वपि ।

पाणं राइम साइम आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं वा विहरति ॥ १०४ ॥ जिमिथभुत्तरागया वि य ण समाणा आयता चोक्खा परमसु(इ)ईभूया त मित्तनाइनियगमयणसवधिपरिजण नायए खत्तिए य विडलेण पुष्पवत्यगधमङ्गलकारेण सक्कारेति सम्माणेति सक्कारित्ता सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइनियगसयणसवधिपरि(य)जणस्स नाया(ण य)ण खत्तियाण य पुरबो एव वयासी-पुष्ट्वि पि (य) ण टेवाणुप्पिया ! अम्ह एयसि दारगंसि गव्ब वक्तसि समाणसि डमे एयाह्वे अव्मत्थिए जाव समुप्पजित्था-जप्पभिइ च ण अम्ह एस दारए कुच्छिसि गव्बत्ताए वक्तते तप्पभिइ च ण अम्हे हिरण्णेण वद्वामो, सुवण्णेण धणेण धक्षेण रज्जेण जाव सावड्जेण पीडमक्कारेण अर्द्व अर्द्व अभिवद्वामो, सामतरायाणो वस-मागया य । त जया ण अम्ह एस दारए जाए भविस्सइ तया ण अम्हे एयस्स दारगस्स इमे एयाणुर्व गुण्ण गुणनिप्फञ्च नामधिज करिस्सामो वद्वमाणुति, ता अज अम्ह मणारहसपत्ती जाया, त होउ ण अम्ह कुमारे वद्वमाणे नामेण ॥ १०५-१०७ ॥ समणे भगव महावीरे कासवगुत्तेण, तस्स णं तओ नामधिजा एवमाहिज्जति, तजहा-अम्मापिउसत्तिए वद्वमाणे, सहस्रमुद्याए समणे, अयले भयमेरवाण प(री)रिसहोवसगाण खतिखमे पडिमाण पालए धीम अरद्वरइसहे दविए वीरियसपन्ने देवेहिं से नाम क्य 'समणे भगव महावीरे' ॥ १०८ ॥ सम-णस्स ण भगवओ महावीरस्स पिया कासवगुत्तेण, तस्स ण तओ नामधिजा एव-माहिज्जति, तजहा-सिद्धत्येह वा, सिज्जसेह वा, जससेह वा । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स माया वासि(डुस)ट्टी गुत्तेण, तीसे तओ नामधिजा एवमाहिज्जति, तजहा-तिसलाइ वा, विदेहदिक्षाइ वा, पीइकारिणीइ वा । समणस्स ण भगवओ महावीरस्स पित्तिजे सुपासे, जिट्टे भाया नदिवद्वणे, भगिणी सुदसणा, भारिया जसेया कोडिन्ना गुत्तेण । समणस्स ण भगवओ महावीरस्स वूया कास(व)वी गुत्तेण, तीसे दो नामधिजा एवमाहिज्जति, तजहा-अणोज्जाइ वा, पियदसणाइ वा । सम-णस्स ण भगवओ महावीरस्स नतुर्हि कोसिय(कासव)गुत्तेण, तीसे ण दो नामधिजा एवमाहिज्जति, तजहा-सेसवईइ वा, जसवईइ वा ॥ १०९ ॥ समणे भगव महावीरे दक्खे दक्खपद्धन्ने पडिरुवे आलीणे भद्वए विणीए नाए नायपुत्ते नायकुलचदे विदेहे विदेहदिजे विदेहज्ज्वे विदेहसूमाले तीस वासाइ विदेहसि कद्गु अम्मापिलहिं देवत्त-गणहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्मणुण्णाए समत्तपद्धन्ने पुणरवि लोगतिएहिं जीयकपिपुहिं देवेहिं ताहिं इट्टाहिं जाव वग्गूहिं अणवरय अभिनंदमाणा य अभियुव्वमाणा य एवं वयासी-जय जय नदा !, जय जय भद्वा ! भद्व ते, जय जय खत्तियवरवसहा !,

संमुक्तरूपं ठरावज्ञीहि॒यं मंचाद्यमंचमङ्गिये मामाशिहरागामूलियज्ज्वलपदागमंशिये अन्  
भेदयमहिये थोसीसुसरसरलक्ष्मदरविलपत्वापुङ्गिलते उविद्यवंदनकल्पं च इत्य-  
सुक्ष्मतोरकपडितुकारदेवमार्यं नासातोक्तथिपुष्टमङ्गलपारिममाक्षानकल्पं फंक्ष्म-  
सुरसुरामिमुहुपृष्ठापुङ्गियोवारकल्पियं क्षक्षागुरुपत्त्वं तु लक्ष्मदृढ़ज्ञात्तम्भमकल्प-  
क्षुद्रामिरामं द्वयोभ्यरणकियं गंववहिभूते नदनामवामामुहित्वैवक्षमक्षयं (पाठ)-  
पदगामासुगमा (इ) एकद्यगामामंद्यगामामुहित्वैवक्षमक्षयं (पाठ)-  
वेद एह क्षरिता कारविता व पर्मेष्ठाहस्तं सुषुप्तमहस्तं च उस्तुविह उस्तुविता मम  
एकमाप्तियं पदपित्र॑ ॥ ११-१ ॥ ११ ए नं ते कोऽप्तियुरिसा विद्यत्वेव  
रक्ष्य एव तुता समाना वद्यात् चाव हिमया करयक चाव विद्यमिता विद्यत्वेव  
द्वंडमुरे नगरे चामसोहर्णं चाव उस्तुविता वेत्तेव विद्यत्वे (वातित) रामा वेत्तेव  
उवागक्षंति २ चा करयक चाव च्छु विद्यत्वस्त्व यत्तिमस्त रक्ष्ये एषमानियं पद-  
पित्रंति ॥ १ १ ॥ ११ ए नं से विद्यत्वे रामा वेत्तेव अद्यसाम्भ वेत्तेव उवागक्षं २ चा  
चाव सम्बोरोहर्णं सम्पुष्ट्यावत्त्वमामामंकारविभूषाए सम्भुद्विवस्तुविनाएवं महता  
श्वीप महया श्वीरे महवा वक्षेवं महवा वाहकेर्ण महया स्मुदर्पर्णं महवा वर-  
द्विविक्षमगसमगप्त्याक्षरं संवक्षनवपद्वभेत्तिवारिवासुहित्वैवमुरमुरमुरमुरमुर-  
व्येक्षनाइवरवेष उस्तुवं उद्दर उत्तिद्व वरिज ववित्वं अमद्यप्तवेषं कर्त्तिम्कोवित्वं  
ववरित्वं पवित्रावरलामध्यक्षकलियं वेत्तेयतामामराकुवरियं व्यक्षुम्भुर्मं ववित्वं  
मङ्गरामं प्युद्यमप्त्यामित्वृत्यं (पामिरामं) व्यक्षानवं इस्तिविव व्येष  
॥ १ २ ॥ ११ ए नं विद्यत्वे रामा वसाहियाए विद्यत्वियाए वहमानीए उरपं व  
साहसित्वं व स्वसाहसित्वं व जाए व जाए व माए व वस्मान्व व वसावेन्व  
व उद्दए व साहसित्वं व स्वसाहसित्वं व ल्लेवे पवित्र्यक्षमावे व पवित्र्यक्षमावे  
व एवं [वा] विवर॑ ॥ १ ३ ॥ ११ ए नं समवस्त्व मगक्षो महानीरस्त अम्भापित्वे  
पद्वेव विवसे विद्यत्वियं क्ष(रि)वेत्ति ११ ए विवसे विद्यत्वर्दसवित्वं कर्त्तेति ल्ले  
विवसे अम्भजागरिय वागरो(करि)ति ११ ए(इ)वारसमे विवसे विद्यत्वं विवरित्वं  
अद्यक्षमाम्भम्भरगे वेत्तो वारसा(इ)वरिवसे विवर वरुर्वं पार्व वाहमं सौदर्यं  
उवक्षम्भगा(वि)वेत्ति २ चा मित्तनाइविव(व)प्युद्यमसंविविविवरिवयं वाक्य वातिर  
व अमर्तेत्ति २ चा तम्भे पञ्चम च्छाया च्छुप्तावेनाई वेगङ्गावं वरद्वं वत्त्वं परि  
विष्या अप्यम्भक्षमामरमामंविष्यम्भरीता मोक्षमेवाप मोक्षमामंविष्य त्राप्तप्यगरवा  
त्वेव वित्तनाइविष्यम्भक्षम्भसंविविविवरिवयेवं वाक्यावै वरियै वरियै वरियै

१ व्यामुक्तुगाई वेत्ति उद्दस्त । २ असुवपाम्भक्षम्भाम्भाम्भ ।

ततीतलतालतुडियगीयवाइयरवेण महुरेण य मणहरेण जयजयमद्घोसमीसिएण  
 मज्जुमज्जुणा घोसेण य पडिवुज्ज्ञ(आपुच्छिज्ञ)माणे पडिवुज्ज्ञमाणे, सब्बिद्धीए  
 सब्बजुडीए सब्बवलेण सब्बवाहणेण मन्वसमुदएण सब्बायरेण सब्बविभूडीए सब्ब-  
 विभूसाए सब्बसभमेण सब्बसगमेण सब्बपगर्ईहिं सब्बनाडएहिं सब्बतालायरेहिं  
 सब्ब(वाव)वोरोहेण सब्बपुफ्कगधवत्यमळालकारविभूसाए सब्बतुडियसहमन्निनाएण  
 महया डडीए महया जुईए महया वलेण महया वाहणेण महया समुदएण महया  
 वरतुडियजगसमगपवाडएण सरपणवपडहभेरिदालरिरवरसुहिहुङ्कडुहिनिग्घोस-  
 नाडयरवेण कुडपुरं नगर मज्जमज्ज्ञेण निगच्छद् २ त्ता जेणेव नायसडवणे उजाणे  
 जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छद् उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्म अहे सीय  
 ठावेद् २ त्ता सीयाओ पचोरहड २ त्ता सयमेव आभरणमळालकार ओमुयद् २ त्ता सय-  
 मेव पचमुट्ठिय लोय करेद् २ त्ता छट्टेण भत्तेण अपाणएण हत्युत्तराहिं नक्खत्तेण जोग-  
 मुवागएण एग वेवदूसमादाय एगे अवीए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए  
 ॥ ११५-११६ ॥ समणे भगव महावीरे सवच्छर साहिय मास जाव चीवरधारी होत्था,  
 तेण परं अच्चेले पाणिपडिगहिए । समणे भगवं महावीरे साइरेगाह दुवालसवासाईं  
 निच्च वोसट्टकाए चियत्तटेहे जे केद् उवसग्गा उप्पज्जति, तंजहा-दिव्वा वा माणुसा  
 वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पडिलोमा वा ते उप्पन्ने सम्म सद्ग खमइ  
 तितिक्खइ अहियासेइ ॥ ११७ ॥ तए ण समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए-इ(ई)-  
 रियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपास-  
 वणखेलज्जसिंघाणपारिष्ठावणियासमिए, मणसमिए, वयसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते,  
 वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तवभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोहे,  
 सते, पसते, उवसते, परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्न(सोए)गथे,  
 निरुवलेवे, कसपाई इव मुक्तोए १, सखे इव निरंजणे २, जीवे इव अप्पडिहयगर्ई  
 ३, गगणमिव निरालवणे ४, वा(ऊ इव)उव अपडिवद्दे ५, मारयसलिल व सुद्ध-  
 हियए ६, पुक्खरपत्त व निरुवलेवे ७, कुम्मे इव गुत्तिंदिए ८, खण्णिविसाणं व  
 एगजाए ९, विहग इव विष्पमुक्के १०, भारेडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुजरे इव  
 सोंडीरे १२, वसहो इव जायथोमे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मदरो इव निक्क-  
 (अप्पक)पे १५, सागरो इव गंभीरे १६, चदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्त-  
 तेए १८, जच्चकणग व जायरुचे १९, वसुधरा इव सब्बफासविसहे २०, सुहुयहु-  
 यासणो इव तेयसा जलते २१ । इमेसिं पयाण दुष्टि संगहणिगाहाओ-कसे सखे  
 जीवे, गगणे वाऊ य सरयसलिले य । पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खगे य भारंडे

दुज्जाहि भयर्व स्मोगनाशा । सवसवयज्ञीकृहि॒र्यं पर्वतेहि॒ चम्मवित्वं हि॒वद्वान्निसे॑  
क्षक्षरं सम्भेदे॑ सव्यजीवार्थं मनिस्त्रश्चित्तम्॒ अ्यज्ञसर्वं पर्वतेहि॒ ॥ ११-११ ॥  
पुणि॒ पि न रम्यस्त मग्नज्ञो महावीरस्त मालुस्त्रयामो निहत्यक्षमामो भुत्तो  
माहोरए॑ अप्यडिक्षारै॑ नान्नद्युमि॒ हो(ह)त्वा । एष वं सम्बे॑ मयर्व महावीरे ते॑रे  
मयुतारेण॑ आहोइपर्यं नापद्युमेण॑ अप्यज्ञो निक्षम्भाङ्गङ्गारै॑ आमोरए॑ ३. ता निका  
हिरञ्जि॑ निका मुक्त्यन्नं निका पथ निका रज्जे निका एहं॑ एवं वर्ते वार्वं दोर्वे॑  
क्षेत्रागार॑ निका पुरे॑, निका अंतेऽर्द्धे॑, निका अन्नद्य निका निपुण्यमवद्यमरवत्त  
मणि॑(मु)मोर्तिमस्त्रयास्त्रिलक्ष्माक्षरताम्यमाहन्नं खेत्रारसाक्षज्ञं निक्षेत्रा निको-  
वद्या दाय दावारेहि॑ परिमाइता दावे॑ दाइमाने॑ परिमाइता ॥ ११२ ॥ ते॑रे॑  
क्षेत्रेण॑ ते॑रे॑ सम्भूतं सम्बे॑ मग्नं महावीरे वे॑ दे॑ हेमतार्थं पर्वते॑ मासे॑ पर्वते॑  
मम्पिरिष्टुते॑ तस्य वं मम्पिरिष्टुप्लस्य इसमीक्षक्षेत्रं पार्विष्टगमितीए॑ छावार  
पोरितीए॑ अभिनिविद्याए॑ फ्लाषपदाए॑ द्वन्नए॑ रिवसेन निवए॑ मुक्त्युतेण॑ वेदप्मार॑  
चीयाए॑ सदेक्षमालुवास्तुराए॑ परिसाए॑ सम्मुग्नम्यमालमग्ने॑ देविवचक्षित्तम्(ठ)नेमणि॑  
मुहमंगमित्तवद्यमात्पूमाप्तिक्षग्नेहि॑ ताहि॑ दुखाहि॑ जाव अग्नाहि॑ अभिनवमात्ता॑(३)  
अभिसुम्भमात्ता॑ य एवं वदत्ती॑-ज्य ज्य नंदा॑ । ज्य ज्य मदा॑ भाई॑ ते॑ [ वातिव  
वरवद्या॑ । ] अमरगेहि॑ नान्नद्युमवरितेहि॑ अवियोरै॑ निकाहि॑ इविवार॑, नियं॑ च  
पार्विहि॑ सम्पवम्मं निक्षिम्भो॑ वि॑ न क्षाहि॑ तं देव॑ । निक्षिम्भो॑ निकाहि॑  
रामादेसमाहे॑ तवेन निक्षिम्भवद्यक्षले॑ महाहि॑ अक्षुक्षम्भसर्व॑ शालेन॑ तालेन॑  
द्वेषेन॑ अप्मार्थे॑ इराहि॑ आराहत्तपदार्थं च वीर॑ । तेक्षुक्षरंगमन्त्ते॑ पावय निक्षिम्भ  
मुक्त्युते॑ केक्षम्भरनामे॑ पक्ष्य व मुक्त्यन्नं परं(रम)॑ एवं निक्षिम्भरोवस्तुतेण॑ ममोर्व ब्रह्मितेण॑  
हीता॑ परिसहस्रं॑, ज्य ज्य वातिववरवद्या॑ । वहौ॑ निकाहि॑ वहौ॑ फलाहि॑ वहौ॑  
मासार्थं॑ वहौ॑ उच्च॑ वहौ॑ अवनाहि॑ वहौ॑ देवप्मार॑ अभीए॑ परिसहस्रमार्थं॑  
संतिक्षमे॑ मयमेरवार्थं॑ भम्मे॑ ते॑ अविम्भे॑ भवतील्लु॑ वववद्युर्व॑ पर्वतेहि॑  
॥ ११३-११४ ॥ तए॑ वं सम्मे॑ भावं॑ महावीरे॑ भवतील्लु॑ उहस्तेहि॑ निक्षिम्भ-  
मामे॑ निक्षिम्भमार्थे॑ वववद्यमालुवास्तुतेहि॑ अभिसुम्भमामे॑ अभिसुम्भमामे॑ द्विव-  
मालासहस्रेहि॑ उच्चविज्ञमामे॑ उच्चविज्ञमामे॑ भवोर्वमालासहस्रेहि॑ निक्षिम्भमामे॑  
निक्षिम्भमामे॑ क्षतिवद्युतेहि॑ परिवज्ञमामे॑ परिवज्ञमामे॑ अपुक्षिमाकालस्तेहि॑  
द्वाष्टमामे॑ वातुक्षमामे॑ वातिवहत्येन॑ वहूर्व नरनामीवास्तामी॑ अवसिम्मामार्थ-  
द्वास्ताहि॑ परिवज्ञमामे॑ विवज्ञमामे॑ भवतपविसहस्राहि॑ सम्भवमामे॑ उम्भवमामे॑

प्र०—जगत् की रखना कौन देय करते हैं ?

उ०—कोई भी नहीं । यह जगत् तो आमादि काल से है और  
अनन्त काल तक रहेगा । न किसी में इसकी रखना की  
है और म कोई इसका माल नहीं कर सकता है ।

प्र०—लो पुण्य पाप का फल कौन देता है ?

उ०—हरेक चीज़ अपना फल स्वयं देती है । उसका फल भी  
गमे के लिये और किसी की आवश्यकता नहीं पड़ती ।  
शराब पीने वाले को शराब स्वयं बेड़ोय बना देती है,  
विष खाने वाले को विष स्वयं ही मार दासता है । ऐसी  
स्वयं भूल भिटा देती है । बेड़ोय बनाने मारने और  
भूष भगाने के लिये किसी दूसरे पुरुष कर्त्ता की जरूर  
रह नहीं पड़ती । इसी प्रकार पुण्य-पाप मोगने के लिये  
किसी ईधर की जरूरत नहीं है । पुण्य-पाप अपना फल  
स्वयं देता है ।

प्र०—भगवान् की भक्ति क्यों करनी चाहिये ?

उ०—हम आत्म गुणि करना चाहते हैं और भगवान् आत्म-  
गुणि के आदर्श हैं । उम्होंने आत्म-गुणन का विषय मी  
हमें बताया है । हम भगवान् सरीके लोकोत्तर गुणप्राप्त  
करना चाहते हैं । हम उम्हे पूज्य न बताएंगे तो उसके  
गुणों का अनुकरण भी न कर सकेंगे । इसलिये उसके  
प्रति आदर और बहुमान रखना हमारा कर्तव्य है ।

प्र०—भगवान् की भक्ति से और भी कोई लाभ है ?

उ०—हाँ अमेक लाभ है । जब कोई मन्त्र शीष आत्मरिक  
भक्ति से गवाच और भगवान् की आराधना करता

जाणमाणे पासमाणे विहरइ ॥ १२१ ॥ तेणं कालेण तेण समएण समणे भगवं  
 महावीरे अद्वियगाम नीसाए पढम अतरावास वासावास उवागए १, चपं च पिढु-  
 चपं च नीसाए तओ अतरावासे वासावास उवागए ४, वेसालिं नगरिं वाणियगाम  
 च नीसाए दुवालस अतरावासे वासावास उवागए १६, रायगिह नगरं नालद च  
 बाहिरिय नीसाए चउद्दस अतरावासे वासावास उवागए ३०, छ मिहि(लिया)लाए ३६  
 दो भद्रियाए ३८ एग आलंभियाए ३९ एगं सावत्थीए ४० एगं पणियभूमीए ४१  
 एग पावाए मज्जिमाए हत्थिवालस्स रण्णो रज्जुगसभाए अपच्छम अतरावास  
 वासावास उवागए ४२ ॥ १२२ ॥ तत्थ ण जे से पावाए मज्जिमाए हत्थिवालस्स  
 रण्णो रज्जुगसभाए अपच्छम अतरावास वासावास उवागए तस्स णं अतरावासस्स  
 जे से वासाण चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे कत्तियबहुले तस्स ण कत्तियबहुलस्स पण्ण-  
 रसीपक्खेणं जा सा चरमा रयणी तं रयणी च णं समणे भगवं महावीरे कालगए  
 विइक्कते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणवधणे सिद्धे बुद्धे मुहुते अतगडे परिनिव्वुडे  
 सब्बदुक्खप्पहीणे, चदे नाम से दो(दु)च्चे सवच्छरे, पीइवद्धणे मासे, नदिवद्धणे पक्खे,  
 अगिवेसे नाम से दिवसे उवसमिति पवुच्चइ, देवाणंदा नामं सा रयणी निरतिति  
 पवुच्चइ, अच्चे लच्चे, मुहुते पाणू, थोवे सिद्धे, नागे करणे, सब्बदुसिद्धे मुहुते, साइणा  
 नक्खत्तेण जोगमुवागएण कालगए विइक्कते जाव सब्बदुक्खप्पहीणे ॥ १२३-१२४ ॥ ज  
 रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सब्बदुक्खप्पहीणे सा ण रयणी बहूहिं  
 देवेहिं देवीहि य ओवयमाणेहि य उप्पयमाणेहि य उज्जोविया यावि हुत्या ॥ १२५ ॥ ज  
 रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सब्बदुक्खप्पहीणे सा ण रयणी बहूहिं  
 देवे(हि य)हिं देवीहि य ओवयमाणेहिं उप्पयमाणेहि य उर्पिंजलमामाणभूया कहकहग-  
 भूया यावि हुत्या ॥ १२६ ॥ ज रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सब्बदु-  
 क्खप्पहीणे त रयणी च ण जिट्टस्स गोयमस्स इदभूहस्स अणगारस्स अतेवासिस्स  
 नायए पिजबवणे वुच्छिशे अणते अणुतरे जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने ॥ १२७ ॥  
 ज रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगए जाव सब्बदुक्खप्पहीणे त रयणी  
 च ण नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्टारसवि गणरायाणो अमावासाए  
 पा(वा)राभो(ए)य पोसहोववास पट्टविसु, गए से भावुज्जोए दब्बुज्जोय करिस्सामो  
 ॥ १२८ ॥ ज रयणी च ण समणे भगवं महावीरे जाव सब्बदुक्खप्पहीणे त रयणी च  
 ण खुद्दाए भासरासी नाम महगहे दोवाससहस्सठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स  
 जम्मनक्खत्त सकते ॥ १२९ ॥ जप्पभिइ च ण से खुद्दाए भासरासी महगहे दो-  
 वाससहस्सठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत्त सकते तप्पभिइ च

॥ १ ॥ ईश्वर बसहे चीहे मगराया भेद सामरमयोहे । ची सूरे कमगे बरुक्षण  
भेद दूरवहे ॥ २ ॥ व तत्त्व य तस्त मध्यंतस्त क्लवह पवित्रि से य पवित्रि  
करम्बिहे पद्मते तंजहा-दम्भओ खितमो काम्भो मावओ दम्भवे व लिंग  
खितमीहिएषु दम्भेषु खितओ व गामे वा नगरे वा भरणे वा खिते वा वके वा  
घरे वा झागये वा नहे वा कम्भमो वं समए वा जावस्त्रियाए वा जावापलुर वा  
बोडे वा खणे वा सधे वा मुहुरते वा भावोरते वा पक्षे वा मासे वा न(छ)उप वा  
अपने वा संवच्छरे वा अवयरे वा शीहक्षस्त्वंबोए, मावमो ज कोहे वा माले वा  
मावाए वा अमेवा वा भए वा हासे वा फिजे वा दोसे वा क्लवे वा अम्भवाते वा  
पेटुते वा फरपरिवाए वा भरहरै(ए) वा मावामोसे वा मिष्ठादुष्पद्धते वा उत्त  
वं मध्यंतस्त नो पूर्व मवइ ॥ ११८ ॥ से वं भगवं वासावासवं व्यु गिम्हृहेमीरि  
मासे गामे एगरहए नगरे वंचहइए वासीर्वदवसमाप्तिष्ये लमतिजमस्तिक्षेपुक्षते सम-  
शुद्धुक्षते इहलेनपरष्टेगवाप्यदिवदेव वीविवरम्(नि य)जनिरवक्षते सेपारपरयामी  
कम्मसुनिमवावणहाए अम्भुक्षिए एव व व विहर ॥ ११९ ॥ तस्य वं मावंतस्त  
म्भुतरेव नारीर्व अम्भुतरेण वंसमेव अम्भुतरेव अरितेव अम्भुतरेव अम्भुतरेव  
विहारेव अम्भुतरेव वीरिपूर्वं अम्भुतरेव अववेवं अम्भुतरेव अम्भुतरेव  
अम्भुतराए अरीए अम्भुतराए अरीए अम्भुतराए दुष्टीए अम्भुतरेव  
सवंवंवमतव्युत्तरियुतोविद्युत्तिव्याममनेवं अप्यार्वं भावेयावस्तु दुष्टाव्यु-  
संवक्षरावं विहारतां, वेरसमस्त संवक्षरस्त अंतरा वासावस्तु ये से फिहार्व  
दुरे मासे वरस्ये पक्षे वहसाहत्ये तस्त वं वहसाहमुद्दस्त वहसीमनेवं पार्व-  
गामिषीए अम्भाए पोरिसीए अमिनिविहाए फ्यामपत्ताए दम्भएवं विक्षेवं विवर्व  
द्युद्धुरेव वगिक्षामस्त सगरस्त वहिया लक्षुतावियाए नहेए तीरे वेमावस्तु  
पेहस्त सम्भुसामेवे सामावस्त माहावस्त अम्भुतर्वंवि साम्भावस्त वहे ग्वेरो-  
हियाए उह(हि)द्युवनिविजाए भावावावाए आवाकेमावस्त अम्भेवं अपावर्व  
हल्लुतराहिं नाम्भारेव ओगम्भुवापएवं आवंतरियाए वहमावस्त अवते अम्भुतरेव विजा-  
चाए निरुपरये क्लसिये पवित्रुते केम्भमरमावंसने उमुप्तने ॥ १२ ॥ तए वं दम्भे  
मस्त म्भावीरे जरहा वाए जिले केवली सम्भव् सम्भवरिती लोकमुत्तरस्त  
ज्ञेयस्त परिमावं वालह पासह, सम्भवेषु सम्भवीवावं वागवं यह विं वर्ष वर्ष-  
वावं तही मजोमावस्त अम्भुतर्वंवि पवित्रेविं आवीकम्भे रहोम्भं अरहा अरहस्त-  
माणी त त अम्भुतर्वंवि सम्भवस्त अम्भवोगे वहमावावं उम्भवेषु सम्भवीवावं उम्भवावं

जाणमाणे पासमाणे विहरइ ॥ १२१ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं  
 महावीरे अट्ठियगामं नीसाए पठम अतरावास वासावास उवागए १, चर्पं च पिछु-  
 चर्पं च नीसाए तथो अतरावासे वासावास उवागए ४, वेसालिं नगरि वाणियगामं  
 च नीसाए दुवालस अतरावासे वासावास उवागए १६, रायगिह नगरं नालदं च  
 वाहिरिय नीसाए चउद्दस अतरावासे वासावास उवागए ३०, छ मिहिं(लिया)लाए ३६  
 दो भद्रियाए ३८ एग आलभियाए ३९ एग सावत्थीए ४० एगं पणियभूमीए ४१  
 एग पावाए मज्जिमाए हृत्थिवालस्स रण्णो रञ्जुगसभाए अपच्छिमं अतरावास  
 वासावास उवागए ४२ ॥ १२२ ॥ तत्थ णं जे से पावाए मज्जिमाए हृत्थिवालस्स  
 रण्णो रञ्जुगसभाए अपच्छिमं अतरावास वासावास उवागए तस्स णं अतरावासस्स  
 जे से वासाण चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे कत्तियवहुले तस्स ण कत्तियवहुलस्स पण्ण-  
 रसीपक्खेण जा सा चरमा रयणी त रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगाए  
 विइक्ते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणवधणे सिद्धे बुद्धे मुहु अतगडे परिनिव्वुडे  
 सब्बदुक्खप्पहीणे, चंडे नाम से दो(दु)चे सवच्छरे, पीइवद्धणे मासे, नदिवद्धणे पक्खे,  
 अग्निवेसे नाम से दिवसे उवसमिति पवुच्छइ, देवाणंदा नामं सा रयणी निरतिति  
 पवुच्छइ, अच्छे लवे, मुहुत्ते पाणू, थोवे सिद्धे, नागे करणे, सब्बदुसिद्धे मुहुत्ते, साइणा  
 नक्खत्तेण जोगमुवागएन काल्माए विइक्ते जाव सब्बदुक्खप्पहीणे ॥ १२३-१२४ ॥ ज  
 रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगाए जाव सब्बदुक्खप्पहीणे सा ण रयणी वहूहिं  
 देवेहिं देवीहि य ओवयमाणेहि य उप्पयमाणेहि य उजोविया यावि हुत्था ॥ १२५ ॥ ज  
 रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगाए जाव सब्बदुक्खप्पहीणे सा ण रयणी वहूहिं  
 देवे(हि य)हिं देवीहि य ओवयमाणेहिं उप्पयमाणेहि य उप्पिंजलगमाणभूया कहकहग-  
 भूया यावि हुत्था ॥ १२६ ॥ ज रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगाए जाव सब्बदु-  
 क्खप्पहीणे त रयणी च ण जिहुस्स गोयमस्स इदभूझस्स अणगारस्म अतेवासिस्स  
 नायए पिजवधणे बुच्छेअणते अणते अणते जाव केवलवरनाणदसणे ममुप्पन्ने ॥ १२७ ॥  
 ज रयणी च ण समणे भगवं महावीरे कालगाए जाव सब्बदुक्खप्पहीणे त रयणी  
 च ण नव मल्हई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्टारसवि गणरायाणो अमावासाए  
 पा(वा)राभो(ए)य पोसहोववास पट्टविंसु, गए से भावुज्जोए दब्बुज्जोय करिस्सामो  
 ॥ १२८ ॥ ज रयणी च ण समणे भगवं महावीरे जाव सब्बदुक्खप्पहीणे त रयणी च  
 ण खुद्दाए भासरासी नाम महगगहे दोवाससहस्सठिई समणस्स भगवओ महावीरस्स  
 जम्मनक्खत्त सकते ॥ १२९ ॥ जप्पभिइ च ण से खुद्दाए भासरासी महगगहे दो-  
 वाससहस्सठिई ममणस्स भगवओ महावीरस्स जम्मनक्खत्त सकते तप्पभिइ च

अ समर्थार्थ निर्माणार्थ शिरोवीज य भो उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ पूजासदारे पवाल्ल ॥ १३ ॥  
 अया य ऐ वृहाए जाव बन्ममकवातामो विश्वरु भविस्त्वद् तथा एं समर्थार्थ  
 निर्माणार्थ निरपेक्षीज य उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ पूजासदारे भविस्त्वद् ॥ १३१ ॥ एं रवि  
 ए एं समर्थ भवावं महावीरे जाव सम्प्रदायपूर्वीने त रवियि ए एं कुंपू व्युदरी  
 मार्द समुप्पत्ता ए त्रिया बन्ममाया उठमस्तार्थ रिपेक्षीर्थ शिरोवीज य  
 भो बन्महाकार्त्त इच्छामागच्छ, या अठिया बन्ममाया उठमस्तार्थ निर्माणार्थ विर्म-  
 वीज य बन्महाप्रधार्थ इच्छामागच्छ ॥ १३२ ॥ ए पाचिया वृहाहि शिरोवीहि विर्म-  
 वीहि म मताइ पवाल्लावात् ऐ भिमाहु भंते । (१) अवध्यभिहि संज्ञमे दुराराहि एव  
 भविस्त्वद् ॥ १३३ ॥ तेवं क्षेत्रं तेवं समर्थर्थ समर्थस्त मगवभो महावीरस्त  
 उठमृष्टपुक्षदामो उठासम्भवाहसीमो उडोसिया समर्थसैपमा तुल्या ॥ १३४ ॥  
 समर्थस्त मगवभो महावीरस्त उठमृष्टपुक्षदामो उडीये अवियासाहसीमो  
 उडोसिया अवियासैपमा तुल्या ॥ १३५ ॥ समर्थस्त [३] मगवभो महावीरस्त  
 उठासम्भवामुक्षदार्थ समजोवास्तगार्थ एगा उमसाहसी अत्रजटि ए स्त्रस्त  
 उडोसिया समजोवास्तगार्थ सैपमा तुल्या ॥ १३६ ॥ समर्थस्त मगवभो महावीरस्त  
 मुक्षमारेषैपुक्षदार्थ समजोवावियार्थ विजि समसाहसीमो अद्वारसम्भास्त  
 उडोसिया उमजोवावियार्थ सैपमा तुल्या ॥ १३७ ॥ समर्थस्त-भगवभो महा-  
 वीरस्त विदि समा उठासपुष्टीर्थ भविजार्थ विजसंकायार्थ सम्भवयरसविद्यार्थ  
 विजे विदि अवितहि वागरमायार्थ उडोसिया उठासपुष्टीर्थ सैपमा तुल्या ॥ १३८ ॥  
 समर्थस्त एं मगवभो महावीरस्त वेरस समा बोविनावीर्थ अद्वेषेषुपतार्थ उडोसिया  
 ओहिना(वीर्थ)विसपमा तुल्या ॥ १३९ ॥ समर्थस्त एं मगवभो महावीरस्त उठ  
 समा वेवज्ञावीर्थ सुभिजननायर्थ उष्मधरार्थ उडोसिया वेवज्ञाविसपमा तुल्या  
 ॥ १४ ॥ समर्थस्त एं मगवभो महावीरस्त सुत समा वेवज्ञावीर्थ अदेवार्थ वेव-  
 मृपतार्थ उडोसिया वेवज्ञवसपमा तुल्या ॥ १४१ ॥ समर्थस्त एं मगवभो  
 महावीरस्त कंप समा विहृष्टमहीर्थ भवाहेतु वीक्षेषु दोषु ए सुरोरु सहीर्थ  
 पविदियार्थ पवागार्थ गवोगए भावे वाजमायार्थ उडोसिया विहृष्टमहीर्थ समा  
 तुल्या ॥ १४२ ॥ समर्थस्त एं मगवभो महावीरस्त वारारि समा वारीर्थ सरेवम-  
 तुवाद्याए परिसाए वाए अवरावियार्थ उडोसिया वासम्भास्त तुल्या ॥ १४३ ॥  
 समर्थस्त एं मगवभो महावीरस्त सता अवाचिष्ठार्थ विहारि जाव सम्प्रदाय-  
 पूर्वीजार्थ उठास्त अवियासवार्थ विहारि ॥ १४४ ॥ समर्थस्त एं मगवभो महा-

वीरस्स अट्ट सया अणुत्तरोवचाइयाण गडकलाणाण ठिडकङ्गाणाणं आगमेसिभद्धाण  
उष्णोसिया अणुत्तरोवचाइयाण सपया हुत्या ॥ १४५ ॥ समणस्स ण भगवओ महा-  
वीरस्स दुविहा अतगटभूमी हुत्या, तजहा-जुगंत(ग)कडभूमी य परियायतकड-  
भूमी य, जाव तच्चाओ पुरिमजुगाओ जुगतकडभूमी, चउवासपरियाए अतमकासी  
॥ १४६ ॥ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे तीस वासाड अगार-  
वासमज्ज्ञे वसित्ता साइरेगाइ दुवाल्स वासाइ छउमत्यपरियाग पाउणित्ता देसूणाइ  
तीस वासाड केवलिपरियाग पाउणित्ता वायालीस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता  
वावत्त(रिं)रि वासाड सब्बाउय पालडत्ता खीणे वेयणिज्जाउयनामगुत्ते इमीसे ओस-  
पिणीए दूसमसुसमाए समाए वहुविडकताए तिहिं वासेहिं अद्वनवमेहि य मासेहिं  
सेसेहिं पावाए मज्जिमाए हत्थिवालस्स रण्णो रज्जु(य)गसभाए एगे अवीए छट्टेण  
भत्तेण अपाणएण साइणा नक्खत्तेण जोगमुवागएण पच्चूसकालमयसि सपलिय-  
कनिसणे पणपञ्च अज्ज्ञयणाइ कलाणफलविवागाडं पणपञ्च अज्ज्ञयणाइ पावफल-  
विवागाइ छत्तीस च अपुट्टवागरणाइ वागरित्ता पहाण नाम अज्ज्ञयण विभावेमाणे  
विभावेमाणे कालगए विडकते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणवधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते  
अतगडे परिनिव्वुडे सब्बदुक्खप्पहीणे ॥ १४७ ॥ संमणस्स भगवओ महावीरस्स  
जाव सब्बदुक्खप्पहीणस्स नव वाससयाईं विडकंताइ, दसमस्स य वाससयस्स अय  
असीइमे सबच्छरे काले गच्छइ । वायणंतरे पुण अय तेणउए सबच्छरे काले गच्छइ  
इइ दीमइ ॥ १४८ ॥ २४ ॥ इइ सिरिमहावीरचरियं समन्तं ॥

तेण कालेण तेण समएण पासे [४] अरहा पुरिसादाणीए पंचविसाहे हुत्या,  
तजहा-विसाहाहिं चुए चइत्ता गव्बम वक्कते १, विसाहाहिं जाए २, विसाहाहिं मुडे  
भवित्ता अगाराओ अणगारिय पब्बइए ३, विसाहाहिं अणते अणुत्तरे निब्बाघाए  
निरावरणे कसिणे पछिपुणे केवलवरनाणदसणे समुप्पन्ने ४, विसाहाहिं परिनि-  
व्वु(डे)ए ५ ॥ १४९ ॥ तेण कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए जे से  
गिम्हाण पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तवहुले तस्स ण चित्तवहुलस्स चउत्थीपक्खेण  
पाणयाओ कप्पाओ वीससागरोवमद्विइयाओ अणतरं चय चइत्ता इहेव जबुद्धीचे दीचे  
भारहे वासे वाणारसीए नयरीए आससेणस्स रण्णो वामाए देवीए पुब्बरत्तावरत्त-  
कालसमयसि विसाहाहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएण आहारवक्तीए भववक्तीए सरीर-

१ कप्पसुत्तस्स पुत्थयलिहणकालजाणावणद्वा सुत्तमिण देवद्विगणिखमासमणेहिं  
लिहिय, वीरनिव्वाणाओ नवसयभसीइवरिसे पुत्थयारुद्धो सिद्धतो जाओ तथा कप्पो  
वि पुत्थयारुद्धो जाओ ति अट्टो । एवं सब्बजिणतरेसु अवगतब्बं ।

वर्त्ततीए दुर्घिष्ठि पम्भापाए वर्तते ॥ १५ ॥ पासे वं अरहा पुरिचादापीए शिव-  
गोवगए भावि हुत्ता तंजहा-चहसामिहि जावह, चममापी न चावह, तुएमिहि  
जावह, तेव चेव व्यभिलावेव सुविषद्दमयविषागेव सर्व जाव निकां विहै अल्पाविष्ठु  
जाव कुर्विहेव तं गव्वे परिचह ॥ १५१ ॥ तेव जावेव तेव दुमएव वसे  
अरहा पुरिचादापीए चे से हेमतापां तुवे भासे लवे पक्के वोच्चावुसे तस्य वं  
पोस्त्वामुम्भस्त्व दसमीपक्केव नर्व मासार्व व्युपविष्ठाव्य जशुमाव्य रह-  
रियाव्य विहैताव्य उम्भरतावरतमस्तमर्विहि विचाहाव्य नक्ततोव्य ज्येष्ठमुदापर्व  
भावेमाग(आ)रोमां रारव्य फ्यामा ॥ १५२ ॥ वं रववि च वं फ्ये अरहा  
पुरिचादापीए जाए (तं रववि च वं) चा (वं) रववी वहृवे वेवीहि व जाव  
ठण्णिम्भल्लम्भूवा कहम्भाम्भूवा भावि हुत्ता ॥ १५३ ॥ सच तहेव नवर अम्भर्व  
पासामिक्कावेय भाविक्कर्व जाव त हात वं तुमारे वासे भोमेव ॥ १५४ ॥ पासे वं  
अरहा पुरिचादापीए वक्के दम्भावहे व्यिह्वे ज्ञावेभे भाए विजीए दीर्घ  
जावाव्य अगारकासमझे विजाता पुष्टरवि च्छेविष्ठिहि जीवक्षणिष्ठिहि वेवीहि ताव्य  
द्वाव्य जाव एवं वासी-ज्व ज्व फ्या । ज्व ज्व भावा । जाव चवउक्कर्व  
फ्येवहि ॥ १५५-१५६ ॥ पुर्वि वि वं पासस्त्व च अरहो पुरिचादापीवस्त्व  
माजुस्त्वगामो गिहूलभम्भामो अणुहो अव्वेष्ट तं चेव सर्व जाव शार्व शाहताव्य  
परिचाहाता वं से हेमतापां तुवे भासे लवे पक्के वोच्चावुके तस्य वं फ्येष्ठमुम्भस्त्व  
इहारसीरिवदेव पुम्भरतावस्तमर्विहि विचाम्भए चिवि(वि)विचाए दावेम्भमुदावराव्य  
परिचाए तं चेव सर्व नवर जावारहिं जगहि मज्जुम्भज्जेव विम्भम्भ १ ता चेवेव  
आसमपाए उज्जेव चेवेव भस्त्रेव वावरपाववेव तेवेव उज्जापाव्य २ ता अद्वेष्टरपाववस्त्व  
वहे दीर्घ ठाव्येव २ ता सीवामो फ्योम्भद्व ३ ता सममेव भासम्भमाङ्गाव्यक्कर भेष्ट  
द्व ३ ता उम्भेव वंचमुट्टिव्य व्येव्य व्येव्य ३ ता अहुमेव भेष्ट अव्याव्य विचाहाव्य  
नक्ततोव्य ज्येष्ठमुदागप्पे पां वेवच्चामावाव विहै पुरिचादापीए चविं सुद्दै  
भविता अगारामो अप्पाराविं फ्याव्य ॥ १५७ ॥ पासे वं अरहा पुरिचादापीए  
तेवीहि राइरियाव्य विव्य वोच्चावाए विवत्तेहि चे केव उक्कसमा उप्कर्विति तंजहा-  
रिया वा माशुमा वा विरिक्कबोविता वा अनुमेमा वा विक्केमा वा ते उप्पो  
सम्म उद्दाह फ्याव्य विविक्कत्व अहिवाच्चेव ॥ १५८ ॥ ताए वं से पासे भयाव्य अव्यारो  
जाए इरियादमिए जाव अप्पाव्य भावेमानस्त्व तेवीहि रक्षविचाव्य विहैताव्य, चरण-

१ फ्यौसि गम्भत्वे छ्य चवविक्कत्वाए माल्लर् पासे उप्पोदी व्याव्यप्पे विहै  
तेव पासे ति नामै फ्यै ।

सीइ(मे)मस्स राइदि(ए)यस्स अतरा वट्मा(णे)णस्स जे से गिम्हाण पठमे मासे पठमे पक्खे चित्तवहुले तस्स ण चित्तवहुलस्स चउत्थीपक्खेण पुब्वण्हकालसमयसि धाय(ई)इपायवस्स अहे छट्टेण भत्तेण अपाणएण विसाहाहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएण झाणतरियाए वट्माणस्स अणते जाव जाणमाणे पासमाणे विहरइ ॥ १५९ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ट गणा अट्ट गणहरा हुत्था, तजहा-सुमे १ य अजघोसे २ य, वसिड्डे ३ वभयारि ४ य । सोमे ५ सिरिहरे ६ चेव, वीरभदे ७ जसे वि य ८ ॥ १ ॥ १६० ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अजदिन्ह-पामुक्खाओ सोल्स समणसाहस्रीओ उक्कोसिया समणसपया हुत्था ॥ १६१ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स पुफ्फचूलापामुक्खाओ अट्टतीस अजियासाहस्रीओ उक्कोसिया अजियासपया हुत्था ॥ १६२ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स सुब्बयपामुक्खाण समणोवासगाण एगा सयसाहस्री[ओ] चउसाहिं च सहस्रसा उक्को-सिया समणोवास(ग)गाण सपया हुत्था ॥ १६३ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादा-णीयस्स सुनदापामुक्खाण समणोवासियाण तिण्णि सयसाहस्रीओ सत्तावीस च सहस्रसा उक्कोसिया समणोवासियाण सपया हुत्था ॥ १६४ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अङ्घुडसया चउद्दसपुब्बीण अजिणाण जिणसकासाण सब्बक्खर-सन्निवाईण जाव चउद्दसपुब्बीण सपया हुत्था ॥ १६५ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स चउद्दस सया ओहिनाणीण, दस सया केवलनाणीण, ए(इ)क्कार-स सया वेउ(व्विया)ब्बीण, छस्सया रिउमईण, दस समणसया सिद्धा, वीस अजि-यासया सिद्धा, अङ्घु-म-सया विउलमईण, छ(रु)सया वाईण, वारस सया अणुत्तरोव-चाइयाण ॥ १६६ ॥ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स दुविहा अतगडभूमी हुत्था, तजहा-जुगतकडभूमी य परियायंतकडभूमी य, जाव चउत्थाओ पुरिसजु-गाओ जुगतकडभूमी, तिवासपरियाए अतमकासी ॥ १६७ ॥ तेण कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए तीस वासाइ अगारवासमज्ज्वे वसित्ता तेसीइं राइदियाइ छउमत्थपरियाय पाउणिता देमूणाइ सत्तरि वासाइ केवलिपरियायं पाउणिता पडिपुञ्चाइ सत्तरि वासाइ सामण्णपरियायं पाउणिता एक वाससय सब्बाउय पालइत्ता खीणे वेयणिजाउयनामगुत्ते इमीसे ओसपिणीए दूसमसुसमाए समाए वहु-विइक्कताए जे से वासाण पठमे मासे दुधे पक्खे सावणसुद्धे तस्स ण सावणसुद्धस्स अट्टमीपक्खेण उपिंष सम्मेयसेलसिहरंसि अप्पचउत्तीसइमे मासिएण भत्तेण अपाणएण विसाहाहिं नक्खत्तेण जोगमुवागएण पुब्व(रत्तावरत्त)ण्हकालसमयसि वगधारियपाणी काल्गाए विइक्कते जाव सब्बदुक्खप्पहीणे ॥ १६८ ॥ पासस्स ण अरहओ जाव

सम्मुक्षपापहीनस्य बुद्धावस्तु वासवत्तार्ह विद्युतार्ह, तरसमस्य (अ) च अर्थ लीक्षमें  
संख्यार्थे वक्त्वे गच्छ ॥ १५९ ॥ २३ ॥ एह सिरिपासजिणवरिये समर्थे ॥

तेजं कालेन तेजं समएन अरदा अरिदुनेमी पंक्तिरो दुत्ता ठंबहा-निशाचि  
तुए चहता गम्भे वर्द्धते ठहेव उक्तेवो चाव वित्तार्ह परिक्षित्वुए ॥ १७ ॥ तेजं  
क्षेत्रेन तेजं समएन अरदा अरिदुनेमी च से वासार्थ चठत्वे मासे सत्तमे फक्त्वे  
कठिनवहुके तस्य चं कठिनवहुकस्य वारसीक्षेत्रेन अपराजिताक्षो नद्याविमाणाक्षे  
वारीसे सापरेवमद्विश्याक्षे अन्तर्वर्ते चं चहता इहेव नेत्रुदीपे तीवे मार्हे चासे  
शोरिक्षुरे नवरे उम्माविम्मस्य रम्भो मारिकाए चिकाए रेणीए पुञ्चरातापरयम्भ  
समवेति जाव वित्तार्ह गम्भताए वर्द्धते सम्बं त(मे)इव सुविष्वरेवयद्विवर्द्धतावहं  
इत्य भावियर्थ ॥ १७१ ॥ तेजं क्षेत्रेन तेजं समएन अरदा अरिदुनेमी चे से वासार्थ  
फक्त्वे मासे दुवे फक्त्वे सापन्नुहो तस्य चं सापन्नुहुस्य फक्त्वमीक्षेत्रेन भक्त्व  
मासार्थे बहुपदिपुञ्चार्थ चाव वित्तार्ह नक्षत्रेन व्योगमुवायएर्थ आरोम्मारोम्मे वारदे  
प्याया । चमर्ल सुमुक्षिभाविताक्षेत्रेन वेदवर्त्वं चाव तं होऽहं चं कुमारे अरिदुनेमी  
मामेवं । अरदा अरिदुनेमी इक्षे चाव वित्तिव वासवस्यार्ह दुमारे अगारदावम्भे  
वित्तार्थे पुञ्चरवि स्फोटित्वहि वीक्षणियहि रेणीहि तं चेव सम्बं भावियर्थ चाव  
वार्ण वाइनार्ह परिमाहता ॥ १७२ ॥ त खे से वासार्थ क्षमे मासे दुवे फक्त्वे सापन्न  
हुहे तस्य चं धावन्नुहुस्य छहुक्षेत्रेन पुञ्चरविवक्षमवेति उत्तराहुए वित्ति(ही)-  
चाए सरेवम्भुमासुराए परिमाए अभुगम्भमाक्षमग्ने चाव वारदीए नवरीए मम्भे  
मज्जेन्न निगमक्षेत्र ३ ता भेष्येन रेष्यए रजामे तनेव उवायक्षेत्र ३ ता अलेप्य  
वरपायक्षम्भ अहे शीवे ठाकेइ ३ ता शीवाळो व्योरहुइ ३ ता सयमेव आमरवमार्हते-  
क्षर ओमुद्य ३ ता सयमेव पंक्तुद्विये शेव वरेइ ३ ता छहुवे भतेन्न अरान्तर्वे  
वित्ता(ही)नक्षत्रोर्थ शोगमुवाणएन एर्ग रेवहुमावाय एगेन पुरिसवहस्तेन उदि-  
मुदि भविता अगाराओ अगगारिये फम्भए ३ १७३ ॥ अरदा चे अरिदुनेमी चउ  
प्यते रद्धिवार्ह निष्व वेसुक्षुराए विवरेहे तं चेव सम्बं चाव फलराहग्नस्य एव्यैकस्य  
अतरा वाम्मायस्य चे से वासार्थ तप्ते मासे वृच्य वक्त्वे आसोमवहुहे तत्प चे  
आस्योमवहुहुस्य फलरसीपस्तेन विवमस्य परिष्ठम्भ म्भ(ए)गे उविक्षासेनविहे वैष  
सपायवस्य अहे अद्युमे(छड्डे)र्थ भतेन्न अगायएन वित्तानम्भतेन अलेप्यमुवायएर्थ

१ अलर्तंति पद्मार्थे माल्ल-दिव्यरयममामी-बहुपारा तुम्हिये दिष्टा तमोऽरि-  
दुनेमी अगारसा अमेनमपरिहारकुलभावो अरिदुनेमिति दिष्टरो अर्थगत्वाविष्यि ।  
२ अपरिजीयतम्भमो ।

— गस्स एगे सागरोवमकोडिसहस्रे विइक्ते, सेस  
अद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्रे हिं ऊणिया  
। पउमप्पहस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स दस  
— तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्रे हिं  
— २०० ॥ ६ ॥ सुमइस्स पां अरहओ जाव पहीणस्स  
विइक्ते, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमा-  
बाड्य ॥ २०१ ॥ ५ ॥ अभिनदणस्स ण अरहओ  
नकोडिसयसहस्सा विइक्ता, सेसं जहा सीयलस्स,  
नवाससहस्रे हिं इच्चाइयं ॥ २०२ ॥ ४ ॥ सभवस्स  
तं सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्ता, सेस जहा  
हियवायालीसवाससहस्रे हिं इच्चाइय ॥ २०३ ॥ ३ ॥  
पहीणस्स पन्नास सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्ता,  
त्र इम-तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्रे हिं  
इ जिणंतराइं समत्ताइ ॥

उसमे ण अरहा कोसलिए चउउत्तरासाढे अभीइपचमे  
हिं चुए चइत्ता गब्म वक्ते जाव अभीइणा परिनिव्वुए  
ण समएण उसमे ण अरहा कोसलिए जे से गिम्हाण  
आसाढबहुले तस्स ण आसाढबहुलस्स चउत्थीपक्खेण  
ज्ञाओ तित्तीस सागरोवमट्ठिइयाओ अणतरं चय चइत्ता  
रहे वासे इक्खागभूमीए नाभिकुलगरस्स मरुदे(वा)वीए  
तलसमयसि आहारवक्तीए जाव गब्मत्ताए वक्ते ॥ २०६ ॥

लेए तिचाणोवगए यावि हुत्या, तजहा-चइस्साभित्ति जाणइ  
हा-गय-वसह० गाहा । सब्व तहेव, नवरं पठम उसमं  
सेसाओ गय । नाभिकुलगरस्स सा(ह)हेह, सुविणपाढगा  
सयमेव वागरेड ॥ २०७ ॥ तेण काळेणं तेण समएण उसमे  
जे से गिम्हाण पठमे मासे पठमे पक्खे चित्तवहुले तस्स ण  
पक्खेण नवण्ह मासाणं वहुपटिपुण्णाण अद्धुमाण राडदियाण  
त्खत्तेण जोगमुवागएण आरोगारोगं दारय पयाया ॥ २०८ ॥  
देवा देवीओ य वसुहारवास वासिंसु, सेस तहेव चारगसोहण-  
उसुक्षमाइयट्ठिद्वडियज्यवज सब्वं भाणियब्व ॥ २०९ ॥

यस्तु वे अराहतो जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य इत्यरत्नं यात्यस्यस्यात्सारै चतुरहीनं  
च यात्यस्यात्सारै नव यात्यस्यादेव निश्चयात्रां इत्यमस्तु य यात्यस्यस्य अर्थं यात्यप्ये  
संकल्पे अथेऽप्यत्र ॥ १०६ ॥ ३ ॥ महित्यस्य च अराहतो जात सम्बुद्धपर्या-  
प्तस्य अप्यद्विं यात्यस्यस्यात्सारै चतुराहीनं च यात्यस्यात्सारै नव यात्यस्यादेव  
निश्चयात्रां इत्यमस्तु य यात्यस्यस्य अर्थं यात्यप्ये संकल्पे अथेऽप्यत्र ॥ १०७ ॥ ५ ॥ अरत्यस्य अराहतो जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य एवो यात्यनेति  
यात्यस्ते निश्चयात्रे संकल्पे यात्य महित्यस्य य च एवं-पर्याप्तस्यात्सारै चतुरहीनो (१)  
(यात्य)यात्यस्यात्सारै (२) निश्चयात्रात्सारै (३) तन्मिम समए यात्यात्सारै निश्चयात्रो दण्डे परे य च  
यात्यस्यात्सारै (४) निश्चयात्रात्सारै (५) इत्यमस्तु य यात्यस्यस्य अर्थं यात्यप्ये संकल्पे अथेऽप्यत्र  
गत्यत्र । एवं लभ्यातो जात सेवस्ते तत्त्वं यद्युपर्य ॥ १०८ ॥ ६ ॥ द्वित्यस्तु वे  
अराहतो जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य एवो चतुरमागायनिष्ठेवमे निश्चयात्रे पर्याप्तस्य च  
यात्यस्यात्सारै संकल्पे यात्य महित्यस्य ॥ १०९ ॥ ७ ॥ संतिःस्य वे अराहतो जात  
सम्बुद्धपर्याप्तस्य एवो चतुरमागायनिष्ठेवमे निश्चयात्रे पर्याप्तस्य च संकल्पे यात्य  
महित्यस्य ॥ ११ ॥ ८ ॥ ११ ॥ यमस्तु वे अराहतो जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य निश्चय-  
साप्तयोरेकमात्रं पर्याप्तस्य च संकल्पे यात्य महित्यस्य ॥ १११ ॥ ९ ॥ १५ ॥ अवत्यस्य वे  
अराहत्ये जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य सत्त्वं सागरोरेकमात्रं पर्याप्तस्य च संकल्पे यात्य  
महित्यस्य ॥ ११२ ॥ १० ॥ निमित्यस्य य अराहत्ये जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य निश्चय-  
षोऽस्तु सागरोरेकमात्रं निश्चयात्रात्सारै पर्याप्तस्य च संकल्पे यात्य महित्यस्य ॥ ११३ ॥ ११ ॥  
यात्यपुञ्जस्य अराहत्ये जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य यात्यात्सारै सागरोरेकमात्रं निश्चय-  
कात्रात्सारै पर्याप्तस्य च संकल्पे यात्य महित्यस्य ॥ ११४ ॥ १२ ॥ निजंतिःस्य वे अराहत्ये  
जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य एवो सागरोरेकमात्रं निश्चयात्रे पर्याप्तस्य च संकल्पे यात्य  
महित्यस्य ॥ ११५ ॥ १३ ॥ सीमलक्ष्म्य वे अराहत्ये जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य एवा  
सागरोरेकमात्रै निश्चयात्रात्सारै यात्यात्सारै सागरोरेकमात्रै निश्चयात्रात्सारै  
एवमि समए यात्यात्सारै निश्चयात्रो दण्डो (यि य व्य) परे नव यात्यस्यात्र निश्चयात्रात्सारै  
इत्यमस्तु य यात्यस्यस्य अर्थं यात्यात्सारै संकल्पे अथेऽप्यत्र ॥ ११६ ॥ १ ॥  
द्वित्यित्यस्य वे अराहत्ये पुण्ड्रात्तरस्य जात सम्बुद्धपर्याप्तस्य इत्यसागरोरेकमात्रै निश्चयात्रात्सारै  
संकल्पे यात्य यात्यस्य एवो सागरोरेकमात्रै निश्चयात्रे संकल्पे यात्य यात्यस्य एवो  
यात्यपुञ्जस्य एवो सागरोरेकमात्रै निश्चयात्रात्सारै यात्यात्सारै निश्चयात्रात्सारै  
यात्यात्सारै निश्चयात्रात्सारै यात्यात्सारै निश्चयात्रात्सारै यात्यात्सारै निश्चयात्रात्सारै

है तो उसके मन में समाधि प्राप्त होती है और उस समाधि से आत्म-विशुद्धि होती है। आत्म-विशुद्धि से दोष दूर होते हैं और दोष दूर होने से क्रमशः मुक्ति प्राप्त होती है।

प्र०—क्या हम भी देव वन सकते हैं ?

उ०—अबश्य । जैन-धर्म नर को नारायण वना देता है ।

प्र०—हम किस प्रकार देव वन सकते हैं ?

उ०—अब तक जो अनंत देव हो चुके हैं वे सब किसी न किसी समय हमारे समान थे । उन्होंने धर्म की आराधना की । पहले सम्यक्त्व प्राप्त किया, फिर चारित्र पाला । धीरे-धीरे कठोर साधना करते-करते उन्हें पूर्ण निर्मलता प्राप्त हो गई । इसी प्रकार हम भी पूर्ण निर्मलता पाकर देव वन सकते हैं ।

### गुरु-

प्रश्न—गुरु किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो महापुरुष पांच महाब्रतों का समितियों और गुप्तियों का नियमित रूप से पालन करते हैं उन्हें गुरु कहते हैं ।

प्र०—पांच महाब्रत कौन-कौन हैं ?

उ०—( १ ) अहिंसा ( २ ) सत्य ( ३ ) अंचौर्य ( ४ ) ब्रह्मचर्य ( ५ ) अपरिग्रह ।

प्र०—इन्हें महाब्रत क्यों कहते हैं ?

उ०—इन्हें महाब्रत कहने के दो कारण हैं:—(१) गृहस्थ श्रावक इन ब्रतों को स्थूल रूप से—एक देश से पालता है और

सुपासस्त्स ण अरहओ जाव पहीणस्स एगे सागरोवमकोडिसहस्से विइक्कते, सेस जहा सीयलस्स, तं च इम-तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्से हिं ऊणिया (विइक्कता) इच्छाइ ॥ १९९ ॥ ७ ॥ पउमप्पहस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स दस सागरोवमकोडिसहस्सा विइक्कता, तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्से हिं इच्छाइय, सेस जहा सीयलस्स ॥ २०० ॥ ६ ॥ चुमइस्स णं अरहओ जाव पहीणस्स एगे सागरोवमकोडिसयसहस्से विइक्कते, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्से हिं इच्छाइय ॥ २०१ ॥ ५ ॥ अभिनदणस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स दस सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्से हिं इच्छाइय ॥ २०२ ॥ ४ ॥ समवस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स वीस सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा सीयलस्स, तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्से हिं इच्छाइय ॥ २०३ ॥ ३ ॥ अजियस्स ण अरहओ जाव पहीणस्स पचास सागरोवमकोडिसयसहस्सा विइक्कता, सेस जहा सीयलस्स, तं च इम-तिवासअद्धनवमासाहियवायालीसवाससहस्से हिं इच्छाइय ॥ २०४ ॥ २ ॥ इह जिणंतराइं समत्ताइं ॥

तेण कालेण तेण समएण उसमे णं अरहा कोसलिए चउत्तरासाढे अभीडपचमे हुत्था, तजहा-उत्तरासाढाहिं चुए चइत्ता गब्ब वक्कते जाव अभीडणा परिनिव्वुए ॥ २०५ ॥ तेण कालेण तेण समएण उसमे ण अरहा कोसलिए जे से गिम्हाण चउत्थे मासे सत्तमे पक्खे आसाढवहुले तस्स ण आसाढवहुलस्स चउत्थीपक्खेण सब्बद्विसिद्धाओ भ्रान्तिमाणाओ तित्तीस सागरोवमट्ठियाओ अणतर चय चडत्ता इहेव जवुहीवे दीवे भारहे वासे इक्खागभूमीए नाभिकुलगरस्म मरुदे(वा)वीए भारियाए पुब्वरत्तावरत्तकालसमयसि आहारवक्कतीए जाव गब्बत्ताए वक्कते ॥ २०६ ॥ उसमे ण अरहा कोसलिए तिज्ञाणोवगए यावि हुत्था, तजहा-चडस्सामित्ति जाणइ जाव सुमिषे पासइ, तजहा-गय-वसह० गाहा । सब्ब तहेव, नवर पठम उसम भुहेण अडत पासाइ, सेसाओ गय । नाभिकुलगरस्स सा(ह)हैइ, चुविणपाडगा नत्यि, नाभिकुलगरो मयमेव वागरेइ ॥ २०७ ॥ तेण कालेण तेण समएण उसमे ण अरहा कोसलिए जे से गिम्हाण पठमे मासे पठमे पक्खे चित्तवहुले तस्स ण चित्तवहुलस्स अट्टमीपक्खेण नवण्ह मासाण घुपडिपुण्णाण अद्धमाण राडियाण जाव आमाढाहिं नकरत्तेण जोगमुवागएण आरोग्यारोग्य दारय पयाया ॥ २०८ ॥ त चेव सब्बं जाव देवा देवीओ य वसुहारवास वामिंसु, सेस तहेव चारगसोहण-माणुम्माणव(ङ)हृणउस्तुक्माडयट्ठिवडियज्यूवज्ज सब्ब भाणियव्व ॥ २०९ ॥

उद्यमे गी अरहा कोसिए जात्यगुरुत्वं तस्य चं पंच भासमिका एवमाद्विन्दी  
तेवाह—उसमेह वा पठमरात्राह वा फडमिकवातरेह वा फडमजिष्ठेह वा फडम-  
तिरु(वंक)वयरे ह वा ॥ २१ ॥ उसमेह चं अरहा कोसिए वक्ते इन्द्रजल्लभे  
परिस्वेष्टीने भावेण विजीए वीर्ये पुष्टस्यसाहस्राह त्रिमारवासमज्ञे वसह वित्ता  
तेवहि पुष्टस्यसाहस्राह रज्जवासमज्ञे वसह, तेवहि च पुष्टस्यसाहस्राह रज्जवा-  
समज्ञे वसमाणे ऐहाइवाल्ये गविवप्त्यायामो उत्तरश्वरमवरायामो वासतरि  
क्षम्यथो चरुवहि गद्विम्बगुणे सिप्पस्वनं च क्षमार्थं शिखि वि फ्वाद्विवाए उवरिसह  
उवरितिता पुष्टस्य रज्जवाए लमिसिन्ह अमिसितिता पुरजवि वीर्येतिएहि जीम्ब-  
प्तिरहि रेवेहि ताहि इद्वाहि चाव क्षम्बहि देवं तं चव उच्चं भाविम्बन्व चव दावं  
चाहार्थं परिमाहता वे से भिम्बार्थं पहमे मार्दे पहमे वक्ते वित्तवहुः तस्य चं  
वित्तवहुः अद्विमीपक्षेन विसस्त्वं परिक्षेम भागे मुख्यस्त्राए विवियाए उवरेम-  
कुवास्त्राए परिसाए उग्निप्रम्माणमाणमाणे चाव विधीर्यं राज्यावि मज्जेमज्जेन्व  
निमग्नज्जहि निमाद्विता वेवेष विद्वत्वक्षे उजासे जेवेव अस्तोगवरपाम्बे टवेव  
उवागच्छहि उवापवित्ता अस्तोगवरपाम्बस्तु अहे चाव उवमेव चरुवहिम्बे चेवे  
करेहि चरिता छट्टेन्व भत्तेव अपापर्वं आधाहाहि भक्त्तहोर्वं आम्बुद्वाग्देहि उम्बार्थं  
मोगान्व एव्यार्थं वित्तिवार्थं चरुहि पुरिसहस्रेहि रायि एगं विवद्वास्त्राव मुद्दे  
मविता अगारायो वक्तवारिर्यं पञ्चए ॥ २११ ॥ उसमेह च अरहा कोसिए एव  
वाससाहस्रं निवं वीस्त्रुप्ताए विकारेहे चाव अप्यार्थं भावेमावस्तु (हहे) एवं वासस-  
हस्तं विद्वत्वं तथो नं वे से देवंतार्थं चरुत्वे मार्दे तात्मे वक्ते इम्बुद्वाहुः तस्य  
चं फल्मुक्षुम्बस्तु स्त्रहि लासीपक्षेम पुष्टज्ञकाम्बलमर्यादि पुरिमतास्त्वं नगरस्त्वं  
विविया सुगदमुहसि उजानेति भमोद्वरप्रम्भस्तु अहे अद्विमेव भत्तेव अपापर्वं  
आधाहाहि भक्त्तहोर्वं जोम्बुद्वाग्देहि ज्ञार्थतरिकाए वामावस्त्वं अव्यति चाव जार्थ-  
माणे प्राप्तमाणे विवरहि ॥ २१२ ॥ उसमस्त्वं चं अरहो कोसिभिस्त चरुराहीरै  
गणा चरुराहीरै गणहरा त्रुत्वा ॥ २१३ ॥ उसमस्त्वं चं अरहो क्षेत्रिविद्वत्वं  
उसमसेपपामुक्त्वा(व्ये)वे चरुराहीरहि वाहोतिवा उम्बसेपवा  
त्रुत्वा ॥ २१४ ॥ उसमस्त्वं चं अरहो कोसिभिस्त वर्मीमुखरीगमुखलालं अविं-  
मार्थं वित्तिव्य सवत्ताहस्तीभो उहोतिवा अविवासप्या त्रुत्वा ॥ २१५ ॥ उस-  
मस्त्वं चं विवियपामुक्त्यार्थं उम्बो रामगाले वित्तिव्य राज्याहस्तीभो वंच उहस्त्वा  
उहोतिवा उम्बो वास(ग)गाले उम्ब्या त्रुत्वा ॥ २१६ ॥ उसमस्त्वं नं प्रभराप्य-  
मुक्त्यार्थं उम्बो वामिवार्थं वंच उवयाहस्तीभो चरुराहीरै च नहरणा उहोतिवा राम

णोवासियाण सपया हुत्था ॥ २१७ ॥ उसभस्स ण चत्तारि सहस्रा सत्त सया  
पणासा चउद्दसपुच्चीण अजिणाण जिणसकासाणं जाव उक्कोसिया चउद्दसपुच्चि-  
सपया हुत्था ॥ २१८ ॥ उसभस्स ण नव सहस्रा ओहिनाणीण० उक्कोसिया ओहि-  
नाणिसपया हुत्था ॥ २१९ ॥ उसभस्स ण वीससहस्रा केवलनाणीण० उक्कोसिया  
केवलनाणिसपया हुत्था ॥ २२० ॥ उसभस्स ण वीससहस्रा छच्च सया वेउ-  
च्चियाण० उक्कोसिया वेउच्चिय(समण)सपया हुत्था ॥ २२१ ॥ उसभस्स ण वारस  
सहस्रा छच्च सया पणासा विउलमईण अद्वाइज्जेसु दी(वेसु दोसु य)वसमुद्देसु सच्चीण  
पच्चिदियाण पज्जतगाण मणोगए भावे जाणमाणाण ( पासमाणाण ) विउलमइसपया  
हुत्था ॥ २२२ ॥ उसभस्स ण वारस सहस्रा छच्च सया पणासा वाईण० उक्को-  
सिया वाइसपया हुत्था ॥ २२३ ॥ उसभस्स ण वीस अतेवासिसहस्रा सिद्धा,  
चत्तालीस अजिया(स)साहस(सा)सीओ सिद्धाओ ॥ २२४ ॥ उसभस्स ण वावीस-  
महस्मा नव सया अणुत्तरोववाइयाण गइकलाणाण जाव भद्राण उक्कोसिया अणुत्तरोव-  
चाइयसपया हुत्था ॥ २२५ ॥ उसभस्स ण अरहओ कोसलियस्स दुविहा अतगडभूमी  
हुत्था, तजहा-जुगतगडभूमी य परियायतगडभूमी य, जाव असखिज्जाओ पुरिसज्जु-  
गाओ जुगतगडभूमी, अतोमुहुत्तपरियाए अतमकासी ॥ २२६ ॥ तेणं कालेण तेण  
समएण उसभेण अरहा कोसलिए वीस पुच्चसयसहस्राइ कुमारवासमज्ज्ञे वसित्ता(णं)  
तेवढु पुच्चसयसहस्राइ रज्जवासमज्ज्ञे वसित्ता तेसीइ पुच्चसयसहस्राइ अगारवास-  
मज्ज्ञे वसित्ता एग वाससहस्र स्तुत्यपरिया(य)ग पाउणित्ता एग पुच्चसयसहस्र  
वाससहस्त्रूण केवलिपरियाग पाउणित्ता पढि(स)पुण्ण पुच्चसयसहस्र सामणपरियाग  
पाउणित्ता चउरासीइ पुच्चसयसहस्राइ सब्बाउय पालइत्ता खीणे वेयणिज्जाउयनामगुत्ते  
इमीसे ओसप्पिणीए श्वसमदूसमाए समाए वहुविडक्ताए तिहिं वासेहिं अद्दनवमेहि य  
मासेहिं सेसेहिं जे से हैमताण तच्चे मासे पच्चमे पक्खे माहवहुले तस्स ण माहवहुलस्स  
तेरसीपक्खेण उप्पि अद्वावयसेलसिहरंसि दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्दिं चउ(चो)इ-  
समेण भत्तेण अपाणएण अभीइणा नक्खत्तेण जोगमुवागएण पुच्चण्हकालसमयसि सप-  
लियकनिसणे कालगए जाव सब्बदुक्खप्पहीणे ॥ २२७ ॥ उसभस्स ण अरहओ कोस-  
लियस्म कालगायस्स जाव सब्बदुक्खप्पहीणस्स तिणिण वासा अद्दनवमा य मासा विइ-  
क्ता, तओ वि परं एगा सागरोवमकोडाकोडी तिवासअद्दनवमासाहियवायालीसाए  
वाससहस्सेहिं ऊणिया विइक्ता, एयसि समए समणे भगव महावीरे परिनिव्वु(डे)ए,  
तओ वि पर नववासमया विइक्ता, दसमस्स य वामसयस्स अय असीइमे सवच्छरे  
काले गच्छ ॥ २२८ ॥ १ ॥ इइ सिरिउसहजिणचरियं समत्तं ॥

तेष्य अक्षेयं तेजं समर्पय समर्पस्तु मगवानो महावीरस्य नव गणा इश्वारस  
गणहरा द्रुत्वा ॥ १ ॥ से केषट्टेजं भेतु । एव कुचल-समर्पस्तु मगवानो महावीरस्य  
नव गणा इश्वारस पगहरा द्रुत्वा ॥ २ ॥ समर्पस्तु मगवानो महावीरस्य चिद्रो रंगम्  
अणमारे गोदम्(स) गुरुतेष्यं पूज्यं समर्पयत्वं बाष्टु, मञ्जिमाए अग्निगृही व्यथारे  
योद्यमगुरुतेष्यं पूज्यं समर्पयत्वं बाष्टु, कषीमसे अनगार वास्तम्भौ नामेष्यं योद्यमगुरुतेष्यं  
पूज्यं समर्पयत्वं बाष्टु, येरे अज्ञनिक्षेत्रो भारताए गुरुतेष्यं पूज्यं समर्पयत्वं बाष्टु, येरे  
अप्यस्तुहम्ने अग्निवेसाव(नि)गुरुतेष्यं पूज्यं समर्पयत्वं बाष्टु, येरे भैरिव्युते वास्ति-  
(द्वि) द्रुत्वात्तेष्यं अनुद्वावं समर्पयत्वं बाष्टु, येरे नोरिक्षुते वास्त(वे)गुरुतेष्यं अनुद्वावं  
समर्पयत्वं बाष्टु, येरे अप्यपिण गोव(नि)मधुगुरुतेष्यं-येरे अप्यमाया इरिवाव(वे)-  
गुरुतेष्यं प॒ए दुष्मिति येरा तिथिं तिथिं समर्पयत्वं बाष्टुति येरे अज्ञमे(इ)क्षे-  
येरे अज्ञपमासे प॒ए दुष्मिति येरा कोकिला-गुरुतेष्यं तिथिं तिथिं समर्पयत्वं  
बाष्टुति । से तेषट्टेजं अज्ञो । एव कुचल-समर्पस्तु मगवानो महावीरस्य नव गणा  
इश्वारस गणहरा द्रुत्वा ॥ ३ ॥ सम्बे वि वि वि एव समर्पस्तु मगवानो महावीरस्य  
ए(इ)इश्वारस वि गणहरा गुरुतेष्यं चट(१)वृष्टुविक्षो समर्पयत्वं विहम्पात्वात्वा  
रात्यपिहे नपरे मातिएर्ण भरुतेष्यं अपाणएर्ण क्षम्भाया जाव सम्भुक्तुभ्यमीया । येरे  
इष्टमूर्ति येरे अप्यस्तुहम्ने य सिद्धिगाए महावीरे क्षम्भ दुष्मिति येरा परिनिष्ठुता । व॒  
इमे अज्ञचाए समर्पया विर्माया विहरुति एव व॒ ए सम्बे अज्ञस्तुहम्नस्तु अप्यगारस्य  
आविक्षा अस्तेसा गणहरा निरव्वा दुष्मिता ॥ ४ ॥ सम्बे मगवानो महावीरे  
कास्तुहुतेष्यं । समर्पस्तु व॒ मगवानो महावीरस्य अप्यस्तुहम्नस्तु अज्ञस्तुहम्ने येरे भरु-  
वासी अग्निवेसावग्नयुते । येरस्तु व॒ अज्ञस्तुहम्नस्तु अग्निवेसावग्नयुतस्य अज्ञ-  
ज्ञाप्यमावे येरे अरेवासी क्षाववस्तुहुते । येरस्तु व॒ अज्ञस्तुहम्नस्तु क्षाववस्तुहुते  
युतस्य अज्ञपिक्षमवे येरे अरेवासी मध्यगपिया वक्ष्यस्तुहुते । येरस्तु व॒ अज्ञपिक्ष-  
मवस्तु मध्यपपित्रयो वक्ष्यस्तुहम्नस्तु अज्ञवस्तुहम्ने येरे अरेवासी तुष्मिवाववस्तुहुते  
॥ ५ ॥ इह गणहरयाइयेयायली समर्पया ॥

तेजं काषेण तेजं समर्पय समर्पय मगवानो महावीरे कामार्पय समीक्षराए मार्चे विद्वंतं  
वासावास फङ्गेसवेद ॥ १ ॥ से केषट्टेजं भेतु । एव कुचल-सम्बे मगवानो महावीरे  
वासावं समीक्षराए मार्चे विद्वंते वासावास फङ्गेसवेद ॥ ज्ञावे व॒ पाएर्ण अगारीर्व  
रक्षा क्ष्या' अस्य पुष्टि क्षेय ।

<sup>१</sup> अम्हाभम्भपाइनावरिसे पृष्ठिभे च व पाट्टे लम्भम् यो 'अज्ञमरवाहुमा इमस्य  
रक्षा क्ष्या' अस्य पुष्टि क्षेय ।

अगाराड कडियाइ उक्ष(वि)पियाइ छन्नाइ लित्ताइ गुत्ताड घट्टाड मट्टाइं सपध्रुमियाइं  
खाथोदगाड खायनिद्धमणाइ अप्पणो अद्वाए कडाइ परिभुत्ताइ परिणामियाइ भवति,  
से तेणद्वेण एव बुच्चइ-समणे भगव महावीरे वासाण सवीसइराए 'मासे विइक्कते  
वासावास पज्जोसवेड ॥ २ ॥ जहा णं समणे भगव महावीरे वासाण सवीसइराए मासे  
विइक्कते वासावास पज्जोसवेइ तहा ण गणहरावि वासाण सवीसइराए मासे विइक्कते  
वासावासं पज्जोसविंति ॥ ३ ॥ जहा ण गणहरा वासाण सवीसइराए जाव पज्जोसविंति  
तहा ण गणहरसीसावि वासाण जाव पज्जोसविंति ॥ ४ ॥ जहा णं गणहरसीसा  
वासाण जाव पज्जोसविंति तहा ण थेरावि वा(सावास)साणं जाव पज्जोसविंति ॥ ५ ॥  
जहा ण थेरा वासाणं जाव पज्जोसविंति तहा ण जे इमे अज्जत्ताए समणा निगथा  
विहरति ते (एए) वि य ण वासाण जाव पज्जोस(वे)विंति ॥ ६ ॥ जहा ण जे इमे अज्ज-  
त्ताए समणा निगथा वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कते वासावास पज्जोसविंति तहा  
ण अम्हपि आयरिया उवज्ज्ञाया वासाण जाव पज्जोसविंति ॥ ७ ॥ जहा णं अम्ह(पि)  
आयरिया उवज्ज्ञाया वासाण जाव पज्जोसविंति तहा णं अम्हेवि वासाण सवीसइ-  
राए मासे विइक्कते वासावास पज्जोसवेमो, अतरा वि य से कप्पद[पज्जोसवित्तए],  
नो से कप्पड त रथार्णि उचाइणावित्तए ॥ ८ ॥ वासावास पज्जोसवियाण कप्पइ  
निगथाण वा निगथीण वा सब्बओ समता सक्कोस जोयण उगगह ओगिण्हित्ताण  
चिट्ठिउ अहालदमवि उगगहे ॥ ९ ॥ वासावास पज्जोसवियाण कप्पइ निगथाण वा  
निगथीण वा सब्बओ समता सक्कोस जोयण भिक्खायरियाए गतु पडिनियत्तए  
॥ १० ॥ जत्थ नई निच्छोयगा निच्छसदणा, नो से कप्पइ सब्बओ समता सक्कोस  
जोयण भिक्खायरियाए गतु पडिनियत्तए ॥ ११ ॥ एरावई कुणालाए, जत्थ चक्रिया  
सिया एग पाय जले किच्चा एगं पाय थले किच्चा, एव चक्रिया एवं ण कप्पइ सब्बओ  
समता सक्कोस जोयण गतु पडिनियत्तए ॥ १२ ॥ एव च नो चक्रिया, एव से नो  
कप्पइ सब्बओ समता सक्कोस जोयण गतु पडिनियत्तए ॥ १३ ॥ वासावास पज्जो-  
सवियाण अत्थेगइयाण एव बुत्तपुञ्च भवइ-'दावे भते !' एव से कप्पइ दावित्तए,  
नो से कप्पइ पडिगाहित्तए ॥ १४ ॥ वासावास पज्जोसवियाण अत्थेगइयाण एव बुत्त-  
पुञ्च भवइ-'पडिगाहे(हि) भते !' एवं से कप्पइ पडिगाहित्तए, नो से कप्पइ दावित्तए  
॥ १५ ॥ वासावास पज्जोसवियाण अत्थेगइयाण एव बुत्तपुञ्च भवइ-'दावे भते !  
पडिगाहे भते !' एव से कप्पइ दावित्तएवि पडिगाहित्तएवि ॥ १६ ॥ वासावास पज्जोस-  
वियाण नो कप्पइ निगथाण वा निगथीण वा हट्टाण तुट्टाण आ(रु)रोगगाण वलिय-  
सरीराण इमाओ विगईओ अभिक्खण अभिक्खण आहारित्तए, तजहा-खीर, दहिं,

यत्थि तिर्तु गुह्ये ॥ १७ ॥ वासावार्ता पञ्चोषत्विकाण अत्येगद्वार्ता एवं तुष्टुप्ते  
मवद्- अद्वे भंते । मिळालस्म ॥ से य वरजा- अद्वे से य तुष्टिक्षये तेजः-  
एवं अद्वे । से (य) वरजा- एवद्वार्ता अद्वो मिळालस्म ॥ वे से फ्लार्व वद्व दे व  
फ्लार्वमो पित्तन्ते से य मिळालिजा से व तिष्ठत्वेमाने अभिजा से य क्लालन्तो हेतु  
अजाहि' इय वास्त्वं तिया से तिमाहु भंते । एवद्वार्ता अद्वो मिळालस्म तिक्त वे  
एवं वर्यते परो वरजा- पठिगाहेहि अद्वे । पर्यय तुर्म शुक्लति वा पार्विति वा  
एवं से कल्पइ पठिगाहिताए, नो से कल्पइ तिष्ठत्वनीस्ताए पठिगाहितप ॥ १४ ॥  
वासावार्ता पञ्चोषत्विकाण अत्थि वं वेराण वद्वप्त्वगाराई तुम्हाई त्वार्ता कीर्तिवर्त  
पित्राई वेसात्तिवर्त संमयाई अद्वमवर्त अद्वमवाई भवति त(व)त्व दे नो कल्प  
अद्वमह वद्वाप- भवित्वे भावत्सो । इमं वा इमं वा ॥ से तिमाहु भंते । उही  
यिही तिष्ठद वा तेविर्विति तुवा ॥ १९ ॥ वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु तिष्ठत्वमित्तस्तु  
मिळालस्तु कल्पइ एवं गोवरकाम गाहालकुलं मत्ताए वा पालाए वा निष्ठामित्ताए  
वा पवित्रित्ताए वा नक्त्वाऽऽवरिद्वेमाक्तेव वा एवं तद्वज्ञावेवत्वत्वेव वा  
तद्वस्तिवेवत्वत्वेव वा तिष्ठत्वमेवावत्वेव वा त्वाए वा अवेष्ट  
जावेष्ट वा ॥ २ ॥ वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु तद्वप्त्वमित्तस्तु तिष्ठत्वमित्तस्तु  
अत्थ एवद्व विदेशेवं से वज्ञो निष्ठत्वम्म पुच्छमेव तिष्ठत्वं भुवा तिवा पठि-  
गाहुगी संक्षिप्ति संप्रमाणित्वं से य संवरिजा कल्पइ से तरिक्ते तेवेव मत्तावं  
पञ्चोषत्वित्तप, से य नो संवरिजा एवं से कल्पइ तुर्मिति पाहालकुलं मत्ताए वा  
पालाए वा निष्ठामित्ताए वा पवित्रित्ताए वा ॥ २१ ॥ वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु  
त्वालमित्तस्तु कल्पसि वो गोवरकाम गाहालकुलं मत्ताए वा पालाए  
वा निष्ठामित्ताए वा पवित्रित्ताए वा ॥ २२ ॥ वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु अद्वे-  
भवित्वमित्तस्तु कल्पति दब्बो गोवरकाम गाहालकुलं मत्ताए वा पालाए  
वा तिष्ठत्वमित्ताए वा ॥ २३ ॥ वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु तिष्ठित्त-  
मित्तस्तु तिष्ठत्वमित्तस्तु कल्पति दब्बो गोवरकाम याहालकुलं भत्ताए वा पालाए  
वा तिष्ठत्वमित्ताए वा पवित्रित्ताए वा ॥ २४ ॥ वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु तिष्ठमित्त-  
वस्तु तिष्ठत्वमित्तस्तु कल्पति संवाई पवित्राहितप । वासावार्ता पञ्चोषत्विक्त-  
वस्तु तिष्ठत्वमित्तस्तु तिष्ठत्वमित्तस्तु कल्पति दब्बो पालावद् पठिगाहितप, तंव्वा-  
ज्ञोसेवमेव(वा) संस्कृतं भावत्वेहुगी । वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु त्वालमित्तस्तु  
तिष्ठत्वमित्तस्तु कल्पति दब्बो पालावद् पवित्राहितप, तंव्वा-हित्येवर्त वा तुसेवणं वा  
ज्ञोदहुगी वा । वासावार्ता पञ्चोषत्विक्तस्तु त्वालमित्तस्तु तिष्ठत्वमित्तस्तु कल्पति दब्बो

पाणगाह पडिगाहित्तए, तंजहा-आयाम वा, सोवीरं वा, सुद्धवियड वा । वासावास पज्जोसवियस्स वि(कि)गिद्धभत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पइ एगे उसिणवियडे पडिगाहित्तए, से वि य ण असित्थे नो (चेव) वि य ण ससित्थे । वासावास पज्जोसवियस्स भत्त-पडियाइक्खियस्स भिक्खुस्स कप्पइ एगे उसिणवियडे पडिगाहित्तए, से वि य ण असित्थे, नो चेव ण ससित्थे, से वि य ण परिपूए, नो चेव ण अपरिपूए, से वि य ण परिमिए, नो चेव ण अपरिमिए, से वि य ण वहुसप्ते, नो चेव ण अवहुसप्ते ॥ २५ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स सखादत्तियस्स भिक्खुस्स कप्पति पञ्च दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पञ्च पाणगस्स, अहवा चत्तारि भोयणस्स पञ्च पाणगस्स, अहवा पञ्च भोयणस्स चत्तारि पाणगस्स, तथ ण एगा दत्ती लोणासायणमित्तमवि पडिगाहिया सिया कप्पइ से तद्विस तेणेव भत्तड्डेण पज्जोसवित्तए, नो से कप्पइ दुच्छपि गाहावइकुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ २६ ॥ वासावास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निगथाण वा निगगथीण वा जाव उवस्सयाओ सत्तधरतर सखडिं सनियट्टचारिस्स इत्तए, एगे (पुण) एवमाहसु-नो कप्पइ जाव उवस्सयाओ परेण सत्तधरतर सखडिं सनियट्टचारिस्स इत्तए, एगे पुण एवमाहसु-नो कप्पइ जाव उवस्सयाओ परपरेण सखडिं सनियट्टचारिस्स इत्तए ॥ २७ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स नो कप्पइ पाणिपडिगगहियस्स भिक्खुस्स कणगफुसियै-मित्तमवि बुद्धिकायसि निवयमाणसि गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ २८ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स पाणिपडिगगहियस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ अगिहसि पिंडवाय पडिगाहित्ता पज्जोसवेमाणस्स सहमा बुद्धिकाए निवैज्ञा देस भुवा देसमादाय से पाणिणा पाणि परिपिहित्ता उरसि वा ण निलिजिज्ञा, कक्खसि वा ण समाहिज्ञा, अहाच्छबाणि वा लेणाणि वा उवागच्छिज्ञा, रुक्खमूलाणि वा उवागच्छिज्ञा, जहा से पाणिसि दए वा दगरए वा दगफुसिया वा नो परियावज्जइ ॥ २९ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स पाणिपडिगगहियस्स भिक्खुस्स ज किंचि कणगफुसियमित्तपि निवडेइ, नो से कप्पइ गाहावइकुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ ३० ॥ वासावास पज्जोसवियस्स पडिगगहवारिस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ वग्यारियबुद्धिकायसि गाहावइकुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पड से अप्पबुद्धिकायसि सतस्तरसि<sup>३०</sup> ॥ ३१ ॥ वासावास पज्जोसवियस्स निगगथस्स निगगथीए वा गाहावइकुल पिंड-

१ आयामे वा, सोवीरे वा, सुद्धवियडे वा । २ 'फुमार' । ३ वियारभूमिगमणे-डवाओ ।

बासपदिमाए अनुपस्थित्यस्तु निगिजित्वा बुद्धिमत्ते निकटज्ञा कृप्य  
भावे भारामेंति वा भावे उक्तस्तर्यसि वा भावे विद्यमाणीहसि वा भावे उक्तमूर्त्यसि वा  
उक्तगच्छित्ताए ॥ १२ ॥ तत्त्व से पुष्ट्यागमलेखं पुष्ट्यारतो चारम्भेश्वरे पव्यवर्त्ते  
मिष्ठिगस्त्रे कृप्यद से चारम्भेश्वरे पदिगाहित्ताए, नो से कृप्यद मिष्ठिगस्त्रे पव्यवर्त्ते  
गाहित्ताए ॥ १३ ॥ तत्त्व से पुष्ट्यागमलेखं पुष्ट्यारतो मिष्ठिगस्त्रे पक्षारतो चार  
म्भेश्वरे कृप्यद से मिष्ठिगस्त्रे पदिगाहित्ताए, नो से कृप्यद चारम्भेश्वरे पदिगाहित्ताए  
॥ १४ ॥ तत्त्व से पुष्ट्यागमलेखं दोऽपि पुष्ट्यारतार्थं (वाहंति) कृप्यस्ति से होऽपि पदि  
गाहित्ताए, तत्त्व से पुष्ट्यागमलेखं दोऽपि फक्षारतार्थं, एवं नो से कृप्यस्ति हाऽपि पदि  
गाहित्ताए, जे से तत्त्व पुष्ट्यागमलेखं पुष्ट्यास्तो से कृप्यद पदिगाहित्ताए, जे से तत्त्व  
पुष्ट्यागमलेखं फक्षारतो नो से कृप्यद पदिगाहित्ताए ॥ १५ ॥ बासाकास क्षेत्रे  
विमस्तु निर्माणस्तु निर्माणीहसि वा गाहाकाशुर्क विड्यावपदिमाए अनुपस्थित्यस्तु  
निगिजित्वा मिगिजित्वा बुद्धिमत्ते निकटज्ञा कृप्यद से भावे भारामेंति वा भावे  
उक्तस्तर्यसि वा भावे विद्यमाणीहसि वा उक्तमूर्त्यसि वा उक्तगच्छित्ताए, नो से कृप्यद  
पुष्ट्यगच्छित्त भारामेंति वेद उक्तगच्छित्ताए, कृप्यद से पुष्ट्यामेव विद्यमयं भूता  
(पिता) पदिम्याहर्ता संक्लिहिय संक्लिहिय संप्रमाणित संप्रमाणित ए[गायत्री]गालो भैरवे  
कु दावरुदे श्रे देवेव उक्तस्त्रए तेजेव उक्तगच्छित्ताए, नो से कृप्यद ते रववि  
त्तरथेव उक्तगच्छित्ताए ॥ १६ ॥ बासाकासे पश्चोत्तिष्ठस्तु निर्माणस्तु निर्माणीहसि  
वा गाहाकाशुर्क विड्यावपदिमाए अनुपस्थित्यस्तु निगिजित्वा बुद्धिमत्ते  
निकटज्ञा कृप्यद से भावे भारामेंति वा भावे उक्तस्तर्यसि वा विद्यमाणीहसि वा  
भावे उक्तमूर्त्यसि वा उक्तगच्छित्ताए ॥ १७ ॥ तत्त्व नो कृप्यद एवस्तु विगमीवस्तु  
एवाए य निर्माणीहसि एवगम्भो विद्वित्ताए १ तत्त्व नो कृप्यद एवस्तु विगमीवस्तु  
तुर्व निर्माणीहसि एवगम्भो विद्वित्ताए २ तत्त्व नो कृप्यद तुर्व निर्माणीहसि एवाए य  
निर्माणीहसि एवगम्भो विद्वित्ताए ३ तत्त्व नो कृप्यद तुर्व निर्माणीहसि तुर्व निर्माणीहसि  
य एवगम्भो विद्वित्ताए ४ अतिव व इव वेद वेदमे तुर्व वा एविया(५) वा अवेमि  
वा सम्प्रोप सप्तदिवुक्तारे एवं वर्त कृप्यद एवगम्भो विद्वित्ताए ॥ १८ ॥ बासाकासे  
पश्चोत्तिष्ठस्तु निर्माणस्तु गाहाकाशुर्क विड्यावपदिमाए अनुपस्थित्यस्तु निगिजित्वा  
निर्माणीहसि बुद्धिमत्ते निकटज्ञा कृप्यद से भावे भारामेंति वा भावे उक्तस्तर्यसि वा  
भावे विद्यमाणीहसि वा भावे उक्तमूर्त्यसि वा उक्तगच्छित्ताए, तत्त्व नो कृप्यद एवस्तु  
निर्माणस्तु एवाए य अगारीए एवगम्भो विद्वित्ताए, एवं वर्तमाणी अतिव व इव  
वेद वेदमे वेरे वा वेरिया(६)वा भौतेसि वा सम्प्रोप शुरादिवुक्तारे एवं कृप्यद एववत्ते

चिद्धित्तए । एवं चेव निगथीए अगारस्स य भाण्यव्व ॥ ३९ ॥ वासावास पजो-  
सवियाण नो कप्पइ निगथाण वा निगथीण वा अपरिणएण अपरिणयस्स  
अद्वाए असण वा १ पाण वा २ खाइम वा ३ साइमं वा ४ जाव पडिगाहित्तए  
॥ ४० ॥ से किमाहु भते !, इच्छा परो अपरिणए भुजिजा, इच्छा परो न  
भुजिजा ॥ ४१ ॥ वासावास पजोसवियाण नो कप्पइ निगथाण वा निगंथीण वा  
उदउल्लेण वा ससिणद्वेण वा काएण असण वा १ पाण वा २ खाइमं वा ३ साइम  
वा ४ आहारित्तए ॥ ४२ ॥ से किमाहु भते !, सत्त सिणेहाययणा पण्णत्ता, तजहा-  
पाणी १ पाणिल्हा २ नहा ३ नहसिहा ४ भमुहा ५ अहरोट्टा ६ उत्तरोट्टा ७ ।  
अह पुण एव जाणिज्जा-विगओदगे मे काए छिजसिणेहे, एव से कप्पइ असण वा १  
पाण वा २ खाइम वा ३ साइम वा ४ आहारित्तए ॥ ४३ ॥ वासावास पजोस-  
वियाण इह खलु निगथाण वा निगथीण वा इमाइ अट्ट सुहमाइ जाइ छउमत्थेण  
निगथेण वा निगथीए वा अभिक्खण अभिक्खण जाणियव्वाइ पासियव्वाइ पडि-  
लेहियव्वाइ भवति, तजहा-पाणसुहम १ पणगसुहम २ वीयसुहम ३ हरियसुहम ४  
पुण्यसुहम ५ अडसुहम ६ लेणसुहम ७ सिणेहसुहम ८ ॥ ४४ ॥ से कि त पाण-  
सुहमे ? पाणसुहमे पचविहे पण्णत्ते, तजहा-किण्हे १, नीले २, लोहिए ३, हालिद्वे ४,  
सुक्किले ५ । अत्थ कुंशु अणुद्धरी ना(म समुप्पन्ना)मं, जा ठिया अचलमाणा छउम-  
त्थाण निगथाण वा निगथीण वा नो चकखुफास हव्वमागच्छद, जा अठिया चल-  
माणा छउमत्थाण निगथाण वा निगथीण वा चकखुफास हव्वमागच्छद, जा छउ-  
मत्थेण निगथेण वा निगथीए वा अभिक्खणं अभिक्खण जाणियव्वा पासियव्वा  
पडिलेहियव्वा हवद । से त पाणसुहमे १ ॥ से कि त पणगसुहमे ? पणगसुहमे पच-  
विहे पण्णत्ते, तजहा-किण्हे, नीले, लोहिए, हालिद्वे, सुक्किले । अत्थ पणगसुहमे तह-  
व्वसमाणवणे नाम पण्णत्ते, जे छउमत्थेण निगथेण वा निगथीए वा जाव पडि-  
लेहियव्वे भवद । से त पणगसुहमे २ ॥ से कि त वीयसुहमे ? वीयसुहमे पचविहे  
पण्णत्ते, तजहा-किण्हे जाव सुक्किले । अत्थ वीयसुहमे कणियासमाणवण्णए नाम  
पण्णत्ते, जे छउमत्थेण निगथेण वा निगथीए वा जाव पडिलेहियव्वे भवद । से त  
वीयसुहमे ३ ॥ से कि त हरियसुहमे ? हरियसुहमे पचविहे पण्णत्ते, तजहा-किण्हे  
जाव सुक्किले । अत्थ हरियसुहमे पुढवीसमाणवण्णए नाम पण्णत्ते, जे निगथेण वा  
निगथीए वा अभिक्खण अभिक्खण जाणियव्वे पासियव्वे पडिलेहियव्वे भवद ।  
से त हरियसुहमे ४ ॥ ने किं त पुण्यसुहमे ? पुण्यसुहमे पचविहे पण्णत्ते, तजहा-  
किण्हे जाव सुक्किले । अत्थ पुण्यसुहमे रुक्खसमाणवणे नाम पण्णत्ते, जे छउमत्थेण

निर्माणेन वा निर्माणीए वा जाग्रिवन्ने वाच पवित्रेहिवन्ने मनह । से तं पुण्यकुमे ५ ॥ से कि तं अद्विषुमे ? अद्विषुमे पंचविहे पञ्चते तंज्ञा-उर्द्वसी उर्द्वसी भवे पितीक्षिविदे इविविदे हमेहिविदे वे विमाणेन वा निर्माणीए वा जाव पवि लेहिवन्ने मनह । से तं अद्विषुमे ६ ॥ से कि तं सेवापुमे ? सेवापुमे पञ्चविह पञ्चते तंज्ञा-उर्द्वसी भवे शिगुषेपे उज्जुर, तालमूल्य, संतुष्टावहे नामे पञ्चये वे छवमूल्येऽ निर्माणेन वा निर्माणीए वा जाग्रिवन्ने वाच पवित्रेहिवन्ने मनह । से तं लेवापुमे ७ ॥ से कि तं लिङ्गापुमे ? लिङ्गापुमे पञ्चविहे पञ्चतो तंज्ञा-उर्द्वसा विमए, महिया अरए, हरत्तुप । वे छवमूल्येऽ निर्माणेन वा निर्माणीए वा अभिक्षारे अभिक्षारण जाव पवित्रेहिवन्ने मनह । से तं लिङ्गापुमे ८ ॥ ४५ ॥ वासा वासे पञ्चोसविए मिन्दू इविज्ञा गाहावद्वक्षर्त भवाए वा पापाए वा निकलमिताए वा पवित्रिताए वा नो से कम्पह अपापुष्टिता आवरिये वा उवज्ञाव वा अर (वा) पवित्रि पर्वि पश्चारे गमावच्छेमर्य वर्ष वा पुरलो अर्च विहर, कम्पह से अपुष्टित आवरिये वा जाव वे वा पुरलो अर्च विहर-इच्छामि वर्ष भवेते । दुब्बेहि अम्बु-म्नाए समाप्ते गाहावद्वक्षर्त भवाए वा पापाए वा निकलमिताए वा पवित्रिताए वा । से किमातु भवेते । आवरिया पववार्य जावैति ॥ ४६ ॥ एवं विहार(सम्भाव)मूर्मि वा विदारमूर्मि वा भव वा वर्ष विद्विपि पञ्चोमर्य एवं गमालुगामे दुष्प्रियाए ॥ ४७ ॥ वासावास पञ्चोसविए मिन्दू इविज्ञा अप्यवरि विहर भाहारिताए, नो से कम्पह अपापुष्टिता आवरिये वा जाव गमावच्छेमर्य वा वा पुरलो अर्च विहर, कम्पह से अपुष्टिता आवरिये जाव भाहारिताए-इच्छामि वर्ष भवेते । दुब्बेहि अम्बुम्नाए समाप्ते अप्यवरि विहर भाहारिताए पुकहर्व वा एवद्वक्षर्तये वा से य से विवरिज्ञा एव से कम्पह अप्यवरि विहर भाहारिताए, से व से नो विवरिज्ञा एव से नो कम्पह अप्यवरि विहर भाहारिताए, से किमातु भवेते । आवरिया पववार्य जावैति ॥ ४८ ॥ वासावास पञ्चोसविए मिन्दू इविज्ञा अप्यवरि ये(मिच्छ)इविज्ञम् आवहिताए, तं वेद सर्वं भाविवर्य ॥ ४९ ॥ वासावास पञ्चोसविए मिन्दू इविज्ञा अप्यवरि उरस्त वहार्व सिद्धे श्वल भैगाहे सुरिचरीये भाहामुगार्व तदोक्तमं उवसंगविद्यार्व विहरिताए, तं वेद सर्वं भाविवर्य ॥ ५ ॥ वासावास पञ्चोसविए मिन्दू इविज्ञम् अप्यविज्ञमार्वेतिवस्त्रेवान्दृष्टापापुष्टिप भातपावपवियावनिवाए पञ्चोसविए वर्तम

[ १२० ]

प्र०—जगत् की रक्षना कौन बेश करते हैं ?

उ०—कोई भी नहीं । यह जगत् तो आमादि काल से ही और अमन्त्र काल तक रहेगा । न किसी में इसकी रक्षना की ही और न कोई इसका भाव कर सकता है ।

प्र०—तो पुण्य पाप का फल कौन देता है ?

उ०—हरेक चीज़ अपना फल स्वयं देती है । उसका फल मेरे गमे के लिये और किसी की आवश्यकता नहीं पड़ती । शराय पीने वाले को शराय स्वयं बेहोश बना देती है विष खाने वाले को विष स्वयं ही मार डालता है । रोटी स्वयं भूक भिटा देती है । बेहोश बनाने भारते और भूक भगाने के लिये किसी दूसरे पुण्य कर्त्ता की जरु एत नहीं पड़ती । इसी प्रकार पुण्य-पाप मोगने के लिये किसी भूत्र की जरूरत नहीं है । पुण्य-पाप अपना फल स्वयं देता है ।

प्र०—भगवान् की भक्षित क्यों करनी चाहिये ?

उ०—हम आगम शुद्धि करना चाहते हैं और भगवान् आत्म-शुद्धि के आवश्यं हैं । उम्होंनि आगम शोधन का उपाय भी हमें पताया है । हम भगवान् सरीखे लोकोंका शुद्धयात्र करना चाहते हैं । हम उम्हे पृथ्य म भासेंगे तो उनके युगों का अनुकरण भी न कर सकेंगे । इसलिये उनके प्रति आश्र और प्रश्नमान रखना हमारा करत्व्य है ।

प्र०—भगवान् की भक्षित से और भी कोई लाभ है ?

उ०—हाँ अबक साम है । जब कोई मध्य जीव आत्मरित भक्षित से गद्याद होकर भगवान् की आराधना करता

अणवक्खमाणे विहरित्तए वा, निक्खमित्तए वा पवित्रित्तए वा, असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा आहारित्तए वा, उच्चार वा पासवणं वा परिद्वावित्तए, सज्जाय वा करित्तए, धम्मजागरिय वा जागरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छत्ता तं चेव सब्ब ॥ ५१ ॥ वासावास पज्जोसविए भिक्खु इच्छिज्ञा वर्थं वा पढिगगह वा कवल वा पायपुंछण वा अण्णयर्ति वा उवर्हि आयावित्तए वा पयावित्तए वा, नो से कप्पइ एग वा अणेग वा अपडिष्णवित्ता गाहावद्वकुल भत्ताए वा पाणाए वा निक्खमित्तए वा पवित्रित्तए वा, असण वा पाण वा खाइमं वा साइम वा आहारित्तए, बहिया विहार-भूमि वा वियारभूमि वा सज्जाय वा करित्तए, काउस्सग वा ठाण वा ठाइत्तए, अत्थ य इत्थ केळ अभिसमणागए अहासण्णहिए एगे वा अणेगे वा, कप्पइ से एवं वद्धत्तए-इम ता अज्जो ! तुम मुहुत्तग जाणेहि जाव ताव अह गाहावद्वकुल जाव काउ स्सग वा ठाण वा ठाइत्तए, से य से पडिसुणिज्ञा एवं से कप्पइ गाहावद्वकुलं त चेव सब्ब भाणियव्व । से य से नो पडिसुणिज्ञा एवं से नो कप्पइ गाहावद्वकुल जाव काउस्सग वा ठाणं वा ठाइत्तए ॥ ५२ ॥ वासावास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निगथाण वा निगथीण वा अणभिगगहियसिज्ञासणियाण हुत्तए, आयाणमेय, अण-भिगगहियसिज्ञासणियस्स अणुच्चाकुह्यस्स अणद्वावधियस्स अभियासणियस्स अणाता-वियस्स असमियस्स अभिक्खण अभिक्खण अपडिलेहणासीलस्स अपमज्ञासीलस्स तहा तहा सज्मे दुराराहए भवद् ॥ ५३ ॥ अणायाणमेयं अभिगगहियसिज्ञासणियस्स उच्चाकुह्यस्स अट्टावधियस्स मियासणियस्स आयावियस्स समियस्स अभिक्खण अभि-क्खण पडिलेहणासीलस्स पमज्ञासीलस्स तहा तहा सज्मे सुआराहए भवद् ॥ ५४ ॥ वासावास पज्जोसवियाण कप्पइ निगथाण वा निगथीण वा तओ उच्चारपासवण-भूमीओ पडिलेहित्तए, न तहा हेमतगिम्हासु जहा ण वासासु, से किमाहु भते ! ? वासासु ण उस्सण्ण पाणा य तणा य वीया य पणगा य हरियाणि य भवति ॥ ५५ ॥ वासावास पज्जोसवियाणं कप्पइ निगथाण वा निगथीण वा तओ मत्तगाइ गिण्हित्तए, तजहा-उच्चारमत्तए, पासवणमत्तए, खेलमत्तए ॥ ५६ ॥ वासावास पज्जोम-विश्याण नो कप्पइ निगथाण वा निगथीण वा पर पज्जोसवणाओ गोलोमप्पमाण-मित्तेऽवि केसे त रयणि उवायणावित्तए ॥ ५७ ॥ वासावास पज्जोसवियाण नो कप्पइ निगथाण वा निगथीण वा परं पज्जोसवणाओ अहिगरण वद्धत्तए, जे ण निगथो वा निगथी वा पर पज्जोसवणाओ अहिगरण वयद्, से ण ‘अकप्पेण अज्जो ! वय-सीति’ वत्तव्वे सिया, जे ण निगथो वा निगथी वा पर पज्जोसवणाओ अहिगरण वयद् से ण निजूहियव्वे तिया ॥ ५८ ॥ वासावास पज्जोसवियाण इह खलु निग-

शाप वा निर्माणीय वा अज्ञेय कर्त्तव्ये कुडाए निकुञ्जमाहे उमुप्यविद्वान् ज्ञाने राइविष्टविद्वान् रामिक्षा लक्ष्मीयन्नं रामाविद्वान् उवसमित्यन्नं उवसमाविद्वान् तुमइष्टपुण्यावद्गुरुसर्वं होमन्नं । जो उवसमावद तस्य भृत्य आराध्य जो स उवसमावद तस्य भृत्य आराध्या तम्हा अप्यवा चेष्ट उवसमित्यन्नं से निमहु भेते । उवसमावद तु सामन्य ॥ ५९ ॥ बासावासे पञ्चोत्तमियार्थं कल्पद्रविद्वान् वार्तिकीय वा तमो उवसमावद विविताप्य, तदहा-वेऽविद्वा वर्तिकेहा साइविक्षणं पमज्ञना ॥ ६० ॥ बासावासे पञ्चोत्तमियाप्य निर्माणीय वा निर्माणीय वा कल्पद्रविद्वान् विद्विति वा अनुविद्विति वा अवगिणित्य २ महापान गवेतिताप । से निमहु भेते । उवसमावद समज्ञा भगवंतो बाधायु उवसंपत्त्य भवति उवसमी तुष्ट्ये विक्षेपे मुष्टिक्षणं वा पद्मिक्षणं वा तमेव दिव्ये वा अनुविद्विति वा समज्ञा भगवंतो पद्मिक्षणं रति ॥ ६१ ॥ बासावासे पञ्चोत्तमियार्थं कल्पद्रविद्वान् वार्तिकीय वा निर्माणीय वा विविताप्य-हेतु अत चत्तारि पञ्च जोयनाई गतु पद्मिनिवत्ताप, अंतराड्विद्वे कल्पद्रविद्वान् गत्वा, जो से कल्पद्रव त रवति तत्त्वेष उवसमावदिताप ॥ ६२ ॥ इत्येवं संप्रस्तुतिर्वेद वेदाङ्गं अह-मुहूर्तं भावाद्वयं भावामग्नं भावात्वं सम्बन्धं बाधेन वार्तिका सौभिता दीरिता किविता आराहिता आचापे अनुपातिका अवधेयहा समज्ञा निर्माणा तेषैव मह माहायेत्वं विज्ञाति तु यज्ञस्ति तु यज्ञस्ति परिनिष्पाशति सम्भुक्ष्यावद्गमते करिति अत्येषाह्या तु येष्व भवन्याह्येत्वं विज्ञाति व्यावह सम्भुक्ष्याभ्यर्थं करिति अवधेयाना तेषैवं भवन्याह्येत्वं जावह अर्हते करिति भावात्मकमाहावह पुन वाश्वर्मति ॥ ६३ ॥ तु ये यज्ञेष्व तेषैव समाधेष्व समने भयं भगवंतो राजविद्वे भयरे तुष्टिक्षणं उवाचे वृृत्यं समज्ञार्थं वृृत्यं समज्ञीर्थं वृृत्यं साक्ष्यार्थं वृृत्यं साक्षिवार्थं वृृत्यं विविति मज्जग्ने चेष्ट एवमाइक्षण, एवं भावह, एवं पञ्चेष्ट, एवं फलेष्ट, फले-उवसमावद्ग्ने नामं अज्ञवर्णं समद्व शेषेत्वं सक्षार्वं सक्षर्तं उवाच्छं सुरभ्यं साक्षार्वं तुष्ट्ये मुज्जो उवसंसेह ॥ ६४ ॥ त्विभेत्वि ॥ इह नामायारी समर्ता ॥ पञ्चोत्तमविषयाकल्प्यो नाम दसाल्लुप्यक्षत्वं उवसमज्जहयने समर्ते ॥ अहवा कल्पसुर्तं समर्तं ॥ पद्मम परिसिंह समर्ते ॥



णमोऽत्थु ण समणस्स भगवओ णायपुच्चमहावीरस्स

# बीयं परिसिद्धं

## सावयावस्सए सामाइयसुत्तं



पठम ‘णमो अरिहताण०’ तओ ‘तिक्षुतो०’ तओ—अरिहतो मह देवो, जावजीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपण्णत तत्त, इय सम्मत मए गहिय ॥ १ ॥ तओ—पचिं-दियसवरणो, तह णवविहवभेरगुतिधरो । चउविहकसायमुक्को, अट्टारसगुणेहि सजुत्तो ॥ १ ॥ पचमहव्ययजुत्तो, पचविहायारपालणसमत्यो । पचसमिडतिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्ज ॥ २ ॥ तओ ‘इच्छाकारेण०’ पच्छा ‘तस्स उत्तरीकरणेण०’ तओ ‘लोगस्स उज्जोयगरे०’ तओ ‘करेमि भते ! सामाइय, सावज्ज जोग पच्चक्खामि, जाव-णियम पजुवासामि, दुविह तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, तस्स भते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि’ । तओ पच्छा ‘णमोऽत्थु ण०’ । तओ सामाइयपारणपाढो जहा—‘एयस्स णवमस्स सामाइय-वयस्स पच अद्यारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, तजहा—( ते आलोएमि—) मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइ अकरणया, सामाइयस्स अणवट्टियस्स करणया, तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइय सम्म काएण ण फासिय, ण पालिय, ण तीरिय, ण किट्टिय, ण सोहिय, ण आराहिय, आणाए अणुपालिय ण भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कड’ । [ सामाइए मणसो दस दोसा, वयणस्स दस दोसा, कायस्स दुवाल्स दोसा, एप्पु अण्णयरो दोसो लग्गो तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए इत्थीकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, एयासु चउसु विकहासु अण्णयरा विकहा कया तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिगगहसण्णा, एयासु चउसु सण्णासु अण्णयरा सण्णा सेविया तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए अडक्कमे वइक्कमे अद्यारे अण्णयारे जाण-तेण वा अजाणतेण वा मणसा वयसा कायसा दुप्पउत्ती कया तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए विहिगहिए विहिपालिए को वि अविही कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइए मत्ताऽणुस्सारपयक्खरगाहासुत्ताइय हीण वा अहिय वा विवरीय वा कहिय अणतसिद्धकेवलिभगवताण सक्खीए तस्स मिच्छामि दुक्कड । सामाइ-

१ साविगाओ ‘इत्थीकहा’ठाणे ‘पुरिसकहा’ति वोलति ।

यगाहणविही-पहर्म भूमिसात्वरयाहरुभिन्नुहोतिवाहिर्व पहिलेह्या अमन्त्रा उन्हे भूमि अमन्त्राए पमजिता आयत्वमत्परिमत्त्व । पुक्षो मुहूर्तेतिवं मुहै विभूत्व आसुणाथ्ये तिन्हि दृग् तिन्हितु 'तिक्कुलो इच्छेत् गुरुवृद्ध्या अमन्त्रा । च च होद्दु गुणिषो तो पुष्टमिसुहेण वा उत्तराभिन्नुहेण वा सीमंवरसामिस्स विहरमन्त् विलक्ष्मरस्स भावदवना करित्ता । तथो नमोद्दारुद्धारो आरम्भ वात् 'तस्य उद्योगिषुत्त' मन्त्रा च उद्योगारेत्त तथो शापावत्ताए विज्ञुहेण वा घोग्नुहेण वा द्वितीयपुहुण्डुहेण वा खग्नासपेण वा 'इरिवाहिवाहिर्व' मन्त्रा चेत् कावृत्सन्मावत्ताए पहिलर्व तथो अमो अरिहंतार्व' मन्त्रा तदा फुड्हवेष उचारिता अउत्सम्बो पारित्तम्भो । उन्हो 'घोग्नस्त लक्षणंतरं गुरु विन्हितु करेमि मंत्रे । पवित्रमर्व । आव-मिवर्म' इच्छेण वेतियार्व धामाहमार्व कावृत्सन्मेष तेतियमुहुरुत्तामस्तु मन्त्रित्व वितर्व तिन्हा उद्योगित्तु आसुणे अहामिही अमोऽस्तु व तिक्कुलो पवित्रमर्व । फ्रम विन्हुण्ड भीय अरिहंतार्व तदर्व 'अमोऽस्तु व मम भम्मुहुस्तु पम्मावरिमस्तु पम्मोवप्सुवस्तु' ति । सामाइए कावृत्सम्भो वा उच्चाम्भो वा वक्षाम्भवत्त वा अवतित्त वा अमन्त्र । सामाइयपारत्यविही-सामाइसम्बुद्धमत्तीए च्छा देष्ट अमोद्दारुत्तामो आरद वाव 'छोमस्त उचारेत् तथो धामाहपारत्यवत्ते पवित्रम्भो तमर्वतरं पुम्मुत्ताविद्वा 'अमोऽस्तु व तिक्कुलो तथो विक्कुलो पम्मोद्दारस्तु कावृत्सम्भो काम्भो । एवं अहामिही सामाहूर्व पालित्व मन्त्र ।] मन्त्रसो वस दोसा-मविदेहै भेदोक्तिरी अमैत्ती गर्वे मंत्रे विवाहैत्ती । स्तैवर्हेष्मभिन्नेहै अवहूमीन् ए दोसा भविकम्भा ॥ १ ॥ वस धार्दोसा-इवयेन सहसीष्वरे उक्तो संबेदं कर्मेत् च । विग्नी वि हृषिर्विद्वं, विरक्षेष्ये मुन्मुक्षा दोसा इस ॥ २ ॥ वारस कायदोसा-इमासुर्व चक्षावत्त चौक्तिरी सार्वजनित्वा संस्कारुद्धर्मसारम् । अत्तेष्ट्व मोहर्व मंत्रे विवाहैत्त विवेदी दीवेत् वि वारस कायदोसा ॥ ३ ॥ वस्तीसी धृव्यादोसा-मवीहिव च देष्ट च भेद च भेदेष्ट विवित्तिर्व । योक्तेन्न भव्युद्द चेत् तदा कर्मुमैतित्व ॥ ४ ॥ मन्त्रुमैत्त मन्त्रा-पर्वेत् तदा च भेदेष्ट भेद भेद भेद भेद भेद ॥ ५ ॥ तेवेष्ट विवित्व च च रुद्द तवित्वेष्ट च । संवेद च हृषिम्य चेत् तदा विपक्तिर्वित्व ॥ ६ ॥ विक्कुलेष्ट च तदा चिन्त च देवेष्ट वर्व । आविद्वैमात्तिर्व, देवं उत्तरैत्विर्व ॥ ७ ॥ भूम्ये च देवैर् च तुष्टिर्व अवित्तिर्व । वातीसदोवपवित्त, विष्ट्वर्व ॥ ८ ॥ एवेष्ट वर्व ॥ ९ ॥ एवाज्ञवीसी कावृत्ससगगदोसा-चेष्ट त्वा च वमे उत्ते

माले य सबरि वैहु गियडे । लवृत्तर थणैउद्धी, सजई खलिणे य वायस कविष्टे ॥ १ ॥ सीसोकपियमूँ, अगुलिभमुहाइ वारुणी पेहा । एए काउसग्गे, हवंति दोसा एगुणवीस\* ॥ २ ॥

॥ इय सामाइयसुत्तं समत्तं ॥



णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

## तद्यं परिसिद्धं

### सावयावस्सय(पडिक्कमण)सुत्तं

इच्छामि ण भते । तुव्वेहिं अब्मण्णाए समाणे देवैसिय पडिक्कमण ठाएमि, देवसियणाणदसणचरित्ताचरित्ततवअइयारचित्तवणत्थ करेमि काउसग्ग ॥ १ ॥

अह पढमं सामाइयावस्सयं

णमो अरिहताण० ॥ १ ॥ करेमि भंते ॥० ॥ २ ॥ इच्छामि ठामि काउसग्ग, जो मे देवसिओ अइयारो कलो, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्तुतो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्ज्ञाओ, दुविचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छियव्वो, असावग-पाउग्गो, णाणे तह दसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिष्ठ गुत्तीण, चउण्ह क्त्तसायाण, पचण्हमणुव्वयाण, तिष्ठ गुणव्वयाण, चउण्ह सिक्कवावयाण, वारस-विहस्स सावगधम्मस्स, ज खडिय, ज विराहिय तस्स मिच्छामि दुङ्कड ॥ ३ ॥ तस्स उर्त्तरी० ॥ ४ ॥ इह पढमं सामाइयावस्सयं समत्तं ॥ १ ॥

१-२-३-४ एए दोसा ण साविगाए, २-३-४ एए दोमा ण साहुणीए होंति त्ति । \* विसेसाय ‘श्रीमान् लाला प्यारेलाल जैन (अवरनाथ G I P)’ इच्छेयस्स दब्बसहाएण शुत्तागमपगासगसमिईए पगासिय सिरिनामाडयसुत्त दट्टब्ब । ५ ‘राइय’ ‘पक्किय’ ‘चाउम्मासिय’ ‘सवच्छरिय’ । ६ णवणउइअइयाराण काउ-स्सग्गो किजड-‘आगमे तिविहे जाव कामभोगासम्पथोगे’ । ‘अद्वारहपावद्वाणग’ भासाए, ‘इच्छामि ठामि०’ ‘णमो अरिहताण०’ शुत्तूण काउस्सग्गो पारिजड । मव्वे अडयारपाटा भिण्णभिण्णभासामीसिया लब्भति तत्तोऽवसेया । मूळ तु अग्गे दट्टब्ब । चीय चउवीसत्थवावस्सयं तइयं चंद्रणावस्सयं जहा आवस्सए ॥२-३॥

अह चउत्थं पडिक्कमणावस्सयं

## पाणाहयारपादो

आगेमे तिनिहे फलो ते—सुतागमे अत्वागमे तजुम्भागमे (एवं तिनिहेतु आगमस्यणाघस्त वित्तए जे अहवारा गमगा ते आग्नेयमि) तं वाह्यं आप सन्धारे य सुज्ञाहर्वं (सन्धतेषु गुणतेषु विवारतेषु जापस्तु जापत्तस्तु य आग्नेयमा इया) तस्तु मित्तामि तुक्तं ।

## दसणसम्भवपादो

अग्रिंतो नह रेतो ॥ १ ॥ फलत्वं संवतो वा श्रीदुपरमत्वं तेजा वा वाह्यं दुष्टणकज्ञा य सम्भासाह्या ॥ २ ॥ इय सम्भासास्तु फल अहवारा तेजस्म वाक्यम् य सुमावरियम् तं—(ते जाग्नेयमि) कुक्ता चक्षा तिरीयिता घटपात्तिवर्त्तमा परपासंवृत्तिवतो (एवं फलम् अहमार्गु अज्ञवद्य अहवारो इयो) तस्तु मित्तामि तुक्तं ।

## सुखालसवयाहयारसहियपादो

(पदम् अणुव्यव्यं—) भूमओ पाणाहयामास्ते वेमर्व (तस्वीके—त्रिवर्तेत्रिव-  
चतुर्विद्यपरिविषेत नात्त्व आउही—इष्टमुद्दीर्घ इष्टमहामवप्यव्यव्याप्तं तस्वविष-  
वसरीरसविसेसपीडागारिया धावताहिया वा विक्षम् ) वावज्ञीवाए तुक्तं तिनिहेतु  
य करेमि च इष्टग्रन्थे मनसा वयसा कामसा (एवंस्तु फलत्वं अभुव्यव्यस्तु शू-  
पाणाहयामवेमर्वत्वं) वेच अहवारा तेजाम् जायियम् य समावरियम् तं—(ते  
आग्नेयमि—) वेति वह, इविष्टेणु भद्रमारे भगवान् (मि) तुक्तेणु जो मे देवसिंहो  
अहवारो ज्ञो तस्तु मित्तामि तुक्तं ॥ १ ॥ (बीर्य अणुव्यव्यं—) दृक्षम्भो सुधा-  
तपादो केमने दृक्षम्भ(की)मित्, योक्तामित्, भोक्तामित्, नासाहारो (वाप्तमोमो),  
कृष्णसिद्धित्वं (तेषामाइस्तु महत्त्वुसापावस्तु पवर्त्तार्ण ) वावज्ञीवाए तुक्तं  
तिनिहेतु य करेमि च कारेमि मनसा वयसा कामसा (एवंस्तु वीर्यस्तु अभुव्यव्यस्तु  
एवंमुसापावेमर्वत्वस्तु) वेच अहवारा जायियम् य समावरियम् तं—( )  
महायमव्यव्याते इत्यसम्भव्याते तुक्तमेतत्त्वेण, मोक्षोवैष्टे इष्टदेहरये च्य मे  
देवसिंही अहमारो ज्ञो तस्तु मित्तामि तुक्तं ॥ २ ॥ (त्रियं अणुव्यव्यं )

१ अहवताहयारपादा जे पदमावस्मय वावहस्तमे वित्तिवैति ते येद एवं  
फुक्तव्यव्य वयारिज्ञति । २ तस्य गुणत्वं त्रिविषय अहवारस्तु तुक्तमित्य-  
तुक्तितिम्-तुक्तित्विषय वामवैता पहित्तमामि । 'गमोऽर्थ' करेमि भेतो । चतुर्वि-  
शेषम् इष्टामि इमि 'इष्टाम्भेत' । इत्ये तुक्तिं पर्वतरे । ३ एवं तप्य  
अवर्गव्यव्यं । ४ साविगाहै अस्य छाप 'समातार'मेतमेष ति जातवै । एवं लक्ष्य ।

थूलाओ अदिणादाणाओ वेरमण, (खत्तखणण, गठिभेयण, तालुरधाडणं, पडियवत्थु-हरण, ससामियवत्थुहरणं, इच्चेवमाइस्स अदिणादाणस्स पचक्खाण अप्पाण य सवधि-वावारसवधितुच्छवत्थु विप्पजहित्तण,) जावजीवाए दुविह तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्स तद्यस्स अणुव्वयस्स थूलअदि-णादाणवेरमणस्स) पच अड्यारा जाणियब्बा ण समायरियब्बा, त०-(०) तेणाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरजाइक्कमे, कूडतुल्कूडमाणे, तप्पडिस्ववगववहारे, जो मे देव-सिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडे ॥ ३ ॥ (चउत्थं अणुव्वयं-) थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं, सदारसतोसिए, अवसेसमेहुणविहिं पचक्खामि, जावजीवाए (दिव्व) दुविह तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, (माणुस्स तिरिक्पजोणिय) एगविह एगविहेण ण करेमि कायसा, (एयस्स चउत्थस्स अणु-व्वयस्स थूलमेहुणवेरमणस्स) पच अड्यारा जाणियब्बा ण समायरियब्बा, त०-(०) इत्तरियपरिगहियागमणे, अपरिगहियागमणे, अणंगकीडा, परविवाहकरणे, काम-भोगतिव्वाभिलासे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ४ ॥ (पंचमं अणुव्वयं-) थूलाओ परिगहाओ वेरमण, (खेतवत्थूण जहापरिमाण, हिरण्णसुवृण्णाणं जहापरिमाण, धणधण्णाण जहापरिमाण, दुपयचउप्पयाणं जहा-परिमाण, कुप्पस्स जहापरिमाण, एव मए जहापरिमाण कय तओ अइरित्तस्स परि-गहस्स पचक्खाण,) जावजीवाए एगविह तिविहेण ण करेमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्स पचमस्स अणुव्वयस्स थूलपरिगहवेरमणस्स) पच अड्यारा जाणियब्बा ण समायरियब्बा, त०-(०) खेतवत्थूप्पमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवृण्णप्पमाणाइक्कमे, धण-धण्णप्पमाणाइक्कमे, दुपयचउप्पयप्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ५ ॥ (छट्टुं दिसिवयं-उहृदिसाए जहा-परिमाण, अहोदिसाए जहापरिमाण, तिरियदिसाए जहापरिमाणं, एवं जहापरिमाण कय तत्तो अइरित्त सेच्छाए कायाए गतूण पचासवासेवणपचक्खाण,) जावजीवाए दुविह तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, (एयस्स छट्टस्स दिसिवयस्स अहवा पढमस्स गुणव्वयस्स) पच अड्यारा जाणियब्बा ण समायरियब्बा, त०-(०) उहृदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुही, सइअतरद्दा, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ६ ॥ (सत्तमं उवभोगपरिभोगपरिमाणव्ययं-) उवभोगपरिभोगविहिं पचक्खाय-माणे(३) १ उल्लणियाविहि, २ दत्तवणविहि, ३ फलविहि, ४ अव्वगणविहि,

१ एगविहपि पचतरे ।

७ उत्तरार्द्धां ६ मध्यांगि ५ दक्षिणां ४ लिङ्गांमि १५ एवं  
 १ आमार्द्धां ११ दक्षिणां १२ लिङ्गांमि ११ मध्यांगि १२ अमार्द्धां  
 १५ दक्षिणां १६ लिङ्गांमि १७ मध्यांगि १८ मध्यांगि १९ अमार्द्धां  
 २ पार्वतीर्द्धां २१ गुणांगांमि २२ दक्षिणांमि २३ दक्षिणां  
 २४ गुणांगांमि २५ गुणांगांमि २६ दक्षिणां (इति च शास्त्रान्वयनम् श्लो  
 ग्रामिण उत्तरार्द्धांगांगा दक्षिणांगा ) उत्तरार्द्धांगा एवं लिङ्गांमि  
 चरेति याता वयगा चक्रवर्ती (एत ते गतये) उत्तरार्द्धांगांगा (भृत्यं देव  
 गुणार्द्धांगा) तु इह पञ्चम भेदश्च भाव(था)स्थाप्त च वस्त्रम् य वस्त्रम्  
 गतमोत्तरांगांमि वज्र अद्यारा जातिवया च गतावदेवमा ते ॥ ( ) लिङ्गांमि  
 क्षितिर्द्विनाशरे अल्पतर्द्विभूतांगमा तु उत्तरांगेभूतिभूतांगमा तु इह  
 गदिभूतांगमा वस्त्रमा च गतार्द्धांगांगा वज्रस्त्रमांगमारे जातिर्द्वारे च  
 गतावदिवयमारे ते ॥ ( ) १ ईगस्त्रम् २ वस्त्रम् ३ गाढीम् ४ भारी  
 वस्त्रम् ५ शारीर्यम् ६ दंतवासिमि ७ स्त्रियांगांगा ८ कार्यांगांगा ९ रक्षा  
 क्षिति १ लिङ्गांगमि ११ वैतरीरक्ष्यम् १२ लिंगुष्टरक्ष्यम् १३ दक्षिणां  
 वयगा १४ गारुदांगांगोगयगा १५ अग्नेयांगोगयगा ये च देवियमि  
 अद्यारो वभा तस्मा विष्णुमि तु इह ॥ ७ ॥ ( भट्टम् भण्डार्द्वेष्टवेष्टयष्टये )  
 चउमिद भण्डार्द्वेष्ट एव्यतो ते - जाग्राणांगावरिए एवावावरिए, हिन्दूपत्ताये  
 वज्रस्त्रमांगांमि ( एवं भट्टम् भण्डार्द्वेष्टवेष्टवस्त्रम् वज्रस्त्रमांगांमि ) वार्त्तीर्द्वा  
 तु इह निषिद्धेन च वरेति च वार्त्तीमि वस्त्रमा वयगा चक्रवर्ती ( वज्रस्त्रम् भण्डार्द्वेष्टवेष्टवस्त्रम् वज्रस्त्रमांगांगा गुणवद्यस्त्रम् ) वज्र अद्यारा जातिवय  
 च गतावदिवयमा ते ॥ ( ) क्षेत्रे तु तु तु तु तोहरिए, संतुताविष्टये उत्तमोत्तर्द्वि-  
 भोवाद्वारिते यो मै देवियो अद्यारो वभो तस्म विष्णुमि तु इह ॥ ८ ॥ ८  
 ( लिङ्गम् गतावदिवययत्थ- ) तस्मै योर्वा परम्परामि जाति-विकर्मं पशुवासामि  
 तु इह निषिद्धेन च वरेति च कार्यमि वस्त्रमा वयगा चक्रवर्ती ( एवं वभा मै  
 वज्रस्त्रम् वज्रस्त्रमा गतावदिवयस्त्रम् गतावदिवयस्त्रम् वज्रस्त्रम् वज्रस्त्रम्  
 वज्रस्त्रम् गतावदिवयस्त्रम् वज्रस्त्रम् वज्रस्त्रम् वज्रस्त्रम् वज्रस्त्रम् ) वज्र वरेतरा व्यक्तिवयमा  
 च गतावदिवयमा ते ॥ ( ) मनुष्यविहारे वहिषुष्यविहारे वहिषुष्यविहारे

१ स्त्रियाहि सम्भोगावयवे एवं लिंगवर्त्य । २ ( जंति भट्ट वल्लभरा- ) आप  
 च याए चा याए चा परिवारे चा देवे चा यागे चा वज्रे चा भूर चा एति  
 एहि आमारोहि वज्रवर्त । इति विष्टव्ये पर्वतरे ।

सामाइयस्स सह अकरणया, सामाइयस्स अणवट्टियस्स करणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ९ ॥ ( दसमं देसावगासियवय-दिणमज्जे गोसा आरब्म पुञ्चाईसु छसु दिसासु जावइयं परिमाणं क्य तत्तो अइरित्त सेच्छाए सकाएणं गतूणं पंचासवासेवणस्स पञ्चकखाणं, ) जाव अहोरत्त दुविहं तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ( अह य छसु दिसासु जावइय परिमाणं क्य तम्मज्जेवि जावइया दच्चाईण मजाया तओ अइरित्तस्स भोगोवभोगस्स फञ्चकखाणं, ) जाव अहोरत्त एगविहं तिविहेण ण करेमि मणसा वयसा कायसा, ( एयस्स दसमस्स देसावगासियवयस्स अहवा विइयस्स सिक्खा-वयस्स ) पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, तं०-(०) आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्धाणुवाए, रुवाणुवाए, बहियापुगलपक्खेवे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १० ॥ ( एकारसमं पडिपुण्णो-सहवयं-असणपाणखाइमसाइमपञ्चकखाणं, अवमपञ्चकखाणं, अमुगमणिसुवण्णप-ञ्चकखाणं, मालावण्णगविलेवणपञ्चकखाण, सत्यमुसलाइयसावजजोगसेवणपञ्च-कखाण, ) जाव अहोरत्त पञ्जुवासामि, दुविहं तिविहेण ण करेमि ण कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ( एवं मे सद्दहणा पर्लवणा पोसहावसरे समागए पोसह-करणे फासणाए सुद्ध, एयस्स एकारसमस्स पडिपुण्णोसहवयस्स अहवा तइयस्स सिक्खावयस्स ) पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, त०-(०) अप्पहिले-हियदुप्पहिलेहियसेजासथारए, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियसेजासथारए, अप्पहिलेहिय-दुप्पहिलेहियउच्चारपासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी, पोसहस्स सम्म अणुपालणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ११ ॥ ( वारसमं अतिहिसंविभागवयं- ) समणे गिरगथे फासुयएसणिज्ञेण-असण-पाणखाइमसाइमवत्थपहिगहकवलपायपुँछणेण पाडिहारियपीढफलगसेजासथारएण ओसहभेसज्जेण पडिलभेमाणे विहरामि, ( एव मे सद्दहणा पर्लवणा साहुसाहुणीण जोगे पत्ते फासणाए सुद्ध, एयस्स वारसमस्स अतिहिसंविभागवयस्स अहवा चउत्थस्स सिक्खावयस्स ) पच अइयारा जाणियव्वा ण समायरियव्वा, त०-(०) सचित्तणि-क्खेवणया, सचित्तपिहणया, कालाइक्कमे, परववएसे, मन्दरिया(ए)य, जो मे देव-सिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १२ ॥

### अपच्छिममारणंतियसंलेहणापाढो

अह भंते । अपच्छिममारणतियसंलेहणाइसुणाभाराहणा(समए पोसहसाल पडि-लेहिता पमज्जिता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहिता गमणागमण पडिक्कमिता दव्वाड-

संयारवे संपरिता दुरहिता उत्तमुत्तमिसुरे संपरित्वादृश्यासुरे(व) दिरीहा  
करकलसंपरिमाहिय दिरसाहते महवए भवकि च्छु एवं व – “कमोऽनु नं अर्दिताव  
ब्रह्म संशतावं (एवं ब्रह्मसिद्धे भवसिता) “कमोऽनु नं अर्दितावं भवतावं ब्रह्म  
संपरित्वद्यमावं” (पृष्ठपञ्चक्षेष महाविदेहे लेते विद्रमापतित्वमे पर्मसिता उप-  
म्मायरिय उभम्मोष्टेष्टे वज्ञामि साहुपसुहृदवद्विहात्तु विलक्ष्य सन्धीवैष-  
मिस्स व खमाक्षता पुर्विके कथा परिवविदा लेतु वे अह्मारदेशा अमा ए उप्पे  
आसोइय परिवमित पितिव विस्त्रेष्टे होत्तन) सर्वं पापाद्वावं पवक्त्वामि सर्वं  
मुखामावं पवक्त्वामि सर्वं जायिष्यादावं पवक्त्वामि सर्वं मेष्ट्यं पवक्त्वामि सर्वं  
परिमाहं पवक्त्वामि सर्वं च्छेहं यावं ब्रह्म मित्याद्युपस्थां सर्वं अक्षरपित्तं च्छेहं  
पवक्त्वामि ब्राह्मीकाए तिविहृ तिविहृ व करेमि ए अरवेमि उत्तरंपि ब्रह्मं व  
चम्कुडाकामि यपसा वपसा ब्रह्मसा (एवं ब्रह्मासप्ताङ्गाहं पवक्त्वामा) सर्वं  
असर्वं प्राप्य ब्राह्म साध्मं चउभिर्हापि ब्रह्मारं पवक्त्वामि ब्राह्मीकाए, (एवं वड  
पित्त ब्राह्मारं पवक्त्वामा) वं पि व इमं चरीरं इद्यु, वं पि व मधुज्ञं लक्ष्मं  
पित्तं वे(वि)सातिव संमवं व्युमयं व्युमयं भावार्द्धगच्छमावं रवपर्द्धगम्भै  
मा वं दीर्घं मा वं उर्घं, मा वं द्वाहा मा वं पिषाक्षा मा वं ब्रह्म मा वं बोरा  
मा वं वैसमसगा मा वं बाइ(वि)व पितिव-सीमि(हणि)म-चालिवाइय-विविहा  
रोगाक्षा पौरस(हा र)होवसम्मा (प्रथा) फुर्तु(तिम्मु) एवं पि व वं व(रि)रेहै  
उस्सास(बी)पिस्सालेहि बोस्तिवितिव्यु (एवं चरीरं बोस्तिरिता) व्युमं ब्रह्मावं-  
मावे विहामि (एवं मे चाहन; पवस्या अवस्यावसरे पते अवस्ये कर अस्याए  
सुर्दं एवी) अपच्छ्यमार्वंतिवस्तेजाप्त्युभावाग्रहाए वं व अह्माए ब्राह्मिम्मा  
ए समावरित्वा तं –( ) इत्येषासंसाप्त्योगे पर्वत्यासंसाप्त्योगे, बीविवर्त्त-  
प्पल्लेगे मरणाद्युपव्योगे कामभोपासंसाप्त्योगे (मा मज्ज द्वाज मर्वत्तेमि चाहां  
स्वत्वमिम्म अन्यहामाचे) इत्यु मित्यामि तुहाँ ॥

महायज्ञपाष्ठुरापाद

(गाहृस्त्रो-पापाद्वासनमसिनं चोरिकं गेहूर्व समिक्षणुष्टे । कोह मार्व मार्व ओहे  
पिंज तदा दोह ॥ १ ॥) फर्व अम्भनकार्य वेमुल्ल खवराळमउर्ण । फरपीरवं  
मावा- मोह मिर्जासाई च ॥ २ ॥ बरिदातविहेममि- साहूर्व समिक्षवं सव गाव ।  
सुमेवियव्वं सेवा- भियाई गलुमेष्टाई तदा ॥ ३ ॥) तस्य मिर्जममि दुइहै ॥

१ अन्ये आयरिसे असु ठाये समुद्रकपाणे भासारे प्रभार तातोप्रधेष्वे ।  
२ इच्छामि ठारि इमो कष्टम विहीए । \*अन्ये पक्षीतमिष्ठापार्व चउस्तम् ।

है तो उसके मन में समाधि प्राप्त होती है और उस समाधि से आत्म-विशुद्धि होती है। आत्म-विशुद्धि से दोप दूर होते हैं और दोप दूर होने से क्रमशः मुक्ति प्राप्त होती है।

प्र०-क्या हम भी देव वन सकते हैं ?

उ०-श्रवण । जैन-धर्म नर को नारायण वना देता है।

प्र०-हम किस प्रकार देव वन सकते हैं ?

उ०-श्रव तक जो अनंत देव हो चुके हैं वे सब किसी न किसी समय हमारे समान थे। उन्होंने धर्म की आराधना की। पहले सम्यक्त्व प्राप्त किया, फिर चारित्र पाला। धीरे-धीरे कठोर साधना करते करते उन्हें पूर्ण निर्मलता प्राप्त हो गई। इसी प्रकार हम भी पूर्ण निर्मलता पाकर देव वन सकते हैं।

—०००—

### गुरु-

प्रश्न-गुरु किसे कहते हैं ?

उत्तर-जो महापुरुष पांच महाब्रतों का समितियों और गुप्तियों का नियमित रूप से पालन करते हैं उन्हें गुरु कहते हैं।

प्र०-पांच महाब्रत कौन-कौन हैं ?

उ०-( १ ) अहिंसा ( २ ) सत्य ( ३ ) अंचौर्य ( ४ ) ब्रह्मचर्य ( ५ ) अपरिग्रह ।

प्र०-इन्हें महाब्रत क्यों कहते हैं ?

उ०-इन्हें महाब्रत कहने के दो कारण हैं:- ( १ ) गृहस्थ श्रावक इन ब्रतों को स्थूल रूप से-एक देश से पालता है और

तस्स धम्मस्म केवलिपण्नत्तस्स अभुट्टिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्को वदामि जिणचउन्वीस। गाहाओ-आयरियउवज्ञाए० जहा आवस्सगचउत्थावस्सयकोट्टगगयाँओ। खामेमि सब्बे जीवा० जहाऽऽवस्सए० इइ चउत्थं पडिक्कमणावस्सयं समत्तं ॥ ४ ॥

### अह पंचमं काउस्सगावस्सयं

देवसियपायच्छित्तविसोहणत्य करेमि काउस्सगं। 'णमो अरिहताणं०' 'करेमि०' 'इच्छामि ठामि०' 'तस्स उत्तरी०' इह पंचमं काउस्सगावस्सयं समत्तं ॥५॥

समुच्छित्तमणुस्सपाढ च उच्चारति ते य एव-अमिगगहियमिच्छत्त, अणभिगगहि-यमिच्छत्त, अभिनिवेसियमिच्छत्त, ससइयमिच्छत्त, अणाभोगमिच्छत्त, लोइयमिच्छत्त, लोउत्तरियमिच्छत्त, कुप्पावयणियमिच्छत्त, अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा, उम्मगे मरगसण्णा, मगे उम्मगगसण्णा, अजीवेषु जीवसण्णा, जीवेषु अर्जीवसण्णा, असाहुषु साहुसण्णा, साहुषु असाहुसण्णा, अमुतेषु मुत्तसण्णा, मुत्तेषु अमुत्तसण्णा, ऊणाइरितपर्वणामिच्छत्त, तव्वइरितपर्वणामिच्छत्त, अकिरियामिच्छत्त, अविणय-मिच्छत्त, अणाणमिच्छत्त, आसायणामिच्छत्तं (एवं एयाइं पणवीसविहाइ मिच्छताइ मए सेवियाइ सेवावियाइ ता अरिहतसिद्धकेवलिसकिखय) तस्स मिच्छामि दुक्कहं॑। (चउद्धठाणसमुच्छित्तमजीवे आलोएमि) १ उच्चारेषु वा, २ पासवणेषु वा, ३ खेलेषु वा, ४ सिंघाणेषु वा, ५ वतेषु वा, ६ पितेषु वा, ७ पूएषु वा, ८ सोणिएषु वा, ९ सुकेषु वा, १० सुकपुगलपरिसाडेषु वा, ११ विगयजीवकलेवरेषु वा, १२ इत्थी-पुरिससजोगेषु वा, १३ णगरणिद्रमणेषु वा, १४ सब्बेषु चेव असुइद्वाणेषु वा, (एवं चउद्धसविहसमुच्छित्तमणुस्साणं विराहणा कथा (होज ता)) तस्स मिच्छामि दुक्कहं॑। अवि य समणसुत्तंपि बोळंते, से किं त समणसुत्त २ जहा आवस्सए चउत्थ पडिक्कमणावस्सय जाव मत्थए॑ वंदामि। 'करेमि भंते०' 'इच्छामि ठामि०' षु जो भेओ सो इमस्स चेव पढमावस्सयाओ णायन्वो। १ इओ पच्छा (दुक्कहतो इच्छामि खमासमणो एको णवकारो विहीए) भिण्णभिण्णभासापाढा लब्मति तत्तोऽवसेया। २ रागेण व दोसेण व, अहवा अक्यण्णुणा पडिणिवेसेण। जो मे किंचि वि भणिओ, तमह तिविहेण खामेमि ॥ पञ्चं नरे एसा गाहाऽहिगा॑ लब्मइ। ३ सावगसाविगखा-मणाचउरासीलखजीवजोणिखामणाकुलको डीखामणापाढा भिण्णभिण्णभासाए तत्तो-ऽवसेया। इओ पच्छा 'अट्टारहपावट्टाणाड' विहीए। ४ काउस्सगे चउलोगस्सज्ञाण, केइ धम्मज्ञाणस्स काउस्सग करेति, तस्स भेया ठाणचउत्थठाणाओऽवसेया। 'णमो अरिहताणं' चुतूण काउस्सगो पारिजह, तओ 'लोगस्स०' फुह उच्चारिजह ति विही ।

**अह छट्ठं पश्चक्ष्याणावस्सय**

**समुद्दयपवर्षेखायदाटो**

गठिसहिं चुट्टियहिं चमुक्कारसहिं पोरिसिं चहूपेरिसिं (भिवमियर  
चालुसार) रिभिहपि चठमिहापि जाहार असर्वं पार्वं चाईं साहर्वं चम्मत्यवा-  
भोगेन्व सहस्रायरेण महत्तरमारेण सम्मधिशियायारेण गोरिहापि । हर छट्ठं  
पवर्षेखायावस्सयं समर्तं ॥ ६ ॥

**साययावस्सय(पदिक्षमण)सुच समर्तं**

**तद्वय परिसिटुं समत्तं**

**ऐसपरिसिटुविसए-**

सार्वज्ञोसो ताव विष्वद्वार, (जाव ११८ गाहा विष्वया) आपार  
सेसपार्वतराई (उवासुगद्वासेसपार्वतराई पिहृण्गासिए चुचाग  
मवसमपुष्के वहूम्याई) गाहाणुक्ममिया विसितुषामधर्वं प गंयमि-  
त्यरमया प विष्णा ।

१ विसेताव जामस्ताए छट्ठं पवर्षेखायावस्सयं चहूर्यं । २ उवं पवर्षद्वार तद्वय  
गोरिहापि ति चवद् अप्येति पवर्षेखायेत् क्वा गोरिरे ति विसेसो । तद्वये पवर्षा  
छम्ममावस्याभमह्यारसेवं विमिष्मामितुकर्वं विष्वद् । तद्वये तु अथ 'अमोऽत्यु च' ।  
३ विष्मा ताव संवित्ताहिं विष्वद्वारो परिहमनविही तर्हत्प्रवक्षमासमपारिही  
गोराहिही ऐसपर्याप्तिक(धंपर)विही भासाभोऽप्यसेवा ।





साधु पूर्ण रूप से पालते हैं। अतः इन घटों की पूर्णता यताने के लिये इन्हें महायत कहते हैं। ( २ ) दूसरा कारण यह है कि संसार में जितने भी घन हैं उन सब में ये घन थ्रेष हैं इमलिए भी इन्हें महायत कहते हैं।

प्र०—इन घटों का अर्थ समझाइए ?

उ०—मन से, वचन से, काय से प्राणी मात्र को कष्ट न पहुंचाना, प्रत्येक प्राणी पर मंथी भाव रखना अहिंसा है। हित, मित, प्रिय और यथार्थ वचन बोलना सत्य है। तिनका जैसी तुच्छ चीज़ भी विना स्वामी की आशा के न ग्रहण करना अचौर्य है। कामवासना का पूर्ण रूप से परित्याग कर आत्मा में विचर्णा ग्रहणचर्य कहलाता है द्रव्य, भाव, सचित्त, अचित्त, आदि समस्त प्रकार के परिप्रह को त्याग देना, संसार के किसी भी पदार्थ पर यहां तक कि शरीर पर भी ममता न रखना अपरिग्रह है।

प्र०—समिति का क्या स्वरूप है ?

उ०—यतना के साथ प्रवृत्ति करना समिति है। मुनिराज प्रत्येक क्रिया बहुत सावधानी से करते हैं।

प्र०—समिति कितनी है ?

उ०—पांच—(१) ईर्या समिति (२) भाषा समिति (३) एषणा समिति (४) आदाननिषेपण समिति (५) उत्सर्ग समिति ।

प्र०—इनका स्वरूप क्या है ?

उ०—यतना के साथ चार हाथ ज़मीन देखते हुए चलना ईर्या समिति है। हितकारी सत्य वचन बोलना भाषा समिति

है। निर्दोष आहार लेना एपणा समिति है। उपकरणों से जीव-रहित स्थान में सावधानी से रखना और उठाना आदाननिक्षेपण समिति है और यतना के साथ मत मृत्र का परित्याग करना उत्सर्ग समिति है।

०-निर्दोष आहार कौन सा है ?

०-जैन शास्त्रों में आहार के ४२ ढोप टाल कर साधु को आहार लेने का विधान है। उनका विवेचन अन्यत्र देखना चाहिए। यहां विस्तार भय से नहीं लिखा जाता। इतना समझ लेना चाहिये कि साधु किसी का निमंत्रण स्वीकार नहीं करते, अपने उद्देश्य से बनाया और खरीदा हुआ आहार नहीं लेते, सचित् भोजन नहीं करते, विकार बढ़ाने वाला पौष्टिक आहार नहीं लेते। रुखासूखा, सादा, बचा खुचा आहार जो अनेक घरों से भिजा ढारा मिल जाता है उसे समझ से ग्रहण करते हैं।

५०-गुस्ति किसे कहते हैं ?

६०-मन बचन और काय की प्रवृत्ति को रोक लेना गुस्ति कहलाता है।

७०-समिति और गुस्ति में क्या कन्तर है ?

८०-गुस्ति उत्सर्ग मार्ग है और अमिति अपवाद मार्ग है। मुनि को सामान्यत मन बचन काय की क्रियाओं का निरोध करना चाहिये यह गुस्ति है और यही उत्सर्ग मार्ग है। यदि मुनि इन क्रियाओं का निरोध करने में असमर्थ है तो ये सब क्रियाएँ कम से कम यतनापूर्वक तो अवश्य ही करे। यह अपवाद मार्ग है, इसी यतना को समिति कहते हैं। समिति अपवाद रूप है।

प्र०-गुरु की पहचान कैसी हो सकती है ?

उ०-सच्चे गुरु की पहचान कर लेना आसान नहीं है।

संसार में अनेक वैष्णवी व्यक्ति ऐसे हैं जो अपने को गुरु कहते हैं, तरह तरह के ढोंग करते हैं और चेलों को ढगते हैं। उनके भुलावे में पड़कर लोग अपना अद्वित कर बैठते हैं। इसलिये गुरु का निश्चय बहुत सावधानी से करना चाहिये।

प्र०-गुरु का निश्चय किन यातों से किया जाय ?

उ०-सच्चे गुरु का स्वरूप ऊपर थोड़ा बताया गया है। जो महापुरुष कंचन-कामिनी का सर्वथा त्यागी हो, फृटी कौड़ी भी अपने पास न रखता हो, हिंसा आदि पापों का पूर्ण रूप से त्यागी हो, स्वार्थ साधता हुआ परमार्थ का ढोंग न करता हो, निस्पृह हो, राग-डेप पर विजय पा रहा हो, घर-द्वार छोड़कर त्यागी बना हो, जिसका हृदय दया से भरा हुआ हो, विषयों की आशा से रहित हो, सब प्रकार के आरंभ-परित्रह से मुक्त हो, ज्ञान-ध्यान और तप में अनुरक्ष हो, उसे साधु या गुरु समझना चाहिये।

प्र०-साधु का वेष कैसा होता है ?

उ०-साधुपन और वेष का अनिवार्य नहीं है। कई असाधु भी साधु का वेष पहन लेते हैं और कई साधु भी साधु का अमुक नियत वेष नहीं पहनते। फिर भी सामान्य रूप से अलग-अलग सम्प्रदाय के साधुओं का वेष अलग-अलग होता है।

प्र०-जैन साधुओं का वेष क्या है ?

उ०-जैनों के भी अलग-अलग सम्प्रदाय हैं। उनके साधुओं के वेष भी अलग-अलग हैं।

प्र०-अपन किस सम्प्रदाय के है ?

उ०-श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय हमारा सम्प्रदाय है।

प्र०-श्वेत स्थान मुनियों का क्या मेष है ?

उ०-स्थानकवासी मुनि श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। यह वस्त्र सिले हुये नहीं होते। उनके मुख पर आठ अंगुल की मुख वस्त्रिका डोरे से वधी रहती है। जिससे कि मुँह से निकलने वाली गर्म वायु के आघात से छोटे जीवों की हिंसा न हो और कोई वाहर उड़ता-फिरता जीव मुँह में न चला जाय। जीवों की रक्षा के लिये मुनिराज ऊनका ओधा रखते हैं। उससे जमीन आदि पूँजते हैं। उनके पैरों में जूता नहीं होता, सिर खुला रहता है। गृहस्थों के घर से भिजा लाते हैं और वन्दना करने पर 'दया पालो' कहकर आशीर्वाद रूप धर्म-प्रेरणा करते हैं।

प्र०-मुनिराजों के और क्या कर्त्तव्य हैं ?

उ०-मुनिराजों के कर्त्तव्यों का वर्णन संक्षेप में होना कठिन है। मुनिराज मुक्ति के लिये सतत प्रयत्नशील रहते हैं। वे कठोर साधना करते हैं। वारह प्रकार की तपस्या इच्छा पूर्वक स्वीकार करते हैं। भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी आदि की वाईस परीयह सहन करते हैं। हमेशा पैदल विहार करते और जगह जगह दयाधर्म का प्रचार

फरते हैं। प्रातःकाल और सायंकाल प्रतिदिन श्रद्धा क्रमण करते हैं। प्रतिदिन अपने दस्त पात्र की प्रति लेखना करते हैं। आत्मा के ध्यान में मस्त रहते हैं शशु और मिथ्र पर समता भाव रखते हैं। आदर्श नृत्कार की चाहना नहीं करते। शरीर को सुन्दर धनाः के लिये ध्यान, लेपन आदि नहीं करते।

प्र०-प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?

उ०-सावधानी रखने पर भी कभी कभी मन शुभ योग से अशुभ योग में प्रवृत्त हो जाता है। ऐसे मन को पुनः शुभ योग में लौटाना प्रतिक्रमण कहलाता है। प्रतिक्रमण में पापों की निन्दा-गर्ही की जाती है। ऐसा करने से पापों पर अद्वितीय होती है। आत्मा में निर्मलता आती है। इसलिये सुनिराज प्रति दिन दो बार प्रतिक्रमण करते हैं।

### धर्म-

प्रश्न-धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर-जो संसारी जीवों को दुःख से छुड़ाकर उत्तम सुख में धारण करता है उसे धर्म कहते हैं।

प्र०-धर्म यथा है ?

उ०-धर्म की अनेक व्याख्याएँ शास्त्रकारों ने बताई हैं। मिथ्र भिन्न दृष्टियों से वै सब संगत और समन्वित हैं। जैसे-( १ ) सदाचार को धर्म कहते हैं।

( २ ) वस्तु-स्वभाव को धर्म कहते हैं।

इन व्याख्याओं में एक चरणानुयोग की दृष्टि से है और दूसरी द्रव्यानुयोग की दृष्टि से।

५०-सदाचार-धर्म का क्या अभिप्राय है ?

३०-'दसवेयाल्पिय' सूत्र में 'धर्मो मंगलमुक्तिकटु अहिंसा सजमो ततो' ऐसा कहा है। यहां अहिंसा, संयम और तप को उत्कृष्ट धर्म बतलाया गया है। किसी भी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाना, सब पर मित्रता की भावना रखना, अपनी इन्द्रियों को और मन को कावू में रखना या उनके उच्छ्वङ्खल व्यापार को रोकना तथा अहिंसा और संयम का पालन करने के हेतु कठिन से कठिन कष्ट सहना-तपस्या करना, यह धर्म है। इस छोटे से वाक्य में मानव जीवन के समस्त कर्त्तव्यों का सार संगृहीत कर दिया गया है। अहिंसा, संयम और तप, सदाचार का आदर्श है। यह तीन रत्न जिन भाग्यवान् को प्राप्त हो चुके वह उत्तम अलौकिक सुख का भोक्ता बन जाता है।

१०-यहां अहिंसा के साथ सत्य आदि को धर्म क्यों नहीं कहा ?

३०-अहिंसा का यहां व्यापक भाव लिया गया है। अतः सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य आदि सब धर्म अहिंसा में ही गम्भित हो जाते हैं। अहिंसा सब धर्मों का मूल है सत्य आदि उसकी शाखाएँ हैं। जिसने पूर्ण अहिंसा की आराधना की हो वह असत्य का आचरण नहीं कर सकता, चोरी नहीं कर सकता। अब्रह का सेवन नहीं कर सकता और परिग्रह के पाश में नहीं फैस सकता। क्योंकि असत्य आदि का आचरण करने से हिंसा होना अनिधार्य है।

प्र०-संयम, धर्म क्यों है ?

उ०-आत्मा रूपी राजा का मन्थी मन है और मन की दासी इन्द्रियाँ हैं। यह दोनों ही जब उच्छ्वेष्यल हो उठते हैं, इनमें तोलुपता पैदा हो जाती है तब आत्मा को पतन की ओर ले जाते हैं। अतः आत्मा रूपी राजा को चाहिये कि वह इनकी चौकसी करता रहे, उन्हें उच्छ्वेष्यल न होने देवे, अपने अधीन रखे। यही संयम कहलाता है। संयम उत्तम सुख का आवश्यक साधन है अतः वह भी धर्म है।

प्र०-तप, क्यों धर्म है ?

उ०-इन्द्रियों और मन का दमन करना तप है। जब वे उच्छ्वेष्यल हो उठते हैं तब उनका दमन करना आवश्यक है। अतः तप भी धर्म है।

प्र०-तप से दमन कैसे होता है ?

उ०-तप दो प्रकार का है—याहा और आभ्यन्तर। मुख्य रूप से याहा तप से इन्द्रियों का दमन होता है और आभ्यन्तर तप से मन का। या यों कहें कि इन्द्रियों के दमन को याहा तप और मन के दमन को आभ्यन्तर तप कहते हैं।

प्र०-याहा तप कितने हैं ?

उ०-छः हैं—अनशन, ऊनोदर, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्षणश्यासन और कायक्लेश।

प्र०-आभ्यन्तर तप कितने हैं ?

उ०-आभ्यन्तर तप भी छः हैं—प्रायक्षित्त, विनय, धैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान।

प्र०-नदाचार धर्म के और भी भेद हो सकते हैं ?

उ०-हां । साधु धर्म और गृहस्थ धर्म के भेद से दो भेद हो सकते हैं ।

प्र०-इन दोनों का अर्थ समझाइये ?

उ०-साधु-धर्म का संक्षिप्त वर्णन गुरु के प्रकरण में किया जा चुका है । एक देशविरति को श्रावक धर्म कहते हैं !

प्र०-देश विरति किसे कहते हैं ?

उ०-अहिंसा आदि व्रतों को एक देश से अर्थात् आंशिक रूप से पालन करना देशविरति है । उसे अणुव्रत भी कहते हैं । श्रावक पांच अणुव्रतों के साथ चार शिक्षा व्रत और तीन गुणव्रतों का भी पालन करता है । इस प्रकार श्रावक के १२ व्रत होते हैं ।

प्र०-अहिंसाणुव्रत का क्या खरूप है ?

उ०-निरपराधी ग्रस जोव की संकल्प पूर्वक हिंसा न करना और विना प्रयोजन स्थावर जीव की हिसान करना अहिंसाणुव्रत है ।

प्र०-सत्याणुव्रत किसे कहते हैं ?

उ०-स्थूल असत्य भापण न करना और दूसरे पर विपक्ष डालने वाला सत्य वचन भी न बोलना सत्याणुव्रत है ।

प्र०-अचौर्याणुव्रत किसे कहते हैं ?

उ०-स्थूल चोरी, जो लोक निन्दा के योग्य हो और राज्य छारा दण्डनीय हो, न करना अचौर्याणुव्रत कहलाता है ।

प्र०—थावक का और क्या कर्तव्य है ?

उ०—साधारणतया किसी भी धर्म के अनुयायियों के जीवन-व्यवहार की अच्छाई या बुराई को देखकर लोग उस धर्म की अच्छाई या बुराई का विचार करते हैं। यदि हमारा जीवन-व्यवहार निंदनीय होगा तो हमारा धर्म भी निंदनीय समझा जायगा, ऐसा सोच कर थावक को प्रत्येक कार्य करना चाहिये। किसी से सम्भापण करते समय, क्रय-विक्रय करते समय, लेन-देन के समय या स्वजन और परजनों से और व्यवहार करते समय अपने कर्तव्य का अर्थात् धर्म का विचार श्रवश्य रखना चाहिये। थावक, न्यायनीति से धन का उपार्जन करे, बड़ों का आदर सत्कार करे, मधुर वाणी बोले, अपनी पत्नी के साथ निश्चल और पवित्र व्यवहार रखे, धर्म और समाज को हानि पहुँचाने वाली कुरुदियों का विवेक पूर्वक परिस्थाग करे, अपने हृदय में विश्वप्रेम और राष्ट्रभक्ति को स्थान दे, सेवा भावी हो, करुणावान् हो, कायर न हो। राजा हो तो प्रजा को पुत्र के समान समझे, सेनापति हो तो प्रजा की रक्षा करे, मन्त्री हो तो सबी हितकर सलाह दे, व्यापारी हो तो देशहित के अनुकूल व्यापार करे। तात्पर्य यह है कि थावक अपने प्रत्येक कर्तव्य के द्वारा अपने जीवन को उन्नत बनावे और अपने धर्म का सिक्का दूसरों पर जमा दे।

प्र०—व्यवहार खाता और धर्म खाता अलग-अलग नहीं हैं ?

उ०—व्यवहार और धर्म अलग-अलग हैं परंतु जो अपने व्यवहार को धर्मस्थ बनाता है उहीं धर्मात्मा कहलाता है।

यह कभी न समझो कि कोई बुरा काम व्यवहार खाते में लिखा गया है इसलिये उसका फल तुम्हें नहीं भुगतना पड़ेगा । आत्मा एक है—अकेला है । सब कर्मों का फल उसे ही भोगना पड़ता है । आत्मा रोकड़-वही नहीं है, इसलिए उसमें इस प्रकार के दो खाते भी नहीं । यदि असमर्थता के कारण कोई धर्म विरुद्ध कार्य हो जाय तो उसे अधर्म ही समझना चाहिए, व्यवहार खाते में गिनकर उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

प्र०—वस्तु स्वरूप धर्म किसे कहते हैं ?

उ०—जिस-जिस द्रव्य का जो-जो स्वभाव है वही उसका धर्म है । उसी को वस्तु स्वभाव धर्म कहते हैं ।

प्र०—उदाहरण देकर भमभाइए ?

उ०—जैसे—जीव ज्ञान, दर्शन, वीर्य और सुख स्वभाव चाला है । जीव के स्वभाविक गुण हैं । जीव इनके निना कभी नहीं रह सकता और ये गुण जीव को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं पाये जा सकते । अतएव ये जीव के स्वभाव या धर्म कहलाते हैं । इसी प्रकार पुद्गल के गुण रूप, रस, गध और स्पर्श हैं । धर्म द्रव्य का गुण गति-सहाय, अधर्म द्रव्य का स्थिति सहाय, आकाश द्रव्य का अवगाहदान और काल द्रव्य का परिणमन सहाय है । यही इनका स्वरूप है ।

प्र०—धर्म की दो व्याख्याओं में भेद क्या है ?

उ०—सदाचार धर्म साधन है और वस्तुस्वभाव धर्म साध्य है । अर्थात् अहिंसा आदि व्रतों के पालन करने से सब कर्मों का क्षय हो जाता है और आत्मा के असाधारण ज्ञान आदि गुण निर्मल और पूर्ण व्यक्त हो जाते हैं ।

प्र०-धर्म से भगड़े पैदा होते हैं, तो उसे मानने की आवश्यकता क्या है ?

उ०-धर्म का पहले जो स्वरूप बतलाया गया है उससे संसार में भगड़े उत्पन्न नहीं हो सकते। वह जहाँ आत्मा का विकास करता है वही संसार में शांति, प्रेम, दया, सहानुभूति और समता का प्रचार करता है। धर्म संसार को भी स्वर्गधार बनाता है। सच्चा धर्म कभी क्लेश नहीं पैदा करता।

प्र०-सच्चे धर्म की पहचान कैसे हो ?

उ०-जो धर्म बीतराग महर्षियों ने बतलाया है, जहाँ दया को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, जहाँ पक्षपात नहीं किन्तु म्याढाद की प्रस्तुति है, जो आत्मा को परमात्मा बनाने का मार्ग बतलाता है, जिसके उपदेशक गुरु परिग्रही नहीं हैं, जिस धर्म के माने हुए देव हथियार नहीं रखते, स्त्रियों से विरक्ष हैं, वही धर्म सच्चा है।

प्र०-सम्प्रदाय और धर्म में कुछ भेद है ?

उ०-हाँ, सम्प्रदाय में प्रायः कदाप्रह होता है, धर्म में नहीं। धर्म मानव का सच्चा सखा है, सच्चा हितकारी है। जो अपने धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।



हंता अतिथि, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ ७१ ॥ इमीसे ण भते ! रथणप्पभाए पुढवीए खरकंडे केवइयं वाहलेण पण्णते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्राइ बाहलेण पन्नते ॥ इमीसे ण भते ! रथणप्पभाए पुढवीए रथणकडे केवइयं वाहलेण पन्नते ? गोयमा ! एक जोयणसहस्र वाहलेण पण्णते, एवं जाव रिट्टे । इमीसे ण भते ! रथ० पु० पकवहुले कडे केवइयं वाहलेण पन्नते ? गोयमा ! चउरसीइजोयणसहस्राइ वाहलेण पण्णते । इमीसे ण भते ! रथ० पु० आववहुले कडे केवइयं वाहलेण पन्नते ? गोयमा ! असीइ-जोयणसहस्राइ बाहलेण पन्नते । इमीसे ण भते ! रथणप्पभाए पु० घणोदही केवइयं वाहलेण पन्नते ? गोयमा ! वीस जोयणसहस्राइ वाहलेण पण्णते । इमीसे ण भते ! रथ० पु० घणवाए केवइयं वाहलेण पन्नते ? गोयमा ! असखेजाइ जोयणसहस्राइ वाहलेण पण्णते, एवं तणुवाएऽवि ओवासतरेऽवि । सक्करप्प० भते ! पु० घणोदही केवइयं वाहलेण पण्णते ? गोयमा ! वीस जोयणसहस्राइ वाहलेण पण्णते । सक्करप्प० पु० घणवाए केवइयं वाहलेण पण्णते ? गोयमा ! असखे० जोयणसहस्राइ वाहलेण पण्णते, एवं तणुवाएऽवि, ओवासतरेवि जहा सक्करप्प० पु० एवं जाव अहेसत्तमा ॥ ७२ ॥ इमीसे ण भते ! रथणप्प० पु० असीउत्तरजोयणसयसहस्रबाहलाए खेतच्छेएण छिजमाणीए अतिथि दब्बाइ वण्णओ कालनीललोहियहालिद्धसुक्लिलाइं गधओ सुरभि-गधाइ दुविभगवाइ रसओ तितकहुयकरायअविलमहुराइ फासओ कक्खडमउयगरु-यलहुसीयउसिणिद्धलुक्खवाइ सठाणओ परिमडलवद्वत्सचउरसआययसठाणपरिणयाइं अश्वमश्वद्वाइ अण्णमण्णपुट्टाइं अण्णमण्णओगाढाइ अण्णमण्णसिणेहपडिवद्वाइ अण्ण-मण्णघडत्ताए चिट्टुति ? हता अतिथि । इमीसे ण भते ! रथणप्पभाए पु० खरकडस्स सोलसजोयणसहस्रवाहलस्स खेतच्छेएण छिजमाणस्स अतिथि दब्बाइ वण्णओ काल जाव परिणयाइ ? हता अतिथि । इमीसे ण भते ! रथणप्प० पु० रथणनामगस्स कडस्स जोयणसहस्रवाहलस्स खेतच्छेएण छिज० त चेव जाव हता अतिथि, एवं जाव रिट्टस्स, इमीसे ण भते ! रथणप्प० पु० पकवहुलस्स कडस्स चउरसीइ-जोयणसहस्रवाहलस्स खेते त चेव, एवं आववहुलस्सवि असीइजोयणसहस्रवाहलस्स । इमीसे ण भते ! रथणप्प० पु० घणोदहिस्स वीस जोयणसहस्रवाहलस्स खेतच्छेएण तहेव । एवं घणवायस्स असखेजजोयणसहस्रवाहलस्स तहेव, ओवासतरस्सवि त चेव ॥ सक्करप्पभाए ण भते ! पु० वतीसुत्तरजोयणसयसहस्रवाहलस्स खेतच्छेएण छिजमाणीए अतिथि दब्बाइ वण्णओ जाव घडत्ताए चिट्टुति ? हता अतिथि, एवं घणोदहिस्स वीसजोयणसहस्रवाहलस्स घणवायस्स असखेजजोयणसहस्रवाहलस्स, एवं जाव ओवासतरस्स, जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ ७३ ॥

इमा च भंते । रमण्य पु निर्संठिया फलता ॥ गोममा । साकरिसंठिया फलता ।  
 इमीसे च भंते । रमण्य पु चर्कडे निर्संठिय पलते ॥ गोममा । साकरिसंठिय  
 फलते । इमीसे च भंते । रमण्य पु रमण्डे निर्संठिय फलते ॥ गोममा ।  
 साकरि संठिय फलते एव जाव रिदे, एवं पंकजहुलेहि एवं आवशुलेहि चोदहाहि  
 अम्बाएहि तुषुपाएहि लोमासतरेहि सम्बे साकरिसंठिया फलता । साकरण्यमा च  
 भंते । पुष्ट्री निर्संठिया फलता ॥ गोममा । साकरिसंठिया फलता साकरण्यमापुढ़ीर  
 चोदहाहि निर्संठिय फलते ॥ गोममा । साकरिसंठिय फलते एवं जाव लोमासतरे,  
 जहा साकरण्यमाए चतुष्मा एवं जाव भोदसतमाए ॥ ७४ ॥ इमीसे च भंते ।  
 रमण्य पुष्ट्रीए पुरतिमिक्काओ चरिमेताओ केवहन भवाहाए चेवंते फलते ।  
 गोममा । तुकाळहाहि चोमबेहि अवाहाए चेवंते फलते एव वाहिमिक्काओ चरिमि-  
 मिक्काओ उत्तरिक्काओ । साकरण्य पु पुरतिमिक्काओ चरिमेताओ केवहन भवाहाए  
 चेवंते फलते ॥ गोममा । दिमाग्येहि तरसहि चोमबेहि अवाहाए चेवंते फलते  
 एवं चरिमिक्कियि । बालुण्य पु पुरतिमिक्काओ पुष्ट्र गोममा । सरिमागेहि तेरसहि  
 चोमबेहि अवाहाए चेवंते फलते एवं चरिमिक्कियि एवं सम्भासि अउमुवि दिसाह  
 पुष्ट्रिमर्म । पंकज चोहसहि चोवलेहि अवाहाए चेवंते फलते । पंचमाए दिमाग्येहि  
 पवरसहि चोवलेहि अवाहाए चेवंते फलते । छहीए सरिमागेहि पवरसहि चोवलेहि  
 अवाहाए चेवंते फलते । उत्तमीए शोभसहि चोवलेहि अवाहाए चेवंते फलते  
 एवं जाव उत्तरिक्काओ ॥ इमीसे च भंते । रमण्य पु पुरतिमिक्के चरिमते च्छविहे  
 फलते ॥ गोममा । दिविहे फलते तंजहा—मालादहिवलय भजवाववन्य तुषुपाच  
 वलय । इमीसे च भंते । रमण्य पु चाहिमिक्के चरिमते च्छविहे फलते ॥ चोममा ।  
 दिविहे फलते तंजहा—एवं जाव उत्तरिहे पूर लम्भासि जाव भोदसतमाए  
 उत्तरिहे ॥ ७५ ॥ इमीसे च भंते । रमण्य पुष्ट्रीए चोदहिक्षय केवहन  
 चाहेहेव फलते ॥ गोममा । ८ चोमजामि बाहेहेव फलते । साकरण्य पु चोदह  
 हिक्षय केवहन चाहेहेव फलते ॥ गोममा । सरिमागाई छोमेवतह चाहेहेव फलते ।  
 बासुक्षयमाए पुष्ट्र गोममा । दिमाग्यूक्षय सत चोमजाई चाहेहेव प । एवं एवं  
 अग्निमध्येवं पंकज्यमाए सत चोमजाई चाहेहेव फलते । भूमण्यमाए सरिमागाई सत  
 चोमजाई चा फलते । तुषुप्यमाए दिमाग्यूक्षय अदु चोमजाई । तुषुप्यमाए अदु  
 चोमजाई ॥ इमीसे च भंते । रमण्य पु पवरामवलय केवहन चाहेहेव फलते ॥  
 गोममा । अदर्पचमाई चोमजाई चाहेहेव । साकरण्यमाए पुष्ट्र गोममा । चोमजाई  
 चंच चोमजाई चाहेहेव फलते एवं दृष्टं अभिघनेवं बासुक्षयमाए चंच चोमजाई

વાહલેણ પણતો, પકપ્પભાએ સક્કોસાઇ પચ જોયણાઇ વાહલેણ પણતો । ધૂમપ્પ-  
ભાએ અદ્ધચ્છાઇ જોયણાઇ વાહલેણ પણતો, તમપ્પભાએ કોસૂણાઇ છજોયણાઇ  
વાહલેણ પણતો, અહેસત્તમાએ છજોયણાઇ વાહલેણ પણતો ॥ ઇમીસે ણ ભતે !  
રયણપ્પ૦ પુ૦ તણુવાયવલએ કેવિયં વાહલેણ પણતો ? ગોયમા ! છક્કોસેણ વાહલેણ  
પણતો, એવ એણ અભિલાઘેણ સક્કરપ્પભાએ સતિભાગે છક્કોસે વાહલેણ પણતો । વાલુ-  
યપ્પભાએ તિભાગૂળે સત્તકોસે વાહલેણ પણતો । પકપ્પભાએ પુઢવીએ સત્તકોસે વાહલેણ  
પણતો । ધૂમપ્પભાએ સતિભાગે સત્તકોસે । તમપ્પભાએ તિભાગૂળે અટુકોસે વાહલેણ  
પણતો । અહેસત્તમાએ પુઢવીએ અટુકોસે વાહલેણ પણતો ॥ ઇમીસે ણ ભતે ! રયણપ્પ૦  
પુ૦ ઘણોદહિવલયસ્સ છજોયણવાહલસ્સ ખેતન્છેએણ છિજમાણસ્સ અતિથ દવ્વાઇં  
વણઓ કાલ જાવ હતા અતિથ । સક્કરપ્પભાએ ણ ભતે ! પુ૦ ઘણોદહિવલયસ્સ  
સતિભાગછજોયણવાહલસ્સ ખેતન્છેએણ છિજમાણસ્સ જાવ હતા અતિથ, એવ જાવ  
અહેસત્તમાએ જ જસ્સ વાહલ । ઇમીસે ણ ભતે ! રયણપ્પ૦ પુ૦ ઘણવાયવલયસ્સ  
અદ્વપચમજોયણવાહલસ્સ ખેતન્છેએણ છી । જાવ હતા અતિથ, એવ જાવ અહેસત્તમાએ જ  
જસ્સ વાહલ । એવ તણુવાયવલયસ્સવિ જાવ અહેસત્તમા જ જસ્સ વાહલ ॥ ઇમીસે ણ  
ભતે ! રયણપ્પભાએ પુઢવીએ ઘણોદહિવલએ કિસઠિએ પણતો ? ગોયમા ! વણે વલયા-  
ગારસઠાણસઠિએ પણતો જે ણ ઇમ રયણપ્પમ પુડવિ સબ્વાઓ ૦ સપરિક્ષિવિત્તાણ  
ચિદ્ધિઃ, એવ જાવ અહેસત્તમાએ પુ૦ ઘણોદહિવલએ, ણવરં અપ્પણપ્પણ પુઢવિં સપરિક્ષિ-  
વિત્તાણ ચિદ્ધિઃ । ઇમીસે ણ રયણપ્પ૦ પુ૦ ઘણવાયવલએ કિસઠિએ પણતો ? ગોયમા !  
વણે વલયાગારે તહેવ જાવ જે ણ ઇમીસે રયણપ્પ૦ પુ૦ ઘણોદહિવલય સબ્વાઓ  
સમતા સપરિક્ષિવિત્તાણ ચિદ્ધિઃ એવ જાવ અહેસત્તમાએ ઘણવાયવલએ । ઇમીસે ણ  
ભતે ! રયણપ્પ૦ પુ૦ તણુવાયવલએ કિસઠિએ પણતો ? ગોયમા ! વણે વલયાગાર-  
સઠાણસઠિએ જાવ જેણ ઇમીસે રયણપ્પ૦ પુ૦ ઘણવાયવલય સબ્વાઓ સમતા  
સપરિક્ષિવિત્તાણ ચિદ્ધિઃ, એવ જાવ અહેસત્તમાએ તણુવાયવલએ ॥ ઇમા ણ ભતે !  
રયણપ્પ૦ પુ૦ કેવિય આયામવિક્ષમેણ પ૦ ? ગોયમા ! અસખેજાઇ જોયણસહસ્સાઇ  
આયામવિક્ષમેણ અસખેજાઇ જોયણસહસ્સાઇ પરિક્ષેવેણ પણતા, એવ જાવ અહે-  
સત્તમા ॥ ઇમા ણ ભતે ! રયણપ્પ૦ પુ૦ અતે ય મજ્જે ય સબ્વત્થ સમા વાહલેણ  
પણતા ? હતા ગોયમા ! ઇમા ણ રયણ૦ પુ૦ અતે ય મજ્જે ય સબ્વત્થ સમા  
વાહલેણ, એવ જાવ અહેસત્તમા ॥ ૭૬ ॥ ઇમીસે ણ ભતે ! રયણપ્પ૦ પુ૦ સબ્વજીવા  
ઉવવણપુબ્વા ? સબ્વજીવા ઉવવણા ?, ગોયમા ! ઇમીસે ણ રય૦ પુ૦ સબ્વજીવા  
ઉવવણપુબ્વા નો ચેવ ણ સબ્વજીવા ઉવવણા, એવ જાવ અહેસત્તમાએ પુઢવીએ ॥

इमा र्हं भर्ते । रमण पु समजीनेहि विजयपुष्पा । समजीनेहि विजया । गोममा ।  
 इमा एं रमण पु समजीनेहि विजयपुष्पा नो खेळ न समजीवविद्वा एं  
 जाव अहेसातमा ॥ इमीसे र्हं भर्ते । रमण पु समजोमम्ब पविद्युपुष्पा । सम-  
 जोमग्राम पविद्यु । योममा । इमीसे र्हं रमण पुड्याए समजोमम्ब पविद्युपुष्पा खो  
 खेळ न समजोमम्ब पविद्यु एं जाव अहेसातमाए पुड्याए ॥ इमा र्हं भर्ते ।  
 रमणप्पमा पुड्याए समजोमम्बेहि विजयपुष्पा । समजोमम्ब पविद्युपुष्पा खो  
 खेळ न समजोमम्बेहि विजया । गोममा । इमा र्हं रमणप्पमा पुड्याए कि  
 सासाया असासाया । योममा । यिय सासाया ठिक असासाया ॥ से केवद्वैर्यं भर्ते ।  
 एव तुच्छ-ठिक यासाया ठिक असासाया । योममा । दम्भुप्पाए सासाया भम्भ-  
 फ्वर्वेहि गंकल्पवेहि रुप्पवेहि घ्राप्पव्ववेहि असासाया से तेवद्वैर्यं योममा ।  
 एव तुच्छ-र्त खेळ जाव ठिक असासाया एव जाव अहेसातमा ॥ इमा र्हं भर्ते ।  
 रमणप्पमा पु समजोमम्बेहि होए । गोममा । न क्वाह न आसि व क्वाह  
 यतिथ प क्वाह य भवित्वाह भुवि न मवाह य मवित्वाह म तुका विद्या सासाया  
 अकल्पया अम्बया अबहुत्या पिता एव जाव अहेसातमा ॥ ७८ ॥ [ इमीसे र्हं  
 भर्ते । रमणप्पमाए पुड्याए उवरिक्षामो चरिमंतामो हेड्हिंचे चरिमंते एव खे-  
 केवद्वैर्यं अवाहाए अंतरे पक्षते । गोममा । अवित्तरे योम्पस्यसाहस्रं अवाहाए  
 अतरे क्वाहते । इमीसे र्हं भर्ते । रमण पु उवरिक्षामो चरिमंतामो वारस्तु  
 फ्वर्वस्तु हेड्हिंचे चरिमंते एव न केवद्वैर्यं अवाहाए अतरे पक्षते । योममा । योम्प  
 योम्पस्यसाहस्रं अवाहाए अंतरे पक्षते] इमीसे र्हं भर्ते । रमणप्पमाए पुड्याए उव-  
 रिक्षामो चरिमंतामो रमणस्तु हेड्हिंचे चरिमंते एव खे केवद्वैर्यं अवाहाए अठरे  
 पक्षते । गोममा । एव योम्पस्यस्यसाहस्रं अवाहाए अंतरे पक्षते ॥ इमीसे र्हं भर्ते ।  
 रमण पु उवरिक्षामो चरिमंतामो वारस्तु फ्वर्वस्तु उवरिक्षे चरिमंते एव खे  
 केवद्वैर्यं अवाहाए अतरे पक्षते । योममा । एव योम्पस्यस्यसाहस्रं अठरे प ॥  
 इमीसे र्हं भर्ते । रमण पु उवरिक्षामो चरिमंतामो फ्वर्वस्तु हेड्हिंचे  
 चरिमंते एव खे केवद्वैर्यं अवाहाए अतरे प । गोममा । यो योम्पस्यस्यसाहस्रं इमीसे  
 र्हं अवाहाए अठरे पक्षते एव जाव रिक्षस्तु उवरिक्षे पवरस्तु योम्पस्यस्यसाहस्रं  
 हेड्हिंचे चरिमंते योम्प योम्पस्यस्यसाहस्रं ॥ इमीसे र्हं भर्ते । रमणप्प पु उवरि-  
 क्षामो चरिमंतामो फ्वर्वस्तु उवरिक्षे चरिमंते एव र्हं अवाहाए केवद्वैर्यं  
 अतरे पक्षते । गोममा । योम्प योम्पस्यस्यसाहस्रं अवाहाए अठरे पक्षते । हेड्हिंचे

चरिमते एक जोयणसयसहस्स आववहुलस्स उवरि एक जोयणसयसहस्स हेट्टिले  
चरिमते असीउत्तर जोयणसयसहस्स । घणोदहिउवरिले असीउत्तरजोयणसयसहस्स  
हेट्टिले चरिमते दो जोयणसयसहस्साइ । इमीसे ण भते । रयण० पुढ० घणवायस्स  
उवरिले चरिमते दो जोयणसयसहस्साइ । हेट्टिले चरिमते असखेजाइ जोयणसयस-  
हस्साइ । इमीसे ण भते । रयण० पु० तणुवायस्स उवरिले चरिमते असखेजाइ  
जोयणसयसहस्साइ अवाहाए अतरे हेट्टिलेवि असखेजाइ जोयणसयसहस्साइ, एव  
ओवासतरेवि ॥ दोच्चाए ण भंते । पुढवीए उवरिलाओ चरिमताओ हेट्टिले चरिमते  
एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्ते ? गोयमा ! वत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्स  
अवाहाए अतरे पण्ते । सक्करप्प० पु० उवरि घणोदहिस्स हेट्टिले चरिमते वाव-  
णुत्तर जोयणसयसहस्स अवाहाए० । घणवायस्स असखेजाइ जोयणसयसहस्साइ  
पण्ताइ । एवं जाव उवासतरस्सवि जाव अहेसत्तमाए, णवरं जीसे ज वाहल तेण  
घणोदही सवधेयब्बो बुद्धीए । सक्करप्पभाए अणुसारेण घणोदहिसहियाण इम  
पमाण ॥ तच्चाए अड्यालीसुत्तर जोयणसयसहस्स । पक्प्पभाए पुढवीए चत्ताली-  
सुत्तरं जोयणसयसहस्स । यूमप्पभाए पु० अट्टीसुत्तर जोयणसयसहस्स । तमाए पु०  
छत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्स । अहेसत्तमाए पु० अट्टावीसुत्तर जोयणसयसहस्स जाव  
अहेसत्तमाए ण भते । पुढवीए उवरिलाओ चरिमताओ उवासतरस्स हेट्टिले चरिमते  
केवइय अवाहाए अतरे पण्ते ? गोयमा ! असखेजाइं जोयणसयसहस्साइं अवाहाए  
अतरे पण्ते ॥ ७९ ॥ इमा ण भते । रयणप्पभा पुढवी दोच्च पुढविं पणिहाय  
वाहलेण किं तुला विसेसाहिया सखेजगुणा ? वित्यरेण किं तुला विसेसहीणा सखेज-  
गुणहीणा ?, गोयमा ! इमा ण रयण० पु० दोच्च पुढविं पणिहाय वाहलेण नो तुला  
विसेसाहिया नो सखेजगुणा, वित्यारेण नो तुला विसेसहीणा नो सखेजगुणहीणा ।  
दोच्च ण भते । पुढवी तच्च पुढविं पणिहाय वाहलेण किं तुला एव चेव भाणियब्ब ।  
एव तच्चा चउत्थी पचमी छट्ठी । छट्ठी ण भते । पुढवी सत्तम पुढविं पणिहाय वाहलेण  
किं तुला विसेसाहिया सखेजगुणा ? एव चेव भाणियब्ब । सेव भते । २ ॥ ८० ॥  
पदमो नेरह्यउद्देसो समन्तो ॥

कइ ण भते ! पुढवीओ पण्ताओ ? गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्ताओ,  
तजहा-रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसे ण भते । रयणप्प० पु० असी-  
उत्तरजोयणसयसहस्सवाहलाए उवरि केवइय ओगाहित्ता हेट्टा केवइय वजित्ता मज्जे  
केवइए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्ता ? गोयमा ! इमीसे ण रयण०  
पु० असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहलाए उवरि एगं जोयणसहस्स ओगाहित्ता हेट्टावि

एवं जोपणसहस्रं क्षेत्रा मध्ये अडसतरी जोपणसदसहस्रा एवं वै रमण्यमाए  
पु नराहारं तीस निरमाणाससक्षाहस्रां भर्तिप्रिमक्षामा ॥ ते च चरण अतो  
वभ वाहि चररसा चाच अमूला परप्तु देवजा एवं एवं अस्त्रं अस्त्रं उक्तुर्क्षित्वा  
मालिक्ष्मयं ठात्रप्यमात्रुसारेण तत्त्वं च वाहां चत्प चत्पिता च नरमाणाससम-  
हस्रा चाच अहेत्तमाए पुष्टीए, अहेत्तमाए मालिक्ष्म केवल च अनुत्तरा मह-  
महान्मया महापिरया फलता एवं पुष्टिप्पर्वं वायरेमर्वंपि तदेव अहित्तमात्रु चर-  
व अग्निक्षमाभा मालिक्ष्मा ॥ १ ॥ इमीषे च भेदे । रमण्यमाए पुष्टीए  
चरण विसंठिया फलता । गोमना ! दुष्टिहा फलता तंचहा—वाविष्मसिष्मा व  
आविष्मसिष्मा हिरा य तत्प च चे ते आविष्मसिष्मा हिरा ते दिष्मिता फलता तंचहा—  
वभ तंचा चररसा तत्प च चे ते आविष्मसिष्मा हिरा ते वावार्छिताभसंठिया फलता  
तंचहा—अस्त्रेदुसंठिया पितृप्यमासंठिया विष्मितिप्यसंठिया उडवसंठिया मुरु-  
संठिया तुर्वगसंठिया भविष्मुर्वगसंठिया आविष्मवसंठिया सुबोदसंठिया वरक्षसंठिया  
पवसंठिया पवसंठिया नेविचंठिया लक्ष्मीसंठिया दुर्वगसंठिया नाविसंठिया  
एवं चाच तमाए ॥ अहेत्तमाए च भेदे । पुष्टीए चरण विसंठिया फलता !  
गोमना ! दुष्टिहा फलता तंचहा—देह च तंचा य ॥ इमीषे च भेदे । रमण्यमाए  
पुष्टीए चरण वेद्यं चाहेने फलता ! गोमना ! विष्मिति जोपणसहस्रां चाहेने  
फलता तंचहा—देह च चा सहस्रं मध्ये शुसिरा सहस्रं उपिति चाहेना सहस्रं एवं  
चाच अहेत्तमाए ॥ इमीषे च भेदे । रमण्य पु चरण वेद्यं आवामलिक्ष्मये चे  
वेद्यं परिष्मेवेण फलता । गोमना ! दुष्टिहा फलता तंचहा—संकेजविष्मवा  
व अस्त्रेवामित्यवा य तत्प च चे ते संकेजविष्मवा ते च संकेजार्द जोपणसहस्रां  
वावामलिक्ष्मये चाहेना जोपणसहस्रां परिष्मेवेण फलता तत्प च चे ते  
अस्त्रेवामित्यवा ते च अस्त्रेवार्द जोपणसहस्रां आवामलिक्ष्मय अस्त्रेवार्द  
जोपणसहस्रां परिष्मेवेण फलता एवं चाच तमाए, अहेत्तमाए च भेदे । पुष्टम्  
गोमना दुष्टिहा फलता तंचहा—संकेजविष्मवा व अस्त्रेवामित्यवा व तत्प च  
चे ते संकेजविष्मवे चे चे एवं एवं जोपणसहस्रां आवामलिक्ष्मये चिति जोपण-  
सहस्रां द्येवं सहस्रां द्येवं य चतारीषे जोपणसहस्रां द्येवं य चक्षुवीष  
व चलुत्वं तेरस व अणुप्तां अद्युत्वं च विष्मितिसेषाहिप परिष्मेवेण फलते  
तत्प च चे ते अस्त्रेवामित्यवा ते च अस्त्रेवार्द जोपणसहस्रां आवाम-  
लिक्ष्मये अस्त्रेवार्द चाच परिष्मेवेण फलता ॥ २ ॥ इमीषे च भेदे । रमण-

प्पभाए पुढवीए नरया केरिसया वणेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा गमीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वणेण पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा केरिसया गंधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा सुणगमडेइ वा मज्जारमडेइ वा मणुस्समडेइ वा महिसमडेइ वा मूसगमडेइ वा आसमडेइ वा हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा वग्घमडेइ वा विगमडेइ वा दीवियमडेइ वा मयकुहियचिरविणटुकुणिमवावण्ण-दुविभगधे असुइविलीणविगयवीभत्यदरिसणिजे किमिजालाउलससते, भवेयाख्वे सिया ?, णो इण्डे समटे, गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिष्टतरगा चेव अकततरगा चेव जाव अमणामतरगा चेव गधेण पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु० णरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए असिपतेइ वा खुरपतेइ वा कलवचीरि-यापतेइ वा सत्तिगेइ वा कुतगेइ वा तोमरगेइ वा नारायगेइ वा सूलगेइ वा ल्हुलगेइ वा भिंडिमालगेइ वा सूइकलवेइ वा कवियच्छूइ वा विंचुयकटएइ वा इगालेइ वा जालेइ वा मुमुरेइ वा अच्छीइ वा अलाएइ वा सुद्धागणीइ वा, भवे एयाख्वे सिया ?, णो इण्डे समटे, गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिष्टतरगा चेव जाव अमणामतरगा चेव फासेण पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ ८३ ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरगा केमहालया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण्ण जबुदीवे २ सव्वदीवसमुद्दाण सव्वभतरए सव्वखुद्दाए वेटे तेलापूवस्थाणसठिए वेटे रहचक्कवालसठाणसठिए वेटे पुक्खरकणियासठाणसठिए वेटे पडिपुण्णचदसठाणसठिए एक्क जोयणसयसहस्र आयामविक्ख-मेण जाव किविविसेसाहिए परिक्खेवेण, देवे ण महिष्ठिए जाव महाणुभागे जाव इणामेव इणामेवत्तिकटु इम केवलकृप्य जबुदीव २ तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्त-खुतो अणुपरियष्टिताण हब्बमागच्छेज्जा, से ण देवे ताए उक्किष्टाए तुरियाए चवलाए चडाए सिग्धाए उज्जुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए दिव्वगईए वीइवयमाणे २ जहणेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा उक्कोसेण छम्मासेण वीइवएज्जा, अत्थेगइए वीइवएज्जा अत्थेगइए नो वीइवएज्जा, एमहालया ण गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा पण्णत्ता, एव जाव अहेसत्तमाए, णवरं अहेसत्तमाए अत्थेगइय नरगा वीइवएज्जा, अत्थेगइए नरगे नो वीइवएज्जा ॥ ८४ ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किंमया पण्णत्ता ? गोयमा ! सव्ववद्दरामया पण्णत्ता, तत्य ण नरएसु वहवे जीवा य पोगला य अवक्षमति विउक्कमति चयति

उवक्त्वंति सासदा वै ह अरया उच्छ्रुताए अन्यपञ्चवेणै गैषपञ्चनेणै रुपञ्चनेणै  
आसपञ्चनेणै व्याघात्यना एवं जाव भ्रहेसलमाए ॥ ८५ ॥ इमीसे वै भर्ते । रक्षण्य-  
माए पुढीए नेत्रका क्षोङ्खितो उवक्त्वंति कि असुष्णीहितो उवक्त्वंति सरीकिवेहितो  
उवक्त्वंति पक्षवीहितो उवक्त्वंति चठप्पहितो उवक्त्वंति उरगेहितो उवक्त्वंति  
इतियाहितो उवक्त्वंति मच्छमयुएहितो उवक्त्वंति ॥ गोममा । असुष्णीहितो  
उवक्त्वंति जाव मच्छमयुएहितो उवक्त्वंति असुष्णी रुहु पद्म दोर्ब च सरीकिया  
तद्य पक्षवी । सीहा जंति चउतिं उरया पुज पैकिं जंति ॥ ८६ ॥ इद्यु प  
इतियामो मच्छम मुकुता य सतमि जंति । जाव भ्रहेसलमाए पुढीए नेत्रका ये  
असुष्णीहितो उवक्त्वंति जाव यो इतियाहितो उवक्त्वंति मच्छमयुस्तेहितो उवक्त्वंति ॥  
इमीसे वै भर्ते । रक्षण्य पु नेत्रका एक्कुमपूर्ण केनका उवक्त्वंति ॥  
योममा । चाल्येष पृष्ठो वा दो वा तिंडि वा उक्षोसेष चुकेजा वा असुकेजा वा  
उवक्त्वंति एवं जाव भ्रहेसलमाए ॥ इमीसे वै भर्ते । रक्षण्य पुढीए नेत्रका  
समए समए अवहीरनामा अवहीरमामा केनकुमेय अवहिया सिवा ॥ गोममा । ते  
वै असुकेजा समए समए अवहीरमामा अवहीरमामा असुकेजाहि चस्तपिकीमो-  
स्तपियोहि अवहीरति भो नेत्र वै अवहिया सिवा जाव भ्रहेसलमा ॥ ८७ ॥ इमीसे वै  
भर्ते । रक्षण्य पु नेत्रका पैकिया सरीकेयाहिया फलता ॥ योममा ।  
दुशिहा सरीकेयाहिया पम्पता उवक्त्वा—मवधारमिका य उत्तरकेतुमिका य तद्य  
वा जा सा मवधारमिका सा चाल्येष मच्छमस्त असुकेजमार्य उक्षोसेन्द्र उत्तर  
तिमिं व रक्षीयो उव अगुक्कार्यं तद्य यं जे से उत्तरकेतुमिके से उव अगुक्कार्य  
सुकेजमार्य उक्को पम्परस अगुक्कार्य महाश्वामो रक्षीयो दोनाए मवधारमिके  
ज्ञान्द्वयो अगुक्कार्यसुकेजमार्य उक्को पम्परस पम्परस अगुक्कार्य रक्षीयो उत्तरकेतु-  
मिका यह अगुक्कार्य सुकेजमार्य उक्को एक्कीस अगुक्क एका रक्षी तद्याए  
मवधारमिके एक्कीस अगुक्क एका रक्षी उत्तरकेतुमिका अगुक्क अगुक्क दोनिं  
रक्षीयो उत्तरकेतुमिके वासहि अगुक्क दोनिं य रक्षीयो उत्तरकेतुमिका  
पलदीस अगुक्क फौमीए मवधारमिके पक्षीस अगुक्क उत्तरकेतुमिका फौमुक्क-  
मार्य, उक्काए मवधारमिका अगुक्कार्य अगुक्क उत्तरकेतुमिका फौमुक्क-  
मार्य, उत्तरकेतुमिका फौमुक्क उत्तरकेतुमिका फौमुक्करस ॥ ८८ ॥  
इमीसे वै भर्ते । रक्षण्य पु नेत्रका सरीता किंसुकमणी पम्पता ॥ योममा ।  
स्वर्वं सुकेजमार्य असुकेजमी नेत्रहि यं जिह जनि ज्ञाह नेत्र सुकेजमार्य जे  
योमम्प अविहु जाव अम्पमामा ते रेति सरीकेजमताए परिषमेति एवं जाव

अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० नेरइयाण सरीरा किसठिया पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता तजहा—भवधारणिज्ञा य उत्तरवेउव्विया य, तत्थ ण जे ते भवधारणिज्ञा ते हुडसठिया पण्णता, तत्थ ण जे ते उत्तरवेउव्विया तेवि हुडसठिया पण्णता, एव जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० ऐरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परमकिण्हा वण्णेण पण्णता, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते रयण० पु० नेरइयाण सरीरया केरिसया गधेण पण्णता ? गोयमा ! से जहानामए अहिमडेइ वा तं चेव जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० नेरइयाण सरीरया केरिसया फासेण पण्णता ? गोयमा ! फुडियच्छविविच्छविया खरफरसझामझुसिरा फासेण पण्णता, एव जाव अहेमत्तमा ॥ ८७ ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए ऐरइयाण केरिसया पोगला ऊसासत्ताए परिणमति ? गोयमा ! जे पोगला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं ऊसासत्ताए परिणमति, एवं जाव अहेसत्तमाए, एवं आहारस्सवि सत्तसुवि ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० नेरइयाण कह लेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एक्का काउलेसा पण्णता, एव सक्रप्पभाएऽवि, वालुयप्पभाए पुच्छा, गोयमा ! दो लेसाओ पण्णत्ताओ त०—नीललेसा य काउलेसा य, तत्थ जे काउलेसा ते बहुतरा जे नीललेस्सा पण्णता ते थोवा, पंकप्पभाए पुच्छा, एक्का नीललेसा पण्णता, वूमप्पभाए पुच्छा, गोयमा ! दो लेस्साओ पण्णत्ताओ, तजहा—किण्हलेस्सा य नीललेस्सा य, ते बहुतरगा जे नीललेस्सा, ते थोवतरगा जे किण्हलेसा, तमाए पुच्छा, गोयमा ! एक्का किण्हलेस्सा, अहेसत्तमाए एक्का परमकिण्हलेस्सा ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० नेरइया किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि सम्मामिच्छादिट्ठीवि, एव जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० ऐरइया किं नाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि, जे णाणी ते णियमा तिणाणी, तजहा—आभिणिवोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी, जे अण्णाणी ते अत्येगइया दुअण्णाणी अत्येगइया तिअच्छाणी, जे दुअच्छाणी ते णियमा मझअच्छाणी य सुयअण्णाणी य, जे तिअच्छाणी ते नियमा मझअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगणाणीवि, सेसा ण णाणीवि अण्णाणीवि तिणिण जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयण० पु० किं मणजोगी वझजोगी कायजोगी ? गो० । तिणिणवि, एव जाव अहेसत्तमाए ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाषु० नेरइया किं सागारोवउत्ता अणगारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणगारोवउत्तावि, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए ॥ [इमीसे ण भते ! रयणप्प० पु० नेरइया ओहिणा

करस्य चेति याप्ति पासेति । यामना । अद्विव अद्विवात्मार्द उद्वोषेषं चाप्तै  
पाठवाई । सहरप्पमापु एव विधि यात्मार्द उद्वो भवत्तुर्मु एवं भद्र-  
गात्म्यं परिहाय जाव अहसत्तमाए एव अद्वगात्म उद्वोषेषं पाठव्यं] इति॒  
वं भेत । रमण्प्पमापु पुढीपै नरश्यार्द एव सुग्रधामा पृथिव्या । येषम् ।  
चपारि सुग्रधामा पृथिव्या तुल्या—तेवासुम्प्याए क्षमायसुग्रधामा वार्ष-  
तिवक्तुग्रधामे वेत्तिवसुग्रधामा, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ ८८ ॥ इतीसे वं  
भेत । रमण्प्पमा पु नेत्र्या वेत्तिवसुग्रधिपासु पञ्चतुम्बमामा विद-  
र्शि । यामना । एमेषस्य वं रवज्यमापुद्विनेत्र्यस्य असम्बादपुढ़वार  
सम्बोद्धी वा सम्बोद्धमेवा आम्पसि पक्षिवेष्य वो एव वं से रवज्य  
पु वेत्रए विते वा विक्षा वित्तुर्वे वा विक्षा एविषया वं मोममा । रवज्यमाए  
पाट्या युहिष्यासु पञ्चतुम्बमामा विद्वैति एवं जाव अहेसत्तमापु ॥ इतीसे वं  
भेत । रवज्यमाए पु नेत्र्या किं एमत् पम् वित्तिवित्तए पुकुर्त्तिपि पम् वित्तिवि-  
त्तए । यामना । एमाद्यपि पम् पुकुर्त्तिपि पम् वित्तिवित्तए, एमत् वित्तिवेमामा एवे  
मह भोम्परव्य वा एवं पुकुर्त्तिवित्ताभिसत्तीहस्यामुख्यव्याप्त्यारामुक्त्येव  
सून्मुड्डिभित्तमाम्य जाव वित्तिवित्तव्य वा पुकुर्त्तिवित्तेमामा मोम्परव्यामि वा  
अव वित्तिवित्ताभित्तमि वा साई स्फेष्याई वो असंवेष्याई संवद्वाई वो असंवद्वाई  
सरिवाई वा अवरिवाई वित्तिवित्ताभित्तमाम्यस्य अवं अभिहृष्यमामा  
अभिहृष्यमामा वेष्यव्य वित्तिवित्त उद्वेष्य वित्तके फाहे झट्टे कुवे चरय निकुर्त्ते वेष्य  
वित्तिवित्तु तुमा तुर्विष्यास एवं जाव पूर्णमाए पुढीपै । छद्विष्यत्यामु वं  
पुढीपै नरश्या वहु मद्वत्तव्य व्येष्यव्युप्याई चरणमशुद्धिपै गोमयद्विवस्यार्द  
वित्तिवित्तिवित्ताभित्तमाम्यस्य सम्बुरेवेमामा ३ यामनामा यामनामा  
मद्वारामाक्षिया वित्त वात्येमामा २ भैता भौता अनुप्यवित्तमामा ४ वेष्यव्य वित्तिवित्त  
उद्वेष्य जाव तुर्विष्यास ॥ इतीसे वं भेत रवज्य पु नेत्र्या किं लीववव  
यद्वित्तिवित्तेवं वद्वित्ति लीभावित्तवेष्य वित्तिवित्ति ५ मोममा । वा सीव्य वित्तवेष्य वद्वित्ति  
उत्तिवेष्य वित्तवेष्य वा सीभावित्तवेष्य एवं जाव वाम्पमाप्पमाए पुष्ट्य  
माम्पमा सीव्यपि वित्तवेष्य वद्वित्ति उत्तिवेष्यपि वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य ६ वित्ति  
व वद्वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य ७ वित्तवेष्य  
पुष्ट्यमाए पुष्ट्यमाए लीव्यपि वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य ८ वित्तवेष्य  
वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य वित्तवेष्य ९ वित्तवेष्य १० वित्तवेष्य

वेयणं वेदेति, एव अहेसत्तमाए णवरं परमसीय ॥ इमीसे ण भते ! रथणप्प० पु०  
 ऐरह्या केरिसय पिरयभवं पच्चणुभवमाणा विहरति ? गोयमा ! ते ण तत्थ णिच्च भीया  
 णिच्च तसिया णिच्च छुहिया णिच्च उव्विगगा निच्च उपप्पुया णिच्च वहिया निच्च  
 परममसुभमउलमणुबद्ध निरयभव पच्चणुभवमाणा विहरति, एव जाव अहेसत्तमाए  
 ण पुढवीए पच अणुत्तरा महइमहालया महाणरगा पण्णता, तजहा—काले महाकाले  
 रोश्य ए महारोश्य अप्पइट्टाणे, तत्थ इसे पच महापुरिसा अणुत्तरेहिं दडसमादाणेहिं  
 काल्मासे काल किच्चा अप्पइट्टाणे णरए ऐरह्यताए उववण्णा, तजहा—रामे  
 जमदग्गिपुत्ते, दठाऊ लच्छइपुत्ते, वसू उवरिच्चरे, सुभूमे कोरव्वे, बभदत्ते चुलणिसुए,  
 ते ण तत्थ नेरह्या जाया काला कालो० जाव परमकिण्हा वण्णेणं पण्णता, तजहा—  
 ते ण तत्थ वेयण वेदेति उज्जल विउल जाव दुरहियासु ॥ उसिणवेयणिजेसु ण  
 भते ! णरह्येसु ऐरह्या केरिसयं उसिणवेयण पच्चणुभवमाणा विहरति ? गोयमा !  
 से जहाणामए कम्मारदारए सिया तरुणे बल्ब जुगव अप्पायके थिरगहत्ये दड-  
 पाणिपायपासपिट्टुतरोरुसधायपरिणए लघणपवणजवणवगणपमद्धणसमत्ये तलजमल-  
 जुयलवहुफलिहिणभवाहू घणणिच्चियवलियवद्वखंवे चम्मेड्गुहणमुद्वियसमाहयणिच्चिय-  
 गते उरस्सवलसमण्णागए छेए दक्खे पट्टे कुसले णिउणे मेहावी णिउणसिप्पोवगए  
 एग मह अयर्पिंड उदगवारसमाणं गहाय तं ताविय ताविय कोट्टिय कोट्टिय उव्विभ-  
 दिय उव्विभदिय चुणिण्य चुणिण्य जाव एगाह वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं  
 अद्भमास सहणेजा, से ण तं सीय सीईभूय अओमएण सदंसएण गहाय असव्वमाव-  
 पट्टवणाए उसिणवेयणिजेसु णरह्येसु पकिखवेजा, से ण तं उभ्मिसियणिमिसियतरेण  
 पुणरवि पच्चुद्वरेस्सामिनिकद्वु पविरायमेव पासेजा पविलीणमेव पासेजा पविद्धत्यमेव  
 पासेजा णो चेव ण सचाएइ अविराय वा अविलीण वा अविद्वत्यं वा पुणरवि  
 पच्चुद्वरित्तए ॥ से जहा नामए मत्तमातगे दुपए कुजरे सद्विहायणे पदमसरयकाल-  
 समयसि वा चरमनिदाघकालसमयसि वा उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवरिगजालाभिहए  
 आउरे सुसिए पिवासिए दुव्वले किलते एक महं पुक्खरिणि पासेजा चाउक्कोण  
 समतीर अणुपुव्वसुजायवप्पगभीरसीयलजल सछण्णपत्तभिसमुणाल वहुउपलक्ष्मुय-  
 पालिणसुभगसोगधियपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तसहस्रपत्तकेसरफुलोवच्चिय छप्पयपरि-  
 भुजमाणकमल अच्छविमलसलिलपुण्ण परिहत्यभमतमच्छकच्छभं अणेगसउणगण-  
 मिहुणयविरह्यसद्वन्नियमहुरसरणाइय त पासड त पासिता तं ओगाहइ ओगाहित्ता  
 से ण तत्थ उण्हपि पविणेजा तण्हपि पविणेजा खुहपि पविणेजा जरपि पवि०  
 दाहपि पवि० णिद्वाएज्ज वा पयलाएज्ज वा सइ वा रइ वा धिइ वा मइ वा उवलभेजा,

सीए सीबभूए संक्षमाये संक्षमाये साक्षात्कारवद्वारे याचि विद्वेजा एकामें  
ग्रेयमा। असम्भावपट्टुवापाए उत्तिष्ठत्यमित्येतिहो वरपट्टिहो नरशेष उच्छिष्ट  
ममाने जद्यै इमाई मणुस्मर्णेयंति मर्वति गोक्खिकास्त्रियाचि वा सोक्खियास्त्रियाचि वा  
भिडियास्त्रियाचि वा अवापराचि वा तंवागराचि वा तउवामरा सीकाग रूपामय  
कुवागराचि वा विरुद्धामरा कुभारामयीह वा मुकागर्णीह वा इत्यप्यर्णीह वा  
कुवुम्बायर्णीह वा दोहारंविषेह वा गंठवारामुखीह वा हृषियस्त्रियाचि वा गोक्खि-  
स्त्रियाचि वा सोक्खियकि पद्मागर्णीह वा शिल्मगर्णीह वा तुसागर्णीह वा तद्यं  
समज्ञेइमूर्ति फुर्मिदुयसमापाई वक्षासाहस्राई विभिन्नमुखमापाई जास्त्रसहस्राई  
पमुखमापाई इंगाम्बसहस्राई परिक्षरमापाई अंतो २ हुदुयमापाई विद्वेति तद्यं  
पास्त्रह तद्यं पाचिता ताई अग्राह ताई भासाविता से वं तद्यं उच्छिष्टपि परिवेज्ञा  
तद्यंपि परिवेज्ञा तद्यंपि परिवेज्ञा तद्यंपि परिवेज्ञा तद्यंपि परिवेज्ञा विद्वाएव वा  
पमल्लापूर्व वा सौई वा रद्द वा भिद वा महै वा उक्तमेज्ञा सीए सीबभूए सम्म  
माये संक्षमाये साक्षात्कारवद्वारे याचि विद्वेज्ञा भवेवाहवे चिमा ॥ घोइम्बु सम्मै  
ग्रेयमा। उत्तिष्ठत्यमित्येतु वरपट्टु नेरइया एतो अक्षिद्वारित्ये चतु उत्तिष्ठत्यमित्ये  
पश्चुमकमाचा विहरिति ॥ सीयवेयमित्येतु च भेतो वरपट्टु वरइया करितुवे सीय-  
वेयमें पश्चुमदमाचा विहरिति ॥ गोयमा। स जहाजामए अमारद्वारए चिमा  
तस्मै शुक्ले वस्त्रे जाव चिप्पोइमए एग महै अवापिहै इयवाराख्याने यहाय तात्त्विय  
वाचिय श्वास्त्रिय घोडिय वह एद्याई वा तुवाई वा उद्यासेवे याचु इप्पञ्च  
से वं तं उत्तिष्ठत्यमित्येतु अभोमएवे सर्दमाल्ल गहाय असम्भावपट्टुवापाए सीमने-  
यमित्येतु वरपट्टु परिवेयमा से तं उत्तिष्ठत्यमित्यमित्यितरेज उक्तरवि पकुदरि  
स्त्रामीतिक्षु परिवेयमन्त पास्त्रमा तं चतु वे जाव जो चतु वे चनाएज्ञा पुक्तरवि  
पकुदरिताए, स वं स जहाजामए मात्रमामें तहेव जाव सोस्पर्यवद्वारे याचि विद्वेज्ञा  
एवामय गोयमा असम्भावपट्टुवाए सीयवेयमित्येतु वरपट्टिनो नरशेष उच्छिष्ट  
सुमात्र जद्यै इमाई इह मणुस्मद्येष इवेति तंवहा—द्विमाचि वा विमुख्याचि वा  
द्विमपड्नमाचि वा द्विमपड्नसुज्ञाचि वा तुमाराचि वा तुमारुज्ञाचि वा द्विमङ्काहाचि वा  
द्विमङ्काहुज्ञाचि वा सीयाचि वा ताई पास्त्र वाचिता ताई अग्राह आग्राहिता से च  
तद्यं सीयाचि परिवेज्ञा तद्यंपि वं गुर्हपि ॥ जर्हपि वं ताईचि वं निराएव वा  
पमल्लापूर्व वा जाव उत्तिष्ठत्यमित्येतु सद्यमाल्ल मद्यमाल्ल लाक्ष्यमेवद्वारुह वात्वे  
विहरज्ञा गोयमा सीयवेयमित्येतु वरपट्टु नरइया एत्य अक्षिद्वारिवे चतु तीवरपर्वते  
एवनुनरकमाचा विहरिति ॥ २९॥ इमीम वं भेत रवपत्प्र पु वरइयामे २११८

काल ठिर्ड पण्णता २ गोयमा । जहणेणवि उक्षोसेणवि ठिर्ड भाणियव्वा जाव अहेसत्तमाए ॥ ९० ॥ इमीसे ण भते । रयणप्पभाए पु० ऐरइया अणतरं उब्बङ्गिय कहिं गच्छति २ कहिं उववज्जति २ किं नेरइएसु उववज्जति २ किं तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति २ एवं उब्बटणा भाणियव्वा जहा वक्तीए तहा इहवि जाव अहेसत्तमाए ॥ ९१ ॥ इमीसे ण भते । रयण० पु० नेरइया केरिसय पुढविफास पच्छुभवमाणा विहरति २ गोयमा । अणिढुं जाव अमणाम, एव जाव अहेसत्तमाए, इमीसे ण भते । रयण० पु० नेरइया केरिसय आउफास पच्छुभवमाणा विहरति २ गोयमा । अणिढुं जाव अमणाम, एव जाव अहेसत्तमाए, एव जाव वणप्फइफास अहेसत्तमाए पुढवीए । इमा ण भते । रयणप्पभापुढवी दोच्च पुढविं पणिहाय सब्बमहंतिया वाहलेण सब्बक्खुड्हिया सब्बतेसु २ हता गोयमा । इमा ण रयणप्पभापुढवी दोच्च पुढविं पणिहाय जाव सब्बक्खुड्हिया सब्बतेसु, दोच्चा ण भते । पुढवी तच्च पुढविं पणिहाय सब्बमहंतिया वाहलेण पुच्छा, हंता गोयमा । दोच्चा ण पुढवी जाव सब्बक्खुड्हिया सब्बतेसु, एव एण अभिलावेण जाव छड्हिया पुढवी अहेसत्तम पुढविं पणिहाय सब्बक्खुड्हिया सब्बतेसु ॥ ९२ ॥ इमीसे ण भते । रयणप्प० पु० तीसाए नरयावाससयसहस्रेसु इक्षमिक्षसि निरयावाससि सब्बे पाणा सब्बे भूया सब्बे जीवा सब्बे सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वा २ हता गोयमा । असइ अदुवा अणतख्तो, एव जाव अहेसत्तमाए पुढवीए णवर जत्थ जत्तिया णरगा [ इमीसे ण भते । रयणप्पभाए पु० निरयपरिसामतेसु जे पुढविक्काइया जाव वणप्फइकाइया ते ण भते । जीवा महारूमतरा चेव महाकिरियतरा चेव महाआसवतरा चेव महावैयनतरा चेव २ हता गोयमा । इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु त चेव जाव महावैयनतरा चेव, एव जाव अहेसत्तमा ] ॥ ९३ ॥ पुढविं ओगाहित्ता, नरगा सठाणमेव वाहल । विक्खभपरिक्खेवे वणो गधो य फासो य ॥ १ ॥ तेसिं महालयाए उवमा देवेण होइ कायव्वा । जीवा य पोगला वष्ममति तह सासया निरया ॥ २ ॥ उववायपरीमाण अवहास्त्रत्तमेव सघयण । सठाणवण्णगधा फासा ऊसासमाहारे ॥ ३ ॥ लेसा दिट्ठी नाणे जोगुवओगे तहा समुगधाया । तत्तो खुहापिवासा विउव्वणा वैयणा य भए ॥ ४ ॥ उववाओ तुरिसाण ओवम्म वैयणाए दुविहाए । उब्बटणपुढवी उ उववाओ सब्बजीवाण ॥ ५ ॥ एयाओ सगद्धिणिगाहाओ ॥ ९४ ॥ वीओ ऐरइयउद्देसो समत्तो ॥

इमीसे ण भते । रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसय पोगलपरिणाम पच्छुभवमाणा विहरति २ गोयमा । अणिढुं जाव अमणाम, एव जाव अहेसत्तमाए एवं

नेयम्ब्रं पाहा—पोमाळपरिज्ञामे वेयमा य ढेसा य नामगोए य । अरहे भए म सोये  
खापिचासा य पाही य ॥ १ ॥ उस्सादे अकुलावे खोहे मावे य मावलेमे व ।  
ज्ञारि य सत्त्वाल्पे नेरक्षार्थं तु परिष्णामे ॥ २ ॥ एत्वं विर अद्वयती नरकुला  
केष्वा कल्परा व । मंडलिया रामापो जे य महारंभद्वृष्टी ॥ ३ ॥ मिष्ठुमुहुष्टे  
नरएमु होइ चिरियमलुम्मु ज्ञारि । देवेषु अद्वमासो उद्देश्यितव्यां भविष्या  
॥ ४ ॥ जे पोमाळा अलिद्वा निकमा सो दसि होइ जाहारे । छार्थं तु अद्व्य  
विष्या द्वृढं तु नायन्न ॥ ५ ॥ अमुमा विष्यां अनु नेरक्षार्थं तु होइ सम्बेसि ।  
देवविवरं छरीरं असंभवाहुच्छेठाप ॥ ६ ॥ अस्सालो उद्वक्ष्यो अस्त्वाल्पे जेव  
प्रद विरक्षार्थं । उम्मपुडबीमु जीवो सम्बेदु विष्यितेहुर्वु ॥ ७ ॥ ए उद्वाएष व सावे  
नेरक्ष्यो देवकम्मुष्या वावि । अज्ञात्वाणमिमिते अहा कम्मालुमापेन्न ॥ ८ ॥ नेर  
हम्मालुमाओ उद्दोर्वं पञ्चवोद्वक्ष्यार्थं । दुक्षेनमिहुयार्थं भेदवस्यस्पाहार्थं ॥ ९ ॥  
अधिकनीतिमेते नरिव द्वार्ह दुक्षमेव पदिकर्द । नरए नेरक्षार्थं अहोविदु  
प्रमाणार्थं ॥ १ ॥ तेमाळमसरीरा मुहुमधीरा व जे अप्तवता । जीविव मुहुमेता  
दर्शति छहस्यो भेदं ॥ ११ ॥ अद्वीर्यं अहर्व्यं अहर्व्या अहर्व्या अस्मवे वा ।  
निरए नेरक्षार्थं दुक्षमसवाहं अविस्थानं ॥ १२ ॥ एत्वं य मिष्ठुमुहुतो पोमाळ  
अव्या य होइ अस्त्वाल्पो । उद्वाल्पो उप्याल्पो अविष्ट दुरीरा व दोद्व्या ॥ १३ ॥  
से ते नेरक्षार्थोमिया ३ विरिक्ष्यावेमिया पंचविदा फ्लता तंज्ञा—  
एगिरियतिरिक्ष्यावेमिया वेइविवतिरिक्ष्यावेमिया तांदिवतिरिक्ष्यावेमिया भरमि  
रियतिरिक्ष्यावेमिया पंचविद्यतिरिक्ष्यावेमिया य । से ते एगिरियतिरिक्ष्या  
वेमिया ३ २ पंचविदा फ्लता तंज्ञा—मुहुमिहम्मपृष्ठिवतिरिक्ष्यावेमिया अप  
वक्षस्तद्वाह्यएगिरियतिरिक्ष्यावेमिया । से ते पुढिक्षम्मपृष्ठिवतिरिक्ष्या  
वेमिया ३ २ दुविदा फ्लता तंज्ञा—मुहुम्मपृष्ठिवतिरिक्ष्यावेमिया  
वाप्तुमिहम्मपृष्ठिवतिरिक्ष्यावेमिया य । से ते मुहुम्मुहुमेहम्मपृष्ठिव-  
तिरिव ३ ३ दुविदा फ्लता तंज्ञा—फ्लतमुहुम भफ्वतमुहुम से त द्वाम ।  
से ते तं भाम्मपुडविक्ष्य ३ ३ दुविदा फ्लता तंज्ञा—फ्लतामायेहु अप्त-  
त्वावेहु से त भाम्मपुडविक्ष्यएगिरिय उते पुडवीक्ष्यएगिरिय । से ते  
तं भाम्माह्यएगिरिय ३ ३ दुविदा फ्लता एव योहु पुडविक्ष्यएगिरिय तहेहु  
तंद्वामभद्रो एव जाव वक्षस्तद्वाह्यामा से त वक्षस्तद्वाह्यएगिरियतिरिक्ष्य । से ते  
तं वेइवियतिरिक्ष्य ३ ३ दुविदा फ्लता तंज्ञा—फ्लतमवेहियति अप्ताम-

त्वावेहु । से ते भाम्मपुडविक्ष्य वेइवियतिरिक्ष्य उते पुडवीक्ष्यएगिरिय । से ते  
तं भाम्माह्यएगिरिय ३ ३ दुविदा फ्लता एव योहु पुडविक्ष्यएगिरिय तहेहु  
तंद्वामभद्रो एव जाव वक्षस्तद्वाह्यामा से त वक्षस्तद्वाह्यएगिरियतिरिक्ष्य । से ते  
तं वेइवियतिरिक्ष्य ३ ३ दुविदा फ्लता तंज्ञा—फ्लतमवेहियति अप्ताम-

वेइदियति०, से त वेइदियतिरि० एव जाव चउरिंदिया । से कि त पचेंदियतिरि-  
क्खजोणिया ? २ तिविहा पण्णता, तंजहा—जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया थल-  
यरपचेंदियतिरिक्खजो० खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त जलयरपचेंदि-  
यतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमजलयरपचेंदियतिरिक्ख-  
जोणिया य गब्भवक्तियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य । से कि त समुच्छिम-  
जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—पज्जतगसमुच्छिम०  
अपज्जतगसमु० छमजलयर०, से त समुच्छिम० पचिंदियतिरिक्ख० । से कि त  
गब्भवक्तियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—पज्जत-  
गगब्भवक्तिय० अपज्जतगगब्भ० से त गब्भवक्तियजलयर०, से तं जलयरपचेंदि-  
यतिरि० । से कि त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—  
चउप्पयथलयरपचेंदिय० परिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त चउ-  
प्पयथलयरपचिंदिय० ? चउप्पय० दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमचउप्पयथ-  
लयरपचेंदिय० गब्भवक्तियचउप्पयथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य, जहेव जल-  
यराण तहेव चउक्खओ मेओ, सेत्त चउप्पयथलयरपचेंदिय० । से कि त परिसप्प-  
थलयरपचेंदियतिरिक्ख० ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—उरपरिसप्पथलयरपचेंदि-  
यतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त उरपरिस-  
प्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? उरपरि० दुविहा पण्णता, तंजहा—जहेव  
जलयराण तहेव चउक्खओ मेओ, एव भुयपरिसप्पाणवि भाणियव, से त भुयपरि-  
सप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया, से त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि  
त खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? खहयर० दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छि-  
मखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्तियखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य ।  
से कि त समुच्छिमखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? समु० दुविहा पण्णता,  
तजहा—पज्जतगसमुच्छिमखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जतगसमुच्छिमखह-  
यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य, एव गब्भवक्तियावि जाव पज्जतगगब्भवक्तियावि  
जाव अपज्जतगगब्भवक्तियावि । खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणियाण भते । कइविहे  
जोणिसगहे पण्णते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णते, तजहा—अडया पोयया  
समुच्छिमा, अडया तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसगा, पोयया  
तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसया, तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते  
सव्वे णपुसगा ॥ ९६ ॥ एएसि ण भते । जीवाण कइ लेसाओ पण्णताओ ?  
गोयमा ! छ्लेसाओ पण्णताओ, तजहा—कण्हलेसा जाव सुक्ष्लेसा ॥ ते ण भते !

नयर्थं गाहा—पोमसपरिषामे वेयणा व लेता व नामगोए य । अर्णे भए व सोगे  
चहापिकासा य वाही य ॥ १ ॥ उरसासे अजुतावे छोहे मागे य मावझेमे य ।  
चतारि य सम्भामो नेरझार्ण दु परिषामे ॥ २ ॥ एत्य लिर अद्वयेती भरवसभा  
लेता कल्परा य । भैदिल्लिया रापाजो जे य महारेमध्येहुयी ॥ ३ ॥ मिष्ठाहुतो  
मरएसु होइ तिरिमलुप्तु चतारि । देवेसु अद्वमस्तो उद्दोसमितव्यणा मविया  
॥ ४ ॥ जे पोमसा अविद्वा निम्मा सो तेचि होइ आहारो । उठार्ण दु अर्थ  
निवमा हुई दु नावर्ण ॥ ५ ॥ असुभा वित्यभा यसु नेरझार्ण दु होइ सम्बेचि ।  
ऐतिथिय सरीर असुप्यमधुडस्ताव ॥ ६ ॥ अस्सामो उष्ट्रप्पो अस्सामो चेत  
अमह निरवमवे । उष्ट्रपुढवीदु जीबो सम्बेदु छिविसेउर्ण ॥ ७ ॥ उष्ट्राएथ व सार्य  
नेरझ्मो देस्तम्मुजा धावि । अज्ञातसाणनिमित्त अहावा कल्पाखुभावेर्ण ॥ ८ ॥ नेर-  
झ्मलुप्यामो उज्जोस फैक्कोम्पसउचावै । दुक्केजमिष्ठामान वेयज्ञसुमसफ्याहावै ॥ ९ ॥  
अनिष्ठनिमीलिक्कमेती नरिं झुई दुक्कमेत पटिकदै । नरए नेरझार्ण अहोदिचै  
फैक्कमापावै ॥ १ ॥ तेयाकल्पमसरीरा स्तुहुमसरीरा य जे अफजता । जीवेच मुष्टमेता  
कर्वति सहस्र्ये मेवे ॥ ११ ॥ अहसीवं अदर्थं अदर्शा अदृशा अस्मयं वा ॥  
मिरए नेरझार्ण दुक्कमसवै अविस्सावै ॥ १२ ॥ एत्य व मिष्ठाहुता पोमसक  
असुहा य होइ अस्सामो । उष्ट्रामो उष्ट्रामो अविष्ट्र सरीरा उ बोद्धवा ॥ १३ ॥  
से तं नेरझा ॥ १५ ॥ ताहमो नेरझपउइसो समस्तो ॥

से कि त तिरिक्यतोविया ? तिरिक्यतोविया फैक्कमिहा फैक्कता तंज्ञा—  
एगिरियतिरिक्कज्जोविया तेइरियतिरिक्कज्जोविया तेइरियतिरिक्कज्जोविया चरीर  
दियतिरिक्कज्जोविया फैक्कतिरिक्कज्जोविया य । से कि तं एगिरियतिरिक्क-  
ज्जोविया ? ३ फैक्कमिहा फैक्कता तंज्ञा—पुडविष्ट्यपैरियतिरिक्कज्जोविया जस  
पचरस्त्वक्काह्यपैरियतिरिक्कज्जोविया । से कि तं पुडविष्ट्यपैरियतिरिक्कज्जोविया जस  
वापरुडविष्ट्यपैरियतिरिक्कज्जोविया ज । से कि तं स्तुहुमपुडविष्ट्यपैरियतिरिक्कज्जोविया  
जापरुडविष्ट्यपैरियतिरिक्कज्जोविया ज । से कि तं स्तुहुमपुडविष्ट्यपैरियतिरिक्क-  
ज्जोविया ? २ दुविहा फैक्कता तंज्ञा—फैक्कतस्तुम अफजातस्तुम से त ग्नुम ।  
से कि त बामरुडविष्ट्यह ? २ दुविहा फैक्कता तंज्ञा—फैक्कतस्तुम अफजातस्तुम से त ग्नुम ।  
से कि त बायरुडविष्ट्यह ? २ दुविहा फैक्कता तंज्ञा—पमात्तावपु अफज-  
तस्तुमयए । से त बायरुडविष्ट्यपैरियतिरिक्कज्जोविय से तं पुक्कीक्काह्यपैरियतिरिक्क-  
ज्जोविय ? २ दुविहा फैक्कता एव च्छेद पुडविष्ट्यपैरियतिरिक्कज्जोविय । से कि  
तं आडक्काह्यपैरियतिरिक्क ? २ दुविहा फैक्कता तंज्ञा—पमात्तावेइरियति अफजातस्तु-

ब्रेइंदियति०, से तं ब्रेइदियतिरि० एवं जाव चउरिंदिया । से कि त पंचेदियतिरि-  
क्खजोणिया ? २ तिविहा पण्णता, तजहा—जल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया थल-  
यरपचेदियतिरिक्खजो० खहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया । से कि त जल्यरपचेदि-  
यतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमजल्यरपचेदियतिरिक्ख-  
जोणिया य गब्भवक्तियजल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया य । से कि त समुच्छिम-  
जल्यरपचिंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—पज्जतगसमुच्छिम०  
अपज्जतगसमुच्छिमजल्यर०, से त समुच्छिम०पंचिंदियतिरिक्ख० । से कि तं  
गब्भवक्तियजल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तंजहा—पज्जत-  
गगब्भवक्तिय० अपज्जतगगब्भ० से त गब्भवक्तियजल्यर०, से त जल्यरपचेदि-  
यतिरि० । से कि त यल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—  
चउप्पथयल्यरपचेदिय० परिसप्पथल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया । से कि त चउ-  
प्पथयल्यरपचिंदिय० ? चउप्पथ० दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमचउप्पथय-  
ल्यरपचेदिय० गब्भवक्तियचउप्पथल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया य, जहेव जल-  
यराण तहेव चउक्कओ मेओ, सेत्त चउप्पथयल्यरपचेदिय० । से कि त परिसप्प-  
थल्यरपचेदियतिरिक्ख० ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—उरपरिसप्पथल्यरपचेदि-  
यतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया । से कि त उरपरेस-  
प्पथल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया ? उरपरि० दुविहा पण्णता, तजहा—जहेव  
जल्यराण तहेव चउक्कओ मेओ, एव भुयपरिसप्पाणवि भाणियव, से त भुयपरि-  
सप्पथल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया, से त यल्यरपचेदियतिरिक्खजोणिया । से कि  
त सहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया ? खहयर० दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छि-  
मखहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्तियखहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया य ।  
से कि त समुच्छिमखहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया ? समु० दुविहा पण्णता,  
तजहा—पज्जतगसमुच्छिमखहयरपचेदियतिरिक्खजोणिया अपज्जतगसमुच्छिमखह-  
यरपचेदियतिरिक्खजोणिया य, एव गब्भवक्तियावि जाव पज्जतगगब्भवक्तियावि  
जाव अपज्जतगगब्भवक्तियावि । सहयरपचेदियतिरिक्खजोणियाण भते ! कइविहे  
जोणिसगहे पण्णते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णते, तजहा—अडया पोयया  
समुच्छिमा, अडया तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसगा, पोयया  
तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसया, तथ ण जे ते समुच्छिमा ते  
सव्वे णपुसगा ॥ ९६ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण कह लेसाओ पण्णताओ ?  
गोयमा ! छळेसाओ पण्णताओ, तजहा—कण्डूलेसा जाव सुक्लेसा ॥ ते ण भते !

नकर्वी गाहा—योगमाल्यरिणामे केवजा य केसा य नामसोए य । अरहे भए य मार्गे  
खडापिकादा य वाही य ॥ १ ॥ उत्तरामे अकुठापे क्षेत्रे माले य मामल्येम य ।  
चत्तारि य सम्बाध्ये नेरक्षार्थं तु परिणामे ॥ २ ॥ एत्य फिर अद्वयंती वरवसभा  
केसा अस्परा य । नैदकिया रामायो जे य महारंजप्रेहृष्टी ॥ ३ ॥ ५ मिलमुहुत्ते  
नरएसु होइ तिरियम्लुएसु चत्तारि । देवेषु अद्वमासो उद्गोसमित्तमजा मविमा  
॥ ४ ॥ जे पोगाळ्य अविद्यु लियमा द्ये देखि होइ भाहारे । संठार्थं तु वृद्ध्यं  
मियमा हृदृ तु नामव्यं ॥ ५ ॥ अमूला मित्तम्पाक्षु नेरक्षार्थं तु होइ सम्बेति ।  
केठमिन्ने सरीर असंघयमहुडस्थार्थं ॥ ६ ॥ मस्तुम्ये उद्गम्पो भस्तामो चव  
क्षम्ह तिरियम्ह । सम्पुरुष्वीयु जीवो रम्पेक्षु ठिक्किमेसर्वु ॥ ७ ॥ उद्वाएम य सामे  
देवेषमो उद्गम्मुपा वाचि । अज्ञानाधाराविमिती अद्वा क्षम्मालुमायेवं ॥ ८ ॥ नर  
इस्तुम्पात्मो उद्गोस पंचव्येयमसार्ह । दुक्षेषमिद्यार्थं केवक्षसम्पेसाक्षार्थं ॥ ९ ॥  
अच्छिदिमीत्तिमभत्ते मत्ति द्युहे तुक्षममेष पक्षिक्षदं । नरए नेरक्षार्थं अहोविदं  
पक्षमाजार्थं ॥ १ ॥ तृयाऽन्मसरीरा मुहुमसरीरा य जे अपवता । जीवेज मुहुलंता  
क्षवत्ति सहस्त्र्ये मेवे ॥ ११ ॥ अद्वीयं अद्वर्त्त्वं अद्वक्षा अद्वद्वा अद्वम्वं वा ।  
निरए देवेषमार्थं दुक्षमस्याहे अविसार्थं ॥ १२ ॥ एत्य य मिलमुहुत्ते पोगाळ्य  
मस्तुमा य होइ अस्तामो । उद्वाएमो उप्याक्षो अविड उरीरा उ वोरम्हा ॥ १३ ॥  
से ते नगद्वा ॥ १५ ॥ ताह्यो नैरुद्युपर्वेसो समाचो ॥

से कि तं तिरिक्षक्षबोधिमा १ तिरिक्षक्षबोधिमा पंचविहा पञ्चता तंवहा—  
एविविष्टिरिक्षक्षबोधिमा बैरिवतिरिक्षक्षबोधिमा तंविविष्टिरिक्षक्षबोधिमा चउरी  
विष्टिरिक्षक्षबोधिमा पंचविहतिरिक्षक्षबोधिमा य । से कि तं एविविष्टिरिक्ष-  
बोधिमा २ पंचविहा पञ्चता तंवहा—पुरविक्षयएगिरिवतिरिक्षक्षबोधिमा चाव  
वपस्त्वक्षात्यएविविष्टिरिक्षक्षबोधिमा । से कि तं पुरविक्षात्यएविविष्टिरिक्ष-  
बोधिमा ३ २ तुविहा पञ्चता तंवहा—तुम्मुपुद्विक्षयएगिरिवतिरिक्षक्षबोधिमा  
वायपुद्विक्षयएविविष्टिरिक्षक्षबोधिमा य । से कि तं तुम्मुपुद्विक्षात्यएविष-  
लिरि ४ २ तुविहा पञ्चता तंवहा—पञ्चतात्युम अमञ्चतात्युम से तं तुम्मुन ।  
से कि तं वायपुद्विक्षात्य ५ २ तुविहा पञ्चता तंवहा—पञ्चतावप्पु अप्पत-  
तावप्परपु से तं वायपुद्विक्षात्यएगिरिव से तं पुरविक्षात्यएविष्टिरिव । से कि  
तं आउक्षात्यएविष्टिरिव ६ २ तुविहा पञ्चता एवं वहेव पुरविक्षात्यएविष्टिरिव । से कि  
तं तं वैरिवतिरिक्ष ७ २ तुविहा पञ्चता तंवहा—पञ्चतावप्पेरिवतिरिक्ष । से कि  
तं वैरिवतिरिक्ष ८ २ तुविहा पञ्चता तंवहा—पञ्चतावप्पेरिवतिरिक्ष ।

वेइदियति०, से त वेइदियतिरि० एव जाव चउरिंदिया । से कि तं पचेंदियतिरि-  
क्खजोणिया ? २ तिविहा पण्णता, तंजहा—जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया थल-  
यरपचेंदियतिरिक्खजो० खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त जलयरपचेंदि-  
यतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमजलयरपचेंदियतिरिक्ख-  
जोणिया य गब्भवक्तियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य । से कि त समुच्छिम-  
जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—पज्जतगसमुच्छिम०  
अपज्जतगसमु॒ःछमजलयर०, से त समुच्छिम०पचिंदियतिरिक्ख० । से कि तं  
गब्भवक्तियजलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तंजहा—पज्जत-  
गगब्भवक्तिय० अपज्जतगगब्भ० से त गब्भवक्तियजलयर०, से तं जलयरपचेंदि-  
यतिरि० । से कि त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—  
चउप्पयथलयरपचेंदिय० परिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त चउ-  
प्पयथलयरपचिंदिय० ? चउप्पय० दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छिमचउप्पयथ-  
लयरपचेंदिय० गब्भवक्तियचउप्पयथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य, जहेव जल-  
यराण तहेव चउक्कओ मेओ, सेत चउप्पयथलयरपचेंदिय० । से कि त परिसप्प-  
थलयरपचेंदियतिरिक्ख० ? २ दुविहा पण्णता, तजहा—उरपरिसप्पथलयरपचेंदि-  
यतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि त उरपरिस-  
प्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? उरपरि० दुविहा पण्णता, तजहा—जहेव  
जलयराण तहेव चउक्कओ मेओ, एव भुयपरिसप्पाणवि भाणियव्वं, से त भुयपरि-  
सप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया, से त थलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया । से कि  
त खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? खहयर० दुविहा पण्णता, तजहा—समुच्छि-  
मखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्तियखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य ।  
से कि त समुच्छिमखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया ? समु० दुविहा पण्णता,  
तजहा—पज्जतगसमुच्छिमखहयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जतगसमुच्छिमखह-  
यरपचेंदियतिरिक्खजोणिया य, एव गब्भवक्तियावि जाव पज्जतगगब्भवक्तियावि  
जाव अपज्जतगगब्भवक्तियावि । खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणियाण भते ! कइविहे  
जोणिसगहे पण्णते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णते, तजहा—अडया पोयया  
समुच्छिमा, अडया तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसगा, पोयया  
तिविहा पण्णता, तजहा—इत्थी पुरिसा णपुसया, तत्य ण जे ते समुच्छिमा ते  
सव्वे णपुसगा ॥ ९६ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण कइ लेसाओ पण्णताओ ?  
गोयमा ! छलेसाओ पण्णताओ, तजहा—कण्डलेसा जाव सुक्कलेसा ॥ ते ण भते !

जीवा कि समरिद्धि मिथ्यारिद्धि समामिथ्यारिद्धि ! गोममा ! समरिद्धिं मित्यारि  
द्धीनि समामिथ्यारिद्धिनि ॥ ते वं भेतु ! जीवा कि जावी अव्याची ! गोममा !  
जावीनि अव्याचीनि तिथिं आपाह तिथिं अव्याचाह भवताए ॥ ते वं भेतु ! जीवा  
कि मध्योगी मध्योगी अव्याचेगी ! गोममा ! तिथिहानि ॥ ते वं भेतु ! जीवा कि  
सापारेकवत्ता अव्यागारेकवत्ता ॥ गोममा ! सामारेकवत्तानि अव्यागारेकवत्तानि ॥  
ते वं भेतु ! जीवा अथे उवक्त्वंति कि नेरएष्टिं उव तिरिक्षयोगेष्टिं उव  
उव ॥ पुच्छ गोममा ! असंकेज्ञासारुववक्ष्मभूयगमंतरणिक्षयक्षेष्टिं उव  
क्षवंति ॥ ऐसि वं भेतु ! जीवार्थ केवहर्यं अङ्ग ठिई पञ्चता ॥ गोममा ! अद्यव्येष्ट  
अतोसुकृत उद्योगेष्टि पक्षिष्ठेवसस्त असंकेज्ञासार्थ ॥ ऐसि वं भेतु ! जीवार्थ अद्य  
समुगच्छाया पञ्चता ॥ गोममा ! एव समुगच्छाया पञ्चता तंवहा—तियासमुगच्छाया  
जाव तेयासमुगच्छाए ॥ ते वं भेतु ! जीवा मारपंतिवसमुगच्छाएवं कि समोहवा  
मर्तिं असमोहवा मर्तिं ॥ गोममा ! समोहवानि म असमोहवानि मर्तिं ॥ ते  
वं भेतु ! जीवा अर्ततर उवक्त्विता अही गच्छति ॥ अही उवक्त्विति ॥—कि नेरएष्टु  
उवक्त्विति ॥ तिरिक्षय पुच्छ योममा ! एवं उवक्त्विता भावित्याया यहा वहीतीए  
तहेव ॥ ऐसि वं भेतु ! जीवार्थ अद्य जाईकुम्भेविष्ठेषीप्सुहसवसहस्रा पञ्चता ॥  
गोममा ! वारस जाईकुम्भेवीयोषीप्सुहसवसहस्रा प ॥ सुवपरिसुप्पयक्ष्मरप्तिविद्य-  
तिरिक्षयओमिवार्थं भेतु ! अविहे योषीस्त्वहे पञ्चते ॥ योममा ! तिविहे योषीस्त्वहे  
पञ्चते तंवहा—भडवा योममा संमुचित्तमा एव यहा लहवरार्थ तहेव यावत्ते  
ज्ञावेष्ट अतोसुकृत उद्योगेष्ट पुम्बद्येवी उवक्त्विता देवं पुढवि मर्तिंति अद्य जाईकुम्भ-  
ेवीयोषीप्सुहसवसहस्रा मर्तिंति मञ्चतार्थं देव तहेव ॥ उरपरिसुप्पयक्ष्मरप्तिव-  
िद्यतिरिक्षयओमिवार्थं भेतु ! पुच्छ यहेव सुवपरिसुप्पार्थ तहेव यवरं ठिई अह  
वेव भंतोसुकृत उद्योगेष्ट पुम्बद्येवी उवक्त्विता यहा एवमि पुढवि गच्छति इस जाई-  
कुम्भेवी ॥ अठप्पयक्ष्मरप्तिविद्यतिरिक्षय पुच्छ गोममा ! तुविहे पञ्चते  
तंवहा—जरारवा (योममा) व संमुचित्तमा व से कि तं जरारवा (योममा) ॥ २  
तिथिहा पञ्चता तंवहा—इस्ती पुरिषा अद्युक्ता लत्ख वं जे तं संमुचित्तमा ते  
सम्बे पञ्चुसमा । ऐसि वं भेतु ! जीवार्थ अद्य डेखाओ फञ्चताओ । ऐसु अद्य  
फञ्चतीर्थ जावत्त ठिई अद्येष्ट परोसुकृत उद्योगेष्ट तिविपक्षिष्ठेमाह, उवक्त्विता  
क्षविति पुढवि गच्छति इष जाईकुम्भेवी ॥ अक्ष्मरप्तिविद्यतिरिक्षयओमिवार्थं  
पुच्छ यहा सुवपरिसुप्पार्थं यवरं उवक्त्विता यहा अहेस्तर्मं पुढवि अद्यतरेष  
जाईकुम्भेवीयोषीप्सुह प ॥ अठरिविवार्थं भेतु ! अद्य जाईकुम्भेवीयोषी-

मुहसयसहस्सा पण्णता ? गोयमा ! नव जाईकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा सम-  
क्षाया । तेइदियाण पुच्छा, गोयमा ! अट्ठजाईकुल जाव मकलाया । वेइदियाण  
भंते ! कइ जाई० पुच्छा, गोयमा ! सत्त जाईकुलकोडीजोणीपमुह० ॥ ९७ ॥  
कइ ण भते ! गधा पण्णता ? कइ ण भंते ! गधसया पण्णता ?, गोयमा ! सत्त गधा  
सत्त गधसया पण्णता ॥ कइ ण भते ! पुफ्फजाईकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा  
पण्णता ? गोयमा ! सोलसपुफ्फजाईकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णता, तजहा—  
चत्तारि जलयाण चत्तारि थलयाण चत्तारि महारुक्खयाण चत्तारि महागुम्मयाण ॥  
कइ ण भते ! वलीओ कइ वलिसया पण्णता ? गोयमा ! चत्तारि वलीओ चत्तारि  
वलीसया पण्णता ॥ कइ ण भंते ! ल्याओ कइ ल्यासया पण्णता ? गोयमा ! अट्ठ  
ल्याओ अट्ठ ल्यासया पण्णता ॥ कइ ण भते ! हरियकाया हरियकायसया पण्णता ?  
गोयमा ! तओ हरियकाया तओ हरियकायसया पण्णता, फलसहस्स च विंटवद्धाण  
फलसहस्स च णालवद्धाण, ते वि सब्बे हरियकायमेव समोयरति, ते एव समणुगम्म-  
माणा २ एव समणुगाहिजमाणा २ एव समणुपेहिजमाणा २ एव समणुचितिजमाणा २  
एएसु चेव दोषु काएसु समोयरंति, तजहा—तसकाए चेव यावरकाए चेव, एवा-  
मेव सपुञ्चावरेण आजीवियदिट्टतेण चउरासीइ जाईकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा  
भवतीति मक्षाया ॥ ९८ ॥ अत्यि ण भते ! विमाणाइ सोत्यियाणि सोत्यियावत्ताइ  
सोत्यियपभाइ सोत्यियकन्ताइ सोत्यियवबाइ सोत्यियलेसाइं सोत्यियज्ञयाइं  
सोत्यियसिंगाराइ सोत्यियकूडाइ सोत्यियसिंडुइ सोत्युत्तरवडिंसगाइ ? हता अत्यि ।  
ते ण भते ! विमाणा केमहालया प० ? गोयमा ! जावइए ण सूरिए उदेइ जावइए ण  
च सूरिए अत्यमइ एवइयाइ तिष्णोवासतराइ अत्येगइयस्स देवस्स एगे विक्रमे सिया,  
से ण देवे ताए उकिट्टाए तुरियाए जाव दिन्वाए देवगईए वीईवयमाणे २ जाव  
एगाह वा दुयाह वा उक्कोसेण छम्मासा वीईवएजा, अत्येगइया विमाण वीईवएजा  
अत्येगइया विमाण नो वीईवएजा, एमहालया ण गोयमा ! ते विमाणा पण्णता,  
अत्यि ण भते ! विमाणाइ अच्छीणि अच्छिरावत्ताइ तहेव जाव अच्छुत्तरवडिंसगाइ ?  
हता अत्यि, ते ण भते ! विमाणा केमहालया पण्णता ? गोयमा ! एव जहा सोत्थी-  
(याई)णि णवर एवइयाइ पच उवासतराइ अत्येगइयस्स देवस्स एगे विक्रमे सिया  
सेस त चेव ॥ अत्यि ण भते ! विमाणाइ कामाड कामावत्ताइ जाव कामुत्तरवडिंस-  
याइ ? हता अत्यि, ते ण भते ! विमाणा केमहालया पण्णता ? गोयमा ! जहा सोत्थीणि  
णवर सत्त उवासतराइ विक्रमे सेस तहेव ॥ अत्यि ण भते ? विमाणाइ विजयाइ  
वेजयताइ जयताइ अपराजियाइ ? हता अत्यि, ते ण भते ! विमाणा कें० ? गोयमा !

जाकहए वं स्त्रीए उदेह एकस्ताई नव ओवासंतरणा, ऐसं तं चेव मा चेव मं ते  
मिमांसे भीर्विष्णवा एमहाम्बा वं ते मिमांसा पञ्चता समजत्वसो ॥ ९९ ॥  
पहमो तिरिक्षाजोप्पियउद्देशो समाचो ॥

अभिष्ठा वं मंते । एंसारसमाकृत्यगा जीवा पञ्चता ॥ योवमा ॥ छमिहा पञ्चता  
तंजहा—युद्धिष्ठिष्ठवा जाव लसज्जहा । दे कि तं पुद्धिष्ठिष्ठवा ॥ पुद्धिष्ठिष्ठवा  
दुमिहा पञ्चता तंजहा—स्त्रुमपुद्धिष्ठिष्ठवा वावरपुद्धिष्ठिष्ठवा य । दे कि तं स्त्रु  
मपुद्धिष्ठिष्ठवा ॥ २ दुमिहा पञ्चता तंजहा—मनसा य अफजलता य ऐसे स्त्रु  
मपुद्धिष्ठिष्ठवा । दे कि तं वावरपुद्धिष्ठिष्ठवा ॥ २ दुमिहा पञ्चता तंजहा—पञ्चता  
य अफजलता य एवं ज्ञा पञ्चता पापए, सज्जा एतमिहा पञ्चता चरा अवेमिहा  
पञ्चता जाव असेज्जा सेतं वावरपुद्धिष्ठिष्ठवा सेतं पुद्धिष्ठिष्ठवा एवं चेव ज्ञा  
पञ्चता पापए तोहृ निरक्षुर्द्देव भाविष्यत्वं जाव वजप्त्यज्जहा एव जाव वर्षयो  
रत्य तिय एंसेज्जा तिय भसेज्जा तिय अर्वता सेतं वावरपञ्चज्जहा दे तं  
वपस्तुज्जहा । दे कि तं लसज्जहा ॥ ३ अभिष्ठा पञ्चता तंजहा—जेहंदिया  
देहंदिया भजेहंदिया पञ्चमिया । दे कि तं जेहंदिया ॥ २ अवेमिहा पञ्चता एवं  
वं चेव पञ्चता पापए तं चेव निरक्षुर्द्देव भाविष्यत्वं जाव समद्गुष्टिद्वयेशा दे तं  
अखुतरोक्ताम्बा से तं रेवा से तं वेदिया से तं लसज्जहा ॥ १ ॥ अभिष्ठा  
वं मंते । पुद्धी पञ्चता ॥ गोवमा ॥ छमिहा पुद्धी पञ्चता तंजहा—सज्जापुद्धी  
स्त्रुपुद्धी वास्त्रुपुद्धी मजोसित्यपु लक्षणपु चरपुद्धी ॥ सज्जापुद्धीवं भंते ।  
केवल्य ऋषे ठिरे पञ्चता ॥ गोवमा ॥ अ अतोमु उद्गोसेवं एवं वास्त्रहस्तं ।  
स्त्रुपुद्धीपु उष्णम् गोवमा ॥ अ अतोमु उद्गो वास्त्र वास्त्रहस्ताई । वास्त्रा-  
पुद्धीपु उष्णम् गोवमा ॥ अ अतोमु उद्गो चोवस्त्र वास्त्रहस्ताई । मजोसित्य-  
पुद्धीवं पु उष्णम् गोवमा ॥ अ अतोमु उद्गो चोवस्त्र वास्त्रहस्ताई । लक्षण-  
पुद्धीपु उष्णम् गोवमा ॥ अ अतोमु उद्गो वास्त्रीय वास्त्रहस्तवद् ॥ नेत्रपालं भंते ।  
केवल्य ऋषे ठिरे पञ्चता ॥ गोवमा ॥ अ इष वास्त्रहस्तवद् उद्गो तेतोर्दे  
सागरोमत्वं ठिरे, एवं सर्वं भाविष्यत्वं जाव समद्गुष्टिद्वयेति ॥ जंते वं भंते ।  
जीवति अक्षये केवलिर होइ ॥ गोवमा ॥ समद्व पुद्धिष्ठिष्ठए वं भंते । पुद्धिष्ठा-  
इएवि अक्षये केवलिर होइ ॥ गोवमा ॥ समद्व, एवं जाव लसज्जहा ॥ १ ॥ ५  
पुद्धिष्ठपुद्धिष्ठिष्ठवा वं भंते । केवल्यमस्त्र विद्वेशा तिया ॥ गोवमा ॥ अहम्बए  
असेज्जाहिर उसुपिण्डीओसुपिण्डीहिं, उद्गोष्टपए भसेज्जाहिं उसुपिण्डीभेसुपिण-

णीहिं, जहन्नपयाओ उक्षोसपए असखेजगुणा, एवं जाव पङ्कुपञ्चवाउक्षाइया ॥  
 पङ्कुपञ्चवणप्फइकाइया ण भते ! केवइकालस्स निलेवा सिग्रा ? गोयमा ! पङ्कुपञ्चवण०  
 जहण्णपए अपया उक्षोसपए अपया, पङ्कुपञ्चवणप्फइकाइयाण गत्थि निलेवणा ॥  
 पङ्कुपञ्चतसकाइयाण पुच्छा, जहण्णपए सागरोवमसयपुहुत्तस्स उक्षोसपए सागरोवम-  
 सयपुहुत्तस्स, जहण्णपया उक्षोसपए विसेसाहिया ॥ १०२ ॥ अविसुद्धलेस्से ण भते !  
 अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवं देविं अणगार जाणइ पासइ ?  
 गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । अविसुद्धलेस्से ण भते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणएण  
 विसुद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । अविसुद्धलेस्से  
 ण भंते ! अणगारे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासइ ?  
 गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । अविसुद्धलेस्से० अणगारे समोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स  
 देव देविं अणगार जाणइ पासइ ? नो इणट्टे समट्टे । अविसुद्धलेस्से ण भते ! अणगारे  
 समोहयासमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देव देविं अणगारे जाणइ पासइ ? नो  
 इणट्टे समट्टे । अविसुद्धलेस्से० अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देव  
 देविं अणगार जाणइ पासइ ? नो इणट्टे समट्टे । विसुद्धलेस्से ण भते ! अणगारे  
 असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देव देविं अणगार जाणइ पासइ ? हुंता जाणइ  
 पासइ जहा अविसुद्धलेस्सेण छ आलावगा एव विसुद्धलेस्सेणवि छ आलावगा भाणि-  
 चब्बा जाव विसुद्धलेस्से ण भंते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स  
 देव देविं अणगार जाणइ पासइ ? हता जाणइ पासइ ॥ १०३ ॥ अणउत्थिया ण  
 भते ! एवमाइक्खति एव भासेन्ति एवं पण्णवेंति एव पर्लवेंति—एव खलु एगे जीवे  
 एगेण समएण दो किरियाओ पकरेइ, तजहा—सम्मतकिरिय च मिच्छतकिरिय च,  
 ज समय सम्मतकिरिय पकरेइ त समयं मिच्छतकिरिय पकरेइ, ज समयं मिच्छतकिरिय  
 पकरेइ त समय सम्मतकिरिय पकरेइ, सम्मतकिरियापकरणयाए मिच्छतकिरिय पकरेइ  
 मिच्छतकिरियापकरणयाए सम्मतकिरिय पकरेइ, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण  
 दो किरियाओ पकरेइ, तजहा—सम्मतकिरिय च मिच्छतकिरिय च, से कहमेय  
 भते ! एव ? गोयमा ! जन्म ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खति एव भासति एव पण्णवेंति  
 एव पर्लवेंति एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेइ, तहेव जाव  
 सम्मतकिरिय च मिच्छतकिरिय च, जे ते एवमाहसु त ण मिच्छा, अह पुण  
 गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव पहवेमि—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग  
 किरिय पकरेइ, तजहा—सम्मतकिरिय वा मिच्छतकिरिय वा, ज समय सम्मतकिरिय  
 पकरेइ णो त समय मिच्छतकिरिय पकरेइ, त चेव ज समय मिच्छतकिरिय पकरेइ

मोर्तु समवै सम्भाकिरिवं पक्षेऽ, सम्भाकिरियापक्षयाए नो मिच्छाकिरिवं पक्षेऽ  
मिच्छाकिरियापक्षयाए जो सम्भाकिरिवं पक्षेऽ, पर्व चहु एते जीवे एतों सम-  
पदे पर्व किरियं पक्षेऽ, तंजहा—सम्भाकिरियं वा मिच्छाकिरियं वा ॥ १ ४ ॥  
भीमो तिरिक्ष्यजोषियठेसो समचो ॥

से कि तं मनुस्सा ! मनुस्सा तुविहा पक्षता सजहा—संमुच्छिममनुस्सा य  
मम्भवाद्विममनुस्सा य ॥ १ ५ ॥ से कि तं संगुच्छिममनुस्सा ॥ २ १ पक्षापारा  
पक्षता ॥ क्षीरं वं भंते । संमुच्छिममनुस्सा संमुच्छंति । गोवमा । अंठोमनुस्सते  
जहा पक्षता ए बाब देते संमुच्छिममनुस्सा ॥ १ ६ ॥ से कि तं गम्भाद्विय-  
मनुस्सा ॥ २ तिरिषा पक्षता तंजहा—झमभूमया भझमभूमया अंठरवीक्षा ॥  
॥ १ ७ ॥ से कि तं अंठरवीक्षा ॥ २ व्युत्तीद्विहा पक्षता तंजहा—एगूल्या  
आभाविवा वेसाविवा गंगोविवा इवरूपा ॥ आवेदमुहा ॥ आउमुहा ॥ आउक्षमा ॥  
उक्षमुहा ॥ उक्षदता जाव मुदर्दता ॥ १ ८ ॥ क्षीरं वं भंते । दाहिविक्षारं एगोक्ष  
मनुस्सार्वं एगोक्षर्वे जामं रीते पक्षते । गोवमा । अंठुरीते २ अंठरस्स पक्षमस्स  
वाहितेण सुमुक्षिमवत्सत वाउहरफ्वयस्स उत्तरपुरिष्ठिक्षाव्ये वरिमंदामो सम्भ-  
समुर्व तिक्षि जोवक्षस्याद् अेपाहिता एत्थ य दाहिविक्षारं एगोक्षमनुस्सारं  
एगूल्यवीव जामं रीते पक्षते तिक्षि जोवक्षस्याद् आवामविक्षमिर्वं जव एगूल्यपक्ष-  
जोवक्षस्याद् तिक्ष्य विक्षमिर्वं एगूल्यवीव सम्भवे समंता परिक्षवद्वं पक्षता । दीते वं  
पउवधरवेश्याए अववेश्याहवं वक्षमावे पक्षतो तंजहा—वधरपक्षा निम्मा एवं  
वधयावम्भवे जहा रामपत्रेष्टए तहा भाविष्यम्भो ॥ १ ९ ॥ या वं पउवधरवेश्या  
एगोक्ष वक्षस्तेवं सम्भवे समंता सपरिक्षित्वा । से वं वक्षस्ते वक्षाद्वं वो जोवक्षद्वं  
वक्षम्भविक्षमिर्वं वेश्यावम्भवं परिक्षवद्वं पक्षते सु वं वक्षस्ते तिक्ष्ये तिक्ष्ये-  
भावे एव जहा उवक्षेष्टयवजस्तवन्यव्ये तहेव निरक्षेसं भाविष्यवं तथात्य य  
वक्षवोवरासो सहो तथाप्य वावीवे उप्यादवम्भवा पुडिविमपक्षया य भाविष्यवा  
जाव तथ्य वं पहवे जाम्भेतरा वजा व इतीभ्ये य भारायति जाव तिर्तुति ॥ ११ ॥  
एमाप्यवीवस्म वं वीक्षस्तु भेत्वा पक्षुसमरमविवे भूमिभागे पक्षतो से जहावामए  
आविष्यपुक्षद्वेर वा एवं समविवे भाविष्यम्भ जाव पुडिविमपर्वत्वंति तथ्य वं  
पहव एगूल्यवीवया मनुस्सा व मनुस्सीभ्ये व आवर्वति जाव तिर्तुति एगूल्यवीवे  
वं रीत तथ्य तथ्य इस २ तर्हि २ वहवे उगूल्या व्येवम्भा क्षमाम्भ वक्षम्भम्

णटमाला सिंगमाला सुखमाला दतमाला सेलमाला णाम दुमगणा पण्णता समणाउसो । कुसविकुसविसुद्धस्त्रभूला भूलभंतो कदमंतो जाव वीयमतो पतेहि य पुष्फेहि य अच्छणपडिच्छुणा सिरीए अङ्गे २ उवसोहेमाणा उवसोहेमाणा चिढ्ठुंति, एग्रूर्यदीवे ण दीवे रुक्खा वहवे हेस्यालवणा भेस्यालवणा सेस्यालवणा सालवणा सरलवणा सतवण्णवणा पूयफलिवणा सज्जूरिवणा णालिएरिवणा कुसविकुसवि० जाव चिढ्ठुंति, एग्रूर्यदीवे ण दीवे तत्थ २ देसे० वहवे तिलया लवया नगोहा जाव रायरुक्खा णदिरुक्खा कुसविकुसवि० जाव चिढ्ठुंति, एग्रूर्यदीवे ण दीवे तत्थ वहूओ पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्च कुमुमियाओ एव लयावण्णओ जहा उववाइए जाव पडिस्त्राओ, एग्रूर्यदीवे ण दीवे तत्थ २ वहवे सेरियागुम्मा जाव महाजाइगुम्मा ते ण गुम्मा दसद्ववण्ण कुमुम कुमुमति विहूयगगसाहा जेण वायविहूयगगसाला एग्रूर्यदीवस्स वहुसमरमणिजभूमिभाग मुक्कपुष्फपुजोवयारकलिय करेति, एग्रूर्यदीवे ण दीवे तत्थ २ वहूओ वणराईओ पण्णताओ, ताओ ण वणराईओ किण्होभासाओ जाव रम्माओ महामेहणिउरुवभूयाओ जाव महइ गधद्धणि मुयतीओ पासाईयाओ ४ । एग्रूर्यदीवे ण दीवे तत्थ २ वहवे मत्तगा णाम दुमगणा पण्णता समणाउसो । जहा से चदप्पभमणिसिलागसीहुवाशणिफलपत्तपुष्फचोयिज्ञा ससारवहुदब्बजुत्तसभारकालसधयासवा महुमेरगरिड्वाभदुद्जाईपसन्नमेलगासयाउ सज्जूरुमुद्दियासारकाविसायणसुपक्खोयरसमुरावण्णरसगधफरिसजुत्ता भजविहित्यवहुप्पगारा तदेव ते मत्तगयावि दुमगणा अणेगवहुविविहीसापरिणयाए मज्जविहीए उववेया फलेहि पुण्णा वीसदति कुसविकुसविसुद्धस्त्रभूला जाव चिढ्ठुंति १ । एग्रूर्यदीवे० तत्थ २ वहवो भिंगगया णाम दुमगणा पण्णता समणाउसो ।, जहा से वारगधडक्करगक्करिपायकचणिउदकवद्धणिसुपविहूरपारीचसगभिंगार-करोडिसरगथरगपत्तीथालणत्थगवलियअवपदगवारयविचित्तवद्गमणिवद्गासुत्तिचास्पिणयाकचणमणिरयणभत्तिचित्ता भायणविहीए बहुप्पगारा तहेव ते भिंगगयावि दुमगणा अणेगवहुविविहीसाए परिणयाए भायणविहीए उववेया फलेहि पुच्चाविव विसद्धति कुसविकुस० जाव चिढ्ठुंति २ । एग्रूर्यदीवे ण दीवे तत्थ २ वहवे तुडियगा णाम दुमगणा पण्णता समणाउसो ।, जहा से आलिंगमुयगपणवपडह-दद्दरगकरडिंडिमभाहोरभकणियारखरमुहिमुगुदसखियपरिलीववगपरिवाइणिव-सावेणुवीणासुघोसविवचिमहइकच्छभिरगसगातलतालकसतालसुसपउत्ता आओज-विहीणिउणगधववसमयकुसलेहि फदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा तहेव ते तुडियगयावि दुमगणा अणेगवहुविविहीसापरिणयाए ततविततघणसुसिराए चउविविहाए

आमोजमिहीए उबेमेया और्हे पुण्या विस्त्रित कुसविकुसविमुद्दलपुण्यम् जाव चिन्हिति ३ । एमोजमही तत्त्व २ वहये रीकिहा जाम दुमग्यथा फलता समवादसो । यहा से संसामिरागासुमए नवविदिवहणो रीकिया चहासविदे पभू-  
विष्टिलिताभेदी विठ्ठालिमिरमहै इत्याविकुवज्ञवितावद्वाही रीकियाही सहसा पञ्चकिर्द-  
सवियविद्वेवविष्टिविमलगाहयपसम्पहाही विस्त्रितरस्त्रक्षरितावेवविकियाही  
जातुमस्त्रवियामिरमाही सोहेमाथा तहेव तं रीकिहावि तुमग्यां अगेगक्षु-  
विविहीसाप्रीजासाए उबेमेया और्हे पुण्या विस्त्रित कुसविकुसवि  
जाव चिन्हिति ४ । एकून्यरीये तत्त्व २ वहये व्योहिहा जाम दुमग्यथा फलता  
समवादसो । यहा से अविश्वाप्यवरजसूनंदल्पाईतरज्ञासूसविष्टिविकुलम्  
मवहनिदूमउविमिनिदेतवोपतात्तरविक्षिल्लुवासोववामाक्षमद्वद्वमविमद्विष्टिविकुल-  
विरवजविक्षिव्यवहाहिपुमविगरस्ताहरेपस्ता तहेव ते जोइविहावि तुमग्यथा  
अगेगव्युविविहीसापरिष्याए उबेमेयाहीए उबेमेया यहेस्त्वा मंदेस्त्वा मंदाम-  
वेस्त्वा कूडाय इव अठिया अवमवस्त्वमोगवाही वेस्त्वाही चाए पमाए  
उपएसे समझो समेता ओमासहि उजोवेति पमासहि कुसविकुसवि जाव चिन्हिति  
५ । एकून्यरीये तत्त्व २ वहये वित्तगा जाम दुमग्यथा फलता समवादसो ।  
यहा से ऐस्त्वमरे विविते रम्मे करकुमवाममस्त्रम्में बासेतमुद्द्युप्तुवेक्ष्यारकविष्ट-  
विरतिविवितमाविविरिवाममाविविरिमुद्दवप्पमाव्ये गविमवेदिमपुरिमसेवक्षमन मोम  
डेमसिष्यिये वित्तगाराह्यप समझो चेव समसुख्ये विरक्ष्यवेतविष्टिवेदी वंकल्पाही  
कुमवामेही सोहमाये होहमाये वत्तमामवामाए चेव विष्टिवाये तहेव ते वित्तग-  
वावि तुमग्यथा अगेगव्युविविहीसापरिष्याए माविहीए उबेमेया कुसविकुसवि  
जाव चिन्हिति ६ । एकून्यरीये तत्त्व २ वहये वित्तगा जाम दुमग्यथा फलता सम-  
वादसो । यहा से दुर्गमवरक्षमावित्तुमविविकुसविविकुसवाहुपुद्वद्वे सारवस्त्वाहुवेद  
महुमेविए अदरसे परमन्मे हेम उत्तमव्यक्तमर्हते रम्मो यहा वा चक्ष्वाविस्त्व होज  
विविगेही दृश्युरिसेही सविएही चाटरक्ष्यसेवविते इव व्येयो क्षमसाविविज्ञप्ति-  
एवि एवे सम्पर्कमितवस्त्वस्त्वित्वे अगेगव्यक्तमार्हतुते यहा पवित्रमव्युह-  
क्षमवेद्व रद्वए क्षमपावरसप्रीरेम्मावम्भीरिवपरिष्वामे इविमव्युष्टिविवेद्वप्ति-  
समद्वये व्याये गुज्जवटिक्ष्वावर्क्षम्भीविमठवलीए फ्लोमगे सम्भविमसाव्ये इवेज परम-  
द्वुमस्त्रमुते तहेव तं वित्तगा विविहीसापरिष्याए भोवव-  
विहीए उबेमेया कुसविकुसवि जाव चिन्हिति ७ । एकून्यरीये चं तत्त्व २ वहये

मणियंगा नाम दुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से हारद्धहारवट्टणगमउडकुडल-  
वासुत्तगहेमजाल्मणिजालकणगजालगमुत्तगउच्चियकडगाखुडियएगावलिकठमुत्तमग-  
रिमउरत्थगेवेजसोणिसुत्तगचूलामणिकणगतिलगफुलसिद्धत्थयकण्णवालिससिसूरउसभ-  
न्वक्षातलमगतुडियहत्थिमालगवलक्ष्वदीणारमालिया चदसूरमालिया हरिसयकेकर-  
वलयपालवअगुलेजगकचीमेहलाकलावपयरगपायजालधंटियखिणिरयणोरुजालत्थि-  
गियवरणोउरचलणमालिया कणगणिगरमालिया कवणमणिरयणभत्तिन्वित्ता भूसणविही  
वहुप्पगारा तहेव ते मणियगावि दुमगणा अणेगवहुविविहवीससापरिणयाए भूसण-  
विहीए उववेया कुसवि० जाव चिद्वृति ८ । एगोस्यदीवे० तत्थ २ वहवे गेहागारा  
नाम दुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से पागारद्धालगचरियदारगोपुरपासायागा-  
सतल्मडवएगसालविसालगतिसालगचउरंसचउसालगब्धरमोहणधरवलभिघरन्वि-  
त्तसालमालयभत्तिघरवट्टतसचउरंसणदियावत्तसठियायपंडुरतलमुंडमालहभियं अहव  
ग धवलहरअद्वमागहविभमसेलद्दसेलसठियकूडगारद्दुसुविहिकोद्वगअणेगधरसरणले-  
गआवणविडगजालचदणिज्ज्वलयपवरकवोयालिक्वदसालियरूवविभत्तिकलिया० भवणविही  
वहुविगप्पा तहेव ते गेहागारावि दुमगणा अणेगवहुविविहवीससापरिणयाए सुहाह-  
हणे सुहेत्ताराए सुहनिक्ष्वमणप्पवेसाए दहरसोवाणपतिकलिया० पइरिकाए सुहवि-  
हाराए मणोऽणुकूलाए भवणविहीए उववेया कुसवि० जाव चिद्वृति ९ । एगोस्यदीवे०  
तत्थ २ वहवे अणिगणा णाम दुमगणा पण्णता समणाउसो !, जहा से आइणग-  
खोमतण्यकवलदुगुल्कोसेजकालमिगपट्टचीणसुयअणहयनिउणनिपावियनिद्वगजिय-  
पञ्चवण्णा चरणातवारवणिगयथुणाभरणन्वित्तसहिणगकछाणगमिगिमेहणीलकुजलव-  
हुवण्णरत्तपीयनीलसुक्षिलमक्षयमिगलोमहेमप्फरणगवसरत्तगर्सिधुओसभदामिल्ब-  
गकलिंगनलिणततुमयभत्तिन्वित्ता वथ्यविही वहुप्पगारा हवेज वरपृणुगया वण्णरा-  
गकलिया तहेव ते अणिगणावि दुमगणा अणेगवहुविविहवीससापरिणयाए वथ्यवि-  
हीए उववेया कुसविकुसवि० जाव चिद्वृति १० । एगोस्यदीवे ण भंते ! दीवे मण-  
याण केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णते ? गोयमा ! ते ण मणुया अणुवमतरसो-  
मचारुवा भोगुत्तमगयल्क्ष्वणा भोगसस्त्रीया सुजायसब्बगसुदरगा सुपइट्टियकु-  
म्मचारुचलणा रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतला नगनगरसागरमगरचक्कवरंकल-  
वरणकियचलणा अणुपुव्वसुसाद्यगुलीया उण्णयतणुतवणिद्विष्णहा सठियसुसिलिद्वग-  
द्वुष्पा एणीकुरुविंदावत्तवद्वाणपुव्वजंघा समुगणिमगगृजाणू गद्यससणमुजायसणि-  
भोरु वरवारणमत्तुलविक्षमविलसियगई द्वुजायवरतुरगगुज्जदेसा आइणहओव-  
णिस्वलेवा पमुइयवरतुरियसीहउइरेगवट्टियकडी साहयसोणिद्वमुसलदप्पणनिगरियवर-



अद्विष्टुसय ऊसिया, तेसि मणुयाणं चउसांडि पिढिकरडगा पण्णता समणाउसो !, ते ण मणुया पगइभद्गा पगइविणीयगा पगइउवसता पगइपयणकोहमाणमायालोभा मिउमह्वसपण्णा अलीणा भद्गा विणीया अप्पिच्छा असनिहिसचया अचंडा विडि-मतरपरिवसणा जहिच्छयकामगामिणो य ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो !। तेसि णं भते ! मणुयाण केवइकालस्स आहारड्हे समुप्पजइ<sup>२</sup> गोयमा ! चउत्थभत्तस्स आहारड्हे समुप्पजइ, एगोरुयमणुईण भते ! केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णते<sup>२</sup> गोयमा ! ताओ ण मणुईओ सुजायसव्वगसुदरीओ पहाणमहिलाशुणोहिं जुत्ता अच्चत-विसप्पमाणपउमसूमाल्कुम्मसठियविसिद्धचलणा उजुमउयपीवरनिरतरपुढ्साहियगु-लीया उण्णयरहयनलिणव सुद्धणिद्धणकखा रोमरहियवट्टलट्टुसठियअजहण्णपसत्थलक्ख-णअकोप्पजघजुयला सुणिभ्मियसुगूढजाणुमडलसुबद्धसधी कयलिक्खभाइरेगसठिय-णिव्वणसुकुमाल्मउयकोमल्झविरलसमसहियसुजायवट्टपीवरणिरतरोरु अद्वावयवीई-पट्टसठियपसत्थविच्छिन्हपिहुल्सोणी वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुवद्धज-हणवरधारणीओ वजविराद्यपसत्थलक्खणिरोदरी तिवलिवलीयतणुणमियमज्ज-याओ उजुयसमसहियजबतणुकसिणणिद्धआदेजलडहसुविभत्तसुजायकतसोहतरह्ल-रमणिजरोमराई गंगावतपयाहिणावततरगभगुररविकिरणतहणवोहियअकोसायतप-उमवणगंभीरवियडणाभी अणुभ्वदपसत्थपीणकुच्छी सण्णयपासा सगयपासा सुजाय-पासा मियमाद्यपीणरहयपासा अकरड्यकणगरुयगनिम्मलसुजायणिरुवहयगायलट्टी कचणकल्लसमपमाणसमसहियसुजायलट्टचूयआमेलगजमलजुयलवहियअभुण्णयर-इयसठियपओहराओ भुयगणुपुव्वतणुयगोपुच्छवट्टसमसहियणमियआएजललियवाहाओ तंवणहा मंसलगहत्या पीवरकोमलवरंगुलीओ णिद्धपाणिलेहा रविससिसखचक्क-सोत्थियसुविभत्तसुविरहयपाणिलेहा पीणुण्णयक्खववत्थिदेसा पडिपुण्णगलकवोला चउरगुलसुप्पमाणक्खुवरसरिसगीवा मसलसठियपसत्थहण्णया दाडिमपुफ्पगास-पीवरक्खचियवराधरा सुदरोत्तरोह्टा दहिदगरयन्वद्कुदवासतिमउल्झच्छिद्विमलदसणा रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीहा कणयरमुउलझकुडिलअभुगयउजुतुगणासा सार-यणवकमलकुमुयक्खुवलयविसुक्खदलणिगरसरिसलक्खणअकियक्ताणयणा पत्तलचवला-यततवलोयणाओ आणामियचावरुद्दलकिण्वमराइसठियसगयआययसुजायतणुकसिण-णिद्धभमुया अहीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमट्टरमणिजगडलेहा चउरसपसत्थ-समणिडाला कोमुइरयणियरविमलपडिपुन्नसोमवयणा छत्तुच्चयउत्तिमगा कुडिलसुसि-णिद्धदीहसिरया छत्तज्जयजुगदामिणिकमडलुकलसवाविसोत्थियपडागजवमच्छकुम्मर-हवरमगरज्जयथालअकुसअद्वावयवीइस्तुपद्धगमउरसिरिदामामिसेयतोरणमेइणिउदहि-

वरभेदधर्मिरिषरभायसमिक्षगवदउमधीहृषमरउत्तमप्रसाद्यकतीमुख्यमधरामो  
 ईस्परिसगैर्मे क्षेत्रमाहुरमिखुस्तरायो फैता उष्ट्रस्त्वं अलुमधमो वकामविधि-  
 पक्षिजा वैगुण्यमध्यमाहीरेत्तमसेमुहामो उष्ट्रतेम य नराय बोनूमध्यमित्याभो  
 समावस्थितारायारत्यास्त्वासा संप्रक्षयक्षतिमनमित्यत्रेत्तिमित्यसुक्षित्या  
 कुसक्त द्विवरप्रथमप्रथमवक्तव्यमध्यमामामा वक्ष्यमध्यव्यबोधवित्यसुक्षित्या  
 भैषज्यविषरक्षारिष्ठीठम्य अष्ट्ररायो अष्ट्रेत्तरेत्तमित्यापात्ताइयामो वरिसक्षि-  
 जाओ विमिस्तामो पक्षिस्तामो । ताति वं भेतु । म्लुर्वेष क्षेत्रमध्यस्त्वं आहार्दे  
 समुप्पत्त्वं । योममा ! चरत्प्रभातस्त्वं आहार्दे समुप्पत्त्वं । तं वं भेतु । म्लुमा  
 विमाहरमाहारेत्ति । गोममा ! मुहमिपुष्टक्षम्भारा वं ते मण्यमाणा पञ्चता समाव-  
 उत्तो । । तीसे वं भेतु । पुष्टवीए क्षेत्रिसए आसाए पञ्चते । गोममा ! से ज्ञातामप्त  
 शुक्रेष वा सहित वा साहराइ वा मध्यमित्यव वा मित्यविह वा पप्पडमोमप्त वा  
 पुष्टउत्तराइ वा पत्तमुच्चराइ वा मध्येत्तिमाइ वा विहवाइ वा महात्मित्यवाह वा  
 आमदेवमाइ वा उष्टमाइ वा अपोत्तमाइ वा चावरदे गेत्तवीरे चरठायपरिष्टप  
 गुह्यवृहनमध्येत्तित्वपीए मेहनिगाम्हीए वज्येष्वं उष्टवीए जाव प्लसेवं मधेवास्त्वे  
 विया । नो इष्टद्वे समद्वे, तीसे वं पुष्टवीए एटो इद्वत्वाए चेव जाव मण्यमात्तराए वंत्व  
 आसाए पञ्चते तंति वं भेतु । पुष्टक्षम्भावं क्षेत्रिसए आसाए पञ्चते । गोममा !  
 से ज्ञातामप्त रत्तो चात्तरत्तप्रद्वाहिस्त्वं क्षम्भे प्लरमोवने समाहरसविष्ट्वे  
 वज्येष्वं उष्टवीए येष्टेवं उष्टवीए रसेष्वं उष्टवीए प्लसेष्वं उष्टवीए आसावियो वीणावियो  
 वीणवियो विहवियो दृप्यवियो मयवियो समित्यित्यमाम्पमहायवियो भवत्वास्त्वे  
 विया । यो इष्टद्वे समद्वे, तोति वं पुष्टक्षम्भावं एटो इद्वत्तराए चेव जाव आसाए  
 पञ्चते । तं वं भेतु । म्लुमा तमाहारमहारिता क्षेत्रं वसवै उवेति । योममा !  
 स्त्रक्षेत्रेहमम्भा वं तं मलुममाणा पञ्चता समावात्तु । । तं वं भेतु । स्त्रक्षा  
 वित्तिमा पञ्चता । योममा ! कूडायारसंठिमा वेष्ट्वावरसंठिमा सत्तायारसंठिमा  
 स्त्रसंठिमा तोरप्पसंठिमा गापुरवेष्ट्यवोयास्तासंठिमा आप्यमसंठिमा पासामसंठिमा  
 इम्मत्तुसंठिमा यवक्षमसंठिमा वास्तमापात्तिवसंठिमा क्षमीषंठिमा अप्य उष्ट  
 वहव वरभेदसुव्याप्तिक्षित्युत्त्यक्षसंठिमा शुद्धसीयक्षम्भम्भा वं तु तुमामा पञ्चता  
 समावात्तु । ॥ अरिष्व वं भेतु । एमोम्भरीव तीव गेहावि वा गेहाववावि वा ॥ यो  
 इष्टद्वे समद्वे, स्त्रक्षेत्रेहमम्भा वं ते मज्जुमम्भा पञ्चता समावात्तु । । अरिष्व वं भेतु ।  
 एमूम्भरीव तीव यामाइ वा अमराइ वा जाव उद्दिक्षाइ वा । यो इष्टद्वे समद्वे,  
 जहित्यित्यम्भममामित्यो तु मलुममाणा पञ्चता समावात्तु । । अरिष्व वं भेतु ।

ज्यदीवे० असीइ वा मसीइ वा कसीइ वा पणीइ वा वणिजाइ वा ? नो इण्डे० द्वे० ववगयअसिमसिकिसिपणियवाणिजा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थ ण भते ! एगूस्यदीवे० हिरण्णेइ वा झुवक्षेइ वा कर्तेइ वा दूसेइ वा भणीइ वा तेएइ वा विउलवणकणगरयणमणिमोन्तियसखसिलप्पवालसत्तसारसावैज्ञेइ वा ? । अत्थि, णो चेव ण तेसिं मणुयाणं तिव्वे भमत्तभावे समुप्पज्ञइ । अत्थि ण ! । एगोस्यदीवे० रायाइ वा जुवरायाइ वा ईंसरेइ वा तलवरेइ वा माडवियाइ वा डुवियाइ वा इब्भाइ वा सेट्टीइ वा सेणावईइ वा सत्थवाहाइ वा ? णो इण्डे० द्वे० ववगयइह्वीसक्कारा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थि ण भते ! श्यदीवे दीवे दासाइ वा पेसाइ वा सिस्साइ वा भयगाइ वा भाइलगाइ वा भगरपुरिसाइ वा ? नो इण्डे० समट्टे० ववगयआभिओलिया ण ते मणुयगणा पण्णता नणाउसो ! । अत्थि ण भते ! एगूस्यदीवे दीवे मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा ईणीइ वा भजाइ वा पुत्ताइ वा धूयाइ वा सुण्हाइ वा ? हता अत्थि, नो चेव ण सि ण मणुयाण तिव्वे पेमबधणे समुप्पज्ञइ, पयणुपेजबधणा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थि ण भते ! एगूस्यदीवे दीवे अरीइ वा वेरिएइ वा धायगाइ । वहगाइ वा पडिणीयाइ वा पव्वामिताइ वा ? णो इण्डे० समट्टे० ववगयवेराणुवेधा ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थि ण भते ! एगूस्यदीवे० मित्ताइ वा यसाइ वा घडियाइ वा सहीइ वा छुहियाइ वा महाभागाइ वा सगइयाइ वा ? णो णट्टे० समट्टे० ववगयपेम्मा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थि ण भते ! गोस्यदीवे० आवाहाइ वा वीवाहाइ वा जणाइ वा सद्वाइ वा थालिपागाइ वा चोलो० णयणाइ वा सीमतोवणयणाइ वा पिइ(मय)पिंडनिवेयणाइ वा ? णो इण्डे० समट्टे० वगयआवाहविवाहजणसद्वथालिपागचोलोवणयणसीमतोवणयणपिइपिंडनिवेयणा ण ! मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थि ण भते ! एगूस्यदीवे दीवे इदमहाइ वा वदमहाइ वा रहमहाइ वा सिवमहाइ वा वेसमणमहाइ वा मुगुदमहाइ वा णागमहाइ ॥ जक्खमहाइ वा भूयमहाइ वा कूवमहाइ वा तलायणइमहाइ वा दहमहाइ वा अव्यमहाइ वा रक्खरोवणमहाइ वा ? णो इण्डे० समट्टे० ववगयमहमहिमा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थि ण भते ! एगूस्यदीवे दीवे णडपेच्छाइ वा गटपेच्छाइ वा मल्लपेच्छाइ वा मुट्टियपेच्छाइ वा विडवगपेच्छाइ वा कहगपेच्छाइ वा पवगपेच्छाइ वा अक्खायगपेच्छाइ वा लासगपेच्छाइ वा लखपे० मखपे० तूणइलपे० तुववीणपे० कीवपे० मागहपे० जळपे० ? णो इण्डे० समट्टे० ववगयकोउहला ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ! । अत्थि ण भते ! एगूस्यदीवे दीवे सगडाइ वा रहाइ

वा आजाइ वा तुम्हारे वा मिलीह वा पिर्हिए वा पिपिलीह वा फाहनालि वा चिनियाइ वा संदमाभिमाइ वा । जो इष्टें समझे, पापचारमिहारिलो जै ते मसुस्समका फलता समजाऊसो । अतिथि वै मंत्रे । एग्रुमधीय आजाइ वा इत्तीह वा उद्धाइ वा गोजाइ वा महिसाइ वा सराइ वा शोजाइ वा भमाइ वा एक्काइ वा । हृषा अतिथि जो चेद वै तस्मि मङ्गुवार्णं परिभ्रोपताए इम्बमायच्छंति । अतिथि वै भेत्र । एगोस्मद्दीये दीवे गावीह वा महिसीह वा वडीह वा भमाइ वा पूज्माइ वा । हृषा अतिथि जो चेद वै तस्मि मङ्गुवार्णं परिभ्रोपताए इम्बमायच्छंति । अतिथि वै मंत्रे । एग्रुमधीय दीवे दीप्ताइ वा बभाइ वा चिंगाइ वा दीपिमद्द वा भमाइ वा परण्माइ वा परस्तराइ वा तरम्भमाइ वा चिकाड्ह वा चित्तमाइ वा शुजगाइ वा चेत्तमुक्तमाइ वा चेत्तेतियाइ वा चाचमाइ वा चित्तमाइ वा चिंगमाइ वा । हृषा अतिथि जो चेद वै ते अन्य-मन्त्रस्त तस्मि वा मञ्जुपाल चित्ति आजाइ वा फाहै वा उप्पासेति वा अन्निक्षेपं वा कर्तृति फाहमाया वै ते चाकडगाया फक्ता समजाऊसो । । अतिथि वै मंत्रे । एग्रुमधीय दीवे साकीह वा वीहीह वा मोभूमाइ वा जवाह वा चित्तमाइ वा इम्बद्द वा । हृषा अतिथि जो चेद वै तस्मि मङ्गुवार्णं परिभ्रोपताए इम्बमायच्छंति । अतिथि वै भेत्रे । एग्रुमधीय दीवे फाहै वा दीपीह वा चेत्ताइ वा मिल्लू वा उषासह वा चित्तमेह वा चित्तेह वा भूलीह वा रेक्ष वा पौधि वा चलनीह वा । जो इष्टे समझे, एग्रुमधीये वै दीवे चाहूस्मरमणिये भूमिमागे फलते समजाऊसो । । अतिथि वै भेत्रे । एग्रुमधीये दीवे चाहूह वा फैल्ह वा हीरएह वा सहराइ वा उप्पम्भराइ वा पतक्कम्भराइ वा असुईह वा एस्माइ वा दुक्खिमंत्राइ वा अनोस्त्राइ वा । जो इष्टे समझे, वक्कावक्कासुक्टग्हारिस्क्करत्तम्भवरपत्तक्कवरम्भुक्तपूम्भुमियोक्त्व-जोम्भवपरिष्वक्ति वै एग्रुमधीये फलते समजाऊसो । । अतिथि वै भेत्रे । एग्रुम-धीय दीवे दंसाइ वा सचगाइ वा पिक्कमाइ वा चूमाइ वा चित्तमाइ वा दुक्खियाइ वा । जो इष्टे समझे, वक्कम्भरैस्मरापिसुवग्नूमिक्कर्तुम्भपरिष्वक्ति वै एग्रुम-धीये फलते समजाऊसो । । अतिथि वै भेत्र । एग्रुमधीये अहीह वा अभगराइ वा महोरयाइ वा । हृषा अतिथि जो चेद वै ते अब्दमायस्त तस्मि वा मङ्गुवार्णं चित्ति आजाइ वा फाहै वा अन्निक्षेपं वा कर्तृति फलम्भगा वै ते चाकडगाया फक्ता समजाऊसो । । अतिथि वै भेत्रे । एग्रुमधीये गहर्दाइ वा गामुस्मद्द वा गहणगित्ताइ वा गहुत्ताइ वा गहुत्तोडगाइ वा गहम्भस्त्राइ वा अभमाइ वा अभ्मस्त्राइ वा उत्ताइ वा गहित्ताइ वा गहित्तोडगाइ वा गहित्तमाइ वा चित्तमाइ वा उत्तम-पानाइ वा चित्तमाइ वा चित्तमाइ वा चित्तमाइ वा चित्तमाइ वा चित्तमाइ वा

वा वूमियाइ वा महियाइ वा रउग्घायाइ वा चडोक्काइ वा ग्रामाइ वा  
चदपरिवेसाइ वा सूरपरिवेसाइ वा पडिचदाइ वा कटिम्बाइ वा इदराइ वा उदग-  
मच्छाइ वा अमोहाइ वा कविहसियाइ वा पाठ्यवापाइ वा वापाइ वा ग्रा-  
मुद्वायाइ वा गामदाहाइ वा नगरदाहाइ वा जाव र्भिक्षाइ वा वापाइ-  
जणक्षयकुलम्बयधणक्षयधणम्भूयमणारियाइ वा ? णो इन्हैं नम्हैं । र्भिक्षाइ  
भते । एग्रूयदीवे दीवे डिवाइ वा उमराइ वा उद्वाइ वा ग्रामाइ वा उद्गाइ  
वेराइ वा महावेराइ वा विश्वदरज्जाइ वा ? णो इन्हैं नम्हैं, र्भिक्षाइ वा ग्रामाइ  
वोलखारवेरविश्वदरज्जविवज्जिया ण ते मण्यगणा पण्णता ग्रामाइ । र्भिक्षाइ  
भते । एग्रूयदीवे दीवे महाजुद्वाइ वा महासगामाइ वा नम्हैं वा ग्रामाइ  
पुरिसपडणाइ वा भद्राहिरपडणाइ वा नागवाणाइ वा नम्हैं वा ग्रामाइ  
वा दुब्भूयाइ वा कुलरोगाइ वा गामरोगाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
सिरोवेयणाइ वा अच्छिवेयणाइ वा रुणवेयणाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
वा नहवेयणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा जराइ वा इद्गाइ वा इद्गाइ  
वा कुद्वाइ वा कुड्वाइ वा दगराइ वा अरिमाट वा इद्गाइ वा इद्गाइ  
इदग्गहाइ वा खदग्गहाइ वा कुमारग्गहाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
भूयग्गहाइ वा उव्वेयग्गहाइ वा वण्गग्गहाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
हियाइ वा चउत्थगाइ वा हियस्लूगाइ वा मर्गम्बुद्धाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
सूलाइ वा जोणिसूलाइ वा गाममारीइ वा नाव र्भिक्षाइ वा ग्रामाइ  
वसणम्भूयमणारियाइ वा ? णो इण्डे सम्हैं, व्यक्तिम्बुद्धाइ वा ग्रामाइ  
पण्णता समणाउसो । अत्थि ण भते । एग्रूद्वाइ वा उदग्गाइ वा मदग्गाइ  
वा सुवुद्वीइ वा मदवुद्वीइ वा उदगवाहाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
प्पीलाइ वा गामवाहाइ वा जाव सञ्चिवेयवाहाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
यारियाइ वा ? णो इण्डे सम्हैं, ववग्यदगोवक्त्रा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
उसो । अत्थि ण भते । एग्रूयदीवे दीवे इद्गाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
राइ वा सुवण्णागराइ वा रयणागराइ वा उद्गाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
वा सुवण्णवासाइ वा रयणवासाइ वा कृत्याइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ  
वा पुप्फवासाइ वा फलवासाइ वा नीववासा ग्रामाइ वा यत्वानाम  
चुणवासा० खीरुद्वीइ वा रयणकुट्टाइ वा उद्गाइ वा ग्रामाइ  
चुणुद्वीइ वा सुकालाइ वा डुकालाइ वा नुकिन्नाइ वा उद्गाइ वा ग्रामाइ  
महर्घाइ वा क्याइ वा महाविक्क्याइ वा वापाइ वा ग्रामाइ वा ग्रामाइ

निहीं वा निहायाई वा चिरपोरापाई वा पहीयसामियाई वा पहीयसंठयाई वा पहीय-  
गोत्रागाराई वा जर्दे म्हाई गामभारणगारखेहृष्टवहमंवदेषुहृष्टव्याकमर्त्याईसु-  
दिक्षेषु चिपाहगतिगमतहृष्टव्याकरुहमहापहपेषु पवरचिद्व्याकमामविद्व्याकु-  
सापगिरिक्षवरसनिद्व्याक्षेष्ट्राणमरणगिषेषु चिपिक्षिताई चिप्पुति । तो इष्टहू सम्हे ।  
एगूळ्यशीवे जे भंते । शीवे नण्यार्थ केहवै अर्ध ठिई पम्ता । गोम्मा । जहेव  
पविष्ठोक्तमस्तु असेवेज्ञभाग असेवेज्ञभागेव उज्जा उज्जेवेवे पविष्ठोक्तमस्तु  
असेवेज्ञमत्ता । ते जे भंते । म्हुया क्षम्मासे क्षक्ष क्षिता क्षी गक्षति क्षी  
उक्तव्यंति । येवमा । ते जे नण्या उम्मादावसेवात्या मित्रुपयाई पस्तीति अठाई-  
शीई एविपद्म मित्रुपद्म सारकर्त्यंति क्षेवेविति व सारक्षिता सुमोक्तिता उस्सित्या  
निस्सित्या क्षविता उम्मादावसेवात्या अविद्यु अव्यविद्या अपरियाविद्या [ पविष्ठोक्तमस्तु  
असेवेज्ञभागे परियाविद्य ] ध्रुव्येषु क्षम्मासे क्षक्ष क्षिता अव्यवरुप्त हेवव्येषु  
देवताए उक्तव्यारो भवन्ति देवव्यवपरिमत्ता जे ते मणुपयापा फ्यता सम्पा-  
उषो । ॥ क्षी जे भंते । वाहिपिक्षार्थ आमाचिमत्तुस्त्वार्थ आमाचिमशीवे जाम-  
दीव पम्तो । गोम्मा । ज्ञुर्हिते शीवे तुप्रहिमवंतस्तु वासहरफ्यमस्तु वाहिपुर-  
पिक्षित्याभो चरिमेताभो स्वप्यसुरै तिति जोयम संस जहा एगूळ्यार्थ पुष्ट्या गोम्मा ।  
ज्ञुर्हिते शीवे मंदरस्तु फ्यव्यस्तु वाहिपेष्य तुप्रहिमवंतस्तु वासहरफ्यमस्तु  
उत्तरप्याचिमिक्षाभो चरिमेताभो स्वप्यसुरै तितिष जोवप्यस्याद्य सेव ज्ञा  
एगूळ्यमत्तुस्त्वार्थ ॥ क्षी जे भंते । वाहिपिक्षार्थ वेसाचिमत्तुस्त्वापुष्ट्या गोम्मा ।  
ज्ञुर्हिते शीवे मंदरस्तु फ्यव्यस्तु वाहिपेष्य तुप्रहिमवंतस्तु वासहरफ्यमस्तु वाहिप-  
प्याचिमिक्षाभो चरिमेताभो स्वप्यसुरै तितिष जाम दीव पम्तो ।  
योम्मा । एगूळ्यवीक्षस्तु उत्तरपुरचिमिक्षाभो चरिमेताभो स्वप्यसुरै चातारि  
जोयमस्याई जोगाहिता एत्य जे वाहिपिक्षार्थ इवम्यमत्तुस्त्वापुष्ट्या इवम्यत्तीते  
जाम दीव पम्तो चातारि जामप्यस्याई आमाचिमत्त्यामेष चातप जोवप्यस्या  
पत्तु विविषेष्या परिस्वेवन से जे एगाए पठमवरवेष्याए अवसेवै जहा  
एगूळ्याप । क्षी जे भंते वाहिपिक्षार्थ गवद्यमत्तुस्त्वार्थ पुष्ट्या गोम्मा ।  
आमाचिकरीस्तु वाहिपुरचिमिक्षाभो चरिमेताभो नम्यप्यसुरै चातारि जोवप्य-  
स्याई सेव जहा इवम्यत्तार्थ । एवं गोग्यमत्तुस्त्वार्थ पुष्ट्या वेसाचिमत्तीस्तु  
वाहिपरचिमिक्षाभो चरिमेताभो स्वप्यसुरै चातारि येवप्यस्याई सेव जहा

हयकण्णाण । सकुलिक्षणाणं पुच्छा, गोयमा । णंगोलियदीवस्स उत्तरपञ्चतिथमिलाओ  
चरिमताओ लवणसमुद्र चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा हयकण्णाण ॥ आयसमुहाण  
पुच्छा, हयकण्णयदीवस्स उत्तरपुरच्छमिलाओ चरिमताओ पच जोयणसयाइ ओगा-  
हित्ता एत्य ण दाहिणिलाण आयसमुहमणुस्साण आयसमुहर्दावे णाम दीवे पण्णते, पच  
जोयणसयाइ आयामविक्खभेण, आसमुहाईण छ सया, आसकन्नाईण सत्त, उक्कामु-  
हाईण अट्टु, घणदंताईण जाव नव जोयणसयाइ, गाहा—एगूस्यपरिक्खेवो नव चेव  
सयाइ अउणपन्नाइ । वारसपन्नट्टाइ हयकण्णाईण परिक्खेवो ॥ १ ॥ आयंसमुहाईण  
पन्नरसेकासीए जोयणसए किचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, एव एएणं कमेण उबउडिङ्गण  
पेयब्बा चत्तारि चत्तारि एगपमाणा, णाणत्त ओगाहे, विक्खभे परिक्खेवे पठमवीय-  
तइयचउक्काण उग्गहो विक्खभो परिक्खेवो भणिओ, चउत्यचउक्के छजोयणसयाइं  
आयामविक्खभेण अट्टारसत्ताणउए जोयणसए विक्खभेण । पचमचउक्के सत्त जोयण-  
सयाइं आयामविक्खभेण वावीच तेरसोत्तरे जोयणसए परिक्खेवेण । छट्टचउक्के  
अट्टुजोयणसयाइं आयामविक्खभेण पणवीस गुणतीसज्जोयणसए परिक्खेवेण ।  
सत्तमचउक्के नवजोयणसयाइ आयामविक्खभेण दो जोयणसहस्साइ अट्टु पणयाले  
जोयणसए परिक्खेवेण । जस्स य जो विक्खभो उग्गहो तस्स तत्तिओ चेव ।  
पठमवीयाण परेरओ झणो सेसाण अहिओ उ ॥ १ ॥ सेसा जहा एगूस्यदीवस्स  
जाव उद्ददतर्दीवे देवलोगपरिग्गहा ण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ॥ कहि  
ण भते ! उत्तरिलाण एगूस्यमणुस्साण एगूस्यदीवे णाम दीवे पण्णते २ गोयमा !  
जंवीवे दीवे मदरस्स पब्बयस्स उत्तरेण तिहरिस्स वासहरपब्बयस्स उत्तरपुरच्छ-  
मिलाओ चरिमताओ लवणसमुद्र तिणिण जोयणसयाइ ओगाहित्ता एव जहा  
दाहिणिलाण तहा उत्तरिलाण भाणियब्ब, णवर सिहरिस्स वासहरपब्बयस्स  
विदिसासु, एव जाव उद्ददतर्दीवेति जाव सेत्त अतरदीवगा ॥ ११२ ॥ से कि त  
अकम्मभूमगमणुस्सा ? २ तीसविहा पण्णत्ता, तजहा—पचाहिं हेमवएहिं, एव  
जहा पण्णवणापए जाव पचाहिं उत्तरकुलहिं, सेत्त अकम्मभूमगा । से कि त कम्म-  
भूमगा ? २ पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा—पचाहिं भरहेहिं पचाहिं एरवएहिं पचाहिं  
महाविदेहोहिं, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—आरिया मिलेच्छा, एव जहा  
पण्णवणापए जाव सेत्त आरिया, सेत्त गब्बवक्तिया, सेत्त मणुस्सा ॥ ११३ ॥  
मणुस्सुद्देसो समत्तो ॥

से कि त देवा ? देवा चउविहा पण्णत्ता, तंजहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया  
वेमाणिया ॥ ११४ ॥ से कि त भवणवासी ? २ दसविहा पण्णत्ता, तजहा—

असुखमारु अहा पर्वतपापए देखावं भेदो तदा माविक्षमो जाव अनुगतो बदाइ  
 एवं विश्वा पर्वता ठंडहा-विज्ञप्तिभैरव जाव सम्भृषिदग्गा देख अनुगतो बदाइ  
 ॥ ११५ ॥ अहि वं भेदो । भवपत्रातिदेशां भवता पवता । अहि वं भेदो ।  
 भवपत्रासी देशा परिवर्त्ति । योमा । इनीते रथपर्पत्ताए पुढबीए असीतत्तरत्त्वेम-  
 णसमस्ताहस्रात्त्वाहस्रात् एवं अहा पर्वतपापए जाव भवपत्रासाइ त(ए)स्य वं  
 भवपत्रासी वेदावं सुत भवपत्रेभैमो बावतारि भवपत्रासास्तमस्तास्त्वा भवति  
 तिमस्ताया उत्प वं बहवे भवपत्रासी देशा परिवर्त्ति-असुरा नाम द्वुधा वं  
 अहा पर्वतपापए जाव विहर्ति ॥ ११६ ॥ अहि वं भेदो । असुखमारुपं देशावं  
 भवता पुच्छ एवं अहा पर्वतपापाद्यपपए जाव विहर्ति ॥ ११७ ॥ अमरस्य वं  
 भेदो । असुरिदस्य असुररजो अह परिसामो प । गो । लभो परिसाखो प तं—  
 समिया चंडा जाया अस्मितरिया समिया मज्जे चंडा बाहि च जाया ॥ अमरस्य  
 वं भेदो । असुरिदस्य असुररजो अस्मितरपरिसाए अह देशाहस्रीभो कलतास्ये ॥  
 नविष्टपरिसाए अह देशाहस्रीभो पवता भेदो । बाहिरियाए परिसाए अह देशा-  
 हस्रीभो पवता भेदो । गोमा । अमरस्य वं असुरिदस्य २ अस्मितरपरिसाए  
 अरमीसु देशाहस्रीभो पवता भेदो मज्जिसमियाए परिसाए असुरमीसु अह बाहि-  
 रियाए परिसाए बतीत देशा ॥ ४ अमरस्य वं भेदो । असुरिदस्य असुररजो  
 अस्मितरियाए प अह देशमा पवता । मज्जिसमियाए परिसाए असुरमीसु अह बाहि-  
 रियाए परिसाए बतीत देशा ॥ ५ अमरस्य वं भेदो । असुरिदस्य असुररजो  
 अस्मितरियाए परिसाए असुरमीसु अह देशमा पवता । गोमा । अमरस्य वं  
 असुरिदस्य असुररजो अस्मितरियाए परिसाए असुरमीसु अह देशमा प  
 परिसाए तिथि भेदि बाहिरियाए असुरमीसु अह । अमरस्य वं भेदो । असुरिदस्य  
 असुररजो अस्मितरियाए परिसाए देशावं केवर्यं कम्ह ठिई पवता । मज्जिसमियाए  
 परिसाए बाहिरियाए परिसाए देशावं केवर्यं कम्ह ठिई पवता । अस्मितरियाए  
 परि देशीवं केवर्यं कम्ह ठिई पवता । मज्जिसमियाए परि देशीवं केवर्यं  
 बाहिरियाए परि देशीवं के । योमा । अमरस्य वं असुरिदस्य २ अस्मितरपरिसाए  
 परि देशावं अनुगामावं पविष्टोक्तमावं ठिई प मज्जिसमाए परिसाए देशावं वो  
 पविष्टोक्तमावं ठिई पवता बाहिरियाए परिसाए देशावं दिक्षावं पविष्टोक्तमावं  
 परिसाए देशीवं विष्टावं पविष्टोक्तमावं ठिई पवता मज्जिसमियाए परिसाए देशीवं पविष्टोक्तमावं ठिई पवता ॥ ६ ऐ

केणद्वेष भंते । एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तजहा—समिया चडा जाया, अबिभतरिया समिया मजिञ्जमिया चडा वाहिरिया जाया ? गोयमा । चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररज्जो अबिभतरपरिसाए देवा वाहिया हृव्वमागच्छति णो अब्बाहिया, मजिञ्जमपरिसाए देवा वाहिया हृव्वमागच्छति अब्बाहियावि, वाहिरपरिसाए देवा अब्बाहिया हृव्वमागच्छति, अदुत्तर च ण गोयमा । चमरे असुरिंदे असुरराया अञ्जयरेषु उच्चावएसु कज्जकोहुंबेषु समुप्पेषेषु अबिभतरियाए परिसाए सद्दिं समइसपुच्छणाबहुले विहरइ मजिञ्जमपरिसाए सद्दिं पय एवं पवचेमाणे २ विहरइ वाहिरियाए परिसाए सद्दिं पयडेमाणे २ विहरइ, से तेणद्वेषं गोयमा । एव वुच्चइ—चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ समिया चडा जाया, अबिभतरिया समिया मजिञ्जमिया चडा वाहिरिया जाया ॥ ११८ ॥ कहि ण भंते । उत्तरिल्लाण असुरकुमाराण भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपए जाव वली एत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणरज्जो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिणिं परिसाओ प०, तजहा—समिया चडा जाया, अबिभतरिया समिया मजिञ्जमिया चडा वाहिरिया जाया । वलिस्स ण भते । वइरोयणिंदस्स वइरोयणरज्जो अबिभतरियाए परिसाए कइ देवसहस्सा ५० ? मजिञ्जमियाए परिसाए कइ देवसहस्सा जाव वाहिरियाए परिसाए कइ देविस्या पण्णत्ता ?, गोयमा ! वलिस्स ण वइरोयणिंदस्स २ अबिभतरियाए परिसाए वीस देवसहस्सा पण्णत्ता, मजिञ्जमियाए परिसाए चउवीस देवसहस्सा पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए अद्वावीस देवसहस्सा पण्णत्ता, अबिभतरियाए परिसाए अद्वचमा देविस्या पण्णत्ता, मजिञ्जमियाए परिसाए चत्तारि देविस्या पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए अद्वुद्वा देविस्या पण्णत्ता, वलिस्स ठिईंए पुच्छा जाव वाहिरियाए परिसाए देवीण केवद्य कालं ठिईं पण्णत्ता ?, गोयमा ! वलिस्स ण वइरोयणिंदस्स २ अबिभतरियाए परिसाए देवाण अद्वुद्वपलिओवमा ठिईं पण्णत्ता, मजिञ्जमियाए परिसाए तिनि पलिओवमाइ ठिईं पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए देवाण अद्वृश्जाइ पलिओवमाइ ठिईं पण्णत्ता, अबिभतरियाए परिसाए देवीण अद्वृश्जाइ पलिओवमाइ ठिईं पण्णत्ता, मजिञ्जमियाए परिसाए देवीण दो पलिओवमाइ ठिईं पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए देवीण दिवद्व पलिओवम ठिईं पण्णत्ता, सेस जहा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो ॥ ११९ ॥ कहि ण भते ! नागकुमाराण देवाण भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपए जाव दाहिणिलाणि पुच्छियव्वा जाव धरणे इत्य नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ जाव

मिहर ॥ भरणस्तु र्थं भेदे । नागकुमारिदस्तु नागकुमाररूपो वद् परिसाम्भो प । ग्रेममा ! त्रिलिंग परिसाम्भो ताक्षो तेव वहा भमरस्तु । भरणस्तु र्थं मंत्रे । नाय-  
कुमारिदस्तु नागकुमाररूपो अभिमतरियाए परिसाए वद् देवसाहस्रा पवता जाव  
बाहिरियाए परिसाए वद् देविया पवता । ग्रेममा ! भरणस्तु र्थं नागकुमारिदस्तु  
नागकुमाररूपो अभिमतरियाए परिसाए सद्गु देवसाहस्रां मनिःसमियाए परिसाए  
सतारि देवसाहस्रां बाहिरियाए परिसाए असीधिदेवसाहस्रां अभिमतरपरिसाए पवतारे  
देविये कलार्थं मनिःसमियाए परिसाए कलार्थं देविये कलार्थं बाहिरियाए परिसाए  
पवतीर्थं देवियम् पवतीर्थं । भरणस्तु र्थं रक्षो अभिमतरियाए परिसाए देवार्थं देवदर्थं  
वद् विद्वं पवता । मनिःसमियाए परिसाए देवार्थं देवदर्थं वद् विद्वं पवता ।  
बाहिरियाए परिसाए देवार्थं देवदर्थं विद्वं पवता । अभिमतरियाए परिसाए  
देवीर्थं देवदर्थं वद् विद्वं पवता । मनिःसमियाए परिसाए देवीर्थं देवदर्थं विद्वं  
विद्वं पवता । बाहिरियाए परिसाए देवीर्थं देवदर्थं विद्वं विद्वं पवता । ग्रेममा !  
भरणस्तु रूपो अभिमतरियाए परिसाए देवार्थं साहरेयं बदपक्षियोक्तं विद्वं पवता  
मनिःसमियाए परिसाए देवार्थं बदपक्षियोक्तं विद्वं पवता बाहिरियाए परिसाए  
देवार्थं देवूर्थं बदपक्षियोक्तं विद्वं पवता अभिमतरियाए परिसाए देवीर्थं देवूर्थं  
बदपक्षियोक्तं विद्वं पवता मनिःसमियाए परिसाए देवीर्थं साहरेयं चतुष्प्राणापक्षि-  
योक्तं विद्वं पवता बाहिरियाए परिसाए देवार्थं बदभाग्यपक्षियोक्तं विद्वं पवता  
अट्टो वहा भमरस्तु ॥ वद् र्थं र्थं मंत्रे । उत्तरियार्थं नागकुमारार्थं वहा ठाकप्त जाव  
मिहर ॥ भूतार्थदस्तु र्थं मंत्रे । नायकुमारिदस्तु नागकुमाररूपो अभिमतरियाए  
परिसाए वद् देवसाहस्रीयो पवता । मनिःसमियाए परिसाए वद् देवसाहस्रीयो  
पवता । बाहिरियाए परिसाए वद् देवसाहस्रीयो पवता । अभिमतरियाए  
परिसाए वद् देविया पवता । मनिःसमियाए परिसाए वद् देवियम् पवता ।  
बाहिरियाए परिसाए वद् देविया पवता । ग्रेममा ! भूतार्थदस्तु र्थं नागकुमारि-  
दस्तु नागकुमाररूपो अभिमतरियाए परिसाए पवता देवसाहस्रा पवता मनिः-  
समियाए परिसाए सद्गु देवसाहस्रीयो पवता । बाहिरियाए परिसाए सुवर्ते  
देवसाहस्रीयो पवता अभिमतरियाए परिसाए दो पवतीर्थं पवता बाहिरियाए परिसाए पवतारे  
देविये पवतीर्थं पवता मनिःसमियाए परिसाए दो पवतीर्थं देवियार्थं पवता  
मनिःसमियाए परिसाए दो देवीर्थं पवता बाहिरियाए परिसाए पवतारे देविये  
पवता । भूतार्थदस्तु र्थं मंत्रे । नागकुमारिदस्तु नागकुमाररूपो अभिमतरियाए  
परिसाए देवार्थं देवदर्थं विद्वं विद्वं पवता जाव बाहिरियाए परिसाए देवीर्थं देवदर्थं  
विद्वं विद्वं पवता । ग्रेममा ! भूतार्थदस्तु र्थं अभिमतरियाए परिसाए देवार्थं

દેસૂણ પલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, મજિઝમિયાએ પરિસાએ દેવાણ સાઇરેગ અદ્ધપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, વાહિરિયાએ પરિસાએ દેવાણ અદ્ધપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, મજિઝમિયાએ પરિસાએ દેવીણ દેસૂણ અદ્ધપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, વાહિરિયાએ પરિસાએ દેવીણ સાઇરેગં ચુચ્ચાગપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, અટો જહા ચમરસ્સ, અવસેસાણ વેણુદેવાઈંગ મહાઘોસપજવસાણાણ ઠાણપયવત્તબ્યા ણિરવસેસા ભાણિયબ્બા, પરિસાઓ જહા ધરણભૂયાણદાળ ( સેસાણ ભવણવૈણ ) દાહિણિલાણ જહા વરણસ્સ ઉત્તરિલાણ જહા ભૂયાણદસ્સ, પરિમાણપિ ઠિંડવિ ॥ ૧૨૦ ॥ કહિ ણ ભંતે ! વાણમતરાણ દેવાણ ભવણા ( ભોમેજ્જા ણગરા ) પણત્તા ? જહા ઠાણપએ જાવ વિહરતિ ॥ કહિ ણ ભંતે ! પિસાયાણ દેવાણ ભવણા પણત્તા ? જહા ઠાણપએ જાવ વિહરતિ, કહિ ણ ભંતે ! દાહિણિલાણ પિસાયકુમારાણ જાવ વિહરતિ કાલે ય એટ્ય પિસાયકુમારિદે પિસાયકુમારરાયા પરિવસઙ્ગ મહિંદ્રિએ જાવ વિહરિ ॥ કાલસ્સ ણ ભંતે ! પિસાયકુમારિદસ્સ પિસાયકુમારરણો કંડ પરિસાઓ પણત્તાઓ ? ગોયમા ! તિણિ પરિસાઓ પણત્તાઓ, તજહા-ઈસા તુડિયા દઢરહા, અંબિતરિયા ઈસા મજિઝમિયા તુડિયા વાહિરિયા દઢરહા । કાલસ્સ ણ ભંતે ! પિસાયકુમારિદસ્સ પિસાયકુમારરણો અંબિતરપરિસાએ કંડ દેવસાહસ્રીઓ પણત્તાઓ જાવ વાહિરિયાએ પરિસાએ કંડ દેવિસયા પણત્તા ?, ગો ૦ । કાલસ્સ ણ પિસાયકુમારિદસ્સ પિસાયકુમારરાયસ્સ અંબિતરિયપરિસાએ અટૂ દેવસાહસ્રીઓ પણત્તાઓ મજિઝમારિસાએ દસ દેવસાહસ્રીઓ પણત્તાઓ વાહિરિયપરિસાએ વારમ દેવસાહસ્રીઓ પણત્તાઓ અંબિતરિયાએ પરિસાએ એગ દેવિસય પણત્ત મજિઝમિયાએ પરિસાએ એગ દેવિસય પણત્ત વાહિરિયાએ પરિસાએ એગ દેવિસય પણત્ત । કાલસ્સ ણ ભંતે ! પિસાયકુમારિદસ્સ પિસાયકુમારરણો અંબિતરિયાએ પરિસાએ દેવાણ કેવિય કાલ ઠિંડે પણત્તા ? વાહિરિયાએ પરિસાએ દેવાણ કેવિય કાલ ઠિંડે પણત્તા જાવ વાહિરિયાએ ૦ દેવીણ કેવિય કાલ ઠિંડે પણત્તા ?, ગોયમા ! કાલસ્સ ણ પિસાયકુમારિદસ્સ પિસાયકુમારરણો અંબિતરપરિસાએ દેવાણ અદ્ધપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, મજિઝમિયાએ પરિ ૦ દેવાણ દેસૂણ અદ્ધપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, વાહિરિયાએ પરિ ૦ દેવાણ સાઇરેગં ચુચ્ચાગપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા, અભ્મતરપરિ ૦ દેવીણ સાઇરેગ ચુચ્ચાગપલિઓવમં ઠિંડે પણત્તા,

काहिरपरिसाए देवीर्व इस्तर्व चतुर्भागपत्रिभोवमे ठिरे पञ्चता अद्वे जो चतुर चम-  
रसु एवं उत्तरस्तनि एवं निरतर जाव गीव्यक्षस्तु ॥ १२१ ॥ अहि वं भर्तु !  
जोइतिकार्वं देवाम विकाका पञ्चता ॥ अहि वं भर्तु ! जोइतिका इषा परिकर्तु !  
मोवमा । उपि दीक्षसुमुद्राप्य इमीसे रथचण्डभाए पुष्टीपु चतुर्भागमिकामे भूमि-  
मायामो चतुर्भाग चावनसुए चतुर्भागता इमुतरस्ता जोववाहाहमेर्व लत्य वं  
जोइतिकार्वं देवाम विरियमस्तेज्ञा जोइतिमिमाणाकाचाचम्यस्ताहस्ता मर्तीर्तीर्तिम-  
क्षायं तु वं विकाका अद्विक्षिणास्ताक्षस्तिमा एवं चाव ठापपद चाव चंद्रस्तरिया  
य तत्त्व वं जोइतिका जोइतिकावामो परिकर्तु महितिका जाव विरति ॥ चूर्त्य वं  
भर्तु ! जोइतिक्षसु जोइतिक्षो अहि परिवामो पञ्चतामो ? गेममा ! विज्ञि परिसामो  
पञ्चतामो तंचाहा—तुवा दुष्टिया पञ्चा विभितरया तुवा मनिष्ठलिमा दुष्टिया वाहि  
मिया फमा देव चाव अम्बसु परिमार्व ठिर्वि । अद्वे चाव अमरस्त । चतुर्भागि एव  
वं ॥ १२२ ॥ अहि वं भर्तु ! दीक्षसुमुद्रा ! केवमा वं भर्तु ! दीक्षसुमुद्रा ! केवमाक्षमा  
वं भर्तु ! दीक्षसुमुद्रा ! किं संठिमा वं भर्तु ! दीक्षसुमुद्रा ! किमाणारमावपडोमार  
वं भर्तु ! दीक्षसुमुद्रा पञ्चता ॥ गेममा ! चंद्रुवाहिमा दीक्षा भ्यकाहामा समुद्रा  
संद्वयमामा एवाविहितिका विश्वारबो जकेविहितिका दुष्टिकुमुखे पञ्चपात्माका ३  
परित्वरमाणा ३ जोमासुमापवीहिमा चतुर्भागमक्षमुद्रक्षिममुमग्येविकर्त्त-  
वरीम्यमाहापोवीक्षकस्तद्वाहस्तरामपुद्रक्षेत्रमिमिया पतेवं पतेवं पठमवरेक्षा-  
परिकिक्षाता पतेवं पतेवं वक्षस्तपरिकिक्षाता अस्ति विरियमेव असुवेजा दीक्षसुमुद्रा  
उवंमुरमपववधाकामा पञ्चता सम्पावदो ॥ ॥ १२३ ॥ तत्त्व वं वयं चंद्रुविमे  
वामे दीक्षसुमुद्रावं भविततरिए सम्पावद व्ये तेक्षमूलसंज्ञनस्तिए व्ये  
एवंक्षमाप्त्वाचस्तिए व्ये पुक्षकरमिमियास्तवज्ञर्तिए व्ये परित्युवर्पर्त्ताम-  
संठिए एवं जोममसमसाहस्र आमामविक्षमेन विष्मिय जोममसमसाहस्रं सोम्यसु  
य साहस्याई रोमिय वं सत्तारीसे जोममपद विज्ञि वं व्येवे चक्रवीष वं भुक्षेवे  
देवस स्तुमाई भद्रुगुच्छे व किष्मिविसेवाक्षिवं परिक्षेवेन पञ्चवे ॥ से वं एवाए  
वर्गव्येवं स्तुम्ये स्तुम्या सपरिक्षेवो ॥ सा वं जयहे भद्रु जोममाई चतुर्भागेन  
मृडे वात्स जोममाई विक्षमिये मम्ये भद्रु जोममाई विक्षमिये उपि चावारि  
जोममाई विक्षमिये मृडे विष्मिया मम्ये रक्षिता उपि तत्त्वा सोपुक्षक्षाम  
संठिमा सम्पावदमाई अच्छ उव्वा उव्वा भद्रु मृडे वीरया विम्मव विष्मेव  
विक्षमिया उव्वमासा सप्तमा सरिसीमा सर्वज्ञेवा पापाईया वरिष्मिया भविम्या  
फिष्मिया ॥ सा वं उपद एवेवं चाम्भदपूर्वं सम्बलो स्तुम्या सपरिक्षेवा ॥ हे वं

जालकडए अद्भुजोयण उच्छु उच्चतेण पञ्चधनुसयाइ विक्खभेण सब्वरयणामए अच्छे सण्हे लण्हे घटे मटे नीरए णिम्मले णिप्पके णिक्कडच्छाए सप्पभे [सस्तिरीए] समरीए सउज्जोए पासाईए दरिसणिजे अभिरुवे पडिरुवे ॥ १२४ ॥ तीसे ण जगईए उप्पि वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण एगा महइ पउमवरवेइया प०, सा ण पउमवरवेइया अद्भुजोयण उच्छु उच्चतेण पञ्च धनुसयाइ विक्खभेण सब्वरयणामए जगईसमिया परिक्षेवेण सब्वरयणामई० ॥ तीसे ण पउमवरवेइयाए अयमेयारुवे वण्णावासे पण्णते, तजहा—वझामया नेमा रिंडामया पझटाणा वेरुलियामया खभा सुवण्णरुप्पमया फलगा वझामया संधी लोहियक्खमर्दओ सर्द्दओ णाणामणिमया कडेवरा कडेवरसधाडा णाणामणिमया रुवा नाणामणिमया रुवसधाडा अकामया पक्खा पक्खवाहाओ जोइरसामया वसा वसकवेल्या य रययामर्दओ पटियाओ जायरुवमर्दओ ओहाडणीओ वझामर्दओ उवरि पुञ्छणीओ सब्वसेए रययामए छायणे ॥ सा ण पउमवरवेइया एगमेगेण हेमजालेण एगमेगेण गवक्खजालेण एगमेगेण खिंखिणिजालेण जाव मणिजालेण (कण्यजालेण रयणजालेण) एगमेगेण पउमवरजालेण सब्वरयणामएण सब्वओ समंता सपरिक्खता ॥ ते ण जाला तव-णिजलवूसगा सुवण्णपयरगमडिया णाणामणिरयणविविहारद्वहारउवसोभियसमुदया इसे अण्णमण्णमसपत्ता पुञ्चावरदाहिणउत्तरागएहिं वाएहिं मदाग २ एजमाणा २ कपिजमाणा २ लवमाणा २ पक्खमाणा २ सद्यमाणा २ तेण ओरालेण मणु-णेण कण्णमणिव्युकरेण सहेण सब्वओ समता आपूरेमाणा सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा उव० चिट्ठति ॥ तीसे ण पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे २ तहिं तहिं वहवे हयसधाडा गयसधाडा नरसधाडा किण्णरसधाडा किपुरिससधाडा महोरग-सधाडा गधव्वसधाडा वसहसधाडा सब्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मट्टा नीरया णिम्मला णिप्पके णिक्कडच्छाया सप्पभा समरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिजा अभिरुवा पडिरुवा । तीसे ण पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे २ तहिं तहिं वहवे हयपतीओ तहेव जाव पडिरुवाओ । एव हयवीहीओ जाव पडिरुवाओ । एव हयमिहुणाइ जाव पडिरुवाइ ॥ तीसे ण पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे २ तहिं तहिं वहवे पउमलयाओ नागलयाओ, एवं असोग० चपग० चूयवण० वासति० अइ-मुतग० कुद० सामलयाओ णिच्च कुसुमियाओ जाव सुविहतपिंडमजरिवडिसगधरीओ सब्वरयणामईओ अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्टाओ मट्टाओ नीरयाओ णिम्मलाओ णिप्पकाओ णिक्कडच्छायाओ सप्पभाओ समरीयाओ सउज्जोयाओ पासाइयाओ दरिसणिजाओ अभिरुवाओ पडिरुवाओ ॥ तीसे ण पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ



परपुद्गएइ वा गएइ वा गयकलमेइ वा कण्हसप्पेइ वा कण्हकेसरेइ वा आगासथि-  
गगलेइ वा कण्हासोएइ वा किण्हकणवीरेइ वा कण्हवधुजीवएइ वा, भवे एयारूवे  
सिया ?, गोयमा ! णो इण्डे समट्टे, तेसि ण कण्हाण तणाण मणीण य इत्तो इट्टतराए  
चेव कत्ततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव वणेणं  
पण्णते ॥ तत्थ ण जे ते णीलगा तणा य मणी य तेसि ण इमेयारूवे वणावासे  
पण्णते, से जहानामए—भिंगेइ वा भिंगपत्तेइ वा चासेइ वा चासपिच्छेइ वा सुएइ वा  
सुयपिच्छेइ वा णीलीइ वा णीलीमेइ वा णीलीगुलियाइ वा सामाएइ वा उच्चतएइ  
वा वणराईइ वा हलहरवसणेइ वा मोरग्नीवाइ वा पारेवयगीवाइ वा अयसिकुसुमेइ  
वा अजणकेसिगाकुसुमेइ वा णीलुप्पलेइ वा णीलासोएइ वा णीलकणवीरेइ वा  
णीलवधुजीवएइ वा, भवे एयारूवे सिया ?, णो इण्डे समट्टे, तेसि ण णीलगाण  
तणाण मणीण य एत्तो इट्टतराए चेव कत्ततराए चेव जाव वणेण पण्णते ॥ तत्थ ण  
जे ते लोहियगा तणा य मणी य तेसि ण अयमेयारूवे वणावासे पण्णते, से  
जहाणामए—ससगरुहिरेइ वा उरब्मरुहिरेइ वा णररुहिरेइ वा वराहरुहिरेइ वा  
भहिसरुहिरेइ वा वालिंदगोवएइ वा वालदिवागरेइ वा सझब्भरागेइ वा गुंजद्वराएइ  
वा जाइहिगुलुएइ वा सिलप्पवालेइ वा पवालकुरेइ वा लोहियक्खमणीइ वा लक्खा-  
रसएइ वा किमिरागेइ वा रत्तकवलेइ वा चीणपिद्वरासीइ वा जासुयणकुसुमेड वा  
किसुयकुसुमेइ वा पालियायकुसुमेइ वा रसुप्पलेइ वा रत्तासोगेइ वा रत्तकणयारेइ  
वा रत्तवधुजीवेइ वा, भवे एयारूवे सिया ?, नो इण्डे समट्टे, तेसि ण लोहियगाण  
तणाण य मणीण य एत्तो इट्टतराए चेव जाव वणेण पण्णते ॥ तत्थ ण जे ते  
हालिद्वगा तणा य मणी य तेसि ण अयमेयारूवे वणावासे पण्णते, से जहाणामए—  
चपएइ वा चपगच्छलीइ वा चपयमेइ वा हालिद्वाइ वा हालिद्वमेइ वा हालिद्वगुलियाइ वा  
हरियालमेइ वा हरियालगुलियाइ वा चिउरेइ वा चिउरंगरागेइ वा वरक-  
णएइ वा वरकणगनिधसेइ वा सुवण्णसिप्पिएइ वा वरपुरिसवसणेइ वा सळळकुसुमेइ  
वा चपगकुसुमेइ वा कुहुडियाकुसुमेइ वा ( कोरटगदामेइ वा ) तडउटकुसुमेइ वा  
घोसाडियाकुसुमेइ वा सुवण्णज्वूहियाकुसुमेइ वा सुहरिक्षयाकुसुमेइ वा [ कोरिंटवरमल-  
दामेइ वा ] वीयगकुसुमेइ वा पीयासोएइ वा पीयकणवीरेइ वा पीयवधुजीएइ वा,  
भवे एयारूवे सिया ?, नो इण्डे समट्टे, ते ण हालिद्वा तणा य मणी य एत्तो इट्टयरा  
चेव जाव वणेण पण्णता ॥ तत्थ ण जे ते सुक्षिलगा तणा य मणी य तेसि ण  
अयमेयारूवे वणावासे पण्णते, से जहानामए—अकेइ वा सखेइ वा चदेइ वा  
कुदेइ वा कुसुमे(सुए)इ वा दयरएइ वा ( दहिघणेइ वा खीरेइ वा खीरपूरेइ वा )

हंशावर्णीद वा कोनाकर्णीद वा हारतलीद वा कलायाकर्णीद वा चंद्राकर्णीद वा सारह-  
भक्तारेह वा चतुषोभस्पत्तेह वा शालिपित्तुरार्णीद वा कुरुपुण्डरार्णीद वा कुमुद-  
रार्णीद वा शुद्धिलिकार्णीद वा पेतृपसिकार्णीद वा निषेद वा मिषालिकार्णीद वा यक्षरेह  
वा यक्षयदर्णीद वा पोंगरीकर्णेह वा लिंगारामाकर्णामेह वा सेमात्तोरेह वा सेक्ष्यार्णीरेह  
वा उच्चर्णकुर्णीरेह वा मध्ये एव्यास्ते दिया । जो इष्टद्वे सम्भूते, तेहि वर्णे शुद्धिलिकार्णी-  
तत्त्वार्णी नवीन य एतो इष्टुरारेह चेत् जात्य वर्ण्येऽपि फलते ॥ तेहि वर्णे मंत्रे । तत्त्वाप-  
य मवीन व केरिसए वर्णे वर्ण्यते ॥ से जहानामए—ज्ञेयपुडाय वा पाठ्युडाय वा  
आवपुडाय वा तयपुडाय वा एव्यपुडाय वा [ निरिनेपियुडाय वा ] वैद्यपुडाय  
वा कुरुपुडाय वा उसीरपुडाय वा भैरवपुडाय वा मस्तपुडाय वा दमजपुडाय  
वा चाहपुडाय वा यद्यियपुडाय वा मिषिस्तुडाय वा जोमासिस्तुडाय वा बासिं-  
स्तुडाय वा केषपुडाय वा कृष्णपुडाय वा पाठ्यपुडाय वा असुवार्णीति उद्धिकृ-  
मायाप वा विद्यिक्षमायाप वा इक्षिक्षमायाप वा यक्षिक्षमायाप वा उद्दिरिक्षमायाप  
वा विनिरिक्षमायाप वा परियुक्तमायाप वा भैराय वा भैरं साहरिक्षमायाप  
ओरुका यमुक्ता चाचमनविक्षुरुहरा सम्भवो समंता र्घना अभिषिस्तवर्णि भवे  
एवारथ दिया ॥ जो इष्टद्वे सम्भूते, तेहि वर्णं तत्त्वार्णी नवीन य दृष्टे उ इष्टुरारेह  
चेत् जात्य मनामत्तराए चेत् गंते फलते ॥ तेहि वर्णे मंत्रे । तत्त्वाप व मवीन व  
केरिसए वर्णे फलते ॥ से जहानामए—मार्गेद वा स्पृह वा वूरेद वा वर्णीरेह  
वा हसगाभ्वकुर्णीद वा मिरीस्तुस्तुमिष्यारेह वा वाच्युमुखपत्तरार्णीद वा भवे एव्यास्ते  
दिया ॥ जो इष्टद्वे सम्भूते, तेहि वर्णं तत्त्वार्णी नवीन य एतो इष्टुरारेह चेत्  
जात्य वर्ण्येऽपि फलते ॥ तेहि वर्णं भेते । तत्त्वार्णी पुष्टमरवाहिपद्मरागर्णीह चाप्ती  
मैद्यार्णी मैद्यार्णी एव्यार्णी भैरियाप खोमियाप चालियार्णी भैरियार्णी परियार्णी  
उर्धीरियार्णी केरिसए चो फलते ॥ से जहानामए—तिनिकाए वा स्त्रमासिकाए  
वा गृहरस्त वा यात्करस्त वा यज्ञायस्त वा यज्ञमस्त वा योरक्षरस्त वा यज्ञरित्योस्तय  
सुविधियित्तेमज्ञामपेरेतपरिवित्तस्त इम्पत्तिवित्तमित्तिवित्तमित्तिवित्तमित्तिवित्त-  
मस्त सुपियित्तारस्तन्तद्युमुरागस्त यज्ञायस्तम्पत्तेमित्ततम्पत्तमस्त याद्यक्षरुप-  
म्पुस्तपठास्त तुरुम्पत्तार्णीमसारार्णीमुष्टपरिगद्यिमस्त सरङ्गकर्णीउठोव(परि)मंडिवस्त  
सरङ्गकर्णीउठोवस्तु सचाक्षरपूर्वामरमरिमस्त योहत्तुरुम्पत्तम रुक्मार्णीति वा  
अठंदरर्णीति वा रम्भसि वा मविहोहिमत्तम्भसि अभिमद्यर्णी ३ अभिषिक्ष-  
मायापस्त वा वियहिक्षमायापस्त वा [ पस्तमरुरम्पत्त भैरेपाद्युस्त ] भेदाभ्य-  
म्पुस्त्या क्षम्भमपविक्षुरुहरा सम्भवो समंता यहा अभिषिस्तवर्णि भवे एव्यास्ते

सिया ?, णो इण्डे समट्टे, से जहाणामए—वेयालियाए वीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए अके सुपइट्टियाए चदणसारकोणपडिघट्टियाए कुसलणरणारिसपगहियाए पओसफ्ट्स-कालसमयसि मदं मंदं इश्याए वेइयाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुणा कण्णमणिव्युइकरा सब्बओ समता सदा अभिणिस्सवति भवे एयारूवे सिया ?, णो इण्डे समट्टे, से जहाणामए—किण्णराण वा किपुरिसाण वा महोरगाण वा गधव्वाण वा भद्रसालवणगयाण वा नदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाण वा पंडगवणगयाण वा हिमवतमल्यमदरगिरिगुहसमणागयाण वा एगओ सहियाण समुहागयाण समु-विद्वाण सनिविद्वाण पमुइयपक्षीलियाण गीयरझगधव्वहरिसियमणाण गेज पञ्च कत्थं गेय पयविद्वं पायविद्वं उक्षित्तय पवत्तय मदाय रोइयावसाण सत्तसरसमणागय अद्वरससुपउत्त छहोसविप्पमुक एकारसगुणालकार अद्वगुणोववेय गुजतवसकुहरोवगूढ रत्त तिद्वाणकरणसुद्ध महुरं सम सुललिय सकुहरगुजतवसततीतलताल्लयगगहसु-सपउत्त मणोहरं मउयरिभियपयसचारं सुरइ सुणइ वरचाराहुव दिव्वं नट्ट सज्ज गेय पगीयाण, भवे एयारूवे सिया ?, हता गोयमा ! एवभौए सिया ॥१२६॥ तस्स ण वणसडस्स तत्य तत्थ देसे २ तहिं तहिं वहवे खुड्डा खुट्टियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ गुजालियाओ दीहियाओ (सरसीओ) सरपतियाओ सरसरपतीओ बिलपतीओ अच्छाओ सण्हाओ रथ्यामयकूलाओ वइरामयपासाणाओ तवणिजमयतलाओ वेश्लियमणिकालियपडलपचोयडाओ सुवण्णसुब्भ(ज्ञ)रथ्यमणिवालुयाओ सुहोया-रासुउत्ताराओ णाणामणितित्थसुबद्धाओ चाउ(चउ)क्षोणाओ समतीराओ आणुपुव्व-सुजायवप्पगभीरसीयलजलाओ सछणपत्तभिसमुणालाओ बहुउप्पलकुम्युणलिणसुभ-गसोगथियपोंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तफुलकेसरोवचियाओ छप्पयपरिभुजमाणकमलाओ अच्छिविमलसलिलपुणाओ परिहत्यभमतमच्छक्त्तभअणेगसउणमिहुणपविचरि-याओ पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइयापरिक्षित्ताओ पत्तेय पत्तेय वणसडपरिक्षि-त्ताओ अप्पेगइयाओ आसबोदाओ अप्पेगइयाओ वारुणोदाओ अप्पेगइयाओ खीरोदाओ अप्पेगइयाओ धबोदाओ अप्पेगइयाओ [इक्षु]खोदोदाओ (अमयरस-समरसोदाओ) अप्पेगइयाओ पगईए उदग(अमय)रसेण पण्णत्ताओ पासाइयाओ ४, तासि ण खुट्टियाण वावीण जाव बिलपतियाण तत्य २ देसे २ तहिं २ जाव वहवे तिसोवाणपडिरुवगा पण्णत्ता । तेसि ण तिसोवाणपडिरुवगाण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तजहा—वइरामया नेमा रिद्वामया पद्वाणा वेश्लियमया खभा सुवण्ण-रुपामया फलगा वइरामया सधी लोहियक्षमईओ सूर्झओ णाणामणिमया अवलवणा अवलवणवाहाओ पासाइयाओ ४ ॥ तेसि ण तिसोवाणपडिरुवगाण पुरओ पत्तेय २

तोरणा प ॥ त वं दोरणा याजामनिमयस्यमेषु उपविशिद्धुसम्बिन्दु विविद्युत-  
धरोक्षिता विशिद्धारास्योक्षिता इहानिमउसभातुरस्यरमगरविहारास्यक्षित्तर  
स्वसरमन्तरमधुक्षितरस्यपत्रमल्लमनिक्षिता यद्युमावक्षितरेष्यापरिगत्यामिरामा  
विक्षितरस्यमधुक्षितरस्यमनिक्षिता अविक्षितस्यमाल्लीजा सक्षमस्यस्यमनिक्षिता  
माजा विक्षितस्यमाजा क्षमत्वमेयक्षेत्रा द्विक्षिता सरिस्तरीयस्या पात्राईया ४ ॥ तेऽपि  
वं दोरणार्थं उपि वहै अद्युमंगल्या पञ्चता ते —सोरिपविरिष्ट्यर्थरियाकात-  
वश्यमायभास्यमत्त्वामत्त्वायप्याया सुम्भवस्यामया अस्यम सञ्चा वाव पदित्या ०  
तेऽपि वं दोरणार्थं उपि वहै विशिद्धामत्त्वाया नीज्ञामरज्ञाया व्येष्यमयामरज्ञाया  
वामित्त्वामरज्ञाया द्विक्षित्त्वामरज्ञाया अच्छा सञ्चा स्यपद्ध वारदेवा वस्यामष-  
गंधिका मुख्या पात्राईया ५ ॥ तेऽपि वं दोरणार्थं उपि वहै छात्राङ्गता पदाग्र-  
पदागा भवात्तुमाजा वामत्तुमाजा उपस्थृत्यगा वाव सक्षमस्यस्यात्त्वगा सम्भव  
यणामया अस्यम वाव पदित्या ६ ॥ ताति वं द्विक्षित्त्वार्थं वावीर्थं वाव विक्षितिवर्त्त-  
तत्त्व तत्त्व वेदे २ ॥ तहै तहै वहै उप्यायपञ्चया विष्टपञ्चया अग्रपञ्चया वाह-  
पञ्चया दग्मविक्षणा इमर्मविक्षणा दग्ममायमा दृपदासञ्चया उत्तुमा द्विवाय-  
अद्युम्या फक्ष्यदेष्या सम्भवत्यामया अच्छम वाव पदित्या ७ ॥ तेमु वं उप्याय-  
पञ्चयमु वाव फक्ष्यदेष्यमु वहै इसासञ्चाई व्येष्यासञ्चाई गङ्गमसञ्चाई उप्याय-  
सञ्चाई पक्ष्यासञ्चाई वीहासञ्चाई मारासञ्चाई फक्ष्यासञ्चाई मगाहसञ्चाई उप्याय-  
सञ्चाई दीहासञ्चाई फड्यासञ्चाई विद्यासञ्चाई वरिसञ्चित्यासञ्चाई अमित्यासञ्चाई पदित्यास-  
८ ॥ तस्य वं वप्यसुद्धस्य तत्त्व तत्त्व वेदे २ ॥ तहै तहै वहै वाकिभरा ग्राकिभरा अविक्षित्त-  
म्याभरा अस्यमधरा पेत्तुमभरा मज्जमधरा पद्धारायमधरा पञ्चमधरा मोहम-  
धरया साक्षमधरा जाक्षमधरा द्विवायमधरा वित्तमधरा गंधमधरा व्याद्यमधरय-  
सञ्चयमायमया अच्छम सञ्चा सञ्चा द्विवा मद्वा शीरया विमलम विष्टम विद्येष्य  
च्याया दुष्पमा समिरीया सुउज्जेया पात्राईया एविविज्ञा अमित्या पदित्या ९ ॥  
तमु वं आक्षित्तरेत्तु वाव अत्यवधरेत्तु वहै इसासञ्चाई वाव विद्यासेवित्यास-  
ञ्चाई सम्भवत्यामयावै वाव पदित्यावै ॥ तस्य वं वप्यसुद्धस्य तत्त्व तत्त्व वेदे २ ॥  
तहै तहै वहै जाइमंडवया यहिवामेहवया मक्षिमामेहवया वक्षमाक्षियामेहवया  
वासतीमंडवया विक्षियामेहवया सुरिक्षिमंडवया तेजेष्येहवया मुरियामेहवया  
व्याप्यस्यामेहवया अप्युत्तमेहवया अल्पेयामेहवया मालुवामेहवया सामक्ष्यामेहवया

सब्बरयणामया णिच्च कुमुमिया णिच्च जाव पडिल्लवा ॥ तेसु ण जाइमडवएसु जाव सामलयामउवएसु वहवे पुढविसिलापटगा पण्णता, तजहा—अप्पेइया हसासण-सठिया अप्पे० कोचासणसठिया अप्पे० गह्लासणसठिया अप्पे० उण्णयासणसठिया अप्पे० पण्णयासणसठिया अप्पे० दीहासणसठिया अप्पे० भद्रासणसठिया अप्पे० पक्खासणसठिया अप्पे० मगरासणसठिया अप्पे० उसभासणसठिया अप्पे० सीहासणसठिया अप्पे० पउमासणसठिया अप्पे० दिसासोत्थियासणसठिया० प०, तत्थ वहवे वरसयणासणविसिद्धसठाणसठिया पण्णता समणाउसो ! आइणगरुय-वूरणवणीयतूलफासा मउया सब्बरयणामया अच्छा जाव पडिल्लवा । तत्थ ण वहवे वाणमतरा देवा देवीओ य आसयति सयति चिढ्हति णिसीयति तुयद्धति रमति ललति कीलति मोहति पुरापोराणाण सुचिण्णाण सुपरिक्ताण सुभाण कळाणाण कडाण कम्माण कळाण फलवित्तिविसेस पच्छुभवमाण विहरति ॥ तीसे ण जगईए० उपिं अतो पउमवरवेइयाए एथ्य ण एगे मह वणसडे पण्णते देसूणाइ दो जोयणाइ विक्खमेण वेइयासमएण परिक्खेवेण किण्हे किण्होभासे वणसडवण्णओ मणि-तणसदविहूणो येयब्बो, तत्थ ण वहवे वाणमतरा देवा देवीओ य आसयति सयति चिढ्हति णिसीयति तुयद्धति रमति ललति कीडति मोहति पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरिक्ताण सुभाण कळाणाण कडाण कम्माण कळाण फलवित्तिविसेस पच्छुभव-माण विहरति ॥ १२७ ॥ जवुद्दीवस्स ण भते ! दीवस्स कइ दारा पण्णता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णता, तजहा—विजए वेजयते जयते अपराजिए ॥ १२८ ॥ कहि ण भते ! जवुद्दीवस्स दीवस्स विजए नाम दारे पण्णते ? गोयमा ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पण्यालीस जोयणसहस्साइ अवाहाए जवुद्दीवे दीवे पुरच्छिमपरते लवण्णसमुद्धुरच्छिमद्दस्स पच्छत्थिमेण सीयाए महाणईए उपिं एथ्य ण जवुद्दीवस्स दीवस्स विजए णाम दारे पण्णते अटु जोयणाइ उझू उच्चतेण चत्तारि जोयणाइ विक्खमेण तावइय चेव पवेसेण सेए वरकणगथूभियागे ईहामि-यउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिणरस्ससरभचमरकुजरवणलयपउसलयभत्तिचित्ते खभुगयवरवइरवेइयापरिगयाभिरामे विजाहरजमलजुयलजतजुते इव अच्चीसहस्समा-लिणीए रुवगसहस्सकलिए भिसमाणे भिदिभसमाणे चक्खुलोयणलेसे सुहफासे सस्स-रीयलवे वण्णो दारस्स तस्सिमो दोइ त०—वइरामया णिम्मा रिद्धामया पइद्धाणा वेश्लियामया खभा जायरुवोवच्चियपवरपच्चवण्णमणिरयणकोष्ठिमतले हसगञ्चमए एलुए गोमेज्जमए इदक्खीले लोहियक्खमईओ दारचेढीओ जोइरसामए उत्तरगे वेश्लियामया कवाढा वइरामया सधी लोहियक्खमईओ सूईओ णाणामणिमया

समुम्पया वहरमई ममतमओ अमालपासाया छहरमई आवत्तपेहिया अं पाचप फिरतरिमपद्धतां भित्तिसु चम भित्तिएहिया छप्पम्पा तिक्कि योमापसी तकिया पाणामफिरतपद्धतां वहरमलौधियसातिमंजियागे वहरमए रम्पामए उस्सेहे सम्बत्तपिक्कमए उड्डेए पाणामफिरतपद्धतां वहरमयि थोहियमपद्धियस्तरम्पमोम्मे अम्पम्पया फक्कावाहाम्मे जेहरसाम्मा वसा । येहुगा य रजवामई पक्कियाओ जावस्तमई थोहावनी वहरमई उषरि पु एव्वसेवत्यवामए छयमेअक्कम्पम्पगमूत्तमक्कियम्पुभियाए सेप सखात्तर्म्म फिम्मस्तदहियगेहीरफेहरम्पयिगरप्पगासे तिक्कगरत्यवद्वंदवितो यावामयि दामार्केहि भेतो य वही च उच्चे तबपिक्कम्पस्त्रम्पाप्पयाप्पदे शुद्धप्परे उ रीयस्ते पासाईए ॥ ४ तिक्कम्पस्ते ये दारस्तु उमओ पासि तुहुओ फिसीरी दो दो वो चतुरम्पसपरिक्कार्यीओ फक्कात्तम्मो ठं ये चंदपक्कम्पसा वरम्पम्पः शुरभिदरणारिपद्धिया नैहपम्पन्तवाया आकदक्केहुगा फरमुप्पम्पिहाया सम्पाम्पया अच्छा सच्छा जाव पक्किया महया महया गर्हियक्कुभस्तमाया फ सम्बात्तसो ॥ ॥ तिक्कम्पस्ते वारस्तु उमओ पासि तुहुओ फिसीहियाए दो दो जाप परिक्कार्यीये ते वे जागद्दत्ता मुत्ताकार्केतहियेमयालम्पक्कम्पवामसीहियाँ जालपरिक्कहा अच्छुगणा अमिक्कियिहा तिरिये तुस्तम्माहिया ल्लोप्पम्पम्प फक्कम्पद्धस्त्रम्पस्त्रिया सम्परम्पाम्पया अच्छ्य जाव पक्किया महया महया गम खमाया प खमात्तसो ॥ ५ तंसु च पामर्देष्टु वहरे फिश्तुत्तद्वद्वारारियम्पद्ध क्कम्पया जाव मुक्कियम्पुत्तद्वद्वारारियमाक्कामक्कत्ता ॥ ते वे जामा त्यापिक्कर्म्म शुद्धप्पम्परामेहिया जावाम्पिरत्यविमिहारद्वाहर(वहसोमिक्कम्पस्त्रवा) तिरीए अर्यव अर्यव उक्कोमेमाजा उक्कोमेमाजा तिर्युर्ति ॥ तसि वे जागद्दत्ता उषरि अम्पाओ दो दो पागर्वतपरिक्कार्यीओ फक्कात्तम्मो तसि वे जागद्दत्त मुत्ताकार्केतहिया त्येह जाव सम्पात्तसो ॥ ६ तंसु वे जागर्देष्टु वहरे रम्पम्प तिक्कता पक्कात्ता तसु वे रयवामप्पु तिक्कएम्पु व तेहियामर्देष्टु भूषवर्द फक्कात्तम्मो तंश्छा—ताओ वे भूषवर्दम्मो क्कम्पगुरुपद्धक्कुरस्त्रुद्धपूम्पम्पर्म्म भुद्धुयामिहमाजा मुम्पवरम्पर्म्मियाओ येहमार्मिमूम्पाओ थोहुरेवे ममुम्पवे व मममिक्कुरुहोजे येहेवे तम्पद्ध सम्बन्धे समदाया आपूरमापीओ आपूरमापी अर्यव अर्यव तिरीए जाव तिर्युर्ति ॥ तिक्कम्पस्ते वे दारस्तु उमओ पासि तुहु फिसीहियाए दो दो सात्तिमेजियापरिक्कार्यीओ फक्कात्तम्मो ताओ वे चालम्पजिया चम्पटियाओ उप्पद्धियाओ मुम्पर्म्मियाओ जामाग्गरवक्काम्मो जाप्पम्पम्पिचद्वा

सुट्टीरेज्जमज्ज्ञाओ आमेलगजमल्जुयलवट्टिअब्मुण्णयपीणरइयसठियपओहराओ  
रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउविसयपसत्थलक्खणसवेह्लियगसिरयाओ ईसि असो-  
गवरपायवसमुद्वियाओ वामहृत्यगहियगसालाओ ईसि अद्वच्छिकडक्खविद्धिएहिं  
त्खेमाणीओ इव चकखुलेयणलेसाहिं अण्णमण्ण खिजमाणीओ इव पुढविपरिणमाओ  
सासयभावमुवगयाओ चदाणणाओ चदविलासिणीओ चदद्वसमनिलालाओ चदाहि-  
यसोमदसणाओ उक्षा इव उज्जोएमाणीओ विज्ञुधणमरीइसूरदिप्पतेयवहियरसनि-  
गासाओ सिंगारागारचास्वेसाओ पासाइयाओ ४ तेयसा अईव अईव सोमेमाणीओ  
सोमेमाणीओ चिद्वति ॥ विजयस्स ण दारस्स उभओ पासि दुहओ णिसीहियाए  
दो दो जालकडगा पण्णता, ते ण जालकडगा सब्वरयणामया अच्छा जाव पडि-  
रुवा ॥ विजयस्स ण दारस्स उभओ पासि दुहओ णिसीहियाए दो दो घटापरिवाहीओ  
पण्णताओ, तासि ण घटाण अयमेयारुवे वणावासे पण्णते, तजहा—जवूणयमईओ  
घटाओ वहरामईओ लालाओ णाणामणिमया घटापासगा तवणिज्मईओ सक्लाओ  
रययामईओ रज्जुओ ॥ ताओ ण घटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंससराओ  
कौचस्सराओ णदिस्सराओ सीहस्सराओ सीहघोसाओ मजुस्सराओ  
मजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सरणिघोसाओ ते पएसे ओरालेण मणुण्णेण  
कण्णमणानिव्वुइकरेण सद्वेण जाव चिद्वति ॥ विजयस्स ण दारस्स उभओ पासि  
दुहओ णिसीहियाए दो दो वणमालापरिवाहीओ पण्णताओ, ताओ ण वणमालाओ  
णाणादुमलयाकिसलयपल्लवसमाउलाओ छप्पयपरिमुजमाणकमलसोभतसस्सरीयाओ  
पासाइयाओ ० ते पएसे उरालेण जाव गधेण आपूरेमाणीओ जाव चिद्वति ॥ १२९ ॥  
विजयस्स ण दारस्स उभओ पासि दुहओ णिसीहियाए दो दो पगठगा पण्णता, ते  
ण पगठगा चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण दो जोयणाइ बाहलेण सब्ववहरामया  
अच्छा जाव पडिरुवा ॥ तेसि ण पगठगाण उवरि पत्तेय पत्तेय पासायवडिंसगा  
पण्णता, ते ण पासायवडिंसगा चत्तारि जोयणाइ उच्च उच्चतेण दो जोयणाइ आया-  
मविक्खभेण अब्मुग्गयमूसियपहसियाविव विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउज्जुयविज-  
यवेजयतीपडागच्छताइच्छतकलिया तुगा गयणयलमभिलधमाण(णुलिहत)सिहरा  
जालतररयणपजरस्मिलियव भणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपौडरीयतिलयर-  
यणद्वच्छदचित्ता णाणामणिमयदामालकिया अतो य वाहि च सण्हा तवणिज्ञसुल-  
वाल्लुयापत्यडा उहफासा सस्सरीयरुवा पासाइया ४ ॥ तेसि ण पासायवडिंसगाण  
चक्षेया पउमलया जाव सामलयाभत्तिचित्ता सब्वतवणिज्ञमया अच्छा जाव पडि-  
रुवा ॥ तेसि ण पासायवडिंसगाण पत्तेय पत्तेय अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे

पञ्चते दे जहायामए आनिमपुक्त्तरेह वा जाव मणीहि उक्तोमित्र, मणीज गधो  
दग्धो प्रसो न नेयम्भो ॥ तसि वं बहुसमरमस्त्वार्थ भूमिमागार्वं बहुमज्जादेसमाद  
पतेवं पतेवं मसिपेत्तिवाऽभे पञ्चतात्त्वो तात्त्वो वं मसिपेत्तिवाऽभो जोयन आमान्ति-  
क्त्तिमेवं अद्वयोऽप्य वाहुर्वेण सम्बरयणमाईयो जाव परिवर्त्तवो तासि वं मसिपेत्ति  
यार्वं उक्तरि पतेवं २ सीहासुरे पञ्चते तेसि वं सीहासुरार्वं अद्यमेयास्त्वं कल्पावादे  
पञ्चते तेजहा-उद्दिक्षमया उद्दवामा रम्यामया सीहा सोविष्ण्या पावा पावास्त्व-  
मिमाई पावसीसगाई र्वद्यमयम्भाई गताई उद्दरामया उच्ची नानामस्त्वाए खेवे ते वं  
सीहासुरा ईहास्त्विक्तुम जाव पठनस्त्वमतिविता सुधारसारोबृहमविष्णुमवित्यव-  
पायीहा अच्छरपमिदमसूरगमवत्युक्तदलिङ्गसीहेसरपशुत्त्वामिरामा उद्दिव्यते-  
मयुग्मपदिष्टप्रयत्ना सुनिख्यत्यताप्ता रत्नमुखस्त्वामा मुरम्भा आर्द्धयस्त्वमूरजवी-  
यक्तुम्भरयत्त्वया मर्त्या पासाईया ४ ॥ तसि वं सीहासुरार्वं उपिय पतेवं पतेवं विज-  
मद्युपे पञ्चते ते वं विज्ञप्तुसा देवा संज्ञकुरुवदगरजमस्पमदिवफेणुपुज्जुष्टिविष्ण्वा  
सम्बरयणामया अच्छा जाव पदिव्या ॥ देसि वं विज्ञप्तुसा वहुमज्जादेसमाए पदेवं  
पतेवं उद्दरामया अकुद्या पञ्चता देशु वं उद्दरामएु अद्युक्त्तु पतेवं २ कुमित्रा मुत्ता  
दामा पञ्चता दे वं कुमित्रा मुत्तावामा भेदेहि उत्तर्वहि उत्तर्वहि उद्युक्त्तुपृष्ठाप्तमोहि  
अद्युक्त्तुमित्रेहि मुत्तावामेहि सम्भवे समर्था सपरीक्षियता ते वं दामा तदविक्षयं  
सुप्ता मुक्त्तुपवरगमविद्या जाव विद्वुति तसि वं पासाम्भदिसुप्तार्वं उपिय उद्यु  
क्त्तुमित्रमया अच्छा सोविष्ण्य तहेव जाव उत्ता ५ १३ ॥ विज्ञवस्तु वं दारस्तु उम्भो  
पासि तुहभो विसीहिवाए दो दो तोरणा पञ्चता ते वं तोरणा जावामस्त्वमया तहेव  
जाव अद्युक्त्तुमित्रमया व उत्तावहता ॥ तसि वं तोरणार्वं पुरवा दो दो तोरणा  
याम्भे पञ्चताभ्ये जहूव वं हेत्ता तहेव ॥ तसि वं तोरणार्वं पुरवा दो दो जागरं  
त्या पञ्चता ते वं जागरंत्या मुत्तावास्त्वस्तिव्या तहेव लमु वं आगरंत्येमु वहरे  
मित्रा मुत्तमस्त्वगपारिमद्वामम्भमया जाव विद्वुति ॥ तसि वं ठारणार्वं पुरव्ये  
दो दो इयसभाड्या जाव उसमस्त्वावामा पञ्चता सम्बरयणामया अच्छम जाव  
पदिव्या एव फंतीभो बीहीभो मित्रुण्या दो दो पडमस्त्वाभो जाव पदिव्याभ्ये  
दसि वं तोरणार्वं पुरव्ये दो दो अस्त्वयसोविष्ण्या पञ्चता ते वं अस्त्वयसोविष्ण्या  
सम्बरयणामया अच्छम जाव पदिव्या तसि वं तोरणार्वं पुरव्ये दो दो उत्तरवद्यम्भा  
पञ्चता ते वं उत्तरवद्यम्भा वरम्भल्लद्यम्भा तहेव मुक्त्तुपृष्ठामया जाव पदिव्या  
उम्भाउत्तो । ८ तसि वं तोरणार्वं पुरव्ये दो दो मिंगारणा पञ्चता वरम्भल्लद्य-  
द्यम्भा जाव सम्बरयणामया अच्छम जहूव पदिव्या महया महया यत्तगममुद्यायित्व-

माणा पण्णता समणाउसो ! ॥ तेसि ण तोरणाण पुरओ दो दो आयसगा पण्णता, तेसि ण आयंसगाण अयमेयाहवे वण्णावासे पण्णते, तजहा—तवणिजमया पगठगा वेसुलियमया छरहा ( थभया ) वइरामया वरंगा णाणामणिमया वलकखा अकमया मडला अणोघसियनिम्मलासाए छायाए सब्बओ चेव समणुवद्वा चदमंडलपडिणि-गासा महया महया अद्वकायसमाणा पण्णता समणाउसो ! ॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो वइरणाभा थाला पण्णता, ते णं थाला अच्छतिच्छडियसालितदुलनह-सदट्टबहुपडिपुणा चेव चिन्हति सब्बजवृणयामया अच्छा जाव पडिरुवा महया महया रहचक्कसमाणा प० समणाउसो ! ॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो पाईओ पण्णताओ, ताओ ण पाईओ अच्छोदयपडिहत्थाओ णाणाविहपचवण्णस्स फलहरियगस्स बहुपडिपुणाओ विव चिन्हति सब्बरयणामईओ जाव पडिरुवाओ महया महया गोकलिंगचक्कसमाणाओ पण्णताओ समणाउसो ! ॥ तेसि ण तोरणाण पुरओ दो दो सुपइट्टगा पण्णता, ते ण सुपइट्टगा णाणाविहपचवण्णपसाहणगभडविरहया सब्बोसाहिपडिपुणा सब्बरयणामया अच्छा जाव पडिरुवा ॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो मणोगुलियाओ पण्णताओ ॥ तासु णं मणोगुलियासु वहवे सुवण्ण-रुप्पामया फलगा पण्णता, तेसु ण सुवण्णरुप्पामएसु फलएसु वहवे वइरामया णागदतगा मुत्ताजालतरुसिया हेम जाव गयदतसमाणा पण्णता, तेसु णं वइराम-एसु णागदतएसु वहवे रथयामया सिक्कया पण्णता, तेसु णं रथयामएसु सिक्कएसु वहवे वायकरगा पण्णता ॥ ते ण वायकरगा किणहसुतसिक्कगवत्थिया जाव सुक्रि-लसुतसिक्कगवत्थिया सब्बे वेसुलियमया अच्छा जाव पडिरुवा ॥ तेसि ण तोरणाणं पुरओ दो दो चित्ता रथणकरडगा पण्णता, से जहाणामए—रणो चाउरतचक्क-वट्टिस्स चित्ते रथणकरडे वेसुलियमणिफालियपडलपच्चोयडे साए पभाए ते पएसे सब्बओ समता ओभासइ उज्जोवैइ तावैइ पभासेइ, एवामेव ते चित्तरथणकर-डगा पण्णता वेसुलियपडलपच्चोयडा साए पभाए ते पएसे सब्बओ समता ओभा-सेन्ति जाव पभासेन्ति ॥ तेसि ण तोरणाण पुरओ दो दो हयकठगा जाव दो दो उसभकठगा पण्णता सब्बरयणामया अच्छा जाव पडिरुवा ॥ तेसु ण हय-कठएसु जाव उसभकठएसु दो दो पुष्फचगेरीओ, एव मळगाधवण्णचुण्णवत्थाभरण-चगेरीओ तिद्वत्थचगेरीओ सब्बरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरुवाओ ॥ तासु ण पुष्फचगेरीसु जाव सिद्वत्थचगेरीसु दो दो पुष्फमडलाइ जाव सि० सब्ब-रयणामयाइ जाव पडिरुवाइ ॥ तेसि ण तोरणाण पुरओ दो दो सीहासणाइ पण्णताइ, तेसि ण सीहासणाण अयमेयाहवे वण्णावासे पण्णते तहेव जाव पासाईया



उत्तरेण एत्य ण विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेवसाहस्रीण सोलस भद्रासण-  
साहस्रीओ पण्णत्ताओ, तजहा-पुरत्थिमेण चत्तारि साहस्रीओ, एवं चउसुवि जाव  
उत्तरेण चत्तारि साहस्रीओ, अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय पत्तेयं भद्रासणा पण्णत्ता ॥ १३२ ॥

विजयस्स ण दारस्स उवरिमागारा सोलसविहेहिं रथणेहिं उवसोभिया, तजहा—  
रथणेहिं वयरेहिं वेशुलिएहिं जाव रिट्टेहिं ॥ विजयस्स ण दारस्स उप्पिं वहवे अद्भु-  
मगलगा पण्णत्ता, तजहा—सोत्थियसिरिवच्छ जाव दप्पणा सब्बरयणामया अच्छा  
जाव पडिल्लवा । विजयस्स ण दारस्स उप्पिं वहवे कण्हनामरजङ्घया जाव सब्बरय-  
णामया अच्छा जाव पडिल्लवा । विजयस्स ण दारस्स उप्पिं वहवे छत्ताइच्छत्ता  
तहेव ॥ १३३ ॥ से केणट्टेण भत्ते ! एव वुच्छइ—विजए दारे २ ? गोयमा !  
विजए ण दारे विजए णामे देवे महिंद्रिए महज्जुइए जाव महाणुभावे पलिओवम-  
द्विइए परिवसइ, से ण तथ चउण्ह सामाणियसाहस्रीण चउण्ह अग्रमहिसीणं  
सपरिवाराण तिष्ठ परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवृद्धिण सोलसण्हं  
आयरक्खदेवसाहस्रीणं विजयस्स ण दारस्स विजयाए रायहाणीए अणोसिं च  
वहूण विजयाए रायहाणीए वत्थवगाण देवाण देवीण य आहेवच्च जाव दिव्वाई  
भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्छइ—विजए दारे विजए  
दारे, अदुत्तरं च ण गोयमा ! विजयस्स ण दारस्स सासए णामधेजे पण्णत्ते जण्ण  
क्याइ णासी ण क्याइ णत्थि ण क्याइ ण भविस्सइ जाव अवट्टिए णिच्चे विजए  
दारे ॥ १३४ ॥ कहि ण भत्ते ! विजयस्स देवस्स विजया णाम रायहाणी पण्णत्ता ?  
गोयमा ! विजयस्स ण दारस्स पुरत्थिमेण तिरियमसधेजे दीवसमुद्दे वीडवइत्ता  
अणामि जयुदीचे दीचे वारस जोयणसहस्राइ ओगाहित्ता एत्य ण विजयस्स देवस्स  
विजया णाम रायहाणी प० वारस जोयणसहस्राइ आयामविक्खमेणं सत्तीसजो-  
यणसहस्राइ नव य अडयाले जोयणसए किचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं प० ॥ सा  
ण एगेणं पागारेण सघ्वओ समंता सपरिक्खत्ता ॥ से ण पागारे सत्तीस जोय-  
णाइ अद्भुजोयण च उच्छ उच्छत्तेण मूले अद्भुतेस जोयणाइ विक्खमेण मज्जेत्य  
सङ्कोसाइ छजोयणाइ विक्खमेण उप्पिं तिष्णि सद्धकोसाइ जोयणाइ विक्खमेण मूले  
विच्छिणे मञ्ज्ञे सखिते उप्पिं तणुए वाहिं वठे अतो चउरसे गोपुच्छसठाणसठिए  
सब्बकणगामए अच्छे जाव पडिल्लवे ॥ से ण पागारे णाणाविहृपचवणोहिं कविसी-  
सएहिं उवसोभिए, तजहा—किष्णेहिं जाव द्वुक्लिलेहिं ॥ ते ण कविसीसगा अद्भुकोसु  
आयामेण पच्छणुसयाइ विक्खमेण देसूणमद्धकोस उच्छ उच्छत्तेण सब्बमणिमया  
अच्छा जाव पडिल्लवा ॥ विजयाए ण रायहाणीए एगमेगाए वाहाए पणवीस पणवीस

दारसम्य मर्तीरि मक्षावै ॥ ते वं दारा वापर्द्धि जोक्षावै अद्वेष्वै च नन्तु  
उक्तेष्वै एहीत्त ज्ञेयत्वाहै क्षेत्रे च विक्षव्वेष्वै वाक्तव्वै चेत् पक्षेष्वै देया भरक्षम्-  
यमूर्मिभागा इहामिय त्वेव वहा विजए दारे चाव लक्ष्मिभावुमपत्वव्व द्वाहासा  
सरिस(म)रीबा द्वाहवा पासाहिमा ४ । तसि वं दारावै उम्भो पासिं त्रुष्मो विदी-  
वियाए दो दो चेत्तद्वल्लभपतिराजीम्भे एव्वताभो त्वेव भासित्वव्व चाव वक्षम्-  
अव्वो ॥ तेषि वं दारावै उम्भो पासिं त्रुष्मो विदीवियाए दो दो फाठ्वा फ्व्वता  
ते वं फाठ्वा एहीत्त ज्ञेयत्वाहै क्षेत्रे च भावामविक्षव्वेष्वै पक्षरस ज्ञेयत्वाहै  
भवुष्मज्जे क्षेत्रे वाहुक्षेत्र पक्षत्व उम्भव्वरामया अव्वा चाव पक्षिद्वा ॥ तसि वं  
पक्षेष्वावै उक्षिं पक्षेवै २ पासामविद्विसुगा फ्व्वता ॥ ते वं पासामविद्विसुगा एहीत्त  
ज्ञेयत्वाहै क्षेत्रे च उन्है उक्तेष्वै पक्षरस ज्ञेयत्वाहै भवुष्मज्जे य क्षेत्रे भावामवि-  
क्षव्वेष्वै संस तं चेत् चाव समुद्वगवा ज्ञहरे भवुष्मव्वै भावित्वव्व । विक्षयाए वं  
रावहाणीए एम्भेगे दारे भवुष्मव्वै पक्षरसम्भावै चाव भवुष्मव्वै सेम्पाप्य वक्षिसावावै  
चाववरकेव्वव्वै एहानेव सुपुम्भव्वरेष्वै विक्षयाए रावहाणीए एग्म्भेगे दारे आसीवै १  
केवसहस्वै भवतीरि मक्षावै । विक्षयाए वं रावहाणीए एग्म्भेगे दारे ( तेषि वं  
दाह्वावै पुरम्भो ) सुतरस भोम्भा पक्षता तंसि वं भोमाप्य ( भूमिभागा ) उड्डेवा  
( य ) पठमम्भ्या भवित्विता ॥ तेषि वं भोमाप्य भवुमज्जवेसभाए ते ते  
नक्षमनक्षमा भोमा तंसि वं भोमाप्य भवुमज्जवेसभाए पक्षेवै २ सीहासक्षा  
फ्व्वता दीहासम्भव्वम्भो चाव दामा वहा देहा एत्व वं अक्षेष्वै  
भोमेषु पक्षेवै पक्षेवै माहसुवा फ्व्वता । तंसि वं दारावै उक्तिम्भ्या( उक्तिरिमा )-  
गारा सोम्पस्तिहेहै रम्भेहै उक्तिहेहै चक्षेत्तिमा तं चेत् चाव छाताहृता एवामेव  
पुम्भावरेष्व विक्षयाए रावहाणीए पक्ष दारसम्या मर्तीरि मक्षावा ॥ १३५ ॥  
विक्षयाए वं रावहाणीए उक्तिहेहै पक्षव्वोम्भव्वसव्वव्वै अव्वाहाए एव्व वं चापारि  
वक्षसुवा फ्व्वता तंवा—मध्येष्वावेसुतरसम्भव्वने चेपावप्य पुरम्भेष्वै  
अस्तोगव्वप्य दाहितेष्वै सुतरसम्भव्वप्य विक्षिमेष्वै वक्षत्वमेष्वै उत्तरेष्वै चूम्पमेष्वै  
वक्षसुवा सद्वरेष्वै त्रुवाम्भु ज्ञेयत्वसहस्त्वाहै भावामेष्वै पक्ष ज्ञेयत्वसव्वव्वै विक्षिमेष्वै  
पक्षता पक्षेवै पक्षेवै पागारपतिरिक्षिता विक्षा विक्षेमाद्या वक्षसुहक्षम्भो भावि-  
यम्भो चाव वहावे वाजमेत्तरा देवा य देवीओ य भावमति समेति विद्वैति विदीवंति  
दुपश्चिति रमेति भवती विदेति नोहति पुराप्येराकावै द्विवित्वावै मुपरीद्वतावै द्वभावै  
क्षमावै क्षावै क्षावै वक्षमेत्तिविसेष पक्षसुम्भवाप्य विद्वति ॥ तंसि वं भव-  
सुवा भवुमज्जवेसभाए पक्षेवै पक्षेवै पासामविद्विसुप्य फ्व्वता तं वे वक्षसुवाहित्वा

वावट्टि जोयणाइ अद्वजोयण च उहु उच्चतेण एकतीस जोयणाइ कोस च आयाम-  
विक्खभेण अब्मुग्यमूसिया तहेव जाव अतो वहुसमरमणिजा भूमिभागा पण्णता  
उल्लोया पउम०भत्तिन्निता भाणियव्वा, तेसि ण पासायवडिंसगाण वहुमज्जदेसभाए  
फ्लेय पत्तेय सीहासणा पण्णता वण्णावासो सपरिवारा, तेसि ण पासायवडिंसगाण  
उप्पि वहवे अद्वट्टुमंगलगा झया छत्ताइछत्ता ॥ तत्थ ण चत्तारि देवा महिष्ठिया जाव  
पलिओवमट्टिइया परिवसति, तजहा—असोए सत्तवणे चपए चौए ॥ तत्थ ण ते  
साण साण वणसडाण साण साण पासायवडिंसयाणं साण साण सामाणियाण साण  
साण अग्गमहिसीण साण साण परिसाण साण साण आयरक्खदेवाण आहेवधं  
जाव विहरन्ति ॥ विजयाए ण रायहाणीए अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते  
जाव पचवण्णेहि मणीहिं उवसोहिए तणसाद्विहूणे जाव देवा य देवीओ य आसयंति  
जाव विहरति । तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण  
एगे मह उवयारियालयणे पण्णते वारस जोयणसयाइ आयामविक्खभेण तिन्नि  
जोयणसहस्राइ सत्त य पचवाणउए जोयणसाए किन्निविसेसाहिए परिक्खेवेण अद्वकोस  
चाहलेण सव्वजवूणयामएण अच्छे जाव पडिहवे ॥ से ण एगाए पउमवरवेइयाए  
एगोण वणसद्वेण सव्वओ समता सपरिक्खते पउमवरवेइयाए वण्णओ वणसट-  
वण्णओ जाव विहरति, से ण वणसडे डेसूणाइ दो जोयणाइ चक्खवालविक्खभेण  
उवयारियालयणसमपरिक्खेवेण ॥ तस्स ण उवयारियालयणस्स चउहिसि चत्तारि  
तिसोवाणपडिहवगा पण्णता, वण्णओ, तेसि ण तिसोवाणपडिहवगाणं पुरओ पत्तेय  
पत्तेय तोरणा पण्णता छत्ताइछत्ता ॥ तस्स ण उवयारियालयणस्स उप्पि वहुसमर-  
मणिजे भूमिभागे पण्णते जाव मणीहिं उवसोभिए मणिवण्णओ, गधो, फासो, तस्स  
ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण एगे मह मूलपासाय-  
वडिंसए पण्णते, से ण पासायवडिंसए वावट्टि जोयणाइ अद्वजोयण च उहु उच्चतेण  
एकतीस जोयणाइ कोस च आयामविक्खभेण अब्मुग्यमूसियप्पहासिए तहेव, तस्स  
ण पासायवडिंसगस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव मणिकासे उल्लोए ॥  
तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभागे एत्थ ण एगा मह मणि-  
पेढिया पञ्चता, सा य एग जोयणमायामविक्खभेण अद्वजोयण वाहलेण सव्वमणि-  
मई अच्छा सण्हा जाव पडिहवा ॥ तीसे ण मणिपेढियाए उवरि एगे मह सीहासणे  
पन्नते, एव सीहामणवण्णओ सपरिवारो, तस्स ण पासायवडिंसगस्स उप्पि वहवे  
अद्वट्टुमंगलगा झया छत्ताइछत्ता ॥ से ण पामायवडिंसए अणोहि चउहिं तदद्वचत्तप्प-  
माणमेत्तेहि पासायवडिंसएहि सव्वओ समता सपरिक्खते, ते णं पासायवडिंसगा

एकठीं जोमवार्द जोर्दे च उहु उचोले अद्वोक्षुद्योयवार्द अद्वेदे च आवाम-  
विक्षयमेवं अस्मुगमय उहेव तेसि च पासामवविक्षयां अतो बहुसमरमविभा-  
मूर्मिमागा उक्षेया ॥ तेसि चं बहुसमरमविभावे भूमिमागावे बहुमव्यवेदमाद  
पतेवं पतेवं सीहासर्वं कम्बर्य वक्षयो तेसि वरिखारभूया बहुमव्यवेदमाए पतेवं २  
महासप्ता पम्माणा तेसि चं अद्वद्वार्यवक्ष्या क्षया छाताहत्तता ॥ ते चं पासामवविक्षया  
जन्मेहि चर्हि चर्हि उद्वृत्तप्यमाद्वेदोहि पासामवेदेसएहि सम्भयो समवा  
संपरिमित्तता ॥ ते चं पासामवेदेसम्या अद्वोक्षुद्योयवार्द अद्वेदे च उहु उच-  
तेव देश्यार्द अहु जोयवार्द आवामविक्षयमेवं अस्मुगमय उहेव तेसि च पासाम-  
ववेदेसगावे अतो बहुसमरमविभा मूर्मिमागा उक्षेया तेसि चं बहुसमरमविभावे  
भूमिमागावे बहुमव्यवेदमाए पतेवं पतेवं क्षयमासप्ता पवाय तेसि चं पासामववं  
बहुमव्यवेदमागा क्षया छाताहत्तता ॥ ते चं पासामवेदेसप्ता अज्येहि चर्हि उहु  
वाताप्यमाद्वेदेहि पासामववेदेसएहि सम्भयो समवा संपरिमित्तता ॥ ते चं पासाम-  
ववेदेसगा वेद्यवार्द अहु जोयवार्द उहु उचतेवं देश्यार्द चतारि जोयवार्द आवाम-  
विक्षयमेवं अस्मुगमय मूर्मिमागा उक्षेया महासप्ता चतारि मंपवाया क्षया छातार  
छाता ॥ १३९ ॥ तस्य चं मूलपासामवेदेसम्स्त चतारपुरित्यमेवं एव चं विक्षयत्वं  
देवस्य समा उद्यमा फलता अद्वेदेसव्यवार्द आवामेवं च सद्वेदार्द जोयवार्द  
विक्षयमेवं च जोयवार्द उहु उचतेवं अज्येयमसुमर्दनित्तिहु अस्मुगमयद्वार्यवार  
वेद्या तोरमवरद्यसाम्भविभा द्युषित्तिद्युषित्तिद्युषित्तियवसत्त्वमेद्यित्तियविमर्द्यमा  
आवामविद्यमवरमव्यवार्द उज्ज्वलुमधुमित्तामित्ता(वित्तिय) रमविद्युत्तिमत्तम देह-  
मित्तदसम्मुरुणवरमगरविद्यपवाक्षगविद्यपरस्तरमव्यवार्द वरपक्षवद्यमव्यवार्दित्ति-  
ता वेद्यमव्यवार्द वेद्यापरियमामित्तामा विजाहरत्तमसम्मुक्तवद्यत्ताविद विजित्तास-  
माक्षीया इत्यसहस्रद्युषित्तिया भित्तिमाणी वक्षयमेवमेवा ग्रुष्टस्या  
सरिस्तीयहवा वक्षयमविद्यमव्युमित्ताया नायाविद्यपवाक्षवद्यपवायपरिमित्तियम-  
विद्यर भवत्तमित्तिद्यव्यवेदी विक्षयमेवं वातावेद्यमविद्या गोदीवदरपरत्तवेद्य  
वारपित्तमेन्द्रियित्तामा उविविच्छेद्यमस्ता वेद्यपवाक्षवद्यपविद्युत्तरेवमासा  
आसत्तेवत्तविद्यमव्यवार्दियमावद्यमव्यवाया पवाक्षवद्यत्तुरभित्तिद्युष्टुव्यवार  
विभिया वास्तुपवाक्षवद्युष्टुव्यवामपवेद्यक्षुद्योयवामित्तामा तुर्मपवरगेभिया वेद-  
विद्यभूया अप्यरात्मदेवस्तिविभिया द्यन्तुर्दियमत्तुरसपवाक्ष्या सुर्म्या उव्यवया  
मह अप्या जाव पवित्ता ॥ तीवं चं उद्यमाए समाए विवित्ति तथा वारा लक्ष्या  
तमहा पुरित्यम द्यावित्तवं उत्तरवं ॥ ते चं दारा पतेवं पतेवं वह दो जोयवार्द

उच्च उच्चतेण एवं जोयण विक्खभेण तावद्य चेव पवेसेण सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालादारवन्नओ ॥ तेसि ण दाराण पुरओ मुहमडवा पण्णता, ते ण मुहमडवा अद्वतेरसजोयणाइ आयामेण छजोयणाइ सङ्कोसाइ विक्खभेण साइरेगाइ दो जोयणाइ उच्च उच्चतेण मुहमडवा अणेगखभसयसनिविट्ठा जाव उल्लोया भूमि-भागवण्णओ ॥ तेसि ण मुहमडवाण उवरि पत्तेय पत्तेय अद्वद्व मगला पण्णता सोत्यय जाव मच्छ० ॥ तेसि ण मुहमंडवाण पुरओ पत्तेय पत्तेय पेच्छाधरमडवा पण्णता, ते ण पेच्छाधरमडवा अद्वतेरसजोयणाइ आयामेण जाव दो जोयणाइ उच्च उच्चतेण जाव मणिफासो ॥ तेसि ण वहुमज्जदेसभाए पत्तेय पत्तेय वइरामय-अक्खाडगा पण्णता, तेसि ण वइरामयाण अक्खाडगाण वहुमज्जदेसभाए पत्तेय २ मणिपीढिया पण्णता, ताओ ण मणिपीढियाओ जोयणमेग आयामविक्खभेण अद्वजोयण वाहलेण सब्बमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिख्वाओ ॥ तासि ण मणि-पीढियाण उप्पि पत्तेय पत्तेय सीहासणा पण्णता, सीहासणवण्णओ जाव दामा परेवारो । तेसि ण पेच्छाधरमडवाण उप्पि अद्वद्वमगलगा झया छताइछता ॥ तेसि ण पेच्छाधरमडवाण पुरओ तिदिसि तओ मणिपेढियाओ पण्णताओ, ताओ ण मणिपेढियाओ जोयण आयामविक्खभेण अद्वजोयण वाहलेणं सब्बमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिख्वाओ ॥ तासि ण मणिपेढियाण उप्पि पत्तेय पत्तेय महिदज्जया अद्वद्व-माइ जोयणाइ उच्च उच्चतेण अद्वकोस उव्वेहेण अद्वकोस विक्खभेण वइरामयवट्ट-लट्टुसठियसुसिलिपृष्ठद्वमद्वसुपइट्ठिया विसिट्ठा अणेगवरपन्चवण्णकुडभीसहस्रपरिमधियाभिरामा वाउहुयविजयवेजयतीपडागा छताइछतकलिया तुगा गयणयलमभिलंघमाणसिहरा पामाईया जाव पडिख्वा ॥ तेसि ण महिदज्जयाण उप्पि अद्वद्वमगलगा झया छताइछता ॥ तेसि ण महिदज्जयाण पुरओ तिदिसि तओ णदाओ पुक्खरिणीओ प० ताओ ण पुक्खरिणीओ अद्वतेरसजोयणाइ आयामेण सङ्कोसाइ छ जोयणाइ विक्खभेण दसजोयणाइ उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणीवण्णओ पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइयापरिक्खत्ताओ पत्तेय पत्तेय वणसडपरिक्खत्ताओ वण्णओ जाव पडिख्वाओ ॥ तेसि ण पुक्खरिणीण पत्तेय २ तिदिसि तिसोवाणपडिख्वगा प०, तेसि ण तिसोवाणपडिख्वगाण वण्णओ, तोरणा भाणियव्वा जाव छताइच्छता । सभाए ण सुहम्माए छ मणोगुलियासाहस्तीओ पण्णताओ, तजहा—पुरत्थिमेण दो साहस्तीओ पच्छत्थिमेण दो साहस्तीओ दाहिणेण एगसाहस्ती उत्तरेण एगा साहस्ती, तासु ण मणोगुलियासु वहवे सुवण्णरुप्पामया फलगा पण्णता, तेसु ण सुवण्णरुप्पामएसु फलगेसु वहवे वइरामया णागदत्तगा पण्णता, तेसु ण वइरामएसु ना० ॥



सभाए ण सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेण एत्य ण एगा मह उववायसभा पण्णता जहा सुहम्मा तहेव जाव गोमाणसीओ उववायसभाएवि दारा सुहमडवा सब्ब भूमिभागे तहेव जाव मणिकासो ( सुहम्मासभावत्वया भाणियव्वा जाव भूमीए फासो ) ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्य ण एगा मह मणिपेदिया पण्णता जोयण आयामविक्खमेण अद्वजोयण वाह्लेण सब्बमणि-मई अच्छा जाव पडिव्वा, तीसे ण मणिपेदियाए उपिं एत्य ण एगे मह देवसय-णिजे पण्णते, तस्म ण देवसयणिजस्स वण्णओ, उववायसभाए ण उपिं अट्टुम-गलगा झया छत्ताइछत्ता जाव उत्तिमागारा, तीसे ण उववायसभाए उत्तरपुरच्छिमेण एत्य ण एगे मह हरए पण्णते, से ण हरए अद्वतेरसजोयणाइ आयामेण छझोसाइ जोयणाइ विक्करमेण दम जोयणाइ उव्वेहेण अच्छे सण्हे वण्णओ जहेव णदाण पुक्खरिणीण जाव तोरणवण्णओ, तस्म ण हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एत्य ण एगा मह अभिसेयसभा पण्णता जहा सभासुहम्मा त चेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उझोए तहेव ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्य ण एगा मह मणिपेदिया पण्णता जोयण आयामविक्खमेण अद्वजोयण वाह्लेण सब्बमणिमया अच्छा० ॥ तीसे ण मणिपेदियाए उपिं एत्य ण मह एगे सीहासणे पण्णते, सीहासणवण्णओ अपरिवारो ॥ तत्थ ण विजयस्स देवस्स सुवहु आभिसेके भडे सणिकित्ते चिढ्डू, अभिसेयसभाए उपिं अट्टुमगलगा जाव उत्ति-मागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तीसे ण अभिसेयसभाए उत्तरपुरत्थिमेण एत्य ण एगा मह अलकारियसभा पण्णता अभिसेयसभावत्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेदियाओ जहा अभिसेयसभाए उपिं सीहासण (स)-अपरिवार ॥ तत्थ ण विजयस्स देवस्स सुवहु अलकारिए भडे सनिकित्ते चिढ्डू, अलंकारिय० उपिं मगलगा झया जाव ( छत्ताइछत्ता ) उत्तिमागारा ॥ तीसे ण अलकारियसहाए उत्तरपुरत्थिमेण एत्य ण एगा मह ववसायसभा पण्णता, अभि-सेयसभावत्वया जाव सीहासण अपरिवार० ॥ त(ए)त्थ ण विजयस्स देवस्स एगे मह पोत्थयरयणे सनिकित्ते चिढ्डू, तस्स ण पोत्थयरयणस्स अयमेयाह्वे वण्णावासे पन्नते, तजहा—रिढ्डामईओ कवियाओ [ रययामयाइ पत्तगाइ ] तवणिजमई दोरे णाणामणिमए गठी ( अकमयाइ पत्ताइ ) वेशुलियमए लिप्पासणे तवणिजमई सकला रिढ्डामए छायणे रिढ्डामया मसी वहरामई लेहणी रिढ्डामयाइ अक्खराइ वम्मिए सत्थे ववसायसभाए ण उपिं अट्टुमगलगा झया छत्ताइछत्ता उत्तिमा-गारेति । तीसे ण ववसायसभाए उत्तरपुरच्छिमेण एत्य ण एगा मह णदापुक्खरिणी

वहने लिखता दृष्टवरयारिवमद्राम इन्द्रादा जाव सुदिद्विषुतवाहनयारिवमद्राम इन्द्रादा  
 त जे हामा दृष्टिक्षेत्रमया जाव चिन्हिति ॥ सभाए प सुहम्माए छामामाछहै—  
 चाहस्तीभो फल्पताभो तंश्वह—पुरतिपदम् दो याहस्तीभो एवं पवरिष्ठमवर्ति  
 दाहिष्यजे महस्त एव वत्तरथिति तासु प गोमावसीमु पहने सुमन्वस्पमया इन्द्रामा  
 प जाव तासु ज वहरमएमु नागर्देवएमु पहने रथममया चिन्हिता फल्पता ततु वे  
 रमयामएमु चिन्हितु प वधुलियामहभ्य भूरपडियाभो फल्पताभो ताजा वे  
 भूरपडियाभो अनायुश्वरकुञ्जतुरुह जाव भावमनविष्मुद्ररेण वंघेवं सुकम्भे  
 समदा भासूरमाणीभो चिन्हिति । सभाए वं सुहम्माए भटो बहुसमरमविजे भूमिमासे  
 फल्पते जाव मध्यीच फामा उम्मेदा पउमन्ममतिविता जाव सम्भतवमिक्षमए अच्छ  
 जाव पहिलवे ॥ १३७ ॥ तस्य वं पातुसमरमविक्षम्य भूमिमासल्ल बहुमग्नदसभाय  
 एत्य वे एगा महायविवेदिया प ता ज मविपेत्तिया हो जोवर्ताहै आवामविक्षय-  
 भेष जावज वहुलेवं सम्भनविमाइ जाव पहिलवा प शीसे वं मविपेत्तियाए उपि  
 एत्य वे एपो महै सीहासबं फल्पते सीहासबन्मभो ॥ शीस वं चिन्हिताए एत्य वे  
 एगा महै मविपेत्तिया प जोवर्त आवामविक्षमेवं अद्वदोयवं बाहुलेवं सम्भमवि  
 मह अन्य जाव पहिलवा ॥ शीसे वं मविपेत्तियाए उपि एत्य वे एगे महै एव-  
 समविजे पल्पते तस्य वं ददसयविक्षम्य भमेयाहै दण्डावासु पल्पते तंश्वह—  
 नावामविमया पहिलवा सोविष्यदा पामा नावामविमया फल्पसीसा ज्वूपदमवार्द-  
 गताहै वहरमया सधी आवामविमए चिते रमयामया कुमी घोड़ीक्षममया  
 विक्षमोयदा तरविक्षम् र्यज्ञोवहालिया दे व ददसवविजे उमओ विक्षमेवे  
 तुहम्मे उम्मए मज्जीनयमर्भीरे दाहिंगपदक्षिए र्यापुत्रियामुग्नाम्भालियए जोव-  
 विक्षम्बोम्भुपहुपडिभ्लमयो सुविद्वयरयताव रात्मुमस्तुपु तुरम्मे आवापमह  
 यत्रूजहर्जीक्षमफ्लसमठए पासाहैए ॥ ४ ॥ तस्य वं ददसयविक्षम्स उत्तरपुरतिमवे  
 एत्य वं महै एगा मविपीत्तिया पल्पता जोवर्तमासे आवामविक्षमेवं अद्वदोयवं  
 जावहुलेवं सम्भनविमह अच्छ जाव पहिलवा ॥ शीसे वं मविपीत्तियाए उपि एपे  
 महै एत्य वं महै एत्य एपल्पते अद्वदुमाहै जोवर्ताहै उवृ उवर्तोलं अद्वदेवु उव्वे  
 देवं अद्वदोल विक्षदेवं वहरमविक्षम्भुस्तिष्ठ तहेव जाव भेषम्भया क्वाव इत्यह-  
 छला ॥ तस्य प ल्लमहै एत्य एत्य एपल्पते एत्य वं विक्षम्भु देवसु तुपापम्भ  
 जाम पहरपद्मेवे पल्पते ॥ एत्य वं विक्षम्भु देवसु एत्य एपल्पते पापमोन्मावा वहने  
 पहरतरयावा सनिविदता चिन्हिति उत्तरसुविमिष्मुत्रिक्षावाह पासाहैया ॥ ५ ॥ शीसे  
 वं सभाए दहम्माए उपि वहने अद्वदुमेगाम्भया इन्द्र छामित्ता ॥ १३८ ॥

सभाए ण सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेण एत्थ ण एगा मह उववायसभा पण्णता जहा सुहम्मा तहेव जाव गोमाणसीओ उववायसभाएवि दारा मुहमंडवा सब्ब भूमिभागे तहेव जाव मणिकासो ( सुहम्मासभावतव्वया भाणियव्वा जाव भूमीए फासो ) ॥ तस्स ण वहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण एगा मह मणिपेढिया पण्णता जोयण आयामविक्खमेण अद्वजोयण वाह्लेण सब्बमणिमई अच्छा जाव पडिरुवा, तीसे ण मणिपेढियाए उपिं एत्थ ण एगे मह देवसय-णिजे पण्णते, तस्स ण देवसयणिज्जस्स वण्णओ, उववायसभाए ण उपिं अट्टुम-गलगा झया छत्ताइछत्ता जाव उत्तिमागारा, तीसे ण उववायसभाए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थ ण एगे मह हरए पण्णते, से ण हरए अद्वतेरसजोयणाइ आयामेण छकोसाइ जोयणाइ विक्खमेण दस जोयणाइ उच्चेहेण अच्छे सण्हे सण्हे वण्णओ जहेव पंदाण पुक्खरिणीण जाव तोरणवण्णओ, तस्स ण हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एत्थ ण एगा मह अभिसेयसभा पण्णता जहा सभासुहम्मा त चेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए तहेव ॥ तस्स ण वहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण एगा मह मणिपेढिया पण्णता जोयण आयामविक्खमेण अद्वजोयण वाह्लेण सब्बमणिमया अच्छा० ॥ तीसे ण मणिपेढियाए उपिं एत्थ ण मह एगे सीहासणे पण्णते, सीहासणवण्णओ अपरिवारो ॥ तत्थ ण विजयस्स देवस्स सुबहु आभिसेके भडे सणिक्खते चिढ्हइ, अभिसेयसभाए उपिं अट्टुमगलगा जाव उत्ति-मागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तीसे ण अभिसेयसभाए उत्तरपुरत्थिमेण एत्थ ण एगा मह अलकारियसभा पण्णता अभिसेयसभावतव्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उपिं सीहासण (स)-अपरिवारं ॥ तत्थ ण विजयस्स देवस्स सुबहु अलकारिए भडे सनिक्खते चिढ्हइ, अलकारिय० उपिं भंगलगा झया जाव ( छत्ताइछत्ता ) उत्तिमागारा ॥ तीसे ण अलकारियसहाए उत्तरपुरत्थिमेण एत्थ ण एगा मह ववसायसभा पण्णता, अभि-सेयसभावतव्वया जाव सीहासण अपरिवार ॥ त(ए)त्थ ण विजयस्स देवस्स एगे मह पोत्थयरयणे सनिक्खते चिढ्हइ, तस्स ण पोत्थयरयणस्स अयमेयारुवे वण्णावासे पञ्चते, तजहा—रिढ्हामईओ कवियाओ [ रययामयाइ पत्तगाइ ] तवणिज्जमए दोरे णाणामणिमए गठी ( अकमयाइ पत्ताइ ) वेहुलियमए लिप्पासणे तवणिज्जमई सकला रिढ्हामए छायणे रिढ्हामया मसी वहरामई लेहणी रिढ्हामयाइ अक्खराइं वम्मिए सत्ये ववसायसभाए ण उपिं अट्टुमगलगा झया छत्ताइछत्ता उत्तिमा-गारेति । तीसे ण ववसायसभाए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थ ण एगा मह णदापुक्खरिणी

परमाणु चेदं परमाणु इत्यस्त ते चेदं सर्वं ॥ ११९-१४ ॥ तर्जनं अधेन  
तर्जनं समएने विजये देवे विजयाए रामहारीए उक्ताम्यसभाए देवदत्तकिंविजि देव-  
द्युष्टतरिए अग्निस्त्वं अस्तेकेऽमाप्यन्तीए बोधीए विजयदेवताए उक्ताम्ये ॥ तए च  
से विजये देवे अहुओवाक्यमेताए चेदं समाजे विजयाए पक्षतीए पक्षतीमार्ग  
गच्छ, ठंगा—आदारफक्तीए सरीरफक्तीए इविद्यवक्तीए आप्याप्युक्तक्तीए  
भासामापक्तीए ॥ ३ तए चे से विजये देवे देवदत्तमित्राभ्यो अस्मद्देव ३ ता विष्वे  
देवदत्तमुख्यल परिदेव ३ ता एसम्यमित्राभ्यो व्योद्दह ३ ता उक्ताम्यसमाप्ते  
पुररितिमेव दारेष्व विम्मच्छ ३ ता चेपेव इरए तेवेव उक्ताम्यच्छ उक्ताम्यक्तिता  
इत्यं असुप्याहिं छरेमाजे छरेमाजे पुररितिमेव तोरणेव असुप्यमित्र ३ ता पुर-  
रितिमित्रेव विद्योक्ताम्यपदिश्यपृथ व्योद्दह ३ ता इत्यं व्योमाद्द ३ ता असुप्याहिं  
छरेव ३ ता अस्माक्तामेव करेव ३ ता अस्मद्दिव्य करेव ३ ता आवेते चोक्ते परम्पर-  
म् एव इत्यत्वे असुप्याह ३ ता चेपामेव अमित्येवत्तमा तेषामेव उक्ताम्यच्छ ३ ता  
अमित्येवत्तमे असुप्याहिं छरेमाजे पुररितिमित्रेव दारेष्व असुप्यमित्र ३ ता चेपेव  
सए शीघ्राद्ये तेवेव उक्ताम्यच्छ ३ ता शीघ्राक्तामवरणए पुरच्यमित्रुहे सम्मित्यम्ये ॥  
तए चे लस्त विजयस्त्वं वेवस्त्वं सामाविवपरिदीक्षावस्त्वा देवा बामिभेविए रेवे  
घाक्तिं ३ ता एवं भक्तादी—विष्वामेव मो व्यापुष्यिता ! विजयस्त्वं देवस्त्वं  
महत्यं महत्यं महर्वि विद्यं ईशामित्रेव उक्ताम्येव ५ तए चे त अप्रमित्येविवा  
देवा सामाविवपरिदीक्षालोहि एवं तुक्ता समाजा उद्याद चाव विद्यवा कल्याक्तारि  
म्यहिय सिरादावत मर्यपे अजर्णि अद्य एवं देवा तात्ति भामाए विजयपूर्वं व्यव-  
पविद्युत्यंति ३ ता उक्तामुररितिम विसीभायं अस्मद्दमंति ३ ता चेवामित्यसुप्याहिं  
समोद्दर्शति ३ ता सुवेजाह बोमजाह रेवं विद्यपूर्वं ते—रयणाने चाव विद्युत्यं  
व्याहारायर पोम्पके परिदावति ३ ता अद्याद्युने पोम्पके परिदावति ३ ता चेवंपै  
केतविवस्त्वमुरवाएव समोद्दर्शति ३ ता अद्याद्यस्त्वं दोषावियावं कल्यासीर्व असुप्य-  
इत्यस्त्वं रुपामयावं कल्यासीर्व असुप्याद्यस्त्वं मत्यम्यावं असुप्याद्यस्त्वं शुक्लवरुपामयावं  
असुप्याद्यस्त्वं मुख्यममित्रावं असुप्याद्यस्त्वं रूपाममित्रावं असुप्याद्यस्त्वं भोमेजावं  
असुप्याद्यस्त्वं विनारगावं एवं आवेचावं वालवं पारैवं मुख्याद्युगावं वितावं  
रयवक्तव्यावं असुप्याद्य सीक्षाद्यावं छातावं चामरावं अवपद्यावं व्यवापावं ल-  
विष्वावं छोरगावं पीक्षावं देवासमुम्मावं विचार्वति त चामाविए विचार्व-  
त चावसे च चाव देवासमुगावं य गेष्वति गेष्वता विजयावं रामहारीवं पडि  
विक्षवंति ३ ता चाव उपिद्वाए चाव उक्ताम्यावं विजयावं रामहारीवं पडि

ज्ञान दीवसमुदाण मज्जमज्ज्ञेण वीर्द्वयमाणा २ जेणेव खीरोए समुदे तेणेव  
उवागच्छति तेणेव उवागच्छता खीरोदग गिण्हति गिण्हिता जाइ तथ्य उप्पलाइ  
जाव सयसहस्रपत्ताइ ताइ गिण्हति २ ता जेणेव पुक्खरोदे समुदे तेणेव उवा-  
गच्छति २ ता पुक्खरोदग गेण्हति पुक्खरोदग गिण्हिता जाइ तथ्य उप्पलाइ  
जाव सयसहस्रपत्ताइ ताइ गिण्हति २ ता जेणेव समयखेते जेणेव भरहेरवयाइ  
वासाइ जेणेव मागहवरदामपभासाइ तित्थाइ तेणेव उवागच्छति तेणेव उवाग-  
च्छता तित्थोदग गिण्हति २ ता तित्थमट्टिय गेण्हति २ ता जेणेव गगासिधुरता-  
रत्तवईसलिला तेणेव उवागच्छति २ ता सरिओदग गेण्हति २ ता उभओ तड-  
मट्टिय गेण्हति गेण्हिता जेणेव चुल्हिमवतसिधरिवासहरपब्बया तेणेव उवागच्छति  
तेणेव उवागच्छता सब्बतुवरे य सब्बपुष्फे य सब्बगधे य सब्बमले य सब्बोस-  
हिसिद्धत्थए य गिण्हंति सब्बोसहिसिद्धत्थए गिण्हिता जेणेव पउमद्दहपुडरीयद्दहा तेणेव  
उवागच्छति तेणेव उवागच्छता दहोदग गेण्हति २ ता जाइ तथ्य उप्पलाइ जाव  
सयसहस्रपत्ताइ ताइ गेण्हति ताइ गिण्हिता जेणेव हेमवयहेरण्णवयाइ वासाइ जेणेव  
रोहियरोहियससुवण्णकूलरुपकूलओ तेणेव उवागच्छति २ ता सलिलोदग गेण्हंति  
२ ता उभओ तडमट्टिय गिण्हति गेण्हिता जेणेव सद्वावाइमालवतपरियागा वट्टवेयङ्गु-  
पब्बया तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छता सब्बतुवरे य जाव सब्बोसहिसिद्ध-  
त्थए य गेण्हति सब्बोसहिसिद्धत्थए गेण्हिता जेणेव महाहिमवतशपिवासहरपब्बया  
तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छता सब्बपुष्फे त चेव जेणेव महापउमद्दहमहा-  
पुडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छता जाइ तथ्य उप्पलाइ त चेव  
जेणेव हरिवासे रम्मावासेति जेणेव हरिकंतहरिसलिलाणरकतणारिकताओ सलिलाओ  
तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छता सलिलोदग गेण्हति सलिलोदग गेण्हिता  
जेणेव वियडावइगधावइवट्टवेयङ्गुपब्बया तेणेव उवागच्छति २ ता सब्बपुष्फे य त चेव  
जेणेव णिसहणीलवतवासहरपब्बया तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छता सब्बतुवरे  
य तहेव जेणेव तिणिच्छदहकेसरिद्दहा तेणेव उवागच्छति २ ता जाइ तथ्य उप्पलाइ  
त चेव जेणेव पुब्बविदेहावरविदेहवासाइ जेणेव सीयासीओयाओ महाणईओ जहा  
णईओ जेणेव सब्बचक्खवट्टिविजया जेणेव सब्बमागहवरदामपभासाइ तित्थाइ तहेव  
जहेव जेणेव सब्बवक्खारपब्बया सब्बतुवरे य जेणेव सब्बतरणईओ सलिलोदग  
गेण्हति २ ता त चेव जेणेव मदरे पब्बए जेणेव भद्रसालवणे तेणेव उवागच्छति  
सब्बतुवरे य जाव सब्बोसहिसिद्धत्थए य गिण्हति २ ता जेणेव णदणवणे तेणेव  
उवागच्छति २ ता सब्बतुवरे जाव सब्बोसहिसिद्धत्थे य सरस च गोसीसचदण

मिष्ठांति २ ता तेजव दोमपस्तवं तेजेव उवागच्छता स्तुतुरे  
 य जाव सम्बोधितिहस्तये य सुरम्योदीसुच्छृण्य रिष्टं च सुमषवत्तं गेव्यंति  
 गेव्यिता तेजेव पठमवये तेजामेव समुदागच्छंति तेजेव समुदागच्छता स्तुतुरे  
 जाव सम्बोधितिहस्तये य सरसं च योहीउच्चवर्ण रिष्टं च इम्योदाम पूरवम्भ-  
 शुर्गंतिपि य गथे गेव्यंति २ ता एवाये मिष्ठांति २ ता अनुप्रस्तु पुरस्तिलोर्व-  
 वारेवं विमाच्छंति पुरस्तिलोर्व वारेवं विमाच्छिता ताए उत्तिहस्तये जाव रिष्टाए  
 देवगार्वए तिरिमासुदेवानं धीशसुदाम भज्ञन्मज्जेण वीक्षयमाना २ तेजेव मिष्ठां  
 रायहापी तेजेव उवागच्छंति २ ता विक्षयं रायहापी अनुप्रवाहिते क्षेमावा ३  
 तेजेव अमिसेवसमा तेजेव मिष्ठाए देवे तेजेव उवागच्छंति ३ ता उत्तवस्तिलोर्व-  
 विरसावत्तं मत्थये अन्विति क्षु वाएव विक्षयेवि विक्षमस्तु देवस्तु तं महात्म-  
 महार्थं माहरिहि विठल अमिसेवे उत्तिहस्तये ॥ तए चं ई विक्षयेवि चतारि धाम-  
 विमाचाहस्तीभो चतारि अमामहिसीभो सपरिषाराभा शिखिण परिषाभो सत अविमा-  
 सत अविमाहितहि सोम्य आवरक्षदेवसाहस्तीभो अते य वाहये विक्षवाहापी-  
 वस्तवक्षया वायर्वतरा देवा य देवीभो ज तेहि धामविपर्वहि उत्तरेवतिहिये य  
 वरक्षम्भवद्वागेहि धुरमिवरवारिष्टिविपुल्लेहि वैदवल्लववागेहि आविदर्दल्लेहि  
 फत्तमुप्रव्यपिहोहि अत्तमन्तुभावोम्भवरिम्भिहि अनुवाहस्तापी धोविमिवार्व-  
 क्षमसांव दृष्टमयावं जाव अनुवाहसांव भोमेवावं अनुवाह सम्बोदपर्वहि स्तुतमहि-  
 याहि स्तुतुरेहि सम्बुप्पेहि जाव सम्बेदवितिदत्त्वाहि सम्भिहीए स्तुतुर्वए  
 सम्बवेव्यं सम्बसुद्वएवं यम्भावरेवं सम्भिभूए सम्भिभूसाए सम्बसमेवं  
 सम्बोदेवेवं सम्बवाहएहि सम्भुप्रवाहमावंभरविमूलाए सम्भविम्भुविमिलाएवं  
 महावा इहीए महावा शृंपे महावा वक्षेव्यं महावा सम्भवपर्व महाभा द्विरिम्भमस्तम्भ-  
 पूर्वप्रवाहमरवेवं सम्भवम्भवद्वभेविम्भाविम्भिद्वविम्भिद्वविम्भोसदमि-  
 यावरवेव्यं महावा महावा ईशामिसेवेवं अमिचिक्षिति ॥ तए चं तस्तु विक्षमस्तु  
 देवस्तु महावा महावा ईशामिसेवेवं अहमार्थिति अप्येगद्वा देवा अवोक्ष्यं प्यावस्त्रिये  
 पविरक्षप्युक्तिय रिष्टं स्तुरमित्तवेषु अप्येगद्वा देवा अवोक्ष्यं अप्येगद्वा देवा  
 विष्यर्वं यद्वुर्वं यद्वुर्वं यद्वुर्वं उवधुर्वं च्छेति अवोगद्वा देवा विक्षं  
 रायहापी सम्भितरवाहितिये आविम्भम्भविम्भेवेवं वित्तुराज्ञम्भुराज्ञतराम्भ-  
 शीवित्यं च्छेति अप्येगद्वा देवा विक्षं रायहापी भवावम्भविम्भेवेवं च्छेति अप्ये  
 गद्वा देवा विक्षं रायहापी पावाविहरागरविम्भविम्भविम्भवेवम्भीपदावा-  
 इपदावामेवित्यं च्छेति अप्येगद्वा देवा विक्षं रायहापी अवोक्ष्येवम्भविम्भेवेवं च्छेति

अप्पेगइया देवा विजय रा० गोसीससरसरत्तचदणदहरदिणपचगुलित्तल करेंति, अप्पे-  
गइया देवा विजयं० उवचियचदणकलस चंदणघडसुक्तयतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पे-  
गइया देवा विजय० आसत्तोसत्तविउलवृद्धवधारियमलदामकलावं करेंति, अप्पे-  
गइया देवा विजयं रायहाणिं पचवण्णसरससुरभिमुक्तपुफ्पुंजोवयारकलिय करेंति, अप्पे-  
गइया देवा विजय० कालागुरुपवरकुदुस्कुतुरुक्वूवडज्ञातमधमधेंतगुबुद्ध्याभिराम  
सुगधवरगधिय गधवट्टभूय करति, अप्पेगइया देवा हिरण्णवास वासति, अप्पेगइया  
देवा सुवण्णवास वासति, अप्पेगइया देवा एव रथणवास वइरवास पुफ्वास मल्ल-  
वास गधवास चुण्णवास वत्थवास आहरणवास, अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं  
भाइति, एव सुवण्णविहिं रथणविहिं वइरविहिं पुफ्विहिं मल्लविहिं चुण्णविहिं गधविहिं  
वत्थविहिं आभरणविहिं भाइति ॥ अप्पेगइया देवा दुय णटविहिं उवदसेति अप्पेग-  
इया देवा विलविय णटविहिं उवदसेति अप्पेगइया देवा दुयविलविय णाम णटविहिं  
उवदसेति अप्पेगइया देवा अचिय णटविहिं उवदसेति अप्पेगइया देवा रिमिय  
णटविहिं उवदसेति अ० अचियरिभियं णाम दिव्व णटविहिं उवदसेति अप्पेगइया  
देवा आरभड णटविहिं उवदसेति अप्पेगइया देवा भसोल णटविहिं उवदसेति  
अप्पेगइया देवा आरभडभसोल णाम दिव्व णटविहिं उवदसेति अप्पेगइया देवा  
उप्पायणिवायपवुत्त सकुचियपसारिय रियारिय भतसभत णाम दिव्व णटविहिं  
उवदसेति, अप्पेगइया देवा चउव्विह वाइय वाएति, तजहा—तत वितत घण  
छुसिर, अप्पेगइया देवा चउव्विह गेय गायति, तजहा—उकिखत्तय पवत्तय मदायं  
रोइयावसाण, अप्पेगइया देवा चउव्विह अभिणय अभिणयति, तजहा—दितुतिय  
पाडतिय सामन्तोवणिवाइय लोगमज्ज्वावसाणिय, अप्पेगइया देवा पीणति, अप्पेग-  
इया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगइया देवा तडवेंति, अप्पे० लासेति, अप्पेगइया देवा  
पीणति बुक्कारेंति तडवेंति लासति, अप्पेगइया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगइया देवा  
अफ्कोडति, अप्पेगइया देवा वगति, अप्पेगइया देवा तिवइ छिंदति, अप्पेगइया देवा  
अफ्कोडेति वगति तिवइ छिंदेति, अप्पेगइया देवा हयहेसिय करेंति, अप्पेगइया देवा  
हृत्यिगुलगुलाइय करेंति, अप्पेगडया देवा रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगइया देवा  
हयहेसिय करेंति हृत्यिगुलगुलाइय करेंति रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगइया देवा  
उच्छोलेति, अप्पेगइया देवा पच्छोलेति, [ अप्पेगइया देवा उक्किट्टि करेंति ] अप्पे-  
गइया देवा उक्किट्टीओ करेंति, अप्पेगइया देवा उच्छोलेति पच्छोलिति उक्किट्टीओ  
करेंति, अप्पेगइया देवा सीहणाय करेंति, अप्पेगइया देवा पायदहरय करेंति, अप्पे-  
गइया देवा भूमिचवेड दल्यति, अप्पेगइया देवा सीहनाय पायदहरय भूमिचवेडं

यस्यर्थि अप्पेगद्वा देवा हृष्टारेति अप्पेगद्वा देवा बुद्धारेति अप्पेगद्वा देवा  
पश्चारेति अप्पे पुश्चारेति अप्पेगद्वा देवा मामाई सार्वंति अप्पेगद्वा देवा  
हृष्टारेति पुश्चारेति पश्चारेति चामाई सार्वंति अप्पेगद्वा देवा उप्स्यति  
अप्पेगद्वा देवा विकर्षति अप्पेगद्वा देवा परिवर्षति अप्पेगद्वा देवा उप्स्यति  
विश्वंति परिकर्षंति अप्पेगद्वा देवा जडति अप्पेगद्वा देवा तदाति अप्पेगद्वा देवा  
पठन्ति अप्पेगद्वा देवा चक्रंति तर्वंति पठन्ति अप्पेगद्वा देवा पञ्चति अप्पेगद्वा  
देवा विकुमारंति अप्पेगद्वा देवा वासंति अप्पेगद्वा देवा गच्छति विकुमारंति  
वासंति अप्पेगद्वा देवा एकान्तिकाय छरेति अप्पेगद्वा देवा शुद्धिं छरेति  
अप्पेगद्वा देवा देवनहरू छरेति अप्पेगद्वा देवा रेतुषुद्धरू छरेति अप्पेगद्वा  
देवा रेतुषुद्धरू छरेति अप्पेगद्वा देवा रेतुषुद्धरू छरेति अप्पेगद्वा देवा रेतुषुद्धरू  
छरेति अप्पेगद्वा देवा विकुमार छरेति अप्पेगद्वा देवा वेतुषुद्धरू छरेति अप्पेगद्वा  
देवा देवुषुद्धरू विकुमार भत्तुषुद्धरू छरेति अप्पेगद्वा देवा उप्स्यद्वास्याय  
जाव साहस्रपत्र फटाहत्याय कल्पहस्यपत्रा जाव लोकपुमायरक्षमया इष्टार्थ  
जाव इतिवक्तव्यिवाप्यमायद्विवाप्यमायद्विवाप्यमायद्विवाप्यमायद्विवाप्यमाय  
परिवाप्यति ॥ तए ये ते विकर्षं देवं चक्षारि सामान्यिवाहसीभो चक्षारि अप्प-  
महिसीभो स्परिशाराम्भे जाव सोम्यसामरक्षादेवाहसीभो अप्पे य वहे  
विक्षयरामायाच्छ्रवण्या वामर्मस्तु देवा य वेदीभो य तदृष्टि वरक्षम्यवद्विवाप्यमाय  
अद्विष्ट य निष्ठोसनाइवरदेव महामा १ ईशामिसुद्धं अमितिवृत्तिः २ ता पत्तं ३  
सिरसाधारं अवधि कहु एवं क्षासी—जम जम नंदा ! जम जम भए । जम जम  
मह महै ते अविनं विणहि विनं पात्तमाहि अविय विनेहि सप्तुष्टम्भे विनं पावेहि  
मितान्मक्षं विक्षमाहि क्षासी तं देव । निष्ठम्य इहो इह देवार्थं चंदो इह वारार्थं  
चमरो इव अमुरार्थं चरणो इव नामार्थं भरणो इव मूलवार्थं वाहुमि पवित्रम्यमार्थं वाहुमि  
सामारोक्षमामि वहुमि पवित्रम्यम्याम्याम्यामि चतुष्पूर्व सामान्यिम्याहसीर्थं जाव जाव  
रक्षदेवक्षाहसीर्थं विक्षस्तु देवस्तु विक्षयाए रामहायीर्थं व्यक्षेति य वहुमि विक्ष-  
रामहामिस्त्रयार्थं वाममतरार्थं देवार्थं वेदीर्थं य आहेवर्थं जाव जामाईसुरसंयत्वं  
च्छरेमाणे पाष्ठेमाणे विहाराहितिम्हु महामा ३ सोप जबजमस्तु फार्वंति ॥ १४१ ॥  
तए ये विकर्ष देवे महामा ३ ईशामिसुद्धं अमितिवृत्तिः समाप्तं दीर्घाच्छपाम्भे अप्पुष्ट  
सीतापुष्टमामि अम्भुदेता अमितेयसमामामो पुरस्तिमेवं दारेवं पवित्रम्यमाह २ ता

जेणामेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता अलकारियसभं अणुप्पया-हिणीकरेमाणे २ पुरत्थिमेण दारेण अणुपविसइ पुरत्थिमेण दारेण अणुपविसिता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिणसणे, तए ण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्वारेति २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विजयस्स देवस्स आलकारिय भंडं उवणेह, तए ण ते आलकारिय भड जाव उवटुवेति ॥ तए णं से विजए देवे तप्पठमयाए पम्हलसुमालाए दिव्वाए सुरभीए गधकासाईए गायाइ ल्हहेइ गायाई ल्हहेता सरसेण गोसीसचंदणेण गायाइ अणुलिप्पइ सरसेण गोसीसचंदणेण गायाइ अणुलिपेता तओऽणतरं च ण नासाणीसासवायवोज्ज्ञ चक्षुहरं वण्णफरिसजुत्त ह्यलालापेलवाइरेग धवल कणगखइयतकम्मं आगासफलिहसरिसप्पभ अहयं दिव्व देवदूसुजुयल णियसेइ णियसेता हार पिणिद्वेइ हार पिणिद्वेता अद्वहारं पिणद्वेइ अद्व० एव एगावलिं पिणिधइ एगावलिं पिणिधेता एव एण अभिलाकेण मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं कडगाइ तुडियाई अगयाई केऊराई दसमुद्दियाणतग कडिसुत्तग वेयच्छिष्टुतग मुरविं कठमुरविं पालव कुडलाइ चूडामणि चित्तरयणसकड मउड पिणिधेइ पिणिधिता गंठिमवेहिमपूरिमसघाइमेण चउव्विहेणं मलेण कप्पस्खखयपिव अप्पाण अलकियविभूसिय करेइ कप्पस्खखयपिव अप्पाण अलकियविभूसिय करेता दहरमल्यसुगधगधिएहिं गधेहिं गायाइ सुकिडइ २ ता दिव्व सुमणदामं पिणिद्वइ ॥ तए ण से विजए देवे केसालकारेण वथालकारेण मल्लालकारेण आभरणाल-कारेण चउव्विहेण अलकारेण अलकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालकारे सीहा-सणाओ अब्मुद्वेइ २ ता अलकारियसभाओ पुरच्छिमलेण दारेण पडिनिक्खमइ २ ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता ववसायसभ अणुप्पयाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमिलेण दारेण अणुपविसइ २ ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिणसणे । तए ण तस्स विजयस्स देवस्स आभिओगिया देवा पोत्थयरयण उवर्णेति ॥ तए ण से विजए देवे पोत्थयरयणं गेणहइ २ ता पोत्थयरयण मुयइ पोत्थयरयण मुएत्ता पोत्थयरयण विहाडेइ पोत्थयरयण विहाडेता पोत्थयरयण वाएइ पोत्थयरयण वाएत्ता धम्मिय ववसाय पगेहइ धम्मिय ववसाय पगेहित्ता पोत्थयरयण पडिणिक्खवेइ २ ता सीहासणाओ अब्मुद्वेइ २ ता ववसायसभाओ पुरत्थिमिलेण दारेण पडिणिक्खमइ २ ता जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव पहारेत्य गमणाए । तए ण से विजए देवे चउहि सामाणिय-साहस्रीहिं जाव सोलसर्हि आयरक्खदेवसाहस्रीहिं सञ्चिद्वीए जाव निर्घोस्नाइय-

रपेषं जेनेव समा शुद्धमा तनेव उवाप्पत्ति २ ता सर्वं शुद्धमं पुररिपित्रिर्व वारेव  
शुपन्नेत्तद् २ ता जेपेव मधिपेहिया तनेव उवागच्छ २ ता शीहायुवाकर्म  
पुररिपित्रिमुद्दे शम्भिर्वन्ने ॥ १४२ ॥ तए व तस्य विज्ञवस्य देवस्य चत्तारि  
चामास्मिन्द्याहस्तीभो अवशतरेषं उत्तरेषं उत्तरपुररिपित्रिमेवं पतेवं २ पुम्बन्नेत्त  
महात्मेषु विसीर्वति । तए वं तस्य विज्ञवस्य देवस्य चत्तारि अमानत्तीर्विभे  
पुररिपित्रिमेवं पतेवं ३ पुम्बन्नेषु भावयेषु विसीर्वति । तए व तस्य विज्ञवस्य  
देवस्य वाहिष्पुररिपित्रिमेवं अभितरियाए परिचाए अङ्ग देवसाहस्तीभो पतेवं २ चत्र  
विसीर्वति । एवं इक्षितजेषं मञ्जित्तमियाए परिचाए दस देवसाहस्तीभो चाव  
विसीर्वति । वाहिष्पुररिपित्रिमेवं वाहिरियाए परिचाए चारस देवसाहस्तीभो पतेवं ३  
चाव विसीर्वति । तए वं तस्य विज्ञवस्य देवस्य पवर्तित्रिमेवं धत अविज्ञाहिर्व  
पतेवं ३ चाव विसीर्वति । तए वं तस्य विज्ञवस्य देवस्य पुररिपित्रिमेवं वाहिष्पेषं  
पवर्तित्रिमेवं उत्तरेषं खेष्वत अम्बरक्ष्यदेवसाहस्तीभो पतेवं २ पुम्बन्नेषु  
विसीर्वति तंश्चा—पुररिपित्रिमेवं चत्तारि साहस्तीभो चाव उत्तरेषं व ४ त व  
आमरक्ष्या सबद्वद्वद्वमिम्यक्ष्या उप्पीमिम्यवासुपपत्तिवा विक्षद्वगेकेवविमल्लर  
विक्षपद्य गवियावहप्पद्वरना विमलार्व विमलीयि क्षट्टाम्या व्योदीयि व्युर्व अभिक्षिय  
परिचाहमक्ष्यद्वावा भीम्यामियो पीम्यामियो रत्तामियो चावामियो चावामियो  
चम्मापामियो चम्मापामियो वृद्धामियो पावामियो वीक्षीवरत्ताम्याहम्मम्म-  
म्मग्न्येवपासुवरवरा आमरक्ष्या रक्ष्येवणा गुता गुत्यामिया गुता गुत्यामिया पावं ५  
सम्बद्वो विषमद्वो विक्षरम्भामियि विद्वति ॥ विज्ञवस्य वं मंतु । देवस्य वेष्वर्व  
क्षवं ठिई फ्लता ॥ गो ! एवं पक्षित्तोक्तम ठिई फ्लता विज्ञवस्य वं मंते ।  
देवस्य चामामियार्व देवार्व वेष्वर्व क्षवं ठिई फ्लता ॥ गोममा ॥ एवं पक्षित्तोक्तम  
ठिई फ्लता एवंमाहित्तिए एवंमाहित्तिए एवंमहस्ये एवंमहाक्षे एवंमहाद्वाष्टे  
एवंमहाद्वाष्टे विज्ञए देवे २ ॥ १४३ ॥ क्षवं वं मंते । क्षुर्विवस्य २ वेष्वर्वं  
पाव वारे फ्लते ॥ गोममा ॥ क्षुर्विवे २ मंदरस्य पवर्तित्रिमेवं पवर्तित्रिमेवं  
बोवपस्त्ताहस्ताह भवाहाए व्युर्वीवरीववाहिष्पेरते व्यवपस्त्ताहिष्पवस्य उत्तरेषं  
एत्य वं क्षुर्विवस्य २ वेष्वर्वं पाव वारे फ्लते व्युर्व बोववाहाए उहु उवर्तेषं  
सतेव सम्मा वत्तम्या चाव विष्वे । क्षवं वं मंते । रावहापी ३ वाहिष्पेवं चाव  
वेष्वर्वं देव २ ॥ क्षवं वं मंते । व्युर्वीवस्य २ वद्वं वामं वारे फ्लते ॥ गोममा ॥  
क्षुर्विवे २ मंदरस्य पवर्तित्रिमेवं पवर्तित्रिमेवं बोवपस्त्ताहस्ताह क्षुर्विव-  
वत्तित्रिमेवं व्यवपस्त्ताहिष्पवस्य पुररिपित्रिमेवं दीक्षेयाए महावाहाए तर्पि एत्य वं

रवेंद्र बेदेव समा शुद्धमा तेबेव उचागच्छ २ ता समे शुद्धम् पुररिपस्मिन्देवं वार्ता  
ख्लृपस्मिस्त ३ ता बेदेव मधिपेक्षिदा तेबेव उचागच्छ ३ ता सीहाशयवत्य  
पुररिपस्मिन्देवं उभितस्मि ॥ १४३ ॥ तए चं तस्य विक्षबस्य देवस्य चतारि  
सामाख्यसाहस्रीमो अवरतरेवं उत्तरेवं उत्तरपुररिपस्मेवं पतोवं २ पुष्टवत्येव  
माधापणेषु विसीर्वति । तए चं तस्य विक्षबस्य देवस्य चतारि अग्नमधिरीमे  
पुररिपस्मेवं पतोवं ३ पुष्टवत्येवु भावापेषु विसीर्वति । तए चं तस्य विक्षबस्य  
देवस्य दाहित्यपुररिपस्मेवं अधिक्षतरियाए परिचाए बद्ध देवसाहस्रीमो पतोवं ३ चाव  
विसीर्वति । एवं दक्षिणगोमं मज्जिसियाए परिचाए देव देवसाहस्रीमो चाव  
विसीर्वति । दाहित्यपुररिपस्मेवं बाहिरियाए परिचाए चावस देवसाहस्रीमो पतोवं ३  
चाव विसीर्वति । तए चं तस्य विक्षबस्य देवस्य वक्षतिपस्मेवं सत् अविदाहितै  
पतोवं ४ चाव विसीर्वति । तए चं तस्य विक्षबस्य देवस्य पुररिपस्मेवं दाहित्येवं  
पक्षतिपस्मेवं उत्तरेवं दोस्त आमरक्षवेदसाहस्रीमो पतोवं ५ पुष्टवत्येवु माधापेषु  
विसीर्वति तेजा—पुररिपस्मेवं चतारि साहस्रीमो चाव उत्तरेवं च ॥ ते चं  
आमरक्षवा उच्चदद्यमियवक्षया सप्तीक्ष्मिवरात्परपक्षिया पिभदगेदेवविमङ्गल  
विक्षबस्य गद्यिवत्तद्यप्त्यरणा दिग्यार्थं तिर्तुपीति वरामया घोरीति वर्णां अभिक्ष्म  
परिचाइनक्षेत्रम्भवा यीक्षमालिनो यीक्षमालिनो रत्नपलिनो चावपलिनो चावपलिनो  
चामपालिनो चामपालिनो दैदपालिनो पासपालिनो यीक्षमालिनो चावचालवाचालवाचालवा  
रगादपाचावरपर आयरक्षा रक्षेत्रगा गुला गुलापलिना गुला गुलपलिना पतोवं ६  
चमपलो विक्षमालो किञ्चरम्भालिन विर्तुति ७ विक्षबस्य चं मंते । देवस्य देवस्य  
क्षम्भं ठिक्क पक्षता । गो । एवं पक्षिमोक्षम ठिक्क पक्षता विक्षबस्य चं मंते ।  
देवस्य सामाख्याच देवार्थं देवार्थं च्छ्रांठ ठिक्क पक्षता । योक्षमा । एवं पक्षिमोक्षम  
ठिक्क पक्षता एवं पक्षित्येवं एक्षमद्युष्टेवं एक्षमद्युष्टेवं एक्षमद्युष्टेवं  
एक्षमद्युष्टेवे विक्षए देवे २ ॥ १४३ ॥ क्षिति च मंते । चंतुरीषस्य १ वैक्षंते  
याम वारे पक्षते । गोक्षमा । चंतुरीषे २ योक्षबस्य पक्षवस्य दक्षिणोर्य पणवार्द्धं  
घोक्षवस्यस्यादे चताहाए चंतुरीषवीवदाहिषपेते व्यवस्यमुहूर्वाहिषवस्य उत्तरेवे  
एत्वं चं चंतुरीषस्य २ वैक्षंते चतमे वारे पक्षते बद्ध बोक्षवार्त उहु उत्तरेवे  
सप्तेव सम्भा चताहाचा चाव विक्षे । क्षिति चं मंते । रमाहार्थी १ दाहित्येवं चाव  
देवदेवे देवे ३ ॥ क्षिति चं मंते । चंतुरीषस्य २ वैक्षंते चतमे वारे पक्षते ३ गोक्षमा ।  
चंतुरीषे १ योक्षबस्य पक्षवस्य वक्षतिपस्मेवं पक्षवार्त्ते चेत्परत्तुरस्यार्थं चंतुरीषम  
वक्षतिपस्मेवे व्यवस्यमुहूर्वाहिषवस्यस्य पुररिपस्मेवं दीक्षेवाए महार्थार्थं वृत्त्य एत्वं चं

जंबुदीवस्स दीवस्स जयते णाम दारे पण्णते, तं चेव से पमाण जयते देवे पच्चत्यिमेण  
 चे रायहाणी जाव महिंडिए० ॥ कहि ण भंते ! जंबुदीवस्स २ अपराइए णामं दारे  
 पण्णते २ गोयमा ! मंदरस्स पञ्चयस्स उत्तरेण पण्यालीस जोयणसहस्साइ अवाहाए  
 जंबुदीवे २ उत्तरपेरते लवणसमुद्रस्स उत्तरद्वास्स दाहिणेण एत्य ण जंबुदीवे २  
 अपराइए णाम दारे पण्णते त चेव पमाण, रायहाणी उत्तरेण जाव अपराइए देवे,  
 चउण्हवि अण्णसि जंबुदीवे ॥ १४४ ॥ जंबुदीवस्स ण भंते ! दीवस्स दारस्स  
 दारस्स य एस केवइयं अवाहाए अतरे पण्णते २ गोयमा ! अउणासीइ  
 सहस्साइ वावण्ण च जोयणाड देसूणं च अद्वजोयणं दारस्स य २ अबाहाए  
 पण्णते ॥ १४५ ॥ जंबुदीवस्स ण भंते ! दीवस्स पएसा लवण समुद्र  
 पुड्डा ॥ ते ण भंते ! किं जंबुदीवे २ लवणसमुद्रे २ गोयमा ! जंबुदीवे  
 ते लवणसमुद्रे ॥ लवणस्स ण भंते ! समुद्रस्स पएसा जंबुदीव दीव  
 ण भंते ! किं लवणसमुद्रे जंबुदीवे दीवे २ गोयमा ! लवणे ण ते  
 दीवे दीवे ॥ जंबुदीवे ण भंते ! दीवे जीवा उद्वाइता २ लवणसमुद्रे  
 अत्येगडया पच्चायांते अत्येगडया नो पच्चायति ॥ लवणे ण भंते !  
 जंबुदीवे २ पच्चायति २ गोयमा ! अत्येगडया पच्चायति अत्येगडया  
 चे केणद्वेष भंते ! एव बुद्ध—जंबुदीवे २ २ गोयमा ! जंबुदीवे २  
 णील्वतस्स वासहरपञ्चयस्स दाहिणेण मालवतस्स वक्खा१८  
 मायणस्स वक्खारपञ्चयस्स पुरत्यिमेण एत्य ण उत्तरखुरा णाम  
 ढीणायया उदीणदाहिणवित्यणा अद्वचदसठाणसठिया एकारस  
 चायाले जोयणसए दोणिं य एगूणवीसडभागे जोयणस्मि१९  
 रखो पाईणपडीणायया दुहओ वक्खारपञ्चय पुड्डा, पुरत्यि२०  
 वक्खारपञ्चय पुड्डा, पच्चत्यिमिळाए कोडीए पच्चत्यिमिळ  
 जोयणसहस्साइ आयामेण, तीसे२१ देणेणं सङ्कि२२  
 अट्टारसुत्तरे जोयणसए दुवालस य  
 उत्तरखुराए ण भंते ! खुराए केरि२३  
 चहुसमरमणिक्के भूमिभागे पण्णते,  
 एगूल्यदीववत्तञ्चया जाव ठेवलोग२४  
 णवरि इम णाणत्त—छवणुनहत्तम२५  
 आहारडे नमुप्पञ्च तिणिं पलि२६  
 उणगाइ जहश्नेण, तिन्नि पलिओवमाड२७

रहें ऐसेव समा मुहम्मा तेजेव उवागच्छ २ ता समे मुहम्मं पुरस्तिमित्रेव वारेव  
ज्ञुपत्तिक्ष २ ता ऐसेव मध्येहि या तेजेव उवागच्छ २ ता सीहासुणवरयए  
पुरस्तिमित्रे समित्तलो ॥ १४३ ॥ तए वं तस्त विजयस्त देवस्त चतारि  
सामाभिषेकाहसीओ अवस्तरेव उत्तरेव उत्तरपुरविष्टेव पतेव २ पुष्कणवेतु  
महासणेतु मितीयंति । तए वं तस्त विजयस्त देवस्त चतारि ब्रमाभिषीक्षे  
पुरस्तिमित्रे पतेव २ पुष्कणवेतु महासणेतु मितीयंति । तए वं तस्त विजयस्त  
देवस्त शाहिणपुरतिमेव अभिमतरियाए परिसाए अद्व देवसाहसीओ पतेव २ आव  
मितीयंति । एवं दक्षिणार्थे मञ्जितमियाए परिसाए एव देवसाहसीओ आव  
मितीयंति । शाहिणपुरतिमेव बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहसीओ पतेव २  
आव मितीयंति । तए वं तस्त विजयस्त देवस्त फलतिमेव चत अभिलाहिवै  
पतेव २ आव मितीयंति । तए वं तस्त विजयस्त देवस्त पुरस्तिमेव बाहिनेव  
पवतिमेव उत्तरेव सोमस आयरक्षादेवसाहसीओ पतेव २ पुष्कणवेतु महासणेतु  
मितीयंति तंश्च—पुरस्तिमेव चतारि साहसीओ आव उत्तरेव च ॥ त वं  
आयरक्षा सबदवदवन्मवक्षया उप्पीस्तियगरामनपरहिया पिष्ठगेवविमस्तव  
पिष्ठपद्य गहियाऽहप्पद्वत्ता तित्तवार्त तित्तेवीयि बहुमया बोद्धीयि पश्चृ अभियिक्षा  
परियाइयद्वद्वत्तमवा जीव्यायिक्षो पीम्यायिक्षो रत्तप्रयिक्षो चावप्रयिक्षो चास्यायिक्षो  
चम्पायिक्षो चम्पायिक्षो देवप्रयिक्षो पास्पायिक्षो बीबीप्रदत्तवावपाद्वद्वमय  
गद्वद्वपामवरभरा आवरक्षा रक्षोवगा शुता शुतप्रयिक्षा शुता शुतप्रयिक्षा पतेव २  
समयभो विजयभो डिहरम्यायिक्ष विद्वति ध विजयस्त वं भत । देवस्त केवर्व  
काळ डिर्व पञ्चता । गो । एवं पठितोवम डिर्व पञ्चता विजयस्त वं भते ।  
देवस्त मामालियाव देवावं केवद्व भाल डिर्व पञ्चता । गोऽमा । एवं पठितोवम  
डिर्व पञ्चता एवंमहित्तिप एवंमहज्जुप एवंमहज्जुपे एवंमहज्जुपे एवंमहज्जुपे  
एवंमहज्जुपागे विजय देवे २ ध १४३ ॥ वहि वं भते । अंतुरीवस्त २ विजयत  
गामे दारे पक्षते ? यावमा । अंतुरीवे १ मंदरस्त विष्ठपस्त दक्षिणालेव पक्षयाक्षीसे  
ज्ञायक्षगाहम्पाद अवाहाए अंतुरीवदीवराहित्तपेरेत सवधसमुरवाहित्तपस्त उत्तरेव  
एवं ने अंतुरीवस्त २ विजयत गामे दारे पक्षते अद्व योक्षार्त उहु उच्चते  
गतेर गत्त्वा बन्धया आव किये । वर्द्दि वं भते । यावदानी १ वाहिनेव आव  
देववंत इव ॥ वहि वं भते । अंतुरीवस्त २ जवीत गामे दारे पक्षते १ यावमा ।  
अंतुरीप मंदरस्त विष्ठपस्त पक्षतिमनं पगवसीवे जोववद्वरगार्त अंतुरीव-  
विष्ठपेरेत तवत्तममुद्वदिमद्वम पुरस्तिमेव सीमोवाए महाभैरूप उपि एवं वं

जवुदीवस्स दीवस्स जयंते णामं दारे पण्णते, तं चेव से पमाण जयते देवे पच्चत्यिमेण से रायहाणी जाव महिष्ठिपु० ॥ कहि ण भते ! जवुदीवस्स २ अपराह्नए णामं दारे पण्णते ? गोयमा । मंदरस्स पब्बयस्स उत्तरेण पण्यालीस जोयणसहस्साइ अवाहाए जवुदीवे २ उत्तरपेरते लवणसमुद्रस्स उत्तरद्वस्स दाहिणेण एत्थ ण जंवुदीवे २ अपराह्नए णाम दारे पण्णते त चेव पमाण, रायहाणी उत्तरेण जाव अपराह्नए देवे, चउष्टवि अण्णंसि जवुदीवे ॥ १४४ ॥ जंवुदीवस्स ण भते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा । अउणासीइ जोयण-सहस्साइ वावण्णं च जोयणाइ देसूण च अद्वजोयण दारस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णते ॥ १४५ ॥ जवुदीवस्स णं भते ! दीवस्स पएसा लवण समुद्रं पुट्ठा ? हता पुट्ठा ॥ ते णं भते ! किं जवुदीवे २ लवणसमुद्रे ? गोयमा ! जंवुदीवे दीवे नो खलु ते लवणसमुद्रे ॥ लवणस्स णं भते ! समुद्रस्स पएसा जवुदीव दीव पुट्ठा ? हता पुट्ठा । ते ण भते ! किं लवणसमुद्रे जवुदीवे दीवे ? गोयमा ! लवणे ण ते समुद्रे नो खलु ते जवु-दीवे दीवे ॥ जवुदीवे णं भते ! दीवे जीवा उहाइत्ता २ लवणसमुद्रं पच्चायति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायति अत्थेगइया नो पच्चायति ॥ लवणे णं भते ! भमुद्रे जीवा उहाइत्ता २ जवुदीवे २ पच्चायति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायति अत्थेगइया नो पच्चायति ॥ १४६ ॥ से केणद्वेण भते ! एव चुच्छइ—जवुदीवे २ ? गोयमा ! जवुदीवे २ मदरस्स पब्बयस्स उत्तरेण णीलवतस्स वासहरपब्बयस्स दाहिणेण मालवंतस्स वक्खारपब्बयस्स पच्चत्यिमेण गंध-मायणस्स वक्खारपब्बयस्स पुरत्यिमेण एत्थ ण उत्तरकुरा णाम कुरा पण्णता, पाईणप-दीणायया उदीणदाहिणवित्यिणा अद्वच्छदसठाणसठिया एकारस जोयणसहस्साइ अद्व चायाले जोयणसए देणिण य एगूणवीसइभागे जोयणस्म विकरंभेण ॥ तीसे जीवा उत्त-रओ पाईणपदीणायया दुहओ वक्खारपब्बयं पुट्ठा, पुरत्यिमिल्लाए कोडीए पुरत्यिमिल्लं वक्खारपब्बय पुट्ठा, पच्चत्यिमिल्लाए कोडीए पच्चत्यिमिल्लं वक्खारपब्बय पुट्ठा, तेवण्ण जोयणसहस्साइ आयामेण, तीसे धणुपट्ठ दाहिणेण सट्ठि जोयणसहस्साइ चत्तारि य अट्ठारसुत्तरे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेण पण्णते ॥ उत्तरकुराए णं भते ! कुराए केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णते ? गोयमा ! वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहा णामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव एव एगूल्यदीववत्तव्या जाव देवलोगपरिगगहा ण ते मणुयगणा पण्णता समणाउसो ।, णवारे इम णाणत्त—छधणुसहस्समृसिया दोष्टपञ्चा पिट्ठकरडगमया अट्ठमभत्तस्स आहारड्हे भमुप्पन्नइ तिणिण पलिओवमाइ देमूणाइं पलिओवमस्साससिज्जइभारेण उणगाइ जहन्नेण, तिन्नि पलिओवमाइ उक्कोसेण, एगूणपण्णराइदियाइं अणुपालणा,

सुरु महा एग्रज्ञार्थं ३ उत्तरकुराए चं कुराए घमिहा मनुस्मा अनुग्रहंति तं ग्रह-  
पम्हर्गाप्ता १ शिवपदा २ अममा ३ यहा ४ तवास्मीमा ५ समिक्षार्थि ६ ७ १४७ ०  
चहि चं भंतु । उत्तरकुराए कुराए जमगा नाम तुवे पम्हया पम्हया ३ गोपमा ।  
नीत्यनेत्रस्म वासाहरपव्ययस्म दाहिणें अद्वारात्माम ज्येष्ठमाए चतारि च सत्तमागे  
ज्येष्ठमास्म अवगाए चीयाए महाल्लाई (पुष्पपत्तिमर्व) उमभो चूके शत्रु च उत्तर  
कुराए ३ जमगा नाम तुवे पम्हया पम्हता एमम्हां जोपलमहस्तं तहु उच्चोर्व  
महृष्टमाई ज्येष्ठमास्माप्ति उच्चेत्र्व शूल एगम्हां ज्येष्ठमहस्तं आवामविकृमिर्व  
मगो अद्वाराई ज्येष्ठमाप्तृ आवामविकृमिर्व उच्चारि पैत्रज्ञोमध्यमध्याई आवाम-  
विकृमिर्व शूले त्रितिं ज्येष्ठमहस्ताई एर्ण च चाप्तु ज्येष्ठमास्म त्रितिं ज्येष्ठमहस्ताई  
परिक्षेत्र्व मग्ने दो ज्येष्ठमहस्ताई त्रिति च चाप्तु ज्येष्ठमास्म त्रितिं ज्येष्ठमहस्ताई  
परिक्षेत्र्व पक्षो उच्चारि पत्तरम एकास्तीए ज्येष्ठमास्म त्रितिं ज्येष्ठमहस्ताई परिक्षेत्र्व  
फलते शूले त्रितिं ज्येष्ठमहस्ताई त्रिति त्रिति त्रिति त्रिति त्रिति त्रिति त्रिति त्रिति  
क्षयामया अन्त्य गन्धा जाव पद्धिस्ता फत्तेवं ३ पउम्हारेह्यापरिक्षेत्र्व फत्तेवं १  
वगसंहरतिरिक्षता वग्नओ दोहरि तसि च जमगापम्हमार्व त्रिति शुद्धसुमरणपित्रे  
भूमिमागे पत्ताते वग्नओ जाव आवमयति ॥ तहि चं शुद्धसुमरमपित्रां भूमि-  
मागाणे शुद्धसुमरमेत्तमाए फत्तेवं ३ पासाम्हाहेत्तुगा फगता ते चं पासाम्हाहेत्तुग्य  
चाप्तु ज्येष्ठमाई अद्वारोवर्व च तहु उच्चेत्र्व एकात्माई ज्येष्ठमाप्तृ ज्येष्ठो च विकृमिर्व  
अवगुणाम्हाप्तिया वग्नओ भूमिमागा उप्तेया दो ज्येष्ठमाई मत्तिपेत्तिम्हाओ वर्तीवा-  
स्ता सपरिक्षारा जाव जमगा त्रितुति ४ से त्रेष्टेष्ट भंतु । एव त्रृष्ट-जमगा  
पम्हया २ ३ शोवमा । जममेष्ट चं पम्हस्म तत्त्व तत्त्व त्रेष्टे ३ तहु तहु त्तुर्वो  
शुद्धसुमाम्हो वातीओ जाव विकृमित्तिम्हाओ तामु चं शुद्धसुमात्तु जाव विकृमित्ति-  
शातु त्रृष्ट त्रप्तम्हाव जाव सप्तमाहस्तपत्ताई ज्येष्ठमप्तमाई ज्येष्ठमप्तमाई, जमगा च  
एत्य हो जाव महित्तिया जाव पैत्रियोमद्विद्या पौरवसंति से चं तत्त्व दौर्ये फत्तेवं  
चट्टां सप्तमाविद्वाहस्तीर्व जाव जमगार्वं पम्हयार्वं जमगान च रुपद्वारीर्व  
ज्येष्ठमिं च त्रृष्ट वाणमंत्रार्वं देवाव च देवीव च आहेवर्व जाव पात्तेयाया त्रिति  
त्रिति से त्रेष्टेष्ट गोवमा । एवं जमगम्हम्हा १ शुद्धतरं च चं गोममा । जाव  
मित्ता ॥ कहि चं भंतु । जमगार्वं देवार्वं जमगाम्हो नाम रामहाणीओ एकात्माम्हो १  
शोवमा । जमगार्वं पम्हयार्वं उत्तरेवं त्रितिमस्तेत्ते चीत्तस्तुते शोवम्हता ज्येष्ठमि  
शुद्धीभ २ वारसु ज्येष्ठमस्तहस्याई ज्येष्ठमित्ता एत्य च जमगार्वं देवार्वं जमगाम्हे  
नाम रुपद्वारीर्वो फलताम्हो वारसुज्येष्ठमहस्त जाव विकृमित्ता जाव त्रितिया

જમગા દેવા જમગા દેવા ॥ ૧૪૮ ॥ કહિ ણ ભતે ! ઉત્તરકુરાએ ૨ નીલવંતદ્વારે ણામં દહે પણતે ૨ ગોયમા ! જમગપવ્યાણ દાહિણે અઢુચોતીસે જોયણસએ ચત્તારિ સત્તભાગા જોયણસસ અબાહાએ સીયાએ મહાર્ણઈએ વહુમજ્જદેસભાએ એથણ ઉત્તર-કુરાએ ૨ નીલવતદ્વારે નામ દહે પણતે, ઉત્તરદવિખણાયએ પાઈણપદીણવિચ્છેને એં જોયણસહસ્સ આયામેણ પચ જોયણસથાં વિક્ષમેણ દસ જોયણાં ઉબ્બેહેણ અચ્છે સણ્હે રયયામયકૂલે ચઉક્કોળે સમતીરે જાવ પડિસુવે ઉભાઓ પાસિં દોર્હિં પડમ-વરવેઝાહિં વણસંદેહિં ય સંબ્બાઓ સમંતા સપરિક્ષિતે દોષિં વણાં ॥ નીલવંત-દહસ્સ ણ દહસ્સ તત્થ ૨ જાવ વહવે તિસોવાણપડિસુવગા પણત્તા, વણાંઓ ભાણિ-યબ્બો જાવ તોરણત્તિ ॥ તસ્સ ણ નીલવતદ્વારસ્સ ણ દહસ્સ વહુમજ્જદેસભાએ એથણ એં મહ પડમે પણત્તે, જોયણ આયામવિક્ષમેણ ત તિગુણ સવિસેસ પરિક્ષેવેણ અદ્ભુજોયણ વાહૃલેણ દસ જોયણાં ઉબ્બેહેણ દો કોસે ઊસિએ જલતાઓ સાડરેગાં દસદ્ધજોયણાં સંબ્બગેણ પણત્તે ॥ તસ્સ ણ પડમસ્સ અયમેયારૂવે વણાવાસે પણત્તે, તજદ્ધા—વિરામયા મૂલા રિદ્વામએ કદે વેશલિયામએ નાલે વેશલિયામયા વાહિરપત્તા જવુણયમયા અભિભતરપત્તા તવણિજમયા કેસરા કણગાર્ણૈ કળણયા નાણામળિમયા પુક્ખરત્થિભુગા ॥ સા ણ કળણયા અદ્ભુજોયણ આયામવિક્ષમેણ ત તિગુણ સવિસેસ પરિક્ષેવેણ કોસ વાહૃલેણ સંબ્બપ્પણા કણગાર્ણૈ અંછા સણ્હા જાવ પડિસુવા ॥ તીસે ણ કળણયાએ ઉવર્ણ વહુસમરમળિજે દેસભાએ પણત્તે જાવ મણીહિં ॥ તસ્સ ણ વહુસમરમળિજસ્સ ભૂમિભાગસ્સ વહુમજ્જદેસભાએ એથણ એં મહ ભવણે પણત્તે, કોસ આયામેણ અદ્ધકોસ વિક્ષમેણ દેસૂણ કોસ ઉછૂ ઉચ્ચતેણ અણેગુખભસયસાનિવિદ્ધ જાવ વણાંઓ, તસ્સ ણ ભવણસ્સ તિદિસિં તાં દારા પણત્તા પુરત્થિમેણ દાહિણેણ ઉત્તરેણ, તે ણ દારા પંચધણુસયાં ઉછૂ ઉચ્ચતેણ અદ્ભૂઇજાં ધણુસયાં વિક્ષમેણ તાવિદ્ય ચેવ પવેસેણ સેયા વરકણગથૂભિયાગા જાવ વણમાલાઉત્તિ ॥ તસ્સ ણ ભવણસ્સ અતો વહુસમરમળિજે ભૂમિભાગે પણત્તે સે જહા નામએ—આલિગપુક્ખરેં વા જાવ મણીણ વણાંઓ ॥ તસ્સ ણ વહુસમરમળિ-જસ્સ ભૂમિભાગસ્સ વહુમજ્જદેસભાએ એથણ મળિપેદ્ધિયા પણત્તા, પંચધણુસયાં આયામવિક્ષમેણ અદ્ભૂઇજાં વણમયાં વાહૃલેણ સંબ્બમળિમર્ણો ॥ તીસે ણ મળિ-પેદ્ધિયાએ ઉવરી એથણ એં મહ દેવમયળિજે પણત્તે, દેવમયળિજસ્સ વણાંઓ ॥ સે ણ પડમે અણેણ અઢુમએણ તદુચુચ્ચતપ્પમાણમેત્તાણ પડમાણ મબ્બાઓ મમતા સપરિક્ષિતે ॥ તે ણ પડમા અદ્ભુજોયણ આયામવિક્ષમેણ ત તિગુણ સવિસેસ પરિક્ષેવેણ કોસ વાહૃલેણ દસ જોયણાં ઉબ્બેહેણ કોસ ઊસિયા જલતાઓ સાડરેગાડ

दस जोशकार्द सम्भगोर्ण पञ्चतार्द ॥ तेनि एं पउमार्ण अयमेवाह्ये बज्ञाकासे  
पञ्चते तज्जहा—प्रदरामका मूला जाव शावामविमया पुकुरुचित्तुगा ॥ तामो अ  
क्षमित्याह्ये तोसे आवामविसमेन ते तिगुणे स परि अद्वैत बाहेव्ये सम्भ  
क्षमित्यामैर्भो अस्त्राह्ये जाव पदिष्याम्ये ॥ ताति अ क्षमित्यावे तथि बहुत्समर  
मविका भूमित्यागा जाव मणीर्ण बज्ञो गपो चासो ॥ तस्य च पउमस्स अवह-  
तरेन उत्तरेण उत्तरुचित्तमेन भीमनेत्तद्वारास्म ऐहन्म बहुत्समर  
हस्तीणे चत्तारि पठमसाहस्रीभो पञ्चताम्ये एवं सम्भो परिकारो भवरि पउमार्ण  
माविकम्यो ॥ से एं पउमे लग्नेहि तिहि पउमवरपरिक्षेहि सम्भम्भे समंता  
संरक्षित्युषे तंज्जहा—अवित्तरेण मजिसमेन बाहिरपूर्वं अवित्तरए एं पठमपरि  
क्षेहे बत्तीर्णे पठमस्याहस्रीभो प मजिसमए एं पउमपरिक्षेहे चत्तामीर्णे  
पठमस्याहस्रीभो प बाहिरए ने पठमपरिक्षेहे अहमार्णीर्णे पठमस्याहस्रीभो  
पञ्चताम्यो एकामेव सुम्भावरेण एका पठमकोही बीर्णे च पउमस्याहस्रा भवे  
तीति मक्षाया ॥ से केवट्टेवं मेरे । एवं तुक्षर—पीमर्णवद्वे दहे । गोवमा ।  
पीमर्णवद्वे एं दहे तत्त्व तत्त्व जार्द उपामार्ण जाव सबसाहस्रपताव भीमर्णवुप्पमर्द  
भीमनेत्तद्वामीर्ण भीमर्णवद्वामारे च एत्य देवे अमगदेवगमो से देषट्टेवं योवमा ।  
जाव नीमर्णवद्वे २ भीमर्णवद्वस्तु परि रावहानी पुम्भामित्यामेन एत्य सो चेद यमो जाव  
बीमर्णवे देवे ॥ १५५ ॥ भीमर्णवद्वस्तु चं पुरस्तिमप्तवतिमेवं दस जोशकार्द  
अवाहाए एत्य गे दस क्षेत्रमगप्तवया पञ्चता ते एं क्षेत्रमगप्तवया एकामेवं  
जामनसर्वं तर्हु उच्चतर्णे पञ्चतीर्णे २ जोशकार्द उम्भेहेण मूळे एकामेवं जोशकार्द  
मिक्षमेवं मज्जे पञ्चतारि जोशकार्द [आयाम]मिक्षमेवं उपरि पञ्चार्ण जोशकार्द  
मिक्षमेवं गूळे तित्तिम सोठे जोशकासए तित्तिमिरेशाहिए परिक्षेहेण मज्जे दोषि  
सत्तार्णे जोशकासए तित्तिमिरेशाहिए परिक्षेहेण उपरि एवं अद्वैतव्यं जोशकासर्वं  
तित्तिमिरेशाहिए परिक्षेहेण मूळे तित्तिम्भा मज्जे संकिता तथि तुक्षरा गोपुर्ण-  
संठालसठिला सम्भर्वप्तवया अच्छ जाव पदिष्या पौर्णे ३ पठमवरलेश्वा पौर्णे ३  
ज्ञात्यस्तपरिक्षिताता ॥ तेनि एं क्षेत्रमगप्तवयार्ण उप्यि बहुत्समरलक्ष्ये भूमित्यागे जाव  
धासर्वंति तेनि गे पौर्णे पौर्णे पास्तावक्षित्युप्या उत्तुवावहि जोशकार्द उर्हु उच्च  
तेनि पौर्णीर्णे जोशकार्द जोशकार्द मिक्षमेवं मित्येहिवा जोशेवामित्या सीक्षासर्वं सर-  
रिक्षाव ॥ से केवट्टेवं मेरे । एवं तुक्षर—इन्द्रगगप्तवया क्षेत्रमगप्तवया ॥ योवमा ।  
क्षेत्रम्भोस्तु एं क्षेत्रपूर्ण उच्च उच्च जार्दीहु उप्पलार्द जाव क्षेत्रमगप्तवया वृष-  
थगा देवा महित्युप्या जाव तिर्तु उच्चमगप्तवया रम्भमित्यामो रम्भ-

जीओ अण्णमि जबू० तहेव सब्ब भाणियब्बं ॥ कहि ण भते ! जंदुदीवे दीवे  
 उत्तरकुराए कुराए उत्तरकुरुद्दहे णाम दहे पण्णते ? गोयमा ! नील्वतद्वस्स दाहिणेण  
 अद्वचोत्तीमे जोयणसए, एव सो चेव गमो जेयब्बो जो पील्वतद्वस्स सब्बेसिं  
 सरिमगो दहमरिनामा य देवा, सब्बेमि पुरत्विभपचत्विमेण कचणगपब्बया दस २  
 एगप्पमाणा उत्तरेण रायहाणीओ अण्णमि जंदुदीवे २ । चदद्दहे एरावणद्दहे माल-  
 वतद्दहे एव एकेको जेयब्बो ॥ १५० ॥ कहि ण भते ! उत्तरकुराए २ जबूसुदंसणाए  
 जंदुपेढे नाम पेढे पण्णते ? गोयमा ! जंदुदीवे २ मंदरस्स पब्बयस्स उत्तरपुरच्छिमेण  
 नील्वतस्स वासहरपब्बयस्स दाहिणेण माल्वतस्स वक्खारपब्बयस्स पचत्विमेण  
 गधमायणस्स वक्खारपब्बयस्स पुरत्विमेण सीयाए महाणईए पुरत्विमिले कूले एत्थ  
 ण उत्तरकुराए कुराए जबूपेढे नाम पेढे पण्णते पन्चजोयणसयाड आयामविक्खमेण  
 पण्णरस एक्षासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण वहुमज्जदेसभाए वारस  
 जोयणाड वाहलेण तयाणतर च ण मायाए २ पएसे परिहाणीए सब्बेषु चरमंतेषु  
 दो कोसे वाहलेण पण्णते सब्बजबूणयामए अच्छे जाव पडिरुवे ॥ से ण एगाए  
 पउमवरवेड्याए एगेण य वणसडेण सब्बओ समता सपरिक्खिते वण्णओ दोण्हवि ।  
 तस्स ण जंदुपेढस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोचाणपडिस्वगा पण्णता तं चेव जाव  
 तोरणा जाव छत्ता ॥ तस्स ण जबूपेढस्स उप्पिं वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते  
 से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव मणि० ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमि-  
 भागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण एगा मह मणिपेहिया पण्णता अटु जोयणाइ  
 आयामविक्खमेण चत्तारि जोयणाइ वाहलेण सब्बमणिमई अच्छा सण्हा जाव  
 पडिरुवा ॥ तीसे ण मणिपेहियाए उवरि एत्थ ण मह जबूसुदसणा पण्णता अटु-  
 जोयणाइ उहु उच्चतेण अद्वजोयण उन्वेहेण दो जोयणाइ खंधे अटु जोयणाइं  
 विक्खमेण छ जोयणाइ विडिमा वहुमज्जदेसभाए अटु जोयणाइ विक्खमेण साइ-  
 रेगाइ अटु जोयणाइ सब्बग्रोण पण्णता, वहरामयमूला रययसुपइट्टियविडिमा रिट्टाम-  
 यविउलकदा वेरुलियसइरक्खधा सुजायवरजायरुवपदमगविसालसाला नाणामणिरय-  
 णविविहसाहप्पसाहवेरुलियपत्ततवणिजपत्तिविटा जबूणयरत्तमउयसुकुमालपवालपल्लवकु-  
 रघरा विचितमणिरयणसुरहिकुसुमा फलभारनमियसाला सच्छाया सप्पमा सस्तिरीया  
 सउज्योया अहिय मणोनिव्युइकरा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरुवा पडिरुवा ॥ १५१ ॥  
 जबूए ण सुदसणाए चउद्दिसिं चत्तारि साला पण्णता, तजहा—पुरत्विमेण दक्खिव-  
 णेण पचत्विमेण उत्तरेण, तत्य ण जे से पुरत्विमिले साले एत्थ ण एगे मह भवणे  
 पण्णते एग कोस आयामेण अद्वकोस विक्खमेण देसूण कोस उहु उच्चतेण अणेग-

र्द्धम वन्नमो जाव मदवस्ता द्वार तं चेव पमार्थं पंचप्रसुतमाइ उर्हु उबतोर्ब  
महाइवाई पकुमयाद्रे विकुटभेदे जाव वजमालाभो भूमिमागा उडोवा मधिरेतिमा  
पंचप्रसुतमाइ देवस्तयमित्र माधिवस्त एव रत्य वं जे से दाहिमित्रे साङे एत्व वं  
एगे महं पासायवहेसए पन्नतो ओसे उर्हु उबतोर्ब अद्वोसे जायामविमित्रेव  
अप्पुमायमुहिम अंठो पकुमसम उडोवा । तत्स वं वहुषमरमविज्ञम भूमिमास्तु  
वहुमञ्जनदेसमाए चीहाशय सपरिकारे भाविमव्यं । तत्य वं जे से पवित्रिमित्रे साङे  
एत्व वं पासायवहेसए पन्नतो तं चेव पमार्थं चीहागां सपरिकारे भाविकव्यं  
तत्य वं जे से उत्तरित्रे साङे एत्व वं एगे महं पासायवहेसए पन्नतो तं चेव पमार्थं  
चीहासुनं सपरिकारे । अंगु वं मुदसणा गूँसे बारसहि पठमवरदेवयाहि सम्भजो उन्नेत्त  
सपरिकिदला ताओ वं पठमवरदेवयाभो अद्वयेवनं उर्हु उबतोर्ब पंचप्रसुतमावं  
विकुटभिर्य वन्नमो ॥ अंगु वं मुदसणा अप्पोर्यं अहुमएवं अंगुनं तम्भुवदप्पमावं  
तोर्ब सप्पमो समंता संपरिकिदता ॥ ताभो वं अंगुओ चतारि ओवलाइ उर्हु उबतोर्ब  
ओसे ओवेहेयं जोकले एंपो ओसे विकुटभिर्य लितिण जोवयाई लिहिमा वहुमस्त-  
देवमाए चतारि ओवलाइ विकुटमित्र साइरेगाई चतारि जोवयाई सम्भमेन एव  
रामप्रमूला सो चेव अप्पुदेवमावयाभो ॥ अंगु वं मुदसणाए अवस्तरेय उत्तरेन  
उत्तरुपुरतिमेन एत्व वं अवाहिमस्त देवस्त उवर्हु सामाविमसाहस्रीयं चतारि  
अंगुसाहस्रीयो फलताभो अंगु वं मुदसणाए पुरतिमेन एत्व वं अवाहिमस्त  
देवस्त उवर्हु अगमदिहीयं चतारि अंगुओ फलताभो एवं परिकारो सम्भे  
जायाभो अंगु जाव जायरकचार्न ॥ अंगु वं मुदसणा तिहै जोवयासपहि वसदेहि  
सम्भजो समंता संपरिकिदता तंबहा—फत्तेन दोवेयं तोवेयं । अंगु वं मुदसणाए  
पुरतिमेन पहम वजसुर्दं पन्नार्दं जोवयाई जोवयाई एत्व वं एगे महं भावे  
पन्नतो पुरतिमित्रे भवस्तसरिदे भाविकव्यं चाव सव्यक्तिव्यं एवं दाहिलेन पवित्रिमेन  
उत्तरेन ॥ अंगु वं मुदसणाए उत्तरुपुरतिमेन फल्म वजसुर्दं पन्नार्दं जोवयाई  
जोवयाई चतारि अंदायुक्तवरिषीयो फलताभो तंबहा—फत्तमा फहमप्पमा तेन  
कुमुदा उमुकप्पमा । ताभो वं जावाओ पुक्तवरिषीयो ओसे जायामेन अद्वयेय  
विकुटभिर्यं पंचप्रसुतयाई उवेहेन अव्याजो उप्पमो उप्पमो कुमुद्यो मुद्यमो  
विकुटभिर्यं गीरत्याभो चाव पवित्रिमाभो फलमो भाविमव्यो चाव तोरनति छाई-  
छाता ॥ तासि वं नदायुक्तवरिषीयं वहुमञ्जनदेसमाए एत्व वं पासायवहेसए पन्नतो  
कोप्पमावे अद्वयेय विकुटभिर्यं सो चेव फलमो चाव चीहास्त्रीयं सपरिकारे । एवं  
दमिक्षणपुरतिमेनवि फलार्दं जोवया चतारि अंदायुक्तवरिषीयो उप्पमुक्तमा

नलिणा उप्पला उप्पलुज्जला त चेव पमाण तहेव पासायवडेंसगो तप्पमाणो । एव दक्खिणपच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणाण नवर-भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पमा, सेस त चेव । जवूए ण सुदसणाए उत्तरपुरत्थिमेणं पठम वणसड पण्णास जोयणाइ ओगाहिता एत्थ णं चत्तारि णदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ त०-सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव तह य सिरिपिलया । तं चेव पमाणं तहेव पासायवडेंसगो ॥ जवूए ण सुदसणाए पुरत्थिमिळस्स भवणस्स उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण पासायवडेंसगस्स दाहिणेण एत्थ ण एगे मह कूडे पण्णते अट्ठ जोयणाइ उद्धु उच्चतेण मूले वारस जोयणाइ विक्खभेण मज्जे अट्ठ जोयणाइ आयामविक्खभेण उवरि चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण मूले साइरेगाइ सत्तीस जोयणाइ परिक्खेवेण मज्जे साइरेगाइ पणवीस जोयणाइ परिक्खेवेण उवरि साइरेगाइ वारस जोयणाइ परिक्खेवेण मूले विच्छिन्ने मज्जे सखिते उप्पिं तणुए गोपुच्छसठाणसठिए सब्बजवूणयामए अच्छे जाव पडिरुवे, से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वण-सडेण सब्बओ समता सपरिक्खिते दोण्हवि वण्णओ ॥ तस्स णं कूडस्स उवरि चहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव आसयति० ॥ जंवूए ण सुदसणाए पुरत्थिमिळस्स भवणस्स दाहिणेण दाहिणपुरत्थिमिळस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एत्थ ण एगे मह कूडे पण्णते त चेव पमाण । जंवूए ण सुदसणाए दाहिणिलस्स भवणस्स पुरत्थिमेण दाहिणपुरत्थिमिळस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थ ण एगे मह कूडे पण्णते त चेव पमाण, जवूए ण सु० दाहिणस्स भवणस्स पच्चत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमिळस्स पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण एगे मह कूडे पण्णते त चेव पमाणं, जंवूओ पच्चत्थिमिळस्स भवणस्स दाहिणेण दाहिणपच्चत्थिमिळस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एत्थ ण एगे मह कूडे प० तं चेव पमाण, जवूए० पच्चत्थिमिळस्स भवणस्स उत्तरेण उत्तरपच्चत्थिमिळस्स पासायवडेंसगस्स दाहिणेण एत्थ ण एगे मह कूडे पण्णते त चेव पमाणं, जवूए० उत्तरस्स भवणस्स पच्चत्थिमेण उत्तरपच्चत्थिमिळस्स पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण एगे मह कूडे पण्णते, त चेव पमाण । जवूए० उत्तरभवणस्स पुरत्थिमेण उत्तरपुरत्थिमिळस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थ ण एगे मह कूडे पण्णते, त चेव पमाण । जवू ण सुदसणा अणेहिं वह्रौहिं तिलएहिं लठएहिं जाव रायरुक्खेहिं हिंगुरुक्खेहिं जाव सब्बओ समता सपरिक्खिता । जवूए ण सुदसणाए उवरि वहवे अट्ठटुमगल्गा पण्णता, तजहा—सोत्थियसिरिवच्छ० किणहा चामरज्जया जाव छत्ताहच्छत्ता ॥ जवूए ण सुदसणाए दुवालस णामधेजा पण्णता, तजहा—सुदसणा अमोहा य, सुप्पवुद्धा जसोवरा । विदेहजवू सोमणसा,

गिर्वर्मिया ॥ १ ॥ मुमदा य विमाला य मुदाका मुमनीतिना । मुदेस्त्राए  
ज्ञेय, नामकेवा दुवस्त्र ॥ २ ॥ से केवल्लोर्य भंते । एवं उच्च—र्ग्नूरुर्सणा २ ॥  
गोपमा । अंगूर्य य मुदेस्त्राए ज्ञेयीकादिवै जापादिए वामे देवे महित्तिए जाप  
पठिओवमहित्तिए परिवक्तु, से भै उत्तर बउर्ह सामालिवसाप्रस्तीय जाप ज्ञेयीप्रस्तु  
अंगूर्य मुदेस्त्राए अपादियाए य राक्षाणीए जाप विहर । क्षिति वै भंते । ज्ञापादि  
बस स जाप उमता वत्तव्या द्यवाणीए महित्तिए । अनुत्तर व वै मोममा ।  
ज्ञेयीति ३ तत्त्व उत्तर देसे २ ताहि २ वहने अंगूर्यस्त्रा अंगूर्यांगूर्या विवृ  
क्षुमिया जाप दिरीए अहैव २ उद्योगेमाला २ वित्तुर्ति से देवद्वेष्य गोपमा । एवं  
उच्च—र्ग्नूर्ति १ अनुत्तर व वै मोममा । अंगूर्यस्त्र सापाए वामकेवे पञ्चते  
जाप क्षापि वापि जाप विवै ॥ १५३ ॥ अंगूर्ये वै भंते । तीपे अद् वैदा पमा-  
सिमु वा पमादेवि वा पमालित्तीति वा ॥ अद् सूरिया तर्मितु वा तर्मिति वा तर्मित्तीति  
वा ॥ अद् लक्ष्मता ज्योर्य ज्योर्य वा ज्योर्यिति वा ज्योर्यस्तीति वा ॥ अद् महामहा वृत्त  
वर्तितु वा वर्तिति वा वर्तित्तीति वा ॥ केवल्लाम्बो दारागणक्षेत्रक्षेत्रीभो दोमित्तु वा  
दोमिति वा दोमेत्तीति वा ॥ गोपमा । अंगूर्ये न वीवे हो वैदा पमालित्तु वा १ रे  
सूरिया तर्मितु वा २ अप्पर्य लक्ष्मता ज्योर्य ज्योर्यमु वा ३ अनुत्तर गृहस्त्रे वारे वर्तितु  
वा ४—एवं व समस्तास्त्रे देवीर्य अमु भवे सहस्रार्य । अव य सदा पदावा  
दारागणक्षेत्रेवेदीवै ॥ १ ॥ दोमित्तु वा दोमिति वा दोमेत्तीति वा ॥ १५३ ०  
अंगूर्य जाम रीवं अग्ने जाम रमुरो वै वज्ञाप्यारसेऽप्यथेत्तिए चम्भमो अंगूरा  
संपरित्तिवार्य विहर ॥ अग्ने वै भंते । समुरे क्षिति समचालनमत्तीतिए विसमवह-  
वास्तव्यत्तिए ॥ गोपमा । एमवहवास्तव्यत्तिए जो विसमवहवास्तव्यत्तिए ॥ अग्ने वै  
भंते । समुरे केवल्लम्बे वज्ञाप्यस्तिव्यत्तिए जेवल्लम्बे परिक्षेत्रेवै पञ्चते ॥ गोपमा ।  
अग्ने वै समुरे हो ज्योग्यमुवस्त्राहस्त्रार्य वज्ञाप्यस्तिव्यत्तिए पञ्चते व्येषणस्वसाहस्रार्य  
एमादीहस्त्राहस्त्राइ समग्रहाचातास्त्रिये द्वितीयेश्वर्य परिक्षेत्रेवै पञ्चते । हे वै  
एव्वाए पठमवर्तेव्याए पूरोल व वज्ञाप्यते सम्भमो समंता संपरित्तिक्ते विहर,  
दोमिति वज्ञाप्यता । ता वै पठमवर्त अद्योवर्त उहूँ वैवल्लुक्तविलक्तमेवै  
समजसमुरुस्तिव्यपरिक्षेत्रेवै सेव्व ताहै । एवं वज्ञाप्यते वेद्यपार्य हो ज्योग्यवर्त  
जाप विहर ॥ समस्त वै भंते । समुहस्त्र अद् वारा पञ्चता ॥ गोपमा । अद्यत्ति  
वारा पञ्चता तंत्रा—विवै वेवयते वर्तते वरपराविए ॥ अद् वै वै भंते । अद्य-  
समुहस्त्र विवै वामे वारे पञ्चते ॥ गोपमा । अवन्नमुहस्त्र पुरतिक्षेत्रेवै  
शाश्वत्त्वाङ्गत्ते रीक्षत्ते पुरतिक्षेत्रेवै धीमोदाए महान्नाए चर्पि एवं वै

लवणस्य भमुद्दस्स विजए णामं दारे पणते अट्ट जोयणाइं उद्धृ उच्चतेण चत्तारि  
जोयणाइ विक्खभेण, एव तं चेव नव्व जहा जबुद्दीवस्स विजयसरिसेवि (दारसरि-  
समेयपि) रायहाणी पुरत्थिमेण अण्णमि लवणसमुद्दे ॥ कहि ण भते । लवणसमुद्दे  
वेजयते नाम दारे पणते ? गोयमा ! लवणसमुद्दे दाहिणपेरते धायइसडदीवस्स  
दाहिणद्वस्स उत्तरेण सेस त चेव सब्बं । एव जयंतेवि, णवरि सीयाए महाणइए  
उप्पि भाणियव्वे । एव अपराजिएवि, णवर दिसीभागो भाणियव्वो ॥ लवणस्स णं  
भते । भमुद्दस्स दारस्स य २ एस ण केवइय अग्रहाए अतरे पणते ? गोयमा !—  
‘तिष्णेव भयसहस्सा पंचाणउड भवे सहस्साइ । दो जोयणसय असिया कोस  
दारतरे लवणे ॥ १ ॥’ जाव अवाहाए अतरे पणते । लवणस्स ण पएसा धायइसड  
दीव पुट्टा, तहेव जहा जबुद्दीवे धायइसडेवि सो चेव गमो । लवणे ण भते । समुद्दे  
जीवा उद्दाइत्ता सो चेव विही, एव धायइसडेवि ॥ से केणद्वेण भते । एव बुच्छइ—  
लवणसमुद्दे २ ? गोयमा ! लवणे ण समुद्दे उदगे आविले रह्ले लोणे लिदे खारए कहुए  
अप्पेजे वहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्षियसरीसिवाण नण्णतथ तज्जोणियाण सत्ताण,  
सुहिंए एत्थ लवणाहिवई देवे महिंहिंए पलिओवमटिई, से ण तथ सामाणिय जाव  
लवणसमुद्दस्स सुहिंयाए रायहाणीए अण्णसिं जाव विहरइ, से एएणद्वेण गो० । एव  
बुच्छइ लवणे ण समुद्दे ३, अदुत्तर च ण गो० । लवणसमुद्दे सासए जाव णिच्चे ॥ १५४ ॥  
लवणे ण भते । समुद्दे कड चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्त्वति वा ?  
एव पचण्हवि पुच्छा, गोयमा ! लवणसमुद्दे चत्तारि चदा पभासिंसु वा ३ चत्तारि  
सूरिया तविंसु वा ३ वारसुत्तरं नक्खत्तसय जोग जोएसु वा ३ तिणिण वावण्णा  
महगगहसया चार चरिंसु वा ३ दुणिण सयसहस्सा सत्तडिं च सहस्सा नव य सया  
ताराणणकोडाकोडीण सोभ सोभिंसु वा ३ ॥ १५५ ॥ कम्हा ण भते । लवणसमुद्दे  
चाउद्दमद्दमुद्दिद्दपुणिमासिणीसु अइरेगं २ वहूइ वा हायइ वा ? गोयमा ! जबुद्दीवस्स  
ण दीवस्स चउद्दिसिं वाहिरिलाओ वेइयताओ लवणसमुद्दं पचाणउइ २ जोयणसह-  
स्साइ ओगाहित्ता एत्थ ण चत्तारि महालिंजरसठाणसठिया महइमहालया महापा-  
याला पणता, तजहा—वलयामुद्दे केझए जूवे इसरे, ते ण महापायाला एगमेगं  
जोयणसयसहस्स उव्वेहेण मूले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण मज्जे एगपएसियाए  
सेढीए एगमेग जोयणसयसहस्स विक्खभेण उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइ  
विक्खभेण ॥ तेसि ण महापायालाण कुष्ठा सब्बत्थ समा दसजोयणसयवाहला  
पणता सब्बवइरामया अच्छा जाव पडिल्ला ॥ तत्थ ण वहवे जीवा पोगला य  
अवक्षमति विउक्षमति चयति उवचयति सासया ण ते कुष्ठा दब्बद्दुयाए वण्णपज्ज-

थेहि असासया ॥ तत्त्व वं चत्तारि देवा महिन्द्रिया बाब परिमोषमद्विष्या परिष-  
र्णिति तंज्ञा—जले महाकाळे देवोपाये पर्मजने ॥ तेसि वं महापावाकार्ण लओ  
दिमाणा पक्षाता तंज्ञा—हेट्टिंग तिमागे मजिक्षेपे तिमागे उवरिमे तिमागे ॥ ते  
ज तिमाणा तेतीर्थ ओवणसाहसा तिणि य तेतीर्थ ओवणसर्वं जोवन्दिमार्ण व  
वाहोर्ण । तत्त्व वं जे से हेट्टिंग तिमागे एत्य वं बाठकाओ देविद्वाइ तत्त्व वं जे  
से मजिक्षेपे तिमागे एत्य वं बाठब्बए य आठब्बए य देविद्वाइ, एत्य वं जे से  
उवरिमे तिमागे एत्य वं बाठब्बए देविद्वाइ, अदुतारं वं वं गोवमा । बबपस्मुरे  
मद्व २ देसे ‘बहै चूपामिन्दरसंजगदेत्तिया चूपापाक्षमस्तु पक्षाता ते वं चूपा  
पावाक्ष एगमें ओवणसाहसी उव्वेहेवं सूक्षे एगमें ओवणसर्व दिक्षद्विमिर्ण मज्जे  
फ्लाफ्लिमाए देवीए एगमें ओवणसाहसी दिक्षद्विमिर्ण तिणि मुहम्मूसे एगमें ओव-  
णसर्व दिक्षद्विमिर्ण ॥ तेति वं चूपापावाकार्ण दुड़ा सञ्चल चमा इस जानवारं  
वाहोर्ण पक्षाता सम्बद्धरानया भव्वा जाव परिष्वा । एत्य वं बहै वीक्षा  
पीमसा य बाब असासवार्णि परेत्वं २ अद्वपदिमोवमहिन्द्रिया हेवाहिं परिग-  
दिया ॥ तेति वं चूपापावाकार्ण त्वो तिमाणा य तंज्ञा—हेट्टिंग तिमागे  
मजिक्षेपे तिमागे उवरिमे तिमागे तं वं तिमाणा तिणि तेतीर्थ ओवणसर्व जोव  
जिमार्ण वं वाहोर्ण पक्षाता । तत्त्व वं जे से हेट्टिंग तिमागे एत्य वं बाठकाओ  
मजिक्षेपे तिमागे बाठब्बए बाठब्बए य उवरिमे बाठब्बए, एवामेव सुपुष्पावरेण  
क्षमनस्मुरे चता पायाक्षमस्तु पद्म य मुहम्मीवा पायाक्षमा भवेतीति मक्षामा वं  
देविं वं महापावाकाप चूपापावाक्षमण य हेट्टिममजिक्षिमेन्द्रु तिमागेषु बहै  
ओराक्ष बाबा देवेवंति देवुपिक्षमति एवंति वर्णति क्षेत्रति चूम्हंति चृति रंति  
ती तं मार्ण परेत्वमंति तथा वं से उवए उव्वामिज्जद, तथा वं तेसि महापावाकार्ण  
चूपापावाकाप य हेट्टिममजिक्षिमेन्द्रु तिमागेषु नो बहै ओराक्षम बाब तं तं मार्ण वं  
परिषमंति तथा वं से उवए नो उव्वामिज्जद भवतुति य वं ते चार्य चर्हीरेति  
भवतुति य वं से उवगे उव्वामिज्जद भवतुति वं ते बाबा नो उवीरेति भवतुति  
य वं से उवगे थो उव्वामिज्जद, एवं यस्य थोवमा । लवतस्मुरे चाउरम्मुहिं-  
पुज्जमाडिशीयु अद्वेवं ३ वहूर वा हावइ वा ॥ १५६ ॥ लवये वं भंत । छुरी  
योवमाप सुदुतार्ण बहुतार्ण अद्वेगे २ वहूर वा हावइ वा ॥ गोवमा ! भद्वले वं सम्मुरे  
शीमाए मुदुतार्ण बुधुतार्ण अद्वेगे वहूर वा हावइ वा ॥ से चेत्वेवं भंत । एवं  
वुचइ-लवये वं समुद्र लीसाए मुदुतार्ण बुधुतार्ण अद्वेवं २ वहूर वा हावइ वा ॥  
गोवमा । उद्वुमरेतु पायाक्षेषु वहूर बापूरिण्डु पावाक्षेषु हावइ, से तेजद्वेवं गोवमा

लवणे ण समुद्रे तीसाए मुहुत्ताण दुक्खुत्तो अडरेग वहूइ वा हायइ वा ॥ १५७ ॥ लवणसिहा ण भंते ! केवइय चक्रवालविक्खंभेण केवइयं अडरेग २ वहूइ वा हायइ वा ? गोयमा ! लवणसिहा ण दस जोयणसहस्साइ चक्रवालवि-क्खभेण देसूण अद्वजोयणं अडरेग २ वहूइ वा हायइ वा ॥ लवणस्स ण भते ! समुद्रस्स कइ णागसाहस्सीओ अविभतरिय वेलं धारति ? कइ नागसाहस्सीओ वाहि-रिय वेल धरंति ? कइ नागसाहस्सीओ अग्नोदय धरेंति ?, गोयमा ! लवणसमुद्रस्स वायालीस णागसाहस्सीओ अविभतरिय वेल धारेंति, वावत्तरि णागसाहस्सीओ वाहिरिय वेलं धारेंति, सट्टि णागसाहस्सीओ अग्नोदय धारेंति, एवामेव सपुव्वावरेण एगा णागसयसाहस्सी चोवत्तरि च णागसहस्सा भवतीति मक्खाया ॥ १५८ ॥ कइ ण भते ! वेलधरा णागराया पण्ता ? गोयमा ! चत्तारि वेलधरा णागराया पण्ता, तजहा—गोथूमे सिवए सखे मणोसिलए ॥ एएसि ण भंते ! चउण्ह वेल-धरणागरायाण कइ आवासपब्बया पण्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवासपब्बया पण्ता, तजहा—गोथूमे उदगभासे सखे दगासीमए ॥ कहि ण भते ! गोथूभस्स वेलधरणागरायस्स गोथूमे णाम आवासपब्बए पण्ते ? गोयमा ! जबूदीवे दीवे मदरस्स प० पुरत्थिमेण लवण समुद्र वायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्य णं गोथूभस्स वेलधरणागरायस्स गोथूमे णाम आवासपब्बए पण्ते सत्तरसएक्कीसाइ जोयणसयाइ उङ्ह उच्चतेण चत्तारि तीसे जोयणसए कोस च उव्वेहेण मूले दसवावीसे जोयणसए आयामविक्खमेण मज्जे सत्ततेवीसे जोयणसए उवरि चत्तारि चउवीसे जोयणसए आयामविक्खमेण मूले तिणिं जोयणसहस्साइ दोणिं य वत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण मज्जे दो जोयणसहस्साइ दोणिं य छलसीए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण मूले वित्थिणे मज्जे सखिते उपिं तणुए गोपुच्छसठाणसठिए सब्बकणगामए अच्छे जाव पडिस्वे ॥ से ण एगाए पउमवर-वेइयाए एगेण य वणसडेण सब्बओ समता सपरिक्खत्ते, दोष्हवि वण्णओ ॥ गोथूभस्स ण आवासपब्बयस्स उवरि वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव आस-यति० ॥ तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्य ण एगे मह पासायवडेसए वावढु जोयणद्व च उङ्ह उच्चतेण त चेव पमाण अद्व आयाम-विक्खमेण वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार ॥ से केणट्टेण भते ! एव वुच्छइ—गोथूमे आवासपब्बए २ ? गोयमा ! गोथूमे ण आवासपब्बए तत्य २ देसे २ तहिं २ वहूओ खड्डाखड्डियाओ जाव गोथूभवण्णाइ वहूड उप्पलाड तहेव जाव गोथूमे तत्य देवे

महिनीए जाव पनिमोत्तमद्विष्टपे परिक्षाह, से ठी कृष्ण चतुर्थ सामाजिकमाइस्सीरे जाव गोप्यमस्स आवासपम्बक्षस्स गोप्यमाए रायहावीए जाव निरुद्ध, से तत्त्वद्वेष जाव लिखे ॥ रायहामिपुच्छा गोप्यमा । गोप्यमस्स आवासपम्बक्षस्स पुरतिक्षिमेन तिरियमस्सेवे शीघ्रसुरो शीघ्रतां अर्जमिक्षमस्सुरो तं चेव पमार्थ त्रैव सम्भ ॥ कहि वं मंते । दिक्षास्स देवंभरणागरामस्स द्वयेभासासामे आवासपम्बए पम्बटे । गोप्यमा । अनुदीवे वं चीवे मंदरस्स पम्बक्षस्स द्वयित्वापेण लक्ष्मस्सुरु वामासीरु जोय-वस्त्राइस्सारु जोगाहिता एत्य वं दिक्षास्स देवंभरणागरामस्स द्वयेभासामे आवासपम्बए पम्बटे तं चेव पमार्थ वं गोप्यमस्स अवरि सम्भान्नेभ्यमए अच्छे जाव पदिस्ते जाव व्युत्ते भारियम्बो गोप्यमा । द्वयेभासामे वं आवासपम्बए लक्ष्मस्सुरु अद्युजाविन-मवेते हाँ उम्बवे समंदा ओमासेइ उज्ज्वेन्द्र दावद पमासेइ लिप्तए इत्य देवे महिनीए जाव रायहावी दे इनिक्षणेण लिदिगा द्वयेभासास्स सेवे तं चेव ॥ कहि वं मंते । संखास्स देवंभरणागरामस्स सेवे गामे आवासपम्बए पम्बटे । गोप्यमा । अनुदीवे वं चीवे मंदरस्स पम्बक्षस्स पुरतिक्षिमेन लक्ष्मस्सुरु वामासीरु जोय-वस्त्राइस्सारु जोगाहिता एत्य वं संदरस्स देवंभर देवे जामे आवासपम्बए प तं चेव पमार्थ यवरे सम्भर-वामए अच्छे जाव पदिस्ते । दे नी योगाए फउमधरयेइवाए एसोप व वशसेवेन जाव व्युत्ते व्युत्ते चाराहियाभी जाव व्युत्ते लक्ष्मस्सुरु सेवापमारु संखाक्ष्यारु संखाक्ष्यप्यमारु सेवे एत्य देवे महिनीए जाव रायहावीए पुरतिक्षिमेन संखास्स आवासपम्बक्षस्स संखाक्षीमारु रायहावी तं चेव पमार्थ ॥ कहि वं मंते । मजोसिक्षास्स देवंभरणाग-रामस्स उद्यगसीमारु जामे आवासपम्बए पम्बटो ॥ योप्यमा । अनुदीवे ३ मंदरस्स प उत्तरेण लक्ष्मस्सुरु वामासीरु जोय-वस्त्राइस्सारु जोगाहिता एत्य वं मजोसिक्षास्स देवंभरणागरामस्स उद्यगसीमारु जामे आवासपम्बए पम्बटे तं चेव पमार्थ यवरे सम्भरिद्वामए अच्छे जाव पदिस्ते व्युत्ते गोप्यमा । दग्धसीमारु वं आवासपम्बए सीयादीयोगाणे महाकार्णि दत्य गम्भे द्योए परिहम्माइ दे तेजद्वेष जाव लिखे मजोसिक्षाए एत्य देवे महिनीए जाव से ठी कृष्ण चतुर्थ सामाजिक जाव निरुद्ध ॥ कहि वं मंते । मजोसिक्षास्स देवंभरणागरामस्स उत्तरेण लिरि अर्जमिलये एत्य वं मजोसिक्षिया जामे रायहावी फलता तं चेव पमार्थ जाव मजोसिक्षिये देवे—कर्णेवरा मयक्षाक्षियम्या य देवंभरणायमावामा । अनुदीवंभरराईन पम्बया होति रथयम्य ११। १५९। कहि वं मंते । अनुदीवंभररामायराजाभो फलता ॥ योप्यमा । यत्तारि अनुदीवंभरत्वागरायमायो फलता तंश्चा—कहोइष अमए देवेष्टु अद्यप्यमे प एर्वनि वं

भते ! चउण्हं अणुवेलधरणागरायाण कह आवासपब्बया पन्नता ? गोयमा ! चत्तारि आवासपब्बया पण्णता, तजहा—क्कोडए १ कहमए २ कहलासे ३ अरुणप्पमे ४ ॥ कहि ण भंते ! क्कोडगस्स अणुवेलधरणागरायस्स क्कोडए णाम आवास-पब्बए पण्णते ? गोयमा ! जवुदीवे २ मदरस्स पब्बयस्स उत्तरपुरच्छमेण लवणसमुद्ध चायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्थ ण क्कोडगस्स नागरायस्स क्कोडए णाम आवासपब्बए पण्णते सत्तरस एक्कवीसाइ जोयणसयाइ तं चेव पमाणं ज गोथूमस्स णवरि सब्बरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सिंहासणं सपरिवारं अद्वो से बहूइ उप्पलाइ० क्कोडप्पमाइ सेस त चेव णवरि क्कोडगपब्बयस्स उत्तर-पुरच्छमेण, एव त चेव सब्ब, कहमस्सवि सो चेव गमओ अपरिसेसिओ, णवरि दाहिणपुरच्छमेण आवासो विजुप्पमा रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेण, कहलासेवि एवं चेव, णवरि दाहिणपञ्चत्थिमेणं कहलासावि रायहाणी ताए चेव दिसाए, अरुणप्पमेवि उत्तरपञ्चत्थिमेण रायहाणीवि ताए चेव दिसाए, चत्तारि विगप्पमाणा सब्बरयणामया य ॥ १६० ॥ कहि ण भते ! सुट्टियस्स लवणाहिवइस्स गोयमदीवे णाम दीवे पण्णते ? गोयमा ! जवुदीवे दीवे मदरस्स पब्बयस्स पञ्चत्थिमेणं लवणसमुद्ध वारस-जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्थ ण सुट्टियस्स लवणाहिवइस्स गोयमदीवे० पण्णते, चारसजोयणसहस्साइ आयामविक्खमेण सत्तीस जोयणसहस्साइ नव य अडयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण जवूदीवंतेण अद्वेगूणणउए जोयणाइ चत्ता-लीस पञ्चणउइभागे जोयणस्स ऊसिए जलताओ लवणसमुद्धतेण दो कोसे ऊसिए जलताओ ॥ से ण एगाए पउमवरवेहयाए एगेण य वणसडेण सब्बओ समंता तहेव वण्णओ दोण्हवि । गोयमदीवस्स ण दीवस्स अतो जाव बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहानामए—आलिंग० जाव आसयति० । तस्स ण बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्जदेसभागे एत्थ ण सुट्टियस्स लवणाहिवइस्स एगे मह अझक्कीला-वासे नाम भोमेजविहारे पण्णते वावट्टि जोयणाइ अद्वजोयण उङ्ह उच्चतेण एकतीस जोयणाइ कोस च विक्खमेण अणेगखभसयसचिविट्टे सब्बो भवणवण्णओ भाणियब्बो । अझक्कीलावासस्स ण भोमेजविहारस्स अतो बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव मणीण फासो । तस्स ण बहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स बहुमज्जदेसभाए एत्थ एगा मणिपेडिया पण्णता । सा ण मणिपेडिया दो जोयणाइ आयामविक्खमेण जोयणवाहल्लेण मब्बमणिमया अच्छा जाव पडिरुवा ॥ तीसे ण मणिपेडियाए उवरि एत्थ ण देवमय-पिजे पण्णते वण्णओ ॥ से केणट्टेण भते । एव वुच्छ—गोयमदीवे दीवे २ ? गोयमा ! गोयमदीवे ण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूइ उप्पलाइ जाव गोयमप्पमाइ से एएणट्टेण

गोममा ! जाव दिये । कहि थं भवि । मुद्गिष्ठस्म ममणाहिक्षस्म मुद्गिष्ठा नामे रावहानी  
पश्चाता हं गोममा ! गोममीषत्प फलिथिमेन्त तिरियमसुलेखे जाव अर्णमि ममणसुरे  
बारम ज्येष्ठमहस्माई ओगाहिता एवं तदेव सम्बं घमध्यं जाव मुद्गिष्ठ देवे ॥ १११ ॥  
कहि थं गंते । चंद्रुरीशगार्ण चंद्रार्ण चंद्रुरीशा नामे शीका पञ्चाता हं गोममा !  
चंद्रुरीये २ मंदरस्म पञ्चयस्म पुरकिञ्चमन्त छदणसुरे बारम ज्येष्ठमहस्माई  
ओगाहिता एत्वं एं चंद्रुरीशगार्ण चंद्रार्ण चंद्रुरीशा नामे शीका पञ्चाता चंद्रुरीयेन्त  
ज्येष्ठमहस्माई ज्येष्ठार्ण चंद्रार्ण चंद्रुरीश भासे ज्येष्ठमहस्माई चंद्रुरीयेन्त  
मन्त्रममसुरैतर्थं दो कोसे लक्ष्मिया जर्नामो बारम ज्येष्ठमहस्माई भावामविस्तर-  
मेन्त दुरुतं च चहा गोममीषस्म परिक्षेप्त्रो पउमवर्वेद्या फोर्वे २ वषसंपरि  
दावह्यि वर्षमओ चतुसमरमणिज्ञा भूमिमाणा जाव जोइनिया देवा आसयेति । तेऽपि  
ये चतुरामरमणिये भूमिमाणे पामावद्वेसणा जावद्वि ज्येष्ठार्ण चतुरम्या मविपेति  
याओ हो ज्येष्ठार्ण जाव शीहासुना मररियारा भावियम्बा तदेव अद्वो गोममा !  
चहु च्छालु चुडियालु चहुई उप्पलाई चंद्रम्बामाई चंद्रा पूर्ण देवा महिष्ठिया बार  
पतिज्ञोमद्विया परियसेति ते ते तत्प फोर्वं पतेय चउन्हं सामावियमाहस्तीर्थ  
जाव चंद्रुरीशगार्ण चंद्रार्ण य रावहानीर्थं अभेति च चहुर्व ज्येष्ठियार्ण चंद्रार्ण देवीव  
य भावहर्व जाव चिह्नेति से वर्षद्वेषी गोममा । चंद्रुरीशा जाव दिवा । कहि थं  
भंतु । चंद्रुरीशगार्ण चंद्रार्ण चंद्राओ भास रावहानीमो पञ्चतामो हं गोममा !  
चंद्रुरीशगार्ण पुरकिञ्चमेन्त तिरिये जाव अर्णमि चंद्रुरीये ३ बारग ज्येष्ठमहस्माई  
ओगाहिता तं च च पमार्ण जाव एमहिष्ठिया चहा देवा २ ॥ ११२ ॥ चंद्रुरीये  
मूरार्ण च्छालु च्छालु जामे शीका पञ्चाता हं गोममा ! चंद्रुरीये २ मंदरल  
पञ्चयस्म पवरियमेन्त लाग्नमसुरे बारम ज्येष्ठमहस्माई ओगाहिता तं चेत चवर्त  
आयामविस्तरमेन्त परिक्षेप्त्रो चेत्या चमर्णेऽन्त भूमिमाणा जाव भावयेति । पामावद्वे  
गागार्ण तं च च पमाण मवियेत्या शीहाम्बा मररियारा अद्वा उप्पलाई सूर्यमार्थ  
मूरा पूर्ण दहा जाव रावहानीमो गमार्ण शीहार्ण पवरियमेन्त अर्णमि चंद्रुरीये  
शीप मेग तं चेत जाव सुग दहा ॥ १२ ॥ ३ ॥ चंद्रुरीये भंतु । अभिरामदास  
जार्ण चंद्रार्ण चंद्रुरीशा नामे शीका पञ्चाता हं गोममा ! चंद्रुरीये ३ मंदरस्म पञ्चयस्म  
पुरकिञ्चमेन्त लाग्नमसुरे बारग ज्येष्ठमहस्माई ओगाहिता एवं से अभिरामदास-  
गार्ण चंद्रार्ण चंद्रुरीशा नामे शीका पञ्चाता जहा चंद्रुरीशा चंद्रा तहा भावियम्बा  
सहर्व रावहानीमो अर्णमि लाग मेग तं चेत । एवं अभिरामदासमाने मूरार्ण  
करमसुरे बारग ज्येष्ठमहस्माई न्हेव गमे जाव रावहानीमो ४ ॥ १२ ॥ ते भग-

चाहिरलावणगाण चदाणं चददीवा० पण्णता ? गोयमा ! लवणस्स समुद्रस्स पुरत्थि-  
मिलाओ वेइयंताओ लवणसमुद्र पच्चत्थिमेण वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्थं ण  
चाहिरलावणगाण चदाणं चददीवा नामं दीवा पण्णता धायइसडदीवंतेण अद्देगूणणव-  
इजोयणाइं चत्तालीसु च पच्चनउइभागे जोयणस्स ऊसिया जलताओ लवणसमुद्रतेण  
दो कोसे ऊसिया वारस जोयणसहस्साइ आयामविक्खमेण पउमवरवेइया वणसडा  
वहुसमरमणिजा भूमिभागा मणिपेहिया सीहासणा सपरिवारा सो चेव अट्टो राय-  
हाणीओ सगाणं दीवाणं पुरत्थिमेण तिरियमस० अण्णमि लवणसमुद्रे तहेव सब्ब ।  
कहि ण भते ! चाहिरलावणगाण सूराणं सूरदीवा णाम दीवा पण्णता ? गोयमा !  
लवणसमुद्रपच्चत्थिमिलाओ वेइयताओ लवणसमुद्र पुरत्थिमेण वारस जोयणसहस्साइ  
धायइसडदीवंतेण अद्देगूणणउइ जोयणाइ चत्तालीसु च पच्चनउइभागे जोयणस्स दो  
कोसे ऊसिया सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पच्चत्थिमेण तिरियमस-  
खेजे लवणे चेव वारस जोयण तहेव सब्ब भाणियब्ब ॥ १६३ ॥ कहि ण भते !  
धायइसडदीवगाणं चदाण चददीवा० पण्णता ? गोयमा ! धायइसडस्स दीवस्स  
पुरत्थिमिलाओ वेइयताओ कालोयं ण समुद्र वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्थं  
ण धायइसडदीवाणं चदाण चददीवा णाम दीवा पण्णता, सब्बओ समता दो कोसा  
ऊसिया जलताओ वारस जोयणसहस्साइ तहेव विक्खभपरिक्खेवो भूमिभागो  
पासायवडिसया मणिपेहिया सीहासणा सपरिवारा अट्टो तहेव रायहाणीओ सगाण  
दीवाणं पुरत्थिमेण अण्णमि धायइसडे दीवे सेस त चेव, एव सूरदीवावि, नवर  
धायइसडस्स दीवस्स पच्चत्थिमिलाओ वेइयताओ कालोयं ण समुद्र वारस जोयण०  
तहेव सब्ब जाव रायहाणीओ सूराण दीवाणं पच्चत्थिमेण अण्णमि धायइसडे दीवे  
सब्ब तहेव ॥ १६४ ॥ कहि ण भते ! कालोयगाण चदाण चददीवा णाम दीवा  
पण्णता ? गोयमा ! कालोयसमुद्रस्स पुरच्छिमिलाओ वेइयताओ कालोयण समुद्र पच्च-  
त्थिमेण वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता एत्थं ण कालोयगचदाण चददीवा० सब्बओ  
समता दो कोसा ऊसिया जलताओ सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाण दीव० पुर-  
च्छिमेण अण्णमि कालोयगसमुद्रे वारस जोयणा त चेव सब्ब जाव चदा देवा २ । एव  
सूराणवि, णवर कालोयगपच्चत्थिमिलाओ वेइयताओ कालोयसमुद्रपुरच्छिमेण वारस  
जोयणसहस्साइ ओगाहिता तहेव रायहाणीओ सगाण दीवाणं पच्चत्थिमेण अण्णमि-  
कालोयगसमुद्रे तहेव सब्ब । एव पुक्खरवरगाण चदाण पुक्खरवरस्स दीवस्स पुरत्थि-  
मिलाओ वेडयताओ पुक्खरसमुद्र वारम जोयणसहस्साइ ओगाहिता चददीवा अण्णमि  
पुक्खरवरे दीवे रायहाणीओ तहेव । एव सूराणवि दीवा पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थि-

मिळालो वेदवंताख्ये मुक्तरोर्वै समुद्र वारस योवनसहस्रार्ह ओगाहिता तदेव उर्व  
आब रावहाणीओ रीविळयाप रीवे समुद्रगार्ह उमुरे वेव एगार्ह वर्षिमत्तरपाठे  
सगारे रावहाणीओ रीविळगार्ह रीवेसु समुद्रगार्ह उमुरेसु सरिसुपामप्पु  
॥ १५५ ॥ इमे पामा अमुर्गांत्मा-अमुरीवे लग्ने पामद आमोद मुक्तरे बहुगे ।  
शीर भय इमहृवये चर्वंती अलग्नरे कुडके लग्ने ॥ १ ॥ आमरजन्तव्यभि उप्प-  
रिष्ट व पुहिमि भिरित्यगे । वासहरवहस्ताभो विक्ता वस्ताराम्पिता ॥ २ ॥ पुर  
मैवरमावासा शूदा योवनसहर्वदृष्टा च । एव माविकर्व ॥ १५६ ॥ अहि वै भंत ।  
देवहिमगार्ह चंदार्ह चंदरीवा जासे शीका फलता । गोदमा । देवहीवस्तु वेवेव  
उमुर्द वारस योवनसहस्रार्ह ओगाहिता तेवेव एवेव पुररिष्टमिळालो वेदवंताख्ये  
आब रावहाणीओ सगार्ह शीकाप पुररिष्टमेवं देवहीवं उमुर्द असुकेजार्ह ओग-  
सहस्रार्ह ओगाहिता एव्व वै देवहीवाने चंदार्ह चदमो जासे रावहाणीओ फल-  
दालो सेवं तै वेव देवहीवचहा शीका एवं सूराणवि ववरे पवरिष्टमिळालो वेदवं-  
ताख्यो ववरिष्टमेवं व माविक्ता तंमि आब उमुर्द ॥ अहि वै भंते । देवसमुपार्व  
चंदार्ह चंदरीवा जासे शीका फलता । गोदमा । देवोदमस्तु उमुरसु पुररिष्टमिळालो  
वेदवंताख्यो देवोदर्य समुर्द पवरिष्टमेवं वारस योगनसहस्रार्ह ओगाहिता तेवेव  
एवेवं जाव रावहाणीओ सगार्ह शीकाप पवरिष्टमेवं देवोदर्हं उमुर्द असुकेजार्ह  
योवनसहस्रार्ह ओगाहिता एव्व वै देवोदगाल चंदार्ह चंदालो जासे रावहाणीओ  
पवनताख्यो तै वेव सम्बं एवं सूराणवि ववरि देवोदगसु पवरिष्टमिळालो वेदवंताख्यो  
देवोदगसमुर्द पुररिष्टमेवं वारस योगाहिता रावहाणीओ उगार्ह २  
शीकामं पुररिष्टमेवं देवोदर्हं उमुर्द असुकेजार्ह ओगनसहस्रार्ह ॥ एवं जागे वक्त्वे मूर्धि  
चतुर्भु शीकसुहार्प । अहि वै भंते । सवभूरमणीकार्ह चंदार्ह चंदरीवा जासे शीका  
फलता । गोदमा । सर्वभूरमणस्तु शीकस्तु पुररिष्टमिळालो वेदवंताख्यो सर्वभूरमणे-  
दग समुर्द वारस योवनसहस्रार्ह तदेव रावहाणीओ सगाले २ शीकाने पुररिष्टमेवं  
सर्वभूरमणोदर्हं उमुर्द पुररिष्टमेवं असुकेजार्ह ओवय तै वेव एवं सूराणवि  
सर्वभूरमणसु पवरिष्टमिळालो वेदवंताख्यो रावहाणीओ सगाले २ शीकार्ह पवरिष्ट  
मिळाप सर्वभूरमणोर्हं समुर्द असुका देवेवं तै वन् । अहि वै भंते । सर्वभूरमण-  
समुद्रगार्ह चंदर्लं । योदमा । सर्वभूरमणस्तु उमुरसु पुररिष्टमिळालो वेदवंताख्यो  
सर्वभूरमणं समुर्द पवरिष्टमेवं वारस योवनसहस्रार्ह ओगाहिता देवेवं तै वेव । एवं  
सूराणवि सर्वभूरमणस्तु पवरिष्टमिळालो सर्वभूरमणोद उमुर्द पुररिष्टमेवं वारस  
योगनसहस्रार्ह ओगाहिता रावहाणीवे फाले शीकार्ह पवरिष्टमेवं सर्वभूरमण समुर्द

असखेजाइ जोयणसहस्राइ ओगाहिता एत्य ण सयभुरमण जाव सूरा देवा २  
 ॥ १६७ ॥ अतिथं णं भते ! लवणसमुद्दे वेलधराइ वा णागरायाइ वा खन्नाइ वा अग्धाइ  
 वा सिंहाइ वा विजाईइ वा हासवटीइ वा ? हता अतिथि । जहा ण भते ! लवणसमुद्दे  
 अतिथि वेलधराइ वा णागराया० अग्धा० सिंहा० विजाईइ वा हासवटीइ वा तहा ण  
 वाहिरएसुवि समुद्देसु अतिथि वेलंधराइ वा णागरायाइ वा० अग्धाइ वा सीहाइ वा विजाईइ  
 वा हासवटीइ वा ? णो इणडे समडे ॥ १६८ ॥ लवणे ण भते ! समुद्दे किं ऊसिओ-  
 दगे किं पत्थडोदगे किं खुभियजले किं अक्खुभियजले ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे ऊसि-  
 ओदगे नो पत्थडोदगे खुभियजले नो अक्खुभियजले । जहा ण भते ! लवणे समुद्दे  
 ऊसिओदगे नो पत्थडोदगे खुभियजले नो अक्खुभियजले तहा ण वाहिरगा समुद्दा किं  
 ऊसिओदगा पत्थडोदगा खुभियजला अक्खुभियजला ? गोयमा ! वाहिरगा समुद्दा नो  
 उस्सिओदगा पत्थडोदगा नो खुभियजला अक्खुभियजला पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोल-  
 द्माणा वोसद्माणा समभरघडत्ताए चिढ्डति ॥ अतिथि णं भते ! लवणसमुद्दे वहवे  
 ओराला वलाहगा ससेयंति समुच्छति वा वास वासति वा ? हता अतिथि । जहा ण भते !  
 लवणसमुद्दे वहवे ओराला वलाहगा ससेयति समुच्छति वास वासति वा तहा ण  
 वाहिरएसुवि समुद्देसु वहवे ओराला वलाहगा ससेयति समुच्छति वास वासति ? णो  
 इणडे समडे, से केणडेण भंते ! एव वुच्चइ-वाहिरगा ण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा  
 वोलद्माणा वोसद्माणा समभरघडत्ताए चिढ्डति ? गोयमा ! वाहिरएसु ण समुद्देसु  
 वहवे उदगजोगिया जीवा य पोगला य उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमंति चयति  
 उवचयति, से तेणट्टेण एव वुच्चइ-वाहिरगा समुद्दा पुण्णा पुण्ण० जाव समभरघड-  
 त्ताए चिढ्डति ॥ १६९ ॥ लवणे ण भते ! समुद्दे केवइय उव्वेहपरिवुङ्गीए पण्णते ?  
 गोयमा ! लवणस्स ण समुद्दस्स उभओ पासि पचाणउइ २ पएसे गता पएस उव्वेह-  
 परिवुङ्गीए पण्णते, पचाणउइ २ वालग्गाइ गता वालग्ग उव्वेहपरिवुङ्गीए पण्णते, एव  
 पं० २ लिक्खाओ गता लिक्ख उव्वेहपरि० ज्या० जवमज्ज्ञ० अगुल० विहृत्यि०  
 रयणी० कुन्ठी० धणु० उव्वेहपरिवुङ्गीए प०, गाउय० जोयण० जोयणसय० जोय-  
 णसहस्राइ गता जोयणसहस्रस उव्वेहपरिवुङ्गीए पण्णते ॥ लवणे ण भते ! समुद्दे  
 केवइय उस्सेहपरिवुङ्गीए पण्णते ? गोयमा ! लवणस्स ण समुद्दस्स उभओ पासि पचा-  
 णउइ पएसे गता सोल्सपएसे उस्सेहपरिवुङ्गीए पण्णते, एणेव क्लेण जाव पचाणउइ २  
 जोयणसहस्राइ गता सोल्स जोयणसहस्राइ उस्सेहपरिवुङ्गीए पण्णते ॥ १७० ॥  
 लवणस्स ण भते ! समुद्दस्स केमहालए गोतित्ये पण्णते ? गोयमा ! लवणस्स ण समु-  
 द्दस्स उभओ पासि पचाणउइ २ जोयणसहस्राइ गोतित्य पण्णते ॥ लवणस्स ण भते !

समुखस केमहात्मए पोतित्वविरहिए बोते पन्थते ॥ गोवमा ! महात्मस वं समुखस  
एस जोवधासहसरां घोटित्वविरहिए बोते पन्थते ॥ अवपत्स्य वं भंते । समुखस  
केमहात्मए उदगमाके पन्थते ॥ गोवमा ! एस जोवधासहसरां उदगमाके पन्थते  
॥ १७१ ॥ सबने वं भंते । समुरो दिव्विठि पन्थते ॥ गोवमा ! घोटित्वविरहिए  
जावासंठाशसंठिए तिपिसंपुडांठिए आस्वांकसंठिए वडमिसंठिए वो वक्ष्यामार  
संठाणसंठिए पन्थते ॥ सबने वं भंते । समुरो केवह्य चाहवास्मिक्कमिने ॥ केवह्य  
परिक्केवेण ॥ केवह्य चम्बेण ॥ केवह्य चसेहेण ॥ केवह्य सम्बमोर्व पन्थते ॥  
गोवमा ! लबने वं समुरो दो जोवधासम्पसहसरां चाहवास्मिक्कमिने पन्थरस  
जोवधासम्पसहसरां एकारीह वं सहस्रां सवं वं हुवार्द दिविविसेसुजे परिक्केवेण  
एवं जोवधासहसरां दम्बेह्य सोम्पत जोवधासहसरां उसेहेण सतारस जोवधासहसरां  
सम्बमोर्व पन्थते ॥ १७२ ॥ वद वं भंते । स्वपत्समुरो दो जोवधासम्पसहसरां  
चाहवास्मिक्कमिने पन्थरस जोवधासक्सहसरां एकारीह वं उहसाहं उवं हुवार्द  
दिविविसेसुजे परिक्केवेण एवं जोवधासहसरां उम्बेहेण सोम्पत जोवधासहसरां  
उसेहेण सतारस जोवधासहसरां सम्बमोर्व पन्थते । लभा वं भंते । स्वपत्समुरो  
वंतुरीव १ नो उवीलेह मो सप्पीकेइ नो खेव वं एगोद्वां करेइ ॥ गोवमा ! वंतुरीव  
वं दीने भयोरेवद्व चासेमु अरद्वत्वक्कद्वित्तमरवा चामुवैवा चारणा विजाहए  
समजा चम्पीमे चाक्का सामिक्काओ मलुवा फाइभादा फाइभिक्कीवा पमाइवासंठा  
फाइपयुहोइमाज्जमाक्काव्वोमा मिनमाइसंठावा व्वीक्का भद्या विक्कीदा तेसि वं पवि-  
द्याए बनने समुरो वंतुरीव दीर्व नो उवीठिइ नो उप्पीकेइ नो खेव वं एगोद्वां करेइ,  
गेगासितुरतारताहेषु सक्किक्कासु वेक्कमाओ महिहिम्माओ जाव पक्किमोक्कमद्विक्कमो  
परिक्कद्वारी तासि वं पविहाए सम्पत्समुरो जाव नो खेव वं एगोद्वां करेइ, कुवहिम-  
वंतुसितुरेषु चासहाप्प्यएदु देवा महिहिमा तेसि वं पविहाए देवपत्सर्ववद्व  
चासेमु चुया पम्पमहागा रोहिमस्तुक्काक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कूक्कू  
सक्किक्कासु देक्कमाओ महिहिम्माओ तासि एवि चासहाप्प्यवद्वाहेयम्पम्प्यएषु देवा महिहिमा जाव  
पक्किमोक्कमद्विक्क्या परिक्क चाहाहिमवंतुल्पीमु चासहाप्प्यएषु देवा महिहिमा जाव  
पक्किमोक्कमद्विक्क्या देवासाप्तम्मवासेमु चुया पम्पमहापा गैपाइमास्मीक्करिवा-  
एगु वद्येवाक्कुप्प्यएषु देवा महिहिमा मिसाग्नीसर्वतेमु चासहाप्प्यएगु देवा महि-  
हिमा सम्पाओ एद्वेववाम्पे भाविक्कमाओ पठमाहापितिपितिपितिपितिपितिपितिपितिपितिपिति-  
देवदाव्ये महिहिम्माम्पे तासि पविहाए पुम्पिवेवावरविवेदु चासेनु अरद्वत्वक्क-  
द्वित्तमदेववामुवेवा चारणा विजाहए समजा चम्पीमो जावपा चामिक्काओ मलुवा

पगइ० तेसि पणिहाए लवण०, सीयासीओयगासु सलिलासु देवयाओ महिंह्रिया०, देवकुरुत्तरकुरुसु मण्या पगइभद्गा०, मदरे पब्बए देवयाओ महिंह्रिया०, जंवौए य सुद्दमणाए जवूदीवाहिवर्द्ध अणाठिए णाम देवे महिंह्रिए जाव पलिओवमठिइए परिवसड तस्स पणिहाए लवणसमुद्दे० नो उवीलेइ नो उप्पीलेइ नो चेव ण एकोदग करेइ, अदुत्तरं च ण गोयमा । लोगटिर्द्विं लोगाणुभावे जण्ण लवणसमुद्दे जवुद्दीव दीव नो उवीलेइ नो उप्पीलेइ नो चेव णमेगोदगं करेइ ॥ १७३ ॥ इह मंदरोहेसो समत्तो ॥

लवणसमुद्द धायइसडे नाम दीवे वटे वल्ल्यागारसठाणसठिए सब्बओ समत्ता सपरिक्खित्ताण चिट्ठुइ, धायइसडे ण भंते । दीवे किं समचक्कवालसठिए विसमचक्कवालसठिए ? गोयमा । समचक्कवालसठिए नो विसमचक्कवालसठिए ॥ धायइसडे ण भते । दीवे केवइय चक्कवालविक्खमेण केवइयं परिक्खेवेण पण्णते ? गोयमा । चत्तारि जोयणसयसहस्साडं चक्कवालविक्खमेण एग्यालीस जोयणसय-सहस्साड दमजोयणसहस्साइ पवाएगट्टे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण पण्णते ॥ से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसडेण सब्बओ समता सपरिक्खिते दोण्हवि वण्णओ दीवसमिया परिक्खेवेण ॥ धायइसडस्स ण भंते । दीवस्स कह दारा पण्णता ? गोयमा । चत्तारि दारा पण्णता, त०-विजए वेजयते जयंते अपराजिए ॥ कहि ण भते । धायइसडस्स दीवस्स विजए णाम दारे पण्णते ? गोयमा । धायइ-सडपुरत्थिमपेरते कालोयसमुद्पुरत्थिमद्धस्स पब्बथिमेण सीयाए महाणईए उप्पिं एत्थ ण धायइ० विजए णाम दारे पण्णते त चेव पमाण, रायहाणीओ अण्णमि धायइसडे दीवे, दीवस्स वत्तब्बया भाणियब्बा, एव चत्तारिवि दारा भाणियब्बा ॥ धायइसडस्स ण भते । दीवस्स दारस्स य २ एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा । दस जोयणसयसहस्साइं सत्तावीस च जोयणसहस्साइ सत्तपणतीसे जोयणसए तिजि य कोसे दारस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णते ॥ धायइसडस्स ण भते । दीवस्स पएसा कालोयगं समुद्द पुट्टा ? हता पुट्टा ॥ ते ण भते ! किं धायइ-सडे दीवे कालोए समुद्दे ? ते धायइसडे नो खलु ते कालोयसमुद्दे । एव कालोय-स्सवि । धायइसडहीवे ण भते ! जीवा उद्दाइत्ता २ कालोए समुद्दे पच्चायति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायति अत्थेगइया नो पच्चायति । एव कालोएवि अत्थे० प० अत्थेग-इया णो पच्चायति ॥ से केणद्वेण भते ! एव बुच्छ—धायइसडे दीवे २ ? गोयमा ! धायइसडे ण दीवे तत्थ तत्थ देसे २ तहिं २ वहवे धायइस्कखा धायइवण्णा धायइसडा णिच्च कुसुमिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति, धायइमहाधायइरुक्खेमु सुद्दसण-

पियदर्दसना तुव देवा महिमिया जाव पलिम्बोदमद्विश्वा परिवर्तिति से प्रएत्तेवं  
महुत्तर च नं गोममा । जाव मिने ॥ चामाइस्तेवं च मंते । रीते च च चंदा फ्लास्ति  
वा ॥ ३ ॥ च चरिता तरिष्टु वा ॥ ४ ॥ च च महमाहा चार चरिष्टु वा ॥ ५ ॥ च चमवत्ता  
जोगं जोरेष्टु वा ॥ ६ ॥ च च चारामक्षोदाक्षेत्रीम्भे सोमेष्टु वा ॥ ७ ॥ गोममा । चारस चेता  
फ्लास्तिष्टु वा ॥ ८ ॥ एव—कर्तवीष्टु सप्तिरवित्तो फ्लक्षणा स्या य शिखि छातीता । एव  
च चहस्तर्त्ते छप्यत्ते भावहेष्टो ॥ १ ॥ अद्वेष्ट सदवत्ताहस्ता तिथ्यि चहस्ताई चह  
न चमद्वं । चावहस्तेवं रीते चारामाणक्षेत्रीतीर्थ ॥ २ ॥ सोमेष्टु वा ॥ ३ ॥ १४ ॥  
चावहस्तेवं च रीते च चेते चाम सहुदे चेते चम्बामारसठाणर्त्तेतिए सम्भां समेता  
सेपरिविक्षातार्थं चित्तु, चमेते च सुरो चित्तु चम्बामास्त्राणर्त्तेतिए चित्तम ।  
गोममा । चम्बामास्त्राणर्त्तेतिए चम्बामास्त्राणर्त्तेतिए । चमेते च मंते । सुरो केत्तर्व  
चम्बामास्त्राणर्त्तेतिए चेत्तर्व्य परिक्षेत्रीर्थ फ्लतो ॥ गोममा । व्यहु जेवत्तमस्यस्त्राणर्त्त  
चम्बामास्त्राणर्त्तेतिए एकामठाईत्तोक्षयस्त्राणर्त्तेति । चत्तारि चहस्तर्त्ते च चंतुतरे  
चोद्यप्रधारे चित्तिविदेसाद्विए परिक्षेत्रीर्थ फ्लतो ॥ से च एवाए पठमवरेष्टोए  
एत्तेवं चावहस्तेवं दोष्टवि चम्बां ॥ चामेयस्त्र च मंते । समुद्दस्त च च चारा  
फ्लक्षणा ॥ गोममा । चत्तारि चारा फ्लक्षणा लैव्वहा—चित्तए चेत्तवेते च्यते चम्बां  
चित्तए ॥ चहि च मंते । चमेवस्त्र समुद्दस्त चित्तए चामी दारे फ्लतो ॥ गोममा ।  
चमेते सुरो पुरत्तिमपेरेते पुक्षवरवरीव्युरत्तिमद्वस्त्र पवत्तिमपेरेते सीद्वेवाए  
महावीर्य उप्यि एत्त च चमेवस्त्र समुद्दस्त चित्तए चामी दारे फ्लतो च्येत  
चोद्यवाह ते चेव फ्लार्ज चाव रत्ताणीमो । चहि च मंते । चामेयस्त्र समुद्दस्त  
चेत्तवेते चामी दारे फ्लतो ॥ गोममा । चामेवस्त्र समुद्दस्त चित्तपेरेते पुक्षवरवर  
चीवस्त्र इविक्षमद्वस्त्र उत्तरोर्य एत्त च चमेवस्त्र समुद्दस्त चेत्तवेते चामी दारे फ्लतो ।  
चहि च मंते । चमेवस्त्र समुद्दस्त च्यते चामी दारे फ्लतो ॥ गोममा । चमेवस्त्र समुद्दस्त  
फ्लत्तिमपेरेते पुक्षवरवरीव्युस्त्र फ्लत्तिमद्वस्त्र पुरत्तिमपेरेते सीमाए महावीर्य  
उप्यि च्यते चामी दारे फ्लतो ॥ चहि च मंते । चमेवस्त्र समुद्दस्त चामत्तविए चामी  
दारे फ्लतो ॥ गोममा । चमेवस्त्र समुद्दस्त उत्तरद्वपेरेते पुक्षवरवरीव्युत्तोरवस्त्र दाहिष्टो  
एत्त च चमेवस्त्र समुद्दस्त चामत्तविए चामी दारे से च ते चेव ॥ चमेवस्त्र च  
मंते । समुद्दस्त चारस्त्र य २ एव चेत्तर्व्य २ चामत्तविए अत्तरे फ्लतो ॥ गोममा ।—  
चामीष्टु चप्यद्वस्त्रा चामत्तव चामु चेव सहस्तर्त्ते । छ्व चमा चमाला चारतर शिखि  
केत्ता य ॥ १ ॥ हारस्त्र य २ चामत्तवाए अत्तरे फ्लतो । चमेवस्त्र च मंते ।  
समुद्दस्त पद्मसा पुक्षवरवरीव्य लैव्व एव पुक्षवरवरीव्यस्त्रि चीका चामत्तवा ॥

तहेव भाणियव्व ॥ से केणट्रेण भते ! एव बुच्छ-कालोए समुद्रे २ ? गोयमा ! कालोयस्स ण समुद्रस्म उदए आसले मासले पेसले कालए भासरासिवण्णभे पगईए उदगरसेण पण्णते, कालमहाकाला एत्थ दुवे देवा महिंद्रिया जाव पलिओवमद्विद्विया परिवसति, से तेणट्रेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कालोए ण भते ! समुद्रे कह चदा पभासिंसु वा ३ ? पुच्छा, गोयमा ! कालोए ण समुद्रे वायालीस चदा पभासेंसु वा ३—वायालीस चदा वायालीस च दिणयरा दित्ता ॥ कालोदहिम्मि एए चरंति सब-झलेमागा ॥ १ ॥ णक्खत्ताण सहस्र एग छावत्तर च सयमण्ण । छच्च सया छण्ण-उया महागहा तिण्ण य सहस्रा ॥ २ ॥ अट्टावीस कालोदहिम्मि वारस य सयसह-स्ताड । नव य सया पचासा तारागणकोडिकोहीण ॥ ३ ॥ सोभेंसु वा ३ ॥ १७५ ॥ कालोयं ण समुद्रं पुक्खरवरे णामं दीवे वटे वल्यागारसठाणसठिए सञ्चओ समंता सपरि० तहेव जाव समचक्कवालसठाणसठिए नो विसमचक्कवालसठाणसठिए । पुक्खरवरे ण भते ! दीवे केवइय चक्कवालविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णते ? गोयमा ! सोलस जोयणसयसहस्राइ चक्कवालविक्खभेण—एगा जोयणकोही घाण-उड खलु भवे सयसहस्रा । अउणाणउड अट्ट सया चउणउया य [ परिरथो ] पुक्खरवरस्स ॥ १ ॥ से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगोण य वणसडेण० सपरि० दोण्हवि वण्णओ ॥ पुक्खरवरस्स ण भते ! दीवस्स कह दारा पण्णता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णता, तजहा—विजए वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ कहि ण भते ! पुक्खरवरस्स दीवस्स विजए णाम दारे पण्णते ? गोयमा ! पुक्खरवरदीवपुरच्छिम-पेरंते पुक्खरोदसमुद्रपुरच्छिमद्वस्स पच्छतिथभेण एत्थ णं पुक्खरवरदीवस्स विजए णाम दारे पण्णते त चेव सञ्चं, एवं चत्तारिवि दारा, सीयासीओया णत्थि भाणि-यव्वाओ ॥ पुक्खरवरस्स ण भते ! दीवस्स दारस्स य २ एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा !—अड्याल सयसहस्रा वावीस खलु भवे सहस्राइ । अगुणुत्तरा य चउरो दारंतर पुक्खरवरस्स ॥ १ ॥ पएसा दोण्हवि पुट्ठा, जीवा दोसु भाणियव्वा ॥ से केणट्रेण भते ! एवं बुच्छ-पुक्खरवरदीवे २ ? गो० ! पुक्खरवरे ण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ वहवे पउमरुक्खा पउमवणसडा णिच्च कुसुमिया जाव चिह्नति, पउममहापउमरुक्खा एत्थ ण पउमपुढरीया णाम दुवे देवा महिंद्रिया जाव पलिओवमद्विद्विया परिवसति, से तेणट्रेण गोयमा ! एव बुच्छ-पुक्खरवरदीवे २ जाव निच्चे ॥ पुक्खरवरे ण भते ! दीवे केवइया चदा पभासिंसु वा ३ ? एव पुच्छा,—चोयाल चदसय चउयाल चेव सूरियाण सय । पुक्खरवरदीवसि चरंति एए पभा-सेंता ॥ १ ॥ चत्तारि सहस्राइ वत्तीस चेव होंति णक्खत्ता । छच्च सया वावत्तर

महगाहा वारह सहस्रा ॥ २ ॥ छण्डइ उपसहस्रा वातालीर्थं मवे सहस्रार्थं । वातारि चक्र पुस्पर्यादिरुतारमाणदेविन्नीतं ॥ ३ ॥ सोमेनु वा ३ ॥ पुक्कर वरीवस्य नै वातुमन्त्रेसमाए पृथय नै मातुमातरे नामं पञ्चए पञ्चते वै वस्त्रा-भारसेऽणासंठिए जे नै पुस्पर्कर वीर्णे तुहा विमममाणे ३ विद्वा तंवहा—अभिन्नतपुक्करद्वे च वाहिन्नपुक्करद्वे च य अभिन्नतपुक्करद्वे नै भैते । वक्षये वाहगाल्लेखं परिक्षेपेते पञ्चते ५ गोममा । अष्टु व्येष्वप्यवदहस्तार्थं वाहवल्लिमित्त-भैते—जोदी वामालीसा धीर्थं वोक्षि व सया व्युत्कल्पा । पुक्करवद्वप्परितो एवं च भ्युस्तप्तेत्तस्तु ॥ १ ॥ से केवद्वै भैते । एवं तुच्च-अभिन्नतपुक्करद्वे २ ५ गोममा । अभिन्नतपुक्करद्वे नै मातुमातरेवं पञ्चएवं सञ्चया सर्वता संपरि विद्वो दे एवद्वै गोममा । अभिन्नतपुक्करद्वे ३ अबुतार च नै वाव विद्वे प अभिन्नतपुक्करद्वे नै भैते । केवद्वा वैदा पमालितु वा ३ वा वेव पुच्छम व्यव तारामणदेविन्नीतो ५ गोममा ।—वावतारि च वैदा वावत्तरिमेव विद्वद्वह विद्वा । पुक्करवरीवै वर्तेति एए पमासेता ॥ १ ॥ प विद्वि एमा छत्तीसा उच वाहसा मात्मगार्हं तु । वाहवतार्हं तु वाव शोकार्हं तुवे सहस्रार्थं ॥ ३ ॥ अड्डप्पल सहस्र-हस्ता पातीर्थं व्यु भवे सहस्रार्थं । वोक्षि वय पुक्करद्वे तारामणदेविन्नीते ॥ ३ ॥ प सोमेनु वा ३ ॥ १७६ ॥ प समवसेते नै भैते । केवद्वय आपामिकामित्त-वेवद्वयं परिक्षेपेते पञ्चते ५ गोममा । पञ्चालीर्थं जोवलमयगाहस्तार्थं आपामिक-वर्तेव्य एमा जोवलद्वोदी वाहभिन्नतपुक्करद्वप्परितो दे माविद्वमो जाव वाव नपन्ने ॥ उ केवद्वै भैते । एवं तुच्च-मातुमातरेवं २ ५ गोममा । मातुमन्त्रेवै विद्विहा भ्युस्ता परिक्षेपि तंवहा—अम्ममूमगा अम्ममूमगा अंतर्लौक्या दे वेगद्वृन वोममा । एवं तुच्च-मातुमन्त्रेवै मातुमन्त्रेवै ॥ मातुगायते नै भैते । एवं वैदा व्यासेनु वा ३ ५ वद्वा तवद्वै वा ३ ५ गोममा ।—वातीर्थं वैदालीर्थं वैदालीर्थं व्यव वैदालीर्थं वर्त्तया । उदर्त मलुस्तम्भेव्य वर्तेति एए पमासेता ॥ १ ॥ प एद्वास व सहस्मा उप्यि च भोमा महगार्हं तु । उच वया उच्चउया वाहवता विद्विव व महस्मा ॥ ३ ॥ वाहस्तीर्थ ममाहस्ता वातामीण वाहस्ता भ्युम्भ्येमिति । गत व स्वा वात्ता वातामणदेविन्नीते ॥ ३ ॥ सोमे सोमेनु वा ३ ५ एसा वावत्तीर्थे वात्तामाणेव मनुद्वम्भेमिति । वद्विव तुच वावत्तीर्थ विद्वेन्द्रि मविद्वा अस्तमेज्ञ ॥ १७७ ॥ एवद्वय वावत्तीर्थ वावत्तीर्थ वावत्तीर्थ वावत्तीर्थ वावत्तीर्थ ॥ ३ ॥ विविग्नवावत्तीर्थ एद्वया वाहिवा भ्युम्भ्येवै । वाव वावत्ताम्भ्येमिति वावत्तीर्थ ॥ ३ ॥ विविग्नवावत्तीर्थ एद्वया वाहिवा भ्युम्भ्येवै । जगि वावत्तीर्थ व उपया वावत्तीर्थ ॥ ३ ॥ उपवही विद्वगार्थं वैदाहस्य भ्युम्भ्येमिति । वो वेदा दे

सूरा य होंति एकेकए पिडए ॥ ४ ॥ छावट्टी पिडगाँ नक्खत्ताण तु मणुयलोगमि ।  
 छप्पन्न नक्खत्ता य होंति एकेकए पिडए ॥ ५ ॥ छावट्टी पिडगाँ महागहाण तु  
 मणुयलोगमि । छावत्तर गहसयं च होइ एकेकए पिडए ॥ ६ ॥ चत्तारि य पतीओ  
 चदाइच्चाण मणुयलोगमि । छावट्टिय छावट्टिय होड य एकेक्या पती ॥ ७ ॥ छप्पन्न  
 पतीओ नक्खत्ताण तु मणुयलोगमि । छावट्टी छावट्टी हवइ य एकेक्या पती ॥ ८ ॥  
 छावत्तर गहाण पतिसय होड मणुयलोगमि । छावट्टी छावट्टी य होइ एकेक्या पती ॥ ९ ॥  
 ते मेरु परियडन्ता पयाहिणावत्तमंडला सब्बे । अणवट्टियजोगेहि चदा सूरा गहगणा  
 य ॥ १० ॥ नक्खत्तारगण अवट्टिया मंडला मुणेयव्वा । तेऽविय पयाहिणाव-  
 त्तमेव मेरु अणुचरंति ॥ ११ ॥ रयणियरदिणयराण उह्ये व अहे व सकमो नत्यि ।  
 मडलसकमण पुण अव्विभत्तरवाहिरं तिरिए ॥ १२ ॥ रयणियरदिणयराण नक्ख-  
 त्ताण महगहाण च । चारविसेसेण भवे सुहुदुक्खविही मणुस्साण ॥ १३ ॥ तेसिं  
 पविसत्ताण तावक्खेत तु वह्ये नियमा । तेणेव कमेण पुणो परिहायइ निक्ख-  
 मताण ॥ १४ ॥ तेसिं कल्लुयापुफसठिया होइ तावखेतपहा । अतो य सकुया  
 वाहि वित्थडा चदसूरगणा ॥ १५ ॥ केण वह्यइ चदो परिहाणी केण होइ चंदस्स ।  
 कालो वा जोण्हो वा केणङ्णुभावेण चदस्स ? ॥ १६ ॥ किंह राहुविमाण  
 निच्च चंदेण होइ अविरहिय । चउरगुलमप्पत्त हिड्डा चदस्स तं चरइ ॥ १७ ॥  
 वावट्टिं वावट्टिं दिवसे दिवसे उ सुक्षपक्खस्स । ज परिवह्युड चदो खवेइ त चेव  
 कालेण ॥ १८ ॥ पञ्चरसइभागेण य चद पञ्चरसमेव त वरइ । पञ्चरसइभागेण य  
 पुणोवि त चेव तिकमइ ॥ १९ ॥ एव वह्यइ चदो परिहाणी एव होइ चदस्स ।  
 कालो वा जोण्हा वा तेणङ्णुभावेण चदस्स ॥ २० ॥ अतो मणुस्सखेते हवंति  
 चारोवगा य उववण्णा । फब्बविहा जोइसिया चदा सूरा गहगणा य ॥ २१ ॥ तेण  
 परं जे सेसा चदाइच्चगहतारनक्खत्ता । नत्यि गई नवि चारो अवट्टिया ते मुणेयव्वा  
 ॥ २२ ॥ दो चदा इह दीवे चत्तारि य सागरे लवणतोए । धायइसडे दीवे वारस  
 चदा य सूरा य ॥ २३ ॥ दो दो जबुट्टीवे ससिसूरा दुगुणिया भवे लवणे । लावणिया  
 य तिगुणिया ससिसूरा धायईसडे ॥ २४ ॥ धायइसडप्पभिई उह्यितिगुणिया भवे  
 चदा । आइल्लच्चदसहिया अणतराणतरे खेते ॥ २५ ॥ रिक्खगहतारगग दीवसमुह्ये  
 जहिच्छसे नाउ । तस्स ससीहिं गुणिय रिक्खगहतारगण तु ॥ २६ ॥ चदाओ  
 सूरस्स य सूरा चदस्स अतरं होइ । पञ्चास सहस्साइ तु जोयणाण अणूणाइ ॥ २७ ॥  
 सूरस्स य सूरस्स य ससिणो ससिणो य अतरं होइ । वहियाओ मणुस्सनगस्स  
 जोयणाण सयसहस्स ॥ २८ ॥ सूरंतरिया चदा चदतरिया य दिणयरा दित्ता ।

महराहा वारह सहस्रा ॥ ३ ॥ छण्डश समसहस्रा चतारीसं भवे सहस्रार्थ ।  
 चतारि रथा पुक्ष्यर्तवर] तारामाल्कोदिक्षेवीर्ण ॥ ३ ॥ सोमेषु वा ३ ॥ पुक्ष्यर  
 वरदीषस्य यं बहुमध्यस्त्रेसमाप्त एव ये मालुकुत्तरे नार्म फलाए फलां वहे बल्मा-  
 गारसंठाणसंठिए ये नं पुक्ष्यवर चीर्ण तुष्टा विभयमाणे २ विठ्ठुर तंदहा—  
 अभिमतरपुक्ष्यवरदे च वाहिरपुक्ष्यवरदे च ॥ अभिमतरपुक्ष्यवरदे यं भवते । केवर्णे  
 अहरार्थ्यं परिक्षेवेन पञ्चते । गोकमा । अद्व जोवप्रसवसहस्रार्थ अद्वस्त्रिमित्य-  
 भेदं—कोही वायाधीसा तीर्णे दोषिण य समा अनुशङ्खा । पुक्ष्यवरद्युपरीक्षे  
 एवं च मधुस्त्रेतास्य ॥ १ ॥ से केणदेवीं भवते । एवं तुष्ट-अभिमतरपुक्ष्यवरदे  
 २ ॥ गोकमा । अभिमतरपुक्ष्यवरदे यं मालुकुत्तरेण फलाएवं धम्भां भुमंता दंयी  
 विद्यते से एप्लदेवीं गोकमा । अभिमतरपुक्ष्यवरदे २ अनुत्तर च यं वाह विद्ये च  
 अभिमतरपुक्ष्यवरदे यं भवते । केवश्या चंदा पमार्चिषु वा ३ सा चेद् पुक्ष्य च व  
 वारामाल्कोदिक्षेवीओ । गोकमा ।—चातारि च चंदा वासत्तरिमेव विक्षवरा विद्या ।  
 पुक्ष्यवरदीक्षे चरोति एए पमार्चेता ॥ १ ॥ तिथिं रथा छातीसा छव सहस्रा  
 महमाहार्थं तु । अहरातार्णं तु भवे सोम्यार्थं तुवे सहस्रार्थ ॥ २ ॥ अद्वस्त्र समस-  
 हस्रा चारीसं चाहु भवे सहस्रार्थ । दोषि चब पुक्ष्यवरदे तारामाल्कोदिक्षेवीर्ण  
 ॥ ३ ॥ योमेषु वा ३ ॥ १७६ ॥ उम्यवेतो यं भवते । केवर्ण्य वायामविक्षयित्वं  
 केवर्ण्य परिक्षेवेण पञ्चते । गोकमा । फलाधीसं जोवप्रसवसहस्रार्थ वायामवि-  
 क्षयित्वं एवा जोवप्रसवेवी चावभिमतरपुक्ष्यवरद्युपरीक्षो से मालिक्षो वाह वड  
 वफणो । से केवदेवीं भवते । एवं तुष्ट-मालुकुत्तरेण २ ॥ गोकमा । मालुकुत्तरेण वे  
 तिथिः मधुस्त्रा परिक्षेवी तम्भा—कम्भमूम्या कम्भमभूम्या भैतुरीक्षा ऐ  
 देणदेवीं गोकमा एवं तुष्ट-मालुकुत्तरेण मालुकुत्तरेण ॥ मालुकुत्तरेण यं भवते । अ  
 चंदा पमार्चेता वा ३ ॥ अ सूरा लक्ष्मि वा ३ ॥ गोकमा ।—वतीसं चंदस्यं वतीसं  
 चेद् सूरियाण सन्ते । उम्यले मधुस्त्रस्त्रेव चरोति एए पमार्चेता ॥ १ ॥ एवारस य  
 सहस्रा छप्यि य दोषा महमाहार्णं तु । छव चबा छम्भरमा अहराता वित्तिं च  
 सहस्रा ॥ २ ॥ अद्वदीप्त चम्भहस्रा चतारीसं चहस्र मधुवस्त्रेवित्ति । चता च सवा  
 अल्ला तारामाल्कोदिक्षेवीर्ण ॥ ३ ॥ सोमं योमेषु वा ३ ॥ एवो वारापितो  
 सम्भसमासेव मधुवस्त्रेवित्ति । वहिया पुष वारालो विद्येति मरिया अस्त्रेवा ॥ १ ॥  
 एवारस तारम्भ यं मरियं मालुकुत्तरेण भोवति । चारे कम्भुवपुष्पदीर्णे ओवर्णे वर  
 ॥ २ ॥ रविसरिपद्मकुत्तराता एवारस व्याहिया मधुवस्त्रेव । वेत्ति वामायेवं त  
 वामाया पवत्तेवित्ति ॥ ३ ॥ उम्यद्वारा पित्तपार्थं चैद्वप्रवाणं मधुवस्त्रेवित्ति । वो चंदा वे

सूरा य होंति एकेक्षणे पिढए ॥ ४ ॥ छावद्वी पिढगाङ्डं नक्खत्ताण तु मणुयलोगंमि ।  
 छप्पन्न नक्खत्ता य होंति एकेक्षणे पिढए ॥ ५ ॥ छावद्वी पिढगाइ महागहाणं तु  
 मणुयलोगंमि । छावत्तरं गहसयं च होइ एकेक्षणे पिढए ॥ ६ ॥ चत्तारि य पतीओ  
 चदाइच्चाण मणुयलोगंमि । छावद्वीय छावद्वीय होइ य एकेक्षणा पती ॥ ७ ॥ छप्पन्न  
 पतीओ नक्खत्ताण तु मणुयलोगंमि । छावद्वी छावद्वी हवइ य एकेक्षणा पती ॥ ८ ॥  
 छावत्तर गहाण पंतिसय होइ मणुयलोगंमि । छावद्वी छावद्वी य होइ एकेक्षणा पती ॥ ९ ॥  
 ते मेरु परियउन्ता पयाहिणावत्तमडला सञ्चे । अणवद्वियजोगेहि चदा सूरा गहगणा  
 य ॥ १० ॥ नक्खत्तारगण अवद्विया मडला मुणेयव्वा । तेऽविय पयाहिणाव-  
 त्तमेव मेरु अणुचरंति ॥ ११ ॥ रयणियरदिणयराणं उच्छ्रु व अहे व सकमो नत्यि ।  
 मंडलसकमण पुण अद्वितरवाहिरं तिरिए ॥ १२ ॥ रयणियरदिणयराण नक्ख-  
 त्ताण महगहाण च । चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साण ॥ १३ ॥ तेसिं  
 पविसताणं तावक्खेत्त तु वह्नुए नियमा । तेणेव कमेण पुणो परिहायइ निक्ख-  
 मताण ॥ १४ ॥ तेसिं कल्युयापुण्फसठिया होइ तावखेत्तपहा । अतो य सकुया  
 वाहि वित्थडा चदस्सरगणा ॥ १५ ॥ केणं वह्नुइ चदो परिहाणी केण होइ चदस्स ।  
 कालो वा जोण्हो वा केण्डणुभावेण चदस्स<sup>२</sup> ॥ १६ ॥ किण्ह राहुविमाण  
 निच्च चदेण होइ अविरहिय । चउरंगुलमप्पत्त हिट्टा चदस्स तं चरइ ॥ १७ ॥  
 वावद्विं वावद्विं दिवसे दिवसे उ सुक्षपक्खस्स । ज परिवह्नुइ चदो खवेह त चेव  
 कालेण ॥ १८ ॥ पञ्चरसइभागेण य चद पञ्चरसमेव त वरइ । पञ्चरसइभागेण य  
 पुणोवि त चेव तिक्कमइ ॥ १९ ॥ एव वह्नुइ चदो परिहाणी एव होइ चदस्स ।  
 कालो वा जोण्हा वा तेणणुभावेण चदस्स ॥ २० ॥ अतो मणुस्सखेते हवंति  
 चारोवगा य उववण्णा । पञ्चविहा जोइसिया चदा सूरा गहगणा य ॥ २१ ॥ तेण  
 परं जे सेसा चदाइच्चगहतारनक्खत्ता । नत्यि गई नवि चारो अवद्विया ते मुणेयव्वा  
 ॥ २२ ॥ दो चदा इह दीवे चत्तारि य सागरे लवणतोए । धायइसडे दीवे वारस  
 चदा य सूरा य ॥ २३ ॥ दो दो जवुद्वीवे ससिसूरा दुगुणिया भवे लवणे । लावणिमा  
 य तिगुणिया ससिसूरा धायईसडे ॥ २४ ॥ धायहसडप्पभिई उद्दिष्टतिगुणिया भवे  
 चदा । आइलचदसहिया अणतराणतरे खेते ॥ २५ ॥ रिक्खगगहतारगग दीवसमुद्दे  
 जहिच्छसे नाउ । तस्स ससीहिं गुणिय रिक्खगगहतारगण तु ॥ २६ ॥ चदाओ  
 सूरस्स य सूरा चदस्स अतर होइ । पञ्चास सहस्ताइ तु जोयणाण अण्णाङ्ड ॥ २७ ॥  
 सूरस्स य सूरस्स य ससिणो ससिणो य अतर होइ । वहियाओ मणुस्सनगस्स  
 जोयणाणं सयसहस्स ॥ २८ ॥ सूरतरिया चदा चदतरिया य दिणयरा दित्ता ।

निर्वत्तरभेदागा मुद्देषा भेदेषा च ॥ २९ ॥ अद्वापीर्ण च गहा अद्वापीर्ण च  
शाहि नक्षत्रा । एसासीपरिकारो एतो तारात्र बोध्यमि ॥ ३ ॥ अवग्निकासस्त्र  
यत्र चेत् सदाई पंचस्त्रवर्ण । एगसीपरिकारो तारात्र अद्वेदिकोदीने ॥ ३१ ॥  
शहिमांशो मालुमनपस्य चंद्रस्त्रात्र अद्विता ज्ञेना । चंद्रा अमीस्त्राता चंद्रा पुष  
शाहि पुस्तेवृ ॥ ३२ ॥ १३३ ॥ मालुमतरे च चेते । फलए केवद्व उहू उष-  
त्रेण । केवद्व उष्टेवृ । केवद्व नूडे विक्षमेने । केवद्व नज्जे विक्षमेवृ ।  
केवद्व विहरे विक्षमेने । केवद्व लंतो विरिपरिरणे । केवद्व वाहि विरिपरि  
रणे । केवद्व नज्जे विरिपरिरणे । केवद्व सबरि विरिपरिरणे । पावमा ।  
मालुमतरे च फलए तारात्र एक्षीयद्र ज्ञेनपस्य उहू उष्टेवृ ज्ञातारि थीरे  
ज्ञेनपस्य एव उष्टेवृ नूडे विक्षमेवृ ज्ञेनपस्य विक्षमेवृ मज्जे सत्तेवृ  
ज्ञेनपस्य विक्षमेने उवरि ज्ञातारि एक्षीयद्र ज्ञेनपस्य विक्षमेवृ अंतो गिरि  
परिरणे—एगा ज्ञेनप्रेवी वायाठीर्ण च सदस्त्रस्त्राई । तीर्ण च सदस्त्रस्त्राई दोष्मि  
च अठणापस्य ज्ञेनपस्य विविक्षेताहिए परिक्षेवैन वाहिरगिरिपरिरणे एगा  
ज्ञेनप्रेवी वायाठीर्ण च सदस्त्रस्त्राई तीर्ण च सदस्त्रस्त्राई उत्तनांगोत्तरे ज्ञेनप-  
स्य ए परिक्षेवैन मज्जे विरिपरिरणे एगा ज्ञेनप्रेवी वायाठीर्ण च सदस्त्रस्त्राई  
ज्ञेनप्रेवी च सदस्या अद्वुतेवृ ज्ञेनपस्य परिक्षेवैन उवरि विरिपरिरणे एगा  
ज्ञेनप्रेवी वायाठीर्ण च सदस्त्रस्त्राई तीर्ण च सदस्त्रस्त्राई नष्ट च ज्ञातीर्ण  
ज्ञेनपस्य एव परिक्षेवैन नूडे विक्षिते मज्जे धंकिते उष्टि उष्टुए अंतो सत्ते नज्जे  
उद्दमो वाहि दरिसक्षिये हैरि सम्बिन्दने सीहिक्षिहौ अवद्ववरात्मिकालप्राप्तिए  
सम्बन्धनमासप अच्छे सत्ते चाव पवित्रे उमओ पासि दोहि फलमवरेत्वाहिए  
दोहि च वणस्तेहि सम्बमो उमंता उपरिक्षिते ज्ञानमो दोष्मि ॥ से केवद्वेवृ  
मंतु । एवं तुष्ट—मालुमतरे फलए ३ । गोममा । मालुमतरस्त्र च फलपस्य  
अंतो मलुमा उष्टि मुक्ष्या वाहि रैवा अद्वुतर च च गोकमा । मालुमतरपस्य  
मलुमा च वृद्ध वीक्षर्तु वा वीक्षयेति वा वीक्षस्तर्तु वा वृद्धत्व वारीहि वा  
किक्षाहरोहि वा रेत्वक्षमुण्डा वानि दे रेत्वक्षुर्ग गोममा । अद्वुतर च च जाव  
विवेति ॥ जाव च च मालुमतरे फलए तार्व च च अरिपि स्त्रेपति तुष्ट, जाव च च  
तेहात वा रेत्वक्षमात्र वा तार्व च च अरिपि स्त्रेपति तुष्ट, जाव च च गामाइ वा  
जाव एवहारीद वा तार्व च च अरिपि स्त्रेपति तुष्ट, जाव च च अर्द्वता अद्वापी  
वसदेवा वासुदेवा पवित्राद्वारेवा वारणा विज्ञाहरा समवा उमणीयो शाववा सार्व-

याओ मणुया पगइभद्रगा विणीया ताव च ण अस्सि लोएति पवुच्छ, जाव च ण समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूड वा थोवाइ वा लवाइ वा मुहुत्ताड वा दिवसाइ वा अहोरत्ताइ वा पक्खाइ वा मासाइ वा उद्दू वा अयणाइ वा सवच्छराइ वा जुगाइ वा वाससयाइ वा वाससहस्साइ वा वाससयसहस्साइ वा पुञ्वगाइ वा पुञ्वाइ वा तुडियगाइ वा, एव तुडिए अडडे अववे हुहुए उप्पले पउमे णलिणे अच्छिणिउरे अउए णउए पउए चूलिया जाव सीसपहेलियगेड वा सीसपहेलियाइ वा पलिओवमेड वा सागरोवमेइ वा उवसप्पिणीइ वा ओसप्पिणीइ वा तावं च ण अस्सि लोएति पवुच्छ, जाव च ण वायरे विजुयारे वायरे थणियसद्दे तावं च ण अस्सि०, जाव च ण वहवे ओराला वलाहगा ससेयति समुच्छति वास वासति ताव च ण अस्सि लोए०, जावं च ण वायरे तेउकाए तावं च ण अस्सि लोए०, जावं च ण आगराइ वा णिहीड वा ताव च ण अस्सि लोएति पवुच्छ, जाव च ण अगडाइ वा णईइ वा ताव च ण अस्सि लोए०, जाव च ण चदोवरागाइ वा सूरोवरागाइ वा चदपरिवेसाइ वा सूरपरिवेसाइ वा पडिचदाइ वा पडिसूराइ वा इदधणूड वा उदगमच्छेइ वा कविहसियाइ वा ताव च ण अस्सि लोएति ५०, जाव च ण चदिमसूरियगहणक्खतताराख्वाण अभिगमणनिरगमणवुहिणिवुहिण-अणवहिणियसठाणसठिई आधविज्जइ ताव च ण अस्सि लोएति पवुच्छ ॥ १७८ ॥ अतो ण भते। मणुस्सखेत्तस्स जे चदिमसूरियगहणणक्खतताराख्वा ते ण भन्ते। देवा कि उह्मोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारहिण्या गइरइया गइसमावण्णगा २ गोयमा ! ते ण देवा णो उह्मोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा नो चारहिण्या गइरइया गइसमावण्णगा उह्मुहकल्युयपुफ्पसठाणसठिएहिं जोयणसाहसिएहिं तावखेत्तेहिं साहसियाहिं वाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महया हयनष्टीयवाइयततीलतालतुहिण्य-घणमुइगपहुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा महया २ उक्कटिसीहणायवो-ल्कलकलसदेण विउलाइं भोगभोगाइ भुंजमाणा अच्छयपव्वयराय पयाहिणावत्तमङ्ग-ल्यार मेरु अणुपरियडति ॥ जया ण भते ! तेसि देवाणं इदे चवइ से कहमिदाणिं पकरेति २ गोयमा ! ताहे चत्तारि पच सामाणिया त ठाण उवसपजित्ताण विहरेति जाव तथ अज्जे इदे उववण्णे भवइ ॥ इदढाणे ण भते ! केवइय काल विरहिए उववाएण पण्णते २ गोयमा ! जहण्णेण एक समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ वहिया ण भते ! मणुस्सखेत्तस्स जे चदिमसूरियगहणक्खतताराख्वा ते ण भते ! देवा कि उह्मोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारहिण्या गइरइया

गद्यसमाकल्पणा । गोपमा । ऐ ग देवा जो उद्धारवन्धना नो क्षयोवकल्पणा विमा-  
धोवन्धना नो भारोवकल्पणा भारद्वित्तिवा नो गद्यसमाकल्पणा परिकृ-  
पसंठापसंठिएहि जोयमस्यसाहसिएहि दाक्षत्येतोहि सहस्रसिंहाहि य वाहिएहि  
प्रेतशिखाहि परिशाहि महाया हस्याहरीक्षाहस्य रेत्व दिव्याहि मोगमोगाहि मुंज्माणा  
जाव छहेस्त्वा सीबेस्त्वा मंदस्त्वा भद्रस्त्वा विर्तुतरभेस्त्वा भूत्वा इव ठाल  
द्विका अज्ञोप्सस्मोगाहाहि भेष्टाहि ऐ पछ्ये सम्भारो समंदा भोमासेहि उद्योगेहि  
त्वंहि प्रमासेहि ॥ अमा वं भंते । देविदेवार्थ इव भवद् दे अमिहार्थि पक्षेहि ॥  
गोवमा । जाव जातारि पञ्च सामायिया तं आव उद्दसीपरित्तार्थि विहरुहि जाव रुप्य  
अज्ञो हिव उद्बन्धो महद् । ईशुर्वे वं भंते । भेष्टहर्य असं विहरुहि उद्बन्धाएवं प है  
गोपमा । अहम्नीर्थ एव समर्थ उद्दोषेवं छम्मासा ॥ १७९ ॥ पुक्त्वारकर्त्त्वं दीर्घ  
पुक्त्वारोदे गामं स्मूरे वेष्ट भद्रमायारसंभ्रमसंठिए जाव संपरिमित्तार्थि विद्वा ॥  
पुक्त्वारोदे वं भंते । स्मूरे भेष्टहर्य भद्रवाहसिक्षेभेष्ट भेष्टहर्य परिक्षेभेष्ट पक्षते ॥  
गोपमा । संकेजाहि जोयमस्यसाहस्याहि भद्रवाहसिक्षमिहि संकेजाहि जोयमस्यसाह-  
स्याहि परिक्षेभेष्ट पक्षते ॥ पुक्त्वारोदस्त्वं वं भंते । स्मूरस्य अ वारा पक्षता ॥  
गोपमा । जातारि वारा पक्षता ल्लोव सम्बं पुक्त्वारोदस्त्वमुपुरातिमपेरुते वस्तवर  
वीचुरातिमदस्त्वं पक्षतिमेवं एवं वं पुक्त्वारोदस्त्वं विवेत नामे द्वारे पक्षते एवं  
सेवावहि । वारदारमि संकेजाहि जोयमस्यसाहस्याहि व्यवहार अतरे पक्षते । एसा  
जीवा व ल्लोव । दे भेष्टहेवं भंति । एवं पुक्त्व—पुक्त्वारोदे स्मूरे २ ॥ गोपमा ।  
पुक्त्वारोदस्त्वं वं स्मूरस्य उद्गो अच्छे पक्षे वेष्ट ल्लुए अलिहान्नामे पक्षीए  
उद्गरसेने विरिपरतिरिप्यमा य दो देवा महिन्दिया जाव परिमोक्षमद्विद्या परिकृ-  
पसंठि दे एप्पक्षेवं जाव विवे । पुक्त्वारोदे वं भंते । स्मूरे भेष्टहर्य वंदा पक्षतिष्ठ  
वा ३ । संकेजा वंदा पक्षासेहि वा ३ जाव लारसाक्षेविद्येभीमो धोमेष्टु वा ३ ॥  
पुक्त्वारोदस्त्वं समुद्द वस्तवरे जामं वीवे वेष्ट भद्रमायार जाव विद्वा ल्लोव समस्त-  
वास्तविए भेष्टहर्य भद्रवाहसिक्षमिहि भेष्टहर्य परिक्षेभेष्ट पक्षते ॥ गोपमा । संके-  
जाहि जोयमस्यसाहस्याहि भद्रवाहसिक्षमेवं संकेजाहि जोयमस्यसाहस्याहि परिक्षेभेष्ट  
पक्षते पक्षते फटमवरतेव्याप्तसंविद्वान्नभो वारतरे पएसा जीवा ल्लोव सम्बं ॥ दे  
भेष्टहेवं भंते । एवं पुक्त्व—वस्तवरे वीवे २ ॥ गोपमा । वस्तवरे नै वीवे एवं २  
दे से २ ल्लहि २ वद्वो व्याहारियमो जाव विकर्तियमो व्यव्यमो पोते २  
फटमवरतेव्याप्ति वम वास्योदगपदिव्याप्ते वासाप्तमो ४ लाह नै व्याह-  
वियाप्त जाव विकर्तियमो वहै उपायपक्षया जाव व्याहया सम्भवित्यमा

अन्दा तहेव वरणागणप्यभा य एत्थ दो देवा महिद्विया० परिवसति, से तेणट्रेण  
जाव पिचे । जोइस मब्बं सुरेज्जगेण जाव तारागणसोडिसोटीओ । वरणवरणं दीय  
वाश्छोडे णाम गमुदे रेटे रल्या० जाव चिट्ठ॒, नमनप० विगमनव्वालवि० तहेव  
मब्ब भाणियव्व, विक्ष्मभपरिक्षेवो सगिज्ञाड जोयणमहस्साड दारंतरे च पउमवर०  
वणसुडे पएमा जीवा अट्टो-गोयमा । वारुणोदस्म ण गमुद्दस्म उदए ने जहा नामए-  
चदप्पभाड वा भणिसिलागाड वा सीहूड वा वाश्णीड वा पत्तामवेड वा पुष्फामवेड वा  
चोयामवेड वा फळामवेड वा महुमेरएड वा जगूफल्पुट्टव्वाड वा जाइप्पग्नाड वा  
सज्जूरगारेह वा मुहियासारेड वा रापिसायणाड वा सुपफ्लोयरसेइ वा पभूयसभार-  
सचिया पोममासमयभिमयजोगवत्तिया निश्वहशविसिट्टदिन्सकालोवयारा उपोमम-  
यपत्ता अट्टपिट्टनिट्टिया वणेण उववेया गधेण उववेया रसेण उववेया फासेण  
उववेया, भवे एयाहुवे सिया ?, गोयमा ! नो उणट्टे समट्टे, वारणस्म ण समुद्दस्म  
उदए एत्तो इट्टतरे जाव आसाएण पण्णते तत्थ ण वारुणिवारुणकता दो देवा  
महिद्विया जाव परिवसति, से एएणट्रेण जाव पिचे, मब्ब जोइस सरिजकेण नायव्व  
॥ १०० ॥ वारुणोदण्णं समुद्द खीरवरे णाम दीवे वेटे जाव चिट्ठ॒ सब्ब सुरेज्जग-  
विक्ष्मभे य परिक्षेवो य जाव अट्टो० वहूओ चुहा० वावीओ जाव विलपतियाओ  
खीरोदगपद्धत्याओ पामाड्याओ ४, तासु ण० खुद्वियासु जाव विलपतियासु वहूवे  
उप्पायपव्वयगा भवरयणामया जाव पडिह्वा, पुडरीगमुप्पदता एत्थ दो देवा महि-  
द्विया जाव परिवसति, से एएणट्रेण जाव निचे जोइस सब्बं सखेजं ॥ खीरवरण्ण  
दीव खीरोए नाम समुद्द वेटे वल्यागारसठाणसठिए जाव परिक्ष्मत्ताण चिट्ठ॒,  
समच्कवालसठिए नो विसमच्कवालसठिए, सखेज्ञाड जोयणस० विक्ष्मभपरिक्षेवो  
तहेव सब्ब जाव अट्टो, गोयमा । खीरोयस्स ण समुद्दस्म उदग से जहा णामए—  
सुउसहीमास्पण्णअञ्जुणतस्णसरसपत्तकोमलअत्यिगत्तणगगपोडगवरुच्छुचारिणीण लव-  
गपत्तपुफ्पल्लवक्कोलगासकलहस्तवहुगुच्छगुर्मकलियमलट्टिमहुपउरपिप्पलीफलियव-  
लिवरविवरचारिणीण अपोदगपिइरइसरसभूमिभागणिभयसुहोसियाण सुपोसियसुहा-  
याण रोगपरिवज्जियाण णिस्त्रहयसरीराण कालप्पसविणीण विइयतइयसामप्पसूयाण  
अजनवरगवलवलयजलधरजच्चजणट्टिमरपभूयसमप्पभाण गावीण कुडदोहणाणं  
चद्धत्थीपत्थुयाण रुढाण मधुमासकाले सगहिए होजचाउरकेव होज तासि खीरे  
महुररसविवगच्छवहुदव्वसपउत्ते पत्तेय मदगिगसुरुहिए आउत्ते खडगुडमच्छडि-  
ओववेए रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस उवट्टविए आसायणिजे विस्सायणिजे पीणिजे  
जाव सव्विदियगायपल्हायणिजे वणेण उववेए जाव फासेण उववेए, भवे एयाहुवे

किया ? यो इन्हें समझें, लीरोदस्य नं समुद्रस्य उदय एतो इन्द्रजाए भेद जाव  
आसाएर्य पञ्चो लिमलिमलप्पमा एत्त दो देश महिनिया जाव परिकसीरि  
सं तेणटुप्पे लंबेव्या वैहा जाव तारा प्र १५१ ॥ लीरोव्यास्य समुर्द्धे भवदे जामे  
हीवे व्ये वस्यागारसंठावसंठिए जाव परि लिद्ध, समवाक्यास्य यो लिस्म  
संलेखनिस्वर्णमपरि एत्ता जाव अद्वे गोममा ! भवदे वं हीवे तत्त्व २ वद्युम्भे  
चालुगुण्यो जावीओ जाव भोशगपडिहत्याओ उप्याक्षमव्यक्ता जाव खड्हर  
उभक्षेचयमया अस्य जाव परिस्त्रा फलक्षणयप्पमा एत्त दो देश महिनिया  
वैहा उलेजा ॥ भवदर्ण्य वीवे भवोहे जामे समुद्रे व्ये वस्यागारसंठावसंठिए  
जाव लिद्ध, समवाक्य तहेव जावएसा जीवा न अद्वे गोममा ! भोशगप्पमा नं  
समुद्रस्य उदय उै जहा सेवगगप्पुद्वासाद्विमुद्वालियारसरस्वत्युष्मिद्व-  
च्छेटदमपिद्वितरस्य निद्वगुप्तेवर्तीविषयनिम्बाद्विलिद्वावरतरस्य मुजाक्षरहिम  
हिमतविसगद्विमन्दणीवद्वचाविमुद्वालिक्तव्यासज्जवीविषयस्य अहिम्यं वीक्षयर  
हिर्गममज्जारमद्वापरिकामदरिसभिक्षस्य फ्लपनिम्बमुद्वोबमोगस्य सरवक्त्वमिही दोज  
घोम्बवरस्य भंडए, भवे एयाहवे तिवा ? यो इन्हें समझें, गोममा ! भवोदस्य नं  
समुद्रस्य एतो इन्द्रजाए जाव आसाएर्य प लंबासुर्णता एत्त दो देश महिनिया जाव  
परिकसीरि देवं तं भेद जाव तारागालोदिकोदीव्यो प भवोदस्य समुर्द्धे भेदवरे  
जामे वीवे व्ये वस्यागार जाव लिद्ध तहेव जाव अद्वे दोजवरे नं हीवे तत्त्व ३  
देवे २ लही २ युद्ध जावीओ जाव दोजेवगपडिहत्याओ उप्याक्षमव्यक्ता उभक्षे-  
च्छियागमा जाव परिस्त्रा गुप्तममहप्पया य एत्त दो देश महिनिया जाव परिव-  
संठि स एप्प सम्बं ज्ञोदस तं भेद जाव तारा ॥ योम्बवरस्य वीवे योसोहे  
जामे समुद्रे वीवे वस्या जाव सदेवावै जोवनसक्ताद्वाई परिक्षेवेव जाव अद्वे  
गोममा ! योद्वेदस्य नं समुद्रस्य उदय उै जहा आसुलमाम्पमस्त्वासंतुनिद्व  
सुद्वमासम्भूमिमागे तुद्विष्ये घरद्वम्भूमिसिद्वनिम्बाद्वयाजीवामीलमुक्तसुद्वत्तवित्त-  
परिक्षमत्राणुपात्तिमुद्वित्तुद्वाल दुवादावै लक्षणतत्त्वदेवविजियावै वाक्यवरिवद्विवावै  
निम्मायमुरागावै रुद्वर्य परिव्ययउपीथपोरम्पुरुस्याप्यमद्वरस्पुण्डविरामावै उदय  
लिद्वविवावै सीषपरिष्यातिवावै अभिगद्वमगावै अपातिवावै लिमायपित्त्येविक-  
वानिगावै अवलीवमूलावै वेठिपरिमात्रियावै तुगक्षवरहपिमावै दण्डावै जाव  
पोटियावै वल्लवावरजावन्तपरिगातिक्षतावै दोक्षत्वे होजा वत्यपीर्पै जाव  
ज्ञावगमुवागिए अद्विषयत्वमद्वुए वस्योपिए तहेव भवे पक्षाव्येत्तिवा ? वी इन्हें  
रामझे, दोद्वेदस्य नं समुद्रस्य उदय एतो इन्द्रजाए भेद जाव आसाएर्य प

पुण्णभद्रमाणिभद्रा य (पुण्णपुण्णभद्रा) इत्थ दुवे देवा जाव परिवसति, सेस तहेव, जोडस सखेज चदा० ॥ १८२ ॥ खोदोदण्ण समुद्र णदीसरवरे णाम दीवे वटे वलयागारसठिए तहेव जाव परिक्खेवो । पउमवर० वणसडपरि० दारा दारतरप्पएसे जीवा तहेव ॥ से केणटेण भंते ! एव चुच्छइ-नंदीसरवरदीवे २<sup>२</sup> गोयमा ! नदीस-रवरदीवे २ तत्थ २ देसे २ तहिं ३ वहूओ खुडा० वावीओ जाव विलपंतियाओ खोदोदगपटिहत्याओ० उप्पायपञ्चयगा सञ्चवडरामया अच्छा जाव पडिस्वा ॥ अदु-त्तर च ण गोयमा ! णदीसरवरदीवचक्कवालविक्खभवहुमज्जदेसभागे एत्य ण चउ-दिसि चत्तारि अजणगपञ्चया पण्णता, ते ण अजणगपञ्चया चउरासीडजोयण-सहस्साड उझू उच्चतेण एगमेग जोयणसहस्स उब्बेहेण मूळे साइरेगाड दस जोयण-सहस्साड धरणियले दस जोयणमहस्साड आयामविक्खभेण तयोडण्ठंतर च ण मायाए २ पएसपरिहाणीए परिहायमाणा २ उवरि० एगमेग जोयणसहस्स आयामविक्खभेण मूळे एक्तीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए किञ्चिविसेसाहिया परिक्खेवेण धरणियले एक्तीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए देसूणे परिक्खेवेण सिद्धरतले तिणिण जोयणसहस्साड एगं च वावटु जोयणसय किञ्चिविसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णता मूळे विच्छिण्णा मज्जे सखिता उपिंप तणुया गोपुच्छ-सठाणसठिया सञ्चवजणामया अच्छा जाव पत्तेय २ पउमवरवेइयापरि० पत्तेय २ वणसडपरिक्खता वण्णओ ॥ तेसि ण अजणगपञ्चयाण उवरि० पत्तेय २ वहुस-मरमणिज्जो भूमिभागो पण्णतो, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेइ वा जाव विहरति ॥ तत्थ ण जे से पुरच्छिमिले अजणगपञ्चए तस्स ण चउदिसि चत्तारि णदाओ पुक्ख-रिणीओ पण्णत्ताओ, तजहा—णदुत्तरा य णदा आणदा णदिवद्धणा । (नदिसेणा अमोघा य गोथूमा य सुदसणा) ताओ ण णदापुक्खरिणीओ अच्छाओ सणहाओ० पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइया० पत्तेय पत्तेय वणसडपरिक्खता० तत्थ तत्थ जाव सोवा-णपडिह्वगा तोरणा ॥ तासि ण पुक्खरिणीण वहुमज्जदेसभाए पत्तेय पत्तेय दहि-सुहपञ्चया चउसट्टु जोयणसहस्साइ उझू उच्चतेण एग जोयणसहस्स उब्बेहेण सञ्चवत्थसमा पल्ल्यासठाणसठिया दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण एक्तीस जोयण-सहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेण पण्णता सञ्चवरयणामया अच्छा जाव पडिस्वा, तहा पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइया० वणसडवण्णओ वहुसम० जाव आसयति सयति० । तत्थ ण जे से दक्खिणिले अजणगपञ्चए तस्स ण चउदिसि चत्तारि णदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तजहा—भद्रा य विसाला य कुमुया पुढरीगिणी, (नन्दु-त्तरा य नदा य आनन्दा नन्दिवहृणा) त चेव दहिसुहा पञ्चया त चेव पमाण जाव

मिहरिं ॥ तत्त्व एं चे से पवतिलिमिते अंबलगपत्त्वए तस्स एं चदरिंचि चतारि नैदा  
पुक्षयरिणीओ पन्धातामो तंजहा—अंरिंसेगा अमोहा य गोष्ट्मा य मुद्रसजा (भया  
य विद्वालम व दुमुका फुंडीरिणी) तं चेत् सर्वं भाष्यिक्ष्वं ॥ तत्त्व एं चे से उतारिं  
अंबलगपत्त्वए तस्स एं चदरिंचि चतारि अंदापुक्षयरिणीओ प तंजहा—विद्वा  
वेजयेती य जर्यती अपराजिया तदेव इतिमुहाम्ब्लया तदेव चाव वयवंडा वदु  
चाव विहरिं । व्युतारं च नं गोदमा ! नैदीवत्तरस्तु य रीक्ष्तु वद्वालरिक्ष्वं-  
मस्त वदुमज्जारेसमाए चठम्बु विरिंसादु चतारि रद्वरयपत्त्वया प तं०—उतापुर  
विलिमिते रद्वरगपत्त्वए वाहिणपुरतिलिमिते रद्वरयपत्त्वए वाहिणपत्तिलिमिते रद्वर  
गपत्त्वए उतापत्तिलिमिते रद्वरगपत्त्वयु, ते चं रद्वरगपत्त्वया इत्येक्ष्यसदयाद् चं०  
उत्तरोर्ध्वं इसुगाडेयसयार्थं दम्भेत्रे उम्भरत्यसमा झाइरेठाणसंडिना वस्त्रोपत्त्वस-  
इत्याद् विलिमेती एहातीसं च्येयसाइत्याद् छवेवीसे ज्ञोम्यसए परिष्वेतेन  
सम्भरयणायया अत्यध चाव पवित्र्या । तत्त्व एं चे से उतापुरविलिमिते रद्वराक-  
म्ब्लए तस्स एं चदरिंचिमीशापत्त्व वेलिंदस्त देवरम्बो चउम्भमगमहिसीर्धं अंगुरीम-  
प्यमाणमेतामो चतारि रामहाणीओ प तं०—वेदोदह अंदा उतापुर देवदुरा  
कम्हाए कम्हराईए कम्माए कम्मरकियवाए । तत्त्व एं चे से वाहिणपत्तिलिमिते रद्वर  
गपत्त्वए तस्स एं चदरिंचि सहरस वेलिंदस्त देवरम्बो चउम्भमगमहिसीर्धं अंगुरीम-  
प्यमाणमेतामो चतारि रामहाणीओ प तं०—द्युमणा लोम्यसा विलिमानी मणोरमा  
पउमाए विवाए सर्वै अंगै । तत्त्व एं चे से वाहिणपत्तिलिमिते रद्वरगपत्त्वए तस्स  
एं चदरिंचि छद्वस्त वेलिंदस्त देवरम्बो चउम्भमगमहिसीर्धं अंगुरीम-  
प्यमाणमेतामो चतारि रामहाणीओ प तं०—मूळा भूवविसा गोष्ट्मा मुर्दछाया अम्भाए अम्भाए  
नवमिताए रोहिणीए । तत्त्व एं चे से उतापत्तिलिमिते रद्वरगपत्त्वए तस्स एं चदरि  
विमीशापत्त्व चउम्भमगमहिसीर्धं अंगुरीम-प्यमाणमेतामो चतारि रामहाणीओ प  
तं०—रद्वरा रद्वरोवया सम्भरयणा रद्वरसञ्चया कम्हए वस्तुमिताए वस्तुमिताए  
वद्वालसाहित्याहा प तत्त्व दुर्वे वेदा महिंहुया चाव पवित्र्येक्ष्यमहिंहुया परिष्वति  
से एण्णगौणं गोदमा । चाव विले जोइसं सोइं ॥ १४३ ॥ अंदीसरवरम्बं एं०  
नैदीसरोदे चासं स्मृते वेदे कल्याणगारझठाणसंडिए चाव सम्म तदेव म्भुद्ये जो  
जोइसरस्तु चाव सुम्भसोमन्मस्तमहा एत्य वो वेदा महिंहुया चाव परिष्वति से०  
तदेव चाव तारम्बं ॥ १४४ ॥ अंदीसरोद एं स्मृते वद्वे नामं एं० वेदे वल्लम्भागार  
चाव समरिंचित्तार्णं विहृ । अस्ते नं भेटे । एं० विं समभद्रालसंडिए विस-  
मन्वद्वालसंडिए । गोदमा । समभद्रालसंडिए नो विसमभद्रालसंडिए, वेवत्ते

चण्डवालविं २ गोयमा । सखेजाइ जोयणसयमहस्साइ चण्डवालविक्षभेण सखेजाइ जोयणसयमहस्साइ परिक्षेवेण पण्णते, पउमवर० वणसउदाग दारतरा य तहेव नखेजाइ जोयणमयसहस्साइ दारतर जाव अट्रो, वावीओ० सोदोदगपडिहत्थाओ उप्पायपव्ययगा नव्ववडरामया अन्धा जाव पडिस्वा, अमोगवीयमोगा य एत्य दुवे देवा महिद्विया जाव परिवस्ति, से तेण० जाव सखेज नव्व ॥ अरुणण्ण दीव अरुणोदे णाम नमुदे तस्यवि तहेव परिक्षेवो अट्रो सोदोदगे णवर सुभद्रमुण-भद्रा एत्य दो देवा महिद्विया सेस तहेव ॥ अरुणोदग णं समुद्र अरुणवरे णाम दीवे वटे वल्यागारसठाण० तहेव सखेजग नव्व जाव अट्रो० सोदोदगपडिहत्थाओ उप्पायपव्ययगा नव्ववडरामया अन्धा जाव पडिस्वा, अरुणवरभद्रअरुणवरमहाभद्रा एत्य दो देवा महिद्विया० । एव अरुणवरोदेवि नमुदे जाव अरुणवरअरुणमहावरा य एत्य दो देवा नेस तहेव ॥ अरुणवरोदण्ण नमुद्र अरुणवरावभाने णाम दीवे वटे जाव अरुणवरावभासमहारुणवरावभासमहाभद्रा एत्य दो देवा महिद्विया० । एव अरुणवरावभासे नमुदे णवरि अरुणवरावभासवरारुणवरावभासमहावरा एत्य दो देवा महिद्विया० ॥ कुडले दीवे कुडलभद्रकुडलमहाभद्रा एत्य दो देवा महिद्विया०, कुडलोदे समुद्रे चक्षुसुभचक्षुकता एत्य दो देवा म० । कुडलवरे दीवे कुडलव-रभद्रकुडलवरमहाभद्रा एत्य दो देवा महिद्विया०, कुडलवरोदे समुद्रे कुडलवर-[वर]कुडलवरमहावरा एत्य दो देवा म० ॥ कुडलवरावभासे दीवे कुडलवराव-भासमहद्रकुडलवरावभासमहाभद्रा एत्य दो देवा० ॥ कुडलवरोभासोदे समुद्रे कुडल-वरोभासवरकुडलवरोभासमहावरा एत्य दो देवा म० जाव पलिओवमटिड्या परि-वस्ति० ॥ कुडलवरोभासोद ण समुद्र स्यगे णाम दीवे वटे वल्या० जाव चिट्ठ, कि समचक्ष० विसमचक्षवाल० २ गोयमा । समचक्षवाल० नो विसमचक्षवालसठिए, केवइय चक्षवाल० पण्णते० सव्वट्टमणोरमा एत्य दो देवा सेस तहेव । स्यगोदे नाम नमुदे जहा सोदोदे समुद्रे सखेजाइ जोयणसयसहस्साइ चक्षवालविं ० सखेजाइ जोयणमयसहस्साइ परिक्षेवेण दारा दारंतरपि सखेजाइ जोइसपि सव्व सखेज भाणियव्व, अट्रोवि जहेव खोदोदस्स नवरि सुमणमोमणसा एत्य दो देवा महिद्विया तहेव स्यगाओ आठत्त असखेज विक्खभो परिक्षेवो दारा दारंतर च जोइस च सव्व असखेज भाणियव्व । स्यगोदण्ण समुद्र स्यगवरे ण दीवे वटे० स्यगवरभद्रस्य-गवरमहाभद्रा एत्य दो देवा० स्यगवरोदे० स० स्यगवरस्यगवरमहावरा एत्य दो देवा महिद्विया० । स्यगवरावभासे दीवे स्यगवरावभासभद्रस्यगवरावभासमहाभद्रा एत्य दो देवा महिद्विया० । स्यगवरावभासे समुद्रे स्यगवरावभासवरस्यगवरावभासमहावरा

एतत् ॥ हारहीवि हारमहारमहामहा एतत् । हारसुरो हारपरदालरमहावरा  
एतत् दो देवा महित्तिवा । हारवरोदे दीने हारपरमहारपरमहामहा एतत् दो देवा  
महित्तिवा । हारपरोदे समुद्रे हारपरदालरमहामहा एतत् । हारपरामासे दीने हार  
वरामासमहारपरामासमहामहा एतत् । हारपरामासोदे समुद्रे हारपरामास-  
परारपरामासमहामहा एतत् । एवं सम्बेदि त्रिपातावारा भेदम्भा जाव सूखये  
भावोदे समुद्रे, दीक्षेत्र माहामा चरनामा होति उरहीतु, जाव पश्चिममार्णे  
बोधरात्यु सर्वभूरमण्डलेत्तु जावीत्ते बोधेष्टपश्चिमत्पात्रे पञ्चयगा य सम्भ-  
परामया । देवदीने दीने देवमहेवमहामहा एतत् दो देवा महित्तिवा देवोदे  
समुद्रे देवमहेवमहावरा एतत् जाव सर्वभूरमण्डले दीने सर्वभूरमण्डलसम्भूरमण्डल-  
महा एतत् दो देवा महित्तिवा । सर्वभूरमण्डले दीने सर्वभूरमण्डलोदे मार्ण  
समुद्रे दो वक्ष्या जाव असुक्षेजाव बोधासक्षसूक्षर्णे परिक्षेत्रेण जाव भट्टे  
गोमया । सर्वभूरमण्डले वदप अच्छे फले अचे तत्त्वाए क्षितिवन्ध्यामे पर्वत्ते  
उदगरसेवं पञ्चते सर्वभूरमण्डलसम्भूरमण्डलमहावरा एतत् दो देवा महित्तिवा सेव  
तत्त्वाए जाव असुक्षेजावो तारागामोक्षित्तिवन्ध्यामे सेवेत्तु वा ॥ ५ १८५ ॥  
क्षेवम्भा वं भर्ति ! वंतुत्तिवा दीवा जामकेवेत्ति पञ्चता ! गोमया ! असुक्षेजाव वैतु-  
हीना ॥ नामभेदेत्ति पञ्चता क्षेवम्भा वं भर्ति ! सर्वगस्त्वाहा पञ्चता ! गोमया !  
असुक्षेजाव सम्भवस्त्वाहा नामभेदेत्ति पञ्चता एवं जाव असुक्षेजाव  
घृत्तिवा जामकेवेत्ति । एवं देवे दीवे पञ्चते एवं देवोदे समुद्रे पञ्चते एवं जावे  
अच्छे भूपे जाव एवे सर्वभूरमण्डले दीवे एवे सर्वभूरमण्डलसमुद्रे जामकेवेत्ति पञ्चते  
॥ १८६ ॥ सम्भवस्त वं भर्ति ! समुद्रस्त वदप क्षेवित्तप जासाएवं पञ्चते ॥ गोमया !  
सम्भवस्त उदप आवित्ते रहके सिंदे अच्छे तत्त्वाए वृष्ट्वा दुप्पत्तरपत्तिविषय-  
पञ्चुपक्षिप्तसीक्षित्तावं गत्तप्त तत्त्वोक्षित्तावं सत्तावं ॥ क्षाढ्येवम्भस वं भर्ति ! समुद्रस्त  
उदप क्षेवित्तप जासाएवं पञ्चते ॥ गोमया ! असुक्षे फेसके मासके असुक्षे उदप जासाए-  
क्षित्तामे फात्तीए उदमरसेवं पञ्चते ॥ पुक्षवरोहत्तु वं भर्ति ! समुद्रस्त उदप  
क्षेवित्तप जा पञ्चते ॥ गोमया ! अच्छे अचे तत्त्वाए जाक्षित्ताम्भामे पर्वत्ते उदगरत्ते  
पञ्चते ॥ चाल्लोवस्त वं भर्ति ॥ ६ गोमया ! से ज्ञाव जामए—जातासैद्धं वा जोमा-  
घृत्तप वा त्वंभूरसाएद वा मुरियासारेद वा त्वंभूरस्त्वोक्तरसैद वा भेरएद वा जाक्षित्ताम-  
गेह वा चंदप्पमह वा भणक्षित्ताव वा सीत्तृ वा चारनीद वा अनुष्ठित्तपरिक्षित्तिवार  
वा अनुप्तक्षमलिनाद वा पञ्चम्भा उडोसुमध्यता क्षम्भेत्त उदवेया जाव मर्वे एवाव्ये  
क्षित्ता ॥ यो इष्ट्वै समद्दु, योवमा ! वास्त्वोरप ॥ इत्या उक्ताराय वेद जाव जावावं

प० । खीरोदस्म ण भते ।० उदाए केरिमए आसाएण पण्णते ? गोयमा । से जहा णामए—रन्नो चाउरेतचक्कवटिस्स चाउरधे गोखीरे पयत्तमदगिमुकढिए आउत्तरखडमच्छडिओववेए वण्णेण उववेए जाव फासेण उववेए, भवे एयाहवे मिया ?, णो इणट्टे समट्टे, गोयमा । खीरोयस्स० एतो इट्ट जाव आमाएण पण्णते । घओदस्स ण० से जहा णामए-मारइयस्म गोघयवरस्म मडे सलडकणियारपुप्फ-वण्णामे सुरुद्वियउदारसज्जवीसदिए वण्णेण उववेए जाव फासेण उववेए, भवे एयाहवे सिया ?, णो इणट्टे समट्टे, इतो इट्टयरा०, खोदोदस्स० से जहा णामए-उच्छृण जच्चपुडगाण हरियालपिंडराण भेरुद्वच्छणाण वा कालपोराणं तिभागनिव्वा-डियवाडगाण वलवगणरजतपरिगालियमित्ताण जे य रसे होज्जा वत्थपरिपूए चाउ-जायगलुवासिए अहियपत्थे लहुए वण्णेण उववेए जाव भवेयाहवे सिया ?, नो इणट्टे समट्टे, एतो इट्टयरा०, एव सेसगाणवि समुद्धाणं भेदो जाव सयभुरमणस्स, णवरि अच्छे जच्चे पत्थे जहा पुक्खरोदस्स ॥ कह ण भते ! समुद्धा पत्तेगरसा पण्णता ? गोयमा । चत्तारि समुद्धा पत्तेगरसा पण्णता, तजहा—लवणे वास्णोदे खीरोडे घओडे ॥ कह ण भते ! समुद्धा पगईए उदगरसेण पण्णता ? गोयमा । तओ समुद्धा पगईए उदगरसेण पण्णता, तजहा—कालोदे पुक्खरोदे सयभुरमणे, अवसेमा समुद्धा उस्तण्ण खोयरसा प० समणाउसो ! ॥ १८७ ॥ कह ण भते ! समुद्धा वहुमच्छकच्छभाइणा पण्णता ? गोयमा । तओ समुद्धा वहुमच्छकच्छभाइणा पण्णता, तजहा—लवणे कालोदे सयभुरमणे, अवसेसा समुद्धा अप्पमच्छकच्छभाइणा पण्णता समणाउसो ! ॥ लवणे ण भते ! समुद्धे कह मच्छजाइकुलकोडिजोणीपमुह-सयसहस्सा पण्णता ? गोयमा । सत्त मच्छजाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णता ॥ कालोदे ण भते ! समुद्धे कह मच्छजाइ० पण्णता ? गोयमा । नव मच्छ-जाइकुलकोडीजोणी० ॥ सयभुरमणे ण भते ! समुद्धे० ? गो०। अद्वतेरस मच्छजाइकुल-कोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णता ॥ लवणे ण भते ! समुद्धे मच्छाण केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गो०। जहणेण अगुलस्स असखेजइभाग उक्षोसेण पच-जोयणसयाड ॥ एव कालोदे उ० सत्त जोयणसयाइ ॥ सयभुरमणे जहणेण अगुलस्स असखेजड० उक्षोसेण दस जोयणसयाइ ॥ १८८ ॥ केवइया ण भते ! दीवसमुद्धा नामधेजेहिं पण्णता ? गोयमा । जावइया लोगे सुभा णामा सुभा वण्णा जाव सुभा फासा एवइया दीवसमुद्धा नामधेजेहिं पण्णता ॥ केवइया ण भते ! दीवसमुद्धा उद्वारसमएण पण्णता ? गोयमा । जावइया अहूइज्जाण सागरोवमाण उद्वारसमया एवइया दीवसमुद्धा उद्वारसमएण पञ्चता ॥ १८९ ॥ दीवसमुद्धा ण भते ! किं

पुडिपरिणामा आउपरिणामा जीवपरिणामा उग्रसपरिणामा ॥ गोपमा । पुडिपरि  
णामि आउपरिणामि जीवपरिणामि पुग्रसपरिणामि ॥ दीयसुदूर च  
मंते । सम्पाता सम्भूता सम्बीबा सम्भाता पुडिपाइकाए आब लसाइयताए  
चबेक्षपुष्टा ॥ हंता गोपमा । अपै अनुजा अग्रकुतो ॥ १९ ॥ इह  
दीयसुदूरा समाता ॥

इन्हिं न मंते । दीयसुदूरे पोग्रसपरिणामे पञ्चते ॥ गोपमा । पंचते इरिय-  
विसाए पोग्रसपरिणामे पञ्चते तंजहा—सोइरियविसाए आब फासिरियविसाए ।  
दोइरियविसाए च मंते । पोग्रसपरिणामे इन्हिं पञ्चते ॥ गोपमा । दुन्हिं पञ्चते  
तंजहा—मुधिमसुदूरपरिणामे च दुधिमसुदूरपरिणामे य एवं चर्वियविस्ताराइयहिं  
दुधिमसुदूरपरिणामे य दुधिमसुदूरपरिणामे य दुर्मिगोबपरिणामे य दुर्मिगोबपरिणामे य  
एवं मुरसपरिणामे य दुर्मिगोबपरिणामे य दुधिमसुदूरपरिणामे य ॥  
से शून्य मंते । उचापाप्तु सप्तपरिणामेतु उचापाप्तु सप्तपरिणामेतु एवं न वर्षपरिणामेतु  
रसुपरिणामेतु शमपरिणामेतु परिममाता पोग्राता परिषमंठीति वत्तर्व दिया ॥ हंता  
गोपमा । उचापाप्तु सप्तपरिणामेतु आब परिजममाता घोग्राका परिजमंठीति वत्तर्व  
दिया से वृत्त मंते । दुधिमसुदूरा गोग्राता दुधिमसुदूराए परिषमंठीति दुधिमसुदूरा गोग्राम  
दुधिमसुदूराए परिषमंठीति ॥ हंता गोपमा । मुधिमसुदूरा दो दुधिमसुदूराए परिषमंठीति  
दुधिमसुदूरा परिषमंठीति से शून्य मंते । मुस्ता पुग्राम दुस्तताए परिषमंठीति  
मंठीति तुक्ता मुग्राम दुस्तताए ॥ हंता गोपमा । एवं मुधिमाता पोग्राम  
दुधिमाता चाहे परिषमंठीति दुधिमसुदूरा पोग्राम दुधिमाता चाहे परिषमंठीति ॥ हंता  
गोपमा । एवं दुराता दुर्मिगोब ॥ दुराता दुरसताए ॥ हंता गोपमा ॥ ॥ १९॥ ते  
देवे च मंते । महिंहिए आब महाणुभागे पुष्टामेव पोग्राम दिविता वभू तम्हे  
अग्रपरिजक्तिताए दिविताए ॥ हंता पम्, से केणद्वये मंते । एवं तुक्त—इते च  
महिंहिए जल गिविताए ॥ गोपमा । पोग्राके दिते चमागे पुष्टामेव दिग्गार्दि  
मंठीता तम्हे पञ्चा संदर्श भन्ह, देवे च महिंहिए आब महाणुभागे पुर्वपि  
पञ्चामि सीहे सीहारी दुरिया हेव से सेन्द्रेवं गोपमा । एवं तुक्त जात  
अग्रपरिजक्तिताए देविताए ॥ देवे च मंते । महिंहिए चाहिरए पोग्राके अपरि  
जाइता पुष्टामेव चाहे अपिछता अमेता पम् गठिताए ॥ नो इन्हें सम्हें ॥ देवे च  
मंते । महिंहिए चाहिरए पुग्राके अपरियक्ता पुष्टामेव चाहे दिता गिता पम्  
देविताए ॥ नो इन्हें सम्हें ॥ देवे च मंते । महिंहिए चाहिरए पुग्राके परिजाता  
पुष्टामेव चाहे अपिछता अमिता पम् गठिताए ॥ नो इन्हें सम्हें ॥ देवे च मंते

महिष्ठिए जाव महाणुभागे वाहिरे पोगूले परियाइत्ता पुञ्चामेव वाल छेत्ता भेत्ता पभू गठित्तए<sup>२</sup> हता पभू ४, त चेव ण गठिं छउमत्थे ण जाणइ ण पासड एवंसुहुमं च ण गढिया ३, देवे ण भंते ! महिष्ठिए० पुञ्चामेव वाल अच्छेत्ता अभेत्ता पभू दीहीकरित्तए वा हस्तीकरित्तए वा ? नो इणट्टे समट्टे ४, एवं चत्तारिवि गमा, पढमविडयभंगेसु अपरियाइत्ता एगतरियगा अच्छेत्ता अभेत्ता, सेस तहेव, त चेव सिद्धि छउमत्थे ण जाणइ ण पासड एसुहुम च ण दीहीकरेज वा हस्तीकरेज वा ॥ १९२ ॥ अतिथ ण भते ! चंदिमसूरियाणं हिष्ठिपि तारारूपा अणुपि तुलावि समंपि तारारूपा अणुपि तुलावि उप्पिपि तारारूपा अणुपि तुलावि ? हता अतिथ, से केणट्टेण भते ! एव चुच्छइ—अतिथ ण चंदिमसूरियाणं जाव उप्पिपि तारारूपा अणुपि तुलावि ? गोयमा ! जहा जहा ण तेसिं देवाणं तवनियमधंभचेरवासाइ [उक्कडाइ] उस्सियाइ भवंति तहा तहा ण तेसिं देवाण एय पण्णायइ अणुत्ते वा तुल्लते वा, से एणट्टेण गोयमा !० अतिथ ण चंदिमसूरियाण० उप्पिपि तारारूपा अणुपि तुलावि ॥ १९३ ॥ एगमेगस्स ण भंते ! चंदिमसूरियस्स केवइओ णक्खतपरिवारो पण्णत्तो केवइओ महगहपरिवारो पण्णत्तो केवइओ तारागणकोडाकोडीओ परिवारो प० २ गोयमा ! एगमेगस्स ण चंदिमसूरियस्स—अद्वासीइ च गहा अद्वावीस च होइ नक्वत्ता । एगससीपरिवारो एज्जो ताराण वोच्छामि ॥ १ ॥ छावट्टिसहस्रसाइ णव चेव सयाइ पचसयराइ । एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीण ॥ २ ॥ १९४ ॥ जबूदीवे ण भते ! दीवे मदरस्स पञ्चयस्स पुरच्छिमिलाओ चरिमताओ केवइय अबाहाए जोइस चारं चरइ ? गोयमा ! एकारसाहिं एकवीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइस चारं चरइ, एव दक्खिणिलाओ पञ्चतिथिमिलाओ उत्तरिलाओ एकारसाहिं एकवीसेहिं जोयण० जाव चारं चरइ ॥ लोगताओ भते ! केवइय अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ? गोयमा ! एकारसाहिं एकारेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ॥ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ केवडय अबाहाए सञ्चहेट्टिले तारारूपे चारं चरइ ? केवडय अबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ ? केवइय अबाहाए चदविमाणे चारं चरइ ? केवइय अबाहाए सञ्चउवरिले तारारूपे चारं चरइ ?, गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणि० सन्तहिं णउ-एहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइस सञ्चहेट्टिले तारारूपे चारं चरइ, अद्वहिं जोयणसएहिं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ, अद्वहिं असीएहिं जोयणसएहिं अबाहाए चदविमाणे चारं चरइ, नवहिं जोयणसएहिं अबाहाए सञ्चउवरिले तारारूपे चारं चरइ ॥ सञ्चहेट्टिमिलाओ ण भते ! तारारूपाओ केवइय अबाहाए सूरविमाणे

चारं चरद् । केवर्द्यं अवाहाए चतुर्विमागे चारं चरद् । केवर्द्यं अवाहाए सम्बद्धिरिते  
ताराहवे चारं चरद् । गोकमा । सम्बहेतुशिक्षामा चे इसहिं जोयमेहि सूर्यिमागे  
चारं चरद् गवर्द्येए जोयमेहि अवाहाए चैत्रिमागे चारं चरद् इमुतारे जोयमसए  
अवाहाए सम्बोधिते ताराहवे चारं चरद् ॥ सूर्यिमागाम्भे चे भंडे । केवर्द्यं अवा-  
हाए चतुर्विमागे चारं चरद् । केवर्द्यं सम्बद्धिरिते ताराहवे चारं चरद् । गोकमा ।  
सूर्यिमागाम्भे चे असीए जोयमेहि चैत्रिमागे चारं चरद्, जोयमसयभवाहाए  
उम्बोधिते ताराहवे चारं चरद् ॥ चैत्रिमागाम्भो चे भंडे । केवर्द्यं अवाहाए  
सम्बद्धिरिते ताराहवे चारं चरद् । गोकमा । चैत्रिमागाम्भो चे धीसाए जोयमेहि  
अवाहाए सम्बद्धिरिते ताराहवे चारं चरद्, एवाम्भं सुपुन्नावरेन्द्र दक्षतरसदजोम्भ-  
वाहो लिरियमसुक्षेत्रे जोइसुमिसप फलतो ॥ १९५ ॥ चंद्रूर्ध्वे चे भंडे । धीवे कर्ते  
मन्त्राते सम्बिमितरितं चारं चरद् । कर्ते तन्त्राते सम्बाहितरितं चारं चरद् । कर्ते  
मन्त्राते सम्बद्धिरितं चारं चरद् । कर्ते तन्त्राते सम्बद्धिरितं चारं चरद् । गोकमा ।  
चंद्रूर्ध्वे चे धीवे अमीत्तन्त्राते सम्बिमितरितं चारं चरद् मृङे यन्त्राते सम्बाहित-  
रितं चारं चरद् साहि यन्त्राते सम्बोधिते चारं चरद् भरणी यन्त्राते सम्बहेतुशिक्षा-  
ते चारं चरद् ॥ १९६ ॥ चैत्रिमागे चे भंडे । किरीठिए फलतो ॥ गोकमा । अदृश्यित्तु-  
संठापसंठियं सम्बाहितमाए अम्भुगमम्भूदियफहसिए पर्याप्तो एवं सूर्यिमागेनि  
ताराहतिमागेनि ताराहतिमागेनि अदृश्यित्तुसंठापसंठियं ॥ चैत्रिमागे चे भंडे ।  
केवर्द्यं आयमसिक्षित्तमिन्दे । केवर्द्यं परिक्षेत्रेन्दे । केवर्द्यं वाहोरेन्दे फलतो । गोकमा ।  
जप्तो एसाप्तिमागे जोयमसस आयमसिक्षित्तमिन्दे तं तिणुर्वं समिसेतु परिक्षेत्रेन्दे  
मन्त्रावीर्दे एगसप्तिमागे जोयमसस वाहोरेन्दे फलतो ॥ सूर्यिमागस्यामि सुवेद पुर्वम  
गोकमा । आयमसिक्षित्तमिन्दे एसाप्तिमागे जोयमसस आयमसिक्षित्तमिन्दे तं तिणुर्वं समिसेतु  
परिक्षेत्रेन्दे पर्वतीर्दे एप्सप्तिमागे जोयमसस वाहोरेन्दे फलतो ॥ एवं वहनिमागेनि  
अदृश्योदर्दे आयमसिक्षित्तमिन्दे समिसेतु परि अदृश्येत वाहोरेन्दे प ॥ एवं वहनिमागेनि  
मन्त्रात्तेदे आयमसिक्षित्तमिन्दे तं तिणुर्वं समिसेतु परि एवं वहनिमागेनि  
गोकमार्केजावयमिगरप्यासार्द्द (मालुषिमपिगम्भवान्) विरक्ष्य[क्षद्व]वाही-  
वरुषित्तिनुरित्तिक्षवाहामित्तिमुहार्द रातुप्यमात्मदक्षतुमात्मवाहुर्दार्द  
[क्षस्त्रव्यद्वेत्तिमित्तिक्षवाहामाल्ल] विसार्द्यमीवरोपवित्तिवाहार्द मित्ति-

सयपसत्यसुहमलक्खणविच्छिणकेसरसडोवसोभियाण चकमियललियपुलियधवलग-  
व्वियगईण उस्मियसुणिम्मियसुजायअप्फोडियणंगूलाण वइरामयणक्खाणं वहरामय-  
दन्ताण वयरामयदाढाण तवणिजजीहाण तवणिजतालुयाणं तवणिजजोत्तगसुजोइ-  
याण कामगमाण पीइगमाण मणोगमाणं मणोरमाण मणोहराणं अमियगईण अमिय-  
चलवीरियपुरिसकारपरक्माण महया अप्फोडियसीहनाइयवोलक्लयलरवेण महुरेण  
मणहरेण य पूरिता अवर दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्रीओ सीहस्वधा-  
रीण देवाण पुरच्छिमिल बाह परिवहति । चदविमाणस्स ण दक्षिणेण सेयाण  
सुभगाण सुप्पभाण सखतलविमलनिम्मलदहिघणगोखीरफेणरययणियरप्पगासाण  
वइरामयकुभजुयलसुट्टियपीवरवरवइरसोंडवट्टिदितसुरत्तपउमप्पगासाण अब्मुण्णय-  
गुणा(मुहा)ण तवणिजविसालचंचलचलतचवलक्षणविमलुज्जलाण मधुवण्णभिसत-  
णिद्वपिगलपत्तलतिवण्णमणिरयणलोयणाण अब्मुगयमउलमल्लियाण धवलसरिससठि-  
यणिव्वणददकसिणफालियामयसुजायदंतमुसलोवसोभियाण कचणकोसीपविट्टुदत्तग-  
विमलमणिरयणरहलपेरंतवित्तरुवगविराइयाणं तवणिजविसालतिलगपमुहपरिमडि-  
याण णाणामणिरयणगुलियोवेजवद्वगलपवरभूसणाण वेशलियविचित्तदडणिम्मल-  
वालगडाण वइरामयतिक्खलट्टुअकुसकुभजुयलंतरोदियाण तवणिजसुवद्वकच्छदपिय-  
वलुद्वराण जवूणयविमलघणमडलवइरामयलीलाललियतालणाणामणिरयणघण्टपास-  
गरयामयरज्जुवद्वलवियघटाजुयलमहुरसरमणहराण अलीणपमाणजुत्तवट्टियसुजाय-  
लक्खणपसत्थतवणिजवालगतपरिपुच्छणाण उवचियपडिपुण्णकुम्मचलणलहुविक्कमाणं  
अकामयणक्खाण तवणिजतालुयाण तवणिजजीहाण तवणिजजोत्तगसुजोइयाण  
कामगमाण पीइगमाण मणोगमाण मणोरमाण मणोहराण अमियगईण अमियवल-  
वीरियपुरिसकारपरक्माण महया गभीरगुलगुलाइयरवेण महुरेण मणहरेण पूरेन्ता  
अवर दिसाओ य सोभयता चत्तारि देवसाहस्रीओ गयस्वधारीण देवाण दक्षिणिल  
बाह परिवहति । चदविमाणस्स ण पचत्थिमेण सेयाण सुभगाणं सुप्पभाण चक-  
मियललियपुलियचलचलक्खणसालीण सण्णयपासाण सगयपासाण सुजायपासाणं  
मियमाड्यपीणरइयपासाण झसविहगसुजायकुच्छीण पसत्थणिद्वमधुगुलियभिसतपिंग-  
लक्खणविसालपीवरोरपडिपुण्णविउलखघाण वट्टपडिपुण्णविउलकण्णपासाणं घणिणि-  
चियसुवद्वलक्खणुण्णयईसिआणयवमभोट्टाण चकमियललियपुलियचक्खवालचवलगव्वि-  
यगईण पीवरोस्वट्टियसुसठियक्कीण ओलवपलवलक्खणपमाणजुत्तपसत्थरमणिज-  
वालगडाण ममखुरवालधाराण समलिहियतिक्खगगसिंगाण तणसुहमसुजायणिद्व-  
लोमच्छविधराण उवचियममलविसालपडिपुण्णखुद्वपमुहसुदराणं (खधपएससुदराण)

प्रेषिन्मिसुतक्षम्भवद्युपिरिक्षजार्थं लुतप्पमादप्पद्युपलक्ष्यपस्त्वरमनिक्षम्भर  
गम्भोमियार्थं अभरणमुवद्यक्षपरिमेहियार्थं नाक्षमविक्षणगरणक्षटेप्पद्यमुह  
वरहमालियार्थं वर्षद्वागल्मालिमसामंतससिरीयार्थं फउमुप्पक्षमस्त्वरमिमास्ता-  
यिमूलिमाण वरहरहरार्थं विविद्यमिहरार्थं फालियासव्वतार्थं तथाक्षिकीहरार्थं तथ  
गिज्जाल्लुमार्थं वरमिक्षजोलगमुज्जेतियार्थं क्षमगमार्थं पीड्यमाले मणेत्रमार्थं  
मणोरमार्थं मणोहरार्थं वमियगैर्थं अमिक्षक्षीरियुरिल्लारपरहमार्थं महवा  
गमीरणविवरेत्त महुरेत्त मणहरेत्त व पूरेत्त अबर वियाओ व सोम्यंता अतारि  
देवसाहस्रीओ वसमहवारीर्थ देवार्थं पवतित्वमित्त वाई परिवहति । अद्विक्षापस्त  
र्थ उत्तरेत्त देयार्थं सुम्पमार्थं वक्षार्थं वरमिल्लायार्थं हरिमेत्रमुम्मालिम-  
प्पार्थं अमिविक्षुल्लायस्त्वल्लुप्पमार्थमिर्वं (वंशुवि) अविमिल्लुक्षिक्षस्त्वल्लर्वप्पम-  
गहिं क्षेत्रवप्पमवाक्षवाक्षवारज्ञिक्षवाक्षविक्षयगैर्थं सुवयपासाच धुम्पयपासाच  
मुवायपासाच विवमाइवपीवरहवासार्थं लुविहरामुवामुवमित्त पीयपीवरविम-  
मुस्तिविक्षीर्थं ओसेप्पद्यक्षम्भवपमामगुतपत्वरमनिज्ञामालोदाम लुम्मुम्मु  
वायपिल्लमेत्रम्भविवरार्थं विवित्वपस्त्वल्लुम्मम्भवपमिल्लेविवरविवरार्थं  
महिक्षमसगत् (वर्तत्वासम्म) छाद्वरमूस्तार्थं मुहमडगोम्मम्भवात्वगपरिलेहित  
क्षीर्थं तथाक्षिकीहरार्थं तथाक्षिक्षम्भवार्थं तथाक्षिक्षजोलगमुज्जेतियार्थं  
क्षमम्भमाले पीड्यमाले मणोगमाले मणोहरार्थं वमियगैर्थं अमिक्ष-  
क्षम्भीरियुरिल्लारपरहमार्थं महया हमोहिविक्षिक्षाम्भरेत्त महुरेत्त महुरेत्त  
व पूरेत्त अबर वियाओ व सो । चतारि देवसाहस्रीओ इवरु ॥  
उत्तरिः वाई परिवहति ॥ ए ॥ ॥ स्त्रिपुष्टा षोम्या ॥ ॥

मद्द देवसाहस्रीओ परिवहति  
वाई परिवहति दो देवान  
पवतित्वम दो देवसाहस्रीओ ॥  
विमास्तमिपुर्वम गेवमा ॥ ॥  
वारीत देवान एगा देवसाहस्री पुर  
तारगालमि अबर दो देवसाहस्रीओ  
पुरविमित्त वाई परिवहति एव ॥  
॥ एवरे ॥  
विवक्षार्थ सुरेहितो ॥

पुष्टा  
देवार्थ साहस्रीओ ॥  
दो देवान  
वाई परिवहति ॥ एव  
परिवहति तंवह  
एव चरहि ॥  
देवान  
व मते  
वहि

हिंतो तारा सिरधगई, सब्बप्पगई चदा सब्बसिरधगईओ तारारूवा ॥ १९९ ॥ एएसि ण भते ! चदिम जाव तारारूवाण क्यरे २ हिंतो अपिह्निया वा महिह्निया वा ? गोयमा ! तारारूवेहितो णक्खता महिह्निया णक्खतेहितो गहा महिह्निया गहेहिंतो सूरा महि-ह्निया सूरेहिंतो चदा महिह्निया, सब्बप्पह्निया तारारूवा सब्बमहिह्निया चंदा ॥ २०० ॥ जबूदीचे ण भते ! दीचे तारारूवस्स २ य एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा ! दुविहे अतरे पण्णते, तजहा—वाघाइमे य निव्वाघाइमे य, तत्थ ण जे से वाघाइमे से जहणेण दोणिण य छावट्टे जोयणसए उक्कोसेण वारस जोयणसह-स्साइ दोणिण य वायाले जोयणसए तारारूवस्स २ य अवाहाए अतरे पण्णते । तत्थ ण जे से णिव्वाघाइमे से जहणेण पचधणुसयाइ उक्कोसेण दो गाउयाइ तारारूव जाव अतरे पण्णते ॥ २०१ ॥ चदस्स ण भंते ! जोइसिंदस्स जोडसरन्नो कह अगगमहिसीओ पण्णताओ ? गोयमा ! चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णताओ, तंजहा—चदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभकरा, तत्थ ण एगमेगाए देवीए चत्तारि चत्तारि देवसाहस्रीओ परिवारे य, पभू ण तओ एगमेगा देवी अण्णाइ चत्तारि २ देविसहस्राइ परिवार विडव्विताइ, एवामेव सपुव्वावरेण सोलस देवसा-हस्रीओ पण्णताओ, से त तुडिए ॥ २०२ ॥ पभू ण भते ! चदे जोइसिंदे जोइ-सराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदसि सीहासणसि तुडिएण सद्दि-दिव्वाड भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्ताइ ? णो इणट्टे समट्टे । अदुत्तरं च ण गोयमा ! पभू चदे जोइसिंदे जोइसराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदसि सीहा-सणसि चउहिं सामाणियसाहस्रीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवाण माहस्रीहिं अन्नेहिं वहूहिं जोइसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्दि सपरिखुडे महया हयणझरीहवाइयत-तीतलतालतुडियधणमुइगपुडप्पवाइयरवेण दिव्वाड भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्ताए, केवल परियारड्हीए नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥ २०३ ॥ सूरस्स ण भते ! जोडसिंदस्स जोडसरन्नो कह अगगमहिसीओ पण्णताओ ? गोयमा ! चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णताओ, तजहा—सूरप्पभा आयवाभा अच्चिमाली पभकरा, एव अवसेस जहा चदस्स णवर सूरवडिसए विमाणे सूरसि सीहामणसि, तहेव सब्बेसिंपि गहाईण चत्तारि अगगमहिसीओ ० तजहा—विजया वेजयती जयती अपराजिया, तेसिंपि तहेव ॥ २०४ ॥ चदविमाणे ण भते ! देवाण केवइय काल ठिंडे पण्णता ? एव जहा ठिईपए तहा भाणियव्वा जाव ताराण ॥ २०५ ॥ एएसि ण भते ! चदिमसू-रियगहणकरतारारूवाण क्यरे २ हिंतो अप्पा वा वहुया वा तुला वा विसेमाहिया वा ? गोयमा ! चदिममृरिया एए ण दोणिणवि तुला सब्बत्योवा, सखेजगुणा णक्खता,

वेदक्षियमिर्तदृष्टव्यमुभिरित्वा शार्ण सुतप्पमाणप्यहाणमन्तरुणप्रस्तरमनिवासगार  
गत्तमोमियार्ण चक्षरगुबद्धयरित्वेदियार्ण नाणाममिक्षयगरद्यजफट्टवेष्टप्पमुर  
यद्यमालिकाय वर्षट्टागल्लालिक्षयोभैत्तसरित्वियार्ण पउमुप्पदमसम्मुरभिमासम  
विभूतियाप्य वहरहराण विविहितुरार्थं घालिकामयशार्ण तद्विज्ञाहार्ण तद्विज्ञाहार्ण तद्वि-  
गिकामयुपार्ण तद्विज्ञाहोत्तमायुजोत्तिकार्ण वस्त्रमाणार्ण पीडगमाणे मजेशमार्ण  
मजोरमार्ण मजोहराण अमिक्षयईज अमिक्षक्त्वीरित्वपुरित्वारपरद्यमाण महा  
यंमीरणविवरपैष्व ममुरेन्न भजहरेण य पूरेता अवरे दिवाभो य सोमयता चतारि  
देवमाहसीमो वयमन्तव्यारीण देवाण वद्वित्विर्ण वाहं परिवहन्ति । चौद्विमासम  
र्ण उत्तरेर्ण सेवाप्य मुमाणे द्युप्पमार्ण चक्षार्ण वरमधिकाव्यार्ण इरिमेतामनुम्ममित्व  
च्छार्ण घवितियमुद्दमन्तव्यमार्णद्विमिं(चंतुष्ठि)वक्त्वित्वुलियवद्यवद्यवद्यवद्य-  
गैर्ण संघवक्त्वमाणवाव्यारणसिवाच्छवित्वित्वगैर्ण द्युगवपास्तार्ण संगमपासार्ण  
मुक्तायपासार्ण वियमाद्यपीव्याव्यासार्ण तस्मित्वगुच्छाव्युठार्ण एवापीव्यवद्यित्व-  
मुसेत्वियद्वीपे अोत्तेवत्तमन्तव्यमाणगुत्तमस्तरमविज्ञाल्लोडाणे तत्पुमुक्त-  
ज्ञामप्तिक्षेमान्तुविवराणे वित्विमवास्त्वमुक्तमन्तव्यविविष्टक्षेपरद्यालित्वार्ण  
मस्तियत्वाहगग्नि(स्तरेवास्त्वात्त)लाडवरमूस्तार्ण मुहर्मेण्णोक्त्वमरव्याव्याप्तिरित्वित्व  
क्षीरेर्ण तद्विज्ञाहुरार्ण तद्विज्ञाहुराण तद्विज्ञाहुरार्ण तद्विज्ञाहोत्तायमुजोह्यार्ण  
वामगमार्ण पीडगमार्ण मजाममार्ण मजोहरार्ण अमियगैर्ण अमित्व  
वक्त्वीरित्वपुरित्वारपरद्यमाण महा इयहेत्वियमित्वात्त्वित्वेन्न ममुरेन्न भजहरेण  
व पूरेता अवरे दिवाभो य सोमयता चतारि देवमाहसीमा इयवद्यवारीर्ण  
उत्तरित्व वाहं परिवहन्ति ॥ एवं सूरविमासमपि तुष्टा गोक्षा । मोरम  
द्यगामाहसीमो परिवहन्ति पुम्बद्यमेत्वे ॥ एवं गह्यविमासमपि तुष्टा ग्रेयमा ।  
अद्य देवमाहसीमो परिवहन्ति पुम्बद्यमेत्वे दो देवाण साहसीओ पुरवित्विर्ण  
वाहं परिवहन्ति दो देवाण गाहसीमा विनायित्व दो देवाण मादसीओ  
पवित्रम दो देवमाहसीमा इयवद्यपारीर्ण उत्तरित्व वाहं परिवहन्ति ॥ एवं चक्षान  
वियमामगमवि पुर्ण्य ग्रायमा । चतारि देवगामाहसीमो परिवहन्ति तत्त्रहा-सीद्यव  
पारीय देवाण एवा देवमाहसीमो पुरवित्विर्ण वाहं परिवहन्, एवं चउरिमित्व तत्त-  
तार्णगमवि जररे दो देवमाहसीमो परिवहन्ति तत्त्रहा-सीद्यवपारीये देवाण वंत्वेत्व  
मया पुरवित्विर्ण वाहं परिवहन्ति एवं चउरिमित्व ॥ १९५ ॥ पृष्ठि वं भेत्व चैत्व  
सूरियगद्यगमगमानारामानार्ण इवरे क्षवरेत्वित्वे विवरार्ण वा वेदयै वा हं योद्यमा ।  
चैत्वेत्वा मूरा शिवप्पार्ण द्यूरेह्नां वदा विष्पर्णै गहेह्नां गामाणा विष्पर्णै अस्माते

हिंतो तारा सिंघगाई, सब्बप्पगाई चदा सब्बसिंघगाईओ तारारूवा ॥ १९९ ॥ एएसि ण  
भते ! चदिम जाव तारारूवाण क्यरे २ हिंतो अप्पिङ्गिया वा महिङ्गिया वा २ गोयमा ।  
तारारूवेहिंतो णक्खता महिङ्गिया णक्खतेहिंतो गहा महिङ्गिया गहेहिंतो सूरा महि-  
ङ्गिया सूरेहिंतो चदा महिङ्गिया, सब्बप्पग्निया तारारूवा सब्बमहिङ्गिया चदा ॥ २०० ॥  
जवूदीवे ण भते ! दीवे तारारूवस्स २ य एस ण केवइय अवाहाए अतरे पण्णते २  
गोयमा ! दुविहे अतरे पण्णते, तजहा—वाघाइमे य निव्वाघाइमे य, तत्थ ण जे  
से वाघाइमे से जहण्णेण दोणिण य छावडे जोयणसए उक्कोसेण वारस जोयणसह-  
स्साइ दोणिण य बायाले जोयणसए तारारूवस्स २ य अवाहाए अतरे पण्णते ।  
तत्थ ण जे से णिव्वाघाइमे से जहण्णेण पचधणुसयाइ उक्कोसेण दो गाउयाइ  
तारारूव जाव अतरे पण्णते ॥ २०१ ॥ चदस्स ण भते ! जोइसिंदस्स जोइसरज्जो  
कइ अगमहिसीओ पण्णताओ २ गोयमा ! चत्तारि अगमहिसीओ पण्णताओ,  
तंजहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभकरा, तत्थ ण एगमेगाए देवीए  
चत्तारि चत्तारि देवसाहस्रीओ परिवारे य, पभू ण तओ एगमेगा देवी अण्णाइ  
चत्तारि २ देविसहस्राइ परिवार विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेण सोलस देवसा-  
हस्रीओ पण्णताओ, से त तुडिए ॥ २०२ ॥ पभू ण भते ! चदे जोइसिंदे जोड-  
सराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि-  
दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए २ णो इणडे समडे । अदुत्तर च ण गोयमा !  
पभू चदे जोइसिंदे जोइसराया चदवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदसि सीहा-  
सणसि चउहिं सामाणियसाहस्रीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवाण साहस्रीहिं  
अन्नेहिं वहूहिं जोइसिएहिं देवेहि देवीहि य सद्धि सपरिबुडे महया हयणद्वगीइवाडयत-  
तीतलतालतुडियघणमुइगपहुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए,  
केवल परियारिङ्गीए नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥ २०३ ॥ सूरस्स ण भते ! जोइसिंदस्स  
जोइसरज्जो कइ अगमहिसीओ पण्णताओ २ गोयमा ! चत्तारि अगमहिसीओ  
पण्णताओ, तजहा—सूरप्पभा आयवाभा अच्चिमाली पभकरा, एव अवसेस जहा  
चदस्स णवर सूरवडिसए विमाणे सूरसि सीहासणसि, तहेव सव्वेसिंपि गहाईं  
चत्तारि अगमहिसीओ ० तजहा—विजया वेजयती जयती अपराजिया, तेसिंपि  
तहेव ॥ २०४ ॥ चदविमाणे ण भते ! देवाण केवडय काल ठिंडे पण्णता २ एव  
जहा ठिईपए तहा भाणियव्वा जाव ताराण ॥ २०५ ॥ एएसि ण भते ! चदिमसू-  
रियगहणक्खततारारूवाण क्यरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया  
वा २ गोयमा ! चदिमसूरिया एए ण दोणिणवि तुला सब्बत्थोवा, सखेजगुणा णक्खता,

संकेष्टगुण यहा संकेष्टगुणमो तारगांओ ॥ ३ ६ ॥ जोहसुदेसमो समर्थो ॥  
 कहि न मंते । देमामितार्थ देवार्थ मिमाणा पञ्चता । कहि न मंते । देमामिता  
 देवा परिवर्तति । यहा अपनए यहा सम मावियम्ब गवरं परिसामो भाविय-  
 भाम्बे आव उडे अलेखि च वृत्त सोहस्रकृपयासीर्थ देवाण च देवीय च आव  
 मिहर ॥ ३ ७ ॥ सहस्र न मंते । ईरिदस्त देवरहो कइ परिसामो पञ्चतामे ।  
 गोवमा । तमो परिसामो पञ्चतामो तंजहा—समिया धंडा याया अभिमतरिया  
 यमिया मजिसमिया यहा बाहिरिया याया ॥ सहस्र न मंते । ईरिदस्त देवरहो  
 अभिमतरियाए परिसाए चइ देवसाहस्रीमो पञ्चतामो । मजिसमियाए परि तहेव  
 बाहिरियाए पुष्ट्यम गोवमा । सहस्र ईरिदस्त देवरहो अभिमतरियाए परिसाए  
 बारस देवसाहस्रीमो पञ्चतामो मजिसमियाए परिसाए चउदेव देवसाहस्रीमो  
 पञ्चतामो बाहिरियाए परिसाए सोबत देवसाहस्रीमो पञ्चतामो तहा अभिमत-  
 रियाए परिसाए उत देवीसमापि मजिसमियाए छ देवीसमापि बाहिरियाए परि  
 देवीसमापि पञ्चतामि ॥ सहस्र न मंते । ईरिदस्त देवरहो अभिमतरियाए परिसाए  
 देवार्थ केवहरं शार्द ठिइ पञ्चता ? एवं मजिसमियाए बाहिरियाए गोवमा ।  
 सहस्र ईरिदस्त देवरहो अभिमतरियाए परिसाए देवार्थ फंच पठिओवमाई ठिई  
 पञ्चता मजिसमियाए परिसाए चतारि पठिओवमाई ठिई पञ्चता बाहिरियाए  
 परिसाए देवार्थ ठिई पठिओवमाई ठिई पञ्चता देवीर्थ ठिई-अभिमतरियाए  
 परिसाए देवीर्थ ठिई पठिओवमाई ठिई पञ्चता मजिसमियाए तुहि पठिओवमाई  
 ठिई पञ्चता बाहिरियाए परिसाए एवं पठिओवमाई ठिई पञ्चता अद्वे यो चेव यहा  
 भवयवासीर्थ ॥ कहि न मंते । ईसागगार्थ देवार्थ मिमाणा पञ्चता ॥ तहेव सर्व  
 जात ईशाये एव्य देविए इव आव मिहर । ईसापस्य न मंते । ईरिदस्त  
 देवरहो कइ परिसामो पञ्चतामो । गोकमा ! तमो परिसामो पञ्चतामो तंजहा—  
 समिया धंडा याया लहेव सर्व जवरं अभिमतरियाए परिसाए दस देवसाहस्रीमो  
 पञ्चतामो मजिसमियाए परिसाए चारण देवसाहस्रीमो बाहिरियाए चउदेव  
 देवसाहस्रीमो देवीर्थ पुष्ट्यम अभिमतरियाए गद देवीसमापि पञ्चता मजिसमियाए  
 परिसाए जदु देवीसमापि पञ्चता बाहिरियाए परिसाए उत देवीसमापि पञ्चता देवार्थ  
 ठिईपुष्ट्या अभिमतरियाए परिसाए देवार्थ सर्व पठिओवमाई ठिई पञ्चता मजिस  
 मियाए उ पठिओवमाई बाहिरियाए फंच पठिओवमाई ठिई पञ्चता । देवीर्थ  
 पुष्ट्यम अभिमतरियाए बाहिरियाए फंच पठिओवमाई मजिसमियाए परिसाए चतारि  
 पठिओवमाई ठिई पञ्चता बाहिरियाए परिसाए निर्मिय पठिओवमाई ठिई पञ्चता

अट्ठो तहेव भाणियब्बो ॥ सणंकुमाराण पुच्छा तहेव ठाणपयगमेण जाव सणंकुमा-  
रस्स तओ परिसाओ समियाई तहेव, णवर अविभतरियाए परिसाए अट्ठ देवसा-  
हस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्जिमियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, वाहिरियाए परिसाए वारस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, अविभतरियाए परिसाए  
देवाणं अद्धपंचमाइ सागरोवमाइ पञ्च पलिओवमाइ ठिंडे पण्णत्ता, मज्जिमियाए  
परिसाए० अद्धपचमाइ सागरोवमाइ चत्तारि पलिओवमाइ ठिंडे पण्णत्ता, वाहिरियाए  
परिसाए० अद्धपंचमाइं सागरोवमाइ तिणिं पलिओवमाइ ठिंडे पण्णत्ता, अट्ठो सो  
चेव ॥ एव माहिंदस्सवि तहेव तओ परिसाओ णवर अविभतरियाए परिसाए  
छेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्जिमियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, वाहिरियाए० दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, ठिंडे देवाण-अविभतरियाए परिसाए  
अद्धपचमाइं सागरोवमाइ सत्त य पलिओ० ठिंडे पण्णत्ता, मज्जिमियाए परिसाए  
अद्धपचमाइ सागरोवमाइ छच्च पलिओवमाइं०, वाहिरियाए परिसाए अद्धपचमाइ  
सागरोवमाइ पञ्च य पलिओवमाइ ठिंडे प०, तहेव सन्वेसि इदाण ठाणपयगमेण  
विमाणा ऐयब्बा तओ पच्छा परिसाओ पत्तेय २ बुच्चति ॥ वभस्सवि तओ परिसाओ  
पण्णत्ताओ० अविभतरियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ मज्जिमियाए छ देवसाहस्सीओ  
वाहिरियाए अट्ठ देवसाहस्सीओ, देवाण ठिंडे-अविभतरियाए परिसाए अद्धनवमाइ  
सागरोवमाइ पञ्च य पलिओवमाइ, मज्जिमियाए परिसाए अद्धनवमाइ चत्तारि पलि-  
ओवमाइ, वाहिरियाए० अद्धनवमाइ सागरोवमाइ तिणिं य पलिओवमाइं अट्ठो सो  
चेव ॥ लतगस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अविभतरियाए परिसाए दो देव  
साहस्सीओ० मज्जिमियाए० चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ वाहिरियाए० छेव-  
साहस्सीओ पण्णत्ताओ, ठिंडे भाणियब्बा—अविभतरियाए परिसाए वारस सागरोवमाइ  
सत्त पलिओवमाइ ठिंडे पण्णत्ता, मज्जिमियाए परिसाए वारस सागरोवमाइ छच्च  
पलिओवमाइ ठिंडे पण्णत्ता, वाहिरियाए परिसाए वारस सागरोवमाइ पञ्च पलिओव-  
माइ ठिंडे पण्णत्ता अट्ठो सो चेव ॥ महासुक्षस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव  
अविभतरियाए एगा देवसहस्स मज्जिमियाए दो देवसाहस्सीओ पश्चत्ताओ वाहिरियाए  
चत्तारि देवसाहस्सीओ, अविभतरियाए परिसाए अद्धसोलस सागरोवमाइ पञ्च  
पलिओवमाइ, मज्जिमियाए अद्धसोलस सागरोवमाइं चत्तारि पलिओवमाइ, वाहिरियाए०  
अद्धसोलस सागरोवमाइ तिणिं पलिओवमाइ, अट्ठो सो चेव ॥ सहस्सारे पुच्छा  
जाव अविभतरियाए परिसाए पञ्च देवसया, मज्जिमियाए परि० एगा देवसाहस्सी,  
वाहिरियाए० दो देवसाहस्सीओ पश्चत्ता, ठिंडे-अविभतरियाए अद्धारस सागरोवमाइ

सत पश्चिमोक्तमात् ठिँ फलता एव मजिसमित्याए अद्भुतसु उपशिष्योक्तमात् वाहि  
रियाए अद्भुतसु सागरोक्तमात् एव पश्चिमोक्तमात् अद्भुते सो चेत् ॥ आयवपाचवस्तुति  
पुर्वम् जाव तज्जो परिसाम्बो चक्षरि अविष्यतिरियाए अद्भुतात्मा देवसंया मजिसमित्याए  
एव दृष्टमया वाहिरियाए पृष्ठा देवसाहस्री ठिँ-अविष्यतिरियाए एग्रजीवं सामरोक्त-  
मात् एव य पश्चिमोक्तमात् एव मजिस एग्रजीवं सामरोक्तमात् चक्षारि य पश्चि-  
ष्योक्तमात् वाहिरियाए परिसाए एग्रजीवं सागरोक्तमात् ठिष्ण्य य पश्चिमोक्तमात् ठिँ  
अद्भुते सो चेत् ॥ कहि चं भंते । वारणज्ञनुदार्ण देवार्थं तहेव अनुप उपरिवारे जाव  
विहर्य, अनुपस्तु य दर्शिवस्तु तज्जो परिसाम्बो फलताभो अविष्यतिरियाए देवार्थं  
पश्चीमं सर्वं मजिसम अद्भुतात्मा समा वाहिरियं पंचसंया अविष्यतिरियाए एकजीवं  
सागरोक्तमा सता य पश्चिमोक्तमात् मजिस एकजीवं सागरो छपड़ि वाहिरि एग्रजीवं  
सागरो एव य पश्चिमोक्तमात् ठिँ फलता ॥ कहि चं भंते । हेद्विस्मोक्तेज्ञार्थं  
देवार्थं विमाणा फलता ॥ कहि चं भंते । हेद्विस्मोक्तेज्ञां देवा परिकर्त्ति । जहेव  
ठाणपए तहेव एव मजिसमोक्तेज्ञा उत्तरिमोक्तेज्ञां अनुत्तरा य जाव अहमिद्वानाम्  
ठ देवा फलता उम्भावसो ॥ ॥ ३ ॥ ११ एहमो विमाणियउद्वेसो सम्भवो ॥

सोहम्मीसागेमु चं भंति । कर्पेमु विमाणपुरात्मी लिपाइट्रिया फलता ॥ गोक्तमा ॥  
एगोदर्शिपट्रिया प । सर्वज्ञमारमाहिरियु कर्पेमु विमाणपुरात्मी लिपाइट्रिया फलता ॥  
गोक्तमा ॥ एगवासपट्रिया फलता ॥ बैमल्लोए चं भंति ॥ कर्पे विमाणपुरात्मी पुर्वा  
यो ॥ एगवासपट्रिया फलता ॥ घंठए चं भंति ॥ पुर्वा योयमा ॥ लुम्भनपट्रिया ॥  
महामुक्तमाहसारेत्तुति तपुयवपट्रिया ॥ आपव जाव अनुनु चं भंते ॥ कर्पेमु पुर्वा  
यो ॥ ओकासंतरपट्रिया ॥ गेविविमाणपुरात्मीचं पुर्वा गोक्तमा ॥ ओकासंतरपट्र  
ट्रिया ॥ अनुत्तरागेवाइनपुर्वा ओकासंतरपट्रिया ॥ ३ ॥ १ ॥ सोहम्मीसागर्पेमु  
विमाणपुरात्मी लेवर्यं वाहौदेय फलता ॥ गोयमा ॥ सतावीर्यं जोक्तसंयाद् वाहौर्यं  
फलता एव पुर्वा सर्वज्ञमारमाहिरियु छप्पीसं जोक्तसंयाद् ॥ चमर्लंठए फंचीर्यं ॥  
महामुक्तमाहसारेमु चउवीसं ॥ आपवासप्यारकालुएमु तपीमु समाई ॥ गेविव  
विमाणपुरात्मी वावीर्यं ॥ अनुत्तरविमाणपुर्वाए एग्रजीवं जोक्तसंयाद् वाहौर्यं प ११ ॥ १  
सोहम्मीसागेमु चं भंते ॥ कर्पेमु विमाणा कल्पयं उर्हु उवरोर्य ॥ योयमा ॥ एव  
जोक्तसंयाद् उर्हु उवरोर्य प । सर्वज्ञमारमाहिरियु लओमणसकार्य, बैमल्लतेमु उर्हु  
महामुक्तमाहसारेमु अद्व, आलक्तरामाल्लु ॥ नव गेवेज्ञविमाणा चं भंते लेवर्यं उर्हु  
उ २ यो ॥ दृप्य जोक्तसंयाद्, अनुत्तरविमाणा चं एगारव जोक्तसंयाद् उर्हु उवरोर्य  
प ११ ॥ १४ सोहम्मीसागेमु चं भंत ॥ कर्पेमु विमाणा लिपाइया फलता ॥ योयमा ॥

दुविहा पण्णता, तजहा—आवलियपविद्वा य आवलियवाहिरा य, तत्य ण जे ते आवलियपविद्वा ते तिविहा पण्णता, तजहा—वद्वा तसा चउरंसा, तत्य ण जे ते आवलियवाहिरा ते ण णाणासठाणसठिया पण्णता, एवं जाव गेविज्विमाणा, अणुत्तरो-ववाइयविमाणा दुविहा पण्णता, तजहा—वट्टे य तंसा य ॥ २१२ ॥ सोहम्मीसाणेसु णं भते । कप्पेसु विमाणा केवइय आयामविकर्खंभेण केवइयं परिक्खेवेण पण्णता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता, तजहा—सखेजवित्थडा य असखेजवित्थडा य, जहा णरगा तहा जाव अणुत्तरोववाइया सखेजवित्थडे य असखेजवित्थडा य, तत्य ण जे से सखेजवित्थडे से जवुद्दीवप्पमाणे असखेजवित्थडा असखेजाईं जोयणसयाड जाव परिक्खेवेण पण्णता ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते । कप्पेसु विमाणा कहवणा पञ्चता ? गोयमा ! पचवणा पण्णता, तजहा—किण्हा नीला लोहिया हालिद्वा सुकिला, सणंकुमारमाहिंदेसु चउवणा नीला जाव सुकिला, बम्लोगलतएसु तिवणा लोहिया जाव सुकिला, महासुक्सहस्सारेसु दुवणा—हालिद्वा य सुकिला य, आण-यपाणयारणच्छुएसु सुकिला, गेविज्विमाणा सुकिला, अणुत्तरोववाइयविमाणा परम-सुकिला वणेण पण्णता ॥ सोहम्मीसाणेसु णं भते । कप्पेसु विमाणा केरिसया पमाए पण्णता ? गोयमा ! णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सय पमाए पण्णता जाव अणु-त्तरोववाइयविमाणा णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सय पमाए पण्णता ॥ सोहम्मीसाणेसु णं भते । कप्पेसु विमाणा केरिसया गधेण पण्णता ? गोयमा ! से जहा नामए—कोट्टपुडाण वा एव जाव एत्तो इछुतरागा चेव जाव गधेण पण्णता, जाव अणुत्तर-विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेसु० विमाणा केरिसया फासेण पण्णता ? गोयमा ! से जहा नामए—आइणेइ वा रुएइ वा सब्बो फासो भाणियब्बो जाव अणुत्तरोववाइय-विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते । कप्पेसु विमाणा केमहाल्या पण्णता ? गोयमा ! अयण्ण जबुदीवे २ सब्बदीवसमुदाण सो चेव गमो जाव छम्मासे वीइव-एज्जा जाव अथेगइया विमाणावासा वीइवएज्जा अथेगइया विमाणावासा नो वीइ-वएज्जा जाव अणुत्तरोववाइयविमाणा अथेगइय विमाण वीइवएज्जा अथेगइए० नो वीइवएज्जा ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते !० विमाणा किंमया पण्णता ? गोयमा ! सब्बरयणामया पण्णता, तत्य ण वहवे जीवा य पोगगला य वक्कमति विउक्कमति चयति उवचयति, सासया णं ते विमाणा दब्बट्टग्राए जाव फासपज्जवेहिं अमामया जाव अणुत्तरोववाइया विमाणा ॥ सोहम्मीसाणेसु ण० देवा कओहिंतो उववज्जति ? उववाओ नेयब्बो जहा वक्तीए तिरियमणुएसु पचेदिएसु समुच्छमवज्जिएसु, उव-वाओ वक्तीगमेण जाव अणुत्तरो० ॥ सोहम्मीसाणेसु० देवा एगसमएण केवइया

उचक्कर्ति । योममा । उहोर्व एको वा दो वा त्रिभिं वा चक्षेतेर्व संकेजा वा असंकेजा वा उचक्कर्ति एवं जाव सहस्यारे आप्याहै गेवेजा अनुत्तरा व एको वा दो वा त्रिभिं वा चक्षेतेर्व संकेजा वा उचक्कर्ति ॥ सोइम्मीसाखेतु वं भेते । देवा समए २ अवहीरमाणा २ केवलपूर्व अक्षेत्र अवहीया त्रिमा ॥ योवमा । ते वं असंकेजा समए २ अवहीरमाणा ३ असंकेजाहि ज्ञेत्रपिणीहि उत्तरपिणीहि अवहीर्तु तो चेत वं अवहीया त्रिमा जाव सहस्यारे आप्याहै प्रभु चरम्भुवि गेवेजेतु अनुत्तरेतु व समए समए जाव केवलपूर्व अवहीया त्रिमा ॥ योवमा । ते वं असंकेजा समए २ अवहीरमाणा २ पक्षिओत्तरमस्तु असंकेजाहैमेतिवं अवहीर्तु तो चेत वं अवहीया त्रिमा ॥ सोइम्मीसाखेतु वं भेते । कथेतु देवार्व केम्भाक्षया सरिरोगाहमा पञ्चता ॥ योवमा । त्रिमिता सरीरा पञ्चता ठंगदा—मवधारमित्ता य उत्तरबेडमित्ता व तत्त्व वं जे से मवधारमित्ते से उहीर्व अगुलस्तु असंकेजाहैमाणो उक्षेतेर्व सत्त रक्षीमो तत्त्व वं जे से उत्तरबेडमित्ते से उहोर्व अगुलस्तु संकेजाहैमाणो उक्षेतेर्व ज्ञेयजस्तसहस्ये एवं एटेका ओसारेताणी जाव अनुत्तराणी एका रक्षी गेविज्ञुत्तरार्व एगो मवधारमित्ते सरीरे उत्तरबेडमित्ता नहिं ॥ १११ ॥ सोइम्मीसाखेतु वं देवार्व सरीरया लिंगप्रयत्नी पञ्चता ॥ योवमा । अर्द संप्रयात्र असंक्षयजी पञ्चता नेत्रुमी नेत्र छिरा नवि च्छाह वेत्र संप्रयत्रमित्ति जि पोम्प्रस्त्र हङ्कु फंडा जाव ते तेविं संकायाए परिणमेति जाव अनुत्तरोप्याश्वा ॥ सोइम्मीसाखेतु देवार्व सरीरया लिंगेत्तिमा पञ्चता ॥ योवमा । त्रिमिता सरीरा वं ते —मवधारमित्ता य उत्तरबेडमित्ता व तत्त्व वं जे से मवधारमित्ता है ममचक्षरेमस्तुत्तरसंठित्ता पञ्चता तत्त्व वं जे से उत्तरबेडमित्ता वं ज्ञानासंठाव सुठित्ता पञ्चता जाव अनुमो अवधमित्ता गेविज्ञुत्तराह भवधारमित्ता समचक्षर संसाप्रसंठित्ता उत्तरबेडमित्ता नहिं ॥ ११२ ॥ सोइम्मीसाखेतु देवा वेरिस्या क्षम्भेति पञ्चता ॥ योवमा । कथमत्तरतामा क्षम्भेति पञ्चता । क्षम्भुमारमाहेतु वं पउमस्मृत्योरा क्षम्भेति पञ्चता । वेम्भेते वं भेते ॥ ॥ योवमा । अम्भुमुग्यान्त्यामा क्षम्भेति पञ्चता एवं जाव गेवेजा अनुत्तरोप्याश्वा फरम्भुदित्ता क्षम्भेति पञ्चता ॥ योइम्मीसाखेतु वं भेते । कथेतु देवार्व सरीरया केरिगया गपिष्ये पञ्चता ॥ योवमा । सं यहा आमए—क्षोभुत्ताम वा ताहेव सम्बं जाव मवामनरया चह गपिष्ये पञ्चता जाव अनुत्तरोप्याश्वा ॥ सोइम्मीसाखेतु देवार्व सरीरया वेरिस्या पासेति पञ्चता ॥ योवमा । विरजउवमित्तुमात्तराहित्तिराहेति पञ्चता एवं जाव अनुत्तरोप्याश्वा ॥ सोइम्मीसाप्तदेवार्व केरिस्या पुमाणा उस्मामत्ताए परिणमेति ॥ योवमा । जे पोम्प्रस्त्रा

इट्टा कता जाव ते तेसि उस्सासत्ताए परिणमति जाव अणुत्तरोववाइया, एवं आहारत्ताएवि जाव अणुत्तरोववाइया ॥ सोहम्मीसाणदेवाण० कह लेस्साओ पण्ताओ ? गोयमा ! एगा तेउलेस्सा पण्तता । सण्कुमारमाहिंदेसु एगा पम्हलेस्सा, एवं वभलोगेवि पम्हा, सेसेसु एक्का सुक्कलेस्सा, अणुत्तरोववाइयाण० एक्का परमसुक्कलेस्सा ॥ सोहम्मीसाणदेवाण० कि सम्मदिट्टी मिच्छादिट्टी सम्मामिच्छादिट्टी ? गोयमा ! तिणिवि, जाव अतिमगेवेजा देवा सम्मदिट्टीवि मिच्छादिट्टीवि सम्मामिच्छादिट्टीवि, अणुत्तरोववाइया सम्मदिट्टी णो मिच्छादिट्टी णो सम्मामिच्छादिट्टी ॥ सोहम्मीसाणा० किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! दोवि, तिणिण णाणा तिणिण अण्णाणा णियमा जाव गेवेजा, अणुत्तरोववाइया नाणी नो अण्णाणी तिणिण णाणा णियमा । तिविहे जोगे दुविहे उवओगे सब्बेसि जाव अणुत्तरोववाइया ॥ २१५ ॥ सोहम्मीसाणदेवाण० ओहिणा केवडय खेत्त जाणति पासति ? गोयमा ! जहण्णेण अगुल्स्स असखेजाइभाग उक्कोसेण ओही जाव रयणप्पभा पुढवी उहु जाव साड विमाणाइ तिरिय जाव असखेजा दीवसमुद्दा एव—सक्कीसाणा पठमं दोच्च च सण्कुमारमाहिंदा । तच्चं च वभलतग सुक्कसहस्सारग चउत्थी ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे देवा पासति पचमिं पुढविं । त चेव आरणज्जुय ओहीनाणेण पासति ॥ २ ॥ छट्ठि हेट्टिममज्जिमगेवेजा सत्तमिं च उवरिहा । सभिण्णलोगणालिं पासति अणुत्तरा देवा ॥ ३ ॥ २१६ ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते !० देवाण कह समुग्घाया पण्तता ? गोयमा ! पच समुग्घाया पण्तता, तजहा—वेयणासमुग्घाए कसाय० मारणतिय० वेउव्विय० तेयासमुग्घाए०, एव जाव अज्जुए । गेवेजअणुत्तराण आडहा तिणिण समुग्घाया पण्तता ॥ सोहम्मीसाणदेवाण० केरिसय खुहपिवास पच्छणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! णत्यि खुहापिवास पच्छणुभवमाणा विहरंति जाव अणुत्तरोववाइया ॥ सोहम्मीसाणेसु ण भते ! कप्पेसु देवा एगत्त पभू विउव्वित्तए पुहुत्त पभू विउव्वित्तए ? हता पभू, एगत्त विउव्वेमाणा एर्गिदियरूप वा जाव पचिंदियरूप वा पुहुत्त विउव्वेमाणा एर्गिदियरूपाणि वा जाव पचिंदियरूपाणि वा, ताड सखेजाडपि असखेजाडपि सरिमाडपि असरिसाइपि सवद्वाडपि असवद्वाडपि रूपाइ विउव्वति विउव्वित्ता अप्पणा जहिच्छयाइ कज्जाइ करेति जाव अज्जुओ, गेवेजअणुत्तरोववाइया० देवा किं एगत्त पभू विउव्वित्तए पुहुत्त पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तपि पुहुत्तपि, नो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वति वा विउव्विस्सति वा ॥ सोहम्मीसाणदेवाण० केरिमय सायासोक्ख पच्छणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! मणुण्णा महा जाव मणुण्णा फासा जाव गेविजा, अणुत्तरोववाइया अणुत्तरा सदा जाव फासा ॥ सोहम्मीसाणेसु०

ऐवार्ण केरिस्या इही पञ्चता । गोममा । महिन्द्रिया महसुस्या जाव महाशुभाया  
इहीए प जाव अकुओ गेकेज्जुतारा य सब्बे महिन्द्रिया जाव सब्बे महाशुभाया  
अग्निधा जाव अहस्तिधा फाम ते वेक्षणाथा पञ्चता समजाउद्दो ॥ २१७ ॥  
सोहम्मीसाधा ऐवा केरिस्या विमूसाए पञ्चता । गोममा । दुश्मिहा पञ्चता  
तंजहा—ऐउचिक्षसुरीरा य अकेउचिक्षसुरीरा य सत्त्व र्ण जे से ऐउचिक्षसुरीरा  
ते हारनिराहवक्षम जाव इस विसामो उजोवेमाणा पमासेमाणा जाव पदिहा  
तत्त्व र्ण जे त अकेउचिक्षसुरीरा ते य जामरपवस्तुरहिया फाइत्ता विमूसाए  
पञ्चता ॥ सोहम्मीसाधेसु र्ण भेठे । कल्पेसु इवीमो केरिचिवाको विमूसाए पञ्च-  
तामो । गोममा । दुश्मिहामो पञ्चतामो तंजहा—ऐउचिक्षसुरीरामो य अवेउचिक्ष-  
सुरीराव्ये ज तत्त्व र्ण जामो ऐउचिक्षसुरीराव्ये तामो प्रवक्षसुहातामो प्रवक्ष-  
सहाम्भ वत्पर्व वक्षपरिहियामो चंद्रालगामो चंद्रविलासिनीमो चंद्रदसमयिता-  
ममो सिंगारापारत्त्वास्वेसामो उगम्य जाव पासाह्यामो जाव पदिहत्त्वामे तत्त्व र्ण  
जामो अवेउचिक्षसुरीरामो तामो र्ण जामरपवस्तुरहियामो फाइत्तामो विभूसाए  
पञ्चतामो उसेदु ऐवा इवीमो जाति जाव अकुओ गेकेज्जादेवा केरिस्या विमू-  
साए । पोवमा । जामरपवस्तुरहिया एवं देवी वत्तिय माविक्ष्यं पाहत्ता  
विमूसाए पञ्चता एवं अकुत्तरामि ॥ २१८ ॥ सोहम्मीसाधेसु ऐवा केरिस्या  
क्षममोग प्रलुभमाणा विहरति । गोममा । इहु यहा इहु यहा जाव फासा  
एवं जाव गेकेज्जा अकुत्तरोववाह्यार्ण अकुत्तरा सहा जाव अकुपरा फासा ॥ २१९ ॥  
ठिई यमेसि भाविक्ष्या वेविताएवि अर्णतर अर्णति चक्षा जे यही गर्वक्षति र्ण  
भाविक्ष्यं ॥ २२ ॥ सोहम्मीसाधेसु र्ण भेठे । कल्पेसु सम्पाका सञ्चभूया जाव  
सत्ता पुढिक्षद्वत्ताए जाव वक्षस्याक्षद्वत्ताए वेवत्ताए वेविताए आसुपसम्भ  
जाव भेडोवारणताए उवक्षपुम्य ॥ इता गोममा । अर्णतर अकुवा अर्णतकुत्ते  
सेदेदु कल्पेसु एवं चेव गवरि नो चेव र्ण इवित्ताए जाव गेकेज्जा अकुत्तरोववा-  
ह्यार्ण एवं जो चेव ज वेविताए । देतां यहा ॥ २२१ ॥ नेत्रज्यार्ण भेठे । केद्यव-  
जाव ठिई पञ्चता । वहेव इस वास्तवाहस्तार्ण वहेवेन लेतीष साग-  
रेवमार्ण, एवं यमेसि पुष्प्य विरिक्षक्षमोमित्यार्ण वहेव अदेसु रक्षेव तिति  
पक्षिमोक्षमार्ण, एवं मकुस्याप्यवि वेवार्ण यहा गेरावार्ण ॥ वेवेवेरव्याप्त जा चेव  
ठिई लवेव सुविदुवा विरिक्षक्षमोमित्यत्स वहेव लदेसुकुत्ते उक्षेव वक्षसह  
क्षम्ये मकुस्ये र्ण भेठे । मकुस्येसि अक्षमो वेविरि होर । पोवमा । जाप्योर्ण  
अतोमुकुत्ते उक्षेवेय तिति पक्षिमोक्षमार्ण पुष्प्यरीविपुम्यम्यक्षियार्ण ॥ नेत्रवम्युस-

देवाण अतरं जहन्नेण अतोमु० उक्कोसेण वणस्सइकालो । तिरिक्खजोणियस्स अतरं जहन्नेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेग ॥ २२२ ॥ एएसि ण भते ! ऐरइयाण जाव देवाण य क्यरे० ? गोयमा ! सब्बत्योवा मणुस्सा ऐरइया अस० देवा अस० तिरिया अणतगुणा, से त चउव्विहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ २२३ ॥ वीओ वे० देवुदेसो समत्तो ॥ तच्चा चउव्विहपडिवत्ती समत्ता ॥

तथ ण जे ते एवमाहसु—पचविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ते एवमाहसु, त०—एर्गिदिया वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचिंदिया । से कि त एर्गिदिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, एव जाव पंचिंदिया दुविहा प०, तं०—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । एर्गिदियस्स ण भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वावीस वाससहस्राई, वेइंदिय० जहन्नेण अतोमु० उक्कोसेण वारस सवच्छराणि, एवं तेइंदियस्स एगूणपण्ण राइंदियाण, चउरिंदियस्स छम्मासा, पचेंदियस्स जह० अतोमु० उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ, अपज्जत्तएर्गिंदियस्स ण० केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमु० उक्कोसेणवि अतो० एव सव्वेसिंपि अपज्जत्तगाण जाव पंचेंदियाण, पज्जत्तेर्गिंदियाण जाव पचिंन्दियाण पुच्छा, गो० ! जहन्नेण अतो० उक्को० वावीस वाससहस्राई अतोमुहुत्तृ-णाइ, एव उक्कोसियावि ठिई अतोमुहुत्तृणा सव्वेसिं पज्जत्ताण कायब्बा ॥ एर्गिदिए ण भते ! एर्गिदिएत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमु० उक्को० वणस्सइकालो । वेइंदिए ण भते ! वेइंदिएत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जह० अतोमु० उक्कोसेण सखेज काल जाव चउरिंदिए सखेज काल, पचेंदिए ण भते ! पचिंदिएत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जह० अतोमु० उक्को० साग-रोवमसहस्र साइरेग ॥ अपज्जत्तएर्गिदिए ण भते !० कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमु० उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त जाव पचिंदियअपज्जत्तए । पज्जत्तगएर्गिदिए ण भते !० कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखिज्जाइ वाससहस्राई । एव वेइंदिएवि, णवर सखेज्जाइ वासाइ । तेइंदिए ण भते !० सखेज्जा राइंदिया । चउरिंदिए ण० सखेज्जा मासा । पज्जत्तपचिंदिए० सागरोवमसय-पुहुत्त साइरेग ॥ एर्गिंदियस्स ण भते ! केवइय काल अतरं होइ ? गोयमा ! जह-णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो सागरोवमसहस्राई सखेज्जवासमव्महियाइ । वेइंदियस्स ण० अतरं कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइ-कालो, एव तेइंदियस्स चउरिंदियस्स पचेंटियस्स, अपज्जत्तगाण एवं चेव, पज्जत्त-गाणवि एव चेव ॥ २२४ ॥ एएसि ण भते ! एर्गिंदि० वेइ० तेइ० चउ० पचिं-

विमाण क्षयरे २ हितो अप्या का बहुता का द्रुगा का विसेसाहिता वा ५ गोमामा । सम्भवत्वोत्ता पञ्चदिवा चतुर्विदिवा विसेसाहिता तीर्थदिवा विसेसाहिता वेईरिदिवा विसेसाहिता पूर्णिदिवा अपत्तुलुप्ता । एवं अपवाहनार्थं सम्भवत्वोत्ता पञ्चदिवा अपवाहना चतुर्विदिवा अपवाहना विसेसाहिता तीर्थदिवा अपवाहना विसेसाहिता वेईरिदिवा अपवाहना विसेसाहिता एग्निदिवा अपवाहना अपत्तुलुप्ता तीर्थदिवा अप ३ ॥ सम्भवत्वोत्ता चतुर्विदिवा पञ्चदिवा फञ्चत्तमा विसेसाहिता वेईरिदिवपञ्चत्तमा विसेसाहिता तीर्थदिवपञ्चत्तमा विसेसाहिता एग्निदिवपञ्चत्तमा विसेसाहिता फञ्चत्तमा विसेसाहिता ॥ एष्वि वे भृते । सर्वदिवार्थं पञ्चत्तमपञ्चत्तमार्थं क्षयरे २ हितो ५ गोमामा । सम्भवत्वोत्ता साईरिदिवा अपवाहना फञ्चत्तमा संबोजलुप्ता । एवं पूर्णिदिवार्थि ॥ एष्वि वे भृते । वेईरिदिवार्थं फञ्चत्तपञ्चत्तमार्थं क्षयरे २ हितो अप्या का बहुता का द्रुगा का विसेसाहिता वा ५ गोमामा । सम्भवत्वोत्ता वेईरिदिवा फञ्चत्तमा अपवाहना असंबोजलुप्ता एवं तीर्थदिवचतुर्विदिवपञ्चदिवार्थि ॥ एष्वि वे भृते । पूर्णिदिवार्थं वेईरिदिवा तीर्थदिवा चतुर्विदिवा एग्निदिवार्थं फञ्चत्तमा अपवाहनार्थं क्षयरे २ ५ गोमामा । सम्भवत्वोत्ता चतुर्विदिवा फञ्चत्तमा एग्निदिवा फञ्चत्तमा विसेसाहिता वेईरिदिवा फञ्चत्तमा विसेसाहिता तीर्थदिवा फञ्चत्तमा विसेसाहिता एग्निदिवपञ्चत्तमा विसेसाहिता वेईरिदिवा अपवाहना विसेसाहिता पूर्णिदिवपञ्चत्तमा संबोजलुप्ता साईरिदिवा एवं दिवा विसेसाहिता । एते पंचदिवा संसारसमाप्त्यार्थं जीवा प ३२५ ॥ चतुर्विदिवा पञ्चदिवा पनिषत्ती समत्वा ॥

तत्त्व वें ऐसे हो एकमार्गीकृ-शक्तिहा एवारसमाकल्यगा जीका प हो एकमार्गी  
तत्त्वहा—पुरुषिक्षमावा जातिक्षमावा तंड चार वर्गस्त्राव्यहा तुलक्ष्मया प हो  
कि हो मुख्यि ? पुरुषि दुर्लिपा पक्षता तं—शुद्धमपुरुषिक्षमावा जातिपुरुषिक्षमा  
ह्या शुद्धमपुरुषिक्षमावा तुलिपा पक्षता तंत्त्वहा—पक्षता म अपक्षतागा व पर्व  
जातिपुरुषिक्षमावा एक वर्गक्षम्ये भेदेन जातित्वात्वात्वास्त्राव्यक्षम्या भेदेन्ना।  
हो कि तं उत्तमाहा ? ? दुर्लिपा पक्षता तंत्त्वहा—पक्षता म अपक्षतागा व  
त २२६ प पुरुषिक्षम्यक्षम्य वें भेदो ! वर्गक्षम्ये वासे द्विर्व पक्षता ? ग्रन्थमा । वह  
भेदो भेदोमुकुर्त उक्षेषेव वावीर वाविक्षम्याह, एवं सम्बेदि द्विर्व नेत्रमा  
तम्भम्भक्षम्य वहेव भेदोमुकुर्त उक्षेषेव सेतीरे चापारोम्भम्याह, अन्तर्वागार्थ  
सम्बेदि वहेव उक्षेषेव भेदोमुकुर्त पक्षतागर्थ सम्बेदि उक्षेषेवा द्विर्व

अतोमुहुत्तूणा कायन्वा ॥ २२७ ॥ पुढविकाइए ण भते । पुढविकाइएति कालओ  
केवचिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्षोसेण असखेज काल जाव अस-  
खेजा लोया । एव आउ० तेउ० वाउक्षाइयाण वणस्सडकाइयाण अणतं काल  
जाव आवलियाए असखेजइभागो ॥ तसकाइए ण भते ।० जहन्नेण अतोमु० उक्षो-  
सेण दो मागरोवमरहस्साइ सखेजवासमव्महियाइ । अपञ्जत्तगाण छण्हवि जहण्णेणवि  
उक्षोसेणवि अतोमुहुत्त, पञ्जत्तगाण—‘वामसहस्रा संखा पुढविदगाणिलतहृण  
पञ्जता । तेउ राइंदिसखा तससागरसयुहुत्ताइ ॥ १ ॥’ पञ्जत्तगाणवि सञ्चेसिं  
एव ॥ पुढविकाइयस्स ण भते । केवइयं काल अतर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण  
अतोमुहुत्त उक्षोसेण वणप्फइकालो, एव आउतेउवाउकाइयाण वणस्सइकालो,  
तसकाइयाणवि, वणस्सइकाइयस्स पुढविकालो, एव अपञ्जत्तगाणवि वणस्सइकालो,  
वणस्सईणं पुढविकालो, पञ्जत्तगाणवि एव चेव वणस्सइकालो, पञ्जत्तवणस्सईणं  
पुढविकालो ॥ २२८ ॥ अप्पावहुय-सञ्चत्योवा तसकाइया तेउकाइया असखेजगुणा  
पुढविकाइया विसेसाहिया आउकाइया विसेसाहिया वाउक्षाइया विसेसाहिया वणस्स-  
इकाइया अणतगुणा एव अपञ्जत्तगाणवि पञ्जत्तगाणवि ॥ एएसि ण भते । पुढविकाइयाण  
पञ्जत्तगाण अपञ्जत्तगाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा एव जाव विसेसाहिया वा ?  
गोयमा ! सञ्चत्योवा पुढविकाइया अपञ्जत्तगा पुढविकाइया पञ्जत्तगा सखेजगुणा, एएसि  
ण भते । आ० सञ्चत्योवा आउक्षाइया अपञ्जत्तगा पञ्जत्तगा सखेजगुणा जाव वणस्स-  
इकाइया० सञ्चत्योवा तसकाइया पञ्जत्तगा तसकाइया अपञ्जत्तगा असखेजगुणा ॥  
एएसि ण भते । पुढविकाइयाण जाव तसकाइयाणं पञ्जत्तगअपञ्जत्तगाण य कयरे  
२ हिंतो अप्पा वा ४ ? गो० । सञ्चत्योवा तसकाइया पञ्जत्तगा, तसकाइया अपञ्जत्तगा  
असखेजगुणा, तेउक्षाइया अपञ्जत्ता असखेजगुणा, पुढविकाइया आउक्षाइया वाउ-  
क्षाइया अपञ्जत्तगा विसेसाहिया, तेउक्षाइया पञ्जत्तगा सखेजगुणा, पुढविआउवाउ-  
पञ्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपञ्जत्तगा अणतगुणा, सकाइया अपञ्जत्तगा  
विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पञ्जत्तगा सखेजगुणा, सकाइया पञ्जत्तगा विसेसाहिया  
॥ २२९ ॥ सुहुमस्स ण भते । केवइय काल ठिँड़ पण्णता ? गोयमा ! जहन्नेण  
अतोमुहुत्त उक्षोसेणवि अतोमुहुत्त एव जाव सुहुमणिओयस्स, एव अपञ्जत्तगाणवि  
पञ्जत्तगाणवि जहण्णेणवि उक्षोसेणवि अतोमुहुत्त ॥ २३० ॥ सुहुमे ण भते । सुहु-  
मेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्षोसेण असखेजकाल  
जाव असखेजा लोया, सञ्चेसिं पुढविकालो जाव सुहुमणिओयस्स पुढविकालो,  
अपञ्जत्तगाण सञ्चेसिं जहण्णेणवि उक्षोसेणवि अतोमुहुत्त, एव पञ्जत्तगाणवि सञ्चेसिं

जहानेणवि उद्गोचेणवि अंतोमुकुर्ता ॥ २११ ॥ मुकुमस्स नै मंदि । केवल्मै अङ्गं भरतं  
होइ । गोकमा । जहानेव अंतोमु उद्गो असेकेव वर्षं अस्त्रो असेकेवालो  
उसुपिणीमोसुपिणीओ बोत्तमो अगुमस्स असेकेवालमालो एवं मुकुमवस्तुवश्व-  
वस्तुवि मुकुमविलोमस्सवि आव असेकेवा अंदेया असेकेवालमालो । मुकुमविलोमस्सवि  
वप्पस्तुवालये । एवं अपवाहार्व पवाहारणवि ॥ २१२ ॥ एवं अप्पालमुख्ये समवेदो  
मुकुमवेठवश्वालया मुकुमपुडविलालया विसेचाहिया मुकुममारवाल विसेचाहिया मुकुम-  
निझेमा असेकेवालया मुकुमवणस्तुवालया अर्थत्तुया मुकुमा विसेचाहिया एवं  
अपवाहार्व पवाहारणवि एवं चेत ॥ एषुधि नै मंदे । मुकुमार्व पवाहारपवाहार्व  
अवरे । गोकमा । सम्भवेदो मुकुमा अपवाहार्व मुकुमा पवाहार्व उद्देवालुया  
एवं आव मुकुमविलोमा ॥ एषुधि नै मंदे । मुकुमार्व मुकुमपुडविलालया आव  
मुकुमविलोमाय व पवाहारपवाहा अवरे २ विठो । गोकमा । सम्भवेदो मुकुमवे-  
ठवालया अपवाहार्व मुकुमपुडविलालया अपवाहार्व विसेचाहिया मुकुमवाडवपवाहा  
विसेचाहिया मुकुमवाडवपवाहा विसेचाहिया मुकुमवेठवालया पवाहार्व उद्देवालुया  
मुकुमपुडविलालयावपवाहार्व विसेचाहिया मुकुमवेठवालया अपवाहार्व अस्त्रेवालुया  
मुकुमविलोमा पवाहार्व मुकुमवणस्तुवश्वालया अपवाहार्व अर्थत्तुया  
मुकुमवपवाहा विसेचाहिया मुकुमवणस्तुवपवाहा उद्देवालुया मुकुमा पवाहा विसे-  
चाहिया ॥ २१३ ॥ आवरस्तु नै मंदे । केवल्मै अङ्गं ठिकै पवाहा । गोकमा ।  
जहानेव अंतोमु उद्गो देवीस चागरेवमार्द ठिकै पवाहा एवं आवरत्तमार्द-  
स्तुवि आवरुद्वीप्यस्तु वावीवालस्तुवस्तुवार्द, आवरत्तमार्द सतावालुद्वस्तुवे  
वास्त्रेवेत्तस्म लिखि राहिवा वावरत्तमार्द लिखि वावरत्तमार्द, वावरत्त-  
दस्त्राचस्तुवस्तुवार्द, एवं पौत्रवरीरत्तमार्दस्तुवि लिखेवस्त्र अवेगवि उद्गोत्तेवि  
अठामु एवं आवरत्तमेवस्तुवि अपवाहार्व उद्देवि अंतोमुकुर्ता पवाहार्व  
उद्गोत्तेवि ठिकै अंतोमुकुर्ता अववाहा उम्बेवि ॥ २१४ ॥ आवरे नै मंदे । आव-  
रेवि काम्भो विविर होइ । गोकमा । वह अंतो उद्गोत्तेवि अवेगवि वासे  
असेकेवालो उसुपिणीमोसुपिणीओ अस्त्रो वेतालो अगुमस्स अर्थात्तमालयो  
आवरुद्विलालयावाडवत्तमार्द पतेवस्त्रीरत्तमार्दवस्त्रावस्त्र आवरत्तमेवस्त्र  
एवं अवेगवि उद्गोत्तेवि अनोमु उद्गोत्तेवि उद्गोत्तेवि चापरोवमेवामोवीवो-हृवाहिवामो  
सवामो अगुमस्सामो राहा असेकेवा । ओहे य आवरत्तमार्दवालो वेतालो वोष्टे  
॥ १ ॥ उद्गोत्तेवि उद्गोत्तेवि उद्गोत्तेवि उद्गोत्तेवि । वेठवद्विलालया एवु चाहिया  
होवि वाम्भाप ॥ २ ॥ अंतोमुकुर्तावस्त्रे होइ अपवाहार्व सम्पैवि ॥ पवाहारपवाहार्व

य वायरतसकाइयस्सावि ॥ ३ ॥ एएसि ठिई सागरोवमसयपुहुत्त साइरेंग । तेउस्य  
सख राई[दिया] दुविहणिओए मुहुत्तमद्धं तु । सेसाण सखेजा वाससहस्सा य सब्बेसि  
॥ ४ ॥ २३५ ॥ अतर वायरस्स वायरवणस्सइस्स णिओयस्स वायरणिओयस्स  
एएसि चउण्हवि पुढविकालो जाव असखेजा लोया, सेसाण वणस्सइकालो । एव  
पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणवि अतरं, ओहे य वायरतरु ओघनिओए य वायरणिओए  
य । काल्मसखेजतरं सेसाण वणस्सईकालो ॥ १ ॥ २३६ ॥ अप्पा० सब्बत्थोवा  
वायरतसकाइया वायरतेउकाइया असखेजगुणा पत्तेयसरीरवायरवणस्सड० अस-  
खेजगुणा वायरणिओया असखे० वायरपुढवि० असखे० आउवाउ० असखेजगुणा  
वायरवणस्सइकाइया अणतगुणा वायरा विसेसाहिया १ । एव अपज्जत्तगाणवि  
२ । पज्जत्तगाण सब्बत्थोवा वायरतेउकाइया वायरतसकाइया असखेजगुणा  
पत्तेयसरीरवायरा असखेजगुणा सेसा तहेव जाव वायरा विसेसाहिया ३ । एएसि णं  
भते ! वायरण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो० २ गो० । सब्बत्थोवा वायरा पज्जत्ता  
वायरा अपज्जत्तगा असखेजगुणा, एव सब्बे जहा वायरतसकाइया ४ । एएसि णं  
भते ! वायरण वायरपुढविकाडयाण जाव वायरतसकाडयाण य पज्जत्तापज्जत्ताण  
कयरे २ हिंतो० २ गोयमा । सब्बत्थोवा वायरतेउकाइया पज्जत्तगा वायरतसका-  
इया पज्जत्तगा असखेजगुणा वायरतसकाइया अपज्जत्तगा असखेजगुणा पत्तेयसरीरवा-  
यरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असखेजगुणा वायरणिओया पज्जत्तगा असखेज०  
पुढविआउवाउपज्जत्तगा असखेजगुणा वायरतेउअपज्जत्तगा असखेजगुणा पत्तेयमरी-  
रवायरवणस्सड० अय० असखे० वायरणिओया अपज्जत्तगा असखे० वायरपुढवि-  
आउवाउअपज्जत्तगा असखेजगुणा वायरवणस्सड० पज्जत्तगा अणतगुणा वायर-  
पज्जत्तगा विसेसाहिया वायरवणस्सइ० अपज्जत्ता असखेजगुणा वायरा अपज्जत्तगा  
विसेसाहिया वायरा विसेसाहिया ५ । एएसि ण भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाडयाण  
जाव सुहुमनिगोदाण वायरण वायरपुढविकाडयाण जाव वायरतसकाइयाण य  
कयरे २ हिंतो० २ गोयमा । सब्बत्थोवा वायरतसकाइया वायरतेउकाइया असखेज-  
गुणा पत्तेयसरीरवायरवण० असखे० तहेव जाव वायरवाउकाइया असखेजगुणा  
सुहुमतेउकाइया असखे० सुहुमपुढवि० विसेसाहिया सुहुमआउ० वि० सुहुमवाउ०  
विसेसा० सुहुमनिओया असखेजगुणा वायरवणस्सइकाइया अणतगुणा वायरा विसे-  
साहिया सुहुमवणस्सइकाइया असखे० सुहुमा विसेसा०, एव अपज्जत्तगावि पज्जत्त-  
गावि, णवरि सब्बत्थोवा वायरतेउकाइया पज्जत्ता वायरतमकाइया पज्जत्ता असखे-  
जगुणा पत्तेयसरीर० सेस तहेव जाव सुहुमपज्जत्ता विसेसाहिया । एएसि ण भते !

ध्रुमार्थ वायराज म पञ्चतार्थ अपञ्चतार्थ व क्षरे २ । गोममा । सम्बलोदा  
वायरा पञ्चता वायरा अपञ्चता असेक्षेत्रगुणा ध्रुमा अपञ्चता असेक्षेत्रगुणा ध्रु  
मपञ्चता सेक्षेत्रगुणा एवं ध्रुमपुष्टिविवरणपुढ़ि वाव ध्रुमनिमोदा वावरमिभिरोदा  
वावर लोमसरीरवामरण सम्बलोदा पञ्चता अपञ्चता असेक्षेत्रगुणा एवं वावर  
लसम्ब्रह्मविदि ॥ सम्बेति भर्ते । पञ्चतमपञ्चतार्थ क्षरे २ शिंहो अप्या वा ध्रुमा वा  
द्रुमा वा विसेसाहिता वा ॥ गोममा । सम्बलोदा वावरतेवक्षात्त्वा पञ्चता वायरत्क्ष-  
क्षात्त्वा पञ्चता असेक्षेत्रगुणा ते चेष्ट अपञ्चता असेक्षेत्रगुणा लोमसरीरवावर  
वास्त्राम्बपञ्चता असेक्षेत्रे वायरमिभिरोदा पञ्चता असेक्षेत्रे वायरपुढ़ि पञ्चता  
असेक्षेत्रे आरवातपञ्चता असेक्षेत्रे वायरतेवक्षात्त्वमपञ्चता असेक्षेत्रे फोय अपञ्चता  
असेक्षेत्रे वायरनिमोदक्षपञ्चता असेक्षेत्रे वायरपुढ़ि वायरवात्क्षर अपञ्चता  
असेक्षेत्रगुणा ध्रुमतेवक्षात्त्वा अपञ्चता असेक्षेत्रे ध्रुमपुढ़िविभावात्त्वमपञ्चता  
विसेसा ध्रुमतेवक्ष्यपञ्चता सेक्षेत्रगुणा ध्रुमपुढ़िविभावात्त्वमपञ्चता विसेसा-  
हिता ध्रुमविग्रोदा अपञ्चता असेक्षेत्रगुणा ध्रुमविसेसोदा पञ्चता सेक्षेत्रगुणा  
वावरणगस्त्राम्बस्या पञ्चता अर्पणहुया वायरा पञ्चता विसेसाहिता वायरत्क्ष-  
क्षात्त्वा अपञ्चता असेक्षेत्रगुणा वावरा अपञ्चता विसेसाहिता ध्रुम-  
पञ्चत्क्षक्षात्त्वा अपञ्चता ध्रुमा अपञ्चता विसेसाहिता ध्रुमवात्त्व-  
स्त्राम्बस्या पञ्चता सेक्षेत्रगुणा ध्रुमा पञ्चता विसेसाहिता ध्रुमा विसेसाहिता  
॥ २३७ ॥ अविहा वै भर्ते । विष्वेदा पञ्चता ॥ गोममा । तुविहा विष्वेदा  
पञ्चता तंजहा—विष्वेदा य विष्वेदीवा व ॥ विष्वेदा वै भर्ते । अविहा  
पञ्चता ॥ गोममा । तुविहा प तंजहा—ध्रुमविमोदा य वायरविमोदा य ॥  
ध्रुमविमोदा वै भर्ते । अविहा पञ्चता ॥ गोममा । तुविहा पञ्चता तंजहा—  
पञ्चता य अपञ्चता व ॥ वायरविमोदा विदि तुविहा पञ्चता तंजहा—पञ्चता  
य अपञ्चता व ॥ विष्वेदीवा वै भर्ते । अविहा पञ्चता ॥ गोममा । तुविहा  
पञ्चता तंजहा—ध्रुमविमोदीवा य वायरविमोदीवा य । ध्रुमविगोदीवा  
तुविहा प ते —पञ्चता य अपञ्चता व । वायरविमोदीवा तुविहा  
पञ्चता ते —पञ्चता व अपञ्चता व ॥ २३८ ॥ विष्वेदा वै भर्ते ।  
दन्तध्रुवाए इ उक्षेजा असेक्षेत्रा अर्चता ॥ गोममा । तो उक्षेजा असेक्षेत्रा तो  
अर्चता एवं पञ्चता अपञ्चता ॥ ध्रुमविग्रोदा वै भर्ते । दन्तध्रुवाए  
इ उक्षेजा असेक्षेत्रा अर्चता ॥ गो । तो उक्षेजा असेक्षेत्रा तो अर्चता एवं  
पञ्चता अपञ्चता ॥ ध्रुमविग्रोदा एवं वायरत्क्षरि पञ्चता अपञ्चता ॥ तो उक्षेजा

असखेजा णो अणता ॥ णिगोदजीवा ण भंते ! दब्बट्ट्याए कि सखेजा असखेजा अणता ? गोयमा ! नो सखेजा नो असखेजा अणता, एव पज्जतावि अपज्जतावि, एव सुहुमणिओयजीवावि पज्जतगावि अपज्जतगावि, वादरणिगोदजीवावि पज्जतगावि अपज्जतगावि ॥ णिगोदा ण भते ! पएसट्ट्याए कि सखेजा० पुच्छा, गोयमा ! नो सखेजा नो असखेजा अणता, एव पज्जतगावि अपज्जतगावि । एवं सुहुमणि-ओयावि पज्जतगावि अपज्जतगावि, पएसट्ट्याए सब्बे अणता, एवं वायरनिगोयावि पज्जतयावि अपज्जतयावि, पएसट्ट्याए सब्बे अणता, एव णिगोदजीवा नवविहावि पएसट्ट्याए सब्बे अणता ॥ एएसि ण भते ! णिओयाण सुहुमाण वायराण पज्जत-गाण अपज्जतगाण दब्बट्ट्याए पएसट्ट्याए दब्बट्टपएसट्ट्याए क्यरे २ हिंतो अप्पा वा वहुया वा० २ गोयमा ! मब्बत्योवा वायरणिओयपज्जतगा दब्बट्ट्याए वादर-निगोदा अपज्जतगा दब्बट्ट्याए असखेजगुणा सुहुमणिगोदा अपज्जतगा दब्बट्ट्याए असखेजगुणा सुहुमणिगोदा पज्जतगा दब्बट्ट्याए सखेजगुणा, एव पएसट्ट्याएवि ॥ दब्बट्टपएसट्ट्याए सब्बत्योवा वायरणिओया पज्जता दब्बट्ट्याए जाव सुहुमणि-गोदा पज्जता दब्बट्ट्याए सखेजगुणा, सुहुमणिओएहितो पज्जतएहित्ये दब्बट्ट्याए वादरणिगोदा पज्जता पएसट्ट्याए अणतगुणा, वायरणिओया अपज्जता पएसट्ट्याए असखे० जाव सुहुमणिओया पज्जता पएसट्ट्याए सखेजगुणा । एव णिओयजीवावि, गवरि सकमए जाव सुहुमणिओयजीवेहितो पज्जतएहितो दब्बट्ट्याए वायरणिओयजीवा यज० पएसट्ट्याए असखेजगुणा, सेस तहेव जाव सुहुमणिओयजीवा पज्जता पए-सट्ट्याए सखेजगुणा ॥ एएसि ण भते ! णिगोदाण सुहुमाण वायराण पज्जताण अपज्जताण णिओयजीवाण सुहुमाण वायराण पज्जतगाण अपज्जतगाण दब्बट्ट्याए पएसट्ट्याए दब्बट्टपएसट्ट्याए क्यरे २ हिंतो० २ गो० । सब्बत्योवा वायरणिओया पज्जता दब्बट्ट्याए वायरणिओया अपज्जता दब्बट्ट्याए असहेजगुणा सुहुमणिगोदा अप० दब्बट्ट्याए असखेजगुणा सुहुमणिगोदा पज० दब्बट्ट्याए सखेजगुणा सुहु-मणिओएहितो दब्बट्ट्याए वायरणिओयजीवा पज्जता दब्बट्ट्याए अणतगुणा वायरणि-ओयजीवा अपज्जता दब्बट्ट्याए असखेजगुणा सुहुमणिओयजीवा अपज्जता दब्बट्ट्याए असखेजगुणा सुहुमणिओयजीवा पज्जता दब्बट्ट्याए सखेजगुणा, पएसट्ट्याए मब्ब-स्थ्योवा वायरणिओयजीवा पज्जता पएसट्ट्याए वायरणिओयो० अपज्जता पएसट्ट्याए असखे० सुहुमणिओयजीवा अपज्जतगा पएसट्ट्याए असखेजगुणा सुहुमणिगोदजीवा पज्जता पएसट्ट्याए सखेजगुणा सुहुमणिगोदजीवेहितो पएसट्ट्याए वादरणिगोदा पज्जता पएसट्ट्याए अणतगुणा वायरणिओया अपज्जतगा पएस० असखेजगुणा जाव

मुहुरमिथोवा फलता पएसद्वयाए संबोज्जुणा दम्बद्वपएसद्वयाए सुमत्तेवा चावर-  
मिथोवा पवता दम्बद्वयाए चावरमिथोवा अफलता दम्बद्वयाए असुभेज्जुणा चाव  
मुहुरमिथोवा पवता दम्बद्वयाए संबोज्जुणा मुहुरमिथोवाहिंतो दम्बद्वयाए चावरमि-  
थोयजीवा फलता दम्बद्वयाए अणदगुणा सेसा ताहेव चाव मुहुरमिथोयजीवा फल-  
ता दम्बद्वयाए संबोज्जुणा मुहुरमिथोयजीवेहिंतो पवताएहिंतो दम्बद्वयाए चावरमि-  
थोयजीवा फलता पएसद्वयाए असुभेज्जुणा सेसा ताहेव चाव मुहुरमिथोवा फलता  
पएसद्वयाए संबोज्जुणा ॥ उत्ते छम्बिहा संसारसमावन्नमा जीवा प ॥ ३१६ ॥

तत्त्व च वे ते एवमाहं—चामिहा संसारसमावन्नमा जीवा प ते एवमाहं—  
संबहा—नेरइया तिरिक्तवोभिवा तिरिक्तवोभिवीवा मनुस्ता मनुस्तीओ देवा  
देवीओ ॥ नेरइयस्त थिई चहेर्व दसवासमाहस्ताह उडोसेवं तेतीर्व शागरोवमाहं,  
तिरिक्तवोभिवस्त थिई चहेर्व भंतोमुहुत उडोसेवं तिरिप पक्षिभेवमाहं, एवं  
तिरिक्तवोभिवीएवि मनुस्ताविं मनुस्तीलिं देवावे थिई चहा नेरइयावे देवीवे  
चहेवेव दसवाससाहस्याह उडोसेवं फलफलपक्षिभेवमाहं ॥ नेरइयदेवदेवीवे चहेव  
थिई भेव समिद्वया । तिरिक्तवोभिवे च भेवे ! तिरिक्तवोभिविटि छाकओ भेवविर  
होइ ! योवमा ! चहेवेव भंतोमुहुत उडोसेवं चगस्त्वद्यव्य तिरिक्तवोभिवीवं  
चहेव भंतोमु उडो तिरिप भिवावमाह पुम्भोदिपुहुतमम्भाहियदं । एवं  
मनुस्तास्त मनुस्तीएवि ॥ नेरइयस्त भंतर चह भंतोमु उडोसेवं चगस्त्वद्यव्ये ।  
एवं सम्भावं तिरिक्तवोभिववाहं तिरिक्तवोभिवावं चहेवेव भंतोमु उडो  
चागराकम्भयपुहुत चाइरेवे ॥ अपाहुवे—अपाहुवोवो भंतुस्तीओ भंतुस्ता अप-  
येज्जुणा देरइया असुभेज्जुणा तिरिक्तवोभिवीओ असुभेज्जुणाओ देवा असुभे-  
ज्जुणा देवीओ असुभेज्जुणाओ तिरिक्तवोभिवा वर्षक्षुणा । उत्ते छम्बिहा  
संसारसमावन्नमा जीवा प ॥ ४ ॥ छम्बी सप्तविहा पछियती समता ॥

तत्त्व च वे ते एवमाहं—मद्दुमिहा संसारसमावन्नमा जीवा प ते एवमाहं  
ते—पामममयनेरइया अपामममयदेरइया पामममयतिरिक्तवोभिविया अपाममम  
यतिरिक्तवोभिवा पामगमवमनुस्ता अपामममयमणुस्ता काममममयदेरइया अपामम-  
मयववाह ॥ पटमममलनउवस्त च भंतवे ! भेववं चाल थिई फलता ! येवमा !  
पामममयदेरइयस्त चह एई समय उडो एई समय अपामगममभेवस्त  
चह दग्गामगहम्भाद ममउग्गाह उडोसेवं तेतीर्व शागरोभमाह रामउग्गाह ।  
पटमममयतिरिक्तवोभिवस्त चह एई समये उडो एई समवं अपामममयति

रिक्खजोणियस्स स जह० खुड्डागं भवगगहण समऊण उक्को० तिन्हि पलिओवमाइ समऊणाइ, एव मणुस्साणवि जहा तिरिक्खजोणियाण, देवाण जहा ऐरइयाण ठिई० ऐरइयदेवाण जच्चेव ठिई सच्चेव सचिट्ठणा दुविहाणवि । पठमसमयतिरिक्खजोणियए ण भंते ! पढ० काल्झो केवच्चिर होइ॒ गोयमा ! जह० एक्स समय उक्को० एक्स समय, अपढम० तिरिक्खजोणियस्स जह० खुड्डाग भवगगहण समऊण उक्कोसेण वणस्सइकालो । पठमसमयमणुस्साण जह० उ० एक्स समय, अपढम० मणुस्साण जह० खुड्डाग भवगगहण समऊण उक्को० तिन्हि पलिओवमाइ पुब्बकोडिपुहुत्तमभ्यहियाइ० अतर पठमसमयणेरइयस्स जह० दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमभ्यहियाइ० उक्को० वणस्सइकालो, अपढमसमय० जह० अतोमु० उक्को० वणस्सइकालो । पठमसमय-तिरिक्खजोणियस्स जह० दो खुड्डागभवगगहणाइ समऊणाइ उक्को० वणस्सइकालो, अपढमसमयमणुस्सस्स जह० खुड्डाग भवगगहण समयाहिय उक्को० सागरोव-भसयपुहुत्त साइरेग । पठमसमयमणुस्सस्स जह० दो खुड्डाइ भवगगहणाइ समऊणाइ० उक्को० वणस्सइकालो, अपढमसमयमणुस्सस्स जह० खुड्डाग भवगगहण समयाहिय उक्को० वणस्सइकालो । देवाण जहा नेरइयाण जह० दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्त-मभ्यहियाइ उक्को० वणस्सइकालो, अपढमसमय० जह० अतो० उक्को० वणस्सइ-कालो ॥ अप्पावहु० एएसि ण भते ! पठमसमयनेरइयाण जाव पठमसमयदेवाण य क्यरे २ हिंतो॒ गोयमा ! सञ्चत्थोवा पठमसमयमणुस्सा पठमसमयणेरइया असखेजगुणा पठमसमयदेवा असखेजगुणा पठमसमयतिरिक्खजोणिया असखेज-गुणा ॥ अपढमसमयनेरइयाण जाव अपढमसमयदेवाण एव चेव अप्पवहु० णवरि अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणतगुणा ॥ एएसि ण भते ! पठमसमयनेरइयाण अपढम० ऐरइयाण क्यरे २ गोयमा ! सञ्चत्थोवा पठमसमयणेरइया अपढम-समयनेरइया असखेजगुणा, एव सञ्चे ॥ एएसि ण भते ! पठमसमयणेरइयाण जाव अपटमसमयदेवाण य क्यरे २ गोयमा ! सञ्चत्थोवा पठमसमयमणुस्सा अपढमसमयमणुस्सा असखेजगुणा पठमसमयणेरइया असखेजगुणा पठमसमयतिरिक्खजोणिया असखेजगुणा अपढमसमयनेरइया असखे-जगुणा अपढमसमयदेवा असखेजगुणा अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणतगुणा । सेत अट्टविहा ससारसमावण्णगा जीवा पण्णता ॥ २४१ ॥ सत्तमा अट्टविह-पडिवत्ती समन्ता ॥

तथ्य ण जे ते एवमाहसु-णविहा समारसमावण्णगा जीवा प० ते एवमाहसु, त०-पुदविकाडया आउकाइया तेउकाइया वाउकाडया वणस्सइकाइया व्रेइदिया

तेऽपि वा अवरिदिया पंचैरिया ॥ तिर्ते सम्भेसि मात्रियम्भा ॥ पुदमिक्षाइस्मात् संविद्वुणा  
पुदमिक्षाम्भे आब वाठकाइयार्ण वणस्त्वैर्ण वणस्त्वैर्ण वेऽपि वा तेऽपि वा तेऽपि वा  
अवरिदिया संवेद वासे पंचैरियार्ण सागरोत्तमसहस्रं साहरेण ॥ अतरं सम्भेसि वलंती  
वार्त वणस्त्वैर्ण वार्त असुरं वास ॥ अप्यावहुय सम्भालोवा पंचैरिया अवरिदिया  
विसेवाहिया तेऽपि वा विसेवाहिया वेऽपि वा विसेवाहिया वेठकाइया अर्द्धे  
पुदमिक्ष आठ वाठ विसेवाहिया वणस्त्वैर्ण वार्त वलंती । देते वणविहा  
संवारसमावन्नगा वीका फलता ॥ २४२ ॥ अद्यमा पायदिव्यपुष्टिवर्ती समस्ता ॥

तथ ए ते ते एवमार्हम्-दसविहा संवारसमावन्नगा जीवा प ते एवमार्हम्  
ते वह—पायमसमयएगिरिया अप्यमसमयएगिरिया फडमसमयेऽपि वा अप्यमसमय-  
वेऽपि वा जाव फडमसमयपंचैरिया अप्यमसमयवंचिदिया फडमसमयएगिरियसु च  
भटे । केवलं कर्त्त तिर्ते फलता ॥ गोवमा । वहज्ञेव एवं समर्थ उहो एव अप्यम  
समयएगिरियसु वहज्ञेव वहार्ण भवमार्हं समक्षेण उहो वार्तीसे वाससाइसार्ह  
समक्षेण, एवं सम्भेसि फडमसमयक्षम्भं वहज्ञोर्ण एको समझो उहोसेण एको  
उमओ अप्यम वहज्ञेण वहार्ण भवमार्हं समक्षेण उहोसेण वा वस्तु तिर्ते शा  
यमसम्भा जाव पंचैरियार्ण तेतीसे सागरोवमार्हं समक्षेण ॥ संविद्वुणा फडमसम्भ  
मस्तु वहज्ञेण एवं समर्थ उहोसेण एवं समर्थ अप्यमसमयगार्ण वहज्ञेव वहार्ण  
भवमार्हं समक्षेण उहोसेण एगिरियार्ण वणस्त्वैर्णम्भे वेऽपि वा वेऽपि वा वेऽपि वा  
संवेदं कर्त्त वेचैरियार्ण सागरोत्तमसहस्रं घारेय ॥ फडमसमयएगिरियार्ण भटे ।  
वामओ वेचैरिय भटरं होइ ॥ गोवमा । वहज्ञेण दो उग्रागममार्हज्ञेव समक्षेण  
उहो वणस्त्वैर्णम्भे अप्यम एगिरिय भटरं वहज्ञेण वहार्ण भवमार्हं समक्षा  
हिये उहो दो सागरोवमसहस्रार्हं सुपेत्वा समम्भाविवद, देसार्ण सम्भमि पायम-  
समदयार्ण भटरं वह दो उग्रार्ह भवमार्हज्ञेव समक्षेण उहो वणस्त्वैर्णम्भे  
अप्यमसमदयार्ण देसार्ण वहज्ञेव वहार्ण भवमार्हं समक्षाहिये उहो वणस्त्वैर्ण-  
म्भे ॥ पडमसमाइयार्ण सम्भेसि सम्भवोवा पडमसमयपंचैरिया फडम अउरिदिया  
विसेवाहिया फडम तेऽपि वा विसेवाहिया प वेऽपि वा विसेवाहिया प एगिरिया  
विसेवाहिया ॥ एवं अप्यमसमदयार्ण अवरि अप्यमसमयएगिरिया अर्थागुणा ।  
दोर्व अप्यवहु विवरणोवा पायमसमयएगिरिया अप्यमगमयएगिरिया अर्थागुणा  
देसार्ण सम्भवोवा पडमसमदयार्ण अप्यम असुवेज्ज्ञुणा ॥ एगिरिये भटे । पायमसमय  
एगिरियार्ण अप्यमगमयएगिरियार्ण जाव अप्यमगमकरिदियार्ण व वहरे  
गोवमा । सम्भालोवा पडमसमयपंचैरिया पडमगमयउरिदिया विमेगाहिया वाम-

समयते इदिया विसेसाहिया एव हेड्वामुहा जाव पठमसमयएर्गिंदिया विसेसाहिया अप-  
ढमसमयपचेंदिया असखेजगुणा अपढमसमयचउर्रिदिया विसेसाहिया जाव अपढम-  
समयएर्गिंदिया अणतगुणा ॥ २४३ ॥ सेत्त दसविहा ससारसमावणगा जीवा पण्णता,  
सेत्त ससारसमावणगजीवाभिगमे ॥ नवमा दसविहा पडिवत्ती समत्ता ॥

से किं त सब्बजीवाभिगमे ? सब्बजीवेषु ण इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहि-  
ज्ञांति एगे एवमाहसु—दुविहा सब्बजीवा पण्णता जाव दसविहा सब्बजीवा पण्णता ॥  
तथं ण जे ते एवमाहसु—दुविहा सब्बजीवा पण्णता ते एवमाहसु, तजहा—सिद्धा  
चेव असिद्धा चेव इति ॥ सिद्धे ण भते । सिद्धेति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा !  
साइए अपज्जवसिए ॥ असिद्धे ण भते । असिद्धेति० ? गोयमा ! असिद्धे दुविहे पण्णते,  
तजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपञ्जवसिए ॥ सिद्धस्त ण भते ।  
केवइकाल अतरं होइ ? गोयमा ! साइयस्त अपज्जवसियस्त णत्य अतर ॥ असि-  
द्धस्त ण भते । केवइय अतरं होइ ? गोयमा ! अणाइयस्त अपज्जवसियस्त णत्य  
अतर, अणाइयस्त सपञ्जवसियस्त णत्य अतर ॥ एएसि ण भते । सिद्धाण असि-  
द्धाण य क्यरे २ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा सिद्धा असिद्धा अणतगुणा ॥ २४४ ॥  
अहवा दुविहा सब्बजीवा पण्णता, तजहा—सइदिया चेव अर्णिंदिया चेव । सइदिए  
ण भते ।० कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! सइंदिए दुविहे पण्णते, त०—अणाइए वा  
अपज्जवसिए अणाइए वा सपञ्जवसिए, अर्णिंदिए साइए वा अपज्जवसिए, दोण्हवि  
अतर नत्य । सब्बत्थोवा अर्णिंदिया सईंदिया अणतगुणा । अहवा दुविहा सब्बजीवा  
पण्णता, तजहा—सकाइया चेव अकाडया चेव एव चेव, एव सजोगी चेव अजोगी  
चेव तहेव, [एव सलेस्सा चेव अलेस्सा चेव ससरीरा चेव असरीरा चेव] सचिद्गुण  
अतर अप्पावहुय जहा सइन्दियाण ॥ अहवा दुविहा सब्बजीवा पण्णता, तजहा—  
सवेदगा चेव अवेदगा चेव ॥ सवेदए ण भते । सवेऽ० ? गोयमा ! सवेदए तिविहे  
पण्णते, तजहा—अणाइए अपज्जवसिए, अणाइए सपञ्जवसिए, साइए मपञ्जवसिए,  
तथं ण जे से साइए सपञ्जवसिए से जह० अतोमु० उझो० अणांत काल जाव  
खेत्तओ अवहू पोगलपरियट देसूण ॥ अवेदए ण भते । अवेदएति कालओ केव-  
च्चिर होइ ? गोयमा ! अवेदए दुविहे पण्णते, तजहा—साइए वा अपज्जवसिए साड़े  
वा सपञ्जवसिए, तथं ण जे से साइए सपञ्जवसिए से जहण्णेण एक समय उझो०  
अतोमुहुत्त ॥ सवेयगस्स ण भते । केवडकाल अतर होइ ? गोयमा ! अणाइयस्त  
अपज्जवसियस्त णत्य अतर, अणाइयस्त सपञ्जवसियस्त नत्य अतर, साइयस्त  
सपञ्जवसियस्त जहण्णेण एव समय उझोसेण अतोमुहुत्त ॥ अवेयगस्स ण भते ।

केवर्य चर्चं अंतरं होइ । गोवमा । सात्प्रसु अपवासिमसु नहिं अंतर, साइ-  
यसु उपज्ञानिमसु वह अंतोमु उद्धोसेव अर्थात् कर्त्त जाव अवर्तु पोमालम-  
रियहै रसून । अप्पावृतुर्गं सम्भवोवा अवेक्षणा सबेक्षणा अर्थत्तुणा । एवं सकलाई  
पेव अस्ताई पेव २ वहा सबैको तहेव माविमसे ॥ वहा दुमिहा सम्भवीषा प  
तं -समेसा य अमेसा य वहा अविहा दिश उपवासोवा अमेवा समेवा अर्थत्तुणा  
॥ ३४५ ॥ वहा वाची जाव अन्नाणी चेव ॥ वाची चं भेटे । आविति काम्लो ॥  
गोवमा । वाची दुमिह पकते त -साइए वा अपवासिए साइए का सपवासिए,  
तात्प च ये से साइए सपवासिए से वहाणीर्व अंतोमुकुत उद्धोसेव उपविसागरो-  
वनार्ह उत्तरेगत्तु, अन्नाणी वहा समेरणा ॥ वाविसु अंतर वहाणीर्व अंतोमुकुत्तु  
उद्धोसेव अर्थात् कर्त्त अवर्तु पोमालमरियहै रसून । अप्पावृत्य-सम्भवोवा वाची अन्नाणी अन्नत्तुणा ॥ वहा  
दुमिह सम्भवीषा पकता तं -सापारोक्तता च अगागारोक्तता य उपविद्वाया अन्तर्द  
च वहाणीर्व उद्धोसेव अंतोमुकुत्तु उपवासु चागारो झेवे ॥ ३४६ ॥  
वहा दुमिह सम्भवीषा पकता तंवहा—आहारण पेव अवाहारणा चेव ॥  
वाहारए चं भेटे । जाव केविहै होइ । गोवमा । वाहारए दुमिहे पक्षते हंवहा—  
उपवासिमाहारए च केविमाहारए य उपवासिमाहारए चं जाव केविहै होइ ।  
गोवमा । वहाणीर्व वहाणीर्व अवमाहर्व दुसमर्थ उद्धो असेकेव चाव जाव अधमो  
केतावो अगुल्मसु असेकेवमार्ग । केविमाहारए चं जाव केविहै होइ । गोवमा ।  
य अंतोमु उद्धो देस्ता पुञ्चकोवी ॥ अगाहारए चं भेटे । अविहै ॥ गोवमा ।  
अगाहारए दुमिहे पक्षते तंवहा—उपवासिमाहारए य केविमाहारए य  
उपवासिमाहारए चं जाव केविहै होइ । गोवमा । वहाणीर्व एवं समर्थ उद्धोसेव  
दो समया । केविमाहारए दुमिहे पक्षते तंवहा—किम्बेविमाहारए च  
मवत्प्रकेविमाहारए य ॥ किम्बेविमाहारए चं भेटे । अस्त्वो केविहै  
होइ ॥ गो । साइए अपवासिए ॥ मवत्प्रकेविमाहारए चं भेटे । अविहै पक्षते ॥  
गो । मवत्प्रकेविमाहारए दुमिहे पक्षते तं -नुव्योगिमवत्प्रकेविमाहारए य अवोवि-  
माहारप्रकेविमाहारए च । सुव्योगिमवत्प्रकेविमाहारए चं भेटे । वाम्पये  
केविहै ॥ गो । अववृत्यामानुदोसेव विनिम समया । अवोविमवत्प्रकेविम वह  
अपो उहो अंतोमुकुत्तु ॥ उपवासिमाहारणसु केवर्य वहाणीर्व अंतर ॥ गोवमा ।  
वहाणीर्व एवं समर्थ उद्धो दो समया । केविमाहारणसु अंतर अववृत्यामु-

कोसेण तिण्णि समया ॥ छउमत्यअणाहारगस्स अतर जहशेण खुडागभवगगहणं  
दुसमऊण उक्षो० असखेज काल जाव अगुलस्स असखेजइभाग । सिद्धकेवलिअणा-  
हारगस्स साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ सजोगिभवत्थकेवलिअणाहार-  
गस्स जह० अतो० उक्षोसेणवि, अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारगस्स णत्थि अतरं ॥  
एएसि ण भते ! आहारगाण अणाहारगाण य क्यरे २ हिंतो अप्पा वा  
बहु० ? गोयमा ! सब्बत्थोवा अणाहारगा आहारगा असखेज० ॥ २४७ ॥  
अहवा दुविहा सब्बजीवा पण्णता, तजहा—सभासगा य अभासगा य ॥ सभासए ण  
भते ! सभासएत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एकं समय उक्षो०  
अतोमुहुत ॥ अभासए ण भते० ? गोयमा ! अभासए दुविहे पण्णते, तं०—साइए वा  
अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए, तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जह०  
अतो० उक्षो० अणांत काल अणताओ उस्सपिणीओसपिणीओ वणस्सडकालो ॥  
भासगस्स ण भते ! केवइकाल अतर होइ ? गोयमा ! जह० अतो० उक्षो० अणांत  
काल वणस्सइकालो । अभासग० साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर, साइयस-  
पज्जवसियस्स जहण्णेण एकं समयं उक्षो० अतो० । अप्पावहु० सब्बत्थोवा भासगा  
अभासगा अणांतगुणा ॥ अहवा दुविहा सब्बजीवा प०, त०—ससरीरी य असरीरी य०  
असरीरी जहा सिद्धा, सब्बत्थोवा औसरीरी ससरीरी अणांतगुणा ॥ २४८ ॥ अहवा  
दुविहा सब्बजीवा पण्णता, तजहा—चरिमा चेव अचरिमा चेव ॥ चरिमे ण भते !  
चरिमेत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! चरिमे अणाइए सपज्जवसिए, अचरिमे  
दुविहे प०, त०—अणाइए वा अपज्जवसिए साइए वा अपज्जवसिए, दोण्हपि णत्थि  
अतरं, अप्पावहुय—सब्बत्थोवा अचरिमा चरिमा अणांतगुणा । [ अहवा दुविहा सब्ब-  
जीवा प०, त०—सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य, दोण्हपि सचिद्गुणावि अतरपि  
जह० अतो० उ० अतो०, अप्पावहु० सब्बत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता  
असखेजगुणा ] सेत्त दुविहा सब्बजीवा पञ्चता ॥ २४९ ॥ ० ॥ तत्थ ण जे ते एवमाहसु-  
तिविहा सब्बजीवा पण्णता ते एवमाहसु, तजहा—सम्मदिद्धी मिच्छादिद्धी सम्मा-  
मिच्छादिद्धी ॥ सम्मदिद्धी ण भते० कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! सम्मदिद्धी  
दुविहे पण्णते, तजहा—साडए वा अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए, तत्थ  
जे ते साइए सपज्जवसिए से जह० अतो० उक्षो० छावद्विं सागरोवमाईं माडरे-  
गाड० मिच्छादिद्धी तिविहे अणाडए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए साडए  
वा सपज्जवसिए, तत्थ जे ते माइए सपज्जवसिए से जह० अतो० उक्षो० अणांत  
काल जाव अवहू पोगलपरियट देसूण सम्मामिच्छादिद्धी जह० अतो० उक्षो०

अंतोमुकुर्तं ॥ सम्मदिद्विस्य अंतरं साइपस्य अपज्ञवसिष्टस्य ननिय अंतरं, साइपस्य सफज्ञवसिष्टस्य अहं अंतो उद्धो अंतरं कल्प बाब अवश्व पोमाळपरियाई देसूर्य मित्तमित्तिद्विस्य अवाइपस्य अपज्ञवसिष्टस्य गतिः अंतरं, अवाइपस्य सफज्ञवसिष्टस्य नहिं अंतरं साइपस्य सफज्ञवसिष्टस्य अहं अंतो उद्धो छालमुक्ति सागरेषमाई साहरेण्याई, सम्मामित्तमित्तिद्विस्य अहं अंतो उद्धो अंतरं कल्प बाब अवश्व पोमाळपरियाई देसूर्य । अप्याशु सञ्चस्तोषा सम्मामित्तमित्तिद्विस्य अंतरं अर्णतयुगा मित्तमित्तिद्विस्य अंतरं ॥ २५ ॥ अहमा तिथिः सुम्भवीया पृथगा तं—परिता अपरिता नोमपरिता । परिते वं मंते । व्याख्यामो केविर होइ । गोममा । परिते दुविहे पण्ठो तं—क्षयपरिते य संसारपरिते य । क्षयपरिते नं मंते । ३ गोममा । अहं अंतोमु उद्धो असुखेयं कल्पं जाव असुखेया स्मेणा । संसारपरिते वं मंते । संसारपरिते व्याख्यामो केविर होइ । गो । अहं अंतो उद्धो अंतरं कल्पं बाब अवश्व पोमाळपरियाई देसूर्य । अपरिते वं मंते । ५ गो । अपरिते दुविहे पण्ठो तं—क्षयपरिते य संसारमध्यरिते य क्षयपरिते वं—अहं अंतो उद्धो अंतरं कल्पं वण्ससूक्ष्मये सुसारापरिते दुविहे पण्ठो तंयान्-मणाइए वा अस्तवदिए अकाइए वा उपज्ञवसिष्ट, नोपरितोनोमपरिते साइप सफज्ञवसिष्ट । क्षयपरितस्य अंतरं अहं अंतो उद्धो वण्ससूक्ष्मये सुसारापरितस्य गतिः अंतरं, काकापरितस्य अहं अंतो उद्धो असुखेयं कल्पं पुष्टिश्चये । सुसारापरितस्य अवाइपस्य अपज्ञवसिष्टस्य नहिं अंतरं, अवाइपस्य सुपक्ष-मित्तिद्विस्य नहिं अंतरं शोपरितोनोमपरितस्य गतिः अंतरं । अप्याशु सम्भत्योषा परिता शोपरिता नोमपरिता अर्णतयुगा अपरिता अंतरं ॥ २५१ ॥ अहमा तिथिः सुम्भवीया प तं—परिता अपज्ञवसिष्ट नोपज्ञतामानोमपज्ञतामा पञ्जानगो वं मंते । १ गोममा । अहं अंतो उद्धो सागरेषमस्तुपुर्त उद्दरेप । अपज्ञतगो वं मंते । १ गोममा । अहं अंतो उद्धो अंतो नोपज्ञतामोमपज्ञतरं साइप क्षयपरित । पर्वतगस्य अंतरं अहं अंतो उद्धो अंतो अपज्ञतगस्य अहं अंतो सहस्रे सागरेषमस्तुपुर्त उद्दरेण लायस्य अरियं अंतरं । अप्याशु सम्भत्योषा नोपज्ञतामानोमपज्ञतामा अर्णतयुगा पञ्जाना संकेम्युगा ॥ २५२ ॥ आहा तिथिः सुम्भवीया प वं—शुभुमा बाबरु नोपदुम नोपासरा शुभुम वं मंते । शुभुमेति व्याख्यामो केविर । गो । अहूप्येन अंतोपुर्त उद्धोपुर्त असुखेयं कल्पं पुष्टिश्चये बाबरु अहं अंतो असुखेयं कल्पं असुखेयो उत्तप्तिशीभोसुप्तिशीओ अस्त्वो वेताभी अनुपस्य असुखेयम्

भागो, नोसुहुमनोवायरे साइए अपजवसिए, सुहुमस्स अनर वायरकालो, वायरस्स  
अतर शुहुमकालो, तइयस्स नोसुहुमणोवायरस्स अतरं नत्थि । अप्पावहु०  
सब्बत्थोवा नोसुहुमनोवायरा वायरा अणतगुणा सुहुमा असखेजगुणा ॥ २५३ ॥  
अहवा तिविहा सब्बजीवा पण्णता, तजहा—सणी असणी नोसणीनोअसणी,  
सञ्ची णं भते ।० कालओ० ? गो०! जह० अतो० उक्को० सागरोवमसयपुहुत्तं  
साइरेग, असणी जह० अतो० उक्को० वणस्सइकालो, नोसणीनोअसणी  
साइ अपजवसिए । सण्णिस्स अतर जह० अतो० उक्को० वणस्सइकालो,  
असणिणस्स अतर जह० अतो० उक्को० सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेग, तइयस्स  
णत्थि अतर । अप्पावहु० सब्बत्थोवा सणी नोसञ्चीनोअसणी अणतगुणा  
असणी अणतगुणा ॥ २५४ ॥ अहवा तिविहा सब्बजीवा पण्णता, तजहा—  
भवसिद्धिया अभवसिद्धिया नोभवसिद्धियानोअभवसिद्धिया, अणाइया सपजवसिया  
भवसिद्धिया, अणाइया अपजवसिया अभवसिद्धिया, साइया अपजवसिया नोभव-  
सिद्धियानोअभवसिद्धिया । तिष्ठपि नत्थि अतर । अप्पावहु० सब्बत्थोवा अभव-  
सिद्धिया णोभवसिद्धियाणोअभवसिद्धिया अणतगुणा भवसिद्धिया अणतगुणा ॥ २५५ ॥  
अहवा तिविहा सब्ब० प०, तजहा—तसा थावरा नोतसानोथावरा, तसस्स णं  
भते ।०? गोयमा ! जह० अतो० उक्को० दो सागरोवमसहस्राइ साइरेगाइ, थावरस्स  
सच्चिद्गुणा वणस्सइकालो, णोतसानोथावरा साइया अपजवसिया । तसस्स अतर  
वणस्सइकालो, थावरस्स अतरं दो सागरोवमसहस्राइ साइरेगाइ, णोतसणोथावरस्स  
णत्थि अतर । अप्पावहु० सब्बत्थोवा, तसा नोतमानोथावरा अणतगुणा थावरा  
अणतगुणा । से त तिविहा सब्बजीवा पण्णता ॥ २५६ ॥०। तत्थ ण जे ते एवमाहसु—  
चउविहा सब्बजीवा पण्णता ते एवमाहसु, तं०—मणजोगी वइजोगी कायजोगी  
अजोगी । मणजोगी ण भते ।०? गोयमा ! जह० एक समय उक्को० अतो०, एव  
वइजोगीवि, कायजोगी जह० अतो० उक्को० वणस्सइकालो, अजोगी साइ अपज-  
वसिए । मणजोगीस्स अतरं जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्को० वणस्सइकालो, एव  
वइजोगीगिस्सवि, कायजोगीगिस्स जह० एक समय उक्को० अतो०, अजोगीगिस्स णत्थि  
अतर । अप्पावहु० सब्बत्थोवा मणजोगी वइजोगी असखेजगुणा अजोगी  
अणतगुणा कायजोगी अणतगुणा ॥ २५७ ॥ अहवा चउविहा सब्बजीवा पण्णता,  
तजहा—इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा नपुसगवेयगा अवेयगा, इत्थिवेयए ण भते !  
इत्थिवेयएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा । (एगेण आएसेण०) पलियसय-  
दस्तरं अद्वारस चोद्दस पलियपुहुत्त, समओ जहण्णो, पुरिसवेयस्स जह० अतो०

उझो सागरेमसव्युहुत साइरण मर्युगविष्टम जह एई समये उझो अर्जी  
कार्ल बणसप्तशतम । अवयए हुविद प तं—साप्तए वा अपञ्जयिए राशा वा  
रापञ्जविभित्ति स जह एई स उझो अंतोमु । इष्पिकदस्तम अन्तर जह अनो  
उझो बनस्त्रास्तम पुरिष्वेयरम जह एई समये उझो बनस्त्रास्तमे  
न्युमावेयरम जह अंतो उझो सागरेमसव्युहुत साइरण अवयमो जहा  
हैदा । अणाव्यु यम्बल्यावा पुरिष्वेयगा इष्पिकेक्षा सुनेव्युगुणा अधेयगा  
अर्णत्युजा न्युगमवेयगा अर्णत्युजा ॥ ३५८ ॥ अहुजा चउभिहा सम्बजीवा फलता  
तंबहा—चक्षुर्दूरमवी अचक्षुर्दूरमवी ओहिदेमवी केवल्दूरमवी ॥ चक्षुर्दूरमवी  
एं भंते । ३ गोवमा । जह अंतो उझो सागरेमसव्युहुत साइरण अम्बुद्धिमवी  
हुविहे फलते तं—अजाइए वा अरञ्जविभित्ति अगाइए वा अपञ्जविभित्ति । ओहिदेसविस्तम  
जह इई समये उझो दो छाव्यु सागरेमसार्ण माप्तरेगाओ केवल्दूरमवी मादर  
अपञ्जविभित्ति ॥ चक्षुर्दूरसविस्तम अंतरे जह अंतोमु उझो बनस्त्रास्तम ।  
अपक्षुर्दूरसविस्तम हुविहेस्तम मतिप अन्तर । ओहिदेसविस्तम अंतोमु उझो  
चक्षुर्दूरसविस्तम । केवल्दूरमविस्तम अतिप अतर । अप्पाव्युर्य—सम्बजीवा ओहिदेमवी  
चक्षुर्दूरमवी असुनेव्युगुणा केवल्दूरमवी अर्णत्युजा अचक्षुर्दूरमवी अर्णत्युजा  
॥ ३ ९ ॥ अहुजा चउभिहा सम्बजीवा फलता तंबहा—दृक्षा असुक्षा  
सज्जयासज्जका ओसेव्युजानोभस्त्रयानोसेव्युजासेव्यु । सेव्यु एं भंते । १ गोवमा ।  
जह एई समये उझो देस्त्रा पुलक्षोही असेव्यु जहा अज्ञानी सेव्युसाप्तम  
जह अंतोमु उझो केस्त्रा पुलक्षोही होसेव्युओअसेव्युओसेव्युसेव्युए साइर  
अपञ्जविभित्ति, चक्षुर्दूरसविस्तम दोग्यु अन्तर जह अंतोमु उझो अर्णही  
पोमाल्यरिहै देस्त्रे असुक्षवस्त जाग्युवे गरिप अतर साक्षमस्त सफञ्जविसिक्षत  
जह एई स उझो देस्त्रा पुलक्षोही चक्षुर्दूरसविस्तम अतिप अतर ॥ अप्पाव्यु  
सम्बजीवा सज्जमा सज्जयासज्जका असुनेव्युगुणा नासेव्युओअसेव्युओसेव्युसेव्यु  
अर्णत्युजा असेव्यु अर्णत्युजा अर्णत्युजा ॥ देहे चउभिहा सम्बजीवा फलता ॥ ९ ॥  
तथा सम्बजीवच०पहिद्वर्ती सम्बता ॥

तरव ने जे ते एक्षाहैट—पञ्जिण सुम्बजीवा फलता ते एक्षाहैट, तंबहा—  
केवल्दूर्याहै मालम्भाहै मायाक्षमाहै देमहस्ताहै अम्भाहै ॥ देहस्ताहैमालम्भाहै  
मालम्भाहैर्य जह जातो उझो अंतोमु देमहस्ताहैस्त जहै ॥ एई स उझो  
अंतो अक्षम्भाहै हुविहे जहा हैदा ॥ कोहक्षाइमालम्भाहैमालम्भाहैर्ये मर्त  
जह एई स उझो जहे देहस्ताहैस्त अतर जह अंतो उझो जहे जातो

अक्साईं तहा जहा हेढ़ा ॥ अप्पावहुय—अक्साइणो सब्बत्थोवा माणक्साईं तहा अणतगुणा । कोहे मायालोमे विसेसमहिया मुणेयब्बा ॥ १ ॥ २६१ ॥ अहवा पचविहा सब्बजीवा पण्ता, तजहा—ऐरडया तिरिक्वजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा । सचिद्विष्टतराणि जह हेढ़ा भणियाणि । अप्पावहु० सब्बत्थोवा मणुस्सा ऐरडया असखेजगुणा देवा असखेजगुणा सिद्धा अणतगुणा तिरिया अणतगुणा । सेत्त पचविहा सब्बजीवा पण्ता ॥ २६२ ॥ चउत्था स० प० समत्ता ॥

तत्य ण जे ते एवमाहसु—छविहा सब्बजीवा पण्ता ते एवमाहसु, तजहा—आभिणिवोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्वणाणी केवलणाणी अणाणी, आभिणिवोहियणाणी ण भते ! आभिणिवोहियणाणिति कालओ केवचिर होइ० गोयमा ! जह० अन्तोमुहुत्त उक्तो० छावद्विं सागरोवमाइ साइरेगाइ, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणी ण भते !० २ गोयमा ! जह० एक समय उक्तो० छावद्विं सागरोवमाइ साइरेगाइ, मणपज्वणाणी ण भते !० २ गो० ! जह० एक समय उक्तो० देसूणा पुव्वकोडी, केवलनाणी ण भते !० २ गो० ! साइए अपज्वसिए, अन्नाणिणो तिविहा प०, त०—अणाइए वा अपज्वसिए अणाइए वा सपज्वसिए साइए वा सपज्वसिए, तत्य० साइए सपज्वसिए से जह० अतो० उक्तो० अणत काल अवहू पुगलपरियट देसूण । अतर आभिणिवोहियणाणिस्स जह० अतो० उक्तो० अणत काल अवहू पुगलपरियट देसूण, एव सुय० अतर० मणपज्वव०, केवलनाणिणो णत्थि अतर, अन्नाणि० साइयसपज्वसियस्स जह० अतो० उक्तो० छावद्विं सागरोवमाइ साइरेगाइ । अप्पा० सब्बत्थोवा मण० ओहि० असखे० आभि० सुय० विसेसा० सट्टाणे दोवि तुला केवल० अणत० अणाणी अणतगुणा ॥ अहवा छविहा सब्बजीवा पण्ता, तजहा—एरिंदिया वेंदिया तेंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अरिंदिया । सचिद्विष्टतरा जहा हेढ़ा । अप्पावहुय—सब्बत्थोवा पंचेंदिया चउरिंदिया विसेसा० तेईंदिया विसेसा० वेंदिया विसेसा० अरिंदिया अणंतगुणा एरिंदिया अणतगुणा ॥ २६३ ॥ अहवा छविहा सब्बजीवा पण्ता, तंजहा—ओरालियसरीरी वेउवियसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी ॥ ओरालियसरीरी ण भते !० कालओ केवचिर होइ० गोयमा ! जहणेण खङ्गाग भवगहणं दुसमऊण, उक्तोसेण असखेज काल जाव अगुलस्स असखेजइमाग, वेउवियसरीरी जह० एक समय उक्तोसेण तेतीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमव्महियाइ, आहारगसरीरी जह० अतो० उक्तो० अतो०, तेयगसरीरी दुविहे प०, त०—अणाइए वा अपज्वसिए अणाइए वा सपज्वसिए, एव कम्मगसरीरीवि, असरीरी साइए अपज्वसिए ॥ अतरं ओरालियसरीरस्स जह०

एहं समय उडो तेजीसे सागरोत्तमाई भवेषुद्गुलमभ्यहियद्, देवतिक्षिप्तसुरौत्तम  
च भूतो उडो अपर्णं क्षमं वग्नस्तद्वास्ये भावाग्नमधीरत्स च वृत्तो  
उडो अपर्णं क्षमं वाव अपावृष्टि पोराम्बद्धरियद् देवज तेव क्षमगुरुरत्स य  
उपर्णिषि वरिष्ठ अंतरं ॥ अप्यावृष्टि चन्द्रत्वोवा वावाग्नमधीरी देवतिक्षिप्तसुरौत्तम  
असुरेष्वगुणा वोराम्बद्धरियी असुरीरी अपर्णत्वगुणा असरीरी अपर्णत्वगुणा तेवाक्षमगुरुरत्स  
दोषि दुवा अपर्णत्वगुणा ॥ देवत उपर्णिषि सम्बन्धीवा पञ्चाता ॥ २६५ ॥ ८  
तत्प च ते एकमाहेषु-उत्तिष्ठा सम्बन्धीवा प तं एकमाहेषु तंवा—पुढिष्ठ-  
क्षम्या भास्त्रक्षम्या देवक्षम्या वातक्षम्या वग्नस्त्रक्षम्या तस्त्रक्षम्या अक्षम्या ।  
संविद्वृष्टिरुद्धरा चक्षा देवा । अप्यावृष्टि सम्बन्धीवा वग्नाता तंवा—  
क्षम्येस्या नीक्षेस्या क्षम्येस्या तेवेस्या फ्लक्षेस्या प्रुद्धेस्या असेस्या ॥ फ्ल  
सेसे च मंते । क्षम्येसेति क्षम्येतो देवतिर होत । गोवमा । च भूतो उडो  
तेजीसे सागरोत्तमाई भवेषुद्गुलमभ्यहियद्, नीक्षेसेते च च भूतो उडो एव  
सागरोत्तमाई परिष्ठोत्तमत्प असुरेष्वभागमभ्यहियद्, अठेष्ठेते च मंते । ३ यो ।  
यह भूतो उडो शिखि सागरोत्तमाई परिष्ठोत्तमस्तु असुरेष्वभागमभ्यहियद्,  
देवेष्ठेते च मंते । ४ योवमा । च च भूतो शिखि सागरोत्तमाई परिष्ठोत्तमस्तु  
असुरेष्वभागमभ्यहियद्, फ्लक्षेते च मंते । ५ योवमा । च च भूतो उडो-  
देव सागरोत्तमाई भवेषुद्गुलमभ्यहियद्, दुक्षेते च मंते । ६ गो । च उत्तेते भूतो-  
उडोते तेजीसे सागरोत्तमाई भवेषुद्गुलमभ्यहियद्, असेसे च मंते । दादर  
भगवत्तसिए ॥ क्षम्येयस्य च मंते । भतुर क्षम्यो देवतिर होत ॥ गोवमा । च  
भूतो उडो तेजीसे सागरोत्तमाई भवेषुद्गुलम एव नीक्षेयस्यावि क्षम्येत्तस्यि  
देवेष्ठेयस्य च मंते । भतुर क्षम्यो देवतिर होत ॥ गोवमा । च भूतो उडो वग्नस्त्रक्षम्ये  
एव फ्लक्षेयस्यि प्रुद्धेयस्यि देवतिष्ठि एवमेतरे, असेयस्य च मंते । अंतरं  
क्षम्येते । गोवमा । दादरस्य भगवत्तसियस्य वरिष्ठ अनुरोध एवसि च मंते ।  
जीवानं क्षम्येयाणं भीमेयाप्त क्षम्येते तेव फ्ल दुद क्षेयाप्त य क्षम्येते । ७  
योवमा । सम्बन्धीवा दुक्षेयस्या फ्लक्षेयस्या देवेष्यगुणा असुरेष्वगुणा  
असेयस्या अपर्णत्वगुणा क्षम्येयस्या अपर्णत्वगुणा वीक्षेयस्या असेयस्या  
दिष्ठेयस्या । तेऽनं उत्तिष्ठा एव्यजीवा पञ्चाता ॥ २६६ ॥ ९ ॥ तत्प च ते त  
एकमाहेषु-पुढिष्ठा सम्बन्धीवा पञ्चाता ते एकमाहेषु तंवा—आमिष्ठोद्दिष्य

नाणी सुय० ओहि० मण० केवल० मद्भगणाणी सुयअण्णाणी विभगणाणी ॥  
 आभिणिवोहियणाणी ण भते । आभिणिवोहियणाणिति कालओ केवचिर होइ॒ २  
 गोयमा । जह० अतो० उक्तो० छावट्टिसागरोवमाइ साइरेगाइं, एव सुयणाणीवि ।  
 ओहिणाणी ण भते ।०२ गोयमा । जह० एक समय उक्तो० छावट्टिसागरोवमाइ  
 साइरेगाइ, मणपञ्चवणाणी ण भते ।०२ गोयमा । जह० एक स० उक्तो० देसूणा  
 पुब्बकोडी, केवलणाणी ण भते ।०२ गोयमा । साइए अपञ्जवसिए, मद्भगणाणी  
 ण भते ।०२ गोयमा । मद्भगणाणी तिविहे पण्णते, त०-अणाइए वा अपञ्जवसिए  
 अणाइए वा सपञ्जवसिए साइए वा सपञ्जवसिए, तथ्य ण जे से साइए सपञ्जवसिए  
 से जह० अतो० उक्तो० अणत काल जाव अवश्व पोगलपरियट देसूण, सुयअण्णाणी  
 एव चेव, विभगणाणी ण भते । विमंग० २ गोयमा । जह० एक समय उ० तेतीस  
 सागरोवमाइ देसूणाए पुब्बकोडीए अब्भहियाइ ॥ आभिणिवोहियणाणिस्स ण  
 भते । अतर कालओ० २ गोयमा । जह० अतो० उक्तो० अणंत काल जाव अवश्व  
 पोगलपरियट देसूण, एव सुयणाणिस्सवि, ओहिणाणिस्सवि, मणपञ्चवणाणिस्सवि,  
 केवलणाणिस्स ण भते । अतर० २ गोयमा । साइयस्स अपञ्जवसियस्स णत्थि  
 अतर । मद्भगणाणिस्स ण भते । अतर० २ गोयमा । अणाइयस्स अपञ्जवसियस्स  
 णत्थि अतर, अणाइयस्स सपञ्जवसियस्स णत्थि अतर, साइयस्स सपञ्जवसियस्स  
 जह० अतो० उक्तो० छावट्टि सागरोवमाइ साइरेगाइ, एव सुयअण्णाणिस्सवि,  
 विभगणाणिस्स ण भते । अतर० २ गोयमा । जह० अतो० उक्तो० वणस्सइकालो ॥  
 एएसि ण भते । आभिणिवोहियणाणीण सुयणाणीण ओहि० मण० केवल०  
 मद्भगणाणीण सुयअण्णाणीण विभगणाणीण य क्यरे० २ गोयमा । सब्बत्थोवा  
 जीवा मणपञ्चवणाणी, ओहिणाणी असखेजगुणा, आभिणिवोहियणाणी सुयणाणी  
 एए दोवि तुला विसेसाहिया, विभगणाणी असखेजगुणा, केवलणाणी अणत-  
 गुणा, मद्भगणाणी सुयअण्णाणी य दोवि तुला अणतगुणा ॥ २६७ ॥ अहवा  
 अष्टविहा सब्बजीवा पण्णता, तजहा—गेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणि-  
 णीओ मणुस्सा मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा ॥ गेरइए ण भते । गेरइएति  
 कालओ केवचिर होइ॒ २ गोयमा । जहन्नेण दस वाससहस्राइ उ० तेतीस सागरो-  
 वमाइ, तिरिक्खजोणिए ण भते ।०२ गोयमा । जह० अतोसु० उक्तो० वणस्सइ-  
 कालो, तिरिक्खजोणिणी ण भते ।०२ गोयमा । जह० अतो० उक्तो० तिच्छि  
 पलिओवमाइ पुब्बकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं, एव मणूसे मणूसी, देवे जहा नेरइए,  
 देवी ण भते ।०२ गो०! जह० दस वाससहस्राइ उ० पणपञ्च पालैओवमाइ, सिद्धे

र्वं भंते । उद्दिष्टि ॥ गोकमा । साधए अपवाहिए । नेत्रस्तु वं भंते । अंठर  
कल्पो केविर होइ । गोकमा । वह अंठो उहो बजस्ताक्को तिरिक्क  
जापियस्तु वं भंते । अंठर कल्पो । गोकमा । वह अंठो उहो चागरोकमचम-  
पुहां चाहोगे तिरिक्काक्कोयिणी वं भंते । अंठर कल्पो केविर होइ । गोकमा ।  
वह अंठेसुहुर्ते उहो बजस्ताक्को एवं म्लुत्स्तस्ति म्लुत्सीएवि वेवसुवि  
देवीएवि विद्वत्व वं भंते । अंठर साधवस्तु अपवाहियस्तु वरिष्ठ अंठर ॥ एष्वि  
वं भंते । विराजार्ण तिरिक्काक्कोयिणार्ण तिरिक्काक्कोयिणीच म्लुत्सीर्ण म्लुत्सीय वेवाय  
देवीय विद्वाज व वहरे ॥ गोकमा । सम्बल्लोका म्लुत्सीये म्लुत्सा असेक्कुणा  
नेत्रवा असेक्कुणा तिरिक्काक्कोयिणीयो असेक्कुणायो देवा संकेक्कुणा  
देवीयो उक्केक्कुणायो विद्वा अनंतकुणा तिरिक्काक्कोयिणा अनंतकुणा । देवा अद्विष्टा  
सम्बल्लीका पञ्चात्मा ॥ २६६ ॥ ॥ वह वं जे ते एकमाहौद्ध-अविलिङ्ग सम्बल्लीका प  
रे एकमाहौद्ध तंज्ञा—एगिरिया वेशिया देविया बउरिया नेत्रवा विविविरिरि  
क्कद्वाक्कोयिणा म्लुत्सा देवा विद्वा ॥ एष्विष्टि वं भंते । एगिरिष्टि बउरियो केविर  
होइ ॥ योकमा । वह अंठेसु उहो बजस्तु वेष्टि वं भंते । ॥ योकमा ।  
वह अंठो उहो उक्केज्ज काँड । एवं लैविएवि वह नेत्रवा वं भंते । ॥ यो ।  
यो । वह वस वासस्तस्तार्ह उहो ॥ देवीसंसार्ह सागरोकमार्ह, विविद्यतिरिक्काक्को-  
यिए वं भंते । ॥ गोकमा । वह अंठो उहो तिष्ठि पक्कियोकमार्ह पुम्पाहिं  
पुहुत्तमम्भहिमार्ह, एवं म्लुत्सेवि देवा वहा नेत्रवा विद्वे वं भंते । ॥ गो । साधए  
अपवाहिए ॥ एष्विद्यतिरिक्क ॥ अंठर कल्पो केविर होइ ॥ गोकमा ।  
वह अंठो उहो हो सागरोकमस्तस्तार्ह संकेक्कुणालम्भहिकर्ह वेशिकस्तु वं  
भंते । अंठर कल्पो केविर होइ ॥ योकमा । वह अंठो उहो वजस्ताक्को  
एव तिरियस्तस्ति बउरियस्तस्ति नेत्रम्लुत्सेवि वेशियातिरिक्काक्कोयिणस्तस्ति म्लुत्स-  
स्तस्ति देवस्तस्ति संकेसुनोर्व अंठर भाविकर्व सिद्वस्तु वं भंते । अंठर कल्पो ॥  
गो । साधवस्तु अपवाहियस्तु वरिष्ठ अंठर ॥ एष्वि वं भंते । एगिरियार्ण वेईरै  
लैविरि बउरियार्ण नेत्रवार्ण विविद्यतिरिक्काक्कोयिणार्ण म्लुत्सार्ण देवार्ण विद्वाज  
व वहरे ॥ ॥ योकमा । सम्बल्लोका म्लुत्सा नेत्रवा असेक्कुणा देवा असेक्क-  
ुणा विविद्यतिरिक्काक्कोयिणा असेक्कुणा बउरिया विसेशाहिवा लैविया  
विसेशाहिवा वेईरिया विद्वे विद्वा अनंतकुणा एगिरिया अनंतकुणा ॥ २६७ ॥  
उहो अविष्टा सम्बल्लीका पञ्चात्मा तंज्ञा—एकम्लुत्सवनेत्रवा अवस्तमनवधेर  
इवा फङ्गमस्तमविरिक्काक्कोयिणा अफङ्गमस्तमविरिक्काक्कोयिणा फङ्गमस्तमस्तम

अपदमसमयमणूसा पदमसमयदेवा अपदमसमयदेवा सिद्धा य ॥ पदमसमयणेरइया-  
ं भते ।० २ गोयमा ! एकं समय, अपदमसमयणेरइयस्स ण भते ।० २ गो० !  
जहन्नेण दस वाससहस्राइ समऊणाइ उक्षो० तेत्तीस सागरोवमाइ समऊणाइ, पदम-  
समयतिरिक्खजोणियस्स ण भते ।० २ गो० ! एकं समय, अपदमसमयतिरिक्खजोणि-  
यस्स ण भते ।० २ गो० ! जह० खुड्हागं भवगगहण समऊण उक्षो० वणस्सइकालो,  
पदमसमयमणूसे ण भते ।० २ गो० ! एकं समय, अपदमसमयमणुसे ण भते ।० २ गो० !  
जह० खुड्हाग भवगगहण समऊण उक्षो० तिन्नि पलिओवमाइ पुञ्चकोङ्गिपुहुत्तमब्भहि-  
याइ, देवे जहा पेरडए, सिद्धे ण भते ! सिद्धेत्ति कालओ केवच्चिर होइ २ गोयमा !  
साडए अपजवसिए ॥ पदमसमयणेरइयस्स ण भते ! अतर कालओ० २ गोयमा ! जह०  
दस वाससहस्राइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्षोसेणं वणस्सइकालो, अपदमसमयणेरइ-  
यस्स ण भते ! अतर० २ गोयमा ! जह० अतो० उक्षो० वणस्सइकालो, पदमसमय-  
तिरिक्खजोणियस्स ण भते ! अतर कालओ० २ गोयमा ! जह० दो खुड्हागाइ भवगग-  
हणाइ समऊणाइ उक्षो० वण०, अपदमसमयतिरिक्खजोणियस्स ण भते ! अतरं  
कालओ० २ गो० ! जह० खुड्हागं भवगगहण समयाहिय उ० सागरोवमसयपुहुत्त  
साइरेग, पदमसमयमणूसस्स जहा पदमसमयतिरिक्खजोणियस्स, अपदमसमयमणू-  
सस्स ण भते ! अतर कालओ० २ गो० ! ज० खुड्हागं भवगगहण समयाहिय उ०  
वण०, पदमसमयदेवस्स जहा पदमसमयणेरइयस्स, अपदमसमयदेवस्स जहा अपदम-  
समयणेरइयस्स, सिद्धस्स ण भते ।० २ गो० ! साइयस्स अपजवसियस्स णत्यि अतरं ॥  
एएसि ण भते ! पदमसमयनेरइयाण पदमसमयतिरिक्खजोणियाण पदमसमयमणू-  
साण पदमसमयदेवाण य क्यरे० २ गोयमा ! सब्बत्थोवा पदमसमयमणूसा पदम-  
समयणेरइया असखेजगुणा पदमसमयदेवा अस० पदमसमयतिरिक्खजो० अस० ।  
एएसि ण भते ! अपदमसमयनेरइयाण अपदमसमयतिरिक्खजोणि० अपदमसमय-  
मणूसाण अपदमसमयदेवाण य क्यरे० २ गोयमा ! सब्बत्थोवा अपदमसमयमणूसा  
अपदमसमयनेरइया अस० अपदमसमयदेवा अस० अपदमसमयतिरि० अृणंतगुणा ।  
एएसि ण भते ! पदमस०नेरइयाण अपदमसमयणेरइयाण य क्यरे० २ गोयमा !  
सब्बत्थोवा पदमसमयणेरइया अपदमसमयणेरइया असखेजगुणा, एएसि ण भते !  
पदमसमयतिरिक्खजो० अपदमसमयतिरिक्खजोणि० क्यरे० २ गोयमा ! सब्ब०  
पदमसमयतिरि० अपदमसमयतिरिक्खजोणिया अणत०, मणुयदेवअप्पावहुय जहा  
जेरइयाण । एएसि ण भते ! पदमसमयणेरइ० पदमस०तिरिक्खजो० पदमस०मणूसाण  
पदमसमयदेवाण अपदमसमयनेरइ० अपदमसमयतिरिक्खजोणि० अपदमसमयम-

पूर्णाण अपदमसमयदेवाक सिद्धात्म य अन्तरे । गोवमा । सम्प पदमस महाला  
 अपदमसमय अम्बु असे पदमसमयनेरहया असे पदमसमयदेवा असुंदे पदमस-  
 मयतिरिक्तव्ये असे अपदमसमव्येर असे अपदमस देवा असुंदे किंवा  
 अर्थ अपदमस सिरि अर्थल्लुणा । सेति भविहा सम्भवीया पञ्चाता ॥२७ ॥ ३  
 तथ्य एं जे ते एकमाहैसु-वस्त्रिहा सम्भवीया पञ्चाता ते एकमाहैसु, तंबहा—पुढिं-  
 अहूया आउअहूया देवउअहूया बाउअहूया बगस्साहूया वेईरिया तेईरिया अठरि-  
 एवं अविदिवा ॥ पुढिंमहै एं भेटे । पुढिंकाइएति अल्लो क्षमिर होइ ।  
 गोवमा । यह अंतो उडो असुंदेवं काळ अदुखेजालो स्तस्तिप्यीजोसप्तिप्यीजो  
 काल्लो खेतलो असुंदेजा लोवा एवं आउतेवाउत्कालै, बगस्साहूया एवं भेटे ।  
 गोवमा । यह अंतो उडो बगस्साहूयो भेटिए एं भेटे । ३ गो । यह अंतो  
 उडो संकेज्ज एवं एवं तेईरिएति अठरिएति वंशिरिए एं भेटे । ३ गो । गोवमा ।  
 यह अंतो उडो सामरोवमलहसु याहरेये अविरिए एं भेटे । ३ गो । सद्वप-  
 अपदमसिए ॥ पुढिंकाइयसु एं भारे । अंतरे अल्लो क्षमिर होइ । गोवमा ।  
 यह अंतो उडो बगस्साहूयो एवं आउकाइयसु तेड बाल बगस्साहूय-  
 इयसु एं भेटे । अंतरे अल्लो ॥ या देव पुढिंकाइयसु संकिञ्चा विविद-  
 अठरिएयपंचैरियावं एएति अठरिएति अंतरे यह अंतो उडो बगस्साहूयसे  
 अविरियसु एं भेटे । अंतरे अल्लो क्षमिर होइ ॥ गोवमा । साक्षयसु अपदम-  
 सिक्षसु अलिं अंतरे ॥ एपुषि एं भेटे । पुढिंकाइयावं आठ तेड बाल बग  
 वेईरियावं तेईरियावं अठरि वंशिरियावं अविरियावं य फ्यरे ॥ ३ गोवमा ।  
 सम्भलोवा वंशिरिया अठरिएति विसेमाहिया तेईरिया विसे वंशिरिया विसे तेड  
 अहूया अदुखेजाणुया पुढिंअहूया वि आठ वि याठ वि अविरिया अपैत-  
 गुया बगस्साहूया अर्थल्लुणा ॥ २७१ ॥ आहूया दुष्विहा सम्भवीया पञ्चाता  
 तंबहा—पदमसमयदेवाक अपदमसमव्येरहया पदमसमयतिरिक्तव्योविया अपद-  
 मसमयतिरिक्तव्योविया पदमसमव्येवाक अपदमसमव्येवाक अपदम-  
 समव्येवा पदमसमव्येवा अपदमसमव्येवा ॥ पदमसमव्येवाक अपदम-  
 समव्येवाक एवं बाल्लो क्षमिर होइ । गोवमा । एवं तमवं अपदमसमव्येवाए एं  
 भेटे ॥ गोवमा । आहूये एवं बाल्लो क्षमिर होइ एवं तमवं लाईंदे बाल्लो-  
 बाल्लो समद्दधार्ये, पदमसमव्येविरिक्तव्योविपु एं भेटे ॥ ३ गोवमा । एवं तमवं अप-  
 दमसमव्येविरिक्तव्य यह ल्लायं भगवाहूये समद्दधार्ये उडो बगस्साहूयसे पुढिं-  
 अपदमसमव्येवे एं भेटे ॥ १ गोवमा । एवं एमवं अपदमस मालूमे एं भेटे ॥ १ गोवमा ।

जह० खुडाग भवगगहण समउर्ण उको० तिण्ण पलिओवमाइ पुञ्चरोडिपुहुत्तमव्य-  
हियाङ, टेवे जहा ऐरडए, पठमसमयसिद्धेण भते !० २ गोयमा ! एष समय, अपट-  
मसमयसिद्धेण भते !० २ गोयमा ! साइ अपजवसिए। पठमसमयणे० भते !  
अतर कालओ० २ गोयमा ! ज० दस वामसहस्राड अतोमुहुत्तमव्यहियाइ उको०  
वण०, अपटमसमयणे० अतर कालओ केव० २ गोयमा ! जह० अतो० उ० वण०,  
पठमसमयतिरिक्खजोणियस्स० अतर० केवचिर होड २ गोयमा ! जह० दो खुडाग-  
भवगगहणाइ समउर्ण उको० वण०, अपटमसमयतिरिक्खजोणियस्स० भते !० २  
गोयमा ! जह० खुडागभवगगहण समयाहिय उको० सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग,  
पठमसमयमणूसस्स० ण भते ! अतर कालओ० २ गो० ! जह० दो खुडागभवगगहणाइ  
समउर्ण उको० वण०, अपटमसमयमणूसस्स० ण भते ! अतर० २ गो० ! जह०  
खुडाग भव० समयाहिय उको० वणस्सड०, देवस्स अतर जहा ऐरइयस्स, पठमस-  
मयसिद्धस्स० ण भते ! अतर० २ गो० ! णत्थि, अपटमसमयसिद्धस्स० ण भते ! अतर  
कालओ केवचिर होड २ गोयमा ! साइयस्स अपजवसियस्स० णत्थि अतर ॥ एएसि  
ण भते ! पठमस०णे० पठमस०तिरिक्खजोणियाण पठमसमयमणूसाण पठमसमय-  
देवाण पठमसमयसिद्धाण य क्यरे २ २ गोयमा ! सब्बत्योवा पठमसमयसिद्धा  
पठमसमयमणूसा असखे० पठमस०णेरइया असखेजगुणा पठमस०देवा अस० पठ-  
मस०तिरि० अस० । एएसि ण भते ! अपटमसमयनेरइयाण जाव अपटमसमयसि-  
द्धाण य क्यरे० २ गोयमा ! सब्बत्योवा अपटमस०मणूसा अपटमस०नेरइया असखे०  
अपटमस०देवा असखे० अपटमस०सिद्धा अणतगुणा अपटमस०तिरिक्खजो० अणत-  
गुणा । एएसि ण भते ! पठमस०णेरइयाण अपटमस०णेरइयाण य क्यरे २ २  
गोयमा ! सब्बत्योवा पठमस०णेरइया अपटमस०णेरइया असखे०, एएसि ण भते !  
पठमस०तिरिक्खजोणियाण अपटमस०तिरिक्खजोणियाण य क्यरे २ २ गोयमा !  
सब्बत्योवा पठमसमयतिरिक्खजो० अपटमस०तिरिक्खजोणिया अणतगुणा, एएसि  
ण भते ! पठमस०मणूसाण अपटमसमयमणूसाण य क्यरे २ २ गोयमा ! सब्ब-  
त्योवा पठमसमयमणूसा अपटमस०मणूसा असखे०, जहा मणूसा तहा देवावि, एएसि  
ण भते ! पठमसमयसिद्धाण अपटमसमयसिद्धाण य क्यरे२ हिंतो अप्पा वा बहुया  
वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्योवा पठमसमयसिद्धा अपटमसमयसिद्धा  
अणतगुणा । एएसि ण भते ! पठमसमयणेरइयाण अपटमसमयणेरइयाण० पठमस०-  
तिरिक्खजोणि० अपटमस०तिरिक्खजो० प०समयमणू० अपटमस०मणू० पठम-  
स०देवाण० अप०समयदेवाण पठमसमयसिद्धाण अपटमसमयसिद्धाण य क्यरे२ हिंतो

अप्पा वा बहुवा वा द्वाप्य वा चिसे । गोवमा] सम्पत्येवा फळमस चिदा पामसु—  
मपूसा असे, अप सम्पमपूसा असुने फळमसम्बेहुवा असे फळमस वेवा असे  
फळमस तिरि असे अपमस वेर असुने अपवमस देवा असे अपमस  
सिदा अर्थत् अपमस सिरि अपल्लुणा । ऐता इस्त्रीहा सम्पत्तीका फृष्टा ॥  
ऐता सम्पत्तीचाभिगमे ॥ २७२ ॥ नयमा सम्पत्तीघवद्वस्थित्पदिवर्ती  
समस्ता ॥ खीवाज्जीवाभिगमसुर्ते समर्ते ॥



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## तत्थ णं पणवणासुत्तं

ववगयजरमरणभए सिद्धे अभिवदिलण तिविहेण । वदामि जिणवरिंद तेलोक्ष-  
गुरुं महावीर ॥ १ ॥ सुयरयणनिहाण जिणवरेण भवियजणनिन्वुइकरेण । उवदसिया  
भगवया पञ्चवणा सब्बभावाण ॥ २ ॥ वायगवरवसाओ तेवीसडमेण धीरपुरिसेण ।  
दुद्धरधरेण मुणिणा पुब्बसुयसमिद्धुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागरा विणेलण जेण सुयर-  
यणमुत्तम दिङ्गं । सीसगणस्स भगवओ तस्स नमो अज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्जयण-  
मिण चित्त सुयरयण दिट्ठिवायणीसन्द । जह वन्निय भगवया अहमवि तह वञ्चइ-  
स्सामि ॥ ५ ॥ पञ्चवणा ठाणाइ वहुवत्तव्व ठिई विसेसा य । वकन्ती ऊसासो सन्ना  
जोणी य चरिमाइ ॥ ६ ॥ भासा सरीर परिणाम कसाय इन्दिए पओगे य । लेसा  
कायठिईया सम्मते अन्तकिरिया य ॥ ७ ॥ ओगाहणसठाणे किरिया कम्मे इयावरे ।  
[कम्मस्स] वन्धए [कम्मस्स] वेद[ए]वेदस्स वन्धए वेयवेयए ॥ ८ ॥ आहारे  
उवओगे पामणया सन्नि सज्जमे चेव । ओही पवियारण वेयणा य तत्तो समुग्धाए  
॥ ९ ॥ से किं त पञ्चवणा ? पञ्चवणा दुविहा पञ्चत्ता । तजहा-जीवपञ्चवणा  
य अजीवपञ्चवणा य ॥ १ ॥ से कि त अजीवपञ्चवणा ? अजीवपञ्चवणा दुविहा  
पञ्चत्ता । तजहा-हविअजीवपञ्चवणा य अहविअजीवपञ्चवणा य ॥ २ ॥ से किं त  
अहविअजीवपञ्चवणा ? अहविअजीवपञ्चवणा दसविहा पञ्चत्ता । तजहा-धम्मत्यिकाए,  
धम्मत्यिकायस्स देसे, धम्मत्यिकायस्स पएसा, अधम्मत्यिकाए, अवम्मत्यिकायस्स  
देसे, अवम्मत्यिकायस्स पएसा, आगासत्यिकाए, आगासत्यिकायस्स देसे, आगा-  
सत्यिकायस्स पएसा, अद्वासमए । सेत्त अहविअजीवपञ्चवणा ॥ ३ ॥ से कि  
त हविअजीवपञ्चवणा ? हविअजीवपञ्चवणा चउच्चिहा पञ्चत्ता । तजहा-१ खधा,  
२ खधटेमा, ३ खधप्पएगा, ४ परमाणुपोगला । ते समासओ पचविहा पञ्चत्ता ।  
तजहा-१ वन्परिणया, २ गधपरिणया, ३ रसपरिणया, ४ फासपरिणया, ५  
चठाणपरिणया ॥ ४ ॥ जे वन्परिणया ते पचविहा पञ्चत्ता । तजहा-१ काल-  
वञ्चपरिणया, २ नीलवञ्चपरिणया, ३ लोहियवञ्चपरिणया, ४ हालिद्ववञ्चपरिणया,

५ सहित्यस्वपरिणया । जे गंभेपरिणया ते दुष्कृति पक्षता । तथा—मुक्तिमान्ब-  
परिणया न मुक्तिमान्बपरिणया न । जे रसपरिणया ते धन्विहा पक्षता । तथा—  
१ शित्तरसपरिणया २ क्लूबरसपरिणया ३ छत्तामरसपरिणया ४ अविभरस-  
परिणया ५ महुररसपरिणया । जे फ्रासपरिणया ते व्यक्तिहा पक्षता । तथा—  
१ अन्तरापासपरिणया २ मठयकासपरिणया ३ पद्मपञ्चसपरिणया ४ अनुम-  
फासपरिणया ५ सीमध्यसपरिणया ६ उडियमध्यसपरिणया ७ निदपञ्चसपरिणया  
८ अन्तर्काषासपरिणया । जे ईअपपरिणया ते पंचविहा पक्षता । तथा—१ परिमेहस-  
संठाणपरिणया २ व्याघ्राण ३ तंसठेठाण ४ चवर्टसठेठाण ५ आवम-  
सठाण ६ ५ ॥ जे व्यज्ञो अव्यवस्थपरिणया ते गम्भेमो मुक्तिमान्बपरिणया वि  
मुक्तिमान्बपरिणया वि । रसमो शित्तरसपरिणया वि क्लूबरसपरिणया वि बमावा  
रसपरिणया वि अविभरसपरिणया वि महुररसपरिणया वि । घासओ अन्तर्क-  
फासपरिणया वि मठयकासपरिणया वि गुहयकासपरिणया वि अनुमपञ्च-  
सपरिणया वि सीमध्यसपरिणया वि उडियमध्यसपरिणया वि निदपञ्चसपरिणया वि मुक्तपञ्च-  
सपरिणया वि । सण्ठाणओ परिमेहसठाणपरिणया वि व्याघ्राणपरिणया वि  
तंसठाणपरिणया वि व्याघ्रसठाणपरिणया वि आवमठाणपरिणया वि १ ।  
जे व्यज्ञो नीम्बाणपरिणया ते गम्भेमो मुक्तिमान्बपरिणया वि मुक्तिमान्बपरिणया  
वि । रसमो शित्तरसपरिणया वि क्लूबरसपरिणया वि बमावरसपरिणया वि  
अविभरसपरिणया वि महुररसपरिणया वि । वास्त्वो अन्तरापासपरिणया वि  
मठयकासपरिणया वि गुहयकासपरिणया वि अनुमपञ्चसपरिणया वि सीमध्यमध्य-  
सपरिणया वि उडियमध्यसपरिणया वि निदपञ्चसपरिणया वि मुक्तपञ्चसपरिणया वि ।  
संठाणओ परिमेहसठाणपरिणया वि व्याघ्राणपरिणया वि तंसठाणपरिणया  
वि व्याघ्रसठाणपरिणया वि आवमठाणपरिणया वि २ । जे व्यज्ञो व्येत्री  
यद्वापरिणया ते गम्भेमो मुक्तिमान्बपरिणया वि मुक्तिमान्बपरिणया वि । रसमो  
शित्तरसपरिणया वि क्लूबरसपरिणया वि बमावरसपरिणया वि अविभरसपरि-  
णया वि महुररसपरिणया वि । रसमो अन्तरापासपरिणया वि मठयकासपरि-  
णया वि गुहयकासपरिणया वि अनुमपञ्चसपरिणया वि सीमध्यमध्यसपरिणया वि  
उडियमध्यसपरिणया वि निदपञ्चसपरिणया वि मुक्तपञ्चसपरिणया वि । संठाणओ  
परिमेहसठाणपरिणया वि व्याघ्राणपरिणया वि तंसठेठाणपरिणया वि व्याघ्र-  
सठाणपरिणया वि आवमठाणपरिणया वि ३ । जे व्यज्ञो व्याघ्रपञ्चपरिणया  
ते गम्भेमो मुक्तिमान्बपरिणया वि मुक्तिमान्बपरिणया वि । रसमो शित्तरसपरिणया



५ दुहितवत्सरिण्या । जे यशस्विण्या तु दुष्प्रिया पकाता ।



मुक्तिमान्धपरिणया वि तुमिगन्धपरिणया वि । एसभो कस्त्राहन्धसपरिणया वि मठवरामपरिणया वि गुरुवद्वयपरिणया वि स्त्रुत्यकासपरिणया वि सीकासपरि-  
णया वि उत्तिष्ठासपरिणया वि निदकासपरिणया वि स्त्रुत्यासपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि वहर्द्वयपरिणया वि तंससंध्यपरिणया वि चउरेमसंठाणपरिणया वि आम्यसंठाणपरिणया वि २ । जे रसभो क्षुमरसपरि-  
णया ते वस्त्रभो कास्त्राहन्धपरिणया वि भीत्यकासपरिणया वि लोहिवद्वयपरिणया वि हात्यिकासपरिणया वि शुद्धिकासपरिणया वि । गाथभो तुमिगन्धपरिणया वि तुमिगन्धपरिणया वि । एसभो कस्त्राहन्धसपरिणया वि मठवरामपरिणया वि गुरुवरामपरिणया वि स्त्रुत्यासपरिणया वि सीयासपरिणया वि उत्तिष्ठ-  
ासपरिणया वि निदकासपरिणया वि स्त्रुत्यासपरिणया वि । संठाणओ परि-  
मण्डलसंठाणपरिणया वि वहर्द्वयपरिणया वि तंससंठाणपरिणया वि चउरेम-  
संठाणपरिणया वि आम्यसंठाणपरिणया वि ३ । जे रसभो क्षामरसपरिणया वि वस्त्रभो कास्त्राहन्धपरिणया वि भीत्यकासपरिणया वि लोहिवद्वयपरिणया वि हात्यिकासपरिणया वि शुद्धिकासपरिणया वि । गाथभो तुमिगन्धपरिणया वि तुमिगन्धपरिणया वि । वासभो कस्त्राहन्धसपरिणया वि मठवरामपरिणया वि गुरुवरामपरिणया वि स्त्रुत्यरामपरिणया वि सीयरामपरिणया वि उत्तिष्ठास-  
परिणया वि निदकासपरिणया वि स्त्रुत्यरामपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डल-  
संठाणपरिणया वि वहर्द्वयपरिणया वि तंससंठाणपरिणया वि चउरेमसंठाणपरि-  
णया वि आम्यसंठाणपरिणया वि ४ । जे राथभो अविक्षरसपरिणया त वस्त्रमें  
कास्त्राहन्धपरिणया वि भीत्यकासपरिणया वि लोहिवद्वयपरिणया वि हात्यिकास-  
परिणया वि शुद्धिकासपरिणया वि । गाथभो तुमिगन्धपरिणया वि तुमिगन्ध-  
परिणया वि । वासभो कस्त्राहन्धसपरिणया वि मठवरामपरिणया वि गुरुवराम  
परिणया वि स्त्रुत्यरामपरिणया वि हीवरामपरिणया वि उत्तिष्ठासपरिणया वि  
निदकासपरिणया वि हस्तरामपरिणया वि । संठाणओ परिमण्डलसंठाणपरिणया वि  
वहर्द्वयपरिणया वि तंगसंठाणपरिणया वि चउरेमसंठाणपरिणया वि आम्यसंठाण-  
परिणया वि भीत्यकासपरिणया वि लोहिवद्वयपरिणया वि हात्यिकासपरिणया वि  
गुरिहामपरिणया वि । गाथभो तुमिगन्धपरिणया वि तुमिगन्धपरिणया वि । वासभो  
कस्त्राहन्धसपरिणया वि मठवरामपरिणया वि गुरुवरामपरिणया वि स्त्रुत्यराम-  
परिणया वि हीवरामपरिणया वि उत्तिष्ठासपरिणया वि निदकासपरिणया वि







न्युपभसपरिणया वि, सीधासपरिणया वि उसिनप्रसपरिणया वि निदक्षस-  
परिणया वि छुक्काफासपरिणया वि २ । जो दंडबद्धो आम्बुद्धाणपरिणया हे वस्त्रबो  
चक्काल्परिणया वि नीजल्पपरिणया वि घेत्तुप्रसपरिणया वि हातिक्कल्प  
परिणया वि घटिक्कल्पपरिणया वि । गम्बबो छुम्भगन्धपरिणया वि दुम्भा-  
न्धपरिणया वि । रस्म्बो तित्तरसपरिणया वि अहुमरसपरिणया वि छायरसपरिणया  
वि अम्बिक्करसपरिणया वि महुररसपरिणया वि । फाटबो छक्काहक्कसपरिणया  
वि मठबद्धसपरिणया वि गुम्बकासपरिणया वि घुम्भभसपरिणया वि सीधासु-  
परिणया वि उसिनप्रासपरिणया वि विदक्षसपरिणया वि छुक्काप्रसपरिणया  
वि ३ । । सेतु छविभजीघपश्चयणा । सेतु अजीघपश्चयणा ॥ ४ ॥

से कि ठं बीजपत्रवता । बीजपत्रवता दुष्मिता पत्रता । ठंबहा—संसारसमाख्य  
जीघपत्रवता य असंसारसमाख्यजीघपत्रवता ॥ ५ ॥ से कि ठं असंसारसमाख्य  
ज्ञात्रीघपत्रवता ६ असंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता दुष्मिता पत्रता । ठंबहा—अपन्त-  
रतिक्कमसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता य परम्परतिक्कमसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता य  
॥ ६ ॥ से कि ठं अपन्तरतिक्कमसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता ७ अपन्तरतिक्कमवैसा  
रसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता पत्रपत्रिता पत्रता । ठंबहा—१ तित्तरसिद्धा ८ अठित्प  
सिद्धा १ तित्तरगरसिद्धा ४ अठित्पगरसिद्धा ५ सर्वकुदसिद्धा ६ पतोम्बुद्धसिद्धा  
७ दुद्धोहियसिद्धा ८ इत्तीसिद्धासिद्धा ९ पुरिसिद्धासिद्धा १० न्युसुम्भसिद्धा  
११ सम्भासिद्धा १२ अवर्लिंगसिद्धा १३ शिहिसिद्धासिद्धा १४ एससिद्धा  
१५ अथेगसिद्धा । सेतु अपैत्तरसिद्धा ॥ ७ ॥ से कि ठं परम्परतिक्कमसंसारसमाख्य-  
ज्ञात्रीघपत्रवता ८ अवीगसिता पत्रता ठंबहा—मफामसमाख्यसिद्धा दुसमयसिद्धा  
तिदमयसिद्धा अठसमयसिद्धा जाव सम्भिजसमदसिद्धा असम्भिजसमयसिद्धा अथ  
स्तुसमदसिद्धा । सेतु परम्परतिक्कमसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता । सेतु असंसारसमाख्य-  
ज्ञात्रीघपत्रवता ॥ ८ ॥ से कि ठं संसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता ९ संसारसमाख्य-  
ज्ञात्रीघपत्रवता पत्रिता पत्रता । ठंबहा—१ एगेन्द्रियसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता  
२ बेइन्द्रियसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता ३ तेइन्द्रियसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता  
४ अठरित्तिक्कमसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता ५ पथिभित्तिसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता  
६ अठरित्तिक्कमसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता ७ पथिभित्तिसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता ८ एगेन्द्रि-  
यसंसारसमाख्यज्ञात्रीघपत्रवता पत्रिता पत्रता । ठंबहा—पुढिसिद्धासिद्धा जावदासिद्धा  
सेतुदासिद्धा बाठदासिद्धा पणस्तुदासिद्धा ॥ १२ ॥ से कि ठं पुढिसिद्धासिद्धा ९ पुढि-  
सिद्धासिद्धा दुष्मिता पत्रता । ठंबहा—स्तुमसुदसिद्धासिद्धा य बाघसुदसिद्धासिद्धा य ॥ १३ ॥

से कि त सुहुमपुढविकाइया ? सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णता । तजहा—पज्जत-  
सुहुमपुढविकाइया य अपज्जतसुहुमपुढविकाइया य । सेत्त सुहुमपुढविकाइया ॥ १४ ॥  
से कि त वायरपुढविकाइया ? वायरपुढविकाइया दुविहा पश्चता । तजहा—सण्हवायर-  
पुढविकाइयों य खरवायरपुढविकाइया य ॥ १५ ॥ से कि त सण्हवायरपुढविकाइया ?  
सण्हवायरपुढविकाइया सत्तविहा पश्चता । तजहा—१ किष्मद्विया; २ नीलमद्विया,  
३ लोहियमद्विया, ४ हालिहमद्विया, ५ मुक्तिलमद्विया; ६ पाण्डुमद्विया, ७ पणग-  
मद्विया । सेत्त सण्हवायरपुढविकाइया ॥ १६ ॥ से कि त खरवायरपुढविकाइया ?  
खरवायरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णता । तजहा—१ पुढवी य २ सक्करा ३ वालुया  
य ४ उवले ५ सिला य ६-७ लोण्ठूसे । ८ अय ९ तब १० तडय ११ सीसय  
१२ रुप्प १३ सुवशे य १४ वइरे य ॥ १ ॥ १५ हरियाले १६ हिंगुलए १७ मणो-  
सिला १८-२० सासगजणपवाले । २१-२२ अब्मपडलब्भवालुय वायरकाए मणि-  
विहाणा ॥ २ ॥ २३ गोमेज्जए य २४ स्थए २५ अके २६ फलिहे य २७ लोहियकस्से  
य । २८ मरगय २९ मसारगले ३० भुयमोयग ३१ इन्दनीले य ॥ ३ ॥ ३२ चदण  
३३ गेह्य ३४ हसगब्म ३५ पुलए ३६ सोगन्धिए य चोद्धव्वे । ३७ चन्दप्पभ  
३८ वेहलिए ३९ जलकते ४० सूरकते य ॥ ४ ॥ जेयावशे तहप्पगारा । ते समासओ  
दुविहा पश्चता । तजहा—पज्जतगा य अपज्जतगा य । तत्थ ण जे ते अपज्जतगा ते ण  
असपता । तत्थ ण जे ते पज्जतगा एएसिं वच्चादेसेण, रसादेसेण, गधादेसेण, फासा-  
देसेण सहस्सगसो विहाणाइ, सहेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ । पज्जतगणिस्साए  
अपज्जतगा वक्तमति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असखेजा । सेत्त खरवायरपुढविकाइया ।  
सेत्त वायरपुढविकाइया । सेत्त पुढविकाइया ॥ १७ ॥ से कि त आउक्काइया ? आउ-  
क्काइया दुविहा पण्णता । तजहा—सुहुमआउक्काइया य वायरभाउक्काइया य ॥ १८ ॥  
से कि त सुहुमआउक्काइया ? सुहुमआउक्काइया दुविहा पश्चता । तजहा—पज्जतसुहुम-  
आउक्काइया य अपज्जतसुहुमआउक्काइया य । सेत्त सुहुमआउक्काइया ॥ १९ ॥ से  
कि त वायरभाउक्काइया ? वायरभाउक्काइया अणेगविहा पश्चता । तजहा—उस्सा,  
हिमए, महिया, करए, हरतणए, सुद्धोदए, सीओदए, उसिणोदए, खारोदए, खट्टो-  
दए, अम्बिलोदए, लवणोदए, वारणोदए, खीरोदए, घओदए, खोओदए, रसोदए,  
जे यावशे तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पण्णता । तजहा—पज्जतगा य अपज्ज-  
तगा य । तत्थ ण जे ते अपज्जतगा ते ण असपता । तत्थ ण जे ते पज्जतगा  
एएसिं वणादेसेण गन्धादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाइ, सखे-  
ज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ, पज्जतगणिस्साए अपज्जतगा वक्तमति, जत्थ एगो

तरय नियमा असंकेजा । सेतुं वायरमात्रकाइया । ऐती आउमाइया ॥ २ ॥ से कि तं तेऽन्धाइया । तंकृष्णाया तुविहा पत्ता । तंजहा-मुहुमत्कृष्णाया य वायरतं कृष्णाया व ॥ २१ ॥ से कि तं मुहुमत्कृष्णाया । मुहुमत्कृष्णाया तुविहा पत्ता । तंजहा-पञ्चतागा य अपञ्चतागा य । सेतुं मुहुमत्कृष्णाया ॥ २२ ॥ प्र से कि तं वाय रत्तेऽन्धाइया । वायरतेऽन्धाइया अनेगाविहा पत्ता । तंजहा-रुग्गें जाला मुमुरे असी अलाए, मुखागामी लडा विजू असारी विमाए, संपरिसंसुन्दिग, भूरभूतमणियिसिद्धि, वेयाक्षे ताप्पत्तारा । ते समाएक्षो तुविहा पत्ता । तंजहा-पञ्चतागा य अपञ्चतागा ज । तत्त्व न जे ते अपञ्चतापा ते जे असंपत्ता । तत्त्व न जे ते पञ्चतागा एएसि य वायादेसेवं गन्धादेसेवं रसादेसेवं फूसादेसेवं सहस्रमास्ते विहापाई, संकेजाई ओगियमुहसयसहसर्व । पञ्चतागाविसाए अपञ्चतागा वहमैति, अत्त एयो तत्त्व नियमा असंकेजा सेतु वायरतंकृष्णाया । सेतुं तेऽन्धाइया ॥ २३ ॥ प्र से कि तं वायरतंकृष्णाया । वायरतंकृष्णाया तुविहा पत्ता । तंजहा-मुहुमत्कृष्णाया व वायरतंकृष्णाया व ॥ २४ ॥ से कि तं मुहुमत्कृष्णाया । द्युमत्कृष्णाया तुविहा पत्ता । तंजहा-पञ्चतागमुहुमत्कृष्णाया व अपञ्चतागमुहुमत्कृष्णाया ज । सेतुं द्युमत्कृष्णाया ॥ २५ ॥ से कि तं वायरतंकृष्णाया । वायरतंकृष्णाया अनेगाविहा पत्ता । तंजहा-पाठ्याए, पठीक्षाए, वाठ्यक्षाए, वर्णीक्षाए, उद्धाए, ल्लोक्षाए, विरिप्यक्षाए, विविक्षाए, वायरक्षामे वायरक्षिक्षा वायरैत्रक्षिक्षा वहमैत्याए, मंषक्षिक्षाए, गुवाक्षाए, फैसाक्षाए, संवर्क्षाए, घम्क्षाए, ल्लुक्षाए, छद्यक्षाए, जेवाक्षो तेऽप्पत्तारा । ते समाएक्षो तुविहा पत्ता । तंजहा-पञ्चतागा य अपञ्चतापा य । तत्त्व न जे ते अपञ्चतागा ते जे असंपत्ता । तत्त्व न जे ते पञ्चतापा एएसि जे क्षम्यादेसेवं गन्धादेसेवं रसादेसेवं फासादेसेवं सहस्रमास्ते विहापाई, संकेजाई ओगियमुहसयसहसर्व । पञ्चतागाविसाए अपञ्चतापा वहमैति अत्त एयो तत्त्व नियमा असंकेजा । सेतुं वायरतंकृष्णाया ॥ २६ ॥ प्र से कि तं वायरतंकृष्णाया । वायरतंकृष्णाया तुविहा पत्ता । तंजहा-मुहुमत्कृष्णाया व वायरतंकृष्णाया व ॥ २७ ॥ प्र से कि तं द्युमत्कृष्णाया तुविहा पत्ता । द्युमत्कृष्णाया तुविहा पत्ता । तंजहा-पञ्चतागमुहुमत्कृष्णाया व अपञ्चतागमुहुमत्कृष्णाया व ॥ २८ ॥ से कि तं वायरतंकृष्णाया । वायरतंकृष्णाया तुविहा पत्ता । तंजहा-पौत्रपूर्णीरक्षायरतंकृष्णाया व वायरतंकृष्णाया ॥ २९ ॥ से कि तं पौत्रपूर्णीरक्षायरतंकृष्णाया । ३ द्युमत्कृष्णाया २ गुण्डा ३ गुण्डा ४ गुण्डा ५ गुण्डा

य ५ वली य ६ पव्वगा चेव । ७ तण ८ वलय ९ हरिय १० ओसहि ११ जलरह  
 १२ कुहणा य वोद्व्वा ॥ ३० ॥ से किं त स्क्खा ? स्क्खा दुविहा पणता ।  
 तंजहा-एगवीया य वहुवीयगा य ॥ ३१ ॥ से किं तं एगवीया ? एगवीया अणेग-  
 विहा पचता । तजहा—णिववजंदुकोसवसालभकुलपीलु सेल्य य । महङ्गमोयइमालु-  
 यवउलपलासे करजे य ॥ १ ॥ पुत्तजीवयउरट्टे विहेलए हरिडए य मिलाए । उंबे-  
 भरियाखीरणि वोद्व्वे धायइपियाले ॥ २ ॥ पूड्यनिंवकरजे सण्हा तह सीसवा य  
 असणे य । पुक्कागनागरुखे सीवणिं तहा असोगे य ॥ ३ ॥ जेयावणे तहप्पगारा ।  
 एएसि ण मूला वि असखेजजीविया, कदा वि, खधा वि, तया वि, साला वि, पवाला  
 वि । पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीविया, फला एगवीया । सेत्त एगवीया  
 ॥ ३२ ॥ से किं त वहुवीयगा ? वहुवीयगा अणेगविहा पचता । तजहा-अत्यियतेंदु-  
 कविट्टे अवाडगमाउलिंग विल्ले य । आमलगफणिसदालिमआसोट्टे उंवरवडे य ॥ १ ॥  
 णगोहणदिस्क्खे पिष्परौं सयरी पिलुक्खस्क्खे य । काउवरि कुत्थुंभरि वोद्व्वा देव-  
 दाली य ॥ २ ॥ तिलए लउए छत्ताहसिरीसे सत्तवञ्चदहिवजे । लोद्धवचदणज्ञुणणीमे  
 कुडए कयवे य ॥ ३ ॥ जेयावजे तहप्पगारा । एएसि ण मूला वि असखेजजीविया,  
 कदा वि, खधा वि, तया वि, साला वि, पवाला वि । पत्ता पत्तेयजीविया । पुप्फा  
 अणेगजीविया । फला वहुवीयगा । सेत्त वहुवीयगा । सेत्तं स्क्खा ॥ ३३ ॥ से किं  
 त गुच्छा ? गुच्छा अणेगविहा पचता । तजहा—वाइगणिसल्लहुष्टडई य तह कच्छुरी  
 य जासुमणा । रुवी आडइ णीली तुलसी तह माउलिंगी य ॥ १ ॥ कच्छुभरि पिष्प-  
 लिया अयसी वली य कायमाईया । बुच्चू पडोलकदलि विउच्चा वत्थुले वयरे ॥ २ ॥  
 पत्तउर सीयउरए हवइ तहा जवसए य वोद्व्वे । णिगुहिय कत्तुवरि अत्यई चेव  
 तालउडा ॥ ३ ॥ सणपाणकासमुद्गायग्धाडगसामसिंदुवारे य । करमहृदरुसगकरी-  
 रएरावणमहित्ये ॥ ४ ॥ जाउलगमालपरिलीगयमारिणिकुच्चकारिया भडी । जावइ  
 केयइ तह गज पाडला दासिभकोले ॥ ५ ॥ जेयावजे तहप्पगारा । सेत्त गुच्छा  
 ॥ ३४ ॥ से किं त गुम्मा ? गुम्मा अणेगविहा पचता । तजहा-सेरियए णोमालिय-  
 कोरंटयवधुजीवगमणोजे । पिइयपाणकणयरकुञ्जय तह सिंदुवारे य ॥ १ ॥ जाई  
 मोगगर तह जूहिया य तह मल्लिया य वासती । वत्थुल कत्थुल सेवाल गंठि मगद-  
 तिया चेव ॥ २ ॥ चंपगजाई णवणीइया य कुदो तहा महाजाई । एवमणेगगारा  
 हवति गुम्मा मुणेयच्चा ॥ ३ ॥ सेत्तं गुम्मा ॥ ३५ ॥ से किं त ल्याओ ? ल्याओ  
 अणेगविहाओ पचताओ । तजहा-पउमल्या णागल्ययसोगचपगल्या य चूयल्या ।  
 वणल्ययवासुतिल्या अझमुत्तयकुदसामल्या ॥ जेयावजे तहप्पगारा । सेत्त ल्याओ॥ ३६ ॥

से कि ते योगी ! योगियो अगेगविहारे पवतासो । तंजहा—पूर्वकी यद्यिनी  
दुर्लभी तउसी म एव्वलासुर्यि । वेषावृष्टि पैदोडा फैलुकिया य शीसी व ॥ १ ॥  
भैश्वरा अद्युक्ता छोड़ई कारियाई सुभगा । इन्द्रजाव वाणुकिया पाइँजाई देव-  
शासी व ॥ २ ॥ अन्द्रेया असुक्षमागव्या अद्यस्त्रकी व । संक्षमवता यि  
य वासुक्षणुविशक्ती य ॥ ३ ॥ मुहिय वंशस्त्री छीरविराई वर्णति योवासी ।  
पाणीमासावाई गुवाक्षी व वक्षावी ॥ ४ ॥ सुसचितुगोदफुकिया गिरिजन्द्र मस्त्रा  
य अंबणई । दहिघोष वागवि मोगाली व तह अद्योरी व ॥ ५ ॥ वेषावृष्टे तद्द  
प्पगारा । देते योगी ॥ ६ ॥ से कि ते पवता ? पवता अगेगविहा पवता ।  
तंजहा—मन्दू य इमहावी शीरप तद्द इहो भमासे व । दुडे चुरे य चेते तिमिरे  
समयोराजके व ॥ १ ॥ बंधे चेष्ट चनए कंभवसे व वावरसे व । तद्द इन्द्र विमर  
क्षेत्रेष्ट य व्यापे ॥ २ ॥ वेषावृष्टे तद्दप्पगारा । देते पवता ॥ ३ ॥ से कि ते  
तणा ? तणा अगेगविहा पवता । तंजहा—देविवमेविमहोदिवदम्भुसे पवए व पोइ-  
द्वा । अनुभ असावृष्टे रोहितसे फुमवेदवीरुसे ॥ ४ ॥ एरहे इस्त्रिद अवर मुडे  
तहा विमगू म । महुरतणहुरयसिपिय बोद्धवे द्वावितये व ॥ ५ ॥ वेषावृष्टे  
तद्दप्पगारा । देते तणा ॥ ६ ॥ से कि ते ववता ? ववता अगेगविहा पवता ।  
तंजहा—वाङ्माले तद्दितोक्ति ताली य सारक्षापे । सरके वावह देव अली  
तद्द पवमालके व ॥ १ ॥ भुमरम्भविहुस्ते वर्णपवम्भके व होइ बोद्धवे । दूषपर्व  
वाली बोद्धवा आक्षिणी व ॥ २ ॥ वेषावृष्टे तद्दप्पगारा । देते ववता ॥ ३ ॥  
से कि ते हरिया ? हरिया अगेगविहा पवता । तंजहा—अजोद्धोडावे हरियम तद्द  
तुम्हेजगती व । वल्लुप्योरण[अंजीर]पोइक्षी य पावता ॥ ४ ॥ इगपिप्पती म वप्पी  
सोरियवसाए तहो वमी व । गुणासरिसव अविक्षुपाएव विवतप चेव ॥ ५ ॥  
तुम्हरी अद्द उराके फक्तियर ववए व भूमधय । ओरपदमयममधय सम्पुतिरीदे  
व तहा ॥ ६ ॥ वेषावृष्टे तद्दप्पगारा । देते हरिया ॥ ७ ॥ से कि ते बोमहीमो ?  
ओमहीमो ववेगविहासो ववतासो । तंजहा—सावीतीतीयोहुमवदवववदवदम्भम्-  
तिप्पमुमामासविफालुम्भमातिम्भसतीचपविम्भममधीयुम्भोरक्षेत्रुत्तम-  
रा(ख)सामकोत्तुसवदरिसक्षमावीया । वेषावृष्टे तद्दप्पगारा । देते बोमहीमो ॥ ८ ॥  
से कि ते ववता ? ववता अगेगविहा पवता । तंजहा—ववए, ववए, देवाके  
वव्युया हडे ववेष्या अद्द माणी उपसे फवमे इन्द्र, वलिये मुभए,  
सोरियए, योद्धीविषए, भद्रापोणीयए, सवपतै चहस्त्रतो ववहारे बोरवरे  
वर्तिद तमरसे भिते मित्तमुक्ताके पोक्षम्भे वीक्षदवदवदम्भए, वेषावृष्टे तद्दप-

रा । से त जलरहा ॥ ४३-१ ॥ से किं तं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पन्ता ।  
हा-आए, काए, कुहणे, कुणके, दब्बहलिया, सप्काए, सज्जाए, छत्तोए, वंसी,  
श, कुरए । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त कुहणा । णाणाविहसठाणा रुक्खाणं  
तीविया पत्ता । खधा वि एगजीवा तालसरेलणालिएरीण ॥ १ ॥ जह सगल्सरि-  
ण सिलेसमिस्साण चट्ठिया वट्ठी । पत्तेयसरीराणं तह होन्ति सरीरसधाया ॥ २ ॥

२ वा तिलपपडिया वहुएहिं तिलेहिं सहया सती । पत्तेयसरीराण तह होन्ति  
सरीरसधाया ॥ ३ ॥ सेत्त पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइया ॥ ४३-२ ॥ से किं तं  
साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया ? साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया अणेगविहा  
पन्ता । तजहा—अवए पणए सेवालें लोहिणी[जाणिया] थिहू थिभगा । अस्सकर्णीं  
सौँहकशी सिउढि तत्तो मुसुंदी य ॥ १ ॥ रुक्कुण्डरिया जीरु छीरविरालीं तहेव किट्ठी  
य । हालिहा सिंगवेरे य आलुगा मूलए इय ॥ २ ॥ कंवूया कञ्जकञ्ज महुपोवलई तहेव  
महुसिंगी । पीरुहों सप्पसुयथा छिन्नरहा चेव बीयरहा ॥ ३ ॥ पाढा मियवालुंकी  
महुररसा चेव रायबली य । पउमा य माडरी दती चट्ठी किट्ठित्ति यावरा ॥ ४ ॥  
मासपण्ण मुग्रापण्णी जीवियरसहे य रेणुया चेव । काओली खीरकाओली तहा भगी  
नही इय ॥ ५ ॥ किमिरासि भद्दमुत्था णगलई पेलुगा इय । किण्हे पउले य हठे हर-  
तणुया चेव लोयाणी ॥ ६ ॥ कण्हकदे वजे सूरणकदे तहेव सल्लूहे । एए अणतजीवा  
जेयावन्ने तहाविहा ॥ ७ ॥ तणमूलकदमूले वसीमूलेत्ति यावरे । सखिंजमसखिजा  
बोधब्बाडणतजीवा य ॥ ८ ॥ सिंधाडगस्स गुच्छो अणेगजीवो उ होइ नायब्बो । पत्ता  
पत्तेयजीया दोघि य जीवा फले भणिया ॥ ९ ॥ जस्स मूलस्स भगगस्स समो भगो  
पदीसइ । अणतजीवे उ से मूले जेयावन्ने तहाविहा ॥ १० ॥ जस्स कदस्स भगगस्स  
समो भगो पदीसइ । अणतजीवे उ से खधे जेयावन्ने तहाविहा ॥ १२ ॥  
जीसे तयाए भगगाए समो भगो पदीसए । अणतजीवा तया सा उ जेयावन्ना तहाविहा  
॥ १३ ॥ जस्स सालस्स भगगस्स समो भगो पदीसए । अणतजीवे य से साले जे-  
यावन्ने तहाविहा ॥ १४ ॥ जस्स पवालस्स भगगस्स समो भगो पदीसए । अणत-  
जीवे पवाले से जेयावन्ने तहाविहा ॥ १५ ॥ जस्स पत्तस्स भगगस्स समो भगो पदी-  
सए । अणतजीवे उ से पत्ते जेयावन्ने तहाविहा ॥ १६ ॥ जस्स पुफ्फस्स भगगस्स  
समो भगो पदीसए । अणतजीवे उ से पुफ्फे जेयावन्ने तहाविहा ॥ १७ ॥ जस्स  
फलस्स भगगस्स समो भंगो पदीसए । अणतजीवे फले से उ जेयावन्ने तहाविहा  
॥ १८ ॥ जस्स बीयस्स भगगस्स संमो भगो पदीसए । अणतजीवे उ से बीए जेया-

बैरेंटिया अपेगमिहा पक्षाता । तंबहा-युक्ताकिमिया कुण्ठिकिमिया गैत्रकल्पा  
पोस्टेया पररा सोमवर्ष्णा वैदीमुहा संसुहा गोवक्षेया चलेया जास्तादत्ता  
संक्षा संक्षेया मुहा, लक्षा गुस्त्या लक्षा वराता सोतिया मुतिया बृहुमा-  
वासा पूर्वोवता तुहमोवता भैरियावता, संकुदा माइशाहा शिथिर्वैषु  
वैद्या चमुरभिन्ना वेयावसे लक्ष्यारा । सम्बे ते संमुचित्तमा नपुरुषा । ते  
समाप्तो बृहिया पक्षाता । तंबहा-पक्षतत्त्वा य अपज्ञत्वा च । एप्सि वै एकमध्य-  
माने बैरेंटियावै पक्षतापक्षतावै सत् जातुक्षेहिजोवैप्सुहसयसहस्या भवतीति  
मक्षदावै । सेत्त बैरेंटियसंकारसमावृत्तीवक्षत्वाता ॥ ४४ ॥ ते कि ते बैरेंटिय-  
सारसमावृत्तीवक्षत्वाता । तेइरियसंकारसमावृत्तीवक्षत्वाता भवतीति  
तंबहा-ओवह्या रोहियिया कुंप, पिरीक्षिया चौरुगा डोहिया उहियिया  
उक्षयाता चक्षाहा तद्वाहारा बद्धाहारा मानुया पताहारा तत्त्वेतिया पार्वै  
दिया उप्फवेतिया फूस्वैदिया धीयवेतिया तदुखमियिया त्वंविमियिया  
क्ष्यासरिक्षियिया द्वित्यिया क्षितिया विगिता विगितिया वाहुया अमुका  
मुमगा चेत्तियिया त्रुववेत्य ईरम्भिया ईरगोवया तुरुरुक्षा तुरुरुक्षाहाणा  
ज्या हस्त्याहमा पिस्त्या चयताइया गोम्ही इरिक्षोदा वेयावसे लक्ष्यारा ।  
सम्बे त अमुचित्तमा नपुरुषा । ते समाप्तमो बृहिया पक्षाता । तंबहा-पक्षतत्त्वा वै  
अपज्ञत्वा च । एप्सि वै एकमाद्यावै तेइरियापक्षतापक्षतावै अद्व आईप्सो-  
हिजोविष्वपुहसयसहस्या भवतीति मक्षदावै । सत्त तेइरियसंकारसमावृत्तीवक्ष-  
त्वाता ॥ ४५ ॥ ते कि ते चतुरित्यसंकारसमावृत्तीवक्षत्वाता ॥ ३ अलोकिया  
पक्षाता । तंबहा-भवित्वपतिक्षमप्तिक्षमसम्भा शीड लक्षा पर्वते य । अनुभुवद्वाहु  
मंहसतो य विभित्तै ॥ किन्तुपता भैक्षपता लेहितपता इतिहासा तुहितपत्य  
वित्तपत्ता विभित्तपत्ता ओहृत्यिया चलक्षाहिया वैमीरा जीविया कुंपा  
भरितुरोदा अपिष्ठेत्ता शारेण वेतुरा दोत्तम भमरा भरित्ये जल्ला होदा  
वित्तुया पतित्युता छावक्षित्युता जमविष्युया पिक्षाता वक्षगा गोमवर्गीदा  
वेयावसे लक्ष्यारा । सम्बे ते संमुचित्तमा नपुरुषा । ते समाप्तमो बृहिया पक्षाता ।  
तंबहा-पक्षतत्त्वा वै अपज्ञत्वा च । एप्सि वै एकमध्यावै चतुरित्यावै पक्षताप-  
क्षत्वात् एव चप्तुम्भोहिजोविष्वपुहसयसहस्यावै भवतीति मक्षदावै । सेत्त चतुरि-  
त्यसंकारसमावृत्तीवक्षत्वाता ॥ ४६ ॥ ते कि ते पंचत्यसंकारसमावृत्तीवक्ष-  
त्वाता ॥ २ चतुरित्या पक्षाता । तंबहा-चतुरित्यसंकारसमावृत्तीवक्षत्वाता  
वित्तसमावृत्तीविष्वपुहित्यसंकारसमावृत्तीवक्षत्वाता मनुषार्थविष्वपत्तीवक्षत्वाता

जीवपञ्चवणा, देवपंचिन्द्रियससारसमावज्ञजीवपञ्चवणा ॥ ४७ ॥ से कि त नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पञ्चता । तजहा-१ रथणप्पभापुढविनेरइया, २ सक्षरप्पभापुढवि-नेरइया, ३ वालुयप्पभापुढविनेरइया, ४ पक्षप्पभापुढविनेरइया, ५ धूमप्पभापुढवि-नेरइया, ६ तमप्पभापुढविनेरइया, ७ तमतमप्पभापुढविनेरइया । ते समासओ दुविहा पञ्चता । तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । सेत्त नेरइया ॥ ४८ ॥ से कि तं पचेदियतिरिक्खजोणिया ? पचेदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पञ्चता । तजहा-१ जलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया य, २ थल्यरपंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया य, ३ खहयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया य ॥ ४९ ॥ से कि त जलयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया ? जलयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया पचविहा पञ्चता । तंजहा-१ मच्छा, २ कच्छभा, ३ गाहा, ४ मगरा, ५ सुसुमारा । से कि त मच्छा ? मच्छा अणेग-विहा पञ्चता । तजहा-सण्हमच्छा, खवल्लमच्छा, जुगमच्छा, विज्ञदियमच्छा, हलि-मच्छा, मगरिमच्छा, रोहियमच्छा, हलीसागरा, गागरा, वडा, वडगरा, गब्भयो, उसगारा, तिमी, तिमिंगिला, णक्का, तदुलमच्छा, कणिकामच्छा, साली, सत्यिया-मच्छा, लभणमच्छा, पडागा, पडागाइपडागा, जेयावच्चे तहप्पगारा । सेत्त मच्छा । से कि तं कच्छभा ? कच्छभा दुविहा पञ्चता । तजहा-अट्टिकच्छभा य मसकच्छभा य । सेत्त कच्छभा । से कि त गाहा ? गाहा पंचविहा पञ्चता । तजहा—१ दिली, २ वेढगा, ३ मुद्धया, ४ पुल्या, ५ सीमागरा । सेत्त गाहा । से कि त मगरा ? मगरा दुविहा पञ्चता । तजहा-१ सोंडमगरा य, २ मट्टमगरा य । सेत्त मगरा । से कि त सुसुमारा ? सुसुमारा एगागारा पञ्चता । सेत्त सुसुमारा । जेयावच्चे तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पञ्चता । तजहा—समुच्छिमा य गब्भवक्तिया य । तत्य ण जे ते समुच्छिमा ते सन्वे नपुसगा । तत्य ण जे ते गब्भवक्तिया ते तिविहा पञ्चता । तजहा—इत्थी, पुरिसा, नपुसगा । एएसि ण एवमाइयाण जलयरपचिदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण अद्वतेरसजाइकुल्कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । सेत्त जलयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया ॥ ५० ॥ से कि त थल्यरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया ? थलयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया दुविहा पञ्चता । तजहा-चउप्पयथलयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया य परिसप्पयथलयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया य । से कि त चउप्पयथलयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया ? चउप्पयथलयरपचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया चउविहा पञ्चता । तजहा-एगाहुरा, विहुरा, गहीपया, सणपफया । से कि त एगाहुरा ? एगाहुरा अणेगविहा पञ्चता । तजहा-अस्सा, अस्सतरा, घोडगा, गहभा, गोरक्खरा, कदलगा, सिरिकदलगा, आवत्तगा, जेयावच्चे तह-

प्यगारा । ऐर्व प्रसूहा । से कि तं दुष्टः ॑ दुष्टः अनेवतिष्ठा पक्षता । तं व्या-व्या  
गोपा यक्षा रोक्षा फस्या महिषा मित्रा संवरा वराहा अया प्रस्त्रस्त्र  
मध्यमखुर्गामेक्षमात्, अनेवते लक्ष्मीपारा । सेतु दुष्टः । से कि त गदीपाता ।  
गदीपाता अनेवतिष्ठा पक्षता । तं व्या-हत्यी हत्यीपूर्वता मेत्तुहत्यी व्यागा(स्मा)  
मैता अनेवते लक्ष्मीपारा । ऐर्व यक्षमा । से कि तं समप्त्या ॑ समप्त्या अनेवतिष्ठा  
पक्षता । तं व्या-सीहा क्षमा ऐक्षिया अच्छा वरक्ष्य फ्रस्तु उक्षाका विद्वाभ्य  
सुष्यगा औरक्षुष्यगा घेवेक्षिया सुष्यगा वित्ताका अनेवते लक्ष्मीपारा ।  
सेतु सुष्यप्यदा । ते समाप्तमो दुष्टिष्ठा पक्षता । तं व्या-संमुचित्या व गम्भीर्विदिवा  
य । तत्त्वं वै अे ते संमुचित्या ते सम्बो नपुंस्या । तत्त्वं वै व गम्भीर्विदिवा  
त विष्ठा पक्षता । तं व्या-हत्यी पुरिषा नपुंस्या । एएसि व एषमाइवार्ण वरम्-  
र्वंचिन्दियतिरिक्षमोमियार्ण वज्जतापञ्चतार्ण दस वरक्षुसम्भेदिजोमिष्यमुहृष्टवस-  
इस्या भवन्तीति मन्त्रार्थः । सेतु वरप्रस्पव्यम्भर्वंचिन्दियतिरिक्षमेतिया ॥ ५१ ॥  
से कि तं वरिसप्तव्यम्भर्वंचिन्दियतिरिक्षमोमिया ॑ वौरुप्यव्यम्भर्वंचिन्दियतिरिक्षमो  
क्षमोमिया दुष्टिष्ठा पक्षता । तं व्या-वरप्रस्पव्यम्भर्वंचिन्दियतिरिक्षमोमिया व  
मुप्यप्रस्पव्यम्भर्वंचिन्दियतिरिक्षमोमिया य ॥ ५२ ॥ से कि तं वरप्रस्पव्यम्भ-  
मर्वंचिन्दियतिरिक्षमोमिया । उरप्रस्पव्यम्भर्वंचिन्दियतिरिक्षमोमिया वड  
मिया पक्षता । तत्त्वा—भी अवगता आपातिया महोरमा । से कि तं जही ॑  
जही दुष्टिष्ठा पक्षता । तं व्या—दत्यीक्षा य मउतिष्ठो व । ए कि ते रम्भीरा ॑  
दत्यीक्षा अनेवतिष्ठा पक्षता । तं व्या—आधीमिया दिद्धिमिया उम्भिया भोक्ष-  
मिया तमातिया अम्भातिया उस्मासमिया भौमातिया वक्ष्यमप्या उम्भात्या  
वाओहरा दक्षमुप्या कोमाहा भौमिया समिद्धा अनेवते लक्ष्मीपारा । ऐर्व  
दत्यीक्षा । ए कि तं यद्विष्ठो ॑ मठमियो अनेवतिष्ठा पक्षता । तं व्या—रैष्याया  
योगक्षा अगाहीया वद्वस्य वित्तशिष्ये भावतिष्ठो मातिष्ठो जही अविगताणा  
वाएवहाणा अदावते लक्ष्मीपारा । सुख मउतिष्ठो । सेतु जही । से कि तं अवगता॑  
अवगता एगायारा पक्षता । सेतु अवगता ॥ ५३ ॥ ए से कि तं आपातिया । वहि वै  
भौमि॑ भापातिया उम्भमुप्य ॑ गोपया । अंगो भौमस्त्वेते भौमप्रकेतु ऐक्षेतु निवा-  
याप्य॑ पञ्चलमु भौमभूमीमु वापाव॑ एटु वंक्षु मातियोहेतु वावरिद्यवाकार॒  
वामुद्वर्दयापारेतु वरदेवनीपत्तारेतु मंडपियोवाकारेतु, वामंदरिद्यवाकारेतु  
वामनियेतेतु वायरनिक्षेत्रु निगमनिक्षेत्रु, लहनिक्षेत्रु, वस्त्रनिर्विक्षेत्रु भौमिनि  
येतेतु दोग्मुद्विवेतेतु पृष्ठनिक्षेत्रु वायरनिक्षेत्रु वास्त्रनिक्षेत्रु लंकानिर्वि

सेसु, रायहाणीनिवेसेसु, एएसि णं चेव विणासेसु एत्य णं आसालिया समुच्छइ । जहनेणं अगुलस्स असखेजाइभागमित्ताए ओगाहणाए, उक्षोसेणं वारसजोयणाइ तय-  
षुर्ल्वं च ण विक्ष्वभवाहलेण भूर्मि दालित्ता ण समुद्रेह, असन्नी मिन्छादिट्टी अण्णाणी  
अंतोमुहुत्तड्डाउया चेव कालं करेइ । सेत्त आसालिया ॥ ५४ ॥ से किं त महोरगा ?  
महोरगा अणेगविहा पञ्चता । तजहा—अत्थेगइया अगुल पि, अगुलपुहुत्तिया वि,  
वियत्थि पि, वियत्थिपुहुत्तिया वि, रथणि पि, रथणिपुहुत्तिया वि, कुच्छि पि, कुच्छि-  
पुहुत्तिया वि, धणु पि, धणुपुहुत्तिया वि, गाउर्यं पि, गाउर्यपुहुत्तिया वि, जोयण  
पि, जोयणपुहुत्तिया वि, जोयणसय पि, जोयणसयपुहुत्तिया वि, जोयणसहस्स पि ।  
ते णं थले जाया, जलेऽवि चरंति थलेऽवि चरन्ति, ते णत्थि इह, बाहिरएसु दीवेसु  
समुद्रेष्ठ द्वन्ति, जेयावक्षे तहप्पगारा । सेत्त महोरगा । ते समासओ दुविहा पञ्चता ।  
तजहा—समुच्छिमा य गब्बवक्षतिया य । तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते सब्बे नपु-  
सगा । तत्थ ण जे ते गब्बवक्षतिया ते तिविहा पञ्चता । तजहा—इत्थी, पुरिसा,  
नपुसगा । एएसि ण एवमाइयाण पजत्तापजत्ताणं उरपरिसप्पाण दसजाइकुलकोडि-  
जोणिप्पमुहसयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । सेत्त उरपरिसप्पा ॥ ५५ ॥ से कि त  
भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा अणेगविहा पञ्चता । तजहा—नउला, सेहा, सरडा, सल्ला,  
सरंठा, सारा, खोरा, घरोइला, विस्सभरा, मूसा, मगुसा, पयलाइया, ढीरविरालिया,  
जोहा, चउप्पाइया, जेयावक्षे तहप्पगारा । ते समासओ दुविहा पञ्चता । तंजहा—  
समुच्छिमा य गब्बवक्षतिया य । तत्थ ण जे ते समुच्छिमा ते सब्बे नपुसगा ।  
तत्थ ण जे ते गब्बवक्षतिया ते तिविहा पञ्चता । तंजहा—इत्थी, पुरिसा, नपुसगा ।  
एएसि ण एवमाइयाणं पजत्तापजत्ताण भुयपरिसप्पाण नव जाइकुलकोडिजोणिप्पमुह-  
सयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । सेत्त भुयपरिसप्पथल्यरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया ।  
सेत्त परिसप्पथल्यरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया ॥ ५६ ॥ से कि त खहयरपचिन्दिय-  
तिरिक्खजोणिया ? खहयरपचिन्दियतिरिक्खजोणिया चउविहा पञ्चता । तजहा—  
चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुगगपक्खी, विययपक्खी । से कि त चम्मपक्खी ? चम्म-  
पक्खी अणेगविहा पञ्चता । तंजहा—वगुली, जलोया, अडिला, भारडपक्खी, जीव-  
जीवा, समुद्रवायसा, कण्णतिया, पक्षिविरालिया, जेयावक्षे तहप्पगारा । सेत्त चम्म-  
पक्खी । से कि त लोमपक्खी ? लोमपक्खी अणेगविहा पञ्चता । तजहा—डका, कंका,  
कुरला, वायसा, चक्कागा, हसा, कलहंसा, रायहसा, पायहसा, आडा, सेढी, वगा,  
बलागा, पारिप्पवा, कोचा, मारसा, मेसरा, मसूरा, मऊरा, मत्तहत्था, गहरा,  
पौडरिया, कागा, कार्मिजुया, वंजुलया, तित्तिरा, वट्टगा, लावगा, क्वोया, कविजला,

पारेक्षया विद्या कासा कुन्तक्षया सुया वरद्विला ममजसुलगा बोद्धम्, सेहा विभिन्नगमाई । सेही स्वेमपक्षकी । ऐ कि त समुभ्यपक्षकी । समुभ्यपक्षकी एगाग्याए पक्षता । ते वं भवित्वा हहु, वाहिरएष वीक्षसुरेष भवन्ति । सेव समुभ्यपक्षकी । ऐ कि त वियवपक्षकी । वियवपक्षकी एकाग्यारा पक्षता । ते वं भवित्वा हहु, वाहिरएष वीक्षसुरेष भवन्ति । सेही वियवपक्षकी । ते समाप्तयो त्रुविदा पक्षता । तंबहा-संमुचिक्षमा य गम्भार्द्दिया च । तत्य वं जे ते संमुचिक्षमा ते सम्बो न्युसगा । तत्य वं जे ते गम्भार्द्दिया ते त्रिविदा पक्षता । तंबहा—हत्ती पुरिला न्युसगा । पएवि वं एकमाइक्षार्थं वाहयरपेत्तिविनियतिरिक्षाओपित्यार्थं फङ्गातापक्षतार्थं वारसु जात्युक्तोपित्योपिष्ठमुहुसमस्तस्या ममन्तीति ममक्षार्थ । उत्तुवात्युक्तोपित्यन्तं नम अन्तररुपाई च । वहु वहु व होन्ति नवगा तहु वारसु चेव बोद्धम्बा । सेही वाहयरपेत्तिविनियतिरिक्षाओपित्या । सेही पवित्रिविनियतिरिक्षाओपित्या प्र ५७ ॥ पे कि त म्युसा ॥ म्युसा त्रुविदा पक्षता । तंबहा—संमुचिक्षम्युसा य गम्भार्द्दिव-म्युसा य ॥ ५८ ॥ पे कि त संमुचिक्षम्युसा ॥ वहि वं भेतो । संमुचिक्षम्युसा चंमुचिक्षिः । गोदया । अती म्युसुद्देते फायार्द्दियाए चेव उक्षारेषु वा पास्त्रक्षेत्रु वा चेवेषु वा चिक्षाक्षेत्रु वा वंतेषु वा पितेषु वा पूर्तु वा दोविष्टु वा उद्देषु वा मुपुम्यस्तरिसाहेतु वा विग्याजीक्षाक्षेत्रेषु वा वीपुरिसर्वेषु वा ज्ञारपिदम्भेषु वा उव्येषु वह अनुशुद्धाभेषु एत्व वं संमुचिक्षम्युसा उमुच्यंति अनुस्तस जस्तेजसागमेताए ओगाहुक्ताए । अस्त्री मित्यापितु जग्यानी सम्भाईं पवरीहि जग्याना औतेसुद्ध ताठया चेव वाहु छोति । सेही संमुचिक्षम्युसा ॥ ५९ ॥ पे कि त वम्भार्द्दिव-म्युसा ॥ गम्भार्द्दिवम्युस्या त्रिविदा पक्षता । तंबहा—ज्ञम्भूम्ला वर्ज्ञम्भूम्ला भन्तरुपीयगा ॥ ६ ॥ पे कि त अन्तररीयगा । अन्तररीयगा अनुशील्यता पक्षता । तंबहा—१ एगोस्मा २ आमालिया ३ वैमालिया ४ ज्ञोलिया ५ इयड्या ६ वद्यजा ७ गोस्मा ८ सद्युक्तिया ९ भार्द्देषुहा १ मैत्रेषुहा ११ भवेषुहा १२ योषुहा १३ आम्युहा १४ इरिषुहा १५ दीर्घुहा १६ वास्मुहा १७ भास्त्रक्षया १८ हरिष्या १९ भरसा २ व्यक्षात्यग्या २१ उक्षमुहा २२ म्यमुहा २३ विश्वमुहा २४ विश्वुर्द्दता २५ वर्गर्दता २६ सद्यूर्दता २७ गृहर्दता २८ एद्यूर्दता । सेही अन्तररीयगा व ६१ ॥ पे कि त अम्भम्भूम्ला ॥ अम्भम्भूम्ला रौमलिहा पक्षता । तंबहा—वहि हेमण्डी, वेदी

हेरण्णवएहि, पचहिं हरिवासेहि, पचहिं रम्मगवासेहि', पंचहिं देवकुर्लहि, पचहिं उत्तर-  
कुर्लहि । सेत्त अकम्मभूमगा ॥ ६२ ॥ से कि तं कम्मभूमगा<sup>2</sup> कम्मभूमगा पञ्चरसविहा  
पञ्चता । तजहा-पचहिं भरहेहि, पंचहिं एरवएहि, पचहिं महाविदेहेहि । ते समासओ  
दुविहा पञ्चता । तजहा-आरिया'य मिलकख् य ॥ ६३ ॥ से कि त मिलकख्<sup>2</sup>  
मिलकख् अणेगविहा पञ्चता । तजहा-सगा जवणा चिलायसवरवब्बरकायमुरुंडोडभ-  
डगनिणगपक्षणियाकुलब्बखगोंडसिंहलपारसगोधाकोंचअवडइदमिलचिललपुलिंदहारो-  
सदोववोक्षाणगन्वाहारगपहलियअज्ञालरोमपासपउसामल्यायवधुंयायसूयलिकुकुणग-  
मेयपल्हवमालवमगरंभामासियाणकचीणल्हसियखसाधासियणद्वरमोंडोविलगलओ-  
सपओसकक्षेयअवखागहूणरोमगमस्मरुयचिलायविसयवासी य एवमाई । सेत्त मिलकख्  
॥ ६४ ॥ से कि त आरिया<sup>2</sup> आरिया दुविहा पञ्चता । तजहा-इङ्गिपत्तारिया य  
अणिङ्गिपत्तारिया य । से कि तं इङ्गिपत्तारिया<sup>2</sup> इङ्गिपत्तारिया छब्बिहा पञ्चता ।  
तंजहा-१ अरहता, २ चक्षवट्ठी, ३ वलदेवा, ४ वासुदेवा, ५ चारणा, ६ विज्ञा-  
हरा । सेत्त इङ्गिपत्तारिया । से कि त' अणिङ्गिपत्तारिया<sup>2</sup> अणिङ्गिपत्तारिया नवविहा  
पञ्चता । तजहा-खेत्तारिया, जाइआरिया, कुलारिया, कम्मारिया, सिप्पारिया,  
भासारिया, नाणारिया, दसणारिया, चरित्तारिया ॥ ६५ ॥ से कि त खेत्तारिया<sup>2</sup>  
खेत्तारिया अद्वच्छव्वीसइविहाणा पञ्चता । तजहा-रायगिह मगह चपा, अगा तह  
तामलिति वगा य । कचणपुरं कलिंगा, वाणारसी चेव कासी य ॥ १ ॥ साएय  
कोसला गयपुरं च कुरु सोरिय कुसद्वो य । कंपिल पंचाला, अहिछता जंगला चेव  
॥ २ ॥ वारवई सोरद्वा, मिहिल विदेहा य वच्छ कोसबी । नंदिपुरं सडिला,  
भद्विलपुरमेव मल्या य ॥ ३ ॥ वझराड वच्छ वरणा, अच्छा तह मत्तियावइ दसणा ।  
सोत्तियवई य चेदी, वीयभयं सिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ महुरा य सूरसेणा, पावा भगा य  
मास पुरिवट्ठा । सावत्थी य कुणाला, कोदीवरिस च लाढा य ॥ ५ ॥ सेयविया वि  
य णयरी, केक्यअद्वं च आरिय भणिय । इत्युप्पत्तीं जिणाण, चक्षीण रामकण्हाण  
॥ ६ ॥ सेत्त खेत्तारिया ॥ ६६ ॥ से कि त जाइआरिया<sup>2</sup> जाइआरिया छब्बिहा  
पञ्चता । तजहा-अवद्वा य कलिंदा विदेहा वेदगा इ य । हरिया चुचुणा चेव छ  
एया इब्भजाइओ ॥ सेत्त जाइआरिया ॥ ६७ ॥ से कि त कुलारिया<sup>2</sup> कुलारिया  
छब्बिहा पञ्चता । तजहा-उगा, भोगा, राइचा, इक्खागा, णागा, कोरब्बा । सेत्त  
कुलारिया ॥ ६८ ॥ से कि त कम्मारिया<sup>2</sup> कम्मारिया अणेगविहा पञ्चता । तजहा-  
दोसिया, सोत्तिया, कप्पासिया, सुत्तवेयालिया, भडवेयालिया, कोलालिया, नरवाह-  
णिया, जेयावज्जे तहप्पगारा । सेत्त कम्मारिया ॥ ६९ ॥ से कि त सिप्पारिया<sup>2</sup>

विष्णुरिद्या भग्नेगनिहा पक्षता । तंश्वहा-त्रुण्णामा तंदुषामा पद्ममारा देवदा कला  
कठिन्या कदुपाठयारा शुभपाठमारा छातारा वज्ञामा पोर्वारा लेप्यारा वित्तारा  
संक्षारा वृत्तारा मंदारा विक्षणारा सेव्यारा खोकिगारा लेव्यारे तद्व्यारा ।  
देता विष्णुरिद्या ॥ ५ ॥ प से हि ते मातारिद्या ॥ मातारिद्या से अं अङ्गमाण्डार  
मासाए भांसेति अत्यन्ति व ने वंभी किंवी पक्षता । वंभीए एं व्यक्तारुद्दिते  
वेष्यगनिहा वक्षते । तंश्वहा-१ वंभी २ जन्मारिद्या ३ दोसाषुरिद्या ४ वरोदी  
५ पुष्टहरुसारिद्या ६ मोगव्यामा ७ पद्मारिद्या ८ अंकव्यारिद्या ९ अङ्गव्यारिद्या  
१ वेनह्या ११ लिङ्गह्या १३ अङ्गहिनी १५ विविहिनी १४ वर्वाहिनी  
१६ आमस्तिनी १८ माहेसरी १७ दोमितिनी १९ वोक्तिनी । सेरे मातारिद्या  
॥ ७ ॥ प से हि ते मातारिद्या ॥ मातारिद्या वैष्णविहा पक्षता । तंश्वहा-आमितिनीहि  
यन्माणामारिद्या छुम्नाणामारिद्या ओहिनामारिद्या मणपञ्चनामारिद्या वेष्यस्तमामारिद्या ।  
सिते नामारिद्या ॥ ८ ॥ से हि ते दंसनारिद्या ॥ दंसनारिद्या दुमिहा पक्षता । तंश्वहा-  
सरागर्वसनारिद्या व वीकरागर्वसनारिद्या व ॥ ९ ॥ प से हि ते सरागर्वसनारिद्या ॥  
सरागव्यसनामारिद्या दस्तिनी पक्षता । तंश्वहा-निसमुष्टुपस्तर्वी आजादी शुलबीयस्तमेष ।  
अमिताममित्यारदी विरियादेवेष्यमर्दी ॥ १ ॥ मूकद्यनाहिगम्या जीवात्मीये व पुण्य-  
पार्व च । सहस्रमुष्ट्याऽऽसुष्टुपस्तर्वी व देश् व निसम्मो ॥ २ ॥ ये विनदिते मारै  
कठिन्ये सहाय चक्षेत । एमेव नवाहिति व निसम्मादति नामम्बो ॥ ३ ॥ प एव  
चेत व नावे उपरिद्वे ओ पौष चाहाइ । छत्तम्भयेष विनेव व उष्टुपत्तिनि  
नामम्बो ॥ ४ ॥ ये हेतम्याप्तंदो आजाए रोक्षए वक्षर्व दु । एमेव नवाहिति व  
एसो आजादी नाम ॥ ५ ॥ ये शुलमहिन्नतो शुएष व्येयम्हाई व सम्मर्त । अर्थ  
वाहिरेण व सो शुलादति नामम्बो ॥ ६ ॥ प एतेऽमितार्वी पक्षाई ओ फुरी व  
सम्मर्त । उष्टुप च तेक्षिष्ठू ओ वीयद्वति नामम्बो ॥ ७ ॥ ये हाय अमितार्वी  
शुलमार्व चसु अत्यन्ते विद्वे । इष्टार्ष अंपदं व्यज्ञमा विहिताम्बो व ॥ ८ ॥  
दम्भाण सञ्चमावा सम्पमागोदी असु उष्टुपद्या । सञ्चाहै अविहितै वित्तारं  
हिति नामम्बो ॥ ९ ॥ दंसनामानवरिते तद्विग्नए सञ्चसमिष्टुतीषु । ओ विरिद्या-  
भाजादी स्त्रे रम्भ विरियादी नाम ॥ १ ॥ अवमित्यहिन्नतिद्वे संकेतदति होए  
नामम्बो । अविसारओ वक्षये अवमित्यादित्वे प सेसेष ॥ ११ ॥ ओ अविच्छय  
वस्त्रे मुक्तमम्बे रम्भ वरितमम्बे च । सहाय विजामित्यिनी ओ वम्भदति नामम्बो  
॥ १२ ॥ अमत्यस्तम्बो वा छुम्नामप्त्यसेव्या वापि । वावामुर्वसव्यमावा व  
सम्मात्सहाया ॥ १३ ॥ निस्तीक्ष्म निवृत्तिय विवितिनिका अमृतीद्वे व ।



संग्रहीते विश्वीणु सामवीय गप दृसु जारिया य । सेतौ संग्रहीते विश्वीणु सामवीय-  
रावदृसु जारिया । से कि तै अबोधीते विश्वीणु सामवीय गप दृसु जारिया । अबोधी-  
ते विश्वीणु सामवीय गप दृसु जारिया तुमिहा पक्षता । ठंबहा—पठमसुभव व जागी-  
ते विश्वीणु सामवीय गप दृसु जारिया य अवगम समव व व्योधीते विश्वीणु सामवीय-  
रावदृसु जारिया च । अहवा अरिमसुभव व व्योधीते विश्वीणु सामवीय गप दृसु जारिया  
य अवरिमसुभव व व्योधीते विश्वीणु सामवीय गप दृसु जारिया य । सेतौ अबोधी-  
ते विश्वीणु सामवीय गप दृसु जारिया । सेतौ अरितारिया ॥ ७५ ॥ ए कि तै  
अरितारिया । अरितारिया तुमिहा पक्षता । ठंबहा—पठरमव व रितारिया य बीमराम-  
व रितारिया च । से कि है सरसालव रितारिया । सरुमालव रितारिया तुमिहा पक्षता ।  
ठंबहा—छुमसंपराव सुरागव व रितारिया च वायरसंफराव सुरागव व रितारिया च । से  
कि तै छुमसंपराव सुरागव व रितारिया । छुमसंफराव सुरागव व रितारिया तुमिहा  
पक्षता । ठंबहा—पठमसुभव छुमसंपराव सुरागव व रितारिया य अवगम सुपराव छुम-  
संपराव सुरागव व रितारिया च । अहवा अरिमसुभव छुमसंपराव सुरागव व रितारिया  
य अवरिमसुभव छुमसंपराव सुरागव व रितारिया य । अहवा छुमसंफराव सुरागव व रितारिया  
तुमिहा पक्षता । ठंबहा—धैरितिसुमाना य विसुज्ज्ञमाना य । सेतौ छुमसंप-  
रागव व रितारिया । से कि है वायरसंपराव सुरागव व रितारिया । वायरसंफराव-  
सुरागव व रितारिया तुमिहा पक्षता । ठंबहा—पठमसुभव व रुपराव सुरागव व रितारिया  
च अफ़गमसमव व रुपराव सुरागव व रितारिया च । अहवा अरिमसुभव व रुपराव सुरागव-  
सुरागव व रितारिया य अवरिमसुभव व रुपराव सुरागव व रितारिया य । अहवा  
वायरसंपराव सुरागव व रितारिया तुमिहा पक्षता । ठंबहा—परिकार्ह य अपरिकार्ह च ।  
सेतौ वायरसंपराव सुरागव व रितारिया ॥ ७६ ॥ ए कि तै बीमरामव व रितारिया ॥  
बीमहमव व रितारिया तुमिहा पक्षता । ठंबहा—उवसंतप्तसामवीय गप व रितारिया य  
खीणक्षयाकीवराव व रितारिया च । से कि तै उवसंतप्तसामवीवराव व रितारिया ॥  
उवसंतप्तसामवीवराव व रितारिया तुमिहा पक्षता । ठंबहा—पठमसुभव उवसंतप्तसाम-  
वीय गप व रितारिया च अफ़गमसमव उवसंतप्तसामवीय गप व रितारिया च । अहवा  
अरिमसुभव उवसंतप्तसामवीय गप व रितारिया य अवरिमसुभव उवसंतप्तसामवीय-  
राव व रितारिया य । सेतौ उवसंतप्तसामवीय गप व रितारिया । से कि तै खीणक्षयाम-  
वीय गप व रितारिया ॥ खीणक्षयाकीवराव व रितारिया तुमिहा पक्षता । ठंबहा—  
कठमत्प्रवीणक्षयामवीय गप व रितारिया य विश्विश्वीणु क्षयामवीय गप व रितारिया च ।

से कि तं छउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया २ छउमत्थखीणकसायवीयरायच-  
रित्तारिया दुविहा पन्नता । तजहा—सयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया  
य वुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । से किं तं सयवुद्धछउम-  
त्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया २ सयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया  
दुविहा पन्नता । तजहा—पठमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया  
य अपठमसमयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमस-  
मयसयवुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयसयवुद्धछउमत्थ-  
खीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । से किं त वुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरा-  
यचरित्तारिया २ वुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता ।  
तजहा—पठमसमयवुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपठमसमय-  
वुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयवुद्धवोहियछ-  
उमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयवुद्धवोहियछउमत्थखीणकसा-  
यवीयरायचरित्तारिया य । सेत्त वुद्धवोहियछउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया ।  
सेत्त छउमत्थखीणकसायवीयरायचरित्तारिया । से किं त केवलिखीणकसायवीयरा-  
यचरित्तारिया २ केवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तंजहा—  
सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायच-  
रित्तारिया य । से कि त सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया २ सजोगिकेव-  
लिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तजहा—पठमसमयसजोगिकेव-  
लिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपठमसमयमजोगिकेवलिखीणकमायवीयराय-  
चरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य  
अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । सेत्त सजोगिकेवलि-  
खीणकसायवीयरायचरित्तारिया । से कि त अजोगिकेवलिखीणकमायवीयरायचरि-  
त्तारिया २ अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया दुविहा पन्नता । तजहा—  
पठमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अपठमसमयअजोगिकेव-  
लिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य । अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसाय-  
वीयरायचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकमायवीयगयचरित्तारिया य ।  
सेत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया । सेत्त केवलिखीणकमायवीयरायच-  
रित्तारिया । सेत्त खीणकमायवीयरायचरित्तारिया । मेत्त वीयरायचरित्तारिया । अहवा  
चरित्तारिया पचविहा पन्नता । तजहा—मामाइचचरित्तारिया, छेवेवटावणियचरित्ता-  
रिया, परिहारविमुद्धियचरित्तारिया, उहुमस्परायचरित्तारिया, अहक्सायचरित्तारिया

य । से कि तं सामाइयवरितारिया । सामाइयवरितारिया तुमिहा पक्षता । तंबहा—इतियसामाइयवरितारिया च आषङ्कियसामाइयवरितारिया व । से तं सामाइयवरितारिया । से कि तं छेशोक्षुद्वयविवचरितारिया । छेशोक्षुद्वयविवचरितारिया तुमिहा पक्षता । तंबहा—साइकारछेशोक्षुद्वयविवचरितारिया य मिरहारछेशोक्षुद्वयविवचरितारिया य । से तं छेशोक्षुद्वयविवचरितारिया । से कि तं परिहारविसुद्धियवरितारिया तुमिहा पक्षता । तंबहा—निविस्तमाभ्यपिहारविसुद्धियवरितारिया । परिहारविसुद्धियवरितारिया तुमिहा पक्षता । से तं परिहारविसुद्धियवरितारिया । से कि तं छातुमसंपरामवरितारिया । छातुमसंपरामवरितारिया तुमिहा पक्षता । तंबहा—सैक्षित्समाप्तश्चातुमसंपरामवरितारिया च विस्त्रज्ञमाप्तश्चातुमसंपरामवरितारिया च । से तं छातुमसंपरामवरितारिया । से कि तं भावन्वामवरितारिया तुमिहा पक्षता । तंबहा—उत्तमत्वक्षुद्वयवरितारिया च लेखिभावन्वामवरितारिया च । से तं अद्वक्षाववरितारिया । से तं अविद्युपातारिया । से तं अभ्यम्भूमया । से तं गम्भमालौतिया । से तं मणुस्ता ॥ ४७ ६ से कि तं देवा । देवा वर्तमिहा पक्षता । तंबहा—मरक्षासी वाक्षमंतरा व्योगिया वैमालिया । से कि तं भवत्वार्ती । मवत्वार्ती व्यस्तिहा पक्षता । तंबहा—व्युत्कुमारा नागकुमारा द्वयव्युत्कुमारा विज्ञुमारा अमिक्षमारा लीकुमारा उद्विकुमारा विव्युत्कुमारा वाउकुमारा विविकुमारा । ते समासम्बो तुमिहा पक्षता । तंबहा—पक्षतागा य अपक्षतागा य । से तं मवत्वासी । उ कि तं वाक्षमंतरा । वाक्षमंतरा लक्ष्मिहा पक्षता । तंबहा—निवारण विपुरिशा माहोत्पा गेपव्या अम्भा रक्ष्यसा भूता पितामा । तं सुमासमो तुमिहा पक्षता । तंबहा—पक्षतागा य अपक्षतागा य । से तं वाक्षमंतरा । से कि तं व्योगिया । व्योगिया पंचमिहा पक्षता । तंबहा—र्वदा सुरा गृहा नक्षत्राता तारा । ते समासम्बो तुमिहा पक्षता । तंबहा—पक्षतागा य अपक्षतागा य । से तं व्योगिया । से कि तं वैमालिया । वैमालिया तुमिहा पक्षता । तंबहा—क्षयोदगा च क्ष्याईया य । से कि तं क्षयोदगा । क्षयोदगा वारस्तिहा पक्षता । तंबहा—घोहमा ईसाणा सुव्युक्तुमारा माहिंदा वैम्भव्या लैत्या महात्मा साइसारा वायव्या पाण्यमा व्यारणा अनुवात । तं समासम्बो तुमिहा पक्षता । तंबहा—पक्षतागा य अपक्षतागा य । से तं क्षयोदगा । से कि तं क्ष्याईया । क्ष्याईया तुमिहा पक्षता । तंबहा—वैविक्षया च व्युत्तारोद्यमाद्यया य । से कि तं गेविक्षया । गेविक्षया नक्षत्रिहा पक्षता । तंबहा—हित्तिमध्येद्विमोक्षिक्षया हित्तिमध्यमिक्षया हेड्विमउपरै पक्षता ।

मगेविजगा, मज्जिमहेद्विमगेविजगा, मज्जिममज्जिममगेविजगा, मज्जिमउवरिमगेविजगा, उवरिमहेद्विमगेविजगा, उवरिममज्जिममगेविजगा, उवरिमउवरिमगेविजगा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तजहा—पञ्जतगा य अपञ्जतगा य । सेत्त गेविजगा । से कि त अणुत्तरोववाडया ? अणुत्तरोववाडया पचविहा पन्नता । तजहा—विजया, वेजयन्ता, जयन्ता, अपराजिया, सब्बद्वसिद्धा । ते समासओ दुविहा पन्नता । तजहा—पञ्जतगा य अपञ्जतगा य । सेत्त अणुत्तरोववाडया । सेत्त कप्पाईया । सेत्त वेमाणिया । सेत्त देवा । सेत्त पर्चिदिया । सेत्त ससारसमावन्धजीवपञ्चवणा । सेत्त जीवपञ्चवणा । सेत्त पञ्चवणा ॥ ७८ ॥ पञ्चवणाएः भगवईए पढमं पञ्चवणापयं समर्तं ।

कहि ण भते ! वायरपुढविकाइयाण पञ्जतगाण ठाणा पन्नता ? गोयमा ! सद्वाणेण अटुसु पुढवीसु, तजहा-र्यणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए, ईसिप्पब्माराए, अहोलोए पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु, निरएसु, निरयावलियासु, निरयपत्थडेसु, उहूलोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए टकेसु, कूडेसु, सेलेसु, सिद्धरीसु, पव्वारेसु, विजएसु, वक्खारेसु, वासेसु, वासहरपव्वएसु, वेलासु, वेइयासु, दारेसु, तोरणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, एत्य णं वायरपुढविकाइयाण पञ्जतगाण ठाणा पन्नता । उववाएण लोयस्स असखेजइभागे, समुद्घाएण लोयस्स असखेजइभागे, सद्वाणेण लोयस्स असखेजइभागे ॥ ७९ ॥ कहि ण भते ! वायरपुढविकाइयाण अपञ्जतगाण ठाणा पन्नता ? गोयमा ! जत्थेव वायरपुढविकाइयाण पञ्जतगाणं ठाणा पन्नता तथेव वायरपुढविकाइयाण अपञ्जतगाण ठाणा पन्नता । उववाएण सब्बलोए, समुद्घाएण सब्बलोए, सद्वाणेण लोयस्स असखेजइभागे ॥ ८० ॥ कहि ण भते ! सुहुमपुढविकाइयाण पञ्जतगाण अपञ्जतगाण य ठाणा पन्नता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जे पञ्जतगा जे य अपञ्जतगा ते सब्बे एगविहा अविसेसा अणाणता सब्बलोयपरियावन्नगा पन्नता समणाउसो ! ॥ ८१ ॥ कहि ण भन्ते ! वायरआउकाइयाण पञ्जतगाण ठाणा पन्नता ? गोयमा ! सद्वाणेण सत्तसु घणोदहीसु, सत्तसु घणोदहिवलएसु, अहोलोए पायालेसु, भवणेसु, भवणपत्थडेसु, उहूलोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए आगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुजालियासु, सरेसु, सरपतियासु, सरसर-पतियासु, बिलेसु, बिलपतियासु, उज्जरेसु, निज्जरेसु, चिल्लएसु, पल्लएसु, चप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सब्बेसु चेव जलासएसु जलद्वाणेसु, एत्य ण वायर-

आत्मकाशार्थ ठाका पक्षता । उक्ताएवं स्मृतस्य असंखेज्ञमागे सुमुख्याएवं न्मेवस्य असंखेज्ञमागे सद्गुणेण घोवस्तु असंखेज्ञमागे । कहि नं भंते । बावर आत्मकाशार्थ अपश्चात्यगार्थ ठाका पक्षता । गोममा । अत्येव बायरभात्काश्चाहम्-फलतापाय ठाका पक्षता दत्तेव बायरभात्काश्चाहम् अपश्चात्यगार्थ दत्ता पक्षता । उक्ताएवं सम्भोए, समुख्याएवं सम्भोए, सद्गुणेवं घोवस्य असंखेज्ञमागे । कहि नं भंते । ध्युममात्रकाशार्थ पक्षतापाय अपश्चात्यगाम अभाप्ता पक्षता । गोममा । ध्युममात्रकाशार्थ एवं पक्षतापाय य अपश्चात्यगाम ते सन्दे प्रगतिं अविसेदा अपाप्तापाय सम्भोवपरिमावज्ञा पक्षता समाप्तादसो ॥ ८२ ॥

कहि नं भंते । बावरतेवकाशार्थ फलतापाय ठाका पक्षता । गोममा । सद्गुणेवं अतोमसुस्थेतो अपाप्तादेष्ट वीक्षमुद्देष्ट विक्षापाएवं वारस्य फलता पक्षता गत्वा विदेष्ट, एतत्वं बायरतेवकाशार्थ फलतापाय ठाका पक्षता । उक्ताएवं घोवस्य असंखेज्ञमागे ॥ ८३ ॥

कहि नं भंते । बावरतेवकाशार्थ अपश्चात्यगार्थ ठाका पक्षता । गोममा । अतोमसुस्थेतो अपाप्तादेष्ट वीक्षमुद्देष्ट विक्षापाएवं वारस्य फलता पक्षता । गोममा । ध्युमतेवकाशार्थ एवं पक्षतापाय य अपश्चात्यगाम ते सन्दे प्रगतिं अविसेदा अपाप्तापाय सम्भोवपरिमावज्ञा पक्षतापाय मपाप्ताद्य ॥ ८४ ॥

कहि नं भंते । ध्युमतेवकाशार्थ पक्षतापाय य अपश्चात्यगाम ते सन्दे प्रगतिं अविसेदा अपाप्तापाय सम्भोवपरिमावज्ञा पक्षतापाय मपाप्ताद्य ॥ ८५ ॥

कहि नं भंते । बावरतेवकाशार्थ फलतापाय ठाका पक्षता । गोममा । सद्गुणेवं उत्तमु अवाप्ताएवं, सद्गुणेवं घोवस्य असंखेज्ञमागे ॥ ८६ ॥

कहि नं भंते । सुहुमतेवकाशार्थ पक्षतापाय य अपश्चात्यगाम ते सन्दे प्रगतिं अविसेदा अपाप्तापाय सम्भोवपरिमावज्ञा पक्षतापाय मपाप्ताद्य ॥ ८७ ॥

कहि नं भंते । ध्युमतेवकाशार्थ फलतापाय य अपश्चात्यगाम ते सन्दे प्रगतिं अविसेदा अपाप्तापाय सम्भोवपरिमावज्ञा पक्षतापाय मपाप्ताद्य ॥ ८८ ॥

कहि नं भंते । ध्युमतेवकाशार्थ फलतापाय य अपश्चात्यगाम ते सन्दे प्रगतिं अविसेदा अपाप्तापाय सम्भोवपरिमावज्ञा पक्षतापाय मपाप्ताद्य ॥ ८९ ॥

कहि नं भंते । अपश्चात्यगार्थ ठाका पक्षता । उक्ताएवं घोवस्य असंखेज्ञेषु भागेतु सनु गपाएवं घोवस्य असंखेज्ञेषु भागेतु सद्गुणेवं घोवस्य असंखेज्ञेषु भागेतु ॥ ९० ॥

कहि नं भंते । अपश्चात्यगार्थ ठाका पक्षता । गोममा । अत्येव बावर बावरतेवकाशार्थ पक्षतापाय ठाका पक्षता । तत्येव बावरतेवकाशार्थ अपश्चात्यगार्थ ठाका पक्षता । उक्ताएवं सम्भोए, सद्गुणेवं सम्भोए, सद्गुणेवं घोवस्य असंखेज्ञेषु

भागेसु ॥ ८७ ॥ कहि ण भते ! सुहुमवाउकाइयाण पज्जतगाण अपज्जतगाण य ठाणा पन्हता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइया जे पज्जतगा जे य अपज्जतगा ते सब्बे एगविहा अविसेसा अणाणता सब्बलोयपरियावन्नगा पन्हता समणाउसो ! ॥ ८८ ॥ कहि ण भते ! वायरवणस्सइकाइयाण पज्जतगाण ठाणा पन्हता ? गोयमा ! सद्बाणेण सत्तसु घणोदहीसु, सत्तसु घणोदहिवलएसु, अहोलोए पायालेसु, भवणेसु, भवण-पत्थडेसु, उझुलोए कप्पेसु, विमाणेसु, विमाणावलियासु, विमाणपत्थडेसु, तिरियलोए अगडेसु, तडागेसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुजालियासु, सरेसु, सरपतियासु, सरसरपतियासु, विलेसु, विलपतियासु, उज्जरेसु, निज्जरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सब्बेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्य ण वायरवणस्सइकाइयाणं पज्जतगाणं ठाणा पन्हता । उववाएण सब्बलोए, समु-रघाएण सब्बलोए, सद्बाणेण लोयस्स असखेज्जइभागे ॥ ८९ ॥ कहि ण भते ! वाय-रवणस्सइकाइयाण अपज्जतगाण ठाणा पन्हता ? गोयमा ! जत्थेव वायरवणस्सइकाइ-याण पज्जतगाण ठाणा प० तथेव वायरवणस्सइकाइयाण अपज्जतगाण ठाणा पन्हता । उववाएण मब्बलोए, समुरघाएण सब्बलोए, सद्बाणेण लोयस्स असखेज्जइभागे ॥ ९० ॥ कहि ण भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जतगाण अपज्जतगाण य ठाणा पन्हता ? गोयमा ! सुहुमवणस्सइकाइया जे पज्जतगा जे य अपज्जतगा ते सब्बे एगविहा अविसेसा अणाणता सब्बलोयपरियावन्नगा पन्हता समणाउसो ! ॥ ९१ ॥ कहि णं भते ! वेइदियाण पज्जतापज्जतगाण ठाणा पन्हता ? गोयमा ! उझुलोए तदेक्कदेसभागे, अहोलोए तदेक्कदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहियासु, गुजालियासु, सरेसु, सरपतियासु, सरसरपतियासु, विलेसु, विलपतियासु, उज्जरेसु, निज्जरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सब्बेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्य ण वेइदियाणं पज्जतापज्जतगाण ठाणा पन्हता । उववाएण लोगस्स असखेज्जइभागे, समुरघाएण लोगस्स असखेज्जइभागे, सद्बाणेण लोगस्स असखेज्जइभागे ॥ ९२ ॥ कहि ण भते ! तेइदियाण पज्जता-पज्जतगाण ठाणा पन्हता ? गोयमा ! उझुलोए तदेक्कदेसभाए, अहोलोए तदेक्कदेस-भाए, तिरियलोए अगडेसु, तलाएसु, नईसु, दहेसु, वावीसु, पुक्खरिणीसु, दीहि-यासु, गुजालियासु, सरेसु, मरपतियासु, सरसरपतियासु, विलेसु, विलपतियासु, उज्जरेसु, निज्जरेसु, चिल्ललेसु, पल्ललेसु, वप्पिणेसु, दीवेसु, समुद्देसु, सब्बेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्य ण तेइदियाण पज्जतापज्जतगाण ठाणा पन्हता , उववाएण लोयस्स असखेज्जइभागे, समुरघाएण लोयस्स असखेज्जइभागे, सद्बाणेण

स्वेषस्य असंकेज्जमागे ॥ ५३ ॥ कहि एं भेते । कठरिदियाज फजाताफजातार्थ  
ठाणा पक्का ? गोममा ! उहुल्लेप तदेहरेसमागे अहोलोए तदेहरेसमागे शिरिक-  
ओए अमड्मु, रक्षाएमु, खाँधु, दहेघ बाबीमु, पुक्करिणीमु रीहिशामु, पुग्ग-  
मियामु सरेमु, सरपंतियामु, सरसरपंतियामु निमेमु विष्वंतियामु उज्ज्वरेमु,  
निजारेमु, निमेमु फलेमु, बाधिलेमु, रीबेमु, सुमुरेमु, उम्बेदु चेष बजासुम्मु  
बज्जारेमु, एत्व एं कठरिदियाज फजाताफजातार्थ ठाणा पक्का । उक्काएर्ल  
स्मेषस्य असंकेज्जमागे यमुग्गाएज स्मेषस्य असंकेज्जमागे छट्टावें स्मेषस्य  
असंकेज्जमागे ॥ ५४ ॥ कहि एं भेते । वंशिदियार्थ फजाताफजाताज ठाणा  
पक्का ? गोममा ! उहुल्लेप तदेहरेसमाए, अहोम्मेप तदेहरेसमाए, शिरिक्कोए  
ज्ञानेमु, तक्काप्मु, नाँधु, रहेमु, बाबीमु, पुक्करिणीमु रीहिशामु तुंवामियामु,  
सरेमु सरपंतियामु, सरसरपंतियामु, निमेमु विष्वंतियामु उज्ज्वरेमु, निम्बरेमु  
निम्बेमु फलेमु बाधिलेमु रीबेमु सुमुरेमु सम्बेदु चेष बजासुम्मु बज्जारेमु  
एत्व एं वंशिदियार्थ फजाताफजातार्थ ठाणा पक्का । उक्काएर्ल स्मेषस्य असंकेज्ज-  
म्भमागे यमुग्गाएज स्मेषस्य असंकेज्जमागे छट्टावें स्मेषस्य असंकेज्जमागे  
॥ ५५ ॥ कहि एं भेते । मेरायार्थ फजाताफजातार्थ ठाणा पक्का ! कहि एं भेते ।  
नेरह्या परिषुनिति ! गोममा ! छट्टावें चामु पुष्टीमु तंज्ञा-रयष्पमाए,  
उक्करप्पमाए, बहुमध्यमाए, फळप्पमाए, घूमप्पमाए, तमप्पमाए, तमतमप्पमाए,  
एत्व एं नेरायार्थ बड़रार्हीहिनिरयाकारुसनसाइस्सा भवस्त्रीति मक्कार्व । ते थं नरणा  
अठो बद्ध बाहि बठरसा भहे ब्रह्मसंठणसंठिया निर्बंधयारतभसा ब्रह्मशाहचर्द  
सूलसन्तानयोद्दियिप्पहा मंदिरसापूर्वपाठ्यद्विरमेयनिराकुलेनपतडा अम्बै  
[वीषा], परमतुमिलीवा ब्रह्मगणितव्यामा ब्रह्मव्यासा तुरहियासा अमुमा  
नरणा अमुमा नरोमु नेवाओ एत्व एं मेरायार्थ फजाताफजातार्थ ठाणा  
पक्का । उक्काएर्ल स्मेषस्य असंकेज्जमागे यमुग्गाएज स्मेषस्य असंकेज्जमागे  
छट्टावें स्मेषस्य असंकेज्जमागे एत्व एं बहव नेराया परिषुनिति । बाघ्य काल्य  
भासा गंभीरत्वेमारिया गीमा उक्कापक्का परमक्कहा बत्तेन्न एत्वा सम्भा-  
हसो । । ते थं तत्व निर्बंधया निर्बंधया निर्बंधया निर्बंधया निर्बंधया  
निर्बंधया निर्बंधया भरणम्बर्य ब्रह्मव्यासा ब्रह्मव्यासा ब्रह्मव्यासा ब्रह्मव्यासा  
म्बै ॥ ५६ ॥ कहि एं भेते । रयष्पमापुष्टीनेरह्यार्थ फजातापज्जार्थ द्वजा पक्का ! कहि एं भेते ।  
रयष्पमापुष्टीनेरह्या परिषुनिति ! गोममा ! इमीले रयष्पमाए पु अस्तीउरर  
ओम्बस्तुरस्तवाह्याए उवरि एर्ग बोयम्बहस्मोगाहिता हेद्वा भेग बाबन-

सहस्र वजिता मज्जे अद्भुतरे जोयणसयसहस्रे एत्थं णं रथणप्पभापुढवी-नेरइयाण तीस निरयावाससयसहस्रा भवन्तीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वटा, वाहिं चउरसा, अहे खुरप्पसठाणसठिया, निच्छयारतमसा, ववगयगहचद-सूरनक्खतजोइसप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खलित्ताणुलेवणतला, असुई[वीसा], परमदुब्बिंगंधा, काउअगणिवण्णाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा णरगा, असुभा णरगेसु वेयणाओ, एत्थं ण रथणप्पभापुढवीनेरइयाण पज्जता-पज्जताण ठाणा पञ्चता, उववाएण लोयस्स असखेजइभागे, समुग्धाएण लोयस्स असखेजइभागे, सद्वाणेण लोयस्स असखेजइभागे । तत्थं ण वहवे रथणप्पभापुढवी-नेरइया परिवसन्ति । काला, कालोभासा, गंभीरलोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा, परमकिण्हा वज्ञेण पञ्चता समणाउसो । । ते ण तत्थं निच्छ भीया, निच्छ तत्था, निच्छ तसिया, निच्छ उविग्गा, निच्छ परममसुहसवद्ध णरगभय पच्छणुभवमाणा विहरन्ति ॥ ९७ ॥ कहि ण भते ! सक्करप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता ? कहि ण भते ! सक्करप्पभापुढवीनेरइया परिवसन्ति ?, गोयमा ! सक्करप्पभापुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्रबहलाए उवरि एगं जोयणसहस्रे ओगाहिता हेड्डा चेग जोयणसहस्र वजिता मज्जे तीसुत्तरे जोयणसयसहस्रे एत्थं ण सक्करप्पभापुढवी-नेरइयाण पणवीस निरयावाससयसहस्रा हवन्तीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वटा, वाहिं चउरसा, अहे खुरप्पसठाणसठिया, निच्छयारतमसा, ववगयगहचद-सूरनक्खतजोइसियप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खलित्ताणुलेवणतला, असुई[वीसा], परमदुब्बिंगंधा, काउअगणिवण्णाभा, कक्खडफासा, दुरहियासा, असुभा णरगा, असुभा णरगेसु वेयणाओ, एत्थं ण सक्करप्पभापुढवीनेरइयाण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता । उववाएण०, समुग्धाएण०, सद्वाणेण लोगस्स असखेजइभागे । तत्थं ण वहवे सक्करप्पभापुढवीनेरइया परिवसन्ति । काला, कालोभासा, गंभीरलोमहरिसा, भीमा, उत्तासणगा, परमकिण्हा वज्ञेण पञ्चता समणाउसो । । ते ण तत्थं निच्छ भीया, निच्छ तत्था, निच्छ तसिया, निच्छ उविग्गा, निच्छ परममसुहसवद्ध नरगभय पच्छणुभवमाणा विहरन्ति ॥ ९८ ॥ कहि ण भते ! वालुयप्पभापुढवीनेरइयाण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता ? कहि ण भते ! वालुयप्प-भापुढवीनेरइया परिवसति ?, गोयमा ! वालुयप्पभापुढवीए अद्वावीसुत्तरजोयणसय-सहस्रबहलाए उवरि एग जोयणसहस्रे ओगाहिता हेड्डा चेग जोयणसहस्र वजिता मज्जे छब्बीसुत्तरजोयणसयसहस्रे एत्थं ण वालुयप्पभापुढवीनेरइयाण पज्जरमनर-यावाससयसहस्रा भवन्तीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वटा, वाहिं चउरंसा,

महे चुरप्पुरुषसंठिया निर्वभवारतमसा वदगवगदधरमउत्तोशियप्पाहा  
भद्रवसापूर्वपडमहिरमेष्विभिरुलिगालुणेष्वतत्ता अमुर्ति[बीचा], परमदुर्भिम-  
गीया क्षत्रज्ञानिक्षयामा क्षत्रज्ञानिक्षयामा उरहियासा अमुमा नरया अमुमा नर  
गेष्व लेयणामो । एत्यं व वल्लयप्पमापुडवीनेरक्षार्ण फज्जापज्जार्ण ठाणा पज्जाता ।  
उद्दाएष स्वेवस्स असुवेज्जमागे समुग्गाएर्ण भ्वेवस्स असुवेज्जमागे सद्गुर्वर्ण  
स्वेवस्स असुवेज्जमागे । सत्यं व वहये वमुम्पमापुडवीनेरक्षा परिवर्तिति ।  
क्षमा रात्मेमासा गंमीरत्तोमहरिसा भीमा उत्ताप्पमा परमतित्ता व्वेवर्ण पज्जाता  
समणात्तदो । । हे व तत्त्व निर्व भीवा निर्व तत्त्वा निर्व तत्त्विमा  
निर्व परममत्तुहस्तद्वे परगमव्वे परमुभवमाणा विहरन्ति ॥ १९ ॥ वहि व मन्त् ।  
पंडप्पमापुडवीनेरक्षार्ण फज्जापज्जार्ण घ्यणा पज्जाता ३ वहि व मन्ते । पंडप्पमा-  
पुडवीनेरक्षा परिवर्तिति ३ गोवमा । पंडप्पमापुडवीए शीतुतरज्ञोक्तसवसहस्त-  
वाहाए उवरि एम जोयजसहस्ते ओगाहिता विड्या चेंग जोक्तसहस्ते वजिता  
मज्जे भद्रासुतरे जोवभस्तवहस्ते पूर्वं व पंडप्पमापुडवीनेरक्षार्ण वस निरमा-  
वासमवसहस्ता भवन्तीति मक्षार्ण । हे व वरगा आतो वहा वाहि वडरेगा  
महे चुरप्पुरुषसंठिया निर्वभवारतमसा वदगवगदधरमउत्तोशियप्पा  
भद्रवसापूर्वपडमहिर्येष्विभिरुलिगालुणेष्वतत्ता अमुर्ति[बीचा], परमदुर्भिमात्ता  
क्षत्रज्ञानिक्षयामा क्षत्रज्ञानिक्षयामा उरहियासा अमुमा नरगा अमुमा नरेष्व  
वेयवाभो एत्यं व पंडप्पमापुडवीनेरक्षार्ण पज्जापज्जार्ण ठाणा पज्जाता । उद-  
वाएर्ण भ्वेवस्स अमुवेज्जमागे समुग्गाएर्ण भ्वेवस्स असुवेज्जमागे सद्गुर्वेव  
स्वेयम्भ अमुवेज्जमागे । तत्त्वं व वहये पंडप्पमापुडवीनेरक्षा परिवर्तिति । क्षमा  
क्षमेमासा गंमीरमेमहरिसा भीमा उत्ताप्पमा परमतित्ता व्वेवर्ण पज्जाता समणा  
उमा । । हे व तत्त्व निर्व भीवा निर्व तत्त्वा निर्व तत्त्विमा निर्व  
परममत्तुहस्तद्वे वरगमव्वे परमुभवमाणा विहरन्ति ॥ १ ॥ वहि व मन्त् ।  
भूमप्पमापुडवीनेरक्षार्ण पज्जापज्जार्ण ठाणा पज्जाता ३ वहि व भंत । भूमप्पमा  
पुडवीनेरक्षा परिवर्तिति । गोवमा । भूमप्पमापुडवीए भद्रासुतरज्ञोक्तसवहस्त-  
वाहाए उवरि एम जोयजसहस्ते ओगाहिता देढा खेंग जोक्तसहस्ते वजिता  
मज्जे भोलमुनरे जोयजसहस्ते एत्यं व भूमप्पमापुडवीनेरक्षार्ण विदि विर  
मागासमयगहस्ता भवन्तीति मम्माम । व व वरगा आतो वहा वाहि वडरेगा  
महे चुरप्पुरुषसंठिया निर्वभवारतमसा वदगवगदधरमउत्तोशियप्पा  
मद्रवगात्मपडमहिर्येष्विभिरुलिगालुणेष्वतत्ता अमुर्ति[बीचा] परमदुर्भिमात्ता

काउअगणिवण्णाभा, कक्षवडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थं ण व्रूमप्पभापुढवीनेरह्याण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता । उववाएण लोयस्स असखेज्जडभागे, समुग्धाएण लोयस्स असखेज्जडभागे, सट्टाणेण लोयस्स असखेज्जडभागे । तत्थं ण वहवे ध्रूमप्पभापुढवीनेरह्या परिवसन्ति । काला कालोभामा गमीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेण पञ्चता समणाउसो ! । ते ण तत्थं निच्च भीया, निच्च तत्था, निच्च तसिया, निच्च उविग्गा, निच्च परममसुहसवद्ध नरगभयं पच्छणुभवमाणा विहरन्ति ॥ १०१ ॥ कहि ण भंते ! तमापुढवीनेरह्याण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता ? कहि ण भंते ! तमापुढवीनेरह्या परिवसति ?, गोयमा ! तमाए पुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयमहस्सवाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स ओगाहिता हिड्डा चेग जोयणसहस्स वजिता मज्जे चउदसुतरे जोयणसयसहस्से एत्थं ण तमप्पभापुढवीनेरह्याण एगे पच्छौणे परगावाससयसहस्से भवतीति मक्खाय । ते ण णरगा अतो वद्दा, वाहिं चउरंमा, अहे खुरप्पसठाणसठिया, निच्चधयारतमसा, ववगयगहच्चदसूरनक्खतजोइसियप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खलित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुविभगधा, कक्षवडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थं ण तमापुढवीनेरह्याण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता । उववाएण लोयस्स असखेज्जडभागे, समुग्धाएण लोयस्स असखेज्जडभागे, सट्टाणेण लोयस्स असखेज्जडभागे । तत्थं ण वहवे तमप्पभापुढवीनेरह्या परिवसति । काला कालोभासा गमीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेण पञ्चता समणाउसो ! । ते ण तत्थं निच्च भीया, निच्च तत्था, निच्च तसिया, निच्च उविग्गा, निच्च परममसुहसवद्ध नरगभयं पच्छणुभवमाणा विहरन्ति ॥ १०२ ॥ कहि ण भंते ! तमतमापुढवीनेरह्याण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता ? कहि ण भंते ! तमतमापुढवीनेरह्या परिवसति ?, गोयमा ! तमतमाए पुढवीए अद्वोत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिं अद्वतेवन्न जोयणसहस्साइ ओगाहिता हिड्डा वि अद्वतेवन्न जोयणसहस्साइ वजिता मज्जे तीसु जोयणसहस्सेसु एत्थं ण तमतमापुढवीनेरह्याण पज्जतापज्जताण पच्चदिसि पच्च अणुत्तरा महामहाल्या महानिरया पञ्चता । तजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपहिड्डाणे । ते ण णरगा अतो वद्दा, वाहिं चउरंसा, अहे खुरप्पसठाणसठिया, निच्चधयारतमसा, ववगयगहच्चदसूरनक्खतजोइसियप्पहा, मेदवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खलित्ताणुलेवणतला, असुई [वीसा], परमदुविभगधा, कक्षवडफासा, दुरहियासा, असुभा नरगा, असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थं ण तमतमापुढवीनेरह्याण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता ।

उवाचाएर्व स्पेक्ष्यमस्य असंकेज्ज्ञमागे समुग्रधार्णं स्पेक्ष्यमस्य असंकेज्ज्ञमागे सद्गुणेऽन्तं  
सोमस्य असंकेज्ज्ञमागे । उत्थ च वह्ये तमामसुव्यानेहस्या परिवर्तनि । काशा  
क्षम्भेभासा गीभीरख्येमहिंशा भीमा उत्ताप्तमाणा परमग्रिंश्चा क्षेत्रं पक्षता समया-  
दमो । । ते च उत्थ निर्बं भीवा निर्बं तत्पा निर्बं तस्मिया निर्बं उविमाणा निर्बं  
परममसुत्तंश्च चरणमर्यं पञ्चमदमाणा चिरन्ति । आसीर्व वत्तीर्व अद्वृतीर्व च  
द्वृति वीर्व च । अद्वारमुमोमसुर्गं अद्वारमेव हिंशुमिवा ॥ १ ॥ अद्वृतारं च द्वृते  
एम्भीर्व चेव सबमाहर्वे तु । अद्वारस दोक्षमं चतुर्षमहिंश्च तु अद्वृते ॥ २ ॥  
अद्विवद्वमसुस्या उवारेमहे विभिन्ना तो मविद्य । मग्ने विद्यास्यामुं होन्ति उ  
नरणा लम्बत्माप ॥ ३ ॥ टीका य पक्षवीत्या पक्षस दसेव षष्ठ्यसहस्रार्ह । विशि  
य पञ्चूष्यं पंचेव अद्वारा नरणा ॥ ४ ॥ १ ॥ ॥ चहि च भंते । विभिरिष्यतिरिष्य-  
येविद्वार्गं पञ्चापञ्चागार्यं ठाणा पक्षता ॥ गोक्मा । अद्वृतोऽ तदेवेत्यमाए,  
अद्वेष्योऽ तदेवेत्यमाए, विभिरिष्येऽ अग्नौम्, तक्षाएम्, नर्विष्, वहेत् वातीम्,  
पुम्बरिणीम्, वीहियात्, गुजाक्षियाम्, सरेम्, मर्पितिमायुं सरसर्पितिमायुं,  
विषेम्, विलासियात् उज्ज्वरेम्, निष्परेम्, विष्टेम्, पाष्टेम् वप्तिवेत् वीषेम्,  
समुरेम् सम्बेत् चेव वक्षायाएम् अद्वृतेम्, एत्व य विभिरिष्यतिरिष्यद्विविद्वार्गं  
पञ्चापञ्चागार्यं ठाणा पक्षता । उवाचाएम स्पेक्ष्यमस्य असंकेज्ज्ञमागे समुग्रधार्व  
सम्भेक्ष्यम असंकेज्ज्ञमागे सद्गुणेऽन्तं सम्भेक्ष्यम असंकेज्ज्ञमागे ॥ ५ ॥  
॥ चहि च भंते । मदुस्तीर्वं पञ्चापञ्चागार्यं भाणा पक्षता ॥ गोक्मा । अतो मदुस्त्वयेऽ  
पञ्चवार्तीसाए जोव्यसव्यमहसेष्य अद्वृतेम् वीक्षसुतेम्, पक्षरसद्व अम्ममूर्मीम्,  
टीकाए अम्भमम्भमूर्मीम्, उप्पलाप अतुर्लीड्यु, एत्व च मदुस्त्वार्णं पञ्चापञ्चागार्यं  
ठाणा पक्षता । उवाचाएत्योऽवक्षम असंकेज्ज्ञमागे समुग्रधार्वं सुव्यक्तोऽ, सद्गुणेऽन्तं  
स्पेक्ष्यमस्य असंकेज्ज्ञमागे ॥ ६ ॥ ॥ चहि च भंते । मदवार्तीर्वं देवार्यं पञ्चाप-  
पञ्चागार्यं ठाणा पक्षता ॥ चहि च भंते मदवार्तीर्वं देवा परिवर्तेति ॥ गोक्मा ।  
इमीसे रवभप्पमाए पुर्वोऽ भवीडातर्येवमम्भमहस्याहाङ्काए उवर्ति एत्य व्येक्ष-  
सद्गुणेऽन्तं वेगाश्चित्ता देवम् चेत्यो जोव्यसव्यसुव्यं विभिन्ना मज्जे मदुस्त्वयेऽवेष्यमसव्यात्म-  
एत्य च मदवार्तीर्वं देवार्यं पञ्चापञ्चागार्यं उत्त मदवार्तीर्वं वातर्तरि मदवार्ता-  
सम्भवसहस्रासा मदन्तीर्वि मदवार्ता । ते च मदवार्ता चाहि पद्म अस्तो वडरसा च  
पुम्बरमितिवार्तीउत्तरितिवा उविच्छेत्तरितिवामीत्याप्तिवित्ता पाणायाम्भवाद  
दोलपमित्तुशारेत्यमाणा अद्वृतमित्तमस्मुर्तिपरियारित्या अद्वृत्या समावया  
सद्गुणा अद्वृत्याक्षेत्रारहस्या मदवार्तामम्भमासा चेता वित्ता वित्तरमर्त्ते-

चरकिवया, लाउहोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचंदणददरदिनपचगुलितला, उवचिय-  
चदणकलसा, चदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्यारि-  
यमल्लदामकलावा, पंचवन्नसरससुरभिमुक्पुष्फपुंजोवयारकलिया, कालागुरुपवरकुंदुस-  
क्तुरुक्धूमधमधतगधुद्धयाभिरामा, सुगधवरगविया, गंधवटिभूया, अच्छरगणसध-  
सविकिज्ञा, दिव्वतुडियसद्सपणइया, सब्बरयणमया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा,  
मट्टा, णीरया, निम्मला, निप्पका, निक्कडच्छाया, सप्पहा, सस्सीरीया, समरीइया,  
सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिज्ञा, अभिरुवा, पडिरुवा । एत्य ण भवणवासिडे-  
चाण पज्जापज्जाण ठाणा पञ्जता । उववाएण लोयस्स असखेज्जडभागे, समुग्धाएण  
लोयस्स असखेज्जडभागे, सट्टाणेण लोयस्स असखेज्जडभागे । तत्य ण वहवे भवण-  
वासी देवा परिवसति । तजहा—असुरा नाग सुवन्ना विज्जु अग्नी य दीव उद्दीय य ।  
दिसिपवणथणियनामा दसहा एए भवणवासी ॥ चूडामणिमउडरयणाभूसणणागफड-  
गरुलवइरपुञ्जकलसकिउप्केमा, सीहृयवरगयकमगरवरवद्धमाणनिज्जुत्तचित्तचिंधगया,  
सुरुवा, महिहिया, महञ्जिया, महञ्ज्वला, महायसा, महाणुभावा, महासोक्खा,  
हारविराइयवच्छा, कडगतुडियथभियभुया, अगदकुडलभट्टगडतलक्ष्मीढधारी,  
विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउलिमउडा, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाण-  
गपवरमल्लाणुलेवणवरा, भासुरबोद्धी, पलववणमालधरा, दिव्वेण वक्षेण दिव्वेण गधेण  
दिव्वेण फासेण दिव्वेण सधयणेण दिव्वेण सठाणेण दिव्वाए इष्टीए दिव्वाए जुईए  
दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्छीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दस  
दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा, ते ण तत्य साण साण भवणावाससयसहस्साणं,  
साण साण सामाणियसाहस्रीण, साण साण तायतीसाण, साण साण लोगपालाण,  
साण साण अग्नमहिसीण, साण साण परिसाण, साण साण अणियाण, साण साण  
अणियाहिवईण, साण साण आयरक्खदेवसाहस्रीण, अजेसिं च वहूण भवणवासीण  
देवाण य देवीण य आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च  
कारेमाणा, पाळेमाणा, महया हयनष्ट्रीयवाहयतितलतालतुडियघणमुडगपहुप्पवाइ-  
यरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरंति ॥ १०६ ॥ कहि ण भंते !  
असुरकुमाराण देवाण पज्जापज्जाण ठाणा पञ्जता ? कहि ण भंते ! असुरकुमारा  
देवा परिवसति ?, गोयमा ! इमीसे रथणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स-  
चाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्स ओगाहित्ता हेड्डा चेग जोयणसहस्स वजित्ता  
मज्जे अद्वृत्तरे जोयणसयसहस्से एत्य ण असुरकुमाराण देवाण चउसट्टि भवणा-  
वाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण भवणा वाहिं वट्टा, अतो चउरसा,

महे पुस्तरक्षिपासैडाजसैठिला उकिस्तवरमिडम्मीरपावच्छिहा पागारधम्म-  
क्काइदोरक्षिदिनुवारद्दिनागा अनम्बरिमुस्तम्मुसेहिपरिकारिया अउग्गा समा-  
जमा समागुता अदाक्कम्भेटुगारेया अडवस्त्रवक्कम्मा येमा उिचा किस्त-  
मरद्दोक्करकिया अठम्भेश्वमहिला गोलीमसरसरतावदमदरविवर्वंशुवित्तम्  
उवकियवंद्यक्कम्मा वंद्यपड्दुम्भलोणपड्दुम्भरेत्तमाथा आसुगोमत्तमिडम्म-  
क्काइदम्मारियमद्वाम्मम्ममा पंदवलमगसुदुमिमुपुण्डुम्भेवयाम्मसिया क्कम्म-  
गुण्डम्भुक्कुरुत्तुग्गावज्ज्ञत्वम्भम्भंत्तीम्भुवामित्तमा मुव्वेक्करग्गिया गवद्वि-  
भूता अच्छरगम्मसेफस्त्तमिल्ला रिष्वत्तुमियस्त्तस्त्तपञ्च्या सम्भवयाम्ममा अम्भम्  
उम्भा सम्भा अम्भा मम्भा जीरया निम्मम्मा निष्पेक्क निष्कृद्व्वाम्मा सम्भमा  
घरिस्तीया समरीइया उठव्वेया पामारीया दरिस्तिज्जा अमिस्ता पडिस्ता  
एव्व एं अमुख्यमाराव्व व्वार्व पम्भत्तापञ्चत्तार्व ठाक्का पञ्चत्ता । उववाप्पर्व स्तेवस्तु  
असुक्केज्ज्ञमागे समुग्गमाएं लोक्म स्तेवेज्ज्ञमागे सद्व्वेज्ज्ञ लोक्मस्तु असुक्केज्ज्ञ  
मग्गे उत्त्व च वह्वे अमुख्यमारा देव्वा परिष्वेति । अज्जा ल्लेहियम्भद्विषेष्टु व्वक्क-  
पुण्डर्वता असियेमा वामेगक्कुद्वम्भरा अद्व्वेण्णाम्भित्तगता रिष्वित्तम्भिष्पु-  
ण्डर्वग्गास्त्रद्वं असुक्किष्टुद्वं मुम्भम्भं व्वत्तव्वं प्वरपरिष्वेत्ता व्व व्व फार्व सम्भवत्ता-  
विह्व च व्व असुक्कामा भेदे जोम्भवे व्वमाणा उम्भम्भेष्टुम्भरम्भस्त्तमिस्तम्भ  
ममिरव्वक्केव्वियम्भा दसमुहार्मियम्भग्गाहत्ता व्वाम्भमियवित्तम्भियव्वा मुरुक्का  
महिहिया महम्भम्भा महम्भम्भा महम्भम्भा महम्भम्भा व्वाम्भमियम्भरम्भस्त्तम्भ  
मव्वत्ता व्वयत्तुमियव्वियम्भा अगव्वक्कुद्वम्भम्भेष्टुम्भव्वत्तापीव्वारी विवित्तहत्ताम-  
एया विवित्तम्भम्भम्भिष्टुद्वा व्वाम्भमियम्भरम्भपरिष्वेत्ता व्वाम्भम्भम्भलुक्केव्वपरा  
माक्कुर्वोर्वे प्वंव्वव्वम्भम्भरा रिष्वेज्ज्ञ व्वेज्ज्ञ रिष्वेज्ज्ञ रिष्वेज्ज्ञ व्वेज्ज्ञ रिष्वेज्ज्ञ  
सुव्वम्भव्वं रिष्वेज्ज्ञ स्ताव्वेज्ज्ञ रिष्वाए इह्वाए रिष्वाए रिष्वाए प्वाए रिष्वाए  
अव्वाए रिष्वाए अव्वीए रिष्वीए तेएर्व रिष्वाए सेमाए इव्व दिसाव्वो उज्जोव्वेमाणा  
प्वास्तेसाणा ते एं उत्त्व सार्व सार्व सार्व भव्वत्ताव्वास्तुव्वस्त्तयार्व सार्व सार्व सामार्व-  
म्भाहस्तीर्व सार्व सार्व तामत्तीसार्व साय सार्व लोपयाम्भव्वं सार्व सार्व लम्भम्भई  
सीण साक्क २ परिसाज साय सार्व अव्वित्तार्व सार्व सार्व सार्व अव्वित्ताव्विर्वैर्व सार्व सार्व  
ज्ञायरव्वव्वेष्टुम्भस्त्तीर्व अव्वेत्ति च व्वव्वं सव्वत्तासार्वीर्व देव्वाण य देव्वी य  
आव्वेष्टु येव्वेष्टु सामित्ते भव्वित्ते महागत्तात्त आव्वित्तसरसेव्वव्वव्व वारेमाणा पाव्वे-  
माणा महया हक्कम्भीमाणाहव्वत्तीत्तक्कग्गम्भुद्वियम्भम्भुईम्भप्वाहस्त्तव्वेव्व रिष्वव्व  
मोगमीयव्व भुव्वमाणा विहरेत्ति । अमरव्विष्टो इत्त तुवे अमुख्यमारिया अमुख्यमार

रायाणो परिवसति । काला, महानीलसरिसा, णीलगुलियगवलअयसिकुसुमपगासा, वियसियसयवत्तिम्मलईसिसियरत्तवणयणा, गरुलाययउजुतुगनाभा, उवचियसिल-प्पवालविवफलसनिभाहरोट्टा, पडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसरगोकखीरकुंदद-गरयमुणालियाधवलदत्तसेढी, हुयवहनिद्वत वोयततवणिज्जरततलतालुजीहा, अजण-घणकसिणगस्यगरमणिज्ञिद्वकेसा, वामेगकुंडलधरा, अद्वंदणाणुलित्तगत्ता, ईसिसि-लिंवपुष्पपगासाइ असफिलिट्टाइ सुहुमाइ वत्थाइ पवरपरिहिया, वयं च पठम समझकता, विड्य च असपत्ता, भद्रे जोब्बणे वट्टमाणा, तलभगयतुडियपवरभूमण णिम्मलमणिरयणमडियमुया, दसमुद्दामडियगहत्था, चूडामणिचित्तचिंधगया, सुख्खा, महिहृद्या, महजुर्ज्जया, महायसा, महावला, महाणमागा, महासोक्खा, हारविराङ्गयवच्छ्या, कडयतुडियवभियमुया, अगदकुडलमट्टगटतलकञ्चपीडवारी, विचित्तहत्थाभरणा, विचित्तमालामउलिमउटा, कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया, कल्लाण-गपवरमल्लाणुलेवणधरा, भासुरवौंदी, पलववणमालवरा, दिव्वेण वज्जेण, दिव्वेण गधेण, दिव्वेण फासेण, दिव्वेण सधयणेण, दिव्वेण सठाणेण, दिव्वाए इह्वीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पमाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अचीए, दिव्वेण तेएण, दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उजोवेमाणा, पमासेमाणा, ते ण तत्थ साण साण भवणावाससयसहस्साण, साण साण सामाणियसाहस्सीण, साण साण तायतीसाणं, साण साण लोगपालाण, साण साणं अगमहिसीण, साण साण परिसाण, साण साण अणियाण, साण साण अणियाहिवईण, साण साण आयरक्खटेवसाहस्सीण, अन्नेसिं च वहूण भवणावासीण देवाण य देवीण य आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित महत्तर गत्त आणाईमरसेणावच्च कारेमाणा, पालेमाणा, महया ह्यनट्टगीयवाइयतंतीतलताल तुडियघणमुहगपदुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति ॥ १०७ ॥

कहि ण भते ! दाहिणिलाण असुरकुमाराण देवाण पजन्तापजन्ताण ठाणा पन्नत्ता ? कहि ण भते ! दाहिणिलाण असुरकुमारा देवा परिवसति ?, गोयमा ! जवुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे र्यणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स-बाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स ओगाहित्ता हिट्टा चेग जोयणसहस्स वजित्ता मज्जे अट्टहुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्य ण दाहिणिलाण असुरकुमाराण देवाणं चउत्तीस भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण भवणा बाहिं वट्टा, अतो चउरसा सो चेव वण्णओ जाव पडिरुवा । एत्य ण दाहिणिलाण असुरकुमाराण देवाण पजन्तापजन्ताण ठाणा पन्नत्ता । तीसुवि लोगस्स असखेजइभागे । तत्थ ण वहैवे दाहिणिलाण असुरकुमारा देवा देवीओ य परिवसति । काला, लोहियक्खा तहेव जाव

मुख्यामा विहरति । एषां जं तदेव तामतीसप्तसंग्रामा मन्त्रित । एवं सञ्चरत  
भावियत्वं । मक्षवासीणं चमरे इत्य अमुखुमारिदे अमुखुमारामा परिक्षयं  
चक्षुं महानीक्षयरिते जाव पमासेमाये । एते वं तदेव अदतीताए भवतामासुप्रबल  
स्पात अठसद्ग्रीष्म सामायिक्षाहस्तीर्णं तामतीताए तामतीसुगार्वं अठन्दृ श्वेग-  
पातार्वं फेवर्वं अग्नमहितीर्णं सपरिक्षारार्णं तिवर्वं परिक्षार्णं चुतार्वं अविक्षार्णं  
सतार्वं अविक्षार्णं अठन्दृ न अठसद्ग्रीष्म आमरक्षदेवसाहस्तीर्णं अवेष्टि च  
वहुण दाहियिक्षार्णं देवार्णं देवीय म आदेवर्वं पोरेवर्वं जाव विहरत् ॥ १४ ॥  
कर्हि नं भेते । उत्तरिक्षार्णं अमुखुमारार्णं देवार्णं पञ्चापञ्चातार्णं द्याणा पञ्चाता ॥  
कर्हि नं भेते । उत्तरिक्षा अमुखुमारा देवा परिक्षयति । योवमा । चंद्रुर्मे रीढे  
मेलवस्त्रं क्षव्यवस्त्रं चक्षते इमीषे रवणप्पमाए पुष्टीर्ण असीउत्तरत्रयोदयसाहस्ती-  
क्षाहस्ताए उक्तरि एवं जोयक्षसहस्ती ओगाहिता हिद्वा खेय जोयक्षसहस्ती बजिता  
मग्ने अद्गुत्तरे जोयक्षसहस्ती एवं उत्तरिक्षार्णं अमुखुमारार्णं देवार्णं दीर्घे  
मवतामासुप्रयमाहस्ता भवत्तीर्णि मक्षार्णि । एते वं भवता वाहि वद्य अंतो  
अठरेषा देवं जहा दाहियिक्षार्णं जाव विहरति । वटी एत्य वशेषिदे वशेषव  
रामा परिक्षय, अक्षे महानीक्षयरिते जाव पमासेमाये । एते वं तदेव लीवाए  
भवतामासुप्रयमाहस्तार्णं सद्ग्रीष्म सामायिक्षाहस्तीर्णं तामतीताए तामतीसुगार्वं  
अठन्दृ श्वेगपात्मर्वं फेवर्वं अग्नमहितीर्णं सपरिक्षारार्णं तिवर्वं परिक्षार्णं चुतार्वं  
अविक्षार्णं ततार्वं अविक्षार्णं अठन्दृ य सद्ग्रीष्म आमरक्षदेवसाहस्तीर्णं  
अवेष्टि च वहुण उत्तरिक्षार्णं अमुखुमारार्णं देवार्णं य देवीय म आदेवर्वं पोरेवर्वं  
कुम्भमागे विहरत् ॥ १५ ॥ कर्हि नं भेते । नागमुमारार्णं देवार्णं पञ्चापञ्चातार्णं  
द्याणा पञ्चाता ॥ कर्हि नं भेते । नागमुमारा देवा परिक्षयति ॥ योवमा । इमीषे  
रवणप्पमाए पुष्टीर्ण असीउत्तरत्रयोदयसाहस्ताहस्ताए उक्तरि एवं जोयक्षसहस्ती  
ओगाहिता हिद्वा खेयं जोयक्षसहस्ती बजिता मग्ने अद्गुत्तरे जोयक्षसहस्ती एवं  
वहुणे नागमुमाराज देवार्णं पञ्चापञ्चातार्णं तुम्हीश्वरक्षात्मापञ्चमसहस्रा भवतीर्णि  
मवतार्णं । तु वं भवता वाहि वद्य अंतो अठरेषा जाव परिक्षया । तदेव वं  
नागमुमारार्णं पञ्चापञ्चातार्णं ठाणा पञ्चाता । तीर्थु वि सोगस्त्रं असुतेज्ञमागे ।  
तदेव वं वहुये नागमुमारा देवा परिक्षयति भद्रिहिता महमुख्या उत्तीर्णे वहा  
ओहिक्षार्णं जाव विहरति । घरणमूकार्णं रा एत्य वं तुव नागमुमारिदा नागमुमार-  
रामायो परिक्षयति मतिहिता देव जहा ओहिक्षार्णं जाव विहरति ॥ १६ ॥ कर्हि  
नं भेते । दाहियिक्षार्णं नागमुमारार्णं देवार्णं पञ्चापञ्चातार्णं ठाणा पञ्चाता ॥ कर्हि

ण भते ! दाहिणिला नागकुमारा देवा परिवसति ?, गोयमा ! जंबुदीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहसवाहल्लाए उवर्ि एग जोयणसहस्स ओगाहिता हैड्डा चेग जोयणसहस्स वजिता मज्जे अद्भुतरे जोयणसयसहस्से एत्थ ण दाहिणिलाण नागकुमाराण देवाण चउयालीस भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण भवणा वाहिं बटा जाव पडिरुवा । एत्थ ण दाहिणिलाण नागकुमाराण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता, तीसु वि लोयस्स असखेजइभागे, एत्थ ण दाहिणिला नागकुमारा देवा परिवसति, महिण्डिया जाव विहरति । धरणे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ, महिण्डिए जाव पभासेमाणे । से ण तत्थ चउयालीसाए भवणावाससयसहस्साण, छण्ह सामाणियसाहस्सीण, तायत्तीसाए तायत्तीसगाण, चउण्ह लोगपालाण, छण्ह अमगमहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाणं, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्ह अणियाहि-वईण, चउब्बीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण, अन्नेसि च बहूण दाहिणिलाण नाग-कुमाराण देवाण य देवीण य आहेवच्च पोरेवच्च कुब्बमाणे विहरइ ॥ १११ ॥ कहि ण भते उत्तरिलाण णागकुमाराण देवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता ? कहि ण भते ! उत्तरिला णागकुमारा देवा परिवसति ?, गोयमा ! जम्बुदीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहसवाहल्लाए उवर्ि एग जोयणसहस्स ओगाहिता हैड्डा चेग जोयणसहस्स वजिता मज्जे अद्भुतरे जोयणसयसहस्से एत्थ ण उत्तरिलाण नागकुमाराण देवाण चत्तालीस भवणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण भवणा वाहिं बटा सेस जहा दाहिणिलाण जाव विहरति । भूयाणंदे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ, महिण्डिए जाव पभासेमाणे । से ण तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साण आहेवच्च जाव विहरइ ॥ ११२ ॥ कहि ण भते ! सुवञ्चकुमाराण देवाण पज्जता-पज्जताण ठाणा पञ्चता ? कहि ण भते ! सुवञ्चकुमारा देवा परिवसति ?, गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थ ण सुवञ्चकुमाराण देवाण वावत्तरि भवणा-वाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण भवणा वाहिं बटा जाव पडिरुवा । तत्थ ण सुवञ्चकुमाराण देवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता जाव तिसु वि लोयस्स असखेजइभागे । तत्थ ण वहवे सुवञ्चकुमारा देवा परिवसति महिण्डिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरति । वेणुदेवे वेणुदाली य इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवण्ण-कुमाररायाणो परिवसति, महिण्डिया जाव विहरति ॥ ११३ ॥ कहि ण भते ! दाहिणिलाण सुवण्णकुमाराण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्चता ? कहि ण भते ! दाहि-

गिक्का शुक्लमुमारा देवा परिवर्तति । गोदमा । इमीसे आप मझे अद्भुतर  
जोयगुणसहस्रं एत्य र्ग दाहिणिकार्जुनं शुक्लमुमारार्थं अद्वीतीयं भवणावासम्यम-  
इस्ता भवन्तीति भवत्वाद् । ते च मदका वाहि वदा आप पदिष्ठा । एत्य र्ग  
दाहिणिकार्जुनं शुक्लमुमारार्थं फलापञ्चार्थं ठाका पदार्थ । तित्वं वि क्लेष्मम  
भवत्वेवप्नाने । एत्य र्गं वहें शुक्लमुमारा देवा परिवर्तति । वेदुदेवं च इत्य  
शुक्लमारिन्द्रं शुक्लमुमाररथा परिवर्तते, सेवं जहा नाममुमारार्थं ॥ ११४ ॥  
कहि र्गं भन्ते । उत्तरिणिकार्जुनमुमारार्थं देवार्थं फलापञ्चार्थं ठाका पदार्थां  
कहि र्गं भन्ते । उत्तरिणिकार्जुनमुमारा देवा परिवर्तति । गोदमा । इमीसे रदण्ड-  
आप आप एत्य र्गं उत्तरिणिकार्जुनमुमारार्थं करतीसे भवणावासम्यमसहस्रं भव-  
न्तीति भवत्वार्थं । तं र्गं भवणा आप एत्य र्गं वहें उत्तरिणिकार्जुनमुमारा देवा  
परिवर्तति महित्तिया जाव विद्वर्तति । वेदुदाकी इत्य शुक्लमुमारिन्द्रं शुक्लमुमाररथा  
परिवर्तते, महित्तिये सेवे वहा नाममुमारार्थं । एवं जहा शुक्लमुमारार्थं वाम्बना  
भविया तहा देवार्थं वि चतुरध्यं इंद्रार्थं भावियत्वा । नवरे भवणावाक्ती इत्याव-  
त्त वस्त्रावापत्तं परिवर्तनावापत्तं च इमाहि याहाहि अनुरात्म-चतुरसुं अवरार्थं  
नुमतीयं र्गं हाति नाम्यार्थं । वाक्तार्थं दुष्टें वारुमुमारार्थं छक्कठी ॥ १ ॥  
रीवदेवात्तद्वार्थीर्थं लिङ्गमुमारिन्द्रियमियमयीर्थं । छक्कठीपि शुक्लम्बाप्तं छावतारिमो  
समसहस्रा ॥ २ ॥ चतुर्तीसा चतुराक्ता अद्वीतीसे र्गं समसहस्रार्थं । फला वातार्तीसा  
दाहिणिको दुर्तिं भवत्वार्थं ॥ ३ ॥ रीसा वातार्तीसा चतुर्तीसे चेत् समसहस्रार्थं ।  
सम्याका छातीसा उत्तराको दुर्तिं भवत्वार्थं ॥ ४ ॥ चतुरसुं चक्षुं एवं छातीसार्थं  
अनुरेत्यार्थं । सम्मानिया उ एए चतुरमुला आमरक्तां उ ॥ ५ ॥ अमरे घर्ने  
तहा वेदुदेवं द्विरेत्यमिगार्थीहे च । पुषे अस्तुते य अमित्यमित्ये च दोसे य  
॥ ६ ॥ वस्तिमूलार्थं वेदुदात्तिरित्सुहे अमिमामविवित्तिहे । चतुर्पद छाती-  
यवाह्ने पर्मद्वये य महाप्त्येसे ॥ ७ ॥ उत्तरिणिकार्जुनं जाव विद्वर्तति । वाम्ब-  
नद्वीक्षमुमारा नामा उद्धी य फैद्वरा दो वि । चतुर्मागनिमत्तोरा दुर्ति द्वाका  
रित्या भविया ॥ ८ ॥ उत्तरापत्तमत्ता विज्ञु अमरी य हाति रीता च । सम्मा  
पिरेषुद्वया वारुमुमारा मुगेक्ष्या ॥ ९ ॥ अमुरेषु दुर्ति रता लिङ्गिंशुपूज्यत्पमा च  
मास्युद्वी । आसास्मगाव्यवधार्थं इति शुक्ला दिता परिवर्तता ॥ १ ॥ नीसानुर-  
गद्वया विज्ञु अमरी य दुर्ति रीता च । सम्मानुरागद्वया वारुमुमारा मुगेक्ष्या  
य ॥ १० ॥ ११ ॥ ० कहि र्गं भन्ते । वाम्बन्तरार्थं देवार्थं फलापञ्चार्थं गता  
फला । कहि च भन्ते । वाम्बन्तरा देवा परिवर्तति । गोदमा । इमीसे रदण्डमार्थ-

पुढवीए रथणामयस्स कडस्स जोयणसहस्रवाहल्स्स उवरि एं जोयणसयं ओगा-हिता हिंडा वि एं जोयणसय वजिता मज्जे अट्टुसु जोयणसएसु एत्थं णं वाण-मत्तराण देवाण तिरियमसखेजा भोमेजनयरावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते ण भोमेजा णयरा वाहिं वद्धा, अतो चउरंसा, अहे पुक्खरकन्नियासठाणसठिया, उक्किश्चतरविउलगभीरखायफलिहा, पागारद्वालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा, जत-सयगिधमुसलभुसदिपरिवारिया, अउज्ज्ञा, सयाजया, सयागुत्ता, अडयालकोट्टुगरद्या, अडयालक्यवणमाला, खेमा, सिवा, किकरामरदडोवरकिखया, लाउलोइयमहिया, गोसीससरसरत्तचदणद्वर्दिष्ठपचुलितला, उवचियचदणकल्सा, चदणघडसुक्य-तोरणपडिदुवारदेसभागा, आसत्तोसत्तविउलवृष्टवग्धारियमळदाभकलावा, पचवण्ण-सरससुराहिमुक्कपुफ्पुजोवयारकलिया, कालागुरुपवरकुटुरुक्कतुरुक्कध्वमधमघतगाधुङ्ग-याभिरामा, सुगधवरगधिया, गववट्टिभूया, अच्छरगणसधसविकिञ्चा, दिव्वतुडिय-सद्दसपणझ्या, पडागमालाउलाभिरामा, सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निष्पका, निष्ककडच्छाया, सण्हा, सस्सरीया, समरीझ्या, सउज्जोया, पासाइया, दरिमणिजा, अभिस्त्वा, पडिस्त्वा । एत्थं ण वाणमन्तराण देवाण पजत्तापजत्ताण ठाणा पञ्चता । तिसु वि लोयस्स असखेजइ-भागे । तत्थं ण वहवे वाणमत्तरा देवा परिवसति । तजहा—पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा, किंनरा, किपुरिसा, भुयगवइणो महाकाया, गन्धव्वरगणा य निउणगधव्वरगीयरइणो, अणवचियपणवचियडसिवाडयभूयवाइयकदियमहाकदिया य बुहडपयगटेवा, चचलचलचवलचित्तकीलणदवपिया, गहिरहसियगीयणच्छणरई, चणमालामेलमउडकुडलमच्छदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा, भव्वोउयसुरभिकुसुम-सुरइयपलवगोहतकतविहसतचित्तवणमालरइयवच्छा, कामगमा [कामकामा], काम-स्वदेहधारी, णाणाविहवणरागवरत्थविचित्तचिल्लगनियसणा, विविहटेसिनेवत्थ-गहियवेसा, पमुडयकदप्पकलहकेलिकोलाहलपिया, हाम्बोलवहुला, अमिसुगगरमत्ति-कुतहत्या, अणेगमणिरयणविविहणजुतविचित्तचिंवगया, महिंड्या, महजुट्या, महायमा, महावला, महाणुभागा, महासुक्खा, हारविराडयवच्छा, कट्टयतुडिय-चमियभुया, अगयकुडलमट्टगडयलक्कपीडधारी, विचित्तहत्थभरणा, विचित्तमाला-मउलिमउटा, क्षणणगपवरत्थपरिहिया, क्षणणगपवरमळणुलेवणधरा, भासुरवोंदी, पलववणमालधरा, दिव्वेण वज्जेण, दिव्वेण गधेण, दिव्वेण फासेण, दिव्वेण सघय-पेण, दिव्वेण सठाणेण, दिव्वाए इद्धीए, दिव्वाए जुड्हीए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए च्छायाए, दिव्वाए अच्छीए, दिव्वेण तेएण, दिव्वाए लेस्साए दग्द दिमाजो उज्जोये-

मात्रा परम्परामें ते वै तत्त्व सारं साक्ष असुखेजयमेऽगवराकासुक्षम्भृत्यर्थ  
सारं सारं सारं यामादियसाहस्रीर्थं सारं सारं यामादिसीर्थं सारं सारं परिदार्थं  
सारं सारं यामीदार्थं देशान् च देवीषं च आदरक्षलदेशां  
हस्तीर्थं अदेवि च बहुर्णं वाग्मतरार्थं देशान् च देवीषं च आदेवच पोरेवच  
सामित महितं महात्मगतं आपाहैसरसेनाकर्त्त्वं धरेमाणा परेषापा महावृषभ-  
गीयमाद्यर्त्तीतक्ष्यामुद्विष्टाप्यग्रहस्त्रैर्ण विद्यार्थी मोगमोगार्हं सुखमाणा  
विहृति ॥ ११५ ॥ कहि च मंते । पिताकारं देशान् पञ्चातापञ्चातार्थं धारा  
पक्षा ! कहि च मंते । पिताया देशा परिवर्तते । गोवमा । इमीसे रमण्यमाए  
पुक्षीए रमण्यमयस्तु कठसु ओमक्षत्तुल्याहक्षस्तु उचरि एर्ण ओमक्षस्तु ओम्या  
हिता हेष्टु चैर्ण जोवणसुर्वं चित्तान् मज्जे अनुमु ओवणसएष्टु एत्यं ने पिताकारं  
देशार्थं तिरिक्षमसुक्षेजा मोमेजनयराकासुक्षम्भृत्यसा भवतीति मक्षात्मे । ते वै  
मोमेजनयरा जाहि बहु बहु ओहियो मवणवन्मो तहा भाविष्यत्यो जाव पक्षि  
हवा । एत्यं च पिताकारं देशार्थं पञ्चातापञ्चातार्थं डाका पक्षा । तिष्ठ नि ल्लेषस्तु  
असुखेजयमाणे । तत्त्व बहुवि पिताया देशा परिवर्तते महित्युया जहा ओहिया जाव  
विहृतिः । अस्माहानाम इत्यं दुबे पितार्था पितायराकारो परिवर्तते महित्युया  
महानुश्वा जाव विहृति ॥ ११६ ॥ कहि च मंते । दाहियिकार्थं पिताकारं देशार्थं  
ठाणा पक्षा ॥ कहि च मंते ॥ दाहियिका पिताया देशा परिवर्तते ॥ गोवमा ।  
अंतुर्हीनं चैर्ण मन्दरस्तु पञ्चवन्मस्तु दाहियेवं इमीसे रमण्यमाए पुक्षीए रमण्य-  
मयस्तु कठसु ओवणसाहस्राहक्षस्तु उचरि एर्ण ओमक्षस्तु ओगाहिता हेष्टु चैर्ण  
ओपणसुर्वं चित्तान् मज्जे अनुमु ओवणसएष्टु एत्यं ने दाहियिकार्थं पिताकारं  
देशान् तिरिक्षमसुक्षेजा मोमेजनयराकासुक्षम्भृत्यसा भवतीति मक्षात्मे । ते वै  
मवणा जहा ओहियो मवणवन्मो तहा भाविष्यत्यो जाव पक्षिक्षा । एत्यं च  
दाहियिकार्थं पिताकारं देशान् पञ्चातापञ्चातार्थं ठाणा पक्षा । तिष्ठ नि ल्लेषस्तु  
असुखेजयमाणे । तत्त्व च बहुवि दाहियिका पिताया देशा परिवर्तते महित्युया  
जहा ओहिया जाव विहृति । कम्भे एत्यं पितार्थि पितायराका परिवर्तते, महित्युया  
जाव पक्षादेशाणे । ते वै तत्त्व तिरिक्षमसुक्षेजार्थं मोमेजनयराकासुक्षम्भृत्यस्तार्थं  
चउल्लं सामादियसाहस्रीर्थं चउल्लं च अग्रमहित्युर्थं सपरिवाराणे तिष्ठ परिवर्तते  
चउल्लं अविक्षार्थं चउल्लं अविक्षाहित्यर्थं सोम्यसुर्वं आदरक्षलदेशाहस्रीर्थं  
अदेवि च बहुर्णं दाहियिकार्थं वाग्मतरार्थं देशान् च देवीषं च आदेवच जाव  
विहृत् । उत्तिकार्थं पुच्छ । गोवमा । जहेव दाहियिकार्थं वाग्मत्या तहा उत्तरी

લાણ પિ । ણવર મન્દરસ્ત પબ્બયસ્ત ઉત્તરેણ । મહાકાલે એત્ય પિસાઇદે પિસાય-  
રાયા પરિવસંજ જાવ વિહરિ । એવં જહા પિસાયાણ તહા ભૂયાણ પિ જાવ ગધબ્વાણ ।  
નવર ઇદેસુ ણાણત્ત ભાણિયબ્વ ઇમેણ વિહિણા—ભૂયાણ સુરૂવપઢિલુવા, જક્ખાણં  
પુણભદ્રમાણિભદ્રા, રક્ખસાણં મીમમહામીમા, કિન્નરાણં કિન્નરકિપુરિસા, કિન્નર-  
સાણ સપ્પુરિસમહાપુરિસા, મહોરગાણં અદ્કાયમહાકાયા, ગધબ્વાણં ગીયરિઝીય-  
જસા જાવ વિહરન્તિ । કાલે ય મહાકાલે સુરૂવપઢિલુવપુણભદે ય । તહ ચેવ માણિ-  
ભદે મીમે ય તહા મહામીમે ॥ ૧ ॥ કિન્નરકિપુરિસે ખલુ સપ્પુરિસે ખલુ તહા મહા-  
પુરિસે । અદ્કાયમહાકાએ ગીયરિં ચેવ ગીયજસે ॥ ૨ ॥ ૧૧૮ ॥ કહિ ણ ભતે ।  
અણવન્નિયાણ દેવાણ ઠાણ પજ્ઞતા ? કહિ ણ ભતે । અણવન્નિયા દેવા પરિવસતિ ?,  
ગોયમા ! ઇમીસે રયણપ્પભાએ પુઢ્બીએ રયણમયસ્ત કડસ્ત જોયણસહસ્તવાહલ્લસ્ત  
ઉવરિં હેટ્ટા ય એગ જોયણસય સય વજેત્તા મજ્જે અદ્ભુસુ જોયણસએસુ એત્ય ણ અણ-  
વન્નિયાણ દેવાણં તિરિયમસખેજા ણયરાવાસસયસહસ્તા ભવન્તીતિ મક્ખાય । તે ણ  
જાવ પડિલુવા । એત્ય ણ અણવન્નિયાણ દેવાણ ઠાણ પજ્ઞતા । ઉવવાએણ લોયસ્ત  
અસખેજિભાગે, સમુરૂધાએણ લોયસ્ત અસખેજિભાગે, સટ્ટાણેણ લોયસ્ત અસખેજિભાગે ।  
તત્થ ણ વહવે અણવન્નિયા દેવા પરિવસતિ । મહિદ્ધિયા જહા પિમાયા જાવ  
વિહરતિ । સણિણહિયસામાણા ઇથ્ય દુવે અણવન્નિદા અણવન્નિયરાયાણો પરિવસતિ ।  
મહિદ્ધિયા, એવ જહા કાલમહાકાલાણ દોણ પિ દાહિણિલાણ ઉત્તરિલાણ ય મણિયા  
તહા સણિણહિયસામાણાણ પિ ભાણિયબ્વા । સગહણીગાહા—અણવન્નિયપણવન્નિયિઝિસ-  
વાડયભૂયવાડયા ચેવ । કદિય મહાકદિય કોહડ પયગાએ ચેવ ॥ ૧ ॥ ડમે ડડા-સનિહિયા  
મામાણા ધાયવિધાએ ઇસી ય ડસિવાલે । ઈસરમહેસરે વિય હવડ સુવચ્છે વિસાલે ય  
॥ ૨ ॥ હાસે હાસરિં ચેવ સેએ તહા ભવે મહાસેએ । પયા પયગવર્દે વિય નેયબ્વા  
આણપુંબીએ ॥ ૩ ॥ ૧૧૯ ॥ કહિ ણ ભતે । જોડસિયાણ દેવાણ પજ્ઞતાપજ્ઞતાણ  
ઠાણ પજ્ઞતા ? કહિ ણ ભતે । જોડસિયા દેવા પરિવસતિ ?, ગોયમા ! ઇમીસે રયણ-  
પ્પભાએ પુઢ્બીએ વહુમમરમળિજાઓ ભૂમિભાગાઓ મત્તણટએ જોયણસએ ઉદ્ધૃ ઉપ્પિદ્તા  
દમુત્તરજોયણસયવાહહે તિરિયમસખેજે જોડસવિસએ । એત્ય ણ જોડસિયાણ દેવાણં  
તિરિયમસખેજા જોડસિયવિમાણાવાસસયસહસ્તા ભવન્તીતિ મક્ખાય । તે ણ  
વિમાણા અદ્ભુકવિદ્ધગસઠાણસઠિયા, સવ્વફાલિદ્ધમયા, અચ્છુગગયમૃસિયપહસિયા ડવ  
વિવિદમણિરણગરયણભત્તિચિત્તા, વાદ્યુયવિજયવેજયતીપઢાગાદ્તાદ્યતકલિયા,  
તુગા, નગણતલ્લમભિલંઘમાણિતિહરા, જાલતરરયણપજલુમ્ભિલિયબ્વ મણિરણગયૃભિ-  
યાગા, વિયસિયમયવત્તપુડીયા, તિલયરયણદ્વુચદચિત્તા, નાણામણિમયદામાલનિયા,

अंतो वही च संज्ञा तदभिज्ञाद्यन्नासुयापन्था शुद्धकर्ता उत्सिरीता सुष्टु  
पत्ताइया दरिद्रगिजा अभिहता पढिस्ता । एत्वं च जोशियार्थं देवार्थं पन्नां  
पञ्चार्थं छाया पन्नां । यिद्यु वि ओपस्म अस्तुतेष्वमार्गे । दात्यं च वहै जोशिया  
येता परिवर्त्तते । तंवहा-वास्तव चेदा स्ता एहा उद्धा उत्कल्प्ता रहू, पूर्णेन,  
कुहा अंगारणा तातात्परिकालगद्यां अं य गहा जोशियमि आरं चरुति केऽच  
गदरेया अद्वितीयस्त्रिया नन्दितदेवगणा आगांठालक्ष्मिनाभो पंचवत्ताभो तार  
याम्भो ठिक्केतानारिणो ज्ञानिस्त्रामालद्यार्थं, फ्रेमनार्थेष्वात्पियपित्तमउदा महि  
हिता चाल पमादेमाणा । ते च एत्वं सार्थं सार्थं यिमापाकात्प्रस्त्रस्तार्थं सार्थं  
सार्थं सार्थं सार्थं अस्तियाज सार्थं सार्थं अविवाहित्वार्थं सार्थं सार्थं आमरमयर्थं-  
साहस्रीय अवेसि च वहूर्वं जोशियार्थं देवार्थं देवीय य आहेष्वं चाल निरुत्ति ।  
चंद्रिमधुरिया इत्व तुवै जोशिया ज्ञेयियरायाभो परिवर्त्तते भवित्वा चाल पमादेमाणा ।  
ते च एत्वं सार्थं सार्थं जोशियियमाणाकासुमस्त्रस्तार्थं चतुर्वृं समावित-  
वसाहस्रीय चतुर्वृं अस्तमहित्वार्थं सपरिकारार्थं तिन्हृं परिसार्थं सतार्हे अलोकार्थं  
सतार्हे अलोकाहित्वार्थं दोक्षस्त्रं आमरमयदेवताहस्रीयं अवेसि च वहूर्वं  
जोशियार्थं देवार्थं देवीय य आहेष्वं चाल निरुत्ति ॥ १२ ॥ चहि च भवि ।  
येमाविदार्थं देवार्थं पञ्चात्पञ्चतार्थं ठाका फलादा १ चहि च भवि । येमाविदा देवा  
परिवर्त्तते १ गोप्यमा । इमीसे रमनप्यमाए पुडवीए वहूस्त्रमविजाबो भूमिमामाल्ले  
उवृं चौरिमधुरियमालकल्पताराराहार्थं वहूइ जोयनस्यात्वं वहूइ जोयनक्षत्रस्त्रार्थं वहूइ  
जोयनस्त्रस्त्रार्थं वहूयाम्भो जोयनद्वेषीयो वहूगाम्भो जोयनद्वेषीयो वहूइ चरं  
उत्पद्या एत्वं योहम्मीतापात्पर्युमारमाहित्वंमस्तेयक्षेत्रगमहाद्यक्षस्त्रारमाल्ल  
पाणवयमारणकुमोदेक्षुतोऽप्त एत्वं य येमाविदार्थं देवार्थं चतुरुचिमियालालाल-  
स्त्रस्त्रा सत्ताचत्तर्वृं च सहस्रा तेवीर्षं च यिमाणा भवन्तीति मक्षार्थं । ते च  
यिमाणा समरयनामया अप्ता संज्ञा एहा एहा मद्भु नीरया यिमाल्ल  
निष्पत्त्य मिहेक्षस्त्रमया सप्तमा यस्तिरीया सरजोगा पास्तीदा इरिसविदा  
अभिहता पवित्रता । एत्वं च येमाविदार्थं देवार्थं पञ्चतापञ्चतार्थं ठाका फलादा ।  
यिद्यु वि अप्तस्य अस्तुतेष्वमार्गे । एत्वं च वहै येमाविदा देवा परिवर्त्तते ।  
तेज्ञा—योहम्मीतापात्पर्युमारमाहित्वंमस्तेयक्षेत्रगमहाद्यक्षस्त्रारमाल्ल  
आजकुमोदेक्षुतोऽप्त एत्वं य यिमाविदेक्षस्त्राहसीत्त्राम्भुत्तरमप्तवहू-  
सुमाध्यमाल्लसमविदिनपात्पियपित्तमवदा पवित्रिक्षरमत्तुहात्तीत्तिपारिषो वहू-

लुजोडयाणा, मउडदित्तसिरया, रत्ताभा, पउमपम्हगोरा, सेया, सुहवन्नगधफासा, उत्तमवेउव्विणो, पवरत्वत्यगंधमलाणुलेवणधरा, महिद्विया, महजुइया, महायसा, महावला, महाणुभागा, महासोकखा, हारविराइयवच्छा, कडयतुडियथभियमुया, अगदकुडलमधुगंडतलकन्धपीढधारी, विचित्तहत्याभरणा, विचित्तमालामउलिमउडा, कल्लाणगपवरत्यपरिहिया, कल्लाणगपवरमलाणुलेवणा, भासुरवोदी, पलंववणमालधरा, दिव्वेण वज्रेण, दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण फासेण, दिव्वेण सघयणेण, दिव्वेण सठाणेण, दिव्वाए इह्वीए, दिव्वाए जुईए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेण तेएण, दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा, पभासेमाणा, ते ण तत्य साण साण विमाणावाससयसहस्साण, साण साण सामाणियसाहस्रीण, साण भाण तायत्तीसगाण, साण साण लोगपालाण, साण साण अगममहिसीण सपरिवाराण, साण साण परिसाण, साण साण अणियाण, साण साण अणियाहि-वईण, साण साण आयरक्खदेवसाहस्रीण, अन्नेसिं च बहूण वेमाणियाण देवाण य देवीण य आहेवच्च पोरेवच्च जाव दिव्वाइ मोगभोगाइ भुजमाणा विहरति ॥ १२१ ॥ कहि ण भते ! सोहम्मगदेवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता ? कहि ण भते ! सोहम्मगदेवा परिवसति ?, गोयमा ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे र्यणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ जाव उङ्हू दूरं उप्प-इत्ता एत्य ण सोहम्मे णाम कप्पे पन्नते । पाईणपडीणायए, उदीणदाहिणवित्यणे, अद्वचदसठाणसठिए, अच्चिमालिभासरासिवण्णामे, असखेजाओ जोयणकोडीओ असखेजाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खमेण, असखेजाओ जोयणकोडा-कोडीओ परिक्खेवेण, सव्वरयणामए, अच्छे जाव पडिस्त्वे । तत्य ण सोहम्मग-देवाण वत्तीसविमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खाय । ते ण विमाणा सव्वर-यणामया अच्छा जाव पडिस्त्वा । तेसि ण विमाणाण बहुमज्जदेसभागे पच वडिं-सया पन्नता, तजहा—असोगवडिंसए, सत्तवणवडिंसए, चपगवडिंसए, चूयवडिंसए, मज्जे इत्थ सोहम्मवडिंसए । ते ण वडिंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिस्त्वा । एत्य ण सोहम्मगदेवाण पज्जतापज्जताण ठाणा पन्नता । तिसु वि लोगस्स असखे-जाइभागे । तत्य ण वहवे सोहम्मगदेवा परिवसति महिद्विया जाव पभासेमाणा । ते ण तत्य साण साण विमाणावाससयसहस्साण, साण साण सामाणियसाहस्रीण, एव जहेव ओहियाण तहेव एएसिं पि भाणियब्बं जाव आयरक्खदेवसाहस्रीण, अन्नेसिं च बहूण सोहम्मगकप्पवासीण वेमाणियाण देवाण य देवीण य आहेवच्च जाव विहरति । मक्के इत्थ देविदे देवराया परिवसइ, वज्जपाणी, पुरदरे, सयक्कु,

सहस्रके मध्यं पाराण्यासमे दाहिन्हामेगाहिन्है, वतीसमिमापावसासमसहस्रा-  
हिन्है, एतत्त्वाहे द्विरिदे, भर्त्ववरत्त्वपरे आव्वदमाक्षमठके भवेयचाह-  
विज्ञेयस्तुद्विविहितमाक्षादे महिन्हिए जाव पमासेमानि । से वं तत्त्व  
वतीयाए विमाणावसुवयसहस्रार्थं भवदाहिन्है चामालिमसाहस्रीर्थं वावतीयाए  
वामतीसुगार्थं बउन्ह लेपपासार्थं अद्वयं अगमहिन्हीन उपरिवारार्थं विन्ह  
परिवार्थं सुत्तम् अमीयार्थं सत्तम् अशीवाहिन्हीर्थं बउन्ह चरुहाहिन्है जावर  
क्षमेवसाहस्रीर्थं अलेसि च बहुर्ण सोहमक्षणाहस्रीर्थं भेमालियार्थं देवाव व  
देवीय य आहेवर्ण दोरेव जाव तुल्यामाणे विहरू ॥ ११३ ॥ कहि न भेत !  
ईसामार्थं देवार्थं फ्लागाफ्लागार्थं ठाका पक्षाता ? कहि य भेते । ईदावगदेवा  
परिवसेति । गोऽमा ! अद्वये वीवे भैरवस्तु फ्लागस्तु उत्तरेष्व इमीचे रमण्यमाए  
पुढ्यीए बहुसमरमलिमामो भूमिमायामो उहु वैरिमस्तुविवाहस्तुदावाहारस्त्वान  
बहुर्ण ओवप्रस्त्वार्थं बहुर्ण ओवप्रस्त्वार्थं जाव उहु उप्पत्ता एत्व वं ईसामे भावे  
क्षये वक्तो । पात्रभवीकायए, उरीचश्वर्त्तिगवित्तिभो एवं जाहा सोहमे जाव  
पवित्रवै । तत्त्व वं ईसामागदेवार्थं अद्वयीर्थं विमाणावसुवयसहस्रा भद्रमीर्थि  
ममवान्वै । त वं विमाणा सम्मरयमामया जाव पवित्रवा । तेसि भं बहुमत्तारेत  
भागे वं वडिसुया पक्षाता । तेवाहा—भैरवहिसेवु, फ्लिहिसेवु, रयवाहिसेवु,  
जाववाहिसेवु, भजे इत्य ईसामागदेवार्थं फ्लागाफ्लागार्थं अभ्या पक्षाता । शिवु वि ल्लेगस्तु  
असुवेअद्वयामो । देसि जहा सोहमागदेवार्थं जाव विहरूति । ईसागी इत्व देविरे  
देवावा परिवसा, स्तुपायी वयाहसाहे उत्तरेहुमेयाहिन्है, अद्वयीसमिमापा-  
वासुवयसहस्राहिन्है, अर्यवरत्त्वपरे देसि जहा सहस्र जाव पमासेमानि । से वं  
तत्त्व अद्वयीयाए विमाणावासुवयसहस्रार्थं असीर्थं चामालिमसाहस्रीर्थं ठाक-  
तीयाए वायवीसुगार्थं बउन्ह लेपपासार्थं अद्वयं अगमहिन्हीर्थं उपरिवारार्थं  
विन्ह परिवार्थं सत्तम् अवियाहिन्हीर्थं बउन्ह अतीर्थं जाव  
क्षमेवसाहस्रीर्थं अलेसि च बहुर्ण ईसागक्षणाहस्रीर्थं भेमालियार्थं देवाव व  
देवीय य आहेवर्ण जाव विहरू ॥ ११३ ॥ कहि न भेत ! सुर्जुमारागेवा परिवर्तति । गोऽमा !  
सोहमस्तु छप्सस्तु उप्पिय सपवित्र उपदिशिति बहुर्ण ओवप्रदं बहुर्ण ओवप्रदं  
बहुर्ण ओवप्रदमाहस्रार्थं बहुर्ण ओवप्रस्त्वाहस्रार्थं बहुगाम्ये ओवप्रदोदीओ बहुगाम्ये  
ओवप्रदोदीओदीने उहु एवं उप्पत्ता एत्व वं सर्जुमारे जावे क्षये वक्तो ।

पाईणपढीणायए, उदीणदाहिणवित्थिणे जहा सोहम्मे जाव पडिरुवे । तत्थ णं सणकुमाराण देवाण वारम विमाणावाससयसहस्सा भवन्तीति मक्खायं । ते णं विमाणा सब्बरयणामया जाव पडिरुवा । तेसि ण विमाणाणं बहुमज्जदेसभागे पच वडिसगा पन्त्ता । तंजहा—असोगवडिंसए, सत्तवच्चवडिंसए, चपगवडिंसए, चूयवडिंसए, मज्जे एत्थ भणकुमारवडिंसए । ते ण वडिसया सब्बरयणामया अच्छा जाव पडिरुवा । एत्थ ण सणकुमारदेवाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण ठाणा पन्त्ता । तिसु वि लोगस्स असखेज्जइभागे । तत्थ ण वहवे सणकुमारदेवा परिवसति, महिन्द्रिया जाव पभासेमाणा विहरति । नवर अगमहिसीओ णत्थि । सणकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ । अरयवरवत्थधरे, सेस जहा सक्कस्स । से ण तत्थ वारसण्ह विमाणावाससयसहस्साण, वावत्तरीए सामाणियसाहस्रीण सेस जहा सक्कस्स अगम-हिसीवज्ज । नवरं चउण्ह वावत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्रीण जाव विहरइ ॥ १२४ ॥ कहि ण भते ! माहिंददेवाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण ठाणा पन्त्ता ? कहि ण भते ! माहिंदगदेवा परिवसति ?, गोयमा ! ईसाणस्स कापस्स उण्पि सपर्किंख सपडिदिसिं वहूइ जोयणाइं जाव वहुयाओ जोयणकोडाकोडीओ उङ्ह दूर उप्पइत्ता एत्थ ण माहिंदे नाम कप्पे पन्त्ते पाईणपढीणायए जाव एवं जहेव सणकुमारे । नवरं अट्टु विमाणावाससयसहस्सा । वडिंसया जहा ईसाणे । नवर मज्जे इत्थ माहिंदवडिंसए, एव जहा सणकुमाराण देवाण जाव विहरति । माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परि-वसइ, अरयवरवत्थधरे, एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ । नवर अट्टुण्ह विमाणा-वाससयसहस्साण, सत्तरीए सामाणियसाहस्रीण, चउण्हं सत्तरीण आयरक्खदेव-साहस्रीण जाव विहरइ ॥ १२५ ॥ कहि ण भते ! वभलोगदेवाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण ठाणा पन्त्ता ? कहि ण भते ! वभलोगदेवा परिवसति ?, गोयमा ! सणकुमारमाहिं-दाण कप्पाण उण्पि सपर्किंख सपडिदिसिं वहूइ जोयणाइं जाव उप्पइत्ता एत्थ ण वभलोए नाम कप्पे पन्त्ते, पाईणपढीणायए, उदीणदाहिणवित्थिणे, पडिपुण्णचद-सठाणसठिए, अच्चिमालीभासरासिष्पमे, अवसेस जहा सणकुमाराण । नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा, वडिंसया जहा सोहम्मवडिंसया, नवर मज्जे इत्थ वभ-लोयवडिंसए । एत्थ ण वभलोगदेवाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण ठाणा पन्त्ता सेस तहेव जाव विहरति । वभे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ, अरयवरवत्थधरे, एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ । नवरं चउण्ह विमाणावामसयसहस्साण, सट्टीए सामा-णियसाहस्रीण, चउण्ह सट्टीए आयरक्खदेवसाहस्रीण, अन्नोसिं च वहूण जाव विहरइ ॥ १२६ ॥ कहि ण भते ! लतगदेवाण पञ्जत्तापञ्जत्ताण ठाणा पन्त्ता ?

कहि वं भेत । कंकालेवा परिवसुति ॥ गोवमा । बैमस्मेगसु छप्पसु उपि सपनिय  
सपडिदियि वहूई जोगाइ जाव बहुगाओ जोगलज्जेडाकोधीओ नहू दूर उप्पता  
एत्व वं अनए नामे कल्पे पक्षते पाईपदीयावपु, जहा बैमज्जेए । नवर फलासु  
विमाणाशाससहस्रा भवन्तीति मक्षाम । बहिसुगा जहा ईसावद्विसुगा नवर  
मज्जे इत्व बैकाल्हिसए, देवा तहेव जाव विहरति । अंतए एत्व देविरे देवरावा  
परिवमह, जहा सर्वकुमारे । नवर फलासाए विमाणाशाससहस्राम फलासाए  
सामाधियसाहस्रीण चउच्छ य फलासामे आमरक्षदेवसाहस्रीति अदेविं व  
वहूई जाव विहर ॥ १२३ ॥ कहि वं भेत ! महात्माराम देवाने फलापलाल  
छणा फलाता ॥ बहि वं भेते महात्मारा देवा परिवसुति ॥ गोवमा । बैकाल्हिसु  
छप्पसु उपि सपनिय सपडिदियि जाव उप्पता एत्व वं महात्मारे नामे कल्पे  
पक्षते पाईपदीयावपु, उरीपदाहिष्ठिरिपन्न जहा बैमज्जेए । नवर चतालीक्षाए  
विमाणाशाससहस्रा भवन्तीति मक्षाम । बहिसुगा जहा सोहम्मविसए जाव  
विहरति । महात्मुषे इत्व देविरे देवरावा जहा सर्वकुमारे । नवर चतालीक्षाए  
विमाणाशाससहस्रीण चतालीसाए सामाधियसाहस्रीण चउच्छ य चतालीसाए  
आमरक्षदेवसाहस्रीण जाव विहर ॥ १२४ ॥ कहि वं भेते ! सहस्रारेवाने  
फलापलाल छणा फलाता ॥ कहि वं भेते ! महासारारेवा परिवसुति ॥ गोवमा ।  
महात्मारसु छप्पसु उपि घपनिय सपडिदियि जाव उप्पता एत्व वं छहस्त्वारे  
नामे कल्पे पक्षते । पाईपदीयावपु, जहा बैमल्लेए, नवर छिक्षमाणाशाससहस्रा  
भवन्तीति मक्षाम । देवा तहेव जाव बहिसुगा जहा ईसावसु बहिसुगा । नवर  
मज्जे इत्व सहस्रारवदिसए जाव विहरति । सहस्रारे इत्व देविरे देवरावा परिवसह  
जहा सर्वकुमारे । नवर छहू विमाणाशाससहस्राम तीसाए सामाधियसाहस्रीण  
चउच्छ य तीसाए आमरक्षदेवसाहस्रीण आहेक्षर्व जाव वरेमाणे विहर ॥ १२५ ॥  
कहि वं भेते ! आजमपाणयाव इत्वाव पक्षतापलाल छणा फलाता ॥ कहि वं  
भेते आजमपाणया देवा परिवसुति ॥ गोवमा ! सहस्रारसु छप्पसु उपि सपनिय  
सपडिदियि जाव उप्पता एत्व वं आजमपाणदगामा तुवे कल्पा पक्षता । पाई-  
पदीयावया उरीपदाहिष्ठिरिपन्न आमरक्षदस्ताजसंठिवा अक्षिमासैमागारामि  
प्पमा चसु जहा सर्वकुमारे जाव पक्षिवा । इत्व वं आजमपाणदेवान चतारि  
विमाणाशासमाया भवन्तीति मक्षाम जाव पक्षिवा । बहिसुगा जहा सोहम्म वप्पे ।  
नवर मज्जे इत्व पाणवरदिसए । तु वं बहिसुगा यम्बरदगाममाया अस्त्र जाव  
पक्षिवा । एत्व वं आजमपाणदगार्व पक्षतापलाल छाला फलाता । निषु दि

लोगस्स असखेजइभागे । तत्थ णं वहवे आणयपाणयदेवा परिवसति महिंद्रिया जाव पभासेमाणा । ते ण तत्थ साण साण विमाणावाससयाणं जाव विहरंति । पाणए इत्य देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे । नवर चउण्ह विमाणावाससयाण, वीसाए सामाणियसाहस्सीण, असीईए आयरक्खदेवसाहस्सीण, अन्नेसिं च बहूण जाव विहरड ॥ १३० ॥ कहि ण भते ! आरणच्छुयाण देवाणं पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्जता ? कहि ण भते ! आरणच्छुयाण देवा परिवसति ?, गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाण उप्पिं सपर्किंख सपडिदिसिं एत्थ ण आरणच्छुयाण नामं दुवे कप्पा पञ्जता । पाईणपडीणायया, उदीणदाहिणवित्यिणा, अद्वचदसठाणसठिया, अच्चिमालीभास-रासिवण्णाभा, असखेजाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खभेण, असखेजाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेण, सब्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निप्पका, निक्कडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरीया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिस्वा, पडिस्वा । एत्थ ण आरणच्छुयाण देवाण तिन्हि विमाणावाससया भवन्तीति मक्खाय । ते ण विमाणा सब्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निप्पका, निक्कडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरीया, सउज्जोया, पासादीया, दरिसणिजा, अभिस्वा, पडिस्वा । तेसि णं विमाणाण कप्पाण चहुमज्जडेसभाए पच्च वडिंसया पञ्जता । तजहा—अकवडिंसए, फलिहवडिंसए, रयणवडिंसए, जायस्ववडिंसए, मज्जे एत्थ अच्छुयवडिंसए । ते ण वडिंसया सब्वरयणामया जाव पडिस्वा । एत्थ ण आरणच्छुयाण देवाण पज्जता-पज्जताण ठाणा पञ्जता । तिसु वि लोगस्स असखेजइभागे । तत्थ ण वहवे आरण-च्छुया देवा परिवसति । अच्छुए इत्य देविंदे देवराया परिवसइ, जहा पाणए जाव विहरड । नवर तिण्ह विमाणावाससयाण, दसण्ह सामाणियसाहस्सीण, चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण आहेवच्च जाव कुळ्वमाणो० विहरड । वत्तीस अट्टवीसा वारस अट्ट चउरो (य) सयसहस्सा । पन्ना चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥ १ ॥ आणय-पाणयकप्पे चत्तारि सयाऽरणच्छुए तिन्हि । सत्त विमाणसयाइ चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसगहणीगाहा-चउरासीइ असीई वावत्तरीं सत्तरी य मट्टी य । पन्ना चत्तालीसा तीसा वीसा दस सहस्सा ॥ १ ॥ एए चेव आयरक्खा चउगुणा ॥ १३१ ॥ कहि ण भते ! हिंदूमगेविज्ञगाण पज्जतापज्जताण ठाणा पञ्जता ? कहि ण भते ! हिंदूमगेविज्ञगा देवा परिवसति ?, गोयमा ! आरणच्छुयाण कप्पाण उप्पिं जाव उहूं दूर उप्पडता एत्थ ण हिंदूमगेविज्ञगाण देवाण तओ गेविज्ञगविमाणपत्यडा पञ्जता । पाईणपडीणायया, उदीणदाहिणवित्यिणा, पडिपुण्णचदसठाणसठिया, अच्चिमा-

सीमाद्विरुद्धामा सेर्वं जहा बंसल्लेगे जाव पदिक्षा । तत्त्व चं हेंड्रिमग-  
विक्षार्थं देवार्थं एकाखुतरे विमाणाकासुसए मवतीति मक्षाव । ते चं विमाणा  
सम्बद्धकामया जाव पदिक्षा । एत्य चं हेंड्रिमगेविक्षार्थं देवार्थं पद्धतापद्धतार्थं  
ठाणा पद्धता । विद्व वि अपेस्तु असुबेवाहमागे । तत्त्व चं वहामे हेंड्रिमगेविक्षा  
देवा परिवर्तति । सम्बो समिन्हिया सम्बो समग्निया सम्बो समवस्ता सम्बो सम-  
वस्तम सम्बो सुमायुमाया महामुक्त्या अविदा अपेस्ता अपुराहिया अहमिदा  
नामं ते देवगणा पद्धता समधार्दसो ! ॥ १३२ ॥ कहि चं भंत । मजिहमगेविक्षा  
देवा परिवर्तति । गोपमा । हेंड्रिमगेविक्षार्थं उपि सपविक्षा सपदिक्षिति जाव  
उप्यक्षा एत्य चं मजिहमगेविक्षार्थं तुझे गेविक्षगविमाणपद्धत्या पद्धता ।  
पाईणपवीयायवा जहा हेंड्रिमगेविक्षार्थं । नवरं घट्टुतरे विमाणाकासुसए मवतीति  
मक्षाये । ते चं विमाणा जाव पदिक्षा । एत्य चं मजिहमगेविक्षार्थं जाव  
विद्व वि अपेस्तु असुबेवाहमागे । तत्त्व चं वहामे मजिहमगेविक्षगा देवा परिवर्तति  
जाव अहमिदा नामं ते देवगणा पद्धता समधार्दसो ! ॥ १३३ ॥ कहि चं भंत । उबरिम-  
गेविक्षगा देवा परिवर्तति । गोपमा । मजिहमगेविक्षार्थं उपि जाव उप्यक्षा  
एत्य चं उबरिमगेविक्षगार्थं तभो गेविक्षगविमाणपद्धत्या पद्धता । पाईणपवीयायवा  
सेर्वं जहा हेंड्रिमगेविक्षार्थं । नवरं एगे विमाणाकासुसए मवतीति मक्षामं सेर्वं  
तहेव भावियत्वं जाव अहमिदा नामं ते देवगणा पद्धता समधार्दसो ! । एहार  
सुतर हेंड्रिमधु घट्टुतरं च मजिहमए । सबमें उबरिमए पवेव अघुतरविमाया  
॥ १३४ ॥ कहि चं भंते । अघुतरोववाहमार्थं देवार्थं पद्धतापद्धतार्थं झाचा  
पद्धता । कहि चं भंते । अघुतरोववाहमार्थं देवा परिवर्तति । गोपमा । इमीसे रवण-  
प्यमाए पुढीए चतुर्स्मरमविक्षामो गृहिमाणामो चहुं चरिमस्त्रिवगहृग्रन्थसुरक्ष-  
ताराहवार्थं चहुं चोमनसवार्थं, चहुं चोमनसस्तरार्थं, चहुं चोमनससाहस्तार्थं,  
चहुगामो चोमनकोदीमो चहुगामो चोमनरोडाकोदीमो चहुं चहुं उप्यक्षा  
सोहस्मीसाणसुर्जुमार जाव आरज्ञुमरप्या तिति अद्वारद्वारे गेविक्षगविमाण-  
वास्तवए वीर्वश्वा वेज पर चहुं गया नीरवा निम्मसा विशिमिरा विद्वा  
पद्धतिसि वेज अघुतरा महामहाम्भा महाविमाणा पद्धता । उबहा—विमर्श,  
विवरिते विवरिते अपराहिए, सम्भुमिदे । ते चं विमाणा सम्बद्धकामया अप्यमा  
सम्बा लहु चहुं मद्द नीरवा निम्मसा विवरिते निम्मसा विवरिते

सस्सरीया, सउज्जोया, पासाईया, दरिसणिजा, अभिरूवा, पडिरूवा । एत्थं ण अणुत्तरोववाइयाण देवाणं पञ्जत्तापञ्जत्ताणं ठाणा पञ्जत्ता । तिसु वि लोगस्स असखे-जइभागे । तत्थं ण वहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति । सब्बे समिद्धिया सब्बे समवला, सब्बे समाणुभावा, महासुक्खा, अणिंदा, अपेस्सा, अपुरोहिया, अह-मिंदा नाम ते देवगणा पञ्जत्ता समणाउसो ! ॥ १३५ ॥ कहि ण भते ! सिद्धाण ठाणा पञ्जत्ता ? कहि ण भंते ! सिद्धा परिवसति ?, गोयमा ! सब्बट्टसिद्धस्स महा-विमाणस्स उवरिलाओ थ्रूभियग्गाओ दुवालस जोयणे उच्छृ अवाहाए एत्थं ण ईसि प्पब्मारा णाम पुढवी पञ्जत्ता । पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्खंभेण, एगा जोयणकोडी वायालीस च सयसहस्साइ तीस च सयसहस्साइ दोन्नि य अउणापणे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पञ्जत्ता । ईसिप्पब्माराए ण पुढवीए वहुमज्जदेसभाए अट्टुजोयणिए खेते अट्टु जोयणाइ वाहलेण पञ्जत्ते । तओ अणतर च ण मायाए मायाए पएमपरिहाणीए परिहायमाणी परिहायमाणी सब्बेसु चरमतेसु मन्छियपत्ताओ तणुयथरी, अगुलस्स असखेजइभाग वाहलेण पञ्जत्ता । ईसिप्पब्माराए ण पुढवीए दुवालस नामधिजा पञ्जत्ता । तजहा-ईसी इ वा, ईसि-प्पब्मारा इ वा, तणू इ वा, तणुत्तू इ वा, सिद्धिति वा, सिद्धालए इ वा, मुत्तिति वा, मुत्तालए इ वा, लोयगेत्ति वा, लोयगथूभियत्ति वा, लोयगपडिवुज्जाणा इ वा, सब्बपाणभूयजीवसत्तसुहावहा इ वा । ईसिप्पब्मारा ण पुढवी सेया सखदल-विमलसोत्थियमुणालदगरयतुसारगोक्खीरहारवणा, उत्ताणयछत्तसठाणसठिया, सब्ब-जुणसुवण्णमई, अच्छा, सण्हा, लण्हा, घट्टा, मट्टा, नीरया, निम्मला, निप्पका, निक्कडच्छाया, सप्पभा, सस्सरीया, सउज्जोया, पासाईया, दरिसणिजा, अभिरूवा, पडिरूवा । ईसिप्पब्माराए ण पुढवीए सीआए जोयणम्मि लोगंतो, तस्स जे से उवरिले गाउए तस्स ण गाउयस्स जे से उवरिले छवभागे, एत्थं ण सिद्धा भगवतो साईया अपञ्जवसिया अणेगजाइजरामरणजोणिससारकलकलीभावपुणवभवगवभवास-वभीपवचसमझकता भासयमणागयद्व काल चिद्गति । तत्थं वि य ते अवेया अवेयणा निम्ममा असगा य । ससारविप्पमुक्का पएसनिवत्तसठाणा ॥ १ ॥ कहिं पडिहया सिद्धा कहिं मिद्धा पइद्धिया । कहिं वोंदि चड्त्ता ण कन्य गत्तृण सिज्जड ? ॥ २ ॥ अलोए पडिहया सिद्धा लोयगे य पडिहिया । इह वोंदि चड्त्ता ण तत्थं गत्तृण सिज्जड ॥ ३ ॥ दीह वा हस्स वा ज चरिमभवे हविज सठाण । तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥ ज सठाण तु टह भव चयतस्स चरिममयमि । आसी य पएमधण त सठाण तहि तस्स ॥ ५ ॥ तिन्नि सया

विदीया बहुतिमालो य होइ नायनो । एसा यसु विद्यार्थि उद्देशोगाहपा भविता ॥ ६ ॥ बतारि य रथजीवो रथर्णी विमापूर्विया य बोद्धना । एसा यहु विद्यार्थि मञ्जिमभोगाहपा भविता ॥ ७ ॥ एगा क होइ रथजी अद्वेष न अशुक्लर्दि साहि(य)या । एसा यहु विद्यार्थि जहसभोगाहपा भविता ॥ ८ ॥ बोगाहपाइ विद्या भवितिमालेह इति परिहीया । सेत्रायमविवर्णे बरामरपरिष्युक्तार्थ ॥ ९ ॥ कल्प य पृष्ठे विद्ये तथ्य अणता भवन्तुद्विमुक्ता । भाषोऽब्रसमानात्ता पुद्ग सव्वा वि लोक्यते ॥ १ ॥ कुमर अनंते विद्ये सव्वात्तेहि नियमस्ते विद्या । वेऽपि य असंविज्ञुणा विसफ-  
र्हेहि ज युद्ध ॥ ११ ॥ असरीग जीवपणा उवडता ईमये य भावे य । नागरमणा गार अस्त्रायमेय तु विद्यार्थ ॥ १ ॥ केवलस्याणुप्रदत्ता जावेता सव्वमानगुप्तमावे । पास्ता सव्वाये यहु केवलविद्वीहित्तार्थाहि ॥ १३ ॥ नवि अस्ति भाषुमार्थ ते  
मुस्ति नवि य सव्वदेवार्थ । ये विद्यार्थ युक्ते अस्तावाह उवगवार्थ ॥ १४ ॥  
कुरुतावाह उपत सव्वादाविद्ये अस्तुवार्थ । नवि भवत युक्तिह नंताह अस्त-  
मग्नहि ॥ १५ ॥ विद्यस्तु युहोरासी सव्वदाविद्यो यह ईतेजा । योऽर्थतम  
भद्रो युक्तावासे न मास्ता ॥ १६ ॥ यह जाम वोइ विक्ष्ये नगरणये वहुतिह  
वियार्थनो । न चण्ड परिकहेहि उवमाए तहि अस्तीए ॥ १७ ॥ इय विद्यार्थ लोक्यं  
अपोमम नविय लस्त जोमर्म । हिति विसेसेवित्तो सारिष्यमित्ते युक्त वोष्टे  
॥ १८ ॥ यह सव्वसाम्युक्तिये युरिचो भोगूल भोगव कोइ । तत्त्वावृहाविद्यो  
अठित्तव यह अमियवित्तो ॥ १९ ॥ इय सव्वदालवित्ता अउत्ते विलाप्यमुक्तावा  
वित्ता । सामयनभावाह विद्वति युही युह फता ॥ २ ॥ न लैपति य बुद्धति य  
पागगदति व परेसगदति । उम्मुक्त्यमध्यवया अजरा अमरा असंपा य ॥ २१ ॥ निविष्वाम्युस्ता जाइवगमरपर्वतविद्युता । अन्वावाह गोकर्ण अशुरेनी यार्म  
वित्ता ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ पद्मवणाए भगव्यईए धीर्य ठाणपर्य विमते ॥

दिनिगार्दियशाल जोए खेप वगाक्तमा य । गम्भतनाणईगायत्रेवत्तरत्रोम-  
आहारे ॥ १ ॥ भासगावित्तावायुग्मस्ती भवद्विष्वेवत्तिमे । त्रीहै व वित्तवर्धे  
पुग्मभावहेहि चतु ॥ २ ॥ विमालुरार्थ सव्वद्योता जीता वित्तिपर्व युक्तिप्रेव  
विमालिया वाहिकार्थ विमालिया उत्तरेव विमेगादिया ॥ २३ ॥ विमालिया  
गम्भयोग पुरामिहादिया वाहिकार्थ उत्तरेव विमालिया पुरामिहेव विमालिया  
वित्तिमार्थ विमेगादिया । विमालुरार्थ गम्भयोता आउशाह्वा वर्गिपर्व पुरामिहार्थ  
विमालिया वाहिकार्थ विमेगादिया उत्तरेव विमालिया । विमालुरार्थ गम्भयोता  
वित्तिमार्थ वाहिकार्थ पुरामिहेव विमालिया वित्तिमार्थ विमेगादिया । विमा-

वाएण सब्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छमेण, पच्छमेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसा-हिया, दाहिणेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्छमेण, पुरच्छमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया ॥ १३८ ॥ दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा बेइदिया पच्छमेण, पुरच्छमेण विसेसाहिया, दक्षिखणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा तेइंदिया पच्चत्थिमेण, पुरच्छमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणु-वाएण सब्वत्थोवा चउरिंदिया पच्चत्थिमेण, पुरच्छमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया ॥ १३९ ॥ दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा नेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा रयणप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा सक्षरप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा वालुयप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छम-पच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा पंकप्पभापुढ-वीनेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सब्व-त्थोवा वूमप्पभापुढवीनेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा तमप्पहापुढवीनेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा अहेसत्तमापुढवीनेरइया पुरच्छमप-च्चत्थिमउत्तरेण, दाहिणेण असखेजगुणा । दाहिणेहिंतो अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतो छट्टीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणलेहिंतो तमापुढवीनेरइएहिंतो पचमाए वूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणेहिंतो पकप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छ-मपच्चत्थिमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणलेहिंतो पकप्पभा-पुढवीनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणलेहिंतो वालुयप्पभापुढवीनेरइएहिंतो दोच्चाए सक्षरप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेजगुणा, दाहिणलेहिंतो सक्षरप्पभापुढवीनेरइएहिंतो इमीसे रयणप्प-भाए पुढवीए नेरइया पुरच्छमपच्चत्थिमउत्तरेण असखेजगुणा, दाहिणेण असखेज-गुणा ॥ १४० ॥ दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा पच्छिदिया तिरिक्खजोणिया पच्छमेण, पुरच्छमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया ॥ १४१ ॥

दिग्गंगुवाएर्ष ममत्वोऽना ममुस्मा दाहिणठतरेण पुरचित्तमेवं संबोज्युता पञ्चतिप-  
भवं विसेवाहिता ॥ १४२ ॥ दिग्गंगुवाएर्ष सम्बल्पोऽना भवत्वासी देवा पुरचित्त-  
मपञ्चतिपमेवं उत्तरेवं असंबोज्युता दाहितेवं असंबोज्युता । दिग्गंगुवाएर्ष  
सम्बल्पोऽना बाक्तमंदरा देवा पुरचित्तमेवं पञ्चतिपमेवं विसेवाहिता उत्तरेव विसेवा-  
हिता दाहितेवं विसेवाहिता । दिग्गंगुवाएर्षं सम्बल्पोऽना जोइविया देवा पुरचित्त-  
मपञ्चतिपमेवं दाहितेवं विसेवाहिता उत्तरेव विसेवाहिता । दिग्गंगुवाएर्षं सम्ब-  
ल्पोऽना देवा सोइन्मे कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं उत्तरेवं असंबोज्युता दाहितेवं  
विसेवाहिता । दिग्गंगुवाएर्षं सम्बल्पोऽना देवा इसाने कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं  
उत्तरेवं असंबोज्युता दाहितेवं विसेवाहिता । दिग्गंगुवाएर्षं सम्बल्पोऽना देवा  
सर्वाद्वारे कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं उत्तरेवं असंबोज्युता दाहितेवं विसेवा-  
हिता । दिग्गंगुवाएर्षं सम्बल्पोऽना देवा माहिते कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं उत्तरेवं  
असंबोज्युता दाहितेवं विसेवाहिता । दिग्गंगुवाएर्षं सम्बल्पोऽना देवा बम्भोए  
कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं दाहितेवं असंबोज्युता । दिग्गंगुवाएर्षं सम्बल्पोऽना  
देवा कंतए कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं दाहितेवं असंबोज्युता । दिग्गंगुवाएर्षं  
सम्बल्पोऽना देवा माहामुदे कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं दाहितेवं असंबोज्युता ।  
दिग्गंगुवाएर्षं सम्बल्पोऽना देवा सहस्रारे कप्ये पुरचित्तमपञ्चतिपमेवं दाहितेवं  
असंबोज्युता । तुण परं बहुसमोषवक्ष्या समजातसो ॥ १४३ ॥ दिग्गंगुवाएर्षं  
सम्बल्पोऽना विदा दाहिणठतरेण पुरचित्तमेवं संबोज्युता पञ्चतिपमेवं विसेवाहिता  
॥ १ दारे ॥ १४४ ॥ एषति ज भेत । नरेयार्थं तिरिक्तज्ञोयिवार्थं मणुस्सार्थं देवार्थं  
विद्यार्थं य वैष्णवसमाप्तेवं क्वरे क्वरेहितो अप्या वा बहुया वा द्रुग्या वा विसेवा-  
हिता वा २ गोपमा । सम्बल्पोऽना ममुस्मा नरेया असंबोज्युता देवा असंबोज्युता  
विदा अर्णवतुला तिरिक्तज्ञोयिवा अर्णवतुला ॥ १४५ ॥ एषति ज भेत । नरेयार्थं  
तिरिक्तज्ञोयिवार्थं तिरिक्तज्ञोयिवीण मणुस्सार्थं मणुस्सीण देवार्थं वेदीर्थं विद्यार्थं  
य अद्वाक्षसमाप्तेवं क्वरे क्वरेहितो अप्या वा बहुया वा द्रुग्या वा विसेवा-हिता वा ३ गोपमा ।  
सम्बल्पोऽना भग्नुस्सीओ भग्नुस्सा असंबोज्युता भरेया अर्णवतुला  
तिरिक्तज्ञोयिवीओ असंबोज्युताओ देवा असंबोज्युता देवीओ संबोज्युताओ  
विदा अर्णवतुला तिरिक्तज्ञोयिवा अर्णवतुला ॥ ३ दारे ॥ १४६ ॥ एषति ज  
भेत । अर्णवार्थं एवीदिवार्थं वेदीर्थार्थं तेऽर्थार्थं वररिदिवार्थं वैविदिवार्थं  
अपीदिवार्थं य अर्णवे क्वरेहितो अप्या वा बहुया वा द्रुग्या वा विसेवा-हिता वा ४  
गोपमा । सम्बल्पोऽना वैविदिवा अठरिदिवा विसेवा-हिता विसेवा-हिता



तदीनिया अवज्ञाना विमेसाद्विदा पेदरिया अवज्ञाना विसेसाद्विदा एसिन्दिया  
अवज्ञाना अर्थत्तुणा पर्दिया अवज्ञाना विसेसाद्विदा एसिन्दिया वज्ञाना संग  
ज्ञाना गर्दिया वज्ञाना विसुभाद्विदा गर्दिया विसुभाद्विदा ॥ ३ द्वारा ॥ १५१ ॥  
एएसि जं भैत । महाइयाल पुर्विकाइयार्थ आउकाइयार्थ देहद्वाइयार्थ बाउकाइ  
याम वणस्पदसाइयार्थ तमाइयार्थ जडाइयार्थ य क्वरे क्वरैर्हिंनो खण्डा वा बदुषा  
वा तुडा वा विसुभाद्विदा वा ॥ गोवमा । गम्भत्योरा तमसाइया दटद्वाइया असेन-  
ज्ञाना पुर्विकाइया विमेसाद्विदा आउकाइया विसेसाद्विदा बाउकाइया विसुभाद्विदा  
अद्वाया अर्थत्तुणा वणस्पदसाइया अर्थत्तुणा सहाइया विसुभाद्विदा ॥ १५२ ॥  
एएसि जं भैत । नहाइयार्थ पुर्विकाइयार्थ आउकाइयार्थ तउकाइयार्थ बाउकाइयार्थ  
बगरगाइसाइयार्थ तमसाइयार्थ अवज्ञानार्थ क्वरे क्वरैर्हिंना आण्डा वा बदुषा वा  
तुडा वा विसुभाद्विदा वा ॥ गोवमा । गम्भत्योरा तमकाइया अवज्ञाना तउद्वाया  
अवज्ञाना अर्थत्तुणा पुर्विकाइया अवज्ञाना विसेसाद्विदा आउकाइया अवज्ञ-  
ाना विमेसाद्विदा बाउकाइया अवज्ञाना विसेसाद्विदा वणस्पदसाइया अवज्ञाना  
अर्थत्तुणा गर्दाइया अवज्ञाना विमेसाद्विदा ॥ १५३ ॥ एएसि जं भैत । गहाइ-  
यार्थ पुर्विकाइयार्थ आउकाइयार्थ तउकाइयार्थ बाउकाइयार्थ दटद्वाइयार्थ  
तमसाइयार्थ वज्ञानार्थ क्वरे क्वरैर्हिंनो आण्डा वा बदुषा वा तुडा वा विसेसाद्विदा  
वा ॥ गोवमा । गम्भत्योरा तमसाइया वज्ञानार्थ तउकाइया वज्ञानार्थ अर्थत्तुणा  
पुर्विकाइया वज्ञानार्थ विमेसाद्विदा बाउकाइया विमेसाद्विदा विसेसाद्विदा  
पवज्ञाना विसेसाद्विदा वद्वायार्थ वज्ञानार्थ अर्थत्तुणा गर्दाइया वज्ञाना  
विमेसाद्विदा ॥ १५४ ॥ एएसि जं भैत । गहाइयार्थ वज्ञानार्थवज्ञानार्थ क्वरे  
क्वरैर्हिंना आण्डा वा बदुषा वा तुडा वा विमेसाद्विदा वा ॥ गोवमा । नमधेश  
गहाइया अवज्ञाना गर्दाइया वज्ञानार्थ अर्थत्तुणा ॥ एएसि जं भैत । पुर्व  
विकाइयार्थ वज्ञानार्थवज्ञानार्थ क्वरे क्वरैर्हिंना आण्डा वा बदुषा वा तुडा वा  
विमेसाद्विदा वा ॥ गोवमा । गम्भत्योरा पुर्विकाइया अवज्ञाना पुर्विकाइया  
वज्ञाना अर्थत्तुणा ॥ एएसि जं भैत । आउकाइयार्थ वज्ञानार्थवज्ञानार्थ क्वरे  
क्वरैर्हिंना आण्डा वा बदुषा वा तुडा वा विमेसाद्विदा ॥ गोवमा । गहाइया

वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वाउकाइया अपज्ञत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखेजगुणा ॥ एएसि ण भते ! वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता-पज्जत्ताण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्ञत्तगा, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखेजगुणा ॥ एएसि ण भंते ! तसकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गो० ! सब्बत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्ञत्तगा, तसकाइया अपज्ञत्तगा असखेजगुणा ॥ १५५ ॥ एएसि ण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्ञत्तगा सखेजगुणा, तेउकाइया अपज्ञत्तगा असखेजगुणा, पुढविकाइया अपज्ञत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्ञत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्ञत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेजगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्ञत्तगा अणंतगुणा, सकाइया अपज्ञत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखेजगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया विसेसाहिया ॥ १५६ ॥ एएसि णं भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिओयाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिओया असखेजगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया ॥ १५७ ॥ एएसि ण भते ! सुहुमअपज्ञत्तगाण सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयअपज्जत्तगाण सुहुम-तेउकाइयअपज्जत्तगाण सुहुमवाउकाइयअपज्जत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइयअपज्जत्तगाण सुहुमनिओयअपज्जत्तगाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिओया अपज्जत्तगा असखेजगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ १५८ ॥ एएसि ण भते ! सुहुमपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयपज्जत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगाण सुहुमनिओयपज्जत्तगाण य क्यरे

क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ । गोपमा । सम्बल्पोका सुहुमतेऽन्नद्या फलताणा शुहुम  
पुश्चिमस्या फलताणा विसेसाहिद्या शुहुमआठकाइया फलताणा विसेसाहिद्या शुहुम  
बाउकाइया फलताणा विसेसाहिद्या शुहुमनिभ्रेया फलताणा विसेसाहिद्या शुहुम  
वनस्पतिकाइया फलताणा अप्यत्तुणा शुहुमफलताणा विसेसाहिद्या ॥ १९९ ॥ एएषि  
ज भवे । शुहुमार्णं फलतापवताणार्णं क्ष्यरे क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ । गोपमा ।  
सम्बल्पोका सुहुमपवताणा शुहुमफलताणा संकेक्षणुणा । एएषि ज भवे । शुहुम-  
पुश्चिमस्यार्णं फलतापवताणार्णं क्ष्यरे क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ । गोपमा । सम्बल्पोका  
शुहुमपुश्चिमस्या भवताणा शुहुमपवताणा फलताणा संकेक्षणुणा । एएषि ज  
भवे । शुहुमवाठकाइयाजं फलतापवताणार्णं क्ष्यरे क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ ।  
गोपमा । सम्बल्पोका शुहुमवाठकाइया अपवताणा शुहुमवाठकाइया फलताणा  
संकेक्षणुणा । एएषि ज भवे । शुहुमवरकाइयार्णं फलतापवताणार्णं क्ष्यरे क्ष्यरेहितो  
अप्या वा ४ । गोपमा । सम्बल्पोका शुहुमतेऽन्नद्या अपवताणा शुहुमतेऽन्नद्या  
फलताणा संकेक्षणुणा । एएषि ज भवे । शुहुमवाठकाइयार्णं फलतापवताणार्णं क्ष्यरे  
क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ । गोपमा । सम्बल्पोका शुहुमवाठकाइया अपवताणा  
शुहुमवाठकाइया फलताणा संकेक्षणुणा । एएषि ज भवे । शुहुमवनस्पतिकाइयार्णं  
फलतापवताणार्णं क्ष्यरे क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ । गोपमा । सम्बल्पोका शुहुम-  
वनस्पतिकाइया अपवताणा शुहुमवनस्पतिकाइया फलताणा संकेक्षणुणा । एएषि ज  
भवे । शुहुमनिभ्रेयार्णं फलतापवताणार्णं क्ष्यरे क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ । गोपमा ।  
सम्बल्पोका शुहुमनिभ्रेया अपवताणा शुहुमनिभ्रेया फलताणा संकेक्षणुणा ॥ २०० ॥  
एएषि ज भवे । शुहुमार्णं शुहुमपुश्चिमस्यार्णं शुहुमवाठकाइयार्णं शुहुमतेऽन्नद्या-  
शुहुमवाठकाइया अपवताणा शुहुमनिभ्रेया अपवताणा शुहुमनिभ्रेया अपवताणा  
क्ष्यरेहितो अप्या वा ४ । गोपमा । सम्बल्पोका शुहुमतेऽन्नद्या अपवताणा  
शुहुमपुश्चिमस्या अपवताणा विसेसाहिद्या शुहुमवाठकाइया अपवताणा विसेसा-  
हिद्या शुहुमवाठकाइया फलताणा विसेसाहिद्या शुहुमतेऽन्नद्या फलताणा विसेसा-  
हिद्या शुहुमवाठकाइया फलताणा विसेसाहिद्या शुहुमनिभ्रेया अपवताणा अर्थेऽन्न-  
द्या शुहुमनिभ्रेया फलताणा संकेक्षणुणा । शुहुमवनस्पतिकाइया अपवताणा अर्थेऽन्न-  
द्या शुहुमवनस्पतिकाइया विसेसाहिद्या शुहुमवनस्पतिकाइया फलताणा संकेक्षणुणा  
शुहुमपवताणा विसेसाहिद्या शुहुम विसेसाहिद्या ॥ २०१ ॥ एएषि ज भवे ।  
वायरार्णं वायरपुश्चिमस्यार्णं वायरवाठकाइयार्णं वायरतेऽन्नद्यार्णं वायरार्णं

काढ्याण वायरवणस्सङ्काइयाण पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काइयाणं वायरनिओथाण  
वायरतसकाइयाण क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वायर-  
तसकाइया, वायरतेउकाइया असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काइया अस-  
खेजगुणा, वायरनिओया असखेजगुणा, वायरपुढविकाइया असखेजगुणा, वायर-  
आउकाइया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया असखेजगुणा, वायरवणस्सङ्काइया  
अणतगुणा, वायरा विसेसाहिया ॥ १६२ ॥ एएसि ण भते ! वायरपुढविकाइय-  
अपज्जतगाण वायरआउकाइयअपज्जतगाण वायरतेउकाइयअपज्जतगाण वायरवाउ-  
काइयअपज्जतगाण वायरवणस्सङ्काइयअपज्जतगाण पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काइय-  
अपज्जतगाण वायरनिओयअपज्जतगाणं वायरतसकाइयअपज्जतगाण य क्यरे  
क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वायरतसकाइया अपज्जतगा,  
वायरतेउकाइया अपज्जतगा असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काइया अपज्ज-  
तगा असखेजगुणा, वायरनिओया अपज्जतगा असखेजगुणा, वायरपुढविकाइया  
अपज्जतगा असखेजगुणा, वायरआउकाइया अपज्जतगा असखेजगुणा, वायरवाउ-  
काइया अपज्जतगा असखेजगुणा, वायरवणस्सङ्काइया अपज्जतगा अणतगुणा,  
वायरअपज्जतगा विसेसाहिया ॥ १६३ ॥ एएसि ण भते ! वायरपज्जतयाण वायर-  
पुढवीकाइयपज्जतयाण वायरआउकाइयपज्जतयाण वायरतेउकाइयपज्जतयाण वायर-  
वाउकाइयपज्जतयाण पत्तेयसरीरवायरवणस्सङ्काइयपज्जतयाण वायरनिओयपज्जत-  
याण वायरतसकाइयपज्जतयाण य क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्ब-  
त्थोवा वायरतेउकाइया पज्जतया, वायरतसकाइया पज्जतया असखेजगुणा, पत्तेय-  
सरीरवायरवणस्सङ्काइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरनिओया पज्जतया असखे-  
जगुणा, वायरपुढवीकाइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया पज्जतया  
असखेजगुणा, वायरवाउकाइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरवणस्सङ्काइया पज्ज-  
तया अणतगुणा, वायरपज्जतया विसेसाहिया ॥ १६४ ॥ एएसि ण भते ! वायराण  
पज्जतापज्जताण क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वायरपज्ज-  
तया, वायरअपज्जतया असखेजगुणा ! एएसि ण भते ! वायरपुढवीकाइयाण  
पज्जतापज्जताण क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वायरपुढवी-  
काइया पज्जतया, वायरपुढवीकाइया अपज्जतया असखेजगुणा ! एएसि ण भते !  
वायरआउकाइयाण पज्जतापज्जताण क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा !  
मव्वत्थोवा वायरवाउकाइया पज्जतया, वायरवाउकाइया अपज्जतया असखेज-  
गुणा ! एएनि ण भते ! वायरतेउकाइयाण पज्जतापज्जताण क्यरे क्यरेहितो



वायरतसकाइया, वायरतेउकाइया असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया  
असखेजगुणा, वायरनिओया असखेजगुणा, वायरपुढवीकाइया असखेजगुणा,  
वायरआउकाइया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया असखेजगुणा, सुहुमतेउकाइया  
असखेजगुणा, सुहुमपुढवीकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया विसेसाहिया,  
सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिओया असखेजगुणा, वायरवणस्सइकाइया  
अणतगुणा, वायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया असखेजगुणा, सुहुमा विसेसा-  
हिया ॥ १६७ ॥ एएसि ण भते ! सुहुमअपज्जत्याण सुहुमपुढवीकाइयाण अपज्जत्त-  
याण सुहुमआउकाइयाण अपज्जत्याण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्याण सुहुमवाउ-  
काइयाण अपज्जत्याण सुहुमवणस्सइकाइयाण अपज्जत्याण सुहुमनिओयाण अप-  
ज्जत्याण वायरअपज्जत्याण वायरपुढवीकाइयाण अपज्जत्याण वायरआउकाइयाण  
अपज्जत्याण वायरतेउकाइयाण अपज्जत्याण वायरवाउकाइयाण अपज्जत्याण  
वायरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्याण पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्याण  
वायरनिओयाण अपज्जत्याण वायरतसकाइयाण अपज्जत्याण क्यरे क्यरेहिंतो  
अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वायरतसकाइया अपज्जत्या, वायरतेउकाइया  
अपज्जत्या असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया अपज्जत्या असखेजगुणा,  
वायरनिओया अपज्जत्या असखेजगुणा, वायरपुढवीकाइया अपज्जत्या असखेज-  
गुणा, वायरआउकाइया अपज्जत्या असखेजगुणा, वायरवाउकाइया अपज्जत्या  
असखेजगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्या असखेजगुणा, सुहुमपुढवीकाइया अप-  
ज्जत्या विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्या विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया  
अपज्जत्या विसेसाहिया, सुहुमनिओया अपज्जत्या असखेजगुणा, वायरवणस्सइ-  
काइया अपज्जत्या अणतगुणा, वायरा अपज्जत्या विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया  
अपज्जत्या असखेजगुणा, सुहुमा अपज्जत्या विसेसाहिया ॥ १६८ ॥ एएसि ण  
भते ! सुहुमपज्जत्याण सुहुमपुढविकाइयपज्जत्याण सुहुमआउकाइयपज्जत्याण सुहु-  
मतेउकाइयपज्जत्याण सुहुमवाउकाइयपज्जत्याण सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्याण सुहु-  
मनिओयपज्जत्याण वायरपज्जत्याण वायरपुढविकाइयपज्जत्याण वायरआउकाइ-  
यपज्जत्याण वायरतेउकाइयपज्जत्याण वायरवाउकाइयपज्जत्याण वायरवणस्सइ-  
काइयपज्जत्याण पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइयपज्जत्याण वायरनिओयपज्जत्याण  
वायरतसकाइयपज्जत्याण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा  
वायरतेउकाइया पज्जत्या, वायरतसकाइया पज्जत्या असखेजगुणा, पत्तेयसरीर-  
वायरवणस्सइकाइया पज्जत्या असखेजगुणा, वायरनिओया पज्जत्या असखेजगुणा,

बायरसुडविकाराद्या पञ्चतया असंखेजगुणा बायरमाडकद्या पञ्चतया असंखेजगुणा  
बायरकाराडकाराद्या फञ्चतया असंखेजगुणा सहुमतेउकाराद्या फञ्चतया असंखेजगुणा  
सहुमपुडविकाराद्या फञ्चतया विसेशाहिता सहुमतेउकाराद्या फञ्चतया विसेशाहिता  
सहुमवारकाराद्या पञ्चतया विसेशाहिता सहुमनिवेद्या फञ्चतया असंखेजगुण  
बायरकारसहुमताद्या पञ्चतया असंखेजगुणा बायरमाडकद्या विसेशाहिता सहुम-  
वणसपाइकाराद्या पञ्चतया असंखेजगुणा सहुमपञ्चतया विसेशाहिता ॥ १९९ ॥  
एएति र्ण भर्ते । सुहुमार्ण बायराख य फञ्चतापञ्चताख क्षरे क्षरेहितो अप्पा वा  
४ ३ गोदमा । सम्बत्योगा बायरा पञ्चतया बायरा अपञ्चतया असंखेजगुणा सहुम-  
वणपञ्चतया असंखेजगुणा सुहुमपञ्चतया संखेजगुणा ८ एएति र्ण भर्ते । सहुम-  
पुडविकाराले बायरसुडविकाराले य पञ्चतापञ्चतार्ण क्षरे क्षरेहितो अप्पा  
वा ४ ३ गोदमा । सम्बत्योगा बायरसुडविकाराद्या पञ्चतया बायरसुडविकाराद्या  
बपञ्चतया असंखेजगुणा सहुमपुडविकाराद्या अपञ्चतया असंखेजगुणा सहुम-  
पुडविकाराद्या पञ्चतया संखेजगुणा ॥ एएति र्ण भर्ते । सहुममाडकाराद्यार्ण बायर  
माडकद्याख य पञ्चतापञ्चताख क्षरे क्षरेहितो अप्पा वा ४ ३ गोदमा ।  
सम्बत्योगा बायरमाडकाराद्या पञ्चतया बायरमाडकाराद्या अपञ्चतया असुखन-  
गुणा सहुमजावकद्या अपञ्चतया असंखेजगुणा सुहुममाडकाराद्या पञ्चतया  
संखेजगुणा ॥ एएति र्ण भर्ते । सहुमतेउकाराद्यार्ण बायरतेउकाराद्याख य पञ्चता-  
पञ्चतार्ण क्षरे क्षरेहितो अप्पा वा ४ ३ गोदमा । सम्बत्योगा बायरतेउकाराद्या  
बपञ्चतया बायरतेउकाराद्या अपञ्चतया असंखेजगुणा सहुमतेउकाराद्या अपञ्चतया  
असंखेजगुणा सहुमतेउकद्या पञ्चतया संखेजगुणा ॥ एएति र्ण भर्ते । सहुमार्ण  
काराद्यार्ण बायरकाराडकाराद्याख य पञ्चतापञ्चतार्ण क्षरे क्षरेहितो अप्पा वा ४ ३  
गोदमा । सम्बत्योगा बायरकाराडकाराद्या पञ्चतया बायरकाराडकाराद्या अपञ्चतया  
असंखेजगुणा हुमा उडसाइया अपञ्चतया असंखेजगुणा सहुमपाउकाराद्या  
पञ्चतया संखेजगुणा ॥ एएति र्ण भर्ते । सुहुमवस्थापाइकारार्ण बायरपसार-  
वाक्षाल य क्षरे क्षरेहितो अप्पा वा ४ ३ गोदमा । गलायेगा बायर  
कसाइकाराद्या पञ्चतया बायरकसाइकाराद्या अपञ्चतया असंखेजगुणा हुमे-  
वलसाइकाराद्या अपञ्चतया असंखेजगुणा सहुमवस्थापाइकाराद्या पञ्चतया संखे-  
जगुणा ८ एएति र्ण भर्ते । सुहुमविक्रीकारार्ण बायरनिक्रीयाख य पञ्चतापञ्च-  
तार्ण क्षरे क्षरेहितो अप्पा वा ४ ३ गोदमा । सम्बत्योगा बायरनिक्रीया  
पञ्चतया बायरनिक्रीया अपंखेजगुणा सहुमनिक्रीया अपंखेजगुणा

असखेजगुणा, सुहुमनिओया पज्जतया सखेजगुणा ॥ १७० ॥ एएसि णं भन्ते !  
 सुहुमाण सुहुमपुढवीकाइयाण सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिओयाण वायराण वायरपुढविकाइयाणं वायरआउकाइयाण वायरतेउकाइयाण वायरवाउकाइयाण वायरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइयाण वायरनिओयाण वायरतसकाइयाण य पज्जतापज्जताण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वायरतेउकाइया पज्जतया, वायरतसकाइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरतसकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरनिओया पज्जतया असखेजगुणा, वायरपुढविकाइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरआउकाइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया पज्जतया असखेजगुणा, वायरतेउकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, वायरनिओया अपज्जतया असखेजगुणा, वायरआउकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, वायरवाउकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, सुहुमपुढवीकाइया अपज्जतया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, सुहुमवाउकाइया अपज्जतया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जतया असखेजगुणा, सुहुमपुढवीकाइया पज्जतया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जतया विसेसाहिया, सुहुमनिओया पज्जतया सखेजगुणा, वायरवणस्सइकाइया पज्जतया अणतगुणा, वायरपज्जतया विसेसाहिया, वायरवणस्सइकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, वायर-अपज्जतया विसेसाहिया, वायरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जतया असखेजगुणा, सुहुमअपज्जतया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सडकाइया पज्जतया सखेजगुणा, सुहुमपज्जतया विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ॥ ४ दार ॥ १७१ ॥ एएसि ण भन्ते ! जीवाण सजोगीण मणजोगीण वहजोगीण कायजोगीण अजोगीण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुङ्गा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा मणजोगी, वहजोगी असखेजगुणा, अजोगी अणतगुणा, कायजोगी अणतगुणा, मजोगी विसेसाहिया ॥ ५ दार ॥ १७२ ॥ एएसि ण भन्ते ! जीवाण सवेयगाण इत्थीवेयगाण पुरिमवेयगाण नपुसगवेयगाण अवेयगाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुङ्गा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा पुरिगवेयगा, इत्थीवेयगा सखेजगुणा, अवेयगा अणतगुणा, नपुनगवेयगा अणत-

गुण सवेदगा विसेसाहिया ॥ ६ शारे ॥ १७३ ॥ एएषि र्ण मंते । सम्माइर्ण  
स्वेहसाहिणी मायस्माइर्ण मायास्माहिणी स्वेहसाहिणी मस्माहिण य क्ष्यरे क्ष्यरे-  
हितो अप्पा वा बहुया वा द्रुष्टा वा विसेसाहिया वा ३ गोममा । सम्बल्लोका जीवा  
मस्माहिणी, मायस्माहिणी अर्कतयुगा कोहसाहिण विसेसाहिया मस्मास्माहिण विसेसाहिया  
स्वेहसाहिण विसेसाहिया सम्माइर्ण विसेसाहिया ॥ ७ शारे ॥ १७४ ॥ एएषि र्ण  
मंते । जीवार्ण स्वेहस्तार्ण लिङ्गस्तेस्तार्ण नीम्बेस्तार्ण कार्वेस्तार्ण तेवलेस्तार्ण पद्म-  
खस्तार्ण सुद्देस्तार्ण असेस्तार्ण य क्ष्यरे क्ष्यरे हितो अप्पा वा बहुया वा द्रुष्टा वा  
विसेसाहिया वा ३ गोममा । सम्बल्लोका जीवा सुद्देस्तार्ण फलेस्तार्ण संबेदयुगा  
तद्देस्तार्ण स्वेहयुगा असेस्तार्ण अर्कतयुगा कार्वेस्तार्ण अर्कतयुगा नीम्बेस्तार्ण  
विसेसाहिया क्ष्यरेस्तार्ण विसेसाहिया उलेस्तार्ण विसेसाहिया ॥ ८ शारे ॥ १७५ ॥  
एएषि र्ण भंतु । जीवार्ण सम्माहिणीर्ण मिम्बाहिणीर्ण सम्मामिच्छाहिणीर्ण य क्ष्यरे  
क्ष्यरहितो अप्पा वा बहुया वा द्रुष्टा वा विसेसाहिया वा ३ गोममा । सम्बल्लोका जीवा  
सम्मामिच्छाहिणीर्ण सम्माहिणीर्ण अर्कतयुगा मिच्छाहिणीर्ण अर्कतयुगा ॥ ९ शारे ॥ १७६ ॥  
एएषि र्ण भंतु । जीवार्ण आभिमितोहिनार्णीर्ण द्विवार्णीर्ण ओहियार्णीर्ण मह-  
पञ्चवणार्णीर्ण केवल्लार्णीर्ण य क्ष्यरे क्ष्यरहितो अप्पा वा बहुया वा द्रुष्टा वा  
विसेसाहिया वा ३ गोममा । सम्बल्लोका जीवा मध्यपञ्चवणार्णीर्ण द्वोहिणार्णीर्ण अर्क-  
तयुगा आभिमितोहिनार्णीर्ण द्वयणार्णीर्ण द्वोहि द्रुष्टा विसेसाहिया केवल्लार्णीर्ण  
अर्कतयुगा ॥ १७७ ॥ एएषि र्ण मंते । जीवार्ण मध्यपञ्चवणार्णीर्ण सुमञ्चवणार्णीर्ण  
विमञ्चवणार्णीर्ण य क्ष्यरे क्ष्यरहितो अप्पा वा बहुया वा द्रुष्टा वा विसेसाहिया वा ३  
गोममा । सम्बल्लोका जीवा विमञ्चवणार्णीर्ण मध्यपञ्चवणार्णीर्ण द्वयणार्णीर्ण द्वोहि द्रुष्टा  
अर्कतयुगा ॥ १७८ ॥ एएषि र्ण मंते । जीवार्ण आभिमितोहिनार्णीर्ण सुमञ्चवणार्णीर्ण  
द्वोहिमञ्चवणार्णीर्ण मध्यपञ्चवणार्णीर्ण केवल्लार्णीर्ण मध्यपञ्चवणार्णीर्ण विमञ्च-

सजयाण असजयाण सजयासजयाण नोसजयनोअसजयनोसजयासजयाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा सजया, सजयासजया असखेजगुणा, नोसजयनोअसजयनोसजयासजया अणतगुणा, असजया अणतगुणा ॥ १२ दार ॥ १८१ ॥ एएसि णं भते ! जीवाण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता सखेजगुणा ॥ १३ दार ॥ १८२ ॥ एएसि णं भते ! जीवाण आहारगाण अणाहारगाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! मब्बत्थोवा जीवा अणाहारगा, आहारगा असखेजगुणा ॥ १४ दार ॥ १८३ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण भासगाण अभासगाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा भासगा, अभासगा अणतगुणा ॥ १५ दार ॥ १८४ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण परित्ताण अपरित्ताण नोपरित्तनोअपरित्ताण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा परित्ता, नोपरित्तनोअपरित्ता अणतगुणा, दपरित्ता अणतगुणा ॥ १६ दार ॥ १८५ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण पज्जाण अपज्जाण नोपज्जानोअपज्जाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा नोपज्जानोअपज्जत्तगा, अपज्जत्तगा अणतगुणा, पज्जत्तगा सखेजगुणा ॥ १७ दार ॥ ॥ १८६ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण सुहुमाण वायराण नोसुहुमनोवायराण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा नोसुहुमनोवायरा, वायरा अणतगुणा, सुहुमा असखेजगुणा ॥ १८ दार ॥ ॥ १८७ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण सञ्चीण असञ्चीण नोसञ्चीनोअसञ्चीण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोव-जीवा सञ्ची, नोसञ्चीनोअसञ्ची अणतगुणा, असञ्ची अणतगुणा ॥ १९ दार ॥ ॥ १८८ ॥ एएसि ण भते ! जीवाण भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाण नोभव-सिद्धियानोअभवसिद्धियाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया, णोभवसिद्धियाणो-अभवसिद्धिया अणतगुणा, भवसिद्धिया अणतगुणा ॥ २० दार ॥ १८९ ॥ एएसि ण भते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोगलत्थिकाया अद्वासमयाण दच्चटुयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसा-

हिमा वा । गोममा । अम्मतिप्रदाए अम्ममरितिप्रदाए आगासतिप्रदाए पए र्ह तितिति  
द्वय दम्भुवाए सम्भत्योका जीवतिप्रदाए दम्भुमाए अर्णत्युने पोमाक्तिप्रदाए  
दम्भुमाए अर्णत्युने अदासमए दम्भुमाए अर्णत्युने ॥ १५ ॥ एप्रिल ने भंते ।  
अम्मतिप्रदायकादम्मतिप्रकायआगासतिप्रदाक्तीवतिप्रकावपेमाघर्षिताद्यवभासमवार्ण  
पएस्तुमाए क्यरे क्यरेहितो अप्या वा बहुवा वा द्वावा वा विसेसाहिमा वा । गोममा ।  
अम्मतिप्रदाए अम्ममरितिप्रदाए पए र्ह द्वावा पएस्तुवाए सम्भत्योका जीवतिप्र  
द्वय पएस्तुमाए अर्णत्युने पोमाक्तिप्रदाए पएस्तुमाए अर्णत्युने अदासमए  
पएस्तुमाए अर्णत्युने आगासतिप्रदाए पएस्तुमाए अर्णत्युने ॥ १६ ॥ एवस्य  
ने भंते । अम्मतिप्रदायसस दम्भुपएस्तुवाए क्यरे क्यरेहितो अप्या वा बहुवा वा  
द्वावा वा विसेसाहिमा वा । गोममा । सम्भत्योव एवे अम्मतिप्रदाए दम्भुमाए, से  
चेव पएस्तुमाए असुकेज्युने । एवस्य र्ह भंते । अम्ममरितिप्रदायसस दम्भुपएस्तु  
वाए क्यरे क्यरेहितो अप्या वा बहुवा वा द्वावा वा विसेसाहिमा वा । गोममा ।  
सम्भत्योव एवे अम्मतिप्रदाए दम्भुमाए, से चेव पएस्तुमाए असुकेज्युने ।  
एवस्य ने भंते । आगासतिप्रदायसस दम्भुपएस्तुमाए क्यरे क्यरेहितो अप्या वा  
बहुवा वा द्वावा वा विसेसाहिमा वा । गोममा । सम्भत्योव एवे आगासतिप्रदाए  
दम्भुमाए, से चेव पएस्तुमाए अर्णत्युने । एवस्य र्ह भंते । जीवतिप्रकावसस  
दम्भुपएस्तुवाए क्यरे क्यरेहितो अप्या वा बहुवा वा द्वावा वा विसेसाहिमा वा ।  
गोममा । सम्भत्योव जीवतिप्रदाए दम्भुमाए, से चेव पएस्तुमाए असुकेज्युने ।  
एवस्य र्ह भंते । पोमाक्तिप्रकावसस दम्भुपएस्तुमाए क्यरे क्यरेहितो अप्या वा  
बहुवा वा द्वावा वा विसेसाहिमा वा । गोममा । सम्भत्योव पोमाक्तिप्रदाए दम्भुवाए  
से चेव पएस्तुवाए असुकेज्युने । अदासमए न मुच्छिवाह, पएसामावा ॥ १७ ॥  
एप्रिल र्ह भंते । अम्मतिप्रदायकादम्मतिप्रदाक्तीवतिप्रकावपेमाघर्षिति-  
प्रदायवदासमवार्ण दम्भुपएस्तुमाए क्यरे क्यरेहितो अप्या वा बहुवा वा द्वावा वा  
विसेसाहिमा वा । गोममा । अम्मतिप्रदाए अम्ममरितिप्रदाए आगासतिप्रदाए पर  
तिति वि द्वावा दम्भुवाए सम्भत्योका अम्मतिप्रदाए अम्मतिप्रदाए य एप्रिल र्ह  
रोगि वि द्वावा पएस्तुमाए असुकेज्युना जीवतिप्रदाए दम्भुवाए अर्णत्युने से  
चेव पएस्तुमाए असुकेज्युने पोमाक्तिप्रकाए दम्भुवाए अर्णत्युने से चेव पएस्तु  
वाए असुकेज्युने अदासमए दम्भुपएस्तुमाए अर्णत्युने आगासतिप्रदाए पएस्तु  
वाए अर्णत्युने ॥ १८ ॥ एप्रिल ने भंते । जीवार्ण वरिमार्ण अपरि  
माव व क्यरे क्यरेहितो अप्या वा बहुवा वा द्वावा वा विसेसाहिमा वा । गोममा ।

सब्बत्योवा जीवा अचारिमा, चरिमा अणतगुणा ॥ २२ दार ॥ १९४ ॥ एएसि णं  
भेते । जीवाण पोगगलाण अद्वासमयाण सब्बदब्बाण सब्बपएसाणं सब्बपजवाण य  
कयरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा । सब्बत्योवा  
जीवा, पोगगला अणतगुणा, अद्वासमया अणतगुणा, सब्बदब्बा विसेसाहिया, सब्ब-  
पएसा अणतगुणा, सब्बपजवा अणंतगुणा ॥ २३ दार ॥ १९५ ॥ खेत्ताणुवाएण  
मब्बत्योवा जीवा उड्डलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए  
असखेजगुणा, तेलुके असखेजगुणा, उड्डलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया  
॥ १९६ ॥ खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवा नेरडया तेलोके, अहोलोयतिरियलोए अस-  
खेजगुणा, अहोलोए असखेजगुणा ॥ १९७ ॥ खेत्ताणुवाएणं सब्बत्योवा तिरिक्ख-  
जोणिया उड्डलोयतिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस-  
खेजगुणा, तेलोके असखेजगुणा, उड्डलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया ।  
खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवाओ तिरिक्खजोणिणीओ उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए अस-  
खेजगुणाओ, तेलोके सखेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणाओ, अहोलोए  
सखेजगुणाओ, तिरियलोए सखेजगुणाओ ॥ १९८ ॥ खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवा  
मणुस्सा तेलोके, उड्डलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा,  
उड्डलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण  
सब्बत्योवाओ मणुस्तीओ तेलोके, उड्डलोयतिरियलोए सखेजगुणाओ, अहोलोयतिरि-  
यलोए सखेजगुणाओ, उड्डलोए सखेजगुणाओ, अहोलोए सखेजगुणाओ, तिरियलोए  
सखेजगुणाओ ॥ १९९ ॥ खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवा देवा उड्डलोए, उड्डलोयतिरिय-  
लोए असखेजगुणा, तेलोके सखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा, अहोलोए  
सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवाओ देवीओ उड्डलोए,  
उड्डलोयतिरियलोए असखेजगुणाओ, तेलोके सखेजगुणाओ, अहोलोयतिरियलोए  
सखेजगुणाओ, अहोलोए सखेजगुणाओ, तिरियलोए सखेजगुणाओ ॥ २०० ॥  
खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवा भवणवासी देवा उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए असखेज-  
गुणा, तेलोके सखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तिरियलोए असखेज-  
गुणा, अहोलोए असखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवाओ भवणवासिणीओ देवीओ  
उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए असखेजगुणाओ, तेलोके सखेजगुणाओ, अहोलोय-  
तिरियलोए असखेजगुणाओ, तिरियलोए असखेजगुणाओ, अहोलोए असखेज-  
गुणाओ ॥ खेत्ताणुवाएण सब्बत्योवा वाणमतरा देवा उड्डलोए, उड्डलोयतिरियलोए  
असखेजगुणा, तेलोके सखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोए







वाएण सब्वत्थोवा तसकाइया अपजत्तया तेलोके, उहूलोयतिरियलोए असखेजगुणा,  
अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा, उहूलोए सखेजगुणा, अहोलोए सखेजगुणा, तिरि-  
यलोए असखेजगुणा । खेत्ताणुवाएण सब्वत्थोवा तसकाइया पजत्तया तेलोके, उहूलो-  
यतिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा, उहूलोए सखेजगुणा,  
अहोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए असखेजगुणा ॥ २४ दारं ॥ २१० ॥ एएसि णं  
भते । जीवाण आउयस्स कम्मस्स वधगाण अवधगाणं पजत्ताण अपजत्ताण  
सुत्ताण जागराण समोहयाण असमोहयाणं सायावेयगाण असायावेयगाण इदिओव-  
उत्ताण नोइदिओवउत्ताण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताण य क्यरे क्यरेहितो  
अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्वत्थोवा जीवा आउ-  
यस्स कम्मस्स वधगा १, अपजत्तया सखेजगुणा २, सुत्ता सखेजगुणा ३, समो-  
हया सखेजगुणा ४, सायावेयगा सखेजगुणा ५, इदिओवउत्ता सखेजगुणा ६,  
अणागारोवउत्ता सखेजगुणा ७, सागारोवउत्ता सखेजगुणा ८, नोइदिओवउत्ता विसे-  
साहिया ९, असायावेयगा विसेसाहिया १०, असमोहया विसेसाहिया ११, जागरा  
विसेसाहिया १२, पजत्तया विसेसाहिया १३, आउयस्स कम्मस्स अवधया विसेसा-  
हिया १४ ॥ २५ दार ॥ २११ ॥ खेत्ताणुवाएण सब्वत्थोवा पुगला तेलोके, उहूलोय-  
तिरियलोए अणतगुणा, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा,  
उहूलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवा पुगला  
उहूलोदिसाए, अहोदिसाए विसेसाहिया, उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण उ दोवि  
तुल्ला असखेजगुणा, दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चत्थिमेण य दोवि विसेसाहिया,  
पुरच्छिमेण असखेजगुणा, पच्चत्थिमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण  
विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सब्वत्थोवाई दब्बाइ तेलोके, उहूलोयतिरियलोए  
अणतगुणाई, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाई, उहूलोए असखेजगुणाई, अहोलोए  
अणतगुणाई, तिरियलोए संखेजगुणाई । दिसाणुवाएण सब्वत्थोवाई दब्बाइ अहोदि-  
साए, उहूलोदिसाए अणतगुणाई, उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण य दोवि तुल्लाई  
असखेजगुणाई, दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चत्थिमेण य दोवि तुल्लाई विसेसाहियाई,  
पुरच्छिमेण असखेजगुणाई, पच्चत्थिमेण विसेसाहियाई, दाहिणेण विसेसाहियाई,  
उत्तरेण विसेसाहियाई ॥ २१२ ॥ एएसि ण भते । परमाणुपोगलाण सखेजपएसि-  
याण असखेजपएसियाण अणतपएसियाण य खधाण दब्बट्टयाए पएसट्टयाए दब्बट्ट-  
पएसट्टयाए क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा वहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?  
गोयमा ! सब्वत्थोवा अणतपएसिया खधा दब्बट्टयाए, परमाणुपोगला दब्बट्टयाए

मर्त्यतयुगा संकेऽपएसिमा र्थंथा दम्भद्वयाए संकेऽग्रयुजा मर्त्यपएसिमा र्थंथा दम्भद्वयाए असंदेजयुक्ता । पएसद्वयाए-सम्बल्पोत्ता मर्त्यतयुसिवा र्थंथा पएसद्वयाए, परमाकुपोत्तम्भ अपएसद्वयाए अर्थतयुजा संकेऽपएसिमा र्थंथा पएसद्वयाए संकेऽग्रयुजा मर्त्यपएसिमा र्थंथा पएसद्वयाए असंकेऽग्रयुजा । दम्भद्वयपएसद्वयाए-सम्बल्पोत्ता मर्त्यतयुसिमा र्थंथा दम्भद्वयाए, ते चेत् पएसद्वयाए अर्थतयुजा परमाकुपोत्तम्भा दम्भद्वयपएसद्वयाए अर्थतयुक्ता संकेऽपएसिमा र्थंथा दम्भद्वयाए संकेऽग्रयुजा ते चेत् पएसद्वयाए संकेऽग्रयुजा असंकेऽपएसिमा र्थंथा दम्भद्वयाए मर्त्यसेजयुजा ते चेत् पएसद्वयाए असंकेऽग्रयुजा ॥११३॥ एषुषि न भंते । एणपएसोगाढार्थ संकेऽपए-सोगाढार्थ मर्त्यसेजयपसोगाढाण य पोमस्तार्थ दम्भद्वयाए फङ्गद्वयाए दम्भद्वयाए याए क्वरे क्वरैहीतो अप्या वा बहुया वा तुजा वा विसेयाद्विया वा । गोवमा । गम्भ-त्वीता एगपएसोगाढा पोमस्ता दम्भद्वयाए, संकेऽपएसोगाढा पोमस्ता दम्भद्वयाए संकेऽग्रयुजा मर्त्यसेजयपसोगाढा पोमस्ता दम्भद्वयाए असंकेऽग्रयुजा वास्तव्यपए-सम्बल्पोत्ता एगपएसोगाढा पोमस्ता पएसद्वयाए, संकेऽपएसोगाढा पोमस्ता पाम्भद्वयाए यापेऽग्रयुजा असंकेऽग्रपएसोगाढा पोमस्ता फङ्गद्वयाए असंकेऽग्रयुजा । दम्भद्वयप-मद्वयाए-सम्बल्पोत्ता एगपएसोगाढा पुगमसा दम्भद्वयपएमद्वयाए, संकिञ्चनप्रत्ययात्रा पुगमसा दम्भद्वयाए संकिञ्चयुजा ते चेत् पएसद्वयाए संकिञ्चयुजा असंकिञ्चरण्णे-गाढा पुगमसा दम्भद्वयाए असंकिञ्चयुजा ते चेत् पएसद्वयाए असंकिञ्चयुजा ॥११४॥ एषुषि न भंते । एगाममठिक्यार्थ संकिञ्चनमयटिक्यार्थ मर्त्यसेजयपसोगाढा पुगमसा दम्भद्वयाए क्वरे क्वरैहीतो अप्या वा बहुया वा तुजा वा विसेयाद्विया वा । गोवमा । सम्बल्पोत्ता एगाममयटिक्या पुगमसा दम्भद्वयाए संकिञ्चयुजा असंकिञ्चनमय टिक्या पुगमना दम्भद्वयाए असंकिञ्चयुजा । पएसद्वयाए-गम्भत्वीता एगाममयटिक्या पुगमना पएगद्वयाए संकेऽग्रसमयटिक्या पुगमसा पाम्भद्वयाए संकेऽग्रयुजा असं-केऽग्रगमयटिक्या पुगमसा पाम्भद्वयाए असंकेऽग्रयुजा । दम्भद्वयपएमद्वयाए-गम्भत्वीता एगाममयटिक्या पुगमसा दम्भद्वयपएगद्वयाए, संकिञ्चनमयटिक्या पुगमसा दम्भद्वयाए संकिञ्चयुजा ते चेत् क्वगद्वयाए संकिञ्चयुजा । असंकिञ्चगमयटिक्या पुगमसा दम्भद्वयाए असंकिञ्चयुजा वा चेत् पएगद्वयाए असंकिञ्चयुजा ॥ १५ ॥ एण्डि न भंते । एगामगामार्थ मंकिञ्चयुजाप्तगालं असंकिञ्चयुवशमार्थं अर्थं एग-वास्तव्यम् य पुगमन्वय दम्भद्वयाए पागद्वयाए दम्भद्वयपएगद्वयाए व चवरे क्वरैहीतो अप्या वा बहुया वा तुजा वा विसेयाद्विया वा । गोवमा । यहा पुगमसा वा

भाणियव्वा, एव सखिजगुणकालगाण वि । एव सेसावि वण्णा गंधा रसा फासा  
भाणियव्वा । फासाण कक्खडभउयगुस्यलहुयाण जहा एगपएसोगाढाण भणियं  
तहा भाणियव्व । अवसेसा फासा जहा वज्ञा तहा भाणियव्वा ॥ २६ दार ॥ २१६ ॥  
अह भंते ! सब्बजीवप्पवहु महादण्डय वच्छ्रस्सामि-सब्बत्थोवा गब्भवक्षंतिया  
मणुस्सा १, मणुस्सीओ सखिजगुणाओ २, वायरतेउकाइया पज्जत्या असखिज-  
गुणा ३, अणुत्तरोववाइया देवा असखिजगुणा ४, उवरिमगेविजगा देवा सखिज-  
गुणा ५, मज्जामगेविजगा देवा सखिजगुणा ६, हिट्टिमगेविजगा देवा सखिज-  
गुणा ७, अच्छुए कप्पे देवा सखिजगुणा ८, आरणे कप्पे देवा सखिजगुणा ९,  
पाणए कप्पे देवा सखिजगुणा १०, आणए कप्पे देवा सखिजगुणा ११, अहे-  
सत्तमाए पुढवीए नेरडया असखिजगुणा १२, छट्टीए तमाए पुढवीए नेरइया  
असखिजगुणा १३, सहस्सारे कप्पे देवा असखिजगुणा १४, महासुके कप्पे देवा  
असखिजगुणा १५, पचमाए वूमप्पभाए पुढवीए नेरडया असखिजगुणा १६,  
लंतए कप्पे देवा असखिजगुणा १७, चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए नेरइया  
असखिजगुणा १८, वभलोए कप्पे देवा असखिजगुणा १९, तच्चाए वाल्युप्पभाए  
पुढवीए नेरइया असखिजगुणा २०, माहिंदे कप्पे देवा असखिजगुणा २१,  
सणकुमारे कप्पे देवा असखिजगुणा २२, दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरडया  
असखिजगुणा २३, समुच्छिमा भणुस्सा असखिजगुणा २४, ईसाणे कप्पे देवा  
असखिजगुणा २५, ईसाणे कप्पे देवीओ सखिजगुणाओ २६, सोहम्मे कप्पे देवा  
सखिजगुणा २७, सोहम्मे कप्पे देवीओ सखिजगुणाओ २८, भवणवासी देवा  
असखिजगुणा २९, भवणवासिणीओ देवीओ सखिजगुणाओ ३०, इमीसे रयणप्प-  
भाए पुढवीए नेरडया असखिजगुणा ३१, खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा  
असखिजगुणा ३२, खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणियीओ सखिजगुणाओ ३३,  
थल्यरपचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा सखिजगुणा ३४, थल्यरपचिंदियतिरि-  
क्खजोणियीओ सखिजगुणाओ ३५, जल्यरपचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा  
सखिजगुणा ३६, जल्यरपचिंदियतिरिक्खजोणियीओ सखिजगुणाओ ३७,  
वाणमतरा देवा सखिजगुणा ३८, वाणमतरीओ देवीओ सखिजगुणाओ ३९,  
जोडसिया देवा सखिजगुणा ४०, जोइसिणीओ देवीओ सखिजगुणाओ ४१,  
खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुसगा सखिजगुणा ४२, थल्यरपचिंदियतिरि-  
क्खजोणिया नपुसगा सखिजगुणा ४३, जल्यरपचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुसगा  
सखिजगुणा ४४, चउरिदिया पज्जत्या सखिजगुणा ४५, पचिंदिया पज्जत्या

विसेशाहिया ४६ वैहरिया फजलया विसेशाहिया ४७ तैहरिया फजलया विसेशाहिया ४८ पंचिरिया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ४९ चतुरिया अफजलया विसेशाहिया ५ तेहरिया अफजलया विसेशाहिया ५१ वैहरिया अफजलया विसेशाहिया ५२ फोमसरीरात्मवरप्रस्तुत्याहिया फजलया असंक्षिप्तगुणा ५३ वायरनिज्ञेया फजलया असंक्षिप्तगुणा ५४ वायरपुष्टीश्वराया फजलया असंक्षिप्तगुणा ५५ वायरतेवद्याया फजलया असंक्षिप्तगुणा ५६ वायरतेवद्याया फजलया असंक्षिप्तगुणा ५७ वायरतेवद्याया फजलया असंक्षिप्तगुणा ५८ वायरसरीरात्मवरप्रस्तुत्याहिया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ५९ वायरनिज्ञेया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ६ वायरपुष्टीश्वराया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ६१ वायरतेवद्याया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ६२ वायरतेवद्याया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ६३ शुद्धमतेवद्याया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ६४ शुद्धमतेवद्याया अफजलया विसेशाहिया ६५ शुद्धमतेवद्याया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ६६ शुद्धमतेवद्याया अफजलया विसेशाहिया ६७ शुद्धमतेवद्याया अफजलया उठियुगुणा ६८ शुद्धमतेवद्याया अफजलया विसेशाहिया ६९ शुद्धमतेवद्याया अफजलया विसेशाहिया ७० शुद्धमतेवद्याया अफजलया विसेशाहिया ७१ शुद्धमतेवद्याया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ७२ शुद्धमतेवद्याया अफजलया उठियुगुणा ७३ अभिविदिया अर्जन्तगुणा ७४ परिविमतसमारिद्धी अर्जन्तगुणा ७५ तिया अर्जन्तगुणा ७६ वायरतेवद्याया अर्जन्तगुणा ७७ वायरप्रस्तुत्याहिया अर्जन्तगुणा ७८ वायरतेवद्याया अर्जन्तगुणा ७९ वायरतेवद्याया विसेशाहिया ८ वायरा विसेशाहिया ८१ शुद्धमतेवद्याया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ८२ शुद्धमतेवद्याया विसेशाहिया ८३ शुद्धमतेवद्याया अफजलया असंक्षिप्तगुणा ८४ शुद्धमतेवद्याया विसेशाहिया ८५ शुद्धमतेवद्याया विसेशाहिया ८६ मार्गियिदा विसेशाहिया ८७ विशेषज्ञीरा विसेशाहिया ८८ इष्टस्थानीया विसेशाहिया ८९ एगिन्या विसेशाहिया ९ तिरिक्कज्ञोमिया विसेशाहिया ९१ मिछारिद्धी विसेशाहिया ९२ अविरिया विसेशाहिया ९३ सरवाइ विसेशाहिया ९४ उडमस्ता विसेशाहिया ९५ सर्वेसी विसेशाहिया ९६ उचारत्मा विसेशाहिया ९७ उच्चरीया विसेशाहिया ९८ ॥ ३० द्वारा प २१७ ॥ ५ पद्मयणापि भगवान्तर्प लक्ष्ये अप्याप्युपये लमर्ते ॥

वेदशान् भर्ते । वेदश्वरं वास्ते तिर्ते पञ्चात् । गोदया । वदेवं वायरसम्भूतात्  
वदेवेवं वायरोद्यावद् । अपजलाग्नेत्रिकावं भवति । वेदश्वरं वास्ते तिर्ते पञ्चात् ।



पुष्टिनेत्रयार्थं भरत । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष वि अठोमुकुर्त  
उडोसेण वि अठोमुकुर्त । फवलयतमप्पमापुष्टिनेत्रयार्थं भरते । केवल्यं चाल ठिक्  
पक्षता । गोपमा । अहसेष उत्तरसु सामरेवमाई अठोमुकुर्तगृहं उडोसेण शास्त्रार्थं  
सामरेवमाई अठोमुकुर्तगृहं । अहसेषमापुष्टिनेत्रयार्थं भरते । केवल्यं चाल ठिक्  
पक्षता । गोपमा । अहसेष वालीसु सामरेवमाई उडोसेण तेलीसु सामरेवमाई ।  
अपश्चात्यमहेसामपुष्टिनेत्रयार्थं भरते । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा ।  
अहसेष वि अठोमुकुर्त उडोसेण वि अठोमुकुर्त । पञ्चताम्बद्देसामपुष्टिनेत्रयार्थं  
भरते । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष वालीसु सामरेवमाई अठो-  
मुकुर्तगृहं, उडोसेण तेलीसु सामरेवमाई अठोमुकुर्तगृहं ॥ १९ ॥ देवान् भर्ति ।  
केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष एस वासवास्तवं, उडोसेण तालीप  
सामरेवमाई । अपश्चात्यदेवान् भरते । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष  
वि अठोमुकुर्त उडोसेण वि अठोमुकुर्त । पञ्चताम्बद्देसामपुष्टिनेत्रयार्थं भरते ।  
केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष एस वासवास्तवं अठोमुकुर्तगृहं ।  
उडोसेण तालीप सामरेवमाई । देवीज मंत्र । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा ।  
अहसेष एस वासवास्तवं, उडोसेण पञ्चताम्बद्देसामपुष्टिनेत्रयार्थं भरते ।  
केवल्यं चाल ठिक् एकता । गोपमा । अहसेष वि अठोमुकुर्त उडोसेण वि अठोमुकुर्त ।  
पञ्चताम्बद्देवीज मंत्र । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष एस वासवास्तवं  
स्ताई अठोमुकुर्तगृहं, उडोसेण पञ्चताम्बद्देसामपुष्टिनेत्रयार्थं अठोमुकुर्तगृहं ॥ २ ॥  
भरताकाशीर्थ देवान् भरते । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष एस  
वासवास्तवं साइरेण सामरेवमाई । अपश्चात्यमवधारातीर्थं भरते । देवान्  
केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष वि अठोमुकुर्त उडोसेण वि अठो-  
मुकुर्त । पञ्चताम्बद्देवातीर्थ देवान् भरते । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा ।  
अहसेष एस वासवास्तवं अठोमुकुर्तगृहं, उडोसेण वासवेण सामरेवमाई अठोमुकुर्त-  
गृहं । भरताकाशीर्थं भरते । देवीज केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा ।  
अहसेष एस वासवास्तवं, उडोसेण जद्वप्तमाई पञ्चताम्बद्देसामपुष्टिनेत्रयार्थं । अपश्चात्यभवत्ता-  
तिर्थीर्थ देवीज मंत्र । केवल्यं चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष वि अठोमुकुर्त-  
गृहं उडोसेण वि अठोमुकुर्त । पञ्चताम्बद्देवीज भरते । भरताकाशीर्थ देवीज केवल्यं चाल  
ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष एस वासवास्तवं अठोमुकुर्तगृहं उडोसेण वि  
चाराई पञ्चताम्बद्देसामपुष्टिनेत्रयार्थं ॥ २३ ॥ अपश्चात्यमाराते भरते । देवान् केवल्यं  
चाल ठिक् पक्षता । गोपमा । अहसेष एस वासवास्तवं उडोसेण ताइर्ग चाल

रोवम् । अपज्जत्यअसुरकुमाराण भते ! देवाण केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत्त उक्षोसेण वि अन्तोमुहुत्तं । पज्जत्यअसुरकुमाराण भते ! देवाणं केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राइ अन्तो-मुहुत्तूणाइ, उक्षोसेण साइरेग सागरोवमं अन्तोमुहुत्तूण । असुरकुमारीण भते ! देवीण केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्राइ, उक्षोसेण अद्वपचमाइ पलिओवमाइ । अपज्जत्याण असुरकुमारीण भते ! देवीण केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अन्तोमुहुत्त उक्षोसेण वि अतोमुहुत्तं । पज्जत्याण असुरकुमारीणं देवीण भते ! केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राइ अतोमुहुत्तूणाइ उक्षोसेण अद्वपचमाइं पलिओवमाइ अतो-मुहुत्तूणाइ ॥ २२२ ॥ नागकुमाराण देवाणं भंते । केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राइ, उक्षोसेण दो पलिओवमाइ देसूणाइ । अपज्जत्याण भते ! नागकुमाराण० केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत्त उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्याण भते ! नागकुमाराण देवाण केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्षोसेणं दो पलिओवमाइ देसूणाइ अतोमुहुत्तूणाइ । नागकुमारीण भते ! देवीण केवडयं काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राइ, उक्षोसेण देसूण पलि-ओवम । अपज्जत्याण भते ! नागकुमारीण देवीण केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत्तं उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्याण भते ! नागकुमारीण देवीण केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससह-स्साइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्षोसेण देसूण पलिओवम अतोमुहुत्तूण ॥ २२३ ॥ सुवण्ण-कुमाराण भते ! देवाण केवडय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण दस वासस-हस्साइ उक्षोसेण दो पलिओवमाइ देसूणाइ । अपज्जत्याण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्याण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्षोसेण दो पलिओवमाइ देसूणाइ अतोमुहुत्तूणाइ । सुवण्णकुमारीण देवीण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण दस वासमह-स्साइ, उक्षोसेण देमूण पलिओवम । अपज्जत्याण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि अतोमुहुत्त उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्जत्याण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण दस वासमहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्षोसेण देसूण पलिओवम अतोमुहुत्तूण । एव एएण अभिलाखेण ओहियअपज्जत्यपज्जत्यसुन्तत्य देवाण य देवीण य नेत्रव्व जाव थणियकुमाराण जहा नागकुमाराण ॥ २२४ ॥ पुटविकाडयाण भते ! केवडय काल













गोममा ! अहोरेण अंतोमुक्तुत उद्दोसेयं सिद्धि परिमोक्षमार्दं अंतोमुक्तुत्तरार्दं ।  
 संमुचितमम्भुत्सारं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतोमुक्तुत ।  
 गम्भार्तियमम्भुत्सारं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण अंतोमुक्तुत उद्दोसेयं सिद्धि  
 परिमोक्षमार्दं । अपमातावार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतो-  
 मुक्तुत । फलतमार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण अंतोमुक्तुत उद्दोसेयं सिद्धि  
 परिमोक्षमार्दं अंतोमुक्तुत्तरार्द ॥ २४७ ॥ वापर्मतरार्यं भर्ते । देवार्यं केदद्वं कर्त्त  
 दिव्यं फलता । गोममा ! अहोरेण इस वासुदाहस्तार्यं उद्दोसेयं परिमोक्षमार्दं । अपम-  
 ातावार्यमतरार्यं देवार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतोमुक्तुत ।  
 फलतमार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण इस वासुदाहस्तार्यं अंतोमुक्तुत्तरार्दं, उद्दोसेयं  
 परिमोक्षमार्दं अंतोमुक्तुत । वापर्मतरीर्यं देवीर्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण इस  
 वासुदाहस्तार्यं, उद्दोसेयं अद्यपरिमोक्षमार्दं । अपमातियार्यं देवीर्यं पुच्छ । गोममा !  
 अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतोमुक्तुत । फलितावार्यं वापर्मतरीर्यं पुच्छ । गोममा !  
 अहोरेण इस वासुदाहस्तार्यं अंतोमुक्तुत्तरार्दं, उद्दोसेयं अद्यपरिमोक्षमार्दं अंतोमुक्तुत्तरार्द ॥ २४८ ॥ जोइसियार्यं देवार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण परिमोक्षमार्दमद्वामागो उद्दो-  
 सेयं परिमोक्षमार्दं वासुदाहस्ताहस्तमम्भाहियं । अपमातवजोइसियार्यं पुच्छ । गोममा !  
 अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतोमुक्तुत । फलतमार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण परिमोक्षमार्दमद्वामागो अंतोमुक्तु-  
 तूर्णं । जोइसियार्यं देवीर्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण परिमोक्षमद्वामागो उद्दोसेयं  
 अद्यपरिमोक्षमार्दं फलासुवासुदाहस्तमम्भाहियं । अपमातियवजोइसियार्यार्यं पुच्छ ।  
 गोममा ! अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतोमुक्तुत । फलितावजोइसियार्यं पुच्छ ।  
 गोममा ! अहोरेण परिमोक्षमद्वामागो अंतोमुक्तुत्तरार्दो उद्दोसेयं अद्यपरिमोक्षमार्दं  
 फलासुवासुदाहस्तमम्भाहियं अंतोमुक्तुत । अद्यपरिमोक्षमार्दं अंतोमुक्तुत्तरार्द ।  
 गोममा ! अहोरेण अउमातापरिमोक्षमार्दं उद्दोसेयं परिमोक्षमार्दं वासुदाहस्तमम्भाहियं ।  
 अपमातावार्यं अद्यदवार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतोमुक्तुत ।  
 फलतमार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण अउमातापरिमोक्षमार्दं अंतोमुक्तुत उद्दोसेयं  
 परिमोक्षमार्दं वासुदाहस्तमम्भाहियं अंतोमुक्तुत । वैदिक्यागो एवं देवीर्यं पुच्छ ।  
 गोममा ! अहोरेण अउमातापरिमोक्षमार्दं उद्दोसेयं अद्यपरिमोक्षमार्दं फलासुवासुदाहस्त  
 मम्भाहियं । अपमातियार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण यि उद्दोसेयं यि अंतोमुक्तुत ।  
 अपमातियार्यं पुच्छ । गोममा ! अहोरेण अउमातापरिमोक्षमार्दं अंतोमुक्तुत उद्दोसेयं  
 अद्यपरिमोक्षमार्दं पलासुवासुदाहस्तमम्भाहियं अंतोमुक्तुत । सर्विमार्ये एवं भर्ते ।





जहन्नेण छब्बीस सागरोवमाइ, उक्षोसेण सत्तावीस सागरोवमाइ । अपज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण छब्बीस सागरोवमाइं अतोमुहुत्तूणाइ उक्षोसेण सत्तावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । मज्जिमउवरिमगेविजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सत्तावीस सागरोवमाइ, उक्षोसेण अट्टावीस सागरोवमाइ । अपज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण सत्तावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइं, उक्षोसेण अट्टावीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइं । उवरिमहेड्हिमगेविजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अट्टावीस सागरोवमाइ, उक्षोसेणं एगूणतीस सागरोवमाइ । अपज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अट्टावीस सागरोवमाइं अतोमुहुत्तूणाइ, उक्षोसेण एगूणतीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । उवरिम-मज्जिमगेविजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एगूणतीस सागरोवमाइ उक्षोसेण तीस सागरोवमाइ । अपज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतो-मुहुत्त । पज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एगूणतीस सागरोवमाइ अतोमुहु-त्तूणाइ, उक्षोसेण तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । उवरिमउवरिमगेविजगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण तीस सागरोवमाइ, उक्षोसेण एकतीस सागरोवमाइ । अपज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ, उक्षोसेण एकतीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ ॥ २४४ ॥ विजयवेजयतजयतअपराजिएसु र्ण भते ! देवाण केवइय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण एकतीस सागरोवमाइ, उक्षो-सेण तेत्तीस सागरोवमाइ । अपज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । पज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एकतीस सागरोवमाइ अतोमु-हुत्तूणाइ, उक्षोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ ॥ सन्वद्विसिद्धगदेवाण भते ! केवइय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! अजहन्मणुक्षोस तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पञ्चता । सन्वद्विसिद्धगदेवाणं अपज्ञत्याणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । सन्वद्विसिद्धगदेवाण० पज्ञत्याणं केवइय काल ठिई पञ्चता ? गोयमा ! अजहन्मणुक्षोस तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ ठिई पञ्चता ॥ २४५ ॥ पञ्चवणाप भगवर्हैप चउत्थं ठिइपर्यं समन्तं ॥

कइविहा ण भते ! पज्वा पञ्चता ? गोयमा ! दुविहा पज्वा पञ्चता । तजहा-जीवपञ्जवा य अजीवपञ्जवा य ॥ २४६ ॥ जीवपञ्जवा ण भते ! किं सखिजा,

असंहिता अर्थता । गोयमा । नो संकेता नो असंहिता अर्थता । से केवल्ले  
मेरे । एवं तुष्टि-जीवपञ्चामा नो संकिता नो असंहिता अर्थता । गोयमा ।  
असंहिता नरकामा असंकिता असुखमारा असंहिता मामुखमारा असंहिता  
उत्थमुखमारा असंहिता शिखमुखमारा असंहिता अगमितुमारा असंहिता  
शिखमुखमारा असंहिता उद्धिकुमारा असंहिता रिरुपिमारा असंहिता  
वारुमुखमारा असंहिता विषमुखमारा असंहिता पुढिकामारा असंहिता  
मारुकामारा असंहिता वृठकामारा असंकिता वारुकामारा अर्थता इन-  
प्रदामामारा असंहिता बेइमिया असंहिता तेइमिया असंहिता चउरिमिया  
असंहिता पंचिदियतिरेकपात्रोमिया असंहिता म्हुस्ता असंहिता वालमंतुए  
असंहिता बोद्धमिया असंहिता बेमामिया अर्थता चिदा से एक्केंटे  
गोयमा । एवं तुष्टि—ते जे नो संकिता नो असंहिता अर्थता ॥ १४७ ॥  
नेरहाम भवि । केवला फळा पद्धता ॥ गोयमा । अर्थता फळा पद्धता । से  
केवल्ले भवि । एवं तुष्टि—“नेरहाम अर्थता फळा पद्धता” ॥ गोयमा ॥ वेरप  
नेरहामस्त एव्वकुमारे तुडे पास्त्वनाए तुडे बोयाएव्वकुमारे सिय हीणे सिय दुडे  
सिय अभ्यहिए । यद हीणे असंकितमागहीणे वा असंकितमागहीणे वा संकित-  
गुणहीणे वा असंहितगुणहीणे वा । यह अभ्यहिए असंकितमागमभ्यहिए वा  
संकितमागमभ्यहिए वा संपित्तगुणमभ्यहिए वा असंकितगुणमभ्यहिए वा ।  
ठिरिए सिय हीणे सिय दुडे सिय अभ्यहिए । यह हीणे असंकितमागहीणे वा  
संपित्तगुणहीणे वा संपित्तगुणहीणे वा असंकितगुणहीणे वा । यह अभ्यहिए  
पस्तिकमागमभ्यहिए वा संकितमागमभ्यहिए वा संकितगुणमभ्यहिए वा  
असंकितगुणमभ्यहिए वा । काम्भात्तपञ्चवेहि सिय हीणे सिय दुडे सिय अभ्यहिए ।  
यह हीणे अर्थत्तमागहीणे वा असेक्कमागहीणे वा संकेक्कमागहीणे वा संकेक्कगुण-  
हीणे वा असेक्कमागहीणे वा अर्थत्तगुणहीणे वा । यह अभ्यहिए अगतमागमभ्यहिए  
वा असेक्कमागमभ्यहिए वा संकेक्कमागमभ्यहिए वा संकितगुणमभ्यहिए वा  
पस्तिकमागमभ्यहिए वा अर्थत्तगुणमभ्यहिए । गीत्तमापञ्चवेहि सोहितमापञ्च-  
वेहि द्वात्तिरपञ्चवेहि संकितमापञ्चवेहि द्वात्तगुणवेहि । द्वात्तिगापिपञ्चवेहि तुम्भ-  
गापञ्चवेहि य द्वात्तगुणवेहि । वित्तरसपञ्चवेहि च्छवरसपञ्चवेहि कसावरसपञ्चवेहि  
मनिष्ठगपञ्चवेहि मगुररसपञ्चवेहि द्वात्तगुणवेहि । अन्वद्वात्तसपञ्चवेहि करमास-  
पञ्चवेहि मद्यफलासपञ्चवेहि ल्लूबफलासपञ्चवेहि दीयफलासपञ्चवेहि दुष्टिपासपञ्चवेहि  
निदध्यसपञ्चवेहि द्वात्तगुणपञ्चवेहि द्वात्तगुणवेहि । जामिगियोहितमापञ्चवेहि

सुयनाणपज्जवेहि ओहिनाणपज्जवेहि मइअन्नाणपज्जवेहि सुयअन्नाणपज्जवेहि विभग-  
नाणपज्जवेहि चक्खुदसणपज्जवेहि अचक्खुदसणपज्जवेहि ओहिदसणपज्जवेहि छट्टाण-  
वडिए, से केणद्वेण गोयमा । एव वुच्च-‘नेरडयाण नो सखेजा, नो असखेजा,  
अणता पज्जवा पञ्चता’ ॥ २४८ ॥ असुरकुमाराण भते । केवडया पज्जवा पञ्चता ?  
गोयमा ! अणता पज्जवा पञ्चता । से केणद्वेण भते । एव वुच्च-‘असुरकुमाराण  
अणता पज्जवा पञ्चता’ ? गोयमा ! असुरकुमारे असुरकुमारस्स दब्बट्टयाए तुळे,  
पएसट्टयाए तुळे, ओगाहणट्टयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, कालवञ्च-  
पज्जवेहि छट्टाणवडिए, एव नीलवञ्चपज्जवेहि लोहियवञ्चपज्जवेहि हालिद्वन्नपज्जवेहि  
सुकिलवञ्चपज्जवेहि, सुविभगधपज्जवेहि दुविभगधपज्जवेहि, तित्तरसपज्जवेहि कहुयरस-  
पज्जवेहि कगायरसपज्जवेहि अविलरमपज्जवेहि महुररसपज्जवेहि, कक्ष्वडफासपज्जवेहि  
मउयफासपज्जवेहि गस्यफासपज्जवेहि लहुयफासपज्जवेहि सीयफासपज्जवेहि उसिण-  
फासपज्जवेहि निद्वफासपज्जवेहि लुक्खफासमपज्जवेहि आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि  
सुयनाणपज्जवेहि ओहिनाणपज्जवेहि मइअन्नाणपज्जवेहि सुयअन्नाणपज्जवेहि विभग-  
नाणपज्जवेहि चक्खुदसणपज्जवेहि अचक्खुदसणपज्जवेहि ओहिदसणपज्जवेहि छट्टाण-  
वडिए, से एणद्वेण गोयमा । एव वुच्च-‘असुरकुमाराण अणता पज्जवा पञ्चता’ । एव  
जहा नेरडया, जहा असुरकुमारा तहा नागकुमारा वि जाव थणियकुमारा ॥ २४९ ॥  
पुढविकाइयाण भंते ! केवइया पज्जवा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पञ्चता ।  
से केणद्वेण भते । एव वुच्च-‘पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पञ्चता’ ? गोयमा !  
पुढविकाइए पुढविकाइयस्स दब्बट्टयाए तुळे, पएसट्टयाए तुळे, ओगाहणट्टयाए सिय  
हीणे सिय तुळे सिय अब्महिए । जइ हीणे असखिज्जइभागहीणे वा सखिज्जइभाग-  
हीणे वा सखिज्जइगुणहीणे वा असखिज्जइगुणहीणे वा । अह अब्महिए असखिज्जइ-  
भागअब्महिए वा सखिज्जभागअब्महिए वा सखिज्जगुणअब्महिए वा असखिज्ज-  
गुणअब्महिए वा । ठिईए तिट्टाणवडिए, सिय हीणे सिय तुळे सिय अब्महिए । जइ  
हीणे असखिज्जभागहीणे वा सखिज्जभागहीणे वा सखिज्जगुणहीणे वा । अह अब्म-  
हिए असखिज्जभागअब्महिए वा सखिज्जइभागअब्महिए वा सखिज्जगुणअब्महिए  
वा । चत्रेहि गवेहि रसेहि फासेहि मइअन्नाणपज्जवेहि सुयअन्नाणपज्जवेहि अचक्ख-  
दसणपज्जवेहि छट्टाणवडिए ॥ २५० ॥ आउकाइयाण भंते ! केवइया पज्जवा  
पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पञ्चता । से केणद्वेण भते ! एव वुच्च-‘आउ-  
काइयाण अणता पज्जवा पञ्चता’ ? गोयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दब्बट्टयाए  
तुळे, पएसट्टयाए तुळे, ओगाहणट्टयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए तिट्टाणवडिए, वञ्च-

असंखिजा अर्णता ! गोवमा ! नो संपिजा नो असंखिजा अर्णता ! से केष्टौरे  
मंते ! एवं तुच्छ-जीवपञ्चवा नो संखिजा नो असंखिजा अर्णता' ? गोवमा !  
असंखिजा नेहवा असंखिजा भमुखमारु असंखिजा नामुखमारु असंखिजा  
सुखमुखमारु असंखिजा मिक्कुमारा असंखिजा लग्गिकुमारा असंखिजा  
लीकुमारा असंखिजा उद्दिकुमारा असंखिजा रिसीकुमारा असंखिजा  
वारुकुमारा असंखिजा वलिकुमारा असंखिजा पुडिकुमारा असंखिजा  
आउकुमारा असंखिजा तेठकुमारा असंखिजा छाउकुमारा अर्णता एवं  
एक्कनाईया असंखिजा बेईरिया असंखिजा दोईरिया असंखिजा चठरियिया  
असंखिजा चौहिया असंखिजा चेमायिया अर्णता चिया से एण्टौरे  
गोवमा ! एवं तुच्छ—से ने नो संखिजा नो असंखिजा अर्णता ॥ २४७ ॥  
मेराकार्य मंते ! केहवा कव्वा पक्का पक्का ! गोवमा ! अर्णता पक्का पक्का ! से  
केष्टौरे भटे ! एवं तुच्छ—नेहयाए अर्णता पक्का पक्का ? गोवमा ! नेहर  
नेहमस्स दक्षद्वाए तुँडे पएक्कद्वाए तुँडे बोगाइण्डवाए चिय हीने चिय तुँडे  
चिय अभ्महिए ! यह हीये असंखिजामागहीये वा संपिज्जमागहीये वा संखिज-  
गुणहीये वा असंखिजगुणहीये वा ! यह अभ्महिए असंखिज्जमागमभ्महिए वा  
संपिज्जमागमभ्महिए वा उपिज्जगुणमभ्महिए वा असंखिज्जगुणमभ्महिए वा !  
ठिहिए चिय हीने चिय तुँडे चिय अभ्महिए ! यह हीये असंखिज्जमागमहीये वा  
संपिज्जमागहीये वा संपिज्जगुणहीये वा असंखिज्जगुणहीये वा ! यह अभ्महिए  
असंखिज्जमागमभ्महिए वा संपिज्जमागमभ्महिए वा संखिज्जगुणमभ्महिए वा  
असंखिज्जगुणमभ्महिए वा ! वास्तव्यापक्कवेहि चिय हीये चिय तुँडे चिय अभ्महिए !  
यह हीये अर्णतमागहीये वा असेज्जमागहीये वा सेज्जमागहीये वा संखिज्ज-  
हीये वा असेज्जगुणहीये वा अर्णतगुणहीये वा ! यह अभ्महिए अर्णतमागमभ्महिए  
वा असेज्जमागमभ्महिए वा सेज्जमागमभ्महिए वा सेज्जगुणमभ्महिए वा  
असेज्जगुणमभ्महिए वा अर्णतगुणमभ्महिए वा ! नीमललपक्कवेहि लोहिकपक्कवेहि  
हैहि शात्रिवत्तपक्कवेहि शुद्धिवत्तपक्कवेहि छट्टापक्कवेहि ! त्रिभिर्वत्तपक्कवेहि तुम्हि-  
र्वत्तपक्कवेहि व छट्टापक्कवेहि ! तिष्ठरसपक्कवेहि छट्टापक्कवेहि कसावरसपक्कवेहि  
जाविमरपक्कवेहि मदुरसपक्कवेहि छट्टापक्कवेहि ! कस्यद्वयवत्तपक्कवेहि मदुरपक्कवेहि  
पक्कवेहि गरुदाक्षसापक्कवेहि भग्नयद्वयवत्तपक्कवेहि सीयप्पवत्तपक्कवेहि संहिजापक्कवेहि  
निदासपक्कवेहि छप्पद्वयापक्कवेहि छट्टापक्कवेहि ! आभिविद्वयापक्कवेहि

सुयनाणपज्जवेहि ओहिनाणपज्जवेहि मइअन्नाणपज्जवेहि सुयअन्नाणपज्जवेहि विभग-  
नाणपज्जवेहि चक्रखुदसणपज्जवेहि अचक्रखुदसणपज्जवेहि ओहिदसणपज्जवेहि छट्टाण-  
वडिए, से केणट्टेण गोयमा ! एव बुच्छ-‘नेरइयाणं नो सखेजा, नो असखेजा,  
अणता पज्वा पञ्चता’ ॥ २४८ ॥ असुरकुमाराण भते ! केवइया पज्वा पञ्चता ?  
गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव बुच्छ-‘असुरकुमाराण  
अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! असुरकुमारे असुरकुमारस्स दब्बट्ट्याए तुळे,  
पएसट्ट्याए तुळे, ओगाहणट्ट्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, कालवन्न-  
पज्जवेहि छट्टाणवडिए, एव नीलवन्नपज्जवेहि लोहियवन्नपज्जवेहि हालिहवन्नपज्जवेहि  
सुकिलवन्नपज्जवेहि, सुविभगधपज्जवेहि दुविभगधपज्जवेहि, तित्तरसपज्जवेहि कहुयरस-  
पज्जवेहि कमायरसपज्जवेहि अविलरसपज्जवेहि महुररसपज्जवेहि, कक्खडफासपज्जवेहि  
मउयफासपज्जवेहि गर्स्यफासपज्जवेहि लहुयफासपज्जवेहि सीयफासपज्जवेहि उसिण-  
फासपज्जवेहि निद्धफासपज्जवेहि लुक्खफासपज्जवेहि आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि  
सुयनाणपज्जवेहि ओहिनाणपज्जवेहि मइअन्नाणपज्जवेहि सुयअन्नाणपज्जवेहि विभग-  
नाणपज्जवेहि चक्रखुदसणपज्जवेहि अचक्रखुदसणपज्जवेहि ओहिदसणपज्जवेहि छट्टाण-  
वडिए, से एणट्टेण गोयमा ! एव बुच्छ-‘असुरकुमाराण अणता पज्वा पञ्चता’ । एव  
जहा नेरइया, जहा असुरकुमारा तहा नागकुमारा वि जाव थणियकुमारा ॥ २४९ ॥  
पुढविकाइयाण भते ! केवइया पज्वा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता ।  
से केणट्टेण भते ! एव बुच्छ-‘पुढविकाइयाण अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा !  
पुढविकाइ पुढविकाइयस्स दब्बट्ट्याए तुळे, पएसट्ट्याए तुळे, ओगाहणट्ट्याए सिय  
हीणे सिय तुळे सिय अव्भहिए । जड हीणे असखिजइभागहीणे वा सखिजइभाग-  
हीणे वा सखिजइगुणहीणे वा असखिजइगुणहीणे वा । अह अव्भहिए असखिजइ-  
भागअव्भहिए वा सखिजइभागअव्भहिए वा सखिजगुणअव्भहिए वा असखिज-  
गुणअव्भहिए वा । ठिईए तिट्टाणवडिए, सिय हीणे सिय तुळे सिय अव्भहिए । जड  
हीणे असखिजभागहीणे वा सखिजभागहीणे वा सखिजगुणहीणे वा । अह अव्भ-  
हिए असखिजइभागअव्भहिए वा सखिजइभागअव्भहिए वा सखिजगुणअव्भहिए  
वा । वक्षेहि गधेहि रसेहि फासेहि मइअन्नाणपज्जवेहि सुयअन्नाणपज्जवेहि अचक्रखु-  
दसणपज्जवेहि छट्टाणवडिए ॥ २५० ॥ आउकाइयाण भते ! केवइया पज्वा  
पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव बुच्छ-‘आउ-  
काइयाण अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दब्बट्ट्याए  
तुळे, पएसट्ट्याए तुळे, ओगाहणट्ट्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए तिट्टाणवडिए, वज-  
२३ सुत्ता०

गंगरसफलसमां अवालद्यमनालभवकहृसुपत्त्वयेहि सद्गुणविषेः ॥ २५१ ॥ एवं  
अहमार्थं पुच्छ । गोवमा । अर्जता पत्त्वा पत्तता । से केऽग्नेयं भर्तु । एवं तु उच्च-  
तेऽप्पाइश्वार्यं अर्जता पत्त्वा पत्तता ॥ गोवमा । तेऽप्पाइ तेऽप्पाइस्त्र दम्भद्वयाए  
द्वै पएसद्वयाए द्वै ओगाइपद्वयाए अवद्वालविषेः तिद्वापविषेः, वर्णवरस-  
प्पासमस्ताजसुवभवाजन्मवकहृसुपत्त्वयेहि य छद्गुणविषेः ॥ २५२ ॥ बावकाइश्वार्यं  
पुच्छ । गोवमा । बावकाइश्वार्यं अर्जता पत्त्वा पत्तता । से केऽग्नेयं भर्तु । एवं तु उच्च-  
तेऽप्पाइश्वार्यं अर्जता पत्त्वा पत्तता ॥ गोवमा । बावकाइ तेऽप्पाइ, वर्ण-  
गंगरसफलसमस्ताजसुवभवाजन्मवकहृसुपत्त्वयेहि कद्गुणविषेः ॥ २५३ ॥ बजस्त्र-  
वालाप पुच्छा । गोवमा । अर्जता पत्त्वा पत्तता । से केऽग्नेयं भर्तु । एवं तु उच्च-  
तेऽप्पाइश्वार्यं अर्जता पत्त्वा पत्तता ॥ गोवमा । बजस्त्रइ तेऽप्पाइ वर्णस्त्रहम्भस्त्र-  
दम्भद्वयाए द्वै पएसद्वयाए द्वै ओगाइपद्वयाए अवद्वालविषेः तिद्वापविषेः, से  
एप्पाग्नेयं गोवमा । एवं तु उच्च- बजस्त्रकाइश्वार्यं अर्जता पत्त्वा पत्तता ॥ २५४ ॥ बेहंशिवार्यं पुच्छ । गोवमा । अर्जता पत्त्वा पत्तता । से केऽग्नेयं भर्तु । एवं तु उच्च-  
तेऽप्पाइश्वार्यं अर्जता पत्त्वा पत्तता ॥ गोवमा । बेहंशिए बेहंशिवस दम्भद्वयाए द्वै  
पएसद्वयाए द्वै ओगाइपद्वयाए तिद्वापविषेः सिय हीये सिय द्वै सिय अम्भविषेः । वह हीये  
असुरिक्षमागाहीये वा अंशिक्षमागाहीये वा संक्षिक्षमागाहीये वा मसुक्षिक्षमाग-  
हीये वा । यह अम्भविषेः असुरिक्षमागाहीये वा अंशिक्षमागाहीये वा संक्षिक्षमागाहीये वा  
सुक्षिक्षमागाहीये वा असुरिक्षमागाहीये वा । तिद्वापविषेः, वर्ण-  
गंगरसफलसमभविषेहि विषनालागम्भवाजन्मवकहृसुपत्त्वयेहि व  
छद्गुणविषेः । एवं बेहंशिवा वि । एवं बठरिशिवा वि नवर दो वैसला बक्षुद्वय-  
वर्णवकहृसुर्ग । वंशिदिवतिरिक्षमोक्षियार्थं पत्त्वा यहा बेहंशिव तदा मायि-  
यत्वा ॥ २५५ ॥ मणुस्त्रार्थं भर्तु । केऽप्पापा पत्त्वा पत्तता ॥ गोवमा । अर्जता  
पत्त्वा पत्तता । से केऽग्नेयं भर्तु । एवं तु उच्च- 'मणुस्त्रार्थं अर्जता पत्त्वा पत्तता' ॥  
गोवमा । मण्से मणूस्त्रम् दम्भद्वयाए द्वै पएसद्वयाए द्वै ओगाइपद्वयाए अवद्वा-  
लविषेः, तिद्वापविषेः, वर्णगंगरसफलसमभविषेहि विषनालागम्भवाजन्मव-  
कहृसुपत्त्वयेहि छद्गुणविषेः, तेऽप्पाग्नेयं भर्तु । तिद्वापविषेः अताप्तेहि तिद्वाप-  
विषेहि छद्गुणविषेः, केऽप्पाग्नेयं भर्तु । आर्यंतरा ओगाइपद्वयाए तिद्वापविषेः  
बेहंशिवा छद्गुणविषेः । ओरिक्षा वेयामिका वि एवं वेष नवर

रिईए तिद्वाणवडिया ॥ २५६ ॥ जहन्नोगाहणगाण भंते । नेरइयाण केवइया पज्वा  
पन्नता ? गोयमा ! अणता पज्वा पन्नता । से केणद्वेण भते ! एवं वुच्चइ० ? गोयमा !  
जहन्नोगाहणए नेरइए जहन्नोगाहणस्स नेरइयस्स दब्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए तुले,  
ओगाहणद्वयाए तुले, ठिईए चउद्वाणवडिए, वन्नगधरसफासपज्ववेहि तिहिं नाणेहिं  
तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए । उक्कोसोगाहणगाण भंते । नेरइयाण  
केवइया पज्वा पन्नता ? गोयमा ! अणता पज्वा पन्नता । से केणद्वेण भते ! एव  
वुच्चइ०-'उक्कोसोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्वा पन्नता' ? गोयमा ! उक्कोसोगा-  
हणए नेरइए उक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दब्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए तुले, ओगाह-  
णद्वयाए तुले । ठिईए सिय हीणे सिय तुले सिय अब्महिए । जइ हीणे असखिज्ज-  
भागहीणे वा सखिज्जभागहीणे वा, अह अब्महिए असखिज्जभागअब्महिए वा  
सखिज्जभागअब्महिए वा । वन्नगधरसफासपज्ववेहि तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं  
तिहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए । अजहन्नमण्कोसोगाहणगाण भंते । नेरइयाण केवइया पज्वा  
पन्नता ? गोयमा ! अणता पज्वा पन्नता । से केणद्वेण भते ! एवं वुच्चइ०-'अजहन्न-  
मण्कोसोगाहणगाण अणता पज्वा पन्नता' ? गोयमा ! अजहन्नमण्कोसोगाहणए  
नेरइए अजहन्नमण्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दब्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए तुले,  
ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुले सिय अब्महिए । जइ हीणे असखिज्जभागहीणे  
वा सखिज्जभागहीणे वा सखिज्जगुणहीणे वा असखिज्जगुणहीणे वा । अह अब्महिए  
असखिज्जभागअब्महिए वा सखिज्जभागअब्महिए वा सखिज्जगुणअब्महिए वा  
असखिज्जगुणअब्महिए वा । ठिईए सिय हीणे सिय तुले सिय अब्महिए । जइ हीणे  
असखिज्जभागहीणे वा सखिज्जभागहीणे वा सखिज्जगुणहीणे वा असखिज्जगुणहीणे  
वा । अह अब्महिए असखिज्जभागअब्महिए वा सखिज्जभागअब्महिए वा सखिज्ज-  
गुणअब्महिए वा असखिज्जगुणअब्महिए वा । वन्नगधरसफासपज्ववेहि तिहिं नाणेहिं  
तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए, से एएणद्वेण गोयमा ! एवं वुच्चइ०-  
'अजहन्नमण्कोसोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्वा पन्नता' ॥ २५७ ॥ जहन्न-  
ठिईयाण भते ! नेरइयाण केवइया पज्वा पन्नता ? गोयमा ! अणता जपवा  
पन्नता । से केणद्वेण भते ! एवं वुच्चइ०-'जहन्नठिईयाण नेरइयाण अणता पज्वा  
पन्नता' ? गोयमा ! जहन्नठिइए नेरइए जहन्नठिईयस्स नेरइयस्स दब्बद्वयाए तुले,  
पएसद्वयाए तुले, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणवडिए, ठिईए तुले, वन्नगधरसफासपज्व-  
वेहि तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए । एव उक्कोसठिइए  
वि । अजहन्नमण्कोसठिइए वि एव चेव, नवर सट्टाणे चउद्वाणवडिए ॥ २५८ ॥

बहुगुणधर्मार्थं भर्तु ! मेरद्यार्थं केवल्या पञ्चदा पञ्चता । गोपमा ! अर्जता पञ्चदा पञ्चता । से केणद्वेषं भर्तु ! एवं तुच्छ- बहुगुणधर्मार्थं वेरद्यार्थं अर्जता पञ्चदा पञ्चता' । गोपमा ! बहुगुणधर्मस्त्र नेरए बहुगुणधर्मास्त्र सरदमस्त्र दम्भद्वयाए तुँके पएसद्यार्थ तुँके ओगाहबद्वयाए चउद्यापदिए, डिंए चउद्यापदिए, अवधारपञ्चतीर्थ तुँके अकसेदेहि बहर्गंभरसकासुपञ्चतेहि तिहि नानेहि तिहि अवापेहि तिहि रसमेहि छद्यापदिए, से पएणद्वेषं गोपमा । एवं तुच्छ- 'बहुगुणधर्मार्थं वेरद्यार्थं अर्जता पञ्चदा पञ्चता' । एवं उड्हेस्युक्षमस्त्र नि । अव- दम्भद्वयेस्युक्षमस्त्र नि एवं चेव नवर बहस्त्रपञ्चतीर्थ छद्यापदिए । एवं अव संसा चतारि वद्या दो गदा देव रसा बद्दु कासा नानियमा ॥ २५९ ॥ बहुगा मिलिकोहियनालीर्थं भर्तु ! नरद्यार्थं केवल्या पञ्चदा पञ्चता । गोपमा ! बहुगा मिलिकोहियनालीर्थं नरद्यार्थं अर्जता पञ्चदा पञ्चता । से केणद्वेषं भर्तु ! एवं तुच्छ- 'बहुगामिलिकोहियनालीर्थं नरद्यार्थं अर्जता पञ्चदा पञ्चता' । गोपमा ! बहुगामिलिकोहियनालीर्थी नेरए बहुगामिलिकोहियनामिस्त्र सेरयस्त्र दम्भद्वयाए तुँके पएसद्यार्थ तुँके ओगाहबद्वयाए चउद्यापदिए, डिंए चउद्यापदिए, बहर्गंभरसक्षयपञ्चतीर्थ छद्यापदिए, आमिलिकोहियनालीर्थपञ्चतेहि तुँके शुक्लार्थ- पञ्चतेहि ओहियनालीर्थ छद्यापदिए, तिहि रसमेहि छद्यापदिए । एवं उहो सामिलिकोहियनालीर्थी नि । बहुगम्भुहोसामिलिकोहियनालीर्थी नि एवं चेव नवर आमिलिकोहियनालीर्थपञ्चतेहि चद्गाये छद्यापदिए । एवं सुक्लार्थी ओहियनालीर्थी नि नवर बहस्त्र भाजा तस्त्र भजाया नरिच । बहु नाणा तहु भजाया नि मानियमा नवर चस्त्र भजाया तस्त्र भाजा न मर्ति । बहुवचन्द्रुष्टीर्थं भर्तु ! नेरपञ्च- केवल्या पञ्चदा पञ्चता ! गोपमा ! अर्जता पञ्चदा पञ्चता । से कणद्वेषं भर्तु ! एवं तुच्छ- बहुगुणधर्मार्थं नेरद्यार्थं अर्जता पञ्चदा पञ्चता' । गोपमा ! बहु- बहुतीर्थसप्ती च नेरए बहुत्तर्वद्यार्थं नेरयस्त्र दम्भद्वयाए तुँके पएसद्यार्थ तुँके ओगाहबद्यार्थ चउद्यापदिए, डिंए चउद्यापदिए, बहर्गंभरसक्षयपञ्चतीर्थ तिहि नानेहि तिहि अवापेहि छद्यापदिए, चम्हर्देशणपञ्चतेहि तुँके अवम्ह- दंशणपञ्चतेहि ओहियनपञ्चतेहि छद्यापदिए । एवं उहोसाम्हद्यार्थं तिहि नि । अव- बहुगम्भुहोसाम्हद्यार्थं तिहि नि एवं चेव नवर चद्गाये छद्यापदिए । एवं अवम्ह- सप्ती नि ओहितीर्थसप्ती नि ॥ २६० ॥ बहुद्वेषगाह्यान भर्तु ! अमुखमार्थं केवल्या पञ्चदा पञ्चता । अर्जता पञ्चदा पञ्चता । से केणद्वेषं भर्तु ! एवं तुच्छ- बहुओगाह्यान अमुखमार्थं अर्जता पञ्चदा पञ्चता' । गोपमा ! बहुद्वेषगाह्याए

असुरकुमारे जहनोगाहणस्स असुरकुमारस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए तुळे, ओगाहणद्वयाए तुळे, ठिईए चउट्टाणवडिए, वन्नाईहि छट्टाणवडिए, आभिणिवोहिय-नाणपज्वेहि सुयनाणपज्वेहि ओहिनाणपज्वेहि तिहि अन्नाणेहि तिहि दंसणेहि य छट्टाणवडिए । एव उक्कोसोगाहणए वि । एव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए वि, नवर सद्वाणे चउट्टाणवडिए । एव जाव थणियकुमारा ॥ २६१ ॥ जहनोगाहणाण भंते । पुढ विकाइयाण केवइया पज्वा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते । एव वुच्चइ-‘जहनोगाहणाण पुढविकाइयाण अणंता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! जहनोगाहणए पुढविकाइए जहनोगाहणस्स पुढविकाइयस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए तुळे, ओगाहणद्वयाए तुळे, ठिईए तिट्टाणवडिए, वन्नगधरसफासपज्वेहि दोहिं अन्नाणेहि अचक्खुदसणपज्वेहि य छट्टाणवडिए । एव उक्कोसोगाहणए वि । अजहन्न-मणुक्कोसोगाहणए वि एव चेव, नवर सद्वाणे चउट्टाणवडिए । जहन्नठिइयाण पुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते । एवं वुच्चइ-‘जह-न्नठिइयाण पुढविकाइयाण अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! जहन्नठिइए पुढविका-इए जहन्नठिइयस्स पुढविकाइयस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए तुळे, ओगाहणद्वयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए तुळे, वन्नगधरसफासपज्वेहि मइअन्नाणपज्वेहि सुयअन्नाणप-ज्वेहि अचक्खुदसणपज्वेहि छट्टाणवडिए । एव उक्कोसठिइए वि । अजहन्नमणुक्कोस-ठिइए वि एव चेव, नवरं सद्वाणे तिट्टाणवडिए । जहन्नगुणकालयाण भते । पुढविका-इयाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते । एवं वुच्चइ-‘जहन्नगुणकालयाण पुढविकाइयाण अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पुढविकाइए जहन्नगुणकालयस्स पुढविकाइयस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए तुळे, ओगाहणद्वयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए तिट्टाणवडिए, कालवन्नपज्वेहि तुळे, अवसेसेहि वन्नगधरसफासपज्वेहि छट्टाणवडिए दोहिं अन्नाणेहि अचक्खुदसणपज्वेहि य छट्टाणवडिए । एव उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवरं सद्वाणे छट्टाणवडिए । एव पच वक्का दो गधा पच रमा अटु फासा भाणियव्वा । जहन्नमइअन्नाणीण भते । पुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते । एवं वुच्चइ-‘जहन्नमइअन्नाणीण पुढविकाइयाण अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! जहन्नमइअन्नाणी पुढविकाइए जहन्नमइअन्नाणिस्स पुढविकाइयस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए तुळे, ओगाहणद्वयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए तिट्टाण-वडिए, वन्नगधरसफासपज्वेहि छट्टाणवडिए, मइअन्नाणपज्वेहि तुळे, सुयअन्नाण-पज्वेहि अचक्खुदसणपज्वेहि छट्टाणवडिए । एवं उक्कोसमइअन्नाणी वि । अजहन्न-

मनुषोंसमझताएँ थे एवं ऐसे नहरे छहामे छहामवहिए। एवं मुखभाषी थे अचम्भुरेतारी थे एवं जब जाग बगप्परसाइमा ॥ २६२ ॥ वहसोमाहणमार्य भैरव ! बैरेतिकार्य पुच्छा । गोदमा । अर्णता पञ्चा पञ्चता । से केवटेष भैरव । एवं तुवर-‘जहलोगाहणगारी बैरेतिकार्य अर्णता पञ्चा पञ्चता’ ॥ गोदमा । जहलोगाहणए बैरेतिए जहलोगाहणसु बैरेतियस्स इम्बद्धयाए तुमे परमद्वयाए तुमे जोगाहणद्वयाए तुमे ठिर्य लिद्वामवहिए, वहर्वरसाप्रसापनवेहि दोहि माचेहि दोहि अचापेहि अनक्षुरेतारपनवेहि व सद्गुप्तवहिए । एवं उक्कोमतागाहणए थि नहरे जागा भस्ति । वहर्वरमनुक्षोसोगाहणए जहा जहलोगाहणए, नहरे छहामे जोगाहणए चउड्याए वहिए । जहलठिकार्य भैरव । बैरेतिकार्य पुच्छा । गोदमा । अर्णता पञ्चा पञ्चता । से केवटुर्ण भैरव । एवं तुवर-जहलठिकार्य बैरेतिकार्य अर्णता पञ्चा पञ्चता’ ॥ गोदमा । जहलठिए बैरेतिए जहलठियस्स बैरेतियस्स इम्बद्धयाए तुमे परमद्वयाए तुमे जोगाहणद्वयाए चउड्यामवहिए, ठिर्य तुमे वहर्वरसाप्रसापनवेहि दोहि अचापेहि अनक्षुरेतारपनवेहि व छहामवहिए । एवं उक्कोस्त्रियए नहरे दो जागा अम्भद्विका । अवहर्वरमनुक्षोसोगियए जहा उहोस्त्रियए, नहरे ठिर्य लिद्वामवहिए । वहर्वरगुणकास्त्रार्थ बैरेतियाए पुच्छा । गोदमा । अर्णता पञ्चा पञ्चता । से केवटेष भैरव । एवं तुवर-जहलगुणकास्त्रार्थ बैरेतिकार्य अर्णता पञ्चा पञ्चता’ ॥ गोदमा । जहलगुणकास्त्रार्थ बैरेतिए जहलगुणकास्त्रार्थसु बैरेतियस्स वम्बद्धयाए तुमे परमद्वयाए तुमे जोगाहणद्वयाए चउड्यामवहिए, ठिर्य लिद्वामवहिए, काढ्यवरपनवेहि तुमे अवसेहिव वहर्वरसाप्रसापनवेहि दोहि माचेहि दोहि जागेहि अनक्षुरेतारपनवेहि व छहामवहिए । एवं उक्कोस्त्रियस्स निः । अवहर्वरमनुक्षोस्त्रियस्स निः एवं जेव । नहरे सद्गुप्ती छहामवहिए । एवं पर्व जहा दो येव पर्व रहा भूत फासा मायियमा । जहलामिलिवोहियनार्थीर्ण भैरव । बैरेतिकार्य केवद्वया पञ्चा पञ्चता है गोदमा । अर्णता पञ्चा पञ्चता । से केवटेष भैरव । एवं तुवर-‘जहलामिलिवोहियनार्थीर्ण बैरेतिकार्य अर्णता पञ्चा पञ्चता’ ॥ गोदमा । जहलामिलिवोहियनार्थीर्ण बैरेतिए जहलामिलिवोहियनार्थीर्ण बैरेतियस्स इम्बद्धयाए तुमे परमद्वयाए तुमे, ज्येष्ठाहणद्वयाए चउड्यामवहिए, ठिर्य लिद्वामवहिए, वहर्वरसाप्रसापनवेहि छहामवहिए, आमिलिवोहियनार्थीर्ण तुमे शुभनामपनवेहि छहामवहिए, अनक्षुरेतारपनवेहि छहामवहिए । एवं उक्कोस्त्रियमिलिवोहियनार्थीर्ण निः । जहलगुणकास्त्रार्थ निः एवं जेव नहरे सद्गुप्ती छहामवहिए । एवं सुक्षमानो विहुमनार्थीर्ण विहुमनार्थीर्ण निः नहरे अत्यनामा तत्त्व जवाना वर्तित

जत्थ अन्नाणा तत्थ नाणा नत्थि, जत्थ दंसण तत्थ नाणा वि अन्नाणा वि । एव तेइदियाण वि । चउरिंदियाण वि एव चेव, णवरं चकखुदसण अब्भहिय ॥ २६३ ॥ जहञ्जोगाहणगाण भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणियाण केवइया पज्वा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भंते ! एव वुच्छ॒—‘जहञ्जोगाहणगाण पचिंदियतिरिक्खजोणियाण अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! जहञ्जोगाहणए पचिं- दियतिरिक्खजोणिए जहञ्जोगाहणयस्स पचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दब्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए तुले, ओगाहणद्वयाए तुले, ठिईए तिद्वाणवडिए, वन्नगधरसफासपज्ववेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दसणेहिं छद्वाणवडिए । उक्कोसोगाहणए वि एव चेव, नवर तिहिं नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छद्वाणवडिए । जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहञ्जमणुक्कोसोगाहणए वि, णवर ओगाहणद्वयाए चउद्वाणवडिए, ठिईए चउद्वाण- वडिए । जहञ्जठिडियाण भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणियाण केवइया पज्वा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते ! एव वुच्छ॒—‘जहञ्जठिडियाणं पचिंदिय- तिरिक्खजोणियाण अणता पज्वा पञ्चता’ ? गोयमा ! जहञ्जठिइए पंचिंदियतिरिक्ख- जोणिए जहञ्जठिडियस्स पचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दब्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए तुले, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणवडिए, ठिईए तुले, वन्नगधरसफासपज्ववेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दसणेहिं छद्वाणवडिए । उक्कोसठिइए वि एव चेव, नवर दो नाणा दो अन्नाणा दो दसणा । अजहञ्जमणुक्कोसठिइए वि एव चेव, नवरं ठिईए चउद्वाणवडिए । तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा तिन्नि दसणा । जहञ्जगुणकालगाण भते ! पचिंदियतिरिक्ख- जोणियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भंते ! एव वुच्छ॒० ? गोयमा ! जहञ्जगुणकालए पचिंदियतिरिक्खजोणिए जहञ्जगुणकालगस्स पचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दब्बद्वयाए तुले, पएसद्वयाए तुले, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणवडिए, ठिईए चउद्वाणवडिए, कालवन्नपज्ववेहिं तुले, अवसेसेहिं वन्नगधर- सफासपज्ववेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छद्वाणवडिए । एव उक्कोमगुणकालए वि । अजहञ्जमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवर सद्वाणे छद्वाण- वडिए । एव पच वन्ना दो गधा पच रसा अट्ट फासा । जहञ्जाभिणिवोहियणाणीण भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणियाण केवइया पज्वा पञ्चता ? गोयमा ! अणता फज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते ! एव वुच्छ॒० ? गोयमा ! जहञ्जाभिणिवोहियणाणी पचिं- दियतिरिक्खजोणिए जहञ्जाभिणिवोहियणाणिस्स पचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दब्बद्व- याए तुले, पएसद्वयाए तुले, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणवडिए, ठिईए चउद्वाणवडिए वन्नगधरसफासपज्ववेहिं छद्वाणवडिए, आभिणिवोहियणाणपज्ववेहिं तुले, सुयणाण-

पर्वतोहि छट्टाक्षवदिए, अक्षयरसपर्वतोहि छट्टाक्षवदिए, अक्षयरसपर्वतोहि छट्टाक्षवदिए । एवं उद्दोषामितिहोहिमाणी मि नवर ठिरेप तिष्ठागवदिए, तिरि आपा तिति दंसणा साहुने तुमे सुरेतु छट्टाक्षवदिए । अवश्यमण्डुमेसामिति-  
शोहिमाणी जहा उद्दोषामितिहोहिमाणी जहर ठिरेप चठट्टाक्षवदिए । उद्धारे  
छट्टाक्षवदिए । एवं द्युमाणी मि । जहोहिमाणीर्थ भेते । वर्तितिवरितिक्षयोहि-  
यार्थ पुच्छा । योक्षमा ! अर्पता पञ्चाणा पञ्चाणा । से लेखद्वये भेते । एवं तुप्त ॥  
योक्षमा । जहोहिमाणी वर्तितिवरितिक्षयोहि जहोहिमाणिस्स वर्तितिवरि  
क्षयोहिमाणिस्स दम्भद्वयाए तुमे परस्तुपाए तुमे ओमाहणद्वयाए, चठट्टाक्षवदिए,  
ठिरेप तिष्ठाक्षवदिए, अक्षयरसपर्वतोहि आमितिहोहिमाणाम्भुमाणपर्वतोहि  
छट्टाक्षवदिए, ओहिमाणपर्वतोहि तुमे । अजापा नरिप । अक्षयरसपर्वतोहि अर्प  
क्षयरसपर्वतोहि ओहिमाणपर्वतोहि य छट्टाक्षवदिए । एवं उद्दोषोहिमाणी मि ।  
अवश्यमण्डुमेसोहिमाणी मि एवं येव नवर सहुने छट्टाक्षवदिए । जहा आमितिहोहि  
माणी तहा मदभक्ताणी मुक्तमाणी य जहा ओहिमाणी तहा विमंगलाणी मि  
अक्षयरसपर्वती अवश्यमण्डुमाणी य जहा आमितिहोहिमाणी ओहिमाणी यहा  
ओहिमाणी अर्प नापा तत्प अजापा नरिप अर्प अजापा तत्प नापा नरिप  
अर्प दस्ता तत्प नापा मि अजापा मि अतिप्रति भानियर्थ ॥ २५४ ॥ जहोगा-  
हणगार्थ भरे । मुक्तस्त्वार्थ लेखमा पञ्चाणा पञ्चाणा ॥ योक्षमा । अर्पता पञ्चाणा  
पञ्चाणा पञ्चाणा ॥ योक्षमा । जहोगाहणए भर्हे जहोगाहणास्स मुक्तस्त्वा  
दम्भद्वयाए तुमे परस्तुपाए तुमे ओगाहणद्वयाए तुमे ठिरेप तिष्ठाक्षवदिए, अर्प-  
रसपरसपरासपर्वतोहि तिहि भागेहि तोहि भागेहि तिहि दंसलेहि छट्टाक्षवदिए ।  
उद्दोषोगाहणए मि एवं येव नवर ठिरेप तिय हीते तिय तुमे तिय अम्भहिए । अर्प  
हीये अर्पतिज्ञामाणीने जह अम्भहिए अर्पतिज्ञामाणम्भहिए । दो नाना दो  
अजापा दो दम्भा । अवश्यमण्डुमेसोगाहणए मि एवं येव नवर ओगाहणद्वयाए  
चठट्टाक्षवदिए, ठिरेप चठट्टाक्षवदिए, आगेहि चठहि नापेहि छट्टाक्षवदिए, लेखमस्त-  
पञ्चाणीहि तुमे तिहि भागेहि तिहि दंसलेहि छट्टाक्षवदिए, लेखमस्त-  
पञ्चाणीहि तुमे । जहतिज्ञानी भंते । मुक्तस्त्वार्थ क्षद्या पञ्चाणा पञ्चाणा ॥ योक्षमा ।  
अर्पता पञ्चाणा पञ्चाणा । से लेखद्वये भंते । एवं तुप्त ॥ योक्षमा । जहमिए  
मुक्तस्त्वे जहतिज्ञानम् मुक्तस्त्वास्स दम्भद्वयाए तुमे परस्तुपाए तुमे ओगाहणद्वयए  
चठट्टाक्षवदिए, ठिरेप तुमे वर्तारसपरासपर्वतोहि तोहि भागेहि तोहि दंसलेहि

छट्टाणवडिए । एवं उक्कोसठिई वि, नवर दो नाणा दो अन्नाणा दो दसणा । अजहन्नमणुक्कोसठिई वि एव चेव, नवर ठिईए चउट्टाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्टाणवडिए, आइल्लेहिं चउहिं नाणेहिं छट्टाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए, केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले । जहन्नगुणकालयाण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छइ० ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए मणूसे जहन्नगुणकाल्यस्स मणुस्सस्स दब्बट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, काल्वन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगधरसफासपज्जवेहिं छट्टाणवडिए, चउहिं नाणेहिं छट्टाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए, केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले । एव उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एव चेव, नवर सट्टाणे छट्टाणवडिए । एव पच वन्ना दो गधा पैच रसा अट्ट फासा भाणियव्वा । जहन्नाभिणिवोहियनाणीण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छइ० ? गोयमा ! जहन्नाभिणिवोहियनाणी मणूसे जहन्नाभिणिवोहियनाणिस्स मणु-स्सस्स दब्बट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं छट्टाणवडिए, आभिणिवोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाणपज्जवेहिं दोहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए, एव उक्कोसाभिणिवोहियनाणी वि, नवर आभिणिवोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले, ठिईए तिट्टाणवडिए, तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्टाणवडिए । अजहन्नमणुक्कोसाभिणिवोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिवोहिय-नाणी, नवरं ठिईए चउट्टाणवडिए, सट्टाणे छट्टाणवडिए । एव सुयनाणी वि । जहन्नोहिनाणीण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पञ्चता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छइ० ? गोयमा ! जहन्नोहिनाणी मणुस्से जहन्नोहिनाणिस्स मणूसस्स दब्बट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए तिट्टाण-वडिए, ठिईए तिट्टाणवडिए, वन्नगधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं छट्टाणवडिए, ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले, मणनाणपज्जवेहिं छट्टाणवडिए, तिहिं दसणेहिं छट्टाणवडिए । एव उक्कोसोहिनाणी वि । अजहन्नमणुक्कोसोहिनाणी वि एव चेव, नवरं ओगाहणट्टयाए चउट्टाणवडिए, सट्टाणे छट्टाणवडिए । जहा ओहिनाणी तहा मणपज्जवनाणी वि भाणियव्वे, नवरं ओगाहणट्टयाए तिट्टाणवडिए । जहा आभिणिवोहियनाणी तहा मझथन्नाणी सुयअन्नाणी वि भाणियव्वे । जहा ओहिनाणी तहा विभगनाणी वि भाणि-यव्वे, चक्खुदसणी अचक्खुदसणी य जहा आभिणिवोहियनाणी, ओहिदसणी जहा

बोहिनार्थी । अत्य नाशा तत्प अक्षया नति अत्य अक्षया तत्प नाशा नति  
 अत्य वृत्सना तत्प नाशा नि अक्षया नि । केवल्लाभीर्थ मंत्रे । महुस्तुत्त्वे केवल्ला-  
 पक्षया पक्षया है गोदमा । अर्जुता पक्षया पक्षया । से केवल्लर्थ मंत्रे । एव तुच्छ-  
 केवल्लाभीर्थ महुस्तुत्त्व अर्जुता पक्षया पक्षया है गोदमा । केवल्लाभीर्थ महुस्ते  
 केवल्लाभीर्थ महुस्तुत्त्व वृत्सन्दूयाए तुः पद्मसद्माए तुः ओगाहृत्तद्वाय चरद्वाय-  
 वर्तिए, ठिर्ए लिङ्गपक्षदिए, वर्तीवर्तासपक्षवेदि वृद्धापक्षदिए, केवल्लाभीर्थवेदि  
 केवल्लाभीर्थवेदि य तुः । एवं केवल्लर्थाभीर्थ नहरं सद्गुण ठिर्ए लिङ्गपक्षदिए  
 मातिक्षय । सेतो जीवक्षया ॥ २९५ ॥ अर्जुता पक्षया र्थ मंत्रे । अर्जुता पक्षया है  
 गोदमा । तुच्छिहा पक्षया । तंवहा-हर्विक्षीपक्षया य अर्जुतीवपक्षया य  
 ६ २९६ ॥ महतिक्षीवपक्षया र्थ मंत्रे । अर्जुता पक्षया है गोदमा । एवं तुच्छिहा  
 पक्षया । संवहा-अमतिक्षीए, अमतिक्षीमस्तु वेदे अमतिक्षीमस्तु पद्मा अह  
 मतिक्षीए, अहमतिक्षीमस्तु वेदे अहमतिक्षीमस्तु पद्मा आगाहतिक्षीए,  
 आपासतिक्षीमस्तु वेदे आपासतिक्षीमस्तु पद्मा अद्याचमए ॥ २९७ ॥ हर्वि-  
 अर्जुतीवपक्षया र्थ मंत्रे । अर्जुतीहा पक्षया है गोदमा । अर्जुतीहा पक्षया । तंवहा-  
 दुर्घा यज्ञहेता क्षेत्रपक्षया परमलुपुमाम्ब । त न न नंते । कि संखेजा असंखेजा  
 अर्जुता । गोदमा । भो संखेजा नो असंखेजा अर्जुता । से केवल्लर्थ मंत्रे । एवं  
 तुच्छ- नो संखेजा नो असंखेजा अर्जुता है गोदमा । अर्जुता परमलुपुमाम्ब  
 अर्जुता तुपण्डिय क्षेत्र जाह अर्जुता वृत्सपृष्ठिय द्यौवा अक्षया संखेज्ञशुद्धिया  
 द्यौवा अक्षया असंखेज्ञपृष्ठिय क्षेत्र अर्जुता अध्यतपृष्ठिय द्यौवा से तेजट्टर्थ  
 गोदमा एवं तुच्छ- त न नो संखेजा नो असंखेजा अर्जुता है ॥ २९८ ॥  
 परमलुपुमाम्बार्थ मंत्रे । केवल्ला पक्षया पक्षया है गोदमा । परमलुपुमाम्ब  
 अर्जुता पक्षया पक्षया । से केवल्लर्थ मंत्रे । एवं तुच्छ-परमलुपुमाम्बर्थ अर्जुता  
 पक्षया पक्षया है गोदमा । परमलुपुमाम्बसे परमलुपुमाम्बस इन्द्रद्वायाए तुः पर-  
 सद्माए तुः ओगाहृत्तद्वाय तुः ठिर्ए लिय हीने लिय तुः लिव अम्भदिए । यह हीने  
 असंखिज्ञभाग्नीने वा उत्तिज्ञभाग्नीने वा उत्तिज्ञशुद्धिने वा अम्भ-  
 दिज्ञशुद्धिने वा । यह अम्भदिए असंखिज्ञभाग्नामभम्भदिए वा उत्तिज्ञभाग्न-  
 अम्भदिए वा संखिज्ञशुद्धिने वा असंखिज्ञशुद्धिने वा । कासवहाम्भवेदि  
 लिय हीने लिय तुः लिव अम्भदिए । यह हीने अर्जुतमायहीन वा असंखिज्ञ  
 भाग्नहीन वा संखिज्ञशुद्धिने वा असंखिज्ञशुद्धिने वा

अणतगुणहीणे वा । अह अब्महिए अणतभागअब्महिए वा असखिज्जइभागअब्महिए वा सखिज्जभागअब्महिए वा सखिज्जगुणअब्महिए वा असखिज्जगुणअब्महिए वा अणतगुणअब्महिए वा । एव अवसेसवन्नगधरनफासपज्जवेहि छट्टाणवडिए । फासाण सीयउसिणनिद्धलुक्खेहि छट्टाणवडिए, से तेणद्वेण गोयमा । एव वुच्चइ-‘परमाणुपोगगलाण अणता पज्वा पञ्चता’ । दुपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भंते । एव वुच्चइ० २ गोयमा ! दुपएसिए दुपएसियस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए तुळे, ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुळे सिय अब्महिए । जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्महिए पएसमब्महिए । ठिईए चउट्टाणवडिए, वन्नाईहि उवरिलेहि चउफासेहि य छट्टाणवडिए । एव तिपएसिए वि, नवर ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुळे सिय अब्महिए । जइ हीणे पएसहीणे वा दुपएसहीणे वा, अह अब्महिए पएसमब्महिए वा दुपएसमब्महिए वा । एव जाव दसपएसिए, नवर ओगाहणाए पएसपरिचुङ्गी कथब्वा जाव दसपएसिए, नवर नवपएसहीणति । सखेजपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते । एव वुच्चइ० २ गोयमा ! सखेजपएसिए सखेजपएसियस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए सिय हीणे सिय तुळे सिय अब्महिए । जइ हीणे सखेजभागहीणे वा सखेजगुणहीणे वा, अह अब्महिए एवं चेव । ओगाहणद्वयाए वि दुट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासपज्जवेहि य छट्टाणवडिए । असखिज्जपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते । एवं वुच्चइ० २ गोयमा ! असखिज्जपएसिए खधे असखिज्जपएसियस्स खधस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए चउट्टाणवडिए, ओगाहणद्वयाए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि य छट्टाणवडिए । अणतपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते । एव वुच्चइ० २ गोयमा ! अणतपएसिए खधे अणतपएसियस्स खधस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए छट्टाणवडिए, ओगाहणद्वयाए तुळे, ठिईए चउट्टाणवडिए, चउट्टाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि छट्टाणवडिए ॥२६९॥ एगपएसोगाढाण पोगगलाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते । एव वुच्चइ० २ गोयमा ! एगपएसोगाढे पोगले एगपएसोगाढस्स पोगगलस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए छट्टाणवडिए, ओगाहणद्वयाए तुळे, ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि छट्टाणवडिए । एव दुपएसोगाढे वि । सखिज्जपएसोगाढाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते । एवं वुच्चइ० २ गोयमा ! सखिज्जपएसोगाढे पोगले सखिज्जपएसोगाढस्स पोगगलस्स दब्बद्वयाए तुळे, पएसद्वयाए

छट्टापवदिए, जोयाहजट्टायाए उठापवदिए, ठिंए चरहुपवदिए, कणाइउपवदिए-  
चरपवसेहि य छट्टापवदिए। असेजेजपएसोगडाग पुछता। गोयमा। अर्थता फज्जा  
पत्ता। से केन्द्रेय भंते। एवं तुच्छ ! गोयमा। असेजेजपएसोगडै पोगड अस-  
जेजपएसोगडस्त पोगडस्त दम्हट्टायाए तुँडे पएसहुयाए छट्टापवदिए, जोगाहपट्ट  
याए चरहुपवदिए, ठिंए चरहुपवदिए, कणाइउपट्टासेहि छट्टापवदिए॥२७॥  
एगसमयविद्यार्थ पुच्छ। गोयमा। अर्थता फज्जा पत्ता। से केन्द्रेय भंते। एवं  
तुच्छ ! गोयमा। एगसमयविद्यए पोगडे एगसमयविद्यस्त पोगडस्त दम्हट्टायाए  
तुँडे पएसहुयाए छट्टापवदिए, जोगाहजट्टायाए चरहुपवदिए ठिंए तुँडे, वज्जाए  
अहुपवसेहि छट्टापवदिए। एवं जाव दससमयविद्यार्थ एवं अव  
नवरे ठिंए तुच्छपवदिए। असेजेजसमयविद्यार्थ एवं चेव नवरे ठिंए चरहुप  
वदिए॥२८॥ एकगुणवत्तमार्थ पुच्छ। गोयमा। अर्थता फज्जा पत्ता। से  
केन्द्रेय भंते। एवं तुच्छ ! गोयमा। एकगुणवत्तम्हय पोगडे एकगुणवत्तम्हस्त  
पोगडस्त दम्हट्टायाए तुँडे पएसहुयाए छट्टापवदिए, जोयाहजट्टायाए चरहुपवदिए,  
ठिंए चरहुपवदिए, कणाइउपट्टासेहि तुँडे नवसेहि वज्जावरसातपवदेहि  
छट्टापवदिए, वज्जाहि फासेहि छट्टापवदिए। एवं जाव दसगुणवत्तम्हय। सेजेजगुण  
वत्तम्हय वि एवं चेव नवरे सद्गुणे तुच्छपवदिए। एवं असेजेजपुणवत्तम्हय वि नवरे  
सद्गुणे चरहुपवदिए। एवं अर्थतगुणवत्तम्हय वि नवरे सद्गुणे छट्टापवदिए। एवं  
जहा चरहुपवदस्त वत्तम्हया मरिया तहा सेवाय वि वज्जावरसातपवदार्थ वत्तम्हया  
मार्कियम्हा जाव अर्थतगुणवत्तम्हये॥२९॥ जहागोयाहजम्हार्थ भंते। तुपएमियार्थ  
पुच्छ। गोयमा। अर्थता फज्जा पत्ता। से केन्द्रेय भंते। एवं तुच्छ ! गोयमा।  
जहागोयाहजए तुपएलिए वधि जहागोयाहजस्त तुपएस्त दम्हट्टायाए तुँडे  
पएसहुयाए तुँडे जोयाहजट्टायाए तुँडे ठिंए चरहुपवदिए, कणाइउपट्टासेहि  
छट्टापवदिए, सेवावरसातपवदस्तपवदेहि छट्टापवदिए, धीकटिलमिलमुक्तपवासपवदेहि  
छट्टापवदिए, से तेन्द्रेय गोयमा। एवं तुच्छ—‘जहागोयाहजम्हार्थ तुपएमियार्थ चम्ह-  
म्हार्थ अर्थता फज्जा पत्ता’। जहासेगाहनए वि एवं चेव। अजहरम्हुक्तोमोयाह  
जओ नखि। जहागोयाहजम्हार्थ भंते। तुपएमियार्थ पुच्छ। धायमा। वज्जाता फज्जा  
पत्ता। से केन्द्रेय भंते। एवं तुच्छ ! गोयमा। जहा तुपएलिए जहागोयाहजए,  
ठम्हकोतायाहजए वि एवं अव एवं अवहुपवत्तम्हयोगद्वानए वि। जहागोयाहजम्हार्थ  
भंते। चहुपएमियार्थ पुच्छ। गोयमा। जहा जहागोयाहजए तुपएलिए तहा अव्वो-  
गाहजए चहुपएलिए, एवं जहा उक्तोयोगाहजए तुपएलिए तहा उक्तोतायाहजए

चउप्पएसिए वि । एव अजहन्मणुकोसोगाहणए वि चउप्पएसिए, णवर ओगाहणद्वयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे पएमहीणे, अह अब्भहिए पएम-अब्भमहिए । एव जाव दसपएसिए ऐयव्व, णवर अजहणुकोसोगाहणए पएसपरिवुही कायव्वा जाव दसपएसियस्स मत्त पएसा परिवद्विजति । जहन्नोगाहणगाण भते ! सखेजपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छ० २ गोयमा ! जहन्नोगाहणए सखेजपएसिए जहन्नोगाहणगस्स सखेजपएसियस्स दब्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए दुद्वाणवडिए, ओगाहणद्वयाए तुल्ले, ठिईए चउद्वाणवडिए, वण्णाइचउफासपज्जवेहि य छद्वाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणए वि । अजहन्मणुक्को-सोगाहणए वि एव चेव, णवर सद्वाणे दुद्वाणवडिए । जहन्नोगाहणगाण भते ! असखिजपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छ० २ गोयमा ! जहन्नोगाहणए असखिजपएसिए खधे जहन्नोगाहणगस्स असखिज-पएसियस्स खधस्स दब्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए चउद्वाणवडिए, ओगाहणद्वयाए तुल्ले, ठिईए चउद्वाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लफासेहि य छद्वाणवडिए । एव उक्कोसोगाहणए वि । अजहन्मणुक्कोसोगाहणए वि एव चेव, नवर सद्वाणे चउद्वाणवडिए । जहन्नोगाहणगाण भते ! अणतपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छ० २ गोयमा ! जहन्नोगाहणए अणतपएसिए खधे जहन्नोगाहणस्स अणतपए-सियस्स खधस्स दब्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए छद्वाणवडिए, ओगाहणद्वयाए तुल्ले, ठिईए चउद्वाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि छद्वाणवडिए । उक्कोसोगाहणए वि एव चेव, नवर ठिईए वि तुल्ले । अजहन्मणुक्कोसोगाहणगाण भते ! अणतपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छ० २ गोयमा ! अजहन्मणुक्कोसोगाहणए अणतपएसिए खधे अजहन्मणुक्कोसोगाहणगस्स अण-तपएसियस्स खधस्स दब्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए छद्वाणवडिए, ओगाहणद्वयाए चउद्वाणवडिए, ठिईए चउद्वाणवडिए, वण्णाइअद्वयासेहि छद्वाणवडिए ॥ २७३ ॥ जहन्नठिड्याण भते ! परमाणुपुगलाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छ० २ गोयमा ! जहन्नठिईए परमाणुपोगले जहन्नठिड्यस्स परमाणुपोगलस्स दब्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए तुल्ले, ओगाहणद्वयाए तुल्ले, ठिईए तुल्ले, वण्णाइदुक्कासेहि य छद्वाणवडिए । एव उक्कोसठिईए वि । अजहन्मणुक्कोसठिईए वि एव चेव, नवर ठिईए चउद्वाणवडिए । जहन्नठिड्याण दुपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्चता । से केणट्टेण भते ! एव वुच्छ० २ गोयमा ! जहन्नठिईए दुपएसिए जहन्नठिड्यस्स दब्बद्वयाए तुल्ले, पएसद्वयाए तुल्ले, ओगाहण

द्वयाप सिय हीने सिय तुँडे सिय अम्भाहिए । यह हीने पएसहीने भह अम्भाहिए पएसमम्भाहिए । ठिंए तुँडे पञ्चामकरपासेहि य छट्टाप्पवहिए । एवं उहोस-ठिक्कए थि । अबहमसुहोसठिक्कए थि एवं चेव नहर ठिर्इए चउट्टाप्पवहिए । एवं चाल इसपएसिए, नहर पएसपरिखुही गोम्बा । ओगाहणद्वयाए तिसु थि गमसु चाल दसपएसिए, एवं पएसा परिवहिक्कांति । जहाज्जिक्काल भरे । संधिजप-सियार्थ पुच्छ । गोम्बा । अर्धता पञ्चा पलता । से केजट्टौर्य भरे । एवं तुच्छ । गोम्बा । जहाज्जिक्कए संधिजपएसिए खावे जहाज्जिक्कियस्स संकिज्जपरिषियस्स संकस्स दम्भद्वयाए तुँडे पएसद्वयाए तुँडाप्पवहिए, ओगाहणद्वयाए तुँडाप्पवहिए, ठिंए तुँडे जम्याहचउफासेहि य छट्टाप्पवहिए । एवं उहोसठिक्कए थि । अबहमसुहोसठिक्कए थि एवं चेव नहर ठिर्इए चउट्टाप्पवहिए । जहाज्जिक्कार्थ अर्धतपएसियार्थ पुच्छ । गोम्बा । अर्धता पञ्चा पलता । से केजट्टौर्य भरे । एवं तुच्छ । गोम्बा । जहाज्जिक्कए अर्धतपएसिए जहाज्जिक्कियस्स अर्धतपएसियस्स दम्भद्वयाए तुँडे पएसद्वयाए तुँडाप्पवहिए, ओगाहणद्वयाए चउट्टाप्पवहिए ठिंए तुँडे जम्याहउज्जिक्क-उफासेहि य छट्टाप्पवहिए । एवं उहोसठिक्कए थि । अबहमसुहोसठिक्कए थि एवं चेव नहर ठिर्इए चउट्टाप्पवहिए । जहाज्जिक्कार्थ अर्धतपएसियार्थ पुच्छ । गोम्बा । अर्धता पञ्चा पलता । से केजट्टौर्य भरे । एवं तुच्छ । गोम्बा । जहाज्जिक्कए अर्धतपएसिए जहाज्जिक्कियस्स अर्धतपएसियस्स दम्भद्वयाए तुँडे पएसद्वयाए तुँडाप्पवहिए, खोगाहणद्वयाए चउट्टाप्पवहिए, ठिंए तुँडे जम्याहउपसहेहि व छट्टाप्प-वहिए । एवं उहोसठिक्कए थि । अबहमसुहोसठिक्कए थि एवं चेव नहर ठिर्इए चउट्टाप्पवहिए ॥ २७४ ३ जहाज्जुप्रभवक्तव्यार्थ परमाणुप्रमाणर्थ पुच्छ । गोम्बा । अर्धता पञ्चा पलता । से केजट्टौर्य भरे । एवं तुच्छ । गोम्बा । जहाज्जुप्रभवक्तव्य-परमाणुप्रमाणके जहाज्जुप्रभवक्तव्यस्स परमाणुप्रमाणस्स दम्भद्वयाए तुँडे पएसद्वयाए तुँडे ओगाहणद्वयाए तुँडे ठिर्इए चउट्टाप्पवहिए, कास्माभवज्ञभेहि तुँडे असेहा कला जरिय । गंवरउप्रभवप्रवेहि व छट्टाप्पवहिए । एवं उक्केसेहाज्जुप्रभवक्तव्यर्थ थि । एकमाह-हचमलुक्केसेहाज्जुप्रभवक्तव्यर्थ थि यहर उहोसे छट्टाप्पवहिए । जहाज्जुप्रभवक्तव्यार्थ भरे । उपरसियार्थ पुच्छ । गोम्बा । अर्धता पञ्चा पलता । से केजट्टौर्य भरे । एवं तुच्छ । गोम्बा । जहाज्जुप्रभवक्तव्य तुपएसिए जहाज्जुप्रभवक्तव्यस्स तुपएसियस्स दम्भद्वयाए तुँडे पएसद्वयाए तुँडे ओगाहणद्वयाए तिय हीने तिय तुँडे सिय अम्भाहिए । यह हीने पएसहीने भह अम्भाहिए पएसमम्भाहिए । ठिर्इए चउट्टाप्पवहिए, कास्म-वक्तव्यप्रवेहि तुँडे असेहाज्जाइउत्तिक्कियउत्तासेहि य छट्टाप्पवहिए । एवं उक्कास-

गुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवर सद्बाणे छट्टाणवडिए । एवं जाव दसपएसिए, नवर पएसपरिवृद्धी ओगाहणाए तहेव । जहन्नगुणकालयाण भते । सखिजपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्जता । से केणद्वेण भते । एवं वुच्चइ० २ गोयमा ! जहन्नगुणकालए सखिजपएसिए जहन्नगुणकालयस्स सखिजपएसियस्स दब्बट्ट्याए तुळे, पएसद्ब्याए दुट्टाणवडिए, ओगाहणद्ब्याए दुट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, कालवन्नपज्वेहि तुळे, अवसेसेहि वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि य छट्टाणवडिए । एव अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि, नवर सद्बाणे छट्टाणवडिए । जहन्नगुणकालयाण भते । असखिजपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्जता । से केणद्वेण भते । एवं वुच्चइ० २ गोयमा ! जहन्नगुणकालए असखिजपएसिए जहन्नगुणकालयस्स असखिजपएसियस्स दब्बट्ट्याए तुळे, पएसद्ब्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, कालवन्नपज्वेहि तुळे, अवसेसेहि वण्णाइउवरिल्लचउफासेहि य छट्टाणवडिए, ओगाहणद्ब्याए चउट्टाणवडिए । एव उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवर सद्बाणे छट्टाणवडिए । जहन्नगुणकालयाण भते । अणतपएसियाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्जता । से केणद्वेण भते । एवं वुच्चइ० २ गोयमा ! जहन्नगुणकालए अणतपएसिए जहन्नगुणकालयस्स अणतपएसियस्स दब्बट्ट्याए तुळे, पएसद्ब्याए छट्टाणवडिए, ओगाहणद्ब्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, कालवन्नपज्वेहि तुळे, अवसेसेहि वण्णाइअट्टफासेहि य छट्टाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं सद्बाणे छट्टाणवडिए । एव नीललोहियहालिद्दसुक्षिल्लसु दुविभगधुविभगधतितकहुकसायाविलमहुररसपज्वेहि य वत्तब्बया भाणियव्वा, नवरं परमाणुपोगलस्स सुविभगधस्स दुविभगधो न भण्णइ, दुविभगधस्स सुविभगधो न भण्णइ, तित्तस्स अवसेस न भण्णइ, एव कहुयाईण वि, अवसेस त चेव । जहन्नगुणक्क्खडाण अणतपएसियाण खधाण पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्जता । से केणद्वेण भते । एवं वुच्चइ० २ गोयमा ! जहन्नगुणक्क्खडे अणतपएसिए जहन्नगुणक्क्खडस्स अणतपएसियस्स दब्बट्ट्याए तुळे, पएसद्ब्याए छट्टाणवडिए, ओगाहणद्ब्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, वञ्चगधरसेहि छट्टाणवडिए, क्क्खडफासपज्वेहि तुळे, अवसेसेहि सत्तफासपज्वेहि छट्टाणवडिए । एव उक्कोसगुणक्क्खडे वि । अजहन्नमणुक्कोसगुणक्क्खडे वि एवं चेव, नवर सद्बाणे छट्टाणवडिए । एव मउयगुस्यलहुए वि भाणियव्वे । जहन्नगुणसीयाण भते । परमाणुपोगलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणता पज्वा पञ्जता । से केणद्वेण भते । एवं वुच्चइ० २ गोयमा ! जहन्नगुणसीए परमाणु

पोगाके बहानगुणसीकस्त परमाणुगमगमस्त दमद्वयाए तुमे, परस्तद्वयाए तुमे सोया-  
हन्द्वयाए तुमे ठिंए अठद्वयवदिए बजारधरतेहि छद्वयवदिए, सीबजारफज्जेहि  
य तुमे उसिजपासो न भयाह, नियम्युक्तवासासपज्जेहि व छद्वयवदिए । एवं उक्तो  
संगुणसीए वि । अबहानमयुक्तोसंगुणसीए वि एवं चेव नवर सद्वये छद्वयवदिए ।  
अबहानगुणसीवार्त दुपएसिवार्त पुच्छा । योकमा । अर्जन्ता पज्जवा पक्षता । से केण्टेन  
भेतु । एवं तुच्छ । गोकमा । अहानगुणसीए दुपएसिए बहानगुणसीवस्त दुपएसिकस्त  
दमद्वयाए तुमे परस्तद्वयाए तुमे बोगाहन्द्वयाए तिव हीने तिव तुमे तिव भयमहिए ।  
बह हीमे फ्रसहीमे भह भयमहिए परस्तवमहिए । ठिंए अठद्वयवदिए, वह-  
गवरसपज्जेहि छद्वयवदिए, सीबज्जसपज्जेहि तुमे उसिजनियम्युक्तप्रकाशपज्जेहि  
छद्वयवदिए । एवं उक्तोसंगुणसीए वि । अबहानमयुक्तोसंगुणसीए वि एवं चेव नवर  
सद्वये छद्वयवदिए । एवं आव दसपदिए, नवर बोयाहन्द्वयाए पपतपरिपूर्वी  
क्षयव्या बाव दसपएसिवस्त नव पास्ता तुम्हीवेति । अहानगुणसीवार्त संकिळकर-  
सिमार्त पुच्छ । गोकमा । अर्जन्ता पज्जवा पक्षता । से केण्टेन भेतु । एवं तुच्छ ।  
गोकमा । अहानगुणसीए संकिळकरएसिए अहानगुणसीवस्त संकिळकरएसिमस्त दमद्वयाए  
तुमे परस्तद्वयाए तुम्हीवदिए, बोगाहन्द्वयाए तुम्हीवदिए, ठिंए अठद्वयवदिए,  
वज्जाईहि छद्वयवदिए, सीम्यमस्तपज्जेहि तुमे उसिजनियम्युक्तेहि छद्वयवदिए ।  
एवं उक्तोसंगुणसीए वि । अबहानमयुक्तोसंगुणसीए वि एवं चेव नवर सद्वये  
छद्वयवदिए । अहानगुणसीवार्त असंकिळकरएसिमार्त पुच्छ । योकमा । अर्जन्ता  
पज्जवा पक्षता । से केण्टेन भेतु । एवं तुच्छ । गोकमा । अहानगुणसीए असंकिळ-  
पएसिए अहानगुणसीवस्त असंकिळपएसिवस्त दमद्वयाए तुमे परस्तद्वयाए अठद्वय-  
वदिए, बोयाहन्द्वयाए अठद्वयवदिए, ठिंए अठद्वयवदिए, क्षयप्रफज्जेहि  
छद्वयवदिए, सीबजारसपज्जेहि तुमे उसिजनियम्युक्तवासासपज्जेहि छद्वयवदिए ।  
एवं उक्तोसंगुणसीए वि । अबहानमयुक्तोसंगुणसीए वि एवं चेव नवर सद्वये छद्वय-  
वदिए । अहानगुणसीवार्त अर्जन्तप्रसिद्धार्त पुच्छ । योकमा । अर्जन्ता पज्जवा पक्षता ।  
से केण्टेन भेतु । एवं तुच्छ । गोकमा । अहानगुणसीए अर्जन्तप्रसिद्धए अहानगुणसी-  
वस्त अर्जन्तप्रसिद्धस्त दमद्वयाए तुमे परस्तद्वयाए छद्वयवदिए, बोगाहन्द्वयाए  
अठद्वयवदिए, ठिंए अठद्वयवदिए, वज्जाईपज्जेहि छद्वयवदिए । एवं बहोसंगुणसीए वि ।  
अबहानमयुक्तोसंगुणसीए वि एवं चेव नवर सद्वये छद्वयवदिए । एवं उसिजनिय  
हुक्ते अहा दीए । परमाणुप्रेम्यमस्त तोहेव पडिक्कलो सम्बेति न मल्ल । ति

भाणियव्व ॥ २७५ ॥ जहन्नपएसियाण भते ! खधाण पुच्छा । गोयमा ! अणता  
पज्वा पञ्चता । से केणद्वेण भते ! एवं चुच्चइ० २ गोयमा ! जहन्नपएसिए खवे  
जहन्नपएसियस्स खंवस्स दब्बट्ट्याए तुल्ले, पएसट्ट्याए तुल्ले, ओगाहणट्ट्याए सिय  
हीणे सिय तुल्ले सिय अब्महिए । जइ हीणे पएसहीणे, अह अब्महिए पएसअब्म-  
हिए । ठिईए चउट्टाणवडिए । वज्ञगवरमउवरिल्लचउफासपज्जवेहि छट्टाणवडिए ।  
उक्तोसपएसियाण भते ! खधाणं पुच्छा । गोयमा ! अणता० । से केणद्वेण भते !  
एव चुच्चइ० २ गोयमा ! उक्तोसपएसिए खधे उक्तोसपएसियस्स खधस्स दब्बट्ट्याए  
तुल्ले, पएसट्ट्याए तुल्ले, ओगाहणट्ट्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाड-  
अट्टकासपज्जवेहि य छट्टाणवडिए । अजहन्नमण्कोसपएसियाण भते ! खधाण केवडया  
पज्वा पञ्चता २ गोयमा ! अणता० । से केणद्वेण० २ गोयमा ! अजहन्नमण्कोसपए-  
सिए खधे अजहन्नमण्कोसपएसियस्स खधस्स दब्बट्ट्याए तुल्ले, पएसट्ट्याए छट्टाण-  
वडिए, ओगाहणट्ट्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाइअट्टकासपज्ज-  
वेहि य छट्टाणवडिए ॥ २७६ ॥ जहन्नोगाहणगाण भते ! पोगलाण पुच्छा ।  
गोयमा ! अणता० । से केणद्वेण० २ गोयमा ! जहन्नोगाहणए पोगले जहन्नोगाहण-  
गस्स पोगलस्स दब्बट्ट्याए तुल्ले, पएसट्ट्याए छट्टाणवडिए, ओगाहणट्ट्याए तुल्ले,  
ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाइउवरिल्लफासेहि य छट्टाणवडिए । उक्तोसोगाहणए वि  
एव चेव, नवर ठिईए तुले । अजहन्नमण्कोसोगाहणगाण भते ! पोगलाण पुच्छा ।  
गोयमा ! अणता० । से केणद्वेण० २ गोयमा ! अजहन्नमण्कोसोगाहणए पोगले  
अजहन्नमण्कोसोगाहणगस्स पोगलस्स दब्बट्ट्याए तुल्ले, पएसट्ट्याए छट्टाणवडिए,  
ओगाहणट्ट्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए, वण्णाइअट्टकासपज्जवेहि य  
छट्टाणवडिए ॥ २७७ ॥ जहन्नठिइयाण भते ! पोगलाण पुच्छा । गोयमा !  
अणता० । से केणद्वेण० २ गोयमा ! जहन्नठिइए पोगले जहन्नठिइयस्स पोगलस्स  
दब्बट्ट्याए तुल्ले, पएसट्ट्याए छट्टाणवडिए, ओगाहणट्ट्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए  
तुल्ले, वण्णाइअट्टकासपज्जवेहि य छट्टाणवडिए । एव उक्तोसठिइवि । अजहन्नमण्को-  
सठिइवि एव चेव, नवर ठिईए वि चउट्टाणवडिए ॥ २७८ ॥ जहन्नगुणकालयाण  
भते ! पोगलाण केवद्या पज्वा पञ्चता २ गोयमा ! अणता० । से केणद्वेण० २  
गोयमा ! जहन्नगुणकालए पोगले जहन्नगुणकालयस्स पोगलस्स दब्बट्ट्याए तुल्ले,  
पएसट्ट्याए छट्टाणवडिए, ओगाहणट्ट्याए चउट्टाणवडिए, ठिईए चउट्टाणवडिए,  
कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वन्नगवरसफासपज्जवेहि य छट्टाणवडिए, से तेणद्वेण  
गोयमा ! एव चुच्चइ—‘जहन्नगुणकालयाण पोगलाण अणता पज्वा पञ्चता’ । एव  
२४ सुत्ता०

उहोयगुणप्रलक्षणि । अग्रहसमुद्धोयगुणवास्तवं विद्युत् च भूतं सद्गुण-  
वाहिण । एवं यहा कामवापवदार्थं वाक्यवा मनिवा तथा सदाच विवक्षयत-  
फसार्थं वाक्यवा भावियम्बा जाव भग्रहसमुद्धोयगुणे सद्गुणे उद्गुणवाहिण ।  
सर्वं हविमीवपवदार्थ । ऐति भजीवपवदार्थ ॥ २७९ ॥ यज्ञपर्याप्तं भगवाईप  
पौर्वमेविसेसपर्यं समर्थ ॥

बारस उद्गुणवाई समर्थर्ते एषाचमय इति य । उद्गुणं वरभियाऽर्थं च व्युत्प-  
न्नायरिता ॥ १ ॥ निरुपर्यं च भूते । केवद्व वाखं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥  
गोवमा ॥ उहोर्यं एवं समर्थं उहोर्येवं बारस मुहुता । विरिमाग्नि च भूते । केवद्वं  
वाखं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्यं एवं समर्थं उहोर्येवं बारस  
मुहुता । मुकुरवाई च भूते । केवद्वं वाखं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥  
उहोर्यं एवं समर्थं उहोर्येवं बारस मुहुता । वेवयाई य भूते । केवद्वं वाखं  
विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं बारस मुहुता ॥  
विदिग्नाई च भूते । केवद्वं वाखं विरहिमा विज्ञप्त्यापं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं  
एवं समर्थं उहोर्येवं उद्गुणाता ॥ २८ ॥ निरुपर्यं च भूते । केवद्वं वाखं विर-  
हिमा उद्गुणापं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्यं एवं समर्थं उहोर्येवं बारस मुहुता ॥  
विरियाग्नि च भूते । केवद्वं वाखं विरहिमा उद्गुणापं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं  
एवं समर्थं उहोर्येवं बारस मुहुता । मुख्यवाई च भूते । केवद्वं वाखं विरहिमा  
उद्गुणापं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं बारस मुहुता । वेवयाई  
च भूते । केवद्वं वाखं विरहिमा उद्गुणापं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्यं एवं समर्थं  
उहोर्येवं बारस मुहुता ॥ १ दारै ॥ २८१ ॥ रवमप्यमापुद्विनेत्रया च भूते ।  
केवद्वं वाखं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं  
वडम्बीर्ते मुहुता । उद्गुणप्यमापुद्विनेत्रया च भूते । केवद्वं वाखं विरहिमा उवकाए-  
र्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं उद्गुणार्थिकायि । वाक्यप्य-  
मापुद्विनेत्रया च भूते । केवद्वं व्यसं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥  
उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं व्यहमासि । वृक्षप्यमापुद्विनेत्रया च भूते । केवद्वं  
वाखं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं वाखं ।  
वृक्षप्यमापुद्विनेत्रया च भूते । केवद्वं वाखं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥  
उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं दो मासा । उद्गुणप्यमापुद्विनेत्रया च भूते । केवद्वं व्यसं  
विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥ उहोर्येवं एवं समर्थं उहोर्येवं चतारि मासा ।  
उद्गुणप्यमापुद्विनेत्रया च भूते । केवद्वं व्यसं विरहिमा उवकाएर्यं पक्षता ॥ गोवमा ॥

जहस्तेण प्रग ममय, उष्णोसेण व्यसाया ॥ २८२ ॥ अमुकुमारा ण भंते । केवट्यं कालं  
विरहिया उवाएण पश्चता ? गोयमा । जहस्तेण प्रग ममय, उष्णोसेण चउच्चीमं  
सुहृत्ता । बागकुमारा ण भंते । केवट्यं कालं विरहिया उववाण्णं पश्चता ? गोयमा ।  
जहस्तेण प्रग ममय, उष्णोसेण चउच्चीमं सुहृत्ता । एवं शुभमुमाराणं विज्ञुमाराण  
अविग्रुमागण धीवकुमागण विग्रुमाराण उद्दिकुमाराणं वाऽकुमाराण थणिय-  
कुमागण य पर्तेयं जहस्तेण प्रग ममय, उष्णोसेण चउच्चीमं सुहृत्ता ॥ २८३ ॥  
पुद्विकाट्या ण भंते । केवट्यं कालं विरहिया उववाण्णं पश्चता ? गोयमा । अण-  
गमयमपिरहियं उववाएण पश्चता । एवं आउकाट्या वि नेडकाट्या वि वाउकाट्या  
वि वणस्पदकाट्या वि अणुगमयं अविग्रहिया उववाएणं पश्चता ॥ २८४ ॥ वैर्दीया  
ण भंते । केवट्यं कालं विरहिया उववाण्णं पश्चता ? गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं,  
उष्णोसेण अनोसुहृत्ता । एवं तेष्ठंदियचउर्भिंदिया ॥ २८५ ॥ मसुन्नियमपर्विनियतिरिक्ष-  
जोणिया ण भंते । केवट्यं कालं विरहिया उववाण्णं पश्चता ? गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं,  
उष्णोसेण अनोसुहृत्ता । गन्नत्रष्ठंतियपञ्चदियतिरिक्षजोणिया ण भंते ।  
केवट्यं कालं विरहिया उववाण्णं पश्चता ? गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेणं  
वारन सुहृत्ता ॥ २८६ ॥ संमुन्नियमणुगमा ण भंते । केवट्यं कालं विरहिया उव-  
वाण्णं पश्चता ? गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण चउच्चीमं सुहृत्ता । गन्न-  
वङ्गनियमणुरना ण भंते । केवट्यं कालं विरहिया उववाण्णं पश्चता ? गोयमा । जहस्तेण  
एवं ममयं, उष्णोसेण वारन सुहृत्ता ॥ २८७ ॥ ग्राणमंतराणं पुच्छा । गोयमा ।  
जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण चउच्चीमं सुहृत्ता । जोटियाणं पुच्छा । गोयमा ।  
जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण चउच्चीमं सुहृत्ता । गोहम्बे कप्ते देवा ण भंते ।  
केवट्यं कालं विरहिया उववाण्णं पश्चता ? गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेणं  
चउच्चीमं सुहृत्ता । देवाणे कप्ते उवाणं पुच्छा । गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं,  
उष्णोसेण चउच्चीमं सुहृत्ता । गणकुमारे ऋषे उवाणं पुच्छा । गोयमा । जहस्तेण  
एवं ममयं, उष्णोसेण एव राष्ट्रियाद वीताद सुहृत्ताद । माहिंद कप्ते उवाणं पुच्छा ।  
गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण वारन गर्हियाद दग सुहृत्ताद । वंशन्योण  
दगाण पुच्छा । गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण अदर्तंरीमं गर्हियाद ।  
लंगदगाण पुच्छा । गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण पणगार्वागं गर्हियाद ।  
मासगुफ्तंवाण सुच्छा । गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण अगीक गर्हियाद ।  
गद्वासं दवाण पुच्छा । गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण राष्ट्रियमय ।  
आणयंदवाण पुच्छा । गोयमा । जहस्तेण प्रग ममयं, उष्णोसेण भूतेजा माया ।

पापदेवार्थं पुण्यम् । गोकमा । अहसेष एवं समये उष्णोसेष संदेशा मासा । वारजदेवार्थं पुण्यम् । गोकमा । अहसेष एवं समये उष्णोसेष संदिग्धा वासा । अनुग्रहदेवार्थं पुण्यम् । गोकमा । अहसेष एवं समये उष्णोसेष संदिग्धा वासा । दिन्दिमगेमिकार्थं पुण्यम् । गोकमा । अहसेष एवं समये उष्णोसेष संदिग्धार्थं काम-सप्ताहं । मतिममगेमिकार्थं पुण्यम् । गोकमा । अहसेष एवं समये उष्णोसेष संदिग्धार्थं वास्तवाइस्तावृ । उष्णरिम्मोमिकार्थं पुण्यम् । गोकमा । अहसेष एवं समये उष्णोसेष संदिग्धार्थं वास्तवाइस्तावृ । विष्णवेदवर्तवर्तभफलिमार्थं पुण्यम् । गोकमा । अहसेष एवं समये उष्णोसेष संदिग्धार्थं वास्तवाइस्तावृ । उष्णोसेष असेषेषं वासं । स्त्रिदुर्दिदगार्वा वं भेत । केषदैर्यं कामं विरहिता उष्णवार्णी पक्षाता ॥ गोकमा ॥ अहसेष एवं समये उष्णोसेषं परिज्ञाकमस्म एवं संदिग्धार्थांमार्गं ॥ २८८ ॥ लिङ्गा वं भेत । केषदैर्यं कामं विरहिता मिज्ञमापृ पक्षाता ॥ गोकमा ॥ अहसेष एवं समये उष्णोसेषं छम्मागा ॥ २८९ ॥ रथवर्णमापुडिनिरहस्या वं भेत । केषदैर्यं कामं विरहिता उष्णवार्णी पक्षाता ॥ गोकमा ॥ अहसेष एवं समये उष्णोसेषं-उष्णवार्णी सुगुला । एवं विहृतवार्णी उष्णवार्णी वि भागिकमा जाव अनुत्तरोवदवृत्यति नवरं विहृतवर्णमापिएतु 'वर्णं'ति अहिमातो जावत्यो ॥ ३ द्वारा ॥ २९ ॥ नेत्रज्ञा वं भेत । कि संतरं उष्णवार्णी विरहरं उष्णवार्णीति ॥ गोकमा ॥ संतरं पि उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति । विरह करद्वीपिता वं भेत । कि संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति । मङ्गुस्मा वं भेत । कि संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति । कि संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ गोकमा ॥ संतरं पि उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति । वैषा वं भेत । कि संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ गोकमा ॥ संतरं पि उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ २९१ ॥ रथवर्णमापुडिनिरहस्या वं भेत । कि संतरं उष्णवर्णंति ॥ २९२ ॥ अनुग्रहमारा वं एवा वं भेत । कि संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ गोकमा ॥ संतरं पि उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति । एवं जाव परिज्ञमारा संतरं पि उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ २९३ ॥ पुडिनिरहस्या वं भेत । कि संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ गोकमा ॥ तो संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति । एवं जाव वस्त्राददया तो संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति । वैरिया वं भेत । कि संतरं उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ गोकमा ॥ संतरं पि उष्णवर्णंति विरहरं पि उष्णवर्णंति ॥ एवं जाव परिज्ञतिरिक्तात्रोविया ॥ ३ ४ ॥ मङ्गुस्मा वं भेत । कि

सतर उववज्जति, निरतर उववज्जति ? गोयमा । सतर पि उववज्जति, निरतरं पि उववज्जति । एव वाणमतरा जोइसिया सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदवभलोयलतग-  
महासुक्षसहस्तारआणयपाणयआरणच्छुयहिंडिगेविजगमज्जिमगेविजगउवरिमगेविज-  
गविजयवेजयतजयतअपराजियसब्बद्विसद्वदेवा य सतर पि उववज्जति निरतर पि  
उववज्जति ॥ २९५ ॥ सिद्धा ण भते ! किं सतर सिज्जति, निरंतर सिज्जति ?  
गोयमा । सतर पि सिज्जति, निरतर पि सिज्जति ॥ २९६ ॥ नेरइया ण भते ! किं  
सतरं उब्बद्वति, निरंतर उब्बद्वति ? गोयमा । सतरं पि उब्बद्वति, निरतर पि उब्बद्वति ।  
एव जहा उववाओ भणिओ तहा उब्बद्वणा वि सिद्धवज्जा भाणियव्वा जाव वेमाणिया,  
नवर जोइसियवेमाणिएसु ‘चयण’ति अहिलावो कायब्बो ॥ ३ दार ॥ २९७ ॥  
नेरइया णं भते ! एगसमएण केवइया उववज्जति ? गोयमा ! जहज्जेण एक्को वा दो  
वा तिन्नि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, एव जाव अहेसत्त-  
माए ॥ २९८ ॥ असुरकुमारा ण भते ! एगसमएण केवइया उववज्जति ? गोयमा !  
जहज्जेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा । एवं  
नागकुमारा जाव थणियकुमारा वि भाणियव्वा ॥ २९९ ॥ पुढिकाइया ण भते !  
एगसमएण केवइया उववज्जति ? गोयमा ! अणुसमय अविरहिय असखेज्जा उवव-  
ज्जति, एव जाव वाउकाइया । वणस्सइकाइया ण भते ! एगसमएण केवइया उवव-  
ज्जति ? गोयमा ! सट्टाणुववाय पहुच अणुसमय अविरहिया अणता उववज्जति,  
परट्टाणुववाय पहुच अणुसमय अविरहिया असखेज्जा उववज्जति । वेइदिया ण भते !  
एगसमएण केवइया उववज्जति ? गोयमा ! जहज्जेण एगो वा दो वा तिन्नि वा,  
उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा । एवं तेइदिया चउरिंदिया । समुच्छिमपंचिं-  
दियतिरिक्खजोणिया गच्छवक्षतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया समुच्छिममणुस्सा वाण-  
मतरजोइसियसोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदवभलोयलतगमहासुक्षसहस्तारकप्पदेवा  
एए जहा नेरइया । गच्छवक्षतियमणूसआणयपाणयआरणच्छुयगेवेजगअणुत्तरो-  
ववाइया य एए जहज्जेण इक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उववज्जति,  
न असखेज्जा उववज्जति ॥ ३०० ॥ सिद्धा ण भते ! एगसमएण केवइया सिज्जति ?  
गोयमा ! जहज्जेण एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं अट्टुसय ॥ ३०१ ॥ नेरइया  
ण भते ! एगसमएण केवइया उब्बद्वति ? गोयमा ! जहज्जेणं एक्को वा दो वा तिन्नि  
वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उब्बद्वति, एव जहा उववाओ भणिओ तहा  
उब्बद्वणा वि सिद्धवज्जा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइया, नवर जोइसियवेमाणियाणं  
चयणेण अहिलावो कायब्बो ॥ ४ दार ॥ ३०२ ॥ नेरइया ण भते ! कओहिंतो





નભરપણિનિદ્યતિરિક્ષયગોળાએહિન્દો ઉદ્વાજનિતિ । ગોમા । દોહિન્યો જિ મન  
અનિત । જ્યા સંમુચ્છિમગુયપરિયપણલક્ષપણિનિદ્યતિરિક્ષયગોળાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત  
કિ પદ્માયસેમુચ્છિમગુયપરિસપ્યલક્ષમરપણિનિદ્યતિરિક્ષયગોળાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત  
અપદ્માયસેમુચ્છિમગુયપરિસપ્યલક્ષમરપણિનિદ્યતિરિક્ષયગોળાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત ।  
શીયમા । પદ્માએહિન્દો ઉદ્વાજનિત મો અપદ્માએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત । જ્યા ગણ-  
બાઈવિષયપરિસપ્યલક્ષમરપણિનિદ્યતિરિક્ષયગોળાએહિન્દો ઉદ્વાજનિત કિ પદ્માએ-  
હિન્દો ઉદ્વાજનિત અપદ્માએહિન્દો ઉદ્વાજનિત । ગોમા । પદ્માએહિન્દો ઉદ્વા-  
જનિત મો અપદ્માએહિન્દો ઉદ્વાજનિત ॥ ૧ ૫ ॥ જ્યા કાદ્યપર્ણિમાયતિરિક્ષય-  
ગમનકાઈતિયદાયરપણિનિદ્યતિરિક્ષયગોળાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત । ગોમા । દોહિન્યો જિ  
ઉદ્વાજનિત । જ્યા સંમુચ્છિમગુયદાયરપણિનિદ્યતિરિક્ષયગોળાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત કિ  
પદ્માએહિન્દો ઉદ્વાજનિત અપદ્માએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત । શીયમા । પદ્માએહિન્દો  
ઉદ્વાજનિત મો અપદ્માએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત । જ્યા પદ્માયગમનકાઈતિયદાયરપણિનિ-  
દ્યતિરિક્ષયગોળાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત કિ સંદેશાસાડાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત અસ્થેઝ-  
શાસાડાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત । પોમા । સંદેશાસાડાએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત મો અસ-  
થેઝાસાડાએહિન્દો ઉદ્વાજનિત । જ્યા સંદેશાસાડાયગમનકાઈતિયદાયરપણિનિદ્ય-  
તિરિક્ષયગોળાએહિન્દો ઉદ્વાજનિત કિ પદ્માએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત અપદ્માએહિન્દો  
ઉદ્વાજનિત । ગોમા । પદ્માએહિન્દો ઉદ્વાજનિત મો અપદ્માએહિસ્તો ઉદ્વાજનિત  
॥ ૧ ૬ ॥ જ્યા મનુસસેહિન્દો ઉદ્વાજનિત કિ સંમુચ્છિમમનુસેહિન્દો ઉદ્વાજનિત  
ગમનકાઈતિયમગુસેહિન્દો ઉદ્વાજનિત । શીયમા । નો સંમુચ્છિમમનુસેહિન્દો ઉદ-  
વાજનિત ગમનકાઈતિયમગુસેહિન્દો ઉદ્વાજનિત । જ્યા ગમનકાઈતિયમગુસેહિસ્તો  
ઉદ્વાજનિત કિ કષ્મમભૂમિગાયમનકાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત અસ્થેઝાસાઢ-  
ાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત અંતરાલીકાયામનકાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત ।  
ગોમા । કષ્મમભૂમિગાયમનકાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત નો અસ્થેઝાસાડ-  
ાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત નો અંતરાલીકાયામનકાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વા-  
જનિત । જ્યા કષ્મમભૂમિગાયમનકાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત કિ સંદેશાસાડ-  
ાએહિન્દો ઉદ્વાજનિત અસ્થેઝાસાડાએહિન્દો ઉદ્વાજનિત । ગોમા । સંદેશાસાડ-  
ાયામનકાઈતિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત । જ્યા સંદેશાસાડાયામનકાઈ-  
તિયમગુસેહિસ્તો ઉદ્વાજનિત કિ પદ્મોહિન્દો ઉદ્વાજનિત અપદ્માએહિસ્તો ઉદ્વા-

जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । एव जहा ओहिया उववाइया तहा रयणप्पभापुढविनेरइया वि उववाएयब्बा ॥ ३०७ ॥ सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! एए वि जहा ओहिया तहेवोववाएयब्बा, नवरं समुच्छिमेहिन्तो पडिसेहो कायब्बो । वालुयप्पभापुढविनेरइया ण भते ! कओहिन्तो उववज्जन्ति० २ गोयमा ! जहा सक्करप्पभापुढविनेरइया, नवरं भुयपरिसप्पेहिन्तो पडिसेहो कायब्बो । पक्कप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा वालुयप्पभापुढविनेरइया, नवरं खहयरेहिन्तो पडिसेहो कायब्बो । धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा पक्कप्पभापुढविनेरइया, नवरं चउप्पएहिन्तो वि पडिसेहो कायब्बो । तमापुढविनेरइया ण भते ! कओहिन्तो उववज्जन्ति० २ गोयमा ! जहा धूमप्पभापुढविनेरइया, नवरं थल्यरेहिन्तो वि पडिसेहो कायब्बो । इमेण अभिलाचेण जड़ पचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, किं जल्यरपचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति, थल्यरपचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति, खहयरपचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! जल्यरपचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति, नो थल्यरेहिन्तो०, नो खहयरेहिन्तो उववज्जन्ति ॥ ३०८ ॥ जड़ मणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, अकम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, अतरदीवएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अकम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अतरदीवएहिन्तो उववज्जन्ति । जड़ कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति किं सखेजवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति, असखेजवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! सखेजवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति, नो असखेजवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति । जड़ सखेजवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति कि पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । जड़ पज्जत्तयसखेजवासाउयकम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति किं इत्थीहिन्तो उववज्जन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्जन्ति, नपुसएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! इत्थीहिन्तो उववज्जन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्जन्ति, नपुसएहिन्तो वि उववज्जन्ति । अहेसत्तमापुढविनेरइया ण भते ! कओहिन्तो उववज्जन्ति० २ गोयमा ! एव चेव, नवर इत्थीहिन्तो पटिसेहो कायब्बो । “अस्सश्री खलु पटम दोच्च पि सिरीसवा तडय पक्खी । सीहा जन्ति चउर्दिंथ उरगा पुण पचमि पुढवि ॥ छट्ठि च इत्तियाओ मच्छा मणुया य सत्तमि पुटवि । एसों परमोत्ताओ वोद्दब्बो नरगपुढवीण” ॥ ३०९ ॥ असुरकुमारा ण भते ! कओहिन्तो उववज्जन्ति० २ गोयमा ! नो नेरडएहिन्तो उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएहिन्तो



उववज्जति । जइ भवणवासिदेवेहिन्तो उववज्जति कि असुरकुमारदेवेहिन्तो उ० जाव थणियकुमारदेवेहिन्तो उववज्जति ? गोयमा ! असुरकुमारदेवेहिन्तो वि उववज्जति जाव थणियकुमारदेवेहिन्तो वि उववज्जति । जइ वाणमतरदेवेहिन्तो उववज्जति किं पिसा-एहिन्तो उ० जाव गधब्बेहिन्तो उववज्जति ? गोयमा ! पिसाएहिन्तो वि उ० जाव गध-ब्बेहिन्तो वि उववज्जति । जइ जोइसियदेवेहिन्तो उववज्जति किं चदविमाणेहिन्तो उववज्जति जाव ताराविमाणेहिन्तो उववज्जति ? गोयमा ! चदविमाणजोडसियदेवेहिन्तो वि उ० जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिन्तो वि उववज्जति । जइ वेमाणियदेवेहिन्तो उववज्जति किं कप्पोवगवेमाणियदेवेहिन्तो उववज्जति, कप्पातीतवेमाणियदेवेहिन्तो उववज्जति ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवेहिन्तो उववज्जति, नो कप्पातीतवेमाणि-यदेवेहिन्तो उववज्जति । जइ कप्पोवगवेमाणियदेवेहिन्तो उववज्जति किं सोहम्मेहिन्तो उ० जाव अच्छुएहिन्तो उववज्जति ? गोयमा ! सोहम्मीसाणेहिन्तो उववज्जति, नो सणकुमार जाव अच्छुएहिन्तो उववज्जंति । एव आउकाइया वि । एव तेउवाउ-काइया वि, नवर देववज्जेहिन्तो उववज्जति । वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया । बेइदिया तेइदिया चउरिंदिया एए जहा तेउवाऊ देववज्जेहिन्तो भाणियब्बा ॥३१४॥ पर्चिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! कओहिन्तो उववज्जति किं नेरइएहिन्तो उवव-ज्जति जाव देवेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! नेरइएहिन्तो वि०, तिरिक्खजोणिएहिन्तो वि०, मणुस्सेहिन्तो वि०, देवेहिन्तो वि उववज्जन्ति । जइ नेरइएहिन्तो उववज्जति कि रय-णप्पभापुढविनेरइएहिन्तो उ० जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिन्तो उववज्जति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहिन्तो वि उववज्जति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिन्तो वि उवव-ज्जति । जइ तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जति किं एगिंदिएहिन्तो उववज्जति जाव पर्चिदिए-हिन्तो वि उववज्जति । जइ एगिंदिएहिन्तो उववज्जति किं पुढविकाइएहिन्तो उववज्जन्ति-एवं जहा पुढविकाइयाण उववाओ भणिओ तहेव एएसि पि भाणियब्बो, नवर देवेहिन्तो जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिन्तो वि उववज्जति, नो आणयकप्पो-वगवेमाणियदेवेहिन्तो जाव अच्छुएहिन्तो उववज्जति ॥ ३१५ ॥ मणुस्सा ण भते ! कओहिन्तो उववज्जति किं नेरइएहिन्तो उववज्जति जाव देवेहिन्तो उववज्जति ? गोयमा ! नेरइएहिन्तो वि उववज्जति जाव देवेहिन्तो वि उववज्जति । जड नेरइएहिन्तो उववज्जति कि रयणप्पभापुढविनेरइएहिन्तो उववज्जति, सङ्करप्पभापुढविनेरइएहिन्तो उववज्जंति, वालुयप्पभापुढविनेरइएहिन्तो०, पक्प्पभा० नेरइएहिन्तो०, वृमप्पभा०-नेरइएहिन्तो०, तमप्पभा०नेरइएहिन्तो०, अहेसत्तमापुढविनेरटएहिन्तो उववज्जति ?



मणुस्सेहितो उववज्जन्ति किं सम्मद्विषीपज्जत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमगेहिन्तो उववज्जन्ति, मिच्छद्विषीपज्जत्तगेहिन्तो उववज्जन्ति, सम्मामिच्छद्विषीपज्जत्तगेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! सम्मद्विषीपज्जत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्तियमणूसेहितो उववज्जन्ति, मिच्छद्विषीपज्जत्तगेहिन्तो उववज्जन्ति, णो सम्मामिच्छद्विषीपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ सम्मद्विषीपज्जत्तगसखेजवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्तियमणूसेहिन्तो उववज्जति कि सजयसम्मद्विषीहिन्तो०, असजयसम्मद्विषीपज्जत्तएहिन्तो०, सजयासजयसम्मद्विषीपज्जत्तसखेजवासाउहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! तीहितो वि उववज्जति । एव जाव अच्छुओ कप्पो । एव चेव गेविजगदेवा वि, नवरं असजय-सजयासंजया एए पडिसेहेयब्बा । एवं जहेव गेविजगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइया वि, नवरं इम णाणत्त सजया चेव । जइ सम्मद्विषीसजयपज्जत्तसखेजवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्तियमणूसेहिन्तो उववज्जन्ति कि पमत्तसजयसम्मद्विषीपज्जत्तएहिन्तो०, अपमत्तसजयसम्मद्विषीपज्जत्तएहिन्तो०, अपमत्तसजयपज्जत्तएहिन्तो०, उववज्जति, नो पमत्तसजयपज्जत्तएहितो उववज्जति । जइ अपमत्तसजएहिन्तो० उववज्जन्ति कि इहिपत्तअपमत्तसजएहिन्तो०, अणिहिपत्तअपमत्तसजएहिन्तो० ? गोयमा ! दोहिन्तो वि उववज्जन्ति ॥ ५ दार ॥ ३१९ ॥ नेरइया ण भते ! अणतर उब्बटिता कहिं गच्छन्ति, काहें उववज्जति ? किं नेरइएसु उववज्जन्ति, तिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, देवेसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, नो देवेसु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति कि एगिदिएसु उववज्जन्ति जाव पाचेदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! णो एगिदिएसु उ० जाव नो चउरिदिएसु उववज्जन्ति, एव जेहिन्तो उववाओ भणिओ तेसु उब्बटणा वि भाणियब्बा, नवर समुच्छमेसु न उववज्जन्ति । एव सब्बपुढबीसु भाणियब्ब, नवर अहेसत्तमाओ मणुस्सेसु न उववज्जन्ति ॥ ३२० ॥ असुरकुमारा ण भते ! अणतर उब्बटिता कहिं गच्छन्ति, कहिं उववज्जन्ति ? किं नेरइएसु उ० जाव देवेसु उवव-मणुस्सेसु उववज्जन्ति, नो देवेसु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति कि एगिन्दिएसु उववज्जति जाव पचिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! एगिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, नो वेइदिएसु उ० जाव नो चउरिदिएसु उववज्जन्ति, पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति । जइ एगिन्दिएसु उववज्जन्ति कि पुटविकाड्यएगिन्दिएसु उ० जाव वणस्सइकाइयएगिन्दिएसु उवव-

जनिति । गोममा । पुढिरिश्चाश्यएविनिदिष्टम् वि आठकाश्वरपृगिनिदिष्टम् वि उच्चवज्रनिति  
नो तेऽवकाशेष्ट गो वास्तवकाशेष्ट उच्चवज्रनिति वणस्पतश्चाशेष्ट उच्चवज्रनिति । यदि  
पुढिरिश्चाश्येष्ट उच्चवज्रनिति कि सहूमपुढिरिश्चाश्येष्ट उच्चवज्रनिति वायरपुढिरिश्चाश्येष्ट  
उच्चवज्रनिति । गोममा । वायरपुढिरिश्चाश्येष्ट उच्चवज्रनिति नो सहूमपुढिरिश्चाश्येष्ट  
उच्चवज्रनिति । यदि वायरपुढिरिश्चाश्येष्ट उच्चवज्रनिति कि पञ्चात्मवायरपुढिरिश्चाश्येष्ट  
उच्चवज्रनिति अपग्राहावायरपुढिरिश्चाश्येष्ट उच्चवज्रनिति । गोममा । फलाशेष्ट उच्चवज्रनिति  
मो अपग्राहाश्च उच्चवज्रनिति । एवं आउवयस्सद्भु वि माविकल्पे । पंचिनिदिवलिरिश्च-  
ओविममश्चेष्ट य जहा नेत्रमार्ण उच्चाश्चा संमुखिमवज्ञा तदा माविकल्पा । एवं  
जाव यविष्यकुमारा ॥ १२१ ॥ पुढिरिश्चाश्यार्थं भवते । अर्जुनार्द उच्चवज्रित्य फले  
गच्छन्ति क्वाहं उच्चवज्रनिति । कि नेत्रेष्ट उ जाव देवेष्ट । गोममा । फो वेरह-  
पसु लिरिक्तज्ञोविममस्तुतेष्ट उच्चवज्रनिति नो देवेष्ट उच्चवज्रनिति एवं जहा एवं  
जब उच्चाश्चो तदा उच्चाश्चा वि उच्चवज्ञा माविकल्पा । एवं आउवयस्सद्भेदेविर  
तेइरिमवज्ञरिनिदिवा वि । एवं देव बात भवर मनुस्सद्भेदेष्ट उच्चवज्रनिति । पंचि-  
निदिवलिरिश्चज्ञोविका न भवते । अर्जुनार्द उच्चवज्रित्य क्वाहं गच्छन्ति क्वाहं उच्चवज्रनिती  
गोममा । वेरहेष्ट उ जाव देवेष्ट उच्चवज्रनिति । यदि नेत्रेष्ट उच्चवज्रनिति कि  
रमवयप्पमापुढिरिनरेष्ट उच्चवज्रनिति जाव भवेष्टामापुढिरिनेरेष्ट उच्चवज्रनिति ।  
गोममा । रकणप्पमापुढिरिनेरेष्ट उच्चवज्रनिति जाव भवेष्टामापुढिरिनेरेष्ट उच्च-  
वज्रनिति । यदि लिरिक्तज्ञोविष्टु उच्चवज्रनिति कि एविनिष्टु उ जाव पंचिनिष्टु  
उच्चवज्रनिति । गोममा । एविनिष्टु उ जाव पंचिनिष्टु उच्चवज्रनिति । एवं जहा  
एवंसि भेद उच्चाश्चो उच्चाश्चा वि देवेष्ट माविकल्पा भवर जर्जेज्जासाराष्ट्रे वि  
एव उच्चवज्रनिति । जाव मणुरुषेष्ट उच्चवज्रनिति कि संमुखिममस्तुतेष्ट उच्चवज्रनिति  
मम्माहृतिममलूपेष्ट उच्चवज्रनिति । गोममा ! देष्ट वि । एवं जहा उच्चाश्चो व्येष्ट  
उच्चाश्चा वि माविकल्पा भवर भवेष्टम्भूमाभृतग्रीष्मागम्भाहृतिमप्पेष्ट भव-  
भेज्जासाराष्ट्रे वि एव उच्चवज्रनिति माविकल्पे । यदि देवेष्ट उच्चवज्रनिति कि भव  
भवेष्ट उच्चवज्रनिति जाव भेमाविष्टु उच्चवज्रनिति । गोममा । सम्भेष्ट भेद उच्च-  
वज्रनिति । यदि मवनवैष्टु कि व्यस्तुकुमारैष्ट उच्चवज्रनिति जाव पवित्रकुमारैष्ट  
उच्चवज्रनिति । गोममा । सम्भेष्ट भेद उच्चवज्रनिति । एवं वायरमेत्तरव्येष्टिमैसा-  
पिष्टु विरतर उच्चवज्रनिति जाव व्यास्तारो क्षम्पोति ॥ १२२ ॥ मनुस्सा न  
भवते । अर्जुनार्द उच्चवज्रित्य क्वाहं यच्छन्ति कहि उच्चवज्रनिति । कि नेत्रेष्ट उच्च-  
वज्रनिति जाव देवेष्ट उच्चवज्रनिति । गोममा । वेरहेष्ट वि उच्चवज्रनिति जाव देवेष्ट वि

उववज्जति । एव निरंतरं सब्वेषु ठाणेषु पुच्छा । गोयमा । सब्वेषु ठाणेषु उववज्जन्ति, न कहिं च पडिसेहो कायब्बो जाव सब्वदुसिद्धदेवेषु वि उववज्जन्ति, अत्येगइया सिज्जन्ति, बुज्जन्ति, मुच्चति, परिनिव्वायंति, सब्वदुक्खवाण अत करेति । वाणमतर-जोइसियवेमाणियसोहम्मीसाणा यं जहा असुरकुमारा, नवर जोइसियाण य वेमाणि-याण य चयतीति अभिलावो ब्रायब्बो । सणंकुमारदेवाण पुच्छा । गोयमा । जहा असुरकुमारा, नवर एगिदिएसु ण उववज्जति । एव जाव सहस्सारगदेवा । आणय जाव अणुत्तरोववाइया देवा एव चेव, नवरं नो तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेषु पज्जतसखेजवासाउयकम्मभूमगगब्बवक्कंतियमणूसेषु उववज्जन्ति ॥ ६ दारं ॥ ॥ ३२३ ॥ नेरइया ण भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेति ? गोयमा ! नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउय० । एव असुरकुमारा वि, एव जाव थणिय-कुमारा । पुढविकाइया ण भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पञ्चता । तजहा—सोवक्कमाउया य निस्वक्कमाउया य । तत्थ ण जे ते निस्वक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेति । तत्थ ण जे ते सोवक्कमाउया ते सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेति, सिय तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेति । आउतेउवाउवणप्फङ्काइयाण वेइदियतेइदियचउ-रिन्दियाण वि एव चेव ॥ ३२४ ॥ पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया ण भंते ! कइभागाव-सेसाउया परभवियाउयं पकरेति ? गोयमा ! पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पञ्चता । तजहा—सखेजवासाउया य असखेजवासाउया य । तत्थ णं जे ते अस-खेजवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउय पकरेति । तत्थ ण जे ते सखेजवासाउया ते दुविहा पञ्चता । तजहा—सोवक्कमाउया य निस्वक्कमाउया य । तत्थ ण जे ते निस्वक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेति । तत्थ ण जे ते सोवक्कमाउया ते ण सिय तिभागे परभवियाउय पकरेति, सिय तिभाग-तिभागे परभवियाउय पकरेति, सिय तिभागतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेति । एव मणूसा वि । वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरडया ॥ ७ दारं ॥ ॥ ३२५ ॥ कइविहे ण भंते ! आउयवधे पञ्चते ? गोयमा ! छविहे आउयवधे पञ्चते । तजहा—१ जाइनामनिहत्ताउए, २ गइनामनिहत्ताउए, ३ ठिइनामनिहत्ताउए, ४ ओगाहणनामनिहत्ताउए, ५ पएसनामनिहत्ताउए, ६ अणुभावनामनिहत्ताउए । नेरड-याण भंते । कइविहे आउयवधे पञ्चते ? गोयमा ! छविहे आउयवधे पञ्चते । तजहा—जाइनामनिहत्ताउए, गडनामनिहत्ताउए, ठिइनामनिहत्ताउए, ओगाहणनामनिहत्ता-



वा । ईसाणगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स आणमति वा जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेगस्स मुहुत्पुहुत्तस्स, उक्षोसेण साइरेगाण दोण्ह पक्खाण जाव नीससति वा । सणकुमारदेवा ण भते । केवङ्कालस्स आणमति वा जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण दोण्ह पक्खाण, उक्षोसेण सत्तण्ह पक्खाण जाव नीससति वा । मार्हिंदगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स आणमति वा जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेग दोण्ह पक्खाणं, उक्षोसेण साइरेग सत्तण्ह पक्खाणं जाव नीससति वा । बभलोगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स आणमंति वा जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण दसण्ह पक्खाण, उक्षोसेण चउदसण्ह पक्खाण जाव नीससति वा । महासुक्कदेवा ण भते । केवङ्कालस्स आणमति वा जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण चउदसण्ह पक्खाण, उक्षोसेण सत्तरसण्ह पक्खाण जाव नीससति वा । सहस्सारगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स आणमति वा जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण सत्तरसण्ह पक्खाणं, उक्षोसेण अद्वारसण्हं पक्खाण जाव नीससति वा । आणयदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण अद्वारसण्ह पक्खाण, उक्षोसेण एगूणवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । पाणयदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण एगूण-वीसाए पक्खाण, उक्षोसेण वीसाए पक्खाणं जाव नीससति वा । आरणदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण वीसाए पक्खाण, उक्षोसेण एगवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । अच्युयदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण एगवीसाए पक्खाण, उक्षोसेण वावीसाए पक्खाण जाव नीससति वा ॥ ३३४ ॥ हिंद्विमहिंद्विमगेविजगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण वावीसाए पक्खाण, उक्षोसेण तेवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । हिंद्विममज्जिमगेविजगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण तेवीसाए पक्खाण, उक्षोसेण चउवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । हिंद्विमउवरिमगेविजगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण चउवीसाए पक्खाण, उक्षोसेण पणवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । मज्जिममहिंद्विमगेविजगदेवा ण भते । केवङ्कालस्स जाव नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण पणवीसाए पक्खाण, उक्षोसेण छवीसाए पक्खाण जाव नीससति वा । मज्जिममज्जिमगेविजगदेवा ण

भेति । केवद्वयस्य जाव नीसुरुति वा । गोममा । अहोर्व छम्भीसाए पक्षावर्ण उडोसेन सत्तावीसाए पक्षावर्ण जाव भीसुरुति वा । मणिमठवरिमगेविजगदेवा व भेति । केवद्वयस्य जाव भीसुरुति वा । गोममा । अहोर्व सत्तावीसाए पक्षावर्ण उडोसेन अङ्गावीसाए पक्षावर्ण जाव नीसुरुति वा । उवरिमहेश्विमासिनिजगदेवा व भेति । केवद्वयस्य जाव नीसुरुति वा । गोममा । अहोर्व अङ्गावीसाए पक्षावर्ण उडोसेन एश्वामीसाए पक्षावर्ण जाव नीसुरुति वा । सवरिममणिमगेविजगदेवा व भेति । केवद्वयस्य जाव भीसुरुति वा । गोममा । अहोर्व एश्वामीसाए पक्षावर्ण उडोसेन तीसाए पक्षावर्ण जाव नीसुरुति वा । सवरिमउवरिमगेविजग-देवा व भेति । केवद्वयस्य जाव नीसुरुति वा । गोममा । अहोर्व लीसाए पक्षावर्ण उडोसेन एश्वामीसाए पक्षावर्ण जाव भीसुरुति वा ॥ ११५ ॥ विक्रम  
वेदवर्तमन्तमपराभियक्षिमाणेषु व देवा व भेति । केवद्वयस्य जाव नीसुरुति वा । गोममा । अहोर्व एश्वामीसाए पक्षावर्ण उडोसेन तेत्तीसाए पक्षावर्ण जाव भीसुरुति वा । कम्बुचिवरिम-देवा व भेति । केवद्वयस्य जाव नीसुरुति वा । गोममा । अवहममुडोसेन तेत्तीसाए पक्षावर्ण जाव नीसुरुति वा ॥ ११६ ॥  
पश्चिमाप्य भगवार्हीप्य सत्तम द्वसासपर्य समर्थ ॥

कह व भेति । सत्तमो पक्षावर्णे । गोममा । इस सत्तमे पक्षावर्णे । हंशा-आहारसत्ता मक्षसत्ता मेहुनसत्ता परिमाहसत्ता खेहसत्ता माखसत्ता मावासत्ता म्हेहसत्ता घेमसत्ता ओफसत्ता ॥ ११७ ॥ वेरेश्वार्व भेति । कह सत्तमो पक्षावर्णे । गोममा । इस सत्तमो पक्षावर्णे । हंशा-आहारसत्ता जाव ओफसत्ता । अहुखुमार्व भेति । कह सत्तमो पक्षावर्णे । गोममा । इस सत्तमो पक्षावर्णे । हंशा-आहारसत्ता जाव ओफसत्ता । एवं विविक्षयार्व जाव केमाभियाक्षाणार्व नेयर्व ॥ ११८ ॥ वेरेश्वार्व भेति । कह आहारसत्तोवर्तता मवसत्तोवर्तता गेहुनसत्तोवर्तता परिमाहसत्तोवर्तता । गोममा । ओसर्व वार्व पक्ष नयसत्तोवर्तता उत्तमार्व पक्ष आहारसत्तोवर्तता वि जाव परिमाहसत्तो-वर्तता वि । एएषि व भेति । मेरुद्वार्व आहारसत्तोवर्ततार्व नयसत्तोवर्ततार्व गेहुनसत्तोवर्ततार्व परिमाहसत्तोवर्तताग य क्षये व्यरेहेतो व्यप्ता वा व्युवा वा द्रुता वा विदेशादिवा वा । गोममा । सन्त्वत्तोवा मेरुद्वा गेहुनसत्तोवर्तता आहार सत्तोवर्तता उत्तिव्यगुणा परिमाहसत्तोवर्तता उत्तिव्यगुणा नयसत्तोवर्तता सदिव्यगुणा ॥ ११९ ॥ विविक्षत्तोविभिया व भेति । कह आहारसत्तोवर्तता जाव परिमाह सत्तोवर्तता । ओसर्व वार्व पक्ष आहारसत्तोवर्तता उत्तमार्व पक्ष

આહારસન્નોવઉત્તા વિ જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા વિ । એએસિ ણ ભતે ! તિરિક્ખજો-  
ણિયાણ આહારસન્નોવઉત્તાણ જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તાણ ય કયરે કયરેહિંતો અપ્પા  
વા બહુયા વા તુલા વા વિસેસાહિયા વા ? ગોયમા ! સવ્વત્થોવા તિરિક્ખજોણિયા  
પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા, મેહુણસન્નોવઉત્તા સખિજગુણા, ભયસન્નોવઉત્તા સંખિજગુણા,  
આહારસન્નોવઉત્તા સખિજગુણા ॥ ૩૪૦ ॥ મણુસ્સા ણ ભતે ! કિ આહારસન્નોવઉત્તા  
જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા ? ગોયમા ! ઓસન્ન કારણ પદુચ્ચ મેહુણસન્નોવઉત્તા,  
સતઃભાવ પદુચ્ચ આહારસન્નોવઉત્તા વિ જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા વિ । એએસિ ણ  
ભતે ! મણુસ્સાણ આહારસન્નોવઉત્તાણ જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તાણ ય કયરે કયરે-  
હિંતો અપ્પા વા બહુયા વા તુલા વા વિસેસાહિયા વા ? ગોયમા ! સવ્વત્થોવા મણુસ્સા  
ભયસન્નોવઉત્તા, આહારસન્નોવઉત્તા સખિજગુણા, પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા સખિજગુણા,  
મેહુણસન્નોવઉત્તા સખિજગુણા ॥ ૩૪૧ ॥ દેવા ણ ભતે ! કિ આહારસન્નોવઉત્તા  
જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા ? ગોયમા ! ઓસન્ન કારણ પદુચ્ચ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા,  
સતઃભાવ પદુચ્ચ આહારસન્નોવઉત્તા વિ જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા વિ । એએસિ ણ  
ભતે ! દેવાણ આહારસન્નોવઉત્તાણ જાવ પરિગ્રહસન્નોવઉત્તાણ ય કયરે કયરેહિંતો  
અપ્પા વા બહુયા વા તુલા વા વિસેસાહિયા વા ? ગોયમા ! સવ્વત્થોવા દેવા  
આહારસન્નોવઉત્તા, ભયસન્નોવઉત્તા સખેજગુણા, મેહુણસન્નોવઉત્તા સખેજગુણા,  
પરિગ્રહસન્નોવઉત્તા સખેજગુણા ॥ ૩૪૨ ॥ પન્નવણાએ ભગવર્ષીએ અદ્દુમ  
સંશાપયં સમત્તાં ॥

કદ્વિદ્વા ણ ભતે ! જોણી પન્નતા ? ગોયમા ! તિવિદ્વા જોણી પન્નતા । તજહા-  
સીયા જોણી, ઉસિણા જોણી, સીઓસિણા જોણી ॥ ૩૪૩ ॥ નેરદ્યાણ ભતે ! કિ  
સીયા જોણી, ઉસિણા જોણી, સીઓસિણા જોણી ? ગોયમા ! સીયા વિ જોણી, ઉસિણા  
વિ જોણી, ણો સીઓસિણા જોણી । અસુરકુમારાણ ભતે ! કિ સીયા જોણી, ઉસિણા  
જોણી, સીઓસિણા જોણી ? ગોયમા ! નો સીયા જોણી, નો ઉસિણા જોણી, સીઓ-  
સિણા જોણી, એવં જાવ થળિયકુમારાણ । પુટવિકાઇયાણ ભતે ! કિ સીયા જોણી,  
ઉસિણા જોણી, સીઓસિણા જોણી ? ગોયમા ! સીયા વિ જોણી, ઉસિણા વિ જોણી,  
સીઓસિણા વિ જોણી । એવ આઉવાઉવણસસડવેદિયતેદિયચુર્રિદિયાણ વિ પત્તેય  
ભાળિયબ્બ । તેઉકાઇયાણ ણો સીયા, ઉસિણા, ણો સીઓસિણા । પચિદિયતિરિક્ખ-  
જોણિયાણ ભતે ! કિ સીયા જોણી, ઉસિણા જોણી, સીઓસિણા જોણી ? ગોયમા !  
સીયા વિ જોણી, ઉસિણા વિ જોણી, સીઓસિણા વિ જોણી । સસુચ્છમપચિદિય  
તિરિક્ખજોણિયાણ વિ એવ ચેવ । ગંભવક્તિયપચિદિયતિરિક્ખજોણિયાણ ભતે !

कि सीया घोषी उठिणा जोणी सीधोसिणा जोणी है गोपमा ! जो सीया घोषी जो उठिणा जोषी सीधोसिणा जोषी । मधुसुखालं भरें ! कि सीया घोषी उठिणा जोषी सीधोसिणा जोषी है गोपमा ! सीया यि जोणी उठिणा यि घोषी सीधोसिणा यि घोषी । संमुचितमधुसुखार्थ मंत्रे ! कि सीया जोणी उठिणा घोषी सीधोसिणा घोषी । गोपमा ! तिनिहा जोषी । गम्भराहतिकमधुसुखालं मंत्रे ! कि सीया घोषी उठिणा घोषी सीधोसिणा घोषी है गोपमा ! जो सीया जो उठिणा सीधोसिणा घोषी । जोशसिद्धमालिकार्थ यि एवं चेत ॥ ३४४ ॥ एषसि न मर ! सीयजोलिकार्थ उठिष्ठजोलिकार्थ सीधेसिणजोलिकार्थ अजोलिकार्थ य क्लरे क्लरेहितो वल्पा वा बहुया वा द्वया वा विसेसाहित्या वा है गोपमा ! सम्बल्पोवा जीवा सीधोसिष्ठजोलिका उठिष्ठजोलिका असेवनगुणा अजोलिका अर्थत्तुगुणा सीयजोलिका अर्थत्तुगुणा ॥ ३४५ ॥ एवं तिनिहा न मंत्रे ! जोणी वक्ता है गोपमा ! तिनिहा घोषी वक्ता । तन्महा—तन्मिहा अविता मीसिया ॥ ३४६ ॥ नेरद्वार्थ मंत्रे ! कि सविता घोषी अविता घोषी गोपमा ! जो सविता घोषी अविता घोषी नो मीसिया घोषी एवं जाव वसितमधुमार्थ । पुराधीश्वरार्थ मंत्रे ! कि सविता घोषी अविता घोषी मीसिया घोषी । गोपमा ! सविता घोषी अविता घोषी मीसिया यि घोषी एवं जाव वत्तरितियार्थ । सु निष्ठमपर्वितिरतिरेकवयेविमार्थ संमुचितमधुसुखालं य एवं चेत । गम्भराहतिमपर्वितिरतिरेकवयेविमार्थ पञ्चवार्षितिकमधुसुखार्थ व जो सविता नो अविता मीसिया घोषी । वाञ्छमतरद्वेष्टिवदेमालिकार्थ वहा अषुखमार्थ ॥ ३४७ ॥ एषसि न मंत्रे ! जीवार्थ सवितव्येवीर्थ अवितजोषीर्थ मीसद्वेषीर्थ अजोषीर्थ य क्लरे क्लरेहितो लल्पा वा बहुया वा द्वया वा विसेसाहित्या वा । गोपमा ! सम्बल्पो वा जीवा मीसजोलिका अवितजोलिका अर्थेवगुणा अजोलिका अर्थत्तुगुणा सविताव्येविका अर्थत्तुगुणा ॥ ३४८ ॥ एवं तिनिहा न मंत्रे ! जोणी वक्ता है घोषा ! तिन्महा—तन्मुहा घोषी विवडा घोषी संतुष्टिवदा घोषी ॥ ३४९ ॥ नरद्वयार्थ मंत्रे ! कि संतुष्टा घोषी विवडा घोषी संतुष्टिवदा घोषी । गोपमा ! संतुष्टजोषी जो विवडजोषी नो संतुष्टिवदजोषी । एवं जाव वपस्तार्थ गोपमा ! संतुष्टजोषी जो विवडजोषी नो संतुष्टिवदजोषी । एवं जाव वपस्तार्थ गोपमा ! वैरितियार्थ पुरुषा । गोपमा ! जो संतुष्टजोषी विवडजोषी एवं संतुष्ट

वियडजोणी । एव जाव चउरिंदियाण । समुच्छमपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं समु-  
च्छममणुस्साण य एव चेव । गव्भवक्षतियपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं गव्भवक्षति-  
यमणुस्साण य नो सबुडा जोणी, नो वियडा जोणी, सबुडवियडा जोणी । वाणम-  
तरजोडसियवेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥ ३५० ॥ एएसि ण भंते ! जीवाण सबुड-  
जोणियाण वियडजोणियाण सबुडवियडजोणियाण अजोणियाण य क्यरे क्यरेहितो  
अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा सबुड-  
वियडजोणिया, वियडजोणिया असखिजगुणा, अजोणिया अणतगुणा, सबुडजोणिया  
अणतगुणा ॥ ३५१ ॥ कइविहा ण भते ! जोणी पन्नता ? गोयमा ! तिविहा जोणी  
पन्नता । तजहा—कुम्मुण्णया, सखावत्ता, वसीपत्ता । कुम्मुण्णया ण जोणी उत्तम-  
पुरिसमाळण । कुम्मुण्णया ण जोणीए उत्तमपुरिसा गव्भे वक्षमंति, तजहा—  
अरहता, चक्षवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा । सखावत्ता णं जोणी इत्थीरयणस्स, सखा-  
वत्ताए जोणीए वहवे जीवा य पोगला य वक्षमंति विउक्षमति चर्यंति उवचयति, नो  
चेव ण णिप्फज्जति । वसीपत्ता ण जोणी पिहुजणस्स, वसीपत्ताए णं जोणीए पिहुजणा  
गव्भे वक्षमति ॥ ३५२ ॥ पञ्चवणाए भगवर्द्दिए नवमं जोणीपयं समत्तं ॥

कइ ण भते ! पुढवीओ पन्नताओ ? गोयमा ! अटु पुढवीओ पन्नताओ ।  
तजहा—रयणप्पभा, सकरप्पभा, वालुयप्पभा, पकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा,  
तमतमप्पभा, ईसिप्पव्भारा ॥ ३५३ ॥ इमा ण भते ! रयणप्पभा पुढवी किं  
चरमा, अचरमा, चरमाइ, अचरमाइ, चरमतपएसा, अचरमतपएसा ? गोयमा !  
इमा ण रयणप्पभा पुढवी नो चरमा, नो अचरमा, नो चरमाइ, नो अचरमाइ, नो  
चरमतपएसा, नो अचरमंतपएसा, नियमाऽचरम चरमाणि य, चरमतपएमा य  
अचरमंतपएसा य, एव जाव अहेसत्तमा पुढवी, सोहम्माई जाव अणुत्तरविमाणाण  
एव चेव, ईसिप्पव्भारा वि एव चेव, लोगे वि एव चेव, एव अलोगे वि ॥ ३५४ ॥  
इमीसे ण भते ! रयणप्पभा ए पुढवीए अचरमस्स य चरमाण य चरमतपएसाण य  
अचरमतपएसाण य दब्बट्टयाए पएसट्टयाए दब्बट्टपएसट्टयाए क्यरे क्यरेहितो  
अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवे इमीसे  
रयणप्पभा ए पुढवीए दब्बट्टयाए एगे अचरमे, चरमाइ असखेजगुणाइ, अचरम  
च चरमाणि य दो वि विसेसाहिया, पएसट्टयाए सब्बत्थोवा इमीसे रयणप्पभा ए  
पुढवीए चरमन्तपएसा, अचरमतपएसा असखेजगुणा, चरमतपएसा य अचरमत-  
पएसा य दो वि विसेसाहिया, दब्बट्टपएसट्टयाए सब्बत्थोवे इमीसे रयणप्पभा ए  
पुढवीए दब्बट्टयाए एगे अचरमे, चरमाइ असखेजगुणाइ, अचरमं चरमाणि य

यो वि विसेयाहिवाई, पापद्वयाए चरमंतपणा असंगेजगुणा अचरमंतपणा असंकेजगुणा चरमंतपणा य अचरमंतपणा य दो वि विसुगाहिवा । एवं जात भौमतमाप, सोहम्मस्य जाव स्मेगस्स एवं चेत ॥ ३५५ ॥ अत्येमस्म नै भैत । अचरमस्म य चरमाय य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दम्बद्वयाए पएसुद्वयाए दम्बद्वयाए चर व्यरोहितो अप्या का बुद्धा का बुद्धा का बुद्धा का विसेयाहिवा का ३ घोषमा । एव्यत्योदे अद्वागम्य दम्बद्वयाए एवा अचरमे चरमाई असंगेजगुणाई, अचरमे चरमालि य दो वि विसेयाहिवाई, परम-द्वयाए सम्भत्वोशा असोमस्य चरमन्तपणा अचरमन्तपणा अचरमन्तपणा चरम-न्तपणा य अचरमन्तपणा य दो वि विसेयाहिवा दम्बद्वयाए सम्भत्वोदे अद्वोगस्स एवो अचरमे चरमाई असंगेजगुणाई अचरमे चरमालि य दो वि विसेयाहिवाई, चरमन्तपणा असंगेजगुणा अचरमन्तपणा अचरमन्तपणा चरम-न्तपणा य अचरमन्तपणा य दो वि विसेयाहिवा ३ ३५६ ॥ ल्लेगाल्लेगस्तु वै भैत । अचरमस्म य चरमालि चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण च दम्बद्वयाए पएसुद्वयाए दम्बद्वयाए चर व्यरोहितो अप्या का बुद्धा का बुद्धा का विसेयाहिवा का ३ घोषमा । सम्भत्वोदे स्मेगस्मेगस्स दम्बद्वयाए एगामेगे अचरमे अगेगस्स चरमाई असंगेजगुणाई, ल्लेगस्तु चरमाई विसेयाहिवाई, ल्लेगस्म य अतोगस्स चरमन्तपणा अतोगस्स चरमन्तपणा विसेयाहिवा अगेगस्तु अचरमन्तपणा असंगेजगुणा असंगेगस्स चरमन्तपणा असंगेजगुणा असंगेगस्स चरमन्तपणा विसेयाहिवाई, असंगेगस्स चरमन्तपणा असंगेजगुणा ॥ ३५७ ॥ परमाल्लुपोमाके नै भैते । कि चरमे १ अचरमे १ अचरमाई ३ चरमाई ५ अचरमाई ५, अवाल्लम्बाई ५ उदाहु चरमे य अचरमे च ७ उदाहु चरमे च अचरमाई ८ उदाहु चरमाई अचरमे च उदाहु चरमाई च अचरमाई च १ पहमा चउभी । उदाहु चरमे च अवाल्लम्बाई ११ उदाहु

चरमे य अवत्तब्बयाइ च १२, उदाहु चरमाइ च अवत्तब्बए य १३, उदाहु चरमाइ च अवत्तब्बयाइ च १४, वीया चउभगी । उदाहु अचरमे य अवत्तब्बए य १५, उदाहु अचरमे य अवत्तब्बयाइ च १६, उदाहु अचरमाइ च अवत्तब्बए य १७, उदाहु अचरमाइ च अवत्तब्बयाइ च १८, तहया चउभगी । उदाहु चरमे य अचरमे य अवत्तब्बए य १९, उदाहु चरमे य अचरमे य अवत्तब्बयाइ च २०, उदाहु चरमे य अचरमाइ च अवत्तब्बए य २१, उदाहु चरमे य अचरमाइ च अवत्तब्बयाइ च २२, उदाहु चरमाइ च अचरमे य अवत्तब्बए य २३, उदाहु चरमाइ च अचरमे य अवत्तब्बयाइ च २४, उदाहु चरमाइ च अचरमाइ च अवत्तब्बए य २५, उदाहु चरमाइ च अचरमाइ च अवत्तब्बयाइ च २६ । एए छ्यांसि भगा । गोयमा ! परमाणुपोगले नो चरमे, नो अचरमे, नियमा अवत्तब्बए, सेमा भगा पडिसेहेयब्बा ॥ ३५८ ॥ दुपएसिए ण भते ! खधे पुच्छा । गोयमा ! दुपएसिए खधे सिय चरमे, नो अचरमे, सिय अवत्तब्बए । सेसा भंगा पडिसेहेयब्बा ॥ ३५९ ॥ तिपएसिए ण भते ! खधे पुच्छा । गोयमा ! तिपएसिए खधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तब्बए ३, नो चरमाइ ४, नो अचरमाइ ५, नो अवत्तब्बयाइ ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अचरमाइ ८, सिय चरमाइ च अचरमे य ९, नो चरमाइ च अचरमाइ च १०, सिय चरमे य अवत्तब्बए य ११, सेसा भगा पडिसेहेयब्बा ॥ ३६० ॥ चउपएसिए ण भते ! खधे पुच्छा । गोयमा ! चउपएसिए ण खधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तब्बए ३, नो चरमाइ ४, नो अचरमाइ ५, नो अवत्तब्बयाइ ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अचरमाइ च ८, सिय चरमाइ अचरमे य ९, सिय चरमाइ च अचरमाइ च १०, सिय चरमे य अवत्तब्बए य ११, सिय चरमे य अवत्तब्बयाइ च १२, नो चरमाइ च अवत्तब्बए य १३, नो चरमाइ च अवत्तब्बयाइ च १४, नो अचरमे य अवत्तब्बए य १५, नो अचरमे य अवत्तब्बयाइ च १६, नो अचरमाइ च अवत्तब्बए य १७, नो अचरमाइ च अवत्तब्बयाइ च १८, नो अचरमे य अवत्तब्बए य १९, नो चरमे य अचरमे य अवत्तब्बयाइ च २०, नो चरमे य अचरमाइ च अवत्तब्बए य २१, नो चरमे य अचरमाइ च अवत्तब्बयाइ च २२, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तब्बए य २३ । सेसा भगा पडिसेहेयब्बा ॥ ३६१ ॥ पचपएसिए ण भते ! खधे पुच्छा । गोयमा ! पचपएसिए खधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तब्बए ३, नो चरमाइ ४, नो अचरमाइ ५, नो अवत्तब्बयाइ ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य



य अवत्तव्वए य १९, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्याइ च २०, सिय चरमे य अचरमाड च अवत्तव्वए य २१, णो चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्याइ च २२, सिय चरमाइ च अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्याइ च २४, सिय चरमाइ च अचरमाड च अवत्तव्वए य २५, सिय चरमाईं च अचरमाड च अवत्तव्याइ च २६ ॥ ३६४ ॥ अट्टपएसिए ण भते । खधे पुच्छा । गोयमा । अट्टपएसिए खधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तव्वए ३, नो चरमाइ ४, नो अचरमाड ५, नो अवत्तव्याइ ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय चरमे य अचरमाईं च ८, सिय चरमाइ च अचरमे य ९, सिय चरमाड च अचरमाईं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्याइ च १२, सिय चरमाइ च अवत्तव्वए य १३, सिय चरमाईं च अवत्तव्याइ च १४, णो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, णो अचरमे य अवत्तव्याइ च १६, णो अचरमाड च अवत्तव्वए य १७, णो अचरमाड च अवत्तव्याइ च १८, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्याइ च २०, सिय चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्वए य २१, सिय चरमे य अचरमाइ च अवत्तव्याइ च २२, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाइ च अचरमे य अवत्तव्याइ च २४, सिय चरमाइ च अचरमाड च अवत्तव्वए य २५, सिय चरमाइ च अचरमाइ च अवत्तव्याइ च २६, सखेजपएसिए असखेजपएसिए अणतपएसिए खधे जहेव अट्टपएसिए तहेव पत्तेय भाणियब्ब । परमाणुम्मि य तइओ पढमो तइओ य होंति दुपएसे । पढमो तइओ नवमो एकारसमो य तिपएसे ॥ १ ॥ पढमो तइओ नवमो दसमो एकारसो य वारसमो । भगा चउप्पएसे तेवीसइमो य चोद्धव्वो ॥ २ ॥ पढमो तइओ सत्तमनवदसइक्कारवारतेरसमो । तेवीसचउव्वीसो पणवीसइमो य पंचमए ॥ ३ ॥ विचउत्थपचछट्ट पनरस सोल च सत्तरट्टार । वीसेक्कवीसवाकीसग च वजेज छट्टमि ॥ ४ ॥ विचउत्थपंचछट्ट पणर सोल च सत्तरट्टार । बावीसइमविहृणा सत्तपएसमि खधम्मि ॥ ५ ॥ विचउत्थपचछट्ट पणर सोल च सत्तरट्टार । एए वज्जिय भगा सेसा सेसेसु खधेसु ॥ ६ ॥ ३६५ ॥ कहण भते । सठाणा पन्रत्ता ? गोयमा । पच सठाणा पन्रत्ता । तजहा—परिमङ्गले, बहे, तसे, चउरसे, आयए य ॥ ३६६ ॥ परिमङ्गला ण भते । सठाणा किं सखेजा, असखेजा, अणता ? गोयमा । नो सखेजा, नो असखेजा, अणता । एव जाव आयया । परिमङ्गले ण भते । सठाणे कि सखेजपएसिए, असखेजपएसिए, अणतपए-



अन्चरमन्तपएसा य दोऽवि विसेसाहिया । एव वद्वत्सचउरसायएसु वि जोएयव्व  
॥ ३६८ ॥ परिमण्डलस्स ण भते । सठाणस्स असखेजपएसियस्स सखेजपएसोगा-  
दस्स अन्चरमस्स चरमाण य चरमन्तपएसाण य अन्चरमन्तपएसाण य दब्बद्वयाए  
पएसद्वयाए दब्बद्वपएसद्वयाए क्यरे क्यरेरहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा ! सब्बत्थोवे  
परिमडलस्स सठाणस्स असखेजपएसियस्स सखेजपएसोगादस्स दब्बद्वयाए एगे  
अन्चरमे, चरमाइ सखेजगुणाइ, अन्चरमं च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाइ,  
पएसद्वयाए सब्बत्थोवा परिमडलसठाणस्स असखेजपएसियस्स सखेजपएसोगादस्स  
चरमतपएसा, अन्चरमतपएसा सखेजगुणा, चरमतपएसा य अन्चरमतपएसा य  
दोऽवि विसेसाहिया, दब्बद्वपएसद्वयाए-सब्बत्थोवे परिमडलस्स सठाणस्स असखेज-  
पएसियस्स सखेजपएसोगाटस्स दब्बद्वयाए एगे अन्चरमे, चरमाइ सखेजगुणाइ,  
अन्चरम च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाइ, चरमतपएसा सखेजगुणा, अचरमत-  
पएसा सखेजगुणा, चरमतपएसा य अचरमतपएसा य दोऽवि विसेसाहिया । एव  
जाव आयए । परिमडलस्स ण भते । सठाणस्स असखेजपएसियस्स असखेजपए-  
सोगादस्स अन्चरमस्स य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दब्बद्व-  
याए पएसद्वयाए दब्बद्वपएसद्वयाए क्यरे क्यरेरहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा ! जहा  
रथणप्पभाए अप्पावहुय तहेव निरवसेस भाणियव्व, एव जाव आयए ॥ ३६९ ॥  
परिमडलस्स ण भते । सठाणस्स अणतपएसियस्स सखेजपएसोगादस्स अन्चरमस्स  
य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दब्बद्वयाए पएसद्वयाए  
दब्बद्वपएसद्वयाए क्यरे क्यरेरहिंतो अप्पा वा ४<sup>२</sup> गोयमा ! जहा सखेजपएसि-  
यस्स सखेजपएसोगादस्स, नवरं सकमेण अणतगुणा, एव जाव आयए । परिमड-  
लस्स ण भते । सठाणस्स अणतपएसियस्स असखेजपएसोगादस्स अन्चरमस्स य ४  
जहा रथणप्पभाए, नवरं सकमे अणतगुणा, एव जाव आयए ॥ ३७० ॥ जीवे ण  
भते । गडचरमेण कि चरमे अचरमे<sup>२</sup> गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । नेरइए  
ण भते । गडचरमेण कि चरमे अचरमे<sup>२</sup> गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे,  
एव निरतरं जाव वेमाणिए । नेरइया ण भते । गडचरमेण कि चरमा अचरमा<sup>२</sup>  
गोयमा ! चरमा वि अचरमा वि, एव निरतर जाव वेमाणिया । नेरइए ण भते !  
ठिँचरमेण कि चरमे अचरमे<sup>२</sup> गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतर  
जाव वेमाणिए । नेरइया ण भते । ठिँचरमेण कि चरमा अचरमा<sup>२</sup> गोयमा !  
चरमा वि अचरमा वि, एव निरतर जाव वेमाणिया । नेरइए ण भते ! भवचरमेण  
कि चरमे अचरमे<sup>२</sup> गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतर जाव वेमा-

मिए ॥ गोकमा । सिय सुखेजपएहिए, तिय असुखेजरएहिए, मिय अर्जतुपएहिए ॥ एर्ज  
जाव आयए । परिमेड़के न मंते । सझाए सुखेजपएगिए कि सुखेजफूसोगाहे असु-  
खेजरएसोगाहे अर्जतुपएसोयाहे ॥ गोकमा । सुखेजपएसोगाहे नो असुखेजपएसोयाहे  
नो अर्जतुपएयोगाहे । एर्ज जाव आयए । परिमेड़के न मंते । संठावे असुखेजपएहिए  
कि सुखेजरएसोगाहे असुखेजपएसोगाहे अर्जतुपएसोयाहे ॥ गोकमा । सिय सुखेज-  
पएसोगाहे सिय असुखेजपएसोगाहे ना अर्जतुपएसोगाहे । एर्ज जाव आयए ।  
परिमेड़के न मंते । सुझावे अर्जतुपएहिए कि सुखेजपएसोगाहे असुखेजपएसोयाहे  
अर्जतुपएसोयाहे ॥ गोकमा । सिय सुखेजरएसोगाहे सिय असुखेजपएन्हेगाहे नो  
अर्जतुपएसोगाहे । एर्ज जाव आयए । परिमेड़के न मंते । संठावे सुखेजरएहिए  
सुखेजरएसोगाहे कि चरमे अचरमे चरमाई, चरमाई, चरमतुपएसा अचरमतु-  
पएसा ॥ गोकमा । परिमेड़के न संठावे सुखेजपएहिए सुखेजपएसोगाहे नो चरमे नो  
अचरमे नो चरमाई, नो अचरमाई, ना चरमतुपएसा निर्भय अचरमे चरमायि व  
चरमतुपएसा म अचरमतुपएसा व । एर्ज जाव आयए । परिमेड़के न मंते । संठावे  
असुखेजपएहिए सुखेजरएसोगाहे कि चरमे पुच्छ । गोकमा । असुखेजपएहिए  
सद्यजपएसोगाहे चहा सुखेजरएहिए । एर्ज जाव आयए । परिमेड़के न मंते । संठावे  
असुखेजपएहिए असुखेजपएसोगाहे कि चरमे पुच्छ । गोकमा । असुखेजपएहिए  
असुखेजपएसोगाहे नो चरमे चहा सुखेजपएसोगाहे एर्ज जाव आयए । परिमेड़के  
न मंते । संठावे अलैनपएहिए सुखेजपएसोगाहे कि चरमे पुच्छ । मोकमा । द्वैर  
जाव आयए । अर्जतुपएहिए असुखेजपएसोगाहे चहा सुखेजपएसोयाहे एर्ज जाव  
आयए ॥ ३५७ ॥ परिमाहस्तस न मंते । सब्धणस्त सुखेजपएहिमस्त सुखेजपए-  
सोगाहस्त अचरमस्त य चरमाय य चरमतुपएसाल य अचरमतुपएसाल व  
दम्बद्धयाए दम्बद्धपएसुम्याए क्ष्वरे क्ष्वरेहितो अप्या वा चृत्या वा द्रुत्या  
वा विसेसाहित्या वा ॥ गोकमा । सम्बल्लोवे परिमेड़हस्तसु संठालस्त सुखेजपएहिमस्त  
सुखेजपएसोगाहस्त दम्बद्धयाए एर्गे अचरमे चरमाई सुखेजपुच्छ, अचरमे  
चरमायि व दोऽपि विसेसाहित्याए, परिमेड़हस्तसु संठालस्त परिमेड़हस्तसु संठालस्त  
सुखेजपएहिमस्त सुखेजपएभोगाहस्त अर्जतुपएसा अचरमन्तुपएसा सुखेजपुच्छ  
चरमन्तुपएसा य अचरमन्तुपएसा य दोऽपि विसेसाहित्या दम्बद्धपएसुम्याए दम्बद्धयाए  
एर्गे अचरमे चरमाई सुखेजपुच्छ, अचरम व चरमायि व दोऽपि विसेसाहित्याए,  
चरमन्तुपएसा सुखेजपुच्छ अचरमन्तुपएसा सुखेजपुच्छ चरमन्तुपएसा य

अचरमन्तपएसा य दोऽवि विसेसाहिया । एव वद्धतंभचउरसायएनु वि जोएथवं  
 ॥ ३६८ ॥ परिमण्डलस्स ण भंते । सठाणस्स असखेजपएसियस्स सखेजपएसोगा-  
 दस्स अचरमस्स चरमाण य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दब्बद्धयाए  
 पएसद्धयाए दब्बद्धपएसद्धयाए क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४२ गोयमा । सब्बत्थोवे  
 परिमडलस्स सठाणस्स असखेजपएनियस्स सखेजपएसोगादस्स दब्बद्धयाए एगे  
 अचरमे, चरमाड सखेजगुणाड, अचरम च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाइ,  
 पएसद्धयाए नब्बत्थोवा परिमडलसठाणस्स असखेजपएसियस्स सखेजपएसोगादस्स  
 चरमतपएसा, अचरमतपएसा सखेजगुणा, चरमतपएसा य अचरमतपएसा य  
 दोऽवि विसेसाहिया, दब्बद्धपएसद्धयाए-मब्बत्थोवे परिमडलस्स सठाणस्स असखेज-  
 पएसियस्स सखेजपएसोगाटस्स दब्बद्धयाए एगे अचरमे, चरमाड सखेजगुणाड,  
 अचरम च चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाइ, चरमतपएसा सखेजगुणा, अचरमत-  
 पएसा सखेजगुणा, चरमतपएसा य अचरमतपएसा य दोऽवि विसेसाहिया । एवं  
 जाव आयए । परिमडलस्स ण भंते । सठाणस्स असखेजपएसियस्स असखेजपए-  
 सोगादस्स अचरमस्स य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दब्बद्ध-  
 याए पएसद्धयाए दब्बद्धपएसद्धयाए क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४२ गोयमा । जहा  
 र्यणप्पभाए अप्पावहुय तहेव निरवसेस भाणियव्व, एव जाव आयए ॥ ३६९ ॥  
 परिमडलस्स ण भंते । सठाणस्स अणतपएसियस्स सखेजपएसोगादस्स अचरमस्स  
 य चरमाण य चरमतपएसाण य अचरमतपएसाण य दब्बद्धयाए पएसद्धयाए  
 दब्बद्धपएसद्धयाए क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४२ गोयमा । जहा सखेजपएसि-  
 यस्स सखेजपएसोगाडस्स, नवर सफ्फमेण अणतगुणा, एव जाव आयए । परिमंड-  
 लस्स ण भंते । सठाणस्स अणतपएसियस्स असखेजपएसोगाडस्स अचरमस्स य ४  
 जहा र्यणप्पभाए, नवर सक्कमे अणतगुणा, एवं जाव आयए ॥ ३७० ॥ जीवे ण  
 भंते । गडचरमेण किं चरमे अचरमे ? गोयमा । सिय चरमे, सिय अचरमे । नेरइए  
 ण भंते । गडचरमेण किं चरमे अचरमे ? गोयमा । सिय चरमे, सिय अचरमे,  
 एव निरतरं जाव वेमाणिए । नेरइया ण भंते । गडचरमेण किं चरमा अचरमा ?  
 गोयमा । चरमा वि अचरमा वि, एव निरतरं जाव वेमाणिया । नेरइए ण भंते ।  
 ठिईचरमेण किं चरमे अचरमे ? गोयमा । सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरतर  
 जाव वेमाणिए । नेरइया ण भंते । ठिईचरमेण किं चरमा अचरमा ? गोयमा !  
 चरमा वि अचरमा वि, एव निरतरं जाव वेमाणिया । नेरइए ण भंते । भवचरमेण  
 किं चरमे अचरमे ? गोयमा । सिय चरमे, सिय अचरमे, एव निरतर जाव वेमा-

यिए । नेहया जी भंडे । मवचरमेव कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि एवं निरतर जाव देमाविदा । नेहए वं भंडे । मासाचरमेव कि चरमा अचरमे है गोवमा । तिव चरमे तिव अचरमे एवं निरतर जाव देमाविए । देहवा जी भंडे । मासाचरमेव कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि । एवं निरतर जाव देमाविदा । नेहए वं भंडे । आहारचर मध्य कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमे । गोवमा । तिव चरमे तिव अचरमे । एवं निरतर जाव देमाविए । नेहया जी भंडे । आहारचरमध्य कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि । एवं निरतर जाव देमाविदा । नेहए वं भंडे । मावचरमध्य कि चरमे अचरमे । गोवमा । तिव चरमे तिव अचरमे । एवं निरतर जाव देमाविए । नेहया जी भंडे । मावचरमेव कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि । एवं निरतर जाव देमाविदा । नेहए वं भंडे । मावचरमेव कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि । एवं निरतर जाव देमाविदा । नेहए वं भंडे । गंभचरमेव कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि । एवं निरतर जाव देमाविदा । नेहए वं भंडे । रसचरमध्य कि चरमे अचरमे है गोवमा । तिव चरमे तिव अचरमे । एवं निरतर जाव देमाविए । नेहया जी भंडे । रसचरमध्य कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि । एवं निरतर जाव देमाविदा । नेहए वं भंडे । कासचरमेव कि चरमे अचरमे है गोवमा । तिव चरमे तिव अचरमे । एवं निरतर जाव देमाविए । नेहया जी भंडे । पासचरमेव कि चरमा अचरमा है गोवमा । चरमा कि अचरमा कि । एवं निरतर जाव देमाविदा । सगृहणीगाहा—“कद्धिष्ठमेव य मासा आलापाशुचरमे य गोवमा । आहारमावचरमे वल्लासे गंभरसे व” ॥ ३७१ ॥ पञ्चवण्णापं भगवांप वस्त्रमेव चरमपर्यं सुभर्तु ॥

इ वृणु भंडे । मञ्चामीति ओहारिणी भाषा तितमीति ओहारिणी भाषा अह मञ्चामीति ओहारिणी भाषा अह तितमीति ओहारिणी भाषा तह मञ्चा-

मीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ? हता गोयमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ॥ ३७२ ॥ ओहारिणी ण भंते ! भासा कि सच्चा, मोसा, सच्चामोसा, असच्चामोसा ? गोयमा ! सिय सच्चा, सिय मोसा, सिय सच्चामोसा, सिय असच्चामोसा । से केणद्वेष भते ! एव वुच्छइ—‘ओहारिणी ण भासा सिय सच्चा, सिय मोसा, सिय सच्चामोसा, सिय असच्चामोसा’ ? गोयमा ! आराहिणी सच्चा, विराहिणी मोसा, आराहणविराहिणी सच्चामोसा, जा येव आराहणी येव विराहिणी येवाराहणविराहिणी सा असच्चामोसा णाम चउत्थी भासा, से तेणद्वेष गोयमा ! एव वुच्छइ—‘ओहारिणी ण भासा सिय सच्चा, सिय मोसा, सिय सच्चामोसा, सिय असच्चामोसा’ ॥ ३७३ ॥ अह भते ! गाओ मिया पसू पक्खी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! जा य गाओ मिया पसू पक्खी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७४ ॥ अह भते ! जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य नपुसगवऊ पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य नपुसगआणवणी, जा य पुमआणवणी, जा य नपुसगआणवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७५ ॥ अह भते ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुसगपण्णवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुसगपण्णवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७६ ॥ अह भते ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुसगआणवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! जा याईइ इत्थिवऊ, जाईड पुमवऊ, जाईइ णपुसगवऊ पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! जा याईइ इत्थिवऊ, जाईइ पुमवऊ, जाईइ णपुसगवऊ पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७८ ॥ अह भते ! जा याईइ इत्थिआणवणी, जाईइ पुमआणवणी, जाईइ णपुसगआणवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! जा याईइ इत्थिआणवणी, जाईइ पुमआणवणी, जाईइ णपुसगआणवणी पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३७९ ॥ अह भते ! जाईइ इत्थिपण्णवणी, जाईइ पुमपण्णवणी, जाईइ णपुसगपण्णवणी

पञ्चवधी वै एषा भासा ए पेषा भासा मोषा ! हता गोबमा ! जाई एवि-  
पञ्चवधी जाई उगपञ्चवधी जाई शुशुगपञ्चवधी पञ्चवधी वै एषा भासा  
ए पेषा भासा मोषा ॥ ३८ ॥ अह मंते । मंदङ्गमारए वा भंदङ्गमारिया वा  
जानह कुम्हमारे-भहमेसे कुम्हमीति । गोयमा । जो इण्डे सम्हे, जन्मत्व समिक्षो ।  
अह मंते । मंदङ्गमारए वा मंदङ्गमारिया वा जानह आहारे-भाहारेमारे-भहमेसे  
आहारमाहारेमिति । गोयमा । जो इण्डे सम्हे, जन्मत्व समिक्षो । अह मंते ।  
मंदङ्गमारए वा मंदङ्गमारिया वा जानह-अर्व मे अम्मापियरो । गोयमा । जो  
इण्डे सम्हे, जन्मत्व समिक्षो । अह मंते । मंदङ्गमारए वा मंदङ्गमारिया वा  
जानह-अर्व मे अहरुरम्हे अर्व मे अहरुर्डेति । गोयमा । जो इण्डे सम्हे,  
जन्मत्व समिक्षो । अह मंते । मंदङ्गमारए वा नंदङ्गमारिया वा जानह-अर्व मे  
मंदिहारए, अर्व मे भंदिहारएति । गोयमा । जो इण्डे सम्हे, जन्मत्व समिक्षो  
॥ ३९ ॥ अह मंते । तो घोषे घरे घोडए अए एम्ह जानह कुम्हमारे-भहमेसे  
कुम्हमी । गोबमा । जो इण्डे सम्हे, जन्मत्व समिक्षो । अह मंते । तो जाव एम्ह  
जानह आहारे आहारेमारे-भहमेसे आहारेमि । गोयमा । जो इण्डे सम्हे,  
जन्मत्व समिक्षो । अह मंते । तो घोषे घरे घोडए अए एम्ह जानह-अर्व मे  
अम्मापियरो । गोयमा । जो इण्डे सम्हे, जन्मत्व समिक्षो । अह मंते ।  
तो जाव एम्ह जानह-अर्व मे अहरुर्डेति । गोयमा । जो इण्डे सम्हे,  
जन्मत्व समिक्षो । अह मंते । तो जाव एम्ह जानह-अर्व मे भंदिहारए ॥ ३१० ॥  
गोयमा । जो इण्डे सम्हे, जन्मत्व समिक्षो ॥ ३११ ॥ अह मंते । मंजुस्ते  
मंजिष्ये भासे दृष्टी सीहे बर्बे किंगे दीर्घिए नक्के तरच्छे परस्तरे मिळाके निराके  
धृष्णए घोडङ्गमए घोडङ्गिए धृष्णए किंगाए चिङ्गाए भेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा  
एगक्क । हंता गोबमा । मंजुस्ते जाव चिङ्गाए भेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा  
घटुक्क । हंता गोबमा । मंजुस्ता जाव चिङ्गाए घेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा  
घटुक्क । हंता गोबमा । मंजुस्ता जाव चिङ्गाए घेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा शुरुक्क ॥ ३१२ ॥  
अह मंते । मंजुस्ती मंजिष्यी वस्ता इतिविया सीही बर्बी किंगी दीर्घिवा नक्की  
तरच्छी परस्तरा रासमी चिक्काली निराली मुखिया घोम्मुखिया घोडङ्गिया समिक्षा  
नितिया चिङ्गिया घेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा इतिवक्क । हंता घोयमा ।  
मंजुस्ती जाव चिङ्गाए भेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा इतिवक्क । अह मंते ।  
मंजुस्ता जाव चिङ्गाए भेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा फुमक्क । हंता गोयमा ।  
मंजुस्ते मंजिष्ये जाव चिङ्गाए भेवाक्षे तहप्पमारा सम्हा सा फुमक्क । अह मंते ।

कंस कसोय परिमडल सेल जालं थाल तारं रुवं अच्छपवं कुड पउम दुद्ध  
दहिं णवणीय असण सयण भवणं विमाण छत चामरं भिंगार अगण पिरंगण  
आभरण रयणं जेयावज्ञे तहप्पगारा सब्ब त णपुसगवऊ ? हता गोयमा ! कंस  
जाव रयण जेयावज्ञे तहप्पगारा सब्ब त णपुसगवऊ ॥ ३८४ ॥ अह भते !  
पुढवी इथिवऊ आउति पुमवऊ धणेति नपुसगवऊ पञ्चवणी णं एसा भासा,  
ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! पुढविति इथिवऊ आउति पुमवऊ  
धणेति नपुसगवऊ पण्वणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । अह भते !  
पुढविति इथिआणवणी, आउति पुमआणवणी, धणेति नपुंसगाणवणी पण्वणी  
ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! पुढविति इथिआणवणी,  
आउति पुमआणवणी, धणेति नपुसगाणवणी पण्वणी णं एसा भासा, ण एसा  
भासा मोसा । अह भते ! पुढवीति इथिपण्वणी, आउति पुमपण्वणी, धणेति  
णपुसगपण्वणी आराहणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता गोयमा !  
पुढवीति इथिपण्वणी, आउति पुमपण्वणी, धणेति णपुंसगपण्वणी आरा-  
हणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । इच्चेव भते ! इथिवयण वा पुमवयणं  
वा णपुसगवयण वा वयमाणे पण्वणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हता  
गोयमा ! इथिवयण वा पुमवयण वा णपुसगवयण वा वयमाणे पण्वणी ण एसा  
भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ३८५ ॥ भासा ण भते ! किमाइया, किपवहा,  
किसठिया, किपज्जवसिया ? गोयमा ! भासा ण जीवाइया, सरीरप्पभवा, वजसठिया,  
लोगतपज्जवसिया पण्त्ता । भासा ऊओ य पभवइ ? कहिं व समएहि भासइ  
भास ? । भासा कडप्पगारा ? कइ वा भासा अणुमया उ ? ॥ सरीरप्पभवा भासा,  
दोहि य समएहि भासइ भास । भासा चउप्पगारा, दोणिं य भासा अणुमया उ  
॥ ३८६ ॥ कडविहा ण भते ! भासा पञ्चता ? गोयमा ! दुविहा भासा पञ्चता ।  
तजहा-पञ्जत्तिया य अपञ्जत्तिया य । पञ्जत्तिया ण भते ! भासा कडविहा पञ्चता ?  
गोयमा ! दुविहा पञ्चता । तजहा—सच्चा मोसा य ॥ ३८७ ॥ सच्चा ण भते !  
भासा पञ्जत्तिया कडविहा पञ्चता ? गोयमा ! दसविहा पञ्चता । तजहा-जणवय-  
सच्चा १, सम्मयसच्चा २, ठवणसच्चा ३, नामसच्चा ४, रुवसच्चा ५, पहुच्चसच्चा  
६, ववहारसच्चा ७, भावसच्चा ८, जोगसच्चा ९, ओवम्मसच्चा १० । “जणवय १  
समय २ ठवणा ३ नामे ४ रुवे ५ पहुच्चसच्चे ६ य । ववहार ७ भाव ८ जोगे ९  
दसमे ओवम्मसच्चे य १०” ॥ ३८८ ॥ मोसा ण भते ! भासा पञ्जत्तिया कडविहा  
पञ्चता ? गोयमा ! दसविहा पञ्चता । तजहा-कोहणिस्सिया १, माणणिस्सिया २,

मायाविस्मित्या ३ स्मैहयिस्मित्या ४ येऽविस्मित्या ५, दोषयिस्मित्या ६ इत्य-  
स्मित्या ७ भवयिस्मित्या ८ वास्तवाइयाविस्मित्या ९ उद्वाइयविस्मित्या १०  
‘चोहे मात्रे माया भ्येमे पिण्डे तहेह दोहे ज । हस्त भए अपवाइयउद्वाइयवि-  
स्मित्या वहमा’ ॥ ३८९ ॥ अपवाइत्या र्वं भर्ते । उद्विहा माया पहता ॥ गोवमा ॥  
दुविहा पहता । तंजहा—घासामोहा वास्तवामोहा ज । घासामोहा र्वं भर्ते । भाया  
अपवाइत्या उद्विहा पहता ॥ गोवमा ॥ दसविहा पहता । तंजहा—उपपञ्चमिस्मित्या  
१ विषयमिस्मित्या २ उपपञ्चमियविस्मित्या ३ जीवमिस्मित्या ४ जीवमिस्मित्या  
५, जीवाजीवमिस्मित्या ६ अर्थात्मिस्मित्या ७ परित्यमिस्मित्या ८ अद्वानिस्मित्या ९  
अद्वानिस्मित्या १ ॥ ३९ ॥ वहमामोहा र्वं भर्ते । भाया अपवाइत्या उद्विहा  
पहता ॥ गोवमा । तुवाष्टमिहा पहता । तंजहा—आर्मेठवि १ आषमनी २  
आयवि ३ तद् पुष्ट्यवी ज ४ पञ्चवी ५ । पञ्चवाणी ६ भासा मासा इत्य-  
युग्मोहा ७ ज ॥ अनमिस्माहिया भमा ८ मासा ज अमिस्माहियि बोझ्मा ९ ।  
घंसवर्कर्णी मासा १ बोग्ह ११ अब्देमसा चेव १२ ॥ ४ ३९१ प्र जीवा र्वं  
भर्ते । कि मासगा अमासगा ३ गोवमा । जीवा मासगा वि अमासगा वि । से  
केवद्वेष भरि । एवं कुच्छ—जीवा मासगा वि अमासगा वि १ गोवमा । जीवा उविहा  
पहता । तंजहा—सेहारसमाकञ्चगा ज असेहारसमाकञ्चगा ज । तत्प र्वं जे ते ते  
असेहारसमाकञ्चगा ते र्वं उद्या उद्या र्वं अमासगा । तत्प र्वं जे ते ते सेहारसमा-  
वज्ञगा ते उविहा पहता । तंजहा—सेहेशीपद्विकञ्चगा ज असेहेशीपद्विकञ्चगा ज ।  
तत्प र्वं जे ते सेहेशीपद्विकञ्चगा ते र्वं अमासगा । तत्प र्वं जे ते असेहेशीपद्वि-  
कञ्चगा तं उविहा पहता । तंजहा—एग्निरिया य अग्नेयिदिया ज । तत्प र्वं जे ते  
एग्निरिया ते र्वं अमासगा । तत्प र्वं जे ते अग्नेयिदिया ते उविहा पहता । तंजहा—  
पञ्चवगा य अपञ्चवगा ज । तत्प र्वं जे ते अपञ्चवगा ते र्वं अमासगा तत्प र्वं  
जे ते अपञ्चवगा तं ण मासमा से पएलद्वेष गोवमा । एवं कुच्छ—जीवा मासगा वि  
अमासगा वि १ २ ३ ॥ नेरह्मा ज मर्ते । कि मासगा अमासगा ३ गोम्हमा । नेरह्मा  
भासगा वि अमासगा वि । से केवद्वेष भर्ते । एवं कुच्छ—नेरह्मा मासगा वि अभी-  
सगा वि १ गोम्हमा । नेरह्मा उविहा पहता । तंजहा—उवर्त्तणा य अपञ्चवगा ज ।  
तत्प र्वं जे ते अपञ्चवगा ते र्वं अमासगा तत्प र्वं जे ते पञ्चवगा तं र्वं मासमा  
से पएलद्वेष गोवमा । एवं कुच्छ—नेरह्मा मासगा वि अमासगा वि । एवं एग्नि-  
रियदिवज्ञाने विरतरे भावियम् ॥ ३९२ ॥ अ र्वं भर्ते । मासज्ञाया पहता ॥  
गोम्हमा । अतारि मासज्ञाया पहता । तंजहा—उवर्त्तणे मासज्ञावे विह्वं भोष्ट तत्प

સત્તામોસ, ચર્ચત્વં અસત્તામોસ । જીવા ણ ભતે ! કિં સત્ત ભાસ ભાસતિ, મોસ ભાસ ભાસતિ, સત્તામોસ ભાસ ભાસતિ, અસત્તામોસ ભાસ ભાસતિ ? ગોયમા ! જીવા સત્ત પિ ભાસ ભાસતિ, મોસ પિ ભાસ ભાસતિ, સત્તામોસ પિ ભાસ ભાસતિ, અસત્તામોસ પિ ભાસ ભાસતિ । નેરદ્યા ણ ભતે ! કિં સત્ત ભાસ ભાસતિ જાવ અસત્તામોસ ભાસ ભાસતિ ? ગોયમા ! નેરદ્યા ણ સત્ત પિ ભાસ ભાસતિ જાવ અસત્તામોસ પિ ભાસ ભાસતિ । એવ અસુરકુમારા જાવ થળિયકુમારા । વૈદિયતેડદિયચરિદિયા ય નો સત્તો, નો મોસો, નો સત્તામોસ ભાસ ભાસતિ, અસત્તામોસ ભાસ ભાસતિ । પર્ચિ-દિયતિરિક્ખજોળિયા ણ ભતે ! કિં સત્ત ભાસ ભાસતિ જાવ અસત્તામોસ ભાસ ભાસતિ ? ગોયમા ! પર્ચિદિયતિરિક્ખજોળિયા ણો સત્ત ભાસ ભાસતિ, ણો મોસ ભાસ ભાસતિ, ણો સત્તામોસ ભાસ ભાસતિ, એગ અસત્તામોસ ભાસ ભાસતિ, ણણત્ય સિક્કાપુન્વગ ઉત્તરગુણલદ્ધિ વા પહુંચ સત્ત પિ ભાસ ભાસતિ, મોસ પિ૦, સત્તામોસ પિ૦, અસત્તા-મોસ પિ ભાસ ભાસતિ । મણુસ્સા જાવ વેમાળિયા એએ જહા જીવા તહા ભાળિયબ્બા ॥ ૩૯૪ ॥ જીવે ણ ભતે ! જાઇ દબ્વાઇ ભાસત્તાએ ગિણહ્દ તાઇ કિં ઠિયાડ ગિણહ્દ, અઠિયાડ ગિણહ્દ ? ગોયમા ! ઠિયાડ ગિણહ્દ, નો અઠિયાડ ગિણહ્દ । જાં ભતે ! ઠિયાડ ગિણહ્દ તાઇ કિં દબ્વાઓ ગિણહ્દ, ખેત્તાઓ ગિણહ્દ, કાલાઓ ગિણહ્દ, ભાવાઓ ગિણહ્દ ? ગોયમા ! દબ્વાઓ વિ ગિણહ્દ, ખેત્તાઓ વિ૦, કાલાઓ વિ૦, ભાવાઓ વિ ગિણહ્દ । જાડ ભતે । દબ્વાઓ ગિણહ્દ તાઇ કિં એગપએસિયાઇ ગિણહ્દ, દુપએસિયાઇ જાવ અણતપએસિયાઇ ગિણહ્દ ? ગોયમા ! નો એગપએસિયાઇ ગિણહ્દ જાવ નો અસખેજપએસિયાઇ ગિણહ્દ, અણતપએસિયાઇ ગિણહ્દ । જાઇ ખેત્તાઓ ગેણહ્દ તાં કિં એગપએસોગાડાઇ ગેણહ્દ, દુપએસોગાડાઇ ગેણહ્દ જાવ અસખેજપએસોગાડાડ ગેણહ્દ ? ગોયમા ! નો એગપએસોગા-ડાઇ ગેણહ્દ જાવ નો સખેજપએસોગાડાદ ગેણહ્દ, અસખેજપએસોગાડાં ગેણહ્દ । જાડ કાલાઓ ગેણહ્દ તાઇ કિં એગસમયઠિઝયાઇ ગેણહ્દ, દુસમયઠિઝયાઇ ગેણહ્દ જાવ અસખેજસમયઠિઝયાઇ ગેણહ્દ ? ગોયમા ! એગસમયઠિઝયાઇ પિ ગેણહ્દ, દુસમયઠિઝ-યાઇ પિ ગેણહ્દ જાવ અસખેજસમયઠિઝયાઇ પિ ગેણહ્દ । જાઇ ભાવાઓ ગેણહ્દ તાડ કિ વણમતાઇ ગેણહ્દ, ગધમતાઇ૦, રસમતાઇ૦, ફાસમતાઇ ગેણહ્દ ? ગોયમા ! વણ-મતાઇ પિ ગે૦ જાવ ફાસમતાઇ પિ ગેણહ્દ । જાઇ ભાવાઓ વણમતાઇ ગેણહ્દ તાઇ કિં એગવણાડ ગેણહ્દ જાવ પચવણાઇ ગેણહ્દ ? ગોયમા ! ગહણદબ્વાઇ પહુંચ એગવણાડ પિ ગેણહ્દ જાવ પચવણાઇ પિ ગેણહ્દ, સબ્વગગહણ પહુંચ ણિયમા પચવણાઇ ગેણહ્દ, તજહા—કાલાઇ નીલાઇ લોહિયાઇ હાલિદ્વાઇ સુક્રિલાઇ । જાડ વણાઓ કાલાઇ ગેણહ્દ તાઇ કિં એગમુણકાલાઇ ગેણહ્દ જાવ અણતગુણકાલાઇ ગેણહ્દ ? ગોયમા !

एगणुषक्षमाई पि गेल्हइ जाव अर्थतुणक्षमाई पि गेल्हइ । एई जाव मुदिक्षाई पि । जाई माकओ गखमंताई गिल्हइ ताई कि एगणेक्षमाई गिल्हइ, दुर्गचाई गिल्हइ ? गोममा ! गहणदम्भाई पक्षुच एगणेक्षमाई पि दुर्गचाई गिल्हइ, सम्ममाई पक्षुच नियमा दुर्गचाई गिल्हइ । जाई गैकओ मुक्तिकांवाई गिल्हइ ताई कि स्मृत्युमुक्तिकांवाई गिल्हइ जाव अर्थतुणमुक्तिकांवाई पि गिल्हइ । एई दुर्गिमांवाई पि गेल्हइ । जाई माकओ रसमंताई गेल्हइ ताई कि एगरसाई गेल्हइ जाव फौरसाई गेल्हइ ? गोममा ! गहणदम्भाई पक्षुच एगरसाई पि गेल्हइ जाव फौरसाई पि गिल्हइ, सम्ममाई पक्षुच नियमा फौरसाई गेल्हइ । जाई रसओ लितरसाई गेल्हइ ताई कि एगणुषतितरसाई गिल्हइ जाव अर्थतुणतितरसाई गिल्हइ ! गोममा ! एगणुषतिताई पि गिल्हइ जाव अर्थतुणतिताई पि गिल्हइ एई जाव महुरसो ! जाई माकओ असमताई गेल्हइ ताई कि एगफासाई गेल्हइ जाव अमुशासाई गेल्हइ ? गोममा ! गहणदम्भाई पक्षुच जो एगफासाई गेल्हइ उपासाई गेल्हइ जाव अर्थ फासाई गेल्हइ जो फौकफासाई गेल्हइ, तंबडा-सीबल्लासाई गेल्हइ, उलियाछसाई निद्रसाई पक्षुचसाई गेल्हइ । जाई पासओ सीयाई गेल्हइ ताई कि एगणुषतीयाई गेल्हइ जाव अर्थतुणतीयाई गेल्हइ ? गोममा ! एगणुषतीवाई पि गेल्हइ जाव अर्थतुणतीवाई गेल्हइ ३१५ ॥ जाई मंतु । जाव अर्थतुणक्षमाई गेल्हइ ताई कि उपाई गेल्हइ, अपुद्वाई गेल्हइ ? गोममा ! पुद्वाई गेल्हइ, मो अपुद्वाई गेल्हइ । जाई मंते । पुद्वाई गेल्हइ ताई कि ओगाई गेल्हइ, मधोगाई गेल्हइ ? गोममा ! ओगाई गेल्हइ, मो अजोगाई गेल्हइ । जाई मंते । ओमद्वाई गेल्हइ ताई कि अर्थतोगाई गेल्हइ, परपरोगाई गेल्हइ ? गोममा ! अर्थतरोगाई गेल्हइ, मो परपरोगाई गेल्हइ । जाई मंते । अर्थतोगाई गेल्हइ ताई कि अर्थ गेल्हइ फौरर्थ गेल्हइ ? गोममा ! अर्थुं पि गेल्हइ बामरर्थ पि गेल्हइ । जाई मंतु । अर्थर्थ गेल्हइ ताई कि उहु गेल्हइ, अहे गेल्हइ, तिरिये गेल्हइ ? गोममा ! उहु पि गेल्हइ, अहे पि गेल्हइ तिरिये पि गेल्हइ । जाहु भंते । उहु पि गेल्हइ अहे पि गेल्हइ भिरिये पि गेल्हइ । जाहु भंते । उहु पि गेल्हइ अहे पि गेल्हइ भिरिये पि गेल्हइ ताई कि आई गेल्हइ, मज्जे गेल्हइ, पञ्जबमाले गेल्हइ ? गोममा ! अद्य पि गेल्हइ, मज्जे पि गेल्हइ, पञ्जबसाले पि गेल्हइ । जाई मंतु । आई पि गेल्हइ मंते पि गेल्हइ, पञ्जबसाले पि गेल्हइ ताई कि सक्षिप्त गेल्हइ अक्षिप्त गेल्हइ ? गोममा !

सविसए गेणहइ, नो अविमए गेणहइ । जाडं भते । सविमए गेणहड ताइं कि आणुपुच्चि गेणहइ, अणाणुपुच्चि गेणहइ<sup>२</sup> गोयमा । आणुपुच्चि गेणहइ, नो अणाणुपुच्चि गेणहड । जाइ भते । आणुपुच्चि गेणहइ ताडं कि तिदिसिं गेणहड जाव छद्दिसिं गेणहइ<sup>२</sup> गोयमा । नियमा छद्दिसिं गेणहइ । “पुटोगाढअणतर अणू य तह वायरे य उहूमहे । आइवि-सयाणुपुच्चि णियमा तह छद्दिसिं चेव” ॥ ३९६ ॥ जीवे णं भते । जाइ दब्बाइ भास-त्ताए गेणहड ताइं कि सतर गेणहइ, निरतर गेणहइ<sup>२</sup> गोयमा । सतर पि गेणहइ, निरतर पि गेणहड । सतर गेणहमाणे जहणेण एं समय, उक्कोसेण असखेजसमए अतर कटु गेणहड, निरतर गेणहमाणे जहणेण दो समए, उक्कोसेण असखेजसमए अणुसमयं अविरहिय निरतर गेणहइ । जीवे णं भते । जाइ दब्बाइ भासत्ताए गहियाइ निसिरइ ताइं कि सतर निसिरइ, निरतर निसिरइ<sup>२</sup> गोयमा । सतर निसिरइ, नो निरतर निसिरइ । सतर निसिसरमाणे एगेण समएण गेणहड, एगेण समएण निसिरइ, एएण गहणनिसिरणोवाएण जहनेण दुसमय, उक्कोसेण असखेजसमय अतोमुहुतिग गहणनिसिरणोवाय करेइ ॥ ३९७ ॥ जीवे णं भते । जाइ दब्बाइ भासत्ताए गहियाइं णिसिरइ ताइ कि मिणाइ णिसिरइ, अभिणाइ णिसिरइ<sup>२</sup> गोयमा । भिन्नाइ पि णिसिरइ, अभिन्नाइं पि णिसिरइ । जाइं भिन्नाइ णिसिरइ ताइ अणतगुणपरिचुद्दीए ण परिचुहुमाणाइ लोयत फुसन्ति, जाइ अभिणाइ णिसिरइ ताइ असखेजाओ ओगाहूणवगणाओ गता भेयमावजति, सखेजाइ जोयणाइ गता विद्वंसमागच्छति ॥ ३९८ ॥ तेसि णं भते । दब्बाण कङ्खिहे भेए पणत्ते ? गोयमा ! पङ्खविहे भेए पञ्चते । तजहा-खडाभेए, पयराभेए, चुणिण्याभेए, अणु-तडियाभेए, उक्तरियाभेए । से कि त खडाभेए<sup>२</sup> २ जण्ण अयखडाण वा तउयखडाण वा तवखडाण वा सीसगखडाण वा रययखडाण वा जायरूवखडाण वा खडाएं भेए भवइ, से त खडाभेए १ । से कि तं पयराभेए<sup>२</sup> २ जण्ण वसाण वा वेत्ताण वा नलाण वा कन्धालीयं भाण वा अन्वपडलाण वा पयरेण भेए भवइ, से त पयराभेए २ । से कि त चुणिण्याभेए<sup>२</sup> २ जण्ण तिलचुणाण वा मुरगचुणाण वा मासचुणाण वा पिपलीचुणाण वा मिरीयचुणाण वा सिंगवेरचुणाण वा चुणिण्याए भेए भवइ, से त चुणिण्याभेए ३ । से कि त अणुतडियाभेए<sup>२</sup> २ जण्ण अगडाण वा तडागाण वा दहाण वा नईण वा वाकीण वा पुक्खरिणीण वा दीहियाण वा गुजालियाण वा सराण वा सरसराण वा सरपतियाण वा सरसरपतियाण वा अणुतडियाभेए भवइ, से त अणुतडियाभेए ४ । से कि त उक्तरियाभेए<sup>२</sup> २ जण्ण मूसाण वा महूसाण वा तिलसिंगाण वा मुग्गसिंगाण वा माससिंगाण वा एरडबीयाण वा फुट्टिया

तद्विकारेऽ मैर भवतु ते हं उद्धरियामेऽ ५ ॥ ३९९ ॥ एएसि वं भंते ।  
 द्वयामे खंडामेऽर्थं पवरुमेऽर्णु तुमिगामेऽर्थं अगुरुदियामेऽर्थं उद्धरियामेऽर्थं  
 य मिज्जमाणामे र्घरे र्घरोहितो अप्पा का शून्या का तुना का विसेसाहिता  
 का ? गोपमा ! सव्वत्वोन्नार्दं द्वयार्दं उद्धरियामेऽर्थं मिज्जमाणार्दं, अगुरुदि  
 यामेऽर्थं मिज्जमाणार्दं अगंतुण्डार्दं, तुमिकामेऽर्थं मिज्जमाणार्दं अगंतुण्डार्दं,  
 भयरामेऽर्थं मिज्जमाणार्दं अर्णतुण्डार्दं, खंडामेऽर्णु मिज्जमाणार्दं अर्णतुण्डार्दं  
 ६ ॥ नेरहए नं भंते । जार्दं द्वयार्दं मासापाद् गेल्हइ तार्दं कि ठियार्दं गेल्हइ,  
 अठियार्दं गेल्हइ ? गोपमा ! एर्वं चेव वहा जीवे वत्तव्यका भविया तहा नेरहपत्ति वि  
 जाव अप्पापुनुव । एर्वं एगिरियवज्ञो रंडलो जाव भैमाविया ; जीवा वं भंते । जार्दं  
 द्वयार्दं मासापाद् गेल्हइ तार्दं कि ठियार्दं गेल्हइ अठियार्दं गेल्हइ । गोपमा !  
 एर्वं चेव पुदुतेग वि नेयर्व जाव भैमाविया । जीवे वं भंते । जार्दं द्वयार्दं  
 सव्वमासत्तार्दं गेल्हइ तार्दं कि ठियार्दं गेल्हइ, अठियार्दं गेल्हइ ? गोपमा ! व्या  
 ओहियर्वद्वजो तहा एखोडवि षष्ठर विलिर्विया ण पुरिष्वर्जति । एर्वं मोसामासाप  
 वि सव्वमोसामासाप वि असुव्वमोसामासाप वि एर्वं चेव जवर असव्वमोसामा-  
 साप विगमिर्विया पुरिष्वर्जति इमार्वं अभिलार्विये-विलिर्विए वं भंते । जार्दं द्वयार्दं  
 असव्वमोसामासत्तार्दं गेल्हइ तार्दं कि ठियार्दं गेल्हइ अठियार्दं गेल्हइ ? गोपमा !  
 वहा ओहियर्वद्वजो एर्वं  
 जीवे वं भंते । जार्दं द्वयार्दं सव्वमासत्तार्दं गिल्हइ तार्दं कि सव्वमासत्तार्दं निरिर्व  
 मोसमासत्तार्दं निरिर्व, सव्वमोसामासत्तार्दं निरिर्व, असव्वमोसामासत्तार्दं निरिर्व ।  
 गोपमा ! गव्वमासत्तार्दं निरिर्व, जो मोसमासत्तार्दं निरिर्व, जो सव्वमोरमासत्तार्दं  
 निरिर्व, जो असव्वमोसमासत्तार्दं निरिर्व । एर्वं एगिरियविगमिर्वियवज्ञे रंडलो  
 जाव भैमाविया । एर्वं पुदुतेग वि । जीवे वं भंते । जार्दं द्वयार्दं मोसमासत्तार्दं विष्वर  
 तार्दं कि सव्वमासत्तार्दं निरिर्व मोसमासत्तार्दं सव्वमोसमासत्तार्दं असव्वमो-  
 समासत्तार्दं निरिर्व ? गोपमा ! जो सव्वमासत्तार्दं निरिर्व, मोसमासत्तार्दं निरिर्व,  
 जो सव्वमासमस्तार्दं जो असव्वमोसमासत्तार्दं निरिर्व । एर्वं गव्वमासमासत्तार्दं  
 वि असव्वमोसमासत्तार्दं वि एर्वं चेव जवर असव्वमोसमासत्तार्दं विलिर्विया  
 तहेव पुरिष्वर्जति जाए चेव विल्हइ तार्दं चेव निरिर्व । एर्वं एर्वं एर्वं एर्वं एर्वं  
 अदु दृग्गा भाविव्या ॥ ४ ३ ॥ वश्विहे नं भंते । वप्पे वहते ? गोपमा !  
 गाम्यविह वक्ते पश्चते । भंडा—एगव्यक्तु तुव्यये वदुव्यये इपिव्यये  
 पुम्यव्यये अपुम्यव्यये अजात्यव्यये वदुव्यव्यये अपाव्यव्यये उपाव्यये

वणीयवयणे, अवणीओवणीयवयणे, तीतवयणे, पदुपपञ्चवयणे, अणागयवयणे, पञ्चक्षवयणे, परोक्षवयणे । इच्छेऽयं भते । एगवयण वा जाव परोक्षवयण वा वयमाणे पण्णवणी ण एसा भासा, ण एमा भासा मोसा ? हता गोयमा ! इच्छेऽय एगवयण वा जाव परोक्षवयणं वा वयमाणे पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥ ४०३ ॥ एएसि णं भते ! जीवाणं सच्चभासगाण मोसभासगाणं सच्चामोसभासगाण असच्चामोसभासगाण अभासगाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा सच्चभासगा, सच्चामोसभासगा असखेजगुणा, मोसभासगा असखेजगुणा, असच्चामोसभासगा असखेजगुणा, अभासगा अणंतगुणा ॥ ४०४ ॥ पञ्चवणाए भगवईए एक्कारसमं भासापयं समत्तं ॥

कद्द ण भते । सरीरा पञ्चता ? गोयमा । पंच सरीरा पञ्चता । तजहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए । नेइयाण भते । कद्द सरीरया पञ्चता ? गोयमा । तओ सरीरया पञ्चता । तजहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए । एव असुर-कुमाराण वि जाव थणियकुमाराण । पुढिविकाइयाण भते । कद्द सरीरया पञ्चता ? गोयमा । तओ सरीरया पञ्चता । तजहा—ओरालिए, तेयए, कम्मए । एव वाउ-काइयवज्ज जाव चउरिंदियाण । वाउकाइयाण भते । कद्द सरीरया पञ्चता ? गोयमा । चत्तारि सरीरया पञ्चता । तजहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए । एव पर्चिदियतिरिक्तजोणियाण वि । मणुस्साण भते । कद्द सरीरया पञ्चता ? गोयमा । पच सरीरया पञ्चता । तजहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा नारगाण ॥ ४०५-६ ॥ केवङ्ग्या ण भते ! ओरालियसरीरया पञ्चता ? गोयमा ! दुविहा पञ्चता । तजहा—वद्देल्लया य मुक्तेल्लया य । तत्थ ण जे ते वद्देल्लया ते ण असखेज्जा, असखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असखेज्जा लोगा । तत्थ ण जे ते मुक्तेल्लया ते ण अणता, अणताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, अभवसिद्धिईहिंतो अणतगुणा सिद्धाण्टभागो । केवङ्ग्या णं भते ! वेउव्वियसरीरया पञ्चता ? गोयमा ! दुविहा पञ्चता । तजहा—वद्देल्लगा य मुक्तेल्लगा य । तत्थ ण जे ते वद्देल्लगा ते ण असखेज्जा, असखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असखेज्जाहिं अवहीरंति कालओ, जहा ओरालियस्स मुक्तेल्लगा तहेव वेउव्वियस्स वि भाणियन्वा

केवला जैं मंते । आहारग्रसरीरया पक्षता ॥ गोक्षमा ॥ तुषिहा पक्षता । ठंडा-  
बद्धेक्षमा य मुद्देक्षमा य । तत्त्व र्ण जे तु बद्धेक्षमा ते र्ण सिय वरिति सिंह नहिं ।  
जह अरिय बहुप्रेम एद्दो का दो का शिखि का उक्षोरेन सहस्रपुरुष । तत्त्व र्ण  
जे ते मुद्देक्षमा हे र्ण अर्वता जहा ओरालिमस्व मुद्देक्षमा तहेव भाविक्षमा ।  
केवला जैं मंते । तेमगस्तरीरया पक्षता ॥ गोक्षमा ॥ तुषिहा पक्षता । ठंडा-बद्धे-  
क्षमा य मुद्देक्षमा य । तत्त्व र्ण जे ते बद्धेक्षमा ते र्ण अर्वता अर्वताहै उस्तुपिण्डि-  
ओस्तुपिण्डीहै अक्षीरंति कास्थो बेत्तबो अर्वता भेगा दम्भबो स्त्रियहैतो अर्वत-  
गुणा सम्बन्धीयार्वतमागृहा । तत्त्व र्ण जे ते मुद्देक्षमा ते र्ण अर्वता अर्वताहै  
उस्तुपिण्डिओस्तुपिण्डीहै अक्षीरंति कास्थो बेत्तबो अर्वता औपा दम्भबो सम्ब-  
न्धीयहैतो अर्वतगुणा योवक्षमास्त्रामेवभागो । एवं कम्मास्तरीरयि ति भाविक्षमा ॥  
॥ ४ ७ ॥ नेत्रश्वार्ण मंते । केवला ओरालिमस्तरीरा पक्षता ॥ गोक्षमा ॥ तुषिहा  
पक्षता । ठंडा-बद्धेक्षमा य मुद्देक्षमा य । तत्त्व र्ण जे ते बद्धेक्षमा ते र्ण वरिति ।  
तत्त्व र्ण जे ते मुद्देक्षमा ते र्ण अर्वता जहा ओरालिममुद्देक्षमा तहा भाविक्षमा ।  
मेत्रश्वार्ण मंते । केवला मेत्रपिण्डस्तरीरा पक्षता ॥ गोक्षमा ॥ तुषिहा पक्षता । ठंडा-  
बद्धेक्षमा य मुद्देक्षमा य । तत्त्व र्ण जे ते बद्धेक्षमा ते र्ण असुखेजाये सेहीयो पवरस्त  
असुखेक्षमागो ताहि ये सेहीर्ण विष्टुमसूर्ण अगुलक्षममामूर्ण विष्टममसूर्ण-  
पहुङ्कर्ण अहूद र्ण अगुमलिलयमममूर्णपवरस्तमावदेत्तबो सेहीयो । तत्त्व र्ण जे ते  
मुद्देक्षमा ते र्ण जहा ओरालिमस्व मुद्देक्षमा तहा भाविक्षमा । नेत्रश्वार्ण मंते ।  
केवला आहारग्रसरीरा पक्षता ॥ गोक्षमा ॥ तुषिहा पक्षता । संक्षु-बद्धेक्षमा य  
मुद्देक्षमा य एवं जहा ओरालिम बद्धेक्षमा मुद्देक्षमा य मविका तहेव आहारया  
ति भाविक्षमा । तेमाक्षमार्द जहा एएवि चेव वेत्रपिण्ड ॥ ४ ८ ॥  
अगुरुक्षमार्द मंते । केवला ओरालिमस्तरीरा पक्षता ॥ गोक्षमा ॥ जहा वेत्रश्वार्ण  
ओरालिमस्तरीरा मविका तहेव एएवि भाविक्षमा । अगुरुक्षमार्द मंते । केवला  
वेत्रपिण्डस्तरीरा पक्षता ॥ गोक्षमा ॥ तुषिहा पक्षता । ठंडा-बद्धेक्षमा य मुद्देक्षमा  
य । तत्त्व र्ण जे ते बद्धेक्षमा ते र्ण असुखेजा असुखेजाहै उस्तुपिण्डीओस्तुपिण्डीहै  
अर्वतिरंति कास्थो बेत्तबो असुखेजायो सेहीयो पवरस्त असुखेक्षमाये ताहि  
ये सेहीर्ण विष्टुमसूर्ण अगुलक्षममामूर्णपवरस्तमागो । तत्त्व र्ण जे ते  
मुद्देक्षमा ते र्ण जहा ओरालिमस्व मुद्देक्षमा तहा भाविक्षमा । आहारग्रसरीरा  
जहा एएवि चेव ओरालिम तहेव तुषिहा भाविक्षमा तवाक्षमास्तरीरा तुषिहा ति

जहा एएसि चेव वेउव्विया, एव जाव थणियकुमारा ॥ ४०९ ॥ पुढविकाडयाण भते । केवडया ओरालियमरीरगा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-वद्देलगा य मुक्केलगा य । तत्थ ण जे ते वद्देलगा ते ण असखेजा, असखेजाहिं उस्सपिणि-ओसपिणीहिं अवहीरति कालओ, खेत्तओ असखेजा लोगा । तत्थ ण जे ते मुक्केलगा ते ण अणता, अणताहिं उस्सपिणि-ओसपिणीहिं अवहीरति कालओ, खेत्तओ अणता लोगा, अभवसिद्धिएहितो अणतगुणा सिद्धाण अणतभागो । पुढवि-काइयाण भते । केवडया वेउव्वियमरीरगा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-वद्देलगा य मुक्केलगा य । तत्थ ण जे ते वद्देलगा ते ण णत्थि । तत्थ ण जे ते मुक्केलगा ते ण जहा एएसि चेव ओरालिया तहेव भाणियब्बा । एव आहार-गसरीरा वि । तेयाक्रम्मगा जहा एएसि चेव ओरालिया । एव आउकाडयतेउकाडया वि ॥ ४१० ॥ वाउकाइयाण भते । केवडया ओरालियमरीरा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा वि जहा पुढविकाइयाण ओरालिया । वेउव्वियाण पुच्छा । गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-वद्देलगा य मुक्केलगा य । तत्थ ण जे ते वद्देलगा ते ण असखेजा, भमए भमए अवहीरमाणा २ पलिओवमस्स असखेजडभागमेतेण कालेण अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया । मुक्केलगा जहा पुढविकाइयाण । आहारयतेयाक्रम्मा जहा पुढविकाडयाण, वणप्फङ्काइयाण जहा पुढविकाइयाण, णवर तेयाक्रम्मगा जहा ओहिया तेयाक्रम्मगा ॥ ४११ ॥ वेइदियाण भते । केवडया ओरालिया सरीरगा पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । तंजहा-वद्देलगा य मुक्केलगा य, तत्थ ण जे ते वद्देलगा ते ण असखेजा, असखेजाहिं उस्सपिणि-ओसपिणीहिं अवहीरति कालओ, खेत्तओ असखेजाओ सेढीओ पयरस्स असखेजडभागो, तासि ण सेढीण विक्खमसूर्द असखेजाओ जोयणकोडा-कोडीओ असखेजाइ सेढिवगममूलाइ । वेइदियाण ओरालियसरीरहिं वद्देलगोहिं पयरो अवहीरइ, असखेजाहिं उस्सपिणि-ओसपिणीहिं कालओ, खेत्तओ अगुलपयरस्स आवलियाए य असखेजडभागपलिभागेण । तत्थ ण जे ते मुक्केलगा ते जहा ओहिया ओरालियमुक्केलगा । वेउव्विया आहारगा य वद्देलगा णत्थि । मुक्केलगा जहा ओहिया ओरालियमुक्केलगा । तेयाक्रम्मगा जहा एएसि चेव ओहिया ओरालिया, एव जाव चउरिदिया । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण एव चेव, नवर वेउव्वियसरीरएसु इमो विसेसो-पचिंदियतिरिक्खजोणियाण भते । केवडया वेउव्विय-सरीरया पन्नता ? गोयमा ! दुविहा पन्नता । त०-वद्देलगा य मुक्केलगा य । तत्थ ण जे ते वद्देलगा ते ण असखेजा, जहा असुरक्खमाराण णवर तासि ण सेढीण

विकर्मभूर्भुग्यमध्यगमूलस्य अस्तेजाहमाणो । मुदोऽमा तदेव त ४१२ ०  
मण्डस्यार्थं मत । केऽया ओहत्तिमधरीरागा फलता । गोममा । तुमिहा फलता ।  
तंजहा-क्षेत्रागा य मुदोऽग्रागा य तत्त्वं चेत् त ब्येक्षणा तं च तिय संकेजा तिय  
भस्तेजा जाह्यपए संकेजा संकेजाभो बोडाकोटीभो तियमध्यमस्सु उवारि  
चउमध्यमस्सु द्वित्ता अहृतं पंचमक्षमपूर्वात्रो छट्टो एमो अहृतं छन्द-  
उद्येयपग्नाद्वारासी उद्दोमपए अस्तेजा अस्तेजाहिं उस्सपियिदोसपियीहि  
अवहीर्ति काङ्गो बोक्ताभो इवपवित्रोहि मकुस्सेहि देहो अवहीर्ति दीर्घे देखाए  
आगासवीलेहि अवहारो नग्निज्ञा-अस्तेजा अस्तेजाहिं उस्सपियिदोसपियीहि  
काङ्गो बोक्ताभो अंगुष्ठमध्यमामूल त्र्ययमग्नमूलपूर्वात् । तत्त्वं च ते मुदोऽमा  
ते यहा ओहत्तिमा ओहिया मुदोऽग्रागा । देउत्तियाय मंत्रे । तुम्मा । गोममा ।  
तुमिहा पत्तता । तंजहा-क्षेत्रागा य मुदोऽग्रागा य तत्त्वं च ते ब्येक्षणा तं च  
संकेजा उमाए ३ अवहीर्तमाणा ३ संकेजेवं काङ्गेवं अवहीर्ति नो चेत् च च  
हीरिया तिया । अहृतं च ते मुदोऽग्रागा ते च यहा ओहत्तिमा ओहिया । अवहार  
पवरीरा अहा ओहिया । तंजहा-क्षमगा जहा एरसि चेत् ओहत्तिमा बाह्यमंत्राल  
जहा नेत्रवालं बोहत्तिमा आहारणा य । देउत्तियस्तीरणा जहा नेत्रवालं बहर  
तानि च देहीर्वं विकर्मभूर्भु, संकेजाभोक्ताद्यमक्षमपविभाणो पवरस्य । मुदोऽग्रा  
गा ओहत्तिमा आहारग्नस्तीरणा जहा अघुठमारावं देहाभ्यम्या जहा एरसि च  
चेत् देउत्तिमा । ओहत्तिमार्थं एवं चेत् नवरं तानि च देहीर्वं विकर्मभूर्भु,  
विद्यपूर्वाघुठमध्यमापविभाणो पवरस्य । देहाभ्यम्या एवं चेत् नवरं तानि च  
देहीर्वं विकर्मभूर्भु, अंगुष्ठपित्र्यमग्नमूल त्र्ययमग्नमूलपूर्वात् अहृतं अंगुष्ठपूर्व-  
ब्यमध्यमध्यमाभमेताभो देहीभो देहे त चेत् ॥ ४१२ ॥ पश्ययणापर भगवर्द्दिप-  
वारसमै स्तरीरपर्यं समर्तं ॥

क्षमिहू न भेतु । परिणामं पक्षते । गोममा । तुमिहै परिणामं पक्षते । तंजहा-  
विवरिक्ताम च विवरिक्ताम य । विवरिक्तामे च मत । क्षमिहै पक्षते ।  
गोममा । दमिहै पक्षते । तंजहा-विवरिक्ताम १ इदियपरिणाम १ विवरिक्ताम  
१ स्मावपरिणाम १ जोगपरिणाम ५ उद्यमगपरिणाम ५ बावरिक्तामे ५  
दैत्यपरिणाम ५ चरितपरिणाम ५ विवरिक्ताम ५ ४ ४१४ ५ गद्यपरिणामे च  
भेतु क्षमिहै पक्षते । गोममा । चउत्तिहै पक्षते । तंजहा-विवरिक्ताम विरिय-  
व्यपरिणामे ल्लुबण्डपरिणाम विवरिक्ताम ३ । इविवरिक्ताम च भेतु । ५८  
गिहै पक्षते । गोममा । पंचमिहै पक्षते । तंजहा-ओईविवरिक्ताम विवरिक्ती

णामे, धार्णिदियपरिणामे, जिविंदियपरिणामे, फासिंदियपरिणामे २ । कसायपरिणामे ण भते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! चउविहे पञ्चते । तंजहा-कोहकसायपरिणामे, मायाकसायपरिणामे, मायाकसायपरिणामे, लोभकसायपरिणामे ३ । लेसापरिणामे ण भते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! छविहे पञ्चते । तजहा-कण्हलेसापरिणामे, नीललेसापरिणामे, काउलेसापरिणामे, तेउलेसापरिणामे, पम्हलेसापरिणामे, सुक्ललेसापरिणामे ४ । जोगपरिणामे ण भते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! तिविहे पञ्चते । तजहा-मणजोगपरिणामे, वइजोगपरिणामे, कायजोगपरिणामे ५ । उवओगपरिणामे ण भते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! दुविहे पञ्चते । तजहा-सागारोवओगपरिणामे, अणागारोवओगपरिणामे य ६ । णाणपरिणामे ण भंते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! पचविहे पञ्चते । तजहा-आभिणिबोहियणाणपरिणामे, सुयणाणपरिणामे, ओहिणाणपरिणामे, मणपज्जवणाणपरिणामे, केवलणाणपरिणामे । अणाणपरिणामे ण भते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! तिविहे पञ्चते । तजहा-मझअणाणपरिणामे, सुयअणाणपरिणामे, विभगणाणपरिणामे ७ । दंसणपरिणामे ण भंते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! तिविहे पञ्चते । तजहा-सम्मद्वंसणपरिणामे, मिच्छादसणपरिणामे, सम्मामिच्छादसणपरिणामे ८ । चरित्तपरिणामे ण भते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! पचविहे पञ्चते । तजहा-सामाइयचरित्तपरिणामे, छेदोवट्टावणियचरित्तपरिणामे, परिहारिषुद्धियचरित्तपरिणामे, सुहुमसपरायचरित्तपरिणामे, अहक्खायचरित्तपरिणामे ९ । वेयपरिणामे ण भते ! कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! तिविहे पञ्चते । तजहा-इत्थिवेयपरिणामे, पुरिसवेयपरिणामे, णपुसगवेयपरिणामे १० ॥ ४१५ ॥ नेरइया गडपरिणामेण निरयगडया, इदियपरिणामेण पर्चिदिया, कसायपरिणामेण कोहकमाई वि जाव लोभकसाई वि, लेसापरिणामेण कण्हलेसा वि नीललेसा वि काउलेसा वि, जोगपरिणामेण मणजोगी वि वइजोगी वि कायजोगी वि, उवओगपरिणामेण सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि, णाणपरिणामेण आभिणिबोहियणाणी वि सुयणाणी वि ओहिणाणी वि, अणाणपरिणामेण मझअणाणाणी वि सुयअणाणी वि विभगणाणी वि, दसणपरिणामेण सम्मादिढ्डी वि मिच्छादिढ्डी वि सम्मामिच्छादिढ्डी वि, चरित्तपरिणामेण नो चरित्ती, नो चरित्ताचरित्ती, अचरित्ती, वेयपरिणामेण नो इत्थिवेयगा, नो पुरिसवेयगा, नपुसगवेयगा । असुरकुमारा वि एव चेव, नवर टेवगडया, कण्हलेसा वि जाव तेउलेसा वि, वेयपरिणामेण इत्थिवेयगा वि, पुरिसवेयगा वि, नो नपुसगवेयगा, सेस त चेव । एव जाव थणियकुमारा । पुढिंविकाडया गडपरिणामेण तिरियगडया, इदियपरिणामेण एर्गिंदिया, सेस जहा नेरइयाण, नवर लेसापरिणामेण तेउलेसा वि,

कोमाररिणामेवं अयज्ञोगी याणपरिणामो वसिष्ठ मञ्चाणपरिणामेवं महमण्याणी  
मुमभ्याणी दंसापरिणामेवं मिष्ठारिद्वी सेवं तं चेव । एवं आठवत्सलक्षणात्मा  
वि । सर्वास्त एवं चेव नवर देवापरिणामेवं वहा नेत्रवा । वैरिणा गृष्णरि-  
कामेवं लिरियश्वका इश्वररिणामेवं लेहिणा सेवं वहा नेत्रवान् । नवर ग्रेष-  
परिणामेवं वहज्ञोगी कामज्ञोगी याणपरिणामेवं आभिविदोहियगाणी वि त्रयवाणी  
वि अण्णाणपरिणामेवं महमण्याणी वि मुमभ्याणी वि भो विभीग्याणी दंस-  
परिणामेवं कुममिद्वी वि मिष्ठासिद्वी वि भो मम्मामिष्ठारिद्वी सुर्वं तं चेव । एवं  
आब चतुरिण्या नवर इश्वररिणुही अकथा । पंचिदिवविरिक्षप्रयोगिया गृष्णरि-  
कामेवं लिरियश्वका सेवं वहा नेत्रवाणी नवर देवापरिणामेवं आब मुहुर्घेषा वि ।  
चरितपरिणामेवं जो चरिती अपरिती वि चरिताचरिती वि देवपरिणामेवं इस्त-  
वेष्या वि पुरिषेवगा वि अमुहुर्गावेवगा वि । मणुस्सा गृष्णपरिणामेवं मणुस्सागृष्ण  
इश्वरपरिणामेवं पंचिदिणा अजिण्या वि वसाणपरिणामेवं कोहृष्टार्ण वि आब  
अक्षवार्ण वि देवापरिणामेवं कलहेषा वि आब अक्षेषा वि अग्राणीरिणामेवं मह-  
ज्ञोगी वि आब अज्ञोगी वि उक्तज्ञोगपरिणामेवं वहा नेत्रवा याणपरिणामेवं आमि-  
विक्षोहिक्षाणी वि आब देवामज्ञाणी वि अण्णाणपरिणामेवं लिलिं वि अण्णाणा  
दंसापरिणामेवं लिलिं वि देवुणा चरितापरिणामेवं चरिती वि अचरिती वि अचरित-  
परिती वि देयपरिणामेवं इश्वरवेष्या वि पुरिषेवगा वि अमुहुर्गावेवगा वि अवेवगा  
वि । वाणमंत्ररा गृष्णपरिणामेवं देवगाइया वहा अमुहुर्गमारा पूर्वं अद्वितिया  
वि नवर देवापरिणामेवं तुर्ढेस्सा । विमानिया वि पूर्वं चेव नवर देवापरि-  
जामेवं तेवक्षेषा वि फूहेषा वि तुर्ढेषा वि देवं बीक्षपरिणामे ॥ ४१६ ॥  
अज्ञोगपरिणामे नं भंते । अविहे पक्षते । योवमा । दसविहे पक्षते । तंवहा-वैष्ण-  
परिणामे १ गृष्णपरिणामे २ सुठाणपरिणामे ३ भैमायक्षिणामे ४ वस्त्रपरिणामे ५  
गोवपरिणामे ६ रसपरिणामे ७ वस्त्रपरिणामे ८ अमुहुर्गुबपरिणामे ९ शह-  
परिणामे १ ॥ ४१७ ॥ वैष्णवपरिणामे नं भंते । अविहे पक्षते । योवमा । तुविहे  
पक्षते । तंवहा-विद्वर्वद्वपरिणामे लुक्ष्यर्वद्वपरिणामे न । सुमनिद्वाए वैष्णो न  
होइ उमलुमक्षाप वि न होइ । भैमायक्षिणायक्षामेवं वैष्णो उ लंबाणी ॥ १ ॥ न  
विद्वस्त्र विद्वेष तुवाहिप नं लक्ष्यस्त्रस्त्र सुक्ष्मेष तुवाहिप न । निद्वस्त्र लुक्षेष  
उमेह वैष्णो वहज्ञवज्ञे विक्ष्मो समीक्षा ॥ २ ॥ गृष्णपरिणामे नं भंते । अविहे  
पक्षते । योवमा । तुविहे पक्षते । तंवहा-मुहुसाणगत्वैष्णपरिणामे न अमुहुर्गमाण-  
परिणामे न अहा इश्वरपरिणामे न इस्त्वागृष्णपरिणामे न ॥ ४१८ ॥ स्त्रवलपरिणामे न

भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नते ! तजहा-परिमटलसठाणपरिणामे जाव आयथसठाणपरिणामे ३ । भेयपरिणामे ण भते ! कःविहे पन्नते ? गोयमा ! पचविहे पन्नते ! तजहा-संटभेयपरिणामे जाव उकरियाभेयपरिणामे ४ । घण्णपरिणामे ण भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! पचविहे पन्नते ! तजहा-कालवण्णपरिणामे जाव सुकिळवण्णपरिणामे ५ । गधपरिणामे ण भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते ! नजहा-सुविभगधपरिणामे य दुविभगधपरिणामे य ६ । रम्परिणामे ण भते ! कःविहे पन्नते ? गोयमा ! पचविहे पन्नते ! तजहा-तित्तरसपरिणामे जाव महुररम्परिणामे ७ । फामपरिणामे ण भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! अट्टविहे पन्नते ! तजहा-कन्खटफामपरिणामे य जाव लुक्खफासपरिणामे य ८ । अगुरुलहुयपरिणामे ण भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! एगागारे पन्नते ९ । सद्धपरिणामे ण भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते ! तजहा-सुविभसद्धपरिणामे य दुविभसद्धपरिणामे य १० । सेत अजीवपरिणामे ॥४१८॥ पन्नचणाए भगवईए तेरसमं परिणामपयं समत्तं ॥

कइ ण भते ! कसाया पन्नता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नता ! तजहा-कोहकसाए, माणकमाए, मायाकसाए, लोमकसाए ! नेरइयाण भते ! कइ कसाया पन्नता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नता ! तजहा-कोहकसाए जाव लोभकसाए ! एव जाव वेमाणियाण ॥ ४१९ ॥ कःपइट्टिए ण भते ! कोहे पन्नते ? गोयमा ! चउपइट्टिए कोहे पन्नते ! तजहा-आयपइट्टिए, परपइट्टिए, तदुभयपइट्टिए, अप्पइट्टिए ! एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण दडओ ! एव माणेण दडओ, मायाए दडओ, लोभेण दंडओ ॥ ४२० ॥ कइहिं ण भते ! ठाणेहिं कोहुप्पती भवइ ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पती भवइ, तजहा-खेत पडुच्च, वत्यु पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च ! एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण ! एव माणेण वि मायाए वि लोभेण वि, एव एए वि चत्तारि दडगा ॥ ४२१ ॥ कइविहे ण भते ! कोहे पन्नते ? गोयमा ! चउव्विहे कोहे पन्नते ! तजहा-अणताणवधी कोहे, अपच्चक्खाणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, सजलणे कोहे ! एव नेरडयाण जाव वेमाणियाण ! एव माणेण मायाए लोभेण, एए वि चत्तारि दडगा ॥ ४२२ ॥ कइविहे ण भते ! कोहे पन्नते ? गोयमा ! चउव्विहे कोहे पन्नते ! तजहा-आभोगनिव्वत्तिए, अणाभोगनिव्वत्तिए, उवसते, अणुवसते ! एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण ! एव माणेण वि, मायाए वि, लोभेण वि चत्तारि दडगा ॥ ४२३ ॥ जीवा ण भते ! कइहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगझीओ चिणिसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगझीओ चिणिसु, तजहा-कोहेण,

माणेवं मावाए, लभेत् । एव नरद्यता जाव देमाभिकर्त्त । जीवा वं भेत् । अरि  
ठाणेहि अद्व कम्मपगार्दीओ विविति । योममा । अउहि ठाणेहि, तंबहा-कोहेवं  
माणेवं मावाए, लभेत् । एव मंद्यता जाव देमाभिकर्त्त । जीवा वं भेत् । अरि  
ठाणेहि अद्व कम्मपगार्दीओ विवित्संति । गोममा । अउहि ठाणेहि अद्व कम्मपगार्दीओ  
विवित्संति तंबहा-कोहेवं माणेवं मावाए, लभेत् । एव नरद्यता जाव देमाभिकर्त्त ।  
जीवा वं भेत् । अउहि ठाणेहि अद्व कम्मपगार्दीओ दवधितिषु । गोममा । अउहि  
ठाणेहि अद्व कम्मपगार्दीओ उवकितिषु, तंबहा-कोहेवं माणेवं मावाए, लभेत् ।  
एव नरद्यता जाव देमाभिकर्त्त । जीवा वं भेत् । पुच्छ । योममा । अउहि ठाणेहि  
उवधित्संति जाव लभेत् । एव नेरता जाव देमाभिकर्त्त । एव उवधित्संति ।  
जीवा वं भेत् । अउहि ठाणेहि अद्व कम्मपगार्दीओ वंधिषु । गोममा । अउहि ठाणेहि  
अद्व कम्मपगार्दीओ वंधिषु तंबहा-कोहेवं माणेवं जाव लभेत् । एव नेरता जाव  
देमाभिकर्त्त । वंधिषु वंधिति वंधित्संति उर्धीरैषु, उर्धीरैषि उर्धीरित्संति वेरिष्ट  
वेरिष्टु वेरिष्टसंति विजरिषु निजरिषेति निजरिसंति एवं पृथं पांचशङ्क देवा-  
विषपञ्चदुषाणा अद्वारम दद्यता जाव देमाभिकर्त्त निजरिषु निजरेषि निजरित्संति ।  
आयशहृष्ट्य देवा पृथं शताखुविष्ट वामदेवे । विष उवधित्य वंध उर्धीर वेव तत्त निजरा-  
न्तर ॥ १ ॥ ४३४ ॥ पञ्चवणाप्य भगवाहिष्ट बोहसमे क्लसायपर्य समर्थे ॥

संठार्वं वाहृष्टं पोहत्तं क्लप्पेत्त बोगाहै । वप्पमहु पुद्ध परिषु विसुव अक्षमार  
आहार ॥ १ ॥ ५ अहाव असी वं मणी तुष्ट पार्विय देव व्यविय तदा व । कंव  
शूणा विमल शीचोवहि अभेष्टमेवे म ॥ २ ॥ क्ष वं भेत् । इविया फलाता ।  
गोममा । पंच इविया फलाता । तंबहा-सोईरिषु, अविकाशिए, वासिरिषु, विभिरिषु,  
व्यविरिषु ॥ ४३५ ॥ सोईरिषु वं भेत् । विस्तीरिषु वक्तो । योममा । क्लवुचा-  
पुप्पसठावधेतिषु वक्तो । अविकुरिषु वं भेत् । विरिषु वक्तो । योममा । अहर  
वंवसठावधेतिषु वक्तो । विभिरिषु वं भेत् । विभिरिषु वक्तो । गोममा । वृद्धुक्षवंव  
सद्यमसुतिषु वक्तो । विभिरिषु वं भेत् । गोममा । वृद्धुक्षवंव संतिषु वक्तो ।  
फासिरिषु वं भेत् । गोममा । वाक्षासंवायसंतिषु वक्तो ॥ ३ ॥ ४३६ ॥ सोईरिषु वं  
भेत् । केवहृष्टं वाहेवं वक्तो । गोममा । अगुमल्ल वस्त्रेवद्यमनो वाहेवं वक्तो ।  
एवं जाव वासिरिषु २ । सोईरिषु वं भेत् । केवहृष्टं वोहतोर्वं वक्तो । गोममा ।  
अगुमल्ल वस्त्रेवद्यमार्गं वोहतोर्वं वक्तो । एव अविकाशिए वि वासिरिषु वि ।  
विभिरिषु वं भेत् । गोममा । अगुमल्ल वक्तो । वासिरिषु वं भेत् । गोममा ।  
उर्धीरिषु वं भेत् । विभिरिषु वं भेत् ॥ ४ ॥ ४३७ ॥ सोईरिषु वं भेत् । व्यप्पेतिषु वक्तो ॥

गोयमा ! अणंतपएसिए पञ्चते । एवं जाव फासिंदिए ४ ॥ ४२८ ॥ सोइंदिए ण भते ! कडपएसोगाडे पञ्चते ? गोयमा ! असखेजपएसोगाडे पञ्चते । एवं जाव फासिंदिए ५ ॥ ४२९ ॥ एएसि ण भते ! सोइदियचकिंखदियधार्णिदियजिविभदियफासिंदियाण ओगाहणट्टयाए पएसट्टयाए ओगाहणपएसट्टयाए क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा वहुया वा तुला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्बत्योवे चकिंखदिए ओगाहणट्टयाए, सोइंदिए ओगाहणट्टयाए सखेजगुणे, धार्णिदिए ओगाहणट्टयाए सखेजगुणे, जिविभदिए ओगाहणट्टयाए असखेजगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्टयाए सखेजगुणे, पएसट्टयाए-सब्बत्योवे चकिंखदिए पएसट्टयाए, सोइंदिए पएसट्टयाए सखेजगुणे, धार्णिदिए पएसट्टयाए सखेजगुणे, जिविभदिए पएसट्टयाए असखेजगुणे, फासिंदिए पएसट्टयाए सखेजगुणे, ओगाहणपएसट्टयाए-सब्बत्योवे चकिंखदिए ओगाहणट्टयाए, सोइदिए ओगाहणट्टयाए सखेजगुणे, धार्णिदिए ओगाहणट्टयाए सखेजगुणे, जिविभदिए ओगाहणट्टयाए असखेजगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्टयाए सखेजगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणट्टयाएहिंतो चकिंखदिए पएसट्टयाए अणतगुणे, सोइदिए पएसट्टयाए सखेजगुणे, धार्णिदिए पएसट्टयाए सखेजगुणे, जिविभदिए पएसट्टयाए असखेजगुणे, फासिंदिए पएसट्टयाए सखेजगुणे ॥ ४३० ॥ सोइंदियस्स ण भते ! केवडया कक्खडगुरुयगुणा पञ्चता ? गोयमा ! अणता कक्खडगुरुयगुणा पञ्चता, एव जाव फासिंदियस्स । सोइदियस्स ण भते ! केवडया मउयलहुयगुणा पञ्चता ? गोयमा ! अणता मउयलहुयगुणा पञ्चता, एव जाव फासिंदियस्स ॥ ४३१ ॥ एएसि णं भते ! सोइदियचकिंखदियधार्णिदियजिविभदियफासिंदियाण कक्खडगुरुयगुणाण मउयलहुयगुणाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्योवा चकिंखदियस्स कक्खडगरुयगुणा, सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, धार्णिदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, जिविभदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा । मउयलहुयगुणाण-सब्बत्योवा फासिंदियस्स मउयलहुयगुणा, जिविभदियस्स मउयलहुयगुणा अणतगुणा, धार्णिदियस्स मउयलहुयगुणा अणतगुणा, सोइदियस्स मउयलहुयगुणा अणतगुणा, चकिंखदियस्स मउयलहुयगुणा अणतगुणा । कक्खडगरुयगुणाण मउयलहुयगुणाण य-सब्बत्योवा चकिंखदियस्स कक्खडगरुयगुणा, सोइदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, धार्णिदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, जिविभदियस्स कक्खटगरुयगुणा अणतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणेहिंतो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणतगुणा, जिविभदियस्स मउयलहुय-

गुणा अर्थत्युगा पारिविकस्य मउयम्भुद्युगा अर्थत्युगा शोईविकस्य मउम्भु  
यगुणा अर्थत्युगा अक्षियदिवस्य मउयम्भुद्युगा अर्थत्युगा ॥ ४१२ ॥ मेरइवार्ण  
मठ । क्ष इन्द्रिया पक्षता ॥ गोममा । पम तंजहा—शोइन्द्रिय जाव शांतिन्द्रिय ।  
मेरइवार्ण मेठे । शोइन्द्रिय किसेठिए पक्षते ॥ गोममा । अम्भुयासंठावसंठिए पक्षते ।  
एवं जहा आहियार्ण बाह्यवा भविया ठोड नंदवार्ण पि जाव अप्याम्भुयार्ण  
दोणिण । नवरे मेरइवार्ण मेठे । शांतिन्द्रिय किसेठिए पक्षते ॥ गोममा । तुथिए  
पक्षते । तंजहा—भवधारनिये व उत्तरवेत्तनिये व । तत्त्व नं ले से  
नं दुर्गसंत्रणसंठिए पक्षते तत्त्व वं भे से उत्तरवेत्तनिये ॥ ४१३ ॥  
पुरुखुमारार्ण मेठे । क्ष इन्द्रिया पक्षता ।  
शोइयार्ण जाव अप्याम्भुयार्ण दोणिण वि । नवरे फारि

४१४ उत्तरवेत्तनिये व । तत्त्व नं ले

|        |                         |
|--------|-------------------------|
| संठिए  | तत्त्व नं ले से ॥ ४१५ ॥ |
| वं भे  | ॥ ४१६ ॥                 |
| पक्षते | । शांतिन्द्रिय पक्षते । |
| ।      | । गोममा । भस्त्रवेदस्   |
| भंत    | ४१७ शाहेवर्ण पक्षते     |

वेइदियाण भते ! कह इदिया पन्नता ? गोयमा ! दो इदिया पन्नता ! तजहा-  
जिव्मिदिए य फासिंदिए य । दोण्ह पि इंदियाण सठाण वाहळ पोहत्त पएसा ओगा-  
हणा य जहा ओहियाण भणिया तहा भाणियव्वा, णवर फासिंदिए हुड्सठाणसठिए  
पण्तेति डमो विसेसो । एएसि णं भते ! वेइंदियाण जिव्मिदियफासिंदियाण  
ओगाहणट्ट्याए पएसट्ट्याए ओगाहणपएसट्ट्याए क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ?  
गोयमा ! सब्बत्थोवे वेइदियाण जिव्मिदिए ओगाहणट्ट्याए, फासिंदिए ओगाहणट्ट्याए  
सखेजगुणे । पएसट्ट्याए-सब्बत्थोवे वेइंदियाण जिव्मिदिए पएसट्ट्याए, फासिन्दिए  
सखेजगुणे । ओगाहणपएसट्ट्याए-सब्बत्थोवे वेइदियस्स जिव्मिदिए ओगाहणट्ट्याए,  
फासिन्दिए ओगाहणट्ट्याए सखेजगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणट्ट्याएहितो जिव्मिदिए  
पएसट्ट्याए अणतगुणे, फासिन्दिए पएसट्ट्याए सखेजगुणे । वेइन्दियाण भते !  
जिव्मिन्दियस्स केवइया कक्खडगरुयगुणा पन्नता ? गोयमा ! अणता । एव फासि-  
न्दियस्स वि, एव मउयलहुयगुणा वि । एएसि ण भते ! वेइन्दियाण जिव्मिदिय-  
फासिन्दियाण कक्खडगरुयगुणाण, मउयलहुयगुणाण, कक्खडगरुयगुणाण, मउयलहु-  
यगुणाण य क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा वेइन्दियाण  
जिव्मिदियस्स कक्खडगरुयगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा,  
फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणेहितो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणतगुणा, जिव्मि-  
दियस्स मउयलहुयगुणा अणतगुणा । एवं जाव चउरिन्दियति, नवरं इदियपरिखुड्ही  
कायव्वा । तेडादियाण घाणिन्दिए थोवे, चउरिन्दियाण चक्किखदिए थोवे, सेस त  
चेव । पचिन्दियतिरिक्खजोणियाण मणूसाण य जहा नेरइयाण, नवरं फासिन्दिए  
छविहसठाणसठिए पन्नते । तजहा-समचउरसे निम्गोहपरिमडले साई खुजे वामणे  
हुडे । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ॥ ४३६ ॥ पुट्टाइ भते !  
सद्वाइ सुणेइ, अपुट्टाइ सद्वाइ सुणेइ ? गोयमा ! पुट्टाइ सद्वाइ सुणेइ, नो अपुट्टाइ  
सद्वाइ सुणेइ । पुट्टाइ भते ! रुवाइ पासइ, अपुट्टाइ० पासइ ? गोयमा ! नो पुट्टाइ  
स्वाइ पासइ, अपुट्टाइ रुवाइ पासइ । पुट्टाइ भते ! गवाइ अगधाइ, अपुट्टाइ गधाइ  
अगधाइ ? गोयमा ! पुट्टाइ० गधाइ अगधाइ, नो अपुट्टाइ० अगधाइ । एव रसाण वि  
फामाण वि, नवर रसाइ अस्ताएइ, फासाइ पडिसवेदेइ ति अभिलाको कायव्वो ।  
पविट्टाइ भते ! सद्वाइ सुणेइ, अपविट्टाइ सद्वाइ सुणेइ ? गोयमा ! पविट्टाइ सद्वाइ सुणेइ,  
नो अपविट्टाइ सद्वाइ सुणेइ, एव जहा पुट्टाणि तहा पविट्टाणि वि ॥ ४३७ ॥  
मोडन्दियस्स ण भते ! केवइए विसए पन्नते ? गोयमा ! जहणेण अगुलस्स  
असखेजइभागो, उक्कोसेण वारमहिं जोयणेहिन्तो अच्छिणे पोगले पुट्टे पविट्टाइ

गुणा अर्थत्तुगुणा घासिदिवस्य मउयस्तुगुणा अर्थत्तुगुणा सोर्तिवस्य मउयस्तु  
गुणा अर्थत्तुगुणा घक्षिदिवस्य मउयस्तुगुणा अर्थत्तुगुणा ॥ ४२३ ॥ मत्रवार्ता  
भंते । कद इन्दिया पहाता ॥ गोममा । एवं तंजहा-सोदिन्दिए जाव घासिन्दिए ।  
मेत्रवाम भंते । सोइन्दिए डिसंठिए पहाते ॥ गोममा । क्षमेत्तुगुणासंठाणसंठिए पहाते ।  
एवं जहा ओहिवार्ता वामवा भग्यिया तहेव मेत्रवाम वि जाव अप्यावद्युगायि  
शाल्य । नवर नेत्रवार्ता भंते । घासिन्दिए डिसंठिए पहाते ॥ घेममा । दुषिहे  
पहाते । तंजहा-भवधारमिजे य उत्तरवेत्तमिए य । तत्प नं जे से भवधारमिजे से  
र्वं दुष्टसंठाणसंठिए पहाते तत्प नं जे से उत्तरवेत्तमिए से वि तहेव सर्वं तं खेव  
॥ ४२४ ॥ अमुखमारार्ता भंते । कद इन्दिया पहाता ॥ गोममा । एवं एवं जहा  
ओहियायि जाव अप्यावद्युगायि दोभियि वि । नवर घासिन्दिए दुषिहे पहाते । तंजहा-  
मवधारमिजे य उत्तरवेत्तमिए य । तत्प नं जे से भवधारमिजे से र्वं समकर्ता  
मुसंठाणसंठिए पहाते तत्प नं जे से उत्तरवेत्तमिए से र्वं जालसंठाणसंठिए, सेंधे  
तं खेव । एवं जाव घविशुमारार्ता ॥ ४२५ ॥ पुडिक्कावार्ता भंते । कद इन्दिया  
पहाता ॥ गोममा । एगे घासिन्दिए पहाते । पुडिक्कावार्ता भंते । घासिन्दिए  
डिसंठाणसंठिए पहाते ॥ गोममा । मसुर्वेदसंठाणसंठिए पहाते । पुडिक्कावार्ता  
भंते । घासिन्दिए खेवर्व वाहेते पहाते ॥ गोममा । अगुम्सस असुरेवद्यमार्ता  
वाहेवर्व पहाते । पुडिक्कावार्ता भंते । घासिन्दिए खेवर्व योहेते पहाते ॥ गोममा ।  
सरीरप्पमालमेते पोहतेर्व । पुडिक्कावार्ता भंते । घासिन्दिए क्षपण्यिए पहाते ॥  
गोममा । अर्थत्तपएतिए पहाते । पुडिक्कावार्ता भंते । घासिन्दिए क्षपण्योगाहे  
पहाते । गोममा । असुरेवद्यफूसोगाहे पहाते । एएति न भंते । पुडिक्कावार्ता  
फासिन्दिवस्य ओपावद्युगाए पक्षद्वयाए ओगावद्यमप्सद्वयाए क्षरे क्षरेत्तिहो  
अप्या वा ६ ॥ गोममा । सम्भत्तोवे पुडिक्कावार्ता घासिन्दिए ओगावद्युगाए, से  
खेव पप्सद्वयाए अर्थत्तगुणे । पुडिक्कावार्ता भंते । घासिन्दिवस्य खेववा क्षक्षह  
पद्यगुणा पहाता ॥ गोममा । अर्थता एवं मत्रवद्युगुणा वि । एएति न भंते ।  
पुडिक्कावार्ता फासिन्दिवस्य क्षक्षहवद्यगुणार्ता भंते । मत्रवद्युगुणावाण य क्षरे  
क्षरेत्तिहो अप्या वा ७ ॥ गोममा । सम्भत्तोवा पुडिक्कावार्ता घासिन्दिवस्य क्षक्ष  
दगद्यगुणा तस्य खेव मत्रवद्युबगुणा अर्थत्तगुणा । एवं आसक्कावाम वि जाव  
द्यवप्पक्कावार्ता नवर सुठाये इमो विसेसो चुम्बो-आसक्कावार्ता विकुपविकुर्ता-  
वसुठिए पहाते । तुठक्कावार्ता चुम्बक्कावार्ता वसुठिए पहाते । बालक्कावार्ता पहा  
गायुआवसुठिए पहाते । वलप्पक्कावार्ता वाजासुठाप्पसुठिए पहाते ॥ ४२६ ॥

बेइदियाण भते ! कह इंदिया पन्नता ? गोयमा ! दो इदिया पन्नता । तजहा-  
जिव्मिदिए य फासिंदिए य । दोह॑ पि इंदियाण सठाण बाहल पोहत्तं पएसा ओगा-  
हणा य जहा ओहियाण भणिया तहा भाणियब्बा, णवर फासिंदिए हुडसठाणसठिए  
पण्तेति इमो विसेसो । एएसि णं भते ! बेइंदियाण जिव्मिदियफासिंदियाणं  
ओगाहणट्टयाए पएसट्टयाए ओगाहणपएसट्टयाए क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ?  
गोयमा ! सब्बत्थोवे बेइदियाणं जिव्मिदिए ओगाहणट्टयाए, फासिंदिए ओगाहणट्टयाए  
सखेजगुणे । पएसट्टयाए-सब्बत्थोवे बेइंदियाण जिव्मिदिए पएसट्टयाए, फासिन्दिए  
सखेजगुणे । ओगाहणपएसट्टयाए-सब्बत्थोवे बेइदियस्स जिव्मिदिए ओगाहणट्टयाए,  
फासिन्दिए ओगाहणट्टयाए सखेजगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणट्टयाएहितो जिव्मिदिए  
पएसट्टयाए अणतगुणे, फासिन्दिए पएसट्टयाए सखेजगुणे । बेइन्दियाणं भते !  
जिव्मिन्दियस्स केवइया कक्खडगस्यगुणा पन्नता ? गोयमा ! अणता । एव फासि-  
न्दियस्स वि, एवं मउयलहुयगुणा वि । एएसि णं भते ! बेइन्दियाण जिव्मिदिय-  
फासिन्दियाण कक्खडगस्यगुणाणं, मउयलहुयगुणाण, कक्खडगस्यगुणाण, मउयलहु-  
यगुणाण य क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा बेइन्दियाण  
जिव्मिदियस्स कक्खडगस्यगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगस्यगुणा अणतगुणा,  
फासिंदियस्म कक्खडगस्यगुणेहितो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणतगुणा, जिव्मि-  
दियस्स मउयलहुयगुणा अणतगुणा । एवं जाव चउरिन्दियति, नवरं इदियपरिवृही  
कायब्बा । तेइदियाण घाणिन्दिए थोवे, चउरिन्दियाण चविंखदिए थोवे, सेस तं  
चेव । पंचिन्दियतिरिक्खजोणियाण मण्साण य जहा नेरइयाण, नवर फासिन्दिए  
छव्विहसठाणसठिए पन्नते । तजहा-समचउरंसे निगोहपरिमडले साईं खुजे वामणे  
हुडे । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा असुरकुम्भाराण ॥ ४३६ ॥ पुट्टाइ भते !  
सद्वाइ सुणेइ, अपुट्टाइ सद्वाइ सुणेइ ? गोयमा ! पुट्टाइ सद्वाइ सुणेइ, नो अपुट्टाइ  
सद्वाइ सुणेइ । पुट्टाइ भते ! ख्वाइ पासइ, अपुट्टाइ० पासइ ? गोयमा ! नो पुट्टाइ  
स्वाइ पासइ, अपुट्टाइ ख्वाइ पासइ । पुट्टाइ भते ! गधाइ अग्धाइ, अपुट्टाइ गधाइ  
अग्धाइ ? गोयमा ! पुट्टाइ० गधाइ अग्धाइ, नो अपुट्टाइ० अग्धाइ । एव रसाण वि  
फासाण वि, नवरं रसाइ अस्साएइ, फासाइ पढिसवेदेइ ति अभिलावो कायब्बो ।  
पविट्टाइ भते ! सद्वाइ सुणेइ, अपविट्टाइ सद्वाइ सुणेइ ? गोयमा ! पविट्टाइ सद्वाइ सुणेइ,  
नो अपविट्टाइ सद्वाइ सुणेइ, एव जहा पुट्टाणि तहा पविट्टाणि वि ॥ ४३७ ॥  
मोडन्दियस्स ण भते ! केवइए विसए पन्नते ? गोयमा ! जहणेण अगुलस्स  
असखेजडभागो, उक्षेसेण वारसहि जोयणेहिन्तो अच्छणे पोगगले पुडे पविट्टाइं

सहाइ उथेह । भावितन्दिवसस वं भवि ! केवल विवेष फलते हं गोवमा । अहल्येवं  
 अगुमसस संप्रेज्ञभागो उद्घोसेवं साक्षरेणाभा व्योवणसयसाहस्रामो अधिष्ठ्ये  
 वोम्यादे अगुद्वे अविद्वाइ इकाइ पासह । भावितन्दिवसम पुर्वम । गोवमा । अहल्येवं  
 अगुमअस्त्रेज्ञभागो उद्घोसेवं नकाहं व्योमनेश्विन्तो अधिष्ठ्य वोमगत मुद्दे  
 पविद्वाइ एवत्र अव्याह, एवं विभितन्दिवसस वि वार्तिरिमस्य वि ॥ ४३८ ॥ अ-  
 गारस्य वं भवि । भावितन्दिवसमागमाएवं समोहस्यस वे भरमा  
 विज्ञरापोमस्य शुभमा वं ते वोमगत पञ्चाचा उमचारदसो । उर्व ल्लेवं पि य वं  
 ते वोगाहिता वं विद्वृति । इता गोवमा । अगारस्य मावितन्दिवसमागमाएवं  
 समुग्याएवं समोहस्यस वे भरमा विज्ञरापोमगमा शुभमा वं ते वोमगत पञ्चाचा  
 उमचारदसो । उर्व ल्लेवं पि य वं वोगाहिता वं विद्वृति । छवमस्य वं भवि ।  
 महसे तसि विज्ञरापोमगमावर्त्त वि आजर्ता वा याजर्ता वा व्योमर्ता वा द्रुष्टर्ता वा  
 गद्यता वा भुवर्ता वा आवाइ पासह ? गोवमा । जो इन्द्रे उमद्वे । से केवल्लेवं  
 भवि । एवं पुच्छ-छउमस्य वं महसे तेसि विज्ञरापोमगमावर्त्त जो किंवि आजर्ता  
 वा याजर्ता वा व्योमर्ता वा द्रुष्टर्ता वा गद्यता वा भुवर्ता वा आवाइ पासह ?  
 गोवमा । ऐते वि य वं अव्येगाइए वे वं तेसि विज्ञरापोमगमावर्त्त जो किंवि आजर्ता  
 वा याजर्ता वा व्योमर्ता वा द्रुष्टर्ता वा गद्यता वा भुवर्ता वा आवाइ पासह, से  
 तेजट्टैवं घोवमा । एवं पुच्छ-छउमस्य वं महसे तसि विज्ञरापोमगमावर्त्त जो किंवि  
 आजर्ता वा आवाइ पासह, एवं शुभमा वं ते वोमगम्य पञ्चाचा उमचारदसो ।  
 सम्भवेयं पि य वं ते वोगाहिता वं विद्वृति ॥ ४३९ ॥ नेरइमा वं भवि । ते  
 विज्ञरापोमगम्य वि जाहर्ति पासहि भावारेति उदाहु न जार्ति म पासहि  
 आहारेति । गोवमा । भेदया विज्ञरापोमगम्य न जार्ति म पासहि भावारेति  
 एव जाव पवित्रियतिरिक्तव्योभियावर्त्त ॥ ४४ ॥ महसा वं भवि । से विज्ञरा-  
 पोमगम्य वि जार्ति पासहि भावारेति उदाहु न जार्ति म पासहि भावारेति ।  
 गोवमा । अव्येगाव्या जार्ति पासहि भावारेति अव्येगाव्या न जार्ति म पासहि  
 भावारेति । से केवल्लेवं भवि । एवं पुच्छ-अव्येगाव्या जार्ति पासहि भावारेति,  
 अव्येगाव्या न जार्ति म पासहि भावारेति । गोवमा । महसा दुष्मिता वकता ।  
 तंवाह-सम्भिमूला न अव्यिमूला य । तत्त्व वं वे ते असम्भिमूला ते वं म  
 जार्ति म पासहि भावारेति । तत्त्व वं वे ते सम्भिमूला ते दुष्मिता वकता । तंवाह-  
 सवठावा व अकुकडावा व । तत्त्व वं वे ते अलुबडावा ते वं म जार्ति म पासहि  
 भावारेति । तत्त्व वं वे ते उवठावा ते वं जार्ति पासहि भावारेति से एफ्क्ट्यूवं

गोयमा ! एव वुच्छ-‘अत्थेगङ्ग्या न जाणति न पासति आहारेंति, अत्थेगङ्ग्या जाणति पासति आहारेंति’। वाणमतरजोडसिया जहा नेरङ्ग्या ॥ ४४१ ॥ वेमाणिया ण भते । ते णिजरापोगले कि जाणति पासति आहारेंति ? जहा मणूसा । नवर वेमाणिया दुविहा पन्नता । तंजहा-माडमिच्छद्विट्टीउववण्णगा य अमाइसम्म-द्विट्टीउववण्णगा य । तथ्य ण जे ते माडमिच्छद्विट्टीउववण्णगा ते ण न जाणति न पासति आहारेंति, तथ्य ण जे ते अमाइसम्मद्विट्टीउववण्णगा ते दुविहा पन्नता । तजहा-अणंतरोववण्णगा य परपरोववण्णगा य । तथ्य ण जे ते अणंतरोववण्णगा ते ण न जाणति न पासति आहारेंति । तथ्य ण जे ते परपरोववण्णगा ते दुविहा पन्नता । तजहा-पजत्तगा य अपजत्तगा य । तथ्य ण जे ते अपजत्तगा ते ण न जाणति न पासति आहारेंति । तथ्य ण जे ते पजत्तगा ते दुविहा पन्नता । तंजहा-उवउत्ता य अणुवउत्ता य । तथ्य ण जे ते उवउत्ता ते ण जाणति पासति आहारेंति, से एणद्वेण गोयमा ! एव वुच्छ-‘अत्थेगङ्ग्या जाणंति जाव अत्थेगङ्ग्या आहारेंति’ ॥ ४४२ ॥ अद्वाय भते । पेहमाणे मणूसे अद्वायं पेहइ, अत्ताण पेहइ, पलिभाग पेहइ ? गोयमा ! अद्वाय पेहइ, नो अप्पाण पेहइ, पलिभागं पेहइ । एव एण अभिलाखेण असिं मणिं दुद्ध पाणियं तेल फाणियं ॥ ४४३ ॥ कवलसाडए ण भते ! आवेद्धियपरिवेद्धिए समाणे जावङ्ग्य उवासतरं फुसित्ता ण चिढ्हइ विरल्लिए वि समाणे तावङ्ग्य चेव उवासतर फुसित्ता ण चिढ्हइ ? हता गोयमा ! कवलसाडए ण आवेद्धियपरिवेद्धिए समाणे जावङ्ग्य तं चेव । थूणा ण भंते । उच्छु ऊसिया समाणी जावङ्ग्य खेत्त ओगाह-इत्ता ण चिढ्हइ ? हता गोयमा ! थूणा ण उच्छु ऊसिया त चेव जाव चिढ्हइ ॥ ४४४ ॥ आगासथिगले ण भते । किणा फुडे, कइहिं वा काएहिं फुडे ? कि धम्मत्थिकाएण फुडे, धम्मत्थिकायस्स देसेण फुडे, धम्मत्थिकायस्स पएसेहिं फुडे ? एव अधम्मत्थिकाएण, आगासथिकाएण एएण भेण जाव पुढविकाएण फुडे जाव तसकाएण, अद्वासमएण फुडे ?, गोयमा ! धम्मत्थिकाएण फुडे, नो धम्मत्थिकायस्स देसेण फुडे, धम्मत्थिकायस्स पएसेहिं फुडे, एव अधम्मत्थिकाएण वि, नो आगासथिकाएण फुडे, आगासथिकायस्स देसेण फुडे, आगासथिकायस्स पएसेहिं जाव वणस्सइ-काएण फुडे, तसकाएण सिय फुडे, सिय नो फुडे, अद्वासमएण देसे फुडे, देसे नो फुडे । जुहीवे ण भते । दीवे किणा फुडे ? कइहिं वा काएहिं फुडे ? कि धम्मत्थिकाएण जाव आगासथिकाएण फुडे ?, गोयमा ! णो धम्मत्थिकाएण फुडे, धम्मत्थिकाएण जाव आगासथिकाएण फुडे ?, गोयमा !

अथस्त ऐसेवं कुडे अमरितिभ्यस्त पक्षेष्ठि कुडे पर्व आमरितिकामस्त वि  
आगासतितिभ्यस्त वि पुढितिएवं कुडे जाव अप्सतिएवं कुडे तस्ताएवं  
सिय कुडे लिय चो कुडे अदासमएवं कुडे । एवं स्वजनस्तु, घायइस्तो हीवे  
अस्तेव र्ष्यो, मर्मितात्पुक्तरदे । बाहितुक्तरदे एवं चेव न्द्रर अदासमएवं  
चो कुडे । एवं जाव सर्वभूमास्तु । एषा परिकाशी इमाहि गाहाहि अल्पतामा  
तमह— चुरीवे लगे जाव अम्भेव पुक्तदे वर्णे । लीरक्षमयोवर्मित व  
अत्यन्तरे कुट्टके र्ष्यए ॥ १ ॥ आमरणवत्तगाये वर्षमतिक्तर व परमनिहितमै ।  
जासहरवाहमर्दिको विक्षया अक्षारस्तिप्तिवा ॥ २ ॥ कुरु मंद्र आवासा कृदा नक्षां  
चंदस्त्राय । ऐते जागे जक्कडे भूए य स्वभुरमने य ॥ ३ ॥ एवं जहा बाहिर  
पुक्तरदे भर्तिए लहा जाव सर्वभूमास्तु जाव अदासमएवं चो कुडे ॥ ४४५ ॥  
झेते नै भेते । दिवा कुडे ? अहि चा क्षणहि ? जहा आगासविम्पते । अत्येव  
वं भेते । दिवा कुडे अहि चा क्षणहि पुक्त्वा । गोममा । नो अमरितिकाएवं  
कुडे जाव नो आगासतिभ्यएवं कुडे आगासतिकामस्त ऐसेवं कुडे नो पुर्वि-  
क्षएवं कुडे जाव नो अदासमएवं कुडे । एगे अवीदवत्तदेसे अलुख्युए अनंतहि  
अगुख्युगुभेहि उभुते सम्बासासमर्णतमन्त्रे ॥ ४४६ ॥ पश्चवणाप भगवहिए  
पश्चरसमस्त प्रियपयस्त पहमो ठहेसो समत्तो ॥

ईरिवठवत्त १ विक्षत्ता २ य समवा भवे असेवेचा ३ । अहि ४ उपने  
महि ५ अप्याग्न्युए विदेशोहिया ६ ॥ योगाहणा ७ अवाए < ईहा ८ त्व वैद्यो-  
भाहि ९ । चेव । वर्णितिव ११ भावितिव १२ तीवा चाव पुरक्षाविया ॥ अभिहे  
नै भेते । ईरिवठवत्त वलते ३ योममा । पंचमिहे ईरिवठवत्त वलते । तज्जा-  
धोईरिवठवत्त च, चविक्षिवठवत्त च, चावितिवठवत्त च, विभिमन्दिवठवत्त च, अभि-  
विद्यवठवत्त च । मेरुवार्च भेते । अभिहे ईनिद्योवत्त वलते १ योममा । पंचमिहे  
ईनिद्योवत्त वलते । तज्जा-धोईरिवठवत्त च जाव अभिविद्यवठवत्त च, एवं जाव  
वेमाविक्षार्च । जस्त चइ ईनिद्या लस्त लद्यिहो चेव ईनिद्यवत्तको भाविक्षो  
१ । अव्यिहा नै भेते । ईनिद्यनिम्बतामा वलता २ योममा । पंचमिहा ईनिद्यनिम्ब-  
तामा वलता । तज्जा-धोईनिद्यनिम्बतामा जाव अभिविद्यविम्बतामा । एवं चेव  
जार्च जाव वेमाविक्षार्च न्द्रर चस्त चइ ईनिद्या भर्ति ३ । उत्तेनिद्यनिम्बतामा  
नै भेते अभिविद्यविम्बतामा ४ योममा । असेविद्यविम्बतामा असेवुतिया वलता  
एवं जाव अभिविद्यविम्बतामा । एवं नेरुवार्च जाव वेमाविक्षार्च ५ । कश्मिहा चं  
मत । ईनिद्यव्युती वलता ६ योममा । पंचमिहा ईनिद्यव्युती वलता । तज्जा-धो-

निंद्यलङ्घी जाव फासिन्द्यलङ्घी । एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाण, नवरं जस्ते जड इन्दिया अत्थि तस्ते तावड्या भाणियव्वा ४ । कइविहा ण भते । डन्दियउव-ओगद्वा पञ्चता ? गोयमा । पचविहा इन्दियउवओगद्वा पञ्चता । तजहा-सोडन्दिय-उवओगद्वा जाव फासिन्द्यउवओगद्वा । एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्ते जड इन्दिया अत्थि० ५, ॥ ४४७ ॥ एएसि ण भते । सोइन्दियचक्षियन्दियधाणि-न्दियजिविभदियफासिन्दियाणं जहण्णयाए उवओगद्वा ए उक्षोसियाए उवओगद्वा ए जहण्णुक्षोसियाए उवओगद्वा ए कयरे कत्त्वरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा चक्षियन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा, सोडन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा विसे-साहिया, धाणिन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा विसेसाहिया, जिविभन्दियस्स जह-ण्णया उवओगद्वा विसेसाहिया, फासिन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा विसेसाहिया, उक्षोसियाए उवओगद्वा ए-सब्बत्थोवा चक्षियन्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा, सोड-न्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसेसाहिया, धाणिन्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसे-साहिया, जिविभन्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसेसाहिया, फासिन्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसेसाहिया, जहण्णउक्षोसिया उवओगद्वा ए-सब्बत्थोवा चक्षिर्वन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा, सोइन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा विसे-सा-हिया, धाणिन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा विसेसाहिया, जिविभन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा विसे-साहिया, फासिन्दियस्स जहण्णया उवओगद्वा विसे-साहिया, फासिन्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसे-साहिया, सोइदियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसे-साहिया, धाणिन्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसे-साहिया, जिविभदियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसे-साहिया, फासिन्दियस्स उक्षोसिया उवओगद्वा विसे-साहिया ॥ ४४८ ॥ कइविहा ण भते । इदिय-ओगाहणा पञ्चता ? गोयमा । पचविहा इदियओगाहणा पञ्चता । तजहा-सोइदिय-ओगाहणा जाव फासिन्दियओगाहणा, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाण, नवरं जस्ते जड इदिया अत्थि० ६, ॥ ४४९ ॥ कइविहे ण भते । इंदियअवाए पञ्चते ? गोयमा ! पचविहे इदियअवाए पञ्चते । तजहा-सोइंदियअवाए जाव फासिन्दियअवाए । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाण, नवरं जस्ते जड इदिया अत्थि० ७ । कइविहा ण भते । ईहा पञ्चता ? गोयमा । पचविहा ईहा पञ्चता । तंजहा-सोइदियईहा जाव फासिन्दियईहा । एवं जाव वेमाणियाण, नवरं जस्ते जड इदिया अत्थि० ८ । कइविहे ण भते । उग्गाहे पञ्चते ? गोयमा ! दुविहे उग्गाहे पञ्चते । तजहा-अत्थोग्गाहे य वजणोग्गाहे य । वजणोग्गाहे ण भते । कइविहे पञ्चते ? गोयमा ! चउविहे पञ्चते । तजहा-

सोईदिवर्जनोम्हा है, भाणिदिवर्जनोम्हा है, भिर्मिदिवर्जनो-  
म्हा है । अत्थोम्हा है वं मंते । क्षदिहे पक्षते । गोममा । अविहे पक्षते । तंजहा-  
सोईदिवभृत्योम्हा है, भसित्विदिवभृत्योम्हा है, भाणिदिवभृत्यो-  
म्हा है, भसित्विदिवभृत्योम्हा है, नोईदिवभृत्योम्हा है ॥ ४५ ॥ नेरइयार्थ मंते । क्षदिहे  
उम्हा है पक्षते । गोममा तुषिहे चम्हा है पक्षते । तंजहा-अत्थोम्हा है य बंजणोम्हा है  
व । एवं असुरकुमारार्थ जाव वसियुमारार्थ । पुढिकलहवार्थ मंते । क्षदिहे  
उम्हा है पक्षते । गोममा । तुषिहे उम्हा है पक्षते । तं-अत्थोम्हा है व बंजणोम्हा है य ।  
पुढिकलहवार्थ मंते । बंजणोम्हा है क्षदिहे पक्षते । गोममा । एगे फ्रसिरिवर्ज-  
नोम्हा है पक्षते । पुढिकलहवार्थ मंते । क्षदिहे अत्थोम्हा है पक्षते । गोममा । एगे  
भसित्विदिवअत्थोम्हा है पक्षते । एवं जाव वगस्तकलहवार्थ । एवं वेइरियार्थ वि  
नवर वेइरियार्थ बंजणोम्हा है तुषिहे पक्षते अत्थोम्हा है तुषिहे पक्षते एवं वेइरिय-  
वरियियार्थ वि नवर इदिवरियुक्ती क्षदिहा । कर्तरियार्थ बंजणोम्हा है तिशिहे  
पक्षते अत्थोम्हा है क्षदिहे पक्षते सेसार्थ जहा नेरइयार्थ जाव वेमादियार्थ  
५-१ ॥ ४५१ ॥ क्षदिहा वं मंते । इरिया पक्षता । गोममा । तुषिहा पक्षता ।  
तंजहा-दभिरिया य भाविरिया य । क्षद ख भंते । दभिरिया पक्षता । गोममा ।  
अद्य वसियिया पक्षता । तंजहा-दो सेता दो येता दो जावा जीहा फासे ।  
नेरइयार्थ मंते । क्षद दभिरिया पक्षता । गोममा । अद्य एए घद एवं असुरकुमारार्थ  
जाव वसियुमारार्थ वि । पुढिकलहवार्थ मंते । क्षद दभिरिया पक्षता । गोममा ।  
एगे फासिरिए पक्षते । एवं जाव वगस्तकलहवार्थ । वेइरियार्थ मंते । क्षद दभि-  
रिया पक्षता । गोममा । दो दभिरिया पक्षता । तंजहा-फासिरिए व विभिरिए  
व । सेइरियार्थ पुच्छ । गोममा । जातारि दभिरिया पक्षता । तंजहा-दो जावा  
जीहा फासे । कर्तरियार्थ पुच्छ । गोममा । छ दभिरिया पक्षता । तंजहा-दो  
सेता दो जावा जीहा फासे । सेसार्थ जहा नेरइयार्थ जाव वेमादियार्थ ॥ ४५२ ॥  
एगमेस्तु वं मंते । नेरइयस्तु केवह्या वसियिया अतीता । गोममा । अवैता ।  
केवह्या क्षेत्रग्ना । गोममा । अद्य । केवह्या पुरेक्षणा । गोममा । अद्य वा सेवह्य  
वा उत्तरेव वा सेवेजा वा असेवेजा वा अवैता वा । एगमेस्तु वं मंते । असुर  
कुमारस्तु केवह्या दभिरिया अतीता । गोममा । अवैता । केवह्या क्षेत्रग्ना । गो ।  
अद्य । केवह्या पुरेक्षणा । गो । अद्य वा नव वा सत्तरेव वा सेवेजा वा अवै  
तेजा वा अवैता वा । एवं जाव वसियुमारार्थ लाव भावियर्थ । एवं पुढिकलहवा  
आउताइया वगस्तकलहवा वि नवर वेइरिया क्षेत्रगति पुच्छए उत्तर एवं वापि-

दियदव्विदिए । एवं तेउकाडयवाउकाडयस्स वि, नवर पुरेक्खडा नव वा अट वा । एव वेइदियाण वि, नवर वद्वेलगपुच्छाए टोण्णि । एव तेउदियस्म वि, नवर वद्वेलगा चत्तारि । एव चउरिंदियस्स वि, नवर वद्वेलगा छ । पञ्चिदियतिरिक्खजोणिय-मणूसवाणमतरजोइसियमोहम्भीमाणगठेवस्स जहा असुरकुमारस्म, नवर मण्यस्म पुरेक्खडा कस्सड अत्थि कस्सड णत्थि, जस्सत्थि अट्ट वा नव वा सखेजा वा अस-खेजा वा अणता वा । मणकुमारमाहिदवंभलतगमुक्षसहस्सारआणग्रपाणयारणअ-च्युयगेवेजगढेवस्स य जहा नेरड्यस्स । एगमेगस्स ण भते ! विजयवेजयतजयतअप-राजियदेवस्स केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवडया वद्वेलगा ? गो० ! अट्ट, केवडया पुरेक्खडा ? गो० ! अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा सरेजा वा, मब्बट्टसिद्धगढेवस्स अतीता अणता, वद्वेलगा अट्ट, पुरेक्खडा अट्ट । नेरड्याण भते ! केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवडया वद्वेलगा ? गोयमा ! असखेजा, केवडया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणता । एव जाव गेवेजगठेवाण, नवर मणूसाण वद्वेलगा सिय सखेजा, सिय असखेजा । विजयवेजयतजयतअपराजियदे-वाण पुच्छा । गोयमा ! अतीता अणता, वद्वेलगा असखेजा, पुरेक्खडा असखेजा । सब्बट्टसिद्धगढेवाण पुच्छा । गोयमा ! अतीता अणता, वद्वेलगा सखेजा, पुरेक्खडा सखेजा ॥ ४५३ ॥ एगमेगस्म ण भते ! नेरड्यस्स नेरड्यत्ते केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवडया वद्वेलगा ? गोयमा ! अट्ट, केवडया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सड नत्थि, जस्सत्थि अट्ट वा सोलस वा चउवीमा वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा । एगमेगस्स ण भते ! नेरड्यस्म असुरकुमारत्ते केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवडया वद्वेलगा ? गोयमा ! णत्थि, केवडया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा । एव जाव थणियकुमारत्ति । एगमेगस्म ण भते ! नेरड्यस्स पुढविकाइयत्ते केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवडया वद्वेलगा ? गोयमा ! णत्थि, केवडया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एक्को वा दो वा तिण्ण वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा, एव जाव वणस्सद्काइयत्ते । एगमेगस्स ण भते ! नेरड्यस्स बैइन्दियत्ते केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवडया वद्वेलगा ? गोयमा ! णत्थि, केवडया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि दो वा चत्तारि वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा । एव तेइन्दियत्ते वि, नवर पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ट वा वारस वा

सुखेजा वा असुखेजा वा अर्थता वा । एवं पठारितिष्ठति यि नवरे पुरस्त्राणा उ वा  
चारम वा भद्रारम वा सुखेजा वा असुखेजा वा अर्थता वा । परिदिवनिरिक्षण  
ओमित्ते भद्रा भगुत्तमागते । मनुसन विएवं पश्च मध्ये केवल्या पुरस्त्राणा ॥ ये ।  
भद्रा वा सोक्षम वा चडीजा वा कलेजा वा असुखेजा वा अर्थता वा । सम्मिन्ने  
मनुसनवार्ता पुरेकरुदा मनुसने इन्द्राण अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ एवं न तुष्ट । याज  
मेन्द्रायोइतिष्ठिगोहम्मण जाव गवेज्ञाहदते अर्थता अर्थता वदेश्या अर्थिष्ठ पुरे  
करुदा कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ भद्रा वा सोक्षम वा चडीजा वा  
सुखेजा वा असुखेजा वा अर्थता वा । एसाम्मस्य च भैरव । मरद्यम्य विद्वदेवयं  
नम्यत्वपराविद्वदेवते केवल्या इतिष्ठिया अर्थता ॥ गो । अर्थिष्ठ केवल्या पुर  
करुदा ॥ गो । अस्त्राण अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ अस्त्राण  
सुखद्विद्वदेवते अर्थता । गर्हिष्ठ वदेश्या अर्थिष्ठ पुरेकरुदा कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अस्त्राण  
अर्थिष्ठ अस्त्राण अद्वा । एवं यदा नरद्यर्द्यते नीजो तदा असुखुमारेष वि  
नद्यतो जाव परिदिवनिरिक्षणोमिष्ठ नवरे यस्तु तदुगे यद कलेजा तस्म एव  
मार्गिक्षमा ॥ ४५४ ॥ एसाम्मस्य च भैरव । मार्गम्य नेत्रदत्तो केवल्या इतिष्ठिया  
अर्थता ॥ गोक्षमा । अर्थता केवल्या वदेश्या ॥ गो । अर्थिष्ठ केवल्या पुरेकरुदा ॥  
गो । कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ अद्वा वा सोक्षम वा चडीजा वा  
सुखेजा वा असुखेजा वा अर्थता वा । एवं जाव परिदिवनिरिक्षणोमिष्ठते नवरे  
एग्मितिष्ठिगल्लिएसु जास वाह पुरेकरुदा तस्म ततिता मार्गिक्षमा । एग्मेषस्य  
च भैरव । मनुसस्य मनुसने कलाया इतिष्ठिया अर्थता ॥ गोक्षमा । अर्थता  
केवल्या वदेश्या ॥ गोक्षमा अद्वा, केवल्या पुरेकरुदा ॥ गो । कर्त्तव्य अर्थिष्ठ  
कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अद्वा वा सोक्षम वा चडीजा वा सुखेजा वा असुखेजा वा  
अर्थता वा । वायम्मत्तव्योइतिष्ठ वाह गेवेज्ञमदेवते जाव नरद्यते । एग्मेषस्य  
च भैरव । मनुसस्य विद्वदेवमत्तव्यतुक्षमणितिष्ठदत्तो केवल्या इतिष्ठिया अर्थता ॥  
गोक्षमा । कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ अस्त्राण अर्थिष्ठ अस्त्राण  
केवल्या ॥ गो । नरिष्ठ केवल्या पुरेकरुदा ॥ गो । कर्त्तव्य अर्थिष्ठ कर्त्तव्य नरिष्ठ  
कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अद्वा वा सोक्षम वा । एग्मेषस्य च भैरव । मनुसस्य सम्मद्विद्वदत्तो  
केवल्या वायम्मितिष्ठ अर्थता ॥ गोक्षमा । कर्त्तव्य अर्थिष्ठ कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अस्त्रिष्ठ  
अद्वा, केवल्या वदेश्या ॥ गो । अर्थिष्ठ केवल्या पुरेकरुदा ॥ ये । कर्त्तव्य  
अर्थिष्ठ कर्त्तव्य अर्थिष्ठ अद्वा वा सोक्षम वा । वायम्मत्तव्योइतिष्ठ वाह वेराए । सोक्षमगारेष  
विज्ञान नराए, नवर सोक्षमगारेषस्य विद्वदेवमत्तव्यताप्रतिष्ठिते केवल्या अर्थता ॥

गोयमा ! कस्सइ अतिथि कस्सइ नत्यि, जस्स अतिथि अट्ठ, केवडया वद्देलगा ? गो० ! णत्यि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अतिथि कस्सइ नत्यि, जस्स अतिथि अट्ठ वा सोलस वा । सब्बटुसिद्धगदेवते जहा नेरइयस्स, एव जाव गेवेजगदेवस्स सब्बटु-सिद्धगदेवते ताव णेयब्ब ॥ ४५५ ॥ एगमेगस्स ण भते । विजयवेजयंतजयंतापराजि-यदेवस्स नेरइयते केवइया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवडया वद्देलगा ? गो० ! णत्यि, केवइया पुरेक्खडा ? गो० ! णत्यि । एव जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियते । मणूसते अतीता अणंता, वद्देलगा णत्यि, पुरेक्खडा अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा सखेजा वा । वाणमंतरजोहसियते जहा नेरइयते । सोहम्मगदेवतेऽतीता अणंता, वद्देलगा णत्यि, पुरेक्खडा कस्सइ अतिथि कस्सइ नत्यि, जस्स अतिथि अट्ठ वा सोलम वा चउवीसा वा सखेजा वा । एवं जाव गेवेजगदेवते । विजयवेजयतजयत-अपराजियदेवते अतीता कस्सइ अतिथि कस्सइ नत्यि, जस्स अतिथि अट्ठ, केवइया वद्देलगा ? गो० ! अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? गो० ! कस्सइ अतिथि कस्सइ नत्यि, जस्स अतिथि अट्ठ । एगमेगस्स ण भते । विजयवेजयतजयतअपराजियदेवस्स सब्बटुसिद्धगदेवते केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! णत्यि, केवइया वद्देलगा ? गो० ! नत्यि, केवइया पुरेक्खडा ? गो० ! कस्सइ अतिथि कस्सइ णत्यि, जस्स अतिथि अट्ठ । एगमेगस्स ण भते । सब्बटुमिद्धगदेवस्स नेरइयते केवइया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवइया वद्देलगा ? गो० ! णत्यि, केवइया पुरेक्खडा ? गो० ! नत्यि, केवइया नेरेक्खडा ?० अट्ठ । विजयवेजयतजयतअपराजियदेवते अतीता कस्सइ अतिथि कस्सइ नत्यि, जस्स अतिथि अट्ठ, केवडया वद्देलगा ? गो० ! णत्यि, केवडया पुरेक्खडा ? गो० ! णत्यि । एगमेगस्स ण भते । सब्बटुसिद्धगदेवस्स सब्बटुसिद्धगदेवते केवइया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! णत्यि, केवडया वद्देलगा ? गो० ! अट्ठ, केवडया पुरेक्खडा ? गो० ! णत्यि ॥ ४५६ ॥ नेरइयाण भते । नेरइयते केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवडया वद्देलगा ? गो० ! असखेजा, केवइया पुरेक्खडा ? गो० ! अणता । नेरइ-याण भने ! अमुरुमारते केवडया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवडया वद्देलगा ? गो० ! णत्यि, केवडया पुरेक्खडा ? गो० ! अणता, एव जाव गेवेजगदेवते । नेर-इयाण भते । विजयवेजयतजयतअपराजियदेवते केवइया दव्विदिया अतीता ?० नत्यि, केवडया वद्देलगा ?० णत्यि, केवडया पुरेक्खडा ?० असखेजा, एव मब्बटुमिद्धगदेवते पि, एव जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिया मब्बटुमिद्धगदेवते भाणियन्न, नवर वण-स्मारण विजयवेजयतजयतअपराजियदेवते सब्बटुमिद्धगदेवते य पुरेक्खडा

अपेता मम्पर्वि मनूसमनुभविद्वावद्यार्थं सद्गुणे बदेष्वा असुरोजा पद्माये  
बदेष्वा गति । वरसाइकात्यार्थं बदेष्वा अपेता । मपूर्णार्थं मरहयते अतीता  
अपेता बदेष्वा नतिं पुरेक्षणा अपेता । एव जात गेवेभ्यावद्वते नवरं मद्गुणे  
अतीता अपेता बदेष्वा त्रियं सुरोजा त्रियं असुरोजा पुरेक्षणा अपेता । मपूर्णार्थं  
भवते । विषयवेऽप्तव्यं त्रियं त्रियवेद्वते केवद्वा द्विविद्या अतीता । सुरोजा  
केवद्वा बदेष्वा । नतिं केवद्वा पुरेक्षणा । त्रियं सुरोजा त्रियं असुरोजा । एवं  
सम्भूषिद्ववद्वते अतीता नतिं बदेष्वा नतिं पुरेक्षणा असुरोजा एवं जात  
गेवेभ्यावद्वते । विषयवेऽप्तव्यं त्रियं त्रियवेद्वते भवते । नरान्द्रते केवद्वा द्विवि-  
द्या अतीता । गोयमा । अपेता केवद्वा बदेष्वा । नतिं केवद्वा पुरेक्षणा ।  
नतिं । एवं जात गोइसिते त्रियं नवरं मद्गुणे अतीता अपेता केवद्वा बदेष्वा ।  
नतिं पुरेक्षणा असुरोजा । एवं जात गेवेभ्यावद्वते सद्गुणे अतीता असुरोजा  
केवद्वा बदेष्वा । असुरोजा केवद्वा पुरेक्षणा । असुरोजा । सम्भूषिद्ववद्वते  
अतीता नतिं बदेष्वा नतिं पुरेक्षणा असुरोजा । सम्भूषिद्ववेद्वते भवते ।  
मेष्ट्यते केवद्वा द्विविद्या अतीता । गोयमा । अपेता केवद्वा बदेष्वा । नतिं  
केवद्वा पुरेक्षणा । नतिं । एवं मपूर्णार्थं तात गेवेभ्यावद्वते । मणुस्यते अतीता  
अपेता बदेष्वा नतिं पुरेक्षणा सुरोजा । विषयवेऽप्तव्यं त्रियं त्रियवेद्वते  
केवद्वा द्विविद्या अतीता । सुरोजा केवद्वा बदेष्वा । नतिं केवद्वा पुरे-  
क्षणा । नतिं । सम्भूषिद्ववेद्वते भवते । सम्भूषिद्ववेद्वते केवद्वा द्विविद्या  
अतीता । नतिं केवद्वा बदेष्वा । सुरोजा केवद्वा पुरेक्षणा । त्वे । नतिं  
११ ॥ ४५५३ ॥ एवं च मंते । मातिरिया पद्मता । गोयमा । एवं मातिरिया  
पद्मता । दंगहा-सोईरिए जात घासिरिप । नेत्रवालं मंत । एवं मातिरिया पद्मता ।  
गोयमा । एवं मातिरिया पद्मता । दंगहा-सोईरिए जात घासिरिप । एवं उत्त च च  
ईरिया लस्त लद् मातिरिया जात जेमाक्षियार्थं । एगाम्नास्त नं भवते । नेत्रवस्तु  
केवद्वा मातिरिया अतीता । गोयमा । अपेता केवद्वा बदेष्वा । एवं केवद्वा  
पुरेक्षणा । एवं वा उत्त वा एकारस्त वा सुरोजा वा असुरोजा वा अपेता वा ।  
एवं अदुखमारस्त वि नवरं पुरेक्षणा एवं वा उत्त वा सुरोजा वा असुरोजा वा  
अपेता वा । पृथ जात विषयमुमारस्त वि । एवं पुरातिस्त्रव्यवाहारकात्यवस्तुश्चाइ-  
स्त वि वेईरियतेरियवउरियस्त वि । सेवाप्राप्यवात्काश्वस्त वि एवं वेव नवरं  
पुरेक्षणा उत्त वा सुरोजा वा असुरोजा वा अपेता वा । परितिरियक-  
घोक्षियस्त जात ईसाम्नस्त वा अदुखमारस्त नवरं मध्यस्तु पुरेक्षणा अस्त

अतिथि कस्सइ नतिथिं भाणियव्वं । सणंकुमार जाव गेवेजगस्स जहा नेरइयस्स । विजयवेजयतजयतभपराजियदेवस्स अतीता अणता, बद्धेलगा पच, पुरेक्खडा पंच वा दस वा पण्णरस वा सखेजा वा । सब्बटुसिद्धगदेवस्स अतीता अणता, बद्धेलगा पच, केवडया पुरेक्खडा २० पच । नेरइयाण भते । केवडया भाविंदिया अतीता २ गोयमा । अणता, केवडया बद्धेलगा २० असखेजा, केवडया पुरेक्खडा २० अणता । एव जहा दव्विदिएसु पोहत्तेण दंडओ भणिओ तहा भाविंदिया अतीता २ गोयमा । अणता, के० बद्धेलगा २० पच, पुरेक्खडा कस्सइ अतिथि कस्सइ नतिथि, जस्स अतिथि पच वा दस वा पण्णरस वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा । एवं असुरकुमाराण जाव थणियकुमाराण, नवर बद्धेलगा नतिथि । पुढिकाइयते जाव बेइदियते जहा दव्विदिया । तेइदियते तहेव, णवरं पुरेक्खडा तिण्ण वा छ वा णव वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा । एवं चउरिदियते वि, नवर पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ट वा चारस वा सखेजा वा असखेजा वा अणता वा । एव एए चेव गमा चत्तारि जाणे यन्वा जे चेव दव्विदिएसु, णवरं तडयगमे जाणियव्वा जस्स जइ इदिया ते पुरेक्खडेसु मुणेयव्वा । चउत्थगमे जहेव दव्विदिया जाव सब्बटुसिद्धगदेवाणं सब्बटुसिद्धगदेवते केवडया भाविंदिया अतीता २० नतिथि, के० बद्धेलगा २० सखेजा, के० पुरेक्खडा २० णतिथि ॥ ४५९ ॥ समत्तो बीओ उहेसो ॥ पञ्चवणाए भगवईप पञ्चरसमं इन्द्रियपथं समत्तं ॥

कइविहे ण भते । पओगे पञ्चते २ गोयमा । पण्णरसविहे पओगे पञ्चते । तजहा—सञ्चमणप्पओगे १, असञ्चमणप्पओगे २, सञ्चामोसमणप्पओगे ३, असञ्चामोसमण-प्पओगे ४, एवं बइप्पओगे वि चउहा ८, ओरालियसरीरकायप्पओगे ९, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे १०, वेउव्वियसरीरकायप्पओगे ११, वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे १२, आहारगसरीरकायप्पओगे १३, आहारगमीससरीरकायप्पओगे १४, कम्मासरीरकायप्पओगे १५ ॥ ४६० ॥ जीवाण भते । कइविहे पओगे पण्णते २ गोयमा । पण्णरसविहे प० पण्णते । तंजहा—सञ्चमणप्पओगे जाव कम्मासरीरकायप्पओगे । नेरइयाण भते । कइविहे पओगे पण्णते २ गोयमा । एक्कारसविहे पओगे पण्णते । तजहा—सञ्चमणप्पओगे जाव असञ्चामोसवइप्पओगे, वेउव्वियसरीरकायप्पओगे, वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे । एव असुरकुमाराण वि जाव थणियकुमाराण । पुढिकाइयाण पुच्छा । गोयमा । तिविहे पओगे

पढ़ते । तंजहा—ओरातियसरीरकामयमोगे कम्मासरीरमयमोगे य । एवं जात वर्षस्त्रदक्षयार्थं भवते वात्ताकार्यं पद्धिते पद्धतेगे पड़ते । तंजहा—ओरातिय कामयमोगे ओरातियमीससरीरकामयमोगे वेतनियए तुमिहे, कम्मासरीरकामयमोगे य । ओरातियां पुष्ट्यः । गोकमा ! चड्डिति हे पद्धतेगे पड़ते । तंजहा—ममवामोसमवृप्तमोगे ओरातियमरीरकामयमोगे वेतनियसंसाधीरमयप्पमोगे कम्मासरीरकामयप्पमोगे । एवं जात वर्षते विद्यार्थं । पंचितियतिरिक्तज्ञोमियाप्तं पुष्ट्या । गोकमा ! सेरसविहे पद्धतेगे पड़ते । तंजहा—सचमनप्पमोगे मोममनप्पमोगे सुकामोममनप्पमोगे ममवामोसमवृप्तमोगे एवं वर्षप्पमोगे वि ओरातियमरीरकामयप्पमोगे ओरातियमीत्तमीरमयप्पमोगे वेतनियसरीरकामयप्पमोगे वेतनियमीससरीरकामयप्पमोगे कम्मासरीरकामयलोगे । कम्मार्थं पुष्ट्यः । गोकमा ! फलसविहे पद्धतेगे पड़ते । तंजहा—सचमनप्पमोगे जात कम्मासरीरकामयप्पमोगे । वात्तमेतत्त्वोदतियमेतियाप्तं ज्ञा भेरस्यार्थं ॥ ४६१ ॥ जीवा य मैते । वि सचमनप्पमोगी जात कम्मासरीरकामयप्पमोगी ! गोकमा ! जीवा सम्ब वि तात द्वेष सचमनप्पमोगी वि जात वेतनियमीससरीरकामयप्पमोगी वि १३ । अहवेये य आहारप्तसरीरकामयप्पमोगी य १ अहवेगे व आहारप्तसरीरकामयप्पमोगीयो व २ अहवेगे य आहारगमीससरीरकामयप्पमोगी य ३ अहवेगे य आहार यमीससरीरकामयप्पमोगीयो व ४ चड्डमां । अहवेगे य आहारप्तसरीरकामयप्पमोगी य १ अहवेगे य आहारप्तसरीरकामयप्पमोगी य २ अहवेगे य आहारप्तसरीरकामयप्पमोगी य ३, अहवेगे य आहारप्तसरीरकामयप्पमोगीयो व ४ एवं जीवार्थं अहु ॥ ०४६२ ॥ नदेवा वं भैरव ! वि सचमनप्पमोगी जात कम्मासरीरकामयप्पमोगी ११ ३ गोकमा ! भेरस्या सम्ब वि तात द्वेषा सचमनप्पमोगी वि जात वेतनियमीससरीरकामयप्पमोगी वि अहवेगे व कम्मासरीरकामयप्पमोगी य १ अहवेगे व कम्मासरीरकामयप्पमोगीयो व २ एवं अशुखमार्थं वि जात वेतनियमार्थं । पुष्टिकाङ्क्षा वं मैते । वि ओरातियमीससरीरकामयप्पमोगी ३ गोकमा ! पुष्टिकाङ्क्षा ओरातियमरीरकामयप्पमोगी वि ओरातियमीससरीरकामयप्पमोगी ३ गोकमा ! पुष्टिकाङ्क्षा ओरातियमरीरकामयप्पमोगी वि एवं जात वर्षप्तदक्षयार्थं । भवते वात वात्ता वेतनियमसरीरकामयप्पमोगी वि वेतनियमीससरीरकामयप्पमोगी वि । वेतनि-

या ण भते ! किं ओरालियसरीरकायप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्पओगी २ गोयमा ! वेइन्दिया सब्बे वि ताव होजा असच्चामोसवइप्पओगी वि ओरालियसरीरकायप्पओगी वि ओरालियमीससरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य, एव जाव चउरिंदिया वि । पर्चिदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवर ओरालियसरीरकायप्पओगी वि, ओरालियमीससरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगी य अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ॥ ४६३ ॥ मणूसा ण भते ! किं सञ्चमणप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्पओगी २ गोयमा ! मणूसा सब्बे वि ताव होजा सञ्चमणप्पओगी वि जाव ओरालियसरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य आहारगमीससरीरकायप्पओगिणो य २, एए अट्ट भगा पत्तेय । अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य ४ एव एए चत्तारि भगा, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगी य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसामरीरकायप्पओगी य आहारगमीसामरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य २, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगिणो य ३, अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगी य ४ चत्तारि भगा, अहवेगे य ओरालियमाससरीरकायप्पओगिणो य ४ चत्तारि भगा, अहवेगे य ओरालियमीसामरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसामरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे ओरालियमीमासगीरमायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे ओरालियमीमासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ४ एए चत्तारि भगा, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीमासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगमीमासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसामरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीमासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य

आहारपसरीरकायप्पमोगिजो य आहारगमीसासरीरकायप्पमोगिजो य ४ अतारी  
भंगा अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पमोगी य कम्मासरीरकायप्पमोगी व १  
अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पमोगी व कम्मासरीरकायप्पमोगिजो य २ अहवेगे  
व आहारगसरीरकायप्पमोगिजो य कम्मासरीरकायप्पमोगी य ३ अहवेगे य  
आहारगसरीरकायप्पमोगिजो य कम्मासरीरकायप्पमोगिजो य ४ अठरो महा  
महवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पमोगी य कम्मासरीरकायप्पमोगी य १  
अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पमोगी य कम्मासरीरकायप्पमोगी य २  
अहवेगे व आहारगमीसासरीरकायप्पमोगिजो व कम्मासरीरकायप्पमोगिजो व ३  
पठरो मङ्गा एवं चउच्चीसे भङ्गा । अहवेगे य ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमोगी व  
आहारगसरीरकायप्पमोगी य आहारपसरीरकायप्पमोगी य १ अहवेगे व  
ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमोगी य आहारगसरीरकायप्पमोगी व आहारगमीसा-  
सरीरकायप्पमोगिजो य २ अहवेगे य ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमोगी य आहार  
गमीरकायप्पमागिजो य आहारगमीसासरीरकायप्पमागी य ३ अहवेगे व  
ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमोगी य आहारगमीसासरीरकायप्पमोगी व आहारगमी-  
सरीरकायप्पमोगिजो य ४ अहवेगे व ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमोगिजो व आहारगमी-  
सरीरकायप्पमोगिजो य ५ अहवेगे य ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमोगिजो व आहार  
गमीसासरीरकायप्पमोगिजो य ६ एवं अदृ भंगा अहवेगे य आहारगमीसास-  
रीरकायप्पमागी य आहारगमीसासरीरकायप्पमागी व कम्मागरीरकायप्पमागी य १  
अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पमोगी य आहारगमीरकायप्पमागी य कम्म-  
मागरीरकायप्पमागिजो य अदृवेगे व ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमागी य आहारगमी-  
सरीरकायप्पमोगी व कम्मागरीरकायप्पमागी य ३ अन्तेगे व ओरा-  
क्षिमीसासरीरकायप्पमोगी व आहारगमीरकायप्पमोगिजो य कम्मागरीरकाय-  
प्पमोगिजो य ४ अहवेगे म ओराक्षिमीसासरीरकायप्पमोगिजो व आहारग  
मरीरकायप्पमोगी य कम्मागरीरकायप्पमोगी य ५ अदृवा व ओराक्षिमी-  
सरीरकायप्पमोगिजो य आहारगमीरकायप्पमागी य कम्मागरीरकायप्पमोगिजो

य ६, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्प-ओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य ओरालियमीसासरीर-कायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ८, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्प-ओगी य कम्मगगरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीगासरीरकाय-प्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीमासरीरकायप्पओगी य आहारगमीमासरीरकायप्प-ओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीमासरीरकाय-प्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य ओरालियमीमासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीमासरीरकायप्प-ओणी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्प-ओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ६, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ८, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीर-कायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीमासरीर-कायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्प-ओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीमासरीर-कायप्पओगिणो य ५, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीर-कायप्पओगी य ६, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसा-सरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य आहारगसरीर-कायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ८। एव एए तियसजोएण चत्तारि अट्टु भगा, सब्बे वि मिलिया वत्तीस भगा जाणिव्वा ३२। अहवेगे य ओरालियमिस्सासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीर-कायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओणी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य

भाद्रारणमीसासरीरक्षयप्पमोगी य कृमासरीरक्षयप्पमोगिणो य ३ अहंको व  
ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगी व आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगी य आद्वारमार्मा-  
सरीरक्षयप्पमोगिणो य कृमासरीरक्षयप्पमोगी य ५ अहंको व ओरात्मि-  
मीसासरीरक्षयप्पमोगी व आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगी य आद्वारणमीसासरीरक्षय-  
प्पमोगिणो य कृमासरीरक्षयप्पमोगिणो य ७ अहंको व ओरात्मिमीमार्म-  
रीरक्षयप्पमोगी य आद्वारणमीसरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारप्पमीमासरीरक्षय-  
प्पमोगी य आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगी य ९ अहंको व ओरात्मिमीसासरीरक्षय-  
प्पमोगी य आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणमीसासरीरक्षयप्पमोगी व  
आद्वारणमीसरीरक्षयप्पमोगिणो व आद्वारणमीसासरीरक्षयप्पमोगी य कृमास-  
रीरक्षयप्पमोगी य १ अहंको व ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो व आद्वार-  
सरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणमीमासरीरक्षयप्पमोगिणो य कृमासरीरक्षय-  
प्पमोगिणो य २ अहंको व ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो व आद्वारपरीर-  
क्षयप्पमोगी य आद्वारणमीसासरीरक्षयप्पमोगी य कृमासरीरक्षयप्पमोगी य ३  
अहंको व ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगी व  
आद्वारणमीमासरीरक्षयप्पमोगी य कृमासरीरक्षयप्पमोगिणो य ५ अहंको व  
ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगी य आद्वारपरीर-  
क्षयप्पमोगी य आद्वारणमीसासरीरक्षयप्पमोगी य कृमासरीरक्षयप्पमोगी य ७  
अहंको व ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगी व  
आद्वारणमीमासरीरक्षयप्पमोगी य कृमासरीरक्षयप्पमोगिणो य ९ अहंको व  
ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगी य आद्वारपरीर-  
क्षयप्पमोगी य आद्वारणमीमासरीरक्षयप्पमोगी य कृमासरीरक्षयप्पमोगी य ११  
अहंको व आद्वारणमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो य १३ अहंको व आद्वारपरीर-  
क्षयप्पमोगिणो य कृमासरीरक्षयप्पमोगिणो य १५ अहंको व ओरात्मिमीमार्म-  
रीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणसरीरक्षयप्पमोगिणो य आद्वारणमीसासरीरक्षय-  
प्पमोगी य कृमासरीरक्षयप्पमोगी य १६ अहंको व ओरात्मिमीसासरीरक्षयप्पमोगिणो  
य आद्वारपरीरक्षयप्पमोगी य १८ अहंको व आद्वारपरीरक्षयप्पमोगी य  
कृमासरीरक्षयप्पमोगी य १९ अहंको व आद्वारणमीमासरीरक्षयप्पमोगी य  
आद्वारपरीरक्षयप्पमोगी य २० एवं एष अड्डमें वार्ष्ण घोषा भर्ति गम्भेऽर्थि व न मंति-  
दिवा भर्ति भेगा भर्ति । वार्ष्णमें अर्थात् भौमातिका वहा अमुरुमारा ॥ ४६० ॥  
कर्तिह व भर्ति ! गम्भेऽरक्षयमैमातिका वहा अमुरुमारा । वैष्विह महाप्रशार वर्तते । तीजहा-

पओगगई १, ततगई २, वंधणछेयणगई ३, उववायगई ४, विहायगई ५। से किंत पओगगई २ पओगगई पणरसविहा पञ्चता। तंजहा-सच्चमणप्पओगगई, एवं जहा पओगो भणिओ तहा एसा वि भाणियव्वा जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगई। जीवाण भंते! कइविहा पओगगई पञ्चता? गोयमा! पणरसविहा पञ्चता। तंजहा-सच्चम-णप्पओगगई जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगई। नेरइयाण भते! कइविहा पओ-गगई पञ्चता? गोयमा! एक्कारसविहा पञ्चता। तजहा-सच्चमणप्पओगगई, एव उवउजिक्कण जस्स जइविहा तस्स तइविहा भाणियव्वा जाव वेमाणियाण। जीवा ण भते! सच्चमणप्पओगगई जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगई? गोयमा। जीवा ण सब्बे वि ताव होज सच्चमणप्पओगगई वि, एव त चेव पुब्बवण्णिय भाणियव्व, भगा तहेव जाव वेमाणियाण, से त पओगगई १॥ ४६५॥ से किं तं ततगई? ततगई जे ण ज गामं वा जाव सणिणवेस वा सपट्टिए असपते अतरापहे वट्टु, सेत ततगई २॥ ४६६॥ से किं तं वधणछेयणगई? वंधणछेयणगई जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ, सेत वधणछेयणगई ३॥ ४६७॥ से कि त उववा-यगई? उववायगई तिविहा पञ्चता। तजहा-खेतोववायगई, भवोववायगई, नोभवो-ववायगई। से किं त खेतोववायगई? खेतोववायगई पचविहा पञ्चता। तजहा-नेरइयखेतोववायगई १, तिरिक्खजोणियखेतोववायगई २, मणूसखेतोववायगई ३, देवखेतोववायगई ४, सिद्धखेतोववायगई ५। से किं त नेरइयखेतोववायगई? नेरइयखेतोववायगई सतविहा पञ्चता। तजहा-रयणप्पभापुढविनेरइयखेतोववायगई १। से किं त तिरिक्खजोणियखेतोववायगई? तिरिक्खजोणियखेतोववायगई पचविहा पञ्चता। तंजहा-एगिंदियतिरिक्खजोणियखेतोववायगई जाव पर्चिंदियतिरिक्खजोणियखेतो-ववायगई। सेत तिरिक्खजोणियखेतोववायगई २। से कि त मणूसखेतोववाय-गई? मणूसखेतोववायगई दुविहा पञ्चता। तजहा-समुच्छिममणूसखेतोववायगई, गव्वमवक्तियमणूसखेतोववायगई। सेत मणूसखेतोववायगई ३। से किं त देवखेतो-ववायगई? देवखेतोववायगई चउन्विहा पञ्चता। तजहा-भवणवई० जाव वेमाणिय-देवखेतोववायगई। सेत देवखेतोववायगई ४॥ ४६८॥ से किं त सिद्धखेतोव-वायगई? सिद्धखेतोववायगई अणेगविहा पञ्चता। तजहा-जंबुदीवे दीवे भरहेरवय-चासे सपकिंख सपडिदिसि सिद्धखेतोववायगई, जंबुदीवे दीवे चुल्हिमवतसिहरिवास-हरपञ्चयसपकिंख सपडिदिसि सिद्धखेतोववायगई, जंबुदीवे दीवे हेमवयहेरण्णवास-सपकिंख सपडिदिसि सिद्धखेतोववायगई, जंबुदीवे दीवे सद्वावइवियटाचडवट्टवेयहु-

सपत्निय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरीव रीवे महाद्विमर्वदस्पिकामहर  
फम्यसपस्त्रिय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरीवे रीवे इरिकामरम्मवावा-  
सपत्निय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरीवे रीवे यंपावाइमास्वंतपत्त-  
पद्येतोवकावयहै सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरीवे रीवे किम्भृतीमर्वदवास्व-  
रपत्तवसपस्त्रिय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरीव रीवे पुम्पविद्वायरविद्व-  
पस्त्रिय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरीवे रीवे देवदुश्वताकुलस्त्रिय उद्यो-  
गिसि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरीवे रीवे भरपम्यस्त्वं सपत्निय सपदिरिमि निव-  
येतोवकावयहै, अंगुरी उम्मी सपस्त्रिय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, वाद्यस्त्वे  
रीवे पुरिमद्वप्त्वरिथमद्वर्मवरपत्त्वसपस्त्रिय उपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, अंगुरी  
वस्त्रिय सपत्निय भरपत्निसि दिद्येतोवकावयहै, पुक्षवरवरतीवद्वपुरविथमदवरहेर  
वयवाम्यसपस्त्रिय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, एव जाव पुक्षवरवरतीवदवपत्तिम्य  
मदवरपत्त्वसपस्त्रिय सपदिरिमि दिद्येतोवकावयहै, से तं दिद्येतोवकावयहै ५  
॥ ४९९ ॥ से कि तं म्भोवकावयहै । म्भोवकावगहै अठविहा पक्षता । तंजहा—नेरस-  
म्भोवकावगहै जाव देवम्भोवकावगहै । से कि तं नेरस्यम्भोवकावयहै । नेरस्वम्भोवक-  
ावयहै यत्तिव्या पक्षता । तंजहा—एव दिद्युम्भो मेवो मायिवन्नो बो देव वेतोवकावयहै  
सो चव से त वषम्भोवकावयहै । से तं म्भोवकावयहै ॥ ५० ॥ प से कि तं गोम्भोव-  
कावयहै । नोम्भोवकावयहै तुविहा पक्षता । तंजहा—योम्भम्भोम्भोवकावयहै, दिद्यु-  
म्भोवकावयहै । से कि तं योम्भम्भोम्भोवकावयहै । योम्भम्भोम्भोवकावयहै अर्थ  
फरमाणुपोम्भै ल्लेगरस्य पुरविथम्भाओ चरमंतान्नो फवरिथम्भै चरमंतं एगसमएव  
गच्छ, फवरिथम्भाओ चा चरमंतान्नो पुरविथम्भै चरमंतं एगसमएव गच्छ,  
दाहितिव्याओ चा चरमंतान्नो चत्तिव्यं चरमंतं एगसमएव गच्छ, एव चत्तिव्यम्ये  
दाहितिव्यं उवरित्वाओ हेत्विं दित्तिव्याओ उवरित्वं से तं योगम्भोम्भोवकावयहै  
॥ ५११ ॥ से कि तं दिद्युपोम्भोवकावयहै । दिद्युबोम्भोवकावयहै तुविहा पक्षता ।  
तंजहा—भर्णतरसिद्ध्यम्भोम्भोवकावयहै फरपरसिद्ध्यम्भोम्भोवकावयहै च । से कि तं  
ब्यष्टुरसिद्ध्यम्भोवकावयहै । ३ फरपरसिद्ध्य पक्षता । तंजहा—तित्वसिद्ध्यम्भतर  
सिद्ध्यम्भोम्भोवकावयहै च चाव अनेपसिद्ध बोगम्भोवकावयहै च । से कि तं फरपर  
सिद्ध्यम्भोम्भोवकावयहै । ३ अनेपसिद्धम्भोम्भोवकावयहै च । तंजहा—अपक्षम्भसमवसिद्ध्यम्भोम्भोवकाव-  
यहै, एव उपम्भवसिद्ध्यम्भोम्भोवकावयहै चाव अर्णतसम्भवसिद्ध्यम्भोम्भोवकावयहै, से तं  
सिद्ध्यम्भोम्भोवकावयहै, से तं बोगम्भोवकावयहै, से हं उवकावयहै ४ ॥ ५१२ ॥  
से कि तं दिद्युवकावयहै । दिद्युवकावयहै सत्तरसविहा पक्षता । तंजहा—कुसमावयहै ।

अफुसमाणगडे २, उवसपञ्जमाणगडे ३, अणुवसपञ्जमाणगडे ४, पोगलगडे ५, मंडयगडे ६, णावागडे ७, नयगडे ८, छायागडे ९, छायाणुवायगडे १०, लेमागडे ११, लेमाणुवायगडे १२, उदिस्सपविभत्तगडे १३, चउपुरिमपविभत्तगडे १४, वक्गडे १५, पक्गडे १६, वधनविमोयनगडे १७ ॥ ४७३ ॥ से कि त फुसमाणगडे १ फुसमाणगडे जण्णं परमाणुपोगले(ल)दुपएसिय जाव अणतपए-सियाण संवाणं अण्णमण्णं फुसिता ण गडे पवत्तड, नेत फुसमाणगडे १। से कि त अफुममाणगडे २ अफुममाणगडे जण्ण एएनि चेव अफुसिता ण गडे पवत्तड, से त अफुसमाणगडे २। से कि त उवसपञ्जमाणगडे २ ३ जण्णं राय वा ऊवराय वा डेमर वा तलवर वा माडविय वा कोडुंवियं वा डब्भ वा सेंट्टि वा सेणाकट वा सत्यवाहं वा उवसपजिता ण गच्छड, से त उवसपञ्जमाणगडे ३। से कि त अणुवसपञ्जमाणगडे २ २ जण्ण एएसि चेव अण्णमण्णं अणुवसपजिना ण गच्छड, से त अणुवसपञ्जमाणगडे ४। से कि त पोगलगडे २ २ जण्ण परमाणु-पोगलाण जाव अणतपएसियाण रधाण गडे पवत्तड, से त पोगलगडे ५। से कि त मह्यगडे २ २ जण्ण मंडूओ फिडिता गच्छड, से त मह्यगडे ६। से कि त णावा-गडे २ जण्ण णावा पुव्ववेयालीओ दाहिणवेयालिं जलपहेण गच्छड, दाहिणवेयालीओ वा अवरवेयालिं जलपहेण गच्छड, से त णावागडे ७। से कि त नयगडे २ २ जण्ण ऐगमसगहवहारउज्जुसुयसद्समभिरुद्देवभूयाण नयाण जा गडे, अहवा मव्वणया वि ज इच्छेति, से त नयगडे ८। से कि त छायागडे २ २ जं ण हयछाय वा गयछाय वा नरछाय वा किणरछाय वा महोरगच्छाय वा गधव्वच्छाय वा उसहछाय वा रहछाय वा छत्ताय वा उवसपजिताण गच्छड, से त छायागडे ९। से कि त छायाणुवायगडे २ २ जेणं पुरिस छाया अणुगच्छड, नो पुरिसे छाय अणुगच्छड, से त छायाणुवायगडे १०। से कि त लेसागडे २ २ जण्ण किण्हलेसा नीललेस पप्प तास्वत्ताए तावण्णत्ताए तागधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुजो भुजो परिणमइ, एव नीललेसा काउलेस पप्प तास्वत्ताए जाव ताफासत्ताए परिणमइ, एव काउलेसा वि तेउलेस तेउलेसा वि पम्हलेस पम्हलेसा वि सुक्लेस पप्प तास्वत्ताए जाव परिणमइ, से त लेसागडे ११। से कि त लेसाणुवायगडे २ २ जेसाइ दव्वाइ परियाड्ता काल करेइ तलेसेसु उववज्जइ, तजहा-किण्हलेसेसु वा जाव सुक्लेसेसु वा, से त लेसाणुवायगडे १२। से कि त उदिस्सपविभत्तगडे २ २ जण्ण आयरिय वा उवज्ज्ञाय वा थेरे वा पवत्ति वा गणि वा गणहरू वा गणावच्छेयं वा उदिसिय २ गच्छड, से त उदिस्सियपविभत्तगडे १३। से कि त चउपुरिसपविभत्तगडे २ से

बहानामए बाहारि पुरिसा समग्री फलवद्विया समर्पय पट्टिया १ उसग्रे पञ्चवद्विया विसम पट्टिया २ विसम फलवद्विया विसम पट्टिया ३ विसमं फलवद्विया समर्पय पट्टिया ४ से तं बहपुरिसपतिमात्माई १४ । से कि त वैक्षणी १ ३ बउविक्षण पवत्ता । तंबहा-बाहारि यंमवद्या छेसम्भवा फलवद्या से तं वैक्षणी १५ । से कि त वैक्षणी २ २ ऐ जहानामए केह पुरिसे फंकंडि वा उदयसि वा बाहने उविक्षिया २ गच्छ से तं फल्लाई १६ । से कि तं यंवधमिमोदक्षाई ३ ५ यस्य अदाल वा अदावगाय वा माउहुगाय वा विक्षान वा फलेद्वान वा भजाय वा फलस्याय वा वालिमाय वा अन्दोवगाय वा बाराल वा खोराल वा रिक्षाय वा फलावं दरियाम-यार्थ वैक्षण्यमो विष्वमुद्वार्थ विष्वाक्षाएवं अहे शीसाए पहै फलाल, से त वैक्षण्यमोदक्षाई १७ । से तं विहासेऽपै ५ ॥ ४४४ ॥ पञ्चवद्याप भगवार्णप सोऽसमं पश्चोगपर्य समर्पय ॥

आहार समसरीय उत्साहे फलमवलेद्वापु । समवेत्य समविरिवा समाववा चेत् वोद्यमा ॥ १ ॥ नेरहा वं भंते । सम्बे समाहारा सम्बे समसरीय सम्बे समुस्यासनिस्सासा १ योवमा । जो इष्टद्वे सम्डे । से केळद्वेष्य भंते । एवं तुच्छ-नेरहा जो सम्बे समाहारा जाव जो सम्बे समुस्यासनिस्सासा' १ योवमा । नेरहा तुविहा फलाल । तंबहा-बाहासरीरा य अप्पुरिरा य । तत्प नं जे ते महासरीरा ठे वं बहुतराप पोमगढे आहारेति बहुतरापे पोमगढे परिकामेति बहुतरापे पोमगढे उत्सुकति बहुतराप पोमगढे नीचवंति अमिक्षयार्थ आहारेति अमिक्षयार्थ परिकामेति अमिक्षयार्थ असरेति अमिक्षयार्थ नीसरेति । तत्प य वे तु अप्पुरिरा वे वं बहुतराप पोमगढे आहारेति अप्पतरापे पोमगढे परिकामेति अप्पतरापे पोमगढे उत्सुकति अप्पतराप पोमगढे नीसरेति आहार आहारेति आहार परिकामेति, आहार असरेति आहार नीचवंति से एणद्वेष्य योवमा । एवं तुच्छ-नेरहा जो सम्बे समाहारा जो सम्बे समसरीरा जो सम्बे समुस्यासनिस्सासा' ॥ ४४५ ॥ नेरहा जो भंते । सम्बे समक्षमा १ योवमा । जो इष्टद्वे यम्डे । से केळद्वेष्य भंते । एवं तुच्छ-नेरहा जो सम्बे समक्षमा' १ योवमा । नेरहा तुविहा फलाल । तंबहा-पुच्छोक्षवद्या व पञ्चवद्यवद्या य । तत्प वं जे तु पुच्छोक्षवद्या तु वं अप्पद्यम-तदुग्गा तत्प वं जे ते पञ्चवद्यवद्या ते जे महाऽम्भवद्यागा से तेणद्वेष्य योवमा । एवं तुच्छ-नेरहा जो सम्बे समक्षमा' ॥ ४४६ ॥ नेरहा वं भंते । सम्बे समक्षमा १ योवमा । जो इष्टद्वे सम्डे । से केळद्वेष्य भंते । एवं तुच्छ-नेरहा जो सम्बे समक्षमा' १ योवमा । नेरहा तुविहा फलाल । तंबहा-पुच्छोक्षवद्या व पञ्च-

ववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुब्बोववन्नगा ते ण विसुद्धवन्नतरागा, तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धवन्नतरागा, से एएणट्रेण गोयमा । एवं वुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समवन्ना’ । एवं जहेव वक्षेण भणिया तहेव लेसासु विसुद्धलेसतरागा अविसुद्धलेसतरागा य भाणियन्वा ॥ ४७७ ॥ नेरइया णं भंते । सब्बे समवेयणा ? गोयमा ! नो इणट्रे समट्रे । से केणट्रेण भते । एवं वुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समवेयणा’ ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पञ्चता । तजहा-सञ्जिभूया य असञ्जिभूया य । तत्थ ण जे ते सञ्जिभूया ते ण महावेयणतरागा, तत्थ ण जे ते असञ्जिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा, से तेणट्रेण गोयमा । एवं वुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समवेयणा’ ॥ ४७८ ॥ नेरइया णं भते । सब्बे समकिरिया ? गोयमा ! नो इणट्रे समट्रे । से केणट्रेण भते । एवं वुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समकिरिया’ ? गोयमा ! नेरइया तिविहा पञ्चता । तजहा-सम्महिद्वी, मिच्छहिद्वी, सम्मामिच्छहिद्वी । तत्थ ण जे ते सम्महिद्वी तेसि ण चत्तारि किरियाओ कज्जति, तजहा-आरंभिया, परिगगहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया । तत्थ णं जे ते मिच्छहिद्वी जे सम्मामिच्छहिद्वी तेसि ण निययाओ पञ्च किरियाओ कज्जति, तजहा-आरंभिया, परिगगहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादसणवत्तिया, से तेणट्रेण गोयमा । एवं वुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समकिरिया’ ॥ ४७९ ॥ नेरइया णं भते । सब्बे समाउया, सब्बे समोववन्नगा ? गोयमा ! नो इणट्रे समट्रे । से केणट्रेण भते । एवं वुच्चइ० ? गोयमा ! नेरइया चउविहा पञ्चता । तंजहा-अत्येगइया समाउया समोववन्नगा, अत्येगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्येगइया विसमाउया समोववन्नगा, अत्येगइया विसमाउया विसमोववन्नगा, से तेणट्रेण गोयमा । एवं वुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समाउया, नो सब्बे समोववन्नगा’ ॥ ४८० ॥ असुरकुमारा ण भते । सब्बे समाहारा ? एवं सब्बे वि पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्रे समट्रे । से केणट्रेण भते । एवं वुच्चइ० ? जहा नेरइया । असुरकुमारा णं भते । सब्बे समकम्मा ? गोयमा ! णो इणट्रे समट्रे । से केणट्रेण भते । एवं वुच्चइ० ? गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पञ्चता । तजहा-पुब्बोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुब्बोववन्नगा ते ण महाकम्मतरा, तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अप्पकम्मतरा, से तेणट्रेण गोयमा । एवं वुच्चइ-‘असुरकुमारा णो सब्बे समकम्मा’ । एवं वजलेस्माए पुच्छा । तत्थ णं जे ते पुब्बोववन्नगा ते ण अविसुद्धवन्नतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते ण विसुद्धवन्नतरागा, से तेणट्रेण गोयमा । एवं वुच्चइ-‘असुरकुमारा ण सब्बे णो समवन्ना’ । एवं लेस्साए वि, वेयणाए जहा नेरइया, अवसेस जहा नेरइयाण । एवं

जात अपिवतुभारा ॥ ४८१ ॥ पुढिविशद्या आहारऽन्नमहेत्साहि जहा भरवा । पुढिविशद्या न भेत । सम्बे उमपैश्चाप फलां ॥ हृता गोममा ॥ सम्बे सुखेववा । ऐ फिलट्रैर्च ॥ गोवमा । पुढिविशद्या सम्बे भावावी भगविशमूर्व अपिववे पैयनी दशनिति से तंजट्रैर्च गोममा । पुढिविशद्या सम्बे समवेयणा । पुढिविशद्या न भेत । सम्बे समर्पि रिया ॥ हृता गोममा । पुढिविशद्या सम्बे तमङ्गिरिया । से केवट्रैर्च ॥ गोममा । पुढिविशद्या सम्बे मात्रमिळ्याहिंडी तेसि विवृद्याभो क्षेत्रियाभो क्षमनिति तंजहा-आरमिया परियाहिया मायावतिया अपवक्ष्यामिरिया मिळ्यादृष्ट्यवतिया व से तेजट्रैर्च गोममा । ॥ एव जात चतुर्दिवा । फैर्वेदियविरिष्यवौविया जहा भेर इवा भवरे फिरियाहि सम्मानिंडी मिळ्याहिंडी सम्मानिंडीहिंडी । तत्प न व त सम्म-हिंडी वे तुविहा पवता । तंजहा-भसेववा व संववासेववा य । तत्प व वे ते संववासेववा तेवि व तिलि फिरियाभो क्षमनिति तंजहा-आरमिया परियाहिया मायावतिया । तत्प न वे ते असेववा तेसि व चातारि फिरियाभो क्षमनिति तंजहा-आरमिया परियाहिया मायावतिया अपवक्ष्यामिरिया । तत्प व वे ते मिळ्य-विंडी वे व सम्मानिंडीहिंडी तेवि व तिरियाभो क्षमनिति तंजहा-आरमिया परियाहिया मायावतिया अपवक्ष्यामिरिया मिळ्यादृष्ट्यवतिया सेवि व वेव ॥ ४८२ ॥ मङ्गुस्था न भेत । सम्बे समाहारा ॥ गोममा ॥ जो इन्हे सम्बे । से केवट्रैर्च ॥ गोममा । मङ्गुस्था तुविहा पवता । तंजहा-माहासरीरा व अपवक्ष्यारा व । तत्प न वे ते माहासरीरा ते व गुणतराए पोमाके आहारेति जात चुदुरार पोमाके नीसुरेति आहार आहारेति आहार भीसुरेति । तत्प व वे ते अपवक्ष्यारा ते व अपवक्ष्याए पोमाके आहारेति जात चुपतराए पोमाके नीसुरेति अगिमालावे आहारेति जात चमिळ्यावर्ण नीसुरेति से तेजट्रैर्च पोममा । एव तुच्छ-‘मङ्गुस्था सम्बे जो समाहारा’ । ऐसे जहा वेरहाने नवरे फिरियाहि मङ्गुस्था लिन्दिया पवता । तंजहा-सम्मानिंडी मिळ्याहिंडी सम्मानिंडीहिंडी । तत्प न वे ते सम्मानिंडी व तिविहा पवता । तंजहा-संज्ञाव असेववा संववासेववा । तत्प न वे ते संववा ते तुविहा पवता । तंजहा-चरागर्हेववा व चैवरागर्हेववा य । तत्प व वे ते चैवरागर्हेववा ते व अक्षिरिया तत्प व वे ते उपमातरेववा व तुविहा पवता । तंजहा-मात्रासेववा व अपमातरेववा व । तत्प न वे ते अपमातरेववा तेसि एव मायावतिया फिरिया क्षमन । तत्प न वे ते फमातरेववा तेवि जो फिरियाभो क्षमनि-आरमिया मायावतिया य । तत्प न वे ते संववासेववा तेवि तिलि फिरियाभो क्षमनि तंजहा-आरमिया परियाहिया मायावतिया । तत्प न वे ते

असजया तेसि चत्तारे किरियाओ कज्जति, तजहा-आरभिया परिमगहिया माया-वत्तिया अपचक्षवाणकिरिया । तथ्य णं जे ते मिच्छादिट्ठी जे सम्मामिच्छादिट्ठी तेसि नियडयाओ पच किरियाओ कज्जति, तजहा-आरभिया परिमगहिया मायावत्तिया अपचक्षवाणकिरिया मिच्छादसणवत्तिया, सेस जहा नेरडयाण ॥ ४०३ ॥ वाण-मतराण जहा असुरकुमाराण । एव जोइसियवेमाणियाण वि, नवरं ते वेयणाए दुविहा पञ्चता । तजहा-माडमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य अमाडसम्मदिट्ठीउववन्नगा य । तथ्य णं जे ते माइमिच्छादिट्ठीउववन्नगा ते ण अप्पवेयणतरागा, तथ्य ण जे ते अमाडसम्म-दिट्ठीउववन्नगा ते ण महावेयणतरागा, से तेणट्रेण गोयमा । एव चुच्छ० । सेस तहेव ॥ ४०४ ॥ सलेसा ण भते । नेरडया भव्ये समाहारा, समसरीरा, समुस्सा-सनिस्मासा-सन्वे वि पुच्छा । गोयमा । एव जहा ओहिओ गमओ तहा सलेसाग-मओ वि निरवसेसो भाणियब्बो जाव वेमाणिया । किंवलेसा ण भंते । नेरहया सव्वे समाहारा-पुच्छा । गोयमा । जहा ओहिया, नवर नेरहया वेयणाए माइमिच्छादिट्ठी-उववन्नगा य अमाडसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियब्बा, सेस तहेव जहा ओहियाण । असुरकुमारा जाव वाणमतरा एए जहा ओहिया, नवरं मणुस्साण किरियाहिं विसेसो-जाव तथ्य ण जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पञ्चता । तजहा-सजया असजया सजयासजया य, जहा ओहियाण । जोइसियवेमाणिया आइलियासु तिसु लेसासु ण पुच्छिज्जंति । एव जहा किंवलेसा विचारिया तहा नीललेसा वि विचारेयब्बा । काउलेसा नेरडएहितो आरब्ब जाव वाणमतरा, नवरं काउलेसा नेरडया वेयणाए जहा ओहिया । तेउलेसाण भते । असुरकुमाराणं ताओ चेव पुच्छाओ । गोयमा । जहेव ओहिया तहेव, नवर वेयणाए जहा जोइसिया । पुढविआउवणस्सडपचेदिय-तिरिक्खमणुस्सा जहा ओहिया तहेव भाणियब्बा, नवरं मणूसा किरियाहिं जे सजया ते पमत्ता य अपमत्ता य भाणियब्बा, सरागा वीयरागा नत्यि । वाणमंतरा तेउलेसाए जहा असुरकुमारा, एव जोइसियवेमाणिया वि, सेस तं चेव । एव पम्हलेसा वि भाणियब्बा, नवरं जेसि अत्यि । सुक्कलेसा वि तहेव जेसि अत्यि, सब्ब तहेव जहा ओहियाण गमओ, नवरं पम्हलेस्स्पसुक्कलेसाओ पचेदियतिरिक्खजोणियमणूसवेमाणियाणं चेव, न सेसाण ति ॥ ४०५ ॥ पञ्चवणाए भगवईप सत्तरसमे लेस्सापए पढमो उहेसओ समत्तो ॥

कह ण भते । लेसाओ पञ्चताओ ? गोयमा । छलेमाओ पञ्चताओ । तजहा-किंवलेसा, नीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा ॥ ४०६ ॥ नेरहयाण भते । कह लेसाओ पञ्चताओ ? गोयमा । तिन्नि० तजहा-किंवलेसा,

नीम्बेना छट्टेना । रिरिक्तप्रोमिवार्णं भर्ते । छट्टेस्तामो पक्षतामो ॥ घोम्मा । छट्टेस्तामो पक्षतामो । तंजहा-कछुलेस्ता जाव छुट्टेस्ता । एमिरियार्णं भर्ते । छट्टेस्तामो पक्षतामो ॥ गोम्मा । चतारि तेस्तामो पक्षतामो । तंजहा-कछुलेस्ता जाव तेरडेन्या । मुद्विकाश्वार्णं भर्ते । कह तेस्तामो पक्षतामो ॥ गोम्मा । एवं चेत् । जाउवणस्ताइस्तान वि एवं चेत् । ठतवाठपैदियतैइवियम्बरिरिवार्णं चरा नेराह्यार्णं । फंचेरियतिरिक्तप्रोमिवार्णं पुच्छ । गोम्मा । छेना-कछुलेस्ता जाव मुहुर्क्षेता । संमुचितमप्तेदियतिरिक्तप्रोमिवार्णं पुच्छ । गोम्मा । जहा नेराह्यार्णं । गम्मवर्क्तिवर्तेदियतिरिक्तप्रोमिवार्णं पुच्छ । गोम्मा । छेना-कछुलेस्ता जाव मुहुर्क्षेता । तिरिक्तप्रोमिवार्णं पुच्छ । घोम्मा । छेना एवाम्बे चेत् । मराह्यार्णं पुच्छ । घोम्मा । छेना एवाम्बे चेत् । संमुचितमलुम्बार्णं पुच्छ । गोम्मा । जहा नेराह्यार्णं । गम्मवर्क्तिवर्क्तुस्तार्णं पुच्छ । गोम्मा । छेनामो तंजहा-कछुलेस्ता जाव मुहुर्क्षेता । मजुस्तीर्णं पुच्छ । घोम्मा । एवं चेत् । ऐशीर्ण पुच्छ । गोम्मा । चतारि-कछुलेस्ता जाव तेरडेना । मदलवासीर्णं भर्ते । दवार्णं पुच्छ । घोम्मा । एवं चेत् एवं मदलवासीर्णं वि । वाक्मीतरदवार्णं पुच्छ । घोम्मा । एवं चेत् एवं वाक्मीतरीच वि । चोद्विकार्णं पुच्छ । गोम्मा । एगा तेरडेना एवं बोहसिलीच वि । बैमामियार्णं पुच्छ । गोम्मा । रिरिदि तंजहा-तेरडेना फम्हेस्ता मुहुर्क्षेता । बैमामिलीर्णं पुच्छ । गोम्मा । एगा तेरडेना ॥ ४४७ ॥ एएषि वं भर्ते । बीचार्णं तेस्तार्णं कह-ठेस्तार्णं जाव मुहुर्क्षेस्तार्णं अठेस्तान व क्षरे क्ष्यरोहितो जप्पा वा जहुवा वा त्रुवा वा बिसेनाहिवा वा ॥ गोम्मा । सञ्चत्पोवा बीचा छट्टेस्ता फम्हेस्ता तेस्तार्णं क्षरे जहुवा तेठेस्ता संसेज्ञुवा अठेस्ता अर्णंजहुवा अठेस्ता अर्णंतजहुवा अठेस्ता अर्णंतजहुवा बिसेनाहिवा फम्हेस्ता बिसेनाहिवा छट्टेस्ता बिसेनाहिवा ॥ ४४८ ॥ एएषि वं भर्ते । नेराह्यार्णं कछुलेस्तार्णं नीम्बेनार्णं छट्टेस्तार्णं जप्पा व क्षरे क्ष्यरोहितो जप्पा वा ॥ ३ ॥ घोम्मा । सञ्चत्पोवा नेराह्या कछुलेस्ता बीचेना जस्तेज्ञुवा अठेस्ता असेज्ञुवा । एएषि वं भर्ते । रिरिक्तप्रोमिवार्णं कछुलेस्तार्णं जाव छट्टेस्तार्णं व क्षरे क्ष्यरोहितो जप्पा वा ॥ ४ ॥ घोम्मा । सञ्चत्पोवा रिरिक्तप्रोमिया मुहुर्क्षेता एवं जहा बोहिवा व क्षरे अठेस्तान । एएषि भर्ते । एमिरियार्णं कछुलेस्तार्णं भिस्तेस्तार्णं अठेस्तार्णं तेठेस्ता अठेस्ता अर्णंजहुवा नीम्बेनार्णं बिसेनाहिवा फम्हेस्ता बिसेनाहिवा । एएषि वं भर्ते । मुद्विक्तदवार्णं कछुलेस्तार्णं जाव तेठेस्तान व

क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहिया एगिंदिया, नवर काउलेस्सा  
असखेजगुणा । एव आउकाइयाण वि । एएसि ण भंते । तेउकाइयाण कण्हलेस्साण  
नीललेस्साण काउलेस्साण य क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा  
तेउकाइया काउलेस्सा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, एवं  
चाउकाइयाण वि । एएसि ण भते । वण्स्साइकडियाण कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साण  
य जहा एगिंदियओहियाण । वेइदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण जहा तेउकाइयाण  
॥ ४८९ ॥ एएसि ण भते । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण कण्हलेस्साण एवं जाव सुक्ल-  
लेस्साण य क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहियाण तिरिक्खजोणि-  
याण, नवर काउलेसा असखेजगुणा । समुच्छमपचेंदियतिरिक्खजोणियाण जहा  
तेउकाइयाण । गब्भवक्तियपचेंदियतिरिक्खजोणियाण जहा ओहियाण तिरिक्ख-  
जोणियाण, नवर काउलेसा सखेजगुणा, एव तिरिक्खजोणिणीण वि । एएसि ण  
भते । समुच्छमपचेंदियतिरिक्खजोणियाण गब्भवक्तियपचेंदियतिरिक्खजोणियाण य  
कण्हलेस्साण जाव सुक्लेस्साण य क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा  
गब्भवक्तियपचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्लेस्सा, पम्हलेस्सा सखेजगुणा, तेउ-  
लेस्सा सखेजगुणा, काउलेस्सा सखेजगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा  
विसेसाहिया, काउलेस्सा समुच्छमपचेंदियतिरिक्खजोणिया असखेजगुणा, नीललेस्सा  
विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया । एएसि ण भते । समुच्छमपचेंदियतिरिक्ख-  
जोणियाण तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साण जाव सुक्लेस्साण य क्यरेहितो  
अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहेव पचम तहा इम छट्ठ भाणियबंव । एएसि ण भते ।  
गब्भवक्तियपचेंदियतिरिक्खजोणियाण तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साण जाव  
सुक्लेस्साण य क्यरे क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा गब्भवक्तिय-  
पचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्लेसा, सुक्लेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ सखेजगुणाओ,  
पम्हलेसा गब्भवक्तियपचेंदियतिरिक्खजोणिया सखेजगुणा, पम्हलेसाओ तिरिक्ख-  
जोणिणीओ सखेजगुणाओ, तेउलेसा तिरिक्खजोणिया सखेजगुणा, तेउलेसाओ  
तिरिक्खजोणिणीओ सखेजगुणाओ, काउलेसा सखेजगुणा, नीललेसा विसेसाहिया,  
कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ सखेजगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ,  
कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ । एएसि ण भंते । समुच्छमपचेंदियतिरिक्खजोणियाण  
गब्भवक्तियपचेंदियतिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साण जाव सुक्लेस्साण य क्यरे  
क्यरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा गब्भवक्तिया तिरिक्खजोणिया  
सुक्लेसा, सुक्लेसाओ तिरि० सखेजगुणाओ, पम्हलेसा गब्भवक्तिया तिरिक्ख-



एवं चेव । एएसि णं भंते ! भवणवासीण देवाण देवीण य कण्हलेसाण जाव तेउलेसाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सब्बत्थोवा भवण-वासी देवा तेउलेसा, भवणवासिणीओ० तेउलेसाओ सखेजगुणाओ, काउलेसा भवणवासी देवा असखेजगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ भवणवासिणीओ देवीओ सखेजगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, एवं वाणमतराण, तिशेव अप्पावहुया जहेव भवण-वासीण तहेव भागियव्वा ॥ ४९२ ॥ एएसि णं भंते ! जोइसियाण देवाणं देवीण य तेउलेस्साण क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सब्बत्थोवा जोइसिया देवा तेउलेसा, जोइसिणीओ देवीओ तेउलेस्साओ सखेजगुणाओ ॥ ४९३ ॥ एएसि ण भंते ! वेमाणियाण देवाण तेउलेसाणं पम्हलेसाण सुक्लेसाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सब्बत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्लेसा, पम्हलेसा असखेजगुणा, तेउलेसा असखेजगुणा । एएसि ण भंते ! वेमाणियाण देवाण देवीण य तेउलेस्साण पम्हलेस्साण सुक्लेस्साण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सब्बत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्लेस्सा, पम्हलेस्सा असखेजगुणा, तेउलेसा असखेजगुणा, तेउलेस्साओ वेमाणिणीओ देवीओ सखेजगुणाओ ॥ ४९४ ॥ एएसि ण भंते ! भवणवासीदेवाण वाणमतराण जोइसियाण वेमाणियाण य देवाण य कण्हलेसाण जाव सुक्लेसाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सब्बत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्लेसा, पम्हलेसा असखेजगुणा, तेउलेसा असखेजगुणा, तेउलेसा भवणवासी देवा असखेजगुणा, काउलेसा असखेजगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, तेउलेसा वाणमतरा देवा असखेजगुणा, काउलेसा असखेजगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, तेउलेसा जोडसिया देवा सखेजगुणा । एएसि ण भंते ! भवणवासिणीण वाणमतरीण जोइसिणी वेमाणिणी य कण्हलेसाण जाव तेउलेसाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सब्बत्थोवाओ देवीओ वेमाणिणीओ तेउलेसाओ, भवणवासिणीओ० तेउलेसाओ असखेजगुणाओ, काउलेसाओ असखेजगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसाओ वाणमतरीओ देवीओ असखेजगुणाओ, काउलेसाओ असखेजगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसाओ जोइसिणीओ देवीओ सखेजगुणाओ ॥ ४९५ ॥ एएसि ण भंते ! भवणवासीण जाव वेमाणियाण देवाण य देवीण य कण्हलेसाण जाव सुक्लेमाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सब्बत्थोवा वेमाणिया देवा

दृष्टिसा पम्हेसा असुखेज्ञुणा तेउसेगा असुखेज्ञुणा तेउसेगामो देशाक्षिण  
दीमो संगेज्ञुणामो देउसेमा भवजवासी देश असुखेज्ञुणा तउक्षेमाद्ये  
भवजवासीजीमो देशीमो संगेज्ञुणाम्ये व्यवहेसा भवजवासी असुखेज्ञुणा  
मीम्मेसा रिसेपाहिया क्षम्हेसा रिसेपाहिया बाड्लेसाओ भवजवासीजीये  
सुखेज्ञुणामो नीक्षेसामो रिसेपाहियामो क्षम्हेसाम्ये रिसेपाहियाम्ये तउल्ला  
चापमंत्रय संगेज्ञुणा तेउसेमामो चापमंत्रीमो दंपेज्ञुणाये बाड्लेसा चाप  
मंत्रय असुखेज्ञुणा मीम्मेसा रिसेपाहिया क्षम्हेसा रिसेपाहिया बाड्लेसाम्ये  
चापमंत्रीमो दंपेज्ञुणामो नीक्षेसामो रिसेपाहियामो क्षम्हेसाम्ये रिसेपा-  
हियामो तेउसेसा जोक्षिया संकेज्ञुणा तड्लेसामो जोक्षियीमो दंपेज्ञ-  
ुणामो ॥ ४१६ ॥ एएषि वं भर्ते । जीवाश क्षम्हेसालं चाप तड्लेश्वरं च  
क्षरे क्षरोहितो अप्पहिया चा महाहिया चा ॥ गोपमा । क्षम्हेसेहितो नीक्षेसा  
महाहिया नीक्षेसेहितो बाड्लेसा महाहिया एवं बाड्लेसेहितो तेउसेसा महाहिया  
तेउसेहितो क्षम्हेसा महाहिया पम्हेसेहिये तुह्येसा महाहिया सम्पर्हिय  
जीवा क्षम्हेसा उम्ममहाहिया तुह्येसा ॥ ४१७ ॥ एएषि वं भर्ते । देरद्वार  
क्षम्हेसार्थ नीक्षेसालं बाड्लेसालं च क्षरे क्षरोहितो अप्पहिया चा महाहिया  
चा ॥ गोपमा । क्षम्हेसेहितो नीक्षेसा महाहिया नीक्षेसेहितो क्षम्हेसा महाहिया  
सम्पर्हिया देरद्वा क्षम्हेसा सम्ममहाहिया नेरद्वा बाड्लेसा ॥ ४१८ ॥ एएषि  
वं भर्ते । तिरिक्षब्जोमिकार्थ क्षम्हेसार्थ चाप तुह्येसालं च क्षरे क्षरोहितो  
अप्पहिया चा महाहिया चा ॥ गोपमा । चहा जीवालं । एप्पसि वं भर्ते । एप्पितै-  
तिरिक्षब्जोमियालं क्षम्हेसालं चाप तेउसेसाव च क्षरे क्षरोहितो अप्पहिया चा  
महाहिया चा ॥ गोपमा । क्षम्हेसेहितो एग्गिरियतिरिक्षब्जोमिएहितो नीक्षेसा  
महाहिया नीक्षेसेहितो तिरिक्षब्जोमिएहितो बाड्लेसा महाहिया बाड्लेसेहितो  
तेउसेसा महाहिया सम्पर्हिया एग्गिरियतिरिक्षब्जोमिया क्षम्हेसा सम्ममहाहिया  
तेउसेसा । एवं पुढिक्षब्जालं च । एवं एवं अग्निक्षत्वेन बद्रेष्व देस्याभ्ये भार्ति-  
मामो व्योर नेमन्म चाप अवरियिका । पंचेविवतिरिक्षब्जोमियालं तिरिक्षब्जोमि-  
जीर्ण समुच्छिक्षार्थं पम्हमक्षेत्रियालं च सम्भेदि मामियार्थं चाप अप्पहिया फौ-  
मिया देश तेउसेसा सम्ममहाहिया देमायिया तुह्येसा । चेद् मर्वति-क्षत्वीर्ण  
दंडएन् शूनी मामियना ॥ ४१९ ॥ पश्चवपाप्य मग्नवाहैप सत्तरम्भमे छेस्या-  
प्य जीवो क्षद्देसामो समचो ॥

देरद्वार वं भर्ते । देरप्पद्वा चवद्वार, अभेष्टप्प नेरप्पद्वा उपम्भद्वा ॥ गोपमा ।

नेरइए नेरइएसु उववज्जइ, नो अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ, एव जाव वेमाणियाण ।  
 नेरइए ण भंते । नेरइएहिंतो उववद्धइ, अनेरइए नेरइएहिंतो उववद्धइ ? गोयमा ।  
 अनेरइए नेरइएहिंतो उववद्धइ, नो नेरइए नेरइएहिंतो उववद्धइ । एव जाव वेमाणिए,  
 नवर जोइसियवेमाणिएसु 'चयण'ति अभिलावो कायव्वो ॥ ५०० ॥ से नूण भते !  
 कण्हलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ, कण्हलेसे उववद्धइ, जलेसे उववज्जइ  
 तलेसे उववद्धइ ? हता गोयमा । कण्हलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ,  
 कण्हलेसे उववद्धइ, जलेसे उववज्जइ तलेसे उववद्धइ, एवं नीललेसे वि, एवं काउले-  
 से वि । एव असुरकुमाराण वि जाव थणियकुमारा, नवर लेसा अवभहिया । से  
 नूण भते । कण्हलेसे पुढिकाइए कण्हलेसेसु पुढिकाइएसु उववज्जइ, कण्हलेसे  
 उववद्धइ, जलेसे उववज्जइ तलेसे उववद्धइ ? हता गोयमा । कण्हलेसे पुढिकाइए  
 कण्हलेसेसु पुढिकाइएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उववद्धइ, सिय नीललेसे उववद्धइ,  
 सिय काउलेसे उववद्धइ, सिय जलेसे उववज्जइ तलेसे उववद्धइ । एव नीलकाउ-  
 लेसासु वि । से नूणं भंते । तेउलेसेसु पुढिकाइएसु उववज्जइ पुच्छा । हता गोयमा ।  
 तेउलेसे पुढिकाइए तेउलेसेसु पुढिकाइएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उववद्धइ,  
 सिय नीललेसे उववद्धइ, सिय काउलेसे उववद्धइ, तेउलेसे उववज्जइ, नो चेव ण  
 तेउलेसे उववद्धइ । एव आउकाइया वणस्साइकाइया वि । तेउबाऊ एवं चेव, नवरं  
 एएसि तेउलेसा नत्यि । वितियचउरिंदिया एव चेव तिसु लेसासु । पचेंदियतिरि-  
 क्षयजोणिया मणुस्सा य जहा पुढिकाइया आइलिया तिसु लेसासु भणिया तहा  
 असुरकुमारा । से नूणं भते । तेउलेसे जोइसिए तेउलेसेसु जोइसिएसु उववज्जइ ?  
 जहेव असुरकुमारा । एव वेमाणिया वि, नवर दोष्टं पि चयंतीति अभिलावो ॥ ५०१ ॥  
 से नूण भते । कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु  
 नेरइएसु उववज्जइ, कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे उववद्धइ, जलेसे उववज्जइ तलेसे  
 उववद्धइ ? हता गोयमा । कण्हनीलकाउलेसे उववज्जइ, जलेसे उववज्जइ तलेसे उव-  
 वद्धइ । से नूण भते । कण्हलेसे जाव तेउलेसे असुरकुमारे कण्हलेसेसु जाव तेउलेसेसु  
 असुरकुमारेसु उववज्जइ ? एवं जहेव नेरइए तहा असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा  
 वि । से नूण भते । कण्हलेसे जाव तेउलेसे पुढिकाइए कण्हलेसेसु जाव तेउलेसेसु  
 पुढिकाइएसु उववज्जइ ? एव पुच्छा जहा असुरकुमाराण । हता गोयमा । कण्हलेसे  
 जाव तेउलेसे पुढिकाइए कण्हलेसेसु जाव तेउलेसेसु पुढिकाइएसु उववज्जइ, सिय  
 कण्हलेसे उववद्धइ, सिय नीललेसे०, सिय काउलेसे उववद्धइ, सिय जलेसे उववज्जइ

तेजेसे उवधार्ष, तुरडेसे उवधार्ष, नो खेद अ तेजेसे उवधार्ष । एवं जातशाहा जास्तगाड़ाउदा मि माधिवधा । से गूर्ज भंति । कष्ठेसु नीमझेसे काउडेसे तेउज्जाए इन्हेसेसु नीमझेसेसु काउडेसेसु तुरडाइएसु उवधार्ष, कष्ठेसे नीमझेसे बालेसे सुवधार्ष, जोसे उवधार्ष तेजेसे सुवधार्ष ॥ हीता गोममा । कष्ठेसु नीमझेसे काउडेसे तुरडाए इन्हेसेसु नीमझेसेसु काउडेसेसु तेउज्जाइएसु उवधार्ष, सिव कष्ठेसे उवधार्ष, सिव नीमझेसे उवधार्ष, सिव क्षुरलेसे उवधार्ष, सिव जटेसे उवधार्ष तेजेसे उवधार्ष । एवं बाउकब्रह्मबेइदियताइरिवचरनिदिवा मि माधिममा । से गूर्ज भंति । कष्ठेसे बाब तुरडेसे पंचदिवतिरिक्षयज्ञोमिए इन्हेसेसु जात मुद्रेसेसु पंचदिवतिरिक्षयज्ञोमिए इन्हेसेसु जात मुद्रेसे पंचदिवतिरिक्षयज्ञोमिए इन्हेसेसु जात मुद्रेसे तुरडाए पुच्छ । हीता गोममा । कष्ठेसे बाब मुद्रेसे पंचदिवतिरिक्षयज्ञोमिए इन्हेसेसु जात मुद्रेसे तुरडाए, सिव कष्ठेसे तुरडाए जात सिव मुद्रेसे तुरडाए, तेज जटेसे तुरडाए । एवं गप्पूसे ति । बापमैतारा जहा अद्वारुनारा । व्येदियवेदामिवा मि एवं चेव नवर बस्तु ज्ञेसा । शोष्ट ति व्यथाप्ति माधियर्थ ॥ ५ ॥ कष्ठेसे जं भंति । नेरहए कष्ठेसे नेरहए पश्चिमा सम्भामो समंता सममिस्तेएमाने २ केवहवं ज्ञेता बालह केवहवं ज्ञेता पासह ॥ गोममा । जो बहुवं ज्ञेता बाणह, जो बहुवं ज्ञेता पासह, जो दु ज्ञेता बाणह, जो दु ज्ञेता पासह इतरिवमेव ज्ञेता जापह इतरिवमेव ज्ञेता पासह । से केवहवं भंति । एवं तुरड- कष्ठेसे जं नेयाए तं चेव जात इतरिवमेव ज्ञेता पासह ॥ गोममा । से बहलामए केव पुरिसे बहुस्मरमन्तिर्विभुमिभास्त्विति ज्ञाता सम्भामो समंता सममित्वेएवा तप् जं से पुरिसे भरमित्वमर्यु पुरिसे पश्चिमा सम्भामो समंता सममित्वेएमाने २ जो बहुवं ज्ञेता बाब पासह जात इतरिवमेव ज्ञेता पासह, से तेबहुवं गोममा । एवं तुरड- कष्ठेसु जं नेयाए बाब इतरिवमेव ज्ञेता पासह ॥ नीमझेसे जं भंति । नवहए कष्ठेसे नेयाए पश्चिमा भोविता समझे समंता सममिस्तेएमाने २ केवहवं ज्ञेता बाणह केवहवं ज्ञेता पासह ॥ गोममा । बहुतरागं ज्ञेता बालह, बहुतरागं ज्ञेता पासह, बहुतर ज्ञेता बापह, बहुतर ज्ञेता पासह, वित्तिमित्तरागं ज्ञेता बालह, वित्तिमित्तरागं ज्ञेता पासह, वित्तिमित्तरागं ज्ञेता बालह, वित्तिमित्तरागं ज्ञेता पासह । से केवहवं भंति । एवं तुरड- 'नीमझेसे जं नेयाए कष्ठेसे नेयाए पश्चिमाप्ति जाप वित्तिमित्तरागं ज्ञेता बापह, वित्तिमित्तरागं ज्ञेता पासह' ॥ गोममा । से बहलामए केव पुरिसे बहुस्मरमन्तिवामो भुमिमामाभो पश्चर्व तुरडहिता सम्भामो समंता सममित्वेएवा तप् जं से पुरिसे परमित्वमावं पुरिसे पश्चिमाप्ति समझे समंता सममित्वेएमाने २ बहुतरागं ज्ञेता बालह वित्तिमित्तरागं

खेत पासइ, से तेणद्वेण गोयमा ! एवं बुच्छ—‘नीललेसे नेरइए कण्ठलेस जाव विसुद्धतरागं खेत पासइ’। काउलेसे ण भते ! नेरइए नीललेस्स नेरइय पणिहाय ओहिणा सब्बओ समता समभिलोएमाणे २ केवइय खेतं जाणइ० पासइ ? गोयमा ! बहुतरागं खेत जाणइ० पासइ जाव विसुद्धतराग खेत पासइ । से केणद्वेण भते ! एव बुच्छ—‘काउलेसे ण नेरइए जाव विसुद्धतराग खेत पासइ’ ? गोयमा ! से जहानामए केद पुरिसे वहुसमरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ पञ्चयं दुरुहड दुरुहिता दो वि पाए उच्चाविया (वहिता) सब्बओ समता समभिलोएजा, तए ण से पुरिसे पञ्चयगय धरणितलगाय च पुरिस पणिहाय सब्बओ समता समभिलोएमाणे २ बहुतराग खेतं जाणइ, बहुतराग खेत पासइ जाव वितिमिरतरागं खेत पासइ, से तेणद्वेण गोयमा ! एव बुच्छ—‘काउलेसे ण नेरइए नीललेस्स नेरइय पणिहाय त चेव जाव वितिमिरतराग खेत पासइ’ ॥ ५०३ ॥ कण्ठलेसे ण भते ! जीवे कदसु नाणेसु होजा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होजा, दोसु होमाणे आभिणिवोहियसुयनाणे होजा, तिसु होमाणे आभिणिवोहियसुयनाणओहि-नाणेसु होजा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिवोहियसुयनाणमणपजवनाणेसु होजा, चउसु होमाणे आभिणिवोहियसुयओहिमणपजवनाणेसु होजा, एव जाव पम्हलेसे । सुक्षलेसे ण भते ! जीवे कदसु नाणेसु होजा ? गोयमा ! एगंसि वा दोसु वा तिसु वा चउसु वा होजा, दोसु होमाणे आभिणिवोहियनाण एव जहेव कण्ठलेसाण तहेव भाणि-यव्व जाव चउहि । एगमि नाणे होमाणे एगमि केवलनाणे होजा ॥ ५०४ ॥ पञ्चवणाप-भगवईए सन्तरसमे लेस्सापए तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

परेणामवश्वरसगवधुअपसत्यसकिलिद्वृहा । गदपरिणामपएसोगाढवगणठाणा-णमपवहु ॥ १ ॥ कद ण भते ! लेसाओ पन्नताओ ? गोयमा ! छ्लेसाओ पन्नताओ । तजहा—कण्ठलेसा जाव सुक्षलेसा । से नूण भते ! कण्ठलेस्सा नीललेस्स पप्प तारू-वत्ताए तावण्णत्ताए तागवत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुजो २ परिणमइ ? हता गोयमा । कण्ठलेस्सा नीललेस्स पप्प तारूवत्ताए जाव भुजो २ परिणमइ । से केणद्वेण भते ! एव बुच्छ—‘कण्ठलेस्सा नीललेस्स पप्प तास्वत्ताए जाव भुजो २ परिणमइ’ ? गोयमा । से जहा नामए खीरे दूर्सि पप्प सुद्दे वा वत्थे राग पप्प तारूवत्ताए जाव ताफासत्ताए भुजो २ परिणमइ, से तेणद्वेण गोयमा ! एव बुच्छ—‘कण्ठलेस्सा नीललेस्स पप्प तास्वत्ताए जाव भुजो २ परिणमइ’ । एव एएण अभिलावेण नील-रेमा काउलेस पप्प, काउलेसा तेउलेस पप्प, तेउलेसा पम्हलेस पप्प, पम्हलेमा सुक्षलेस पप्प जाव भुजो २ परिणमइ ॥ ५०५ ॥ से नूण भते ! कण्ठलेसा नीललेस

भवत्तेसु तेऽप्येसु पम्भृतेसु द्वाहृतेसु पर्य तास्ताताए तार्गताताए तर्च सत्ताए ताताताताए मुजो २ परिष्पर्मद । हृता गोममा । द्वाहृतेसा भीत्तेसु वर्ण जात द्वाहृतेसु पर्य तास्ताताए तार्गताताए तर्च भृताए मुजो २ परिष्पर्मद । ऐ केष्टेन्म भैते । एवं तुष्ट- द्वाहृतेसा भीत्तेसु जात द्वाहृतेसु पर्य तास्ताताए तर्च भृत्यो २ परिष्पर्मद । गोममा । ऐ जहानामए बेदलिक्षितपी लिवा द्वाहृतपर्य का नीम्भुताए वा बोहियतुताए वा द्वाहृतपर्य का द्विलिक्षिताए वा आइए उपामे तास्ताताए जात मुजो २ परिष्पर्मद, से तथ्यद्वैत गो । एवं तुष्ट- द्वाहृतेसा भीत्तेसु जात द्वाहृतेसु पर्य तास्ताताए जात भृत्यो २ परिष्पर्मद ॥ ५ ६ ॥ ऐ नूर्धं भैते । भीत्तेसु लिवा द्वाहृतेसु जात द्वाहृतेसु पर्य तास्ताताए जात मुजो २ परिष्पर्मद । एवं तुष्ट- द्वाहृतेसु भैते । एवं तेऽप्येसा द्वाहृतेसु भीत्तेसु तेऽप्येसु द्वाहृतेसु एवं द्वाहृतेसु भीत्तेसु वात्तेसु पम्भृतेसु द्वाहृतेसु एवं पम्भृतेसा द्वाहृ- तेसु भीत्तेसु द्वाहृतेसु तेऽप्येसु भैत्यो २ परिष्पर्मद । इन्द्र्य गोममा । तं चतु । से नूर्धं भैते । द्वाहृतेसा द्वाहृतेसु भीत्तेसु द्वाहृतेसु तेऽप्येसु पम्भृतेसु पर्य जात मुजो २ परिष्पर्मद । हृता गोममा । तं चेत ॥ ५ ७ ॥ द्वाहृतेसा नू भैते । ज्ञेन्म केरितिया पत्ता । गोममा । से जहानामए भीम्भु ६ वा अवधि इ वा चंद्रमे इ वा चन्द्रसे इ वा परके इ वा गम्भवत्तर्प इ वा चंद्रमे इ वा भारितुपके इ वा परुषे इ वा भवरे इ वा भमरात्ती इ वा यवस्तमे इ वा द्विव्यासरे इ वा आसासविमसे इ वा द्विव्यासोए इ वा द्वाहृतपर्यारेए इ वा द्वाहृतपुरीरए इ वा भवत्तेसु चेत अक्षरतरिया चेत अपिष्पतरिया चेत अम्लुततरिया चेत अम्ल- जामतरिया चेत ज्ञेन्म पत्ता ॥ ५ ८ ॥ प्र भीत्तेसु नू भैते । भेरितिया ज्ञेन्म पत्ता । गोममा । से जहानामए लिंगए इ वा लिंगपत्ते इ वा चावे इ वा चासे पिष्पर्मदए इ वा द्वाहृतपिष्पके इ वा चामा इ वा चत्तराई इ वा चंद्रताए इ वा चारेवयनीया इ वा भोरणीया इ वा द्वाहृतपर्मदसे इ वा भवत्तिक्षुमे इ वा चाहृतमे इ वा अवत्तेपियाङ्गम्भुमे इ वा वीक्षुपके इ वा नीम्भसोए इ वा भीक्षुतपर्यारेए इ वा भीत्तेम्भुतीरी इ वा भीत्तेम्भुतीरी इ वा गवेवास्त्वे । गोममा । चो इन्द्रद्वे सम्हौ एतो जात भम- लामदरिया चेत ज्ञेन्म पत्ता ॥ ५ ९ ॥ द्वाहृतेसा नू भैते । भेरितिया ज्ञेन्म पत्ता । से जहानामए चाहृतपर्मदए इ वा चाहृतपर्मदारे इ वा भमास्तमारे इ वा तंत्रे इ वा तंत्रपर्मदोई इ वा तंत्रपिष्पक्षुमे इ वा चोहृत- चाहृतमुमे इ वा भवासाङ्गम्भुमे इ वा भवेवास्त्वे । गोममा । चो इन्द्रद्वे सम्हौ ।

काउलेस्सा ण एतो अणिद्वयरिया जाव मणामयरिया चेव वक्षेण पञ्चता ॥५१०॥  
 तेउलेस्सा ण भते ! केरिसिया वक्षेण पञ्चता ? गोयमा ! से जहानामए ससरहिरे  
 इ वा उरच्छहिरे इ वा वराहरहिरे इ वा सवररहिरे इ वा मणुस्सरहिरे इ वा  
 इदगोवे इ वा वालंदगोवे इ वा वालदिवायरे इ वा सज्जारागे इ वा शुंजद्वरागे इ वा  
 जाइहिंगुले इ वा पवालंकुरे इ वा लक्खारसे इ वा लोहियक्खमणी इ वा किमिरा-  
 गक्कले इ वा गयतालुए इ वा चीणपिट्ठरासी इ वा पारिजायकुसुमे इ वा जासुमण-  
 कुसुमे इ वा किंसुयपुष्परासी इ वा रुत्तुप्पले इ वा रत्तासोगे इ वा रत्तकणवीरए इ  
 वा रत्तवधुजीवए इ वा, भवेयारुवे ? गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । तेउलेस्सा ण एतो  
 इष्टुतरिया चेव जाव मणामतरिया चेव वक्षेण पञ्चता ॥ ५११ ॥ पम्हलेस्सा ण  
 भते ! केरिसिया वक्षेणं पञ्चता ? गोयमा ! से जहानामए चंपे इ वा चपयछली इ  
 वा चपयमेए इ वा हालिद्वा इ वा हालिद्वगुलिया इ वा हालिद्वमेए इ वा हरियाले-  
 इ वा हरियालगुलिया इ वा हरियालमेए इ वा चिउरे इ वा चिउररागे इ वा  
 सुवश्वसिप्पी इ वा वरकणगणिहसे इ वा वरपुरिसवसणे इ वा अलइकुसुमे इ वा  
 चपयकुसुमे इ वा कणिणयारकुसुमे इ वा कुहड्यकुसुमे इ वा सुवण्णजूहिया इ वा  
 शुहिरक्षियाकुसुमे इ वा कोरिटमलदामे इ वा पीयासोगे इ वा पीयकणवीरे इ वा  
 पीयवधुजीवए इ वा, भवेयारुवे ? गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । पम्हलेस्सा ण एतो  
 इष्टुतरिया जाव मणामतरिया चेव वक्षेण पञ्चता ॥ ५१२ ॥ सुक्लेस्सा ण भते !  
 केरिसिया वक्षेण पञ्चता ? गोयमा ! से जहानामए अंके इ वा सखे इ वा चदे-  
 इ वा कुदे इ वा दगे इ वा दगरए इ वा दही इ वा दहिघणे इ वा खीरे इ वा  
 खीरपूए इ वा सुक्लच्छवाडिया इ वा पेहुणमिजिया इ वा धतधोयरुप्पटे इ वा  
 सारयवलाहए इ वा कुमुयदले इ वा पोंडरीयदले इ वा सालिपिट्ठरासी इ वा  
 कुड्यपुष्परासी इ वा सिंदुवारमङ्गदामे इ वा सेयासोए इ वा सेयकणवीरे इ वा  
 सेयवधुजीवए इ वा, भवेयारुवे ? गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । सुक्लेस्सा ण एतो  
 इष्टुतरिया चेव जाव मणामतरिया चेव वक्षेण पञ्चता ॥ ५१३ ॥ एयाओ ण भते !  
 छेलेस्साओ कहसु वक्षेण साहिजति ? गोयमा ! पचसु वक्षेसु साहिजति, तजहा-  
 कम्हलेस्सा कालएण वक्षेण साहिजइ, नीलेस्सा नीलवक्षेण साहिजइ, काउलेस्सा  
 काल्लोहिएण वक्षेण साहिजइ, तेउलेस्सा लोहिएण वक्षेण साहिजइ, पम्हलेस्सा  
 हालिद्वएण वक्षेण साहिजइ, सुक्लेस्सा सुक्लिएण वक्षेण साहिजइ ॥ ५१४ ॥  
 कम्हलेस्सा ण भते ! केरिसिया आसाएण पञ्चता ? गोयमा ! से जहानामए निंबे इ  
 वा निंवसारे इ वा निंवछली इ वा निंवफाणिए इ वा कुड्यए इ वा कुडगफलए इ वा

कुषगाढ़ी इ वा कुषगाढ़ीर इ वा कुषगतुषिक्षे इ वा धारतउदी  
 इ वा धारतउदीक्षे इ वा देवदाढ़ी इ वा देवदाढ़ीक्षे इ वा मियवासुरी इ वा  
 मियवासुरीक्षे इ वा ओसाडप् इ वा ओसाडप्क्षे इ वा कम्हक्षेप् इ वा बजस्तप्  
 इ वा भैयास्त्वे इ गोममा । जो इन्हें समझे, कम्हस्त्वा वं एतो अविद्यारिया  
 चेत् वाव अमणामतरिया चेत् आसाएर्व पद्धता ॥ ५१८ ॥ नीम्हस्त्वाए पुण्डा ।  
 गोममा । से बहानामए भंगी इ वा भंगीरें इ वा पादा इ वा अविया इ वा विता-  
 नूपए इ वा पिष्ठी इ वा पिष्ठीक्षुप् इ वा पिष्ठीक्षुप्ले इ वा मिरिए इ वा  
 मिरियकुण्डा इ वा किंवरे इ वा किंवरेकुण्डे इ वा भैवाहवे इ गोममा । जो  
 इन्हें समझे, नीम्हस्त्वा वं एतो वाव अमणामतरिया चेत् आसाएर्व पद्धता ॥ ५१९ ॥  
 कम्हस्त्वाए पुण्डा । गोममा । से बहानामए अवाण वा अवाहगाव वा मत्कुर्ष्यान  
 वा विहान वा कम्हिद्वाज वा अवाण वा कुणसाज वा दाहिमाप वा अभ्योदयान  
 वा वाराण वा बोरान वा तिक्ष्याम वा अपशान अपरिक्षाणी व्येष्टी अनुवक्षावर्ण  
 गविर्ण अनुवक्षावर्ण वासेर्व अनुवक्षेवार्ण भैयाहवे ॥ गोममा । जो इन्हें समझे  
 वाव एतो अमणामतरिया चेत् अस्त्वाएर्व पद्धता ॥ ५२० ॥ तेउम्हस्त्वा वं भंगी  
 पुण्डा । गोममा । से बहानामए अवाण वा वाव पद्धार्व परिवाक्षावर्ण व्येष्टी  
 व्यवक्षेवार्ण फलत्येवं वाव फासेर्व वाव एतो अवामयरिया चेत् तंडम्हस्त्वा अला-  
 एर्व पद्धता ॥ ५२१ ॥ फम्हस्त्वाए पुण्डा । गोममा । से बहानामए चंदप्पमा  
 इ वा मध्यिम्म इ वा शीहु इ वा वाल्मी इ वा पात्तस्त्वे इ वा पुण्डाम्हे इ वा  
 फम्हस्त्वे इ वा चोयाम्हे इ वा आम्हे इ वा भृहु इ वा मेरए इ वा कावियाम्हे इ  
 वा यज्ञरसारए इ वा मुरियाखारए इ वा मुपह्योमोरसे इ वा कम्हपिद्विधिया इ वा  
 चंद्रुम्हस्त्वाक्षिया इ वा परवाह इ वा उक्तोसम्यपत्ता व्येष्टी उक्तवेया वाव वासेर्व उर्व-  
 देया दृप्पमिक्ता मध्यिम्म भैयाहवा ॥ गोममा । जो इन्हें समझे, कम्हस्त्वा वं एतो  
 "क्षुरिया भेद आव मणामतरिया चेत् आसाएर्व पद्धता ॥ ५२२ ॥ तुम्हस्त्वा वं  
 भंगी । क्षेरिया अस्त्वाएर्व पद्धता ॥ गोममा । से बहानामए शुके इ वा थड़े इ वा  
 सफरा वा मध्यिया इ वा पप्पामोयए इ वा मिसर्वश्वे इ वा पुण्डुरा इ वा पड़  
 मुचरा इ वा माद्यिया इ वा किंविद्या इ वा माणाराघ्यिभोमा इ वा डब्मा वं  
 वा अगोममा इ वा भैयाहवे ॥ गोममा । जो इन्हें समझे, तुम्हस्त्वा वं एतो इन्हें  
 दिया चेत् पिवतरिया चेत् अमणाएर्व पद्धता वा ३ ॥ कर वं  
 भंगी । ईमाम्हो तुम्हिम्मापाम्हो पक्षात्ताम्हो ॥ गोममा । तम्हो तैस्ताम्हो तुम्हिम्मापाम्हो  
 पक्षात्ताम्हो । तंज्ञह-तंडम्हस्त्वा भीम्हस्त्वा वाडम्हस्त्वा । कर वं भंगी । तैस्ताम्हो

સુદ્વિમગધાઓ પન્ત્તાઓ ? ગોયમા ! તથો લેસ્સાઓ સુદ્વિમગધાઓ પન્ત્તાઓ ! તજહા—  
 તેઉલેસ્સા, પમ્હલેસ્સા, સુક્લેસ્સા, એવં તથો અવિસુદ્ધાઓ, તથો વિસુદ્ધાઓ, તથો  
 અપ્પસત્યાઓ, તથો પસત્યાઓ, તથો સકિલિદ્વાઓ, તથો અસકિલિદ્વાઓ, તથો  
 સીયલુક્ખાઓ, તથો નિદ્રુણહાઓ, તથો દુરગઙગામિયાઓ, તથો સુગડગામિયાઓ  
 ॥ ૫૨૧ ॥ કણહલેસ્સા ણ ભંતે ! કડવિહ પરિણામ પરિણમડ ? ગોયમા ! તિવિહ વા  
 નવવિહ વા સત્તાવીસવિહ વા એષાસીદ્વિહ વા બેતેયાલીસતવિહ વા વહુય વા વહુવિહ  
 વા પરિણામ પરિણમડ, એવ જાવ સુક્લેસ્સા ॥ ૫૨૨ ॥ કણહલેસ્સા ણ ભતે ! કહ-  
 પએસિયા પન્ત્તા ? ગોયમા ! અણતપએસિયા પન્ત્તા, એવ જાવ સુક્લેસ્સા । કણહલેસ્સા  
 ણ ભતે ! કહપએસોગાડા પન્ત્તા ? ગોયમા ! અસહેજપએસોગાડા પન્ત્તા, એવ જાવ  
 સુક્લેસ્સા । કણહલેસ્સાએ ણ ભતે ! કેવિદ્યાઓ વરગણાઓ પન્ત્તાઓ ? ગોયમા ! અણ-  
 તાઓ વરગણાઓ ૦, એવ જાવ સુક્લેસ્સાએ ॥ ૫૨૩ ॥ કેવિદ્યા ણ ભતે ! કણહલેસ્સાઠાણા  
 પન્ત્તા ? ગોયમા ! અસહેજા કણહલેસ્સાઠાણા પન્ત્તા । એવ જાવ સુક્લેસ્સા ॥ ૫૨૪ ॥  
 એપસિ ણ ભતે ! કણહલેસ્સાઠાણાણ જાવ સુક્લેસ્સાઠાણાણ ય જહન્નગાણ દવ્વદૃયાએ  
 પએસદૃયાએ દવ્વદૃપએસદૃયાએ કયરે કયરેહિંતો અપ્પા વા ૪ ? ગોયમા ! સવ્વત્થોવા  
 જહન્નગા કાઉલેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ, જહન્નગા નીલ્લેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ અસહેજ-  
 શુણા, જહન્નગા કણહલેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ અસહેજગુણા, જહન્નગા તેઉલેસ્સાઠાણા  
 દવ્વદૃયાએ અસહેજગુણા, જહન્નગા પમ્હલેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ અસહેજગુણા, જહ-  
 ન્નગા સુક્લેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ અસહેજગુણા, પએસદૃયાએ-સવ્વત્થોવા જહન્નગા  
 કાઉલેસ્સાઠાણા પએસદૃયાએ, જહન્નગા નીલ્લેસ્સાઠાણા પએસદૃયાએ અસહેજગુણા,  
 જહન્નગા કણહલેસ્સાઠાણા પએસદૃયાએ અસહેજગુણા, જહન્નગા તેઉલેસ્સાએ ઠાણા  
 પએસદૃયાએ અસહેજગુણા, જહન્નગા પમ્હલેસ્સાઠાણા પએસદૃયાએ અસહેજગુણા, જહ-  
 ન્નગા સુક્લેસ્સાઠાણા પએસદૃયાએ અસહેજગુણા, દવ્વદૃપએસદૃયાએ-સવ્વત્થોવા જહ-  
 ન્નગા કાઉલેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ, જહન્નગા નીલ્લેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ અસહેજગુણા,  
 એવ કણહલેસ્સા, તેઉલેસ્સા, પમ્હલેસ્સા, જહન્નગા સુક્લેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ અસહેજ-  
 શુણા, જહન્નરહિંતો સુક્લેસ્સાઠાણેહિંતો દવ્વદૃયાએ જહન્નકાઉલેસ્સાઠાણા પએસદૃયાએ  
 અસહેજગુણા, જહન્નયા નીલ્લેસ્સાઠાણા પએસદૃયાએ અસહેજગુણા, એવ જાવ સુક્લે-  
 સ્સાઠાણા ॥ ૫૨૫ ॥ એપસિ ણ ભતે ! કણહલેસ્સાઠાણાણ જાવ સુક્લેસ્સાઠાણાણ ય  
 ચક્કોસગાણ દવ્વદૃયાએ પએસદૃયાએ દવ્વદૃપએસદૃયાએ કયરે કયરેહિંતો અપ્પા વા ૪ ?  
 ગોયમા ! સવ્વત્થોવા ઉક્કોસગા કાઉલેસ્સાઠાણા દવ્વદૃયાએ, ઉક્કોસગા નીલ્લેસ્સાઠાણા  
 દવ્વદૃયાએ અસહેજગુણા, એવ જહેવ જહન્નગા તહેવ ઉક્કોસગા વિ, નવર ઉક્કોસત્તિ  
 ૨૯ સુત્તા૦

अभिलाषो ॥ ५२६ ॥ एषमि चं भेत । कन्धस्पेत्ताणार्थं जाव गुहयेत्ताणाव व  
वर्षास्तद्वौराणार्थं दम्भुयाए पस्मद्याए दम्भुयाए दम्भुयाए च्यरेच्यरेहितो अना  
वा ४ । गोममा । कन्धस्पेत्ताणार्थं जावगा काउलेत्ताणाव दम्भुयाए, जावगा भीक्ष-  
ेत्ताणावा दम्भुयाए असेहेज्जगुणा एवं कन्धवडपम्भसेत्ताणाव जावगा मुद्देह-  
राणावा दम्भुयाए असेहेज्जगुणा जावगरेहितो हृष्टेत्ताणार्थेहितो दम्भुयाए उद्दोसा  
काउलेत्ताणावा दम्भुयाए असेहेज्जगुणा उद्दोसा भीक्षसेत्ताणाव दम्भुयाए असे-  
हेज्जगुणा एवं कन्धतंठपम्भसेत्ताणाव उद्दोगा सुदस्तम्भाणा दम्भुयाए असेहेज्ज-  
गुणा । पएम्भुयाए—नम्भत्तोरा जावगा काउलेत्ताणाव पएम्भुयाए, जावगा  
नीक्षसेत्ताणाव पएम्भुयाए असेहेज्जगुणा एवं जहेव दम्भुयाए तहेव पएम्भुयाए चि  
मालियव्वं नवरे पएम्भुयाएति नमिमालविसेयो । दम्भुयपएम्भुयाए—नम्भत्तोरा  
जावगा काउलेत्ताणाव दम्भुयाए, जावगा भीक्षसेत्ताणाव दम्भुयाए असेहेज्ज-  
गुणा एवं कन्धतंठपम्भसेत्ताणाव जावगा मुद्दस्तम्भाणा दम्भुयाए असेहेज्जगुणा  
जावगरेहितो मुक्षसेत्ताणार्थेहितो दम्भुयाए उद्दोसा काउलेत्ताणाव दम्भुयाए असेहेज्ज-  
गुणा उद्दोगा नीक्षसेत्ताणाव दम्भुयाए असेहेज्जगुणा एवं कन्धतंठपम्भसेत्ताणाव  
उद्दोसा सुदस्तम्भाणा दम्भुयाए असेहेज्जगुणा उद्दोसेहितो मुक्षसेत्ताणार्थेहितो  
दम्भुयाए जावगा काउलेत्ताणाव पएम्भुयाए अर्णत्तगुणा जावगा भीक्षसेत्ताणाव  
पएम्भुयाए असेहेज्जगुणा एवं कन्धतंठपम्भसेत्ताणाव जावगा मुक्षसेत्ताणाव पएम्भुयाए  
असेहेज्जगुणा जावगरेहितो मुक्षसेत्ताणार्थेहितो पएम्भुयाए उद्दोसा अर्णत्तेत्ताणाव १८-  
पद्मुयाए असेहेज्जगुणा उद्दोसा नीक्षसेत्ताणाव पएम्भुयाए असेहेज्जगुणा एवं कन्धतंठ  
पम्भसेयद्वयाणा उद्दोसा मुक्षसेत्ताणाव पएम्भुयाए असेहेज्जगुणा ॥ ५१७ ॥ पद्मदणापं  
भगवायहि प्रसारममस्स लेखनापयस्स चउत्तर्यो उद्देसयो समर्थो समर्थो ॥

क्ष चं भेत । उद्दोसाओ पक्षाण्डो । गोममा । उद्दोसाभ्यो पक्षाण्डो । तावहा—  
कन्धस्पेत्ता जाव उद्दोसा । दे नूर्ये भेत । कन्धस्पेत्ता भीक्षसेयं पप्प तावहाए  
तावहाए, तावहाए, तावहाए तावहाए मुझे मुझे परिक्षमर । इत्य असर्वं  
आहा चरत्तमो रेहेक्षमो तेहा मार्कियव्वं जाव नेत्रिक्षियव्विक्षुतोति ॥ ५१८ ॥ दे नूर्ये  
भेत । कन्धस्पेत्ता नीक्षसेयं पप्प यो तावहाए, यो तावहाए, यो  
तावहाए, यो तावहाए, यो तावहाए मुझे २ परिक्षमर । दे केळेहेन भेत ।  
एवं तुच्छ । गोममा । भागारभाक्षमावस्य वा दे सिवा पत्तिमात्रामात्रमात्राए वा  
दे सिवा । कन्धस्पेत्ता चं दा जो चहु भीक्षसा उत्त गया ओळक्कद उसुलम्ब

वा, से तेणद्वेष गोयमा ! एव वुच्छ—‘कण्हलेसा नीललेस पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुजो २ परिणमड’ । से नूण भते ! नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुजो २ परिणमइ ? हता गोयमा ! नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुजो २ परिमणइ । से केणद्वेण भते ! एव वुच्छ—‘नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुजो २ परिणमड’ ? गोयमा ! आगारभावमायाए वा सिया, पलिभागभावमायाए वा सिया । नीललेसा ण सा, णो खलु सा काउलेसा, तत्थगया ओसक्कइ उस्सक्कइ वा, से एएणद्वेष गोयमा ! एव वुच्छ—‘नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुजो २ परिणमड’ । एव काउलेसा तेउलेस पप्प, तेउलेसा पम्हलेस पप्प, पम्हलेसा सुक्कलेस पप्प । से नूण भते ! सुक्कलेसा पम्हलेस पप्प णो तारूवत्ताए जाव परिणमइ ? हता गोयमा ! सुक्कलेसा तं चेव । से केणद्वेण भते ! एव वुच्छ—‘सुक्कलेसा जाव णो परिणमड’ ? गोयमा ! आगारभावमायाए वा जाव सुक्कलेसा ण सा, णो खलु सा पम्हलेसा, तत्थ गया ओसक्कइ, से तेणद्वेण गोयमा ! एव वुच्छ—‘जाव णो परिणमइ’ ॥ ५२९ ॥ पञ्चवणाप भगवर्द्धए सत्तर-समे लेस्सापए पंचमो उद्देसयो समन्वो ॥

कह ण भते ! लेसा पञ्चत्ता ? गोयमा ! छ लेसा पञ्चत्ता । तजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा । मणुस्साण भते ! कह लेसाओ पञ्चत्ताओ ? गोयमा ! छ लेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा । मणुस्सीण भते ! पुच्छा । गोयमा ! छ्लेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्हा जाव सुक्का । कम्मभूमयमणुस्साण भते ! कह लेसाओ पञ्चत्ताओ ? गोयमा ! छ्लेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्हा जाव सुक्का । एव मणुस्सीण वि । पुञ्चविदेहे अवरविदेहे कम्मभूमयमणुस्साण कह लेसाओ ? गो० ! छ्लेसाओ० । तजहा—कण्हा जाव सुक्का । एव मणुस्सीण वि । अकम्मभूमयमणुस्साण पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि लेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्ह० जाव तेउलेसा, एव अकम्म-भूमगमणुस्सीण वि, एव अतरदीवगमणुस्साण, मणुस्सीण वि । एव हेमवयएरश्ववय-अकम्मभूमयमणुस्साण मणुस्सीण य कह लेसाओ पञ्चत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि, तजहा—कण्हलेसा जाव तेउलेसा । हरिवासरम्मयअकम्मभूमयमणुस्साण मणुस्सीण य पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि, तजहा—कण्ह० जाव तेउलेसा । देवकुरुत्तरकुरु-अकम्मभूमयमणुस्सा एव चेव, एसिं चेव मणुस्सीण एव चेव, धायइसडपुरिमद्दे वि एव चेव, पच्छिमद्दे वि, एव पुक्खरदीवे वि भाणियव ॥ ५३० ॥

अभिभावो ॥ २२६ ॥ एएसि जे भंते ! कन्धेसठाणा वाव द्युष्मेत्तरावाय व  
जहावरहोक्तार्थ दमदुयाए पएसदुयाए दमदुपस्मदुयाए अरे क्षरेहितो खणा  
वा ४ ३ गोम्मा । समत्वेता जहाणा कन्धेसठाणा दमदुयाए, जहाणा नील-  
सेसठाणा दमदुयाए असेज्जुणा एवं कन्धत्रैपमहेसठाणा जहाणा द्युष्मे-  
सठाणा दमदुयाए असेज्जुणा जहाणेहितो द्युष्मेसठाणेहितो दमदुयाए उक्तेता  
कन्धेसठाणा दमदुयाए असेज्जुणा उक्तेता नीलसेसठाणा दमदुयाए असेज-  
ज्जुणा एवं कन्धत्रैपमहेसठाणा उक्तेता द्युष्मेसठाणा दमदुयाए असेज-  
ज्जुणा । पएसदुयाए—समत्वेता जहाणा कन्धेसठाणा पएसदुयाए, जहाणा  
नीलसेसठाणा पएसदुयाए असेज्जुणा एवं योद दमदुयाए तहेव पएसदुयाए वि  
मायिकर्म नवर पएसदुयाएति अभिभावविसेदो । दमदुपस्मदुयाए—समत्वेता  
जहाणा कन्धेसठाणा दमदुयाए, जहाणा नीलसेसठाणा दमदुयाए असेज-  
ज्जुणा एवं कन्धत्रैपमहेसठाणा जहाणा द्युष्मेसठाणा दमदुयाए असेज्जुणा  
जहाणेहितो द्युष्मेसठाणेहितो दमदुयाए उक्तेता वारेसठाणा दमदुयाए असेज-  
ज्जुणा उक्तेता नीलसेसठाणा दमदुयाए असेज्जुणा एवं कन्धत्रैपमहेसठाणा  
उक्तेसठाणा द्युष्मेसठाणा दमदुयाए असेज्जुणा उक्तेसपहितो द्युष्मेसठाणेहितो  
दमदुयाए जहाणा कन्धेसठाणा फ्युष्मदुयाए अर्जत्तुणा जहाणा नीलसेसठाणा  
पएसदुयाए असेज्जुणा एवं कन्धत्रैपमहेसठाणा जहाणा मुक्तेसठाणा पएसदुयाए  
असेज्जुणा जहाणेहितो द्युष्मेसठाणेहितो पएसदुयाए उक्तेता कन्धेसठाणा पर्द-  
सदुयाए असेज्जुणा उक्तेता नीलसेसठाणा पएसदुयाए असेज्जुणा एवं कन्धत्रै-  
पमहेसठाणा उक्तेता द्युष्मेसठाणा पएसदुयाए असेज्जुणा ॥५२७॥ पञ्चवायाप-  
मगवर्हैय नवरसमस्त लेस्सापयस्स चठत्यो उहेसभो समचो ॥

कर जे भंते ! ऐसाको पत्तामो । गोम्मा । घोसस्मे पत्तामो । ठंबा—  
कन्धेता जाव द्युष्मेता । से नूर्ण भंते । कन्धेता नीलसेतु पर्य तास्ताताए  
तास्ताताए तास्ताताए तास्ताताए पुजो मुजो परिभ्माइ । इतो बहर्त  
जहा चठत्यो तोउच्ये तहा मायिकर्म जाव वैदिक्यमनिविष्टोति ॥५२८॥ से नूर्ण  
भंते । कन्धेता नीलसेतु पर्य जो तास्ताताए जाव जो तास्ताताए मुजो मुजो परि-  
भ्माइ । हत्ता गोम्मा । कन्धेता नीलसेतु पर्य जो तास्ताताए, जो तास्ताताए, जो  
तास्ताताए, जो तास्ताताए मुजो २ परिभ्माइ । से लेन्हुने भंते ।  
एवं तुवर् । गोम्मा । आयारमात्मावाए वा से सिमा परिभ्मारमात्मावाए वा  
से सिमा । कन्धेता जे दा जो वाहु नीलसेता तर्ह यता जोसम्बद्ध उसकाह

वा, से तेणट्रेण गोयमा ! एव वुच्छ—‘कण्ठलेसा नीललेस पप्प णो तारुवत्ताए जाव भुजो २ परिणमड’ । से नूण भंते ! नीललेसा काउलेस पप्प णो तारुवत्ताए जाव भुजो २ परिणमड ? हता गोयमा ! नीललेसा काउलेस पप्प णो तारुवत्ताए जाव भुजो २ परिमणइ । से केणट्रेण भते ! एव वुच्छ—‘नीललेसा काउलेस पप्प णो तारुवत्ताए जाव भुजो २ परिणमड’ ? गोयमा ! आगारभावमायाए वा सिया, पलिभागभावमायाए वा सिया । नीललेसा ण सा, णो खलु सा काउलेसा, तत्थगया ओसकइ उस्सकइ वा, से एणट्रेण गोयमा ! एव वुच्छ—‘नीललेसा काउलेस पप्प णो तारुवत्ताए जाव भुजो २ परिणमड’ । एव काउलेसा तेउलेस पप्प, तेउलेसा पम्हलेस पप्प, पम्हलेसा सुक्लेस पप्प । से नूण भते ! सुक्लेसा पम्हलेस पप्प णो तारुवत्ताए जाव परिणमइ ? हता गोयमा ! सुक्लेसा तं चेव । से केणट्रेण भते ! एव वुच्छ—‘सुक्लेसा जाव णो परिणमइ’ ? गोयमा ! आगारभावमायाए वा जाव सुक्लेसा ण सा, णो खलु सा पम्हलेसा, तत्थ गया ओमकइ, से तेणट्रेण गोयमा ! एव वुच्छ—‘जाव णो परिणमइ’ ॥ ५२९ ॥ पञ्चवणाए भगवर्द्धिष्ठ सत्तर-समे लेस्सापए पंचमो उद्देसयो समत्तो ॥

कठण भते ! लेसा पञ्चत्ता ? गोयमा ! छ लेसा पञ्चत्ता । तजहा—कण्ठलेसा जाव सुक्लेसा । मणुस्साण भते ! कह लेसाओ पञ्चत्ताओ ? गोयमा ! छ लेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्ठलेसा जाव सुक्लेसा । मणुस्सीण भते ! पुच्छा । गोयमा ! छलेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्ठा जाव सुक्का । कम्मभूमयमणुस्साण भते ! कह लेसाओ पञ्चत्ताओ ? गोयमा ! छ लेसाओ पञ्चत्ताओ । तंजहा—कण्ठा जाव सुक्का । एव कम्मभूमयमणुस्सीण वि । भरहेरवयमणुस्साण भते ! कह लेसाओ पञ्चत्ताओ ? गोयमा ! छलेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्ठा जाव सुक्का । एव मणुस्सीण वि । पुच्छविदेहे अवरविदेहे कम्मभूमयमणुस्साण कह लेसाओ ० ? गो० ! छलेसाओ० । तजहा—कण्ठा जाव सुक्का । एवं मणुस्सीण वि । अकम्मभूमयमणुस्साण पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि लेसाओ पञ्चत्ताओ । तजहा—कण्ठ० जाव तेउलेसा, एव अकम्म-भूमयमणुस्सीण वि, एव अतरदीवगमणुस्साण, मणुस्सीण वि । एव हेमवयएरञ्चवय-अकम्मभूमयमणुस्साण मणुस्सीण य कह लेसाओ पञ्चत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि, तजहा—कण्ठलेसा जाव तेउलेसा । हरिवासरम्मयअकम्मभूमयमणुस्साण मणुस्सीण य पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि, तजहा—कण्ठ० जाव तेउलेसा । देवकुरुउत्तरकुरु-अकम्मभूमयमणुस्सा एव चेव, एएसि चेव मणुस्सीण एव चेव, धायहसद्धपुरिमद्दे वि एवं चेव, पञ्च्छमद्दे वि, एव पुक्खरवीवे वि भाणियव्व ॥ ५३० ॥

कल्पसे न भंते । मनुसे कल्पसे पर्वत जगेता ॥ हृता गोममा । जगेता ।  
कल्पसे मनुसे भीक्षेते गर्वम जगेता ॥ हृता गोममा । जगेता जात कल्पसे  
गर्वम जगेता । नीक्षेते मनुसे कल्पसे गर्वम जगेता ॥ हृता गोममा । जगेता  
एवं भीक्षेते मनुसे जात कल्पसे गर्वम जगेता एवं कारुक्षेते इष्टिप्राप्तकर्ता  
भावितव्या । तेऽपेक्षाण वि पम्हलेसाप वि कुरुक्षेता वि एवं छातीसं बाकाम्पा  
भावितव्या । कल्पसेता इतिया कल्पसे पर्वत जगेता ॥ हृता गोममा । जगेता ।  
एवं पूर्व वि छातीसं बाकाम्पा भावितव्या । कल्पसे न भंते । मनुसे कल्पसेता ए  
इतिवाए कल्पसे पर्वत जगेता ॥ हृता गोममा । जगेता एवं एवं छातीसं बाकाम्पा  
दगा । कल्पमूमणकल्पसे न भंते । मनुसे कल्पसेता ए इतिवाए कल्पसे पर्वत  
जगेता ॥ हृता गोममा । जगेता एवं पूर्व छातीसं बाकाम्पा । अकल्पमूमणकल्पसे  
मनुसे अकल्पमूमणकल्पसेता ए इतिवाए अकल्पमूमणकल्पसे पर्वत जगेता ॥  
हृता गोममा । जगेता नवरं चतुर्ष देवस्तु दोक्षु बाकाम्पा । एवं भैतरर्तीवाप वि  
॥ ५१३ ॥ उद्धो उद्देश्यो समर्थो ॥ पञ्चवण्णाप मगधार्थं उच्चरसमै  
लेस्सापर्यं समर्थं ॥

अत्र गैरिक एवं ओर ऐए कल्पावेता य । सम्मतापापर्दसुण संजय उक्तवेष्य  
आहारे ॥ १ ॥ भास्त्रगपरित पञ्चत घृतम उच्ची भवतित्वं वरिमे य । एवंपि द्व  
पञ्चार्थं कायठिर् होइ गोममा ॥ २ ॥ अत्रै न भंते । अविति कल्पमो केविरि  
होइ ॥ गोममा । सम्पदं ॥ चार ॥ ॥ ५१२ ॥ मेराहए न भंते । नेराहएति काल्पमी  
केविरि होइ ॥ गोममा । अहोर्वयं दृश बासदाहस्त्रं, उक्तोसेवं सुतीसी सागरी-  
मार्ह । तिरिक्तागोविष्टिति कल्पमो केविरि होइ ॥ गोममा ।  
बहौर्वयं अठोमुकुर्तं उक्तोसेवं अर्वते कल्पमो उस्सपितिक्षेत्रपितीव्ये  
कल्पमो केविरि अर्वता स्मेया अस्मेया वोग्गस्सरियका दे न तु पुम्परिवर्द्धं  
जाक्षियाए अस्मेक्ष्यमानो । तिरिक्तागोविष्टिति कल्पमो  
केविरि होइ ॥ गोममा । अहोर्वयं अठोमुकुर्तं उक्तोसेवं तिरिक्तागोविष्टिति  
दिपुम्परिवर्द्धं । एवं मनुसे वि मनुसी वि एवं चेत । चेते न भंते । अविति  
कल्पमो केविरि होइ ॥ गोममा । अहोर्वयं मेराहए । तेती न भंते । अविति कल्पमो  
केविरि होइ ॥ गोममा । अहोर्वयं दृश बासदाहस्त्रं, उक्तोसेवं पञ्चार्थं पतिष्ठो-  
वमर्थं । तिरिक्ते न भंते । तिरिक्ति कल्पमो केविरि होइ ॥ गोममा । चारए अप्तव  
विष्टि । नेराहएति कल्पमो केविरि होइ ॥ गोममा । चारए अप्तव  
विष्टि । तिरिक्तागोविष्टिति कल्पमो केविरि होइ ॥ गोममा । तिरिक्तागोविष्टिति

भंते ! नेरडयपञ्जताएति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राड अतोमुहुत्तूणाइ, उकोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । तिरिक्खजोणियपञ्जताए॒ ण भंते ! तिरिक्खजोणियपञ्जताए॒ ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण तिन्नि पलिओवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ । एव तिरिक्खजोणियपञ्जतिया वि, एव मणुस्से वि, मणुस्ती वि एवं चेव । देवपञ्जताए॒ जहा नेरडयपञ्जताए॒ । देवी-पञ्जतिया ण भंते ! देवीपञ्जतियति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण दस वाससहस्राइ अतोमुहुत्तूणाइ, उकोसेण पणपञ्च पलिओवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ ॥ दार २ ॥ ५३३ ॥ सङ्दिए॒ ण भंते ! सङ्दिए॒ ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! सङ्दिए॒ दुविहे पन्नते । तजहा—अणाइए वा अपञ्जवसिए, अणाइए वा सपञ्जवसिए । एर्गिंदिए॒ ण भंते ! एर्गिंदिए॒ ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण अणंत कालं वणस्सइकालो । वेइदिए॒ ण भंते ! वेइदिए॒ ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सखेज कालं । एव तेइंदियचउरिंदिए॒ वि । पचिंदिए॒ ण भंते ! पचिंदिए॒ ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतो-मुहुत्त, उकोसेण सागरोवमसहस्र साइरेग । अर्गिंदिए॒ ण पुच्छा । गोयमा ! साइए॒ अपञ्जवसिए । मङ्दिदियवपञ्जताए॒ ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण वि उकोसेण वि अतो-मुहुत्त । एव जाव पचिंदियथपञ्जताए॒ । सङ्दिए॒ यपञ्जताए॒ ण भंते ! सङ्दिए॒ यपञ्जताए॒ कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सागरोवमसय-पुहुत्त माडरेग । एर्गिंदियपञ्जताए॒ ण भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सखेजाइ॒ वाससहस्राइ । वेइदियपञ्जताए॒ ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सखेजवासाड । तेइदियपञ्जताए॒ ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सखेजाइ॒ राडियाइ॒ । चउरिंदियपञ्जताए॒ ण भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सखेजामा॒ । पचिंदियपञ्जताए॒ ण भंते ! पचिंदियपञ्जताए॒ ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सागरोवमसयपुहुत्त ॥ दार ३ ॥ ५३४ ॥ सकाइए॒ ण भंते ! सकाइए॒ ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! नकाइए॒ दुविहे पन्नते । तंजहा—अणाइए॒ वा अपञ्जव-सिए॒, अणाइए॒ वा सपञ्जवसिए॒, तथ्य ण जे से अ० स० से जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण दो॒ सागरोवमसहस्राड संखेजवामभहियाइ॒ । अकाइए॒ ण भंते ! पुच्छा । गोयमा ! अकाइए॒ साइए॒ अपञ्जवसिए॒ । सकाइयथपञ्जताए॒ ण पुच्छा । गोयमा ! जह-न्नेण वि उकोसेण वि अतोमुहुत्त, एव जाव तसकाइयथपञ्जताए॒ पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उकोसेण सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग । पुढिविकाइए॒ ण पुच्छा ।

गोकमा ! वहसेज अंतोमुकुर्त उद्दोसेय असेकेझ घर्ल असेजेजामा उस्सपिकिओ-  
सपिणीमो काल्पनो बेगभो असेजेजा ल्लेगा । एवं जान्तुठेठवारकाइमा लि । वह-  
स्सहमाइवार्च पुच्छ । गोममा ! वहसेज अंतोमुकुर्त उद्दोसेज अवत घर्ल अस-  
जामो उस्सपिकिओसपिणीमो काल्पनो लेत्तमो अर्पणा ल्लेगा असेजेजा पुम्हल-  
परिकाई तं न पुम्हलपरिया भास्तिमाए असेजेजमागो । पुहिकाईए पजाए  
पुच्छ । गोममा ! वहसेज अंतोमुकुर्त उद्दोसेय सेकेजाई बाससाहसरां, एवं बाल  
लि । तेउक्काईए काल्पत पुच्छ । गोममा ! वहसेज अंतोमुकुर्त उद्दोसेय सेकेजाई  
राईयिमाई । बास्तकाइवपजाए वे पुच्छ । गोममा ! वहसेज अंतोमुकुर्त उद्दोसेय  
सेकेजाई बाससाहसरां । बास्तवाइवपजाए पुच्छ । गोममा ! वहसेय अंतोमु-  
कुर्त उद्दोसेय सेकेजाई बाससाहसरां । बास्तवाइवपजाए पुच्छ । गोममा ! वहसेय  
अंतोमुकुर्त उद्दोसेय सापरोक्मसम्पुकुर्त साहरेंग ॥५३॥११४ सुमे वं मंते । द्युमेति  
असम्मो केविर होइ । गोममा ! वहसेय जातोमुकुर्त उद्दोसेय असेकेझ वह  
असेजेजामो उस्सपिकिओसपिणीमो काल्पनो बेगभो असेजेजा ल्लेगा । द्युम  
पुहिकाईए, द्युममात्रकाईए, द्युमयेवकाईए, द्युमवात्रकाईए, द्युमवप्पकाईए  
द्युमनिगोदे लि वहसेय अंतोमुकुर्त उद्दोसेय असेजेझ वह असेजेजामो उस्स-  
पिकिओसपिणीमो काल्पनो लेत्तमो असेजेजा ल्लेगा । सुमे वं मंते । अपमान-  
पति पुच्छ । गोममा ! वहसेय अंतोमुकुर्त उद्दोसेय लि अंतोमुकुर्त । पुहिक्काई  
बाउक्कावयेठक्काइमारभाइवनप्पकाईमाण य एवं वं वं पजामाल लि एवं लेव ।  
बादरे वं मंते । बायरेति काल्पनो केविर होइ । गोममा ! वहसेय अंतोमुकुर्त  
उद्दोसेय असेजेजे काल असेजेजामो उस्सपिकिओसपिणीमो काल्पनो बेगभो  
अस्पुक्मसु असेजेजामास्य । बायरपुहिकाईए वं मंते । पुच्छ । गोममा ! वहसेय  
अंतोमुकुर्त उद्दोसेय उत्तरि सापरोक्मस्येदाकोडीलो । एवं बायरवात्रकाईए लि  
बायरतेउकाईए लि बायरवात्रकाईए लि । बायरवप्पकाईए वं बायर पुच्छ ।  
गोममा ! वहसेय कलोमुकुर्त उद्दोसेय असेजेझ वह बेत्तमो अंतुक्सु  
असेजेजामागो । फेवस्तिरिक्कावरवणप्पकाईए वं मंते । पुच्छ । गोममा ! वह-  
सेय अंतोमुकुर्त उद्दोसेय उत्तरि सागरोक्मकोडाकोडीलो । निगोए वं मंते ।  
निगोपति काल्पनो केविर होइ । गोममा ! वहसेय अंतोमुकुर्त उद्दोसेय अर्पति  
काल अगतामो उस्सपिकिओसपिणीमो काल्पनो बेगभो जात्कामा पोम्हक-  
परिकाई । बावरनिगोदे वं मंते । बावरनिगोदे लि पुच्छ । गोममा ! वहसेय  
अंतोमुकुर्त उद्दोसेय उत्तरि सापरोक्मकोडाकोडीलो । बावरतवाइए वं मंते ।

वायरतसकाइएति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण  
दो सागरोवमसहस्राइ सखेजवासमब्भहियाइ । एएसिं चेव अपज्जतगा सब्बे वि  
जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अतोमुहुत्त । वायरपज्जतए ण भते ! वायरपज्जतएति  
मुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेग ।  
चायरपुढविकाइयपज्जतए णं भते ! वायर० पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त,  
उक्षोसेण सखेजाइं वाससहस्राइ । एव आउकाइए वि । तेउकाइयपज्जतए णं  
भते । तेउकाइयपज्जतएति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण सखे-  
जाइ राइदियाइ । वाउकाइयवणस्सइकाइयपत्तेयसरीरवायरवणप्फइकाइए मुच्छा ।  
गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण सखेजाइ वाससहस्राइ । निओयपज्जतए  
चायरनिओयपज्जतए मुच्छा । गोयमा ! दोण्ह वि जहन्नेण अन्तोमुहुत्त, उक्षोसेण  
अतोमुहुत्त । वायरतसकाइयपज्जतए ण भते ! वायरतसकाइयपज्जतएति कालओ  
केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण सागरोवमसयपुहुत्त माइ-  
रेग ॥ दार ४ ॥ ५३६ ॥ सजोगी ण भते ! सजोगिति कालओ केवच्चिर होइ ?  
गोयमा ! सजोगी दुविहे पञ्चते । तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा  
सपज्जवसिए । मणजोगी ण भंते ! मणजोगिति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा !  
जहन्नेण एक समय, उक्षोसेण अतोमुहुत्त । एव वइजोगी वि । कायजोगी ण भते !  
कायजोगि० ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण वणप्फइकालो । अजोगी ण  
भते ! अजोगिति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! साइए अपज्जवसिए ॥ दारं ५ ॥  
॥ ५३७ ॥ सवेदए ण भते ! सवेदएति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! सवेदए  
तिविहे पञ्चते । तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साइए  
चा सपज्जवसिए । तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण  
अणत काल, अणताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवश्य पोगल-  
परियट देसून । इथिवेदए ण भते । इथिवेदएति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा !  
एगेण आएसेण जहन्नेण एक समय, उक्षोसेण दसुत्तर पलिओवममयं पुञ्चकोडिपुहु-  
त्तमब्भहिय १, एगेण आएसेण जहन्नेण एग समय, उक्षोसेण अट्टारसपलिओवमाइं  
पुञ्चकोडिपुहुत्तमब्भहियाड २, एगेण आएसेण जहन्नेण एग समयं, उक्षोसेण चउ-  
दस पलिओवमाड पुञ्चकोडिपुहुत्तमब्भहियाड ३, एगेण आएसेणं जहन्नेण एग समय,  
उक्षोसेण पलिओवममय पुञ्चकोडिपुहुत्तमब्भहिय ४, एगेण आएसेण जहन्नेण एग  
समय, उक्षोसेण पलिओवमपुहुत्त पुञ्चकोडिपुहुत्तमब्भहिय ५ । पुरिसवेदए ण भते !  
पुरिसवेदएति० ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण सागरोवमसयपुहुत्त साइ-

रें ! न्युसायदेवए वं भंत ! न्युसायकेशएति पुष्ट्यम् । गोवमा ! जहलेज यां समर्द्द  
उडोसेर्ग वजस्त्रहस्ये । जबेयए वं भंत ! जबेयएति पुष्ट्यम् । गोवमा ! जबेयए  
दुष्टिए पक्षते । ठंजहा—साइए वा अपञ्चविष्टि, साइए वा समञ्चविष्टि । तत्प वं वं से  
साइए सपञ्चविष्टि से जहण्णोर्व एर्ग समर्द्द उडोसेर्ग अंतोसुहुत्ते ॥ वारे ६ ॥ ५२६ ॥  
सक्षाई वं भंते ! सम्याहति काळमो केवचिर दोह ! गोवमा ! सक्षाई तिष्ठिए  
पश्चते । ठंजहा—अगादए वा अपञ्चविष्टि, अगादए वा सपञ्चविष्टि, साइए वा  
सपञ्चविष्टि जाव लक्ष्मृ पोमास्त्ररियह लेस्ये । कोइक्काई वं भंते । पुष्ट्यम् ।  
गोवमा ! जहलेज वि उडोसेर्ग वि अंतोसुहुत्ते एर्व जाव माप्तमायाक्षाई । ओमर्द्द-  
साई वं भंते ! ओमर्द्दसाईति पुष्ट्यम् । गोवमा ! जहलेज एर्व समर्द्द उडोसेर्ग  
अंतोसुहुत्ते । अग्नसाई वं भंते ! अग्नयाहति अग्नस्ये केवचिर दोह ! याम्यमा ।  
अग्नसाई दुष्टिए पक्षते । ठंजहा—साइए वा अपञ्चविष्टि साइए वा सपञ्चविष्टि ।  
तत्प वं वं से साइए सपञ्चविष्टि से जहलेज एर्ग समर्द्द उडोसेर्ग अंतोसुहुत्ते ॥  
वारे ७ ॥ ५२७ ॥ सक्षेते वं भंते ! सक्षेते पुष्ट्यम् । गोवमा ! सक्षेते दुष्टिए  
पक्षते । ठंजहा—अगादए वा अपञ्चविष्टि, अगादए वा सपञ्चविष्टि । क्षद्गंधे वं  
भंते ! क्षद्गंधेति अग्नस्ये केवचिर दोह ! गोवमा ! जहलेज अंतोसुहुत्ते उडोसेर्ग  
उत्तीर्त्त सागरोक्षमाई अंतोसुहुत्तममहियाई । मीलसेते वं भंते ! मीलसेते पुष्ट्यम् ।  
गोवमा ! जहलेज अंतोसुहुत्त उडोसेर्ग लेच सागरोक्षमाई पक्षिक्षमाईपिक्ष  
भासाममहियाई । क्षद्गंधेते वं पुष्ट्यम् । गोवमा ! जहलेज अंतोसुहुत्त उडोसेर्ग  
तिष्ठिय सागरोक्षमाई पक्षिक्षमाईपिक्षममहियाई । तत्पक्षेते वं पुष्ट्यम् ।  
गोवमा ! जहलेज अंतोसुहुत्त उडोसेर्ग दो सागरोक्षमाई पक्षिक्षमाईपिक्षमम-  
ममहियाई । पक्षमेते वं पुष्ट्यम् । गोवमा ! जहलेज अंतोसुहुत्त उडोसेर्ग इस  
सागरोक्षमाई अंतोसुहुत्तममहियाई । क्षद्गंधेते वं पुष्ट्यम् । गोवमा ! जहलेज अंतो-  
सुहुत्त उडोसेन उत्तीर्त्त सागरोक्षमाई अंतोसुहुत्तममहियाई । अंतोसे वं पुष्ट्यम् ।  
गोवमा ! साइए अपञ्चविष्टि प्र वारे ८ ॥ ५२८ ॥ सम्मदिद्वि वं भंते ! सम्मदि-  
द्विति काम्ये केवचिर दोह ! गोवमा ! सम्मदिद्वि दुष्टिए पक्षते । ठंजहा—साइए वा  
अपञ्चविष्टि, साइए वा सपञ्चविष्टि । तत्प वं वं से साइए सपञ्चविष्टि से जहलेज  
अंतोसुहुत्ते उडोसेन आवद्वि सागरोक्षमाई साइएगाई । मिळाईद्वि वं भंते ।  
पुष्ट्यम् । गोवमा ! मिळाईद्वि दुष्टिए पक्षते । ठंजहा—अगादए वा अपञ्चविष्टि,  
अगादए वा सपञ्चविष्टि, साइए वा सपञ्चविष्टि । तत्प वं वं से साइए सपञ्च-  
विष्टि से जहलेज अंतोसुहुत्ते उडोसेन अर्वते जाव अर्वते उस्त्रायितिवेशायि-

णीओ कालओ, खेत्तओ अवङ्हु पोगलपरियट देसूॣ। सम्मामिच्छादिष्टी ण पुच्छा। गोयमा। जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥ दार ९ ॥ ५४१ ॥ णाणी ण भंते। णाणिति कालओ केवच्चिर होइ? गोयमा। णाणी दुविहे पञ्चते। तजहा— साडए वा अपज्जवसिए, साडए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जहणेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण छावड्हि सागरोवमाइ साडरेगाइ। आभिणि- ओहियणाणी ण पुच्छा। गोयमा। एव चेव, एव सुयणाणी वि, ओहिणाणी वि एव चेव, णवर जहणेण एग समय। मणपज्जवणाणी ण भते। मणपज्जवणाणिति कालओ केवच्चिर होइ? गोयमा। जहन्नेण एग समय, उक्कोसेण देसूॣ पुब्बकोढी। केवलणाणी णं पुच्छा। गोयमा। साडए अपज्जवसिए। अणाणी मद्भयणाणी सुयभणाणी पुच्छा। गोयमा। अणाणी, मद्भयणाणी, सुयभणाणी तिविहे पञ्चते। तजहा—अणाडए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साडए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल, अणताओ उस्सपिणिओसपिणीओ कालओ, खेत्तओ अवङ्हुपोगलपरियट देसूॣ। विभंगणाणी णं भते! पुच्छा। गोयमा। जहणेण एग समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ देसूॣए पुब्बकोढीए अब्भहियाइ ॥ दार १० ॥ ५४२ ॥ अचक्षुदसणी ण भते! पुच्छा। गोयमा। जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सागरोवम- सहस्र साइरेग। अचक्षुदसणी ण भते! अचक्षुदसणिति कालओ? गोयमा! अचक्षुदसणी दुविहे पञ्चते। तजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए। ओहिदसणी ण पुच्छा। गोयमा। जहन्नेण एग समय, उक्कोसेण दो छाव- ड्हीओ सागरोवमाण साइरेगाओ। केवलदसणी ण पुच्छा। गोयमा। साडए अपज्जवसिए ॥ दार ११ ॥ ५४३ ॥ सजए ण भते। सजएति पुच्छा। गोयमा। जहन्नेण एग समय, उक्कोसेण देसूॣ पुब्बकोडिं। असजए ण भंते। असजएति पुच्छा। गोयमा! असजए तिविहे पञ्चते। तजहा—अणाडए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साडए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल, अणताओ उस्सपिणिओसपिणीओ कालओ, खेत्तओ अवङ्हु पोगलपरियट देसूॣ। सजयासजए ण पुच्छा। गोयमा। जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूॣ पुब्बकोडिं। नोसजए-नोअसजए-नोसजयासजए ण पुच्छा। गोयमा। साडए अपज्जवसिए ॥ दार १२ ॥ ५४४ ॥ सागरोवओगोवउत्ते ण भते! पुच्छा। गोयमा। जहन्नेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त। अणागारोवउत्ते वि एव चेव ॥ दार १३ ॥ ५४५ ॥ आहारए ण भते! पुच्छा। गोयमा। आहारए

दुर्विहे पत्तो । तज्ज्ञा-उत्तमत्यभावाहारए य केवलिभावाहारए य । उत्तमत्यभावाहारए चं भंते । उत्तमत्यभावाहारए काल्पनो केवलिर होइ । गोममा । जहलेखं सुखाममकम्भाहर्व दुसमयज्ञं उडोसेखं असंक्षेपं अर्थं जहलेखेज्ञमो ससुप्तिपिण्डिओसुप्तिपिण्डिओ इस्त्रो जेत्तमो अंगुष्ठस्त असंक्षेप्तमाण । केवलिभावाहारए चं भंते । केवलिभावाहारए क्षम्भो केवलिर हाइ । गोममा । जहलेखं अठोमुकुर्तं उडोसेखं देशर्जं पुष्टिरोडि । अगाहारए चं भंते । अगाहारए क्षम्भो केवलिर होइ । गोममा । अगाहारए दुर्विहे पत्तो । तज्ज्ञा-उत्तमत्यभावाहारए य केवलिभावाहारए य । उत्तमत्यभावाहारए चं भंते । उत्तमत्यभावाहारए चं भंते । केवलिभावाहारए चं भंते । उत्तमत्यभावाहारए चं भंते । केवलिभावाहारए चं भंते । तज्ज्ञा-सिद्धकेवलिभावाहारए य मवत्यकेवलिभावाहारए य । सिद्धकेवलिभावाहारए चं पुच्छा । गोममा । साईए अपञ्जनहिए । भवत्यकेवलिभावाहारए चं भंते । पुर्णम । गोममा । मवत्यकेवलिभावाहारए दुर्विहे पत्तो । तज्ज्ञा-सबोगिमवत्यकेवलिभावाहारए चं अबोगिमवत्यकेवलिभावाहारए चं । सबोगिमवत्यकेवलिभावाहारए चं भंते । पुर्णम । गोममा । अमहान्ममुकुर्तं रुद्धिं दिविष्यं समया । अबोगिमवत्यकेवलिभावाहारए चं पुच्छा । गोममा । जहलेखं चि उडोसेषं चि अठोमुकुर्तं ॥ दार १४ ॥ १५४६ ॥ प्र मासए चं पुच्छा । गोममा । अहलेखं एर्यं समर्यं उडोसेखं अठोमुकुर्तं । अमासए चं पुर्णम । गोममा । अमासए दिविहे पत्तो । तज्ज्ञा-अगाहारए चा अपञ्जनहिए, अगाहारए ना सपञ्जनहिए, साईए चा सपञ्जनहिए । तत्त्वं यं चे से साईए चा रापञ्जनहिए से उद्धलेखं अठोमुकुर्तं उडोसेखं वरपञ्जनम्भे ॥ दार १५ ॥ १५४७ ॥ परिते चं पुच्छा । गोममा । परिते दुर्विहे पत्तो । तज्ज्ञा—जावपरिते च संकार परिते य । कामपरिते चं पुच्छा । गोममा । जहलेखं अठोमुकुर्तं उडोसेखं पुढिं काल्पे असंक्षेप्तमो उसुप्तिपिण्डिओसुप्तिपिण्डिओ । स्वारपरिते चं पुच्छा । गोममा । जहलेखं अठोमुकुर्तं उडोसेखं अर्थत काल अवश्य प्रेमाल्लरिहाई देशर्जं । अपरिते चं पुच्छा । गोममा । अपरिते दुर्विहे पत्तो । तज्ज्ञा-जावपरिते च संकार ज्वपरिते च । कामपरिते चं पुच्छा । गोममा । जहलेखं अठोमुकुर्तं उडोसेखं वज्रसुदृकम्भे । स्वारपरिते चं पुच्छा । गोममा । संकारमपरिते दुर्विहे पत्तो । तज्ज्ञा—अगाहारए चा अपञ्जनहिए, अगाहारए चा सपञ्जनहिए । गोपरिते-मोगपरिते चं पुच्छा । गोममा । साईए अपञ्जनहिए ॥ दार १६ ॥ १५४८ ॥ परमाणुए चं पुर्णम । गोममा । अहलेखं अठोमुकुर्तं उडोसेखं सामरोदमसुकुर्तं उद्दिरेण । जरमाणाए चं पुच्छा । गोममा । जहलेखं चि उडोसेषं चि अठोमुकुर्तं । नोपञ्जनाए-नोमपञ्जनाए चं

पुच्छा । गोयमा । साइए अपज्जवसिए ॥ दार १७ ॥ ५४९ ॥ सुहुमेण भते । सुहुमेति  
पुच्छा । गोयमा । जहञ्जेण अतोसुहुत्त, उक्षेसेण पुढविकालो । वायरे ण पुच्छा ।  
गोयमा । जहञ्जेण अतोसुहुत्त, उक्षेसेण असखेज काल जाव खेत्तओ अगुलस्त्स  
असखेजइभागं । नोसुहुमनोवायरे ण पुच्छा । गोयमा । साइए अपज्जवसिए ॥  
दार १८ ॥ ५५० ॥ सण्णी ण भते । पुच्छा । गोयमा । जहञ्जेण अतोसुहुत्त,  
उक्षेसेण सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग । असण्णी ण पुच्छा । गोयमा । जहञ्जेण  
अतोसुहुत्त, उक्षेसेण वणस्पडकालो । नोसण्णीनोअसण्णी ण पुच्छा । गोयमा ।  
साइए अपज्जवसिए ॥ दार १९ ॥ ५५१ ॥ भवसिद्धिए ण पुच्छा । गोयमा ।  
अणाइए सपज्जवसिए । अभवसिद्धिए ण पुच्छा । गोयमा । अणाइए अपज्जवसिए ।  
नोभवसिद्धिए-नोअभवसिद्धिए ण पुच्छा । गोयमा । साइए अपज्जवसिए ॥ दार २० ॥  
॥ ५५२ ॥ वम्मत्यिकाए ण पुच्छा । गोयमा । सब्बद्व, एव जाव अद्वासमए ॥  
दार २१ ॥ ५५३ ॥ चरिमे ण पुच्छा । गोयमा । अणाइए सपज्जवसिए । अचरिमे  
ण पुच्छा । गोयमा । अचरिमे दुविहे पन्त्ते, तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए,  
साइए वा अपज्जवसिए ॥ दार २२ ॥ ५५४ ॥ पन्नवणाए भगवईए अद्वार-  
समं कायट्टिनामपयं समत्त ॥

जीवा ण भते । किं सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी ? गोयमा । जीवा  
सम्मदिद्वी वि, मिच्छादिद्वी वि, सम्मामिच्छादिद्वी वि । एव नेरइया वि । असुरकु-  
मारा वि एव चेव जाव थणियकुमारा । पुढवीकाङ्गा ण पुच्छा । गोयमा ! पुढवीका-  
इया णो सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, णो सम्मामिच्छादिद्वी, एव जाव वणस्पडकाङ्गा ।  
वेइंदिया ण पुच्छा । गोयमा ! वेइंदिया सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, णो सम्मामिच्छा-  
दिद्वी । एव जाव चउरिंदिया । पंचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा वाणमतरजोडसि-  
यवेमाणिया य सम्मदिद्वी वि मिच्छादिद्वी वि सम्मामिच्छादिद्वी वि । सिद्धा ण  
पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा सम्मदिद्वी, णो मिच्छादिद्वी, णो सम्मामिच्छादिद्वी ॥ ५५५ ॥  
पन्नवणाए भगवईए एगूणवीसइमं सम्मत्तपयं समत्त ॥

नेरइय अतकिरिया अणन्तरं एगसमय उव्वटा । तित्थगरचक्रिवलवासुदेव-  
महलिगरयणा य ॥ दारगाहा ॥ जीवे ण भते । अतकिरिय करेजा ? गोयमा !  
अत्येगइए करेजा, अत्येगइए णो करेजा । एव नेरइए जाव वेमाणिए । नेरइए  
ण भते ! नेरइएसु अतकिरिय करेजा ? गोयमा ! णो इणट्टे समट्टे । नेरइया ण  
भते ! असुरकुमारेसु अतकिरिय करेजा ? गोयमा ! णो इणट्टे समट्टे । एव जाव  
वेमाणिएसु । नवरं मणूसेसु अतकिरिय करेजत्ति पुच्छा । गोयमा ! अत्येगइए

करेजा अत्येष्टद्वयो करेजा । एवं अमुखमार्ग जाव बोमापिणि । एवंतेव चठ  
बीरु २ दण्डमा मजन्ति ॥ ५५५ ॥ भेरज्ञा य मते । कि अर्पणरागवा अंतकिरिय  
पद्मोति परंपरागवा अंतकिरियं पद्मोति ॥ गोवमा । अर्पणरागवा वि अंतकिरियं पद्मोति  
परंपरागवा वि अंतकिरियं पद्मोति । एवं रवजप्पमापुडमिनेरइया वि जाव फँक्प्पमा-  
पुडवीनेरइया । घूमप्पमापुडवीनेरइया वि युच्छ । घोवमा । जो अर्पणरागवा  
अंतकिरियं पद्मोति परंपरागवा अंतकिरियं पद्मोति एवं जाव अहोसामापुडवी  
नेरइया । अमुखमार्ग जाव बम्बिकुमार्ग पुष्पीजाठवस्तुकाइया य वर्षतरा-  
गवा वि अंतकिरियं पद्मोति परंपरागवा वि अंतकिरियं पद्मोति । लेउवार्गभेदिक-  
तेईश्वरदरिया वो अर्पणरागवा अंतकिरियं पद्मोति परंपरागवा अंतकिरियं  
पद्मोति । सेचा अर्पणरागवा वि अंतकिरियं पद्मोति परंपरागवा वि अंतकिरियं  
पद्मोति ॥ ५५६ ॥ अर्पणरागवा नेरइया एगसमए केवळया अंतकिरियं पद्मोति ॥  
गोवमा । जहोर्ख एव्ये वा दो वा तिथि वा उहोसेव दस । रवजप्पमापुडवीनेरइया  
वि एवं चेव जाव बम्बिकुमापुडवीनेरइया । अर्पणरागवा वि भेतु । फँक्प्पमापुडवी-  
नेरइया एगसमएव केवळया अंतकिरियं पद्मोति ॥ घोवमा । जहोर्ख एव्ये वा दो  
वा तिथि वा उहोसेव चत्तारि । अर्पणरागवा वि भेतु । अमुखमार्ग एगसमर  
केवळया अंतकिरियं पद्मोति ॥ गोवमा । जहोर्ख एव्ये वा दो वा तिथि वा उहो-  
सेव दस । अर्पणरागवा वि भेतु । अमुखमार्गो एगसमए केवळया अंतकिरियं  
पद्मोति ॥ गोवमा । जहोर्ख एव्ये वा दो वा तिथि वा उहोसेव वंद । एवं जहा  
अमुखमार्ग सदेवीवा तहा जाव बम्बिकुमार्ग । अर्पणरागवा वि भेतु । पुडविकाइया  
एगसमए केवळया अंतकिरियं पद्मोति ॥ गोवमा । जहोर्ख एव्ये वा दो वा तिथि  
वा उहोसेव चत्तारि । एवं जाडकाइया वि चत्तारि ववस्तुप्पद्मया वृद्ध पंचिरिस-  
तिरिक्तजोविका दस तिरिक्तजोविकीओ दस ममुस्ता दस ममुस्तीओ भीरु  
वाप्पमतरा दस वाप्पमतरीओ फेव जोइसिया दस जोइसियीओ भीरु वैमापिया  
बद्धमय वेमालियीओ भीरु ॥ ५५७ ॥ नेरए वि भेतु । वेरएहीटो अर्पणरागवा नेरएहीटा  
नेरएमु उवकजेजा ॥ गोवमा । जो इष्टु समद्वे । नेरए वि भेतु । नेरएहीटो अर्प-  
तर उम्हिता अमुखमारेषु उवकजेजा ॥ गोवमा । जो इष्टु समद्वे । एवं भिरारे  
जाव बउरियेषु पुण्य । घोवमा । जो इष्टु समद्वे । भेरए वि भेतु । भेरएहीटो  
अर्पणरागवा उम्हिता पंचिरियतिरिक्तजोविएषु उवकजेजा ॥ घोवमा । अत्येष्टद्वये  
उवकजेजा अर्पणरागवा उवकजेजा । ज वि भेतु । नेरएहीटो अर्पणरागवा ३ एवं  
दियतिरिक्तजोविएषु उवकजेजा से वि भेतु । केवलिक्कार्ग वर्षम् जमेजा उपमाद ॥

गोयमा ! अत्थेगद्वारे लमेजा, अत्थेगद्वारे णो लमेजा । जे ण भंते ! केवलिपञ्चतं वम्म लमेजा सवणयाए से ण केवलि वोहिं बुज्झेजा ? गोयमा ! अत्थेगद्वारे बुज्झेजा, अत्थेगद्वारे णो बुज्झेजा । जे ण भंते ! केवलि वोहिं बुज्झेजा से ण सद्हेजा पत्तिएजा रोएजा ? गोयमा ! सद्हेजा, पत्तिएजा, रोएजा । जे ण भंते ! सद्हेजा पत्तिएजा रोएजा से ण आभिणिवोहियनाणसुयनाणाइं उप्पाडेजा ? हता गोयमा ! उप्पाडेजा । जे ण भंते ! आभिणिवोहियनाणसुयनाणाइं उप्पाडेजा से ण सचाएजा सील वा वयं वा गुणं वा वेरमणं वा पञ्चक्खाण वा पोसहोववास वा पडिवजित्ताए ? गोयमा ! अत्थेगद्वारे सचाएजा, अत्थेगद्वारे णो सचाएजा । जे ण भंते ! सचाएजा सील वा जाव पोसहोववास वा पडिवजित्ताए से ण ओहिनाण उप्पाडेजा ? गोयमा ! अत्थेगद्वारे उप्पाडेजा, अत्थेगद्वारे णो उप्पाडेजा । जे ण भंते ! ओहिनाण उप्पाडेजा से ण सचाएजा मुण्डे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पञ्चइत्ताए ? गोयमा ! नो इण्डे समट्टे ॥ ५५९ ॥ नेरइए ण भंते ! नेरइएहितो अणतरं उब्बित्ता मणुस्सेसु उववजेजा ? गोयमा ! अत्थेगद्वारे उववजेजा, अत्थेगद्वारे णो उववजेजा । जे ण भंते ! उववजेजा से ण केवलिपञ्चतं वम्म लमेजा सवणयाए ? गोयमा ! जहा पर्चिदियतिरिक्खजोणिएसु जाव जे ण भंते ! ओहिनाण उप्पाडेजा से ण सचाएजा मुण्डे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पञ्चइत्ताए ? गोयमा ! अत्थेगद्वारे सचाएजा, अत्थेगद्वारे णो सचाएजा । जे ण भंते ! सचाएजा मुण्डे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पञ्चइत्ताए से ण मणपजवनाणं उप्पाडेजा ? गोयमा अत्थेगद्वारे उप्पाडेजा, अत्थेगद्वारे णो उप्पाडेजा । जे ण भंते ! मणपजवनाण उप्पाडेजा से ण केवलनाण उप्पाडेजा ? गोयमा ! अत्थेगद्वारे उप्पाडेजा, अत्थेगद्वारे णो उप्पाडेजा । जे ण भंते ! केवलनाण उप्पाडेजा से ण सिज्झेजा बुज्झेजा मुच्चेजा सव्वदुक्खाण अत करेजा ? गोयमा ! सिज्झेजा जाव सव्वदुक्खाणमतं करेजा । नेरइए ण भंते ! नेरइएहितो अणतर उब्बित्ता वाणमतरजोइसियवेमाणिएसु उववजेजा ? गोयमा ! नो इण्डे समट्टे ॥ ५६० ॥ असुरकुमारे ण भंते ! असुरकुमारेहितो अणतर उब्बित्ता नेरइएसु उववजेजा ? गोयमा ! नो इण्डे समट्टे । असुरकुमारेसु उववजेजा ? गोयमा ! नो इण्डे समट्टे । एव जाव थणियकुमारेसु । असुरकुमारे ण भंते ! असुरकुमारेहितो अणतर उब्बित्ता पुढिकाइएसु उववजेजा ? हन्ता गोयमा ! अत्थेगद्वारे उववजेजा, अथेगद्वारे णो उववजेजा । जे ण भंते ! उववजेजा से ण केवलिपञ्चतं वम्म लमेजा सवणयाए ? गोयमा ! नो इण्डे समट्टे । एव आउवणस्सइसु वि । असुर-

पुनारे वं भंते । अमुखमारेहिता भर्तुर उपहिता उठावेहितिविद्वत्ति  
दिएमु उवद्वेजा ३ योगमा । जो इष्टु समद्वे । असेसेमु पंचमु पंचिदिवनिरिक्त  
जोमियामु अमुखमारेमु जहा मर्मभे एवं जाव यविमुमारा ० ५६१ ०  
पुर्वीकाशएहितो अर्थत्तर उपहिता वेष्टएमु उवद्वेजा ।  
गोगमा । जो अष्टु समद्वे । एवं अठाखमारेमु वि जाव यविमुमारेषु वि । पुर्वे  
अष्टए वं भंते । पुर्वीकाशएहितो अर्थत्तर उपहिता पुर्वीकाशएमु उवद्वेजा ।  
गोगमा । अत्येषाए उवद्वेजा अत्येषाए गो उवद्वेजा । जे वं भंते । उवद्वेजा  
से वं केवलिकार्त घम्मे लमेजा सक्षमयाए ३ योगमा । जो इष्टु समद्वे । एवं  
जावउत्तरवोद्विविवायिएमु निरेत्तर भावियत्व जाव अडारिदिएमु । पंचिदिवनिरिक्तविद्वत्ति  
समु जहा नद्दए । वावमत्तरवोद्विविवायिएमु परिषेहो । एवं जहा पुर्वीकाशए  
भगिको ताहु बाठकाम्भो वि जाव यवस्त्रायिएमु वि भावियत्वो ० ५६२ ० ४ उठ  
काशए वं भंते । उठावाएहितो अर्थत्तर उपहिता वेष्टएमु उवद्वेजा ३ योगमा ।  
जो इष्टु समद्वे । एवं अठाखमारेमु वि जाव यविमुमारेषु । पुर्वीकाशएवाच  
उठावात्तरवोद्विविवायिएमु अत्येषाए उवद्वेजा अत्येषाए जो उवद्वेजा  
जेवा । जे वं भंते । उवद्वेजा से वं केवलिकार्त घम्मे लमेजा सक्षमयाए ३ योगमा ।  
गोगमा । जो अष्टु समद्वे । उवद्वेजा वं भंते । उठावाएहितो अर्थत्तर उपहिता  
पंचिदिवनिरिक्तविद्वत्तिविएमु उवद्वेजा ३ योगमा । अत्येषाए  
गो उवद्वेजा । जे से वं केवलिकार्त घम्मे लमेजा सक्षमयाए ३ योगमा । अत्येषाए  
लमेजा अत्येषाए जो लमेजा । जे वं भंते । केवलिकार्त घम्मे लमेजा सक्षमयाए  
से वं केवलिकोहै तुग्गेजा ३ योगमा । जो इष्टु समद्वे । मुख्यस्त्रायमत्तरविद्वत्ति  
विविवायिएमु पुर्वाय । योगमा । जो इष्टु समद्वे । एवं बहौद उठावाए निरेत्तर  
एवं बाठकाम्भए वि ० ५६३ ० ५ बैंदिए वं भंते । बैंदिएहितो अर्थत्तर उपहिता  
भर्त्रएमु उवद्वेजा ३ योगमा । जहा पुर्वीकाशया भवर मुख्यस्त्रेषु जाव यवस्त्राय-  
नार्थ उप्पादेजा । एवं ताविया अडारिदिया वि जाव मध्यपञ्चमार्थ उप्पादेजा ।  
जे वं मध्यपञ्चमार्थ उप्पादेजा से वं केवलमान उप्पादेजा ३ योगमा । जो इष्टु  
समद्वे । पंचिदिवनिरिक्तविद्वत्तिविए वं भंते । पंचिदिवनिरिक्तविद्वत्तिविएहितो अर्थत्तर  
उपहिता वेष्टएमु उवद्वेजा ३ योगमा । अत्येषाए उवद्वेजा अत्येषाए  
उवद्वेजा । जे से वं केवलिकार्त घम्मे लमेजा सक्षमयाए ३ योगमा । अत्येषाए  
लमेजा अत्येषाए जो लमेजा । जे वं केवलिकार्त घम्मे लमेजा सक्षमयाए से वं  
केवलिकोहै तुग्गेजा ३ योगमा । अत्येषाए तुग्गेजा अत्येषाए जो तुग्गेजा ।

जे ण भते ! केवलिं वोहिं बुझेजा से ण सद्हेजा पत्तिएजा रोएजा ? हता गोयमा ! जाव रोएजा । जे ण भते ! सद्हेजा ३ से ण आभिणिवोहियनाणसुयनाणओहि-  
नाणाइ उप्पाडेजा ? हता गोयमा ! जाव उप्पाडेजा । जे ण भते ! आभिणिवोहिय-  
नाणसुयनाणओहिनाणाइ उप्पाडेजा से णं सचाएजा सील वा जाव पडिवजितए ?  
गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । एवं असुरकुमारेसु वि जाव थणियकुमारेसु । एंगिदिय-  
विगलिंदिएसु जहा पुढवीकाइए । पञ्चिदियतिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु य जहा  
नेरइए । वाणमतरजोइसियवेमाणिएसु जहा नेरइएसु उवबजेजा पुच्छा भणिया एव  
मणुस्से वि । वाणमतरजोइसियवेमाणिए जहा असुरकुमारे ॥ ५६४ ॥ रयणप्पभा-  
पुढवीनेरइए ण भते ! रयणप्पभापुढवीनेरइएहितो अणतरं उब्बष्टिता तित्यगरत्त  
लभेजा ? गोयमा ! अत्येगइए लभेजा, अत्येगइए णो लभेजा । से केणट्टेण भते !  
एव बुच्छ—‘अत्येगइए लभेजा, अत्येगइए णो लभेजा’ ? गोयमा ! जस्स ण  
रयणप्पभापुढवीनेरइयस्स तित्यगरनामगोयाइ कम्माइ वद्धाइ पुढाइ निवन्ताइ कठाइ  
पट्टवियाइ निविट्टाइ अभिनिविट्टाइ अभिसमन्नागयाइ उदिशाइ, णो उवसताइ हवति,  
से ण रयणप्पभापुढवीनेरइए रयणप्पभापुढवीनेरइएहितो अणतरं उब्बष्टिता तित्य-  
गरत्त लभेजा, जस्स ण रयणप्पभापुढवीनेरइयस्स तित्यगरनामगोयाइ० णो वद्धाइ  
जाव णो उदिशाइ, उवसताइ हवति, से ण रयणप्पभापुढवीनेरइए रयणप्पभापुढवी-  
नेरइएहितो अणतरं उब्बष्टिता तित्यगरत्त णो लभेजा, से तेणट्टेण गोयमा ! एवं  
बुच्छ—‘अत्येगइए लभेजा, अत्येगइए णो लभेजा’ । एव सकरप्पभा जाव वालुयप्प-  
भापुढवीनेरइएहितो तित्यगरत्त लभेजा । पकप्पभापुढवीनेरइए ण भते ! पकप्पभा०-  
नेरइएहितो अणतरं उब्बष्टिता तित्यगरत्त लभेजा ? गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे,  
अतकिरिय पुण करेजा । ध्रूमप्पभापुढवीनेरइए पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे,  
सब्बविरइ पुण लभेजा । तमप्पभापुढवी-पुच्छा । नो विरयाविरइ पुण लभेजा ।  
अहेसत्तमपुढवी-पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे, सम्मत्त पुण लभेजा । असुर-  
कुमारस्स पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे, अतकिरिय पुण करेजा । एव निरं-  
तर जाव आउकाइए । तेउकाइए ण भते ! तेउकाइएहितो अणतरं उब्बष्टिता  
तित्यगरत्त लभेजा ? गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे, केवलिपन्त्रत्त धम्मं लभेजा सवण-  
याए । एव वाउकाइए वि । वणस्सइकाइए ण पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे,  
अतकिरिय पुण करेजा । वेहदियतेइदियन्वउरिंदिए ण पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्टे  
समट्टे, मणपञ्चवनाण उप्पाडेजा । पञ्चिदियतिरिक्खजोणियमणूसवाणमतरजोडसिए  
ण पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे, अतकिरिय पुण करेजा । सोहम्मगदेवे ण

मेतु । अर्णतरे वर्ष चाहा वित्पन्नर्ते समेजा । गोदमा । अत्येकाए लभेजा अत्येकाए यो समेजा एवं जहा रक्षणमापुड़िनेरहए, एवं जाव सम्मुखित्पन्नर्ते ॥ ५९५ ॥ रक्षणमापुड़िनेरहए ने मेतु । अप्तर उम्बरिता चाहवहिते समेजा । गोदमा । अत्येकाए समेजा अत्येकाए यो समेजा । दो केजद्वेष्ट मेतु । एवं तुच्छ । गोदमा । जहा रक्षणमापुड़िनेरहस्स वित्पन्नर्ते । सदरप्पमा नररह अर्णतरे उम्बरिता चाहवहिते समेजा । गोदमा । नो इण्डे सम्हृदे । एवं जाव अहेसहनापुड़िनेरहए । तिरिक्कलुएहिंठो तुच्छ । गोदमा । नो इण्डे सम्हृदे । भरपराक्षाप मंत्ररक्षोइयदेमानियहिंठो तुच्छ । गोदमा । अत्येकाए समेजा अत्येकाए यो समेजा । एवं वक्तव्येतत्त पि नदरे उहरप्पमापुड़िनरहए वि समेजा । एवं वाकुरहते दोहिंठो पुँजीहिंठो देमानियहिंठो य अनुपरोक्षाप्पवहेहिंठो सेचमु नो इण्डे सम्हृदे । मंडलिता अहेसहनातेउकाठवजेहिंठो । सेचावरयनते गाहाघरदक्षते वहरयनते पुरोहित्यरयनता इत्पिरयनते अ एव चेद नदरे अनुपरोक्षाप्पवजेहिंठो । आसरयनते इत्पिरयनते रक्षणमाप्तो निरतरे जाव उहस्सारे अत्येकाए समेजा अत्येकाए यो समेजा । चहरयनते छतरयनते चम्बरयनते दंडरयनते असिरदक्षते निरियनते क्षमिनिरयनते एहिंठी वं अमुखुमारेहिंठो आरज निरतर जाव ईशावाप्तो उवक्षाप्तो सेचेहिंठो नो इण्डे सम्हृदे ॥ ५९६ ॥ नह भई । असबदमनियदम्बदेशार्थ अविराहियसंज्ञमार्थ विराहियसंज्ञमार्थ अविराहियसंज्ञमार्थनाथ असाधीर्थ ताक्षतार्थ वंदपियार्थ चरणपरिभ्वामार्थ फिक्षितियार्थ तिरिचित्तार्थ आजीवितार्थ जामियोगियार्थ सक्षिप्तीर्थ इसमवादभ्यग्यार्थ देवत्वेमेसु उवक्षमाप्तार्थ दस्त रहें उवक्षाप्तो पञ्चार्थ । गोदमा । असबदमनियदम्बदेशार्थ चहम्बोप मध्यकाहीषु उहोसेव उवक्षमगेजएसु अविराहियसंज्ञमार्थ जहवेव सोहम्मे इप्पे उहोसेव सन्युक्तियो, विराहियसंज्ञमार्थ जहवेव संज्ञमासीषु उहोसेव सोहम्मे इप्पे; अविराहियसंज्ञमार्थ जहवेव सोहम्मे इप्पे उहोसेव मनुए इप्पे; विराहियसंज्ञमार्थ जहवेव मदवक्षासीषु उहोसेव जोहियसु; अमदीर्थ जहवेव मदवक्षासीषु उहोसेव जाप्तियसु;

^ जहवेव मदवक्षासीषु, उहोसेव सोहम्मे इप्पे चरणपरिभ्वामार्थ जहवेव चहम्बासीषु उहोसेव वंसत्वेए इप्पे फिक्षितियार्थ जहवेव सोहम्मे इप्पे । २ इप्पे; तिरिचित्तार्थ जहवेव मदवक्षासीषु, उहोसेव सहसरारे गण जहवेव मदवक्षासीषु उहोसेव अनुए इप्पे; एवं आभियो-

गाण वि, सलिंगीणं दसणवावण्णगाण जहन्नेण भवणवासीसु, उक्षोसेण उवरिमगेवेज-  
एसु ॥ ५६७ ॥ कइविहे ण भंते ! असणिणयाउए पन्नते ? गोयमा ! चउव्विहे  
असणिणयाउए पन्नते । तजहा—नेरइयअसणिणयाउए जाव देवअसणिणयाउए ।  
असणी ण भते । जीवे किं नेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय पकरेड ? गोयमा !  
नेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय पकरेइ । नेरइयाउ पकरेमाणे जहन्नेण दस वास-  
सहस्राह, उक्षोसेण पलिओवमस्स असखेजइभागं पकरेइ । तिरिक्खजोणियाउयं  
पकरेमाणे जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्षोसेण पलिओवमस्स असखेजइभागं पकरेइ ।  
एव मणुस्साउय पि । देवाउय जहा नेरइयाउय । एयस्स ण भंते ! नेरइयअसणिण-  
आउयस्स जाव देवअसणिणआउयस्स क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा !  
सञ्चत्थोवे देवअसणिणआउए, मणूसअसणिणआउए असखेजगुणे, तिरिक्खजोणिय-  
असणिणआउए असखेजगुणे, नेरइयअसणिणआउए असखेजगुणे ॥ ५६८ ॥ पन्न-  
वणाए भगवईए वीसद्मं अतकिरियापयं समत्तं ॥

विहिसठाणपमाणे पोगगलचिणणा सरीरसजोगो । दब्बपएसडप्पबहु सरीरोगा-  
हणडप्पवहुं ॥ कड ण भते ! सरीरया पन्नता ? गोयमा ! पच सरीरया पन्नता ।  
तजहा-ओरालिए १, वेउव्विए २, आहारए ३, तेयए ४, कम्मए ५ । ओरालिय-  
सरीरे ण भते ! कइविहे पन्नते ? गोयमा ! पचविहे पन्नते । तजहा-एर्गिदियओरा-  
लियसरीरे जाव पचिंदियओरालियसरीरे । एर्गिदियओरालियसरीरे ण भते ! कइ-  
विहे पन्नते ? गोयमा ! पचविहे पन्नते । तजहा—पुढविकाइयएर्गिदियओरालिय-  
सरीरे जाव वणप्पइकाइयएर्गिदियओरालियसरीरे । पुढविकाइयएर्गिदियओरालिय-  
सरीरे ण भते ! कइविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा—सुहुमपुढविका-  
इयएर्गिदियओरालियसरीरे य वायरपुढविकाइयएर्गिदियओरालियसरीरे य । सुहुम-  
पुढविकाइयएर्गिदियओरालियसरीरे ण भते ! रझिविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे  
पन्नते । तजहा—पञ्जतगसुहुमपुढविकाइयएर्गिदियओरालियसरीरे य अपञ्जतगसुहुम-  
पुढविकाइयएर्गिदियओरालियसरीरे य । वायरपुढविकाइया वि एवं चेव, एव जाव  
चणस्सइकाइयएर्गिदियओरालियसरीरेति । वेइदियओरालियसरीरे ण भते ! कडविहे  
पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा—पञ्जतगवेइदियओरालियसरीरे य अपञ्ज-  
तगवेइदियओरालियसरीरे य । एव तेडदिया चउर्दिया वि । पचिंदियओरालिय-  
सरीरे ण भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा-तिरिक्ख-  
जोणियपचिंदियओरालियसरीरे य मणुस्सपचिंदियओरालियसरीरे य । तिरिक्ख-  
जोणियपचिंदियओरालियसरीरे ण भते ! कइविहे पन्नते ? गोयमा ! तिविहे



कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते ! तजहा—समुच्छिममण्सपचिंदियओरालियसरीरे य गव्वभवक्तियमण्सपचिंदियओरालियसरीरे य । गव्वभवक्तियमण्सपचिंदियओरालियसरीरे य भते ! कडविहे पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते ! तजहा—पजत्तगगव्वभवक्तियमण्सपचिंदियओरालियसरीरे य अपजत्तगगव्वभवक्तियमण्सपचिंदियओरालियसरीरे य ॥ ५६९ ॥ ओरालियसरीरे ण भते ! किसठिए पन्नते ? गोयमा ! णाणासठाणसठिए पन्नते ! एर्गिंदियओरालियसरीरे० किसठिए पन्नते ? गोयमा ! णाणासठाणसठिए पन्नते ! पुढविकाइयएर्गिंदियओरालियसरीरे० किसठिए पन्नते ? गोयमा ! मसूरचदसठाणसठिए पन्नते । एव सुहुमपुढविकाइयाण वि वायराण वि एव चेव, पजत्तापजत्ताण वि एव चेव, आउक्काइयएर्गिंदियओरालियसरीरे ण भते ! किसठिए पन्नते ? गोयमा ! यिखुयविंदुसठाणसठिए पन्नते । एवं सुहुमवायरपजत्तापजत्ताण वि । तेउक्काइयएर्गिंदियओरालियसरीरे ण भते ! किसठिए पन्नते ? गोयमा ! सूँडकलावसठाणसठिए पन्नते । एव सुहुमवायरपजत्तापजत्ताण वि । वाउक्काइयाण वि पडागासठाणसठिए, एवं सुहुमवायरपजत्तापजत्ताण वि । वणप्फइकाइयाण णाणासठाणसठिए पन्नते, एव सुहुमवायरपजत्तापजत्ताण वि । वेइदियओरालियसरीरे ण भते ! किसठाणसठिए पन्नते ? गोयमा ! हुडसठाणसठिए पन्नते, एव पजत्तापजत्ताण वि, एव तेइंदियचउरिंदियाण वि । पचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियसरीरे ण भते ! किसठाणसठिए पन्नते ? गोयमा ! छब्बिहसठाणसठिए पन्नते । तजहा—समचउरंससठाणसठिए वि जाव हुडसठाणसठिए वि, एव पजत्तापजत्ताण वि ३ । समुच्छिमतिरिक्खजोणियपचिंदियओरालियसरीरे ण भते ! किसठाणसठिए पन्नते ? गोयमा ! हुडसठाणसठिए पन्नते, एव पजत्तापजत्ताण वि । गव्वभवक्तियतिरिक्खजोणियपचिंदियओरालियसरीरे ण भते ! किसठाणसठिए पन्नते ? गोयमा ! छब्बिहसठाणसठिए पन्नते । तजहा—समचउरंस० जाव हुडसठाणसठिए । एव पजत्तापजत्ताण वि ३ । एवमेए तिरिक्खजोणियाण ओहियाण णव आलावगा । जलयरतिरिक्खजोणियपचिंदियओरालियसरीरे ण भते ! किसठाणसठिए पन्नते ? गोयमा ! छब्बिहसठाणसठिए पन्नते । तंजहा—समचउरंसे जाव हुडे, एवं पजत्तापजत्ताण वि । समुच्छिमजलयरा हुडसठाणसठिया, एपर्सि चेव पजत्ता अपजत्ता वि एवं चेव । गव्वभवक्तियजलयरा छब्बिहसठाणसठिया, एव पजत्तापजत्ताण वि । एव थलयराण वि णव सुत्ताणि, एव चउप्पयथलयराण वि उरपरिसप्पथलयराण वि भुयपरिसप्पथलयराण वि । एव खहयराण वि णव सुत्ताणि, णवरं सब्बत्थ समुच्छिमा हुडसठाणसठिया भाणियब्बा, इयरे

एषु नि । मनुष्यर्थिदिवभृत्यस्त्रीरे वं भेते । छिरेत्यासंठिय् पक्षते ॥ योदमा ॥  
 छमिक्षुहस्त्यपसंठिय् पक्षते । तंगाह-यमचडरसे जाव हुडि पञ्चतापञ्चताम वि एव  
 चेष गन्ममहातियाण वि एवं चन पञ्चतापञ्चताम वि एवं चेष । समुचित्मार्ण  
 पुच्छा । योदमा । हुडस्ताणसंठिया पक्षता ॥ ५७ ॥ व्योरात्मिक्षयस्त्रीरस्त  
 वं भेते । केमहात्मिका सरीरोगाहृता पक्षता ॥ योदमा । जहल्लें अंगुस्तस्तु अस्ते  
 अहमार्ण उहोसें चाहरेण जोमपसहस्त । एगितिस्त्रोरात्मिक्षयस्त्रीरस्त  
 शोहित्यस्त । पुहित्यस्तपृथिव्यभोरात्मिक्षयस्त्रीरस्त वं भेते । केमहात्मिका सरीरो-  
 गाहृता पक्षता ॥ योदमा । जहल्लें पक्षतोसेण वि अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण एवं  
 अपञ्चतामाण वि पञ्चतामाण वि । एवं स्तुमार्ण पञ्चतापञ्चतार्ण जावरार्ण पञ्चता-  
 पञ्चताम वि । एवं एसी चक्षु भेष्ये चहा पुद्यिक्षाहमाण तहा भावक्षत्याप वि  
 तेवद्याहत्याप वि चारक्षत्याप वि । चञ्चस्तद्याहम्भेहस्त्रीक्षयस्त्रीरस्त वं भेते ।  
 केमहात्मिका सरीरोगाहृता पक्षता ॥ योदमा । जहल्लें अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण  
 उहोसेण्य साहरेण जोवणसहस्त । अपञ्चतामार्ण जहल्लेण वि उहोसेण वि अंगुस्तस्त  
 अस्तेजहमार्ण पञ्चतामार्ण जहल्लेण अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण उहोसेण्य साहरेण्य  
 जोयपसहस्त । चायरार्ण जहल्लेण अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण उहोसेण्य साहरेण्य  
 जोमणसहस्त । पञ्चतामाप वि एवं चेष । अपञ्चतामार्ण जहल्लेण वि उहो-  
 सेण वि अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण । स्तुमाप पञ्चतापञ्चतामाप व तिष्ठ वि जहल्लेण वि उहो-  
 सेण वि अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण । वेहित्यभोरात्मिक्षयस्त्रीरस्त वं मदे । केमहात्मिका  
 सरीरोगाहृता पक्षता ॥ योदमा । जहल्लें अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण उहोसेण्य  
 चारण जोवणसहस्त । एवं स्त्वात्व वि अपञ्चतामार्ण अंगुस्तस्तु अस्तेजहमार्ण जहल्लेण  
 वि उहोसेण वि । पञ्चतामार्ण जहेव व्योरात्मिक्षयस्तु शोहित्यस्त । एवं तेवित्यार्ण  
 वित्य गाऊवाई, चउरित्यार्ण चतारि गाऊवाई, पवित्रियतिरिक्षयोक्षिताम उहो-  
 सेण जोमणसहस्त ३ एवं समुचित्मार्ण ३ पञ्चमक्षयित्याण वि ३ एवं चन  
 अक्षु भेष्यो माविक्षु । एवं चक्षत्याप वि जोमणसहस्त चक्षु भेष्या चक्ष-  
 ताप वि चन भेष्या ९ उहोसेण्य छ गाऊवाई, पञ्चतामाण वि एवं चेष संमुचित्त  
 मार्ण पञ्चतामाप व उहोसेण्य याऊवपुकुर्त ३ गम्मक्षयित्यार्ण उहोसेण्य छ  
 गाऊवाई पञ्चतामाप य २ शोहित्यवरपञ्चपञ्चतामागम्भृतिवपञ्चतामाप वि उहोसेण्य  
 छ गाऊवाई । समुचित्मार्ण पञ्चतामाप व याऊवपुकुर्त उहोसेण्य एवं चरपरिसप्त्यव  
 वि । शोहित्यवरपञ्चक्षयित्यपञ्चतामार्ण जोमणसहस्त संमुचित्मार्ण पञ्चतामाप व  
 जोमणपुकुर्त मुम्परिसप्त्यार्ण शोहित्यवरपञ्चक्षयित्याम व उहोसेण्य गाऊवपुकुर्त

समुच्छिमाण धणपुहुत्तं, खहयराण ओहिंयगब्भवकंतियाणं समुच्छिमाण य तिष्ठ  
वि उक्षोसेणं धणपुहुत्तं । इमाओ सगहणीगाहाओ—जोयणसहस्र्स छग्गाउयाइ  
तत्तो य जोयणसहस्र्स । गाउयपुहुत्त भुयए धणपुहुत्त च पक्खीसु ॥ १ ॥  
जोयणसहस्र्स गाउयपुहुत्त तत्तो य जोयणपुहुत्त । दोणह तु वणपुहुत्तं  
समुच्छिमे होइ उच्चत्तं ॥ २ ॥ मण्सोरालियसरीरस्र्स ण भते ! केमहालिया  
सरीरोगाहणा पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण अगुलस्स असखेजइभाग, उक्षोसेण  
तिष्ण गाउयाइ । एव अपज्ञताणं जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अगुलस्स  
असखेजइभाग । समुच्छिमाण जहन्नेण वि उक्षोसेण वि अगुलस्स असखे-  
जइभाग, गब्भवकंतियाणं पञ्चताण य जहन्नेण अगुलस्स असखेजइभागं,  
उक्षोसेण तिष्ण गाउयाइ ॥ ५७१ ॥ वेउवियसरीरे ण भते ! कहविहे पञ्चते ?  
गोयमा ! दुविहे पञ्चते । तंजहा-एर्गिंदियवेउवियसरीरे य पर्चिंदियवेउवियसरीरे  
य । जड एर्गिंदियवेउवियसरीरे कि वाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे, अवाउक्का-  
इयएर्गिंदियवेउवियसरीरे ? गोयमा ! वाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे, नो अवा-  
उक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे । जइ वाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे कि सुहुम-  
वाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे, वायरवाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे ? गोयमा !  
नो सुहुमवाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे, वायरवाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे ।  
जइ वायरवाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे कि पञ्चतबायरवाउक्काइयएर्गिंदियवेउ-  
वियसरीरे, अपज्ञतबायरवाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे ? गोयमा ! पञ्चत-  
बायरवाउक्काइयएर्गिंदियवेउवियसरीरे, नो अपज्ञतबायरवाउक्काइयएर्गिंदियवेउ-  
वियसरीरे । जइ पर्चिंदियवेउवियसरीरे कि नेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे जाव  
देवपर्चिंदियवेउवियसरीरे ? गोयमा ! नेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे वि जाव  
देवपर्चिंदियवेउवियसरीरे वि । जइ नेरइथपर्चिंदियवेउवियसरीरे कि रथणप्प-  
मापुढविनेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपर्चिंदियवे-  
उवियसरीरे ? गोयमा ! रथणप्पमापुढविनेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे वि जाव  
अहेसत्तमापुढविनेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे वि । जइ रथणप्पमापुढविनेरइय-  
पर्चिंदियवेउवियसरीरे कि पञ्चतगरथणप्पमापुढविनेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे,  
अपज्ञतगरथणप्पमापुढविनेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे ? गोयमा ! पञ्चतगरथणप्प-  
मापुढविनेरइयपर्चिंदियवेउवियसरीरे, अपज्ञतगरथणप्पमापुढविनेरइयपर्चिंदियवेउ-  
वियसरीरे, एव जाव अहेसत्तमाए दुगओ भेडो भाणियब्बो । जइ तिरिक्ख-  
जोणियपर्चिंदियवेउवियसरीरे कि समुच्छिमतिरिक्खजोणियपर्चिंदियवेउवियसरीरे,



મમભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે, અતરદીવગગબ્ભવક્તિયમણૂસ-  
પચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે ? ગોયમા ! કમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિય-  
સરીરે, ણો અકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે, ણો અતરદીવ-  
ગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિન્દ્યવેઉન્નિયસરીરે । જડ કમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસ-  
પચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે કિં સહેજવાસાઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિય-  
વેઉન્નિયસરીરે, અસહેજવાસાઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિય-  
સરીરે ? ગોયમા ! સહેજવાસાઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિય-  
સરીરે, નો અસહેજવાસાઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે ।  
જડ સહેજવાસાઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે કિ પજત્ત-  
યસહેજવાસાઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે, અપજત્તયસહેજવાસાઉય-  
કમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે ? ગોયમા ! પજત્તયસહેજવાસા-  
ઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે, નો અપજત્તયસહેજવાસા-  
ઉયકમ્મભૂમગગબ્ભવક્તિયમણૂસપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે । જડ દેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિય-  
ચસરીરે કિં ભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે જાવ વૈમાળિયદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિય-  
સરીરે ? ગોયમા ! ભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે વિ જાવ વૈમાળિયદેવપ-  
ચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે વિ । જડ ભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે કિ અસુરકુ-  
મારભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે જાવ થળિયકુમારભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવે-  
ઉન્નિયસરીરે ? ગોયમા ! અસુરકુમાર૦ વિ જાવ થળિયકુમારદેવપચ્છિન્દ્યવેઉન્નિય-  
સરીરે વિ । જડ અસુરકુમારભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે, અપજત્તગઅસુ-  
રકુમારભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે ? ગોયમા ! પજત્તગઅસુરકુમારભવણવાસિદેવપ-  
ચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે વિ, અપજત્તગઅસુરકુમારભવણવાસિદેવપચ્છિદ્યવેઉન્નિય-  
સરીરે વિ, એવં જાવ થળિયકુમારાણ દુહાઓ મેઓ । એવ વાણમતરાણ અદૃવિહાણ, જોડિસિયાણ  
પંચવિહાણ । વૈમાળિય દુવિહા—કપોવગા કપ્પાતીતા ય । કપોવગા વારસવિહા,  
તેસિં પિ એવ ચેત્ર દુહાઓ મેઓ । કપ્પાતીતા દુવિહાએનેવેજગા ય અણુત્તરોવવાઇયા  
ય, ગેવેજગા ણવવિહા, અણુત્તરોવવાઇયા પચવિહા, એએસિ પજત્તાપજત્તામિલાવેણ  
દુહાઓ મેઓ માળિયન્દો ॥ ૫૭૨ ॥ વેઉન્નિયસરીરે ણ ભતે ! કિસઠિએ પજત્તે ?  
ગોયમા ! ણાણાસઠાણસઠિએ પજત્તે । વાઉકાઇયએર્ગિન્ડિયવેઉન્નિયસરીરે ણ ભતે !  
કિસઠિએ પજત્તે ? ગોયમા ! પડાગાસઠાણસઠિએ પજત્તે । નેરહૃથપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસ-  
રીરે ણ ભતે ! કિસઠાણસઠિએ પજત્તે ? ગોયમા ! નેરહૃથપચ્છિદ્યવેઉન્નિયસરીરે

मुनिहे पक्षते । तंजहा-भवधारमिज्ञे य उत्तरबृद्धिए य । तत्पर्ण जे से मध्यार-  
रमिज्ञे से जे हुइसंठापसंठिए पक्षते । तत्पर्ण जे से उत्तरबृद्धिए से हि हुइसंठा-  
पसंठिए पक्षते । रथष्पमापुडमिनेरथपर्विदियवेत्तमियसरीरे जे भंते । किंचउप-  
संठिए पक्षते । योममा । रथष्पमापुडमिनेरथमार्जुनिहे सरीरे पक्षते । तंजहा-  
भवधारमिज्ञे य उत्तरबृद्धिए य । तत्पर्ण जे से भवधारमिज्ञे से जे हुइ जे से  
उत्तरबैठमिज्ञे से हि हुइ । एवं जाव अहेसत्तामपुडमिनेरथबृद्धियसरीरे । तिरि  
क्षुप्रमित्तिपर्विदियवेत्तमियसरीरे जे भंते । किंचठापसंठिए पक्षते । योममा ।  
वाष्पासंठापसंठिए पक्षते । एवं जाव उत्तरबृद्धियसरीरे । यस्मात्ताप वि  
क्षुप्रयपरिचयात् वि परिचयात् वि उत्तरपरिचयात् युवपरिचयात् वि । एवं मङ्गुस्तुप-  
विदियवेत्तमियसरीरे । असुखुमारभवधारमित्तिवधपविदियवेत्तमियसरीरे जे  
भंते । किंचठापसंठिए पक्षते । योममा । असुखुमारार्थ उक्तान्तं मुनिहे सरीरे पक्षते ।  
तंजहा-भवधारमिज्ञे य उत्तरबैठमिज्ञे ज । तत्पर्ण जे से भवधारमिज्ञे से जे  
उत्तरबैठसंठापसंठिए पक्षते तत्पर्ण जे जे से उत्तरबैठमिज्ञे से ये पाण्यासंठाप-  
संठिए पक्षते एवं जाव अविकुमारदेवपर्विदियवेत्तमियसरीरे एवं जावमंत्राप  
वि गवर व्योहिया जानमंत्रयुक्तिवर्त्तिए एवं योइसिवाज वि ओहियार्थ एव  
सोहम्मे जाव अनुपदेवसरीर । गेपेजगक्षप्यातीतवमामित्यवेषपर्विदियवेत्तमियसरीरे  
जे भंत । किंचित्तिए पक्षते । योममा । गेपेजगदेवार्थ एगे मध्यारमिज्ञे सरीरे  
ए जे उत्तरबृद्धिसंठापसंठिए पक्षते एवं मङ्गुस्तरोवधावाण वि ॥ ५६३ ॥  
वेत्तमियसरीरस्तु जे भंते । केमहारिम्या सरीरोगाहणा पक्षता है योममा । जहेव  
अगुरुस्तु असुखेजाइमार्ग उक्तोसेव्यं साप्तरिणं जोगमसुक्षमार्ग । वालहाइन्दृशीर्व-  
वेत्तमियसरीरस्तु जे भंते । केमहारिम्या सरीरोगाहणा पक्षता है योममा । जहेव  
अगुरुस्तु असुखेजाइमार्ग उक्तोसेव्यं विभुजुक्तस्तु वर्त्तेज्ज्ञामार्ग । नेरहमपरिविद-  
विदियसरीरस्तु जे भंत । केमहारिम्या सरीरोगाहणा पक्षता है योममा । हुमिहा  
पक्षता । तंजहा-भवधारमिज्ञा ज उत्तरबैठमिज्ञा य । तत्पर्ण जे जा सा भवधारमिज्ञा  
सा जहेव अगुरुस्तु असुखेजाइमार्ग उक्तोसेव्यं पंचवक्षुमार्ग । तत्पर्ण जे जा सा  
उत्तरबैठमिज्ञा सा जहेव अगुरुस्तु असुखेजाइमार्ग उक्तोसेव्यं वक्षुक्षुरस्तु । रथष्प-  
मापुडमिनेरथवाज भंते केमहारिम्या सरीरोगाहणा पक्षता है योममा । हुमिहा  
पक्षता । तंजहा-भवधारमिज्ञा ज उत्तरबैठमिज्ञा य । तत्पर्ण जे जा सा भवधारमिज्ञा  
सा जहेव अगुरुस्तु असुखेजाइमार्ग उक्तोसेव्यं जात भक्षणं तिरिम रथघीओ छव  
अगुरुर्वद्य । तत्पर्ण जे जा सा उत्तरबैठमिज्ञा सा जहेव अगुरुस्तु असुखेजाइमार्ग

उक्कोसेण पण्णरस धण्डूङ् अब्बूइज्जाओ रयणीओ । सक्करप्पभाए पुच्छा । गोयमा । जाव तत्य णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण पण्णरस धण्डूङ् अब्बूइज्जाओ रयणीओ । तत्य णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेण अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेण एक्कतीस धण्डूङ् एक्का य रयणी । वालुयप्पभाए भवधारणिज्जा एक्कतीस वण्डूङ् एक्का रयणी, उत्तरवेउव्विया वासद्विं धण्डूङ् दो रयणीओ । पक्कप्पभाए भवधारणिज्जा वासद्विं वण्डूङ् दो रयणीओ, उत्तरवेउव्विया पण्वीस धणुसय । धूमप्पभाए भवधारणिज्जा पण्वीस धणुसय, उत्तरवेउव्विया अब्बूइज्जाइ धणुसयाइ । तमाए भवधारणिज्जा अब्बूइज्जाइ धणुसयाइ, उत्तरवेउव्विया पंच धणुसयाइ । अहेसत्तमाए भवधारणिज्जा पंच वणुसयाइ, उत्तरवेउव्विया धणुसहस्स एव उक्कोसेण । जहन्नेण भवधारणिज्जा अगुलस्स असखेज्जइभाग, उत्तरवेउव्विया अगुलस्स सखेज्जइभाग । तिरिक्क्वजोणियपचिंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भते । केमहालिया सरीरोगाहणा पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेण साइरेग जोयणसयसहस्स । मणुस्सपचिंदियवेउव्वियसरीरस्स ण भते । केमहालिया सरीरोगाहणा पञ्चता ? गोयमा ! जहन्नेण अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेण साइरेग जोयणसयसहस्स । असुरकुमारभवणवासिदेवपचिंदियवेउव्वियसरीरस्स ण भते । केमहालिया सरीरोगाहणा पञ्चता ? गोयमा ! असुरकुमाराण डेवाण दुविहा सरीरोगाहणा पञ्चता । तजहा-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्य णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सत्त रयणीओ । तत्य णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेण अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसयसहस्स । एव जाव यणियकुमाराण, एवं ओहियाण वाणमतराण एव जोइसियाण वि, सोहम्मीसाणदेवाण एव चेव, उत्तरवेउव्विया जाव अब्बूओ कप्पो, णवरं सणकुमारे भवधारणिज्जा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण छ रयणीओ । एव माहिंदे वि, वभलोयलतगेसु पच रयणीओ, महाद्वक्षसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणयपाणय आरणच्चुएसु तिणिण रयणीओ । गेविज्जगकप्पातीतवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्वियसरीरस्स ण भते । केमहालिया सरीरोगाहणा पञ्चता ? गोयमा ! गेवेज्जगडेवाण एगा भवधारणिज्जा सरीरोगाहणा पञ्चता । सा जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण दो रयणी । एव अणुत्तरोववाइयडेवाण वि, णवरं एक्का रयणी ॥ ५७४ ॥ आहारगसरीरे ण भते । कझिवहे पञ्चते ? गोयमा ! एगागारे पञ्चते । जड एगागारे प० कि मणूसआहारगसरीरे, अमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! मणूसआहारगसरीरे, नो अमणूसआहारगसरीरे । जड मणूसआहारगसरीरे कि समुच्छममणूसआहारग-



भूमगगब्बवकंतियमणूसआहारगसरीरे, नो अपमत्तसजयसम्मद्विढी० कम्मभूमगगब्ब-  
वकंतियमणूसआहारगसरीरे। जइ पमत्तसजयसम्मद्विढी० सखेजवासाउयकम्मभूमग०-  
मणूसआहारगसरीरे कि इङ्हिपत्तपमत्तसजयसम्मद्विढी० कम्मभूमगसखेजवासाउयग-  
च्चवकंतियमणूसआहारगसरीरे, अणिङ्हिपत्तपमत्तसजय० कम्मभूमगसखेजवासाउयग-  
गच्चवकंतिय० आहारगसरीरे १ गोयमा ! इङ्हिपत्तपमत्तसजयसम्मद्विढी० सखेजवासा-  
उयकम्मभूमगगब्बवकंतियमणूसआहारगसरीरे नो अणिङ्हिपत्तपमत्तसजयसम्मद्विढी०  
सखेजवासाउयकम्मभूमगगब्बवकंतियमणूसआहारगसरीरे। आहारगसरीरे ण भते !  
किंसठिए पञ्चते २ गोयमा ! समचउरससठाणसठिए पञ्चते। आहारगसरीरस्स ण  
भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पञ्चता २ गोयमा ! जहब्रेण देसूणा रयणी,  
उक्कोसेण पडिपुण्णा रयणी ॥५७५॥ तेयगसरीरे ण भते ! कळविहे पञ्चते २ गोयमा !  
पचविहे पञ्चते ! तजहा—एर्गिदियतेयगसरीरे जाव पचिंदियतेयगसरीरे ! एर्गिदिय-  
तेयगसरीरे ण भते ! कळविहे पञ्चते २ गोयमा ! पचविहे पञ्चते ! तजहा—पुढवि-  
काइय० जाव वणस्सइकाइयएर्गिदियतेयगसरीरे ! एवं जहा ओरालियसरीरस्स भेओ  
भणिओ तहा तेयगस्स वि जाव चउरिंदियाण। पचिंदियतेयगसरीरे ण भते ! कळविहे  
पञ्चते २ गोयमा ! चउविहे पञ्चते ! तजहा—नेरइयतेयगसरीरे जाव देवतेयगसरीरे,  
नेरइयाण दुगओ भेओ भाणियब्बो जहा वेउवियसरीरे ! पचिंदियतिरिक्खजोणियाण  
मणूसाण य जहा ओरालियसरीरे भेओ भणिओ तहा भाणियब्बो ! देवाण जहा  
वेउवियसरीरभेओ भणिब्बो तहा भाणियब्बो जाव सब्बटुसिद्धदेवत्ति ! तेयगसरीरे  
ण भते ! किंसठिए पञ्चते २ गोयमा ! णाणासठाणसठिए पञ्चते ! एर्गिदियतेयग-  
सरीरे ण भते ! किंसठिए पञ्चते २ गोयमा णाणासठाणसठिए पञ्चते ! पुढविकाइय-  
एर्गिदियतेयगसरीरे ण भते ! किंसठिए पञ्चते २ गोयमा ! मसूरचंदसठाणसठिए  
पञ्चते, एव ओरालियसठाणाणुसारेण भाणियब्ब जाव चउरिंदियाण वि ! नेरइयाण  
भते ! तेयगसरीरे किंसठिए पञ्चते २ गोयमा ! जहा वेउवियसरीरे ! पचिंदियति-  
रिक्खजोणियाण मणूसाण जहा एसिं चेव ओरालियत्ति ! देवाण भते ! तेयगसरीरे  
किंसठिए पञ्चते २ गोयमा ! जहा वेउवियस्स जाव अणुत्तरोववाइयत्ति ॥५७६॥  
जीवस्स ण भते ! मारणतियसमुग्धाएण समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया  
सरीरोगाहणा पञ्चता २ गोयमा ! मरीरप्पमाणमेता विक्खभवाहलेण, आयामेण  
जहब्रेण अगुल्स्स असखेजङ्गां, उक्कोसेण लोगताओ लोगते ! एर्गिदियस्स ण भते !  
मारणतियसमुग्धाएण समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पञ्चता २  
गोयमा ! एव चेव जाव पुढवि० आउ० तेउ० वाउ० वणप्फडकाडयस्स ! वेइदियस्स

यं भर्ते ! मारण्तिक्षमुग्धाएवं समोहस्स तेयासीरस्स केमहालिमा चरीरोगाह्वा पत्ता ? गोक्ता ! चरीरप्पमाप्तमेता लिक्खन्मवाहोर्व आपामेन जहोर्व अणु-  
स्स असंखेज्ञमां उद्घोषेण विरियल्पेणाभी स्मेगते । एवं चाव अठरिविषस्स ।  
नेत्रहस्स यं भर्ते ! मारण्तिक्षमुग्धाएवं समोहस्स तेयासीरस्स केमहालिमा  
चरीरोगाह्वा य । गोक्ता ! चरीरप्पमाप्तमेता लिक्खन्मवाहोर्व आपामेन  
जहोर्व लक्ष्मेण ज्ञात्वरेण जोपशस्सर्व जहे, उद्घोषेन चाव अहेसत्तमा पुढी विरिवं चाव  
सम्मुरमणे स्मुरो, उद्घु चाव पदम्भणे पुक्षुरिणीओ । परिवितिरिक्षव्यविषस्स  
यं भर्ते । मारण्तिक्षमुग्धाएवं समोहस्स तेयासीरस्स केमहालिमा चरीरोगा-  
ह्वा । गोक्ता ! उहा वैश्विकसीरस्स । मलुस्सस्य यं भर्ते । मारण्तिक्षमुग्धा-  
एवं समोहस्स तेयासीरस्स केमहालिमा चरीरोगाह्वा । गोक्ता ! समफेताम्भे  
स्थोर्विं । अमुक्तमारस्स ये भर्ते । मारण्तिक्षमुग्धाएवं समोहस्स तेयासीरस्स  
केमहालिमा चरीरोगाह्वा । गोक्ता ! सरीरप्पमाप्तमेता लिक्खन्मवाहोर्व आपामेन  
जहोर्व अणुस्स असंखेज्ञमां उद्घोषेन जहे चाव तावद् पुढीए विट्टिक  
चर्मेते विरिव चाव सम्मुरमणस्सुस्स चालिष्टे केम्पंते उद्घु चाव विषिप्पमारा  
पुढी एवं चाव अमिक्तमारतेयासीरस्स । आगमतरजोहिमसोहमीशाक्ता व  
एवं चाव । सम्मुक्तमारतेयस्स यं भर्ते । मारण्तिक्षमुग्धाएवं समोहस्स तेयासीरस्स  
केमहालिमा चरीरोगाह्वा । गोक्ता ! सरीरप्पमाप्तमेता लिक्खन्मवाहोर्व आपामेन  
जहोर्व अणुस्स असंखेज्ञमां उद्घोषेन जहे चाव मद्वापावाम्भणे देवे विमागे  
विरिवं चाव सम्मुरमणे स्मुरो, उद्घु चाव अमुक्तो क्षयो । एवं चाव सहस्रारेष्टस्स ।  
आगमत्रेष्टस्स यं भर्ते । मारण्तिक्षमुग्धाएवं समोहस्स तेयासीरस्स केमहालिमा  
चरीरोगाह्वा । गोक्ता ! सरीरप्पमाप्तमेता लिक्खन्मवाहोर्व आपामेन जहोर्व  
अणुस्स असंखेज्ञमां उद्घोषेन चाव अहोवेष्टयामा विरिवं चाव मक्षुत्तेते उद्घु  
चाव अमुक्तो क्षयो एवं चाव आगमत्रेष्टस्स । अमुक्तमेष्टस्स एवं चेष्ट चक्कर उद्घु चाव  
सम्बद्ध विमाक्त । गेविक्कगेष्टस्स यं भर्ते । मारण्तिक्षमुग्धाएवं समोहस्स तेय-  
सीरस्स केमहालिमा चरीरोगाह्वा । गोक्ता ! सरीरप्पमाप्तमेता लिक्खन्मवाहोर्व  
आपामेन जहोर्व विज्ञाहरुसेदीभो उद्घोषेण चाव अमोम्भेष्टवगामा विरिवं चाव  
मक्षुत्तेते उद्घु चाव सम्बद्ध विमाक्त, अमुक्तरोवाह्वामस्स वि एवं चेष्ट । क्षम्भगास्तीरे  
यं भर्ते । क्षम्भिष्टे चक्करे । गोक्ता ! पंचमिष्टे चक्करे । तंश्वा—एग्निविक्षम्भगास्तीरे  
चाव पांचिविक्षम्भगास्तीरे च । एवं चक्कर तेयासीरस्स मेलो संठापे ओगाह्वा  
यं भर्ता तहेव विक्षेष माविष्टव्यं चाव अमुक्तरोवाह्वामति ॥ ५७० ॥

ओरालियसरीरस्स ण भते ! कइदिसि पोगला चिजंति ? गोयमा ! निव्वाघाएण  
च्छिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पचदिसि । वेउव्विय-  
सरीरस्स ण भते ! कइदिसि पोगला चिजंति ? गोयमा ! णियमा छ्छिसि । एव  
आहारगसरीरस्स वि, तेयाकम्मगाण जहा ओरालियसरीरस्स । ओरालियसरीरस्स  
ण भते ! कइदिसि पोगला उवचिजंति ? गोयमा ! एव चेव जाव कम्मगसरीरस्स  
एव उवचिजंति, अवचिजंति ॥ ५७८ ॥ जस्स ण भते ! ओरालियसरीर तस्स  
चेउव्वियसरीर, जस्स वेउव्वियसरीर तस्स ओरालियसरीर ? गोयमा ! जस्स  
ओरालियसरीर तस्स वेउव्वियसरीर सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स वेउव्वियसरीर  
तस्स ओरालियसरीर सिय अत्थि सिय नत्थि । जस्स ण भते ! ओरालियसरीर  
तस्स आहारगसरीर, जस्स आहारगसरीर तस्स ओरालियसरीर ? गोयमा ! जस्स  
ओरालियसरीर तस्स आहारगसरीर सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण आहारग-  
सरीर तस्स ओरालियसरीर णियमा अत्थि । जस्स ण भते ! ओरालियसरीर तस्स  
तेयगसरीर, जस्स तेयगसरीर तस्स ओरालियसरीर ? गोयमा ! जस्स ओरालिय-  
सरीर तस्स तेयगसरीर णियमा अत्थि, जस्स पुण तेयगसरीर तस्स ओरालिय-  
सरीर सिय अत्थि सिय नत्थि, एव कम्मगसरीर पि । जस्स ण भते ! वेउव्विय-  
सरीर तस्स आहारगसरीर, जस्स आहारगसरीर तस्स वेउव्वियसरीर ? गोयमा !  
जस्स वेउव्वियसरीर तस्स आहारगसरीर णत्थि, जस्स वि आहारगसरीर तस्स वि  
वेउव्वियसरीर णत्थि । तेयाकम्माइँ जहा ओरालिएण सम तहेव आहारगसरीरेण  
वि सम तेयाकम्मगाइ चारेयब्बाणि । जस्स ण भते ! तेयगसरीर तस्स कम्मग-  
सरीर, जस्स कम्मगसरीर तस्स तेयगसरीर ? गोयमा ! जस्स तेयगसरीर तस्स  
कम्मगसरीर णियमा अत्थि, जस्स वि कम्मगसरीर तस्स वि तेयगसरीर णियमा  
अत्थि ॥ ५७९ ॥ एएसि ण भते ! ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगकम्मगसरीराण  
दब्बट्ट्याए पएसट्ट्याए दब्बट्ट्यपएसट्ट्याए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा !  
सब्बत्थोवा आहारगसरीरा दब्बट्ट्याए, वेउव्वियसरीरा दब्बट्ट्याए असखेजगुणा,  
ओरालियसरीरा दब्बट्ट्याए असखेजगुणा, तेयाकम्मगसरीरा दोवि तुला दब्बट्ट्याए  
अणंतगुणा । पएसट्ट्याए-सब्बत्थोवा आहारगसरीरा पएसट्ट्याए, वेउव्वियसरीरा  
पएसट्ट्याए असखेजगुणा, ओरालियसरीरा पएसट्ट्याए असखेजगुणा, तेयगसरीरा  
पएसट्ट्याए अणंतगुणा, कम्मगसरीरा पएसट्ट्याए अणंतगुणा । दब्बट्ट्यपएसट्ट्याए-  
सब्बत्थोवा आहारगसरीरा दब्बट्ट्याए, वेउव्वियसरीरा दब्बट्ट्याए असखेजगुणा,  
ओरालियसरीरा दब्बट्ट्याए असखेजगुणा, ओरालियसरीरेहिंतो दब्बट्ट्याएहिंतो आहा-

रगमधिरुपाए अर्थतयुपा देउभियसरीरा पएसद्गुणाए अस्तेज्जगुणा ओर-  
लिम्पवरीरा पएसद्गुणाए अस्तेज्जगुणा तेमालम्ना होति तुङ्गा वस्तुवाए अर्थतयुपा  
तेकगमरीरा पएसद्गुणाए अर्थतयुपा कम्मगमरीरा पएसद्गुणाए अर्थतयुपा ५५८ ॥  
एषुपि च भैत । ओराभियदेउभियमाहारगतेयगम्ममसरीराम जहाभियाए ओमा-  
इनाए उडोसियाए ओगाइनाए जहामुहासियाए ओगाइनाए क्षरे क्षरेहितो  
अप्पा चा ४ ? योसमा । सम्बत्योगा ओराभियसरीरस्त जहाभिया ओगाइना तेवा-  
कम्मगार्ण दोष्ट ति तुङ्गा जहाभिया ओगाइना विसेसाहिता देउभियसरीरस्त जह  
भिया ओगाइना अस्तेज्जगुणा आहारगसरीरस्त जहाभिया ओगाइना अस्तेज्ज-  
गुणा । उडोसियाए ओगाइनाए-सम्बत्योगा माहारगसरीरस्त उडोसिया ओगाइना  
ओराभियसरीरस्त उडोसिया ओगाइना संयेज्जगुणा देउभियसरीरस्त उडोसिया  
ओगाइना संयेज्जगुणा तमालम्नगार्ण दोष्ट ति तुङ्गा उडोसिया ओगाइना अस्तेज्ज-  
गुणा । जहामुहोसियाए ओगाइनाए-सम्बत्योगा ओराभियसरीरस्त जहाभिया  
ओगाइना तेवाम्मार्ण दोष्ट ति तुङ्गा जहाभिया ओगाइना विसेसाहिता देउभिय  
सरीरस्त जहाभिया ओगाइना अस्तेज्जगुणा आहारगसरीरस्त जहाभिया लोगा-  
इना अस्तेज्जगुणा आहारगसरीरस्त जहाभियाहितो ओगाइनाहितो तस्म तेव  
उडोसिया ओगाइना विसेसाहिता ओराभियसरीरस्त उडोसिया ओगाइना संलग्न-  
गुणा देउभियसरीरस्त उडोसिया ओगाइना संयेज्जगुणा तेवाम्मार्ण दोष्ट  
ति तुङ्गा उडोसिया ओगाइना अस्तेज्जगुणा ॥ ५५९ ॥ पद्मयज्ञाए भगवर्हिष्ठ  
पगवीमहमे ओगाइनासंटाप्पपयं समर्ते ॥

क्ष च च भैत ! रिरियाओ एवत्तामा ? गायमा । वैष रिरियामा पञ्चतामे ।  
तंबदा-नाइया १ अहिगरविया पाभाविया ३ पारियारविया ५ पाशाद्वाद्व-  
रिरिया ८ । बाइया च भैत । रिरिया वर्दिहा पत्ता ? गायमा । तुमिहा पत्ता ।  
तंबदा-अतुरवयवान्या च तुप्पत्तराइया च । अहिगरविया च भैत । रिरिया  
वर्दिहा पत्ता ? गोदमा । तुमिहा पत्ता । तंबदा-नीयेवदाटिगर्हिता च निषा  
पारिगरविया च । पाभाविया च भैत । रिरिया वर्दिहा पत्ता ? गायमा । तिमिहा  
पत्ता । तंबदा-जग अप्पना चा परम चा तुमयन्न चा अनुभव चर्ण क्षेत्रारेह  
सुते पाभाविया रिरिया । पारियारविया च भैत । रिरिया वर्दिहा पत्ता ? गोदमा ।  
तिमिहा पत्ता । तंबदा-जग अप्पना चा परमा चा तुमयस्तु चा अमार्ण तेवर्ण  
उठीरेह मिने पारियारविया रिरिया । पाशाद्वाद्वायविरिया च भैत । वर्दिहा पत्ता ?  
गोदमा तिमिहा पत्ता । तंबदा-जर्ण अप्पर्ण चा परे चा तुमवे चा तंबदा-

ववरोवेद्, सेत्त पाणाइवायकिरिया ॥ ५८२ ॥ जीवा ण भंते ! कि सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि । से केणट्टेण भंते ! एवं बुच्छइ—‘जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि’ ? गोयमा ! जीवा दुविहा पञ्चता । तजहा-ससारस-मावण्णगा य अससारसमावण्णगा य । तत्थ ण जे ते अससारसमावण्णगा ते ण सिद्धा, सिद्धा ण अकिरिया । तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा ते दुविहा पञ्चता । तजहा-सेलेसिपडिवण्णगा य असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण अकिरिया, तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण सकिरिया, से तेणट्टेण गोयमा ! एवं बुच्छइ—‘जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि’ ॥ ५८३ ॥ अत्थि ण भंते ! जीवाण पाणा-इवाएण किरिया कज्जइ ? हता गोयमा ! अत्थि । कम्हि ण भंते ! जीवाण पाणा-पाणाइवाएण किरिया कज्जइ ? गोयमा ! छसु जीवनिकाएसु । अत्थि ण भंते ! नेरइयाण अत्थि ण भंते ! जीवाण मुसावाएण किरिया कज्जइ ? हता । अत्थि । कम्हि ण भंते ! जीवाण मुसावाएण किरिया कज्जइ ? गोयमा ! सब्बदब्बेसु, एव निरतरं नेरइयाण जाव वेमाणियाण । अत्थि ण भंते ! जीवाण अदिन्नादाणेण किरिया कज्जइ ? हता ! अत्थि । कम्हि ण भंते ! जीवाण अदिन्नादाणेण किरिया कज्जइ ? गोयमा ! गहणधारणिज्जेसु दब्बेसु, एव नेरइयाण निरतरं जाव वेमाणियाण । अत्थि ण भंते ! जीवाण मेहुणेण किरिया कज्जइ ? हता ! अत्थि । कम्हि ण भंते ! जीवाण मेहुणेण किरिया कज्जइ ? गोयमा ! रुवेसु वा रुवसहगएसु वा दब्बेसु, एव नेरइयाण निरतरं जाव वेमाणियाण । अत्थि ण भंते ! जीवाण परिग्रहेण किरिया कज्जइ ? हता ! अत्थि । कम्हि ण भंते ! जीवाण परिग्रहेण किरिया कज्जइ ? गोयमा ! सब्बदब्बेसु एवं नेरइयाण जाव वेमाणियाण । एव कोहेण माणेण मायाए लोमेण पेजेण दोसेण कलहेण अब्बक्साणेण पेसुज्जेण परपरिवाएण अरइरईए मायामोसेण मिच्छादसणसहेण । सब्बेसु जीवनेरइयमेएण भाणियव्वा निरतर जाव वेमाणियाण ति, एव अट्टारस एए दडगा १८ ॥ ५८४ ॥ जीवे ण भंते ! पाणाइवाएण कद कम्पपगडीओ वधइ ? गोयमा ! सत्तविहवधए वा अट्टविहवधए वा । एव नेरइए जाव निरंतर वेमाणिए । जीवा ण भंते ! पाणाइवाएण कद कम्पपगडीओ वधति ? गोयमा ! सत्तविहवधगा वि अट्टविहवधगा वि । नेरइया ण भंते ! पाणाइवाएण कद कम्पपगडीओ वधति ? गोयमा ! नव्वे वि ताव हौजा सत्तविहवधगा, अहवा भत्तविहवधगा य अट्टविहवधए य, अहवा सत्तविहवधगा य अट्टविहवधगा य । एव असुखुमारा वि जाव थणियकुमारा पुढवि-

आठतेउकात्वपञ्चकान्मा य एवं पर्व वि जहा ओहिया जीवा असुमा जहा  
नेरह्या । एवं ते जीवेगिरियवामा तिथि तिथि भया सुम्बत्व मादिममति  
जाव मिन्छादेशसुदे एवं पूर्वपोहतिया छातीस दहगा होति ॥ ५६५ ॥  
जीवे व भये ! जाजावरमिव्य क्षम्य वेवमाजे क्षमिरिए ॥ गोममा । तिय तिकिरिए,  
तिब चउकिरिए, तिब वेचविरिए, एवं नेरह्य जाव बेमाहिए । जीव व भय !  
जाजावरमिव्य क्षम्य वेवमाजा क्षमिरिया ॥ गोममा । तिब तिकिरिया तिय चउ-  
किरिया तिय पंचहिरिया वि एवं नेरह्या विरहत जाव बेमाहिया । एवं दरिसवा-  
चरमिव्य बहविजे मोहमिव्य जाठये नामं गोर्खे भैतरह्य च अद्विहम्ममध्यामे  
माधिमम्माओ एषतापाहतिया सोङ्गम दहगा भवन्ति त ५८६ ॥ जीव व भये !  
जीवामो क्षमिरिए ॥ गोममा । तिय तिकिरिए, तिय चउकिरिए, तिब पंचकिरिए,  
तिय अकिरिए । जीव व भय ! नेरह्यामो क्षमिरिए ॥ गोममा । तिय तिकिरिए,  
तिब चउकिरिए, तिब अकिरिए, एवं जाव वियकुमारामो । मुद्रिकावामो  
आठकान्मामो उरहान्यामो बाठकान्वपञ्चक्षयोहतियत्तदिमचउकिरियविकिरि-  
दिवतिरिक्षयोमियमखुस्तम्भे जहा जीवामो जावमन्तरजोहतियवामामियामो जहा  
नेरह्याम्भे । जीवे व भये ! जीवहिता क्षमिरिए ॥ गोममा । तिय तिकिरिए, तिय  
चउकिरिए, तिब पंचकिरिए, तिब अकिरिए । जीवे व भये ! नेरह्यहितो क्षमिरिए ॥  
गोममा । तिय तिकिरिए, तिय चउकिरिए, तिए अकिरिए, एवं क्षेत्र फामो हाँडे  
जहा एसो तिक्ष्मो माधिमम्मो । जीवा व भये ! जीवामो क्षमिरिया ॥ गोममा । तिय  
तिकिरिया वि तिय चउकिरिया वि तिय पंचकिरिया वि तिय अकिरिया वि । जीव व  
भये ! नेरह्याम्भे क्षमिरिया ॥ गोममा । जहेह आझाहैदह्ये तहेह भाषिम्भो अन  
बेमाहियति । जीवा व भये ! जीवेहितो क्षमिरिया ॥ गोममा । तिकिरिया वि  
चउकिरिया वि पंचकिरिया वि अकिरिया वि । जीवा व भये ! नेरह्यहितो  
क्षमिरिया ॥ गोममा । तिकिरिया वि चउकिरिया वि अकिरिया वि । अम्बुखुमारे  
हितो वि एवं वेद जाव बेमाहिएहितो अपेहतियमहीरहितो जहा जीवेहितो । मर्ट्टे  
व भये ! जीवामो क्षमिरिए ॥ गोममा । तिय तिकिरिए, तिय चउकिरिए, तिय  
पंचकिरिए । नेरह्य व भये ! नेरह्यामो क्षमिरिए ॥ गोममा । तिय तिकिरिए  
तिय चउकिरिए । एवं जाव बेमाहिएहितो नवर नेरह्यस्त नेरह्यहितो वेहेहितो व  
पंकमा तिरिया नहिं । नेरह्या व भये ! जीवाम्भे क्षमिरिया ॥ गोममा । तिय तिकिरिया  
तिय चउकिरिया तिय पंचकिरिया एवं जाव बेमाहियम्भे नवर वराम्भो  
देवाम्भे य पंचमा क्षिरिया भरिय । नेरह्या व भये ! जीवहितो क्षमिरिया ॥

गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पचकिरिया वि । नेरइया ण भते ! नेरडएहिंतो कडकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि । एव जाव वेमाणिएहिंतो, नवरं ओरालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो । असुरखुमारे ण भते ! जीवाओ कङ्किरिए ? गोयमा ! जहेव नेरडए चत्तारि दडगा तहेव असुरखुमारे वि चत्तारि दडगा भाणियव्वा, एव च उबउज्जिञ्चण भावेयव्वं ति । जीवे मण्से य अकिरिए चुच्छइ, सेसा अकिरिया न चुच्छति । सव्वजीवा ओरालियसरीरेहिंतो पंचकिरिया । नेरइयेवेहिंतो पचकिरिया ण चुच्छति । एव एकेकजीवपए चत्तारि चत्तारि दडगा भाणियव्वा एव एयं दडगसय सब्बे वि य जीवाइया दडगा ॥ ५८७ ॥ कइ ण भते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ । तंजहा—काइया जाव पाणाडवायकिरिया । नेरइयाण भते ! कइ किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पच किरियाओ पण्णत्ताओ । तजहा—काइया जाव पाणाइवायकिरिया, एव जाव वेमाणियाण । जस्स ण भते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया कज्जइ, जस्स अहिगरणिया किरिया कज्जइ तस्स काइया किरिया नियमा कज्जइ । जस्स ण भते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स आओसिया किरिया कज्जइ, जस्स पाओसिया किरिया कज्जइ तस्स काइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! एव चेव । जस्स ण भते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ, जस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स काइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्स ण जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया० सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, जस्स पुण पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स काइया० नियमा कज्जइ, एव पाणाडवायकिरिया वि । एवं आइलाओ परोप्पर नियमा तिणिण कज्जति । जस्स आइलाओ तिणिण कज्जति तस्स उवरिलाओ दोञ्चि सिय कज्जति, सिय नो कज्जंति, जस्स उवरिलाओ दोणिण कज्जति तस्स आइलाओ नियमा तिणिण कज्जंति । जस्स ण भते ! जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स पाणाइवायकिरिया कज्जइ, जस्स पाणाइवायकिरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्स ण जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स पाणाइवायकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जह, जस्स पुण पाणाइवायकिरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया नियमा कज्जइ । जस्स ण भते ! नेरइयस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जहेव जीवस्स तहेव नेरइयस्स वि, एव निरतरं जाव

वेमानिषसु ॥ ५८८ ॥ जं समर्थ वं भर्ते । जीवसु अहमा किरिया कल्प तं समर्थ  
अहिगरणिया किरिया कल्प, च समर्थ अहिगरणिया कल्प तं उमर्थ अहमा किरिया  
कल्प ३ । एवं अहेष आश्रमाद्वयो दहूद भावितप्यो जाव वेमानिषसु । जं देस  
जं भर्ते । जीवसु अहमा किरिया तं देस वं अहिगरणिया किरिया अहेष जाव  
वेमानिषसु । जं पद्मे जं भर्ते । जीवसु अहमा किरिया तं पद्मे वं अहिगरणिया  
किरिया एवं दहूद जाव वेमानिषसु । एवं एए असु वं समर्थ वं देस वं पद्मे वं  
चतारि देहगा होति ॥ ५८९ ॥ अह वं भर्ते । आवोजियाओ किरियाद्वयो एवं  
जावो ३ गोममा । पंच आवोजियाओ किरियाद्वयो फलताम्बो । दहूद—काल्पा जाव  
पाण्डुष्वायकिरिया एवं नेत्रद्वयार्थं जाव वेमानिषार्थं । चत्सु वं भर्ते । जीवसु  
अहमा आवोजिया किरिया अरिय तसु अहिगरणिया आवोजिया किरिया अरिय  
असु अहिगरणिया आवोजिया किरिया अरिय तसु अहमा आवोजिया किरिया  
अरिय ३ । एवं पद्मे अभिभावेषं ते चब चतारि देहगा भावितप्यो चत्सु वं  
समर्थ वं देस वं जाव वेमानिषार्थं ॥ ५९ ॥ जीव वं भर्ते । जं समर्थ काल्पार  
अहिगरणियाए पामोसियाए किरियाए पुद्दे तं समर्थ पारियावसियाए पुद्दे, पालाह-  
वावकिरियाए पुद्दे ३ गोममा । अत्येगहए जीवे एवाइयाओ जीवाओ वं समर्थ काल-  
पाए अहिगरणियाए पामोसियाए किरियाए पुद्दे तं समर्थ पारियावसियाए किरियाए  
पुद्दे, पाण्डुष्वायकिरियाए पुद्दे १ अत्येगहए जीवे एवाइयाओ जीवाओ वं समर्थ काल-  
पाए अहिगरणियाए पामोसियाए किरियाए पुद्दे तं समर्थ पारियावसियाए किरियाए  
पुद्दे, पाण्डुष्वायकिरियाए अपुद्दे २ अत्येगहए जीवे एवाइयाओ जीवाओ वं समर्थ  
अहमाए अहिगरणियाए पामोसियाए पुद्दे तं समर्थ पारियावसियाए किरियाए  
अपुद्दे, पाण्डुष्वायकिरियाए अपुद्दे ३ ॥ ५९१ ॥ अह वं भर्ते । किरियाओ  
फलताम्बो ३ गोममा । पंच किरियाओ फलताम्बो । दहूद—आरम्भा परिम्भिता  
मायावसिया अपवक्ष्याणकिरिया मित्तवर्द्धसम्बरिया । आरम्भा वं भर्ते ।  
किरिया कल्प कल्प ३ गोममा । अपम्भरसु वि फलताम्बवक्ष्यसु । परिम्भिता  
वं भर्ते । किरिया कल्प कल्प ३ गोममा । अपम्भरसु वि सवया-  
संवयसु । मायावसिया वं भर्ते । किरिया कल्प कल्प ३ गोममा । अपम्भरसु  
वि अपमताम्बवयसु । अपवक्ष्याणकिरिया वं भर्ते । कल्प कल्प ३  
गोममा । अपम्भरसु वि अपवक्ष्यावसिसु । मित्तवर्द्धसम्बरिया वं भर्ते ।  
किरिया कल्प कल्प ३ गोममा । अपम्भरसु वि मित्तवर्द्धपरिसु ॥ ५९२ ॥  
येत्तवार्थ भर्ते । अह किरियाओ फलताम्बो ३ गोममा । पंच किरियाओ पक्षताम्बो ।

तंजहा-आरभिया जाव मिच्छादसणवत्तिया । एवं जाव वेमाणियाण । जस्स ण भते । जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स परिगगहिया० कज्जइ जस्स परिगगहिया किरिया कज्जइ तस्स आरभिया किरिया कज्जइ<sup>२</sup> गोयमा । जस्स णं जीवस्स आरभिया किरिया कज्जइ तस्स परिगगहिया० सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, जस्स पुण परिगगहिया किरिया कज्जइ तस्स आरभिया किरिया णियमा कज्जइ । जस्स ण भते । जीवस्स आरभिया किरिया कज्जइ तस्स मायावत्तिया किरिया कज्जइ पुच्छा । गोयमा । जस्स ण जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स मायावत्तिया किरिया णियमा कज्जइ, जस्स पुण मायावत्तिया किरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ । जस्स ण भते । जीवस्स आरभिया किरिया कज्जइ तस्स अपचक्खाणकिरिया पुच्छा । गोयमा । जस्स णं जीवस्स आरभिया किरिया कज्जइ तस्स अपचक्खाणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, जस्स पुण अपचक्खाणकिरिया कज्जइ तस्स आरभिया किरिया णियमा कज्जइ । एवं मिच्छादसणवत्तियाए वि सम । एवं परिगगहिया वि तिहिं उवरिलाहिं समं सचारेयव्वा । जस्स मायावत्तिया किरिया कज्जइ तस्स उवरिलाओ दो वि सिय कज्जति, सिय नो कज्जति, जस्स उवरिलाओ दो कज्जति तस्स मायावत्तिया० णियमा कज्जइ । जस्स अपचक्खाणकिरिया कज्जइ तस्स मिच्छादसणवत्तिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, जस्स पुण मिच्छादसणवत्तिया किरिया० तस्स अपचक्खाणकिरिया णियमा कज्जइ । नेरइयस्स आइलियाओ चत्तारि परोपरं नियमा कज्जन्ति, जस्स एयाओ चत्तारि कज्जति तस्स मिच्छादसणवत्तिया किरिया भइज्जइ, जस्स पुण मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जइ तस्स एयाओ चत्तारि नियमा कज्जति, एवं जाव थणियकुमारस्स । पुढवीकाड्यस्स जाव चउरिंदियस्स पञ्च वि परोपरं नियमा कज्जति । पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स आइलियाओ तिणिं वि परोपरं नियमा कज्जति, जस्स एयाओ कज्जति तस्स उवरिलिया दोणिं भइज्जति, जस्स उवरिलाओ दोणिं कज्जति तस्स एयाओ तिणिं वि णियमा कज्जति । जस्स अपचक्खाणकिरिया० तस्स मिच्छादसणवत्तिया० सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ, जस्स पुण मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जइ तस्स अपचक्खाणकिरिया णियमा कज्जइ, मण्णस्स जहा जीवस्स, वाणमतरजोइसियवेमाणियस्स जहा नेरइयस्स । ज समयण भते । जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ त समय परिगगहिया किरिया कज्जइ<sup>२</sup> एवं एए जस्स ज समय ज देस ज पएसेण य चत्तारि डडगा णेयव्वा, जहा नेरइयाण तहा सब्बदेवाण नेयव्व जाव वेमाणियाण ॥ ५९३ ॥ अतिथि



विहवंधगा य अट्टविहवधगे य छव्विहवंधए य अवधए य १, अहवा सत्तविह-  
ंधगा य एगविहवधगा य अट्टविहवधए य छव्विहवंधए य अवंधगा य २,  
अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धए य छव्विहवन्धगा य  
अवन्धए य ३, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धए य  
छव्विहवन्धगा य अवन्धगा य ४, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य  
अट्टविहवन्धगा य छव्विहवन्धगे य अवन्धए य ५, अहवा सत्तविहवन्धगा य  
एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य छव्विहवन्धगे य अवन्धगा य ६, अहवा  
सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य छव्विहवन्धगा य अवन्धए  
य ७, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य छव्विह-  
वन्धगा य अवन्धगा य ८, एवं एए अट्ट भगा, सब्बे वि मिच्छासत्तावीस भगा  
भवति । एव मणूसाण वि एए चेव सत्तावीस भगा भाणियव्वा, एव मुसावायविर-  
यस्स जाव मायामोसविरयस्स जीवस्स य मणूसस्स य । मिच्छादसणसल्लविरए ण  
भते । जीवे कइ कम्मपगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! सत्तविहवन्धए वा अट्टविहवन्धए  
वा छव्विहवन्धए वा एगविहवन्धए वा अवन्धए वा । मिच्छादसणसल्लविरए ण  
भते । नेरइए कइ कम्मपगडीओ बन्धइ ? गोयमा ! सत्तविहवन्धए वा अट्टविह-  
वन्धए वा जाव पर्चिदियतिरिक्खजोणिए । मणूसे जहा जीवे । वाणमंतरजोइसिय-  
वेमाणिए जहा नेरइए । मिच्छादसणसल्लविरया ण भते । जीवा कइ कम्मपगडीओ  
बन्धन्ति ? गोयमा ! ते चेव सत्तावीस भगा भाणियव्वा । मिच्छादसणसल्लविरया  
ण भते । नेरइया कइ कम्मपगडीओ बन्धन्ति ? गोयमा ! सब्बे वि ताव होज्ज  
सत्तविहवन्धगा, अहवा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगे य, अहवा सत्तविह-  
वन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एव जाव वेमाणिया, णवरं मणूसाण जहा जीवाण  
॥ ५९५ ॥ पाणाइवायविरयस्स ण भते । जीवस्स कि आरंभिया किरिया कज्जइ  
जाव मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! पाणाइवायविरयस्स ण जीवस्स  
आरंभिया किरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ । पाणाइवायविरयस्स ण भते ।  
जीवस्स परिगगहिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे । पाणाइवायवि-  
रयस्स ण भते । जीवस्स मायावत्तिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! सिय कज्जइ,  
सिय नो कज्जइ । पाणाइवायविरयस्स ण भते । जीवस्स अपच्चक्खाणवत्तिया  
किरिया कज्जइ ? गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे । मिच्छादसणवत्तियाए पुच्छा ।  
गोयमा ! णो इणद्वे समद्वे । एव पाणाइवायविरयस्स मणूसस्स वि, एव जाव माया-  
मोसविरयस्स जीवस्स मणूसस्स य । मिच्छादसणसल्लविरयस्स ण भते । जीवस्स किं

आरभिया किरिया कल्प जाव मित्तार्दसणवतिया किरिया कल्प ! गोममा । मित्तार्दसणवतियरेस्तु जीवस्तु वै आरभिया किरिया सिव कल्प, सिव नो कल्प, एवं जाव अपन्नद्यापकिरिया । मित्तार्दसणवतिया किरिया न कल्प । मित्तार्दसणवतियरेस्तु वै भंते । नेरायस्तु कि आरभिया किरिया कल्प जाव मित्तार्दसणवतिया किरिया कल्प ! गोममा । आरभिया किरिया कल्प जाव अपन्नद्यापकिरिया कि कल्प, मित्तार्दसणवतिया किरिया नो कल्प । एवं जाव बमिक्तमारस्तु । मित्तार्दसणवतियरेस्तु वै भंते । परिविमतिरिक्तव्योनियस्तु एवमेव पुच्छा । गोममा आरभिया किरिया कल्प जाव मायावतिया किरिया कल्प, अपन्नद्यापकिरिया सिव कल्प, सिव नो कल्प, मित्तार्दसणवतिया किरिया नो कल्प । मायास्तु वहा जीवस्तु । वाणस्तुरव्योनियवेमानिवार्ता वहा नेरायस्तु ॥ ५९६ ॥ एवमाहि वै भंते । आरभियाप जाव मित्तार्दसणवतियाप व कल्प अप्यराहितो भप्पा वा ॥ ३ ॥ गोममा । सम्बल्लोकाम्भे मित्तार्दसणवतियाम्भे किरियाम्भे अपन्नद्यापकिरियाम्भे विसेसाहियाम्भे परिमग्निवाम्भे विसेसाहिवाम्भे आरभियाम्भे किरियाम्भे विसेसाहियाम्भे मायावतियाम्भे विसेसाहियाम्भे ॥ ५९७ ॥ पश्चायपाप मगधईय वावीसाइमे किरियापर्य समर्त ॥

कइ पर्वी कइ बन्धु क्षहि वि ठानेहि बन्धए जीवो । कइ वेद व पर्वी अमुमामो क्षमितो कल्प ॥ कइ वै भंते । कम्मपयमीमो पञ्चाताम्भो ॥ गोममा । अद्वृ कम्मपादीमो पञ्चाताम्भो । तंबहा—जालावरमित्त १ दसचावरमित्त २ विमित्त ३ माहुमित्त ४ जाउव ५ नामे ६ गोव ७ अंतरात्व ८ । वेद्यार्थ भंते । कइ कम्मपादीमो पञ्चाताम्भो ॥ गोममा । एवं जाव एवं जाव वेमानियाप ॥ ५९८ ॥ कहु वै भंते । जीवो अद्वृ कम्मपादीमो बन्धए ॥ गोममा । जालावरमित्तस्तु कम्मस्तु उद्दृष्टं दरिसचावरमित्त कम्म विमित्त, दैसणावरमित्तस्तु कम्मस्तु उद्दृष्टं दसचमोहमित्तं कम्म विमित्त, दैसणमोहमित्तस्तु कम्मस्तु उद्दृष्टं विमित्त, मित्तार्देव उविएवं गोममा । एवं वहु जीवो अद्वृ कम्मपादीमो बन्धए । कहु वै भंते । वेद्याए अद्वृ कम्मपादीमो बन्धए ॥ गोममा । एवं वेद एवं जाव वेमानिया ॥ ५९९ ॥ जीव वै भंते । जालावरमित्त कम्म कहहि भंते । एवं जाव वेद एवं जाव वेमानिया ॥ ६०० ॥ जीव वै भंते । जालावरमित्त वहु वै भंते । गोममा । दोहि ठानेहि तंबहा—रागेव वै दोसेव व । रागे तुमिहे वहु । तंबहा—जावा व लोमे व । दोसे तुमिहे वहु । तंबहा—दोहे वै भंते व इति-एहि कहहि घोहि विरियोदम्प्रियहि एवं वहु जीव जालावरमित्त कम्म बन्धए,

एव नेरडए जाव वेमाणिए । जीवा ण भते । णाणावरणिज्ज कम्म कइहिं ठाणेहिं वन्धन्ति ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं एव चेव, एवं नेरडया जाव वेमाणिया । एव दंसणावरणिज्ज जाव अतराइय, एवं एए एगत्तपोहत्तिया सोलस दडगा ॥ ६०० ॥ जीवे ण भते । णाणावरणिज्ज कम्म वेएड ? गोयमा ! अत्येगइए वेएइ, अत्येगइए नो वेएइ । नेरडए ण भते । णाणावरणिज्जं कम्मं वेएड ? गोयमा ! नियमा वेएइ, एव जाव वेमाणिए, णवर मणूसे जहा जीवे । जीवा ण भंते । णाणावरणिज्ज कम्मं वेदंति ? गोयमा ! एवं चेव, एव जाव वेमाणिया । एव जहा णाणावरणिज्ज तहा दसणावरणिज्ज मोहणिज्ज अतराइय च, वेयणिज्जाउनामगोयाइं एव चेव, नवरं मणूसे वि नियमा वेएइ, एव एए एगत्तपोहत्तिया सोलस दडगा ॥ ६०१ ॥ णाणा-वरणिज्जस्स ण भते । कम्मस्स जीवेणं वद्धस्स पुट्टस्स वद्धफासपुट्टस्स सचियस्स चियस्स उचचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं क्यस्स जीवेण निव्वत्तियस्स जीवेण परिणामियस्स सय वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरयस्स तदुभएण वा उदीरज्जमाणस्स गइ पप्प ठिंडं पप्प भवं पप्प पोगल-परिणाम पप्प कइविहे अणुभावे पञ्चते ? गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोगलपरिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पञ्चते । तंजहा—सोया-वरणे, सोयविण्णाणावरणे, पेत्तावरणे, पेत्तविण्णाणावरणे, घाणावरणे, घाणविण्णाणा-वरणे, रसावरणे, रसविण्णाणावरणे, फासावरणे, फासविण्णाणावरणे, ज वेएइ पोगल वा पोगले वा पोगलपरिणामं वा वीससा वा पोगलाण परिणामं तेसिं वा उदएणं जाणियब्ब ण जाणइ, जाणिउकामे वि ण जाणइ, जाणिता वि ण जाणइ, उच्छ्वसणाणी यावि भवइ णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण, एस ण गोयमा ! णाणावरणिज्जे कम्मे, एस ण गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोगलपरिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पञ्चते ॥ ६०२ ॥ दरिसणावरणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोगलपरिणामं पप्प कइविहे अणुभावे पञ्चते ? गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोगलपरिणाम पप्प गवविहे अणुभावे पञ्चते । तजहा—णिद्वा, णिद्वाणिद्वा, पयला, पयलापयला, थीणद्वी, चक्रखुदसणावरणे, अचक्रखुदसणावरणे, ओहिदसणावरणे, केवलदसणावरणे, ज वेएड पोगल वा पोगले वा पोगलपरिणाम वा वीससा वा पोगलाण परिणामं तेसिं वा उदएण पासियब्ब ण पासइ, पासिउकामे वि ण पासइ, पासिता वि ण पासइ, उच्छ्वान्दसणी यावि भवइ दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण, एस ण गोयमा ! दरिसणावरणिज्जे कम्मे, एस ण गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स

आरमिया किरिया क्षम्भ जाव मिच्छादसपवतिया किरिया क्षम्भ ! गोममा ! मिच्छादसपवतियस्त जीवस्त व आरमिया किरिया सिय क्षम्भ, सिय वो क्षम्भ, एवं जाव अपक्षस्त्वाणकिरिया । मिच्छादसपवतिया किरिया न क्षम्भ । मिच्छर्स सुणसपवतियस्त व भेटे । बेरइमस्त कि आरमिया किरिया क्षम्भ जाव मिच्छादसपवतिया किरिया क्षम्भ ! गोममा ! आरमिया किरिया क्षम्भ जाव मायावतिया-पकिरिया वि क्षम्भ, मिच्छादसपवतिया किरिया नो क्षम्भ । एवं जाव वर्षित-मारस्त । मिच्छादसपवतियस्त व भट्टे । पंक्तियतिरिक्षयोविक्षम्भ एक्षम्भ पुच्छा । गोममा आरमिया किरिया क्षम्भ जाव मायावतिया किरिया क्षम्भ, अपक्षस्त्वाणकिरिया सिय क्षम्भ, सिय वो क्षम्भ, मिच्छादसपवतिया किरिया वे क्षम्भ । मन्त्रस्त जहा जीवस्त । बाजमंत्रतबोहसिव्वेमायियावं जहा बेरइमस्त ॥ ५९६ ॥ एमाहि व भेटे । आरमियाण जाव मिच्छादसपवतियाव व क्षम्भ क्षम्भराहितो अप्या वा ॥ ३ ॥ गोममा ! सम्भस्त्वोजाओ मिच्छादसपवतियाओ हिरियाओ अपक्षस्त्वाणकिरियाओ विसेसाहियाओ घरिम्यद्वियाओ विसेसाहियाओ आरमियाओ किरियाओ विस्माहियाओ मायावतियाओ विसेसाहियाओ ॥ ५९७ ॥ पञ्चवपार्ष भगवद्विषय वावीसाहर्म किरियापर्यं समर्थ ॥

कहि पावी कहि बन्धद कहिवि वि ठालेहि बन्धए जीको । क्षद बेद व पद्धति अमुमाओ क्षम्भिहो कस्त ॥ कहि व भट्टे । कम्मपगाहीओ पञ्चताओ ! गोममा ! अद्व कम्मपाहीओ पञ्चताओ । ठंजहा—जालावरमित्रं १ दंसपावरमित्रं २ विमित्रं ३ माहमित्रं ४ जाठमं ५ जामं ६ गोवं ७ अंतरादमं ८ । नेत्रयावं भरे । एवं कम्मपाहीओ पञ्चताओ । गोममा ! एवं बेद एवं जाव वेमायियावं ॥ ० ५९८ ॥ कहि व भट्टु कम्मपाहीओ बन्धद ! गोममा ! नाणावरमित्रस्त कम्मस्त उदाहृत वरिसलावरमित्रं कम्म वियक्षद, दंसपावरमित्रस्त कम्मस्त उदाहृत दामधमोहवित्रं कम्म वियक्षद, दंसपमोहवित्रस्त कम्मस्त उदाहृत वियक्षद, मिच्छतोर्ण उदाहृत गोममा ! एवं यहु जीको अद्व कम्मपाहीओ बन्धद ! कहि व भट्टे । नेत्रए अद्व कम्मपगाहीओ बन्धद ! गोममा ! एवं बेद एवं जाव वेमायिया ॥ ५९९ ॥ जीको अद्व कम्मपगाहीओ बन्धनित १ गोममा ! एवं बेद एवं जाव वेमायिया ॥ ५९९ ॥ जीको व भट्टे । जालावरमित्रं कम्म कहिवि ग्रहेै बन्धद ! गोममा ! दोहै ठागेहि ठंजहा—हुगेण व बासन व । रागे दुर्गेहि तांडो । ठंजहा—जाला व भोभे व । दोमे तुषिहे वज्जे । तंजहा—क्षेदे व मापे व एवं एहि चउहि ठागेहि विरभोवमाहियहि एवं यहु जीको जालावरमित्रं कम्म कम्म

एव नेरइए जाव वेमाणिए । जीवा णं भते । णाणावरणिज्ज कम्म कइहिं ठाणेहिं  
चन्वन्ति ? गोयमा । दोहिं ठाणेहिं एव चेव, एव नेरइया जाव वेमाणिया । एवं  
दंसणावरणिज्ज जाव अतराडयं, एवं एए एगत्पोहत्तिया सोलस दडगा ॥ ६०० ॥  
जीवे ण भते । णाणावरणिज्जं कम्म वेएइ ? गोयमा ! अत्येगइए वेएइ, अत्येगइए  
नो वेएइ । नेरइए ण भते । णाणावरणिज्जं कम्म वेएइ ? गोयमा ! नियमा वेएइ,  
एवं जाव वेमाणिए, णवर मण्डसे जहा जीवे । जीवा ण भते । णाणावरणिज्जं कम्म  
वेदेति ? गोयमा ! एव चेव, एव जाव वेमाणिया । एवं जहा णाणावरणिज्जं तहा  
दंसणावरणिज्ज मोहणिज्ज अतराइय च, वेयणिज्जाउनामगोयाइं एव चेव, नवरं  
मण्डसे वि नियमा वेएइ, एव एए एगत्पोहत्तिया सोलम दडगा ॥ ६०१ ॥ णाणा-  
वरणिज्जस्स णं भते । कम्मस्स जीवेण वद्धस्स पुट्टस्स वद्धफासपुट्टस्स सच्चियस्स  
च्चियस्स उवच्चियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेण  
क्यस्स जीवेण निव्वत्तियस्स जीवेण परिणामियस्स सय वा उदिणस्स परेण वा  
उदीरियस्स तटुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गड पप्प ठिं पप्प भव पप्प पोगगल-  
परिणाम पप्प कइविहे अणुभावे पञ्चते ? गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स  
जीवेण वद्धस्स जाव पोगगलपरिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पञ्चते । तंजहा—सोया-  
वरणे, सोयविण्णाणावरणे, ऐत्तावरणे, ऐत्तविण्णाणावरणे, घाणावरणे, घाणविण्णाणा-  
वरणे, रसावरणे, रसविण्णाणावरणे, फासावरणे, फासविण्णाणावरणे, ज वेएइ  
पोगगल वा पोगगले वा पोगगलपरिणाम वा वीससा वा पोगगलाण परिणामं तेसिं  
वा उदएण जाणियब्ब ण जाणइ, जाणिउकामे वि ण जाणइ, जाणिता वि ण जाणइ,  
उच्छ्वाणाणी यावि भवइ णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण, एस ण गोयमा !  
णाणावरणिज्जे कम्मे, एस ण गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेण वद्धस्स  
जाव पोगगलपरिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पञ्चते ॥ ६०२ ॥ दरिसणावरणिज्जस्स  
ण भते ! कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोगगलपरिणाम पप्प कइविहे अणुभावे  
पञ्चते ? गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पोगगलपरिणाम  
पप्प णवविहे अणुभावे पञ्चते । तजहा—णिहा, णिहाणिहा, पयला, पयला, पयलापयला,  
थीणद्वी, चक्षुदसणावरणे, अचक्षुदसणावरणे, ओहिदसणावरणे, केवलदसणावरणे,  
ज वेएइ पोगगल वा पोगगले वा पोगगलपरिणाम वा वीससा वा पोगगलाण परिणामं  
तेसिं वा उदएण पासियब्ब ण पासइ, पासिउकामे वि ण पासइ, पासिता वि ण  
पासइ, उच्छ्वादसणी यावि भवइ दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण, एस ण  
गोयमा ! दरिसणावरणिज्जे कम्मे, एस ण गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स

जीवेण वदस्य जाव पोम्मलपरिणामं पर्य अवशिष्टे अनुमावे पक्षते ॥ ६ ३ ॥  
 सायावेयविज्ञस्त वं भंते । कम्मस्य जीवेण वदस्य जाव पोम्मलपरिणामं पर्य  
 कर्तविष्टे अनुमावे पक्षते । गोवमा । सायावेयविज्ञस्त वं कम्मस्य जीवेण वदस्य  
 जाव अद्विष्टे अनुमावे पक्षते । तंजहा—मणुष्णा सहा १ मणुष्णा रसा २, मणुष्णा  
 रसा ३ मणुष्णा रसा ४ मणुष्णा फासा ५ मणेशुइया ६ वदशुइया ७ वद-  
 शुइया ८ वं वेदै वोमासं वा पोमगडे वा पोम्मलपरिणामं वा वीससा वा वोम-  
 सारं परिणामं तेसि वा उदएवं सायावेयविज्ञस्त कम्मे वेणु एस वं वोवमा ।  
 सायावेयविज्ञस्ते कम्मे एस वं वोवमा । सायावेयविज्ञस्त जाव अद्विष्टे अनुमावे  
 पक्षते । असायावेयविज्ञस्त वं भंते । कम्मस्य जीवेण तदेव पुच्छ उत्तरं वं वदरं  
 अमणुष्णा सहा जाव अवशुइया एस वं वोवमा । असायावेयविज्ञस्ते कम्मे एस वं  
 वोवमा । असायावेयविज्ञस्त जाव अद्विष्टे अनुमावे पक्षते ॥ ६ ४ ॥ वोहविज्ञस्त  
 वं भंते । कम्मस्य जीवेण वदस्य जाव अद्विष्टे अनुमावे पक्षते । गोवमा । वोह  
 विज्ञस्त वं कम्मस्य जीवेण वदस्य जाव पंचविष्टे अनुमावे पक्षते । तंजहा—सम्मार्त-  
 वेयविज्ञस्ते विज्ञातवेयविज्ञस्ते सम्मानिज्ञातवेयविज्ञस्ते विज्ञातवेयविज्ञ-  
 फेयविज्ञस्ते । वं वेणु वोम्मल वा पोमगडे वा पोम्मलपरिणामं वा वीससा वा वोम्मलरं  
 परिणामं तेसि वा उदएवं मोहस्त्री कम्मे वेणु, एस वं वोवमा । मोहविज्ञस्त  
 कम्मस्य जाव कर्तविष्टे अनुमावे पक्षते ॥ ६ ५ ॥ आउवस्य वं भंते । कम्मस्य  
 जीवेण तदेव पुच्छ । वोवमा । आउवस्य वं कम्मस्य जीवेण वदस्य जाव कर्तविष्टे  
 अनुमावे पक्षते । तंजहा—नेहवाडए, तिरिवाडए, अनुवाडए, विवाडए, वं वेणु  
 वोमासं वा पोमगडे वा पोम्मलपरिणामं वा वीससा वा पोम्मलरं परिणामं तेसि  
 वा उदएवं आउवं कम्मे वेणु, एस वं वोवमा । आउए कम्मे एस वं वोवमा ।  
 आउवकम्मस्य जाव कर्तविष्टे अनुमावे पक्षते ॥ ६ ६ ॥ उहामास्य वं भंते ।  
 कम्मस्य जीवेण पुच्छ । वोवमा । सुहाणामस्य वं कम्मस्य जीवेण “कडसुविष्टे  
 अनुमावे पक्षते । तंजहा—सहा सहा १ इहा रसा २ इहा गंधा ३ इहा रेणा ४  
 इहा फासा ५ इहा गाँ ६ इहा ठिँ ७ इहे लावन्ये ८ इहा जयोतिशी ९  
 इहे उहापकम्मामवीरियपुरिसहारपरामे । इहसारया ११ कंतस्वरमा १२  
 पिमस्सरया १३ मणुष्णस्सरया १४ वं वेणु वोमासं वा पोमगडे वा पोम्मल-  
 परिणामं वा वीससा वा पोम्मलरं परिणामं तेसि वा उदएवं तुहामसं कम्मे  
 वेणु, एस वं वोवमा । सुहाणामस्ये एस वं वोवमा । सुहामास्य कम्मस्य जाव  
 कडसुविष्टे अनुमावे पक्षते । तुहामास्य वं भंते । पुच्छ । वोवमा । एवं वेण

णवर अणिद्वा सदा जाव हीणस्सरया, दीणस्सरया, अकतस्सरया, ज वेएड सेस त  
चेव जाव चउह्वसिहे अणुभावे पन्तते ॥ ६०७ ॥ उच्चागोयस्स ण भते ! कम्मस्स  
जीवेण पुच्छा । गोयमा ! उच्चागोयस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्वस्स जाव अद्विहे  
अणुभावे पन्तते । तजहा—जाइविसिद्वया १, कुलविसिद्वया २, वलविसिद्वया ३,  
स्वविसिद्वया ४, तवविसिद्वया ५, सुयविसिद्वया ६, लाभविसिद्वया ७, इस्सरिय-  
विसिद्वया ८, ज वेएड पोगल वा पोगले वा पोगलपरिणाम वा वीससा वा  
पोगलाण परिणाम तेसि वा उदएण जाव अद्विहे अणुभावे पन्तते । णीयागोयस्स  
ण भते ! पुच्छा । गोयमा ! एव चेव, णवर जाइविहीणया जाव इस्सरियविहीणया,  
जं वेएड पुगल वा पोगले वा पोगलपरिणाम वा वीससा वा पोगलाण परिणाम  
तेसि वा उदएण जाव अद्विहे अणुभावे पन्तते ॥ ६०८ ॥ अतराइयस्स ण भते !  
कम्मस्स जीवेण पुच्छा । गोयमा ! अतराइयस्स ण कम्मस्स जीवेण वद्वस्स जाव  
पचविहे अणुभावे पन्तते । तंजहा—दाणतराए लाभतराए भोगतराए उवभोगतराए  
वीरियतराए, ज वेएड पोगल वा जाव वीससा वा पोगलाण परिणाम तेसि वा  
उदएण अतराइय कम्म वेएड, एस ण गोयमा ! अतराइए कम्मे, एस ण गोयमा !  
जाव पचविहे अणुभावे पन्तते ॥ ६०९ ॥ पन्नवणाए भगवईए तेवीसइ-  
मस्स पयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥

कड ण भते ! कम्मपगढीओ पन्तताओ ? गोयमा ! अटु कम्मपगढीओ पन्त-  
ताओ । तजहा—णाणावरणिज जाव अतराइय । णाणावरणिजे ण भते ! कम्मे  
कइविहे पन्तते ? गोयमा ! पचविहे पन्तते । तजहा—आभिणिवोहियनाणावरणिजे  
जाव केवलनाणावरणिजे ॥ ६१० ॥ दसणावरणिजे ण भते ! कम्मे कइविहे पन्तते ?  
गोयमा ! दुविहे पन्तते । तजहा—निहापंचए य दसणचउक्कए य । निहापंचए ण  
भते ! कइविहे पन्तते ? गोयमा ! पचविहे पन्तते । तजहा—निहा जाव थीणद्वी ।  
दसणचउक्कए ण पुच्छा । गोयमा ! चउविहे पन्तते । तजहा—चक्खुदंसणावरणिजे  
जाव केवलदसणावरणिजे ॥ ६११ ॥ वेयणिजे ण भते ! कम्मे कइविहे पन्तते ?  
गोयमा ! दुविहे पन्तते । तजहा—सायावेयणिजे य असायावेयणिजे य । साया-  
वेयणिजे ण भते ! कम्मे पुच्छा । गोयमा ! अद्विहे पन्तते । तंजहा—मणुण्णा  
सदा जाव कायसुह्या । असायावेयणिजे ण भते ! कम्मे कइविहे पन्तते ?  
गोयमा ! अद्विहे पन्तते । तजहा—अमणुण्णा सदा जाव कायदुह्या ॥ ६१२ ॥  
मोहणिजे ण भते ! कम्मे कइविहे पन्तते ? गोयमा ! दुविहे पन्तते । तजहा—  
दसणमोहणिजे य चरित्मोहणिजे य । दसणमोहणिजे ण भते ! कम्मे कइविहे

पहाते । गोक्का । विविहे पहाते । तंज्ञा-सम्मतवेयविहे मिल्लावेविहे सम्मानिक्तवयविहे । चरित्तमोहविहे वं भंते । कम्मे कृविहे पहाते । गोक्का । तुविहे पहाते । तंज्ञा-कलासदेवविहे नोक्कायवेयविहे । कलायवेयविहे वं भंते । कम्मे कृविहे पहाते । गोक्का । धोक्कविहे पहाते । तंज्ञा-अवताकुर्वी क्षोहे अवताकुर्वी माते अणन्ताकुर्वी माता अणन्ताकुर्वी घोमे अप्प-क्षणे क्षोहे, एवं माते माता घोमे पक्काक्षान्तरसे क्षोहे, एवं माते माता घोमे संक्षम्पद्धेहे, एवं माते माया घोमे । नोक्कायवेयविहे वं भंते । कम्मे कृविहे पहाते । गोक्का । शविहे पहाते । तंज्ञा-इत्तीवेवधेयविहे पुरिष्वेव-वयविहे नवुसगवयवेवविहे हाउ र्हं, अर्हं, मणु, लोगो तुरुषम् ॥ ११ ॥ आवाए वं भंते । कम्मे कृविहे पहाते । गोक्का । चउविहे पहाते । तंज्ञा-नेष्यावए जाव देवावए ॥ ११४ ॥ णाम वं भंते । कम्मे कृविहे पहाते । गोक्का । वायाक्षीसूक्ष्मिहे पहाते । तंज्ञा-वहणामे १ वहणामे २ सुरीरक्षामे ३ सरीरोक्तिक्षामे ४ सरीरवेष्टक्षामे ५ सरीरसंक्षयव्यामे ६ संष्टव्यव्यामे ७ सठाणव्यामे ८ वक्षणामे ९ वंक्षणामे १० रस्तामे ११ वारुणामे १२ अगुक्षम्भुत्तामे १३ उद्वाम्भणामे १४ परावाम्भणामे १५ वाखुपुक्षित्तामे १६ उस्सास्त्रणामे १७ भावव्यामे १८ उज्जेषणामे १९ विहाम्भव्याम २ तस्तामे २१ वावरव्यामे २२ द्वाहुम्भामे २३ वायरव्यामे २४ फलाव्याम २५ अप्पत्तामामे २६ वाहारणसरीरणामे २७ परेस्मसरीरणामे २८ विरणामे २९ विरिणामे ३ शुभम्भामे ३१ अशुभम्भामे ३२ शुभग्यामामे ३३ इम्ब-यामे ३४ द्वासरव्यामे ३५ द्वासरव्यामे ३६ वावव्यामे ३७ वक्ताव्यामामे ३८ वस्त्राव्यामामे ३९ वक्त्रोक्तिक्तिव्यामे ४ विम्बाक्षामे ४१ वित्त-गरज्ञाम ४२ । वक्त्तामे वं भंते । कम्मे कृविहे पहाते । गोक्का । चउविहे पहाते । तंज्ञा-विरक्षमामे विरिणाव्यामे मलुक्काव्यामे देवग्नित्तामे । वद्वयामे वं भंते । कम्मे पुष्णा । योक्का । वंविहे पहाते । तंज्ञा-एविविष्वाव्यामे जाव वंविविष्वाव्यामे । सुरीरक्षामे वं भंते । कम्मे कृविहे पहाते । गोक्का । वंविहे पहाते । तंज्ञा-ओरालिष्वसरीरमामे जाव कम्पणासरीरक्षाम । सुरीरोक्तिक्षामे वं भंते । कृविहे पहाते । योक्का । विविहे पहाते । तंज्ञा-ओरालिष्वसरीरोक्तिक्षामे वेड विक्कम्भीरोक्तिक्षाम वाहारणसरीरोक्तिक्षाम । सुरीरवयव्यामे वं भंते । वर्षविहे पहाते । योक्का । वंविहे पहाते । तंज्ञा-ओरालिष्वसरीरवयव्यामे जाव वयव्य-सरीरवयव्यामे । सुरीरसंपायव्यामे वं भंते । कृविहे पहाते । योक्का । वंविहे

पन्नते । तजहा—ओरालियसरीरसधायनामे जाव कम्मगसरीरसधायनामे । सधयण-  
नामे ण भते । ० कइविहे पन्नते ? गोयमा ! छविहे पन्नते । तजहा—वइरोस-  
भनारायसधयणनामे, उसहनारायसधयणनामे, नारायसधयणनामे, अद्वनाराय-  
सधयणनामे, कीलियासधयणनामे, छेवट्टुसधयणनामे । सठाणनामे ण भते । ० कइविहे  
पन्नते ? गोयमा ! छविहे पन्नते । तजहा—समचउरससठाणनामे, निग्गोहपरिमडल-  
सठाणनामे, साइसठाणनामे, वामणसठाणनामे, खुज्जसठाणनामे, हुडसठाणनामे ।  
वण्णनामे ण भते । कम्मे कइविहे पन्नते ? गोयमा ! पचविहे पन्नते । तजहा—  
कालवण्णनामे जाव सुक्किलवण्णनामे । गधनामे णं भते । कम्मे पुच्छा । गोयमा !  
दुविहे पन्नते । तजहा—सुरभिगधनामे, दुरभिगधनामे । रसनामे ण पुच्छा । गोयमा !  
पचविहे पन्नते । तजहा—तित्तरसनामे जाव महुररसनामे । फासनामे णं पुच्छा ।  
गोयमा ! अट्टविहे पन्नते । तजहा—कवखडफासनामे जाव लहुयफासनामे । अगुरु-  
लहुयनामे एगागारे पन्नते । उवधायनामे एगागारे पन्नते, पराधायनामे एगागारे  
पन्नते । आणुपुब्बीणामे चउविहे पन्नते । तजहा—नेरइयआणुपुब्बीणामे जाव  
देवाणुपुब्बीणामे । उस्सासनामे एगागारे पन्नते, सेसाणि सब्बाणि एगागाराइ पण्ण-  
ताइ जाव तित्थगरणामे । नवर विहायगइनामे दुविहे पन्नते । तजहा—पसत्थविहा-  
यगइनामे, अपसत्थविहायगइनामे य ॥ ६१५ ॥ गोए ण भंते ! कम्मे कइविहे  
पन्नते ? गोयमा ! दुविहे पन्नते । तजहा—उच्चागोए य नीयागोए य । उच्चागोए  
ण भते । ० कइविहे पन्नते ? गोयमा ! अट्टविहे पन्नते । तजहा—जाइविसिंहुया  
जाव इस्सरियविसिंहुया, एव नीयागोए वि, णवरं जाइविहीणया जाव इस्सरियवि-  
हीणया ॥ ६१६ ॥ अतराइए ण भते ! कम्मे कइविहे पन्नते ? गोयमा ! पचविहे  
पन्नते । तंजहा—दाणतराइए जाव वीरियतराइए ॥ ६१७ ॥ णाणावरणिज्जस्स ण  
भते ! कम्मस्स केवडय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण  
तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्राइ अवाहा, अवाहूणिया कम्म-  
ठिई कम्मनिसेगो ॥ ६१८ ॥ निहापचगस्स ण भते ! कम्मस्स केवडय काल ठिई  
पन्नता ? गोयमा ! जहणेण सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असुखे-  
जडभागेण ऊणिया, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्राड  
अवाहा, अवाहूणिया कम्मट्टुई कम्मनिसेगो । दसणचउक्कस्स ण भते ! कम्मस्स केव-  
डय काल ठिई पन्नता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तीस सागरोवम-  
कोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्राइ अवाहा ॥ ६१९ ॥ सायावेयणिज्जस्स इरिया-  
वहिय वधग पहुच अजहणमणुक्षोसेण दो समया, सपराइयवधग पहुच जहणेण

वारस मुहुरा उक्तोसेण पञ्चरस सागरोक्तमनोडाक्षेदीभ्ये पञ्चरस वासनयाई अवाहा । असादानेयमिक्तसु जहौरेण सागरोक्तमसु तित्तित्त सुक्तमात्रा पठियावमल्ल असेक्तमागार्ण अग्नया उक्तोसेभ्ये शीर्षे सागरोक्तमनोडाक्षेदीभ्ये तित्तित्त य वासन याइस्तद्वं अवाहा ॥ ५३ ॥ रुम्मानदेवतिक्तसु पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण अतो-मुहुर्त उक्तोसेभ्ये अमद्वि सागरोक्तमाई आइरेगाई । मित्तानदेवतिक्तसु जहौरेण सागरोक्तमसु पठियावमल्ल असेक्तमागेण अग्नयां उक्तोसेण सत्तरि ओडाक्षेदीभ्ये सत्ता य वासनाहस्ताई अवाहा अवाहूप्तित्ता । सुम्मामित्तानदेवतिक्तसु जहौरेण अतोमुहुर्त उक्तोसेण अतोमुहुर्त । क्षुम्मानवारसगम्स्य अहौरेण सागरोक्तमसु अग्नया सत्तमागा पठियोक्तमस्तु असेक्तमागेण अग्नया उक्तोसेभ्ये वक्ताठीसे सागरोक्तम-क्षेदीभ्ये वक्ताठीसे वासनयाई अवाहा जाव निसेयो । ज्ञेहसउल्लग्ने पुच्छा । गोक्तमा । जहौरेण दो माध्या उक्तोसेभ्ये वक्ताठीसे धायरोक्तमनोडाक्षेदीभ्ये वक्ताठीसे वासनयाई अवाहा जाव निसेयो । मायसुबल्लग्नाए पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण वक्ता माध्य उक्तोसेण अग्ना ज्ञेहस्य । मायासुबल्लग्नाए पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण वक्ता माध्य उक्तोसेभ्ये अग्ना कोहस्त । ल्पेहसउल्लग्नाए पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण अतोमुहुर्त उक्तोसेण अग्ना ज्ञेहस्त । इरिपनेवत्सु पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण सागरोक्तमसु तित्ति सत्तमागा पठियोक्तमसु असेक्तमागेण अग्नये उक्तोसेभ्ये पञ्चरस सागरोक्तमनोडा-क्षेदीभ्ये पञ्चरस वासनयाई अवाहा । पुरिपनेवत्सु वर्ण पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण अद्य संवाधरात् उक्तोसेण दस एगरोक्तमनोडाक्षेदीभ्ये दस वासनयाई अवाहा जाव निसेयो । अर्पुसुप्तेयत्सु वर्ण पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण सागरोक्तमसु होत्तित्त सत्तमागा पठियोक्तमसु असेक्तमागेण अग्नया उक्तोसेण वीर्षे सागरोक्तमनोडा-क्षेदीभ्यो वीर्षे वासनयाई अवाहा । इसर्यात् पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण सागरोक्तम-स्तु एवं सत्तमागा पठियोक्तमसु असेक्तमागेण अग्नये उक्तोसेभ्ये दस एगरोक्तम-क्षेदीभ्यो दस वासनयाई अवाहा । अरामवसोपमुण्डार्णी पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण सागरोक्तमसु होत्तित्त सत्तमागा पठियोक्तमसु असेक्तमागेण अग्नया उक्तोसेण वीर्षे सासनयाई अवाहा ॥ ५३ ॥ ८ मेरेष्यात्तमस्तु वर्ण पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण दस वासनाहस्ताई अतोमुहुर्ताममद्वि वर्ण, उक्तोसेभ्ये तर्तीसे एगरोक्तमाई पुच्छक्षेदीतिमात्रममद्विवाई । तिरिपनेवत्तिये वात्तमसु पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण अतोमुहुर्त उक्तोसेभ्ये तित्तित्त पठियोक्तमवर्ण पुच्छक्षेदीतिमात्रममद्विवाई, एवं मश्यात्तमस्तु वि । वक्ताठवत्सु अग्ना मेरेष्यात्तमर्त्त तित्तित्त ॥ ५४ ॥ तिरिपनेवत्सु वर्ण पुच्छ । गोक्तमा । जहौरेण एगरोक्तमवर्ण

स्सस्म दो मत्तभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया, उक्षोसेण वीस साग-  
रोवमकोडाकोडीओ, वीस वाससयाइ अवाहा। तिरियगइनामए जहा नपुगमवेयस्स।  
मणुयगडनामए पुच्छा। गो०। जहज्ञेण सागरोवमस्स दिवद्वृ सत्तभागा पलिओवमस्स  
असखेजइभागेण ऊणग, उक्षोसेण पण्णरग सागरोवमकोडाकोडीओ, पण्णरसवास-  
सयाइ अवाहा। देवगडनामए ण पुच्छा। गोयमा! जहज्ञेण मागरोवममहस्सस्त  
एग मत्तभाग पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणय, उक्षोसेण जहा पुरिमवेयस्स।  
एर्गिदियजाइनामए ण पुच्छा। गोयमा! जहज्ञेण सागरोवमस्स दोणिण सत्तभागा  
पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया, उक्षोसेण वीस मागरोवमकोडाकोडीओ,  
वीमड वाससयाइ अवाहा। वेडियजाइनामाए ण पुच्छा। गोयमा! जहज्ञेण  
सागरोवमस्स नव पण्तीसइभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया, उक्षोसेण  
अट्टारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अट्टारस य वाससयाइ अवाहा। तेडियजाइ-  
नामए ण जहणेण एव चेव, उक्षोसेण अट्टारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अट्टारस  
वाससयाइ अवाहा। चउरिदियजाइनामाए पुच्छा। गोयमा! जहज्ञेण सागरोवमस्स  
णव पण्तीमइभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया, उक्षोसेण अट्टारस  
सागरोवमकोडाकोडीओ, अट्टारस वाससयाइ अवाहा। पचिंदियजाइनामाए पुच्छा।  
गोयमा! जहज्ञेण सागरोवमस्स दोणिण सत्तभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण  
ऊणया, उक्षोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससयाइ अवाहा। ओरा-  
लियसरीरनामाए वि एव चेव। वेडव्वियसरीरनामाए ण भते! पुच्छा। गोयमा!  
जहज्ञेण सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया,  
उक्षोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, वीसइ वाससयाइ अवाहा। आहारगसरीर-  
नामाए जहज्ञेण अतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्षोसेण अतोसागरोवमकोडाकोडीओ।  
तेयाकम्मसरीरनामाए जहृणेण दोणिण सत्तभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण  
ऊणया, उक्षोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, वीस य वाससयाइ अवाहा।  
ओरालियवेउव्वियआहारगसरीरोवगनामाए तिणिण वि एव चेव, सरीरवधणनामाए वि  
पच्छ्व वि एव चेव, सरीरसधायनामाए पच्छ्व वि जहा सरीरनामाए कम्मस्स ठिइति,  
वहरोसभनारायसधयणनामाए जहा रझनामाए। उसभनारायसधयणनामाए पुच्छा।  
गोयमा! ज० सागरोवमस्स छ पण्तीसइभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया,  
उक्षोसेण वारस सागरोवमकोडाकोडीओ, वारस वाससयाइ अवाहा। नारायसध-  
यणनामस्स जहज्ञेण सागरोवमस्स सत्त पण्तीसइभागा पलिओवमस्स असखेजइ-  
भागेण ऊणया, उक्षोसेण चोहस सागरोवमकोडाकोडीओ चउहस वाससयाइ अवाहा।

अद्वारात्परं अप्यनामस्य उहोरेण सागरोषमस्तु अहु पर्यवीक्षणागा पक्षियोषमस्तु  
असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेष्व शोभ्यत्वा सागरोषमकोडाक्षेदीभो शोभम वस्तु-  
सम्याई अवाहा । चीक्षियासुरपयगे च पुच्छम । गोदमा । उहोरेण सागरोषमस्तु तत्  
पर्यवीक्षणागा पक्षियोषमस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेष्व अद्वारस शापरो-  
मम्भेदाक्षेदीभो अद्वारस वाससम्याई अवाहा । ऐश्वर्यसुरपद्मवासस्य पुच्छम । गोदमा ।  
उहोरेण सागरोषमस्तु शोष्यि सत्तमागा पक्षियोषमस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा  
उहोरेष्व वीर्य सागरोषमकोडाक्षेदीभो वीर्य च वाससम्याई अवाहा एवं तत्  
सुखप्रयत्नामाए उम्भायिका एवं संवाधा वि अम्भायिक्षमा । मुक्तिक्षम्यत्यामए पुच्छम ।  
गोदमा । उहोरेण सागरोषमस्तु एवं सत्तमागा पक्षियोषमस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा  
उहोरेष्व एवं सागरोषमकोडाक्षेदीभो इस वाससम्याई अवाहा । हार्षिक-  
वल्लभमाए च पुच्छम । गोदमा । उहोरेण सागरोषमस्तु तत् अद्वारीक्षणागा पक्षि-  
योषमस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेष्व अद्वारस शापरोषमम्भेदाक्षेदीभो अद्वा-  
रेस वाससम्याई अवाहा । मर्तिहित्यव्याप्तामाए च पुच्छम । गोदमा । उहोरेण साग-  
रोषमस्तु च अद्वारीक्षणागा पक्षियोषमस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेष्व  
पद्मरस सागरोषमम्भेदाक्षेदीभो पद्मरस वाससम्याई अवाहा । नीमन्मन्मनामाए  
पुच्छम । गोदमा । उहोरेण सागरोषमस्तु उहोरेण सत्त अद्वारीक्षणागा पक्षियोषमस्तु असु-  
रेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेण अद्वारस शापरोषमम्भेदाक्षेदीभो अद्वारस वस्तु-  
सम्याई अवाहा । असम्बल्पनामाए यहा ऐश्वर्यसद्वल्पनामस्य । मुक्तिक्षम्यत्यामए  
पुच्छम । गोदमा । अह तु क्षियाक्षणायामस्य तुम्भिर्गायिकामाए यहा ऐश्वर्यसद्वल्पन-  
रसाचं महुरांग यहा वल्पानं भविय त्वयै परिवाहीए भावियत्वं फासा चे  
अपसरसा तसि यहा ऐश्वर्यस चे फाल्पा तेविं यहा क्षियाक्षणायामस्य अद्वारस्य  
मामाए यहा ऐश्वर्यस एवं उपरामनामाए वि पराकावनामाए वि एवं चेत । निरवल्ल-  
पुच्छीनामाए पुच्छम । गोदमा । उहोरेण सागरोषमस्तु तत् सत्तमागा पक्षियोष-  
मस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेष्व वीर्य सागरोषमकोडाक्षेदीभो वीर्य वासस-  
म्याई अवाहा । तिरिक्षालुपुम्भीए पुच्छम । गोदमा । उहोरेण सागरोषमस्तु तत् सत्तमागा  
पक्षियोषमस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेण वीर्य सागरोषमकोडाक्षेदीभो  
वीर्य वाससम्याई अवाहा । मनुयक्षुपुम्भीकामाए च पुच्छम । गोदमा । उहोरेण  
सागरोषमस्तु दिवद्वृत्ति सत्तमागा पक्षियोषमस्तु असुरेष्वज्ञामागेऽप्यत्त्वा उहोरेण  
पद्मरस सागरोषमकोडाक्षेदीभो पद्मरस वाससम्याई अवाहा । ऐश्वर्यपुम्भीकामाए  
पुच्छम । गोदमा । उहोरेण सागरोषमस्तु एवं सत्तमागा पक्षियोषमस्तु अप्य-

खेजडभागेण ऊणय, उक्षोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस य वाससयाइं अवाहा। उसासनामाए पुच्छा। गोयमा! जहा तिरियाणुपुञ्चीए, आयवनामाए वि एव चेव। उज्जोयनामाए वि पसत्थविहायोगइनामाए वि पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण एं सागरोवमस्स सत्तभाग, उक्षोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाइं अवाहा। अपसत्थविहायोगइनामस्स पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण सागरोवमस्स देण्णिण सत्तभागा पल्लिओवमस्स असखेजडभागेण ऊणया, उक्षोसेण वीस सागरोवम-कोडाकोडीओ, वीस य वाससयाइं अवाहा। तसनामाए थावरनामाए य एव चेव। सुहुमनामाए पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण सागरोवमस्स णव पणतीसइभागा पल्लिओव-मस्स असखेजडभागेण ऊणया, उक्षोसेण अट्टारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अट्टारस य वाससयाइं अवाहा। वायरनामाए जहा अपसत्थविहायोगइनामस्स। एव पञ्जत्त-नामाए वि, अपञ्जत्तनामाए जहा सुहुमनामस्स। पत्तेयसरीरनामाए वि दो सत्तभागा, साहारणसरीरनामाए जहा सुहुमस्स, थिरनामाए एग सत्तभाग, अथिरनामाए दो, सुभनामाए एगो, असुभनामाए दो, सुभगनामाए एगो, दूभगनामाए दो, सूसरनामाए एगो, दूसरनामाए दो, आदिजनामाए एगो, अणादिजनामाए दो, जसोकित्तिनामाए जहन्नेण अट्ट मुहुत्ता, उक्षोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाइं अवाहा। अजसोकित्तिनामाए पुच्छा। गोयमा! जहा अपसत्थविहायोगइनामस्स, एव निम्मा-णनामाए वि। तित्थगरणामाए ण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण अतोसागरोवमकोडा-कोडीओ, उक्षोसेण वि अतोसागरोवमकोडाकोडीओ। एव जत्थ एगो सत्तभागो तत्थ उक्षोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दस वाससयाइं अवाहा, जत्थ दो सत्तभागा तत्थ उक्षोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ वीस य वाससयाइं अवाहा॥ ६२३॥ उच्चागोयस्स ण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण अट्ट मुहुत्ता, उक्षोसेण दस सागरोवम-कोडाकोडीओ, दस य वाससयाइं अवाहा। नीयागोत्तस्स पुच्छा। गोयमा! जहा अपसत्थविहायोगइनामस्स॥ ६२४॥ अतराइए ण पुच्छा। गोयमा! जहन्नेण अतोमुहुत्ता, उक्षोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिणिण य वाससहस्राइं अवाहा, अवाहृणिया कम्मष्टिईं कम्मनिसेगो॥ ६२५॥ एगिंदिया ण भते! जीवा णाणाव-रणिजस्स कम्मस्स किं वंधति? गोयमा! जहन्नेण सागरोवमस्स तिणिण सत्तभागा पल्लिओवमस्स असखेजडभागेण ऊणया, उक्षोसेण ते चेव पडिपुणे वंधति। एव निद्वापच्चगस्स वि, दसणचउक्षस्स वि। एगिंदिया णं भते!० सायावेयणिजस्स कम्मस्स किं वंधति? गोयमा! जहन्नेण सागरोवमस्स दिवद्वृ सत्तभाग पल्लिओवमस्स असखेजडभागेण ऊणया, उक्षोसेण त चेव पडिपुणे वंधति। असायावेयणिजस्स

जहा जागावरपिक्षस्य । एगिरिया न भेते । जीवा सम्मतदेवमिक्षस्य कि वंचति । गोमा ! जरिय छिपि वंचति । एगिरिया न भरु । जीवा मिक्षतदेवपिक्षस्य क्षमस्य कि वंचति । गोमा ! जहोपेण सागरोक्तम् पक्षिक्षोक्तमस्य असुक्षेक्षित्वामोर्त्वे उक्त उक्तोसेव तु चेत् पक्षिपुण्य वंचति । एगिरिया न भरु । जीवा सम्मामिक्षतदेवपिक्षस्य कि वंचति । गोमा ! जरिय छिपि वन्दन्ति । एगिरिया न भेते । जीवा क्षमापावारक्षमस्य कि वंचति । गोमा ! जहोपेण सागरोक्तमस्य विवरि सतामागे पक्षिक्षेक्षमस्य असुक्षेक्षित्वामोर्त्वे उक्त उक्तोसेव ते चेत् पक्षिपुण्य वंचति । एव जाव क्षेहसुक्षमापाए वि जाव ल्लेभसुक्षमापाए वि । इतिवेक्षस्य जहा सावाक्षयपिक्षस्य । एगिरिय पुरिस्वेष्यस्य क्षमस्य उक्तोपेण सागरोक्तमस्य एवं सतामागे पक्षिक्षेक्षमस्य असुक्षेक्षित्वामोर्त्वे उक्त उक्तोसेव त चेत् पक्षिपुण्य वंचति । एगिरिया नपुस्तगेवस्य क्षमस्य उक्तोपेण सागरोक्तमस्य दो सतामागे पक्षिक्षेक्षमस्य असुक्षेक्षित्वामोर्त्वे उक्त उक्तोसेव त चेत् पक्षिपुण्य वंचति । हातर्यए जहा पुरिष्वेष्यस्य अरामवसोम्युक्तुंभाए जहा नपुस्तगेवस्य । नेत्र्यात्यवेक्षत्वनिर अग्नामवक्षमह्नामवेड्मिवसरीनामनाहागासरीनामनेरायल्पुमिक्षामवेक्षत्पुमिक्षामवित्वगरनाम-एमापि जाव पमापि व वंचति । तिरिक्षव्येक्षित्वात्मस्य उक्तोपेण अतोमुक्तुत उक्तोसेव पुण्यक्षेपी सताहि शासवाहस्तेहि शासवाहस्तमापेव य अक्षिय वंचति । एवं खुस्ताठवस्य वि । तिरिगग्नामापाए जहा नपुस्तगेवस्य । मपुक्षग्नामापाए जहा सावाक्षयपिक्षस्य । एगिरियमापाए पक्षिरियजाहमापाए व जहा नपुस्तगेवस्य । नेत्रियत्वेऽदियजाहनमापाए पुण्यम । उक्तोपेण सागरोक्तमस्य व एव पक्षिक्षेक्षमस्य असुक्षेक्षित्वामोर्त्वे उक्त उक्तोसेव त चेत् पक्षिपुण्य वंचति । उक्तोपेण सागरोक्तमस्य व एव पक्षिक्षेक्षमस्य असुक्षेक्षित्वामोर्त्वे उक्त उक्तोसेव त चेत् पक्षिपुण्य वंचति । उक्त व उक्तोपेण एगो वा रेक्षहो वा सतामाप्ये उक्त उक्तोपेण त चेत् मापियव्य उक्तोपेण त चेत् पक्षिपुण्य वंचति । उसोक्षित्वात्मेवान्म अर्थेव उक्तोपेण सागरोक्तमस्य एवं सतामागे पक्षिक्षेक्षमस्य असुक्षेक्षित्वामोर्त्वे उक्त उक्तोसेव त चेत् पक्षिपुण्य वंचति । अंतरायस्य व भेते । पुण्यम । गोमा ! जहा पावा-वरपिक्षस्य जाव उक्तोपेण ते चेत् पक्षिपुण्य वंचति ॥ १२६ ॥ नेत्रिया व भेते । जीवा जावावरपिक्षस्य क्षमस्य कि वंचति । गोमा उक्तोपेण सागरोक्तमस्य वंचति ।

तिणि सत्तभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया, उक्कोसेण ते चेव पडिपुणे वधति, एवं निदापचगस्स वि । एवं जहा एर्गिदियाण भणियं तहा वेइदियाण वि भाणियब्ब, नवरं सागरोवमपणवीसाए सह भाणियब्बा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणा, सेस त चेव पडिपुणे वधति । जत्थ एर्गिदिया न वधति तत्थ एए वि न वधति । वेइदिया ण भते । जीवा मिच्छत्तवेयणिजस्स० किं वधति ? गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमपणवीस पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणय, उक्कोसेण तं चेव पडिपुणे वधति । तिरिक्खजोणियाउयस्म जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडिं चउहिं वासेहिं अहिय वधति । एवं मणुयाउयस्स वि, सेस जहा एर्गिदियाण जाव अतराइयस्स ॥६२७॥ तेइदिया ण भते । जीवा णाणावरणिजस्स० किं वधति ? गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमपणासाए तिणि सत्तभागा पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणया, उक्कोसेण ते चेव पडिपुणे वधति, एवं जस्स जइ भागा ते तस्स सागरोवमपणासाए सह भाणियब्बा । तेइदिया ण भते ।० मिच्छत्तवेयणिजस्स कम्मस्स किं वधति ? गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमपणास पलिओवमस्सासखेजइभागेण ऊणय, उक्कोसेण त चेव पडिपुणे वधति । तिरिक्खजोणियाउयस्स जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडिं सोलसेहिं राइदिएहिं राइदियतिभागेण य अहियं वधति, एवं मणुस्माउयस्स वि, सेस जहा वेइदियाण जाव अतराइयस्स ॥ ६२८ ॥ चउरिदिया ण भते । जीवा णाणावरणिजस्स० किं वधति ? गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमसयस्म तिणि सत्तभागे पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणए, उक्कोसेण ते चेव पडिपुणे वधति, एवं जस्स जइ भागा तस्स सागरोवमसएण सह भाणियब्बा । तिरिक्खजोणियाउयस्स कम्मस्स जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडिं दोहिं मासेहिं अहिय । एवं मणुस्माउयस्स वि, सेस जहा वेइदियाण, णवर मिच्छत्तवेयणिजस्स जहन्नेण सागरोवमसय पलिओवमस्स असखेजइभागेण ऊणय, उक्कोसेण त चेव पडिपुणे वधति, सेस जहा वेइदियाण जाव अतराइयस्स ॥ ६२९ ॥ असण्णी ण भते । जीवा पर्विदिया णाणावरणिजस्स० कम्मस्स किं वधति ? गोयमा ! जहन्नेण सागरोवमसहस्सस्स तिणि सत्तभागे पलिओवमस्सासखेजइभागेण ऊणए, उक्कोसेण ते चेव पडिपुणे वधति, एव सो चेव गमो जहा वेइदियाण, णवरं सागरोवमसहस्सेण समं भाणियब्ब जस्स जइ भागति । मिच्छत्तवेयणिजस्स जहन्नेण सागरोवमसहस्स पलिओवमस्सासखेजइभागेण ऊणयं, उक्कोसेण तं चेव पडिपुणे । नेरइयाउयस्स जहन्नेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेजइभाग पुव्वकोडितिभागव्वहिय वधति । एवं तिरिक्ख-

बोधिमाट्ठयस्य वि नवर बहुत्तेजं अंतोमुद्दुष्ट एवं मनुष्याठ्यस्य वि शशांकस्य  
बहा नराङ्गाठ्यस्य । असम्भी व भवेते । जीवा पैरिदिवा निरवग्यानामाए उम्मस्य  
कि बर्वति ॥ गोयमा । बहुत्तेजं सागरोषमसहस्रस्य दो घटमागे पठिमोषमस्य  
असहेज्ञमागेण उभए, उडोत्तेजं ते चेष पढिपुण्ये एवं तिरिक्षयान्त्रमाए वि ।  
मनुष्यग्रहमामाए वि एव चेष नवर बहुत्तेजं सागरोषमसहस्रस्य दिवद्वं सहमासे पठिं-  
ओषमस्यासेज्ञमागेण उभ्य उडोत्तेजं ते चेष पढिपुण्य वर्वति । एवं वेणान्त्र-  
माए वि नवर बहुत्तेजं सागरोषमसहस्रस्य एवं सत्तमागे पठिमोषमस्यासेज्ञमागेण  
मागेवं उभ्य उडोत्तेजं ते चेष पढिपुण्य वर्वति । येउचिमसुरीरनामाए पुण्य ।  
गोदमा । बहुत्तेजं सागरोषमसहस्रस्य दो घटमागे पठिमोषमस्यासेज्ञमागेण  
उभ्ये उडोत्तेजं दो पढिपुण्ये वर्वति । सम्मतासम्मामिद्गुणाभाग्नारम्भरीरनामाए  
तिलगरनामाए न विनिवि वि वर्वति । अपसिद्धं बहा वेददिवाप्य नवर वस्तु वर्विय  
मात्या तस्म ते सागरोषमसहस्रसेष सह मामिकम्भा सम्बेदि आल्पुष्यीए जाय नट-  
राइपस्य ॥ १३ ॥ प सज्जी व भवेते । जीवा पैरिदिवा गायावरपिज्ञस्य कम्मस्य कि  
वर्वति ॥ गोदमा । बहुत्तेजं अंतोमुद्दुष्ट उडोत्तेजं तीसं सागरोषमसोडाकोटीये  
तिरियं बाससहस्राई अवाहा । सज्जी व भवेते । पैरिदिवा विहापक्षगास्य कि वर्वति ॥  
गोदमा । बहुत्तेजं अंतोसागरोषमसोडाकोटीयो उडोत्तेजं तीसं सागरोषमसोडाकोटीयो  
तिरियं व बाससहस्राई अवाहा । दंसपत्तवद्वस्य बहा वायावरपिज्ञस्य ।  
घायावेयपिज्ञस्य बहा ओहिया ठिरे भविया तहेव मामिकम्भा इरिवापहिवर्वने  
पुण्यं सप्तराष्यवैष्यं च । अघायावेयपिज्ञस्य बहा विहापक्षगास्य । सम्मतोषेवपि-  
ज्ञस्म सम्मामिद्गुणाभ्यपिज्ञस्य जा ओहिया ठिरे भविया तं वर्वति । मिळ्ठतोषेवपि  
ज्ञस्य बहुत्तेजं अंतोसागरोषमसोडाकोटीयो उडोत्तेजं सत्तरि सागरोषमसोडाकोटीयो  
सत्तरि व बाससहस्राई अवाहा । कसाववारस्यस्य बहुत्तेजं एवं चेष उडोत्तेजं वर्वा  
चीसं सागरोषमसोडाकोटीयो चतुर्वीसं य बाससुशर्वं अवाहा । कोहुमामायाहोष-  
सम्बल्णाए व दो मासा मास्ये नवमासो अंतोमुद्दुष्टे एवं बहुत्तेजं उडोत्तेजं पुण्य  
बहा कसाववारस्यस्य । बहुत्तेजं वि आडयाप्य जा ओहिया ठिरे भविया तं वर्वति ।  
आहुरप्मुरीरस्य तिलगरनामाए य बहुत्तेजं अंतोसाप्यतोषमसोडाकोटीयो उडो-  
त्तेजं अंतोसागरोषमसोडाकोटीयो । पुरियावेयपिज्ञस्य बहुत्तेजं अहु सहस्ररद्धं उडो-  
त्तेजं दसं सागरोषमसोडाकोटीयो एस य बाससुशर्वं अवाहा । कमोऽपित्तिमाए  
ठवायेतास्य एवं पव नवर बहुत्तेजं अहु मुद्दाता । भरारप्तवस्य बहा वायावरपि-  
ज्ञस्य सेमस्यु उम्बेतु ठमेतु सप्तमेतु चौथावेष्य वत्तेषु यवेतु व बहुत्तेजं अंतोसा-

गरोवमनोटाकोहीओ, उष्णोसेण जा जस्त ओहिया ठिई भणिया तं वंधति, पवर  
इम णाणत्त-अवाहा अवाहूणिया ण वुचड । एवं आणुपूव्वीए भवेषिं जाव अतराइथस्य  
ताव भाणियब्ब ॥ ६३१ ॥ णाणावरणिजस्न ण भते ! कम्मस्स जहण्णठिईवंधए  
के ? गोयमा ! अण्णयरे सुहुमसपराए उवसामए वा खवगए वा, एस ण गोयमा !  
णाणावरणिजस्स कम्मस्स जहण्णठिईवंधए, तव्वडरिते अजहण्णे, एवं एएण अभिला-  
वेण मोहाउयवज्ञाण सेसकम्माण भाणियब्ब । मोहणिजस्स ण भते ! कम्मस्स जह-  
ण्णठिईवंधए के ? गोयमा ! अन्नयरे वायरसपराए उवसामए वा खवए वा, एस ण  
गोयमा ! मोहणिजस्स कम्मस्स जहण्णठिईवंधए, तव्वडरिते अजहण्णे । आउयस्स  
ण भते ! कम्मस्स जहण्णठिईवंधए के ? गोयमा ! जे ण जीवे असरेप्पदापविट्टे,  
सव्वनिरुद्धे से आउए, सेमे नव्वमहंतीए आउयवद्वाए, तीसे ण आउयवधद्वाए  
चरिमकालसमयंति सव्वजहण्णय ठिईं पज्ञापञ्जत्तिय निव्वत्तेड, एस ण गोयमा !  
आउयकम्मस्स जहण्णठिईवंधए, तव्वडरिते अजहण्णे ॥ ६३२ ॥ उष्णोसकालट्टिड्य  
ण भते ! णाणावरणिज ० किं नेरडओ वधइ, तिरिक्खजोणिओ वधइ, तिरिक्खजो-  
णिणी वधइ, मणुस्सो वधइ, मणुस्सिणी वधइ, देवो वधइ, देवी वधइ ? गोयमा !  
नेरडओ वि वधइ जाव देवी वि वधइ । केरिसए ण भते ! नेरडए उष्णोसकालट्टिड्य  
णाणावरणिज कम्म वधइ ? गोयमा ! सण्णी पंचिदिए सव्वाहिं पज्ञीहिं  
पज्ञते सागरे जागरे सुत्तो(ओ)वउत्ते मिच्छादिट्टी कण्हलेसे य उष्णोससकिलिट्टपरि-  
णामे ईसिमज्जिमपरिणामे वा, एरिसए ण गोयमा ! नेरडए उष्णोसकालट्टिड्य णाणा-  
वरणिज कम्म वधइ । केरिसए ण भते ! तिरिक्खजोणिए उष्णोसकालट्टिड्य णाणा-  
वरणिज कम्म वधइ ? गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमगपलिभागी वा सण्णी  
पंचिदिए सव्वाहिं पज्ञत्तए सेस त चेव जहा नेरडए, एवं आउयवज्ञाण सत्तण्ह  
कम्माण । उष्णोसकालट्टिड्य ण भते ! आउयं कम्म किं नेरडओ वधइ जाव देवी  
वधइ ? गोयमा ! नो नेरडओ वधइ, तिरिक्खजोणिओ वधइ, नो तिरिक्खजोणिणी  
वधइ, मणुस्से वि वधइ, मणुस्सी वि वधइ, नो देवो वधइ, नो देवी वधइ । केरिसए  
ण भते ! तिरिक्खजोणिए उष्णोसकालट्टिड्य आउय कम्म वधइ ? गोयमा ! कम्मभूमए  
वा कम्मभूमगपलिभागी वा सण्णी पंचिदिए सव्वाहिं पज्ञत्तीहिं पज्ञत्तए सागरे  
जागरे सुत्तोवउत्ते मिच्छादिट्टी परमकण्हलेसे उष्णोससकिलिट्टपरिणामे, एरिसए ण  
गोयमा ! तिरिक्खजोणिए उष्णोसकालट्टिड्य आउय कम्म वधइ । केरिसए ण भते !  
मणूस्से उष्णोसकालट्टिड्य आउय कम्म वधइ ? गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमग-

पक्षिमार्गी वा जाव मुचो(तो)वडें सम्मरिद्धी वा मिथ्याद्विंशी वा क्षम्भुमे वा सुरभेदे  
वा जापी वा अस्त्राणी वा उडोसुर्दिलिङ्गपरिज्ञामे वा असंक्षिलिङ्गपरिज्ञाम वा तप्पा-  
उग्गविमुज्जमास्परिज्ञाम वा एरिचुप घं गोयमा । मद्भूमि उडोसुर्दिलिङ्गर्य आउर्य  
क्षम्भे बन्नह । केरिचिया घं भंत । मगुस्सी उडोयग्गल्हट्टिर्य आउर्य क्षम्भ बन्नह ?  
गोयमा । क्षम्भमूसिना वा क्षम्भमूग्गपक्षिमार्गी वा जाव मुत्तोवडता सम्मरिद्धी सुरभेदा  
तप्पारम्भविमुज्जमास्परिज्ञामा एरिचिया जं गोकमा । मद्भूमि उडोसुर्दिलिङ्गर्य  
आउर्य क्षम्भे बन्नह, औत्तराइर्य जहा आजाहरमिज ॥ १३३ ॥ भीमो उडेसो  
समर्थो ॥ पञ्चवप्पाए भगवर्हए लेखीसाईमै क्षम्भपग्गडीपर्य समर्थ ॥

कह वं भर्ते । कम्मफाईओ कम्मताओ । गोवमा । अदु कम्मफाईओ कम्मताओ । टंजहा-जाणावरमिज जाव लंतरावये । एवं नेरेयार्ण जाव फैमाक्षियार्ण । जीवे वं भर्ते । जाणावरमिज कम्म बन्धमाने कह कम्मफाईओ कम्मद । गोवमा । सतामिहृष्टप्रथ वा अदुमिहृष्टप्रथ वा उमिहृष्टप्रथ वा । नेराए वं भर्ते । जाणावरमिज कम्म बन्धमाने कह कम्मफाईओ कम्मद । गोवमा । सतामिहृष्टप्रथ वा अदुमिहृष्टप्रथ वा एव जाव फैमाक्षिय, अटर मकुसे ज्ञा जीवे । जीवा वं भर्ते । पाणावरमिज कम्म बन्धमाना कह कम्मफाईओ बन्धनित । गोवमा । सभ्ये मि ताव होआ सतामिहृष्टप्रथगा य अदुमिहृष्टप्रथगा य भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व उमिहृष्टप्रथगा य । गोवमा वं भर्ते । जाणावरमिज कम्म बन्धमाना कह कम्मपगाईओ बन्धनित । गोवमा । सभ्ये मि ताव होआ सतामिहृष्टप्रथगा भहवा सतामिहृष्टप्रथगा ज अदुमिहृष्टप्रथगे य भहवा सतामिहृष्टप्रथगा ज अदुमिहृष्टप्रथगा य उमिहृष्टप्रथगा एव जाव वर्पियडुमारा । पुरविकाह्या वं पुच्छा । गोवमा । सतामिहृष्टप्रथगा मि अदुमिहृष्टप्रथगा मि एवं जाव वन्ससइकाइया । विपङ्गार्ण पविहिवटिरिक्ष-ओमियार्ण दिमेगो-सब्द मि ताव होआ सतामिहृष्टप्रथगा भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य भहवा सतामिहृष्टप्रथगा य अदुमिहृष्टप्रथगा य । महसा वं भर्ते । जाणावरमिजस्स पुच्छा । गोवमा । सभ्ये मि ताव होआ सतामिहृष्टप्रथगा । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य २ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगा य ३ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व उमिहृष्टप्रथए य ४ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य ५ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य उमिहृष्टप्रथगा य ६ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य उमिहृष्टप्रथगा य ७ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य ८ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य ९ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य १० । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य ११ । भहवा सतामिहृष्टप्रथगा व अदुमिहृष्टप्रथगे य १२ ।

अट्टविहवन्धगा य छच्चिवहवन्धगा य १, एव एए नव भंगा । सेसा चाणमतराडया जाव वेमाणिया जहा नेरडया मत्तविहाउवन्धगा भणिया तहा भाणियव्वा । एव जहा णाणावरण वन्धमाणा जहिं भणिया दंसणावरण पि वन्धमाणा तहिं जीवाडया एगत्पोहत्तएहिं भाणियव्वा ॥ ६३४ ॥ वेयणिज० वधमाणे जीवे कड कम्मपगढीओ वन्धइ ? गोयमा । सत्तविहवन्धए वा अट्टविहवन्धए वा छच्चिवहवन्धगा वा एगविहवन्धए वा, एव मणूसे वि । सेसा नारगाडया सत्तविहवन्धगा वा अट्टविहवन्धगा वा जाव वेमाणिए । जीवा ण भते ! वेयणिज कम्म पुच्छा । गोयमा । सब्बे वि ताव होजा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य छच्चिवहवन्धए य, अहवा मत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य छच्चिवहवन्धगा य, अवसेसा नारगाडया जाव वेमाणिया जाओ णाणावरण वधमाणा वधन्ति ताहिं भाणियव्वा । नवर मणूसा ण भते ! वेयणिज कम्म वन्धमाणा कड कम्मपगढीओ वधति ? गोयमा । सब्बे वि ताव होजा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य १, अहवा मत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगे य २, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य ३, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य छच्चिवहवन्धगे य ४, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धए य छच्चिवहवन्धए य ५, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य छच्चिवहवन्धगे य ६, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगे य छच्चिवहवन्धगा य ७, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य छच्चिवहवन्धगे य ८, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य छच्चिवहवन्धगा य ९, एव एए नव भगा भाणियव्वा ॥ ६३५ ॥ मोहणिज० वन्धमाणे जीवे कड कम्मपगढीओ वन्धइ ? गोयमा । जीवेगिंदियवज्जो तियभगो । जीवेगिंदिया सत्तविहवन्धगा वि अट्टविहवन्धगा वि । जीवे ण भते ! आउय कम्म वन्धमाणे कड कम्मपगढीओ वन्धइ ? गोयमा । नियमा अट्ट, एव नेरइए जाव वेमाणिए, एव पुहुत्तेण वि । णामगोयतराडय० वन्धमाणे जीवे कड कम्मपगढीओ वन्धइ ? गोयमा । जाओ णाणावरणिज कम्म वन्धमाणे वन्धइ ताहिं भाणियव्वो, एव नेरइए वि जाव वेमाणिए, एव पुहुत्तेण वि भाणियव्व ॥ ६३६ ॥ पन्नवणाए भगवईए चउवीसइमं कम्मवन्धपयं समत्तं ॥

कड ण भते ! कम्मपगढीओ पन्ताओ ? गोयमा ! अट्ट कम्मपगढीओ पन्ताओ । तजहा—णाणावरणिज जाव अतराडय, एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण । जोवे ण भते ! णाणावरणिज कम्म वन्धमाणे कड कम्मपगढीओ वैएइ ? गोयमा । नियमा

मदु कम्पणादीओ बेहरे । एवं नेत्रए जाव बेमालिए, एवं पुकुरोंप रि । एवं ऐयमित्तव्यं जाव अंतराहर्य । जीवे वं भर्ते । ऐयमित्तव्यं कम्पं बन्धमाये कह कम्प-पर्यादीओ बरेह । गोवमा । सतमिहृषेषए वा भद्रमिहृषेषए वा अठमिहृषेषए वा एवं मधुसे रि । सेषा नेरूयाहै एगरेवं पुकुरोंप रि निदमा अदु कम्पणादीओ बेवलि जाव बेमालिया । जीवा वं भर्ते । ऐयमित्तव्यं कम्पं बन्धमाया कह कम्प-फल्दीओ बेहेलि । गोवमा । सम्ये रि ताव होजा अदुमिहृषेषगा य अठमिहृषेषगा व १ अहरा अदुमिहृषेषगा य अठमिहृषेषगा य सतमिहृषेषगे व २ अहरा अदुमिहृषेषगा य अठमिहृषेषगा य सतमिहृषेषगा व ३ एवं मधुसा रि माविकमा ०६६५० एवं पञ्चपणाप भवावहृषए कम्पमेयणामं पणाथीमहृमं पर्यं समर्त ॥

कह वं भर्ते । कम्पणादीओ फलताल्ले १ गेपमा । अदु कम्पफल्दीओ फलताल्ले । सम्या—जावावरमित्त जाव अंतराहर्य । एवं नेत्रम्याप जाव बेमालिनार्व । जीवे वं भर्ते । जावावरमित्त उम्पं बेयमाल कह कम्पणादीओ बरभरे । गोवमा । सतमिहृषेषगए वा भद्रमिहृषेषए वा छमिहृषेषए वा एमिहृषेषए वा । नेत्रए वं भर्ते । जावावरमित्त उम्पं बेयमाले कह कम्पफल्दीओ बन्धर । गोवमा । सतमिहृषेषए वा भद्रमिहृषेषए वा एमिहृषेषए वा । एवं जाव बेमालिए, एवं मधुसे ज्वा जीवे । जीवा वं भर्ते । जावावरमित्त उम्पं घटमाला कह कम्पणादीओ बन्धनि । गोवमा । सम्ये रि ताव होजा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा व १ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य २ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ३ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ४ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ५ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ६ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ७ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ८ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ९ एवं एर मध भंगा । अवसेसावे एमिरिदमकूसमजार्व तिकमोरो जाव बेमालियावे । एमिरिदा वं सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य । मधुसार्व पुर्णम । गोवमा । सम्ये रि ताव होज सतमिहृषेषगा । अहरा सतमिहृषेषगा व अदुमिहृषेषग्यगे व १ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य २ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ३ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य ४ एवं एमिहृषेषए रि सम्य वो भंगा ५ एमिहृषेषए रि सम्य दो भंगा ६-७ अहरा सतमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा य अदुमिहृषेषगा व एमिहृषेषए रि सम्य

हवन्धए य चउभगो १, अहवा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धए य एगविहवन्धगे य चउभगो २, अहवा सत्तविहवन्धगा य छव्विहवन्धए य एगविहवन्धए य चउभंगो ३, अहवा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धए य छव्विहवन्धए य एगविहवन्धए य भगा अट्ट, एव एए सत्तावीस भगा । एव जहा णाणावरणिज तहा दसणावरणिज पि अतराइय पि ॥ ६३८ ॥ जीवे ण भते । वेयणिज कम्म वेएमाणे कइ कम्मपगडीओ वन्धड ? गोयमा । सत्तविहवधए वा छव्विहवन्धए वा एगविहवन्धए वा अवधए वा, एव मण्सूसे वि । अवसेसा णारयाइया सत्तविहवन्धगा अट्टविहवन्धगा य, एव जाव वेमाणिया । जीवा ण भते । वेयणिज कम्म वेएमाणा कइ कम्मपगडीओ वन्धन्ति ? गोयमा । सब्बे वि ताव होजा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य १, अहवा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य छव्विहवन्धगे य २, अहवा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य छव्विहवन्धगा य ३, अवधगेण वि मम दो भगा भाणियब्बा ५, अहवा सत्तविहवन्धगा य अट्टविहवन्धगा य एगविहवन्धगा य छव्विहवन्धगे य अवधगे य चउभंगो, एव एए नव भगा । एर्गिदियाण अभगय नारगाईण तियभगा जाव वेमाणियाण । नवर मण्साण पुच्छा । सब्बे वि ताव होजा सत्तविहवधगा य एगविहवन्धगा य, अहवा सत्तविहवन्धगा य एगविहवंवगा य छव्विहवधए य अट्टविहवधए य अवधए य, एव एए सत्तावीस भगा भाणियब्बा, एव जहा वेयणिज तहा आउय नाम गोय च भाणियब्ब । मोहणिज वेएमाणे जहा णाणावरणिज तहा भाणियब्ब ॥ ६३९ ॥ पञ्चव्याए भगवर्द्धिप छब्बीसहूमं कम्मवेयवन्धपरं समत्तं ॥

कइ ण भते । कम्मपगडीओ पञ्चताओ ? गोयमा ! अट्ट कम्मपगडीओ पञ्चताओ । तजहा—णाणावरण जाव अतराइय, एव नेरडयाण जाव वेमाणियाण । जीवे ण भते । णाणावरणिज कम्म वेएमाणे कइ कम्मपगडीओ वेएइ ? गोयमा । सत्तविहवेयए वा अट्टविहवेयए वा, एव मण्सूसे वि । अवसेसा एगत्तेण वि पुहुत्तेण वि णियमा अट्ट कम्मपगडीओ वेदेति जाव वेमाणिया । जीवा ण भते । णाणावरणिज० वेएमाणा कइ कम्मपगडीओ वेएति ? गोयमा । सब्बे वि ताव होजा अट्टविहवेयगा १, अहवा अट्टविहवेयगा य सत्तविहवेयगे य २, अहवा अट्टविहवेयगा य सत्तविहवेयगा य ३, एव मण्सा वि । दरिसणावरणिज अतराइय च एवं चेव भाणियब्ब । वेयणिज आउयनामगोत्ताइ वेएमाणे कइ कम्मपगडीओ वेएइ ? गोयमा । जहा वधवेयगस्स वेयणिज तहा भाणियब्बाणि । जीवे ण भते । मोहणिज कम्म वेएमाणे कइ कम्मपगडीओ वेएइ ? गोयमा । णियमा अट्ट कम्मपगडीओ वेएइ, एव नेरडए जाव

वेमालिए पृष्ठ पुक्तोप वि ॥ १४ ॥ पश्चवप्याय भगवद्वैय सच्चादीचार्य  
कल्पमवेयवेयपर्यं समर्थं ॥

सचिताहार्दी भेदह कि वाचि सम्बो वेद । अभार्यं सम्बो चक्षु परिषमे अ  
बोद्धमे ॥ १ ॥ पुर्णिदिक्षसरीराई भोमाहारो वाहूष मणममसी । एएसि द्व फ्रार्व विस्म-  
दणा होइ असम्भा ॥ २ ॥ नेरह्मा वं भर्ते । कि सचिताहारा भविताहारा भीसा-  
हारा । गोममा । नो सचिताहारा अविताहारा नो भीसाहारा एवं अद्युखमरा  
वाच वेमालिमा । अरेत्विक्षसरीरा वाच मृक्षा सचिताहारा वि भविताहारा वि  
भीसाहारा वि । नरह्मा वं भर्ते । भाहार्दी । हन्ता । आहार्दी । नेरह्मा वं भर्ते ।  
भेदहालस्त्वा भाहार्दे समुप्पवद ॥ गोममा । नेरह्मावं दुर्विदे भाहारे पवरे ।  
तंवहा-आमोगविश्वतिए व अमामोगविश्वतिए व । तत्प वं वे से अपामोगविश्व-  
तिए से व अकुसममविरहिए भाहार्दे समुप्पवद । तत्प वं वे से आमोगविश्व-  
तिए से वं वस्तिव्वसमाहए भतोमुकुर्तिए भाहार्दे समुप्पवद ॥ १४१ ॥ नेरह्मा  
वं भर्ते । भिमाहारमाहारेति ॥ गोममा । दम्भमो अर्जतपएरिवाह, भेदमो अस्तेव-  
पएसोगवार्य, अस्ममो अन्तवर्तिवार्य, मावमो अन्तमतार्य अंकमतार्य रसमतदे  
फासमताह । जाहं भर्ते । मावमो वणमंसाह भाहारेति ताह कि एगवणाह भाहारेति  
वाच एवक्षमाह भाहारेति ॥ गोममा । ठाणममगवं पुक्ष एगवणाह वि भाहारेति  
वाच एवक्षमाह वि भाहारेति ॥ गोममा । ठाणममगवं पुक्ष एगवणाह वि भाहारेति  
वाच एवक्षमाह वि भाहारेति ॥ गोममा । चर्वं वम्भमो काम्भलव भाहारेति ताह कि एव  
पुम्भममाह भाहारेति वाच एगवणवाहाह भाहारेति संक्षिगुणवम्भमाह, अर्ज-  
विश्वलुगकाम्भ, अर्जत्वामवाह भाहारेति ॥ गोममा । एगवुलवाहाह वि भाहारेति  
वाच अर्जत्वामवाह वि भाहारेति एवं वाच तुकिक्षावं वि एवं वाचमे वि  
रसमो वि । जाहं भावमो फ्रम्भमेवाह भाहारेति ताहं नो एमावसाह भाहारेति वे  
दुद्वाहाह भाहारेति नो तिराउहाह भाहारेति वरप्रवाहाह वि भाहारेति वाच वह  
च्छावाह वि भाहारेति विहामममाहं पुक्ष अन्तवाह वि भाहारेति वाच कुम्पाह ।  
जाहं च्छावाह अन्तवाह भाहारेति ताह कि एगवुक्षमममाह भाहारेति वाच  
अर्जत्वामवाह भाहारेति ॥ गोममा । एगवुक्षमममाह वि भाहारेति वाच  
अर्जत्वामवाह भाहारेति ॥ गोममा । एगवुक्षमममाह वि भाहारेति वाच  
अर्जत्वामवाह भाहारेति ॥ गोममा । एगवुक्षमममाह वि भाहारेति वाच  
पुद्वाह भाहारेति अपुद्वाह भाहारेति ॥ गोममा । पुद्वाह भाहारेति नो अपुद्वाह  
भाहारेति वाच भाषुदेश वाच विदमा छरिति भाहारेति भेदम्भ वाच

पहुच वणओ कालनीलाइं, गधओ दुष्मगधाइं, रसओ तितकह्याइ, फासओ कक्खडगुस्यसीयलुक्खाइ, तेसि पोराणे वणगुणे गधगुणे रसगुणे फासगुणे विपरिणामइत्ता परिपीलह्ता परिसाडह्ता परिविद्वंसइत्ता अणे अपुब्बे वणगुणे गधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरखेतोगाढे पोगगले सब्बप्पणयाए आहार आहारेन्ति । नेरइया ण भते । सब्बओ आहारेन्ति, सब्बओ परिणामेंति, सब्बओ ऊससति, सब्बओ नीससति, अभिक्खण आहारेन्ति अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खण ऊससति, अभिक्खण नीससति, आहच आहारेन्ति, आहच परिणामेंति, आहच ऊससति, आहच नीससति ? हता गोयमा ! नेरइया सब्बओ आहारेन्ति एवं त चेव जाव आहच नीससति ॥ ६४२ ॥ नेरइया ण भते ! जे पोगगले आहारत्ताए गिण्हति ते ण तेसि पोगगलाण सेयालसि कळभाग आहारेन्ति, कळभाग आसाएति ? गोयमा ! असखेजइभाग आहारेन्ति, अणतभाग अस्साएति । नेरइया ण भते ! जे पोगगले आहारत्ताए गिण्हति ते कि सब्बे आहारेन्ति, नो सब्बे आहारेति ? गोयमा ! ते सब्बे अपरिसेसए आहारेन्ति । नेरइया ण भते ! जे पोगगला आहारत्ताए गिण्हति ते ण पोगगला तेसि कीसत्ताए भुजो भुजो परिणमति ? गोयमा ! सोइदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए अणिठत्ताए अकतत्ताए अपियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अ(ण)भिजियत्ताए अहत्ताए नो उच्छत्ताए दुक्खत्ताए नो सुहत्ताए तेसि भुजो भुजो परिणमति ॥ ६४३ ॥ असुरकुमारा ण भंते ! आहारट्टी ? हता ! आहारट्टी । एव जहा नेरइयाण तहा असुरकुमाराण वि भाणियब्ब जाव तेसि भुजो भुजो परिणमति । तथ्य ण जे से आभोगनिवत्तिए से ण जहणेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण साइरेगवाससहस्रस्स आहारट्टे समुप्पज्जइ । ओसण्ण कारण पहुच वणओ हालिद्सुकिलाइ, गधओ सुष्मगधाइ, रसओ अविलमहुराइ, फासओ मउयलह्य-निहुण्हाइ, तेसि पोराणे वणगुणे जाव फासिंदियत्ताए जाव मणामत्ताए इच्छियत्ताए भिजियत्ताए उच्छत्ताए नो अहत्ताए सुहत्ताए नो दुहत्ताए तेसि भुजो भुजो परिणमति, सेस जहा नेरइयाण, एव जाव यणियकुमाराण, नवर आभोगनिवत्तिए उक्कोसेण दिवसपुहत्तस्स आहारट्टे समुप्पज्जइ ॥ ६४४ ॥ पुढिविकाड्या ण भते ! आहारट्टी ? हता ! आहारट्टी । पुढिविकाड्या ण भते ! केवडकालस्स आहारट्टे समुप्पज्जड ? गोयमा ! अणुसमयमविरहिए आहारट्टे समुप्पज्जइ । पुढिविकाड्या ण भंते ! किमाहारमाहारेन्ति ? एव जहा नेरइयाण जाव ताड कळदिसिं आहारेन्ति ? गोयमा ! निव्वाघाएण छदिसिं, वाघाय पहुच सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय

पैदानि नवर योग्यतावार्थ न मरमद । वर्णज्ञे कल्पनीलस्मेहियहातियुक्तिर्थं, गीथज्ञे सुभिंगाम्युभिर्यथां, रसज्ञे वित्तरसक्षुयरसक्षुवादरमभिलिङ्गमुण्डं, पासमो ऋक्षुद्वापास्यमउमगुरुमस्युष्मीमरश्चिद्गुरुक्षयां, तेऽसि खेराणे पञ्चाणे ऐस जगा नेत्रस्यार्थ जाव आहृष्ट नीपसंति । पुडिकाशया वं भेतु । जे योग्यज्ञे आहारताए गिर्वाणि तेऽसि भेतु । योग्यसार्थ उपासनंसि छळमार्गं आहारेन्ति छळमार्गं आसार्थति । गोवमा । असेहेवामार्गं आहारेन्ति अर्जुनमार्गं आसार्थति । पुडिकाशया वं भेतु । जे योग्यज्ञे आहारताए गिर्वाणि ते हि सर्व आहारेन्ति नो सम्बो आहारेन्ति । बहेव नेत्रस्या तहेव । पुडिकाशया वं भेतु । जे योग्यज्ञे आहारताए गिर्वाणि ते वं पुग्मना तेऽसि वीसायाए भुज्ये भुज्ये परिष्पर्ति । गोवमा । वासिंधिमेवामायाए तेऽसि भुज्ये भुज्ये परिष्पर्ति एवं जाव वक्षस्याहारया ॥ १४८ ॥ वेईदिया वं भेतु । आहारदी । इन्त्या । आहारदी । वेईदिया वं भेतु । नेत्रस्याप्तस्य आहारद्वे समुप्पवद । जहा वेईदियां नवर उत्त वं जे से अपार्यनिवालिए से वं असंक्षिप्तसमदृष्ट अंतोमुकुदिए वेमायाए आहारद्वे समुप्पवा, सुसं जहा पुडिकाशयाम जाव आहृष्ट नीसायति नवर नियमा कृतीति । वेईदियावं भेतु । जे योग्यज्ञे आहारताए गिर्वाणि ते वं तेऽसि पुग्मार्गं सेयास्त्वयि वं मार्गं आहारेन्ति छळगाम आसार्थति । एवं जहा नेत्रस्याम । वेईदिया वं भेतु । जे योग्यज्ञा आहारताए गिर्वाणि ते हि सम्बो आहारेन्ति वो सर्व आहारेन्ति । गोवमा । वेईदियावं दुष्टिं आहारे फलते । तव्या—स्मेमाहारे व पक्षेवाहारे व जे योग्यज्ञे स्मेमाहारताए गिर्वाणि ते सम्बो अपरिसेवे आहारेन्ति जे योग्यज्ञे पक्षेवाहारताए गेष्ठाणि तेऽसिमसेवेवामायमाहारेन्ति अपेगार्द वं वं मागस्यास्त्वयि अफासाइज्जमाणार्द अपासाइज्जमाणार्द गिर्वासमारुद्धति । एएति वं भेतु । योग्य समर्थं अपासाइज्जमायाम अपासाइज्जमायाम व क्षरे क्षयरेत्तो अप्या वा ॥ १ ॥ गोवमा । सब्बत्योवा योग्यज्ञा अपासाइज्जमाया अफासाइज्जमाया अर्द्धद्युमा । वेईदिया वं भेतु । जे योग्यज्ञा आहारताए-पुच्छा । योग्यमा । गिर्वाणिरिवतासिरिव-वेमायाताए तेऽसि भुज्ये भुज्ये परिष्पर्ति । एवं जाव कर्त्तरिदिवा पक्षर योग्यवं वं वं भागसाहस्रवं अपावाइज्जमाणार्द अपासाइज्जमाणार्द अप्ससायज्जमाणार्द गिर्वाणि-यन्त्राति । एएति वं भेतु । योग्यज्ञवं अपावाइज्जमाणार्द अपासाइज्जमाणार्द अप्ससायज्जमाणार्द गिर्वाणि-यन्त्राति । योग्यमा । सब्बत्योवा योग्यस्य अपावाइज्जमाणार्द अपासाइज्जमाणार्द अप्ससायज्जमाणार्द ॥ १४९ ॥ तेऽरिया वं भेतु । जे योग्यज्ञ-पुच्छा । योग्यमा । ते वं योग्यज्ञा जार्मिरिवतिर्थि-

दियफासिदियवेमायत्ताए तेसि भुजो भुजो परिणमति । चउरिंदियाण चक्किंखदिय-  
घाणिंदियजिव्बिभदियफासिदियवेमायत्ताए तेसि भुजो भुजो परिणमति, सेस जहा  
तेइंदियाण । पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेइंदियाण, णवर तत्थ ण जे से  
आभोगनिव्वत्तिए से जहणेण अतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण छट्टभत्तस्स आहारड्डे समुप्प-  
जइ । पचिंदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! जे पोगला आहारत्ताए-पुच्छा । गोयमा !  
सोइंदियचक्किंखदियघाणिंदियजिव्बिभदियफासिदियवेमायत्ताए तेसि भुजो भुजो परि-  
णमति । मण्सा एव चेव, नवर आभोगनिव्वत्तिए जहञ्चेण अतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण  
अट्टुभत्तस्स आहारड्डे समुप्पजइ । वाणमतरा जहा नागकुमारा, एव जोडसिया वि,  
नवर आभोगनिव्वत्तिए जहञ्चेण दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स आहारड्डे  
समुप्पजइ, एवं वेमाणिया वि, नवर आभोगनिव्वत्तिए जहञ्चेण दिवसपुहुत्तस्स, उक्को-  
सेण तेचीसाए वाससहस्राणं आहारड्डे समुप्पजइ, सेस जहा असुरकुमाराणं जाव तेसि  
भुजो भुजो परिणमति । सोहम्मे आभोगनिव्वत्तिए जहञ्चेण दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं  
दोण्ह वाससहस्राण आहारड्डे समुप्पजइ । ईसाणे पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण दिवस-  
पुहुत्तस्स साइरेगस्स, उक्कोसेणं साइरेग दोण्ह वाससहस्राण । सणकुमाराण पुच्छा ।  
गोयमा ! जहञ्चेणं दोण्ह वाससहस्राण, उक्कोसेण सत्तण्ह वाससहस्राण । माहिंदे  
पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण दोण्ह वाससहस्राण साइरेगाणं, उक्कोसेण सत्तण्ह  
वाससहस्राण साइरेगाण । वभलोए पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण सत्तण्ह वाससह-  
स्राण, उक्कोसेण दसण्ह वाससहस्राण । लतए ण पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण दसण्हं  
वाससहस्राण, उक्कोसेण चउदसण्ह वाससहस्राण । महासुक्के ण पुच्छा । गोयमा !  
जहञ्चेण चउदसण्ह वाससहस्राण, उक्कोसेण सत्तरसण्ह वाससहस्राण । सहस्सारे  
पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण सत्तरसण्ह वाससहस्राण, उक्कोसेण अट्टारसण्हं वाससह-  
स्राण । आणए ण पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण अट्टारसण्ह वाससहस्राण, उक्कोसेण  
एगूणवीसाए वाससहस्राण । पाणए ण पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण एगूणवीसाए  
वाससहस्राण, उक्कोसेण वीसाए वाससहस्राण । आरणे ण पुच्छा । गोयमा ! जह-  
ञ्चेण वीसाए वाससहस्राण, उक्कोसेण एक्कवीसाए वाससहस्राण । अक्कुए ण पुच्छा ।  
गोयमा ! जहञ्चेण एक्कवीसाए वाससहस्राण, उक्कोसेण वावीसाए वामसहस्राणं ।  
हिंडिमहिंडिमगेविजगाण पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण वावीसाए वाससहस्राण,  
उक्कोसेणं तेवीसाए वाससहस्राण, एव सब्बत्य सहस्राणि भाणियव्वाणि जाव सब्बढू ।  
हिंडिमजिझमगाण पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण तेवीसाए, उक्कोसेण चउवीसाए ।  
हिंडिमउवरिमाण पुच्छा । गोयमा ! जहञ्चेण चउवीसाए, उक्कोसेण पणवीसाए ।

मजिसमहेद्विमार्थं पुच्छम् । गोदमा ! अहोरेषं पश्चवीसाए, उद्धोरेषं लम्हीसाए ।  
 मजिसममजिसमार्थं पुच्छम् । गोदमा ! अहोरेषं लम्हीसाए, उद्धोरेषं सातावीसाए ।  
 मजिसमउद्दरिमार्थं पुच्छम् । गोदमा ! अहोरेषं सातावीसाए, उद्धोरेषं अद्वावीसाए ।  
 उद्दरिमहेद्विमाणं पुच्छम् । गोदमा ! अहोरेषं अद्वावीसाए, उद्धोरेषं एग्रालतीसाए ।  
 उद्दरिमउद्दरिमार्थं पुच्छम् । गोदमा ! अहोरेषं एग्रालतीसाए, उद्धोरेषं तीसाए ।  
 उद्दरिमउद्दरिमार्थं पुच्छम् । गोदमा ! अहोरेषं तीसाए, उद्धोरेषं एग्रालतीसाए ।  
 विजयवेऽनवत्क्षयं कलपराजिवार्णं पुच्छम् । गोदमा ! अहोरेषं एग्रालतीसाए, उद्धोरेषं  
 देतीसाए । उम्भद्विश्वगदेवान् पुच्छम् । गोदमा ! अम्भद्वान्मधुद्वेषेषं देतीसाए  
 वासुदेवस्यान्माहारद्वे समुण्डवद् ॥ ५४३ ॥ भेदवा एं मते । कि एविदिवसरीरादं  
 आहारेन्ति जाव पर्विदिवसरीरादं आहारेन्ति । गोदमा ! पुष्पमावपल्लवर्णं पुच्छ  
 पर्विदिवसरीरादं पिंजाहारेन्ति जाव पर्विदिव पक्षुपल्लवमावपल्लवर्णं पुच्छ निकमा  
 पर्विदिवसरीरादं आहारेन्ति एवं जाव वर्विदिवक्षमार्थं पुच्छ । पुष्पमिकाइमार्थं पुच्छ ।  
 गोदमा ! पुष्पमावपल्लवर्णं पुच्छ एवं चेद् एवुपल्लवमावपल्लवर्णं पुच्छ निकमा  
 एविदिवसरीरादं आहारेन्ति । वेदिवा पुच्छमावपल्लवर्णं पुच्छ एवं चेद् एवुपल्ल  
 भावपल्लवर्णं पुच्छ निकमा वेदिवान् सरीरादं आहारेन्ति एवं जाव वर्विदिवा  
 जाव पुष्पमावपल्लवर्णं पुच्छ एवं एवुपल्लभावपल्लवर्णं पुच्छ निकमा वस्त्रं च  
 ईदिवादं लक्ष्मिदिवादं सरीरादं आहारेन्ति सेसा जहा नेत्रवा जाव वेमाविना ।  
 नेत्रवा एं मते । कि वेमाहारा फक्षेवाहारा ? गोदमा ! वेमाहारा जो फक्षेवा-  
 हारा एवं एविदिवा सम्बे देवा य मावियवा जाव वेमाविना । वेदिवा जाव  
 मण्डमा वेमाहारा कि फक्षेवाहारा कि ॥ ५४४ ॥ नेत्रवा एं भंते । कि वेमाहारा  
 मजमक्षी ? योदमा ! ओमाहारा जो मजमक्षी एवं सम्बे ओराविष्वरीरा कि ।  
 देवा सम्बा कि जाव वेमाविना वेमाहारा कि मजमक्षी कि । तत्त्वं एं ते मज-  
 मक्षी देवा देसि य इच्छामन्ते समुण्डवद् इच्छामो एं मणमक्षीते वरिताद् तदं एं  
 देहै देवेहै एवं मजमक्षीएं समाये विष्वामेव देव योगास्य इडु ठेता जाव मणमग्नं दे  
 देसि मजमक्षीतापं परिणमेति देव जहामामए दीवा पोम्पमद् तीवं पञ्च तीवं चेद् अद्य  
 वहातान्म चिद्वृति उठिता वा पोम्पमा उठिते पञ्च दसिते चेद् अद्वावातीवं चिद्वृति  
 एवामेव तदैः देहैः मजमक्षीएं समाने देव इच्छामन्ते विष्वामेव अदेह ॥ ५४५ ॥  
 पद्यवणाप्य मगवईए अद्वावीमहमेआहारपप पहमो वहेतो समतो ॥

आहार मविय सम्भी देवा दिद्वी य संबव वहाए । जावे वोगुवालेगे पैद व एवीर  
 पञ्चती । तीवं एं भंते । कि आहारए अमाहारए ? योदमा ! दिव आहारए, दिव

अणाहारए, एव नेरडए जाव असुरकुमारे जाव वेमाणिए । सिद्धे ण भते ! कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! नो आहारए, अणाहारए । जीवा ण भते ! कि आहारया अणाहारया ? गोयमा ! आहारया वि अणाहारया वि । नेरड्याण पुच्छा । गोयमा ! सब्बे वि ताव होज्जा आहारया १, अहवा आहारगा य अणाहारए य २, अहवा आहारगा य अणाहारगा य ३, एव जाव वेमाणिया, नवर एर्गिंदिया जहा जीवा । सिद्धाण पुच्छा । गोयमा ! नो आहारगा, अणाहारगा ॥ दारं १ ॥ भवसिद्धिए णं भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एव जाव वेमाणिए । भवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेंगेंदियवज्जो तियभगो, अभवसिद्धिए वि एव चेव । नोभवसिद्धिए-नोअभवसिद्धिए ण भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! णो आहारए, अणाहारए, एव सिद्धे वि । नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! नो आहारगा, अणाहारगा, एव सिद्धा वि ॥ दारं २ ॥ सण्णी णं भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एव जाव वेमाणिए, नवर एर्गिंदियविगलिंदिया नो पुच्छिज्जति । सण्णी ण भते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवाइज्जो तियभगो जाव वेमाणिया । असण्णी ण भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एव ऐरड्ये जाव वाणमतरे । जोडसियवेमाणिया ण पुच्छिज्जति । असण्णी ण भते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! आहारगा वि अणाहारगा वि एगो भगो । असण्णी ण भते ! ऐरड्या कि आहारया अणाहारया ? गोयमा ! आहारगा वा १, अणाहारगा वा २, अहवा आहारए य अणाहारए य ३, अहवा आहारए य अणाहारया य ४, अहवा आहारगा य अणाहारए य ५, अहवा आहारगा य अणाहारगा य ६, एव एए छब्बगा, एवं जाव थणियकुमारा । एर्गिंदिएसु अभगय, वेइदिय जाव पंचिंदियतिरिक्खज्जोणिएसु तियभगो, मणूसवाणमतरेसु छब्बगा । नोसण्णीनोअसण्णी ण भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए य, एवं मणूसे वि । सिद्धे अणाहारए, पुहुत्तेण नोसण्णीनोअसण्णी जीवा आहारगा वि अणाहारगा वि, मणूसेसु तियभगो, सिद्धा अणाहारगा ॥ दारं ३ ॥ ६५० ॥ सलेसे ण भते ! जीवे कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए, सिय अणाहारए, एव जाव वेमाणिए । सलेसा ण भते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेंगिंदियवज्जो तियभगो, एव कण्हलेसा वि नीललेसा वि काउलेसा वि जीवेंगिंदियवज्जो

ठियमगो । तउलेसाए पुढियमारवपत्तसुकाश्यार्थ उम्मंगा उलार्व जीवद्वये  
तियमंगो जेति भर्त्ति तेउलेसा पम्हलेसाए छुक्लेसाए य जीवाइओ तियमंगो  
अलेसा जीवा म्लुरुसा तिद्वा य एगोले यि पुहुतेग यि मो आहारणा अवाहारणा ॥  
दारे ४॥ १५१ ॥ सम्मार्द्वी यं भंते । जीवा कि आहारणा अवाहारणा ॥ गोक्कमा ।  
तिय आहारणा तिय अवाहारणा । लेईदिवा लेईदिवा उम्मंगा तिय  
अवाहारणा अवसेसाण तियमंगो मिळ्डार्द्वीषु जीवेगिदिवज्ञो तियमंगो । उम्मा-  
मिळ्डार्द्वी यं मंते । कि आहारए अवाहारए ॥ गोक्कमा । आहारए, मो अवाहारए,  
एवं एगिरियकिगलिदिवज्ञ जाव बेमाणिए, एवं पुहुतेल यि ॥ दारे ५ ॥ १५२ ॥  
संबए यं भंते । जीवे कि आहारए अवाहारए ॥ गोक्कमा । तिय आहारए, तिय  
अवाहारए, एवं मनूसे यि पुहुतेग तियमंगो । असंबए पुच्छा । तिय आहारए,  
तिय अवाहारए, पुहुतेल जीवेगिदिवज्ञो तियमंगो उंडवासंबए यं जीवे लेईरिक-  
तिरिक्षयज्ञोणिए मनूसे य ३ एव एगोले यि पुहुतेग यि आहारणा मो अवाहारण  
नोसंबए-नोवसंबए-नोसंबवासंबए जीवे यिदे य एव एगोले पोहुतेल यि मो आहा-  
रणा अवाहारणा ॥ दारे ६ ॥ १५३ ॥ सारसार यं भंते । जीव कि आहारए  
अवाहारए ॥ गोक्कमा । तिय आहारए, तिय अवाहारए, एवं जाव बेमाणिवा पुहुतेवं  
जीवेगिदिवज्ञो तियमंगो कोहृसार्द्वु जीवार्द्वु एवं येव नवरे देवगु उम्मंगा  
मावरुसार्द्वु मावारुसार्द्वु य देवनेरहएमु उम्मंगा अवसेसार्द्व जीवेगिदिवज्ञे  
तियमंगो मोहृसार्द्वु नेरहएमु उम्मंगा अवसेसेमु जीवेगिदिवज्ञो तियमंगे  
अस्मार्द्व यहा गोगल्लीनोभगल्ली ॥ दारे ७ ॥ १५४ ॥ जाणी यहा सम्मार्द्वी ।  
आभियिवाहियवाजी मुषणार्द्वी य पैईदिवलैईदिवज्ञउर्तिरिष्टु उम्मंगा अवसेसेवं  
जीवाइभा तियमंगो अमि अतिय । ओहिलार्द्वी यैविदिवतिरिक्षयज्ञोविवा आहारणा  
ना अवाहारणा अवसेसेवु जीवद्वभो तियमंगो जेगि भर्त्ति ओहिलार्द्वी मधवत्रासार्द्वी  
जीवा मनूगा य एगोले यि पुहुतेग यि आहारणा णा अवाहारणा । बेवक्कार्द्वी  
जहा गोगल्लीनाभगल्ली ॥ दारे ८-१ ॥ अन्नाजी मद्भगल्लार्द्वी मुषगल्लार्द्वी जीवे  
गिदिवज्ञा तियमंगो । गिमेवणार्द्वी पविरियनिरिक्षयज्ञोविवा मनूगा य आहारणा  
ना अवाहारणा अवसेसेवु जीवाइभा तियमंगो ॥ दारे ८-२ ॥ १५५ ॥ गोक्कमीण  
जीवतिदिवज्ञा तियमंगो । मनूजार्द्वी यैवार्द्वी यहा सम्मार्द्वउर्तिरिष्टी नवरे वर  
जागा भिगतिदिवज्ञा यि । कायजोगीनु जीवेगिदिवज्ञो तियमंगो ज्ञोगी जीव  
मासार्द्वाद्वा अवाहारणा ॥ दारे ९ ॥ मायाराणायारोवउलेमु जीवेगिदिवज्ञो तियमंगो  
तिद्वा भावाहारणा ॥ दारे १ ॥ व संवेयए जीवेगिदिवज्ञो तियमंगा इच्छिवार्द्वउर्तिरिष्ट-

वेयएसु जीवाइओ तियभगो, नपुसगवेयए य जीवेंगिंदियवज्जो तियभंगो, अवेयए जहा केवलणाणी ॥ दारं ११ ॥ ६५६ ॥ ससरीरी जीवेंगिंदियवज्जो तियभगो, ओरालिय-सरीरीजीवमण्सेसु तियभगो, अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा जेसिं अतिथ ओरालियसरीर, वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी य आहारगा, नो अणाहारगा जेसिं अतिथ, तेयकम्मसरीरी जीवेंगिंदियवज्जो तियभगो, असरीरी जीवा सिद्धा य नो आहारगा, अणाहारगा ॥ दारं १२ ॥ आहारपज्जत्तीए पज्जत्तए सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तए इंदियपज्जत्तीए पज्जत्तए आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तए भासामणपज्जत्तीए पज्जत्तए एयासु पंचसु वि पज्जत्तीसु जीवेसु मण्सेसु य तियभगो, अवसेसा आहारगा, नो अणाहारगा, भासामणपज्जत्ती पचिंदियाणं, अवसेसाण नतिथ । आहारपज्जत्तीअपज्जत्तए णो आहारए, अणाहारए एगत्तेण वि पुहुत्तेण वि, सरीरपज्जत्तीअपज्जत्तए सिय आहारए सिय अणाहारए, उवरिलियासु चउसु अपज्जत्तीसु नेरडयदेवमण्सेसु छब्भगा, अवसेसाण जीवेंगिंदियवज्जो तियभगो, भासामणपज्जत्तएसु जीवेसु पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु य तियभगो, नेरडयदेवमण्सु छब्भगा । सब्बपएसु एगत्तपोहत्तेण जीवाइया दडगा पुऱ्ठाए भाणियब्बा जस्स ज अन्थ तस्स तं पुच्छिज्जइ, जस्स ज णतिथ तस्स त ण पुच्छिज्जइ जाव भासामणपज्जत्तीअपज्जत्तएसु नेरडयदेवमण्सु छब्भगा, सेसेसु तियभगो ॥ ६५७ ॥ दार १३ ॥ विहाओ उद्देसो समत्तो ॥ पञ्चवणाए भगवर्षीष अट्टावीसाइमं आहारपयं समत्तं ॥

कङ्गविहे ण भते ! उवओगे पञ्चते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पञ्चते । तजहा-सागारोवओगे य अणागारोवओगे य । सागारोवओगे ण भते ! कङ्गविहे पञ्चते ? गोयमा ! अट्टविहे पञ्चते । तजहा-आभिणिवोहियणाणसागारोवओगे, सुयणाणसागारोवओगे, ओहिणाणसागारोवओगे, मणपज्जवणाणसागारोवओगे, केवलणाणसागारोवओगे, मझब्बणाणसागारोवओगे, सुयब्बणाणसागारोवओगे, विभगणाणसागारोवओगे । अणागारोवओगे ण भते ! कङ्गविहे पञ्चते ? गोयमा ! चउव्विहे पञ्चते । तजहा-चकखुदसणअणागारोवओगे, अचकखुदसणअणागारोवओगे, ओहिदसणअणागारोवओगे, केवलदंसणअणागारोवओगे य । एव जीवाण ॥ ६५८ ॥ नेरडयाण भते ! कङ्गविहे उवओगे पञ्चते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पञ्चते । तजहा-सागारोवओगे य अणागारोवओगे य । नेरडयाण भते ! सागारोवओगे कङ्गविहे पञ्चते ? गोयमा ! छव्विहे पञ्चते । तजहा-मझणाणसागारोवओगे, सुयणाणसागारोवओगे, ओहिणाणसागारोवओगे, मझब्बणाणसागारोवओगे, सुयब्बणाणसागारोवओगे, विभगणाणसागारोवओगे । नेरडयाण भते ! अणागारोवओगे कङ्गविहे पञ्चते ? गोयमा !

तिथिहे पढते । तंबहा-चक्रवर्द्धसुप्रभायारोक्तोगे अचक्षुर्दसप्रभायारोक्तागे  
ओहिवलभायारोक्तागे एवं जात चक्रिमुमाराप्य । पुर्विकात्मापुर्व !  
गोयमा ! तुम्हिहे उक्तोगे पडतो । तबहा-सागारोक्तोगे अप्यायारोक्तोगे य । पुर्वि-  
कात्माप्य सागारोक्तोगे चक्रिहे पढते ? गोयमा ! तुम्हिहे पडते । तंबहा-महामन्त्र-  
सागारोक्तोगे चक्रमन्त्रसागारोक्तोगे य । पुर्विकात्माप्य अप्यायारोक्तोगे च  
क्रिहे पढते ? गोयमा ! एगे अचक्षुर्दसप्रभायारोक्तोगे पडते एव जात चक्रत्व-  
कात्माप्य । बैरेंद्रिकार्पुर्व ! गोयमा ! तुम्हिहे उक्तागे पडते । तबहा-सागारोक्त-  
आगे अप्यायारोक्तोगे य । बैरेंद्रिकाप्य मति । सागारोक्तोगे चक्रिहे पढते ? गोयमा !  
चठिहे पडते । तंबहा-जामिनिकोहियणाप्य मुख्याप्य महामन्त्राप्य तुम्-  
अप्यायामध्यायारोक्तोगे । बैरेंद्रियाप्य मति । अप्यायारोक्तोगे कहिहे पडते ? गोयमा !  
एगे अचक्षुर्दसप्रभायारोक्तोगे एवं तेहियाप्य यि । चठिहेनिकाप्य यि एव चर-  
मधरे अप्यायारोक्तोगे तुम्हिहे पढते । तंबहा-चक्रवर्द्धसुप्रभायारोक्तोगे अचक्षुर्द-  
दसप्रभायारोक्तोगे । पर्विकात्मिकाप्यतिरिक्ताकोनिकाप्य चहा नेरह्याप्य । मुख्याप्य  
चहा ओहिए उक्तोगे मतियं तदेव भावितव्य । बायमेतरज्योतिष्मैमाविकाप्य चहा  
नेरह्याप्य ॥ ६५९ ॥ जीवा च मति । कि सागारोक्तागे अप्यायारोक्तागे ! गोयमा !  
सागारोक्तागे अप्यायारोक्तागे यि । से केष्टेवं मति । एवं तुष्टि-‘जीवा साप्य-  
रोक्तागे अप्यायारोक्तागे यि’ । गोयमा ! जैवं जीवा जामिनिकोहियणाप्यमुख्याप्य-  
ओहिकाप्यप्रवाप्यमेवस्त्रायमहम्याप्यमुख्याप्यमेवत्वाक्तोक्तागे । एवं  
जीवा सागारोक्तागे बैरेंद्र जीवा चक्रवर्द्धसुप्रभायाप्यसुप्रभायाप्यमेवस्त्राय-  
क्तागे तर्वं जीवा अप्यायारोक्तागे से तद्वेष गोयमा । एवं तुष्टि—जीवा  
सागारोक्तागे अप्यायारोक्तागे यि । नरह्या गी मति । कि सागारोक्तागे अप्या-  
यारोक्तागे ? गोयमा ! नरह्या सागारोक्तागे अप्यायारोक्तागे यि । स वन्देवं  
मति । एवं तुष्टि । गोयमा ! जैवं नरह्या जामिनिकोहियणाप्यमुख्याप्यमाहिनाप्य-  
महमन्त्राप्यव्यवहाराप्यमिमंगाक्तोक्तागे तर्वं नेरह्या सागारोक्तागे जैवं नेरह्या  
चक्रवर्द्धसुप्रभायाप्यमेवस्त्रायाक्तागे तर्वं नेरह्या अप्यायारोक्तागे से तेवं  
द्वेष गोयमा एवं तुष्टि-जीव सागारोक्तागे अप्यायारोक्तागे यि एव जात  
परिमुमारा । पुर्विकात्माप्य पुर्व ! गोयमा ! तदेव जात जैव पुर्विकात्मा  
महामन्त्राप्यमुख्याप्यमाहिनाप्यमेवस्त्रायाक्तागे तेवं पुर्विकात्मा जैवं पुर्विकात्मा  
अचक्षुर्दसप्रभायाक्तागे तर्वं पुर्विकात्मा अप्यायारोक्तागे से तद्वेष गोयमा ।  
एवं तुष्टि जात चक्रमन्त्रव्यवह्या । बैरेंद्रियाप्य मति । अटुगलिया तहरं पुर्व !

गोयमा ! जाव जेण वेइदिया आभिणिओहियणाणसुयणाणमइअणाणसुयणाणोवउत्ता  
तेण वेइंदिया सागारोवउत्ता, जेण वेइदिया अचक्खुदसणोवउत्ता तेण अणा-  
गरोवउत्ता, से तेणटेण गोयमा ! एव बुच्छ०, एव जाव चउरिंदिया, णवर चक्खु-  
दसण अब्महियं चउरिंदियाण ति । पंचिदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, मणूसा  
जहा जीवा, वाणमतरजोहिसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥ ६६० ॥ पञ्चवणाए  
भगवर्हैए पगूणतीसइमं उचओगपर्यं समत्तं ॥

कइविहा ण भते ! पासणया पञ्चत्ता ? गोयमा ! दुविहा पासणया पञ्चत्ता ।  
तजहा-सागारपासणया, अणागारपासणया । सागारपासणया ण भते ! कइविहा  
पञ्चत्ता ? गोयमा ! छविहा पञ्चत्ता । तजहा-सुयणाण०पासणया, ओहिणाण०पास-  
णया, मणपज्जवणाण०पासणया, केवलणाण०पासणया, सुयअणाणसागारपासणया,  
विभगणाणसागारपासणया । अणागारपासणया ण भते ! कइविहा पञ्चत्ता ? गोयमा !  
तिविहा पञ्चत्ता । तजहा-चक्खुदसणअणागारपासणया, ओहिदसणअणागारपासणया,  
केवलदंसणअणागारपासणया, एव जीवाण पि । नेरइयाण भते ! कइविहा पासणया  
पञ्चत्ता ? गोयमा ! दुविहा पञ्चत्ता । तंजहा-सागारपासणया, अणागारपासणया ।  
नेरइयाण भते ! सागारपासणया कइविहा पञ्चत्ता ? गोयमा ! चउविहा पञ्चत्ता ।  
तजहा-सुयणाण०पासणया, ओहिणाण०पासणया, सुयअणाण०पासणया, विभगणा-  
ण०पासणया । नेरइयाण भते ! अणागारपासणया कहिविहा पञ्चत्ता ? गोयमा ! दुविहा  
पञ्चत्ता । तजहा-चक्खुदसण० ओहिदमण०, एव जाव यणियकुमारा । पुढविकाइयाण  
भते ! कइविहा पासणया पञ्चत्ता ? गोयमा ! एगा सागारपासणया प० । पुढविकाइयाण  
भते ! सागारपासणया कइविहा पञ्चत्ता ? गोयमा ! एगा सुयअन्नाणसागारपासणया  
पञ्चत्ता, एव जाव वणस्सइकाइयाण । वेइदियाण भते ! कहिविहा पासणया पञ्चत्ता ?  
गोयमा ! एगा सागारपासणया पञ्चत्ता । वेडदियाण भते ! सागारपासणया कहिविहा  
पञ्चत्ता ? गोयमा ! दुविहा पञ्चत्ता । तंजहा-सुयणाणसागारपासणया, सुयअणाण-  
सागारपासणया, एव तेइदियाण वि । चउरिंदियाण पुच्छा । गोयमा ! दुविहा  
पञ्चत्ता । तजहा-सागारपासणया य अणागारपासणया य । सागारपासणया जहा  
वेइदियाण । चउरिंदियाण भते ! अणागारपासणया कहिविहा पञ्चत्ता ? गोयमा !  
एगा चक्खुदसणअणागारपासणया पञ्चत्ता । मणूसाण जहा जीवाण, सेसा जहा नेर-  
इया जाव वेमाणियाण ॥ ६६१ ॥ जीवा ण भते ! कि सागारपस्सी, अणागार-  
पस्सी ? गोयमा ! जीवा सागारपस्सी वि अणागारपस्सी वि । से केणटेण भते !  
एव बुच्छ०-जीवा सागारपस्सी वि अणागारपस्सी वि ? गोयमा ! जेण जीवा

सुयगाणी ओशिजाणी मणपञ्चबधाणी केमलाणी सुयज्जाणी निर्भेयाणी तर्व  
जीवा सायारपस्ती तेवं जीवा चन्द्रहरुणी ओशिरुषी तेवर्दृष्टिपी तुवं गो  
अणागारपस्ती से एएन्ड्रेज गोमा ! एवं तुच्छ-जीवा सागारपस्ती वि अणागार  
पस्ती वि । नेरइया वं भर्ते । कि सागारपस्ती अणागारपस्ती । गोमा । त्वं  
तेवं नवर्त सागारपासणवाए मणपञ्चबधाणी तेवम्नाणी न सुच्छ, अणागारपासण  
वाए केवर्दृष्टिपी नरिष्य एवं जाव विष्वकुमारा । पुडविश्वर्वार्ष पुच्छ । गोमा ।  
पुडविश्वाइया सायारपस्ती जो अणागारपस्ती । से तेजट्टेज मंते । एवं तुच्छ ।  
गोमा । पुडविश्वाइया एमा मुयम्बाणसागारपासणवा पत्तता से तच्छेवं  
गोमा । एवं तुच्छ, एवं जाव इक्स्ट्रेंड्साइयाण । तेहदिवान् पुच्छ । गोमा ।  
सागारपस्ती जो अणागारपस्ती । से तेजट्टेज मंते । एवं तुच्छ । गोमा । तेहदिवान्  
तुच्छिया सागारपासणवा पत्तता । टंक्हा-मुयम्बाणसागारपासणवा मुयम्बाणसागार-  
पासणवा से एएन्ड्रेज गोमा । एवं तुच्छ । एवं तेहदिवान् वि । चठरिदिवाल पुच्छ ।  
गोमा । चठरिदिवा सागारपस्ती वि अणागारपस्ती वि । से तेजट्टेज । गोमा ।  
तेवं चठरिदिवा तुयजाणी घुमयम्बाणी तेवं चठरिदिवा सागारपस्ती तेवं  
चठरिदिवा चन्द्रहरुणी तेवं चठरिदिवा अणागारपस्ती से एएन्ड्रेज गोमा ।  
एवं तुच्छ । मम्हा जहा जीवा व्यवस्था जहा नेरइया जाव भेयाणिवा ॥ ११ ॥  
केवली वं भर्ते । इमं रमणपर्म पुडविश्वारेहि तेहदृष्टिपी वन्नेवं  
सठालेहि पमारेहि वहेयारेहि वं समवं जावइ तं समवं पासइ, वं समवं पासइ तं  
समवं जावइ ॥ गोमा । नो इण्डू सम्हें । से तेजट्टेज भर्ते । एवं तुच्छ-केवली  
वं न्मं रमणपर्म पुडविश्वारेहि वं समवं जावइ भो तं समवं पासइ, वं  
समवं पासइ भो तं समवं जावइ ॥ गोमा । यामारे से नाले भवा, अणागारे से  
दंसने भवा, से तेजट्टेज जाव नो तं समवं जावइ, एवं जाव अहेवर्तम । त्वं  
सोहम्मध्यं जाव अनुयं नेविजगमियाणा अलुतरविमाना ईशिष्पम्बारं पुडवि  
पत्तमालुपोमाळं तुपपसिये वर्व जाव अर्वतपएलिये वर्व । केवली वं भर्ते । इमं  
रमणपर्म पुडविश्वारेहि जहेव्हेहि अपुक्माहि अविक्षुतेहि अपव्वेहि अछालेहि  
अपमालेहि अपदोमारेहि पासइ न जावइ ॥ इता गोमा । केवली वं इमं रमणपर्म  
पुडविश्वारेहि जाव पासइ न जावइ । से तेजट्टेज भर्ते । एवं तुच्छ-केवली  
वं न्मं रमणपर्म पुडविश्वारेहि जाव पासइ न जावइ ॥ गोमा । अणागारे  
से दंसने भवा, यामारे से नाले भवा, से तेजट्टेज गोमा । एवं तुच्छ-केवली वं  
इमं रमणपर्म पुडविश्वारेहि जाव पासइ न जावइ ॥ एवं जाव ईशिष्पम्बारं

पुढविं परमाणुपोग्गल अणंतपएसियं खध पासइ, न जाणइ ॥ ६६३ ॥ पञ्चवणाए  
भगवईप तीसइमं पासणयापयं समत्तं ॥

जीवा ण भते ! किं सण्णी, असण्णी, नोसण्णीनोअसण्णी ? गोयमा ! जीवा  
सण्णी वि असण्णी वि नोसण्णीनोअसण्णी वि । नेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! नेर-  
इया सण्णी वि असण्णी वि नो नोसण्णीनोअसण्णी । एव असुरकुमारा जाव  
थणियकुमारा । पुढविकाइयाण पुच्छा । गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी, नो नोसण्णी-  
नोअसण्णी । एव वेडदियतेइदियचउरिदिया वि, मणूसा जहा जीवा, पंचिदिय-  
तिरिक्खजोणिया वाणमतरा य जहा नेरइया, जोइसियवेमाणिया सण्णी, नो  
असण्णी, नो नोसण्णीनोअसण्णी । सिद्धाण पुच्छा । गोयमा ! नो सण्णी, नो  
असण्णी, नोसण्णीनोअसण्णी । नेरइयतिरियमणुया य वणयरगसुराइ सण्णीऽसण्णी  
य । विगलिंदिया असण्णी जोइसवेमाणिया सण्णी ॥ ६६४ ॥ पञ्चवणाए भगवईप  
इगतीसइमं सण्णीपयं समत्तं ॥

जीवा ण भते ! कि सजया, असजया, सजयासजया, नोसजयनोअसजय-  
नोसजयासजया ? गोयमा ! जीवा सजया वि १, असजया वि २, सजयासजया वि  
३, नोसजयनोअसजयनोसजयासजया वि ४ । नेरइया णं भते ! पुच्छा ।  
गोयमा ! नेरइया नो सजया, असजया, नो सजयासजया, नो नोसजयनोअसजय-  
नोसजयासजया । एव जाव चउरिदिया । पंचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।  
गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया नो सजया, असजया वि, सजयासजया वि, नो  
नोसजयनोअसजयनोसजयासजया वि । मणुस्ताण पुच्छा । गोयमा ! मणूसा सजया  
वि असजया वि सजयासजया वि, नो नोसजयनोअसजयनोसजयासजया । वाण-  
मतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया । सिद्धाण पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा नो सजया  
१, नो असजया २, नो सजयासजया ३, नोसजयनोअसजयनोसजयासजया ४ ।  
गाहा-“सजयअसजयमीसगा य जीवा तहेव मणुया य । सजयरहिया तिरिया सेसा  
अस्सजया होति” ॥ ६६५ ॥ पञ्चवणाए भगवईप वत्तीसइमं संजयपयं  
समत्तं ॥

मेयविसयसठाणे अद्वितरवाहिरे य देसोही । ओहिस्स य खयवुद्धी पडिवाई चेव  
अपडिवाई ॥ कडविहा ण भते ! ओही पञ्चता ? गोयमा ! दुविहा ओही पञ्चता । तजहा-  
भवपचइया य खओवसमिया य, दोण्ह भवपचइया, तजहा-देवाण य नेरइयाण य,  
दोण्ह खओवसमिया, तजहा-मणूस्ताण पंचिदियतिरिक्खजोणियाण य ॥ ६६६ ॥  
नेरइया ण भते ! केवइय खेत ओहिणा जाणति पासति ? गोयमा ! जहब्रेण अद्व-

गारुदं उडोसेवं चतारि गारुदवद् ओहिणा जार्यति पासंति । रथणप्पमापुर्वमि-  
नेरह्या नं भंते । केवश्यं लेतं ओहिणा जार्यति पासंति ॥ गोममा ! चहोर्व अहु-  
द्वार्द्वं गारुदवाह, उडोसेवं चतारि गारुदवद् ओहिणा जार्यति पासंति । सहरप्पम-  
पुढिनरह्या चहोरेण तिथिं गारुदवद्, उडोसेवं अहुद्वार्द्वं गारुदवाह ओहिण  
जार्यति पासंति । वस्त्रप्पमापुर्वमिनेरह्या चहोर्व अहुद्वार्द्वं गारुदवद् उडोसेव  
तिथिं गारुदवद् ओहिणा जार्यति पासंति । पंडप्पमापुर्वमिनेरह्या चहोर्व दोतिं  
गारुदवद्, उडोसेवं अहुद्वार्द्वं गारुदवद् ओहिणा जार्यति पासंति । भूमप्पमापुर्वमि-  
नेरह्या चहोरेण दिव्यं गारुदवाह, उडोसेवं द्वो गारुदवद् ओहिणा जार्यति पासंति ।  
तमापुर्वमिनेरह्या चहोरेण गारुदवद् उडोसेवं दिव्यं गारुदवद् ओहिणा जार्यति  
पासंति । अहेसतमाए पुच्छ । गोममा । अहोर्वं मर्द्वं गारुदवद् उडोसेवं गारुदवद्  
ओहिणा जार्यति पासंति ॥ ९९७ ॥ अध्यरुद्धमारा नं भंते । ओहिणा केवह्ये लेतं  
जार्यति पासंति ॥ गोममा । चहोर्वं पश्वीसु ओमजाह, उडोसेवं असंकेते शीकसुरो  
ओहिणा जार्यति पासंति । मागङ्गमारा नं चहोरेण पश्वीसु ओमजाह, उडोसेवं संकेते  
शीकसुरो ओहिणा जार्यति पासंति एवं जाव विवरुद्धमारा । परिविवरिरक्ष-  
ओहिणा नं भंते । केवश्यं लेतं ओहिणा जार्यति पासंति ॥ गोममा । उडोर्वं  
अगुमस्स असंकेतमार्य उडोसेवं असंकेते शीकसुरो । मर्द्वा नं भंते । ओहिण  
केवह्ये लेतं जार्यति पासंति ॥ गोममा । चहोरेण अगुमस्स असंकेतमार्य उडोसेवं  
असंकेतमार्य अस्त्रेण छोयप्पमाप्ममेताहं चंद्राहं ओहिणा जार्यति पासंति । वाप्मंत्या  
जहा नागङ्गमारा ॥ ९९८ ॥ ओहिणा नं भंते । केवश्यं लेतं ओहिणा जार्यति  
पासंति ॥ गोममा । अहोर्वं संकेते शीकसुरो, उडोसेवं द्वि दुलेते शीकसुरो ।  
सोहम्मगरेणा नं भंते । केवश्यं लेतं ओहिणा जार्यति पासंति ॥ गोममा । उडोर्वं  
अगुमस्स असंकेतमार्य उडोसेवं अहे जाव इनीते रथणप्पमाए हिट्टिते चरमंते  
तिरियं जाव असंकेते शीकसुरो, चंद्रं जाव समार्द्वं विमानाहं ओहिणा जार्यति  
पासंति एव ईशानगरेणा द्वि । उपरुद्धमारेणा द्वि एवं लेतं नवार जाव अहे दोषाए  
सकरप्पमाए पुडवीए हिट्टिते चरमंते एव माहिवरेणा द्वि । वंसन्तेकर्मन्त्यवदा  
रात्माए पुडवीए हिट्टिते चरमंते महारुद्धस्थारागरेणा चडत्वीए पंक्षप्पमाए  
पुठवीए हेट्टिते चरमंते आणवपानयवारलक्ष्मुद्दरेणा अहे जाव छार्द्वाए रुमाए पुढीर  
माए हेट्टिते चरमंते हेट्टिममतिसमोकेजगरेणा अहे जाव छार्द्वाए रुमाए पुढीर  
हेट्टिते चरमंते । उवरिमगेविजगरेणा नं भंते । केवश्यं लेतं ओहिणा जार्यति  
पासंति ॥ गोममा । चहोर्वं अगुमस्स असंकेतमार्य उडोसेवं अहेसतमाए

हेंडिले चरमते, तिरिय जाव असखेजे दीवसमुदे, उहू जाव सयाहं विमाणाहं ओहिणा जाणति पासति । अणुत्तरोववाइयदेवा ण भते । केवह्य खेत्त ओहिणा जाणति पासति २ गोयमा । सभिञ्चं लोगनालिं ओहिणा जाणति पासति ॥ ६६९ ॥ नेरइयाण भते । ओही किंसठिए पञ्चते २ गोयमा । नप्पागारसठिए पञ्चते । असुर-कुमाराण पुच्छा । गोयमा ! पल्लगसठिए, एव जाव थणियकुमाराण । पचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! णाणासठाणसठिए, एव मणूसाण वि । वाणमतराण पुच्छा । गोयमा ! पड्हगसठाणसठिए । जोइसियाण पुच्छा । गोयमा ! शळरिसठाणसठिए पञ्चते । सोहम्मगदेवाण पुच्छा । गोयमा ! उहूमुयंगागारसठिए पञ्चते, एव जाव अक्षुयदेवाण । गेवेजगदेवाण पुच्छा । गोयमा ! पुष्फचंगेरिसठिए पञ्चते । अणुत्तरोववाइयाण पुच्छा । गोयमा ! जवनालियासठिए ओही पञ्चते ॥ ६७० ॥ नेरइयाण भते । ओहिस्स कि अतो, बाहिं ? गोयमा ! अतो, नो वाहिं, एव जाव थणियकुमारा । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! नो अतो, बाहिं । मणूसाण पुच्छा । गोयमा ! अतो वि वाहिं पि । वाणमतरजोइसिय-वेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥ ६७१ ॥ नेरइयाण भते ! किं देसोही, सब्बोही २ गोयमा ! देसोही, नो सब्बोही, एव जाव थणियकुमारा । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! देसोही, नो सब्बोही । मणूसाण पुच्छा । गोयमा ! देसोही वि सब्बोही वि । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥ ६७२ ॥ नेरइयाण भते ! ओही कि आणुगामिए, अणाणुगामिए, वहूमाणए, हीयमाणए, पडिवाई, अप्पडिवाई, अवढिए, अणवढिए ? गोयमा ! आणुगामिए, नो अणाणुगामिए, नो हीयमाणए, नो पडिवाई, अप्पडिवाई, अवढिए, नो अणवढिए, एव जाव थणियकुमाराण । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । गोयमा ! आणुगा-मिए वि जाव अणवढिए वि, एव मणूसाण वि । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥ ६७३ ॥ पञ्चवणाए भगवर्हैप तेत्तीमझमं ओहिपयं समत्तं ॥

अणतरागाहारे १ आहारे भोयणाड य २ । पोगला नेच जाणति ३ अज्जव-साणा ४ य आहिया ॥ १ ॥ सम्मतस्साहिगमे ५ तत्तो परियारणा ६ य वोद्धव्वा । काए फासे रुवं सदे य मणे य अप्पवहु ७ ॥ २ ॥ नेरइयाण भते ! अणतराहारा, तओ निवृत्तणया, तओ परियाइणया, तओ परिणामया, तओ परियारणया, तओ पञ्चा यिउव्वणया ? हता गोयमा ! नेरइयाण अणतराहारा, तओ निवृत्तणया, तओ परियाइणया, तओ परिणामया, तओ परियारणया, तओ पञ्चा यिउव्वणया । असुरकु-मारा ण भते ! अणतराहारा, तओ निवृत्तणया, तओ परियाइणया, तओ परिणा-

मया तमो विडम्बनया तमो पञ्चम परिवारणया ॥ हृता गोममा । अमुखमारु वर्ण-  
तराहारा तमो निष्ठलया जाव तमो पञ्चम परिवारणया एवं जाव विद्युममय ।  
पुष्टदिव्यशया च मंत्रे । अर्थतराहारु तमो विष्ठलया तमो परिवारणया तमो  
परिवारणया तमो परिवारणया तमो विडम्बनया ॥ हृता गोममा । तं चेष जाव  
परिवारणया तो चेष च विडम्बनया । एवं जाव चक्रिदिव्या भवरे वास्तविका चय  
पंचिदिव्यतिरिक्तव्येतिया सूक्षा य जहा नेहस्या वाक्मत्तरबोद्धियेमानिका चय  
अमुखमारु ॥ ६७४ ॥ नेहस्यां भंते । जाहारे ति जामोगनिष्ठतिए, वर्ण-  
मोगनिष्ठतिए ॥ गोममा । आमोगनिष्ठतिए ति अगमोगनिष्ठतिए ति । एवं  
अमुखमारु जाव वैमानिक्यां चवरे पंचिदिव्यां तो आमोगनिष्ठतिए, जाम-  
मोगनिष्ठतिए । नेहस्या च मंत्रे । चे पोम्मां वाहारताए मिष्टां ते ति जार्थति  
पार्थति आहारेति उदाहू य जार्थति म पार्थति आहारेति ॥ गोममा । न जार्थति  
म पार्थति आहारेति एवं जाव तर्हदिव्या । चक्रिदिव्यां पुच्छा । गोममा । अत्येद-  
इवा य जार्थति पार्थति आहारेति अर्थेगङ्गया य जार्थति म पार्थति आहारेति ।  
पंचिदिव्यतिरिक्तव्येतियां पुच्छा । गोममा । अस्तेगङ्गया जार्थति पार्थति आहारेति  
१ अर्थेगङ्गया जामति न पार्थति आहारेति २ अर्थेगङ्गया न जार्थति पार्थति  
आहारेति ३ अत्येगङ्गया य जार्थति म पार्थति आहारेति ४ एवं जाव ममुख्यम  
ति । वाक्मत्तरबोद्धिया आहा नेहस्या । वैमानिकाल पुच्छा । गोममा । अत्येदसर्व  
जार्थति पार्थति आहारेति अर्थेगङ्गया य जार्थति न पार्थति आहारेति । ते  
केळद्वेष भंते । एवं तुच्छ- वैमानिका अर्थेगङ्गया जार्थति पार्थति आहारेति  
अर्थेगङ्गया न जार्थति न पार्थति आहारेति' ॥ गोममा । वैमानिका तुमिहा वर्ण  
तंवहा-माइसिल्लदिव्यितव्यवस्थया य अमाइसम्मितिव्यवस्थगा य एवं जहा हृस्ति  
चौसप फळमे भवित्य लहा मानिक्य जाव से एप्पद्वेष गोममा । एवं तुच्छ ॥ ६७५ ॥  
येहस्यां भंते । केळहस्या अजसरसाया वर्णता ॥ गोममा । अर्थेजा अस्तेगङ्गया  
वर्णता । ते चे भंते । ति फळत्वा अपस्त्वा ॥ गोममा । फळत्वा ति अपस्त्वा ति  
एवं जाव वैमानिक्यां । नेहस्या च मंत्रे । ति सम्मतामिगमी मिष्टामिगमी  
सम्मानिष्टामिगमी ॥ गोममा । सम्मतामिगमी ति मिष्टामिगमी ति सम्म-  
मिष्टामिगमी ति एवं जाव वैमानिक्य ति । भवरे पंचिदिव्यतिरिक्तव्ये  
सम्मतामिगमी मिष्टामिगमी जो सम्मानिष्टामिगमी ॥ ६७६ ॥ तेवा च  
भंते । ति सरेतीया सपरिवारा सरेतीया अपरिवारा अरेतीया सपरिवारा अरेतीया  
अपरिवार ॥ गोममा । अर्थेगङ्गया तेवा सरेतीया सपरिवारा अर्थेगङ्गया तेवा

अदेवीया सपरियारा, अत्येगइया देवा अदेवीया अपरियारा, नो चेव ण देवा सदेवीया अपरियारा । से केणट्टेण भंते । एव बुच्छ-‘अत्येगइया देवा सदेवीया सपरियारा, त चेव जाव नो चेव ण देवा सदेवीया अपरियारा ? गोयमा । भवण-वइवाणमतरजोड़ससोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा सदेवीया सपरियारा, सणकुमार-माहिंदवभलोगलतगमहासुक्षसहस्मारव्याणयपाणयआरणच्छएसु कप्पेसु देवा अदेवीया मपरियारा, नेवेज्जअणुत्तरोववाइया देवा अदेवीया अपरियारा, नो चेव ण देवा सदेवीया अपरियारा, से तेणट्टेण गोयमा ! एव बुच्छ-‘अत्येगइया देवा सदेवीया सपरियारा, तं चेव, नो चेव ण देवा सदेवीया अपरियारा’ ॥ ६७७ ॥ कह-विहा ण भते । परियारणा पञ्चता ? गोयमा ! पचविहा परियारणा पञ्चता । तजहा-कायपरियारणा, फासपरियारणा, रुवपरियारणा, मद्दपरियारणा, मणपरि-यारणा । से केणट्टेण भते । एव बुच्छ-पचविहा परियारणा पञ्चता । तजहा-कायपरियारणा जाव मणपरियारणा ? गोयमा ! भवणवइवाणमतरजोड़ससोहम्मी-साणेसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा, सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा, वभलोयलंतगेसु देवा रुवपरियारगा, महासुक्षसहस्मारेसु देवा सद्वपरियारगा, आणयपाणयआरणच्छएसु कप्पेसु देवा मणपरियारगा, नेवेज्जअणुत्तरोववाइया देवा अपरियारगा, से तेणट्टेण गोयमा । त चेव जाव मणपरियारगा । तत्थ ण जे ते कायपरियारगा देवा तेसि ण इच्छामणे समुपज्ज-‘इच्छामो ण अच्छराहिं सद्दि कायपरियार करेत्तए’, तए ण तेहिं देवेहिं एव मणसीकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छराओ ओरालाइ सिंगाराइ मणुण्णाइ मणोहराइ मणोरमाइ उत्तरवेउव्विवस्वाइ विउव्वति विउव्विता तेसि देवाण अतिय पाउब्बवति, तए ण जे देवा ताहिं अच्छराहिं सद्दि कायपरियारण करेत्ति । से जहाणामए सीया पोगला सीय पप्प सीय चेव अइवइत्ताण चिढ्हति, उसिणा वा पोगला उसिण पप्प उसिण चेव अइवइत्ताण चिढ्हति, एवमेव तेहिं देवेहिं ताहिं अच्छराहिं सद्दि कायपरियारणे कए समाणे से इच्छामणे खिप्पामेव अवेद ॥ ६७८ ॥ अथि ण भते । तेसि देवाण सुक्षपोगला ? इता । अतिय । ते ण भते । तासि अच्छराण कीसत्ताए भुजो भुजो परिणमति ? गोयमा ! सोइदियत्ताए चक्खुइदियत्ताए धारिंदियत्ताए रसिंदियत्ताए फासिंदियत्ताए इड्हत्ताए कत्तत्ताए मणुबत्ताए मणामत्ताए सुभगत्ताए सोहगगर्वजोव्ववणगुणलावञ्जत्ताए ते तासि भुजो भुजो परिणमति ॥ ६७९ ॥ तत्थ ण जे ते फासपरियारगा देवा तेसि ण इच्छामणे समुप्पज्जइ, एवं जहेव कायपरियारगा तहेव निरवसेस भाणि-यव्व । तत्थ ण जे ते रुवपरियारगा देवा तेसि ण इच्छामणे समुप्पज्जइ—

‘इच्छामो ए अच्छराहि सदि इषपरिवारण करेणाए’ तए वं तेहि देवेहि ए  
मणसीक्षए समाजे ठहेव जाव उत्तरवेडभिवद् इवाद् विडभिक्ता वेषाम्भ त एव  
ठणामेव उवागच्छ्रूप्ति उवागभिक्ता तेसि इवार्थ अनुसामेहे ठिका उद्दे उत्तम्भं  
जाव नष्टोरमाई उत्तरवेडभिवद् इवाद् उवाहेमाणीओ २ विद्वुहि तए वं त  
देवा ताहि अच्छराहि सदि इषपरिवारण करेणि सेसे तं चेव जाव मुख्य मुख्ये  
परिषमनिति । तत्प वं जे ते साधपरिवारणा देवा तेसि वं इच्छामये समुप्पत्त—  
इच्छामो ए अच्छराहि सदि साधपरिवारण करेणाए’ तए वं तेहि देवेहि ए  
मणसीक्षए समाजे ठहेव जाव उत्तरवेडभिवद् इवाइ विडभिक्ति विडभिक्ति  
वेषामेव तं देवा तेषाम्भ उवागच्छ्रूप्ति उवागभिक्ता तेसि इवार्थ अनुसामेहे  
ठिका अनुत्तराई उवागमद् सहाई समुदीरेमाणीओ २ विद्वुहि तए वं ते देवा  
ताहि अच्छराहि सदि साधपरिवारण करेणित सेसे तं चेव जाव मुख्ये मुख्ये परिष-  
मति । तत्प वं जे ते मणपरिवारणा देवा तेसि इच्छामये समुप्पत्त— इच्छामये  
ए अच्छराहि सदि मणपरिवारण करेणाए’ तए वं सेहि देवेहि ए वं मणसीक्ष  
समाजे विष्ण्यामेव तामो अच्छराहो यत्प—गवामो चेव समाशीमो अनुलवं  
उवागयाई मणाई उपहारेमाणीओ २ विद्वुहि तए वं ते देवा ताहि अच्छराहि सदि  
मणपरिवारण करेणि सेसे विष्णुसे सेसे चेव जाव मुख्ये मुख्ये परिषमति ॥ ६८ ॥  
एषुहि वं मंतु । देवार्थ कावपरिवारणार्थ जाव मणपरिवारणार्थ अपरिवारपार्थ व  
अपरे अपरेहितो अप्या वा ४ ॥ गोमता । सम्बत्पोवा देवा अपरिवारणा मणपरि  
वारणा सुखेऽगुणा साधपरिवारणा असुखेऽगुणा इषपरिवारणा असुखेऽगुणा  
फासपरिवारणा असुखेऽगुणा कावपरिवारणा असुखेऽगुणा ॥ ६९ ॥ पश्च  
प्याप भगवाहृष्ट अवस्थीसाहमी परिवारणापर्यं समर्थं ॥

सीया य इष्व धर्मारा साम्भा तह विष्णा मणह तुम्हा । असुखामेवेवमिता  
विष्णा य अपिता व नावम्भा ॥ १ ॥ साम्भसावं सम्बे द्वाह व तुम्ह अनुक्रमतुहं व ॥  
माणसुहृदि विगमितिवा तु सेसा दुष्टिनेत ॥ २ ॥ अद्विता वं मंतु । वैष्णवा पवाना ।  
गोमता । निविहा वैष्णवा पवाना । तंवहा-सीया उविजा सीमाहिता । वेत्तुवा  
वं मंतु । किं सीय वेत्तुवं वेदेहि उपित्तवं वेत्तुवं वेदेहि द्वीपेतिव वेत्तुवं वेदेहि ।  
गोमता । सीय पि वेत्तुवं वेदेहि उपित्तवं पि वैष्णवं वेदेहि नो सीमोत्तिव वर्तवं  
वेदेहि । वेदेहि एकेषुपुर्वीए वैष्णवामो मर्ति । रयवप्यमापुहितेवा वं मंतु ।  
पुराना । वेष्णवा । नो सीय वेत्तुवं वेदेहि उपित्तवं वेत्तुवं वेदेहि नो सीमोत्तिव  
वर्तवं वेदेहि ए वं जाव वात्तमप्यमापुहितेवा । फङ्गप्यमापुहितेवा वर्तवं पुराना ।

गोयमा ! सीय पि वेयणं वेदेति, उसिण पि वेयण वेदेति, नो सीओसिणं वेयणं वेदेति । ते बहुतरागा जे उसिण वेयणं वेदेति, ते थोवतरागा जे सीयं वेयण वेदेति । वूमप्पभाए एव चेव दुविहा, नवरं ते बहुतरागा जे सीय वेयण वेदेति, ते थोवतरागा जे उसिण वेयण वेदेति । तमाए य तमतमाए य सीय वेयण वेदेति, नो उसिण वेयण वेदेति, नो सीओसिण वेयण वेदेति । असुरकुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! सीय पि वेयण वेदेति, उसिणं पि वेयण वेदेति, सीओसिण पि वेयण वेदेति, एव जाव वेमाणिया ॥ ६८२ ॥ कइविहा ण भते ! वेयणा पञ्चता ? गोयमा ! चउव्विहा वेयणा पञ्चता । तजहा-दब्बओ खेत्तओ कालओ भावओ । नेरइया णं भते ! किं दब्बओ वेयण वेदेति जाव भावओ वेयण वेदेति ? गोयमा ! दब्बओ वि वेयण वेदेति जाव भावओ वि वेयण वेदेति, एव जाव वेमाणिया । कइविहा ण भते ! वेयणा पञ्चता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पञ्चता । तजहा-सारीरा, माणसा, सारीरमाणसा । नेरइया ण भते ! किं सारीर वेयणं वेदेति, माणसं वेयण वेदेति, सारीरमाणस वेयणं वेदेति ? गोयमा ! सारीर पि वेयण वेदेति, माणस पि वेयण वेदेति, सारीरमाणस पि वेयण वेदेति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं एुर्गिंदियविगलिंदिया सारीर वेयण वेदेति, नो माणस वेयण वेदेति, नो सारीरमाणस वेयणं वेदेति । कइविहा ण भते ! वेयणा पञ्चता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पञ्चता । तंजहा-साया, असाया, सायासाया । नेरइया णं भते ! किं साय वेयण वेदेति, असायं वेयण वेदेति, सायासायं वेयण वेदेति ? गोयमा ! तिविह पि वेयण वेदेति, एव सब्बजीवा जाव वेमाणिया । कइविहा णं भते ! वेयणा पञ्चता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पञ्चता । तजहा-दुक्खा, सुहा, अदुक्खमसुहा । नेरइया णं भते ! किं दुक्ख वेयण वेदेति पुच्छा । गोयमा ! दुक्ख पि वेयण वेदेति, सुह पि वेयण वेदेति, अदुक्खमसुह पि वेयण वेदेति, एव जाव वेमाणिया ॥ ६८३ ॥ कइविहा ण भते ! वेयणा पञ्चता ? गोयमा ! दुविहा वेयणा पञ्चता । तजहा-अब्बोवगमिया य उवक्कमिया य । नेरइया ण भते ! अब्बोवगमिय वेयण वेदेति, उवक्कमिय वेयण वेदेति ? गोयमा ! नो अब्बोवगमिय वेयण वेदेति, उवक्कमिय वेयण वेदेति, एव जाव चउर्रिंदिया । पच्चिंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा य दुविह पि वेयण वेदेति, वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥ ६८४ ॥ कइविहा ण भते ! वेयणा पञ्चता ? गोयमा ! दुविहा वेयणा पञ्चता । तजहा-निदा य अणिदा य । नेरइया ण भते ! कि निदाय वेयण वेदेति, अणिदाय वेयण वेदेति ? गोयमा ! निदाय पि वेयण वेदेति, अणिदाय पि

केवलिसमुखामा अर्थात् । गोपमा । केवलया पुरेकदण । योगमा ।  
 अर्थात् । मत्स्यार्थ भर्ते । केवलया केवलिसमुखामा अर्थात् । गोपमा । तिन  
 अर्थिं सिय भर्ति यह अर्थिं बहुव्येष्ट एहो वा दो वा तिनिं वा द्वयेष्ट  
 सर्वपुनुता । केवलया पुरेकदण । सिय संकेजा सिय असंकेजा ॥ १८८ ॥  
 एगमेगस्य वं भंते । नरेक्यस्त नरेक्यते केवलया वेयणासमुखामा अर्थात् ।  
 गोपमा । अर्थात् । केवलया पुरेकदण । योवमा । अस्त्र अर्थिं अस्त्र भर्ति  
 अस्त्र अर्थिं यहेष्ट एहो वा दो वा तिनिं वा उक्तेष्ट दंकेजा वा अस्तेजा  
 वा अर्थात् वा । एवं अशुद्धमारते वाव वेमानियते । एगमेगस्य वं मैत । अशुद्ध  
 मारत्यस्त नरेक्यते केवलया वेयणासमुखामा अर्थात् । योवमा । अर्थात् । केवलया  
 पुरेकदण । योवमा । अस्त्र अर्थिं अस्त्र भर्ति अस्त्रर्थिं छस्य सिय उक्तेजा  
 वा सिय असंकेजा वा तिय अर्थात् वा । एगमेगस्य वं भंति । अशुद्धमारत्यस्त  
 अशुद्धमारते केवलया वेयणासमुखामा अर्थात् । योवमा । अर्थात् । केवलया  
 पुरेकदण । योवमा । अस्त्र अर्थिं अस्त्र भर्ति अस्त्रर्थिं छस्य उक्तेजा  
 वा सिय असंकेजा वा असंकेजा वा अर्थात् वा एव नागशुद्धमारते  
 विवाव वेमानियते एवं वहा वेयणासमुखाद्ये अशुद्धमारते नेरेक्याइवेमानियत  
 वावमारत्यु भवियते वहा नागशुद्धमाराह्या अक्षेष्ट द्वय वर्णुत्येष्ट मानियता  
 वाव वेमानियस्त वेमानियते । एकमेष्ट वर्णवीर्ण वर्णवीर्ण दंडपा मैति ॥ १८९ ॥  
 एगमेगस्य वं भंते । नरेक्यस्त नरेक्यते केवलया अस्त्रसमुखामा अर्थात् ।  
 गोपमा । अर्थात् । केवलया पुरेकदण । योवमा । अस्त्र अर्थिं अस्त्र भर्ति  
 अस्त्रर्थिं एग्यारियाए वाव अर्थात् । एगमेगस्य वं भंते । नरेक्यस्त अशुद्धमारते  
 केवलया अस्त्रसमुखामा अर्थात् । योवमा । अर्थात् केवलया पुरेकदण । योवमा ।  
 अस्त्र अर्थिं अस्त्र भर्ति अस्त्रर्थिं सिय उक्तेजा सिय असंकेजा सिय अर्थात्  
 एव वाव नेरेक्यस्त वर्णियते । पुरातिराह्यते एग्यारियाए नेर्क्यं एव वाव  
 मूलते वावमैतरते वहा अशुद्धमारते । वोहियते अर्थात् अर्थात् पुरेकदण  
 अस्त्र अर्थिं अस्त्र भर्ति अस्त्रर्थिं सिय असंकेजा सिय अर्थात् एव वेमानियते  
 विसिय असंकेजा सिय अर्थात् । अशुद्धमारत्यस्त नरेक्यते अर्थात् अर्थात् पुरे  
 कदण अस्त्र अर्थिं अस्त्र भर्ति अस्त्रर्थिं सिय असंकेज्य सिय अर्थेष्ट विसिय  
 अर्थात् । अशुद्धमारत्यस्त अशुद्धमारते अर्थात् ॥ १९० ॥ पुरेकदण ॥  
 नागशुद्धमारते वाव विरत्तरे वेमानियते वहा ने  
 वाव विविशुद्धमारत्यस्त विवेमानियते नवर ॥ १९१ ॥ तरोप ॥

जहेव असुरकुमारस्स । पुढविकाइयस्स नेरइयते जाव थणियकुमारते अतीता अणता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि सिय सखेजा, सिय असखेजा, सिय अणता । पुढविकाइयस्स पुढविकाइयते जाव मणूसते अतीता अणता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि एगुतरिया । वाणमतरते जहा ऐरह्यते । जोइसियवेमाणियते अतीता अणता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि सिय असखेजा, सिय अणंता, एव जाव मणूसे वि नेयब्ब । वाणमतरजोइ-सियवेमाणिया जहा असुरकुमारा, नवर सट्टाणे एगुतरियाए भाणियब्बे जाव वेमाणियस्स वेमाणियते । एव एए चउब्बीस चउब्बीसा दंडगा ॥ ६९० ॥ मारणति-यसमुग्धाओ सट्टाणे वि परद्वाणे वि एगुतरियाए नेयब्बो जाव वेमाणियस्स वेमाणियते, एवमेए चउब्बीस चउब्बीसदडगा भाणियब्बा । वेउब्बियसमुग्धाओ जहा कसायसमु-ग्धाओ तहा निरवसेसो भाणियब्बो, नवर जस्स नत्थि तस्स न बुच्छइ, एत्थ वि चउ-ब्बीस चउब्बीसा दडगा भाणियब्बा । तेयगसमुग्धाओ जहा मारणतियसमुग्धाओ, नवरं जस्सइत्थि, एवं एए वि चउब्बीस चउब्बीसा दडगा भाणियब्बा ॥ ६९१ ॥ एगमेगस्स ण भते ! नेरह्यस्स नेरह्यते केवइया आहारगसमुग्धाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि, एव जाव वेमाणियते, नवरं मणूसते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहब्बेण एको वा दो वा, उक्कोसेण तिन्हि । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहब्बेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कोसेण चत्तारि, एव सब्बजीवाण मणुस्ताण भाणियब्ब । मणूसस्स मणूसते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि जहब्बेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कोसेण चत्तारि, एव पुरेक्खडा वि । एवमेए चउब्बीस चउब्बीसा दडगा जाव वेमाणियते ॥ ६९२ ॥ एगमेगस्स ण भते ! नेरह्यस्स नेरह्यते केवइया केवलिसमुग्धाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! नत्थि, एव जाव वेमाणियते, नवरं मणूसते अतीता नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि इङ्को, मणूसस्स मणूसते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एको, एव पुरेक्खडा वि । एवमेए चउब्बीस चउब्बीसा दडगा ॥ ६९३ ॥ नेरह्याण भते ! नेरह्यते केवइया वेयणा-समुग्धाया अतीता ? गोयमा ! अणता । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणता, एव जाव वेमाणियते, एव सब्बजीवाण भाणियब्ब जाव वेमाणियाण वेमाणियते, एव जाव तेयगसमुग्धाया, नवर उवउजिझण गेयब्ब जस्सत्थि वेउब्बियतेयगा ॥ ६९४ ॥ नेरह्याण भते ! नेरह्यते केवइया आहारगसमुग्धाया अतीता ? गोयमा ! नत्थि ।

केवल या पुरेकरणा ॥ गोदमा । अरिषं एवं जाव केमापियते । वहरे मध्यमते भट्टीता असंगेजा पुरेकरणा असंगेजा एवं जाव बमापियार्थ । वहरे वस्तुइकाइयाच मध्यमते भट्टीता अर्णता पुरेकरणा अर्णता । मध्यमार्थ मध्यमते भट्टीता दिय संगेजा दिय असंगेजा एवं पुरेकरणा दिय । देशा सम्बो जहा नरहया एवं ए वडबीर्ध वडवीता रहगा ॥ १९५ ॥ नेत्रकार्य भेते । वरहयते केवला केवलिसमुदाया अर्णता ॥ गोदमा । अरिषं । केवला पुरेकरणा ॥ गोदमा । अरिषं एवं जाव केमापियते । वहरे मध्यमते भट्टीता अरिषं पुरेकरणा असंगेजा एवं जाव केमा पिया वहरे वस्तुइकाइयाच मध्यमते भट्टीता अरिषं पुरेकरणा अर्णता । मध्यमार्थ मध्यमते भट्टीता दिय अतिव दिय अरिषं अरिषं वडबीर्ध एडो वा वो वा दिय वा उद्दोसेन सदपुकुर्त । केवला पुरेकरणा ॥ गोदमा । दिय उवेजा दिय असंगेजा एवं ए वडबीर्ध वडवीता रहगा सम्बो मुच्छए भालिकाचा जाव केवलिसमुदायाएवं जावायसमुग्धाएवं मारवंतिकासमुग्धाएवं वडविकासमुग्धाएवं ठमासमुग्धाएवं जाहरायसमुग्धाएवं केवलिसमुग्धाएवं समोहयां खलमोहयां य वहरे वडबीर्ध वज्या वा वदुवा वा तुवा वा विसेमाहिया वा २ । गोदमा । सम्बल्लोका जीवा अद्वारण-समुग्धाएवं समोहया केवलिसमुदायाएवं समोहया उवेजगुणा तेकासमुग्धाएवं उमोहया असंगेजगुणा वडविकासमुदायाएवं उमोहया असंगेजगुणा मारवंतिक-समुग्धाएवं उमोहया अर्णतगुणा जमावसमुग्धाएवं उमोहया असंगेजगुणा विवणासमुग्धाएवं उमोहया विसेपाहिया असमोहया असंगेजगुणा ॥ १९६ ॥ एपुर्णि वं भेते । नेत्रहयार्थ वेपणासमुग्धाएवं फलामसमुग्धाएवं मारवंतिकसमुग्धाएवं वडविकासमुग्धाएवं उमोहयां खलमोहयां य वहरे वडबीर्ध वज्या वा ३ । गोदमा सम्बल्लोका नरहया मारवंतिकसमुग्धाएवं उमोहया उवेजगुणा वेतवासमुदायाएवं उमोहया जसंगेजगुणा फलामसमुग्धाएवं उमोहया उवेजगुणा वेतवासमुदायाएवं उमोहया उवेजगुणा खलमोहया उवेजगुणा । एपुर्णि वं भेते । अष्टुप्तमार्थ वेपणासमुग्धाएवं फलामसमुग्धाएवं मारवंतिकसमुग्धाएवं वडविकासमुग्धाएवं तुकासमुग्धाएवं उमोहयार्थ खलमोहयां य वहरे वडबीर्ध वज्या वा ४ । गोदमा । सम्बल्लोका असुखमारा तुकासमुग्धाएवं उमोहया मारवंतिकसमुग्धाएवं उमोहया असंगेजगुणा वेपणासमुग्धाएवं उमोहया असंगेजगुणा वसावस्तु रघाएवं उमोहया संवज्ञगुणा वेतविकासमुग्धाएवं उमोहया उवेजगुणा वज्या वा ५ । पुडविकासमुग्धाएवं एवं जाव विवृत्यागारा वं भेते ।

वेयणा० कसाय० मारणतियसमुग्धाए॒ण समोहयाणं असमोहयाण य क्यरे क्यरेहिंतो  
अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा पुढविकाइया मारणतियसमुग्धाए॒ण समोहया,  
कसायसमुग्धाए॒ण समोहया सखेजगुणा, वेयणासमुग्धाए॒ण समोहया विसेसाहिया,  
असमोहया असखेजगुणा । एव जाव वणस्सइकाइया, णवर सब्बत्थोवा वाउकाइया  
वेउव्वियसमुग्धाए॒ण समोहया, मारणतियसमुग्धाए॒ण समोहया असखेजगुणा,  
कसायसमुग्धाए॒ण समोहया सखेजगुणा, वेयणासमुग्धाए॒ण समोहया विसेसाहिया,  
असमोहया असखेजगुणा । वेइदियाणं भते ! वेयणासमुग्धाए॒ण कसायसमुग्धाए॒ण  
मारणतियसमुग्धाए॒ण समोहयाणं असमोहयाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ?  
गोयमा ! सब्बत्थोवा वेइदिया मारणतियसमुग्धाए॒ण समोहया, वेयणासमुग्धाए॒ण  
समोहया असखेजगुणा, कसायसमुग्धाए॒ण समोहया असखेजगुणा, असमोहया  
सखेजगुणा, एव जाव चउरिंदिया । पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भते ! वेयणासमु-  
ग्धाए॒ण कसायसमुग्धाए॒ण मारणतियसमुग्धाए॒ण वेउव्वियसमुग्धाए॒ण तेयासमुग्धा-  
ए॒ण समोहयाण असमोहयाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्ब-  
त्थोवा पचिंदियतिरिक्खजोणिया तेयासमुग्धाए॒ण समोहया, वेउव्वियसमुग्धाए॒ण  
समोहया असखेजगुणा, मारणतियसमुग्धाए॒ण समोहया असखेजगुणा, वेयणा-  
समुग्धाए॒ण समोहया असखेजगुणा, कसायसमुग्धाए॒ण समोहया सखेजगुणा,  
असमोहया सखेजगुणा । मणुस्ताण भते ! वेयणासमुग्धाए॒ण कसायसमुग्धाए॒ण  
मारणतियसमुग्धाए॒ण वेउव्वियसमुग्धाए॒ण तेयगसमुग्धाए॒ण आहारगसमुग्धाए॒ण  
केवलिसमुग्धाए॒ण समोहयाण असमोहयाण य क्यरे क्यरेहिंतो अप्पा वा ४ ?  
गोयमा ! सब्बत्थोवा मणुस्ता आहारगसमुग्धाए॒ण समोहया, केवलिसमुग्धाए॒ण  
समोहया सखेजगुणा, तेयगसमुग्धाए॒ण समोहया सखेजगुणा, वेउव्वियसमुग्धाए॒ण  
समोहया सखेजगुणा, मारणतियसमुग्धाए॒ण समोहया असखेजगुणा, वेयणासमु-  
ग्धाए॒ण समोहया असखेजगुणा, कसायसमुग्धाए॒ण समोहया सखेजगुणा, असमोहया  
असखेजगुणा । वाणमतरजोइसियवेमाणियाण जहा असुरक्माराण ॥ ६९८ ॥ कड  
ण भते ! कमायसमुग्धाया पञ्चता ? गोयमा ! चत्तारि कसायसमुग्धाया पञ्चता ।  
तजहा-कोहसमुग्धाए॒, माणसमुग्धाए॒, मायासमुग्धाए॒, लोहसमुग्धाए॒ । नेरहयाण  
भते ! कड कसायसमुग्धाया पञ्चता ? गोयमा ! चत्तारि कसायसमुग्धाया पञ्चता०  
एव जाव वेमाणियाण । एगमेगस्सण भते ! नेरहयस्स केवड्या कोहसमुग्धाया  
अतीता ? गोयमा ! अणता । केवड्या पुरेक्षडा ? गोयमा ! कस्सइ अतिथ कस्सइ-  
नतिथ, जस्सस्त्रिय जहणेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्षोसेण सखेजा वा अस-



विग्गहेणं एवडकालस्स अप्फुण्णो, एवडकालस्स फुडे । ते णं भंते ! पोगला केवइ-  
कालस्स निच्छुब्भति ? गोयमा ! जहनेण अतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण वि अतोमुहु-  
त्तस्स ॥ ७०६ ॥ ते ण भते ! पोगला निच्छूढा समाणा जाइं तत्थ पाणाइं  
भ्रयाइ जीवाड सत्ताइं अभिहणति जाव उद्वेंति, ते(हि)ण भंते ! जीवे कइ-  
किरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । ते णं  
भंते !० जीवाओ कइकिरिया ? गोयमा ! एव चेव । से णं भते ! जीवे ते य जीवा  
अणेसिं जीवाण परंपराघाएण कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि  
पंचकिरिया वि, एवं मणूसे वि ॥ ७०७ ॥ अणगारस्स ण भते ! भावियप्पणो  
केवलिसमुग्धाएण समोहयस्स जे चरमा णिजरापोगला द्वुहुमा ण ते पोगला  
पञ्चता समणाउसो । सब्बलोग पि य ण ते फुसित्ताणं चिद्वृति ? हता गोयमा !  
अणगारस्स भावियप्पणो केवलिसमुग्धाएणं समोहयस्स जे चरमा णिजरापोगला  
द्वुहुमा ण ते पोगला पञ्चता समणाउसो । सब्बलोग पि य णं ते फुसित्ताणं चिद्वृति  
॥ ७०८ ॥ छउमत्थे ण भते ! मणूसे तेसिं णिजरापोगलाण किन्चि वण्णेण वण्णं  
गधेणं गंध रसेण रस फासेण वा फास जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्टे  
समट्टे । से केणट्टेण भते ! एव बुच्छइ-‘छउमत्थे ण मणूसे तेसिं णिजरापोगलाणं  
णो किन्चि वण्णेण वण्णं गधेणं गंध रसेण रस फासेण फास जाणइ पासइ’ ?  
गोयमा ! अयणं जबुद्दीवे दीवे सब्बदीवसमुद्दाण सब्बब्भंतराए सब्बखुद्दाए वटे  
तेलापूयसठाणसठिए वटे रहच्छक्खालसठाणसठिए वटे पुक्खरकणियासठाणसठिए  
वटे पडिपुण्णचदसठाणसठिए एग जोयणसयसहस्स आग्यामविक्खमेण तिणिण जोय-  
णसयसहस्साइ सोल्स सहस्साइ दोणिण य सत्तावीसे जोयणसए तिणिण य कोसे  
अद्वावीस च धणुसय तेरस य अगुलाइं अद्वगुल च किन्चिविसेसाहिए परिक्खेवेण  
पञ्चते । देवे ण महिद्दिए जाव महासोक्खे एग महं सविलेवण गधसमुग्धायं  
गहाय त अवदालेइ, त महं एग सविलेवण गधसमुग्धाय अवदालइत्ता इणामेव  
कहु केवलकप्पे जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छराणिवाएहिं तिसत्ताख्यत्तो अणुपरियहित्ताण  
हृष्वमागच्छेजा, से नूण गोयमा ! से केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे तेहिं धाणपोगलेहिं  
फुडे ? हता ! फुडे, छउमत्थे ण गोयमा ! मणूसे तेसिं धाणपुगलाणं किन्चि  
वण्णेण वण्णं गधेण गंध रसेण रस फासेण फास जाणइ पासइ ? भगव । नो  
इणट्टे समट्टे, से एणट्टेण गोयमा ! एव बुच्छइ-‘छउमत्थे ण मणूसे तेसिं णिज-  
रापोगलाण णो किन्चि वण्णेण वण्णं गधेण गंध रसेण रस फासेण फास जाणइ  
पासइ, एसुहुमा ण ते पोगला पञ्चता समणाउसो । सब्बलोग पि य ण फुसित्ता-

सेतो अपुण्णे एवं थेरे फुडे । दे वं भंत । थेरे केन्द्रकलस स अपुण्णे केन्द्र  
एवं लस फुडे ॥ गोकमा ॥ एगम्बरेण का दुसम्भएष वा विसम्भएण का पठम्य  
एवं वा विगाहेष एवं कालस अपुण्णे एवं कलस फुडे सेच तं वेद वाच  
पंचकिरिया वि । एवं नेत्रए वि नवर आयामेण वह्नीण सात्रेण जोकलस  
उद्दोसेव असेवाक्ष जोयामाई एवं विस एवं थेरे अपुण्णे एवं थेरे फुडे  
विम्बहर्ण एवं सम्भएण का दुसम्भएष वा विसम्भएष का नवर नवरम्भएष  
वा न भवत्, सेच तं वाच वाच पंचकिरिया वि । अपुण्णमारस्त वहा वीरे  
पए, नवर विगाहे विसम्भओ वहा नेत्रायस्म देच तं वेद वहा वहर  
कुमार एवं वाच विमालिपि, नवर एवं विस वहा वीरे विरक्तेच ॥ ५ ४ ॥  
जीवे न भंत । केन्द्रकलस स अपुण्णे केन्द्रकलस फुडे विम्बहर्ण  
देहि न मठ । पोम्बकेहि केन्द्रए थेरे अपुण्णे केन्द्रए पोम्बे फुडे ॥ गोकमा ॥  
सरीरप्यमाक्षनीय विम्बहर्ण आयामेण वह्नीवेव अपुण्णस सेवेकलस  
उद्दोसेव उद्देवाई जोयामाई एवं विस विस वा एवं थेरे अपुण्णे एवं  
थेरे फुडे । दे वं भंत । केन्द्रकलस स अपुण्णे केन्द्रकलस फुडे ॥ गोकमा ॥  
एगम्बरेण का दुसम्भएष वा विसम्भएष का विम्बहर्ण एवं कलस स अपुण्णे  
एवं कलस फुडे सेच तं वेद वाच पंचकिरिया वि एवं नेत्रए वि नवर आया-  
मेव वह्नीवेष अपुण्णस असेवाक्षमार्य उद्दोसेव उद्देवाई जोयामाई एवं विस ।  
एवं थेरे केन्द्रकलस ॥ तं वाच वहा वीरपट, एवं वहा नेत्रायस्म वहा  
वहरम्भमारस्त नवर एवं विस विस वा एवं वाच विम्बहर्णमत । नवर-  
इम्भस्त वहा वीरपए, नवर एवं विस । पंचकिरियतिरिक्षद्वोमिवस्म विरक्तेच  
वहा नेत्रायस्म । अपुण्णमारमतरवोक्तिवेमाविवस्म विरक्तेच वहा वहरम्भा  
रस्त ॥ ५ ५ ॥ जीवे न भंत । उकालमुग्धाएवं समोहए समोहिता वे  
पोम्बके विम्बहर्ण देहि न मठ । पोम्बकेहि केन्द्रए थेरे अपुण्णे केन्द्रए थेरे  
फुडे ॥ एवं व्यौव केन्द्रिए समुग्धाए व्यौव नवर आयामेव वह्नीवेव अपुण्णस  
असेवाक्षमार्य सेच तं वेद एवं वाच वेमाविम्भस नवर पंचकिरियतिरिक्षद्वोमि-  
वस्म एवं विस एवं थेरे अपुण्णे एवं थेरे फुडे ॥ ५ ६ ॥ जीव न भंत ।  
आद्यारगसमुग्धाएवं समोहए समोहिता वे पोम्बके विम्बहर्ण देहि न मठ ।  
पोम्बकेहि केन्द्रए थेरे अपुण्णे केन्द्रए थेरे फुडे ॥ गोकमा ॥ सरीरप्यमाक्षनीय  
विम्बहर्ण आयामेव वह्नीवेव अपुण्णस असेवाक्षमार्य उद्दोसेव उद्देवाई  
जोयामाई एवं विस एवं विस विस विस विस विस विस विस विस विस

णजोग०, नो सच्चामोसमणजोगं जुजड, असच्चामोसमणजोगं जुंजह, वडजोगं जुंजमाणे  
कि सच्चवडजोगं जुजड, मोसवडजोगं जुजड, सच्चामोसवहजोगं०, असच्चामोसवडजोग  
जुजड ? गोयमा । सच्चवहजोग०, नो मोसवडजोगं०, नो सच्चामोसवडजोगं०, असच्चामो-  
सवहजोग पि जुंजड, कायजोग जुजमाणे आगच्छेज वा गच्छेज वा चिट्ठेज वा  
निसीएज वा हुयेज वा उल्लेज वा पलधेज वा, पाडिहारियं पीढफलगसेजा-  
सथारग पचपिण्णेजा ॥ ७१३ ॥ से ण भते । तहा मजोगी सिज्जड जाव अत  
करेड ? गोयमा ! नो डणट्टे समट्टे । मे ण पुव्वामेव सणिणस्स पर्चिदियपञ्जतयस्स  
जहण्णजोगिस्स हेढ्हा असखेजगुणपरिहीणं पद्म मणजोगं निरुभइ, तओ अणंतर  
वेडियपञ्जतगस्स जहण्णजोगिस्स हेढ्हा असखेजगुणपरिहीण दोच्चं वडजोगं  
निरुभइ, तओ अणंतर च ण सुहुमस्स पणगजीवस्स अपञ्जतयस्स जहण्णजोगिस्स  
हेढ्हा असखेजगुणपरिहीण तच्च कायजोग निरुभइ, से ण एएण उचाएणं-पद्म  
मणजोग निरुभइ, मणजोग निरुभिता वडजोग निरुभइ, वडजोग निरुभिता कायजोगं  
निरुभइ, कायजोगं निरुभिता जोगनिरोह करेड, जोगनिरोह करेता अजोगत्त  
पाउण्ड, अजोगत्त पाउणिता इमि द्वस्मपचक्त्यस्त्वारणद्वाए असखेजसमडयं अतोमु-  
हुतिय सेलेमि पठिवज्जड, पुव्वरडयगुणसेहीयं च णं कम्म, तीसे सेलेसिमद्वाए  
असखेजाहिं गुणसेहीहिं असखेजे कम्मखधे सवयड, खवडत्ता वेयणिज्ञाउणामगोत्ते  
उच्चे चत्तारि कम्मसे जुगव खवेड, जुगव खवेता ओरालियतेयाकम्मगाड सव्वाहिं  
विष्णवहणाहि विष्णवहड, विष्णवहिता उज्जुसेहीपठिवणो अफुमाणगडए एगभ-  
मएण अविग्रहेण उद्ध गता सागारोवडत्ते सिज्जड बुज्जड०, तत्य सिद्धो भवइ ।  
ते ण तत्य सिद्धा भवति अमरीरा जीवधणा दंसणणाणोवडत्ता णिट्टियट्टा णीरया  
णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा मासयमणागयद्व काल चिट्ठति । से केणट्टेण भते ।  
एव बुच्चट-ते ण तत्य मिद्धा भवति अमरीरा जीवधणा दंसणणाणोवडत्ता णिट्टियट्टा  
णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सागयमणागयद्व काल चिट्ठति' ? गोयमा ! से  
जहाणामए चीयाण असिगदहृण पुणरवि अकुरुप्ती ण भवइ, एवामेव मिद्धाण  
वि कम्मवीएमु दहैमु पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवड, से तेणट्टेण गोयमा ! एव  
बुच्चट-ते ण तत्य मिद्धा भवति अमरीरा जीवधणा दंसणणाणोवडत्ता णिट्टियट्टा  
णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा मासयमणागयद्व काल चिट्ठति' त्ति । निन्द्व-  
णसच्चदुक्ष्या जाडजरामरणवन्धणविसुधा । सागयमव्वावाह चिट्ठति सुही सुह  
पत्ता ॥ १ ॥ ७१४ ॥ पञ्चवणाए भगवर्द्धिण छत्तीसहमं समुग्घायपयं  
समत्तं ॥ पण्णवणासुच्चं समत्तं ॥

गं चिह्निति ॥ ७९ ॥ कम्हा गं मंते । केवली समुखाव गच्छइ । गोममा । केवलिस्तु चपारि कम्हेसा अक्षयीणा अपेक्षा अपिजित्या मर्तिं तंजहा—केवलिये आठए, तासे गोए सम्बद्धप्रसे दे केवलिये कम्हे इवा, सम्भवों आठए कम्हे इवा, किसमे सुमं करेह वंपत्तेहि ठिरेहि य विसमसमीकरजयाए वंपत्तेहि ठिरेहि व एवं लक्ष्म केवली समोहणह, एवं लक्ष्म समुखाव गच्छइ । उम्हे वि थं मंते । केवली समोहणिं उम्हे वि नं मंते । केवली समुखाव गच्छिति । गोममा । नो इष्टे समहु । अस्तारएन शुभ्रां, वक्षेहि ठिरेहि य । भवेवमाहम्भार्तु, समुखाव दे य यच्छइ ॥ १ ॥ अर्गशूल समुखाव अर्गता केवली विजा । अरमरणविष्मुहा ठिरिः वरगहै यमा ॥ २ ॥ ७१ ॥ कश्मसमश् वं मंते । आत्मजीकरणे पत्तते । गोममा । असुहेअसमश् अंतेसुहुतिर आत्मजीकरणे पत्तते । कश्मसमश् वं मंते । केवलिसमुखाव ए पत्तते । गोममा । अद्वसमश् पत्तते । तुंजहा—क्षमे स्मर दंडे करेह, वीए समए क्षार्ह करेह, ताए समए मंडे करेह, भवत्ये समए लंडे पूरेह, पंडमे समए म्हेयं पवित्राहरु, छ्डे समए मंडे पवित्राहरु, सत्तमए ख्मए क्षार्ह पवित्राहरु, लक्ष्मे समए दंडे पवित्राहरु, दंडे पवित्राहरुता तभो लम्ह सुरीत्ये महह ॥ ७११ ॥ से नं गंते । तहा समुखावगए फि मध्यमों तुंजह, अद्यमों तुंजह, अव्यज्ञों तुंजह । गोममा । नो मध्यमों तुंजह, नो वर्द्यमों तुंजह, अव्यज्ञों तुंजह । अव्यज्ञों वं मंते । शुभमामि फि ओरालियसुरीरकावज्ञों तुंजह, ओरालियमीसासुरीरकावज्ञों तुंजह, केवलियसुरीरकावज्ञों तुंजह वेत्तिवमीसासुरीरकावज्ञों तुंजह, आहारणसुरीरकावज्ञों ताहारणमीसुरीरकावज्ञों तुंजह, कम्हगसुरीरकावज्ञों तुंजह । गोममा । व्वेत्तालियसुरीरकावज्ञों तुंजह, ओरालियमीसासुरीरकावज्ञों तुंजह, व्वेत्तिवमीसासुरीरकावज्ञों तुंजह, आहारणसुरीरकावज्ञों तो आहारणमीसासुरीरकावज्ञों कम्हगसुरीरकावज्ञों पि तुंजह, वहमद्वम्भु समर्थ ओरालियसुरीरकावज्ञों तुंजह, विश्यम्भुगदमेमु समएमु ओरालियमीसासुरीरकावज्ञों तुंजह, व्वेत्तिवमीसासुरीरकावज्ञों तुंजह, तावचउत्थपत्तमेमु समएमु कम्हगसुरीरकावज्ञों तुंजह ॥ ७१२ ॥ ४ से वं मंते । तहा समुखावगए विजसइ तुम्हाई मुच्छ परिविष्याव सम्भुक्षयाव अंडे करेह । गोममा । नो इष्टे समहु । से वं तभो पवित्रिकाव्य पवित्रियताता तभो पच्छ भवज्ञों पि तुंजह, वर्ज्ञों पि तुंजह, वायज्ञों पि तुंजह । सवज्ञों तुंजमाले फि सबमध्यज्ञों तुंजह, मोसमध्यज्ञों तुंजह सबमध्ये तुंजह । सवज्ञों तुंजमाले फि सबमध्यज्ञों तुंजह । गोममा । तावमध्यज्ञों नो मोशम-

णजोग०, नो सच्चामोसमणजोग जुजइ, असच्चामोसमणजोग जुजइ, वइजोगं जुंजमाणे किं सच्चवइजोगं जुजइ, मोसवइजोग जुजइ, सच्चामोसवइजोगं०, असच्चामोसवइजोग जुजडै गोयमा ! सच्चवइजोग०, नो मोसवइजोगं०, नो सच्चामोसवइजोगं०, असच्चामो-सवइजोग पि जुजइ, कायजोग जुंजमाणे आगच्छेज वा गच्छेज वा चिट्ठेज वा निसीएज वा तुयेज वा उल्लंघेज वा पलघेज वा, पाडिहारिय पीढफलगसेजा-सथारग पच्चपिण्येजा ॥ ७१३ ॥ से ण भते । तहा सजोगी सिज्जइ जाव अत करेडै गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । से ण पुञ्चामेव सणिणस्स पचिदियपजातयस्स जहण्णजोगिस्स हेढ्हा असखेजगुणपरिहीणं पठम मणजोगं निरुभड, तओ अणतर वेडियपजातगस्स जहण्णजोगिस्स हेढ्हा असखेजगुणपरिहीण दोच्च वइजोगं निरुभड, तओ अणतर च ण सुहुमस्स पणगजीवस्स अपजतयस्स जहण्णजोगिस्स हेढ्हा असखेजगुणपरिहीण तच्च कायजोग निरुभड, से ण एएण उवाएॄण-पठम मणजोग निरुभड, मणजोग निरुभित्ता वइजोग निरुभड, वइजोग निरुभित्ता कायजोग निरुभड, कायजोग निरुभित्ता जोगनिरोह करेड, जोगनिरोह करेता अजोगत्त पाउण्ड, अजोगत्त पाउणित्ता ईसिं हस्सपचक्खसच्चारणद्वाए असखेजसमझयं अतोमु-हुत्तिय सेलेसिं पडिवज्जइ, पुञ्चरडयगुणसेढीय च ण कम्म, तीसे सेलेसिमद्वाए असखेजाहिं गुणसेढीहिं असखेजे कम्मखधे खवयइ, खवइत्ता वेयणिज्ञाउणामगोत्ते ढच्चए चत्तारे कम्मसे जुगव खवेइ, जुगव खवेता ओरालियतेयाकम्मगाइ सञ्चाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपडिवणो अफुसमाणगड्हेए एगस-मएण अविगगहेण उङ्हू गता सागारोवउत्ता सिज्जइ बुज्जइ०, तत्थ सिद्धो भवड । ते ण तत्थ सिद्धा भवति अमरीरा जीवघणा दसणणाणोवउत्ता णिट्टियद्वा णीरया पिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्व काल चिट्टति । से केणट्टेण भते । एव बुच्छड-‘ते ण तत्थ सिद्धा भवति असरीरा जीवघणा दसणणाणोवउत्ता णिट्टियद्वा णीरया पिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्व काल चिट्टति’२ गोयमा । से जहाणामए वीयाण अगिदद्वाण पुणरवि अकुरुप्ती ण भवड, एवामेव सिद्धाण पि कम्मवीएनु दद्वेनु पुणरवि जम्मुप्पत्ती ण भवड, से तेणट्टेण गोयमा ! एव उगद-‘ते ण तत्थ निद्धा भवति अमरीरा जीवघणा दसणणाणोवउत्ता णिट्टियद्वा णीरया पिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा नानवमणागयद्व काल चिट्टति’३ ति । निच्छ-णामव्युत्तुङ्गा जाडजरामरणवन्वणविसुष्टा । सानयमच्चावाह चिट्टति भुही चुर पत्ता ॥ १ ॥ ७१४ ॥ पञ्चवणाए भगवर्द्धेष्ठ छत्तीसहमं समुग्धायपयं नमत्तं ॥ पण्णवणासुच्चं समत्त ॥



णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

तथु णं

## जंबुदीवपणन्ती

णमो अरिहताण णमो सिद्धाण णमो आयारियाण णमो उचज्ज्ञायाणं णमो लोए सब्बसाहूणं । तेण कालेण तेण समएणं मिहिला णाम णयरी होत्था, रिद्धतिथमिय-समिद्धा वण्णओ । तीसे णं मिहिलाए णयरीए वहिया उत्तरपुरन्छिमे दिसीभाए एत्थ ण माणिमेहे णाम उज्जाणे होत्था, वण्णओ । जियसत्तु राया, धारिणी देवी, वण्णओ । तेण कालेणं तेण समएण सामी समोसदे, परिसा पिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेहे अतेवासी इदभूई णाम अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुसेहे समचउ-रंससठाणे जाव [ तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेह २ ता वदइ णमसइ वदित्ता णमंसित्ता ] एवं वयासी-कहि ण भते ! जबुदीवे २ ? केमहालए ण भते ! जबुदीवे २ ? किसठिए ण भते ! जबुदीवे २ ? किमायारभावपडोयारे ण भते ! जबुदीवे २ पण्णते ?, गोयमा ! अग्यण्ण जबुदीवे २ सब्बदीवसमुद्धाण सब्बब्भतराए सब्बखुद्धाए वेहे तेल्लापूयसठाणसठिए वेहे रहचक्खालसठाणसठिए वेहे पुक्खरकणिण-यासठाणसठिए वेहे पडिपुण्णचदसठाणसठिए एग जोयणसयसहस्स आयामवि-क्खमेण तिणिण जोयणसयसहस्साइ सोलस महस्साइ दोणिण य सत्तावीसे जोयणसए तिणिण य कोसे अट्टावीस च वणुसय तेरस य अगुलाइ अद्धगुल च किन्निविसेसाहिए परिक्खमेणेवेण पण्णते ॥ २-३ ॥ से णं एगाए वझरामईए जगईए सब्बओ समंता सपरिक्खिते, सा णं जगई अट्ट जोयणाइ उहु उच्चत्तेण मूले वारस जोयणाइ विक्खमेण मज्जे अट्ट जोयणाइ विक्खमेण उवरिं चत्तारि जोयणाइ विक्खमेणं मूले विच्छिन्ना मज्जे सखित्ता उवरिं तणुया गोपुच्छसठाणसठिया सब्बवझरामई अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा भट्टा पीरया णिम्मला णिप्पका णिक्ककडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिजा अभिरूचा पडिरूचा, सा ण जगई एगेण महंतग-वक्खकडएण सब्बओ समता सपरिक्खित्ता, से णं गवक्खकडए अद्धजोयणं उहु उच्चत्तेणं पच वणुसयाइ विक्खमेण मब्बरयणामए अच्छे जाव पडिरूचे, तीसे ण जगईए उप्पि



पव्वयवहुले पवायवहुले उज्जरवहुले णिज्जरवहुले खश्ववहुले दरिवहुले णईवहुले दहवहुले स्कखवहुले गुच्छवहुले गुम्मवहुले लयावहुले वलीवहुले अडवीवहुले साव-यवहुले तणवहुले तक्रवहुले डिम्बवहुले डमरवहुले दुटिमक्तववहुले दुकालवहुले पासटवहुले किवणवहुले वणीमगवहुले ईतिवहुले मारिवहुले कुवुट्टिवहुले अणावुट्टि-वहुले रायवहुले रोगवहुले सकिलेसवहुले अभिक्खण अभिक्खणं सखोहवहुले पाईण-पहीणायए उदीणदाहिणविन्छिणे उत्तरओ पल्लियकसठाणसठिए दाहिणओ वणुपिट्ट-सठिए तिहा लवणसमुद्पुट्टे गगासिंधूहिं महाणईहिं वेयद्वेण य पव्वएण छब्भागपविभत्ते जवुदीवदीवणउयसथभागे पचछवीसे जोयणसए छच एगूणवीसइभाए जोयणसस विक्खमेण। भरहस्य ण वासस्य वहुसज्जदेसभाए एत्य ण वेयद्वे णाम पव्वए पण्णते, जे ण भरह वास दुहा विभयमाणे २ चिट्टइ, त०-दाहिणहृभरह च उत्तरहृभरह च ॥ १० ॥ कहि ण भत्ते ! जवुदीवे दीवे दाहिणद्वे भरहे णाम वासे पण्णते २ गो० । वेयद्वस्स पव्वयस्म दाहिणेण दाहिणलवणसमुद्स्स उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्स्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्स्स पुरत्थिमेणं एत्य ण जवुदीवे दीवे दाहिणहृभरहे णाम वासे पण्णते, पाईणपहीणायए उदीणदाहिणविन्छिणे अद्वचदसठाणसठिए तिहा लवणसमुद्पुट्टे गगासिंधूहिं महाणईहिं तिभागपविभत्ते दोणिं अद्वतीसे जोयणसए तिणिं य एगूणवीसइभागे जोयणसस विक्खमेण, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपहीणायया दुहा लवणसमुद्पुट्टा पुट्टा पुरत्थिमिलाए कोडीए पुरत्थिमिल लवणसमुद्पुट्टा पच्चत्थिमिलाए कोडीए पच्चत्थिमिल लवणसमुद्पुट्टा णव जोयणसहस्साइ सत्त य अडयाले जोयणसए दुचालस य एगूणवीसइभाए जोयणसस आयामेण, तीसे धणपुट्टे दाहिणेण णव जोयण-सहस्साइ सत्तछावद्वे जोयणसए इक्क च एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णते, दाहिणहृभरहस्स ण भत्ते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते २ गो० । वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपञ्चवणेहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए, तजहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, दाहिणहृभरहे ण भत्ते ! वासे मणुयाण केरिसए आयारभावपडो-यारे पण्णते २ गोयमा ! ते ण मणुया वहुसघयणा वहुसठाणा वहुउच्चतपजवा चहुआउपज्जवा वहुइ वासाइं आउ पालेति पालित्ता अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगडया देवगामी अप्पेगइया सिज्जाति बुज्जाति मुच्चति परिगिब्बायति सञ्चदुक्खाणमंत करेति ॥ ११ ॥ कहि ण भत्ते ! जवुदीवे २ भरहे वासे वेयद्वे णाम पव्वए पण्णते २ गो० । उत्तरहृभरहवासस्स दाहिणहृ-भरहवासस्स उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्स्स पच्चत्थिमेण पच्चत्थिमलवणसमुद्स्स पुर-

बहुमज्जेसमाए पूर्व न महाई एगा पठमवरेहमा पञ्चता अद्वोमन्त दहु रक्ष-  
रेवं पूर्व यशुसमाए विक्षेपेण अग्रैसमिमा परिक्षेपेन सम्भवयामह महा जाव  
पदिक्षमा । तीसे न पठमवरेहमाए अद्वेमाहम्ब वञ्चावासे पञ्चतो तंबहा-हरमन्त  
गिमा पूर्व चहा ऊधाभिगमे जाव अश्वे जाव भुवा विमया सासवा जाव विला  
॥ ४ ॥ तीसे न जगहै उपि चाहि पठमवरेहमाए पूर्व न महाई एगे वक्षुदेव पञ्चते,  
देसूक्तहं दो जोयणाई विक्षेपेवं अग्रैसमए परिक्षेपेवं वक्षुदवञ्चयो लेमवो  
॥ ५ ॥ दस्त न वक्षुदवस अंतो बहुसमरमकिवे भूमिमाले फलते हे ज्ञायमर-  
मामिन्यापुक्तयरेह वा जाव शामाभिहर्पचक्ष्येहि भजीहि तजेहि उदसोगिए तंबहा-  
किष्टहि एवं कलो धंडो इसो घ्रसो उहो उक्तवरिणीओ पञ्चवगा चरगा मंडसा  
पुष्टविशिष्यावज्या म जेमवा तर्व न वहये वायमेहरा देवा य देवीओ व  
आसवंति सवंति विहृति वितीयति दुमहृति रमति अवंति भिसति मोहति पुण  
पोरामार्थं द्वुपरक्षतार्थं द्वुभार्थं क्षात्रार्थं क्षमाले क्षात्रायक्षमवितिविसेउ  
पञ्चबुमगमाणा विहरति । तीसे न जगहै उपि अंतो पठमवरेहमाए पूर्व न  
एगे महाई वक्षुदेव पञ्चते देसूक्ताई दो जोयणाई विक्षेपेण जेमासमएन परिक्षेप-  
वेण लिन्हे जाव तपविष्ये लेमन्ते ॥ ६ ॥ अंतुरीक्षस न भंडत । दीक्षस न  
दारा पञ्चता ॥ गो । चत्तारि दारा प त-विजए १ वेक्षते २ जवंठे ३  
अपराविए ४ ॥ ७ ॥ कहि न भंडते । अंतुरीक्षस दीक्षस विजए जामे दारै फलते ॥  
गो । अंतुरीवे दीक्षे मंदरस्तु क्षमस्तु पुरतिवेवं पञ्चालैस ओवनसहस्रार्थं  
वीक्षता अंतुरीवीचपुरतिवेते नमयसमुद्धुरतिवमदस्तु क्षमविमेन दीक्षाए  
महामहै उपि एव न अंतुरीक्षस विजए जामे दारै पञ्चते अद्व जोयणाई वहु  
उच्चरोर्थं चत्तारि जोयणाई विक्षेपेवं ताक्षर्थं च वक्षेपेवं देए वरक्षणगुमित्वार  
जाव दारस्तु क्षमव्ये जाव रायहापी । एवं चत्तारि वि दारा चटुक्षाविता  
भावियम्बा ॥ ८ ॥ अंतुरीक्षस न भंडते दीक्षस दारस्तु य दारस्तु व  
केहाए अवाहाए अंतरे पञ्चते ॥ गो । अद्वासीर्थ जोक्षणसहस्राय वायव्यं च  
ओवनाई देसूर्ण च अद्वोमन्त दारस्तु व २ अवाहाए अंतरे पञ्चते गाहा-  
अठवाईर सहस्रा वायव्यं च जोयणा वहुति । एवं च अद्वोमन्त दारता  
अंतुरीक्षस ॥ १ ॥ ९ ॥ कहि न भंडते । अंतुरीवे दीक्षे मरहे जामे वासे पञ्चते ॥  
यो । अंतुरीवर्तस्य वायवरपञ्चकरस्य दाविनेन वायवपञ्चमसमुद्धस्य उत्तरेवं  
पुरतिवमम्बणसमुद्धस्य क्षमतिवेवं क्षमतिवमम्बणसमुद्धस्य पुरतिवेवं एव न  
अंतुरीवे दीक्षे मरहे जामे वासे पञ्चते वायवग्नुते वृद्धावग्नुते विसमवग्नुते तुम्पन्ते

पञ्चववहुले पवायवहुले उज्जरवहुले णिज्जरवहुले खड्डावहुले दरिवहुले णईवहुले दहवहुले रुक्खवहुले गुच्छवहुले गुम्मवहुले लयावहुले वशीवहुले अडवीवहुले साव-यवहुले तणवहुले तक्रवहुले डिम्बवहुले डमरवहुले दुविम्बकखवहुले दुकालवहुले पासटवहुले किवणवहुले वणीमगवहुले ईतिवहुले मारिवहुले कुवुट्टिवहुले अणावुट्टिवहुले रायवहुले रोगवहुले सकिलेसवहुले अभिक्खण अभिक्खण सखोहवहुले प्राईन-पहीणायए उदीणदाहिणविच्छिणे उत्तरओ पलियंकसठाणसठिए दाहिणओ वणुपिट्ट-सठिए तिहा लवणसमुद्दपुद्दे गगासिंधूहिं महाणईहिं वेयद्वेण य पञ्चाण छब्भागपविभत्ते जवुदीवदीवणउयसथभागे पंचद्वीसे जोयणसए छच एगूणवीसइभाए जोयणस्स-विक्खमेण। भरहस्सण वासस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण वेयद्वेण णाम पञ्चए पण्णत्ते, जे ण भरह वास दुहा विभयमाणे २ चिट्ठृ, त०-दाहिणद्वृभरह च उत्तरद्वृभरह च ॥ १० ॥ कहि ण भत्ते ! जवुदीवे दीवे दाहिणद्वे भरहे णाम वासे पण्णत्ते २ गो० । वेयद्वृस्स पञ्चयस्स दाहिणेण दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पञ्चत्थिमेण पञ्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण जवुदीवे दीवे दाहिणद्वृभरहे णाम वासे पण्णत्ते, पाईणपहीणायए उदीणदाहिणविच्छिणे अद्वच्चदसठाणसठिए तिहा लवणसमुद्दपुद्दे गगासिंधूहिं महाणईहिं तिभागपविभत्ते दोणिण अद्वत्तीसे जोयणसए तिणिय एगूणवीसइभागे जोयणस्स विक्खमेण, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपहीणायया दुहा लवणसमुद्दपुद्दा पुरत्थिमिलाए कोडीए पुरत्थिमिल लवणसमुद्दपुद्दा णव जोयणसहस्साइ सत्त य अडयाले जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेण, तीसे धणपुद्दे दाहिणेण णव जोयण-सहस्साइ सत्तछावडे जोयणसए इक्क च एगूणवीसइभागे जोयणस्स किचिविसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णत्ते, दाहिणद्वृभरहस्सण भत्ते ! वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते २ गो० । बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपञ्चवण्णोहिं मणीहिं तणेहिं उवसोभिए, तजहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, दाहिणद्वृभरहे ण भत्ते ! वासे मणुयाण केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ते ण मणुया बहुसघयणा बहुसठाणा बहुउच्चतपजवा बहुआउपजवा बहुइं वासाइं आउ पालेंति पालित्ता अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगइया देवगामी अप्पेगइया सिज्जाति बुज्जाति सुच्चति परिणिव्वायति सञ्चदुक्खाणमतं करेंति ॥ ११ ॥ कहि ण भत्ते ! जवुदीवे २ भरहे वासे वेयद्वेण णामं पञ्चए पण्णत्ते २ गो० । उत्तरद्वृभरहवासस्स दाहिणेण दाहिणद्वृ-भरहवासस्स उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पञ्चत्थिमेण पञ्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुर-

स्थिमेन्द्र एवं य अंतुरीमे २ मरणे वासे भेषजे जास्ते पञ्चाए पञ्चारो पाईजपदीचकए  
सरीक्षाहिणविक्षिप्ते दुहा अवगतसमुद्दे पुढे पुररित्यमिक्ताए कोटीए पुररित्यमिक्ताए अव-  
समुद्दे पुढे पञ्चतित्यमिक्ताए कोटीए पञ्चतित्यमिक्ताए उदगतसमुद्दे पुढे, पञ्चारो बोक्षावृ उड्हे  
उच्छेते इस्तक्षेत्रार्ह जोयथार्ह उच्छेतेर्व पञ्चारो जोयथार्ह विक्षेत्रेव उस्स वाहा  
पुररित्यमपञ्चतित्यमिक्ताए वातारि अद्गारीए जोक्षणसाए सोख्स य एमूल्यवीक्षमागे ज्ञेयत्वस्तु  
अद्गमार्ह च आवामेन्द्र पञ्चावा उस्स जीवा उत्तरेव पाईजपदीचास्तमा दुहा अवगतसमुद्दे  
पुढा पुररित्यमिक्ताए कोटीए पुररित्यमिक्ताए लक्षणसमुद्दे पुढा पञ्चतित्यमिक्ताए कोटीए पञ्च-  
तित्यमिक्ताए अवगतसमुद्दे पुढा एस जोयथास्तुस्तु उत्त य वीचे जोयथास्तु पुढा स्तु च  
एमूल्यवीक्षमागे जोयथास्तु आवामेन्द्र तीसे घुप्ते दाहिणार्ह एस ज्ञेयत्वस्तुस्तु उत्त  
य तेवाडे जोयथास्तु पञ्चत्वस्तु य एमूल्यवीक्षमागे जोयथास्तु परिक्षेत्रेव रम्पल्लिक्त  
सठिए सम्बरवगामाए अच्छे सन्धे घड्हे घड्हे मट्ठे जीरए लिम्मले लिप्पक्ति लिप्पक्ति  
ज्ञाए उप्पमे समितीए पासार्हए दरिसक्तिए अभिहथे पदिस्त्वे । उमम्हे पासि दोहि  
फउमवरतेव्याहि दोहि च वर्णसंदृढहि सम्भवो सम्भावा संपरित्यक्षित्वो । ताळे च  
फउमवरतेव्यास्तो वद्वयोयन्द उड्हे उच्छेतेर्व वद्वयुत्प्रयाव विक्षेत्रेव पञ्चवसमित्यास्तो  
आवामेन्द्र वन्धम्हो भाविक्तास्तो । ते च वर्णर्तवा वेद्वावृ दो जोयथार्ह विक्षेत्रेव  
फउमवरतेव्यास्तमगा आवामेन्द्र विक्ष्वोमास्ता वन्धम्हो । वेद्वावृस्तु च  
पञ्चमस्तु पुरन्जिमपञ्चतित्यमिक्ताए दो गुहाखे पञ्चताम्हो चरम्भाहिणाक्षाम्हो  
पाईजपदीचावित्यत्यास्तो पञ्चास्तु जोयथार्ह आवामेन्द्र दुवास्तु जोयथार्ह विक्षेत्रेव  
अड्हे जोयथार्ह उड्हे उच्छेतेर्व वरामयक्षावोहाविक्षाम्हो अम्भम्भुत्सवाम्हाअम्भम्भुत्स  
वेसाम्हो विक्षेत्रवारुत्तित्यस्तम्हो वद्वयवग्वावद्वयक्षवावोद्वयक्षवावे चाव वदि-  
त्यास्तो तंज्ञान-तमित्यगुहा चेव दीडप्पावगुहा चेव तद्व च दो वेदा महित्यावा  
महाकृत्या महावाचा महास्तमा महाकृत्या महाकृत्या परिम्भोदमधिक्त्वा परित्यक्ति  
तंज्ञान—क्षमाक्षर च व वहमास्तु चेव । लेसि च वर्णसंदृढहि वाक्षुस्तमरमविजाम्हे  
भूमिमाणाखे वेद्वावृस्तु पञ्चमस्तु उम्भवो पासि इह एस जोयथार्ह उड्हे उप्पक्ता  
एत्य च दुवे विक्षावरतेव्याखो पञ्चताम्हो पाईजपदीचाक्षाम्हो उडीवाहित्यमिक्त-  
त्यास्तो वस्तु एस जोयथावृ विक्षेत्रेव पञ्चवसमित्यास्तो आवामेन्द्र उमम्हे पासि  
दोहि फउमवरतेव्याहि दोहि वभस्तेहि संपरित्यक्षाम्हो ताळ्ये च फउमवरतेव्यास्तो  
अद्वयोक्त्व उड्हे उच्छेतेर्व च वाम्भवावृ विक्षेत्रेव पञ्चवसमित्यास्तो आवामेन्द्र  
वन्धम्हो वेद्वावा वद्वावा च फउमवरतेव्यास्तमगा आवामेन्द्र वन्धम्हो । विजावर  
सेवीव भेत्वे । भूमीव वेरिस्तु आवारभावम्होवारे फञ्चते । योवमा । वाक्षुस्तम

મળિજે ભૂમિમાગે પણતે, સે જહાણામણ-આલિંગપુક્વરેડ વા જાવ ણાણાવિહ-  
પચવણોહિં મળીહિં તણેહિં ઉવસોભિએ, તંજહા-કિત્તિમેહિં ચેવ અકિત્તિમેહિં ચેવ,  
તત્થ ણ દાહિણિલાએ વિજાહરસેઢીએ ગગણવલભપામોક્વા પણાસ વિજાહરણ-  
ગરાવાસા પણત્તા, ઉત્તરિલાએ વિજાહરસેઢીએ રહનેઉરચ્કવાલપામોક્વા સાંછે  
વિજાહરણગરાવાસા પણત્તા, એવામેવ સપુન્વાવરેણ દાહિણિલાએ ઉત્તરિલાએ વિજા-  
હરસેઢીએ એગ દસુત્તર વિજાહરણગરાવાસસય ભવતીતિમક્ષાય, તે વિજાહરણગરા  
રિદ્વિથિમિયસમિદ્ધા પસુઇયજણજાણવયા જાવ પડિસ્વા, તેસુ ણ વિજાહરણગરેસુ  
વિજાહરરાયાઓ પરિવસતિ મહયાહિમવતમલયમંદરમહિંદસારા રાયવણાઓ ભાણિ-  
યબો ! વિજાહરસેઢીણ ભતે ! મણુયાણ કેરિસએ આયારભાવપદોયારે પણતે ?  
ગોયમા ! તે ણ મણુયા વહુસંઘણા વહુસઠાણા વહુઉચ્ચતપજ્વા વહુબાદપ-  
જ્વા જાવ સચ્ચદુક્ખાણમંત કરેતિ, તાસિ ણ વિજાહરસેઢીણ વહુસમરમળિ-  
જાઓ ભૂમિમાગાઓ વેયદૃસ્સ પવ્વયસ્સ ઉમભો પાસિ દસ દસ જોયણાઇ ઉદ્ધુ  
ઉપ્પદ્ધા એથણ ણ દુવે આભિઓગસેઢીઓ પણત્તાઓ, પાઈણપઢીણાયયાઓ ઉદીણ-  
દાહિણવિચ્છિણાઓ દસ દસ જોયણાઇ વિક્રખભેણ પવ્વયસમિયાઓ આયામેણ  
ઉમભો પાસિ દોહિં પઉમવરવેદ્યાહિં દોહિં ય વણસઢેહિં સપરિક્વિસ્તાઓ વણાઓ  
દોષ્ટ વિ પવ્વયસમિયાઓ આયામેણ, આભિઓગસેઢીણ ભતે ! કેરિસએ આયારભાવ-  
પદોયારે પણતે ? ગોયમા ! વહુસમરમળિજે ભૂમિમાગે પણતે જાવ તણેહિં ઉવ-  
સોભિએ વણાઇ જાવ તણાણ સદ્ગોત્તિ, તાસિ ણ આભિઓગસેઢીણ તત્થ તત્થ દેસે ૨  
તહિં તહિં જાવ વાણમતરા દેવા ય દેવીઓ ય આસયંતિ સયતિ જાવ ફલવિત્તિ-  
વિસેસ પચ્છણુભવમાણા વિહરંતિ, તાસુ ણ આભિઓગસેઢીસુ સક્ષસ્સ દેવિંદસ્સ દેવરણો  
સોમજમવસ્થાવેસમણકાઇયાણ આભિઓગાણ દેવાણ વહુવે ભવણા પણત્તા, તે ણ  
ભવણા વાહિં વદ્ધ જતો ચચુરસા વણાઓ જાવ અચ્છરઘણસઘસવિકિણા જાવ પડિ-  
સ્વા, તત્થ ણ સક્ષસ્સ દેવિંદસ્સ દેવરણો સોમજમવસ્થાવેસમણકાઇયા વહુવે આભિ-  
ઓગ દેવા મહિંદ્રિયા મહઝુદ્યા જાવ મહાસુક્વા પલિઓવમદ્વિદ્યા પરિવસતિ !  
તાસિ ણ આભિઓગસેઢીણ વહુસમરમળિજાઓ ભૂમિમાગાઓ વેયદૃસ્સ પવ્વયસ્સ  
ઉમભો પાસિ પચ ૨ જોયણાઇ ઉદ્ધુ ઉપ્પદ્ધા એથણ વેયદૃસ્સ પવ્વયસ્સ સિહરતલે  
પણતે, પાઈણપઢીણાયએ ઉદીણદાહિણવિચ્છિણો દસ જોયણાઇ વિક્રખભેણ પવ્વયસમગે  
આયામેણ, સે ણ ઇક્કાએ પઉમવરવેદ્યાએ ઇક્કેણ વણસઢેણ સચ્ચાઓ સમતા સપરે-  
ક્વિસે, પમાણ વણાનો દોષ્ટપિ, વેયદૃસ્સ ણ ભતે ! પવ્વયસ્સ સિહરતલસ્સ કેરિ-  
સએ આગારભાવપદોયારે પણતે ? ગોયમા ! વહુસમરમળિજે ભૂમિમાગે પણતે, સે

जाहाणामप-भास्त्रिगुप्त-  
जाव कावीओ पुक्करिल  
मुंगमाना लिखरिति  
कृष्ण प ३ गा । ३  
संवध्यवादगुप्ताशुद्ध १  
ग्रामहै ७ उत्तरकुमार  
चंद्रीरे २ मारहे बासे  
मण्डलसमुद्दस सप्तमिति  
हीवे भारहे बासे भेद  
जोवराहे उहू उच्चतेर्थ भूर  
पन्न जोयनार्थ लिखतेर्थे उ  
गाई बावीर्थ जोयनार्थ परिक  
उच्ची भाइरगाई गव जोव  
त्थुए गोपुच्छउठाणसंठियु ग  
फठमवरधियाए पृथेष व व  
बोन्हपि लिद्धकुमसन ने उपि  
मास्त्रिगुप्तदरेह वा जाव व  
भंते । भेदहू पन्नप दाहिनकुम  
पुरात्मर्थ लिद्धकुमसन प्रभित  
हूहे पन्नते लिद्धकुमसाचसनि  
कुमग्नदेशगाए पृथ्वे व मह  
मदतोर्थे लिखतेर्थ अस्तुराग  
पासामवहित्यसस कुमग्नदेशमा  
कुमसार्थ आवामलिखतेर्थ अक्षा  
मलिपेतियाए उपि लिद्धसन व  
पन्न कुवा-दाहिनकुमरहूहे २ ३ ४  
हेवे महित्तिए जाव परिम्भामद्विप्र  
स्तीनं चउभू अगगमहितीनं सपरि  
अग्नियादिवर्त्तनं तोमसार्थ भायरक्ता-  
रामहाणीप अन्नेति व वृक्षं तेज्ञ-

स्त्रेयसस परिक्ततेवेऽः १ उत्तरकुमरास व  
२ उद्दर्देवेरे रमते ३ योक्ता । वंशुसमरमकिवे भूमि  
३ उद्दर्देवेरे वा जाव लिखतेर्थ चेत् अविभित्ति  
४ रमे उद्दर्देवेरे भैरिषण भायारभावपदोभारे फलते ।  
५ उद्दर्द उद्दर अप्तेयास लिखतेर्थ जाव सम्मुक्तास  
६ उद्दरे रुद्ध उत्तरकुमरहे बासे उसमहूहे ।  
७ उद्दर उद्दरेवेग लिखतेर्थस्तु पुरात्मर्थ तु  
८ उद्दरे देवे पृथ्वे व वंशुहीवे हीवे उत्तरकुम  
९ उद्दर जोवराहे उहू उच्चतोर्थ वे भेद  
१० उद्दरे भग्ने ११ जोवराहे लिखतेर्थे उम  
११ उद्दरे उद्दरि धावरेगाई तुशान्तस जोवराहे वी  
१२ उद्दर लिखतेर्थे भग्ने उहू जोवराहे लिखतेर्थे  
१३ उद्दरे उद्दरेगाई उत्तरीर्थ जोवराहे परिक्ततेवे  
१४ उद्दरेवेग उपि धावरेगाई वारस भेदव  
१५ उद्दरे उपि उपि उपि गोपुच्छउठाक्षर्त्ति  
१६ उद्दरे, से १८ पन्नाए पठमवरधियाए ट्यो  
१७ उद्दरेवेग लेसद्वर्थ बोसि उहू उच्चतेर्थ व्यौ  
१८ उद्दरे न पृथ्वे भहित्तिए जाव दाहित्तिए  
१९ उद्दरेवेग अविभित्तिए ॥ १० ११ पदमो

वे हृषिहे काले फलते ३ गो । तुषिहे हृषि  
हृषिदिवसे व भोगपिपिविकाते व वरि ।  
४ तु ५ उद्दरमसुमसमाठ १ मुमसाठते १  
६ उद्दरमाघाठ ५ उद्दरमसुलमाघाठ  
जावरवर्त्तन चाराठि  
७ य तद्वारास्त्र

दाहिणद्वृभरहकूडस्स देवस्स दाहिणद्वृ णाम रायहाणी पण्णता २ गो० ! मदरस्स पव्वयस्स दक्षिणेण तिरियमसखेजदीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णमि जंबुदीवे दीवे दक्षिणेण वारस जोयणसहस्राइ ओगाहित्ता एत्य ण दाहिणद्वृभरहकूडस्स देवस्स दाहिणद्वृभरहा णाम रायहाणी भाणियव्वा जहा विजयस्स देवस्स, एव मव्वकूडा णेयव्वा जाव वेसमणकूडे परोपर पुरच्छिमपञ्चतिमेण, इमेर्सि वण्णाचासे गाहा-मज्जे वेयद्वृस्स उ कण्यमया तिण्ण होति कूडा उ । सेसा पव्वयकूडा नव्वे रयणामया होति ॥ १ ॥ माणिभद्वकूडे १ वेयद्वृकूडे २ पुण्णभद्वकूडे ३ एए तिण्ण कूडा कणगामया सेसा छप्पि रयणामया, दोण्ह विसरिसणामया देवा क्यमालए चेव णटमालए चेव, सेसाण छण्ह सरिसणामया-जण्णामया य कूडा तण्णामा खलु हवति ते देवा । पलिओवमद्विईया हवति पत्तेयपत्तेय ॥ १ ॥ रायहाणीओ जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण तिरिय असखेजदीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णमि जबुदीवे दीवे वारस जोयणसहस्राइ ओगाहित्ता एत्य ण रायहाणीओ भाणियव्वाओ विजयरायहाणीसरिसयाओ ॥ १४ ॥ से केणट्टेण भते । एव बुच्चड-वेयद्वृ पव्वए वेयद्वृ पव्वए २ गोयमा ! वेयद्वृ णं पव्वए भरह वास दुहा विभयमाणे २ चिढ्हइ, तंजहा-दाहिणद्वृभरहं च उत्तरद्वृभरह च, वेयद्वृगिरिकुमारे य महिद्विए जाव पलिओ-वमद्विइए परिवसइ, से तेणट्टेण गोयमा । एव बुच्चड-वेयद्वृ पव्वए २, अदुत्तर च ण गोयमा ! वेयद्वृस्स पव्वयस्स सासए णामधेजे पण्णते ज ण क्याड ण आसि ण क्याइ ण अत्थ ण क्याइ ण भविस्सड भुविं च भवड य भविस्सड य दुवे णियए सासए अक्ष्वए अव्वए अव्वद्विए णिच्चे ॥ १५ ॥ कहि ण भंते ! जबुदीवे दीवे उत्तरद्वृभरहे णाम वासे पण्णते २ गोयमा ! चुल्हिमवतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेण वेयद्वृस्स पव्वयस्स उत्तरेण पुरच्छिमलवणसमुद्वस्स पच्छच्छिमेण पच्छ-च्छिमलवणसमुद्वस्स पुरच्छिमेण एत्य ण जबुदीवे दीवे उत्तरद्वृभरहे णाम वासे पण्णते, पाईणपढीणायए उदीणदाहिणविच्छिणे पलियकसठाणसठिए दुहा लवणसमुद्द पुडे पुरच्छिमिळाए कोडीए पुरच्छिमिल लवणसमुद्द पुडे पच्छच्छिमिळाए जाव पुडे गगासिधौहिं महाणईहिं तिभागपविभते दोण्ण अद्वतीसे जोयणसए तिण्ण य एगूणवीसइभागे जोयणस्स विक्खमेण, तस्स वाहा पुरच्छिमपच्छच्छिमेण अट्टारस चाणउए जोयणसए सत्त य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्वभाग च आयामेण, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपढीणायया दुहा लवणसमुद्द पुडा तहेव जाव चोहस जोयणस-इस्साइ चत्तारि य एकहत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणे आयामेण पण्णता, तीसे धणुपट्टे दाहिणेण चोहस जोयणसहस्राइ पंच अद्वावीसे

बहाणामए-आरिंगापुक्क्षयेहे वा जाव बाणानिहृपंक्क्षयेहे मर्तीहै उक्क्षेमिर  
जाव बाणीओ पुक्क्षरिणीओ जाव बासमंतरा देवा य देवीओ य बाससंवि गम  
भुक्क्षमाप्ता विहरिति चंद्रुरीते वं भर्ति । हीते मारहे कासे देवापुक्क्षए य  
कूण प ३ गो । यत्र कूण प तं-चिद्रहे १ वाहिन्हृमरहृहे २  
चाहप्पामगुहृहे ३ मायिमहृहे ४ देवहृहे ५ पुक्क्षमरहृहे ६ विमिन  
ग्राहृहे ७ उत्तरहृमरहृहे ८ देवमरहृहे ९ ॥ १२ ॥ वहि वं भर्ति ।  
चंद्रुरीते २ मारहे कासे देवापुक्क्षए चिद्रहे जामं कूडे पक्षतो ३ गो । पुराण  
मस्तवनसमुद्रसु पवित्रिमेवं वाहिन्हृमरहृहृपसु पुराणिमेवं एत्य वं चंद्रुरीते  
हीते मारहे बासे देवहृ पक्षाए चिद्रहे यामं कूडे पक्षतो ४ उक्क्षेमिर  
बोमजाहै उहृ उक्क्षेमेवं सूक्षे ५ उक्क्षेमाहै बोमजाहै विक्क्षेमेवं मज्जे देवप्रवृ  
यंत्र जोवयद् विक्क्षेमेवं उक्क्षरि साहरेयाहै लिपि जोवयाहै विक्क्षेमेवं गृहे रह-  
नाहै बालीस जोवयाहै परिक्षेमेवं मज्जे देवशाहै पक्षारस बोमजाहै परिक्षेमेवं  
उक्क्षरि साहरेयाहै जब बोमजाहै परिक्षेमेवं गृहे विक्क्षिप्ते मज्जे देवितो दर्शि  
त्युए गापुक्क्षसम्पत्तिए चम्बरवज्ञामए अच्छे दम्हे जाव पुरिस्ते । से वं एत्य  
करमधरवेद्याए एत्येव व कणक्षेवं सम्बन्धो समंता संपरीक्षिक्तो पक्षार्थ वक्तव्ये  
इत्युपि चिद्रहृपसु नं उपि बहुसमरमिते भूमिभागे पक्षतो से बहाणामए-  
आरिंगापुक्क्षयेहे वा जाव बासमंतरा देवा य जाव विहरिति ॥ १३ ॥ वहि वं  
भर्ति । देवहृ पक्षाए वाहिन्हृमरहृहे जामं कूडे पक्षतो ५ गो । चाहप्पामगुहृहृसु  
पुराणिमेवं चिद्रहृपसु पवित्रिमेवं एत्य नं देवापुक्क्षए वाहिन्हृमरहृहे जामं  
कूडे पक्षतो चिद्रहृचाहप्पामसरिषे जब तस्य वं बहुसमरमितासु पूर्विमस्तु  
बहुमज्जसदेवमाए एत्य वं महै एगे पासाक्क्षवित्तिए पक्षतो अद्वेष उहृ उक्क्षेवं  
अद्वेष विक्क्षेमेवं अध्युगायम्भूतिपरहिते जाव पासाहैए ८ तस्य वं  
पासायविंशगस्त बहुमज्जसदेवमाए एत्य वं महै एगे मितिपेत्तिया पक्षतो वं  
अपुस्याहै आवामित्तिमेवं अहुआहाहै असुस्याहै बाहुतेवं सम्प्रमित्तिहै तीते वं  
मितिपेत्तियाए उपि चिद्रहृष्टे पक्षतो संपरिवार मायिवर्णे दे केल्हुवं भर्ति ।  
एवं तुच्छ-वाहिन्हृमरहृहे २ ३ गो । वाहिन्हृमरहृहे वं वाहिन्हृमरहृहे जामं  
देवे महित्तिए जाव पक्षिमोक्क्षमित्तिए परिक्षिइ, से वं तत्त्व चतुर्थ चामामित्तिवाह  
स्तीते चतुर्थ अग्नमित्तिवाह संपरिवारवं तिव्वं परिसार्थं सत्तार्थं अविवार्थं सत्तार्थं  
अभियाहित्तिवाह सोम्यस्त यावरक्षयदेवसाहस्रीयं वाहिन्हृमरहृहृत्त्वं वाहिन्हृहृए  
रमहानीए वक्षेत्ति वं बहुते देवाय व देवीय व जब विहर ॥ वहि वं भर्ति ।

६, उत्सप्तिकाले य भते ! कहविहे प० २ गो० । छविहे पणते, त०-दुस्सम-  
दुस्समाकाले १ जाव चुसमसुसमाकाले ६ । एगमेगस्स यं भते ! मुहुत्सस केवइया  
उत्सासदा वियाहिया ? गोयमा ! असखिज्ञाण समयाण समुदयसमिइसमागमेण  
सा एगा आवलियति वुच्छ सखिज्ञाओ आवलियाओ उसासो सखिज्ञाओ आवलि-  
याओ नीसासो, गाहा-दृष्टस अणवाहस्स, गिरवकिदृष्टस जंतुणो । एगे उसास-  
नीसासे, एस पाणति वुच्छै ॥ १ ॥ सत्त पाणूह से थोवे, सत्त थोवाह से लवे ।  
ल्वाण सत्तहतरीए, एस मुहुत्तेति आहिए ॥ २ ॥ तिणिण सहस्रा सत्त य सयाह  
तेवत्तरिं च उसासा । एस मुहुत्तो भणिओ सन्वेहिं अणतनाणीहि ॥ ३ ॥ एण  
मुहुत्प्पमाणेण तीस मुहुत्ता अहोरत्तो पणरस अहोरत्ता पक्खो दो पक्खा मासो  
दो मासा उऊ तिणिण उऊ अयणे दो अयणा सवच्छरे पचसवच्छरीए जुगे वीस  
जुगाह वाससए दस वाससयाह वाससहस्से सय वाससहस्राण वाससयसहस्से  
चउरासीइं वाससयसहस्राह से एगे पुबंगे चउरासीइं पुबंगसयसहस्राह से एगे  
पुब्बे एव विगुण विगुण गेयव्व तुडियंगे २ अडडगे २ अवबंगे २ हू.हुयंगे २ उप्प-  
लगे २ फउमगे २ णलिणगे २ अच्छणिउरंगे २ अउयंगे २ नउयगे २ पउयगे २  
चूलियंगे २ जाव चउरासीइ सीसपहेलियगसयसहस्राह सा एगा सीसपहेलिया  
एताव ताव गणिए एताव ताव गणियस्स विसए तेण पर ओवमिए ॥ १८ ॥  
से किं त ओवमिए २ २ दुविहे पणते, तंजहा-पलिओवमे य सागरोवमे य, से किं  
त पलिओवमे २ पलिओवमस्स पर्वण करिस्सामि, परमाणु दुविहे पणते, तजहा-  
सुहुमे य वावहारिए य, अणताण सुहुमपरमाणुपुगलाणं समुदयसमिइसमागमेण  
वावहारिए परमाणु षिप्फज्जइ तत्थ णो सत्थ कमइ-सत्थेण सुतिक्खेणवि छेत्तुं  
भित्तुं च ज ण किर सक्का । तं परमाणु सिद्धा वयति आह पमाणाण ॥ १ ॥ वाव-  
हारियपरमाणूण समुदयसमिइसमागमेण सा एगा उत्सण्हसण्हियाह वा सण्हसण्हि-  
याह वा उहूरेणूह वा तसरेणूह वा रहरेणूह वा वाल्पगेह वा लिक्खाह वा जूयाह वा  
जवमज्ज्वेह वा उस्सेहगुलेह वा, अट्ट उत्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया  
अट्ट सण्हसण्हियाओ सा एगा उहूरेणू अट्ट उहूरेणूओ सा एगा तसरेणू अट्ट  
तसरेणूओ सा एगा रहरेणू अट्ट रहरेणूओ से एगे देवकुरुतरकुराण मणुस्साण  
वाल्पगे अट्ट देवकुरुतरकुराण मणुस्साण वाल्पगा से एगे हरिवासरम्मयवासाण  
मणुस्साण वाल्पगे एव हेमवयहेरण्णवयाण मणुस्साण पुब्बविदेहअवरविदेहाण  
मणुस्साण वाल्पगा सा एगा लिक्खा अट्ट लिक्खाओ सा एगा जूया अट्ट  
ज्याओ से एगे जवमज्ज्वे अट्ट जवमज्ज्वा से एगे अंगुले एण अगुलप्पमाणेण

योग्यमए एकारस च एकालीसइभाए योवरत्स परिक्षेपेण । उत्तराहुमरहस्यम् च  
मंत्रे । वासस्म केरिसए आवारमावपडोयारे पञ्चते ॥ गोवमा । वहुसमरमित्रे मूर्मि-  
मार्गे पञ्चते से जहाणामए—आसिनामुक्त्योदे वा जाव कितिमेहि चेव अप्रितिष्ठै  
चंद उत्तराहुमरहे य भंते । वस्ते मञ्चामर्गे केरिसए आवारमावपडोयारे पञ्चते ।  
गोवमा । ते च मणुया बहुसंफयका जाव व्यपेगद्या तिर्यक्तिं जाव सम्मुक्त्यामर्गं  
केरेति ॥ १५ ॥ कहि च मंत्रे । रंगुहीवे लीब उत्तराहुमरहे वाहे उत्तमहृदे वामे  
पञ्चए पञ्चते ॥ गोवमा । गीगाहुइस्स परित्यमेण तिर्यक्त्यस्तु पुरुषिमर्गं मुक्त्यै  
मर्गंत्स्स वासाहृपम्बमस्म दाहिगिहो यित्रे एत्व न रंगुहीव लीबे उत्तराहुमरहे  
वासे उत्तमहृदे वामे पञ्चए पञ्चते अदु योवमाई उहु उव्वेण दो योवमाई  
उव्वेण मूळे अदु योवमाई तिर्यक्त्यमेण मञ्जे उ योवमाई तिर्यक्त्यमेण उही  
चतारि योवमाई तिर्यक्त्यमेण मूळे साहरेगाई पम्बीर्य योवमाई परिक्षेपेण मञ्जे  
साहरेगाई अद्वारम योवमाई परिक्षेपेण उहारि साहरेगाई दुक्तमस्तु योवमाई परि-  
क्षेपेण ( पाढेतरे—मूळ वारम योवमाई तिर्यक्त्यमेण मञ्जे अदु योवमाई तिर्यक्त्यमेण  
उपि चतारि योवमाई तिर्यक्त्यमेण मूळे साहरेगाई सत्तारीर्य योवमाई परिक्षेपेण  
मञ्जे साहरेगाई पम्बीर्य योवमाई परिक्षेपेण उपि साहरेगाई वारम योवमाई  
परिक्षेपेण ) मूळे तिर्यक्त्यमेण मञ्जे संखिते उपि उत्तुए मोपुष्टसंज्ञान्तर्य  
सम्बन्धूण्यामए अच्छ सञ्जे जाव पहिल्य स चं पं एगाए पद्मवरमधवाए तहे  
जाव भवणे चोर्य आवामर्ग अद्वारोर्य तिर्यक्त्यमेण रेमद्वणे चोर्य उहु उव्वेण अदु  
तहे उप्पलाभि पउमायि जाव उसम य एत्प हैमे महिल्लिए जाव हाहियेन  
एपद्वार्यी तहेव मंशरस्म पम्बद्यम बहा तिर्यक्त्यस्तु अविरुद्धिवे ॥ १५ ॥ पद्मो  
यफरारो समत्वो ॥

रंगुहीव च मंत्रे । लीबे भारहे वाम व्यपिदे वस्ते पञ्चते ॥ तो । तुम्हे वामे  
पञ्चते तंत्रहा—भोगापित्रिशाखे य उसगणितिहाले व आपित्रिशाखे च मंत्रे ।  
व्यपिदे पञ्चते ॥ तो । उपिद पञ्चते है—मुगममुगमाहाले । मुमशाई ॥  
मुममदुम्ममाहाले ॥ मुगममुगमाहाले ॥ मुरममाई ॥ मुरगममुगमाहाले ॥

१ तिर्यक्त्यममधैर्गमधे कम्माथ गभावगमविचित्राण गाइरस्ते वहारी  
वास अतुग्नादिगुहातुम अद्वारोर्य ( गवं पम्बा ) चहिराले य रंगुहीव  
य रंगुहीव तिर्यक्त्यममधे पम्बगवगार्या हद्वारी अतुर्यार्य वारेतरा त्वं मि-  
त्रित्वानि भहा तम्बगवगानिलो र्दमाईर्य तहार्यिपम्बमवर्तु तिर्यार्य अतुर्या  
गार्यर्य पाव ताप तिर्यी भंभवित्वा ।

६, उसपिणिकाले ण भते ! कहविहे प० ? गो० ! छविहे पणते, तं०-दुस्सम-  
दुस्समाकाले १ जाव सुसमसुसमाकाले ६ । एगमेगस्स ण भते ! सुहुत्तस्स केवइया  
उसासद्वा वियाहिया ? गोयमा ! असखिज्ञाण समयाणं समुदयसमिडसमागमेण  
सा एग आवलियति बुच्चइ सखिज्ञाओ आवलियाओ ऊसासो सखिज्ञाओ आवलि-  
याओ नीसासो, गाहा-हट्टस्स अणवगलस्स, णिरुवकिट्टस्स जतुणो । एगे ऊसास-  
नीसासे, एस पाणुति बुच्चइ ॥ १ ॥ सत्त पाणूइ से थोवे, सत्त थोवाइ से लवे ।  
ल्वाण सत्तहत्तर्णै, एस मुहुत्तेति आहिए ॥ २ ॥ तिणिण सहस्सा सत्त य सयाइ  
तेवत्तरि च ऊमासा । एस मुहुत्तो भणिओ सबवेहि अणंतनाणीहि ॥ ३ ॥ एण  
मुहुत्तप्पमाणेण तीस मुहुत्ता अहोरत्तो पणरस अहोरत्ता पक्खो दो पक्खा मासो  
दो मासा उऊ तिणिण उऊ अयणे दो अयणा सवच्छरे पचसवच्छरिए जुगे वीस  
जुगाइ वासमए दस वाससयाइ वाससहस्से सय वाससहस्साण वाससयसहस्से  
चउरासीइ वाससयसहस्साइ से एगे पुवंगे चउरासीइ पुवंगसयसहस्साइ से एगे  
पुव्वे एव विगुण विगुण गेयव्व तुडियंगे २ अडडगे २ अववंगे २ हूहुयगे २ उप्प-  
ल्गे २ पउमगे २ णलिणगे २ अच्छिणिउरगे २ अउयगे २ नउयगे २ पउयगे २  
चूलियगे २ जाव चउरासीइ सीसपहेलियगसयसहस्साइ सा एगा सीसपहेलिया  
एताव ताव गणिए एताव ताव गणियस्स विसए तेण पर ओवमिए ॥ १८ ॥  
से किं त ओवमिए ? २ दुविहे पणते, तजहा-पलिओवमे य सागरोवमे य, से किं  
त पलिओवमे ? पलिओवमस्स पहवण करिस्सामि, परमाणू दुविहे पणते, तजहा-  
सुहुमे य वावहारिए य, अणताण सुहुमपरमाणुपुगलाणं समुदयसमिडसमागमेण  
वावहारिए परमाणू णिप्पक्कड तत्थ णो मत्थ कमड-सत्थेण सुतिक्खेणवि छेत्तुं  
भित्तु च ज ण किर सङ्का । त परमाणु सिद्धा वर्यंति आड पमाणाण ॥ १ ॥ वाव-  
हारियपरमाणू समुदयसमिडसमागमेण सा एगा उस्मण्हसण्हियाड वा सण्हसण्हि-  
याड वा उहुरेण्ड वा तसरेण्ड वा रहरेण्ड वा वाल्मगेड वा लिक्खाइ वा जूयाड वा  
जवमज्जेड वा उस्सेहुलेड वा, अटु उस्मण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया  
अटु मण्हमण्हियाओ मा एगा उहुरेणू अटु उहुरेणूओ सा एगा तसरेणू अटु  
तमरेणूओ मा एगा रहरेणू अटु रहरेणूओ से एगे देवकुहत्तरकुराण मणुस्साण  
वाल्मो अटु देवकुहत्तरकुराण मणुस्साण वाल्मगा से एगे हरिवासरम्यवासाण  
मणुस्साण वाल्मगे एव हेमवयहेरणवयाण मणुस्साण पुव्वविदेहअवरविदेहाणं  
मणुस्साण वाल्मगा ना एगा लिक्खा अटु लिक्खाओ सा एगा जूया अटु  
जूयाओ से एगे जवमज्जे अटु जवमज्जा से एगे अगुलप्पमाणेण

ए अंगुलार्द पासो शारस अंगुलत विष्टवी अठवीर्दि अंगुलार्द रमणी अश्वम  
 अंगुलार्द उत्तर्णी अश्वठार्द अंगुलम् से एवा अक्षयार्द का रेण्ड वा क्षय वा उन्न  
 वा मुख्येव वा नाकिमार्द का एवर्ध अलुप्पमायेव दो असुहस्यार्द याउर्व वर्णार्द  
 याउर्व जोवर्ध एवर्ध बोद्यत्पमायेव जे वैष्ण बोवर्ध अवामविक्षमेव येन  
 उन्न उच्चतेवं तं विष्टवी मविसर्व परिक्षेवर्व से यं वैष्ण एगाहिमेविवरेविव  
 रद्वासुर्व मत्तरत्तमालेव सम्भेव मन्दिरिए मविए वासमगेवीवं । ते यं वासम  
 वो दुत्येवा यो परिकिर्देवेजा वा अमी छहेजा यो वाए इरेजा यो दुष्टम  
 इव्यमागत्तक्ष्या तजो नं वाससए २ एगमेव वासमग्न अवाहाय वासद्वर्त वासेवं ॥  
 वो लील जीरप विद्विए विट्ठिए मवद्व से तं पक्षिवेवमे । एवर्धि पावार्ध काङ्क्षेवी  
 इवेव दण्डगुप्तिवा । त सागरोवमस्म च एगस्त विवे परिमार्ध ॥ १ ॥ एवर्ध  
 यागरोवमप्पमालेवं वत्तारि सापरोवमतोऽव्योहीभो काव्ये द्वासमसुसमा । विविव  
 यागरोवमतोऽव्योहीभो काव्ये दुष्टमा २ यो सागरोवमतोऽव्योहीभो काव्ये सुस्म  
 दुष्टमा ३ एगा यागरोवमतोऽव्योही वायार्दिवाए वासुहस्येवि उविवा वहेव  
 दुस्ममसुसमा ४ एवर्धीर्द वासुहस्यार्द काव्ये दुष्टमा ५ एवर्धीर्द वासुहस्यार्द  
 काव्ये दुस्ममसुसमा ६ दुक्तर्विव उसुपिण्डीर्द एवर्धीर्द वासुहस्यार्द काव्ये दुस्म  
 मसुसमा ७ एव विक्षेवं लेक्ष्ये जाव वत्तारि सागरोवमतोऽव्योहीभो काव्ये  
 दुष्टमगुस्मा ८ इसुसागरोवमतोऽव्योहीभो काव्ये वोसुपिण्डी दसुसागरोवमतोऽव्योहीभो काव्ये  
 दुष्टमिणी ९ इसुसागरोवमतोऽव्योहीभो काव्ये वोसुपिण्डीउस्म  
 विणी ॥ ११ ॥ चंद्रीवे नं भेते । लीवे मरहे वाचे इमीरे सुसम  
 एगमाए एमाए उसमम्भुपताए भरहस्य वासस्व विरेष्व  
 होत्वा ॥ गा । चंद्रामरमणिवे भूमिमागे होत्वा से वहाँ  
 वा जाव वायामिहपैवद्वन्निवि वावेहि व मणीहि य ०  
 जाव एविवेहि, एव वन्नो गंगे) पूरो य तनाव  
 जाव तत्प न वहवे मनुस्या भ  
 दुम्हेति इसरि रमेति मम्हेति १  
 मुरामा क्षमाका वामाका २  
 वामं दुमगाका क्षमाका दुसुपिसु  
 वतोहि य दुपकेहि य फकेहि य ०  
 विद्विति लीये न दमाए मरहे  
 भेदामस्वन्नार्द पमयस्मन्नार्द

खजूरीवणाइं पालिएरीवणाइ कुसविकुसविमुद्धस्खमूलाइ जाव चिढुति, तीसे ण समाए भरहे वासे तथ्य तथ्य वहवे सेरियागुम्मा णोमालियागुम्मा कोरटयगुम्मा चधुजीवगुम्मा मणोजगुम्मा वीयगुम्मा वाणगुम्मा कणइरगुम्मा कुज्जायगुम्मा सिद्धवाखगुम्मा भोगरगुम्मा जृहियागुम्मा मलियागुम्मा वासतियागुम्मा वत्थुलगुम्मा कत्थुलगुम्मा सेवालगुम्मा अगत्थिगुम्मा भगदतियागुम्मा चपगगुम्मा जाईगुम्मा णवणीडियागुम्मा कुदगुम्मा महाजाइगुम्मा रम्मा महामेहणिउरवभूया दसद्ववण्ण कुमुम कुमुमेति जे ण भरहे वासे वहुसमरमणिज्ज भूमिभाग वायविधुयगसाला सुकपुफ्पुजोवयारकलिय करेति, तीसे ण समाए भरहे वासे तथ्य २ तहिं तहिं वहुईओ पउमल्याओ जाव सामल्याओ णिच्चं कुमुमियाओ जाव ल्यावण्णओ, तीसे ण समाए भरहे वासे तथ्य २ तहिं २ वहुईओ वणराईओ पण्णत्ताओ, किष्ठाओ किष्ठोभासाओ जाव मणोहराओ रयमत्तगछप्पयकोरगभिगारगकोंडलगजीवजीवग-नवीमुहकविलपिंगलक्खगकारडवचक्कवायगकलहसहसमारसवणेगसउणगणमिहणप-वियरियाओ महुण्णइयमहुरसरणाइयाओ सपिडिय० णाणाविहुगुच्छ० वावीपुक्ख-रिणीदीहियासु अ सुणि० विचित० अदिभत० साउ० णिरोगक० सब्बोउय-पुफ्फक्लसमिद्धाओ पिंडिम जाव पासाइयाओ ४। तीसे ण समाए भरहे वासे तथ्य तथ्य तहिं तहिं मत्तगा णामं दुमगणा पण्णत्ता, से जहा० चदप्पमा जाव छणपडिच्छणा चिढुति, एवं जाव अणिगणा णाम दुमगणा पण्णत्ता ॥ २० ॥ तीसे ण भते! समाए भरहे वासे मणुयाण केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते? गो०! ते ण मणुया सुपद्धियकुम्मचारुचलणा जाव लक्खणवजणगु-णोववेया सुजायसुविमत्तसगयगा पासादीया जाव पडिरूवा। तीसे ण भते! समाए भरहे वासे मणुईण केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते? गो०! ताओ ण मणुईओ सुजायसव्वगसुदरीओ पहाणमहिलागुणोहि जुत्ताओ अद्वक्तविमप्पमाणमउ-याओ सुकुमालकुम्मसठियविसिद्धचलणाओ उज्जुमउयपीवरसुसाहयगुलीओ अब्मुण्णय-रद्यतलिणतवसुइणिद्वणक्खाओ रोमरहियवढलहुसठियभजहणपसत्यलक्खणअको-प्पजघञ्जुयलाओ सुणिम्मियसुग्रूदसुजण्णुमडलसुवद्वसधीओ कयलीखभाइरेगसठियणि-च्छणसुकुमालमउयमसलअविरलसमसहियसुजायवटपीवरणिरतरोहु अट्टावयवीइयपट्ट-सठियपसत्यविच्छिणपिहुलसोणीओ वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालम्मसलसुवद्वज-हणवरधारिणीओ वज्विराडयपसत्यलक्खणनिरोदरतिवलियवलियतणुणयमजिन्माओ उज्जुयसमसहियजच्चतणुकसिणिद्वाइजलडहसुजायसुविभत्तकतसोभतरहलरमणिज्ज-रोमराईओ गगावत्तपयाहिणावत्ततरगभगुररविकिरणतरुणवोहियआकोसायतपउभग-



मिउमद्वसपन्ना अलीणा भद्रगा विणीया अपिन्ना असणिणहिसचया विडिमंतरपरे-  
वसणा जहिच्छियकामकामिणो ॥ २१ ॥ तेसि णं भते ! मणुयाणं केवडकालस्स  
आहारटे समुप्पज्जड २ गोयमा ! अट्टमभत्तस्स आहारटे समुप्पज्जइ, पुढवीपुफ्फला-  
हारा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !, तीसे ण भते !० पुढवीए केरिसए आसाए  
पण्णते ? गो० ! से जहाणामए-गुलेइ वा खडेइ वा सकराड वा मच्छंडियाड वा  
पप्पडमोयएड वा भिसेड वा पुफ्फुत्तराड वा पउमुत्तराइ वा विजयाइ वा महावि-  
जयाइ वा आगासियाइ वा आदसियाइ वा आगासफालिओवभाड वा उग्गाड वा अणो-  
वमाइ वा इमेए अज्ञोववणाए, भवे एयाह्वे ? , णो इणटे समटे, सा णं पुढवी इत्तो  
इष्टतरिया चेव जाव मणामतरिया चेव आसाएण पण्णत्ता । तेसि णं भते ! पुफ्फक  
लाण केरिसए आसाए पण्णते ? गोयमा ! से जहाणामए-रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स  
कळाणे भोयणजाए सयसहस्रनिप्फने वण्णेणुववेए जाव फासेण उववेए आसायणिजे  
विस्सायणिजे दिप्पणिजे दप्पणिजे मयणिजे [ विगधणिजे ] विंहणिजे सञ्चिदियगाय-  
पल्हायणिजे, भवे एयाह्वे ? , णो इणटे समटे, तेसि ण पुफ्फफलाण इत्तो इष्टतराए  
चेव जाव आसाए पण्णते ॥ २२ ॥ ते णं भते ! मणुया तमाहारमाहारेत्ता कहिं वसहिं  
उवेंति ? गोयमा ! स्क्खगेहालया ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !, तेसि ण  
भते ! स्क्खाण केरिसए आयारभावपदोयारे पण्णते ? गोयमा ! कूडागारसठिया  
पेच्छाछतज्जयतोरणगोयरवेश्याचोफालगअट्टालगपासायहम्मियगवक्खवालगपोइ-  
यावलभीघरसठिया अत्थणे इत्य वहवे वरभवणविसिद्धसठाणसठिया दुमगणा सुह-  
सीयलच्छाया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २३ ॥ अत्थि ण भते ! तीसे समाए भरहे  
वासे गेहाड वा गेहावणाइ वा ? गोयमा ! णो इणटे समटे, स्क्खगेहालया ण ते  
मणुया पण्णत्ता समणाउसो !, अत्थि ण भते ! तीसे समाए भरहे वासे गामाड वा  
जाव सणिवेसाइ वा ? गोयमा ! णो इणटे समटे, जहिच्छियकामगामिणो ण ते  
मणुया पण्णत्ता०, अत्थि ण भते !० असीइ वा मसीइ वा किसीइ वा वणिएत्ति वा  
पणिएत्ति वा वाणिज्जेइ वा ? गो० ! णो इणटे समटे, ववगयअसिमसिकिसिवणियपणिय-  
वाणिज्जा ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !, अत्थि ण भते !० हिरण्णोइ वा सुवण्णोइ  
वा कंसेइ वा दूसेइ वा मणिमोतियसव्वसिलप्पवालरत्तरयणसाव्वज्जेइ वा ? हत्ता !  
अत्थि, णो चेव ण लेसि मणुयाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छइ । अत्थि णं भते !०  
भरहे० रायाइ वा जुवरायाइ वा ईसरतलवरमाडवियकोङ्वियइब्बसेद्विसेणावइस-  
त्थवाहाइ वा ? गोयमा ! णो इणटे समटे, ववगयइहिसक्कारा ण ते मणुया०, अत्थि  
ण भते !० भरहे वासे दासेइ वा पेसेइ वा सिस्सेइ वा भयगेइ वा भाइल्लएइ वा

अम्बरएँ वा ? जो इष्टें सम्में, कवगमभामिजोगा वं ते मनुया पर्यता सम्भावसो । अतिथि वं भेतु । वीसे मध्याद भरहे वासे भावाद वा फियाद वा भावा भलिनी भजा युग भूया सुखाद वा हैता । अतिथि व्ये चक्र वं निष्ठे पेम्म-पैथं समुप्पत्ति, अतिथि वं भेतु । भरहे वासे अर्हाद वा भेरिएँ वा याकएँ वा वहएँ वा पदिलीपर्याद वा पर्यामित्तेऽवा ? जो । जो इष्टें सम्में, कवगमवेरमुक्त्या वं ते मनुया पर्यता सम्भावसो । अतिथि वं भेतु । भरहे वासे निताद वा वर्युदाद वा याकएँ वा धीकाद वा जप्ताद वा उदाद वा वासीयागाद वा निवर्तितिक्षणाद वा ? जो इष्टें सम्में, पर्यप्यआत्माहीताहृष्ट्यसद्यमत्तीपागमियपित्तिनेत्या वं ते मनुया पर्यता सम्भावसो । अतिथि वं भेतु । भरहे वासे ईरमहाद वा चंद वाय जनक भूय अमड तदाप वह चह लक्ष्य फ्लवमहाद वा ? जो इष्टें सम्में, कवगमविमा वं ते मनुया प स अतिथि वं भेतु । भरहे वासे चंद वेण्माद वा जह चड मढ मुक्तिय खेळंगा कहूय पक्ष्य सहस्रपेण्माद वा ? जो । जो इष्टें सम्में, कवगमवोडहाद वं ते मनुया पर्यता सम्भावसो । अतिथि वं भेतु । भरहे वासे सप्तदद वा रहाद वा जाकाद वा तुम्हा निव्रि फिली सीधा सद्मामिप्रद वा ? जो इष्टें सम्में पावचारपित्तरा वं ते मनुया प सम्भावसो । अतिथि वं भेतु । भरहे वासे गहीद वा नहिरीद वा अद्वाद वा एक्षयाद वा ? हैता । अतिथि जो चेत वं लेसि मनुयाज परिमोगताएँ हृष्ट्यायक्ष्यी जातिव वं भेतु । भरहे वासे भावाद वा इत्यी उद्या गोवा गववा भवा दृक्ष्या पर्यवा निवा चराहा वह उरमा चर्यु चर्णगोक्ष्यप्रववा ? हैता । अतिथि व्ये चेत वं लगि परिमोगताएँ हृष्ट्याग ~ मैते ।

भरहे वासे हीदद वा वर्त ~ नहींगमक्ष्यवर्त्य,

तिव्योलदुवगाद वा ? हैता ।

वा छिच्छेद वा चेप्याएति

वं भेतु । भरहे वासे

उप्तें सम्में, भरहे वासे

। चेत वं ते ~

वावाद

वाद वा ? हैता । अतिथि

वं भेतु । भरहे वासे

उप्तें सम्में, भरहे वासे

पुक्खरेड वा०, अतिथि णं भते ।० भरहे वासे खाण्डू वा कटगतणकन्यवराइ वा पत्तकन्यवराइ वा २० णो इण्टे समट्टे, ववगयखाणुकटगतणकन्यवरपत्तकन्यवरा णं सा समा पण्णता०, अतिथि ण भते ।० भरहे वासे डसाइ वा मसगाइ वा जूयाइ वा लिक्खाइ वा डिंकुणाइ वा पिसुयाइ वा २० णो इण्टे समट्टे, ववगयडसमसगजूय-लिक्खदिंकुणपिसुया उवद्वविरहिया ण सा समा पण्णता०, अतिथि ण भते ।० भरहे० अहीइ वा अयगराइ वा ? हंता ! अतिथि, णो चेव ण तेसि मणुयाण आबाह वा जाव पगडभद्या ण ते वालगनाणा पण्णता०, अतिथि ण भते ।० भरहे० डिंवाइ वा घमराइ वा कलहवोलखारवइरमहाजुद्धाइ वा महासगामाइ वा महासत्थपडणाइ वा महापुरिसपडणाइ वा ? गोयमा ! णो इण्टे समट्टे, ववगयवेराणुवंधा णं ते मणुया पण्णता स० ।, अतिथि ण भते ।० भरहे वासे दुब्भूयाणि वा कुलरोगाइ वा गामरो-गाइ वा मछलरोगाइ वा पोट्वे० सीसवेयणाइ वा कण्णोट्टुअच्छिणहृदंतवेयणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा सोसाइ वा दाहाड वा अरिसाइ वा अजीरगाइ वा दओदराइ वा पहुरोगाड वा भगदराइ वा एगाहियाइ वा वेयाहियाइ वा तेयाहियाइ वा चउ-त्याहियाइ वा इदगहाइ वा धणुगहाइ वा खदगहाइ वा कुमारगगहाइ वा जक्ख-गहाइ वा भूयगहाइ वा मच्छसूलाइ वा हिययसूलाइ वा पोट्ट० कुच्छिं० जोणिसू-लाइ वा गाममारीइ वा जाव सणिवेसमारीइ वा पाणिक्खया जणक्खया कुल्क्खया वसणचभूयमणारिया ? गोयमा ! णो इण्टे समट्टे, ववगयरोगायका ण ते मणुया पण्णता समणाउसो ! ॥ २४ ॥ तीसे ण भते । समाए भारहे वासे मणुयाण केवइय काल ठिँै पण्णता ? गोयमा ! जहणोण देसूणाइ तिणिण पलिओवमाइं उक्कोसेण देसू-णाइं तिणिण पलिओवमाइ, तीसे ण भते । समाए भारहे वासे मणुयाण सरीरा केवइय उच्चतेण पण्णता ? गोयमा ! जहञ्जेण तिणिण गाउयाइ उक्कोसेणं तिणिण गाउयाइ, ते ण भते । मणुया किसधयणी पण्णता ? गोयमा ! वह्रोसभणारायसधयणी पण्णता, तेसि ण भते । मणुयाण सरीरा किसठिया पण्णता ? गोयमा ! समचउरंससठाण-सठिया, तेसि ण मणुयाण बेढप्पणा पिट्टुकरंडयसया पण्णता समणाउसो !, ते णं भते । मणुया काल्मासे काल किच्चा कहिं गच्छति कहिं उववज्जति ? गो० । छम्मा-सावसेसाउया जुयलग पसवति, एगूणपण्ण राइंदियाइं सारक्खति सगोवेति सा० २ ता कासिता छीइता जभाइता अकिछ्टा अब्बहिया अपरियाविया काल्मासे काल किच्चा देवलोएस्तु उववज्जति, देवलोयपरिगहा ण ते मणुया पण्णता०, तीसे ण भते । समाए भारहे वासे कहविहा मणुस्सा अणुसञ्ज्ञित्या ? गो० । छविहा प०, त०-पम्हगधा १ मियगधा २ अममा ३ तेयतली ४ सहा ५ सणिचारी ६ ॥ २५ ॥ तीसे ण समाए

क्षमतरएह वा । यो इष्टद्वे समद्वे, वक्तगक्तामिक्तोग वं ते मनुया पञ्चता स्माणारसो । अतिथि वं भेते । सीसे समाए मरहे वासे मावाह वा मित्राह वा मात्र भविणी मज्जा पुत्र धूया दुष्वाह वा ॥ हृता ॥ अतिथि यो चेव वं तिथे भेत्ते चेष्टणे समुप्पज्ञा, अतिथि वं भेते । मरहे वासे अरीह वा वेरिएह वा वावर्ष वं वाहएह वा परिवीप्तह वा फ्लामितेह वा ॥ यो ॥ यो इष्टद्वे समद्वे, वक्तगम्भेत्तुस्त्रा वं ते मनुया पञ्चता समारसो । अतिथि वं भेते । मरहे वासे मित्राह वा वक्तव्य वं वावएह वा संपादिएह वा सहाह वा शुद्धीह वा चंगल्लएह वा ॥ हृता ॥ अतिथि यो चेव वं तेसि मनुयावं तिथे रागबेष्टणे समुप्पज्ञा, अतिथि वं भेते । मरहे वासे आवाहाह वा वीवाहाह वा अप्याह वा सहाह वा पाल्मीपावाह वा मित्रपितृनिषेषपद्म वा । यो इष्टद्वे समद्वे, वक्तगम्भावाहीवाहृष्टमस्त्रालीपागमित्रपितृमित्रेष्वया वं ते मनुया पञ्चता समारसो । अतिथि वं भेते । मरहे वासे ईष्महाह वा चर वाय वक्तव्य भूय अयड तदाग दह घह स्वरूप फ्लम्महाह वा ॥ यो ॥ वाहचे समद्वे, वक्तगम्भमित्रमा वं ते मनुया प स अतिथि वं भेते । मरहे वासे वाह पेष्ठाह वा णह चल मङ्ग मुक्तिव भेत्तेवग अहय फ्लग साम्यपेष्ठम वा ॥ यो ॥ यो इष्टद्वे समद्वे, वक्तगम्भोत्तहाह वं ते मनुया पञ्चता समारसो ॥ अतिथि वं भेते । मरहे वासे साहाह वा रहाह वा चाणाह वा शुभ्या लिही लिकी सीया चेहनामिन्नाह वा ॥ यो इष्टद्वे समद्वे पान्तारमिहाह वं त मनुया प समारसो । अतिथि वं भेते । मरहे वासे यावीह वा महिसीह वा अवाह वा एक्ष्याह वा ॥ हृता ॥ अतिथि यो चेव वं तेसि मनुयान परिमोयताए हृष्मामध्यर्थी अतिथि वं भेते । मरहे वासे आसाह वा हर्षी उद्ध ग्वेला गवदा भवा एक्ष्या पसवा मित्रा वराहा दह स्वरमा चमरा तुरेणग्नेष्ठमप्तवा ॥ हृता ॥ अतिथि यो चेव वं तेसि परिमोयताए हृष्मामध्यर्थी अतिथि वं भेते । मरहे वासे दीहाह वा पग्नाह वा विगाहीविष्णुमध्यरूपस्त्रिवृक्षविहालमुष्मद्वोर्द्विमकोम्मुष्मद्वा ॥ हृता ॥ अतिथि यो चेव वं तेसि मनुयान आवाह वा वावर्ष वा छिच्छीव वा चप्पार्थी पग्नहमह्या वं त शावयवाह प समारसो । अतिथि वं भेते । मरहे वासे सालेह वा वीहिपेत्तुमवनवनवाह वा वक्तगम्भस्त्रुत्यम-सनिम्मुक्तस्त्रिल्लवाभिष्ठेदगमयसित्तुमकोद्वर्ष्युवरयरात्मप्रसवसरैमस्त्रूपी-याह वा ॥ हृता ॥ अतिथि यो चेव वं तुलिं मनुयावं परिमोयताए हृष्मामध्यर्थी अतिथि वं भेते । मरहे वासे वग्नाह वा दीर्घोवावपादविशामित्रमाह वा ॥ यो इष्टद्वे समद्वे मरह वासे वहुस्त्रमपित्रे भूमिभगे फ्लतौ स ज्वालामए-आमिग-

पद्धिसुई २ सीमंकरे ३ सीमधरे ४ खेमकरे ५ खेमधरे ६ विमलवाहणे ७ चक्रखुमं ८  
जसम ९ अभिच्छदे १० चदामे ११ पसेणई १२ मरुदेवे १३ णाभी १४ उसमे  
१५ ति ॥ २८ ॥ तत्थ ण सुमद्धिसुड्सीमकरसीमधरखेमंकराण एएसि पञ्चण्हं  
कुलगराणं हक्कारे णामं दण्डणीई होत्था, ते ण मणुया हक्कारेण दंडेण हया समाणा  
लजिया विलजिया वेहु भीया तुसिणीया विणओणया चिढ्ठंति, तत्थ ण खेमधर-  
विमलवाहणचक्रखुमजसमअभिच्छदाण एएसि ण पञ्चण्हं कुलगराण मक्कारे णामं  
दडणीई होत्था, ते ण मणुया मक्कारेण दडेण हया समाणा जाव चिढ्ठंति, तत्थ ण  
चंदाभपसेणइमरुदेवणाभिउसभाण एएसि ण पञ्चण्हं कुलगराण धिक्कारे णाम दडणीई  
होत्था, ते ण मणुया धिक्कारेण दंडेण हया समाणा जाव चिढ्ठंति ॥ २९ ॥  
णाभिस्त ण कुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए कुच्छिसि एत्थ ण उसहे णाम अरहा  
कोसलिए पढमराया पढमजिणे पढमकेवली पढमतित्थयरे पढमधम्मवरचक्षक्षट्टी  
समुप्पजित्था, तए ण उसमे अरहा कोसलिए वीस पुव्वसयसहस्साइ कुमारवास-  
मज्ज्हे वसइ वसइत्ता तेवट्टि पुव्वसयसहस्साइ महारायवासमज्ज्हे वसइ, तेवट्टि पुव्व-  
सयसहस्साइ महारायवासमज्ज्हे वसमाणे लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-  
पज्जवसाणाओ वावत्तरि कलाओ चोसट्टि महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माण तिणिवि  
पयाहियाए उवदिसइ उवदिसित्ता पुत्तसय रज्जसए अभिसिंचड अभिसिंचित्ता तेसीइ  
पुव्वसयसहस्साइ महारायवासमज्ज्हे वसइ वसित्ता जे से गिम्हाण पढमे मासे पढमे  
पक्खे चित्तवहुले तस्स ण चित्तवहुलस्स णवमीपक्खेण दिवसस्स पच्छिमे भागे  
चइत्ता हिरण्णं चइत्ता सुवण्णं चइत्ता कोस कोट्टागार चइत्ता वल चइत्ता वाहण  
चइत्ता पुर चइत्ता अतेउर चइत्ता विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसखसिलप्पवाल-  
रत्तरयणसत्सारसावडज विच्छृङ्खित्ता विगोवइत्ता दाय दाइयाण परिभाएत्ता सुदंस-  
णाए सीयाए सटेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमगे सखिदन्त्कियणगालि-  
यमुहमगलियपूसमाणववद्माणगआइक्खगलंखमखघटियगणेहि ताहिं इद्वाहिं कताहिं  
पिवाहिं मणुणाहिं मणामाहिं उरालाहिं कळाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मग्गाहिं सस्ति-  
रीयाहिं हिययगमणिज्ञाहिं हिययपल्हायणिज्ञाहिं कणमणिव्वुइकराहिं अपुणरुत्ताहिं  
अट्टसइयाहिं वग्गाहिं अणवरय अभिणदत्ता य अभिथुणता य एव वयासी-जय जय  
नदा । जय जय भद्वा । धम्मेण अभीए परीसहोवसगगाण खतिखमे भयभेरवाणं  
धम्मे ते अविग्ध भवउत्तिकद्वु अभिणदंति य अभिथुणति य । तए ण उसमे अरहा  
कोसलिए णयणमालासहस्सोहिं पिच्छिजमाणे २ एव जाव णिगच्छइ जहा उववाइए  
जाव आउल्योल्लवहुल णभ करंते विणीयाए रायहाणीए मज्जममज्जेण णिगच्छइ

कठहि सागरोक्तमग्रेदाकोदीहि छके बीक्किरे अर्थतेहि वस्तुपञ्चवेहि अर्थति  
गंधपञ्चवेहि अर्थतेहि रासपञ्चवेहि अर्थतिहि घटपञ्चवेहि अर्थतेहि दीक्षपञ्चवेहि  
अर्थतेहि उठापञ्चवेहि अर्थतेहि उच्चापञ्चवेहि अर्थतेहि आठपञ्चवेहि अर्थति  
गुरुषुपञ्चवेहि अर्थतेहि गुरुषुपञ्चवेहि अर्थतेहि उद्धारमन्तरालीरितुरित्यस्त-  
परद्वामपञ्चवेहि अर्थतेहि गुरुषुपरिहासीए परिहासमाने २ एत्य च द्वासमा वामे उमामे  
परिवर्तितु समवात्सो । जुहीवे च भेतो । यीसे इमीसे ओसपिणीए द्वासमा  
समाए चतुर्मुखपताए मरहस्त वासस्त भेरियए आमारमाकपडोबारे होता ।  
गोममा । द्वासमारमणिये भूमिमागे होता से जाहाजामए-आर्मित्युस्तवेत वा वं  
चव च द्वासमात्समाए पुष्टवर्णिये वावरे वामते-कठपञ्चुस्तस्तमृदिता हो  
ज्ञानीसे पिठुकर्तव्यसए, छटुमात्स्त आहाये, वरुषमुर्द रात्यरिमार्द चारक्कीति चे  
परिवोक्तमार्द आज देखे ते चेव तीसे च समाए कठमिता म्हुस्तसा द्वासपिण्या  
तेज्ज्वा-एमा । वरुषमां २ द्वासमा ऐ द्वासमा ४ ॥ २६ ॥ तीसे च समाए तिमाए  
सागरोक्तमग्रेदाकोदीहि छके बीक्किरे अर्थतिहि जलपञ्चवेहि चाव अर्थतुरित्यस्त-  
हासीए परिहासमासी २ एत्य च द्वासम्हुस्तस्त वामे उमा परिवर्तितु समवात्सो ।  
या च समा तिहा रित्यज्ञ-वामे तिमाए । मजिसमे तिमाए २ परिष्कारे तिमाए ते  
ज्ञानीव च भेतो । यीसे इमीसे ओसपिणीए द्वासम्हुस्तस्तमाए समाए परममणित्यस्त-  
तिमाएषु मरहस्त वासस्त भेरियए आमारमाकपडोबारे पुळा गोममा । द्वासम-  
रमणिये भूमिमागे होता सो भेव गमो शेक्को वामद दो भक्तुस्तस्तवं न्है  
उठातेवं तेहि च म्हुवाले कठपञ्चुपिठुकर्तव्या कठात्मगत्स्त आहामुर्द स्तुप्यम-  
ठिठे परिवोक्तमी एक्कासीहि रात्यरिमार्द चारक्कीति संगोरीति चाव देवतेपरी  
ग्याहिया च देव म्हुमा फक्तता समवात्सो । तीसे ले भेतो । द्वासमाए परिवर्त्ये तिमाए  
मरहस्त वासस्त भेरियए आमारमाकपडोबारे होता । गोममा । द्वासमारमणिये  
भूमिमागे होता से जाहाजामए-आर्मित्युस्तवेत वा चाव मजीहि उपत्येति,  
तेज्ज्वा-तित्रिसेहि चेव अकितिसेहि चेव तीसे च भेतो । समाए परिवर्त्ये तिमागे  
भेतो वासे म्हुवावं भेरियए आमारगामपडोबारे होता । गोममा । तेहि म्हुवावं  
ज्ञानिहे संक्षये तामिहे उठाये नहूयि भक्तुस्तामि रम्हु उठातेवं उठातेवं संक्षिज्ञामि  
वासामि उठातेवं असंक्षिज्ञामि वासामि आठवं पार्थिवी पाक्षिता अप्येक्षमा तिर-  
मामी अप्येक्षमा तिरिसामी अप्येक्षमा म्हुस्तमामी अप्येक्षमा रेक्षमामी अप्ये-  
ग्याहा तिज्ञाति चाव स्तुप्यमाप्तं खट्टेति ॥ २७ ॥ तीसे च समाए परिवर्त्ये तिमाए  
परिवोक्तमग्रावदेषे एत्य च इमे फलरस भुक्तारा स्तुप्यमित्या तेज्ज्वा-इम्है ।



आनियसुमजियमित्तु अपुष्पोदवारकमिं निदत्त्वकमित्तुराकममो करमाये इ-  
गमरहफूलरेज पाइक्काकरेज व मंद २ उदत्तरेजुवे करेमाये ३ अक्षेत्र निदत्त्व  
क्षेत्र उज्जाल जेभेक असोगवरपाक्के तकेव चक्कापच्छ १ ता असोगवरपाक्कस्त व्हो  
सीय अमेह २ ता सीयाम्पे पक्कोद्वाह ३ ता सक्केवामरकालकार व्होमुमद २ ता  
सममेव अठड्डि मुद्दीहि ख्येय फरेह २ ता छ्टैव्य भरोर्ण अपालएष अलालाहै  
अक्कउरोर्ण ओगमुक्काग्गर्ण उमाल्ल मामार्ण राक्कार्ण यतिमाजे व्हठड्डि सरसेहि  
क्कहि एव्य बवद्दमावाव तुहै भविता अपाराजो अपमारिये फलहए ॥ ३ ॥  
उसमे ने अरहा बोसलिए स्वक्कर्त दाहिये औरप्पारी होत्या तब पर अर्थम् ।  
अप्पमिहि च व उसमे अरहा बोसलिए मुहै भविता अगाराभो अपमारिये फलहए  
उप्पमिहि च व उसमे अरहा बोसलिए भिवे बोस्क्कुम्मए विनारेहे जे हैह उवक्कम्मा  
उप्पक्कहि त ॥—दिव्या वा आब पदिस्तेमा वा अफुओमा वा तत्त्व पदिस्तेमा ऐन्न  
वा आब क्केज वा अए आरेजा अगुस्तेमा बदिज वा कमसेज वा आब पशुह-  
सेज वा दे (उप्पह) सम्ब सम्ब लहइ आब अदिवारेह, तए ने से मार्व सम्बे  
आए इरियासमिए आब पारिक्कावभियासमिए मजसमिए बमसमिए बाक्कमिए  
मणगुते आब गुत्तर्मयारी अकोहे जाब अम्मेह संतु पर्सेते उदसुते परिक्किम्मे  
क्किम्मगोहे विश्वक्केमे संक्कमिव विरजन अक्कक्कये व जाक्कहे आहरिसपदिमाने इव  
पागडमाये कुम्मो इव शुत्तियिए पुक्कपरपत्तमिव विश्वक्केमे गगममिव विराव्वक्के  
अविक्के इव विराम्म चंदो इव लोमर्सुते भुरो इव तेयसी विहग इव अवर्तिम्म-  
यामी सामये इव घंटीरे गंधरो इव अहंपी शुक्की विव सम्भक्कासविश्वहे जीवो विव  
अप्पदिहकगद्दिति । गणिय व तस्स मार्वत्तस्य अलह पदिव्वेदे से पदिव्वेदे चर्न-  
मिह मवह, तंज्ञा-दम्भो वित्तम्भे काम्भो भावभो दम्भो इव सहु मावा मे  
पिवा मे भावा मे भविष्यति मे आब सम्यपसुक्का मे विराष्ट्र मे सुख्कर्म मे आब  
उवगरज्ज मे अहवा समावये सवितो वा अवितो वा मीसिप वा दम्भमाए ऐन्न  
तस्म व मवह, दित्तम्भे पाने वा नवरे वा अद्यो वा खेते वा खेते वा गेहे वा  
अवगो वा एव तस्स व मवह, अल्लो थोवे वा छ्वे वा सुहूते वा जाहोरी वा  
फक्के वा मासे वा उच्च वा अद्यो वा संक्कम्भे वा अल्लवरे वा शीहक्काम्भिम्भे  
एव तस्स व मवह, भावभो कोहे वा आब मोहे वा भए वा हासे वा एव तस्स व  
मवह, से व मववे वासावासवर्ज हेमीताग्गिम्भस्य गामे एवगाइए वगरे फैतराव्व-  
क्कवगङ्गासुसोग्गवराम्भपरितासि विम्मम विराहकारे अम्भूम्भ अविय वासीक्कवे  
तुम्हे वेष्याक्कुम्भेवे अरते भेट्टुमि क्कववमि व समे इव घ्येए अपदिव्वेदे जीम्म-

मरणे निरवकंखे सप्तारपारगामी कम्मसगणिग्नायणद्वाए अब्मुद्धिए विहरइ । तस्स  
ण भगवतस्स एएण विहारेण विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइकंते समाणे पुरिम-  
तालस्स णयरस्स बहिया सगडमुहंसि उज्जाणसि णग्नोहवरपायवस्स अहे झाणतरि-  
याए वट्टमाणस्स फग्नुणवहुलस्स इक्कारसीए पुन्वण्हकालसमयंसि अडुमेण भत्तेण  
अपाणएण उत्तरासाढाणक्खतेण जोगमुवागाएण अणुत्तरेण नाणेण जाव चरितेण  
बणुत्तरेण तवेण बलेण वीरिएण आलएण विहारेण भावणाए खतीए गुत्तीए मुत्तीए  
हुद्धीए अज्जवेण मद्वेण लाघवेण सुचरियसोवच्चियफलनिव्वाणमग्नेण अप्पाण भावे-  
माणस्स अणंते अणुत्तरे पिव्वाधाए पिरावरणे कसिणे पडिपुणे केवलवरनाणदसणे  
समुप्पणे जिणे जाए केवली सब्बण्णू सब्बदरिसी सणेरइयतिरियणरामरस्स लोगस्स  
पज्जवे जाणइ पासइ, तजहा-आगाइ गइ ठिइ उववाय भुत्त कड पडिसेवियं आवीकम्म  
रहोकम्म त त काल मणवयकाए जोगे एवमाई जीवाणवि सब्बभावे अजीवाणवि  
सब्बभावे मोक्खमग्नस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्ने  
मम अणेंसि च जीवाण हियसुहणिस्सेसकरे सब्बदुक्खविमोक्खणे परमसुहसमाणणे  
भविस्सड । तए ण से भगव समणाण पिरगथाण य पिगंथीण य पच महब्बयाइ  
सभावणगाइ छच जीवणिकाए धम्म देसमाणे विहरइ, तजहा-पुढविकाइए भावणा-  
गमेण पच महब्बयाइ सभावणगाइ भाणियव्वाइ । उसभस्स ण अरहबो कोसलियस्स  
चउरासी गणा गणहरा होत्था, उसभस्स ण अरहबो कोसलियस्स उसभसेणपामो-  
क्खाओ चुलसीइ समणसाहस्रीओ उक्कोसिया समणसपया होत्था, उसभस्स ण० वभी-  
छुदरीपामोक्खाओ तिणिं अजियासयसाहस्रीओ उक्कोसिया अजियासपया होत्था,  
उसभस्स ण० सेज्जसपामोक्खाओ तिणिं समणोवासगसयसाहस्रीओ पच य साह-  
स्रीओ उक्कोसिया समणोवासगसपया होत्था, उसभस्स ण० सुभद्रापामोक्खाओ पच  
समणोवासियासयसाहस्रीओ चउपण्ण च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियासपया  
होत्था, उसभस्स ण अरहबो कोसलियस्स अजिणाण जिणसकासाण सब्बक्खरस-  
णिवाईं जिणो विव अवितहं वागरमाणाण चत्तारि चउद्दसपुव्वीसहस्सा अद्धमा  
य सया उक्कोसिया चउद्दसपुव्वीसपया होत्था, उसभस्स ण० णव ओहिणाणि-  
सहस्सा उक्कोसिया०, उसभस्स ण० वीस जिणसहस्सा० वीस वेडव्वियसहस्सा छच  
सया उक्कोसिया० वारस विउलम्भईसहस्सा छच सया पण्णासा० वारस वाईसहस्सा  
छच सया पण्णासा०, उसभस्स ण० गङ्गकलाणाण ठिइकलाणाण आगमेसिभद्राण  
वावीस अणुत्तरोववाइयाण सहस्सा णव य सया०, उसभस्स ण० वीस समणसहस्सा  
मिद्धा, चजालीस अजियासहस्सा सिद्धा, सद्धि अतेवासीसहस्सा सिद्धा, उसभस्स ण

आसियसैमजिबयित्तमुहुरुप्षोपमारकमिये निदाया  
 गयरहृष्टरेय पाहृष्टपदकरेव य मैद ३ उद्दत्तर  
 क्षेत्र उज्जाये जेणिव असोगवरप्रायवे तेणिव उज्जाय  
 सीये ध्वेइ ३ ता धीयामो पवाल्लद ३ ता ४  
 सयमेव चतुर्हि सुद्धीहि लोये करेइ ३ ता छठेण  
 पक्ष्यात्तर्व जोगमुदागर्व उमगार्व मोगार्व रा  
 सदि एवं लेखकुमाराव सुहै भविता अयारान  
 उसमे ये अरहा कोसलिए सवच्छर्व चाहिये चीन  
 अप्पमिहि च च उसमे अरहा कोसलिए सुहै भवि  
 त्तप्पमिहि च च उसमे अरहा कोसलिए विहै लेखन  
 उप्पज्ञति तं -रिष्मा वा जाव पडिक्षमा वा अ-  
 वा जाव वसेव वा एव भाउडेवा अनुस्मेव च  
 देव वा ते (उप्पन) सम्ये सम्ये सद्दृ जाव भा  
 चाए इरियस्तमिए जाव पारिक्षाविवासमिए  
 मणगुते जाव गुलांभवारी अनोहे जाव अन्नेह  
 छिणसोए निश्चक्षेवे सुप्पमिव विरजये वचनग  
 पागडभावे कुम्मो इव गुलियिए पुक्ष्यरपत्तमिल  
 अनिले इव विराप्त्य चौहो इव सोमदैषने सूरो  
 गानी सामग्रो इव धंमीरे भैवरो इव अन्ने पुत्रवी  
 अप्पविहृतगङ्गिति । यरिप च तस्य मगार्वतस्य कर्त  
 विहै भवह, तंवहा-दप्त्यो विक्षमे कास्मो भाव  
 पिया मे यामा मे मणिजी भे जाव संपर्यसंयुद्या म  
 सवयरव्वे मे अहा उमालयो उमितो वा अनितो  
 तस्य च मवह, विकायो गामे वा अवरे वा अरन्ये च  
 अंगये वा एवं तस्य च मवह, काळमो लोये वा अन्न  
 एव्वे वा माटे वा उत्त्वे वा अम्बे वा सक्षत्तरे वा अ-  
 एवं तस्य च मवह, गालम्बे लोहे वा जाव येहे वा भए  
 मवह, से च मगार्व वासावासक्षर्व हेमतायिमहात्तु गाम ए  
 क्षवगवहासुसाम्भरहम्पयपरिताये निम्ममे विरहम्बरे अनुम्  
 दुम्हेवे लेदणालुमेवने अरते लेदुमि वैष्वर्णमि य उमे इव अ-

दीवसमुद्धाण मज्जमज्ज्ञेण जेणेव अट्टावयपब्बए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स सरीरए  
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छता विमणे पिराणंदे चिद्धइ । तेण कालेण तेण  
समएण ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरद्धुलोगाहिवई अट्टावीसविमाणसयसहस्राहिवई  
सूलपाणी वसहवाहणे मुरिंदे अरयवरवत्थधरे जाव विउलाइं भोगभोगाइ भुंजमाणे  
विहरइ, तए णं तस्स ईसाणस्स देविंदस्स देवरणो आसण चलइ, तए णं से  
ईसाणे जाव देवराया आसण चलियं पासइ २ ता ओहिं पउजइ २ ता भगव  
तित्थगरं ओहिणा आभोइ २ ता जहा सक्के नियगपरिवारेण भाणेयब्बो जाव  
चिद्धइ, एव सब्बे देविंदा जाव अच्छुए पियगपरिवारेण आणेयब्बा, एव जाव भवण-  
वासीण वीस इदा वाणमंतराण सोलस जोइसियाण दोणिण पियगपरिवारा पेयब्बा ।  
तए ण सक्के देविंदे देवराया ते वहवे भवणवडवाणमतरजोइसवेमाणिए देवे एव  
वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! णदणवणाओ सरसाइ गोसीसवरचदणकट्टाइ  
साहरह २ ता तओ चिडगाओ राहइ-एग भगवओ तित्थगरस्स एंगं गणहराणं एंगं  
अवसेसाण अणगाराण । तए ण ते० भवणवइ जाव वेमाणिया देवा णदणवणाओ  
सरसाइ गोसीसवरचदणकट्टाइ साहरति २ ता तओ चिडगाओ रएति, एग भगवओ  
तित्थगरस्स एग गणहराण एंगं अवसेसाण अणगाराण, तए ण से सक्के देविंदे  
देवराया आभिओगे देवे सहावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !  
खीरोदगसमुद्धाओ खीरोदग साहरह, तए ण ते आभिओगा देवा खीरोदगसमुद्धाओ  
खीरोदग साहरति, तए ण से सक्के देविंदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेण  
ण्हाणेइ २ ता सरसेण गोसीसवरचदणेण अणुलिंपइ २ ता हसल्क्ष्वण पडसाडय  
पियसेइ २ ता सब्बालकारविभूसिय करेइ, तए ण ते० भवणवइ जाव वेमाणिया०  
गणहरसरीरगाइ अणगारसरीरगाइपि खीरोदगेणं ण्हावेति २ ता सरसेण गोसीसवर-  
चदणेण अणुलिंपति २ ता अहयाइ दिव्वाइ देवदूसजुयलाइ णियसेति २ ता सब्बा-  
लकारविभूसियाइ करेति, तए ण से सक्के देविंदे देवराया ते वहवे भवणवइ जाव  
वेमाणिए देवे एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ईहामिगउसभतुरय जाव  
वणलयभत्तिचित्ताओ तओ सिवियाओ विउव्वह, एग भगवओ तित्थगरस्स एंगं  
गणहराण एग अवसेसाण अणगाराण, तए ण ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिया०  
तओ सिवियाओ विउव्वति, एग भगवओ तित्थगरस्स एग गणहराण एग अव-  
सेसाणं अणगाराण, तए ण से सक्के देविंदे देवराया विमणे पिराणंदे भगवओ  
तित्थगरस्स विणद्धुजम्मजरामरणस्स सरीरगं सीय आरुहेइ २ ता चिडगाए ठवेइ,  
तए ण ते वहवे भवणवइ जाव वेमाणिया देवा गणहराण अणगाराण य विणद्ध-

अम्बरामत्तार्ण सरीरगद्वै सीर्प भारहेति २ ता शिष्याए ठ्येति तए वं से छो  
देविदि देवरामा ते वहने मवणवृ जाव देमामिदि देवे पूर्व वयासी-शिष्यामेव के  
देवाखुपिमा । शिल्पगरुचिश्याए जाव अपगारचिश्याए असुसुरवाहर्व व दुम्मन्ने  
व भारमासो य चाहरा, तए वं ते मवणवृ जाव देमामिमा देवा शिल्पगरुचिश्याए  
जाव अगगारचिश्याए जाव भारमासो य सब्बर्हेति तए वं से सहे देविदि देवरामा  
अमिगुमारे देवे सहावेइ २ ता एवं वयासी-शिष्यामेव मो देवाखुपिमा । शिल्प-  
गरुचिश्याए जाव अगगारचिश्याए अगविकाय विद्वन्नह २ ता एक्षमालाहिन्दि  
पविष्ट्याह, तए वं से अमिगुमारा देवा शिमाया विरावंदा शिल्पगरुचिश्याए  
जाव अगगारचिश्याए अगविक्ष्य विद्वन्नति तए वं से सहे देविदि देवरामा  
वारकुमारे देवे सहावेइ २ ता एवं वयासी-शिष्यामेव मो देवाखुपिमा । शिल्प-  
गरुचिश्याए जाव अगगारचिश्याए वासाहाय विद्वन्नह २ ता अगविक्ष्य  
उजाळेह शिल्पगरुसरीरणी यष्ट्वरसरीरगद्वै अगगारसरीरगद्वै व जामेह, तए वं ते  
वारकुमारा देवा शिमाया विरावंदा शिल्पगरुचिश्याए जाव विद्वन्नति अगविक्ष्य  
सजाळसि शिल्पगरुसरीरणी जाव अगगारसरीरपायि व जामेति तए वं ते वहने  
मवणवृ जाव देमामिमा देवा शिल्पगरुस्तु परिषिष्यापमहिर्म बद्देति २ ता जेमेह  
साहै साहै शिमालाहै जेमेह साहै २ मवणवृ जेमेह जाओ २ उभाओ उद्धमाओ  
तेजेह उजागव्हेति २ ता विद्वन्नह भोगमोयाहै मुम्माला शिरेति ॥ ११ ॥ यीसे  
वं सुमाए शोहै यागरेषमकोडोडीहै काढे वीझांते अपरेहै वज्ज्वलवेहै वेव  
जाव अवरेहै उद्धाणकम्म जाव परिषामाले २ एवं वं उद्धमसुम्मा घामं घमा-  
काढे पदिवज्ज्ञु सम्भावयो । यीसे वं भंते ! समाए मवणस्तु वासस्तु केरिए  
आगारमाकडोमारे पञ्चते ३ गोममा । बहुसुभरमनिष्टे भूमिमागे पञ्चते है  
ज्ञानामद-जातिनपुक्करह वा जाव मधीहै उक्तोमिदि, तंज्ञा-कितिमेहै वेव  
तीसे वं भंते । समाए भरहे ममुमार्य केरिसए आवारमावपडोमारे प ३ गोममा ।  
ऐसि यमुमार्य उमिहै सधमे उमिहै सधमे वहूहै वहूहै उक्तोर्म वहूप्येहै  
अतोमुद्दृत उक्तोर्म पुष्टकोट्याद्यर्य पालेति २ ता अप्येष्यमा विलगामी जाव  
देवगामी अप्येष्यमा विजांति तुक्तोर्म जाव सम्पुष्टप्राप्तमर्त वर्तेति तीसे वं  
समाए तमो वंसा समुप्यविलगा तंज्ञा-मराहत्वसे वज्ज्वलिति वधारत्वेति यीसे  
वं समाए तंवीत शिल्पवरा इक्कारस वज्ज्वली नव वज्ज्वला नव वासुदेवा समुप्यविलगा  
॥ १२ ॥ यीसे वं समाए एहाए आगरेषमकोडोडीए वावाय्येसाए वासखरस्तैहै  
ज्ञानिमाए अमे वीझते अन्ततहै वज्ज्वलमेहै तहेव जाव परिषामावे

एत्यं णं दूसमा णामं समाकाले पडिवजिस्सइ समणाउसो !, तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ २ गोयमा ! वहुसम-रमणिजे भूमिभागे भविस्सइ से जहाणामए-आलिंगपुक्खरेइ वा मुइगपुक्खरेइ वा जाव णाणामणिपचवणोहिं कित्तिमोहिं चेव अकित्तिमोहिं चेव, तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स मणुयाण केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णते ? गो० ! तेसि मणुयाण छब्बिहे सधयणे छब्बिहे सठाणे वहुईओ रयणीओ उहु उच्चतेण जहाणेण अतोमुहुत उकोसेण साडरें वाससय आउय पालेति २ ता अप्पेगद्या णिरयगामी जाव सब्बदुक्खाणमत करेति, तीसे णं समाए पच्छिमे तिभागे गणधम्मे पासडधम्मे रायधम्मे जायतेए धम्मचरणे य बोच्छजिस्समइ ॥ ३५ ॥ तीसे ण समाए एकवीसाए वाससहस्रोहिं काले विइकते अणतेहिं वण्णपजवेहिं गध० रस० फासपजवेहिं जाव परिहायमाणे २ एत्यं दूसमदूसमा णाम समाकाले पडिवजिस्सइ समणाउसो !, तीसे ण भते ! समाए उत्तमकट्टपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सइ २ गोयमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए भमाभूए कोलहलभूए समाणुभावेण य खरफस्सधूलिमइला दुब्बिसहा वाउला भयकरा य वाया सबद्वगा य वाइति, इह अभिक्खण २ धूमाहिंति य दिसाओ समता रउस्सला रेणुक्लुसतमपडलगिरालोया समयलुक्खयाए णं अहिय चदा सीय मोच्छिहिंति अहिय सूरिया तविस्सति, अदुत्तरं च ण गोयमा ! अभिक्खण २ अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा अग्निमेहा विजुमेहा विसमेहा अजवणि-जोदगा वाहिरोगवेयणोदीरणपरिणामसलिला अमणुण्णपाणियगा चडाणिलपहयति-क्खधाराणिवायपउर वास वासिहिंति, जेणं भरहे वासे गामागरणगरखेडकब्बडम-चंवदोणमुहपट्टणासमगय जणवय चउप्पयगवेलए खहयरे पकिखसधे गामारण्णप्य-यारणिरए तसे य पाणे बहुप्पयारे रुक्खगुच्छगुम्लयवलिपवाल्कुरमाइए तणवण-स्सइकाइ ओसहीओ य विद्दसोहिंति पञ्चयगिरिडोंगरुत्थलभट्टिमाइए य वेयहुगिरि-चजे विरावेहिंति, सलिलविलविसमगतणिणुण्णयाणि य गगासिंधुवज्जाइ समीकरे-हिंति, तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ २ गोयमा ! भूमी भविस्सइ इगालभूया मुम्मुरभूया छारियभूया तत्तकवेलु-यभूया तत्समजोहभूया धूलिवहुला रेणुवहुला पंकवहुला पणयवहुला चलणिवहुला वहूण धरणिगोयराण सत्ताण दुनिक्कमा यावि भविस्सइ । तीसे ण भते ! समाए भरहे वासे मणुयाण केरिसए आयारभावपडोयारे भविस्सइ २ गोयमा ! मणुया भविस्सति दुर्लवा दुवण्णा दुगधा दुरसा दुफासा अणिद्वा अकता अप्पिया असुभा

अमणुष्णा अमणामा हीप्रस्तरा शीणस्तरा अग्निद्वास्तरा अर्द्धतस्तरा अपिक्षस्तरा  
अमणामस्तरा अमणुष्णस्तरा अणावेजवन्यजपन्नामामा निङ्गमा कूटक्षवद्वास्तरा-  
वेरभिरया मजायाहृस्तरामण्डाणा अङ्गमिन्नुज्ञा गुरुणिभोगविनयरहिता य निक-  
म्बद्धा प्रद्वानहेतुमस्त्रोमा कल्प उरुद्वस्त्रमामण्डा फुडहिता क्षेत्रविविक्षेता  
व्युष्णारणिईपिक्षद्वास्त्रियहवा स्तुष्टिवधृतरंगपरिवेदिव्यगमंगा वरापरिक्षम्ब  
वेरगमरा पवित्रमरित्यविद्वैतसेवी उच्चमहायमुहा विसम्प्रथर्वक्षमासा वैक्षम्ब-  
विग्यमेस्त्रमुहा व्युष्टिविटिमस्त्रिम्भुष्टियक्षद्वास्त्री नित्यगमंगा कूटक्षस्त्रम-  
म्भा वरप्रवक्षमन्त्यविक्षम्भत् टोक्षमास्त्रियमंगविवेत्यव्यग- उद्वद्वास्त्रियम-  
द्वास्त्रिम्भुष्टिम्भुष्टियमाण्डुष्टिवा इवा व्युष्टिमास्त्रियमेहयो लक्षणो अपे-  
ग्याविपीक्षियगमंगा उच्चताविक्षम्भग्नै विस्त्रिता हा सत्तपरिविक्षया विगवेद्वा पूर्व  
तेया अग्निक्षम्भर्ष १ सीउच्चयरप्तस्त्राविज्ञवियमस्त्रियमस्त्रियम्भस्त्रियो एवुष्टियगमंगा व्यु-  
ष्टियमाणमायामोमा व्युष्टिमोहा अप्तुम्भम्भमागी ओस्त्रम्भ घम्भस्त्रमापरिम्भ-  
उक्षेत्येव रयविष्णमाणमेता दोम्भस्त्रीत्यास्त्राप्रमात्रादो व्युष्टिमान्त्यपरिविक्षम्भम्भम्भ  
गंगास्त्रिम्भयो महागैत्रो वेवहृ च पञ्चर्य जीवाए वाक्तरिव विक्षेत्रवीव वीक्षेत्रा  
विक्षवाहियो ममुष्णा भविस्त्रियि त च मंत्रे । ममुष्णा विमाहास्त्रियम्भि । गोवमा ।  
तेऽनं क्षेत्रेण तेऽनं समएनं फास्त्रिम्भयो महापैत्र्यो रहयामित्यवित्वरानो अक्षम्भे-  
यप्यमापमेत्त चर्त वोक्षियहिति देविव च अक्षे व्युष्टिम्भम्भम्भम्भे चो तेव च  
आत्माम्भे मविस्त्रद्वा तप च ते ममुष्णा धूम्भमाप्तस्त्रुत्यिय धूरस्त्रमाम्भम्भुत्यियि च  
विक्षेत्रेतो विमाहास्त्रियि विक्षे २ ता मक्षम्भम्भम्भे वक्षद्वे याहेहिति मक्षम्भम्भम्भे  
क्षम्भहृ गाहेता धीमावक्षद्वेहिति मक्षम्भम्भम्भोहिति इक्षवीये वाचस्त्रास्त्राव विति क्षेत्रे-  
माया विद्विस्त्रियम्भि । ते च मंत्रे । मण्ड्या विस्त्रीका विक्षवा विग्युष्णा विन्देरा  
विष्णविक्षम्भस्त्रापोत्तेववाया खोस्त्रम्भ गंगावाया मक्षम्भारा व्युष्टिमाहारा  
क्षम्भमाये क्षम्भं विक्षा चहृ गत्यिहिति चहृ तवविक्षियिति । यो । ओस्त्रम्भे चर-  
गतिरिक्षम्भविष्णु उवविक्षियिति । तीर्ते च मंत्रे । समाए सीहा क्षम्भा विणा धीविदा  
व्युष्णमात्रा तत्त्वां परस्तरा सरमास्त्रासविराम्भुष्णग्ना खेत्युष्णया सत्या वित्या  
विक्षम्भा ओस्त्रम्भं मसाहारा मक्षम्भारा व्युष्टिमाहारा क्षम्भमाते वाहै  
विक्षा वहृ गत्यिहिति चहृ तवविक्षियिति । यो । ओस्त्रम्भे चरमतिरिक्षवोक्षि  
एहृ उवविक्षियिति ते च मंत्रे । वरा क्षम्भा धीम्भामा ममुष्णा विही ओस्त्रम्भे  
मेसाहारा वाय चहृ विक्षियिति चहृ तवविक्षियिति । योवमा । ओस्त्रम्भे  
परमतिरिक्षवोक्षिएहृ उवविक्षियिति ॥ ३९ ॥ तीर्ते च समाए श्वरीसाए

वाससहस्रेहिं काले वीइकते आगमिस्ताए उस्सप्पिणीए सावणवहुलपडिवए  
 वाल्वकरणसि अभीइणक्खते चोइसपढमसमए अणतेहिं वणपजवेहिं जाव  
 अणतगुणपरिवुद्धीए परिवुद्धेमाणे २ एत्थ ण दूसमदूसमा णाम समाकाले पडिव-  
 जिस्सइ समणाउसो ! । तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगार-  
 भावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए भभाभूए एव सो  
 चेव दूसमदूसमावेढओ णेयब्बो, तीसे ण समाए एक्वीसाए वाससहस्रेहिं काले  
 विइकते अणतेहिं वणपजवेहिं जाव अणतगुणपरिवुद्धीए परिवुद्धेमाणे २ एत्थ ण  
 दूसमा णाम समाकाले पडिवजिस्सइ समणाउसो ! ॥ ३७ ॥ तेण कालेण तेण  
 समएण पुक्खलसवट्टए णामं महामेहे पाउब्बविस्सइ भरहप्पमाणमिते आयामेण  
 तयणुर्व च ण विक्खभवाहलेण, तए ण से पुक्खलसवट्टए महामेहे खिप्पामेव  
 पतणतणाइस्सइ खिप्पामेव पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ खिप्पामेव  
 पविज्जुयाइत्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्टिप्पमाणमित्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्त  
 वास वासिस्सइ, जेण भरहस्स वासस्स भूमिभाव इंगालभूयं सुम्मुरभूयं छारियभूयं  
 तत्तकवेलुगभूय तत्तसमजोइभूय णिव्वाविस्सइ, तसि च ण पुक्खलसवट्टगसि महा-  
 मेहंसि सत्तरत्त णिवइयसि समाणसि एत्थ ण खीरमेहे णाम महामेहे पाउब्बविस्सइ  
 भरहप्पमाणमेते आयामेण तयणुर्व च ण विक्खभवाहलेण, तए ण से खीरमेहे  
 णाम महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेव जुगमुसलमुट्टि जाव सत्त-  
 रत्त वास वासिस्सइ, जेण भरहवासस्स भूमीए वण गध रस फास च जणइस्सइ,  
 तसि च ण खीरमेहंसि सत्तरत्त णिवइयसि समाणसि इत्थ ण घयमेहे णाम महामेहे  
 पाउब्बविस्सइ, भरहप्पमाणमेते आयामेण, तयणुर्व च ण विक्खभवाहलेण, तए  
 ण से घयमेहे० महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ जाव वास वासिस्सइ, जेण भर-  
 हस्स वासस्स भूमीए सिणेहभाव जणइस्सइ, तसि च ण घयमेहंसि सत्तरत्त णिवइयसि  
 समाणसि एत्थ ण अमयमेहे णाम महामेहे पाउब्बविस्सइ भरहप्पमाणमित आयामेण  
 जाव वास वासिस्सइ, जेण भरहे वासे रुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लितणपव्वगहरियग-  
 ओसहिपवाल्कुरमाइए तणवणस्सइकाइए जणइस्सइ, तसि च ण अमयमेहंसि सत्त-  
 रत्त णिवइयसि समाणसि एत्थ ण रसमेहे णाम महामेहे पाउब्बविस्सइ भरहप्पमा-  
 णमित आयामेण जाव वास वासिस्सइ, जेण तेसि वहूण रुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लितण-  
 पव्वगहरियगओसहिपवाल्कुरमाईण तितकहुयक्सायअविलम्बुरे पचविहे रसविसेसे  
 जणइस्सइ, तए ण भरहे वासे भविस्सइ पस्फरुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लितणपव्वगहरिय-  
 गओसहिए, उवचियतयपत्तपवाल्कुरपुफफलसमुइए सुहोवभोगे यावि भविस्सइ ॥ ३८ ॥

तए ए ते मणुवा भरह वारे पस्तक्षयपत्ताप्रवाह्यमुम्माघ्यवित्तिरप्यवगाहरिवगाहास्तीर्थ  
उच्चनिवत्त्यपत्ताप्रवाह्यप्रवाह्यमुम्माघ्यवित्तिरप्यवगाहरिवगाहास्तीर्थ  
पाचित्ता विद्वेश्वितो विद्वान्त्यस्तीर्थि विद्वान्त्यस्तीर्थि विद्वान्त्यस्तीर्थि २ च  
एवं वद्वस्तीर्थि-जाए व वेष्टाणुपित्ता । भरह वारे पस्तक्षयपत्ताप्रवाह्यमुम्माघ्यवित्ति-  
पत्ताप्रवाह्यवगाहरिवग जाव छुहोवमोगे तं जे व इवाणुपित्ता । अर्थं केव भजप्पमिद वर्त्तम  
कुपित्तम व्याहार व्याहारित्ताइ से व अयोगाहिं छावाहिं वज्जित्तेविद्वाहिं उत्तिर्थ  
व्येस्तीर्थि २ ता भरह वारे ध्वन्तरेवं अभिममाना २ विद्वित्तिरस्तीर्थि ३ १९ व  
तीसे व भरहे । समाए भरहस्त वासस्त वेरिसए आवारमावडोमारे भविस्तद् ।  
गो । वहुसमरमधित्ते भूमिगागे भविस्तद् जाव वित्तिमेहि व अकित्तिमहि वेव  
तीसे व भरहे । समाए मणुवार्थ वेरिसए आवारमावडोमारे भविस्तद् । गोक्ता ।  
तेत्ति वं मणुवार्थ छमिहे सम्बन्धे छमिहे उठाने वहुईओ रवाणीओ वहुं उवतोर्व  
वहुल्लोर्व भत्तोमुकुर्त उडोसेर्व वाहरेगं वासस्त आठर्व पाखेहिंति २ ता अप्पेयवा  
विरयगामी जाव अप्पेगाण्डा वेष्टगामी व तिज्जीर्थि । तीसे व समाए एहवीत्तर  
वाससहस्तेहि क्कडे वीझक्के अलतेहि वज्जप्यवेहि जाव परित्तुमाने ३ एवं व  
हुसमस्तमा वार्म समाराढे पटिवज्जित्ताइ सम्भारत्तो । तीसे व भरहे । समाए  
भरहस्त वासस्त वेरिसए आवारमावडोमारे भविस्तद् । गोक्ता । वहुसमरमधित्ते  
जाव अकित्तिमेहि वेव तेत्ति व भरहे । मणुवार्थ वेरिसए आवारमावडोमारे भवि-  
स्तद् । गो । तेत्ति वं मणुवार्थ छमिहे सम्बन्धे छमिहे उठाने वहुं वहुं व  
उवतोर्व वहुल्लोर्व भत्तोमुकुर्त उडोसेर्व पुष्पडोरीभाऊर्व पाखिहिंति २ ता अप्पेय  
इया विरयगामी जाव अते करेहिंति तीसे व समाए दमो वंडा समुप्पवित्तिर  
तं—वित्त्यगरत्ते वद्ववित्तिरे एसारबदे तीसे व समाए तेवीते वित्त्यगरा पद्मारु  
वद्ववही जव वद्ववदा वद्व वामुदेवा समुप्पवित्तिरे तीसे वं समाए वायरोत्तम  
वोडाकोदीए वायाल्लैसाए वाससहस्तेहि व्यविमाए काळे वीझति अवतिहि वल्ल-  
पञ्चवेहि जाव अर्गत्त्युवर्त्तिरुहीए परित्तुमाने ३ एवं वं हुसमस्तमा वल्ले समा-  
क्कडे पटिवज्जित्ताइ सम्भारत्तो । ता वं समा तिहा विमजित्ताइ, कडमे तिमाये  
मजिसमे तिमागे परित्तम तिमागे तीसे वं भरहे । समाए कडमे तिमाए भरहस्त  
वासस्त वेरिसए आवारमावडोमारे भविस्तद् । गोक्ता । वहुसमरमधित्ते जाव  
भविस्तद्, मणुवार्थ जा वेव ओसापिणीए परित्तमे तिमाग वत्तन्त्रया जा भावि-  
ममा तुलगरवज्ञा उसममाविरज्ञा अण्डे पहर्ति-तीसे वं समाए पडम तिमाए  
द्वमे कण्वरस कुम्मरा समुप्पवित्तिरे तंजहा—तुर्मर्ह जाव उवमे उसे तं व ए-

णीईओ पडिलोमाओ ऐयब्बाओ, तीसे ण समाए पढमे तिभाए रायधम्मे जाव धम्मचरणे य चोच्छजिसइ, तीसे ण समाए मज्जमपच्छमेसु तिभागेसु जा पढममज्जमेसु वत्तव्या ओसपिणीए सा भाणियब्बा, सुसमा तहेव सुसमासुसमा-वि तहेव जाव छन्विहा मणुस्सा अणुसजिस्सति जाव सणिचारी ॥ ४० ॥ वीओ वक्खारो समत्तो ॥

से केणद्वेष भते ! एवं वुच्चइ-भरहे वासे २ ? गोयमा ! भरहे ण वासे वेयहूस्स पव्वयस्स दाहिणेण चोहसुत्तरं जोयणसय एगारस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अवाहाए दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेण चोहसुत्तरं जोयणसर्य एक्कारस य एगूण-वीसइभाए जोयणस्स अवाहाए गगाए महाणईए पच्चत्थिमेण सिंधूए महाणईए पुरत्थिमेण दाहिणहृभरहमज्जाळतिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्य ण विणीया णाम रायहाणी पण्णता, पाईणपदीणायया उदीणदाहिणविच्छिणा दुवालसजोयणायामा णवजोयणविच्छिणा धणवइमशणिम्माया चामीयरपागारा णाणामणिपञ्चवण्ण-कविसीसगपरिमडियाभिरामा अलकापुरीसकासा पमुइयपकीलिया पच्चक्खं देव-लोगभूया रिद्धित्थमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव पडिरुवा ॥ ४१ ॥ तत्थ ण विणीयाए रायहाणीए भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवटी समुप्पज्जित्या, महयाहिमवतमहतमलयमदर जाव रज पसासेमाणे विहरइ । विह्वओ गमो राय-वण्णगस्स इमो-तत्थ असखेजकालवासातरेण उप्पज्जए जससी उत्तमे अभिजाए सत्तवीरियपरकमगुणे पसत्थवण्णसरसारसधयणतणुगवुद्धिवारणमेहासठाणसीलप्पगई पहाणगारवच्छायागइए अणेगवयणपहाणे तेयआउवलवीरियजुते अङ्गुसिरघणणि-चियलोहसक्लणारायवइरउसहसधयणदेहधारी ज्ञस १ जुग २ भिंगार ३ वद्धमाणग ४ भद्धमाणग ५ सख ६ छत ७ वीयणि ८ पडाग ९ चक्र १० पंगल ११ मुसल १२ रह १३ सोत्थिय १४ अकुस १५ चदाइच्च १६-१७ अगि १८ जूय १९ सागर २० इद्ज्जय २१ पुहवि २२ पउम २३ कुजर २४ सीहासण २५ दड २६ फुम्स २७ गिरिवर २८ त्रुरगवर २९ वरमउड ३० कुडल ३१ णदावत्त ३२ घणु ३३ कोत ३४ गागर ३५ भवणविमाण ३६-अणेगलक्खणपसत्थसुवि-भत्तचित्तकरचरणदेसभाए उङ्गुमुहलोमजालसुकुमालणिद्वमउआवत्तपसत्थलोमविरइ-यसिरिवच्छच्छुणविउलवच्छे देसखेत्तसुविमत्तदेहधारी तस्णरविरस्सिवोहियवरकमल-विवुद्धगव्ववण्णे हयपोसणकोससणिभपसत्थपिद्वतणिरुवलेवे पउमुप्पलकुदजाइज्जहि-यवरचपण्णागपुफ्सारंगतुक्काधी छत्तीसाहियपसत्थपत्थिवगुणेहि जुते अब्बोच्छ-ण्णायवत्ते पागढउभयजोणी विसुद्धणियगकुलगयणपुण्णच्छदे चदे इव सोमयाए णयण-



सुद्धियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणगविमलमहरिहणिउणोवियमिसिमिसिंतविरइयसु-  
सिलिट्टविसिट्टलट्टसठियपसत्यआविद्वीरवलए, कि वहुणा ?, कपप्रक्खए चेव अल-  
कियविभूसिए परिदे सकोरंट जाव चउचामरवालवीइयंगे मगलजयजयसहक्यालोए  
अणेगगणणायगदडणायग जाव दूयसधिवालसद्दि सपरिचुडे धवलमहामेहणिगणए  
इव जाव ससिन्व पियदसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ ता जेणेव  
आउहघरसाला जेणेव चक्करयणे तेणामेव पहारेत्य गमणाए । तए ण तस्स भरहस्स  
रणो वहवे ईसरपभिइओ भरह रायाणं पिट्ठवो २ अणुगच्छति । तए ण तस्स  
भरहस्स रणो वहुइओ-छुजा चिलाइ वामणिवडभीओ वब्बरी बउसियाओ ।  
जोणियपल्हवियाओ ईसिणियथारुणियाओ ॥ १ ॥ लासियलउसियदमिली सिंहलि  
तह आरवी पुलिंदी य । पक्षणि वहलि मुरुंडी सवरीओ पारसीओ य ॥ २ ॥ भरहं  
रायाण पिट्ठवो २ अणुगच्छति, तए ण से भरहे राया सव्विहुई सव्वजुईए  
सव्वबलेण सव्वसमुदएण सव्वायरेण सव्वविभूईए सव्वालकारविभूसाए सव्व-  
तुडियसहसणिणाएण महया इहुईए जाव महया वरतुडियजमगसमगप्पवाइएण  
सस्पणवपडहमेरिजलरिखरसुहिसुरयमुइंगदुदुहिणिगधोसणाइएण जेणेव आउहघर-  
साला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छता चक्करयण पासइ २ ता आउहघरसालाओ  
पडिणिक्खमइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवा-  
गच्छइ २ ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिणसीयइ २ ता अट्टारस सेणिप्पसे-  
णीओ सद्वावेड २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिथा ! उस्सुक्क उक्करं  
उक्किट अदिज अमिज अभडप्पवेस अदडकोदडिम अधरिम गणियावरणाडिज्ज-  
कलिय अणेगतालायराणुचरिय अणुक्कुयसुइग अमिलायमहदाम पसुइयपक्कीलियसपु-  
रजणजाणवय विजयवेजइय चक्करयणस्स अट्टाहिय महामहिम करेह २ ता ममेय-  
माणत्तिय खिप्पामेव पच्चपिणह, तए ण ताओ अट्टारस सेणिप्पमेणीओ भरहेण रन्ना  
एव तुत्ताओ समाणीओ हट्ट जाव विणएण वयण पडिसुणेति २ ता भरहस्स रणो अति-  
याओ पडिणिक्खमेन्ति २ ता उस्सुक्क उक्कर जाव करेति य कारवेति य क० २ ता  
जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ ता तमाणत्तिय पच्चपिणति ॥ ४३ ॥  
तए ण से दिव्वे चक्करयणे अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउह-  
घरसालाओ पडिणिक्खमइ २ ता अतलिक्खपडिवणे जक्खसहस्सपरिचुडे दिव्व-  
णिमाच्छइ २ ता गगाए महाणइए दाहिणिलेण कूलेण पुरत्थिम दिसि मागहतित्या-  
मिमुहे पयाए यावि होत्या, तए ण से भरहे राया त दिव्व चक्करयण गंगाए

महाभारते शाहिनिषेण कृष्णेण पुरतिवर्ते विभि मामाहतित्वामिसुरै फलाद्य वास्तव १ ए  
दद्वद्व जाव हियए कोहुंचित्पुरिसे घटावेद् २ ता एवं वाचाची-यिष्पामेव स  
देवसुप्तिष्ठा । आमिसेहै इतिपरमजं पदित्तप्येह इत्वगवरहपवरबोहुतिर्व चारठिर्व  
सेष्ण सन्नाहेह एकमाणसित्यं पद्मपिण्डाह तए अ ते क्षेत्रुंचित्य जाव पद्मपिण्डाति ता  
नं सं भरहे रामा खेनेव मञ्जपरे तुनेव उवागच्छ २ ता मञ्जनवरै अनुपमिसह ३ ए  
समुत्तमामात्कामिरामे ताहेव जाव चतुर्महामेहतिष्ठापए इव जाव सुकिष्ठ पिण्डेत्वे  
जरवह मञ्जनवरत्यो पदित्तिन्द्रमह ३ ता इत्यगवरहपवरबोहुत्तमद्वयरपहर  
संकुलमए सेषाए पद्मित्तिली खेनेव वाहिरिया उवाद्वाचसामा खेषेव आमित्तेह  
इतिपरवर्ते तेनेव उवागच्छ २ ता ठंबजपितिरहुत्तसित्यमे गमवहै जरवरै तुरहै ।  
तए नं सं भरहाहिने गरिदि इत्येत्वमसुरमरहप्यक्त्वे कुंडलउजोहवाज्ञे मठाहिर्व  
सिरए जरसीहै जरवरै गरिदि जरवसहे मल्लराक्षुषमनप्ये जम्बुद्विवरवरेक्ष्यामै  
विष्पमामे पसर्वमंगम्भाप्त्वे संकुलमामे ज्यवरसहवर्वमेह इतिप्त्वाभवरणए उक्तेवम-  
वदामध्य छत्रैर्व यरिज्यामान्वयं सेववरबोमराहै उनुम्भमाणीहै ५ ज्यवरसहत्वम-  
परिजुहे खेसमेव खेव प्रवाहै अमरहइत्यमित्तमहै इत्यैप पद्मिक्ती यंगाए महानहै  
वाहिपिण्डेवै कृष्णं गमामगरजगरसेवहम्भाईमहोजमुहुपृथ्यासुमर्त्याहस्त्वमित्तं  
विष्पमेत्वामै वसुरै अमित्तिष्ठमामे २ अमाद्य वरवै रयनाहै पदित्तमामे ३ ए  
दित्यं चक्रत्वर्वं अनुगच्छमामे २ जोयर्वतरिवाहै क्षत्रीहै वसमाले २ खेनेव माने  
हतित्ये तेनेव उवागच्छ २ ता मामाहतित्वस्तु अनुसामंते तुवाक्षस्त्वेववामामे  
गवद्योयपवित्तिल्प्यं वरफ्मारसरित्त्वे वित्तवर्वंचाकारमित्तेव करेह ३ ता वाहुरवर्व  
ज्ञानेह उवागमता एवं वाचाची-यिष्पामेव मो देवानुप्तिष्ठा । ममं वाचाद येव  
सेष्ण च करेहि करेता ममेवगाणतित्यं पद्मपिण्डाति, तए नं से क्षुद्रवर्वे मठेव  
रणा एवं तुरो उमाये इत्युत्तितमान्वित्ये पीड्यमये जाव भवति क्षु एवं तामी  
तहति व्याणाए विलएन क्षर्वं पदित्तुर्वेद् २ ता भरहस्तु रणो व्यानवाहै येवहस्तु  
च करेह ३ ता एकमाणतित्यं विष्पामेव पद्मपिण्डाह, तए नं से भरहे रामा आमि-  
सेष्णामो इतिपरवणामो फ्लोरहै २ ता खेषेव पोसहसामा तुनेव उवागच्छ ३ ए  
पोस्त्वसाम्ते अनुपवित्त ३ ता पोसहसाम्ते पम्भद्व २ ता इत्यमस्त्रातो एवरह ३ ए  
वस्त्रस्त्रातो तुरहै ३ ता मामाहतित्वमारस्तु ऐकस्तु अनुममाते पदित्तह ३ ए  
पोसहसामाए पोसहिते ४ एवं वंभयारी उम्मुक्तमिसुक्त्वे क्षणाममक्षम्भयमित्तेवे

१ इतिपुष्टेऽय । २ जो पोसहिति अद्वे पोसहे त्वाहित्तिरवित्तवरव्यवित्त-  
व्यानवामे ।

णिक्खित्तसत्थमुसले दब्मसथारोवगए एगे अवीए अद्भुमभत्त पडिजागरमाणे २  
विहरइ । तए ण से भरहे राया अद्भुमभत्तसि परिणममाणसि पोसहसालाओ पडिणि-  
क्खमइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ ता कोडुविय-  
पुरिसे सद्वावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । हयगयरहपवरजो-  
हक्कलिय चाउरगिणि सेण सण्णाहेह चाउगघट आसरह पडिकप्पेहत्तिकदु मज्जनधर  
अणुपविमइ २ ता समुत्त तहेव जाव धवलमहामेहणिगगए जाव मज्जनधराओ पडिणि-  
क्खमइ २ ता हयगयरहपवरवाहण जाव पहियकित्ती जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला  
जेणेव चाउगघटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ ता चाउगघट आसरहं दुरुढे ॥ ४४ ॥  
तए ण से भरहे राया चाउगघट आसरह दुरुढे समाणे हयगयरहपवरजोहक्कलियाए  
सांझे सपरियुडे महयाभडचडगरपहगरवदपरिक्खिते चक्ररयणदेसियमग्रे अणेगराय-  
वरसहस्साणुयायमग्रे महया उक्किट्टिसीहणायथोलकलकलरवेण पक्खुभियमहासमुद्दर-  
चभूय पिव करेमाणे पुरत्त्यमदिसाभिमुहे मागहतित्येण लवणसमुद् ओगाहइ जाव  
से रहवरस्स कुप्परा उल्ला, तए ण से भरहे राया तुरगे निगिण्हइ २ ता रह ठवेइ २ ता  
धणु परामुसइ, तए ण त अइस्मगयथालचद्दधणुसकास वरमहिसदरियदप्पि-  
यदधणसिंगरहयसारं उरगवरपवरगवलपवरपरहयभमरकुलणीलिणिद्धधतधोयपद्ध-  
णिउणोवियमिसिमिसितमणिरयणधटियाजालपरिक्खित तडितरुणकिरणतवणिजवद्ध-  
चिंध दहरमलयगिरिसिहरकेसरचामरवालद्वचदविंध कालहरियरत्तपीयसुकिलवहुण्हा-  
रणिसपिणद्धजीव जीवियतकरण चलजीव धणु गहिचण से णरवई उसु च वरवहर-  
कोडिय वहरसारतोंड कच्छणमणिकणगरयणधोइद्धसुक्यपुख अणेगमणिरयणविविहसु-  
पिरइयणामचिंध वहसाह ठाईलण ठाण आयथकणायय च काळण उसुमुदार इमाह  
वयणाह तत्थ भाणीअ से णरवई-हदि सुणतु भवतो वाहिरओ खलु सरस्स जे देवा ।  
णागासुरा सुवण्णा तेसि खु ण्मो पणिवयामि ॥ १ ॥ हदि सुणतु भवतो अबिभत-  
रओ सरस्स जे देवा । णागासुरा सुवण्णा सब्वे मे ते विसयवासी ॥ २ ॥ इतिकदु  
उसु णिसिरइत्ति-परिगरणिगरियमज्जो वाउद्धुयसोभमाणकोसेज्जो । चित्तेण सोभए  
घणुवरेण इदोवव पच्चक्ख ॥ ३ ॥ त चच्चलायमाण पच्चमिच्चदोवम महाचाव ।  
छज्जड वामे हृत्ये णरवहणो तमि चिजयमि ॥ ४ ॥ तए ण से सरे भरहेण रण्णा  
णिसद्वे समाणे खिप्पामेव दुवाल्स जोयणाइ गता मागहतित्याहिवद्वस्स टेवस्स भव-  
णसि निवहए, तए ण से मागहतित्याहिवई देवे भवणांसि सरं णिवहय पासइ २ ता  
आसुरते रुटे चडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडिं णिडाले साहरइ २ ता  
एव वयासी-केस ण भो । एस अपत्तियपत्थए दुरंतपतलक्खणे हीणपुण्णद्वेउचा

हिरिसिपिपरिक्षिए जे थे सम इमार एवानुक्ताए विष्वाए देविहृष्टए विष्वाए देव-  
गुण्येव विष्वीर्ण विष्वाकुमारेव सद्याए पत्ताए अभिसम्भागवाए उपि असुख्ये भर्त-  
वसि सर विष्विष्वितिरु चीहात्तामो असुहोइ ३ ता जेनेव से वामाइवहि तरे  
तपेन चक्रायच्छ २ ता ते लामाइयेव सर गेवह वामेव असुख्याए वामेव  
असुख्याए मालस्म न्म एवाह्य अभ्यत्विए वित्तिए परिष्वेव मध्येयाए लंग्ये लंग्य-  
प्रवित्या-उप्प्यो श्वसु भो । अंतुरीवे थीवे भरहे वासे भरहे वामे रावा चाउल-  
चक्रवाही ते वीवमेव द्वैवक्तुप्यव्यवन्नामाल भागदत्तित्युमाराव देवाव र्वद-  
सुवरपायिवे करेताए ते व्यद्यामि वे आहिपि भयस्त रूप्यो वज्रत्वामिवे करेतिपि-  
क्तु एव संपेहोइ संपेहोता हार मठ्ठ ईडामामि व कङ्गामि व तुदिवामि व वत्तामि व  
आमरनामि व सर व वामाइयेव मागदत्तित्योदर्वा व तेवह विष्विष्वा तर  
तुदिह्वाए तुरिमाए चक्राए चक्राए चीहाए विष्वाए उद्धुकाए विष्वाए  
देवपौरीए वीर्णवमाले २ जेनेव भरहे रावा तपेन उवामच्छ २ ता अटविक्ष-  
पदिवल्लो चालीविवित्याव वंकल्याव वत्ताव व्यवरपरिहिए वरवल्परिमाहिव रुद्ध-  
विर वाव अंत्रिक्ति क्तु भरहे राव व्यद्य वित्तर्व वद्यावेद २ ता एव वामी-  
आमिविए वे देवानुप्यिएहि लेवस्त्वये भरहे वासे पुराणिमर्य भागदत्तित्यमर्त  
ते अहर्व देवानुप्यिवाव विक्षक्षासी अहर्व देवानुप्यिवाव आमालामिक्तरे अहर्व  
देवानुप्यिवाव पुराणिमिक्ते अंतवाले ते परिष्वक्तु वे देवानुप्यिवा । समे इमेक्षर्वे  
पीवशार्थतिक्तु हार मठ्ठ ईडामामि व कङ्गामामि व चाल मागदत्तित्योदर्वा व उद्देव-  
ताए वे भरहे रावा मागदत्तित्युमारस्त वक्षस्त इमेवाहवे पीवाव वित्तिक्त २ ता  
मागदत्तित्युमार ववं सद्याए चम्मावेव व २ ता पदिविमवेव वर वे भे  
भरहे रावा रहे परावोइ २ ता मागदत्तित्येव अवपसम्युद्धभो फ्लुवह २ ता  
जेनेव वित्तयद्यवारामिक्ते जेनेव वाहिरिवा उद्धुक्तवद्यामा तेनेव उवामच्छ २ ता  
तुरए विष्विष्व २ ता रहे ठक्के २ ता रहायो फ्लोटह २ ता वैमेव मज्जवारे तपेव  
उवामच्छ २ ता मज्जवारे असुपविस्त २ ता वाव सक्षिव पिवर्वत्वे वरहे  
मज्जवाराम्ये पदिविमवम्य २ ता जेनेव मोक्षमंडवे तेनेव उवामच्छ २ ता वैम-  
नमोक्षविद्युत्तमवरमए अद्वृत्तमारो पार्व २ ता मोक्षमेवनामो पदिविमवम्य २ ता  
जेनेव वाहिरिवा उद्धुक्तवद्याम जेनेव चीहास्त्वे तेनेव उवामच्छ २ ता चीहा-  
सम्भवरगए पुरत्वामिहो विसीक्त २ ता असुरवस्त विविष्वसीपीड्वे चाहावे २ ता एव  
वद्यासी-विष्वामेव भो देवानुप्यिवा । उद्धुक्त रहर वाव मागदत्तित्युमारस्त लेवस्त  
अद्वाहियं महामहिम करेह २ ता मम एवमालविवे व्यापिवाह ताए व ताम्भे अद्वाह

सेणिप्पसेणीओ भरहेणं रणा एव वुत्ताओ समाणीओ हट्ट जाव करेति २ ता एयमा-  
नतिय पचप्पिणति, तए णं से दिव्वे चक्ररयणे वद्वामयतुवे लोहियक्खामयारए जंबू-  
णयणेमीए णाणामणिखुरप्पथालपरिगए मणिमुत्ताजालभूस्सिए सणदिघोसे साखिंखिणीए  
दिव्वे तरुणरविमंडलणिमे णाणामणिरयणधटियाजालपरिक्खते सब्बोउयस्त्रुरभिकुसुम-  
आसत्तमल्लदामे अतलिक्खपडिवणे जक्खवसहस्सपरिक्खुटे दिव्वतुडियसद्वस्सणिणाएणं  
पूर्ते चेव अवरतल णामेण य सुदसणे परवइस्स पठमे चक्ररयणे मागहतित्यकुमा-  
रस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहधरसालाओ पडिणि-  
क्खमइ २ ता दाहिणपचत्तियमं दिसिं वरदामतित्याभिमुहे पयाए यावि होत्या ॥ ४५ ॥  
तए ण से भरहे राया त दिव्व चक्ररयण दाहिणपचत्तियमं दिसिं वरदामतित्याभि-  
मुह पयाय चावि पासइ २ ता हट्टुट्टु २ कोडुवियपुरिसे सद्वावेइ २ ता एवं व्यासी-  
खिप्पामेव भो देवाणुपिया । हयगयरहपवर० चाउरगिर्णि सेणं सणाहेह आभि-  
सेक्ष हत्तिरयण पडिकपेहत्तिक्कु मज्जनघर अणुपविसइ २ ता तेणेव कमेणं जाव  
घवलमहामेहणिगए जाव सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ माइयवरफल्यपवर-  
परिगरखेडयवरवम्मकवयमाढीसहस्सकलिए उक्कडवरमउडतिरीडपडागझायवेजयति-  
चामरच्छलतछतयारकलिए असिखेवणिखरगचावणारायकणयक्षणिसूललुडभिडि-  
मालथणुहतोणसरपहरणोहि य कालणीलहहिरपीयस्तुक्किळअणेगचिंधसयसणिणविट्टे  
अप्पोडियसीहणायछेलियहयहेसियहत्तियगुलगुलायअणेगरहसयसहस्सधणेंतानी-  
हम्ममाणसद्वसहिएण जमगसमगभभाहोरेमकिर्णितखरमुहिमुरुदसखियपरिलिवच्चगप-  
रिवाइणिवसचेणुपिपचिमहइकच्छभिरिगिसिगियकलतालकंसतालकरधाणुत्यिएण महया  
सद्वसणिणाएण सयलमवि जीवलोग पूरथते वलवाहणसमुदएणं एव जक्खवसहस्स-  
परिखुटे वेसमणे चेव धणवई अमरवइसणिभाइ इहीए पहियकिती गामागरणगर-  
खेडकच्छ तहेव सेस जाव विजयखधावारणिवेस करेइ २ ता वद्वाहरयण सद्वावेइ २ ता  
एव व्यासी-खिप्पामेव भो देवाणुपिया । भम आवसह पोसहसाल च करेहि,  
ममेयमाणत्तिय पचप्पिणाहि ॥ ४६ ॥ तए णं से आसमदोणमुहगामपद्धणपुरवर-  
खधावारगिहावणविभागकुसले एगासीइपएसु सच्चेसु चेव वत्थूसु ऐगुणुजाणए  
पडिए विहिष्णु पणयालीसाए देवयाण वत्थुपरिच्छाए ऐमिपासेसु भत्तसालासु कोट्ट-  
पीसु य वासधरेसु य विभागकुसले छेजे वेज्जे य दाणकम्मे पहाणतुद्दी जल्याण  
भूमियाण य भायणे जलयलगुहासु जतेसु परिहासु य कालनाणे तहेव सहे वत्थुप्प-  
एसे पहाणे गद्विमणिकण्णस्क्खवहिवेदियगुणदोसवियाणए गुणहु शोलसपासायकरण-  
कुसले चउसाट्टिविकप्पवित्तियमई णदावत्ते य वद्वमाणे सोत्यियस्यग तह सब्बओ-



आउहधरसालाओ पडिणिक्खमङ् २ ता अतलिक्खपडिवणे जाव पूरते चेव अवर-  
तल उत्तरपच्चत्यम दिसि पभासतित्याभिमुहे पयाए यावि होत्या, तए ण से भरहे  
राया त दिव्वं चक्षरयणं जाव उत्तरपच्चत्यम दिसि तहेव जाव पच्चत्यमदिसाभिमुहे  
पभासतित्येण लवणममुद्द ओगाहेड २ ता जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला जाव  
पीइदाण से, णवर माल मउडिं मुत्ताजालं हेमजाल कडगाणि य तुडियाणि य आभ-  
रणाणि य सर च णामाहयंकं पभासतित्योदग च गिणहड २ ता जाव पच्चत्यमेण  
पभासतित्यमेराए अहण्ण डेवाणुप्पियाण विसयवासी जाव पच्चत्यमिळे अतवाले, सेसु  
तहेव जाव अट्टाहिया णिवत्ता ॥४८-४९॥ तए ण से दिव्वे चक्षरयणे पभासतित्य-  
कुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिवत्ताए समाणीए आउहधरसालाओ  
पडिणिक्खमङ् २ ता जाव पूरते चेव अवरतल सिंधूए महाणडेइ दाहिणिलेण कूलेण  
पुरच्छ्यम दिसि सिंधुटेवीभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्या । तए ण से भरहे राया  
त दिव्व चक्षरयण सिंधूए महाणडेइ दाहिणिलेण कूलेण पुरत्यम दिसि सिंधुटेवी-  
भवणाभिमुह पयाय पासङ् २ ता हृष्टुहृष्टुचित्त तहेव जाव जेणेव सिंधूए डेवीए  
भवण तेणेव उवागच्छड २ ता सिंधूए डेवीए भवणस्स अदूरसामते दुवालसज्जोय-  
पायाम णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसारिच्छं विजयखवावारणिवेस करेइ जाव  
सिंधुटेवीए अट्टमभत्त पगिणहड २ ता पोसहसालाए पोसहिए इव वभयारी जाव  
दब्मसथारोवगए अट्टमभत्तिए सिंधुटेविं मणसि करेमाणे २ चिण्हइ । तए ण तस्स  
भरहस्स रणो अट्टमभत्तसि परिणममाणसि सिंधूए डेवीए आसण चलइ, तए ण  
सा सिंधुटेवी आसण चलियं पासङ् २ ता ओहिं पउजइ २ ता भरह राय ओहिणा  
आभोएइ २ ता इमे एयास्वे अब्मत्यिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ममुप्प-  
जित्या-उप्पणे खलु भो ! जबुदीवे दीवे भरहे वासे भरहे णाम राया चाउरत-  
चक्कवटी, त जीयमेय तीयपञ्चुप्पण्णमणागयाण सिंधूण देवीण भरहाण राईण उव-  
त्याणिय करेताए, त गच्छासि ण अहपि भरहस्स रणो उवत्याणिय करेमित्तिकहु  
कुभट्टसहस्स रयणचित्त णाणामणिकणगरयणमत्तिनित्ताणि य दुवे कणगभद्वासणाणि  
य कडगाणि य तुडियाणि य जाव आभरणाणि य गेणहड २ ता ताए उक्किट्टाए  
जाव एव वयासी-अभिजिए ण देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे अहण्ण देवाणु-  
प्पियाण विसयवासिणी अहण्ण देवाणुप्पियाण आणतिकिंकरी त पडिच्छंतु ण  
देवाणुप्पिया । मम इम एयास्व पीइदाणतिकहु कुभट्टसहस्स रयणचित्त  
णाणामणिकणगकडगाणि य जाव सो चेव गमो जाव पडिविसज्जेइ, तए ण से  
भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमङ् २ ता जेणेव मज्जणधरे तेणेव

उत्तागच्छ २ ता प्याए मुदपाकेचाई र्मगमाई वस्ताई परपरिहैए अप्महना-  
भरताकलित्तसुरीरे भजनभराळो पठित्तित्तमह ३ ता जेनेह गोवध्यंव्यवे तेवेष  
उत्तागच्छ २ ता भोपणमंडर्वंषि मुहसुपवरगाए अद्धुममार्तं परिवादिक्त वस्त  
दीहासुणवरगाए पुरत्पामिमुहे विसीयह २ ता अद्धुमस देविष्ट्वेषीओ सदावेह २ ता  
जाव अद्धुमहिमाए महामहिमाए तमान्तिंवं पवपिर्वंषि ॥ ५ ॥ तए वं से दिवे  
चट्टवं लिखृए वेत्तीए अद्धुमहिमाए महामहिमाए विष्णवाए चमावीए आदहस  
धामसम्भो तहेव जाव उत्तापुरविक्तम विसि देवमृक्ष्यामिमुहे प्याए जाव होत्ता  
तए वं से भरहे रावा जाव जेनेव देवमृक्ष्याए जेनेव देवमृक्ष्याव पवपस्स वाहिन्दे  
विवेदे तेवेष उत्तागच्छ २ ता देवमृक्ष्याव पवपस्स वाहिन्दे विवेदे दुश्मस्त्रोम-  
जामार्म यवद्वीपविचिक्त्वं वरयगरसर्वत्त विवक्षवावारविवेदे करेह २ ता जाव  
देवमृक्ष्यामित्तमारस देवस्स अद्धुममर्तं पमिष्ठह २ ता पोसुहसामाए जाव अद्धुम-  
मत्तीए देवमृक्ष्यामित्तमार देव मनसि करेमाने २ विद्धु तए वं तस्स मरहस्स रन्नो  
अद्धुममर्तंषि परिषममापसि देवमृक्ष्यामित्तमारस्स देवस्स जासुरं चक्ष, एवं विदुम्ये  
देवस्सो वीश्वार्णं जामिष्ठेह रसामस्त्वरं कर्मावि म दुष्टिवावि य वर्षावि व जासर  
जावि ज गेष्ठह २ ता ताए उदिद्वाए जाव अद्धुमहिम्य जाव पवपिर्वंषि । तए वं वं  
दिव्वे चट्टवं अद्धुमहिमाए महामहिमाए विष्णवाए चमावीए जाव पवपिर्वंषि विवि  
विमियणुहामिमुहे प्याए जावि होत्ता तए वं से भरहे रावा तं दिव्वे चट्टवं  
जाव पवपिर्वं दिसि दिमिलुक्तामिमुहे पवाम पालह २ ता दुष्टुद्वित्ता जाव विवि-  
स्तुहाए अशुद्धामंते दुश्मस्त्रोम्यावाम यवद्वीपविचिक्त्वं जाव क्षमामस्स  
देवस्स अद्धुममर्तं पमिष्ठह २ ता पोसुहसामाए पोसुहिए इव बंमवारी जाव  
क्षमामर्तं देव मनसि करेमाने २ विद्धु, तए वं तस्स मरहस्स रन्नो अद्धुममर्तंषि  
परिषममापसि क्षमामस्स देवस्स आषुरं चक्ष तहेव जाव देवमृक्ष्यामित्तमारस्स  
पवरपिष्वावं इत्तीरवस्स विक्तामोहर्त्त भेष्मसंकारं क्षवगावि व जाव जामरजावि व  
गेष्ठह २ ता ताए उदिद्वाए जाव सदावेह सम्मानेह स २ ता घडिमिवेह  
जाव मोवामर्तंषि तहेव ग्रहमहिमा क्षमामस्सु पवपिर्वंषि ॥ ५१ ॥ तए  
वं से भरहे रावा क्षमामस्सु अद्धुमहिमाए महामहिमाए विष्णवाए चमावीए  
सुषेज सेषामाई सदावेह २ ता एवं वशावी-गच्छमहि वं भो देषालुपिवा । विद्धु  
माहागहैए पवपिर्वं विष्ठुहे सर्विषुसागरविवेरम्भे तमविसमविष्ठुहावि व  
भोविवेह भोविवेता क्षमाद्वं वराई रवमाई पविष्वावि क्षमाद्वं पविष्वावि ममेव  
मावत्तिंवं पवपिक्तावि, तए वं से देगावहै वप्त्वा भरहे जावेमि विद्धुवज्जे

महावलपरक्षमे महप्पा ओयसी तेयलक्खणजुते मिलक्खुभासाविसारए चित्तचारु-  
भासी भरहे वासमि णिक्खुडाण णिणाण य दुगगमाण य दुप्पवेसाण य वियाणए  
अथसत्यकुसले रथणं सेणावई सुसेणे भरहेणं रणा एव वुते समाणे हृष्टुद्वचित्त-  
माणदिए जाव करयलपरिगगहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कद्गु एवं सामी !  
तहति आणाए विणएण वयण पदिसुणइ २ ता भरहस्त रणो अतियाओ पडिणि-  
क्खमइ २ ता जेणेव मए आवासे तेणेव उवागच्छइ २ ता कोडुवियपुरिसे मद्दावेड २ ता  
एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणप्पिया ! आभिसेकं हत्यिरयण पडिकप्पेह  
हयगयरहपवर जाव चाउरगिणि सेणण सणाहेहत्तिकद्गु जेणेव मज्जणधरे तेणेव  
उवागच्छइ २ ता मज्जणधर अणुपविसइ २ ता घ्हाए सणणद्वद्वद्वम्मयकवए उप्पी-  
लियनरामणपट्टिए पिणद्वरोविजावद्वाविद्वविमलवरचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे अणे-  
गगणणायगद्डणायग जाव सद्दिं सपरिचुडे सकोरंटमल्लदामेण छतेणं धरिज्जमाणेणं  
मगलजय २ मद्कयालोए मज्जणधराओ पडिणिक्खमइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवड्हा-  
णसाला जेणेव आभिसेके हत्यिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ ता आभिसेक हत्यिरयणं  
दुरुद्दे । तए ण से सुसेणे सेणावई हत्यिखधवरगए सकोरंटमल्लदामेण छतेण धरिज्ज-  
माणेण हयगयरहपवरजोहकल्याए चाउरगिणीए सेणाए सद्दिं सपरिचुडे महयाभ-  
डच्छगरपहगरवदपरिक्खते महया उक्किट्टिसीहणायवोल्कलकलसदेण समुद्रवभूय  
पिव करेमाणे सच्छिणीए सब्बजुर्देण सब्बवलेण जाव निग्योसनाडएण जेणेव सिंधु  
महाणई तेणेव उवागच्छइ २ ता चम्मरयणं परामुसइ, तए ण त सिरिवच्छसरिसहव  
सुत्तारद्वचंदचित्त अयलमकप अमेज्जकवय जत सलिलासु सागरेसु य उत्तरण  
दिव्व चम्मरयण सणसत्तरसाइ सब्बवधणाई जत्थ रोहति एगदिवसेण वावियाइ,  
वास णाऊण चक्खवट्टिणा परामुडे दिव्वे चम्मरयणे दुवालस जोयणाइ तिरियं  
पवित्यरइ तथ्य साहियाइ, तए ण से दिव्वे चम्मरयणे सुसेणमेणावइणा परामुडे  
समाणे खिप्पामेव णावाभूए जाए यावि होत्था, तए ण से सुसेणे सेणावई सखधा-  
वारवलवाहणे णावाभूयं चम्मरयण दुरुहइ २ ता सिंधु मद्दाणइ विमलजलतुगवीईं  
णावाभूएण चम्मरयणेण सब्बलवाहणे ससेणे समुत्तिणे, तओ महाणइसुत्तरित्तु सिंधु  
अप्पडिहयसासणे सेणावई कहिंचि गामागरणगरपव्वयाणि खेडकब्बदमडवाणि  
पट्टणाणि सिंहलए बब्बरए य सब्ब च अगलोय बलायालोय च परमरम्म जवण-  
रीव च पवरमणिरयणकणगकोसागारसमिद्ध आरबए रोमए य अलसडविसयवासी  
य पिक्खुरे कालमुहे जोणए य उत्तरवेयहूससियाओ य मेच्छजाई वहुप्पगारा  
दाहिणअवरेण जाव सिंधुसागरंतोत्ति सब्बपवरकन्त्त च ओअवेळण पडिणियत्तो

वाहुसुमरमधिके य भूमिमागे एस्स छन्दोहस्त सुहमिसुच्चे ताहे ते अपमान अपराह्ण पहाण व जे व ताहे सामिया फ्लूया आगरवाई व मैडवर्वाई व पहारवाई व उपे खेत्र वाहुदार्द आमरणालिय भूसायालि व रयालिय व बलालिय महरिहालिय अर्थ व जे वाहुद रायारिह व व इष्टिवर्व एस देणाकहस्त उक्तेति मत्त्वाक्षवयवसिमुगा पुष्टरवि अद्वय अत्रिय मत्त्वर्वमि पम्मा तुम्मे अम्हेऽत्य दामिया देहर्व व उत्तरागया मो तुम्मे दिसद्वयासिम्मोति विक्व अंगमाला देणाकहस्त वहरिह ठिय सकारिव विसविता विक्ता सगालि घारालि पक्ष्यालि अलुप्पिद्धु ताहे देणाहे दिसविता सविज्ञानो खेत्र वाहुदार्द आमरणालि भूष्यालि रक्षालि व पुष्टरवि ते दिसुवा-मधेअं दिसियो अणहसासुक्तेके ताहे व भरहस्त रण्यो विवेद विवेता व अप्पियिता व पाहुदार्द सक्तारियसुम्मालिय सहरिते विसविते ज्ञाने पद्मर्दवमहागए, तए जे द्वुसेवे देणाहे व्हाए विमिस्युत्तरागए दमाणे आब उत्तरागेसीसवेत्तुमिन्त-त्ताप्ससरीरे उप्पि पाद्यामवरयए फुक्काणेहि दुश्यगमत्यएहि वर्तीत्तरव्वेहि वाहरिह वरुत्तर्षीसुप्तरतोहि उक्तविज्ञाने २ उक्तार्थाने २ उक्तकालि ( अभि ) अनापे १ महया इवयात्तीवयात्तर्तुत्तरात्तरुदियवज्ञमुर्हाप्यप्यवाह्यरवेवं तु शर्वर्व-सरुत्तर्षवेवि फेवविहे दामुस्तप्त फ्लम्मोने दुंज्मापे विहर्व ॥ ५३ ॥ तए व दे भे भावे रावा अण्डाका फ्लाव द्वुसेवे देणाहे दाहेह २ ता एवं द्वार्दी-गच्छ वे विप्पामेव भा वेत्तुमिया । विमिस्युत्तरागए वाहियिस्यस्तु तुवारत्तत व्हाहे विहावेहि २ ता भम एकमाप्तियं पक्ष्यपिक्तालिति तए व दे द्वुसेवे देणाहे दाहेह रण्या एवं तुते दमाणे वहुद्वालित्तमार्विए जाब व्लव्लपरिम्पिहिय विसालात्त मत्त्वर अत्रिय कहु आब पहिमुहेह २ ता महारस रण्यो अठिवाळो विविक्तामद १ ता वेवेव दए भावादे वेनेव पेत्तासाका देवेव उक्तामच्छ २ ता इम्मस्वेवार्वे संक-रह आब व्लव्लाकहस्त वेवेव अद्वम्मत्तं पवित्र्वह पोत्तुहसाक्तागए पोसवेहि एवं वैय-मात्री आब अद्वम्मत्तं पवित्र्वमार्वियि पोत्तुहसाक्ताको पवित्र्विक्तामद १ ता वेवेव मव्ववारे तेवेव उक्तामच्छ २ ता व्हाए द्वुद्व्यावेचाहे र्मयङ्गाह वलाह फ्लर्व-रिहिए अप्पमहृष्यामरणामेलियसहीर मव्वणकरामो पवित्र्विक्तामद १ ता वेवेव विमिस्युत्तरागए वाहियिस्यस्तु तुवारत्त फ्लावा देवेव पहारेत्व यमणाए, तए व दत्तस्तु द्वुत्तरत्त सेणाकहस्त वहे राहेत्वरुत्तरमार्विय आब उत्त्वाहप्पिमिस्यो द्वुसेवे देणाहे विद्वां २ अमुत्तर्वहियि तए व दत्तस्तु द्वुसेवत्त सेणाकहस्त वहुद्वेद्ध व्लव्लामो विक्ताह्यामो आब ईमिवित्तियपत्तियविमालियामो विविक्तुसाम्मो विविवात्त्वे आब अमुत्तर्वहियि । तए व दे द्वुसेवे देणाहे दाहेह दिविन्हीए दम्मत्तर्वए

जाव णिर्घोसणाइएण जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिलस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दडरयण परामुसइ, तए ण त दडरयण पंचलइयं वइरसारमद्य विणासण सब्बसत्तुसेण्णाण खधावारे णरवइस्स गढ़दरिविसमपब्मारगिरिवरपवायाणं समीकरण सतिकरं सुभकर हियकर रण्णो हियइच्छियमणोरहपूरग दिव्वमप्पडिह्य दडरयणं गहाय सत्तटु पयाइं पच्चोसकइ पच्चोसकित्ता तिमिसगुहाए दाहिणिलस्स दुवारस्स कवाडे दंडरयणेण महया २ सद्देण तिक्कुत्तो आउडेइ, तए ण तिमिसगुहाए दाहिणिलस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणावइणा दंडरयणेण महया २ सद्देण तिक्कुत्तो आउडिया समाणा महया २ सद्देण कोंचारव करेमाणा सरसरस्स सगाइ २ ठाणाइ पच्चोसकित्था, तए ण से सुसेण सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिलस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ २ त्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव भरह राय करयलपरिगगहिय जएण विजाएण वद्धावेइ २ त्ता एव वयासी-विहाडिया ण देवाणुपिया । तिमिसगुहाए दाहिणिलस्स दुवारस्स कवाडा एयणं देवाणुपियाण पिय णिवेएमि पिय मे भवउ, तए ण से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अतिए एयमटु सोचा निसम्म हद्धुतुद्धुचित्तमाणंदिए जाव हियए सुसेण सेणावइं सक्कारेइ सम्मानेह सक्कारित्ता सम्माणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुपिया । आभिसेक हृथिरयण पडिकप्पेह हयगयरहपवर तहेव जाव अजण-गिरिकूडमणिभ गयवर णरवई दुरुष्टे ॥ ५३ ॥ तए ण से भरहे राया मणिरयणं परा-मुसइ तोत चउरगुलप्पमाणमित्त च अणगध तसिय छलस अणोवमजुइ दिव्वं मणिरयण-पद्दसम वेश्लिय सब्बभूयकत जेण य मुद्धागएण दुक्खंण ण किचि जाव हवइ आरोग्ने य सब्बकालं तेरिच्छियदेवमाणुसक्या य उवसग्गा सब्बे ण करैति तस्स दुक्ख, सगामेऽवि असत्थवज्ज्ञो होइ णरो मणिवरं धरैतो ठियजोब्बणकेसअवद्वियणहो हवइ य सब्बभयविष्पमुक्तो, त मणिरयण गहाय से परवई हृथिरयणस्स दाहिणिलाए कुभीए णिक्खिवहइ, तए ण से भरहाहिवे णरिदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ-सणिभाए इहुीए पहियकिती मणिरयणकउज्जोए चक्ररयणदेसियमग्ने अणेगरायसह-स्साणुयायमग्ने महया उक्किट्टिसीहणायवोलकलकलरवेणं समुद्रवभूय पिव करेमाणे जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिले दुवारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिमिसगुह दाहिणिहेण दुवारेण अईइ ससिव्व मेहधयारणिवह । तए ण से भरहे राया छत्तल दुवालससिय अट्टुकणिय अहिगरणिसठिय अट्टुसोवणिय कागणिरयण परामुसइ । तए ण त चउरगुलप्पमाणमित्त अट्टुसुवण्ण च विसहरण अउल चउरससठाणसठिय समतल माणुम्माणजोग्गा जओ लोगे चरति सब्बजणपण्णवगा, ण इव चदो ण इव

सत्य सूरे प इव अमी न इव तत्प मयिषो तिभिर आसेति अवयारे जट्य तने दिव  
भावहुतं तुकास्मद्येयजाई तस्य उपात्र विवृति तिभिरतिगरपदित्यामो रुदि प  
यत्परास लोपयारे करेत आलोर्य रिवसभूत्य अस्य पमावेष चहन्ती तिभिन्नता  
अर्हत् सेष्यसहित् अमिलेत्यु विव्यमदमर्ह रामदरे व्ययमि गहाय तिभिन्नता  
पुरचित्तिभिन्नतिविभित्यु ब्रह्म ब्रह्मतरियाई पवशुस्त्रविभिन्नतामह ब्रह्मत्रेष  
कराई चहनेमीरुदियाई चंद्रमास्त्रविभिन्नताई एग्णायपर्य मन्त्रद्वय आविष्णवे १  
अनुप्पविश्व, तए चं चा तिभिन्नताप भरहृष्टे रुद्या तहि ब्रोदर्पतरिएहि बाब ब्रह्म  
ब्रह्मत्रेष्व एग्णायपर्य मन्त्रमेष्व आविद्यमात्रेहि २ तिभिन्नामेष ब्रह्मेगम्भा उब्रो-  
यमूदा विवस्त्रमा बाबा यावि होत्वा ॥ ५४ ॥ तीसे न तिभिन्नताप चहुमज्ज्ञात्यमर  
एत्य च उम्ममाविम्मगवस्त्रामो जाम तुवे महापृथ्वे पल्लवामो व्यक्तो चं तिभिन्न-  
ताप ए पुरचित्तिभिन्नामो भित्तिभिन्नमामो पूर्वामो समाधीमो व्यविष्यमने सिंहु महा-  
पृथ्वै समर्पेति से तेष्टेष्व भवते । एव तुष्ट-उम्ममाविम्मगवस्त्रामो महापृथ्वे १  
योगमा । बन्ध उम्ममावस्त्रप महापृथ्वै तर्व वा पर्व वा चह्व वा सहर वा भासे वा  
हत्वी वा रहे वा बोहे वा मुख्से वा पवित्रपद तर्व उम्ममावस्त्रम महापृथ्वै तिभिन्न-  
ताप आहुतिय २ एवंते बर्मसि एदेष, बन्ध विम्मगवस्त्रप महापृथ्वै तर्व वा पर्व वा चह्व  
वा सहर वा बाब मणुस्वे वा पवित्रपद तर्व विम्मगवस्त्रम महापृथ्वै तिभिन्नतो चहु-  
पिय २ अतो बर्मसि विम्मजातेह, से तेष्टेष्व गोवमा । एव तुष्ट-उम्ममाविम्म-  
गवस्त्रामो महापृथ्वै तए चं से भरहे रुद्या चहरवणेत्यममो अपेयरात्र यदा  
उदित्तिरुद्धीर्णाय बाब ब्रह्मामि सिंहु महापृथ्वै पुरचित्तिभिन्नत्य वृषेष लोकेष उम्म-  
मावस्त्रम महापृथ्वै तेष्व उम्ममावस्त्र २ ता चहुरत्यव्य सहातेह ३ ता एव ब्राह्मी-  
विष्णामेष भ्यो देष्टुपिया । उम्ममाविम्मगवस्त्रम महापृथ्वै अपेयरात्रवस्त्रविभि-  
त्तिभु अवस्थमध्ये अमेयवस्त्रप साक्ष्यपत्ताहाए सप्तरत्यगामप चहरुक्त्य ब्रह्मेष ब्रह्म  
मम एवमापत्तिय विष्णामेष व्यविष्यात्ति, तए चं से चहुरत्यगे भरहेव रुद्या एव  
दुते समाप्ते चहुरुद्धित्यापत्तिए बाब विभएष पवित्रमेह २ ता विष्णामेष उम्मम-  
पिम्मगवस्त्रम महापृथ्वै अपेयरात्रवस्त्रविभित्तिभु बाब चहरुक्त्य ब्रह्मेष ३ ता तेष्व  
भरहे रुद्या तेष्व उम्ममावस्त्र २ ता जाब एवमापत्तिय व्यविष्यात, तए चं से भरहे  
रुद्या सर्वभावारब्दे उम्ममाविम्मगवस्त्रामो महापृथ्वैभु तेष्व अपेयरात्रवस्त्रविभि-  
त्तिभु बाब चहरुक्त्य तेष्व उम्ममावस्त्र ३ ता जाब एवमापत्तिय व्यविष्यात, तए चं से भरहे  
रुद्या सर्वभावारब्दे उम्ममाविम्मगवस्त्रामो महापृथ्वैभु तेष्व अपेयरात्रवस्त्रविभि-  
त्तिभु बाब चहरुक्त्य तेष्व उम्ममावस्त्र ४ ता जाब एवमापत्तिय व्यविष्यात, ५ ता अपृथ्वै व्यविष्यात्ता ॥ ५५  
तेष्व व्यविष्य तेष्व समर्पन बाबाहुमरहे वासे चहुवे बाबाहा नामे विभवा परि

वसति अद्वा दिता विता विच्छिणविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइणा वहुधण-  
चहुजायरुवरयया आओगपओगसपउत्ता विच्छिणविउलभत्तपाणा वहुदासीदासगो-  
महिसगवेलभापभूया वहुजणस्स अपरिभूया सूरा चीरा विक्षंता विच्छिणविउलवल-  
चाहणा वहुसु समरसपराएसु लद्वलक्ष्मा यावि होत्था, तए ण तेसिमावाडचिलायण  
अणणया कल्याई विसयसि वहूइ उप्पाइयसयाइ पाउव्ववित्था, तजहा—अकाले गजियं  
अकाले विजुया अकाले पायवा पुष्फति अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ णच्चति,  
तए ण ते आवाडचिलाया विसयसि वहूइ उप्पाइयसयाइ पाउव्वभूयाइ पासति पासिता  
अणणमण्ण सद्वावेंति २ त्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुपिया । अम्हं विसयसि  
चहूइ उप्पाइयसयाइ पाउव्वभूयाइ तजहा—अकाले गजियं अकाले विजुया अकाले  
पायवा पुष्फति अभिक्खण २ आगासे देवयाओ णच्चति, तण णजाइ ण देवाणु-  
पिया । अम्हं विसयस्स के मध्ये उवद्वे भविस्सडत्तिकद्व ओहयमणसकप्पा चितासोग-  
सागरं पविद्वा करयलपल्हत्थमुहा अठन्जाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया छियायंति, तए  
ण से भरहे राया चक्षरयणदेसियमगे जाव समुद्रवभूय पिव करेमाणे तिसिस-  
गुहाओ उत्तरिणे दारेणं पीड ससिव्व मेहघयारणिवहा, तए ण ते आवाडचिलाया  
भरहस्स रणो अगगाणीय एजमाण पासति २ त्ता आसुरत्ता रुद्धा चडिक्किया कुविया  
मिसिमिसेमाणा अणणमण्ण सद्वावेंति २ त्ता एवं वयासी—एस ण देवाणुपिया । केद  
अपत्तियपत्थए दुरतपतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्देसे हिरिसिरिपरिवज्जिए जे ण अम्हं  
विसयस्स उवरि विरिएण हव्वमागच्छइ त तहा ण घत्तामो देवाणुपिया । जहा ण  
एस अम्हं विसयस्स उवरि विरिएण णो हव्वमागच्छइत्तिकद्व अणणमण्णस्स अतिए  
एयमद्व पडिसुउेंति २ त्ता सण्णद्ववद्वमिमयकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्वगे-  
विजा वद्वआविद्वविमलवरचिंधपट्टा गहियाउहप्पहरणा जेणेव भरहस्स रणो अगगा-  
णीय तेणेव उवागच्छंति २ त्ता भरहस्स रणो अगगाणीएण सद्दिं सपलग्गा यावि  
होत्था, तए ण ते आवाडचिलाया भरहस्स रणो अगगाणीय हयमहियपवरवीर-  
वाइयविवडियचिंधद्वयपडाग किञ्च्छप्पाणोवगय दिसोदिसि पडिसेहिंति ॥ ५६ ॥  
तए ण से सेणावलस्स ऐया वेढो जाव भरहस्स रणो अगगाणीय आवाडचिलाएहिं  
हयमहियपवरवीर जाव दिसोदिसि पडिसेहिय पासइ २ त्ता आसुरत्ते रुद्धे चटिक्किए  
कुविए मिसिमिसेमाणे कमलामेल आसरयण दुरुहूइ २ त्ता तए ण तं असीझमगुल-  
मूसिय णवगउझमगुलपरिणाह अद्वसयमगुलमायय बत्तीसमगुलमूसियसिर चउंगुल-  
कण्णाग वीसद्वअगुलवाहाग चउरंगुलजाणूक सोलसअगुलजधाग चउरगुलमूसियस्सुरं  
मुक्कोलीसवत्तवलियमज्ज ईसिं अगुलपणयपद्व सणग्यपद्व सगथपद्व सुजायपद्व पसत्थ-



मारा देवा ते मणसीकरेमाणा २ चिट्ठति । तए ण तेसिमावाडचिलायाण अट्टम-  
भत्तसि परिणममाणंसि मेहमुहाण णागकुमाराण देवाण आसणाइ चलति, तए ण ते  
मेहमुहा णागकुमारा देवा आसणां चलियाइ पासति २ ता ओहिं पउजति २ ता  
आवाडचिलाए ओहिणा आभोएति २ ता अण्णमण्ण सदावेति २ ता एवं वयासी-  
एवं खलु देवाणुपिया ! जबुद्धीवे दीवे उत्तरझुभरहे वासे आवाडचिलाया सिंधूए  
महाणईए वालुयासथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्टमभत्तिया अम्हे कुलदेवए  
मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा २ चिट्ठति, त सेय खलु देवाणुपिया ! अम्हे  
आवाडचिलायाण अतिए पाउव्भवित्तिकदु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्टु पडिसुणेति  
पडिसुणेता ताए उक्किट्टाए तुरियाए जाव वीइवयमाणा २ जेणेव जबुद्धीवे दीवे उत्तर-  
झुभरहे वासे जेणेव सिंधू महाणई जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छति २ ता  
अतलिक्खपडिवण्णा सर्खिखिणियाइ पंचवण्णाइ वत्थाइं पवरपरिहिया ते आवाड-  
चिलाए एव वयासी-ह भो आवाडचिलाया ! जण्ण तुव्भे देवाणुपिया ! वालुया-  
सथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्टमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णाग-  
कुमारे देवे मणसीकरेमाणा २ चिट्ठह तए ण अम्हे मेहमुहा णागकुमारा देवा तुव्भ  
कुलदेवया तुम्ह अतियण्ण पाउव्भूया, त वदह ण देवाणुपिया ! कि करेमो के व मे  
मणसाइ१, तए ण ते आवाडचिलाया मेहमुहाण णागकुमाराण देवाण अतिए  
एयमट्टु सोच्चा णिसम्म हट्टुट्टुचित्तमाणदिया जाव हियया उझ्हाए उझ्हेति २ ता जेणेव  
मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छति २ ता करयलपरिगाहिय जाव मत्थए  
अजलिं कट्टु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएण विजएण वद्धावेति २ ता एव वयासी-  
एस ण देवाणुपिया ! केइ अपत्थियपत्थए दुरतपतलखणे जाव हिरिसिरिपरिवज्जिए  
ने ण अम्हे विसयस्स उवरिं विरिएण हव्वमागच्छइ, त तहा ण घतेह देवाणुपिया !  
जहा ण एस अम्हे विसयस्स उवरिं विरिएण णो हव्वमागच्छइ, तए ण ते मेहमुहा  
णागकुमारा देवा ते आवाडचिलाए एव वयासी-एस ण भो देवाणुपिया ! भरहे  
णाम राया चाउरंतचक्षवट्टी महिंड्हीए महज्जुइए जाव महासोक्खे, णो खलु एस  
सक्को केणइ देवेण वा दाणवेण वा किणरेण वा किंपुरिसेण वा महोरोणे वा गथ-  
च्वेण वा सत्थप्पओगेण वा अगिगप्पओगेण वा मतप्पओगेण वा उद्वित्तए पडिसेहि-  
तए वा, तहाविय ण तुव्भ पियट्टुयाए भरहस्स रण्णो उवसगग करेमोत्तिझटु तेसिं  
आवाडचिलायाण अतियाओ अवक्भति २ ता वेउव्वियसमुगधाएण समोहणति २ ता  
मेहाणीय विउव्वति २ ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयक्खधावारणिवेसे तेणेव  
उवागच्छति २ ता उर्पिं विजयक्खधावारणिवेसस्म खिप्पामेव पतणतणायति २ ता



अभिसमण्णागयाए उर्पि विजयखंघावारस्स जुगमुसलमुद्दि जाव वास वासइ । तए  
णं तस्स भरहस्स रणो इमेयारूवं अब्मत्थिय चित्तियं पत्थियं मणोगय सकप्पं  
समुप्पणं जाणिता सोल्स देवसहस्सा सण्णज्जित्त पवता यावि होत्या, तए ण ते  
देवा सण्णद्वद्वमियकवया जाव गहियाउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णाग-  
कुमारा देवा तेणेव उवागच्छति २ त्ता मेहमुहे णागकुमारे देवे एवं वयासी-हं  
भो मेहमुहा णागकुमारा देवा ! अपत्थियपत्थगा जाव परिवजिया किण्ण तुब्मे  
ण जाणह भरह राय चाउरंतचक्कवट्ठि महिष्टुयं जाव उहवित्तए वा पडिसेहित्तए  
वा तहा वि ण तुब्मे भरहस्स रणो विजयखंघावारस्स उर्पि जुगमुसलमुद्दिप्प-  
माणसित्ताहिं धाराहिं ओघमेघ सत्तरत्त वास वासह, त एवमवि गए इत्तो खिप्पा-  
मेव अवक्षमह अहव ण अज्ज पासह चित्त जीवलोगं, तए ण ते मेहमुहा णाग-  
कुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा भीया तत्या वहिया उविग्गा सजाय-  
भया मेहाणीय पडिसाहरंति २ त्ता जेणेव आवाड्चिलाया तेणेव उवागच्छति २ त्ता  
आवाड्चिलाए एव वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ! भरहे राया महिष्टुए जाव णो  
खलु एस सक्को केणइ देवेण वा जाव अगिप्पओगेण वा जाव उहवित्तए वा पडि-  
सेहित्तए वा तहावि य णं अम्हेहिं देवाणुप्पिया ! तुब्म पियट्टुयाए भरहस्स रणो  
उवसगे कए, त गच्छह ण तुब्मे देवाणुप्पिया ! ष्हाया उह्लपडसाडगा ओचूलगणि-  
यच्छा अगगाइ वराइ रयणाइ गहाय पजलिउडा पायवडिया भरहं रायाण सरण  
उवेह, पणिवइयवच्छला खलु उत्तमपुरिसा णत्यि भे भरहस्स रणो अतियाओ भय-  
सितिकट्ठु एव वडत्ता जामेव दिसिं पाउब्मया तामेव दिसिं पडिगया । तए ण ते  
आवाड्चिलाया मेहमुहेहिं णागकुमारेहिं देवेहिं एव वुत्ता समाणा उद्दाए उद्देति २ त्ता  
ष्हाया उह्लपडसाडगा ओचूलगणियच्छा अगगाइ वराइ रयणाइ गहाय जेणेव  
भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयलपरिगहिय जाव मत्थए अजलिं कहु  
भरह राय जएण विजएण वद्वाविंति २ त्ता अगगाइ वराइ रयणाइ उवणेति २ त्ता  
एव वयासी-वसुहर शुणहर जयहर, हिरिसिरिधीकित्तिधारणरिंद । लक्खणसह-  
स्सगरग रायमिद जे चिर धारे ॥ १ ॥ हयवइ गयवइ णरवइ पन्वणिहिवइ भरह-  
वासपटमवइ । वत्तीमजणवयसहस्सराय सामी चिर जीव ॥ २ ॥ पठमणरीमर ईसर  
हियडेमर महिलियासहस्साण । देवसयसाहसीसर चोद्दसरयणीसर जससी ॥ ३ ॥  
सागरगिरिमेराग उत्तरवाईममिजिय तुमए । ता अम्हे देवाणुप्पियस्म विमए परि-  
वसामो ॥ ४ ॥ अहो णं देवाणुप्पियाण डही जुड जसे वले वीरिए पुरिगक्कारपर-  
ष्मे दिल्ला देवजुडे दिल्ले देवाणुभावे लद्दे पत्ते अभिममण्णागए, त दिल्ला ण देवा-

पुणिकाप हही एवं चेष जाव अमिसुमण्णायए, तं याम्मु नं देवालुपिण्णा ! कर्म्म  
नं देवालुपिण्णा ! पशुमरुर्हति नं देवालुपिण्णा ! जाव मुज्ज्ये २ एवं उक्षारण्णिन्नु  
पेवलिठडा पायदिवा मरह राम्य सरज्जं उविशि । तए नं से मरहे एवा  
उसि आवाडधिल्लायार्व अम्माई वराई रथ्याई पदिल्लह २ ता ते आवाडभिल्ल,  
एव वयासी—नाष्टह नं भो दुष्मे मम वाहुप्रावापरिमहिमा विभवा विभिन्ना  
शुद्धार्हेन परिवस्तु, वरिष्ठ भै छतोवि भयमरितिक्कु उक्षारेह सम्मानेह उद्धारेण  
सम्मानेता पदिविक्षेत्र । तए नं से भरहे रावा शुद्धेन उक्षारेह सदावेह २ ता एवं  
वयासी—गच्छाहि नं भो देवालुपिण्णा ! दोषेवि चिभूए महान्नईए पवित्रिमे  
पिम्बाइ उसिपुसामरगिरिमेराणी समविदमधिक्कुडावि व ओजवेहि २ ता अम्माई  
वराई रथ्याई पदिल्लहि २ ता भम एक्माणतिय विष्णामेव पवित्रिमाहि जा  
वाहिलिल्लस्त ओजवेण तहा सर्व भाविक्कर्व जाव पवित्रिममाने विहरह ॥ १ ॥  
तए नं दिव्ये वक्षारवेष अण्णजा क्षमाइ आवहउवसाक्षात्तो पदिलिल्लमह २ ता  
अतिभिक्करपदिल्लो जाव उत्तरुपरिष्ठमे दिसि तुल्लिमवदप्पकामिसुहे व्याए वावि  
देवता तए नं से मरहे राम्य हं दिव्ये वक्षरयन्न जाव तुल्लिमर्त्तव्यमारस्य वेष्टव  
म्बयस्त अप्रसामव तुपालम्बयेष्यामाम जाव तुल्लिमर्त्तव्यमिरिकुमारस्य देवतव  
अहुमभता पदिल्लह, तहेव वहा मामहुरित्वस्त जाव सम्मानरक्ष्यै विष फ्रेमावै  
सत्तरविद्यामिसुहे तेजेव तुल्लिमर्त्तव्यासहरफ्पवए तेजेव उक्षामच्छ २ ता तुल्लिम  
मर्त्तव्यासहरफ्पवए तिक्कहतो रहसिरेन्न फुहिता द्वुरए पदिल्लह विविधिया  
तहेव जाव आयमक्षणामय च वक्षत्वं उक्षमुदाई इमावि वववावि तत्त्व  
माणीम से वरहाई जाव सम्बे गे ते विचम्मावितिक्कु उक्ष वेहाप व्यु वितिर  
परिगरविष्यमिष्यज्ञे जाव तए नं से घरे भरहेह रथ्या उक्ष वेहाई विच्छु उमावै  
विष्णामेव जावतारि जोवयाई यंता तुल्लिमवदप्पिरिकुमारस्य वेष्टव मेराए विष  
शए, तए नं से तुल्लिमवदप्पिरिकुमारे देवे मेराए सरे विषत्वं पात्तह २ ता वाह  
ज्ञो रहु जाव पीत्तराज मन्त्रोदाई माळ योसीसंबद्धं च व्यावावि जाव दहोवै  
च नेहरह २ ता ताए चविक्कुए जाव उत्तरेण तुल्लिमवदप्पिरिमेराए नाह्यते देवता  
पिमाण विसाक्षासी जाव व्याप्य देवालुपिण्णाप उत्तरेण अवकाषे जाव पदिलिम  
घेह ॥ १२ ॥ तए नं से मरहे रावा द्वुरए पदिल्लह २ ता एवं परावौद २ ता  
जेजेव उक्षहृष्टे तेजेव उक्षामच्छ २ ता उक्षहृष्ट क्षम्भं विक्कहते रहसिरेन्न  
फुह्य २ ता द्वुरए निगिल्लह २ ता एवं ठेवेह २ ता छात्तर्वं तुपालमधिने अहुर्व  
विषय अद्विगरविष्टिर्यं द्वोविभिन्नं व्ययपित्रिवर्णं परामुखद १ ता उक्षमहृष्ट

पञ्चयस्स पुरतिथमिलसि कडगसि णामगं आउडेइ-ओसपिणीइमीसे तद्याएँ समाइ पच्छमे भाए। अहमसि चक्रवटी भरहो इय नामधिजेणं ॥ १ ॥ अहमसि पठमराया अहय भरहाहिवो णरवरिंदो । णतिथ मह पडिसत् जियं मए भारह वास ॥ २ ॥ तिकटु णामग आउडेइ णामग आउडित्ता रह परावत्तेइ २ ता जेणेव विजयखधावा रणिवेसे जेणेव वाहिरिया उच्छ्वाणसाला तेणेव उचागच्छड २ ता जाव चुलहिम-वतगिरिखमारस्स देवस्स अद्वाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघ-रसालाओ पडिणिक्खमइ २ ता जाव दाहिणदिसि वेयद्वृपव्यामिमुहे पयाए याबि होत्या ॥ ६३ ॥ तए ण से भरहे राया त दिव्व चक्खरयण जाव वेयद्वृस्स पञ्च-यस्स उत्तरिले णियबे तेणेव उचागच्छड २ ता वेयद्वृस्स पञ्चयस्स उत्तरिले णियबे दुवालसजोयणायाम जाव पोसहसाल अणुपविसइ जाव णमिविणमीण विजाहरराईण अद्वमभत्त पणिणहइ २ ता पोसहसालाए जाव णमिविणमिविजाहररायाणो मणसी-करेमाणे २ चिद्धह, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो अद्वमभत्तांसि परिणममाणसि णनि-विणमीविजाहररायाणो दिव्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अतियं पाउव्य-चति २ ता एवं वयासी-उप्पणे खालु भो देवाणुपिया । जबुद्दीवे दीवे भरहे वसे भरहे राया चाउरतचक्रवटी तं जीयमेय लीयपन्नुप्पणमणागयाण विजाहरराईण चक्रवटीण उवत्थाणियं करेताए, तं गच्छामो ण देवाणुपिया । अम्हेवि भरहस्स रण्णो उवत्थाणिय करेमोत्तिकटु विणमी णाक्षण चक्रवटि दिव्वाए मईए चोइयमई माण-माणपमाणजुत्त तेयस्सि रुवलक्खणजुत्त ठियजुव्वणकेसवद्वियणह इच्छियसीउ-प्हक्षासजुत्त-तिसु तणुय तिसु तब तिवलीगइउण्णयं तिगंभीर । तिसु कालं तिसु सेयं तियायथ तिसु य विच्छण्ण ॥ १ ॥ समसरीर भरहे वासमि सव्वमहिलप्पहाण सुद-रयणजहणवरकरचलणणयणसिरसिजदसणजणहिययरमणमणहरि सिंगारागार जाव उतोवयारकुसल अमरवहूणं सुरुवं रुवेण अणुहरति सुभह भद्रसि जोव्वणे वह्माणि इत्थीरयण णमी य रयणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य गेह्हहइ २ ता ताए उक्तिद्वाए तुरियाए जाव उच्छ्वाए विजाहरगई जेणेव भरहे राया तेणेव उचागच्छति २ ता अतलिक्खपडिवण्णा सर्विखिणियाइ जाव जएण विजएण वद्वावेंति २ ता एवं वयासी-अभिजिए ण देवाणुपिया । जाव अम्हे देवाणुपियाणं आणत्तिकिकरा इतिकटु तं पडिच्छतु ण देवाणुपिया । अम्ह इम जाव विणमी इत्थीरयण णमी रयणाणि० समप्पेइ । तए ण से भरहे राया जाव पडिविसज्जोइ २ ता पोसहसालाओ पडिणिक्ख-मइ २ ता मज्जणधरं अणुपविसइ २ ता भोयणमडवे जाव णमिविणमीण विजाहर-राईण अद्वाहियमहामहिमा, तए ण से दिव्वे चक्खरयणे आउहघरसालाथो पडिणि-

शुभिकाल हही एवं चेद जात अमितुमस्तागाद्, तं यामेषु चं देवाणुपिता ! तर्मदु  
जं देवाणुपिता ! उद्गुमरहंति चं देवाणुपिता ! याइ भुजो ३ एवंकरलवाएतित्तु  
पंजकित्तु पायदहिया भरहं रायं उरण उर्मिति । तए य से भरहं राया  
तेति आवाइचिक्काम अमगाई वरहं रम्यहं परिक्षण् २ ता ते आवाइचिक्काम  
एवं वदासी—गच्छहं चं भो तुष्टे मां वाहुप्पयापरिमाहिया विष्मया विहिष्मया  
शुरुंघडेष्टं परिवसाह, परिष्ठ मे क्तोऽपि भवतिष्ठितित्तु उद्धाई उम्मानेद् सहारेता  
उम्मानेता पहितिस्तेद् । तए चं से भरहं राया शुरेन उवाहं सहानेद् २ ता एवं  
वदासी—गच्छहं चं भो देवाणुपिता ! दोषपि चिष्टौ भवाणीए पवतिष्ठम  
विमहृत् संसिमुखागरगिरिमेरागे समविसमनिमहृत्तायि य खोमबेत्रि २ ता अमगाई  
वरहं रम्यहं पटिच्छहं २ ता मम एम्मानदिम लिप्पामेव पवधित्तायि यहा  
वाहिमित्तस्त भोअवणे तहा सर्वं भाविष्यत्वं जाव फलानुमानये विहृद ॥ ५१ ॥  
तए चं दिव्ये वाहरयणे वर्ष्यमा क्षयाई आरहफरसासाको पहितिस्तमद् २ ता  
अंठिरिमहृपनिष्ठै जाव उत्तरुपरचिमं विसि तुम्हृत्तमवंतपक्षयामिसुहे फ्याए जावि  
होत्पा तए य से भरहं राया तं दिव्ये वाहरयणे जाव तुम्हृत्तमवंतपक्षयामिसुहे  
भवत्तस्त भद्रसंभंते तुवाक्षुभोक्षयावामं जाव तुम्हृत्तमवंतपित्तिमारस्य देवस्य  
अद्गमगता एगिव्याह, तहेव जहा मत्तहतित्तस्त जाव तुम्हृत्तमवंतपक्षयामिसुहे  
उत्तररित्तामिसुहे वेत्तेव तुम्हृत्तमवंतपक्षयामिसुहे तुरए विमिष्टौ विमिष्टा  
तहेव जाव आवदक्षयावव च क्षत्तम उम्मुक्षारं इमायि क्षयायि तत्त  
माणीय से भरहं जाव सर्वे मे से विसाक्षायितित्तु उम्मुक्षारं तहु वेत्तासु तहु विद्युत्  
परियरमिष्टियमन्त्ये जाव तए य से सरे भरहेष्टं रणा उम्मुक्षारं विस्तुते समाये  
लिप्पामेव वावतरि जोमपाई यहा तुम्हृत्तमवंतपित्तिमारस्य देवस्य भरए विहृ-  
द् । तए चं से तुम्हृत्तमवंतपित्तिमारे देवे मेराए सरे विक्षय पासह २ ता आसु-  
रो देवे जाव पीक्षदार्चं सम्बोधहि याम्भं गोसीसुवंदेव च क्षयायि जाव वहेतरी  
च गेष्ट २ ता ताए विक्षुप्त जाव उत्तरेण तुम्हृत्तमवंतपित्तिमेराए अहर्वं देवत्त-  
पित्तार्वं विसाक्षासी जाव अहर्णं देवाणुपिता उत्तरिये अतुत्ताके जाव पहितिस-  
तेद् ॥ ५२ ॥ तए चं से भरहं राया द्वारए विमिष्टौ २ ता रहं परावेष १ या  
वेत्तेव उत्तमहृते वेत्तेव उवागच्छह २ ता उसहृते फ्यावं विमहृतो यहिरेवे  
फुक्ष २ ता द्वारए निगिष्टह ३ ता रहं थेष्ट २ ता उत्तम तुवाक्षुभियं व्युक्ष-  
विद्यं अहिगरविद्यित्ते वेत्तेविद्यं कागवित्तव फ्यामुक्ष २ ता उत्तमहृत्त

पव्वयस्स पुरत्थिमिहसि कडगसि णामगं आउडेड-ओसपिणीइमीसे तडयाएँ समाइ पच्छिमे भाए। अहमसि चक्कवट्टी भरहो इय नामधिजेण ॥ १ ॥ अहमसि पढमराया अहय भरहाहिवो णरवरिंदो । णत्य मह पडिसत् जिय मए भारह वास ॥ २ ॥ तिकट्टु णामग आउडेड णामग आउडित्ता रहं परावत्तेइ २ ता जेणेव विजयखधावा-रणिवेसे जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ ता जाव चुलहिम-वत्तिरिकुमारस्स देवस्स अट्टाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए ममाणीए आउहध-रसालाओ पडिणिक्खमड २ ता जाव दाहिणदिसि वेयद्वृपव्वयाभिमुहे पयाए यावि होत्था ॥ ६३ ॥ तए ण से भरहे राया तं दिव्व चक्ररयणं जाव वेयद्वृस्स पव्व-यस्स उत्तरिले णियबे तेणेव उवागच्छइ २ ता वेयद्वृस्स पव्वयस्स उत्तरिले णियबे दुवालसजोयणायाम जाव पोसहसाल अणुपविसइ जाव णमिविणमीणं विजाहरराईणं अट्टमभत्त पगिणहइ २ ता पोसहसालाए जाव णमिविणमिविजाहररायाणो मणसी-करेमाणे २ चिढ्हइ, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो अट्टमभत्तसि परिणममाणसि णमि-विणमीविजाहररायाणो दिव्वाए मईए चोइयमई अण्णमण्णस्स अतिय पाउव्व-वति २ ता एवं वयासी-उप्पणे खलु भो देवाणुपिया। जबुहीवे दीवे भरहे वासे भरहे राया चाउरतचक्कवट्टी त जीयमेय तीयपञ्चुप्पणमणागयाण विजाहरराईण चक्कवट्टीण उवत्थाणिय करेत्तए, त गच्छामो ण देवाणुपिया। अम्हेवि भरहस्स रण्णो उवत्थाणिय करेमोत्तिकट्टु विणमी णालणं चक्कवट्टु दिव्वाए मईए चोइयमई माणु-म्माणप्पमाणजुत्त तेयस्सि रूवलक्खणजुत्त ठियजुव्वणकेसवट्टियणह इच्छियसीउ-ण्हफासजुत्त-तिसु तणुय तिसु तव तिवलीगइउण्णयं तिगमीरं। तिसु काल तिसु सेय तियायय तिसु य विच्छिण्ण ॥ १ ॥ समसरीरं भरहे वासमि सव्वमहिलप्पहाण सुंद-रथणजहणवरकरचलणणयणसिरसिजदसणजणहिययरमणमणहरि सिंगरागार जाव जुत्तोवयारकुन्सल अमरवहूण सुरुव रुवेण अणुहरति सुभइ भद्वमि जोव्वणे वद्वमाणि इत्थीरयण णमी य रयणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य गेणहइ २ ता ताए उकिद्वाए तुरियाए जाव उद्धुयाए विजाहरगईए जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ ता अतलिक्खपडिवणा सखिखिणियाइ जाव जएण विजएण वद्वावेंति २ ता एवं वयासी-अभिजिए ण देवाणुपिया। जाव अम्हे देवाणुपियाण आणतिकिंकरा इतिकट्टु पडिच्छतु ण देवाणुपिया। अम्हे इम जाव विणमी इत्थीरयण णमी रयणाणि० समप्पेइ । तए णं से भरहे राया जाव पडिविसज्जेइ २ ता पोसहसालाओ पडिणिक्ख-मइ २ ता मज्जणघर अणुपविसइ २ ता ००भोयणमहवे जाव णमिविणमीण विजाहर-राईण अट्टाहियमहामहिमा, तए ण से दिव्वे चक्ररयणे आउहधरसालाओ पडिणि-

कल्पना जाव उत्तरपुरतिर्णे रिति गंगादेवीमवामिसुहे पवाए यावि होत्वा  
सुनेव सम्भा दिषुकाम्भना जाव भवर ऊँमझुसहस्रे रजपथित जागामधिक्षणग  
रमणभातिक्षितापि य दुष्टे क्षमगच्छीहात्पार्द सेसे तं चेव जाव महिमति ॥ ६४ ॥  
तए वं से दिल्ले पद्मरवये गंगाए देवीए अद्वाहिताए महामहिमाए विष्वत्ताए  
समाचीए जाऊहरत्वाक्षयो पद्मिन्नक्षम्भ २ ता जाव गंगाए महान्नार्द पद्मरित-  
मिक्षेन कूलेन दाहिणदिति लंडप्पवाशण्डामिसुहे पवाए यावि होत्वा तए वं से  
मरहे राया जाव देवेव लंडप्पवाशण्डा तेजेव उवामन्धद २ ता सम्भा क्षमाक्षम-  
काल्पना देवम्भा गवर णामाक्षो देवे पीदशार्द से व्याख्यातैक्षम्भै क्षडगावि य  
सेसे एवं तहेव जाव अद्वाहिता महाम । तए वं से मरहे राया णामाक्षास्त्व  
देवस्त्व अद्वाहिताए म विष्वत्ताए क्षमाचीए शुसेन्न देवाम्भ चाहेइ २ ता जाव  
दिषुपमो देवम्भो जाव पवाए महान्नार्द पुरतिरित्विन्न दिस्त्वुहै सक्षेपासागरमिरिमेरार्द  
उमवित्तमिस्त्वुदाविय बोम्भेइ २ ता जमाविक्षराविरुद्ध २ ता जमाविक्षरुद्ध २ ता  
देवेव गंगा महान्नार्द तेजेव उवामन्धद २ ता देवापि सम्भवावारवये व्या-  
महान्नार्द दिस्त्वम्भरुद्धावीइ जामामूर्द चम्मरवयेइ उत्तर २ ता देवेव मरहस्त्व  
रव्यो विक्षद्वंदवारतिरित्वेव देवेव जाहिरिया उष्टुद्वाभवाम्भा तेजेव उवाग-  
च्छद २ ता जागिदेवाम्भो इतिरमप्पामो फोम्भेइ २ ता अम्भद्व वरहै रवपर्व  
गहाम देवेव मरहे राया तेजेव उवामन्धद २ ता उत्तरसपरिष्पतिहैय जाव जविति  
क्षु मरहै रायं जाएव दिवरपर्व बदावेइ २ ता अम्भाहै वरहै रवनाहै चवप्रेत ।  
तए वं से मरहे राया द्वुष्टेवस्त्व सेवाम्भस्त्व अम्भाहै वरहै रवपर्व दित्तिव्यद २ ता  
शुसेन्न देवाम्भ उत्तारेइ सम्भागेइ स २ ता पद्मिन्निजेइ, तए वं से दुष्टेवे देवावर्दै  
मरहस्त्व रव्यो देवेवित्त तहेव जाव विराग, तए वं से मरहे राया अम्भमा क्षाहै  
शुसेन्न देवाक्षरवये साहेइ २ ता एवं व्यासी-गात्त वं भो देवात्पुष्पिया । यद्वा-  
प्पवाशुहाए उत्तरित्वस्त्व दुष्टारस्त्व क्षावेव विहत्वेइ २ ता व्या तिमिस्त्वुहाए व्या  
माविक्षर्व जाव दिवे भे भवत्त सेसे तहेव जाव मरहो उत्तरित्वेव दुष्टारेव जाइ-  
सुसिव्य मेहैप्पवारमित्वर्व तहेव पविसेतो मरहाहै आविहै, सीषे वं लोदगव्याम-  
गुह्याए बहुमज्जरेसमाए जाव उत्तरमिस्त्वम्भम्भो याम दुष्टे महान्नाभो द्वेव  
ज्वर फ्लरित्वित्ताम्भो व्याप्याम्भो फूहाम्भो समाणीम्भो पुरतिरित्वेव वं महान्नर्द  
उमप्पेति सेसे तहेव ज्वर पद्मिन्नित्वेव कूर्त्तेव व्याए संम्भवाम्भदा व्येवति  
तए वं लंडगप्पवाशुहाए दाहित्वित्वस्त्व दुष्टारस्त्व क्षावा सम्भव महाम ३  
बोवारवे क्षरेमावा उत्तरस्त्व सम्भद्व २ अम्भाहै प्लोष्टित्वा तए वं से मरहे एवा

चक्ररथणदेसियमगे जाव खंडगप्पवायगुहाओ दक्षिणिलेण दारेण णीणेह ससिव्व  
मेहंयारणिवहाओ ॥ ६५ ॥ तए ण से भरहे राया गगाए महार्णईए पच्चतिथिमिले  
कूले दुवाल्सजोयणायाम णवजोयणविक्षिण जाव विजयक्षयधावारणिवेस करेइ,  
अवसिट त चेव जाव णिहिरयणाण अट्टमभत्त पगिणहइ, तए ण से भरहे राया  
पोसहसालाए जाव णिहिरयणे मणसि करेमाणे करेमाणे चिढ्हइ, तस्त य अपरि-  
मियरत्तरयणा धुयमक्षयमव्वया सदेवा लोकोपचयकरा उवगया णव णिहओ  
लोगविस्तुयजसा, तजहा—णेसप्पे १ पहुयए २ पिंगलए ३ सब्वरयण ४ मह-  
पउमे ५ । काले ६ य महाकाले ७ माणवगे महाणीही ८ सखे ९ ॥ १ ॥ णेस-  
प्पमि णिवेसा गामागरणगरपट्टणाण च । दोणमुहमडबाणं खंधावारावणगिहाणं  
॥ १ ॥ गणियस्त य उप्पत्ती माणुम्माणस्स जं पमाण च । धण्णस्स य  
चीयाण य उप्पत्ती पहुए भणिया ॥ २ ॥ सब्वा आभरणविही पुरिसार्ण जा य  
होइ महिलाण । आसाण य हत्थीण य पिंगलमणिहिमि सा भणिया ॥ ३ ॥  
रयणाइ सब्वरयणे चउदसवि वराइ चक्रवट्टिस । उप्पज्जते एर्गिदियाइ पंचिदियाइ  
च ॥ ४ ॥ वत्थाण य उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सब्वभत्तीण । रगाण य धोव्वाण  
य सब्वाएसा महापउमे ॥ ५ ॥ काले कालणाण सब्वपुराण च तिसुवि वंसेसु ।  
सिप्पसय कम्माणि य तिण्ण पयाए हियकराणि ॥ ६ ॥ लोहस्स य उप्पत्ती होइ  
महाकालि आगराण च । रुप्पस्स सुवण्णस्स य मणिमुत्तसिलप्पवालाण ॥ ७ ॥  
जोहाण य उप्पत्ती आवरणाण च पहरणाण च । सब्वा य जुद्धणीई माणवगे  
दडणीई य ॥ ८ ॥ णटविही णाडगविही कब्वस्स य चउन्निहस्स उप्पत्ती । सखे  
महाणिहिमि तुडियाण च सब्वोर्सि ॥ ९ ॥ चक्रद्वपद्वाणा अद्वुस्सेहा य णव य  
विक्षयभा । वारसदीहा मज्जुससठिया जणहवीइ मुहे ॥ १० ॥ वेशलियमणिकवाडा  
कणगमया विविहरयणपडिपुण्णा । ससिसूरचक्लक्षण अणुसमवयणोववत्ती या  
॥ ११ ॥ पलिओवमट्टिईया णिहिसरिणामा य तत्थ खलु देवा । जेसिं ते आवासा  
अक्षिज्ञा आहिवच्चा य ॥ १२ ॥ एए णव णिहिरयणा पभूयधणरयणसच्ययसमिद्धा ।  
जे वसमुवगाच्छेति भरहाहिवच्चक्षवट्टीण ॥ १३ ॥ तए ण से भरहे राया अट्टमभत्तसि  
परिणममाणसि पोसहसालाओ पडिणिक्षमइ, एव मज्जणघरपवेसो जाव सेणि-  
प्पसेणिमद्वावण्या जाव णिहिरयणाण अट्टाहिय महामहिम क०, तए ण से भरहे  
राया णिहिरयणाण अट्टाहियाए महामहिमाए णिवत्ताए ममाणीए सुसेण सेणा-  
वडरयण सद्वचेइ २ ता एव वयासी-गच्छ ण भो देवाणुपिया ! गगामहाणईए  
पुरत्तिमिह णिक्षुड दुच्चपि सगगासागरगिरेराग ममविसमणिक्षुडाणि य

ओमवेदि २ ता पृथ्वीतिं पञ्चपिण्डाहिति । तए च से मुक्तेये तं तेव पुन्न-  
विद्यार्थं भावियन्व जाव ओमवित्ता तमायतिम् पञ्चपिण्डा पठिविस्तेव जाव  
मोगमोगाइ भुज्वमाने विहरह । तए च से विष्वे वक्तव्यज्ञे अलशा क्ष्याइ आदह  
वरसात्मव्ये पठिभिक्त्वमह २ ता अंतिमित्यपवित्रव्ये लक्षणाहस्तसंपरित्वुदे विष्व  
द्वितिय जाव ज्ञापूर्वेते तेव विष्वमक्त्वमारभिवेत्तु मञ्जसंमज्जेव्ये विमानव्य  
वाहिन फलतिम् विष्वि विनीये रायहायि अमिस्तुहे प्याए यावि होरवा ॥१॥ तए च  
से भरहे रामा जाव पासह २ ता छहद्वाद जाव व्येद्विष्वपुरिते सहायेह २ ता  
एवं वनासी-विष्वामेव भो देवाखुपिण्या । आमित्वेव जाव पञ्चपिण्डाहि ॥२॥ ५  
तए च से भरहे रामा अविमरणो विष्वमसागृ उप्पत्त्वसमातरव्ये वहरत्ववाप्त्वामे  
पञ्चपिण्डाहि । समिद्वकोसे वर्तीसहाववरसात्माममगे सद्वीए वरित्वस्तेव्ये  
केवलव्ये भरहे वार्ते ओमवेदि ओमवेत्ता व्येद्विष्वपुरिते सहायेह २ ता एवं  
वयासी—विष्वामेव भो देवाखुपिण्या । आमित्वेव द्वितिरवणे इमगवरह ताहे जाव  
मञ्जविरिष्वद्विजिम यदवहै नरवहै तुस्ते । तए च तस्य भरहस्त रुखो आमि-  
त्वेव द्वितिरवणे तुस्तस्त समाप्तस्त इमे भद्रुत्तमप्त्वा पुरखो भद्रुत्तमाए  
संपट्टिया ठंडहा—सोरिवमसिरिवद्व जाव इप्पणे तमर्जतरे च च पुञ्जव्यम  
गिंगार दिव्या य छापडासा जाव संपट्टिया तमर्जतरे च च विरिष्वभिस्तिरिवद्वहै  
जाव भावुपुम्बीए संपट्टिये तमर्जतरे च च सत्ता एर्गिरिवरव्या पुरखे भद्रुत्त-  
पुम्बीए संपट्टिया तं०— चदरव्ये १ छापडासे २ चम्मरव्ये ३ वंडरव्ये ४ असि  
रव्ये ५ मवियव्ये ६ चागपिरव्ये ७ तमर्जतरे च च च च महाविहैमे पुरखो  
भद्रुत्तपुम्बीए संपट्टिवा ठंडहा—शस्त्वे पंडवये जाव संके ठवर्जतरे च च  
सोलव्य देवसहस्रा पुरखे भद्रुत्तपुम्बीए संपट्टिया तमर्जतरे च च च च च च  
सहस्रा पुरखो भद्रुत्तपुम्बीए संपट्टिया तमर्जतरे च च च च च च च च  
भद्रुत्तपुम्बीए संपट्टिये एवं गाहापात्रव्ये वहरत्वमे पुरोद्धिवरव्ये तमर्जतरे च च  
इरिवरव्ये पुरखे भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च च च च च च च च च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च च च च च च च च च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च च च च च च च च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च च च च च च च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च च च च च च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च च च च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे च  
भद्रुत्तपुम्बीए तमर्जतरे

ण छणउई मणस्सफोडीओ पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्टिया, तयणतर च ण वहवे राईसरतल्वर जाव सत्थवाह्पमिडओ पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्टिया, तयणतर च ण वहवे असिगगाहा लट्टिगगाहा कुंतगगाहा चावगगाहा चामरगगाहा पासगगाहा फ्लगगगाहा परसुगगाहा पोत्थयगगाहा वीणगगाहा कूयगगाहा हडप्फगगाहा दीविय-गगाहा सएहैं सएहैं ख्वेहैं, एव वेसेहैं चिधेहैं निओएहि सएहि २ वत्थेहैं पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्टिया, तयणतरं च ण वहवे ठंडिणो मुडिणो सिहडिणो जडिणो पिन्छिणो हासकारगा खेळकारगा द्वकारगा चाङ्कारगा कदप्पिया कुकुड्या मोहरिया गायंता य दीवता य (वायंता) नच्ता य हस्ता य रमंता य कीलता य सामंता य सावेता य जावेता य रावेता य सोभेता य सोभावेता य आलोयता य जयजययहै च पठजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्टिया, एव उववाइयगमेण जाव तस्स रण्णो पुरओ महआसा आसधरा उभओ पासिं णागा णागधरा पिट्टओ रहा रहसगेली अहाणुपुव्वीए सपट्टिया । तए ण से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थयसुक-यरहयवच्छे जाव अमरवाइसणिभाए इहुीए पहियकिती चक्ररथणदेसियमगे अणे-गरायवरमहस्माणुयायमगे जाव समुद्रवम्बू पिव करेमाणे सव्विहुीए सब्बजुड्है जाव णिरघोसणाइयरवेण गामागरणगरखेडक्वडमडव जाव जोयणंतरियाहैं वस-हीहैं वसमाणे २ जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता विणी-याए रायहाणीए अदूरसामते दुवालसजोयणायाम णवजोयणविन्छिण जाव खधा-वारणिवेस करेइ २ त्ता वहुहरयण सद्वेइ २ त्ता जाव पोसहसालं अणुपविमड २ त्ता विणीयाए रायहाणीए अटुमभत्त पगिष्ठद्व २ त्ता जाव अटुमभत्त पडिजागरमाणे २ विहरद । तए ण से भरहे राया अटुमभत्तसि परिणममाणसि पोसहसालाओ पडिणि-क्षमड २ त्ता कोङ्डवियपुरिसे सद्वेइ २ त्ता तहेव जाव अजणगिरिकूडसणिभ गय-वहै णरवहै दुस्ढे त चेव सब्ब जहा हेद्वा णवर णव महाणिहओ चत्तारि सेणाओ ण पविसति सेसो सो चेव गमो जाव णिरघोसणाइएण विणीयाए रायहाणीए मज्ज-मज्जेण जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवांडिसगपडिवारे तेणेव पद्वारेत्थ गमणाए, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्जमज्जेण अणुपविसमाणस्स अप्पे-गइया देवा विणीय रायहाणि सब्भतरवाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्त करेति, अप्पेगइया० मचाइमचकलिय करेति, एव सेसेसुवि पएसु, अप्पेगइया० णाणाविहरागव-साणुस्मयधयपडागामडियभूमिय०, अप्पेगडया० लाउहोइयमहिय करेति, अप्पेगइया जाव गववट्टिभूय करेति, अप्पेगइया० हिरण्णवास वासिंति० सुवण्णरयणवहरभाभरण-वास वासेति, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो विणीय रायहाणि मज्जमज्जेण अणुपवि-

समाप्तस्मि निषादग आब महापहपदेषु वहने अरथतिथा अमरितिथा भोयस्तिथा लक्ष्म-  
रितिथा हृषिकितिथा क्षितिकितिथा कारणाहिता उत्तितिथा वितिथा वैदितिथा मुहर्म-  
गतिथा पूर्माणिता वद्माणिता खेत्तुमहिता या ताहिं ओरमाहिं इद्वाहिं खेत्ताहिं नित्ताहिं  
मणुल्लाहिं मणामाहिं तित्ताहिं तम्मूहिं अणवर्त्त अमित्तिर्दत्ता य अभिसुर्पत्ता य एवं वदासी—  
अब अय अदा ! अय अय महा ! महे अविद्य वित्ताहि विद्य पात्त्वाहि विद्वमज्जे  
वसाहि इत्तो नित्त देवार्थ ज्ञेत्रो नित्त तारार्थचम रो नित्त अमुराज परन्तो नित्त नामार्थ  
वहूर्व पुष्टसम्भवस्तुर्व वहुर्वांशो पुष्टकोटीभो वहुर्वांशो पुष्टकोटीभो विनीवाए  
रामहार्णीप तु अहिमावैतिरिमागरमेहागस्तु ज लेकमङ्गपरस्म भरहस्त्य वास्तुर्व मामार्थ-  
रथगरहेहक्ष्यहगटवदोममुहपूचासमउत्तिवेसेतु सम्म पदापत्तजाहिमिमद्वम्भे  
महावा आब माहेवर्व वोरेवर्व जाव विदराहितिहु अयव्वर्वर्व वर्ववेति तए वं से भरहे  
रामा पद्धतमालासहस्रेति विनिष्ठमामे २ वयजमाम्भवहस्रेति अभियुपमामे २  
हिममाम्भसहस्रेति उत्त्वविजमामे २ मधोरामालासहस्रेति विनिष्ठमामे २ वैति  
स्वसोइम्मुण्डेति विनिष्ठमामे २ अंगुलिमालासहस्रेति दाहमामे ३ वाहिणहत्तेव  
वहूर्व अर्थारीमाहस्तार्थ अंगिमिमालासहस्रार्थ विनिष्ठमामे ३ महामैतीमाहस्तार्थ  
समहस्तमामे २ लंतीलम्भुवियगीयवद्यरवेवं महुरेवं मजहरेवं महुमहुया वोसेवं  
विनिष्ठुज्जमामे २ जेतेव सए गिहे जेतेव सए भवम्भवर्वहितवदुकारे तेवेव उत्त-  
पद्धत् ३ ता अमित्तेव इतिवर्वर्व ठेवे ३ ता अमित्तेवामो इतिवर्वस्ते  
फ्लोरह ३ ता सोम्य देवसहस्रे दद्वारेव सम्मार्थेव स २ ता वातीस रामचर्वसे  
सद्वारेव सम्मानेव स २ ता सेवाकर्मवं सद्वारेव सम्मानेव स २ ता एव  
पद्धतम्भर्वर्व वहुर्वर्वर्व पुरोहितम्भर्व सद्वारेव सम्मानेव स २ ता वित्ति द्वेष्टे  
सद्वारेव सद्वारेव सम्मानेव स २ ता अद्वारस सेविष्टसेवीभो सद्वारेव सम्मानेव  
स २ ता अन्नेवि वहने राईराव आब सत्त्वाहपमित्तो सद्वारेव सम्मार्थेव स २ ता  
विनिष्ठिवेव, इस्तीर्मनेव वर्तीसाए उडुक्कामिमालाहस्रेति वर्तीसाए अव  
वयव्वामिमालाहस्रेति वर्तीसाए वर्तीसावेवेति आव्ववहस्त्येति एवि उपरित्तो  
भवम्भवर्वविचार्माहिति अव्वैव नहा तुवेहेव देवरामा लेकम्भवितिरिम्भवेति तए वं से  
भरहे रामा नित्ताप्रमिमालासवन्तसविवरित्वं त्वुवेत्तद ३ ता वेवेव भवम्भवेवे  
तेवेव त्वागाम्भद ३ ता भवम्भवेवेति त्वागाम्भवेव अद्वम्भार्ता पारेव ३ ता उपि  
पसाम्भवमेव फुम्भानेवेति त्वागाम्भवेवेति वर्तीसाव्वदेवेति वाव्वहि उपव्वविजमामे १

उवणच्छिजमाणे २ उवगिजमाणे २ महया जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ ६७ ॥  
 तए ण तस्य भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ रज्जुर चिंतेमाणस्स इमेयाह्वे जाव  
 समुप्पज्जित्या-अभिजिए ण मए णियगबलवीरियपुरिसकारपरक्कमेण चुल्लहिमवत-  
 गिरिसागरमेराए केवलकप्पे भरहे वासे तं सेय खलु मे अप्पाण महया २ रायाभि-  
 सेण अभिसेण अभिसिंचावित्ताएतिकहु एव सपेहेड २ त्ता कल्ल पाउप्पभायाए जाव  
 जलते जेणेव मज्जणघरे जाव पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवद्वाणसाला  
 जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्याभिमुहे णिसीयह  
 णिसीइत्ता सोल्स देवसहस्रे वत्तीस रायवरसहस्रे सेणावइरयणे जाव पुरोहियरयणे  
 तिणिण सहु सूयसए अद्वारस सेणिप्पसेणीओ अणे य वहवे राईसरतलवर जाव  
 सत्यवाहप्पभियओ सहावेह २ त्ता एव वयासी—अभिजिए ण देवाणुप्पिया । मए  
 णियगबलवीरिय जाव केवलकप्पे भरहे वासे त तुञ्जे ण देवाणुप्पिया । मम  
 महयारायाभिसेय वियरह, तए ण ते सोल्स देवसहस्रा जाव पभिइओ भरहेण  
 रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टु० करयल० मत्थए अजलिं कहु भरहस्स रण्णो एयमट्टु  
 सम्म विणएण पडिसुणेति, तए ण से भरहे राया जेणेव पोसहसाला तेणेव  
 उवागच्छइ २ त्ता जाव अद्वमभत्तिए पडिजागरमाणे २ विहरइ, तए ण से भरहे  
 राया अद्वमभत्तसि परिणममाणसि आभिओगिए देवै सहावेह २ त्ता एव वयासी-  
 खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छमे दिसीभाए एगं  
 महं अभिसेयमष्टव विउव्वेह २ त्ता मम एयमाणत्तिय पच्चपिणह, तए ण ते  
 आभिओगा देवा भरहेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्टु जाव एव सामित्ति  
 आणाए विणएण वयण पडिसुणेति पडिसुणित्ता विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिम  
 दिसीभाग अवक्कमति २ त्ता वेउव्वियसमुग्धाएणं समोहणति २ त्ता सखिजाइ जोय-  
 गाइ दहं णिसिरति, तजहा-रयणाण जाव रिट्टाण अहावायरे पुगगले परिसाडेति २ त्ता  
 अहासुहुमे पुगगले परियादियति २ त्ता दुच्चपि वेउव्वियसमुग्धाएण जाव  
 समोहणति २ त्ता वहुसमरमणिज भूमिभाग विउव्वति से जहाणामए-आलिंगपु-  
 क्खरेइ चा०, तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण  
 मह एग अभिसेयमष्टव विउव्वति अणेगखभसयसणिणविट्टु जाव गधवद्विभूय पेच्छाघ-  
 रमडववण्णगोत्ति, तस्स ण अभिसेयमडवस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण महं एगं  
 अभिसेयपेढ विउव्वति अच्छं सण्ह०, तस्स ण अभिसेयपेढस्स तिदिसिं तओ तिसोवा-  
 णपडिस्वए विउव्वति, तेसि ण तिसोवाणपडिस्वगाण अयमेयाह्वे वणावासे पण्णते  
 जाव तोरणा, तस्स ण अभिसेयपेढस्स वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते, तस्स ण

बहुसमरमफिकरत्य भूमिमाप्तस्य बहुमज्जेसमाप्त एत्य च मर्हं एवं सीहसुन्ने विड  
भृति तस्य एं सीहसुन्नस्य अयमेयाहवे वस्त्रासे पक्षते जाव दामवद्यग्या सम-  
र्थिति । तए च से देवा अमिसेयमंडर्व विउव्वर्ति २ ता जेयेव भरहे रामा जाव पक्ष-  
पिन्नति तए च से भरहे रामा आमिसोयार्ण इवार्ण भृतिए पूर्वमद्दं सोवा विसुम्म  
उद्ग्रह्य जाव पोसहसाम्भो पडिपिक्कद्वमै २ ता कोऽवृक्षिम्भुरिसे सामेव २ ता  
एवं वमार्ची-विष्पामेव मो वेष्टलुप्पिवा । आमिसेहं हरिपरवर्ण एडिक्कप्पेह ३ ता  
हृत्यग्य जाव सञ्चाहेता एवमाध्यतिय पक्षपिण्यह जाव पक्षपिण्यति तए च से  
भरहे रामा भवत्यपर्व अनुपविसइ जाव वंशजगिरिकूडुसविम्म घमवई भरहरं  
हुरहे तए च तस्य भरहस्त रक्षो आमिसेहं हरिपरवर्ण तुक्कटस्य समाप्तस्य  
इमे अद्भुतगत्यां जो चेव घमो विश्वार्द पवित्रमाप्तस्य सो चेव विक्कदममावस्तुति  
जाव पवित्रुजसमाने २ विश्वीय रामाहार्षि मञ्जसंमञ्जोर्ण विमगम्भृद् २ ता जेयेव विष्वी-  
जाए रामाहार्षीए उत्तरपुरुषिमे विसीमाप्त अमिसेयमंडर्वे तेवेव उवागम्भृद् ३ ता  
अमिसेयमंडवत्तुवारे आमिसेहं हरिपरवर्ण ठामेह २ ता आमिसेहाम्भो हरिपरवर्णाम्भो  
पक्षोद्दृद् २ ता हृत्यारवणेवं वत्तीसाए उद्ग्रह्यामिन्मासहस्तेहि वत्तीसाए वक्षवक्ष-  
व्वामियामहस्तेहि वत्तीसाए वत्तीस्त्रवदेहि वाहगसहस्तेहि सहि उपरिकुदे अमिसेय-  
महन अनुपविष्ट २ ता जेयेव अमिसेयपेहं तुमेह उवागम्भृद् २ ता अमिसेयपेहं  
अनुप्पवाहिषीकरेमावे २ पुरतिक्किमेव विसोवाणपविहवएप्पे तुहह २ ता तेवेव  
सीहासये तेवेव उवागम्भृद् २ ता पुरत्वामिसुहे सम्पिसुवां । तए च तस्य मर  
हस्त रक्षो वत्तीसं रावद्वाहत्या जेयेव अमिसेयमण्डवे तेवेव उवागम्भृति १ ता  
अमिसेयमंडर्व अनुपविष्टि २ ता अमिसेयपेहं अनुप्पवाहिषीकरेमावा १ उत्तरिष्टे  
विसोवाणपविहवएवं जेयेव भरहे रामा तुमेह उवागम्भृति १ ता वरक्क जाव  
अवलि कठु भरह रामार्ण अदर्प विजएवं वस्त्रोवेति २ ता मरहस्त रक्षो व्वासन्ये  
पाक्कद्वे द्वस्त्रमाप्ता जाव पक्षुवासति तए च तस्य मण्डस्य रक्षो चेपावदरक्के  
जाव सुलभाहृप्पमिहाम्भो तेज्ज्वि वह चेव वदर वाहिक्किण विसोवाणपविहवएवं  
जाव पक्षुवासति तए च से भरहे रामा आमिसेगे देवे सामेव २ ता एवं ववार्ची-  
विष्पामेव मो वेष्टलुप्पिवा । मम महत्वं महर्वं महर्वं महारम्यामिसेवे उव्वह-  
वेह, तए च ते आमिसेहवा देवा भरहेवं रक्षा एवं त्रुता समाप्ता उद्ग्रह्यता  
जाव उत्तरपुरुषिमां विसीमाप्त अनुष्मिता वैठक्कियमुखाएवं समोह  
वेति एवं वहा विक्कयस्त वहा इर्वंपि जाव पैडगवये पूर्णो विक्कयेति एव्वलो  
विलक्षा तेवेव वाहिक्कुभरहे वाये जेयेव विजीवा रामाहार्षी तेवेव उवागम्भृति १ तए

विणीय रायहाणि अणुप्पयाहिणीकरेमाणा २ जेणेव अभिसेयमडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति २ ता त महत्थ महग्घ महरिह महारायाभिसेय उव-द्वैंति, तए ण त भरह रायाण वत्तीस रायसहस्रा सोभणसि तिहिकरणदिवसण-क्खत्तमुहुत्तसि उत्तरपोद्वयाविजयसि तेहिं साभाविएहि य उत्तरवेऽव्विएहि य वर-क्खलपद्व्वाणेहि सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहि जाव महया महया रायाभिसेण अभि-सिंचति, अभिसेयो जहा विजयस्स, अभिसिन्चिता पत्तेय २ जाव अजलिं कटु ताहिं इष्टाहिं जहा पविसत्तस्स० भणिया जाव विहराहित्तिकटु जयजयसद् पउजति । तए ण त भरह रायाण सेणाविरयणे जाव पुरोहियरयणे तिणिं य सद्वा सूयसया अद्वारस सेणिप्पसेणीओ अणे य वहवे जाव सत्यवाहप्पभिडिओ एव चेव अभिसिंचति तेहिं वरक्खलपद्व्वाणेहि तहेव जाव अभियुणति य सोलस देवसहस्रा एव चेव णवर पम्हलसुकुमालाए जाव मउड पिणद्वेति, तयणतर च ण दहरमल्यसुगधिएहिं गधेहिं गायाइ अब्मुक्खेति दिव्वच सुमणोदाम पिणद्वेति, किं वहुणा<sup>१</sup>, गठिमवेडिम जाव विभूसिय करेति, तए ण से भरहे राया महया २ रायाभिसेण अभिसिन्चिए समाणे कोङ्गवियपुरिसे सद्वावेइ २ ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थ-खधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाडगतिगचउक्कचचर जाव महापहपहेसु महया २ सदेण उर्घोसेमाणा २ उस्सुक्क उकर उकिटु अदिज अमिज अभडप्पवेस अदड-कोदडिम जाव सपुरजणजाणवय दुवालससवच्छरिय पमोय धोसेह २ ता ममेयमाण-तियं पच्चपिणहति, तए ण ते कोङ्गवियपुरिसा भरहेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्ट-चित्तमाणदिया पीइमणा० हरिसवसविसप्पमाणहियया विणाएण वयण पडिसुणेति २ ता खिप्पामेव हत्थिखधवरगया जाव वोसेति २ ता एयमाणत्तिय पच्चपिणति, तए ण से भरहे राया महया २ रायाभिसेण अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अब्मुट्टेइ २ ता इत्यिरयणेण जाव णाडगसहस्तेहि सद्वि सपरिद्वुडे अभिसेयपेढाओ पुरथिमि-लेण तिसोवाणपडिस्त्वएण पच्चोरुहइ २ ता अभिसेयमडवाओ पडिणिकरमइ २ ता जेणेव आभिसेके हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ २ ता अजणगिरिकृडसणिभ गयवइ जाव दुरुढे, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो वत्तीस रायसहस्रा अभिसेयपेढाओ उत्तरलेण तिसोवाणपडिस्त्वएण पच्चोरुहति, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो सेणावडर-यणे जाव सत्यवाहप्पभिइओ अभिसेयपेढाओ दाहिणलेण तिसोवाणपडिस्त्वएण पच्चोरुहति, तए ण तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्क हत्थिरयण दुरुहडस्स समाणस्स इसे अद्वृमगल्मा पुरज्ञो जाव सपट्टिया, जोडविय अडगच्छमाणस्स गमो पडमो कुवेरावसाणो सो चेव इहपि क्षमो सक्षारजहो गेयव्वो जाव कुवेरोन्व देवराया

केमासे विहरिनिमामूर्द्धि । तए वं से भरहे राता मजबउर्द अगुपतिश २ ता बाब  
मोयफमैर्वेषि उहासण्वरगए अद्गममत्त पारेह ३ ता मोयपमैडवाम्पे पदिलिङ्ल-  
मङ २ ता उपि पासामवरगए कुहमाणेहि शुईगमल्पएहि जाव उम्बमाने विहर,  
तए वं से भरहे राता बुवास्मार्वष्टिरिविषि फ्लोयसि विम्बत्तसि समार्वसि देखेव मज-  
पधरे तणेव उवासाष्ठाइ २ ता बाब मजबउरगरामो पदिलिङ्लपमङ २ ता देखेव बाहि  
रिया उष्ट्रापसाम्म जाव सीहासम्मरगए पुरत्वामिसुहे विहीमइ ३ ता सोकस देव-  
सहस्ते एकारेह सम्मानेह स २ ता पदिलिच्छेह २ ता बर्तीसं रामवरपाहसा उदायेह  
सम्मानेह स २ ता देखावहर्यन्ते उकारेह सम्मानेह स २ ता बाब पुरोहित्वर्य  
उकारेह सम्मानेह स २ ता एवं विष्णि छ्डे उद्गारसए उद्गारसे देखिप्पसुचीम्बे उका-  
रेह सम्मानेह स २ ता अन्ये न कहमे राईसरत्तम्बर जाव उत्तवाहृपमिक्षमे उदायेह  
सम्मानेह स २ ता पदिलिच्छेह २ ता उपि पासामवरगए जाव विहर ॥ ६८-१०  
मरहस्म रण्णो बहरम्बे १ देवरम्बे २ असिरम्बे १ उत्तरम्बे ४ एप वं ज्ञारि  
एविरियरमणा आउहरसामाए उमुप्पणा अम्मरम्बे १ मधिरम्बे २ अगमि-  
रवये १ जब य महाविद्धो एप वं विरिक्तुहि उमुप्पणा देखावहरम्बे १ गद्धा-  
क्षरम्बे २ बहुहरम्बे २ पुरोहित्वर्ये ४ एप वं ज्ञारि मधुयरवणा विषीवाए  
रामहानीए उमुप्पणा आसरम्बे १ हरिवरम्बे २ एप वं दुजे पंक्तिरिक्षवणा  
देखुगिरिपात्यमूके उमुप्पणा झुम्हा इत्वारम्बे उत्तरिक्ताए विजाहरयेहि उमु-  
प्पण ॥ ६८-२ ॥ तए वं से भरहे राया उठासहै रवजार्व उठार्व महाविहीन्यं  
सोख्यार्व देवमाहसीक बत्तीसाए उमरहस्यार्व बत्तीसाए उद्गुप्तमियासाहस्यार्व  
बत्तीसाए उमरहस्यापियासाहस्यार्व बत्तीसाए बत्तीसक्षम्यार्व बाह्यरहस्यार्व  
विन्दु उद्गुप्त उमारस्यार्व उद्गारउर्व देखिप्पसेचीभ उठासीर्व आउसमरहस्यार्व  
उठासीर्व बंतिसमरहस्यार्व उठासीर्व रहस्यसाहस्यार्व उम्बर्व उम्बुस्त-  
कोटीवं बाकातहीए पुरवरसाहस्यार्व बत्तीसाए उमरवरसाहस्यार्व उम्बर्व एपम-  
कोटीवं उवलत्तर्व देखमुहमाहस्यार्व बद्यामीसाए पक्षसाहस्यार्व उम्बीसाए  
क्ष्माहसाहस्यार्व उठम्बीसाए महेवसाहस्यार्व बीसाए आगरहसाहस्यार्व सोख्यार्व  
उठसाहस्यार्व उठासहै स्थाहसाहस्यार्व उम्बुप्पणाए अंतरोहमाल एक्षम्प्याए  
कुरजार्व विजीयाए उम्बीमवैतगिरिसागरमेहमस्म देखमाहस्म  
मरहस्म बासस्स अज्ञेषि च बूर्ज राईसरत्तम्बर जाव उत्तवाहृपमिर्व बाह्यर्व  
वेरेवर्व महितं सानितं महारपतं आकाहसरसेनाकर्व कारमाने पालेमाने बोहव  
विष्णुएतु उद्दिमसमिष्टु उम्बुप्पणु विजित्तु मरहावीमे वरिहे वर्वरम-

चन्द्रियंगे वरहाररइयवच्छे वरमउडविसिद्धुए वरवत्थभूसणधरे सब्बोउयसुरहिकुसुम-  
वरमल्लसोभियसिरे वरणाडगणाडिजवरइत्यिगुम्मसद्धि सपरिवुडे सब्बोसहिसव्वरय-  
णसव्वसमिइसमगे सुपुण्णमणोरहे हयामितमाणमहणे पुञ्चक्यतवप्पभावणिविद्ध-  
सच्चियफले भुजइ माणुस्सए सुहे भरहे णामधेजेत्ति ॥ ६९ ॥ तए णं से भरहे  
राया अण्णया क्याइ जेणेव मज्जणधरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव ससिव्व  
पियद्वसणे णरवई मज्जणधराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव आयंसधरे जेणेव  
सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरणए पुरत्यामिमुहे गिसीयइ २ त्ता  
आयसधरंसि अत्ताण देहमाणे २ चिद्धुइ, तए णं तस्स भरहस्स रणो सुभेण  
परिणामेण<sup>१</sup> पसत्थेहिं अज्ञवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्ज्ञमाणीहिं २ ईहापोहमगणगवे-  
सण करेभाणस्स तयावरणिजाण कम्माण खएणं कम्मरथविकिरणकर अपुञ्चकरणं  
पविद्धुस्स अणते अणुत्तरे निब्बाधाए निरावरणे कसिणे पडिपुणे केवलवरनाणदसणे  
समुप्पणे, तए ण से भरहे केवली सयमेवाभरणालकार ओमुँयइ २ त्ता सयमेव  
पंचमुद्धिय लोय करेइ २ त्ता आयंमधराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता अतेउरमज्ज्ञमज्ज्ञेण  
णिगच्छइ २ त्ता दसहिं रायवरसहस्सेहिं सद्धि सपरिवुडे विणीयं रायहाणिं  
मज्ज्ञमज्ज्ञेण णिगच्छइ २ त्ता मज्ज्ञदेसे सुहसुहेण विहरइ २ त्ता जेणेव अद्वावए  
पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अद्वावयं पव्वय सणिय २ दुरुहइ २ त्ता मेघधण-  
सणिणगास देवसणिणवाय पुढविसिलावच्छ्य पडिलेहेइ २ त्ता सलेहणाद्वासुणाद्वासिए  
भज्जपाणपडियाइक्षिए पाओवगए काल अणवक्खमाणे विहरइ, तए णं से भरहे  
केवली सत्ततरि पुञ्चसयसहस्साइ कुमारवासमज्ज्ञे वसित्ता एग वाससहस्स  
मठलियरायमज्ज्ञे वसित्ता छ पुञ्चसयसहस्साइ वाससहस्सूणगाइ महारायमज्ज्ञे  
वसित्ता तेसीइपुञ्चसयसहस्साइ अगारवासमज्ज्ञे वसित्ता एग पुञ्चसयसहस्स  
देसूणग केवलिपरियाय पाउणित्ता तमेव वहुपडिपुण सामणापरियाय पाउणित्ता  
चउरासीइपुञ्चसयसहस्साइ सव्वाउय पाउणित्ता मासिएण भत्तेण अपाणएण सव-  
णेण णक्खतेण जोगमुवागएण खीणे वेयणिजे आउए णामे गोए काल्माए वीडक्कते  
समुज्जाए छिण्णजाइजरामरणवधणे सिद्धे वुद्दे मुत्ते परिणिव्वुडे अतगडे सव्वदुक्ख-  
प्पहीणे ॥ ७० ॥ इह भरहचक्किचरियं समत्तं ॥

१ तहिमप्पाणमवलोयतस्स तस्सेगमुलीए गलियमगुलिज्य, सो य त पडत ण  
जाणइ, अणुक्मेण तुर्दि पेहमाणे तमगुलिमसोहतियमवलोएइ ताहे हारकडगाइसव्व-  
माभरणमवणोइ । २ गत्तअसारत्तभावणाह्वजीवपरिणिए । ३ सयमेवाभरणभूयम-  
लकार वथ्यमल्लस्वमोमुयइत्ति अहो ।

मरहे य इत्थ देवे महिनिए भरुप्पए जाव परिज्ञोवमहिन्द्रपरिषद्वा ऐ  
एएष्टुर्णेर्ग गोममा । एवं तुक्का—भरहे जासे २ हति । असुत्तर च च गो । भरहस्स  
वासस्य सासए गामजेभे पञ्चार्ण च च क्ष्याह य आसि य क्ष्याह परिष्ठ य क्ष्याह  
य मविस्तर मुर्वि च भरह य मविस्तर च तुर्वे वियए सासए अक्षतए लक्ष्याए भरहिन्द्र  
मिष्टे मरहे जासे ॥ ७१ ॥ ताहमो वक्षारो समचो ॥

तहि न मठ । अम्बुदीपि तुदहिमर्वते जाम वासहरपन्नए पञ्चते । गोममा ।  
दैमवयस्स वासस्स द्वाहिनेर्ग भरहस्स वासस्स उत्तरेण पुरतिमध्यवज्जमुहस्स  
पवतिमेवं पवतिमध्यवज्जमुहस्स पुरतिमेवं एवं वं जम्बुदीपि तीवे तुदहिमर्वते  
जाम वासहरपन्नए पञ्चते पार्विषपवीजावए उर्धीजदादिविविच्छुम्भे तुदा व्यव-  
समुद्र पुद्दे पुरतिमित्ताए कोवीपुरतिमित्ताए अम्बुदमुह पुद्दे पवतिमित्ताए कोवीपुर-  
पवतिमित्ताए सम्पत्तमुह पुद्दे एवं जोवजसर्व चर्वृ उच्चतौर्वं पञ्चवीसं जोवमार्व  
उच्चतौर्व एवं जोवमसहस्य वावर्व च जोवमार्व तुदाम्भुद च एगूम्भीस्तमाए  
जोवगस्स विक्षयमेवंति तस्स वाहा पुरतिमध्यवज्जमेवं पंच जोवगसहस्सर्व  
विविष्टि य पञ्चासे जोवगस्स वल्लरस य एगूम्भीस्तमाए जोवगस्स अद्भुताग च  
वावामर्व तस्स जीवा उत्तरेण पार्विषपवीजाममा जाव पवतिमित्ताए कोवीपुर-  
पवतिमित्ताए उवजसमुह पुद्दा व्यवमीसं जोवमसहस्सर्वं पंच च वातीसे जोवमस्स  
अद्भुताग च विचिविचेष्टा भावामर्व वल्लता वीसे चकुप्ते वाहियेप वल्लीस  
जोवमसहस्सर्वाए दोषिणि य लीसे जोवगस्स चत्तारि य एगूम्भीस्तमाए जोवगस्स  
परिष्ठोवज्जं पञ्चते दक्षगच्छापस्तिए सम्बन्धगगमाए वाप्ते उप्ते तटेव जाव  
पार्विषवे उमओ पासि दोहि पउमवरतेहमाहि दोहि य वप्तुहेहु दंपरिक्षियो  
तुद्धनि फ्लार्व वल्लगपेति । शुश्रीमतन्तस्स वासहरपन्नयस्य उत्तरि तुद्धमर  
मविजे भूमिमागो पञ्चते से वाहायामए—आस्मिन्दुक्षयरेष वा जाव वाहृ वावामर्वा  
देवा च दबीमो च भासवैति जाव विद्वति ॥ ७२ ॥ तस्स वं वाहुसमरविज्ञास  
मूमिमागस्स वाहुमज्जवसमाए इत्थ वं वं मह पउमहे जाम वहे पञ्चते  
पार्विषपवीजायए उर्धीजदादिविविच्छुम्भ इह जोवगसहस्स भावामर्व पंच  
जोवगस्समार्व विक्षयमेवं वस जोवमार्व उच्चतौर्वं अम्भे उच्चे रम्भाम्भह्ये  
जाव पामार्वए जाव पविष्टैति च य एगाए पउमवरतेहमाए एगाव च वम्भस्तेवं  
सम्भमो रम्भता सपरिक्षितो भैवानकसुन्दर्भां भाविवन्नोति तस्स वं पउमर  
इस्म अत्तरिष्टि चत्तारि विसोवाणपटिव्यगा पञ्चता वल्लवाम्भो भाविवन्नोति ।  
तसि वं विमोवावद्विव्यगार्वे पुरभो पतोर्व लोणा पञ्चता वं वं तारणा



मरहे य इत्त देवे महिहिए महज्ज्ञए जाव पलिमोवमद्विरए परिवर्त, ऐ  
एक्षट्रेण पोक्षमा । एवं शुक्ल-मरहे वासे २ इति । अनुराग च नं गो । भरहस्त  
वासस्त सासए यामेवेप्यतो ज्ञ च क्ष्याद च आसि च क्ष्याद यतिव च क्ष्याद  
च मविस्त्रह मुवि च भवह य भविरसह च मुवि वियए सासए अन्यनए अन्यए अग्निर  
विये मरहे वासे ॥ ७१ ॥ तद्यगो यक्षलारो समस्ता ॥

कहि च भं भंते । अनुरागे २ शुद्धिमवें वाम वासहरप्यए पञ्चतो ३ शोक्षमा ।  
हेमकमस्त वासस्त दाहियेव भरहस्त वासस्त उत्तरेव पुरतिवम्भवस्तमुहस्त  
पञ्चतिवमेव पञ्चतिवम्भवस्तमुहस्त पुरतिवमेव एव नं अनुरागे वीते शुद्धिनवें  
आमं वासहरप्यए पञ्चतो पाईपदीक्षावए उर्ध्वीषदाहिवमिविद्वन्ने दुहा सद्व-  
स्तमुहे पुडे पुरतिवमिक्षाए कोवैपु पुरतिवमिक्ष त्वनस्तमुह पुडे पञ्चतिवमिक्षाए कोवैपु  
पञ्चतिवमिक्ष त्वनस्तमुहे पुडे एवं जोवजसव उहु उत्तरेव पञ्चतीते जोवजाह  
उप्येहेण पर्यं जोवजसहस्त वाक्ष्य च जोवजाह तुवाक्ष्य च एक्षुवीक्षमाए  
जोवजसहस्त विक्षमेवंति तस्त वाहा पुरतिवमप्यतिवमेवं वंच जोवजसहस्तावं  
दिविण च पण्णासे जोवजसहए फल्गुरस च एक्षुवीक्षमाए जोवजसहस्त बद्धभाग च  
आयामेव तस्त जीवा उत्तरेव पाईपदीक्षावया जाव पञ्चतिवमिक्षाए कोवैपु  
पञ्चतिवमिक्ष त्वनस्तमुहे पुडा चउम्हीते जोवजसहस्ताहे नव च वत्तीसे जोवजसहए  
अद्वामां च विचिकिसेसूचा आयामेवं पञ्चता तीसे एक्षुपदे वाहिवेष पञ्चतीते  
जोवजसहस्ताहे दोविण च तीसे जोवजसहए जाताहि च एक्षुवीक्षमाए जोवजसहस्त  
परिक्षेवेवं पञ्चतो रक्षणस्तापस्तथिय सम्बक्षणगामाए अन्ते रक्षे तोहे वाव  
पठिही उम्हो पासि थोही पठमवरकेहवाही दोही च वप्सकेही उपरिक्षिको  
तुष्टिवि पमार्य वस्तगयेति । शुद्धिमवन्तरस्त वासहरप्यमस्त उवारि वहुधर  
मविक्षे भूमिमानो पञ्चतो से व्याजामाए-माविक्षपुक्षद्वये च जाव वही वामनतरह  
देवा च देवीओ च आसदीति जाव विहरति ॥ ७२ ॥ तस्त च वहुतमरनविक्षरस  
भूमिमामस्त वहुमज्जदेसमाए इत्त च हदे मह पठमहे वामं वहे पञ्चतो  
पर्युपपदीक्षावए उर्ध्वीषदाहिवमिविद्वन्ने इह जोवजसहस्त आयामेवं वंच  
जोवजसहए विक्षमेवं इसे जोवजाह उप्येहेण अन्ते रक्षणस्तमुहे  
जाव पास्ताहेए जाव पठिहीति से नं एगाए पठमवरकेहवाए एगेव च वमस्तेवं  
सम्भालो समंता उपरिक्षिको जेह्यावज्जस्तव्यम्भां माविक्षनोति तस्त च पठम-  
हस्त चउहीति जाताहि विसोवालपठिहवगा पञ्चता क्ष्यादाहो माविक्षनोति ।  
तेहि च विद्योवायपठिहवगाए पुर्मो पतेवं ३ तोरणा पञ्चता ते च तोरणा

णाणामणिमया०, तस्स ण पउमहस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ मह एगे पउमे पण्णते, जोयण आयामविक्खमेण अद्धजोयण वाहलेण दस जोयणाइ उब्बेहेण दो कोसे ऊसिए जलताओ साइरेगाइ दसजोयणाइं सब्बगेणं पण्णते, से ण एगाए जगईए सब्बओ समता सपरिक्खिते जम्बुदीवजगाइप्पमाणा गवक्खकडएवि तह चेव पमाणेणति, तस्स ण पउमस्स अयमेयारूपे वण्णावासे प०, त०-वइरामया मूला रिट्टामए कदे वेश्लियामए णाले वेश्लियामया वाहिरपत्ता जम्बूणयामया अव्वितरपत्ता तवणिज्जमया केसरा णाणामणिमया पोक्खरवीयभाया कणगामई कणिण्या, सा ण० अद्धजोयण आयामविक्खमेण कोस वाहलेण सब्बकणगामई अच्छा०, तीसे ण कणिण्याए उप्पि वहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आलिंग०, तस्स ण वहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण मह एगे भवणे प० कोस आयामेण अद्धकोस विक्खमेण देसूणग कोस उहु उच्चतेण अणेगरखंभसय-सणिणविडे पासाईए दरिसणिज्जे०, तस्स ण भवणस्स तिदिसि तओ दरा प०, ते ण दरा पञ्चधणुसयाइ उहु उच्चतेण अहुइज्जाइ धणुसयाइ विक्खमेणं तावइय चेव पवेसेण सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ ऐयव्वाओ, तस्स ण भवणस्स अतो वहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णते, से जहाणामए-आलिंग०, तस्स ण वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण महई एगा मणिपेहिया प०, सा ण मणिपेहिया पञ्चधणुसयाइ आयाम-विक्खमेण अहुइज्जाइ धणुसयाइ वाहलेण सब्बमणिमई अच्छा०, तीसे ण मणिपेहियाए उप्पि एत्थ ण मह एगे सयणिज्जे पण्णते, सयणिज्जवण्णाओ भाणियव्वो । से ण पउमे अणेण अड्डसएण पउमाण तद्दुच्चतप्पमाणमित्ताण सब्बओ समता सपरिक्खिते, ते ण पउमा अद्धजोयण आयामविक्खमेण कोस वाहलेण दसजोयणाइ उब्बेहेण कोस ऊसिया जलताओ साइरेगाइ दसजोयणाइ उच्चतेण, तेसि ण पउमाण अयमेयारूपे वण्णावासे पण्णते, तजहा-वइरामया मूला जाव कणगामई कणिण्या, सा ण कणिण्या कोस आयामेण अद्धकोस वाहलेण सब्बकणगामई अच्छा इति, तीसे ण कणिण्याए उप्पि वहुसमरमणिज्जे जाव मणीहिं उवसोभिए, तस्स ण पउमस्स अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरत्तिमेण एत्थ ण सिरीए देवीए चउण्ह सामाणियसाहस्रीण चत्तारि पउम-साहस्रीओ पण्णताओ, तस्स ण पउमस्स पुरत्तिमेण एत्थ ण सिरीए देवीए चउण्ह महत्तरियाण चत्तारि पउमा प०, तस्स ण पउमस्स दाहिणपुरत्तिमेण सिरीए । \* अव्वितरियाए परिसाए अड्डण्ह देवसाहस्रीण अड्ड पउमसाहस्रीओ दाहिणेण मज्जिमपरिसाए दसण्ह देवसाहस्रीण दस पउमसाहस्रीओ दाहिणपत्तिमेण वाहिरियाए परिसाए वारसण्ह देवसाहस्रीण वारस । ०८८।

स्वीक्षो पण्डिताभ्यो प्रतिक्रियेण सनाहं अविद्याद्विषयैर्य सत्ता कठमा पण्डिता तस्य नं पठमस्स चक्षिति सम्बन्धो समता इत्य नं सिरीए देखीए सोक्षमार्ह आयरक्ष-  
देवक्षाहस्तीक्ष्ण सोक्षम्भु पठमसाहस्तीक्ष्णे पण्डिताभ्यो से नं तीहं पठमपरिक्षेवैहं  
सम्बन्धो समता संपरिक्षियते त -अधिकारएष मणिक्षमण्ड वाहिरएष मणिक्षताए  
पठमपरिक्षेवे वाहीसे पठमसब्दाहस्तीक्ष्णे पण्डिताभ्यो मणिक्षमण्ड पठमपरिक्षेवे  
चत्तारीसे पठमसब्दाहस्तीक्ष्णे पण्डिताभ्यो वाहिरए पठमपरिक्षेवे आह्यावैरु पठम-  
सब्दाहस्तीक्ष्णे पण्डिताभ्यो एकामेव उपुचावरेण तिहिं पठमपरिक्षेवैहि एषा  
पठमक्षोवै वीरु च पठमसब्दाहस्तीक्ष्णे मणिक्षतिं मणिक्षमण्ड । से बेष्टेवैषं भीते । एवं  
कुर्व-कठमहे २ ! गोममा ! कठमहे य तत्य १ देसे २ ताहि ३ बहुवे उपमार्ह  
आव सम्बाहस्तापत्तार्ह पठमहस्तामार्ह पठमहस्तामार्ह चिरी य इत्य देवी महिमिया  
आव पठिक्षेवमद्विद्या परिक्षद, से एण्डहुवै आव अवृत्तर च चं गोममा ।  
पठमहस्त सासए जामपेणे पण्डिते य क्षाइ वाहि य ॥ ७३ ॥ तस्य  
नं पठमहस्त पुरतिक्षिक्षेण तोरपेण यंगा महानार्ह पूर्णा समाजी पुरत्वा-  
मिमुही पद बोपक्षस्त्वार्ह पण्डिते यंक्षेत्र यंक्षेत्र यंक्षेत्र यंक्षेत्र यंक्षेत्र  
जोयक्षसए विशिष्य य एगूणवीसहमाए जोयक्षस्स दाहिणामिमुही पण्डिते यंक्षेत्र  
महाया चद्मुहपवित्तिएनं सुपाविहारस्तिथिएनं चाहरेगावोवप्यस्त्वार्हं पण्डिते यंक्षेत्र  
गंगा महानार्ह ज्ञावे पवद्वै इत्य नं महे एषा विभिन्ना पण्डिता सा च विभिन्ना  
मद्वयोवै आयामेष इ सक्षेत्रार्ह जोयक्षाद् विक्षेत्रेनं व्यद्वयोव वाहेनं मगर  
मुहित्वद्वैठावचतिया सम्बाहस्तामार्ह यंगा सम्बन्ध यंगा महानार्ह चत्व वरद्वै एत्य  
यं महे एगे यंगाप्यनामकुडे जाम तुडे पण्डिते सहिं जोयक्षार्ह आवामविक्षेत्रेनं  
नद्वय बोवक्षुयं विक्षेत्रेसाहिवै परिक्षेवेन दस बोयक्षार्ह उच्चेत्र लभे एवं  
रक्षाम्भृडे समर्तीरे वाहराम्भपासाने वाहरुडे युवाप्यमुख्यरक्षाम्भपासानुवाए वैर  
क्षिदमलिपाविक्षिमपवक्ष्यत्वोवे द्वाहोमारे द्वाहोमारे यावामविहित्वद्वै ये अनुप्य-  
सुजाववप्यगमीरस्तीयस्त्वके द्वाहोम्भावे वाहुउप्यक्षमुक्षलविभित्वम-  
सोर्पंविवपोडहीमहापोडहीक्षयपात्ताहस्तपात्तास्तपात्तायुक्षलविभित्वमिए छप्य-  
यमकुवरपरिमुख्यमायक्षम्भे अव्यविमल्यत्वस्तिथे युन्ने विहित्वम्भम्भम्भव-  
म्भवेमस्तपात्तायमित्युप्यपविवरिमस्तुल्यमाहुत्वरणावै पासाहाए । से चं एमाए  
पठमवरैयाए एगेन य वज्राण्डेन सम्बन्धो समेता संपरिक्षियते देवयावचार्हावार्ह  
पठमाय व्यक्षो माविम्भयो तस्य नं गंगाप्यवायकुडस्स तिहिं त्वयोवाच  
पविहवगा य तंज्ञाह-पुरतिक्षेण वाहियेण पठतिक्षेण तेति चं विशोवाच्यदि

રૂવગાળ અયમેયારૂવે વણાવાસે પણતે, તજહા-વડરામયા યેમા રિદ્વામયા પદ્વાળા વેશલિયામયા ખભા સુવણ્ણરૂપમયા ફલ્યા લોહિયક્વમર્હિઓ સર્હુઓ બયરામયા સધી ણાળામળિમયા આલવણા આલવણવાહાઓતિ, તેસિ ણ તિસોવાણપદિરૂવગાળાં પુરથો પત્તેય પત્તેય તોરણા પણતા, તે ણ તોરણા ણાળામળિમયા ણાળામળિમાએસુ ખંમેસુ ઉવળિવિદ્વસુળિવિદ્વા વિવિહમુતતરોવચ્ચિયા વિવિહતારાસ્વોવચ્ચિયા ઈહામિયઉસહતુર-ગણરમગરવિહગવાલગકિણરસુસરમનુંજરવણલયપદમલયમત્તિચિત્તા ખભુગય-વડરવેઝાપરિગયાભિરામા વિજાહરજમલજુયલજતજુત્તાવિવ અચ્છીસહસ્સમાલણીયા રૂવગસહસ્કલિયા ભિસમાણા ભિબિસમાણા ચક્વબુલોયણલેસા સુહફાસા સસ્સિરી-યસ્વા ઘટાવલિચલિયમહુરમણહરસરા પાસાઈયા ૦, તેસિ ણ તોરણાણં ઉવરિં વહવે અદૃઢમગલા પ૦, ત૦—સોઠિથાએ સિરિવચ્છે જાવ પદિરૂવા, તેસિ ણ તોરણાણ ઉવરિં વહવે કિણહ્વામલજ્ઞયા જાવ સુક્ષીલચામરજ્ઞયા અચ્છા સંદ્રા સુપ્પણ્ણ વડરામયદંડા જલ્યામલગધિયા સુરમ્મા પાસાઈયા ૪, તેસિ ણ તોરણાણ ઉપ્પિ વહવે છત્તાઇચ્છતા પઢગાઇપડાગા ઘટાજુયલા ચામરજુયલા ઉપ્પલહૃત્યગા પડમહૃત્યગા જાવ સય-સહસ્સપત્તહૃત્યગા સવ્વરયણામયા અચ્છા જાવ પદિરૂવા, તસ્સ ણ રંગાપ્વવાયકુદસ્સ વહુમજ્ઞદેસભાએ એથય ણ મહ એગે ગગાદીચે ણામ દીચે પણતે અદૃ જોયણાં આયામવિક્વંમેણ સાહેરગાડ પણવીસ જોયણાડ પરેક્વંચેચેણ દો કોસે ઊસિએ જલ્તાઓ સન્વચ્ચરયશમાએ અચ્છે સણ્હે ૦, સે ણ એગાએ પડમવરવેડયાએ એગેણ ચ વણસંડેણ સવ્વાઓ સમતા સપરિવિક્ષતે વણાઓ ભાળિયબ્રો, ગગાદીવસ્સ ણ દીવસ્સ ઉપ્પિ વહુસમરમળિજે ભૂમિભાગે પણતે, તસ્સ ણ વહુમજ્ઞદેસભાએ એથય ણ મહં ગગાએ દેદીએ એગે ભવણે પણતે કોસ આયામેણ અદ્વકોસ વિક્વંમેણ દેસૂણગ ચ કોસ ઉદૃ ઉચ્ચતેણ અણેગાખમસયસણિણવિદ્વે જાવ વહુમજ્ઞદેસભાએ સળિપેહિયાએ સયણિજે, સે કેણંદ્રેણ જાવ સાસએ ણામદેઝે પણતે, તસ્સ ણ ગગાપ્વવાયકુદસ્સ દમ્નિક્વણિલેણ તોરણેણ ગગામહાણડે પવ્દા સમાણી ઉત્તરદૃભરહ્વાસ એજેમાણી ૨ સત્તાહેં સલિલસહસ્સેહેં આઝરેમાણી ૨ અહે ખણદ્વપ્વવાયગુહાએ વેયદૃપવ્યયં દાલડત્તા દાહિણદૃભરહ્વાસ એજેમાણી ૨ દાહિણદૃભરહ્વાસસ્ત વહુમજ્ઞ-દેસમાગ ગતા પુરત્યાભિસુહી ચાવત્તા મમાણી ચોદ્દસાહેં સલિલસમહસ્સેહેં સમગ્રા અહે જગડ દાલડત્તા પુરત્યિમેણ લ્વણસમુદ્ર સમપ્પેડ, ગગા ણ મહાણડે પવહે છ સકોસાડ જોયણાડ વિક્વંમેણ અદ્વનોસ ઉવ્ચેહેણ તયણતર ચ ણ માયાએ ૨ પારિવદૃમાણી ૨ સુહે વાસદ્વિ જોયણાડ અદ્વજોયણ ચ વિક્વંમેણ સનોસ જોયણ ઉચ્ચેહેણ ઉમબ્રો પાસિ દોહેં પડમવરવેડયાહે દોહેં વણસંડેહેં

संपरिमिलता वेद्याकृष्णदत्तज्ञो माधिक्ष्यो एवं सिद्धूर्प्रिये वेद्यर्थं जाव तस्य  
 नं पउमहस्य पवर्तिवस्त्रिवेदं तोरमिवं सिद्धुआवात्पूर्वे शारिजाभिसुही विद्युप्पग-  
 वर्जुर्वं सिद्धुरीयो अद्यो सो चव जाव अहेतिविद्युप्पराए वेद्यमृक्ष्यमवं वाम्यता  
 पवर्तियमामिसुही आवता समाधा चोरस्त्रिला अहे चागदं पवर्तिवमेवं पवर्त्यमसुर्व-  
 जाव समप्येह, सेवं तं चव। तस्य नं पउमहस्य उत्तरितेवं तोरमेवं रोहिक्ष्या  
 महापर्वं पद्मा समाधी वेद्यिणि छावतारे जोमणसए एवं प्रगूडवीद्युप्पमाए वोवक्ष्यम  
 उत्तराभिसुही पवर्त्यर्थं गैता महावा पद्मुहपवित्तिएवं सुषावधिमारस्त्रियेवं माहरेप-  
 जोमणसएवं पवर्त्यर्थं पवड्ड, रोहियंसा वाम्य महापाह यथो पवड्ड प्रत्यं नं महं  
 एवा विभिन्ना पव्यता सा च विभिन्ना जोवर्यं आवामेवं अद्वेतस्त्रोवन्नदं  
 विक्ष्यमेवं कोसं वाहिर्वं मगासुहभित्तुसंठापसंठिता वाम्यक्ष्यरमाहे अन्यम् रोहि-  
 यंसा महापर्वं चहिं पवड्ड एवं नं महं एवो रोहियंसा पव्यते वाम्य कुम्हं पव्यते  
 अवीसं जोवर्यसंवं जात्यामविक्ष्यमेवं विभिन्न अहरीद जोमणसए विभिन्नेस्त्रो  
 परिक्षेपेवं दस्त्रोमणाद तम्भेहेवं अच्छे कुम्हप्यमजो जाव तोरणा तस्य नं  
 रोहियंसा पव्यत्यक्ष्यरस्य चकुम्हस्त्रेत्यमाए प्रत्यं नं महं एवो रोहियंसा वाम्य वीवे  
 पव्यते घेस्त्रा जोमणाह आवामविक्ष्यमेवं साहरेयाह पव्यादं जोमणाह परिक्षेपेवं  
 दो कोसे च्छिए चर्वतामो सम्वरमणामए अच्छे दहो ऐसं तं चेव जाव भवत्य अद्यो  
 म भाग्यिक्ष्यो तस्य नं रोहियंसप्यमास्त्रियस्य उत्तरितेवं तोरमेवं रोहिक्ष्या महापर्वं  
 पद्मा समाधी देवत्यं वासं एवेमाधी २ चतुरदशहि उत्तिकासाहसेवं आपरेमाधी २  
 सहायत्वादेवत्तुप्यवं अद्वजोवयेवं भर्तुपाणा समाधी पवर्त्याभिसुही आवता  
 समाधी देवत्यं वासं दुहा विमम्माधी ३ अद्वावीसाए उत्तिस्माहसेवं तुम्हा  
 वहे अहं वाम्यता पवर्तियमेवं अव्यवसुर्वं समप्येह, रोहियंसा नं फाहे अद्वेत  
 सजोमणाह पिक्ष्यमेवं कोस उम्भेहेवं तम्भन्दार च नं मायाए ३ परिवहमाधी ३  
 मुहम्हेवे पव्यतीसं जोवर्यसं विक्ष्यमिवं अद्वावाह जोमणाह उम्भेहेवं उम्हेवे पार्वि  
 वोहि पउम्हवरमेवाहि वोहि य ववसदेहि दुपरिमिलता ॥ ७४ ॥ कुम्हेस्त्रावं  
 नं मन्त्रे । वाम्यरप्याए एव इति ४ ५ योवमा । इत्यारस कृता पं तं—  
 सिद्धूर्वे १ उत्तरिमन्त्रहृदे २ मराहृदे ३ इत्यारेतीकृदे ४ वंयारेतीकृदे ५  
 सिरेहृदे ६ रोहियंसहृदे ७ लिङ्मुहेतीकृदे ८ द्वारेतीकृदे ९ इम्मम्हृदे १  
 देवत्यम्हृदे ११ । कहि च गम्त ! कुम्हेस्त्रावे वाम्यरप्याप्य सिद्धूर्वं वाम्य हृदे  
 पं ५ योवमा । पुरितिम्मव्यवस्थाहस्य विवर्तियमेवं उत्तरिमन्त्रहस्य पुरितियमेवं  
 एवं नं सिद्धूर्वे वाम्य कृदं पव्यते पंच व्येवत्यसवर्वं वहु उत्तरेवं मूले तेव जोव-

णसयां विक्खमेण मज्जे तिणि य पण्णतरे जोयणसए विक्खमेण उपिं अहूद्वाइजे जोयणसए विक्खमेण मूळे एग जोयणसहस्य पच य एगासीए जोयणसए किंचि-विसेसाहिए परिक्खेवेण मज्जे एग जोयणसहस्य एग च छलसीय जोयणसय किंचि-विसेसूण परिक्खेवेण उपिं सत्ताइक्षाणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण, मूळे विच्छिणे भज्जे सखिते उपिं तणुए गोपुच्छसठाणसठिए सब्बरयणामए अच्छे०, से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसडेण सब्बओ समता सपरिक्खिते, सिद्धस्स कूडस्स ण उपिं वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव विहरंति । कहि ण भन्ते ! चुल्हिमवन्ते वासहरपव्यए चुल्हिमवन्तकूडे णाम कूडे पण्णते ? गो० । भरहकूडस्स पुरत्थिमेण सिद्धकूडस्स पञ्चत्यिमेण एत्य ण चुल्हिमवन्ते वासहरपव्यए चुल्हिमवन्त-कूडे णाम कूडे पण्णते, एव जो चेव सिद्धकूडस्स उच्चतविक्खभपरिक्खेवो जाव व० भू० प० वण्णओ, तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण महं एगे पासायवडेसए पण्णते वासट्टु जोयणाइ अद्वजोयण च उच्चतेण इक्तीस जोयणाइ कोस च विक्खमेण अब्गुगयमूसियपहसिए विव विविहमणिरयणभत्तिचिते वाउद्युय-विजयवेजयतीपडागच्छताइच्छतकलिए तुगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालतरय-णपजस्मीलिएव्व भणिरयणथूमियाए वियसियसयवत्तपुढरीयतिलयरयणद्वचदचित्ते णाणामणिमयदमालकिए अतो वहिं च सण्हे वइरतवणिजसहलवालुयापत्थडे सुहफासे सस्तिरीयरुवे पासाईए जाव पडिरुवे, तस्स ण पासायवडेसगस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमिभागे प० जाव सीहासण सपरिवार, से केणट्टेण भन्ते । एव वुच्चइ-चुल्हिमवन्त-कूडे २१ गो० । चुल्हिमवन्ते णाम देवे महिङ्गिए जाव परिवसइ, कहि ण भन्ते ! चुल्हिमवन्तकूडस्स देवस्स चुल्हिमवन्ता णाम रायहाणी प० ? गो० । चुल्हिमवन्तकूडस्स दक्षिणेण तिरियमसखेजे दीवसमुद्दे वीईवइता अयण जम्बुदीवं २ दक्षिणेण वारस जोयणसहस्साइ ओगाहिता इत्य ण चुल्हिमवन्तस्स गिरिखिमारस्स देवस्स चुल्हिमवन्ता णाम रायहाणी प० वारस जोयणसहस्साइ आयामविक्ख-मेण, एव विजयरायहाणीसरिसा भाणियव्वा, एव अवसेसाणवि कूडाणं वत्तव्यया णेयव्वा, आयामविक्खभपरिक्खेवपासायदेवयाओ सीहासणपरिवारो अद्वो य देवाण य देवीण य रायहाणीओ णेयव्वाओ, चउम्ह देवा चुल्हिमवन्त १ भरह २ हेमवय ३ वेसमणकूडेसु ४, सेसेसु देवयाओ, से केणट्टेण भन्ते ! एव वुच्चइ-चुल्हिमवन्ते वासहरपव्यए २ ? गो० । महाहिमवन्तवासहरपव्यं पणिहाय आयामुष्मतुव्वे-हविक्खभपरिक्खेवं पद्मच्छ ईसिं छ्वातराए चेव हस्सतराए चेव पीयतराए चेव, चुल्हिमवन्ते य इत्थ देवे महिङ्गिए जाव पलिओवमडिश्य परिवसइ, से एएणट्टेण

गो । एवं तुल्य—उक्तहिमकल्पे बासहरपत्त्येण अद्युतारे च न गो । तुल्यहि  
मवन्तुस्तु धारणे शामयेवे पत्त्यते च च क्षमाइ जारि ॥ ७५ ॥ वहि च मन्त्रं ।  
वंशहीने रीते हेमवपु शामं बासे प ३ गो । महाहिमकल्पतुस्तु बासहरपत्त्यकल्पस्तु  
शक्तिवेष्ट उक्तहिमकल्पस्तु बासहरपत्त्यकल्पस्तु दत्तरेण पुरतिक्षमवज्ञसुइस्तु पत्त्य  
तिक्ष्मर्थं पत्त्यक्षिमम्भक्षम्भसुइस्तु पुरतिक्षमेष्टं एत्य न वंशहीने रीते हेमवपु शाम  
बासे पत्त्यते पार्वत्यपवैष्णवाप्त्ये उरीचक्षाहिणविपित्त्ये पत्तिवेष्टहेमवपुस्तुठिए उक्ता  
म्भक्षम्भसुइ । पुद्दे पुरतिक्षमित्यापु ओवैष्टे पुरतिक्षमित्यापु सक्षम्भसुइ । पुद्दे पत्तिक्ष-  
मित्यापु ओवैष्टे पत्तिक्षमित्यापु अभक्षम्भसुइ । पुद्दे वोविष्ट ओवपत्त्यसाहस्रां एवं च  
वंशुदारे ओवपत्त्यस्य एवं य एग्रूपवीक्षमापु ओवक्षम्भसु विक्षम्भमेष्ट तस्तु बाहा  
पुरतिक्षमपत्तिक्षमेष्टं उज्जोवत्तसाहस्रां चता य पणपत्त्ये ओवपत्त्यस्तु तुह्यो  
अभक्षम्भसुइ । पुद्दा पुरतिक्षमित्यापु ओवैष्टे पुरतिक्षमित्यापु अभक्षम्भसुइ । पुद्दा पत्तिक्षमित्यापु  
जाव पुद्दा सत्तांश ओवपत्त्यस्तु बाहामेष्टं तस्तु जीवा उत्तरेण पार्वत्यपवैष्णवाप्त्या  
अभक्षम्भसुइ । ओवपत्त्यस्तु जीवपत्त्यस्तु चत्वारे ओवक्षम्भसुइ । ओवपत्त्यस्तु जीव-  
पत्त्यस्तु चत्वारे ओवपत्त्यस्तु एवं य एग्रूपवीक्षमापु ओवपत्त्यस्तु परिक्षेष्टं  
हेमवप्यस्तु च मन्त्रं । बासस्तु वेरिष्टए बासारमाहपत्तोमारे पत्त्यते ३ यो । बहुसमर  
मविष्टे भूमिमाला पत्त्यते एवं लक्ष्यसमाकुमालो नैवपत्तोति ॥ ७६ ॥ वहि न भर्ते ।  
हेमवपु बासे सदार्थं बासं वहिम्भृपत्त्यए पत्त्यते ३ पोवया । रोहियापु महार्थैप  
पत्तिक्षमेष्ट रोहियेचाए महार्थैपु पुरतिक्षमेष्ट हेमवप्यस्तुस्तु वहुमञ्जरेहम्भए  
एत्य चं सदार्थं णाम वहिम्भृपत्त्यए पत्त्यते एवं जोवपत्त्यस्तु उर्वृ उव्वैर्व  
वहुत्तार्द ओवक्षम्भवार्द उम्भेहेष्टं सम्भवत्तमे पत्त्यास्तुठपत्तीठिए एवं ओवक्षम्भस्तु  
आवामविक्षम्भर्द ओवपत्त्यस्तु एवं च बहु ओवपत्त्यस्य विक्षिप्तुम्-  
यं परिक्षेष्ट । ५ वहिम्भृ से चं एगाए पत्तमवर्त्येष्टापु  
स्तुरिक्षमेष्टो ऐवावपत्त्यस्तुठपत्तीमेष्टो मविष्टो  
वहुसमरमविष्टे भूमिमाले पत्त्यते ६

महावर्द्धे य इत्थ देवे महिंद्रिए जाव महाणुभावे पलिओवमट्टिइए परिवसइ, से ण तत्थ चउण्ह सामाणियसाहस्रीण जाव रायहाणी मंदरस्स पब्बयस्स दाहिणेण अण्णमि जम्बुद्दीवे दीवे० ॥ ७७ ॥ से केणट्टेण भन्ते ! एव बुच्छइ-हेमवए वासे २ ? गोयमा ! चुलहिमवन्तमहाहिमवन्तेहिं वासहरपब्बएहिं दुहओ समवग्रूठे णिच्चं हेम दलइ णिच्च हेम दलइता णिच्च हेम पगासड हेमवए य इत्थ देवे महिंद्रिए० पलिओव-मट्टिइए परिवसइ, से तेणट्टेण गोयमा ! एव बुच्छइ-हेमवए वासे हेमवए वासे ॥ ७८ ॥ कहि णं भन्ते ! जम्बुद्दीवे २ महाहिमवन्ते णाम वासहरपब्बए प० ३ गो० ! हरि-वासस्स दाहिणेण हेमवयस्स वासस्स उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्छत्थिमेण पच्छत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण जम्बुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णाम वासहरपब्बए पण्णते, पाईणपढीणायथए उदीणदाहिणविच्छिणे पलियकसठाणसठिए दुहा लवणसमुद्द पुट्टे पुरत्थिमिळाए कोडीए जाव पुट्टे पच्छत्थिमिळाए कोडीए पच्छत्थिमिळं लवणसमुद्द पुट्टे दो जोयणसयाइ उद्दु उच्चतेण पण्णास जोयणाइ उव्वेहेण चत्तारि जोयणसहस्राइ दोणिं य दसुत्तरे जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्वभाग च आयामेण, तस्स जीवा उत्तरेण पाईणपढीणायया दुहा लवणसमुद्द पुट्टा पुरत्थिमिळाए कोडीए पुरत्थिमिल लवणसमुद्द पुट्टा पच्छत्थिमिळाए जाव पुट्टा तेवण्ण जोयणसहस्राइ णव य एगातीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसाहिए आयामेण, तस्स धणु दाहिणेण सत्तावण्ण जोयणसहस्राइ दोणिं य तेणउए जोयणमए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेण, सुयगसठाणसठिए मव्वरयणामए अच्छे० उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसडेहिं सपरिक्खते॑। महाहिमवन्तस्स ण वासहरपब्बयस्स उर्पि बहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णते जाव णाणाविहपब्बवणोहिं मणीहि य तणेहि य उवसोभिए जाव आसयति सयति य ॥ ७९ ॥ महाहिमवतस्स ण० बहुमज्जदेसभाए एत्थ ण एगे महापउमद्दहेण णाम दहे पण्णते दो जोयणसहस्राइ आयामेण एग जोयणसहस्र विक्खमेण दस जोयणाइ उव्वेहेण अच्छे० रययामयकूळे एव आयामविक्खभविहूणा जा चेव पउमद्दहस्स वत्तव्यया सा चेव पैयव्वा, पउमप्पमाण दो जोयणाइ अद्वो जाव महापउमद्दहवण्णाभाइ हिरी य इत्थ देवी जाव पलिओवमट्टिइया परिवसइ, से एएणट्टेण गोयमा ! एव बुच्छइ०, अदुत्तर चणं गोयमा ! महापउमद्दहस्स सासए णामधेजे प० जं ण क्याइ णासी ३ , तस्स ण महापउमद्दहस्स दक्खिणिलेण तोरणेण रोहिया महाणई पवृढा समाणी सोलस

पंक्तिरे जोक्षणराए पंच म एग्रूपवीमश्वाए ज्ञानवस्प स्वादिष्णमिमुही पञ्चार्थ गंता  
महामा च मुहूपवितिएर्ल मुकावम्भारस्तिएर्व सद्वरेमदोबोव्यवस्थाएर्ज पवाएर्व कवड्ह  
रोहिवा वं महापार्व जओ पवड्ह एत्य वं महै एमा विभिन्ना प भा वं विभिन्ना  
ज्येष्ठां आवामर्ण अदतरराजोव्यवस्थ विस्तामेवं कोर्त वाहूमेन मगरमुहूर्तिउद्धुर्वा-  
पर्वतिया सम्बन्धरामह भ्रष्टा रोहिवा वं महापार्व जहि पवाइ एत्व वं महै एगे  
रोहिवप्पामयुद्धे जामं कुड प सतीसु ज्येष्ठामर्ण आवामविकर्त्तमेवं पञ्चत विभिन्न  
भसीए जोक्षणसए किविविस्मृल परिक्षेवर्व इम जोक्षणर्व उद्धुर्त जट्ठ उद्दे  
या चक्र व्याख्यो व्यारतके बडे भमतीरे जाव तोरका तस्म वं रोहिवप्पामयुद्धस्म  
बहुमज्जमभाए एत्य वं महै एगे रोहिवर्तीवे जामं शीघ्र पक्षतो भोक्तु ज्येष्ठामर्ण  
आवामविक्षयमेवं साइरेमार्व पक्षार्व ज्येष्ठार्व परिक्षेवर्व दो कोसु ज्येष्ठार्व वर्त-  
तामा सम्बन्धरामए अच्छे स एं एगाए पड़मवरमेव्याए एगी य इत्तस्तैर्वं  
सम्भामा मर्त्ता सपरिवित्ता रोहिवशीक्षस्म वं शीघ्रस्म उपि बहुममरमविक्षै मूर्मि-  
मागे पक्षतो उद्धुर्त वं बहुममरमविक्षस्म भूमिमागस्म बहुमज्जवसमाए एत्व वं  
महै एगे भक्त फक्षतो कोसु आवामेवं ऐसु तं चेत पक्षार्व च अद्वे य भाविततो ।  
तस्म वं रोहिवप्पामयुद्धस्म इविद्याविवें तोरत्वेवं रोहिवा महापार्व पवाइ समाजी  
देवमवर्व जार्व एजेमाजी ३ सहायर्व वास्तेव्युम्भवं अद्वोवणेवं असीत्ता पुरत्वामि-  
मुही आवामा यमाजी देवमवर्व जार्व तुहा विभवमाजी ३ अद्वावीमाए सविक्षात्तस्तेहि  
सम्मामा अहे जमार्व इस्त्वा पुरत्वमवर्व उद्धुर्तम्भुर्व उमप्येह रोहिवा वं चाहा  
रोहिव्यमा ताहा पक्षाहे च मुहै य भावितम्भा जाव सपरिवित्ता । तस्म वं  
महापउमहस्म उत्तरिण्य तारत्वेवं हरिक्षामा महापार्व पवाइ समाजी सोस्म  
पंक्तिरे जोक्षणसए पञ्च व एग्रूपवीस्त्वाए जोक्षणस्म उत्तरामिमुही पञ्चपन्ते गंता  
महामा च मुहूपवितिएर्वं मुकावम्भारस्तिएर्वं सद्वरेगत्तुबोव्यवस्थाएर्वं पक्षाएर्वं  
पवाइ हरिक्षेता वं महापार्व जओ पवड्ह एत्व वं महै एगा विभिन्ना प दो  
जोक्षणार्व आवामेवं पक्षावीसु ज्येष्ठार्व विस्मृतिमेवं अद्व जोक्षण वाहूमेवं मपणुर  
विउद्धुर्तात्तिया सम्बन्धरामह अच्छम हरिक्षेता वं महापार्व जहि पवड्ह एत्व  
वं महै एगे हरिक्षेत्पक्षमकुड जाम कुडे पक्षतो वाप्ति य चत्ताके जोक्षणसए आवाम-  
विक्षयमेवं उत्तरमन्त्वे जोक्षणसए परिक्षेवेवं अन्ते एव हरिक्षेत्पक्षवा सम्भा  
वेवद्वा जाव तोरका तस्म वं हरिक्षेत्पक्षमकुडस्म बहुमज्जवेव्याए एत्व वं महै  
एगे हरिक्षेत्पक्षवे जामं शीघ्र प वातीसु जीवामार्व आवामविकर्त्तमेवं एगुत्तर जोक्षण  
संवे परिक्षेवेवं दो कोसु उद्धिए अस्तामो सम्बन्धरामए जस्ते से वं एगाए पठ-

वरदेवद्याए एरोण य वणसदेणं जाव सपरिक्षित्वे वण्णओ भाणियव्वोति, पमाण च  
यणिज च अद्वौ य भाणियव्वो । तस्स णं हरिकतप्पवायकुण्डस्स उत्तरिण्ठेणं तोरणेणं  
जाव पवूढा समाणी हरिवस्स वास एजेमाणी २ वियडावइं वट्टवेयद्वृ जोयणेणं अस-  
त्ता पच्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी हरिवास दुहा विभयमाणी २ छप्पणाए सलि-  
ग्रसहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पच्चत्थिमेण लवणसमुद्द समप्पेइ, हरिकंता  
। महार्णडे पवहे पणवीस जोयणाइ विक्खम्मेण अद्वजोयण उव्वेहेण तथणतर च ण  
गायाए २ परिवङ्गमाणी २ मुहमूले अद्वाइजाइ जोयणसयाइं विक्खम्मेण पञ्च जोय-  
णाइ उव्वेहेण, उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वणसदेहिं सपरिक्षित्वा  
॥ ८० ॥ महाहिमवन्ते ण भन्ते ! वासहरपव्वए कइ कूडा प० १ गो० । अद्व कूडा प०,  
त०-सिद्धकूडे १ महाहिमवन्तकूडे २ हेमवयकूडे ३ रोहियकूडे ४ हरिकूडे ५ हरि-  
कतकूडे ६ हरिवासकूडे ७ वेसलियकूडे ८, एव चुल्लहिमवतकूडाण जा चेव वत्तव्या  
सच्चेव णेयव्वा, से केणद्वेण भन्ते ! एव बुच्छ-महाहिमवंते वासहरपव्वए २ १  
गोयमा ! महाहिमवंते ण वासहरपव्वए चुल्लहिमवंते वासहरपव्वय पणिहाय आया-  
मुच्चन्तुव्वेवेहिक्खम्मपरिक्खेवेणं महत्तराए चेव दीहतराए चेव, महाहिमवंते य  
इथ देवे महिद्विए जाव पलिओवमद्विइए परिवसइ ॥ ८१ ॥ कहि णं भन्ते !  
जम्बुद्वीवे दीवे हरिवासे णाम वासे प० १ गो० । णिसहस्स वासहरपव्वयस्स  
दक्खिणेण महाहिमवन्तवासहरपव्यस्स उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेण  
पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्य ण जम्बुद्वीवे २ हरिवासे णाम वासे  
पणते एव जाव पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल लवणसमुद्द पुढे अद्व जोयण-  
सहस्साइ चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स  
विक्खम्मेण, तस्स वाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेण तेरस जोयणसहस्साइ तिण्ण य एग-  
सद्वे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्वभाग च आयामेणति, तस्स जीवा  
उत्तरेण पाईणपडीणायथा दुहा लवणसमुद्द पुढा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्ल  
जाव लवणसमुद्द पुढा तेवत्तरि जोयणसहस्साइ णव य एगुत्तरे जोयणसए सत्तरस य  
एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्वभाग च आयामेण, तस्स धणु दाहिणेण चउरासइं  
जोयणमहस्साइ सोलस जोयणाइ चत्तारि एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेण ।  
हरिवासम्म ण भन्ते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे प० १ गोयमा ! वहुसमर-  
मणिजे भूमिभागे पणते जाव मणीहिं तणेहि य उव्वसोभिए एव मणीण तणाण य  
वण्णो गन्धो फासो सहो भाणियव्वो, हरिवासे ण० तत्य २ देसे २ ताहिं २ वहवे खड्डा-  
खट्टियाओ एव जो सुममाए अणुभावो सो चेव अपरिसेसो वत्तव्यो । कहि ण भन्ते !

इरिषासे जासे विद्वावै जामं बहवेयहुपम्बए पम्बते ॥ गो । इरीए महाशद्वै पवर्तिनि-  
मध्ये इरिक्ताए महानैए पुररिपमेण इरिषासस्म २ बहुमज्जदेमभाए एव व व  
विद्वावै जामं बहवेयहुपम्बए पम्बते एवं जो जाव साहारस्य विस्तयमुच्छुम्भेह  
परिक्षेवसंठाम वन्ध्यावासो य सो चेव विद्वावैस्यमि माविदम्भो जवर अद्भो  
देवो पठमार्ह जाव विद्वावैवन्ध्यामाई अद्यो य "त्य देवे महिंहुए एवं जाव वाहि  
गेवं रामहाणी लेयम्भा से लेवट्टेवं मार्ह । एवं युवार-इरिषासे इरिषासे ॥ गोमना ॥  
इरिषासे व जासे मणुया भद्रा भद्रोमासा संवा वं संयुद्धस्तुपिण्डामा इरिषासे  
य "त्य देवे महिंहुए जाव पछिअद्वेवमन्त्तिप्पए परिवक्तु से तण्ट्टेवं योवमा । एवं युवार-  
॥ ५३ ॥ कर्ति वं भन्तु । बंगुरीमे ३ विस्तारे जामं वासहारपम्बए पम्बते ॥ गोमना ॥  
महाविद्वैहस्य वासस्य विकितमेण इरिषासस्म उत्तरेवं पुररिष्यमन्नसमुरस्तु पव-  
रिष्यमेण पवरिष्यमन्नसमुरस्तु पुररिष्यमेण एव वं बंगुरीमे वीवे विस्तारे जामं  
वासहारपम्बए पम्बते पाईशपदीवामए उद्दीपद्वाहिणविलिप्पे बुहा व्यवसमुरं पुडे  
पुररिष्यमिक्ताए जाव पुडे पवरिष्यमिक्ताए जाव पुडे उत्तारि जोववसवाई उर्व उच-  
तिर्ण उत्तारि गाउवसवाई उच्चेहेवं सोमस जोववाहसाई भटु य वादाले जोवव-  
सए द्वित्तिय य एकूणवीक्षमाए जोववासस विक्षम्भमेण तस्य बाहा पुररिष्यमपविष्य-  
मेण वीस जोववाहसाई एवं व फल्टु जोववसवं दुवित्तिय य एकूणवीक्षमाए जोव-  
वासस भद्रमार्ह व आयामेवं तस्य जीवा उत्तरेवं जाव उत्तमाई जोववाहसाई  
एव व उच्चपम्बं जोववसवं दुवित्तिय य एकूणवीक्षमाए जोववासस आयामेवंति तस्य  
भन्तु इरिष्यमेण एव जोववसवसहसर्वं उत्तमीतु व जोववसवाहसाई दित्तिय व छावापे  
जोववासए जाव व एकूणवीक्षमाए जोववासस परिक्षेवेन द्वयाहस्त्रयसंवित्तिए उच्चतम-  
विक्षमए अप्पे उभमी पासि दोईं पठमवर्तेवाहि देवि य वदसहेहि जाव सं-  
रिष्यित्वते विस्तारस्य व वासहारपम्बसस्य उपिय बहुधमरमविलो मूर्मित्वते पम्बते जाव  
आसमंति सम्पति तस्य यं बहुधमरमविक्षमस भूमिभायसस बहुमज्जदेमभाए एवं वं  
माई एगे विलिष्ठिवे जामं वहे पम्बते पाईशपदीवामए उद्दीपद्वाहिणविलिप्पे उत्तारि  
जोववाहसाई आयामेव दो जोववाहसाई विक्षमेवं दस जोवमार्ह उच्चेहेवं अप्पे  
सम्हे रम्भमवद्वै तस्य वं विलिष्ठिवाहस्य उत्तरियि उत्तारि विलिष्ठिवाहपविक्षमा  
प एवं जाव आयामविक्षमविलोगा या चेव महापमहस्य वत्तम्भमा दा चेव विलि-  
ष्ठिवाहस्य वाम्भमा तं चेव पठगहाप्माण भट्टु वाम्भ विलिष्ठिवाहप, विहै व इत्य-  
देवी पविष्यमेवमन्त्तिप्पामा परिक्षमात् से तण्ट्टेवं गोमना । एवं युवार-विलिष्ठिवे विलिष्ठिवे  
॥ ५४ ॥ तस्य वं विलिष्ठिवाहस्य विक्षमेण दोउवेवं इरिषान्नै पक्षा समाप्ती सप्त

जोयणसहस्राइ चत्तारि य एकवीसे जोयणसए एग च एगूणवीसइभाग जोयणस्स  
दाहिणाभिमुही पव्वएण गता महया घडमुहपवित्तिएण जाव साइरेगचउजोयण-  
सइएण पवाएण पवडइ, एव जा चेव हरिकन्ताए वत्तब्बव्या सा चेव हरीएवि  
गेयव्वा, जिव्भयाए कुडस्स दीवस्स भवणस्स त चेव पमाण अट्टोडवि भाणियब्बो  
जाव अहे जगइ दालइत्ता छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिम लवणसमुद्दं  
समप्पेइ, त चेव पवहे य मुहमूले य पमाण उव्वेहो य जो हरिकन्ताए जाव वण-  
सडसपरिक्खत्ता, तस्स ण तिगिंछिद्दहस्स उत्तरिलेण तोरणेण सीओया महाणई  
पवूडा समाणी सत्त जोयणसहस्राइ चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एग च एगूण-  
वीसइभाग जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएण गता महया घडमुहपवित्तिएण जाव  
साइरेगचउजोयणसइएण पवाएण पवडइ, सीओया ण महाणई जओ पवडइ एत्य  
ण महं एगा जिव्भया पण्णत्ता चत्तारि जोयणाइ आयामेण पण्णास जोयणाइ  
विक्खमेण जोयण वाहलेण मगरमुहविउद्दसठाणसठिया सञ्चवइरामई अच्छा०,  
सीओया ण महाणई जहिं पवडइ एत्य ण मह एगे सीओयप्पवायकुण्डे णाम कुण्डे  
पण्णत्ते चत्तारि असीए जोयणसए आयामविक्खमेण पण्णरसअट्टारे जोयणसए  
किन्चिविसेसूणे परिक्खेवेण अच्छे एवं कुडवत्तब्बव्या णेयव्वा जाव तोरणा । तस्स ण  
सीओयप्पवायकुण्डस्स वहुमज्जदेसभाए एत्य ण मह एगे सीओयदीचे णाम दीचे  
पण्णत्ते चउसस्त्रि जोयणाइ आयामविक्खमेण दोणिण विउत्तरे जोयणसए परिक्खेवेण  
दो कोसे असिए जलत्ताओ सञ्चवइरामए अच्छे सेस तहेव वेह्यावणसडभूमिभाग-  
भवणसयणिजअट्टो भाणियब्बो, तस्स ण सीओयप्पवायकुण्डस्स उत्तरिलेण तोरणेण  
सीओया महाणई पवूडा समाणी टेवकुरु एजेमाणी २ चित्तविचित्तकूडे पव्वए निसढ-  
देवकुस्सरसुलसविज्जुप्पभदहे य दुहा विभयमाणी २ चउरासीए सलिलासहस्सेहिं  
आपूरेमाणी २ भद्दसालवण एजेमाणी २ मदर पव्वय दोहिं जोयणेहिं असपत्ता  
पच्चत्थिमाभिमुही आवत्ता समाणी अहे विज्जुप्पम वक्खारपव्वय दारइत्ता मन्दरस्स  
पव्वयस्स पच्चत्थिमेण अवरविदेह वास दुहा विभयमाणी २ एगमेगाओ चक्कवट्ठि-  
विजयाओ अट्टावीसाए २ सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी २ पन्नहिं सलिलासयसहस्सेहिं  
दुतीसाए य सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जयतस्स दारस्स जगइ दालइत्ता  
पच्चत्थिमेण लवणसमुद्द समप्पेइ, सीओया ण महाणई पवहे पण्णास जोयणाइ  
विक्खमेण जोयण उव्वेहेण, तयणतर च ण माग्याए २ परिवह्नमाणी २ मुहमूले  
पव्व जोयणसयाइ विक्खमेण दस जोयणाइ उव्वेहेण उभओ पासि दोहिं पउमवर-  
वेह्याहिं दोहिं य वणसडेहिं सपरिक्खत्ता । गिसढे ण भन्ते । वासहरपव्वए

अथ कृष्ण पञ्चाता १ योगमा । यत् कृष्ण पञ्चाता तंजाहा-चिद्रहृदे १ चित्तरहृदे २ हरिकागरृदे ३ पुष्पविरहकृदे ४ हरिसृदे ५ पिरिहृदे ६ सीमोयाहृदे ७ अमर विद्रहृदे ८ रमगरृदे ९ ये चेत् पुष्पहिमर्तज्ज्ञाय उच्चात्मिकचतुर्मायरिकवेषो पुष्पविशिष्टो रम्भाणी य सर्वेष इहपि वेदमा से केवलेष्व मन्त्रे । एवं पुष्पर चित्तह वास्तवरपञ्चए २ ३ योगमा । चित्तह च वास्तवरपञ्चए वहये कृष्ण चित्तह संठाणसंठिया उच्चभास्तुराणसंठिया चित्तह च इत्य वेद महित्तिए वास्तवपञ्चिम-ठिक्कए परिवस्तु से तेजद्वेष्व योगमा । एवं तुष्टह-चित्तह वास्तवरपञ्चए ३ ४ ५ एवं एहि ने मन्त्रे । जमुहीये शीघ्रे महाविदेहे नार्म वास्त फलतो ४ योगमा । जौ-दन्तस्त वास्तवरपञ्चस्त संक्षिप्तेऽर्थ चित्तहस्त वास्तवरपञ्चस्त संतारेण पुरतिम-मञ्चामसमुद्दस्त पञ्चविष्टमेष पञ्चतिमसम्भवसुमुद्दस्त पुरतिमसेष्व एत्य ने जमुहीये २ महाविदेहे शार्म वार्षे फलतो पाईपर्यायाय उर्ध्वायशाहिनविद्युत्त्वे पतिंकं-संठाणसंठिए तुहा अमसहस्रै तुहे पुरतिम जाव पुहे पञ्चतिमिकाय अत्रैष च चित्तमित्रे जाव पुहे तेवीर्व ओवप्रसाहस्तार्व इव तुलसीए ओवप्रसादे तातारि च एगूजवीक्ष्माए ओवप्रस्तु संक्षिप्तमेष्वेति तस्त वाहा पुरतिमपञ्चतिमसेष्व तेवीर्व ओवप्रसाहस्तार्व सत् य सत्सद्वे ओवप्रसादे सत् य एगूजवीक्ष्माए ओवप्रस्तु जावामेष्वेति तस्त जीवा बहुमज्जातेचमाए पाईपर्यायामा तुहा अमसहस्रै पुहा पुरतिमिकाय शोहीए पुरतिमिकाय जाव पुहा एवं पञ्चतिमिकाय जाव पुहा एवं ओवप्रस्तुमसाहस्त जायामेष्वेति तस्त वर्षु उम्मो पासि उत्तरवाहिमेष्व एवं ओव नमसहस्रै अद्वाष्ट्व ओवप्रसाहस्तार्व पर्ग च तेखुतार्व ओवप्रसादे दोक्षु च एत्य शीक्ष्मामो ओवप्रस्तु तिविदिसेषाहिए परिक्षेषेवेति महाविदेहे च वास्त चरम्भिहे चउप्पावारे फलतो तंजाहा-पुष्पविदेहे १ जावविदेहे २ देवकुरा ३ जावकुरा ४ महाविद्युत्त्वे पं मन्त्रे । वास्तवस्त तेरिसुए भास्तारमस्तवदोवारे फलतो ५ योगमा । वट्टुम्भरमधिजे भूमिमागे फलतो जाव तितिवेहि तेव जावतिमेहि तेव । महाविदेहे ने भन्त । वास्त मनुष्यार्व तेरिसुए भास्तारमस्तवदोवारे फलतो ६ तेसि न व्युत्पादे छम्भिहे सप्तवने छम्भिहे उठागे पञ्चलुक्यार्व उहु उच्चतेष्व अद्व्येष्व भवतेसुहुए वहे-सेष्व पुष्पकोर्यात्म पाषेति पाषेता अप्येत्वा विरभगामी जाव अप्येत्वा तिज्जर्ति जाव अर्त करेन्ति । देव तेजद्वेष्व मन्त्रे । एवं तुष्टह-महाविदेहे वार्षे ७ योगमा । महाविदेहे च वास्त भरतेरवदेवतवदेवताप्रत्यापत्तिवेषो वास्तामविद्युत्त्वमस्तापत्तिवाहेत्वं तिविद्युत्त्वत्तराए चेव विपुलतराए च वह महेत्वात्पर चेव दुष्प्रमाणतराए चेव महाविदेहा य इत्य मनुष्या परिवर्त्तते महाविदेहे च इत्य तेव

महिष्मृष्टे जाव पलिओवमद्विइए परिवसइ, से तेणद्वेण गोयमा ! एव चुच्छइ-महा-विदेहे वासे २, अदुत्तरं च णं गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स सासए णामधेजे पण्णते ज ण क्याइ णासि ३ ॥ ८५ ॥ कहि ण भन्ते ! महाविदेहे वासे गन्ध-मायणे णामं वक्खारपब्बए पण्णते ? गोयमा ! णीलवन्तस्स वासहरपब्बयस्स दाहिणेण मंदरस्स पब्बयस्स उत्तरपञ्चतिथमेण गधिलावइस्स विजयस्स पुरच्छिमेण उत्तरकुराए पञ्चतिथमेण एत्य ण महाविदेहे वासे गन्धमायणे णामं वक्खारपब्बए पण्णते, उत्तरदाहिणायए पाईणपहीणविच्छिणे तीस जोयणसहस्राइ दुष्णि य णउत्तरे जोयणसए छच्च य एगूणवीसहभाए जोयणस्स आयामेण णीलवतवासहर-पब्बयतेण चत्तारि जोयणसयाइ उङ्हुं उच्चतेण चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेण पञ्च जोयणसयाइ विक्खम्भेण तयणतरं च ण मायाए २ उस्सेहुव्वेहपरिवद्वीए परिवद्व-माणे २ विक्खम्भपरिहाणीए परिहायमाणे २ मदरपब्बयतेण पञ्च जोयणसयाइ उङ्हुं उच्चतेण पञ्च गाउयसयाइ उव्वेहेण अगुलस्स असखिज्जिभाग विक्खम्भेण पण्णते गयदन्तसठाणसठिए सब्बरयणामए अच्छेऽ, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वणसडेहिं सब्बओ समन्ता सपरिक्खिते, गन्धमायणस्स ण वक्खारपब्ब-यस्स उप्पि वहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव आसयन्ति । गन्धमायणे ० वक्खार-पब्बए कइ कूडा पण्णता ? गो० । सत्त कूडा ५०, तजहा-सिद्धकूडे १ गन्धमायणकूडे २ गधिलावईकूडे ३ उत्तरकुरुकूडे ४ फलिहकूडे ५ लोहियक्खकूडे ६ आणदकूडे ७ । कहि ण भन्ते ! गंधमायणे वक्खारपब्बए सिद्धकूडे णाम कूडे पण्णते ? गोयमा ! मदरस्स पब्बयस्स उत्तरपञ्चतिथमेण गवमायणकूडस्स दाहिणपुरतिथमेण एत्य ण गंधमायणे वक्खारपब्बए सिद्धकूडे णामं कूडे पण्णते, ज चेव चुल्हिमवन्ते सिद्धकूडस्स पमाण त चेव एएसि सब्बेसि भाणियब्ब, एवं चेव विदिसाहिं तिण्णि कूडा भाणियब्बा, चउत्थे तद्यस्स उत्तरपञ्चतिथमेणं पञ्चमस्स दाहिणेण, सेसा उ उत्तरदाहिणेण, फलिहलोहियक्खेसु भोगकरभोगवईओ देवयाओ सेसेसु सरिसणा-मया देवा, छसुवि पासायवडेसगा रायहाणीओ विदिसासु, से केणद्वेण भन्ते ! एव चुच्छइ-गवमायणे वक्खारपब्बए २ ? गो० । गवमायणस्स ण वक्खारपब्बयस्स गधे से जहाणामए-कोट्ठपुडाण वा जाव पीसिजमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विकिरिज्जमाणाण वा परिभुजमाणाण वा जाव ओराला मणुण्णा जाव गधा अभिषिस्सवन्ति, भवे एयारुवे ?, णो इणद्वे समद्वे, गंधमायणस्स ण इत्तो इद्वतराए चेव जाव गधे पण्णते, से एएणद्वेण गोयमा ! एव चुच्छइ-गवमायणे वक्खारपब्बए २, गवमायणे य इत्य देवे महिष्मृष्टे परिवसइ, अदुत्तरं च ण० साम्भए णामधेजे

॥ ८६ ॥ कहि न मन्तो । महाविदेहे जासे उत्तरुगा जामे दुरा प ३ गो ।  
 मंदरस्त्र पञ्चमस्त्र उत्तरेवं जीवित्यन्तस्त्र वासाहरपञ्चमस्त्र इक्षित्येवं रात्कामावदस्त्र  
 वक्ष्यारपञ्चमस्त्र पुरतिथिमेवं भास्त्रवन्तस्त्र वक्ष्यारपञ्चमस्त्र पवतिथिमेवं एतत् च  
 उत्तरुगा जामे दुरा पञ्चाता पाईजपडीजामया उर्हीषदाहिष्वित्यित्यजा अद्वित्य  
 संठालसंठिया इहारए ज्येष्ठमाहस्ताई अद्व य जावाते जोयपसापृष्ठिय य एगूर्ध-  
 औस्तमाए जोयणस्त्र विष्णुपमेवंति तीसे जीवा उत्तरेवं पाईजपडीजामया दुहा  
 वक्ष्यारपञ्चमस्त्र पुद्ग तंबहा-पुरतिथिमित्याए कोद्वैपुरतिथिमित्य वक्ष्यारपञ्चमक पुद्ग  
 एवं पञ्चतिथिमित्याए जाव पञ्चतिथिमित्य वक्ष्यारपञ्चमय पुद्ग तंबज्ञ जोयपसाहस्ताई  
 जामयामेवंति तीसे जे वजु दाहितेवं सहिं जोयपसाहस्ताई जातारि य अद्वारे  
 जोयणसापृष्ठिय दुवामस्त्र य एगूर्धवीस्तमाए ज्येष्ठमस्त्र परिक्षेवेवं उत्तरुगा ए च  
 मन्तो । इराए केरिउए जावारमावदोजारे फन्तो १ गोदमा । वहुस्तमरमित्ये  
 भूमिमागे फन्तो एवं पुष्पतिथिया ज्येष्ठ छुम्ममुस्तमावतमया सुवेष जेमध्या जाव  
 फठगगामा १ शिवगगामा २ वममा ३ सहा ४ तेवतली ५ उभित्यारी ६ ॥ ८७ ॥ कहि  
 वं मन्तो । उत्तरुगा ए २ वमगा जामे दुवे फञ्चया फन्ताता ३ गोदमा । जीवित्यन्तस्त्र  
 वासाहरपञ्चमस्त्र इक्षित्यित्यजो चरित्यन्ताभ्यो अद्वजोयणसापृष्ठिय जोतीसे जातारि ज  
 सत्तमाए जोयणस्त्र भनाहाए धीयाए महावैपु उत्तमो कृते एतत् च जमया जामे  
 दुवे फञ्चया पञ्चाता जोयणसाहस्त्र ठहु उत्तरोज अहुहाजाई जोयणसाहस्त्र सम्भेवं  
 मूँडे एवं जोयपसाहस्त्र जावामित्यित्यमेवं मन्तो अद्वुमाई जोयणसाहस्त्र जावाम-  
 विष्णुपमेवं उत्तरि एवं जोयणसाहस्त्र जावामित्यित्यमेवं मूँडे तिथिय जोयणसाह-  
 स्त्रसापृष्ठ एवं जावदु जोयणस्त्र तिथिमित्येवाहिर्व परिक्षेवेवं मन्तो दो जोयणसाह-  
 स्त्राई तिथिय वाहतरे जोयणसापृष्ठ तिथिमित्येवाहिर्व परिक्षेवेवं उत्तरि एवं जोयण-  
 साहस्त्र पद्म य एकत्रीपु जोयणसापृष्ठ तिथिमित्येवाहिर्व परिक्षेवेवं मूँडे तिथित्या  
 मन्तो सहिता उपि लक्ष्या अम्मस्ताभर्तुठिया सम्भवणगमया अन्तम सम्भा  
 पतेवं २ फठमवर्वेष्यापरिक्षित्या फतेवं ३ वचसाहपरिक्षित्या तात्को च फठम-  
 वर्वेष्याक्षे हो गान्तयाई ठहु उत्तरोन्तं पद्म वजुस्ताई तिथिमेवं तिथित्य-  
 सम्भवण्यभ्यो भाष्यित्यभ्यो तेसि च जमगपञ्चमावै उपि वहुस्तमरमित्ये भूमिमागे  
 फन्तो जाव तस्त्र च वहुस्तमरमित्यस्त्र भूमिमागस्त्र वहुमञ्जसेवामाए एतत् च  
 दुवे पत्तामवर्वेष्या ४ ते च पासामवर्वेष्या जावहिं जोयणर्व अद्वयेवं  
 च ठहु उत्तरोन्ते इहतीसे जोयणर्व ज्येष्ठ च जावामित्यित्यमेवं पासामवर्वेवे  
 मामित्यभ्यो हीहास्त्रा उपरिवारा जाव एतत् च जमगान्ते इवायं सोलमन्तर्व-

आयरकरदेवसाहस्रीण सोलस भद्रासणसाहस्रीओ पण्णत्ताओ, से केणट्रेण भते ! एवं चुच्छ-जमगा पव्वया २२ गोयमा ! जमगपव्वएसु ण तत्थ २ देसे २ तहिं २ वहवे खुड्डाखुट्टियासु वावीसु जाव विलपंतियासु वहवे उप्पलाइ जाव जमगवण्णा-भाईं जमगा य इत्य दुवे देवा महिह्विया०, ते ण तत्थ चउण्ह सामाणियसाह-स्सीण जाव भुङ्गमाणा विहरंति, मे तेणट्रेण गो० ! एवं चुच्छ-जमगपव्वया २, अदुन्तर च ण सासाए णामधेजे जाव जमगपव्वया २। कहि ण भन्ते ! जमगाण देवाण जमिगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओ २ गोयमा ! जम्बुद्दीवे दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेण अण्णमि जम्बुद्दीवे २ वारस जोयणसहस्राइ ओगाहिता एत्थ ण जमगाण देवाण जमिगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओ वारस जोयणसहस्राइ आयामविक्खम्भेण सत्तीस जोयणसहस्राइ णव य अद्याले जोयणनए किन्चिविसेसाहिए परिक्षेवेण, पत्तेय २ पायारपरिक्खिता, ते ण पागारा सत्तीस जोयणाइ अद्वजोयण च उङ्घ उच्चतेण मूले अद्वतेरसजोयणाइ विक्खम्भेण मज्जे छ सकोसाइ जोयणाइ विक्खम्भेण उवरि तिणि सअद्वकोसाइ जोयणाइ विक्खम्भेण मूले विच्छिणा मज्जे सखिता उप्पि तणुया वाहिं वश्च अतो चउरंसा सब्वरयणामया अच्छा०, ते ण पागारा णाणामणि-पञ्चवण्णेहिं कविसीसएहिं उच्चसोहिया, तजहा-किण्हेहिं जाव सुक्लिरहिं, ते ण कवि-सीसगा अद्वकोस आयामेण देसूण अद्वकोस उङ्घ उच्चतेण पञ्च धणुसयाइ वाहलेण सब्वमणिमया अच्छा०, जमिगाण रायहाणीण एगमेगाए वाहाए पणवीस पणवीस दारसय पण्णत्त, ते ण दारा वावट्टि जोयणाइ अद्वजोयण च उङ्घ उच्चतेण इक्तीस जोयणाइ कोस च विक्खम्भेण तावइय चेव पवेसेण, सेया वरकणगथूभियागा एवं रायप्पसेणइज्जविमाणवत्तव्याए दारवण्णाओ जाव अद्वद्वमगलगाइति, जमियाण रायहाणीं चउहिसि पञ्च पञ्च जोयणसए अवाहाए चत्तारि वणसण्डा पण्णत्ता, तंजहा—असोगवणे १ सत्तिवण्णवणे २ चपगवणे ३ चूयवणे ४, ते ण वणसडा साइरेगाइ वारसजोयणसहस्राइ आयामेण पञ्च जोयणसयाइ विक्खम्भेण पत्तेय २ पागारपरिक्खिता किण्हा वणसण्ववण्णाओ भूमिभागे पण्णत्ते वण्णगोत्ति, तेसि ण वहुसमरमणिज्ञाण भूमिभागाण वहुमज्जदेसभाए एत्थ ण दुवे उवयारियालयणा पण्णत्ता वारस जोयणसयाइ आयामविक्खम्भेण तिणि जोयणसहस्राइ सत्त य पञ्चाणउए जोयणसए परिक्खेवेण अद्वकोस च वाहलेण सब्वजंबूणयामया अच्छा०, पत्तेय पत्तेय पउमवरवेइयापरिक्खिता, पत्तेय पत्तेय वणसडवण्णाओ भाणियव्वो, तिसोवाणपडिल्लवगा तोरणचउहिसि भूमिभागा य भाणियव्वत्ति, तस्स ण वहुमज्ज-

देसमाए एत्व र्थं एवो पासाम्बद्देश्य ए पक्षतो वाक्तु जोयणाई अद्यतेयर्थ च उहु उच्चतेय "इतीर्थं जोयणाई क्षेत्रं च आवामविन्द्यमेण वस्त्रमो उडाया भूमिमागा सीहासुभा सपरिकारा एवं पासाम्बद्यतीओ एत्व फलमा कर्ति ते र्थं पासाम्बद्यमागा एहतीर्थं जोयणाई क्षेत्रं च उहु उच्चतेयं सादरेगाई अद्यमेस्मस्तबोम्पाई आवामविन्द्यमेण विन्द्यमासायती ते र्थं पासाम्बद्येस्या सादरेगाई अद्यमोक्षस्तबोयणाई उहु उच्चतेयं सादरेगाई अद्यमाई जोयणाई आवामविन्द्यमेण उद्यपासायती ते र्थं पासाम्बद्येस्या सादरेगाई अद्यमाई जोयणाई उहु उच्चतेयं सादरेगाई अद्यु-ज्ञेयणाई आवामविन्द्यमेण वस्त्रमो सीहासुभा सपरिकारा तेति र्थं मूलमागाम-वद्विस्यार्थं उत्तरपुरविष्टमे विसीमाए एत्व र्थं जग्नार्थं देवार्थं सहाय्ये सहमाय्ये पक्षताम्बो अद्यतेरसजोयणाई आयामेव उस्मोसाई जोयणाई विन्द्यमेण र्थं ज्ञेयणाई उहु उच्चतेयं अनेगद्यमस्यस्यविन्द्यमिद्वा समाक्ष्यमो ताति च समार्थं द्युम्मार्थं विविति तमो दारा फलता तं र्थं दारा दो ज्ञेयणाई उहु उच्चतेयं जोयणर्थं विन्द्यमेण तावद्य ऐव पक्षेत्रेण सेया वस्त्रमो जाव वणमाल्म तेति र्थं दाराण पुरुषो पक्षेयं २ लघो मुहर्मद्या पञ्चता ते र्थं मुहर्मद्या अद्यतेरसजोयणाई आवामर्थं उत्तरपक्षेत्राई ज्ञेयणाई विन्द्यमेण सादरेगाई र्थं ज्ञेयणाई उहु उच्चतेयं जाव दारा भूमिमागा य ति फेन्छाप्तमद्यार्थं त तेव पमार्थं भूमिमागो मविपेदिवान्तोति साम्बे र्थं मविपेदिवान्तो ज्ञेयर्थं आवामविन्द्यमेण वद्यजोयर्थं वाहृत्रेण सम्बमविमश्या सीहासुभा भाविकम्बा ताति र्थं फेन्छाप्तमद्यार्थं पुरुषो तमो मविपेदिवान्तो पक्षताम्बो तमो र्थं मविपेदिवान्तो ज्ञेयर्थं आवामविन्द्यमेण वद्यजोयर्थं वाहृत्रेण वद्यक्षेत्रं वद्यत्रेते वद्यत्रेण वाहृत्रेण वद्यमवपृ वस्त्रमो वेद्यात्मपर्दितिसोवान्ततोरत्या य माविकम्बा ताति र्थं समार्थं द्युम्मार्थं उत्तरपक्षेत्राई पञ्चताम्बो तवाह-पुरविन्द्यमर्थं यो साङ्गस्तीक्ष्णो पक्षताम्बो पवित्रिमेण दो दातास्तीक्ष्णो विन्द्यत्रेण एवा द्याहस्ती उत्तरेण एवा जाव दामा विन्द्यत्रिति एव योमानविमान्तो यत्तरं भूमधिवान्तोति ताति र्थं द्युम्मार्थं समार्थं यत्तो वद्युत्तरपक्षिते भूमिमाग पक्षतो मविपेदिवा सीहासुभा सपरिकारा विविद्याए समविन्द्यवस्त्रमो उत्तरपुरविष्टमे विहीमाए उत्तर-मविहेत्यम्बा मविपेदिवाभिनृपा मविहेत्यस्यप्यमाणा तेति उत्तरेण ज्ञेयणा यत् उत्तरं यहु विविद्यमपासुप्तवा जाव विन्द्यत्रिति द्युम्मार्थं उत्तिव्य उत्तरं मंयव्यगा एवं अवत्तेसावति समार्थं जाव उत्तराम्बमाए समविज द्यात्वे य

અમિસેયસભાએ વહુ આમિસેકે ભડે, અલકારિયસભાએ વહુ અલકારિયમંડે ચિદ્રૂડ, વવસાયસભાસ્તુ પુત્થયયણા, ણદા પુચ્છરિણીઓત્તિ,-ઉવવાઓ જમગાણ અમિસે-યવિહૂસણા ય વવસાઓ । અવરં ચ સુહમ્મગમો જહા ય પરિવારણાઇદ્રૂટી ॥ ૧ ॥ જાવઇયમિ પમાણમિ હુતિ જમગાઓં ણીલવતાઓ । તાવિદ્યમન્તર ખલુ જમગદહાણ દહાણ ચ ॥ ૨ ॥ ૮૮ ॥ કહિ ણ ભન્તે । ઉત્તરકુરાએ ૨ ણીલવન્તદ્વાહે ણામ દહે પણતે ? ગોયમા । જમગાણ૦ દક્ષિણાણિલાઓ ચરિમન્તાઓ અદ્ભુસએ ચોતીસે ચત્તારિ ય સત્તભાએ જોયણસ્સ અવાદ્ધાએ સીયાએ મહાણઈએ વહુમજ્જ્ઞદેસભાએ એથ ણ ણીલવન્તદ્વાહે ણામ દહે પણતે, દાહિણઉત્તરાયએ પાઈણપઢીણવિચ્છણો જહેવ પરમદ્વાહે તહેવ વળણાઓ ણેયવો, ણાણત્ત દોહિ પરમવરવેઝયાહિ દોહિ ય વળસડેહિ સપરિ-કિલોને, ણીલવન્તે ણામ ણાગકુસારે દેવે સેસ ત ચેવ ણેયવ્બ, ણીલવન્તદ્વાહુસ્સ પુબ્વાવરે પાસે દસ ૨ જોયણાઈ અવાહાએ એથ ણ વીસ કંચળગપબ્બયા પણતા, એગ જોયણસય ઉદ્ધૃ ઉચ્ચતેણ-મૂલમિ જોયણસય પણતારિ જોયણાઇ મજ્જાંમિ । ઉવરિતલે કચણગા પણાસ જોયણા હુતિ ॥ ૧ ॥ મૂલમિ તિણિણ સોલે સત્તાતીસાઇ દુણિણ મજ્જાંમિ । અદ્ભુવળં ચ સય ઉવરિતલે પરિરાઓ હોઇ ॥ ૨ ॥ પઢમિત્થ નીલવન્તો ૧ વિઝાઓ ઉત્તરકુરુ ૨ સુણેયવો । ચદ્દ્ધ્દ્ધોત્થ તહીઓ ૩ એરાવય ૪ માલવન્તો ય ૫ ॥ ૩ ॥ એવં વળણાઓ અદ્ભો પમાણ પલિઓવમદ્વિઝયા દેવા ॥ ૮૯ ॥ કહિ ણ ભન્તે । ઉત્તરકુરાએ ૨ જમ્વુપેઢે ણામ પેઢે પણતે ? ગોયમા । ણીલવન્તસ્સ વાસહરપબ્બયસ્સ દક્ષિણે મન્દરસ્સ૦ ઉત્તરેણ માલવન્તસ્સ વક્ખારપબ્બયસ્સ પચ્છાંયમેણ સીયાએ મહાણઈએ પુરત્થિમિલે કુલે એથ ણ ઉત્તરકુરાએ કુરાએ જમ્વુપેઢે ણામ પેઢે પણતે પદ્મ જોયણ-સયાઇ આયામવિક્ખમ્મેણ પણરસ એકાસીયાઇ જોયણસયાઈ કિચ્ચિવિસેસાહિયાઈ પરિકલેવેણ વહુમજ્જાદેસભાએ વારમ જોયણાઇ વાહલેણ તથળન્તર ચ ણ માયાએ ૨ પએસપરિહાણીએ પરિહાયમાળે ૨ સબ્વેસુ ણ ચરિમપેરંતેસુ દો દો ગાયાઇ વાહલેણ સબ્વજમ્બૂણયામએ અચ્છે૦, સે ણ એગાએ પરમવરવેઝયાએ એરેણ ય વળસડેણ મન્વાઓ સમન્તા સપરિકિલોને દુણહપિ વળણાઓ, તસ્સ ણ જમ્વુપેઢસ્સ ચરદિસિએ એ ચત્તારિ તિસોવાણપદિઝવગા પણતા વળણાઓ જાવ તોરણાઇ, તસ્સ ણ જમ્વુપેઢસ્સ વહુમજ્જા-દેસભાએ એથ ણ મળિપેદ્ધિયા પણતા અદ્ભુજોયણાઇ આયામવિક્ખમ્મેણ ચત્તારિ જોય-ણાડ ચાહલેણ, તીસે ણ મળિપેદ્ધિયાએ ઉર્પિ એથ ણ જમ્વુસુદસણા પણતા અદ્ભુ જોય-ણાડ ઉદ્ધૃ ઉચ્ચતેણ અદ્ભુજોયણ ઉબ્બેહેણ, તીમે ણ ખખો દો જોયણાડ ઉદ્ધૃ ઉચ્ચતેણ અદ્ભુજોયણ વાહલેણ, તીમે ણ સાલા છ જોયણાઇ ઉદ્ધૃ ઉચ્ચતેણ વહુમજ્જાદેસભાએ અદ્ભુ જોયણાડ આયામવિક્ખમ્મેણ સાઇરેગાઇ અદ્ભુ જોયણાઈ સબ્વગ્રેણ, તીસે ણ અય-

मेयाक्षे कल्पाकासे प २५०—वहरामया मूळ रमण्याप्रद्विमधिहिमा बाल अहिकमण्य-  
मिक्षुदर्शी पासाईया वरिसुमिजा । अमूर्ख प सुदृढसाए चठिहिमि चतारि छाडा  
प तत्पर्य र्थ जे से पुरतिमिजे उडे पूर्ण र्थ भजने पर्णते छोरे आमामेच एकमेव  
भवरमिल्क समिक्षा सेसेचु पासाम्बद्धेसगा सीहासगा व स्वरिकारा इहि । अमूर्ख-  
बारमहि पठमवरपेश्वाहि सम्भाषे सुमन्ता संपरिमिक्षाता विष्याण बम्बलो अमूर्ख  
र्थ अल्लेख अमूर्खएर्ख अमूर्ख तदनुकृताय सम्भाषे सुमन्ता संपरिमिक्षाता लासि र्थ  
सम्भाषे साझे र्थ अमूर्खो छहि पठमवरपेश्वाहि संपरिमिक्षाता अमूर्ख र्थ सुदृढस्पाए  
चाहरपुरतिमेल उत्तरेक उत्तरपत्रतिमेल पूर्ण र्थ अकाहिमस्स विकसु चठाहि  
सामाधिक्षाहसीर्ख चतारि अमूर्खाहसीर्खो पक्षताम्भो तीसे र्थ पुरतिमेल  
चठाहि अमामहिसीर्ख चतारि अमूर्खो पक्षताम्भो—द्वाहिनपुरतिमेल इक्षिक्षानेम  
ताह अवरद्वितिमेल र्थ । अद्व दह बारसेव य मानित अमूर्खहसार्ख ॥ १ ॥  
अमिक्षाहिक्षान पक्षतिमेल सतोद हाति अमूर्खो । सोखस उहसीर्खो चठाहिपि  
आयरक्षार्ख ॥ २ ॥ अमूर्ख र्थ रिहि सहएहि बजसहेहि सम्भाषे सुमन्ता संप-  
रिमिक्षाता अमूर्ख ने पुरतिमेल पक्षाठे बोयजाहि पठमे बपठेहि बोयाहिछा एल  
र्थ भजने पक्षतो बोस आमामेल सो र्थ अमूर्खो समिक्षे र्थ एवं सेहादुनि  
विसामु भजना अमूर्ख ने उत्तरपुरतिमेल पक्षमे बजसहर्ख पक्षासु बोयपाहि  
बोयगाहिता एत्पर्य र्थ चतारि पुक्षदरिणीम्भो पक्षताम्भो तीव्हा—पठमा १ पठमप्यमा  
कुमुदा रे कुमुदप्यमा ४ ताम्भो र्थ बोरे आमामेल अम्भोरे बिक्षुमेल  
पक्षपञ्जमयाहि उम्भेहिर्ख बज्ञमा लासि र्थ मझे पासाम्बद्धेसगा बोस आमामेल  
अम्भोरे बिक्षुमेल देसूर्ख बोस रहि उच्चतोर्ख अम्भाषे सीहासगा संपरिक्षारा  
एवं सुधामु बिक्षियामु गाहा—पठमा पठमप्यमा र्थ दुमुदा कुमुदप्यहा । उप्पस-  
गुम्भा अलिजा उप्पजा उप्पहुम्भम् ॥ १ ॥ भिगा भिगाप्यमा भेव भैज्ञमा  
कुमुदप्यमा । चिरिखेना चिरिमहिक्षा चिरिखेना चेव चिरिभिन्नमा ॥ २ ॥ अमूर्ख  
ने पुरतिमिक्षम भवक्षसु उत्तरेण उत्तरपुरतिमिक्षम पासाम्बद्धेसप्स्स इक्षिप-  
नेम एत्पर्य र्थ दूडे पक्षतो अद्व बोयक्ताहि रहि उच्चतोर्ख बोयक्ताहि उम्भेहिर्ख मूले अद्व  
बोयजाहि आमामिक्षक्षमेल बहुमज्जसेसभाए छ बोयपाहि आमामिक्षक्षमेल  
उच्चरि चतारि बोयधाहि आमामिक्षक्षमेल—पक्षबीसद्वारस बारसेव मूले व मानित  
उच्चरि र्थ । उम्भिसेप्पद परिरत्नो कृष्णसु इमस्स बोद्धम्भो ॥ ३ ॥ मूल बिक्षिल्ली  
मज्जे संदिते उच्चरि लक्ष्मी उप्पसु उप्पमयमामए अप्पहि बेश्यमवसाहव्वान्नो एवं सेहाम्भि  
कूना इहि । अमूर्ख ने उप्पस्पाए दुष्कल्प गाम्भेजा प २०—दुष्कल्पा १ अमोदा

२ य, सुप्पतुद्वा ३ जसोहरा ४ । विदेहजम्बू ५ सोमणसा ६, गियया ७ गिच्च-  
महिया ८ ॥ १ ॥ सुभद्रा य ९ विसाला य १०, सुजाया ११ सुमणा १२  
विया । सुदसणाए जम्बूए, णामधेजा दुवालस ॥ २ ॥ जम्बूए ३० अद्वृष्टमगलगा०,  
से केणट्टेण भन्ते ! एव बुच्छ-जम्बू सुदसणा २ २ गोयमा ! जम्बूए ३० सुदंसणाए  
अणाहिया० णाम देवे जम्बुदीवाहिवई परिवसइ महिष्ठिए०, से ण तथ्य चउण्ह सामाणिय-  
साहस्तीणं जाव आयरकखदेवसाहस्तीणं जम्बुदीवस्स ण दीवस्स जम्बूए सुदसणाए  
अणाहिया० रायहाणीए अणोसिं च बहूण देवाण य देवीण य जाव विहरइ, से  
तेणट्टेण गो० ! एव बुच्छ०, अदुत्तर च णं गोयमा ! जम्बुसुदसणा जाव भुविं च ३  
धुवा णियया सासया अकखया जाव अवट्टिया । कहि ३० ण भन्ते ! अणाहियस्स  
देवस्स अणाहिया णाम रायहाणी पण्त्ता २ गोयमा ! जम्बुदीवे० २ मन्दरस्स  
पब्यस्स उत्तरेण जं चेव पुब्ववणियं जमिगापमाण तं चेव णेयब्ब जाव उववाओ-  
अभिसेओ य निरवसेसोति ॥ ९० ॥ से केणट्टेण भन्ते ! एवं बुच्छ-उत्तरकुरा २ २  
गोयमा । उत्तरकुराए० उत्तरकुरु णाम देवे परिवसइ महिष्ठिए० जाव पलिओ-  
वमट्टिहरु, से तेणट्टेण गोयमा एवं बुच्छ-उत्तरकुरा २, अदुत्तर च णं जाव  
सासए । कहि ३० ण भन्ते ! महाविदेहे वासे मालवंते णामं वकखारपब्बए पण्त्ते ?  
गोयमा ! मदरस्स पब्यस्स उत्तरपुरत्थिमेण णीलवंतस्स वासहरपब्यस्स दाहिणेणं  
उत्तरकुराए० पुरत्थिमेण वच्छस्स चक्कविजयस्स पच्छत्थिमेण एत्थं णं महाविदेहे  
वासे मालवंते णामं वकखारपब्बए पण्त्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपढीणविच्छिणेणं जं  
चेव गधमायणस्स पमाण विकखम्मो य णवरमिमं णाणत्त सञ्चववेरलियामए अवसिष्ट त  
चेव जाव गोयमा ! नव कूडा पण्त्ता, तजहा-सिद्धकूडे०, सिद्धे य मालवन्ते उत्तरकुरु  
कच्छसागरे रयए । सीओय पुण्णभद्रे हरिस्सहे चेव बोद्धवे ॥ १ ॥ कहि ३० ण भन्ते !  
मालवन्ते वकखारपब्बए सिद्धकूडे० णाम कूडे पण्त्ते ? गोयमा ! मन्दरस्स पब्यस्स  
उत्तरपुरत्थिमेण मालवतस्स कूडस्स दाहिणपच्छत्थिमेणं एत्थं ण सिद्धकूडे० णाम कूडे०  
पण्त्ते पच जोयणसयाइ उच्छु उच्चतेणं अवसिष्ट त चेव जाव रायहाणी, एव माल-  
वन्तस्स कूडस्स उत्तरकुरकूडस्स कच्छकूडस्स, एए चत्तारि कूडा दिसाहि पमाणेहि०  
णेयब्बा, कूडसरिसणामया देवा, कहि ३० सागरकूडे० सागरकूडे० णाम कूडे पण्त्ते ?  
गोयमा ! कच्छकूडस्स उत्तरपुरत्थिमेण रययकूडस्स दक्खिणेण एत्थं ण सागरकूडे०  
णाम कूडे पण्त्ते पच जोयणसयाइ उच्छु उच्चतेण अवसिष्ट त चेव सुभोगा देवी  
रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेण रययकूडे० भोगमालिणी देवी रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं,  
अवसिष्टा कूडा उत्तरदाहिणेण णेयब्बा एकेण पमाणेण ॥ ९१ ॥ कहि ३० ण भन्ते !

मास्तकन्ते हरिस्महाहृषे जामै कृष्ण पत्नते ? गोममा ! पुण्यमहस्त उत्तरेण शीलवन्तस्त  
दक्षिणयेण एव्य वै हरिस्महाहृषे जामै कृष्णते एव जोक्कसहस्रं उपू उक्तोत्त  
जमगण्यमाणेन भेदम्भ रावहासी उत्तरेण असुवेदे शीते अस्मिन्निवृत्तिवृत्तिवृत्ति  
वारसज्जोक्कसहस्राई ओगाहिता एव वै हरिस्महस्त इक्ष्म हरिस्महा जामै गयाहासी  
पत्नता क्षुत्रासीर्द जोक्कसहस्राई आवामिन्निवृत्तम्भेष वे जोक्कसहस्रगहमाई  
पश्चात्तु व सहस्राई एव उत्तीसु जोक्कसह वरिक्षेदेवं सेवं जहा क्षमरक्ष्माई राम-  
हासीर्द तदा फ्लार्व भावियर्व महित्तिए महजद्वय, से तेजद्वयं मन्तु । एवं तुवृष्ट-  
मास्तकन्ते बस्त्रारपत्त्वए ३ । गोममा ! मास्तकन्ते व बस्त्रारपत्त्वए तत्प्रत्ययेऽन्ते ३  
तद्वै ३ पहवे देविकागुम्मा जोमामिन्निगुम्मा जाव मगदमित्यस्तुम्मा ते व गुम्मा  
दमद्वयर्व कुनुम धुम्मेति जे व ते मास्तकन्तस्त बस्त्रारपत्त्वायस्त वहुसुभरमदिव्ये  
भूमिमार्गं जायविषुद्धगगमासामुहुपृथुंबोव्यारतिर्व छरेन्ति मास्तकन्ते व इत्य देवे  
महित्तिए जाव पत्तिभोव्यमद्विए परिवस्त्र, से तेजद्वयं गोममा । एवं मुपर्व अनुत्तर  
व ते जाव तित्ते ॥ ९२ ॥ कहि वै मन्तु ! जम्मुरीवे शीते महाविदेवे वासे क्षणे वामै  
वित्तए पत्नते ? गोवमा ! सीवाए महावर्षए उत्तरेण शीलवन्तस्त वास्त्रारपत्त्वायस्त  
दक्षिणयेण वित्ताहृष्टस्त बस्त्रारपत्त्वायस्त पवरित्यमन्न मास्तकन्तस्त बस्त्रारपत्त्वायस्त  
पुरित्यमेण एव्य वै जम्मुरीवे ३ महाविदेवे वासे क्षणे जामै वित्तए पत्नते उत्तर  
दाहिण्यायए पाईक्कादीपतिर्वित्तावै पतिर्वित्तावैव्याप्तिर्वित्तावै गोगमिधुर्व भहाणर्वर्व वै व  
द्वेष व पञ्चार्जन्ते द्वाम्मागप्यमित्त नोक्का ज्येष्ठसहस्राई वै व वापउए जापामै  
दोष्यि व एगूचीक्कामाए जोगवर्म आवामर्व दो जोक्कसहस्राई दोष्यि व तरुत्तरे  
जायनसाय वित्तिरिम्मूल वित्तमित्तेनि । वाप्त्वस्त विवद्वय वहुमगारेवमाए  
एव वै धेवै जाव पत्नत जे वै क्षणे विवद्वय तुरा विमयमाल ३ वित्त  
तंत्रहा—शाहिणदक्षक्षण्ठे व उत्तरदक्षक्षण्ठे चति कहि वै मातु । जम्मुरीवे शीते  
महाविदेव वास शाहिणदक्षक्षण्ठे जामै वित्तए पै ३ गोममा । धेयहृष्टम् वास्त्राय  
दातिक्कम शीताए महावर्षए उत्तरेण वित्ताहृष्टम् बस्त्रारपत्त्वायस्त पवरित्यमेण  
मान्दान्मग बस्त्रारपत्त्वायस्त पुरित्यमेण एव वै जम्मुरीव वै व महाविदेव  
शाहिणदक्षक्षण्ठे जामै वित्तए प उत्तरादिक्कायण पाईक्कादीपतिर्वित्तावै भद्रं चेष्टव  
गद्वयाई दार्शना वै एक्कात्तरे जापवग्न एव व एगूचीगृध्वानं जोक्कसहस्रायस्त  
दो जापवग्नमाई नहिं व तरुत्तरे जोक्कसह वित्तिरिम्मूल वित्तमेणे  
वित्तिरिम्मूल वित्तिरिम्मूल शाहिणदक्षक्षण्ठे वै मन्तु । विवद्वय वेरिगाए जास्त्रामै  
इक्कात्तरे पत्नत वै गोममा । वहुगवरमात्रेभूमिभग्न पत्नत तंत्रहा—जाव वित्त

मेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव, दाहिणद्वकल्छे पं भन्ते। विजए मणुयाण केरिसए आग्रारभावपडोयारे पण्ठते? गोयमा। लेसि ण मणुयाण छव्विहे सधयणे जाव सब्बुक्खाणमत करेति। कहि ण भन्ते। जम्बुदीचे दीचे महाविदेहे वासे कल्छे विजए वेयहृ० णाम पव्वए प०? गोयमा। दाहिणद्वकल्छविजयस्स उत्तरेण उत्तरद्व-कल्छस्स दाहिणेण चित्तकूडस्स० पच्चतिथमेण मालवन्तस्स वक्खारपव्वयस्स पुरतिथ-मेण एत्थ ण कल्छे विजए वेयहृ० णामं पव्वए पण्ठते, पाईणपहीणायए उदीणदाहि-णविच्छिणणे दुहा वक्खारपव्वए पुट्टे पुरतिथमिलाए कोहीए जाव दोहि वि पुट्टे भर-हृवेयहृ० सरिसए णवर दो बाहाओ जीवा धणुपट्ट च ण कायव्व, विजयविक्खम्मसरिसे आयामेण, विक्खम्मो उच्चत उन्वेहो तहेव य विजाहरआभिओगसेढीओ तहेव, णवर पणपण २ विजाहरणगरावासा प०, आभिओगसेढीए उत्तरिलाओ सेढीओ सीयाए ईसाणस्स सेसाळो सक्खस्सति, कूडा-सिद्धे १ कल्छे २ खडग ३ माणी ४ वेयहृ० ५ पुण्ण ६ तिमिसगुहा ७। कल्छे ८ वेसमणे वा ९ वेयहृ० होंति कूडाइ० ॥१॥ कहि ण भन्ते। जम्बुदीचे २ महाविदेहे वासे उत्तरद्वकल्छे णामं विजए पण्ठते? गोयमा। वेयहृ० स्स पव्वयस्स उत्तरेण णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेण माल-वन्तस्स वक्खारपव्वयस्स पुरतिथमेण चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चतिथमेण एत्थ ण जम्बुदीचे दीचे जाव चिज्जन्ति तहेव णेयव्व सब्बं, कहि ण भन्ते। जम्बुदीचे दीचे महाविदेहे वासे उत्तरद्वकल्छे विजए सिंधुकुडे णाम कुडे पण्ठते? गोयमा। मालवन्तस्स वक्खारपव्वयस्स पुरतिथमेण उसभकूडस्स० पच्चतिथमेण णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिले णियबे एत्थ ण जम्बुदीचे दीचे महाविदेहे वासे उत्तरद्वकल्छ-विजए सिंधुकुडे णाम कुडे पण्ठते संद्वि जोयणाइ आयामविक्खम्ममेण जाव भवण अट्टो रायहाणी य णेयव्वा, भरहसिंधुकुडसरिस सब्बं णेयव्व जाव तस्स ण सिंधुकुण्डस्स दाहिणिलेण तोरणेण सिंधुमहाणइ पवूढा समाणी उत्तरद्वकल्छविजय एजेमाणी २ सत्ताहै सलिलासहस्रेहिं आपूरेमाणी ३ अहै तिमिसगुहाए वेयहृ० पव्वय दालझता दाहिणकल्छविजय एजेमाणी २ चोहसाहिं सलिलासहस्रेहिं समग्गा दाहिणेण सीय महाणइ समप्पेहै, सिंधुमहाणइ पवहे य मूले य भरहसिंधुसरिसा पमाणेण जाव दोहिं वणसडेहिं सपरिक्खता। कहि ण भन्ते। उत्तरद्वकल्छविजए उसभकूडे णाम पव्वए पण्ठते? गोयमा। सिंधुकुडस्स पुरतिथमेण गंगाकुण्डस्स पच्चतिथमेण णीलवन्तस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिले णियबे एत्थ ण उत्तरद्वकल्छविजए उसह-कूडे णाम पव्वए पण्ठते अट्टु जोयणाइ उहू० उच्चतेण त चेव पमाण जाव राय-हाणी से णवर उत्तरेण भाणियव्वा। कहि ण भन्ते। उत्तरद्वकल्छे विजए गंगा-

कुण्डे यामं कुण्डे पर्णते ॥ गोममा । चित्तादूरस्य वक्त्वारपन्नयस्य परतिष्ठेत्वं उसाहृष्टस्य पञ्चवस्सु पुरतिष्ठेत्वं शीघ्रन्तरस्स वासाहरपन्नयस्स वाहिनिके विष्ठेत्वं एत्य च उत्तरदृक्षेत्वे ॥ वैयाकुण्डे यामं कुण्डे पर्णते सहिं वेष्यतां वायामविष्ठ भ्वेत्वं उत्तर यथा चित्त वाव वस्त्रेष्य य संपरिनिष्ठाता । ऐ लेण्डेवं मन्ते । एवं कुण्ड-क्षेत्वे विवए क्षेत्वे विवए ॥ गोममा । क्षेत्वे विवए वैनहृस्य पञ्चवस्स वाहि वेत्वं सीमाए महापार्णेष उत्तरेष गम्याए महापार्णेष परतिष्ठेत्वं सिंधूए महापार्णेष पुरतिष्ठेत्वं वाहिष्यदृक्षेत्वं विष्ठस्स वहुमज्जेसमाए एत्य च लेमा यामं रायहाणीप विशीयारायहाणीसरिषा भायियम्बा तत्त्व च लेमाए रायहाणीप क्षेत्वे यामं राया समुप्यज्ञाइ, महावाहिमन्त वाव सर्वं वरदोक्षवर्त्वं भायियम्बे विष्ठ-मण्डव्वं सेसु सर्वं भायियम्बं वाव मुंबए मातुस्सए छाहे, क्षेत्वागमकेजे य क्षेत्वे एत्व रेवे महिनिए वाव परिष्ठेम्भिर्णेपरिष्ठाह, ऐ एत्येवं गोममा । एवं कुण्ड-क्षेत्वे विवए क्षेत्वे विवए वाव विष्ठे ॥ ९३ ॥ अहि च मन्ते । जम्हुरीवे लीवे महाविद्वे वासे चित्तादृदे यामं वक्त्वारपन्नए पर्णते ॥ गोममा । सीमाए महापार्णेष उत्तरेष शीघ्रन्तरस्स वासाहरपन्नवस्स वाहिनेष क्षुक्ष्विज्यस्यस्य पुरतिष्ठेत्वं शुक्ष्विज्यस्यस्य परतिष्ठेत्वं एत्य च चम्हुरीवे लीवे महाविद्वे होसे चित्तादृदे यामं वक्त्वारपन्नए पर्णते उत्तरदृहिनावए पार्णपन्नीविष्ठिष्ये होम्भस्त्रोम्भ-सहस्राइ पञ्च च वाक्त्वए वोम्पस्सए दुष्टिं य सूख्यवीक्ष्यमाए वोम्पस्स भायामेवं पञ्च वोम्पस्सवर्त्वं विष्ठस्यम्भेवं शीघ्रन्तरत्वासाहरपन्नवर्त्वं चत्तारि वोम्पस्सतां उहु उव्वत्वेवं चत्तारि गात्रजस्यां उव्वेहेवं तवर्त्वेतर च च मात्वाए २ उसेहृष्टेवपरि उहीए परिष्ठम्भावे २ सीवासाहाणीवर्त्वेवं पञ्च वोम्पस्सवर्त्वं उहु उव्वत्वेवं पञ्च याउ-समाहे उव्वत्वेवं वस्तुक्ष्वाप्तस्तावस्तिए सम्पर्यणमाए अक्षेत्वे सहे वाव पतिरवै उभ्यो पासि दोहि पठमवर्तेवाहि दोहि य वजस्तेहि संपरिनिष्ठते वज्ञानो दुक्ष्विव चित्तादूरस्य च वक्त्वारपन्नवस्स उपि वहुसमारम्भिवे भूमिमानो फलते वाव भास-वन्ति चित्तादृदे च मन्ते । वक्त्वारपन्नए च दृढा पर्णता ॥ गोममा । चत्तारि दृढा पर्णता तैवहा—चित्तादृदे चित्तादृदे फलादृदे शुक्ष्विदृदे समा उत्तरदृहि वेवं पदपर्णति वहमं सीमाए उत्तरेष चउत्तरए नीघ्रन्तरस्स वासाहरपन्नवस्स वाहिनेष एत्य च चित्तादृदे वामं रेवे महिनिए वाव रायहाणी लेति ॥ ९४ ॥ अहि च मन्ते । चम्हुरीवे लीवे महाविद्वे वासे शुक्ष्विदृदे वामं विजए पर्णते ॥ गोममा । सीमाए महापार्णेष उत्तरेष शीघ्रन्तरस्स वासाहरपन्नवस्स वाहिनेष पद्म-वर्त्वे पदावर्त्वए परतिष्ठेत्वे चित्तादूरस्य वक्त्वारपन्नवस्स पुरतिष्ठेत्वं एत्य च

जम्बुदीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजए पण्णते, उत्तरदाहिणायए जहेव कच्छे विजए तहेव सुकच्छे विजए, णवर खेमपुरा रायहाणी सुकच्छे राया समुपजइ तहेव सब्ब। कहि ण भन्ते ! जम्बुदीवे २ महाविदेहे वासे गाहावइकुडे० पण्णते ? गो० सुकच्छविजयस्स पुरत्थिमेण महाकच्छस्स विजयस्स पच्चत्थिमेण णीलवन्तस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणिले णियम्बे एत्थ ण जम्बुदीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावइ-कुडे णाम कुण्डे पण्णते, जहेव रोहियंसाकुण्डे तहेव जाव गाहावइदीवे भवणे, तस्स ण गाहावइस्स कुण्डस्स दाहिणिलेण तोरणेण गाहावर्द महाणई पवूढा समाणी सुकच्छमहाकच्छविजए दुहा विभयमाणी २ दाहिणेण सीय महाणइ समप्पेइ, गाहावर्द ण महाणई पवहे य मुहे य सब्बत्थ समा पणवीस जोयणसय विक्खम्मेण अहूआइजाइ जोयणाइ उव्वेहेण उमओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वण-साण्डेहिं जाव दुण्हवि वण्णओ, कहि ण भन्ते ! महाविदेहे वासे महाकच्छे णामं विजए पण्णते ? गोयमा ! णीलवन्तस्स वासहरपव्ययस्स दाहिणेण सीयाए महाणईए उत्तरेण पम्हकूडस्स वक्खारपव्ययस्स पच्चत्थिमेण गाहावर्दए महाणईए पुरत्थिमेण एत्थ ण महाविदेहे वासे महाकच्छे णाम विजए पण्णते, सेस जहा कच्छविजयस्स (णवरं अरिढ्हा रायहाणी) जाव महाकच्छे इत्थ देवे महिद्विए अट्ठो य भाणियव्वो। कहि ण भन्ते ! महाविदेहे वासे पम्हकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णते ? गोयमा ! णीलवन्तस्स० दक्खिणेण सीयाए महाणईए उत्तरेण महाकच्छस्स पुरत्थिमेण कच्छावर्देइ पच्चत्थिमेण एत्थ ण महाविदेहे वासे पम्हकूडे णाम वक्खारपव्वए पण्णते, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिणे सेस जहा चित्तकूडस्स जाव आसयन्ति०, पम्हकूडे चतार कूडा प०, त०-सिद्धकूडे पम्हकूडे महाकच्छकूडे कच्छावइकुडे एव जाव अट्ठो, पम्हकूडे य इत्थ देवे महिद्विए० पलिओवमद्विइए परिवसइ, से तेणद्वेण गोयमा ! एव वुच्चइ०। कहि ण भन्ते ! महाविदेहे वासे कच्छगावर्द णाम विजए प० ? गो० णीलवन्तस्स० दाहिणेण सीयाए महाणईए उत्तरेण दहावर्दए महाणईए पच्चत्थिमेण पम्हकूडस्स० पुरत्थिमेण एत्थ ण महाविदेहे वासे कच्छगावर्द णाम विजए प०, उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिणे सेस जहा कच्छस्स विजयस्स जाव कच्छगावर्द य इत्थ देवे०, कहि ण भन्ते ! महाविदेहे वासे दहावर्दकुण्डे णाम कुण्डे पण्णते ? गोयमा ! आवत्तस्स विजयस्स पच्चत्थिमेण कच्छगावर्दए विजयस्स पुरत्थिमेण णीलवन्तस्स० दाहिणिले णियवे एत्थ ण महाविदेहे वासे दहावर्दकुण्डे णाम कुण्डे प० सेस जहा गाहावर्दकुण्डस्स जाव अट्ठो, तस्स णं दहावर्दकुण्डस्स दाहिणेण तोरणेण दहावर्द महाणई पवूढा समाणी कच्छावर्दआवते विजए दुहा विभयमाणी २ दाहिणेण

कुम्हे आमे कुम्हे पम्हते ॥ गोममा । चित्ताकृष्टस्य वक्षारपम्बद्धस्य पवतित्वेऽ  
उत्तरदृशस्य पम्बयस्य पुरतित्वेऽन्नं जीवन्तस्य वासदूरपम्बद्धस्य वाहिन्ये विवेद  
एत्य च उत्तरदृश्ये रंगाकुम्हे जामे कुम्हे पम्हते सहिं येवताहै आवामसिद्ध-  
म्भेऽर्थ सहेष वाहा चित्पू चाव वजसंहेण च संपरितिवता । से केळद्वैर्य मम्हो । एवं  
कुम्ह-कुम्हे विवेद कुम्हे विवेद ॥ योकमा । कुम्हे विवेद वेत्तुरूप्यस्य पम्बद्धस्य वाहि  
नेऽर्थ सीबाए भावान्तर्यै उत्तरेण गंगाए भावान्तर्यै पवतित्वेऽर्थ सिद्धूर्पूर्व भावान्तर्यै  
पुरतित्वेऽथ वाहिन्यदृश्यविवत्यस्य वाहुमध्यवेत्तमाए एत्य वै वेमा आमे रामभान्तर्यै  
प विजीयाराम्यहानीसरिसा मामिदम्भा उत्तर वै वेमाए रामभान्तर्यै कुम्हे  
जामे रामा अमुप्यज्ञ, भावादिमस्त्वं चाव सम्बं भरहेमस्त्वं मामिदम्भं विवेद-  
मयदर्शं देसु सम्बं मामिदम्भं चाव भुवेद मामुस्याए द्वाहे, कल्पत्रामवेदे य कुम्हे  
एत्य देवे महिन्दिए चाव पलिमोक्तमठिए परिवता, से एएमद्वैर्यं योकमा । एवं  
कुम्ह-कुम्हे विवेद कुम्हे विवेद चाव लिखे ॥ १३ ॥ कुम्ह वै भन्ते । भामुरीै  
हीने महाविद्वेदे वासे चित्ताकृष्टे जामे वक्षारपम्बाए पम्हतो ॥ गोममा । सीवाय  
भावान्तर्यै उत्तरेण जीवन्तस्य वासदूरपम्बद्धस्य वाहिन्येऽन्नं विवत्यस्य  
चुक्त्यविवृक्तस्य पवतित्वेऽर्थ एत्य वै भमुहीै हीवे महाविद्वेदे वासे चित्ताकृष्टे  
पामे वक्षारपम्बाए पम्हतो उत्तरवाहिन्याए पवैष्टिपरीक्षित्ये सोऽसुज्येमन्  
उहस्यार्थं पव च वाक्तुर्यै जोवनस्य दुष्प्रिय च एग्रजीविभग्नाए जोवनस्य भावावेऽर्थं  
पव व्योमपम्बस्वर्द्धं विवद्यम्भेऽन्नं जीवन्तवादादूरपम्बर्तुर्यै वातारि जोवनस्याहै वर्तु  
उवतोर्णं वातारि गात्तव्ययाहै उम्भेऽर्थ तम्भर्तुर्ण च वै मामाए २ उस्तेत्तुरैपरि  
कुम्हार्थं परिवृक्तमाधे २ सीवामहान्तर्यैभत्तेऽर्थं पव जोवनस्याहै वर्तु उवतोर्णं पव मात्तव-  
सवाहै उम्भेऽर्थं वस्तुत्वं वल्लापसंहित्ये सम्बरव्यामाए भन्हे द्वाहे चाव पाठिहै  
उम्भवो पासि दोहिं फलमधरप्रेयाहै दोहिं च वपुदेहिं द्विपरितियते उम्भवो तुक्ति  
चित्ताकृष्टस्य वै वक्षारपम्बद्धस्य उपि वाहुमध्यविवेदे भूमिभागे पवतो जाव वासु-  
दन्ति चित्ताकृष्ट वै भन्ते । वक्षारपम्बाए कह कृष्ण पम्हता ! योकमा । भामरीै  
कृष्ण पम्हता तंवदा—चित्ताकृष्टे चित्ताकृष्टे तुम्भाकृष्टे समा उत्तरवाहि  
वै वै पवप्पत्ति कुम्हे सीबाए उत्तरेण उत्तरेण मीवन्तस्य वासदूरपम्बद्धस्य  
वाहिन्येऽन्नं एत्य वै चित्ताकृष्टे जामे देवे महिन्दिए चाव रामभान्ती सेति ॥ १४ ॥  
कुम्ह वै भन्ते । भमुहीै हीवे महाविद्वेदे वासे उवतो जामे विवेद पम्हतो ॥  
योकमा । सीयाए भावान्तर्यै उत्तरेण जीवन्तस्य वासदूरपम्बद्धस्य वाहिन्येऽर्थं पव-  
द्वाहै भावान्तर्यै पवतित्वेऽन्नं विवत्यस्य वक्षारपम्बद्धस्य पुरतित्वेऽन्नं एत्य वै



सीधे महानई समर्पये हैं, ऐसे जहा गाहार्तीए। कहि वं मन्ते ! महाविदेहे बासे आतो  
जामे विजए पञ्चारो ! गोममा ! शीक्षणन्तरस्य बासहरपम्बनस्य वाहिनीं सीधाए  
महानईए उत्तरेण जिभिमृदस्य कम्बारपम्बमस्य पवित्रिमें दहार्तीए महानईए  
पुरतिमें एत्वं वं महाविदेहे बासे आवतो जाम विजए पञ्चारो सहं जहा कम्बस्य  
विजयस्य इति । कहि वं मन्ते ! महाविदेहे बासे अस्मिन्दृढ़े जामे कम्बारपम्बए  
पञ्चारो ! गो ! शीक्षणन्तरस्य वाहिनीं सीधाए उत्तरेण मंगसाकृत्यस्य विजयस्य  
पवित्रिमें आ जास्यस्य विजयस्य पुरतिमें एत्वं वं महाविदेहे बासे नशिन्दृढ़े जाम  
कम्बारपम्बए पञ्चारो कम्बारदाहिनावाए पार्वतपदीयविक्षिप्ये ऐरे जहा विजयस्य  
जाव आस्यन्ति विभिन्नदृढ़े वं मन्ते ! कहि दृढ़ा प ! गोममा ! जातारि दृढ़ा  
पञ्चाता तंजहा-विभिन्नदृढ़े विभिन्नदृढ़े मंगसाकृत्यस्य एए दृढ़ा पञ्चाता  
राबहार्थीओ उत्तरेण । कहि वं मन्ते ! महाविदेहे बासे मंगसाकृत्यस्य वासे विजए  
पञ्चारो ! गोममा ! शीक्षणन्तरस्य विभिन्नदृढ़े सीधाए उत्तरेण विभिन्नदृढ़े पुरतिमें  
पैद्यस्य एत्वं पवित्रिमें एत्वं वं मंगसाकृत्ये पास्मे विजए पञ्चारो जहा कम्बस्य विजए  
तहा एसो मावियम्बो जाव मंगसाकृत्ये य इत्य देवे परिकस्तु, से एवज्ञदेवे । कहि  
वं मन्ते ! महाविदेहे बासे पैद्यविभिन्नदृढ़े पास्मे दुर्गे पञ्चारो ! गोममा ! मंगसाकृत्यस्य  
पुरतिमें पुरक्षयस्य विजयस्य पवित्रिमें शीक्षणन्तरस्य वाहिनीं विभिन्नदृढ़े एत्वं वं पञ्च-  
वाहे जाव दुर्गे पञ्चारो तं चेव जहा विभिन्नदृढ़े पञ्चात्यस्य जाव मंगसाकृत्यस्य पुरक्षयस्य  
विजए तुहा विभयमानी २ अवसेस हं चेव वं चेव जहा विजए । कहि वं मन्ते !  
महाविदेहे बासे पुरक्षयस्य जामे विजए पञ्चारो ! गोममा ! शीक्षणन्तरस्य वाहि  
नीं सीधाए उत्तरेण पैद्यस्य एत्वं पुरतिमें पौरक्षयस्य विभिन्नदृढ़े पवित्रिमें  
पैद्यस्य एत्वं पुरक्षयस्य जामे विजए पञ्चारो जहा कम्बविजए तहा मावियम्ब  
जाव पुरक्षये य इत्य देव महिन्द्रिए पवित्रिमें पौरक्षयस्य विभिन्नदृढ़े परिकस्तु, से एवज्ञदेवे  
कहि वं मन्ते ! महाविदेहे बासे एवसेसे जामे कम्बारपम्बए प ! गो ! पुरक्ष-  
यस्य विभिन्नदृढ़े विभिन्नदृढ़े पुरतिमें पौरक्षयस्य विभिन्नदृढ़े पवित्रिमें शीक्ष-  
णन्तरस्य विभिन्नदृढ़े सीधाए उत्तरेण एत्वं वं एवसेसे जामे कम्बारपम्बए पञ्चारो  
विजयस्य विभिन्नदृढ़े जाव देवा आस्यन्ति जातारि दृढ़ा तं—सिद्धार्थे एव-  
सेवदृढ़े पुरक्षयस्य उत्तरेण पुरक्षयस्य एवज्ञदृढ़े दृढ़ावं तं चेव पञ्चात्यस्य परिमार्ज जाव  
एवसेसे य एवे महिन्द्रिए । कहि वं मन्ते ! महाविदेहे बासे पुरक्षयस्य जामे  
विजयस्य विभिन्नदृढ़े पञ्चारो ! गोममा ! शीक्षणन्तरस्य विभिन्नदृढ़े सीधाए उत्तरेण उत्तरि  
विजयस्य विभिन्नदृढ़े पञ्चारो ! गोममा ! शीक्षणन्तरस्य विभिन्नदृढ़े सीधाए उत्तरेण उत्तरि

महाविदेहे वासे पुक्खलावई णाम विजाए पण्णते, उत्तरदाहिणायए एवं जहा कच्छ-विजयस्स जाव पुक्खलावई य इत्थ टेवे० परिवसड, से एएणटेण० । कहि ण भन्ते । महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए उत्तरिले सीयामुहवणे णाम वणे प० २ गोयमा ! णीलवन्तस्स दक्खिणेण सीयाए उत्तरेण पुरत्थिमलवणसमुद्रस्स पच्छियमेण पुक्ख-लावडचक्कवद्विजयस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण सीयामुहवणे णाम वणे पण्णते, उत्तर-दाहिणायए पाईणपढीणविच्छिणे सोलसजोयणसहस्राह पञ्च य वाणउए जोयणसए दोण्ण य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेण सीयाए महाणईए अन्तेण दो जोयण-सहस्राह नव य धावीसे जोयणसए विक्खम्मेण तयणतर च ण मायाए २ परिहायमाणे २, णीलवन्तवासहरपव्यतेण एग एगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खमेणति, से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसण्डेण सपरिविक्षते वण्णओ सीयामुहवणस्स जाव देवा आसयन्ति०, एवं उत्तरिल पास समत्तं । विजया भणिया । रायहाणीओ इमाओ—खेमा १ खेमपुरा २ चेव, रिढ्हा ३ रिढ्हपुरा ४ तहा । खमगी ५ मजूसा ६ अविय, ओसही ७ पुंडरीगिणी ८ ॥ १ ॥ सोलस विजाहरसेदीओ तावह्याओ आभिझोगसेदीओ सब्बाओ इमाओ ईसाणस्स, सव्वेसु विजएसु कच्छवत्तव्यया जाव अट्ठो रायाणो सरिसणामगा विजएसु सोलसण्ह चक्खारपव्ययाण चित्तकूडवत्तव्यया जाव कूडा चत्तारि २ वारसण्ह णईण गाहावइव-तव्यया जाव उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं वणसण्डेहि य० वण्णओ ॥ ९५ ॥ कहि ण भन्ते । जम्बुदीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिले सीयामुहवणे णाम वणे पण्णते ? एवं जह चेव उत्तरिल सीयामुहवण तह चेव दाहिणपि भाणियवं, णवर णिसहस्स वासहरपव्ययस्स उत्तरेण सीयाए महाणईए दाहिणेण पुरत्थिमलवणसमुद्रस्स पच्छियमेण वच्छस्स विजयस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण जम्बुदीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिले सीयामुहवणे णाम वणे प०, उत्तरदाहिणायए तहेव सब्ब नवरे णिसहवासहरपव्ययतेण एगमेगूणवीस-इभाग जोयणस्स विक्खम्मेण किण्डे किण्डोभासे जाव महया गन्धद्वाणि मुधते जाव आसयन्ति० उभओ पासि दोहिं पउमवरवेइयाहिं० वणवण्णओ इति । कहि ण भन्ते । जम्बुदीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णाम विजए पण्णते ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्ययस्स उत्तरेण सीयाए महाणईए दाहिणेण दाहिणिलस्स सीया-मुहवणस्स पच्छियमेण तिउडस्स वक्खारपव्ययस्स पुरत्थिमेण एत्थ ण जम्बुदीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णाम विजए पण्णते त चेव पमाण द्वसीमा रायहाणी १, तिउडे वक्खारपव्यए सुवच्छे विजए कुण्डला रायहाणी २, तत्तजला णई महा-

वच्छे विजए अपराजिता रामहाणी ३ वेसमण्डूडे कक्षारफल्लए क्षयमहै विजए  
 पर्मस्तु रामहाणी ४ मत्तमला यहै रम्मे विजए जंतुहै रामहाणी ५ अबने  
 कक्षारफल्लए रम्मगे विजए पम्हार्है रामहाणी ६ उम्मतमला महार्है रम्मिते  
 विजए मुमा रामहाणी ७ मार्यजने कक्षारफल्लए मंगम्बर्है विजए रवधर्सम्भवा  
 रामहाणीति ८ एवं यह ऐति सीयाए महाजीए उत्तर पांच तह ऐति विजयिता  
 भाग्यमर्व दाहित्रितीयमुहूर्मा, इमे कक्षारकूडा तं०-तिर्है १ वेसमण्डूडे १  
 अंजने २ मार्यजने ३ [ यौठ उत्तम १ मत्तमला २ उम्मतमला ३ ]  
 विजया ४ -वच्छे दुष्कृते महार्है चतुर्थे क्षणावै । रम्मे रम्मए ऐति रम-  
 विज मंगमार्है ॥ १ ॥ य रामहाणीत्ये तंज्ञा-सुसीमा कुञ्जका ऐति अकरात्म  
 पहुँचा । अंजनर्है पम्हात्मा, दुमा रम्मतम्भवा ॥ २ ॥ वन्धस्त्व विजयस्य विठ्ठै  
 दाहित्रेण सीया उत्तरेण दाहित्रितीयमुहूर्मे पुरत्रित्येति तिर्है तम्हे दुष्कृते विजए  
 एएवं क्षेत्रे उत्तमला यहै महाकृते विजए वेसमण्डूडे कक्षारफल्लए क्षमार्है  
 विजए मत्तमला यहै रम्मे विजए अंजने कक्षारफल्लए रम्मए विजए उम्मतमल्लम  
 यहै रम्मिते विजए मार्यजने कक्षारफल्लए मंगम्बर्है विजए ॥ ९ ॥ १  
 यहै यं मन्ते । यम्हुर्है यीते महात्रिते वासे सोमजस्ते जामे कक्षारफल्लए  
 पल्लते ॥ गो । विमहत्व वाक्षारफल्लमस्तु सत्तरेण मन्दरस्तु पम्हवस्तु दाहित्रित्य-  
 भवे मंगमार्हैविजयस्य पवत्रित्येति वेस्कुराए पुरत्रित्येति एत्वं यं यम्हुर्है ।  
 महात्रिते वासे सोमजस्ते जामे कक्षारफल्लए पम्हते उत्तरवाहिणायए पार्श्वपद्मै  
 विक्षित्वे वहा मार्यजने कक्षारफल्लए उहा यहर उन्नरत्वदामए अप्ते वाह  
 पहिलते विमहत्वाक्षारफल्लयतिर्है चत्तारि ओयणस्याहै उहू उक्तते चत्तारि यान्त्र-  
 स्याहै उक्तते उक्तते सेस तहेष सम्बे यहर अद्ये स गोदमा । सोमजसे यं कक्षारफल्लए  
 वहै वहा य रवीयो य सोमा सुमला सोमजस्ते य इत्यं यी गहित्रिए वहै परि  
 वस्तु से एएट्टेण घोममा । आव वित्वे । सोमजसे यं भंते । कक्षारफल्लए कह दृग-  
 प ॥ गो । सत्त कूटा प १०-तिर्है १ सोमजस्ते २ विय बोद्धमे मंगमार्हैरूडे ३ ।  
 वेस्कुराए ४ विमह ५ वंचन ६ विमहूडे ७ य बोद्धमे ॥ १ ॥ एवं सम्ब पवत्रित्वा  
 दृग-एएति पुख्य विसितिरित्वा ए मार्यजना यहा गम्बमायमस्य विमहफल्ल-  
 यूडे मु यहर वेयाओ मुक्तम्भ वक्तव्यिता य वदत्रित्वेन दृग्दृग सरित्वामवा वहा  
 रामहाणीओ इकित्रेत्विति । यहै यं मन्ते । महात्रिते वासे वेवुहा जामे तुहा  
 पल्लता ॥ गोममा । मन्दरस्तु पम्हयस्तु दाहित्रित्वे विमहस्तु वाक्षारफल्लमस्तु उपरेण

विज्ञुप्पहस्स वक्खारपञ्चयस्स पुरत्थिमेण सोमणसवक्षारपञ्चयस्स पञ्चत्थिमेण  
एत्थ ण महाविदेहे वासे देवकुरा णाम कुरा पण्णता, पाईणपडीणायया उदीण-  
दाहिणविच्छिणा इक्कारस जोयणसहस्साड अट्ट य वायाले जोयणमए दुण्ण य  
एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खम्भेणं जहा उत्तरकुराए वत्तञ्चया जाव अणुसज्ज-  
माणा पम्हगन्धा मियगन्धा अममा सहा तेयतली सणिचारीति ६ ॥ ९७ ॥ कहि  
ण भन्ते ! देवकुराए २ चित्तविचित्तकूडा णाम दुवे पञ्चया प० २ गो० । णिसहस्स  
वासहरपञ्चयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमताओ अट्टचोत्तीसे जोयणसए चत्तारि य  
सत्तमाए जोयणस्स अवाहाए सीओयाए महाणईए पुरत्थिमपञ्चत्थिमेणं उभओरूले  
एत्थ ण चित्तविचित्तकूडा णाम दुवे पञ्चया प०, एव जच्चेव जमगपञ्चयाण० सञ्चेव०,  
एपेसि रायहाणीओ दक्खिणेणति ॥ ९८ ॥ कहि ण भन्ते ! देवकुराए २ णिसहद्दहे  
णाम दहे पण्णते २ गो० । तेसि चित्तविचित्तकूडाणं पञ्चयाण उत्तरिल्लाओ चरिमन्ताओ  
अट्टचोत्तीसे जोयणसए चत्तारि य सत्तमाए जोयणस्स अवाहाए सीओयाए महाण-  
ईए वहुमज्जदेसभाए एत्थ णं णिसहद्दहे णाम दहे पण्णते, एवं जच्चेव पीलवत-  
उत्तरकुरुचन्द्रेरावयमालवताण वत्तञ्चया सञ्चेव णिसहदेवकुरुम्हरसुलसविज्ञुप्पभाणं  
गेयब्बा, रायहाणीओ दक्खिणेणति ॥ ९९ ॥ कहि ण भन्ते ! देवकुराए २ कूड-  
सामलिपेडे णाम पेढे पण्णते २ गोयमा । मन्दरस्स पञ्चयस्स दाहिणपञ्चत्थिमेणं  
णिसहस्स वासहरपञ्चयस्स उत्तरेण विज्ञुप्पभस्स वक्खारपञ्चयस्स पुरत्थिमेणं  
सीओयाए महाणईए पञ्चत्थिमेण देवकुरुपञ्चत्थिमद्दस्स वहुमज्जदेसभाए एत्थ णं  
देवकुराए कुराए कूडसामलीपेडे णाम पेढे प०, एव जच्चेव जम्बूए सुदसणाए  
वत्तञ्चया सञ्चेव सामलीएवि भाणियब्बा णामविहृणा गरुदेवे रायहाणी दक्खिण-  
गेण अवसिष्ट त चेव जाव देवकुरु य इत्थ देवे० पलिओवमद्विईए परिवसइ, से  
तेणट्टेण गो० । एव घुच्छ-देवकुरा २, अदुत्तर च ण० देवकुराए० ॥ १०० ॥  
कहि ण भन्ते ! जम्बुदीवे २ महाविदेहे वासे विज्ञुप्पमे णाम वक्खारपञ्चए  
पण्णते २ गो० । णिसहस्स वासहरपञ्चयस्स उत्तरेण मन्दरस्स पञ्चयस्स दाहिण-  
पञ्चत्थिमेण देवकुराए० पञ्चत्थिमेण पम्हस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ ण जम्बु-  
दीवे २ महाविदेहे वासे विज्ञुप्पमे० वक्खारपञ्चए प०, उत्तरदाहिणायए एवं जहा  
मालवन्ते णवरि सञ्चतवणिजमए अच्छे जाव देवा आसयन्ति० । विज्ञुप्पमे ण  
भन्ते ! वक्खारपञ्चए कइ कूडा प० २ गो० । णव कूडा प०, त०-सिद्धकूडे  
विज्ञुप्पमकूडे देवकुरुकूडे पम्हकूडे कणगकूडे सोवत्थियकूडे सीओयाकूडे सयज्जल-  
कूडे हरिकूडे । सिद्धे य विज्ञुणामे देवकुरु पम्हकणगसोवत्थी । सीओया य सयज्ज-

सद्गिरूढे देव बोद्धम् ॥ १ ॥ एव इरिष्टुवना पश्चात्तवा देवम् वा एवसि  
कृदान्मुण्डा दिसिविदिसात्रो णयम्भामो जहा मान्मन्तस्स इरिस्त्वाहूढे तद च च  
इरिष्ट्वै रायहाणी जहा देव दाहिलेन भवत्वना रायहाणी तद देवम् वा उपग-  
चोवत्प्रदेव वारिदेवत्वसाह्यामो हो देवम् वा अवसिष्टेतु कृदेव कृद्वरिसाया-  
म्या देवा रायहाणीमो दाहिलेन से केषट्टेन भन्ते । एवं तुष्ट-विज्ञुप्तमे वन्दाम्  
फलए २ ३ गोप्यमा । विज्ञुप्तमे जे वन्दामपन्नए विज्ञुमिव सम्बद्धे सम्मता  
ओमात्मेइ उज्ज्वेव फ्लास्त्र विज्ञुप्तमे य इत्य देवे जात्व परिमोक्तमद्विष्ट वरिष्ठस्त्र,  
देव एवं देवेन गोप्यमा । एवं तुष्ट-विज्ञुप्तमे २ अनुत्तर च जे जाव दिवे  
॥ १ ॥ ॥ ॥ एवं पम्हे विवेद भस्यपुरा रायहाणी अन्तस्त्र वन्दामपन्नए १ तुम्हे  
विवेद रीढ़पुरा रायहाणी सीरोमा महाश्वै २ महापम्हे विवेद महापुरा रायहाणी  
पम्हाश्वै वन्दामपन्नए ३ पम्हाश्वै विवेद विज्ञपुरा रायहाणी सीरोमा  
महाश्वै ४ देवे विवेद अवतारमा रायहाणी आरीसिसे वन्दामपन्नए ५ कुम्हे  
विवेद अत्या रायहाणी अत्तेवाहिषी महाश्वै ६ शिखे विवेद असोग रायहाणी  
सहाये वन्दामपन्नए ७ विक्षिणाहै विवेद बीवदोमा रायहाणी ८ दाहिलिये  
सीमोम्भुद्वप्तस्त्रहे उत्तरिण्ये एमेव भाविष्यत्वे जहा सीवाए, एव्ये विवेद  
विषया रायहाणी चन्द्रे वन्दामपन्नए ९ तुष्टये विवेद अन्ती रायहाणी  
उम्मिमालिणी श्वै २ महाश्व्ये विवेद अन्ती रायहाणी द्वे वन्दामपन्नए ३  
वप्पाश्वै विवेद अवतारमा रायहाणी फेजमालिणी श्वै ४ वम् विवेद अस्पुरा  
रायहाणी जागे वन्दामपन्नए ५ छब्मू विवेद वास्पुरा रायहाणी सीमीरमालिणी  
अत्तरवै ६ गन्धिके विवेद अवज्ञा रायहाणी देव वन्दामपन्नए ७ विक्षिणाहै  
विवेद अभोजका रायहाणी ८ एवं मन्दरस्त्र फ्लक्षस्त्र फ्लत्वमिङ्ग पासे गावि-  
द्यम तत्त्व दाव सीमोम्भाए नाए दविष्ठलिये जे कृडे हमे विक्षया ठै-म्हे  
घुम्हे महापम्हे, चठत्ये फ्लग्गश्वै । देवे कुम्हे अविष्ठारै  
॥ १ ॥ इमामो रायहाणीमो ठै-मास्पुरा सीढ़पुरा महापुरा देव इत्य विवेद-  
पुरा । अवतारमा य अत्या वसेम तद बीमसेमा च ॥ २ ॥ इमे वन्दामा  
तंजहा-अके पम्हे आरीसिसे सहाये, एवं इत्य परिज्ञातीए दो हो विक्षया दृग्परी  
सुषाम्या भाविष्यत्वा विदा विदिसामो य श्वै सीमोम्भुद्वप्त च  
भाविष्यत्वे सीमोम्भाए दाहिण्ये श्वै च  
तंजहा-अप्ये द्वुष्टये महां  
विविष्यत्वै ॥ १ ॥ रायहा-

जिया । चक्रपुरा खगपुरा हवइ अवज्ञा अउज्ज्ञा य ॥ २ ॥ इमे वक्खारा, तजहा-चन्दपञ्चए १ सूरपञ्चए २ णागपञ्चए ३ देवपञ्चए ४, इमाओ णईओ सीओयाए महाणईए दाहिणिले कूले-खीरोया सीहसोया अतरवाहिणीओ णईओ ३, उभिमालिणी १ फेणमालिणी २ गमीरमालिणी ३ उत्तरिलविजयाणन्तराउत्ति, इत्थ परिवाढीए दो दो कूडा विजयसरिसणासया भाणियव्वा, इमे दो दो कूडा अवट्ठिया, तजहा-सिद्धकूडे पञ्चव्यसरिसणामकूडे ॥ १०२ ॥ कहि ण भन्ते ! जम्बुदीवे २ महाविदेहे वासे मन्दरे णाम पञ्चए पण्ते ? गोयमा । उत्तरकुराए दकिखणेण देवकुराए उत्तरेण पुञ्चविदेहस्स वासस्स पञ्चतिथमेण अवरविदेहस्स वासस्स पुरतिथमेण जम्बुदीवस्स २ बहुमञ्चदेसभाए एत्थ ण जम्बुदीवे दीवे मन्दरे णाम पञ्चए पण्ते णवणउडजोयणसहस्साइ उहु उच्चतेणं एगं जोयणसहस्स उच्चेहेण मूले दसजोयणसहस्साइ णवइ च जोयणाइ दस य एगारसभाए जोयणस्स विक्खमेण वरणियले दस जोयणसहस्साइ विक्खमेण तयणन्तर च ण मायाए २ परिहायमाणे परिहायमाणे उवरितले एग जोयणसहस्स विक्खमेण मूले एकतीस जोयणसहस्साइ णव य दसुतरे जोयणसए तिणिं य एगारसभाए जोयणस्स परिक्खेवेण धरणियले एकतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेण उवरितले तिणिं जोयणसहस्साइ एग च वावढु जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मूले विच्छिणे मज्जे सखिते उवरिं तणुए गोपुच्छसठाणसठिए सब्बरयणामए अच्छे सण्हेति । से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसडेण सब्बओ समन्ता सपरिक्खिते वण्णओत्ति, मन्दरे ण भन्ते ! पञ्चए कइ वणा प० २ गो० । चत्तारि वणा प०, त०-भद्रसालवणे १ णन्दणवणे २ सोमणसवणे ३ पडगवणे ४, कहि ण भन्ते ! मन्दरे पञ्चए भद्रसालवणे णाम वणे प० २ गोयमा ! धरणियले एत्थ ण मन्दरे पञ्चए भद्रसालवणे णाम वणे पण्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविन्दिणे सोमण-सविज्जुप्पहगथमायणमालवतेहिं वक्खारपञ्चएहिं सीयासीओयाहि य महाणईहिं अहुभागपविभते मन्दरस्स पञ्चव्यस्स पुरतिथमपञ्चतिथमेण वावीस वावीस जोयणसह-स्साइ आयामेण उत्तरदाहिणेण अहुआइज्जाइ अहुआइज्जाइ जोयणसयाइ विक्खमेणति, से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसडेण सब्बओ समन्ता सपरिक्खिते दुण्डवि वण्णओ भाणियव्वो किष्टे किष्टोमासे जाव डेवा आसयन्ति सयन्ति०, मन्दरस्स ण पञ्चव्यस्स उत्तरपुरतिथमेण भद्रसालवण पण्णास जोयणाइ ओगाहिता एत्थ ण चत्तारि णन्दापुक्तवरिणीओ पण्णत्ताओ, त०-पउमा १ पउमप्पभा २ चेव, कुमुया ३ कुमु-यप्पभा ४, तावो ण पुक्तवरिणीओ पण्णास जोयणाइ आयामेण पणवीस जोयणाइ

पितृगम्भीरं इगायत्राद् उम्पहर्षे वराभा पैरेकारनगोदारं भावित्वा चउपी  
तारना जाव लाभि र्हे गुरुगरिर्द्देवं ब्रह्मगत्तगमाए उभ र्हे मर्द एग इगरस्मा  
देविरुद्ग देवरामो पाणायत्तिमर् पाणन पद्मापाणगयं उहु उच्चांगे प्रहृदये  
बोपदगदार्द गिरांनन्ति अन्युगमावार्णीय र्हे गार्दामो पाणादर्दिक्षो मायि  
यत्रा मन्त्रग्न र्हे एवं दातिमुर्ग वयं गुरुगरिर्दीप्त उल्लग्नम्या चार्दिक्षा उल्लग्न  
उल्लग्नम्या तं भव वयार्द वयो पाणायत्तिमर्भा गरुद्ग गरुद्गतो तर्न चाव व्याप्तव्यं  
दातिमुर्गविमर्शः । गुरुगरिर्दीप्त-मिता भिर्गामा एव औद्गता अन्युगम्या ।  
पाणायत्तिमर्भा गरुद्ग लीदागत्वं गरुद्गतो । उल्लग्नविमर्शं गुरुगरिर्दीप्ते-मिति  
एव ॥ तिरिप्तना तिरिप्तिया ३ एव तिरिप्तिक्षा ॥ । पाणायत्तिमर्भा इग-  
गम्म मीदागत्वं गरुद्गतो । मन्त्रे र्हे भास । पव्यर् भरणालग्न एव निराहिष  
हृष्ट य ॥ गो । अदृ भिराद्यपृष्ठा पाणामा मन्त्रद्वा-पउमुन्ते । चीत्तात्तु ३  
गुहर्वी ५ अन्युगम्याप्ति ५ । कुमुए य ५ वयाम य ६ वटिसे ७ रोक्षागिरी ८  
॥ १ ॥ वटि र्हे मन्त्र । मन्दरे पव्यर् भरणालग्न पउमुन्ते शामे इगाहवि-  
कृष्टे य ३ वायमा । मन्त्रग्न व्यज्यग्न उल्लग्नविमर्शं गुरुद्गविमर्शं लीक्षा उल-  
र्हे एव र्हे पउमुन्तर शामे इगाहविकृष्टे एवते पद्मायवग्नयां उहु उक्तेवं  
पद्मायवग्नयां उम्पहर्षे एवं विक्षम्मतिरिक्षा । तो भार्तियमो गुरुद्गिमद्वल्लग्नियो  
पाणायत्रा य र्हे चतु पउमुन्तग इवा रुपदाली उल्लग्नविमर्शं । एवं भीत्तव्यन  
दिग्दाहविकृष्टे मन्त्रग्न दातिमुर्गविमर्शं गुरुद्गविमर्शं लीयाए इस्तिसेवं एव-  
स्मारि लीत्तव्यना एवो रामहाली दातिमुर्गविमर्शं एवं गुरुद्गविमर्शं  
मन्त्रग्न दातिमुर्गविमर्शं दिग्दालीशाए लीप्रायाए गुरुद्गविमर्शं एवस्मारि गुरुद्गी  
इवा रामाली दातिमुर्गविमर्शं ३ एवं चतु अवकाशिरिदिग्दाहविकृष्टे मन्त्रस्म  
दातिमुर्गविमर्शं दिग्दालीशाए लीओयाए पद्मिप्तिमर्शं एवस्मारि अन्युगम्यिती एवो  
रामहाली दातिमुर्गविमर्शं ४ एवं कुमुए विदिसाहविकृष्टे मन्त्रस्म दातिमुर्गविमर्श-  
मर्शं पद्मिप्तिमर्शं लीओयाए इस्तिसेवं एवस्मारि कुमुष्ट एवो रामहाली दातिमु-  
र्गविमर्शं ५ एवं पलातु विदिसाहविकृष्टे मन्त्रस्म उल्लग्नविमर्शेवं पद्मिप्तिमर्शं  
लीओयाए उत्तरेवं एवस्मारि फलसो एवो रामहाली उल्लग्नविमर्शं ६ एवं वहेवे  
विदिसाहविकृष्टे मन्त्रस्म उल्लग्नविमर्शं उत्तरिण्ड लीयाए मदायशए पद्मिप्तिमर्शं  
एवस्मारि वहेमो एवो रामहाली उल्लग्नविमर्शेवं ७ एवं रोक्षागिरी विदिसाहविकृष्टे  
मन्त्रस्म उल्लग्नविमर्शं उत्तरिण्ड लीयाए गुरुद्गविमर्शं एवस्मारि रोक्षागिरी वहेमो  
रामहाली उल्लग्नविमर्शेवं ८ ॥ १ ॥ १ ॥ वटि र्हे मन्त्र । मन्दरे पव्यर् भरणालग्न शामे

वणे पण्णते २ गो० । भद्रसालवणस्स वहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ पञ्चजोयणसयाइ  
उझुं उप्पडता एत्थ ण मन्दरे पब्बए णन्दणवणे णाम वणे पण्णते पञ्चजोयणसयाइं  
चक्कवालविक्खम्मेण वडे वलयागारसठाणसठिए जे ण मन्दरे पब्बयं सब्बओ समन्ता  
सपरिक्खिताण चिट्ठुइत्ति णवजोयणसहस्साइ णव य चउप्पणे जोयणसए छञ्चेगारसभाए  
जोयणसस वाहिं गिरिविक्खम्मो एगतीस जोयणसहस्साइ चत्तारि य अउणासीए  
जोयणसए किचिविसेसाहिए वाहिं गिरिपरिरएण अट्ठु जोयणसहस्साइ णव य चउप्पणे  
जोयणसए छञ्चेगारसभाए जोयणसस अतो गिरिविक्खम्मो अट्ठावीस जोयणसहस्साइ  
तिणिं य सोलसुत्तरे जोयणसए अट्ठु य इक्कारसभाए जोयणसस अतो गिरिपरिरएण,  
से ण एगाए पउमवरवेइयाए एरोण य वणसडेण सब्बओ समन्ता सपरिक्खिते  
वण्णओ जाव देवा आसयन्ति०, मदरस्स णं पब्बयस्स विदिसासु पुक्खरिणीओ त  
चेव पमाण पुक्खरिणीण पासायवडिसगा तह चेव सक्षेसाणाण तेण चेव पमाणेण,  
णदणवणे ण भन्ते । कइ कूडा प० २ गोयमा । णव कूडा पण्णता, तजहा-णन्दण-  
वणकूडे १ मन्दरकूडे २ णिसहकूडे ३ हिमवयकूडे ४ रययकूडे ५ रुयगकूडे ६  
सागरचित्तकूडे ७ वझरकूडे ८ बलकूडे ९ । कहि ण भन्ते । णन्दणवणे णदणवणकूडे  
णाम कूडे प० २ गोयमा । मन्दरस्स पब्बयस्स उत्तरपुरत्यमिलस्स पासायवडेसयस्स  
दक्खिणेण एत्थ ण णन्दणवणे णदणवणे णाम कूडे पण्णते० पञ्चसइया कूडा पुब्ब-  
वण्णया भाणियव्वा, देवी मेहकरा रायहाणी विदिसाएत्ति १ एयाहिं चेव पुब्बाभि-  
लावेण पेयव्वा इमे कूडा इमाहिं दिसाहिं दाहिणपुरत्यमिलस्स पासायवडेसगस्स उत्तरेण  
मन्दरे कूडे मेहवई देवी रायहाणी पुब्बेण २ दाहिणपुरत्यमिलस्स पासायवडेसगस्स  
पञ्चत्यमेण णिसहे कूडे सुमेहा देवी रायहाणी दक्खिणेण ३ दक्खिणपञ्चत्यमिलस्स  
पासायवडेसगस्स पुरत्यमेण हेमवए कूडे हेममालिणी देवी रायहाणी दक्खिणेण ४  
दाहिणपञ्चत्यमिलस्स पासायवडेसगस्स उत्तरेण रयए कूडे सुवच्छा देवी रायहाणी पञ्च-  
त्यमेण ५ उत्तरपञ्चत्यमिलस्स पासायवडेसगस्स दक्खिणेण रुयगे कूडे वच्छमित्ता देवी  
रायहाणी पञ्चत्यमेण ६ उत्तरपञ्चत्यमिलस्स पासायवडेसगस्स पुरत्यमेण सागरचित्ते  
कूडे वझरसेण देवी रायहाणी उत्तरेण ७ उत्तरपञ्चत्यमिलस्स पासायवडेसगस्स  
पञ्चत्यमेण वझरकूडे वलाह्या देवी रायहाणी उत्तरेणति ८, कहि ण भन्ते । णन्दणवणे  
वलकूडे णामं कूडे पण्णते० २ गोयमा । मन्दरस्स पब्बयस्स उत्तरपुरत्यमेण एत्थ  
ण णन्दणवणे वलकूडे णाम कूडे प०, एव ज चेव हरिस्सहकूडस्स पमाण रायहाणी  
य त चेव वलकूडस्सवि, णवर वलो देवो रायहाणी उत्तरपुरत्यमेणति ॥ १०४ ॥  
कहि ण भते । मन्दरए पब्बए सोमणसवणे णाम वणे प० २ गोयमा । णन्दणवणस्स

बहुसमरमनिजाओ भूमिमासाओ अदरेददि ज्येष्ठसाहस्राई उद्गु उपदत्ता एवं मन्दरे पम्बाए सोमणसाक्षे वामे क्षेत्रे पम्बारे पम्बजोवणसम्भाई चक्रवर्षिकरुम्नेवें वहे वल्लयागारसंठाकर्त्तिए ज्ये वं मन्दरे पम्बर्ये सम्भाओ समन्ता सुपरिकित्ताण्य विद्वु चत्तारि ज्येष्ठसाहस्राई तुष्टिय व वाकातरे ज्येष्ठसपु अद्व व इत्तासमाप्त ज्येष्ठसपु वाहि गिरिकित्ताम्नेवें तेरस ज्येष्ठसाहस्राई वाव य एहारे ज्येष्ठसपु छव इत्तासमाप्त ज्येष्ठसपु वाहि गिरिपरिरएवं तित्तिय ज्येष्ठसाहस्राई तुष्टिय व वाकातरे ज्येष्ठसपु अद्व य इत्तासमाप्त ज्येष्ठसपु अनो गिरिकित्ताम्नेवें वस ज्येष्ठसाहस्राई तित्तिय य अत्तापत्त्वे ज्येष्ठसपु तित्तिय य इत्तासमाप्त ज्येष्ठसपु अन्तो पिरिपरिएवंति । ऐ वं एगाए पठमवरवेश्वाए एगेम व वायुवेन सम्भावे समन्ता संपरिकित्तते वाम्बल्ये लिङ्गे लिङ्गोगासे वाव वासमन्ति एवं वृद्धज्ञा संवेद वाम्बमध्यवाक्या मानिवम्भा तं वेव ज्येष्ठाहित्त्व वाव पासामध्यवाक्या सहीसाजावति ॥ १ ५ ॥ कहि वं भवते ! मन्दरपम्बए पठगवने वामे क्षेत्रे व । गो । सोमणसाक्षस बहुसमरमनिजाओ भूमिमासाओ छातीसे ज्येष्ठसाहस्राई उद्गु उपदत्ता एवं वं मन्दरे पम्बए विद्वत्तके पठगवणे वामे क्षेत्रे पम्बते चत्तारि चत्तपरए ज्येष्ठसपु चक्रवर्षिकरमिन्ने वहे वल्लयागारसंठाकर्त्तिए, ज्ये वं मन्दर तुष्टिम्बे सम्भावे समन्ता संपरिकित्ताण्य विद्वु तित्तिय ज्येष्ठसाहस्राई एवं व वामद्वं ज्येष्ठसपु वित्तिवेसाहित्वे परिक्षेत्रेवं ऐ वं एगाए पठमवरवेश्वाए एगेम व वर्ण उद्देश्य वाव लिङ्गे वाव भासुमन्ति पठगवणसपु बहुमज्जदेसमाप्त एवं वं मन्दर तुष्टिम्बा वामे तुष्टिम्बा पम्बता चत्ताम्भेस ज्येष्ठसाहस्राई उद्गु उपदत्तेवं मूले वारस ज्येष्ठवारे विकरमिन्ने मज्जे अद्व ज्येष्ठाई विकरमेवें उप्पि चत्तारि ज्येष्ठाई विकरमेवें मूले वारसेगद्वं चत्ताम्भेस ज्येष्ठाई परिक्षेत्रेवं मूले वित्तिष्ठ्या भज्जे दीविद्या उप्पि उगुया गोपुच्छस्त्राप्तस्तिवा सम्बद्धिमार्ह अन्ता वा वं एगाए पठमवर विद्याए वाव सपरिकित्ताण्य इति उप्पि बहुसमरमनिजे भूमिमागे वाव विहर्ती एवं ज्येत्र सोमणसे पुम्बरत्तियाओ ममो पुम्बरत्तियानी पासामद्वेश्वान व नो खेत नेदम्भो जाव सहीसाक्षदेशाना तर्च वेव परिमावेन ॥ १ ६ ॥ पठगवणे वं भवते ! वले कद अभिवेयविलाम्भे पम्बताओ ॥ गोयमा ! चत्तारि अभिवेयविलाम्भो व ॥ १०—११ तित्तिम् १ पठुद्वेष्मर्हिम् २ रहतिम् ३ रत्तिम् ४ रत्तम्बत्तिम्भेन ५ । कहि वं भवते ! पठगवणे कष्टुष्टिका वामे विम्ब पम्बता ॥ गोयमा ! मध्यरत्तियाए पुरत्तिमेवं वंडगवणपुरत्तिमेवें एवं वं वंशवानं पंडीता वामे शिता पम्बता

उत्तरदाहिणायया पाईणपढीणविच्छिणा अद्वचन्दसठाणसठिया पचजोयणमयाड आयामेण अहूआज्ञाइ जोयणसयाइ विक्खम्भेण चत्तारि जोयणाड वाहलेण सब्बक-णगामई अच्छा वेड्यावणसडेण सब्बओ समन्ता सपरिक्खता वण्णओ, तीसे ण पण्डुसिलाए चउद्दिसि चत्तारि तिसोवाणपडिस्वगा पण्णत्ता जाव तोरणा वण्णओ, तीसे णं पण्डुसिलाए उपिंग वहुसमरमणिजे भूमिभागे पण्णत्ते जाव देवा आसयन्ति०, तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए उत्तरदाहिणेण एत्थ ण दुवे सीहासणा पण्णत्ता पञ्च वणुसयाड आयामविक्खम्भेण अहूआज्ञाइ धणुसयाड वाहलेण सीहासणवण्णओ भाणियब्बो विजयदूसवज्जोत्ति॑। तत्थ ण जे से उत्तरिले सीहासणे तत्थ ण वहूहिं भवणवइवाणमन्तरजोइसियवेमाणिएहि देवोहिं देवीहि य कच्छाइया तित्थयरा अभिसिच्चन्ति, तत्थ ण जे से दाहिणिले सीहासणे तत्थ ण वहूहिं भवण जाव वेमाणिएहिं देवोहिं देवीहि य वच्छाइया तित्थयरा अभिसिच्चन्ति॑। कहि ण भन्ते॑! पण्डगवणे पण्डुकवलसिला णाम सिला पण्णत्ता॒? गोयमा॑! मन्दरचूलियाए दक्खिणेण पण्डगवणदाहिणपेरते॑ एत्थ ण पंडगवणे पण्डुकवलसिला णाम सिला पण्णत्ता॑, पाईणपढीणायया उत्तरदाहिणविच्छिणा॒ एव तं चेव पमाण वत्तव्यया य भाणियब्बा जाव तस्स ण वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए॑ एत्थ ण मह एगे सीहासणे॑ प० तं चेव सीहासणप्पमाण तत्थ ण वहूहिं भवणवइ जाव भारहगा तित्थयरा अहिसिच्चन्ति, कहि ण भन्ते॑! पण्डगवणे रत्तसिला णाम सिला॑ प०? गो॑! मन्दरचूलियाए॑ पच्चत्यिमेणं पण्डगवणपच्चत्यिम-पेरते॑ एत्थ ण पण्डगवणे रत्तसिला णाम सिला पण्णत्ता॑, उत्तरदाहिणायया पाईण-पढीणविच्छिणा॑ जाव त चेव पमाण सब्बतवणिजमई॑ अच्छा॑ उत्तरदाहिणेण एत्थ ण दुवे सीहासणा पण्णत्ता॑, तत्थ ण जे से दाहिणिले सीहासणे तत्थ ण वहूहिं भवण॑ पम्हाइया तित्थयरा अहिसिच्चन्ति, तत्थ ण जे से उत्तरिले सीहासणे तत्थ ण वहूहिं भवण जाव वप्पाइया तित्थयरा अहिसिच्चति, कहि ण भन्ते॑! पण्डगवणे रत्तकवलसिला णाम सिला पण्णत्ता॑? गोयमा॑! मन्दरचूलियाए॑ उत्तरेण पडगवण-उत्तरचरिमते॑ एत्थ ण पडगवणे रत्तकवलसिला णाम सिला पण्णत्ता॑, पाईणपढीणायया॑ उदीणदाहिणविच्छिणा॑ सब्बतवणिजमई॑ अच्छा॑ जाव मज्जदेसभाए॑ सीहासण, तत्थ ण वहूहिं भवणवइ जाव देवोहिं देवीहि य एरावयगा तित्थयरा अहिसिच्चन्ति॑ ॥१०७॥ मन्दरस्स ण भन्ते॑! पव्यवस्स कइ कण्डा पण्णत्ता॑? गोयमा॑! तओ कडा॑ पण्णत्ता॑, तजहा॑-हिंडिले कडे॑ मजिझले कण्डे॑ उवरिले कण्डे॑, मन्दरस्स ण भन्ते॑! पव्यवस्स हिंडिले कण्डे॑ कइविहे॑ पण्णत्ते॑? गोयमा॑! चउविहे॑ पण्णत्ते॑, तजहा॑-मुढवी॑ १ उवले॑ २.

वर्हे र चाहरा ४ मणिमिले र्ण भन्ते । कम्हे क्षमिहे प ३ गोममा । क्षमिहे  
फलतो तंश्चा-अकि १ पमिहे २ चावहमे ३ रमए ४ उपमिहे कम्हे क्षमिहे  
फलतो ५ गोममा । एगायारे फलतो उच्चवस्त्रम् चामए, मन्दरस्तु वे भन्ते । पञ्चमस्तु  
हेतुमि कम्हे केवल्यं चाहेप प ६ गोममा । एग जोवणसाहस्तु वाहेप फलतो  
मणिमिले कम्हे पुच्छा गोममा । तेकांति ओवषसाहस्तु वाहेप प उपमिहे  
पुच्छा गोममा । छासिर्व ओवषसाहस्तु वाहेप प एवमेव सुपुच्छान्तरेव  
मन्दरे पञ्चए एग जोवणसाहस्तु सम्मगेव पन्ते ॥ १ ८ ॥ मन्दरस्तु  
वे भन्ते । पञ्चमस्तु क्षम जामधेजा पञ्चता ६ गोममा । दोषस जामधेजा पञ्चता  
तंश्चा-मन्दर १ भेद ३ मन्दोरम ३ द्विदंशन ४ सर्वपंचम य ५ मिरिहवा ६ ।  
रवजोवद ७ तिस्रोवद ८ भग्ने सोमस्तु ९ यामी य १ ८ १ ॥ भक्ते व ११  
सुरिवासतो १२ सुरिवासरेव १३ तिया । उत्तमे १४ य विसारी य १५ वदेशीर्व  
१६ य सोख्ते ॥ २ ॥ से केषट्टौर्व भन्ते । एवं तुष्ट-मन्दरे पञ्चए २ ३ गोममा ।  
मन्दरे पञ्चए मन्दरे जामै देवे परिवक्तु महित्तिः जाव परिमोषमन्तिःप्र, से  
तेनद्वेष गोममा । एवं तुष्ट-मन्दरे पञ्चए २ बहुतरं ते भेदति ॥ १ ९ ॥  
कहि वे भन्ते । यमुहीये वीवे वीक्ष्यतु वामे वासाहरपञ्चए पन्तो १ गोममा ।  
महामिहेहस्तु वासस्तु उत्तरेण रम्मगवासस्तु इक्षित्तेवं पुरतिष्ठित्तमात्मसुरस्तु  
पञ्चतिष्ठेवं पञ्चतिष्ठमम्भणस्युहस्तु पुरतिष्ठेवं एत्य वे यमुहीये २ वीक्ष्यतु  
वामे वासाहरपञ्चए पन्तो पाइवयीकायद उर्विवदाहिष्यतिदित्त्वे विक्षिहताम्भवा  
वीक्ष्यत्तस्तु सामिमम्भा पञ्चर्व वीवा शाहिषेवं वर्ण उत्तरेवं एत्य वे भेदतिःहो  
वाहिषेवं वीवा महाणहे पक्षा सुमाणी उत्तराहेवं एवेमाणी ३ अमवयवाए वीक्ष्य-  
बन्दरतात्तुष्टवन्तेराववमात्मन्तरहे य दुहा विभक्तमाणी ३ अठराहीए सक्षिका-  
सहस्राह आरोमाणी ३ भाइमामाणी एवेमाणी २ मन्दरे पञ्चव होहै भेदतिःही  
आमपाता पुरत्यामिमुही वाचता सुमाणी वहे मात्मन्तत्वारपञ्चवे वासपाता  
मन्दरस्तु पञ्चमस्तु पुरतिष्ठेवापु दुहा विभयमाणी ३ एयम्भामो वा-  
वाहिषिवयाम्भे अद्वृद्वीयाए २ उक्षिकासहस्रेह आरोमाणी ३ पर्वहै सक्षिमासम्भाहै  
स्तेहै वाहिषाए य सक्षिमासहस्रेह समग्ना वहे विभवस्तु वारस्तु वर्णं वास्त्राणा  
पुरतिष्ठेवी लक्षणसमुहै समप्येह, अवसिद्धू त भेदति । एवं वारिक्षितावि उपरामिमुही  
भेदवा पवरमिमी वाचती गम्भावद्वहेमहृपञ्चवे जोवलेव वर्णता पवरवामिमुही  
वाचता सुमाणी वदिङु ते पव वहे य मुहे य जहा हरिष्वासमिका इहि ।  
जीक्ष्यतु वे भन्ते । वासाहरपञ्चए क्षम वृज पञ्चता ६ गोममा । वव वृज ७

तजहा-सिद्धकूडे०, सिद्धे १ णीले २ पुब्वविदेहे ३ सीया य ४ किति ५ णारी य ६ । अवरविदेहे ७ रम्मगकूडे ८ उवदसणे चेव ९ ॥ १ ॥ सब्वे एए कूडा पञ्च-  
सहया रायहाणीउ उत्तरेण । से केणट्रेण भन्ते । एवं चुच्छ-णीलवन्ते वासहरपब्वए  
२ २ गोयमा ! णीले णीलोभासे णीलवन्ते य इत्य देवे महिंद्रिए जाव परिवसह  
सब्ववेशलियामए णीलवन्ते जाव गिर्विति ॥ ११० ॥ कहि ण भन्ते ! जम्बुदीवे २  
रम्मए णाम वासे पण्णते २ गो० । णीलवन्तस्स उत्तरेण रुप्पिस्स दक्खिणेण  
पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्छिमेण पच्छिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एवं जह  
चेव हरिवास तह चेव रम्मय वास भाणियव्वं, णवर दक्खिणेण जीवा उत्तरेण  
धणुं अवसेस त चेव । कहि ण भन्ते ! रम्मए वासे गन्धावई णाम वट्वेयहृ-  
पब्वए पण्णते २ गोयमा ! णरकन्ताए पच्छिमेण णारीकन्ताए पुरत्थिमेण रम्म-  
गवासस्स बहुमज्जदेसभाए एत्य ण गन्धावई णाम वट्वेयहृपब्वए पण्णते, जं  
चेव वियडावइस्स तं चेव गन्धावइस्सवि वत्तव्वं, अट्टो बहवे उप्पलाइ जाव गधा-  
वईवण्णाइ गन्धावइप्पभाईं पउमे य इत्य देवे महिंद्रिए जाव पलिओवमद्विइए परिवसह,  
रायहाणी उत्तरेणति । से केणट्रेण भन्ते ! एवं चुच्छ-रम्मए वासे २ २ गोयमा !  
रम्मगवासे ण रम्मे रम्मए रम्मणिजे रम्मए य इत्य देवे जाव परिवसह, से तेणट्रेण० ।  
कहि ण भन्ते ! जम्बुदीवे २ रुप्पी णाम वासहरपब्वए पण्णते २ गोयमा ! रम्मग-  
वासस्स उत्तरेण हेरण्णवयवासस्स दक्खिणेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्छिमेण  
पच्छिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्य ण जम्बुदीवे दीवे रुप्पी णाम वासहरपब्वए  
पण्णते, पाईणपडीणायए उद्दीणदाहिणविच्छिणे, एवं जा चेव महाहिमवन्तवत्तव्वया  
सा चेव रुप्पिभसवि, णवर दाहिणेण जीवा उत्तरेण धणु अवसेस त चेव महापुण्डरीए  
दहे णरकन्ता णई दक्खिणेण णेयव्वा जहा रोहिया पुरत्थिमेण गच्छइ, रुप्पकूला  
उत्तरेण णेयव्वा जहा हरिकन्ता पच्छिमेण गच्छइ, अवसेस त चेवति । रुप्पिमि  
ण भन्ते ! वासहरपब्वए कङ्क कूडा प० २ गो० । अट्ट कूडा प०, त०-सिद्धे १ रुप्पी २  
रम्मग ३ णरकन्ता ४ चुद्धि ५, रुप्पकूला य ६ । हेरण्णवय ७ मणिकन्तण ८  
अट्ट य रुप्पिमि कूडाइ ॥ १ ॥ सब्वेवि एए पच्चसहया रायहाणीओ उत्तरेण । से  
केणट्रेण भन्ते ! एवं चुच्छ-रुप्पी वासहरपब्वए २ २ गोयमा ! रुप्पीणामवासहरपब्वए  
रुप्पी रुप्पपटे रुप्पोभासे सब्वरुप्पामए रुप्पी य इत्य देवे पलिओवमद्विइए परिवसह,  
से एएणट्रेण गोयमा ! एवं चुच्छिति । कहि ण भन्ते ! जम्बुदीवे २ हेरण्णवए णाम  
वासे पण्णते २ गो० । रुप्पिस्स उत्तरेण सिहारिस्स दक्खिणेण पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स  
पच्छिमेण पच्छिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेण एत्य ण जम्बुदीवे दीवे हेरण्णवए णाम

वासे पर्यते एवं यह चेत हेमवते तद चेत हेरण्णवक्षयि भाविकर्त्ता वदरे जीवा शहि  
वेत्ता उत्तरेण व्यु भवसिद्धु ते चेत्तति । कहि वं मन्ते । हेरण्णवए वासे मालक्कन्तपरिवाए  
पार्म वृषभवृषभए प ॥ गो । मुख्यामुम्पए पवरिषेष्येव्य हप्यमुम्पए पुररिष्यमेव्य एव  
ने हेरण्णवमस्त वासस्त व्युमज्जवेसमाए गाल्लवन्तपरिवाए वासे वस्तेवृषभए प  
यह चेत हास्त तद चेत मालक्कन्तपरिवाएवि अद्वो उप्पव्यै वडमार्द मालक्कर्त्ता  
पिमार्द मालक्कन्तव्यव्यै मालक्कन्तव्यामार्द पमासे य इत्थ देवे महिनीए परिष्योव-  
मद्विए परिवसह, से एप्पटेव्य रामहाणी उत्तरेवति । से वेजद्वेज मन्ते । एवं  
मुख्य-हेरण्णवए वासे ३ ॥ गोवमा । हेरण्णवए वं वासे रूपीलिहरीहै वासहर  
पव्यपहि व्युमो उम्बगुहे विव्य हिरण्ण इत्थ विव्य हिरण्ण सुंचाइ विव्य हिरण्ण पव्य-  
धर हेरण्णवए य इत्थ देवे परिवसह से एप्पटेवति । कहि वं मन्ते । व्यमुहीव वीवे  
सिही वासे वासहरपव्यए पव्यते ॥ गोवमा । हेरण्णवमस्त उत्तरेष पराववस्त वाहि-  
वेष्य पुररिष्यमस्तव्यसमुहस्त पवरिष्यमस्तव्यसमुहस्तपुररिष्यमेव्य एवं यह चेत व्युवहि  
मवन्तो तद वेव सिहीवि वदरे जीवा वाहिवेष्य व्यु उत्तरेव्य व्यवसिद्धु ते चेत पुण्यतीर  
वह व्यवस्त व्याहिम्मूलो तद चेत रामावहिमो लेयमालो पुररिष्यमेव्य रामा पवरिष्यमेव्य  
रामवहि व्यवसिद्धु त चेत [ अवसेव्य माविष्यमवति ] । विहरिम्म वं मन्ते । वासहर  
रपव्यए यह व्यु व्यता ॥ गो । इदारप व्यु य १—विद्वन्ते १ विहरिए ३  
हेरण्णवम्मूहे ३ व्युव्यहव्यहृहे ४ व्युव्यवीहृहे ५ रामम्मूहे ६ उम्बीहृहे ८  
रामवीहृहे ८ इदारेवीहृहे ९ एरामम्मूहे १ विगिलिहृहे ११ एवं समेवि  
व्यु व्यवस्त व्यामहाणीवो उत्तरेव्य । से वेजद्वेज मन्ते । एव्यमुहा-विहरिवाच  
रपव्यए २ ॥ गोवमा । विहरिमि वासहरपव्यए यह व्यु व्यु विहरिवाचवस्तिवा  
उपरव्यामवा विही य इत्थ देवे वाव परिवसह से तेजद्वेज वहि वं मन्ते ।  
व्यमुहीव वीवे एप्पवए वाम वासे पव्यते ॥ गोवमा । विहरिस्स उत्तरेव्य उत्तरव्य-  
व्यसमुहस्त व्यवसेव्य पुररिष्यमस्तव्यसमुहस्त पवरिष्यमेव्य पवरिष्यमस्तमुहस्त  
पुररिष्यमेव्य एत्य वं व्यमुहीव वीवे एरामए वार्म वासे पव्यते वालुव्युहृहे व्यव-  
व्यव्युहृहे एवं व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त  
सुविष्यमवा उपरिनिव्यावा वदरे एराम्मो व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त  
एरामए वासे ३ ॥ १११ ॥ व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त व्यवस्त ॥

व्यवा वं एव्यमेव्य व्यवविविवए व्यववन्तो विलवरा व्युप्यवन्ति तेव्य वाहिव  
तेव्य समाप्ते व्यववन्तो व्यववन्तो व्यववन्तो व्यववन्तो व्यववन्तो व्यववन्तो ३ व्यवव-

सएहि॒ २ भवणेहि॒ सएहि॒ २ पासायवडेसएहि॒ पत्तेय॑ २ चउहि॑ सामाणियसाहस्तीहि॑  
 चउहि॑ महत्तरियाहि॑ सपरिवाराहि॑ सत्तहि॑ अणिएहि॑ सत्तहि॑ अणियाहिवईहि॑ सोलसएहि॑  
 आयरक्खदेवसाहस्तीहि॑ अणेहि॑ य वहूहि॑ भवणवइवाणमन्तरेहि॑ देवेहि॑ देवीहि॑ य  
 सद्दि॑ सपरिवुडाओ॑ महया॑ ह्यणद्वयीयवाइय॑ जाव॑ भोगभोगाइ॑ भुजमाणीओ॑ विहरति॑,  
 तजहा॑-भोगंकरा॑ १ भोगवई॑ २, सुभोगा॑ ३ भोगमालिणी॑ ४ । तोयधारा॑ ५ विचित्ता॑  
 य॑ ६, पुफ्फमाला॑ ७ अणिदिया॑ ८ ॥ १ ॥ तए॑ ण॑ तासिं अहेलोगवत्थव्वाण॑ अट्टणहि॑  
 दिसाकुमारीण॑ मयहरियाण॑ पत्तेय॑ पत्तेय॑ आसणाइ॑ चलति॑, तए॑ ण॑ ताओ॑ अहेलोग-  
 वत्थव्वाओ॑ अट्ट॑ दिसाकुमारीओ॑ महत्तरियाओ॑ पत्तेय॑ २ आसणाइ॑ चलियाइ॑ पासन्ति॑ २ ता॑  
 ओहि॑ पउंजति॑ पउजित्ता॑ भगव॑ तित्थयर॑ ओहिणा॑ आभोएति॑ २ ता॑ अण्ण-  
 मण॑ सद्वाविति॑ २ ता॑ एव॑ वयासी॑-उच्पणे॑ खलु॑ भो॑ ! जम्बुदीवे॑ दीवे॑ भयव॑  
 तित्थयर॑ तं जीयमेय॑ तीयपञ्चुपण्णमणागयाण॑ अहेलोगवत्थव्वाण॑ अट्टणहि॑ दिसाकु-  
 मारीमहत्तरियाण॑ भगवओ॑ तित्थगरस्स॑ जम्मणमहिम॑ करेत्तए॑, त गच्छामो॑ ण॑ अम्हे-  
 वि॑ भगवओ॑ जम्मणमहिम॑ करेमोत्तिकहु॑ एव॑ वयति॑ २ ता॑ पत्तेय॑ २ आभिओगिए॑  
 देवे॑ सद्वावेति॑ २ ता॑ एव॑ वयासी॑-खिप्पामेव॑ भो॑ देवाणुपिण्या॑ ! अणेगखम्भसयस-  
 णिंविट्ट॑ लीलहिय॑ ० एव॑ विमाणवण्णओ॑ भाणियब्बो॑ जाव॑ जोयणविच्छिणे॑ दिव्वे॑  
 जाणविमाणे॑ विउव्विता॑ एयमाणत्तिय॑ पञ्चपिणहत्ति॑, तए॑ ण॑ ते॑ आभिओगा॑ देवा॑  
 अणेगखम्भसय॑ जाव॑ पञ्चपिणति॑, तए॑ ण॑ ताओ॑ अहेलोगवत्थव्वाओ॑ अट्ट॑ दिसाकु-  
 मारीमहत्तरियाओ॑ हट्टुहट्ट॑ ० पत्तेय॑ २ चउहि॑ सामाणियसाहस्तीहि॑ चउहि॑ महत्तरि-  
 याहि॑ जाव॑ अणेहि॑ वहूहि॑ देवेहि॑ देवीहि॑ य सद्दि॑ सपरिवुडाओ॑ ते॑ दिव्वे॑ जाणविमाणे॑  
 दुर्घति॑ दुर्घिता॑ सन्विहृण॑ ए सन्वजुहै॑ घणमुङ्गपणवपवाइयरवेण॑ ताए॑ उकिह्वाए॑ जाव॑  
 देवगई॑ जेणेव॑ भगवओ॑ तित्थगरस्स॑ जम्मणणगरे॑ जेणेव॑ ० तित्थयरस्स॑ जम्मणभवणे॑  
 तेणेव॑ उवागच्छन्ति॑ २ ता॑ भगवओ॑ तित्थयरस्स॑ जम्मणभवणस्स॑ उत्तरपुरथिमे॑  
 दिसीभाए॑ इंसिं चउरगुलम्भसपत्ते॑ घरणियले॑ ते॑ दिव्वे॑ जाणविमाणे॑ ठविति॑ ठविता॑  
 पत्तेय॑ २ चउहि॑ सामाणियसाहस्तीहि॑ जाव॑ सद्दि॑ सपरिवुडाओ॑ दिव्वेहितो॑ जाणविमा-  
 णेहितो॑ पञ्चोरुहति॑ २ ता॑ सन्विहृण॑ जाव॑ णाइए॑ जेणेव॑ भगव॑ तित्थयर॑ तित्थय-  
 रमाया॑ य॑ तेणेव॑ उवागच्छन्ति॑ २ ता॑ भगव॑ तित्थयर॑ तित्थयरमायर॑ च॑ तिखुतो॑  
 आयाहिणपयाहिण॑ करेति॑ २ ता॑ पत्तेय॑ ० करयलपरिसगहियं॑ सिरसावत्त॑ मत्थए॑  
 अजलि॑ कहु॑ एव॑ वयासी॑-णमोऽत्यु॑ ते॑ रयणकुच्छियारिए॑ जगप्पडवदाइ॑ सब्बजग-  
 मगलस्स॑ चक्षुणो॑ य॑ मुत्तस्स॑ सब्बजगजीवच्छलस्स॑ हियकारगमगदेसियवागि-  
 द्विविभुपभुत्स॑ जिणस्स॑ णाणिस्स॑ णायगस्स॑ ब्रुहस्म॑ वोहगस्स॑ सब्बलोगणाहस्त॑

पित्तममस्तु पत्राकुम्भमुख्यमस्तु जाईए खत्तिमस्तु बंसि भेद्युक्तमस्तु वयनी भृष्मापि  
ते पुण्यापि फलत्वापि अम्हे य देवाशुभिए । अहोग्रेगक्तव्यमानो अहु रिसाकुम्भ-  
रीमहत्तरिवानो भगवन्नो शिल्पमरस्तु अम्भम्भाहिने व्यरिस्तामो उर्व तुम्हाई य  
मात्रबर्वतिक्तु चतुराखुरतिक्तमे दिसीमानां अवाइमन्ति २ ता बेडमिक्तमुख्याएव  
समोहर्वति २ ता संविज्ञाई ओववर्व वैड भिसिरेति तंबहा-रजवामें वाव संवा-  
गवाए बिट्टम्भति २ ता तेवं दिवेवं मठएर्व मारएन अनुभुवर्व ग्रूमितद्विमम्भर  
अेवं मण्डुरेवं सम्बोद्धम्भरहित्तुमग्नवाणुवातिष्ठ पित्तिमवीहारिमेवं गन्मुखर्व  
विरिये फ्लाइएर्व भगवन्नो शिल्पवरस्तु अम्भम्भमवज्ञस्तु सव्यामो समन्वा ओववर्वति  
मध्यम्भ से व्याधाणमाप-क्षममारवारए दिया जाव तहेव वै दत्तव तर्व वा पर्व वा क्षेत्र वा  
क्षमवर्व वा अद्भुत्वानोक्त्वे पूर्व तुविभगम्भ ते सम्भ व्याकुम्भिव २ एम-ते एवेति २ ता  
तेवेवं भावां शिल्पवरे शिल्पवरमाया य तेवेवं उवागच्छन्ति ३ ता भगवन्नो शिल्प-  
वरस्तु शिल्पवरमायाए य अद्भुत्वामन्ते आगाममाणीमो परिगम्भमाणीमो विद्युति  
॥ ११२ ॥ तेवं क्षमेवं तेवं उमाएर्व उद्भुवेगवत्पव्यामो अहु रिसाकुमारीमहत्तरिवावे  
सप्तहि १ दूडेहि सप्तहि २ भवगेहि सप्तहि २ पासाववदेहि सप्तहि पतेवं २ क्षतहि उमाम-  
मित्ताहस्तीहि एवं ते वेव पुण्यविभिर्य जाव विहरुति तंबहा-मेहुत्तरा १ भेद्यो  
२ मुमेत्ता ३ मेहमालिम्भी ४ । दुक्त्वा ५ व्याघ्रमिता य ६ वारिदेवा ० अम-  
हगा ० ० १ ॥ तपु वै तासि उद्भुवेयवत्पव्याप्य अस्तुहु रिसाकुमारीमहत्तरिवावे  
पतेवं २ भासपव्य चत्वारि एवं ते वेव पुण्यविभिर्य माविक्त्वा जाव अम्हे वै  
देवाशुभिए । उद्भुवेगवत्पव्यामो अहु रिसाकुमारीमहत्तरिवावे तेवं भगवन्नो  
शिल्पवरस्तु अम्भम्भाहिने व्यरिस्तामो उर्व तुम्हाई य मात्रबर्वतिक्तु उत्तराखुरतिक्त-  
विद्युतीमानां अवाइमन्ति २ ता जाव अम्भम्भाप्त्य वित्तमन्ति २ ता वाव ते विद्य-  
यत्वे द्वारव्य द्वारव्य व्यवतरव्य व्यवतरव्य व्यवतरव्य २ ता विष्यावेव व्युत्तुमन्ति एवं  
पुण्यम्भंसि पुण्यम्भ वासेवी वासिता वाव अम्भम्भवर वाव द्विक्त्वामित्तम-  
व्यवोम्भ चौर्ति २ ता भेदेव मय्यां शिल्पवरे शिल्पवरमाया य तेवेव उवाग-  
च्छन्ति २ ता जाव आयम्भमाणीमो परियाम्भमाणीमो विद्युति ० ११३ ॥ तेवं भवेवे  
तेवं समएर्व पुण्यम्भाप्त्यवत्पव्यामो अहु रिसाकुमारीमहत्तरिवावे सप्तहि १  
दूडेहि तहेव वाव विहरुति तंबहा-मेहुत्तरा य १ भन्ता २ भासपव्या ३ वैद्य-  
ददेवा ४ । विद्यवा य ५ वैद्यवस्ती ६ भवन्ती ७ अफाशिवा ८ ॥ १ ॥ तेवं  
ते वेव वाव तुम्हाई व भात्रबर्वतिक्तु भगवन्नो शिल्पवरत्य शिल्पवरमायाए व  
पुरतिमेवं आप्तुहत्त्वमव्यामो आयम्भमाणीमो परियाम्भमाणीमो विद्युति । तेवं

कालेण तेण समएण दाहिणस्यगवत्थव्वाओ अटु दिसाकुमारीमहत्तरियाओ तहेव जाव विहरंति, तजहा-समाहारा १ सुप्पद्मणा २, सुप्पबुद्धा ३ जसोहरा ४। लच्छ-मई ५ सेसवई ६, चित्तगुता ७ वसुधरा ८ ॥ १ ॥ तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइ-यव्वतिकदु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य दाहिणेण भिंगारहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्ति । तेण कालेण तेण समएण पचत्थि-मरुयगवत्थव्वाओ अटु दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं २ जाव विहरंति, त०-इलादेवी १ सुरादेवी २, पुहवी ३ पउमावई ४ । एगणासा ५ णवमिया ६, भदा ७ सीया य ८ अट्टमा ॥ १ ॥ तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइयव्वतिकदु जाव भग-वओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य पचत्थिमेण तालियटहत्थगयाओ आगायमा-णीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्ति । तेण कालेण तेण समएण उत्तरिलरुयगवत्थ-व्वाओ जाव विहरंति, तजहा-अलयुसा १ मिस्सकेसी २, पुण्डरीया य ३ वारुणी ४ । हासा ५ सब्बप्पभा ६ चेव, सिरि ७ द्विरि ८ चेव उत्तरओ ॥ १ ॥ तहेव जाव वन्दिता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य उत्तरेण चामरहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्ति । तेण कालेण तेण समएण विदिसि-रुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ जाव विहरंति, तंजहा-चित्ता य १ चित्तकणगा २, सतेरा ३ य सोदामिणी ४ । तहेव जाव ण भाइयव्वतिकदु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य चउसु विदिसासु दीवियाहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठन्तित्ति । तेण कालेण तेण समएण मज्ज-मरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं २ क्रूडेहिं तहेव जाव विहरंति, तजहा-रुया रुयासिया चेव, सुरुया रुयगवई । तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइयव्वतिकदु भगवओ तित्थयरस्स चउरगुलवज्ज णाभिणाल कप्पन्ति कप्पेत्ता विय-रग खणन्ति खणित्ता वियरगे णाभि णिहृणति णिहृणित्ता रयणाण य वझराण य पूरेति २ ता हरियालियाए पेढ बन्वति २ ता तिदिसिं तओ कयलीहरए विउव्वति, तए ण तेसि कयलीहरगाण वहुमज्जदेसभाए तओ चाउस्सालए विउव्वन्ति, तए ण तेसि चाउस्सालगाण वहुमज्जदेसभाए तओ सीहासणे विउव्वन्ति, तेसि ण सीहासणां अयमेयाख्वे वण्णाकासे पण्णते सख्वो वण्णगो भाणियव्वो । तए ण ताओ रुयगमज्जवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तराओ जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छन्ति २ ता भगव तित्थयर करयल-संपुडेण णिहृन्ति तित्थयरमायर च वाहाहिं णिहृन्ति २ ता जेणेव दाहिणिले कयलीहरए जेणेव चाउस्सालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छन्ति २ ता भगव

तित्पर तित्परमायर च सीहासुने पिरीयावेति २ ता समपागसहस्रपागेहि  
टिटेहि अम्बोंति २ ता मुरमिता गभवस्तुपूर्णं उम्भोंति २ ता भगवं तित्पर  
करम्भस्तुपूर्णे तित्परमायर च बाहाहि गिर्वन्ति २ ता वेगेव पुरतिमिते क्षम्भ-  
हरए जेवेव चावस्ताक्षर जेवेव सीहासुने तेवेव उवागच्छन्ति उवागच्छन्ति ता मर्वं  
तित्पर तित्परमायर च सीहासुने पिरीयावेति २ ता शिर्हि उद्देहि मजावेति  
उवाहा-नान्वोद्देहै १ पुष्पेवदपूर्णं २ शुद्धोदपूर्णं ३ मजाविता सम्भवस्तुपूर्णे  
करेति २ ता ममवं तित्पर करम्भस्तुपूर्णे तित्परमायर च बाहाहि गिर्वन्ति २ ता  
जेवेव उत्तरिते क्षम्भौद्दरए जेवेव चावस्ताक्षर जेवेव सीहासुने तेवेव उवा-  
म्भुन्ति २ ता ममवं तित्पर तित्परमायर च सीहासुने पिरीयाविति २ ता  
भामिभोगे देवे सदाविति २ ता पर्वं भयासी-किप्पामेव मो देवाखुपिता । तु-  
हिमन्तामो चासहरपम्भयामो गोषीस्त्वदणक्षुर्वं साहरण, तप् चं ते भामिभोगा  
देवा ताहि इगम्भाक्षवत्वम्भाहि चवहि दिवाक्षमारीमहातरित्याहि एवं तुता सुमापा  
उद्दद्द जात तिभएवं वयनं पवित्र्यन्ति २ ता किप्पामेव तुहाहिमहन्तामो चास-  
हरपम्भयामो चरसार्वं गोषीस्त्वन्दणक्षुर्वं साहरन्ति तप् चं तामो मञ्जियम्भय-  
वात्पम्भयामो चतारि दिवाक्षमारीमहातरित्यामो चरसं करेन्ति २ ता अरणि वर्तेति  
अरणि चक्रिता चरएवं अरणि महिति २ ता अणि पावेति २ ता अणि उद्द-  
करेति २ ता गोषीस्त्वन्दणक्षुर्वे पवित्र्यन्ति २ ता अणि चक्रासंति २ ता भूरेम्भ-  
करेति २ ता रैक्षयापोइलिम्भं वंकित वन्मेता यागमपिरक्षमतिविते तुविते  
पाहाजवाहे पाहाव भयामो तित्परस्त अम्भग्नूमेति वित्तियाविति भवठ ममवं  
पम्भयात्प १ । तप् चं तामो इगम्भाक्षवत्वम्भामो चतारि दिवाक्षमारीमहात-  
यामो ममवं तित्पर करम्भस्तुपूर्णे तित्परमायर च बाहाहि विवृन्ति विविता  
जेवेव भगवामो तित्परस्त अम्भग्नूमेते तेवेव उवागच्छन्ति २ ता तित्परमायर  
सवविवेति पिरीयाविति पिरीयाविता भयवं तित्पर मात्प । पादे उवाति ठिरिता  
आगवमाणीओ परिगाक्माणीओ विद्वन्तीति ॥ ११४ ॥ तेवेव उवेत्य तर्वं उमएवे  
सद्गे नामं इविरे देवाता वक्षयाणी पुर्वे सद्गेत्य सात्सन्त्वे भयवं पापमाप्ते  
दाहिमहूम्भेगाहितै वर्तीसविमायाकासुसमस्तसाहितै एरवणवाहण तुरिते अरणे-  
वरत्पवरे आम्भमाम्भडै जवहेमवाहित्यवच्छसुण्डमिलिहिमत्वयेदे भास्तर  
वाही पम्भववयमासे महित्वै महाक्षे महावसे महावागे मही-

१ चण कम्भेव क्षुद्रावं भरस्त्वावं मर्वति तं तारित २ मर्सेति वा भयेति वा  
भूति वा रक्षाति वा प्राणा ३ जीवेति वाक्षण वंपिवर्ती भरस्त्वोहिता वै ।

सोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्षसि सीहा-  
सणसि से ण तत्थ वर्तीसाए विमाणावाससयसाहस्रीण चउरासीए सामाणि-  
यसाहस्रीण तायत्तीसाए तायत्तीसगण चउण्ह लोगपालाण अट्टण्ह अगमहि-  
सीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चउण्ह  
चउरासीण आयरक्खदेवसाहस्रीण अणोसिं च वहूण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण  
देवाण य देवीण य आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च  
कारेमाणे पालेमाणे महया हयणद्वगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुइगपहुपडहवाइय-  
रवेण दिव्वाइ भोगभोगाई भुजमाणे विहरइ । तए ण तस्स सक्षस्स देविंदस्स  
देवरण्णो आसण चलइ, तए ण से सळ्के जाव आसण चलिय पासइ २ ता ओहिं  
पउजड पउजित्ता भगव तित्थयरं ओहिणा आमोएइ २ ता हट्टुट्टुचित्ते आणदिए  
पीइमणे परमसोमणसिसए हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयक्यवकुसुमचचुमालहय-  
ऊसवियरोमकूचे वियसियवरकमलणयणवयणे पयलियवरकडगतुडियकेळरमउडे  
कुण्डलहारविरायतवच्छे पालम्बपलम्बमाणघोलतभूसणधरे ससभम तुरिय चवल सुरिंदे  
सीहासणाओ अब्मुडेइ २ ता पायपीढाओ पच्चोरहइ २ ता वेश्वलियवरिट्टिरिट्टुअजणणि-  
उणोवियमिसिमिसितमणिरयणमडियाओ पाउयाओ ओमुयइ २ ता एगसाढियं उत्तरा-  
सग करेइ २ ता अजलिमउलियगहत्ये तित्थयराभिमुहे सत्तटु पयाइ अणुगच्छइ २ ता  
वाम जाणु अचेइ २ ता दाहिण जाणु धरणीयलसि साहटु तिक्खुत्तो सुद्धाण  
धरणीयलसि णिवेसेइ २ ता ईसिं पक्कुण्णमइ २ ता कडगतुडियथभियाओ भुयाओ  
साहरड २ ता करयलपरिगहिय० सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी—गमोऽत्यु  
ण अरहताण भगवन्ताण, आइगराण तित्थयराण सयंसवुद्धाण, पुरिसुत्तमाणं पुरिस-  
सीहाण पुरिसवरपुण्डरीयाण पुरिसवरगन्धदृष्टीण, लोगुत्तमाणं लोगणाहाण लोग-  
हियाण लोगपईवाण लोगपजोयगराण, अभयदयाण चक्खुदयाण भगदयाणं  
सरणदयाण जीवदयाण वोहिदयाण, धम्मदयाण धम्मदेसयाण धम्मणायगाण  
धम्मसारहीण धम्मवरचाउरन्तचक्कवटीण, वीवो ताण सरण गई पइट्टा अपडिहय-  
वरनाणदसणधराण वियद्वित्तमाण, जिणाण जावयाण तिण्णाणं तारयाण बुद्धाण  
वोहयाण मुत्ताण मोयगाण, सब्बण्णूण सब्बदरिसीण सिवमयलमस्यमणन्तमक्खय-  
मव्वावाहमपुणरावित्तिसिद्धिगहणामधेय ठाण सपत्ताण णमो जिणाण जियभयाण,  
णमोऽत्यु ण भगवओ तित्थगरस्स आइगरस्स जाव सपावित्तकामस्स, वदामि ण  
भगवन्त तत्थगय इहगए, पासउ मे भयव ! तत्थगए इहगयतिकट्टु वन्दइ णमसइ  
व० २ ता सीहासणवरसि पुरत्याभिमुहे सणिणसणे, तए ण तस्स सक्षस्स देविंदस्स

देवरत्नो अक्षेवाहये बाब उन्होंने समुप्पत्तिरा-उपम्भे दहनु भो । जन्मुद्दीवे शीर्ष  
मगर्व तित्पवरे तं जीमेयं तीवप्पुण्ड्रमजागायार्वं सहार्वं देवराईर्व  
तित्पवरार्णं जम्मणमस्त्रीम करेतए, तं गप्पमि न अहैपि मगवभो तित्पवरस्स  
जम्मणमहिमं द्वेमितिमहु एवं संपेहैइ २ ता हरिणेयमसि पाकतार्जीयाहिर्वं एव  
सहानेइ ३ ता एवं क्षासी-ठिप्पामेव भो देवालुप्पिया । सभाए शुहम्माए मेवोप्प  
ठियर्यमीरमहुरयरसर्वं बोवधपरिमव्वन् तुचेत्ते सुसरे यंते तिकहृद्ये रक्षेमार्व १  
महावा महावा छर्वं उग्गेसुमाने २ एवं द्वयाहि-माणेहै वं भो । उके देविदे  
देवरात्मा गच्छ वं भो । उके देविदे देवरात्मा जन्मुद्दीवे २ मगवभो तित्पवरस्स  
जम्मणमहिमं करितए, तं तुच्चेत्ति वं देवालुप्पिया । उमित्तीए सम्बुद्धीए सम्बद्धेन  
सम्बसमुवएन सम्बायरेवं सम्बिभूरीए सम्बसंभमेन सम्बवाहप्पहि सम्बेवरोहैवै  
सम्बाल्लभरकिम्भुराए सम्बद्धिमहुरयरसर्वं महावा शुहीए जन्म रेवं  
विषयरियाक्षर्यपरियुक्ता सबाहं १ जाविमाजाहपाहपाहं तुम्हा समाजा अक्षर-  
परिणीर्व भेव सदस्स बाब अंतियं पाहम्ममहु, तप वं से हरिमेयमभी देवे पाव-  
तार्जीयाहिर्वं सहेवं २ व्यद एवं तुते स्फाने छद्मुक्त बाब एवं देवोति बालाए  
विषयर्वं व्यज पदिक्षुणेइ ३ ता सक्षस्स १ अंतियामो पदिक्षियमहं २ ता वेवेव  
सभाए शुहम्माए मेवोपरसिकाम्भीरमहुरयरसर्वं बोवधपरिमव्वन् तुचेत्ता बाबा  
तेकेव चावागच्छइ ३ ता तं मेवोक्तरसिकाम्भीरमहुरयरसर्वं बोवधपरिमव्वन् तुचेत्ते  
भट्टं तिकहृद्या चावानेहै, तप वं दीसे मेवोक्तरसिकाम्भीरमहुरयरसर्वाए बोवधपरि  
मव्वनाए द्वेचेत्ता एव्वाए विकहृद्यो चावात्तियाए समाजीए सोइमे व्यप्पे व्यवही  
पर्गतीहि वारीघ्यमिमाजावाहुसवक्तव्यस्तेहि व्यवहार्वं पर्गतार्वं वारीवं क्षदासवक्तव्यस्ते  
जम्मणमग्ग नव्वक्षणाराव कार्त्तं फाराहाहि जावि तुला तप वं शोहम्मो व्यप्पे व्यवहार्वं  
विमायमिन्दुत्ता वियसहस्रमुक्तिवायपाहम्मात्तमहस्ससेहुके जाए जावि देवता  
तप वं देवि घोर्ममङ्गवासीवं व्यूर्वं विमायिवाव देवता व देवीव व  
एग्नतराहपसात्तिवायप्पमात्तिवायप्पमुक्तिवायं सुसुरज्ञारात्तिवायत्तमेत्तमुरेवक्षर्वं  
पदितोहये तप उमाने घेतन्नक्षेत्रद्विष्ट्वायप्पमात्तिवायत्तमेत्तमायवार्वं से पाव-  
तार्जीवाहिर्वं देवे तंति व्यावर्वं विद्वितपदित्तेत्ति समाव्यसि व्यव ठव रेवे ३  
तपहि २ महावा महावा सीर्वं उग्गेसेमाने ४ एवं क्षासी-हस्त । द्वयेत्तु भाल्ले  
वहये घोर्ममङ्गवासी विमायिवाव देवीओ व शोहम्मङ्गवासो इवयो व्यवही  
दिव्यत्तुही-जावानेह वं भो । उद्दे तं भेव बाब अंतियं पाहम्मवाहार्वि तप वं ते देवा  
देवीओ व एग्नस्तु चोत्ता छद्मुक्त बाब विवया अप्पेगाहया व्यवहार्विवे एवं अमेव-

णवत्तिय सक्कारवत्तिय सम्माणवत्तिय दंसणवत्तियं जिणभत्तिरागेण अप्पेगडया त जीयमेय एवमाइत्तिकटु जाव पाउब्भवर्तिति । तए ण से सक्के डेविंदे डेवराया ते वेमाणिए देवे देवीओ य अकालपरिहीण चेव अतिय पाउब्भवमाणे पामड २ ता हट्ट० पालय णामं आभिओगियं देव सहावेड २ ता एव व्यासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगसहस्रभसयसणिंविटु लीलट्टियसालभजियाकलिय ईहामियउसभ तुरगणरमगरविहगवालगकिण्णरस्तसरभचमरकुजरवणलयपउमलयभत्तिचित्त खभुग-यवइरवेड्यापरिगयाभिरामं विजाहरजमलजुयलजतजुत्तपिव अच्छीसहस्रमालिणीयं रुवगसहस्रकलिय भिसमाण भिविसमाण चक्खुलोयणलेस सुहफास सस्त्रीयरुव घण्टावलियमहुरमणहरसर सुह कन्त दरिसणिज णिउणोवियमिसिमिसितमणिरयण-घटियाजालपरिकिलत जोयणसहस्रविच्छिण पञ्चजोयणसयमुव्विद्ध सिगधं तुरियं जडणणिव्वाहि-दिव्व जाणविमाणं विउव्वाहि २ ता एयमाणित्यं पच्चप्पिणाहि ॥ १५ ॥ तए ण से पालयदेवे सक्षेण डेविंदेण देवरणा एव वुते समाणे हट्टहट्ट जाव वेउवियसमुग्धाएण समोहणिता तहेव करेइ इति, तस्स ण दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तब्बो तिसोवाणपडिरुवगा वण्णओ, तेसि णं पडिरुवगाण पुरओ पत्तेय २ तोरणा वण्णओ जाव पडिरुवा, तस्स ण जाणविमाणस्स अतो वहुसमरमणिजे भूमि-भागे०, से जहाणामए-आलिंगापुक्खरेइ वा जाव दीवियच्चम्मेइ वा अणेगसकुकीलग-सहस्रवियए आवडपचावडसेहिप्पसेहिसुवियसोबत्तियवद्द्वमाणपूसमाणवमच्छडगम-गरडगजारमारफुलावलिपउमपत्तसागरतरगवसतलयपउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविहपव्ववणेहिं मणीहिं उवसोभिए, तेसि णं मणीण वणे गन्धे फासे य भाणियवे जहा रायप्पसेणइज्जे, तस्स णं भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभाए पेच्छाघरमण्डवे अणेगखम्भसयसणिंविटु वण्णओ जाव पडिरुवे, तस्स उल्लोए पउमलयभत्तिचित्ते जाव सब्बतवणिजमए जाव पडिस्त्वे, तस्स ण मण्डवस्स वहुसमरमणिजस्स भूमिभागस्स वहुमज्जदेसभागसि मह एगा मणिपेहिया० अटु जोयणाइ आयमविक्खम्भेण चत्तारि जोयणाह बाहुलेण सब्बमणिमई वण्णओ, तीए उवरि मह एगे सीहासणे वण्णओ, तस्सुवरि मह एगे विजयदूसे सब्बरयणामए वण्णओ, तस्स मज्जदेसभाए एगे वद्दरामए अकुसे, एत्थ ण मह एगे कुम्भके सुत्तादामे, से ण अणोहिं तद्धुच्चतप्पमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुम्भकेहिं मुत्तादामेहिं सब्बत्तो समन्ता सपरिकिलते, ते ण दामा तवणिजल्लूसगा सुवण्णपयरगमणिया णाणामणिरयणविविहारद्धहारउवसोभियसमुदया ईसिं अणमणमसपत्ता पुच्चाह-एहिं चाएहिं मन्द २ एहज्जमाणा जाव निव्वुइकरेण सदेण ते पएसे आपूरेमाणा २

जाव भैरव २ उष्णोभेदाग्रा ३ लिंगुरि तस्य ये सीहासप्तस्तु अवदत्तरेष्व उपर्ये  
उत्तरास्पुरत्विभेदं पूर्व ये सहस्रसु अठरासीए शामाभियसाहस्रीये अठरासीम्भ-  
सप्तस्तुस्सीयो पुरत्विभेदं अनुर्व अग्न्यमहिंशीये पूर्व वाहिनपुरत्विभेदं अविकार  
परिसाए तुवास्तुर्व देवसाहस्रीये वाहिनेभे मजिकामाए चवदस्तुर्व देवसाहस्रीये  
वाहिनपुरत्विभेदं वाहिनपरिसाए सोचस्तुर्व देवसाहस्रीये ववरियमेष्व यत्वं  
भविवाहिर्विगति तए ये तस्य सीहासप्तस्तु अठहिंसि अठर्व अठरासीये आवरक्ष-  
देवसाहस्रीये एवमार्व विभातिम्भं सुरिमामममेष्व जाव ववपियामिति ॥ ११६ ॥  
तए ये से सके हुद जाव व्यियए रिष्व विजेदामिनाममग्नुर्व सम्बाल्कारविमुचिते  
उत्तरवेत्तव्यिये इव विठ्ठल २ ता अनुर्व अग्न्यमहिंशीहि उपरिशाराहि वाहानीये  
मन्मध्याधीएय य सक्ति ते विमाये असुप्यवाहिनीकरेमामे २ पुष्टिक्लेन विसोकामेन्व  
दुर्दह २ ता जाव सीहासप्तसि पुरुषामिसुहे सुभित्वम्भेति एवं जाव शामाभिक-  
वि उत्तरेण विसोकामेन्व दुर्दहिता फटेवं २ पुष्टिक्लेन्व भद्रासमेष्व विशीमिति वन्देत्ता  
देवा य देवीओ य वाहिनिक्लेन विसोकामेन्व दुर्दहिता तहेव जाव विशीमिति तए ये  
तस्य सहस्रसु तंति दुर्दहस्य इमे अनुद्दुम्भगङ्गा पुरुषो वाहालुपुष्टीए संपद्धिः  
तवप्ततर च ये पुष्टिक्लेन्वमिगार दिव्या च छत्रपदाया स्त्रामरा य वृत्तपत्य  
आव्येषदरिसमिक्षा वान्दुबवीत्वयेवमन्ती च सम्भिया यथावत्तम्भुत्तिर्वही पुरुषो  
वाहालुपुष्टीए संपद्धिवा तवप्ततर च छत्रमिगार तवप्ततर च ये वाहामवाहस्तु  
संठिवमुचितिद्वपरिष्ठुम्भुत्तिपद्धिए विक्षिते वन्देयवरपद्धाव्यमुद्भवीत्वाहस्तुपरिमिति  
वामिरामे वावद्यविवेष्वयेवकर्तीपद्धाव्यमुद्भवाइच्छात्ताक्षिए दुर्वी गम्यमवम्भुत्तिर्वही  
विहर ओवानसाहस्रम्भुत्तिए महागहात्तए महिदज्जपुरुषो वाहालुपुष्टीए संपद्धिए  
तवप्ततर च ये सहवयेवत्यपरियन्त्यमुख्याया सुखाल्क्ष्यविमुहिया यव विविवा यव  
भवियाहिक्षयो जाव संपद्धिवा तवप्ततर च य वहेव आभिमोगिया देवा य देवीओ य  
सप्तहि संपद्धिवा वाव विलोकेहि छहे केविहि देवसम्भं पुरुषो य मम्भामो य वहा  
तवप्ततर च ये वहेव सोहम्भम्भवाही देवा य देवीओ य संभिहीए जाव दुर्दह  
सुमाणा ममाभो य जाव संपद्धिया तए चे से सके तेवं प्यामिकर्तीतिक्षोर्व  
जाव महिदज्जर्वर्व पुरुषो पक्षित्वामामेवं अठरासीए सामाभिव जाव परिषुद्धे  
संभिहीए जाव रेवेव सोहम्भम्भसु क्षप्तसु मन्महामज्जोर्व ते रिष्व रेविहि जाव  
उपदेमाने २ जेमेव सोहम्भम्भसु क्षप्तसु उत्तिपि विजात्ममो तेमेव वावपत्य  
उवागाहिता वोवपत्यवाहसिसएहि विमाहेहि ओवमामामे २ ताए जविद्वाए जाव  
देवगाहिए वीरेवदमामे २ विरेममर्विजामर्व दीवसमुहार्व मन्महामज्जोर्व लेवेव

णन्दीसरवरे दीवे जेणेव दाहिणपुरतिथमिहे रइकरगपब्बए तेणेव उवागच्छइ २ ता  
एव जा चेव सूरियाभस्स वत्तव्यया णवर सक्काहिगारो वत्तव्यो जाव तं दिव्ब देविष्ठि  
जाव दिव्ब जाणविमाण पडिसाहरमाणे २ जाव जेणेव भगवओ तित्थयरस्स  
जम्मणणगरे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छइ २ ता  
भगवत्तो तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स उत्तरपुरतिथमे दिसीभागे चउरगुलमसप्त  
धरणियले त दिव्ब जाणविमाण ठवेइ २ ता अद्वहिं अगगमहिसीहिं दोहिं अणीएहिं  
गन्धव्वाणीएण य णद्वाणीएण य सद्धि ताओ दिव्बाओ जाणविमाणाओ पुरतिथमिहेण  
तिसोवाणपडिरुवएण पच्चोरुहइ, तए ण सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउरासीइ-  
सामाणियसाहस्रीओ दिव्बाओ जाणविमाणाओ उत्तरिलेण तिसोवाणपडिरुवएण  
पच्चोरुहति, अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिव्बाओ जाणविमाणाओ दाहिणिलेण  
तिसोवाणपडिरुवएण पच्चोरुहतिति । तए ण से सक्के देविन्दे देवराया चउरासीए  
सामाणियसाहस्रिएहिं जाव सद्धि सपरिखुडे सव्विहुणीए जाव दुदुहिणिधोसणाइय-  
रवेण जेणेव भगव तित्थयरे तित्थयरसाया य तेणेव उवागच्छइ २ ता आलोए  
चेव पणाम करेइ २ ता भगव तित्थयर तित्थयरमायर च तिकखुत्तो आयाहिण-  
पयाहिण करेइ २ ता करयल जाव एव वयासी-णमोऽत्यु ते रयणकुच्छिधारिए एव  
जहा दिसाकुमारीओ जाव धणासि पुण्णासि त कथत्यासि, अहण देवाणुप्पिए !  
सक्के णाम देविन्दे देवराया भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामि, त ण  
तुञ्चमाहिंण भाइयन्वतिकहु ओसोवणि दलयह २ ता तित्थयरपडिरुवग विउव्वह २ ता  
तित्थयरमाउयाए पासे ठवेइ २ ता पञ्च सक्के विउव्वह विउव्वित्ता एगे सक्के भगव  
तित्थयर करयलसपुडेण गिष्हह २ एगे सक्के पिटुओ आयवत्त धरेइ दुवे सक्का उभओ  
पासि चामरखखेवं करेन्ति एगे सक्के पुरओ वज्जपाणी पक्कहुइत्ति, तए ण से सक्के  
देविन्दे देवराया अणोहिं वहूहिं भवणवइवाणमन्तरजोइसवेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि  
य सद्धि सपरिखुडे सव्विहुणीए जाव णाइयरवेण ताए उकिहुए जाव वीईवयमाणे २  
जेणेव मन्दरे पब्बए जेणेव पठगवणे जेणेव अभिसेयसिला जेणेव अभिसेयसीहासणे  
तेणेव उवागच्छइ २ ता सीहासणवरगए पुरत्याभिमुहे सणिणसणोत्ति ॥ ११७ ॥  
तेण कालेण तेण समएण ईसाणे देविन्दे देवराया सूलपाणी वसभवाहणे सुरिन्दे  
उत्तरहुलोगाहिवई अद्वावीसविमाणवाससयसहस्राहिवई अरयवरवत्यधरे एव जहा  
सक्के इम णाणत्त-महाघोसा घण्टा लहुपरक्कमो पायत्ताणियाहिवई पुप्फओ विमाण-  
कारी दक्खिखणे निज्जाणमगे उत्तरपुरतिथमिलो रइकरगपब्बओ मन्दरे समोसरिओ  
जाव पञ्चुवासइति, एव अवसिद्धावि इदा भाणियव्वा जाव अञ्जुओति, इम णाणत-

चतुराई असीहै बाबतरि सद्दी य सद्दी य । पञ्जा चतासीसा थीसा बीसा एवं  
सहस्रा ५ । ॥ एए सामायिकार्थ चतीस्तुतीसा चारसू चतरो सप्तसहस्रा ।  
पञ्जा चतासीसा छ्य सहस्रा॒रे ५ । ॥ आषयपाणकङ्गे चतारि सवा-  
उत्तराशुए तिभि । एए विमार्जने इमे जाषयिमाज्जरी चेता तंबहा—पञ्च ॥  
पुष्के य २ सोनपसे ३ तिरिक्कठे य ४ बैदियाकौ ५ । कामयमे ६ पीडगम ७  
मधोरये ८ विमङ्ग ९ सम्बद्धोमे १ ॥ १ ॥ १ ॥ सोइम्ममार्थ सुषुमारणार्थ वैम-  
स्येकार्थ महामुद्दयार्थ पाषयगार्थ ईदार्थ सुषेदा चटा इरिएमासेसी पाषयाचीया  
दिवहै उत्तरिया विजाषमूमी दाहिजपुरतिमिले राष्ट्ररापम्बए, ईसाणगाव भावीर  
क्षेत्रासहस्रारम्भुययाय व ईदाय महापेदा चटा लुफलमो पाषयाचीयादिवहै  
दिविमिले विजाषम्मगे उत्तरपुरतिमिले राष्ट्ररापम्बए, परिसा व चहा जीवामि-  
शमे वाषरक्ता सामायिकचतुर्मुणा सम्बेदि जाषयिमाणा सम्बेदि जोवजम्बसहस्र-  
विठ्ठला उत्तेष्ठे सुषिमाच्चप्पमाणा महिज्जस्या सम्बेदि जोवजसहस्रिमा सह  
वज्ञा मन्द्रे समोपरति बाब पञ्चासीति ॥ ११८ ॥ तेज कालेवं तेजं सुमएवं  
चमरे अमृतिन्द्र अमुरराया चमरज्जाए राजहाणीए समाए सुहम्माए चमरिः  
सीहासर्वसि चउस्तुतीए सामायिमाहसीहै बाबरीयाए दायरीसेहै चउहै अभे-  
पालेहै प्लहै अम्ममहिसीहै सपरिजाराहै तिहै परिसाहै चतहै अविएहै चतहै  
अपिमाहिज्जहै चउहै चउस्तुतीहै भाषरक्तदेवयात्सीहै अप्पहै व जहा सहे चवरे  
इमे यालर्ह-तुमो पाषयाचीयादिवहै ओषस्त्रा चटा विमार्ज फ्यार्द जोवजसह-  
स्माह महिज्जस्यो फ्यामेवजसयार्थ विमाषमारी आमिओमिले देशे अवलिंगे ते  
जेव बाब मन्द्र चमोपरद पञ्चासीति । तेजं कालेवं तेजं सुमएवं वडी अमृतिन्द्रे  
अमुरराया एवम्ब चवरे सद्दी सामायिमाहसीमो चतुर्गुणा भाषरक्त्या माषमुणो  
पाषयाचीयादिवहै महामेहस्सरा चटा देशे ते चव दरियाओ जहा जीवामिशमे ।  
तेजं कालेवं तेजं सुमएवं चवरे तहेव यालर्ह-छ सामायिमाहसीमो छ अम्ममहि-  
सीयो चउस्तुता भाषरक्त्या मेहस्सरा चटा मूरुणो पाषयाचीयादिवहै विमार्ज पर्य-  
वीस जोवजम्बसहस्रार्थ महिज्जस्यो अहाज्जर्व जोवजसयार्थ एवममृतिन्द्रजिमाण मम  
जवास्त्रियाय पवर अमुरार्थ ओषस्त्रा चटा भागार्ज भक्तस्त्रा उषम्बार्थ ईस्त्ररा  
विक्षुर्ण बाबस्त्रय भवीर्ण मैत्रुस्त्रय विसार्थ मंत्रुकोमा उदहीन श्रस्त्रय वीरार्थ  
ममुरस्त्रय बाबक्त्या विस्त्रय भवियार्थ भविष्योसा चउसद्दी सद्दी चमु छ्य सहस्रा  
उ अमुररायार्थ । सामायिमा उ एए चउस्तुता भाषरक्त्या व ॥ १ ॥ दर्हिज्जर्व  
पाषयाचीयादिवहै मारुणो उत्तरिकार्थ इक्षोति । वाषम्बन्द्रजोवजिमा विवम्बा एवं

ચેવ, ણવરું ચત્તારિ સામાણિયસાહસ્સીઓ ચત્તારિ અગગમહિસીઓ સોલસ આયરક્ખ-  
સહસ્સા વિમાણા સહસ્સ મહિન્દજ્ઞયા પણવીસ જોયણસંઘણા દાહિણાણ મજુસ્સરા  
ઉત્તરાણ મજુઘોસા પાયતાણીયાહિવર્દ્ધ વિમાણકારી ય આભિયોગ દેવા જોડિસિયાણ  
સુસ્સરા સુસ્સરાણિઘોસાઓ ઘણાઓ મન્દરે સમોમરણ જાવ પણુવાસતિત્તિ ॥ ૧૧૯ ॥  
તએ ણ સે અચ્છુએ ટેવિન્દે દેવરાયા મહ દેવાહિવે આભિયોગે દેવે સહાવેદ ૨ તા એવ  
વયાસી-ચિપ્પામેવ ભો દેવાળુપ્યિયા । મહત્થ મહરઘ મહરિહ વિઉલં તિત્થયરાભિસેયં  
ઉવટુવેહ, તએ ણ તે અભિયોગ દેવા હદ્ધુદ્ધ જાવ પડિસુણિતા ઉત્તરપુરાઠિમ દિસીમાગ  
અવક્ષમન્તિ ૨ તા વેઉવ્ચિયસમુગ્ધાએણ જાવ સમોહણિતા અદૃસહસ્સ સોવણિયકલ-  
સાણ એવ રૂપમયાણ મળિમયાણ સુવણણરૂપમયાણ સુવણણમળિમયાણ રૂપમળિમયાણ  
સુવણણરૂપમળિમયાણ અદૃસહસ્સ ભોમિજાણ અદૃસહસ્સ ચન્દણકલસાણ એવ  
ભિગારાણ આયુસાણ થાલાણ પાઈણ સુપઇદુગાણ ચિત્તાણ રયણકરડગાણ વાય  
કરગાણ વિઉચ્વતિ ૨ તા સીહાસણછતચામરતેલ્લસમુગ જાવ સરિસવસમુગા  
તાલિયટા જાવ વીયણા વિઉચ્વતિ વિઉચ્વિતા સાહાવિએ વેઉવ્ચિએ ય કલસે જાવ  
વીયણે ય ગિણ્હન્તા જેણેવ ખીરોદએ સમુદ્દે તેણેવ આગમ્મ ખીરોદં ગિણ્હન્તિ ૨ તા  
જાડ તત્થ ઉપ્પલાઇ પડમાઇ જાવ સહસ્સપત્તાઇ તાડ ગિણ્હતિ, એવ પુક્ખરોદાઓ  
જાવ ભરહેરવયાણ માગહાડતિત્થાણ ઉદગં મણ્ય ચ ગિણ્હન્તિ ૨ તા એવ ગગાઈણ  
મહાપણેણ જાવ ચુલ્લાહિમવન્તાઓ સબ્વતુવરે સબ્વપુષ્ફે સબ્વગનંધે સબ્વમહે જાવ  
સબ્વોમહીઓ સિદ્ધત્થએ ય ગિણ્હન્તિ ૨ તા પડમદ્ધાઓ દહોદગ ઉપ્પલાઈણ ય૦, એવ  
સબ્વકુલપવ્યએસુ વટ્ચૈયેદ્ધેસુ સબ્વમહ્દેસુ સબ્વવાસેસુ સબ્વચક્ષવિજએસુ વક્રવાર-  
પવ્યએસુ અતરણિસુ વિમાસિજા જાવ ઉત્તરકુદ્ધે જાવ સુદસણમહ્દ્ધમાલવણે સબ્વતુવરે  
જાવ સિદ્ધત્થએ ય ગિણ્હન્તિ, એવ પન્દણવણાઓ સબ્વતુવરે જાવ સિદ્ધત્થએ ય સરસ  
ચ ગોસીમિચન્દણ દિચ્ચ ચ સુમણદામ ગેણ્હન્તિ, એવ સૌમણસપટગવણાઓ ય સબ્વ-  
તુવરે જાવ સુમણદામ દદ્રમલ્યસુગનંધે ય ગિણ્હન્તિ ૨ તા એશાઓ મિલતિ ૨ તા  
જેણેવ માર્મા તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ ૨ તા મહત્થ જાવ તિત્થયરાભિસેય ઉવટુવેતિત્તિ  
॥ ૧૨૦ ॥ તએ ણ સે અચ્છુએ ટેવિન્દે દસહિ સામાણિયમાહસ્સીહિં તાયતીમાએ  
તાયતીમએહિ ચરહિં લોગપાલેહિ તિહિ પરિનાહિં સત્તહિ અળિએહિ સત્તહિ અળિયા-  
હિવર્દ્ધાટ ચત્તાર્નીયાએ આયરકરદેવસાહસ્સીહિં મદ્ધિ સપારિચુડે તેહિં માભાવિએહિ  
વેઉવ્ચિએહિ ય ગ્રક્ષમલપદ્ધાણેહિં તુરમિવરચારિપડિપુણેહિં ચન્દણ રુચચાએહિં  
અપિદરંગણેસુણેહિં પડમુપણલપિદ્ધાણેહિં કરયલસુકુમાલપરિગહિએહિં અદૃસહસ્સેણ  
ચોરણિયાણ કલમાણ જાવ અદૃશહસ્તુણ ભોમેજાણ જાવ સબ્વોદએહિં સબ્વમદ્ધિ-

नाहि सम्भवरेहि जाव स्मोसहितिदत्तपर्हि समिक्षीए जाव रवेन्ह महावा २ तित्व-  
 चरामिहेएण अग्निचिक्षा, तए वै सामिस्स महावा ३ अग्निर्मयि वृक्षार्थिति  
 इवाइया बैवा उत्तरामारुप्तस्त्रियमया इद्युद्ध जाव वज्रसूक्ष्मार्थी पुराणा विद्युति  
 पैदिलिङ्गा इति एवं विद्यालुसारैष जाव वप्पेगाइया देवा आदियसंमिक्षभोव  
 तित्वसिताद्यसम्मुद्रत्वंतरुचक्षवीहिते छरेन्ति जाव गन्धविमूर्त्ति अप्येष  
 हिरण्यवार्द्ध वाचिति एवं त्रुपञ्चक्षवज्वरामरणपात्पृष्ठक्षमीवक्षमगन्धवक्षण जाव  
 त्रुपञ्चवार्द्ध वाचिति अप्येगाइया हिरण्यविहि भास्ति एवं जाव त्रुपञ्चविहि मात्रति  
 वप्पेगाइया चठविहि कर्त्त जाएन्ति तंश्वात्त्व १ वित्त २ वर्ष ३ शुक्लिं  
 ४ अव्योइया चठविहि नेत्र वापन्ति तंजाहा-उमिस्तर्त १ पाप्यते २ मन्दार्द्व ३  
 रोहतावसार्त ४ अप्येगाइया चठविहि जाह अप्यन्ति तं०-मतिव्य १ दुर्य २  
 आरम्भ ३ मसोले ४ वप्पेगाइया चठविहि अग्निव अग्निष्ठेति तं -विद्युतिये  
 पादिस्त्रये साम्योदयिताइर्य ज्ञोपमज्ञावसाविये अप्येगाइया वातीद्वविहि रित्ये  
 वृद्धिविहि उच्चदेवेन्ति अप्येगाइया उप्पवनिवर्ये निवक्तप्पर्ये सुविद्यप्पारिदं जाव  
 मात्रसंमर्शणार्म रित्ये वृद्धिविहि उच्चसुन्तीति अप्येगाइया तंदेवेति अप्येगाइया  
 लासेन्ति अप्येगाइया पीडेन्ति एवं त्रुपारेन्ति अप्लोदेति वापन्ति सीहार्द्व  
 वापन्ति अप्ये सम्भार्द्व छरेन्ति अप्ये हस्तेविये एवं इतिषुत्तुवाद एवम्-  
 व्याहार्द्व अप्ये वित्तिवि अप्ये उच्चदेवन्ति अप्ये वर्ष्येसन्ति अप्ये वित्त  
 विद्युतिपावदर्द्व वरेन्ति भूमिक्षवेहै दक्षयन्ति अप्ये महावा २ तर्तुव रावेति एवं  
 सबोपा विभागियम्बा अप्ये इहारेन्ति एवं १०१  
 उप्पदेति परिवर्तति वासन्ति तर्तुति वर्तति गवंति विकुल  
 अप्येगाइया वेदुद्विये वर्तति एवं विवर्द्वहण कर्त्तति च  
 अप्ये विभिन्नभूद्व इहार्द्व वित्तिवा पर्वति  
 विवदस्त जाव वर्ष्येसे समन्ता आकावेति  
 वै से असुरिं सपरिकारे सामि लेन्ह महावा महाया  
 वर्ष्येसपरिमादिये जाव मत्वए वर्ष्येवि वृद्ध वर्ष्येव  
 ताहि इहार्द्व जाव वर्ष्येसर्व पठेव वर्षिता जाव  
 वर्ष्येव  
 वैरेव  
 वर्ष्येव  
 वार्ष्येव

णमोऽत्यु ते सिद्धवुद्धणीरथसमैणसमाहियसमत्तसमजोगिमलगत्तणिवभयणीरागदो-  
सणिममणिस्सगणीसलमाणमूरणगुणरथणीसीलसागरमणतमप्पमेयभवियधम्मवरच्चा-  
उरतचक्कवट्टी णमोऽत्यु ते अरहओत्तिकद्व एवं वन्दइ णमसड व० २ ता णच्चासणे  
णाइद्वरे भुस्सूसमाणे जाव पञ्जुवासड, एवं जहा अच्छुयस्स तहा जाव इंसाणस्स  
भाणियव्व, एवं भवणवडवाणमन्तर जोइसिया य सूरपज्जवसाणा सएण परिवारेण  
पतेय २ अभिसिंचति, तए ण से इंसाणे देविन्दे देवराया पञ्च इंसाणे विउब्बइ २ ता  
एगे इंसाणे भगव तित्थयर करयलसपुडेण गिणहइ २ ता सीहासणवरगए  
पुरत्यामिसुहे सणिणसणे एगे इंसाणे पिढुओ आयवत्त धरेड दुवे इंसाणा उभओ  
पासि चामरुक्खेव करेन्ति एगे इंसाणे पुरओ सूलपाणी चिढ्हइ, तए ण से सक्के  
देविन्दे देवराया आभियोगे ढेवे सद्वावेइ २ ता एसोवि तह चेव अभिसेयाणत्ति  
देड तेडवि तह चेव उवणेन्ति, तए ण से सक्के देविन्दे देवराया भगवओ तित्थ-  
यरस्स चउद्विसि चत्तारि धवलवसमे विउब्बेड सेए सखदलविमलणिम्मलदधिघण-  
गोखीरफेणरथयणिगरप्पगासे पासाईए दरिसणिजे अभिरुवे पडिरुवे, तए ण तेसि  
चउह धवलवसभाण अट्ठहिं सिगेहितो अट्ठ तोयवाराओ णिगगच्छन्ति, तए ण  
ताओ अट्ठ तोयवाराओ उद्धु वेहास उप्पयन्ति २ ता एगओ मिलायन्ति २ ता  
भगवओ तित्थयरस्स मुद्दाणसि णिवयति । तए ण से सक्के देविन्दे देवराया  
चउरासीइए सामाणियसाहस्रीहिं एयस्सवि तहेव अभिसेओ भाणियव्वो जाव  
णमोऽत्यु ते अरहओत्तिकद्व वन्दइ णमसड जाव पञ्जुवासड ॥ १२२ ॥ तए ण से  
सक्के डेविंदे देवराया पन्च सक्के विउब्बइ २ ता एगे सक्के भगव तित्थयर करयल-  
सपुडेण गिणहइ एगे सक्के पिढुओ आयवत्त धरेइ दुवे सक्का उभओ पासि चामरुक्खेव  
करेति एगे सक्के वजपाणी पुरओ पक्कहइ, तए ण से सक्के चउरासीइए सामाणिय-  
साहस्रीहिं जाव अणोहि य० भवणवडवाणमतरजोइसवेमाणिएहिं डेवेहिं डेवीहिं य  
सद्वि सपारेयुडे सव्विवट्टीए जाव णाइयरवेण ताए डक्किंद्वाए जेणेव भगवओ तित्थ-  
यरस्स जम्मणणयरे जेणेव० जम्मणभवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छट २ ता  
भगव तित्थयर माऊए पासे ठवेड २ ता तित्थयरपडिरुवग पडिसाहरड २ ता  
ओसोवणि पडिमाहरड २ ता एग मह खोमजुयल कुटलजुयल च भगवओ तित्थ-  
यरस्स उस्सीसगमूले ठवेड २ ता एग मह तिरिदामगड तवणिजलवृगग सुवण्णपय-  
रगमडिय णाणामणिरथणविविहारद्वहारउवसोहियसमुदय भगवओ तित्थयरस्स  
उओयनि णिक्किरवड तण भगव तित्थयरे अणिमिसाए दिट्टीए डेहमाणे २ सुहसुहेण  
अभिगममाणे २ चिढ्हइ, तए ण से सक्के डेविंदे देवराया वेसमण देव मद्ववेड २ ता

एवं बदाई-किष्णामेव मो देवाखुपिमा । बतीसे हिरण्यकोटीओ बतीसे मुख्यमात्रे धीओ बतीसे पदाक्ष बतीसे महार्द दृग्मगे मुमासमनुष्णणज्ञान्वये ज मामव्ये तित्व-वरस्स अम्मण्यमवर्णति साहराहि २ ता एवमाणतिम् पद्मपिलाहि, तए वं से देसमये देवे संदेवं आब विष्णुर्ण व्यथ पद्मध्येष्ट २ ता औमए देवे साहरेह ३ या एवं बदाई-किष्णामेव मो देवाखुपिमा । बतीसे हिरण्यकोटीओ आब भगव्ये तित्वगरस्स अम्मण्यमवर्णति साहराह साहरेता एम्मानतिम् पद्मपिलाहि तए व ठे अम्मां देवा देसमये देवीर्ण एवं बुत्ता समाना इद्धद्व आब किष्णामेव बतीसे हिरण्यकोटीओ आब भगव्ये तित्वगरस्स अम्मण्यमवर्णति साहरेहि ३ ता वेष्मे देसमये देवे तेजेव जाव पद्मपिर्णति तए वं से देसमये देवे देवीर्ण सहे देवीर्ण देवराया आब पद्मपिलाहि । तए वं से दाढे देवीर्ण देवराया हे आमिम्बो देवे साहरेह २ ता एवं बदाई-किष्णामेव मो देवाखुपिमा । भगव्ये तित्वगरस्स अम्मण्यमवर्णति सिंचाळग आब महापापहेतु भगवा २ दरोर्ण उद्गदेतेमाना ३ एवं नाह-हौरि धूर्णतु भवतो बहवे भद्रजाहानमनरबोद्धुभेमामिया देवा व देवीर्ण य चे वं देवाखुपिमा । तित्वगरस्स तित्वगरमात्य् वा अमुमे भर्य पद्मरेह दृस्य वं अम्भगमंवरिया इव समाना मुदार्ण फुहडलिङ्कु घोसेह ३ ता एवमाणतिम् पद्मपिलाहिति तए वं ते व्यभिक्षोमा देवा आब एवं देवीति आपाए विष्णुर्ण वर्ण पद्मध्येष्ट ३ ता दृद्धस्स देवीदस्य देवराम्बो भस्त्रिक्ष्यमति ३ या विष्णामेव भगव्ये तित्वगरस्स अम्मण्यमवर्णति सिंचाळग आब एवं बदाई-हौरि धूर्णतु भवतो बहवे भद्रजाहान आब चे वं देवाखुपिमा । तित्वगरस्स आब अमुर्णी-तित्वरु घोसगं घोसेति ३ ता एवमाणतिम् पद्मपिलाहिति तए वं त बहवे भद्रजाहान-गमंतरवेद्यसैमामिया देवा भगव्ये तित्वगरस्स अम्मण्यमवर्णिम् कर्त्तेति ३ ता जाम्ब शिर्मि पाठम्भूता तामेव दिति पद्मिगम्या ॥ १२३ ॥ धंजामो यन्त्यारो समर्थो ॥

बंशुरीषस्य वं मंते ! वीदस्स पएसा लक्ष्यसमुद्र युद्धा । इता । युद्ध वे वं मंते ! कि बंशुरीषे वीद सम्बन्धसमुद्रे । गोक्षमा । बंशुरीषे वं वीदे जो क्षम्भु लक्ष्यसमुद्रे एवं लक्ष्यसमुद्रस्य वीदसा बंशुरीषे २ युद्ध मामियम्भा । बंशुरीषे वं मंते । जीवा द्वा-इता २ लक्ष्यसमुद्रे पद्मार्थति । गो । अत्येगद्या पद्मार्थति अत्येगद्या जो पद्मार्थति एवं लक्ष्यसमुद्रस्य वंशुरीषे वीदे गोदम्भमिति ॥ १२४ ॥ धंजा १ जोक्ष २ जामा २ पद्मव ४ युद्धा ५ व तित्व ६ सेवीओ ७ । विश्व ८ इ ९ दम्भिम्भो १ विद्यु दोइ सम्भाली १ ॥ १ ॥ बंशुरीषे वं मंते ! वीदे भद्रजाहानमोर्है लहिरे देवाद्वं लंडगमित्ये ८ । गो । बहुव बहुव यन्त्याहित्ये लक्ष्यो । बंशुरीषे देवाद्वं लंडगमित्ये ८ । गो । बहुव बहुव यन्त्याहित्ये लक्ष्यो । बंशुरीषे

ण भते । दीवे केवइया जोयणगणिएण पण्णते २ गोयमा ।—सत्तेव य कोडिसया णउया छप्पण सयसहस्राड । चउणवई च सहस्रा सय दिवहृ च गणियपयं ॥ १ ॥ जबुद्धीवे ण भते । दीवे कह वासा पण्णता २ गोयमा । सत्त वासा प०, तंजहा-भरहे एरवए हेमवए हेरणवए हरिवासे रम्मगवासे महाविटेहे, जंबुद्धीवे ण भते । दीवे केवइया वासहरा पण्णता केवडया मदरा पव्वया पण्णता केवइया चित्तकूडा केवइया विचित्तकूडा केवइया जमगपव्वया केवइया कचणगपव्वया केवडया वक्खारा केवइया दीहवेयहृ केवडया वट्टवेयहृ पण्णता २ गोयमा । जबुद्धीवे २ छ वासहरपव्वया एगे मदरे पव्वए एगे चित्तकूडे एगे विचित्तकूडे दो जमगपव्वया दो कचणगपव्वयसया वीस वक्खारपव्वया चोत्तीस दीहवेयहृ चत्तारि वट्टवेयहृ०, एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्धीवे दीवे दुण्ण अउणत्तरा पव्वयसया भवतीतिमक्खाय । जबुद्धीवे ण भते । दीवे केवइया वासहरकूडा केवइया वक्खारकूडा केवडया वेयहृकूडा केवइया मदरकूडा प० २ गो० । छप्पण वासहरकूडा छणउई वक्खारकूडा तिण्ण छलुत्तरा वेयहृकूड-सया णव मदरकूडा पण्णता, एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्धीवे २ चत्तारि सत्तटा कूड-सया भवन्तीतिमक्खाय । जबुद्धीवे ण भते । दीवे भरहे वासे कह तित्था प० २ गो० । तओ तित्था प०, त०-मागहे वरदामे पभासे, जंबुद्धीवे० एरवए वासे कह तित्था प० २ तित्था प० २ गो० । तओ तित्था प०, त०-मागहे वरदामे पभासे, जंबुद्धीवे ण भते । दीवे महाविटेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए कह तित्था प० २ गो० । तओ विउत्तरे तित्थसए भवतीतिमक्खाय । जंबुद्धीवे ण भते । दीवे केवइयाओ विजा-हरसेढीओ केवइयाओ आभिओगसेढीओ प० २ गो० । जंबुद्धीवे दीवे अट्टसट्टी विजा-हरसेढीओ अट्टसट्टी आभिओगसेढीओ पण्णत्ताओ, एवामेव सपुव्वावरेण जंबुद्धीवे दीवे छत्तीसे सेढीसए भवतीतिमक्खार्य, जंबुद्धीवे ण भते । दीवे केवइया चक्कवट्टिविजया केवइयाओ रायहाणीओ केवइयाओ तिमिसगुहाओ केवइयाओ खंडप्पवायगुहाओ केवइया कयमालया देवा केवडया णझमालया देवा केवइया उसभकूडा० प० २ गो० । जंबुद्धीवे दीवे चोत्तीस चक्कवट्टिविजया चोत्तीस रायहाणीओ चोत्तीस तिमिसगुहाओ चोत्तीस खंडप्पवायगुहाओ चोत्तीस कयमालया देवा चोत्तीस णझमालया देवा चोत्तीस उसभकूडा पव्वया प०, जंबुद्धीवे ण भते । दीवे केवइया महद्वहा प० २ गो० । सोल्स महद्वहा पण्णता, जंबुद्धीवे ण भते । दीवे केवइयाओ महाणईओ वासहरपवहाओ केव-इयाओ महाणईओ कुडप्पवहाओ पण्णत्ताओ २ गोयमा । जंबुद्धीवे २ चोहस महाणईओ वासहरपवहाओ छावत्तरि महाणईओ कुडप्पवहाओ०, एवामेव सपुव्वावरेण जंबुद्धीवे

थीं अर्थात् महान् इओ भवतीतिमक्षात् । वंशुरीये भरतेवप्यु बासेनु कह मह-  
मर्दो प । योगमा । चतारि महान् इओ पञ्चात्तमे त ॥—गंगा लिघु रता रतम्,  
तत्त्व एं एमेगा महार्ह अठरहैं सत्तिक्षमसहस्रेहि समग्गा पुरतिक्षमपत्रिक्षमेव  
चम्पसमुर्ह समप्येह एकामेव सपुष्मावरेवं वंशुरीये थीं भरतेवप्यु बासेनु छम्पने  
सत्तिक्षमसहस्रा मर्दीतिमक्षात् वंशुरीये व भंत । थीं हेमवद्भरतेवप्यु बासेनु  
चम्प महार्ह इओ पञ्चात्तमो ॥ यो । चतारि महार्ह इओ पञ्चात्तमो तत्त्वा—रीढ़िव  
रोडिवसा छप्पन्नरूपम दृप्परूपम तत्त्व एं एमेगा महार्ह भद्रमवीचाए छटुभीताम  
सत्तिक्षमसहस्रेहि समग्गा पुरतिक्षमपत्रिक्षमेवं छम्पनुमुर्ह समप्येह एकामेव सपुष्म-  
वरेण वंशुरीये २ हेमवद्भरतेवप्यु बासेनु बाहातरे सत्तिक्षमसहस्रेहि मर्दीति-  
मक्षात् । वंशुरीये व भंते । थीं हरिकासरमग्गासेव चम्प महार्ह इओ पञ्चात्तमो ॥  
गोगमा । चतारि महार्ह इओ पञ्चात्तमो तत्त्वा—हरी हरिकंता जरकंदा धारिकंदा  
तत्त्व एं एमेगा महार्ह छप्पन्नाप्त २ सत्तिक्षमसहस्रेहि समग्गा पुरतिक्षमपत्रिक्ष-  
मेवं छम्पनुमुर्ह समप्येह एकामेव सपुष्मावरेवं वंशुरीये ३ हरिकासरमग्गावसेनु  
दो चक्रवीरा सत्तिक्षमसहस्रा मर्दीतिमक्षात् वंशुरीये व भंति । थीं महा-  
वियेहे वासे कह महार्ह इओ पञ्चात्तमो ॥ गोगमा । यो महार्ह इओ पञ्चात्तमो  
तत्त्वा—सीया न सीजोवा य तत्त्व एं दृग्मंगा महार्ह वंशुरी ३ एतिक्षम-  
सहस्रेहि वातीचाए य सत्तिक्षमसहस्रेहि समग्गा पुरतिक्षमपत्रिक्षमेवं छम्पनुमुर्ह  
समप्येह एकामेव सपुष्मावरेवं वंशुरीये थीं भाशाविदेहे वासे दस सत्तिक्षमसहस्रा  
चठसद्वि च सत्तिक्षमसहस्रा मर्दीतिमक्षात् । वंशुरीये व भंते । थीं मंदरस्त्व  
फलकस्त्व दक्षित्येवं खेळवा सत्तिक्षमसहस्रा पुरतिक्षमपत्रिक्षमाभिमुहा छम्प-  
नुमुर्ह समप्येहि ॥ यो । एं दृप्परूपे सत्तिक्षमसहस्रे पुरतिक्षमपत्रिक्षमाभिमुहे  
छम्पनुमुर्ह समप्येह वंशुरीये व भंते । थीं मंदरस्त्व फलकस्त्व उत्तरेवं खेळवा  
सत्तिक्षमसहस्रा पुरतिक्षमपत्रिक्षमाभिमुहा छम्पनुमुर्ह समप्येहि ॥ यो । एं  
छम्परप सत्तिक्षमसहस्रे पुरतिक्षमपत्रिक्षमाभिमुहे जाव छमप्येह वंशुरीये व  
भंत । थीं खेळवा सत्तिक्षमसहस्रा पुरतिक्षमाभिमुहा छम्पनुमुर्ह समप्येहि ॥  
योगमा । उत्त सत्तिक्षमसहस्रा छटुभीर्ह च सहस्रा जाव समप्येहि वंशुरीये व  
भंते । थीं खेळवा सत्तिक्षमसहस्रा पुरतिक्षमाभिमुहा छम्पनुमुर्ह समप्येहि ॥  
योगमा । सत्त सत्तिक्षमसहस्रा छटुभीर्ह च सहस्रा जाव समप्येहि एकामेव  
सपुष्मावरेवं वंशुरीये थीं ओस सत्तिक्षमसहस्रा छम्पन्ने च सहस्रा मर्दीति-  
मक्षात् ॥ ११६ ॥ छटु चक्रवारो समतो ॥

जंबुदीवे ण भते । दीवे कह चंदा पभासिंसु पभासति पभासिस्सति कह सूरिया तवइसु तवेंति तविस्सति केवइया णक्खता जोग जोइसु जोयंति जोइस्सति केवइया महगहा चारं चरिंसु चरंति चरिस्सति केवइयाओ तारागणकोडाकोडीओ सोभिंसु सोभति सोभिस्सति ? गोयमा । दो चंदा पभासिंसु ३ दो सूरिया तवइसु ३ छप्पण्ण णक्खता जोग जोइसु ३ छावतर महगहसय चार चरिंसु ३-एर्ग च सयसहस्र तेतीस खलु भवे सहस्राइं । एव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीण ॥ १ ॥ ति ॥ १२६ ॥ कह ण भते । सूरमडला पण्णता ? गोयमा ! एगे चउरासीए मडलसए पण्णते । जंबुदीवे ण भते । दीवे केवइय ओगाहिता केवइया सूरमडला पण्णता ? गोयमा ! जबुदीवे २ असीय जोयणसयं ओगाहिता एत्य ण पण्णाही सूरमडला पण्णता, लवणे ण भते । समुद्रे केवइय ओगाहिता केवइया सूरमडला पण्णता ? गोयमा ! लवणे समुद्रे तिणिं तीसे जोयणसए ओगाहिता एत्य ण एगूणवीसे सूर-मडलसए पण्णते, एवमेव सपुञ्चावरेण जंबुदीवे दीवे लवणे य समुद्रे एगे चुलसीए सूरमडलसए भवतीतिमक्खाय १ ॥ १२७ ॥ सव्वब्मतराओ ण भते । सूरमडलाओ केवइयाए अवाहाए सव्वबाहिरए सूरमंडले प० २ गोयमा ! पचदसुत्तरे जोयणसए अवाहाए सव्वबाहिरए सूरमडले पण्णते २ ॥ १२८ ॥ सूरमडलस्स ण भंते । सूर-मडलस्स य केवइय अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा ! दो जोयणाइं अवाहाए अतरे पण्णते ३ ॥ १२९ ॥ सूरमडले ण भते । केवइय आयामविक्खमेण केवइयं परिक्खेवेण केवडय बाहलेण पण्णते ? गोयमा ! अडयालीस एगसट्टिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खमेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण चउवीस एगसट्टिभाए जोयणस्स बाहलेण पण्णते इति ४ ॥ १३० ॥ जंबुदीवे ण भते । दीवे मदरस्स पब्यस्स केवइयाए अवाहाए सव्वब्मतरे सूरमडले पण्णते ? गोयमा ! चोयालीस जोयणसहस्राइ अद्य य वीसे जोयणसए अवाहाए सव्वब्मतरे सूरमडले पण्णते, जबुदीवे ण भते । दीवे मदरस्स पब्यस्स केवइयाए अवाहाए सव्वब्मतराणतरे सूरमडले पण्णते ? गो० । चोया-लीस जोयणसहस्राइ अद्य य वावीसे जोयणसए अडयालीस च एगसट्टिभागे जोय-णस्स अवाहाए अब्मतराणतरे सूरमडले प०, जबुदीवे ण भंते । दीवे मदरस्स पब्यस्स केवइयाए अवाहाए अब्मतरतचे सूरमडले पण्णते ? गो० । चोयालीस जोयणसहस्राइ अद्य य पणवीसे जोयणसए पणतीस च एगसट्टिभागे जोयणस्स अवाहाए अब्मतरतचे सूरमडले पण्णते, एव खलु एएण उवाएणं गिक्खममाणे सूरिए तयणतराओ मडलाओ तयणतर मंडल सक्कममाणे २ दो दो जोयणाइ अडयालीस च एगसट्टिभाए जोयणस्स एगमेगे मडले अवाहाबुद्धि अभिवद्धेमाणे २ सव्वबाहिरं

मैडल उबसुरुमिता चार चरणति अंतुरीवि चं भर्ति । यीवे मंदरस्स पम्बयस्स केन्द्र-  
याए अवाहाए सम्बन्धाद्विरे सूर्यमंडले प ५ गो । पम्बयालीसु जोवजस्त्रस्त्र  
तिथिय य दीसे जोवजस्त्र अवाहाए सम्बन्धाद्विरे सूर्यमंडले प अंतुरीवि चं भर्ति ।  
यीवे मंदरस्स पम्बयस्स केन्द्रवाए अवाहाए सम्बन्धाद्विरार्थतरे सूर्यमंडले पम्बये १  
गोममा । पम्बयालीसु जोवजस्त्रस्त्रस्त्र तिथिय य सत्तायीसे जोवजस्त्रए तेरस व ए॒-  
सहिताए जोवजस्त्र अवाहाए वाहिराष्ट्रतरे सूर्यमंडले पम्बने अंतुरीवि चं भर्ति । यीवे  
मंदरस्स पम्बयस्स केन्द्रवाए अवाहाए वाहिरत्वे सूर्यमंडले पम्बने १ गो । पम्बय-  
ालीसु जोवजस्त्रस्त्रस्त्र तिथिय य अठवीसे जोवजस्त्र छ एगासहिताए चेन्द्र-  
जस्स अवाहाए वाहिरत्वे सूर्यमंडले पम्बने ए॑ चमु प॒ ए॑ चमु ए॒ चमु ए॒ ए॑  
स्त्ररिए त्वार्थतरामो मैडलामो त्वार्थतरे मैडल संक्षममाये संक्षममाये दो दो  
जोवजस्त्र अवाहालीसु च एमसहिताए जोवजस्त्र पुगमेंगे मैडले अवाहालुर्हि  
मिल्लौमाने २ सम्बन्धतरे मैडल उबसुरुमिता चार चरण ५ ४ १२१ ॥ अंतु-  
रीवे यीवे सम्बन्धतरे चं भर्ति । सूर्यमंडले केन्द्र आवामिक्षमित्य केन्द्रने  
परिक्षेत्रेण पम्बने १ गो । अवजर्ह जोवजस्त्रस्त्राहे छब चत्ताके चेवचरप  
आवामिक्षमित्य तिथिय व जोवजस्त्रस्त्रस्त्र पम्बरस य जोवजस्त्रस्त्रस्त्र ए॒-  
क्तर्ह च चेमनदृ तिथिक्षेत्राद्विक्तर्ह परिक्षेत्रेण अर्भतराष्ट्रतरे चं भर्ति ।  
सूर्यमंडले केन्द्र आवामिक्षमित्य केन्द्र परिक्षेत्रेण पम्बने १ गोममा । अवजर्ह  
जोवजस्त्रस्त्राहे छब पम्बाके चेमनस्त्र ए पम्बतीसु च एपसहिताए जोवजस्त्र अवाह-  
मिक्षमित्य तिथिय जोवजस्त्रस्त्रस्त्र पम्बरस य जोवजस्त्रस्त्रस्त्र ए॑ चुपुर्ह  
जोवजस्त्र परिक्षेत्रेण पम्बने अर्भतराष्ट्रतरे चं भर्ति । सूर्यमंडले केन्द्र आवाम-  
िक्षमित्य केन्द्रने परिक्षेत्रेण प ३ गो । अवजर्ह जोवजस्त्रस्त्राहे छब ए॒उल्लये  
जोवजस्त्र ए पम्बस्त्र जोवजस्त्रस्त्र आवामिक्षमित्य तिथिय व चेमनस्त्र  
स्त्रस्त्राहे पम्बरस जोवजस्त्रस्त्रस्त्र ए॑ च पम्बतीसु जोवजस्त्रस्त्र परिक्षेत्रेण ए॑  
चमु चमु उबाए॑ तिथिक्षममाये स्त्ररिए त्वार्थतरामो मैडलामो त्वार्थतरे मैडले उब-  
स्त्रस्त्रमाये १ प॒ च २ जोवजस्त्र पम्बतीसु च एगासहिताए जोवजस्त्रस्त्र पम्बमेंगे मैडले  
तिथिक्षमलुर्हि विल्लौमाने २ अङ्गुरप २ चेमनदृ परिक्षेत्रलुर्हि विल्लौमाने २  
उब्बवाहिरे मैडल उबसुरुमिता चार चरण, सम्बन्धाद्विरए चं भर्ति । सूर्यमंडले केन्द्र-  
इब आवामिक्षमित्य केन्द्र परिक्षेत्रेण पम्बने १ गोममा । ए॑ जोवजस्त्रस्त्रस्त्र  
छब सुष्टु जोवजस्त्र आवामिक्षमित्य तिथिय व जोवजस्त्रस्त्रस्त्र ए॒उल्लये च  
स्त्रस्त्राहे तिथिय व पम्बरमुतारे जोवजस्त्र ए परिक्षेत्रेण वाहिरपतरे चं भर्ति ।

सूरमंडले केवइयं आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्ठते ? गोयमा ! एगं जोयणसयसहस्स छच्च चउप्पणे जोयणसए छब्बीस च एगसट्टिभागे जोयणस्स आयामविक्खभेण तिण्ठिण य जोयणसयसहस्साइ अद्वारस य सहस्साइं दोणिण य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणति, वाहिरतच्चे ण भते ! सूरमंडले केवइय आयामविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्ठते ? गो० ! एग जोयणसयसहस्स छच्च अड्याले जोयणसए वावण्ण च एगसट्टिभाए जोयणस्स आयामविक्खभेण तिण्ठिण जोयणसयसहस्साइं अद्वारस य सहस्साइं दोणिण य अउणासीए जोयणसए परिक्खेवेण०, एव खलु एण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणंतरं मडलं सकममाणे २ पच पच जोयणाइं पणतीस च एगसट्टिभाए जोयणस्स एगमेगे मडले विक्खमयुह्नि णियुह्नेमाणे २ अद्वारस २ जोयणाइं परिरयवुह्नि णियुह्नेमाणे २ सब्बब्बंतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ ६ ॥ १३२ ॥ जया णं भते ! सूरिए सब्बब्बंतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण एगमेगेण मुहुतेण केवइय खेत्त गच्छइ ? गोयमा ! पच पंच जोयणसहस्साइ दोणिण य एगावणे जोयणसए एगूणतीस च सट्टिभाए जोयणस्स पठमसि अहोरत्तसि सब्बब्बमतराणतरं मंडल उवसकमित्ता चार चरइ, जया ण भते ! सूरिए अब्बंतराणंतर मडलं उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण एगमेगेण मुहुतेण केवइय खेत्त गच्छइ ? गोयमा ! पच पच जोयणसहस्साइ दोणिण य एगावणे जोयणसए सीयालीस च सट्टिभागे जोयणस्स एगमेगेण मुहुतेण गच्छइ, तया ण इहगयस्स मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणासीए जोयणसए सत्तावण्णाए य सट्टिभाएहिं जोयणस्स सट्टिभाग च एगसट्टिहा छेत्ता एगूणवीसाए चुणिण्याभागेहिं सूरिए चक्खुप्फास हब्बमागच्छइ, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अब्बमतरतच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ, जया ण भते ! सूरिए अब्बमतरतच्च मडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया ण एगमेगेण मुहुतेण केवइय खेत्त गच्छइ ? गोयमा ! पच पच जोयणसहस्साइ दोणिण य वावणे जोयणसए पच य सट्टिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुतेण गच्छइ, तया ण इहगयस्स मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं छणउईए जोयणेहिं तेत्तीसाए सट्टिभागेहिं जोयणस्स सट्टिभाग च एगसट्टिहा छेत्ता दोहिं चुणिण्याभागेहिं सूरिए चक्खुप्फास हब्बमागच्छइ, एव खलु एण उवाएण णिक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मड-

ताभ्यो तथार्थतरं मंडळं संभवमाने संभवमाने अद्वारय २ सद्गुमाणं जीवस्त्वं  
 एगमेगे मंडळे सुदुरपादं जग्नितुवैमाने जग्नितुवैमाने तुष्टीर्दि २ सवार्द जोवर्ष्य  
 पुरिसच्चार्थं जितुवैमाने २ सम्भवाद्विरं मंडळं उवसंभविता चारं चरद । तदा चं  
 मंते । स्मरिए सम्भवाद्विरमंडलं उवसंभविता चारं चरद तदा चं एगमेगेवं मुद्दुर्णेवं  
 केवल्यं चेता गच्छद ॥ गोकमा । पूर्वं पूर्वं जीवस्त्वहस्तस्त्र तितिवं व पुनारे जीवस्त्वं  
 सए पक्षारसं व सद्गुमाणं जीवस्त्वहस्तस्त्र एगमेगेवं मुद्दुर्णेवं गच्छद, तथा चं इहगमस्त्वं  
 मनुस्सस्त्वं पृथग्तीसाए जीवस्त्वहस्तस्त्रेहि व्यद्विवं व एगादीर्णेहि जीवस्त्वहस्तस्त्रेहि तीसाए व  
 सद्गुमाणेहि जीवस्त्वहस्तस्त्र चरिए चक्षवृष्ट्यसं हस्तमाणगच्छद एस चं फडमे छम्मार्णे एस  
 चं फक्षमस्त्वं छम्मासस्त्वं पक्षवृष्ट्यावे से पवित्रमाने स्मरिए देवे छम्मासे अम्मार्णे  
 फक्ष्यसि व्यारोत्तर्णसि वाद्विरार्थतरं मंडलं उवसंभविता चारं चरद, तदा चं मंते । स्मरिए  
 वाद्विरार्थतरं मंडलं उवसंभविता चारं चरद तथा चं एगमेगेवं मुद्दुर्णेवं केवल्यं  
 चेता गच्छद ॥ गोकमा । पूर्वं पूर्वं जीवस्त्वहस्तस्त्र तितिवं व चरहारे जीवस्त्वहस्त  
 सताकर्षं व सद्गुमाणं जीवस्त्वहस्तस्त्र एगमेगेवं मुद्दुर्णेवं गच्छद, तथा चं इहगमस्त्वं  
 मनुस्सस्त्वं पृथग्तीसाए जीवस्त्वहस्तस्त्रेहि व्यद्विवं व सोन्मनुष्ठारेहि जीवस्त्वहस्तस्त्रेहि इहगम-  
 लीसाए व सद्गुमाणेहि जीवस्त्वहस्तस्त्र चं एगसद्गुमाणं देता चहीए तुवित्यामाणेहि  
 स्मरिए चक्षवृष्ट्यसं हस्तमाणगच्छद, से पवित्रमाने स्मरिए देवेवं व्यारोत्तर्णसि वाद्विरल्ये  
 मंडलं उवसंभविता चारं चरद तदा चं मंते । स्मरिए वाद्विरल्ये मंडलं उवसंभविता  
 चारं चरद तदा चं एगमेगेवं मुद्दुर्णेवं केवल्यं चेता गच्छद ॥ गोकमा । पूर्वं पूर्वं  
 जीवस्त्वहस्तस्त्र तितिवं व चरहारे जीवस्त्वहस्तस्त्र चं सद्गुमाणं जीवस्त्वहस्तस्त्र  
 एगमेगेवं मुद्दुर्णेवं गच्छद, तथा चं इहगमस्त्वं मनुस्सस्त्वं पृथग्तीर्णेहि वारीसाए जीवस्त्व-  
 सहस्तस्त्रेहि एगूलपक्ष्याए व सद्गुमाणेहि जीवस्त्वहस्तस्त्र सद्गुमाणं व एगसद्गुमाणं देता  
 तीवीसाए तुवित्यामाणेहि स्मरिए चक्षवृष्ट्यसं हस्तमाणगच्छद, एस चहु एपर्य तदार्थं  
 पवित्रमाने स्मरिए तदार्थतरम्भो तदार्थतरं मंडलं संभवमाने २ अद्वारय ३  
 सद्गुमाणं जीवस्त्वहस्तस्त्र एगमेगे मंडळे सुदुरात्मं जितुवैमाने २ चाहरैमार्हं पंचार्थीर्दि  
 जीवस्त्वहस्तस्त्र पुरिसच्चार्थं जग्नितुवैमाने ३ सम्भवर्थतरं मंडलं उवसंभविता चारं चरद,  
 एस चं देवे छम्मासे एस चं जीवस्त्वहस्तस्त्र सम्भवसावे फलते ५ ॥ १३३ ॥ तदा चं  
 मंते । स्मरिए सम्भवर्थतरं मंडलं उवसंभविता चारं चरद तदा चं वेमहस्त तितिवे  
 केवलास्त्रिया राहे मन्त्र ॥ गोकमा । तदा चं उत्तमस्त्रमते उद्देश्ये अद्वारलगुडे  
 विक्षुपे भवद् वाद्वित्या तुवाम्भस्त्रमुद्देश्या राहे मन्त्र, से विक्षम्भमाने स्मरिए चं

सवच्छर अयमाणे पठमंसि अहोरत्तसि अब्भतराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ, जया ण भते ! सूरिए अब्भतराणतर मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ? गोयमा ! तया ण अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुते हिं ऊणे दुवालसमुहुता राई भवइ दोहिं य एगट्टिभा-गमुहुते हिं अहियत्ति, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि जाव चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ? गोयमा ! तया ण अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुते हिं ऊणे दुवालसमुहुता राई भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुते हिं अहियत्ति, एव खलु एएण उवाएण णिक्खममाणे सूरिए तया-णतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे २ दो दो एगट्टिभागमुहुते हिं मडले दिवसखेत्तस्स निवुहुमाणे २ रथणिखेत्तस्स अभिवहुमाणे २ सव्ववाहिरं मडल उवसकमिता चारं चरइत्ति, जया णं सूरिए सव्वब्भतराओ मडलाओ सव्ववाहिर मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण सव्वब्भतरमंडल पणिहाय एणेण तेसीएण राईंदियनएणं तिणिं छावडे एगट्टिभागमुहुतसए दिवसखेत्तस्स निवुहुता रथणि-खेत्तस्स अभिवुहुता चारं चरइत्ति, जया ण भते ! सूरिए सव्ववाहिरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ? गोयमा ! तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्तोसिया अट्टारसमुहुता राई भवइ जहणणए दुवालसमुहुते दिवसे भवइत्ति, एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे । से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि वाहिराणतरं मडल उवसकमिता चारं चरइ, जया ण भंते ! सूरिए वाहिराणतरं मंडल उवसकमिता चारं चरइ तया णं केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ? गोयमा ! अट्टा-रसमुहुता राई भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुते हिं ऊणा दुवालसमुहुते दिवसे भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुते हिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि वाहिरतच्च मडल उवसकमिता चारं चरइ, जया णं भते ! सूरिए वाहिरतच्च मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण केमहालए दिवसे केमहालिया राई भवइ ? गोयमा ! तया ण अट्टारसमुहुता राई भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुते हिं ऊणा दुवालसमुहुते दिवसे भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुते हिं अहिए इति, एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतरं मडल सकममाणे सकममाणे दो दो एगट्टिभागमुहुते हिं एगमेगे मडले रथणिखेत्तस्स निवुहुमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवुहुमाणे २ सव्वब्भतर मडल उवसकमिता चारं चरइत्ति, जया ण सूरिए सव्ववाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भतर मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण

सम्बन्धाहिरु भंडरु पयिहाय एतें तेईएरु राधिकासाठी शिखिण आणु एष्टि-  
भागमुद्दृतसपे रवसितेतस्य शिवुहेता विवसवेतस्य असिवृता चार चर,  
एस र्हं थोरे सम्मासे एम र्हं बुद्धस्य सम्मासस्य पञ्चवसाणे एस र्हं आप्ते  
समच्छरे एस र्हं जाश्वस्य संक्षेपस्य पञ्चवसाणे पञ्चते ॥ १३४ ॥ च्या  
र्हं मंत्रे । सूरिपु सम्बन्धतरु भंडरु उद्दंशलमिता चार चर उमा र्हं शिरेठिमा  
ताक्षेत्रसंठिरे पञ्चता । गोममा । उहीसुहरुम्यापुण्डरीठामसंठिमा ताक्षेत्र-  
संठिरे पञ्चता भंतो संकुमा वाही विलङ्गा भंतो वदा वाही पिंडिता भंतो भक्त्याह-  
संठिमा वाही उगडुरीगुहरेठिमा उत्तरपासे र्हं तीसे दो वाहाम्भे वद्विमासो  
इर्हंति पञ्चताळीसे २ जोमपासहस्याही जायामेही दुवे म र्हं तीसे वाहाम्भे वद्व-  
वद्विमासो इर्हंति तंक्षा-सम्बन्धतरिया चेव वाहा सम्बन्धाहिरिया चेव वाहा  
तीसे र्हं सम्बन्धतरिया वाहा भंदरफलमंत्रे गवत्तोमध्यसहस्राही चतारि छलर्हं  
जोमपासपे वद्व म दसमाए जोक्षस्य परिक्षेत्रेण एस र्हं मंत्रे । परिक्षेत्रेसेहे  
क्षमो आहिएति वद्वा । गोममा । ये ये भंदरस्य परिक्षेत्रे तं परिक्षेत्रे तिही  
गुणेता दसही ठेता दसही मागे हीरमाणे एस र्हं परिक्षेत्रेसेहे आहिएति वद्वा  
तीसे र्हं सम्बन्धाहिरिया वाहा अवपस्मृतिर्हं वद्वज्ञाही जोमपासहस्राही वद्विम-  
योक्षस्याही वद्व म दसमाए जोक्षस्य परिक्षेत्रेण से र्हं मंत्रे । परिक्षेत्रेसेहे  
क्षमो आहिएति वद्वा । गोममा । ये नं बंगुरीवस्य २ परिक्षेत्रे तं परिक्षेत्रे तिही  
गुणेता दसही ठेता दसमाणे हीरमाणे एस र्हं परिक्षेत्रेसेहे आहिएति वद्वा ।  
क्ष्या र्हं भंते । ताक्षेत्रे केलहर्य जावासेही प ॥ गोममा । अद्भुतरि ज्येष्ठ-  
चाहस्याही शिखिण च तेतीसे जोमपासपे ज्येष्ठपास्य शिखार्हं च जावासेही फलाते  
मेदस्य गज्जमारे जाव च लक्षपास्य रुद्राभ्यमाणो । तावावामो एहो सम्पूर्णसंठिमो  
शिखमा ॥ १ ॥ च्या र्हं मंत्रे । शिरेठिमा भंडवारसंठिरे फञ्चता ॥ गोममा ।  
उहीसुहरुम्यापुण्डरीठामसंठिमा भंडवारसंठिरे पञ्चता भंतो संकुमा वाही  
विलङ्गा त चर जाव तीसे र्हं सम्बन्धतरिया वाहा भंदरफलमंत्रे तंक्षेत्रसहस्राही  
शिखिण य चढवीसी ज्येष्ठपासपे उच्च दसमाए जोक्षस्य परिक्षेत्रेवर्हं से र्हं भंते ।  
परिक्षेत्रेसेहे क्षमो आहिएति वद्वा । गोममा । ये र्हं भंदरस्य फञ्चवस्य परिक्षेत्रे  
तं परिक्षेत्रे दोही गुणेता दसही ठेता दसही मागे हीरमाणे एस र्हं परिक्षेत्रेसेहे  
आहिएति वद्वा तीसे र्हं सम्बन्धाहिरिया वाहा अवपस्मृतिर्हं तेष्टुही जोक्षस्य  
स्याही दोहिण य पण्माणे ज्येष्ठपासपे उच्च दसमाए जोक्षस्य परिक्षेत्रेवर्हं से र्हं  
भंते । परिक्षेत्रेसेहे क्षमो आहिएति वद्वा । येममा । ये नं बंगुरीवस्य २ वरी-

क्षेवे त परिक्षेव दोहिं गुणेता जाव त चेव तया ण भंते ! अथयारे केवडए  
आयामेण प० २ गोयमा । अद्वृहतरि॒ जोयणसहस्राऽं तिणिण य तेत्तीसे जोयणमए  
तिभागं च आयामेण प० १ जया ण भंते । सूरिए सव्ववाहिरमंडल उवसकमिता  
चार चरड तया ण किसठिया तावखेतसठिई॑ प० ३ गो० । उझ्मुहकल्युयापुष्ट-  
सठाणसठिया० पण्णता, तं चेव सब्ब गेयव्व णवर णाणत्त जं अथयारसठिई॑  
पुञ्चवणिण्य पमाण त तावखेतसठिई॑ गेयव्व, ज तावखेतसठिई॑ पुञ्चवणिण्यं  
पमाण त अध्यारसठिई॑ गेयव्वति॑ ९ ॥ १३५ ॥ जम्बुदीवे ण भंते । दीवे सूरिया  
उगमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति मज्जतियमुहुत्तसि मूले य दूरे य दीसति  
अत्थमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति॑ २ हता गोयमा । त चेव जाव दीसति,  
जम्बुदीवे ण भन्ते ।० सूरिया उगमणमुहुत्तसि य मज्जतियमुहुत्तसि य अत्थमण-  
मुहुत्तसि य सव्वत्य समा उच्चतेण॑ २ हता त चेव जाव उच्चतेण, जइ ण भन्ते ।  
जम्बुदीवे दीवे सूरिया उगमणमुहुत्तसि य मज्जं० अत्थ० सव्वत्य समा उच्चतेण  
कम्हा ण भन्ते । जम्बुदीवे दीवे सूरिया उगमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति॑ ० २  
गोयमा । लेसापडिघाएण उगमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति लेसाहितावेण  
मज्जतियमुहुत्तसि मूले य दूरे य दीसति लेसापडिघाएण अत्थमणमुहुत्तसि दूरे य  
मूले य दीसति, एव खलु गोयमा । त चेव जाव दीसति १० ॥ १३६ ॥ जम्बुदीवे  
ण भन्ते । दीवे सूरिया कि॒ तीय खेत्त गच्छन्ति॑ पहुप्पण्ण खेत्त गच्छन्ति॑  
अणागय खेत्त गच्छन्ति॑ २ गोयमा । णो तीय खेत्त गच्छन्ति॑ पहुप्पण्ण खेत्त  
गच्छन्ति॑ णो अणागय खेत्त गच्छन्ति॑, त भन्ते । कि॒ पुढ़ गच्छन्ति॑ जाव  
नियमा छद्विसंति॑, एव ओभासेंति॑, त भन्ते । कि॒ पुढ़ ओभासेंति॑ ३ एवं आहारपयाइ  
गेयव्वाइ॑ पुट्टोगाढमणतरअणुमहव्याइविसयाणुपुव्वी य जाव णियमा छद्विसि॑, एव  
उज्जोवेंति॑ तवेंति॑ पभासेंति॑ ११ ॥ १३७ ॥ जम्बुदीवे ण भन्ते । दीवे सूरियाणं कि॒  
तीए खेत्त किरिया कज्जइ॑ पहुप्पण्ण॑ ० अणागए० २ गो० । णो तीए खेत्त किरिया  
कज्जइ॑ पहुप्पण्ण॑ कज्जइ॑ णो अणागए०, सा भन्ते । कि॒ पुढ़ कज्जइ॑ २ गोयमा । पुढ़ा०  
णो अणापुढ़ा कज्जइ॑ जाव णियमा छद्विसि॑ १२ ॥ १३८ ॥ जम्बुदीवे ण भन्ते । दीवे॑  
सूरिया केवइय खेत्त उझू तवयन्ति॑ अहे॑ तिरिय च॑ २ गोयमा । एग जोयणसय उझू  
तवयन्ति॑ अद्वारससयजोयणाइ॑ अहे॑ तवयन्ति॑ सीयालीस जोयणसहस्राऽं दोणिण य  
तेवडे॑ जोयणसए॑ एगवीस च॑ सद्विभाए॑ जोयणस्स तिरिय तवयन्ति॑ १३ ॥ १३९ ॥  
अतो णं भन्ते । माणुस्तरस्स पव्वयस्स जे चादिमसूरियगहणणक्षत्तारारूपा ते॑  
ण भन्ते । देवा कि॒ उझ्मोववणगा कप्पोववणगा विमाणोववणगा चारोववणगा

चारद्विषया गदरस्या गदस्मात्प्रव्यगा ॥ गोवमा । अंतो च माणुषप्रस्तु पन्नस्तु  
ते चन्द्रिमगृहिय आब तारास्त्वा त च देवा जो उद्गृहप्रव्यगा जो कप्येवक्ष्य  
विमाघोवक्ष्यगा चारेवक्ष्यगा जो चारद्विषया गदरस्या गदस्मात्प्रव्यगा वहीन  
कर्मुवापुष्टवेत्यसंठियहि ओववसाहस्यिएहि ताक्षयोहि साहस्याहि वेऽभिवाहि  
चाहिराहि परिषाहि महमा हृषीकेशवद्यतीतलक्षाम्भुदियकामुहांपुष्टवाहर  
वेन रिष्यार्थं भोगमोगाई भुजमाणा महाना उदित्तिशीहृषावत्वेऽभिवाहरत्वैर्य  
अर्थात् पन्नवरत्वे पवाहिपावत्तमण्डलवारं महं अशुपरिष्यहुति ॥५ ॥ १४ ॥  
तेति च भासे । देवार्थं जाहे ईरुप्रभ भवद्व से कहमियाहि पहरेति ॥ गोवमा ।  
ताहे चत्तारि दंष वा सामाजिवा देवा तं ठार्थ उवसंपवित्तार्थं विद्वरेति चाब उव  
भव्ये ईरुप्रव्ये मवद् । उद्गृहे च भासे । केवद्व चाल उववाहर्वं विद्विए ।  
गोवमा । वह्योर्यं एवं समवे उद्गेत्तर्ण छम्मासे उववाहर्वं विद्विए । वहिवा च  
मन्तं । माणुषप्रस्तु पन्नवरत्वे चन्द्रिम आब तारास्त्वा त चेव वेवव्ये वालां  
विमाघोवक्ष्यगा जो चारेवक्ष्यगा चारद्विषया जो गदरस्या जो गदस्मात्प्रव्यगा  
पदिष्टवसंठाम्भुदियहि ओवमस्मपुष्टस्यिएहि ताद्वेत्तरेहि स्परुषाहस्यिएहि विद्यिव  
चाहिराहि परिषाहि महमा हृषीकेशवद्यतीतलक्षाहि वेषाहि दृगविव द्वावित्ता स्मक्षे  
समन्ता ते पद्धते ओवाद्विव चज्जोवेति पमासेनिति । तेति च भासे । देवार्थं  
जाहे ईरुप्रभ भवद्व से कहमियाहि पहरेति चाब चालवेति एव समवे उद्गेत्तर्ण  
छम्मासा इति ॥५ ॥ १४१ ॥ चाल च भासे । चन्द्रमण्डला प ॥ यो ॥ पन्नवरत्वे  
चस्मापाद्या फलता । अम्भुरिये च भासे । यीवे केवद्व ओवाहिता वेषस्या चन्द्र  
मण्डलम् प ॥ यो ॥ अम्भुरिये २ अस्तीर्यं ओवमस्तु ओवाहिता फैद चन्द्रमण्डलम्  
फलता फलते च भासे । पुच्छ गोवमा । चन्द्र च सम्बो विविति तीवे ओवां  
सद ओवाहिता एत्य च वस चन्द्रमण्डला पञ्चता एवामेव सुपुष्टवरेत्तरेहि अम्भुरिये  
यीवे चलये च सम्बो विवरस चन्द्रमण्डला गमन्तीतिमङ्गवार्य ॥ १४२ ॥ सम्ब-  
व्येत्तरेहो च भासे । चन्द्रमण्डलाभो वेषस्याए अवाहाए उववाहिरए चन्द्रमण्डले  
प ॥ गोवमा । पन्नवस्तुरे ओवमस्तु अवाहाए उववाहिरए चन्द्रमण्डले फलते  
प ॥ १४३ ॥ चन्द्रमण्डलस्य च भासे । चन्द्रमण्डलस्य एव वेषस्याए अवाहाए अवरे  
प ॥ गोवमा । फलीर्यै २ ओववाहर्व तीच च एवास्तुमाए ओवमस्तु पन्नविष्यार्य  
च साक्षा लेता चत्तारि तुष्टिवामाए चन्द्रमण्डलस्य चन्द्रमण्डलस्य अवाहाए अवरे  
फलते प ॥ १४४ ॥ चन्द्रमण्डले च भासे । केवद्व वायामविविष्येत्तरेहि विष्यपं परि

क्षेवेण केवद्य वाह्लेण पणते ? गोयमा ! छप्पण एगसट्टिभाए जोयणस्स  
आयामविक्खम्मेणं त तिगुण सविसेस परिक्षेवेण अट्टावीस च एगसट्टिभाए  
जोयणस्स वाह्लेण० ॥ १४५ ॥ जम्बुद्वीपे ण भंते । दीवे मन्दरस्स पव्ययस्स केव-  
इयाए अवाहाए सव्वब्मतरए चन्दमडले पणते ? गोयमा ! चोयालीस जोयण-  
सहस्साइ अद्व य वीसे जोयणसए अवाहाए सव्वब्मन्तरे चन्दमंडले पणते,  
जम्बुद्वीपे मन्दरस्स पव्यभ्रस्स केवद्याए अवाहाए अब्मतराणन्तरे चन्दमडले  
पणते ? गोयमा ! चोयालीस जोयणसहस्साइ अद्व य छप्पणे जोयणसए पणवीस  
च एगसट्टिभाए जोयणस्से एगसट्टिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुणिणयाभाए  
अवाहाए अब्मतराणन्तरे चन्दमडले पणते, जम्बुद्वीपे० दीवे मन्दरस्स पव्य-  
यस्स केवद्याए अवाहाए अब्मतरतचे चद्मडले प० ? गोयमा ! चोयालीस  
जोयणसहस्साइ अद्व य वाणउए जोयणसए एगावण च एगसट्टिभाए जोयणस्स  
एगसट्टिभाग च सत्तहा छेत्ता एग चुणिणयाभाग अवाहाए अब्मतरतचे चंदमंडले  
पणते, एव खलु एण उवाएण णिक्खममाणे चदे तयाणन्तराओ मंडलाओ  
तयाणन्तर मडल सकममाणे २ छत्तीस छत्तीस जोयणाइ पणवीस च एगसट्टिभाए  
जोयणस्स एगसट्टिभाग च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुणिणयाभाए एगमेगे मडले अवा-  
हाए चुहिं अभिव्वेष्माणे २ सव्वबाहिरं मंडल उवसकमित्ता चार चरइ । जम्बुद्वीपे०  
दीवे मन्दरस्स पव्ययस्स केवद्याए अवाहाए सव्वबाहिरे चंदमंडले प० ? गो० !  
पणयालीस जोयणसहस्साइ तिणिण य तीसे जोयणसए अवाहाए सव्वबाहिरए  
चद्मडले प०, जम्बुद्वीपे० दीवे मन्दरस्स पव्ययस्स केवद्याए अवाहाए वाहिरा-  
णन्तरे चद्मडले पणते ? गो० । पणयालीस जोयणसहस्साइ दोणिण य तेणउए  
जोयणसए पणतीस च एगसट्टिभाए जोयणस्स एगसट्टिभाग च सत्तहा छेत्ता तिणिण  
चुणिणयाभाए अवाहाए वाहिराणन्तरे चद्मडले पणते, जम्बुद्वीपे० दीवे मन्द-  
रस्स पव्ययस्स केवद्याए अवाहाए वाहिरतचे चद्मडले प० ? गो० ! पणयालीस  
जोयणसहस्साइ दोणिण य सत्तावणे जोयणसए णव य एगसट्टिभाए जोयणस्स  
एगसट्टिभाग च सत्तहा छेत्ता छ चुणिणयाभाए अवाहाए वाहिरतचे चद्मडले प० ।  
एव खलु एण उवाएण पविसमाणे चदे तयाणतराओ मंडलाओ तयाणन्तर  
मडल सकममाणे २ छत्तीस २ जोयणाइ पणवीस च एगसट्टिभाए जोयणस्स  
एगसट्टिभाग च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुणिणयाभाए एगमेगे मडले अवाहाए  
चुहिं णिखुद्वेष्माणे २ सव्वब्मतरं मडल उवसकमित्ता चार चरइ ॥ १४६ ॥  
सव्वब्मतरे ण भन्ते । चंदमडले केवद्य आयामविक्खम्मेण केवद्य परिक्षेवेण

पणते ? ग्रेयमा । व्यवहार जोयणसहस्राई अवश्यकताके जोयणसह आवामनिक्षमोर्च रित्तिय व जोयणसमस्यासह पर्याप्त जोयणसहस्राई अउपायवाई व व्यवन्नाई लिखिविसेसाहिए परिक्षेपेण्य प अभ्यन्तरायतरे सा ज्ञेय पुच्छ गोवमा । पव्यवहार जोयणसहस्राई सत्त य वारप्राप्तरे जोयणसह पृगावर्ण व प्राद्विभागे जोयणसहस्राई एगांड्विमार्ण व सत्ताहा ऐता पूर्ण तुष्टियामार्ण आयामनिक्षमोर्च रित्तिय व जोयणसमस्यासहस्राई पर्याप्त सहस्राई रित्तिय व एगांड्विमार्ण जोयणसह साहिए परिक्षेपेण्य अभ्यन्तरतत्त्वे व वाद प । गो । व्यवहार जोयणसहस्राई सत्त य फ्लासीए जोयणसह इग्वाठैसै व एगांड्विमाए जोयणसहस्राई एगांड्विमार्ण व सध्या ऐता दोत्तिय व तुष्टियामाए आयामनिक्षमोर्च लिखिविसेसाहिए परिक्षेपेण्य व्यवहार जोयणसहस्राई यन्म य इग्वाठैसै जोयणसह परिक्षेपेण्य व्यवहार जोयणसहस्राई एगांड्विमार्ण व सत्ताहा ऐता पूर्ण व तुष्टियामार्ण एगमेगे मंडले विकल्पमनुहि भवित्वेमाये २ दो दो तीव्राई व्यवन्नसयाई परिरक्षुहि भवित्वेमाये ३ सम्बाहिरे मंडले उद्दर्शकमिता चारे चर । सम्बन्धिरए प भन्ने । कन्दमहाडे केवहर्व आवामनिक्षमोर्च केवहर्व परिक्षेपेण्य पणते ? गो । एही जोयणसमस्यासहस्राई उद्दास्तु जोयणसह आवामनिक्षमोर्च रित्तिय व जोयणसमस्यासहस्राई अद्वारस उद्दास्तु रित्तिय व फ्लाप्राप्तरे जोयणसह परिक्षेपेण्य वाहिराप्तरे व वुच्छ गो । पूर्ण जोयणसमस्यासहस्राई जोयणसह जब व एगांड्विमाए जोयणसहस्राई उद्दास्तु ऐता छ तुष्टियामाए आवामनिक्षमोर्च रित्तिय व जोयणसमस्यासहस्राई अद्वारस उद्दास्तु वेचारीई व जोयणवद्व परिक्षेपेण्य वाहिराप्तरे व मन्तु । कन्दमहाडे प । गो । एही व्यवन्नसमस्यासहस्राई उद्दास्तु रेप्ते जोयणसह पृगूप्तीई व एगांड्विमाए जोयणसहस्राई एगांड्विमाग व सत्ताहा ऐता वै तुष्टियामाए आयामनिक्षमोर्च रित्तिय व जोयणसमस्यासहस्राई उद्दास्तु व्यवहार व व्यवहार जोयणसह परिक्षेपेण्य एही वह एप्पर्व उद्दास्तु परिसमाणे कन्द जाव संभमाये २ वादतारी ३ जोयणवद्व एगांड्विमाए जोयणसहस्राई एगांड्विमार्ण व सत्ताहा ऐता पूर्ण तुष्टियामार्ण एगमेगे माझाळे विकल्पमनुहि वित्तुहेमाये २ दो दो तीव्राई जोयणसहवद्व परिरक्षुहि वित्तुहेमाये ३ सम्बन्धमन्तरमाझाले उद्दर्शकमिता चारे चर ॥ १४३ ॥ वज्ञा व मन्तु । कन्द सम्बन्धमन्तरमाझाले उद्दर्शकमिता चारे चर तथा वै एगमेगेव मुहुरोर्व केव्य पाते गच्छ । ग्रेयमा । वै जोयणसमस्यासहस्राई उद्दास्तारी व जोयणवद्व उद्दास्तारी

च चोयाले भागसए गच्छइ मण्डल तेरसहिं सहस्रेहिं सत्तहि य पणवीसेहिं सएहिं  
छेत्ता इति, तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्रेहिं दोहि य  
तेवद्वेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए य सट्टिभाएहिं जोयणस्स चन्दे चकखुप्फास हव्व-  
मागच्छइ । जया ण भन्ते ! चन्दे अब्मन्तराणन्तर मण्डलं उवसकमित्ता चार चरइ  
जाव केवइय खेत्त गच्छइ ? गो० ! पंच जोयणसहस्राइ सत्तत्तरि० च जोयणाइ छत्तीस  
च चोवत्तरे भागसए गच्छइ मण्डल तेरसहिं सहस्रेहिं जाव छेत्ता, जया ण भन्ते !  
चन्दे अब्मतरतच्च मण्डल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण एगमेगेण मुहुत्तेण केव-  
इय खेत्त गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्राइ असीइ च जोयणाइ तेरस य  
भागसहस्राइ तिणिं य एगूणवीसे भागसए गच्छइ मण्डल तेरसहिं जाव छेत्ता  
इति । एव खलु एएण उवाएण णिक्खममाणे चन्दे तयाणन्तराओ जाव सकममाणे २  
तिणिं २ जोयणाइ छण्णउइ च पंचावणे भागसए एगमेगे मण्डले मुहुत्तगइं  
अमिवद्वेष्माणे २ सब्ववाहिर मण्डल उवसकमित्ता चार चरइ, जया ण भन्ते ! चन्दे  
सब्ववाहिर मण्डल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण एगमेगेण मुहुत्तेण केवइय खेत्त  
गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्राइ एग च पणवीस जोयणस्यं अउत्तत्तरि० च  
णउए भागसए गच्छइ मण्डल तेरसहिं भागसहस्रेहिं सत्तहि य जाव छेत्ता इति,  
तया ण इहगयस्स मणूसस्स एक्तीसाए जोयणसहस्रेहिं अद्वहि य एगत्तीसेहिं  
जोयणसएहिं चन्दे चकखुप्फास हव्वमागच्छइ, जया ण भन्ते ! वाहिराणन्तर  
पुच्छा, गोयमा ! पंच जोयणसहस्राइ एक्त च एक्तीस जोयणन्य एक्तारस य सद्वे  
भागसहस्रे गच्छइ मण्डल तेरसहिं जाव छेत्ता, जया ण भते ! वाहिरतच्च पुच्छा,  
गोयमा ! पंच जोयणसहस्राइ एग च अद्वारसुत्तरं जोयणसय चोद्दस य पन्तुत्तरे भागसए  
गच्छइ मडल तेरसहिं सहस्रेहिं सत्तहिं पणवीसेहिं सएहिं छेत्ता, एवं खलु एएण उवा-  
एण जाव सकममाणे २ तिणिं २ जोयणाइ छण्णउइ च पंचावणे भागसए एगमेगे  
मण्डले मुहुत्तगइ णिवुद्वेष्माणे २ सब्वब्मतर मण्डल उवसकमित्ता चार चरइ ॥ १४८ ॥  
कठ ण भते ! णक्खत्तमण्डला प० २ गोयमा ! अद्व णक्खत्तमण्डला पण्णता । जम्बु-  
दीवे ण भते ! दीवे केवइय ओगाहित्ता केवइया णक्खत्तमडला पण्णता ? गोयमा !  
जम्बुदीवे दीवे असीय जोयणसय ओगाहेत्ता एत्य ण दो णक्खत्तमंडला पण्णता, लवणे  
ण भते ! समुद्वे केवइय ओगाहेत्ता केवइया णक्खत्तमडला पण्णता ? गोयमा ! लवणे  
ण समुद्वे तिणिं तीसे जोयणन्य ओगाहित्ता एत्य ण छ णक्खत्तमडला पण्णता,  
एवामेव सपुञ्चावरेण जम्बुदीवे दीवे लवणसमुद्वे अद्व णक्खत्तमडला भवतीतिमक्खाय ।  
सब्वब्मतराओ ण भते ! णक्खत्तमडलाओ केवइयाए अवाहाए सब्ववाहिरए

जक्कडामडके पक्षते ॥ गोवमा । वंचदद्वातरे ज्येष्ठसुए अवाहाए सम्बाहिरए  
जक्कडामडके पक्षते जक्कडामडकसु वं भन्ते । जक्कडामडकसु य एष वं  
जेवह्याए अवाहाए भतरे पक्षते ॥ गोवमा । वो जोयथाई जक्कडामडकसु वं  
जक्कडामडकसु वं अवाहाए भतरे पक्षते । जक्कडामडके वं भन्ते । जेवह्य  
आयामविकर्ममेव जेवह्य परिक्षेदेव केवह्य वाहौयं पक्षते ॥ गोवमा । मात्रवं  
आयामविकर्ममेव तु दिगुनं सक्षिदेव परिक्षेवेव अद्यात्म वाहौयं पक्षते ।  
अमुहीवं वं भन्ते । वीपे मंदरसु पक्षमसु जेवह्याए अवाहाए सम्बाहिरए  
जक्कडामडके पक्षते ॥ गोवमा । जोयाईहं जोयथाहस्तवं अहु य वीपे जोयमल्ल  
अवाहाए सम्बाहिरए जक्कडामडके पक्षते अमुहीवं वं भन्ते । वीपे मंदरसु पक्ष-  
मसु अवाहाए अवाहाए सम्बाहिरए जक्कडामडके पक्षते ॥ गोवमा । पववा  
सीसु जोयथाहस्तवं तिथिं य तीसु जोयमसु अवाहाए सम्बाहिरए अवाहाए-  
मडके पक्षते । सम्बाहिरए वं भन्ते । जक्कडामडके केवह्य आयामविकर्ममेव  
जेवह्य परिक्षेदेव य ॥ गोवमा । पक्षमत्वाई जोयमसुहस्तवं उक्कडाते जोयमल्ल  
आयामविकर्ममेव तिथिं य जोयमसुहस्तवं पक्षमरु जोयमसुहस्तवं सूक्ष्मान्दे  
वं जोयमत्वाई तिथिमिसेताहिपु परिक्षेवेव पक्षते उक्कडाहिरए वं भन्ते । जक्कडा-  
मडके केवह्य आयामविकर्ममेव जेवह्यं परिक्षेदेव पक्षते ॥ गोवमा । एष जोयम-  
सुहोनं जेवह्य खेती पक्षद्व ॥ गोवमा । वं जोयमसुहस्तवं दोभिं य पक्षद्वे  
जोयमसु अद्यात्म य मागसुहस्ते दोभिं य हेष्टु भागसुए गच्छ भंडाई एष्टी-  
साए भागसुहसेहि य सट्टेहि सप्तेहि लेता । अमा वं भन्ते । पक्षमत्वाई सम्भ-  
वाहिरए भडके उक्कडामिता चारे चरद त्वा वं एगमेवेव सुहोवं जेवह्य वेत्त  
गच्छ ॥ गोवमा । वं जोयमसुहस्तवं तिथिं य एग्लाजीसे जोयमल्ल योक्तु वं  
भागसुहसेहि तिथिं य पक्षद्वे भागसुए गच्छ भडके एफ्लीसाए भागसुहसेहि  
जबहि य सट्टेहि सप्तेहि लेता एष वं भन्ते । अहु जक्कडामडका जबहि चंद्रमडमेहि  
समोवरति ॥ गोवमा । अद्याहि चंद्रमडमेहि समोवरति तंज्ञा—तंज्ञा—तंज्ञा—तंज्ञा—  
द्युप छटे सुतम अहुमे वसमे इहात्ममे फक्तरुमे चंद्रमडके स्वमोवं  
भन्ते । सुहोनी जेवह्याई भागसुयाई गच्छ ॥ गोवमा । वं वं भडके उक्कडामिता चारे  
चरद त्वा २ भडकल्परिक्षेक्षसु सुतरसु अहु भागसुए गच्छ भडके सुक्ष्मान्देवं

अद्वाणउईए य सएहिं छेता इति । एगमेगेण भन्ते । मुहुत्तेण सूरिए केवइयाइं भाग-  
सयाइं गच्छइ २ गोयमा । ज जं मडल उवसकमिता चार चरइ तस्स २ मंडलपरि-  
क्खेवस्स अद्वारसतीसे भागसए गच्छइ मंडल सयसहस्रसेहिं अद्वाणउईए य सएहिं  
छेता, एगमेगेण भते । मुहुत्तेण णक्खते केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ २ गोयमा ।  
ज जं मडल उवसकमिता चार चरइ तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अद्वारस  
पणतीसे भागसए गच्छइ मंडल सयसहस्रसेण अद्वाणउईए य सएहिं छेता ॥ १४९ ॥  
जम्बुद्धीवे ण भते । दीवे सूरिया उदीणपाईणमुगच्छ पाईणदाहिणमागच्छति १  
पाईणदाहिणमुगच्छ दाहिणपढीणमागच्छति २ दाहिणपढीणमुगच्छ पढीणउदीण-  
मागच्छति ३ पढीणउदीणमुगच्छ उदीणपाईणमागच्छति ४ २ हता गोयमा । जहा  
पचमसए पढमे उद्देसे जाव पौवत्यि ० उस्तपिणी अवट्टिए ण तत्थ काले ० ० समणा-  
उसो ।, इच्चेसा जम्बुद्धीवपणती सूरपणती वत्युसमैसेण सम्मता भवइ । जम्बुद्धीवे  
ण भते । दीवे चदिमा उदीणपाईणमुगच्छ पाईणदाहिणमागच्छति जहा सूरवत्त-  
व्या जहा पचमसयस्स दसमे उद्देसे जाव अवट्टिए ण तत्थ काले पणते समणा-  
उसो ।, इच्चेसा जम्बुद्धीवपणती चदपणती वत्युसमैसेण सम्मता भवइ ॥ १५० ॥  
कइ ण भन्ते । सवच्छरा पणता २ गोयमा । पच सवच्छरा ०, त०-णक्खतसव-  
च्छरे जुगसवच्छरे पमाणसवच्छरे लक्खणसवच्छरे सणिच्छरसवच्छरे । णक्खत-  
सवच्छरे ण भन्ते । कइविहे पणते २ गोयमा । दुवालसविहे ०, त०-सावणे  
महवए आसोए जाव आसाढे, ज वा विहप्पई महगहे दुवालसेहिं सवच्छरे  
सव्वणक्खतमडल समाणेइ सेत्त णक्खतसवच्छरे । जुगसवच्छरे ण भन्ते । कइविहे  
पणते २ गोयमा । पंचविहे ०, तजहा—चंदे चदे अभिवट्टिए चटे अभिवट्टिए  
चैवेति, पढमस्स ण भन्ते । चन्दसवच्छरस्स कइ पब्बा पणता २ गोयमा । चउब्बीस  
पब्बा पणता, विड्यस्स ण भन्ते । चन्दसवच्छरस्स कइ पब्बा पणता २ गोयमा ।  
चउब्बीस पब्बा पणता, एव पुच्छा तइयस्स, गोयमा । अभिवट्टियसवच्छरस्स  
छब्बीस पब्बा ०, चउत्यस्स ० चन्दसवच्छरस्स ० चौब्बीस पब्बा ०, पंचमस्स ण ०  
अभिवट्टियस्स ० छब्बीस पब्बा पणता, एवामेव सपुब्बावरेण पचसवच्छरिए जुए एगे  
चउब्बीसे पब्बसए पणते, सेत्त जुगसवच्छरे । पमाणसवच्छरे ण भन्ते । कडविहे पणते २  
गोयमा । पचविहे पणते, तजहा—गङ्कवत्ते चन्दे उऊ आइच्चे अभिवट्टिए, सेत्त

१ आइश्वरीवस्स जहावट्टियसरुचणिस्तिविगा गधपद्धई-तीए । २ सूरियाहिगारप-  
टिवद्वापयपद्धई । ३ मडलसखाईण सूरियपणतीआइमहागाधावेक्षताए सखेवो तेण ।  
४ चदाहिगार० । ५ मटलसखाईण चदपणतीआइ० ।

प्रमाणसंकल्परे । अन्वयासंकल्परे च मन्ते । कहिहे पञ्चते ॥ गोवमा ॥ कंवर्ति  
पञ्चते संबहा—“समवै वक्तव्यां ज्ञेयं जोवति दृमव उद्ध परिवर्तते । बंधुव  
जाहसीमे वहूपमो होह वक्तव्यते ॥ १ ॥ एवं समग्रपुञ्जमासि जोएन्ति विस्म  
आरिष्टक्षयाता । कहूमे वहूपमो य तमाहु संकल्परे चन्द ॥ २ ॥ विस्मं पवालिमे  
परिष्मन्ति भजुम्हु विति पुण्डपर्व । वासे न सम्म वाल्य तमाहु संकल्परे कम्बे  
॥ ३ ॥ पुडिवदगार्व च रसे पुण्डपर्वमध्ये च देह आत्मो । अप्येवति वाचेवं  
सम्म विष्क्राए सस्वे ॥ ४ ॥ वाइवरेवतविया वाप्तमविवदा उद्ध परिष्मन्ति ।  
पूरेह य विष्पर्वले तमाहु अमिवन्तिर्य वाय ॥ ५ ॥” संकल्परसंकल्परे च मन्ते ।  
कहिहे पञ्चते ॥ गोवमा । अद्वायीसाहिहे पञ्चते, तम्हा—अमिहे सवयेव विष्क्रा  
सवमित्यया दो य होति महवया । रेवह अस्तिविभरणी वरिष्म तह देहिती चेत्  
॥ ६ ॥ वाव तत्तराष्ट्रे वासावाम्भो च वा संकिर्ते महमाहे दीसाए संकल्परेह  
सम्व वक्तव्यासम्भवे समानेह देवा विष्क्राएसंकल्परे ॥ ७ ॥ एवमेवस्तु च  
मन्ते । संकल्परस्तु कह मासा पञ्चता ॥ गोवमा । तुष्टास्तु मासा पञ्चता देहि  
न तुष्टिहा वामेवा य तं०—स्त्रेवा अवतारिया य तत्त वोद्धा वासा इसे  
तं०—सावने भरवए वाव वासाहै अवतारिया जामा इमे तंबहा—अमिवरिए पह्ने  
य विष्पर्व पीष्टपद्मे । सेवसि य सिवे चव वितिरे य सहेम्हे ॥ ८ ॥ वर्तमे  
वस्त्रतमासे वस्मे इस्मस्त्रम्हे । एवारसे विदाहे य वनविरोहे य वारसे ॥ ९ ॥  
एवामेवास्तु च मन्ते । मासस्तु कह पञ्चता पञ्चता ॥ गोवमा । दो पञ्चता पञ्चता  
तं०—बंधुवास्तु य दृढपक्षे य । एवामेवास्तु च मन्ते । पञ्चवास्तु च विष्पवा  
पञ्चता ॥ गोवमा । पञ्चरस विष्पवा पञ्चता तं०—विष्पवाविष्पे विष्पवाविष्पे वाव  
पञ्चरसीविष्पे एप्ति च भेते । पञ्चरसहै विष्पवाणे कह वामेवा पञ्चता ॥  
गोवमा । पञ्चरस वामेवा पञ्चता तं०—पुञ्जी विष्पवाविष्पे व तद्ये भोद्धोहे  
चव । वस्मे य वस्मे छ्वे सम्बन्धमस्मिद्दे ॥ १ ॥ इसुज्जाविष्पे व दोमेवास्तु  
पञ्चवए य बोद्धमे । वत्परिद्दे अमिवाए अवस्मे संवेदए चव ॥ २ ॥ अमिवस्मे  
उक्तमे विष्पवार्व होति चामद्दे । एप्ति च भेते । पञ्चरसहै विष्पवार्व च  
दिही पञ्चता ॥ गोवमा । पञ्चरस तिही पञ्चता तं०—वरि मो चए तुष्टे तुष्टे  
पञ्चवास्तु वेवमी पुणरवि वरि भै चए तुष्टे पुञ्जे पञ्चवास्तु वस्मी पुणरवि वरि  
मो चए तुष्टे पुञ्जे पञ्चवास्तु पञ्चरसी एवे त विष्पवावी तिहीभो तम्भेति विष्पवा  
चवि । एवामेवास्तु च भेते । पञ्चवास्तु च राईभो पञ्चतामो ॥ गोवमा । पञ्चरसहै  
राईभो पञ्चतामो ते—विष्पवाहै वाव पञ्चरसीराई, एवानि च भेते । पञ्चरसहै

राईणं कह णामधेजा पण्णता ? गोयमा ! पण्णरस णामधेजा पण्णता, तजहा—  
उत्तमा य सुणक्खता, एलावच्चा जसोहरा । सोमणसा चेव तहा, सिरिसभूया य  
बोद्धव्वा ॥ १ ॥ विजया य वेजयन्ति जयंति अपराजिया य इच्छा य । समाहारा  
चेव तहा तेया य तहा अईतेया ॥ २ ॥ देवाणदा णिरई रथणीण णामधिजाई ।  
एयासि ण भते ! पण्णरसण्ह राईणं कह तिही प० ? गोयमा ! पण्णरस तिही प०,  
त०—उगगवई भोगवई जसवई सञ्चसिद्धा सुहणामा, पुणरवि उगगवई भोगवई जसवई  
सञ्चसिद्धा सुहणामा, पुणरवि उगगवई भोगवई जसवई सञ्चसिद्धा सुहणामा, एवं  
तिगुणा एए तिहीओ सञ्चेसि राईण, एगमेगस्स ण भते ! अहोरत्तस्स कह मुहुता  
पण्णता ? गोयमा ! तीस मुहुता प०, तं०—रहे सेए मिते वाउ मुवीए तहेव अभिचंदे ।  
माहिंद वलव वभे वहुसच्चे चेव ईसाणे ॥ १ ॥ तष्टे य भावियप्पा वेसमणे वाहणे  
य आणंदे । विजए य वीससेणे पायावच्चे उवसमे य ॥ २ ॥ गधब्ब अगिवेसे सय-  
वसहे आयवे य अममे य । अणव भोमे वसहे सञ्चट्टे रक्खसे चेव ॥ ३ ॥ १५२ ॥  
कह ण भन्ते ! करणा पण्णता ? गोयमा ! एकारस करणा पण्णता, तजहा—ववं  
वालवं कोलव थीविलोयण गराइ वणिजं विट्ठी सउणी चउप्पय णागं किंथुग्ध, एएसि  
ण भन्ते ! एकारसण्ह करणाण कह करणा चरा कह करणा थिरा पण्णता ?  
गोयमा ! सत्त करणा चरा चत्तारि करणा थिरा पण्णता, तजहा—ववं वालवं  
कोलवं थीविलोयणं गराइ वणिजं विट्ठी, एए ण सत्त करणा चरा, चत्तारि करणा  
थिरा प०, तं०—सउणी चउप्पय णाग किंथुग्ध, एए ण चत्तारि करणा थिरा पण्णता,  
एए ण भन्ते ! चरा थिरा वा कया भवन्ति ? गोयमा ! स्त्रुक्षपक्खस्स पडिवाए  
राओ ववे करणे भवइ, विड्याए दिवा वालवे करणे भवइ, राओ कोलवे करणे  
भवइ, तइयाए दिवा थीविलोयण करण भवइ, राओ गराइकरण भवइ, चउत्थीए  
दिवा वणिजं राओ विट्ठी पचमीए दिवा वव राओ वालवं छट्ठीए दिवा कोलवं राओ  
थीविलोयण सत्तमीए दिवा गराइ राओ वणिज अट्टमीए दिवा विट्ठी राओ ववं  
णवमीए दिवा वालवं राओ कोलव दसमीए दिवा थीविलोयण राओ गराइ एक्कारसीए  
दिवा वणिज राओ विट्ठी वारसीए दिवा ववं राओ वालव तेरसीए दिवा कोलव  
राओ थीविलोयण चउद्दसीए दिवा गराइकरण राओ वणिजं पुणिमाए दिवा  
विट्ठीकरण राओ वव करण भवइ, बहुलपक्खस्स पडिवाए दिवा वालवं राओ कोलवं  
विड्याए दिवा थीविलोयण राओ गराइ तइयाए दिवा वणिज राओ विट्ठी चउत्थीए  
दिवा वव राओ वालव पचमीए दिवा कोलव राओ थीविलोयण छट्ठीए दिवा गराइ  
राओ वणिज सत्तमीए दिवा विट्ठी राओ वव अट्टमीए दिवा वालवं राओ कोलवं

जन्मीए दिवा वीतिष्ठेयर्थ राजो ग्राह वस्मीए दिवा विवर्त राजो विद्वी एवरदीए  
दिवा वबे राजो वास्त्वे वारसीए दिवा क्लेप्प राजो वीतिष्ठेयर्थ तेरसीए दिवा मण्ड  
राजो विवर्त अवरसीए दिवा विद्वी राजो सरुभी अमावास्याए दिवा अवप्पर्यं राजो  
आगी छाक्षस्त्वस्य पादिवर दिवा विद्वीर्थ भ्रम भ्रात् ॥ १५२ ॥ प्र विमाइदा वं  
माते । संवक्षण विमाइदा जन्मणा विमाइदा उद्ध विमाइदा मासा विमाइदा पक्ष्य  
विमाइदा भावोरता विमाइदा सुहुता विमाइदा करणा विमाइदा अक्षयता पक्ष्यता ।  
गोममा । वंशाद्या संवक्षण विमाइदा जन्मणा पलुसाइदा उद्ध सावधाइदा मासा  
सुहुताइदा पक्ष्यता विमाइदा भावोरता रीहाइदा सुहुता वास्त्वाइदा भ्रमा वदिविं-  
वाहदा अक्षयता पक्ष्यता समाप्तत्वसो । इति । पंक्तिष्ठारिए वं मन्त्र । तुमो  
वेनद्वा जन्मणा वेनद्वा उद्ध एवं मासा पक्ष्यता भावोरता अवद्या सुहुता पक्ष्यता ।  
गोममा । पंक्तिष्ठारिए वं तुमे इस अन्त्या तीर्थ उद्ध सद्वी मासा एवं वीद्वरे  
पक्ष्यता अवप्परस्तीसा अद्वोरक्ष्या अवप्पर्यं सुहुताइद्युत्या वं समा पक्ष्यता ॥ १५३ ॥  
ग्राहा—जोगा १ देवय २ दात्रय ३ गोता ४ उंडाण ५ वंदरविजोगा ६ । उद्ध वं  
पुष्टिम अमावस्या व ८ सत्प्रियाए ९ व वेदा व १० ११ १२ वं मन्त्रे ।  
अक्षयता पं गोममा । अद्वावीर्थं अक्षयता पं तं—अमिरै १ सवनो २ विद्वा ३  
समितिमा ४ पुष्टिमाइवा ५ उत्तरमाइवा ६ रेतौ ७ अस्तिष्ठी ८ मरणी ९  
व्यतिया १ रोहिणी ११ मित्रिति १३ वज्र १५ पुष्टिमृदु १४ वृष्टे १५  
अस्तेता १६ मवा १७ पुष्टिमगुणी १८ उत्तरफगुणी १९ हत्तो २० विद्वा २१  
साई २२ विद्वाहा २३ अद्वाहा २४ वेदा २५ मूर्ख २६ पुष्टिमाता २७  
उत्तरमाता २८ इति ॥ १५५ ॥ एएषि वं मन्त्रे । अद्वावीसाए अक्षयता  
व्यवे अक्षयता व्ये वं समा अवद्यस्य दावितेष्ठ जोर्यं जोर्यति व्यवे अक्षयता व्ये वं  
समा वंदेस्य उत्तरेवं जोर्यं जोर्यति व्यवे अक्षयता व्ये वं वंदेस्य दावितेष्ठपि फ्लार्पि  
जोर्यं जोर्यति व्यवे अक्षयता व्ये वं समा अवद्यस्य फ्लार्पि जोर्यं जोर्यति ३ येवता ।  
एएषि वं अद्वावीसाए अक्षयता वं व्ये वं अक्षयता व्ये वं समा वंदेस्य दाविते  
व्यवे व्यवे जोर्यति ते वं ४ उंडाण—उडाण १ अह २ पुस्तो ३ उसिरेण ४ इत्यो ५  
व्यवे व्यवे ६ । वाहिरलो वाहिरमंडक्षस्त छम्पेत अक्षयता ॥ १ ॥ वं तत्य वं व्ये  
ते अक्षयता व्ये वं समा अवद्यस्य उत्तरेवं जोर्यं जोर्यति ते वं वारुष तं—अमिरै  
समये विद्वा सवमितिमा पुष्टिमाइवा उत्तरमाइवा रेतौ विसिष्ठी मरणी पुष्टा  
गुणी उत्तरफगुणी उर्ध्वं दूर्व वं व्ये ते अक्षयता व्ये वं समा अवद्यस्य दाविते

ओवि उत्तरओवि पमद्वपि जोगं जोएंति ते ण सत्त, तजहा-कत्तिया रोहिणी पुणव्वसु  
मधा नित्ता विसाहा अणुराहा, तत्य ण जे ते णक्खत्ता जे णं सया चन्दस्स  
दाहिणओवि पमद्वपि जोग जोएंति ताओं दुवे आसाढाओ सव्ववाहिरए मंडले  
जोग जोइंसु वा ३, तत्य णं जे से णक्खत्ते जे णं सया चन्दस्स पमई० जोएह सा  
णं एगा लेड्वा इति ॥ १५६ ॥ एएसि णं भन्ते ! अट्टावीसाए णक्खत्ताण अभिई  
णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णते ? गोयमा ! वम्हदेवयाए पण्णते, सवणे णक्खत्ते विण्हु-  
देवयाए पण्णते, धणिड्वा० वसुदेवयाए पण्णते, एएणं क्षेण णेयव्वा अणुपरिवाही  
इमाओ देवयाओ-वम्हा विण्हु वसू वरुणे अए अभिवही पूसे आसे जमे अग्नी पया-  
वई सोमे रहे अदिई वहस्सई सप्पे पिठ भगे अज्ञम सविया तट्टा वाऊ इदग्नी  
मितो इदे पिरई आऊ विस्सा य, एवं णक्खत्ताणं एसा परिवाही णेयव्वा जाव  
उत्तरासाढा किंदेवया पण्णता ? गोयमा ! विस्सदेवया पण्णता ॥ १५७ ॥ एएसि  
णं भन्ते ! अट्टावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कङ्कारे पण्णते ? गोयमा !  
तितारे प०, एवं णेयव्वा जस्स जइयाओ ताराओ, इम च त तारग्गं-तिगतिगपच-  
गसयदुग दुगवत्तीसगतिग तह तिगं च । छप्पचगतिगएक्कगपंचगतिग छक्कगं चेव  
॥ १ ॥ सत्तगदुगदुग पचग एक्केक्कग पच चउतिगं चेव । एक्कारसग चउक्कं चउक्कं  
चेव तारग्ग ॥ २ ॥ ति ॥ १५८ ॥ एएसि णं भन्ते ! अट्टावीसाए णक्खत्ताणं  
अभिई णक्खत्ते किंगोत्ते प० ? गोयमा ! मोगलायणसगोत्ते०, गाहा-मोगलायण १  
सखायणे २ य तह अग्नभाव ३ कणिणहे ४ । तत्तो य जाउक्कणे ५ धणंजाए ६  
चेव वोद्धन्वे ॥ १ ॥ पुस्सायणे ७ य अस्सायणे य ८ भगगवेसे ९ य अगिगवेसे  
१० य । गोयम ११ भारहाए १२ लोहिचे १३ चेव वासिष्टे १४ ॥ २ ॥ ओम-  
ज्ञायण १५ मठब्बायणे १६ य पिंगायणे १७ य गोवहे १८ । कासव १९ कोसिय  
२० दब्भा २१ य चामरच्छाय २२ सुगा य २३ ॥ ३ ॥ गोवलायण २४ तेगि-  
च्छायणे २५ य कच्छायणे २६ हवह मूले । तत्तो य वज्ज्ञयायण २७ वरघावचे य  
गोत्ताइ २८ ॥ ४ ॥ एएसि ण भन्ते ! अट्टावीसाए णक्खत्ताण अभिईणक्खत्ते  
किंसिठिए पण्णते ? गोयमा ! गोसीसावलिसिठिए प०, गाहा-गोसीसावलि १ काहार २  
सरणि ३ पुफ्फोवयार ४ वावी य ५-६ । णावा ७ आसक्खधग ८ भग ९  
छुरधरए १० य सगङ्कुद्धी ११ ॥ १ ॥ मिगसीसावलि १२ रुहिरविंदु १३ तुल १४  
वद्धमाणग १५ पडागा १६ । पागारे १७ पलियंके १८-१९ हृत्ये २० सुहफुलए २१  
चेव ॥ २ ॥ खीलग २२ दामणि २३ एगावली २४ य गयदत २५ विच्छुअयले  
य २६ । गयविक्षमे २७ य तत्तो सीहणिसीही य २८ सठाणा ॥ ३ ॥ १५९ ॥

एएति वं मन्ते ! अमुखीसाए अक्षयातार्थ अमिरेणकरो अमुहुते अन्देष सर्वि  
जोर्यं ओएह ! गोप्यमा ! अब मुहुते सतावीर्यं व सत्प्रियमाए मुहुतस्त व रेष सर्वी  
जोर्यं ओएह, एवं इमाहि गाहाहि अमुखन्तर्म्भ—अमिरस अन्दजोगो सतावीर्यिनो  
अहोरत्ते । ते हृषि अब मुहुता सतावीर्यं कललो व प १ ॥ सदमित्या भरण्ये  
आ अस्तेष साद जेत्तु व । एए अम्बक्षाता पञ्चरसमुहुतसंजोगा ॥ २ ॥  
तिष्ठेव उत्तराई पुष्टम्भू रोहिणी विसाहा व । एए अम्बक्षाता पञ्चरसमुहुतसंजोगा  
प ३ ॥ अस्तेषा अक्षयाता पञ्चरसवि हृषि दीससमुहुता । अन्दमि एष वेष्ये  
अक्षयातार्थ मुधीयत्वो ॥ ४ ॥ एएति वं मन्ते ! अमुखीसाए अक्षयातार्थ अमिरेण  
करो अ अहोरते सूरेष सर्वी जोर्यं ओएह ! गोप्यमा ! अतारि अहोरते अ  
मुहुते सूरेष सर्वि जोर्यं ओएह, एवं इमाहि गाहाहि वेष्यर्थ—अमिरै अब मुहुते  
अतारि व वेष्ये अहोरते । सूरेष सम्ब गक्षय एयो सेचान गोप्यमि ॥ ५ ॥ सद  
मित्या भरणीयो अह अस्तेष साद जेत्तु व । कर्त्तिं मुहुते इमाहि वेष्यजोरते  
॥ ६ ॥ तिष्ठेव उत्तराई पुष्टम्भू रोहिणी विसाहा व । कर्त्तिं मुहुते विष्णि  
वेष वीर्यं अहोरते ॥ ७ ॥ अस्तेषा अक्षयाता पञ्चरसवि सूरखप्या वर्ति ।  
वारस वेष मुहुतो वेरस व एम अहोरते ॥ ८ ॥ प १६ ॥ अ वं मन्ते ! अम्भ  
अ उक्षयमा अ अम्भेक्षुमा पञ्चया ! गोप्यमा ! वारस कुञ्ज वारस उक्षुम  
अतारि कुञ्जेक्षुम्य पञ्चया वारस कुञ्ज तंश्वा—पञ्चिक्षुम । उत्तराई  
वारसुर्यं २ अस्तिसभीकुञ्जं ३ अक्षिक्षुम्यं ४ मिंगारिकुञ्जं ५ पुस्तो कुञ्जं ६ वेष-  
कुञ्जं ७ उत्तराक्षयुक्तिकुञ्जं ८ वित्तकुञ्जं ९ विसाहकुञ्जं १ मूँडे कुञ्जं ११ वर्णरा-  
साक्षकुञ्जं १२ । मासार्थं परिक्षामा हौति कुञ्ज उक्षुम्य उ हेत्तिम्या । हौति उष  
कुञ्जेक्षुमा अमीत्यस्य वह अमुराहा ॥ १ ॥ वारस उक्षुम्य त ॥ उत्तराई उक्ष-  
कुञ्जं १ पुष्टमदयवा उक्षुम्यं २ रेष्यै उक्षुम्यं ३ मरणी उक्षुम्यं ४ रोहिणी उक्षुम्यं ५  
पुष्टम्भू उक्षुम्यं ६ अस्तेषा उक्षुम्यं ७ पुष्टम्भुयी उक्षुम्यं ८ हल्लो उक्षुम्यं ९  
साई उक्षुम्यं १ जेत्तु उक्षुम्यं ११ पुष्टासाडा उक्षुम्यं १२ । अतारि कुम्भे  
कुञ्ज ठंश्वा—अमिरै कुञ्जेक्षुम्य १ अवमित्या कुञ्जेक्षुम्य २ आ अम्भेक्षुम्य ३  
अमुहुहा कुम्भेक्षुम्य ४ । अ वं मन्ते ! पुष्टिमायो वह अमावास्ये पञ्च-  
यात्यो ५ वेष्यमा ! वारस पुष्टिमायो वारस अमावास्यायो व ६ त ॥ अदित्ये  
पेत्तुराई आसोरै अतिरी मग्नारियो पोशी माही पञ्चयी वेती वर्षाही वेत्तुराई  
आसार्यी सावित्तिम्ब बन्ते । पुष्टिमायी वह अक्षया जीर्ण जोर्यति ६ वोप्यमा ।  
विष्णि पञ्चया वेती जोर्यति व ७ —अमिरै सद्यो वर्षिद्वा । पेत्तुराईम्ब वेत्तु ।

पुणिमं कह णक्खता जोगं जोएति ? गोयमा ! तिणि णक्खता० जोएति, त०-  
 सयभिसया पुब्वभद्रवया उत्तरभद्रवया, अस्सोइण्णं भते ! पुणिम कइ णक्खता  
 जोगं जोएति ? गोयमा ! दो जोएति, त०-रेवै अस्सिणी य, कत्तिइण्ण दो-भरणी  
 कत्तिया य, मगसिरिण्णं दो-रोहिणी मगसिर च, पोसिं णं तिणि-अहा पुणव्वसू  
 पुस्सो, माविण दो-अस्सेसा मधा य, फरगुणि ण दो-पुब्वाफरगुणी य उत्तरा-  
 फरगुणी य, चेत्तिण दो-हृस्थो चित्ता य, विसाहिण्णं दो-साई विसाहा य, जेट्टा-  
 मूलिण्ण तिणि-अणुराहा जेट्टा मूलो, आसादिण्ण दो-पुब्वासाढा उत्तरासाढा ।  
 साविट्टिण्ण भन्ते ! पुणिमं किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?  
 गोयमा ! कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ कुल जोएमाणे  
 धणिट्टा णक्खते जोएइ उवकुल जोएमाणे सवणे णक्खते जोएइ कुलोवकुल जोए-  
 माणे अभिई णक्खते जोएइ, साविट्टिण्ण पुणिमासि कुल वा जोएइ जाव कुलो-  
 वकुल वा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता  
 साविट्टी पुणिमा जुत्तति वत्तव्व सिया, पोट्टविण्ण भते ! पुणिम कि कुल जोएइ  
 ३ पुच्छा, गोयमा ! कुल वा० उवकुल वा० कुलोवकुल वा जोएइ, कुल जोएमाणे  
 उत्तरभद्रवया णक्खते जोएइ उ० पुब्वभद्रवया० कुलोव० सयभिसया णक्खते  
 जोएइ, पोट्टविण्णं पुणिम कुलं वा जोएइ जाव कुलोवकुल वा जोएइ कुलेण वा  
 जुत्ता जाव कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोट्टवै पुणमासी जुत्तति वत्तव्व सिया,  
 अस्सोइण्णं भन्ते ! पुच्छा, गो० ! कुलं वा जोएइ उवकुलं वा जोएइ णो लब्भइ  
 कुलोवकुल, कुल जोएमाणे अस्सिणीक्खते जोएइ उवकुले जोएमाणे रेवैणक्खते  
 जोएइ, अस्सोइण्ण पुणिम कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ कुलेण वा जुत्ता  
 उवकुलेण वा जुत्ता अस्सोइ पुणिमा जुत्तति वत्तव्व सिया, कत्तिइण्ण भते !  
 पुणिम कि कुल पुच्छा, गोयमा ! कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ णो  
 कुलोवकुल जोएइ, कुल जोएमाणे कत्तियाणक्खते जोएइ उव० भरणी०, कत्तिइण्ण  
 जाव वत्तव्व०, मगसिरिण भते ! पुणिमं किं कुल त चेव दो जोएइ णो भवै  
 कुलोवकुल, कुल जोएमाणे मगसिरेणक्खते जोएइ उ० रोहिणी०, मगसिरिण  
 पुणिम जाव वत्तव्व सिया इति । एव सेसियाओडवि जाव आसाढि, पोसिं जेट्टा-  
 मूलि च कुल वा उ० कुलोवचुल वा, सेसियाणं कुल वा उवकुल वा कुलोवकुल ण  
 भण्णइ । साविट्टिण्ण भते ! अमावास कह णक्खता जोएति ? गोयमा ! दो  
 णक्खता जोएति, त०-अस्सेसा य महा य, पोट्टविण्ण भते ! अमावास कह णक्खता  
 जोएति ? गोयमा ! दो पुब्वाफरगुणी उत्तराफरगुणी य, अस्सोइण्ण भते !

दो-हत्ये चित्ता च कर्तिहर्ण दो-साई चित्ताहा य ममासिरिणी विष्णि-मुण्डा  
जेन्द्र मूले च पोक्षिण्ड दो-गुण्डासाग्र उत्तरासाडा माद्विष्ण शिखि-ममिरै  
सष्ठो भविष्टु फलगुणि वै विष्णि-समगिषया पुष्टमदया उत्तरमदया जेतिन्द्र  
दो-रेत्वै असिसी च वद्याशिष्व दो-मरणी करिदा च जेन्द्रमृतिन्द्र दो-हेत्वै  
ममासिर च आसासिष्व शिष्णि-आहा पुष्टमदू पुस्तो इति । साविद्विष्व भंडे ।  
अमादरात्ये कि हुतं बोध उत्तुङ्ग जोए इन्द्रेन्द्रुद्वं बोध ३ वोधमा । कुर्वता वोध  
उत्तुङ्ग वा जोए दो गम्भार कुसोन्दुर्वं कुर्व बोधमाने महाजनकरौ जोए उत्तुङ्ग  
बोधमाने अस्तेषाप्यकरौ जोए, साविद्विष्व अमावासु कुर्वता वा जोए उत्तुङ्ग  
वा जोए, कुर्वेण वा तुता उत्तुङ्गेन वा तुता साविद्वी अमावासा तुताति वात्यर्थ  
सिदा पेन्द्रुप्रिष्व भंडे । अमावासु तं चेद दो जोए इन्द्रं वा बोध उत्तुङ्ग  
कुर्व बोधमाने उत्तराफलगुणी एक्षरौ जोए उत्तुङ्ग पुष्टाफलगुणी पोद्विष्व अमा-  
वासु वाव वात्यर्थ सिदा मगगिरिल्लं तं चेद इन्द्रं मूले एक्षरौ जोए उत्तुङ्ग-  
इन्द्रेन्द्रुद्वं उत्तुराहा वाव तुताति वात्यर्थ सिदा एवं माहीए फलगुणीए आसावैए  
कुर्वता वा उत्तुङ्ग वा कुसोन्दुर्वं वा अवरेतियावर्त कुर्वता वा उत्तुङ्ग वा बोध ३  
वदा वं भंडे । साविद्वी पुष्टिमा मवह तथा वं माही अमावासा भवह वदा वं  
माही पुष्टिमा भवह वदा वं साविद्वी अमावासा भवह । हृता गोममा । वदा  
वं साविद्वी तं चेद वात्यर्थ वदा वं भंडे । पेन्द्रुहै पुष्टिमा भवह तथा वं  
फलगुणी अमावासा भवह वदा वं फलगुणी पुष्टिमा भवह तथा वं पेन्द्रुहै अमा-  
वासा भवह । हृता गोममा । तं चेद एवं एवं अभिलादेवं इमानो पुष्टिमाने  
अमावासानो ऐप्पाव्वाजो-असिसी पुष्टिमा वत्ती अमावासा असिसी पुष्टिमा एवं  
ताही अमावासा मम्मिहि पुष्टिमा जेन्द्रमूडी अमावासा पोद्वी पुष्टिमा आसावै  
अमावासा ॥ १६१ ॥ वात्यर्थ भंडे । फलमं मार्द वक्षता भेति । वोधमा ।  
चत्तारि वक्षता भेति तं—उत्तरासाडा अमिरै उक्षो भविष्टु उत्तरासाडा उत्तर  
वहोरते वेह, अमिरै उत्तर वहोरते वेह, उक्षो भविष्टवहोरते वेह वविष्ट एवं वहोरते  
वेह, तंसि व वं मासिहि वठापुक्षवोरित्वीए उत्तराए उत्तरेव अत्यविवद्ध, उत्तर वं  
मासस्तु चरिमरिष्वे दो फ्या चत्तारि व अगुण्ड पोरिसी भवह । वात्यर्थ भंडे । दोवे  
मार्द वक्षता भेति । वोधमा । चत्तारि तं—वविष्ट सवभिहमा पुष्टाभवमा  
उत्तराभवमा वविष्ट वं उत्तर वहोरते वेह, उत्तराभवमा उत्तर वहोरते वेह, पुष्टा-  
भवमा अद्व वहोरते वेह, उत्तराभवमा एवं तंसि व वं मासिहि अद्वपुक्षवोरित्वीए  
उत्तराए उत्तरेव अत्यविवद्ध, उत्तर वं मासस्तु चरिमे विक्षे दो पवा अद्व व अनुभव

पोरिसी भवइ । वासाण भन्ते । तइय मासं कह णक्खता जेति ? गोयमा ! तिण्ण  
णक्खता जेति, त०-उत्तरभद्रया रेवई अस्सिणी, उत्तरभद्रया चउद्दस राइदिए गेइ,  
रेवई पण्णरस० अस्सिणी एगं०, तसि च ण माससि दुवालसगुलपोरिसीए छायाए  
सूरिए अणुपरियद्व, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहटाइं तिण्ण पयाइं पोरिसी  
भवइ । वासाण भन्ते । चउत्थ मास कह णक्खता जेति ? गोयमा ! तिण्ण०, त०-  
अस्सिणी भरणी कत्तिया, अस्सिणी चउद्दस० भरणी पण्णरस० कत्तिया एगं०, तंसि च  
ण माससि सोलसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्स ण मासस्स चरिमे  
दिवसे तिण्ण पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ । हेमन्ताण भन्ते ! पठम मास कह  
णक्खता जेति ? गोयमा ! तिण्ण०, त०-कत्तिया रोहिणी मिगसिरे, कत्तिया चउद्दस०  
रोहिणी पण्णरस० मिगसिरे एगं अहोरत्त गेइ, तंसि च ण माससि वीसगुलपोरिसीए  
छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्स ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च ण  
दिवससि तिण्ण पयाइ अट्ठु य अगुलाइ पोरिसी भवइ, हेमताण भन्ते ! दोच्च मास  
कह णक्खता जेति ? गोयमा ! चत्तारि णक्खता जेति, तंजहा-मिगसिरे अहा  
पुणब्बसू पुस्तो, मिगसिरे चउद्दस राइदियाइ गेइ, अहा अट्ठ० गेइ, पुणब्बसू सत्त  
राइंदियाइ०, पुस्तो एग राईंदियं गेइ, तथा ण चउब्बीसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए  
अणुपरियद्व, तस्स ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च ण दिवससि लेहटाइं  
चत्तारि पयाइं पोरिसी भवइ, हेमन्ताण भत्ते ! तच्च मास कह णक्खता जेति ?  
गोयमा ! तिण्ण०, त०-पुस्तो असिलेसा महा, पुस्तो चोद्दस राइदियाइ गेइ, असिलेसा  
पण्णरस० महा एक०, तथा ण वीसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्स  
ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च ण दिवससि तिण्ण पयाइ अट्ठुगुलाइ पोरिसी  
भवइ । हेमताण भन्ते ! चउत्थ मास कह णक्खता जेति ? गोयमा ! तिण्ण ण०,  
त०-महा पुब्बाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी, महा चउद्दस राइदियाइ गेइ, पुब्बाफग्गुणी  
पण्णरस राइदियाइ गेइ, उत्तराफग्गुणी एग राईदिय गेड, तथा ण सोलसगुलपोरिसीए  
छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्स ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च ण  
दिवससि तिण्ण पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ । गिम्हाण भन्ते ! पठम मास  
कह णक्खता जेति ? गोयमा ! तिण्ण णक्खता जेति, त०-उत्तराफग्गुणी हत्यो  
चित्ता, उत्तराफग्गुणी चउद्दस राइदियाइ गेड, हत्यो पण्णरस राइदियाइ गेइ, चित्ता  
एगं राईंदिय गेइ, तथा ण दुवालसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्स  
ण मासस्स जे से चरिमे दिवसे तसि च ण दिवससि लेहटाइं तिण्ण पयाइं पोरिसी  
भवइ, गिम्हाण भन्ते ! दोच्च मास कह णक्खता जेति ? गोयमा ! तिण्ण णक्खता

नेति तं—विता साई विचाहा विता अवस्था रवद्विवार्द्ध नेत्र, साई पञ्चरस एवं जाई नेत्र विचाहा एवं रवद्विवर्द्ध नेत्र, तथा वं अद्युगुम्भोरिषीए छम्याए सरिए अनुपरिवद्ध, तस्य वं मासस्य वं से अरिमे दिवसे तंति वं वं दिवसंति दो पर्व अद्युगुम्भार्द्ध पोरिषी मवद् । विम्हार्ण मन्त्रे । तत्त्वं मासे अद्य अम्भुठां नेति । योक्ता । अतारि अम्भुठां वेति अवाहा—विचाहाऽम्भुठां अद्युगुम्भोरिषीए छम्याए सरिए अनुपरिवद्ध नेत्र, अवाहा अद्युगुम्भार्द्ध नेत्र, अद्युगुम्भोरिषीए छम्याए सरिए अनुपरिवद्ध, तस्य वं मासस्य वं से अरिमे दिवसे तंति वं वं दिवसंति दो पर्व अवाहा अद्युगुम्भार्द्ध पोरिषी मवद् । विम्हार्ण मन्त्रे । अवर्त्त्वं मासे अद्य अम्भुठां नेति । योक्ता । तिति अम्भुठां नेति तं—मूलो पुम्भासाडा उत्तरायांडा मूले अवस्था रवद्विवर्द्ध नेत्र, पुम्भासाडा पञ्चरस रवद्विवर्द्ध नेत्र, उत्तरायांडा एवं रवद्विवर्द्ध नेत्र, तथा वं वद्याए सम्बद्धं संस्थाठांसंविकाए अग्नोहपरिमण्डाए अग्नबम्भुर्गिवाए छम्याए सरिए अनुपरिवद्ध, तस्य वं मासस्य वं से अरिमे दिवसे तंति वं वं दिवसंति दो पर्व अवाहा अद्युगुम्भार्द्ध पोरिषी मवद् । एषां वं पुम्भाभिकार्णं पर्वाणं हमा संयाहणी तं—ज्ञेयो देववत्परम्परो गोत्तम्भाग्न अवद्विविजोगो । कुम्भुभिकम्भमवस्था वेता छम्या य बोद्धम्या ॥ १ ॥ १२ ॥ गाहा—हिति संतिपरिवारो मन्वरूपाहा तदेव स्वेति । अरिमितां अवाहा अतो वाही वं अवाहुते ॥ १ ॥ १ संग्रामं वं पर्वाणं वाहति द्विवार्द्धे अहिम्भ्या य । तारद्वरज्ञगमहिषी द्रुदिव अद्य द्विव य अप्यवद् ॥ २ ॥ अरिम वं मन्त्रे । अदिवस्युरिवार्द्ध हित्तिपि ताराम्भा अभ्युपि द्रुदामि संमेति ताराम्भा अभ्युपि द्रुदामि उपिति ताराम्भा अभ्युपि द्रुदामि । हृता योक्ता । तं तेव तत्त्वारेकार्णं से केवल्लेप मन्त्रे । एवं अवद्—अतिव वं अहा अहा वं तेति देवार्णं तदक्षिणं मवंमधेरार्द्ध अस्तिवार्द्ध मवन्ति तदा तदा वं तेति वं देवार्णं एवं पञ्चम्य, तदवाहा—अतुतो वा द्रुदामि वा अहा अहा वं तेति देवार्णं तदक्षिणं मवंमधेरेवं ज्ञाते ॥ १११ ॥ एवमेषस्य वं मन्त्रे । अन्वस्तु वेत्तव्या महम्भाहा परिवारो वेत्तव्या पञ्चम्भाहा परिवारो वेत्तव्याम्भो ताराम्भक्षेत्रमधेयीं वं पञ्चम्भाहे । योक्ता । अद्युर्वीर्यमहम्भाहा परिवारो अद्युर्वीर्यमहम्भाहा परिवारो अभ्युत्तिवाहस्तार्द्ध वं च चम्या पञ्चम्भाहा ताराम्भक्षेत्रमधेयीं वं पञ्चम्भाहो ॥ ११४ ॥ मन्वस्य वं मन्त्रे । पञ्चम्भाहा अवर्त्त्वं याए अवाहाए बोद्धसे वार अव्य । योक्ता । इवारसहि इवारसहि अवेष्टन्तराए अवाहाए बोद्धसे वार अव्य । वेत्तव्याए अवाहाए वेष्टन्ते । वेत्तव्याए अवाहाए वेष्टन्ते ।

पण्ठे २ गोयमा ! एकारसेहि जोयणसएहि अबाहाए जोइसे पण्ठे । धरणितलाओ ण भन्ते । ० सत्तहि णउएहि जोयणसएहि जोइसे चार चरइति, एवं सूरविमाणे अट्ठहिं सएहिं, चंद्रविमाणे अट्ठहिं असीएहिं, उवरिले तारारूपे णवरहिं जोयणसएहि चार चरइ । जोडसस्स ण भन्ते । हेट्टिलाओ तलाओ केवइयाए अबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ २ गोयमा ! दसहिं जोयणेहिं अबाहाए चारं चरइ, एवं चन्द्रविमाणे णउईए जोयणेहिं चारं चरइ, उवरिले तारारूपे दसुत्तरे जोयणसए चारं चरइ, सूरविमाणाओ चन्द्रविमाणे असीईए जोयणेहिं चारं चरइ, सूरविमाणाओ जोयणसए उवरिले तारारूपे चारं चरइ, चन्द्रविमाणाओ धीसाए जोयणेहिं उवरिले ण तारारूपे चारं चरइ ॥ १६५ ॥ जम्बुदीवे ण भते ! धीवे अट्ठावीसाए णक्खताणं क्यरे णक्खते सब्बब्मंतरिलं चारं चरइ २ क्यरे णक्खते सब्बवाहिरं चारं चरइ ३ क्यरे ० सब्बहिट्टिलं चारं चरइ ४ क्यरे ० सब्बउवरिलं चारं चरइ ५ , गोयमा ! अभिई णक्खते सब्बब्मंतरं चारं चरइ, मूलो सब्बवाहिरं चारं चरइ, भरणी सब्बहिट्टिलंगं० साईं सब्बुवरिलंग चारं चरइ । चन्द्रविमाणे ण भते ! किंसठिए पण्ठे २ गोयमा ! अद्वकविडुसठाणसठिए सब्बफालियामए अब्मुग्यमूसिए एवं सब्बाइं गेयव्वाईं, चन्द्रविमाणे ण भन्ते ! केवइयं आयामविक्खमेण केवइय वाहलेण २ गो ० ।—छपण खलु भाए विच्छिण चन्द्रमडल होइ । अट्ठावीस भाए वाहलु तस्स वोद्वच्व ॥ १ ॥ अड्यालीस भाए विच्छिण सूरमण्डल होइ । चउवीस खलु भाए वाहलु तस्स वोद्वच्व ॥ २ ॥ दो कोसे य गहाणं णक्खताण तु हवइ तस्सद्व । तस्सद्व ताराण तस्सद्व चेव वाहलु ॥ ३ ॥ १६६ ॥ चन्द्रविमाण ण भन्ते । कइ देवसाहस्रीओ परिवहति २ गोयमा ! सोल्स देवसाहस्रीओ परिवहति । चन्द्रविमाणस्स ण पुरत्थिमेण सेयाणं सुभगाण सुप्पभाण सखतलविमलणिम्मल-दहिघणगोखीरफेणरथयणिगरप्पगासाण थिरलट्टपउट्टवझपीवरसुसिलिट्टविसिट्टविक्ख-दाढाविडवियमुहाण रत्तुप्पलपत्तमउयस्मालतालुजीहाण महुगुलियपिंगलक्खाणं पीवरवरोहपडिपुण्णविउलखधाण मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थवरवणकेसरसडोव-सोहियाण कसियसुणामियसुजायअप्पोडियलगूलाण वइरामयणक्खाण वइरामय-दाढाणं वइरामयदन्ताण तवणिज्जीहाण तवणिज्जतालुयाण तवणिज्जजोतगसु-जोहियाण कामगमाण पीडगमाण मणोगमाण मणोरमाण अमियर्द्दीणं अमिय-वलवीरियपुरिसकारपरक्षमाणं महया अप्पोडियसीहणायवोलक्लक्लरवेणं महुरेणं मणहरेण पूरेता अवर दिसाओ य मोभयता चत्तारि देवसाहस्रीओ सीहस्व-धारीणं पुरत्थिमेल वाह परिवहति । चंद्रविमाणस्स ण दाहिणेण सेयाण सुभगाणं



यपासाणं सगयपासाण सुजायपासाण पीवरवट्टियसुसठियकढीण ओल्वपलंबलक्ष-  
णपमाणजुत्तरमणिजवालपुच्छाणं तणसुहुमसुजायणिद्वलोमच्छविहराण मिउविसयसुहु-  
मलक्षणपसत्यविच्छिणकेसरवालिहराण ललत्यासगललाडवरभूसणाण सुहमण्डग-  
ओचूलगचामरथासगपरिमण्डियकढीण तवणिजखुराण तवणिजजीहाण तवणिजतालु-  
याण तवणिजजोत्तमगुजुजोड्याण कामगमाण जाव मणोरमाण अमियगईण अमिय-  
चलवीरियपुरिसकारपरकमाण महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेण मणहरेण पूरेता  
अवर दिसाओ य सोभयता चत्तारि देवसाहस्रीओ हयरुवधारीण देवाण उत्तरिल  
वाह परिवहंति । गाहा—सोलसदेवमहस्ता हवंति चदेसु चेव सूरेसु । अद्वेव मह-  
स्ताईं एकेकमी गहविमाणे ॥ १ ॥ चत्तारि सहस्ताइ णक्खत्तमि य हवति इष्किके ।  
दो चेव सहस्ताइ तारारुवेक्षमेक्षमि ॥ २ ॥ एव सूरविमाणाण जाव तारारुवविमा-  
णाण, णवर एस देवसघाएत्ति ॥ १६७ ॥ एएसि ण भन्ते ! चंदिमसूरियगहरण-  
णक्खत्ततारारुवाण कयरे सब्बसिरघगई कयरे सब्बसिरघतराए चेव ? गोयमा !  
चन्देहिंतो सूरा सिरघगई, सूरेहिंतो गहा सिरघगई, गहेहिंतो णक्खत्ता सिरघगई,  
णक्खत्तेहिंतो तारारुवाण सिरघगई, सब्बप्पगई चन्दा, सब्बसिरघगई तारारुवा इति  
॥ १६८ ॥ एएसि ण भन्ते ! चंदिमसूरियगहरणणक्खत्ततारारुवाण कयरे सब्बमहिंद्विया  
कयरे सब्बप्पहिंद्विया ? गो ! तारारुवेहिंतो णक्खत्ता महिंद्विया, णक्खत्तेहिंतो गहा  
महिंद्विया, गहेहिंतो सूरिया महिंद्विया, सूरेहिंतो चन्दा महिंद्विया, सब्बप्पहिंद्विया  
तारारुवा, सब्बमहिंद्विया चन्दा ॥ १६९ ॥ जम्बुद्वीपे ण भन्ते ! दीपे तारारुवस्स य  
तारारुवस्स य केवइए अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा ! दुविहे प०, त०—वाघाडए  
य निव्वाधाइए य, निव्वाधाइए जहण्णेण पचधणुसयाइ उक्कोसेण दो गाउयाईं,  
वाघाइए जहण्णेण दोणिण छावडे जोयणसए उक्कोसेण वारस जोयणसहस्ताइ  
दोणिण य वायाले जोयणसए तारारुवस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णते ॥ १७० ॥  
चन्दस्स ण भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कह अगगमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा !  
चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णत्ताओ, त०—चन्दप्पमा दोसिणाभा अच्छिमाली पभकरा,  
तओ ण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवीसहस्ताई परिवारो पण्णत्तो, पभू ण ताओ  
एगमेगा देवी अज्ज देवीसहस्स विउव्वित्तए, एवामेव सपुब्बावरेण सोलस  
देवीसहस्ता, सेत तुडिए । पहू ण भंते ! चदे जोइसिंदे जोइसराया चदवडेसए  
विमाणे चन्दाए रायहाणीए सभाए स्त्रहम्माए तुडिएण सद्दि महया हयणद्वीय-  
चाइय जाव दिव्वाई भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! णो इणट्टे समट्टे,  
पभू ण चंदे सभाए स्त्रहम्माए चउहिं सामाणियसाहस्रीहिं एव जाव दिव्वाइ भोग-



यपासाणं सगयपासाण सुजायपासाणं पीवरवद्वियसुसठियकहीण ओलंबपलवलक्ख-  
णपमाणजुतरमणिजवालपुच्छाणं तणुसुहुमसुजायणिद्वलोमच्छविहराण मिउविसयसुहु-  
मलक्खणपसत्थविच्छिणकेसरवालिहराण ललतथासगललाडवरभूसणाण सुहमण्डग-  
ओचूलगचामरथासगपरिमण्डयकहीण तवणिजखराणं तवणिजजीहाण तवणिजताल-  
याण तवणिजजोत्तगसुजोइयाण कासगमाण जाव मणोरमाणं अमियगईण अमिय-  
बलवीरियपुरिसक्षारपरक्कमाण महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेण मणहरेण पूरेता  
अवरं दिसाओ य सोभयता चत्तारि देवसाहस्रीओ हयस्वधारीण देवाण उत्तरिलं  
वाहं परिवहति । **गाहा**—सोलसदेवसहस्ता हवंति चदेसु चेव सूरेसु । अट्टेव सह-  
स्ताइ एकेकभी गहविमाणे ॥ १ ॥ चत्तारि सहस्ताइ णक्खतंमि य हवति इकिके ।  
दो चेव सहस्ताइ तारारूपेक्कमेकमि ॥ २ ॥ एवं सूरविमाणाण जाव तारास्वविमा-  
णाणं, णवरं एस देवसधाएत्ति ॥ १६७ ॥ एएसि ण भन्ते । चंदिमसूरियगहगण-  
णक्खततारास्वाण कयरे सब्बसिगधगई कयरे सब्बसिगधतराए चेव ? गोयमा !  
चन्देहितो सूरा सिगधगई, सूरेहितो गहा सिगधगई, गहेहितो णक्खता सिगधगई,  
णक्खतेहितो तारास्वा सिगधगई, सब्बप्पगई चंदा, सब्बसिगधगई तारास्वा इति  
॥ १६८ ॥ एएसि ण भन्ते । चंदिमसूरियगहगणणक्खततारास्वाण कयरे सब्बमहिञ्छिया  
कयरे सब्बप्पहिञ्छिया ? गो ! तारारूपेहितो णक्खता महिञ्छिया, णक्खतेहितो गहा  
महिञ्छिया, गहेहितो सूरिया महिञ्छिया, सूरेहितो चन्दा महिञ्छिया, सब्बप्पहिञ्छिया  
तारास्वा, सब्बमहिञ्छिया चन्दा ॥ १६९ ॥ जम्बुदीवे ण भन्ते । दीवे तारारूपस्स य  
तारास्वस्स य केवइए अवाहाए अतरे पण्णते ? गोयमा ! दुविहे प०, त०—वाघाइए  
य निव्वाधाइए य, निव्वाधाइए जहणेणं पचधणुसयाइ उक्कोसेण दो गाऊयाइ,  
वाधाइए जहणेण दोणिं छावटे जोयणसए उक्कोसेणं वारस जोयणसहस्ताइ  
दोणिं य वायाले जोयणसए तारास्वस्स य २ अवाहाए अतरे पण्णते ॥ १७० ॥  
चन्दस्स ण भते । जोइसिंदस्स जोइसरणो कइ अगगमहिसीओ पण्णताओ ? गोयमा !  
चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णताओ, त०—चन्दप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभकरा,  
तओ ण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवीसहस्ताइ परिवारो पण्णतो, पभू ण ताओ  
एगमेगा देवी अज्ञ देवीसहस्त विजवित्तए, एवामेव सपुत्रावरेण सोलस  
देवीसहस्ता, सेत्त तुडिए । पहू ण भते । चदे जोइसिंदे जोइसराया चढवडेसए  
विमाणे चन्दाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्विं महया हयणट्टीय-  
वाईय जाव दिव्वाड भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! णो इणट्टे समट्टे,  
पभू ण चदे सभाए सुहम्माए चउहिं सामाणियसहस्रीहिं एव जाव दिव्वाड भोग-

मोगाई भुज्माने विहरिताए केवल परिमारिहीए, जो अब वे मेहुपत्तिर्दि । विक्रमा १  
विजयी २ वर्षीय ३ अपराधिया ४ सम्बेदि गहाईर्ण एकाम्बो अम्बमहिसीओ  
छात्तरस्त्रि गहसमस्त एकाम्बो अम्बमहिसीओ वात्ताम्बो इमाहि गहाईर्ण-  
इंगाम्बए १ विक्रम्बए २ व्येहिके ३ सविच्छरे खेव ४ । आहुमिए ५ पाहुमिए ६  
खलगुसमामा व फेव ११ ॥ १ मे लोमे १२ लहिए १३ वासासुने व १४ फेवे-  
ए १५ व कम्बुरए १६ । अम्बरए १७ दुःखमए संदासामेवि तिळ्केव २ ॥ २ ॥  
एवं माविकर्व वाव नामकेत्तस्त अगगमहिसीओति ॥ १७१ ॥ गाहा-नम्हा निहू-  
य नस् वर्णे ज्यु बुझी पूस आप ज्ञमे । अविग प्यावह खेमे रो अविह वहस्तै  
सप्ये ॥ १ ॥ पिठ मास्त्रजमरिवा ताहा वाळ तहेव ईदम्ही । विते हरि विरी  
आठ विस्ता व बोहम्ही ॥ २ ॥ १७२ ॥ वहस्ताम्हाये वं भंते । देवार्थ फलम्ह  
वाळ ठिहै पम्हता ॥ यो । वहस्तै वहमाम्हापक्षिओवमं उक्षेसेवं पक्षिमोक्षम  
वाससम्हस्तम्हियं वंवमिमाये व देवीर्व वहस्तै वहमाम्हापक्षिमोक्षमं व  
वहमापक्षिओवमं पम्हता वाससहस्रसेविमम्हियं सूरमिमाये देवार्थ व वह  
म्हाम्हापक्षिओवमं उक्षेसेवं पक्षिमोक्षमं वाससहस्रम्हियं सूरमिमाये देवीर्व  
वहस्तै वहमाम्हापक्षिमोक्षमं उक्षेसेवं अद्वपक्षिमोक्षमं वं भंते । वहस्तै वहमाम्हापक्षिमोक्षमं उक्षेसेवं अद्वपक्षिमो-  
क्षमं वहस्तमिमाये देवीर्व वहस्तै वहमाम्हापक्षिमोक्षमं उक्षेसेवं अद्वपक्षिमो-  
क्षमं जन्मवातमिमाये देवीर्व वहस्तै वहमाम्हापक्षिमोक्षमं उक्षेसेवं यात्रीर्व  
वहमाम्हापक्षिमोक्षमं वारामिमाये देवार्थ वहस्तै वहमाम्हापक्षिमोक्षमं उक्षेसेवं  
वहमाम्हापक्षिमोक्षमं वारामिमायेदेवीर्व वहस्तै वहमाम्हापक्षिमोक्षमं उक्षेसेवं  
साइरें वहमाम्हापक्षिमोक्षमं ॥ १७३ ॥ पूर्णि वं भंते । वंविमधुरिवयहुगचन्दनवरा-  
तारास्त्वार्थ रुपरे २ हिंहो अप्पा वा वहुया वा तुडा वा विसेचाहिया वा ॥ ये ।  
वंविमधुरिवा दुष्टे तुडा सम्भत्योवा वक्षता संवेज्युपा गहा संवेज्युपा वारा-  
दवा संवेज्युपा हहि ॥ १७४ ॥ वहमुहीवे वं भंते । हीवे वहमपर वा  
उक्षेसेवए वा वेक्षवा वित्तवर्या सम्भमेवं पञ्चता । वहमुहीवे वं भंते । हीवे वहमपए  
वा उक्षेसेवए वा वेक्षवा वहमटी सम्भमेवं पञ्चता । हीवे वहमपए वारारि  
उक्षेसेवए तीस वहमटी सम्भमेवं पञ्चता । हीवे वहमपए वारारि वा वहमपए  
वहमटी वादवेशावि तातिया वेवहि । वहमुहीवे वं भंते । हीवे वेक्षवा विहित्या

सब्वग्रेण प० ? गो० । तिणि छलुतरा गिहिरयणसया सब्वग्रेण प०, जम्बुदीवेण भन्ते ! दीवे केवइया गिहिरयणसया परिभोगत्ताए हब्वमागच्छति ? गो० । जहणपए छत्तीस उक्कोसपए दोणि सत्तरा गिहिरयणसया परिभोगत्ताए हब्वमागच्छति, जम्बुदीवे० केवइया पचिंदियरयणसया सब्वग्रेण पण्णता ? गो० । दो दसुत्तरा पचिंदियरयणसया सब्वग्रेण पण्णता, जम्बुदीवे० जहणपए वा उक्कोसपए वा केवइया पचिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हब्वमागच्छति ? गो० । जहणपए अट्टावीस उक्कोसपए दोणि दसुत्तरा पचिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हब्वमागच्छति, जम्बुदीवे ण भन्ते ! दीवे केवइया एर्गिंदियरयणसया सब्वग्रेण प० ? गो० । दो दसुत्तरा एर्गिंदियरयणसया सब्वग्रेण प०, जम्बुदीवे ण भन्ते ! दीवे केवइया एर्गिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हब्वमागच्छन्ति ? गो० । जहणपए अट्टावीस उक्कोसेण दोणि दसुत्तरा एर्गिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हब्वमागच्छति ॥ १७५ ॥ जम्बुदीवे ण भन्ते । दीवे केवइयं आयामविक्खमेण केवइय परिक्खेवेण केवइय उव्वेहेण केवइयं उहू उच्चतेण केवइय सब्वग्रेण प० ? गो० । जम्बुदीवे २ एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खमेण तिणि जोयणसयसहस्साइ सोलसय महस्साइ दोणि य सत्तावीसे जोयणसए तिणि य कोसे अट्टावीस च धणुसयं तेरम य अगुलाइ अद्गुल च किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण प०, एग जोयणसहस्स उव्वेहेण णवणउड जोयणसहस्साइ साइरेगाइ उहू उच्चतेण साइरेग जोयणसयसहस्स सब्वग्रेण पण्णते ॥ १७६ ॥ जम्बुदीवे ण भन्ते । दीवे किं सासए असासए ? गोयमा ! सिय सासए सिय असासए, से केणट्टेण भन्ते ! एव बुच्छ-सिय सासए सिय असासए ? गो० । दव्वद्वयाए सासए वणपज्जवेहिं गध० रस० फास-पज्जवेहिं असासए, से तेणट्टेण गो० । एव बुच्छ-सिय सासए सिय असासए । जम्बुदीवे ण भन्ते ! दीवे कालज्जो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! ण कज्जावि णासि ण कज्जावि ण तिथि ण कज्जावि ण भविस्सइ भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णिइए सासए अव्वए अव्विए णिच्चे जम्बुदीवे दीवे पण्णते इति ॥ १७७ ॥ जम्बुदीवे ण भन्ते ! दीवे किं पुढविपरिणामे आउपरिणामे जीवपरिणामे पोगलपरिणामे ? गोयमा ! पुढविपरिणामेवि आउपरिणामेवि जीवपरिणामेवि पुगलपरिणामेवि । जम्बुदीवे ण भन्ते ! दीवे सब्वपणा सब्वजीवा सब्वभूया सब्वसता पुढविकाह-यत्ताए आउकाइयत्ताए तेउकाइयत्ताए वाउकाइयत्ताए वणस्सइकाइयत्ताए उववण्ण-पुञ्च ? हत्ता गो० । असइ अदुवा अणतहृत्तो ॥ १७८ ॥ से केणट्टेण भन्ते ! एव बुच्छ-जम्बुदीवे २ ? गो० । जम्बुदीवे ण दीवे तत्य २ देसे २ तहिं २ बहवे

भाइषजार १८ मासा १९ य फौंच संक्षिकरा इय २ ॥ १४ ॥ जो इसस्तु य राखें  
 २१ यक्षतमिक्षए शिय २२ । दसमे पाहुडे एप बाबीरे पाहुडपाहुडा ॥ १५ ॥  
 तेवं क्षमेवं तेवं समएवं मिहिला नाम वयरी होत्वा रिद्यतिप्रिमिसुमिका प्लुस्ट  
 चण्डाम्भव्या पासारीया ४ ॥ १ ॥ तीसे नै मिहिलए वयरीए वहिमा उपर  
 पुरधिछो शिसीमाए मामिसो जामं उज्जाणे होत्वा वयस्थो ॥ २ ॥ तीसे वै मिहिलए  
 वयरीए विकल्प जामं रामा होत्वा वयस्थो ॥ ३ ॥ तस्तु वै विवरात्तुस्तु रन्धे  
 चारिणी जामं विही होत्वा वयस्थो ४ ५ ॥ तेवं क्षमेवं तेवं समएवं तमिमि ठव्यां  
 सामी समोसुडे परिसा विम्याया भम्मो वहियो परिसा पविगवा जाव राम  
 जाम्ब शिसि पाठम्भूए तामेव शिसि पविगए ॥ ५ ॥ तेवं क्षमेवं तेवं समएवं  
 समपत्स्तु मगम्बो महाभीरत्स्तु लेहु अतेवारी इंद्रमौ जामं अजगारे गोवमे गोतीवं  
 सुनुस्तुहे समन्तराचृष्टालंडिए क्षमिसहारमस्तवने चाव एवं वयारी-री  
 व्य ते जहोन्ही सुहुताण बाहिरेति वएज्ञा ॥ ता अद्युपूर्वीसे सुहुतास्तु सदामीठ  
 व सहिमारे सुहुतास्तु बाहिरेति वएज्ञा ॥ ६ ॥ ता ज्या वै सरिए सम्बन्धतरामो  
 मैदम्बो सम्बन्धाहिर मंडले उवस्थमिता चार चरह सम्बन्धाहिरामो मैदम्बो  
 सम्बन्धतर मंडले उवस्थमिता चार चरह एस वै ज्या लेनहर्य राहिम्बोर्न  
 बाहिरेति वएज्ञा ॥ ता लिप्ति छाहुडे राहिम्बोर्न बाहिरेति वएज्ञा ॥ ७ ॥  
 ता एमाए ज्याए सरिए व्य मंडलरं चरह व्य मंडलर्ह तुनहारे  
 चरह व्य मंडलार्ह एगकहुतो चरह ॥ ता तुक्सीय मंडलर्ह चरह चासीय  
 मंडलर्ह तुक्सातो चरह तंज्ञा-विक्षबगमाले लेव पविसमाले भेव तुने व व्य  
 मंडलार्ह लर्ह चरह तंज्ञा-सम्बन्धतर लेव मंडले उम्बन्धाहिर लेव मंडल  
 ॥ ८ ॥ व्य यह तसेव बाइषजस्तु सक्षम्भत्स्तु सर्वे अद्युरसमुहुर्ते विषेवे मवह  
 सर्वे अद्युरसमुहुर्ता राहे मवह सर्वे तुवाम्भसमुहुर्ते विषेवे मवह सर्वे तुवाम्भ-  
 सुहुता राहे मवह व्यमे छम्मासे वरिष्य अद्युरसमुहुर्ता राहे मवह दोवे छम्मासे  
 विषेवे अरिष्य तुवाम्भसमुहुर्ते विषेवे वरिष्य अद्युरसमुहुर्ता राहे मवह दोवे छम्मासे  
 अरिष्य अद्युरसमुहुर्ते विषेवे वरिष्य अद्युरसमुहुर्ता राहे मवह पडमे वा छम्मासे दोवे वा छम्मासे वरिष्य  
 फलरसमुहुर्ते विषेवे ॥ वरिष्य ॥ राहे मवह उत्त नै वै हेहे  
 १ २ वाव विसेसा-  
 ३ ४

मुहुत्ता राई भवइ, से गिक्खममाणे सूरिए णवं सवच्छरं अयमाणे पढ-  
अहोरत्तंसि अविन्दतराणतरं मडल उवसकमिता चारं चरइ, ता जया णं  
अविन्दतराणतरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण अट्टारसमुहुते दिवसे  
। हि एगद्विभागमुहुतेहि ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगद्विभाग-  
अहिया, से गिक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तंसि अविन्दतरं तच्च मडलं  
त्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अविन्दतरं तच्च मडल उवसकमिता चारं  
ग ण अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुतेहि ऊणे, दुवाल-  
गई भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुतेहि अहिया, एव खलु एएणं उवाएण  
णे सूरिए तयाणतराओ० मडलाओ मडल सकममाणे २ दो॒ २ एगद्विभागमुहुते  
ले दिवसखेत्तस्स पिवुहुमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवुहुमाणे २ सव्वबाहिर-  
कमिता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए सव्वब्मंतराओ मडलाओ सव्व-  
ल उवसकमिता चारं चरइ तया णं सव्वब्मतरमंडलं पणिहाय एगेण  
उदियसएणं तिणिण्ठावद्वएगद्विभागमुहुते सए दिवसखेत्तस्स पिवुहुत्ता  
म अभिवुहुत्ता चारं चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टार-  
भवइ, जहण्णए वारसमुहुते दिवसे भवइ, एस ण पढ्मे छम्मासे, एस  
म्मासस्स पञ्जवसाणे । से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे  
त्तसि वाहिराणतर मंडल उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए  
नडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ  
मुहुतेहि ऊणे, दुवालसमुहुते दिवसे भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुतेहि  
माणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तंसि वाहिरं तच्च मंडल उवसकमिता चारं  
ण सूरिए वाहिरं तच्च मंडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण  
। हि भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुतेहि ऊणे, दुवालसमुहुते दिवसे  
अभागमुहुतेहि अहिए । एव खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए  
उत्तर मडलाओ मडल सकममाणे २ दो॒ दो॒ १० एगद्विभागमुहुते एगमेणे  
पिवुहुमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवुहुमाणे २ सव्वब्मतर मंडलं  
रइ, ता जया ण सूरिए सव्वबाहिराओ मडलाओ सव्वब्मतर  
रं चरइ तया ण सव्वबाहिरं मंडल पणिहाय एगेण तेसीएण  
वडे एगद्विभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स निवुहुत्ता दिवसखेत्तस्स  
तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ,  
। राई भवइ, एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दुच्चस्स छम्मा-

जमूकस्ता जमूकपा जमूकपसंवा मिले कुदुमिया आव पिदिममंजरिहडेहरभय  
सिरैए व्याह २ उदसोमेमाता २ चिर्हुति जमूए मुदसमाए अपासिए नामै देवै  
महिहुए आव पक्षिथोकमहिश्च फरिवसहु से तेवट्टोर्ख योवमा । एवं मुख-जमू-  
हीवे दीवे इति ॥ १७९ ॥ तदै च समरे भयर्ख महावीरे मित्रिमाप नयरीए भासि-  
भरे उजागे बहुर्ख समजार्ख बहुर्ख समधीर्ख बहुर्ख समयार्ख बहुर्ख तापिवार्ख  
बहुर्ख देवार्ख बहुज देवीर्ख मज्जगाए एकमाइन्यर्ख एवं मासदृश एवं पल्लवर्ख एवं  
पहवीए जमूरीवरन्धनी नामणि अव्यो । अज्ञवये अहु च हेठे च पसिर्ख च  
अरर्ख च वागरर्ख च मुझो २ उदवस्तिवेमि ॥ १८ ॥ सच्चमो जमूकास्ये  
समर्तो ॥ जंबुरीवरन्धनचिसुर्चं समर्तं ॥



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ पायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## तत्थ णं चंदपणन्ती

जयड णवणलिणकुवलयवियसियसयवत्तपत्तलदलच्छो । वीरो गयंदमयगलसललि-  
यगयविक्षमो भयव ॥ १ ॥ नमिलण सुरभुरगरस्सभुयगपरिवदिए गयकिलेसे ।  
अरिहे सिद्धायरिए उवज्ज्ञाय सब्बसाहू य ॥ २ ॥ फुडवियडपागडत्य बुच्छ पुच्च-  
भुयसारणीसदं । सुहुमगणिणोवइहु जोइसगणरायपण्णति ॥ ३ ॥ णामेण इदभूइति  
गोयमो वदिलण तिविहेण । पुच्छहु जिणवरवसह जोइसगणरायपण्णति ॥ ४ ॥ कइ  
मडलाइ वच्छ १, तिरिच्छा किं च गच्छहु २ । ओभासइ केवइयं ३, सेयाई किं ते  
सर्थिई ४ ॥ ५ ॥ कहिं पडिह्या लेसा ५, कहिं ते ओयसठिई ६ । के सूरिय वर-  
यए ७, कहं ते उदयसठिई ८ ॥ ६ ॥ कह कट्टा पोरिसिच्छाया ९, जोगे किं ते व  
आहिए १० । किं ते सवच्छरेणाई ११, कइ सवच्छराइ य १२ ॥ ७ ॥ कहं चद-  
मसो बुही १३, कया ते दोसिणा वहू १४ । केइ सिगघाई बुत्ते १५, कह दोसिण-  
ल्कर्त्तवं १६ ॥ ८ ॥ चयणोववाय १७ उच्चते १८, सूरिया कइ आहिया १९ ।  
अणुमाने के व सबुत्ते २०, एवमेयाइ वीसई ॥ ९ ॥ वङ्गोवङ्गी सुहुत्ताण १, अद्भु-  
मंडलसठिई २ । के ते चिण्णं परियरह ३, अतर किं चरति य ४ ॥ १० ॥ उगगा-  
हुइ केवइय ५, केवइय च विकपह ६ । मंडलाण य सठाणे ७, विकखभो ८ अहु  
पाहुडा ॥ ११ ॥ छप्पच य सत्तेव य अहु तिणिण य हवति पडिवत्ती । पढमस्स  
पाहुडस्स हवति एयाउ पडिवत्ती ॥ १२ ॥ पडिवत्तीओ उदए, तहा अत्थमणेसु य ।  
भियवाए कण्णकला, सुहुत्ताण गईह य ॥ १३ ॥ णिकखममाणे सिगघाई,  
पविसते मदगईह य । चुल्सीइसय पुरिसाण, तेसि च पडिवत्तीओ ॥ १४ ॥  
उदयम्मि अहु भणिया भेयगधाए दुवे य पडिवत्ती । चत्तारि मुहुत्तगईए हुति तइयम्मि  
पडिवत्ती ॥ १५ ॥ आवलिय १ सुहुत्तमगे २, एवभागा य ३ जोगस्सा ४ । कुलाइं ५  
पुण्णमासी ६ य, सण्णिवाए ७ य सठिई ८ ॥ १६ ॥ तार(य)ग्ग च ९ गेया य  
१०, चदमगति ११ यावरे । देवयाण य अज्ज्ययणे १२, सुहुत्ताण पामया इय  
१३ ॥ १७ ॥ दिवसा राइ बुत्ता य १४, तिहि १५ गोत्ता १६ भोयणाणि १७ य ।  
४३ सुत्ता०

भाइचार १८ मासा १९ वं पंच संवत्सर इय ३ ॥ १८ ॥ ओऽगस्त्य व वारदं  
 २१ षष्ठ्यपत्तिविवेद निय ३ । इसमें पाकुड़े परे वारीरि पाहुडपाहुडा ॥ १९ ॥  
 देवं काषेण तेष्वं समएर्ण मिहिला नाम वरी होत्या रिदरिष्यमिक्यमिदा प्युश्क-  
 जणवाजवया 'पासारीदा ४ ॥ १ ॥ तीसे वं मिहिलाए जयरीए बहिला उल्ल  
 पुरविद्यमे दिरीभाए माविमो वार्म उजाने होत्या वल्लभो ॥ २ ॥ तीसे वं मिहिलाए  
 अवरीए वियमात् वार्म रामा होत्या वल्लभो ॥ ३ ॥ तस्म वं वियसहुस्य रम्भो  
 पारिणी वार्म देवी हार्या वल्लभो ० ४ ॥ तेष काषेण तेषं समएर्ण तमिम उजान  
 वामी वमोमहे परिसा मिगाया वम्मो बहिलो परिसा पदिमवा वाव रामा  
 वामेव विति पाडम्भूपै तामेव विति पदिमपै ५ ॥ तुर्ण वल्लेवं तेषं समएर्ण  
 समवस्म मगवमो महावीरस्म चेद्दु भविवारी ईरमौर वार्म अणवारे गोवमे वोतिर्व  
 सानुसेहे समक्षर्टमर्त्तव्यार्थिए वज्रिचल्लारावसीवमिता वाव एव वयसी-ता  
 वहं त वहेवही मुहुतार्व वाहितेवि वस्त्वा ॥ ता व्युष्मालावीते मुहुतमर वतावीर्व  
 च चट्टिमागे मुहुतस्व वाहितेवि वप्य ॥ ६ ॥ ता वदा वं सरिए समव्यंतराभो  
 वीवामो समवाहिर भंडर्व उवसुकमिता वार वरद समवाहिरामो मैदाम्भो  
 समव्यंतर मैदर्व उवसुकमिता वार वरद एव वं वदा वेवर्व वाहितेवि वस्त्वा  
 ॥ ७ ॥ ता एवाए वदाए सरिए व्य मैदाम्भ वरद, व्य मैदम्भार तुव्याव्ये  
 वरद, वह मैदम्भार एवाव्यातो वरद ॥ ता तुव्यीर्व मैदम्भसर्व वरद, वारीर्व  
 मैदाम्भव्य तुव्यातो वरद, तैवहा-विक्षमावे चेव पविसमावे चेव तुवे व व्य  
 मैदम्भार व्य वरद, तैवहा-समव्यंतर चेव मैदर्व समवाहिर चेव मैदर्व  
 ॥ ८ ॥ व्य वहं तस्मेव मादवस्त्व सव्यव्यस्त्व व्य व्युष्मालसमुहुते विवसे ववद  
 वह व्युष्मालसमुहुता राहे ववद सव्य तुवालसमुहुते विवसे ववद वहं तुवालस-  
 मुहुता राहे ववद, फद्देछमावे वतिव व्युष्मालसमुहुता राहे, वतिव व्युष्मालसमुहुते  
 विवसे वतिव तुवालसमुहुते विवसे वतिव तुवालसमुहुता राहे ववद वोवे छमावे  
 वतिव व्युष्मालसमुहुते विवसे वतिव तुवालसमुहुता राहे, वतिव तुवालसमुहुता  
 राहे, वतिव तुवालसमुहुते विवसे ववद, फद्दे वा छमावे वोवे वा छमावे वतिव  
 व्युष्मालसमुहुते विवसे ववद, वतिव फणवसमुहुता राहे ववद तस्व वं हेवं  
 व्युष्मालसमुहुते विवसे ववद, वतिव फणवसमुहुता राहे ववद तस्व वं हेवं  
 वप्य ॥ ता ववद्वर्व वेवं फलते ता वदा वं द्वारिए समव्यंतरमैदर्व उवसुकमिता  
 वार वरद वदा वं वत्तमम्भुते उवोस्त्रए व्युष्मालसमुहुते विवसे ववद, व्यविला  
 वार वरद वदा वं वत्तमम्भुते उवोस्त्रए व्युष्मालसमुहुते विवसे ववद, व्यविला

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से गिक्खममाणे सूरिए णव सवच्छरं अयमाणे पढ-  
मंसि अहोरत्तसि अविभतराणतरं मडलं उवसकमित्ता चार चरइ, ता जया णं  
सूरिए अविभतराणतरं मडल उवसकमित्ता चारे चरड तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे  
भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्टिभाग-  
मुहुत्तेहि अहिया, से गिक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अविभतरं तच्च मडलं  
उवसकमित्ता चारे चरइ, ता जया णं सूरिए अविभतर तच्च मडल उवसकमित्ता चारे  
चरइ तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवड चउहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणे, दुवाल-  
समुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहि अहिया, एव खलु एएण उवाएण  
गिक्खममाणे सूरिए तथाणतराओ० मडलाओ मडल सकममाणे २ दो॒ २ एगट्टिभागमुहुत्ते  
एगमेगे मडले दिवसखेतस्स णिवुहृमाणे २ रयणिखेतस्स अभिवुहृमाणे २ सब्बवाहिर-  
मडल उवसकमित्ता चार चरइ, ता जया ण सूरिए सब्बब्भतराओ मंडलाओ सब्ब-  
वाहिर मडलं उवसकमित्ता चार चरइ तया ण सब्बब्भतरमंडलं पणिहाय एगेणं  
तेसीएणं राइदियसएण तिणिण्ठावट्टएगट्टिभागमुहुत्ते सए दिवसखेतस्स णिवुहृत्ता  
रयणिखेतस्स अभिवुहृत्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टार-  
समुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस ण पढमे छम्मासे, एस  
ण पढमस्स छम्मासस्स पञ्चवासाणे । से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे  
पढमसि अहोरत्तसि वाहिराणतर मंडल उवसकमित्ता चारे चरइ, ता जया ण सूरिए  
वाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चारे चरइ तया ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ  
दोहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहि  
अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि वाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चारे  
चरइ, ता जया ण सूरिए वाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चारे चरइ तया ण  
अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे  
भवड चउहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहि अहिए । एव खलु एएनुवाएण पविसमाणे सूरिए  
तथाणतराओ तथाणंतर मडलाओ मडल सकममाणे २ दो॒ दो॒ एगट्टिभागमुहुत्ते एगमेगे  
मडले रयणिखेतस्स णिवुहृमाणे २ दिवसखेतस्स अभिवुहृमाणे २ सब्बब्भतर मंडल  
उवसकमित्ता चारे चरइ, ता जया ण सूरिए सब्बवाहिराओ मडलाओ सब्बब्भतर  
मंडल उवसकमित्ता चारे चरइ तया णं सब्बवाहिर मडल पणिहाय एगेणं तेसीएणं  
राईदियसएण तिणिण्ठावट्टएगट्टिभागमुहुत्तसए रयणिखेतस्स णिवुहृत्ता दिवसे  
अभिवुहृत्ता चारे चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे  
जहण्णया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण ॥

सहस्र पञ्चवधुये एस ने आक्षये उनक्करे, एग जे भाइस्स संबन्धउत्तरस्य पञ्चवस्त्रे  
इह उत्तु वसेने भाप्रथस्स संवर्प्परस्य सर्व अद्वारसमुद्गुपे रिक्षे भवद् रही अद्वार  
समुद्गुला राई मवद्, सर्व तुषाल्लसमुद्गुरो रिक्षे भवद्, सर्व तुषाल्लसमुद्गुला राई मवद्,  
पर्वमे छम्मासे अस्ति अद्वारसमुद्गुला राई मवद्, जतिव अद्वारसमुद्गुपे रिक्षे भवद्,  
अस्ति तुषाल्लसमुद्गुपे रिक्षे अस्ति तुषाल्लसमुद्गुला राई मवद्, दोषे छम्मासे अस्ति  
अद्वारसमुद्गुरो रिक्षे भवद्, एस्ति अद्वारसमुद्गुला राई, अस्ति तुषाल्लसमुद्गुला राई,  
अस्ति तुषाल्लसमुद्गुरो रिक्षे भवद्, फडमे वा छम्मासे दोषे वा छम्मासे जस्ति पञ्चर  
समुद्गुपे रिक्षे भवद् जतिव पञ्चरसमुद्गुला राई मवद्, पञ्चरस्स राईदिवान्न बहुकाही  
मुहुरान वा अव्यवचरण जस्तत्य वा असुनायमरैए गाइज्ञे भाप्रियम्भान्नो ॥ १ ॥

पदमस्स पाहुदम्स पदमे पाहुदपाहुद समर्थं ॥ १-२ ॥

ता कहे ते अद्वमेडम्सठिर्व वाहिताति वाएजा ॥ तत्प खड़ इसा तुषिया अद्व  
मेडम्सठिर्व पञ्चता तंजहा-शाहिणा चब अद्वमेडम्सठिर्व उत्तरा चब अद्वमेडम्सठे-  
ठिर्व । ता कहे ते शाहिणअद्वमेडम्सठिर्व वाहिताति वाएजा ॥ ता अक्षर्य बन्नौरीने  
सीवे सम्बरीषसमुद्गार्ण चार वरिक्क्षेवर्ण ता वया र्व सुरिए एम्भितर वाहिर्व अद्व  
मेडम्सठिर्व उवसरमिता चार चरह तवा र्व उत्तमसद्गुपतो उडोउए अद्वारसमुद्गुपे  
रिक्षे भवद्, अहम्भिया तुषाल्लसमुद्गुला राई मवद्, दे लिक्कममाये सुरिए जर्व  
एम्भितर अम्मावे फँट्टीति जाहोरत्तिव वाहिणाए अंतराए मागाए तस्साइपएसाए  
अभिमत्तरार्थिर उत्तरार्थमेड्क्क ईठिर्व उवसरमिता चार चरह, वया र्व सुरिए अस्ति-  
तरार्थतां उत्तर अद्वमेडम्सठिर्व उवसरमिता चार चरह तवा र्व अद्वारसमुद्गुरो(१)  
रिक्षे भवद् होहि एगद्विमागमुद्गुरोहि घ्ने तुषाल्लसमुद्गुला राई होहि एगद्विमाग-  
मुद्गुरोहि वाहिया दे लिक्कममाये सुरिए दोर्विति अहोरत्तिव उत्तराए अतराए  
भामाए तस्साइपएसाए अस्तितरै तर्व वाहिर्व अद्वमेड्क्क ईठिर्व उवसरमिता चार  
चरह । ता वया र्व सुरिए अस्तितर तर्व वाहिर्व अद्वमेड्क्क ईठिर्व उवसरमिता  
चार चरह तवा र्व अद्वारसमुद्गुला रिक्षे भवद् चरहि एगद्विमागमुद्गुरोहि घ्ने  
तुषाल्लसमुद्गुला राई मवद् चरहि एगद्विमागमुद्गुरोहि वाहिया पर्व खड़ एएव  
उत्ताएय लिक्कममाये सुरिए तम्भितराम्भोडर्वत्तिव तंसि २ देसेसि तं तं अद्व  
मेडम्सठिर्व उवसरमाने २ वाहिणाए ३ अतराए मागाए तस्साइपएसाए उम्म-  
वाहिर उत्तर अद्वमेडम्सठिर्व उवसरमिता चार चरह, ता वया र्व सुरिए एव  
वाहिर उत्तर अद्वमेडम्सठिर्व उवसरमिता चार चरह तवा र्व उत्तमसद्गुपता उडो-  
तिया अद्वारसमुद्गुला राई मवद् चरहए तुषाल्लसमुद्गुपे रिक्षे भवद् । एस र्व

पढमे छम्मासे, एस ण पढमछम्मासस्स पजवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्च  
छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तंसि उत्तराए अतरभागाए तस्साइपएसाए वाहि-  
राणतरं दाहिण अद्वमंडलसठिइ उवसकमिता चार चरइ, ता जया ण सूरिए  
वाहिराणतरं दाहिण अद्वमंडलसठिइ उवसकमिता चार चरइ तया ण अट्टारसमु-  
हुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं  
एगट्टिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अत-  
राए भागाए तस्साइपएसाए वाहिरतरं तच्च उत्तरं अद्वमंडलसठिइ उवसकमिता  
चारं चरइ, ता जया ण सूरिए वाहिरं तच्च उत्तर अद्वमंडलसठिइ उवसकमिता  
चारं चरइ तया ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुत्तेहिं अहिया,  
एव खलु एण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ तयाणंतर० तसि २ देससि  
त त अद्वमंडलसठिइ सकम्माणे २ उत्तराए अतरभागाए तस्साइपएसाए सब्बव्य-  
तरं दाहिण अद्वमंडलसठिइ उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए सब्बव्य-  
तर दाहिण अद्वमंडलसठिइ उवसकमिता चारं चरइ तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए  
अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस ण दोच्चे  
छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पजवसाणे, एस ण आइच्चे सब्बच्छरे, एस ण  
आइच्चसब्बच्छरस्स पजवसाणे ॥ १० ॥ ता कहं ते उत्तरा अद्वमंडलसठिइ आहि-  
ताति वएज्जा २ ता अय ण जंबूदीचे वीचे सब्बदीव जाव परिक्खेवेण, ता जया ण  
सूरिए सब्बव्यतर उत्तर अद्वमंडलसठिइ उवसकमिता चार चरइ तया ण उत्तम-  
कट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई  
भवइ, जहा दाहिण तहा चेव णवर उत्तरट्टिओ अविभितराणतर दाहिण उव-  
सकमइ, दाहिणाओ अविभितरं तच्च उत्तर उवसकमइ, एवं खलु एण उवाएण  
जाव सब्बवाहिर दाहिण उवसकमइ सब्बवाहिर दाहिण उवसकमिता दाहिणाओ  
वाहिराणतर उत्तर उवसकमइ, उत्तराओ वाहिर तच्च दाहिण तच्चाओ दाहिणाओ  
सकम्माणे २ जाव सब्बव्यतरं उवसकमइ, तहेव । एस ण दोच्चे छम्मासे, एस  
ण दोच्चस्स छम्मासस्स पजवसाणे, एस ण आइच्चे सब्बच्छरे, एस ण आइच्चस्स  
सब्बच्छरस्स पजवसाणे, गाहाओ ॥ ११ ॥ पढमस्स पाहुडस्स वीयं पाहुड-  
पाहुडं समन्तं ॥ १-२ ॥

ता के ते चिण्ण पडिच्चरइ आहितेति वएज्जा २ तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया  
पन्त्ता, तजहा-भारहे चेव सूरिए एरवए चेव सूरिए, ता एए ण दुवे सूरिया  
पत्तेय २ तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेग अद्वमंडलं चरति, सट्टीए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं

मैडल संपादिति ता निक्षयममाणा कहु एए तुमे सुरिया थो अन्नमन्नस्सु निर्व  
पदिचर्टुति पविसमाणा कहु एए तुमे सुरिया अन्नमन्नस्सु निर्व पदिचर्टुति त  
सुमेमे चोबाल्हे तत्त्व के हेठ ति बहुजा ३ ता अमन्न बंशीमे ३ जाव परिस्ते-  
वेन तत्त्व न अम माराइ देव सुरिए वंशीवस्सु २ पाइयपवीजामवरी-  
दाहिणामवाए जीवाए मैडल चरवीसुपर्व राएव छेता वाहिणपुरतिमिश्चिति चर-  
मागमंडलस्ति बाफउइममूरिवमयाई जाई अप्पणा देव विष्वाद पदिचर्टु, उत्तराख-  
तिमिश्चिति चरमागमंडलस्ति एकाणउई सुरिवमयाई जाई सुरिए अप्पणो देव निर्व  
पदिचर्टु, तत्त्व न अव्व माराइ सुरिए परत्तमस्सु सुरिवस्स वंशीवस्सु २ पाइय-  
पवीजामवाए उदीनदाहिणामवाए जीवाए भडल चरवीसुपर्व सएव छेता चार  
पुरतिमिश्चिति चरमागमंडलस्ति बाणउई सुरियमवाई जाव सुरिए परस्स निर्व  
पदिचर्टु वाहिणपवतिमिश्चिति चरमागमंडलस्ति एकाणउई सुरिवमयाई जाई  
सुरिए परस्स चब निर्व पदिचर्टु, तत्त्व न अव्व एरवाए सुरिए वंशीवस्सु ३  
पाइयपवीजामवाए उदीनदाहिणामवाए जीवाए मैडल चरवीसुपर्व सएव छेत्य  
उत्तराखतिमिश्चिति चरमागमंडलस्ति बाणउई सुरिवमयाई जाव सुरिए अप्पणो चब  
निर्व पदिचर्टु, वाहिणपुरतिमिश्चिति चरमागमंडलस्ति एकाणउई सुरिवमयाई जाव  
सुरिए अप्पणो चब निर्व पदिचर्टु, तत्त्व न अव्व एरवाइ सुरिए माराइस्स  
सुरियस्स वंशीवस्सु ३ पाइयपवीजामवाए उदीनदाहिणामवाए जीवाए मैडल  
चरवीसुपर्व सएव छेता वाहिणपवतिमिश्चिति चरमागमंडलस्ति बाणउई सुरियमवाई  
सुरिए परस्स निर्व पदिचर्टु, उत्तराखतिमिश्चिति चरमागमंडलस्ति एकाणउई  
सुरियमवाई जाई सुरिए परस्स चब निर्व पदिचर्टु, ता निर्मममाणा “तु  
एए तुमे सुरिया थो अन्नमन्नस्सु निर्व पदिचर्टुति पविसमाणा रसु एए तुमे  
सुरिया अन्नमन्नस्सु निर्व पदिचर्टुति रायमेमे चोबाल्हे । गाहगो ॥ ११ ॥

ता केवल एप तुम्ही सुरिया अस्त्रमाल्स्त्र संगरे चु चारे चर्टी आहिवाणि वएज्ञा १ तरेप रातु इमाझे छ पडिक्तीमो पञ्चतांओ तंजदा-तत्त्व एगे एवम्ह-  
इत्तु-ता एरी जोवलसाईसु एरी च उत्तीस जोवलसाई अस्त्रमाल्स्त्र संगरे चु  
सुरिया चारे चर्टी आहिवाणि वएज्ञा एगे एवमाईतु १ एगे युव एवमाईतु-ना  
एरी अवलम्बाईसु एरी च चर्टीसे जोवलसाई अस्त्रमाल्स्त्र संगरे चु सुरिया चारे  
चर्टी आहिवाणि वएज्ञा एगे एवमाईतु २ एगे युव एवमाईतु-ना एरी जोवल  
एवलसु एरी च पर्टीसे जोवलसाई अस्त्रमाल्स्त्र संगरे चु सुरिया चारे चर्टी

आहिताति वएज्जा एगे एवमाहसु ३, एवं एग दीव एगं समुद्रं अण्णमण्णस्स अतरं कद्म॑ ४, एगे दो दीवे दो समुद्रं अण्णमण्णस्स अतर कद्म॑ सूरिया चार चरति आहिताति वएज्जा एगे एवमाहसु ५, एगे तिणिण दीवे तिणिण समुद्रं अण्णमण्णस्स अतरं कद्म॑ सूरिया चार चरति आहिताति वएज्जा एगे एवमाहसु ६, वय पुण एवं वयामो-ता पच पंच जोयणाइं पणतीस च एगट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतरं अभिवङ्गमाणा वा निवङ्गमाणा वा सूरिया चार चरति० । तत्य णं को हेऊ आहिएति वएज्जा ? ता अयण जंबूदीवे २ जाव परिक्षेवेण पणते, ता जया ण एए दुवे सूरिया सब्बव्यभतरमडल उवसकमिता चार चरति तया ण णवणउइजोयणसहस्राइं छच्चचत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कद्म॑ चार चरति आहिताति वएज्जा, तया ण उत्तमकद्म॑पते उक्कोसए अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ, जहणिणया दुवालसमुहुता राई भवइ, ते णिकखममाणा सूरिया णव सबच्छर अयमाणा पढमसि अहोरत्तसि अविभतराणतर मडल उवसकमिता चार चरति, ता जया ण एए दुवे सूरिया अविभतराणंतरं मडल उवसकमिता चार चरति तया ण णवणवइ जोयणसहस्राइं छच्च पणयाले जोयणसए पणवीस च एगट्टिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कद्म॑ चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया ण अट्टार-समुहुते दिवसे भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुतेहि ऊणे, दुवालसमुहुता राई भवइ दोहिं एगट्टिभागमुहुतेहि अहिया, ते णिकखममाणा सूरिया दोच्चसि अहोरत्तसि अविभतरं तच्च मडल उवसकमिता चारं चरंति, ता जया ण एए दुवे सूरिया अविभतरं तच्च मंडल उवसकमिता चारं चरंति तया ण वणणवइ जोयणसहस्राइं छच्चइकावण्णे जोयणसए णव य एगट्टिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कद्म॑ चार चरति आहिताति वएज्जा, तया ण अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुतेहि ऊणे, दुवालसमुहुता राई भवइ चउहिं एगट्टिभागमुहुतेहि अहिया, एवं खलु एएण-वाएण णिकखममाणा एए दुवे सूरिया तओऽणतराओ तयाणतरं मडलाओ मडल सक्कममाणा २ पच २ जोयणाइ पणतीस च एगट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर अभिवङ्गमाणा २ सब्बवाहिर मडल उवसकमिता चारं चरंति, ता जया ण एए दुवे सूरिया सब्बवाहिर मडल उवसकमिता चारं चरंति तया ण एग जोयणसयसहस्रस छच्च सहे जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कद्म॑ चारं चरंति, तया ण उत्तमकद्म॑पता उक्कोसिया अट्टारसमुहुता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुते दिवसे भवइ, एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पजवसाणे, ते पवित्रमाणा सूरिया दोच्चं छम्मास अयमाणा पढमसि अहोरत्तसि

बाहिराखरंतरं मैडलं उवसंक्षिता चारं चरंति ता ज्ञा न एए दुवे सूरिया बाहि  
राखरंतरं मैडलं उवसंक्षिता चारं चरंति तमा न एए जोवयसयसहस्यं एव अठ-  
प्पले जोवयसए छत्तीसं च एगद्विभागे जोवयससु अन्यमध्यस्सु अंतरं क्षु चारं  
चरंति बाहिताति वप्त्वा तमा च अद्वारसमुद्दत्ता राई भव दोहि एगद्विभागमुद्द  
देहि तमा दुवाल्पसमुद्दते दिक्से भव दोहि एगद्विभागमुद्दते हि अद्विए, ते पश्चिमा-  
माणा सूरिया दोहिति बहोरत्तिं बाहिरं तर्च मैटलं उवसंक्षिता चारं चरंति ता  
ज्ञा न एए दुवे सूरिया बाहिरं तर्च मैडलं उवसंक्षिता चारं चरंति तमा च एम-  
जोवयसयसहस्यं छत्ता अद्वारके जोवयसए जोवयस्च च एगद्विभागे जोवयससु अन्य  
मध्यस्सु अंतरं क्षु चारं चरंति तमा न अद्वारसमुद्दत्ता राई भव चरहि एगद्वि-  
भागमुद्दते हि तमा दुवाल्पसमुद्दते दिक्से भव अद्वहि एगद्विभागमुद्दते हि अद्विए।  
एवं यह एप्लियाएवं पश्चिमाणा एए दुवे सूरिया तमोऽर्थतरात्मे तारार्थतरं मैड-  
लाम्बो मैडलं उवसंक्षिता २ वैष २ जोवयाई पश्चिमे एगद्विभागे जोवयससु  
एगद्विभागे मैडके अन्यमध्यस्संतरं दित्तुद्विमाणा ५ सम्बन्धतरमैडलं उवसंक्षिता चारं  
चरंति ता ज्ञा न एए दुवे सूरिया सम्बन्धतरं मैडलं उवसंक्षिता चारं चरंति  
तमा न जक्षक्षद्विमोवयसहस्यवृ छत्ता क्षत्ताके जोवयसए अन्यमध्यस्सु अंतरं क्षु  
चारं चरंति तमा च उत्तममुद्दते उद्वोधए अद्वारसमुद्दते दिक्से भव, बाहिताति  
दुवाल्पसमुद्दत्ता राई भव, एस य दोवे छम्माते एस च दोवस्सु छम्मातस्सु  
फज्जक्षाये एस न जाइये उवयक्षने एस च आवस्यक्षस्सु फज्जक्षाये ॥ १३५  
एवमस्सु पादुरपादुरं भवत्वं पादुरपादुरं भवत्वं ॥ १३५ ॥

ता केवल्य ते शीर्वं वा दमुर्वं वा ज्ञेयाहिता सूरिए चारं चरहि बाहिताति  
वप्त्वा १ तत्त्वं बहु इमाम्बो फैल पश्चिमाम्बो फैलाम्बो तं -तत्त्वं एगे एकमाहस्य-  
ता एर्वं जोवयसहस्यं एर्वं च तेत्तीसं जोवयसुर्वं शीर्वं वा समुर्वं वा ज्ञेयाहिता सूरिए  
चारं चरहि १ एगे पुष्प एकमाहस्य-ता एर्वं जोवयसहस्यं एर्वं च अरतीसं जोवयसुर्वं  
शीर्वं वा समुर्वं वा ज्ञेयाहिता सूरिए चारं चरहि एगे एकमाहस्य २ एगे पुष्प एकमा-  
हस्य-ता एर्वं जोवयसहस्यं एर्वं च पश्चिमी जोवयसुर्वं शीर्वं वा समुर्वं वा ज्ञेयाहिता  
सूरिए चारं चरहि एगे एकमाहस्य ३ एगे पुष्प एकमाहस्य-ता जन्मत्वं शीर्वं वा समुर्वं वा  
ज्ञेयाहिता सूरिए चारं चरहि एगे एकमाहस्य-ता ज्ञेयाहिता सूरिए चारं चरहि  
शीर्वं वा समुर्वं वा ज्ञेयाहिता सूरिए चारं चरहि ५ तत्त्वं ते एकमाहस्य-ता एर्वं  
जोवयसहस्यं एर्वं च तेत्तीसं जोवयसुर्वं शीर्वं वा समुर्वं वा ज्ञेयाहिता सूरिए चारं चरहि  
ते एकमाहस्य-ता तमा च दौरिए सम्बन्धतरं मैडलं उवसंक्षिता चारं चरहि तमा

णं जबूदीवं २ एगं जोयणसहस्स एगं च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता सूरिए चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुता राई भवइ, ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ तया ण लवणसमुद् एग जोयणसहस्स एगं च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता चारं चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अद्वारसमुहुता राई भवइ, जहणए दुवालसमुहुते दिवसे भवइ । एव चोत्तीस जोयणसय । एव पणतीस जोयणसय । तत्य जे ते एवमाहसु-ता अवहू दीवं वा समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ, ते एवमाहसु-ता जया ण सूरिए सव्वव्वभतर मडल उवसकमिता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुता राई भवइ, एव सव्ववाहिरएवि, णवर अवहू लवणसमुद्, तया ण राइदिय तहेव, तत्य जे ते एवमाहसु-ता णो किञ्चि दीवं वा समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ, ते एवमाहसु-ता जया ण सूरिए सव्वव्वभतर मडल उवसकमिता चार चरइ तया ण ऊं णो किञ्चि दीवं वा समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ तहेव एव सव्ववाहिरए मडले णवर णो किञ्चि लवणसमुद् ओगाहिता चारं चरइ, राइदिय तहेव, एगे एवमाहसु ५ ॥ १४ ॥ वय पुण एव वयामो-ता जया ण सूरिए सव्वव्वभतरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तया णं जबूदीवं २ असीय जोयण-सयं ओगाहिता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुता राई भवइ, एवं सव्ववाहिरेवि, णवर लवणसमुद् तिणि तीसे जोयणसए ओगाहिता चार चरइ, तया णं उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अद्वारसमुहुता राई भवइ, जहणए दुवालसमुहुते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणिय-व्वाओ ॥ १५ ॥ पढमस्स पाहुडस्स पंचमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-५ ॥

ता केवइय (ते) एगमेगेण राइदिएण विकंपइता २ सूरिए चारं चरइ आहितेति वएजा ? तत्य खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पणत्ताओ, त०—तत्येगे एवमाहसु-ता दो जोयणाइ अद्वुचत्तालीस तेसीयसयभागे जोयणस्स एगमेगेण राइदिएण विकपइता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता अङ्गाइ-ज्वाइ जोयणाइ एगमेगेण राइदिएण विकपइता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहसु-ता तिभागूणाइ तिणि जोयणाइ एगमेगेण राइदिएणं विकप-इता २ सूरिए चारं चरइ० एगे एवमाहसु ३, एगे पुण एवमाहसु-ता तिणि जोयणाइ अद्वसीयालीस च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेण राइदिएण विकंप-

इता ३ सुरिए चार चरह एगे एकमाहेषु ४ फो पुज एकमाहेषु-ता अद्वारा  
जोवणार्दे एगमेनेण राहेशिएर्यं विकृपद्धता ३ सुरिए चार चरह फो एकमाहेषु ५  
एगे पुज एकमाहेषु-ता अठव्यामूषार्दे चतारि जोवणार्दे एगमेनेण राहेशिएर्यं  
विकृपद्धता ३ सुरिए चार चरह एगे एकमाहेषु ६ फो पुज एकमाहेषु-ता चतारि  
जोवणार्दे अद्वारामध्ये च तेसीहिघवमागे जोवणस्स एगमेनेण राहेशिएर्यं विकृपद्धता ३  
सुरिए चार चरह एगे एकमाहेषु ७ । तबं पुज एवं चयामो-ता हो जोवणार्दे  
अद्वारालीच च एगट्रिभागे जोवणस्स एगमेनेण मंडलं एगमेनेण राहेशिएर्यं विकृपद्धता ३  
सुरिए चार चरह तत्त्व र्थं को हेड ति चत्ता ८ ता अद्वारा अद्वारीने २ चाल  
परिक्षेपेणं पणते ता चया र्थं सुरिए सम्बन्धार मंडलं उवसंरमिता चार चरह  
तया र्थं उत्तमस्तुतो उप्तोसए अद्वारामूषुर्हे विक्षे मवह, अहित्या तुवाम्ममूषुता  
राई भवह, से विकृपद्धता चे सुरिए जबं संवच्छर अवमागे फलभेदि अहोरात्रिः  
अविमत्तरात्रातर मंडल उवसंरमिता चार चरह, ता चया र्थं सुरिए अविमत्तरात्रातर  
मंडलं उवसंरमिता चार चरह तया र्थं दो जोवणार्दे अद्वारालीच च एगट्रिभागे  
जोवणस्स एगेनेण राहेशिएर्यं विकृपद्धता चार चरह, तया र्थं अद्वारामूषुर्हे विक्षे  
भवह दोही एगट्रिभागमूषुर्हेहि त्वं तुवाम्ममूषुता राई भवह दोही एगट्रिभाग-  
मूषुर्हेहि अहित्या । से विकृपद्धता चे सुरिए दोहंसि अहोरात्रिः अविमत्तर तबं मंडल  
उवसंरमिता चार चरह, ता चया र्थं सुरिए अविमत्तर तबं मंडलं उवसंरमिता  
चार चरह तया र्थं पंच जोवणार्दे फलार्दे च एगट्रिभागे जोवणस्स होही राहेशिएर्यं  
विकृपद्धता ३ चार चरह, तया र्थं अद्वारामूषुर्हे विक्षे भवह चठही एगट्रिभागमू-  
षुर्हेहि त्वं तुवाम्ममूषुता राई भवह चठही एगट्रिभागमूषुर्हेहि अहित्या एवं यह  
एपर्ज उवाएज विकृपद्धता चे सुरिए तवार्थतराम्भो तवार्थतर मंडलम्भो मंडलं सं-  
मागे २ दो ३ जोवणार्दे अद्वारालीच च एगट्रिभागे जोवणस्स एगमेनेण मंर्यं  
एगमेनेण राहेशिएर्यं विकृपद्धता ३ सम्बन्धाहिर भंडलं उवसंरमिता चार चरह, ता  
चया र्थं सुरिए सम्बन्धतराम्भो भंडलम्भो सम्बन्धाहिर भंडलं उवसंरमिता चार चरह  
तया र्थं सम्बन्धतर मंडलं पवित्राय पंतेन तेसीएने राहेशिएर्यं पंचवत्तार  
जोवणस्स विकृपद्धता ३ चार चरह, तया र्थं उत्तमस्तुतो उप्तोविता अद्वारामूषुता  
राई भवह, अहृष्यए तुवाम्ममूषुतो विक्षे भवह, एस र्थं पत्तमध्यमागे एस र्थं  
पठमउम्मापासस्म पवित्राम्भो हे य पवित्राम्भो सुरिए दोहं अम्मार्दे अवमागे पठमेहि  
अहोरात्रिः वाविद्यानातर मंडलं उवसंरमिता चार चरह, ता चया र्थं सुरिए  
वाविद्यानातर मंडलं उवसंरमिता चार चरह तया र्थं दो दो जोवणार्दे अद्वारालीच

च एगद्विभागे जोयणस्स एगेण राइंदिएण विकपइत्ता २ चार चरइ, तया णं अद्वारसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगद्विभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहि एगद्विभागमुहुत्तेहि अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि वाहिरतच्चसि मडलंसि उवसकमित्ता चार चरइ, ता जया णं सूरिए वाहिरतच्च मडलं उवसकमित्ता चार चरइ तया ण पंच जोयणाईं पणतीस च एगद्विभागे जोयणस्स दोहि राइंदिएहि विकपइत्ता २ चार चरइ, राइंदिए तहेव, एव खलु एणुवाएण पविसमाणे सूरिए तओऽणंतराओ तयाणतर च ण मडल सकममाणे २ दो २ जोयणाई अटयालीस च एगद्विभागे जोयणस्स एगमेगेण राइंदिएण विकपमाणे २ सव्वव्वभतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, ता जया ण सूरिए सव्ववाहिराओ मडलाओ सव्वव्वभतर मटल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण सव्ववाहिर मडलं पणिहाय एगेण तेसीएण राइंदियसएण पचदमुतरे जोयणसए विकपइत्ता २ चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्षोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालममुहुत्ता राई भवइ, एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पजवसाणे, एस ण आइच्चस्म सव्वच्छरस्स पजवसाणे ॥ १६ ॥

पढमस्स पाहुडस्स छहुं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १-६ ॥

ता कह ते मंडलसठिड आहिताति वएजा<sup>१</sup> तत्य खलु डमाओ अट्ट पडिवत्तीओ पणत्ताओ, त०-तथेगे एवमाहनु-ता भव्वावि ण मडलवया ममचउरम-सठाणसठिया पणत्ता एगे एवमाहनु १, एगे पुण एवमाहनु-ता सव्वावि ण मडलवया विममचउरमठाणसठिया पणत्ता एगे एवमाहनु २, एगे पुण एवमाहनु-ता भव्वावि ण मडलवया समचउष्णोणसठिया पणत्ता एगे एवमाहनु ३, एगे पुण एवमाहनु-ता भव्वावि ण मटलवया विसमचउष्णोणसठिया पणत्ता एगे एव-माहनु ४, एगे पुण एवमाहनु-ता भव्वावि ण मडलवया ममचउगालसठिया पणत्ता एगे एवमाहनु ५, एगे पुण एवमाहनु-ता भव्वावि ण मडलवया विमम-चउरमठिया पणत्ता एगे एवमाहनु ६, एगे पुण एवमाहनु-ता भव्वावि ण मडलवया चष्टक्करागालसठिया पणत्ता एगे एवमाहनु ७, एगे पुण एवमाहनु-ता रस्यावि ण मडलवया छन्नागारन्नठिया पणत्ता एगे एवमाहनु ८, तन्य जे ते एवमाहनु-ता भव्वावि ण मंडलवया ग्रत्तागारसठिया पणत्ता एगे पणेण फारा, तो नो ण टररेहि पाहुडपाहुडो भात्तिव्याओ ॥ १७ ॥

<sup>१</sup> एव्वावि ण मडलवया फेलद्य याहेण फेरवय आयानमिस्तमेण देवद्य

परिक्षेपेण भाविताति वएजा १ तत्प यमु इमानो तिथिं परिक्षीयो कल्पणानो  
तंवद्वा-तत्पेगे एकमार्हसु-ता सम्बादि च मैडल्मया जोवर्ष वाहोम् दृग् जोवर्ष-  
सहस्रं दृग् च तीरीसु जोवर्षस्यं आयामसिक्षस्यमेवं तिथिं जोवर्षसहस्रार्ह तिथिं  
य ववर्षठए जोवर्षसए परिक्षेपेण पश्चाता एगे एकमार्हसु १ एगे पुण एकमा-  
इमु-ता सम्बादि च मैडल्मया जोवर्ष वाहोम् दृग् जोवर्षसहस्रं दृग् च वड-  
द्वीसु जोवर्षस्यं आयामसिक्षस्यमेवं तिथिं जोवर्षसहस्रार्ह चालारे वित्तर ज्ञवर्ष-  
सए परिक्षेपेण पश्चाता एगे एकमार्हसु २ एगे पुण एकमार्हसु-ता जोवर्ष वाह-  
केवं दृग् जोवर्षसहस्रं एय च पश्चातीसु जोवर्षस्यं आयामसिक्षस्यमेवं तिथिं जोवर्ष-  
सहस्रार्ह चालारि च पंकुतरे जोवर्षसए परिक्षेपेण पश्चाता एगे एकमार्हसु ३ चर्व  
पुण एवं वदानो-ता सम्बादि च मैडल्मया अडवालीसु च एकमिमागे जोवर्षस्य  
वाहोम् अविक्षया आयामसिक्षस्यमेवं परिक्षेपेण भाविताति वएजा तत्प च चो-  
हेड ति वएजा ५ ता अवर्ष वंशीवे २ वाव परिक्षेपेण ता वया च सुरिए  
उव्वभावंतरं मैडल्स उवर्षक्षमिता चारे चरह तया च सा मैडल्मया अडवालीए च  
एकमिमागे जोवर्षस्य वाहोम् ववर्षठए जोवर्षसहस्रार्ह त्वच चालारे ज्ञेयससए  
आयामसिक्षस्यमेवं तिथिं जोवर्षसहस्रार्ह पश्चरसजोवर्षसहस्रार्ह एकमिमागे  
जोवर्ष तिथिमिसेवाहिए परिक्षेपेण तया च उत्तमसहुपगो वाहोम् एवं अद्वारस-  
मुहुरे रिक्षसे मवह, वाहन्निया तुवास्समुहुपगा राहे मवह, से निमित्यममाने सुरिए  
च चवर्षठए अवमाने फलंचि जाहोरतासिं अविक्षतरावंतरं मैडल्स उवर्षक्षमिता  
चारे चरह, ता वया च सुरिए अविक्षतरावंतरं मैडल्स उवर्षक्षमिता चारे चरह  
तया च सा मैडल्मया अडवालीसु च एकमिमागे जोवर्षस्य वाहोम् ववर्षठए  
जोवर्षसहस्रार्ह त्वच पश्चाते ज्ञेयससए पश्चातीसु च एकमिमागे जोवर्षस्य  
आयामसिक्षस्यमेवं तिथिं ज्ञेयससक्षसहस्रार्ह पश्चरस च उहस्सार्ह एवं चठार  
जोवर्षस्यं तिथिमिसेवूर्खं परिक्षेपेण तया च रिक्षरावप्पमार्ह ताहेव । दे  
विक्षममाने सुरिए जोवर्षं जाहोरतासिं अविक्षतार्ह तर्व मैडल्स उवर्षक्षमिता चार  
चरह, ता वया च सुरिए अविक्षतरं तर्व मैडल्स उवर्षक्षमिता चार चरह तया च  
सा मैडल्मया अडवालीसु च एकमिमागे जोवर्षस्य वाहोम् ववर्षठए जोवर्ष-  
सहस्रार्ह त्वच एकमिमागे जोवर्षस्य आयामसिक्ष-  
मेवं तिथिं जोवर्षसहस्रार्ह पश्चरस च उहस्सार्ह दृग् च पश्चातीसु जोवर्षस्य  
परिक्षेपेण पश्चाता तया च रिक्षराहे ताहेव एवं रम्पु एवं वार्लं तिथिममाने  
सुरिए तयावंतरामो त्वावंतरं मैडल्स उवर्षक्षममाने २ एवं ज्ञेयसार्ह

पणतीस च एगट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले विक्खभवुहुँि अभिवहृमाणे २ अद्वारस २ जोयणाइ परिरयवुहुँि अभिवहृमाणे २ सब्बवाहिर मंडल उवसक-मित्ता चार चरइ, ता जया ण सूरिए सब्बवाहिरमडल उवसकमित्ता चार चरइ तथा ण सा मडलवया अडयालीस च एगट्टिभागा जोयणस्स वाहलेण एग जोयण-सयसहस्स छच्च सट्टे जोयणसए आयामविक्खमेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अद्वारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुन्तरे जोयणसए परिक्खेवेण०, तया ण उक्कोसिया अद्वा-रसमुहुत्ता राईं भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पजवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अय-माणे पढमसि अहोरत्तसि वाहिराणतरं मडलं उवसकमित्ता चार चरइ, ता जया ण सूरिए वाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चारं चरइ तथा ण सा मंडलवया अडया-लीस च एगट्टिभागे जोयणस्स वाहलेण एग जोयणसयसहस्स छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छच्चीस च एगट्टिभागे जोयणस्स आयामविक्खमेण तिण्णि जोयणसय-सहस्साइं अद्वारससहस्साइ दोण्णि य सत्तानउए जोयणसए परिक्खेवेण पण्णता, तया ण राइदिय तहेव, से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि वाहिर तच्च मडलं उवसकमित्ता चार चरइ, ता जया ण सूरिए वाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ तथा ण सा मंडलवया अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणस्स वाहलेण एग जोयणसयसहस्स छच्च अडयाले जोयणसए वावण च एगट्टिभागे जोयणस्स आया-मविक्खमेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ अद्वारससहस्साइ दोण्णि य अउयणातीसे जोयणसए परिक्खेवेण पण्णता, दिवसराईं तहेव, एव खलु एएणुवाएणं से पवि-समाणे सूरिए तयाणतराओ तयाणतर मडलाओ मडल सक्कमाणे २ पच २ जोयणाइ पणतीस च एगट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले विक्खभवुहुँि णिहुहृ-माणे २ अद्वारस जोयणाइ परिरयवुहुँि णिहुहृमाणे २ सब्बव्वभतर मडल उव-सकमित्ता चार चरइ, ता जया ण सूरिए सब्बव्वभतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तथा ण सा मडलवया अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणस्स वाहलेण णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च चत्ताले जोयणसए आयामविक्खमेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ पण्णरम य सहस्साइ अउणाउइं च जोयणाइ किञ्चिविसेसाहियाइ परिक्खेवेण पण्णता, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राईं भवइ, एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्म छम्मासस्स पजवसाणे, एम ण आडच्चे सवच्छरे, एस ण आडच्चस्स सवच्छरस्स पजवसाणे, ता सब्बावि ण मंडल-वया अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणस्स वाहलेण, सब्बावि ण मंडलतरिया दो

बोयलाई निर्धारेतेर्थं एस व अन्य सेसीवसयपुण्यामो पंचदशुतरे जोक्षवसरे आहिताति वएजा ता अभिक्षतरामो मंडळवामो बाहिरे मंडळवर्यं बाहिरामो वा अभिक्षतरे मंडळवर्यं एस व अन्य केवळ भाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरामे पंचदशुतरे जोक्षवामो बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवसरे अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवामो अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवामो अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवामो अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवामो अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवामो अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवामो अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा । ता पंचदशुतरे जोक्षवामो अभिक्षतरामे मंडळवर्यं एस व अन्य खेळर्यं बाहिताति वएजा ॥ १८ ॥ पदमस्स पाहुडस्स मदुर्म पाहुडपाहुड समर्थ ॥ १८ ॥ पदमर्म पाहुड समर्थ ॥ १ ॥

ता वह दरिक्षमाई बाहिताति वएजा । लक्ष यांड इमामो अद्व फिरतामो पक्षतामो तं-०-तत्त्वेते एकनाई-ता पुरतिक्षमामो खेळतामो पामो मरीई आगा-सांसि उतिक्षु, से व इमं तिरियं खेवं तिरियं करेता पक्षतिक्षमेति खेवंतापि सांस्यमि रावं आगासंसि निर्दिशइ एगे एकमाई १ एगे पुण एकमाई-ता पुरतिक्षमामो खेवंतामो पामो सुरिए आगासंसि उतिक्षु, से व इमं तिरियं खेवं तिरियं करेता पक्षतिक्षमेति खेवंतापि सावं सुरिए आगासं अलुपक्षिक्ष २ ता वहे पक्षिकापाक्षद वहे पक्षिकापक्ष्यो पुषरावि अवरमुरतिक्षमामो खेवंतामो पामो सुरिए आगासंसि उतिक्षु एगे एकमाई ३ एगे पुण एकमाई-ता पुरतिक्षमामो खेवंतामो पामो सुरिए पुरतिक्षमेति उतिक्षु, से व इमं तिरियं खेवं तिरियं करेता पक्षतिक्षमेति खेवंतापि सावं सुरिए पुरतिक्षमेति निर्दिश ४ एगे एकमाई ४ एगे पुण एकमाई-ता पुरतिक्षमामो खेवंतामो पामो सुरिए पुरतिक्षमेति उतिक्षु, से व इमं तिरियं खेवं तिरियं करेता पक्षतिक्षमेति खेवंतापि सावं सुरिए पुरतिक्षमेति अलुपक्षिक्ष ५ एगे पुण एकमाई-ता पुरतिक्षमेति खेवंतामो पामो सुरिए आगा-सांसि उतिक्षु एगे पक्षिकापाक्षद ६ ता पुषरावि अवरमुरतिक्षमामो खेवंतामो पामो सुरिए पुरतिक्षमेति उतिक्षु, से व इमं तिरियं खेवं तिरियं करेता पक्षतिक्षमेति खेवंतापि उतिक्षु, से व इमं तिरियं खेवं तिरियं करेता पक्षतिक्षमेति खेवंतापि

पाओ सूरिए आउकायसि विद्धसइ एगे एवमाहसु ६, एगे पुण एवमाहसु-ता पुरत्थि-  
माओ लोयताओ पाओ सूरिए आउकायसि उत्तिष्ठइ, से णं इम तिरियं लोयं तिरियं  
करेइ करेता पचात्यिमसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायसि अणुपविसइ २ ता अहे  
पडियागच्छइ २ ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयताओ पाओ सूरिए आउ-  
कायसि उत्तिष्ठइ एगे एवमाहसु ७, एगे पुण एवमाहसु-ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ  
वहूइ जोयणाड वहूइ जोयणसयाइं वहूइ जोयणसहस्साइं उङ्हू दूरं उप्पइत्ता एत्थं णं  
पाओ सूरिए आगाससि उत्तिष्ठइ, से णं इम दाहिणङ्हू लोय तिरिय करेइ करेता  
उत्तरहूलोय तमेव राओ, से ण इम उत्तरहूलोय तिरिय करेइ २ ता दाहिणङ्हूलोय  
तमेव राओ, से ण इमाइ दाहिणुतरहूलोयाइं तिरिय करेइ करेता पुरत्थिमाओ  
लोयताओ वहूइ जोयणाड वहूइ जोयणसयाइं वहूइ जोयणसहस्साइ उङ्हू दूरं उप्प-  
इत्ता एत्थं णं पाओ सूरिए आगाससि उत्तिष्ठइ एगे एवमाहसु ८। वय पुण एवं  
वयामो-ता जंवूदीवस्स २ पाईणपढीणाययउदीणदाहिणाययाए जीवाए मडलं चउ-  
च्चिसेण सएण छेता दाहिणपुरच्छिमंसि उत्तरपचात्यिमसि य चउच्चागमडलसि इमीसे  
रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ अट्ट जोयणसयाइं उङ्हू उप्प-  
इत्ता एत्थं णं पाओ दुवे सूरिया० उत्तिष्ठति, ते णं इमाइ दाहिणुतराइ जवूदीव-  
भागाइ तिरिय करेति २ ता पुरत्थिमपचात्यिमाइ जवूदीवभागाइ तमेव राओ, ते ण  
इमाइ पुरच्छिमपचात्यिमाइ जवूदीवभागाइ तिरिय करेति २ ता दाहिणुतराइ जवू-  
दीवभागाइ तमेव राओ, ते ण इमाइ दाहिणुतराइं पुरच्छिमपचात्यिमाइ च जवू-  
दीवभागाइ तिरिय करेति २ ता जवूदीवस्स २ पाईणपढीणाययउदीणदाहिणाययाए  
जीवाए मडल चउच्चिसेण सएण छेता दाहिणपुरच्छिमिलसि उत्तरपचात्यिमिलसि य  
चउभागमडलसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ अट्ट  
जोयणमयाड उङ्हू उप्पइत्ता एत्थं णं पाओ दुवे सूरिया आगाससि उत्तिष्ठति ॥ १९ ॥  
विइयस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ २-१ ॥

ता कह ते मडलाओ मडल सकममाणे २ सूरिए चार चरइ आहिताति वएजा २  
तत्थ यलु इमाओ दुवे पडिवतीओ पणताओ, त०-तत्थेगे एवमाहसु-ता मंडलाओ  
मडल सकममाणे २ सूरिए भेयधाएण सकमड० एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-  
ता मडलाओ मडल सकममाणे २ सूरिए कण्णकल णिव्वेढेड २, तत्थ (ण) जे ते  
एवमाहसु-ता मडलाओ मडल चकममाणे २ सूरिए भेयधाएण सकमइ, तेसि ण  
अय डोसे, ता जेणतरेण मडलाओ मटल सकममाणे २ सूरिए भेयधाएण सकमइ  
एवउय च ण अद्य पुरओ ण गच्छइ, पुरओ अगच्छमाणे मडलकालं परिहवेड, तेसि

अं अर्यं किसे तत्त्व ते ते एकमाहसु-ता मैडब्ल्यु र्मार्ट्स ईंसमार्गे २ सुरिप  
कम्पम्बं फिल्मेट्रू, तेहि अ अर्यं किसे ते ता अर्थतरेव मैडब्ल्यु र्मार्ट्स संस्क-  
मार्गे सरिए कम्पम्बं फिल्मेट्रू एकमाहे अ अं कर्द पुराणे गच्छ, पुराणे  
गच्छमार्गे मैडब्ल्यु र्मार्ट्स परिषेद, तेहि अं अर्यं किसे तत्त्व ते ते एकमाहसु-ता  
मैडब्ल्यु र्मार्ट्स संस्क-मार्गे ३ सुरिप कम्पम्बं फिल्मेट्रू, एएन वर्ण गम्भी  
जो चेत अं इयरेजं ॥ ३ ॥ विष्णुपस्स पाकुडस्स पिहर्यं पाकुडपाकुड  
समर्थं ॥ २-२ ॥

ता केवर्यं ते तेव शुरिप एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ आदिताति वस्त्वा । तत्त्व  
अमृ इमान्नो जत्तारि पदिक्ताम्बो पव्यताम्बो तं -तत्त्व एते एकमाहसु-ता ४ अ  
ओवनसहस्रार्द सरिए एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ एग एकमाहसु १ एगे पुण  
एकमाहसु-ता पैच पैच ओवनसहस्रार्द सरिए एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ एते  
एकमाहसु २ एगे पुण एकमाहसु-ता जत्तारि ३ ओवनसहस्रार्द सरिए एगमेन्द्रं  
मुहुरोर्ण गच्छ एते एकमाहसु ३ एगे पुण एकमाहसु-ता छवि पव्यति वर्तमीरि  
ओवनसहस्रार्द सरिए एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ एते एकमाहसु ४ तत्त्व कम्ब ते  
ते एकनार्थार्द-ता ४ अ ओवनसहस्रार्द सरिए एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ, अ एक-  
माहसु-ता वत्ता अं सरिए सम्बन्धतर मंडर्ड उवसंझमिता चार चरह तत्वा अं  
उत्तमकम्बुपते उद्दोसपे भद्रारम्भमुहुरो दिक्षे मवह, वहमिता तुवामसमुहुरा राई  
मवह, तंसि अ अं दिक्षे सिए एग ओवनसहस्रार्द अद्व अ ओवनसहस्रार्द तत्त्वक्षेते  
पव्यते ता वत्ता अं सरिए सम्बन्धतर मंडर्ड उवसंझमिता चार चरह तत्वा अं  
उत्तमकम्बुपता उद्दोसिता भद्रारम्भमुहुरा राई मवह, वहमिते तुवामसमुहुरो दिक्षे  
मवह तंसि अ अं दिक्षे सिए वापत्तीर ओवनसहस्रार्द तत्त्वक्षेते पव्यते तत्वा अं  
५ अ ओवनसहस्रार्द सरिए एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ, तत्त्व ते ते एकमाहसु-ता  
पैच पैच ओवनसहस्रार्द सरिए एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ, ते एकमाहसु-ता वत्ता  
अं सरिए सम्बन्धतर मंडर्ड उवसंझमिता चार चरह, तदेव दिक्षतरात्पमार्गं तंसि  
अ अं दिक्षसिए तावक्षेते नवाहयेमयसहस्रार्द, ता वत्ता अं सरिए सम्बन्धतर  
मंडर्ड उवसंझमिता चार चरह तत्वा अं तं तेव रात्पदितपमार्गं तंसि अ अं दिक्षसिए  
सहिं ओवनसहस्रार्द तावक्षेते पव्यते तत्वा अं पैच पैच ओवनसहस्रार्द सरिए  
एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ, तत्त्व अं ते एकमाहसु-ता जत्तारि ५ ओवनसहस्रार्द  
सरिए एगमेन्द्रं मुहुरोर्ण गच्छ, अ एकमाहसु-ता वत्ता अं सरिए सम्बन्धतर मंडर्ड  
उवसंझमिता चार चरह तत्वा अं दिक्षसिए वापत्तीर तंसि अ अं दिक्षसिए वापत्तीर

जोयणसहस्राइ तावक्खेते पण्ठते, ता जया ण सूरिए सब्बवाहिरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तथा ण राहदिय तहेव, तसि च ण दिवससि अड्यालीस जोयणसहस्राइ तावक्खेते पण्ठते, तथा ण चत्तारि २ जोयणसहस्राइ सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, तत्थ जे से एवमाहसु—ता छवि पञ्चवि चत्तारिवि जोयणसहस्राइ सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहसु—ता सूरिए ण उगमणमुहुत्तासि य अत्थमणमुहुत्तासि य सिरघगई भवइ, तथा ण छ छ जोयणसहस्राइ एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, मज्जिमतावक्खेत समासाएमाणे २ सूरिए मज्जिमभगई भवइ, तथा णं पञ्च पञ्च जोयणसहस्राइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, मज्जिम २ तावक्खेत सपत्ते सूरिए मदगई भवइ, तथा णं चत्तारि जोयणसहस्राइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, तत्थ को हेऊ०ति वाज्जा २ ता अयणं जंबुद्धीवे २ जाव परिक्खेवेण०, ता जया णं सूरिए सब्बबमतरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तथा ण दिवसराई तहेव, तसि च णं दिवससि एकाणउइ जोयणसहस्राइ तावक्खेते पण्ठते, ता जया ण सूरिए सब्बवाहिरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तथा ण राहदिय तहेव, तस्सि च ण दिवससि एग-ट्टिजोयणसहस्राइ तावक्खेते पण्ठते, तथा ण छवि पञ्चवि चत्तारिवि जोयणसहस्राइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ एगे एवमाहसु । वयं पुण एव वयामो—ता साइरेगाड पञ्च पञ्च जोयणसहस्राइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ०, तत्थ को हेऊ०ति वाज्जा २ ता अयणं जंबुद्धीवे २ परिक्खेवेण०, ता जया ण सूरिए सब्बबमतरं मंडल उवसकमिता चारं चरइ तथा ण पञ्च २ जोयणसहस्राइ दोणिं य एकावण्णे जोयणसए एगूणतीस च सद्भिभागे जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, तथा ण इहगयस्स मणुस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्रेहि दोहि य तेवद्वेहि जोयणसएहि एकवीसाए य सद्भिभागेहि जोयणस्स सूरिए चक्कुप्फास हव्वमागच्छइ, तथा ण दिवसे राई तहेव, से णिक्खममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अविभतराणंतरं मडल उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए अविभतराणतरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तथा ण पञ्च पञ्च जोयणमहस्राइ दोणिं य एकावण्णे जोयणसए सीयालीस च सद्भिभागे जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, तथा ण इहगयस्स मणूस्सस्स सीयालीसाए जोयणसहस्रेहि अउणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सद्भिभागेहि जोयणस्स सद्भिभाग च एगद्विहा छेता अउपावीसाए चुणिणयाभागेहि सूरिए चक्कुप्फास हव्वमागच्छइ, तथा णं दिवसराई तहेव, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्छसि अहोरत्तसि अविभतरतच्च मडल उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए अविभतरतच्च मडल उवसकमिता चारं चरइ तथा ण

पंच २ जोयमसहस्रार्द्ध दोणि य बाबन्धे जोयमसाप् पञ्च य संक्षिमागे जोयमस्तु  
एगमेशेण मुकुतोर्ण गच्छद्, तथा यं इहमक्सस गम्भसस्तु धीवाठीसाप् जोयमसहस्रेण  
ज्ञानउद्दीप य जोयमेहि तेजीसाप् य संक्षिमागेहि जोयमस्तु संक्षिमार्ण च एमद्विदा  
हेता दोहि तुष्टिमामागेहि सुरिए चक्षुप्त्यसं इम्बमाम्बल्ल तथा यं विकल्पार्ण  
तदेव एवं वक्ष पृथ्वे उवाएवं लिक्ष्यममाने सुरिए तवार्थतरामो रुप्यार्थतरं भाव  
म्भलो भंडङ्क संक्षममाणे २ अद्वारस २ संक्षिमागे जोयमस्तु एगमेग भंडङ्के मुकुतार्ण  
ज्ञानितुष्टिमामे २ तुष्टीर्ण चाहरेपार्ण जोयमाह पुरिलक्ष्यार्ण वितुष्टिमाने २ सम्भ-  
वाहिरे भंडङ्क उवसंक्षिता चारं चरण, ता बबा यं सुरिए सम्भवाहिरभंडङ्क उवसंक्ष-  
मिता चारं चरण तबा चं पंच २ जोयमसहस्रार्द्ध तित्तिण च पंचुतरे ज्ञेयमस्तु  
फल्लरस भ संक्षिमागे जोयमस्तु एगमेशेण मुकुतोर्ण गच्छद्, तथा चं इहगमस्तु मन्त्र-  
स्तु एक्षतीसाप् जोयमसहस्रेण अद्वृत्तेहि एक्षतीसेहि जोयमसप्तेहि तीयाए च चक्षि  
मागेहि जोयमस्तु सुरिए चक्षुप्त्यसं इम्बमागल्ल, तथा यं रात्रमध्यमता उद्दे-  
षिता अद्वारसमुकुता रात्रे भक्त, चक्षुप्त्यए तुवात्तमुकुतो विद्युते भक्त, एवं चं फल्ले  
उम्माए एस चं फलमस्तु उम्मासस्तु फलमासे । से पवित्रमाने सुरिए दोषं उम्मार्ण  
ज्ञानमासे फलमेति भाहोर्तुषि वाहिरार्थतरं भंडङ्क उवसंक्षिता चारं चरण, ता बबा  
यं सुरिए वाहिरार्थतरं भंडङ्क उवसंक्षिता चारं चरण तबा चं पंच २ जोयमसह  
स्तु तित्तिण च चतुर्तारे ज्ञेयमस्तु उत्ताक्षर्ण च संक्षिमाए जोयमस्तु एगमेशेण  
मुकुतीर्ण गच्छद्, तबा चं इहगमस्तु मन्त्रमत्तु एक्षतीसाप् जोयमसहस्रेण अद्वृत्ति  
सेहि जोयमसप्तेहि एग्लूबाठीसाप् संक्षिमागेहि जोयमस्तु संक्षिमागे च एमद्विदा  
हेता संक्षिप्त तुष्टिमामाणे सुरिए चक्षुप्त्यसं इम्बमागल्ल, तथा चं रात्रिवै तदेव  
से पवित्रमासे सुरिए दोषं भाहोर्तुषि वाहिरे तर्चं भंडङ्क उवसंक्षिता चारं चरण,  
ता बबा चं सुरिए वाहिरतत्त्वं भंडङ्क उवसंक्षिता चारं चरण तबा चं पंच पंच  
जोयमसहस्रार्द्ध तित्तिण च चतुर्तारे ज्ञेयमस्तु उम्मार्णहि चं संक्षिमागे ज्ञेयमस्तु एग-  
मेशेण मुकुतोर्ण गच्छद्, तथा चं इहगमस्तु मन्त्रमत्तु एग्लूरिगेहि चतीताए ज्ञेय-  
सहस्रेण एग्लूबाठीसाप् च संक्षिमागेहि जोयमस्तु संक्षिमायं च एग्लूद्विदा हेता तेहि  
साप् तुष्टिमामागेहि सुरिए चक्षुप्त्यार्ण इम्बमागल्ल, रात्रिवै तदेव एवं यत्त  
एग्लूबाठीसाप् पवित्रमासे सुरिए तवार्थतरामो तवार्थतरं भंडङ्कमो भंडङ्के उम्ममामे १  
अद्वारस १ संक्षिमागे ज्ञेयमस्तु एगमेग भंडङ्के मुकुतार्ण वितुष्टिमाने १ चाहरेगर्दं  
पंचासीहि २ जोयमाह पुरिलक्ष्यार्ण ज्ञानितुष्टिमामे २ सम्भवतरं भंडङ्क उवसंक्षिता  
चारं चरण, ता बबा चं सुरिए सम्भवतरं भंडङ्क उवसंक्षिता चारं चरण तबा चं

पञ्च २ जोयणसहस्राइ दोणिण य एक्कावण्णे जोयणसए अद्वृतीस च सद्विभागे जोय-  
णस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ तथा ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसह-  
स्सेहि दोहि य दोवद्वेहि जोयणसएहि एक्कीसाए य सद्विभागेहि जोयणस्स स्त्रिए  
चक्कुप्फास हच्चमागच्छइ, तथा ण उत्तमकटुपते उक्कोसए अद्वारसमुहुते दिवसे भवइ,  
जहणिया दुवालसमुहुता राई भवइ, एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मा-  
सस्स पज्वसाणे, एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्व-  
साणे ॥ २१ ॥ विद्ययस्स पाहुडस्स तद्यं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ २-३ ॥  
विद्ययं पाहुडं समत्तं ॥ २ ॥

ता केवद्य खेत्त चदिमसूरिया ओभासति उज्जोर्वेति तर्वेति पगासति आहिताति  
वएज्जा २ तत्य खलु इमाओ वारस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त०-तत्थेगे एवमाहसु-  
ता एग दीव एग समुह चदिमसूरिया ओभासति उज्जोर्वेति तर्वेति पगासेति १,  
एगे पुण एवमाहसु-ता तिणिण दीवे तिणिण समुहे चदिमसूरिया ओभासति एगे  
एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहसु-ता अद्वचउत्थे दीवसमुहे चंदिमसूरिया ओभा-  
सति एगे एवमाहसु ३, एगे पुण एवमाहसु-ता सत्त दीवे सत्त समुहे चंदिमसू-  
रिया ओभासति एगे एवमाहसु ४, एगे पुण एवमाहसु-ता दस दीवे दस समुहे  
चदिमसूरिया ओभासति एगे एवमाहसु ५, एगे पुण एवमाहसु-ता वारस दीवे  
वारस समुहे चदिमसूरिया ओभासति ६, एगे पुण एवमाहसु-ता वायालीस दीवे  
वायालीस समुहे चदिमसूरिया ओभासति एगे एवमाहसु ७, एगे पुण एवमाहसु-  
ता वावत्तरि दीवे वावत्तरि समुहे चदिमसूरिया ओभासति एगे एवमाहसु ८, एगे  
पुण एवमाहसु-ता वायालीस दीवसय वायालीस समुद्दसय चदिमसूरिया ओभासति

एगे एवमाहसु ९, एगे पुण एवमाहसु-ता वावत्तरि दीवसय वावत्तरि समुद्दसय  
चंदिमसूरिया ओभासति एगे एवमाहसु १०, एगे पुण एवमाहसु-ता वायालीस  
दीवसहस्स वायाल समुद्दसहस्स चदिमसूरिया ओभासति एगे एवमाहसु ११, एगे  
पुण एवमाहसु-ता वावत्तरि दीवसहस्स वावत्तरि समुद्दसहस्स चंदिमसूरिया ओभा-  
सति एगे एवमाहसु १२, वय पुण एवं वयामो-ता अयण जबुदीवे २ सब्बदी-  
वसमुद्दाण जाव परिक्खेवेण पण्णते, से ण एगाए जगईए सब्बबो समंता सपरि-  
क्किखते, सा ण जगई तहेव जहा जंबूदीवपण्णस्तीए जाव एवामेव सपुन्वावरेण  
जबुदीवे २ चोहससलिलासयसहस्सा छप्पण च सलिलासहस्सा भवतीति मक्खाया,  
जबुदीवे ण दीवे पचचक्कभागसठिए आहिएति वएज्जा, ता कह जबुदीवे २ पंचन्चक्क-  
भागसठिए आहिएति वएज्जा २ ता जया ण एए दुवे सूरिया सब्बबमतर मडल

ਤਰਥੰਸ਼ਮਿਤਾ ਕਾਰੇ ਕਹੁਣਿ ਰਧਾ ਵੰ ਬ੍ਰਾਹਮਿਕਸਤੁ ੨ ਦਿਲਿ ਪੰਚਕਾਸ਼ਮਾਗੇ ਬੋਸਾਂਤਿ  
ਤੰਬਹਾ-ਏਗਿ ਏਗ ਦਿਲਾਈ ਪੰਚਕਾਸ਼ਮਾਗੇ ਬੋਸਾਂਤਿ ਏਗਿ ਏਗ ਦਿਲਾਈ ਪੰਚਕਾਸ਼ਮਾਗੇ  
ਬੋਸਾਂਤਿ ਰਧਾ ਵੰ ਰਤਸਮਾਨੁਪਤੇ ਦਿਲੇਖੇ ਅਨੁਕੂਲੀ ਦਿਲੇ ਮਨੁ, ਅਨੁਭਿਤਾ  
ਤੁਲਸੀਸਮੁਨੁਤਾ ਰਾਈ ਮਨੁ, ਤਾ ਜਵਾ ਵੰ ਏਧ ਤੁਖੇ ਸੁਰਿਆ ਚਮਗਾਹੀ ਮੰਡਲੇ ਉਦਈ-  
ਅਸਿਤਾ ਕਾਰੇ ਕਹੁਣਿ ਰਧਾ ਵੰ ਬ੍ਰਾਹਮਿਕਸਤੁ ੨ ਦੀਲਿ ਚਲਸਾਗੇ ਬੋਸਾਂਤਿ ਤਾ ਏਗਿ  
ਸੁਰਿਏ ਏਗ ਪੰਚਕਾਸ਼ਮਾਗੇ ਬੋਸਾਂਤਿ ਤੰਬੋਕੇਦੁ ਤੰਬੋਕੇਦੁ ਪਮਾਂਕੇਦੁ, ਏਗਿ ਏਗ ਪੰਚਕਾਸ਼-  
ਕਾਸ਼ਮਾਗੇ ਬੋਸਾਂਤਿ ਰਧਾ ਵੰ ਰਤਸਮਾਨੁਪਤਾ ਅਨੁਕੂਲੀ ਅਨੁਕੂਲੀ ਰਾਈ ਮਨੁ,  
ਅਨੁਭਿਤਾ ਤੁਲਸੀਸਮੁਨੁਤੀ ਦਿਲੇ ਮਨੁ ॥ ੨੨ ॥ ਤਾਈ ਪਾਹੂਰੁ ਸਮਾਂਕੇ ॥ ਐ ॥

या वर्ष ते देशाए संविधानादिति वर्णना ३ तत्पर यहु इमा दुषिता संविधान  
पर्याप्ता संवाहा-चंद्रिमस्त्रियसंविधान या वाक्यवेत्तासंविधान या या वर्ष ते चंद्रिमस्त्रिय  
संविधानादिति वर्णना ४ तत्पर यहु इमामो सोबत पढ़ितीमो पर्याप्तामो  
तं ०—तत्पेगे एकमार्हसु—ता उमचररेत्तसंविधान न चंद्रिमस्त्रियसंविधान एगे एकमार्हसु  
१ एगे पुण एकमार्हसु—ता विसमवर्तरेत्तसंविधान न चंद्रिमस्त्रियसंविधान पर्याप्ता २  
एवं एएवं अभिभावेय समवर्तदोषसंविधान ३ विसमवर्तदोषसंविधान न समवर्त  
वास्तविधान ४ विसमवर्तवास्तविधान ५ ता चंद्रवर्तवास्तविधान पर्याप्ता  
एगे एकमार्हसु ६ एगे पुण एकमार्हसु—ता छापागारसंविधान न चंद्रिमस्त्रियसंविधान  
पर्याप्ता ७ एवं वेष्टसंविधान ८ वेष्टवायसंविधान ९ पासावसंविधान १० गोषुर  
संविधान ११ वेष्टमीरसंविधान १२ इन्मिवलस्तविधान १३  
एगे पुण एकमार्हसु—ता वास्तवप्रेष्टवासंविधान न चंद्रिमस्त्रियसंविधान पर्याप्ता १४  
तत्पर ते त एकमार्हसु—ता समवर्तरेत्तसंविधान ने चंद्रिमस्त्रियसंविधान कर्याता १५  
एएवं अपर्यं देवमध्ये जो देव ने इयरेहि । ता वहु ते तास्तवेत्तसंविधानादिति वर्णना १६  
तत्पर यहु इमामो देवसम्पन्न पढ़ितीमो पर्याप्तामो तं ०—तत्पर ने एगे एकमार्हसु—ता वेष्ट  
संविधान ने तावक्येत्तासंविधान पर्याप्ता एवं जाव वास्तवप्रेष्टवासंविधान ने तावक्येत्त-  
संविधान एगे पुण एकमार्हसु—ता वस्तसंविधान ने जैकुरीते २ तस्तविधान ने तावक्येत्तसंविधान  
पर्याप्ता एगे एकमार्हसु ३ एगे पुण एकमार्हसु—ता भस्तसंविधान ने मारहे वास्तवस्तसंविधान  
पर्याप्ता ४ एवं उजासासंविधान विजालसंविधान एकमो विनाईसंविधान पुणमो  
विसाहसंविधान संवक्षणसंविधान एगे एकमार्हसु ५ एगे पुण एकमार्हसु—ता देवस-  
पद्मसुसंविधान ने तावक्येत्तसंविधान पर्याप्ता एगे एकमार्हसु ६ एवं पुण वास्तवमो—ता  
उड्हौसुहस्तुमापुणसंविधान ने तावक्येत्तसंविधान पर्याप्ता भागा सुउडा वाहि विवरण  
मतो वष्टा वाहि पितृसा भनो वस्तुहसंविधान वाहि तत्त्विपुणसंविधान उभमो वास्तव-

तीसे दुवे वाहाओ अवट्टियाओ भवति पणयालीस २ जोयणसहस्राइ आयामेण,  
 तीसे दुवे वाहाओ अणवट्टियाओ भवति, तजहा-सब्बभतरिया चेव वाहा सब्ब-  
 वाहिरिया चेव वाहा, तत्य को हेक०ति वएज्ञा ? ता अयणं जंबुदीवे २ जाव  
 परिक्खेवेण०, ता जया ण सूरिए सब्बभतर मडल उवसकमिता चार चरइ तया  
 ण उड्हीमुहकलबुयापुफ्फसठिया ण तावक्खेतसठिई आहिताति वएज्ञा, अतो सकुडा  
 वाहिं वित्थडा अतो वट्ठा वाहिं पिहुला अतो अक्सुहसठिया वाहिं सत्थिमुहसठिया,  
 दुहओ पासेणं तीसे तहेव जाव सब्बवाहिरिया चेव वाहा, तीसे ण सब्बभतरिया  
 वाहा मदरपब्यंतेण णव जोयणसहस्राइ चत्तारि य छलसीए जोयणसए णव य  
 दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिताति वएज्ञा, तासे ण परिक्खेवविसेसे कळो  
 आहिएति वएज्ञा ? ता जे ण मदरस्स पब्ययस्स परिक्खेवे त परिक्खेव तिहिं गुणिता  
 दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस ण परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्ञा, तीसे ण  
 सब्बवाहिरिया वाहा लवणसमुद्रतेण चउणउइ जोयणसहस्राइ अट्ट य अट्टुसड्हे  
 जोयणसए चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिताति वएज्ञा, तासे ण  
 परिक्खेवविसेसे कळो आहिएति वएज्ञा ? ता जे ण जबुदीवस्स २ परिक्खेवे तिहिं  
 गुणिता दसहिं छेत्ता दभाहिं भागे हीरमाणे एस ण परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्ञा,  
 तीसे ण तावक्खेत्ते केवइयं आयामेण आहिएति वएज्ञा ? ता अट्टतरिं जोयणसहस्राइ  
 तिणिण य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे य आयामेण आहिएति वएज्ञा, तया ण  
 किंसठिया अधयारसठिई आहिताति वएज्ञा ? ता उड्हीमुहकलबुयापुफ्फसठिया  
 तहेव जाव वाहिरिया चेव वाहा, तीसे ण सब्बभतरिया वाहा मदरपब्ययतेणं  
 छज्जोयणसहस्राइ तिणिण य चउवीसे जोयणसए छच्च दभमागे जोयणस्स परिक्खेवेण  
 आहिताति वएज्ञा, तीसे ण परिक्खेवविसेसे कळो आहिएति वएज्ञा ? ता जे  
 ण मदरस्स पब्ययस्स परिक्खेवे त परिक्खेव दोहिं गुणेत्ता सेस तहेव, तीसे ण  
 सब्बवाहिरिया वाहा लवणसमुद्रतेण तेवट्टिजोयणसहस्राइ दोणिण य पणयाले  
 जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिताति वएज्ञा, तासे ण परि-  
 क्खेवविसेसे कळो आहिएति वएज्ञा ? ता जे ण जबुदीवस्स २ परिक्खेवे त परि-  
 क्खेव दोहिं गुणिता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस ण परिक्खेवविसेसे आहि-  
 एति वएज्ञा, ता से ण अधयारे केवइय आयामेण आहिएति वएज्ञा ? ता अट्टतरिं  
 जोयणसहस्राइ तिणिण य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभाग च आयामेण आहिएति  
 वएज्ञा, तया ण उत्तमकट्टुपत्ते अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ, जहणिण्या दुवालसमुहुता  
 भवइ, ता जया ण सूरिए सब्बवाहिरं मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण

किंसुठिया तावक्केतरसंठिरे भाद्रिताति वएजा । ता उत्तुमुहस्तुयापुण्डुष्ठिया तावक्केतरसंठिरे भाद्रिताति वएजा । एवं वं अभिसारसंठिरे अभिसारसंठिरे एवं प्लावं तं वाहितमंडले तावक्केतरसंठिरे एवं तं तावक्केतरसंठिरे एवं वाहितमंडले अभिसारसंठिरे भाद्रिताति जाव तमा वं उत्तमरस्तुता उद्दोसिया अद्वारस्तुता राहै भवत्, जाग्न्यए तुवास्तुमुहुते दिवसे भवत्, ता जनुहीने २ सुरिया देवताये देवता जनुहीने वं रीते सुरिया एवं ओवषस्य उत्तु तमति अद्वारस्तु ओवषस्य वर्तं भवे तर्वति सीयस्तैरे ओवषस्तुत्यात् तुप्ति य तवद्वे ओवषस्य एगावीर्तं च सुट्टिमागे ओवषस्तु ओवषस्तु तर्वति ॥ १ ॥ अउत्तर्ये पादुहृ तमर्त्ते ॥ ४ ॥

ता अस्ति वं सुरियस्तु ऐस्ता पद्धिया भाद्रिताति वएजा । तत्य लहु इमानो शीघ्र पटिकातीभो फलाताभो तं—तत्येगे एकमार्द्दु—ता भंदरेति वं पञ्चवंति सुरि यस्तु बङ्स्ता पद्धिया भाद्रिताति वएजा एवा एकमार्द्दु । एगे पुण्य एकमार्द्दु—ता भंदरेति वं पञ्चवंति सुरियस्तु ऐस्ता पद्धिया भाद्रिताति वएजा एगे एकमार्द्दु २ एवं एजे अभिसारेण भाद्रितात्त्वं—ता भंदरेति वं पञ्चवंति ता तुर्दुसंति वं पञ्चवंति ता सर्वदेवति वं पञ्चदेवति ता भिरिरावंति वं पञ्चवंति ता रस्तुवंति वं पञ्चवंति ता भिलुचवंति वं पञ्चवंति ता भोयमज्ञाति वं पञ्चवंति ता ल्पेष्वामिति वं पञ्चदेवति ता अच्छर्वंति वं पञ्चदेवति ता सुरियावर्त्तति वं पञ्चदेवति ता सुरियावर्त्तति वं पञ्चदेवति ता भिगार्दिगि वं पञ्च वंति ता अवर्यसंति वं पञ्चदेवति ता परमित्यालंति वं पञ्चदेवति ता परमित्यालंति वं पञ्चदेवति ता परमित्यालंति ता परमित्यालंति ता परमित्यालंति ता परमित्यालंति ता भंदरेति पुण्य जाव पञ्चवर्गाया पुण्य, ता जे नं पुम्पासा सुरियस्तु ऐस्ता तुमीरि तं वं पुम्पासा सुरियस्तु ऐस्ता भद्रिताति वं पोरात्ता तुर्देवता तेवर्ते पटिर्वंति परिमध्यनरगायाति वं पाम्पासा सुरियस्तु ऐस्ता भद्रिताति ॥ २४ ॥ देवतमे पादुहृ तमर्त्ते ॥ ५ ॥

ता अर्द्ध त आकर्तिरे भाद्रिताति वएजा । तत्य लहु इमानो पावीर्ते पटिकातीभो पराजाभो तं—न्यग एकमार्द्दु—ता भंतुगमयमह तुरियस्तु ऐस्ता भाज्या उप्पज्जद भज्या भवत् एगे एकमार्द्दु । एवा पुण्य एकमार्द्दु—ता भंतुमुहुत्या सुरियस्तु ऐस्ता भाज्या उप्पज्जद भज्या भवत् २ एवं एवं अभिप्रदेवते भेवत्ता भंतुगार्द्यमेव ता भंतुगमयमह ता भंतुमार्द्दु ॥ ६ ॥

अथणमेव, ता अणुसवच्छरमेव, ता अणुजुगमेव, ता अणुवासमयमेव, ता अणुवास-सहस्रमेव, ता अणुवाससयसहस्रमेव, ता अणुपुच्चमेव, ता अणुपुच्चसयमेव, ता अणुपुच्चसहस्रमेव, ता अणुपुच्चसयसहस्रमेव, ता अणुपलिओवममेव, ता अणुपलि-ओवमसयमेव, ता अणुपलिओवमसयसहस्रमेव, ता अणुपलिओवमसयसहस्रमेव, ता अणुसागरोवममेव, ता अणुसागरोवमसयमेव, ता अणुसागरोवमसहस्रमेव, ता अणुसागरोवमसयसहस्रमेव, एगे पुण एवमाहसु-ता अणुउस्सपिणिओसपिणिमेव सूरियस्स ओया अणा उप्पजड अणा अवेइ, एगे एवमाहसु २५। वयं पुण एवं चयामो-ता तीस २ मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवद्धिया भवइ, तेण पर सूरियस्स ओया अणवद्धिया भवइ, छम्मासे सूरिए ओय णिवुहृइ छम्मासे सूरिए ओयं अभिवहृइ, णिक्खममाणे सूरिए देस णिवुहृइ पविसमाणे सूरिए देस अभिवहृइ, तथ को हेऊ०ति चएजा ? ता अयण्णं जंबुदीवे २ सब्बदीवसमु० जाव परिक्खेवेण०, ता जया ण सूरिए सब्बब्मतर मडलं उवसकमिता चार चरइ तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सूरिए णव सब्बच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तसि अविभतराणतर मंडल उवसकमिता चार चरइ, ता जया ण सूरिए अविभतराणतर मडलं उवसकमिता चारं चरइ तया ण एगेणं राइदिएण एग भाग ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुहृत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवहृत्ता चार चरइ मडलं अद्वारसहिं तीसेहिं सएहिं छेता, तया ण अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तसि अविभतरतच्च मडल उवसकमिता चारं चरइ, ता जया ण सूरिए अविभतरतच्च मडल उवसकमिता चारं चरइ तया ण दोहिं राइदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुहृत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवहृत्ता चार चरइ मडल अद्वारसतीसेहिं सएहिं छेता, तया ण अद्वारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगद्विभागमुहुत्तेहिं अहिया, एव खलु एणुवाएण णिक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ तयाणतरं मडलाओ मडल सक्कममाणे २ एगमेगे मडले एग-मेगेण राइदिएण एगमेग भाग ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुहृमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवहृमाणे २ सब्बवाहिरं मडल उवसकमिता चार चरह, ता जया ण सूरिए सब्बब्मतराओ मडलाओ सब्बवाहिर मंडल उवसकमिता चार चरइ तया ण सूरिए सब्बब्मतराओ दिवसखेत्तस्स णिवुहृत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवहृत्ता चार चरइ मडल अद्वा-

रसहि तीसेहि छेता तथा एं उत्तमद्वयता उडोहिया अद्वारसमुद्रुता राई मवह  
अद्वयए दुवास्मसुद्रुतो दिवसे मवह, एम एं पटमात्मासे एम एं फलमस्म हम्मा-  
स्म पञ्चवगाने से पञ्चितमाले सुरिए दोर्चं उम्मांसे अद्वमाने पटमेहि महोरत्तेहि  
बाहिरार्थतरे मंडले उवसंपत्तिता चारे चरह, ता तथा एं सुरिए बाहिरार्थतरे मंडल  
उवसंपत्तिता चारे चरह तथा एं एरोर्चं राहिरिएर्चं एग मासी ओयाए रवविक्षेत्रसम  
यितुहेता दिवसेतत्सम अभिवहेता चारे चरह मंडल अद्वारसहि तीसेहि छेता  
तथा एं अद्वारसमुद्रुता राई मवह दोहिए एगद्विमाणमुद्रुतोहि जना दुवास्मसुद्रुते  
दिवसे मवह दोहिए एगद्विमाणमुद्रुतोहि अद्विए, से पञ्चितमाने सुरिए दोर्चंहि ब्लो-  
रत्तेहि बाहिर तथं मंडले उवसंपत्तिता चारे चरह, ता तथा एं सुरिए बाहिरत्तर्च  
मंडले उवसंपत्तिता चारे चरह तथा एं दोहिए राहिरिएहि दो भाए ओयाए रववि  
येतसम यितुहेता दिवसेतत्सम अभिवहेता चारे चरह मंडले अद्वारसहि तीसेहि  
छेता तथा एं अद्वारसमुद्रुता राई मवह चरहि एगद्विमाणमुद्रुतोहि जना दुवा-  
स्मसुद्रुते यित्तेसे मवह चरहि एगद्विमाणसमुद्रुतोहि अद्विए, एं यज्ञ एण्युत्ताएं  
पञ्चितमाने मूरिए तथान्तवराभो तथार्थतरे मंडलाभो मंडले सुखमाने १ एफ-  
मेंग राईरिएर्चं एगमेहि मासी ओयाए रवविक्षेत्रसम यितुहेमाने २ दिवसेतत्सम  
अभिवहेताने ३ सम्बन्धतरे मंडले उवसंपत्तिता चारे चरह, ता तथा एं सुरिए  
सम्बन्धयाहिराभा मंडलाभा सम्बन्धतरे मंडले उवसंपत्तिता चारे चरह तथा एं सम्ब-  
न्धयाहिर मंडले पञ्चिताव एगले तसीर्चं राहिरिवसाएज एग तसीर्चं भगवन्वे भोयाए  
रवविक्षेत्रसह यितुहेता दिवसेतत्सम अभिवहेता चारे चरह मंडले अद्वारपर्तीहेहि  
मएहि छेता तथा एं उत्तमद्वयतो उडेमेए अद्वारसमुद्रुतो दिवसे मवह, अद्वित्ता  
दुवास्मस्मुद्रुता राई मवह, एम एं दोर्चं उम्मासु एस ने दोबस्म उम्मास्म सवर  
तान एह एं आद्वय सवच्छारे एग एं आद्वयस्म सुवधुरहम पञ्चवगाने ॥ १५ ॥

ता क हे मूरिये बर्तनि आहिताति वरजा ॥ तरह यातु इमाभो वीर्ये चहि  
वातीभो पञ्चवगाभो तं—तापेग एवमाईमु—ता मंडरे एं पञ्चए मूरिये चरवर  
आहितनि वरजा एगे एवमाईमु । एग पुज एवमाईमु—ता याच एं करए  
सुरिये चरह आहितनि वरजा एर णाऱ्य अभिवावर्च रंगवर्च जाव पम्म-  
वराए एं पञ्चए मूरिये चरवर आहितनि वरजा एग एवमाईमु ॥ १६ ॥ वर्च पुज  
एं ववामा—ता मंडरेवि पुजवर तदेव जाव पञ्चवरार्थि पुजवर ता जे ने  
पाणगता सुरियसम ऐम्पुर्मनि त एं पाणस्म मूरिय वरवी। आहितनि एं पाणस्मा

सूरिय वरयति, चरमलेसतरगयावि ण पोगगला सूरिय वरयति० ॥ २६ ॥ सत्तमं पाहुडं समत्तं ॥ ७ ॥

ता कह ते उदयसठिई आहितेति वएज्जा २ तत्थ खलु इमाओ तिष्णि पडि-वतीओ पण्णत्ताओ, त०-तत्थेरे एवमाहसु-ता जया ण जबुदीवे २ दाहिणहृ अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ तया ण उत्तरहृवि अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ, जया ण उत्तरहृ अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ तया ण दाहिणहृवि अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ, जया ण जबुदीवे २ दाहिणहृ सत्तरसमुहुते दिवसे भवइ तया ण उत्तरहृवि सत्तरसमुहुते दिवसे भवइ, एव (एएण अभिलावेण) परिहावेयव्व, सोल समुहुते दिवसे पण्णरसमुहुते दिवसे चउद्दसमुहुते दिवसे तेरसमुहुते दिवसे जाव जया ण जबुदीवे २ दाहिणहृ वारसमुहुते दिवसे० तया ण उत्तरहृवि वारस-सुहुते दिवसे भवइ, जया ण दाहिणहृ वारसमुहुते दिवसे भवइ तया ण जबुदीवे २ मदरस्स पव्ययस्स पुरच्छिमपच्छियमेण सया पण्णरसमुहुते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहुता राई भवइ, अवढिया ण तत्थ राइदिया पण्णता समणाउसो ! एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता जया ण जबुदीवे २ दाहिणहृ अट्टारसमुहुताणतरे दिवसे भवइ, जया ण उत्तरहृवि अट्टारसमुहुताणतरे दिवसे भवइ तया ण दाहिणहृवि अट्टारसमुहुताणतरे दिवसे भवइ, एव परिहावेयव्व, सत्तरसमुहुताणतरे दिवसे भवइ सोलसमुहुताणतरे०, पण्णरसमुहुताणतरे दिवसे भवइ चोहसमुहुताणतरे०, तेरसमुहुताणतरे०, जया ण जबुदीवे २ दाहिणहृ वारसमुहुताणतरे दिवसे भवइ तया ण उत्तरहृवि वारसमुहुताणतरे दिवसे०, जया ण उत्तरहृ वारस-सुहुताणतरे दिवसे भवइ तया ण दाहिणहृवि वारसमुहुताणतरे दिवसे भवइ, तया ण जबुदीवे २ मदरस्स पव्ययस्स पुरत्थिमपच्छियमेण णो सया पण्णरसमुहुते दिवसे भवइ, णो सया पण्णरसमुहुता राई भवइ, अणवढिया ण तत्थ राइदिया प० समणाउसो ! एगे एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहसु-ता जया ण जबुदीवे २ दाहिणहृ अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ तया ण उत्तरहृ डुवालसमुहुता राई भवइ, जया ण उत्तरहृ अट्टारसमुहुते दिवसे भवइ तया ण दाहिणहृ वारसमुहुता राई भवइ, जया ण दाहिणहृ अट्टारसमुहुताणतरे दिवसे भवइ तया ण उत्तरहृ वारसमुहुता राई भवइ, जया ण उत्तरहृ अट्टारसमुहुताणतरे दिवसे भवइ तया ण दाहिणहृ वारसमुहुता राई

भवह, एवं नेवर्म्म सगलेहि य भवतरहि य एकेके दो दो आमवागा सम्बेद्धे तुवास्म-  
समुद्राता राई भवह जाव ता ज्या वं ज्युरीये २ दाहिन्हू वारसमुद्रापांतरे दिवसे  
भवह त्या वं उत्तरहु तुवास्मसमुद्राता राई भवह, ज्या वं उत्तरहु तुवास्मसमुद्रापांतरे  
दिवसे भवह त्या वं दाहिन्हू तुवास्मसमुद्राता राई भवह, त्या वं ज्युरीये २ मंद  
रस्य पञ्चवस्य पुरतिष्ठमपञ्चरित्यमेवं भित्तिव फलरसमुद्रे दिवसे भवह, भित्तिव  
पञ्चरसमुद्राता राई भवह ओट्टिला वं तथ्य रत्तिला प समवाटयो। पृष्ठ एकमा-  
ईति ३। कर्य पुष्ट एव ज्यामो—ता ज्युरीये २ शुरिवा उरीपपार्वजमुमार्घति पाईन-  
दाहिन्हमागार्घति पाईनदाहिन्हमुगार्घति दाहिन्हपवीजमागार्घति दाहिन्हपवीजमुग-  
र्घति पधीमउरीणमागार्घति पाईबठरीजमुगार्घति उरीजपाईनमागार्घति ता  
ज्या वं ज्युरीये दाहिन्हू दिवसे भवह त्या वं उत्तरहु दिवसे भवह ज्या वं  
उत्तरहु त्या वं ज्युरीये २ मंदरस्य पञ्चवस्य पुरतिष्ठमपञ्चरित्यमेवं राई भवह  
ता ज्या वं ज्युरीये भवहस्य पञ्चवस्य पुरतिष्ठमेवं दिवसे भवह त्या वं फल-  
भित्तिमत्तिव दिवसे भवह, ज्या वं फलभित्तिव दिवसे भवह त्या वं ज्युरीये २ मंद  
रस्य पञ्चवस्य उत्तरदाहिन्हेवं राई भवह, ता ज्या वं दाहिन्हू उड्डोगए अद्वार  
समुद्रे दिवसे भवह त्या वं उत्तरहुवि उड्डोगए अद्वारसमुद्रात दिवसे भवह, ज्या  
वं उत्तरहु त्या वं ज्युरीये २ मंदरस्य पञ्चवस्य पुरतिष्ठमपञ्चरित्यमेवं जहिन्हा  
तुवास्मसमुद्राता राई भवह, ता ज्या वं ज्युरीये २ मंदरस्य पञ्चवस्य पुरतिष्ठमेवं  
उड्डोगए अद्वारसमुद्रे दिवसे भवह त्या वं फलभित्तिव उड्डोगए अद्वारसमुद्रे  
दिवसे भवह ज्या वं फलभित्तिव उड्डोगए अद्वारसमुद्रे दिवसे भवह त्या वं  
ज्युरीये २ मंदरस्य पञ्चवस्य उत्तरदाहिन्हेवं जहिन्हा तुवास्मसमुद्राता एव मर्य,  
एवं एवं गमेये भित्ति अद्वारसमुद्रापांतरे दिवसे भवह, सादरेगतुवास्मसमुद्रा  
राई भवह, सत्तरसमुद्रे दिवसे तरसमुद्रापांतरे दिवसे भवह  
सादरेगतुवास्मसमुद्राता राई भवह, छोट्टमसमुद्रे दिवसे भवह, ओरसमुद्राता एव मर्य,  
सोल्सममुद्रापांतरे दिवसे भवह, सादरेगतोरसमुद्राता राई भवह, पञ्चरसमुद्रे दिवसे  
पञ्चरसमुद्राता राई, पञ्चरसमुद्रापांतरे दिवसे सादरेगफलरसमुद्राता राई भवह  
फलरसमुद्रे दिवसे सोम्यसमुद्राता राई, ओरसमुद्रापांतरे दिवसे सादरेगतेष्य  
तुवा राई, तेरसमुद्रे दिवसे तरसमुद्राता राई, तरसमुद्रापांतरे दिवसे सादरेग  
तरसमुद्राता राई, ता ज्या वं ज्युरीये एवे दाहिन्हू जहम्यए तुवास्मसमुद्राए  
दिवसे भवह त्या वं उत्तरहु जहम्यए तुवास्मसमुद्रे दिवसे भवह, ता ज्या वं  
उत्तरहु जहम्यए तुवास्मसमुद्रे दिवसे भवह त्या वं ज्युरीये २ मंदरस्य पञ्चवस्य

पुरत्तिमपच्चत्तिमेण उक्तोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया ण जबुदीवे २  
 मदरस्स पव्वयस्स पुरत्तिमेण जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं पच्चत्तिमेणवि  
 जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्तिमेण जहण्णए दुवाल-  
 समुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जबुदीवे २ मदरस्स० उत्तरदाहिणेण उक्तोसिया अट्टार-  
 समुहुत्ता राई भवइ, ता जया ण जबुदीवे २ दाहिणहृ वासाण पढमे समए पडिवज्जड  
 तया ण उत्तरहृवि वासाण पढमे समए पडिवज्जड, जया ण उत्तरहृ वासाण  
 पढमे समए पडिवज्जड तया ण जबुदीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छमपच्चत्तिमेण  
 अणतरपुरक्खडकालसमयसि वासाण पढमे समए पडिवज्जड, ता जया ण जबुदीवे २  
 मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छमेण वासाण पढमे जब्जड तया ण पच्चत्तिमेणवि  
 वासाण पढमे समए पडिवज्जड तया ण जबुदीवे २ म५२४३८१८  
 लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्क जहा एव द  
 गिम्हाण च भाणियव्वा, एव व  
 तया ण उत्तरहृवि न  
 तया ण दाहिणहृवि  
 वज्जड तया ण जबुदी  
 क्खडकालसमयसि पढमे  
 यस्स पुरत्तिमेण पढमे  
 वज्जड, जया ण पच्चत्ति  
 पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण  
 जहा अयणे तहा सवच्छरे  
 पुव्वे एव जाव सीसपहेलिया  
 दाहिणहृ उस्सपिणी पडिवज्जड  
 णं उत्तरहृ उस्सपिणी पडिवज्जड  
 पच्चत्तिमेण गेवत्ति उस्सपिणी  
 पण्णो समणाउसो ।० एव बोस्स  
 दिवसे भवइ तया ण लवणसमुदे ।०  
 तया ण लवणसमुदे ।०  
 दम्मग्गायइसडे ण

रीति दाहिन्हो हि क्षेत्रे मनह तथा च उत्तरार्थो हि क्षेत्रे मनह, जया च उत्तरार्थो हि क्षेत्रे मनह तथा च आवश्यके रीति मंदराज पञ्चमार्णं पुरातिप्रमपत्रातिप्रमं राई मनह, एव बहुतीति २ चहा तदेव जात उत्सविणी अम्बेद च चहा घट्ये समुद्रे तदेव ता अव्यंतरपुक्तरदेव च उत्तरार्थो हि क्षेत्रे मनह तथा च उत्तरार्थो हि क्षेत्रे मनह, जया च उत्तरार्थो हि क्षेत्रे मनह तथा च अव्यंतरपुक्तरदेव मंदराजं पञ्चमार्णं पुरातिप्रमपत्रातिप्रमं राई मनह, संसे चहा बहुतीति २ तदेव जात उत्सविणीमोसविणीमो त्र २७ ॥ अद्युम पादुक समर्त ॥ ८ ॥

ता इष्टद्वे ते उत्तरार्थो हि क्षेत्रे वाहितेति वएजा । तत्त्व लक्ष्मालो विभिन्न पठिकतीमो पञ्चमार्णो तं—तत्वेगे एकमार्हांशु—ता चे च पोमाळा उत्तरियस्य ऐसे फुसरति ते च पोमाळा संतप्त्येति ते च पोगम्भ ईतप्त्यमाळा तद्यन्ते ताहाई वाहिरद्व पोमाळाई संतावेतीति एस च समिए तावक्त्वेतो एगे एकमार्हांशु । एगे पुण एकमार्हांशु—ता चे च पोगम्भ उत्तरियस्य ऐसे फुसरति ते च पोगम्भ असंतप्त्यमाळा तद्यन्ते ताहाई वाहिरद्व पोमाळाई चो संतावेतीति एस च समिए तावक्त्वेतो एगे एकमार्हांशु २ एगे पुण एकमार्हांशु—ता चे च पोमाळा उत्तरियस्य ऐसे फुसरति ते च पोगम्भ अस्येगम्भा संतप्त्येति अस्येगम्भा गो संतप्त्येति तत्त्व अस्येगम्भा संतप्त्यमाळा तद्यन्ते ताहाई वाहिरद्व पोमाळाई संतावेतीति अस्येगम्भा असंतप्त्यमाळा तद्यन्ते ताहाई वाहिरद्व पोमाळाई चो संतावेतीति एगे च समिए तावक्त्वेतो एगे एकमार्हांशु ३ । चये पुण एवं वयामो—ता वाहे इमालो चंद्रिमउत्तरियार्थं देवाज विमावेहैतो ऐसालो वहिया [ उच्चूका ] असिमिल्लुम्भो एतावेतीति एयासि चे ऐसार्थं अत्यरेष्य अल्लामरीमो छिन्नकेसाम्भो संमुच्छेति तर च तामो छिन्नकेसाम्भो संमुच्छिमार्थे समाजीम्भे तद्यन्ते ताहाई वाहिरद्व पोगम्भाई स्त्रावेतीति इह एस च समिए तावक्त्वेतो ॥ २८ ॥ ता इष्टद्वे ते उत्तरार्थो हि क्षेत्रे विभिन्न उत्तरार्थो हि क्षेत्रे वाहितेति वएजा । तत्त्व लक्ष्मालो पञ्चमीसे पठिकतीमो पञ्चमार्णो तं—तत्वेगे एकमार्हांशु—ता अल्लामम्भमं पुरातिप्रमपत्रातिप्रमं विभिन्न वाहितेति वएजा एगे पुण एकमार्हांशु । एगे पुण एकमार्हांशु—ता अल्लामुद्गम्भेति उत्तरार्थो हि क्षेत्रे विभिन्न उत्तरार्थो हि क्षेत्रे वाहितेति वएजा २ एवं एर्व अमिलमैति विभिन्न ता जाहे चर अनेकात्तिर्थै एवं पञ्चमीसे पठिकतीमो तामो ऐव नेयम्भाम्भे जात अत्युत्सविणी मेव सूरिये विभिन्न उत्तरार्थो हि क्षेत्रे वाहितेति वएजा एगे पुकमार्हांशु ३५ । चये पुण एवं वयामो—ता उत्तरियस्य च उत्तराते च ऐसे च एड्डव एवं एर्वै

उच्चत च छाय च पदुच्च लेसुह्देसे लेस च छाय च पदुच्च उच्चसुह्देसे, तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त०-तत्येगे एवमाहसु-ता अत्थि ण से दिवसे जंसि च ण दिवससि सूरिए चउपोरिसिच्छाय णिव्वत्तेइ, अत्थि ण से दिवसे जसि च ण दिवससि सूरिए दुपोरिसिच्छाय णिव्वत्तेइ० एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमा-हसु-ता अत्थि ण से दिवसे जसि च ण दिवससि सूरिए दुपोरिसिच्छाय णिव्वत्तेइ० अत्थि ण से दिवसे जसि० दिवससि सूरिए णो किन्चि पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेइ० २, तत्थ जे ते एवमाहसु-ता अत्थि ण से दिवसे जसि च ण दिवससि सूरिए चउपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ० अत्थि ण से दिवसे जसि च ण दिवससि सूरिए दोपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ० ते एवमाहसु-ता जया ण सूरिए सब्बवभतर मंडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णया दुवाल्समुहुत्ता राई भवइ, तसि च ण दिवससि सूरिए चउपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ० त०-उग्गमणमुहुत्तसि य अथमणमुहुत्तसि य, लेस अभिवृद्धेमाणे णो चेव ण णिवुद्धेमाणे, ता जया ण सूरिए सब्बवाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवाल्स-सुहुत्ते दिवसे भवइ० तसि च ण दिवससि सूरिए दुपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ० त०-उग्गमणमुहुत्तसि य अथमणमुहुत्तसि य, लेस अभिवृद्धेमाणे णो चेव ण णिवुद्धेमाणे० १, तत्थ ण जे ते एवमाहसु-ता अत्थि ण से दिवसे जसि च ण दिव-ससि सूरिए दुपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ० अत्थि णं से दिवसे जसि च ण दिवससि सूरिए णो किन्चि पोरिसिय छायं णिव्वत्तेइ० ते एवमाहसु-ता जया ण सूरिए सब्ब-भतर मंडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णया दुवाल्समुहुत्ता राई भवइ० तसि च ण दिवससि सूरिए दुपोरिसिय छाय णिव्वत्तेइ० त०-उग्गमणमुहुत्तसि य अथमणमुहुत्तसि य, लेस अभिवृद्धेमाणे णो चेव ण णिवुद्धेमाणे० २, ता जया ण सूरिए सब्बवाहिरं मडल उवसकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ० जहण्णए दुवाल्समुहुत्ते दिवसे भवइ० तसि च ण दिवससि सूरिए णो किन्चि पोरि-सिच्छाय णिव्वत्तेइ० त०-उग्गमणमुहुत्तसि य अथमणमुहुत्तसि य, णो चेव ण लेस अभिवृद्धेमाणे वा णिवुद्धेमाणे वा० २, ता कइकट्टे सूरिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेइ० आहिताति वएज्जा॒ २ तत्थ खलु इमाओ छणउई पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त०-तत्येगे एवमाहसु-ता अत्थि ण से देसे जसि च णं देससि सूरिए एगपोरिसिय छाय णिव्व-त्तेइ० एगे एवमाहसु० एगे पुण एवमाहसु-ता अत्थि ण से देसे जसि च ण देससि

सरिए दुपोरिलिंबं स्थम विष्वतेऽ एवं एष अभिकावेषं बेवर्णं जाव छन्दठई  
पोरिलिंच्छार्यं विष्वतेऽ तत्त्वं जे ते एकमार्हसु-ता अरिष्य वं स देसे वंसि च वं देसंसि  
सरिए एगपोरिलिंबं छार्यं विष्वतेऽ, ते एकमार्हसु-ता द्विरिमस्तु वं स्थमहेत्तिमास्मे  
द्वरप्पदिहीमो वहिया अभिविष्वद्वाहि देवाहि तादिजमाणीहि इमीसे रवयप्पमाए  
पुढीए बहुसमरमधिजामो भूमिभागप्पमावेष्य उमाए तत्त्वं से द्वरिए एगपोरिलिंबं  
छार्यं विष्वतेऽ, तत्त्वं जे ते एकमार्हसु-ता अरिष्य वं से देसे वंसि च वं देसंसि  
सरिए दुपोरिलिंबं छार्यं विष्वतेऽ, ते एकमार्हसु-ता द्विरिमस्तु वं स्थमहेत्तिमास्मे  
द्वरियप्पदिहीमो वहिया अभिविष्वद्वाहि देवाहि तादिजमाणीहि इमीसे रवयप्प-  
माए पुढीए बहुसमरमधिजामो भूमिभागामो जावहर्वं सरिए उर्वं उवर्तोर्वं एक-  
माहि दोहि भवाहि शोहि छायालुमाणप्पमावेहि उमाए पृथ्वं वं से द्वरिए दुपोरिलिंबं  
छार्यं विष्वतेऽ, एवं वैकर्णं जाव तत्त्वं जे ते एकमार्हसु-ता अतिव वं से देसे वंसि च  
वं देसंसि द्वरिए छन्दठई पोरिलिंबं छायं विष्वतेऽ, ते एकमार्हसु-ता द्विरिमस्तु वं  
स्थमहेत्तिमास्मे द्वरप्पदिहीमो वहिया अभिविष्वद्वाहि देवाहि तादिजमाणीहि इमीसे  
रवयप्पमाए पुढीए बहुसमरमधिजामो भूमिभागामो जावहर्वं सरिए उर्वं उवर्तोर्वं  
एकमाहि छन्दठईए छायालुमाणप्पमाणाहि उमाए पृथ्वं वं से द्वरिए छन्दठई  
पोरिलिंबं छाय विष्वतेऽ एगे एकमार्हसु कर्वं पुष्प एवं क्षयमो-ता साहरेगवरप्पहि  
पोरिसीवं सुरिए पोरिलिंबं विष्वतेऽ ता अस्तुपोरिसी वं छाया विष्वस्तु द्वि-  
यप् वा देसे वा १ ता तिमागे मप् वा देसे वा ता पोरिसी वं छाया विष्वस्तु द्वि-  
गण् वा देसे वा २ ता चट्टमागे गण् वा देसे वा ता दिष्वपोरिसी वं छाया  
विष्वस्तु द्वि यप् वा देसे वा ३ ता पक्षमागे गण् वा देसे वा एवं अस्तोरिसी  
स्तेवुं पुच्छा विष्वस्तु भार्य छोहुं जामर्वं जाव ठां अद्वलउनासहित्तोरित्तीवना  
विष्वस्तु द्वि गण् वा देसे वा ४ ता पश्चालीचुसवमागे गण् वा देसे वा ता चउना-  
चहित्तोरिसी वं छाया विष्वस्तु द्वि गण् वा देसे वा ५ ता वासीचुसहस्यमागे यप्  
वा देसे वा ता चाइरेगवरनासहित्तोरिसी वं छाया विष्वस्तु द्वि गण् वा देसे वा ६  
ता वातिव द्वियप् वा देसे वा तत्त्वं यमु इमा पर्वतीसविष्वद्वा छाया ७  
चंभन्त्तामा रज्ञुच्छमावा पागारच्छमावा पासापच्छमावा छक्कमाल्लमावा उवर्ताल्लमावा  
अनुबेमच्छमावा आद्यमिवा समा पर्विया लीक्कछमावा फक्कमाल्लम्य पुरखेत्तवा  
पुरिमल्लमाडवगवा पर्विमल्लमाल्लवगवा छानाशुवाइमी विष्वद्वाल्लपील्लवा छाव  
छाया १७ पोल्लववा तत्त्वं वं योल्लल्लामा भावुविष्वा पर्वता ठंवा-गोल्लल्लमा भवाह  
छाया १८ पोल्लल्लामा तत्त्वं वं योल्लल्लामा भावुविष्वा पर्वता ठंवा-गोल्लल्लमा भवाह

गोलच्छाया गाटलगोलच्छाया अवहृगाढलगोलच्छाया गोलावलिच्छाया अवहृगोल-  
वलिच्छाया गोलपुजच्छाया अवहृगोलपुजच्छाया २५ ॥ २९ ॥ णवमं पाहुडं  
समतं ॥ ९ ॥

ता जोगेति वत्युस्म आवलियाणिवाए आहितेति वएज्जा, ता कह ते जोगेति  
वत्युस्स आवलियाणिवाए आहितेति वएज्जा २ तत्य खलु इमाओ पच पडिवतीओ  
पण्णत्ताओ, त०-तत्येगे एवमाहसु-ता सब्बेवि ण णक्खत्ता कत्तियाडया भरणिपजव-  
साणा प० एगे एवमाहसु॑ १, एगे पुण एवमाहसु॒-ता सब्बेवि ण णक्खत्ता महाइया  
अस्सेसपज्जवसाणा पण्णत्ता एगे एवमाहसु॒ २, एगे पुण एवमाहसु॒-ता सब्बेवि ण  
णक्खत्ता वणिड्वाडया सवणपज्जवसाणा पण्णत्ता एगे एवमाहसु॒ ३, एगे पुण एवमाहसु॒-  
ता सब्बेवि ण णक्खत्ता अस्सिणीआइया रेवइपज्जवसाणा प० एगे एवमाहसु॒ ४,  
एगे पुण एवमाहसु॒-ता सब्बेवि ण णक्खत्ता भरणीआडया अस्सिणीपज्जवसाणा०  
एगे एवमाहसु॒ ५, वय पुण एव वयामो-ता सब्बेवि ण णक्खत्ता अभिईआइया  
उत्तरासाढापज्जवसाणा पण्णत्ता, तजहा-अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा ॥ ३० ॥  
दसमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं समतं ॥ १०-१ ॥

ता कह ते मुहुत्ता आहितेति वएज्जा २ ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्खत्तार्ण  
अत्थिणक्खत्ते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्टिभागे मुहुत्तस्स चदेण सद्दिं  
जोय जोएइ, अत्थिणक्खत्ता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्दिं जोय जोएंति,  
अत्थिणक्खत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्दिं जोय जोएति, अत्थिणक्खत्ता जे  
ण पण्यालीसे मुहुत्ते चदेण सद्दिं जोय जोएंति, ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्ख-  
त्ताण कयरे णक्खत्ते जे ण णवमुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्टिभाए मुहुत्तस्स चदेण  
सद्दिं जोय जोएइ, कयरे णक्खत्ता जे ण पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्दिं जोय जोएंति,  
कयरे णक्खत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चंदेण सद्दिं जोय जोएति, कयरे णक्खत्ता जे ण  
पण्यालीस मुहुत्ते चदेण सद्दिं जोय जोएति २ ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्खत्ताण  
तत्य जे से णक्खत्ते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्टिभागे मुहुत्तस्स चदेण सद्दिं  
जोय जोएइ से ण एगे अभीई, तत्य जे ते णक्खत्ता जे ण पण्णरसमुहुत्ते चदेण  
सद्दिं जोय जोएति ते ण छ, त०-सयभिसया भरणी अद्वा अस्सेसा साई जेद्वा,  
तत्य जे ते णक्खत्ता जे ण तीस मुहुत्त चदेण सद्दिं जोय जोएति ते ण पण्णरस,  
त०-सवणे धणिड्वा पुच्चाभद्रवया रेवई अस्सिणी कत्तिया मिगसिरपुस्सा महा  
पुच्चाफळगुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुच्चासाढा, तत्य जे ते णक्खत्ता जे ण  
पण्यालीस मुहुत्ते चदेण सद्दिं जोय जोएति ते ण छ, तजहा-उत्तराभद्रवया रोहिणी

पुण्यसू उत्तरापमुण्डी निराहा उत्तरासाहा ॥ ११ ॥ ता एवं य अद्वावीसाए  
यक्षतार्ण वत्ति यक्षवते ये वं वत्तारि अहोरते छव मुहुर्ते सूरिएष सर्वि योवं  
ओएह, अरिष्य पक्षवाता ये वं छ अहोरते एहवीर्ते न मुहुर्ते सूरिएष सर्वि योवं  
ओएहति अरिष्य पक्षवाता ये वं तेरस अहोरते वारस य मुहुर्ते सूरेण सर्वि योवं  
ओएहति अरिष्य पक्षवाता ये वं बीर्ते अहोरते शिखि य मुहुर्ते सूरेण सर्वि योवं  
ओएहति ता एवं वं अद्वावीसाए पक्षवाताप वरे यक्षवते ये वं वत्तारि अहोरते  
छव मुहुर्ते सूरेण सर्वि योवं ओएह, व्यरे यक्षवाता ये य छ अहोरते एहवीर्ते  
मुहुर्ते सूरेण सर्वि योवं ओएहति व्यरे यक्षवाता ये वं तेरस अहोरते वारस मुहुर्ते  
सूरेण सर्वि योवं ओएहति व्यरे यक्षवाता ये वं बीर्ते अहोरते शिखि व मुहुर्ते  
सूरेण सर्वि योवं ओएहति ता एवं वं अद्वावीसाए पक्षवातार्ण तत्व ये से यक्षवाते  
ये वं वत्तारि अहोरते छव मुहुर्ते सूरेण सर्वि योवं ओएह से व पूर्वो भासीर्त, तत्व  
ये ते यक्षवाता ये वं छ अहोरते एहवीर्ते य मुहुर्ते सूरिएष सर्वि योवं ओएहति  
ते वं छ तंजहा-सुभिष्ठवा भरपी वहा अस्सेसा साहि बेद्वा तत्व ये ते तंजहा  
अहोरते तुवास्त्व य मुहुर्ते सूरिएष सर्वि योवं ओएहति ते वं पक्षवरम तंजहा-  
सब्जो यविद्वा पुण्यामाप्या रेवै असिसी वत्तिमा मिगसिरि पूर्णो महा पुण्याम  
मुण्डी हस्यो नित्ता अकुराहा मूले पुण्यासाहा तत्व ये ते यक्षवाता ये वं वीष  
अहोरते शिखि य मुहुर्ते सूरेण सर्वि योवं ओएहति ते वं छ तंजहा-उत्तरामाल्या  
रेविणी पुण्यसू उत्तरापमुण्डी निराहा उत्तरासाहा ॥ १२ ॥ दसमस्त्व  
पात्रुदस्त्व यिहये पात्रुदपात्रुद समर्थ ॥ १०२ ॥

ता वर्ते एवं यमाया आदित्यार्थि वपुज्ञा । ता एवं वं अद्वावीसाए पक्षवातार्ण  
अरिष्य यक्षवाता पुण्यमाया समफ्वेता तीक्ष्ममुहुता । अरिष्य यक्षवाता पक्षवाताया  
समफ्वेता तीक्ष्ममुहुता । अरिष्य यक्षवाता वर्तमाया अद्वावीप्तेता पक्षवरममुहुता  
ए अतिव यक्षवाता उभयमाया शिवहस्तेता पक्षवर्तीर्तमुहुता । ता एवं वं  
अद्वावीसाए पक्षवाता वर्तमाया समफ्वेता तीक्ष्ममुहुता । ता एवं वं  
आप व्यरे यक्षवाता उभयमाया शिवहस्तेता पक्षवर्तीर्तमुहुता । ता एवं वं  
अद्वावीसाए पक्षवातान तत्व ये ते यक्षवाता पुण्यमाया समफ्वेता तीक्ष्ममुहुता  
प ते वं छ तंजहा-पुण्यापेद्ववा वत्तिमा महा पुण्याममुण्डी मूले पुण्यासाहा  
तत्व ये ते यक्षवाता पक्षवाताया समर्थन्त्व तीक्ष्ममुहुता । ते वं इत्या नित्ता अकुराहा  
अमिति उपगो यविद्वा रेवै असिसी मिगसिरि पूर्णो इत्या नित्ता अकुराहा  
तत्व ये ते यक्षवाता वर्तमाया अद्वावीप्तेता पक्षवरममुहुता । ते वं छ तंजहा-

सयभिसया भरणी अहा अस्सेसा साईं जेट्टा, तत्य जे ते णक्खता० उभयभागा दिवष्टुक्खेता पण्यालीस मुहुत्ता प० ते ण छ, तजहा-उत्तरापोष्टवया रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्नुणी विसाहा उत्तरासाठा ॥ ३३ ॥ दसमस्स पाहुडस्स तहयं पाहुडपाहुड समत्त ॥ १०-३ ॥

ता कह ते जोगस्स आइ आहिताति वएजा<sup>२</sup> ता अभीईसवणा खलु दुवे णक्खता पच्छाभागा समक्खेता साइरेगज्यालीसइमुहुत्ता तप्पदमयाए साय चदेण सद्दि जोयं जोएति, तओ पच्छा अवर साइरेय दिवस, एव खलु अभीईसवणा दुवे णक्खता एगराई एग च साइरेग दिवस चदेण सद्दि जोय जोएति जोय जोएता जोय अणुपरियट्टि जोय अणुपरियट्टि साय चद धणिट्टाण समप्पेति, ता धणिट्टा खलु णक्खते पच्छाभागे समक्खेते तीसइमुहुत्ते तप्पदमयाए साय चदेण सद्दि जोय जोएइ २ ता तओ पच्छा राई अवर च दिवस, एवं खलु धणिट्टा णक्खते एग च राई एग च दिवस चदेण सद्दि जोयं जोएइ जोएता जोय अणुपरियट्टि जोय अणुपरियट्टि साय चद सयभिसयाण समप्पेइ, ता सयभिसया खलु णक्खते नत्तभागे अवष्टुक्खेते पण्णरसमुहुत्ते तप्पदमयाए सायं चदेण सद्दि जोय जोएइ णो लभइ अवर दिवस, एव खलु सयभिसया णक्खते एग राई चदेण सद्दि जोय जोएइ जोय जोएता जोयं अणुपरियट्टि जोय अणुपरियट्टि पाओ चदं पुव्वाण पोष्टवयाण समप्पेइ ता पुव्वापोष्टवया खलु णक्खते पुव्वभागे समक्खेते तीसइमुहुत्ते तप्पदमयाए पाओ चदेण सद्दि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवरराई, एव खलु पुव्वापोष्टवया णक्खते एग च दिवस एग च राई चदेण सद्दि जोय जोएइ २ ता जोय अणुपरियट्टि २ ता पाओ चद उत्तरापोष्टवयाण समप्पेइ, ता उत्तरापोष्टवया खलु णक्खते उभयभागे दिवष्टुक्खेते पण्यालीसइमुहुत्ते तप्पदमयाए पाओ चदेण सद्दि जोय जोएइ अवर च राई तओ पच्छा अवर दिवस, एव खलु उत्तरापोष्टवया णक्खते दो दिवसे एग च राई चदेण सद्दि जोय जोएइ अवर च राई तओ पच्छा अवरं दिवस, एवं खलु उत्तरापोष्टवया णक्खते दो दिवसे एग च राई चदेण सद्दि जोय जोएइ जोइता जोय अणुपरियट्टि २ ता साय चद रेवईण समप्पेइ, ता रेवई खलु णक्खते पच्छाभागे समक्खेते तीसइमुहुत्ते तप्पदमयाए साय चदेण सद्दि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवरं दिवस, एव खलु रेवई णक्खते एग राई एग च दिवस चदेण सद्दि जोय जोएइ २ ता जोयं अणुपरियट्टि २ ता सायं चद अस्सिसणीण समप्पेइ, ता अस्सिसणी खलु णक्खते पच्छाभागे समक्खेते तीसइमुहुत्ते तप्पदमयाए साय चदेण सद्दि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर दिवस, एव खलु अस्सिसणी णक्खते एगं च

राई एवं च विदसे वदिन सहिं बोई जोएह २ ता जोय अनुपरियद्व ३ ता थार्म चंद मरणीर्भ समप्पेह, ता मरणी रहु फक्कहो जत्तमानो अनुप्राप्त्वेते फक्करम्भुर्गे तप्पटमवाए चार्व वदिन सहिं बोई जोएह, जो अम्भ अवर विदसे एवं चहु मरणी फक्कहो एगे राई वदिय सहिं बोई जोएह २ ता जोय अनुपरियद्व ३ ता पासो चंद कत्तियाल समप्पेह, ता व्यतीया रहु फक्कहो पुर्वमानो उम्मानेते तीसह-मुहुर्गे तप्पटमवाए पासो चर्विन साहू जोय जोएह, तज्जे पच्छा राई, एवं चहु व्यतीया उम्माते एसी च विदसे एगे च राई वदिय सहिं बोई जोएह २ ता जोय अनुपरियद्व ३ ता पासो चंद रोहिणीर्भ समप्पेह, रोहिणी जहा उत्तरभृत्या मिगडिर व्या विद्धा भरा जहा स्वमित्या पुण्यवस् व्या उत्तरभृत्या पुस्तो जहा विद्धा अस्तेता व्या उत्तरभृत्या महा जहा पुष्टाकम्भुणी पुष्टाकम्भुणी व्या पुष्टामृत्या उत्तराम्भुणी जहा उत्तरामृत्या हत्यो निता य व्या विद्धा चारी व्या स्वमित्या निता ह जहा उत्तरामृत्या अनुराहा जहा विद्धा स्वमित्या भूका पुष्टासादा न जहा पुष्टामृत्या उत्तरासादा जहा उत्तरामृत्या ॥ १४ ॥ द्वसमस्स पाहुडस्स चढत्यै पाहुडपाहुड समर्थ ॥ १०-४ ॥

ता चई ते कुमा उत्तराम्भुका भाहिताति वप्त्या १ तत्त्व चहु इमे वारस झुम वारस उत्तराम्भ चत्तारि कुमेकुम्मम प वारस कुमा तंबहा-विद्धुरुके उत्तरामृत्याकुर्वे भरियाकुके उत्तरामृत्युकुर्वे पुस्ताकुर्वे महाकुर्वे उत्तराम्भुणीकुर्वे निताकुर्वे निताकुर्वे मूलकुर्वे उत्तरासाहाकुर्वे वारस उत्तराम्भ तंया-सवनो उत्तराम्भ पुष्टापुष्टावारदुर्म रेहैठवदुर्म मरणीउवकुर्वे रोहिणीउवकुर्वे पुष्टासूउवकुर्वे अस्तेताउवकुर्वे पुष्टाम्भुणीउवकुर्वे हत्यासूउवकुर्वे साहैउवकुर्वे वेश्व-उवकुर्वे पुष्टासात्ताउवकुर्वे चत्तारि कुमेकुम्का तंबहा-मनीकुमेकुर्वे उत्तरामृत्याकुमेकुर्वे अनुराहाकुमेकुर्वे ॥ १५ ॥ द्वसमस्स पाहुडस्स एवं वाहुडपाहुड समर्थ ॥ १०-५ ॥

ता चई ते पुष्टियमातिणी भाहितेति वप्त्या १ तत्त्व ज्ञु नामो वारस पुष्टियमातिणी वारस अमावस्याको रक्षतामो तंबहा-साहिद्धी पोहुर्वै जासेता व्यतीया ममातिणी पोही मारी रम्भुणी खेती वैसाही जेहुस्ती वामाही ता चाहिद्धीर्भु पुष्टियमाति च वस्तुता जोएति १ ता विभिन्न वस्तुता जोएति तंबहा-व्यतीया विभिन्न विभिन्न वस्तुता जोएति १ ता विभिन्न वस्तुता जोएति तंबहा-व्यतीया पुष्टापुष्टावा उत्तरामृत्या ता आमाइन्न पुष्टियमे च वस्तुता जोएति १ ता विभिन्न वस्तुता जोएति तंबहा-

रेवई य अस्सिणी य, ता कत्तियण्णं पुणिमं कह णक्खता जोएंति ? ता दोणिण  
णक्खता जोएंति, तंजहा-भरणी कत्तिया य, ता भग्गसिरीपुणिम कह णक्खता  
जोएंति ? ता दोणिण णक्खता जोएंति, तंजहा-रोहिणी मिगसिरो य, ता पोसिण्णं  
पुणिमं कह णक्खता जोएंति ? ता तिणिण णक्खता जोएंति, तंजहा-अद्वा पुण-  
व्वसू पुस्सो, ता माहिणण पुणिमं कह णक्खता जोएंति ? ता दोणिण णक्खता  
जोएंति, त०-अस्सेमा महा य, ता फग्गुणिण पुणिमं कह णक्खता जोएंति ? ता  
दुणिण णक्खता जोएंति, त०-पुब्बाफलगुणी उत्तराफलगुणी य, ता चेत्तिण  
पुणिम कह णक्खता जोएंति ? ता दोणिण०, त०-हत्यो चित्ता य, ता वेसाहिण्णं  
पुणिम कह णक्खता जोएंति ? ता दोणिण णक्खता जोएंति, त०-साई विसाहा  
य, ता जेद्वामूलिण्णं पुणिमासिणि कह णक्खता जोएंति ? ता तिणिण णक्खता  
जोएंति, त०-अणुराहा जेद्वा मूलो, ता आसादिण्णं पुणिमं कह णक्खता जोएंति ?  
ता दो णक्खता जोएंति, तंजहा-पुब्बासाढा उत्तरासाढा ॥ ३६ ॥ [ णाउमिह  
अमावास जइ इच्छासि कम्मि होइ रिक्खम्मि । अवहारे ठाविजा तत्तियरूपेहि  
सगुणए ॥ १ ॥ ] छावट्टी य मुहुता विसद्विभागा य पंच पडिपुणा । वासद्विभाग-  
सत्तद्विगो य इक्को हवइ भागो ॥ २ ॥ एयमवहाररासि इच्छाअमावाससगुण कुञ्जा ।  
णक्खताण एक्तो सोहणगविहिं गिसामेह ॥ ३ ॥ वावीस च मुहुता छायालीस  
विसद्विभागा य । एय पुणव्वसुस्स य सोहयव्व हवइ बुच्छ ॥ ४ ॥ वावत्तर  
सय फग्गुणीण वाणउइय बे विसाहासु । चत्तारि य वायाला सोज्ज्ञा उ उत्तरासाढा  
॥ ५ ॥ एय पुणव्वसुस्स य विसद्विभागसहिय तु सोहणग । इक्तो अभिर्भाइ  
विइय बुच्छामि सोहणग ॥ ६ ॥ अभिडस्स णव मुहुता विसद्विभागा य हुंति  
चउवीस । छावट्टी असमता भागा सत्तद्विछेयक्या ॥ ७ ॥ उगुणहु पोट्टवयाइसु  
चेव णवोत्तर च रोहिणिया । तिसु णवणवेसु भवे पुणव्वसू फग्गुणीओ य ॥ ८ ॥  
पचेव उगुणपण सयाइ उगुणउत्तराइ छच्चेव । सोज्ज्ञापि विसाहासु मूले सत्तेव  
चोयाला ॥ ९ ॥ अट्टसय उगुणवीसा सोहणगं उत्तराण साढाण । चउवीस खलु  
भागा छावट्टी चुणियाओ य ॥ १० ॥ एयाइ सोहइता ज सेस त हवेइ णक्खतं ।  
इत्य करेइ उड्बवइ सूरेण सम अमावास ॥ ११ ॥ इच्छापुणिमगुणिओ अवहारो  
सोत्य होइ कायब्बो । त चेव य सोहणग अभिर्भाइ तु कायब्ब ॥ १२ ॥  
छद्मिय सोहणगे ज सेस त भविज्ज णक्खत । तत्य य करेइ उड्बवइ पडिपुणो  
पुणिम विडले ॥ १३ ॥ ] ता साविद्विण पुणिमासिणि कि कुल जोएइ उवकुल  
जोएइ कुलोवकुल जोएइ ? ता कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा

योएहु कुर्वं चोएमाये परिष्ठु गक्करते उष्टुकं योएमाने सक्ते गक्करते योएहु  
 दुखेकुर्वं योएमाने अभिर्ह गक्करते योएहु ता धारिष्ठि पुण्यम् कुर्वं वा योएह  
 उष्टुकं वा योएहु कुम्भेकुर्वं वा योएहु कुम्भं वा शुक्ता उष्टुकेम वा शुक्ता कुम्भेकुर्वं  
 वा शुक्ता सारिद्वि पुण्यमा शुक्ताति वत्तम्भ सिया ता पोदुपश्चर्व पुण्यम्  
 कि कुर्वं योएहु उष्टुकं योएहु कुम्भेकुर्वं वा योएहु ! ता कुर्वं वा योएहु उष्टुकं  
 वा योएहु कुम्भेकुर्वं वा योएहु, कुर्वं योएमाये उत्तरापोदुपश्चवा गक्करते योएहु, उष्टुकं  
 कुर्वं योएमाये पुण्यापोदुपश्चवा गक्करते योएहु, कुम्भेकुर्वं योएमाल सम्भिसवा  
 गक्करता योएहु, पोदुपश्चर्व पुण्यमासिणि कुर्वं वा योएहु उष्टुकेम वा योएहु कुम्भेकुर्वं  
 कुर्वं वा योएहु, कुर्वेय वा शुक्ता ३ पुण्यवा पुण्यमा शुक्ताति वत्तम्भ सिया ता  
 आसोहै वं पुण्यमासिणि कि कुर्वं योएहु उष्टुकं योएहु कुम्भेकुर्वं योएहु ? ता  
 कुर्वेय योएहु उष्टुकंपि योएहु वो गम्भइ कुम्भेकुर्वं कुर्वं योएमाये असिद्धी  
 गक्करते योएहु, उष्टुकं योएमाने रेवै गक्करते योएहु, आसोहै वं पुण्यम् कुर्वं  
 वा योएहु उष्टुकं वा योएहु, कुर्वेय वा शुक्ता उष्टुकेम वा शुक्ता अस्तोहै वं  
 पुण्यमा शुक्ताति वत्तम्भ सिया एवं रेम्भार वोहै पुण्यम् चेन्द्रमूलं पुण्यम् वं  
 कुम्भेकुर्वंपि योएहु, अकर्त्तासु वरिष्ठ कुम्भेकुर्वं वाव आसादी पुण्यमा शुक्ताति  
 वत्तम्भ सिया । ता सारिद्वि वं अमावास्य व्य गक्करता योएहै ? ता इति  
 गक्करता योएहै तंज्ञा-भर्त्तेवा व महा य एवं एवं अमिकामेवं खेत्य  
 पोदुपश्च वो गक्करता योएहै तंज्ञा-पुण्यापम्भुवी उत्तरापग्नुवी अस्तोहै वो  
 इत्वा वित्ता व वर्त्तिये शाहं वित्ताहा व मम्पत्ति भुत्तराहा वेत्तु मूले येति  
 पुण्यापात्ता उत्तरापात्ता माहै अग्नीै सवनो परिष्ठु ऋग्युवि सम्भिसवा  
 पुण्यापोदुपश्चवा उत्तरापोदुपश्चवा येति रेवै असिद्धी य वित्ताहै मर्यै ऋग्युवि  
 य चेन्द्रमूलं रोहिणी मित्रिव व ता आसाति वं अमावास्य व अमावास्य  
 योएहै । ता वित्तिय अम्भात्ता योएहै तं—ज्ञा पुण्यम् पुस्त्ये ता धारिष्ठि वं  
 अमावास्य कि कुर्वं योएहु उष्टुकं योएहु कुम्भेकुर्वं योएहु । ता कुर्वं वा योएहु  
 उष्टुकं वा योएहु वो गम्भइ कुम्भेकुर्वं कुर्वं योएमाने गम्भ गक्करते योएहु, वं  
 कुर्वं योएमाये असिद्धेवा योएहु, कुर्वेय वा शुक्ता उष्टुकेम वा शुक्ता सारिद्वि  
 अमावास्या शुक्ताति वत्तम्भ सिया एवं लेयम्भ व्यवर मम्पत्तिए माहैै ऋग्युवीै  
 आसादीै व अमावास्याए कुम्भेकुर्वंपि योएहु, उसेतु वरिष्ठ वाव आसादीै  
 अमावास्या शुक्ताति वत्तम्भ सिया ॥ १०७ ॥ इसमस्त पादुडस्त छु पादुड  
 पादुड समर्थ ॥ १०८ ॥

ता कहं ते सणिणवाए आहिएति वएजा ? ता जया ण साविढी पुणिमा भवइ तथा ण माही अमावासा भवइ, जया ण माही पुणिमा भवइ तया ण साविढी अमावासा भवइ, जया ण पुढवई पुणिमा भवइ तया ण फरगुणी अमावासा भवइ, जया ण आसोई पुणिमा भवइ तया ण चेती अमावासा भवइ, जया ण चेती पुणिमा भवइ तया ण आसोई अमावासा भवइ, जया ण कत्तिई पुणिमा भवइ तया ण वेसाही अमावासा भवइ, जया ण मग्गसिरी पुणिमा भवइ तया ण जेट्टामूली अमावासा भवइ, जया ण जेट्टामूली पुणिमा भवइ तया ण मग्गसिरी अमावासा भवइ, जया ण पोसी पुणिमा भवइ तया ण आसाढी अमावासा भवइ, जया ण आसाढी पुणिमा भवइ तया ण पोसी अमावासा भवइ ॥ ३८ ॥ दसमस्स पाहुडस्स सत्तमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-७ ॥

ता कहं ते णक्खतसठिई आहितेति वएजा ? ता एएसि णं अट्टावीसाए णक्खतार्ण अभीईणक्खते किंसठिई पण्णते ? ता गोसीसावलिसठिई पण्णते, ता सबणे णक्खते किसठिई पण्णते ? ता काहारसठिई प०, धणिट्टाणक्खते सउणि-पलीणगसठिई, सयमिसयाणक्खते पुण्पोवयारसठिई, पुञ्बापोट्टवयाणक्खते अवहू-वाविसठिई, एव उत्तरावि, रेवईणक्खते णावासठिई, अस्सिणीणक्खते आसक्खध-सठिई, भरणीणक्खते भगसठिई, कत्तियाणक्खते छुरधरगसठिई, रोहिणीणक्खते सगडुद्दिसठिई, मिगसिराणक्खते मिगसीसावलिसठिई, अद्दाणक्खते सहिरविंदु-सठिई, पुणव्वसूणक्खते तुलासठिई, पुण्पे णक्खते वद्धमाणसठिई, अस्सेसाणक्खते पडागसठिई, महाणक्खते पागारसठिई, पुञ्बाफरगुणीणक्खते अद्दपलियंकसठिई, एव उत्तरावि, हत्ये णक्खते हत्यसठिई, चित्ताणक्खते मुहफुल्लसठिई, साईणक्खते खीलगसठिई, विसाहाणक्खते दामणिसठिई, अणुराहाणक्खते एगावलिसठिई, जेट्टाणक्खते गयदंतसठिई, मूळे णक्खते विच्छुयलगोलसठिई, पुञ्बासाढाणक्खते गयविक्मसठिई, उत्तरासाढाणक्खते साइयसठिई प० ॥ ३९ ॥ दसमस्स पाहु-डस्स अहुमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-८ ॥

ता कह ते तारगे आहिएति वएजा ? ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्खतार्ण अभीईणक्खते कडतारे प० ? ता तितारे पण्णने, सबणे णक्खते तितारे, धणिट्टाणक्खते पण्तारे, सयमिसयाणक्खते सयतारे, पुञ्बापोट्टवयाणक्खते दुतारे, एवं उत्तरावि, रेवई० वज्जीसडतारे, अस्सिणीणक्खते तितारे, भरणी तितारे, कत्तिया छतारे,

रोहिणी पंचतार मिगसिरे लिंगारे, भवा एतारे पुष्पब्बस् पंचतारे पुर्से लिंगारे, अस्तेषा छतारे भवा सतारे पुष्पाळम्बुजी दुलारे एवं उत्तरामि हृत्ये पंचतारे लिंगा एगतारे, साईं पृगतारे लिंगाहा पंचतारे, अलुराहा चठतारे लेड्हा लिंगारे मूँडे एक्तारे पुष्पालाहा चठतारे, उत्तरासाधा चठतारे ॥ ४ ॥ वस्तमस्त  
पाहुडम्स णाथमं पाहुडपाहुडं समर्थ ॥ १०-९ ॥

ता अर्दे ते लेना आहिलेति वृग्जा । ता वासार्थ फळमं मार्दे वह वक्तव्य लेति । ता वतारि वक्तव्या लेति तंभा-उत्तरासाधा अमिरि सब्दो वस्तिं उत्तरासाधा चोहस अहोरते लेह, अमिरि सत्त अहोरते लेह, सब्दे अद्द अहोरते लेह, वस्तिं एम अहोरतं नह, तंसि च वं मासेषि अद्वागुम्बोरिसीए छम्बए सरिए अलुपरियद्ध, तस्य वं मासस्य चरिमे लिंगे दो पवार्द वक्तव्या य अंगुष्ठार्द पोरिसी भवह, ता वासार्थ लोर्द मार्दे अर्द वक्तव्या लेति । ता वतारि वक्तव्या लेति तंभा-वस्तिं उपमित्या पुम्बापेहुक्या उत्तरापेहुक्या वस्तिं चोहस अहोरते लेह उपमित्या चत्त अहोरते लेह पुम्बापेहुक्या अद्द अहोरते लेह, उत्तरापेहुक्या एवं अहोरतं लेह, तंसि च वं मासेषि अद्वागुम्बोरिसीए छावाए सरिए अलुपरियद्ध, तस्य वं मासस्य चरिमे लिंगे दो पवार्द अद्व य अंगुष्ठार्द पोरिसी भवह, ता वासार्थ लोर्द मार्दे अर्द वक्तव्या लेति । ता लिंगि वक्तव्याद्य लेति तं - उत्तरापेहुक्या रेवां अस्तिषी उत्तरापेहुक्या चोहस अहोरते लेह, रेवां पवारस अहोरते नह, अस्तिषी एवं अहोरतं लेह, लंसि च वं मासेषि उत्तरापेहुक्या एवं अस्तिषी भवह, ता वासार्थ चठत्वं मार्दे अर्द वक्तव्या लेति । ता लिंगि वक्तव्याद्य लेति तं - अस्तिषी भरणी करिष्या अस्तिषी चठहस अहोरते लेह, भरणी पवारस अहोरते लेह, करिष्या एवं अहोरतं लेह, तंसि च वं मासेषि दोहसुगुडाए पोरित्यिक्षायाए सरिए अलुपरियद्ध, तस्य वं मासस्य चरिमे लिंगे लिंगि पवार्द वतारि व अलुगार्द पोरिसी भवह । ता हेमंतार्थ फळमं मार्दे अर्द वक्तव्या लेति । ता लिंगि वक्तव्या लेति तं - अस्तिषा रोहिणी संठाया वतिषा चठेस अहोरते लेह, रोहिणी पवारस अहोरते लेह, संठाया एवं अहोरतं लेह, लंसि च वं मासेषि शीसगुडम्बोरिसीए छावाए सरिए अलुपरियद्ध, तस्य वं मासस्य चरिमे लिंगे लिंगि पवार्द अद्व व अलुगार्द पोरिसी भवह, ता हेमंतार्थ रोर्दे मार्दे अर्द वक्तव्या लेति । ता वतारि वक्तव्या लेति तं - संठाया भवा पुष्पब्बस् पुस्तो वक्तव्या चोहस अहोरते लेह, भवा भवा अहोरते लेह, पुष्पब्बस् अद्व अहोरते लेह,

पुस्ते एं अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि चउवीसगुल्पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वृ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहड्वाइं चतारि पयाइं पोरिसी भवइ, ता हेमताण तइय मास कह णकखत्ता जेंति ? ता तिणिण णकखत्ता जेंति, त०-पुस्ते अस्सेसा महा, पुस्ते चोद्वास अहोरत्ते ऐइ, अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते ऐइ, महा एं अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि वीसगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वृ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे ज्ञिणिण पयाइं अट्टगुलाइ पोरिसी भवइ, ता हेमताण चउत्थ मास कह णकखत्ता जेंति ? ता तिणिण णकखत्ता जेंति, त०-महा पुब्बा-फलगुणी उत्तराफलगुणी, महा चोद्वास अहोरत्ते ऐइ, पुब्बाफलगुणी पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, उत्तराफलगुणी एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि सोलसअगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वृ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे तिणिण पयाइं चतारि य अगुलाइ पोरिसी भवइ । ता गिम्हाण पढ्मर्म मास कह णकखत्ता जेंति ? ता तिणिण णकखत्ता जेंति, त०-उत्तराफलगुणी हत्थो चित्ता, उत्तराफलगुणी चोद्वास अहोरत्ते ऐइ, हत्थो पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, चित्ता एग अहोरत्तं ऐइ, तसि च ण माससि दुवाल-सगुल्पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वृ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहड्वाइं तिणिण पयाइं पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण विड्य मास कह णकखत्ता जेंति ? ता तिणिण णकखत्ता जेंति, त०-चित्ता साईं विसाहा, चित्ता चोद्वास अहोरत्ते ऐइ, साईं पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, विसाहा एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि अट्टगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वृ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइ अट्ट य अगुलाइ पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण तइर्य मास कह णकखत्ता जेंति ? ता तिणिण णकखत्ता जेंति, त०-विसाहा अणुराहा जेड्वामूलो, विसाहा चोद्वास अहोरत्ते ऐइ, अणुराहा पण्णरस०, जेड्वामूलो एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि चउरंगुल्पो-रिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वृ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चतारि अगुलाणि पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण चउत्थ मास कह णकखत्ता जेंति ? ता तिणिण णकखत्ता जेंति, त०-मूलो पुब्बासाढा उत्तरासाढा, मूलो चोद्वास अहोरत्ते ऐइ, पुब्बासाढा पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, उत्तरासाढा एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि बट्टाए समचउरससठियाए णगोहपरिमडलाए सक्रायमणुरगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियद्वृ, तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहड्वाइं दो पयाइं पोरिसी भवइ ॥ ४१ ॥

दसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१० ॥

ता कह ते चदमग्गा आहितेति वएजा ? ता एएसि ण अट्टवीसाए णकखत्ताण अत्थि णकखत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जोय जोएंति, अत्थि णकखत्ता जे ण

रोहिणी पंचतारे, मिशिरे शितारे अथ एवतारे पुजन्नस् पंचतारे पुस्ते शितारे, अस्तेया छतारे महा चतारे, पुम्बाक्षगुणी तुतारे एवं चतारायि हस्ते पंचतारे, शिता एवतारे, साई एवतारे शिताक्षा पंचतारे, अशुराहा चतारारे तेज्ञा शितारे मूँहे एवतारे, पुम्बासाडा चतारे, चतारासाडा चतारारे ॥ ४ ॥ दक्षमस्त पाहुडस्त पवर्म पाहुडपाहुडे समर्थ ॥ १०-३ ॥

ता कहं ते नेमा भाविषेति एवजा । ता चासाव फर्म मार्द मार्द कह चक्षता चेति । ता चतारि चक्षता चेति तंब्हा-उत्तरासाडा अभिरौ सबतो चमिद्ध उत्तरासाव चोएष अहोरते नेह, अभिरौ सत अहोरते नेह, सबते अहु अहोरते चेति, चमिद्धा एग अहोरतं नेह, तंसि च वं मासेति अर्द्धगुम्बोरिसीए छापाए द्वारप अमुपरिवद्ध, तस्स वं मासस्त चरिमे दिवसे दो पवर्म चतारि य अगुम्बद्व पोरिसी भवह, ता चासाव दोर्म मार्द कह चक्षता चेति । ता चतारि चक्षता चेति तंब्हा-चमिद्धा सबमिद्धया पुम्बापोहुक्षया उत्तरापोहुक्षया चमिद्धा चोएष अहोरते चेति, सबमिद्धया चत अहोरते चेति पुम्बापोहुक्षया अद्ध अहोरते चेति, उत्तरापोहुक्षया एग अहोरते नेह, तंसि च वं मासेति अर्द्धगुम्बोरिसीए छम्भाए द्वारप अमुपरिवद्ध, तस्स य मासस्त चरिमे दिवसे दो पवर्म अद्ध य अगुम्बद्व पोरिसी भवह, ता चासाव तद्वं मार्द कह चक्षता चेति । ता दिल्लि चक्षता चेति ते - उत्तरापोहुक्षया रेह असिष्टी उत्तरापोहुक्षया चोएष अहोरते चेति, रेह एवं फ्लरस अहोरते नेह, असिष्टी एवं अहोरतं नेह, तंसि च वं मासेति दुवासर्व-प्रमाए योरिसीए छायाए सरिए अमुपरिवद्ध, तस्स वं मासस्त चरिमरिहे देवहर्व दिल्लि पवर्म योरिसी भवह, ता चासाव चरत्व मार्द कह चक्षता चेति । य दिल्लि चक्षता चेति ते - असिष्टी भरणी कलिमा असिष्टी चरत्व अहोरते चेति, भरणी फ्लरस अहोरते नेह, कलिमा एवं अहोरतं चेति, तंसि च वं मासेति सोसचगुम्बाए पोरिपिच्छयाए द्वारप अमुपरिवद्ध, तस्स वं मासस्त चरिमे दिवसे दिल्लि पवर्म चतारि च अमुम्बद्व योरिसी भवह । ता हेमतावं पवर्म मार्द कह चक्षता चेति । ता दिल्लि चक्षता चेति तं-कलिमा रोहिणी चंठाना कलिमा चोएष अहोरते नेह, रोहिणी फ्लरस अहोरते चेति, चंठाना एवं अहोरते नेह, तंसि च वं मासेति बीसगुम्बोरिसीए छम्भाए द्वारप अमुपरिवद्ध, तस्स वं मासस्त चरिमे दिवसे दिल्लि पवर्म अद्ध च अगुम्बद्व योरिसी भवह, ता हेमतावं दोर्म मार्द कह चक्षता चेति । ता चतारि चक्षता चेति तं-छाया चहा पुजन्नस् पुस्ते चंठाना चोएष अहोरते नेह, चहा चहा अहोरते चेति, पुजन्नस् अद्ध अहोरते चह,

पुस्ते एग अहोरत्तं ऐइ, तसि च ण माससि चउवीसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्य ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहडाइं चत्तारि पयाइ पोरिसी भवइ, ता हेमताण तइय मास कह णक्खता जेंति ? ता तिण्ण णक्खता जेंति, त०-पुस्से अस्सेसा महा, पुस्से चोहस अहोरत्ते ऐइ, अस्सेसा पचदस अहोरत्ते ऐइ, महा एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि वीसगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्य ण मासस्स चरिमे दिवसे तिण्ण पयाइ अट्टगुलाइ पोरिसी भवइ, ता हेमताण चउत्थ मास कह णक्खता जेंति ? ता तिण्ण णक्खता जेंति, त०-महा पुञ्चाफगुणी उत्तराफगगुणी, महा चोहस अहोरत्ते ऐइ, पुञ्चाफगगुणी पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, उत्तराफगगुणी एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि सोलसअगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्य ण मासस्स चरिमे दिवसे तिण्ण पयाइ चत्तारि य अगुलाइ पोरिसी भवइ । ता गिम्हाण पढमं मास कह णक्खता जेंति ? ता तिण्ण णक्खता जेंति, त०-उत्तराफगगुणी हत्थो चित्ता, उत्तराफगगुणी चोहस अहोरत्ते ऐइ, हत्थो पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, चित्ता एग अहोरत्तं ऐइ, तसि च ण माससि दुवाल-सगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्य ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहडाइं तिण्ण पयाइ पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण विइय मास कह णक्खता जेंति ? ता तिण्ण णक्खता जेंति, त०-चित्ता साई विसाहा, चित्ता चोहस अहोरत्ते ऐइ, साई पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, विसाहा एगं अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि अट्टगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्य ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइ अट्टय अगुलाइ पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण तइय मास कह णक्खता जेंति ? ता तिण्णक्खता जेंति, त०-विसाहा अणुराहा जेडामूलो, विसाहा चोहस अहोरत्ते ऐइ, अणुराहा पण्णरस०, जेडामूलो एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्य ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चत्तारि अगुलापि पोरिसी भवइ, ता गिम्हाण चउत्थ मास कह णक्खता जेंति ? ता तिण्ण णक्खता जेंति, त०-मूलो पुञ्चासाढा उत्तरासाढा, मूलो चोहस अहोरत्ते ऐइ, पुञ्चासाढा पण्णरस अहोरत्ते ऐइ, उत्तरासाढा एग अहोरत्त ऐइ, तसि च ण माससि चद्वाए समचउरंससठियाए णगगोहपरिमडलाए सकायमणुरगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियद्व, तस्य ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहडाइ दो पयाइ पोरिसी भवइ ॥ ४१ ॥

इसमस्स पाहुडस्स दसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१० ॥

ता कह ते चदमग्ना आहितेति वएज्ञा ? ता एएसि ण अट्टावीसाए णक्खताण अत्थ णक्खता जे ण सथा चदस्स दाहिणेण जोय जोएति, अत्थ णक्खता जे ण

समा चंद्रस्त उत्तरेष्य जोर्य जोर्हिति अतिथि पक्षवत्ता जे वं चंद्रस्त दाहितेष्यति  
 उत्तरेष्यति पमहैपि जोर्य जोर्हिति अतिथि पक्षवत्ता जे वं चंद्रस्त दाहितेष्यति पमहैपि  
 जोर्य जोर्हिति अतिथि पक्षवत्ता जे वं समा चंद्रस्त पमहै जोर्य जोर्हु, ता एएषि वं  
 अद्भुतीसाए पक्षवत्ताप्य क्षयरे पक्षवत्ता जे वं समा चंद्रस्त दाहितेष्य जोर्य जोर्हिति  
 ठहेह चाव क्षयरे पक्षवत्ते जे वं समा चंद्रस्त पमहै जोर्हु ॥ ता एएषि वं  
 अद्भुतीसाए पक्षवत्ताप्य जे वं चंद्रवत्ता समा चंद्रस्त दाहितेष्य जोर्य जोर्हिति ते वं  
 इ तं -संवित्ता अरा पुस्तो वक्षेषा इत्वो मूमे तत्प जे ते पक्षवत्ता जे वं  
 समा चंद्रस्त उत्तरेष्य जोर्य जोर्हिति ते वं चारस तंज्ञा-अभिहै सम्बो चंद्रिता  
 सवनिमया पुष्पाभरया उत्तरापेक्षुवत्ता रेवहै असिसची भरवी पुष्पापुष्पी  
 उत्तरापुष्पी साई १२ तत्प जे ते पक्षवत्ता जे वं चंद्रस्त दाहितेष्यति उत्तरेष्यति  
 पमहैपि जोर्य जोर्हिति तं वं सत तंज्ञा-कित्ता रोहिणी पुष्पमस् महा वित्ता  
 वित्ता भुवराता तत्प जे ते पक्षवत्ता जे वं चंद्रस्त दाहितेष्यति पमहैपि जोर्य  
 जोर्हिति ताम्भो वं दो भासाहामो सम्भवाहिरे नेहडे जोर्य जोर्हु वा जोर्हिति वा ज्योर्ह-  
 स्वेष्टि वा तत्प जे ते पक्षवत्ते वं वं समा चंद्रस्त पमहै जोर्य जोर्हु ता वं एषा  
 देहु ॥ ४२ ॥ ता क्षु ते चंद्रमेहता पम्यता ॥ ता पम्यरस चंद्रमेहतम पम्यता  
 ता एएषि वं पम्यरसर्ह चंद्रमहताप्य अतिथि चंद्रमेहता जे वं समा चंद्रतोहै  
 अविरहिता अतिथि चंद्रमेहता जे वं रविसुसिष्यवत्ताप्य साम्या मर्हति अविथि  
 चंद्रमेहता जे वं समा आशेहि विरहिता ता एएषि वं पम्यरसर्ह चंद्रमेहताप्य  
 क्षयरे चंद्रमेहतम जे वं समा पक्षवत्तोहै अविरहिता चाव क्षयरे चंद्रमेहता जे वं  
 समा आशेहिरहिता ॥ ता एएषि वं पम्यरसर्ह चंद्रमटवत्ताप्य तत्प जे तं चंद्रमेहता  
 जे वं समा चंद्रवत्तोहै अविरहिता ते वं अद्व, तंज्ञा-पउमे चंद्रमेहते त्वय चंद्रमेहडे  
 छद्वे चंद्रमेहडे सत्तमे चंद्रमेहडे अद्वुमे चंद्रमेहडे दसमे चंद्रमेहडे एहासत्तमे चंद्रमेहडे  
 पम्यरसमे चंद्रमेहडे तत्प जे ते चंद्रमहता जे वं समा चंद्रवत्तोहै विरहिता तं  
 वं मत तंज्ञा-निए चंद्रमेहडे चठत्ये चंद्रमहसे पंचम चंद्रमेहडे लगे चंद्रमेहडे  
 चारसमे चंद्रमेहडे तेरसमे चंद्रमेहडे चठासमे चंद्रमेहडे तत्प जे ते चंद्रमेहडा  
 जे वं रविसुसिष्यवत्ताप्य साम्या मर्हति तं वं चातारि, तंज्ञा-पउमे चंद्रमेहडे  
 तीए चंद्रमेहडे श्वारसमे चंद्रमेहडे पम्यरसमे चंद्रमेहडे तत्प जे तं चंद्रमेहडा  
 जे वं समा आशेहिरहिता तं वं वं तंज्ञा-छद्वे चंद्रमेहडे रात्मे चंद्रमेहडे  
 अद्वुमे चंद्रमेहडे ज्वमे चंद्रमेहडे दसमे चंद्रमेहडे ॥ ४३ ॥ दसमस्त साहुदस्त  
 एहासत्तमे पाहुदपाहुदे समर्त ॥ १०-११ ॥

ता कह ते देवयाण अज्जयण आहिताति वएजा ? ता एपुणि ण अट्टावीसाए  
णक्खत्ताण अभिईणक्खत्ते किंदेवयाए पण्णते ? ता वभदेवयाए पण्णते, सवणे० विण्हु०,  
घणिंद्वाणक्खत्ते वसुदेवयाए०, सयभिसयाणक्खत्ते वशण०, पुञ्चापोद्व० अयदेह०,  
उत्तरापोद्वयाणक्खत्ते अभिवङ्ग०, एव सव्वेवि पुच्छज्जति, रेवई पुस्सदेवया०,  
अस्सणी अस्सदेवया०, भरणी जमदेवया०, कत्तिया अग्निदेवया०, रोहिणी पया-  
वइदेवया०, सठाणा सोमदेवयाए०, अहा रुद्देवयाए०, पुणव्वसू अदिति०, पुस्तो वह-  
स्सड०, अस्सेसा सप्प०, महा पिह०, पुञ्चापलगुणी भग०, उत्तराफलगुणी अज्जम०,  
हृत्ये सविया०, चित्ता तट्ठ० साई वाउ०, विसाहा इदग्नी०, अणुराहा मित्त०, जेद्वा  
इद०, मूले णिरइ०, पुञ्चासाढा आउ०, उत्तरासाढा० विस्सदेवयाए पण्णते ॥ ४४ ॥  
दसमस्स पाहुडस्स वारसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१२ ॥

ता कह ते मुहुत्ताण नामवेजा आहिताति वएजा ? ता एगमेगस्स ण अहोरत्तस्स  
तीस मुहुत्ता प०, तजहा-रुद्दे सेए मित्ते वाउ शुणी(पी)ए तहेव अभिचदे । माहिंद वलव  
वमे वहुसच्चे चेव इंसाणे ॥ १ ॥ तट्ठे य भावियप्पा वेसमणे वारुणे य आणदे ।  
विजए य वीससेणे पयावई चेव उवसामे ॥ २ ॥ गधब्ब अग्निवेसे सयरिसहे  
आयव च अममे य । अणव भोमे रिसहे सञ्चट्ठे रक्खसे चेव ॥ ३ ॥ ४५ ॥  
दसमस्स पाहुडस्स तेरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१३ ॥

ता कह ते दिवसा आहिताति वएजा ? ता एगमेगस्स ण पक्खस्स पण्णरस  
दिवसा पण्णत्ता, त०-पडिवादिवसे विड्यादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे, ता एपुणि ण  
पण्णरसण्ह दिवसाण पण्णरस णामवेजा प०, त०-पुञ्चंगे सिद्धमणोरमे य तत्तो  
मणोरहे(हरे) चेव । जसमद्दे य जसोधर य सञ्चकामसमिद्दे ॥ १ ॥ इंदमुद्धाभि-  
सित्ते य सोमणस धणजए य वोद्धव्वे । अत्यसिद्दे अभिजाए अच्चसणे सयजए चेव  
॥ २ ॥ अग्निवेसे उवसमे दिवसाण णामधेजाड । ता कह ते राईओ आहिताति  
वएजा ? ता एगमेगस्स ण पक्खस्स पण्णरस राईओ पण्णत्ताओ, तजहा-पडिवाराई  
विड्याराई जाव पण्णरसीराई, ता एयासि ण पण्णरसण्ह राईण पण्णरस णामधेजा  
पण्णत्ता, त०-उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोधरा । सोमणसा चेव तहा  
सिरेसभूया य वोद्धव्वा ॥ १ ॥ विजया य वेजयंति जयति अपराजिया य इच्छा  
य । समाहारा चेव तहा तेया य तहा य अइतेया ॥ १ ॥ देवाणदा णिरई र्य-  
णीण णामधेजाड ॥ ४६ ॥ दसमस्स पाहुडस्स चउद्दसमं पाहुडपाहुडं  
समत्तं ॥ १०-१४ ॥

ता कह ते तिही आहितेति वएजा ? तत्य खलु इमा दुविहा तिही पण्णत्ता,

ठंवहा-रिषसदिही म राहेतिही म ता कहूं ते रिषसदिही बाहिरेति वएजा । ता एगमेगस्स गं पक्षस्स पक्षरस २ रिषसदिही पक्षता ठं—भद्रि मो॒ जए दुध्दे  
पुण्ये पक्षस्स पक्षमी पुणरवि भद्रि मो॒ जए दुध्दे पुण्ये पक्षस्स वसनी पुणरवि  
भद्रि मो॒ जए दुध्दे पुण्ये पक्षस्स पक्षरसी एर्व ते रिषुषा रिहीओ सम्बेदि रिष-  
सार्व ता कहूं ते राहेतिही भाहिरेति वएजा । ता एगमेगस्स नं पक्षस्स पक्षरस  
राहेतिही प ठं—उगवाहै मोगवाहै जसवाहै सम्बलिष्या द्वृष्णमा पुणरवि उग्मवाहै  
मोगवाहै जसवाहै सम्बलिष्या द्वृष्णमा पुणरवि उग्मवाहै मोगवाहै जसवाहै सम्बलिष्या  
द्वृष्णमा एप रिषुषा रिहीओ सम्बासि राहेख ॥ ४७ ॥ वसमस्स पाहुडपाहुडं समर्थ ॥ १०—१५ ॥

ता कहूं ते पोता भाहिराति वएजा । ता एर्वति नं अद्वावीसाए अक्षतार्व  
अमिरैश्वर्यतो भिन्नोते प । ता मोगाङ्गमध्यसुमोते पक्षतो सुवये सुवाय  
भविद्वा अभिमानस उभगिसया छर्णिलाक्षणसुगोते पुण्यापोटुक्षा बावक  
भिन्नसुगोते उत्तरापोटुवया भर्णवदसयोते रेहीपक्षतो पुस्तामध्यसुमोते अमिरै  
जीणक्षुतो अस्तामयस्सोते मर्धीणक्षुतो भग्मेसुसुगोते छर्णिलाक्षक्षुतो अभिम-  
भेसुसुगोते रेहीपक्षतो गोदम उठाणाक्षक्षुतो मारदावस्सोते अद्वामध्यसुमोते  
अभिविष्टामयस्सोते पुण्यस्सम्बक्षतो बाहिद्वुसुगोते पुस्ते उमजामध्यसुमोते अस्ते-  
साम्बक्षतो मैद्वामयस्सुगोते महामनवते विगावयस्सुगोते पुण्यापशुवीक्षक्षुतो  
गोदावामयस्सुगोते उत्तरापशुवीणक्षुतो क्षम्ब इत्ये बोठिय विद्वाक्षक्षुतो  
दगिवापस्सुगोते साहेणक्षुतो चामाक्षमयस्सुगोते रिषाहाणक्षुतो द्वृग्वायस्सुगोते  
अभुराहाक्षक्षुतो गोलम्बामयस्सुमोते अद्वाक्षक्षुतो रिमिक्षमयस्सुगोते मृक्षे क्षम्बते  
क्षम्बस्सुगोते पुण्यासाडामक्षुतो बज्जितामयक्षुतोते उत्तरासाडामक्षुतो क्षम्ब-  
क्षम्बस्सुगोते ॥ ४८ ॥ वसमस्स पाहुडस्स सोढसमं पाहुडपाहुडं  
समर्थ ॥ १०—१६ ॥

ता कहूं ते भोजना भाहिराति वएजा । ता एर्वति नं अद्वावीसाए अक्षतार्व  
अभियाहि दहिना भोजा क्षम्ब साखेति रेहीपीहि मुख्ये भोजा क्षम्ब साखेति क्षम्ब-  
क्षम्बहि क्षम्बरि भोजा क्षम्ब साखेति भाहाहि भावाहि भोजा क्षम्ब साखेति उक्षम्ब  
भुजा एद्व मोजा क्षम्ब साखेति पुस्तेव्य बीरेण मोजा क्षम्ब साखेति अस्तेव्य  
बाहिएर मोजा क्षम्ब साखेति भाहाहि क्षेत्रेति मोजा क्षम्ब साखेति पुण्याहि क्षम्ब-  
जीहि एकापद्व मोजा क्षम्ब साखेति उत्तरापशुवीहि दुरेण भोजा क्षम्ब साखेति

१ पड़ेहुए मैय २ नारिकल्पी गिरि ३ साइविसेप ४ आवजेप इवर्वी ।

हत्थेण वत्याणीएण भोच्चा कज्ज साधेति, वित्ताहिं मुग्गसूचेण भोच्चा कज्ज साधेति, साहणा फलौद भोच्चा कज्ज साधेति, विसाहाहिं आसित्तियाथो भोच्चा कज्ज साधेति, अणुराहाहिं मिस्साकूर भोच्चा कज्ज साधेति, जेट्टाहिं लट्टुएण भोच्चा कज्ज साधेति, मूलेण मैलगेण भोच्चा कज्ज साधेति, पुब्बाहिं आसाढाहिं आमलग भोच्चा कज्ज साधेति, उत्तराहिं आसाढाहिं विल्फक्लेहिं [णिम्मिय] भोच्चा कज्ज साधेति, अभीहणा पुँफेहिं [निम्मिय] भोच्चा कज्ज साधेति, सवणेण खीरेण भोच्चा कज्ज साधेति, वणिट्टाहिं जूसेण भोच्चा कज्ज साधेति, सयभिसयाए तुवराउ भोच्चा कज्ज साधेति, पुब्बाहिं पुष्टवयाहिं कारियहाएहिं भोच्चा कज्ज साधेति, उत्तरापुष्टवयाहिं वर्सरोयण भोच्चा कज्ज साधेति, रेवईहिं सिंधीटग भोच्चा कज्ज साधेति, अस्सिणीहिं तित्तफलं भोच्चा कज्ज साधेति, भरणीहिं तिलतडुलयं भोच्चा कज्ज साधेति ॥ ४९ ॥ दसमस्स पाहुडस्स सत्तरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१७ ॥

ता कह ते चारा आहिताति वएज्जा<sup>१</sup> तत्थ खलु इमे दुविहा चारा पण्णता, त०-आइच्चारा य चदचारा य, ता कह ते चदचारा आहिताति वएज्जा<sup>२</sup> ता पच सवच्छरिए ण जुगे अभीझणकखते सत्तसट्टिचारे चदेण सद्धि जोय जोएइ, सवणे णकखते सत्तसट्टिचारे चदेण सद्धि जोय जोएइ, एव जाव उत्तरासाढाणकसते सत्तसट्टिचारे चदेण सद्धि जोय जोएइ । ता कह ते आइच्चारा आहितेति वएज्जा<sup>३</sup> ता पच सवच्छरिए ण जुगे अभीर्झणकखते पचचारे सूरेण सद्धि जोय जोएइ, एव जाव उत्तरासाढाणकखते पचचारे सूरेण सद्धि जोय जोएइ ॥ ५० ॥ दसमस्स पाहुडस्स अहुरसमं पाहुडपाहुडं समत्तं ॥ १०-१८ ॥

ता कह ते मासा आहिताति वएज्जा<sup>४</sup> ता एगमेगस्स ण सवच्छरस्स वारस मासा पण्णता, तेसि च दुविहा णामधेजा पण्णता, त०-लोइया य लोउत्तरिया य, तत्थ लोइया णामा०, त०-सावणे भद्वए आसोए जाव आसाढे, लोउत्तरिया णामा०, त०-अभिणदे पद्देय, विजए पीइवद्धणे । सेजसे य सिवे यावि, सिसिरेवि य हेमवं ॥ १ ॥ णवमे वसतमासे, दसमे कुसुमसभवे । एकारसमे णिदाहो, वणविरोही य वारसे ॥ २ ॥ ५१ ॥ दसमस्स पाहुडस्स एगूणवीसद्दमं पाहुड-पाहुडं समत्तं ॥ १०-१९ ॥

ता कह ते सवच्छरा आहिताति वएज्जा<sup>५</sup> ता पच सवच्छरा आहिताति वएज्जा,

<sup>१</sup> सायविशेष, <sup>२</sup> विफला, <sup>३</sup> खायविशेष, <sup>४</sup> खायविशेष, <sup>५</sup> शाकविशेष, <sup>६</sup> चेलफलका मुरव्वा, <sup>७</sup> गुलबद, <sup>८</sup> करेले का शाक, <sup>९</sup> वगलोचन, <sup>१०</sup> सूखा मिंघाडा, <sup>११</sup> विकुटा सोठ-वाली मिर्च-पीपल ।

तं—जनकात्मकात्मकरे गुगर्तवक्षरे पमाणसंक्षरे लक्षणसंक्षरे उक्तिक्षरे  
क्षरे ॥ ५२ ॥ ता पक्षकात्मकात्मकरे वं नहिं हो प । ता पक्षकात्मकात्मकरे वं  
उक्तात्मकात्मकरे पक्षते तं—सामने भद्रप जाव आसाडे वं का बाहस्त्रमाहमाहे  
इक्षात्मकात्मकरे संक्षरेहैं सर्व एक्षयात्मकात्मकरे समागोह ॥ ५३ ॥ ता गुगर्तवक्षरे वं  
पक्षते पक्षते उक्ता—वहि वहि अभिवहिए वहि अभिवहिए भेव ता पक्षमस्य  
वं चंदसंक्षमस्य चरवीरे पक्षा प दोषस्य वं चंदसंक्षमस्य चरवीरे  
पक्षा प तत्त्वस्य वं अभिवहिए संक्षमस्य छमीरे पक्षा प वरुत्तस्य वं  
चंदसंक्षमस्य चरवीरे पक्षा प पक्षमस्य वं अभिवहिए संक्षमस्य छमीरे  
पक्षा पक्षता एकामेव इक्षात्मकरे वं पक्षसंक्षरेहैं हुगे एके चरवीरे पक्षसंक्षर  
मातीति मक्षयामे ॥ ५४ ॥ ता पमाणसंक्षरे वं पक्षते हो उक्ता—पक्षते  
वहि उक्त आश्वे अभिवहिए ॥ ५५ ॥ ता लक्षणसंक्षरे वं पक्षते प  
तं—समर्थ जनकात्मा ओवे ज्येष्ठति चमरे उक्त परिषमंति । नकुल वक्षसंक्षर वहु  
उक्तए होइ एक्षयोरे ॥ १ ॥ उक्ति समय पुणिमातीति ओईता निसमार्तिमात्मकात्मा ।  
क्षुग्मो व्यूहमो य तमाहु संक्षमरे वर्द ॥ २ ॥ उक्ति समय पक्षात्मिते परिषमंति नकु-  
ल वहु दिति पुण्यकाम । वासे न समय वासाहु उक्तसंक्षरे कम्मे प ३ ॥ पुणिम  
जाव व रसे पुण्यपक्षमार्थे व वेह आश्वे । अपेक्षिति वासेवं समये निष्पत्तए सस्य  
प ४ ॥ आद्यतेयतविद्या यक्षमारित्या उक्त परिणमंति । पूरोहि निष्पत्तए  
तमाहु अभिवहिये जाव ॥ ५ ॥ ता उक्तिक्षरसंक्षरे वं नकुलीयतिहैं प  
तं—मगीरे उक्त जाव उक्तात्मकात्मा वं का उक्तिक्षरे महम्यहे तीव्रप उक्तकरेहैं  
सर्व एक्षयात्मकात्मकरे समागोह ॥ ५६ ॥ इसमस्य पातुहस्य वीसहमे पातुह  
पातुहैं समर्थे ॥ १०—२० ॥

ता वह ते ओइसस्य वारा आद्यतातीति वर्ण्य १ उक्त वहु इमावो वं वहि  
कातीत्ये पक्षतात्मो तं—उत्तेहो एक्षमाहमु—ता करित्याद्या वं सता जनकात्मकात्मा  
पक्षता पक्षता एगे एक्षमाहमु १ एगे पुण एक्षमाहमु—ता महाप्रया वं सता जनकात्मा  
पुणक्षमारित्या पक्षता एगे एक्षमाहमु २ एगे पुण एक्षमाहमु—ता अभिवहिया वं उक्त  
एक्षयात्मकात्मकरे पक्षता एगे एक्षमाहमु ३ एगे पुण एक्षमाहमु—ता अरित्यातीति  
जावा वं सता जनकात्मकात्मकरे पुणक्षमारित्या पक्षता एगे एक्षमाहमु ४ एगे पुण एक्ष-  
माहमु—ता भरथीमाहमा वं सता जनकात्मकात्मकरे पुणक्षमारित्या पक्षता ५ । उक्त वे ते  
एक्षमाहमु—ता करियाइया वं उक्त जनकात्मकात्मकरे पुणक्षमारित्या पक्षता ते एक्षमाहमु—ती—  
करिया ऐहिणी छठाया आदा पुणक्षम् पुम्हो वस्त्रेया महात्मा वं उक्त जनकात्मकात्मकरे

दाहिणदारिया पण्णता, तंजहा-महा पुब्बाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हृत्यो चित्ता साईं विसाहा, अणुराहाइया ण सत्त णक्खत्ता पच्छमदारिया पण्णता, तंजहा-अणुराहा जेढा मूलो पुब्बासाढा उत्तरासाढा अभिईं सवणो, धणिढ्डाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णता, तजहा-धणिढ्डा सयभिसया पुब्बापोट्टवया उत्तरापोट्टवया रेवई अस्सिणी भरणी । तत्थ जे ते एवमाहसु-ता महाइया णं सत्त णक्खत्ता पुब्बदारिया पण्णता, ते एवमाहसु-तंजहा-महा पुब्बाफग्गुणी हृत्यो चित्ता साईं विसाहा, अणुराहाइया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णता, तजहा-अणुराहा जेढा मूले पुब्बासाढा उत्तरासाढा अभिईं सवणो, धणिढ्डाइया ण सत्त णक्खत्ता पच्छमदारिया पण्णता, तंजहा-धणिढ्डा सयभिसया पुब्बापोट्टवया उत्तरापोट्टवया रेवई अस्सिणी भरणी, कत्तियाइया ण सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णता, तंजहा-कत्तिया रोहिणी सठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा । तत्थ जे ते एवमाहसु-ता धणिढ्डाइया णं सत्त णक्खत्ता पुब्बदारिया पण्णता, ते एवमाहसु-तंजहा-धणिढ्डा सयभिसया पुब्बाभद्वया इत्तराभद्वया रेवई अस्सिणी भरणी, कत्तियाइया ण सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णता, तजहा-कत्तिया रोहिणी सठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा, महाइया ण सत्त णक्खत्ता पच्छमदारिया पण्णता, तंजहा-महा पुब्बाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हृत्यो चित्ता साईं विसाहा, अणुराहाइया ण सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णता, तजहा-अणुराहा जेढा मूलो पुब्बासाढा उत्तरासाढा अभीईं सवणो । तत्थ जे ते एवमाहसु-ता अस्सिणी-आइया ण सत्त णक्खत्ता पुब्बदारिया पण्णता ते एवमाहसु-तंजहा-अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी सठाणा अद्दा पुणव्वसू, पुस्साइया ण सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णता, तजहा-पुस्सा अस्सेसा महा पुब्बाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हृत्यो चित्ता, साईंआइया णं सत्त णक्खत्ता पच्छमदारिया पण्णता, तजहा-साईं विसाहा अणुराहा जेढा मूलो पुब्बासाढा उत्तरासाढा, अभीईंआइया ण सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णता, तजहा-अभिईं सवणो धणिढ्डा सयभिसया पुब्बाभद्वया उत्तराभद्वया रेवई । तत्थ जे ते एवमाहसु-ता भरणीआइया ण सत्त णक्खत्ता पुब्बदारिया पण्णता, ते एवमाहसु-तंजहा-भरणी कत्तिया रोहिणी सठाणा अद्दा पुणव्वसू, पुस्सो, अस्सेसाइया ण सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णता, तजहा-अस्सेसा महा पुब्बाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हृत्यो चित्ता साईं, विसाहाइया ण मत्त णक्खत्ता पच्छमदारिया पण्णता, त०-विसाहा अणुराहा जेढा मूले पुब्बासाढा उत्तरासाढा अभिईं, सवणाइया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णता,

ते -मुख्यो वरिष्ठु समविसया पुष्पापेक्षया उत्तरापेक्षया रेखै अस्तित्वी पए  
एवमाहंक वर्ण पुष्प एवं वर्णमो-वा अभिरैमाइवा चं सत वक्तव्या पुष्पदारिया  
प तंवदा-अभिरै सदनो वरिष्ठु समविसया पुष्पापेक्षया उत्तरापेक्षया रेखै,  
अस्तित्वीभाइवा चं सत वक्तव्या दाहिनदारिया पञ्चता तं -अस्तित्वी मरणी  
वरिष्ठा रोहिणी उठावा वा पुष्पवस् पुस्ताइवा चं सत वक्तव्या पञ्चम-  
दारिया पञ्चता ते -गुरुसो अस्तेषां महा पुष्पाभ्यगुणी उत्तरापेक्षयी इत्यो  
विता शारीमाइवा चं सत वक्तव्या उत्तराधारिया पञ्चता ते -साहै विचारा  
अपुरुषा वेदा सूक्ष्मे पुष्पावादा उत्तराधारा ॥ ५७ ॥ दसमस्स पातुडस्स  
एक्षयीसात्रम् पातुडपात्रै समर्थ ॥ १०-२१ ॥

ਤਾ ਕਹੇ ਦੇ ਯਮਨਾਈਸਿਥ ਜਾਇਏਂਹਿ ਗਏਗਾ । ਤਾ ਅਖਲੀ ਬੰਨ੍ਹੀਵੇ ੧ ਜਾਂ  
ਪਰਿਕਲੋਅਣ ਤਾ ਬੰਨ੍ਹੀਵੇ ਵੰ ਚੀਜੇ ਦੋ ਚੰਡਾ ਪਸਾਰੈਥ ਕਾ ਪਸਾਰੈਥ ਕਾ ਪਸਾਰਿਸਟਕੀਵੇ  
ਕਾ ਕਾ ਸੁਰਿਆ ਵਹਿਥ ਕਾ ਤਕੇਤਿ ਕਾ ਤਕੇਤਿਸਥੀਵੇ ਕਾ ਛਾਪਣੀ ਕਮਕਤਾ ਕੋਈ  
ਕੋਈਥ ਕਾ ੩ ਤੱਥਾ-ਕੋ ਅਸੀਂਹਿ ਦੋ ਗੁਕਧਾ ਦੇ ਚੰਡਾ ਦੋ ਚੰਡਾਵਾ ਦੋ ਪੁਸ਼ਾ-  
ਪੋਨੁਕਵਾ ਦੋ ਉਤਾਰਪੋਨੁਕਵਾ ਦੀ ਰੇਖੀ ਦੋ ਅਸਿਥੀ ਦੀ ਮਰਣੀ ਦੀ ਕਾਤਿਆ ਦੀ ਰੋਹਿੰਹੀ  
ਦੀ ਚੰਡਾਵਾ ਦੀ ਅਹਾ ਦੀ ਪੁਲਾਵਦੁ ਦੀ ਪੁਸ਼ਾ ਦੀ ਅਸੇਹਾਵਾਂ ਦੀ ਜਾਹਾ ਦੀ ਪੁਸ਼ਾ  
ਪਸੁਣੀ ਦੀ ਉਤਾਰਾਛਾਨੁਧੀ ਦੀ ਹਲਥਾ ਦੀ ਨਿਤਾ ਦੀ ਸਾਈ ਦੀ ਨਿਤਾਹਾ ਦੀ ਅਤੁਹਾਹਾ  
ਦੀ ਬੰਡਾ ਦੀ ਸੂਕਾ ਦੀ ਪੁਸ਼ਾਸਾਡਾ ਦੀ ਉਤਾਰਸਾਡਾ ਤਾ ਏਧਿ ਵੰ ਛਾਪਣਾਏ ਨਾਨਾ-  
ਤਾਖੀ ਅਤਿਥ ਪਕਧਾਤਾ ਕੇ ਵੰ ਪਥ ਸੁਹੂਰੇ ਚਲਾਈਂਦੀ ਚ ਚਲਾਹਿਮਾਗੇ ਸੁਹੂਰਸ਼ ਅਹਿੰ  
ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ ਅਤਿਥ ਪਕਧਾਤਾ ਕੇ ਵੰ ਫਲਰਸ ਸੁਹੂਰੇ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ  
ਕੋਈਤਿ ਅਤਿਥ ਪਕਧਾਤਾ ਕੇ ਵੰ ਟੀਚਸੁਹੂਰੇ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ ਅਤਿਥ  
ਪਕਧਾਤਾ ਜੋ ਵੰ ਪਕਧਾਈਦੀ ਸੁਹੂਰੇ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ ਤਾ ਏਧਿ ਵੰ ਛਾਪ-  
ਣਾਏ ਪਕਧਾਤਾਣੇ ਕਹਰੇ ਪਕਧਾਤਾ ਕੇ ਵੰ ਕਥ ਸੁਹੂਰੇ ਚਲਾਈਂਦੀ ਚ ਚਲਾਹਿਮਾਗੇ  
ਸੁਹੂਰਸ਼ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ ਕਹਰੇ ਪਕਧਾਤਾ ਕੇ ਵੰ ਫਲਰਸਸੁਹੂਰੇ ਅਦੇਵ  
ਸਹਿ ਕੋਈ ਆਈਤਿ ਕਹਰ ਪਕਧਾਤਾ ਜੋ ਵੰ ਟੀਚ ਸੁਹੂਰੇ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ  
ਕਹਰੇ ਪਕਧਾਤਾ ਕੇ ਵੰ ਪਕਧਾਈਦੀ ਸੁਹੂਰੇ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ ੩ ਤਾ ਏਧਿ ਵੰ  
ਛਾਪਣਾਏ ਪਕਧਾਤਾਣੇ ਤਾਥ ਕੇ ਵੰ ਪਕਧਾਤਾ ਕੇ ਵੰ ਕਥ ਸੁਹੂਰੇ ਚਲਾਈਂਦੀ ਚ ਚਲਾਹਿ  
ਮਾਗੇ ਸੁਹੂਰਸ਼ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ ਕੇ ਵੰ ਦੀ ਅਸੀਂਹਿ, ਤਾਥ ਕੇ ਤੇ ਪਕਧਾਤਾ  
ਕੇ ਵੰ ਪਕਧਾਈ ਸੁਹੂਰੇ ਅਦੇਵ ਸਹਿ ਕੋਈ ਕੋਈਤਿ ਕੇ ਵੰ ਕਾਰਤ ਤੱਥਾ-ਕੋ ਚਲਾਹਿ  
ਸਥਾ ਦੀ ਮਰਣੀ ਦੀ ਅਹਾ ਦੀ ਅਸੇਹਾ ਦੀ ਸਾਈ ਦੀ ਬੰਡਾ ਤੇ ਤੇ

धणिद्वा दो पुञ्चाभद्रवया दो रेवदे दो अस्सिणी दो कत्तिया दो सठाणा दो पुस्सा दो महा दो पुञ्चाफलगुणी दो हत्था दो चित्ता दो अणुराहा दो मूला दो पुञ्चा-साढा, तत्थ जे ते णक्खता जे ण पण्यालीस मुहुर्ते चंद्रेण सद्धि जोय जोएति ते ण वारस, तजहा-दो उत्तरापोट्टवया दो रोहिणी दो पुण्यवसू दो उत्तराफलगुणी दो विसाहा दो उत्तरासाढा, ता एएसि ण छपण्णाए णक्खताण अतिथ णक्खता जे ण चत्तारि अहोरते छच मुहुर्ते सूरिएण सद्धि जोयं जोएति, अतिथ णक्खता जे ण छ अहोरते एकवीस च मुहुर्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएति, अतिथ णक्खता जे ण तेरस अहोरते वारसमुहुर्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति, अतिथ णक्खता जे ण वीस अहोरते तिण्णि य मुहुर्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति, ता एएसि ण छपण्णाए णक्खताण क्यरे णक्खता जे ण तं चेव उच्चारेयब्ब, ता एएसि ण छपण्णाए णक्खताण तत्थ जे ते णक्खता जे ण चत्तारि अहोरते छच मुहुर्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति ते ण दो अभीई, तत्थ जे ते णक्खता जे ण छ अहोरते एकवीस च मुहुर्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति ते ण वारस, तंजहा-दो सम्भिसया दो अदा दो अस्सेसा दो साई दो विसाहा दो जेड्वा, तत्थ जे ते णक्खता जे ण तेरस अहोरते वारसमुहुर्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति ते ण तीस, तजहा-दो सवणा जाव दो पुञ्चासाढा, तत्थ जे ते णक्खता जे ण वीस अहोरते तिण्णि य मुहुर्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति ते ण वारस, तजहा-दो उत्तरापोट्टवया जाव दो उत्तरासाढा ॥ ५८ ॥ ता कह ते सीमाविक्खयमे आहिएति वएज्जा ? ता एएसि ण छपण्णाए णक्खताण अतिथ णक्खता जेसि ण छ सया तीसा सत्तट्टिभागती-सङ्गभागण सीमाविक्खयभो, अतिथ णक्खता जेसि ण तं सहस्स पचोत्तरं सत्तट्टिभागतीसङ्गभागणं सीमाविक्खयभो, अतिथ णक्खता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्टिभागतीसङ्गभागण सीमाविक्खयभो, अतिथ णक्खता जेसि ण दो सहस्सा पचदसुत्तर सत्तट्टिभागतीसङ्गभागण सीमाविक्खयभो, ता एएसि ण छपण्णाए णक्खताण क्यरे णक्खता जेसि ण छ सया तीसा त चेव उच्चारेयब्ब जाव क्यरे णक्खता जेसि ण तिमहस्स पचदसुत्तर सत्तट्टिभागतीसङ्गभागणं सीमाविक्खयभो ? ता एएसि ण छपण्णाए णक्खताण तत्थ जे ते णक्खता जेसि ण छ भया तीसा सत्तट्टिभागतीसङ्गभागण सीमाविक्खयभो ते ण दो अभीई, तत्थ जे ते णक्खता जेसि ण सहस्स पचुत्तर भत्तट्टिभागतीसङ्गभागण सीमाविक्खयभो ते ण वारस, तजहा-दो नयभिमया जाव दो जेड्वा, तत्थ जे ते णक्खता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा भत्तट्टिभागतीसङ्गभागण सीमाविक्खयभो ते ण तीस, तजहा-दो सवणा

जाए दो पुम्भासादा रत्न जे ते जन्मदाता लेखि वर्ण विधिं साहस्रा पञ्चाशास्रा  
सत्तद्विमायसीसद्भागार्थं दीमाविक्षयो ले घ बारस तं—दो उत्तरापेत्तुस्ता  
जाए दो उत्तरासादा ॥ ५९ ॥ ता एसि वर्ण छम्पणाए जन्मदातार्थं कि समा  
पम्भो वर्दिन सहिं ओर्य ओर्युहि कि सबा साम वर्दिन सहिं ओर्य ओर्युहि कि समा  
उत्तमो पवित्रिय २ वर्दिन सहिं ओर्य ओर्युहि ॥ ता एसि वर्ण छम्पणाए जन्मदा-  
तार्थं व विमवि त वर्ण समा पात्रो वर्दिन सहिं ओर्य ओर्युहि जो उत्ता साम वर्दिन  
सहिं ओर्य ओर्युहि जो समा उत्तमो पवित्रिय २ वर्दिन सहिं ओर्य ओर्युहि वर्दिन  
राईदियाव उत्तोतुहीए मुहुषार्थ व व्योक्त्याएर्थ बन्धत्व दोहि अमीर्हि, ता  
एएर्थ दो अमीर्हि पार्वतिय जोताम्भिर्थं २ अमाकार्थ ओर्युहि दो वर्ण वर्ण  
पुण्यमाविणि ॥ ६ ॥ तत्त्व रज्जु इमामो वावहि पुण्यमाविणीयो वावहि  
अमाकासाम्भो पञ्चताम्भो ता एसि वर्ण वर्दिन सहिं पहमे पुण्यमाविणि  
वर्दि वर्दिं देसंसि ओर्युहि ॥ ता असि वर्ण देसंसि वर्दि वर्दिं वावहि पुण्यमाविणि  
ओर्युहि ताम्भो पुण्यमाविणित्युत्ताम्भो मंडलं वर्दम्भीसेवं सहर्वं छेता तुत्तीसे  
भागो उत्तद्विमावेता एत्व वर्ण से वर्दि वर्दम्भ पुण्यमाविणि ओर्युहि, ता एसि वर्ण वर्दिन  
सहिं सहिं दोर्युहि पुण्यमाविणि वर्दि वर्दिं देसंसि ओर्युहि ॥ ता असि वर्ण देसंसि वर्दि  
फल्युहि पुण्यमाविणि ओर्युहि ताम्भो पुण्यमाविणित्युत्ताम्भो मंडलं वर्दम्भीसेवं सहर्वं छेता  
तुत्तीसे भागे उत्ताइयावेता एत्व वर्ण से वर्दि दोर्युहि पुण्यमाविणि ओर्युहि ता एसि  
वर्ण वर्दिन सहिं सहिं तर्वं पुण्यमाविणि वर्दि वर्दिं देसंसि ओर्युहि ॥ ता असि वर्ण  
देसंसि वर्दि दोर्युहि पुण्यमाविणि ओर्युहि ताम्भो पुण्यमाविणित्युत्ताम्भो मंडलं वर्द  
म्भीसेवं सहर्वं छेता तुत्तीसे भागे उत्ताइयावेता एत्व वर्ण से वर्दि तर्वं पुण्यमा-  
विणि ओर्युहि ता एसि वर्ण वर्दिन सहिं सहिं तुत्ताइसे पुण्यमाविणि वर्दि वर्दि  
देसंसि ओर्युहि ॥ ता असि वर्ण देसंसि वर्दि तर्वं पुण्यमाविणि ओर्युहि ताम्भो पुण्यमा-  
विणित्युत्ताम्भो मंडलं वर्दम्भीसेवं सहर्वं छेता धोणि अद्युहीए भास्तर्वं उत्ताइया-  
वेता एत्व वर्ण से वर्दि तुत्ताम्भम्भं पुण्यमाविणि ओर्युहि, दर्वं वस्तु पर्युत्ताएत्व ताम्भे २  
पुण्यमाविणित्युत्ताम्भो मंडलं वर्दम्भीसेवं सहर्वं छेता तुत्तीसे भागे उत्ताइयावेता  
तंसि २ वस्तु तर्वं तर्वं पुण्यमाविणि वर्दि वर्दिं देसंसि ओर्युहि ॥ ता अत्तीसस्त वर्ण  
वर्दिं वावहि पुण्यमाविणि वर्दि वर्दिं देसंसि ओर्युहि ॥ ता अत्तीसस्त वर्ण  
पर्युत्ताम्भाए उत्तीयद्विपाम्भाए वीकाए मंडलं वर्दम्भीसेवं सहर्वं छेता वावहि  
वर्दिं वर्दम्भाम्भेऽप्यव्युत्तीसेवं सदाही  
छेता अद्युत्तरा—

वावहीत्यमागे वीकाए  
— पर्युत्तिवर्दि वर्ण

અમાગમઢલં અસપત્તે એત્ય ણ સે ચંદે ચરિમં વાવંદ્ચિ પુણિમાસિણિ જોએદ ॥ ૬૧ ॥ તા એએસિ ણ પચણહ સવચ્છરાણ પઢમં પુણિમાસિણિ સૂરે કસિ દેસસિ જોએદ ૨ તા જસિ ણ દેસસિ સૂરે ચરિમ વાવંદ્ચિ પુણિમાસિણિ જોએદ તાઓ પુણિમાસિણિદ્વાળાઓ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા ચઉણવિં ભાગે ઉવાઇણાવેતા એત્ય ણ સે સરીએ પઢમં પુણિમાસિણિ જોએદ, તા એએસિ ણ પચણહ સવચ્છરાણ દોચ્ચ પુણિમાસિણિ સૂરે કસિ દેસસિ જોએદ ૨ તા જસિ ણ દેસસિ સૂરે પઢમ પુણિમાસિણિ જોએદ તાઓ પુણિમાસિણિદ્વાળાઓ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા દો ચઉણવિદ્ભાગે ઉવાઇણાવેતા એત્ય ણ સે સૂરે દોચ્ચ પુણિમાસિણિ જોએદ, તા એએસિ ણ પચણહ સવચ્છરાણ તચ્ચ પુણિમાસિણિ સૂરે કસિ દેસસિ જોએદ ૨ તા જસિ ણ દેસસિ સૂરે દોચ્ચ પુણિમાસિણિ જોએદ તાઓ પુણિમાસિણિદ્વાળાઓ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા ચઉણવિદ્ભાગે ઉવાઇણાવેતા એત્ય ણ સે સૂરે તચ્ચ પુણિમાસિણિ જોએદ, તા એએસિ ણ પચણહ સવચ્છરાણ દુવાલસમ પુણિમાસિણિ સૂરે કસિ દેસસિ જોએદ ૨ તા જસિ ણ દેસસિ સૂરે તચ્ચ પુણિમાસિણિ જોએદ તાઓ પુણિમાસિણિદ્વાળાઓ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા અદૃષ્ટાલે ભાગસાએ ઉવાઇણાવેતા એત્ય ણ સે સૂરે દુવાલસમં પુણિમાસિણિ જોએદ, એવ ખલુ એણુંવાએણ તાઓ ૨ પુણિમાસિણિદ્વાળાઓ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા ચઉણવડ ૨ ભાગે ઉવાઇણાવેતા તસિ ૨ દેસસિ તં ત પુણિમાસિણિ સૂરે જોએદ, તા એએસિ ણ પચણહ સવચ્છરાણ ચરિમ વાવંદ્ચિ પુણિમાસિણિ સૂરે કસિ દેસસિ જોએદ ૨ તા જવુદીવસ્સ ણ ૦ પાર્દેણપદીણાયયાએ ઉદીણદાહિણાયયાએ જીવાએ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા પુરાચ્છિમિલસિ ચઉભાગમઢલસિ સત્તાવીસ ભાગે ઉવાઇણાવેતા અદ્વાવીસદ્ગ્રામ ભાગ વીસહા છેતા અદ્વારસભાગે ઉવાઇણાવેતા તિહેં ભાગેહેં દોહિ ય કલાહેં દાહિળિ ચઉભાગમઢલ અસપત્તે એત્ય ણ સૂરે ચરિમ વાવંદ્ચિ પુણિમસં જોએદ ॥ ૬૨ ॥ તા એએસિ ણ પચણહ સવચ્છરાણ પઢમ અમાવાસ ચંદે કસિ દેસસિ જોએદ ૨ તા જસિ ણ દેસસિ ચંદે ચરિમવાવંદ્ચિ અમાવાસ જોએદ તાઓ અમાવાસદ્વાળાઓ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા દુવત્તીસ ભાગે ઉવાઇણાવેતા એત્ય ણ સે ચંદે પઢમ અમાવાસ જોએદ, એવ જેણેવ અમિલાવેણ ચદ્સ્સ પુણિમાસિણીઓ ૦ તેજેવ અમિલાવેણ અમાવાસાઓવિ ભાગિયવ્વાઓ-વિડ્યા તડયા દુવાલસમી, એવ ખલુ એણુંવાએણ તાઓ ૨ અમાવાસદ્વાળાઓ મઢલ ચઉબ્બીસેણ સાણ છેતા દુવત્તીસ ૨ ભાગે ઉવાઇણાવેતા તસિ ૨ દેસસિ ત ત અમાવાસ૦ ચંદે જોએદ, તા એએસિ ણ પચણહ સવચ્છરાણ ચરિમ વાવંદ્ચિ અમાવાસ ચંદે કસિ દેસસિ જોએદ ૨ તા જસિ ણ દેસનિ ચંદે ચરિમ વાવંદ્ચિ પુણિમાસિણિ જોએદ તાઓ

पुणिमासिंहिद्वाषाथो महार्द्धं चतुर्भ्युसेवं सपूर्वं हेता सोऽसुभागे उद्दोक्षता पृथ्वी  
वर्ष से चंद्रे चरिमं वाहनं अमावास्ये जोएह ॥ १३ ॥ ता एप्रसि वर्ष पंचम् संक्षत्त-  
राणं पश्चमं अमावास्ये सूरे रुद्धि देखेसि जोएह ! ता चंसि वर्ष देखेसि सूरे चरिमं  
वाहनं अमावास्ये जोएह तामो अमावास्याद्वालगमो मंडलं चतुर्भ्युसेवं सपूर्वं हेता  
चतुर्षत्तमागे उवाइपायेता पृथ्वी वर्ष से सूरे पक्षमं अमावास्ये जोएह, एवं वेष्ट्ये अमित-  
ममवेष्ट्ये सूरीयस्य पुणिमासिंहीव्ये तेषेव अमावास्याव्योगि ठंबहा-विहारा छामा  
उपास्यसमी एवं वह एप्रुवाएवं तामो अमावास्याद्वालगमो मंडलं चतुर्भ्युसेवं उपूर्वं  
हेता चतुर्षत्तम् २ भागे उवाइपायेता ठंसि २ देखेसि तु २ अमावास्ये सूरे  
जोएह, ता एप्रसि वर्ष पंचम् संक्षत्तराणं चरिमं वाहनं अमावास्ये पुणिमासिंहिद्वाषाथो  
महार्द्धं चतुर्भ्युसेवं सपूर्वं हेता सत्तालौसं भागे उद्दोक्षता पृथ्वी वर्ष से सूरे चरिमं  
वाहनं अमावास्ये जोएह ॥ १४ ॥ ता एप्रसि वर्ष पंचम् संक्षत्तराणं वर्षमं पुणिमासिंहि  
चंद्रे केवं अक्षयतोर्वं (वोर्म) जोएह ॥ ता अमित्द्वाहि, अमित्द्वाहि शिल्पि मुहुरा प्रूपतीय  
व वावहिमागा मुहुरास्य वावहिमागा व सत्ताद्विहा हेता पक्षमित्तु अमित्यामागा ऐसा  
तं समयं व वर्ष सूरिए केवं अक्षयतोर्वं जोएह ॥ ता मुमाप्तमुगीहि, मुमाप्तमुगीहि  
अद्वावीय मुहुरा अद्वावीय व वावहिमागा मुहुरास्य वावहिमागं व सत्ताद्विहा हेता  
मुहुरावीय मुणिमामागा ऐसा ता एप्रसि वर्ष पंचम् संक्षत्तराणं दोवं पुणिमासिंहि चंद्रे  
केवं अक्षयतोर्वं जोएह ॥ ता उत्तराहि पोद्वाहि, उत्तराण पोद्वाक्यार्थं युत्तरावीय मुहुरा  
जोएस व वावहिमागे मुहुरास्य वावहिमागं व सत्ताद्विहा हेता वावहितु मुणिमामागा  
ऐसा तं समयं व वर्ष सूरे केवं अक्षयतोर्वं जोएह ॥ ता उत्तराहि पर्युगीहि, उत्तरा-  
प्रम्युगीहि सत्त मुहुरा देवीसं व वावहिमागा मुहुरास्य वावहिमागं व सत्ताद्विहा हेता  
एहवीय मुणिमामागा ऐसा ता एप्रसि वर्ष पंचम् संक्षत्तराणं तर्बं पुणिमासिंहि चंद्रे  
केवं अक्षयतोर्वं जोएह ॥ ता असिसाहि, असिसाहि एहवीय मुहुरा वर्ष व पृष्ठि  
मागा मुहुरास्य वावहिमागा व सत्ताद्विहा हेता देवहितु मुणिमामागा ऐसा तं समयं  
व वर्ष सूरे केवं अक्षयतोर्वं जोएह ॥ ता चित्ताहि, चित्तावं एओ मुहुरो अद्वावीय व  
वावहिमागा मुहुरास्य वावहिमागं व सत्ताद्विहा हेता तीवं मुणिमामागा ऐसा ता  
एप्रसि वर्ष पंचम् संक्षत्तराणं उपास्यसमं पुणिमासिंहि चंद्रे केवं अक्षयतोर्वं जोएह ॥  
ता उत्तराहि असाहाहि, उत्तराण आसागर्ण छतुषीस मुहुरा छतुषीय व वावहितु  
मागा मुहुरास्य वावहिमागं व सत्ताद्विहा हेता चतुर्पल्लं पुणिमामागा ऐसा  
तं समयं व वर्ष सूरे केवं अक्षयतोर्वं जोएह ॥ ता मुक्तमहात्मा पुणिमासिंहि

हुता अष्ट य वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभागं च सत्तट्टिहा छेता वीस चुणिया-  
भागा सेसा, ता एएसि णं पञ्चण्हं सवच्छराणं चरिम वावट्टिं पुणिमासिणि चदे केण  
णक्खत्तेण जोएइ २ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाण चरमसमए, तं  
समयं च णं सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ २ ता पुस्सेण, पुस्सस्स एगूणवीस मुहुता  
तेयालीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिहा छेता तेत्तीस चुणिया-  
भागा सेसा ॥ ६५ ॥ ता एएसि ण पञ्चण्हं सवच्छराण पढम अमावास चदे केण  
णक्खत्तेण जोएइ २ ता अस्सेसाहिं, अस्सेसार्ण एक्के मुहुते चत्तालीस च वावट्टि-  
भागा मुहुत्तस्स वावट्टिभागं च सत्तट्टिहा छेता वावट्टिं चुणियाभागा सेसा, त  
समयं च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ २ ता अस्सेसाहिं चेव, अस्सेसार्ण एक्को  
मुहुते चत्तालीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभागं च सत्तट्टिहा छेता वावट्टि-  
चुणियाभागा सेसा, ता एएसि ण पञ्चण्हं सवच्छराण दोब्ब अमावास चदे केण  
णक्खत्तेण जोएइ २ ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीस मुहुता  
पणतीस वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिहा छेता पणट्टिं चुणियाभागा  
सेसा, तं समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ २ ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं,  
उत्तराणं फग्गुणीण जहेव चदस्स । ता एएसि ण पञ्चण्हं सवच्छराणं तच्च अमावास  
चदे केण णक्खत्तेण जोएइ २ ता हत्थेण, हत्थस्स चत्तारि मुहुता तीस च वावट्टि-  
भागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिहा छेता वावट्टिं चुणियाभागा सेसा, त  
समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ २ ता हत्थेण चेव, हत्थस्स जहा चदस्स,  
ता एएसि ण पञ्चण्हं सवच्छराण दुवालसम अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ २  
ता अद्दाहिं, अद्दाण चत्तारि मुहुता दस य वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभागं च सत्त-  
ट्टिहा छेता चउप्पण चुणियाभागा सेसा, तं समय च णं सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ २  
ता अद्दाहिं चेव, अद्दाण जहा चदस्स । ता एएसि ण पञ्चण्हं सवच्छराण चरिम वावट्टिं  
अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ २ ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स वावीस मुहुता  
वायालीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स सेसा, त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण  
जोएइ २ ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स ण जहा चदस्स ॥ ६६ ॥ ता जेणं  
अज्जणक्खत्तेण चदे जोयं जोएइ जसि देससि से ण इमाइं अष्ट एगूणवीसाइ मुहुत्त-  
सयाइ चउवीस च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिहा छेता वावट्टि-  
चुणियाभागे उवाइणावेता पुणरवि से चदे अणेण सरिमएण चेव णक्खत्तेण जोय  
जोएइ अणसि देससि, ता जेण अज्जणक्खत्तेण चदे जोय जोएइ जसि देससि से ण  
इमाइ सोलग अद्वत्तीसे मुहुत्तसयाइ अडणापण्ण च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स वावट्टिभागं

व सताद्विषा छेता पर्याहि तुमिनामागे उवाइपावेता पुष्टरवि से वं वदि तेवं वेव  
 अक्षतोर्य ओर्य ओएह अव्याहिं देसंसि ता बोर्य क्षमपत्तक्षतोर्य वंदे ओम ओएह वंसि  
 देसंसि से वं इमार्ह उवाप्पत्तसुक्षुप्तसहस्रार्ह वल व सुहुतासयद् उवाइपावेता पुष्ट-  
 रवि से वंदे अन्नेव तारिसुएवं वेव ओर्य ओएह वंसि देसंसि ता बोर्य अज्ञनक्षतोर्य  
 वंदे ओर्य ओएह वंसि देसंसि से वं इमार्ह एवं इमार्ह वल व सहस्रे वद्धु व  
 सुहुत्तसप उवाइपावेता पुष्टरवि से वंदे तवं वेव अक्षतोर्य ओर्य ओएह वंसि  
 देसंसि ता बोर्य अज्ञनक्षतोर्य श्रे ओर्य ओएह वंसि देसंसि से वं इमार्ह विभिन्न  
 अमद्वार्ह राईक्षसयद् उवाइपावेता पुष्टरवि से शरिप अन्नेव तारिसुएवं वेव  
 अक्षतोर्य ओर्य ओएह वंसि देसंसि ता बोर्य क्षमपत्तक्षतोर्य श्रे ओर्य ओएह वंसि  
 देसंसि से वं इमार्ह सतासुबीर्व राईक्षसयद् उवाइपावेता पुष्टरवि से श्रे तेवं वेव  
 अक्षतोर्य ओर्य ओएह वंसि देसंसि ता बोर्य क्षमपत्तक्षतोर्य श्रे ओर्य ओएह वंसि  
 देसंसि से वं इमार्ह बद्धारस वीसार्ह राईक्षसयद् उवाइपावेता पुष्टरवि ए श्रे  
 अन्नेव वेव अक्षतोर्य ओर्य ओएह वंसि देसंसि ता बोर्य क्षमपत्तक्षतोर्य श्रे ओर्य  
 ओएह वंसि देसंसि तवं इमार्ह अलीर्ह सुद्धार्ह राईक्षसयद् उवाइपावेता पुष्टरवि  
 से श्रे तेवं वेव अक्षतोर्य ओर्य ओएह वंसि देसंसि ॥ १७ ॥ ता चमा वं इमे  
 वंदे गाहसमावन्नए मवह तमा वं इमरेवि वंदे गाहसमावन्नए मवह तमा वं  
 इमरे वंदे गाहसमावन्नए मवह तमा वं इमेवि वंदि गाहसमावन्नए मवह ता  
 चमा वं इमे शरिप गाहसमावन्ने मवह तमा वं इमरेवि शरिप गाहसमावन्ने मवह  
 चमा वं इवै शरिप गाहसमावन्ने मवह तमा वं इमेवि शरिप गाहसमावन्ने मवह  
 एवं यहेवि अक्षतोर्यि ता चमा वं इम वंदे शुतो ओरेव भवह तमा वं इमेवि वंदि  
 वंदि शुतो ओरेव भवह चमा वं इमरे वंदि शुतो ओरेव भवह तमा वं इमेवि वंदि  
 शुतो ओरेव भवह एवं श्रे वंदि पहेवि अक्षतोर्यि समावि वं चदा शुता ओरेवि  
 समावि वं श्रा शुता ओरेवि समावि वं यहा शुता ओरेवि समावि वं क्षमपत्ता  
 शुता ओरेवि शुत्तेवि वं चंदा शुता ओरेवि शुत्तेवि वं श्रा शुता ओरेवि  
 शुत्तेवि वं गहा शुता ओरेवि शुत्तेवि वं अक्षता शुता ओरेवि वं श्रा शुता  
 शहस्रेव बद्धापत्तवाए सणहि छेता । इवेष पत्ततो वेदपरिमागे अक्षतपत्तिवर्प  
 पाहुदेवि आवैष्टि-वेवि ॥ १८ ॥ दसमस्स पाहुदस्स वावीसार्हम पाहुद  
 पाहुदं समर्थ ॥ १०-२२ ॥ दसम पाहुदं समर्थ ॥ १० ॥

ता वह ते उन्नच्छतावाह वावैष्टि वह्या । तत्त्व कहु इमे वं उन्नच्छता  
 पञ्चता तमाह-वंदे २ अमितहिए वंदि अमितहिए ता एवं वं वं वं वं वं

राण पठमस्स चंद्रसवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा ? ता जे णं पचमस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स पञ्जवसाणे से णं पठमस्स चंद्रसवच्छरस्स आई अणतर-पुरक्खडे समए, ता से ण किं पञ्जवसिए आहिएति वएजा ? ता जे ण दोच्चस्स चंद्रसवच्छरस्स आई से णं पठमस्स चंद्रसवच्छरस्स पञ्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए, त समय च ण चंद्रे केण णक्खतेणं (जोग) जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण छदुवीस मुहुत्ता छदुवीस च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वाव-द्विभागं च सत्तद्विहा छेत्ता चउप्पणं चुणिण्याभागा सेसा, त समय च णं सूरे केण णक्खतेणं जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ट य वाव-द्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेत्ता वीस चुणिण्याभागा सेसा । ता एएसि ण पञ्चह सवच्छराण दोच्चस्स चंद्रसवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा ? ता जे ण पठमस्स चंद्रसवच्छरस्स पञ्जवसाणे से ण दोच्चस्स चंद्रसवच्छरस्स आई अणतरपच्छाकडे समए, ता से ण किं पञ्जवसिए आहिएति वएजा ? ता जे ण तच्चस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स आई से ण दोच्चस्स चंद्रसवच्छरस्स पञ्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए, त समय च ण चंद्रे केण णक्खतेण जोएइ ? ता पुणव्वाहिं आसाढाहिं, पुणव्वाणं आसाढाण सत्त मुहुत्ता तेवण्णं च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेत्ता इगतालीस चुणिण्याभागा सेसा, त समय च णं सूरे केण णक्खतेण [जोयं] जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स ण वायालीस मुहुत्ता पणतीस च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेत्ता सत्त चुणिण्याभागा सेसा । ता एएसि ण पंचहं सवच्छराण तच्चस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा ? ता जे णं दोच्चस्स चंद्रसवच्छरस्स पञ्जवसाणे से ण तच्चस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स आई अणतरपुरक्खडे समए, ता से ण किं पञ्जवसिए आहिएति वएजा ? ता जे णं चउत्थस्स चंद्रसवच्छरस्स आई से ण तच्चस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स पञ्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए, त समय च ण चंद्रे केणं णक्खतेण जोएइ ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण तेरस मुहुत्ता तेरस य वावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभाग च सत्तद्विहा छेत्ता सत्तावीस च चुणिण्याभागा सेसा, त समय च णं सूरे केण णक्खतेण जोएइ ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता छप्पणं च वावद्विभागा मुहुत्तस्स वावद्विभागं च सत्तद्विहा छेत्ता सद्वी चुणिण्याभागा सेसा । ता एएसि ण पंचहं सवच्छराण चउत्थस्स चंद्रसवच्छरस्स के आई आहिएति वएजा ? ता जे ण तच्चस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स पञ्जवसाणे से णं चउत्थस्स चंद्रसवच्छरस्स आई अणतरपुरक्खडे समए, ता से ण किं

फलवसिए आहिएति वर्णा । ता ये वर्ष चतुर्मस्तु अभिवृत्तिवसंक्षरस्य आई से वर्ष चतुर्मस्तु चैदसंवच्छरस्य फलवाण्यां व्याख्यातरपञ्चमकडे घमण, तर समर्थ वर्ष वर्ष देवने जक्कटोर्व बोएऱ । ता उत्तराहि आसाडाहि, उपरार्थ आसाडार्थ वाच्छालीर्व मुद्गुतां चालासीर्व व वाच्छिमाण्या मुद्गुतांस्य वाच्छिमाण्य च सतांदित्ता ठंगा चठसद्गु तुभियामाण्या उत्ता तं समर्थ वर्ष वर्ष सूरे केवर्व फक्कटोर्व बोएऱ । ता पुण्यमुद्गुता पुण्यमुद्गुत्तु अरुष्टार्वीर्व मुद्गुतां एक्कीर्व वाच्छिमाण्या मुद्गुतांस्य वाच्छिमाण्य च सतांदित्ता डेता दीयालीर्व तुभियामाण्या उत्ता । ता एपेति वर्ष वेळवृ देववच्छरार्थ वैदसंवच्छरस्य अभिवृत्तिवसंक्षरस्य के जाई आहिएति वर्णा । ता ये वर्ष चतुर्मस्तु चैदसंवच्छरस्य फलवाण्यां व्याख्यातरपञ्चमकडे घमण, ता से वर्ष किं पञ्चमस्तु अभिवृत्तिवसंक्षरस्य फलवाण्यां व्याख्यातरपञ्चमकडे घमण, तं समर्थ वर्ष वर्ष देवने जक्कटोर्व बोएऱ । ता उत्तराहि आसाडाहि, उत्तरार्थ चरमसमण, तं समर्थ वर्ष सूरे केवर्व जक्कटोर्व बोएऱ । ता पुस्तेले पुस्तस्तु वर्ष एक्कीर्व मुद्गुतां वेळालीर्व व वाच्छिमाण्या मुद्गुतांस्य वाच्छिमाण्य च सतांदित्ता डेता वेळीर्व तुभियामाण्या उत्ता ॥ १९ ॥ वर्णारसमं पाद्गुहे समर्थ ॥ ११ ॥

ता वर्ष वर्ष देववच्छरार्थ आहिएति वर्णा । तत्त्व घमु हमे वर्ष देववच्छरार्थ फलवाण्यां-परमाणु वर्ष वर्ष वाह्ये अभिवृत्ति, ता एपेति वर्ष वेळवृ देववच्छरार्थ फलवाण्यां एक्कुतांसंवच्छरस्य जक्कटामाण्ये दीयामुद्गुतोर्व बाहोरतेव भिज्माणे केवलए रक्षणिकमोर्व आहिएति वर्णा । ता सतांदीर्व राईविवार्ह एक्कीर्व च सतांदित्तामाण्या राईवियस्य राईविकमोर्व आहिएति वर्णा ता से वर्ष केवलए मुद्गुत्तेले आहिएति वर्णा । ता वट्ठमणे एक्कुतीर्व मुद्गुतार्व सतांदीर्व च सतांदित्तामे शुद्ध तत्त्व मुद्गुतमोर्व आहिएति वर्णा ता एस वर्ष अव्याप्तमुद्गुतांत्त्वां अव्याप्ते सक्षण्ये, ता से वर्ष केवलए रक्षणिकमोर्व आहिएति वर्णा । ता विज्ञि सतांदीर्व राईविवाए एक्कुत्तर्व च सतांदित्तामाण्ये राईवियस्य राईविकमोर्व आहिएति वर्णा ता से वर्ष केवलए मुद्गुतमोर्व आहिएति वर्णा । ता अव मुद्गुत्तमाण्यस्य वट्ठ व वारीसे मुद्गुतांत्त्वे छप्पत्तर्व च सतांदित्तामाण्ये मुद्गुतांत्त्वे शुद्धत्तमोर्व आहिएति वर्णा । ता एपेति वर्ष वेळवृ देववच्छरार्थ वोक्ता चैदसंवच्छरस्य वर्ष वर्ष भावे दीप्यमुद्गुतार्व बाहोरतेव यगिज्ञमाणे केवलए रक्षणिकमोर्व आहिएति वर्णा । ता एक्कुतीर्व राईविवादे वारीर्व वाच्छिमाण्या राईवियस्य राईविकमोर्व आहिएति वर्णा ता से वर्ष केवलए मुद्गु-

रगेण आहिएति वएज्ञा ? ता अद्वपचासए मुहुते तेतीस च घावट्टिभागे मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा, ता एस ण अद्वा दुवालसक्खुतकडा चदे सवच्छरे, ता से ण केव-इए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा ? ता तिणि चउपणे राइंदियसए दुवालस य घावट्टिभागे राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा, ता से ण केवइए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ? ता दस मुहुत्तसहस्रां छच्च पणवीसे मुहुत्तसए पणास च घावट्टिभागे मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा । ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्चस्स उद्दुसवच्छरस्स उद्दुमासे तीसइमुहुत्तेण ० गणिजमाणे केवइए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा ? ता तीस राइंदियाण राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा, ता से ण केवइए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ? ता णव मुहुत्तसयाइ मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा, ता एस ण अद्वा दुवालसक्खुतकडा उद्दु सवच्छरे, ता से ण केवइए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा ? ता तिणि सडे राइंदियसए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा, ता से ण केवइए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ? ता दस मुहुत्तसहस्राइ अद्व य सयाइ मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा । ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चउत्थस्स आइच्चसवच्छरस्स आडच्चे मासे तीसइमुहुत्तेण अहोरत्तेण गणिजमाणे केवइए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा ? ता तीस राइंदियाइ अवद्वभागं च राइंदियस्स राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा, ता से ण केवइए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ? ता णव पणरस मुहुत्तसए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा, ता एस ण अद्वा दुवालसक्खुतकडा आइच्चे सवच्छरे, ता से ण केवइए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा ? ता तिणि छावडे राइंदियसए राड-दियगेण आहिएति वएज्ञा, ता से ण केवइए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ? ता दस मुहुत्तस्स सहस्राइ णव असीए मुहुत्तसए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा । ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचमस्स अभिवद्वियसवच्छरस्स अभिवद्विए मासे तीसइमुहुत्तेण गणिजमाणे केवइए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा ? ता एकतीस राडियाइ एगूणतीस च मुहुत्ता सत्तरस घावट्टिभागे मुहुत्तस्स राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा, ता से ण केवइए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ? ता णव एगूणसडे मुहुत्तसए सत्तरस घावट्टिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा, ता एस ण अद्वा दुवाल-सक्खुतकडा अभिवद्वियसवच्छरे, ता से ण केवइए राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा ? ता तिणि तेसीए राइंदियसए एकवीस च मुहुत्ता अद्वारस घावट्टिभागे मुहुत्तस्स राइंदियगेण आहिएति वएज्ञा, ता से ण केवइए मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ? ता एकारस मुहुत्तसहस्राड पच य एकारस मुहुत्तमए अद्वारम घावट्टिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तमगेण आहिएति वएज्ञा ॥ ७० ॥ ता केवइय ते नोजुगे राइंदियगेण आहिएति

वएजा ? ता सतारस एकारपरप राहिरियमध्ये एकूणबींच च मुहुर्तं सतावध्ये बालद्वि  
भागे मुहुरात्स बालद्विभागे च उत्तद्विद्वा ठेता पञ्चमव्यं चुणियामागे राहिरियमोर्व  
आहिएवि वएजा ता से वर्ष केवःए मुहुरात्मोर्व आहिएवि वएजा ? ता वंपन्मुहुर्प-  
चहस्याई उत्त य अववाप्त्ये मुहुरात्मोर्व सतावध्यं बालद्विभागे मुहुरात्स बालद्वि  
भागे च उत्तद्विद्वा ठेता पञ्चमव्यं चुणियामागा मुहुरात्मोर्व आहिएवि वएजा ता  
केवःए वर्ष ते लग्नपत्नो राहिरियव्योर्व आहिएवि वएज्य ? ता अद्वीतींचे राहिरियव्यं इति य  
मुहुरात्स अतारि य बालद्विभागे मुहुरात्स बालद्विभागे च सत्तद्विद्वा ठेता वुशाळस चुणि-  
यामागे राहिरियमोर्व आहिएवि वएजा ता से वर्ष केवःए मुहुरात्मोर्व आहिएवि वएज्य ?  
ता एकारस फलादे मुहुरात्मोर्व अतारि य बालद्विभागे बालद्विभागे च सत्तद्विद्वा  
ठेता वुशाळस चुणियामागे मुहुरात्मोर्व आहिएवि वएज्य ता केवःए तुगे राहिरिय-  
मार्व आहिएवि वएज्य ? ता अद्वारात्मोर्वे राहिरियसपर राहिरियमोर्व आहिएवि वएज्य  
ता से वर्ष केवःए मुहुरात्मोर्व आहिएवि वएज्य ? ता अउप्यव्यं मुहुरात्सहस्रवृं वर्ष  
य मुहुरात्सयाई मुहुरात्मोर्व आहिएवि वएज्य ता से वर्ष केवःए बालद्विभागमुहुरात्मोर्व  
आहिएवि वएज्य ? ता अतारींसे सवसाहस्रवृं अद्वीतींसे च बालद्विभागमुहुरात्मोर्व  
बालद्विभागमुहुरात्मोर्व आहिएवि वएज्य ॥ ७१ ॥ ता क्या वर्ष एए आद्वचन्वं  
सवन्नवा उमाहवा समफलवसिया आहिरेवि वएज्य ? ता सह्ये एए आद्वचन्वं  
बालद्वि एए अदमासा एस य अदा उक्तद्वचन्वा वुशाळसुमक्ष्या तीर्ते एए अश्व-  
सवन्नवा एकतीस एए चंद्रसंवचन्वा तम्या वर्ष एए आद्वचन्वं उमाहवा  
उमपन्नवसिया आहितारि वएज्य ? ता क्या वर्ष एए अश्ववहुर्वचन्वक्षणा  
सवन्नवा उमाहवा समफलवसिया आहिरेवि वएज्य ? ता सह्ये एए आद्वचन्वं  
एकाद्वि एए अदमासा बालद्वि एए चंद्रमासा साह्ये एए उक्तद्वचन्वा एवं वर्ष अदा  
मुहुरात्समुहुरात्मोर्व वुशाळसुमक्ष्या सह्ये एए बालवा सवन्नवा एकाद्वि एए उक्तद्वचन्वा  
बालद्वि एए चंद्रा सवन्नवा उत्तद्विद्वा एए उक्तद्वचन्वा सवन्नवा तवा वर्ष एए आद्वच-  
न्वं उक्तद्वचन्वाता सवन्नवा उमाहवा समफलवसिया आहिरेवि वएज्य ? ता क्या वर्ष  
एए अमितविद्वचन्वाद्वचन्वहुर्वदन्वक्षणा सवन्नवा उमाहवा समफलवसिया आहिरेवि  
वएज्य ? ता सतावध्यं मासा सत्त व अदोरता एकारस य मुहुरात्मोर्वींसे बालद्विमासा  
मुहुरात्स एए अमितविद्वचन्वा मासा सह्ये एए अश्वमासा एमह्ये एए उक्तद्वचन्वा  
बालद्वि एए चंद्रमासा सत्तह्ये एए उक्तद्वचन्वा एवं अदा उप्यवसुमन्त्रहुर्वदन्वा  
वुशाळसुमक्ष्या उत्त सवा ओताव्य एए अमितविद्वचन्वा उक्तद्वचन्वा उत्त सवा अदीता  
एए वर्ष अदमासा सवन्नवा उत्त सवा उक्तद्विद्वा एए वर्ष उक्तद्वचन्वा उत्त अदा

एए ण चदा सवच्छरा, एकसत्तरी अट्टसया एए ण णक्खता सवच्छरा, तथा ण  
एए अभिवद्धिया आइच्चउड्चदणक्खता सवच्छरा समाइया समपज्ववसिया आहितेति  
वएजा, ता णयट्टयाए ण चदे सवच्छरे तिणिं चउप्पणे राइदियसए दुवालस य  
वावट्टिभागे राइदियसस आहिएति वएजा, ता अहातचेण चंदे संवच्छरे तिणिं  
चउप्पणे राइदियसए पंच य मुहुते पणास च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स आहिएति  
वएजा ॥ ७२ ॥ तत्य खलु इमे छ उड्ह पण्णता, तजहा-पाउसे वरिसारते सरए  
हेमंते वसते गिम्हे, ता सब्बेवि ण एए चदउड्ह दुवे २ मासाड चउप्पणेण २  
आयाणेण गणिजमाणा साइरेगाइ एगूणसद्धि २ राइदियाइ राइदियगेण आहितेति  
वएजा, तत्य खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णता, तजहा-तड्हे पव्वे सत्तमे पव्वे एकार-  
समे पव्वे पण्णरसमे पव्वे एगूणवीसइमे पव्वे तेवीसइमे पव्वे, तत्य खलु इमे छ  
अझरत्ता प०, त०-चउत्थे पव्वे अट्टमे पव्वे वारसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसइमे  
पव्वे चउवीसइमे पव्वे । छच्चेव य अझरत्ता आइच्चाओ हवति माणाहि । छच्चेव ओम-  
रत्ता चदाहि हवति माणाहि ॥ १ ॥ ७३ ॥ तत्य खलु इमाओ पञ्च वासिकीओ  
पञ्च हेमताओ आउटीओ पण्णत्ताओ, ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराणं पढम वासिकिं  
आउट्टि चदे केण णक्खतेण जोएड २ ता अमीइणा, अमीइस्स पढमसमएण, त  
समय च ण सूरे केण णक्खतेण जोएड २ ता पूसेण, पूस्सस एगूणवीस मुहुत्ता  
तेत्तालीस च वावट्टिभाग मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिहा छेत्ता तेत्तीस चुणिया-  
भाग सेसा, ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराण दोच्च वासिकिं आउट्टि चंदे केण  
णक्खतेण जोएड २ ता सठाणाहि, सठाणाण एकारसमुहुते ऊयालीस च वावट्टिभागा  
मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिहा छेत्ता तेपण चुणियाभाग सेसा, त समय च  
ण सूरे केण णक्खतेण जोएड २ ता पूसेण, पूस्सस ण तं चेव जं पढमाए, ता एएसि  
णं पचण्हं सवच्छराण तच्च वासिकिं आउट्टि चदे केण णक्खतेण जोएड २ ता  
विसाहाहि, विसाहाण तेरस मुहुत्ता चउप्पणं च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभागं  
च सत्तट्टिहा छेत्ता चत्तालीस चुणियाभागा सेसा, तं समय च ण सूरे केण णक्ख-  
तेण जोएड २ ता पूसेण, पूस्सस तं चेव, ता एएसि ण पचण्हं सवच्छराण चउत्थ  
वासिकिं आउट्टि चदे केण णक्खतेण जोएड २ ता रेवईहि, रेवईण पणवीस मुहुत्ता  
वासट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिहा छेत्ता चत्तीस चुणियाभागा सेसा,  
त समय च ण सूरे केण णक्खतेण जोएड २ ता पूसेण, पूस्सस त चेव, ता एएसि  
ण पंचण्हं सवच्छराण पञ्चम वासिकिं आउट्टि चंदे केण णक्खतेण जोएड २ ता  
पुञ्चाहि फरगुणीहि, पुञ्चाफरगुणीण वारस मुहुत्ता सत्तालीस च वावट्टिभागा

मुहुरतस्य वावद्विमार्गं च सताद्विदा ऐता वरस्य त्रुष्णिवामागा सेवा तं समवं च यं  
सूरे केव जन्मक्षेत्रं चोपद् ॥ ता पूर्णेष्वं पूर्षस्य तं चेत् ॥ ७४ ॥ ता एएसि वं  
पंचवृं उम्बुच्छराणं पठमे हेमति आरहि चरि केवं यक्षक्षेत्रं चोपद् ॥ ता इत्येवं  
इत्यस्य यं पञ्च मुहुर्षा पञ्चास्च च वावद्विमागा मुहुरतस्य वावद्विमार्गं च सताद्विदा  
ऐता चट्टिं त्रुष्णिवामागा सेवा तं समवं च य सूरे केवं जन्मक्षेत्रं चोपद् ॥ ता  
उत्तराहि आसाधाहि, उत्तराणं आसाधाणं चरिमसमए, ता एएसि वं पंचवृं उम्बुच्छ-  
राणं वोर्वं हेमति आरहि चरि केवं यक्षक्षेत्रं चोपद् ॥ ता सबमिसपाहि, सदभि  
समार्थं त्रुष्णिं मुहुर्षा अष्टुष्टीसं च वावद्विमाया मुहुरतस्य वावद्विमार्गं च सद्विदा  
ऐता उत्ताळीसं त्रुष्णिवामागा सेवा तं समवं च य सूरे केवं यक्षक्षेत्रं चोपद् ॥ ता  
उत्तराहि आसाधाहि, उत्तराणं आसाधाणं चरिमसमए, ता एएसि वं पंचवृं उम्बुच्छ-  
राणं चरित्यं हेमति आरहि चरि केवं यक्षक्षेत्रं चोपद् ॥ ता मूलेण्यं मूलस्तं तं  
मुहुर्षा अष्टुष्टीकर्णं च वावद्विमागा मुहुरतस्य वावद्विमार्गं च सद्विदा लेप्य वोर्वं  
त्रुष्णिवामागा सेवा तं समवं च यं सूरे केवं यक्षक्षेत्रं चोपद् ॥ ता उत्तराहि  
आसाधाहि, उत्तराणं आसाधाणं चरिमसमए, ता एएसि वं पंचवृं उम्बुच्छराणं  
पञ्चमे हेमति आरहि चरि केवं यक्षक्षेत्रं चोपद् ॥ ता करित्याहि, करिमानं अनुरस  
मुहुर्षा उत्ताळीसं च वावद्विमाया मुहुरतस्य वावद्विमार्गं च सताद्विदा ऐता छ त्रुष्णिवामागा  
सेवा तं समवं च वं सूरे केवं यक्षक्षेत्रं चोपद् ॥ ता उत्तराहि आसाधाहि, उत्तराणं  
आसाधाणं चरिमसमए ॥ ७५ ॥ तत्त्वं रम्यु इमे दसविहे जोए पञ्चते तीर्त्यान्त-  
भाणुओए ऐख्याकुश्येए मध्ये मंज्ञाइमंज्ञे छोते उत्ताळात्तो शुक्रदे यवसंमोर्यं पीमिए  
मंडयप्पुत्ते नामे इसमे ता एएसि वं पंचवृं समच्छराणं उत्ताळात्तो वोर्वं चरि वंति  
देसिं चोपद् ॥ ता अंतुरीक्षस्त ३ पाइनपाईयामयाए उत्तीजवाहिणामाए जीवाए मंडले  
पञ्चवृंसिं चुप्यं ऐता वाहिष्युरविमिंसि वाहिष्यमाम्बासंसि उत्ताळीसु माग उत्ता-  
न्यावेता अष्टुष्टीमृश्माग वीमहा ऐता अद्वारममाग उत्ताळावेता निहि मागेहि राहि  
क्षमाहि वाहिष्युरविमिंसि वाहिष्यमाम्बासंसि अस्तरते एत्वं च से चरि एत्यान्तहर्त जमे  
जोपद् ॥ उप्यि चरो मञ्ज्ञ नक्षत्रे देवा आद्येषे तं समवं च वं परे केवं यक्षक्षेत्रं  
चोपद् ॥ ता विताहि, चरिमसमए ॥ ७६ ॥ वारसमं पाणुहृ लमसे ॥ ७७ ॥

ता कह ते चटमसो वद्वोवद्वी आहितेति वएजा ? ता अट्ठ पचासीए मुहुत्तसए तीस च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स, ता दोसिणापक्खाओ अधयारपक्खमयमाणे चढे चत्तारि वायालसए छत्तालीस च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स जाइ चढे रजड, तजहा-पठमाए पठम भाग विड्याए विड्य भाग जाव पण्णरसीए पण्णरसम भाग, चरिम-समए चढे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चढे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्ण अमावासा, एत्य ण पढमे पव्वे अमावासा, ता अधयारपक्खो, तो ण दोसिणापक्खं अयमाणे चढे चत्तारे वायाले मुहुत्तसए छायालीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स जाइ चढे विरजइ, तं०-पठमाए पठम भाग विड्याए विड्यं भाग जाव पण्णरसीए पण्णरसम भाग, चरिमे समए चढे विरत्ते भवइ, अवसेससमए चढे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्ण पुणिमासिणी, एत्य ण दोच्चे पव्वे पुणिमासिणी ॥ ७७ ॥ तत्थ खलु इमाओ वावट्टिं पुणिमासिणीओ वावट्टिं अमावासाओ पण्णत्ताओ, वावट्टिं एए कसिणा रागा, वावट्टिं एए कसिणा विरागा, एए चउब्बीसे पव्वसए, एए चउब्बीसे कसिणरागविरागसए, जावइया ण पचण्ह सवच्छराण समया एगोण चउब्बीसेण समयसएणूणगा एवइया परित्ता असखेजा देसरागविरागसया भवंतीति मक्खाया, ता अमावासाओ ण पुणिमासिणी चत्तारि वायाले मुहुत्तसए छत्तालीस च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएजा, ता पुणिमासिणीओ ण अमावासा चत्तारि वायाले मुहुत्तसए छत्तालीस च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएजा, ता अमावासाओ ण अमावासा अट्टपचासीए मुहुत्तसए तीस च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएजा, ता पुणिमासिणीओ ण पुणिमासिणी अट्टपचासीए मुहुत्तसए तीस च वावट्टिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएजा, एस ण एवइए चढे मासे एस ण एवइए सगले जुगे ॥ ७८ ॥ ता चदेण अद्भुमासेण चढे कइ मडलाइ चरइ ? ता चोद्दस चउब्बागमंडलाइ चरइ, एग च चउब्बीससयभागं मडलस्स, ता आहेच्चेण अद्भुमासेण चढे कइ मडलाइ चरइ ? ता १४ वृद्धं मडलाइ चरइ, ता णक्खतेण अद्भुमासेण चढे कइ मडलाइ चरइ ? ता तेरस मंडलाइ चरइ, तेरस सत्तटिभागं मडलस्स, तया अवराइ खलु दुवे अट्टगाइ जाइ चढे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविंडिता २ चारं चरइ, कयराइ खलु ताइ दुवे अट्टगाइ जाइ चढे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविंडिता २ चारं चरइ ? ता इमाइ खलु ते वे अट्टगाइ जाइ चढे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविंडिता २ चारं चरइ, तजहा-णिक्खमयमाणे चेव अमावासतेण पविसमाणे चेव पुणिमासितेण, एयाइ खलु दुवे अट्टगाइ जाइ चढे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविंडिता २ चारं चरइ, ता पठमायणगाए चढे

दाहिकाए भागाए पवित्रमामे उत्त अद्यमंडलमई जाई चरि दाहिकाए भागाए पवित्रमामे चारे चरह, अनराई यहु ताई उत्त अद्यमंडलमई जाई चरि दाहिकाए भागाए पवित्रमामे चारे चरह । इमाई यहु ताई उत्त अद्यमंडलमई जाई चरे दाहिकाए भागाए पवित्रमामे चारे चरह, तंवा-पिंप अद्यमंडके चठत्वे नद मंडके छहु अद्यमंडके अद्युमे अद्यमंडके उत्तमे अद्यमंडके बारसमे अद्यमंडके चठत्वे नद मंडके एवाई यहु ताई उत्त अद्यमंडलमई जाई चरि दाहिकाए भागाए पवित्रमामे चारे चरह, ता फूमायषयए चरि उत्तराए भागाए पवित्रमामे उ अद मंडलमई तेरस य सत्ताहिमायाई अद्यमंडलस्स जाई चरि उत्तराए भागाए पवित्रमामे चारे चरह, अनराई यहु ताई उ अद्यमंडलमई तरस य सत्ताहिमायाई अद्यमंडलस्स जाई चरि उत्तराए भागाए पवित्रमामे चारे चरह । इमाई यहु ताई उ अद्यमंडलमई तेरस य सत्ताहिमायाई अद्यमंडलस्स जाई चरि उत्तराए भागाए पवित्रमामे चारे चरह, तंवा-तंशए अद्यमंडके फेवमे अद्यमंडके उत्तमे अद्यमंडके बबमे अद्यमंडके एट्टरसमे अद्यमंडके तेरसमे अद्यमंडके फूमरसमस्स अद्यमंडलस्स तेरस सत्ताहिमायाई, एवाई यहु ताई उ अद्यमंडलमई तेरस य सत्ताहिमायाई अद्यमंडलस्स जाई चरि उत्तराए भागाए पवित्रमामे चारे चरह, एताखता य फहमे वंदायमे समरो महार, ता अन्धराये अद्यमासे नो चरे अद्यमासे नो चरि अद्यमासे यद्यमासे ता गङ्गाधारायो अद्यमासायो से चरि चरिं अद्यमासेव चिह्निं चरह । ता एस अद्यमंडलमई चरह चतारि य सत्ताहिमायाई अद्यमंडलस्स एताहीयाए उत्ता य भागाई, ता दोबायषयए चरि उरथिमाए भागाए विश्वममाये सुचउप्यज्ञाई जाई चरि परस्स विष्वं पदिचरह, ता तेरसमर्द जाई चरि अप्पलो चिल्ले पदिचरह, ता दोबायषयाए चरि पवस्तिमाए भागाए विश्वममाये चठप्पज्ञाई जाई चरि फरस्स चिल्ले पदिचरह, छ तेरसगाई चरि चरि अप्पलो चिल्ले पदिचरह, अवरप्पर्द यहु दुये तरसगाई जाई चरि केष्य अचाम्यज्ञाई सुदमेव पवित्रिता १ चारे चरह, अनराई यहु ताई दुये तरसगाई जाई चरि केष्य अचाम्यज्ञाई नदमन पवित्रिता २ चारे चरह । इमाई यहु ताई दुये तरसगाई जाई चरि केष्य अचाम्यज्ञाई सुदमेव पवित्रिता ३ चारे चरह, ठ०-सम्प्रंगरे चर मंडके उत्तराहिरे चेत मैन्के एवाई यहु ताई दुये तरसगाई जाई चरि केष्य जारे चारे चरह एताखता दोबायषये समरो महार, ता वंदायम मासे यो चरि मासे यो अक्षयते मासे ता अक्षयते मासे चरिं मासेव दि अहिं चरह । ता दो अद्यमंडलमई चरह जहु य सत्ताहिमायाई अद्यमंडलस्स

सत्तद्विभागं च एकतीसहा छेता अट्टारस भागाइं, ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे वाहिराणतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्दमंडल्लस्स ईयालीस सत्तद्वि-भागाइ जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडिच्चरइ, तेरस सत्तद्विभागाइ जाइं चंदे परस्स चिण्ण पडिच्चरइ, तेरस सत्तद्विभागाइ चंदे अप्पणो परस्स चिण्ण पडिच्चरइ, एतावता वाहिराणतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्दमडले समते भवइ, ता तच्चायणगए चंदे पुरच्छिमाए भागाए पविसमाणे वाहिरतच्चस्स पुरच्छिमिल्लस्स अद्दमंडल्लस्स ईयालीस सत्तद्विभागाइ जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडिच्चरइ, तेरस सत्तद्विभागाइ जाइं चंदे अप्पणो परस्स चिण्ण पडिच्चरइ, एतावताव वाहिरतच्चे पुरच्छिमिल्ले अद्दमडले समते भवइ, ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे वाहिरचउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्दमडल्लस्स अद्दसत्तद्विभागाइ च एकतीसहा छेता अट्टारस भागाइ जाइ चंदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडिच्चरइ, एतावताव वाहिरचउत्थपच्चत्थिमिल्ले अद्दमडले समते भवइ । एव खलु चंदेण मासेण चंदे तेरस चउप्पणगाइं दुवे तेरसगाइं जाइ चंदे परस्स चिण्ण पडिच्चरइ, तेरस तेरसगाइं जाइ चंदे अप्पणो चिण्ण पडिच्चरइ, दुवे ईयालीसगाइं अट्ट सत्तद्विभागाइ सत्तद्विभाग च एकतीसहा छेता अट्टारसभागाइं जाइ चंदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडिच्चरइ, अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइ चंदे केणइ असामणगाइ सथमेव पविडिता २ चारं चरइ, इच्चेसो चंदमासोऽभिगमणणिक्षमणवृष्टिणिवृष्टिवणवट्टियसठाणसठिर्विउव्वणगिष्टिपत्ते रूवी चंदे देवे २ आहिएति वएज्जा ॥ ७९ ॥ तेरसमं पाहुडं समतं ॥ १३ ॥

ता क्या ते दोसिणा वहू आहितेति वएज्जा ? ता दोसिणापक्खे ण दोसिणा वहू आहितेति वएज्जा, ता कहं ते दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहितेति वएज्जा ? ता अधयारपक्खाओ णं० दोसिणा वहू आहिताति वएज्जा, ता कह ते अधयारपक्खाओ दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएज्जा ? ता अधयारपक्खाओ णं दोसिणापक्ख अयमाणे चंदे चत्तारि वायाले मुहुत्तसए छत्तालीस च वाचद्विभागे मुहुत्तस्स जाइ चंदे विरज्जइ, तं०-पठमाए पठम भाग विइयाए विइय भाग जाव पणरसीए पणरसम भाग, एव खलु अधयारपक्खाओ दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएज्जा, ता केवइया ण दोसिणापक्खे दोसिणा वहू आहिताति वएज्जा ? ता परित्ता असखेज्जा भागा । ता क्या ते अवयारे वहू आहिएति वएज्जा ? ता अधयारपक्खे ण अधयारे वहू आहिएति वएज्जा, ता कह ते अधयारपक्खे० वहू आहिएति वएज्जा ? ता दोसिणापक्खाओ ण अधयारपक्खे अधयारे वहू आहिएति वएज्जा,

ता कहे दोषियापक्षान्वो अंधवारफक्षे अंधवारे वहु आहिएति वप्त्वा । ता दोषियापक्षान्वो परं अंधवारफक्षे जयमाणे चरि चतारि वायते सुदूरास्थ वायालैर्व  
अ वायद्विमाणे सुदूरास्थ आहे चरि रजा, ते -फळमाप॒ पद्म॑ भाव॑ विह्वाए॒ विह्व॑  
भाग वाव॒ पञ्चरसीए॒ पञ्चरसम॑ भाव॑ एव॒ व्यु दोषियापक्षान्वो अंधवारफक्षे  
अंधवारे वहु आहिएति वप्त्वा ता तेजाए॒ अ अंधवारफक्षे अंधवारे वहु आहिएति  
वप्त्वा । ता परिता असेकेवा भावा ॥८॥ उचोइसम॑ पादुर्व॑ समर्ते प्र॑प्त्वा

ता व्यं ते सिंकमै॑ वल्ल॑ आहिरेति वप्त्वा । ता प्र॑प्ति अ अदिमसुरिमया॑-  
गणकम॑ चताराहस्यार्वं चरेहितो सुरा सिंवय॑ सुरेहितो पहा सिंकमै॑ योहितो  
अक्षद्वाता सिंकमै॑ अक्षहोरेहितो ठसा सिंकमै॑ सम्पर्प्य॑ वंदा सम्पर्प्यार्व॑  
वाय॒ ता एगमेष्वं सुदूरेव॑ चरि तेज्यावं मागस्याव॑ गच्छ॑ । ता वं अं मंडळे॑  
उद्यासमिता चार॑ चर॑ तस्य॑ २ मंडळपरिक्षेवस्य॑ सतारस॑ अदस्तु॑ मामस्य॑  
गच्छ॑ मंडळ॑ सम्पाद्यसेव॑ अद्वाप्तदैसपै॑ हेता ता एगमेष्वं सुदूरेव॑ वृरिए॑  
तेज्याव॑ मागस्याव॑ गच्छ॑ । ता वं अं मंडळ॑ उद्यासमिता चार॑ चर॑ तस्य॑ ३ मंडळ-  
परिक्षेवस्य॑ अद्वारस॑ तीर्ते भागस्य॑ गच्छ॑ मंडळ॑ सम्पाद्यसेव॑ व्युपाप्तदैसपै॑ हेता  
ता एगमेष्वं सुदूरेव॑ वक्षतो तेज्याव॑ मागस्याव॑ गच्छ॑ । ता वं अं मंडळ॑ उद्य-  
यासमिता चार॑ चर॑ तस्य॑ २ मंडळपरिक्षेवस्य॑ अद्वारस॑ पर्वतीर्ते भागस्य॑ गच्छ॑  
मंडळ॑ सम्पाद्यसेव॑ अद्वाप्तदैसपै॑ हेता ॥९॥ ता ज्ञा न वं गद्यसमावर्त्ते॑ वृरे॑  
गद्यसमावर्त्ते॑ भव॑ से अं गद्यसमावर्त्ते॑ तेज्याव॑ विसेस॑ । ता वायद्विमाणे॑ विसेस॑ अ  
ज्ञा न वं गद्य॑ गद्यसमावर्त्ते॑ वक्षतो गद्यसमावर्त्ते॑ भव॑ से अं गद्यसमावर्त्ते॑ विसेस॑ ।  
ता सत्त्व॑ भाव॑ विसेस॑ ता ज्ञा वं सूर॑ गद्यसमावर्त्ते॑ वक्षतो वं-  
समावर्त्ते॑ मव॑ से अं गद्यसमावर्त्ते॑ तेज्याव॑ विसेस॑ । ता वं गद्यसमावर्त्ते॑ विसेस॑,  
ता वं वं गद्य॑ गद्यसमावर्त्ते॑ अमीर्जनवत्तो गद्यसमावर्त्ते॑ पुरचिमाए॑ मावा॑ अ समावर्त्ते॑  
पुरचिमाए॑ मावा॑ अ समावर्त्ता॑ अ व्यु सुदूरे॑ सत्ताव॑ अ सत्ताव॑ सुदूरास्य॑  
वंदिन॑ सदि॑ जोय॑ जोय॑ जोय॑ जोय॑ जोय॑ जोय॑ अनुपरिवद्वा॑ विष्प-  
वद्वा॑ २ ता विषयज्ञो॑ यावि॑ भव॑, ता ज्ञा वं वं गद्य॑ गद्यसमावर्त्ते॑ वक्षतो॑  
गद्यसमावर्त्ते॑ पुरचिमाए॑ मावा॑ अ समावर्त्ते॑ पुरचिमाए॑ भावा॑ अ समावर्त्ता॑ तीर्ते॑  
सुदूरे॑ वंदिन॑ सदि॑ जोय॑ जोय॑ २ ता ज्ञा॑ अनुपरिवद्वा॑ जो॑ २ ता॑ विष्पवद्वा॑  
विषयज्ञो॑ यावि॑ भव॑, एव॑ एव॑ अभिमान॑ वेष्वं वेष्वं पञ्चरसमुदाय॑ वैष्वसुदूराम॑  
पर्वताव॑ युद्धाव॑ भावियम्बाव॑ याव॑ चलावावा॑ । ता ज्ञा वं वं गद्यसमावर्त्ते॑  
याव॑ गद्यसमावर्त्ते॑ पुरचिमाए॑ मावा॑ अ समावर्त्ता॑ पुर॑ २ ता॑ वं वं वं वं वं वं वं वं

जुजइ २ ता जोग अणुपरियद्व २ ता विप्पजहइ० विगयजोई यावि भवड । ता जया  
 णं सूरं गइसमावण्णं अभीईणक्खते गइसमावण्णे पुरच्छिमाए भागाए समासादेह  
 पुर० २ ता चत्तारि अहोरते छच्च मुहुते सूरेण सद्धि जोयं जोएइ २ ता जोय  
 अणुपरियद्व २ ता विप्पजहइ० विगयजोई यावि भवइ, एव अहोरता छ एक्कीस  
 मुहुता य तेरस अहोरता वारस मुहुता य वीस अहोरता तिण्णि मुहुता य सब्बे  
 भाणियव्वा जाव जया ण सूर गइसमावण्ण उत्तरासाढाणक्खते गइसमावण्णे पुरच्छि-  
 माए भागाए समासादेह पु० २ ता धीस अहोरते तिण्णि य मुहुते सूरेण सद्धि जोयं  
 जोएइ जो० २ ता जोय अणुपरियद्व जो० २ ता विप्पजहइ० विगयजोई यावि भवइ,  
 ता जया ण सूर गइसमावण्ण णक्खते गइसमावण्णे पुरच्छिमाए भागाए समासादेह  
 पु० २ ता सूरेण सद्धि जोय जुजइ २ ता जोयं अणुपरियद्व २ ता जाव विगय-  
 जोई यावि भवइ॥ ८२ ॥ ता णक्खतेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ०  
 ता तेरस मडलाइ चरइ तेरस य सत्तटिभागे मडलस्स, ता णक्खतेण मासेण सूरे-  
 कइ मडलाइ चरइ० ता तेरस मंडलाइ चरइ चोतालीस च सत्तटिभागे मंडलस्स,  
 ता णक्खतेण मासेण णक्खते कइ मडलाइ चरइ० ता तेरस मंडलाइ चरइ अद्ध-  
 सीयालीस च सत्तटिभागे मडलस्स, ता चदेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ० ता  
 चोहस चउभागाइ मडलाइ चरइ एग च चउव्वीससयभाग मडलस्स, ता चदेण  
 मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ० ता पण्णरस चउभागूणाइ मडलाइ चरइ एगं च  
 चउव्वीससयभाग मडलस्स, ता चंदेण मासेण णक्खते कइ मडलाइ चरइ० ता  
 पण्णरस चउभागूणाइ मडलाइ चरइ छच्च चउव्वीससयभागे मडलस्स, ता उहुणा  
 मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ० ता चोहस मडलाइ चरइ तीस च एगटिभागे  
 मडलस्स, ता उहुणा मासेण सूरे कइ मंडलाइ चरइ० ता पण्णरस मडलाइ चरइ,  
 ता उहुणा मासेण णक्खते कइ मडलाइ चरइ० ता पण्णरस मडलाइ चरइ पच्च य  
 वावीमसयभागे मडलस्स, ता आइच्चेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ० ता चोहस  
 मडलाइ चरइ एकारसभागे मडलस्स, ता आइच्चेण मासेण सूरे कइ मडलाइ  
 चरइ० ता पण्णरस चउभागाहियाइ मडलाइ चरइ, ता आइच्चेण मासेण णक्खते  
 कइ मडलाइ चरइ० ता पण्णरस चउभागाहियाइ मडलाइ चरइ पचतीस च चउ-  
 व्वीमसयभागमडलाइ चरइ, ता अभिवद्धिएण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ० ता  
 पण्णरस मडलाइ० तेसीइ छलसीयसयभागे मडलस्स, ता अभिवद्धिएण मासेण सूरे  
 कइ मडलाइ चरइ० ता सोलस मडलाइ चरइ तिहिं भागेहिं ऊणगाइ दोहिं अड्या-  
 लेहिं सरेहिं मडल छेता, ता अभिवद्धिएण मासेण णक्खते कइ मडलाइ चरइ० ता

सोक्षु मैदलार्द चरद सीयालीसुएँहि मागेहि अहिकार्द चोरमहि अद्यासीएहि मैदले  
हेता ॥ ८ ॥ ता एगमेवं अद्योरोर्य चर्द चर्द मैदलार्द चरद । ता एवं अद्य  
मैदलार्द चरद एहदीसाप मागेहि अर्य अहिं पञ्चरहेहि अद्यमहेहि हेता ता एगमेवं अद्यो-  
रोर्य अस्तुते चर्द मैदलार्द चरद । ता एवं अद्यमहेहि चरद शोहि मागेहि अद्यिवं  
हातहि नातीसेहि उपहि अद्यमहेहि हेता ता एगमेवं मैदले चर्द अद्यहि अहोरोहि  
चरद । ता शोहि अहोरोहि चरद एहदीसाप मागेहि अहियहि चउहि बोयाहेहि  
सणहि रवंशिपहि हेता ता एगमेवं मैदल चक्षुते चर्दहि अहोरोहि चरद । ता शोहि  
अहोरोहि चरद ता एगमेवं मैदल चक्षुते चर्दहि अहोरोहि चरद । ता शोहि  
अहोरोहि चरद तोहि अद्योहि शोहि उपहडेहि उपहि रवंशिपहि हेता ता शुभेवं  
चर्द कद मैदलार्द चरद । ता अद्य तुमसीए मैदलसाप चरद, ता शुभेवं सुरे चर्द  
मैदलर्द चरद । ता अद्यपञ्चारसीद्यम्हाए चरद, ता शुभेवं पक्षताते चर्द मैदलर्द  
चरद । ता अद्यारम पश्चीमे तुमाम्हेम्हसाप चरद । इतेसा सुदुतपर रिमाइम्ह-  
हरार्दियहुपमैद्यम्हिमता तिर्यपर्य वल्प् आधिरेति (बहुज्ञा) वेमि ॥ ८५ ॥  
पण्णरसम्भ पादुर्द समर्थ ॥ १५ ॥

ता चर्द ते तेतिपालक्ष्यते आधिरेति वपज्ञा । ता चंद्रेताइ य बोहित्रप च  
दीमिकाइ य चंद्रेताइ य के अद्वे डि सक्षमते । ता एगडु एगमसापे ता चर्द ते  
सुरम्हक्ष्यते आधिरेति वपज्ञा । ता शूरसेस्याद्य य आवैर य आवैर य मूरसंस्माद  
य के अद्वे डि सक्षमते । ता एगडु एगमसापे ता चर्द ते अव्याकाशसापे आधिरेति  
वपज्ञा । ता अपवारेइ य छायाइ य छायाइ य अपवारेइ य के अद्वे डि सक्षमते ।  
ता एगडु एगमसाप ॥ ८५ ॥ सोलसमी पादुर्द समर्थ ॥ १६ ॥

ता चर्द त अद्यगोरक्षाया आधिरेति वपज्ञा । तरय रामु इमाज्ञा वपरीते वहि  
द्योहिते पक्षतात्प्रा त -तरय एगे एकमार्द्यु-ता अद्याम्हक्षेत्र चीम्हक्षरिता अभी  
चर्दति अज्ञा उच्चर्दति एगे एकमार्द्यु । एमे पुज एकमार्द्यु-ता अद्युपुद्युवर्य  
चीम्हरिया अज्ञा चर्दति अज्ञा उच्चर्दति ३ एवं चर्देव हेता तरेव चर्द ता  
एमे पुज एकमार्द्यु-ता अद्युप्लायितिभायल्पितिमव चीम्हमृदिता अन्य चर्दी  
अज्ञा उच्चर्दति एमे एकमार्द्यु ४५ वर्य पुज एवं चर्द ता चीम्हरिया ने  
जाइतिता देता मदित्युषा महद्युर्या मदाक्षया महाक्षया महागोर्या महद्युर्या  
करण्यपरा वरमद्यपरा वरगोपपरा वरगम्हपरा अतोगितिभित्यव्याप ५० वर्ये अभी  
चर्दति अन्य उच्चर्दति ॥ ८५ ॥ मृतरसम्भ पादुर्द समर्थ ॥ १६ ॥

ता कह ते उच्चते आहितेति वएजा ? तत्य खलु इमाओ पणवीसं पडिवतीओ प०, त०-तत्येगे एवमाहसु-ता एग जोयणसहस्स सूरे उद्धु उच्चतेण दिवद्वृ चदे एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता दो जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वृइजाइं चदे एगे एवमाहसु २, एगे पुण एवमाहसु-ता तिण्ण जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वृट्टाइ चदे एगे एवमाहसु ३, एगे पुण एवमाहसु-ता चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वपचमाइ चदे एगे एवमाहसु ४, एगे पुण एवमाहसु-ता पच जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वद्वृट्टाइ चदे एगे एवमाहसु ५, एगे पुण एवमाहसु-ता छ जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वसत्तमाइ चदे एगे एवमाहसु ६, एगे पुण एवमाहसु-ता सत्त जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वद्वमाइ चदे एगे एवमाहसु ७, एगे पुण एवमाहसु-ता अद्व जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वणवमाइ चदे एगे एवमाहसु ८, एगे पुण एवमाहसु-ता णवजोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वदसत्तमाइ चदे एगे एवमाहसु ९, एगे पुण एवमाहसु-ता दस जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वएक्कारस चदे एगे एवमाहसु १०, एगे पुण एवमाहसु-ता एक्कारस जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वबारस चदे ११, एण अभिलावेण णेयव्व चारस सूरे अद्वतेरस चदे १२, तेरस सूरे अद्वचोद्दस चदे १३, चोद्दस सूरे अद्वपणरस चदे १४, पणरस सूरे अद्वसोलस चदे १५, सोलस सूरे अद्वसत्तरस चदे १६, सत्तरस सूरे अद्वअद्वारस चदे १७, अद्वारस सूरे अद्वएगूणवीस चदे १८, एगूण-वीस सूरे अद्ववीस चदे १९, वीस सूरे अद्वएक्कवीस चदे २०, एक्कवीस सूरे अद्व-वावीस चदे २१, वावीस सूरे अद्वतेवीस चदे २२, तेवीस सूरे अद्वचउवीस चदे २३, चउवीस सूरे अद्वपणवीस चदे एगे एवमाहसु २४, एगे पुण एवमाहसु-ता पणवीस जोयणसहस्साइ सूरे उद्धु उच्चतेण अद्वचव्वीस चदे एगे एवमाहसु २५। चय पुण एव वयामो-ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्ञाओ भूमिभागाओ सत्तणउइजोयणसए उद्धु उप्पइत्ता हेड्विले ताराविमाणे चारं चरइ अट्टजोयणसए उद्धु उप्पइत्ता सूरविमाणे चार चरह अट्टअसीए जोयणसए उद्धु उप्पइत्ता चदविमाणे चारं चरइ णव जोयणसयाइ उद्धु उप्पइत्ता उवरिं ताराविमाणे चार चरइ, हेड्विलाओ ताराविमाणाओ दसजोयणाइ उद्धु उप्पइत्ता सूरविमाणे चार चरइ णउइ जोयणाइ उद्धु उप्पइत्ता चदविमाणे चार चरइ दसोत्तर जोयणसय उद्धु उप्पइत्ता उवरिले ताराहवे चारं चरइ, चदविमाणाओ ण वीस जोयणाइ उद्धु उप्पइत्ता उवरिले ताराहवे चारं चरइ, एवामेव सपुञ्चावरेण दसुत्तर-

बोक्षमसत् वाहो तिरियमसेक्षेत्रे बोहसमिसए बोहसं भार भरह आहिरेति वहना ॥ ८० ॥ ता भरिं नं चरिमसुरियार्थ देवार्थ हिंदूपि तारास्ता अलृपि तुळामि समंपि तारास्ता अलृपि तुळामि चरिपि तारास्ता अलृपि तुळामि । ता भरिं ता वृ ते चरिमसुरियार्थ देवार्थ हिंदूपि तारास्ता अलृपि तुळामि चमंपि तारास्ता अलृपि तुळामि उपिपि तारास्ता अलृपि तुळामि । ता जहा जहा वं तेसि वं देवार्थ तचमियमांभवेराई चरित्याह मर्ति तहा तहा वं तेसि देवार्थ एवं मर्य दृश्या—व्युत्ते वा तुळामि वा ता एवं वृष्ट चरिमसुरियार्थ देवार्थ हिंदूपि तारास्ता अलृपि तुळामि तहेव वाव चरिपि तारास्ता अलृपि तुळामि ॥ ८१ ॥ ता एमभेगस्त वं चैदस्स देवस्स केवहया एवा परिकारे प केवहया वास्तवाता परिकारे पक्षतो केवहया तारा परिकारो पक्षतो । ता एमभेगस्त ल चैदस्स देवस्स व्यासीत्यग्ना परिकारो पक्षतो व्यासीरे पक्षताता परिकारो व्यासाते व्यासाति सहस्राई वज्र खेळ घ्याई खेलताई [पंचस्तरद] । एमससीधरिकारो तारापूर्व कोकिकोटीर्थ ॥ १ ॥ परिकारे प ॥ ८२ ॥ ता मैदरस्स वं पक्षमस्स केवस्स व्यासाहाए बोहसे भार चरह । ता एकारस एकावीरे बोक्षमसत् व्यासाहाए बोहसे भार चरह, ता अभेत्यात्मो वं केवहये व्यासाहाए बोहसे प ॥ ८३ ॥ ता अलृहीवे वं वीज व्यापे व्यक्ताते सम्बन्धताति भार चरह, व्यरे पक्षतो सम्बन्धताति भार चरह, क्यरे व्यक्तते सम्बन्धति भार चरह, व्यरे व्यक्तते सम्बन्धताति भार चरह ॥ ८४ ॥ ता अमीरी पक्षतो एम-मिताति भार चरह, मूळे पक्षतो सम्बन्धताति भार चरह, साई व्यक्तते सम्बन्धताति भार चरह, मरणी व्यक्तते सम्बन्धताति भार चरह ॥ ८५ ॥ ता चंद्रमित्यामेवे वं किस्तिए प । ता अद्यविहुगापठापसीठिए उम्भामियामए अस्मुम्ममम्मुतिव पद्धतिए विशिष्मविरयमतिविते वाव परिहवे एवं स्त्रियामेवे पद्धतिमाने पक्षयामियामेवे तारामियामेवे । ता चंद्रमियामेवे वं केवहये आयामविकलगेल केवस्से परि-स्त्रेवेव केवहये वाहोवेव प । ता इत्यर्थं एमद्विमागे बोक्षमस्स आवामविकलगेवे ते तिग्रुष सविसेव परिरएण व्यासीरे एपद्विमागे चेवस्सस्त व्याहोवेव पक्षतो ता सूरमियामेवे वं केवहये आवामविकलगेवे तुर्ष्य ता अद्यवालीरे प्रयद्विमागे व्येष-वस्तु आयामविकलगेवे ते तिग्रुष सविसेव परिरएण अद्यवोव वाहोवेव प । ता तारामियामेवे वं केवहये तुर्ष्य ता अद्यवोव आयामविकलगेवे ते तिग्रुष सविसेव परिरएल वं चंद्रपञ्चरी वाहोवेव

प० । ता चदविमाण ण कइ देवसाहस्रीओ परिवहंति ? ता सोल्स देवसाहस्रीओ परिवहंति, त०-पुरच्छिमेण सीहरूवधारीण चत्तारि देवसाहस्रीओ परिवहंति, दाहि-णेण गयरूवधारीण चत्तारि देवसाहस्रीओ परिवहंति, पच्चत्थिमेण वसहरूवधारीण चत्तारि देवसाहस्रीओ परिवहंति, उत्तरेण तुरगरूवधारीण चत्तारि देवसाहस्रीओ परिवहंति, एव सूरविमाणपि, ता गहविमाणे ण कइ देवसाहस्रीओ परिवहंति ? ता अटु देवसाहस्रीओ परिवहंति, त०-पुरच्छिमेण सीहरूवधारीण देवाण दो देवसाह-स्रीओ परिवहंति, एव जाव उत्तरेण तुरगरूवधारीण०, ता णक्खत्विमाणे ण कइ देवसाहस्रीओ परिवहंति ? ता चत्तारि देवसाहस्रीओ परिवहंति, त०-पुरच्छिमेण सीहरूवधारीण देवाण एका देवसाहस्री परिवहइ, एव जाव उत्तरेण तुरगरूवधारीण देवाण०, ता ताराविमाणे ण कइ देवसाहस्रीओ परिवहंति ? ता दो देवसाहस्रीओ परिवहंति, त०-पुरच्छिमेण सीहरूवधारीण देवाण पंच देवसाया परिवहंति, एवं जावुत्तरेण तुरगरूवधारीण० ॥ ९२ ॥ ता एएसि ण चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ताता-राहवाणं क्यरे २ हिंतो सिंघगई वा मदगई वा ? ता चदेहिंतो सूरा सिंघगई, सूरेहिंतो गहा सिंघगई, गहेहिंतो णक्खत्ता सिंघगई, णक्खतेहिंतो तारा० सिंघ-गई, सब्बप्पगई चदा, सब्बसिंघगई तारा० । ता एएसि ण चंदिमसूरियगहगण-णक्खत्ताराहवाण क्यरे २ हिंतो अप्पिष्टिया वा महिष्टिया वा ? ता तारा०हिंतो णक्खत्ता महिष्टिया, णक्खतेहिंतो गहा महिष्टिया, गहेहिंतो सूरा महिष्टिया, सूरे-हिंतो चंदा महिष्टिया, सब्बप्पष्टिया तारा०, सब्बमहिष्टिया चंदा ॥ ९३ ॥ ता जबुदीचे ण दीचे ताराहूवस्स य २ एस ण केवइए अबाहाए अतरे पण्णते ? ता दुविहे अतरे प०, त०-वाघाइमे य निव्वाघाइमे य, तत्थ णं जे से वाघाइमे से णं जहणेण दोणिण वावडे जोयणसए उङ्कोसेण वारस जोयणसहस्राई दोणिण वायाले जोयणसए ताराहूवस्स य २ अबाहाए अतरे पण्णते, तत्थ णं जे से निव्वाघाइमे से ण जहणेण पच धणुसयाइ उङ्कोसेण अद्वजोयण ताराहूवस्स य २ अबाहाए अतरे प० ॥ ९४ ॥ ता चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्ण-त्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त०-चंदप्पभा दोसिणाभा अच्छिमाली पभकरा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्री परिवारो पण्णतो, पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ चत्तारि २ देवीसहस्राइ परिवारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुब्बवरेणं सोल्स देवीसहस्रा, सेत्त तुडिए, ता पभू णं चदे जोइसिंदे जोइसराया चदवर्डिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरित्तए ? जो इणड्वे समड्वे, पभू ण चंदे जोइसिंदे जोइसराया चदवर्डिसए विमाणे

समाए सहस्राए वर्दंति सीहासपसि चरहि सामानियसहस्रीहि चरहि कम्महि  
सीहि सपरिकाराहि तिहि परिचाहि सताहि अविएहि सताहि अविवाहिएहि सोम्महि  
आवरक्षदेवसाहस्रीहि वर्णोहि च गौहि ज्वेषिएहि देवेहि देवीहि च सर्वि  
मह्या हवलहालीकाश्मर्त्तीलक्ष्माभृदिवश्मसुर्गप्रदृप्तवद्यरेव दिव्याह मेय-  
भोगार्थ भुज्माणे विहरितए कंठं परियारभिहीए ओ चेव च मेहुमवतियाए । या  
धरस्त च ज्वेषिदस्त ज्वेषारण्यो अ अम्महिसीओ प ॥ ता चतारि अम्म-  
महिसीओ प तंक्षा-धरप्त्वा आव्याव अविमानम् फर्मङ्ग्रा सेवै ज्ञा वर्दस्तु  
पावर सूखडेसए दिमावे जाव यो चेव च मेहुमवतियाए ॥ १५ ॥ ता ज्वेषिया-  
र्थ देवार्थ ज्वेषय चार्ह ठिई पक्षता ॥ ता वह्योर्थ अहमागपतियोवर्म उहोसेव्य  
पक्षियोवर्म वाससप्तहस्तमम्भाहि ॥ ता ज्वेषियीर्ण देवीर्ण ज्वेष्व चार्ह ठिई  
प ॥ ता वह्योर्थ अहुमागपतियोवर्म उहोसेव्य अदपतियोवर्म पक्षासाए वाए-  
सहस्रेहि अम्भाहि ॥ ता कंठिमावे च देवार्थ ज्वेष्व चार्ह ठिई पक्षता ॥ या  
वह्योर्थ अठम्भागपतियोवर्म उहोसेव्य पक्षियोवर्म वाससप्तहस्तमम्भाहि ॥ या  
वर्दमिमाणे च देवीर्थ ज्वेष्व चार्ह ठिई प ॥ ता वह्योर्थ अहुमागपतियोवर्म  
उहोसेव्य अदपतियोवर्म पक्षासाए वाससहस्रेहि अम्भाहि ॥ ता धरमिमावे च  
देवार्थ ज्वेषय चार्ह ठिई पक्षता ॥ ता वह्योर्थ अठम्भागपतियोवर्म उहोसेव्य  
पक्षियोवर्म वाससहस्रमम्भाहि ॥ ता धरमिमावे च देवार्थ ज्वेष्व चार्ह ठिई  
प ॥ ता वह्योर्थ अठम्भागपतियोवर्म उहोसेव्य अदपतियोवर्म कंठहि वामपरहि  
अम्भाहि ॥ ता गह्यिमाणे च देवार्थ ज्वेष्व चार्ह ठिई प ॥ ता वह्योर्थ वर्द-  
मागपतियोवर्म उहोसेव्य पक्षियोवर्म ता गह्यिमाणे च देवीर्थ ज्वेष्व चार्ह  
ठिई प ॥ ता वह्योर्थ अठम्भागपतियोवर्म उहोसेव्य अदपतियोवर्म या  
कष्टदाविमावे च देवार्थ ज्वेष्व चार्ह ठिई प ॥ ता वह्योर्थ अठम्भागपति-  
योवर्म उहोसेव्य अदपतियोवर्म ता नक्षत्रमिमावे च देवीर्थ ज्वेष्व चार्ह  
ठिई प ॥ ता वह्योर्थ अठम्भागपतियोवर्म उहोसेव्य अदपतियोवर्म ता व्यारा-  
मिमाणे च देवार्थ ज्वेष्व चार्ह ठिई प ॥ ता वह्योर्थ अठम्भागपतियोवर्म ता व्यारा-  
मिमाणे च देवार्थ ज्वेष्व चार्ह ठिई प ॥ ता एपति च वर्दिमापुरिकपरम्परा  
पतियोवर्म ता तारुमिमाणे च देवीर्थ ज्वेष्व ता व्यामिमाणे अठम्भागपतियोवर्म  
उहोसेव्य साइरेयअठम्भागपतियोवर्म ॥ १६ ॥ ता एपति च वर्दिमापुरिकपरम्परा  
पतियोवर्म ता व्यामिमाणे च देवीर्थ ज्वेष्व ता व्यामिमाणे अठम्भागपतियोवर्म  
उहोसेव्य साइरेयअठम्भागपतियोवर्म ॥ १७ ॥ ता एपति च वर्दिमापुरिकपरम्परा  
पतियोवर्म ता व्यामिमाणे च देवीर्थ ज्वेष्व ता व्यामिमाणे अठम्भागपतियोवर्म  
उहोसेव्य साइरेयअठम्भागपतियोवर्म ॥ १८ ॥ अनुपरस्तम् पादुर्वं समर्ते ॥ १८ ॥

ता कदू ण चदिमसूरिया सब्बलोय ओभासेति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति आहि-  
तेति वएजा २ तत्य खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त०-तत्येगे  
एवमाहसु-ता एगे चदे एगे सूरे सब्बलोय ओभासड उज्जोएइ तवेह पभासेइ० एगे  
एवमाहसु० १, एगे पुण एवमाहसु-ता तिण्ण चदा तिण्ण सूरा सब्बलोय ओभासेंति  
४० एगे एवमाहसु० २, एगे पुण एवमाहसु-ता आउट्टि चदा आउट्टि सूरा सब्बलोय  
ओभासेंति० ४ एगे एवमाहसु० ३, एगे पुण एवमाहसु-एएण अभिलाखेण पेयव्वं  
सत्त चदा सत्त सूरा दस चंदा दस सूरा वारस चदा वारस सूरा वायालीस चदा  
२ वावत्तरि चदा० २ वायालीस चदसय० २ वावत्तर चंदसय० वावत्तरं सूरसयं  
वायालीस चदसहस्र० वायालीस सूरसहस्र० वावत्तर चंदसहस्र० वावत्तर सूरसहस्र०  
सब्बलोय ओभासेंति० ४ एगे एवमाहसु० १२, वय पुण एव वयामो-ता अयण्ण  
जबुद्दीवे० २ जाव परिक्खेवेण०, ता जबुद्दीवे० २ केवइया चदा पभासिंसु वा पभासिंति  
वा पभासिस्सति वा० २ केवइया सूरा तविंसु वा तवेंति वा तविस्सति वा० २ केवइया  
णक्खत्ता जोय जोइसु वा जोएति वा जोइस्सति वा० २ केवइया गहा चारं चरिंसु  
वा चरंति वा चरिस्सति वा० २ केवइयाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा  
सोभेंति वा सोभिस्सति वा० २ ता जबुद्दीवे० २ दो चदा पभासेंसु वा० ३, दो सूरिया  
तवइसु वा० ३, छप्पण्ण० णक्खत्ता जोय जोएसु वा० ३, छावत्तरि गहसय० चारं चरिंसु  
वा० ३, एग सयसहस्र० तेत्तीस च सहस्रा० णव य सया पण्णासा तारागणकोडिको-  
डीण सोभ सोभेंसु वा० ३, “दो चदा दो सूरा णक्खत्ता खलु हवति छप्पणा० छावत्तरे०  
गहसय० जबुद्दीवे० विचारीण० ॥ १ ॥” एगं च सयसहस्र० तेत्तीस खलु भवे० सहस्राइ०  
णव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीण० ॥ २ ॥” ता जबुद्दीवे० ३ दीच लवणे०  
णाम समुद्रे वेंदे चल्यागारसठाणसठिए० सब्बओ समता सपरिक्खत्ताण० चिढ्ह०, ता  
लवणे० ४ समुद्रे किं समचक्कवालसठिए० विसमचक्कवालसठिए० ५ ता लवणसमुद्रे०  
समचक्कवालसठिए० णो विसमचक्कवालसठिए०, ता लवणसमुद्रे० केवइय० चक्कवाल-  
विक्खभेण० केवइय० परिक्खेवेण० आहिएति वएजा० ६ ता दो जोयणसयसहस्राइ०  
चक्कवालविक्खभेण० पण्णरस जोयणसयसहस्राइ० एक्कासीय च सहस्राइ० सयं च  
च्याल किंचिविसेसूण० परिक्खेवेण० आहिएति वएजा०, ता लवणसमुद्रे० केवइय० चदा  
पभासेंसु वा० ३० एव पुच्छा जाव केवइयाऽत तारागणकोडिकोडीओ० सोभिंसु वा० ३००  
ता लवणे० ४ समुद्रे चत्तारि चदा पभासेंसु वा० ३०, चत्तारि सूरिया तवइसु वा० ३००  
वारस णक्खत्तसय० जोय जोएसु वा० ३०, तिण्ण वावणा० महगहसया चारं चरिंसु  
वा० ३००, दो सयसहस्रा० सत्तट्टिं च सहस्रा० णव य सया तारागणकोडिकोडीण० सोभिंसु

वा ३ । पर्णरस स्वयंसहस्रा एहासीर्वं सर्वं च अथामः । किञ्चित्किसेसेष्वनो अन्नो-  
वहिष्ठो परिक्षेप्तो ॥ १ ॥ चतारि चेन चेदा चतारि च सुरिया अक्षतोए । चारस  
अक्षतास्यं गहान तिष्ठेत वायज्या ॥ २ ॥ हो चेन सवसहस्रा सतांषि कलु महे  
सहस्रार्थं । तत्र म समा अवपञ्जले तारागच्छेत्तिष्ठेत्तिष्ठं ॥ ३ ॥ ता अनन्तस्मृतं  
धार्यैस्तेव जामे तीव्रे चेव अम्भामारसंद्वगसंठिए तहेत वाव यो विसम्भालाक्षण्ठिए,  
जावैस्तेव न तीव्रे चेनह्यं वाहाङ्गमिक्तमिर्वेत्तिष्ठं परिक्षेप्तेव आहिएति वएज्ञा ।  
ता चतारि जोयनसवसहस्रार्थं अङ्गासमिक्तमिर्वेत्तिष्ठं ईवाम्भैर्वं जोयनसवसहस्रार्थं एव  
य सहस्राह यत्र च एगद्वे जोयनसए तिष्ठित्तिष्ठेत्तिष्ठे परिक्षेप्तेव आहिएति वएज्ञा  
वावैस्तेव तीव्रे केवश्या चेदा पमांसेत्तु वा ३ शुच्या तहेत ता वावैस्तेव ने  
तीव्रे वारस चेदा पमांसेत्तु वा ३ वारस सुरिया उमेष्टु वा ३ तिष्ठित्तिष्ठीसा  
अक्षतास्या जोर्व जोर्व वा ३ एव्य अन्नं महामहसहस्रार्थं वार चरितु वा ३  
बद्धेत उवसहस्रा तिष्ठित्तिष्ठं सहस्रार्थं यत्र च समार्थं । एगासीपरिक्षाहे ताराग-  
भेत्तिष्ठेत्तिष्ठे ॥ १ ॥ चेम खोमेष्टु वा ३—जावैस्तेवद्वरिक्षे ईयाळ इमुतारा अ-  
सहस्राह । यत्र समा य एगद्वे तिष्ठित्तिष्ठं ईवाम्भैर्वं जावैस्तेव उत्तिरित्तिष्ठो  
अक्षतास्या य तिष्ठित्तिष्ठीसा । एव्य च गहसहस्रार्थं लक्ष्मी वावैस्तेव य ३ ग  
बद्धेत उवसहस्रा तिष्ठित्तिष्ठं सहस्रार्थं यत्र च उमार्थं । वावैस्तेव तीव्रे तारागच्छेत्तिष्ठि-  
त्तिष्ठे ॥ २ ॥ ता वावैस्तेव च तीव्रे कामेए जामे यमुरे चेव अम्भामारसंठाल-  
संठिए वाव यो विसम्भालाक्षण्ठिएत्तिष्ठिए, ता कामेए च यमुरे कम्बर्य वाव-  
वामिक्तमिर्वेत्तिष्ठं केवह्यं परिक्षेप्तेव आहिएति वएज्ञा । ता कामेए च यमुरे बद्ध  
जोयनसवसहस्रार्थं अङ्गासमिक्तमिर्वेत्तिष्ठं पम्भते एहान्तर्वे जोयनसवसहस्रार्थं चतारि  
च सहस्रार्थं उव्य पंतुतरे जोयनसए तिष्ठित्तिष्ठेत्तिष्ठे परिक्षेप्तेव आहिएति चर्य  
ता कामेए च यमुरे केवश्या चेदा पमांसेत्तु वा ३ शुच्या ता कामेए समुरे  
वावैस्तेव चेदा पमांसेत्तु वा ३ वावैस्तेव सुरिया उमेष्टु वा ३ एव्य वावतार  
यावग्नास्या जोर्व जोर्व वा ३ तिष्ठित्तिष्ठं उव्य लक्ष्मीया महामहस्या वार  
चरितु वा ३ वावत उवसहस्रार्थं अद्वावैस्तेव च सहस्रार्थं यत्र च सवर्त्त पम्भता  
तारागच्छेत्तिष्ठेत्तिष्ठे चोम खोमेष्टु वा चोर्वति वा चेमित्तिष्ठेत्तिष्ठे वा ‘एयाम्भैर्वं  
समार्थं गहसहस्रार्थं परिक्षेव तस्य । अद्विवद्व उव्य पंतुतरार्थं वाम्भेयहिवरस्य ॥ १ ॥ व  
वावैस्तेव चेदा वावैस्तेव च तिष्ठित्तिष्ठा रिता । वाम्भेयहिविए च वार्तावैम्भेयस्या  
॥ २ ॥ अम्भामारसहस्रार्थं एगमेव अवतारं च सवमर्थं । उव्य वावा उव्य वाव  
माहा तिष्ठित्तिष्ठं वावस्या ॥ ३ ॥ अद्वावैस्तेव वाम्भेयहिविवारस य सहस्रार्थं । यत्र

य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीण ॥ ४ ॥” ता कालोय णं समुद्र पुक्खरवरे णाम दीवे वहे वलयागारसठाणसठिए सब्बओ समता सपरिक्षिताण चिट्ठइ, ता पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्षवालसठिए विसमचक्षवालसठिए ? ता समचक्षवाल-सठिए णो विसमचक्षवालसठिए, ता पुक्खरवरे णं दीवे केवइय समचक्षवालविक्ख-भेण केवइयं परिक्षेवेण ० ? ता सोलस जोयणसयसहस्साइ चक्षवालविक्खभेण एगा जोयणकोडी वाणउइ च सयसहस्साइ अउणावण च सहस्साइ अट्टचउणउए जोयणसए परिक्षेवेण आहिएति वएजा, ता पुक्खरवरे ण दीवे केवइया चदा पभासेसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता चोयालचदसय पभासेसु वा ३, चोत्ताल सूरियाणं सय तवइसु वा ३, चत्तारि सहस्साइ चत्तीस च णक्खता जोय जोएसु वा ३, वारस सहस्साइ छच्च वावत्तरा महगहसया चार चरिसु वा ३, छणउइसयसहस्साइ चोयालीस सहस्साइ चत्तारि य सयाडं तारागणकोडिकोडीणं सोभ सोमिसु वा ३, “कोडी वागउइ खलु अउणाणउड भवे सहस्साइ । अट्टसया चउणउया य परिरओ पोक्खरवरस्स ॥ १ ॥ चोत्ताल चंदसय चत्ताल चेव सूरियाण सर्य । पोक्खरवर-दीवम्मि चरंति एए पभासता ॥ २ ॥ चत्तारि सहस्साइ चत्तीस चेव हुंति णक्खता । छच्च सया वावत्तर महगहा वारह सहस्सा ॥ ३ ॥ छणउइ सयसहस्सा चोत्तालीस ० खलु भवे सहस्साइ । चत्तारि य सया खलु तारागणकोडिकोडीण ॥ ४ ॥” ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स ० वहुमज्जदेसभाए माणुसुत्तरे णाम पन्वए वलयागार-सठाणसठिए जे णं पुक्खरवरं दीव दुहा विभयमाणे २ चिट्ठइ, तजहा-अविभतर-पुक्खरद्द च वाहिरपुक्खरद्दं च, ता अविभतरपुक्खरद्दे ण किं समचक्षवालसठिए विसमचक्षवालसठिए ? ता समचक्षवालसंठिए णो विसमचक्षवालसठिए, ता अविभ-तरपुक्खरद्दे ण केवइय चक्षवालविक्खभेणं केवइय परिक्षेवेण आहिएति वएजा ? ता अट्ट जोयणसयसहस्साइ चक्षवालविक्खभेण एक्षा जोयणकोडी वायालीस च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइ दो अउणापणे जोयणसए परिक्षेवेण आहिएति वएजा, ता अविभतरपुक्खरद्दे ण केवइया चदा पभासेसु वा ३ केवइया सूरा तविसु वा ३ पुच्छा, ता वावत्तरि चदा पभासेसु वा ३, वावत्तरि सूरिया तवइसु वा ३, दोणिं सोला णक्खत्तसहस्सा जोयं जोएसु वा ३, छ महगहसहस्सा तिणिं य चत्तीसा चार चरेसु वा ३, अड्यालीससयसहस्सा वावीस च सहस्सा दोणिं य सया तारागणकोडिकोडीण सोभ सोमिसु वा ३ । ता समयक्खेते ण केवइय आयाम-विक्खभेण केवइय परिक्षेवेण आहिएति वएजा ? ता पणयालीसं जोयणसयसह-सहस्साइ आयामविक्खभेण एगा जोयणकोडी वायालीस च सयसहस्साइ दोणिं य

अठपापन्ने जीवनसाए परिस्तेवैर्यं बाहिरपि वद्या ता समयन्त्रेते र्थं केलदा  
वदा पमासेनु वा ३ पुष्टा तदेव ता वतीर्थं वैदस्यं पमासेनु वा ३ वतीर्थं सुरि  
वाण सर्वे लक्ष्मीनु वा ३ त्रिभ्यं सहस्रा छ्यं छन्दरद्या भक्षणात्तुमा जोर्वे जोल्लु  
वा ३ एहारस सहस्रा छ्यं सोम्यं महगाहस्या चारं चरितु वा ३ अमु-  
सीइ समसहस्रद्वं चतारीर्थं च सहस्रा सता व समा तारागामिकोद्दिकोद्दीर्थं  
सोमं खोमिषु वा ३ अद्वेष सबसाहस्रा अधिकारपुक्षदरस्य विश्वामो । पवाम-  
समसहस्रा भलुम्बेष्टस्तु विश्वामो ॥ १ ॥ जोरी वामालीर्थं सहस्रं दुर्लभा व  
अवरणपम्भासा । भलुम्बेष्टपरिरभो एमेव व पुक्षदरस्त्व ॥ २ ॥ वामतरि व  
वैदवा वामतरिम्ब रित्यवरा रिता । पुक्षदरकरीनु चरिति एए पमासेता ॥ ३ ॥  
त्रिभ्यं यवा छतीमा छ्यं याहस्रा महगाहार्थं द्वु । अम्बुदार्थं द्वु भवे लेव्वर्दं  
दुर्वे छासद्वं ॥ ४ ॥ अठवाल्लम्बसहस्रा वतीर्थं चक्षु भवे सहस्रद्वं । हो व  
सम पुक्षदरये तारागामिकोद्दिकोद्दीर्थं ॥ ५ ॥ वतीर्थं वैदसव वतीर्थं चेव सुरि  
वाण सर्वे । सम्भं भलुम्बेष्ट चरिति एए पमासेता ॥ ६ ॥ एहारस व सहस्रा  
छापि य दोला महगाहार्थं द्वु । छ्यं यवा छन्दरद्या भक्षणाता त्रिभ्यं व सहस्रा  
॥ ७ ॥ अमुसीइ चतारं उक्षसहस्रद्वं भलुम्बेष्टमि । सता व सवा भलुम्बा तारा-  
पम्भेष्टिकोद्दीर्थं ॥ ८ ॥ एमो तारापिंडो उक्षसमासेव मलुम्बेष्टमि । ब्रह्मिवा पुष्ट  
ताराभो विष्णेनु भविया असेयेता ॥ ९ ॥ एक्षस्य तारम्बं च मविं भलुम्बेष्टमि  
स्त्रेष्टमि । चारं अमुवालुप्तिक्षिव चेवर्थं चर्य ॥ १ ॥ रविष्टिगाहम्बवाण  
एक्षस्या बाहिवा भलुम्बेष्ट । वेति यामागोरी व पात्ताया पम्भेष्टिति ॥ ११ ॥  
अमष्टु विडगार्इ वैदवाल मलुम्बेष्टमिम । हो वदा हो सरा व दुर्वि एक्षेष्ट  
विडए ॥ १२ ॥ अमष्टु विडगार्इ भक्षणार्थं द्वु भलुम्बेष्टमिम । छ्यान्वे भक्षणा  
दुर्वि एक्षेष्ट विडए ॥ १३ ॥ अमष्टु विडगार्इ महगाहार्थं द्वु भलुम्बेष्टमिम । अवारि  
गहर्षयं हेव एक्षेष्ट विडए ॥ १४ ॥ वामारि व पतीक्षे वैदवाल मलुम्ब-  
भेष्टमिम । अमष्टु २ व हेव एक्षिक्षिव पटी ॥ १५ ॥ छन्दर्वं पतीक्षे भक्षणार्थं  
द्वु भलुम्बेष्टमिम । छाष्टु २ हवंति एक्षेदिवा पटी ॥ १६ ॥ अवारि गहर्ष  
पतीक्षयं हवर मलुम्बेष्टमिम । अमष्टु २ हवर म एक्षेदिवा पटी ॥ १७ ॥ ते  
मेस्त्रुम्बवरता प्याहिवालत्तमेवासा सम्बे । अप्यद्विभजेष्टि वैदा सरा एक्षस्या  
व ॥ १८ ॥ भक्षणातवरगार्थं अमष्टुया मंडलम मुलेयवा । तेवि व प्याहिवा-  
वालत्तमेव मेर्व भलुम्बर्ति ॥ १९ ॥ रमविवरविवरगार्थं उर्वं च अहे व उक्षमो  
भलिव । मंडलसंभवं पुष्ट सम्मितवाहिर त्रिपि ॥ २ ॥ रमविवरविवरगार्थं  
भलिव ।

णक्खत्ताण महगगहाण च । चारविसेसेण भवे सुहृदुक्खविही मणुस्साण ॥ २१ ॥  
 तेसि पविसताण तावक्खेत्तं तु वहृए णियय । तेणेव कमेण पुणो परिहायड णिक्ख-  
 मंताण ॥ २२ ॥ तेसि कल्वुयापुफ्सठिया हुति तावखेत्तपहा । अतो य सकुडा  
 वाहि वित्थडा चंदस्साण ॥ २३ ॥ केण वहृड चंदो॒ परिहाणी केण होड चदस्स॑ ।  
 कालो वा जोण्हो वा केणडणुभावेण चदस्स ॥ २४ ॥ किण्ह राहुविमाणं णिच्च चटेण  
 होइ अविरहिय । चउरगुल्मसपत्तं हिक्का चदस्स तं चरइ ॥ २५ ॥ वावहृं॒ २ दिवसे॑ २  
 उ सुव्वपक्खस्म । ज परिवहृड चदो यवेइ त चेव कालेण ॥ २६ ॥ पण्णरसइभागेण  
 य चद पण्णरसमेव त वरड । पण्णरसइभागेण य पुणोवि त चेव वक्मइ ॥ २७ ॥  
 एव वहृइ चंदो परिहाणी एव होइ चंदस्स । कालो वा जुण्हो वा एवडणुभावेण  
 चदस्स ॥ २८ ॥ अतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा उ उववण्णा । पचविहा जोइ-  
 सिया चंदा सूरा गहगणा य ॥ २९ ॥ तेण परं जे सेसा चदाइच्चगहतारणक्खत्ता ।  
 णत्यि गडं णवि चारो अवहिया ते मुणेयव्वा ॥ ३० ॥ एव जबुहीवे दुगुणा लवणे  
 चउगुणा हुति । लावणगा य तिगुणिया ससिसूरा धायईसडे ॥ ३१ ॥ दो चंदा इह  
 दीवे चत्तारि य सायरे लवणतोए । धायईसडे दीवे वारस चदा य सूरा य ॥ ३२ ॥  
 धायईसडप्पभिइसु उदिह्वा तिगुणिया भवे चदा । आहलचदसहिया अणतराणतरे  
 खेत्ते ॥ ३३ ॥ रिक्खगहतारणग दीवसमुद्दे जहिच्छसी णाउ । तस्ससीहिं तरगुणिय  
 रिक्खगहतारणग तु ॥ ३४ ॥ वहिया उ माणुसणगस्स चंदस्साणडवाहिया  
 जोण्हा । चदा अभीइजुता सूरा पुण हुति पुस्सेहिं ॥ ३५ ॥ चंदाओ सूरस्स य  
 सूरा चदस्स अतर होइ । पण्णाससहस्साइ तु जोयणाण अणूणाइ ॥ ३६ ॥ सूरस्स  
 य २ ससिणो २ य अतरं होइ । वाहिं तु माणुसणगस्स जोयणाण सयसहस्स ॥ ३७ ॥  
 सूरंतरिया चंदा चदतरिया य दिण्यरा दित्ता । चित्ततरलेसागा सुहैलेसा मदलेसा  
 य ॥ ३८ ॥ अद्वासीइं च गहा अद्वावीस च हुति णक्खत्ता । एगससीपरिवारो  
 एतो ताराण वोच्छामि ॥ ३९ ॥ छावहिसहस्साइं णव चेव सयाइ पचसयराइं ।  
 एगससीपरिवारो ताराणकोडिकोहीण ॥ ४० ॥ ता अतो मणुस्सखेत्ते जे चदिससूरिया  
 गहगणणक्खत्तारास्वा ते णं देवा कि उद्धोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोव-  
 वण्णगा चारोववण्णगा चारट्टिइया गइरहिया गइसमावण्णगा॑ ता ते ण देवा णो  
 उद्धोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा णो चारट्टिइया  
 गइरहिया गइसमावण्णगा उद्धासुहक्लुयापुफ्सठाणपस्तिएहिं जोयणसाहसिएहिं  
 तावक्खेत्तेहिं साहसिएहिं वाहिराहि य वेउव्वियाहिं परिसाहिं महया हयणहि-  
 गीयवाइयतीतलतालतुडियधणमुहगपहुप्पवाइयरवेणं महया उक्किट्टिसीहणायक्ल-



स्साइ चक्कवालविक्खमेण असखेजाइ जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण आहिएति वएजा, ता रुग्गे ण दीवे केवइया चदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा, ता रुग्गे ण दीवे असखेजा चदा पभासेंसु वा ३ जाव असखेजाओ तारागणकोडिकोहीओ सोभ सोभेंसु वा ३, एव रुग्गे समुद्रे रुग्गवरोदे दीवे रुग्गवरोदे समुद्रे रुग्गवरोभासे दीवे रुग्गवरोभासे समुद्रे, एव तिपडोयारा गेयव्वा जाव सूरे दीवे सूरोदे समुद्रे सूरवरे दीवे सूरवरे समुद्रे सूरवरोभासे दीवे सूरवरोभासे समुद्रे, सब्बेसिं विक्खभपरिक्खेवजोइ-साडं रुग्गवरदीवसरिसाइ, ता सूरवरोभासोदण्ण समुद्र देवे णाम दीवे वडे वलयागारसठाणसठिए सब्बओ समता सपरिक्खित्ताण चिट्ठृ जाव णो विसमचक्कवाल-सठिए, ता देवे ण दीवे केवइय चक्कवालविक्खमेण केवइय परिक्खेवेण आहिएति वएजा ? ता असखेजाइ जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खमेण असखेजाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण आहिएति वएजा, ता देवे ण दीवे केवइया चदा पभासेंसु वा ३ पुच्छा तहेव, ता देवे ण दीवे असखेजा चदा पभासेंसु वा ३ जाव असखेजाओ तारागणकोडिकोहीओ० सोभेंसु वा ३। एव देवोदे समुद्रे णागे दीवे णागोदे समुद्रे जक्खे दीवे जक्खोदे समुद्रे भूए दीवे भूओदे समुद्रे सयभुरमणे दीवे सयंभुरमणे समुद्रे सब्बे देवदीवसरिसा ॥ ९९-१००-१०१ ॥ पगूणवीसइमं पाहुडं समत्तं ॥ १९ ॥

ता कह ते अणभावे आहिएति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ दो पठिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०-तत्थेगे एवमाहसु-ता चदिमसूरिया ण णो जीवा अजीवा णो घणा झुसिरा णो वादरवोंदिघरा कलेवरा णत्थि ण तेसिं उद्भाणेह वा कम्मेह वा बल्लेह वा वीरिएह वा पुरिसक्कारपरक्कमेह वा ते णो विज्ञुं लवंति णो असर्णि लवति णो थणिय लवति, अहे य ण वायरे वाउकाए समुच्छिइ अहे य ण वायरे वाउकाए समुच्छिता विज्ञुपि लवति असर्णिपि लवति थणियपि लवंति एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता चदिमसूरिया ण जीवा णो अजीवा घणा णो झुसिरा वादर-बुदिघरा कलेवरा अत्थि ण तेसिं उद्भाणेह वा० ते विज्ञुपि लवति ३ एगे एवमाहसु २, वय पुण एवं वयामो-ता चदिमसूरिया ण देवा महिष्मिया जाव महाणुभागा वरवत्यधरा वरमल्लधरा० वराभरणधारी अवोच्छित्तिणयद्वयाए अणे चयति अणे उववज्जति० ॥ १०२ ॥ ता कह ते राहुकम्मे आहिएति वएजा ? तत्थ खलु इमाओ दो पठिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं०-तत्थेगे एवमाहसु-ता अत्थि ण से राहू देवे जे ण चद वा सूर वा गिण्हृ एगे एवमाहसु १, एगे पुण एवमाहसु-ता णत्थि ण से राहू देवे जे ण चद वा सूर वा गिण्हृ० २,

तत्त्व जे ते एकमाहांशु-ता अरिषं ने से राहू देवे जे न चढ़ वा सूरे वा गिरवा, ते एकमाहांशु-ता राहू जे देवे चंद्र वा सूरे वा गेष्ठनाले मुद्रारेष्य गिरिष्ठा तुर्यं तेर्वं मुक्त तुर्यरेष्य गिरिष्ठा मुद्रारेष्य मुक्त मुद्रारेष्य गिरिष्ठा मुद्रारेष्य मुक्त, वाममुपरेष्टं गिरिष्ठा वाममुपरेष्टं मुक्त वाममुपरेष्टं गिरिष्ठा वामिकमुपरेष्टं मुक्त वामिकमुपरेष्टं गिरिष्ठा वाममुपरेष्टं मुक्त वामिकमुपरेष्टं गिरिष्ठा वामिक-मुक्तरेष्य मुक्त, तत्त्व जे ते एकमाहांशु-ता अरिषं ने से राहू देवे जे न चंद्र वा सूरे वा गेष्ठन, ते एकमाहांशु-ता इमे पञ्चरस छित्रपोमास्त्र प तं -सिंचावए चरिक्त द्वारए यन्न भंडमे दीजने सीजके द्विमधीयके केसासे अहनामे परिज्ञए यमस्त्रए रविम्प्र यिप्पम्प्र राहू, ता ज्या र्वं एए पञ्चरस चरिणा पोमास्त्र स्वा चंद्रस्त्र वा सूरस्त्र वा द्वेषाख्यवद्यारिष्यो मर्त्यि तथा र्वं मातुस्त्रम्भेश्यि मातुस्त्रा एर्वं वर्यति—एर्वं यहू चंद्र वा सूरे वा गेष्ठन ३ ता ज्या र्वं एए पञ्चरस चरिणा पोमास्त्र जो स्वा चंद्रस्त्र वा सूरस्त्र वा द्वेषाख्यवद्यारिष्यो मर्त्यि तथा र्वं मातुस्त्र-म्भेश्यि मातुस्त्रा एर्वं वर्यति—एर्वं यहू चंद्र वा सूरे वा गेष्ठन एर्वं एकमाहांशु र्वं युज एर्वं यवासो-र्ता राहू र्वं देवे महित्विए नहातुमावे वरवत्त्वपरे ज्या वरामरणयारी राहूस्त्र ज देवस्त्र यन्न जामधेजा प तं -सिंचावए चरित्यम्प्र द्वारए ज्येतए इहूरे भगरे भक्ते चक्षुमे चित्तस्त्रप्ये ता राहूस्त्र र्वं देवस्त्र द्विमाता फैक्ष-क्षण्या प तं—सिंचावायीम्प्र म्भेश्या हात्तिणा द्विमिका अरिषं चरिक्त द्वारए राहूमिमाये व्यावधिक्षमामे प अरिषं यात्तिणाये राहूमिमाये द्वात्तरात्तिणामे प ता ज्या र्वं राहूदेवे आगच्छमाये वा गच्छमाये वा चित्तमेष्टमे आवरिता पञ्चरिष्टमेष्ट बीरैक्षमइ तथा र्वं पुरचित्तमेष्ट धंडे वा सूरे वा उचरिष्ट पञ्चरिष्टमेष्ट राहू ज्या र्वं राहूदेवे आगच्छमाये वा गच्छमाये वा चित्तमेष्टमाये वा परिमारेमाये वा चंद्रस्त्र वा सूरस्त्र वा गेष्ठन वा चाहित्वेष्ट आवरिता उत्तरपञ्चरिष्टमेष्ट बीरैक्षम ज्या र्वं राहू देवे आगच्छमाये वा गच्छमाये वा परिमारेमाये वा चंद्रस्त्र वा चाहित्वपुरचित्तमेष्ट चंद्र वा सूरे वा उचरिष्ट उत्तरपञ्चरिष्टमेष्ट राहू ज्या र्वं राहू देवे आगच्छमाये वा गच्छमाये वा परिमारेमाये वा चंद्रस्त्र

वा सूरस्स वा लेस दाहिणपञ्चत्थिमेण आवरित्ता उत्तरपुरच्छिमेण वीईवयइ तया ण  
दाहिणपञ्चत्थिमेण चदे वा सूरे वा उवदंसेइ उत्तरपुरच्छिमेण राहू, एण अभि-  
लवेण उत्तरपञ्चत्थिमेण आवरेत्ता दाहिणपुरच्छिमेण वीईवयइ, उत्तरपुरच्छिमेण  
आवरेत्ता दाहिणपञ्चत्थिमेण वीईवयइ, ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा०  
चदस्स वा सूरस्स वा लेस आवरेमाणे चिट्ठइ [आवरेत्ता वीईवयइ], तया ण मणुस्स-  
लोए मणुस्सा वयति-एव खलु राहुणा चदे वा सूरे वा गहिए०, ता जया ण राहू  
देवे आगच्छमाणे वा० चदस्स वा सूरस्स वा लेस आवरेत्ता पासेण वीईवयइ तया ण  
मणुस्सलोयमि मणुस्सा वयति-एव खलु चदेण वा सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा०,  
ता जया ण राहुदेवे आगच्छमाणे वा० चदस्स वा सूरस्स वा लेस आवरेत्ता  
पञ्चोसक्कइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति-एवं खलु राहुणा चदे वा सूरे वा  
वते० राहुणा० २, ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा० चदस्स वा सूरस्स वा  
लेस आवरेत्ता मज्जमज्जेण वीईवयइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति० राहुणा  
चंदे वा सूरे वा वीडीयरिए० राहुणा० २, ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे०  
चदस्स वा सूरस्स वा लेस आवरेत्ताण अहे सपकिख सपडिदिसिं चिट्ठइ तया ण  
मणुस्सलोयसि मणुस्सा वयति० राहुणा चदे वा० घत्थे० राहुणा० २। ता  
कइविहे ण राहू प० २ ता दुविहे प०, त०-धुवराहू य पव्वराहू य, तत्थ ण जे  
से धुवराहू से ण वहुलपक्खस्स पाडिवए पण्णरसइभाणे० भागं चदस्स लेस आवरे-  
माणे० चिट्ठइ, त०-पढमाए पठम भाग जाव पण्णरसम भागं, चरमे समए चदे  
रत्ते भवइ, अवसेसे समए चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, तमेव सुष्कपक्खे उवदंसेमाणे० २  
चिट्ठइ, त०-पढमाए पठमं भाग जाव चदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समए चदे  
रत्ते य विरत्ते य भवइ, तत्थ ण जे से पव्वराहू से जहण्णेण छ्यह मासाण, उक्कोसेण  
बायालीसाए मासाण चदस्स अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स ॥ १०३ ॥ ता कह  
ते चदे ससी० २ आहिएति वएज्जा० २ ता चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियके  
विमाणे कता देवा कताओ देवीओ कताइ आसाणसयणस्थमभडमत्तोवगरणाइ अप्प-  
णावि य ण चदे देवे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कते सुभगे पियदसणे सुरुवे ता  
एव खलु चदे ससी० चंदे ससी आहिएति वएज्जा० । ता कहूं ते सूरिए आइचे सूरे० २  
आहिएति वएज्जा० २ ता सूराइया ण समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूइ वा  
योवेइ वा जाव उस्सपिणियोसपिणीइ वा, एव खलु सूरे आइचे० २ आहिएति  
वएज्जा० ॥ १०४ ॥ ता चदस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कह अगमहिसीओ  
पण्णत्ताओ० २ ता चदस्स० चत्तारि अगमहिसीओ पण्णत्ताओ, त०-चदप्पमा

दोसिणामा अविमास्त्री परमंकरा अहा देहा तं चेव चाव यो चेव य मेहुष्वतिं एव  
परस्परि शेषम्बरं ता अविमस्त्रिया वी ओहसिदा वं खोहसरामानो देरिसए वामभोये  
परमुम्भमामा दिहरिति । ता ऐ वाहायामए—जेव पुरिसे पदमबोध्यकुप्रवल्लम्भते  
फटमबोध्यकुद्वायमस्तुमत्त्वाए भारिजाए सर्वि अविरवत्तिक्षित्वा है अत्यत्ती अस्पत्ते  
सप्तयाए उत्तम्भासरिप्पत्तिए से ये तमो यम्भदे च्यवत्ते अप्पहस्तम्भी पुरात्ति दिवर्ता  
इम्भमामाए ज्ञाए मुद्दप्पामेसाहं मंपम्भरं वत्तारं परपरिहितए वाप्पमाहायामरयाहीम्भं  
सरीरे मथुर्यं पालीतागमुद्दे अद्वारसर्ववचाऽऽल मोक्षं युते समाचे तंत्रि तारिष्यांति  
वासवर्त्ति भंतो वाहिरणो द्विमिवक्षुम्भे विवित्तानेवाविवित्तानेवे गुहुष्मसुविमाणस्  
मिमाए मविरवप्पगासिर्वप्पवारे अज्ञायामकर्त्तुल्लक्ष्ममप्तमांसुवामिहुमे  
पुरांपवर्गांति गंपवडिम्पु पति तारिष्यांति सप्तविक्षंति तुह्ये उत्तप्ते मक्षो  
वक्षंमीरे सांक्षिगणवाहित् पण्यात्पर्वदविव्वोक्त्ये द्वारम्भे गंपापुक्षियामुवावद्वक्षांति-  
षए मुविरवप्पत्ताये बोवविम्भोमियहोमतुगृह्यप्पत्तिलक्ष्मणे रत्तमुवल्लुदे मुरम्भे  
वाहीयगस्यद्वारयवलीवद्वायदे द्वागवरख्यमुप्पत्तिवद्वायोव्यारक्षितिए ताप तारिष्याए  
मारियाए सर्वि लिंगारायारप्पामेसाए संगवगम्भाविम्भमविवित्तिवस्त्रविक्षासुवि-  
दन्तुशुद्धेव्यारक्षुम्भाए अद्वाराविरत्ताए मणाकुम्भाए एमतराम्भसुते अन्तर्वत् इत्यं  
मयं भक्ष्यमाने द्वौ सद्वरिचरत्तद्वर्गेषे पंचविहो भाषुम्भसए काममेगे परम्भम्भ  
माने विहरिजा ता से यं पुरिसे वित्तसम्भवाम्भम्भिति देरिष्यं सामालेन्द्रं पर्वत्  
मक्षामाये विहृद् । उरार्थं समकाढ्हो । ता दृष्ट वं पुरिस्त्वं काममेगेहित्ये पृथ्वी  
मर्जनतुग्नविहित्तुरा चेव चापमर्तवार देवार्थं चममोगा चापमर्तवारं देवार्थं काम-  
मोगाहितो वर्षत्तुग्नविहित्तुरा चेव असुरिवविक्षार्थं मक्षवाणीर्ण देवार्थं काममेगा  
अष्टुरिवविक्षार्थं देवार्थं काममेगेहितो वर्षत्तुग्नविहित्तुरा चेव असुखुमार्थं  
हंपमूर्यार्थं चमार्थं काममेगा असुखुमार्थं देवार्थं चममोगेहितो गहयम्भ  
क्षवातारभवार्थं काममेगा यहुगणयक्षवात्तापस्त्रार्थं काममोगेहितो वर्षत्तुग्न-  
विहित्तुरा चेव वर्षिमस्त्रियार्थं देवार्थं काममेगा ता एरिष्यं वं वर्षिमस्त्रिया  
ओहसिदा ओहसरयानो काममेगे परम्भममामा दिहरिति ॥ १ ॥ ५ ॥ तत्त चौ  
द्वे अद्वारसिद्धे महम्भद्वा दम्भता तं—स्यार्थं विप्रत्वं स्पेदित्वे सवित्तुर्दे अद्व  
द्वित वाहुमिति चौ द्वारे क्षम्भप्त्वं चमविवाप्त्वं । क्षम्भर्तानै दोमे दहित्व  
आसासने क्षम्भप्त्वं क्षम्भर्त अद्वारप्त्वं दहित्वं संले दहित्वामे ३ सद्वक्ष्यामे वंति  
वंसवामे क्षम्भवामे चौके भौम्भेमासे रूपे इप्पोमासे भासे भासवाती ३ तिके  
विहित्तुप्रवाये द्वे दग्धव्ये क्षम्भ वंति इत्यमी पूर्वेभ्य इति विप्रत्वं ५ द्वे

सुष्वे वहस्सई राहू अगतधी माणवए कामफासे धुरे पसुहे वियडे ५० विसधी कप्पे-  
हए पड़हे जडियालए अरणे अगिगल्लए काले महाकाले सोत्तिए सोवत्तिए ६० वद्ध-  
माणगे पलवे गिच्चालोए णिच्चुजोए सयपमे ओभासे सेयंकरे खेमकरे आभकरे  
पमंकरे ७० अरए विरए अमोगे विसोगे विमले विवते विवत्थे विसाले साले  
चुब्बए ८० अणियटी अणाविए एगजडी दुजडी करकरिए रायगगले पुफकेझ  
भावकेझ ९० ॥ १०६ ॥ वीसइमं पाहुडं समत्तं ॥ २० ॥

इह एस पाहुडत्या अभव्वजणहियदुलहा डणमो। उक्षित्तिया भगवया जोहगरा-  
यस्स पणत्ती ॥ १ ॥ एस गहियावि सता थडे गारवियमाणिपडिणीए। अवहुस्युए  
ण देया तव्विवरीए भवे देया ॥ २ ॥ सद्धाधिडउट्टाणुच्छाहकम्मवलवीरियपुरि-  
सकारेहैं। जो सिक्खओवि सतो अभायणे परिकहेजाहि ॥ ३ ॥-सो पवयणकुलगण-  
सधवाहिरो णाणविणयपरिहीणो। अरहतथेरगणहरमेर किर होइ वोलीणो ॥ ४ ॥  
तम्हा धिइट्टाणुच्छाहकम्मवलवीरियसिक्खय णाण। धारेयव गियमा ण व  
अविणीएसु दायच्च ॥ ५ ॥ वीरवरस्स भगवओ जरमरणकिलेसदोमरहियस्यु।  
वदामि विणयपणओ सोकखुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ १०७ ॥ चदपणत्ती नमना ॥





ણમોડત્યુ ણં સમણસ્સ ભગવાઓ ણાયપુત્તમહાવીરસ્સ

# સુત્તાગમે

તત્થ ણં

## સૂરિયપણન્તી

ણમો અરિહ્તાણ ણમો સિદ્ધાણ ણમો આયરિયાણ ણમો ઉવજ્જાયાણ ણમો લોએ સબ્વસાહ્રણ । તેણ કાલેણ તેણ સમએણ મિહિલા ણામ ણયરી હોત્થા રિદ્વાટ્યિ-મિયસમિદ્વા પસુઇયજણજાણવયા પામાદીયા ૪ । તીસે ણ મિહિલાએ ણયરીએ વહિયા ઉત્તરપુરચ્છિમે દિસીભાએ માણિભદે ણામ ઉજાણે હોત્થા વણાઓ । તીસે ણ મિહિલાએ ણયરીએ જિયસત્તુ ણામ રાયા હોત્થા વણાઓ । તસ્સ ણ જિય-સત્તુસ્સ રણો ધારિણી ણામ દેવી હોત્થા વણાઓ । તેણ કાલેણ તેણ સમએણ તમ્મ ઉજાણે સામી સમોસઢે, પરિસા ણિગયા, વમ્મો કહિઓ, પરિસા પઢિગયા જાવ રાયા જામેવ દિસિ પાઉભૂએ તામેવ દિસિ પઢિગએ ॥ ૧ ॥ તેણ કાલેણ તેણ સમએણ સમણસ્સ ભગવાઓ મહાવીરસ્સ જેટે અતેવાસી ઇદભૂઈ ણામ અણગારે ગોયેમે ગોતેણ સત્તુસ્સેહે સમચર્દરંસસઠાણસઠિએ વજરિસહણારાયસઘયણે જાવ એવ વયાસી-કહ મઢલાઇ વચ્છ ૧, તિરિચ્છા કિં ચ ગચ્છછ ૨ । ઓભામદ કેવિય ૩, સેયાઈ કિ તે સઠિઈ ૪ ॥ ૧ ॥ કહિં પઢિહ્યા લેમા ૫, કહિં તે ઓયસઠિઈ ૬ । કે સૂરિય વરયએ ૭, કહં તે ઉદ્યસઠિઈ ૮ ॥ ૨ ॥ કહ કઢા પોરિસિચ્છાયા ૯, જોગે કિ તે વ આહિએ ૧૦ । કિં તે સવચ્છરાણાઈ ૧૧, કહ સવચ્છરાઇ ય ૧૨ ॥ ૩ ॥ કહ ચદમસો વુદ્ધી ૧૩, કયા તે દોસિણા વહૂ ૧૪ । કેઇ સિંઘગાઈ વુતે ૧૫, કહ દોસિણલક્ષ્વણ ૧૬ ॥ ૪ ॥ ચયણોવવાય ૧૭ ઉચ્ચતે ૧૮, સૂરિયા કહ આહિયા ૧૯ । અણુભાવે કે વ સવુતે ૨૦, એવમેયાઇ વીસર્દે ॥ ૫ ॥ ૨ ॥ વદ્ધોવદ્ધી સુહૃત્તાણ ૧, અદ્ધમઢલસઠિઈ ૨ । કે તે ચિણ પરિયરડ ૩, અતર કિં ચરતિ ય ૪ ॥ ૬ ॥ ઉગાહિદ કેવિય ૫, કેવિય ચ વિકપદ ૬ । મડલાણ ય સઠાણે ૭, વિકખમો ૮ અદૃ પાહુઠા ॥ ૭ ॥ છાપચ ય સતોવ ય અદૃ તિણિ ય હવતિ પઢિવતી । પદમસ્સ પાહુડસ્સ હવતિ એયાઉ પઢિવતી ॥ ૯ ॥ ૩ ॥ પઢિવતીઓ ઉદાએ, તહા અસ્થમ્યેસુચ । મિયવાએ કળણકળા, સુહૃત્તાણ ગર્હેઇ ય ॥ ૯ ॥ ગિક્ખમમાળે સિંઘગાઈ, પવિસતે મદગાઈ ય । ચુલસીઝસ્ય પુરિસાણ, તેસિં ચ પઢિવતીઓ ॥ ૧૦ ॥ ઉદ્યમ્મ અદૃ

भन्निवा भेदवाए तुथे य पठिवती । चतारि मुहुर्तगाँडे हुंगि तद्यमिन् पठिवती ॥ ११ ॥ ४ ॥ जावलिम् १ मुहुर्तमो ३ एवंभासा य ३ बोगससा ४ । छुसद् ५ पुञ्चमासी ६ य सम्भिवाए ७ य उठिवे ८ ॥ १२ ॥ तार(य)-मर्य य ९ भेदा य १ चतुर्मध्यति ११ यावरे । देववाज य अज्ञसये १२ मुहुर्तानं चासमा हन् १३ ॥ १३ ॥ रिक्षा राइ तुषा य १४ तिशि १५ योता १६ भोवधामि १७ य , जाववार १८ माणा १९ य चेत्त सहस्र्या २० इय य १४ ॥ चत्रसस्त इसर्वं २१ जन्मद्यतामिकए विय २२ । दममे पाहुडे एट बाबीर्वे पाहुडपाहुडा ॥ १५ ॥ ५ ॥ पत्सो कल्मविसेसो ताव सूरियपण्णशीए भयसेसो अपरिसेसो भाषियब्बो जहा चतुर्पण्णशीए जाव भैतिमा गाहुचि ॥ सूरिय पण्णशी समता ॥



णमोऽत्थु णं समणस्स भगवां णायपुत्तमहावीरस्स

# सुन्तागमे

तथ्य णं

## निरयावलियाओ

### [ कपिया ]

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्या, रिद्धित्थिमियसमिद्देऽ।  
युणसिलए नाम उज्जाणे चण्णओ। असोगवरपायचे। पुढविसिलापट्टै वण्णओ ॥ १ ॥  
तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवां महावीरस्स अन्तेवासी अजसुहम्मे  
नामं अणगारे जाइसपन्ने जहा केसी जाव पञ्चहिं अणगारसएहिं सद्दे सपरिखुडे  
पुब्बाणपुञ्चि चरमाणे जेणेव रायगिहे नयरे जाव अहापडिरुव उगगह ओगि-  
णिहत्ता सजमेण जाव विहरइ। परिसा निगग्या। धम्मो कहिओ। परिसा पडिग्या  
॥ २ ॥ तेण कालेण तेण समएण अजसुहम्मस्स अणगारस्स अन्तेवासी जम्बू  
नाम अणगारे समचउरंससठाणसठिए जाव सखित्तविउलतेउलेसे अजसुहम्मस्स  
अणगारस्स अदूरसामन्ते उच्छुजाणू जाव विहरइ। तए ण से जम्बू जायसहे जाव  
पञ्चुवासमाणे एवं वयासी-उवङ्गाण भन्ते। समणेण जाव सपत्तेण के अद्वे पञ्चते  
एव खलु जम्बू। समणेण भगवया जाव सपत्तेण एवं उवङ्गाण पञ्च वगगा पञ्चता,  
तजहा-निरयावलियाओ, कप्पवर्डिसियाओ, पुफ्फियाओ, पुफ्फूलियाओ, चण्हि,  
दसाओ ॥ ३ ॥ जइ ण भन्ते। समणेण जाव सपत्तेण उवङ्गाणं पञ्च वगगा पञ्चता,  
तजहा-निरयावलियाओ जाव चण्हिदसाओ, पढमस्स ण भन्ते। वगगस्स उवङ्गाण  
निरयावलियाण समणेण भगवया जाव सपत्तेण कह अज्ञयणा पञ्चता? एवं  
खलु जम्बू। समणेण जाव सपत्तेण उवङ्गाण पढमस्स वगगस्स निरयावलियाण  
दस अज्ञयणा पञ्चता, तजहा—काले सुकाले महाकाले कण्हे सुकण्हे तहा महा-  
कण्हे। वीरकण्हे य चोद्रव्वे रामकण्हे तहेव य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्हे नवमे दसमे  
महासेणकण्हे उ। जइ ण भन्ते। समणेण जाव सपत्तेण उवङ्गाणं पढमस्स वगगस्स  
निरयावलियाण दस अज्ञयणा पञ्चता, पढमस्स ण भन्ते। अज्ञयणस्स निर-  
यावलियाण समणेण जाव सपत्तेण के अद्वे पञ्चते? एव खलु जम्बू। तेण  
कालेण तेण समएण इहेव जम्बुद्वीवे दीवे भारहे वासे चम्पा नाम नयरी होत्या,

रिद । पुण्यमारुतज्ञाप । तेत्य च चमाए भवतीए स्त्रियस्म रथो पुत्र अन्नाए इवीए भवतए कृषिए चाप राता होता महद्या । तस्य च कृषियस्म रथो पउमारं नाम देवी होता स्त्रीमात्पात्तिनाया जाप विदरद ॥ ४ ॥ तथ्य च चम्पाए क्षवरीए स्त्रियस्म रथो भवता कृषियस्म रथो पुण्यमात्तका छालै नाम इवी होता स्त्रीमात्त जाप मुण्डा । टीस च कालीए इवीए पुत्रे चाह नाम तुमारे होता स्त्रीमात्त जाप तुच्छै य ५ ॥ ६ तए च ऐ से काके कुमारे अक्षया क्ष्याद निहि दन्तिमाहस्मेहि निहि यस्तद्यस्मेहि निहि आराधास्महि निहि मणुवकोहीहि गल्लहै एकारमेन उष्णदेव शूलिएर्थं रथा सर्वि यस्तुगल्लं छामर्म जोयाए ॥ ६ ॥ ७ च चीसे कालीए इवीए अक्षया क्ष्याद इुग्मज्ञापरिवं जागरमाणीपं अयम्भाव्यै अज्ञातिपं जाप यस्तुप्यजित्वा—एवं यस्तु भर्तु पुत्रे चाम्बुमारे शिहि दन्तिमाह स्तर्हि जाप जोयाए, च मह छि यस्तद ॥ नो यस्तद्यस्म च जीवित्वद ॥ पठाशिविस्माद ॥ नो पठाशिविस्माद ॥ वासे च तुमारे अहं जीवमालं पातिज्ञा ॥ अद्यमल जाप विद्याद ॥ ७ ॥ ८ तेवं क्षमेय तर्वं स्त्रयैर्थं समर्थे भगवं महाशीरे समोत्तरिए । परिता निगग्या । तए च चीसे कालीए इवीए इमीषे वहाए ल्पद्धाए समानीए अपमेयाहै अज्ञातिपं जाप यस्तुप्यजित्वा—एवं यस्तु समर्थे भगवं पुष्पालुपुरिव जाप विदरद, ते महापर्वं यस्तु दहस्तवाल जाप विद्यमस्म अद्यस्म पहणयाए, ते गच्छमि च समर्थं जाप पमुकासामि इमं च च एवारम वासारं पुच्छिद्याप्रितिहु एवं संपेहोद २ ता शेषमिवस्तुरिसे सरानेद ता एवं चयाशी—दिप्यामेव भो देवाशुपित्वा । अभिमर्य जायप्यवरं तुत्तामेव उष्णुही उष्णुहीता जाप पचपित्वन्ति ॥ ८ ॥ ९ तए च सा शालै देवी चहाया अप्यमारुताभरणस्त्वंस्त्री-सरीरा चहृहि चुमाहि जाप महात्तरप्रिव्यपरिवित्ता अन्तेऽराघो निष्पत्त्वद २ ता जेणव वाहिरिया उष्णुहानसामा खेवेव अभिमाए जायप्यवरे तेवेव उष्णपात्त्वद ३ ता अभिमर्य जायप्यवरं तुरुद्य २ ता भियपपरिवाक्त्वंपरिषुद्धा वर्म्मं भवति मज्जामज्जहेवं गिरावद्य २ ता जेणव पुष्पमौ उत्तामे तेवेव उष्णपात्त्वद २ ता छालाहै जाप अभिमर्य जायप्यवरं ठेहोद २ ता अभिमवामो जायप्यवरामो पव्येवद २ ता चहृहि चुमाहि जाप विष्वप्रिवित्ता जेवेव समर्थे भगवं महाशीरे तेवेव उष्णपात्त्वद २ ता चारा प्रस्त्रस्तमाणी नमस्तमाणी अभिमुहुषा विजएक व्यक्तित्वा फलुवस्त ॥ ९ ॥ १० तए च समर्थे भगवं जाप नालीए देवीए टीसे य महाशमात्तिनाए अम्भमहा माणि-यम्भा जाप उम्भोदासए चा सम्भोदासिवा चा विद्यरमाने जापाए भाराए भन्न

॥ १० ॥ तए ण सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्म सोच्चा निसम्म हृषु जाव हियया समणं भगवं तिक्खुत्तो जाव एवं वयासी—एव खलु भन्ते । मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्रसेहिं जाव रहमुसल सगाम ओयाए, से ण भन्ते । किं जइस्सइ २ नो जइस्सइ जाव काले णं कुमारे अहं जीवमाण पासिजा २ कालीइ समणे भगव० कालि देवि एव वयासी—एव खलु काली । तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्रसेहिं जाव कूणिएण रजा सद्दिं रहमुसल सगाम सगामेमाणे हयमहियपवरवीरधाइयनिवडियच्चिन्धज्ञयपडागे निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रजो सपकख सपडिदिमि रहेण पडिरह हव्वमागाए, तए ण से चेडए राया काल कुमार एज्जमाण पासइ २ ता आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ २ ता उसु परामुसइ २ ता वइसाह ठाण ठाइ २ ता आययकण्णायय उसु करेइ २ ता काल कुमार एगाहच्च कूडाहच्च जीवियाओ ववरोवेइ, तं कालगए ण काली । काले कुमारे, नो चेव ण तुम काल कुमारं जीवमाण पासिहिसि ॥ ११ ॥ तए ण सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिय एयमटु सोच्चा निसम्म महया पुत्तसोएण अफुञ्चा समाणी परसुनियत्ता विव चम्पगलया धसत्ति धरणीयलसि सव्वज्ञोहिं सनिवडिया । तए ण सा काली देवी मुहुत्तन्तरेण आसत्या समाणी उट्टाए उट्टेइ २ ता समण भगव० वन्दइ नमंसइ व० २ ता एव वयासी—एवमेय भन्ते । तहमेय भन्ते । अवितहमेय भन्ते । असदिद्धमेयं भन्ते । सच्चे णं भन्ते । एसमट्टे जहेय तुब्बे वयहत्तिक्षु समण भगव० वन्दइ नमसइ व० २ ता तमेव धम्मियं जाणप्पवर दुरुहद २ ता जामेव दिसिं पाउब्बया तामेव दिसिं पडिगया ॥ १२ ॥ भन्ते । ति भगव गोयमे जाव वन्दइ नमंसइ व० २ ता एव वयासी—काले ण भन्ते । कुमारे तिहिं दन्तिसहस्रसेहिं जाव रहमुसल सगामं सगामेमाणे चेडएण रजा एगाहच्च कूडाहच्च जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किञ्चा कहिं गए कहिं उववन्ने २ गोयमाइ समणे भगव० गोयम एवं वयासी—एव खलु गोयमा । काले कुमारे तिहिं दन्तिसहस्रसेहिं जाव जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किञ्चा चउत्थीए पङ्कप्पभाए पुढवीए हैमाभे नरगे दससागरोवमद्विइएसु नेरहइएसु नेरडयत्ताए उववन्ने ॥ १३ ॥ काले ण भन्ते । कुमारे केरिसएहिं आरम्भेहिं केरिसएहिं समारम्भेहिं केरिसएहिं भोगसमारम्भेहिं केरिसएहिं भोगेहिं केरिसएहिं समेगेहिं केरिसएहिं भोगसमेगेहिं केरिसेण वा असुभकडकम्मपव्वारेणं कालमासे काल किञ्चा चउत्थीए पङ्कप्पभाए पुढवीए जाव नेरहयत्ताए उववन्ने २ एवं खलु गोयमा । तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे नाम नयरे होत्या, रिद्धत्थिमियसमिद्धेऽ ।

तत्परं एव राजमिहे नमरे सेपिए नामं राजा होत्ता महया । तस्य वं सेपियस्य रजो नन्दा नामं देवी होत्ता सोमाङ् चाव निहरत् । तस्य वं सेपियस्य रजे पुते नन्दाए देवीए अतए अमयं नामं तुमारे होत्ता सोमाङ् चाव मुहै साम् चामेवद्ध चहा नितो चाव रक्षुराए निन्ताए चावि होत्ता । तस्य वं सेपि-यस्य रजो चेत्ता नामं देवी होत्ता सोमाङ् चाव निहरत् ॥ १४ ॥ तए वं च चेत्ता देवी अबया क्षाह तंसि तारिस्वर्णि वासवर्णिः चाव सीरं छुमिभे पासितार्ण पदिकुण्डा चहा फमाहै चाव द्विमित्पाणगा पदिकियमित्या चाव चेत्ता से वर्णं पदिकित्ता लेखे सए भवये लेखे लक्षुपिण्डा ॥ १५ ॥ तए वं तीसे चेत्ताए देवीए अबया क्षाह तिष्ठ मासार्ण चतुपदिपुण्णार्ण अमेयास्ये दोहके पात्रभूए-पद्मामो अ तामो अम्मवाथो चाव अम्मवीमिवफ्ले चाम्बे वं सेपियस्य रजो उवर फलिमीसेहि चेत्तिहि वं तमिएहि वं मुर वं चाव फस्त्वं वं आसास्मा चेत्तिहि चाव परिमाएमाणीमो दोहके परिलेन्ति । तए वं सा चेत्ता देवी तंसि दोहलेहि अविभिक्षमार्णिः छहा तुक्ष्या मिमीषा लोकुण्डा लोकुण्डासीरा तित्तोमा शीषमित्पाणवया फद्गुरमुही लोमनिवनयवयवयक्षमा व्यामिर्व पुण्यत्वगम्भ-माणस्क्षरं अपरिकुण्डमाणी छर्मलमित्पव छमलमाम लोकुण्डमपर्णक्ष्या चाव फियाए ॥ १६ ॥ तए वं तीसे चेत्ताए देवीए अक्षुपदिवारियामो लेख्ये देवि दुर्वं तुक्ष्यं जाव मियाममाणि पासमित २ ता लेखे सेपिए राजा लेखे उवामक्षमित ३ ता उर्यक्षपरिमाहित निरसामात मत्यए अवमि दु लेखिये रामे एव बनाटी-एवं चक्षु चामी । चेत्ता देवी वं यामामो लेखइ चार्येण छहा तुक्ष्या चाव फियाए ॥ १७ ॥ तए वं से सेपिए राजा तासि अक्षुपदिवारियाच अनितए एकमद्दु लोचा निरुम्म उद्देष चमस्ते चमाले देखेव चेत्ता देवी लेखेव उवामक्षम २ ता लेख्ये देवि दुर्वं तुक्ष्यं चाव मियाममाणि पासिता एवं चवासी-क्षि वं तुमे देवात्मिपिए । छहा तुक्ष्या चाव फियाए ॥ १८ ॥ तए वं सा चेत्ता देवी लेखियस्य रजो एकमद्दु नो चावाह नो परिजाताह तुषिषीमा लेखिष्य । तए वं से सेपिए रामा चेत्तार्व देवि दोर्वपि तर्वपि एवं चवासी-क्षि अ जाह देवात्मिपिए । एकमद्दु भो असिइ उक्षयाए वं ए तुमे परमद्दु रास्तीररेहि ॥ १९ ॥ तए वं सा चेत्ता देवी सेपिएर्व रजा दोर्वपि तर्वपि एवं तुता चमानी लेखिये रामे एवं चवासी-क्षिव न चामी । से केह अठै उस्य वं तुम्हे अवरिहा उववयाए नो चेव वं इमस्य अद्वास्य समवयाए एवं चक्षु चामी । मर्म उस्य अवरमस्य चाव महामुमित्पस्य फिर्वं भासार्ण चतुपदिपुण्णार्ण अमेयास्ये दोहके पात्रभूए-पद्मामो वं तामो

अम्मयाओ जाओ ण तुव्वम उयरवलिमंसेहि गोहएहि य जाव दोहल विणेन्ति, तए ण अह सामी । तसि दोहलसि अविणिजमाणसि नुषा भुक्ता जाव क्षियामि ॥ २० ॥ तए ण से सेणिए राया चेलण देविं एव वयासी-मा ण तुम देवाणुप्पिए । ओहय० जाव क्षियाहि, अह ण तहा जत्तिहामि जहा ण तब दोहलस्स सपत्ती भविस्मडत्ति-कहु चेलण देविं ताहिं इट्टाहिं फन्ताहिं पियाहिं मणुज्ञाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कलाणाहिं सिवाहिं वज्ञाहिं मङ्गलाहिं मियमहुरस्तिसरीयाहिं वग्गृहि सभासासेड २ ता चेलणाए देवीए अन्तियाओ पडिनिक्खमड २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव सीहामणे तेणेव उवागच्छड २ ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ २ ता तस्स दोहलस्स सपत्तिनिमित्त वहूहिं आएहि उवाएहि य उप्पत्तियाए य वैणइ-याए य कम्मयाए य पारिणामियाए य परिणामेमाणे २ तस्स दोहलस्स आय वा उवाय वा ठिइ वा अविन्दमाणे ओहयमणसक्ष्ये जाव क्षियाइ ॥ २१ ॥ इम च ण अभए कुमारे ष्हाए अप्पमहग्रधाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमड २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छड २ ता सेणियं राय ओहय० जाव क्षियायमाणं पासड २ ता एव वयासी-अन्या ण ताओ ! तुव्वमे भम पासिता हट्ट जाव हियथा भवहृ कि ण ताओ ! अज तुव्वमे ओहय० जाव क्षियाह ? त जइ ण अह ताओ ! एयमहुस्स अरिहे सवणयाए तो ण तुव्वमे भम एयमहु जहाभूयमवितह असदिद्धं परिकहेह, जा णं अह तस्स अट्टस्स अन्तगमण करेमि ॥ २२ ॥ तए ण से सेणिए राया अभयं कुमार एव वयासी-नस्ति ण पुत्ता । से केड अट्टे जस्स ण तुम अणरिहे सवणयाए, एव खलु पुत्ता । तब चुल्माउयाए चेलणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव महासुभिणस्स तिण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण जाव जाओ ण भम उयरवली-मसेहि सोलेहि य जाव दोहल विणेन्ति, तए ण सा चेलण देवी तसि दोहलसि अविणिजमाणसि सुक्का जाव क्षियाइ, तए ण अह पुत्ता ! तस्स दोहलस्स सपत्ति-लिमित्त वहूहिं आएहि य जाव ठिइ वा अविन्दमाणे ओहय० जाव क्षियामि ॥ २३ ॥ तए ण से अभए कुमारे सेणिय राय एव वयासी-मा ण ताओ ! तुव्वमे ओहय० जाव क्षियाह, अह ण तहा जत्तिहामि जहा ण भम चुल्माउयाए चेलणाए देवीए तस्स दोहलस्स सपत्ती भविस्सइत्तिकहु सेणिय राय ताहिं इट्टाहिं जाव वग्गृहिं सभासासेड २ ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छड २ ता अविन्तरए रहस्तियए ठाणिजे पुरिसे सद्वावेड २ ता एव वयासी-गच्छह ण तुव्वमे देवाणुप्पिया । सूणाओ अल मस शहिरं वत्थिपुड्गं च गिणहह ॥ २४ ॥ तए ण ते ठाणिजा पुरिसा

अमर्त्यं कुमारेव एवं बुद्धा यमाचा दृश्यत् याव पदिमुगेता अमयस्त कुमारस्त  
अनितवामो पदिनिम्भुमनित २ ता वेदन सूणा तंत्रेव उकागच्छनित ३ ता मां दीर्घं  
दृश्यत् वतिष्पुद्धर्म च गिज्ञनित ३ ता ज्येष्ठ अग्ने बुमारे तेजेव उकागच्छनित २ ता  
वरयत्वं ते अड मंसे दृश्यत् वतिष्पुद्धर्म च उक्षयेन्ति ४ २५ ॥ तए च हे  
अमर बुमारे तं अद्व मंसे दृश्यत् कप्यधी[ अम्ब ]स्त्रिय वरेद् २ ता वेदन  
सेवित् रामा तंत्रेव उकागच्छ ३ ता सेविय रामे रहस्यगम समविज्ञेति उक्षयत्वं  
निकावेद् २ ता सेवियस्त उवरकभीतु ते अवं मंसे दृश्यत् विरेद् २ ता विष  
पुड्डर्म विरेद् २ ता सदन्तीकरयेव वरेद् २ ता अद्वर्ण देवी दृष्टिप यामाए अवं  
स्त्रेववरतामेत्यावेद् २ ता वेदनाए रवीए अहे सपकर्त्तु सुविदिविति सेविय रामे  
सुविज्ञेति उक्षायगे निकावेद्, सेवियस्त रत्नो उवरकतिर्मित्याद् कप्य[ धि ]धी  
कप्ययद्व वरेद् २ ता से य मायधीति परित्याकाह । तए चं से सेविय रामा अस्ति  
मुखित्वं वरेद् २ ता मुकुतामारेव अस्तमेव उद्दिसेवमाने विद्वात् । तए चं ते हं  
अमयकुमारे सेवियस्त रत्नो उवरकतिर्मित्याद् विल्वेद् २ ता वेदन अक्षया इवी  
तंत्रेव उकागच्छ ३ ता वेदनाए वेदीए उक्षयेद् । तए चं सा वेदना देवी सेवि  
यस्त रथे तेऽहं उवरकतिर्मित्याद् देवेऽहं याव दोहर्व विवेद् । तए चं सा वेदना  
देवी दपुष्यद्वौहला एवं धमाविक्षद्वौहला विभित्तद्वौहला ते गम्यं दुर्द्वौहेवं वरि  
वहर ४ २६ ॥ तए चं तीसे वेदनाए वेदीए अवया क्षमाद् पुम्बरतावरताम्भ-  
समर्पति अवमेवाहवे याव समुप्यविक्षया—जह ताव इमेव शरणे यमयस्त  
वेद् पितृष्ठो उवरकतिर्मित्याद् याइमायि ते सेवे प्रमु नए एवं गम्ये सावित्र्य  
वा पाकित्ताए वा गाकित्ताए वा विद्वित्ताए वा एवं दपहेद् २ ता ते गम्यं वर्णि  
गम्यसाहेहि व गम्यपात्तेहि य गम्यसाहेहि व गम्यविद्वसेहि व इत्यत ते  
गम्यं दावित्ताए वा पाकित्ताए वा याकित्ताए वा विद्वेशित्ताए वा नो चाव चं से मम्मे  
सद्व वा पद्व वा यद्व वा विद्वेश वा । तए चं सा वेदना देवी ते गम्ये चाहे  
नो साकाए वहूहि गम्यसाहेहि व याव यमविद्वयेहि व दावित्ताए वा याव  
विद्वित्ताए वा वाहे सन्ता तन्ता परिक्षया विविक्षा समाधी अकाविवा अवं  
सद्वा अस्त्वाद्वौहला ते गम्यं परिक्षद् ॥ २७ ॥ तए चं सा वेदना देवी नवर्द्द  
मासायं वृष्टपिमुण्यान्व याव दोमासं सुम्य वारये फ्यावा । तए चं तीसे वेदनाए  
देवीए दमे दमात्वे याव समुप्यविक्षया—जह ताव इमेव शरणे यमयस्त वेद  
पितृष्ठो उवरकतिर्मित्याद् वाहव ई, ते न नवद चं एस वारए दपहुमारे नवर्द्द  
दुस्तस्त अवत्तदे विवित्ताए ते सेवे लहु मम्मई एवं वाराए एमर्त्त वहुविवित्त

उज्ज्ञावित्तए, एव सपेहेइ २ ता दासचेदि सहावेइ २ ता एव वयासी-गच्छ णं तुम देवाणुप्पिए । एय दारग एगते उक्तुरुडियाए उज्ज्ञाहि ॥ २८ ॥ तए णं सा दासचेदी चेल्लणाए देवीए एवं वुत्ता समाणी करयल० जाव कदु चेल्लणाए देवीए एयमद्वं विणएणं पडिसुणेइ २ ता तं दारग करयलपुडेणं गिणहइ २ ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ ता त दारग एगन्ते उक्तुरुडियाए उज्ज्ञाह । तए ण तेण दारगेण एगन्ते उक्तुरुडियाए उज्ज्ञाएण समाणेण सा असोगवणिया उज्ज्ञाविया यावि होत्था ॥ २९ ॥ तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धेण समाणे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ ता तं दारग एगन्ते उक्तुरुडियाए उज्ज्ञाय पासेइ २ ता आसुरुते जाव मिसिमिसेमाणे त दारग करयलपुडेणं गिणहइ २ ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ २ ता चेल्लण देविं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ २ ता उच्चावयाहिं निव्वमच्छणाहिं निव्वमच्छेइ एव उद्दं-सणाहिं उद्धसेइ २ ता एव वयासी-किस्स ण तुम मम पुत्त एगन्ते उक्तुरुडियाए उज्ज्ञावेसि २ तिकदु चेल्लण देविं उच्चावयसवहसाविय करेइ २ ता एव वयासी-तुम ण देवाणुप्पिए । एय दारग अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी सवद्धेहि ॥ ३० ॥ तए ण सा चेल्लण देवी सेणिएण रजा एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विद्वा करयलपरिगगहिय० सेणियस्स रजो विणएण एयमद्वं पडिसुणेइ २ ता त दारग अणुपुव्वेण सारक्खमाणी सगोवेमाणी सवद्धेइ ॥ ३१ ॥ तए ण तस्स दारगस्स एर्ते उक्तुरुडियाए उज्ज्ञाज्जमाणस्स अग्गहुलिया कुकुडपिच्छएण दूमिया यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खण पूय च सोणिय च अभिनिस्सवइ । तए ण से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया महया सद्देण आरसइ । तए ण सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसियसइ सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ २ ता त दारग करयलपुडेण गिणहइ २ ता त अग्गहुलिय आसयंसि पक्षिक्खवइ २ ता पूय च सोणिय च आसएण आमुसइ । तए ण से दारए निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए सचिद्धइ । जाहे वि य ण से दारए वेयणाए अभिभूए समाणे महया महया सद्देण आरसड ताहे वि य ण से णिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ २ ता त दारग करयलपुडेण गिणहइ तं चेव जाव निव्वेयणे तुसिणीए सचिद्धइ ॥ ३२ ॥ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो तहए दिवसे चन्दसूरदरिसणिय करेन्ति जाव सपत्ने वारसाहे दिवसे अयमेयारूप गुणनिपक्षं नामधेज करेन्ति-जम्हा ण अम्ह इमस्त दारगस्स एगन्ते उक्तुरुडियाए उज्ज्ञाज्जमाणस्स अहुलिया कुकुडपिच्छएण दूमिया त होउ णं अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज कूणिए २ । तए णं तस्स दार-

पत्तु अम्मापियरो मामकेवं करेति दूषित ति । तए वं तत्सु कृषिवस्य आव  
पुम्बेष ठिक्किवं च जहा मेहस्य आव उप्पि पापास्वरणए विहर, अद्गुलो इम्बो  
॥ ३३ ॥ तए वं तत्सु कृषिवस्य कुमारस्य अक्षया पुम्बरता आव समुप्पिक्त्वा-  
एवं अह वह सेभिवस्य रजो वावाएवं नो संचाएवि समेव रजसिरि करेमावे  
पापेमावे विहरित्वा, तं सेवं यष्टु मम सेभियं रायं निकलन्वर्ण फ्रेता अप्पार्ण महावा  
महावा रायामिसेव्यं अभिलिक्षिताविताएतित्वु एव संपेत्वे २ ता सेभिवस्य रजो अन्त  
रायि च छिह्निय य विहरामि च पदिक्षावरमावे २ विहरइ ॥ ३४ ॥ तए वं से  
दूषिए कुमारे सेभिवस्य रजो अस्तर वा आव मन्म वा असम्भवावे अद्वदा क्वाव  
अक्षारै एषु कुमारे नियवर सहावेद २ ता एवं व्यासी-एवं एषु देवालुपिया !  
अम्हे सेभिवस्य रजो वावाएवं नो संचाएवो समेव रजसिरि करेमावा पापेमावा  
विहरित्वा, तं सेवं यष्टु देवालुपिया ! अम्हे सेभियं रायं निकलन्वर्ण फ्रेता रज  
च रहु च वह च वाहर्ण च क्षेत्र च क्षेत्रमार्ण च वजवव च एकारस्वमाए विरि  
क्षिता उपमेव रजसिरि फ्रेतापार्णं पापेमापार्णं जाव विहरिष्वए ॥ ३५ ॥ तए वं  
ते अक्षारैया दसु कुमारु कृषिवस्य कुमारस्य एवम्हु विष्वए पदिक्षुपिति । तए  
वं से दूषिए कुमारे अद्वदा क्ष्याह सेभिवस्य रजो अस्तर व्याह २ ता सेभियं  
राव विकलन्वर्ण फ्रेत्वे २ ता अप्पार्ण महावा महावा रायामिसेव्यं अभिलिक्षितै ।  
तए वं से दूषिए कुमारे राया आए महावा ॥ ३६ ॥ तए वं से दूषिए राया अद्वदा  
क्ष्याह व्याह सम्भास्तारविभूषिए चेत्वाए देवीए पाववन्दए इम्बमागच्छ । तए वं  
से दूषिए राया चेत्वयं देवी चेत्वय वाव क्षिताक्षमाविपास्त्व २ ता चेत्वाए देवीए  
पापम्हर्ण फ्रेत्वे २ ता चेत्वय देवी एवं व्यासी—क्षि वं अम्मो ! तुम्ह व द्वी  
वा व अस्तए वा व हरिते वा व व्यागन्दे वा वं वं अहं समेव रजसिरि वाव  
विहरामि ॥ ३७ ॥ तए वं सा चेत्वावे देवी दूषिवं रायं एवं व्यासी—वह  
वं पुता ! मम दुद्धी वा अस्तए वा हरिते वा व्यागन्दे वा भविस्त्व वं वं दुर्मं सेभियं  
रायं पियं देवयं गुरुवार्ण अवन्वत्वेहालुरागर्त्त निवलन्वर्ण वरिता अप्पार्ण महावा २  
रायामिसेव्यं अभिलिक्षितै ॥ ३८ ॥ तए वं से दूषिए राया चेत्वयं देवी एवं  
क्ष्यासी—पापवक्षमे वं अम्मो ! मम सेभिए राया एवं मारेड वभित विष्व  
मितव्यमे वं अम्मो ! मम सेभिए राया तं वह वं अम्मो ! मम सेभिए राया  
व्यवस्त्वेहालुरागर्त्ते ॥ ३९ ॥ तए वं एवा चेत्वावे देवी दूषिवं इम्बार्ण एवं व्यासी-  
एवं वसु पुता ! दुर्मंसि मम गव्ये आम्हे समावे तिव्वं व्यासार्ण व्युपदिव्यार्ण  
मम अवन्वत्वेहालुरागर्त्ते देवहे पापवक्ष—वक्षमे वं ताम्हे अम्भवाम्हे वाव अपवक्षितावि

याओ निरवसेस भाणियव्व जाव जाहे वि य ण तुम वेयणाए अभिभूए महया जाव  
तुसिणीए सचिद्विंशि, एवं सालु तव पुत्ता । सेणिए राया अचन्तनेहाणुरागरत्ते ॥४०॥  
तए ण से कूणिए राया चेळणाए देवीए अन्तिए एयमद्वं सोच्चा निसम्म चेळण देविं  
एव वयासी—दुद्धु ण अम्मो । मए कग सेणियं राय पिय देवय गुरुजणगं अच्च-  
न्तनेहाणुरागरत्त नियलवन्धण करन्तेण, तं गच्छामि ण सेणियस्स रक्को सयमेव  
नियलाणि छिन्दामित्तिकद्वु परसुहत्यगए जेणेव चारगमाला तेणेव पहारेत्य गमणाए  
॥४१॥ तए ण सेणिए राया कूणिय कुमार परसुहत्यगय एजमाणं पासइ २ ता  
एव वयासी—एस ण कूणिए कुमारे अपत्थियपत्थिए जाव सिरिहिरिपरिवज्जिए पर-  
सुहत्यगए इह हव्वमागच्छइ, तं न नज्जइ ण सम केणइ कुमारेण मारिस्सद्वित्तिकद्वु  
भीए जाव सजायभए तालपुडग विस आसगसि पक्खिववइ । तए ण से सेणिए राया  
तालपुडगविससि आसगसि पक्खित्ते समाणे मुहुतन्तरेण परिणममाणसि निष्पाणे  
निच्छेद्वु जीवविष्पज्जठे ओडणे ॥४२॥ तए ण से कूणिए कुमारे जेणेव चारगसाला  
तेणेव उवागए, सेणिय राय निष्पाणं निच्छेद्वु जीवविष्पज्जठ ओडण पासइ २ ता  
महया पिईसोएण अफ्कुणे समाणे परसुनियत्ते विव चम्पगवरपायवे धसत्ति धरणी-  
यलसि सब्बङ्गेहि सनिवडिए । तए ण से कूणिए कुमारे मुहुतन्तरेण आमत्थे समाणे  
रोयमाणे कन्दमाणे सोयमाणे विलवमाणे एव वयासी—अहो ण मए अधन्नेण अपुणोणं  
अक्यापुणोण दुद्धुकयं सेणिय राय पिय देवय अचन्तनेहाणुरागरत्त नियलवन्धण  
करन्तेण, मममूलाग चेव ण सेणिए राया काल्माणित्तिकद्वु ईसरतलवर जाव सधि-  
वालसद्वि सपरिच्छुडे रोयमाणे ३ महया इङ्गीसक्कारसमुद्रएणं सेणियस्स रक्को नीहरणं  
करेइ २ ता वह्वूह लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ । तए ण से कूणिए कुमारे एण महया मणो-  
माणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे अन्नया कयाइ अन्तेउरपरियालसपरिच्छुडे सभ-  
ष्टमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पडिनिक्खमइ २ ता जेणेव चम्पा-नयरी तेणेव उवा-  
गच्छइ, तत्यवि ण विउलमोगसमिइसमन्नागए कालेण अप्पसोए जाए यावि होत्था  
॥४३॥ तए ण से कूणिए राया अन्नया कयाइ कालाईए दस कुमारे सद्वावेइ २ ता रज्ज  
च जाव जणवय च एकारसभाए विरिब्बहइ २ ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे  
विहरइ ॥४४॥ तत्य ण चम्पाए नयरीए सेणियस्स रक्को पुत्ते चेळणाए देवीए अत्तए  
कूणियस्स रक्को सहोयरे कणीयसे भाया वेहङ्गे नाम कुमारे होत्था, सोमाले जाव लुरुवे ।  
तए ण तस्स वेहङ्गस्स कुमारस्स सेणिएणं रक्का जीवतएण चेव सेयणए गन्धहृथी अद्वार-  
सवके य हारे पुव्वदिङे । तए ण से वेहङ्गे कुमारे सेयणएण गन्धहृत्यिणा अन्तेउर-  
परियालसपरिच्छुडे चम्पं नयरिं मज्जमज्जेण निगच्छइ २ ता अभिक्खणं २ गङ्ग

महापर्वत मन्दिरमय छायरह । तए वं सेयतए गन्धारती देवीमो सोणवाए गिर्भृत २ ता  
 अप्पेगद्वामो पुढे ठेहे, अप्पेगद्वामो सञ्च ठेहे, एवं कुम्हे ठेहे, सीसे  
 ठेहे, दस्तमुसुके ठेहे, अप्पेगद्वामो सोडाए गाहाय उड्ह फेहारं डभिहर, अप्पे  
 गद्वामो सोणवामयामो अन्दोलावेह, अप्पेगद्वामो बन्तन्तरेष्य नीरेह, अप्पेगद्वामो  
 सीमरेखं व्यावेह, अप्पेगद्वामो अणेगेहि वीजाकोहि वीजागेह । तए वं बम्हाए  
 जमरीए सिधाहगतिगक्तहक्करमहासप्तेषु व्युक्तयो अहमवस्थ सूक्ष्माक्षक्षर  
 चाव फलेह-एव याहु देवतापुरिणा । वेहो कुमारे सेवतएवं गन्धारतिणा बन्तेवर  
 हं चेव जाव अणेगेहि वीजावणएहि वीजावेह, तं एस वं वेहो कुमारे रजाहिरिक्षं  
 फलुमवसामो विहरह, भो कूपिए रामा ॥ ४५ ॥ तए वं तीसे फलमावर्हए देवीए  
 इमीरो व्याप व्याप्ताए उमाधीए अयमेवाहये चाव समुप्यजित्या-एवं बाल वेहो  
 कुमारे सेयतएवं गन्धारतिणा चाव अणेगेहि वीजावणएहि वीजावेह हं एव वं  
 वेहो कुमारे रजाहिरिक्षं फलुमवसामो विहरह नो कूपिए रामा तं कि वं अम्ह  
 रजेव वा जाव अवावएव वा चाह वं अम्ह सेवतागे यन्धारती मतिः १ हं सेवं लहु  
 मम कूपिवं राम एकमद्द विहारितपतिष्ठु एव उपेहेह ता वेवेव कूपिए रामा  
 उपेव दवायच्छद ३ ता कर्मल चाव एव व्याधी-एवं यमु सामी । वेहो  
 कुमारे सेयतएवं गन्धारतिणा चाव अणेगेहि वीजावणएहि वीजावेह, तं कि वं  
 अम्ह रजेव वा जाव अवावएव वा चाह वं अम्ह सेयतए गन्धारती मतिः २ ॥ ४६ ॥  
 तए वं से कूपिए रामा फलमावर्हए एकमद्द नो आहाह नो परिजातार,  
 द्रुष्टिधीए संचित्यु । तए वं सा फलमावर्ह देवी अग्निक्षयं २ कूपिवं रावं एकमद्द  
 विहारेह । तए वं से कूपिए रामा फलमावर्हए देवीए अग्निक्षयं २ एकमद्द विद्व-  
 विज्ञमागे अक्षमा क्षमाह वेहो कुमारे साहेह ३ ता सेयतागे यन्धारतिव अद्वारसंके  
 व व्यार चावह ॥ ४७ ॥ तए वं से वेहो कुमारे कूपिवं रावं एवं व्याधी-एवं यमु  
 सामी । सेविएवं रामा वीजारेवं चव उपतए यन्धारती अद्वारसंके व व्यारे विवे  
 तं चाह वं सामी । तुम्हे मम रजास्त व चाव अप्यवस्थ स अर्ह दद्वाह तो वं  
 अर्ह तुम्हे सेवतागे यन्धारतिव अद्वारसंके व व्यार व्यामी । तए वं से कूपिए  
 रामा वेहास्तु कुमारस्य एकमद्द नो आहाह भो परिजातार, अग्निक्षयं २ उपवर्व  
 गन्धारतिव अद्वारसंके व व्यार चावह ॥ ४८ ॥ तए वं तस्तु वेहास्तु कुमारस्य  
 कूपिएवं रामा अग्निक्षयं २ सेवतागे यन्धारतिव अद्वारसंके व व्यारे एवं यमु  
 अग्निक्षित्यामे वं गिर्भित्यामे वं उद्धारक्षये वं मम कूपिए रामा सेयतागे यन्ध  
 द्वितीय अद्वारसंके व व्यार, वं चाव न उहाकेह मम कूपिए रामा चाव ( उप्य मे )

સેયણગ ગન્ધહર્તિથ અદ્વારસવકં ચ હાર ગહાય અન્તે ઉરપરિયાલસપરિયુદ્સમ સભણ્ડમ-  
તોવગરણમાયાએ ચમ્પાઓ નયરીઓ પડિનિક્ષમિત્તા વેસાલીએ નયરીએ અજગ ચેડય  
રાય ઉવસપજિત્તાણ વિહરેતાએ, એવ સપેહેડ ૨ તા કૃણયસ્સ રન્નો અન્તરાળિ જાવ  
પઢિજાગરમાણે ૨ વિહરિદ । તએ ણ સે વેહલે કુમારે અજયા કન્યાડ કૃણયસ્સ રન્નો  
અન્તર જાણડ ૨ તા સેયણગ ગન્ધહર્તિથ અદ્વારસવક ચ હાર ગહાય અન્તે ઉરપરિયાલ-  
સપરિયુદે સભણ્ડમતોવગરણમાયાએ ચમ્પાઓ નયરીઓ પડિનિક્ષમિદ ૨ તા જેણેવ  
વેસાલી નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છડ ૨ તા વેસાલીએ નયરીએ અજગ ચેડયં રાય  
ઉવસપજિત્તાણ વિહરિદ ॥ ૪૯ ॥ તએ ણ સે કૃણિએ રાયા ઝર્માસે કહાએ લદ્ધે  
સમાણે-એવ ખલુ વેહલે કુમારે મમ અસવિદિણ સેયણગ ગન્ધહર્તિથ અદ્વારસવક ચ  
હાર ગહાય અન્તે ઉરપરિયાલસપરિયુદે જાવ અજગ ચેડય રાય ઉવસપજિત્તાણં  
વિહરિદ, ત સેય ખલુ મમ સેયણગ ગન્ધહર્તિથ અદ્વારસવક ચ હાર આણેઉ દૂય  
પેસિતાએ, એવ સપેહેડ ૨ તા દૂય સદ્ગ્રાવેદ ૨ તા એવ વયાસી—માચ્છહ ણ તુમં  
દેવાણુપ્રિયા । વેસાલિન નયરિં, તત્થ ણ તુમ મમ અજ ચેડગ રાય કરયલ૦ વદ્ધાવેત્તા  
એવ વયાહિ—એવ ખલુ સામી ! કૃણિએ રાયા વિજ્ઞવેદ—એસ ણ વેહલે કુમારે કૃણિ-  
યસ્સ રન્નો અસવિદિણ સેયણગ૦ અદ્વારસવક ચ હારાં ગહાય ઇહ હવ્વમાગએ, તએ  
ણ તુલ્યે સામી ! કૃણય રાયં અણુગિફ્ફમાણા સેયણગ૦ અદ્વારસવક ચ હાર કૃણયસ્સ  
રન્નો પચ્ચપિણહ વેહલુ કુમાર ચ પેસેહ ॥ ૫૦ ॥ તએ ણ સે દૂએ કૃણિએણ૦ કરયલ૦  
જાવ પડિસુણિતા જેણેવ સાએ ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છડ ૨ તા જહા ચિત્તો જાવ  
વદ્ધાવેત્તા એવ વયાસી—એવ ખલુ સામી ! કૃણિએ રાયા વિજ્ઞવેદ—એસ ણ વેહલે કુમારે  
તહેવ ભાણિયવ જાવ વેહલુ કુમાર ચ પેસેહ ॥ ૫૧ ॥ તએ ણ સે ચેડએ રાયા  
ત દૂયં એવ વયાસી—જહ ચેવ ણ દેવાણુપ્રિયા ! કૃણિએ રાયા સેણિયસ્સ રન્નો પુત્રે  
ચેલણાએ દેવીએ અતાએ મમ નન્દુએ તહેવ ણ વેહલેવિ કુમારે સેણિયસ્સ રન્નો પુત્રે  
ચેલણાએ દેવીએ અતાએ મમ નન્દુએ, સેણિએણ રન્ના જીવન્તેણ ચેવ વેહલસ્સ કુમારસ્સ  
સેયણગે ગન્ધહર્તથી અદ્વારસવકે ય હારે પુબ્વવિદ્યણે, ત જહ ણ કૃણિએ રાયા વેહલસ્સ  
રજસ્સ ય૦ જણવયસ્સ ય અદ્વ દલયિદ તો ણ અહ સેયણગ૦ અદ્વારસવક ચ હાર  
કૃણયસ્સ રન્નો પચ્ચપિણામિ વેહલં ચ કુમાર પેસેમિ । ત દૂય સકારેદ સમાણેદ  
પઢિવિસજેદ ॥ ૫૨ ॥ તએ ણ સે દૂએ ચેડએણ રન્ના પઢિવિસજીએ સમાણે જેણેવ  
ચાઉગઘણે આસરહે તેણેવ ઉવાગચ્છડ ૨ તા ચાઉગઘણ આસરહ દુરુહિદ ૨ તા  
વેસાલિન નયરિં મજ્જમજ્જોણ નિગચ્છડ ૨ તા સુમેહિં વસહીહિં પાયરાસેહિં જાવ  
વદ્ધાવેત્તા એવ વયાસી—એવ ખલુ સામી ! ચેડએ રાયા આણવેદ—જહ ચેવ ણ

कृष्णए राया सेमियस्स रजो मुते चेहाए देवीए भराए मम नहुए, ते चेव मार्ग-  
नवं जाव चेहाए च कुमार ऐसेमि तं न चेह चं सामी। चेहए राया सेवकी  
च्छारसर्वं च हार चेहाए च नो ऐसेह ॥ ५३ ॥ तए चं से कृष्णए राया देवंपि  
दृश वदावेता एवं वयासी-गच्छ चं तुमे देवाकुपिया। वेशांि नवरि, तत्व चं  
तुम मम अजगं चेहये राये जाव एवं क्याहि—एवं बहु सामी। कृष्णए राया  
विष्वेह—जामि क्यावि रवणामि समुप्पञ्चनित सम्बावि तामि रायकुमारामीमि  
सेमियस्स रजो रजसिरि फ्रेमामस्स पावेमाजस्स तुवे रजना समुप्पदा तंज्ञा—  
सेमलए फन्दात्ती च्छारसर्वके हारे, ते चं तुम्हे सामी। रायकुम्भरपराम्ब तिर्यं  
भवोवेमाणा सेवयर्गं गच्छार्थिं च्छारसर्वं च हार कृष्णियस्स रजो फ्लपिया,  
चेहाए कुमार ऐसेह ॥ ५४ ॥ तए चं से दृश कृष्णियस्स रजो तहेव जाव क्यावेता  
एवं वयासी—एवं बहु सामी। कृष्णए राया विष्वेह—जामि क्यावि जाव चेहाए  
कुमार ऐसेह। तए चं से चेहए राया तं दृश एवं क्याहि—जह चेव चं देवल-  
पिया। कृष्णए राया सेमियस्स रजो मुते चेहाए देवीए भराए च्छा फ्लम जाव  
चेहाए च कुमार ऐसेमि। तं दृश उद्धारेह संमाख्ये फ्रिमिक्तेह ॥ ५५ ॥ तए चं  
से दृश जाव कृष्णियस्स रजो वदावेता एवं क्यासी—चेहए राया जावेह—जह चेव  
चं देवाकुपिया। कृष्णए राया सेमियस्स रजो मुते चेहाए देवीए भराए जाव  
चेहाए कुमार ऐसेमि तं न चेह चं सामी। चेहए राया सेवकं गच्छार्थिं च्छार  
सर्वं च हार, चेहाए कुमार नो ऐसेह ॥ ५६ ॥ तए चं से कृष्णए राया तस्य  
दृशस्त अन्तिए एम्माङ्गु चोका गिराम्म आत्मुरते जाव मिरिमिसेमावे तं दृश  
सहावेह २ ता एवं वयासी-गच्छ चं तुम देवाकुपिया। वेशालीए नवरीए चेहस्स  
रजो वामेवं पाएवं पाव[ली]पीर्वं अदमाहि १ ता तुन्तमोर्ज चेहै फ्लावेह ३ ता  
आत्मुरते जाव मिरिमिसेमावे तिर्यक्षि गिरहि गिरहि साहु चेहाए एवं दृश  
क्याहि—है मो चेहयराया। अपरिवरपतिक्षि। तुरन्त जाव परिवक्षि। दृश चं  
कृष्णए राया आपल्द—फ्लपियाहि च कृष्णियस्स रजो सेवयर्गं च्छारसर्वं च  
हार चेहै च कुमार ऐसेहि भद्रा तुदसज्जो चिद्वाहि एस चं कृष्णए राया तप्तके  
उदाहें सख्यावारे ज तुदस्ये दह इम्मायक्ष ॥ ५७ ॥ तए चं से दृश  
कर्यह तहेव जाव चेहेव चेहए टेनेव उदागच्छ २ ता कर्यम जाव  
वदावेता एवं वयासी—दृश चं सामी। मम विनयपतिक्षी इवामि कृष्णियस्स रजो  
आजति अडगास्स रजो वामेवं पाएवं पावपीर्वं अदमह २ ता आत्मुरते कुन्तमोर्ज  
द्वं पावाद्व तं चेव सख्यान्वावारे चं इह इम्मायक्ष ॥ ५८ ॥ तए चं से

चेडए राया तस्स दूयस्स अतिए एयमटुं सोचा निसम्म आसुरुते जाव साहदु एव  
वयासी-न अप्पिणामि णं कूणियस्स रज्जो सेयणग अट्टारसवकं हार वेहल च कुमार  
नो पेसेमि, एस ण जुद्दसज्जे चिट्टामि । त दूय असकारिय असमाणियं अवद्वारेण  
निन्द्युहावेड ॥ ५९ ॥ तए ण से कूणिए राया तस्स दूयस्स अन्तिए ए[अ]यमटुं  
सोचा निसम्म आसुरुते कालाईए दस कुमारे सदावेइ २ ता एव वयासी-एवं खलु  
देवाणुपिया ! वेहले कुमारे मम असविदिएण सेयणग गन्धहर्तिय अट्टारसवक हार  
अन्तेउर मभण्ड च गहाय चम्पाओ पडिनिकखमड २ ता वेसालिं अजगं जाव  
उवसपजित्ताण विहरइ, तए णं भए सेयणगस्स गन्धहर्तियस्स अट्टारसवकस्स० अट्टाए  
दूया पेसिया, ते य चेडएण रक्षा इमेण कारणेण पडिसेहिया, अदुत्तर च ण ममं  
तच्चे दूए अमकारिए असमाणिए अवद्वारेण निन्द्युहावेइ, त सेय खलु देवाणुपिया !  
अम्ह चेडगस्स रज्जो जुत्तं गिण्हित्तए । तए ण कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रज्जो  
एयमटुं विणाएण पडिसुणेन्ति ॥ ६० ॥ तए ण से कूणिए राया कालाईए दस कुमारे  
एवं वयासी-गच्छह ण तुब्बे देवाणुपिया ! सएमु सएसु रजेसु पत्तेय पत्तेय ष्हाया  
हत्थिरखन्धवरगया पत्तेय पत्तेय तिहिं दन्तिसहस्सेहिं एवं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं  
आमसहस्सेहिं तिहिं मणुस्सकोहीहिं सद्दिं सपरिखुडा सव्विहूणीए जाव रवेण सएहिन्तो २  
नयरेहिन्तो पडिनिकखमह २ ता मम अन्तिय पाउब्बवह ॥ ६१ ॥ तए ण ते  
कालाईया दस कुमारा कूणियस्स रज्जो एयमटुं सोचा सएमु सएसु रजेसु पत्तेय २  
ष्हाया हत्थिय जाव तिहिं मणुस्सकोहीहिं सद्दिं सपरिखुडा मव्विहूणीए जाव रवेण  
सएहिन्तो २ नयरेहिन्तो पडिनिकखमन्ति २ ता जेणेव अङ्गा जणवए जेणेव चम्पा  
नयरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागया करयल० जाव वद्वावेन्ति ॥ ६२ ॥ तए  
ण से कूणिए राया कोहुम्बियपुरिसे सदावेइ २ ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो  
देवाणुपिया ! आभिसेक हत्थिरयण पठिकप्पेह, हयगयरहजोहचाउरजिणि सेण  
सनाहेह, मम एयमाणत्तिय पच्चपिणह जाव पच्चपिणन्ति । तए ण से कूणिए राया  
जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ जाव पडिनिगच्छता जेणेव वाहिरिया उवद्वा-  
णसाला जाव नरवई दुरुढे ॥ ६३ ॥ तए ण से कूणिए राया तिहिं दन्तिसहस्सेहिं  
जाव रवेण चम्प नयरि मज्जमज्ज्ञेण निगच्छइ २ ता जेणेव कालाईया दस  
कुमारा तेणेव उवागच्छइ २ ता कालाईहिं दसहिं कुमारेहिं सद्दिं एगओ मेला-  
यन्ति । तए ण से कूणिए राया तेत्तीसाए दन्तिसहस्सेहिं तेत्तीसाए आससहस्सेहिं  
तेत्तीमाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए मणुस्सकोहीहिं सद्दिं सपरिखुडे सव्विहूणीए जाव  
रवेण सुभेहिं वसहीहिं सुभेहिं पायरासेहिं नाइविगिट्टेहिं अन्तरावासेहिं वसमाणे २

काहवगवमस्म मज्जमग्नेव जेवेष विवेहे अन्नाए जेवेष वैसाही नवरी तपेष  
पहारेत्व गमनाए ॥ १४ ॥ तए वं से जेडए राया इमीसे व्यापु लद्दु समावे  
मव मार्द नव जेवाहे कासीज्ञेसम्भा अद्वारसवि गणराजामो सद्येष २ ता पर्व  
व्यासी-प्रथ व्यु देवानुपिया । जैवो इमारे दूषितस्त रक्षो असंविद्येष सेवयां  
अद्वारसवां व व्यार गमन इहै दृष्टमागए, तए वं दूषितेष सेवयां अद्वारसवांस्तु  
य अद्वार तमो व्याम जेविया वं म मए इमेष व्यारवेष घटिदेहिया तए वं से  
दूषिए, मर्म प्रमर्द अपदिष्टुणमामे चात्ररक्षीए ऐजाए सर्वि दंपरितुडे तुज्ज-  
सवे वाई दृष्टमागच्छ, तं किं न देवानुपिया । सेवयां अद्वारसवां (च) दूषितस्त  
रक्षो फलियामो ३ जेवाहे तुमारे जेवेमो ५ उपाहु तुमित्वा ॥ ११ ॥ तए वं  
नव मार्द नव जेवाहे असीकोसम्भा अद्वारसवि गणराजामो व्यावर्य राये पर्व  
व्यासी-न पर्व सामी । तुरी वा पर्व वा रामसरिय वा वं वं सेवयां अद्वार  
सवां दूषितस्त रक्षो फलियामिज्ज जेवाहे य तुमारे सरणायाए जेविया, तं व्य  
नं दूषिए राया चात्ररक्षीए सेवाए दंपि दंपरितुडे तुज्जसवे इहै दृष्टमागच्छ,  
तए वं अहै दूषिए रक्षा दंपि तुज्जामो ॥ १२ ॥ तए वं से जेडए राया वं  
नव मार्द नव जेवाहे कासीज्ञेसम्भा अद्वारसवि गणराजामो एवं व्यासी-व्य वं  
देवानुपिया । तुम्हे दूषिए रक्षा दंपि तुज्जामो ॥ १३ ॥ तए वं से जेडए राया वं  
नव मार्द नव जेवाहे कासीज्ञेसम्भा अद्वारसवि गणराजामो एवं व्यासी-आमिसेहे जहा दूषिए  
वाय तुम्हे ॥ १४ ॥ तए वं से जेडए राया विहै दन्तिसहस्रेहि जहा दूषिए  
जाय जेवासि नवरि मज्जमज्जोर्व निमगच्छ १ ता जेवेष दे नव यं नव  
जेवाहे व्यासीज्ञेसम्भा अद्वारसवि गणराजामो रेवेष उपागच्छ । तए वं हि जेडए  
राया उत्तीर्णहाए दन्तिसहस्रेहि उत्तावद्वाए भायसहस्रेहि उत्तावद्वाए रक्षमहस्तेहि  
उत्तावद्वाए मसुस्तमोर्वेहि दंपि दंपरितुडे दृष्टिव्यापु जाय रक्षेष दुमेहि कार्याहि  
पापरायेहि भावविगिद्वेहि कन्तरेहि व्यामाये २ जिवेहि व्यावेष मज्जमज्जोर्व जेवेष  
जेवपत्त जेवेष उपागच्छ ३ ता व्यावारनिवामये कर्वे ४ ता दूषिए राये  
पदिष्टालमाल तुज्जसवे चिद्व ॥ १५ ॥ तए वं से दूषिए राया दृष्टिव्यापु जाय  
रक्षेष जेवेष इसपत्ते उत्तेष उपागच्छ ५ ता जेडमस्त रक्षो ज्वोवरमारिये  
गणराजारनिवैष करद ॥ १६ ॥ तए वं त दोक्षियि रायाये रक्षमूर्मि गजावेन्ति ६ ता  
रक्षमूर्मि ज्वन्ति । तए वं से दूषिए राया उत्तीर्णहाए दन्तिसहस्रेहि जाय  
मसुस्तमोर्वेहि गहसर्हूं रक्ष ७ ता गहसर्हूंहेह रक्षमूर्मि उत्तावद्वाए । तए

णं से चेदगे राया सत्तावन्नाए दन्तिसहस्रेहि जाव सत्तावन्नाए मणुस्मकोटीहि  
सगडवृह रएइ २ त्ता सगडवृहेण रहमुसल सगाम उवायाए । तए णं ते दोण्हवि  
राईण अणीया सनद्द० जाव गहियाउपहरणा मगइएहि फलएहि निकट्टाहि  
असीहि असागएहि तोणेहि सजीवेहि धण्हि समुक्तितोहि मरेहि समुलालियाहि  
डावाहि ओसारिग्राहि ऊशघण्टाहि छिप्पतूरेण वज्माणेण महया उकिट्टसीहनाय-  
वोलकलकलरवेण समुद्रवभूयं पिव करेमाणा सव्विहूए जाव रवेण हयगया हय-  
गएहि गयगया गयगएहि रहगया रहगएहि पायत्तिया पायत्तिएहि अन्नमन्नेहि  
सद्दि सपलग्गा यावि होत्या । तए णं ते दोण्हवि रायाणं अणीया नियगसामी-  
सासणाषुरता मह[या]न्त जणकवय जणवहं जणप्पमद् जणसवट्कप्पं नचन्तकवन्ध-  
वारसीम रुहिरकद्दम करेमाणा अन्नमन्नेण सद्दि जुज्जन्ति ॥ ७० ॥ तए ण से  
काले कुमारे तिहि दन्तिसहस्रेहि जाव मणुस्मकोटीहि गहलवृहेण एकारसमेण  
खन्देण कूणिएण रञ्जा सद्दि रहमुसल सगाम सगामेमाणे हयमहिय ० जहा भग-  
वया कालीए देवीए परिकहिय जाव जीवियाओ ववरोविए ॥ ७१ ॥ तं एयं खलु  
गोयमा । काले कुमारे एरिसएहि आरम्भेहि जाव एरिसएणं असुभकडकम्पव्या-  
रेणं कालम्भासे कालं किच्चा चउत्थीए पङ्क्षप्पमाए पुढवीए हेमामे नरए नेरइयत्ताए  
उववन्ने ॥ ७२ ॥ काले ण भन्ते । कुमारे चउत्थीए पुढवीए अणन्तरं उव्व-  
ष्टिता कहि गच्छिहिद कहि उववज्जिहिइ ? गोयमा । महाविदेहे वासे जाइ कुलाइ  
भवन्ति अह्नाइ जहा ददपझ्नो जाव सिज्जिहिइ बुज्जिहिइ जाव अन्त काहिइ  
॥ ७३ ॥ त एव खलु जम्बू । समणेणं भगवया जाव सपत्तेणं निरयावलियाण  
पठमस्स अज्ञयणस्स अयमद्वे पन्नते-त्तिवेमि ॥ ७४ ॥ पठमं अज्ञयणं  
समत्तं ॥ १ । १ ॥

जह ४ भन्ते । समणेण जाव सपत्तेणं निरयावलियाण पठमस्स अज्ञयणस्स  
अयमद्वे पन्नते, दोच्चस्स ४ भन्ते । अज्ञयणस्स निरयावलियाणं समणेण भगवया  
जाव सपत्तेण के अद्वे पन्नते ? एव खलु जम्बू । तेण कालेण तेण समएण चम्पा  
नामं नयरी होत्या । पुण्मद्वे उज्जाणे । कूणिए राया । पउमावई देवी । तथ ४  
चम्पाए नयरीए सेणियस्स रञ्जो भज्जा कूणियस्स रञ्जो चुक्रमाउया सुकाली नाम  
देवी होत्या, सुकुमाल० । तीसे ४ सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नाम कुमारे  
होत्या, सुकुमाल० । तए ४ से सुकाले कुमारे अन्नया कयाइ तिहि दन्तिसहस्रेहि  
जहा काले कुमारो निरवसेस त चेव भाणियव्व जाव महाविदेहे वासे.. अन्त  
काहिइ । निकवेवो ॥ ७५ ॥ बीय अज्ञयणं समत्तं ॥ १ । २ ॥

एवं सुरामि भट्ट अजस्रपा मेष्या पद्मचरिता नवरे मायमो सरिलामामे।  
निक्षेपो सम्बेदि मातिवमो तहा ॥ ७६ ॥ १ । १० ॥ विष्णवलिङ्गामो  
समक्षामो ॥ पद्ममो षम्मो समर्थो ॥ १ ॥



णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

तथ णं

## कप्पवडिंसियाओ

जइ णं भन्ते ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवङ्गाण पढमस्स वगस्स निरयाव-  
लियाण अयमहे पञ्चते, दोच्चस्स ण भन्ते ! वगस्स कप्पवडिंसियाण समणेण जाव  
सपत्तेण कइ अज्ञयणा पञ्चता ? एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण  
कप्पवडिंसियाण दस अज्ञयणा पञ्चता, तजहा-पउमे १, महापउमे २, भेदे ३, सुभेदे  
४, पउमभेदे ५, पउमसेणे ६, पउमगुम्मे ७, नलिणिगुम्मे ८, आणन्दे ९, नन्दणे १०  
॥७७॥ जइ णं भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण कप्पवडिंसियाण दस अज्ञयणा पञ्चता,  
पढमस्स ण भन्ते ! अज्ञयणस्स कापवटिंसियाण समणेण भगवया जाव सपत्तेण  
के अद्वे पञ्चते ? एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण यमएण चम्पा नाम नयरी  
होत्या । पुण्णभेदे उज्जाणे । कूणिए राया । पउमावई देवी । तथ णं चम्पाए  
नयरीए सेणियस्स रजो भजा कूणियस्स रजो चुल्लमाउया काली नाम देवी होत्या,  
सुउमाल० । तीसे ण कालीए देवीए पुते काले नाम कुमारे होत्या, सुउमाल० ।  
तस्स ण कालस्स कुमारस्स पउमावई नाम देवी होत्या, सोमाल० जाव विहरइ  
॥७८॥ तए ण सा पउमावई देवी अन्नया कन्याइ तसि तारिसगसि वासधरसि  
अद्विभन्तरओ सचित्तकम्मे जाव सीह सुमिणे पासित्ताण पडिवुद्धा । एवं जम्मण  
जहा महावल्स्स जाव नामधेज—जम्हा ण अम्ह इमे दारए कालस्स कुमारस्स  
पुते पउमावईए देवीए अत्तए त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज पउमे  
पउमे, सेस जहा महावल्स्स, अट्टओ दाओ जाव उप्पि पासायवरगए विहरइ । सामी  
समोसरिए । परिसा निगगया । कूणिए निगगए । पउमेवि जहा महावले निगगए  
तहेव अम्मापिइबापुच्छणा जाव पव्वइए अणगारे जाए जाव गुत्तवम्भयारी ॥७९॥  
तए ण से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहास्वाण थेराण अन्तिए  
सामाइयमाइयाइं एकारस अङ्गाइ अहिजाइ २ त्ता वहूहिं चउत्थछद्गद्गम० जाव विह-  
रइ ॥८०॥ तए ण से पउमे अणगारे तेण ओरालेण जहा मेहो तहेव वम्मजाग-  
रिया चिन्ता एव जहेव मेहो तहेव समण भगव० आपुच्छित्ता विउले जाव पाओ-

वगण चमापे तदास्तार्थं वेरार्थं अन्तिए सामाइमाइयार्थं एकारस अकाई बहुपरि  
पुम्पार्थं पर वासार्थं सामन्धपरियाए, मारियाए संबेद्याए सहि भावार्थं आलुपुम्पार्थ  
अम्पार्थं । वेरा वोद्यन्ना । भगवं गोममे पुम्पार्थ, भावी व्येद वाव उहि भावार्थ  
अथसत्याए ऐहता भास्मेइयपदिष्टन्त उहि अनियम सोहम्मे कप्ये दक्षार्थं उक्षार्थं ।  
दो सामगरार्थं ॥ १ ॥ से वं मन्ते । पठम देव तामो देवकोगाम्ये आडक्षयर्थं  
पुम्पार्थ । घोम्मा । महामिहेऽवासे वहा दहप्त्यो भाव अर्थं अक्षिर । तं पूर्वं व्यु  
वम् । समवेदं वाव संपत्तेवं कल्पवलिसियार्थं पठमस्य अन्त्ययस्तु अम्मद्वे पठमे  
जिवेमि ॥ २ ॥ पहमं अन्त्ययणं समर्थं ॥ २ । १ ॥

वद च मन्ते । समवेदं भगवद्य वाव संपत्तेवं कल्पवलिसियार्थं पठमस्य अन्त्य-  
यस्य अवमद्वे पठते होहस्य वं मन्ते । अन्त्यवस्तु के अद्वे पठते । एवं व्यु  
वम् । तेजं कल्पेण तेजं समपूर्णं अम्पा भासं नदीरी होत्या । पुम्पमो वजाने ।  
कूणिए रामा । पठमार्थं ददी । लत्य वं अम्पार्थं भद्रीए देविवस्तु रघो भावा  
दूर्मिवस्तु रघो तुम्माठ्या शुश्रावी नासं देवी होत्या । दौसे वं दृष्ट्याए उपै  
मुक्ताके नासं दुमारे । लस्य वं शुक्रवस्तु दुमारस्य महापठमा नामी देवी होत्या  
मुक्तमास ॥ ३ ॥ तप वं सा महापठमा देवी भक्तवा क्यार तेषि तारिच्छविति  
एवं तदेव महापठमे नामी वारए वाव रितियावृति, नवर ईचाण कप्ये वस्त्राम्भे  
उद्देश्याद्विष्यो । निष्ठलेऽवो ॥ ४ ॥ शीर्यं अन्त्ययणं समर्थं ॥ २ । २ ॥

एवं देवामि अहु नेवत्या । माध्यमो सरिचनामामो । कास्मार्थं वस्त्रं दुर्वलं  
अलुपुम्पार्थ—दोहरं च पर वत्तारि रित्वं रित्वं च होनित रित्वेव । होहरं च देवि  
वासा देवियनाश्रू परिवामो ॥ १ ॥ उवात्मे आलुपुम्पार्थ—पठमो सोहम्मे विस्मे  
ईचामे उहमो उण्डुम्मारे पठत्यो मारिये पठमो वस्त्रामोए, छडे क्षयए,  
सत्यमो महापूर्वे अद्यमो धारस्यारे नवमा पापए, इसमो अनुर । उवात्म उक्षे  
उद्दिई गारिवामा । महामिहेऽव रितियावृति ॥ ५ ॥ २ । ३ ॥ कल्पवलि  
सियामो समत्तामो ॥ शीघ्रो वगगो समर्थो ॥ २ ॥



णमोऽत्थ णं समणस्स भगवओ णायपुच्चमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## तत्थ णं पुष्पियाओ

जइ ण भते ! समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवज्ञाण दोच्चस्स० कप्पवडिसियाण  
अथमद्वे पन्नते, तच्चस्स णं भन्ते ! वग्गस्स उवज्ञाणं पुष्पियाण के अड्डे पन्नते ?  
एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण उवज्ञाण तच्चस्स वग्गस्स पुष्पियाण दस  
अज्ज्ययणा पन्नता, तजहा—चंदे सूरे सुक्के वहुपुत्तिय पुण्ण माणिभद्वे य । दत्ते सिवे  
बले या अणाहिए चेव बोद्धव्वे ॥ १ ॥ जइ णं भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण  
पुष्पियाण दस अज्ज्ययणा पन्नता, पठमस्स ण भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण के  
अड्डे पन्नते ? एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नामं नयरे ।  
गुणसिलए उज्जाणे । सेणिए राया । तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे ।  
परिसा निग्गया । तेण कालेण तेण समएणं चन्दे जोइसिन्दे जोइसराया चन्द-  
वडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चन्दसि सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्रीहिं  
जाव विहरइ । इम च ण केवलकप्प जम्बुदीवं दीव विउलेण ओहिणा आभोएमाणे २  
पासइ २ ता समण भगव महावीरं जहा सूरियामे आभिथोगे देवे सहावेता  
जाव सुरिन्दाभिगमणजोग करेता तमाणत्तिय पञ्चपिणन्ति । सुसरा घटा जाव  
विउव्वणा, नवर जाणविमाण जोयणसहस्रविथिण अद्वतेवद्विजोयणसमूसियं,  
महिन्दज्ज्ञवो पणुवीस जोयणमूसियो, सेस जहा सूरियामस्स जाव आगओ,  
नद्विही तहेव पडिगओ ॥ ८६ ॥ भन्ते ! ति भगव गोयमे समणं भगवं० पुच्छा ।  
कूडागारसाला । सरीर अणुपविट्ठा । पुञ्चभवो । एव खलु गोयमा ! तेण कालेण  
तेण समएण सावत्थी नामं नयरी होत्था । कोट्ठए उज्जाणे । तत्थ ण सावत्थीए०  
अङ्गई नाम गाहावई होत्था, अड्डे जाव अपरिभूए । तए ण से अङ्गई गाहावई साव-  
त्थीए नयरीए वहूण नगरनिगम० जहा आणन्दो ॥ ८७ ॥ तेण कालेण तेण  
समएण पासे ण अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा महावीरो नवुस्सेहे सोलसेहिं  
समणसाहस्रीहिं अट्टीसाए अज्जियासहस्रेहिं जाव कोट्ठए समोसढे । परिसा  
निग्गया ॥ ८८ ॥ तए ण से अङ्गई गाहावई इमीसे कहाए लद्धेसे हड्डे समाणे हड्डे जहा

कहिए सेहु तहा निमाच्छ जाव पछुवामइ, घर्म सोबा निरम्य जैनवर देहउ  
पिया। कद्गुत कुड्गमे धरेमि तए व आई रवालिमार्व जाव पमसामि जहा  
यद्वाते तहा पम्बए जाव गुलाम्मकारी॥ १३॥ तए व से अग्रै अपगारे फलस्त  
भरहमो तहारवार्ण येरार्व अन्तिए सामाइयमपयद्व एहारस वद्व भद्रियद् २ ता  
शहु व उत्स जाव माक्माये वहु वासाई समध्यपरिमार्ण पाठमइ ३ ता अर्द  
मालियाए उमेहकाए तीर्थ मतार्व अपसजाए देवधा विराहिमसामणे कालम्मासे अठ  
किया अन्दविद्वाए विमाले उववा(य)इयाए समाए देवसवविक्षिति देवमूलतारीए  
चम्ब बोइसिन्दत्ताए उववाए ४ १ व तए व से चम्ब बोइसिन्दे बोइ[मि]गरमा  
अद्गुणोवत्तमे समाये फलियाए पञ्चतीए पञ्चतीमार्व पञ्चद, तंवद-माहारपञ्चतीए  
सरीरपञ्चतीए इनिवपञ्चतीए सासोधासुपञ्चतीए मासामध्यपञ्चतीए ५ १ ॥  
चम्बस्त व मन्ते। बोइसिन्दस्त बोइमरबो वेक्ष्य वार्त ठिई ववधा ६ मोक्षा।  
पद्मियेवमे वासुवदहस्तमध्यविद्व । एव लम्ब गोममा। अन्दस्त जाव बोइसार्वो  
सा दिवा रविहु । अन्दे व मन्ते। बोइसिन्दे बोइसरमा ताम्हे देवसोमाये  
आठक्काएर्व २ चहु वहु विविह २ । गोममा। महामिहेहे वार्त विविह ५ ।  
निक्षेपमो ६ १२॥ पद्म अन्दुयर्व समर्ते ४ ३ । १ ॥

य व व मन्ते। भमेव मावया जाव पुष्टिमार्व फामस्त अज्ञामवर्त्त  
अपम्हु पद्मो दोवस्त व मन्ते। अज्ञामवर्त्तु पुष्टिवार्व लम्बेव भमसा जाव  
संपोर्वा के अद्गु पद्मो! एव लम्ब चम्ब । तेव वालेव तेव समर्व एवमिहे वार्त  
नमरे। गुलसिन्द उव्वाणे। देविय राजा। समोहर्व । वहा अन्दे तहा सुटेव  
आग्मो जाव नहुमिहे उव्वासिता पद्मिगम्हो। गुलमालुष्मा। सावत्ती वर्ती।  
दुपद्गु नम्हे गाहावहै होत्ता अहै वहेव अर्व जाव विहर। वासो उमास्तो  
वहा अहै तहेव अम्बए, तहेव विराहिमसामणे जाव महामिहेहे वार्त विविह  
जाव अन्दे करेहिह । निक्षेपमो ७ १३॥ ५ विविह अज्ञामयी समर्ते ४ ३ । २ ॥

वह व मन्ते। जाव उपर्वेव उक्तवद्वो मालियबो। रामगिहे वर्तो। गुप्तिमिह  
उव्वाये। देविय राजा। सामी समोहर्व । परिसा निगगमा। तेव वालेव तेव समर्व  
दुन्हके मारग्मो दुन्हविन्दिए विमाले मुमर्विही दीहाशवति अठहै सामालियदाहसीव  
वहेव अन्दो तहेव जाप्तो नहुमिहे उव्वासिता पद्मिगम्हो। भम्हे । ६। इहापर  
साम्य। पुष्टममपुष्टम। एव लम्ब गोममा। तेव कम्हेव लेव समर्व जावार्वी लम्हे  
नमरी होत्ता। तत्त व वाणार्वीए भवरीए छोमिले नद्मे माहै परिसार, अहै वर्त  
अपरियै, रित्तव्वेव जाव सुपर्विविह । पसे उमोख्तो। परिषा कम्हुवार्व ८ १४॥

तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लङ्घद्वास्स समाणस्स इमे एयास्वे अज्ञातिथिए०—एवं खलु पासे अरहा पुरेतादाणीए पुव्वाणपुच्चिं जाव अम्ब्रसालवणे विहरइ, त गच्छामि णं पासस्स अरहाओ अन्तिए पाउब्बवामि, इमाड च ण एयास्वाइ अड्डाइ हैठड जहा पण्णन्तीए। सोमिले निरगबो स्वण्डियविहृणो जाव एवं वयासी—जत्ता ते भन्ते ! जवणिज्ज च ते २ पुच्छा। सरिसवया मासा कुलत्था एगे भव जाव सद्वुद्दे सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगए॥९५॥ तए ण पासे ण अरहा अन्यथा क्याइ वाणारसीओ नयरीओ अम्ब्रसालवणाओ उज्जाणावो पडिनिक्खमइ २ ता वहिया जणवयविहार विहरइ। तए ण से सोमिले माहणे अन्यथा क्याइ असाहुदसणेण य अपज्जुवासणथाए य मिच्छतपज्जवेहिं परिवहृमाणेहिं २ सम्भत्तपज्जवेहिं परिहाय-माणेहिं २ मिच्छत च पडिवन्ने॥९६॥ तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्यथा क्याइ पुच्चरत्तावरत्तकालसमयसि कुहम्बजागरिय जागरमाणस्स अयमेयास्वे अज्ञ-त्थिए जाव समुप्पज्जित्या—एव खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अच्चन्तमाहणकुलप्पसौए, तए ण मए वयाइ चिण्णाइ, वेया य अहीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इच्छीओ समाणीयाओ, पस्तुवृद्धंया क्या, जमा जेढा, दक्खिणा दिशा, अतिही पूड्या, अगरी हूया, जूवा निकिवत्ता, त सेय खलु मम इथार्णि कल्लं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए वहिया वहवे अम्बारामा रोवावित्तए, एवं माउलिङ्गा विळा कविट्ठा चिन्हा पुफ्कारामा रोवावित्तए, एव सपेहैइ २ ता कलं जाव जलन्ते वाणारसीए नयरीए वहिया अम्बारामे य जाव पुफ्कारामे य रोवावेहै। तए ण वहवे अम्बारामा य जाव पुफ्कारामा य अणुपुच्चेण सारकिवज्जमाणा सगोविज्जमाणा संवहिंजमाणा आरामा जाया किण्हा किण्हेभासा जाव रम्मा महामेहनिकुरम्बभूया पत्तिया पुष्पिक्या फलिया हरियगरेरिजमाणिसरीया अईव २ उवसोमेमाणा २ चिद्धन्ति॥९७॥ तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स अन्यथा क्याइ पुच्चरत्तावरत्तकालसमयसि कुहम्बजाग-रिय जागरमाणस्स अयमेयास्वे अज्ञतिथिए जाव समुप्पज्जित्या—एव खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नाम माहणे अच्चन्तमाहणकुलप्पसौए, तए ण मए वयाइ चिण्णाइ जाव जूवा निकिवत्ता, तए ण मए वाणारसीए नयरीए वहिया वहवे अम्बा-रामा जाव पुफ्कारामा य रोवाविया, त सेय खलु ममं इथार्णि कलं जाव जलन्ते सुवहु लोहकडाहकहुच्छुय तम्बिय तावसभण्ड घडावेता विउलं असण पाण खाइम साइम मित्तनाइ आमन्वेता तं मित्तनाइनियग० विउलेण असण० जाव समाणेता तस्सेव मित्त० जाव जेढुपुत्त कुहम्बे ठवेता त मित्तनाइ जाव आपुच्छित्ता सुवहु लोहकडाहकहुच्छुय तम्बिय तावसभण्डगं गहाय जे इमे गङ्गाकूला वाणपत्था

तावना भवन्ति तंश्चाहौरिमा पोरिमा शोक्षिया जहारे सहौरे बास्त्रे दुष्कर्त्ता  
दनुकर्त्तिया उम्मवया संक्षयगा निमज्जया संक्षयस्मगा इमिद्यज्ञास्ता उत्तरार्थ  
संयममा शूक्षयमा निमज्जयया इमितावधा उत्पन्ना दिशापातिक्षयो वहारिये  
दिश्यासियो जड्यातियो क्षयमुलिया अम्बुमिक्षयो वाचमिक्षयो सेवाक्षमिक्षये  
सूख्यार बन्धाहार वशाहार श्याहार उप्खाहार उम्माहार बीक्षाहार प्रैम्भारिये  
क्षयमूक्तयपापुण्ड्रज्ञाहार अमिमिसेवक्षीयायमूमा आयाक्षाहै प्रविण्यारेहे  
इक्षामोक्षिर्म बन्धुमोक्षिर्म पित्र अप्यार्थं क्षेमाना विहरन्ति उत्पर्वं ते ह विष्णु-  
पोक्षिस्या तावसा सेति अन्तिष्ठ दिशाप्रेमिक्षयाताए पक्षक्षाए, पक्षश्च ते वर्व  
ममाये इसं एकास्त्रं अमिमाहै अमिगिपिष्ठसामि-क्षय मे जामजीवाए बन्धुमोक्ष-  
अमिक्षियत्तर्य दिशाक्षयार्थ्यं ततोक्षमेवं तद्वृ वाहामो परिगिक्षय ३ स्त्रामिसुहस्त-  
आवक्षयमूमीए आवामेमास्त्रय विहरितप्रतिग्रन्थु एवं संपीहै २ ता वाहौ वाहौ बन्धुमो  
क्षयु घ्येह वाहौ दिशाप्रेमिक्षयताक्षताए पक्षश्च । पक्षश्च ते वर्व समाने  
द्वं एकास्त्रं अमिमाहै वाहौ अमिगिपिष्ठदा क्षयं एष्टुक्षमवे तत्त्वंशीक्षयार्थ-  
विहर ४ १५ ग तद्वं तोमिक्षे माहौसे विशी क्षमज्ञुक्षमपार्थियि आवक्षयमूमीय  
क्षयश्च २ ता वामस्त्रवनिमत्ते ज्ञेयत्र साए उद्दृष्ट तेषेव उवाक्षयश्च ३ ता  
कितिक्षयार्थ्यं गेन्द्रह २ ता पुरस्त्रियं दिनि पुक्षवेद ३ ता पुरस्त्रिमाए दिशाए तेषे  
महारावा पत्तावै परिवर्व अमिरक्षत शोक्षिक्षमाहूरियि जामि य तत्त्वं बन्धुमो  
व शूक्षयि व तथामि य पाप्यामि व शुष्णामि व क्षम्यामि य बीवामि व हरिकामि व  
तामि अगुजाजठप्रतिग्रन्थु पुरस्त्रियं दिति पक्षश्च ३ ता जामि य तत्त्वं क्षम्यामि व  
जाव हरिकामि व तार्थं गेन्द्रह २ ता कितिक्षयार्थ्यार्थ्यं मरोह ३ ता इच्छे व कुरुते व  
पात्मोर्ह व समिद्याक्षम्यामि य गेन्द्रह २ ता ज्ञेयत्र साए उद्दृष्ट तेषेव उवाक्षयश्च ३ ता  
कितिक्षयार्थ्यार्थ्यं ठेवेह २ ता ज्ञेह वद्वैर ३ ता उवक्षेप्त्वंसंज्ञयं करेह ३ ता  
एष्टुक्षमस्त्रत्वयाए ज्ञेयत्र गद्या महार्थै दण्ड उवाक्षयश्च ३ ता गर्वं महार्थै लेय-  
हर २ ता अस्त्रमज्जर्वं करेह ३ ता जस्तक्षिर्हु करेह ३ ता अस्त्रमिक्षयं करेह ३ ता  
आवक्षय बोक्षये परमत्रुभ्यै देवप्रियक्षमये एष्टुक्षमस्त्रत्वयाए प्रज्ञामो महार्थै लेय-  
पक्षश्च २ ता ज्ञेयत्र साए उद्दृष्ट उवाक्षयश्च ३ ता इच्छेहि व कुरुते व वाऽ-  
याए य वेदं रहेह २ ता सरदं करेह ३ ता अरत्यं अरत्यं मरोह ३ ता  
अमिं पात्तह ३ ता अमिं संपुक्षवेद ३ ता समिद्याक्षुर्व पक्षिगाह ३ ता अमिं इत्य-  
वेद ३ ता अमिस्म दाहिष्य पाच वात्ताहै तमावहै । तत्त्वापार्थं वहारे गर्वं हेत्व-  
मर्वं क्षम्यास्तु । इत्यहारे तद्यार्थं वाहौ तार्थं समावहै ॥ १० मदुवा य वर्णव व वर्ण-

लेहि य अग्नि हुणइ, चरुं साहेइ २ ता वलिवइस्सदेव करेइ २ ता अतिहिपूर्यं करेइ २ ता तथो पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ ॥ ९९ ॥ तए ण से सोमिले माहणरिसी - दोच्चांसि छट्टक्खमणपारणगंसि त चेव सब्बं भाणियन्व जाव आहार आहारेइ, नवरं इम नाणत्त—दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसि, जाणि य तत्थ कल्दाणि य जाव अणजाणउत्तिक्कु दाहिणं दिसि पस-रह । एव पच्चत्थमेण वरुणे महाराया जाव पच्चत्थम दिसि पसरइ । उत्तरेण वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसि पसरइ । पुव्वदिसागमेण चत्तारि विदिसावो भाणिय-व्वाओ जाव आहारं आहारेइ ॥ १०० ॥ तए ण तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अन्नया क्याइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अणिव्वजागरियं जागरमाणस्स अयमेयाहूवे अज्जन्त्येए जाव समुप्पजित्या—एव खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माह-णरिसी अच्छन्तमाहणकुलप्पमूए, तए ण मए वयाइ चिण्णाइ जाव जूवा निकिखत्ता, तए ण मए वाणारसीए जाव पुफ्कारामा य जाव रोविया, तए ण मए सुवहुं लोह० जाव घडावेत्ता जाव जेट्टपुत्तं कुडुवे ठवेत्ता जाव जेट्टपुत्त आपुच्छित्ता सुवहु लोह० जाव गहाय मुण्डे जाव पव्वइए, पव्वइए वि य ण समाणे छट्टुळ्डुण जाव विहरासि, त सेय खलु मम इयाणि कल जाव जलन्ते वहवे तावसे दिङ्गाभडे य पुव्वसगइए य परियायसगइए य आपुच्छित्ता आसमससियाणि य वहूइं सत्तसयाइ अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्यस्स किदिणसकाइयगहियसभण्डोवगरणस्स कट्टमुद्दाए मुह वन्नित्ता उत्तरादिसाए उत्तराभिमुहस्स महपत्थाण पत्थावेत्तए, एव सपेहेइ २ ता कल जाव जलन्ते वहवे तावसे य दिङ्गाभडे य पुव्वसगइए य तं चेव जाव कट्टमुद्दाए मुह वन्धइ २ ता अयमेयाहूव अभिगगह अभिगिणहइ-जत्थेव ण अह जलसि वा एव यलसि वा दुग्गासि वा निन्नसि वा पव्वर्यसि वा विसमसि वा गङ्गाए वा दरीए वा पक्खलिज वा पव्विज वा, नो खलु मे कप्पइ पच्चुट्टिएत्तिक्कु अयमेयाहूव अभिगगहं अभिगिणहइ २ ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहपत्थाण पत्थिए से सोमिले माहणरिसी पुव्वावरणहकालसमयसि लेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए, असोगवरपायवस्स अहे किदिणसकाइय ठवेइ २ ता वेइं वळेइ २ ता उवलेवण-समजण करेइ २ ता दब्भकलसहत्यगए लेणेव गङ्गा महाणई जहा सिवो जाव गङ्गाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ २ ता लेणेव असोगवरपायवे लेणेव उवागच्छइ २ ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेइ रएइ २ ता सरग करेइ २ ता जाव वलि-वडस्सठेव करेइ २ ता कट्टमुद्दाए मुह वन्धइ २ ता तुसिणीए सच्चिड़ ॥ १०१ ॥ तए ण तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि एगे देवे अन्तियं

पारम्परा॒ । तए वं से देवे सोमिक्षमाहर्ण एवं वयासी-हैं भो सोमिक्षमाहर्ण !  
 पम्बर्या॑ । कुपम्बद्वै ते॒ । तए वं से सोमिक्षे तस्य देवस्य वोविषि तव्यिषि एव  
 महूं नो भावाद् नो परिज्ञायाव वाव तुशिषीए॒ संचिद्वै॑ । तए वं से देवे सोमिक्षे॑  
 माहर्णरितिणा भजावाइज्ञमाणे जामेव शिषि पारम्परा॒ तामेव शिषि परिग्रह॑ ।  
 तए वं से सोमिक्षे व्याव जस्ते वाम्पमत्पवित्रये किंविष्टक्षये पात्र  
 गद्विभन्नशेवगरये कद्मुराए॒ सुई॒ वन्धै॑ २ ता उत्तरामिसुहे॒ संपत्तिए॑ ॥ १ ३ ॥  
 तए वं से सोमिक्षे विश्वरितसमिमि पुम्पावरल्लक्ष्ममर्यादे॑ जेवेव सत्तवन्ने॑ तेवेव  
 उवागाए॑, उत्तराम्बस्य व्यावे॑ किंविष्टक्षये॑ ठवै॒ २ ता वेद॑ व्योर॑ वहा अतीव-  
 वरपावये वाव अविंग तुवाव, कद्मुराए॒ सुई॒ वन्धै॑, तुशिषीए॒ संचिद्वै॑ । तए वं  
 तस्य सोमिक्षस्य पुम्परतावरत्तमस्यविषि एवो॑ देवे॑ अनितर्वं पारम्परा॒ । तए वं  
 से देव अस्तुमिक्षद्विषे॑ वहा असोगवरपावये वाव पडिगए॑ । तए वं से सोमिक्षे॑  
 वहा वाव जस्ते वाम्पमत्पवित्रये किंविष्टक्षये॑ गेवहै॑ २ ता कद्मुराए॒ सुई॒  
 वन्धै॑ २ ता उत्तरामिसुहे॒ संपत्तिए॑ ॥ १ ४ ॥ तए वं से सोमिक्षे॑  
 ल्प्यविष्टविष्टमिमि पुम्पा(पव्य)वरल्लक्ष्मसमर्यादे॑ जेवेव असोगवरपावये॑ तेवेव  
 उवागच्छै॑ २ ता असोगवरपाववस्य व्यावे॑ किंविष्टक्षये॑ ठवै॒ २ ता वेद॑ व्योर॑  
 वाव व्योर॑ महान्नर्व कद्मुरावै॑ २ ता अयेव असोगवरपावये॑ तेवेव उवागच्छै॑ २ ता  
 असोगवरपाववस्य व्यावे॑ किंविष्टक्षये॑ ठवै॒ ३ ता वेद॑ एवै॑ २ ता कद्मुरावै॑  
 सुई॒ वन्धै॑ २ ता तुशिषीए॒ संचिद्वै॑ । तए वं तस्य सोमिक्षस्य पुम्परतावरत्तासे॑  
 एवो॑ देवे॑ अनितर्वं पाहमावित्वा तं चेत॑ भवद्व वाव पडिगए॑ । तए वं से सोमिक्षे॑  
 वाव जस्ते वाम्पमत्पवित्रये किंविष्टक्षये॑ वाव कद्मुराए॒ सुई॒ वन्धै॑ २ ता  
 उत्तराए॑ विमाए॑ उत्तरामिसुहे॒ संपत्तिए॑ ॥ १ ५ ॥ तए वं से सोमिक्षे॑ वउत्त-  
 विष्टपुम्पावरल्लक्ष्मसमर्यादे॑ जेवेव वट्पावये॑ तेवेव उवागाए॑, वट्पाववस्य व्यावे॑  
 किंविंग ठवै॒ २ ता वेद॑ व्योर॑, उद्देवत्तमस्यव्यावे॑ करेव वाव कद्मुराए॒ सुई॒ वन्धै॑,  
 तुशिषीए॒ संचिद्वै॑ । तए वं तस्य सोमिक्षस्य पुम्परतावरत्तासे॑ एवो॑ देवे॑ अनितर्वं॑  
 पारम्परावित्या तं चेत॑ भवद्व वाव पडिगए॑ । तए वं से सोमिक्षे॑ वाव जस्त॑ वाव-  
 ल्प्यविष्टविष्टये॑ किंविष्टक्षये॑ वाव कद्मुराए॒ सुई॒ वन्धै॑ उत्तराए॑ उत्तरामिसुहे॒  
 संपत्तिए॑ ॥ १ ६ ॥ तए वं से सोमिक्षे॑ ल्प्यविष्टविष्टमिमि पुम्पावरल्लक्ष्मसमर्यादे॑  
 जेवेव उम्परपावये॑ तपेव उवागच्छै॑ उम्परपाववस्य व्यावे॑ व्यावे॑ तपेव॑  
 एव॑ वहाव वाव कद्मुराए॒ सुई॒ वन्धै॑ वाव तुशिषीए॒ संचिद्वै॑ । तए वं तस्य  
 सोमिक्षमाहर्णसे॑ एव देवे॑ जाव एव॑ वयासी-हैं भा॑ ल्पेक्ष्य ।

पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते, पठमं भणइ तहेव तुसिणीए सचिद्वड । देवो दोच्चपि तच्चपि क्यड-सोमिला ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते । तए ण से सोमिले तेण देवेण दोच्चपि तच्चपि एव त्रुते समाणे त देव एवं वयासी-कहं णं देवाणुप्पिया । मम दुप्प-व्वइयं ? । तए ण से देवे सोमिल माहणं एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । तुम पामस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अन्तिय पञ्चाणुव्वए सत्तसिकखावए दुवालसविहे सावयधम्मे पडिवज्ञे, तए ण तव अन्नया क्याइ असाहुटसणेण० पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि कुदुम्बजागरिय जाव पुव्वचिन्तियं देवो उच्चारेड जाव जेणेव असो-गवरपायवे तेणेव उवागच्छसि ? ता किदिणसकाइयं जाव तुसिणीए सचिद्वुसि, तए ण पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अन्तिय पाउब्बवामि, ह भो सोमिला ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते, तह चेव देवो नियवयण भणइ जाव पञ्चमदिवसभ्मि पुव्वावरण्हकालसमयसि जेणेव उभ्वरपायवे तेणेव उवागए किदिणसकाइय ठवेसि, वेड वहुसि, उवलेवण० करेसि ? ता कद्धुमुद्दाए मुह वन्धेसि ? ता तुसिणीए सचिद्वुसि, त एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव दुप्पव्वइय ॥ १०६ ॥ तए ण से सोमिले तं देवं एवं वयासी-कहं णं देवाणुप्पिया । मम सुप्पव्वइय ? । तए ण से देवे सोमिल एवं वयासी—जइ ण तुम देवाणुप्पिया ! इयाणिं पुव्वपडिवज्ञाइ पञ्च अणुव्वयाइ० सयमेव उवसपजित्ताण विह-रसि तो ण तुज्ञ इयाणिं सुप्पव्वइय भवेजा । तए ण से देवे सोमिल वन्दह नम-सइ व ० २ ता जामेव दिसि पाउभूए तामेव दिसि पडिगए । तए ण सोमिले माहणरसी तेण देवेण एव त्रुते समाणे पुव्वपडिवज्ञाइ० पञ्च अणुव्वयाइ० सयमेव उवसपजित्ताण विहरइ ॥ १०७ ॥ तए ण से सोमिले वहुहिं चउत्थछद्वुम जाव मासद्वमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं अप्पाण भावेमाणे वहुइ वासाइ समणो-वासगपरियाग पाउणइ २ ता अद्वमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेह २ ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेइ २ ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कन्ते विराहियसम्मते कालभासे काल किञ्चा सुक्कवडिसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिजसि जाव ओगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववज्ञे ॥ १०८ ॥ तए ण से सुक्के भहग्गहे अहुणोव-वज्ञे समाणे जाव भासामणपज्जीए । एवं खलु गोयमा ! सुक्केण० सा दिव्वा जाव अभिसमझागया । एग पलिओवम ठिई । सुक्के ण भन्ते । महग्गहे तओ देवलोगाओ आउक्खएण० कहिं गच्छाहिइ २ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्ज़-हिइ ५ । निक्खेवओ ॥ १०९ ॥ तहयं अज्ज्ययणं समत्तं ॥ ३ । ३ ॥

जइ ण भते ! उक्खेवओ । एवं खलु जबू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे । गुणसिलए उज्जाणे । सेणिए राया । सामी समोसदे । परिसा निगया

॥ ११ ॥ तेष्व अलेखं तेष्व समर्थं बहुपुत्रिता देवी द्योहमे क्षये गुडुगीए  
दिमाने समाए धृस्माए बहुपुत्रिता द्योहासर्वसि चर्वहे सप्तामिक्षुहस्तीहे  
चर्वहे महत्तरियाहे वहा सूरियामे जात मुखमाणी शिरह, इमं च चं कलहर्व  
बम्हुदीनं दीर्घं दिव्वेळे वोहिणा जामेष्माणी २ पात्रह ३ ता समर्थं भवर्व महा-  
वीर वहा सूरियामो जात नमंकिता द्योहासप्तार्हीहे पुरत्वामिशुहा समित्तामा । व्यामि-  
वोया वहा सूरियामस्स सूसरा चप्ता आमिमोगित्यं देव तामेन्, जामित्ताम-  
चोमजसाहस्रविलिप्त्यं जामित्तामवश्यमो जात उत्तरितेष्वं दिव्वाक्षस्तेष्वं  
चोमजसाहस्रित्तिर्ही विम्मोहेहि आगमा वहा सूरियामे । पम्ममहा सम्माणा । तए चं  
सा बहुपुत्रिता देवी चाहिणं मुख पठारेह देव्वामार्हं अद्भुतम रेव्वामार्हित्ताम च  
जामामो भुयामो अद्भुतमे रुपानन्तरं च चं वहै वारया च व्यामित्तामे च दिम्माए च  
दिमित्तामे य दिव्वाम, नद्येहि वहा सूरियामो उपवाहिता पविण्यामा ॥ ११ ॥  
गत्ते । ति वगवं गोदमे सुमणं भगवं भद्रावीर वन्दव नन्दव । वृद्धागारसम्भ ।  
बहुपुत्रिता चं मन्ते । देवीए सा रित्ता देविहु पुष्टा जात अभिषम्भागवा ।  
एवं वहु गोदमा । तेष्वं काढेन तुचं समर्थं वापारसी नामे नवरै अम्भसाम्भमे  
उज्जामे । तत्यं चं वापारसीए फदरिए महे नामे सत्त्वाहे होत्ता चो चत  
अपरिष्यू । तत्सुर्णं याहस्य द्युमरा नाम भारिया द्युम्भाक वक्षा अभियात्तरी वक्षमे-  
प्परमाया वापि होत्ता ॥ ११२ ॥ तए चं द्युसे द्युमाए द्युत्तवाहीए नवया अवं  
पुम्भरत्तवरतानहि इद्युम्भवागरित्यं जापारमाणीए इमेशाहै जात सद्यप्पे सुम्भ-  
वित्ता—एवं द्यु चाहे अरेखं सत्त्वाहैर्वं सर्वि दिव्वामर्हं मोगमोगर्हं भुवामी  
विहरामि नो जेहं चं वह वारया चा वारिते चा व्यामा । तं भज्जामो चं तामो अम्भ-  
वालो जात सुम्भदे चं तापि अम्भवाम भुवामम्भवीविद्यप्पे जापि नदे दिव्वामित्त-  
संमूकगाहं अपतुद्युद्यगाहं भुवरस्युवाप्यापि मम्भान(मंगुळ)प्पवामित्तामि वक्षमू-  
क्षम्भदेसमार्यं अभिसरेमाप्यापि पण्ड्यनित पुष्टो य फोमङ्गलम्भदेवनहि हृपेहि  
दिव्विद्यर्हं उप्पत्तिवित्तिमामि इन्ति उमुकाप्प उम्भुरे पुष्टो पुष्टो मम्भव्यमित्ति,  
आहं चं अवज्ञा व्युत्त्वा अम्भव्युत्ता एवो एवामित्ति न पता व्यंदव वाव फ्रिवार  
॥ ११३ ॥ तेष्वं काढेन ३ द्युम्भवामो चं भज्जामो इरियासुमित्तामे यात्तमित्तामे  
एस्यासुमित्तामो जापायक्षमतानिक्षेव्वासमित्तामो उवारपास्मव वक्षमूक्षित्ताम-  
पातिपुम्भवाप्याप्याप्ये मण्डुहीमो वयगुदीमो वाम्भुतीमो गुतिनित्तामो उप्पम-  
वारियीमो वहुस्मुकाम्भे वहुपरिषारायो पुम्भालुपुम्भि वरमाज्जीमो पाम्भक्ष्यमे पूर्व-  
माणीमो लेपेव वापारसी भवरी तेष्वेव वज्जामा व्यागच्छित्ता व्यापत्तिर्हं अव्यं

ओगिणिहता सजमेण तवसा० विहरन्ति ॥ ११४ ॥ तए ण तासि सुब्वयाणं अज्ञाण  
एगे सधाडए वाणारसीनयरीए उच्चनीयमज्जिन्नमाड कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खा-  
यरियाए अडमाणे भद्रस्स सत्यवाहस्स गिह अणुपविष्टे । तए ण सुभद्रा सत्यवाही  
ताओ अज्ञाओ एज्जमाणीओ पासइ २ ता हट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्मु-  
द्देड २ ता सत्तट्पयाई अणुगच्छ० २ ता बन्दइ नमसइ वं० २ ता विउलेण  
असणपाणखाइमसाडमेण पडिलामेत्ता एव वयासी—एवं खलु अह अज्ञाओ ! भद्रेण  
सत्यवाहेण सद्दिं विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणी विहरामि, नो चेव ण अह दारग  
वा दारिय वा पयायामि, त धन्नाओ ण ताओ अम्मयाओ जाव एत्तो एगमवि न  
पत्ता, त तुव्वमे अज्ञाओ ! वहुणायाओ वहुपढियाओ वहूणि गामागरनगर जाव  
सनिवेसाइ आहिण्डह, वहूण राईसरतलवर जाव सत्यवाहप्पभिहेण गिहाइ अणु-  
पविसह, अतिथ से केइ कहिंचि विजापओए वा मन्तप्पओए वा वमण वा विरेयण  
वा वत्थिकम्म वा ओसहे वा मेसजे वा उवलद्दे, जेण अह दारगं वा दारिय  
वा पयाएजा ? ॥ ११५ ॥ तए ण ताओ अज्ञाओ सुभद्रा सत्यवाहिं एव वयासी-  
अम्हे ण देवाणुप्पिए ! समणीओ निगगन्थीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तवम्भया-  
रिणीओ, नो सलु कप्पह अम्ह एयमठु कण्णेहिवि निसामेत्तए किमङ्ग पुण उद्दिसित्तए  
वा समायरित्तए वा, अम्हे ण देवाणुप्पिए ! नवर तव विचित्त केवलिपञ्चत्तं धम्म  
परिकहेमो ॥ ११६ ॥ तए ण सा सुभद्रा सत्यवाही तासि अज्ञाण अन्तिए वम्म  
सोच्चा निसम्म हट्ठुद्धा ताओ अज्ञाओ तिक्कुत्तो बन्दइ नमसइ वं० २ ता एव  
वयासी—सह्यामि ण अज्ञाओ ! निगगन्थ्य पावयण, पत्तियामि ण रोएमि ण  
अज्ञाओ ! निगगन्थ्य पावयण, एवमेय तहमेय अवितहमेय जाव सावगधम्मं पडिवज्जए,  
अहास्तुह देवाणुप्पिए ! मा पडिवन्ध करेह, तए ण सा सुभद्रा सत्यवाही तासि  
अज्ञाणं अन्तिए जाव पडिवज्ज० २ ता ताओ अज्ञाओ बन्दइ नमसइ वं० २ ता  
पडिविसज्ज० । तए ण सा सुभद्रा सत्यवाही समणोवासिया जाया जाव विहरइ  
॥ ११७ ॥ तए ण तीसे सुभद्राए समणोवासियाए अन्नया क्याइ पुब्वरत्तावरत्त-  
कालसमयसि कुङ्गम्भजागरिय जागरमाणीए अयमेयाह्वे अज्ञत्यिए जाव समुप्यं  
जित्या—एव खलु अह भद्रेण सत्यवाहेण० विउलाइ भोगभोगाइ जाव विहरामि,  
नो चेव ण अहं दारग वा , त सेय खलु मम कळ जाव जलन्ते भद्रस्स  
आपुच्छिता सुब्वयाण अज्ञाण अन्तिए अज्ञा भविता आगाराओ जाव पव्वदत्तए,  
एव सपेहेइ २ ता कळे जेणेव भेदे सत्यवाहे तेणेव उवागया करयल जाव एव  
वयासी—एवं खलु अह देवाणुप्पिया ! तुव्वमेहिं सद्दिं वहूइ वासाइ विउलाइ

मोगमोगाई जाव विहारि नो खेद अं दसरं वा बारिं वा प्राचामि तं  
इच्छामि वं देवालुपिया ! दुष्मेहि जन्मतुवाया उमाषी उच्चवार्ण अजार्ण अं  
प्रमहात् ॥ ११८ ॥ तए वं से मो॒ सत्पवाहे शुभर् सत्पवाहि एवं क्वासी-वा वं  
दुर्मं देवालुपिये ! इमामि मुष्टा वाव प्रमवाहि, भुवाहि ताव देवालुपिये ! भर  
सर्वि विरक्षर्ण मोगमोगाई, तजो पक्षा भुवामोहि मुष्टमार्ण अजाय वाव प्रमवाहि !  
तए वं शुभवा सत्पवाही भास्तु एममहु नो परियाक्ष । दोर्वपि व्यापि सुम्भ  
सत्पवाही भार्ण सत्पवाहं एवं क्वासी-इच्छामि वं देवालुपिया ! दुष्मेहि अन्त्य  
वाव उमाषी वाव प्रमहात् । तए वं से मो॒ सत्पवाहे वाहे नो सत्पवाह भृत्य  
भास्तुवाहि व एवं प्रववाहि य सत्पवाहि य विवक्षणाहि य व्यापवित् । वा वाव  
विवितात् वा ताहे अज्ञामए चेवं शुभवात् निक्षमार्ण अशुभवित्वा ॥ ११९ ॥ तए  
वं से मो॒ सत्पवाहे विवर्ण असर्ण ४ उक्षवाहावेहि विवनाह । तमो पक्षा मोहन-  
वेक्षाए वाव विलाहि उक्षावेहि उमागेहि, शुभर् सत्पवाहि भास्तु सम्भाव्याग्रहित्वा  
सिर्वि पुरिस्त्रहस्तवाहिवि तीव्रे तुहदेह । उजो वा शुभवा सत्पवाही विवनाह वाव  
संविक्षसुपरिकुदा सम्भित्वाए वाव रवेव वासारसीलवरीए मज्जांसज्जेवं तेवेव  
प्रमवाप्तं अज्ञार्ण उक्षस्तु तेवेव उक्षवाहाह २ वा शुभवित्वाहस्तवाहिवि तीव्रे  
उपेवं शुभर् सत्पवाहि उमाषी पक्षोद्देह ॥ १२ ॥ य तए वं मो॒ सत्पवाहे शुभर्ण  
सत्पवाही पुरमो अठै जेवेव सत्पवा अज्ञा तेवेव उक्षवाहाह २ वा शुभवाहे  
अज्ञाओ बन्दह नमहेह वं २ वा एवं क्वासी-एवं शुभ देवालुपिया ! शुभर्ण  
सत्पवाही भम भारिभा शुभ क्षता अव वा वं वाहा विविका सिर्वि  
वाहवा विविहा रोगामवा फुष्टम्भु, एष वं देवालुपिया ! संधारभवविक्षमा तीव्रा  
जन्मन(न)मरणावेवेवालुपियालं अन्तिह शुभवा मत्तिता वाव प्रमवाह, व एवं अवे  
देवालुपियार्ण सीसिद्धीमिक्षय दक्षवामि पवित्रक्षन्तु वं देवालुपिया ! तीव्रिवि  
विवर्ण । अलक्ष्मी देवालुपिया वा पवित्रक्षय करेह ॥ १२१ ॥ तए वं वा शुभवा  
उत्पवाही शुभवाहि अज्ञाहि एवं तुवा उमाषी शुभ सम्मेव वासारसम्भावेवार्ण,  
ब्लौमुक्त २ वा सवमेव पक्षुद्विवेव अवेव करेह २ वा अवेव सत्पवाही अज्ञाप्ते  
तेवेव उक्षवाहाह २ वा शुभवामो अज्ञाओ विक्षातो वावाहिप्रवाहिवेवं बन्दह  
नमहेह वं २ वा एवं क्वासी-जाहिवे नै भन्ते 'वहा देवावन्दा तहा प्रवद्वा  
वाव अज्ञा वाया वाव प्रात्ममयारिणी ॥ १२२ ॥ तए वं वा शुभर् अज्ञा अज्ञावा  
वाव अज्ञा वाया वाव प्रात्ममयारिणी ॥ १२३ ॥ तए वं वा शुभर् अज्ञा अज्ञावा  
वाव अज्ञा वाया वाव प्रात्ममयारिणी ॥ १२४ ॥ तए वं वा शुभर् अज्ञा अज्ञावा

य सज्जलगाणि य खीर च पुष्फाणि य गवेसद् गवेसिता बहुजणस्स दारए वा  
दारिया वा कुमारे य कुमारियाओ य डिम्मए य डिम्मियाओ य अप्पेगइयाओ अब्मङ्गेह,  
अप्पेगइयाओ उच्छवेह, एव फालुयपाणएण पहावेह, अप्पेगइयाण पाए रयह, ० ओड्हे  
रयह, ० अच्छीणि अखेह, ० उसुए करेह, ० तिलए करेह, अप्पेगइयाओ दिंगिदलए  
करेह, अप्पेगइयाण पन्तियाओ करेह, अप्पेगगाह छिज्जाइ करेह, अप्पेगइया वणएण  
समालभह, ० चुणएण समालभह, अप्पेगइयाण खेलणगाइं दलयह, ० खज्जलगाइं  
दलयह, अप्पेगइयाओ खीरभोयण भुजावेह, अप्पेगइयाण पुष्फाइं ओमुयह, अप्पे-  
गइयाओ पाएसु ठवेह, जंघासु करेह, एव ऊसु उच्छवेह कटीए पिट्हे उरसि खन्धे सीसे  
य करयलपुडेण गहाय हलउलेमाणी २ आगायमाणी २ परिगायमाणी २ पुत्तपिवास  
च धूयपिवास च नत्तपिवास च नत्तपिवास च पच्छुभवमाणी विहरह ॥ १२३ ॥  
तए ण ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ सुभदं अज एव वयासी-अम्हे ण देवाणुपिए !  
समणीओ निगन्थीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तव्म्भयारिणीओ, नो खलु अम्ह  
कप्पह जातककम्म करेत्तए, तुम च ण देवाणुपिए ! बहुजणस्स चेडरुवेसु मुच्छिया  
जाव अज्जोववज्ञा अब्मङ्गण जाव नत्तपिवास वा पच्छुभवमाणी विहरसि, त ण तुमं  
देवाणुपिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पाय[प]च्छित्त पडिवज्जाहि ॥ १२४ ॥  
तए ण सा सुभदा अज्जा सुव्वयाण अज्जाण एयमट्ठ नो आढाह नो परिजाणह  
अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरह । तए ण ताओ समणीओ निगन्थीओ  
सुभदं अज हीलेन्ति निन्दन्ति खिसन्ति गरहन्ति अभिकर्खण २ एयमट्ठ निवारेन्ति  
॥ १२५ ॥ तए ण ती[ए]से सुभद्हाए अज्जाए समणीहिं निगन्थीहिं हीलिज्जमाणीए  
जाव अभिकर्खण २ एयमट्ठ निवारिजमाणीए अयमेयाहवे अज्जत्तिए जाव समु-  
पज्जित्य—जया ण अह अगारवास वसामि तया ण अहं अप्पवसा, जप्पभिं च  
ण अहं सुण्डा भविता आगाराओ अणगारिय पव्वइया तप्पभिं च ण अहं परवसा,  
पुर्विं च समणीओ निगन्थीओ आढेन्ति परिजाणेन्ति इयाणि नो आढाएन्ति नो  
परिजाणन्ति, त सेय खलु मे कळ जाव जलन्ते सुव्वयाण अज्जाण अन्तियाओ  
पडिनिक्खमिता पाडिएक उवस्सय उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, एवं सपेहेह २ त्ता  
कळ जाव जलन्ते सुव्वयाण अज्जाण अन्तियाओ पडिनिक्खमह २ त्ता पाडिएक  
उवस्सय उवसपज्जित्ताण विहरह । तए ण सा सुभदा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्टिया अणि-  
वारिया सच्छन्दमह बहुजणस्स चेडरुवेसु मुच्छिया जाव अब्मङ्गण च जाव नत्ति-  
पिवास च पच्छुभवमाणी विहरह ॥ १२६ ॥ तए ण सा सुभदा पासत्या पासत्यविहा-  
रिणी एव ओमज्ञा ओसज्जविहारिणी कुसीलविहारिणी ससत्ता ससत्तविहारिणी

भद्राजन्दा अद्वान्दविहारिणी वहूहै बासद उममध्यपरिमाप पितृमह २ ता अहमां  
सियाए उत्तेष्ठाए अतार्थं सीरे मताइ अनसायाए ऐद्रता लेस्स ठाक्सस अना-  
म्भेष्टपितृमहान्ता काळमारे ब्रह्म किंवा लोहमे कप्पे वदुपुतिमालिमारे उक्ताक्षमह  
दिवसपितृमहान्ति देवद्वान्दविहारिणा अतुम्भस्तु असंखेज्ञामापमेताए घोगाह्याए वदुपुतिम  
देविताए उववदा ॥ १२७ त तए वं सा वदुपुतिमा रेखी लहुयोवदक्षमाता समार्थ  
प्यविहाए पज्ञातीए जाव मासामनपज्ञातीए पर्व घ्रातु गोवमा । वदुपुतिमाए रेखी  
सा दिव्या देविती जाव अमितमद्वागमा त १२८ वा से केवद्वेष्ट मन्ते । एवं तुष्ट-  
वदुपुतिमा रेखी २ । गोवमा । वदुपुतिमा नै देखी जाहे जाहे उद्गस्त देवितस्त  
देवरतो उवत्पातिवर्ण वरेह ताहे २ वहवे वारए व दारियालो व तिम्हए व  
किम्भिमयाभ्यो य वित्तमह २ ता जेवेव सारे देवित्वे देवद्वाया देवेव उवाम्भर १ वा  
उद्गस्त देवितस्त देवरतो रिवर्ण देवित्वि दिव्ये देवद्वार्द विष्व वदाकुमार्द उवरतित  
दे तुष्टद्वेष्ट पेमना । एवं तुष्ट-वदुपुतिमा रेखी २ । वदुपुतिमाए वं मन्त । रेखी  
पेखद्वेष्ट जाल ठिँई पक्षता ३ गोवमा । जतारि पक्षिमेवमाई ठिँई पक्षता । वदुपुतिमा वं  
मन्ते । देखी वाशो देवलोगालो आउक्ष्याएव तिक्ष्यक्षणार्थं भक्षक्षणार्थं अवस्तर वर्व  
अहता कहि गच्छिविद् कहि उवविजिहि । गोवमा । इहेव चम्मुहीवे रीवे जाएहे इहे  
विष्वमिरिपाम्भूते विमेवर्दनिवेदे माहृष्टुर्महि दारियाद फ्लाम्याविह ॥ १२९ ॥ तद्  
य हीधे दारियाए अम्भापिकरो एक्षारसमे दिवेह वीहक्षमे जाव वारसेहि दिवसेहि  
वीहक्षमेहि अयमेयाहर्वं नामधेज्ञ करेनित—होठ वं अम्है इमीसे दारियार नामधेव  
सोमा ॥ १३ ॥ तए वं सोमा उम्भुक्ष्यात्मनावा नित्यवद्यरियमेता वेष्टवप्तम्भुयता  
इवेज य बोध्येष्य व उविद्वा उविद्वुप्तीरा जाव मवित्स्त । तए वं  
तं सोमे दारिनं अम्भापिकरो उम्भुक्ष्यात्मगार्वं विष्ववप्तियमेत्त बोध्यवप्तम्भुपर्वत  
पविद्विष्ट उद्गेष्टं पविद्ववर्णं विवगस्तु भावेज्ञस्तु एक्षारस्तु मारियताए  
उद्गस्त्वह । या वं तस्तु मारिया भविस्त्वह इहु क्षता जाव अव्यवस्थापत्तमावा  
ऐक्षकेवा इह उरुस्पेतिवा चेष्टये(म)वा इह उरुस्पैतिवाद्विवा रक्षावरक्षां तिव  
मुसारविक्षया उरुस्पेतिवा मा वं चीर्व जाव विविहा देवावाहा उरुस्त्व ॥ १३१ ॥  
तए वं या सोमा माहती उम्भुक्ष्येर्व सहि वित्तमह भावगमेवावै उम्भमानी स्वप्तरे २  
रुद्यमानी पद्मम्भानी सोम्भेहि संवच्छरेहि वरीस वारपत्तै फ्लाम्यह । तए वं या  
सोमा माहती तही वहूहै वारेहि व दारियाहि व तुमारेहि व तुमारेहि व  
तिम्हएहि य विभिम्भाविहि य अप्येष्टएहि उत्ताप्तेज्ञएहि व अप्येष्टएहि विभिम्भाविहि  
एहि य अप्येष्टएहि पीड्यपाएहि अप्येष्टएहि परंगयपाएहि अप्येष्टएहि परंगम्भाविहि

अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं अप्पेगइएहिं थण मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खीर मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खेलणय मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं खजग मग्गमाणेहिं अप्पेगइएहिं कूर मग्गमाणेहिं पाणिय मग्गमाणेहिं हसमाणेहिं रुसमाणेहिं अक्रोसमाणेहिं अकुस्समाणेहिं हणमाणेहिं विष्पलायमाणेहिं अणुगम्ममाणेहिं रोचमाणेहिं कन्दमाणेहिं विलवमाणेहिं कूवमाणेहिं उक्कूवमाणेहिं निहायमाणेहिं पलवमाणेहिं दहमाणेहिं दसमाणेहिं वभमाणेहिं छेरमाणेहिं मुत्तमाणेहिं मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता मइल-वसणपुच्छा जाव असुडबीभच्छा परमदुग्गन्धा नो सचाएइ रुक्कूडेण सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुज्जमाणी विहरित्तए ॥ १३२ ॥ तए णं तीसे सोमाए माहणीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुहुम्बजागरियं जागरमाणीए अयमेयारुवे जाव समुप्पज्जित्या-एव खलु अह इमेहिं वहूहिं दारगेहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेग-इएहिं उत्ताणसेज्जएहि य जाव अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुजाएहिं दुजम्मएहिं हयविष्पहयभगोहिं एगप्पहारपडिएहिं जेण मुत्तपुरीसवमियसुलित्तोवलित्ता जाव परम-दुव्विभगन्धा नो सचाएमि रुक्कूडेण सद्धि जाव भुज्जमाणी विहरित्तए, त धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव जीवियफले जाओ ण वन्द्वाओ अवियाउरीओ जाणकोप्पर-मायाओ सुरभिसुगन्धगन्धियाओ विउलाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुज्जमाणीओ विहरन्ति, अह ण अवन्ना अपुणा अक्यपुणा नो सचाएमि रुक्कूडेण सद्धि विउलाइ जाव विहरित्तए ॥ १३३ ॥ तेण कालेण तेण समएण सुव्वयाओ नाम अज्ञाओ इरियासमियाओ जाव वहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणेव विमेले सनिवेसे अहापडिहव उग्गह जाव विहरन्ति । तए ण तासि सुव्वयाण अज्ञाण एगे सधाडए विमेले सनिवेसे उच्चनीय० जाव अडमाणे रुक्कूडस्स गिह अणुपविट्ठे । तए ण सा नोमा माहणी ताओ अज्ञाओ एजमाणीओ पासइ २ ता हट्ट० खिप्पामेव आसणाओ अच्छुट्टे २ ता सत्तट्टपयाइ अणुगच्छड २ ता वन्दइ नमसइ वं० २ ता विउलेण असण ४ पडिलामेइ २ ता एव वयासी-एव खलु अह अज्ञाओ । रुक्कूडेण सद्धि विउलाइ जाव सवच्छरे २ जुगल पयामि, सोलमहिं सवच्छरेहिं वत्तीस दारगहवे पयाया, तए ण अह तेहिं वहूहिं दारएहि य जाव डिम्भियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहिं जाव मुत्तमाणेहिं दुजाएहिं जाव नो सचाएमि विहरित्तए, त इच्छामि ण अह अज्ञाओ । तुम्ह अन्तिए धम्म निसामेत्तए । तए ण ताओ अज्ञाओ सोमाए माहणीए विनित्त केवलिपन्नत धम्म परिकहेन्ति ॥ १३४ ॥ तए ण सा नोमा माहणी तासि अज्ञाण अन्तिए धम्म सोचा निसम्म हट्ट जाव हियया ताओ अज्ञाओ वन्दइ नमसइ वं० २ ता एव वयासी-सद्व्वामि ण अज्ञाओ !

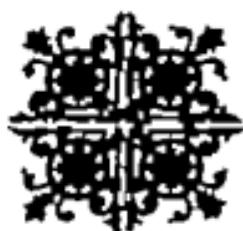
निमन्तरं पाकयर्ण जाव अप्युद्देशि च अजास्तो । निमन्तरं पाकयर्ण एवमेव अजास्ते । जाव से जहैर्य दुष्ट्ये रया, च भवते अजास्तो । रुद्रूर्दे आपुच्छामि तए च चर्व  
देवालुप्तिमात्रं अनितए मुम्हा जाव फलवामि । अहस्ताहै देवालुप्तिए । मा एव  
चन्द्रं । तए चं सा सोमा माहृषी तामो अजास्तो अन्धर नर्मस्त्र चं १ य  
पठिनिष्ठेत् ॥ १३५ ॥ तए चं सा सोमा माहृषी तेजेव रुद्रूर्दे तेजेव उत्तमा  
करम्भं एव वयासी-एवं वाहू मए देवालुप्तिमा । अजास्त अनितए अम्भे निरुन्ते  
से ति च चं वम्भे इक्षिए जाव अमित्यए, तए चं अहै देवालुप्तिमा । दुम्भेवै  
अप्युच्छामा दुम्भवार्णं अजास्त जाव फलश्चयए ॥ १३६ ॥ तए चं दे रुद्रूर्दे लेमे  
माहृषि एवं वयासी-मा चं दुम्भे देवालुप्तिए । इयामि मुम्हा भविता जाव फलवाहै-  
मुम्हाहै जाव देवालुप्तिए । भए सद्यि विरलद्वं भोगभोगार्दं तथो पात्रम् मुलम्भे  
दुम्भवाजं अजास्तं अनितए मुम्हा जाव फलवाहै ॥ १३७ ॥ तए चं ता लेम  
माहृषी व्यापा अप्यमहृणामरणार्दिवसुरीरा चेतियावक्षामररिक्षिया ताम्भे  
मिथामो पठिनिष्ठम्भद २ ता विशेषं संनिवेसं अजास्तम्भेवै तेजेव मुम्हवार्णं  
अजास्तं तदस्तप् तेजेव उपागच्छ २ ता दुम्भवामो अजास्तो अन्धर नर्मस्त्रं  
फलुवास्तइ । तए चं तामो दुम्भवामो अजास्तो सोमाए माहृषीए विवितं अविनिष्ठये  
वम्भे परिक्षेन्ति जहा चीका वज्ञन्ति । तए चं सा सोमा माहृषी दुम्भवार्णं  
अजास्तं अनितए जाव दुम्भवास्तिर्णं साक्षात्कर्मं पठिष्यत् २ ता दुम्भवामो अजास्ते  
चन्द्र नर्मस्त्र चं २ ता जामेव विर्ति पात्रम्भूता ताम्भं विर्ति पठियमा । तए चं  
सा सोमा माहृषी सम्भोदाचिया जाया अमित्यम् जाव अप्यार्णं भावेमार्णी विवर ।  
तए चं ताम्भे दुम्भवामो अजास्तो अन्धमा अवाहै विमेजामो संनिवेसामो पठिनिष्ठ-  
मन्ति २ ता वहिया अन्धवामेहारं विवरन्ति ॥ १३८ ॥ तए चं ताम्भो दुम्भवामो  
अजास्तो अन्धमा अवाहै पुलालुपुर्णि जाव विवरन्ति । तए चं सा लेमा माहृषी  
इमीसे अद्यप लक्ष्मुदु सुमार्णी दुदु व्यापा तदेव विलावा जाव अन्धर नर्मस्त्रं  
चं २ ता वम्भे लेमा जाव नर्मर रुद्रूर्दे आपुच्छामि तए चं फलवामि । अहात्यरै ।  
तए चं सा लेमा माहृषी दुम्भवे अन्धे अन्धर नर्मस्त्र चं २ ता दुम्भवार्णं  
अनितयमो पठिनिष्ठम्भद २ ता तेजेव चुए यिरे तेजेव रुद्रूर्दे तेजेव उपाग-  
च्छ २ ता करम्भं तदेव आपुच्छद जाव फलश्चयए । अहात्यरै देवालुप्तिए ।  
मा पठिक्कर्व । तए चं से रुद्रूर्दे विट्सं असुरं देवेव जाव उत्तमर्दे  
दुम्भा जाव अजास्त जावा इरियासुमिया जाव गुलाममवारिपी ॥ १३९ ॥  
तए चं सा लेमा अजा दुम्भवार्णं अजास्तं अनितए उमाहक्षमार्णवं एवार्ष

अङ्गाइं अहिज्जइ २ ता वहूहिं छट्टुमदसमदुवाल्स जाव भावेमाणी वहूहिं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणह २ ता मासियाए सलेहणाए सट्टिं भत्ताइ अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिकन्ता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा सक्षस्स देविन्दस्स देवरज्ञो सामाणियदेवत्ता उववज्जिहिं । तत्थ णं अथेगइयाण देवाण दो सागरोवमाइ ठिई पञ्चत्ता, तत्थ ण सोमस्सवि देवस्स दो सागरोवमाइ ठिई पञ्चत्ता ॥ १३९ ॥ से ण भन्ते । सोमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खण जाव चय चहत्ता कहिं गच्छिहिं कहिं उववज्जिहिं ? गोयमा । महाविदेहे वासे जाव अन्तं काहिं । निक्खेवओ ॥ १४० ॥ चउत्थं अज्ञायणं समत्तं ॥ ३ । ४ ॥

जइ णं भन्ते । समणेण० उक्खेवओ । एवं खलु जम्बू । तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे नाम नयरे । गुणसिलए उज्जाणे । सेणिए राया । सामी समोसरिए । परिसा निगया ॥ १४१ ॥ तेण कालेण तेण समएण पुण्णभेदे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभेदे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभहसि सीहासणसि चउहिं सामाणियसाह-स्तीहिं जहा सूरियामो जाव वत्तीसइविहं नष्टविहिं उवदंसिता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए । कूडागारसाला । पुञ्चभवपुञ्च्छ । एवं खलु गोयमा । तेणं कालेण तेण समएण इहेव जम्बुहीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नाम नयरी होत्था, रिद्ध० । चन्दो राया । ताराइणे उज्जाणे । तत्थ ण मणिवइयाए नयरीए पुण्णभेदे नाम गाहावहि परिवसह, अझौ० । तेण कालेण तेण समएण थेरा भगवन्तो जाइ-सप्त्ना जाव जीवियासमरणभयविष्पुक्का वहुस्त्या वहुपरिवारा पुञ्चणपुञ्चिं जाव समोसढा । परिसा निगया । तए ण से पुण्णभेदे गाहावहि इमीसे कहाए लद्धेह० हट्ट० जाव जहा पणणच्चीए गङ्गदत्ते तहेव निगगच्छह । जाव निक्खन्तो जाव गुत्त-वम्भश्चारी ॥ १४२ ॥ तए ण से पुण्णभेदे अणगारे भगवन्ताण अन्तिए सामाइय-माइयाइ एक्कारस अङ्गाइ अहिज्जइ २ ता वहूहिं चउत्थछट्टुम जाव भाविता वहूहिं वासाइ सामण्णपरियाग पाउणह २ ता मासियाए सलेहणाए सट्टिं भत्ताइ अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिकन्ते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे पुण्णभेदे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जाव भासामणपञ्चीए ॥ १४२ ॥ एवं खलु गोयमा । पुण्णभेदेण देवेण सा दिव्वा देविष्टु जाव अभिसमन्नागया । पुण्णभहस्स ण भन्ते । देवस्स केवइय काल ठिई पञ्चत्ता ? गोयमा । दो सागरोवमाइ ठिई पञ्चत्ता । पुण्णभेदे ण भन्ते । देवे ताओ देवलोयाथो जाव कहिं गच्छिहिं कहिं उववज्जिहिं ? गोयमा । महाविदेहे वासे सिज्जिहिं जाव अन्तं काहिं । निकरेवओ ॥ १४३ ॥ पंचमं अज्ञायणं समत्तं ॥ ३ । ५ ॥

अह वं गते । समेतेऽ उभेद्वयो । एवं परत् चम् । तेऽ कालेऽ तेऽ समार्थं  
एवमिहे नवरे । गुणसिद्धं चजाणे । सेमिए राया । सामी समोसरिए ॥ १४३ ॥  
तेऽ व्यक्तेऽ तेऽ समार्थं मातिसो देवे समाए चुम्माए मातिसांहि सीधामर्थं  
चरहि चामापिक्षाहसीहि चहा पुण्यमहो तहेव जागमर्त मातिहि पुण्यमं  
पुण्य । मतिहै नवरी मातिसो पाहावहि, देवार्त बनिए फक्त्या एदारस मार्थं  
महिज्ञ, चारूं वासार्थं परिज्ञाहे मातिया संख्या सहि भताह मातिसो  
मिमाने उवदानो शो चामारोवनाहि ठिए, महामिरेह वासे सिगिज्ञाहि । विन्दे-  
ष्टो ॥ १४४ ॥ चहुं फक्त्यायर्ण समर्थ ॥ इ । ९ ॥

एवं दत्तौ ७ सिवे ८ वडे ९ अणाहिए । सम्बे चहा पुण्यमहो देवे । सम्बेहि  
शो चामारोवनार्थं ठिए । मिमाणा वेवसरिज्ञामा । पुण्यमेद दत्ते चन्द्रवनार्थं  
सिवे मिहिज्ञाए, वडे हरिक्षपुरे नवरे अणाहिए काकन्तीए । उज्जानाहि चहा संग-  
जीए ॥ १४५ ॥ इ । १० ॥ पुण्यिशामो समत्तानो ॥ ताम्हो वागो  
समत्तो ॥ इ ॥



णमोऽत्थं पाण्यपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

## तथं पाण्यपुष्पकचूलियाओ

जइ ण भन्ते । समणेण भगवया उक्खेवओ जाव दस अज्ञयणा पन्ता, तजहा—सिरि-हिरि-घिइ-कित्तीओ बुद्धी लच्छी य होइ बोद्धवा । इलादेवी स्त्रादेवी रसदेवी गन्धदेवी य ॥ १ ॥ जइ ण भन्ते । समणेण भगवया जाव सपत्तेण उवज्ञाण चउत्थस्स वग्गस्स पुष्पकचूलियाण दस अज्ञयणा पन्ता, पढमस्स ण भन्ते । उक्खेवओ । एव खलु जम्बु । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे, गुणसिलए उजाणे, सेणिए राया । भाभी समोसदे, परिसा निगया । तेण कालेण तेण समएण सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिसि सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्रीहिं चउहिं महत्तरियाहिं ० जहा बहुपुतिया जाव नटविहिं उवदसित्ता पडिगया । नवर [दारय]दारियाओ नत्यि । पुञ्चमवपुच्छा । एवं खलु गोयमा । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे, गुणसिलए उजाणे, जिय-सत्तू राया । तथं पाण्यपुत्तमहावीरस्स पिया नाम भारिया होत्या, सोमाल० । तस्स ण सुदसणस्स गाहावइस्स पिया नाम भारिया होत्या वृद्धावृद्धा वृद्धावृद्धा वृद्धावृद्धा जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी वरगपरिवज्जिया यावि होत्या ॥ १४७ ॥ तेण कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव नवरयणिए वणओ सो चेव, समोसरण । परिसा निगया ॥ १४८ ॥ तए ण सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धासमाणी हट्टुट्टु ० जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ ता एवं वयासी—एव खलु अम्मताओ । पासे अरहा पुरिसादाणीए पुञ्चाणपुञ्चिव चरमाणे जाव गणपरिवुडे विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मताओ । तुझेमहिं अब्भणुज्जाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवन्दिया गमित्तए । अहासुह देवाणुपिए । मा पडिवन्ध ॥ १४९ ॥ तए ण सा भूया दारिया एहाया अप्पमहमधाभरणालकिय-सरीरा चेहीचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ ता जेणेव वाहिरिया उवद्वाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरुद्धा । तए ण सा

भूया दारिद्रा निष्पत्तिरिदारविदुडा रायगिर्ह नदर मज्जेमज्जेवं निष्पत्ति १ च  
तेषेव गुप्तिसए सज्जाने तेजेव उदागच्छाइ २ ता छापैए वित्तकरणासए पासह ३ ए  
बन्मियाम्बो जापप्पवरम्बो पकोद्य[मि]इ २ ता भेदीकल्पवासरिशिका तेजेव  
पासे अण्डा पुरिसादाखीए तेजेव उदागच्छाइ २ ता निष्कृतो जाव पञ्चुदाख्य  
॥ १५ ॥ तए एं पासे अण्डा पुरिसादाखीए भूया दारिद्राए नदर  
भम्माम्बा भम्म सोवा निष्पत्ति छु बन्दह मज्जेवं २ ता एवं बाटी-  
साहामि वं भन्ते । निष्पत्ति पाववर्ण जाव अम्बुद्देमि वं भन्ते । निष्पत्ति पाववर्ण,  
से बहेवं त्रुट्ये बन्दह, वं नदर मन्ते । अम्मापियरो आपुचम्मि तए वं बर्द जाव  
फम्मद्दाए । अहाक्षरं देवालुप्तिए । ॥ १५१ ॥ तए एं सा भूया दारिद्रा तेजेव  
बन्मियं जापप्पवर्ण जाव तुहदह २ ता तेजेव रायगिर्ह नदर तेजेव उदागच्छा  
रायगिर्ह नदर मज्जेमज्जेवं तेजेव सए गिर्ह तेषेव उदागच्छा रायगिर्ह पकोद्येव  
तेजेव अम्मापियरो तेजेव उदागच्छा छट्यस जहा अम्बाखी आपुचम्मि । अहा-  
क्षरं देवालुप्तिए ॥ १५२ ॥ तए एं से शुद्धेवं गाहाक्षरं निठं अवर्ण ४ उद-  
कल्पवाहिए नित्तानाइ २ ता जाव निष्पत्तिसुत्तुत्तरक्कामे द्वैमूले निष्पत्ति-  
अमापेता होउमियशुरिसे उदान्तेह २ ता एवं बाटी-विष्णामेव मो देवालुप्तिमा ।  
भूयादारिद्राए पुरिसादाख्याहिणीवं सीर्य उदान्तेह ३ ता जाव फवपित्तह ।  
तए एं ते जाव फवपित्तहित ॥ १५३ ॥ तए एं से शुद्धेवं गाहाक्षरं भूया दारिद्र  
ज्ञात्वा ए निष्पत्तिमधरीरो पुरिसादाख्याहिणी सीर्य तुहदेह २ ता नित्तानाइ जाव तेजेव  
रायगिर्ह नदर मज्जेमज्जेवं तेजेव गुप्तिप्पद् उदागच्छे तेजेव उदागच्छा छट्यार्ह  
नित्तमरात्तसए पासह ३ ता सीर्य उदान्तेह २ ता भूया दारिद्रं सीमाओ पकोद्येव  
॥ १५४ ॥ तए एं ते भूया दारिद्रं अम्मापियरो पुरुष्ये छर्त तेजेव पासे अण्डा  
पुरिसादाखीए तेजेव उदागच्छा निष्कृतो बन्दन्ति मज्जेवित्त वं ३ ता एवं बाटी-  
एवं बहु देवालुप्तिमा । भूया दारिद्रा अम्ब एगा भूया छुम् एस वं देवालुप्तिमा ।  
सीसामरविष्णगा मीका जाव देवालुप्तिमार्ण अमित्तए सुष्णा जाव फव[जा]न्त, ते एवं  
वं देवालुप्तिमा । निस्तिनिष्पत्ति एम्बाम्बो पकिच्छन्तु वं देवालुप्तिमा ।  
निस्तिनिष्पत्ति । अहाक्षरं देवालुप्तिमा । ॥ १५५ ॥ तए एं सा भूया दारिद्रा  
पासेवं अण्डा एवं बुगा समाख्य छु उदागच्छेवं उदागच्छे जामरजमरजामर  
ज्ञाव[उम]मुनाइ जहा देवालुप्त्या पुरुष्याख्यवं जगित्तए जाव पुरुष्यम्भगित्ती ॥ १५६ ॥ तए  
तए एं सा भूया अम्बा अम्बा अम्बाए सरीखाम्बोहिया जावा जावी होला  
बन्मिस्तवर्ण २ इले बोलह, पाए बोलह, एवं सीर्य बोलह, मुहां बोलह, बन्मिस्तवर्ण

धोवइ, कक्षन्तराइ धोवइ, गुज्जन्तराइ धोवइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाण वा  
सेज वा निसीहिय वा चेएइ, तत्थ तत्थ वि य ण पुव्वमेव पाणएण अब्मुक्खेइ,  
तओ पच्छा ठाण वा सेज वा निसीहिय वा चेएइ ॥ १५७ ॥ तए णं  
ताओ पुप्फचूलाओ अज्ञाओ भूयं अज्ञ एव वयासी-अम्हे ण देवाणुप्पिए !  
समणीओ निगन्धीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तव्मयारिणीओ, नो खलु कप्पइ  
अम्ह सरीरवाओसियाण होत्तए, तुम च ण देवाणुप्पिए ! सरीरवाओसिया अभि-  
क्षणं २ हत्थे धोवसि जाव निसीहिय चेएसि, त णं तुम देवाणुप्पिए ! एयस्त  
ठाणस्स आलोएहिति, सेस जहा चुभद्दाए जाव पाडिएक उवस्सयं उवसपजित्ता  
विद्वरइ । तए णं सा भूया अज्ञा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छन्दमई अभिक्षण २  
हत्थे धोवइ जाव चेएइ ॥ १५८ ॥ तए ण सा भूया अज्ञा वहृहिं चउत्थछट्ट०  
चहृइं वासाइं सामण्णपरियांगं पाउणिता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कन्ता कालमासे  
काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववायसमाए देवसयणिज्जसि जाव  
ओगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववन्ना पञ्चविहाए पञ्जतीए जाव भासामणपञ्जतीए  
पञ्जता । एव खलु गोयमा । सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविही लङ्घा पत्ता । एग  
पलिचोवमं ठिई । सिरी ण भन्ते । देवी जाव कहि गच्छहिइ० ? महाविदेहे वासे  
सिज्जिहिइ । निक्षेवओ ॥ १५९ ॥ पढमं अज्ज्ययणं समत्तं ॥ ४ । १ ॥

एव सेसाणवि नवण्ह भाणियब्ब । सरिसनामा विमाणा । सोहम्मे कप्पे । पुव्वमवे  
नयरउज्जाणपियमाईण अप्पणो य नामाइ जहा सगहणीए । सब्बा पासस्स अन्तिए  
निक्षेवन्ता । ताओ पुप्फचूलाण सिस्सिणियाओ सरीरवाओसियाओ सब्बाओ अणन्तर  
चय चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्जिहिन्ति ॥ १६० ॥ ४ । १० ॥ पुप्फचू-  
[ला]लियाओ समत्ताओ ॥ चउत्थो वगगो समत्तो ॥ ४ ॥



प्रमोऽत्यु चं समणस्स भगवद्भो णायपुस्महावीरस्स

## सुत्तागमे

तत्य ण

### धण्डसाओ

चइ चं भगवं । उक्षेषभो जाव दुषाम्भु अज्ञावना पक्षता तवहा—मिथै  
मायमित्ताह—को फमा कुली दधरहे बडाहे य । महापूर्व सताप्य दधरहे नमे  
सदाप्य य प १ ॥ चइ चं भगवं । समधेय जाव दुषाम्भु अज्ञावना पक्षता  
फमस्स चं भगवं । उक्षेषभो । एवं कालु जम् । तेऽपं क्षेष्व तेऽपं स्पर्शे  
बारवै नामं मवरी होत्ता दुषाम्भु बनावामा जाव फक्षर्व देवतेवभूता पादा  
दीया दरितमित्ता अमित्ता पदित्ता प १५१ ॥ तीर्त चं बारवैए नवरीए वहिक  
तत्त्वादुरत्तिमे दित्तीमाए एत्त चं रेवप नाम फमप होत्ता तुडे गम्भकम्भु  
मित्तादुत्तिहे नाणादित्तादुत्तादुत्ताम्भुम्भाक्षीपरिगमामिरामे हंसमित्तम्भूत्तोम्भार  
एत्तादुत्ताम्भुम्भाम्भादुत्तोम्भेवेप तदक्षडगमित्तम्भेवेपत्तादुत्ताम्भारित्तपर्वे  
म्भादुत्तागणदेवत्तादुत्तारनमित्ताहरमित्तुप्तादुत्तिनित्तिली मित्तात्तियए दसात्तलीयुरिक  
तेऽपेक्षेवत्तगार्वं सोमे छमए पित्तादुत्तने दुरुवे पादाहैए जाव पदित्तने प १५२ ॥  
तत्त चं रेवगमस्स फमवस्स अदुसाम्भवे एत्त चं नवदवने नामं उज्जाने होत्ता  
स्पेत्तुत्तुपुञ्च जाव दरित्तमित्ते ॥ १५३ ॥ प तत्त चं बारवैए नवरीए चं नामं  
बादेमे रामा होत्ता जाव फक्षादेमाने विहर । ऐ चं तत्त समुद्रमित्तम्भामेत्ताव  
दस्तर्व दसारायं वज्जेवपामोक्षानं फक्षर्व महालीरायं तमसेवपामोत्ताव तेऽप्पे  
उच्च रायेषाहसीर्वं फक्षुप्यपामोक्षानं अदुक्षार्जं फक्षारक्षीयं सम्पामोत्ताव  
सद्वैए दुष्कल्पाहसीर्वं वीरसेणपामोक्षानं एक्षीसाए वीरसद्वैरीयं महात्तेष  
पामोक्षानं छम्भाए वम्भगम्भाहसीर्वं इपित्तिपामोक्षाव दोक्षर्व देवीसाह  
स्तीय अत्तेषि च बहूयं रायेषर च च चत्कवाहप्पमित्तर्व वेयनुविरायमेवप्त्त  
दायेन्नामत्तास्स आहेष्व जाव विहर ॥ १५४ ॥ तत्त चं बारवैए नवरीए  
बसदेवे नाम रामा होत्ता महावा जाव एवं फक्षादेमाने विहर । दस्त चं बसदेवत्त  
राजा रेवहै नामं देवी होत्ता चेमाल जाव विहर । तपु चं सा रेवहै देवी नामा  
क्ष्याव तुषि रायेष्वाहित्त एवमित्तेषि जाव दीर्घ दुमिये पादित्तायं एवं दुमित्तपर्व

परिकहण, कलाओ जहा महावलस्स, पञ्चामओ दाओ, पञ्चासरायकनगाण एगदिव-  
सेण पाणिगगहण १, नवर निसदे नाम जाव उप्पि पासाए विहरइ ॥ १६५ ॥  
तेण कालेण तेण समएण अरहा अरिद्वनेमी आइगरे दम धण्ड वण्णओ जाव  
समोसरिए । परिसा निगया ॥ १६६ ॥ तए ण से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्वट्टे  
समाणे हट्टुट्टे० कोडुम्बियपुरिस सद्वावेड २ त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया !  
सभाए सुहम्माए सामुदाणिय भेरि तालेह । तए ण से कोडुम्बियपुरिसे जाव पडिसुष्णिता  
जेणेव भभाए सुहम्माए भामुदाणिय भेरि तेणेव उवागच्छड २ त्ता सामुदाणिय भेरि  
महया २ सद्वेण तालेह ॥ १६७ ॥ तए ण तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया २ सद्वेण  
तालियाए समाणीए समुद्विजयपामोकला दस दसारा देवीओ(उण) भाणियब्बाओ,  
अन्ने य वहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ ष्ठाया सञ्चालकारविभूसिया जहाविभव-  
इङ्गीसकारसमुदएण अप्पेगडया हयगया जाव पुरिसवगुरापरविक्षता जेणेव कण्हे  
वासुदेवे तेणेव उवागच्छन्ति २ त्ता करयल० कण्ह वासुदेव ज्ञाण विजार्ण वद्धवेन्ति ।  
तए ण से कण्हे वासुदेवे कोडुम्बियपुरिसे एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !  
आभिसेक्ष्वत्तियरयण पडिकप्पेह हयगश्रहपवर जाव पञ्चप्पिणन्ति । तए ण से  
कण्हे वासुदेवे मज्जणघरे जाव दुरुठे, अट्टुट्ट मझल्ला, जहा कूणिए, सेयवरचामरेहिं  
उद्धव्वमाणीहिं २ समुद्विजयपामोक्खेहि दसहिं दसारेहिं जाव सत्थवाहप्पभिइहिं  
मार्दिं सपरियुठे सञ्चिच्छीए जाव रवेण वारावइ नयरि मञ्ज्जंमञ्ज्जेण सेस जहा  
कूणिओ जाव पञ्जुवासह ॥ १६८ ॥ तए ण तस्स निसद्स्स कुमारस्स उप्पि पासा-  
यवरगयस्स तं महया जणसह च जहा जमाली जाव धम्म सोचा निसम्म  
वन्दड नमंसह व० २ त्ता एवं वयासी-सद्वामि ण भन्ते ! निगन्थ पावयण  
जहा चित्तो जाव सावगधम्म पडिवज्जइ २ त्ता पडिगए ॥ १६९ ॥ तेण कालेण  
तेण समएण अरहओ अरिद्वनेमिस्स अन्तेवासी वरदत्ते नाम अणगारे उराले  
जाव विहरइ । तए ण से वरदत्ते अणगारे निसद कुमार पासह २ त्ता जायसहे जाव  
पञ्जुवासमाणे एवं वयासी-अहो ण भन्ते ! निसदे कुमारे इड्डे इट्टुरुवे कन्ते कन्तरुवे,  
एव पिए० मणुज्जए० मणामे मणामरुवे सोमे सोमरुवे पियदंसणे सुरुवे, निसदेण  
भन्ते ! कुमारेण अयमेयास्वा माणुयइङ्गी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता ? पुच्छा जहा  
सूरियाभस्स । एवं खलु वरदत्ता । तेण कालेण तेण समएण इहेव जम्बुदीवे दीवे  
भारहे वासे रोहीडए नाम नयरे होत्या, रिद्ध० । मेहवणे उज्जाणे । तथ्य ण  
रोहीडए नयरे महब्बले नाम राया, पउमावई नाम देवी, अन्नया कयाइ तसि  
तारिसगसि सयणिज्जसि सीह सुमिणे , एवं जम्मण भाणियब्ब जहा महावलस्स,

महरे शीरक्षणो नामं वारीसख्ये वास्तो वातीसाए रामवरक्षणमार्बं पाणि वाव उन्  
मिजमाये १ पाठक्षवरियारात्रासरवहेमन्तव्यसन्तुगिम्मृफङ्ग्यते छप्यि उठ व्याकिम्भेर्व  
भुजमाये २ कांडं याकेमाये छुटे सह वाव विहरइ ॥ १७ ॥ तेवं काकेवं तेवं  
समपृण लिहत्ता जाम जावरिया जहाँसेपता जहा फेती नवरे बहुसुका बहुपीत्तार  
अबेक रोहीज्जद नयरे खेलेव मेहवज्ज्ये छज्जाये तेबेव उवाम्या बहापरिहर्व वाव  
विहरन्ति । परिया निम्माया ॥ १७१ ॥ तए वं तस्तु शीरक्षपस्तु झुमारस्तु उपि  
पासाप्यवरगमस्तु तं मद्या बग्गर्वै जहा बग्गली निम्माये झम्मी द्वेषा वं  
नवरे देखानुपिया । भम्मापियरो आपुच्छम्माये जहा बग्गली तहेव निम्माये वाव  
बग्गगारे जाए वाव गुताप्यम्मायारी ॥ १७२ ॥ तए वं से शीरक्षए बग्गगारे लिहत्तार्व  
जावरियार्व अन्तिए सामाइमाइवर्व पदारस ब्यार्व अहिज्जद २ ता वाहै  
ज्ञात्तव वाव अप्पार्व भाकेमाये बहुपरिपुण्यार्व पन्याबीसासार्व उम्मारपरियार्व  
पाठमिता दोमाडियाए संकेहथाए अतार्व इहिता द्वयार्व सतार्व अन्त्यार्व  
देहता आम्भेद्यपडिहान्ते समाहिपरो काष्ठमासे झम्मं किछा बग्गलोए वप्पे नक्केये  
निम्माये देखताए उक्कले । उत्त जं अस्त्रेणायार्व देखार्व उसासायरेकमद्व तिर्य  
पदद्वा ॥ १७३ ॥ से वं शीरक्षए देखे ताख्ये देखेकेमालो आउक्कयर्व अव  
बग्गन्तरे वाव जहाँ इहेव वारेहर्व झम्मीए बछदेवस्तु रहो रेहर्व देहर्व  
कुर्विक्षुपि पुत्ताए उक्कले । तए वं ता रेहर्व देखी तेसि तारिक्कार्वि सबिहर्वि  
शुसिध्यदस्तु वाव उपि पासाप्यवरगाए विहरइ । तं एवं बहु वरदता । निष्ठैर्वं कुमा-  
रेवं अबग्गमयास्ता उराका भुजबड्ही अद्य ३ ॥ १७४ ॥ पम् वं भन्तु । निष्ठै  
झुमारे देखानुपियार्व अन्तिए वाव पञ्चदत्ताए । बन्ता । पम् । से एवं भन्ते । १  
इव बरदते अबग्गारे वाव अप्पार्व भाकेमासे विहरइ । तए वं बहा अहिं-  
नेमी अलया अल्लाव वारेहर्वो बवरीमो वाव अहिया अलवयनिहारे विहरइ ।  
निष्ठै कुमारे समधोरास्तु जाए अमियवजीवाजीये जाव विहरइ ॥ १७५ ॥  
तए वं से निष्ठै कुमारे अल्ला बयाह देलेव पोसाहस्तम तेसेव लुगागच्छ ४ ता  
वाव द्वम्मसेवारोक्ताए विहरइ । तए वं तस्तु निष्ठवस्तु कुमारस्तु पुष्परात्तरार्व  
कालसम्मयेपि भग्मजागरिये जायरमाषस्तु इमेवाहये अज्जादिये जाव अम्म-  
यित्पा—जहा वं तं यामागर वाव देनिजेता जल्ल वं बहा अहिनेमी विहरइ  
वाव वं से राईसर वाव उत्तवाहप्पमिहान्ते वं अरिदुनेमी बहुमिति नम्भमिति  
वाव पञ्चुकासन्ति जह वं बहा अरिदुनेमी पुष्पापुषुमि नम्भमवद विहरेजा  
तो वं लाई अहर्व अरिदुनेमी बमिदजा वाव पञ्चुकाडिया ॥ १७६ ॥ तए वं अहा

अरिद्वनेमी निसदस्स कुमारस्स अयमेयाख्वमज्जलिय जाव वियाणिता अट्टारसाहिं  
समणसहस्रेहिं जाव नन्दणवणे उजाणे समोसढे । परिसा निगया । तए ण निसढे कुमारे  
इमीसे कहाए लद्धृ समाणे हृष्ट० चाउधणटेण आसरहेण निगाए जहा जमाली जाव  
अप्पापियरो आपुच्छता पब्बहए अणगारे जाए जाव शुत्तवभ्यारी ॥१७७॥ तए ण  
से निसढे अणगारे अरहओ अरिद्वनेमिस्स तहारुवाण येराण अन्तिए सामाइयमाइयाइ  
एकारस अङ्गाईं अहिज्जइ २ ता वहूहिं चउत्थछटू जाव विचिरेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण  
भावेमाणे वहूपडिपुण्णाइ नव वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ २ ता वायालीस  
भत्ताइ अणसणाए छेइदु, आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपते आणुपुव्वीए कालगए  
॥ १७८ ॥ तए ण से वरदते अणगारे निसढे अणगारं कालमाय जाणिता जेणेव  
अरहा अरिद्वनेमी तेणेव उवागच्छइ २ ता जाव एव वयासी—एवं खलु देवाणु-  
पियाण अन्तेवासी निसढे नाम अणगारे पगाइभद्दए जाव विणीए, से ण भन्ते ।  
निसढे अणगारे कालमासे कालं किञ्चा कहिं गए कहिं उववज्जे ? ॥ १७९ ॥ वरदत्ताइ  
अरहा अरिद्वनेमी वरदत्त अणगारं एव वयासी—एव खलु वरदत्ता । मम अन्ते-  
वासी निसढे नामं अणगारे पगाइभद्दे जाव विणीए भमं तहारुवाण येराणं अन्तिए  
सामाइयमाइयाइ एकारस अङ्गाईं अहिजिता वहूपडिपुण्णाइ नव वासाइं सामण्णपरि-  
यागं पाउणिता वायालीस भत्ताइ अणसणाए छेइता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपते  
कालमासे काल किञ्चा उहू चन्दिमसूरियगहगणक्खततारारुवाणं सोहम्मीसाण  
जाव अक्षुए तिणिं य अट्टारसुतरे गेविजविमाणावाससए वीइवइता सब्बद्विसिद्धविमाणे  
देवत्ताए उववज्जे, तत्य ण देवाण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पञ्चता, तत्य ण निसदस्सवि  
देवस्स तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णता ॥ १८० ॥ से ण भन्ते । निसढे  
देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खाएण भवक्खाएण ठिइक्खाएण अणन्तरं चय चइत्ता  
कहिं गच्छहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ? वरदत्ता । इहेव जम्बुद्वीचे दीचे महाविदेहे वासे  
उश्चाए नयरे विसुद्धपिक्कंसे रायकुले पुत्ताए पञ्चायाहिइ । तए ण से उम्मुक्खवाल-  
भावे विघ्यपरिणयमेते जोव्वणगमणुपते तहारुवाण येराण अन्तिए केवलबोहिं  
वुज्जिहिइ २ ता अगाराओ अणगारिय पब्बज्जिहिइ । से ण तत्य अणगारे भविस्सइ  
इरियासमिए जाव शुत्तवभ्यारी । से ण तत्य वहूहिं चउत्थछट्टमदसमदुवालसेहिं  
मासद्वमासखमणेहिं विचिरेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे वहूइ वासाइ सामण्ण-  
परियाग पाउणिस्सइ २ ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं द्वसिहिइ २ ता सहिं भत्ताइ  
अणसणाए छेइहिइ, जस्सद्वाए कीरड येरकप्पभावे जिणकप्पभावे मुण्डभावे अणहाणए  
जाव अदन्तवणए अच्छत्ताए अणोवाहणए फलहसेजा कहुसेजा केत्सलोए वम्भचेर-

वारे परपत्रकेसे पिण्डावायी स्पदावध्ये उच्चावया य यामन्त्रया वणिकसिन्हार्द  
तम्हुं आराहे २ ता चरिमेहि इस्सासनिस्साएहि शिंजिलिह तुनिष्ठिह वाम स्पद  
उक्तार्य वास्त छाहिह । निक्खेवली ॥ १५१ ॥ पहामें अखम्यर्ण समर्थ ॥ ५५ ॥

एवं सेवायि एकारस अज्ञामया नेयम्बा धैगृषीमुषारेष अहीन्मर्यादी  
एकारसमुलि तिगेमि ॥ १५२ ॥ ५ ॥ १२ ॥ वणिकसामो समत्तामो ॥  
पञ्चामो घम्बो समत्तो ॥ ५ ॥ निरयाधलियाहसुपफलम्भो समत्तो ॥  
समत्ताणि उष्टुप्ताणि ॥

निरियावलियाहसुचाह समत्ताह ॥  
तेसि समत्तीए

## बारस उवंगाहं समत्ताहं

॥ सबसिलोगसंखा २५००० ॥

५

णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहारीरस्स

# सुत्तागमे

## चउछेयसुत्ताइं

तथ णं

## ववहारो

### पठमो उद्देश

जे भिक्खू मासिय परिहारद्वा  
माणस्स मासिय, पलिउचिय आ  
परिहारद्वाण पडिसेविता आलू  
पलिउचिय आलोएमाणस्स वे  
पडिसेविता आलोएजा, अप  
माणस्स चाउम्मासिय ॥ ३ ॥

आलोएजा, अपलिउचिय आलो  
पचमासिय ॥ ४ ॥ जे भिक्खू  
अपलिउचिय आलोएमाणस्स  
॥ ५ ॥ वेण पर पलिउचिए वा  
भिक्खू वहुसो वि मासिय परिहारद्वा  
माणस्स मासिय, पलिउचिय आलो  
वि दोमासिय परिहारद्वाण परिहारद्वा  
दोमासिय, पलिउचिय आलोएमा  
वेमासिय परिहारद्वा नेत्ता  
सिय, पलिउ  
चाउम्मासिय ५  
चाउम्मासिय, ५.  
वि पचमासिय ६  
पचमासिय, पलिउ

वासे परवरपक्षे पिण्डवाको अद्वितीये उचावया न गामकम्भगा न  
तमहु आसाहे २ ता चरिमेहि उससासनिस्तासेहि पिण्डिहि त्रिजितिहि  
तुम्हार्य अन्त छाहिइ : निक्तेक्षणो ॥ १०१ ॥ एकमै अज्ञयर्य सर

एवं देशानि एकारस अज्ञवया देवमा संगहीनगुप्तारेच  
एकारसद्विति तिथेति ॥ १०२ ॥ ५ । १२ ॥ विद्वद्वासामो सम  
पञ्चमो यग्नो समलो ॥ ५ ॥ निरियावलियाहसुयक्षम्यो  
समत्तापि उचक्षत्विति ॥

निरियावलियाहसुचार्य एषो शुभक्षम्यो यज्ञ वया फल्य विन  
सुनित दत्त चठमु कम्भेषु एस इस चोरेत्वा फलमध्ये वारस घोर्या

॥ निरियावलियाहसुचार्य समचार्य ॥

तेसि समर्तीप

# बारस उवंगाइं समत्ताइं

॥ सञ्चितिलोगसंक्षा २५००० ॥



पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेड से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयब्बे सिया ॥ १७ ॥ जे भिक्खू चाउम्मासिय वा साइरेगचाउम्मासियं वा पचमासिय वा साइरेगपंचमासियं वा एएसि परिहारद्वाणाणं अण्णयर परिहारद्वाण पडिसेविता आलोएजा, पलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज ठवइता करणिज वेयावडिय, ठविए वि पडिसेविता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयब्बे सिया, पुञ्चि पडिसेविय पुञ्चि आलोइय, पुञ्चि पडिसेवियं पञ्चा आलोइय, पच्छा पडिसेविय पुञ्चि आलोइय, पच्छा पडिसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचियं, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय आलोएमाणस्स सब्बमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयब्बे सिया ॥ १८ ॥ जे भिक्खू वहुसो वि चाउम्मासिय वा वहुसो वि साइरेगपचमासियं वा एएसि परिहारद्वाणाण अण्णयर परिहारद्वाण पडिसेविता आलोएजा, अपलिउचिय आलोएमाणे ठवणिज ठवइता करणिज वेयावडिय, ठविए वि पडिसेविता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयब्बे सिया, पुञ्चि पडिसेविय पुञ्चि आलोइय, पुञ्चि पडिसेवियं पञ्चा आलोइय, पच्छा पडिसेविय पुञ्चि आलोइय, पच्छा पडिसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय आलोएमाणस्स सब्बमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयब्बे सिया ॥ १९ ॥ जे भिक्खू वहुसो वि चाउम्मासिय वा वहुसो वि साइरेगचाउम्मासिय वा वहुसो वि पचमासिय वा वहुसो वि साइरेगपचमासिय वा एएसि परिहारद्वाणाण अण्णयर परिहारद्वाण पडिसेविता आलोएजा, पलिउचिय आलोएमाणे ठवणिज ठवइता करणिज वेयावडिय, ठविए वि पडिसेविता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयब्बे सिया, पुञ्चि पडिसेविय पुञ्चि आलोइय, पुञ्चि पडिसेवियं पच्छा आलोइय, पच्छा पडिसेविय पुञ्चि आलोइय, पच्छा पडिसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय आलोएमाणस्स सब्बमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयब्बे सिया ॥ २० ॥ वहवे पारिहारिया वहवे अपारिहारिया इच्छेजा एगयबो अभिनिसेज वा अभिनिसीहिय वा चेएत्तए, नो ष्ह कप्पइ थेरे अणापुच्छिता एगयबो अभिनिसेज वा अभिनिसीहिय वा चेएत्तए, कप्पइ ष्ह थेरे आपुच्छिता एगयबो अभिनिसेज वा

वा अपक्रित्विए वा ठु थेव छम्मासा ॥ १३ ॥ ये मिन्दू मालियं वा दोमालियं वा तेमालियं वा चारम्मालियं वा पंचमालियं वा एएसि परिहारद्वापारं अन्वर्द परिहारद्वारं पदिसेविता आओएजा अपक्रित्विव आम्बेएमाषस्त्र मालियं वा दोमालियं वा ठमालियं वा चारम्मालियं वा पंचमालियं वा पक्कित्विय आम्बे भाजत्य दोमालियं वा तेमालियं वा चारम्मालियं वा पंचमालियं वा छम्मालियं वा टेज परं पक्कित्विए वा अपक्रित्विए वा ते अव छम्मासा ॥ १४ ॥ ये मिन्दू घृसो यि मालियं वा घृसो यि दोमालियं वा घृसो यि तेमालियं वा घृसो यि चारम्मालियं वा घृसो यि पंचमालियं वा एएसि परिहारद्वापारं अन्वर्द परिहारद्वारं पदिसेविता आओएजा अपक्रित्विव आम्बेएमाषस्त्र मालियं वा दोमालियं वा तेमालियं वा चारम्मालियं वा पंचमालियं वा पक्कित्विय आम्बेएमाषस्त्र दोमालियं वा तेमालियं वा चारम्मालियं वा पंचमालियं वा छम्मालियं वा तेज परं पक्कित्विए वा अपक्रित्विए वा ते थेव छम्मासा ॥ १५ ॥ ये मिन्दू चारम्मालियं वा छर्दे यवाचम्मालियं वा पंचमालियं वा चाहरेगपंचमालियं वा एएसि परिहारद्वापारं अन्वयवर परिहारद्वारं पदिसेविता आओएजा अपक्रित्विव आम्बेएमाषस्त्र चारम्मालियं वा साहरेगचारम्मालियं वा पंचमालियं वा चाहरेगपंचमालियं वा पक्कित्विव आम्बेएमाषस्त्र पंचमालियं वा साहरेगपंचमालियं वा छम्मालियं वा ठेज परं पक्कित्विए वा अपक्रित्विए वा ठु थेव छम्मासा ॥ १६ ॥ ये मिन्दू घृसो यि चारम्मालियं वा घृसो यि चाहरेगचारम्मालियं वा घृसो यि पंचमालियं वा घृसो यि चाहरेगपंचमालियं वा एएसि परिहारद्वापारं अन्वर्द परिहारद्वारं पदिसेविता आओएजा अपक्रित्विव आम्बेएमाषस्त्र चारम्मालियं वा चाहरेगचारम्मालियं वा पंचमालियं वा साहरेगपंचमालियं वा पक्कित्विव आम्बेएमाषस्त्र पंचमालियं वा चाहरेगपंचमालियं वा छम्मालियं वा ठेज परं पक्कित्विए वा अपक्रित्विए वा ते थेव छम्मासा ॥ १७ ॥ ये मिन्दू चारम्मालियं वा चाहरेगचारम्मालियं वा पंचमालियं वा एएसि परिहारद्वापारं अन्वर्द परिहारद्वारं पदिसेविता आओएजा अपक्रित्विव आम्बेएमाली ठमियं ठमियं ठमियं देवावदियं ठमियं यि पदिसेविता से यि घसिने तत्पेव आव्वेदन्वे दिवा पुणि पदिसेवियं पुणि आम्बेदवं पुणि पदिसेवियं तत्ता आम्बेदवं पत्ता पवित्रियं पुणि वाम्बेदवं पत्ता पवित्रियं तत्ता आम्बेदवं अपक्रित्विए अपक्रित्वियं पुणि अपक्रित्विए पक्कित्वियं पक्कित्विए अपक्रित्विये पक्कित्वियं अपक्रित्वियं अपक्रित्विए पक्कित्वियं पक्कित्विए अपक्रित्विये पक्कित्वियं अपक्रित्वियं अपक्रित्वियं आम्बेएमाषस्त्र उम्ममेवं उम्मवे चाहमिय वे प्लाए युग्मवार

पृष्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १७ ॥ जे भिक्खू चाउम्मासिय वा साइरेगचाउम्मासियं वा पचमासिय वा साइरेगपंचमासिय वा एएसिं परिहारद्वाणाणं अण्णयर परिहारद्वाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, पलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्ज ठवइत्ता करणिज वेयावडिय, ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया, पुञ्चिं पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, पुञ्चिं पडिसेविय पच्छा आलोइय, पच्छा आलोइयं, पच्छा पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, पच्छा पडिसेविय पच्छा आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय आलोएमाणस्स सब्बमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पृष्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १८ ॥ जे भिक्खू वहुसो वि चाउम्मासिय वा वहुसो वि साइरेगपचमासिय वा एएसिं परिहारद्वाणाण अण्णयर परिहारद्वाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउचिय आलोएमाणे ठवणिज्ज ठवइत्ता करणिज वेयावडियं, ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया, पुञ्चिं पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, पुञ्चिं पडिसेविय पच्छा आलोइय, पच्छा पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, पच्छा पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय आलोएमाणस्स सब्बमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पृष्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ १९ ॥ जे भिक्खू वहुसो वि चाउम्मासिय वा वहुसो वि साइरेगचाउम्मासिय वा वहुसो वि पचमासिय वा वहुसो वि साइरेगपचमासिय वा एएसिं परिहारद्वाणाण अण्णयर परिहारद्वाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, पलिउचिय आलोएमाणे ठवणिज्ज ठवइत्ता करणिज वेयावडिय, ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया, पुञ्चिं पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, पुञ्चिं पडिसेविय पच्छा आलोइय, पच्छा पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, पच्छा पडिसेविय पुञ्चिं आलोइय, अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिए पलिउचिय आलोएमाणस्स सब्बमेय सक्य साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पृष्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥ २० ॥ वहवे पारिहारिया वहवे अपारिहारिया इच्छेज्जा एगयओ अभिनिसेज्ज वा अभिनिसीहियं वा चेएत्तए, नो ष्ह कप्पइ थेरे अणापुञ्चित्ता एगयओ अभिनिसेज्ज वा अभिनिसीहियं वा चेएत्तए, कप्पइ ष्ह थेरे आपुञ्चित्ता एगयओ अभिनिसेज्ज वा

भविनिसीहिय का चालाए, येरा य अ॒ स गिरोया ए॑ ए॒ बायद ए॑ ए॒ ए॑  
 भविनियज्ञे का भविनिगीहिय का चालाए, येरा य अ॒ से जो विदेजा ए॑ ए॒  
 जो बापा ए॑ ए॒ ए॑ भविनिमेखं का भविनिसीहिय का चालाए, जो व थेरै  
 भवित्वा भविनिसंज्ञे का भविनिसीहिय का थेरै से मंत्रा हैरे का दौराे  
 का ॥ ३१ ॥ परिदारक्ष्यहिए निष्ठू बहिया येरार्थ येरार्थियाए गर्हेजा देह  
 य मे गरजा बप्पद मे एगराइयाए पटिमाए जन्म ३ निं अन्न शाहमिया  
 विहृती जन्म ३ निं उबनिताए, जो मे कप्पद तथ्य विहारतिये बधए, कप्पद  
 मे तथ्य कारणतिये कधए, तसि व वे शाहजहाँ विहृयनि परो बएजा-बमादि  
 अओ । एगरार्थ का दुरार्थ का एर्थ मे बायद एगरार्थ का दुरार्थ का बधए, जो  
 मे कप्पद परे एगरायाओ का दुरायाओ का बधए, जे तथ्य परे एगरायाओ का  
 दुरायाओ का बगा मे मंत्रा हैरे का परिहारे का ॥ ३१ ॥ परिदारक्ष्यहिए निष्ठू  
 बहिया येरार्थ बदार्थियाए गर्हेजा येरा य जो सरेजा बप्पद से निक्षिप्त-  
 कस्ता एगराइयाए पटिमाए जन्म जन्म रिमि जो साहमिया विहृती तर्थ  
 तर्थ निमि उबनिताए, जो से कप्पद तथ्य विहारतिये बधए, कधय मे तथ्य  
 कारणतिये कधए, तसि व व बार्थसि विहृयनि परो बएजा-बमादि अओ ।  
 एपरार्थ का दुरार्थ का एर्थ से कप्पद एपरार्थ का दुरार्थ का बधए, जो से कप्पद  
 परे एपरायाओ का दुरायाओ का बधए, जे तथ्य परे एपरायाओ का दुरायाओ  
 का बधए, से उनरा हैरे का परिहारे का ॥ ३२ ॥ परिहारक्ष्यहिए निष्ठू बहिया  
 येरार्थ येरार्थियाए गर्हेजा येरा य से सरेजा का जो सरेजा बायद से  
 निक्षिप्तमालस्ता एगराइयाए पटिमाए जन्म जन्म रिमि अन्न साहमिया विहृती  
 तर्थ तर्थ रिमि उबनिताए, जो से कप्पद तथ्य विहारतिये बधए, कप्पद से  
 तथ्य कारणतिये बधए, तसि व व बार्थसि विहृयनि ज्ञो बएजा-बमादि  
 अओ । एपरार्थ का दुरार्थ का एर्थ से कप्पद एपरार्थ का दुरार्थ का बधए, जो से  
 कप्पद परे एपरायाओ का दुरायाओ का बधए, जे तथ्य परे एपरायाओ का  
 दुरायाओ का बधए, से उनरा हैरे का परिहारे का ॥ ३२ ॥ वे निष्ठू य गवाओ  
 अवद्यम्म एगरायिहारपडिम सबसुपञ्जितार्थ विहृरेजा से य जो सरेजा से व  
 इच्छेजा जोर्चे पि तमेव गण उबसुपञ्जितार्थ विहृताए, पुष्टो आओएजा पुष्टो  
 पहिहमेजा पुष्टो ऐगरायिहारस्त उबद्धाएजा ॥ ३३ ॥ मणारपेक्षए व पवान्ने  
 अवद्यम्म एगरायिहारपडिम सबसुपञ्जितार्थ विहृरेजा से व जो सरेजा है व  
 इच्छेजा जोर्चे पि तमेव गण उबसुपञ्जितार्थ विहृताए, पुष्टो आओएजा पुष्टो

पठिक्षमेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्टाएजा ॥ २६ ॥ एव आयरियउवज्ञाए य  
गणाओ अवक्षम्म एगाहविहारपठिम उवसपजित्ताण विहरेजा, से य इच्छेजा दोच्चं  
पि तमेव गण उवसपजित्ताण विहरित्तए, पुणो आलोएजा पुणो पठिक्षमेजा पुणो  
छेयपरिहारस्स उवट्टाएजा ॥ २७ ॥ भिक्खू य गणाओ अवक्षम्म पासत्थविहार  
उवसपजित्ताण विहरेजा, से य इच्छेजा दोच्चं पि तमेव गण उवसपजित्ताण  
विहरित्तए, अत्थ याड थ सेमे, पुणो आलोएजा पुणो पठिक्षमेजा पुणो छेयपरि-  
हारस्स उवट्टाएजा ॥ २८ ॥ भिक्खू य गणाओ अवक्षम्म अहाद्वदविहार उव-  
सपजित्ताण विहरेजा, से य इच्छेजा दोच्चं पि तमेव गण उवसपजित्ताण  
विहरित्तए, अत्थ याड य सेसे, पुणो आलोएजा पुणो पठिक्षमेजा पुणो छेयपरिहारस्स  
उवट्टाएजा ॥ २९ ॥ भिक्खू य गणाओ अवक्षम्म उसीलविहार उवसपजित्ताण  
विहरेजा, से य इच्छेजा दोच्चं पि तमेव गण उवसपजित्ताण विहरित्तए, अत्थ  
याइ थ सेसे, पुणो आलोएजा पुणो पठिक्षमेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्टाएजा  
॥ ३० ॥ भिक्खू य गणाओ अवक्षम्म ओसण्णविहार उवसपजित्ताण विहरेजा,  
से य इच्छेजा दोच्चं पि तमेव गण उवसपजित्ताण विहरित्तए, अत्थ याड थ  
सेसे, पुणो आलोएजा पुणो पठिक्षमेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्टाएजा ॥ ३१ ॥  
भिक्खू य गणाओ अवक्षम्म ससत्तविहार उवसपजित्ताण विहरेजा, से य इच्छेजा  
दोच्चं पि तमेव गण उवसपजित्ताण विहरित्तए, अत्थ याड य सेसे, पुणो आलोएजा  
पुणो पठिक्षमेजा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्टाएजा ॥ ३२-१ ॥ भिक्खू य गणाओ  
अवक्षम्म परपासड उवसपजित्ताण विहरेजा, से य इच्छेजा दोच्चं पि तमेव गण  
उवसपजित्ताण विहरित्तए, नत्थि ण तस्य तप्पत्तिय केइ छेए वा परिहारे वा णण्णत्य  
एगाए आलोयणाए ॥ ३२-२ ॥ भिक्खू य गणाओ अवक्षम्म ओहावेजा, से य  
इच्छेजा दोच्चं पि तमेव गण उवसपजित्ताण विहरित्तए, नत्थि ण तस्य केइ छेए  
वा परिहारे वा णण्णत्य एगाए सेहोवट्टावणियाए ॥ ३३ ॥ भिक्खू य अण्णयर  
अकिच्छाण (पडि)सेविता इच्छेजा आलोएत्तए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्ञाए  
पासेजा, तेसतियं आलोएजा पठिक्षमेजा निदेजा गरहेजा विउट्टेजा विसोहेजा  
अक्रणयाए अब्मुट्टेजा अहारिह तवोकम्मं पायच्छित पठिवजेजा ॥ ३४ ॥ नो चेव  
अप्पणो आयरियउवज्ञाए पासेजा, जत्थेव सभोड्यं साहम्मिय पासेजा वहुसुय

१ फुटीकरणमेयस्स विवाहपणतिपणवीमडमसयणियठवत्तव्या-ठाणचउभगीओ  
तह इमस्स चेव ववहारस्स दसमुदेसाजो णायब्बं । २ पाढंतरं-कप्पइ से तस्तिय  
आलोइत्तए वा पठिक्षमित्तए वा जाव पठिवजित्तए ।

वस्त्रामर्य लस्टेतियं आलोएज्जा जाव पटिवज्ज्ञा ॥ १५ ॥ तो चेद भं संस्कृते  
षाहमिति अत्येव अलोयेज्ज्ञे षाहमिति पासेज्जा बहुस्तुत्यं वस्त्रामर्य लस्टेतियं  
आलोएज्जा जाव पटिवज्ज्ञा ॥ १६ ॥ तो चेद भं अलोयेज्ज्ञे अत्येव षाहमिति  
पासेज्जा बहुस्तुत्यं वस्त्रामर्य लस्टेतियं आलोएज्जा जाव पटिवज्ज्ञा ॥ १७-१ ॥  
तो चेद भं षाहमिति पासेज्जा बहुस्तुत्यं वस्त्रामर्य अत्येव समग्रोक्षासागी भव्यात्मे  
पासेज्जा बहुस्तुत्यं वस्त्रामर्य कृप्त दे तस्मीतिपृष्ठं आस्मद्युत्तपृष्ठं वा पटिवज्ज्ञेर वा  
जाव पावच्छित्तं पटिवज्ज्ञेर वा ॥ १७-२ ॥ तो चेद भं समग्रोक्षासागी वस्त्रामर्य  
पासेज्जा बहुस्तुत्यं वस्त्रामर्य अत्येव समग्रामिति आलो पासेज्जा कृप्त दे तस्मीतिपृष्ठं  
आस्मद्युत्तपृष्ठं वा पटिवज्ज्ञेर वा जाव पावच्छित्तं पटिवज्ज्ञेर वा ॥ १८ ॥ तो चेद  
समग्रामिति आलो पासेज्जा बहिया गामस्तु वा नगरस्तु वा निगमस्तु वा रम्यात्मीये  
वा खेडस्तु वा कम्बडस्तु वा मईकस्तु वा पृष्ठस्तु वा लेण्डमुहस्तु वा जात्यमस्तु  
वा उंचाइस्तु वा उंचिकेस्तु वा पाइयामिसुहे वा उर्धीयामिसुहे वा भरकपरीम-  
द्विर्य उर्द्वावार्ता मत्पृष्ठं वृच्छिं कु एवं वणज्जा—एकज्ञा मे ज्ञाराहा एकज्ञात्ये  
वृद्धं वरद्वे । अरहतानं विद्वानं भविते आलोएज्जा जाव पटिवज्ज्ञेराति ॥ १९ ॥  
तिवेमि ॥ वयहारस्तु पहमो उद्देसभो समाचो ॥ २ ॥

### वयहारस्तु पिहळो उद्देसओ

दो षाहमित्या एम्बलो विहरुति एगे तस्य अन्नवरं भविष्यद्गुर्वं परिस्तैता  
आलोएज्जा ठवित्यं ठवहाता भरकिं वियावहिं ॥ ४ ॥ दो षाहमित्या  
एपवलो विहरुति दो वि ते अन्नवरं भविष्यद्गुर्वं परिस्तैता आलोएज्जा एवं तस्य  
कृप्तागां ठवहाता एगे लिखिसेज्जा अह पक्षम से वि निष्पित्तेज्जा ॥ ४१ ॥ वहै  
षाहमित्या एम्बलो विहरुति एगे तस्य अन्नवरं भविष्यद्गुर्वं परिस्तैता आलोएज्जा  
ठवित्यं ठवहाता भरकिं वियावहिं ॥ ४२ ॥ वहै साहमित्या एपवलो विह-  
रुति एगे वि ते अन्नवरं भविष्यद्गुर्वं परिस्तैता आलोएज्जा एवं तस्य कृप्ताग-  
ठवहाता अवसेता निष्पित्तेज्जा अह पक्षम से वि विष्पित्तेज्जा ॥ ४३ ॥ परिहर-  
कृप्तिए भिक्षू गिरावद्भावे अन्नवरं भविष्यद्गुर्वं परिस्तैता आलोएज्जा से व  
सुवेरज्जा ठवित्यं ठवहाता भरकिं वियावहिं ॥ ४४ ॥ से व तो उंचरज्जा अह  
परिहारिए भरकिं वियावहिं से ते अनुपरिहारिए वीरमार्तं वियावहिं सद्य  
जेज्जा से वि अरुणे तस्य आद्वैत्ये उिया ॥ ४५ ॥ परिहारकृप्तिए भिक्षू  
गिरावद्भावे तो कृप्त तस्य पक्षम्भोस्यस्तु निष्पूरिणप्, अमिक्षाए तस्य

<sup>१</sup> विहरुत्यं अहुवा देवे पुण्यपालिम्बुद्धमाणुमाणा चामिक्षविहितात्मिति ।



करतिव देयाक्षिद्य जाव तजो रोगायंग्नो विष्मुहो तव्ये कणा तस्य व्याह-  
स्मुसए नासे कवाहरे फुमिमन्ये लिया ॥ ५७ ॥ अवद्वाप्य विष्मुहो अविष्मूर्ते नो  
कप्पद तस्य गमाक्षेत्रस्य उवद्वावेताए ॥ ५८ ॥ अवद्वाप्य विष्मुहो विष्मूर्ते  
कप्पद तस्य गमाक्षेत्रस्य उवद्वावेताए ॥ ५९ ॥ पारंविद्य विष्मुहो विष्मूर्ते  
कप्पद तस्य गमाक्षेत्रस्य उवद्वावेताए ॥ ६० ॥ पारंविद्य विष्मुहो विष्मूर्ते  
कप्पद तस्य गमाक्षेत्रस्य उवद्वावेताए ॥ ६१ ॥ अवद्वाप्य विष्मुहो विष्मूर्ते  
वा विष्मूर्ते वा कप्पद तस्य गमाक्षेत्रस्य उवद्वावेताए, जहा तस्य व्यस्य परिव  
लिया ॥ ६२ ॥ पारंविद्य विष्मुहो विष्मूर्ते वा विष्मूर्ते वा कप्पद तस्य गमाक्षेत्र-  
इवस्य उवद्वावेताए, जहा तस्य गमस्य परिव लिया ॥ ६३ ॥ हो शाहमिया एफ्नो  
विहरिति एतो तत्त्व अज्ञयरे अविष्मूर्ते पवित्रेविता आसोएज्ञा-ज्ञाई वे भर्ते ।  
असुरोर्व साहुत्या चर्दि इममिम कारणमिम पवित्रेवी से य पुष्टिक्षम्ये कि पवित्रेवी ।  
से य बएज्ञा-पवित्रेवी पवित्रारप्तो से य बएज्ञा-नो पवित्रेवी नो पवित्रारप्तो वे  
से फ्लार्च बब्द से फ्लार्चास्तो तेक्ष्ये से लिमाहु भर्ते (१) । छाप्लाजा कवाहाप ॥ ५४ ॥  
विष्मूर्ते य गमामो अवद्वम ओहाम्नुप्ये(हिए)ही क्षेत्र(गच्छे)ज्ञा से व (गच्छे)  
भणोहाइए इच्छेज्ञा दोर्वे पि तमेव गर्व उवद्वेपवित्राल विहरिताए, तत्त्व वे भेरावे  
इनेयास्ये लियाए उमुप्पमित्या-इम्ने भो । जानह कि पवित्रेवी । हो व (गच्छे)  
कि पवित्रेवी । से य बएज्ञा-पवित्रेवी पवित्रारप्तो से य बएज्ञा-नो पवित्रेवी  
नो पवित्रारप्तो वे से फ्लार्च बब्द से फ्लार्चास्तो तेक्ष्ये से लिमाहु भर्ते । उष-  
पद्जा कवाहाप ॥ ५५ ॥ एप्पमित्यावस्य मिक्कहस्य कप्पद जायरियद्वयमातावात  
इतरिये दिस वा अलुरिते वा उरिलितए वा चारेत्तद वा जहा वा तस्य व्यस्य  
परिव लिया ॥ ५६ ॥ बहुते पवित्रारिया बहुते अपवित्रारिया इच्छेज्ञा एम्बन्ये  
एगमार्द वा तुमार्द वा तिमार्द वा जडमार्द वा झमार्द वा व्याहए  
हे अन्नमल्य सुमुर्वेति अन्नमल्य नो सुमुर्वेति (एता) मार्द( मार्दुर्वे ) तजो पवित्र  
सुव्ये कि एप्पम्नो सुमुर्वेति ॥ ५७ ॥ पवित्रारक्षम्पहिक्षस्य मिक्कहस्य नो कप्पद  
ज्ञार्वे वा पार्व वा जाहम्न वा साहम्न वा जार्व वा अनुप्पश्वर्व वा भेरा व वे  
बएज्ञा-इमे ता अव्ये । तुम एप्सिं देहि वा अनुप्पर्वि वा एते वे कप्पद ज्ञार्वे  
वा अनुप्पश्वर्व वा कप्पद से खें अखुबाजावेताए, अखुबाजाते ते लेवाए । एते हे  
कप्पद लेवे अखुबाजावेताए ॥ ५८ ॥ पवित्रारक्षम्पहिक्ष मिक्कह सुर्वे पवित्रेवी  
विज्ञा भेरावे देयाक्षियाए गच्छेज्ञा भेरा व व बएज्ञा-पवित्रार्द(२) अव्ये ।  
आहे पि भेम्बामि वा पाहामि वा एवे से कप्पद पवित्राहेताए, तत्त्व नो कप्पद

अपरिहारिएणं परिहारियस्स पडिग्गहसि असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयसि वा पडिग्गहसि पाणिंसि वा उद्धु उद्धु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पो अपरिहारियस्स परिहारियाओ ॥ ६९ ॥ परिहार-कप्पट्टिए भिक्खु थेराणं पडिग्गहएणं वहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेजा, थेराय ण व एज्जा-पडिग्गाहे अज्जो ! तुम पि पच्छा भोक्खसि वा पाहिसि वा, एव से कप्पइ पडिग्गाहित्तए, तत्य नो कप्पइ परिहारिएण अपरिहारियस्स पडिग्गहसि असणं वा पाण वा खाइमं वा साइमं वा भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयसि वा पडिग्गहसि पाणिंसि वा उद्धु उद्धु भोत्तए वा पायए वा, एस[लेस] कप्पो परिहारियस्स अपरिहारियाओ ॥ ७० ॥ ति-वेमि ॥ ववहारस्स विहओ उहेसओ समत्तो ॥ २ ॥

### ववहारस्स तहओ उहेसओ

भिक्खु य इच्छेजा गण धारेत्तए, भगव च से अपलिच्छ(ज्ञे)ए, एव नो से कप्पइ गण धारेत्तए, भगव च से पलिच्छज्ञे, एव से कप्पइ गण धारेत्तए ॥ ७१ ॥ भिक्खु य इच्छेजा गण धारेत्तए, नो से कप्पइ थेरे आपुच्छित्ता गण धारेत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छित्ता गण धारेत्तए, थेरा य से वियरेजा, एव से कप्पइ गण धारेत्तए, थेरा य से नो वियरेजा, एव से नो कप्पइ गण धारेत्तए, जण थेरेहि अविहण्ण गणं वारेजा, से सतरा छेष्ठो वा परिहारो वा ( साहम्मिया उद्धाए विहरंति नत्थि ण तेसि केह छेए वा परिहारे वा ) ॥ ७२ ॥ तिवासपरियाए समणे णिगगथे आयार-कुसले सजमकुसले पवयणकुसले पण्णत्तिकुसले सगहकुसले उवगगहकुसले अक्खयायारे अभिन्नायारे असवलायारे असकिलिङ्गायारचि(चरि)ते वहुस्सुए वब्मागमे जहण्णेण आयारपकापधरे कप्पइ उवज्ञायत्ताए उहिसित्तए ॥ ७३ ॥ सच्चेव णं से तिवास-परियाए समणे णिगगथे नो आयारकुसले नो सजमकुसले नो पवयणकुसले नो पण्णत्तिकुसले नो सगहकुसले नो उवगगहकुसले खयायारे भिन्नायारे सवलायारे सकिलिङ्गायारचिते अप्पस्सुए अप्पागमे नो कप्पइ उवज्ञायत्ताए उहिसित्तए ॥ ७४ ॥ पचवासपरियाए समणे णिगगथे आयारकुसले सजमकुसले पवयणकुसले पण्णत्तिकुसले संगहकुसले उवगगहकुसले अक्खयायारे अभिन्नायारे असवलायारे असकिलिङ्गायार-चिते वहुस्सुए वब्मागमे जहण्णेण द[स]साकप्पववहारधरे कप्पइ आयरियउवज्ञाय-त्ताए उहिसित्तए ॥ ७५ ॥ सच्चेव ण से पचवासपरियाए समणे णिगगंथे नो आयारकुसले नो सजमकुसले नो पवयणकुसले नो पण्णत्तिकुसले नो सगहकुसले नो उवगगहकुसले खयायारे भिन्नायारे सवलायारे सकिलिङ्गायारचिते अप्पस्सुए अप्पागमे नो कप्पइ

आवरिकउज्ज्वालताए उद्दिशिताए ॥ ७६ ॥ अद्युपस्थिरियाए समने किमयि आवार  
कुरुक्षे संजमद्वासके पक्षमकुरुक्षे पक्षतिकुरुक्षे संग्रहकुरुक्षे उद्यमाकुरुक्षे अन्नवानारे  
अभिजात्यारे असुवानारे असुकिञ्चिद्यारियारितो बहुस्तुए बद्धायमें बद्धयेत्वं यज्ञ-  
समावप्तरे कप्पद् आवरियताए आव गणस्त्वेद्यमताए उद्दिशिताए ॥ ७७ ॥ उत्ते  
वं से अद्युपस्थिरियाए समये किमयि नो आयाकुरुक्षे नो संजमकुरुक्षे नो पक्षम-  
कुरुक्षे नो पक्षतिकुरुक्षे नो संग्रहकुरुक्षे नो उद्यमाकुरुक्षे अव्यायारे मित्रानारे स्व-  
लायारे संकिञ्चिद्यारितो अप्स्तुए अप्यायमें नो कप्पद् आवरियताए आव यज्ञ-  
स्त्वेद्यमताए उद्दिशिताए ॥ ७८ ॥ निष्ठपरियाए समने किमयि कप्पद् उद्दिशि अन्न-  
रियउज्ज्वालताए उद्दिशिताए, से किमाहु भंते । अतिव वं दीरार्थ ताहस्तामि कुमारि  
क्षामि परिमामि वेजामि वेसामिक्षामि संग्रामि सम्मुखक्षामि अग्नेयामि गु-  
म्भामि भर्तुषि तेहि भर्तुषि तेहि परिष्ठि तेहि भर्तुषि तेहि भेसामिष्ठि तेहि  
संग्रहृषि तेहि सम्मुखरृषि तेहि अद्युपहृषि तेहि बहुमपहृषि वं से निष्ठपरियाए  
समये किमयि कप्पद् आवरियउज्ज्वालताए उद्दिशिताए उद्दिशि ॥ ७९ ॥ निष्ठ  
आसपरियाए समये किमयि कप्पद् अद्युपिमउज्ज्वालताए उद्दिशिताए स्मुच्छेत्  
कप्पिति तस्य वं आवारपङ्गस्य वेसे अस्त्रिष्ठुए, से य अद्युपिस्त्रामिति अद्युपेजा  
एवं से कप्पद् आवरियउज्ज्वालताए उद्दिशिताए, से य अद्युपिस्त्रामिति नो अद्युपेजा  
एवं से नो कप्पद् आवरियउज्ज्वालताए उद्दिशिताए ॥ ८० ॥ किमयैवस्य वं यज्ञ-  
हरतदस्य आवरियउज्ज्वालताए भी(हुं)संगेजा नो से कप्पद् आवरियउज्ज्वालत  
होताए, कप्पद् वे पुर्व आवरिय उद्दिशिता तस्यो पक्षा उज्ज्वाले से किमाहु भंते ।  
दुर्देशिष्ठि ए समये किमयि ठज्ज्वा—आवरिएवं ठज्ज्वाएन य ॥ ८१ ॥ किमयैव  
वं नवद्वारतद्वीए आवरियउज्ज्वालताए पू(वि)द्यतिष्ठि य वीसेमेजा नो से कप्पद् आव-  
रियउज्ज्वालताए अम्भरिष्ठि य होताए, कप्पद् वे पुर्व आवरिय उद्दिशिता तस्यो  
उज्ज्वाले तस्यो पक्षम पक्षतिष्ठि दे किमाहु भंते । दिर्देशिष्ठि ए समयी किमयैव  
ठज्ज्वा—आवरिएवं ठज्ज्वाएवं पक्षतिष्ठि य ॥ ८२ ॥ निष्ठव्यजाम्ये अविनिष्ठ-  
तिता मेवृष्टव्यम्ये पक्षिदेशिजा आक्षीजाए तस्य तप्पतिष्ठि नो से कप्पद् आवरिय  
वा उज्ज्वालताए वा पक्षतिष्ठि वा येताए वा यमिताए वा पक्षम्येद्यताए वा उद्दिशित  
वा घारिताए वा ॥ ८३ ॥ निष्ठव्य य यज्ञाम्ये अवज्ञम्ये मेवृष्टव्यम्ये पक्षिदेशिजा  
तिष्ठि सम्बद्धरामि तस्य तप्पतिष्ठि नो कप्पद् आवरिय वा आव यज्ञालतेद्यताए  
वा उद्दिशिताए वा वारेताए वा तिहि सम्बद्धरैवं वीहारैवं अठरक्षांति देवक्षांति  
वा उद्दिशिताए वा वारेताए वा तिहि सम्बद्धरैवं वीहारैवं अठरक्षांति देवक्षांति  
वा प(तुष्ठ)हिमंसि तिष्ठस्य उज्ज्वालस्य उज्ज्वालस्य (पिण्डिभरस्य) एवं से



वासरियउवज्ज्ञामाताए उहितिगाए ॥ ७५ ॥ नदुवासपरिवाए समने किंमये वद्वा-  
कुसङ्गे संभवुकुसङ्गे पवर्णतिकुसङ्गे संगठकुसङ्गे उवज्ज्ञामुकुसङ्गे अवज्ञामातारे  
अमिज्ञायारे असुवज्ञायारे असंक्षिप्तिकुमारितो नदुसद्वप वम्मायमे वद्वेष्व इन्  
सम्मायपरे कल्पद वासरियताए व्यव गवामाव्येष्यदाए उहितिगाए ॥ ७६ ॥ सुन  
न से अदुवासपरिवाए समने किंमये नो आवाकुमाके नो संभवकुसङ्गे नो वद्वा-  
कुसङ्गे नो पञ्चतिकुसङ्गे नो संगठकुसङ्गे नो उवज्ज्ञामुकुसङ्गे वज्ञामारे ल-  
अम्यारे संक्षिप्तिकुमारितो अस्मुए अप्पाममे नो कल्पद वासरियताए व्यव वद्वा-  
व्येष्यदाए उहितिगाए ॥ ७७ ॥ निष्पदपरिवाए समने किंमये कल्पद तीरुरु वास-  
रियउवज्ञामाताए उहितिगाए, से निमाहु भंते । वरिष्व वं विरुण तदास्तादि कुम्भमि  
कडायि परिवायि वेष्यायि वेष्यायि सुम्यायि सम्मुहकरायि वद्वुम्यायि वा-  
मयायि मर्वति तेहु छेहु तेहु परिष्वहु तेहु केहुहु तेहु वेष्यायिहु तेहु  
संमएहु तेहु सम्मुहकरेहु तेहु वद्वुमएहु तेहु वद्वुमएहु वं से निष्पदपरिवाए  
समने किंमये कल्पद वासरियउवज्ञामायताए उहितिगाए उहितिगाए ॥ ७८ ॥ निष्पद  
वासपरिवाए समने किंमये कल्पद वद्वुमरियउवज्ञामायताए उहितिगाए स्मुक्षेष-  
कर्पंसि तस्य नी आवारपद्ध्यस्य देदे अवहुए, से न अद्विजिस्थामिति वाहियेजा  
एवं से कल्पद वायरियउवज्ञामायताए उहितिगाए, से य अद्विजिस्थामिति नो वद्वियेजा,  
एवं से नो कल्पद वासरियउवज्ञामायताए उहितिगाए ॥ < ॥ निष्पदतस्य वं वद्वा-  
हरतरतस्य वासरियउवज्ञामायताए वी(तु)संमेजा नो से कल्पद वावरियउवज्ञामायत-  
होताए, कल्पद से पुर्वं वायरिय उविष्यायेता तथो पक्षा उवज्ञामायते से निमाहु भंते ।  
त्रुष्टेष्वहुए समने किंमये तंबहा—वावरियउवज्ञामायत व ॥ < ॥ निष्पदीप  
वं वद्वहरतरतस्य वावरियउवज्ञामायत व(विवितिवी) व वीसंमेजा नो से कल्पद वाव-  
रियउवज्ञामायताए वासरियउवज्ञामायतीए होताए, कल्पद से पुर्वं वायरिय उविष्यायेता तथो  
उवज्ञामायत तथो पक्षा पवर्णियि से निमाहु भंते । विसंमहिया समनी किंमयी  
तंबहा—वायरियउवज्ञामायत व(विवितिवी) व ॥ < ॥ निष्पद वद्वामे वावरियउ-  
विता सेतुवक्षमं पदिसेविजा वावरियउवज्ञामायत तस्य तप्पतिवं नो से कल्पद वावरियउ-  
वा उवज्ञामायत वा पवर्णिव वा वेरतं वा वायितं वा वायव्येष्यवतं वा उहितिग-  
वा वावरियउवज्ञामायत ॥ < ॥ निष्पद वं वणम्भो ववद्वम्भ सेतुवक्षमं पदिसेविजा  
तिप्ति सुभद्र्यायि तस्य तप्पतिवं नो कल्पद वावरियउवज्ञामायत वा वाव वायव्येष्यवतं  
वा उहितिगाए वा भारेताए वा विहि सर्वक्षेत्रहु वीर्द्धवंतहु वज्ञवंतहु सर्वक्षेत्रहु  
वा प(व)द्विवितिवी विष्यस्य उवसंतस्य उवरमस्य पदिविरजस्य (निष्पदतस्य) वं से



संवध्यरेहि वीश्वरेहि चउत्तमसि संवद्धरेहि पद्मिनीसि ठिवस्तु चवसंदृक्ष वर  
कस्य पदिविरमस्य एवं से कृष्ण आवरियता वा चाव गणाश्वेष्यता का उपरिक्ष  
वा चारेताए वा ॥ १३ ॥ मिन्द य वृक्षाप वस्मागमे वृक्षो वृक्षामासापेषु  
चरनेषु माई मुखावाई अद्वैत पात्रीवी चाकजीवाए तस्य तप्पतिं नो कृष्ण  
आवरियता वा चाव गणाश्वेष्यता का उपरिताए वा चारेताए वा ॥ १४ ॥  
गणाश्वेष्यए वृक्षाप वस्मागमे वृक्षो वृक्षामासापेषु चरनेषु माई मुखावाई  
अद्वैत पात्रीवी चाकजीवाए तस्य तप्पतिं नो कृष्ण आवरियता वा चाव गणा-  
श्वेष्यता वा उपरिताए वा चारेताए ॥ १५ ॥ आवरिक्तवज्ज्ञाप वृक्षार  
वस्मागमे वृक्षो वृक्षामासापेषु चरनेषु माई मुखावाई अद्वैत पात्रीवी  
चाकजीवाए तस्य तप्पतिं नो कृष्ण आवरियता वा चाव गणाश्वेष्यता वा  
उपरिताए वा चारेताए ॥ १६ ॥ वहै मिन्दह्यो वृक्षाप वस्मागमा वृक्षो  
वृक्षामासापेषु चरनेषु माई मुखावाई अद्वैत पात्रीवी चाकजीवाए तेसि  
तप्पतिं नो कृष्ण आवरियता वा चाव गणाश्वेष्यता का उपरिताए वा चारेताए  
वा ॥ १७ ॥ वहै यनाश्वेष्या वृक्षाप वस्मागमा वृक्षो वृक्षामासापेषु  
चरनेषु माई मुखावाई अद्वैत पात्रीवी चाकजीवाए तेसि तप्पतिं नो कृष्ण  
आवरियता वा चाव गणाश्वेष्यता वा उपरिताए वा चारेताए ॥ १८ ॥ वहै  
आवरिक्तवज्ज्ञापा वृक्षामासा वृक्षो वृक्षामासापेषु चरनेषु माई  
मुखावाई अद्वैत पात्रीवी चाकजीवाए तेसि तप्पतिं नो कृष्ण आवरियता वा  
चाव गणाश्वेष्यता वा उपरिताए वा चारेताए ॥ १९ ॥ वहै मिन्दह्यो  
वहै यनाश्वेष्या वहै आवरिक्तवज्ज्ञापा वृक्षाप वस्मागमा वृक्षो वृ  
क्षामासापेषु चरनेषु माई मुखावाई अद्वैत पात्रीवी चाकजीवाए तेसि तप्प-  
तिं नो कृष्ण आवरियता वा चाव गणाश्वेष्यता का उपरिताए वा चारेताए  
वा ॥ २० ॥ वि-बेसि ॥ वष्टवारस्त्वा तद्वो उद्देसमो समचो नै नै

### वष्टवारस्त्वा उद्देसमो

नो कृष्ण आवरिक्तवज्ज्ञापस्त्वा एयामिन्दस्य हेमन्तमिन्दाप्त चरि(त)ए ॥ १ १०  
कृष्ण आवरिक्तवज्ज्ञापस्त्वा एयामिन्दस्य हेमन्तमिन्दाप्त चरि(तार)ए ॥ १ ११  
नो कृष्ण गणाश्वेष्यस्त्वा एयामिन्दस्य हेमन्तमिन्दाप्त चरिए ॥ १ १२ ॥ कृष्ण  
गणाश्वेष्यस्त्वा एयामिन्दस्य हेमन्तमिन्दाप्त चरि ॥ १ १३ ॥ नो कृष्ण आव-  
रिक्तवज्ज्ञापस्त्वा एयामिन्दस्य वासावाप्त चरि ॥ १ १४ ॥ कृष्ण आवरिक्तव-  
ज्ञापस्त्वा एयामिन्दस्य वासावाप्त चरि ॥ १ १५ ॥ नो कृष्ण गणाश्वेष्यस्त्वा

अप्पतइयस्स वासावास वत्थए ॥ १०७ ॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स  
वासावास वत्थए ॥ १०८ ॥ से गामंसि वा नगरसि वा निगमसि वा रायहाणीए  
वा खेडसि वा कच्चडसि वा मडवसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा  
सवाहंसि वा सनिवेससि वा वहूण आयरियउवज्ज्वायाण अप्पविइयाणं वहूण  
गणावच्छेइयाण अप्पतइयाणं कप्पइ हेमतगिम्हासु चरिए अण्णमण्ण निस्साए  
॥ १०९ ॥ से गामसि वा नगरसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडसि वा  
कच्चडसि वा मडवंसि वा पट्टणसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा सवाहंसि वा  
सणिवेससि वा वहूण आयरियउवज्ज्वायाण अप्पतइयाणं वहूणं गणावच्छेइयाण  
अप्पचउत्थाण कप्पइ वासावास वत्थए अण्णमण्ण निस्साए ॥ ११० ॥ गामाण-  
गाम द्वज्जमा(ण)ो भिक्खू य ज पुरओ कहु विह(रेजा, से य)रइ आहच्च  
वीसमेज्जा, अत्थि याइ थ अण्णो केइ उवसपज्जणारिहे कप्पइ से(०) उवसपज्जि(त्ताण  
विहरित्ताए)यव्वे, नत्थि याइ थ अण्णो केइ उवसपज्जणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए  
असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्ण दि(सिं)स अण्णो साहम्मिया  
विहरंति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए,  
कप्पइ से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तंसि च ण कारणसि निद्वियसि परो वएज्जा-  
वसाहि अज्जो ! एगराय वा दुराय वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुराय वा वत्थए,  
नो से कप्पइ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ पर एगरायाओ वा  
दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पज्जो-  
सवि(ए)ओ भिक्खू य ज पुरओ कहु विहरइ आहच्च वीसमेज्जा, अत्थि याड य  
अण्णो केइ उवसपज्जणारिहे से उवसपज्जियव्वे, नत्थि याइ थ अण्णो केइ उवसपज्जणा-  
रिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण  
दिस अण्णो साहम्मिया विहरंति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ  
विहारवत्तिय वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तंसि च ण कारणसि निद्वि-  
यसि परो वएज्जा-वसाहि अज्जो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगराय वा  
दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ परं  
एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२ ॥ आयरिय-  
उवज्ज्वाए गिलायमाणे अण्णयर वएज्जा-अज्जो ! ममसि ण काल्मायसि समाणसि अय  
समुक्षसियव्वे, से य समुक्षसणारिहे समुक्षसियव्वे से य नो समुक्षसणारिहे नो  
समुक्षसियव्वे, अत्थि याइ थ अण्णो केइ समुक्षसणारिहे से समुक्षसियव्वे, नत्थि याइ  
थ अण्णो केइ समुक्षसणारिहे से चेव समुक्षसियव्वे, तंसि च ण समुक्षिङ्गसि परो

संकष्टरेहि गीर्हांतरहि चउत्त्यगंसि संकष्टरेहि पट्टिरेहि ठिस्स उदयंतस्तु इव  
प्रस्तु पट्टिरेहितस्म पर्वं से कृष्ण आवरित्वा वा जाव गच्छत्वेष्यते वा उदितित्वा  
वा भारेत्वाए वा ॥ ३ ॥ मिन्दूय व्युस्तुए वस्मायमे व्युस्तो व्युभागाद्यादेषु  
कारेषु माई मुसावाई असौरि पाक्षीवी वाक्षीवाए तस्तु तप्पतिर्यं जो कृष्ण  
आवरित्वा वा जाव गच्छत्वेष्यते वा उदितित्वा वा भारेत्वाए ॥ ५ ॥ गच्छत्वेष्यते  
व्युस्तुए वस्मायमे व्युस्तो व्युभागाद्याद्यादेषु कारेषु माई मुसावाई  
असौरि पाक्षीवी वाक्षीवाए तस्तु तप्पतिर्यं जो कृष्ण आवरित्वा वा जाव यन्त्र-  
व्युत्तेष्यते वा उदितित्वा वा भारेत्वाए ॥ ९५ ॥ आवरित्वेष्यत्वाए व्युस्तुए  
वस्मायमे व्युस्तो व्युभागाद्यादेषु कारेषु माई मुसावाई असौरि पाक्षीवी  
आवरित्वाए तस्तु तप्पतिर्यं जो कृष्ण आवरित्वा वा जाव गच्छत्वेष्यते वा  
उदितित्वा वा भारेत्वाए ॥ ९६ ॥ वहे मिन्दूयो व्युस्तुया वस्मायमा व्युस्ते  
व्युभागाद्यादेषु कारेषु माई मुसावाई असौरि पाक्षीवी वाक्षीवाए तप्पति-  
तिर्यं जो कृष्ण आवरित्वा वा जाव गच्छत्वेष्यते वा उदितित्वा वा भारेत्वाए  
वा ॥ ९७ ॥ वहे गच्छत्वेष्यता व्युस्तुया वस्मायमा व्युस्तो व्युभागाद्यादेषु  
कारेषु माई मुसावाई असौरि पाक्षीवी वाक्षीवाए तप्पतिर्यं जो कृष्ण  
आवरित्वा वा जाव गच्छत्वेष्यते वा उदितित्वा वा भारेत्वाए ॥ ९८ ॥ वहे  
आवरित्वेष्यत्वावा व्युस्तुया वस्मायमा व्युस्तो व्युभागाद्यादेषु कारेषु माई  
मुसावाई असौरि पाक्षीवी वाक्षीवाए तप्पतिर्यं जो कृष्ण आवरित्वा वा  
जाव गच्छत्वेष्यते वा उदितित्वा वा भारेत्वाए ॥ ९९ ॥ वहे मिन्दूयो  
वहे गच्छत्वेष्यता वहे आवरित्वेष्यता प्युस्तुया वस्मायमा व्युतो व्यु  
भागाद्यादेषु कारेषु माई मुसावाई असौरि पाक्षीवी वाक्षीवाए तप्पति-  
तिर्यं जो कृष्ण आवरित्वा वा जाव गच्छत्वेष्यते वा उदितित्वा वा भारेत्वाए  
वा ॥ १ ॥ हि-तेनि ॥ ववहारस्तु त्वामो उदेसमो समतो ॥ ३ ॥

### ववहारस्तु चउत्त्यो उदेसमो

जो कृष्ण आवरित्वेष्यत्वावस्तु पृथग्मियस्तु हेमतमिम्हादु चरि(त)ए ॥ १ ॥ १०  
कृष्ण आवरित्वेष्यत्वावस्तु अप्पविहस्तु हेमतमिम्हादु चरि(चार)ए ॥ १ ३ ॥  
जो कृष्ण घच्छत्वेष्यत्वावस्तु अप्पविहस्य हेमतमिम्हादु चरिए ॥ १ ४ ॥ कृष्ण  
गच्छत्वेष्यत्वावस्तु अप्पत्तमिम्हादु चरिए ॥ १ ५ ॥ जो कृष्ण वाम-  
रित्वेष्यत्वावस्तु अप्पविहस्तु वासावाई अस्तए ॥ १ ५ ॥ कृष्ण आवरित्वेष्य-  
त्वावस्तु अप्पत्तमिम्हादु वासावाई अस्तए ॥ १ ६ ॥ जो कृष्ण गच्छत्वेष्यत्वाव-

अप्पत्तद्यस्स वासावास वत्थए ॥ १०७ ॥ कप्पइ गणावच्छेद्यस्स अप्पचउत्थस्स  
वासावास वत्थए ॥ १०८ ॥ से गार्मसि वा नगरसि वा निगमसि वा रायहाणीए  
वा खेडसि वा कब्बडंसि वा मडवसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा  
सवाहंसि वा सनिवेससि वा वहूण आयरियउवज्ज्ञायाणं अप्पबिद्याण वहूण  
गणावच्छेद्याण अप्पत्तद्याणं कप्पइ हेमतगिम्हासु चरिए अण्णमण्णं निस्साए  
॥ १०९ ॥ से गामसि वा नगरसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा  
कब्बडसि वा मडवसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा सवाहंसि वा  
सनिवेससि वा वहूण आयरियउवज्ज्ञायाण अप्पत्तद्याण वहूण गणावच्छेद्याण  
अप्पचउत्थाण कप्पइ वासावास वत्थए अण्णमण्ण निस्साए ॥ ११० ॥ गामाणु-  
गाम दूझमा(ण)ो भिकख् य ज पुरओ कहु विह(रेजा, से य)रइ आहच्च  
वीसमेजा, अत्थ याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे कप्पइ से(०) उवसपज्जि(त्ताण  
विहरित्तए)यव्वे, नस्थ याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए  
असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्ण दि(सिं)स अण्णे साहम्मिया  
विहरति तण्ण तण्ण दिस उचलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए,  
कप्पइ से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तंसि च ण कारणसि निट्टियसि परो वएजा-  
वसाहि अज्जो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगरायं वा दुराय वा वत्थए,  
नो से कप्पइ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा चत्थए, ज तत्थ पर एगरायाओ वा  
दुरायाओ वा वसइ, से सत्तरा ढेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पज्जो-  
सवि(ए)ओ भिकख् य ज पुरओ कहु विहरइ आहच्च वीसमेजा, अत्थ याइ थ  
अण्णे केइ उवसपज्जणारिहे से उवसपज्जियव्वे, नस्थ याइ थ अण्णे केइ उवसपज्जणा-  
रिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण  
दिस अण्णे साहम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उचलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ  
विहारवत्तिय वत्थए, कप्पड से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तसि च ण कारणसि निट्टि-  
यसि परो वएजा-वसाहि अज्जो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगराय वा  
दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ पर  
एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सत्तरा ढेए वा परिहारे वा ॥ ११२ ॥ आयरिय-  
उवज्ज्ञाए गिलायमाणे अण्णयर वएजा-अज्जो ! ममसि ण काळ्यायसि समाणसि अयं  
समुक्षसियव्वे, से य समुक्षसणारिहे समुक्षसियव्वे से य नो समुक्षसणारिहे नो  
समुक्षसियव्वे, अत्थ याइ थ अण्णे केइ समुक्षसणारिहे से समुक्षसियव्वे, नस्थ याह  
थ अण्णे केइ समुक्षसणारिहे से चेव समुक्षसियव्वे, तसि च ण समुक्षिट्टसि परो

संकाउरेहि वीक्षेहि चउत्त्यगंति संकाउरेहि पट्टिंसि ठिक्स्स उक्सेतसु उक्स  
यस्य परिविरस्स एवं से क्षण्य आयरियत वा जाव गमावस्थेऽयत्त वा उरिंसिन्द  
वा भारेत्तए वा ॥ १३ ॥ भिक्षु च बुद्ध्य वस्मायने बहुसो बहुजागाणादै  
चरणेभु माई मुखावाई अश्वारे पाववीती जावजीवाए तस्य तप्पतिंयं नो क्षण्य  
आयरियत्त वा जाव गमावस्थेऽयत्त वा उरिंसिन्द वा भारेत्तए वा ॥ १४ ॥  
गमावस्थेऽय बुद्ध्य वस्मायने बहुसो बहुजागाणादैभु चरणेभु माई मुखावर्णं  
अमूर्द पाववीती जावजीवाए तस्य तप्पतिंयं नो क्षण्य आयरियत्त वा जाव यस्य  
बहुजागत वा उरिंसिन्द वा भारेत्तए वा ॥ १५ ॥ आयरियउक्तज्ञाए वाल्लर  
वस्मायने बहुसो बहुजागाणादैभु चरणेभु माई मुखावाई अमूर्द पाववीती  
जावजीवाए तस्य तप्पतिंयं नो क्षण्य आयरियत्त वा जाव गमावस्थेऽयत्त वा  
उरिंसिन्द वा भारेत्तए वा ॥ १६ ॥ वहै भिक्षुणो बहुस्या वस्मायने बहुभे  
बहुजागाणादैभु चरणेभु माई मुखावाई अश्वारे पाववीती जावजीवाए तस्यि  
तप्पतिंयं नो क्षण्य आयरियत्त वा जाव गमावस्थेऽयत्त वा उरिंसिन्द वा भारेत्तए  
वा ॥ १७ ॥ वहै गमावस्थेऽय बहुस्या वस्मायने बहुसो बहुजागाणादैभु  
चरणेभु माई मुखावाई अमूर्द पाववीती जावजीवाए तस्यि तप्पतिंयं नो क्षण्य  
आयरियत्त वा जाव गमावस्थेऽयत्त वा उरिंसिन्द वा भारेत्तए वा ॥ १८ ॥ वहै  
आयरियउक्तज्ञाया बहुस्या वस्मायने बहुसो बहुजागाणादैभु चरणेभु नो  
मुखावाई अश्वारे पाववीती जावजीवाए तेभि तप्पतिंयं नो क्षण्य अदीन वा  
जाव गमावस्थेऽयत्त वा उरिंसिन्द वा भारेत्तए वा ॥ १९ ॥ वहै भिक्षुण्य  
वहै गमावस्थेऽय वहै आयरियउक्तज्ञाया बहुस्या वस्मायने बहुभो शु  
आयाणाणादैभु चरणेभु माई मुखावाई अमूर्द पाववीती जावजीवाए तस्यि टौ  
हिय वा क्षण्य आयरियत्त वा जाव गमावस्थेऽयत्त वा उरिंसिन्द वा भारेत्तए  
वा ॥ २० ॥ ति-विमा ॥ यथाहारस्म तद्युमो उद्देस्ताओ समर्थो ॥ २१ ॥

### यवाहारस्म चउत्त्यो उद्देस्तओ

नो क्षण्य आयरियउक्तज्ञायस्म एमार्तियस्म हैमन्तियहातु चरी(न)॥ २२ ॥  
दाव आयरियउक्तज्ञायस्म अन्तियस्म हैमन्तियहातु चरी(पार)॥ २३ ॥  
वा क्षण्य गमावस्थेऽयस्म अन्तियस्म हैमन्तियहातु चरीए ॥ २४ ॥ एम  
गमावस्थेऽयस्म जावावस्थेऽयस्म हैमन्तियहातु चरीए ॥ २५ ॥ नो क्षण्य अ  
यियउक्तज्ञायस्म अन्तियस्म जावावस्थेऽय ॥ २६ ॥ क्षण्य अदीन  
जावस्म अन्तियस्म जावावस्थेऽय ॥ २७ ॥ नो क्षण्य अन्तियस्म

अप्पतइयस्स वासावास वत्थए ॥ १०७ ॥ कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स  
वासावास वत्थए ॥ १०८ ॥ से गामसि वा नगरंसि वा निगमसि वा रायहाणीए  
वा खेडसि वा कब्बडसि वा मडवसि वा पट्टणसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा  
सवाहसि वा सनिवेससि वा वहूण आयरियउवज्ज्ञायाण अप्पबिइयाण वहूण  
गणावच्छेइयाण अप्पतइयाण कप्पइ हैमतगिम्हासु चरिए अण्णमण्ण निस्साए  
॥ १०९ ॥ से गामसि वा नगरंसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडसि वा  
कब्बडसि वा मडवसि वा पट्टणसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा सवाहसि वा  
सणिवेससि वा वहूण आयरियउवज्ज्ञायाण अप्पतइयाण वहूण गणावच्छेइयाण  
अप्पचउत्थाण कप्पइ वासावास वत्थए अण्णमण्ण निस्साए ॥ ११० ॥ गामाणु-  
गाम ढूज्जमा(ण)ो भिक्खु य ज पुरओ कट्टु विह(रेजा, से य)रइ आहच्च  
वीसमेज्जा, अतिथ याइ थ अणो केइ उवसपज्जारिहे कप्पइ से(०) उवसपज्जि(ताण  
विहरित्तए)यव्वे, नत्थि याइ थ अणो केइ उवसपज्जारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए  
असमते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण दि(सि)स अणो साहम्मिया  
विहरति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए,  
कप्पइ से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तसि च ण कारणसि निष्ट्रियसि परो वएज्जा-  
वसाहि अज्जो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगरायां वा दुराय वा वत्थए,  
नो से कप्पइ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ पर एगरायाओ वा  
दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पज्जो-  
सवि(ए)ओ भिक्खु य ज पुरओ कट्टु विहरइ आहच्च वीसमेज्जा, अतिथ याइ थ  
अणो केइ उवसपज्जारिहे से उवसपज्जियव्वे, नत्थि याइ थ अणो केइ उवसपज्जाना-  
रिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण  
दिस अणो साहम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ  
विहारवत्तिय वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तसि च ण कारणसि निष्ट्रि-  
यसि परो वएज्जा-वसाहि अज्जो ! एगराय वा दुराय वा, एव से कप्पइ एगराय वा  
दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ परं  
एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२ ॥ आयरिय-  
उवज्ज्ञाए गिलायमाणे अण्णायर वएज्जा-अज्जो ! ममसि ण काल्मायसि समाणसि अय  
समुक्कसियव्वे, से य समुक्कसणारिहे समुक्कसियव्वे से य नो समुक्कसणारिहे नो  
समुक्कसियव्वे, अतिथ याइ थ अणो केइ समुक्कसणारिहे से समुक्कसियव्वे, नत्थि याइ  
य अणो केइ समुक्कसणारिहे से चेव समुक्कसियव्वे, तसि च ण समुक्किष्टसि परो

संवच्छरेहि वीर्षकतेहि चरुतपगमि संवच्छरेहि पठिविंसि ठिमस्त चक्षस्तस्त चार  
कस्त पठिविरमस्त एवं से क्ष्यह आयरित्त वा चाव गणाक्षेष्यत्त वा उद्दित्तिए  
वा भारेत्तए वा ॥ १३ ॥ मित्तव्य म वहुस्तुए वस्तमायमे वहुसो वहुभागावादेष्टु  
क्षरनेष्टु माई मुसावाई अष्टु वाक्षीवी वाक्षीवाए तस्त तप्पतिंसि नो क्ष्यह  
आयरित्त वा चाव गणाक्षेष्यत्त वा उद्दित्तिए वा भारेत्तए वा ॥ १४ ॥ गणाक्षेष्टु  
वस्तमायमे वहुसो वहुभागावादेष्टु क्षरनेष्टु माई मुसावाई अष्टु वाक्षीवी  
वाक्षीवाए तस्त तप्पतिंसि नो क्ष्यह आयरित्त वा चाव गणाक्षेष्टु वा  
उद्दित्तिए वा भारेत्तए वा ॥ १५ ॥ आयरित्तवज्ज्ञाए वहुस्तुए  
वस्तमायमे वहुसो वहुभागावादेष्टु क्षरनेष्टु माई मुसावाई अष्टु वाक्षीवी  
वाक्षीवाए तस्त तप्पतिंसि नो क्ष्यह आयरित्त वा चाव गणाक्षेष्टु वा  
उद्दित्तिए वा भारेत्तए वा ॥ १६ ॥ वह्ये मित्तव्यो वहुस्तुया वस्तमायमा वहुव्ये  
वहुभागावादेष्टु क्षरनेष्टु माई मुसावाई अष्टु वाक्षीवी वाक्षीवाए तप्पतिंसि नो क्ष्यह  
आयरित्त वा चाव गणाक्षेष्यत्त वा उद्दित्तिए वा भारेत्तए वा ॥ १७ ॥ वह्ये  
आयरित्तवज्ज्ञाए वहुस्तुया वस्तमायमा वहुसो वहुभागावादेष्टु क्षरनेष्टु माई  
मुसावाई अष्टु वाक्षीवी वाक्षीवाए तप्पतिंसि नो क्ष्यह आयरित्त वा  
चाव गणाक्षेष्यत्त वा उद्दित्तिए वा भारेत्तए वा ॥ १८ ॥ वह्ये मित्तव्ये  
वह्ये गणाक्षेष्याए वह्ये आयरित्तवज्ज्ञाए वहुस्तुया वस्तमायमा वहुसो एवं  
भागावादेष्टु क्षरनेष्टु माई मुसावाई अष्टु वाक्षीवी वाक्षीवाए तप्पतिंसि नो  
क्ष्यह आयरित्त वा चाव गणाक्षेष्यत्त वा उद्दित्तिए वा भारेत्तए  
वा ॥ १ ॥ ति-तेमि ॥ वयहारस्त तात्त्वो उद्देसओ समाचो ॥ ३ ॥

### वयहारस्त तात्त्वो उद्देसओ

नो क्ष्यह आयरित्तवज्ज्ञावस्त एमायिमस्त हेमंतगिम्हात्प चरि(त)ए ॥ १ ॥ १५  
क्ष्यह आयरित्तवज्ज्ञायस्त अपविश्वस्त हेमंतगिम्हात्प चरि(चार)ए ॥ १ ॥ १६  
नो क्ष्यह गणाक्षेष्यस्त अपविश्वस्त हेमंतगिम्हात्प चरिए ॥ १ ॥ १६ ॥ क्ष्यह  
गणाक्षेष्यस्त अपविश्वस्त हेमंतगिम्हात्प चरिए ॥ १ ॥ १७ ॥ नो क्ष्यह आय-  
रित्तवज्ज्ञायस्त अपविश्वस्त वासावाई चरिए ॥ १ ॥ १८ ॥ क्ष्यह आयरित्त-  
ज्ञायस्त अपविश्वस्त वासावाई चरिए ॥ १ ॥ १९ ॥ नो क्ष्यह गणाक्षेष्यस्त

अप्पत्तद्यस्स वासावास वत्थए ॥ १०७ ॥ कप्पइ गणावच्छेद्यस्स अप्पचउत्थस्स वासावास वत्थए ॥ १०८ ॥ से गरमंसि वा नगरंसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडसि वा कब्बडसि वा मडवंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा सवाहंसि वा सनिवेससि वा वहूण आयरियउवज्ज्ञायाणं अप्पविद्याण वहूण गणावच्छेद्याण अप्पत्तद्याण कप्पइ हेमतगिम्हासु चरिए अण्णमण्ण निस्साए ॥ १०९ ॥ से गमसि वा नगरसि वा निगमसि वा रायहाणीए वा खेडसि वा कब्बडसि वा मडवसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आसमसि वा सवाहंसि वा सणिवेससि वा वहूणं आयरियउवज्ज्ञायाण अप्पत्तद्याण वहूण गणावच्छेद्याण अप्पचउत्थाण कप्पइ वासावास वत्थए अण्णमण्ण निस्साए ॥ ११० ॥ गमाणु-गम दूझमा(ण)णो भिक्खु य ज पुरओ कटु विह(रेजा से य)रइ आहच्च वीसमेजा, अत्थ याइ थ अण्णो केइ उवसपञ्जणारिहे कप्पइ से(०) उवसपञ्जि(ताण विहरित्तए)यव्वे, नत्थ याइ थ अण्णो केइ उवसपञ्जणारिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण दि(सिं)स अण्णो साहम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तसि च ण कारणसि निष्ट्रियसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगराय वा दुराय वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १११ ॥ वासावास पजो-सवि(ए)ओ भिक्खु य ज पुरओ कटु विहरइ आहच्च वीसमेजा, अत्थ याइ थ अण्णो केइ उवसपञ्जणारिहे से उवसपञ्जियव्वे, नत्थ याइ थ अण्णो केइ उवसपञ्जणा-रिहे, तस्स अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्ण जण्ण दिस अण्णो साहम्मिया विहरति तण्ण तण्ण दिस उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तिय वत्थए, कप्पड से तत्थ कारणवत्तिय वत्थए, तसि च ण कारणसि निष्ट्रि-यसि परो वएजा-वसाहि अजो ! एगराय वा दुराय धा, एव से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, ज तत्थ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसइ, से सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ ११२ ॥ आयरिय-उवज्ज्ञाए गिलायमाणे अण्णयर वएजा-अजो ! ममसि ण कालग्रायसि समाणसि अय समुक्षसियव्वे, से य समुक्षसणारिहे समुक्षसियव्वे से य नो समुक्षसणारिहे नो समुक्षसियव्वे, अत्थ याइ थ अण्णो केइ समुक्षसणारिहे से समुक्षसियव्वे, नत्थ याइ थ अण्णो केइ समुक्षसणारिहे से चेव समुक्षसियव्वे, तसि च ण समुक्षिष्टसि परो

बएजा—तुस्समुकिन्हे रे भजो । निमित्तवाहि, तस्स वं निमित्तवमाणस्स नतिं देव  
देव वा परिहारे वा वे (ती) साहमिम्या अहाकप्पेण नो उद्ग्राए विहरू(बम्बुद्धे)-  
वि (विचि) सम्बोधि देसि तप्पतिं देव वा परिहारे वा ॥ ११३ ॥ आयरिन-  
उवज्ज्ञाए भोहावमाणे अप्पवर बएजा—भजो । मर्मसि वं ओहाविर्भवि उमार्भवि  
अप्पे समुद्दिवन्वे से व समुद्दिवन्वाहिने उमुद्दिवन्वे से य नो समुद्दिवन्वाहिने  
गो उमुद्दिवन्वे अरिय नाव व अल्ले देव समुद्दिवन्वे उमुद्दिवन्वे नरिं  
नाई व अल्ले देव समुद्दिवन्वाहिने से देव समुद्दिवन्वे तीवि व वं उमुद्दिवन्वे  
परो बएजा—तुस्समुकिन्हे रे भजो । निमित्तवाहि, तस्स वं निमित्तवमाणस्स नरिं  
देव देव वा परिहारे वा वे साहमिम्या अहाकप्पेण नो उद्ग्राए विहरैवि उमार्भवि  
देसि तप्पतिं देव वा परिहारे वा ॥ ११४ ॥ आयरिनउवज्ज्ञाए सरमाणे (पर)  
आद उदरावर्षवरायांवो कप्पाणे मित्तवं नो उक्कुवेष, कप्पाए अरिय याई व  
से देव माणकिंवे कप्पाए, नरिं से देव देव वा परिहारे वा नरिं याई व से  
देव माणकिंवे कप्पाए, से उक्कुवा देव वा परिहारे वा ॥ ११५ ॥ आयरिनउवज्ज्ञाए  
वसरमाणे पर उठ(पंच)रामाणे कप्पार्य मित्तवं नो उक्कुवेष, कप्पाए अरिय  
याई व से देव माणकिंवे कप्पाए, नरिं से देव देव वा परिहारे वा नरिं याई  
व से देव माणकिंवे कप्पाए, से उक्कुवा देव वा परिहारे वा ॥ ११६ ॥ आयरिन-  
उवज्ज्ञाए सरमाणे वा अधरमाणे वा पर इच्छावकप्पाणो कप्पाण मित्तवं नो  
उक्कुवेष, कप्पाए अरिय याई व से देव माणकिंवे कप्पाए, नरिं से देव देव वा  
परिहारे वा नरिं याई व से देव माणकिंवे कप्पाए, सैक्ष्यर उत्तर तप्पतिं नो  
कप्पह आयरितं (आव) उहिंशिताए ( ) ॥ ११७ ॥ मित्तवं व माणाओ अप्पम्भ कर्व  
गेल उवसपवित्तार्ण विहरेजा तं व देव साहमिम्यए पाहिता बएजा—ई भजो ।  
उवसपवित्तार्ण विहरियि । वे दत्त उम्भराइयिए तं बएजा राहयिए तं बएजा ।  
आह भते । कस्स कप्पाए ॥ जे दत्त उम्भराइयिए तं बएजा वं वा से भम्भ वनवर  
तस्स आकाउववायववभित्तेसे विहित्सामि ॥ ११८ ॥ जहावे साहमिम्या इक्केजा  
एप्पक्को अमित्तिचारिये चारए, कप्पह नो वह वेरे अनातुचित्ता एप्पक्को अमित्तिचा-  
रिये चारए, कप्पह वह वेरे अपुचित्ता एप्पक्को अमित्तिचारिये चारए, वेरा व से नो  
कियरेजा ए(व)वर्व कप्पह एप्पक्को अमित्तिचारिये चारए, वं उत्त वेरेह अमि-  
त्तिचारिये अमित्तिचारिये चारसि से उक्कुवा देव वा परिहारे वा ॥ ११९ ॥ चरिवापर्वेते

भिक्खू जाव चउरायपचरायाओ थेरे पासेजा, सच्चेव आलोयणा सच्चेव पडिकमणा  
सच्चेव ओगगहस्स पुब्बाणुण्णवणा चिढ्हूङ् अहालंदमवि ओगगहे ॥ १२० ॥ चरियापविहे  
भिक्खू पर चउरायपचरायाओ थेरे पासेजा, पुणो आलोएजा पुणो पडिकमेजा  
पुणो छेयपरिहारस्स उवढाएजा, भिक्खुभावस्स अट्टाए दोच्च पि ओगगहे अणुण्ण-  
वेयव्वे सिया, अणुजाणह भते । मिओगगह अहालंद धुव नि(च्छइ)तियं वेउट्रिय,  
तओ पच्छा कायसफास ॥ १२१ ॥ चरियानियेष्टे भिक्खू जाव चउरायपचरायाओ  
थेरे पासेजा, सच्चेव आलोयणा सच्चेव पडिकमणा सच्चेव ओगगहस्स पुब्बाणुण्णवणा  
चिढ्हूङ् अहालदमवि ओगगहे ॥ १२२ ॥ चरियानियेष्टे भिक्खू परं चउरायपचरायाओ  
थेरे पासेजा, पुणो आलोएजा, पुणो पडिकमेजा, पुणो छेयपरिहारस्स उवढाएजा,  
भिक्खुभावस्स अट्टाए दोच्च पि ओगगहे अणुण्णवेयव्वे सिया । अणुजाणह भते ।  
मिओगगह अहालद धुव नितियं वेउट्रिय, तओ पच्छा कायसफास ॥ १२३ ॥ दो  
साहम्मिया एगयओ विहरंति, तंजहा-सेहे य राइणिए य, तत्थ सेहतराए पलि-  
च्छणे, राइणिए अपलिच्छणे, सेहतराएन राइणिए उवसपजियव्वे, भिक्खोववायं  
च दलयइ कप्पाग ॥ १२४ ॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, तजहा-सेहे य  
राइणिए य, तत्थ राइणिए पलिच्छणे, सेहतराए अपलिच्छणे, इच्छा राइणिए  
सेहतराग उवसपजइ इच्छा नो उवसपजइ, इच्छा भिक्खोववाय दलयइ कप्पाग  
इच्छा नो दलयइ कप्पाग ॥ १२५ ॥ दो भिक्खुणो एगयओ विहरंति, नो एहं  
कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए, कप्पइ एह अहाराइणियाए अण्ण-  
मण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए ॥ १२६ ॥ दो गणावच्छेइया एगयओ विहरंति,  
नो एह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए, कप्पइ एह अहाराइणियाए  
अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए ॥ १२७ ॥ दो आयरियउवज्ञाया एगयओ  
विहरंति, नो एह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ एह अहाराइ-  
णियाए अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए ॥ १२८ ॥ वहवे भिक्खुणो एगयओ  
विहरंति, नो एह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए, कप्पइ एह अहाराइ-  
णियाए अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए ॥ १२९ ॥ वहवे गणावच्छेइया  
एगयओ विहरंति, नो एह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए, कप्पइ एह  
अहाराइणियाए अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए ॥ १३० ॥ वहवे आय-  
रियउवज्ञाया एगयओ विहरंति, नो एह कप्पइ अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरि-  
त्तए, कप्पइ एह अहाराइणियाए अण्णमण्ण उवसपजित्ताण विहरित्तए ॥ १३१ ॥  
वहवे भिक्खुणो वहवे गणावच्छेइया वहवे आयरियउवज्ञाया एगयओ विहरंति,

मो च एवं अन्यमन्ते उदसंपत्तितार्थं विहरिताए (वासावादं बत्यए कृप्य ए )  
कृप्य च अहाराद्यन्तियाए अन्यमन्ते उदसंपत्तितार्थं विहरिताए (हीमंठगिम्महात्)  
॥ १३२ ॥ तिन्मेमि ॥ यथहारस्स चउत्तर्यो उद्देसमो समचो ॥ ४ ॥

### यथहारस्स पंचमो उद्देसओ

मो कृप्य एवतितीए अप्यन्तियाए देमेतगिम्महात् चारए ॥ १३३ ॥ कृप्य  
पत्तितीए अप्यतह्याए देमेतगिम्महात् चारए ॥ १३४ ॥ मो कृप्य गणावद्येष्वीए अप्यवरत्याए  
देमेतगिम्महात् चारए ॥ १३५ ॥ कृप्य गणावद्येष्वीए अप्यवरत्याए  
देमेतगिम्महात् चारए ॥ १३६ ॥ मो कृप्य एवतितीए अप्यवरत्याए वासावादं  
बत्यए ॥ १३७ ॥ कृप्य एवतितीए अप्यवरत्याए वासावादं बत्यए ॥ १३८ ॥ मो  
कृप्य गणावद्येष्वीए अप्यवरत्याए वासावादं बत्यए ॥ १३९ ॥ कृप्य  
गणावद्येष्वीए अप्यवरत्याए वासावादं बत्यए ॥ १४० ॥ से गामति वा नगरेति  
वा निगमति वा रायहाविति वा वृत्तं पत्तितीर्थं अप्यतह्यान्ते बहुर्थं यथावद्येष्वी  
तीर्थं अप्यवरत्यान्ते कृप्य देमेतगिम्महात् चारए अन्यमन्ते भी(लिरु)साए ॥ १४१ ॥  
से गामति पा नगरेति वा निगमति वा रायहाविति वा वृत्तं पत्तितीर्थं अप्य-  
वरत्यान्ते बहुर्थं गणावद्येष्वीर्थं अप्यवरत्यान्ते कृप्य वासावादं बत्यए अप्यमन्ते  
भीशाए ॥ १४२ ॥ गामतुगमते शुद्धमात्री विमोदी य चं पुरुषो (इतु) कर्ते  
विहरित्या)रत वा आहय वीसेमेजा भवित्य याई य काइ अन्या उदसंपत्तिवापिता  
ता उदाहृतविदव्या नवित्य यद्वं य काइ अन्या उदसंपत्तिवापिता भीमे व अप्यन्ते  
वासाए भगवत्ते (एवं) कृप्य या अप्यवरत्याए पवित्राए वा  
ताइमितीभो विहरेति तत्त्वं । उदलिताए, नो ॥ ५  
वत्तिव वत्यए कृप्य या तत्य  
यो इएजा-क्षमादि अज्ञो । एवं । ५  
व वासाए नो ता कृप्य वर । ६

दुराय वा, एव सा कप्पद्द एगराय वा दुराय वा वत्थए, नो सा कप्पद्द पर एग-  
रायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, जं तत्थ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा वसह,  
सा सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १४४ ॥ पवत्तिणी य गिलायमाणी अण्यर  
वएज्ञा-मए ण अज्ञो ! कालगयाए समाणीए अर्यं समुक्सियव्वा, सा य समुक्ष-  
सणारिहा समुक्सियव्वा, सा य नो समुक्सणारिहा नो समुक्सियव्वा, अत्यि याइ  
थ अण्णा काइ समुक्सणारिहा सा समुक्सियव्वा, नत्थि याइ थ अण्णा काइ  
समुक्सणारिहा सा चेव समुक्सियव्वा, ताए व ण समुक्किट्ठाए परो वएज्ञा-दुस्स-  
मुक्किट्ठ ते अज्ञे । निक्खिवाहि ताए र्ण निक्खिवमाणाए नत्थि केइ छेए वा परिहारे  
वा, जाओ साहम्मणीओ अहाकप्प नो उट्टाए विहरति सब्बासिं तासिं तप्पत्तिय  
छेए वा परिहारे वा ॥ १४५ ॥ पवत्तिणी य ओहायमाणी अण्यर वएज्ञा-मए ण  
अज्ञो ! ओहावियाए समाणीए अर्यं समुक्सियव्वा, सा य समुक्सणारिहा समुक्ष-  
सियव्वा, सा य नो समुक्सणारिहा नो समुक्सियव्वा, अत्यि याइ थ अण्णा काइ  
समुक्सणारिहा सा समुक्सियव्वा, नत्थि याइ थ अण्णा काइ समुक्सणारिहा सा  
चेव समुक्सियव्वा, ताए व ण समुक्किट्ठाए परो वएज्ञा-दुस्समुक्किट्ठ ते अज्ञे ।  
निक्खिवाहि, ताए ण निक्खिवमाणाए नत्थि केइ छेए वा परिहारे वा, जाओ  
साहम्मणीओ अहाकप्प नो उट्टाए विहरति सब्बासिं तासिं तप्पत्तिय-छेए वा  
परिहारे वा ॥ १४६ ॥ निगरथस्स (ण) नवडहरतरुण(ग)स्स आयारपक्षे नाम  
अज्जयणे परिव्भट्टे सिया, से य पुच्छियव्वे, केण ते अज्ञो ! कारणेण आयार-  
पक्षे नाम अज्जयणे परिव्भट्टे, कि आवाहेण पमाएण ? से य वएज्ञा-नो आवा-  
हेण पमाएण, जावज्ञी(वाए)व तस्स तप्पत्तिय नो कप्पद्द आयरियत वा जाव  
गणावच्छेड्यत वा उद्दिसित्तएवा धारेत्तए वा, से य वएज्ञा-आवाहेण नो पमाएण,  
से य सठवेस्सामीति सठवेज्ञा, एव से कप्पड आयरियत वा जाव गणावच्छेड्यत  
वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, से य सठवेस्सामीति नो सठवेज्ञा, एव से नो कप्पड  
आयरियत वा जाव गणावच्छेड्यत वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १४७ ॥  
निगरधीए (ण) नवडहरतरुण(गिया)णाए आयारपक्षे नाम अज्जयणे परिव्भट्टे  
सिया, सा य पुच्छियव्वा, केण भे कारणेण (अज्ञा !) आयारपक्षे नाम अज्जयणे  
परिव्भट्टे, कि आवाहेण पमाएण ? सा य वएज्ञा-नो आवाहेण पमाएण, जावज्ञीव  
तीसे तप्पत्तिय नो कप्पड पत्तिपित वा गणावच्छेडपित वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए  
वा, सा य वएज्ञा-आवाहेण नो पमाएण, भा य सठवेस्सामीति सठवेज्ञा, एव से  
कप्पड पत्तिपित वा गणावच्छेडपित वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, भा य सठवेस्सा-

मीठि नो संठेजा एवं से भो कप्पद् फ़तिहिर्ति वा पणावर्द्देशिर्ति वा उद्दिलिए  
वा घारेताए वा ॥ १४८ ॥ येरार्व वेरमूमिपतात्त्र आमारपद्धये मार्म अज्ञनमे परिष्मद्दे  
सिया कप्पद् तेसि संठेतात्त्र वा असंठेतात्त्र वा आदरियर्ति वा आव गणमूल्यर्ति  
वा उद्दिलिए वा घारेताए वा ॥ १४९ ॥ येरार्व वेरमूमिपतात्त्र आमारपद्धये मार्म  
अज्ञनये परिष्मद्दे सिया कप्पद् तेसि संलिख्यात्त्र वा संतुयात्त्र वा उत्तात्त्रमात्त्र वा  
पाणिङ्गात्त्र वा आमारपद्धये मार्म अज्ञनवय दोर्वं पि तर्वं पि पडिपुच्छिलाए वा पडि  
घारेताए वा ॥ १५० ॥ त थे निर्मात्त्रा व निर्मात्त्रीओ व संमोहना सिया भोर्व कप्पद्  
अन्नमण्णसस अतिप आक्षेताए, अतिप यद्व (थ) वर्व केऽ बास्मेव्यार्ति, कप्पद् वर्व  
दस्स अतिप आक्षेताए, नरिप वार्व वर्व केऽ बास्मेव्यार्ति ॥ एव वर्व कप्पद् अन्न-  
मण्णसस अतिप आक्षेताए ॥ १५१ ॥ त ने निर्मात्त्रा व निर्मात्त्रीओ व संमोहना सिया  
नो वर्व कप्पद् अन्नमण्णसस अतिप) लोजे वेवाक्षं कारेताए, अतिप वद्व वर्व केऽ  
वेवाक्षकरे कप्पद् वर्व नियावर्व घरेताए, नरिप यद्व वर्व केऽ वेवाक्षकरे एव वर्व  
कप्पद् अन्नमण्णर्ति वेवाक्षर्व घरेताए ॥ १५२ ॥ निर्मात्त्र वर्व रामो वा निर्मात्त्रे वा  
रीहम्हु लक्षेजा इत्ती वा पुरिसस्त्र ओमाकेजा पुरिसो वा इत्तीए ओमाकेजा एवं  
से कप्पद्, एवं से निष्ठु, परिहार व एवं न(थो) पात्तमाई-एस कृ(पो)वे वेरमूलियार्ति  
एवं से नो कप्पद्, एवं से नो निष्ठु, परिहार व नो पात्तमाई-एस कृपे निष्ठुपि-  
यार्ति ॥ १५३ ॥ ति-बेमि ॥ ववहारसस पंखमो उद्देसभो समत्तो ॥ ५ ॥

### ववहारसस छट्ठो उद्देसओ

निकद् य इष्टेजा नामविह॑ एताए, नो(थे) कप्पद् वेरे ज्ञातुचित्ता वसविह॑  
एताए, कप्पद्(से) वेरे आपुचित्ता नामविह॑ एताए, वेरा व से निररेजा एवं से  
कप्पद् नामविह॑ एताए, वेरा व से नो निररेजा एवं से नो कप्पद् नामविह॑ एताए,  
वं (थे) तत्त्व येरेह॑ नविश्वने नामविह॑ एव, से उत्तरा छेत् वा परिहारे वा ॥ १५४ ॥  
नो से कप्पद् अप्सामसस अप्सायमसस एसायिक्सस नामविह॑ एताए ॥ १५५ ॥  
कप्पद् से वे तत्त्व वाकुस्त्वए वस्त्रागम तेव दर्दि नामविह॑ एताए ॥ १५६ ॥ तत्त्व  
से पुम्पाममनेन पुम्पात्तरे चास्तमेवने पम्पात्तरे निर्मात्त्रे कप्पद् हे चास्तमेवे  
परिम्याद(हि)हेताए, नो से कप्पद् निर्मात्त्रे परिमाहेताए ॥ १५७ ॥ तत्त्व हे पुम्पा-  
ममनेन पुम्पात्तरे निर्मात्त्रे पम्पात्तरे चास्तमेवने कप्पद् से निर्मात्त्रे परिम्या-  
हेताए नो से कप्पद् चास्तमेवने परिम्याहेताए ॥ १५८ ॥ तत्त्व हे पुम्पाममनेन  
दो वि पुम्पात्तरे कप्पद् से दो वि परिम्याहेताए ॥ १५९ ॥ तत्त्व से पुम्पाममनेन  
दो वि पम्पात्तरे नो से कप्पद् दो वि परिम्याहेताए ॥ १६० ॥ वे से तत्त्व पुम्पा-

गमणेणं पुव्वाउत्ते से कप्पड पडिग्गाहेत्तए ॥ १६१ ॥ जे से तथ्य पुव्वागमणेणं पच्छाउत्ते नो से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए ॥ १६२ ॥ आयरियउवज्ज्ञायस्स गणसि पंच अडसेसा पण्णता, तजहा-(१) आयरियउवज्ज्ञाए अतो उवस्सयस्स पाए निगिज्ज्य २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा नो अ(णा)इक्कमइ ॥ १६३ ॥ (२) आयरियउवज्ज्ञाए अतो उवस्सयस्स उच्चारपासवणं विर्गिचमाणे वा विसोहेमाणे वा नो अइक्कमइ ॥ १६४ ॥ (३) आयरियउवज्ज्ञाए पभू वेयावडिय इच्छा करेजा इच्छा नो करेजा ॥ १६५ ॥ (४) आयरियउवज्ज्ञाए अतो उवस्सयस्स एगरायं वा दुराय वा वसमाणे नो अइक्कमइ ॥ १६६ ॥ (५) आयरियउवज्ज्ञाए वाहिं उवस्सयस्स एगराय वा दुराय वा वसमाणे नो अइक्कमइ ॥ १६७ ॥ गणावच्छेइयस्स ण गणसि दो अडसेसा प०, त०-(१) गणावच्छेइए अतो उवस्सयस्स एगराय वा दुराय वा वसमाणे नो अइक्कमइ ॥ १६८ ॥ (२) गणावच्छेइए वाहिं उवस्सयस्स एगराय वा दुराय वा वसमाणे नो अइक्कमइ ॥ १६९ ॥ से गामसि वा जाव रायहार्णि- (सण्णिवेस)सि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगाणिक्खमणपवेसाए णो कप्पइ बहूण अगडसुयाण एगयओ वत्थए, अतिथ याइ प्ह केइ आयारपक्पधरे णत्थ याइ प्ह केइ छेए वा परिहारे वा, णत्थ याइ प्ह केइ आयारपक्पधरे से (सब्बेसिं तेसि) सतरा छेए वा परिहारे वा ॥ १७० ॥ से गामसि वा जाव रायहार्णिसि वा अभिणिवगडाए अभिणिदुवाराए अभिणिक्खमणपवेसणाए णो कप्पइ बहूण वि अगड- सुयाण एगयओ वत्थए, अतिथ याइ प्ह केइ आयारपक्पधरे जे तत्त्व रथर्णि सबसइ णत्थ याइ प्ह केइ छेए वा परिहारे वा, णत्थ याइ प्ह केइ आयारपक्पधरे जे तत्त्व रथर्णि सबसइ णत्थ याइ प्ह केइ छेए वा परिहारे वा ॥ १७१ ॥ से गामसि वा जाव रायहार्णिसि वा अभिणिवगडाए अभिणिदुवाराए अभिणिक्ख- मणपवेसणाए णो कप्पइ बहुसुयस्स बब्भागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए, किमग-पुण अप्पागमस्स अप्पस्सुयस्स २ ॥ १७२ ॥ से गामसि वा जाव रायहार्णिसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगाणिक्खमणपवेसाए कप्पइ बहुसुयस्स बब्भागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए दुह(उभ)ओ काल भिक्खुभाव पडिजागरमाणस्स ॥ १७३ ॥ ज(जे त)त्थ एए वहवे इत्थीओ य पुरिसा य पण्हावेंति तथ्य से समणे णिमगथे अण्णयरसि अचित्तसि सोयसि सुक्षपोगले णिरधाएमाणे हत्थकम्पडि- सेवणपत्ते आवज्जइ मासिय परिहारद्वाण अणुघाइय ॥ १७४ ॥ जत्थ एए वहवे इत्थीओ य पुरिसा य पण्हावेंति तथ्य से समणे णिमगथे अण्णयरसि अचित्तसि सोयसि सुक्षपोगले णिरधाएमाणे मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परि-

हादुर्वार्थ अनुरपाद्वन् ॥ १७५ ॥ जो कल्पद्र लिम्नीषाम वा लिम्नीबीज वा लिम्नीयि  
 (अन्नपत्राओं आगम्य) दुमावारं सबलावारं मिळावारं संक्षिद्धिश्चावारनित तस्य व्यक्तस्य  
 अणम्बेवावेता अपदिक्षावेता अनिद्वावेता अग्रावेता अनिरुद्धावेता अनि-  
 द्वेषावेता अवरणाए अनम्बुद्धावेता भावरिद्व पावचित्त अपदिक्षावेता (पुष्टिष्ठए  
 वा वाहतए वा) उद्गुप्तिताए वा संमुचित्तए वा संवित्तए वा तेसि (दीर्घे)  
 इतरिव दित्त वा अनुदित्त वा उद्दित्तित्त वा वारेत्तए वा ॥ १७६ ॥ कल्पद्र  
 लिम्नीषाम वा लिम्नीबीज वा लिम्नीयि अन्नगताओं आगम्य दुमावारं सबलावारं  
 मिळावारं संक्षिद्धिश्चावारनित तस्य व्यक्तस्य अणम्बेवावेता पदिक्षावेता निदावेता  
 गरहावेता लित्तुद्धावेता अवरणाए अनम्बुद्धावेता भावरिद्व पावचित्त पदिक्षावेता  
 उद्गुप्तित्त वा संमुचित्तए वा संवित्तए वा तेसि इतरिव दित्त वा अनुदित्त वा  
 उद्दित्तित्त वा वारेत्तए वा ॥ १७७ ॥ ति-त्रैमि ॥ वयहारस्स छहो उद्देसमो  
 समत्तो ॥ ६ ॥

### वयहारस्स सत्तमो उद्देसओ

जे लिम्नीषा व लिम्नीबीजो म संमोहवा लिवा जो कल्पद्र लिम्नीबीजे लिम्नीयि  
 अनम्बुद्धिता लिम्नीयि अन्नगताओं आगम्य दुमावारं सबलावारं मिळावारं  
 संक्षिद्धिश्चावारनित तस्य ठाक्कस्य अणम्बेवावेता जाव पावचित्त अपदिक्षावेता  
 पुष्टिष्ठए वा वाएत्तए वा उद्गुप्तित्त वा संमुचित्तए वा संवित्तए वा तीर्थे इतरिवे  
 दित्त वा अनुदित्त वा उद्दित्तित्त वा वारेत्तए वा ॥ १८ ॥ जे लिम्नीषा व  
 लिम्नीबीजो व सभोहया लिवा कल्पद्र लिम्नीबीज लिम्नीये अनम्बुद्धिता लिम्नीयि  
 अन्नगताओं आगम्य दुमावारं सबलावारं मिळावारं संक्षिद्धिश्चावारनिते तस्य  
 व्यक्तस्य अणम्बेवावेता जाव पावचित्त पदिक्षावेता पुष्टिष्ठए वा वाएत्तए वा  
 उद्गुप्तित्त वा संमुचित्तए वा संवित्तए वा तीर्थे इतरिव दित्त वा अनुदित्त वा  
 उद्दित्तित्त वा वारेत्तए वा ॥ १८१ ॥ जे लिम्नीषा व लिम्नीबीजो व समेवया  
 लिया कल्पद्र लिम्नीबीजो आनुदित्त वा अनम्बुद्धिता वा लिम्नीयि  
 अन्नगताओं आगम्य दुमावारं सबलावारं मिळावारं संक्षिद्धिश्चावारनिते तस्य  
 व्यक्तस्य अणम्बेवावेता जाव पावचित्त पदिक्षावेता पुष्टिष्ठार वा वाएत्तए वा  
 उद्गुप्तित्त वा संमुचित्तए वा संवित्तए वा तीर्थे इतरिव दित्त वा अनुदित्त वा  
 उद्दित्तित्त वा वारेत्तए वा ते व लिम्नीबीजो नो इन्द्रेजा उम(सम)भैर निर्य अर्थ

<sup>1</sup> अप्ये जावरिदे द्वारुगमहिंगमुक्तमद् १७६-१७७ उरिस वदर “लिम्नीयि”  
 ठारे “लिम्नीबीज” ति ।

॥ १८० ॥ जे णिगगथीओ य सभोडया सिया, नो एह कप्पइ (णिगगथे) पारोक्ख पाडिएकं सभोइय विसभोग करेत्तए, कप्पइ एह पच्चक्ख पाडिएकं सभोइयं विसभोग करेत्तए, जत्थेव अण्णमण्णं पासेज्जा तथेव एव वएज्जा—अह ण अज्जो ! तु(म)माए सद्दि इमम्मि कारणम्मि पच्चक्ख सभोग विसभोग करेमि, से य पडितप्पेज्जा एव से नो कप्पइ पच्चक्खं पाडिएकं सभोइय विसभोग करेत्तए, से य नो पडितप्पेज्जा एव से कप्पइ पच्चक्ख पाडिएकं सभोइय विसभोगं करेत्तए ॥ १८१ ॥ जाओ णिगगथीओ वा णिगगथा वा सभोइया सिया, नो एह कप्पइ (णिगगथीओ) पच्चक्ख याडिएकं सभोइय विसभोग करेत्तए, कप्पइ एह पारोक्ख पाडिएकं सभोइय विसभोग करेत्तए, जत्थेव ताओ अप्पणो आयरियउवज्ज्ञाए पासेज्जा, तथेव एव वएज्जा—अह ण भर्ते ! अमुगीए अज्जाए सद्दि इमम्मि कारणम्मि पारोक्ख पाडिएकं सभोग विसभोग करेमि, सा य से पडितप्पेज्जा एव से नो कप्पइ पारोक्ख पाडिएकं सभोइयं विसभोग करेत्तए, सा य से नो पडितप्पेज्जा एवं से कप्पइ पारोक्ख पाडिएकं सभोइय विसभोग करेत्तए ॥ १८२ ॥ नो कप्पइ णिगगथाण णिगगथिं अप्पणो अट्टाए पव्वावेत्तए वा मुडावेत्तए वा (सिक्खावेत्तए वा) सेहावेत्तए वा उच्छ्वावेत्तए वा स्वसित्तए वा समुजित्तए वा तीसे इत्तरिय दिस वा अणुदिस वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८३ ॥ कप्पइ णिगगथाण णिगगथिं अणेसिं अट्टाए पव्वावेत्तए वा जाव समुजित्तए वा तीसे इत्तरिय दिस वा अणुदिस वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८४ ॥ नो कप्पइ णिगगथीण णिगगथ अप्पणो अट्टाए पव्वावेत्तए वा मुँडावेत्तए वा जाव उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८५ ॥ कप्पइ णिगगथीण णिगगथ णिगगथाण अट्टाए पव्वावेत्तए वा मुडावेत्तए वा जाव उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८६ ॥ नो कप्पइ णिगगथीण विइकिट्टिय दिस वा अणुदिस वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८७ ॥ कप्पइ णिगगथाण विइकिट्टिय दिस वा अणुदिस वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ॥ १८८ ॥ नो कप्पइ णिगगथाण विइकिट्टाइ पाहुडाइ विलोसवेत्तए ॥ १८९ ॥ कप्पइ णिगगथीण विइकिट्टाइ पाहुडाइ विलोसवेत्तए ॥ १९० ॥ नो कप्पइ णिगगथाण (वा णिगगथीण वा) विइकिट्टए काले सज्जाय (उद्दिसित्तए वा) करेत्तए (वा) ॥ १९१ ॥ कप्पइ णिगगथीण विइकिट्टए काले सज्जाय करेत्तए णिगगथणिस्साए ॥ १९२ ॥ नो कप्पइ णिगगथाण वा णिगगथीण वा असज्जाइए सज्जाय करेत्तए ॥ १९३ ॥ कप्पइ णिगगथाण वा णिगगथीण वा सज्जाइए सज्जाय करेत्तए ॥ १९४ ॥ नो कप्पइ णिगगथाण वा णिगगथीण वा अप्पणो असज्जाइए सज्जाय करेत्तए, कप्पइ एह अण्णमण्णस्स वायण दलइत्तए ॥ १९५ ॥ तिवासपरियाए समणे णिगगथे

हीरे चासपरियाए समर्थीए कल्पद्रुतकम्भामत्ताए उरितित्तए ॥ १९६ ॥  
 पंचवासपरियाए समजे चिन्नामे सुद्धिकासपरियाए समर्थीए कल्पद्रुतकम्भ-  
 मिम(ताए)उक्तकम्भामत्ताए उरितित्तए ॥ १९७ ॥ गम्भाकुण्डामे शुभजम्भामे चिन्नाम-  
 य अद्वय वीर्यमेजा तं च सरीरण लेद्रुत साहमिमए पसेजा कल्पद्रुते हे तं सरीरय  
 हे म (मा) चागारियमिति क्ष ( पर्यामे अनिति ) वंडिते बहुध्यत्तुरु परित्तेत्तित्ता  
 फलमित्ता परिदुत्तेत्तए, अरिय मार्ह च लेद्रुत साहमिमवर्धत्तित्तित्त उक्तारफलाए पर्य-  
 द्वरणारित्ते, कल्पद्रुते हे सागारकल्प गहाय योग्ये पि ओमाई अलुक्तवेत्ता परिहारे परि-  
 हारेत्तए ॥ १९८ ॥ सागारिए उक्तस्त्वमे बहुर्य फलमेजा हे म बहुर्य बहुमा-  
 इम(मिं)मि य इममि य जोकासे समना चिन्नामा परिवर्तत्तित्ते हे सागारिए पारिया-  
 रिए, हे य जो (एवं) बहुजा बहुर्य बहुजा( ) हे सागारिए पारियारिए, दो यि  
 हे (एवं) बहुजा (बाह) दो यि सागारिया पारियारिया ॥ १९ ॥ सागारिए उक्त-  
 स्त्वमे चिन्नामा हे य बहुर्य बहुजा-इममि य इममि य जोकासे समना चिन्नामा  
 परिवर्तत्तित्ते हे सागारिए पारियारिए, हे य जो बहुजा बहुर्य बहुजा हे सागारिए  
 पारियारिए, दो यि हे बहुजा यो यि सागारिया पारियारिया ॥ १ ॥ चिन्नामा  
 ना(नि)अलुक्तवेत्तित्ती चा यि यावि ओमाई अलुक्तवेत्तामा चिन्नाम-पुण फिवा वा  
 माया वा पुत्रे वा हे (व) यि या(वो)यि जो(व)मा(ह)ये ओगेप्रिय(वा)ये  
 ॥ २ १ ॥ पर्यिए यि जोमाई अलुक्तवेत्तमे ॥ २ २ ॥ से रज(रम)परिवेद्य  
 संबहुमु अब्दोपदेत्तु अब्दोपित्तित्तोत्तु असरपरिम्यत्तित्तेत्तु संबेद ओगाहस्यु पुम्लुक्त  
 वजा चिद्धु भवार्म्भमवि ओमाई ॥ २ ३ ॥ से रजपरियेत्तु असंबहुमु रेत्तेत्तु  
 योपित्तित्तेत्तु परपरिम्यत्तित्तेत्तु चिन्नामुमस्यु अद्वाए दोर्ये पि ओगाई अलुक्तवेत्तमे  
 फिवा ॥ २ ४ ॥ यि-जेमि ॥ घवहारस्स सत्तमो उद्देसभो समर्थो ॥ ४ ॥

### घवहारस्स अद्वमो उद्देसभो

भावा(गिह)उ(ह)अलुक्तोसविए, ताए पावाए ताए परसाए ताए उक्तार्क्तरार-  
 वमित्ती २ सेजासुपारां भमेजा तमित्ती तमित्ती ममेव तिवा देरा य से अलुक्तमेजा  
 तस्त्वेत्त तिया देरा य से जो अलुक्तमेजा (जो तस्त्वेत्त तिया) पर्य हे कल्प-  
 बाहारकल्पिकार सेजासुपारपे चिन्नामोत्ताए ॥ २ ५ ॥ से अलुक्तमुल्य देजा-  
 सभारणे गवेत्तेजा च चिन्ना एगेव इत्येव ओमित्त(जित्त १)ज्ञ जाव एमाई वा  
 दुवाई वा तिवाई वा (चद्यन) परिवित्तार, एव म हेमंतमिहात्त भवित्तयह  
 ॥ २ ६ ॥ से य अलुक्तमुसर्ण सेजासुपारपे गवेत्तेजा च चिन्ना पर्य इत्येव  
 ओमित्त जाव एगाई ( ) अद्वार्च परिवित्तार, एव म वामासात्त भवित्तद

॥ २०७ ॥ से अहालहुसग सेजासथारगं जाए(गवेसे)जा ज चक्रिया एगेण हृत्येण ओगिज्ञा जाव एगाह वा दुयाह वा तियाहं वा चउयाह वा पं(चाह वा दूरमवि)चगाह वा अद्वाण परिवहित्तए, एस मे वुह्वावासासु भविस्सइ ॥ २०८ ॥ येराण थेरभूमिपत्ताण कप्पइ दडए वा भडए वा मत्तए वा चेले वा चेलचिलमिली वा अविरहिए ओवासे ठवेत्ता गाहावइकुल पिंडवायपडिया(भत्ताए वा पाणा)ए (वा) पविसित्तए वा णिक्खमित्तए वा, कप्पड प्हं सणियद्वचारीण दोच्चं पि ओगगह अणुण्णवेत्ता (परिहार) परिहरित्तए ॥ २०९ ॥ नो कप्पइ णिगरंथाण वा णिगरथीण वा पाडिहारिय वा सागारियसतिय वा सेजासथारग दोच्चं पि ओगगह अणुण्ण-वेत्ता वहिया नीहरित्तए ॥ २१० ॥ कप्पइ णिगरथाण वा णिगरथीण वा पाडिहारियं वा सागारियसतिय वा सेजासथारग दोच्चं पि ओगगह अणुण्णवेत्ता वहिया नीहरित्तए ॥ २११ ॥ नो कप्पइ णिगरथाण वा णिगरथीण वा पाडिहारिय वा सागारियसतिय वा सेजासथारग सञ्चापणा अ(पच्च)पिणित्ता दोच्चं पि (तमेव) ओगगह अणुण्णवेत्ता अहिट्ठित्तए, कप्पइ (०) अणुण्णवेत्ता (०) ॥ २१२ ॥ नो कप्पइ णिगरथाण वा णिगरथीण वा पुव्वामेव ओगगह ओगिष्ठित्ता तओ पच्छा अणुण्णवेत्तए ॥ २१३ ॥ कप्पइ णिगरथाण वा णिगरथीण वा पुव्वामेव ओगगह अणुण्णवेत्ता तओ पच्छा ओगिष्ठित्तए ॥ २१४ ॥ अह पुण एव जाणेजा, इह खलु णिगरथाण वा णिगरथीण वा नो सुलमे पाडिहारिए सेजासथारए ति कहु एव प्हं कप्पइ पुव्वामेव ओगगह ओगिष्ठित्ता तओ पच्छा अणुण्णवेत्तए, मा व(दु)ह(ओ)उ अजो० व(त्तिय)इ अणुलोमेण अणुलोमेयब्बे सिया ॥ २१५ ॥ णिगरथस्स पं गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुपविद्वस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिभ्रह्मद्वे सिया, त च केह साहमिए पासेजा, कप्पइ से सागारकड़ गहाय जत्येव (ते) अणमण पासेजा तत्येव एव वएज्जा-इ(मं ते)मे मे अजो ! किं परिण्णाए २ से य वएज्जा-परिण्णाए, तस्सेव पडिणिज्ञाएयब्बे सिया, से य वएज्जा-नो परिण्णाए, तं नो अप्णण परिझु(जए)जेज्जा नो अ(णोसिं)णमणस्स दावए, एगते वहुफास्तुए (पएसे पडिलेहित्ता) थंडिले परिद्वेयब्बे सिया ॥ २१६ ॥ णिगरथस्स पं वहिया वियारभूमि वा विहारभूमि वा णिक्खतस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिभ्रह्मद्वे सिया, त च केह साहमिए पासेजा, कप्पइ से सागारकड़ गहाय जत्येव अणमणं पासेजा तत्येव एव वएज्जा-इसे (ते) मे अजो ! किं परिण्णाए २ से य वएज्जा-परिण्णाए, तस्सेव पडिणिज्ञाएयब्बे सिया, से य वएज्जा-नो परिण्णाए, त नो अप्णण परिझुजेज्जा नो अण्णमणस्स दावए, एगते वहुफास्तुए थंडिले परिद्वेयब्बे सिया ॥ २१७ ॥

मिमीक्षसु र्थं यामाणुगाम शून्यमानसु अप्यदरे उवगत्याए परिष्क्रेणे दिया तं  
व तेऽपाहम्भिए पासेजा कप्पद से सामारक्षं गहय इउ(भिन्न)मेक्षमार्थं परि  
ष्क्रिताए, बत्तेव अन्यमार्थं पासेजा तस्येव एवं वाप्त्याद्देष्मे भव्ये । कि परि  
ष्याए ? से य वाप्त्याद्देष्मे तं भो अप्यथा परिष्क्रेज्ञा तो अप्यमानसु दावाए, एवंते वहुपाद्युप  
महिते परिष्क्रेम्ये दिया ॥ २१८ ॥ कप्पद मिमीक्षाल वा मिमीक्षीष वा अर्दैय-  
परिमाह अप्यमानसु व्याए (इमविभद्याव वरिष्क्रिताए) वारेत्तप वा परिमाहितप  
वा सो वा र्थं वारेत्तप अहं वा र्थं वारेत्तपामि अन्यो वा एवं वारेत्तपु, तो से  
कप्पद से अमायुक्तिय अजामविय अन्यमान्येति वार्त वा अनुप्यवार्त वा कप्पद  
से हे अमायुक्तिय आर्मसिन अन्यमान्येति वार्त वा अनुप्यवार्त वा ॥ २१९ ॥ एवं  
अन्यमान्यमान्यमेते आहार आहारेमाये (समये) मिमाये अप्याहारे वार्तुपाये वा  
अन्यमान्यमान्यमेते आहार आहारेमाये मिमाये अन्याहारेमाये दोत्त्वं अन्यमान्य-  
मेते आहार आहारेमाये मिमाये दुमागाप्ते चठधीसं अन्यमान्यमान्यमेते आहारे  
आहारेमाये मिमाये ओ(फो)मोयरिवा एगतीसं अन्यमान्यमेते आहार आहारे  
माणे मिमाये किंचूलोमोयरिवा वारीसं अन्यमान्यमेते आहार आहारेमाये मिमाये  
क्षमायप्ते एत्ये प्रयोग वि छउबे(पासे)र्थं वार्तां आहार आहारेमाये दम्ये मिमाये  
तो वक्त्वमरसम्येऽ-ति वक्त्वम्य दिया ॥ २२ ॥ ति-त्वमि ता ववहारस्तु  
अद्यमो उद्देसन्नो समस्तो ॥ ८ ॥

### ववहारस्तु यवमो उद्देसन्नो

यागारिवस्तु आएते अंतो वगाहाए भुज्य निष्ठिप निःसि निष्ठे वाग्धिहारिष, तम्हा  
दावाए, तो से कप्पद पदिगाहेत्ताए ॥ २२१ ॥ यागारिवस्तु आएते अंतो वगाहाए  
भुज्य मिष्टिए निष्ठे वाग्धिहारिष, तम्हा दावाए, एवं से कप्पद पदिगाहेत्ताए  
॥ २२२ ॥ यागारिवस्तु आएते वाहि वगाहाए भुज्य निष्ठिए निष्ठे वाग्धिहारिष,  
तम्हा दावाए, तो से कप्पद पदिगाहेत्ताए ॥ २२३ ॥ यागारिवस्तु आएते वाहि  
वगाहाए भुज्य निष्ठिए निष्ठे वाग्धिहारिष, तम्हा दावाए, एवं से कप्पद वाग्धिहारिष  
दावाए ॥ २२४ ॥ यागारिवस्तु दावाए वा वेत्तु वा भवाए वा भद्राए वा अंतो वग-  
ाहाए भुज्य निष्ठिए निष्ठे वाग्धिहारिष, तम्हा दावाए, तो से वगाह वाग्धिहारिष  
॥ २२५ ॥ यागारिवस्तु दावाए (इ) वा वेत्तु वा भवाए वा भद्राए (वित्त) वा अंतो  
वगाहाए भुज्य निष्ठिए निष्ठे वाग्धिहारिष, तम्हा दावाए, एवं से वग्य वाग्धिहारिष  
दावाए ॥ २२६ ॥ यागारिवस्तु दावाए वा वेत्तु वा भवाए वा भद्राए वा वाहि वगाहाए

भुजड निट्ठिए निसट्टे पाडिहारिए, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २२७ ॥  
 सागारियस्स दासे वा वेसे वा भयए वा भइण्णए वा वाहिं वगडाए भुजड निट्ठिए  
 निसट्टे अपाडिहारिए, तम्हा दावए, एव से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २२८ ॥  
 सागारिय(स्स)णायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अतो (सागारियस्स) एगपयाए  
 सागारिय चो(च उ)वजीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २२९ ॥  
 सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए अतो अभिणिपयाए सागारिय चोव-  
 जीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३० ॥ सागारियणायए सिया  
 सागारियस्स एगवगडाए वाहिं एगपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, जो से  
 कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३१ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स एगवगडाए  
 वाहिं अभिणिपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए  
 ॥ २३२ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिवगडाए एगदुवाराए एग-  
 णिक्षमणपवेसाए अतो एगपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पइ  
 पडिगाहेत्तए ॥ २३३ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स अभिणिवगडाए एग-  
 दुवाराए एगणिक्षमणपवेसाए अतो अभिणिपयाए सागारिय चोवजीवइ, तम्हा  
 दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३४ ॥ सागारियणायए सिया सागारियस्स  
 अभिणिवगडाए एगदुवाराए एगणिक्षमणपवेसाए वाहिं एगपयाए सागारिय चोव-  
 जीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३५ ॥ सागारियणायए सिया  
 सागारियस्स अभिणिवगडाए एगदुवाराए एगणिक्षमणपवेसाए वाहिं अभिणिपयाए  
 सागारिय चोवजीवइ, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३६ ॥ सागा-  
 रियस्स चक्रियासाला साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए  
 ॥ २३७ ॥ सागारियस्स चक्रियासाला णिस्साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं  
 से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३८ ॥ सागारियस्स गोलियसाला साहारणवक्षयपउत्ता,  
 तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २३९ ॥ सागारियस्स गोलियसाला  
 णिस्साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २४० ॥  
 सागारियस्स चो(चो)धियसाला साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, जो से कप्पइ  
 पडिगाहेत्तए ॥ २४१ ॥ सागारियस्स चोधियसाला णिस्साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा  
 दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २४२ ॥ सागारियस्स दोसियसाला साहारण-  
 वक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, जो से कप्पइ पडिगाहेत्तए ॥ २४३ ॥ सागारियस्स  
 दोसियसाला णिस्साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए  
 ॥ २४४ ॥ सागारियस्स सोत्तियसाला साहारणवक्षयपउत्ता, तम्हा दावए, जो से

कप्पद पठिगाहेतए ॥ २४५ ॥ सागारियस्तु शोकिसाक्ष विस्तारारपक्षवदया  
तम्हा दावए, एवं से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २४६ ॥ सामारियस्तु बोक्तिवक्तव्यम्  
साहारपक्षवदयपउत्ता तम्हा दावए, जो से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २४७ ॥ सापा-  
रियस्तु बोक्तिवक्तव्यम् विस्तारारपक्षवदयपउत्ता तम्हा दावए, एवं से कप्पद पडि  
गाहेतए ॥ २४८ ॥ सामारियस्तु वंशिवक्तव्यम् साहारपक्षवदयपउत्ता तम्हा दावए,  
जो से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २४९ ॥ सामारियस्तु वंशिवक्तव्यम् विस्तारारपक्षवद  
पउत्ता तम्हा दावए, एवं से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५ ॥ सामारियस्तु लोकिस-  
क्तव्यम् साहारपक्षवदयपउत्ता तम्हा दावए, जो से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५१ ॥  
सागारियस्तु लोकिसाक्ष विस्तारारपक्षवदयपउत्ता तम्हा दावए, एवं से कप्पद  
पठिगाहेतए ॥ २५२ ॥ सामारियस्तु बोक्तिसीमो संवक्तव्यम् तम्हा दावए, जो से  
कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५३ ॥ सामारियस्तु बोक्तिसीमो असंवक्तव्यम् तम्हा दावए  
एवं से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५४ ॥ सामारियस्तु अभिक्षमा संवक्तव्यम् तम्हा दावए,  
जो से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५५ ॥ सामारियस्तु अपद्यक्षा असंवक्तव्यम् तम्हा दावए  
एवं से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५६ ॥ सामारियस्तु लिया लापारियस्तु  
एगवगाहाए एगुचाराए एगविक्षुमनपवेगाए सागारियस्तु एगवू सामारियं च  
उद्वीक्ष, तम्हा दावए, जो से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५७ ॥ सामारियस्तु लिया  
सामारियस्तु एगक्षगाहाए एगुचाराए एगविक्षुमनपवेगाए सागारियस्तु अभिविक्षू  
सामारियं च उद्वीक्ष तम्हा दावए, जो से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५८ ॥  
सामारियस्तु लिया सामारियस्तु अभिविक्षगाहाए अभिविक्षुचाहाए अभिविक्ष-  
मनपवेगाए सामारियस्तु एगवू सामारियं च उद्वीक्ष, तम्हा दावए, जो से  
कप्पद पठिगाहेतए ॥ २५९ ॥ सामारियस्तु लिया सामारियस्तु अभिविक्षगाहाए  
अभिविक्षुचाहाए अभिविक्षमनपवेगाए गागारियस्तु अभिविक्षू लापारियं च  
उद्वीक्ष तम्हा दावए, जो से कप्पद पठिगाहेतए ॥ २६ ॥ लियालिया च  
मिस्तुरादिमा (वं) एक्षमान्त्याए रव्वरिएऽ॒ लोक उल्लुत्तर्व भिस्ताकार्ये अहार्व  
अहाराय अहामगर्ये अहामर्व अहामम(माएर्व)ं पार्वि(ता)का पार्विया (पर्वी)  
रीरिया छिरिया (आणार) अतुरानिया भवद त ११ ॥ अभार्वदिता च निरु  
षदिमा अहामद्वैर रव्वरिएऽ॒ लोक व अहातील्लै भिस्तागार्द॑ अहामर्व भाव्य  
अहामर्व अहामर्व अहामम्म चार्विया पार्विया लीरिया छिरिया अभार्विया भवा  
त २६ ॥ लियालिया च भिस्तुरादिमा एगवूर्वी राम्भूर्वी पर्व व पंतुर्वी  
भिस्तागार्द॑ अहामुर्व अहामले अहामर्व अहामम्म चार्विया अभार्विया भवा

तीरिया किण्डिया अणुपालिया भवइ ॥ २६३ ॥ दसदसमिया ण भिक्खुपडिमा एगेण  
राहदियसएण अद्वच्छट्टेहि य भिक्खासएहिं अहासुत्त अहाकपं अहामग्ग अहातच्च अहा-  
सम्म फासिया पालिया तीरिया किण्डिया अणुपालिया भवइ ॥ २६४ ॥ दो पडिमाओ  
पण्ताओ, तजहा-खुङ्गिया वा (चेव) मोयपडिमा महलिया वा मोयपडिमा, खुङ्गियण्ण  
मोयपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पड पढ(मेसरद)मणिदाहकालसमयसि वा  
चरिमणिदाहकालसमयसि वा वहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए (सणिवेससि) वा  
वणसि वा वणदुग्गसि वा पञ्चयसि वा पञ्चयदुग्गसि वा, भोच्चा आरुभइ चोदसमेण  
पारेइ, अभोच्चा आरुभइ सोलसमेण पारेइ, एवं खलु एसा खुङ्गिया मोयपडिमा अहा-  
सुत्त जाव अणुपालित्ता भवइ ॥ २६५ ॥ महलियण्ण मोयपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स  
कप्पइ से पढमणिदाहकालसमयसि वा चरिमणिदाहकालसमयसि वा वहिया गामस्स  
वा जाव रायहाणीए वा वणसि वा वणदुग्गसि वा पञ्चयसि वा पञ्चयदुग्गसि वा, भोच्चा  
आरुभइ, सोलसमेण पारेइ, अभोच्चा आरुभइ, अद्वारसमेण पारेइ, एव खलु एसा मह-  
लिया मोयपडिमा अहासुत्त जाव अणुपालित्ता भवइ ॥ २६६ ॥ सखादत्तियस्स ण  
(भिक्खुस्स पडिग्गहधारिस्स गाहावङ्गकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविङ्गस्स) जावइय  
केइ अतो पडिग्गहंसि उ(वित्ता)वइतु दलएज्जा तावइयाओ (ताओ) दत्तीओ वत्तब्ब  
सिया, तत्थ से केइ छ[प्प]ब्बएण वा दू(दुस)सएण वा वालएण वा अतो पडिग्गहंसि  
उवित्ता दलएज्जा, सा (सब्बा) वि ण सा एगा दत्ती वत्तब्ब सिया, तत्थ से बहवे भुज-  
माणा सब्बे ते सय (२) पिं(डसाहणियं)ड अतो पडिग्गहंसि उवित्ता दलएज्जा, सब्बा  
वि ण सा एगा दत्ती वत्तब्ब सिया ॥ २६७ ॥ (सखादत्तियस्स ण भिक्खुस्स) पाणि-  
पडिग्गहियस्स ण (गा०) जावइय केइ अतो पाणिसि उवइतु दलएज्जा तावइयाओ  
दत्तीओ वत्तब्ब सिया, तत्थ से केइ छब्बएण वा दूसएण वा वालएण वा अतो पाणिसि  
उवित्ता दलएज्जा, सा वि ण सा एगा दत्ती वत्तब्ब सिया, तत्थ से बहवे भुजमाणा सब्बे  
ते सय (१ एग) पिं(ड)ड अतो पाणिसि उवित्ता दलएज्जा, सब्बा वि णं सा एगा दत्ती  
वत्तब्ब सिया ॥ २६८ ॥ तिविहे उवहडे पण्णते, तजहा-सुद्धोवहडे फलिओवहडे  
ससद्धोवहडे ॥ २६९ ॥ तिविहे ओग्गहिए पण्णते, तजहा-ज च ओगिण्हइ, जं च  
साहरइ, ज च आसगसि पक्षिववहइ, एगे एवमाहसु ॥ २७० ॥ (एगे पुण एव माहसु)  
दुविहे ओग्गहिए पण्णते, तजहा-ज च ओगिण्हइ, ज च आसगसि पक्षिववहइ ॥ २७१ ॥  
त्ति-वेमि ॥ ववहारस्स णवमो उद्देसब्बो समत्तो ॥ ९ ॥

### ववहारस्स दसमो उद्देसओ

दो पडिमाओ पण्णताओ, तजहा-जवमज्जा य चदपडिमा वहरमज्जा य

बंदपदिमा जबमज्जुम्ब बंदपदिम पडिक्षणस्स अकगारस्स दिंद(माई) बोम्बुद्धए  
दियतारेहे ने केह परीउहो(उ)वधम्मा समु(उ)फ्लॉटि दिव्वा वा मात्तुस्सया वा  
तिरिक्तजोम्मिया वा(अजुन्मेमा वा ) वे(सध्ये) उपम्भे सम्म उ(हज्जा)इ खम्ह  
दितिम्भेह अहिवासेह ॥ २७२ ॥ जबमज्जुम्ब बंदपदिम पडिक्षणस्स अकगारस्स  
घाइम्भम्भस्स दे पडिवए क्ष्यद् एग दर्ती योव्वस्स पडिगाहेत्तए एग पावस्स  
(सम्मीहै दुप्पयचउप्पन्नाइएहै आहारक्तीहै सतोहै पडिम्भतोहै) अम्भाकर्ड  
म्भदोहैहै यिज्जिता वहने सम्भम्भाहेप्पम्भदिम्भयव्वीमगा क्ष्यद् दे एस्सर्ह  
भुम्भमाणस्स पडिगाहेत्तए, घो दोहै जो तिज्ज जो चठव्व घो पक्षव्व, घो गुम्भ-  
चीए घो बाम्भत्वाए घो दारगे देज्जमाणीए, घो (से क्ष्यद्) अंतो म्भुम्भस्स दो दि  
पाए चाहहु रम्भमाणीए, (पटिगाहित्तए जाह पुण एवं बाम्भज्जा) घो वाहै म्भुम्भस्स  
दो दि पाए चाहहु रम्भमाणीए, एर्वं पार्वं अंतो दिव्वा एर्वं पार्वं वाहै दिव्वा एहुम्भे  
दिक्षम्भहात्प (एगाए एस्साए एस्सागे क्ष्यम्भेज्जा वाहारे एगाए एस्साए एस्स  
माने घो क्ष्यम्भेज्जा जो आहारेज्जा) एर्वं दक्ष्याह, एर्वं दे क्ष्यद् पडिगाहेत्तए, एर्वं घो  
दक्ष्याह, एर्वं दे पा क्ष्यद् पडिगाहेत्तए, दिहज्जाए दे क्ष्यद् दोम्भिं दक्षीजो मोव्वस्स  
पडिगाहेत्तए चठपाप्पस्स पंक्तमीए दे क्ष्यद् पंक्तदक्षीजो मोयन्स्स पडिगाहेत्तए छ पावस्स चक्कमीए  
से क्ष्यद् सत दक्षीजो भोव्वस्स पडिगाहेत्तए चत पावस्स छक्कमीए से क्ष्यद् छह  
दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए छह पावस्स जक्कमीए से क्ष्यद् यव दक्षीजो मोम्भस्स  
पडिगाहेत्तए यव पावस्स दक्कमीए से क्ष्यद् दस दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए  
दस पावस्स एपार(धी)उमीए से क्ष्यद् एगारस दक्षीजो मोयन्स्स पडिगाहेत्तए  
एपारस पावस्स चारसमीए से क्ष्यद् चारत दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए चारत  
चारस पावस्स तेरसमीए से क्ष्यद् तेरच दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए ठर्च  
पावस्स चोहसमीए से क्ष्यद् चोहस दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए चोहस पावस्स  
फ्लरसमी(पुम्भमा)ए छ क्ष्यद् फ्लरस दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए फ्लरस  
पावस्स चमुळम्भम्भस्स से पाहिज्जए क्ष्यद्दी चोहस (दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए  
चोहस पावस्स दक्षीहै दुप्पम्भ चाव घो आहारेज्जा) दिव्वाए क्ष्यद् तेरस दक्षीजो  
मोम्भस्स पडिगाहेत्तए तरस पावस्स चाव घो आहारेज्जा एगाए क्ष्यद् चारस  
दक्षीजो मोम्भस्स पडिगाहेत्तए चारस पावस्स चाव घो आहारेज्जा चठव्वीए

कप्पइ एक्कारस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, पचमीए कप्पइ दस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, छट्टीए कप्पइ णव दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, सत्तमीए कप्पइ अट्ट दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, अट्टमीए कप्पइ सत्त दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, णवमीए कप्पइ छ दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, इक्कारसीए कप्पइ चउदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, वारसीए कप्पइ तिदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, तेरसीए कप्पइ दो दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, चउहसीए कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, अमावासाए से य अभत्तड्हे भवइ, एवं खलु एसा जवमज्ज्ञचंदपडिमा अहासुत्त अहाकप्प जाव अणुपालित्ता भवइ ॥ २७३ ॥ वहरमज्ज्ञण्ण चंदपडिम पडिवण्णस्स अणगारस्स मास वोसट्काए चियतदेहे जे केइ परिसहोवसग्गा समु-प्पज्जति, तजहा-दिव्वा वा माणुस्सग्गा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पडिलोमा वा, तथ्य अणुलोमा वा ताव वदेज्जा वा नमसेज्जा वा सक्कारेज्जा वा सम्माणेज्जा वा कलाण मंगल देवय चैद्य पञ्जवासेज्जा, तथ्य पडिलोमा वा अण्णयरेण दडेण वा लट्टीण वा मुट्टीण वा जोत्तेण वा वेत्तेण वा कसेण वा काए आउटेज्जा, ते सब्बे उप्पण्णे सम्म सहेज्जा खमेज्जा तिइक्खेज्जा अहियासेज्जा ॥ २७४ ॥ वहरमज्ज्ञण्ण चंदपडिम पडिवण्णस्स अणगारस्स वहुलपक्खस्स पाडिवए कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्त जाव णो आहारेज्जा, विइयाए से कप्पइ चउहस्स दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, चउत्थीए कप्पइ वारस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, पचमीए कप्पइ एगरस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, छट्टीए कप्पइ दस दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, सत्तमीए कप्पइ णव दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, अट्टमीए कप्पइ अट्ट दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, णवमीए कप्पइ सत्त दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, इक्कारसीए कप्पइ पच दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, वारसीए कप्पइ चउदत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, तेरसीए कप्पइ तिण्ण दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, चउहसीए कप्पइ दो दत्तीओ भोयणस्स जाव णो आहारेज्जा, अमावासाए कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहेत्त जाव णो आहारेज्जा, सुक्षपक्खस्स पाडिवए से कप्पइ दो-

दर्तीओ मोयपस्स जाव जो आहारेजा विहाए से कप्पइ तित्ति दर्तीओ यें  
जस्त जाव जो आहारेजा तद्याए से कप्पइ चउदतीओ मोयपस्स जाव ये  
आहारेजा चउतीए से कप्पइ पंचदर्तीओ मोयपस्स जाव जो आहारेजा  
पंचमीए कप्पइ छ दर्तीओ मोयपस्स जाव जो आहारेजा छट्टीए कप्पइ छ  
दर्तीओ मोयपस्स जाव जो आहारेजा सतमीए कप्पइ छु दर्तीओ यें  
जस्त जाव यो आहारेजा छट्टमीए कप्पइ यह दर्तीओ मोयपस्स जाव ये  
आहारेजा णवमीए कप्पइ इस दर्तीओ मोयपस्स जाव जो आहारेजा दस्तीए  
कप्पइ एगारस दर्तीओ मोयपस्स जाव जो आहारेजा एगारसीए कप्पइ अस  
दर्तीओ मोयपस्स जाव जो आहारेजा बारसीए कप्पइ तेरस दर्तीओ यें  
जस्त जाव जो आहारेजा तेरसीए कप्पइ चउदस दर्तीओ मोयपस्स यह ये  
आहारेजा चउसीए कप्पइ पञ्चरस दर्तीओ मोयपस्स पडिगाहेतु, पञ्चरस  
पाञ्चमस्स पडिगाहेतु, सम्भेद्धि फूफ्प्रथ्वरप्रव जाव जो फुकेजा जो आहोज  
पुण्यमाए अमात्तु भाव, एवं पहु एसा बारमन्ता पंचपदिमा आहार्तुर्त बारमन्त  
जाव अशुपाकिता गवाह ॥ २७५ ॥ पंचतिर्ते बवहारे पञ्चते तंबहा-आपमे छर  
आजा चारणा जीए ! चत्वेद तत्प आगमे दिवा आगमार्त बवहार फुकेजा ये  
से तत्प आगमे दिवा चहा से तत्प छुए दिया छुएर्त बवहार फुकेजा यो हे  
तत्प छुए दिवा चहा से तत्प आगा दिवा आगाए बवहार फुकेजा यो हे तत्प  
आगा दिवा चहा से तत्प आगा दिवा चारणाए बवहार फुकेजा यो हे तत्प  
चारणा दिवा चहा से तत्प जीए दिया जीएर्त बवहार फुकेजा एर्ति एर्ति  
बवहारेहि बवहार फुकेजा तंबहा-आपमेर्त छुएर्त आगाए चारणाए जीएर्त चहा  
से आगमे छुए आगा भारपा जीए तहा तहा बवहारे फुकेजा से दिमाहु मेरे ।  
आगमकलिमा उम्ना दिमाहा इत्तेवं पंचतिर्ते बवहार ज्या चवा चही चही तहा  
तहा तही तही अभिदिव्योवरिसदे बवहार बवहारेमाने समये दिलोव आगम  
आराहए गवाह ॥ २७६ ॥ चत्तारि पुरिष्ठ[जा]आगा फलता तंबहा-छुकरे  
आ(ममे)दे एगे जो मावङ्करे मावङ्करे यामं एगे जो बदुङ्करे एगे बदुङ्करे जियान्त  
करे जि एगे जो बदुङ्करे जो मावङ्करे ॥ २७७ ॥ चत्तारि पुरिष्ठआगा फलता  
तंबहा-गष्टुङ्करे यामं एगे जो मावङ्करे मावङ्करे जामं एगे जो बदुङ्करे, हो  
गष्टुङ्करे जि मावङ्करे जि एगे जो बदुङ्करे जो मावङ्करे ॥ २७८ ॥ चत्तारि  
पुरिष्ठआगा फलता त - नावसंमाङ्करे यामं एगे जो मावङ्करे मावङ्करे यामं एगे  
जो गष्टुङ्करे एगे एवंसंमाङ्करे जि मावङ्करे जि एगे जो मावङ्करे जो

माणकरे ॥ २७९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तंजहा-गणसो(भ)हकरे णाम एगे णो माणकरे, माणकरे णाम एगे णो गणसोहकरे, एगे गणसोहकरे वि माणकरे वि, एगे णो गणसोहकरे णो माणकरे ॥ २८० ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, त०-गणसोहिकरे णाम एगे णो माणकरे, माणकरे णाम एगे णो गणसोहिकरे, एगे गण-सोहिकरे वि माणकरे वि, एगे णो गणसोहिकरे णो माणकरे ॥ २८१ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तजहा-रुवं णामेगे जहइ णो धम्म, धम्म णामेगे जहइ नो रुव, एगे रुव वि जहइ धम्म वि जहइ, एगे णो रुव जहइ णो धम्म जहइ ॥ २८२ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तजहा-धम्म णामेगे जहइ णो गणसठिइ, गणसठिइ णामेगे जहइ णो धम्म, एगे गणसठिइ वि जहइ धम्म वि जहइ, एगे णो गणसठिइ जहइ णो धम्म जहइ ॥ २८३ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पण्णता, तजहा-पियधम्मे णामेगे णो दढधम्मे, दढधम्मे एगे पियधम्मे, एगे पियधम्मे वि दढधम्मे वि, एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे ॥ २८४ ॥ चत्तारि आयरिया पण्णता, तंजहा-पब्बावणायरिए णामेगे णो उवट्टावणायरिए, उवट्टावणायरिए णामेगे णो पब्बावणायरिए, एगे पब्बावणायरिए वि उवट्टावणायरिए णामेगे णो पब्बावणायरिए ॥ २८५ ॥ चत्तारि आयरिया पण्णता, तजहा-उद्देसणायरिए णामेगे णो वायणायरिए, वायणायरिए णामेगे णो उद्देसणायरिए, एगे उद्देसणायरिए वि वायणायरिए वि, एगे णो उद्देसणायरिए णो वायणायरिए ॥ २८६ ॥ धम्मायरियस्स चत्तारि अतेवासी पण्णता, तजहा-पब्बावणतेवासी णामेगे णो उवट्टावणतेवासी, उवट्टावणतेवासी णामेगे णो पब्बावणतेवासी, एगे पब्बावणतेवासी वि उवट्टावणतेवासी वि, एगे णो पब्बावणतेवासी एगे पब्बावणतेवासी णो उवट्टावणतेवासी ॥ २८७ ॥ चत्तारि अतेवासी पण्णता, त०-उद्देसणतेवासी णामेगे णो वायणतेवासी, वायणतेवासी णामेगे णो उद्देसणतेवासी, एगे उद्देसणतेवासी वि वायणतेवासी वि, एगे णो उद्देसणतेवासी णो वायणतेवासी ॥ २८८ ॥ चत्तारि धम्मायरिया पण्णता, तजहा-पब्बावणधम्मायरिए णामेगे णो उवट्टावणधम्मायरिए, उवट्टावणधम्मायरिए णामेगे णो पब्बावणधम्मायरिए, एगे पब्बावणधम्मायरिए वि उवट्टावणधम्मायरिए वि, एगे णो पब्बावणधम्मायरिए णो उवट्टावणधम्मायरिए ॥ २८९ ॥ चत्तारि धम्मायरिया पण्णता, त०-उद्देसणधम्मायरिए णामेगे णो वायणधम्मायरिए, वायणधम्मायरिए णामेगे णो उद्देसणधम्मायरिए, एगे उद्देसणधम्मायरिए वि वायणधम्मायरिए वि, एगे णो उद्देसणधम्मायरिए णो वायणधम्मायरिए ॥ २९० ॥ चत्तारि धम्मतेवासी पण्णता, तजहा-पब्बावणधम्मतेवासी णामेगे णो उवट्टावणधम्मतेवासी, उवट्टावण-

धर्मतेवासी जानेगे जो पञ्चाशयधर्मतेवासी एवं क्षावणधर्मतेवासी वि उद्धु-  
वयधर्मतेवासी वि ऐ जो क्षावणधर्मतेवासी जो उद्धुवयधर्मतेवासी ॥  
प २९१ ॥ वत्तारि धर्मतेवासी पञ्चता तंबहा-उरोसजधर्मतेवासी जानेगे जो  
धर्मधर्मतेवासी धर्मधर्मतेवासी जानेगे जो उरोसजधर्मतेवासी ऐ वे-  
धर्मधर्मतेवासी वि धर्मधर्मतेवासी वि ऐ जो उद्धुवयधर्मतेवासी जो धर्म-  
धर्मतेवासी ॥ २९२ ॥ उन्होंने देखमूलीओं पञ्चताम्भे तंबहा-वाल्लवे द्वारा द्वारे  
पूर्वजा)प्रियाप्ययेरे । सुक्षिप्त(परि)सुवारे (उन्होंने दिमादे) वाल्लवेरे (पूर्व)सम्मा-  
मां जाव द्वयवारण द्वययेरे वीक्षणसपरियाए परिवाकयेरे ॥ २९३ ॥ तभी उन्हे  
मूलीओं पञ्चताम्भे तं-उत्तराहरिया वाल्लम्मासिया छम्मासिया छम्मासिया  
उद्धोसिया जालम्मासिया मञ्जसमिया सुलग्नो जहाँसिया ॥ २९४ ॥ जो क्षम्म  
दिमावाल वा दिमावील वा द्वार्म्म वा द्वार्म्म वा अण्डुवासवार्म उद्धुवेत्तर वा  
सुरुचित्ताए वा ॥ २९५ ॥ क्षम्म दिमावाल वा दिमावील वा द्वार्म्म वा द्वार्म्म वा  
साइरेग्नुवासवार्म उद्धुवेत्तर वा सुरुचित्ताए वा ॥ २९६ ॥ जो क्षम्म दिमावाल  
वा दिमावील वा द्वार्म्म वा द्वार्म्म वा अण्डुवासवार्मस्व जावारपम्भे जाम्भे  
जम्मासम्भे उद्दिशित्तए ॥ २९७ ॥ क्षम्म दिमावाल वा दिमावील वा द्वार्म्मस्व वा  
द्वार्म्माए वा वंववासवास्तु जावारपम्भे जाम्भे अज्ञाम्भे उद्दिशित्तए ॥ २९८ ॥  
तिषासपरियाम्भस्तु उम्मासपरियाए जावारपम्भे जाम्भे अज्ञाम्भे उद्दि-  
शित्तए ॥ २९९ ॥ वाल्लम्मासपरिया(मस्त )ए क्षम्म मूम्मदे जाम्भे जागे उद्दिशित्तए  
॥ ३ ॥ ५ वंववासपरियाए क्षम्म इसाक्षम्भवारे (वाम्माज्ञाम्भे) उद्दिशित्तए  
॥ ३ ॥ ६ ॥ अद्वासपरियाए क्षम्म ठाप्पसम्भाए (जाम्भे जागे) उद्दिशित्तए ॥ ३ ॥ ७ ॥  
दसवासपरियाए क्षम्म दिव(जागे)जाहे जाम्भे जागे उद्दिशित्तए ॥ ३ ॥ ८ ॥ दहारम्भ-  
वासपरियाए क्षम्म द्वार्म्म दिमाणपदिमत्ती जहाँसिया दिमाणपदिमत्ती अण्डुसिया  
वर्वी)प्राचुरिया दिमाहसुक्षिया जाम्भे अज्ञावाम्भे उद्दिशित्तए ॥ ३ ॥ ९ ॥ वारस्ताक्ष-  
परियाए क्षम्म गम्भेशवाए भर्त्तोवाए वेसम्भोवाए दिमावोवाए जाम्भे अम्भ-  
यी उद्दिशित्तए ॥ ३ ॥ १० ॥ देसवासपरियाए क्षम्म उद्धुव(द)परियावस्तुए द्व्य-  
द्वाप्पाहए वेसिवोवाय जाम्भपरियावस्तुए जाम्भे अज्ञावाम्भे उद्दिशित्तए ॥ ३ ॥ ११ ॥  
जो(चर्व)वासपरियाए क्षम्म दिव(ह)दिमामाक्षा जाम्भे अज्ञावाम्भे उद्दिशित्तए  
॥ ३ ॥ १२ ॥ क्षम्मरसवासपरियाए क्षम्म चार(ना)गभावाक्षा जाम्भे अज्ञावाम्भे उद्दि-  
शित्तए ॥ ३ ॥ १३ ॥ सोक्षम्भासपरियाए क्षम्म देवजीसगे जाम्भे अज्ञावाम्भे उद्दिशित्तए  
॥ ३ ॥ १४ ॥ दातरसवासपरियाए क्षम्म जाहीसियावाक्षा जाम्भे अज्ञावाम्भे उद्दिशित्तए

॥ ३१० ॥ अद्वारसवान्परियागस्स समणस्स णिगगथस्स कप्पइ दिट्टीविसभावणा  
नाम अज्ञायणे उद्दिसित्तए ॥ ३११ ॥ एगूणवीसवासपरियाए कप्पइ दिट्टिवाए नाम  
अगे उद्दिसित्तए ॥ ३१२ ॥ धीमवासपरियाए समणे णिगंये मव्वसुयाणुवाहि भवड  
॥ ३१३ ॥ दसविहे वेयावचे पण्ठते, तजहा-आयरियवेयावचे उवज्ज्वायवेयावचे  
थेरवेयावचे सेहवेयावचे गिलाणवेयावचे तवस्सवेयावचे साहम्मियवेयावचे कुल-  
वेयावचे गणवेयावचे सधवेयावचे ॥ ३१४ ॥ आयरियवेयावच्च करेमाणे नमणे  
णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३१५ ॥ उवज्ज्वायवेयावच्च करेमाणे  
समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३१६ ॥ थेरवेयावच्च करेमाणे  
समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३१७ ॥ तवस्सवेयावच्च करेमाणे  
समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३१८ ॥ सेहवेयावच्च करेमाणे  
समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३१९ ॥ गिलाणवेयावच्च करेमाणे  
समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३२० ॥ साहम्मियवेयावच्च  
करेमाणे समणे णिगंये महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३२१ ॥ कुलवेयावच्च  
करेमाणे समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३२२ ॥ गणवेयावच्च  
करेमाणे समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३२३ ॥ सधवेयावच्च  
करेमाणे समणे णिगगथे महाणिज्जरे महापञ्जवसाणे भवड ॥ ३२४ ॥ ति-वेमि ॥  
ववहारस्स दसमो उहेसओ समत्तो ॥ १० ॥ ववहारसुत्तं समत्तं ॥





णमोऽत्यु णं समणस्स भगवओ णायपुत्तमहावीरस्स

# सुत्तागमे

तत्थ णं

विहक्षणप्रसुत्तं

पढ्मो उद्देसओ

नो कप्पड निगगन्थाण वा निगगन्थीण वा आमे तालपलम्ब्वे अभिन्ने पडि(गाहि)-  
गाहेत्तए ॥ १ ॥ कप्पड निगगन्थाण वा निगगन्थीण वा आमे तालपलम्ब्वे भिन्ने  
पडिगगाहेत्तए ॥ २ ॥ कप्पड निगगन्थाणं पष्ठे तालपलम्ब्वे भिन्ने वा अभिन्ने वा  
पटिगगाहेत्तए ॥ ३ ॥ नो कप्पइ निगगन्थीण पष्ठे तालपलम्ब्वे अभिन्ने पडिगगाहेत्तए  
॥ ४ ॥ कप्पइ निगगन्थीण पष्ठे तालपलम्ब्वे भिन्ने पटिगगाहेत्तए, से वि य विहिभिन्ने,  
नो (चेव-ण) अविहिभिन्ने ॥ ५ ॥ से गामसि वा नगरसि वा खेडंसि वा कब्बडसि  
वा मछम्बसि वा पट्टणंसि वा आगरसि वा दोणमुहसि वा निगमंसि वा रायहार्णिंसि  
वा आसमसि वा सनिवेससि वा सवाहंसि वा घोससि वा असियसि वा पुडमेयणसि  
वा सपरिक्खेवसि अवाहिरियसि कप्पड निगगन्थाण हेमन्तगिम्हासु एग मास वत्थए  
॥ ६ ॥ से गामंसि वा जाव रायहार्णिंसि वा सपरिक्खेवसि सवाहिरियंसि कप्पइ  
निगगन्थाण हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए, अन्तो एग मास वाहिं एगं मास,  
अन्तो वसमाणाण अन्तोभिक्खायरिया वाहिं वसमाणाणं वाहिंभिक्खायरिया ॥ ७ ॥  
से गामसि वा जाव रायहार्णिंसि वा सपरिक्खेवसि अवाहिरियसि कप्पइ निगगन्थीण  
हेमन्तगिम्हासु दो मासे वत्थए ॥ ८ ॥ से गामसि वा जाव रायहार्णिंसि वा सप-  
रिक्खेवसि सवाहिरियसि कप्पइ निगगन्थीणं हेमन्तगिम्हासु चत्तारि मासे वत्थए,  
अन्तो दो मासे, वाहिं दो मासे, अन्तो वस(न्ती)माणीण अन्तोभिक्खायरिया  
वाहिं वसमाणीण वाहिंभिक्खायरिया ॥ ९ ॥ से गामसि वा जाव रायहार्णिंसि वा  
एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ निगगन्थाण य निगगन्थीण  
य एगयओ वत्थए ॥ १० ॥ से गामंसि वा जाव रायहार्णिंसि वा अभिनिव्वगडाए  
अभिनिहुवाराए अभिनिक्खमणपवेसाए कप्पइ निगगन्थाण य निगगन्थीण य एगयओ

१ कन्यलीफले ।

वत्तेष ॥ ११ ॥ तो कप्पह निमान्बीजं आकृष्णीर्हसि वा ए(त्वा)क्षम्भुर्हसि वा  
सिद्धाहर्गसि वा लिंबसि वा अउद्धसि वा अवर्गसि वा अन्तराहर्गसि वा वत्तेष ॥ १२ ॥  
कप्पह निमान्बार्जं आकृष्णगिर्हसि वा आब मन्तराशणसि वा वत्तेष ॥ १३ ॥ तो  
कप्पह निमान्बीजं अवहुयदुषारिए उवस्सप्त वत्तेष, एवं प्रसार अस्तो लिक्षा एवं  
प्रसार वाहिं लिक्षा लोहातिय(चेत)विक्षिक्षियार्हसि एवं वर्णं कप्पह वत्तेष  
॥ १४ ॥ कप्पह निमान्बार्जं अवहुयदुषारिए उवस्सप्त वत्तेष ॥ १५ ॥ कप्पह  
निमान्बीयं अस्तोक्षितर्थं चक्षिमत्ताम् भारेताप् वा परिहरिताप् वा ॥ १६ ॥ तो कप्पह  
निमान्बार्जं अस्तोक्षितर्थं चक्षिमत्ताम् भारेताप् वा परिहरिताप् वा ॥ १७ ॥ कप्पह  
निमान्बीयं अस्तोक्षितर्थं चक्षिमत्ताम् भारेताप् वा परिहरिताप् वा ॥ १८ ॥ तो  
कप्पह निमान्बार्जं लिक्षान्बीयं वा लिम्पान्बीयं वा वयसीर्हसि लिंदिताप् वा लिंसी  
इत्तेष वा द्रवहिताप् वा निहताताप् वा पद्ममाहाताप् वा असर्वं वा पार्वं वा लक्ष्मीं वा  
सप्तर्म्मं वा आहारमध्या(रि)रेत्पू(वा) चक्षारं वा पाशवधं वा लेङं वा सिद्धार्थं वा  
परिद्वय(लि)सेताप् चक्षाम् वा भरेताप् (अस्मद्वागरियं वा आय(रि)रेताप्) सार्वं वा  
क्षाइताप्, काउत्स्सर्गी वा ठार्वं वा द्वाहाताप् ॥ १९ ॥ तो कप्पह निम्पम्बालं वा  
निम्पान्बीयं वा सवितात्म्मे उवस्सप्त वत्तेष ॥ २० ॥ कप्पह निम्पम्बालं वा  
निम्पम्बीयं वा अविकात्म्मे उवस्सप्त वत्तेष ॥ २१ ॥ तो कप्पह निम्पम्बीयं  
सामारियम्भिस्ताप् वत्तेष ॥ २२ ॥ कप्पह निम्पम्बीयं द्वागारियनिस्ताप् वत्तेष  
॥ २३ ॥ कप्पह निम्पम्बार्जं द्वागारियनिस्ताप् वा अनिस्ताप् वत्तेष ॥ २४ ॥  
तो कप्पह निम्पम्बार्जं लिम्पान्बीयं वा लिम्पारिए उवस्सप्त वत्तेष ॥ २५ ॥  
कप्पह निम्पम्बार्जं लिम्पान्बीयं वा अप्सामारिए उवस्सप्त वत्तेष ॥ २६ ॥ तो  
कप्पह निम्पम्बार्जं इत्पितागारिए उवस्सप्त वत्तेष ॥ २७ ॥ कप्पह निम्पम्बार्जं  
पुरिस्तागारिए उवस्सप्त वत्तेष ॥ २८ ॥ तो कप्पह निम्पम्बीयं पुरिस्तागारिए  
उवस्सप्त वत्तेष ॥ २९ ॥ कप्पह निम्पम्बीयं इत्पितागारिए उवस्सप्त वत्तेष ॥ ३० ॥  
तो कप्पह निम्पम्बार्जं पद्मिक(द)याप् सेत्ताप् वत्तेष ॥ ३१ ॥ कप्पह निम्पम्बीयं  
पद्मिकद्वाप् सेत्ताप् वत्तेष ॥ ३२ ॥ तो कप्पह निम्पम्बार्जं याहात्पुष्टस्तु मञ्ज-  
मञ्जेत्ते मन्तुं वत्तेष ॥ ३३ ॥ कप्पह निम्पम्बीयं याहात्पुष्टस्तु मञ्जंमञ्जेत्ते  
गन्तुं वत्तेष ॥ ३४ ॥ निम्पम्बीयं विद्विगर्वं चू तं विद्विगर्वं अविद्विगर्वं अविद्विगर्वं  
ओदिवापूर्वै-श्वम्भए परो आद्येत्ता इत्पाए परो नो आद्येत्ता इत्पाए परो  
आभुद्वेत्ता इत्पाए परो नो अभुद्वेत्ता इत्पाए परो अद्वेत्ता इत्पाए परो वो  
वन्देत्ता इत्पाए परो चमुकेत्ता इत्पाए परो चमुकेत्ता इत्पाए परो लंसेत्ता

इच्छाए परो नो सवसेजा, इच्छाए परो उवसमेजा, इच्छाए परो नो उवसमेजा; जे (जो) उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जे न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्व, से किमाहु भन्ते (!) <sup>२</sup> उवसमसारं सामण्ण ॥ ३५ ॥ नो कप्पइ निगन्याण वा निगन्यीण वा वासावासासु चार(चरित)ए ॥ ३६ ॥ कप्पइ निगन्याण वा निगन्यीण वा हेमन्तगिम्हासु चारए ॥ ३७ ॥ नो कप्पइ निगन्याण वा निगन्यीण वा वेरज्जिविरुद्धरज्जसि सज्ज गमण सज्ज आगमण सज्ज गमणागमण क(रि)रेत्तए जे (जो) खलु निगन्(थो)ये वा निगन्यी वा वेरज्जिविरुद्ध-रज्जसि सज्ज गमण सज्ज आगमण सज्ज गमणागमण करेद क(रि-रि)रेत्त वा साइज्जइ, से दुहओ(वि) वीझक्कममाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाण अणुग्घाइय ॥ ३८ ॥ निगन्य च णं गाहावइकुल पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्टु केइ वत्थेण वा पडिगगहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय आयरि-यपायमूले ठवेत्ता दोच्च पि ओगहं अणुञ्जवेत्ता परिहार परिहरित्तए ॥ ३९ ॥ निगन्य च ण वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निकखन्त समाणं केइ वत्थेण वा पडिगगहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय आयरियपायमूले ठवेत्ता दोच्च पि ओगह अणुञ्जवेत्ता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४० ॥ निगन्यिं च ण गाहावइकुल पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्टु केइ वत्थेण वा पडिगगहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय प(वि)वत्ति(णि)णीपायमूले ठवेत्ता दोच्च पि ओगह अणुञ्जवेत्ता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४१ ॥ निगन्यिं च ण वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निकखन्तं समाणिं केइ वत्थेण वा पडिगगहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा उवनिमन्तेजा, कप्पइ से सागारकड गहाय पवत्तिणीपायमूले ठवेत्ता दोच्च पि ओगह अणुञ्जवेत्ता परिहारं परिहरित्तए ॥ ४२ ॥ नो कप्पइ निगन्याण वा निगन्यीण वा राओ वा वियाले वा असण वा ४ पडिगगहेत्तए नञ्जत(थे)थ एगेण पुब्बपडिलेहिएण सेजासथारएण ॥ ४३ ॥ नो कप्पइ निगन्याण वा निगन्यीण वा राओ वा वियाले वा वत्थ वा पटिगगह वा कम्बल वा पायपुञ्छण वा पडिगगहेत्तए, नञ्जत्य एगाए हरियाह(रि)-डियाए, सा वि (य) याइ परिसुत्ता वा धोया वा रत्ता वा घट्टा वा मट्टा वा संपधूमिया वा ॥ ४४ ॥ नो कप्पइ निगन्याण वा निगन्यीण वा राओ वा वियाले वा अद्वाणगम(णाए)ण एत्तए, (नो ) सखडिं सखडिपडियाए एत्तए ॥ ४५ ॥ नो कप्पइ निगन्यस्स एगाणियस्स राओ वा वियाले वा वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निकखमित्तए वा पविसित्तए वा, कप्पइ से अप्पविड्यस्स वा अप्पतड्यस्स वा राओ

वा कियाके वा बहिर्या विवारभूमि वा विहारभूमि वा निष्ठामिताए वा परिचिताए वा ॥ ४६ ॥ जो कप्पद निमग्न्यीए प्रगतियाए राखो वा कियाके वा बहिर्या विवारभूमि वा विहारभूमि वा निष्ठामिताए वा परिचिताए वा कप्पद से अपनाइताए वा अपनाइताए वा राखो वा कियाके वा बहिर्या विवारभूमि वा विहारभूमि वा निष्ठामिताए वा परिचिताए वा ॥ ४७ ॥ कप्पद निमग्न्याय वा निमग्न्यीय वा पुरतिमेण जात व्यक्तमग्नामो एतए, दक्षिणायेण जात अस्त्रम्भीमो एतए, पश्चिमेण जात दूलामिसामो एतए, उत्तरेण जात तुलासामित्यामो एतए, एयावजात कप्पद एयावजात आरिए केते जो से कप्पद एतो वाहि, तब फै वत्य नारदसंवचितार्थ वहस्पन्निति ॥ ४८ ॥ तिनेमि ॥ विहारभूमि पहमो उद्देसओ समाचो ॥ १ ॥

### विहारो उद्देसओ

उद्देसस्तु अन्तो वगडाए साक्षीणि वा शीहीणि वा मुग्याणि वा मात्याणि वा तिक्षणि वा कुम्भाणि वा पोहूमाणि वा अवाणि वा व्यवाणि वा बोक्षि(ता)-  
व्याणि वा तिक्षिक्षाणि वा विहित्याणि वा विष्ट्रित्याणि वा जो कप्पद  
निमग्न्याय वा निमग्न्यीय वा अहाम्नदमिति वत्यए ॥ ४९ ॥ यह पुर एवं चालेजा-  
नो बोक्षिक्षार्द्दं जो विविदाक्षार्द्दं जो विष्ट्रिक्षार्द्दं जो विष्ट्रित्यार्द्दं, रातिक्षाणि वा  
पुष्टक्षाणि वा वितिक्षाणि वा कुलिक्षडाणि वा अभिक्षाणि वा सुरियाणि वा  
पित्रिवाणि वा कप्पद निमग्न्याय वा निमग्न्यीय वा हेमन्तगिम्हार्द वत्यए ॥ ५० ॥  
यह पुर एवं चालेजा-नो रातिक्षार्द्दं जो पुष्टक्षार्द्दं जो वितिक्षार्द्दं जो तुलिक्ष-  
डार्द, बोक्षिक्षाणि वा पाक्षात्ताणि वा मात्यात्ताणि वा मात्यात्ताणि वा बोक्षि-  
ताणि वा विशिताणि वा अभिक्षाणि वा सुरियाणि वा पित्रिवाणि वा कप्पद  
निमग्न्याय वा निमग्न्यीय वा वासावार्दं वत्यए ॥ ५१ ॥ उद्देसस्तु अन्तो  
वगडाए पुराक्षिक्षडकुम्भे वा सोबीयवियहकुम्भे वा उपमिक्षिक्षडे तिवा जो कप्पद  
निमग्न्याय वा निमग्न्यीय वा अहाम्नदमिति वत्यए, त्रुरत्या व उद्देसर्वं परिवेद-  
माणि जो ख्येजा एव से कप्पद एगरार्द्दं वा त्रुराम्भं वा वत्यए, जो से कप्पद फै  
एगराम्भामो वा त्रुराम्भामो वा वत्यए, जे त्रुरत्या एगराम्भामो वा त्रुराम्भामो वा फै  
व(सह)सुजा से सन्तरा क्षेत्र वा परिक्षारे वा ॥ ५२ ॥ उद्देसस्तु अन्तो वगडाए  
सीधोदग्लियहकुम्भे वा उपिजोदग्लियहकुम्भे वा उपमिक्षिक्षडे तिवा जो कप्पद  
निमग्न्याय वा निमग्न्यीय वा अहाम्नदमिति वत्यए, त्रुरत्या व उद्देसर्वं परिवेद-  
माणि जो ख्येजा एव से कप्पद एगरार्द्दं वा त्रुराम्भं वा वत्यए, जो से कप्पद फै

एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा पर वसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५३ ॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सब्बरा(ई)इए जोई झियाएजा, नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सय पडिलेहमाणे नो लभेजा, एव से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ पर एगरायाओ वा दुरायाओ वा पर वसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५४ ॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए सब्बराइए पईवे दिप्पेजा, नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए, हुरत्था य उवस्सयं पडिलेहमाणे नो लभेजा, एव से कप्पइ एगराय वा दुराय वा वत्थए, नो से कप्पइ परं एगरायाओ वा दुरायाओ वा वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा पर वसेजा, से सन्तरा छेए वा परिहारे वा ॥ ५५ ॥ उवस्सयस्स अन्तो वगडाए पिण्डए वा लोयए वा खी(रे)र वा दहिं वा सर्पि वा नवणीए वा तेले वा फाणि(ए)य वा पूर्वे वा सकुली वा सिहरिणी वा ओखिणाणि वा विक्षिवण्णाणि वा विइगिण्णाणि वा विष्पद्धण्णाणि वा, नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा अहालन्दमवि वत्थए ॥ ५६ ॥ अह पुण एव जाणेजा-नो ओखिणाइ ४, रासिकडाणि वा पुञ्जकडाणि वा भित्तिकडाणि वा कुलियकडाणि वा लच्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा, कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा हैमन्तरिगम्हासु वत्थए ॥ ५७ ॥ अह पुण एव जाणेजा-नो रासिकडाइ ४, कोट्टाउत्ताणि वा पलाउत्ताणि वा भद्राउत्ताणि वा मालाउत्ताणि वा कुम्भिउत्ताणि वा करम्भिउत्ताणि वा ओलित्ताणि वा विलित्ताणि वा लच्छियाणि वा मुद्दियाणि वा पिहियाणि वा, कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा वासावास वत्थए ॥ ५८ ॥ नो कप्पइ निगन्थीण अहे आगमणगिहंसि वा वियडगिहंसि वा वसीमूलसि वा रुक्खमूलसि वा अब्सावगासियसि वा वत्थए ॥ ५९ ॥ कप्पइ निगन्थाण अहे आगमणगिहंसि वा वसीमूलसि वा रुक्खमूलसि वा अब्भावगासियसि वा वत्थए ॥ ६० ॥ एगे सागारिए पारिहारिए, दो(न्नि) तिणि चत्तारि पञ्च सागारिया पारिहारिया, एग तत्थ कप्पाग ठवइत्ता अवसेसे निव्विसेजा ॥ ६१ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा सागारियपिण्ड वहिया अनीहड (अससद्वा) ससद्व-पडिगगाहेत्तए ॥ ६२ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा सागारियपिण्ड वहिया अनीहड अससद्व पडिगगाहेत्तए ॥ ६३ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा सागारियपिण्ड वहिया नीहड अससद्व पडिगगाहेत्तए ॥ ६४ ॥ कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा सागारियपिण्ड वहिया नीहड ससद्व

परिमाहेताए ॥ ५५ ॥ नो कप्पद निगान्वाण वा निमान्वीय वा सामारिपिण्ड  
वरिया भीहडं असंक्षुं संसङ्कुं करेताए, जे यतु निमन्ये वा निम्मन्यी वा सामा-  
रिपिण्डं वरिया नीहडं असंक्षुं संसङ्कुं करेताए वा चाहताए, जे युज्जो भीहड-  
माले असामाइ चाहतम्मासियं परिहारुण्यं अशुभद्दर्यं ॥ ५६ ॥ सागारियस्तु  
आहटिया सामारिप्तु(व)र्णं परिगगाहि(वा)ता तम्हा दावए, नो दे कप्पद परिमाहे-  
ताए ॥ ५७ ॥ सागारियस्तु आहटिया सामारिएर्ण अपरिमाहिता तम्हा दावए,  
एवं से कप्पद परिमाहेताए ॥ ५८ ॥ सागारियस्तु नीहटिया परेव अपरिमाहित्या  
तम्हा दावए, नो दे कप्पद परिमाहेताए ॥ ५९ ॥ त सागारियस्तु नीहटिया परेव  
परिगगाहिता तम्हा दावए, एवं से कप्पद परिमाहेताए ॥ ६० ॥ सागारियस्तु  
असियाओ असिमालाओ अस्त्रोचित्तालो अस्त्रोपहालो अनिज्ञूलाओ (एवं से) तम्हा  
दावए, नो दे कप्पद परिमाहेताए ॥ ६१ ॥ सागारियस्तु असियाओ निमत्ताओ  
बोचित्तालो बोगडालो निज्ञूलालो तम्हा दावए, एवं से कप्पद परिमाहेताए  
॥ ६२ ॥ सामारियस्तु पूयामते उैषिए चेष्टए पाहुडियाए, सागारियस्तु उवयरक्त-  
वाए निहिए निस्तु प(प)डिहारिए, तं सामारियो देव(वा)इ, सागारियस्तु परिबलो  
हेइ, तम्हा दावए, नो दे कप्पद परिमाहेताए ॥ ६३ ॥ सागारियस्तु पूयामते उैषिए  
चेष्टए पाहुडियाए, सागारियस्तु उवयरक्तवाए निहिए निस्तु परिष्ठारिए, तं  
नो सामारियो देइ, नो सागारियस्तु परिबलो हेइ, सागारियस्तु पूया हेइ, तम्हा  
दावए, नो दे कप्पद परिमाहेताए ॥ ६४ ॥ सामारियस्तु पूयामते उैषिए चेष्टए  
पाहुडियाए, सागारियस्तु उवयरक्तवाए निहिए निस्तु अपरिहारिए, तं सामारियो  
हेइ, सागारियस्तु परिबलो हेइ, तम्हा दावए, नो दे कप्पद परिमाहेताए ॥ ६५ ॥  
सामारियस्तु पूयामते उैषिए चेष्टए पाहुडियाए, सागारियस्तु उवयरक्तवाए निहिए  
निस्तु अपरिहारिए, तं नो सागारियो हेइ, नो सामारियस्तु परिबलो हेइ, सामा-  
रियस्तु पूया हेइ, तम्हा दावए, एवं से कप्पद परिमाहेताए ॥ ६६ ॥ कप्पद  
निगान्वाण वा निम्मन्यीय वा (परिमाहित) इमर्वं प्य वत्ता(विर)इ वारेताए वा  
परिहरिताए वा तंच्छा—बद्धिए बोम्पिए सावए योताए विरीहप्पे ना(मे)व्वम् व्वमे  
॥ ६७ ॥ कप्पद निम्मन्याप्य वा निम्मन्यीय वा इमर्वं प(विव)इ रवहरताए वारेताए  
वा परिहरिताए वा तंच्छा—मोम्पिए बोद्धि(वहि)ए सावए वव्यापित्तिव(वा)-  
द्विष्य)ए मुख्यपित्तिए जाम व्वमे ॥ ६८ ॥ ति—त्ति ॥ विहम्बन्ध्ये विहमो  
वहेसमो समतो ॥ ६९ ॥

## तइओ उद्देसओ

नो कप्पइ निगन्थाण निगन्थीण उवस्स(यसि)ए आसइत्तए वा चिद्धित्तए वा  
निसीइत्तए वा तुयद्धित्तए वा निद्धाइत्तए वा पयलाइत्तए वा, असण वा ४ आहार-  
माहारेत्तए, उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिद्धाण वा परिष्ठवेत्तए, सज्जाय वा  
करेत्तए, झाण वा झाइत्तए, काउस्सगं वा ठाण वा ठाइत्तए ॥ ७९ ॥ नो कप्पइ  
निगन्थीण निगन्थ(थ)याण उवस्सए आसइत्तए जाव ठाइत्तए ॥ ८० ॥ नो कप्पइ  
निगन्थाण वा निगन्थीण वा कसिणाइ वत्थाइ वारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८१ ॥  
कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा अकसिणाइ वत्थाइ धारेत्तए वा परिहरित्तए  
वा ॥ ८२ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा अभिज्ञाइ वत्थाइ धारेत्तए  
वा परिहरित्तए वा ॥ ८३ ॥ कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा भिज्ञाइं वत्थाइ  
धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८४ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण ओ(उ)ग्रहणन्तग वा  
ओग्रहणपट्टग वा धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८५ ॥ कप्पइ निगन्थीण ओग्र-  
हणन्तग वा ओग्रहणपट्टग वा वारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ ८६ ॥ निगन्थीए य  
गाहावङ्कुल पिण्डवायपडियाए अणुप्पविद्धाए चेलट्टे समुप्पज्जेजा, नो से कप्पइ  
अप्पणो नीसाए चेल पडिग्गाहेत्तए, कप्पइ से पवत्तिणीनीसाए चेल पडिग्गाहेत्तए  
॥ ८७ ॥ नो (य से) ज(त)त्थ पवत्तिणी समा(ण)णी सिया, जे तत्थ समाणे  
आयरिए वा उवज्ञाए वा प(वि)वत्ती वा थेरे वा गणी वा गणहरे वा गणावच्छेइए  
वा (ज चऽन्न पुरओ कदु विहरइ), कप्पइ से त(तेसि)नी(निसु)साए चेल पडिग्गा-  
हेत्तए ॥ ८८ ॥ निगन्थस्स (य) ण तप्पटमयाए सपव्वयमाणस्स कप्पइ रय-  
हरणपडिग्गहगोच्छगमायाए ति(हिं)हि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए सपव्वइत्तए, से  
य पुव्वोवट्टविए सिया, एव से नो कप्पइ रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए तिहि य  
कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए सपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइ वत्थाइ गहाय  
आयाए सपव्वइत्तए ॥ ८९ ॥ निगन्थीए ण तप्पटमयाए सपव्वयमाणीए कप्पइ  
रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए चउहि य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए सपव्वइत्तए, सा  
य पुव्वोवट्टविया सिया, एव से नो कप्पइ रयहरणपडिग्गहगोच्छगमायाए चउहि  
य कसिणेहिं वत्थेहिं आयाए सपव्वइत्तए, कप्पइ से अहापरिग्गहियाइ वत्थाइ गहाय  
आयाए सपव्वइत्तए ॥ ९० ॥ नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा पट्टमस्मो-  
मरणेद्देसपत्ताइ चेला(चीवरा)इ पडिग्गाहेत्तए ॥ ९१ ॥ कप्पइ निगन्थाण वा निग-  
न्थीण वा दोचसमोमरणेद्देसपत्ताइ चेलाइ पडिग्गाहेत्तए ॥ ९२ ॥ कप्पइ निगन्थाण  
वा निगन्थीण वा आ(अ)हराइणियाए चेलाइ पडिग्गाहेत्तए ॥ ९३ ॥ कप्पइ निग-

म्बाण वा निगन्धीय वा आहाराश्चिद्याए सेजाईचारवै पदिमाहेत्तए ॥ १५ ॥  
 कप्पद निगन्धाण वा निगन्धीय वा आहाराश्चिद्याए निकृमै करेत्तए ॥ १६ ॥  
 मो कप्पद निगन्धाण वा निगन्धीय वा अन्य(ए)शिर्हसि आसहत्तए वा विकृष्टेप  
 वा निसीकृष्टेप वा तुष्टित्तए वा निलाइत्तए वा पम्भाइत्तए वा असर्व वा ४ आहर  
 माहारेत्तए, उचारं वा ४ परिकृष्टेत्तए, सम्भाय वा करेत्तए, शार्व वा सादवै  
 कातस्तमग्नं वा अर्थ वा अहत्तए, वह मुण एवं जाणेजा—जहागुण्ये वाहिए (वरे)  
 तप्तस्ती तुष्टित्तेप निकृमै ( अवरिए) मुष्टेज वा पम्भेज वा एवं से कप्पद  
 अन्तरगिष्ठसि आसहत्तए वा आद अर्थ वा अहत्तए ॥ १७ ॥ मो कप्पद निगन्धाण  
 वा निगन्धीय वा अन्तरगिष्ठसि जाद वडगाह वा फलाह वा आहनिकृष्टेप वा  
 निगन्धेत्तए वा विकृष्टेप वा पक्षेत्तए वा नवरूप एगमाएथ वा एगमायरवै  
 एगमाहाए वा एगमिक्षेएन वा से वि व ठिका मो खेव व व अहिका ॥ १८ ॥  
 मो कप्पद निगन्धाण वा निगन्धीय वा अन्तरगिष्ठसि इमाहं ( व व) वा  
 महामवाहं उभावगाह आहाशिद्याए वा आद पक्षेत्तए वा नवरूप एगमाएथ वा  
 अथ एगमिक्षेएथ वा से वि व ठिका मो खेव व व अ(ठिडिका ॥ १९ ॥ वे कप्पद  
 निगन्धाण वा निगन्धीय वा पक्षिहारियं (वा सायारिक्षितिय) सेजाईचारवै  
 आवाए अपिहु, संपक्षेत्तए ॥ २० ॥ मो कप्पद निगन्धाण वा निगन्धीय  
 वा सायारिक्षितिवं सेजाईचारवै आवाए अहिगर्वं क्षु दंपक्षेत्तए ॥ २१ ॥  
 कप्पद निगन्धाण वा निगन्धीय वा पक्षिहारियं वा सायारिक्षितिवं वा देवा-  
 ईचारवै आवाए विषयवै क्षु संपक्षेत्तए ॥ २२ ॥ इह क्षु निगन्धाण वा  
 निगन्धीय वा पक्षिहारियं वा सायारिक्षितिवं वा सेजाईचारए (विषयवैविजा)  
 परिकृमै सिया से य अणुगवेसियव्ये ठिया; से य अणुगवेसमाये व्यमेजा तसेव  
 अणुप्प(पहिं)शावव्ये सिया; से व अणुगवेसमाये मो व्यमेज्य एवं से कप्पद वोवं  
 पि व्येगाह ओमित्तिश्चुष्ट(१)विंता पक्षिहारं पक्षिहारित्तए ॥ २३ ॥ वर्तिवं व व व्यावै  
 व व समग्ना निगन्धाण वा सेजाईचारवै विषयवैनित वरि(त वि)वर्त व व व्यावै  
 समग्ना निगन्धाण इम्भमाप्तेज सेव ज्ञेमाहस्त पुष्टाणु(वा-व)वाप्ता निग्न  
 अहास्तमवि व्येगप्ते ॥ २४ ॥ व वरियं वर्त व वेह उक्तस्तमविवाह(वा-व)वे वरियं  
 परिदूषणारिये, सेव अम्भाहस्त पुष्टाणुवाहना निग्न अहास्तमवि व्येगप्ते ॥ २५ ॥ वे  
 से वर्त अम्भावैहु अम्भोगदेवु अमरपौर्णिमाहित्तु अमरपौर्णिमाहित्तु सेव  
 अम्भाहस्त पुष्टाणुवाहना निग्न अहास्तमवि व्येगप्ते ॥ २६ ॥ वे कप्पद  
 व्येगप्ते व्येगप्ते वर्तपौर्णिमाहित्तु मिळकृमावस्तुद्वाए व्येगप्ते व्येगप्ते

सिया (अहालदमवि उग्गाहे) ॥ १०६ ॥ से अणुकुड्हेसु वा अणुभितीसु वा अणुचरं-  
यासु वा अणुफरिहासु वा अणुपन्थेसु वा अणुमेरासु वा सचेव ओगगहस्स पुव्वाणु-  
चवणा चिट्ठ॒ अहालन्दमवि ओग्गाहे ॥ १०७ ॥ से गा(मस्स)मसि वा जाव  
(रायहाणीए) सनिवेससि वा वहिया सेणं सनिविट्ठ॒ पेहाए काप्ह॒ निगगन्थाण वा  
निगगन्थीण वा तद्विस भिक्खायरियाए गन्तूण पट्ठिए नियत्तए, नो से कप्पइ  
(सा रथणी) त रथणिं तत्थेव उवा(य)इणा(वि)वेत्तए, जे खलु निगगन्थे वा निगगन्थी  
वा त रथणिं तत्थेव उवाइणावेइ उवाइणावेत्त वा साइज्ज॒, से दुहओ वीङ्कममाणे  
आवज्जड चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ १०८ ॥ से गामसि वा जाव  
सनिवेससि वा कप्पइ निगगन्थाण वा निगगन्थीण वा सब्बओ समन्ता सकोस  
जोयण ओग्गाह ओगिष्ठित्ताणं परिहार परिहरि(चिट्ठि)त्तए ॥ १०९ ॥ त्ति-वेसि ॥  
विहक्कप्पे तह्यो उहेसओ समत्तो ॥ ३ ॥

### चउत्थो उहेसओ

तओ अणुग्धाइ(मा)या पञ्चता, तजहा-हत्थकम्म करेमाणे, मेहुण पड्हिसेवमाणे,  
राईभोयण भुज्जमाणे ॥ ११० ॥ तओ पारश्चिया पञ्चता, तजहा-दुड्हे पारश्चिए,  
यमत्ते पारश्चिए, अचमक्ष करेमाणे पारश्चिए ॥ १११ ॥ तओ अणवट्ठप्पा पञ्चता,  
तंजहा-साहम्मि(य)याण ते(णिय)ञ्च करेमाणे, अचध(पर-ह)म्मि(य)याण तेञ्च  
करेमाणे, हत(थता)यायाल दल्माणे ॥ ११२ ॥ तओ नो कप्पन्ति पञ्चावेत्तए,  
तजहा-पण्डए कीवे वा(हि) इए, एव मुण्डावेत्तए सिक्खावेत्तए उवट्ठावेत्तए सभुजित्तए  
स(वा)व्रसित्तए ॥ ११३ ॥ तओ नो कप्पन्ति वा(इ)एत्तए, तजहा-अविणीए विगई-  
पडिवद्धे अविओसवियपाहुडे ॥ ११४ ॥ तओ कप्पन्ति वाएत्तए, तजहा-विणीए  
नो विगईपडिवद्धे विओसवियपाहुडे ॥ ११५ ॥ तओ दुस्सन्धणा पञ्चता, तजहा-  
दुड्हे मूढे वुग्गाहिए ॥ ११६-१ ॥ तओ दुस्सन्धणा पञ्चता, तजहा-अदुड्हे अमूढे अदुग्गा-  
हिए ॥ ११६-२ ॥ निगगन्थि च ण गिलायमाणिं माया वा भगिणी वा वूया (पिया वा  
भाया वा पुत्रे) वा पलिस्सएज्जा, त च निगगन्थीये साइज्ज(जइ)जेज्जा, मेहुणपट्ठि-  
नेवणप(ता)ते आवज्जड चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ ११७ ॥ निगगन्थि च  
ण गिलायमाण पिया वा भाया वा पुत्रे वा (माया वा भगिणी वा वूया वा) पलिस्स-  
एज्जा, त च निगगन्थीये साइज्जेज्जा, मेहुणपट्ठिसेवणप(ते)ता आवज्जड चाउम्मासियं  
परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ ११८ ॥ नो कप्पइ निगगन्थाण वा निगगन्थीण वा  
असण वा ४ पडमाए पो(रि-र)द्धसीए पट्ठिग्गाहेत्ता (चउत्थ-त्तिं) पच्छिम पोरुसि  
उवाइणावेत्तए, से य आहच उवाइणाविए सिया, त नो अप्पणा भुज्जेज्जा नो अज्जेसि

भयुपदेशा; एग(न्तम)मृते बहुप्रक्षण (पट्टे) विधिके परिवेशिता प्रमाणिता और  
विषयके सिवा तं अप्यथा मुख्यमाणे ज्ञानेति चा अलुप्पदेशमाने जाकश्च चारम्मालिं  
परिहारद्वाप उ(अलु)प्रवाहर्व ॥ ११९ ॥ तो कम्पद निमाम्बाह वा निमयम्बीव वा  
असर्वं वा ४ परे अद्वयोवक्त्वे(रे)ताए उवाइणवेताए से य आद्वय उवाइणालिं  
सिवा तं तो अप्यथा मुख्येजा तो ज्ञानेति अलुप्पदेशा एगन्तं बहुरासुद विधिके  
परिवेशिता प्रमाणिता परिदुर्लेपन्ते सिवा; तं अप्यथा मुख्यमाणे ज्ञानेति वा अलुप्प-  
देशमाने जाकश्च चारम्मालिं परिहारद्वाप उवाहर्व ॥ १२० ॥ विमल्लेप व  
गाहानश्चकं पित्तवामपदिवाए अलुप्पदेशीर्व अचबरे अग्निते व्यैसमिते पात्रमेत्ते  
परिवर्पाहिए सिवा अस्ति याहं व तेऽसेह( )तराए अलुप्पदेशियए, कम्पद से वस्तु  
दावं वा अलुप्पदावं वा; अतिथ याहं व तेऽसेहतराए अलुप्पदेशियए (सिवा) तं  
तो अप्यथा मुख्येजा तो ज्ञानेति अलुप्पदेशा; पराते बहुरासुद विधिके परिवेशिता  
प्रमाणिता परिदुर्लेपन्ते सिवा ॥ १२१ ॥ ते वदे कम्पहित्यार्ण तो से कम्पद कम्पहि  
जार्व ते कम्पे कम्पहित्यार्ण कम्पद से अकम्पहित्यार्ण ते कम्पे अकम्पहित्यार्ण तो से  
कम्पद कम्पहित्यार्ण ते कम्पे अकम्पहित्यार्ण कम्पद से अकम्पहित्यार्ण; कम्पहिता निकामे  
ठिका कम्पहिता बहुप्ये ठिका अकम्पहिता ॥ १२२ ॥ निकाम य गता(दे न)प-  
वद्यम् इष्टेजा व्य(व)त्ते गत उवसंपवित्तार्ण विहरिताए, तो से कम्पद अपा-  
पुरिकला(व) आवरित्वं वा उवाक्षेत्रं वा अति ता तेऽवं वा यति वा पक्षदर्त वा  
यज्ञाक्षेत्रं वा अतं गतं उवसंपवित्तार्ण विहरिताए कम्पद से आपुरिकला आव-  
रित्वं वा जात यज्ञाक्षेत्रं वा अतं गतं उवसंपवित्तार्ण विहरिताए ते व से  
विव(रेजा)रमित् एवं से कम्पद अतं गतं उवसंपवित्तार्ण विहरिताए तं व से तो  
विवरन्ति एवं से तो कम्पद अतं पर्व उवसंपवित्तार्ण विहरिताए ॥ १२३ ॥ व वा  
वज्जेत्प य गतावद्यम् इष्टेजा अतं गतं उवसंपवित्तार्ण विहरिताए, तो कम्पद  
यज्ञाक्षेत्रकस्तु गताक्षेत्रतो अनिविक्षिता अतं गतं उवसंपवित्तार्ण विहरिताए  
कम्पद गताक्षेत्रमस्तु गताक्षेत्रतो अनिविक्षिता अतं गतं उवसंपवित्तार्ण  
विहरिताए, तो से कम्पद अपुरिकला आवरित्वं वा जात यज्ञाक्षेत्रं वा अतं गतं  
उवसंपवित्तार्ण विहरिताए; कम्पद से आपुरिकला आवरित्वं वा जात यज्ञाक्षेत्रं वा  
अतं गतं उवसंपवित्तार्ण विहरिताए, ते व से विवरन्ति एवं से कम्पद अतं ठर्व  
उवसंपवित्तार्ण विहरिताए, ते व से तो विवरन्ति एवं से तो कम्पद अतं गतं  
उवसंपवित्तार्ण विहरिताए ॥ १२४ ॥ आवरित्वज्ञाप व यज्ञावद्यम् इष्टेजा  
अतं गतं उवसंपवित्तार्ण विहरिताए, तो कम्पद आवरित्वज्ञामस्तु आवरि-

उवज्ञायत्त अनिक्षिवित्ता अन्नं गणं उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, कप्पइ आयरिय-  
उवज्ञायस्स आयरियउवज्ञायत्त निक्षिवित्ता अन्नं गणं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए,  
नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा जाव गणावच्छेइय वा अन्न गण उवसप-  
ज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरिय वा जाव गणावच्छेइय वा अन्न  
गण उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एव से कप्पइ अन्न गणं उव-  
सपज्जित्ताणं विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति, एवं से नो कप्पइ अन्न गण उव-  
सपज्जित्ताण विहरित्तए ॥ १२५ ॥ मिक्खू य गणायवक्षम्म इच्छेजा अन्न गण  
सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरियं वा  
उवज्ञायं वा पवत्ति वा थेरे वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइय वा अन्नं गणं  
सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, कप्पइ से आपुच्छित्ता आयरिय वा जाव  
गणावच्छेइय वा अन्नं गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, ते य से  
वियरन्ति, एव से कप्पइ अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, ते  
य से नो वियरन्ति, एव से नो कप्पइ अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताणं  
विहरित्तए, जत्युत्तरिय धम्मविणय लमेजा, एव से कप्पइ अन्न गण सभोगपडियाए  
उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, जत्युत्तरिय धम्मविणय नो लमेजा, एवं से नो कप्पइ  
अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए ॥ १२६ ॥ गणावच्छेइय य  
गणायवक्षम्म इच्छेजा अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, नो  
कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्त अनिक्षिवित्ता अन्न गण सभोगपडियाए  
उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, कप्पइ गणावच्छेइयस्स गणावच्छेइयत्त निक्षिवित्ता अन्न  
गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, नो से कप्पइ अणापुच्छित्ता आयरिय  
वा जाव गणावच्छेइय वा अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, कप्पइ  
से आपुच्छित्ता आयरिय वा जाव गणावच्छेइय वा अन्न गण सभोगपडियाए  
उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, ते य से वियरन्ति, एव से कप्पइ अन्न गण सभोगपडि-  
याए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, ते य से नो वियरन्ति, एव से नो कप्पइ अन्न गण  
सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, जत्युत्तरियं धम्मविणय लमेजा, एव से  
कप्पइ अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, जत्युत्तरिय धम्मविणय  
नो लमेजा, एव से नो कप्पइ अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए  
॥ १२७ ॥ आयरि(ओ)यउवज्ञाए य गणायवक्षम्म इच्छेजा अन्न गण सभोगपडि-  
याए उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, नो कप्पइ आयरियउवज्ञायस्स आयरियउवज्ञायत्त  
अनिक्षिवित्ता अन्न गण सभोगपडियाए उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ आयरि-



वा आहच वीसुम(भि)मेजा, त च सरीरगं (केइ) वेयावच्चक(रा-रे भिक्खू)रा  
इ(च्छ)च्छेजा एगान्ते वहुकासुए (पएसे) थण्डिले परिष्ठवेत्तए, अतिथ याह थ  
केइ सागारियसन्तिए उवगरणजाए अचिते परिहरणारिहे, कप्पइ से साग(रि)रकड  
गहाय त सरीरग एगान्ते वहुकासुए थण्डिले परिष्ठवेत्ता तत्थेव उवनिकखेवियव्वे  
सिया ॥ १३२ ॥ भिक्खूय अहिगरण कङ्गु त अहिगरण अविओसवेत्ता-नो से  
कप्पइ गाहावइकुल (पिण्डवायपडियाए) भत्ताए वा पाणाए वा निकखमित्तए वा  
पविसित्तए वा, नो से कप्पइ वहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निकखमित्तए वा  
पविसित्तए वा, नो से कप्पइ गामाणुगाम (वा) दूझित्तए, (गणाओ वा गण सकमित्तए  
वासावास वा वत्थए) जत्थेव अप्पणो आयरि(ओ)यउवज्ञाय पासेजा वहुस्सुय  
वब्मागम, कप्पइ से तस्स(अ)न्ति(य)ए आलो(इजा)एत्तए पडिक्कमित्तए निनिदत्तए  
गरहित्तए विउद्दित्तए विसोहित्तए अकरणाए अब्सुद्दित्तए अहारिह पायच्छित् (तवो-  
कम्म) पडिवजित्तए, से य सुएण पट्टविए आइयन्वे सिया, से य सुएण नो पट्टविए नो  
आइयन्वे सिया, से य सुएण पट्टविज्जमाणे नो आइयइ, से निज्जूहियव्वे सिया ॥ १३३ ॥  
परिहारकप्पद्वियस्स ण भिक्खुस्स कप्पइ (आयरियउवज्ञा(या)एण) तद्विस ए(गंसि)-  
गरिहसि पिण्डवाय दवावे(पडिग्गाहे)त्तए, तेण पर नो से कप्पइ असण वा ४ दाउ  
वा अणुप्पदाउ वा, कप्पइ से अन्नगर वेयावडिय करेत्तए, तजहा-उद्घावण वा  
अणुद्घावण वा निसीयावण वा तुयद्घावण वा, उच्चा(र)रपासवणखेलजलसिद्धाणिगि-  
ञ्चण वा विसोहण वा करेत्तए, अह पुण एव जाणेजा-छिन्नावाएसु पन्थेसु (आउरे  
जज्जरि(ज्ञिक्षि)ए पिवासिए) तवस्ती दुब्बले किलन्ते मु(च्छ)च्छेज वा पव(डि)डेज  
वा, एव से कप्पइ असण वा ४ दाउ वा अणुप्पदाउ वा ॥ १३४ ॥ नो कप्पइ  
निगगन्थ्याण वा निगगन्थीण वा इमाओ पञ्च (महण्णवाओ) महानईओ उद्दित्ताओ  
गणियाओ वजियाओ अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा सतरि-  
त्तए वा, तंजहा-गङ्गा जउणा सरयू (एरावई) कोसिया मही, अह पुण एव जाणेजा-  
ए(रा)खवड़ कुणालाए-जत्थ चक्रिया एग पाय जले किचा एग पाय थले किचा,  
एव से कप्पइ अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा सतरित्तए  
वा, जत्थ नो एव चक्रिया, एव से नो कप्पइ अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो  
वा उत्तरित्तए वा सतरित्तए वा ॥ १३५ ॥ से तणेसु वा तणपुञ्जेसु वा पलालेसु वा  
पलालपुञ्जेसु वा अप्पणेसु अप्पणेसु अप्पवीएनु अप्पहरिएसु अप्पोस्सेसु अप्पुतिङ्ग-  
पणगदगमद्विय(य)यामङ्ग(डग)डासताणएनु अहेसवणमायाए नो कप्पइ निगगन्थ्याण  
वा निगगन्थीण वा तहम्पगारे उवल्लए हेमन्तगिम्हासु वत्थए ॥ १३६ ॥ से तणेसु

वा जाव चंद्राष्टपद्म, उपिषष्टमनावाए कल्प निमान्वाण वा निमान्वीष वा  
ताहप्पगारे चबस्तप दैमन्त्रयिम्हाए बत्तप ॥ १३७ ॥ से तरेसु वा जाव चंद्राष्ट-  
पद्म अद्वयमिम्हुक्तमच्येद्य) भो कल्प निमान्वाण वा निमान्वीष वा ताहप्पगारे  
चबस्तप वासावासं बत्तप ॥ १३८ ॥ से तरेसु वा जाव चंद्राष्टपद्म उपिष्टविमि-  
मुक्तमवर्ते कल्प निमान्वाण वा निमान्वीष वा ताहप्पगारे उक्तस्तप वासावास  
बत्तप ॥ १३९ ॥ ति-वेमि ॥ विहृष्टये अठत्यो उहेसुभो समसो ॥ ४ ॥

पञ्चमो उपेसायो

१४३ ॥ देवी य पुरिस्त्वं विठ्ठिता निमान्ते पदिम्याहेत्वे)जा तं च निमन्ते साहृण(जह)तेजा मेहुषपदिसेषणपते बाकजह चारम्मासिंहं परिहारुपर्यं अकुपवर्णं ॥ १४४ ॥ देवी य पुरिस्त्वं विठ्ठिता निमान्ते पदिम्याहेत्वे तं च निमन्ते साहृण(जह)तेजा मेहुषपदिसेषणपता आकजह चारम्मासिंहं परिहारुपर्यं अकुपवर्णं ॥ १४५ ॥ देवी य पुरिस्त्वं विठ्ठिता निमान्ते पदिम्याहेत्वे तं च निमन्ते साहृण(जह)तेजा मेहुषपदिसेषणपता आकजह चारम्मासिंहं परिहारुपर्यं अकुपवर्णं ॥ १४६ ॥ देवी य पुरिस्त्वं विठ्ठिता निमान्ते पदिम्याहेत्वे तं च निमन्ते साहृण(जह)तेजा मेहुषपदिसेषणपता आकजह चारम्मासिंहं परिहारुपर्यं अकुपवर्णं ॥ १४७ ॥ मिकू य अद्विग्रहर्थं कु तं अद्विग्रह अस्तित्वेत्वा हेत्वे व(व) गतं उत्तर्षपवित्तार्थं लिहरिताए, क्षम्भ तस्य व्य राइन्दि(व)पार्व तेवं कु पदि-पदि(म्बा)व्यविषय २ तामेव यर्थं पदिमित्ताप्यव्ये दिवा अहा वा तस्य पक्षस्तु पदिष्ठे दिया ॥ १४८ ॥ मिकू य उम्मवितीए अत्तर्खमिस्त्वैक्ये संविदिए विकिर्त (गिहा-गिक्क-समावह)गिल्के असुरं वा ४ पदिम्याहेत्वा आहारमाहारेमाने अ-पक्षम चारेत्वा-अकुम्भए स्त्रिए अत्तर्खमिए वा से वं च (आत्मवित्ति) मुहे वं च पार्विति च च पदिम्याहेत्वे (वा) विसोहेमाने ना(लो व)हस्तु तं अप्यना मुळगाने अत्तेत्वि वा (दत्तमाने) असुप्पदेमाने (राइमोन्नपदिसेषणपते) आकजह चारम्मासिंहं परिहारुपर्यं अकुपवर्णं ॥ १४९ ॥ मिकू य उम्मवितीए अत्तर्खमिस्त्वैक्ये संविदिए लिहित्ताप्तमास्त्वे असुरं वा ४ पदिम्याहेत्वा आहार माहारेमाने अहा पक्षम चारेत्वा-अकुम्भए स्त्रिए अत्तर्खमिए वा से च च मुहे वं च पार्विति च च पदिम्याहेत्वे विसोहेमाने नाशक्त, तं अप्यना मुळगाने अत्तेत्वि वा असुप्पदेमाने आकजह चारम्मासिंहं परिहारुपर्यं अकुपवर्णं ॥ १५० ॥ मिकू य उम्मवितीए अत्तर्खमिस्त्वैक्ये असुविदिए विकिर्तपित्ते असुरं वा ४ पदिम्याहेत्वा आहारमाहारेमाने अहा पक्षम चारेत्वा-अकुम्भए स्त्रिए

अथमिए वा, से ज च मुहे ज च पार्णिसि ज च पडिग्गहे त विगिज्ञमाणे विसोहे-  
माणे नाइक्कमइ, त अप्पणा भुज्जमाणे अज्जेसिं वा अणुप्पदेमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय  
परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ १४७ ॥ भिक्खू य उग्रयवित्तीए अणत्यभियसकप्पे  
असथडिए विडिगिच्छासमावज्जे असण वा ४ पडिग्गहेत्ता आहारमाहारेमाणे अह  
पच्छा जाणेज्जा-अणुग्गाए सूरिए अथमिए वा, से जं च मुहे ज च पार्णिसि ज च  
पडिग्गहे त विगिज्ञमाणे विसोहेमाणे नाइक्कमइ, तं अप्पणा भुज्जमाणे अज्जेसिं वा  
अणुप्पदेमाणे आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ १४८ ॥ इह खलु  
निगन्थस्स वा निगन्थीए वा राओ वा वियाले वा सपाणे सभोयणे उग्गाले आग-  
च्छेज्जा, त विगिज्ञमाणे विसोहेमाणे नाइक्कमइ, त उग्गिलित्ता पञ्चोगिलमाणे राइ-  
भोयणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ १४९ ॥  
निगन्थस्स य गाहावङ्कुल पिण्डवायपडियाए अणुप्पविद्वस्स अन्तो (०) पडिग्गहसि  
पा(णाणि)णे वा वी(याणि)ए वा रए वा परियावज्जेज्जा, त च सचाएइ विगिज्ञित्तए  
वा विसोहेत्तए वा, (तं पुब्वामेव आलो० विसोहि-य-या-त) तओ सज्यामेव भुज्जेज्जा  
वा पिएज्ज वा, त च नो सचाएइ विगिज्ञित्तए वा विसोहेत्तए वा, त नो अप्पणा  
भुज्जेज्जा (तं) नो अज्जेसिं अणुप्पदेज्जा, एगन्ते बहुफासुए थप्पिले पडिलेहित्ता  
पमजित्ता परिद्वेयव्वे सिया ॥ १५० ॥ निगन्थस्स य गाहावङ्कुल पिण्डवाय-  
पडियाए अणुप्पविद्वस्स अन्तो पडिग्ग(हंग)हसि दए वा दगरए वा दगफुसिए वा  
परियावज्जेज्जा, से य उसि(णे)णभोयणज्जाए, परिभोत्तव्वे सिया, से य (नो उसिणे)  
सीयमेयणज्जाए, त नो अप्पणा भुज्जेज्जा नो अज्जेसिं अणुप्पदेज्जा, एगन्ते  
बहुफासुए थप्पिले पडिलेहित्ता पमजित्ता परिद्वेयव्वे सिया ॥ १५१ ॥ निगन्थीए  
य राओ वा वियाले वा उच्चार वा पासवण वा विगिज्ञमाणीए वा विसोहेमाणीए वा  
अन्नयरे पसुजाईए वा पविक्खजाईए वा अन्नयरद्वन्द्यज्जाए त परामुसेज्जा, त च  
निगन्थी साइज्जेज्जा, हृत्थकम्पडिसेवणपत्ता आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाण  
अणुग्धाइय ॥ १५२ ॥ निगन्थीए य राओ वा वियाले वा उच्चार वा पासवण वा  
विगिज्ञमाणीए वा विसोहेमाणीए वा अन्नयरे पसुजाईए वा पविक्खजाईए वा अन्नयरेसि  
सोर्यसि ओगाहेज्जा, त च निगन्थी साइज्ज(ज्ज)जेज्जा, मेहुणपडिसेवणपत्ता आवज्जइ  
चाउम्मासिय परिहारद्वाण अणुग्धाइय ॥ १५३ ॥ नो कप्पह निगन्थीए एगाणियाए  
होत्तए ॥ १५४ ॥ नो कप्पह निगन्थीए एगाणियाए गाहावङ्कुलं भत्ताए वा पाणाए  
वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १५५ ॥ नो कप्पह निगन्थीए एगाणियाए  
चहिया वियारभूमि वा विहारभूमि वा निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १५६ ॥

मो कृष्ण निमग्नवीए पृणालिकाए गामाखुगाम दशभित्रए (वासावार्दि (वा) वत्तर) ॥ १५७ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए अपेक्षिकाए होल(हृत)ए ॥ १५८ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए अपाइयाए होताए ॥ १५९ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए बोलहुम्हनाए होताए ॥ १६० ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए बैक्षिका गामस्तु वा वाव (रामहार्दी) धंनिवेसस्तु वा उहू वाहाको परिज्ञित २ स्त्रामिषु(ही)वाए पृणालिकाए ठिका आयावनाए वावावेताए ॥ १६१ ॥ कृष्ण से उकटामस्तु अन्ये वगाए धंनिवेपिवद्याए समस्तमाइयाए ठिका वायावनाए वावावेताए ॥ १६२ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए ठाणाइयाए होताए ॥ १६३ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए पहिम्हुमियाए होताए ॥ १६४ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए ले(हि)प्रिकाए होताए ॥ १६५ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए वीरामवियाए होताए ॥ १६६ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए वण्डप्र(वि)सपिकाए (फळमिक्षमाहाए) होताए ॥ १६७ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए झगाइसावयाए होताए ॥ १६८ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए ओमेकियाए होताए ॥ १६९ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए उत्ता(चाल्ल)पिकाए होताए ॥ १७० ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए अम्बलुमिकाए होताए ॥ १७१ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीए एगापालिमाए होताए ॥ १७२ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीर्च वासावार्दि घारेत्त वा परिहरिताए वा ॥ १७३ ॥ कृष्ण निमग्नवार्च वासावार्दि घारेत्तमस्तु घारेत्त वा परिहरि(वहि)ताए वा ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीर्च सर(वा)पस्तर्चि वास(व्य)र्चियि ॥ १७६ ॥ कृष्ण निमग्नवार्च वासावार्दि ॥ १७७ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीर्च सुविसा(जडी)र्चियि छब्यर्चियि वा पी(हर्ष)र्चियि वा चिह्निकर वा निसीइताए वा (वाख्यताए वा त्रुयहिताए वा) ॥ १७८ ॥ कृष्ण निमग्नवार्च वास निसीइताए वा ॥ १७९ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीर्च (उत्ता(व्य)क्वार्दि वार्दि वार्दि वार्दि) उमेष्टर्च वासर्च वारेत्त वा परिहरिताए वा ॥ १८० ॥ कृष्ण निमग्नवीर्च वासर्च सुविसा(जडी)र्चियि छब्यर्चियि वा पी(हर्ष)र्चियि वा चिह्निकर वा परिहरि(वहि)ताए वा ॥ १८१ ॥ नो कृष्ण निमग्नवीर्च स(विड)यि(विवाचो)पृथ्ये पामकेसरि(वासो)र्चियि वारेत्त वा परिहरिताए वा ॥ १८२ ॥ कृष्ण निमग्नवार्च सपेष्टर्च वादमेसरियि वारेत्त वा परिहरिताए वा ॥ १८३ ॥ नो

१ स्त्रामिणवसम्भवुहे अम्बलए हत्तो वा माझ तस्त्र अम्भडो अम्भडो  
हुण्मालो वहो लिज्ज, तस्त्रमामलो वहो वा अम्भम्भमिया ता पामकेसुरिया  
सुकिया मप्पइ।

कप्पइ निगन्थीण दारुदण्डयं पायपुच्छण धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८४ ॥  
 कप्पइ निगन्थाण दारुदण्डय पायपुच्छणं धारेत्तए वा परिहरित्तए वा ॥ १८५ ॥  
 नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा पारियासि(ए भोयणजाए)यस्स आहारस्स  
 जाव त(ट्ट)यणमाणमेत्तमवि भूडप्पमाणमेत्तमवि विन्दुप्पमाणमेत्तमवि आहारमाहारे-  
 त्तए, नश्त्य आ(गाढा)गाढे(झु)हिं रोगायङ्केहिं ॥ १८६ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण  
 वा निगन्थीण वा पारियासिएण आलेवणजाएणं गा(य)याइ आलिम्पित्तए वा  
 विलिम्पित्तए वा, नश्त्य आगाढेर्हिं रोगायङ्केहिं ॥ १८७ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण  
 वा निगन्थीण वा पारियासिएण तेलेण वा घएण वा गायाड अब्मङ्गेत्तए वा  
 म(किस)क्वेत्तए वा, नश्त्य आगाढेर्हिं रोगायङ्केहिं ॥ १८८ ॥ नो कप्पइ निगन्थाण  
 वा निगन्थीण वा कक्षेण वा लोद्देण वा अञ्चयरेण वा आलेवणजाएण  
 गायाइ उब्बलेत्तए वा उब्बटित्तए वा, नश्त्य आगाढेर्हिं रोगायङ्केहिं ॥ १८९ ॥  
 परिहारकप्पट्टिए ण भिक्खू वहिया थेराण वेयावडियाए गच्छेज्ञा, से य आहच्च  
 अहक्मेज्ञा, त च थेरा जाणेज्ञ अप्पणो आगमेण अन्नेसिं वा अन्तिए सोच्चा, तओ  
 पच्छा तस्स अहालुहसए नाम ववहारे पट्टवियव्वे सिया ॥ १९० ॥ निगन्थीए य  
 गाहावहकुल पिण्डवायपडियाए अणुप्पविट्टाए अञ्चयरे पुंलागमत्ते पढिगाहिए  
 सिया, सा य सथरेज्ञा, एव से कप्पइ (त दिवस) तेणेव भत्तट्टेणं पजोसवेत्तए,  
 सा य नो सधरे, एव से कप्पइ दोष्व पि गाहावहकुल (पिण्डवायपडियाए अ०)  
 भत्ताए वा पाणाए वा निक्रतमित्तए वा पविसित्तए वा ॥ १९१ ॥ ति-त्रेमि ॥  
 विहक्कप्पे पञ्चमो उद्देसओ समत्तो ॥ ५ ॥

### छट्टो उद्देसओ

नो कप्पइ निगन्थाण वा निगन्थीण वा इमाइ छ अव(यण)तव्वाइ वहत्तए,  
 तजहा-अलियवयणे हीलियवयणे खिसियवयणे फुसवयणे गारत्थियवयणे, विउ-  
 ओसविय वा पुणो उदी(रि)रेत्तए ॥ १९२ ॥ छ कप्पस्स पत्थारा पच्चत्ता, तजहा-  
 पाणाहवायस्स वाय वयमाणे, मुसावायस्स वाय वयमाणे, अदिज्ञादाणस्स वाय वय-  
 माणे, अविरइ(य)यावायं वयमाणे, अपुरिसवाय वयमाणे, दासवाय वयमाणे, इच्छेए  
 कप्पस्स छप्पत्थारे पत्थरेत्ता सम्म अप्पडिपूरेमाणे तट्टाणपत्ते सिया ॥ १९३ ॥  
 निगन्थस्स य अहे पायंसि खा(णु)णुए वा क(णु)ण्टए वा ही(सङ्क)रे वा  
 परियावज्जेज्ञा, त च निगन्थे नो सच्चाएइ नीहरित्तए वा विसोहेत्तए वा, त (च)  
 निगन्थी नीहरमाणी वा विसोहेमाणी वा नाइकमइ ॥ १९४ ॥ निगन्थस्स य

१ नीरसे भोयणे ।

अर्थिति पाणे वा चीए वा रए वा परियावयेजा तं च निमन्(दो)ये नो संचार-  
(जा)इ नीहरितए वा खिमोहेताए वा त निमान्धी नीहरमाणी वा खिमोहेमाणी वा  
माणमह ॥ १९५ ॥ निमान्धीए च अहे पार्थिवाष्टए वा कट्टए वा ही(ए)रे वा  
(उड्रे वा) परियावयेजा ते च निमान्धी भो संचारेद नीहरितए वा खिमोहेतर  
वा त निमान्धे नीहरमाणे वा खिमोहेमाणे वा नाशमह ॥ १९६ ॥ निमान्धीए व  
अर्थिति पाणे वा चीए वा रए वा परियावयेजा तं च निमान्धी नो संचारेद  
नीहरितए वा खिमोहेताए वा त खिमान्धे नीहरमाणे वा खिमोहेमाणे वा नाशमह  
॥ १९७ ॥ खिमान्धे निमान्धिय बुर्धति वा खिमति वा पश्चर्ति वा पश्च(प)वश्च-  
माणि वा पश्चमाणि वा गेहमाणे वा अकलम्बमाणे वा नाशमह ॥ १९८ ॥  
खिमान्धे निमान्धिय सेयंति वा पौर्ति वा पश्चाति वा उद्यति वा और(उद्द)माणि  
वा अग्नु(ज्ञ)ममाणि वा गेहमाणे वा अकलम्बमाणे वा नाशमह ॥ १९९ ॥  
निमान्धे निमान्धिय मार्त्र आ(रोह)दम्ममाणि वा और(उ-रोह)दम्ममाणि वा गेहमाणे  
वा अकलम्बमाणे वा नाशमह ॥ २ ॥ १ ॥ दित्तवित्त निमान्धिय निमान्धे गेह(पि)ह  
माणे वा अकलम्बमाणे वा नाशमह ॥ २ ॥ २ ॥ अक्षताहु ( ) उम्माक्षते  
( ) उक्षसम्मापत्त ( ) साहिमर्थ ( ) सपायविहार ( ) मातापापविहारविहार  
( ) लक्ष्मा(यमिम)वं निमान्धिय निमान्धे गेहमाणे वा अकलम्बमाणे वा नाशमह  
॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ क्षप्तस्त पतिमन्ध् पद्माता तंबहा-क्षेत्रुष्ट ईश्वरस्त पतिमन्ध्, शेष्ठरीप  
सब्दवणस्त पतिमन्ध्, तिनिता(भी)पिए एसचागोमरस्त पतिमन्ध्, भक्षणस्तेर  
हरियावविहार ए पतिमन्ध्, इच्छाक्षे(म-स्त-ए)मे मुतिमास्त पतिमन्ध्, (मित्य)  
भुज्ये भुज्ये निवाचक्षरमे चिरिद(मोक्ष)मम्पस्तु पतिमन्ध्, सञ्चत्व मात्वा विभि-  
याच्च वा पसत्वा ॥ २ ॥ ४ ॥ छमिदा क्षप्तविहीं पद्माता तंबहा-सामाप्तवस्तवक्षपविहीं,  
क्षेष्ठेष्ठुवावविहसववक्षपविहीं, निविद्वासाप्तवक्षपविहीं, निविद्वासाप्तवक्षपविहीं,  
क्षपविहीं, वेष्टक्षपविहीं ॥ २ ॥ ५ ॥ तिनेमि ॥ विहङ्गम्ये छ्हो लारेसद्वे  
समत्वे ॥ ६ ॥ विहङ्गम्यसुर्त समत्वे ॥





वा भारेत वा साइबर ॥ १३ ॥ ये मिस्कू अस्तोहनगस्तुतारकर्त्त वा भार-  
रतिष्ठेण वा गारतिष्ठेण वा भारेत भारेत वा साइबर ॥ १४ ॥ ये मिस्कू नक्षत्र  
सूर्य वायद वासंत वा साइबर ॥ १५ ॥ ये मिस्कू अण्डाए पिष्ठेण वायद वासंत वा  
साइबर ॥ १६ ॥ ये मिस्कू अण्डाए कम्पसोहणी वायद वासंत वा साइबर ॥ १७ ॥  
ये मिस्कू अण्डाए अस्तोहनगर्व वायद वायद वा साइबर ॥ १८ ॥ ये मिस्कू  
अशिहीए सूर्य वायद वासंत वा साइबर ॥ १९ ॥ ये मिस्कू अशिहीए पिष्ठम्ब  
वायद वासंत वा साइबर ॥ २० ॥ ये मिस्कू अशिहीए कम्पसोहणी वायद वासंत वा  
साइबर ॥ २१ ॥ ये मिस्कू अशिहीए कम्पसोहणी वायद वासंत वा  
साइबर ॥ २२ ॥ ये मिस्कू अशिहीए लाल्लोहणी वायद वासंत वा साइबर ॥ २३ ॥  
ये मिस्कू अशिहीए लाल्लोहणी वायद वासंत वा साइबर ॥ २४ ॥ ये मिस्कू  
लाल्लोहणी लाल्लोहणी वायद वासंत वा साइबर ॥ २५ ॥ ये मिस्कू अशिहीए कम्पसोहणी वायद वासंत वा  
साइबर ॥ २६ ॥ ये मिस्कू पाण्डिहारिए सूर्य वायद वासंत वा  
सिंहार सिंहार वा साइबर ॥ २७ ॥ ये मिस्कू पाण्डिहारिए पिष्ठम्ब वायद वासंत वा  
सिंहिस्तामिति पानं लियर लिंदर्त वा साइबर ॥ २८ ॥ ये मिस्कू पाण्डिहारिए  
लाल्लोहणी वायद वायद लिंहिस्तामिति सूर्यदर्त करेय कर्त्त वा साइबर ॥ २९ ॥  
ये मिस्कू पाण्डिहारिए कम्पसोहणी वायद कम्पम्ब जीहिस्तामिति बृहम्ब वा  
बृहम्ब वा जीहरेय जीहरेत वा साइबर ॥ ३० ॥ ये मिस्कू अप्पमो एहस्स  
भद्राए सूर्य वायद अष्टमम्बस्तु अनुपरेह अनुपरेत वा साइबर ॥ ३१ ॥ ये  
मिस्कू अप्पमो एहस्स भद्राए पहचेनवायद वायद अष्टमम्बस्तु अनुपरेह अनुपरेत  
वा साइबर ॥ ३२ ॥ ये मिस्कू अप्पमो एहस्स भद्राए लाल्लोहणी वायद  
अल्लम्बल्लस्तु अनुपरेह अनुपरेत वा साइबर ॥ ३३ ॥ ये मिस्कू अप्पमो एहस्स  
भद्राए कम्पसोहणी वायद अष्टमम्बस्तु अनुपरेह अनुपरेत वा साइबर ॥ ३४ ॥  
ये मिस्कू सूर्य अशिहीए पवधिम्ब ववधिम्बर्त वा साइबर ॥ ३५ ॥ ये मिस्कू  
अशिहीए पिष्ठम्बर्व पवधिम्ब ववधिम्बर्त वा साइबर ॥ ३६ ॥ ये मिस्कू अशिहीए  
लाल्लोहणी पवधिम्ब ववधिम्बर्त वा साइबर ॥ ३७ ॥ ये मिस्कू अशिहीए लाल्लोहणी-  
ववधिम्ब ववधिम्बर्त वा साइबर ॥ ३८ ॥ ये मिस्कू कल्पवपार्व वा वास्तवारे  
वा महियाप्पव वा अल्लवरिक्तिए वा गारतिष्ठेण वा परिष्ठेय वा संठेय वा  
लम्बायेह वा अल्लम्बप्पमो कारणवाए छाहुममिति शो कम्पद वावमाये सरमाये अल्ल-  
म्बस्स विवद्य विवरेत वा साइबर ॥ ३९ ॥ ये मिस्कू रेहेय वा अल्लेयिरे  
वा ऐलुस्याय वा अल्लवतिष्ठेण वा गारतिष्ठेण वा परिष्ठेय वा संठेय वा  
वमायेह वा अल्लम्बप्पमो कारणवाए छाहुममिति शो कम्पद वावमाये सरमाये अल्ल-  
म्बस्स विवद्य विवरेत वा साइबर ॥ ४० ॥ ये मिस्कू पास्तरस एह द्विक्षे

१ बेरामेस्ताए, देसि कप्पत् ति ।

याणि वा पच्छासथुयाणि वा कुलाइं पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुप-  
विसत वा साइज्जइ ॥ ९४ ॥ जे भिक्खु अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अपार-  
हारिए वा अपरिहारिएण सद्दि गाहावङ्कुल पिंडवायपडियाए णिक्खमइ वा अणुप-  
विसइ वा णिक्खमतं वा अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ ९५ ॥ जे भिक्खु अण्णउत्थिएण  
वा गारत्थिएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्दि वहिया विहारभूमि वा वियारभूमि  
वा णिक्खमइ वा पविसइ वा णिक्खमत वा पविसत वा साइज्जइ ॥ ९६ ॥ जे भिक्खु  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिहारिओ अपरिहारिहि सद्दि गामाणुगाम  
दूझज्जइ दूझज्जतं वा साइज्जइ ॥ ९७ ॥ जे भिक्खु अण्णयरं पाणगजायं पडिगाहित्ता  
पुण्फग पुण्फग आडयइ कसाय २ परिष्ठुवेइ परिष्ठुवेत वा साइज्जइ ॥ ९८ ॥ जे भिक्खु  
अण्णयर भोयणजाय पडिगाहित्ता सुविभ २ भुजइ दुविभ २ परिष्ठुवेइ परिष्ठुवेत वा  
साइज्जइ ॥ ९९ ॥ जे भिक्खु मणुण भोयणजाय पडिगाहेत्ता वहुपरियावणं सिया  
अदूरे तत्थ साहम्मिया सभोइया समणुणा अपरिहारिया सता परिवसति ते अणापु-  
च्छिय(य)या अणिमतिया परिष्ठुवेइ परिष्ठुवेत वा साइज्जइ ॥ १०० ॥ जे भिक्खु सागारिय  
पिंड गिणहइ गिणहत वा साइज्जइ ॥ १०१ ॥ जे भिक्खु सागारिय पिंड भुजइ  
भुजत वा साइज्जइ ॥ १०२ ॥ जे भिक्खु सागारिय कुलं अजाणिय अपुच्छिय  
अगवेसिय पुव्वामेव पिंडवायपडियाए अणुपविसइ अणुपविसत वा साइज्जइ ॥ १०३ ॥  
जे भिक्खु सागारियनीसाए असण वा पाण वा खाइम वा साइमं वा ओमातिय २  
जायइ जायतं वा साइज्जइ ॥ १०४ ॥ जे भिक्खु उङ्गुबद्धियं सेजासथारयं  
पर पज्जोसवणाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइज्जइ ॥ १०५ ॥ जे भिक्खु वासा-  
वासिय सेजासथारय परं दसरायकप्पाओ उवाइणाइ उवाइणत वा साइज्जइ  
॥ १०६ ॥ जे भिक्खु उङ्गुबद्धिय वा वासावासिय वा सेजासथारग उवरि सिज-  
माण पेहाए न ओसारेइ न ओसारेत वा साइज्जइ ॥ १०७ ॥ जे भिक्खु पाडि-  
हारिय सेजासथारय अणणुणवेत्ता वाहिं णीणेइ णीणेत वा साइज्जइ ॥ १०८ ॥  
जे भिक्खु सागारियसतिय सेजासथारय अणणुणवेत्ता वाहिं णीणेइ णीणेत वा  
साइज्जइ ॥ १०९ ॥ जे भिक्खु पाडिहारियं सागारियसतिय वा सेजासथारय  
दोच्चंपि अणणुणवेत्ता वाहिं णीणेइ णीणेत वा साइज्जइ ॥ ११० ॥ जे भिक्खु  
पाडिहारिय सेजासथारय आदाय अप्पडिहट्टु सपव्वयइ सपव्वयतं वा साइज्जइ  
॥ १११ ॥ जे सागारियसतिय सेजासथारय आदाय अहिगरण कटु अण-  
पव्वयत वा साइज्जइ ॥ ११२ ॥ जे भिक्खु पाडिहारियं  
जासथारय विष्णष्टु ण गवेसइ ण गवेसत वा साइज्जइ

साइवाई ॥ ६५ ॥ जे मिक्तू पक्षमनी वा उद्गमं वा आर्द्धवर्ण वा सम्मेत करेत वा साइवाई ॥ ६६ ॥ जे मिक्तू दयवीतिर्य सम्मेत करेत करेत वा साइवाई ॥ ६७ ॥ जे मिक्तू उद्गमं वा उद्गमण्ठत्यं वा सम्मेत करेत करेत वा साइवाई ॥ ६८ ॥ जे मिक्तू सोतिने वा रुद्धुर्यं वा उद्गिमिति वा सम्मेत करेत करेत वा साइवाई ॥ ६९ ॥ जे मिक्तू स्थौए उत्तरकृत्वं सम्मेत करेत करेत वा साइवाई ॥ ७० ॥ जे मिक्तू पिप्पलवस्य उत्तरकृत्वं सम्मेत करेत करेत वा साइवाई ॥ ७१ ॥ जे मिक्तू नहृष्टेष्यगत्स्य उत्तरकृत्वं सम्मेत करेत करेत वा साइवाई ॥ ७२ ॥ जे मिक्तू अप्यस्त्रोपमस्य उत्तरकृत्वं सम्मेत करेत करेत वा साइवाई ॥ ७३ ॥ जे मिक्तू अमुसर्गं असर्वं वर्तत वा साइवाई ॥ ७४ ॥ जे मिक्तू अमुसर्यं सुर्वं वयह करेत वा साइवाई ॥ ७५ ॥ जे मिक्तू अमुसर्गं अवर्त आदित्य आदित्यं वा साइवाई ॥ ७६ ॥ जे मिक्तू अमुसर्प्यं सीधोदगविहेत वा उत्तिष्ठोदगविहेत य दृत्यामि वा पावामि वा कल्पामि वा अन्तर्विधि वा देतामि वा यहामि वै (अहो वा) उत्पत्तेष्येत्वा पश्चोदेत्वा उत्त्वेष्येत्वा पश्चोदेत्वा वा साइवाई ॥ ७७ ॥ जे मिक्तू कल्पित्वाई वत्वाई वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ७८ ॥ जे मिक्तू अमित्यार्द वत्वाई वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ७९ ॥ जे मिक्तू अमित्यार्द वत्वाई वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ८० ॥ जे मिक्तू रुद्धने वा अवस्थेयं परिवहेत वा उठनेत वा अमानेत वा परिवहेत वा उठनेत वा अमानेत वा साइवाई ॥ ८१ ॥ जे मिक्तू उद्गमण्ठित्वं परिम्लृप्य वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ८२ ॥ जे मिक्तू उद्गमण्ठित्वं परिम्लृप्य वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ८३ ॥ जे मिक्तू वरणवेस्तिर्यं पठिम्लृप्यं वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ८४ ॥ जे मिक्तू कल्पावेस्तिर्यं पठिम्लृप्यं वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ८५ ॥ जे मिक्तू अवस्थेयं पठिम्लृप्यं वरेत वरेत वा साइवाई ॥ ८६ ॥ जे मिक्तू निरित्यं अम्यतिर्यं अुवर्त अुवर्त वा साइवाई ॥ ८७ ॥ जे मिक्तू निरित्यं पिर्यं अुवर्त अुवर्त वा साइवाई ॥ ८८ ॥ जे मिक्तू निरित्यं अवर्तमार्गं अुवर्त अुवर्त वा साइवाई ॥ ८९ ॥ जे मिक्तू निरित्यं भार्गं अुवर्त अुवर्त वा साइवाई ॥ ९० ॥ जे मिक्तू निरित्यं उद्गमण्ठ अुवर्त अुवर्त वा साइवाई ॥ ९१ ॥ जे मिक्तू निरित्यामार्गं वर्त वर्त वा साइवाई ॥ ९२ ॥ जे मिक्तू पुरेष्वर्णं वा पञ्चासवर्णं वा करेत वरेत वा साइवाई ॥ ९३ ॥ जे मिक्तू उमामे वा वषमामे वा गमामाण्डामे वा द्व्यजमामे तुरेत्तु-